

कलामुर - रहमान

हिन्दी में कुरआने मजीद

कन्जुल ईमान

अरबी मत्न, अनुवाद व तफ्सीर

उर्दू अनुवाद :

अअला हजरत इमाम अहमद रजा खाँ
मुहद्दिसे बरैलवी रहमतुल्लाहे तआला अलैह

तफ्सीर :

हजरत मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब
सद्दुल अफ्फाज़िल रहमतुल्लाहे तआला अलैह

हिन्दी रूपान्तर :

सैयद शाह आलै रसूल हसनैन मियाँ नज़्मी
सज्जादानशीन, ख़ानकाहे बरकातियह,
मारेहरा शरीफ़.

प्रकाशक:

बरकाती पब्लिशर्स

मिलने के पते

फ़ारुक़िया बुक डिपो
रजा अकेडमी

४२२, मांटेया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-११०००६
२६, काम्बेकर स्ट्रीट, मुंबई-४००००३

कलामुर - रहमान

हिन्दी में कुरआने मजीद

कन्जुल ईमान

अरबी मूल, अनुवाद व तफसीर

- उर्दू अनुवाद : अअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ
मुहद्दिसे बरैलवी रहमतुल्लाहे तआला अलैह
- तफ़सीर : हज़रत मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब
सदुल अफ़ज़िल रहमतुल्लाहे तआला अलैह
- हिन्दी रुपान्तर : सैयद शाह आले रसूल हसनैन गिर्याँ नज़मी
सज्जादानशीन, ख़ानक्राहे बरकातियह,
मारेहरा शरीफ़.

प्रकाशक:

बरकाती पब्लिशर्स

मिलने के पते:

दारुल उलूम ग़रीब नवाज़ रज़ा नगर, जान्सापुरा उज्जैन (एम० पी०)
फारुक़िया बुक डिपो ४२२, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-११०००६
रज़ा अकैडमी २६, काम्बेकर स्ट्रीट, मुंबई-४००००३

अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा मेहरवान रहमत वाला

७ सितम्बर, २००२. मुंबई का मशहूर हज हाऊस खचाखच भरा हुआ. ये लोग कन्जुलईमान के हिन्दी अनुवाद कलामुर्हमान के इज्जा की तकरीब में शिरकत करने जमा हुए हैं. हज हाऊस के अन्दर बनाए गए मिम्बर पर उलमाए किराम और अइम्माए मसाजिद का मजमअ है. बाहर के उलमा भी तशरीफ़ फ़रमा हैं. अचानक सवाल उठता है कि इज्जा किस के हाथों कराया जाए. यह बड़ा ही नाजुक मरहला है. एक को खुश करें तो दूसरा नाराज़. ऐसे में एक ख़याल आया. फ़ौरन रज़ा अकादमी के बानी अलहाज मुहम्मद सईद नूरी को फ़ोन किया कि वह मुंबई के कुलावा मक़ाम पर वाक़े दारुल उलूम हनफ़िया चले जाएं और वहाँ के सबसे कमसिन हाफ़िज़ को बुला लाएँ. दस ग्यारह साल के हाफ़िज़ मुहम्मद शमीम नूरी के वहमो गुमान में भी न होगा कि भरे जलसे में उसका नाम पुकारा जाएगा और वह सैकड़ों लोगों की तवज्जह का मरकज़ बन जाएगा. एक और सवाल यह उठा कि मुहम्मद शमीम हिन्दी अनुवाद की पहली कॉपी किसे पेश करे. यहाँ भी गैबी मदद हुई. मिम्बर पर बराऊँ शरीफ़ के शहज़ादे और मुल्क के एक नामवर आलिम अल्लामा गुलाम अब्दुल क़ादिर अलवी तशरीफ़ फ़रमा थे. मेहमान आलिम और हुज़ूर सैय्यिदुल उलमा के ख़लीफ़ा को जिस वक़्त पहली कॉपी पेश की गई तो हज हाऊस नारों से गूँज उठा.

पहला अँडीशन हाथों हाथ निकल गया. अब यह दूसरा अँडीशन आपके हाथों में है. मुल्क के कोने कोने से ख़त आ रहे हैं जिनमें हिन्दी अनुवाद की तारीफ़ की गई है. मेरा इरादा था कि दूसरे अँडीशन में सूरतों का ख़ुलासा शामिल करूँ मगर अपनी अलालत की वजह से यह काम न कर सका. आप सब हज़रात मेरी सेहत के लिये दुआ करें.

हमारी यही कोशिश रही है कि जो चीज़ पेश करें वह मेअयारी हो. इसी लिये कलामुर्हमान का कागज़, इसकी जिल्दबन्दी और छपाई में ख़ूब से ख़ूबतर की तलाश रही है.

अल्लाह तआला अपने हबीबे करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदक़े में हमारी यह ख़िदमत कुबूल फ़रमाएँ और उन सब हज़रात को अज़े जमील अता फ़रमाएँ जिन्होंने इस अनुवाद की इशाअत में हमारी मुआविनत की है. आमीन.

आपका अपना

सैयद आले रसूल हसनैन मियाँ क़ादरी बरकाती नूरी
सज्जादा नशीन, ख़ानक़ाहे बरकातियह, मारेहरा शरीफ़

१२ सफ़रुल मुज़फ़्फ़र १४२४ हिजरी.

सुराह नं.	सुराह का नाम	पारा नं.	सफा नं.	सुराह नं.	सुराह का नाम	पारा नं.	सफा नं.
१	सुराह अल-फातिहा	१	५	५८	सुराह मुजादलह	२८	८६५
२	सुराह अल-बक्रह	१	७	५९	सुराह हथ	२८	८६९
३	सुराह आले इमरान	३	११	६०	सुराह मुम्ताहिनाह	२८	८७५
४	सुराह अन-निसा	४	१३२	६१	सुराह सफ	२८	८७९
५	सुराह अल-माइदा	६	१७७	६२	सुराह जुमअह	२८	८८३
६	सुराह अल-अनआम	७	२०९	६३	सुराह मुनाफिकून	२८	८८५
७	सुराह अल-अअराफ	८	२४३	६४	सुराह तगावून	२८	८८७
८	सुराह अल-अनफाल	९	२८३	६५	सुराह तलाक	२८	८९०
९	सुराह अत-तौबह	१०	३००	६६	सुराह तहरीम	२८	८९३
११	सुराह युनुस	११	३३०	६७	सुराह मूलक	२९	८९७
११	सुराह हुद	११	३५२	६८	सुराह कलम	२९	९००
१२	सुराह युसुफ	१२	३७३	६९	सुराह हाक्का	२९	९०४
११	सुराह अर-रअद	१३	३९५	७०	सुराह मआरिज़	२९	९०८
१४	सुराह इब्राहीम	१३	४०५	७१	सुराह नुह	२९	९११
१५	सुराह अल-हिज	१३	४१६	७२	सुराह जिन्न	२९	९१४
१६	सुराह अल-नहल	१४	४२४	७३	सुराह मुज़म्मिल	२९	९१७
१७	सुराह बनी इस्राईल	१५	४४८	७४	सुराह मुद्सिर	२९	९१९
१८	सुराह अल-कहफ	१५	४६७	७५	सुराह क्रियामह	२९	९२२
१९	सुराह मरयम	१६	४८७	७६	सुराह दहर	२९	९२५
२०	सुराह ताहा	१६	४९९	७७	सुराह मुसलत	२९	९२९
२१	सुराह अल-अम्बिया	१७	५१६	७८	सुराह नबा	३०	९३२
२२	सुराह अल-हज	१७	५२९	७९	सुराह नाज़िआत	३०	९३३
३१	सुराह अल-मुमिनून	१८	५४५	८०	सुराह अबसा	३०	९३६
१४	सुराह अन-नूर	१८	५५६	८१	सुराह तकवीर	३०	९३८
२५	सुराह अल-फुरकान	१८	५७३	८१	सुराह इन्कितार	३०	९३९
२६	सुराह अश-शुअरा	१९	५८४	८१	सुराह मुतफ़िफ़ून	३०	९४०
२७	सुराह अन-नमल	१९	६००	८०	सुराह इन्किफ़	३०	९४३
२८	सुराह अल-कसस	२०	६१३	८०	सुराह बुरुज	३०	९४४
२९	सुराह अल-अनकवूत	२०	६३१	८६	सुराह तारिक	३०	९४६
३१	सुराह अर-रुम	२१	६४३	८७	सुराह अअला	३०	९४७
३१	सुराह लुकमान	२१	६५३	८८	सुराह गाशियह	३०	९४९
३२	सुराह अस-सजदह	२१	६५९	८९	सुराह फय	३०	९५०
३१	सुराह अल-अहज़ाब	२१	६६३	९०	सुराह बलद	३०	९५२
३१	सुराह सबा	२२	६८२	९१	सुराह शम्स	३०	९५३
३५	सुराह फ़ातिर	२२	६९२	९२	सुराह लैल	३०	९५४
३६	सुराह यासीन	२२	७०१	९१	सुराह दुहा	३०	९५६
३७	सुराह अस-साफ़क़ात	२३	७१०	९४	सुराह इन्शारह	३०	९५६
३८	सुराह लौद	२३	७२१	९५	सुराह तीन	३०	९५८
३९	सुराह अज़-ज़ुमर	२३	७२९	९६	सुराह अलक	३०	९५८
४०	सुराह अल-मुमिन	२४	७४३	९७	सुराह क़द्र	३०	९६०
४३	सुराह हामीम सजदह	२४	७५६	९८	सुराह दय्यिनह	३०	९६०
४२	सुराह अश-शूरा	२५	७६६	९९	सुराह ज़िलज़ाल	३०	९६२
४३	सुराह अज़-ज़ुब्रक़	२५	७७५	१००	सुराह आदियात	३०	९६३
४४	सुराह अद-दुख़ान	२५	७८५	१०१	सुराह क़ारिअह	३०	९६४
४५	सुराह अल-जासियह	२५	७९०	१००	सुराह तकासुर	३०	९६४
४६	सुराह अल-अहक़ाफ़	२६	७९६	१०३	सुराह अन्न	३०	९६५
४७	सुराह मुहम्मद	२६	८०३	१०४	सुराह हुमज़ह	३०	९६५
४८	सुराह अल-फ़त्ह	२६	८०९	१०५	सुराह फ़ील	३०	९६५
४९	सुराह अल-हुजुरात	२६	८१६	१०६	सुराह क़ुरैश	३०	९६७
५०	सुराह काफ़	२६	८२२	१०७	सुराह माऊन	३०	९६७
५१	सुराह ज़ारियात	२६	८२७	१०८	सुराह कौसर	३०	९६८
५२	सुराह तूर	२७	८३२	१०९	सुराह काफ़िरून	३०	९६८
५३	सुराह नज्म	२७	८३५	११०	सुराह नन्न	३०	९६८
५४	सुराह क़मर	२७	८४१	१११	सुराह लहव	३०	९७०
५५	सुराह रहमान	२७	८४६	११२	सुराह इक्लास	३०	९७०
५६	सुराह बाकिआ	२७	८५२	११३	सुराह फ़लक	३०	९७०
५७	सुराह हदीद	२७	८५७	११४	सुराह नास	३०	९७२

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम सूरतुल फ़ातिहा

मक्का में उतरी : आयतें: सात, रूकू एक.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१)
सब ख़ुवियाँ अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों
का^(२) बहुत मेहरबान रहमत वाला^(३) रोज़े जज़ा (इन्साफ़
के दिन) का मालिक^(४) हम तुझी को पूजें और तुझी से
मदद चाहें^(५) हम को सीधा रास्ता चला^(६) रास्ता उनका
जिन पर तूने एहसान किया^(७) न उनका जिनपर
ग़ज़व (प्रकोप) हुआ और न बहके हुआ का^(८)



तफ़सीर - सूरतुल फ़ातिहा

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला.

अल्लाह की तअरीफ़ और उसके हवीब पर दरुद.

सूरए फ़ातिहा के नाम :

इस सूरत के कई नाम हैं - फ़ातिहा, फ़ातिहतुल किताब, उम्मुल कुरआन, सूरतुल कज़, काफ़िया, वाफ़िया, शाफ़िया, शिफ़ा, सबए मसानी, नूर, रूक़ैया, सूरतुल हम्द, सूरतुद दुआ, तअलीमुल मसअला, सूरतुल मनाज़ात, सूरतुल तफ़वीद, सूरतुस सवाल, उम्मुल किताब, फ़ातिहतुल कुरआन, सूरतुस सलात.

इस सूरत में सात आयतें, सत्ताईस कलिमे, एक सौ चालीस अक्षर हैं. कोई आयत नासिग्र या मन्सूख़ नहीं.

शाने नज़ूल यानी किन हालात में उतरी :

ये सूरत मक्कए मुकर्रमा या मदीनए मुनबरा या दोनों जगह उतरी. अम्र बिन शर्जील का कहना है कि नबीये करीम (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम - उनपर अल्लाह तआला के दुरुद और सलाम हों) ने हज़रत ख़दीजा (रदियल्लाहो तआला अन्हा - उनसे अल्लाह राज़ी) से फ़रमाया- मैं एक पुकार सुना करता हूँ जिसमें इकरा यानी 'पढ़ो' कहा जाता है. दरकर बिन नोफ़िल को ख़बर दी गई, उन्होंने अर्ज़ किया- जब यह पुकार आए, आप इन्मीनाह से सुनें. इसके बाद हज़रत जिब्रील ने ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया- फ़रमाइये : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम. अल्लहु लिल्लाहे रब्बिल आलमीन- यानी अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान, रहमत वाला, सब ख़ुवियाँ अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का. इससे मालूम होता है कि उतरने के हिसाब से ये पहली सूरत है मगर दूसरी रिवायत से मालूम होता है कि पहले मूरए इकरा उतरी. इस सूरत में सिख़ाने के तौर पर बन्दों की ज़बान में क़ताम किया गया है.

नमाज़ में इस सूरत का पढ़ना वाजिब यानी ज़रूरी है. इमाम और अकेले नमाज़ी के लिये तो हकीकत में अपनी ज़बान से, और मुक्तदी के लिये इमाम की ज़बान से. सही हदीस में है कि इमाम का पढ़ना ही उसके पीछे नमाज़ पढ़ने वाले का पढ़ना है. कुरआन शरीफ़ में इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले को ख़ामोश रहने और इमाम जो पढ़े उसे सुनने का हुक्म दिया गया है. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे सुनो और ख़ामोश रहो. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है कि जब इमाम कुरआन पढ़े, तुम ख़ामोश रहो. और बहुत सी हदीसों में भी इसी तरह की बात कही गई है. ज़नाज़े की नमाज़ में दुआ याद न हो तो दुआ की नियत से सूरए फ़ातिहा पढ़ने की इजाज़त है. कुरआन पढ़ने की नियत से यह सूरत नहीं पढ़ी जा सकती.

मुरतुल फ़ातिहा की खूबियाँ :

हदीस की किताबों में इस सूरत की बहुत सी खूबियाँ बयान की गई हैं. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया तौरात व इंजील व जुबूर में इस जैसी सूरत नहीं उतरी. (तिरमिज़ी). एक फ़रिश्ते ने आसमान में उतरकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर सलाम अर्ज़ किया और दो ऐसे नूरों की ख़ुशख़बरी सुनाई जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम में पहले किसी नबी को नहीं दिये गए. एक सूरफ़ फ़ातिहा दूसरे सूरफ़ बक्र की आग़िरी आयतें. (मुस्लिम शरीफ़) सूरफ़ फ़ातिहा हर बीमारी के लिये दवा है. (दारमी) सूरफ़ फ़ातिहा सौ बार पढ़ने के बाद जो दुआ मांगी जाए, अल्लाह तआला उसे कुबूल फ़रमाता है. (दारमी)

इस्तिआज़ा : क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने से पहले "अज़ज़ो बिल्लाहे मिनश शैतानिर रज़ीम" (अल्लाह की पनाह मांगता हूँ भगाए हुए शैतान से) पढ़ना प्यारे नबी का तरीका यानी सुन्नत है. (खाज़िन) लेकिन शागिर्द अगर उस्ताद से पढ़ता हो तो उसके लिये सुन्नत नहीं है. (शामी) नमाज़ में इमाम और अकेले नमाज़ी के लिये सना यानी सुन्नानक़्क़ल्लाहुम्मा पढ़ने के बाद आहिस्ता में "अज़ज़ो बिल्लाहे मिनश शैतानिर रज़ीम" पढ़ना सुन्नत है. (शामी)

तस्मियह : "बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रज़ीम" क़ुरआने पाक की आयत है मगर सूरफ़ फ़ातिहा या किसी और सूरत का हिस्सा नहीं है, इसी लिये नमाज़ में ज़ोर के साथ न पढ़ी जाए. बुख़ारी और मुस्लिम में लिखा है कि प्यारे नबी (उनपर अल्लाह के दुरुद और सलाम) और हज़रत सिद्दीक़ और फ़ारूक़ (अल्लाह उनसे राज़ी) अपनी नमाज़ "अल्हमदो बिल्लाहे रब्बिल आलमीन" यानी सूरफ़ फ़ातिहा की पहली आयत में शुरू करते थे. तरवीह (रमज़ान में रात की ख़ास नमाज़) में जो ख़तम किया जाता है उसमें कहीं एक बार पूरी बिस्मिल्लाह ज़ोर से ज़रूर पढ़ी जाए ताकि एक आयत बाक़ी न रह जाए.

क़ुरआन शरीफ़ की हर सूरत बिस्मिल्लाह में शुरू की जाए, सिवाय सूरफ़ बराअत या सूरफ़ तौबह के. सूरफ़ नम्ल में सज़्दे की आयत के बाद जो बिस्मिल्लाह आई है वह मुरतज़िल आयत नहीं है बल्कि आयत का एक टुकड़ा है. इस आयत के साथ ज़रूर पढ़ी जाएगी, आवाज़ से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में आवाज़ के साथ और ख़ामोशी से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में ख़ामोशी से. हर अच्छे काम की शुरुआत बिस्मिल्लाह पढ़कर करना अच्छी बात है. बुरे काम पर बिस्मिल्लाह पढ़ना सना है.

सूरफ़ फ़ातिहा में क्या क्या है ?

इस सूरत में अल्लाह तआला की तारीफ़, उसकी बड़ाई, उसको रहमत, उसका मालिक होना, उससे इबादत, अच्छाई, हिदायत, हर तरह की मदद तलब करना, दुआ मांगने का तरीका, अच्छे लोगों की तरह रहने और बुरे लोगों से दूर रहने, दुनिया की ज़िन्दगी का ख़ातिमा, अच्छाई और बुराई के हिसाब के दिन का साफ़ साफ़ बयान है.

इन्ह यानी अल्लाह की बड़ाई बयान करना :

हर काम की शुरुआत में बिस्मिल्लाह की तरह अल्लाह की बड़ाई का बयान भी ज़रूरी है. कभी अल्लाह की तारीफ़ और उसकी बड़ाई का बयान अनिवार्य या वाजिब होता है जैसे जुमूए के ख़ुत्बे में, कभी मुस्तहब यानी अच्छा होता है जैसे निकाह के ख़ुत्बे में या दुआ में या किसी अहम काम में और हर ख़ाने पीने के बाद. कभी सुन्नत मुअक्क़दा (यानी नबी का वह तरीका जिसे अपनाने की ताकीद आई हो) जैसे छींक आने के बाद. (तहतावी)

"रब्बिल आलमीन" (यानी मालिक सारे ज़हान वालों का) में इस बात को तरफ़ इशारा है कि सारी कायनात या समस्त सृष्टि अल्लाह की बनाई हुई है और इसमें जो कुछ है वह सब अल्लाह ही की मोहताज़ है. और अल्लाह तआला हमेशा से है और हमेशा के लिये है, ज़िन्दगी और मौत के जो पैमाने हमने बना रखे हैं, अल्लाह उन सब से पाक है. वह कुदरत वाला है. "रब्बिल आलमीन" के दो शब्दों में अल्लाह में तअल्लुक़ रखने वाली हमारी जानकारी की सारी मजिलें तय हो गईं.

"मालिके योमिदीन" (यानी इन्साफ़ वाले दिन का मालिक) में यह बता दिया गया कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है क्योंकि सब उसकी मिल्क में है और जो ममलूक़ यानी मिल्क में होता है उसे पूजा नहीं जा सकता. इसी से मालूम हुआ कि दुनिया कर्म की धरती है और इसके लिये एक आग़िर यानी अन्त है. दुनिया के ख़तम होने के बाद एक दिन जज़ा यानी बदले या हिसाब का है. इससे पुनर्जन्म का सिद्धान्त या नज़रिया ग़लत साबित हो गया.

"इय्याका नअबुदु" (यानी हम तुझी को पूजें) अल्लाह की ज़ात और उसकी खूबियों के बयान के बाद यह फ़रमाना इशारा करता है कि आदमी का अक़ीदा उसके कर्म में ऊपर है और इबादत या पूजा पाठ का कुबूल किया जाना अक़ीदे की अच्छाई पर है. इस आयत में मूर्ति पूजा यानी शिर्क का भी रद्द है कि अल्लाह तआला के सिवा इबादत किसी के लिये नहीं हो सकती.

"व इय्याका नस्तईन" (यानी और तुझी में मदद चाहें) में यह सिखाया गया कि मदद चाहना, चाहे किसी माध्यम या वास्ते से हो, या फिर सीधे सीधे या डायरेक्ट, हर तरह अल्लाह तआला के साथ ख़ास है. सच्चा मदद करने वाला वही है, बाक़ी मदद के जो ज़रिये या माध्यम हैं वो सब अल्लाह ही की मदद के प्रतीक़ या निशान हैं. बन्दे को चाहिये कि अपने पैदा करने वाले पर नज़र रखे और हर चीज़ में उसी के दस्ते कुदरत को काम करता हुआ माने. इससे यह समझना कि अल्लाह के नबियों और बलियों में मदद चाहना शिर्क़ है, ऐसा समझना ग़लत है क्योंकि जो लोग अल्लाह के करीबी और ख़ास बन्दे हैं उनकी इमदाद दर अस्त अल्लाह ही की मदद है. अगर इस आयत के वो मानी होते जो वहबियों ने समझे तो क़ुरआन शरीफ़ में "अईनूनी बि कुव्वतिन" और "इस्तईनु विस सबे वसल्लाह" क्यों आता, और हदीसों में अल्लाह वालों से मदद चाहने की तालीम क्यों दी जाती.

"इहदिनस सिरातल मुस्तकीम" (यानी हम को सीधा रास्ता चला) इसमें अल्लाह तआला को ज़ात और उसकी खूबियों की पहचान के बाद उसकी इबादत, उसके बाद दुआ की तालीम दी गई है. इससे यह मालूम हुआ कि बन्दे को इबादत के बाद दुआ

सूरतुल बकरह

यह कुरआन शरीफ की दूसरी सूरत है. मदीने में उतरी,
आयतें: २८६, रुकू ४०.

पहला रुकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१)
अलिफ लाम मीम^(२) (१) वह बुलन्द रूत्बा किताब (कुरआन)
कोई शक की जगह नहीं^(३) (२) इसमें हिदायत है डर वालों
को^(४) वो जो बेदेखे ईमान लाएं^(५) और नमाज़ कायम रखें^(६)
और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं^(७) (३)
और वो कि ईमान लाएं उस पर जो ऐ मेहबूब तुम्हारी तरफ
उतरा और जो तुम से पहले उतरा^(८) और आखिरत पर
यकीन रखें^(९) (४)



में लगा रहना चाहिये. हदीस शरीफ में भी नमाज़ के बाद दुआ की तालीम दी गई है. (तिबरानी और बेहिक्की) सिराते मुस्तकीम का मतलब इस्लाम या कुरआन या नबीयें करीम (अल्लाह के दुरुद और सलाम उनपर) का रहन सहन या हुज़ूर या हुज़ूर के घर वाले और साथी हैं. इससे साबित होता है कि सिराते मुस्तकीम यानी सीधा रास्ता पहले सुन्नत का तरीका है जो नबीयें करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के घराने वालों, उनके साथी और सुन्नत व कुरआन और मुस्लिम जगत सब को मानते हैं.

“सिरातुल लज़ीना अनअम्ता अलैहिम” (यानी रास्ता उनका जिनपर तुने एहसान किया) यह पहले वाले वाक्य या जुमले की तफ़सीर यानी विवरण है कि सिराते मुस्तकीम से मुसलमानों का तरीका मुराद है. इससे बहुत सी बातों का हल निकलता है कि जिन बातों पर बुजुर्गों ने अमल किया वही सीधा रास्ता की तारीफ में आता है.

“मैरिल ममादूब अलैहिम बलद दौल्लीन” (यानी न उनका जिनपर मज़ब हुआ और न बहके हुआ का) इसमें हिदायत दी गई है कि सच्चाई की तलाश करने वालों को अल्लाह के दुश्मनों से दूर रहना चाहिये और उनके रास्ते, रस्मों और रहन सहन के तरीके से परहेज़ रखना ज़रूरी है. हदीस की किताब तिरमिज़ी में आया है कि “ममादूब अलैहिम” यहूदियों और “दौल्लीन” ईसाइयों के लिये आया है.

सूरए फ़ातिहा के अन्त पर “आमीन” कहना सुन्नत यानी नबी का तरीका है. “आमीन” के मानी हैं “ऐसा ही कर” या “कुबूल फ़रमा”. ये कुरआन का शब्द नहीं है. सूरए फ़ातिहा नमाज़ में पढ़ी जाए या नमाज़ के अलावा, इसके आखिर में आमीन कहना सुन्नत है.

हज़रत इमामे अअज़म का मज़हब यह है कि नमाज़ में आमीन आहिस्ता या धीमी आवाज़ में कही जाए.

सूरए बकरह - पहला रुकू

(१) सूरए बकरह : यह सूरत मदीना में उतरी. हज़रत इब्ने अब्बास (अल्लाह तआला उनसे राजी रहे) ने फ़रमाया मदीनाए तैयिबह में सबसे पहले यही सूरत उतरी, सिवाय आयत “बन्तकू थीमन तुर जज़न” के कि नबीयें करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आखिरी हज़ में मक्कए मुकर्रमा में उतरी. (ख़ाज़िन) इस सूरत में दो सौ छियासी आयतें, चालीस रुकू, छ हज़ार एक सौ इक्कीस कलिमे (शब्द) पच्चीस हज़ार पांच सौ अक्षर यानी हरूफ हैं. (ख़ाज़िन)

पहले कुरआन शरीफ में सूरतों के नाम नहीं लिखे जाते थे. यह तरीका हन्नाज़ बिन यूसुफ़े सक्फ़ी ने निकाला. इब्ने अरबी का कहना है कि सूरए बकरह में एक हज़ार अक्षर यानी आदेश, एक हज़ार नही यानी प्रतिबन्ध, एक हज़ार हुक्म और एक हज़ार इअरें हैं. इसे अपनाने में बरकत और छोड़ देने में मेहरूमी है. बुराई वाले जादूगर इसकी तासीर बर्दाश्त करने की ताकत नहीं रखते. जिस

घर में ये सूत पड़ी जाए, तीन दिन तक सरकश शैतान उस में दाखिल नहीं हो सकता. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि शैतान उस घर से भागता है जिस में यह सूत पड़ी जाए. बेहिकी और सईद दिन मनसूर ने हज़रत मुगीरा से रिवायत की कि जो कोई सोते वक़्त सूरए बक्रह की दस आयतें पढ़ेगा, वह क़ुरआन शरीफ़ को नहीं भूलेगा. वो आयतें ये हैं : चार आयतें शुरु की और आयतल क़ुरसी और दो इसके बाद की और तीन सूत के आख़िर की.

तिबरानी और बेहिकी ने हज़रत इब्ने उमर (अल्लाह उन से राज़ी रहे) से रिवायत की कि हुज़ूर (अल्लाह के दूरूद और सलाम हों उनपर) ने फ़रमाया- मैं यत को दफ़न करके क़ब्र के सिरहाने सूरए बक्रह की शुरु को आयतें और पांच की तरफ़ आख़िर की आयतें पढ़ी.

शाने नुज़ूल यानी किन हालात में उतरी :- अल्लाह तआला ने अपने हबीब (अल्लाह के दूरूद और सलाम हों उनपर) से एक ऐसी किताब उतारने का वादा फ़रमाया था जो न पानी से थोकर मिटाई जा सके, न पुरानी हो. जब क़ुरआन शरीफ़ उतरा तो फ़रमाया “ज़ालिकल किताबु” कि वह किताब जिसका वादा था, यही है. एक कहना यह है कि अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल में एक किताब उतारने का वादा फ़रमाया था, जब हुज़ूर ने मदीनए तैयिबह को हिज़रत फ़रमाई जहाँ यहूदी बड़ी तादाद में थे तो “अलिफ़, लाम, मीम, ज़ालिकल किताबु” उतार कर उस वादे के पूरे होने की ख़बर दी. (ख़ाज़िन)

(२) अलिफ़ लाम मीम :- सूरातों के शुरु में जो अलग से हुरूफ़ या अक्षर आते हैं उनके बारे में यही मानना है कि अल्लाह के राज़ों में से हैं और मुतशाबिहात यानी रहस्यमय भी. उनका मतलब अल्लाह और रसूल जानें. हम उसके सच्चे होने पर ईमान लाते हैं.

(३) इस लिये कि शक़ उसमें होता है जिसका सूबूत या दलील या प्रमाण न हो. क़ुरआन शरीफ़ ऐसे खुले और ताक़त वाले सूबूत या प्रमाण रखता है जो जानकार और इन्साफ़ वाले आदमी को इसके किताबे इलाही और सच होने के यक़ीन पर मज़बूत करते हैं. तो यह किताब किसी तरह शक़ के काबिल नहीं, जिस तरह अंधे के इन्कार से सूरज का वुजूद या अस्तित्व संदिग्ध या शुबह वाला नहीं होता, ऐसे ही दुश्मनी रखने वाले काले दिल के इन्कार से यह किताब शुबह वाली नहीं हो सकती.

(४) “हुदल लिल मुत्कीन” (यानी इसमें हिदायत है डर वालों को) हालांकि क़ुरआन शरीफ़ की हिदायत या मार्गदर्शन हर पढ़ने वाले के लिये आम है, चाहे वह मूमीन यानी ईमान वाला हो या काफ़िर, जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया “हुदल लिल नासे” यानी “हिदायत सारे इन्सानों के लिये” लेकिन चूंकि इसका फ़ायदा अल्लाह से डरने वालों या पहले तक्रवा को होता है इसीलिये फ़रमाया गया - हिदायत डर वालों को. जैसे कहते हैं वारिश हरियाली के लिये है यानी फ़ायदा इससे हरियाली का ही होता है हालांकि यह बरसती ऊसर और बंजर ज़मीन पर भी है.

‘तक्रवा’ के कई मानी आते हैं. नफ़स या अन्तःकरण को डर वाली चीज़ से बचाना तक्रवा कहलाता है. शरीअत की भाषा में तक्रवा कहते हैं अपने आपको गुनाहों और उन चीज़ों से बचाना जिन्हें अपनाने से अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया है. हज़रत इब्ने अब्बास (अल्लाह उन से राज़ी रहे) ने फ़रमाया मुत्की या अल्लाह में डरने वाला वह है जो अल्लाह के अलावा किसी की इबादत और बड़े गुनाहों और बुरी बातों से बचा रहे. दूसरों ने कहा है कि मुत्की वह है जो अपने आप को दूसरों से बेहतर न समझे. कुछ कहते हैं तक्रवा ह़राम या वर्जित चीज़ों का छोड़ना और अल्लाह के आदेशों या एहकामात का अदा करना है. औरों के अनुसार आदेशों के पालन पर डटे रहना और ताअत पर ग़ुर्र से बचना तक्रवा है. कुछ का कहना है कि तक्रवा यह है कि तेरा रब तुझे वहाँ न पाए जहाँ उसने मना फ़रमाया है. एक कथन यह भी है कि तक्रवा हुज़ूर (अल्लाह के दूरूद और सलाम हों उनपर) और उनके साथी सहाबा (अल्लाह उन से राज़ी रहे) के रास्ते पर चलने का नाम है. (ख़ाज़िन) यह तमाम मानी एक दूसरे से जुड़े हैं.

तक्रवा के दर्जे बहुत हैं - आम आदमी का तक्रवा ईमान लाकर कुफ़्र से बचना, उनसे ऊपर के दर्जे के आदमियों का तक्रवा उन बातों पर अमल करना जिनका अल्लाह ने हुक्म दिया है और उन बातों में दूर रहना जिनसे अल्लाह ने मना किया है. ख़वास यानी विशेष दर्जे के आदमियों का तक्रवा ऐसी हर चीज़ को छोड़ना है जो अल्लाह तआला से दूर कर दे या उसे भुला दे. (जुमल) इमाम अहमद रज़ा खाँ, मुहद्दिसे बरेलवी (अल्लाह की रहमत हो उनपर) ने फ़रमाया- तक्रवा सात तरह का है (१) कुफ़्र से बचना, यह अल्लाह तआला की मेहरबानी से हर मुसलमान को हासिल है (२) बद-मज़हबी या अधर्म से बचना- यह हर मुन्नी को नसीब है. (३) हर बड़े गुनाह से बचना (४) छोटे गुनाह से भी दूर रहना (५) जिन बातों की अच्छाई में शक़ या संदेह हो उनसे बचना (६) शहवात यानी वासना से बचना (७) ग़ैर की तरफ़ खिंचने से अपने आप को रोकना. यह बहुत ही विशेष आदमियों का दर्जा है. क़ुरआन शरीफ़ इन सातों मरतबों या श्रेणियों के लिये हिदायत है.

(५) “अल लज़ीना यूमिनुना बिल ग़ैब” (यानी वो जो बे-देखे ईमान लाएं) से लेकर “मुफ़लिहून” (यानी वही मुराद को पहुंचने वाले) तक को आयतें सच्चे दिल से ईमान लाने और उस ईमान को संभाल कर रखने वालों के बारे में हैं. यानी उन लोगों के हक़ में जो अन्दर बाहर दोनों से ईमानदार हैं. इसके बाद दो आयतें खुले काफ़िरों के बारे में हैं जो अन्दर बाहर दोनों तरह से काफ़िर हैं. इसके बाद “ब मिनन नासे” (यानी और कुछ कहते हैं) से तरह आयतें मुनाफ़िकों के बारे में हैं जो अन्दर से काफ़िर हैं और बाहर से अपने आपको मुसलमान ज़ाहिर करते हैं. (जुमल) ग़ैब वह है जो हवास यानी इन्द्रियों और अक़ल से मालूम न हो सके. इस की दो क्रिमें हैं- एक वो जिसपर कोई दलील या प्रमाण न हो, यह इल्मे ग़ैब यानी अज्ञात की जानकारी ज़ाती या व्यक्तिगत है और यही मतलब निकलता है आयत “इन्दहू मफ़तिहुल ग़ैबे ला यालमुहा इल्ला हू” (और अल्लाह के पास ही अज्ञात को कुंजी है, और अज्ञात को जानकारी उसके अलावा किसी को नहीं) में और उन सारी आयतों में जिनमें अल्लाह के सिवा किसी को भी अज्ञात की जानकारी

न होने की बात कही गई है। इस क्रिम का इल्म गैब यानी ज्ञाती जिस पर कोई दलील या प्रमाण न हो, अल्लाह तआला के साथ विशेष या खास है।

गैब की दूसरी क्रिम वह है जिस पर दलील या प्रमाण हो जैसे दुनिया और इसके अन्दर जो चीजें हैं उनका देखते हुए अल्लाह पर ईमान लाना, जिसने ये सब चीजें बनाई हैं, इसी क्रिम के तहत आता है क़यामत या प्रलय के दिन का हाल, हिसाब वाले दिन अच्छे और बुरे कामों का बदला इत्यादि की जानकारी, जिस पर दलीलें या प्रमाण मौजूद हैं और जो जानकारी अल्लाह तआला के बताए से मिलती है। इस दूसरे क्रिम के गैब, जिसका तअल्लुक ईमान से है, की जानकारी और यकीन हर ईमान वाले को हासिल है, अगर न हो तो वह आदमी मूमीन ही न हो।

अल्लाह तआला अपने क़रीबी चहते बन्दों, नबियों और वलियों पर जो गैब के दरवाज़े खोलता है वह इसी क्रिम का गैब है। गैब की तफ़सीर या व्याख्या में एक कथन यह भी है कि गैब से क़त्ब यानी दिल मुराद है। उस सूरत में मानी ये होंगे कि वो दिल से ईमान लाएं। (जुमल)

ईमान :- जिन चीजों के बारे में हिदायत और यकीन से मालूम है कि ये दीने मुहम्मदी से हैं, उन सबको मानने और दिल से तस्दीक या पुष्टि करने और ज़वान से इक़रार करने का नाम सही ईमान है। कर्म या अमल ईमान में दाख़िल नहीं इसीलिये “यूमीनूना विल गैब” के बाद “युकीमूनस सलाता” (और नमाज़ क़ायम रखें) फ़रमाया गया।

(६) नमाज़ के क़ायम रखने से ये मुराद है कि इसपर सदा अमल करते हैं और ठीक वक्तों पर पूरी पाबन्दी के साथ सभी अरक़ान यानी संस्कारों के साथ नमाज़ की अदायगी करते हैं और फ़र्ज़, सुन्नत और मुस्तहब अरक़ान की हिफ़ाज़त करते हैं, किसी में कोई रूकावट नहीं आने देते। जो बातें नमाज़ को ख़राब करती हैं उन का पूरा पूरा ध्यान रखते हैं और जैसी नमाज़ पढ़ने का हुक्म हुआ है वैसी नमाज़ अदा करते हैं।

नमाज़ के संस्कार :- नमाज़ के हुक्क या संस्कार दो तरह के हैं एक ज़ाहिरी, ये वो हैं जो अभी अभी ऊपर बताए गए। दूसरे बातिनी, यानी आंतरिक, पूरी यक़सूई या एकाग्रता, दिल को हर तरफ़ से फेरकर सिर्फ़ अपने पैदा करने वाले की तरफ़ लगा देना और दिल की गहराइयों से अपने ख़ की तारीफ़ या स्तुति और उससे प्रार्थना करना।

(७) अल्लाह की राह में ख़र्च करने का मतलब या ज़कात है, जैसा दूसरी जगह फ़रमाया “युकीमूनस सलाता व यूतूनज़ ज़काता” (यानी नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं), या हर तरह का दान पुष्प मुराद है चाहे फ़र्ज़ हो या वाज़िब, जैसे ज़कात, भेंट, अपनी और अपने घर वालों की गुज़र बसर का प्रवस्थ। जो क़रीबी लोग इस दुनिया से जा चुके हैं उनकी आत्मा की शान्ति के लिये दान करना भी इसमें आ सकता है। बग़दाद वाले बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म की ग्यारहवीं की नियाज़, फ़ातिहा, तीजा, चालीसवाँ वग़ैरह भी इसमें दाख़िल हैं कि ये सब अतिरिक्त दान हैं। क़ुरआन शरीफ़ का पढ़ना और क़लिमा पढ़ना नेकी के साथ अतिरिक्त नेकी मिलाकर अन्न और सवाब बढ़ाता है।

क़ुरआन शरीफ़ में इस तरफ़ ज़रूर इशारा किया गया है कि अल्लाह की राह में ख़र्च करते वक्त, चाहे अपने लिये हो या अपने क़रीबी लोगों के लिये, उसमें बीच का रास्ता अपनाया जाए, यानी न बहुत कम, न बहुत ज्यादा।

‘रज़क़नाहुम’ (और हमारी दी हुई रोज़ी में से) में यह स्पष्ट कर दिया गया कि माल तुम्हारा पैदा किया हुआ नहीं, बल्कि हमारा दिया हुआ है। इसको अगर हमारे हुक्म से हमारी राह में ख़र्च न करो तो तुम बहुत ही कंज़ूस हो और ये कंज़ूसी बहुत ही बुरी है।

(८) इस आयत में किताब वालों से वो ईमान वाले मुराद हैं जो अपनी किताब और सारी पिछली किताबों और नबियों (अल्लाह के दुरुद और सलाम हो उनपर) पर भेजे गए अल्लाह के आदेशों पर भी ईमान लाए और क़ुरआन शरीफ़ पर भी। और “मा उज़िला इलैका” (जो तुम्हारी तरफ़ उतरा) से तमाम क़ुरआन शरीफ़ और सारी शरीअत मुराद है। (जुमल)

जिस तरह क़ुरआन शरीफ़ पर ईमान लाना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है उसी तरह पिछली आसमानी किताबों पर ईमान लाना भी अनिवार्य है जो अल्लाह तआला ने हुज़ूर (अल्लाह के दुरुद और सलाम हो उनपर) से पहले नबियों पर उतारीं। अलबत्ता उन किताबों के जो अहक़ाम या आदेश हमारी शरीअत में मन्बूअ या स्थगित कर दिये गए उन पर अमल करना दुरुस्त नहीं, मगर ईमान रखना ज़रूरी है। जैसे पिछली शरीअतों में बैतुल मक़दिस क़िबला था, इसपर ईमान लाना तो हमारे लिये ज़रूरी है मगर अमल यानी नमाज़ में बैतुल मक़दिस की तरफ़ मुंह करना जायज़ नहीं, यह हुक्म उठा लिया गया।

क़ुरआन शरीफ़ से पहले जो कुछ अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके नबियों पर उतरा उन सब पर सामूहिक रूप से ईमान लाना फ़र्ज़ ऐन है और क़ुरआन शरीफ़ में जो कुछ है उस पर ईमान लाना फ़र्ज़ किफ़ायी है, इसीलिये आम आदमी पर क़ुरआन शरीफ़ की तफ़सीलात की जानकारी फ़र्ज़ नहीं जबकि क़ुरआन शरीफ़ के जानकार मौजूद हों जिन्होंने क़ुरआन के ज्ञान को हासिल करने में पूरी मेहनत की हो।

(९) यानी दूसरी दुनिया और जो कुछ उसमें है, अच्छाइयों और बुराइयों का हिसाब वग़ैरह सब पर ऐसा यकीन और इत्मीनान रखते हैं कि ज़रा शक़ और शुबह नहीं। इसमें पहले किताब (ईसाई और यहूदी) और काफ़िरों वग़ैरह से बेज़ारी है जो आख़िरत यानी दूसरी दुनिया के बारे में ग़लत विचार रखते हैं।

वही लोग अपने रव की तरफ से हिदायत पर हैं और वही मुराद को पहुंचने वाले (५) बेशक वो जिन की किसमत में कुफ्र है (१०) उन्हें बराबर है चाहे तुम उन्हें डराओ या न डराओ वो ईमान लाने के नहीं (६) अल्लाह ने उनके दिलों पर और कानों पर मुहर कर दी और उनकी आँखों पर घटा टोप है (११) और उनके लिये बड़ा अज़ाब (७)

दूसरा रूकू

और कुछ लोग कहते हैं (१) कि हम अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाए और वो ईमान वाले नहीं (८) धोखा दिया चाहते हैं अल्लाह और ईमान वालों को (२) और हकीकत में धोखा नहीं देते मगर अपनी जानों को और उन्हें शऊर (या आभास) नहीं (९) उनके दिलों में बीमारी है (३) तो अल्लाह ने उनकी बीमारी और बढ़ाई और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है बदला उनके झूठ का (४) (१०) और जो उनसे कहा जाए ज़मीन में फ़साद न करो (५) तो कहते हैं हम तो संवारने वाले हैं (११) सुनता है ! वही फ़सादी हैं मगर उन्हें शऊर नहीं (१२) और जब उनसे कहा जाए ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं (६) तो कहें क्या हम मूर्खों की तरह ईमान लाए (७) सुनता है ! वही मूर्ख हैं मगर जानते नहीं

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْبَٰقِيُونَ
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ
خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاقٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ
وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ
يُخَذِّعُونَ اللَّهَ وَيُخَذِّعُونَ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَخَذِّعُونَ الْإِنفُسَ وَمَا يَشْعُرُونَ
فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ
مَّا كَانُوا يَكْذِبُونَ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ
أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِن لَّا يَشْعُرُونَ
وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ امْكُثُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِن لَّا

منزل

(१०) अल्लाह वालों के बाद, अल्लाह के दुश्मनों का बयान फ़रमाता हिदायत के लिये है कि इस मुक़ाबले से हर एक को अपने किरदार की हकीकत और उसके नतीजों या परिणाम पर नज़र हो जाए.

यह आयत अबू जहल, अबू लहब वगैरह काफ़िरों के बारे में उतरी जो अल्लाह के इल्म के तहत ईमान से मेहरूम हैं, इसी लिये उनके बारे में अल्लाह तआला की मुग़ालिफ़त या दुश्मनी से डराना या न डराना दोनों बराबर हैं, उन्हें फ़ायदा न होगा. मगर हुज़ूर की कोशिश बेकार नहीं क्योंकि रसूल का काम सिर्फ़ सच्चाई का रास्ता दिखाना और अच्छाई की तरफ़ बुलावा है. कितने लोग सच्चाई को अपनाते हैं और कितने नहीं, यह रसूल की ज़वाबदारी नहीं है. अगर कौम हिदायत कुचूल न करे तब भी हिदायत देने वाले का हिदायत का पुष्प या सबाब मिलेगा ही.

इस आयत में हुज़ूर (अल्लाह के दुरुद और सलाम हो उनपर) की तसल्ली की बात है कि काफ़िरों के ईमान न लाने से आप दुखी न हों, आप की तबलीग़ या प्रचार की कोशिश पूरी है, इसका अच्छा बदला मिलेगा. मेहरूम तो ये बदनसीब है जिन्होंने आपकी बात न मानी.

कुफ़्र के मानी : अल्लाह तआला की ज़ात या उसके एक होने या किसी के नवी होने या दीन की ज़रूरतों में से किसी एक का इन्कार करना या कोई ऐसा काम जो शरीअत से मुंह फेरने का सुबूत हो, कुफ़्र है.

(११) इस सारे भज़मून का सार यह है कि काफ़िर गुमराही में ऐसे डूबे हुए हैं कि सच्चाई के देखने, सुनने, समझने से इस तरह मेहरूम हो गए जैसे किसी के दिल और कानों पर मुहर लगी हो और आँखों पर पर्दा पड़ा हुआ हो.

इस आयत से मालूम हुआ कि बन्दों के कर्म भी अल्लाह की कुदरत के तहत हैं.

सूरए बकरह - दूसरा रूकू

(१) इस से मालूम हुआ कि हिदायत की राहें उनके लिए पहले ही बन्द न थीं कि बहाने की गुंजायश होती. बल्कि उनके कुफ़्र, दुश्मनी और सरकशी व बेदीनी, सत्य के विरोध और नबियों से दुश्मनी का यह अंजाम (परिणाम) है जैसे कोई आदमी डॉक्टर का विरोध करे और उसके लिये दवा से फ़ायदे की सूत न रहे तो वह खुद ही अपनी दुर्दशा का ज़िम्मेदार ठहरेगा.

(२) यहाँ से तेरह आयतें मुनाफ़िक्कां (दोमली प्रवृत्ति वालों) के लिये उतरीं जो अन्दर से काफ़िर थे और अपने आप को मुसलमान ज़ाहिर करते थे. अल्लाह तआला ने फ़रमाया "माहुम बिमूमीनीन" वो ईमान वाले नहीं यानी कलिमा पढ़ना, इस्लाम का दावा करना, नमाज़ रोज़े अदा करना मूमिन होने के लिये काफ़ी नहीं, जब तक दिलों में तरदीक न हो. इससे मालूम हुआ कि जितने फिरके (समुदाय) ईमान का दावा करते हैं और कुफ़्र का अक्कीदा रखते हैं सब का यही हुक्म है कि काफ़िर इस्लाम से बाहर हैं. शरीअत

الْقُرْآن

الن

(१३) और जब ईमान वालों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले हों^(१) तो कहें हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो यूँ ही हंसी करते हैं^(१०) (१४) अल्लाह उनसे इस्तहज़ा फ़रमाता है (अपनी शान के मुताबिक) (१५) और उन्हें ढील देता है कि अपनी सरकशी में भटकते रहें, ये वो लोग हैं जिन्होंने ने हिदायत के बदले गुमराही खरीदी, (१६) तो उनका सौदा कुछ नफ़ा न लाया और वो सौदे की राह जानते ही न थे^(११) (१६) उनकी कहावत उसकी तरह है जिसने आग रौशन की तो जब उससे आसपास सब जगमगा उठा, अल्लाह उनका नूर ले गया और उन्हें अंधेरियों में छोड़ दिया कि कुछ नहीं सूझता^(१२) (१७) वहरे, गूंगे, अन्धे, तो वो फिर आने वाले नहीं^(१३) या जैसे आसमान से उतरता पानी कि उसमें अंधेरियां हैं और गरज और चमक^(१४) अपने कानों में उंगलियां ठूस रहे हैं, कड़क के कारण मौत के डर से^(१५) और अल्लाह काफ़िरी को घेरे हुए है^(१६) (१९) विजली यूँ मालूम होती है कि उनकी निगाहें उचक ले जाएगी^(१७) जब कुछ चमक हुई उस में चलने लगे^(१८) और जब अंधेरा हुआ, खड़े रह गए और अल्लाह चाहता तो उनके कान और

لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنُوا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شُيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزَؤُونَ ۝ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اسْتَرَوُا الصَّلَاةَ بِالْهُلَّةِ ۖ فَمَا رَجَبَتْ تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۖ فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمٍ ۖ لَا يَبْصُرُونَ ۝ صُمُّ بَكْرٍ عَمَىٰ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝ أَوْ كَصَيْبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمٌ ۖ وَرَعْدٌ ۖ وَبَرْقٌ ۖ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حُدُودَ السَّوْتِ ۖ وَاللَّهُ مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ۝ يَكَادُ الْبَرِيُّ إِخْطَفُ آبْنَاءَهُمْ ۖ كَلِمًا أَضَاءَ لَهُمْ مَّشَافِيهِ ۖ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ

مَنْ

में ऐसों को मुनाफ़िक कहते हैं, उनका नुकसान खुले काफ़िरी से ज़्यादा है, *मिनन नास* (कुछ लोग) फ़रमाने में यह इशारा है कि यह ग़िरोह बेहतर गुणों और इत्तानी क़माल से ऐसा ख़ाली है कि इसका ज़िक्र किसी बसक (प्रशंसा) और ख़ूबी के साथ नहीं किया जाता, यूँ कहा जाता है कि वो भी आदमी है, इस से मालूम हुआ कि किसी को बशर कहने में उसके फ़ज़ाइल और क़मालात (विशेष गुणों) के इन्कार का पहलू निकलता है, इसलिये क़ुरआन में जगह जगह नबियों को बशर कहने वालों को काफ़िर कहा गया और वास्तव में नबियों की शान में ऐसा शब्द अदब से दूर और काफ़िरी का तरीका है, कुछ तफ़सीर करने वालों ने फ़रमाया कि *मिनन नास* (कुछ लोगों) में सुनने वालों को आश्चर्य दिलाने के लिये फ़रमाया गया कि ऐसे धोखेबाज़, मक्कार और ऐसे महामूर्ख भी आदमियों में हैं, (३) अल्लाह तआला इससे पाक है कि उसको कोई धोखा दे सके, वह छुपे रहस्यों का जानने वाला है, मतलब यह है कि मुनाफ़िक अपने गुमान में ख़ुदा को धोखा देना चाहते हैं या यह कि ख़ुदा को धोखा देना यही है कि रसूल अलैहिस्सलाम को धोखा देना चाहें क्योंकि वह उसके ख़लीफ़ा हैं, और अल्लाह तआला ने अपने हबीब को रहस्यों (छुपी बातों) का इल्म दिया है, वह उन दोगलों यानी मुनाफ़िकों के छुपे कुफ़्र के जानकार है और मुसलमान उनके बताए से बाज़्रबर, तो उन अधर्मियों का धोखा न ख़ुदा पर चले न रसूल पर, न ईमान वालों पर, बल्कि हकीकत में वो अपनी जानों को धोखा दे रहे हैं, इस आयत से मालूम हुआ कि तक्क़िया (दिलों में कुछ और ज़ाहिर कुछ) बड़ा ऐब है, जिस धर्म की बुनियाद तक्क़िया पर हो, वो झूठा है, तक्क़िया वाले का हाल भरोसे के क़ाबिल नहीं होता, तौबह इन्मीनान के क़ाबिल नहीं होती, इस लिये पढ़े लिखों ने फ़रमाया है 'ला तुकबलो तौबतुज जिन्दीक़' यानी अधर्मी की तौबह कुबूल किये जाने के क़ाबिल नहीं, (४) बुरे अक्कीदे को दिल की बीमारी बताया गया है, इससे मालूम हुआ कि बुरा अक्कीदा रुहानी जिन्दीगी के लिये हानिकारक है, इस आयत में साबित हुआ कि झूठ हराम है, उसपर भारी अज़ाब दिया जाता है, (५) काफ़िरी से मेल जोल, उनकी ख़ातिर दीन में क़तर ब्यौत और असत्य पर चलने वालों की खुशामद और चापलूसी और उनकी खुशी के लिये सुलह कुल्ती (यानी सब चलता है) बन जाना और सच्चाई से दूर रहना, मुनाफ़िक की पहचान और हराम है, इसी को मुनाफ़िकों का फ़साद फ़रमाया है कि जिस जल्से में गए, वैसे ही हो गए, इस्लाम में इससे मना फ़रमाया गया है, ज़ाहिर और बातिन (बाहर और अन्दर) का एकसा न होना बहुत बड़ी बुराई है, (६) यहाँ "अन्नासो" से या सहाब किराम मुराद है या ईमान वाले, क्योंकि ख़ुदा के पहचानने, उसकी फ़रमाँबरदारी और आगे की चिन्ता रखने की बदीलत वही इन्सान कहलाने के हक़दार है, "आमिनु कमा आमना" (ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए) में साबित हुआ कि अच्छे लोगों का इतिदाअ (अनुकरण) अच्छा और पसन्दीदा है, यह भी साबित हुआ कि एहले सुन्नत का मज़हब सच्चा है क्योंकि इसमें अच्छे नेक लोगों का अनुकरण है, बाक़ी सारे समुदाय अच्छे लोगों से मुँह फेरे हैं इसलिये गुमराह हैं, कुछ विद्वानों ने इस आयत को जिन्दीक़ (अधर्मी) की तौबह कुबूल होने की दलील क़रार दिया है, (दीज़ारी), जिन्दीक़ वह है जो नबुव्वत को माने,

इस्लामी उसूलों को ज़ाहिर करे मगर दिल ही दिल में ऐसे अक्कीदे रखे जो आम राय में कुफ़्र हों, यह भी मुनाफ़िक्कों में दाख़िल है। (७) इससे मालूम हुआ कि अच्छे नेक आदमियों को बुरा कहना अधर्मियों और असत्य को मानने वालों का पुराना तरीका है आजकल के बातिल फ़िक्क भी पिछले बुजुर्गों को बुरा कहते हैं। राफ़ज़ी समुदाय वाले ख़ुलफ़ाए राशिदीन और बहुत से सहाबा की, ख़ारिजी समुदाय वाले हज़रत अली और उनके साथियों को, ग़ैर मुक़ल्लिद अहममए मुज्ताहिदीन (चार इमामों) विशेषकर इमामे अअज़म अबू हनीफ़ा को, वहाबी समुदाय के लोग अक्सर औलिया और अल्लाह के प्यारों को, मिज़ाई समुदाय के लोग पहले नबियों तक को, चक़ड़ालवी समुदाय के लोग सहाबा और मुहद्दिसीन को, नेचरी तमाम बुजुर्गाने दीन को बुरा कहते हैं और उनकी शान में गुस्ताख़ी करते हैं। इस आयत से मालूम हुआ कि ये सब सच्ची सीधी राह से हटे हुए हैं। इसमें दीनदार आलिमों के लिये तसल्ली है कि वो गुमराहों की बद-ज़बानियों से बहुत दुखी न हों, समझ लें कि ये अधर्मियों का पुराना तरीका है। (मदारिक)

(८) मुनाफ़िक्कों की ये बद-ज़बानी मुसलमानों के सामने न थी। उनसे तो वो यही कहते थे कि हम सच्चे दिल से ईमान लाए हैं जैसा कि अगली आयत में है “इज़ा लकुल्लज़ीना आमनू कालू आमना” (और जब ईमान वालों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए)। ये तबर्बाज़ियाँ (बुरा भला कहना) अपनी ख़ास मज्जिसों में करते थे। अल्लाह तआला ने उनका पर्दा खोल दिया। (ख़ाज़िन) उसी तरह आज कल के गुमराह फ़िक्क (समुदाय) मुसलमानों से अपने झूठे ख़यालों को छुपाते हैं मगर अल्लाह तआला उनकी किताबों और उनकी लिखाइयों से उनके राज़ खोल देता है। इस आयत से मुसलमानों की ख़बरदार किया जाता है कि अधर्मियों की धोखे बाज़ियों से होशियार रहें, उनके जाल में न आएं।

(९) यहाँ शैतानों से काफ़िर् के वो सरदार मुराद हैं जो अगवा (बहकावे) में मसल्फ़ रहते हैं। (ख़ाज़िन और बेज़ावी) ये मुनाफ़िक्क जब उनसे मिलते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं और मुसलमानों से मिलना सिर्फ़ धोखा और मज़ाक़ उड़ाने की गरज़ से इसलिये है कि उनके राज़ मालूम हों और उनमें फ़साद फैलाने के अवसर मिलें। (ख़ाज़िन)

(१०) यानी ईमान का ज़ाहिर करना यानी मज़ाक़ उड़ाने के लिये किया, यह इस्लाम का इन्कार हुआ। नबियों और दीन के साथ मज़ाक़ करना और उनकी ख़िल्ली उड़ाना कुफ़्र है। यह आयत अब्दुल्लाह बिन उबई इत्यादि मुनाफ़िक्कों के बारे में उतरी। एक रोज़ उन्होंने सहाबए किराम की एक जमाअत की आंते देखा तो इन्हे उबई ने अपने बारों से कहा- देखो तो मैं इन्हें कैसा बनाता हूँ। जब वो हज़रात करीब पहुंचे तो इन्हे उबई ने पहले हज़रते सिदीके अक़बर का हाथ अपने हाथ में लेकर आपकी तअरीफ़ की फिर इसी तरह हज़रत उमर और हज़रत अली की तअरीफ़ की। हज़रत अली मुर्तज़ा ने फ़रमाया- ये इन्हे उबई, ख़ुदा से डर, दोगलेपन से दूर रह, क्योंकि मुनाफ़िक्क लोग बदतरीन लोग हैं। इसपर वह कहने लगा कि ये बातें दोगलेपन से नहीं की गईं। ख़ुदा की क़सम, हम आपकी तरह सच्चे ईमान वाले हैं। जब ये हज़रात तशरीफ़ ले गए तो आप अपने बारों में अपनी चालबाज़ी पर फ़ख़्र करने लगा। इसपर यह आयत उतरी कि मुनाफ़िक्क लोग ईमान वालों से मिलते बख़्त ईमान और महबूत ज़ाहिर करते हैं और उनसे अलग होकर अपनी ख़ास बैठकों में उनकी हंसी उड़ाते और खिल्ली करते हैं। इससे मालूम हुआ कि सहाबए किराम और दीन के पेशवाओं की खिल्ली उड़ाना कुफ़्र है।

(११) अल्लाह तआला इस्तहज़ा (हंसी करने और खिल्ली उड़ाने) और तमाम ऐबों और बुराइयों से पाक है। यहाँ हंसी करने के जवाब को इस्तहज़ा फ़रमाया गया ताकि ख़ूब दिल में बैठ जाए कि यह सज़ा उस न करने वाले काम की है। ऐसे मौक़े पर हंसी करने के जवाब को असल क्रिया की तरह बयान करना फ़साहत का क़ानून है। जैसे बुराई का बदला बुराई। यानी जो बुराई करेगा उसे उसका बदला उसी बुराई की सूरत में मिलेगा।

(१२) हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदना यानी ईमान की जगह कुफ़्र अपनाता बहुत नुक़सान और घाटे की बात है। यह आयत या उन लोगों के बारे में उतरी जो ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए, या यहूदियों के बारे में जो पहले से तो हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लतम पर ईमान रखते थे मगर जब हुज़ूर तशरीफ़ लें आए तो इन्कार कर बैठे, या तमाम काफ़िर् के बारे में कि अल्लाह तआला ने उन्हें समझने वाली अक्ल दी, सच्चाई के प्रमाण ज़ाहिर फ़रमाए, हिदायत की राहें खोलीं, मगर उन्होंने अक्ल और इन्साफ़ से काम न लिया और गुमराही इम्तिज़ार की। इस आयत से साबित हुआ कि ख़रीदो फ़रोख़्त (क्रय-विक्रय) के शब्द कहे बिना सिर्फ़ रज़ामन्दी से एक चीज़ के बदले दूसरी चीज़ लेना जायज़ है।

(१३) क्योंकि अगर तिज़ारत का तरीका जानते तो मूल-पूँजी (हिदायत) न खो बैठते।

(१४) यह उनकी मिसाल है जिन्हें अल्लाह तआला ने कुछ हिदायत दी या उसपर झुंझरत बरसूरी, फिर उन्होंने उसको ज़ाया कर दिया और हमंशा बाकी रहने वाली दौलत की हासिल न किया। उनका अंजाम हसरत, अफ़सोस, हैरत और ख़ौफ़ है। इसमें वो मुनाफ़िक्क भी दाख़िल हैं जिन्होंने ईमान की गुमाइश की और दिल में कुफ़्र रखकर इक़्रार की रौशनी को ज़ाया कर दिया, और वो भी जो ईमान लाने के बाद दीन से निकल गए, और वो भी जिन्हें समझ दी गई और दलीलों की रौशनी ने सच्चाई को साफ़ कर दिया मगर उन्होंने उससे फ़ायदा न उठाया और गुमराही अपनाई और जब हक़ सुनने, मानने, कहने और सच्चाई की राह देखने से मेहरूम हुए तो कान, ज़बान, आँख, सब बेकार हैं।

(१५) हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदने वालों की यह दूसरी मिसाल है कि जैसे बारिश ज़मीन को ज़िन्दगी का कारण होती है और उसके साथ ख़ौफ़नाक अंधेरियाँ और ज़ोरदार गरज और चमक होती है, उसी तरह क़ुरआन और इस्लाम दिलों की ज़िन्दगी का सबब हैं और कुफ़्र, शिर्क, निफ़ाक़ (दोगलेपन) का बयान तारीकी (अंधेरे) से मिलता जुलता है। जैसे अंधेरा राहगीर को मंज़िल तक पहुंचने से रोकता है, ऐसे ही कुफ़्र और निफ़ाक़ राह पाने से रोकते हैं, और सज़ाओं का ज़िक़ गरज से और हुज़्मतों का वर्णन चमक

आँखें ले जाता^(२०), वेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है^(२१) (२०)

तीसरा रूकू

ऐ लोगो^(१) अपने रब को पूजो जिसने तुम्हें और तुम से अगलों को पैदा किया ये उम्मीद करते हुए कि तुम्हें परहेज़गारी मिले^(२) (२१) और जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को विछौना और आसमान को इमारत बनाया और आसमान से पानी उतारा^(३) तो उस से कुछ फल निकाले तुम्हारे खाने को तो अल्लाह के लिये जान बूझकर बराबर वाले न ठहराओ^(४) (२२) और अगर तुम्हें कुछ शक हो उसमें जो हमने अपने (उन खास) बन्दे^(५) पर उतारा तो उस जैसी एक सूरत तो ले आओ^(६) और अल्लाह के सिवा अपने सब हिमायतियों को बुला लो अगर तुम सच्चे हो, (२३) फिर अगर न ला सको और हम फ़रमाए देते हैं कि हरगिज़ न ला सकोगे तो डरो उस आग से जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं^(७) तैयार रखी है काफ़िरों के लिये^(८) (२४) और खुशखबरी दे उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उनके लिये बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहें^(९) जब उन्हें उन बाग़ों से कोई फल खाने को दिया जाएगा (सूरत देखकर) कहेंगे यह तो वही रिज़क़ (जीविका) है जो हमें पहले मिला था^(१०) और वह (सूरत में) मिलता जुलता उन्हें दिया गया और उनके लिये

وَأَبْصَارِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۝ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۝ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا ۝ أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ ۝ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ ۝ مِمَّنْ دُونِ اللَّهِ ۝ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا ۝ فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۝ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۝ وَلَيَبْئُرَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۝ كُلَّمَا نَزَّلْنَا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا ۝ قَالُوا ۝ هَٰذَا الَّذِي رَزَقْنَا مِنْ قَبْلُ ۝ وَأَنْزَلْنَاهُ مِنْ ثَمَرَاتِهَا ۝ وَلَهُمْ

مَنْزِلٌ

से मिलते जुलते हैं।

मुनाफ़िकों में से दो आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास से मुश्रिकों की तरफ़ भागे, राह में यही बारिश आई जिसका आयत में ज़िक्र है। इसमें जोरदार गरज, कड़क और चमक थी। जब गरज होती तो कानों में उंगलियाँ दूंस लेते कि यह कानों का फाड़ कर मार न डाले, जब चमक होती चलने लगते, जब अंधेरी होती, अंधे रह जाते। आपस में कहने लगे- खुदा ख़ैर से सुबह करे तो हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपने हाथ हुज़ूर के मुबारक हाथों में दे दें। फिर उन्होंने ऐसा ही किया और इस्लाम पर साबित क़दम (डटे) रहे। उनके हाल को अल्लाह तआला ने मुनाफ़िकों के लिये कहावत बनाया जो हुज़ूर की पाक मज्जिनस में हाज़िर होते तो कानों में उंगलियाँ दूंस लेते कि कहीं हुज़ूर का कलाम उनपर असर न कर जाए जिससे मर ही जाएं और जब उनके माल व औलाद ज़्यादा होते और फ़तह और ग़नीमत का माल मिलता तो बिजली की चमक वालों की तरह चलने और कहते कि अब तो मुहम्मद का दीन ही सच्चा है। और जब माल और औलाद का नुक़सान होता और कोई बला आती तो बारिश की अंधेरियों में टिठक रहने वालों की तरह कहते कि यह मुसीबतें इसी दीन की वजह से हैं और इस्लाम से पलट जाते।

(१६) जैसे अंधेरी रात में काली घटा और बिजली की गरज-चमक जंगल में मुसाफ़िरों की हैरान करती हो और वह कड़क की भयानक आवाज़ से मौत के डर के मारे कानों में उंगलियाँ दूंसते हों। ऐसे ही काफ़िर कुरआन पाक के सुनने से कान बन्द करते हैं और उन्हें यह अन्देशा (डर) होता है कि कहीं इसकी दिल में घर कर जाने वाली बातें इस्लाम और ईमान की तरफ़ खींच कर बाप दादा का कुफ़्र वाला दीन न छुड़वा दें जो उनके नज़्दीक मौत के बराबर है।

(१७) इसलिये ये बचना उन्हें कुछ फ़ायदा नहीं दे सकता क्योंकि वो कानों में उंगलियाँ दूंस कर अल्लाह के प्रकोप से छुटकारा नहीं पा सकते।

(१८) जैसे बिजली की चमक, मालूम होता है कि दृष्टि को नष्ट कर देगी, ऐसे ही खुली साफ़ दर्तीलों की रौशनी उनकी आँखों और देखने की कुव्वत को चाँधिया देती है।

(१९) जिस तरह अंधेरी रात और बादल और बारिश की तारीकियों में मुसाफ़िर आश्चर्यचकित होता है, जब बिजली चमकती है तो कुछ चल लेता है, जब अंधेरा होता है तो खड़ा रह जाता है, उसी तरह इस्लाम के ग़लबे और मौजिज़ात की रौशनी और आराम के वक़्त मुनाफ़िक़ इस्लाम की तरफ़ राग़िब होते (खिंचते) हैं और जब कोई मंशक़त पेश आती है तो कुफ़्र की तारीकी में खड़े रह जाते हैं और इस्लाम से हटने लगते हैं। इसी मज़मून (विषय) को दूसरी आयत में इस तरह इरशाद फ़रमाया “इज़ा दुरु इलल्लाहे व रसूलिही लियहकुमा बैनुहम इज़ा फ़रीकुम मिह्म मुअरिदून।” (सूरए नूर, आयत ४८) यानी जब बुलाए जाएं अल्लाह व रसूल की तरफ़ कि रसूल उनमें फैसला फ़रमाए तो ज़मी उनका एक पक्ष मुंह फेर जाता है। (ख़ाज़िन वहीरह)

(२०) यानी यद्यपि मुनाफ़िकों की हरकतें इसी की हक़दार थीं, मगर अल्लाह तआला ने उनके सुनने और देखने की ताक़त को नष्ट न किया. इससे मालूम हुआ कि असबाब की तासीर अल्लाह की मर्ज़ी के साथ जुड़ी हुई है कि अल्लाह की मर्ज़ी के बिना किसी चीज़ का कुछ असर नहीं हो सकता. यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह की मर्ज़ी असबाब की मोहताज नहीं, अल्लाह को कुछ करने के लिये किसी वजह की ज़रूरत नहीं.

(२१) 'शै' उसीको कहते हैं जिसे अल्लाह चाहे और जो उसकी मर्ज़ी के तहत आ सके. जो कुछ भी है सब 'शै' में दाख़िल हैं इसलिये वह अल्लाह की कुदरत के तहत है. और जो मुमुकिन नहीं यानी उस जैसा दूसरा होना सम्भव नहीं अर्थात् वाजिब, उससे कुदरत और इरादा सम्बन्धित नहीं होता जैसे अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात वाजिब है, इस लिये मक़दूर (किस्मत) नहीं. अल्लाह तआला के लिये झूट बोलना और सारे ऐश मुहाल (असंभव) हैं इसीलिये कुदरत को उनसे कोई वास्ता नहीं.

सूरए बक्ररह - तीसरा रुक़

(१) सूरत के शुरू में बताया गया कि यह किताब अल्लाह से डरने वालों की हिदायत के लिये उतारी गई है, फिर डरने वालों की विशेषताओं का ज़िक्र फ़रमाया, इसके बाद इससे मुंह फेरने वाले समुदायों का और उनके हालात का ज़िक्र फ़रमाया कि फ़रमावर्दार और किस्मत वाले इल्हान हिदायत और तक्रवा की तरफ़ राग़िब हों और नाफ़रमानी व बगावत से बचें. अब तक्रवा हासिल करने का तरीक़ा बताया जा रहा है. "ऐ लोगों" का ख़िताब (सम्बोधन) अक्सर मक्कें वालों की और "ऐ ईमान वाले" का सम्बोधन मदीने वालों का होता है. मगर यहाँ यह सम्बोधन ईमान वालों और काफ़िर सब को आम है. इसमें इशारा है कि इस्लामी शराफ़त इसी में है कि आदमी अल्लाह से डर यानी तक्रवा हासिल करे और इबादत में लगा रहे. इबादत वह संस्कार (बंदगी) है जो बन्दा अपनी अब्दीयत और माबूद की उलूहियत (ख़ुदा होना) के एतिकाद और एतिराफ़ के साथ पूरे करे. यहाँ इबादत आम है अर्थात् पूजा पाठ की सारी विधियों, तमाम उम्ूल और तरीकों की समोह हुए हैं. काफ़िर इबादत के मामूर (हुक्म किये गए) हैं जिस तरह बेवुजू होना नमाज़ के फ़र्ज़ होने को नहीं रोकता उसी तरह काफ़िर होना इबादत के वाजिब होने की मना नहीं करता और जैसे बेवुजू व्यक्ति पर नमाज़ की अनिवार्यता बदन की पाकी को ज़रूरी बनाती है ऐसे ही काफ़िर पर इबादत के वाजिब होने से कुफ़्र का छोड़ना अनिवार्य ठहरता है.

(२) इससे मालूम हुआ कि इबादत का फ़ायदा इबादत करने वाले ही को मिलता है, अल्लाह तआला इससे पाक है कि उसको इबादत या और किसी चीज़ से नफ़ा हासिल हो.

(३) पहली आयत में बयान फ़रमाया कि तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को शून्य से अस्तित्व किया और दूसरी आयत में गुज़र बसर, जीने की सहूलतों, अन्न और यानी का बयान फ़रमाकर स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह ही सारी नेअमतों का मालिक है. फिर अल्लाह को छोड़कर दूसरे की पूजा सिर्फ़ वातिल है.

(४) अल्लाह तआला के एक होने के बयान के बाद हज़ुर सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और क़ुरआने करीम के देवबाणी और नबी का मौजिज़ा होने की वह ज़बरदस्त दलील बयान फ़रमाई जाती है जो सच्चे दिल वाले को इत्मीनान बख़्शे और इन्कार करने वालों को लाजबाब कर दे.

(५) ख़ास बन्दे से हज़ुर पुरनूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुराद हैं.

(६) यानी ऐसी सूरत बनाकर लाओ जो फ़साहत (अच्छा क़लाम) व बलागत और शब्दों के सौंदर्य और प्रबन्ध और ग़ैब की ख़बरें देने में क़ुरआने पाक की तरह हो.

(७) पत्थर से वो बुत मुराद हैं जिन्हें काफ़िर पूजते हैं और उनकी महब्वत में क़ुरआने पाक और रसूले करीम का इन्कार दुश्मनी के तौर पर करते हैं.

(८) इस से मालूम हुआ कि दोज़ख़ पैदा हो चुकी है. यह भी इशारा है कि ईमान वालों के लिये अल्लाह के करम से हमेशा जहन्नम में रहना नहीं.

(९) अल्लाह तआला की सुन्नत है कि किताब में तरहीब (डराना) के साथ तरगीब ज़िक्र फ़रमाता है. इसी लिये काफ़िर और उनके कर्मों और अज़ाब के ज़िक्र के बाद ईमान वालों का बयान किया और उन्हें जन्नत की बशारत दी. "सालिहातुन" यानी नेकियाँ वो कर्म हैं जो शरीअत की रौशनी में अच्छे हों. इनमें फ़र्ज़ और नफ़ल सब दाख़िल हैं. (जलालैन) नेक अमल का ईमान पर अत्फ़ इसकी दलील है कि अमल ईमान का अंग नहीं. यह बशारत ईमान वाले नेक काम करने वालों के लिये बिना क़ैद है और गुनाहगारों को जो बशारत दी गई है वह अल्लाह की मर्ज़ी की शर्त के साथ है कि अल्लाह चाहे तो अपनी क़ृपा से माफ़ फ़रमाए, चाहे गुनाहों की सज़ा देकर जन्नत प्रदान करे. (मदारिक)

(१०) जन्नत के फल एक दूसरे से मिलते जुलते होंगे और उनके मज़े अलग अलग. इसलिये जन्नत वाले कहेंगे कि यही फल तो हमें पहले मिल चुका है, मगर ख़ाने से नई लज़ज़त पाएंगे तो उनका लुत्फ़ बहुत ज़्यादा हो जाएगा.

उन बागों में सुथरी वीवियां हैं^(११) और वो उनमें हमेशा रहेंगे^(१२) (२५) वेशक अल्लाह इस से हया नहीं फरमाता कि मिसाल समझाने को कैसी ही चीज का जिक्र या वर्णन फरमाए मच्छर हो या उससे बड़कर^(१३) तो वो जो ईमान लाए वो तो जानते हैं कि यह उनके रब की तरफ से हक़ (सत्य) है^(१४) रहे काफिर वो कहते हैं ऐसी कहावत में अल्लाह का क्या मकसद है, अल्लाह बहुतेरों को इससे गुमराह करता है^(१५) और बहुतेरों को हिदायत फरमाता है और उससे उन्हें गुमराह करता है जो वेहुकम हैं^(१६) (२६) वह जो अल्लाह के अहद (इकरार) को तोड़ देते हैं^(१७) पक्का होने के बाद और काटते हैं उस चीज को जिसके जोड़ने का खुदा ने हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं^(१८) वही नुकसान में हैं^(१९) भला तुम कैसे खुदा का इन्कार करोगे हालांकि तुम मुर्दा थे उसने तुम्हें जिलाया (जीवंत किया) फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिन्दा करेगा फिर उसी की तरफ़ पलटकर जाओगे^(२०) (२८) वही है जिसने तुम्हारे लिये बनाया जो कुछ ज़मीन में है^(२१) फिर आसमान की तरफ़ इस्तिवा (क़सद, इरादा) फ़रमाया तो ठीक सात आसमान बनाए और वह सब कुछ जानता है^(२२) (२९)

चौथा रूकू

और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने फ़रिशतों से फ़रमाया मैं ज़मीन में अपना नायब बनाने वाला हूँ^(१) बोले क्या ऐसे

فِيهَا أَرْوَاحٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ إِنْ أَنْتَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكَ الرُّسُلُ ۚ أَلَمْ يَكُنْ لَهُ الْبَاقِعَاتُ مِنَ الْأَمْثَلِ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ أَنْ يَكُونَ لَكُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۚ بَلْ يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا ۖ وَهُدًى بِلَهُ كَثِيرًا ۖ وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ۚ الَّذِينَ يَتَقَضُّونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ ۖ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۚ كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَهْوَآءًا ۖ فَاحْيَاكُمْ ثُمَّ يَعْيِئْكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۚ هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ أَسْوَأَ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوا أَتَجْعَلُ

مَثَلًا

(११) जन्नती वीवियाँ चाहें हूँ हो या ओर, स्त्रियों की सारी जिस्मानी इल्तों (दोषों) और तमाम नापाकियों और गन्दगियों से پاک होंगी, न जिस्म पर मेल होगा, न पेशाव पड़ना, इसके साथ ही वो बदमिज़ाजी और बदखल्की (बुरे मिज़ाज़) से भी पाक होंगी. (मदारिक व मज़ज़िन)

(१२) यानी जन्नत में रहने वाले न कभी फ़ना होंगे, न जन्नत से निकाले जाएंगे. इससे मालूम हुआ कि जन्नत और इसमें रहने वालों के लिये फ़ना नहीं.

(१३) जब अल्लाह तआला ने आयत मसलुहुम कमसलिल लज़िस्तीक़दा नारा (उनकी कहावत उसकी तरह है जिसने आग रौशन की) और आयत "कसैथिविम मिनस समाए" (जैसे आसमान से उतरता पानी) में मुनाफ़िक्कों की दो मिसालें बयान फ़रमाई तो मुनाफ़िक्कों ने एतिराज़ किया कि अल्लाह तआला इससे बालातर है कि ऐसी मिसालें बयान फ़रमाए. उसके रद में यह आयत उतरी.

(१४) चूँकि मिसालों का बयान हिक्मत (जानकारी, बोध) देने और मज़मून का दिल में घर करने वाला बनाने के लिये होता है और अरब के अच्छी ज़बान वालों का तरीका है, इसलिये मुनाफ़िक्कों का यह एतिराज़ ग़लत और बेजा है और मिसालों का बयान सच्चाई से भरपूर है.

(१५) "युदिल्लो बिही" (इससे गुमराह करता है) काफ़िर् के उस कथन का जवाब है कि अल्लाह का इस कहावत से क्या मतलब है. "अम्मल लज़ीना आमनू" (वो जो ईमान लाए) और "अम्मल लज़ीना कफ़रू" (वो जो काफ़िर रहे), ये दो जुम्ले जो ऊपर इरशाद हुए, उनकी तफ़सीर है कि इस कहावत या मिसाल से बहुतों को गुमराह करता है जिनकी अक्लों पर अज्ञानता या जिहालत ने ग़लब किया है और जिनकी आदत बड़ाई छोटना और दुश्मनी पालना है और जो हक़ बात और खुली हिक्मत के इन्कार और विरोध के आदी हैं और इसके बावजूद कि यह मिसाल बहुत मुनासिब है, फिर भी इन्कार करते हैं और इससे अल्लाह तआला बहुतों को हिदायत फ़रमाता है जो ग़ौर और तहकीक़ (अनुसंधान) के आदी हैं और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ बात नहीं कहते कि हिक्मत (बोध) यही है कि बड़े रूबे वाली चीज़ की मिसाल किसी क़द्र वाली चीज़ से और हकीर (तुच्छ) चीज़ की अदना चीज़ से दी जाए जैसा कि ऊपर की आयत में हक़ (सच्चाई) की तूर (प्रकाश) से और वातिल (असत्य) की ज़ुलमत (अंधेरे) से मिसाल दी गई.

(१६) शरीअत में फ़ासिक् उस नाफ़रमान को कहते हैं जो बड़े गुनाह करे. "फिक्क" के तीन दर्जे हैं. एक तगाबी, वह यह कि आदमी इतिफ़ाक़िया किसी गुनाह का मुर्तकिब (करने वाला) हुआ और उसको बुरा ही जानता रहा, दूसरा इन्हिमाक़ कि बड़े गुनाहों का आदी

हो गया और उनसे बचने की परवाह न रही, तीसरा जुहूद कि हाराम की अच्छा ज्ञान कर इतिहास करे. इस दर्जे वाला ईमान से मेहरम हो जाता है. पहले दो दर्जों में जब तक बड़ों में बड़े गुनाह (शिक व कुफ़र) का इतिहास न करे, उसपर मूमिन का इतलाक़ (लागू होना) होता है. यहाँ “फ़ासिक़ीन” (वेहुक़म) से वही नाफ़रमान मुराद हैं जो ईमान से बाहर हो गए. क़ुरआने करीम में काफ़िरों पर भी फ़ासिक़ का इतलाक़ हुआ है: *इन्नल मुनाफ़िक़ीना हुमुल फ़ासिक़ून* (सूरए तौबह, आयत ६७) यानी बेशक़ मुनाफ़िक़ वही पक्के वेहुक़म हैं. कुछ तफ़सीर करने वालों ने यहाँ फ़ासिक़ से काफ़िर मुराद लिये, कुछ ने मुनाफ़िक़, कुछ ने यहूद.

(१७) इससे वह एहद मुराद है जो अल्लाह तआला ने पिछली किताबों में हज़ुर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने की निस्बत फ़रमाया. एक क़ौल यह है कि एहद तीन हैं- पहला एहद वह जो अल्लाह तआला ने तमाम औलादे आदम से लिया कि उसके रब होने का इक़्रार करें. इसका बयान इस आयत में है “*व इज़ अख़ज़ा रब्बुका मिम वनी आदमा...*” (सूरए अअरफ़, आयत १७२) यानी और ऐ मेहबूब, याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उनकी नसल निकाली और उन्हें ख़ुद उनपर गवाह किया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं, सब बोले- क्यों नहीं, हम गवाह हुए. दूसरा एहद नबियों के साथ विशेष है कि रिसालत की तबलीग़ फ़रमाएं और दीन कायम करें. इसका बयान आयत “*व इज़ अख़ज़ना मिन नबिय़ीना मीसाक़हुम*” (सूरए अलअहज़ाब, आयत सात) में है, यानी और ऐ मेहबूब याद करो जब हमने नबियों से एहद लिया और तुम से और नूह और इब्राहीम और मूसा और ईसा मरयम के बेटे से और हम ने उनसे गाढ़ा एहद लिया. तीसरा एहद उलमा के साथ ख़ास है कि सच्चाई की न छुपाएं. इसका बयान “*व इज़ अख़ज़ल्लाहो मीसाक़ल्लज़ीना अतुल किताब*” में है, यानी और याद करो जब अल्लाह ने एहद लिया उनसे जिन्हें किताब अता हुई कि तुम ज़स्म उसे उन लोगों से बयान कर देना और न छुपाना. (सूरए आले इमरान, आयत १८७)

(१८) रिश्ते और क़राबत के तअल्लुकात (करीबी संबंध) मुसलमानों की दोस्ती और मेहबूत, सारे नबियों को मानना, आसमानी किताबों की तस्दीक़, हक़ पर जमा होना, ये धो चीज़ें हैं जिनके मिलाने का हुक़म फ़रमाया गया. उनमें फूट डालना, कुछ को कुछ से नाहक़ अलग करना, तफ़क़्वे (अलगाव) की बिना डालना हाराम करार दिया गया.

(१९) तौहीद और नबुव्वत की दलीलों और कुफ़र और ईमान के बदले के बाद अल्लाह तआला ने अपनी आम और ख़ास नेअमतों का, और कुदरत की निशानियों, अजीब बातों और हिक्मतों का ज़िक़र फ़रमाया और कुफ़र की ख़राबी दिल में बिठाने के लिये काफ़िरों को सम्बोधित किया कि तुम किस तरह ख़ुदा का इन्कार करते हो जबकि तुम्हारा अपना हाल उसपर ईमान लाने का तक्राज़ा करता है कि तुम मुर्दा थे. मुर्दा से बेजान जिस्म मुराद है. हमारे मुहावरे में भी बोलते हैं- ज़मीन मुर्दा हो गई. मुहावरे में भी मौत इस अर्थ में आई. ख़ुद क़ुरआने पाक में इरशाद हुआ “*युहय़िल अरदा वअदा मौतिहा*” (सूरए रूम, आयत ५०) यानी हमने ज़मीन को ज़िन्दा किया उसके मरे पीछे. तो मतलब यह है कि तुम बेजान जिस्म थे, अब्बर (तत्व) की सुरत में, फिर ग़िज़ा की शक़ल में, फिर इज़लात (मिल जाना) की शान में, फिर नुत्फ़े (भाड़े) की हालत में. उसने तुमको जान दी, ज़िन्दा फ़रमाया. फिर उग्र की मीआद पूरी होने पर तुम्हें मौत देगा. फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा. इससे या क़ब्र की ज़िन्दगी मुराद है जो सवाल के लिये होगी या हथ की. फिर तुम हिसाब और जज़ा के लिये उसकी तरफ़ लौटाए जाओगे. अपने इस हाल को जानकर तुम्हारा कुफ़र करना निहायत अजीब है. एक क़ौल मुफ़सिरीन का यह भी है कि “*कैफ़ा तकफ़ुरुना*” (भला तुम कैसे अल्लाह के इन्कारी हो गए) का ख़िताब मूमिनीन से है और मतलब यह है कि तुम किस तरह काफ़िर हो सकते हो इस हाल में कि तुम जिहालत की मौत से मुर्दा थे, अल्लाह तआला ने तुम्हें इल्म और ईमान की ज़िन्दगी अता फ़रमाई, इसके बाद तुम्हारे लिये वही मौत है जो उग्र गुज़रने के बाद सबको आया करती है. उसके बाद तुम्हें वह हकीक़ी हमेशगी की ज़िन्दगी अता फ़रमाएगा, फिर तुम उसकी तरफ़ लौटाए जाओगे और वह तुम्हें ऐसा सवाब देगा जो न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना, न किसी दिल ने उसे मेहमूस किया.

(२०) यानी ख़ानें, सज़े, जानवर, दरिया, पहाड़ जो कुछ ज़मीन में हैं सब अल्लाह तआला ने तुम्हारे दीनी और दुनियावी नफ़े के लिये बनाए. दीनी नफ़ा इस तरह कि ज़मीन के अजायबात देखकर तुम्हें अल्लाह तआला की हिक्मत और कुदरत की पहचान हो और दुनियावी मुनाफ़ा यह कि ख़ाओ पियो, आराम करो, अपने कामों में लाओ. तो इन नेअमतों के बावजूद तुम किस तरह कुफ़र करोगे. क़र्ज़ी और अव्वक़ राज़ी वग़ैरह ने “*ख़लक़ा लकुम*” (तुम्हारे लिये बनाया) को फ़ायदा पहुंचाने वाली चीज़ों की मूल वैधता (मुबाहुल अस्त) की दलील ठहराया है.

(२१) यानी यह सारी चीज़ें पैदा करना और बनाना अल्लाह तआला के उस असीम इल्म की दलील है जो सारी चीज़ों को घेरे हुए है. क्योंकि ऐसी सृष्टि का पैदा करना, उसकी एक एक चीज़ की जानकारी के बिना मुमकिन नहीं. मरने के बाद ज़िन्दा होना काफ़िर लोग असम्भव मानते थे. इन आयतों में उनकी झूठी मान्यता पर मज़बूत दलील कायम फ़रमादी कि जब अल्लाह तआला कुदरत वाला (सक्षम) और जानकार है और शरीर के तत्व जमा होने और जीवन की योग्यता भी रखते हैं तो मौत के बाद ज़िन्दगी कैसे असंभव हो सकती है. आसमान और ज़मीन की पैदाइश के बाद अल्लाह तआला ने आसमान में फ़रिश्तों को और ज़मीन में जिनों का सुकूनत दी. जिनों ने फ़साद फैलाया तो फ़रिश्तों की एक जमाअत भेजी जिसने उन्हें पहाड़ों और जज़ीरों में निकाल भगाया.

सूरए बकरह - चौथा रुकू

(१) ख़लीफ़ा निर्देशों और आदेशों के जारी करने और दूसरे अधिकारों में अस्त का नायब होता है. यहाँ ख़लीफ़ा से हज़रत आदम (अल्लाह की सलामती उनपर) मुराद हैं. अगरचे और सारे नबी भी अल्लाह तआला के ख़लीफ़ा हैं. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के

التوبة

التوبة

को (नायब) करेगा जो उसमें फ़साद फैलाएगा और खून बहाएगा^(२) और हम तुझे सराहते हुए तेरी तस्बीह (जाप) करते हैं और तेरी पाकी बोलते हैं फ़रमाया मुझे मालूम है जो तुम नहीं जानते^(३) (३०) और अल्लाह तआला ने आदम को सारी (चीज़ों के) नाम सिखाए^(४) फिर सब (चीज़ों) को फ़रिश्तों पर पेश करके फ़रमाया सच्चे हो तो उनके नाम तो बताओ^(५) (३१) बोले पाकी है तुझे हमें कुछ इल्म नहीं मगर जितना तूने हमें सिखाया वेशक तू ही इल्म और हिक्मत वाला है^(६) (३२) फ़रमाया ऐ आदम बतादे उन्हें सब (चीज़ों के) नाम जब उसने (यानी आदम ने) उन्हें सब के नाम बता दिये^(७) फ़रमाया मैं न कहता था कि मैं जानता हूँ आसमानों और ज़मीन की सब छुपी चीज़ें और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो^(८) (३३) और (याद करो) जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सिजदा करो तो सबने सिजदा किया सिवाए इबलीस (शैतान) के कि इन्कारी हुआ और घमंड किया और काफ़िर हो गया^(९) (३४) और हमने फ़रमाया ऐ आदम तू और तेरी वीवी इस जन्नत में रहो और खाओ इसमें से वे रोक टोक जहाँ तुम्हारा जी चाहे मगर उस पेड़ के पास न जाना^(१०) कि हद से बढ़ने वालों में हो जाओगे^(११) (३५) तो शैतान ने उससे (यानी जन्नत से) उन्हें लगाजिश (डगमगाहट) दी और जहाँ रहते थे वहाँ से उन्हें अलग कर दिया^(१२) और हमने फ़रमाया नीचे उतरो^(१३)

فِيهَا مَنْ يَفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۚ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝
وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ أَنْبِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝
قَالُوا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ ۖ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۖ وَاسْتَكْبَرَ ۖ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوا

مَزَل

बारों में फ़रमाया : “يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ” (सूरए सौद, आयत २६) यानी ऐ दाऊद, वेशक हमने तुझे ज़मीन में नायब किया, तो लोगों में सच्चा हुक्म कर.

फ़रिश्तों की हज़रत आदम की ख़िलाफ़त की ख़बर इसलिये दी गई कि वो उनके ख़लीफ़ा बनाए जाने की हिक्मत (रहस्य) पूछ कर मालूम करलें और उनपर ख़लीफ़ा की बुज़ुर्गी और शान ज़ाहिर हो कि उनको पैदाइश से पहले ही ख़लीफ़ा का लक़ब अता हुआ और आसमान वालों को उनकी पैदाइश की खुशख़बरी दी गई. इसमें बन्दों का तालीम है कि वो काम से पहले मशवरा किया करें और अल्लाह तआला इससे पाक है कि उसको मशवरे की ज़रूरत हो.

(२) फ़रिश्तों का मक़सद ऐतिराज़ या हज़रत आदम पर लांछन नहीं, बल्कि ख़िलाफ़त का रहस्य मालूम करना है. और इन्सानों की तरफ़ फ़साद फैलाने की बात जोड़ना इसकी जानकारी या तो उन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ से दी गई हो या लौहे मेहफूज़ से प्राप्त हुई हो या खुद उन्होंने जिन्नत की तुलना में अन्दाज़ा लगाया हो.

(३) यानी मेरी हिक्मतें (रहस्य) तुम पर ज़ाहिर नहीं. बात यह है कि इन्सानों में नबी भी होंगे, औलिया भी, उलमा भी, और वो इल्म और अमल दोनों ऐतिवार से फ़ज़ीलतों (महानताओं) के पूरक होंगे.

(४) अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर तमाम चीज़ें और सारे नाम पेश फ़रमाकर उनके नाम, विशेषताएं, उपयोग, गुण इत्यादि सारी बातों की जानकारी उनके दिल में उतार दी.

(५) यानी अगर तुम अपने इस ख़याल में सच्चे हो कि मैं कोई मख़लूक (प्राणी जीव) तुमसे ज़्यादा जगत में पैदा न क़र्रमा और ख़िलाफ़त के तुम्हीं हक़दार हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ क्योंकि ख़लीफ़ा का काम तसर्क़फ़ (इग़्रियार) और तदबीर, इन्साफ़ और अदल है और यह वशीर इसके सम्भव नहीं कि ख़लीफ़ा को उन तमाम चीज़ों की जानकारी हो जिनपर उसको पूरा अधिकार दिया गया और जिनका उसको फ़ैसला करना है. अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के फ़रिश्तों पर अफ़ज़ल (उच्चतर) होने का कारण ज़ाहिर इल्म फ़रमाया. इससे साबित हुआ कि नामों का इल्म अकेलेपन और तनहाइयों की इबादत से बेहतर है. इस आयते से यह भी साबित हुआ कि नबी फ़रिश्तों से ऊंचे हैं.

(६) इसमें फ़रिश्तों की तरफ़ से अपने इज़ज़ (लाचारी) और मलती का ऐतिराफ़ और इस बात का इज़हार है कि उनका सवाल केवल जानकारी हासिल करने के लिये था, न कि ऐतिराज़ की निमत से. और अब उन्हें इन्सान की फ़ज़ीलत (बड़ाई) और उसकी पैदाइश का रहस्य मालूम हो गया जिसको वो पहले न जानते थे.

(16) यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने हर चीज़ का नाम और उसकी पैदाइश का राज़ बता दिया. सज़
(17) फ़रिश्तों ने जो बात ज़ाहिर की थी वह यह थी कि इन्सान फ़साद फैलाएगा, ख़ून ख़राबा करेगा और जो बात छुपाई थी वह यह थी कि ख़िलाफ़त के हक़दार वो ख़ुद हैं और अल्लाह तआला उनसे ऊंची और जानकार कोई मख़लूक पैदा न फ़रमाएगा. इस आयत से इन्सान की शराफ़त और इल्म की बढ़ाई साबित होती है और यह भी कि अल्लाह तआला की तरफ़ तालीम की निस्वत करना सही है. अगरचे उसको मुअल्लिम (उस्ताद) न कहा जाएगा, क्योंकि उस्ताद पंशावर तालीम देने वाले को कहते हैं. इससे यह भी मालूम हुआ कि सारे शब्दकोष, सारी ज़बानें अल्लाह तआला की तरफ़ से हैं. यह भी साबित हुआ कि फ़रिश्तों के इल्म और कमालात में बढ़ीचढ़ी होती है.

(18) अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सारी सृष्टि का नमूना और रूहानी व जिस्मानी दुनिया का मज़मूआ बनाया और फ़रिश्तों के लिये क़माल हासिल करने का साधन किया तो उन्हें हुक्म फ़रमाया कि हज़रत आदम को सज्दा करें क्योंकि इसमें शुक्रगुज़ारी (कृतज्ञता) और हज़रत आदम के बढ़प्पन के एतिलाफ़ और अपने कथन की माफ़ी की शान पाई जाती है. कुछ विद्वानों ने कहा है कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम को पैदा करने से पहले ही सज्दे का हुक्म दिया था, उसकी सनद (प्रमाण) यह आयत है : “फ़ इज़ा सबैतुहु व नफ़रन्नो फ़ीहे मिर रूही फ़क़ऊ लहु साजिदीन” (सूरए अल-हिज़र, आयत 25) यानी फिर जब मैं उसे टीक बनालूँ और उसमें अपनी तरफ़ की ख़ास इज़ज़त वाली रूह फूंकूँ तो तुम उसके लिये सज्दे में गिरना. (बैज़ावी). सज्दे का हुक्म सारे फ़रिश्तों को दिया गया था, यही सब से ज़्यादा सही है. (ख़ाज़िन) सज्दा दो तरह का होता है एक इबादत का सज्दा जो पूजा के इरादे से किया जाता है, दूसरा आदर का सज्दा जिससे किसी की ताज़ीम मंज़ूर होती है न कि इबादत. इबादत का सज्दा अल्लाह तआला के लिए ख़ास है, किसी और के लिये नहीं हो सकता न किसी शरीअत में कभी जायज़ हुआ. यहाँ जो मुफ़ससिरीन इबादत का सज्दा मुराद लेते हैं वो फ़रमाते हैं कि सज्दा ख़ास अल्लाह तआला के लिए था और हज़रत आदम ख़िदला बनाए गए थे. मगर यह तर्क कमज़ोर है क्योंकि इस सज्दे से हज़रत आदम का बढ़प्पन, उनकी बुज़ुर्गी और महानता ज़ाहिर करना मक़सूद थी. जिसे सज्दा किया जाए उस का सज्दा करने वाले से उत्तम होना कोई ज़रूरी नहीं, जैसा कि काबा हज़ुर सैयदुल अंबिया का ख़िदला और मस्जुद इब्राहिम (अर्थात् जिसकी तरफ़ सज्दा हो) है, जब कि हज़ुर उससे अफ़ज़ल (उत्तम) हैं. दूसरा कथन यह है कि यहाँ इबादत का सज्दा न था बल्कि आदर का सज्दा था और ख़ास हज़रत आदम के लिये था, ज़मीन पर पेशानी रखकर था न कि सिर्फ़ झुकना. यही कथन सही है, और इसी पर सर्वानुमति है. (मदारिक). आदर का सज्दा पहली शरीअत में जायज़ था, हमारी शरीअत में मना किया गया. अब किसी के लिये जायज़ नहीं क्योंकि जब हज़रत सलमान (अल्लाह उनसे राज़ी हो) ने हज़ुर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सज्दा करने का इरादा किया तो हज़ुर ने फ़रमाया मख़लूक को न चाहिये कि अल्लाह के सिवा किसीको सज्दा करे. (मदारिक). फ़रिश्तों में सबसे पहले सज्दा करने वाले हज़रत जिब्रील हैं, फिर मीक़ाईल, फिर इसराफ़ील, फिर इज़्राईल, फिर और क़रीबी फ़रिश्ते. यह सज्दा शुक्रवार के रोज़ ज़वाल के वक़्त से अख़ तक किया गया. एक कथन यह भी है कि क़रीबी फ़रिश्ते सौ बरस और एक कथन में पाँच सौ बरस सज्दे में रहे. शैतान ने सज्दा न किया और घमण्ड के तौर पर यह सोचता रहा कि वह हज़रत आदम से उच्चतर है, और उसके लिये सज्दे का हुक्म (मआज़ल्लाह) हिक्मत (समझदारी) के ख़िलाफ़ है. इस झूटे अक़ीदे से वह क़ाफ़िर हो गया. आयत में साबित है कि हज़रत आदम फ़रिश्तों से ऊपर हैं कि उनसे उन्हें सज्दा कराया गया. घमण्ड बहुत बुरी चीज़ है. इससे कभी घमण्ड की नौबत कुफ़्र तक पहुंचती है. (बैज़ावी और जुमल)

(19) इससे गेहूँ या अंगूर वगैरह मुराद हैं. (जलालैन)

(20) जुल्म के मानी हैं किसी चीज़ को बे-महल वज़अ करना. यह मना है. और अंबियाए किराम मासूम हैं, उनसे गुनाह सरज़द नहीं होता. और अंबियाए किराम को ज़ालिम कहना उनकी तौहीन और कुफ़्र है, जो कहे वह क़ाफ़िर हो जाएगा. अल्लाह तआला मालिक व मौला है जो चाहे फ़रमाए, इसमें उनकी इज़ज़त हैं. दूसरे की क्या मजाल कि अदब के ख़िलाफ़ कोई बात ज़बान पर लाए और अल्लाह तआला के कहे को अपने लिये भी मुनासिब जाने. हमें अदब, इज़ज़त, फ़रमाँबरदारी का हुक्म फ़रमाया, हम पर यही लाज़िम है.

(21) शैतान ने किसी तरह हज़रत आदम और हवा के पास पहुंचकर कहा, क्या मैं तुम्हें जन्नत का दरख़्त बता दूँ ? हज़रत आदम ने इन्कार किया. उसने क्रसम ख़ाई कि मैं तुम्हारा भला चाहने वाला हूँ. उन्हें ख़याल हुआ कि अल्लाह पाक की झूठी क्रसम कौन ख़ा सकता है. इस ख़याल से हज़रत हवा ने उसमें से कुछ खाया फिर हज़रत आदम को दिया, उन्होंने भी ख़ाया. हज़रत आदम को ख़याल हुआ कि “ला तकरबा” (इस पेड़ के पास न जाना) की मनाही तन्ज़ीही (हल्की ग़लती) है, तहरीमी नहीं क्योंकि अगर वह हाराम के अर्थ में समझते तो हरगिज़ ऐसा न करते कि अंबिया मासूम होते हैं. यहाँ हज़रत आदम से इज़्तिहाद (कैसला) में ग़लती हुई और इज़्तिहाद की ग़लती गुनाह नहीं होती.

(22) हज़रत आदम और हवा और उनकी औलाद को जो उनके सुल्ब (पुश्त) में थी जन्नत से ज़मीन पर जाने का हुक्म हुआ. हज़रत आदम हिन्द की धरती पर सरअब्दीप (मौजूदा श्रीलंका) के पहाड़ों पर और हज़रत हवा जिद्दा में उतारे गए (ख़ाज़िन). हज़रत आदम की बरक़त से ज़मीन के पेड़ों में पाकीज़ा ख़ुशबू पैदा हुई. (रुहूल बयान)

आपस में एक तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक्त तक ज़मीन में ठहरना और बरतना है^(१५) (३६) फिर सीख लिये आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे (शब्द) तो अल्लाह ने उसकी तौबा कुबूल की^(१६) वेशक वही है बहुत तौबा कुबूल करने वाला मेहरवान (३७) हमने फ़रमाया तुम सब जन्नत से उतर जाओ फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का पालन करने वाला हुआ उसे न कोई अन्देशा न कुछ ग़म^(१७) (३८) और वो जो कुफ़्र और मेरी आयतों झुटलाएंगे वो दोज़ख़ वाले हैं उनको हमेशा उस में रहना (३९)

पाँचवां रूकू

ऐ याक़ूब की सन्तान^(१) याद करो मेरा वह एहसान जो मैं ने तुमपर किया^(२) और मेरा अहद पूरा करो मैं तुम्हारा अहद पूरा करूँगा^(३) और ख़ास मेरा ही डर रखो^(४) (४०) और ईमान लाओ उसपर जो मैं ने उतारा उसकी तस्दीक़ (पुष्टि) करता हुआ जो तुम्हारे साथ है और सबसे पहले उसके मुनकिर यानी इन्कार करने वाले न बनो^(५) और मेरी आयतों के बदले थोड़े दाम न लो^(६) और मुझी से डरो (४१) और हक़ (सत्य) से वातिल (झूठ) को न मिलाओ और जान बूझकर हक़ न छुपाओ (४२) और नमाज़ कायम रखो और ज़कात दो और रूकू करने वालों (झुकने वालों) के साथ रूकू करो^(७) (४३) क्या लोगों को भलाई

بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتْنٌ
إِلَىٰ حِينٍ ۖ فَتَلَقُوا آدَمَ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ
إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۖ قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا
فَمَا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ
يَبْنِي لِابْنِ إِسْرَءِيلَ أَكْوَاعًا لِذُرِّيَّتِهِ النَّبِيِّ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ
وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ۖ وَ
أَمْنًا لِّمَا أَنزَلْتُ مَصِيدًا لِّالْبَاطِلِ مَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۖ
كَافِرِينَ ۖ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ وَإِيَّايَ
فَاتَّقُونِ ۖ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَكَانُوا
الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا
الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ ۖ أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ

(१४) इससे उग्र का अन्त यानी मौत मुराद है, और हज़रत आदम के लिए बशारत है कि वह दुनिया में सिर्फ़ उतनी मुद्दत के लिये हैं उसके बाद उन्हें जन्नत को तरफ़ लौटना है और आपकी औलाद के लिये मआद (आखिरत) पर दलालत है कि दुनिया की ज़िन्दगी निश्चित समय तक है, उग्र पूरी होने के बाद उन्हें आखिरत की तरफ़ पलटना है।

(१५) आदम अलैहिस्सलाम ने ज़मीन पर आने के बाद तीन सौ बरस तक हया (लज्जा) से आसमान की तरफ़ सर न उठाया, अगरचे हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम बहुत रोने वाले थे, आपके आँसू तमाम ज़मीन वालों के आँसूओं से ज़्यादा हैं, मगर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम इतना रोए कि आप के आँसू हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम और तमाम ज़मीन वालों के आँसूओं के जोड़ से बढ़ गए (श्वाज़िन). तिग्रानी, हाकिम, अबू नईम और वैहकी ने हज़रत अली मुर्तज़ा (अल्लाह उनसे राज़ी रहे) से मरफूअन रिवायत की है कि जब हज़रत आदम पर इत्ताय हुआ तो आप तीव्र की फ़िक्क में हैरान थे, इस परेशानी के आलम में याद आया कि पैदाइश के वक्त मैं ने सर उठाकर देखा था कि अर्श पर लिखा है “ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह” मैं समझा था कि अल्लाह की बारगाह में वह रूखा किसी को हासिल नहीं जो हज़रत मुहम्मद (अल्लाह के दुरुद हों उनपर और सलाम) को हासिल है कि अल्लाह तआला ने उनका नाम अपने पाक नाम के साथ अर्श पर लिखवाया, इसलिये आपने अपनी दुआ में “रब्बना ज़लमना अन्कुसना व इल्लम तग़फ़िर लना व तरहमना लनकूनना मिनल ख़ासिरीन ” यानी ऐ रब हमारे हमने अपना आप बुरा किया तो अगर तू हमें न बख़्शे और हमपर रहम न करे तो हम ज़रूर नुक़सान वालों में हुए. (सूरए अअराफ़, आयत २३) के साथ यह अर्ज़ किया “अस अलुका विहक्के मुहम्मदिन अन तग़फ़िर ली” यानी ऐ अल्लाह मैं मुहम्मद के नाम पर तुझसे माफ़ी चाहता हूँ, इन्हे मुन्नर की रिवायत में ये कलिमे हैं “अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका बिजाहे मुहम्मदिन अब्दुका व करामतुहु अलैका व अन तग़फ़िर ली ख़त्तीअती” यानी याद मैं तुझ से तेरे ख़ास बन्दे मुहम्मद सल्लल्लाही अलैहे वसल्लम की इज़ज़त और मर्तबे के तुफ़ैल में, और उस बुजुर्गी के सदके में, जो उन्हें तेरे दरबार में हासिल है, माफ़िरत चाहता हूँ. यह दुआ करनी थी कि हक़ तआला ने उनकी माफ़िरत फ़रमाई. इस रिवायत से साबित है कि अल्लाह के प्यारों के वसीले से दुआ उनके नाम पर, उनके वसीले से कहकर मांगना जायज़ है. और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है. अल्लाह तआला पर किसी का हक़ (अधिकार) अनिवार्य नहीं होता लेकिन वह अपने प्यारों को अपने फ़ज़ल और करम से हक़ देता है. इसी हक़ के वसीले से दुआ की जाती है. सही हदीसों से यह हक़ साबित है जैसे आया “मन आमना बिल्लाहे व रसूलिही व अक़ामस सलाता व सौमा रमदाना काना हक़कन अलल्लाहे अँय यदख़ुलल जन्नता”. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तीव्र दसवीं मुहर्रम को कुबूल हुई. जन्नत से निकाले जाने के वक्त और नेअमतों के साथ अरबी ज़बान भी आप

से सत्व कर ली गई थी उसकी जगह ज़वाने मुबारक पर सुरियानी जारी कर दी गई थी। तौबह कुबूल होने के बाद फिर अरबी ज़वान अता हुई। (फ़तहुल अज़ीज़) तौबह की असल अल्लाह की तरफ़ पलटना है। इसके तीन भाग हैं- एक ऐतिराफ़ यानी अपना गुनाह तस्लीम करना, दूसरे निदामत यानी गुनाह की शर्म, तीसरे कभी गुनाह न करने का एहद। अगर गुनाह तलाफ़ी (प्रायश्चित) के क़ाबिल हो तो उसकी तलाफ़ी भी लाज़िम है। जैसे नमाज़ छोड़ने वाले की तौबह के लिये पिछली नमाज़ों का अदा करना अनिवार्य है। तौबह के बाद हज़रत ज़िब्रील ने ज़मीन के तमाम जानवरों में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त का ऐलान किया और सब पर उनकी फ़रमाँबर्दारी अनिवार्य होने का हुक्म सुनाया। सबने हुक्म मानने का इज़हार किया। (फ़तहुल अज़ीज़)

(१६) यह ईमान वाले नेक आदमियों के लिये खुशख़बरी है कि न उन्हें बड़े हिसाब के वक्त ख़ौफ़ हो और न आख़िरत में ग़म। वो बेग़म जन्नत में दाख़िल होंगे।

सूरए बकरह - पाँचवाँ रूक़

(१) इस्राईल यानी अब्दुल्लाह, यह इब्रानी ज़वान का शब्द है। यह हज़रत यक़ूब अलैहिस्सलाम का लक़ब है। (मदारिक)। कल्बी मुफ़सिर ने कहा अल्लाह तआला ने “या अय्युहन्नासोअ बुदू” (ऐ लोगो इबादत करो) फ़रमाकर पहले सारे इंसानों को आम दावत दी, फिर “इज़क़ाला रबुका” फ़रमाकर उनके मुब्दअ का ज़िक्र किया। इसके बाद खुसूसियत के साथ बनी इस्राईल को दावत दी। ये लोग यहूदी हैं और यहाँ से “सयक़ूल” तक उनसे क़लाम जारी है। कभी ईमान की याद दिलाकर दावत की जाती है, कभी डर दिलाया जाता है, कभी हुज्जत (तर्क) कायम की जाती है, कभी उनकी बदअमली पर फटकारा जाता है, कभी पिछली मुसीबतों का ज़िक्र किया जाता है।

(२) यह एहसान कि तुम्हारे पूर्वजों को फिरऔन से छुटकारा दिलाया, दरिया को फाड़ा, अब्र को सायबान किया। इनके अलावा और एहसानात, जो आगे आते हैं, उन सब को याद करो। और याद करना यह है कि अल्लाह तआला की बन्दगी और फ़रमाँबर्दारी करके शुक्र बजा लाओ क्योंकि किसी नेअमत का शुक्र न करना ही उसका भुलावा है।

(३) यानी तुम ईमान लाकर और फ़रमाँबर्दारी करके मेरा एहद पूरा करो, मैं नेक बदला और सवाब देकर तुम्हारा एहद पूरा करूँगा। इस एहद का बयान आयत : “व लक़द अख़ज़ल्लाहो भीसाका बनी इस्राईला” यानी और वेशक अल्लाह ने बनी इस्राईल से एहद लिया। (सूरए मायदा, आयत १२) में है।

(४) इस आयत में नेअमत का शुक्र करने और एहद पूरा करने के बाज़िव होने का बयान है और यह भी कि मूмин को चाहिये कि अल्लाह के सिवा किसी से न डरे।

(५) यानी कुरआने पाक और तौरात और इंजील पर, जो तुम्हारे साथ हैं, ईमान लाओ और किताब वालों में पहले काफ़िर न बनो कि जो तुम्हारे इतिबाअ (अनुकरण) में कुफ़्र करे उसका बवाल भी तुम पर हो।

(६) इन आयतों से तौरात व इंजील की वो आयतें मुराद हैं जिन में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नअत और सिफ़्त (प्रशंसा) है। मक़सद यह है कि हुज़ूर की नअत या तारीफ़ दुनिया की दौलत के लिये मत छुपाओ कि दुनिया का माल छोटी पूंजी और आख़िरत की नेअमत के मुकाबले में बे हकीक़त है।

यह आयत कअब बिन अशरफ़ और यहूद के दूसरे रईसों और उलमा के बारे में नाज़िल हुई जो अपनी क़ौम के जाहिलों और कमीनों से टके चुसूल कर लेते और उनपर सालाने मुक़रर करते थे और उन्होंने फलों और नक़द माल में अपने हक़ ठहरा लिये थे। उन्हें डर हुआ कि तौरात में जो हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नअत और सिफ़्त (प्रशंसा) है, अगर उसको जाहिर करें तो क़ौम हुज़ूर पर ईमान ले आएंगी और उन्हें कोई पूछने वाला न होगा। ये तमाम फ़ायदे और मुनाफ़े जाते रहेंगे। इसलिये उन्होंने अपनी किताबों में बदलाव किया और हुज़ूर की पहचान और तारीफ़ को बदल डाला। जब उनसे लोग पूछते कि तौरात में हुज़ूर की क्या विशेषताएं दर्ज हैं तो वो छुपा लेते और हरगिज़ न बताते। इसपर यह आयत उतरी। (श्वाज़िन क़ौरह)

(७) इस आयत में नमाज़ और ज़क़ात के फ़र्ज़ होने का बयान है और इस तरफ़ भी इशारा है कि नमाज़ों को उनके हुक्क (संस्कारों) के हिसाब से अदा करो। जमाअत (सामूहिक नमाज़) की तर्गीब भी है। हदीस शरीफ़ में है जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले पढ़ने से सत्ताईस दर्जे ज़्यादा फ़ज़ीलत (पुण्य) रखता है।

का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो हालांकि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें अक्ल नहीं^(८) (४४) और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो और बेशक नमाज़ जरूर भारी है मगर उनपर(नहीं) जो दिल से मेरी तरफ झुकते हैं^(९) (४५) जिन्हें यकीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की तरफ फिरना^(१०) (४६)

छटा रूकू

ऐ यअक़ूब की सन्तान, याद करो मेरा वह अहसान जो मैं ने तुमपर किया और यह कि इस सारे ज़माने पर तुम्हें बड़ाई दी^(१) (४७) और डरो उस दिन से जिस दिन कोई जान दूसरे का बदला न हो सकेगी^(२) और न काफिर के लिये कोई सिफ़ारिश मानी जाए और न कुछ लेकर उसकी जान छोड़ी जाए और न उनकी मदद हो^(३) (४८) और (याद करो) जब हमने तुमको फिरऔन वालों से नजात बाख़्शी (छुटकारा दिलाया)^(४) कि तुमपर बुरा अज़ाब करते थे^(५) तुम्हारे वेटों को ज़िह्न करते और तुम्हारी वेटियों को ज़िन्दा रखते^(६) और उसमें तुम्हारे रब की तरफ से बड़ी बला थी या बड़ा इनाम^(७) (४९) और जब हमने तुम्हारे लिये दरिया फ़ाड़ दिया तो तुम्हें बचा लिया और फिरऔन वालों को तुम्हारी आँखों के सामने डुबो दिया^(८) (५०) और जब हमने मूसा से चालीस रात का वादा फ़रमाया फिर उसके पीछे तुमने वछड़े

بِالْبُرُوحِ وَتَتَسَوَّنَ الْفُسُكُ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ۝ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلَاقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝ يَكُونُ لَكُمْ أَعْتَابٌ ۝ وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ نَارِي ۚ أَنُؤْمِنُ بِكَ وَالْمَوْلَىٰ ۚ وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝ وَإِذْ يَخِيفُكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُوكُمْ مُّؤَسَّسًا الْعَذَابِ يُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ ۖ مَنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝ وَإِذْ قَرَفْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَأَنجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۝ وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَىٰ أَلْبَعَيْنَ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَنَجْعَلَ لَكُمْ مِيزَانًا ۝

मज़ल

(८) यहूदी उलमा से उनके मुसलमान रिश्तेदारों ने इस्लाम के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा तुम इस दीन पर कायम रहो, हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दीन भी सच्चा और क़लाम भी सच्चा, इसपर यह आयत उतरी, एक कथन यह है कि आयत उन यहूदियों के बारे में उतरी जिन्होंने अरब मुश्रिकों को हुज़ूर के नबी होने की ख़बर दी थी और हुज़ूर का इतिबा (अनुकरण) करने की हिदायत की थी, फिर जब हुज़ूर की नबुव्वत जाहिर होगई तो ये हिदायत करने वाले हसद (ईर्ष्या) से ख़ुद काफ़िर हो गए, इसपर उन्हें फटकारा गया, (ग़्राज़िन व मदारिक)

(९) यानी अपनी ज़रूरतों में सब्र और नमाज़ से मदद चाहो, सुबहान अल्लाह, क्या पाकीज़ा तालीम है, सब्र मुसीबतों का अख़लाक़ी मुकाबला है, इन्सान इन्साफ़ और सत्यमार्ग के संकल्प पर इसके बिना कायम नहीं रह सकता, सब्र की तीन किस्में हैं -

(१) तकलीफ़ और मुसीबत पर नफ़्स को रोकना, (२) ताअत (फरमाँवरदारी) और इबादत की मशक्कतों में मुस्तक़िल (अडिग) रहना, (३) गुनाहों की तरफ़ खिंचने से तबीअत को रोकना, कुछ मुफ़सिरो ने यहाँ सब्र से रोज़ा मुराद लिखा है, वह भी सब्र का एक अन्दाज़ है, इस आयत में मुसीबत के वक़्त नमाज़ के साथ मदद की तालीम भी फ़रमाई क्योंकि वह बदन और नफ़्स की इबादत का संगम है और उसमें अल्लाह की नज़्दीकी हासिल होती है, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अहम कामों के पेश आने पर नमाज़ में मशगूल हो जाते थे, इस आयत में यह भी बताया गया कि सच्चे ईमान वालों के सिवा औरों पर नमाज़ भारी पड़ती है,

(१०) इसमें ख़ुशख़बरी है कि आख़िरत में मूमिनों की अल्लाह के दीदार की नेअमत मिलेगी,

सुरए बक्ररह - छटा रूकू

(१) अलआलमीन (सारे ज़माने पर) उसके वास्तविक या हकीक़ी मानी में नहीं, इससे मुराद यह है कि मैं ने तुम्हारे पूर्वजों को उनके ज़माने वालों पर बुजुर्गी दी, यह बुजुर्गी किसी विशेष क्षेत्र में हो सकती है, जो और किसी उम्मत की बुजुर्गी को कम नहीं कर सकती, इसी लिये उम्मत मुहम्मदिया के बारे में इरशाद हुआ "कुनुम ख़ैरा उम्मतिन" यानी तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में जाहिर हुई (सुरए आले इमरान, आयत ११०), (रुहुल बयान, जुमल बौरह)

(२) वह क़यामत का दिन है, आयत में नफ़्स दो बार आया है, पहले से मूमिन का नफ़्स, दूसरे से काफ़िर मुराद है, (मदारिक)

(३) यहाँ से रूकू के आख़िर तक दस नेअमतों का बयान है जो इन बनी इस्राईल के बाप दादा को मिलीं,

(४) क़िन्न और अमालीक की क़ौम से जो मिस्र का वादशाह हुआ, उस को फिरऔन कहते हैं, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने के फिरऔन का नाम बर्लाद बिन मुसअब बिन रैयान है, यहाँ उसी का ज़िक्र है, उसकी उम्र चार सौ बरस से ज़्यादा हुई, आले

की पूजा शुरू कर दी और तुम ज़ालिम थे^(११) (५१) फिर उसके बाद हमने तुम्हें माफ़ी दी^(१२) कि कहीं तुम अहसान मानो^(१३) (५२) और जब हमने मूसा को किताब दी और सत्य और असत्य में पहचान कर देना कि कहीं तुम राह पर आओ^(१४) (५३) और जब मूसा ने अपनी क्रौम से कहा ऐ मेरी क्रौम तुमने बछड़ा बनाकर अपनी जानों पर जुल्म किया तो अपने पैदा करने वाले की तरफ़ लौट आओ तो आपस में एक दूसरे को कत्ल करो।^(१५) यह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़्दीक तुम्हारे लिये बेहतर है तो उसने तुम्हारी तौबह कुबूल की, वेशक वही है बहुत तौबह कुबूल करने वाला मेहरबान^(१६) (५४) और जब तुमने कहा ऐ मूसा हम हरगिज़ (कदाचित्) तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे जब तक खुले बन्दों खुदा को न देख लें तो तुम्हें कड़क ने आ लिया और तुम देख रहे थे (५५) फिर मरे पीछे हमने तुम्हें ज़िन्दा किया कि कहीं तुम एहसान मानो^(१७) (५६) और हमने बादल को तुम्हारा सायवान किया^(१८) और तुमपर मन्न और सलवा उतारा, खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें^(१९) और उन्होंने कुछ हमारा न विगाड़ा, हाँ अपनी ही जानों का विगाड़ करते थे (५७) और जब हमने फ़रमाया उस वस्ती में जाओ^(२०) फिर उसमें जहां चाहो, वे रोक टोक खाओ और दरवाज़े में सजदा करते

التَّائِبِينَ

۱۱

التَّائِبِينَ

وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ۝ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَإِذْ أَنْتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمُ إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوا إِلَىٰ بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ وَإِذْ قُلْتُمْ يَبُوسَىٰ لَنْ نُّؤْمِنَ بِكَ حَتَّىٰ تَرَىٰ إِلَٰهَ جَهَنَّمَ فَاخِذْنَاكَ الصُّعْقَةَ وَأَنْتُمْ تُنْظَرُونَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَاكَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّاءَ وَالسَّلَوىٰ كُلَّوَامٍ مِنْ طَيِّبَاتِ بَارِئِكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَمَا مِنْهَا حَآئِثٌ شَعْنُمْ رَغَدًا وَأَدْخُلُوا الْبَابَ سُبْحًا

مَنْ

फ़िरऔन से उसके मानने वाले मुराद हैं. (जुमल वगैरह)

(५) अज़ाब सब बुरे होते हैं “सुअल अज़ाब” वह कहलाएगा जो और अज़ाबों से ज़्यादा सख्त हो. इसलिये आला हज़रत ने “बुरा अज़ाब” अनुवाद किया. फ़िरऔन ने बनी इस्राईल पर बड़ी बेदर्री से मेहनत व मशक्कत के दुश्वार काम लाज़िम किये थे. पत्थरों की चट्टानें काटकर ढोते ढोते उनकी कमरें गर्दन ज़ख्मी हो गई थीं. ग़रीबों पर टैक्स मुक़र्रर किये थे जो सूरज डूबने से पहले ज़बरदस्ती बुसूल किये जाते थे. जो नादार किसी दिन टैक्स अदा न कर सका, उसके हाथ गर्दन के साथ मिलाकर बाँध दिये जाते थे, और महीना भर तक इसी मुसीबत में रखा जाता था, और तरह तरह की सख्तियाँ निर्दयता के साथ की जाती थीं. (स्वाज़िन वगैरह)

(६) फ़िरऔन ने ख़्वाब देखा कि बैतुल मक़दिस की तरफ़ से आग आई उसने भिस्स को घेर कर तमाम क़िन्नियों को जला डाला, बनी इस्राईल को कुछ हानि न पहुँचाई. इससे उसको बहुत घबराहट हुई. काहिनों (तांत्रिकों) ने ख़्वाब की तअदीर (व्याख्या) में बताया कि बनी इस्राईल में एक लड़का पैदा होगा जो तेरी मौत और तेरी सल्तनत के पतन का कारण होगा. यह सुनकर फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि बनी इस्राईल में जो लड़का पैदा हो, क़त्ल कर दिया जाए. दाइयाँ छान बीन के लिये मुक़र्रर हुई. बारह हज़ार और दूसरे कथन के अनुसार सत्तर हज़ार लड़के क़त्ल कर डाले गए और नब्बे हज़ार हमल (गर्भ) गिरा दिये गये. अल्लाह की मर्ज़ी से इस क्रौम के बूढ़े जल्द मरने लगे. क़िस्ती क्रौम के सरदारों ने घबराकर फ़िरऔन से शिकायत की कि बनी इस्राईल में मौत को गर्मबाज़ारी है इसपर उनके बच्चे भी क़त्ल किये जाते हैं, तो हमें सेवा करने वाले कहाँ से मिलेंगे. फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि एक साल बच्चे क़त्ल किये जाएँ और एक साल छोड़े जाएँ. तो जो साल छोड़ने का था उसमें हज़रत हारून पैदा हुए, और क़त्ल के साल हज़रत मूसा की पैदाइश हुई.

(७) बला इन्तिहान और आज़माइश को कहते हैं. आज़माइश नेअमत से भी होती है और शिद्दत व मेहनत से भी. नेअमत से बन्दे की शुक्रगुज़ारी, और मेहनत से उसके सब्र (संयम और धैर्य) का हाल ज़ाहिर होता है. अगर “ज़ालिकुम,” (और इसमें) का इशारा फ़िरऔन के मज़ालिम (अत्याचारों) को तरफ़ हो तो बला से मेहनत और मुसीबत मुराद होगी, और अगर इन अत्याचारों से नज़ात देने की तरफ़ हो, तो नेअमत.

(८) यह दूसरी नेअमत का बयान है जो बनी इस्राईल पर फ़रमाई कि उन्हें फ़िरऔन वालों के जुल्म और सितम से नज़ात दी और फ़िरऔन को उसकी क्रौम समेत उनके सामने डुबो दिया. यहाँ आले फ़िरऔन (फ़िरऔन वालों) से फ़िरऔन और उसकी क्रौम दोनों मुराद हैं. जैसे कि “करमना बनी आदमा” यानी और वेशक हमने औलाद आदम को इज़ज़त दी (सूरए इसरा, आयत ७०) में हज़रत आदम और उनकी औलाद दोनों शामिल हैं. (जुमल). संक्षिप्त वाक़िआ यह है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से

रात में बनी इस्राईल को मिस्र से लेकर खाना हुए. सुन्न को फिरऔन उनकी खोज में भारी लश्कर ले कर चला और उन्हें दरिया के किनारे जा लिया. बनी इस्राईल ने फिरऔन का लश्कर देखकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रियाद की. आपने अल्लाह के हुक्म से दरिया में अपनी लाठी मारी, उसकी वरकत से दरिया में बारह ख़ुश्क रास्ते पैदा हो गए. पानी दीवारों की तरह खड़ा हो गया. उन दीवारों में जाली की तरह रौशनदान बन गए. बनी इस्राईल की हर जमाअत इन रास्तों में एक दूसरे की देखती और आपस में बातें करती गुजर गई. फिरऔन दरियाई रास्ते देखकर उनमें चल पड़ा. जब उसका सारा लश्कर दरिया के अन्दर आ गया तो दरिया जैसा था वैसा हो गया और तमाम फिरऔनी उसमें डूब गए. दरिया को चौड़ाई चार फरसंग थी. ये घटना बेहरे कुलज़म की है जो बेहरे फ़ारस के किनारे पर है, या बेहरे मा-वराए मिस्र की, जिसको असाफ़ कहते हैं. बनी इस्राईल दरिया के उस पार फिरऔनी लश्कर के डूबने का दृश्य देख रहे थे. यह वाक़िआ दसवीं मुहर्रम की हुआ. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उस दिन शुक्र का रोज़ा रखा. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने तक भी यहूदी इस दिन का रोज़ा रखते थे. हुज़ूर ने भी इस दिन का रोज़ा रखा और फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की विजय की ख़ुशी मनाने और उसकी शुक्र गुज़ारी करने के हम यहूदियों से ज़्यादा हक़दार हैं. इस से मालूम हुआ कि दसवीं मुहर्रम यानी आशुरा का रोज़ा सुन्नत है. यह भी मालूम हुआ कि नवियों पर जो इनाम अल्लाह का हुआ उसकी यादगार क़ायम करना और शुक्र अदा करना अच्छी बात है. यह भी मालूम हुआ कि ऐसे कामों में दिन का निश्चित किया जाना सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सुन्नत है. यह भी मालूम हुआ कि नवियों की यादगार अगर काफ़िर लोग भी क़ायम करते हों जब भी उसको छोड़ा न जाएगा.

(९) फिरऔन और उसकी क़ौम के हलाक हो जाने के बाद जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल की लेकर मिस्र की तरफ़ लौटे और उनकी प्रार्थना पर अल्लाह तआला ने तौरात अता करने का वादा फ़रमाया और इसके लिये मीकात निश्चित किया जिसकी मुदत बढ़ती-रती समेत एक माह दस दिन थी यानी एक माह ज़िलक़ाद और दस दिन ज़िलहज के. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम क़ौम में अपने भाई हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को अपना ख़लीफ़ा व जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाकर, तौरात हासिल करने तूर पहाड़ पर तशरीफ़ ले गए, चालीस रात वहाँ ठहरे. इस असे में किसी से बात न की. अल्लाह तआला ने ज़बरजद की तस्त्रियों में आप पर तौरात उतारी. यहाँ सामरी ने सोने का जवाहरात जड़ा बछड़ा बनाकर क़ौम से कहा कि यह तुम्हारा माबूद है. वो लोग एक माह हज़रत का इन्तिज़ार करके सामरी के बहकाने पर बछड़ा पूजने लगे, सिवाए हज़रत हारून अलैहिस्सलाम और आपके बारह हज़ार साथियों के तमाम बनी इस्राईल ने बछड़े की पूजा. (ख़ाज़िज़)

(१०) माफ़ी की कैफ़ियत (विवरण) यह है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तौबह की सूरत यह है कि जिन्होंने बछड़े की पूजा नहीं की है, वो पूजा करने वालों की क़त्ल करें और मुज़रिम राज़ी ख़ुशी क़त्ल हो जाएं. वो इसपर राज़ी हो गए. सुबह से शाम तक सत्तर हज़ार क़त्ल हो गए तब हज़रत मूसा और हज़रत हारून ने गिड़गिड़ा कर अल्लाह से अर्ज़ की. बही (देववाणी) आई कि जो क़त्ल हो चुके वो शहीद हुए, बाकी माफ़ फ़रमाए गए. उनमें के क़ातिल और क़त्ल होने वाले सब जन्नत के हक़दार हैं. शिर्क से मुसलमान मुर्तद (अधर्मी) हो जाता है. मुर्तद की सज़ा क़त्ल है क्योंकि अल्लाह तआला से बगावत क़त्ल और रक्तपात से भी सख़्ततर ज़ुर्म है. बछड़ा बनाकर पूजने में बनी इस्राईल के कई ज़ुर्म थे. एक मूर्ति बनाना जो हाराम है, दूसरे हज़रत हारून यानी एक नबी की नाफ़रमानी, तीसरे बछड़ा पूजकर मुश्रिक (मूर्ति पूजक) होजाना. यह जुल्म फिरऔन वालों के जुल्मों से भी ज़्यादा बुरा है. क्योंकि ये काम उनसे ईमान के बाद सरज़द हुए, इसलिये हक़दार तो इसके थे कि अल्लाह का अज़ाब उन्हें मुहलत न दे, और फ़ौरन हलाक़त से कुफ़्र पर उनका अन्त हो जाए लेकिन हज़रत मूसा और हज़रत हारून की बदौलत उन्हें तौबह का मौक़ा दिया गया. यह अल्लाह तआला की बड़ी कृपा है.

(११) इसमें इशारा है कि बनी इस्राईल की सलाहियत फिरऔन वालों की तरह वातिल नहीं हुई थी और उनकी नस्ल से अच्छे नेक लोग पैदा होने वाले थे. यही हुआ भी, बनी इस्राईल में हज़ारों नबी और नेक गुणवान लोग पैदा हुए.

(१२) यह क़त्ल उनके कफ़रारे (प्रायश्चित्त) के लिये था.

(१३) जब बनी इस्राईल ने तौबह की और प्रायश्चित्त में अपनी जातें दे दीं तो अल्लाह तआला ने हुक्म फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उन्हें बछड़े की पूजा की माफ़ी माँगने के लिये हाज़िर लाएं. हज़रत उनमें से सत्तर आदमी चुनकर तूर पहाड़ पर ले गए. वो कहने लगे- ऐ मूसा, हम आपका यकीन न करेंगे जब तक ख़ुदा को रुबरू न देख लें. इसपर आपमान से एक भयानक आवाज़ आई जिसकी हैबत से वो मर गए. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने गिड़गिड़ाकर अर्ज़ की कि ऐ मेरे रब, मैं बनी इस्राईल को क्या ज़याब दूंगा. इसपर अल्लाह तआला ने उन्हें एक के बाद एक ज़िन्दा फ़रमाया. इससे नवियों की शान मालूम होती है कि हज़रत मूसा से “लन नूमिना लका” (ऐ मूसा हम हरगिज़ तुम्हारा यकीन न लाएंगे) कहने की सज़ा में बनी इस्राईल हलाक़ किये गए. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के एहद वालों को आगाह किया जाता है कि नवियों का निरादर करना अल्लाह के प्रकोप का कारण बनता है, इससे डरते रहें. यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह तआला अपने प्यारों की दुआ से मुर्दे ज़िन्दा फ़रमा देता है.

(१४) जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़ारिग होकर बनी इस्राईल के लश्कर में पहुँचे और आपने उन्हें अल्लाह का हुक्म सुनाया कि मुल्के शाम हज़रत इब्राहीम और उनकी औलाद का मदफ़न (अन्तिम आश्रय स्थल) है, उसी में बैतुल मक़दिस है. उसको अमालिक़ा से आज़ाद कराने के लिए जिहाद करो और मिस्र छोड़कर वहीं अपना वतन बनाओ. मिस्र का छोड़ना बनी इस्राईल पर बड़ा भारी था. पहले तो वो काफ़ी आगे पीछे हुए और जब अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म से मजबूर होकर हज़रत हारून और हज़रत मूसा के साथ खाना हुए तो रास्ते में जो कठिनाई पेश आती, हज़रत मूसा से शिकायत करते. जब उस सहरा (मरुस्थल) में

दाखिल हो^(१०) और कहो हमारे गुनाह माफ़ हों हम तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे और करीब है कि नेकी वालों को और ज़्यादा दें^(११) (५८) तो ज़ालिमों ने और बात बदल दी जो फ़रमाई गई थी उसके सिवा^(१२) तो हमने आसमान से उनपर अज़ाब उतारा^(१३) बदला उनकी बे हुकमी का (५९)

सातवाँ स्कू

और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी मांगा तो हमने फ़रमाया इस पत्थर पर अपनी लाठी मारो फ़ौरन उस में से बारह चश्मे वह निकले^(१) हर समूह ने अपना घाट पहचान लिया, खाओ और पियो खुदा का दिया^(२) और ज़मीन में फ़साद उठाते न फ़िरो^(३) (६०) और जब तुम ने कहा ऐ मूसा^(४) हम से तो एक खाने पर^(५) कभी सब्र न होगा तो आप अपने सब्र से दुआ कीजिये कि ज़मीन की उगाई हुई चीज़ें हमारे लिये निकाले कुछ साग और ककड़ी और गेहूँ और मसूर और प्याज़. फ़रमाया क्या मामूली चीज़ को बेहतर के बदले मांगते हो^(६) अच्छा भिक्ष^(७) या किसी शहर में उतरो वहाँ तुम्हें मिलेगा जो तुम ने मांगा^(८) और उनपर मुकर्रर कर दी गई ख़वारी (ज़िल्लत) और नादारी^(९) (या दरिद्रता) और खुदा के मज़ब में लौटे^(१०) ये बदला था

وَقُولُوا حِطَّةٌ نَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ وَسَنَزِيدُ الْحَسَنِينَ
فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا
عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ ۝ وَإِذْ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا
اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ
عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ
رِزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ وَإِذْ
قُلْتُمْ يَبْنَوسَىٰ لَنْ نَصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا
رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُثْبِتُ الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَ
وِثَائِهَا وَفَوْمِهَا وَعَذْبًا رَاسًا وَبَصْلًا قَالَ أَسْتَبْدِلُونَ
الَّذِي هُوَ أَذَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ أَهْبِطُوا مَصْرًا فَإِنَّ
لَكُمْ مِمَّا سَأَلْتُمْ وَصُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذَّلِيلَةُ وَالسَّكَنَةُ
وَبَآءُ بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ

पहुँचे जहाँ हरियाली थी न छाया, न गल्ला साथ था. वहाँ धूप की तेज़ी और भूख की शिकायत की. अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा की दुआ से सफ़ेद बादल को उनके सरों पर छा दिया जो दिन भर उनके साथ चलता. रात की उनके लिए प्रकाश का एक सुतून (स्तम्भ) उतरता जिसकी रौशनी में काम करते. उनके कपड़े मैले और पुराने न होते, नाख़ून और बाल न बढ़ते, उस सफ़र में जो बच्चा पैदा होता उसका लिबास उसके साथ पैदा होता, जितना वह बढ़ता, लिबास भी बढ़ता.

(१५) मन्न, तरंजबीन (दलिया) की तरह एक मीठी चीज़ थी, रोज़ाना सुबह पौ फटे सूरज निकलने तक हर आदमी के लिये एक साअ के बराबर आसमान से उतरती. लोग उसको चादरों में लेकर दिन भर खाते रहते. सलवा एक छोटी चिड़िया होती है. उसको हवा लाती. ये शिकार करके खाते. दोनों चीज़ें शनिवार को विल्कुल न आतीं, बाक़ी हर रोज़ पहुंचतीं. शुक्रवार को और दिनों से दुगुनी आतीं. हुक़म यह था कि शुक्रवार को शनिवार के लिये भी ज़रूरत के अनुसार जमा करलो मगर एक दिन से ज़्यादा का न जमा करो. बनी इस्राईल ने इन नेअमतों की नाशुक्री की. भंडार जमा किये, वो सड़ गए और आसमान से उनका उतरना बन्द हो गया. यह उन्होंने अपना ही नुक़सान किया कि दुनिया में नेअमत से मेहरूम और आख़िरत में अज़ाब के हक़दार हुए.

(१६) “उस वस्ती” से बैतुल मक़दिस मुराद है या अरीहा जो बैतुल मक़दिस से करीब है, जिसमें अमालिका आबाद थे और उसको ख़ाली कर गए. वहाँ गल्ले मेवे की बहुतायत थी.

(१७) यह दर्वाज़ा उनके लिये कावे के दर्जे का था कि इसमें दाख़िल होना और इसकी तरफ़ सज़्दा करना गुनाहों के प्रायश्चित्त का कारण करार दिया गया.

(१८) इस आयत से मालूम हुआ कि ज़बान से माफ़ी मांगना और बदन की इबादत सज़्दा वग़ैरह तौबह का पूरक है. यह भी मालूम हुआ कि मशहूर गुनाह की तौबह ऐलान के साथ होनी चाहिये. यह भी मालूम हुआ कि पवित्र स्थल जो अल्लाह की रहमत वाले हों, वहाँ तौबह करना और हुक़म बजा लाना नेक फ़लों और तौबह जल्द कुशुल होने का कारण बनता है. (फ़तहूल अज़ीज़). इसी लिये बुज़ुर्गों का तरीक़ा रहा है कि नवियों और बलियों की पैदाइश की जगहों और उनके मज़ारात पर हाज़िर होकर तौबह और अल्लाह की बारगाह में सर झुकाते हैं. उर्स और दर्वाहों पर हाज़िरी में भी यही फ़ायदा समझा जाता है.

(१९) बुज़ुरी और मुस्लिम की हदीस में है कि बनी इस्राईल को हुक़म हुआ था कि दर्वाजे में सज़्दा करते हुए दाख़िल हों और ज़बान से “हित्तुन” यानी तौबह और माफ़ी का शब्द कहते जाएं. उन्होंने इन दोनों आदेशों के बिस्वद किया. दाख़िल तो हुए पर चूतड़ों के बल धिसरते और तौबह के शब्द की जगह मज़ाक़ के अंदाज़ में “हब्बतुन फ़री शअरतिन” कहा जिसके मानी हैं बाल में दादा.

(२०) यह अज़ाब ताऊन (प्लेग) था जिससे एक घण्टे में चौबीस हज़ार हलाक़ हो गए. यही हदीस की किताबों में है कि ताऊन पिछली उम्मतों के अज़ाब का शेष हिस्सा है. जब तुम्हारे शहर में फैले, वहाँ से न भागो. दूसरे शहर में हो तो ताऊन वाले शहर में न जाओ. सही हदीस में है कि जो लोग बदा के फैलने के वक़्त अल्लाह की मर्ज़ी पर सर झुकाए सब्र करें तो अगर वो बचा (महामारी)

उसका कि वो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते और नवियों को नाहक शहीद करते^(१) ये बदला उनकी नाफरमानियों और हद से बढ़ने का^(६१)

आठवाँ रूकू

वेशक ईमान वाले और यहूदियों और ईसाइयों और सितारों के पुजारियों में से वो कि सच्चे दिल से अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाएं और नेक काम करें उन का सवाब (पुण्य) उनके रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा (आशंका) हो और न कुछ गम^(६२) और जब हमने तुमसे एहद लिया^(६३) और तुमपर तुर (पहाड़) को ऊंचा किया^(६४) और जो कुछ हम तुमको देते हैं जोर से^(६५) और उसके मज़मून याद करो इस उम्मीद पर कि तुम्हें परहेज़गारी मिले^(६६) फिर उसके बाद तुम फिर गए तो अगर अल्लाह की कृपा और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम टोटे वालों में हो जाते^(६७) और बेशक ज़रूर तुम्हें मालूम है तुम में के वो जिन्होंने हफ़ते (शनिवार) में सरकशी की^(६८) तो हमने उनसे फ़रमाया कि हो जाओ बन्दर धुत्कारे हुए^(६९) तो हमने (उस बस्ती का) ये वाक़िआ (घटना) उसके आगे और पीछे वालों के लिये इबरत कर दिया और परहेज़गारों के लिये नसीहत^(७०) और जब मूसा ने अपनी क्रौम से फ़रमाया खुदा तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाय जिन्ह करो^(७१)

البقرة

١٣

القرآن

بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَ
الَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّبِيَّانَ مَن آمَنَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلُوا صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَإِذْ
أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَآ
آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ ۚ وَآذِكُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ
الَّذِينَ اعْتَدُوا مِنْكُمْ فِي الشَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا
قَوَدَةً حَسِيرِينَ ۖ فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّبَآئِنِ يَدِيهَا
وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ
لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۚ قَالُوا

سورة

से बच जाएं तो भी उन्हें शहादत का सवाब मिलेगा।

सूरए बकरह - सातवाँ रूकू

(१) जब बनी इस्राईल ने सफ़र में पानी न पाया तो प्यास की तेज़ी की शिकायत की। हज़रत मूसा को हुक्म हुआ कि अपनी लाठी पत्थर पर मारे। आपके पास एक चौकोर पत्थर था। जब पानी की ज़रूरत होती, आप उस पर अपनी लाठी मारते, उससे बारह चश्मे जारी हो जाते, और सब प्यास बुझाते। यह बड़ा मोज़िज़ा (चमत्कार) है। लेकिन नवियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुबारक उंगलियों से चश्मे जारी फ़रमाकर एक बड़ी जमाअत की प्यास और दूसरी ज़रूरतों को पूरा फ़रमाना इससे बहुत बड़ा और उत्तम चमत्कार है। क्योंकि मनुष्य के शरीर के किसी अंग से पानी की थार फूट निकलना पत्थर के मुक्काबले में ज़्यादा आश्चर्य की बात है। (ख़ाज़िन व मदारिक)

(२) पानी आसमानी ख़ाना मन्न व सलवा ख़ाओ और पत्थर के चश्मों का पानी पियो जो तुम्हें अल्लाह की कृपा से विना परिश्रम उपलब्ध है।

(३) नेअमतों के ज़िक्र के बाद बनी इस्राईल की अयोग्यता, कम हिम्मती और नाफ़रमानी की कुछ घटनाएं बयान की जाती हैं।

(४) बनी इस्राईल की यह अदा भी बहुत बेअदबी की थी कि बड़े दर्जे वाले एक नबी को नाम लेकर पुकारा। या नबी, या रसूलल्लाह या और आदर का शब्द न कहा। (फ़त्हुल अज़ीज़)। जब नवियों का ख़ाली नाम लेना बेअदबी है तो उनको मामूली आदमी और एलची कहना किस तरह गुस्ताख़ी न होगा। नवियों के ज़िक्र में ज़रा सी भी बेअदबी नाजायज़ है।

(५) 'एक ख़ाने' से एक क्रिस्म का ख़ाना मुराद है।

(६) जब वो इसपर भी न माने तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बारगाह में दुआ की, हुक्म हुआ 'इहबितू' (उतरो)।

(७) मिस्र अरबी में शहर को भी कहते हैं, कोई शहर हो और ख़ास शहर यानी मिस्र मूसा अलैहिस्सलाम का नाम भी है।

यहाँ दोनों में से एक मुराद हो सकता है। कुछ का ख़याल है कि यहाँ ख़ास शहर मुराद नहीं हो सकता। मगर यह ख़याल सही नहीं है।

(८) पानी साग, ककड़ी बग़ैरह, हालांकि इन चीज़ों की तलब गुनाह न थी लेकिन मन्न व सलवा जैसी बेमेहनत की नेअमत छोड़कर उनकी तरफ़ खिंचना तुच्छ विचार है। हमेशा उन लोगों की तबीयत तुच्छ चीज़ों ओर बातों की तरफ़ खिंची रही और हज़रत हारून और हज़रत मूसा बग़ैरह जुजुर्गी वाले बलन्द हिम्मत नवियों के बाद बनी इस्राईल की बदनसीबी और कमहिम्मती पूरी तरह ज़ाहिर हुई

और जालूत के तसल्लुत (अधिपत्य) और वस्त्रों नस्सर् की घटना के बाद तो वो बहुत ही ज़लील व ख़्वाब हो गए. इसका बयान "दुरंत अलैहिमुज्ज़ ज़िल्लतु" (और उनपर मुक़रर कर दी गई ख़्वाब और नादारी) (सूरए आले ईमरान, आयत : ११२) में है.

(९) यहूद की ज़िल्लत तो यह कि दुनिया में कहीं नाम को उनकी सल्लत नहीं और नादारी यह कि माल मौजूद होते हुए भी लालच की वजह से मोहताज ही रहते हैं.

(१०) नबियों और नेक लोगों की बदौलत जो रस्ते उन्हें हासिल हुए थे उनसे मेंह्रम हो गए. इस प्रकोप का कारण सिर्फ़ यही नहीं कि उन्होंने आसमानी मिज़ाओं के बदले ज़मीनी पैदावार की इच्छा की या उसी तरह और ख़ताएं जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में उनसे हुई, बल्कि नबुच्चत के एहद से दूर होने और लम्बा समय गुज़रने से उनकी क्षमताएं बातिल हुई और निहायत बुरे कर्म और बड़े पाप उनसे हुए. ये उनकी ज़िल्लत और ख़्वाबों के कारण बने.

(११) जैसा कि उन्होंने हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया को शहीद किया और ये क़त्ल ऐसे नाहक़ थे जिनकी वजह खुद ये कातिल भी नहीं बता सकते.

सूरए वक्ररह - आठवाँ रुकू

(१) इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम ने सदी से रिवायत की कि यह आयत हज़रत सलमान फ़ारसी (अल्लाह उनसे राज़ी हो) के साथियों के बारे में उतरी.

(२) कि तुम तौरात मानोगे और उसपर अमल करोगे. फिर तुमने उसके निर्देशों को बोझ जानकर कुबूल करने से इन्कार कर दिया. जबकि तुमने खुद अपनी तरफ़ से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से ऐसी आसमानी किताब की प्रार्थना की थी जिसमें शरीअत के क़ानून और इबादत के तरीक़े विस्तार से दर्ज़ हों. और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने तुमसे बार बार इसके कुबूल करने और इसपर अमल करने का एहद लिया था. जब वह किताब दी गई तो तुमने उसे कुबूल करने से इन्कार कर दिया और एहद पूरा न किया.

(३) बनी इस्राईल के एहद तोड़ने के बाद हज़रत जिब्रील ने अल्लाह के हुक्म से तूर पहाड़ को उठाकर उनके समूह पर लटका दिया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम एहद कुबूल करो वरना ये पहाड़ तुमपर गिरा दिया जाएगा, और तुम कुचल डाले जाओगे. वास्तव में पहाड़ का सर पर लटका दिया जाना अल्लाह की निशानी और उसकी क़ुदरत का खुला प्रमाण है. इससे दिलों को इत्मीनान हासिल होता है कि बेशक़ यह रसूल अल्लाह की कुबूल और क़ुदरत के ज़ाहिर करने वाले हैं. यह इत्मीनान उनके मानने और एहद पूरा करने का असल कारण है.

(४) यानी पूरी कोशिश के साथ.

(५) यहाँ फ़ज़ल व रहमत से या तौबह की तौफ़ीक़ मुराद है या अज़ाब में विलम्ब (देरी). एक कथन यह भी है कि अल्लाह की कृपा और रहमत से हज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पाक ज़ात मुराद है. मानी ये हैं कि अगर तुम्हें नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कुबूल (अस्तित्व) की दौलत न मिलती और आपका मार्गदर्शन नसीब न होता तो तुम्हारा अंजाम नष्ट होना और घाटा होता.

(६) इला शहर में बनी इस्राईल आवाद थे उन्हें हुक्म था कि शनिवार का दिन इबादत के लिये ख़ास कर दें, उस रोज़ शिकार न करें, और सांसारिक कारोबार बन्द रखें. उनके एक समूह ने यह चाल की कि शुक्रवार को दरिया के किनारे बहुत से गढ़े खोदते और सनीचर की सुबह को दरिया से इन गढ़ों तक नालियाँ बनाते जिनके ज़रिये पानी के साथ मछलियाँ आकर गढ़ों में फँद हो जातीं. इतवार को उन्हें निकालते और कहते कि हम मछली को पानी से सनीचर के दिन नहीं निकालते. चालीस या सत्तर साल तक यह करते रहे. जब हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की नबुच्चत का एहद आया तो आपने उन्हें मना किया और फ़रमाया कि फ़ैद करना ही शिकार है, जो सनीचर को करते हो, इससे हाथ रोको वरना अज़ाब में गिरफ़्तार किये जाओगे. वह बाज़ न आए. आपने दुआ फ़रमाई. अल्लाह तआला ने उन्हें बन्दरों की शकल में कर दिया, उनकी अक़ल और दूसरी इन्द्रियाँ (हवास) तो बाक़ी रहे, केवल बोलने की कुबूल छीन ली गई. शरीर से बदबू निकलने लगी. अपने इस हाल पर रोते रोते तीन दिन में सब हलाक़ हो गए. उनकी नस्ल बाक़ी न रही. ये सत्तर हज़ार के करीब थे. बनी इस्राईल का दूसरा समूह जो बारह हज़ार के करीब था, उन्हें ऐसा करने से मना करता रहा. जब ये न माने तो उन्होंने अपने और उनके मुहल्लों के बीच एक दीवार बनाकर अलाहिदगी कर ली. इन सबने निजात पाई. बनी इस्राईल का तीसरा समूह ख़ामोश रहा, उसके बारे में हज़रत इब्ने अब्बास के सामने अक़रमह ने कहा कि वो माफ़ कर दिये गए क्योंकि अच्छे काम का हुक्म देना फ़ज़्र किफ़ाय़ा है, कुछ ने कर लिया तो जैसे कुल ने कर लिया. उनकी ख़ामोशी की वजह यह थी कि ये उनके नसीहत मानने की तरफ़ से निराश थे. अक़रमह की यह तक्ऱीर हज़रत इब्ने अब्बास को बहुत पसन्द आई और आप खुशी से उठकर उनसे गले मिले और उनका माथा चूमा. (फ़िह्रुल अज़ीज़). इससे मालूम हुआ कि खुशी में गले मिलना रसूलुल्लाह के साथियों का तरीक़ा है. इसके लिये सफ़र से आना और जुदाई के बाद मिलना शर्त नहीं.

(७) बनी इस्राईल में आमील नाम का एक मालदार था. उसके चचाज़ाद भाई ने विरासत के लालच में उसको क़त्ल करके दूसरी बस्ती के दरवाज़े पर डाल दिया और खुद सुबह को उसके खून का दावेदार बना. वहाँ के लोगों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से विनती की कि आप दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह तआला सारी हकीक़त खोल दे. इसपर हुक्म हुआ कि एक गाय ज़िब्र करके उसका कोई हिस्सा मख़्तूल (मृतक) को मारें, वह ज़िन्दा होकर कातिल का पता देगा.

वोले कि आप हमें मसखरा बनाते हैं^(८) फ़रमाया खुदा की पनाह कि मैं जाहिलों से हूँ^(९) (६७) वोले अपने रव से दुआ कीजिये कि वह हमें बता दे गाय कैसी? कहा, वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है न बूढ़ी और न ऊसर, बल्कि उन दोनों के बीच में, तो करो जिसका तुम्हें हुक्म होता है (६८) वोले अपने रव से दुआ कीजिये हमें बता दे उसका रंग क्या है? कहा वह फ़रमाता है वह एक पीली गाय है जिस की रंगत डहडहाती, देखने वालों को खुशी देती (६९) वोले अपने रव से दुआ कीजिये कि हमारे लिये साफ़ वयान करदे वह गाय कैसी है? वेशक गावों में हमको शुबह पड़ गया और अल्लाह चाहे तो हम राह पा जाएंगे^(१०) (७०) कहा वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है जिससे खिदमत नहीं ली जाती कि ज़मीन जोते और न खेती को पानी दे. वे एव है, जिसमें कोई दाग़ नहीं. वोले अब आप ठीक बात लाए^(११), तो उसे ज़िक्क किया और ज़िक्क करते मालूम न होते थे^(१२) (७१)

नवाँ रुकू

और जब तुमने एक खून किया तो एक दूसरे पर उसकी तोहमत (आरोप) डालने लगे और अल्लाह को ज़ाहिर करना था जो तुम छुपाते थे (७२) तो हमने फ़रमाया उस मक्तूल को उस गाय का एक टुकड़ा मारो^(१) अल्लाह यूँ ही मुर्दे

النَّارِ
اَتَّخِذْ تَاهُرُوا قَالَ اَعُوذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنْ
الْجَاهِلِيْنَ قَالُوا اَدْعُ لَنَا رَبَّكَ يَبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ قَالَ
اِنَّهُ يَقُولُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِصٌ وَلَا يَكْرَهُ عَوَانُ
بَيْنَ ذَلِكَ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ قَالُوا اَدْعُ
رَبَّكَ يَبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْهَاهُ قَالَ اِنَّهُ يَقُولُ اِنَّهَا
بَقَرَةٌ صَفَرَاءُ فَاقْعَمْ لَوْنَهَا تَسْرُ النَّظِيرِينَ قَالُوا
اَدْعُ لَنَا رَبَّكَ يَبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ اِنْ الْبَقَرُ شَبَّهَ عَلَيْهَا
وَاِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُونَ قَالَ اِنَّهُ يَقُولُ اِنَّهَا
بَقَرَةٌ لَا ذَلُولٌ تُثَمِّرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ
مُسْلِمَةٌ لَا شِيَةَ فِيهَا قَالُوا لَنْ جِئْتُ بِالْحَقِّ
فَلْيَجْزِهَا وَمَا كَاذُوْنَ يَعْلَمُونَ وَاذْكُرْ لَكُمْ نَفْسًا
فَاذْرَئْهُمْ فِيْهَا وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ
فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا كَذَلِكَ يُحْيِي اللّٰهُ الْمَوْتٰى
مَنْ

(८) क्योंकि मक्तूल (मृतक) का हाल मालूम होने और गाय के ज़िक्क में कोई मुनासिबत (तअल्लुक) मालूम नहीं होती.

(९) ऐसा जवाब जो सवाल से सम्यन्ध न रखे जाहिलों का काम है. या ये मानी हैं कि मुहाकिमे (न्याय) के मौक़े पर मज़ाक़ उड़ाना या हंसी करना जाहिलों का काम है, और नबियों की शान उससे ऊपर है. बनी इस्राईल ने समझ लिया कि गाय का ज़िक्क करना अनिवार्य है तो उन्होंने अपने नबी से उसकी विशेषताएं और निशानियाँ पूछीं. हदीस शरीफ़ में है कि अगर बनी इस्राईल यह बहस न निकालते तो जो गाय ज़िक्क कर देते, काफ़ी हो जाती.

(१०) हज़ूर सैयदें आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, अगर वो इश्आअल्लाह न कहते, हरमिज़ वह गाय न पाते. हर नेक काम में इश्आअल्लाह कहना बरक़त का कारण है.

(११) यानी अब तसल्ली हुई और पूरी शान और सिफ़त मालूम हुई. फिर उन्होंने गाय की तलाश शुरू की. उस इलाक़े में ऐसी सिर्फ़ एक गाय थी. उसका हाल यह है कि बनी इस्राईल में एक नेक आदमी थे और उनका एक छोटा सा बच्चा या उनके पास सिवाए एक गाय के बच्चे के कुछ न रहा था. उन्होंने उसकी गर्दन पर मुहर लगाकर अल्लाह के नाम पर छोड़ दिया और अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ किया- ऐ रब, मैं इस बछिया की इस बेटे के लिये तेरे पास अमानत रखता हूँ. जब मेरा बेटा बड़ा हो, यह उसके काम आए. उनका तो इत्तिफ़ाल हो गया. बछिया जंगल में अल्लाह की हिफ़ाज़त में पलती रही. यह लड़का बड़ा हुआ और अल्लाह के फ़ज़्र से नेक और अल्लाह से डरने वाला, माँ का फ़रमाँवरदार था. एक रोज़ उसकी माँ ने कहा बेटे तेरे बाप ने तेरे लिये अमुक जंगल में खुदा के नाम पर एक बछिया छोड़ी है. वह अब जवान हो गई होगी. उसको जंगल से ले आ और अल्लाह से दुआ कर कि वह तुझे अता फ़रमाए. लड़के ने गाय को जंगल में देखा और माँ की बताई हुई निशानियाँ उसमें पाई और उसको अल्लाह की क़सम देकर बुलाया, वह हाज़िर हुई. जवान उसको माँ की खिदमत में लाया. माँ ने बाज़ार लेजाकर तीन दीनार में बेचने का हुक्म दिया और यह शर्त की कि सौदा होने पर फिर उसकी इज़ाज़त हासिल की जाए. उस ज़माने में गाय की कीमत उस इलाक़े में तीन दीनार ही थी. जवान जब उस गाय को बाज़ार में लाया तो एक फ़रिश्ता ख़रीदार की सूत में आया और उसने गाय की कीमत छः दीनार लगा दी, मगर इस शर्त से कि जवान माँ की इज़ाज़त का पाबन्द न हो. जवान ने ये स्वीकार न किया और माँ से यह तमाम क्रिस्ता कहा. उसकी माँ ने छः दीनार कीमत मंज़ूर करने की इज़ाज़त तो दे दी मगर सौदे में फिर दोबारा अपनी मर्ज़ी दरयाफ़्त करने की शर्त रखी. जवान फिर बाज़ार में आया. इस बार फ़रिश्ते ने बारह दीनार कीमत लगाई और कहा कि माँ को इज़ाज़त पर मौक़ूफ़ (आधारित) न रखो. जवान न माना और माँ को सूचना दी. यह समझदार थी, समझ गई कि यह ख़रीदार नहीं कोई फ़रिश्ता है जो आजमायश के लिये आता है. बेटे से कहा कि अब की बार उस ख़रीदार से यह कहना कि आप हमें इस गाय की फ़रोस्त करने का हुक्म देते हैं या नहीं. लड़के ने यही कहा. फ़रिश्ते ने जवाब दिया अभी इसको रोके रहो. जब बनी इस्राईल ख़रीदने आएंगे तो इसकी कीमत यह मुक़रर करना

ज़िन्दा करेगा और तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है कि कहीं तुम्हें अक्ल हो^(१) (७३) फिर उसके बाद तुम्हारे दिल सख्त होगए^(२) तो वह पत्थरों जैसे हैं वल्कि उनसे भी ज़्यादा करें और पत्थरों में तो कुछ वो हैं जिनसे नदियां वह निकलती हैं और कुछ वो हैं जो फट जाते हैं तो उनसे पानी निकलता है और कुछ वो हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं^(३) और अल्लाह तुम्हारे कौतुकों से वेखबर नहीं^(४) (७४) तो ऐ मुसलमानो, क्या तुम्हें यह लालच है कि यहूदी तुम्हारा यक़ीन लाएंगे और उनमें का तो एक समूह वह था कि अल्लाह का कलाम सुनते फिर समझने के बाद उसे जान बूझकर बदल देते^(५) (७५) और जब मुसलमानों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए^(६) और जब आपस में अकेले हो तो कहें वह इल्म जो अल्लाह ने तुमपर खोला मुसलमानों से वयान किये देते हो कि उससे तुम्हारे रब के यहाँ तुम्हीं पर हुज्जत (तर्क) लाएं, क्या तुम्हें अक्ल नहीं^(७) (७६) क्या नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो कुछ वो छुपाते हैं और जो कुछ वो ज़ाहिर करते हैं^(८) (७७) और उनमें कुछ अनपढ़ हैं कि जो किताब^(९) को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना^(१०) या कुछ अपनी मनघड़त और वो निरे गुमान (ध्रम) में

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَإِنْ مِنْ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنْ مِنْهَا لَمَا يَشَقَّقُ يَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ۚ وَإِنْ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَنِ الْمُتَعِمِّلِينَ ۝ أَقْطَعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَ مِنْ بَعْدِ مَا عَقِلُوا ۚ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَا بِعَضَمٍ إِلَى بَعْضٍ قَالُوا أَتَعَدُّوا نَوْمَهُمْ بِمَا فَتَمَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ وَهُمْ أَمِيُونٌ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا آمَنُوا ۚ وَإِنْ هُمْ إِلَّا

कि इसकी खाल में सोना भर दिया जाए. जवान गाय को घर लाया और जब बनी इस्राईल खोजते खोजते उसके मकान पर पहुंचे तो यही कीमत तय की और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़मानत पर वह गाय बनी इस्राईल के सुपुर्द की. इस क्रिये से कई बातें मालूम हुई. (१) जो अपने बाल बच्चों को अल्लाह के सुपुर्द करे, अल्लाह तआला उसकी ऐसी ही ऊमदा पर्वरिश फ़रमाता है. (२) जो अपना माल अल्लाह के भरोसे पर उसकी अमानत में दे, अल्लाह उसमें बरकत देता है. (३) माँ बाप की फ़रमाँबरदारी अल्लाह तआला को पसन्द है. (४) अल्लाह का फ़ैज़ (इनाम) कुर्बानी और ख़ैरात करने से हासिल होता है. (५) झुदा को राह में अच्छा माल देना चाहिये. (६) गाय की कुरबानी उच्च दर्जा रखती है. (७) बनी इस्राईल के लगातार प्रश्नों और अपनी रूखाई के डर और गाय की महंगी कीमत से यह ज़ाहिर होता था कि वो ज़िद्ध का इशारा नहीं रखते, मगर जब उनके सवाल मुनासिब जवाबों से ख़त्म कर दिये गए तो उन्हें ज़िद्ध करना ही पड़ा.

सूरए बकरह - नवाँ रूकू

(१) बनी इस्राईल ने गाय ज़िद्ध करके उसके किसी अंग से मुर्दे को मारा. वह अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा हुआ. उसके हल्क से ख़ून के फ़व्वारे जारी थे. उसने अपने चचाज़ाद भाई को बताया कि इसने मुझे क़त्ल किया है. अब उसको भी कुबूल करना पड़ा और हज़रत मूसा ने उसपर क्रिसास का हुक्म फ़रमाया और उसके बाद शरीअत का हुक्म हुआ कि क़ातिल मृतक की मीरास से मेहरूम रहेगा. लेकिन अगर इन्साफ़ वाले ने वागी को क़त्ल किया या किसी हमला करने वाले से जान बचाने के लिये बचाव किया, उसमें वह क़त्ल हो गया तो मृतक की मीरास से मेहरूम न रहेगा.

(२) और तुम समझो कि बेशक अल्लाह तआला मुर्दे ज़िन्दा करने की ताक़त रखता है और इन्साफ़ के दिन मुर्दों को ज़िन्दा करना और हिसाब लेना हकीक़त है.

(३) कुदरत की ऐसी बड़ी निशानियों से तुमने इब्रत हासिल न की.

(४) इसके बावजूद तुम्हारे दिल असर कुबूल नहीं करते. पत्थरों में अल्लाह ने समझ और शज़र दिया है, उन्हें अल्लाह का ख़ौफ़ होता है, वो तस्बीह करते हैं *इम भिन शैइन इल्ला युसबिहो बिहम्दिही* यानी काँई चीज़ ऐसी नहीं जो अल्लाह की तारीफ़ में उसकी पाकी न बोलती हो. (सूरए बनी इस्राईल, आयत ४४). मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत जाविर (अल्लाह उनसे राज़ी) से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मैं उस पत्थर को पहचानता हूँ जो मेरी नबुव्वत के इज़्ज़ार से पहले मुझे सलाम किया करता था. तिरमिज़ी में हज़रत अली (अल्लाह उनसे राज़ी) से रिवायत है कि मैं सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ मक्का के आस पास के इलाक़े में गया. जो प़ेड़ या पहाड़ सामने आता था *अस्सलामो अलैका* या *रसूलल्लाह* अर्ज़ करता था.

हैं (७८) तो खराबी है उनके लिये जो किताब अपने हाथ से लिखें फिर कह दें ये खुदा के पास से है कि इसके बदले थोड़े दाम हासिल करें (७) तो खराबी है उनके लिये उनके हाथों के लिखे से और खराबी उनके लिये उस कमाई से (७९) और बोले हमें तो आग न छुएगी मगर गिन्ती के दिन (८०) तुम फरमादो क्या खुदा से तुमने कोई एहद (वचन) ले रखा है ? जब तो अल्लाह कभी अपना एहद खिलाफ न करेगा (८१) या खुदा पर वह बात कहते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं (८०) हाँ क्यों नहीं, जो गुनाह कमाए और उसकी खता उसे घेर ले (८२) वह दोज़ख वालों में है, उन्हें हमेशा उसमें रहना (८१) और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वो जन्नत वाले हैं, उन्हें हमेशा उस में रहना (८२)

दसवाँ सूक़

और जब हमने बनी इस्राईल से एहद लिया कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो और माँ बाप के साथ भलाई करो (९) और रिश्तेदारों और यतीमों (अनाथों) और मिस्कीनों (दरिद्रों) से और लोगों से अच्छी बात कहो (१०) और नमाज़ कायम रखो और ज़कात दो, फिर तुम फिर गए (११) मगर तुम में के थोड़े (१२) और तुम मुंह फेरने वाले हो (१३) (८३)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيِّدِيْهِمْ
ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرِيَٰ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا
قُوْلُ لٰهُمْ مِمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لّٰهُمْ مِّمَّا
يَكْسِبُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَنْ نَّمَسَّنَا النَّارُ اِلَّا اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً
قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا اَنْ لَّا تُخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدًا
اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْمَلُوْنَ ۝ بَلٰى مَنْ كَسَبَ
سَيِّئَةً وَّلَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْئَتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحَابُ النَّارِ
هُمُ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
اُولٰٓئِكَ اَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَاِذْ
اٰخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْۤ اِسْرٰٓءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۝ وَاِذْ
بَاٰلُ الدِّيْنِ اِحْسٰنًا وَّذٰى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسْكِيْنَ
وَقُوْلُوْا لِلنّٰاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاَتُوْا الزّٰكٰوةَ
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝

منزل

(९) जैसे उन्होंने तौरात में क़तर ब्योंत की और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ के अल्फ़ाज़ बदल डाले।
(१०) यह आयत उन यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने में थे। इन्हे अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, यहूदी मुनाफ़िक़ जब सहाबए किराम से मिलते तो कहते कि जिसपर तुम ईमान लाए, उसपर हम भी ईमान लाए। तुम सच्चाई पर हो और तुम्हारे सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सच्चे हैं, उनका क़ौल सच्चा है। उनकी तारीफ़ और गुणगान अपनी किताब तौरात में पाते हैं। इन लोगों पर यहूद के सरदार मलामत करते थे। “ व इज़ा ख़ला बअदुहुम ” (और जब आपस में अकेले हों) में इसका बयान है। (अज़ज़िन)। इससे मालूम हुआ कि सच्चाई छुपाना और उनके कमालात का इन्कार करना यहूदियों का तरीक़ा है। आजकल के बहुत से गुमराहों की यही आदत है।

(११) किताब से तौरात मुराद है।

(८) अमानी का अर्थ है ज़बानी पढ़ लेना। यह उमनिया का बहुवचन है। हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि आयत के मानी ये हैं कि किताब को नहीं जानते मगर सिर्फ़ ज़बानी पढ़ लेना, बिना समझे (अज़ज़िन)। कुछ मुफ़ससिरो ने ये मानी भी बयान किये हैं कि “अमानी” में वो झूटी गद्दी हुई बातें मुराद हैं जो यहूदियों ने अपने विद्वानों से सुनकर बिना जांच पड़ताल किये मान ली थीं।

(९) जब सैयदे अब्बास सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीनए तैय्यिबह तशरीफ़ लाए तो यहूदियों के विद्वानों और सरदारों को यह डर हुआ कि उनकी रोज़ी जाती ग़ेगी और सरदारी मिट जाएगी क्योंकि तौरात में हुज़ूर का हुलिया (तस्वशिर) और विशेषताएं लिखी है। जब लोग हुज़ूर को इसके अनुसार पाएंगे, फ़ैरन ईमान ले आएंगे और अपने विद्वानों और सरदारों को छोड़ देंगे। इस डर से उन्होंने तौरात के शब्दों को बदल डाला और हुज़ूर का हुलिया कुछ का कुछ कर दिया। मिसाल के तौर पर तौरात में आपकी ये विशेषताएं लिखी थीं कि आप बहुत ख़ूबसूरत हैं, सुंदर बाल वाले, सुंदर आँखें सुर्मा लगी जैसी, क़द औसत (मध्यम) दर्जे का है। इसको मिटाकर उन्होंने यह बनाया कि हुज़ूर का क़द लम्बा, आँखें कंजी, बाल उलझे हुए हैं। यही आम लोगों को सुनाते, यही अल्लाह की किताब का लिखा बताते और समझते कि लोग हुज़ूर को इस हुलिये से अलग पाएंगे तो आप पर ईमान न लाएंगे। हमारे हो अस्सर में रहेंगे और हमारी कमाई में कोई फ़र्क़ नहीं आएगा।

(१०) हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि यहूदी कहते कि दोज़ख़ में वो हरगिज़ न दाख़िल होंगे मगर सिर्फ़ उतनी मुद्दत के लिये जितने असें उनके पूर्वजों ने बछड़ा पूजा था और वो चालीस दिन हैं, उसके बाद वो अज़ाब से छूट जाएंगे। इसपर यह आयत उतरी।

(११) क्योंकि झूट बड़ी बुराई है और बुराई अल्लाह की ज़ात से असम्भव। इसलिये उसका झूट तो मुमकिन नहीं लेकिन जब अल्लाह तआला ने तुमसे सिर्फ़ चालीस रोज़ अज़ाब के बाद छोड़ देने का वादा ही नहीं फ़रमाया तो तुम्हारा कहना झूट हुआ।

(१२) इस आयत में गुनाह से शिर्क़ और कुफ़्र मुराद है। और “घेर लेने” से यह मुराद है कि निजात के सारे रास्ते बन्द हो जाएं और कुफ़्र तथा शिर्क़ पर ही उसको मौत आए क्योंकि ईमान वाला चाहे कैसा हो गुनाहगार हो, गुनाहों से घिरा नहीं होता, इसलिये

और जब हमने तुमसे एहद लिया कि अपनों का खून न करना और अपनों को अपनी बस्तियों से न निकालना फिर तुमने उस का इकरार किया और तुम गवाह हो (८४) फिर ये जो तुम हो अपनों को क्रल करने लगे और अपने में से एक समूह को उनके बतन से निकालते हो उनपर मदद देते हो (उनके मुखालिफ़ या दुश्मन को) गुनाह और ज्यादती में और अगर वो कैदी होकर तुम्हारे पास आए तो बदला देकर छुड़ा लेते हो और उनका निकालना तुपर हाराम है^(६) तो क्या खुदा के कुछ हुक्मों पर ईमान लाते हो और कुछ से इन्कार करते हो ? तो जो तुम में ऐसा करे उसका बदला क्या है, मगर यह कि दुनिया में रूसवा (जलील)^(७) हो, और क्रयामत में सख़्तर अज़ाब की तरफ़ फेरे जाएंगे और अल्लाह तुम्हारे कौतुकों से बेख़बर नहीं^(८) (८५) ये हैं वो लोग जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी मोल ली, तो न उनपर से अज़ाब हल्का हो और उनकी मदद की जाए (८६)

ग्यारहवाँ रूकू

और वेशक हमने मूसा को किताव अता की^(९) और उसके बाद एक के बाद एक रसूल भेजे^(१०) और हमने मरयम के

النساء

16

النساء

وَإِذَا أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ
أَنفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تُشْهَدُونَ ۝
ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا
مِنْكُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ فَتُظَاهَرُونَ عَلَيْهِم بِالْإِلْثَمِ
وَالْعَدْوَانِ ۖ وَإِنْ يُاتُوكُمْ أُسْرَىٰ تَقْدُواهُمْ وَهُوَ
مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إخراجَهُمْ ۖ أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ
وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَاءُ مَنْ يَفْعَلُ ذَٰلِكَ
مِنْكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
يُرَدُّونَ إِلَىٰ أَشَدِّ الْعَذَابِ ۖ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ فَلَا يَخَفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ
وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ ۖ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ

مَرْيَمَ

कि ईमान जो सबसे बड़ी फ़रमावशकारी है, वह उसके साथ है।

सूरए बक्ररह - दसवाँ रूकू

(१) अल्लाह तआला ने अपनी इबादत का हुक्म फ़रमाने के बाद माँ बाप के साथ भलाई करने का आदेश दिया। इससे मालूम होता है कि माँ बाप की ख़िदमत बहुत ज़रूरी है। माँ बाप के साथ भलाई के ये मानी हैं कि ऐसी कोई बात न कहे और कोई ऐसा काम न करे जिससे उन्हें तकलीफ़ पहुंचे और अपने शरीर और माल से उनकी ख़िदमत में कोई कसर न उठा रखे। जब उन्हें ज़रूरत हो उनके पास हाज़िर रहें। अगर माँ बाप अपनी ख़िदमत के लिये नफ़ल (अतिरिक्त) इबादत छोड़ने का हुक्म दें तो छोड़ दे, उनकी ख़िदमत नफ़ल से बढ़कर है। जो काम बाज़िब (अनिवार्य) है वो माँ बाप के हुक्म से छोड़े नहीं जा सकते। माँ बाप के साथ एहसान के तरीक़े जो हदीसों से साबित हैं ये हैं कि दिल की गहराइयों से उनसे महबूत रखे, बोल चाल, उठने बैठने में अदब का ख़याल रखे, उनकी शान में आदर के शब्द कहे, उनको राज़ी करने की कोशिश करता रहे, अपने अच्छे माल को उनसे न बचाए। उनके मरने के बाद उनकी वसीयतों को पूरा करे, उनकी आत्मा की शांति के लिये दानपुन करे, कुरआन का पाठ करे, अल्लाह तआला से उनके गुनाहों की माफ़ी चाहे, हफ़्ते में कम से कम एक दिन उनकी क़ब्र पर जाए। (फ़तहल अज़ीज़)। माँ बाप के साथ भलाई करने में यह भी दाख़िल है कि अगर वो गुनाहों के आदी हों या किसी बदमज़हबी में गिरफ़्तार हों तो उनको नर्मा के साथ अच्छे रास्ते पर लाने की कोशिश करता रहे। (अज़ाज़िन)

(२) अच्छी बात से मुराद नेकियों की रुचि दिलाना और बुराइयों से रोकना है। हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि मानी ये हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में सच बात कहो। अगर कोई पूछे तो हज़ूर के कमालात और विशेषताएं सच्चाई के साथ बयान करदो और आपके गुणमत छुपाओ।

(३) एहद के बाद।

(४) जो ईमान ले आए, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथियों की तरह, तो उन्होंने एहद पूरा किया।

(५) और तुम्हारी क़ौम की आदत ही विरोध करना और एहद से फिर जाना है।

(६) तौरात में बनी इस्राईल से एहद लिया गया था कि वो आपस में एक दूसरे की क्रल न करें, बतन से न निकालें और जो बनी इस्राईल किसी की क़ैद में हो उसको माल देकर छुड़ा लें, इसपर उन्होंने इकरार भी किया, अपने नफ़स पर गवाह भी हुए लेकिन क़ायम न रहे और इससे फिर गए। मदीने के आसपास यहूदियों के दो समुदाय बनी कुज़ैज़ा और बनी नुज़ैर रहा करते थे। मदीने के अन्दर दो समुदाय औस और ख़ज़रज रहते थे। बनी कुज़ैज़ा औस के साथी थे और बनी नुज़ैर ख़ज़रज के, यानी हर एक क़बीले ने अपने

बेटे ईसा को खुली निशानियाँ अता फ़रमाई^(१) और पवित्र आत्मा^(२) से उसकी मदद की^(३) तो क्या जब तुम्हारे पास कोई रसूल वह लेकर आए जो तुम्हारे नफ़स(मन) की इच्छा नहीं, घमण्ड करते हो तो उन(नवियों) में एक गिरोह(समूह) को तुम झुटलाते हो और एक गिरोह को शहीद करते हो^(४) (८७) और यहूदी बोले हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हैं^(५) बल्कि अल्लाह ने उनपर लानत की उनके कुफ़्र के कारण तो उनमें थोड़े ईमान लाते हैं^(६) (८८) और जब उनके पास अल्लाह की वह किताब(कुरआन) आई जो उनके साथ वाली किताब(तौरात) की तस्दीक(पुष्टि) फ़रमाती है^(७) और इससे पहले वो इसी नबी के वसीले(जरिये) से काफ़िरों पर फ़तह मांगते थे^(८) तो जब तशरीफ़ लाया उनके पास वह जाना पहचाना, उस से इन्कार कर बैठे^(९) तो अल्लाह की लानत इन्कार करने वालों पर^(१०) (८९) किस बुरे मोलों उन्होंने अपनी जानों को ख़रीदा कि अल्लाह के उतारे से इन्कार करें^(११) इस जलन से कि अल्लाह अपनी कृपा से अपने जिस वन्दे पर चाहे वही(देव वाणी) उतारे^(१२) तो ग़ज़व पर ग़ज़व(प्रकोप) के सज़ावार(अधिकारी) हुए^(१३) और काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब है^(१४) (९०) और जब उनसे कहा जाए कि अल्लाह के उतारे पर ईमान लाओ^(१५) तो कहते हैं वह जो हमपर उतरा उसपर ईमान लाते हैं^(१६) और बाक़ी से इन्कार करते हैं हालांकि वह सत्य है उनके पास

مَرِيَمَ الْبَيْتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ أَفَكُلَّمَا
جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى أَنْفُسُكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ
فَقَرِينًا كَذِبًا وَقَرِينًا نَقُتُلُونَ ۝ وَقَالُوا
قُلُوبُنَا غُلْفٌ ۚ بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا
مَّا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَكِنَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى
الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ
فَلَعَنَهُ اللَّهُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ بَلَسَمَا اسْتَرَوَاهُ
أَنْفُسُهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بَغْيًا أَنْ يَنْزِلَ
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ فَكَانُوا
بِغَضَبٍ عَلَى غَضَبٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝ وَ
إِذَا قِيلَ لَهُمْ اهْنُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا تِلْكَ
أَنْزَالٌ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ ۚ وَهُوَ الْحَقُّ

مَنْزُورٌ

सहयोगी के साथ कसमाकसमी की थी कि अगर हम में से किसी पर कोई हमला करे तो दूसरा उसकी मदद करेगा, औस और ख़ज़रज आपस में लड़ते थे, बनी कुरैज़ा औस की और बनी नुज़ैर ख़ज़रज की मदद के लिये आते थे, और सहयोगी के साथ होकर आपस में एक दूसरे पर तलवार चलाते थे, बनी कुरैज़ा बनी नुज़ैर को और वो बनी कुरैज़ा को क़त्ल करते थे और उनके घर वीरान कर देते थे, उन्हें उनके रहने को जगहों से निकाल देते थे, लेकिन जब उनकी क़ौम के लोगों को उनके सहयोगी क्रोध करते थे तो वो उनको माल देकर छुड़ा लेते थे, जैसे अगर बनी नुज़ैर का कोई व्यक्ति औस के हाथों में गिरफ़्तार होता तो बनी कुरैज़ा औस को माल देकर उसको छुड़ा लेते जबकि अगर वही व्यक्ति लड़ाई के वक़्त उनके निशाने पर आ जाता तो उसके मारने में हरगिज़ नहीं झिझकते, इस बात पर मलामत को जाती है कि जब तुमने अपनों का ख़ून न बहाने और उनको बस्तियों से न निकालने और उनके कैदियों को छुड़ाने का एहद किया था तो इसके क्या मानी कि क़त्ल और ख़देइने में तो झिझको नहीं, और गिरफ़्तार हो जाएं तो छुड़ाने फिर, एहद में कुछ मानना और कुछ न मानना क्या मानी रखता है, जब तुम क़त्ल और अत्याचार से न रुक सके तो तुमने एहद तोड़ दिया और हराम किया और उसको हलाल जानकर काफ़िर हो गए, इस आयत से मालूम हुआ कि जुल्म और हराम पर मदद करना भी हराम है, यह भी मालूम हुआ कि यज़ीनी हराम को हलाल जानना कुफ़्र है, यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह की किताब के एक हुक्म का न मानना भी सारी किताब का इन्कार और कुफ़्र है, इस में यह चेतावनी है कि जब अल्लाह के निर्देशों में से कुछ का मानना कुछ का न मानना कुफ़्र हुआ तो यहूदियों का हज़रत सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम का इन्कार करने के साथ हज़रत मूसा की नबुव्वत को मानना कुफ़्र से नहीं बचा सकता,

(७) दुनिया में तो यह रुखाई हुई कि बनी कुरैज़ा सन ३ हिजरी में मारे गए, एक दिन में उनके सात सौ आदमी क़त्ल किये गये थे, और बनी नुज़ैर इससे पहले ही बतन से निकाल दिये गए थे, सहयोगियों की ख़ातिर अल्लाह के एहद के विरोध का यह बवाल था, इससे मालूम हुआ कि किसी की तरफ़दारी में दीन का विरोध करना आख़िरत के अज़ाब के अलावा दुनिया में भी ज़िल्लत और रुखाई का कारण होता है,

(८) इस में जैसे नाफ़रमानों के लिये संश्रुत फ़टकार है कि अल्लाह तआला तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं है, तुम्हारी नाफ़रमानियों पर भारी अज़ाब फ़रमाएगा, ऐसे ही ईमान वालों और नेक लोगों के लिये सुश्रुतबरी है कि उन्हें अच्छे कामों का बेहतरीन इनाम मिलेगा—(तफ़सीरी कबीर)

सूरए बकरह - ग्यारहवाँ सूकू

- (१) इस किताब से तौरात मुराद है जिसमें अल्लाह तआला के तमाम एहद दर्ज थे. सबसे अहम एहद ये थे कि हर ज़माने के नबियों की इताअत (अनुकरण) करना, उनपर ईमान लाना और उनकी ताज़ीम व तीक़ीर करना.
- (२) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक एक के बाद एक नबी आते रहे. उनकी तादाद चार हज़ार बयान की गई है. ये सब हज़रत मूसा की शरीअत के मुहाफ़िज़ और उसके आदेश जारी करने वाले थे. चूंकि नबियों के सरदार के बाद किसी को नवुबत नहीं मिल सकती, इसलिये हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शरीअत की हिफ़ाज़त और प्रचार प्रसार की ख़िदमत विद्वानों और दीन की रक्षा करने वालों की सौंपी गई.
- (३) इन विशानियों से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के भोजिजे (चमत्कार) मुराद हैं जैसे मुर्दे जिन्दा कर देना, अंधे और कोढ़ी की अच्छा कर देना, चिड़िया पैदा करना, ग़ैब की ख़बर देना वग़ैरह.
- (४) रुहिल कुदुस से हज़रत जिब्रील मुराद हैं कि रुहानी हैं, वही (देववाणी) लाते हैं जिससे दिलों की ज़िन्दगी है. वह हज़रत ईसा के साथ रहने पर मामूर थे. आप ३३ साल की उम्र में आसमान पर उठाए गए, उस वक़्त तक हज़रत जिब्रील सफ़र व सुकूनत में कभी आप से जुदा न हुए. रुहिल कुदुस की ताईद (समर्थन) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बड़ी फ़ज़ीलत है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कुछ मानने वालों को भी रुहिल कुदुस की ताईद (मदद) हासिल हुई. सही बुझारी वग़ैरह में है कि हज़रत हस्सान (अल्लाह उनसे राज़ी) के लिये मिनबर बिछाया जाता. वह नात शरीफ़ पढ़ते, हुज़ूर उनके लिये फ़रमाते "अल्लाहुम्मा अय्यिदहु बिरुहिल कुदुस" (ऐ अल्लाह, रुहिल कुदुस के ज़रिये इसकी मदद फ़रमा).
- (५) फिर भी ऐ यहूदियों, तुम्हारी सरक़शी में फ़र्क़ नहीं आया.
- (६) यहूदी, पैग़म्बरों के आदेश अपनी इच्छाओं के ख़िलाफ़ पाकर उन्हें झुटलाते और मौक़ा पाते तो क़त्ल कर डालते थे, जैसे कि उन्होंने हज़रत ज़करिया और दूसरे बहुत से अम्बिया को शहीद किया. सैयदुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पीछे भी पड़े रहे. कभी आप पर जादू किया, कभी ज़हर दिया, क़त्ल के इरादे से तरह तरह के धोखे किये.
- (७) यहूदियों ने यह मज़ाक़ उड़ाने को कहा था. उनकी मुराद यह थी कि हुज़ूर की हिदायत को उनके दिलों तक राह नहीं है. अल्लाह तआला ने इसका रद्द फ़रमाया कि अथर्मा झूठे हैं. अल्लाह तआला ने दिलों को प्रकृति पर पैदा फ़रमाया है, उनमें सच्चाई कुबूल करने की क्षमता रखी है. उनके कुफ़्र की ख़राबी है कि उन्होंने नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नवुबत का इज़्ज़ार करने के बाद इन्कार किया. अल्लाह तआला ने उनपर लअनत फ़रमाई. इसका असर है कि हक़ (सत्य) कुबूल करने की नेअमत से मेहरूम हो गए.
- (८) यह बात दूसरी जगह इशारा हुई : "बल तबअल्लाहो अलैहा बिकुफ़्रिहिम फ़ला यूमिनूना इल्ला क़लीला" यानी बल्कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र के कारण उनके दिलों पर मोहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े. (सूरए निसा, आयत ५५).
- (९) सैयदे अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नवुबत और हुज़ूर के औसाफ़ (ख़ूबियों) के बयान में. (ख़ाज़िन व तफ़सीरे कबीर)
- (१०) सैयदे अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के नबी बनाए जाने और क़ुरआन उतरने से पहले यहूदी अपनी हाज़तों के लिये हुज़ूर के नामे पाक के वसीले से दुआ करते और कामयाब होते थे और इस तरह दुआ किया करते थे - "अल्लाहुम्पतह अलैना वन्सुरना बिन्नवीयिल उम्मीये" यानी ऐ अल्लाह, हमें नबिये उम्मी के सदके में फ़तह और कामयाबी अता फ़रमा. इससे मालूम हुआ कि अल्लाह के दरबार में जो क़रीब और प्रिय होते हैं उनके वसीले से दुआ कुबूल होती है. यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर से पहले जग़त में हुज़ूर के तशरीफ़ लाने की बात मशहूर थी, उस वक़्त भी हुज़ूर के वसीले से लोगों की ज़रूरत पूरी होती थी.
- (११) यह इन्कार दुश्मनी, हसद और हुकूमत की महबूत की वजह से था.
- (१२) यानी आदमी को अपनी जान बचाने के लिये वही करना चाहिये जिससे छुटकारे की उम्मीद हो. यहूद ने यह बुरा सौदा किया कि अल्लाह के नबी और उसकी किताब के इन्कारी हो गए.
- (१३) यहूदियों की ख़्वाहिश थी कि आख़िरी नबी का पद बनी इस्माईल में से किसी को मिलता. जब देखा कि वो मेहरूम रहे और इस्माईल की औलाद की श्रेय मिला तो हसद के मारे इन्कार कर बैठे. इस से मालूम हुआ कि हसद हाराम और मेहरूमी का कारण है.
- (१४) यानी तरह तरह के ग़ज़ब और यातनाओं के हक़दार हुए.
- (१५) इससे मालूम हुआ कि ज़िल्लत और ख़ुदाई वाला अज़ाब काफ़िरों के साथ ख़ास है. ईमान वालों की गुनाहों की वजह से अज़ाब हुआ भी तो ज़िल्लत और ख़ुदाई के साथ न होगा. अल्लाह तआला ने फ़रमाया : "व लिल्लाहिल इज़ज़तु व लिरसूलिही व लिलमुमिनीना" यानी और इज़ज़त तो अल्लाह और उसके रसूल और मुरालमानों ही के लिये है मगर मुनाफ़िक़ों की ख़बर नहीं. (सूरए मुनाफ़िक़ून, आयत ८)
- (१६) इससे क़ुरआन पाक और वो तमाम किताबें मुराद हैं जो अल्लाह तआला ने उतारीं, यानी सब पर ईमान लाओ.
- (१७) इससे उनकी मुराद तौरात है.

वाली की तस्दीक (पुष्टि) फ़रमाता हुआ^(१८)। तुम फ़रमाओ कि फिर अगले नबियों को क्यों शहीद किया अगर तुम्हें अपनी किताब पर ईमान था^(१९) (९१) और बेशक तुम्हारे पास मूसा खुली निशानियाँ लेकर तशरीफ़ लाया फिर तुमने उसके बाद^(२०) बछड़े को मावूद (पूजनीय) बना लिया और तुम ज़ालिम थे^(२१) (९२) और याद करो जब हमने तुमसे पैमान (वाद) लिया^(२२) और तूर पर्वत को तुम्हारे सरो पर बलन्द किया, लो जो हम तुम्हें देते हैं जोर से और सुनो, बोले हम ने सुना और न माना और उनके दिलों में बछड़ा रच रहा था उनके कुफ़्र के कारण, तुम फ़रमादो क्या बुरा हुक्म देता है तुमको तुम्हारा ईमान अगर ईमान रखते हो^(२३) (९३) तुम फ़रमाओ अगर पिछला घर अल्लाह के नज़दीक ख़ालिस तुम्हारे लिये हो न औरों के लिये तो भला मौत की आरज़ू तो करो अगर सच्चे हो^(२४) (९४) और कभी उसकी आरज़ू न करेंगे^(२५) उन बुरे कर्मों के कारण जो आगे कर चुके^(२६) और अल्लाह ख़ूब जानता है ज़ालिमों को^(२७) (९५) और बेशक तुम ज़रूर उन्हें पाओगे, कि सब लोगों से ज़्यादा जीने की हवस रखते हैं और मुश्रिकों (मूर्तिपूजकों) से प्रत्येक को तमन्ना है कि कहीं हज़ार वरस जिये^(२८) और वह उसे अज़ाब से दूर न करेगा इतनी उम्र का दिया जाना और

الْقُرْآن 19 الْقُرْآن
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ. قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ
مِنْ قَبْلِ أَنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَى
بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ أَخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ
ظَالِمُونَ ۖ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ
الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَأَسْعُوا ۚ قَالُوا
سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأَشْرَبُوا بِقُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ
قُلْ بِشِمَاكُمُ يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيْمَانُكُمْ أَنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ
قُلْ إِنْ كُنْتُمْ كُفْرًا فَالْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةٌ
مِّنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَتَّعُوا الْبَوْتَ أَنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ
وَلَنْ يَّمُوتَ أَعْدَاؤُكُمْ قَدْ مَتَّ أَيْدِيَهُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِالظَّالِمِينَ ۖ وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَى
حَيَاتِهِ ۚ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا يَوَدُّ أَحَدُهُمْ أَنْ يُعَمَّرَ
أَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُخْرَجِهِ مِنَ الْعَذَابِ ۚ إِنَّ

- (१८) यानी तौरात पर ईमान लाने का दावा मलत है, चूंकि कुरआने पाक जो तौरात की तस्दीक (पुष्टि) करने वाला है, उसका इन्कार तौरात का इन्कार हो गया।
- (१९) इसमें भी उनकी तकज़ीब है कि अगर तौरात पर ईमान रखते तो नबियों को हरमिज़ शहीद न करते।
- (२०) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के तूर पर तशरीफ़ ले जाने के बाद।
- (२१) इसमें भी उनकी तकज़ीब है कि हज़रत मूसा की लाठी और रौशन हथेली वगैरह खुली निशानियों के देखने के बाद बछड़ा न पूजते।
- (२२) तौरात के आदेशों पर अमल करने का।
- (२३) इसमें भी उनके ईमान के दावे का झुटलाया गया है।
- (२४) यहूदियों के झूटे दावों में एक यह दावा था कि जन्नत ग़्रास उन्हीं के लिये है, इसका रद फ़रमाया जाता है कि अगर तुम्हारे सोच के मुताबिक जन्नत तुम्हारे लिये ग़्रास है, और आग़िरत की तरफ़ से तुम्हें इल्मीनान है, कर्मों की ज़रूरत नहीं, तो जन्नत की नेअमतों के मुक़ाबले में दुनिया की तकलीफ़ क्यों बर्दाश्त करते हो, मौत की तमन्ना करो कि तुम्हारे दावे की बुनियाद पर तुम्हारे लिये राहत की बात है, अगर तुमने मौत की तमन्ना न की तो यह तुम्हारे झूटे होने की दलील होगी, हदीस शरीफ़ में है कि अगर वो मौत की तमन्ना करते तो सब हलाक हो जाते और धरती पर कोई यहूदी बांकी न रहता।
- (२५) यह ग़ैब की ख़बर और चमत्कार है कि यहूदी काफ़ी ज़िद और सख्त विरोध के बावजूद मौत की तमन्ना ज़बान पर न ला सके।
- (२६) जैसे आग़िरि नबी और कुरआन के साथ कुफ़्र और तौरात में काँट छोट वगैरह, मौत की महबूत और अल्लाह से मिलने का शौक, अल्लाह के करीबी बन्दा का तरीका है, हज़रत उमर (अल्लाह उनसे राज़ी) हर नमाज़ के बाद दुआ फ़रमाते, “अल्लाहुम्मर जुन्नती शहादतन फ़ी सबीलिका व वफ़ातन दिवल्दि रसूलिका” (ऐ अल्लाह, मुझे अपने रास्ते में शहादत अता कर और अपने प्यारे हबीब के शहर में मौत दे), आम तौर से सारे बड़े सद्दावा और विशेष कर बद्र और उहद के शहीद और वैअते रिज्जान के लोग अल्लाह की राह में मौत की महबूत रखते थे, हज़रत सअद बिन अबी वक्क़ास (अल्लाह उनसे राज़ी) ने काफ़िर लश्कर के सरदार रुस्तम बिन फ़र्रुज़ज़ाद के पास जो ख़त भेजा उसमें तहरीर फ़रमाया था, “इन्ना मअना क़ौमन युहिबून मौता कमा युहिबूल अआजिमुल ख़स्रा” यानी मेरे साथ ऐसी क़ौम है जो मौत को इतना मेहबूब रखती है जितना अजमी लोग शराब को, इसमें सुन्दर इशारा था कि शराब की दूषित मस्ती की दुनिया की महबूत के दीवाने पसन्द करते हैं और अल्लाह वाले मौत को हकीकी मेहबूब से मिलने का ज़रिया समझकर चाहते हैं, सारे ईमान वाले आग़िरत की साबत रखते हैं और अगर लम्बी ज़िन्दगी की तमन्ना भी करें तो वह इसलिये

अल्लाह उनके कौतुक देख रहा है (९६)

बारहवाँ सूकू

तुम फ़रमाओ जो कोई जिब्रील का दुश्मन हो^(१) तो उस (जिब्रील) ने तो तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से यह क़ुरआन उतारा अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता और हिदायत और वशारत (ख़ुशाख़बरी) मुसलमानों को^(२) (९७) जो कोई दुश्मन हो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिब्रील और मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफ़िरों का^(३) (९८) और वेशक़ हमने तुम्हारी तरफ़ रोशन आयातें उतारी^(४) और उनके इन्कारी न होंगे मगर फ़ासिक (कुकर्मी) लोग (९९) और क्या जब कभी कोई एहद करते हैं उनमें का एक फ़रीक़ (पक्ष) उसे फेंक देता है वल्कि उन में बहुतेरों को ईमान नही^(५) (१००) और जब उनके पास तशरीफ़ लाया अल्लाह के यहां से एक रसूल^(६) उनकी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता^(७) तो किताब वालों से एक ग़िरोह (दल) ने अल्लाह की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी^(८) जैसे कि वो कुछ इल्म ही नहीं रखते (कुछ जानते ही नहीं)^(९) (१०१) और उसके मानने वाले हुए जो शैतान पढ़ा करते थे सुलैमान की सल्तनत के ज़माने में^(१०) और सुलैमान ने कुफ़्र न किया^(११) हों शैतान काफ़िर हुए^(१२) लोगों को जादू सिखाते हैं और वह (जादू) जो वाबुल में दो

يُعَمِّرُ وَاللَّهُ بِصِيرٍ لِّمَا يَعْمَلُونَ ۝ قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرًا لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ۝ وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ۝ أَوَكَلِمَا عَهْدٍ وَآعْهَدًا ثَبَدْنَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَتَجَاوَزَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبِّدْ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لِكِتَابِ اللَّهِ وَرَأَوْا ظُهُورَهُمْ لَكَاتِبِهِمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَاشْبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيْطَانُ عَلَىٰ مُلْكِ سُلَيْمَانَ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلَكِنَّ الشَّيْطَانِ كَفَرُوا يَعْلَمُونَ النَّاسُ لِلْحَافِرِ وَمَا

होती है कि नकियाँ करने के लिये कुछ और समय मिल जाए जिससे आख़िरत के लिये अच्छा तोशा ज़्यादा जमा कर सकें, अगर पिछले दिनों में गुनाह ज़्यादा हुए हैं तो उनसे तौबह और क्षमा याचना करलें, सही हदीस की किताबों में है कि कोई दुनिया की मुसीबत से परेशान होकर मौत की तमन्ना न करे और वास्तव में दुनिया की परेशानियों से तंग आकर मौत की दुआ करना सब और अल्लाह की ज़ात पर भरोसे और उसकी इच्छा के आगे सर झुका देने के ख़िलाफ़ और नाजायज़ है, (२७) मुश्रिकों का एक समूह मजूसी (आग का पुजारी) है, आपस में मिलते वक़्त इज़्रत और सलाम के लिये कहते हैं “ज़िह हज़ार साल” यानी हज़ार बरस जियो, मतलब यह है कि मजूसी मुश्रिक हज़ार बरस जीने की तमन्ना रखते हैं, यहूदी उनसे भी बढ़ गए कि उन्हें ज़िन्दगी का लालच सब से ज़्यादा है,

सूरए बक्ररह - बारहवाँ सूकू

- (१) यहूदियों के आलिम अब्दुल्लाह बिन सूरिया ने हज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा, आपके पास आसमान से कौन फ़रिश्ता आता है, फ़रमाया, जिब्रील, इन्ने सूरिया ने कहा वह हमारा दुश्मन है कि हमपर कड़ा अज़ाब उतारता है, कई बार हमसे दुश्मनी कर चुका है, अगर आपके पास मीकाईल आते तो हम आप पर ईमान ले आते,
- (२) तो यहूदियों की दुश्मनी जिब्रील के साथ बेमानी यानी बेकार है, वल्कि अगर उन्हें इन्साफ़ होता तो वो जिब्रीले अनीन से महबूब करते और उनके शुक्रगुज़ार होते कि वो ऐसी किताब लाए जिससे उनकी किताबों की पुष्टि होती है, और “बुशरा लिल मुमिनीन” (और हिदायत व वशारत मुसलमानों को) फ़रमाने में यहूदियों का रव है कि अब तो जिब्रील हिदायत और ख़ुशाख़बरी ला रहे हैं फिर भी तुम दुश्मनी से बाज़ नहीं आते,
- (३) इससे मालूम हुआ कि नबियों और फ़रिश्तों की दुश्मनी कुफ़्र और अल्लाह के ग़ज़ब का कारण है, और अल्लाह के प्यारों से दुश्मनी अल्लाह से दुश्मनी करना है,
- (४) यह आयत इन्ने सूरिया यहूदी के जवाब में उतरी, जिसने हज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि ऐ मुहम्मद, आप हमारे पास कोई ऐसी चीज़ न लाए जिसे हम महबूब करते और न आप पर कोई ख़ुली (स्पष्ट) आयत उतरी जिसका हम पालन करते,
- (५) यह आयत मालिक बिन सैफ़ यहूदी के जवाब में उतरी जब हज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यहूदियों को अल्लाह तआला के वो एहद याद दिलाए जो हज़ूर पर ईमान लाने के बारे में किये थे तो इन्ने सैफ़ ने एहद ही का इन्कार कर दिया,

फरिश्तों हासूत और मालूत पर उतरा और वो दोनों किसी को कुछ न सिखाते जब तक यह न कह लेते कि हम तो निरी आजमायश हैं तू अपना ईमान न खो^(१३) तो उनसे सीखते वह जिससे जुदाई डालें मर्द और उसकी औरत में और उस से ज़रर (हानि) नहीं पहुंचा सकते किसी को मगर खुदा के हुक्म से^(१४) और वो सीखते हैं जो उन्हें नुकसान देगा नफ़ा न देगा और वेशक ज़रूर उन्हें मालूम है कि जिसने यह सौदा लिया आखिरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं और वेशक क्या बुरी चीज़ है वह जिसके बदले उन्होंने अपनी जानें बेची किसी तरह उन्हें इल्म होता^(१५) ﴿१०२﴾ और अगर वो ईमान लाते^(१६) और परहेज़गारी करते तो अल्लाह के यहाँ का सवाब बहुत अच्छा है किसी तरह उन्हें इल्म होता^(१७) ﴿१०३﴾

तेरहवाँ स्कू

ऐ ईमान वालो^(१) "राइना" न कहो और यूँ अर्ज़ करो कि हुज़ूर हमपर नज़र रखें और पहले ही से ग़ौर से सुनो^(२) और काफ़िरो के लिये दर्दनाक अज़ाब है^(३) ﴿१०४﴾ वो जो काफ़िर हैं किताबी या मुश्रिक^(४) वो नहीं चाहते कि तुम पर कोई भलाई उतरे तुम्हारे रव के पास से^(५) और अल्लाह अपनी रहमत से ख़ास करता है जिसे चाहे और अल्लाह

أَنْزَلَ عَلَى الْمَلَائِكَةِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ
وَمَا يَعْلَمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ
فَلَا تَكْفُرْ فَيَعْلَمُونَ مِنْهُمَا مَا يَفْتَرُونَ بِهِ بَيْنَ
النِّسَاءِ وَوُجُوهِهِنَّ وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا
بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَعْلَمُونَ مَا يَصْنَعُونَ وَلَا يَنْفَعُهُمْ
وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ
خَلْقٍ شَيْءٍ وَلَيْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكُنْثَىٰ ۝ فَمِنْ
عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ لَّوْكَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انْظُرْنَا وَاسْمِعُوا
وَاللَّكْفِيرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ مَا يَوَدُّ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنْزَلَ
عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ

مَنْزِل

(६) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

(७) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तौरात और ज़बूर वगैरह की पुष्टि फ़रमाते थे और खुद इन किताबों में भी हुज़ूर के तशरीफ़ लाने को खुशख़बरी और आपके गुणों का बयान था। इसलिये हुज़ूर का तशरीफ़ लाना और आपका मुबारक अस्तित्व ही इन किताबों की पुष्टि है। तो होना यह चाहिये था कि हुज़ूर के आगमन पर पहले किताब का ईमान अपनी किताबों के साथ और ज़्यादा पक्का होता, मगर इसके विपरीत उन्होंने अपनी किताबों के साथ भी कुछ किया। सदी का कथन है कि जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो यहूदियों ने तौरात से मुकाबला करके तौरात और कुरआन को एकसा पाया तो तौरात को भी छोड़ दिया।

(८) यानी उस किताब की तरफ़ ध्यान नहीं दिया। सुफ़ियान बिन ऐनियस का कहना है कि यहूदियों ने तौरात को कीमती रेशमी कपड़ों में सोने चांदी से मढ़कर रख लिया और उसके आदेशों को न माना।

(९) इन आयतों से मालूम होता है कि यहूदियों के चार सम्प्रदाय थे। एक तौरात पर ईमान लाया और उसने उसके अहक़ाम भी अदा किये। ये भूमिनीने पहले किताब हैं। इनकी तादाद थोड़ी है। और "अक्सरोहुम" (उनमें बहुतेरों को) से उस दूसरे समुदाय का पता चलता है जिसने खुल्लम खुल्ला तौरात के एहद तोड़े, उसकी सीमाओं का उल्लंघन किया, सरकशी का रास्ता अपनाया, "नबज़ह फ़रीकुम मिह्रम" (उनमें एक पक्ष उसे फेंक देता है) में इनका ज़िक्र है। तीसरा सम्प्रदाय वह जिसने एहद तोड़ने का प्लान तो न किया लेकिन अपनी जिहालत से एहद तोड़ते रहे। उनका बयान "बल अक्सरोहुम ला यूमिनून" (बल्कि उनमें बहुतेरों को ईमान नहीं) में है। चौथे सम्प्रदाय ने ज़ाहिर में तो एहद माने और छुपवाँ विद्रोह और दुश्मनी से विरोध करते रहे। यह बनावटी तौर से जाहिल बनते थे। "कअन्नहुम ला यालमून" (मानो वो कुछ इल्म ही नहीं रखते) में उनका चर्चा है।

(१०) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के ज़माने में बनी इस्राईल जादू सीखने में मशगूल हुए तो आपने उनको इससे रोका और उनकी किताबें लेकर अपनी कुर्सी के नीचे दफ़न कर दीं। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को वफ़ात के बाद शैतानों ने वो किताबें निकाल कर लोगों से कहा कि सुलैमान इसी के जोर से सल्तनत करते थे। बनी इस्राईल के आलिमों और नेक लोगों ने तो इसका इनकार किया मगर जाहिल लोग जादू को हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का इल्म बताकर उसके सीखने पर दूट पड़े। नवियों की किताबें छोड़ दीं और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम पर लांछन शुरू की। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने तक इसी हाल पर रहे। अल्लाह तआला ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की सफ़ाई के लिये हुज़ूर पर यह आयत उतारी।

(११) क्योंकि वो नबी हैं और नबी कुछ से बिल्कुल मासूम होते हैं, उनकी तरफ़ जादू की निस्वत करना बातिल और ग़लत है, क्योंकि जादू का कुफ़्रियात से ख़ाली होना लगभग असम्भव है।

(१२) जिन्होंने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम पर जादूगरी का झूठा इल्ज़ाम लगाया...

बड़े फ़ज़ल (अनुकम्पा) वाला है (१०५) जब कोई आयत हम मन्सूख (निरस्त) फ़रमाएँ या भुला दें (१०६) तो उससे बेहतर या उस जैसी ले आएंगे, क्या तुझे ख़बर नहीं कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है (१०६) क्या तुझे ख़बर नहीं कि अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की बादशाही और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई हिमायती न मददगार (१०७) क्या यह चाहते हो कि अपने रसूल से वैसा सवाल करो जो मूसा से पहले हुआ था (१०८) और जो ईमान के बदले कुफ़्र लें (१०८) वह ठीक रास्ता बहक गया (१०८) बहुत कितावियों ने चाहा (१०९) काश तुम्हें ईमान के बाद कुफ़्र की तरफ़ फेर दें अपने दिलों की जलन से (१०९) बाद इसके कि हक़ उनपर ख़ूब ज़ाहिर हो चुका है, तो तुम छोड़ो और दरगुज़र (क्षमा) करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (शक्तिमान) है (१०९) और नमाज़ कायम रखो और ज़कात दो (११०) और अपनी जानों के लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे बेशक अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है (११०) और किताब वाले

الْبَصِيرَةِ
۲۲
الْبَصِيرَةِ
مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ مَا نَسْنَسُ مِنْ
آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلَهَا ۚ أَلَمْ تَعْلَمْ
أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ
اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ
دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ أَمْ تَرِيدُونَ أَنْ
تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سَأَلَ مُوسَى مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ
يَتَّبِعِلْ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝
وَذَكَرْنَا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُونَ نُكُودًا مِنْ بَعْدِ إِيْمَانِهِمْ
كُفْرًا ۚ حَسَدًا ۚ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ ۚ مِنْ بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا ۚ حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهَ
بِأَمْرٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَاقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَأَتُوا الزَّكَاةَ ۚ وَمَا تَقَدَّمَا لَكُمْ مِنَ الْأَنْفُسِ ۚ وَمِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ
عِنْدَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَقَالُوا

مَنْ

- (१३) यानी जादू सीख कर और उसपर अमल और विश्वास करके और उसको दुरुस्त जान कर काफ़िर न बन. यह जादू फ़रमाविरदार और नाफ़रमान के बीच अन्तर जानने और परखने के लिये उतरा. जो इसको सीखकर इसपर अमल करे, काफ़िर हो जाएगा. शर्त यह है कि जादू में ईमान के विरुद्ध जो बातें और काम हों और जो उससे बचे, न सीखे या सीखे और उसपर अमल न करे और उसके कुफ़्रियात पर विश्वास न रखे वह मुमिन रहेगा, यही इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी का कहना है. जो जादू कुफ़्र है उसपर अमल करने वाला अगर मर्द है, कत्ल कर दिया जाएगा. जो जादू कुफ़्र नहीं, मगर उससे जानें हलाक की जाती हैं, उसपर अमल करने वाला तरीक़े को काटने वालों के हुक्म में है, मर्द हो या औरत. जादूगर की तौबत कुबूल है. (मदारिक)
- (१४) इससे मालूम हुआ कि असली असर रखने वाला अल्लाह तआला है. चीज़ों की तारीफ़ उसी की मर्जी पर है.
- (१५) अपने अंजामेकार और अज़ाब के कड़ेपन का.
- (१६) हज़रत सैयदे कायनात सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और कुरआने पाक पर.

सूरए बक्ररह - तेरहवाँ सूक़

- (१) जब हुज़ुरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने सहाबा को कुछ बताते या सिखाते तो वो कभी कभी बीच में अर्ज़ किया करते “राइना या रसूलल्लाह”. इसके मानी ये थे कि या रसूलल्लाह हमारे हाल की रिआयत कीजिये, यानी अपनी बातों को समझने का मौक़ा दीजिये. यहूदियों की ज़बान में यह कलिमा तौहीन का अर्थ रखता था. उन्होंने ने उस नियत से कहना शुरू किया. हज़रत सअद बिन मआज़ यहूदियों की बोली के जानकार थे. आपने एक दिन उनकी ज़बान से यह कलिमा सुनकर फ़रमाया, ऐ अल्लाह के दुश्मनो, तुम पर अल्लाह की लअनत. अगर मैं ने अब किसी की ज़बान से यह कलिमा सुना तो उसकी गर्दन मार दूंगा. यहूदियाँ ने कहा, हमपर तो आप गर्म होते हैं, मुसलमान भी तो यही कहते हैं. इसपर आप रंजीदा होकर अपने आका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे कि यह आपत उतरी, जिसमें “राइना” कहने को मना कर दिया गया और इस मतलब का दूसरा लफ़ज़ “उन्नुरना” कहने का हुक्म हुआ. इससे मालूम हुआ कि नवियों का आदर सत्कार और उनके समक्ष अदब की बात बोलना फ़र्ज़ है, और जिस बात में ज़रा सी भी हतक या तौहीन का संदेह हो उसे ज़बान पर लाना मना है.
- (२) और पूरी तरह कान लगाकर ध्यान से सुनो ताकि यह अर्ज़ करने की ज़रूरत हो न रहे कि हुज़ुर तबज़ुह फ़रमाएँ, क्योंकि नबी के दरबार का यही अदब है. नबीयों के दरबार में आदमी को अदब के ऊंचे सूखों का लिहाज़ अनिवार्य है.
- (३) “लिल काफ़िरीन” (और काफ़िरों के लिये) में इशारा है कि नवियों की शान में बेअदबी कुफ़्र है.
- (४) यहूदियों की एक जमाअत मुसलमानों से दोस्ती और शुभेच्छा ज़ाहिर करती थी. उसको झुटलाने के लिये यह आयत उतरी

मुसलमानों को बताया गया कि काफिर दोस्ती और शुभेच्छा के दावे में झूठे हैं (जुमल)

(५) यानी काफिर पहले किताब और मुश्किन दोनों मुसलमानों से दुश्मनी और कटुता रखते हैं और इस दुश्मि में है कि उनके नबी मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को पैगम्बरी और वही (देववाणी) अता हुई और मुसलमानों को यह बड़ी नेअमत मिली। (श्राज़िन वगैरह)

(६) कुरआने करीम ने पिछली शरीअतों और पहली किताबों को मन्सूख यानी स्थगित फ़रमाया तो काफिरों को बड़ी घबराहट हुई और उन्होंने इसपर ताना किया। तब यह आयत उतरी और बताया गया कि जो स्थगित हुआ वह भी अल्लाह की तरफ़ से था और जिसने स्थगित किया (यानी कुरआन), वह भी अल्लाह को तरफ़ से है। और स्थगित करने वाली चीज़ कभी स्थगित होने वाली चीज़ से ज्यादा आसान और नफ़ा देने वाली होती है। अल्लाह की क़ुदरत पर ईमान रखने वाले को इसमें शक़ करने की कोई जगह नहीं है। कायनात (सृष्टि) में देखा जाता है कि अल्लाह तआला दिन से रात को, गर्मी से ठण्डी की, ज़बानी को बचपन से, बीमारी को तंदुरुस्ती से, बहार से पतझड़ की स्थगित फ़रमाता है। यह तमाम बदलाव उसकी क़ुदरत के प्रमाण हैं। तो एक आयत और एक हुक्म के स्थगित होने में क्या आश्चर्य। स्थगन आदेश दरअसल पिछले हुक्म की मुद्दत तक के लिये था, और उस समय के लिये बिल्कुल मुनासिब था। काफिरों की नासमझी कि स्थगन आदेश पर ऐतिराज़ करते हैं और पहले किताब का ऐतिराज़ उनके अक्कीदों के लिहाज़ से भी ग़लत है। उन्हें हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की शरीअत के आदेश का स्थगन मानना पड़ेगा। यह मानना ही पड़ेगा कि सनीचर के दिन दुनिया के काम उनसे पहले ह़राम नहीं थे, यह भी इज़रार करना होगा कि तौरात में हज़रते नूह को उम्मत के लिये तमाम चौपाए हलाल होना बयान किया गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर बहुत से चौपाए ह़राम करदिये गए। इन बातों के होते हुए स्थगन आदेश का इन्कार किस तरह सम्भव है।

जिस तरह एक आयत दूसरी आयत से स्थगित होती है, उसी तरह हदीसे मुतवातिर से भी होती है। स्थगन आदेश कभी सिर्फ़ हुक्म का, कभी तिलावत और हुक्म दोनों का। बेहक़ी ने अबू इमामा से रिवायत की कि एक अन्सारी सहाबी रात को तहज्जुद के लिये उठे और सूरत फ़ातिहा के बाद जो सूरत हमेशा पढ़ा करते थे उसे पढ़ना चाहा लेकिन वह बिल्कुल याद न आई और बिस्मिल्लाह के सिवा कुछ न पढ़ सके। सुबह को दूसरे सहाबा से इसका ज़िक्र किया। उन हज़रत ने फ़रमाया हमारा भी यही हाल है। वह सूरत हमें भी याद थी और अब हमारी याददाश्त में भी न रही। सबने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में वाकिआ अर्ज़ किया। हुज़ूर ने फ़रमाया आज रात वह सूरत उठा ली गई: उसका हुक्म और तिलावत दोनों स्थगित हुए। जिन कामज़ों पर वह लिखी हुई थी उनपर निशान तक बाक़ी न रहे।

(७) यहूदियों ने कहा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) हमारे पास आप ऐसी किताब लाइये जो आसमान से एक साथ उतरे। उनके बारे में यह आयत नाज़िल हुई।

(८) यानी जो आयतें उतर चुकी हैं उनके कुबूल करने में बेजा (बर्थ) बहस करे और दूसरी आयतें तलब करे। इससे मालूम हुआ कि जिस सवाल में ख़राबी हो उसे वुजुर्गा के सामने पेश करना जायज़ नहीं और सबसे बड़ी ख़राबी यह कि उससे नाफ़रमानी ज़ाहिर होती हो।

(९) उहद को जंग के बाद यहूदियों की जमाअत ने हज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान और अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहो अन्हुमा से कहा कि अगर तुम हक़ पर होते तो तुम्हें हार न होती। तुम हमारे दीन को तरफ़ वापस आ जाओ। हज़रत अम्मार ने फ़रमाया तुम्हारे नज़दीक एहद का तोड़ना कैसा है? उन्होंने कहा, निहायत बुरा। आपने फ़रमाया, मैं ने एहद किया है कि ज़िन्दगी के अन्तिम क्षण तक सैयदे आलम मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से न फ़िर्क़ा और क़ुफ़्र न अपनाऊंगा और हज़रत हुज़ैफ़ा ने फ़रमाया, मैं राज़ी हुआ अल्लाह कं रब होने, मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रसूल होने, इस्लाम के दीन होने, कुरआन के ईमान होने, काबे के क़िबला होने और मूमिनीन के भाई होने से। फिर ये दोनों सहाबी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपको वाक़ए की ख़बर दी। हुज़ूर ने फ़रमाया तुमने बेहतर किया और भलाई पाई। इसपर यह आयत उतरी।

(१०) इस्लाम की सच्चाई जानने के बाद यहूदियों का मुसलमानों के काफ़िर और मुर्तद होने की तमन्ना करना और यह चाहना कि वो ईमान से मेहलूम हो जाएं, हसद के कारण था। हसद बड़ी बुराई है। हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया हसद से बचो वह नेकियों को इस तरह खाता है जैसे आग सूखी लकड़ी को। हसद ह़राम है। अगर कोई शरय्य अपने माल व दौलत या असर और प्रभाव से गुमराही और बेदीनी फैलाता है, तो उसके फ़ितने से मेहफूज़ रहने के लिये उसको हासिल नेअमतों के छिन जाने की तमन्ना हसद में दाख़िल नहीं और ह़राम भी नहीं।

(११) ईमान वालों को यहूदियों से बचने का हुक्म देने के बाद उन्हें अपने नफ़्स की इस्लाह की तरफ़ ध्यान दिलाता है।

बोले हरगिज़ जन्नत में न जाएगा मगर वह जो यहूदी या ईसाई हो^(१२) ये उनकी खयालबंदियां हैं, तुम फ़रमाओ लाओ अपनी दलील^(१३) अगर सच्चे हो^(१३१) हाँ क्यों नहीं जिसने अपना मुंह झुकाया अल्लाह के लिये और वह नेकी करने वाला है^(१४) तो उसका नेग उसके रब के पास है, और उन्हें न कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म^(१५) ^(१३२)

चौदहवाँ सूक़

और यहूदी बोले नसरानी (ईसाई) कुछ नहीं और नसरानी बोले यहूदी कुछ नहीं^(१) हालांकि वो किताब पढ़ते हैं^(२) इसी तरह जाहिलों ने उनकी सी बात कही^(३) तो अल्लाह क़यामत के दिन उनमें फैसला कर देगा जिस बात में झगड़ रहे हैं^(१३३) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन^(४) जो अल्लाह की मस्जिदों को रोके उनमें खुदा का नाम लिये जाने से^(५) और उनकी वीरानी में कोशिश करे^(६) उनको न पहुंचता था कि मस्जिदों में जाएं मगर डरते हुए उनके लिये दुनिया में रूखाई है^(७) और उनके लिये आखिरत में बड़ा अज़ाब^(८) ^(१३४) और पूरव पश्चिम सब अल्लाह ही का है तो तुम जिंघर मुंह करो उधर बज्हुल्लाह (खुदा की रहमत तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जेह)

لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا أَوْ نَصْرًا
تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝ بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصْرَةُ عَلَىٰ
شَيْءٍ ۝ وَقَالَتِ النَّصْرَةُ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ ۝
وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ
مِثْلَ قَوْلِهِمْ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسْجِدَ
اللَّهِ أَنْ يُذَكَّرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَطُ فِي خُرَابِهِمْ أُولَٰئِكَ
مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ لَهُ لَّهُمْ فِي
الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝
وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ فَأَيُّمَا تَوْلَا فَأَتَمُّ وَجْهَهُ

منزل

(१२) यानी यहूदी कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ़ वही दाख़िल होंगे, और ईसाई कहते हैं कि फ़क़त ईसाई जाएंगे, और ये मुसलमानों को दीन से हटाने के लिये कहते हैं, जैसे स्थगन आदेश वगैरह के कुछ संदेह उन्होंने इस उम्मीद पर पेश किये थे कि मुसलमानों को अपने दीन में कुछ संदेह हो जाए, इसी तरह उनको जन्नत से मायूस करके इस्लाम से फेरने की कोशिश करते हैं, चुनावे पारा के अन्त में उनका यह कथन दिया हुआ है “वक़ालू क़ूनू हूदन ओ नसारा तहतदू” (यानी और किताब वाले बोले यहूदी या ईसाई हो जाओ, राह पा जाओगे), अल्लाह तआला उनके इस बातिल ख़याल का रद्द फ़रमाता है,

(१३) इस आयत से मालूम हुआ कि इन्कार का दावा करने वाले को भी दलील या प्रमाण लाना ज़रूरी है, इसके बिना दावा बातिल और झूठ होगा,

(१४) चाहे किसी ज़माने, किसी नरत, किसी क़ौम का हो,

(१५) इसमें इशारा है कि यहूदी और ईसाईयाँ का यह दावा कि जन्नत के फ़क़त वही मालिक हैं, बिल्कुल ग़लत है, क्योंकि जन्नत में दाख़िला सही अक़ीदे और नेक क़र्माँ पर आधारित है, और यह उनको उपलब्ध नहीं,

सूरए बक़रह - चौदहवाँ सूक़

(१) नजरान के ईसाईयाँ का एक दल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में आया तो यहूदी उलमा भी आए और दोनों में मुनाज़िरा यानी वार्तालाप शुरू हो गया, अन्वार्ज़ बलन्द हुई, शोर मचा, यहूदियों ने कहा कि ईसाईयाँ का दीन कुछ नहीं और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और इन्जील शरीफ़ का इन्कार किया, इसी तरह ईसाईयाँ ने यहूदियों से कहा कि तुम्हारा दीन कुछ नहीं और तौरात शरीफ़ और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का इन्कार किया, इस बात में यह आयत उतरी,

(२) यानी जानकारी के बावज़ूद उन्होंने ऐसी जिहालत की बात की, हालांकि इन्जील शरीफ़ जिसको ईसाई मानते हैं, उसमें तौरात शरीफ़ और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के नबी होने की पुष्टि है, इसी तरह तौरात जिसे यहूदी मानते हैं, उसमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नबी होने और उन सारे आदेशों की पुष्टि है जो आपको अल्लाह तआला की तरफ़ से अता हुए,

(३) किताब वालों के उलमा की तरह उन जाहिलों ने जो इल्म रखते थे न किताब, जैसे कि मूर्तिपूजक, आग के पुजारी, वगैरह, उन्होंने हर एक दीन वाले को झुटलाना शुरू किया, और कहा कि वह कुछ नहीं, इन्हीं जाहिलों में से अरब के मूर्तिपूजक मुश्किन भी हैं, जिन्होंने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके दीन की शान में ऐसी ही बातें कहीं,

(४) यह आयत बैतुल मक़दिस की बेहुरमती या निरादर के बारे में उतरी, जिसका मुख़्तसर वाकिआ यह है कि रोम के ईसाईयाँ ने बनी इसाईल पर चढ़ाई की, उनके सूरमाओं को क़त्ल किया, औरतों बच्चों की क़ैद किया, तौरात शरीफ़ को जलाया, बैतुल

है वेशक अल्लाह वुसअत (विस्तार) वाला इल्म वाला है (११५) और बोले खुदा ने अपने लिये औलाद रखी, पाकी है उसे (१) वल्कि उसीकी मिल्क (संपत्ति) है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है (१०) सब उसके हुज़ूर (प्रत्यक्ष) गर्दन डाले हैं (११६) नया पैदा करने वाला आसमानों और ज़मीन का (११) और जब किसी बात का हुक्म फ़रमाए तो उससे यही फ़रमाता है कि हो जा और वह फ़ौरन हो जाती है (१२) (११७) और जाहिल बोले (१३) अल्लाह हम से क्यों नहीं कलाम करता (१४) या हमें कोई निशानी मिले (१५) उनसे अगलों ने भी ऐसी ही कही उनकी सी बात. उनके दिल एक से हैं (१६) वेशक हमने निशानियाँ खोल दीं यकीन वालों के लिये (१७) (११८) वेशक हमने तुम्हें हक़ के साथ भेजा खुशख़बरी देता और डर सुनाता और तुमसे दोज़ख़ वालों का सवाल न होगा (१८) (११९) और कभी तुमसे यहूदी और नसारा (ईसाई) राज़ी न होंगे जबतक तुम उनके दीन का अनुकरण न करो (१९) तुम फ़रमाओ अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है (२०) और (ऐ सुनने वाले, कोई भी हो) अगर तू उनकी ख़्वाहिशों पर चलने वाला हुआ बाद इसके कि तुझे इल्म आचुका तो अल्लाह से तेरा कोई वचाने वाला न होगा और न मददगार (२१) (१२०) जिन्हें हमने किताब दी है वो जैसी

اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ سُبْحَنَهُ ۚ بَلْ لَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ ۚ كُلٌّ لَّهُ قِصَّةٌ ۚ فَنُتَوْنَ ۚ بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ ۚ وَإِذَا قُضِيَ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ ۚ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ ۚ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا بِأَحْقَقِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَلَا تَسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ۝ وَلَنْ نَرْضَىٰ عَنْكَ الْيَهُودَ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۚ قُلْ إِنَّ هُدَىٰ اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۚ وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۚ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَكِيلٍ ۚ وَلَا تَتَّبِعِ الْآيَاتِ

مَزْلُ

मक़दिस को वीरान किया; उसमें गन्दगी डाली, सुपर जिवह किये (मआज़ल्लाह). बैतुल मक़दिस हज़रत उमरे फ़ारूक की ख़िलाफ़त तक इसी वीरानी में पड़ा रहा. आपके एहदे मुबारक (समयकाल) में मुसलमानों ने इसको नए सिरे से बनाया. एक क़ौल यह भी है कि यह आयत मक्का के मुशिकों के बारे में उतरी, जिन्होंने इस्लाम की शुरुआत में हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके साथियों को काबे में नमाज़ पढ़ने से रोका था, और हुदैबिया को जंग के वक्त उसमें नमाज़ और हज़ से मना किया था. (५) ज़िक्र नमाज़, ख़ुल्वा, तख़वीह, वअज़, नअत शरीफ़, सबको शामिल है. और अल्लाह के ज़िक्र को मना करना हर जगह बुरा है, ख़ासकर मस्जिदों में, जो इसी काम के लिये बनाई जाती हैं. जो शरय्स मस्जिद को ज़िक्र और नमाज़ से महरूम कर दे, वह मस्जिद का वीरान करने वाला और बहुत बड़ा ज़ालिम है. (६) मस्जिद की वीरानी जैसे ज़िक्र और नमाज़ के रोकने से होती है, ऐसे ही उसकी इमारत को नुक़सान पहुंचाने और निरादर करने से भी. (७) दुनिया में उन्हें यह रुखाई पहुंची कि क़त्ल किये गए, गिरफ़्तार हुए, बदन से निकाले गए. ख़िलाफ़ते फ़ारूकी और उस्मानी में मुल्के शाम उनके क़ब्ज़े से निकल गया, बैतुल मक़दिस में ख़िल्लत के साथ निकाले गए. (८) सहाब किराम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ एक अंधेरी रात सफ़र में थे. क़िबले को दिशा मालूम न हो सकी. हर एक शरय्स ने जिस तरफ़ उस का दिल जमा, नमाज़ पढ़ी. सुबह को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाल अर्ज़ किया तो यह आयत उतरी. इससे मालूम हुआ कि क़िबले की दिशा मालूम न हो सके तो जिस तरफ़ दिल जमे कि यह क़िबला है, उसी तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़े. इस आयत के उतरने के कारण के बारे में दूसरा क़ौल यह है कि यह उस मुसाफ़िर के हक़ में उतरी, जो सवारी पर नफ़ल अदा करे, उसकी सवारी जिस तरफ़ मुंह फेर ले, उस तरफ़ उसकी नमाज़ दुरुस्त है. बख़्तग़ारी और मुस्लिम की हदीसों से यह साबित है. एक क़ौल यह है कि जब क़िबला बदलने का हुक्म दिया गया तो यहूदियों ने मुसलमानों पर ताना किया. उनके रद में यह आयत उतरी. बताया गया कि पूर्व पश्चिम सब अल्लाह का है, जिस तरफ़ चाहे क़िबला निश्चित करे. किसी को एतिराज़ का क्या हक़? (ख़ाज़िन). एक क़ौल यह है कि यह आयत दुआ के बारे में उतरी है. हुज़ूर से पूछा गया कि किस तरफ़ मुंह करके दुआ की जाए. इसके जवाब में यह आयत उतरी. एक क़ौल यह है कि यह आयत हक़ से ग़ुरेज़ व फ़रार में है. और “ऐनमा तुबल्लू” (तुम जिधर मुंह करो) का ख़िताब उन लोगों को है जो अल्लाह के ज़िक्र से रोकते और मस्जिदों की वीरानी की कोशिश करते हैं. वो दुनिया की रुसवाई और आख़िरत के अज़ाब से कहीं भाग नहीं सकते, क्योंकि पूरब पश्चिम सब अल्लाह का है, जहाँ भागेंगे, वह गिरफ़्तार फ़रमाएगा. इस संदर्भ में “बहुल्लाह” का मतलब खुदा का कुर्ब और हुज़ूर है. (फ़रह). एक क़ौल यह भी है कि मानी यह है कि अगर काफ़िर ख़ाने काबा में नमाज़ से मना करें तो तुम्हारे लिये भारी ज़मीन मस्जिद बना दी गई है, जहाँ से चाहे क़िबले की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ो.

चाहिये उसकी तिलावत(पाठ) करते हैं वही उसपर ईमान रखते हैं और जो उसके इन्कारी हों तो वही घाटे वाले हैं(१२१) (१२२)

पंद्रहवाँ सूक़

ऐ यअक़ूब की सन्तान, याद करो मेरा एहसान जो मैं ने तुमपर किया और वह जो मैंने उस ज़माने के सब लोगों पर तुम्हें बढ़ाई दी(१२२) और डरो उस दिन से कि कोई जान दूसरे का बदला न होगी और न उसको कुछ लेकर छोड़ें और न काफ़िर को कोई सिफ़ारिश नफ़ा दे(१) और न उनकी मदद हो(१२३) और जब(२) इब्राहीम को उसके रब ने कुछ बातों से आजमाया(३) तो उसने वो पूरी कर दिखाई(४) फ़रमाया मैं तुम्हें लोगों का पेशवा बनाने वाला हूँ अर्ज़ की मेरी औलाद से, फ़रमाया मेरा एहद ज़ालिमों को नहीं पहुंचता(५) (१२४) और याद करो जब हमने उसे घर को(६) लोगों के लिये मरजअ(शरण स्थल) और अमन बनाया(७) और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ(८) और हमने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि मेरा घर ख़ूब सुधरा करो तवाफ़ वालों(परिक्रमा वालों) और एतिकाफ़ वालों(मस्जिद में बैठने वालों) और सूक़ व सिजदे वालों के लिये(१२५) और जब अर्ज़ की

الْقُرْآن

४०

الْقُرْ

أَتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلْكَ وَأُولَئِكَ
يُؤْمِنُونَ بِهِ ، وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْخَاسِرُونَ ۝ يٰبَنِي إِسْرَءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ
الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝
وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا
يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ۝ وَإِذْ ابْتَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ رَبُّهُ بِكَلِمَاتٍ فَأَتَتْهُنَّ
قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي
قَالَ لَا يَبْتَالُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ ۝ وَإِذْ جَعَلْنَا
الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَاتَّخِذُوا مِن
مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى وَعَهِدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَ
إِسْمَاعِيلَ أَنَّ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ
وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ۝ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ

مَنْزِلًا

(१) यहूदियों ने हज़रत उज़ैर को और ईसाईयों ने हज़रत मसीह को ख़ुदा का बेटा कहा. अरब के मुश्रिकीन ने फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ बताया. उनके रद में यह आयत उतरी. फ़रमाया 'सुन्नानह' वह पाक है इससे कि उसके औलाद हो. उसकी तरफ़ औलाद की निस्बत करना उसको ऐब लगाना और बेअदबी है. हदीस में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है इब्ने आदम ने मुझे ग़ाली दी, मेरे लिये औलाद बताई. मैं औलाद और बीबी से पाक हूँ.

(१०) और ममलूक होना औलाद होने के मनाफ़ी है. जब तमाम जगल उसका ममलूक है, तो कोई औलाद कैसे हो सकता है अगर कोई अपनी औलाद का मालिक हो जाए, वह उसी वक़्त आज़ाद हो जाएगा.

(११) जिसने बग़ैर किसी पिछली मिसाल के चीज़ों को शून्य से अस्तित्व प्रदान किया.

(१२) यानी कायनात या सृष्टि उसके इरादा फ़रमाते ही अस्तित्व में आ जाती है.

(१३) यानी पहले किताब या मूर्तिपूजक मुश्रिकीन.

(१४) यानी वास्ते या माध्यम के बिना ख़ुद क्यों नहीं फ़रमाता जैसा कि फ़रिश्तों और नबियों से कलाम फ़रमाता है. यह उनके घमण्ड की सर्वोच्च सीमा और भारी सरकशी थी, उन्होंने अपने आप को फ़रिश्तों और नबियों के बराबर समझा. राफ़ेअ बिन ख़ुज़ैमा ने हुज़ुरे अक़्दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा, अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो अल्लाह से फ़रमाइये वह हमसे कलाम करे, हम ख़ुद सुनें. इसपर यह आयत उतरी.

(१५) यह उन आयतों का दुश्मनी से इन्कार है जो अल्लाह तआला ने अता फ़रमाई.

(१६) नासमझी, नाबीनाई, कुफ़र और दुश्मनी में. इसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि आप उनकी सरकशी और ज़िद और इन्कार से दुखी न हों. पिछले काफ़िर भी नबियों के साथ ऐसा ही करते थे.

(१७) यानी क़ुरआनी आयतों और ख़ुले चमत्कार इन्साफ़ वाले को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के नबी होने का यक़ीन दिलाने के लिये काफ़ी हैं, मगर जो यक़ीन करने का इच्छुक न हो वह दलीलों या प्रमाणों से फ़ायदा नहीं उठा सकता.

(१८) कि वो क्यों ईमान न लाए, इसलिये कि आपने अपना तबलीग़ का फ़र्ज़ पूरे तौर पर अदा फ़रमा दिया.

(१९) और यह असम्भव है, क्योंकि वो झूठे और बातिल हैं.

(२०) वही अनुकरण के काविल है और उसके सिवा हर एक राह झूटी और गुमराही वाली.

(२१) यह सम्बोधन उम्मेते मुहम्मदिया यानी मुसलमानों के लिये है कि जब तुमने जान लिया कि नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तुम्हारे पास सत्य और हिदायत लेकर आए, तो तुम हरगिज़ काफ़िरों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना. अगर ऐसा किया तो तुम्हें कोई अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाला नहीं है. (ख़ाज़िन)

(२२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया यह आयत पहले सफ़ीना के बारे में उतरी जो जअफ़र बिन अबी तालिब

इब्राहीम ने कि ऐ मेरे रब इस शहर को अमान वाला कर दे और इसके रहने वालों को तरह तरह के फलों से रोज़ी दे जो उनमें से अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाएँ^(१) फ़रमाया और जो काफ़िर हुआ थोड़ा बरतने को उसे भी दूंगा फिर उसे दोज़ख के अज़ाब की तरफ़ मजबूर कर दूंगा और वह बहुत बुरी जगह है पलटने की^(१२६) और जब उठता था इब्राहीम उस घर की नींव और इस्माईल यह कहते हुए ऐ रब हमारे हम से कुबूल फ़रमा^(१३) वेशक तू ही है सुनता जानता^(१२७) ऐ रब हमारे और कर हमें तेरे हुज़ूर गर्दन रखने वाला^(१४) और हमारी औलाद में से एक उम्मत (जन समूह) तेरी फ़रमाँवरदार (आज्ञाकारी) और हमें हमारी इबादत के कायदे बता और हम पर अपनी रहमत के साथ रज़ू (तबज्जुह) फ़रमा^(१५) वेशक तू ही है बहुत तौवह कुबूल करने वाला मेहरबान^(१२८) ऐ रब हमारे और भेज उन में^(१६) एक रसूल उन्हीं में से कि उन्हें तेरी आयतें तिलावत फ़रमाएँ और उन्हें तेरी किताब^(१७) और पुख्ता (पायदार) इल्म सिखाएँ^(१८) और उन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमा दे^(१९) वेशक तू ही है ग़ालिब हिकमत वाला^(१२९)

सोलहवाँ सूक़

और इब्राहीम के दीन से कौन मुंह फेरे^(१) सिवा उसके जो दिल का मूर्ख है और वेशक ज़रूर हम ने दुनिया में उसे चुन लिया^(२) और वेशक वह आख़िरत में हमारे खास कुर्ब (समीपता) की योग्यता वालों में है^(३)^(१३०) जबकि उससे

هَذَا بَلَدًا آمِنًا وَارْزُقْ أَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرَاتِ مَنْ
آمَنَ مِنْهُمْ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ
فَأَمَّتُهُ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُ إِلَىٰ عَذَابِ النَّارِ وَ
يُتَسَّ الْمَصِيزُ ۚ وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ
مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ
أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۚ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ
لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا
مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۚ
رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۚ وَمَنْ يَرْغَبْ عَنْ قَوْلِ إِبْرَاهِيمَ
إِلَّا مِنْ سَفَاهَةٍ نَّفْسُهُ ۚ وَلَقَدْ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا
وَلَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَكِنُ الصَّالِحِينَ ۚ إِذْ قَالَ لَهُ

مَنْ

के साथ रसूल पाक के दरबार में हाज़िर हुए थे. उनकी तादाद चालीस थी. बत्तीस हवशा वाले और आठ शाम वाले पादरी. उनमें बुहैरा राहिब (पादरी) भी थे. मतलब यह है कि वास्तव में तौरात शरीफ़ पर ईमान लाने वाले वही हैं जो इसके पढ़ने का हक़ अदा करते हैं और उसके मानी समझते और मानते हैं और उसमें हुज़ूर सैयदे कायनात मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और गुण देखकर हुज़ूर पर ईमान लाते हैं और जो हुज़ूर के इन्कारी होते हैं वो तौरात शरीफ़ पर ईमान नहीं रखते.

सूरए बक्ररह - पंद्रहवाँ सूक़

- (१) इसमें यहूदियों का रव है जो कहते थे हमारे बाप दादा बुजुर्ग गुज़रे हैं, हमें शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करके छुड़ा लेंगे. उन्हें मापूस किया जाता है कि शफ़ाअत काफ़िर के लिये नहीं.
- (२) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पैदाइश अहवाज़ क्षेत्र में सूस स्थान पर हुई. फिर आपके वालिद आपको नमरुद के मुल्क बाबुल में ले आए. यहूदी और ईसाई और अरब के मुश्रिक सब आपकी बुजुर्गी मानते और आपकी नस्ल में होने पर गर्व करते हैं. अल्लाह तआला ने आपके वो हालात वयान फ़रमाएँ जिनसे सब पर इस्लाम कुबूल करना लाज़िम हो जाता है, क्योंकि जो चीज़ें अल्लाह तआला ने आप पर वाजिब कीं वो इस्लाम की विशेषताओं में से हैं.
- (३) खुदाई आजमाइश यह है कि बन्दे पर कोई पाबन्दी लाज़िम फ़रमाकर दूसरों पर उसके ख़रे ख़ोटे होने का इज़हार कर दे.
- (४) जो बातें अल्लाह तआला ने हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर आजमाइश के लिये वाजिब की थीं, उनमें तफ़सीर करने वालों के चन्द क़ौल हैं. क़तादा का कहना है कि वो हज़ के मनासिक है. मुजाहिद ने कहा इससे वो दस चीज़ें मुराद हैं जो अगली आयतों में वयान की गई हैं. हज़रत इब्ने अब्बास का एक क़ौल यह है कि वे दस चीज़ें ये हैं, मूँछें कतरवाना, कुल्ली करना, नाक में सफ़ाई के लिये पानी इस्तेमाल करना, मिखाक करना, सर में मांग निकालना, नाख़ून तरशवाना, बग़ल के बाल दूर करना, पेड़ के नीचे की सफ़ाई, ख़तना, पानी से इस्तंजा करना. ये सब चीज़ें हज़रत इब्राहीम पर वाजिब थीं और हम पर उनमें से कुछ वाजिब हैं.
- (५) यानी आपकी औलाद में जो ज़ालिम (काफ़िर) हैं वो इमामत की पदवी न पाएंगे. इससे मालूम हुआ कि काफ़िर मुसलमानों का पंशवा नहीं हो सकता और मुसलमानों को उसका अनुकरण जायज़ नहीं.
- (६) बैत स काबा शरीफ़ मुराद है और इसमें तमाम हरम शरीफ़ दाख़िल है.

(७) अन्न बनाने से यह मुराद है कि हरमे काबा में कत्ल व लूटमार हराम है या यह कि वहाँ शिकार तक को अन्न है। यहाँ तक कि हरम शरीफ में शेर भेड़िये भी शिकार का पीछा नहीं करते, छोड़ कर लौट जाते हैं। एक क़ौल यह है कि ईमान वाला इसमें दाखिल होकर अज़ाब से सुरक्षित हो जाता है। हरम की हरम इसलिये कहा जाता है कि उसमें कत्ल, जुल्म, शिकार हराम और मना है। (अहमदी) अगर कोई मुजरिम भी दाखिल हो जाए तो वहाँ उसपर हाथ न डाला जाएगा। (मदारिक)

(८) मक़ामे इब्राहीम वह पत्थर है जिसपर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काबए मुअज़्ज़मा की बिना फ़रमाई और इसमें आपके क़दम मुबारक का नशान था। उसको नमाज़ का मक़ाम बनाने का मामला महबूत के लिये है। एक क़ौल यह भी है कि इस नमाज़ से तवाफ़ की दो रकअतें मुराद हैं। (अहमदी वगैरह)

(९) चूँकि इमारत के बारे में “*ला यनाली अहदिज़ ज़ालिमीन*” (यानी मेरा एहद ज़ालिमों को नहीं पहुँचता) इशारा हो चुका था, इसलिये हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस दुआ में ईमान वालों को ख़ास फ़रमाया और यही अदब की शान थी। अल्लाह ने करम किया। दुआ कुबूल हुई और इशारा फ़रमाया कि रिज़क सब को दिया जाएगा, ईमान वाले को भी, काफ़िर की भी। लेकिन काफ़िर का रिज़क थोड़ा है, यानी सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी में वह फ़ायदा उठा सकता है।

(१०) पहली बार काबए मुअज़्ज़मा की बुनियाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने रखी और टूफ़ाने नूह के बाद फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उसी बुनियाद पर तामीर फ़रमाई। यह तामीर ख़ास आपके मुबारक हाथ से हुई। इसके लिये पत्थर उठाकर लाने की ख़िदमत और सआदत हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की प्राप्त हुई। दोनों हज़रत ने उस वक़्त यह दुआ की कि या रब हमारी यह फ़रमावर्दारी और ख़िदमत कुबूल फ़रमा।

(११) वो हज़रत अल्लाह तआला के आज्ञाकारी और मुअज़्ज़ल बन्दे थे, फिर भी यह दुआ इसलिये है कि ताअत और इस्लाम में और ज़्यादा क़माल की तलब रखते हैं। ताअत का ज़िक्र सेर नहीं होता, सुन्नाहल्लाह, हर एक की फ़िक्र उसकी हिम्मत पर है।

(१२) हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम मासूम हैं। आपकी तरफ़ तो यह तवाज़ो है और अल्लाह वालों के लिये तालीम है। यह मक़ाम दुआ की कुबूलियत की जगह है, और यहाँ दुआ और तौबह हज़रत इब्राहीम की सुन्नत है।

(१३) यानी हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल की ज़रियत में यह दुआ सैयदुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये थी, यानी काबए मुअज़्ज़मा की तामीर की अज़ीम ख़िदमत बंजा लाने के लिये और तौबह और प्रायश्चित करने के बाद हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल ने यह दुआ की, कि या रब, अपने मेहबूब नबीये आख़िरीज़माँ सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की हमारी नस्ल में प्रकट फ़रमा और यह बुजुर्गी हमें इनायत कर। यह दुआ कुबूल हुई और उन दोनों साहिबों की नस्ल में हुज़ूर के सिवा कोई नबी नहीं हुआ, औलादे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम में बाक़ी तमाम नबी हज़रत इसहाक़ की नस्ल से हैं। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपना मीलाद शरीफ़ खुद बयां किया। इमाम बग़वी ने एक हदीस रिवायत की, कि हुज़ूर ने फ़रमाया मैं अल्लाह तआला के नज़्दीक ख़ातिमुन नबियीन लिखा हुआ था। उस वक़्त भी जब हज़रत आदम के पुतले का ख़मीर हो रहा था। मैं तुम्हें अपनी शुरुआत की ख़बर दूँ। मैं इब्राहीम की दुआ हूँ, ईसा की ख़ुशख़बरी हूँ, अपनी बालिदा के उस ख़ाब की तावीर हूँ जो उन्होंने मेरी पैदाइश के वक़्त देखा और उनके लिये एक चमकता तूर ज़ाहिर हुआ जिससे मुल्के शाम के महल उनके लिये रोशन हो गए। इस हदीस में इब्राहीम की दुआ से यही दुआ मुराद है जो इस आयत में दी गई है। अल्लाह तआला ने यह दुआ कुबूल फ़रमाई और आख़िर ज़माने में हुज़ूर सैयदे अम्बिया मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अपना आख़िरी रसूल बनाकर भेजा। यह हम पर अल्लाह का एहसान है। (जुमल व ख़ाज़िन)

(१४) इस क़िताब से क़ुरआने पाक और इसकी तालीम से इसकी हकीकतों और मानी का सीखना मुराद है।

(१५) हिकमत के मानी में बहुत से अक़वाल हैं। कुछ के नज़्दीक हिकमत से फ़िख्र मुराद है। क़तादा का कहना है कि हिकमत सुन्नत का नाम है। कुछ कहते हैं कि हिकमत अहक़ाम के इल्म की कहते हैं। ख़ुलासा यह कि हिकमत रहस्यों की जानकारी का नाम है।

(१६) सुथरा करने के मानी यह हैं कि नफ़स की तरज़ी और आत्मा को बुराईयों से पाक करके पदें उठा दें और क्षमता के दर्पण को चमका कर उन्हें इस क़ाबिल कर दें कि उनमें हकीकतों की झलक नज़र आने लगे।

सूरए बक्रह - सोलहवाँ रकू

(१) यहूदी आलिमों में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ने इस्लाम लाने के बाद अपने दो भतीजों मुहज़ज़िर और सलमह को इस्लाम की तरफ़ बुलाया और उनसे फ़रमाया कि तुमको मालूम है कि अल्लाह तआला ने तीरात में फ़रमाया है कि मैं इस्माईल की औलाद से एक नबी पैदा करूँगा जिनका नाम अहमद होगा। जो उनपर ईमान लाएगा, राह पाएगा और जो उनपर ईमान न लाएगा, उसपर लअनत पड़ेगी। यह सुनकर सलमह ईमान ले आए और मुहज़ज़िर ने इस्लाम से इन्कार कर दिया। इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाकर ज़ाहिर कर दिया कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने खुद इस रसूल मुअज़्ज़म के भेजे जाने की दुआ फ़रमाई, तो जो उनके दीन से फिरे वह हज़रत इब्राहीम के दीन से फिरे। इसमें यहूदियों, ईसाईयों और अरब के मूर्ति पूजकों पर ऐतिसाज़ है, जो अपने आपको बड़े गर्व से हज़रत इब्राहीम के साथ जोड़ते थे। जब उनके दीन से फिर गए तो शराफ़त कहाँ रही।

(२) रिसालत और कुबूत के साथ रसूल और ख़लील यानी करीबी दोस्त बनाया।

(३) जिनके लिये बलन्द दर्जे हैं। तो जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम दीन दुनिया दोनों की करामतों के मालिक हैं, तो उनकी तरीक़त यानी रास्ते से फिरने वाला ज़रूर नादान और मूर्ख है।

उसके रव ने फ़रमाया गर्दन रख, अर्ज़ की मैं ने गर्दन रखी जो रव है सारे जहान का (१३१) अर्ज़ की वसीयत की इब्राहीम ने अपने बेटों को और यअक़ूब ने कि ऐ मेरे बेटो वंशक अल्लाह ने यह दीन तुम्हारे लिये चुन लिया तो न मरना मगर मुसलमान (१३२) बल्कि तुम में के खुद मौजूद थे (१३) जब यअक़ूब को मौत आई जबकि उसने अपने बेटों से फ़रमाया मेरे बाद किसकी पूजा करोगे बोले हम पूजेंगे उसे जो खुदा है आपका और आपके आवा (पूर्वज) इब्राहीम और इस्माईल (१३४) और इस्हाक़ का एक खुदा और हम उसके हुज़ूर गर्दन रखे हैं (१३३) यह (१३५) एक उम्मत है कि गुज़र चुकी (१३६) उनके लिये है जो उन्होंने कमाया और तुम्हारे लिये है जो तुम कमाओ और उनके कामों की तुम से पूछगछ न होगी (१३४) और किताबी बोले (१३५) यहूदी या नसरानी हो जाओ राह पा जाओगे, तुम फ़रमाओ बल्कि हम तो इब्राहीम का दीन लेते हैं जो हर बातिल (असत्य) से अलग थे, और मुश्रिकों से न थे (१३५) यूँ कहो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उसपर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतारा गया इब्राहीम और इस्माईल व इस्हाक़ व यअक़ूब और उनकी औलाद जो प्रदान किये गए मूसा व ईसा और जो अता किये गए बाकी

رَبِّهِ أَسْلِمَ ۖ قَالَ أَسَلَّمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ وَوَصَّىٰ
بِهِمَا ابْنَهُمَا بِنَزْلٍ ۖ وَيَعْقُوبُ ۖ يَبْنِي ۖ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ
لَكُمْ الدِّينَ ۖ فَلَا تَتَوَتَّنَ إِلَّا ۖ وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۖ أَمْ
كُنْتُمْ شُهَدَاءَ ۖ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ ۖ إِذْ قَالَ
لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ ۖ مِنْ بَعْدِي ۖ قَالُوا نَعْبُدُ إِلَهَكَ
وَاللَّهُ آبَاؤُنَا ۖ وَإِبْرَاهِيمَ ۖ وَإِسْمَاعِيلَ ۖ وَإِسْحَاقَ ۖ وَآلِهَدًا ۖ
وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۖ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا
كَسَبَتْ ۖ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَنْهَا كَالَّذِينَ
يَعْمَلُونَ ۖ وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارًا ۖ تَهْتَدُوا ۖ
قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ۖ قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا
أُنْزِلَ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۖ وَإِسْمَاعِيلَ ۖ وَإِسْحَاقَ ۖ وَيَعْقُوبَ
وَالْأَسْبَاطِ ۖ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ ۖ وَعِيسَىٰ ۖ وَمَا أُوتِيَ

مَثَلًا

(४) यह आयत यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई. उन्होंने कहा था कि हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने अपनी बफ़ात के रोज़ अपनी औलाद को यहूदी रहने की वसियत की थी. अल्लाह तआला ने उनके इस झूठ के रव में यह आयत उतारी (स्वाज़िन). मतलब यह कि ऐ बनी इस्राईल, तुम्हारे लोग हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम के आख़िरी वक़्त उनके पास मौजूद थे, जिस वक़्त उन्होंने अपने बेटों को बुलाकर उनसे इस्लाम और तीहीद यानी अल्लाह के एक होने का इक़रार लिया था और यह इक़रार लिया था जो इस आयत में बताया गया है.

(५) हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को हज़रत यअक़ूब के पूर्वजों में दाख़िल करना तो इसलिये है कि आप उनके चचा हैं और चचा बाप बराबर होता है. जैसा कि हदीस शरीफ़ में है. और आपका नाम हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम से पहले ज़िक्र फ़रमाया दो वज़ह से है, एक तो यह कि आप हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम से चौदह साल बड़े हैं, दूसरे इसलिये कि आप सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पूर्वज हैं.

(६) यानी हज़रत इब्राहीम और यअक़ूब अलैहिस्सलाम और उनकी मुसलमान औलाद.

(७) ऐ यहूदियो, तुम उनपर लांछन मत लगाओ.

(८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत यहूदियों के रईसों और नज़रान के ईसायों के जवाब में उतरी. यहूदियों ने तो मुसलमानों से यह कहा था कि हज़रत मूसा सारे नबियों में सबसे अफ़ज़ल यानी बुजुर्गी वाले हैं. और यहूदी मज़हब सारे मज़हबों से ऊंचा है. इसके साथ उन्होंने हज़रत सैयदे कायनात मुहम्मद मुतफ़्फ़ सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और इन्जील शरीफ़ और कुरआन शरीफ़ के साथ कुफ़्र करके मुसलमानों से कहा था कि यहूदी बन जाओ. इसी तरह ईसाइयों ने भी अपने ही दीन को सच्चा बताकर मुसलमानों से ईसाई होने को कहा था. इसपर यह आयत उतरी.

(९) इसमें यहूदियों और ईसाइयों वगैरह पर एतितराज़ है कि तुम मुश्रिक हो. इसलिये इब्राहीम की मिल्लत पर होने का दावा जो तुम करते हो वह झूटा है. इसके बाद मुसलमानों की ख़िताब किया जाता है कि वो उन यहूदियों और ईसाइयों से यह कहें "यूँ कहो कि हम ईमान लाए, अल्लाह पर और उसपर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतारा गया इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व यअक़ूब और उनकी औलाद पर. (आयत के अन्त तक).

(१०) ओर उनमें सच्चाई तलाश करने की भावना नहीं.

(११) यह अल्लाह की तरफ़ से ज़िम्मा है कि वह अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ग़लबा अता फ़रमाएगा, और इस में ग़ैब की ख़बर है कि आयन्दा हासिल होने वाली विजय और कामयाबी को पहले से ज़ाहिर कर दिया. इसमें नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का चमत्कार है कि अल्लाह तआला का यह ज़िम्मा पूरा हुआ और यह ग़ैबी ख़बर सच हो कर रही. काफ़िरों के हसद,

नबी अपने रब के पास से हम उन में किसी पर ईमान मे फर्क नहीं करते और हम अल्लाह के हुजूर गर्दन रखे हैं (१३६) फिर अगर वो भी यही ईमान लाए जैसा तुम लाए जब तो वो हिदायत पा गए और अगर मुंह फेरें तो वो निरी ज़िद में हैं। (१३७) तो ऐ मेहबूब शीघ्र ही अल्लाह उनकी तरफ से तुम्हें क़िफ़ायत करेगा (काफ़ी होगा) और वही हे सुनता जानता (१३८) हमने अल्लाह की रैनी ली (१३९) और अल्लाह से बेहतर किसकी रैनी, और हम उसी को पूजते हैं (१४०) तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के बारे में झगड़ते हो (१४१) हालांकि वह हमारा भी मालिक है और तुम्हारा भी (१४२) और हमारी करनी हमारे साथ और तुम्हारी करनी तुम्हारे साथ और हम निरे उसी के हैं (१४३) बल्कि तुम यूँ कहते हो कि इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व यअक़ूब और उनके बेटे यहूदी या नसरानी थे तुम फ़रमाओ क्या तुम्हें इल्म ज़्यादा है या अल्लाह को (१४४) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसके पास अल्लाह की तरफ़ की गवाही हो और वह उसे छुपाए (१४५) और खुदा तुम्हारे कौतुकों से बेख़बर नहीं (१४६) वह एक गिरोह (समूह) है कि गुज़र गया उनके लिये उनकी कमाई और तुम्हारे लिये तुम्हारी कमाई और उनके कामों की तुम से पूछगछ न होगी (१४७)

النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝ فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ فَقَدْ اهْتَدَوْا ۖ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۚ صِبْغَةَ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۖ وَنَحْنُ لَهُ عِبِيدُونَ ۝ قُلْ أَتَحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۖ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ۝ أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَى ۚ قُلْ إِنَّا نَعْلَمُ أَمْرَ اللَّهِ ۚ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ تِلْكَ أَمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

दुश्मनी और उनकी शरायतों से हुजूर को नुकसान न पहुंचा. हुजूर की फ़तह हुई. बनी कुरैज़ा क़त्ल हुए. बनी नज़्रै बतन से निकाले गए. यहूदियों और ईसाइयों पर जिज़िया मुक़रर हुआ.

(१२) यानी जिस तरह रंग कपड़े के ज़ाहिर और बातिन पर असर करता है, उसी तरह अल्लाह के दीन के सच्चे एतिकाद हमारी रंग रंग में समा गए. हमारा ज़ाहिर और बातिन, तन और मन उसके रंग में रंग गया. हमारा रंग दिखाने का नहीं, जो कुछ फ़ायदा न दे, बल्कि यह आत्मा को पाक करता है. ज़ाहिर में इसका असर कर्मों से प्रकट होता है. ईसाई जब अपने दीन में किसी को दाख़िल करते या उनके यहाँ कोई बच्चा पैदा होता तो पानी में ज़र्द रंग डालकर उस व्यक्ति या बच्चे को गौता देते और कहते कि अब यह सच्चा हुआ. इस आयत में इसका रस फ़रमाया कि यह ज़ाहिरी रंग किसी काम का नहीं.

(१३) यहूदियों ने मुसलमानों से कहा हम पहली क़िताब वाले हैं, हमारा क़िताब पुराना है, हमारा दीन क़दीम और प्राचीन है. हम में से नबी हुए हैं. अगर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम नबी होते तो हम में से ही होते. इसपर यह मुबारक आयत उतरी.

(१४) उसे इश्तिघार है कि अपने बन्दों में से जिसे चाहे नबी बनाए, अरब में से हो या दूसरों में से.

(१५) किसी दूसरे को अल्लाह के साथ शरीक नहीं करते और इबादत और फ़रमाँबरदारी ख़ालिस उसी के लिये करते हैं. तो हम महरबानियाँ और इज़ज़त के मुस्तहक़ हैं.

(१६) इसका भरपूर जवाब यह है कि अल्लाह ही सबसे ज़्यादा जानता है. तो जब उसने फ़रमाया “मा काना इब्राहीमो यहूदियन व ला नसरानियन” (इब्राहीम न यहूदी थे, न ईसाई) तो तुम्हारा यह कहना झूटा हुआ.

(१७) यह यहूदियों का हाल है जिन्होंने अल्लाह तआला की गवाहियाँ छुपाई जो तौरात शरीफ़ में दर्ज थीं कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके नबी है और उनकी यह तारीफ़ और गुण हैं और हज़रत इब्राहीम मुसलमान हैं और सच्चा दीन इस्लाम है, न यहूदियत न ईसाइयत.

पारा एक समाप्त

पारा दो - सयकूल (सूरए बकरह जारी)

सत्तरहवाँ सूकू

अब कहेंगे^(१) बेवकूफ लोग किसने फेर दिया मुसलमानों को, उनके इस क़िबले से, जिसपर थे^(२) तुम फ़रमा दो कि पूरब और पश्चिम सब अल्लाह ही का है^(३) जिसे चाहे सीधी राह चलाता है^(४२) और बात यूँ ही है कि हमने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़ज़ल, कि तुम लोगों पर गवाह हो^(५) और ये रसूल तुम्हारे निगहबान और गवाह^(६) और ऐ मेहबूब तुम पहले जिसे क़िबले पर थे हमने वह इसी लिये मुक़रर (निश्चित) किया था कि देखें कौन रसूल के पीछे चलता है और कौन उलटे पाँव फिर जाता है^(७) और वेशक यह भारी थी मगर उनपर, जिन्हें अल्लाह ने हिदायत की, और अल्लाह की शान नहीं कि तुम्हारा ईमान अकारत करे^(८) वेशक अल्लाह आदमियों पर बहुत मेहरबान, मेहर (कृपा) वाला है^(१४३) हम देख रहे हैं बार बार तुम्हारा आसमान की तरफ़ मुंह करना^(९) तो ज़रूर हम तुम्हें फेर देंगे उस क़िबले की तरफ़ जिसमें तुम्हारी खुशी है अभी अपना मुंह फेर दो मस्जिदें हराम की तरफ़, और ऐ मुसलमानो तुम जहाँ कहीं हो अपना मुंह उसी की तरफ़ करो^(१०) और वो जिन्हें किताब मिली है ज़रूर जानते हैं कि यह उनके रब की

سَيَقُولُ الشُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَهُمْ عَن قِبَلِهِمُ النَّبِيُّ كَانُوا عَلَيْهِمْ قُلُوبَ الشَّرِّقِ وَ الْمَغْرِبِ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۚ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعِ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقْبَيْهِ ۚ وَإِن كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ عَمَّا تَكْتُمُونَ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَكَرِيمٌ ۝ قَدْ نَزَّلَ ثِقْلَ بَلِّغِ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَتَهُ تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۚ وَإِنِ الَّذِينَ آتَوْا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ

مَنْزِل

दूसरा पारा : सयकूल

सूरए बकरह - सत्तरहवाँ सूकू

(१) यह आयत यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई, जब बैतुल मक़दिस की जगह काबे की क़िबला बनाया गया। इसपर उन्होंने ताना किया क्योंकि उन्हें यह नागवार था और वो स्थान आदेश के क़ायल न थे। एक क़ौल पर, यह आयत मक्के के मुशिकों के और एक क़ौल पर, मुनाफ़िकों के बारे में उतरी और यह भी हो सकता है कि इससे काफ़िरों के ये सब ग़िरोह मुराद हों, क्योंकि ताना देने और बुरा भला कहने में सब शरीक थे। और काफ़िरों के ताना देने से पहले क़ुरआने पाक में इसकी ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बरों में से है। तअना देने वालों को बेवकूफ़ इसलिये कहा गया कि वो निहायत खुली बात पर ऐतिराज़ करने लगे जबकि पिछले नबीयों ने आपका लक़ब “दो क़िबलों वाला” बनाया भी था और क़िबले का बदला जाना ख़बर देने आए। ऐसे रौशन निशान से फ़ायदा न उठाना और ऐतिराज़ किये जाना परले दर्जे की मुर्ग्रता है।

(२) क़िबला उस दिशा को कहते हैं जिसकी तरफ़ आदमी नमाज़ में मुंह करता है। यहाँ, क़िबला से बैतुल मक़दिस मुराद है।

(३) उसे इस्तिमार है जिसे चाहे क़िबला बनाए। किसी को ऐतिराज़ का क्या हक़। बन्दे का काम फ़रमाँबरदारी है।

(४) दुनिया और आख़िरत में। दुनिया में तो यह कि मुसलमान की गवाही ईमान वाले और काफ़िर सबके हक़ में शरई तौर से भरोसे वाली है और काफ़िर की गवाही मुसलमान पर माने जाने के क़ाबिल नहीं। इससे यह भी मालूम हुआ कि किसी बात पर इस उम्मत की सर्वसहमति अनिवार्य रूप से क़बूल किये जाने योग्य है। गुज़रे लोगों के हक़ में भी इस उम्मत की गवाही मानी जाएगी। रहमत और अज़ाब के फ़रिशते उसके मुताबिक़ अमल करते हैं। सही हदीस की किताबों में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने एक जनाज़ा गुज़रा। आपके साथियों ने उसकी तारीफ़ की। हुज़ूर ने फ़रमाया “वाजिब हुई”। फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा। सहाबा ने उसकी बुराई की। हुज़ूर ने फ़रमाया “वाजिब हुई”। हज़रत उमर ने पूछा कि हुज़ूर क्या चीज़ वाजिब हुई? फ़रमाया : पहले जनाज़े की तुमने तारीफ़ की, उसके लिये जन्नत वाजिब हुई। दूसरे की तुमने बुराई की, उसके लिये दोज़ख़ वाजिब हुई। तुम ज़मीन में अल्लाह के गवाह हो। फिर हुज़ूर ने यह आयत तिलावत फ़रमाई। ये तमाम गवाहियाँ उम्मत के नेक और सच्चे लोगों के साथ ग़्यास हैं, और उनके विश्वसनीय होने के लिये ज़बान की एहतियात शर्त है। जो लोग ज़बान की एहतियात नहीं करते और शरीअत के ख़िलाफ़ बेजा बातें उनकी ज़बान से निकलती हैं और नाहक़ लानत करते हैं, सही हदीस की किताबों में है कि क़यामत के दिन न

तरफ़ से हक़ है^(१०) और अल्लाह उनके कौतुकों से बेख़बर नहीं^(११) और अगर तुम उन किताबियों के पास हर निशानी लेकर आओ वो तुम्हारे क़िवले की पैरवी (अनुकरण) न करेंगे^(१२) और न तुम उनके क़िवले की पैरवी करो^(१३) और वो आपस में एक दूसरे के क़िवले के तावे (फ़रमावश) नहीं^(१४) और (ऐ सुनने वाले जो कोई भी हो) अगर तू उनकी ख़्वाहिशों पर चला बाद इसके कि तुझे इल्म मिल चुका तो उस वक़्त तू ज़रूर सितमगार (अन्यायी) होगा^(१५) जिन्हें हमने किताब अता फ़रमाई^(१६) वो उस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे आदमी अपने बेटों को पहचानता है^(१७) और वेशक उनमें एक ग़िरोह (समूह) जान बूझ कर हक़ (सच्चाई) छुपाते हैं^(१८) (ऐ सुनने वाले) ये सच्चाई है तेरे रब की तरफ़ से (या सच्चाई वही है जो तेरे रब की तरफ़ से हो) तो ख़बरदार तू शक न करना^(१९)

अड्डारहवाँ, रसूफ़

और हर एक के लिये तवज्जह की सन्त (दिशा) है कि वह उसी की तरफ़ मुंह करता है तो ये चाहो कि नेकियों में औरों से आगे निकल जाएं तुम कहीं हो अल्लाह तुम सब को इकट्ठा ले आएगा^(१) वेशक अल्लाह जो चाहे करे^(२) और जहाँ से आओ^(३) अपना मुंह मस्जिदे हराम की तरफ़ करो और वह ज़रूर तुम्हारे कामों से गाफ़िल नहीं^(४) और ऐ मेहबूब तुम जहाँ से आओ अपना मुंह मस्जिदे हराम

رَبِّهِمْ ۖ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝ وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَّا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ ۖ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۖ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۖ وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ قُرْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّكَ إِذَا لَئِنَ الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۚ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۚ وَلِكُلِّ وُجْهَةٍ هُومٌ مَوْلَاهَا فَاستَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ إِنَّ مَا تَكُونُوا يَأْتِي بِكُمْ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَإِنَّهُ لِلْحَقِّ مِنْ رَبِّكَ ۖ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۖ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ

مَنْزِل

वां सिफ़ारिशों होंगे और न गवाह. इस उम्मत की एक गवाही यह भी है कि आख़िरत में जब तमाम अगली पिछली उम्मतें जमा होंगी और काफ़िरों से फ़रमाया जाएगा, क्या तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से इरान और निर्देश पहुंचाने वाले नहीं आए, तो वो इन्कार करेंगे और कहेंगे कोई नहीं आया. नबियों से पूछा जाएगा, वो अर्ज करेंगे कि ये झूठे हैं, हमने इन्हें तेरे निर्देश बताए. इसपर उनसे दलील तलब की जाएगी. वो अर्ज करेंगे कि हमारी गवाह उम्मत मुहम्मदिया है. ये उम्मत पैगम्बरों की गवाही देगी कि उन हज़रत ने तबलीग़ फ़रमाई. इसपर पिछली उम्मतों के काफ़िर कहेंगे, इन्हें क्या मालूम, ये हमसे बाद हुए थे. पूछा जाएगा तुम कैसे जानते हो. ये अर्ज करेंगे, या रब तूने हमारी तरफ़ अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को भेजा, क़ुरआन पाक उतारा, उनके ज़रिये हम क़तई यकीनी तौर पर जानते हैं कि नबियों ने तबलीग़ का फ़र्ज़ भरपूर तौर से अदा किया. फिर नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से आपकी उम्मत के बारे में पूछा जाएगा. हुज़ूर उनकी पुष्टि फ़रमाएंगे. इससे मालूम हुआ कि जिन चीज़ों की यकीनी जानकारी सुनने से हासिल हो उसपर गवाही दी जा सकती है.

(५) उम्मत को तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बताए से उम्मतों के हाल और नबियों की तबलीग़ की क़तई यकीनी जानकारी है और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के करम से नबुव्वत के नूर के ज़रिये हर आदमी के हाल और उसके ईमान की हकीकत और अच्छे बुरे कर्मों और महबूत व दुश्मनी की जानकारी रखते हैं. इसीलिये हुज़ूर की गवाही दुनिया में शरीअत के हुक़म से उम्मत के हक़ में मक़बूल है. यही वजह है कि हुज़ूर ने अपने ज़माने के हाज़िरिन के बारे में जो कुछ फ़रमाया, जैसे कि सहाबा और नबी के घर वालों की बुज़ुर्गी और बड़ाई, या बाद वालों के लिये, जैसे हज़रत उवैस और इमाम मेहदी वौरह के बारे में, उसपर अक़ीदा रखना बाजिब है. हर नबी को उसकी उम्मत के कर्मों की जानकारी दी जाती है. ताकि क़्यामत के दिन गवाही दे सकें चूंकि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की गवाही आम होगी इसलिये हुज़ूर तमाम उम्मतों के हाल की जानकारी रखते हैं. यहाँ शहीद का मतलब जानकार भी हो सकता है, क्योंकि शहादत का शब्द जानकारी और सूचना के लिये भी आया है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया “वल््लाहो अला कुल्ले शेइन् शहीद” यानी और अल्लाह हर चीज़ की जानकारी रखता है. (सूर मुजादलह, आयत ६)

(६) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पहले क़ाबि की तरफ़ नमाज़ पढ़ते थे. हिज़रत के बाद बैतुल मक़दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ने का हुक़म हुआ. सत्तरह महीने के करीब उस तरफ़ नमाज़ पढ़ी. फिर काबा शरीफ़ की तरफ़ मुंह करने का हुक़म हुआ. क़ियला बदले जाने की एक वजह यह बताई गई कि इससे ईमान वाले और काफ़िर में फ़र्क और पहचान साफ़ हो जाएगी. चुनाने ऐसा ही हुआ.

की तरफ़ करो और ऐ मुसलमानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह उसीकी तरफ़ करो कि लोगों को तुमपर कोई हज्जत (तर्क) न रहे^(१) मगर जो उनमें ना इन्साफ़ी करें^(२) तो उनसे न डरो और मुझसे डरो और यह इसलिये है कि मैं अपनी नेअमत (अनुकम्पा) तुमपर पूरी करूँ और किसी तरह तुम हिदायत पाओ^(३) जैसा हमने तुममें भेजा एक रसूल तुम में से^(४) कि तुमपर हमारी आयतें तिलावत करता है (पढ़ता है) और तुम्हें पाक करता^(५) और किताब और पुख्ता इल्म सिखाता है^(६) और तुम्हें वह तालीम फ़रमाता है जिसकी तुम्हें जानकारी न थी^(७) तो मेरी याद करो, मैं तुम्हारा चर्चा करूँगा^(८) और मेरा हक़ मानो और मेरी नाशुक्री न करो^(९)

उन्नीसवाँ रूक़

ऐ ईमान वाले सब्र और नमाज़ से मदद चाहो^(१) वेशक अल्लाह साबिरो (सब्र करने वालों) के साथ है^(२) और जो खुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो^(३) बल्कि वो ज़िन्दा हैं, हाँ तुम्हें ख़बर नहीं^(४) और ज़रूर हम तुम्हें आजमाएंगे कुछ डर और भूख से^(५) और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से^(६) और खुशख़बरी सुना उन सब्र वालों को^(७) कि जब उनपर कोई मुसीबत पड़े

قَوْلَ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ قُولُوا وَجُوهَكُمْ شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلَا تَمْنَعْنِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْحِكْمَةَ وَالْحِكْمَةَ يُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۝ فَادْكُرُونِي أذكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَكِنْ لَا تَشْعُرُونَ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۝ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا

منزل

- (७) बैतुल मक़दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ने के ज़माने में जिन सहाया ने वफ़ात पाई उनके रिश्तेदारों ने क़िबला बदले जाने के बाद उनकी नमाज़ों के बारे में पूछा था, उसपर ये आयत उतरी और इम्मीवान दिलाया गया कि उनकी नमाज़ें बेकार नहीं गईं, उनपर सबाब मिलेगा. नमाज़ को ईमान बताया गया क्योंकि इसकी अदा और जमाअत से पढ़ना ईमान की दलील है.
- (८) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को काबे का क़िबला बनाया जाना पसन्द था और हुज़ूर इसी उम्मीद में आसमान की तरफ़ नज़र फ़रमाते थे. इसपर यह आयत उतरी. आप नमाज़ ही में काबे की तरफ़ फिर गए. मुसलमानों ने भी आपके साथ उसी तरफ़ रुज़्र किया. इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला को अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रज़ा और पसन्द मन्ज़ूर है और आपकी झ्रातिर ही काबे को क़िबला बनाया गया.
- (९) इससे साबित हुआ कि नमाज़ में क़िबले की तरफ़ मुंह होना फ़र्ज़ है.
- (१०) क्योंकि उनकी किताबों में हुज़ूर की तारीफ़ के सिलसिले में यह भी दर्ज था कि आप बैतुल मक़दिस से काबे की तरफ़ फिरेंगे और उनके नवियों ने बशारतों के साथ हुज़ूर का यह निशान बताया था कि आप बैतुल मक़दिस और काबा दोनों क़िबलों की तरफ़ नमाज़ पढ़ेंगे.
- (११) क्योंकि निशानी उसको लाभदायक हो सकती है जो किसी शुबह की वजह से इन्कारी हो. ये तो हसद और दुश्मनी के कारण इन्कार करते हैं, इन्हें इससे क्या नफ़ा होगा.
- (१२) मानी ये हैं कि यह क़िबला स्थगित न होगा. तो अब किताब वालों को यह लालच न रखना चाहिये कि आप उनमें से किसी के क़िबले की तरफ़ रुज़्र करेंगे.
- (१३) हर एक का क़िबला अलग है. यहूदी तो बैतुल मक़दिस के गुम्बद को अपना क़िबला करार देते हैं और ईसाई बैतुल मक़दिस के उस पूर्वी मक़ान को, जहाँ हज़रत मसीह की रूह डाली गई. (फ़त्ह).
- (१४) यानी यहूदियों और ईसाइयों के उलमा.
- (१५) मतलब यह कि पिछली किताबों में आख़िरी ज़माने के नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के गुण ऐसे साफ़ शब्दों में बयान किये गए हैं जिनसे किताब वालों के उलमा को हुज़ूर के आख़िरी नबी होने में कुछ शक़ शुबह बाक़ी नहीं रह सकता और वो हुज़ूर के इस उच्चतम पद को पूरे यकीन के साथ जानते हैं. यहूदी आलिमों में से अब्दुल्लाह बिन सलाम इस्लाम लाए तो हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने उनसे पूछा कि आयत "यअरिफून्हु" (वो इस नबी को ऐसा पहचानते हैं.) में जो पहचान बयान की गई है उसकी शान क्या है. उन्होंने फ़रमाया, ऐ उमर, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को देखा तो बौर किसी शुबह के पहचान लिया और मेरा हुज़ूर को पहचानना अपने बेटों के पहचानने से कहीं ज़्यादा भ्रूपूर और सम्पूर्ण है. हज़रत उमर ने पूछा, वह कैसे?

उन्होंने कहा मैं गवाही देता हूँ कि हुजूर अल्लाह की तरफ से उसके भेजे हुए रसूल हैं, उनके गुण अल्लाह तआला ने हमारी किताब तौरात में बयान फरमाए हैं, बेटे की तरफ से ऐसा यकीन किस तरह हो, औरतों का हाल ऐसा ठीक ठीक किस तरह मालूम हो सकता है, हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हां ने उनका सर चूम लिया, इससे मालूम हुआ कि ऐसी दीनी महबूत में जिसमें वासना शामिल न हो, माथा चूमना जायज़ है।

(१६) यानी तौरात और इन्जील में जो हुजूर की नअत और गुणगान है, किताब वालों के उलमा का एक गुट उसको हसद, ईर्ष्या और दुश्मनी से जानबूझ कर छुपाता है, सच्चाई का छुपाना गुनाह और बुराई है।

सूरए बकरह - अठारहवाँ रूकू

- (१) क़्यामत के दिन सबको जमा फरमाएगा और कर्मों का बदला देगा।
- (२) यानी चाहे किसी शहर से सफ़र के लिये निकलो, नमाज़ में अपना मुंह मस्जिदे हराम (काबे) की तरफ़ करो।
- (३) और काफ़िर को यह ताना करने का मौक़ा न मिले कि उन्होंने कु़रैश के विरोध में हज़रत इब्राहीम और इस्माईल अलैहिमस्सलाम का क़िबला भी छोड़ दिया जबकि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनकी औलाद में हैं और उनकी बड़ाई और बुजुर्गी को मानते भी हैं।
- (४) और दुश्मनी के कारण बेजा ऐतिराज़ करें।
- (५) यानी सैयदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।
- (६) नापाकी, शिक और गुनाहों से।
- (७) हिक्मत से मुफ़रिसरीन ने फ़िक्र मुराद ली है।
- (८) ज़िक्र तीन तरह का होता है (१) ज़बान से (२) दिल में (३) शरीर के अंगों से, ज़बानी ज़िक्र तस्बीह करना, पाकी बोलना और तारीफ़ करना वगैरह है, ख़ुदा, तौबा इस्तिग़फ़ार, दुआ वगैरह इसमें आते हैं, दिल में ज़िक्र यानी अल्लाह तआला की नेअमतों को याद करना, उसकी बड़ाई और शक्ति और क्षमता में गौर करना, उलमा जो दीन की बातां में विचार करते हैं, इसी में दाख़िल है, शरीर के अंगों के ज़रिये ज़िक्र यह है कि शरीर अल्लाह की फ़रमावशकारी में मशगूल हो, जैसे हज़ के लिये सफ़र करना, यह शारीरिक ज़िक्र में दाख़िल है, नमाज़ तीनों किस्मों के ज़िक्र पर आधारित है, तस्बीह, तकवीर, सना व क़ुरआन का पाठ तो ज़बानी ज़िक्र है, और एकाग्रता व एकगुई, ये सब दिल के ज़िक्र में है, और नमाज़ में खड़ा होना, रूकू व सिजदा करना वगैरह शारीरिक ज़िक्र है, इन्हे अब्बास रदियल्लाहो तआला अन्हुमा ने फ़रमाया, अल्लाह तआला फ़रमाता है तुम फ़रमावशकारी के साथ मेरा हुक्म मान कर मुझे याद करो, मैं तुम्हें अपनी मदद के साथ याद करूँगा, सही हदीस की किताबों में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अगर बन्दा मुझे एकान्त में याद करता है तो मैं भी उसको ऐसे ही याद फ़रमाता हूँ और अगर वह मुझे जमाअत में या सामूहिक रूप से याद करता है तो मैं उसको उससे बेहतर जमाअत में याद करता हूँ, क़ुरआन और हदीस में ज़िक्र के बहुत फ़ायदे आए हैं, और ये हर तरह के ज़िक्र को शामिल हैं, ऊंची आवाज़ में किये जाने वाले ज़िक्र भी और आहिस्ता किये जाने वाले ज़िक्र को भी।

सूरए बकरह - उन्नीसवाँ रूकू

- (१) हदीस शरीफ़ में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को जब कोई सज़ा या कड़ी मुहिम पेश आती तो नमाज़ में मशगूल हो जाते, और नमाज़ से मदद चाहने में बरसात की दुआ वाली नमाज़ और हाज़त की दुआ वाली नमाज़ भी शामिल है।
- (२) यह आयत बद्र के शाहीदों के बारे में उतरी, लोग शाहीदों के बारे में कहते थे कि वह व्यक्ति मर गया, वह दुनिया की सहूलतों से मेहरूम हो गया, उनके बारे में यह आयत उतरी।
- (३) मौत के बाद ही अल्लाह तआला शहीदों को ज़िन्दगी अता फ़रमाता है, उनकी आत्माओं पर रिज़क़ पेश किये जाते हैं, उन्हें राहत दी जाती है, उनके कर्म जारी रहते हैं, सवाब और इनाम बढ़ता रहता है, हदीस शरीफ़ में है कि शहीदों की आत्माएं हरे परिन्दों के रूप में जन्नत की सैर करती हैं और वहाँ के मेवे और नेअमतें खाती हैं, अल्लाह तआला के फ़रमावशदार बन्दों को क़ब्र में जन्नती नेअमतें मिलती हैं, शहीद वह सच्चा मुसलमान है जो तेज़ हथियार से ज़बरदस्ती मारा गया हो और उसके क़त्ल से माल भी वाजिब न हुआ हो, या युद्ध में मुर्दा या ज़ख्मी पाया गया हो, और उसने कुछ आसायश न पाई, उसपर दुनिया में यह अहक़ाम हैं कि उसको न नहलाया जाय, न कफ़न, अपने कपड़ों ही में रखा जाय, उसी तरह उसपर नमाज़ पढ़ी जाए, उसी हालत में दफ़न किया जाए, आख़िरत में शहीद का बड़ा रूखा है, कुछ शहीद वो हैं कि उनपर दुनिया के ये अहक़ाम तो जारी नहीं होते, लेकिन आख़िरत में उनके लिए शहादत का दर्जा है, जैसे हुब कर या जलकर या दीवार के नीचे दब कर मरने वाला, इत्म की तलाश में या हज़ के सफ़र में मरने वाला, यानी मुदा की राह में मरने वाला, ज़ख्मी के बाद की हालत में मरने वाली औरत, और पेट की बीमारी और प्लेग और ज़ातुल जुनुव और सिल की बीमारी और जुमे के दिन मरने वाले, वगैरह।
- (४) आजमायश से फ़रमावशदार और नाफ़रमात के हाल का ज़ाहिर करना मुराद है।
- (५) इमाम शाफ़ई अलैहिर्रहमत ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि ख़ौफ़ से अल्लाह का डर, भूख से रमज़ान के रोज़े, माल की कमी से ज़कात और सदक़ान देना, जानों की कमी से बीमारियों से मौतें होना, फ़त्नों की कमी से औलाद की मौत मुराद है, इसलिये कि औलाद दिल का फल होते हैं, हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जब किसी बन्दे का बच्चा मरता है, अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाता है तुमने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह निकाली, वो अर्ज़ करतें हैं, हाँ।

तो कहें हम अल्लाह के माल में हैं और हम को उसी की तरफ़ फिरना^(५) (१५६) ये लोग हैं जिनपर उनके रब की दुरुई हैं और रहमत, और यही लोग राह पर हैं^(६) (१५७) बेशक सफ़ा और मर्वा (पहाड़ियाँ)^(७) अल्लाह के निशानों से हैं^(८) तो जो उस घर का हज या उमरा करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे^(९) और जो कोई भली बात अपनी तरफ़ से करे तो अल्लाह नेकी का सिला (इनाम) देने वाला ख़बरदार है^(१०) (१५८) बेशक वो हमारी उतारी हुई रौशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं^(११) बाद इसके कि लोगों के लिये हम उसे किताब में बाज़ेह (स्पष्ट) फ़रमा चुके उनपर अल्लाह की लअनत है और लअनत करने वालों की लअनत^(१२) (१५९) मगर वो जो तौबह करें और सवारें और ज़ाहिर करें तो मैं उनकी तौबह कुबूल फ़रमाऊंगा और मैं ही हूँ बड़ा तौबह कुबूल फ़रमाने वाला मेहरबान^(१३) (१६०) बेशक वो जिन्होंने ने कुफ़ किया और काफ़िर ही मरे उनपर लअनत है अल्लाह और फ़रिश्तों और आदमियों सबकी^(१४) (१६१) हमेशा रहेंगे उसमें न उनपर से अज़ाब हल्का हो और न उन्हें मोहलत दी जाए^(१५) (१६२)

اصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ ۖ قَالُوا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ
رٰجِعُونَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلٰوٰتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَ
رَحْمَةٌ ۖ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْتَدُونَ ۝ اِنَّ الصَّفَا وَ
الْمَرْوَةَ مِّنْ شَعَابِرِ اللّٰهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوْ اعْتَمَرَ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطُوفَ بِهِنَّ ۚ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۖ
فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَا
اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ
لِلنَّاسِ فِي الْكِتٰبِ ۖ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ ۚ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاصْلَحُوْا وَبَيَّنُّوْا
فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاِنَّا لَتَوَّابُ الرَّحِيْمِ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَا تُوُوْا وَهُمْ كَفٰرًا ۖ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ
لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۖ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۚ لَا يَخَفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝

مَثَلًا

फिर फ़रमाता है तुमने उसके दिल का फल ले लिया. अर्ज करते हैं, हाँ या रब. फ़रमाता है उसपर मेरे बन्दे ने क्या कहा? अर्ज करते हैं उसने तेरी तारीफ़ की और “इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजिऊन” (यानी हम अल्लाह की तरफ़ से हैं और उसीकी तरफ़ हमें लौटना है) पढ़ा, फ़रमाता है उसके लिये जन्नत में मकान बनाओ और उसका नाम बैतुल हम्द रखो. मुसीबत के पेश आने से पहले ख़बर देने में कई हिकमतें हैं, एक तो यह कि इससे आदमी को मुसीबत के वक़्त सब आसान हो जाता है, एक यह कि जब काफ़िर देखें कि मुसलमान बला और मुसीबत के वक़्त सब, शुक्र और साबित क़दमी के साथ अपने दीन पर कायम रहता है तो उन्हें दीन की ख़ूबी मालूम हो और उसकी तरफ़ दिल खिंचे. एक यह कि आने वाली मुसीबत पेश आने से पहले की सूचना अज्ञात की ख़बर और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का चमत्कार है. एक हिकमत यह कि मुनाफ़िकों के क़दम मुसीबत की ख़बर से उग्रड़ जाएँ और ईमान वाले और मुनाफ़िक का फ़र्क मालूम हो जाए.

(६) हदीस शरीफ़ में है कि मुसीबत के वक़्त “इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजिऊन” पढ़ना अल्लाह की रहमत लाता है. यह भी हदीस में है कि मूमिन की तकलीफ़ को अल्लाह गुनाह मिटाने का ज़रिया बना देता है.

(७) सफ़ा और मर्वा मक्कए मुक़र्रमा के दो पहाड़ हैं, जो काबे के सामने पूर्व की ओर स्थित हैं. मर्वा उत्तर की तरफ़ झुका हुआ और सफ़ा दक्षिण की तरफ़ जबले अबू कुवैस के दामन में है. हज़रत हाजिरा और हज़रत इस्माईल ने इन दोनों पहाड़ों के करीब उस मक़ाम पर जहाँ ज़मज़म का कुआँ है, अल्लाह के हुक्म से सुकूनत इस्त्रियार की. उस वक़्त यह जगह पथरीली वीरान थी, न यहाँ हरियाली थी न पानी, न खाने पीने का कोई साधन. अल्लाह की खुशी के लिये इन अल्लाह के प्यारे बन्दों ने सब किया. हज़रत इस्माईल बहुत छोटे से थे, प्यास से जब उनकी हालत नाज़ुक हो गई तो हज़रत हाजिरा बैचैन होकर सफ़ा पहाड़ी पर तशरीफ़ ले गईं. वहाँ भी पानी न पाया तो उतर कर नीचे के मैदान में दौड़ती हुई मर्वा तक पहुँचीं. इस तरह सात बार दोनों पहाड़ियों के बीच दौड़ीं और अल्लाह तआला ने “इज़ल्लाहा मअस साबिरीन” (अल्लाह सब करने वालों के साथ है) का जलवा इस तरह ज़ाहिर फ़रमाया कि ग़ैब से एक चश्मा ज़मज़म नमूदार किया और उनके सब और महबूत की बरक़त से उनके अनुकरण में इन दोनों पहाड़ियों के बीच दौड़ने वालों को अपना प्यारा किया और इन दोनों जगहों को दुआ कुबूल होने की जगह बनाया.

(८) “शआइरिल्लाह” से दीन की निशानियाँ मुराद हैं, चाहे वो मक़ानात हों जैसे काबा, अरफ़त, मुज्दलिफ़ा, शैतान को कंकरी मारने की तीनों जगहें, सफ़ा, मर्वा, मिदा, मस्जिदे, या ज़माने जैसे रमज़ान, ज़िलक़ाद, ज़िलहज़्ज और मुहर्रम के महीने, ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़हा, जुमा, अय्यामे तशरीफ़ यानी दस, ग्यारह, बारह, तेरह ज़िल हज़्जा, या दूसरे चिन्ह जैसे अज़ान, अक़ामत, वा-जमाअत नमाज़, जुमे की नमाज़, ईद की नमाज़ें, ख़तवा, ये सब दीन की निशानियाँ हैं.

(९) इस्लाम से पहले के दिनों में सफ़ा और मर्वा पर दो मूर्तियाँ रखी थीं. सफ़ा पर जो मूर्ति थी उसका नाम असाफ़ था और जो मर्वा पर थी उसका नाम नायला था. काफ़िर जब सफ़ा और मर्वा के बीच सई करते या दौड़ते तो उन मूर्तियों पर अदब से हाथ फेरते.

और तुम्हारा मअबूद (आराध्य) एक मअबूद है^(१३) उसके सिवा कोई माबूद नहीं मगर वही बड़ी रहमत वाला मेहरवान^(१६३)

बीसवाँ सूक़

बेशक आसमानों^(१) और ज़मीन की पैदायश और रात व दिन का बदलते आना और किशती कि दरिया में लोगों के फ़ायदे लेकर चलती है और वह जो अल्लाह ने आसमान से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को उससे ज़िन्दा कर दिया और ज़मीन में हर किस्म के जानवर फैलाए और हवाओं की गर्दिश (चक्कर) और वह बादल कि आसमान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है इन सब में अक़लमन्दों के लिये ज़रूर निशानियाँ है^(१६४) और कुछ लोग अल्लाह के सिवा और माबूद बना लेते हैं कि उन्हें अल्लाह की तरह मेहबूब रखते हैं और ईमान वालों को अल्लाह के बराबर किसी की महबूब नहीं, और कैसी हो अगर देखें ज़ालिम वह वक़्त जबकि अज़ाब उनकी आँखों के सामने आएगा इसलिये कि सारा ज़ोर अल्लाह की है और इसलिये कि अल्लाह का अज़ाब बहुत सख़्त है^(१६५) जब वेज़ार होंगे पेशवा अपने मानने वालों से^(१६) और देखेंगे अज़ाब और कट जाएंगी उन सब की डोरें^(१६६) और कहेंगे अनुयायी

الْبُرْ

२२

سَيَقُولُونَ

وَالْهَكْمُ لِلَّهِ وَاحِدٌ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ
الرَّحِيمُ ۚ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَ
اِخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي
فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ
السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۚ وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ وَ
السَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ
لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِنْ
دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ
أَمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرَوْنَ
الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعَذَابِ ۝ إِذْ تَبَرَأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا
وَرَأَوْا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ۝ وَقَالَ

مَنْ

इस्लाम के एहद में बुत तो तोड़ दिये गए थे लेकिन चूंकि काफ़िर यहाँ शिर्क के काम करते थे इसलिये मुसलमानों को सफ़ा और मर्वा के बीच सई करना भारी लगा कि इसमें काफ़िरों के शिर्क के कामों के साथ कुछ मुशाबिहत है. इस आयत में उनका इस्मीनान फ़रमा दिया गया कि चूंकि तुम्हारी नियत ख़ालिफ़ अल्लाह की इबादत की है, तुम्हें मुशाबिहत का डर नहीं करना चाहिये और जिस तरह काबे के अन्दर जाहिलियत के दौर में काफ़िरों ने मूर्तियाँ रखी थीं, अब इस्लाम के एहद में वो मूर्तियाँ उठा दी गईं और काबे का तवाफ़ दुस्त रह्य और वह दीन की निशानियों में से रहा, उसी तरह काफ़िरों की बुत परस्ती से सफ़ा और मर्वा के दीन की निशानी होने में कोई फ़र्क़ नहीं आया. सई (यानी सफ़ा और मर्वा के बीच दौड़ना) वाजिब है, हदीस से साबित है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हमेशा इसे किया है. इसे छोड़ देने से दम यानी कुर्बानी वाजिब हो जाती है. सफ़ा और मर्वा के बीच दौड़ना हज और उमरा दोनों में ज़रूरी है. फ़र्क़ यह है कि हज के अन्दर अरफ़ात में जाना और वहाँ से काबे के तवाफ़ के लिये आना शर्त है. और उमरे के लिये अरफ़ात में जाना शर्त नहीं. उमरा करने वाला अगर मक्का के बाहर से आए, उसको सीधे मक्का मुकर्रमा में आकर तवाफ़ करना चाहिये और अगर मक्के का रहने वाला हो, तो उसको चाहिये कि हरम से बाहर जाए, वहाँ से काबे के तवाफ़ के लिये एहराम बाँधकर आए. हज व उमरा में एक फ़र्क़ यह भी है कि हज साल में एक ही बार हो सकता है, क्योंकि अरफ़ात में अरफ़े के दिन यानी ज़िलहज्जा की तौ तारीख़ को जाना, जो हज में शर्त है, साल में एक बार ही सम्भव हो सकता है. उमरा हर दिन हो सकता है, इसके लिये कोई वक़्त निर्धारित नहीं है.

(१०) यह आयत यहूदियों के उन उलमा के बारे में उतरी जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नात शरीफ़ और आयते रज़्ज और तौगात के दूसरे आदेश छुपाया करते थे. यहाँ से मालूम हुआ कि दीन की जानकारी को ज़ाहिर करना फ़र्ज़ है.

(११) लात करने वालों से फ़रिश्ते और ईमान वाले लोग मुराद हैं. एक कौल यह है कि अल्लाह के सारे बन्दे मुराद हैं.

(१२) मूनिन तो काफ़िरों पर लात करेंगे ही, काफ़िर भी क़यामत के दिन एक दूसरे पर लात करेंगे. इस आयत में उन पर लात फ़रमाई गई जो कुफ़्र पर मरे. इससे मालूम हुआ कि जिसकी मौत कुफ़्र पर मालूम हो, उसपर लात करनी जायज़ है. गुनहगार मुसलमान पर तअय्युन के साथ लात करना जायज़ नहीं. लेकिन अलल इतलाक़ जायज़ है, जैसा कि हदीस शरीफ़ में चोर और सूद ख़ोर वगैरह पर लात आई है.

(१३) काफ़िरों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा, आप अपने स्व की शान और सिफ़्त बयान कीजिये. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें बता दिया गया कि मअबूद सिर्फ़ एक है न उसके टुकड़े हो सकते हैं, न उसको बाँटा जा सकता है, न उसके लिये मिरन न ज़रूर. पूजे जाने और स्व होने के मामले में कोई उसका शरीक नहीं, वह यक़ता है, अपने कामों में. चीज़ों को तबहा उचीने बनाया, वह अपनी ज़ात में अकेला है, कोई उसका जोड़ नहीं. अपनी विशेषताओं और गुणों में वह यगाना है, कोई उस जैसा नहीं. अबूदाऊद और तिरमिज़ी की हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला का इस्मे आज़म इन दो आयतों में है. एक यही

काश हमें लौट कर जाना होता (दुनिया में) तो हम उनसे तोड़ देते जैसे उन्होंने हम से तोड़ दी। यूँही अल्लाह उन्हें दिखाएगा उनके काम उनपर हसरतें होकर^(१) और वो दोज़ख से निकलने वाले नहीं^(२) (१६७)

इक्कीसवाँ सूक़

ऐ लोगो खाओ जो कुछ ज़मीन में^(१) हलाल और पाकीज़ा है और शैतान के क़दम पर क़दम न रखो। वेशक़ वह तुम्हारा खुला दुश्मन है^(२) वह तो तुम्हें यही हुक्म देगा बदी और बेहयाई का और यह कि अल्लाह पर वह बात जोड़ो जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं^(३) (१६९) और जब उनसे कहा जाए अल्लाह के उतारे पर चलो^(४) तो कहें बल्कि हम तो उसपर चलेंगे जिसपर अपने बाप दादा को पाया क्या अगरचे (यद्यपि) उनके बाप दादा न कुछ अक्ल रखते हों न हिदायत^(५) (१७०) और काफ़िरों की कहावत उसकी सी है जो पुकारे ऐसे को कि खाली चीख़ पुकार के सिवा कुछ न सुने^(६) वहरे गूंगे अंधे तो उन्हें समझ नहीं^(७) (१७१) ऐ ईमान वाले खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें और अल्लाह का अहसान मानो

الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنْهَا كَذَلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝ إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالشُّوْءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْجُدُوا لِلَّهِ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَفْقَيْنَا عَلَيْهِ ۝ آبَاءُنَا وَأَوْلَاؤُنَا إِنَّهُمْ لَا يَفْقَهُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ۝ وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعُقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۝ صُمُّ بُكُمْ عُمْى فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا

مَزَل

आयत “व इलाहोकुम” दूसरी “अलिफ़ लाम मीम अल्लाहो लाइलाहा इल्लाहुवा.....”

सूरए बक्ररह - बीसवाँ सूक़

(१) कावए मुअज़्ज़मा के चारों तरफ़ मुश्क़ों के ३६० वृत्त थे, जिन्हें वो मअबूद मानते थे, उन्हें यह सुनकर बड़ी हैरत हुई कि मअबूद सिर्फ़ एक है, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं। इसलिये उन्होंने हुज़ुर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से ऐसी आयत तलब की जिससे अल्लाह के एक होने पर सही दलील हो। इसपर यह आयत उतरी। और उन्हें बताया गया कि आसमान और उसकी बलन्दी और उसका बिना किसी ख़म्बे और इलाक़े के कायम रहना, और जो कुछ उसमें नज़र आता है, चाँद सूरज सितारे कौरह, ये तमाम और ज़मीन और इसका फैलाव और पानी पर टिका हुआ होना और पहाड़, दरिया, चश्मे, खानें, पेड़ पौधे, हरियाली, फल और रात दिन का आना जाना घटना बढ़ना, किशियाँ और उनका भारी बोझ और वज़न के साथ पानी पर चलते रहना और आदमियों का उनपर सवार होकर दरिया के चमत्कार देखना और व्यापार में उनसे माल देने का काम लेना और बारिश और इससे म्रुश्क और मुर्दा हो जाने के बाद ज़मीन का हरा भरा करना और नई ज़िन्दगी अता करना और ज़मीन को क्रिस्म क्रिस्म के जानवरों से भरदेना, इसी तरह हवाओं का चलना और उनकी विशेषताएँ और हवा के चमत्कार और बादल और उसका इतने ज़्यादा पानी के साथ आसमान और ज़मीन के बीच टिका रहना, यह आठ बातें हैं जो कुदरत और सर्वशक्तिमान अल्लाह के इल्म और हिक़मत और उसके एक होने की साबित करती हैं। ये जो चीज़ें ऊपर बयान हुई ये सब संभव चीज़ें हैं और उनका अस्तित्व बहुत से विभिन्न तरीकों से मुमकिन था। मगर वो मअ़सूस शान से अस्तित्व में आईं। यह प्रमाण है कि ज़रूर उनके लिये कोई ईजाद करने वाला भी है। सर्वशक्तिमान अल्लाह अपनी इच्छा और इरादे से जैसा चाहता है बनाता है, किसी को दख़ल देने या ऐतिराज़ की मजाल नहीं। वो मअबूद यकीनन एक और यक्ता है, क्योंकि अगर उसके साथ कोई दूसरा मअबूद भी माना जाए तो उसको भी यह सब काम करने की शक्ति रखने वाला मानना पड़ेगा। असरदार बनाए रखने में दोनों एक इरादा, एक इच्छा रखने वाले होंगे या नहीं होंगे। अगर हों, तो एक ही चीज़ की बनावट में दो असर करने वालों का असर करना लाज़िम आएगा और यह असम्भव है। और अगर यह फ़र्ज़ करो कि तारीफ़ उनमें से एक की है, तो दूसरे की शक्तिहीनता टहरेगी, जो मअबूद होने के ख़िलाफ़ है। और अगर यह होगा कि एक किसी चीज़ के होने का इरादा करे और दूसरा उसी हाल में उसके न होने का, तो वह चीज़ एक ही हाल में मौजूद या ग़ैरमौजूद या दोनों न होगी। ज़रूरी है कि या मौजूदगी होगी या गायब, एक ही बात होगी। अगर मौजूद हुई तो गायब का चाहने वाला शक्तिहीन ठहरे और मअबूद न रहे, और अगर गायब हुई तो मौजूद का इरादा करने वाला मजबूर रहा, मअबूद न रहा। लिहाज़ा यह साबित हो गया कि “इलाह” यानी मअबूद एक ही हो सकता।

अगर तुम उसी को पूजते हो (१७२) उसने यही तुमपर हाराम किये हैं मुर्दार (मृत) (१७) और खून (१८) और सुअर का गोश्त (१९) और वो जानवर जो गैर खुदा का नाम लेकर ज़िबह किया गया (२०) तो जो नाचार हो (२१) न यूँ कि ख्वाहिश से खाए और न यूँ कि ज़रूरत से आगे बढ़े तो उसपर गुनाह नहीं, वेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है (१७३) वो जो छुपाते हैं (२२) अल्लाह की उतारी किताब और उसके बदले ज़लील क्रीमत ले लेते हैं (२३) वो अपने पेट में आग ही भरते हैं (२४) और अल्लाह क़यामत के दिन उनसे बात न करेगा और न उन्हें सुधरा करे और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है (१७४) वो लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली और बख़्शिश (इनाम) के बदले अज़ाब तो किस दर्जा उन्हें आग की सहाय है (१७५) ये इसलिये कि अल्लाह ने किताब हक़ के साथ उतारी, और वेशक जो लोग किताब में इख़िलाफ़ (मतभेद) डालने लगे (२५) वो ज़रूर परले सिरे के झगड़ालू हैं (१७६)

बाईसवाँ सूक़

कुछ अरब नेकी यह नहीं कि मुंह मश्रिक (पूर्व) या मगरिव (पश्चिम) की तरफ़ करो (१) हाँ अरब नेकी ये कि ईमान लाए अल्लाह और क़यामत और फ़रिशतों और किताब

النَّبَا

३५

سَبَقُول

لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝ اِنَّا حَزَمْنَا عَلَيْنَا
الْمِيْثَاقَ وَالذِّمَّةَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَنَا اَهْلَ بِهٖ لَعِيْرُ
اللّٰهِ ۚ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا اِثْمَ
عَلَيْهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَكْتُمُوْنَ مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيُسْتُرُوْنَ بِهٖ
ثَمَنًا قَلِيْلًا ۚ اُولٰٓئِكَ مَا يَأْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا
النَّارَ وَلَا يَكْلُمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوْا الضَّلٰلَةَ
بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى
النَّارِ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۚ وَاِنَّ
الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ۝
لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
وَلَكِنْ الْبِرُّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ

مَزَل

(२) यह क़यामत के दिन का बयान है, जब शिर्क करने वाले और उनके सरदार, जिन्होंने उन्हें कुफ़्र की तरफ़ बुलाया था, एक जगह जमा होंगे और अज़ाब उतरता हुआ देखकर एक दूसरे से बेज़ार हो जाएंगे।

(३) यानी वो सारे सम्बन्ध जो दुनिया में उनके बीच थे, चाहे वो दोस्तीयाँ हों या रिश्तेदारीयाँ, या आपसी सहयोग के एहद।

(४) यानी अल्लाह तआला उनके बुरे कर्म उनके सामने करेगा तो उन्हें काफी हसरत होगी कि उन्होंने ये काम क्यों किये थे। एक क़ौल यह है कि जन्नत के मक़ामात दिखाकर उनसे कहा जाएगा कि अगर तुम अल्लाह तआला को फ़रमाँबरदारी करते तो ये तुम्हारे लिये थे। फिर वो जगह ईमान वालों को दी जाएगी। इसपर उन्हें हसरत और शर्मिन्दगी होगी।

सूरए बकरह - इक्कीसवाँ सूक़

(१) ये आयत उन लोगों के बारे में उतरी जिन्होंने बिज़ार वग़ैरह को हाराम करार दिया था। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला की हलाल फ़रमाई हुई चीज़ों की हाराम करार देना उसकी रिज़क देने वाली शक्ति से बग़ावत है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, अल्लाह तआला फ़रमाता है जो माल में अपने बन्दों को अता फ़रमाता हूँ वह उनके लिये हलाल है। और उसी में है कि मैंने अपने बन्दों को बातिल से बेतअल्लुक पैदा किया, फिर उनके पास शैतान आए और उन्होंने दीन से बहकाया, और जो मैंने उनके लिये हलाल किया था, उसको हाराम ठहराया। एक और हदीस में है, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया मैंने यह आयत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने पढ़ी तो हज़रत सअद इब्ने अबी वक्कास ने खड़े होकर अर्ज़ की, या रसूलल्लाह दुआ फ़रमाइये कि अल्लाह तआला मुझे मुस्तजाबुद दावत (यानी वह आदमी जिसकी हर दुआ अल्लाह कुबूल फ़रमाए) कर दे। हज़ूर ने फ़रमाया ऐ सअद, अपनी ख़ुराक पाक करो, मुस्तजाबुद दावत हो जाओगे। उस ज़ांते पाक की क्रसम जिसके दस्ते कुदरत मे मुहम्मद की जात है, जो आदमी अपने पेट में हाराम का लुक़मा डालता है, तो चालीस रोज़ तक कुबूलियत से मेहरूमी रहती है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

(२) तौहीद व क़ुरआन पर ईमान लाओ और पाक चीज़ों को हलाल जानो, जिन्हें अल्लाह ने हलाल किया।

(३) जब वाप दादा दीन की बातों को न समझते हों और सीधी राह पर न हों तो उनका अनुकरण करना मूर्खता और गुमराही है।

(४) यानी जिस तरह चौपाए चरवाहे की सिर्फ़ आवाज़ ही सुनते हैं, क़लाम के मानी नहीं समझते, यही हाल उन काफ़िरों का है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को आवाज़ को सुनते हैं, लेकिन उसके मानी दिल में बिठाकर आपके इश़ाद से फ़ायदा नहीं उठाते।

(५) यह इसलिये कि वो सच्ची बात सुनकर लाभ न उठा सके, सच्ची बात उनकी ज़बान पर जारी न हो सकी, नसीहतों से उन्होंने

कोई फ़ायदा न उठाया।

(६) इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला की नेअमतों पर शुक्र वाजिब है।

(७) जो हलाल जानवर वगैर ज़िह्न किये मर जाए या उसको शरई तरीक़े के ख़िलाफ़ मारा गया हो जैसे कि गला घोट कर, या लाठी, पत्थर, ढेले, गुल्ले, गोली मार कर हलाल किया गया हो, या वह गिरकर मर गया हो, या किसी जानवर ने सींग से मारा हो या किसी दरिन्दे ने हलाल किया हो, उसको मुर्दार कहते हैं। और इसी के हुक्म में दाख़िल है ज़िन्दा जानवर का वह अंग जो काट लिया गया हो। मुर्दार जानवर का ख़ाना हराम है, मगर उसका पका हुआ चमड़ा काम में लाना और उसके बाल, सींग, हड्डी, पट्टे, ख़ुरी वगैरह से फ़ायदा उठाना जायज़ है। (तफ़सीर अहमदी)

(८) ख़ून हर जानवर का हराम है, अगर बहने वाला हो। दूसरी आयत में फ़रमाया “औ दमम मसफूहन” (यानी या ग़ाँ का बहता ख़ून या बंद जानवर का गोश्त, वह नज़ासत है) (सूर अन्नआम - १४५)।

(९) सुअर नजिसुल ऐन है, यानी अत्यन्त अपवित्र है, उसका गोश्त पोस्त, बाल, नाख़ून वगैरह तमाम अंग नजिस, नापाक और हराम हैं। किसी को काम में लाना जायज़ नहीं। चूँकि ऊपर से ख़ाने का बयान हो रहा है इसलिये यहाँ गोश्त के ज़िक़्र को काफ़ी समझा गया।

(१०) जिस जानवर पर ज़िह्न के वक़्त ग़ैर ख़ुदा का नाम लिया जाए, चाहे अकेले या ख़ुदा के नाम के साथ “और” मिलाकर, वह हराम है। और अगर ख़ुदा के नाम के साथ ग़ैर का नाम “और” कहे बिना मिलाया तो मकरूह है। अगर ज़िह्न फ़क़त अल्लाह के नाम पर किया और उससे पहले या बाद में ग़ैर का नाम लिया, जैसे कि यह कहा अक़ीक़े का बकरा या बलीम का दुम्बा या जिसकी तरफ़ से वह ज़बीहा है उसी का नाम लिया या जिन बलियों के लिये सबाब पहुंचाना मन्ज़ूर है, उनका नाम लिया, तो यह जायज़ है, इसमें कुछ हर्ज नहीं। (तफ़सीर अहमदी)

(११) “मुज़्तर” अर्थात् नाचार वह है जो हराम चीज़ ख़ाने पर मजबूर हो और उसको न ख़ाने से जान जाने का डर हो, चाहे तो कड़ी भूक या नादारी के कारण जान पर वन जाए और कोई हलाल चीज़ हाथ न आए या कोई व्यक्ति हराम के ख़ाने पर ज़ब्र करता हो और उससे जान का डर हो। ऐसी हालत में जान बचाने के लिये हराम चीज़ का ज़रूरत भर यानी इतना ख़ालेना जायज़ है कि मरने का डर न रहे।

(१२) यहूदियों के उलमा और सरदार, जो उम्मीद रखते थे कि आख़िरी ज़माने के नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनमें से आएंगे। जब उन्होंने देखा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दूसरी क्रौम में से भेजे गए, तो उन्हें यह डर हुआ कि लोग तौरात और इंजील में हुज़ूर के गुण देखकर आपकी फ़रमोंबरदारी की तरफ़ झुक पड़ेंगे और उनके नज़राने, तोहफ़े, हदिये, सब बन्द हो जाएंगे, हुक्मत जाती रहेगी। इस ख़याल से उन्हें हसद पैदा हुआ और तौरात व इंजील में जो हुज़ूर की नअत और तारीफ़ और आपके वक़्ते नबुव्वत का बयान था, उन्होंने उसको छुपाया। इसपर यह मुयारक आयत उतरी। छुपाना यह भी है कि किताब के मज़मून पर किसी को सूचित न होने दिया जाए, न वह किसी को पढ़ के सुनाया जाए, न दिखाया जाए। और यह भी छुपाना है कि ग़लत मतलब निकाल कर मानी बदलने की कोशिश की जाए और किताब के अस्ल मानी पर पर्दा डाला जाए।

(१३) यानी दुनिया के तुच्छ तफ़े के लिये सत्य को छुपाते हैं।

(१४) क्योंकि ये रिश्वतें और यह हराम माल जो सच्चाई को छुपाने के बदले उन्होंने लिया है, उन्हें जहन्नम की आग में पहुंचाएगा।

(१५) यह आयत यहूदियों के बारे में उतरी कि उन्होंने तौरात में विरोध किया। कुछ ने उसको सच्चा कहा, कुछ ने बातिल, कुछ ने ग़लत सलत मतलब जोड़े, कुछ ने इबारत बदल डाली। एक क़ौल यह है कि यह आयत शिर्क करने वालों के बारे में नाज़िल हुई। उस सूरत में किताब से मुराद क़ुरआन है और उनका विरोध यह है कि उनमें से कुछ इसको शायरी कहते हैं, कुछ जादू, कुछ टोना टोटका।

सूर अन्नआम - बाईसवाँ रूक़

(१) यह आयत यहूदियों और ईसाइयों के बारे में नाज़िल हुई, क्योंकि यहूदियों ने बैतुल मक़दिस के पूर्व खो और ईसाइयों ने उसके पश्चिम को क़िबला बना रखा था और हर पक्ष का ख़याल था कि सिर्फ़ इस क़िबले ही की तरफ़ मुंह करना काफ़ी है। इस आयत में इसका रद्द फ़रमाया गया कि बैतुल मक़दिस का क़िबला होना स्थगित हो गया। (मदारिक़)। तफ़सीर करने वालों का एक क़ौल यह भी है कि यह सम्बोधन किताब वालों और ईमान वालों सब को आम है। और मानी ये हैं कि सिर्फ़ क़िबले की ओर मुंह करलेना अस्ल नेकी नहीं जबतक अक़ीदे दुस्स्त न हो और दिल सच्ची महब्वत के साथ क़िबले के रब की तरफ़ मुतवज्जेह न हो।

और पैगम्बरों पर^(२) और अल्लाह की महबूत में अपना अजीज माल दे रिश्तदरों और अनाथों और दरिद्रों और राहगीर और सायलों (याचकों) को और गर्दन छुड़ाने में^(३) और नमाज़ क़ायम रखे और ज़कात दे, और अपना कहा पूरा करने वाले जब अहद करें, और सब्र वाले मुसीबत और सख्ती में और जिहाद के वक़्त, यही हैं जिन्होंने अपनी बात सच्ची की, और यही परहेज़गार हैं^(१७७) ऐ ईमान वालो तुम पर फ़र्ज़ है^(४) कि जो नाहक मारे जाएं उनके खून का बदला लो^(५) आज़ाद के बदले अज़ाद, और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत^(६) तो जिसके लिये उसके भाई की तरफ़ से कुछ माफ़ी हुई^(७) तो भलाई से तक्राज़ा हो और अच्छी तरह अदा, यह तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारा बोझ हल्का करना है और तुमपर रहमत, तो इसके बाद जो ज़्यादाती करे^(८) उसके लिये दर्दनाक अज़ाब है^(१७८) और खून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है, ऐ अक्लमन्दो^(९) कि तुम कहीं बचो^(१७९) तुमपर फ़र्ज़

الْمَلِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّيِّبِينَ وَأَتَى الْمَالَ عَلَى
حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنَ
السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ فِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ
وَأَتَى الزَّكَاةَ وَالنَّفَقَةَ يَحْضَرُهُمْ إِذَا عَاهَدُوا
وَالصُّبْرِينَ فِي الْمُنَازَعَاتِ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ
أَوْلِيَّكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي
الْقَتْلِ الْحَرْبِ بِالْحَرْبِ وَالْعَبْدِ بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثَىٰ
بِالْأُنْثَىٰ فَمَنْ عَفَىٰ عَنْ شَيْءٍ فَإِنَّهُ
بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَّىٰ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ
مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ
فَعَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ إِذَا

(२) इस आयत में नेकी के छ तरीके इरशाद फ़रमाए - (क) ईमान लाना (ख) माल देना (ग) नमाज़ क़ायम करना (घ) ज़कात देना (ण) एहद पूरा करना (ङ) सब्र करना. ईमान की तफ़सील यह है कि एक अल्लाह तआला पर ईमान लाए कि वह ज़िन्दा है, क़ायम रखने वाला है, इल्म वाला, हिक्मत वाला, सुनने वाला, देखने वाला, देने वाला, कुदरत वाला, अज़ल से है, हमेशा के लिये है, एक है, उसका कोई शरीक नहीं. दूसरे क़यामत पर ईमान लाए कि वह सच्चाई है. उसमें बन्दों का हिसाब होगा, कर्मों का बदला दिया जाएगा. अल्लाह के प्रिय-जन शफ़ाअत करेंगे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सआदत-मन्दों या फ़रमाँबरदारों की हौज़े कौसर से जी भर कर पिलाएंगे, सिरात के पुल पर गुज़र होगा और उस रोज़ के सारे अहवाल जो क़ुरआन में आए या सैयदुल अम्बीया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बयान फ़रमाए, सब सत्य हैं. तीसरे, फ़रिश्तों पर ईमान लाए कि वो अल्लाह के पैदा किये हुए और फ़रमाँबरदार बन्दे हैं, न मर्द हैं, न औरत, उनकी तादाद अल्लाह ही जानता है. उनमें से चार बहुत नज़दीकी और बुजुर्गी वाले हैं, ज़िब्रईल, मीक़ाईल, इब्राहील, इज़राईल (अल्लाह की सलामती उन सब पर). चौथे, अल्लाह की किताबों पर ईमान लाना कि जो किताब अल्लाह तआला ने उतारी, सच्ची है. उनमें चार बड़ी किताबें हैं - (१) तौरात हज़रत मूसा पर (२) इंज़ल हज़रत ईसा पर, (३) बुक़र हज़रत दाऊद पर और (४) क़ुरआन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व अलैहिंम अजमईन पर नाज़िल हुई. और पचास सहीफ़े हज़रत शीस पर, तीस हज़रत इब्रीस पर, दस हज़रत आदम पर और दस हज़रत इब्राहीम पर नाज़िल हुए. पाँचवें, सारे नबीयों पर ईमान लाना कि वो सब अल्लाह के भेजे हुए हैं और मासूम यानी गुनाहों से पाक हैं. उनकी सही तादाद अल्लाह ही जानता है. उनमें ३१३ रसूल हैं. "नबिष्यीन" बहुवचन पुल्लिङ्ग में ज़िक्र फ़रमाया इशारा करता है कि नबी मर्द होते हैं. कोई औरत कभी नबी नहीं हुई जैसा कि "वमा अरसलेना मिन क़बलीका इल्ला रिजालन" (और हमने नहीं भेजे तुमसे पहले अपने रसूल मगर सिर्फ़ मर्द) सूरए नहल की ४३वीं आयत से साबित है. ईमाने मुजमल यह है : "आमन्नो बिल्लाहे व बिजयीए मा जाआ बिहिन नबिष्यी" (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) यानी मैं अल्लाह पर ईमान लाया और उन तमाम बातों पर जो नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के पास से लाए. (तफ़सीर अहमदी)

(३) ईमान के बाद कर्मों का और इस सिलसिले में माल देने का बयान फ़रमाया. इसके छ: उपयोग ज़िक्र किये. गर्दन छुड़ाने से गुलामों का आज़ाद करना मुग़ाद है. यह सब मुस्तहब तौर पर माल देने का बयान था. इस आयत से मालूम होता है कि सदक़ा देना, तनदुरुस्ती की हालत में ज़्यादा पुण्य रखता है, इसके विपरीत कि मरते वक़्त ज़िन्दगी से निराश होकर दे. हदीस शरीफ़ में है कि रिश्तेदार को सदक़ा देना दो सवाब हैं, एक सदक़े का, दूसरा ज़रूरतमन्द रिश्तेदार के साथ मेहरबानी का. (नसाई शरीफ़)

(४) यह आयत और ख़ज़रज के बारे में नाज़िल हुई. उनमें से एक कबीला दूसरे से जनसंख्या में, दौलत और बुजुर्गी में ज़्यादा था. उसने क्रसम खाई थी कि वह अपने गुलाम के बदले दूसरे कबीले के आज़ाद को, और औरत के बदले मर्द को, और एक के बदले दो को क़त्ल करेगा. जाहिलियत के ज़माने में लोग इसी किस्म की बीमारी में फंसे थे. इस्लाम के काल में यह मामला सैयदे

हुआ कि जब तुम में किसी को मौत आए अगर कुछ माल छोड़े वसीयत कर जाए अपने मां बाप और करीब के रिश्तेदारों के लिये दस्तूर के अनुसार^(१०) यह बाजिब है परहेजगारों पर^(१८०) तो जो वसीयत को सुन सुनकर बदल दे^(११) उसका गुनाह उन्हीं बदलने वालों पर है^(१२) बेशक अल्लाह सुनता जानता है^(१८१) फिर जिसे डर हुआ कि वसीयत करने वाले ने कुछ वे इन्साफी या गुनाह किया तो उसने उसमें सुलह करा दी उसपर कुछ गुनाह नहीं^(१३) बेशक अल्लाह वदखाने वाला मेहरवान है^(१८२)

तेईसवाँ रूक

ऐ ईमान वालों^(१) तुमपर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेजगारी मिले^(२) ^(१८३) गिनती के दिन है^(३) तो तुम में जो कोई बीमार या सफ़र में हो^(४) तो उतने रोज़े और दिनों में और जिन्हें इसकी ताकत न हो वो बदला दें एक दरिद्र का खाना^(५) फिर जो अपनी तरफ़ से नेकी ज़्यादा करे^(६) तो वह उसके लिये बेहतर है, और रोज़ा रखना तुम्हारे लिये ज़्यादा भला है अगर तुम जानो^(७) ^(१८४) रमज़ान का महीना जिसमें कुरआन उतारा^(८)

حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖ الْوَصِيَّةُ لِلْأُولَٰئِكَ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ۚ فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيمٌ عَلِيمٌ ۚ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوَصٍّ جَنْفًا أَوْ إِنْشَاءً فَلَا يَصْلَحُ بِهِمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۚ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الضِّيَاقُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۚ أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۚ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ ۚ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۚ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ

आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में पेश हुआ तो यह आयत उतरी और इन्साफ़ और बराबरी का हुक्म दिया और इसपर वो लोग राज़ी हुए. कुरआने करीम में खून का बदला लेने यानी किसास का मसअला कई आयतों में बयान हुआ है. इस आयत में किसास और माफ़ी दोनों के मसअले हैं और अल्लाह तआला के इस एहसान का बयान है कि उसने अपने बन्दों को बदला लेने और माफ़ कर देने की पूरी आज़ादी दी, चाहे बदला लें, चाहे माफ़ कर दें. आयत के शुरू में किसास के बाजिब होने का बयान है.

(५) इससे जानबूझ कर क़त्ल करने वाले हर क़ातिल पर किसास का बुजब अर्थात् अनिवार्यता साबित होती है. चाहे उसने आज़ाद को क़त्ल किया हो या गुलाम को, मुसलमान को या काफ़िर को, मर्द को या औरत को. क्योंकि "क़त्ला" जो क़त्ल का बहुवचन है, वह सबको शामिल है. हाँ जिसको शरई दलील ख़ास करे वह मज़सूस हो जाएगा. (अहकामुल कुरआन)

(६) इस आयत में बताया गया है कि जो क़त्ल करेगा वही क़त्ल किया जाएगा चाहे आज़ाद हो या गुलाम, मर्द हो या औरत. और जाहिलों का यह तरीक़ा जुल्म है जो उनमें रोज़ या प्रचलित था कि आज़ादों में लड़ाई होती तो वह एक के बदले दो को क़त्ल करते, गुलामों में होती तो गुलाम के बजाय आज़ाद को मारते. औरतों में होती तो औरत के बदले मर्द का क़त्ल करते थे और केवल क़ातिल के क़त्ल पर चुप न बैठते. इसको मना फ़रमाया गया.

(७) मानी ये हैं कि जिस क़ातिल को मृतक के बली या वारिस कुछ माफ़ करें और उसके ज़िम्मे माल लाज़िम किया जाए, उसपर मृतक के वारिस तफ़्ज़ा करने में नमी इस्तिथार करें और क़ातिल खून का मुआविज़ा समझबूझ के माहौल में अदा करे. (तफ़्सीरी अहमदी). मृतक के वारिस को इस्तिथार है कि चाहे क़ातिल को बिना कुछ लिये दिये माफ़ कर दे या माल पर सुलह करे. अगर वह इसपर राज़ी न हो ओर खून का बदला खून हो चाहे, तो किसास ही फ़र्ज़ रहेगा (जुमल). अगर मृतक के तमाम वारिस माफ़ कर दें तो क़ातिल पर कुछ लाज़िम नहीं रहता. अगर माल पर सुलह करें तो किसास साफ़ि (शूय) हो जाता है और माल बाजिब होता है (तफ़्सीरी अहमदी). मृतक के बली को क़ातिल का भाई फ़रमाने में इसपर दलालत है कि क़त्ल अगरचे बड़ा गुनाह है मगर इससे ईमान का रिश्ता नहीं टूटता. इसमें ख़ारजियों का रद है जो बड़े गुनाह करने वाले को काफ़िर कहते हैं.

(८) यानी जाहिलियत के तरीक़े के अनुसार, जिसने क़त्ल नहीं किया है उसे क़त्ल करे या दियत कुबूल करे और माफ़ करने के बाद क़त्ल करे.

(९) क्योंकि किसास मुकरर होने से लोग क़त्ल से दूर रहेंगे और जातें बचेंगी.

(१०) यानी शरीअत के क़ानून के मुताबिक़ इन्साफ़ करे और एक तिहाई माल से ज़्यादा की वसियत न करे और मुहताजों पर मालदारों को प्राथमिकता न दे. इस्लाम की शुरूआत में यह वसियत फ़र्ज़ थी. जब मीरास यानी विरासत के आदेश उतरे, तब स्थगित की गई. अब ग़ैर वारिस के लिये तिहाई से कम में वसियत करना मुस्तहब है. शर्त यह है कि वारिस मुहताज न हों, या तर्क मिलने पर मुहताज न रहे, वरना तर्क वसियत से अफ़ज़ल है. (तफ़्सीरी अहमदी)

लोगों के लिये हिदायत और राहनुमाई और फ़ैसला की रौशन बातें, तो तुम मे जो कोई यह महीना पाए ज़रूर इसके रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिनों में, अल्लाह तुमपर आसानी चाहता है और तुमपर दुश्चारी नहीं चाहता और इसलिये कि तुम गिनती पूरी करो^(१) और अल्लाह की बड़ाई बोलो इसपर कि उसने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम हकगुज़ार हो (यानी कृतज्ञ) **﴿१८५﴾** और ऐ मेहबूब जब तुमसे मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़दीक हूँ^(२) हुआ क़बूल करता हूँ पुकारने वाले की जब मुझे पुकारते^(३) तो उन्हें चाहिये मेरा हुक्म मानें और मुझपर ईमान लाएं कि कहीं राह पाएं **﴿१८६﴾** रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना तुम्हारे लिये हलाल (वैध) हुआ^(४) वो तुम्हारी लिबास हैं और तुम उनके लिबास, अल्लाह ने जाना कि तुम अपनी जानों को ख़यानत (वैदमानी) में डालते थे तो उसने तुम्हारी तौबह क़बूल की और तुम्हें माफ़ फ़रमाया^(५) तो अब उनसे सोहबत करो^(६) और तलब करो जो अल्लाह ने तुम्हारे नसीब में लिखा हो^(७) और खाओ और पियो^(८) यहां तक कि तुम्हारे लिये ज़ाहिर हो जाए सफ़ेदी का डोरा सियाही के डोरे से पौ फटकर^(९)

الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَ
الْفُرْقَانِ، فَمَن شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ، وَمَن
كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ
يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا
الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۝ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي
قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا
لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِلَعَنِهِمْ يَزْسُدُونَ ۝ أَجَلٌ لَّكُمْ
لَيْلَةُ الصِّيَامِ الرِّقْتُ إِلَىٰ نَسَابِكُمْ ۖ هُنَّ لِبَاسٌ
لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۖ عَلِمَ اللَّهُ أَنْكُمْ
كُنْتُمْ تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ
فَالَّذِينَ لَا شَرُوا هُنَّ وَأَتَعَوْا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ سَوْكُوتًا
وَأَشْرُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ

- (११) चाहे वह व्यक्ति हो जिसके नाम वसियत की गई हो, चाहे बली या सरपरस्त हो, या ग़वाह और वह तबदीली वसियत की लिखाई में करे या बँटवारे में या ग़वाही देने में . अगर वह वसियत शरीअत के दायरे में है तो बदलने वाला गुनहगार होगा.
(१२) और दूसरे, चाहे वह वसियत करने वाला हो या वह जिसके नाम वसियत की गई है, बरी हैं.
(१३) मतलब यह है कि वारिस या वसी यानी वह जिसके नाम वसियत की जाय. या इमाम या क़ाज़ी जिसको भी वसियत करने वाले की तरफ़ से नाइन्साफ़ी या नाहक़ कार्रवाई का डर हो वह अगर, जिसके लिये वसियत की गई, या वारिसों में, शरीअत के मुवाफ़िक़ सुलह करादे तो गुनाह नहीं क्योंकि उसने हक़ की हिमायत के लिये बातिल को बदला. एक क़ौल यह भी है कि मुराद वह शख्स हैं जो वसियत के वक़्त देखे कि वसियत करने वाला सच्चाई से आगे जाता है और शरीअत के खिलाफ़ तरीक़ा अपनाता है तो उसके रोक दे और हक़ व इन्साफ़ का हुक्म करे.

सूरए बक्ररह - तेईसवाँ रूकू

- (१) इस आयत में रोज़े फ़र्ज़ होने का बयान है. रोज़ा शरीअत में इसका नाम है कि मुसलमान, चाहे मर्द हो या शारीरिक नापाकी से आज़ाद औरत, सुबह सादिक़ से सूरज डूबने तक इबादत की नियत से खाना पीना और सहवास से दूर रहे. (आलमगीरी). रमज़ान के रोज़े दस शवाल मन दो हिज़री को फ़र्ज़ किये गये (दुर्रे मुख़्तार व ख़ाज़िन). इस आयत से साबित होता है कि रोज़े पुरानी इबादत हैं. आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से सारी शरीअतों में फ़र्ज़ होते चले आए, अगरचे दिन और संस्कार अलग थे, मगर असल रोज़े सब उम्मतों पर लाज़िम रहे.
(२) और तुम गुनाहों से बचो, क्योंकि यह कसरे-दफ़स का कारण और तक़वा करने वालों का तरीक़ा है.
(३) यानी सिर्फ़ रमज़ान का एक महीना.
(४) सफ़र से वह यात्रा मुराद है जिसकी दूरी तीन दिन से कम न हो. इस आयत में अल्लाह तआला ने बीमार और मूसाफ़िर को छूट दी कि अगर उसको रमज़ान में रोज़ा रखने से बीमारी बढ़ने का या मौत का डर हो या सफ़र में सक्ती या तकलीफ़ का, तो बीमारी या सफ़र के दिनों में रोज़ा खोल दे और जब बीमारी और सफ़र से फ़ारिग़ होले, तो पाबन्दी वाले दिनों की छोड़कर और दिनों में उन छूटे हुए रोज़ों की क़ज़ा पूरी करे. पाबन्दी वाले दिन पांच हैं जिन में रोज़ा रखना जायज़ नहीं, दोनो ईद और ज़िल्हज़ की ग़्यारहवीं, बारहवीं और १३ वीं तारीख़. मरीज़ की केवल वहम पर रोज़ा खोल देना जायज़ नहीं. जब तक दलील या तजुर्वा या परहेज़गार और सच्चे तबीब की ख़बर से उसकी यह यक़ीन न हो जाए कि रोज़ा रखने से बीमारी बढ़ जाएगी. जो शख्स उस वक़्त बीमार न हो मगर मुसलमान तबीब यह कहे कि रोज़ा रखने से बीमार हो जाएगा, वह भी मरीज़ के हुक्म में हैं. गर्भवती या दूध पिलाने वाली औरत को अगर रोज़ा रखने से अपनी या बच्चे की जान का या उसके बीमार होजाने का डर हो तो उसको भी रोज़ा खोल

देना जायज़ है, जिस मुसाफ़िर ने फ़ज्र तुलू होने से पहले सफ़र शुरू किया उसको तो रोज़े का खोलना जायज़ है, लेकिन जिसने फ़ज्र निकलने के बाद सफ़र किया, उसको उस दिन का रोज़ा खोलना जायज़ नहीं।

(५) जिस बूढ़े मर्द या औरत को बुढ़ापे की कमज़ोरी के कारण रोज़ा रखने की ताक़त न रहे और आगे भी ताक़त हासिल करने की उम्मीद न हो, उसको शैख़ फ़रानी कहते हैं, उसके लिये जायज़ है कि रोज़ा खोल दे और हर रोज़े के बदले एक सौ पछहतर रुपये और एक अट्ठी भर गेहूँ या गेहूँ का आटा या उससे दुग्ने जौ या उसकी कीमत फ़िदिया के तौर पर दे, अगर फ़िदिया देने के बाद रोज़ा रखने की ताक़त आगई तो रोज़ा वाजिब होगा, अगर शैख़ फ़रानी नादार हो और फ़िदिया देने की क्षमता न रखता हो तो अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफ़ी माँगता रहे और दुआ व तौबा में लगा रहे।

(६) यानी फ़िदिया की भिक्कदार से ज्यादा दे।

(७) इससे मालूम हुआ कि अगरचे मुसाफ़िर और मरीज़ की रोज़ा खोलने की इजाज़त है लेकिन बेहतरी रोज़ा रखने में ही है।

(८) इसके मानी में तफ़सीर करने वालों के चन्द अक़वाल हैं : (१) यह कि रमज़ान वह है जिसकी शात व शराफ़त में क़ुरआने पाक उतरा (२) यह कि क़ुरआने करीम के नाज़िल होने की शुरुआत रमज़ान में हुई, (३) यह कि क़ुरआन करीम पूरा रमज़ाने मुबारक को शबे क़द्र में तौहे मेहफ़ूज़ से दुनिया के आसमान की तरफ़ उतारा गया और वैतुल इज़ज़त में रहा, यह उसी आसमान पर एक मक़ाम है, यहाँ से समय समय पर अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ थोड़ा थोड़ा जिब्रीले अमीन लाते रहे, यह नज़ूल तेईस साल में पूरा हुआ।

(९) हदीस में है, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि महीना उनतीस दिन का भी होता है तो चौदें देग़र ख़ोलो, अगर उनतीस रमज़ान को चौद न दिख़ाई दे तो तीस दिन की गिनती पूरी करो।

(१०) इसमें हज़रत ओर सच्चाई चाहने वालों की उस तलब का बयान है जो अल्लाह की पाने की तलब है, जिन्होंने अपने रब के इशक़ में अपनी ज़रूरतों को क़ुरबान कर दिया, वो उसी के तलबगार हैं, उन्हें कुर्व और मिलन की खुशख़बरी सुनाकर खुश किया गया, सहाबा की एक जमाअत ने अल्लाह के इशक़ की भावना में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पूछा कि हमारा रब कहाँ है, इसपर कुर्व की खुशख़बरी दी गई और बताया गया कि अल्लाह तआला मकान से पाक है, जो चीज़ किसी से मकानी कुर्व रखती हो वह उसके दूर वाले से ज़रूर दूरी रखती है, और अल्लाह तआला सब बन्दों से करीब है, मकानी की यह शात नहीं, कुर्वत की मन्ज़िलों में पहुँचने के लिये बन्दे को अपनी ग़फ़लत दूर करनी होती है।

(११) दुआ का मतलब है हाज़त बयान करना और इजाज़त यह है कि परवर्दिगार अपने बन्दे की दुआ पर “लब्बेका अब्दी” फ़रमाता है, मुराद अता फ़रमाना दूसरी चीज़ है, वह भी कभी उसके करम से फ़ौरन होती है, कभी उसकी हिक़मत के तहत देरी से, कभी बन्दे की ज़रूरत दुनिया में पूरी फ़रमाई जाती है, कभी आग़िरत में, कभी बन्दे का नफ़ा दूसरी चीज़ में होता है, वह अता की जाती है, कभी बन्दा मेहबूब होता है, उसकी ज़रूरत पूरी करने में इसलिये देर की जाती है कि वह असे तक दुआ में लगा रहे, कभी दुआ करने वाले में सिद्क व इख़लास बग़ैरह शर्तें पूरी नहीं होती, इसलिये अल्लाह के नेक और मक़बूल बन्दों से दुआ कराई जाती है, नाजायज़ काम की दुआ कराना जायज़ नहीं, दुआ के आदाव में है कि नमाज़ के बाद हम्दो सना और दरुद शरीफ़ पढ़े फिर दुआ करें।

(१२) पिछली शरीअतों में इफ़्तार के बाद ख़ाना पीना सहवास करना ईशा की नमाज़ तक हलाल था, ईशा बाद ये सब चीज़ें रात में भी हराम हो जाती थीं, यह हुक्म सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़मानए अक़दस् तक बाक़ी था, कुछ सहाबा ने रमज़ान की रातों में नमाज़ ईशा के बाद सहवास किया, उनमें हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो भी थे, इसपर वो हज़रत लज्जित हुए और रसूले अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अपना हाल अर्ज़ किया, अल्लाह तआला ने माफ़ फ़रमाया और यह आयत उतरी और बयान कर दिया गया कि आयन्दा के लिये रमज़ान की रातों में मगरिब से सुबह सादिक़ तक अपनी पत्नी के साथ सहवास हलाल किया गया।

(१३) इस ख़यानत से वह सहवास मुराद है जो इजाज़त मिलने से पहले के रमज़ान की रातों में मुसलमानों ने किया, उसकी माफ़ी का बयान फ़रमाकर उनकी तसल्ली फ़रमा दी गई।

(१४) यह बात इजाज़त के लिये है कि अब वह पाबन्दी उटाली गई और रमज़ान की रातों में सहवास हलाल कर दिया गया।

(१५) इसमें हिदायत है कि सहवास नसल और औलाद हासिल करने की नियत से होना चाहिये, जिससे मुसलमान बड़ें और दीन मज़बूत हो, मुफ़सिरीन का एक क़ौल यह भी है कि मानी ये है कि सहवास शरीअत के हुक्म के मुताबिक़ हो जिस महल में जिस तरीक़े से इजाज़त दी गई उससे आगे न बढ़ा जाए, (तफ़सीर अहमदी), एक क़ौल यह भी है जो अल्लाह ने लिखा उसको तलब करने के मानी हैं रमज़ान की रातों में इबादत को कसरत (ज्यादती) और जाग़-कर शबे-क़द्र की तलाश करना।

(१६) यह आयत सरमआ बिन क़ैस के बारे में उतरी, आप महनती आदमी थे, एक दिन रोज़े की हालत में दिन भर अपनी ज़मीन में काम करके शाम को घर आए, दीवी से ख़ाना माँगा, वह पकाने में लग गई यह थके थे और लग गई, जब ख़ाना तैयार करके उन्हें बेदार किया उन्होंने ख़ाने से इन्कार कर दिया क्योंकि उस ज़माने में सो जाने के बाद रोज़ेदार पर ख़ाना पीना बन्द हो जाता था और उसी हालत में दूसरा रोज़ा रख लिया, कमज़ोरी बहुत बढ़ गई, दोपहर को चक्कर आगया, उनके बारे में यह आयत उतरी और रमज़ान को रातों में उनके कारण ख़ाना पीना हलाल किया गया, जैसे कि हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो की अनाबत और रज़ू के सबब कुर्वत हलाल हुई।

(१७) रात को सियाह डोरे से और सुबह सादिक़ को सफ़ेद डोरे से तशबीह दी गई, मानी ये हैं कि तुम्हारे लिये ख़ाना पीना रमज़ान

फिर रात आने तक रोजे पूरे करो^(१८) और औरतों को हाथ न लगाओ जब तुम मस्जिदों में एतिकाफ से हो (यानी दुनिया से अलग थलग बैठे हो)^(१९) ये अल्लाह की हदें हैं, इनके पास न जाओ, अल्लाह यूही वयान करता है लोगों से अपनी आयतें कि कहीं उन्हें परहेज़गरी मिले^(२०) और आपस में एक दूसरे का माल नाहक न खाओ और न हाकिमों के पास उनका मुकदमा इस लिये पहुंचाओ कि लोगों का कुछ माल नाजायज़ तौर पर खालो^(२१) जान बूझ कर^(२२)

चौबीसवाँ सूक़

तुमसे नए चांद को पूछते हैं^(१) तुम फ़रमादो वो वक़्त की अलामतें (चिन्ह) हैं लोगों और हज के लिये^(२) और यह कुछ भलाई नहीं कि^(३) घरों में पछैत (पिछली दीवार) तोड़ कर आओ हां भलाई तो परहेज़गारी है, और घरों में दरवाज़ों से आओ^(४) और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि फ़लाह (भलाई) पाओ^(५) और अल्लाह की राह में लड़ो^(६) उनसे जो तुमसे लड़ते हैं^(७) और हद से न बढ़ो^(८) अल्लाह पसन्द नहीं रखता हद से बढ़ने वालों को^(९) और काफ़िरों को जहाँ पाओ मारो^(१०) और उन्हें निकाल दो^(११)

الْغَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ أَتَبُوا الضِّيَامَ إِلَى
الْبَيْتِ وَلَا تَبَايَسْهُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي
الْمَسْجِدِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا كَذَلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ وَلَا
تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتَذَلُّوا بِهَا إِلَى
الْحُكَّامِ لِنَأْكُلُوا فَرِيقًا مِنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ
وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْهَيْكَةِ قُلْ هِيَ
مَوَاقِفُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا
الْبَيْتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَى وَأَتُوا
الْبَيْتَ مِنْ أَبْوَابِهَا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝
وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا
تَعْتَدُوا لِلْإِنِّ اللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَأَقْسَلُوهُمْ
حَيْثُ تَقِفُ مَوَهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ

منزل

की रातों में मगरिब से सुबह सादिक तक हलाल कर दिया गया. (तफ़सीर अहमदी). सुबह सादिक तक इजाज़त देने में इशारा है कि जनावत या शरीर की नापाकी रोजे में छुकावट नहीं है. जिस शख्स को नापाकी के साथ सुबह हुई, वह नहाले, उसका रोज़ा जायज़ है. (तफ़सीर अहमदी). इसी से उलमा ने यह मसअला निकाला कि रमज़ान के रोजे की नियत दिन में जायज़ है.

(१८) इससे रोजे की आखिरी हद मालूम होती है और यह मसअला साबित होता है कि रोजे की हालत में खाने पीने और सहवास में से हर एक काम करने से कफ़रा लाज़िम हो जाता है. (मदारीक). उलमा ने इस आयत को सौमे विसाल यानी तय के रोजे यानी एक पर एक रोज़ा रखने की मनाही की दलील क़रार दिया है.

(१९) इस में वयान है कि रमज़ान की रातों में रोजेदार के लिये बीबी से हमबिस्तरी हलाल है जब कि वह मस्जिद में एतिकाफ़ में न बैठा हो. एतिकाफ़ में औरतों से कुरबत और चूमा चाटी, लिपटाना चिपटाना सब हराम हैं. मंदों के एतिकाफ़ के लिये मस्जिद ज़रूरी है. एतिकाफ़ में बैठे आदमी को मस्जिद में खाना पीना सोना जायज़ है. औरतों का एतिकाफ़ उनके घरों में जायज़ है. एतिकाफ़ हर ऐसी मस्जिद में जायज़ है जिसमें जमाअत कायम हो. एतिकाफ़ में रोज़ा शर्त है.

(२०) इस आयत में बातिल तौर पर किसी का माल खाना हराम फ़रमाया गया है, चाहे वह लूट कर छीन कर या चोरी से या जुए से या हराम तमाशों से या हराम कामों या हराम चीज़ों के बदले या रिशवत या झूठी गवाही या चुगलख़ोरी से, यह सब मना और हराम है. इससे मालूम हुआ कि नाजायज़ फ़ायदे के लिये किसी पर मुक़दमा बनाना और उसको हाकिम तक लेजाना हराम और नाजायज़ है. इसी तरह अपने फ़ायदे के लिये दूसरे को हानि पहुंचाने के लिये हाकिम पर असर डालना, रिशवत देना हराम है. हाकिम तक पहुंच वाले लोग इन आदेशों को नज़र में रखें. हदीस शरीफ़ में मुसलमानों को नुक़सान पहुंचाने वाले पर लानत आई है.

सूरए बक्ररह - चौबीसवाँ सूक़

(१) यह आयत हज़रत मआज़ बिन जबल और सअलबा बिन ग़िनाम अन्सारी के जवाब में उतरी. उन दोनों ने दर्याफ़्त किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाही अलैका वसल्लम, चाँद का क्या हाल है, शुरू में बहुत बारीक निकलता है, फिर दिन ब दिन बढ़ता है यहाँ तक कि पूरा ग़ैशन हो जाता है फिर घटने लगता है और यहां तक घटता है कि पहले की तरह बारीक हो जाता है. एक हालत में नहीं रहता. इस सवाल का मक़सद चाँद के घटने बढ़ने की हिकमत जानना था. कुछ मुफ़ससरीन का ख़याल है कि सवाल का मक़सद चाँद के इस्तिफ़ात का कारण मालूम करना था.

(२) चाँद के घटने बढ़ने के फ़ायदे वयान फ़रमाए कि वह वक़्त की निशानियाँ हैं और आदमी के हज़ारों दीनी व दुनियावी काम इससे जुड़े हैं. खेती बाड़ी, लेन देन के मामले, रोजे और ईद का समय, औरतों की इंदतें, माहवारी के दिन, गर्भ और दूध पिलाने

जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला था^(१०) और उनका फ़साद तो क़त्ल से भी सज़ा है^(११) और मस्जिद हारम के पास उन से न लड़ो जबतक वो तुम से वहाँ न लड़ें^(१२) और अगर तुमसे लड़ें तो उन्हें क़त्ल करो^(१३) काफ़िरों की यही सज़ा है^(१४) फिर अगर वो बाज़ (रूके) रहें^(१५) तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरवान है^(१६) और उनसे लड़ो यहाँ तक कि कोई फ़ितना न रहे और एक अल्लाह की पूजा हो, फिर अगर वो बाज़ आएँ^(१७) तो ज़्यादती नहीं मगर ज़ालिमों पर^(१८) माहे हारम के बदले माहे हारम और अदब के बदले अदब है^(१९) जो तुमपर ज़ियादती करे उसपर ज़ियादती करो उतनी ही जितनी उसने की, और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह डरने वालों के साथ है^(२०) और अल्लाह की राह में खर्च करो^(२१) और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो,^(२२) और भलाई वाले हो जाओ बेशक भलाई वाले अल्लाह के मेहबूब हैं^(२३) और हज व उमरा अल्लाह के लिये पूरा करो^(२४) फिर अगर तुम रोके जाओ^(२५) तो कुरबानी भेजो जो मयस्सर (उपलब्ध) आए^(२६) और अपने सर न मुंडाओ जब तक कुरबानी अपने ठिकाने न

الْبَقَرَةُ

٢

سُورَةُ

وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ، وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّى يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ، فَإِنْ قَاتَلُوكُمْ
فَاغْلِبُواهُمْ، كَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ۖ فَإِنْ انْتَهَوْا
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۖ وَفَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ
فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ فَإِنْ انْتَهَوْا فَلَا
عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ۖ الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ
الْحَرَامِ وَالْحُرُمَتُ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ اعْتَدَى عَلَيْكُمْ
فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَى عَلَيْكُمْ ۖ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۖ
وَأَنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى
التَّهْلُكَةِ وَأَحْسِنُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۖ
وَأَيَّمُوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ فَإِنْ أُخْصِرْتُمْ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّى

مَنْزِل

की मुदतें और दूध छुड़ाने का वक़्त और हज के औक़ात इससे मालूम होते हैं क्योंकि पहले जब चाँद बारीक होता है तो देखने वाला जान लेता है कि यह शुरु की तारीख़ है, और जब चाँद पूरा रौशन हो जाता है तो मालूम हो जाता है कि यह महीने की बीच की तारीख़ है, और जब चाँद छुप जाता है तो यह मालूम होता है कि महीना ख़त्म पर है, इसी तरह उनके बीच दिनों में चाँद की हालतें दलायत किया करती हैं, फिर महीनों से साल का हिसाब मालूम होता है, यह वह कुदरती जनतरी है जो आसमान के पत्र पर हमेशा खुली रहती है, और हर मुल्क और हर ज़बान के लोग, पढ़े भी और बे पढ़े भी, सब इससे अपना हिसाब मालूम कर लेते हैं।

(३) जाहिलियत के दिनों में लोगों की यह आदत थी कि जब वो हज का इहराम बांधते तो किसी मकान में उसके दरवाज़े से दाख़िल न होते, अगर ज़रूरत होती तो पिछे तोड़ कर आते और इसको नेकी जानते, इसपर यह आयत उतरी।

(४) चाहे इहराम की हालत हो या ग़ैर इहराम की।

(५) सन छ हिजरी में हुदैबिया का वाकिआ पेश आया, उस साल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीनए तैयिबह से उमरे के इरादे से मक्कए मुकर्रमा खाना हुए, मुशिकों ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका और इसपर सुलह हुई कि आप अगले साल तशरीफ़ लाएँ तो आपके लिये तीन रोज़ मक्कए मुकर्रमा ख़ाली कर दिया जाएगा, अगले साल सन सात हिजरी में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम क़त्रा उमरे के लिये तशरीफ़ लाए, अब हुज़ूर के साथ एक हज़ार चार सौ की जमाअत थी, मुसलमानों को यह डर हुआ कि काफ़िर अपने वचन का पालन न करेंगे और हरमे मक्कए में पाबन्दी वाले महीने यानी ज़िलक़ाद के माह में जंग करेंगे और मुसलमान इहराम की हालत में हैं, इस हालत में जंग करना भारी है क्योंकि जाहिलियत के दिनों से इस्लाम की शुरुआत तक न हरम में जंग जायज़ थी न माहे हारम में, न हालत इहराम में, तो उन्हें फ़िक्र हुई कि इस वक़्त जंग की इजाज़त मिलती है या नहीं, इसपर यह आयत उतरी।

(६) इसके मानी या तो ये हैं कि जो काफ़िर तुमसे लड़ें या जंग की शुरुआत करें तुम उनसे दीन की हिमायत और इज़ाज़त के लिये लड़ो, यह हुक्म इस्लाम की शुरुआत में था, फिर स्थगित कर दिया गया और काफ़िरों से क़िताल या जंग करना वाजिब हुआ, चाहे वो शुरुआत करें या न करें, या ये मानी हैं कि जो तुम से लड़ने का इरादा रखते हैं, यह बात सारे ही काफ़िरों में है क्योंकि वो सब दीन के दुश्मन और मुसलमानों के मुख़ालिफ़ हैं, चाहे उन्होंने किसी वजह से जंग न की हो लेकिन मौक़ा पाने पर चूकने वाले नहीं, ये मानी भी हो सकते हैं कि जो काफ़िर मैदान में तुम्हारे सामने आएँ और तुम से लड़ने वाले हों, उनसे लड़ो, उस सूरत में बूढ़े, बच्चे, पागल, अपाहिज, अन्धे, बीमार, औरतें वग़ैरह जो जंग की ताक़त नहीं रखते, इस हुक्म में दाख़िल न होंगे, उनका क़त्ल करना जायज़ नहीं।

(७) जो जंग के क़ाबिल नहीं उनसे न लड़ो या जिनसे तुमने एहद किया हो या बग़ैर दावत के जंग न करो क्योंकि शरई तरीक़ा यह है कि पहले काफ़िरों को इस्लाम की दावत दी जाए, अगर इन्कार करें तो जिज़िया माँगा जाए, उससे भी इन्कारी हों तो जंग की

जाए। इस मानी पर आयत का हुक्म बाकी है, स्थगित नहीं। (तफसीरे अहमदी)

(८) चाहे हरम हो या गैर हरम।

(९) मक्कए मुकर्रमा से।

(१०) पिछले साल, चुनावों के फल मक्का के दिन जिन लोगों ने इस्लाम कुबूल न किया उनके साथ यही किया गया।

(११) फसाद से शिर्क मुग़ाद है या मुसलमानों को मक्कए मुकर्रमा में दाखिल होने से रोकना।

(१२) क्योंकि ये हरम की पाकी के विरुद्ध है।

(१३) कि उन्होंने हरम शरीफ की बेहुरमती या अपमान किया।

(१४) कत्ल और शिर्क से।

(१५) कुफ़र और वातिल परस्ती से।

(१६) जब पिछले साल जिल्काद सन छ हिजरी में अरब के मुश्रिकों ने माहे हराम की पाकी और अदब का लिहाज न रखा और तुम्हें उमरे की अदायगी से रोका तो ये अपमान उनसे वाक़े हुआ और इसके बदले अल्लाह के दिये से सन सात हिजरी के जिल्काद में तुम्हें मौका मिला कि तुम क़ज़ा उमरे को अदा करो।

(१७) इससे सारे दीनी कामों में अल्लाह की खुशी और फ़रमावशकारी के लिये ख़र्च करना मुग़ाद है चाहे जिहाद हो या और बेकियाँ।

(१८) खुदा की राह में ज़रूरत भर की हलाल चीज़ों का छोड़ना भी अच्छा नहीं और फ़ूज़ूल ख़र्ची भी और इस तरह और चीज़ भी जो ख़तरे और मौत का कारण हो, उन सब से दूर रहने का हुक्म है यहाँ तक कि बिना हथियार जंग के मैदान में जाना या ज़हर खाना या किसी तरह आत्म हत्या करना। उलमा ने इससे यह निष्कर्ष भी निकाला है कि जिस शहर में प्लेग हो वहाँ न जाएं अगरचे वहाँ के लोगों का वहाँ से भागना मना है।

(१९) और इन दोनों की इनके फ़रायज़ और शर्तों के साथ ख़ास अल्लाह के लिये वे सुस्ती और बिला नुक़सान पूरा करो। हज़ नाम है इहराम बाँधकर नबी ज़िलहज़ को अरफ़ात में ठहरने और काबे के तवाफ़ का। इसके लिये ख़ास वक़्त मुकर्रर है, जिसमें ये काम किये जाएं तो हज़ है। हज़ सन नौ हिजरी में फ़र्ज़ हुआ। इसकी अनिवार्यता निश्चित है। हज़ के फ़र्ज़ ये हैं : (१) इहराम (२) नौ ज़िलहज़ को अरफ़ात के मैदान में ठहरना (३) तवाफ़े ज़ियारत। हज़ के वाजिबात ये हैं : (१) मुज्दलिफ़ा में ठहरना, (२) सफ़ा मर्या के बीच सई, (३) शैतानों को कंकरियाँ मारना, (४) बाहर से आने वाले हाजी के लिये काबे का तवाफ़े ख़ुमसत और (५) सर मुंडाना या बाल हल्के करना। उमरा के स्कन तवाफ़ और सई हैं और इसकी शर्त इहराम और सर मुंडाना है। हज़ और उमरा के चार तरीक़े हैं : (१) इफ़राद बिलहज़ : वह यह है कि हज़ के महीनों में या उनसे पहले मीक़ात से या उससे पहले हज़ का इहराम बाँध ले और दिलसे उसकी नियत करे चाहे ज़बान से लब्बैक पढ़ते वक़्त चाहे उसका नाम ले या न ले। (२) इफ़राद बिल उमरा। वह यह है कि मीक़ात से या उससे पहले हज़ के महीनों में या उनसे पहले उमरे का इहराम बाँधे और दिल से उसका इरादा करे चाहे तलबियह यानी लब्बैक पढ़ते वक़्त ज़बान से उसका ज़िक़र करे या न करे और इसके लिये हज़ के महीनों में या उससे पहले तवाफ़ करे चाहे उस साल में हज़ करे न करे मगर हज़ और उमरे के बीच सही अरक़ान अदा करे इस तरह कि अपने बाल बच्चों की तरफ़ हलाल होकर वापस हो। (३) क़िरान यह है कि हज़ और उमरा दोनों को एक इहराम में जमा करे। वह इहराम मीक़ात से बाँधा हो या उससे पहले, हज़ के महीनों में या उससे पहले। शुरु से हज़ और उमरा दोनों की नियत हो चाहे तलबियह या लब्बैक कहते वक़्त ज़बान से दोनों का ज़िक़र करे या न करे। पहले उमरे के अरक़ान अदा करे फिर हज़ के। (४) तमतो यह है कि मीक़ात से या उससे पहले हज़ के महीने में या उससे पहले उमरे का इहराम बाँधे और हज़ के माह में उमरा करे या अकसर तवाफ़ उसके हज़ के माह में हों और हलाल होकर हज़ के लिये इहराम बाँधे और उसी साल हज़ करे और हज़ और उमरा के बीच अपनी बीबी के साथ सोहबत न करे। इस आयत से उलमा ने क़िरान साबित किया है।

(२०) हज़ या उमरे से बाद शुरु करने और घर से निकलने और इहराम पहन लेने के, यानी तुम्हें कोई स्क्वाबट हज़ या उमरे की अदायगी में पेश आए चाहे वह दुश्मन का ख़ौफ़ हो या बीमारी वगैरह, ऐसी हालत में तुम इहराम से बाहर आजाओ।

(२१) ज़ंट या गाय बकरी, और यह क़ुरबानी भेजना वाजिब है।

पहुंच जाए^(२२) फिर जो तुममें बीमार हो उसके सर में कुछ तकलीफ है^(२३) तो बदला दे रोज़े^(२४) या ख़ैरात^(२५) या कुरबानी। फिर जब तुम इल्मीनान से हो तो जो हज से उमरा मिलाने का फ़ायदा उठाए^(२६) उसपर कुरबानी है जैसी मयस्सर आए^(२७) फिर जिसकी ताक़त न हो तीन रोज़े हज के दिनों में रखे^(२८) और सात जब अपने घर पलट कर जाओ, ये पूरे दस हुए, यह हुक्म उसके लिये है जो मक्का का रहने वाला न हो,^(२९) और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है^(३०)।

पच्चीसवाँ रूकू

हज के कई महीने हैं जाने हुए^(१) तो जो उनमें हज की नियत करे^(२) तो न औरतों के सामने सोहबत (संभोग) का तज़किरा (चर्चा) हो न कोई गुनाह न किसी से झगड़ा^(३) हज के वक़्त तक और तुम जो भलाई करो अल्लाह उसे जानता है^(४) और तोशा साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़गारी है^(५) और मुझसे डरते रहो ऐ अक्ल वालो^(६) ^(१९७) तुमपर कुछ गुनाह नहीं^(७) कि अपने रब का फ़ज़ल (कृपा) तलाश करो तो जब अरफ़ात (के मैदान) से पलटो^(८) तो

يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَجْلَهُ، فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا
أَوْ بَرِيًّا أَدَّى مِنْ رَأْسِهِ فَفِذْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ
صَدَقَةٍ أَوْ نُسْإٍ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَمَنْ تَبَتَّعَ بِالْهَجَرَةِ
إِلَى الْحَجِّ فَبِمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ، فَمَنْ لَمْ
يَجِدْ قِصْيَامَ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا
رَجَعْتُمْ، تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ، ذَلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ
أَهْلَهُ حَاضِرِينَ السَّجْدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ الْحَجُّ أَشْهُرٌ
مَّعْلُومَةٌ، فَمَنْ قَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفْعَ
وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ
خَيْرٍ يَغْفِرْهُ اللَّهُ وَتَزُودُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ
التَّقْوَىٰ، وَاتَّقُوا يَٰأَيُّهَا الْأَبْأَاسُ ۝ لَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ، فَإِذَا أَقَضْتُمْ

(२२) यानी हरम में जहाँ उसके ज़िक्र का हुक्म है, यह कुरबानी हरम के बाहर नहीं हो सकती।

(२३) जिससे वह सर मुंडाने के लिये मजबूर हो और सर मुंडाले।

(२४) तीन दिन के।

(२५) छ मिरक़ीनों का ख़ाना, हर मिरक़ीन के लिये पौने दो सेर गेहूँ।

(२६) यानी तमतो करे।

(२७) यह कुरबानी तमतो की है, हज के शुक्र में बाजिव हुई, चाहे तमतो करने वाला फ़कीर हो, ईदुज़ जुहा की कुरबानी नहीं, जो फ़कीर और मुसाफ़िर पर बाजिव नहीं होती।

(२८) यानी पहली शबाल से नवीं ज़िल्हज तक इहराम बाँधने के बाद इस दरमियान में जब चाहे रग़रले, चाहे एक साथ या अलग अलग करके, बेहतर यह है कि सात, आठ, नौ ज़िल्हज को रखे।

(२९) मक्का के निवासी के लिये न तमतो है न क़िरान, और मीक़ात की सीमाओं के अन्दर रहने वाले, मक्का के निवासियों में दाख़िल हैं, मीक़ात पाँच है: जुल हलीफ़ा, ज़ाते इर्क़, जहफ़ा, करन, यलमलम, जुल हलीफ़ा मदीना निवासियों के लिये, जहफ़ा शाम के लोगों के लिये, करन नज्द के निवासियों के लिये, यलमलम यमन वालों के लिये, (हिन्दुस्तान चूँकि यमन की तरफ़ से पड़ता है इसलिये हमारी मीक़ात भी यलमलम ही है)

सूरा बकरह - पच्चीसवाँ रूकू

(१) शबाल, ज़िल्काद और दस तारीखें ज़िल्हज की, हज के काम इन्हीं दिनों में दुरुस्त हैं, अगर किसी ने इन दिनों से पहले हज का इहराम बाँधा तो जायज़ है लेकिन कराहत के साथ।

(२) यानी हज को अपने ऊपर लाज़िम व बाजिव करे इहराम बाँधकर, या तलबियह कहकर, या कुरबानी का जानवर चलाकर, उसपर ये चीज़ें लाज़िम हैं, जिनका आगे ज़िक्र फ़रमाया जाता है।

(३) “रिफ़स” सहवास या औरतों के सामने हमबिस्तरी का ज़िक्र या ग़न्दी और अश्लील बातें करना है, निकाह इसमें दाख़िल नहीं, इहराम वाले मर्द और इहराम वाली औरत का निकाह जायज़ है अलवत्ता सहवास यानी हमबिस्तरी जायज़ नहीं, “फ़ुसूक” से गुनाह और बुराइयाँ और “जिदाल” से झगड़ा मुराद है, चाहे वह अपने दोस्तों या ख़ादिमों के साथ हो या ग़ैरों के साथ।

(४) बुराइयाँ या बुरे कामों से मना करने के बाद नेकियों और पुण्य की तरफ़ बुलाया कि बजाय गुनाह के तक्वा और बजाय झगड़े के अच्छे आचरण और सदव्यवहार अपनाओ।

अल्लाह की याद करो^(१) मशअरे हराम के पास^(२) और उसका ज़िक्र करो जैसे उसने तुम्हें हिदायत फ़रमाई और बेशक इससे पहले तुम वहके हुए थे^(३) (१९८) फिर बात यह है कि ऐ कुरैशियो तुम भी वहीं से पलटो जहाँ से लोग पलटते हैं^(४) और अल्लाह से माफ़ी मागो बेशक अल्लाह वाख़ाने वाला मेहरबान है^(५) (१९९) फिर जब अपने हज के काम पूरे कर चुको^(६) तो अल्लाह का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे^(७) वल्कि उससे ज़्यादा और कोई आदमी यूँ कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुनिया में दे, और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं (२००) और कोई यूँ कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा^(८) (२०१) ऐसों को उनकी कमाई से भाग है^(९) और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है^(१०) (२०२) और अल्लाह की याद करो गिने हुए दिनों में^(११) तो जो जल्दी करके दो दिन में चला जाए उसपर कुछ गुनाह नहीं और जो रह जाए तो उसपर गुनाह नहीं परहेज़गार के

الْبَكْرَةِ

۲۲

سُورَةُ

مِنْ عَرَفْتِ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ
وَأَذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ لَكِنِ
الضَّالِّينَ ۝ ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ
النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا لِلَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ۝
فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ
أَبَاءَكُمْ أَوْ أَشْدَّ ذِكْرًا فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي
الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ
النَّارِ ۝ أُولَئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِمَّا كَسَبُوا
وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ وَأَذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامِ
مَعْدُودَاتٍ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا أَثَمَ
عَلَيْهِ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ الشَّقَىٰ

مَنْزِلٌ

(१) कुछ यमन के लोग हज के लिये बेसामानी के साथ रवाना होते थे और अपने आपको मुतवक्किल कहते थे और मक्का मुकर्रमा पहुंचकर सवाल शुरू करते और कमी दूसरे का माल छीनते या अमानत में ख़यानत करते, उनके बारे में यह आयत उतरी और हुक्म हुआ कि तोशा लेकर चलो, औरों पर बोझ न डालो, सवाल न करो, कि बेहतर तोशा परहेज़गारी है। एक क़ौल यह है कि तक्वा का तोशा साथ लो जिस तरह दुनियावी सफ़र के लिये तोशा ज़रूरी है, ऐसे ही आख़िरत के सफ़र के लिये परहेज़गारी का तोशा लाज़िम है।

(६) यानी अक़्त का तक्ज़ा अल्लाह का डर है, जो अल्लाह से न डरे वह बेअक़लों की तरह है।

(७) कुछ मुसलमानों ने ख़याल किया कि हज की राह में जिसने तिजारत की या ऊंट किराए पर चलाए उसका हज ही क्या, इसपर यह आयत उतरी। जब तक ब्यापार से हज के अरफ़ात की अदायगी में फ़र्क न आए, उस वक़्त तक तिजारत जायज़ है।

(८) अरफ़ात एक स्थान का नाम है जो मौक़फ़ यानी ठहरने की जगह है। ज़हाक का क़ौल है कि हज़रत आदम और हवा जुदाई के बाद ९ ज़िल्हज को अरफ़ात के स्थान पर जमा हुए और दोनों में पहचान हुई, इसलिये उस दिन का नाम अरफ़ात यानी पहचान का दिन और जगह का नाम अरफ़ात यानी पहचान की जगह हुआ। एक क़ौल यह है कि चूंकि उस रोज़ बन्द अपने गुनाहों का ऐतिराफ़ करते हैं इसलिये उस दिन का नाम अरफ़ात है। अरफ़ात में ठहरना फ़र्ज़ है।

(९) तलबियह यानी लब्वेक, तस्बीह, अल्लाह की तारीफ़, तक्बीर और दुआ के साथ या मगरिब व इशा की नमाज़ के साथ।

(१०) मशअरे हराम कुज़ह पहाड़ है जिसपर इमाम ठहरता है। मुहसिर घाटी के सिवा तमाम मुज़दलिफ़ा ठहरने की जगह है। उसमें ठहरना वाजिब है। चिला उज़र छोड़ने से जुमर्त की कुरबानी यानी दम लाज़िम आता है। और मशअर हराम के पास ठहरना अफ़ज़ल है।

(११) ज़िक्र और इबादत का तरीक़ा कुछ न जानते थे।

(१२) कुरैश मुज़दलिफ़ा में ठहरते थे और सब लोगों के साथ अरफ़ात में न ठहरते। जब लोग अरफ़ात से पलटते तो ये मुज़दलिफ़ा से पलटते और इसमें अपनी बेड़ाई समझते। इस आयत में उन्हें हुक्म दिया गया कि सब के साथ अरफ़ात में ठहरें और एक साथ पलटें। यही हज़रत इब्राहीम और इस्माईल अलैहुमसलाम की सुन्नत है।

(१३) हज के तरीक़े का संक्षिप्त बयान यह है कि हाजी आठ ज़िल्हज की सुबह को मक्का मुकर्रमा से मिना की तरफ़ रवाना हो। वहाँ अरफ़ात यानी नवा ज़िल्हज की फ़ज्र तक ठहरे, उसी रोज़ मिना से अरफ़ात आए। ज़वाल के बाद इमाम दो ख़ुत्बे पढ़े, यहाँ हाजी जोहर और असर की नमाज़ इमाम के साथ जोहर के वक़्त में जमा करके पढ़े, इन दोनों नमाज़ों के बीच जोहर की सुन्नत के सिवा कोई नफ़ल न पढ़ी जाए। इस जमा के लिये इमाम आजम ज़रूरी है। अगर इमाम आजम न हो या गुमराह और बदमज़हब हो तो हर एक नमाज़ अलग अलग अपने अपने वक़्त में पढ़ी जाए। और अरफ़ात में सूर्यास्त तक ठहरे। फिर मुज़दलिफ़ा की तरफ़ लौटे और

लिये^(१९) और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उसी की तरफ उठना है^(२०) और कुछ आदमी-वह है कि दुनिया की ज़िन्दगी में उसकी बात तुझे भली लगे^(२०) और अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह लाए और वो सबसे बड़ा झगड़ालू है^(२०४) और जब पीठ फेरे तो ज़मीन में फ़साद डालता फिरे और खेती और जानें तबाह करे और अल्लाह फ़साद से राजी नहीं^(२०५) और जब उससे कहा जाए कि अल्लाह से डरो तो उसे और ज़िद चढ़े गुनाह की^(२१) ऐसे को दोज़ख काफ़ी है और वह ज़रूर बहुत बुरा बिछौना है^(२०६) और कोई आदमी अपनी जान बेचता है^(२२) अल्लाह की मर्जी चाहने में और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है^(२०७) ऐ ईमान वाले इस्लाम में पूरे दाखिल हो^(२३) और शैतान के क़दमों पर न चलो^(२४) वेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है^(२०८) और इसके बाद भी वच लो कि तुम्हारे पास रौशन हुक्म आचुके^(२५) तो जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है^(२०९) काहे के इन्तिज़ार में हैं^(२६) मगर यही कि अल्लाह का अज़ाब आए,

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ عَلَى مَا فِي قَلْبِهِ ۖ وَهُوَ أَلَدُّ
الْخِصَامِ ۖ وَإِذَا تَوَلَّى سَعَى فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ
فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ
الْفُسَادَ ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ
بِأَلْسِنِهِ ۖ فَهَسْبُهُ جَهَنَّمُ وَلَيْسَ الْيَهَادُ ۖ وَمِنَ
النَّاسِ مَنْ يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۚ
وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا
فِي السِّلْمِ كَافَّةً ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۖ فَإِنْ زَلَلْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَاذْكُرُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۖ
هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي طُلُوعِ

जबले क़ज़ह के करीब उतरे. मुज़दलिफ़ा में मगरिब और इशा की नमाज़ें जमा करके इशा के वक़्त पढ़े और फ़रज़ की नमाज़ ख़ूब अचल वक़्त अंधरे में पढ़े. मुहम्मि़र घाटी के सिवा तमाम मुज़दलिफ़ा और बल अरना के सिवा तमाम अरफ़ात टहने या वक़फ़ की जगह है. जब सुबह ख़ूब रौशन हो तो क़ुरबानी के दिन यात्री दस ज़िल्हज को मिन्या की तरफ़ आए और वादी के बीच से बड़े शैतान को सात बार कंकरियाँ मारे. फिर अगर चाहे क़ुरबानी के दिनों में से किसी दिन तबस्के ज़ियारत करे. फिर मिन्या आकर तीन रोज़ स्थाई रहे और ग़्यारहवीं ज़िल्हज के ज़वाल के बाद तीनों जमरात की रमी करे यात्री तीनों शैतानों को कंकरी मारे. उस जमरे से शुरु करे जो मस्जिद के करीब है, फिर जो उसके बाद है, फिर जमरात अक़बा, हर एक को सात सात कंकरियाँ मारे, फिर अगले रोज़ ऐसा ही करे, फिर अगले रोज़ ऐसा ही. फिर मक्कए मुकर्रमा की तरफ़ चला आए. (तफ़सील फ़िक़ह की किताबों में मौजूद है)

(१४) जाहिलियत के दिनों में अरब हज के बाद काबे के करीब अपने बाप दादा की बड़ाई बयान करते थे. इस्लाम में बतल्पा गया कि यह शोहरत और दिग्ग़ावे की बेकार बातें हैं. इसकी जगह पूरे ज़ौक़ शौक़ और एकग्रता से अल्लाह का ज़िक्र करो. इस आयत से बलन्द आवाज़ में ज़िक्र और सामूहिक ज़िक्र साबित होता है.

(१५) दुआ करने वालों की दो क़िस्में बयान फ़रमाई, एक दो काफ़िर जिनकी दुआ में सिर्फ़ दुनिया की तलब होती थी. आख़िरत पर उनका अक्कीदा न था, उनके बारे में इरशाद हुआ कि आख़िरत में उनका कुछ हिस्सा नहीं. दूसरे वो ईमानदार जो दुनिया और आख़िरत दोनों की बेहतरी की दुआ करते हैं. मूमिन दुनिया की बेहतरी जो तलब करता है वह भी जायज़ काम और दीन की हिमायत और मज़बूती के लिये, इसलिये उसकी यह दुआ भी दीनी कामों से है.

(१६) इस आयत से साबित हुआ कि दुआ कोशिश और कर्म में दाख़िल है. हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अक्सर यही दुआ फ़रमाते थे "अल्लाहुम्मा आतिना फ़िद दुनिया हसनतों व फ़िल आख़िरते हसनतों व किना अज़ाबन नार" यानी ऐ ख़ुद हमारे हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा. (सूरा बक़रह, आयत २०१)

(१७) बहुत जल्द क़यामत कायम करके बन्दों का हिसाब फ़रमाणा तो चाहिये कि बन्दे ज़िक्र व दुआ व फ़रमाँवरदारी में जल्दी करें. (मदारिक व ख़ाज़िन)

(१८) इन दिनों से अय्यामे तशरीक और ज़िक्क़ुल्लाह से नमाज़ों के बाद और शैतानों को कंकरियाँ मारते वक़्त तकबीर कहना मुराद है.

(१९) कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि जाहिलियत के दिनों में लोग दो पक्ष थे. कुछ जल्दी करने वालों की गुनाहगार बताते थे, कुछ रह जाने वाले को. क़ुरआने पाक ने बयान फ़रमा दिया कि इन दोनों में कोई गुनाहगार नहीं.

(२०) यह और इससे अगली आयत अम्रनस बिन शरीफ़ भुनाफ़िक़ के बारे में उतरी जो हुज़ूर सयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर बहुत लजाजत से मीठी मीठी बातें करता था और अपने इस्लाम और सरकार की महबूत का दावा करता और उसपर क़स्में खाता और छुपवाँ फ़साद भड़काने में लगा रहता. मुसलमानों के मवेशी की उसने हलाक किया और

छाए हुए वादलों में और फ़रिश्ते उतरे^(२१) और काम हो चुके और सब कामों का पलटना अल्लाह की तरफ़ है^(२१०)

छब्बीसवाँ रुकू

बनी इस्राईल से पूछो हमने कितनी रौशन निशानियाँ उन्हें दी^(१) और जो अल्लाह की आई हुई नेअमत को बदल दे^(२) तो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख्त है^(२११) काफ़िरों की निगाह में दुनिया की ज़िन्दगी सजाई गई^(३) और मुसलमानों से हंसते हैं^(४) और डर वाले उनसे ऊपर होंगे क़यामत के दिन^(५) और खुदा जिसे चाहे बेगिन्ती दे^(२१२) लोग एक दीन पर थे^(६) फिर अल्लाह ने नबी भेजे खुशख़बरी देते^(७) और डर सुनाते^(८) और उनके साथ सच्ची किताब उतारी^(९) कि वह लोगों में उनके मतभेदों का फैसला कर दे और किताब में मतभेद उन्हीं ने डाला जिन को दी गई थी^(१०) बाद इसके कि उनके पास रौशन हुक्म आ चुके^(११) आपस की सरकशी से तो अल्लाह ने ईमान वालों को वह सच्ची बात सुझा दी जिसमें झगड़ रहे थे अपने हुक्म से और

البقرة

२२

سُورَةُ

الْغَمَامِ وَالْمَلَكَةِ وَفُضِيَ الْأَمْرُ إِلَى اللَّهِ
تُرْجَمَ الْأُمُورُ سَلَّ نَبِيَّ إِسْرَائِيلَ كَمَا اسْتَلْزَمَهُمْ
مِنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ
بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝
لِذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ
مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝
كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِينَ
مُبَشِّرِينَ وَمُنْذِرِينَ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ
بِالْحَقِّ لِيُخَيِّمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ
وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ بَعْدِ
مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِآيَاتِهِ

مَنْزِل

उनकी खेती में आग लगा दी.

(२१) गुनाह से जुल्म और सरकशी और नसीहत की तरफ़ ध्यान न देना मुराद है.

(२२) हज़रत सुहैब इब्ने सनान रूमी मक्कए मुकर्रमा से हिज़रत करके हज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में मदीनए तैय्यिबह की तरफ़ ख़ाता हुए. कुरैश के मुशिकों की एक जमाअत ने आपका पीछा किया तो आप सवारी से उतरे और तरक़्श से नीर निकाल कर फ़रमाने लगे कि ऐ कुरैश तुम में से कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि मैं तीर मारते मारते तमाम तरक़्श ख़ाली न करदूँ और फिर जब तक तलवार मेरे हाथ में रहे उससे मारुं. उस वक़्त तक तुम्हारी जमाअत का खेत हो जाएगा. अगर तुम मेरा माल चाहो जो मक्कए मुकर्रमा में ज़मीन के अन्दर गड़ा है. तो मैं तुम्हें उसका पता बता दूँ, तुम मुझसे मत उलझो. वो इसपर राज़ी हो गए. और आपने अपने तमाम माल का पता बता दिया. जब हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो यह आयत उतरी. हज़ूर ने तिलावत फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारी यह ज़ौफ़रोशी बड़ी तफ़े वाली तिज़ारत है.

(२३) किताब वालों में से अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके असहाब यानी साथी हज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने के बाद शरीअते मूसवी के कुछ अहक़ाम पर क़ायम रहे, सनीअर का आदर करते, उस दिन शिकार से अलग रहना अनिवार्य जानते, और ऊंट के दूध और गोशत से परहेज़ करते, और यह ख़याल करते कि ये चीज़ें इस्लाम में तो वैथ यानी जायज़ हैं, इनका करना ज़रूरी नहीं, और तीरात में इससे परहेज़ अनिवार्य बताया गया है, तो उनके छोड़ने में इस्लाम की मुख़ालिफ़त भी नहीं है. और हज़रत मूसा की शरीअत पर अमल भी होता है. उसपर यह आयत उतरी और इरशाद फ़रमाया गया कि इस्लाम के आदेश का पूरा पालन करो यानी तीरात के आदेश स्थगित हो गए, अब उनकी पाबन्दी न करो. (ख़ाज़िन)

(२४) उसके उकसाने और बहकाने में न आओ.

(२५) और ख़ुली दलीलों के बावजूद इस्लाम की राह के ख़िलाफ़ रास्ता इस्तियार करो.

(२६) इस्लामी मिल्लत छोड़ने और शैतान की फ़रमाँबरादारी करने वाले.

(२७) जो अज़ाब देने के काम पर लगे हुए हैं.

सूरए बकरह - छब्बीसवाँ रुकू

(१) कि उनके नबियों के चमत्कारों की उनकी नबुव्वत की सच्चाई का प्रमाण बनाया. उनके इरशाद और उनकी किताबों को दीने इस्लाम की हक्कानियत और इसके सच्चे होने का ग़वाह किया.

(२) अल्लाह की नेअमत से अल्लाह की आयत मुराद है. जो मार्गदर्शन और हिदायत का कारण हैं और उनकी बदौलत गुमराही

अल्लाह जिसे चाहे सीधी राह दिखाए (२१३) क्या इस गुमान (भ्रम) में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुमपर अगलों की सी रूदाद (वृत्तांत) न आई (१२) पहुंची उन्हें सख्ती और शिदत (कठिनाई) और हिला हिला डाले गए यहाँ तक कि कह उठा रसूल (१३) और उसके साथ के ईमान वाले, कब आएगी अल्लाह की मदद (१४) सुन लो वेशक अल्लाह की मदद करीब है (२१४) तुमसे पूछते हैं (१५) क्या खर्च करें, तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में खर्च करो तो वह माँ बाप और करीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों (दरिद्रों) और राहगीर के लिये है और जो भलाई करो (१६) वेशक अल्लाह उसे जानता है (१७) (२१५) तुमपर फ़र्ज़ हुआ अल्लाह की राह में लड़ना और वह तुम्हें नागवार है (१८) और करीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और करीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वह तुम्हारे हक़ में बुरी हो . और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते (१९) (२१६)

सत्ताईसवाँ सूक्त

तुमसे पूछते हैं माहे हराम में लड़ने का हुक्म (१) तुम फ़रमाओ इसमें लड़ना बड़ा गुनाह है (२) और अल्लाह की राह से

وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ اِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوْا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَّثَلُ
الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ۚ مَسْتَهْمُ الْبَاسِ ۚ وَ
الصُّرَّاءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهُ مَتٰى نَصْرَ اللّٰهِ ۚ اَلَا اِنْ نَصَرَ اللّٰهُ
قَرِيْبٌ ۙ يَنْصُرُوْكَ مَا ذَا يُنْفِقُوْنَ ۚ قُلْ مَا اَنْفَقْتُ
مِنْ خَيْرٍ فَلِلّٰهِ الدِّيْنُ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسْكِيْنَ
وَابْنِ السَّبِيْلِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ
بِهٖ عَلِيْمٌ ۝ كَتَبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالَ ۚ وَهُوَ كَرِهٌ لَّكُمْ
وَعَسٰى اَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ
عَسٰى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۚ وَاللّٰهُ
يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ يَسْأَلُوْكَ عَنِ الشَّهْرِ
الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ۚ قُلْ فِتْنَةٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۚ وَصَدَّ

مَنْ

- से छुटकारा मिलता है. उन्हीं में से वो आयते हैं जिनमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और गुणगान और हुज़ूर की नबुव्वत व रिसालत का वयान है. यहूदियों और ईसाइयों ने इस वयान में जो तबदीलियाँ की हैं वो इस नेअमत की तबदीली हैं.
- (३) वो इसी की कद्र करते हैं और इसी पर मरते हैं.
- (४) और दुनिया की माया से उनकी अरुचि देखकर उनको तुच्छ समझते हैं, जैसा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद और अम्मार बिन यासिर और सुहैब और बिलाल रदियल्लाहो अन्हुम को देखकर काफ़िर मजाक उड़ाया करते थे, और दुनिया की दौलत के घमण्ड में अपने आपको ऊँचा समझते थे.
- (५) यानी ईमान वालों कायामत के दिन जन्नत के ऊँचे दर्जों में होंगे और घमण्डी काफ़िर जहन्नम में ज़लील और झ्वार.
- (६) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से हज़रत नूह के एहद तक सब लोग एक दीन और एक शरीअत पर थे. फिर उनमें मतभेद हुआ तो अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को नबी बनाकर भेजा. ये रसूल बनाकर भेजे जाने वालों में पहले हैं (स्वाज़िन).
- (७) ईमान वालों और फ़रमाँवरदारों को सवाय की. (मदारिक और स्वाज़िन)
- (८) काफ़िरों और नाफ़रमानों को अज़ाब का. (स्वाज़िन)
- (९) जैसा कि हज़रत आदम व शीस व इद्रीस पर सहीफ़े और हज़रत मूसा पर तौरात, हज़रत दाऊद पर जुबूर, हज़रत ईसा पर इन्जील और आख़िरी नबी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर कुरआन.
- (१०) यह मतभेद धर्मग्रन्थों में कौंछौंछौं और रद्दोबदल और ईमान व कुफ़्र के साथ था, जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों से हुआ. (स्वाज़िन)
- (११) यानी ये मतभेद नादानों से न था बल्कि
- (१२) और जैसी यातनाएं उनपर गुज़र चुकीं, अभी तक तुम्हें पेश न आईं. यह आयत अहज़ाब की जंग के बारे में उतरी, जहाँ मुसलमानों को सर्दों और भूख़ वगैरह की सख्त तकलीफ़ें पहुंची थीं . इस आयत में उन्हें सब्र का पाठ दिया गया और बताया गया कि अल्लाह की राह में तकलीफ़ें सहना पहले से ही अल्लाह के ख़ास बन्दों की विशेषता रही है. अभी तो तुम्हें पहलों की सी यातनाएं पहुंची भी नहीं हैं. बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत खुबाब बिन अरत रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम काबे के साए में अपनी चादरे मुवास्क से तकिया लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे. हमने हज़ूर से अज़ा किया कि सरकार हमारे लिये क्यों दुआ नहीं फ़रमाते, हमारी क्यों मदद नहीं करते. फ़रमाया, तुमसे पहले लोग गिरफ़्तार किये जाते थे, ज़मीन में गद्दा खोदकर उसमें दबाए जाते थे, आगे से चीर कर दो टुकड़े कर डाले जाते थे और लोहे की कंधियों से उनके गोशत नोचे जाते थे और इनमें की

रोकना और उसपर ईमान न लाना और मस्जिदे हराम से रोकना और इसके बसने वालों को निकाल देना^(१) अल्लाह के नज़्दीक ये गुनाह उससे भी बड़े हैं और उनका फ़साद^(२) क़त्ल से सख़्तर है^(३) और हमेशा तुमसे लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर वन पड़ें^(४) और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे, फिर काफ़िर होकर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया दुनिया में और आखिरत में^(५) और वो दोज़ख वाले हैं उन्हें उसमें हमेशा रहना^(६) वो जो ईमान लाए और वो जिन्होंने अल्लाह के लिये अपने घरवार छोड़े और अल्लाह की राह में लड़े वो अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं और अल्लाह वस्त्राने वाला मेहरवान है^(७) (२१८) तुमसे शराब और जुए का हुक्म पूछते हैं, तुम फ़रमादो कि उन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुनियावी नफ़े भी और उनका गुनाह उनके नफ़े से बड़ा है^(८) और तुम से पूछते हैं क्या खर्च करें^(९) तुम फ़रमाओ जो फ़ज़िल (अतिरिक्त) वचे^(१०) इसी तरह अल्लाह तुमसे आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं सोचकर करो

التَّقْوَىٰ

۲۶

سَبِيلُ

عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَكَفَرِيهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَأَحْبَابِ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ وَالْفِتْنَةُ
أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّى
يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا وَمَنْ
يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ
فَأُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجْهَهُدُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ وَاللَّهُ
عَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ
فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ
مِنْ نَّفْعِهِمَا وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ
الْعَفْوُ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ

مَنْزِل

कोई मुसीबत उन्हें उनके दीन से रोक न सकती थी।

(१३) यानी सख्ती इस चरम सीमा पर पहुंच गई कि उन उम्मतों के रसूल और उनके फ़रमावरदार मूमिन भी मदद मांगने में जल्दी करने लगें। इसके बावजूद कि रसूल बड़े सब करने वाले होते हैं और उनके साथी भी। लेकिन बावजूद इन सख्तरतीन मुसीबतों के वो लोग अपने दीन पर कायम रहे और कोई मुसीबत और बला उनके हाल को बदल न सकी।

(१४) इसके जवाब में उन्हें तसल्ली दी गई और यह ईशारा हुआ।

(१५) यह आयत अग्र बिन जमूह के जवाब में नाज़िल हुई जो बड़े आदमी थे और बड़े मालदार थे उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सवाल किया था कि क्या खर्च करें और किसपर खर्च करें। इस आयत में उन्हें बता दिया गया कि जिस किस्म का और जिस क़दर माल कम या ज्यादा खर्च करो, उसमें सबाब है और खर्च की मदें ये हैं। आयत में नफ़ल सदक़े का बयान है। माँ बाप को ज़कात और बाज़िब सदक़ा (जैसे कि फ़ितरा) देना ज़ाज़ि नहीं (जुमल बग़ैरह)।

(१६) यह हर नेकी को आम है। माल का खर्च करना हो या और कुछ और बाकी खर्च की मदें भी इसमें आ गईं।

(१७) उसकी जज़ा यानी बदला या इनाम अता फ़रमाएगा।

(१८) जिहाद फ़र्ज़ है, जब इसकी शर्तें पाई जाएं। अगर काफ़िर मुसलमानों के मुल्क पर चढ़ाई करें तो जिहाद अत्यन्त अनिवार्य हो जाता है। वरना फ़र्ज़ क़िफ़ायी यानी एक के करने से सब का फ़र्ज़ अदा हो गया।

(१९) कि तुम्हारे हक़ में क्या बेहतर है, तो तुम पर लाज़िम है, अल्लाह के हुक्म का पालन करो और उसी को बेहतर समझो, चाहे वह तुम्हारी अन्नरआत्मा पर भारी हो।

सूरए बक्ररह - सत्ताईसवाँ सूक़

(१) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन जह़श के नेतृत्व में मुजाहिदों की एक जमाअत रवाना फ़रमाई थी। उसने मुश्किनों से जंग की। उनका ख़याल था कि वह दिन जमादियुल आख़िर का अन्तिम दिन है। मगर दर हज़ीक़त चौद २९ रक़ों होगया था, और वह रजब की पहली तारीख़ थी। इसपर काफ़िरों ने मुसलमानों को शर्म दिलाई कि तुमने पाबन्दी वाले महीने में जंग की और हुज़ूर से इसके बाँर में सवाल होने लगे। इसपर यह आयत उतरी।

(२) मगर सहाबा से यह गुनाह बाँक़ नहीं हुआ, क्योंकि उन्हें चौद होने की ख़बर ही न थी। उनके ख़याल में वह दिन माहे ह़ग़म यानी पाबन्दी वाले महीने रजब का न था। पाबन्दी वाले महीनों में जंग न करने का हुक्म "अवतुलुल मुश्किना हैसो वजद तुमूहम" यानी मुश्किनों को मारो जहां पाओ (९: ५) की आयत द्वारा स्थगित हो गया।

(३) जो मुश्किनों से बाँक़े हुआ कि उन्होंने हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा का, हृदयिया वाले

साल, काबल मुअज्जमा से रोका और मक्क में आपके क्रयाम के जमाने में आपको ओर आपके साथियों को इतनी तकलीफें दीं कि वहाँ से हिजरत करना पड़ी।

(४) यानी मुश्किलों का, कि वह शिर्क करते हैं और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और मूमिनो को मस्जिद हराम से रोकते हैं और तरह तरह के कष्ट देते हैं।

(५) क्योंकि क़त्ल तो कुछ हालतों में जायज़ होता है, और कुछ किसी हाल में जायज़ नहीं। और यहाँ तारीख़ का मशकूक यानी संदेह में होना मुनासिब वजह है। और काफ़िरों के कुछ के लिये तो कोई वजह ही नहीं है।

(६) इसमें ख़बर दी गई कि काफ़िर मुसलमानों से हमेशा दुश्मनी रखेंगे। कभी इसके खिलाफ़ न होगा। और जहाँ तक उनसे संभव होगा वो मुसलमानों को दीन से फेरने की कोशिश करते रहेंगे। “इनिसतनाज़” (अगर बन पड़े) से ज़ाहिर होता है कि अल्लाह तआला के क़रम से वो अपनी इस मुराद में नाकाम रहेंगे।

(७) इस आयत से मालूम हुआ कि दीन से फिर जाने से सारे कर्म बातिल यानी बेकार हो जाते हैं। आख़िरत में तो इस तरह कि उनपर कोई पुण्य, इनाम या सवाब नहीं। और दुनिया में इस तरह कि शरीअत मुर्तद यानी दीन में फिर जाने वाले के क़त्ल का हुक्म देती है। उसकी औरत उसपर हलाल नहीं रहती, वो अपने रिश्तेदारों की विरासत पाने का अधिकारी नहीं रहता, उसका माल छीना या लूटा या चुराया जा सकता है। उसकी तारीफ़ और मदद जायज़ नहीं। (रुहुल बयान वगैरह)।

(८) अब्दुल्लाह बिन जहश की सरदारी में जो मुजाहिद भेजे गए थे उनके बारे में कुछ लोगों ने कहा कि चूंकि उन्हें ख़बर न थी कि यह दिन रजब का है इसलिये इस दिन जंग करना गुनाह तो न हुआ लेकिन उसका कुछ सवाब भी न मिलेगा। इसपर यह आयत उतरी। और बताया गया कि उनका यह काम जिहादे मक़बूल है। और इसपर उन्हें अल्लाह की रहमत का उम्मीदवार रहना चाहिये और यह उम्मीद ज़रूर पूरी होगी। (ख़ाज़िन)। “यरज़ुना” (उम्मीदवार हैं) में ज़ाहिर हुआ कि अमल यानी कर्म में पुण्य या इनाम बाजिब या अनिवार्य नहीं होता, बल्कि सवाब देना केवल अल्लाह की मर्जी और उसके फ़रज़ पर है।

(९) हज़रत अली मुरतज़ा रदियल्लाहो अन्हु ने फ़रमाया, अगर शराब की एक बूंद कुंवे में गिर जाए फिर उस जगह एक मीनार बनाया जाए तो मैं उसपर अज़ान न कहूँ। और अगर नदी में शराब की बूंद पड़े, फिर नदी खुश्क हो और वहाँ घास पैदा हो तो उसमें मैं अपने जानवरों को न चराऊँ। सुक़ान अल्लाह ! गुनाह से किस क़द नफ़रत है। अल्लाह तआला हमें इन बुजुर्गों के रस्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता करे। शराब सन तीन हिजरी में मजदए अहज़ाब में कुछ दिन बाद हराम की गई। इससे पहले यह बताया गया था कि जुए और शराब का गुनाह उनके नफ़े से ज़्यादा है। नफ़ा तो यही है कि शराब से कुछ सुरू पैदा होता है या इसकी क्रय विक्रय से तिजारीती फ़ायदा होता है। और जुए में कभी मुफ़्त का माल हाथ आता है और गुनाहों और बुराइयों की क्या गिनती, अक़ल का पतन, ग़ैरत, शर्म, हया और ख़ुददारी का पतन, इबादतों से मेहरूमी, लोगों में दुश्मनी, सबकी नज़र में ख़ार होना, दौलत और माल की बर्बादी। एक रिवायत में है कि जिब्रीले अमीन ने हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला को जअफ़रे तैयार की चार विशेषताएं पसन्द हैं। हुज़ूर ने हज़रत जअफ़र तैयार से पूछा, उन्होंने अर्ज़ किया कि एक तो यह है कि मैंने शराब कभी नहीं पी यानी हराम होजाने के हुक्म से पहले भी और इसकी वजह यह थी कि मैं जानता था कि इससे अक़ल भ्रष्ट होती है और मैं चाहता था कि अक़ल और भी तेज़ हो। दूसरी आदत यह है कि जाहिलियत के ज़माने में भी मैंने मूर्ति पूजा नहीं की क्योंकि मैं जानता था कि यह पत्थर है, न नफ़ा दे, न नुक़सान पहुंचा सके, तीसरी ख़सलत यह है कि मैं कभी ज़िना में मुब्तिला नहीं हुआ कि उसको मैं बेग़ैरती ओर निर्लज्जता समझता था। चौथी ख़सलत यह कि मैंने कभी झूट नहीं बोला क्योंकि मैं इसको कमीना-पन ख़याल करता था। शतरंज, ताश वगैरह हार जीत के खेल और जिन पर बाज़ी लगाई जाए, सब जुए में दाख़िल हैं, और हराम हैं। (रुहुल बयान)

(१०) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुसलमानों की सद्का देने की राबत दिलाई तो आपसे दर्याफ़्त किया गया कि भिक्षुदार इरशाद फ़रमाएं कि कितना माल ख़ुदा की राह में दिया जाय। इसपर यह आयत उतरी। (ख़ाज़िन)

(११) यानी जितना तुम्हारी ज़रूरत से ज़्यादा हो। इस्लाम की शुरुआत में ज़रूरत से ज़्यादा माल का ख़र्च करना फ़र्ज़ था। सहाबए क़ियाम अपने माल में से अपनी ज़रूरत भर का लेकर बाक़ी सब ख़ुदा की राह में दे डालते थे। यह हुक्म ज़कात की आपत के बाद

तुम (२१९) दुनिया और आखिरत के काम (२०) और तुम से यतीमों के बारे में पूछते हैं (२१) तुम फ़रमाओ उनका भला करना बेहतर है और अगर अपना उनका खर्च मिला लो तो वो तुम्हारे भाई हैं और खुदा खूब जानता है विगाड़ने वाले को संवारने वाले से और अल्लाह चाहता तो तुम्हें मशक़त (परिश्रम) में डालता वेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है (२२०) और शिर्क वाली औरतों से निकाह न करो जब तक मुसलमान न हो जाएं (२२) और वेशक मुसलमान लौंडी मुश्रिका औरत से अच्छी है (२३) अगरचे वह तुम्हें भाती हो और मुश्रिकों के निकाह में न दो जबतक वो ईमान न लाएं (२४) और वेशक मुसलमान गुलाम मुश्रिकों से अच्छा है अगरचे वो तुम्हें भाता हो, वो दोज़ख की तरफ़ बुलाते हैं (२५) और अल्लाह जन्नत और बख्शिश की तरफ़ बुलाता है अपने हुक्म से और अपनी आयतों लोगों के लिये वयान करना है कि कहीं वो नमीहत मानें (२२१)

अट्ठाईसवाँ स्कू

और तुमसे पूछते हैं हैज़ का हुक्म (२६) तुम फ़रमाओ वह नापाकी है तो औरतों से अलग रहो हैज़ के दिनों और उनके करीब न जाओ जबतक पाक न हो लें फिर जब पाक हो जाएं तो उनके पास जाओ जहां से तुम्हें अल्लाह ने हुक्म

تَتَفَكَّرُونَ ۚ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ
عَنِ الْيَتَامَىٰ ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَهُمْ خَيْرٌ ۖ وَإِنْ
تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ
الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝
وَلَا تَنْكِحُوا الشَّرِكَاتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنَ ۚ وَلَآ مَنَّةَ مُؤْمِنَةً
خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تَنْكِحُوا
الشُّرَكَيْنَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ
مُّشْرِكٍ ۚ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۚ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى التَّارِ
وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ ۚ بِإِذْنِهِ
وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝
وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ۖ قُلْ هُوَ أَذًى ۖ فَاعْتَزِلُوا
النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ ۖ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ
يَظْهَرْنَ ۚ فَإِذَا أَتَظْهَرْنَ فَأَنْوَهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَهَرَكُم

منزل

स्थगित हो गया।

(२२) कि जितना तुम्हारी सांसारिक आवश्यकता के लिये काफी हो, वह लेकर बाक़ी सब अपनी आखिरत के नफ़े के लिये दान कर दो. (सूराज़िन)

(२३) कि उनके माल को अपने माल से मिलाने का क्या हुक्म है. आयत “إِنَّمَا لَكُم مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ” यानी वो जो यतीमों का माल नाहक ख़ाते हैं वो तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं. (सूरफ़ निसा, आयत दस) उतरने के बाद लोगों ने यतीमों के माल अलग कर दिये और उनका ख़ाना पीना अलग कर दिया. इसमें ये सूरतें भी पेश आई कि जो ख़ाना यतीमों के लिये पक़राया गया और उसमें से कुछ बच रहा वह ख़राब हो गया और किसी के काम न आया. इस में यतीमों का नुक़सान हुआ. ये सूरतें देखकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रबाहा ने हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि अगर यतीमों के माल की हिफ़ाज़त की नज़र से उसका ख़ाना उसके सरपरस्त अपने ख़ाने के साथ मिलालें तो उसका क्या हुक्म है. इसपर यह आयत उतरी और यतीमों के फ़ायदे के लिये मिलाने की इजाज़त दी गई.

(२४) हज़रत मरसद ग़ानवी एक बहादुर सहाबी थ. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें मक्कफ़ मुकर्रमा ख़ाना किया ताकि वहाँ से तदबीर के साथ मुसलमानों को निकाल लाएं. वहाँ उनका नामक एक मुश्रिक औरत थी जो जाहिलियत के ज़माने में इनसे महबूत रखती थी. ख़ूबसूरत और मालदार थी. जब उसको इनके आने की ख़बर हुई तो वह आपके पास आई और मिलन की चाह ज़ाहिर की. आपने अल्लाह के डर से उससे नज़र फेर ली और फ़रमाया कि इस्लाम इसकी इजाज़त नहीं देता. तब उसने निकाह की दरखास्त की. आपने फ़रमाया कि यह भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इजाज़त पर निर्भर है. अपने काम से छुट्टी पाकर जब आप सरकार की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हाल अर्ज़ करके निकाह के बारे में दर्याफ़्त किया. इसपर यह आयत उतरी. (तफ़सीर अहमदी). कुछ उलमा ने फ़रमाया जो कोई नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ कुछ करे वह मुश्रिक है, चाहे अल्लाह को एक ही कहता हो और तौहीद का दावा रखता हो. (सूराज़िन)

(२५) एक ग़ेज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन रबाहा ने किसी ग़लती पर अपनी दासी के थप्पड़ मारा फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसका ज़िक्र किया. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसका हाल दर्याफ़्त किया. अर्ज़ किया कि वह अल्लाह तआला के एक होने और हुज़ूर के रसूल होने की ग़वाही देती है, रमज़ान के रोज़े रखती है, ख़ूब बुज़ू करती है और नमाज़ पढ़ती है. हुज़ूर ने फ़रमाया वह ईमान वाली है. आप ने अर्ज़ किया, तो उसकी क़सम जिसने आपको सच्चा नबी बनावकर भेजा, मैं उसको आज़ाद करके उसके साथ निकाह करूँगा और आपने ऐसा ही किया. इसपर लोगों ने ताना किया कि तुमने एक क़ाली दासी से निकाह किया इसके बावजूद कि अमुक मुश्रिक आज़ाद औरत तुम्हारे लिये हाज़िर है. वह सुंदर भी है, मालदार

दिया वेशक अल्लाह पसन्द करता है बहुत तौबह करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को (२२२) तुम्हारी औरतें तुम्हारे लिये खेतियां हैं तो आओ अपनी खेतियों में जिस तरह चाहो (२) और अपने भले का काम पहले करो (३) और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उससे मिलना है और ऐ मेहबूब वशारत दो ईमान वालों को (२२३) और अल्लाह को अपनी क्रिस्मतों का निशाना न बना लो (४) कि एहसान और परहेजगारी और लोगों में सुलह करने की कसम कर लो और अल्लाह सुनता जानता है (२२४) अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता उन क्रस्मों में जो वेईरादा ज़वान से निकल जाएं, हाँ उसपर पकड़ फरमाता है जो काम तुम्हारे दिलों ने किये (५) और अल्लाह बख्शने वाला हिल्म (सहिष्णुता) वाला है (२२५) और वो जो क्रसम खा बैठते हैं अपनी औरतों के पास जाने की उन्हें चार महीने की मोहलत (अवकाश) है तो अगर इस मुदत में फिर आए तो अल्लाह बख्शने वाला मेहरवान है (२२६) और अगर छोड़ देने का इरादा पक्का कर लिया तो अल्लाह सुनता जानता है (२२७) और तलाक़ वालियाँ अपनी जानों को रोके रहें तीन हैज़ (माहवारी) तक (६) और उन्हें हलाल नहीं कि छुपाएं वह जो अल्लाह ने उनके पेट में पैदा किया (७) अगर अल्लाह

اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ﴿٢٢٢﴾
 نِسَاءَكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأَتُوا حَرْثَكُمْ أَنْتُمْ شِئْتُمْ
 وَقَدْ مَوْلَا أَنْفُسَكُمْ، وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ
 تُلْقَوْنَ، وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٢٣﴾ وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً
 لِإِيمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ
 النَّاسِ، وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٤﴾ لَا يَأْخُذُكُمْ اللَّهُ
 بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤْخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ
 قُلُوبُكُمْ، وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ
 مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ، فَإِنْ فَاءُوا
 فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ
 فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْبَطْلَقَةُ يَتَرَبَّصْنَ
 بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوفٍ، وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ
 يَكْتَسِبْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ

مَرْثُونَ

भी है। इसपर नाज़िल हुआ “वला अमलुम मुमिनतुन” यानी मुसलमान दासी मुश्रिक औरत से अच्छी है, चाहे आज़ाद हो और हुस्न और माल की वजह से अच्छी मालूम होती हो।

(१६) यह औरत के सरपरतों को सम्बोधन है। मुसलमान औरत का तिकाह मुश्रिक व काफिर के साथ अवैध व हराम है।

(१७) तो उनसे परहेज़ ज़रूरी है और उनके साथ दोस्ती और रिश्तेदारी ना पसन्दीदा।

सूरए बकरह - अठ्ठाईसवाँ सूक़

(१) अरब के लोग यहूदियों और मजूसियों यानी आग के पुजारियों की तरह माहवारी वाली औरतों से सख्त नफरत करते थे, साथ खाना पीना, एक मकान में रहना ग़वार न था, बल्कि सख्ती यहाँ तक पहुँच गई थी कि उनकी तरफ़ देखना और उनसे बात चीत करना भी हराम समझते थे, और ईसाई इसके विपरीत माहवारी के दिनों में औरतों के साथ बड़ी महबूब से मशगूल होते थे, और सहवास में बहुत आगे बढ़ जाते थे, मुसलमानों ने हज़ूर से माहवारी का हुक्म पूछा, इसपर यह आयत उतरी और बहुत कम तथा बहुत ज़्यादा की राह छोड़ कर बीच की राह अपनाने की तालीम दी गई और बता दिया गया कि माहवारी के दिनों में औरतों से हमबिस्तरी करना मना है।

(२) यानी औरतों की कुर्बत से नस्ल का इरादा करो न कि वासता दूर करने का।

(३) यानी नेक और अच्छे कर्म या हमबिस्तरी से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना।

(४) हज़रत अब्दुल्लाह बिन स्वाहा ने अपने बेहोई नोमान बिन वशीर के घर जाने और उनसे बात चीत करने और उनके दुश्मनों के साथ उनकी सुलह कराने से क्रसम खाली थी, जब इसके बारे में उनसे कहा जाता था तो कह देते थे कि मैं क्रसम खा चुका हूँ इसलिय यह काम कर ही नहीं सकता, इस सिलसिले में यह आयत नाज़िल हुई और नेक काम करने से क्रसम खा लेने को मना किया गया, अगर कोई व्यक्ति नेकी से दूर रहने की क्रसम खाले तो उसको चाहिये कि क्रसम को पूरा न करे बल्कि वह नेक काम ज़रूर करे और क्रसम का कफ़ारा दे, मुस्लिम शरिफ़ की हदीस में है, रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख्स ने किसी बात पर क्रसम खाली फिर मालूम हुआ कि अच्छाई और बेहतरी इसके ख़िलाफ़ में है तो चाहिये कि उस अच्छे काम को करे और क्रसम का कफ़ारा दे, कुछ मुफ़स्सिरों ने यह भी कहा है कि इस आयत से बार बार क्रसम खाने की मुमातिअत यानी मनाही साधित होती है।

(५) क्रसम तीन तरह की होती है : (१) लम्ब (२) ग़मूस (३) मुनअक्रिदा, लम्ब यह है कि किसी गुज़री हुई बात पर अपने ख़याल में सही जानकर क्रसम खाए और अस्ल में वह उसके विपरीत हो, यह माफ़ है, और इसपर कफ़ारा नहीं, ग़मूस यह है कि किसी

और क़ायमत पर ईमान रखती हैं^(१) और उनके शौहरों को इस मुद्दत के अन्दर उनके फेर लेने का हक़ पहुंचता है अगर मिलाए चाहे^(२) और औरतों का भी हक़ ऐसा ही है जैसा उनपर है शरीअत के अनुसार^(३) और मर्दों को फ़ज़ीलत (प्रधानता) है और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है^(२२८)

उन्तीसवाँ रूकू

यह तलाक़^(४) दो बार तक है फिर भलाई के साथ रोक लेना है^(५) या नेकी के साथ छोड़ देना है^(६) और तुम्हें रवा नहीं कि जो कुछ औरतों को दिया^(७) उसमें से कुछ वापिस लो^(८) मगर जब दोनों को डर हो कि अल्लाह की हदें क़ायम न करेंगे^(९) फिर अगर तुम्हें डर हो कि वो दोनों ठीक उन्हीं हदों पर न रहेंगे तो उनपर कुछ गुनाह नहीं इसमें जो बदला देकर औरत छुट्टी ले^(१०) ये अल्लाह की हदें हैं इनसे आगे न बढ़ो तो वही लोग ज़ालिम हैं^(२२९) फिर अगर तीसरी तलाक़ उसे दी तो अब वह औरत उसे हलाल न होगी जब तक दूसरे शौहर के पास न रहे^(११) फिर वह दूसरा अगर उसे तलाक़ दे दे तो उन दोनों पर गुनाह नहीं कि आपस में मिल जाएं^(१२) अगर समझते हों कि अल्लाह की हदें निभाएंगे और

سُبْحَانَكَ يَا اللَّهُ وَالْيَوْمَ الْآخِرُ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا وَلَكِنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ فَإِمَّا سَأَكَ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيٍّ بِإِحْسَانٍ وَلَا يَحِلُّ لَكُمُ أَنْ تَأْخُذُوا مِنْهَا شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ ذَلِكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ وَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدِ حَتَّى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ وَتِلْكَ مَنَازِلُ

गुज़री हुई बात पर जान बूझकर झूठी क़सम ख़ाए, इसमें गुनाहगार होगा। मुनअक्किदा यह है कि किसी आने वाली बात पर इरादा करके क़सम ख़ाए। क़सम को अगर तोड़े तो गुनाहगार भी है और कफ़फ़ारा भी लाज़िम।

(६) जाहिलियत के दिनों में लोगों का यह तरीक़ा था कि अपनी औरतों से माल तलब करते, अगर वह देने से इनकार करतीं तो एक साल, दो साल, तीन साल या इससे ज़्यादा समय तक उनके पास ना जाते और उनके साथ सहवास न करने की क़सम ख़ालेते थे और उन्हें परेशानी में छोड़ देते थे। न वो देवा ही थी कि कहीं अपना ठिकाना कर लेतीं, न शौहर वाली कि शौहर से आराम पातीं। इस्लाम ने इस अत्याचार को मिटाया और ऐसी क़सम ख़ाने वालों के लिये चार महीने की मुद्दत निश्चित फ़रमादी कि अगर औरत से चार माह के लिये सोहबत न करने की क़सम ख़ाले जिसको ईला कहते हैं तो उसके लिये चार माह इन्तिज़ार की मोहलत है। इस अर्थ में ख़ूब सोच समझ ले कि औरत को छोड़ना उसके लिये बेहतर है या रखना। अगर रखना बेहतर समझे और इस मुद्दत के अन्दर रज़ू करले तो निकाह बाक़ी रहेगा और क़सम का कफ़फ़ारा लाज़िम आएगा, और अगर इस मुद्दत में रज़ू न किया और क़सम न तोड़ी तो औरत निकाह से बाहर होगई और उसपर तलाक़ बायन बाक़े हाँगेई। अगर मर्द सहवास की द़मता रखता हो तो रज़ू हमबिस्तरी में ही होगा और अगर किसी वज़ह से ताक़्त न हो तो ताक़्त आने के बाद सोहबत का वादा रज़ू है। (तफ़सीरी अहमदी)

(७) इस आयत में तलाक़ शुदा औरतों की इद्दत का बयान है। जिन औरतों को उनके शौहरों ने तलाक़ दी, अगर वो शौहर के पास न गई थी और उनसे तनहाई में सहवास न हुआ था, जब तो उनपर तलाक़ की इद्दत ही नहीं है जैसा कि आयत “फ़मालकुम अलैहिन्ना मिन इद्दतिन” यानी निकाह करो फिर उन्हें बेहाथ लगाए छोड़ दो तो तुम्हारे लिये कुछ इद्दत नहीं जिसे गिनो। (सूरए अहज़ाब, आयत ४९) में इरशाद है और जिन औरतों को कमसिनी या बुढ़ापे की वज़ह से हैज़ या माहवारी न आती हो या जो गर्भवती हो, उनकी इद्दत का बयान सूरए तलाक़ में आएगा। बाक़ी जो आज़ाद औरतें हैं, यहाँ उनकी इद्दत और तलाक़ का बयान है कि उनकी इद्दत तीन माहवारी हैं।

(८) वह गर्भ हो या माहवारी का ख़ून, क्योंकि उसके छुपाने से रजअत और बलद में जो शौहर का हक़ है, वह नष्ट होगा।

(९) यानी ईमानदारी का यही तक़ज़ा है।

(१०) यानी तलाक़ रज़ई में इद्दत के अन्दर शौहर औरत की तरफ़ पलट सकता है, चाहे औरत राज़ी हो या न हो। लेकिन अगर शौहर को मिलाए मंज़ूर हो तो ऐसा करे। कष्ट पहुंचाने का इरादा न करे जैसा कि जाहिल लोग औरतों को परेशान करने के लिये करते थे।

(११) यानी जिस तरह औरतों पर शौहरों के अधिकार की अदायगी बाज़िब है, उसी तरह शौहरों पर औरतों के हुक्क को रियायत लाज़िम है।

ये अल्लाह की हदें हैं जिन्हें बयान करता है अकल वालों के लिये (२३०) और जब तुम औरतों को तलाक दो और उनकी मीआद (अवधि) आ लगे (२३०) तो उस वक्त तक या भलाई के साथ रोक लो (२३१) या नेकी के साथ छोड़ दो (२३२) और उन्हें जरर (तकलीफ) देने के लिये रोकना न हो कि हद से बढ़ो और जो ऐसा करे वह अपना ही नुकसान करता है (२३३) और अल्लाह की आयतों को ठ्ठा न बना लो (२३४) और याद करो अल्लाह का एहसान जो तुमपर है (२३५) और वह जो तुमपर किताब और हिकमत (२३६) उतारी तुम्हें नसीहत देने को और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है (२३७) (२३१)

तीसवाँ रूकू

और जब तुम औरतों को तलाक दो और उनकी मीआद पूरी हो जाए (२३८) तो ऐ औरतों के वालियों (स्वामियों), उन्हें न रोको इससे कि अपने शौहरों से निकाह कर लें (२३९) जब कि आपस में शरीअत के अनुसार रज़ामंद हो जाएं (२४०) यह नसीहत उसे दी जाती है जो तुम में से अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखता हो यह तुम्हारे लिये ज़्यादा सुधरा और पाकीज़ा है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते (२४१) और माएं दूध पिलाएं अपने बच्चों को (२४२) पूरे दो वरस

حُدُودُ اللَّهِ يَبْتَغِيهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۚ وَإِذَا طَلَقْتُمُ
النِّسَاءَ فَلْيُكْفَنَ أَجْلَهُنَّ فَأُمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ
أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا
لِتَعْتَدُوا ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ
وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ
اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ
وَالْحِكْمَةِ بِعَظْمِ بَهْمٍ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ
فَلْيَكُنْ أَجْلُهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ
أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ ذَلِكَ
يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ بِإِلَهِ يَوْمِ الْوَعْدِ
الْآخِرِ ۚ ذَلِكَ أَرْكَى لَكُمْ وَأَظْهَرُ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ۚ وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ

مَوْلَانَا

सूरए बकरह - उन्तीसवाँ रूकू

- (१) यानी तलाक रजई. एक औरत ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खिदमत में हाजिर होकर अर्ज किया कि उसके शौहर ने कहा है कि वह उसको तलाक देता और रूजू करता रहेगा. हर बार जब तलाक की इद्दत गुजरने के करीब होगी रूजू कर लेगा, फिर तलाक दे देगा, इसी तरह उम्र भर उसको कैद में रखेगा. इसपर यह आयत उतरी और इरशाद फरमाया कि तलाक रजई दो बार तक है. इसके बाद फिर तलाक देने पर रूजू करने का हक नहीं.
- (२) रूजू करके.
- (३) इस तरह कि रूजू न करे और इद्दत गुजरकर औरत बायना हो जाए.
- (४) यानी मेहर.
- (५) तलाक देने वक्त.
- (६) जो मियाँ बीबी के हुक्क के बारे में है.
- (७) यानी तलाक हासिल करे. यह आयत जमीला बिन अब्दुल्लाह के बारे में उतरी. यह जमीला साबित बिन कैस इब्ने शमास के निकाह में थी और शौहर से सख्त नफरत रखती थीं. रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में अपने शौहर की शिकायत लाई और किसी तरह उनके पास रहने पर राजी न हुई, तब साबित ने कहा कि मैं ने इनको एक बाग दिया है अगर यह मेरे पास रहना ग्वारा नहीं करती और मुझसे अलग होना चाहती हैं तो वह बाग मुझे वापस करें, मैं इनको आज़ाद कर दूँ. जमीला ने इसको मंज़ूर कर लिया. साबित ने बाग ले लिया और तलाक दे दी. इस तरह की तलाक को ख़ुला कहते हैं. ख़ुला तलाक बायन होता है. ख़ुला में 'ख़ुला' शब्द का ज़िक्र ज़रूरी है. अगर जुदाई की तलबगार औरत हो तो ख़ुला में मेहर की भिकदार से ज़्यादा लेना मकरूह है और अगर औरत की तरफ से नुशूज़ न हो, मर्द ही अलाहिदगी चाहे तो मर्द को तलाक के बदले माल लेना बिल्कुल मकरूह है.
- (८) तीन तलाकों के बाद औरत शौहर पर हराम हो जाती है, अब न उससे रूजू हो सकता है न दोबारा निकाह, जब तक कि हलाला हो, यानी इद्दत के बाद दूसरे से निकाह करे और वह सहवास के बाद तलाक दे, फिर इद्दत गुज़रे.
- (९) दोबारा निकाह कर लें.
- (१०) यानी इद्दत ख़त्म होने के करीब हो. यह आयत साबित बिन यसार अन्सारी के बारे में उतरी. उन्होंने अपनी औरत को तलाक दी थी और जब इद्दत ख़त्म होने के करीब होती थी, रूजू कर लिया करते थे ताकि औरत कैद में पड़ी रहे.
- (११) यानी निवाहने और अच्छा मामला करने की नियत से रूजू करो.
- (१२) और इद्दत गुज़र जाने दो ताकि इद्दत के बाद वां आज़ाद हो जाए.

उसके लिये जो दूध की मुदत पूरी करनी चाहे^(१) और जिसका वच्चा है^(२) उसपर औरतों का खाना और पहनना है दस्तूर के अनुसार^(३) किसी जान पर बोझ न रखा जाएगा मगर उसकी ताकत भर. माँ को जरूर न दिया जाए उसके वच्चे से^(४) और न औलाद वाले को उसकी औलाद से^(५) या माँ बाप जरूर न दें अपने वच्चे को और न औलाद वाला अपनी औलाद को^(६) और जो बाप की जगह है उसपर भी ऐसा ही वाजिब है फिर अगर माँ बाप दोनों आपस की रज़ा और सलाह से दूध छुड़ाना चाहें तो उनपर गुनाह नहीं. और अगर तुम चाहो कि दाइयों से अपने वच्चों को दूध पिलाओ तो भी तुमपर हरज नहीं कि जब जो देना ठहरा था भलाई के साथ उन्हें अदा करदो और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है^(७) और तुम में जो मरें और वीवियां छोड़ें वो चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें^(८) तो जब उनकी मुदत (अवीध) पूरी हो जाए तो ऐ वालियों (स्वामियों) तुम पर मुआख़ज़ा (पकड़) नहीं उस काम में जो औरत अपने मामले में शरीअत के अनुसार करें और अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है^(९) और तुम पर गुनाह नहीं इस बात में जो पर्दा

حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِنَبْنُ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرِّضَاعَةَ،
وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ،
لَا تُكَلِّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا، لَا تَضَارُّ وَالِدَةٌ
بَوْلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ بِوَلَدِهِ، وَعَلَى الْوَارِثِ
مِثْلُ ذَلِكَ، فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا
وَ تَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا، وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ
تَسْرِضُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَأَلْتُمُ
مَّا آتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ، وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ
مِنْكُمْ وَيَدْرُونَ أَرْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ
أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا، فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ
بِالْمَعْرُوفِ، وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ وَلَا

- (१३) कि अल्लाह के हुक्म की मुआलिफ़्त करके गुनहगार होता है.
(१४) कि उनकी पर्वाह न करो और उनके ख़िलाफ़ अमल करो.
(१५) कि तुम्हें मुसलमान किया और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का उम्मीत बनाया.
(१६) किताब से कुरआन और हिकमत से कुरआन के आदेश और रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सुन्नत मुराद है.
(१७) उससे कुछ छुपा हुआ नहीं है.

सूरए बक्ररह - तीसवाँ खूक

- (१) यानी उनकी इदत गुज़र चुके.
(२) जिनको उन्होंने अपने निकाह के लिये चुना हो, चाहे वो नए हों या सही तलाक़ देने वाले या उनसे पहले जो तलाक़ दे चुके थे.
(३) अपने कुपुत्र यानी बरावर वाले में मेहरे मिसल पर, क्योंकि इसके ख़िलाफ़ की सूरत में सरपरस्त हस्तक्षेप और एतिराज़ का हक़ रखते हैं. मअक़्तल बिन यसार मुज़नी की बहन का निकाह आसिम बिन अदी के साथ हुआ था. उन्होंने तलाक़ दी और इदत गुज़रने के बाद फिर आसिम ने दरख़ास्त की तो मअक़्तल बिन यसार आड़े आए. उनके बारे में यह आयत उतरी. (बुख़ारी शरीफ़)
(४) तलाक़ के बयान के बाद यह सवाल अपने आप सामने आता है कि अगर तलाक़ वाली औरत की गोद में दूध पीता बच्चा हो तो उसके अलग होने के बाद बच्चे की परवरिश का क्या तरीक़ा होगा. इसलिये यह ज़रूरी है कि बच्चे के पालन पोषण के बारे में माँ बाप पर जो अहक़ाम हैं वो इस मौक़े पर बयान फ़रमा दिये जाएं. लिहाज़ा यहाँ उन मसाइल का बयान हुआ: माँ चाहे तलाक़ शुदा हो या न हो, उसपर अपने बच्चे को दूध पिलाना वाजिब है, शर्त यह है कि बाप को उजरत या बेतन पर दूध पिलवाने की क्षमता और ताक़त न हो या कोई दूध पिलाने वाली उपलब्ध न हो. या बच्चा माँ के सिवा किसी का दूध कुबूल न करे. अगर ये बात न हो, यानी बच्चे की परवरिश खास माँ के दूध पर निर्भर न हो तो माँ पर दूध पिलाना वाजिब नहीं, मुस्तहब है. (तफ़सीरे अहमदी व जुमल बग़ैरह)
(५) यानी इस मुदत का पूरा करना अनिवार्य नहीं. अगर बच्चे को ज़रूरत न रहे और दूध छुड़ाने में उसके लिये ख़तरा न हो तो इससे कम मुदत में भी छुड़ाना जायज़ है. (तफ़सीरे अहमदी, ख़ाज़िन बग़ैरह)
(६) यानी वालिद. इस अन्दाज़े बयान से मालूम हुआ कि नसब बाप की तरफ़ पलटता है.
(७) बच्चे की परवरिश और उसके दूध पिलवाना बाप के ज़िम्मे वाजिब है. इसके लिये वह दूध पिलाने वाली मुक़रर करे. लेकिन

रखकर तुम औरतों के निकाह का पयाम दो या अपने दिल में छुपा रखो।^(१२) अल्लाह जानता है कि अब तुम उनकी याद करोगे^(१३) हों उनसे छुपवां वादा न कर रखो मगर यह कि उतनी बात कहो जो शरीअत में चलती है और निकाह की गांठ पक्की न करो जबतक लिखा हुआ हुक्म अपने समय को न पहुंच ले^(१४) और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे दिल की जानता है तो उससे डरो और जान लो कि अल्लाह बख्शाने वाला, हिल्म(सहिष्णुता) वाला है।^(२३५)

इकत्तीसवाँ सूबू

तुमपर कुछ मुतालिबा(अभियाचना) नहीं^(१) तुम औरतों को तलाक़ दो जब तक तुम ने उनको हाथ न लगाया हो या कोई मेहर(रक़म, दैन) निश्चित कर लिया हो।^(२) और उनको कुछ वरतने को दो।^(३) हैसियत वाले पर उसके लायक और तंगदस्त पर उसके लायक, दस्तूर के अनुसार कुछ वरतने की चीज़, ये वाजिब है भलाई वालों पर^(४) (२३६) और अगर तुमने औरतों को वे छुए तलाक़ दे दी और उनके लिये कुछ मेहर निश्चित कर चुके थे तो जितना ठहरा था उसका आधा अनिवार्य है मगर यह कि औरतें कुछ छोड़ दें^(५) या वह ज्यादा दे^(६) जिसके हाथ में निकाह की गिरह है^(७) और

جُنَاحٌ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَضْتُمْ بِهِ مِنْ خُطْبَةِ النِّسَاءِ
أَوْ أَكْتَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ عَلِيمَ اللَّهِ أَنَّكُمْ سَتَذَكَّرُونَ
وَلَكِنْ لَا تَوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا
مَعْرُوفًا وَلَا تَعْزِمُوا عَقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّى
يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي
أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَفُوٌّ رَحِيمٌ
لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمْ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمْسُوهُنَّ
أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً وَمَتَّعُوهُنَّ عَلَى
الْمُوسِمِ قَدْرُهُ وَعَلَى الْمُقْتَرِ قَدْرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ
حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ۝ وَإِنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ
قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً
فَوَصَّفْ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوا
الَّذِي بِيَدِهِ عَقْدَةُ النِّكَاحِ وَأَنْ تَعْفُوا

مَنْعَل

अगर माँ अपनी सगवत से बच्चे को दूध पिलाए तो बेहतर है। शौहर अपनी बीवी पर बच्चे को दूध पिलाने के लिये ज़बरदस्ती नहीं कर सकता, और न औरत शौहर से बच्चे के दूध पिलाने की उजरत या मज़दूरी तलब कर सकती है। जब तक कि उसके निकाह या इद्दत में रहे। अगर किसी शख्स ने अपनी बीवी को तलाक़ दी और इद्दत गुज़र चुकी तो वह उस बच्चे के दूध पिलाने की उजरत ले सकती है। अगर बाप ने किसी औरत को अपने बच्चे के दूध पिलाने पर रखा और उसकी माँ उसी बेतन पर या बिना पैसे दूध पिलाने पर राजी हुई तो माँ ही दूध पिलाने को ज्यादा हक़दार है। और अगर माँ ने ज्यादा बेतन तलब किया तो बाप को उससे दूध पिलवाने पर मज़बूर नहीं किया जाएगा। (ताफ़सीर अहमदी व मदारीक)। “अलमअररुफ़” (दस्तूर के अनुसार) से मुराद यह है कि हैसियत के मुताबिक़ हो, तंगी या फ़ुज़ूलअर्ची के बग़ैर।

(८) यानी उसको उसकी मर्जी के ख़िलाफ़ दूध पिलाने पर मज़बूर न किया जाए।

(९) ज्यादा बेतन तलब करके।

(१०) माँ का बच्चे को कष्ट देना यह है कि उसको वक्त पर दूध न दे और उसकी निगरानी न रखे या अपने साथ मानूस कर लेने के बाद छोड़ दे। और बाप का बच्चे को कष्ट देना यह है कि हिले हुए बच्चे को माँ से छीन ले या माँ के हक़ में कमी करे जिससे बच्चे को नुक़सान हो।

(११) गर्भवती की इद्दत तो गर्भ के अन्त तक यानी बच्चा पैदा हो जाने तक है, जैसा कि सूरए तलाक़ में ज़िक़्र है। यहाँ बिना गर्भ वाली औरत का बयान है जिसका शौहर मर जाए, उसकी इद्दत चार माह दस रोज़ है। इस मुद्दत में न वह निकाह करे न अपना घर छोड़े, न बिना ज़रूरत तेल लगाए, न खुशबू लगाए, न मेहंदी लगाए, न सिंगार करे, न रंगीन और रेशमी कपड़े पहने, न नए निकाह की बात चीत खुलकर करे। और जो तलाक़े बायन की इद्दत में हो, उसका भी यही हुक्म है। अल्बत्ता जो औरत तलाक़े रजई की इद्दत में हो, उसको सजना सँवरना और सिंगार करना मुस्तहब है।

(१२) यानी इद्दत में निकाह और निकाह का खुला हुआ प्रस्ताव तो मना है लेकिन पदों के साथ निकाह की इच्छा प्रकट करना गुनाह नहीं। जैसे यह कहे कि तुम बहुत नेक औरत हो या अपना इरादा दिल में ही रखे और ज़बान से किसी तरह न कहे।

(१३) और तुम्हारे दिलों में इच्छा होगी इसी लिये तुम्हारे लिये तारीज़ जायज़ कर दी गई।

(१४) यानी इद्दत गुज़र चुके।

सूरए बक्ररह - इकत्तीसवाँ सूबू

(१) मेहर का।

(२) यह आयत एक अन्तारी के बारे में नाज़िल हुई जिन्होंने बनी हनीफ़ा कबीले को एक औरत से निकाह किया और कोई मेहर

ऐ मर्दो, तुम्हारा ज्यादा देना परहेजगारी से नजदीकतर है और आपस में एक दूसरे पर एहसान को भुला न दो बेशक अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है (२३७) निगहबानी करो सब नमाज़ों की (१) और बीच की नमाज़ की (१०) और खड़े हो अल्लाह के हुज़ूर अदब से (११) (२३८) फिर अगर डर में हो तो प्यादा या सवार जैसे बन पड़े, फिर जब इत्मीनान से हो तो अल्लाह की याद करो जैसा उसने सिखाया जो तुम न जानते थे (२३९) और जो तुम में मरें और बीवियां छोड़ जाएं वो अपनी औरतों के लिये वसीयत कर जाएं (१२) साल भर तक नान नफ़्का देने की वे निकालें (१३) फिर अगर वो खुद निकल जाएं तो तुम पर उसका कोई हिसाब नहीं जो उन्होंने अपने मामले में मुनासिब तौर पर किया और अल्लाह गालिब हिकमत वाला है (२४०) और तलाक वालियों के लिये भी मुनासिब तौर पर नान नफ़्का है ये वाजिब है परहेजगारी पर (२४१) अल्लाह यूँ ही बयान करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतें कि कहीं तुम्हें समझ हो (२४२)

बत्तीसवाँ सूक़

ऐ मेहबूब क्या तुमने न देखा था उन्हें जो अपने घरों से निकले और वो हज़ारों थे मौत के डर से तो अल्लाह ने

أَقْرَبَ لِلتَّقْوَىٰ وَلَا تَنْسُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ
إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ خُفِظُوا عَلَى
الصَّلَواتِ وَالصَّلَوةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَنِينَ
فَإِنْ خِفْتُمْ فِرْجًا لَا أَرْكَبَانَا فَإِذَا أَمِنْتُمْ
فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ
وَالَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا
وَصِيَةً لَا رُؤُوسَ لَهُمْ مَتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرِ
إِخْرَاجٍ فَإِنْ خَرَجْنَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا
فَعَلْنَا فِي أَنْفُسِنَا مِنْ مَّعْرُوفٍ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ وَلِلْمُطَلَّقاتِ مَتَاءٌ بِمَا لَمْ يَكُنَّ
عَلَى الْمُتَّقِينَ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا
مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أَلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ

निश्चित न किया। फिर हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दी। इससे मालूम हुआ कि जिस औरत का मेहर निश्चित न किया हो, अगर उसको छूने से पहले तलाक़ दे दी तो मेहर की अदायगी लाज़िम नहीं। हाथ लगाने या छूने से हम बिस्तरी मुराद है, और ग्रिलवले सहीदा यानी भरपूर तनहाई उसके हुक़्म में है। यह भी मालूम हुआ कि मेहर का जिक्र किये बिना भी निकाह दुस्त है, मगर उस सूरत में निकाह के बाद मेहर निश्चित करना होगा। अगर न किया तो हमबिस्तरी के बाद मेहरे मिसल लाज़िम हो जाएगा, यानी वो मेहर जो उसके झानदान में दूसरों का बंधता चला आया है।

(३) तीन कपड़ों का एक जोड़ा।

(४) जिस औरत का मेहर मुकर्रर न किया हो, उसको दुखूल यानी संभोग से पहले तलाक़ दी हो उसको तो जोड़ा देना वाजिब है। और इसके सिवा हर तलाक़ वाली औरत के लिये मुस्तहब है। (मदारिक)

(५) अपने इस आधे में से।

(६) आधे से जो इस सूरत में वाजिब है।

(७) यानी शौहर।

(८) इसमें सदब्यवहार और महब्वत और नमी से पेश आने की तरगीब है।

(९) यानी पाँच वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ों को उनके औकात पर भरपूर संस्कारों और शतों के साथ अदा करते रहो। इसमें पाँचों नमाज़ों के फ़र्ज़ होने का बयान है। और औलाद और बीबी के मसाइल और अहक़ाम के बीच नमाज़ का जिक्र फ़रमाना इस नतीजे पर पहुंचाता है कि उनको नमाज़ की अदायगी से माफ़िल न होने दो और नमाज़ की पाबन्दी से दिल की सफ़ाई होती है, जिसके बिना मामलों के दुस्त होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

(१०) हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा और अक्सरी बेशक सहाबा का मज़हब यह है कि इससे अस की नमाज़ मुराद है। और हदीसों से भी प्रमाण मिलता है।

(११) इससे नमाज़ के अन्दर क़याम का फ़र्ज़ होना साबित हुआ।

(१२) अपने रिश्तेदारों को।

(१३) इस्लाम की शुरुआत में विधवा की इदत एक साल की थी और पूरे एक साल वह शौहर के यहाँ रहकर रोटी कपड़ा पाने की अधिकारी थी। फिर एक साल की इदत तो “यतरब्सना वि अनुस्तेहिना अरबता अशहरिन व अशरा” (यानी चार माह दस दिन अपने आप को रोके रहें - सूर अन्नूर - आयत २३४) से स्थगित हुई, जिसमें विधवा की इदत चार माह दस दिन निश्चित फ़रमा दी गई और साल भर का नान नफ़्का मीरास की आयत से मन्सूख़ यानी रद्द हुआ जिसमें औरत का हिस्सा शौहर के छोड़े हुए माल से मुकर्रर किया गया। लिहाज़ा अब वसियत का हुक़्म बाकी न रहा। हिकमत इसकी यह है कि अरब के लोग अपने पूर्वज की विधवा

(१३) इसमें विरासत को कुछ दर्ज़ नहीं।

(१४) जिसे चाहे गनी यानी मालदार करदे और माल में विस्तार अता फ़रमा दे। इसके बाद बनी इस्राईल ने हज़रत शमवील अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि अगर अल्लाह ने उन्हें सल्तनत के लिये मुक़रर किया है तो इसकी निशानी क्या है। (ख़ाज़िन व मदारिक)

(१५) यह ताबूत शमशाद की लकड़ी का एक सोने से जड़ाऊ सन्दूक था जिसकी लम्बाई तीन हाथ की और चौड़ाई दो हाथ की थी। इसको अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर उतारा था। इसमें सारे नबियों की तस्वीरें थीं उनके रहने की जगहें और मकानों की तस्वीरें थीं और आख़िर में नबियों के सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की और हुज़ूर के मुक़द्दस मकान की तस्वीर एक सुन्न याक़ूत में थी कि हुज़ूर नमाज़ की हालत में खड़े हैं और आपके चारों तरफ़ सहाबए किराम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने इन सारी तस्वीरों को देख़ा। यह सन्दूक विरासत में चलता हुआ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तक पहुंचा। आप इसमें तौगत भी रखते थे और अपना ख़ास सामान भी। चुनान्ने इस ताबूत में तौगत की तस्वीरों के टुकड़े भी थे, और हज़रत मूसा की लाठी और आपके कपड़े, जूते और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की पगड़ी और उनकी लाठी और थोड़ा सा मन्न, जो बनी इस्राईल पर उतरता था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जंग के अवसरों पर इस सन्दूक को आगे रखते थे, इससे बनी इस्राईल के दिलों को तस्कीन रहती थी। आपके बाद यह ताबूत बनी इस्राईल में लगातार विरासत में चला आया। जब उन्हें कांड मुश्किल पेश आती, वो इस ताबूत को सामने रखकर दुआएं करते और कामयाब होते। दुश्मनों के मुकाबले में इसकी बरक़त से फ़तह पाते। जब बनी इस्राईल की हालत ख़राब हुई और उनके कुकर्म बहुत बढ़ गए तो अल्लाह तआला ने उनपर अमालिका को मुसल्लत किया तो वो उनसे ताबूत छीन ले गए और इसको अपवित्र और गन्दे स्थान पर रखा और इसकी बेहुरमती यानी निरादर किया और इन गुस्ताख़ियों की वजह से वो तरह तरह की मुसीबतों में गिरफ़्तार हुए। उनकी पाचें बस्तियाँ तबाह हो गईं और उन्हें यकीन हो गया कि ताबूत के निरादर से उनपर बर्बादी और मौत आई है। तो उन्होंने एक बेल गाड़ी पर ताबूत रखकर बैलों को हॉक दिया और फ़रिश्ते उसको बनी इस्राईल के सामने तालूत के पास लाए और इस ताबूत का आना बनी इस्राईल के लिये तालूत की बादशाही की निशानी मुक़रर हुआ। बनी इस्राईल यह देखकर उसकी बादशाही पर ख़ाज़ी हो गए और फ़ौरन जिहाद के लिये तैयार हो गए क्योंकि ताबूत पाकर उन्हें अपनी फ़तह का यकीन हो गया। तालूत ने बनी इस्राईल में से सत्तर हज़ार जवान चुने जिनमें हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम भी थे। (जलालेन व जुमल व ख़ाज़िन व मदारिक वगैरह) इससे मालूम हुआ कि जुजुगों की चीज़ों का आदर और एहतियाम लाज़िम है। उनकी बरक़त से दुआएं क़बूल होती हैं और हाज़तें पूरी होती हैं और तबर्क़क़त का निरादर गुमराहों का तरीका और तबाही का कारण है। ताबूत में नबियों की जो तस्वीरें थीं वो किसी आदमी की बनाई हुई न थीं, अल्लाह की तरफ़ से आई थीं।

सूरए बकरह - तैलीसवाँ रूकू

(१) यानी बेतुल मक़दिस से दुश्मन की तरफ़ रवाना हुआ। वह वक़्त निहायत सख़्त गर्मी का था। लश्करियों ने तालूत में इसकी शिकायत की और पानी की मांग की।

(२) यह इम्तिहान मुक़रर फ़रमाया गया था कि सख़्त प्यास के वक़्त जो फ़रमाँबरदारी पर क़ायम रहा वह आगे भी क़ायम रहेगा और सख़्तियों का मुकाबला कर सकेगा और जो इस वक़्त अपनी इच्छा के देवाच में आए और नाफ़रमानी करे वह आगे की सख़्तियों को क्या बर्दाश्त करेगा।

सब ने उससे पिया मगर थोड़ों ने^(३) फिर जब तालूत और उसके साथ के मुसलमान नहर के पार गए बोले हम में आज ताक़त नहीं जालूत और उसके लश्करों की बोले वो जिन्हें अल्लाह से मिलने का यकीन था कि अकसर कम जमाअत ग़ालिब आई है ज़्यादा गिरोह पर अल्लाह के हुक़म से और अल्लाह सब करने वालों के साथ है^(४) (२४९) फिर जब सामने आए जालूत और उसके लश्करों के, अर्ज़ की ऐ रब हमारे/हम पर सब उड़ेल और हमारे पाँव जमे रख क़ाफ़िर लोगों पर हमारी मदद कर^(५) तो उन्होंने ने उनको भगा दिया अल्लाह के हुक़म से और क़त्ल किया दाऊद ने जालूत को^(६) और अल्लाह ने उसे सल्तनत और हिक़मत (बोध)^(७) अता फ़रमाई और उसे जो चाहा सिखाया^(८) और अगर अल्लाह लोगों में कुछ से कुछ को दफ़ा (निवारण) न करे^(९) तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए मगर अल्लाह सारे ज़हान पर फ़ज़ल (कृपा) करने वाला है^(१०) (२५१) ये अल्लाह की आयतें हैं कि हम ऐ मेहबूब तुमपर ठीक ठीक पढ़ते हैं और तुम देशक रसूलों में हो^(११) (२५२)

يَبْدِيهِمْ فَشَرُّبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ
هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ
بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ
مُلقُوا اللَّهَ كَمُ مِنْ وَتِيَّةٍ قَلِيلَةٌ عَلَيْكَ فِئَةٌ
كَثِيرَةٌ بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ
وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ
عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى
الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ فَهَزَمُوهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ
وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَاشْتَبَاهُ اللَّهُ الْمَلِكَ وَ
الْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ مِمَّا يَشَاءُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ
النَّاسَ بَعْضُهُمْ بِبَعْضٍ لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَ
لَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ تِلْكَ آيَاتُ
اللَّهِ تَتْلُوهَا عَلَيْكَ الْحَقُّ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ

مَنْ

(३) जिनकी तादाद तीन सौ तेरह थी, उन्होंने सब किया और एक चूल्हू उनके और उनके जानवरों के लिये काफ़ी हो गया और उनके दिल और ईमान का कुच्चत हुई और नहर से सलामत गुज़र गए और जिन्होंने ख़ूब पिया था उनके होंट काले हो गए, प्यास और बढ़ गई और हिम्मत टूट गई.

(४) उनकी मदद फ़रमाता है और उसी की मदद काम आती है.

(५) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के बालिद ऐशा तालूत के लश्कर में थे और उनके साथ उनके सारे बेटे भी. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम उन सब में सबसे छोटे थे, बीमार थे, रंग पीला पड़ा हुआ था. बकरियाँ चराते थे. जब जालूत ने बनी इस्राईल को मुकाबले के लिये ललकारा, वो उसकी जसामत देत्र कर घबराए, क्योंकि वह लम्बा चौड़ा ताज़्जवर था. तालूत ने अपने लश्कर में ऐलान किया कि जो शय्य जालूत को क़त्ल करे, मैं अपनी बेटी उसके निकाह में दूँगा और आधी जायदाद उसको दूँगा. मगर किसीने उसका जवाब न दिया तो तालूत ने अपने नबी शमवील अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि अल्लाह के सामने दुआ करें. आपने दुआ की तो बताया गया कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम जालूत को क़त्ल करेंगे. तालूत ने आपसे अर्ज़ की कि अगर आप जालूत को क़त्ल करें तो मैं अपनी लड़की आपके निकाह में दूँ और आधी जायदाद पेश करूँ. आपने कुबूल फ़रमाया और जालूत की तरफ़ खाता हो गए. मुकाबले की सफ़ कायम हुई. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अपने मुबारक हाथों में गुलेल या गोफ़न लेकर सामने आए. जालूत के दिल में आपको देखकर दहशत पैदा हुई मगर उसने बड़े घमण्ड की बातें कीं और आपको अपनी ताक़त के रोब में लाना चाहा. आपने गोफ़न में पत्थर रखकर मारा वह उसकी पेशानी को तोड़कर पीछे से निकल गया और जालूत गिर कर मर गया. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने उसको लाकर तालूत के सामने डाल दिया. सारे बनी इस्राईल बहुत खुश हुए और तालूत ने वादे के मुताबिक़ आधी जायदाद दी और अपनी बेटी का आपके साथ निकाह कर दिया. सारे मुल्क पर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की सल्तनत हुई. (मुमल बग़ैरह)

(६) हिक़मत से नयुच्चत मुराद है.

(७) जैसे कि ज़िरह बनाता और जाक़रों की बोली समझना.

(८) यानी अल्लाह तआला नेकों के सदक़े में दूसरों की बलाएं भी दूर फ़रमाता है. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला एक नेक मुसलमान की बरक़त से उसके पड़ोस के सौ घर वालों की बला दूर करता है. सुक़ानल्लाह ! नेकों के साथ रहना भी फ़ायदा पहुंचाता है. (ख़ाज़िन)

(९) ये हज़रत जिनका ज़िक़ पिछली आयतों में और ख़ास कर आयत "इन्नका लमिनल मुरसलीन" (और तुम देशक रसूलों में हो) में फ़रमाया गया.

पारा दो समाप्त

तीसरा पारा तैंतीसवाँ रुकू (जारी)

ये रसूल हैं कि हमने इन में एक को दूसरे पर अफ़ज़ल (प्रधान) किया^(१०) इन में किसी से अल्लाह ने कलाम फ़रमाया^(११) और कोई वह है जिसे सब पर दर्जों बलन्द किया^(१२) और हमने मरयम के बेटे ईसा को खुली निशानियाँ दीं^(१३) और पाकीज़ा रूह से उसकी मदद की^(१४) और अल्लाह चाहता तो उनके बाद वाले आपस में न लड़ते बाद इसके कि उनके पास खुली निशानियाँ आचुर्कीं^(१५) लेकिन वो मख़्तलिफ़ हो गए उनमें कोई ईमान पर रहा और कोई काफ़िर होगया^(१६) और अल्लाह चाहता तो वो न लड़ते मगर अल्लाह जो चाहे करे^(१७) (२५३)

चौतीसवाँ रुकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह की राह में हमारे दिये में से खर्च करो वह दिन आने से पहले जिसमें न ख़रीद फ़रोख़्त (क्रिय-विक्रिय) है न काफ़िरों के लिये दोस्ती और न शफ़ाअत (सिफ़ारिश) और काफ़िर खुद ही ज़ालिम हैं^(१) (२५४) अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअबूद नहीं^(२) वह आप ज़िन्दा, औरों का कायम रखने वाला^(३) उसे न ऊँघ आए न नींद^(४) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में^(५) वह कौन है जो उसके यहां सिफ़ारिश करे वे उसके हुक्म के^(६) जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो

بِأَنَّكَ الرَّسُولُ فَصَلَّاتًا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ
مِّنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضُهُمْ دَرَجَاتٍ
وَأَنبَيَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ
الْقُدُسِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ مِن
بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِن
اِخْتَلَفُوا فَبُيِّنَتْ لَهُمْ مِّنْ أَمْنٍ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ وَلَوْ
شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلُوا وَلَكِن يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِّنْ
قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ
وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ
لَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَن ذَا
الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ
أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُ بِشَيْءٍ مِّنْ شَيْءٍ

तीसरा पारा - तिल्कर रसूल

तैंतीसवाँ रुकू (जारी)

(१०) इससे मालूम हुआ कि नबियों के दर्जे अलग अलग हैं। कुछ हज़रात से कुछ अफ़ज़ल हैं। अगरचे नबुच्चत में कोई फ़र्क़ नहीं, नबुच्चत की श्रुती में सब शरीक हैं, मगर अपनी अपनी विशेषताओं, गुणों और क़माल में अलग अलग दर्जे हैं। यही आयत का मज़मून है और इसी पर सारी उम्मत की सहमति है। (श्राज़िन व जुमल)

(११) यानी बिला वास्ता या बिना माध्यम के, जैसे कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तूर पहाड़ पर संबोधित किया और नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मंराज़ में। (जुमल)।

(१२) वह हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं कि आपको कई दर्जों के साथ सारे नबियों पर अफ़ज़ल किया। इसपर सारी उम्मत की सहमति है। और कई हदीसों से साबित है। आयत में हुज़ूर के इस बलन्द दर्जे का वयान फ़रमाया गया और नामे मुबारक की तसरीह यानी विवरण न किया गया। इससे भी हुज़ूर अलैहिस्सलामो वसल्लम की शान की बड़ाई मक़सूद है, कि हुज़ूर की मुबारक ज़ात की यह शान है कि जब सारे नबियों पर फ़ज़ीलत या दुजुर्गी का वयान किया जाए तो आपकी पाक ज़ात के सिवा किसी और का ख़याल ही न आए और कोई शक़ न पैदा हो सके। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वो विशेषताएं और गुण जिनमें आप सारे नबियों से फ़ायक़ और अफ़ज़ल हैं और आपका कोई शरीक नहीं, बेशुमार हैं कि क़ुरआने पाक में यह इरशाद हुआ “दर्जों बलन्द किया” इन दर्जों की कोई गिनती क़ुरआन शरीफ़ में ज़िक़्र नहीं फ़रमाई, तो अब कौन हद लगा सकता है। इन बेशुमार विशेषताओं में से कुछ का इज़माली और संक्षिप्त वयान यह है कि आपकी रिसालत आम है, तमाम सृष्टि आपकी उम्मत है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया “वَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلْعَالَمِينَ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الْآيَاتِ الَّتِي هُمْ يُقْرَأُونَ وَلِيُنْذِرَ لِقَوْمٍ يُظْلَمُونَ” (यानी ऐ मेहबूब हमने तुमको न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है, खुशख़बरी देता और डर सुनाता) (३४:२८)। दूसरी आयत में फ़रमाया: “لِيُذَكِّرَ الَّذِينَ لَمْ يَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ الرُّسُلَ مِنْ قَبْلِهِمْ الْآيَاتِ الَّتِي هُمْ يُقْرَأُونَ” (यानी जो सारे ज़हान को डर सुनाने वाला हो) (२५:१)। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में इरशाद हुआ “أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلْعَالَمِينَ” (और आप पर नबुच्चत ख़त्म की गई)। क़ुरआने पाक में आपको ख़ातिमुन्नबीय़ीन फ़रमाया हदीस शरीफ़ में इरशाद हुआ “خُتِمَتِ النَّبِيُّونَ بِكَ” (आपको तमाम नबियों पर अफ़ज़ल फ़रमाया)

कुछ उनके पीछे^(१) और वो नहीं पाते उसके इल्म में से मगर जितना वह चाहे^(२) उसकी कुर्सी में समाए हुए है आसमान और ज़मीन^(३) और उसे भारी नहीं उनकी निगहबानी और वही है वलन्द बढ़ाई वाला^(४) (२५५) कुछ ज़बरदस्ती नहीं^(५) दीन में बेशक खूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और अल्लाह पर ईमान लाए^(६) उसने बड़ी मज़बूत गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं और अल्लाह सुनता जानता है (२५६) अल्लाह वाली है मुसलमानों का उन्हें अंधेरियों से^(७) नूर की तरफ निकालता है और काफ़िरों के हिमायती शैतान हैं वो उन्हें नूर से अंधेरियों की तरफ निकालते हैं यही लोग दोज़ख वाले हैं, उन्हें हमेशा उसमें रहना (२५७)

पैंतीसवाँ सूक़

ऐ मेहबूब क्या तुमने न देखा था उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उसके रब के बारे में इस पर^(१) कि अल्लाह ने उसे बादशाही दी^(२) जब कि इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वह है कि जिलाता और मारता है^(३) वोला मैं जिलाता और मारता

الفقرة

५८

بسم الله الرحمن الرحيم

أَيُّدِيهِمْ وَمَا خَلَقَهُمْ وَلَا يَظُنُّونَ شَيْئًا مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝ لَا أَكْرَاهُ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدْ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَى لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أُولَئِكَمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ مِنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ حَاكَمُوا بَيْنَهُمْ فِي رَيْبَةٍ أَنْ أُنْشِئَ لَهُمُ الْقُلُوبَ أَمْ قَالِ الْإِنْسَانُ لِرَبِّهِ رَبِّي أَلَمْ يَجِبْ وَيُؤْتِ قَالَ إِنَّا أَنَا رَبِّي وَامْنُتُ

مترجم

गया . आपकी उम्मत का तमाम उम्मतों पर अफ़ज़ल किया गया . शफ़ाअते कुबरा आपको अता फ़रमाई गई . मेराज में ख़ास कुब आपकी मिला . इल्मी और अमली कमालात में आपको सबसे ऊँचा किया और इसके अलावा वे इन्तिहा विशेषताएं आपको अता हुई . (मदारिक, जुमल, ख़ाज़िन, बैज़ावी वगैरह).

- (१३) जैसे मुर्दे को ज़िन्दा करना, बीमारों को तन्दुरुस्त करना, मिट्टी से चिड़ियाँ बनाना, ग़ैब की ख़बर देना वगैरह.
- (१४) यानी ज़िब्रिल अलैहिस्सलाम से जो हमेशा आपके साथ रहते थे.
- (१५) यानी नबियों के चमत्कार.
- (१६) यानी पिछले नबियों की उम्मतों भी ईमान और कुफ़्र में विभिन्न रहीं, यह न हुआ कि तमाम उम्मत मुतीअ हो जाती.
- (१७) उसके मुल्क में उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़ कुछ नहीं हो सकता और यही खुदा की शान है.

सूरए बक्ररह - चौतीसवाँ सूक़

- (१) कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगानी में हाज़त के दिन यानी क़यामत के लिये कुछ न किया.
- (२) इसमें अल्लाह तआला की उल्हियत और उसके एक होने का बयान है. इस आयत की आयतल कुर्सी कहते हैं. हदीसों में इसकी बहुत सी फ़ज़ीलत आई है.
- (३) यानी बाज़िबुल वुजूद और आलम का ईजाद करने वाला और तदवीर फ़रमाने वाला.
- (४) क्योंकि यह दोष है और यह दोष और ऐब से पाक है.
- (५) इसमें उसकी मालिकियत और हुक़म के लागू करने की शक्ति का बयान है, और बहुत ही सुंदर अन्दाज़ में शिर्क का रद्द है कि जब सारी दुनिया उसकी मिल्क है तो शरीक कौन हो सकता है. मुश्रिक या तो सितारों को पूजते हैं जो आसमानों में हैं या दरियाओं, पहाड़ों, पत्थरों और दरख़्तों और जानवरों वगैरह को कि जो ज़मीन में हैं. जब आसमान और ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह की मिल्क है तो ये कैसे पूजने के क़ाबिल हो सकते हैं.
- (६) इसमें मुश्रिकों का रद्द है जिनका गुमान था कि मूर्तियाँ सिफ़ारिश करेंगी. उन्हें बता दिया गया कि काफ़िरों के लिये सिफ़ारिश या शफ़ाअत नहीं. अल्लाह के दरबार से ज़िन्हें इसकी इजाज़त मिली है उनके सिवा कोई शफ़ाअत नहीं कर सकता और इजाज़त वाले नबी, फ़रिश्ते और ईमान वाले हैं.
- (७) यानी गुज़रे हुए या आगे आने वाले दुनिया और आख़िरत के काम.
- (८) और जिनको वह मुत्तला फ़रमाए, वो नबी और रसूल हैं जिनको ग़ैब पर सूचित फ़रमाया, उनकी नबुव्वत का प्रमाण है. दूसरी

हैं^(५) इब्राहीम ने फ़रमाया तो अल्लाह सूरज को लाता है पूरब से, तू उसको पश्चिम से ले आ^(६) तो होश उड़ गए काफ़िर के और अल्लाह राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को^(७) या उसकी तरह जो गुज़रा एक बस्ती पर^(८) और वह ढई पड़ी थी अपनी छतों पर^(९) बोला इसे कैसे जिलाएगा अल्लाह इसकी मौत के बाद, तो अल्लाह ने उसे मुर्दा रखा सौ बरस फिर ज़िन्दा कर दिया, फ़रमाया तू यहां कितना ठहरा, अर्ज़ की दिन भर ठहरा हूंगा या कुछ कम, फ़रमाया नहीं, तुझे सौ बरस गुज़र गए और अपने खाने और पानी को देख कि अब तक बू न लाया और अपने गधे को देख कि जिसकी हड्डियां तक सलामत न रहीं, और यह इसलिये कि तुझे हम लोगों के वास्ते निशानी करें और उन हड्डियों को देखकर कैसे हम उन्हें उठान देते फिर उन्हें गोश्त पहनाते हैं। जब यह मामला उसपर ज़ाहिर हो गया बोला मैं ख़ुब जानता हूँ कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है^(१०) और जब अर्ज़ की इब्राहीम ने^(११) ऐ रव मेरे मुझे दिखादे तू किस तरह मुर्दे जिलाएगा, फ़रमाया क्या तुझे यक़ीन नहीं^(१२) अर्ज़ की यक़ीन क्यों नहीं मगर यह चाहता हूँ कि मेरे दिल को क़रार

قَالَ اِبْرٰهِيْمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يٰٓاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الشَّرْقِ
فَاْتِيْ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ قَبِيْهَتِ الَّذِيْ كَفَرَ وَ
اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ
عَلٰى قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۖ قَالَ اَتَى
يَعْنٰى هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مَاتَ
عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتُ ۖ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا
اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَلْ لَبِثْتُ مِائَةً عَامٍ
فَانْظُرْ اِلٰى طَعْنٰكَ وَشَرٰبِكَ لَمْ يَتَسَنَّهٖ ۚ وَانْظُرْ
اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ ۚ وَانْظُرْ اِلٰى
الْوَعْدِ كَيْفَ نُنْشِرُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ۚ
فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۖ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۝ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِي
الْمَوْتِ ۖ قَالَ اَوْ لَمْ تُؤْمِنْ ۖ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ

आपत में इरशाद फ़रमाया “ला युज़हिरो अला गैबिही अहदन इल्ला मनिर तदा मिर रसूलिन” (यानी अपने गैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता सिवाय अपने पसन्दीदा रसूलों के। (७२:२६) (ख़ाज़िन)।

(९) इसमें उसकी शान की अज़मत का इज़हार है, और कुर्सी से या इल्म और क्षमता मुराद है या अर्थ या वह जो अर्थ के नीचे और सातों आसमानों के ऊपर है। और मुमकिन है कि यह वही हो जो “फलकुल वरूज” के नाम से मशहूर है।

(१०) इस आपत में इलाहिय्यात के ऊंचे मसायल का बयान है और इससे साबित है कि अल्लाह तआला मौजूद है अपने अल्लाह होने में एक है, हयात यानी ज़िन्दगी के साथ मुत्सफ़ि है। वाजिबुल वुजुद, अपने भासियों का मूजिद है। तमय्युरो हलूल से मुत्तज़ा और तबदीली व ख़राबी से पाक है, न किसी को उससे मुशाबिहत, न मख़लूक के अवारिज़ को उस तक रसाई, मुल्कों मलकून का मालिक, उसूलो फ़रज का मुब्देअ, क़बी गिरफ्त वाला, जिसके हुज़ूर सिवाए मख़ज़ून के कोई शफ़ाअत नहीं कर सकता। सारी चीज़ों का जानने वाला, ज़ाहिर का भी और धुपी का भी, कुल का भी, और कुछ का भी। उसका मुल्क बसीअ और कुदरत तामेहदूद, समझ और सोच से ऊपर।

(११) अल्लाह की सिफ़ात के बाद “ला इकराहा फ़िद दीन” (कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में) फ़रमान में यह राज़ है कि अब समझ वाले के लिये सच्चाई कुबूल करने में हिचकिचाहट की कोई वजह बाकी न रही।

(१२) इसमें इशारा है कि काफ़िर के लिये पहले अपने कुफ़्र से तौबह और बेज़ारी ज़रूरी है, उसके बाद ईमान लाना सही होता है।

(१३) कुफ़्र और गुमराही की रौशनी, ईमान और हिदायत की रौशनी और.....

सूरए बक्रह - पैंतीसवाँ ख़ुकू

(१) घमण्ड और बड़ाई पर।

(२) और तमाम ज़मीन की सल्तनत अता फ़रमाई, इस पर उसने शुक्र और फ़रमाँबरदारी के वजाय घमण्ड किया और ख़ुदा होने का दावा करने लगा, उसका नाम नमरूद बिन कनआन था। सब से पहले सर पर ताज रखने वाला यही है। जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उसको ख़ुदा परस्ती की दावत दी, चाहे आग में डाले जाने से पहले या इसके बाद, तो वह कहने लगा कि तुम्हारा ख़ब कौन है जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो।

(३) यानी ज़िम्मा में मौत और ज़िन्दगी पैदा करता है, एक ख़ुदा को न पहचानने वाले के लिये यह बेहतरीन हिदायत थी, और इसमें बताया गया था कि ख़ुद तेरी ज़िन्दगी उसके अस्तित्व की ग़वाह है कि तू एक बेज़ान नुस्फ़ा था, उसने उसे इन्साना सूरत दी और ज़िन्दगी प्रदान की। वह ख़ब है और ज़िन्दगी के बाद फिर ज़िन्दा ज़िम्मा को जो मौत देता है। वो परबर्दिगार है, उसकी कुदरत की ग़वाही ख़ुद तेरी अपनी मौत और ज़िन्दगी में मौजूद है। उसके अस्तित्व से बेख़बर रहना अत्यन्त अज्ञानता और सज़न बद-नसीबी है। यह

दलील ऐसी ज़बरदस्त थी कि इसका जवाब नमरुद से न बन पड़ा और इस खयाल से कि भीड़ के सामने उसको लाजवाब और शर्मिन्दा होना पड़ता है, उसने दंडा तर्क अपनाया।

(४) नमरुद ने दो व्यक्तियों को बुलाया, उनमें से एक को क़त्ल किया, एक को छोड़ दिया और कहने लगा कि मैं भी ज़िलाता मारता हूँ, यानी किसी को गिरफ्तार करके छोड़ देना उसको ज़िलाता है। यह उसकी अत्यन्त भूख़ता थी, कहाँ क़त्ल करना और छोड़ना और कहाँ मौत और ज़िन्दगी पैदा करना। क़त्ल किया हुए शय्स को ज़िन्दा करने से आजिज़ रहना और बजाय उसके ज़िन्दा के छोड़ने को ज़िलाता कहना ही उसकी ज़िल्लत के लिये काफी था। समझ वालों पर इसी से जाहिर हो गया कि जो तर्क हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कायम किया है वह अन्तिम है, और उसका जवाब मुमकिन नहीं, लेकिन चूंकि नमरुद के जवाब में दावे की शान पैदा हो गई तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उसपर मुनाज़िरे वाली गिरफ्त फ़रमाई कि मौत और ज़िन्दगी का पैदा करना तो तेरी ताक़त से बाहर है, ऐ खुदा बनने के झूठे दावेदार, तू इससे सरल काम ही कर दिखा जो एक मुतहरिक ज़िस्म की हरकत का बदला है।

(५) यह भी न कर सकें तो खुदा होने का दावा किस मुंह से करता है, इस आपत से इल्मे क़त्नाम में मुनाज़िरा करने का सुबूत मिलता है।

(६) बहुतेरों के अनुसार यह घटना हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम की है और बस्ती से मुराद बैतुल मक़दिस है। जब वुस्नेनस्सर बादशाह ने बैतुल मक़दिस को वीरान किया और बनी इस्राईल को क़त्ल किया, गिरफ्तार किया, तवाह कर डाला, फिर हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम वहाँ गुज़रे, आपक साथ एक बरतन खज़ूर और एक प्याला अंगूर का रस और आप एक गधे पर सवार थे। सारी बस्ती में फिर, किसी शय्स को वहाँ न पाया। बस्ती की इमारतों की गिरा हुआ देखा तो आपने आश्चर्य से कहा “अन्ना पुहयी हाज़िहिल्लाहो बाद मीतिहा” (कैसे ज़िलाएगा अल्लाह उसकी मौत के बाद) और आपने अपनी सवारी के गधे को वहाँ बाँध दिया, और आपने आराम फ़रमाया। उसी हालत में आपकी रूढ़ क़ब्ज़ कर ली गई और गधा भी मर गया। यह सुबह के वक़्त की घटना है। उससे सत्तर बरस बाद अल्लाह तआला ने फ़ारस के बादशाहों में से एक बादशाह की मुसल्लत किया और वह अपनी फ़ौज लेकर बैतुल मक़दिस पहुँचा और उसके पहले से भी बेहतर तरीक़े पर आबाद किया और बनी इस्राईल में से जो लोग बाक़ी रहे थे, अल्लाह तआला उन्हें फिर यहाँ लाया और वो बैतुल मक़दिस और उसके आस पास आबाद हुए और उनकी तादाद बढ़ती रही। इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम को दुनिया की आँखों से छुपाए रख़ा और कोई आपको न देख सका। जब आपकी वफ़ात को गी साल गुज़र गए तो अल्लाह तआला ने आपको ज़िन्दा किया, पहले आँखों में जान आई, अभी तक सारा बदन मुर्दा था। वह आपके देखते देखते ज़िन्दा किया गया। यह घटना शाम के वक़्त सूरज डूबने के करीब हुई; अल्लाह तआला ने फ़रमाया, तुम यहाँ कितने दिन ठहरे। आपने अन्दाज़े से अज़्र किया कि एक दिन या कुछ कम। आप का खयाल यह हुआ कि यह उसी दिन को शाम है जिसकी सुबह को साँप थे। फ़रमाया बल्कि तुम सौ बरस ठहरे, अपने खाने और पानी यानी खज़ूर और अंगूर के रस को देखो कि बैसा ही है, उसमें बू तक न आई और अपने गधे की देखो, देखा कि वह मरा हुआ था, गल गया था, अंग बिखर गए थे, हड्डियाँ सफ़ेद चमक रही थीं। आपकी निगाह के सामने उसके अंग जमा हुए, हड्डियों पर गोश्त चढ़ा, गोश्त पर खाल आई, बाल निकले, फिर उसमें रूढ़ फूँकी गई। वह उठ खड़ा हुआ और आवाज़ करने लगा। आपने अल्लाह तआला की क़ुदरत का अवलोकन किया और फ़रमाया मैं ख़ूब जानता हूँ कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है, फिर आप अपनी उसी सवारी पर सवार होकर अपने महल्ले में तशरीफ़ लाए। सरे अक़दम और दाढ़ी मुबारक के बाल सफ़ेद थे, उम्र वही चालीस साल की थी, काँई आपको पहचानता न था। अन्दाज़े से अपने मकान पर पहुँचे, एक बुढ़िया मिली, जिसके पाँव रह गए थे, वह अभी हो गई थी, वह आपके घर की दासी थी, उसने आपको देखा था, आपने उससे पूछा कि यह उज़ैर का मकान है, उसने कहा हाँ, और उज़ैर कहाँ, उन्हें गायब हुए सौ साल गुज़र गए, यह कहकर ख़ूब रोई। आपने फ़रमाया, मैं उज़ैर हूँ, उसने कहा सुक़ानल्लाह, यह कैसे हो सकता है, आपने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने मुझे सौ साल मुर्दा रख़ा, फिर ज़िन्दा किया। उसने कहा, हज़रत उज़ैर दुआ की कुबूलियत वाले थे, जो दुआ करते, कुबूल होती। आप दुआ कीजिए कि मैं देखने वाली हो जाऊँ, ताकि मैं अपनी आँखों से आपको देखूँ, आपने दुआ फ़रमाई, वह आँखों वाली हो गई। आपने उसका हाथ पकड़ कर फ़रमाया, उठ खुदा के हुक्म से, यह फ़रमाते ही उसके मारे हुए पाँव दुरूस्त हो गए, उसने आपको देखकर पहचाना और कहा, मैं गवाही देती हूँ कि आप बेशक उज़ैर हैं, वह आपको बनी इस्राईल के महल्ले में ले गई, वहाँ एक बैठक में आपके बेटे थे, जिनकी उम्र एक सौ अठारह साल की हो चुकी थी और आपके पोते भी, जो बूढ़े हो चुके थे, बुढ़िया ने बैठक में पुकारा कि यह हज़रत उज़ैर तशरीफ़ ले आए, बैठक में मौजूद लोगों ने उसे झुटलाया, उसने कहा मुझे देखो, आपकी दुआ से मेरी यह हालत हो गई, लांग उठ और आपके पास आए, आपके बेटे ने कहा कि मरे वालिद साहब के कम्बों के बीच काले बालों का एक हिलाल था, जिसे मुबारक खोलकर दिखाया गया तो वह मौजूद था, उस ज़माने में तीरात की कोई प्रतिलिपि यानी नुस्खा न रहा था, काँई उसका जानने वाला मौजूद न था, आपने सारी तीरात ज़बानी पढ़ दी, एक शय्स ने कहा कि मुझे अपने वालिद से मालूम हुआ कि वुस्नेनस्सर के अत्याचारों के बाद गिरफ्तारी के ज़माने में मेरे दादा ने तीरात एक जगह दफ़न कर दी थी उसका पता मुझे मालूम है, उस पते पर तलाश करके तीरात का वह नुस्खा निकाला गया और हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम ने अपनी याद से जो तीरात लिखाई थी, उससे मुक़ाबला किया गया तो एक अक्षर का फ़र्क न था। (जुमल)

(७) कि पहले छतें गिरी फिर उपर दीवारें आ पड़ीं।

(८) मुफ़त्सिरों ने लिखा है कि समन्दर के किनारे एक आदमी मरा पड़ा था, ज़ार भाटे में समन्दर का पानी चढ़ता उतरता रहता

आजाए^(१०) फरमाया तो अच्छा चार परिन्दे लेकर अपने साथ हिला ले^(११) फिर उनका एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे फिर उन्हें बुला वो तेरे पास घले आएंगे पाँव से दौड़ते^(१२) और जान रख कि अल्लाह गालिब हिकमत वाला है^(२६०)

छत्तीसवाँ सूकू

उनकी कहावत जो अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं^(१) उस दिन की तरह जिसने उगाई सात बालों^(२) हर बाल में सौ दाने^(३) और अल्लाह इस से भी ज्यादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और अल्लाह बुरात (विस्तार) वाला इल्म वाला है^(२६१) वो जो अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं^(४) फिर दिये पीछे न एहसान रखें न तकलीफ दें^(५) उन का नेग उनके रब के पास है और उन्हें न कुछ डर हो न कुछ गम^(२६२) अच्छी बात कहना और दरगुजर (क्षमा) करना^(६) उस खैरात से बेहतर है जिसके बाद सताना हो^(७) और अल्लाह बे-परवाह हिल्म (सहिष्णुता) वाला है^(२६३) ऐ ईमान वालो अपने सदक़े (दान) बातिल न करदो एहसान रखकर और ईज़ा (दुखः) देकर^(८) उसकी तरह जो अपना

لِيُطْمِئِنَّ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِنَ الطَّيْرِ
فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَى كُلِّ جَبَلٍ
مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ
أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ
أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَتَتْ سَنَفَ
سَبَائِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةٌ حَبَّةٌ ۚ وَاللَّهُ يُضْعِفُ
لِمَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ
أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يَتَّبِعُونَ مَّا أَنْفَقُوا
مَنًّا وَلَا أَذًى ۖ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ وَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ
وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أَذًى ۚ وَاللَّهُ
غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا
صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ ۚ كَالَّذِي يُنْفِقُ

है. जब पानी चढ़ता तो मछलियाँ उसकी लाश को खातीं, जब उतर जाता तो जंगल के दरिन्दे खाते, जब दरिन्दे जाते तो परिन्दे खाते. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह देखा तो आपको शौक हुआ कि आप देखें कि मुझे किस तरह ज़िन्दा किये जाएंगे. आपने अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ किया, या रब मुझे यकीन है कि तू मुझों को ज़िन्दा फ़रमाएगा और उनके अंग दरिपाई जानवरों और दरिन्दों के पेट और परिन्दों के पेटों से जमा फ़रमाएगा. लेकिन मैं यह अजीब दृश्य देखने की इच्छा रखता हूँ. मुफ़सिरीन का एक क़ौल यह भी है कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अपना ख़लील यानी दोस्त किया, मौत के फ़रिश्ते इब्राईल अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला से इजाज़त लेकर आपको यह ख़ुशख़बरी देने आए. आपने बशारत सुनकर अल्लाह की तारीफ़ की और फ़रिश्ते से फ़रमाया कि इस ख़ुल्लत यानी ख़लील बनाए जाने की निशानी क्या है ? उन्होंने अर्ज़ किया, यह कि अल्लाह तआला आपकी दुआ कुबूल फ़रमाए और आपके सवाल पर मुझे ज़िन्दा कर दे. तब आपने यह दुआ की. (ख़ाज़िर)
(९) अल्लाह तआला हर ज़ाहिर छुपी चीज़ का जानने वाला है, उसको हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ईमान और यकीन के क़माल यानी सम्पूर्णता का इल्म है. इसके बावजूद यह सवाल फ़रमाना कि क्या तुझे यकीन नहीं, इसलिये है कि सुनने वालों को सवाल का मक़सद मालूम हो जाए और वो जान लें कि यह सवाल किसी शक व शक़ की बुनियाद पर न था. (बैज़ावी व ज़ुमल वग़ैरह)
(१०) और इन्तिज़ार की बेचैनी दूर हो. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, मानी ये हैं कि इस निशानी से मेरे दिल को तसल्ली हो जाए कि तूने मुझे अपना ख़लील यानी दोस्त बनाया.
(११) ताकि अच्छी तरह पहचान हो जाए.
(१२) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने चार चिड़ियाँ लीं, मोर, मुर्ग, कबूतर और कौवा. उन्हें अल्लाह के हुक्म से ज़िद्द किया, उनके पर उखाड़े और क़ीमा करके उनके अंग आपस में मिला दिये और इस मज़मूए के कई हिस्से किये. एक एक हिस्से को एक एक पहाड़ पर रखा और सबके सर अपने पास मेहफूज़ रखे. फिर फ़रमाया, चले आओ अल्लाह के हुक्म से. यह फ़रमाना था, वो टुकड़े दौड़े और हर हर जानवर के अंग अलग अलग होकर अपनी तरतीब से जमा हुए और चिड़ियों की शक़ल बनकर अपने पाँव से दौड़ते हुए हाज़िर हुए और अपने अपने सरों से मिलकर जैसे पहले थे वैसे ही सम्पूर्ण बनकर उड़ गए. सुक़ानल्लाह !

सूरए बकरह - छत्तीसवाँ सूकू

- (१) चाहे खर्च करना वाजिब हो या नफ़ल, भलाई के कामों से जुड़ा होना आम है. चाहे किसी विद्यार्थी को किताब ख़रीद कर दी जाए या कोई शिफ़ाख़ाना बना दिया जाए या मरने वालों के ईसाले सवाब के लिये सोयम, दसवें, बीसवें, चालीसवें के तरीक़े पर मिरकीनों को ख़ाना खिलाया जाए.
(२) उगाने वाला हकीकत में अल्लाह ही है. दाने की तरफ़ उसकी निश्चयत मज़ाज़ी है. इससे मालूम हुआ कि मज़ाज़ी सनद जायज़

माल लोगों के दिखावे के लिये खर्च करें और अल्लाह और क़यामत पर ईमान न लाए तो उसकी कहावत ऐसी है जैसे एक चट्टान कि उसपर मिट्टी है अब उसपर जोर का पानी पड़ा जिसने उसे निरा पत्थर कर छोड़ा^(१) अपनी कमाई से किसी चीज़ पर काबू न पाएंगे और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता^(२६४) और उनकी कहावत, जो अपने माल अल्लाह की रज़ा चाहने में खर्च करते हैं और अपने दिल जमाने को^(१०), उस बाग़ की सी है जो भोड़ (रितीली ज़मीन) पर हो उस पर जोर का पानी पड़ा तो दो ने मेंवा लाया फिर अगर जोर का मेंह उसे न पहुंचे तो ओस काफ़ी है^(११) और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है^(१२) (२६५) क्या तुम में कोई इसे पसन्द रखेगा^(१३) कि उसके पास एक बाग़ हो खजूरों और अंगूरों का^(१४) जिसके नीचे नदियां बहतीं उसके लिये उसमें हर किसम के फलों से है^(१५) और उसे बुढ़ापा आया^(१६) और उसके नातवां (कमज़ोर) बच्चे हैं^(१७) तो आया उसपर एक बगोला जिसमें आग थी तो जल गया^(१८) ऐसा ही बयान करता है अल्लाह तुम से अपनी आयतों कि कहीं तुम ध्यान लगाओ^(१९) (२६६)

التوبة

५१

تِلْكَ الرُّسُلُ

مَالَهُ رِثَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ
وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا لَا يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ
فَمَثَلُ كَسَبُوا لَهُ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ
وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ
اللَّهِ وَتَثْبِيْتًا مِنْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ
أَصَابَهَا وَابِلٌ فَأَتَتْ أُكُلَهَا ضَعْفَيْنِ فَإِنْ لَمْ
يُصِبْهَا وَابِلٌ قَطُلَ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ
أَيُّودُ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِمَّنْ تَنْحِيلُ
وَأَعْنَابٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا
مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّتٌ
ضَعُفَاءٌ فَآصَابَهُمْ إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ

مَثَلًا

है जबकि सनद करने वाला मीर खुदा के तसल्लूफ़ में मुस्तक़िल एतिक़ाद न करता हो। इसी लिये यह कहना भी जायज़ है कि ये दवा फ़ायदा पहुंचाने वाली है, यह नुक़सान देने वाली है, यह दर्द मिटाने वाली है, माँ बाप ने पाला, आलिम ने गुमराही से बचाया, बुजुर्गों ने हाज़त पूरी की, वगैरह। यद्यपि मज़ाज़ी सनदें हैं और मुसलमान के अक़ीदे में करने वाला हकीकत में अल्लाह ही है, बाकी सब साधन है।

(३) तो एक दाने के सात सौ दाने हो गए, इसी तरह खुदा की राह में खर्च करने से सात सौ गुना अन्न हो जाता है।

(४) यह आयत हज़रत उस्माने गनी और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रदियल्लाहो अन्हुमा के बारे में उतरी। हज़रत उस्मान रदियल्लाहो अन्हो ने ग़ज़व तबूक के मौक़े पर इस्लामी लश्कर के लिये एक हज़ार ऊंट सामान के साथ पेश किये और अब्दुर रहमान बिन औफ़ रदियल्लाहो अन्हो ने चार हज़ार दरहम सदक़े के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किये और अर्ज़ किया कि मेरे पास कुल आठ हज़ार दरहम थे, आधे मैंने अपने ओर-अपने बाल बच्चों के लिये रख लिये और आधे खुदा की राह में हाज़िर हैं। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, जो तुमने दिये और जो तुमने रखे, अल्लाह तआला दोनों में वरक़्त अता फ़रमाए।

(५) एहसान रखना तो यह कि देने के बाद दूसरों के सामने ज़ाहिर करें कि हमने तेरे साथ ऐसे मुलूक किये और उसको पेशान कर दें। और तकलीफ़ देना यह कि उसको शर्म दिलाएं कि तू नादार था, मुफ़्लिस था, मजबूर था, निकम्मा था, हमने तेरी देखभाल की, या और तरह दबाव दें, यह मना फ़रमाया गया।

(६) यानी अगर सवाल करने वाले को कुछ न दिया जाए तो उससे अच्छी बात कहना और सदब्यवहार के साथ जवाब देना, जो उसको नागवार न गुज़रे और अगर वह सवाल किये ही जाए या ज़बान चलाए, बुरा भला कहने लगे, तो उससे मुंह फेर लेना।

(७) शर्म दिला कर या एहसान जताकर या और कोई तकलीफ़ पहुंचा कर।

(८) यानी जिस तरह मुनाफ़िक़ को अल्लाह की रज़ा नहीं चाहिये, वह अपना माल रियाकारी यानी दिखावे के लिये खर्च करके बर्बाद कर देता है, इसी तरह तुम एहसान जताकर और तकलीफ़ देकर अपने सदक़ात और दान का पुण्य तबाह न करो।

(९) ये मुनाफ़िक़ रियाकार के काम की मिसाल है कि जिस तरह पत्थर पर मिट्टी नज़र आती है लेकिन बारिश से वह सब दूर हो जाती है, झाली पत्थर रह जाता है, यही हाल मुनाफ़िक़ के कर्म का है और क़यामत के दिन वह तमाम कर्म झूटे टहरेंगे, क्योंकि अल्लाह की रज़ा और झुशी के लिये न थे।

(१०) खुदा की राह में खर्च करने पर।

(११) यह ख़लूस वाले मूमिन के कर्मों की एक मिसाल है कि जिस तरह ऊंचे इलाक़े की बेहतर ज़मीन का बाग़ हर हाल में ख़ूब फ़सलता है, चाहे बारिश कम हो या ज्यादा, ऐसे ही इज़लास वाले मूमिन का दान और सदक़ा ख़राब चाहे कम हो या ज्यादा, अल्लाह

सैंतीसवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो^(१) और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला^(२) और ख़ास नाक़िस (दूषित) का इरादा न करो कि दो तो उसमें से^(३) और तुम्हें मिले तो न लोगे-जब तक उसमें चश्मपोशी न करो और जान रखो कि अल्लाह बे-परवाह सराहा गया है^(४) शैतान तुम्हें अन्देशा (आशंका) दिलाता^(५) मोहताजी का और हुक्म देता है बेहयाई का^(६) और अल्लाह तुम से वादा फ़रमाता है बख़्शिश (इनाम) और फ़ज़ल (कृपा) का^(७) और अल्लाह बुरसत (विस्तार) वाला इल्म वाला है^(८) अल्लाह हिकमत (बोध) देता है^(९) जिसे चाहे और जिसे हिकमत मिली उसे बहुत भलाई मिली और नसीहत नहीं मानते मगर अक्ल वाले^(१०) और तुम जो खर्च करो^(११) या मन्नत मानो^(१२) अल्लाह को उसकी ख़बर है^(१३) और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं^(१४) अगर ख़ैरात खुलेबन्दों दो तो वह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़कीरों को दो ये तुम्हारे लिये सबसे बेहतर है^(१५) और

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ
وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَلَا تَكُونُوا
الْحَكِيذَ مِنْهُ تَنفِقُونَ وَأَكْسَبُوا بِأَخْذِهِ إِلَّا أَنْ
تُغِيضُوا فِيهِ وَأَعْلُوا أَنَّ اللَّهَ غَفِيرٌ حَمِيدٌ
الشَّيْطَانُ يَبْغِيكُمْ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ
وَاللَّهُ يَبْعَثُكُمْ مَغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا وَاللَّهُ
وَاسِعٌ عَلِيمٌ يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ
يُؤْتِ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا وَمَا
يَذْكُرُونَ إِلَّا أُولُوا الْأَلْبَابِ وَمَا أَنْفَقْتُمْ
مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ نَذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُهَا وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ إِنْ تَبَدُّوا
الضَّدَّةُ فَفِيهَا هَيْبَةٌ وَإِنْ تُخَفُّوْهَا وَتُؤْتُوْهَا
الْفَقْرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ

مَنْ

तआला उसको बढ़ाता है.

(१२) और तुम्हारी नियत और इच्छा को जानता है.

(१३) यानी कोई पसन्द न करेगा क्योंकि यह बात किसी समझ वाले के ग़वारा करने के काबिल नहीं है.

(१४) अगरचे उस बाग़ में भी किस्म क्रिम के पेड़ हों मगर ख़जूर और अंगूर का ज़िक्र इसलिये किया कि ये ऊमदा मेवे हैं.

(१५) यानी वह बाग़ आरामदायक और दिल को लुभाने वाला भी है, और नफा देने वाली ऊमदा जायदाद भी.

(१६) जो हाजत या आवश्यकता का समय होता है और आदमी कोशिश और परिश्रम के काबिल नहीं रहता.

(१७) जो कमाने के काबिल नहीं और उनके पालन पोषण की ज़रूरत है, और आधार केवल बाग़ पर, और बाग़ भी बहुत ऊमदा है.

(१८) वह बाग़, तो इस वक़्त उसके रंगो ग़म और हसरतों यास की क्या इतिहा है: यही हाल उसका है जिसने अच्छे कर्म तो किये हों मगर अल्लाह की ख़ुशी के लिये नहीं, बल्कि दिखावे के लिये, और वह इस गुमान में हो कि मरे पास नेकियों का भंडार है. मगर जब सज़ा ज़रूरत का वक़्त यानी क़यामत का दिन आए, तो अल्लाह तआला उन कर्मों को अप्रिय करदे. उस वक़्त उसको कितना दुःख और कितनी मायूसी होगी. एक रोज़ हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने सहाब किराम से फ़रमाया कि आप की जानकारी में यह आयत किस बारे में उतरी है. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ये उदाहरण है एक दौलतमंद व्यक्ति के लिये जो नेक कर्म करता हो, फिर शैतान के बहकावे से गुमराह होकर अपनी तमाम नेकियों को ज़ाया या नष्ट कर दे. (मदारिक व ख़ाज़िन)

(१९) और समझो कि दुनिया फ़ानी, मिटजाने वाली और आक्रियत आनी है.

सूरए बकरह - सैंतीसवाँ रूकू

(१) इससे रोज़ी के लिये कोशिश करने का अच्छाई और तज्जारत के माल में ज़कात साबित होती है (ख़ाज़िन व मदारिक). यह भी हो सकता है कि आयत नफ़ल सदके और फ़ज़्र सदके दोनों को लागू हो. (तफ़सीरे अहमदी)

(२) चाहे वो अनाज हो या फ़ल या ख़ानों से निकली चीज़ें.

(३) कुछ लोग ख़राब माल सदके में देते थे, उनके बारे में यह आयत उतरी. सदका चुसूल करने वाले को चाहिये कि वह बीच का माल ले, न बिल्कुल ख़राब न सबसे बढ़िया.

(४) कि अगर खर्च करेंगे, सदका देंगे तो नादार या दरिद्र हो जाओगे.

उसमें तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है (२७१) उन्हें राह देना तुम्हारे जिम्मे अनिवार्य नहीं (२७२) हाँ अल्लाह राह देता है जिसे चाहता है। और तुम जो अच्छी चीज़ दो तो तुम्हारा ही भला है (२७३) और तुम्हें खर्च करना मुनासिब नहीं मगर अल्लाह की मर्जी चाहने के लिये और जो माल दो तुम्हें पूरा मिलेगा और नुकसान न दिये जाओगे (२७४) उन फ़कीरों के लिये जो खुदा की राह में रोके गए (२७५) ज़मीन में चल नहीं सकते (२७६) नादान उन्हें तबन्नार (मालदार) समझे बचने के सबब (२७७) तु उन्हें उनकी सूरत से पहचान लेगा, (२७८) लोगों से सवाल नहीं करते कि गिड़गिड़ाना पड़े और तुम जो ख़ैरात करो अल्लाह उसे जानता है (२७९)

अड़तीसवाँ रूकू

वो जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर (२८०) उनके लिये उनका नेग है उनके रब के पास उनको न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म (२८१) वो जो सुद खाते हैं (२८२) क़यामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वह जिसे आसेव (प्रेतवाधा) ने छू कर मखबूत (पागल)

سَيَاتِكُمْ، وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَا يُنْفِكُمْ، وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ، وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَفِّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۝ لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أَحْصَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ صَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ، تَعْرِفُهُمْ بِسِيمَاهُمْ، لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِعْجَافًا، وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِالْأَيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ، وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِينَ يَتَقَبَّطُونَ

مَذَل

(२८०) यानी कंजूसी का, और ज़कात या सदका न देने का, इस आयत में यह बात है कि शैतान किसी तरह कंजूसी की खूबी दिमाग में नहीं बिठा सकता। इसलिये यह यही करता है कि खर्च करने से नादारी और दरिद्रता का डर दिलाकर रोके। आजकल जो लोग ख़ैरात को रोकने पर उतारू हैं, वो भी इसी एक बहाने से काम लेते हैं।

(२८१) सदका देने पर और खर्च करने पर।

(२८२) हिक्मत से या कुरआन व हदीस व फ़िक्र का इल्म मुराद है, या तर्कवा या नयुबत. (मदारिक व ख़ाज़िन)

(२८३) नेकी में, चाहे बदी में।

(२८४) फ़रमाँवरदारी की या गुनाह की, नज़्र आम तौर से तोहफ़ा और भेंट को बोलते हैं और शरीअत में नज़्र इबादत और रब की कुर्वत की चाह है। इसीलिये अगर किसी ने गुनाह करने की नज़्र की तो वह सही नहीं हुई। नज़्र ख़ास अल्लाह तआला के लिये होती है और किसी बली के आस्ताने के फ़कीरों को नज़्र पूरा करने का साधन ख़याल करे, जैसे किसी ने यह कहा, ऐ अल्लाह मैं न नज़्र मानी कि अगर तू मेरा ये काम पूरा करा दे तो मैं उस बली के आस्ताने के फ़कीरों को ख़ाना-ख़िलाऊंगा या वहाँ के ख़ादियों को रूपया पैसा दूँगा या उनकी मस्जिद के लिये तेल या चटाई-बगीरह हाज़िर करूँगा, तो यह नज़्र जायज़ है. (सहुल मोहतार)

(२८५) वह तुम्हें इसका बदला देगा।

(२८६) सदका चाहे फ़र्ज़ हो या नफ़ल, जब सच्चे दिल से अल्लाह के लिये दिया जाए और दिखावे से पाक हो तो चाहे ज़ाहिर कर के दे या छुपाकर, दोनों बेहतर हैं। लेकिन फ़र्ज़ सदक़ा का ज़ाहिर करके देना अफ़ज़ल है, और नफ़ल का छुपाकर और अगर नफ़ल सदका देने वाला दूसरों की ख़ैरात की तरगीब देने के लिये ज़ाहिर करके दे तो यह ज़ाहिर करना भी अफ़ज़ल है. (मदारिक)

(२८७) आप खुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले और दावत देने वाले बनाकर भेजे गए हैं आपका फ़र्ज़ लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाने पर पूरा होजाता है। इस से ज़्यादा कोशिश और मेहनत आप पर लाज़िम नहीं। इस्लाम से पहले मुसलमानों की यहूदियों से रिश्तेदारियाँ थीं। इस वजह से वो उनके साथ व्यवहार किया करते थे। मुसलमान होने के बाद उन्हें यहूदियों के साथ व्यवहार करना नागवार होने लगा और उन्होंने इस लिये हाथ रोकना चाहा कि उनके ऐसा करने से यहूदी इस्लाम की तरफ़ आएँ। इसपर ये आयत उतरी।

(२८८) तो दूसरों पर इसका एहसास न जताओ।

(२८९) यानी वो सदकात जो आयत " **وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ** " (और तुम जो अच्छी चीज़ दो) में ज़िक्र हुए, उनको बेहतरीन मुस्लम वह फ़कीर है जिनको ने अपने नफ़सों को जिहाद और अल्लाह की फ़रमाँवरदारी पर रोका। यह आयत एहले सुफ़फ़ा के बारे में नाज़िल हुई। उन लोगों की तादाद चार सौ के करीब थी। ये लोग हिज़रत करके मदीनए तैय्यिबह हाज़िर हुए थे, न यहाँ उनका मकान था, न परिवार, न क़बीला, न उन हज़रात ने शादी की थी। उनका सारा वक्त इबादत में जाता था, रात में कुरआने करीम सीखना,

बना दिया हो^(१) यह इसलिये कि उन्होंने कंहा वेअ (विक्रय) भी तो सूद ही के समान है, और अल्लाह ने हलाल किया वेअ को और हराम किया सूद तो जिसके उसके रब के पास से नसीहत आई और वह बाज़ (रूका) रहा तो उसे हलाल है जो पहले ले चुका^(२) और उस का काम खुदा के सुपुर्द है^(३) और जो अब ऐसी हरकत करेगा तो वह दोज़ाबी है, वो इस में मुदतों रहेंगे^(४) (२७५) अल्लाह हलाक करता है सूद को^(५) और बढ़ाता है ख़ैरात को^(६) और अल्लाह को पसन्द नहीं आता कोई नाशुक्रा बड़ा गुनहगार (२७६) वेशक वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और नमाज़ कायम की और ज़कात दी उनका नेग उनके रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा (डर) हो न कुछ ग़म (२७७) ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद, अगर मुसलमान हो^(७) (२७८) फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन कर लो अल्लाह और अल्लाह के रसूल से लड़ाई का^(८) और अगर तुम तौबत करो तो अपना अस्ल माल लेलो न तुम किसी को नुक़सान पहुंचाओ^(९) न तुम्हें नुक़सान हो^(१०) (२७९) और अगर कर्ज़दार तंगी वाला है

الشَّيْطَانُ مِنَ الْبَيْسِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَانْتَهَى فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ وَمَنْ عَادَ فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُزِيهِ الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنْ ثَبَنْتُمْ فَأَكْمَرُؤُوسَ أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ۝ وَإِنْ كَانَتْ ذُو

مَائِلًا

दिन में जिहाद के काम में रहना आयत में उनकी कुछ विशेषताओं का बयान है।

- (१५) क्योंकि उन्हें दीनी कामों से इतनी फ़ुर्सत नहीं कि वो चल फिर कर रोज़ी रोटी की भाग दौड़ कर सकें।
 (१६) यानी चूंकि वो किसी से सवाल नहीं करते इसलिये न जानने वाले लोग उन्हें मालदार खयाल करते हैं।
 (१७) कि मिज़ाज में तवाज़ो और इन्क़िमार है, चेहरों पर कमज़ोरी के आसार हैं, भूख से रंगत पीली पड़ गई है।

सूरए बकरह - अइतीसवाँ रूकू

(१) यानी ख़ुदा की राह में ख़र्च करने का बहुत शौक रखते हैं और हर हाल में ख़र्च करते रहते हैं। यह आयत हज़रत अबूबक्र सिदीक़ रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में नाज़िल हुई, जबकि आपने ख़ुदा की राह में चालीस हज़ार दीनार ख़र्च किये थे, दस हज़ार रात में और दस हज़ार दिन में, और दस हज़ार छुपाकर और दस हज़ार ज़ाहिर में। एक क़ौल यह है कि यह आयत हज़रत मौला अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो के बाग़ में नाज़िल हुई, जबकि आपके पास फ़क़त चार दरहम थे और कुछ न था। आपने इन चारों को ख़ैरात कर दिया। एक रात में, एक दिन में, एक छुपा कर, एक ज़ाहिर में। आयत में रात की ख़ैरात को दिन की ख़ैरात पर, और छुपवाँ ख़ैरात को ज़ाहिर ख़ैरात पर प्राथमिकता दी गई है। इसमें इशारा है कि छुपाकर देना ज़ाहिर करके देने से अप्रज़ल है।

(२) इस आयत में सूद के हराम होने और सूद ख़ाने वालों के बुरे परिणाम का बयान है। सूद को हराम फ़रमाने में बहुत सी हिक्मतें हैं। उनमें से कुछ ये हैं कि सूद में जो ज़ियादती ली जाती है वह माली मुआवज़े में माल की एक मात्रा का बिना बदल और एवज़ के लेना है। यह ख़ुली हुई नाइन्साफी है। दूसरे, सूद का रिवाज़ तिजारतों का ख़राब करता है कि सूद ख़ाने वाले को बे मंहमत माल का हासिल होना तिजारत की मशक्कतों और ख़तरों से कहीं ज़्यादा आसान मालूम होता है और तिजारतों में कमी इत्सानी समाज को हानि पहुंचाती है। तीसरे, सूद के रिवाज़ में आपसी व्यवहार का नुक़सान पहुंचता है कि जब आदमी सूद का आदी हो जाता है तो वह किसी को कर्ज़ हसन से मदद करना पसन्द नहीं करता। चौथे, सूद से आदमी की तय्यीयत में जानवरों की सी बेरहमी और कठोरता पैदा हो जाती है और सूद ख़ोर अपने कर्ज़दार की तबाही और बर्बादी की इच्छा करता रहता है। इसके अलावा भी सूद में और बड़े बड़े नुक़सान हैं और शरीअत ने इससे जिस तरह हमें रोका है, वह अल्लाह की ख़ास हिक्मत से है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि इसूले अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सूद ख़ाने वाले और उसके काम करने वाले और सूद का कामाज़ लिखने वाले और उसके गवाहों पर लातत की और फ़रमाया, वो सब गुनाह में बराबर हैं।

(३) मानी ये हैं कि जिस तरह आसेब अर्थात् भूत प्रेत का शिकार सीधा ख़ूब नहीं हो सकता, गिरता पड़ता चलता है, क़यामत के दिन सूद ख़ाने वाले का ऐसा ही हाल होगा कि सूद से उसका पेट बहुत भारी और बोझाल हो जाएगा और वह उसके बांझ से

तो उसे मोहलत दो आसानी तक और कर्ज उसपर बिल्कुल छोड़ देना तुम्हारे लिये और भला है अगर जानो^(१३) (२८०) और डरो उस दिन से जिसमें अल्लाह की तरफ़ फ़िरोगे और हर जान को उसकी कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर जुल्म न होगा^(१४) (२८१)

उन्तालीसवाँ सूक़

ऐ ईमान वालो जब तुम एक निश्चित मुदत तक किसी देन का लेन देन करो^(१) तो उसे लिख लो^(२) और चाहिये कि तुम्हारे दरमियान कोई लिखने वाला ठीक ठीक लिखे^(३) और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे जैसा कि उसे अल्लाह ने सिखाया है^(४) तो उसे लिख देना चाहिये और जिस पर हक़ आता है वह लिखता जाए और अल्लाह से डरो जो उसका रब है और हक़ में से कुछ रख न छोड़े फिर जिस पर हक़ आता है अगर बे-अयल या कमजोर हो या लिखा न सके^(५) तो उस का वली (सरपरस्त) इन्साफ़ से लिखाए और दो गवाह करलो अपने मदीं में से^(६) फिर अगर दो मर्द न हों^(७) तो एक मर्द और दो औरतें, ऐसे गवाह जिनको पसन्द करो^(८) कि कहीं उनमें एक औरत भूले तो उस एक को

بَلَاغُ الْمَثَلِ	٦٥	الْبَقَرَةُ
عَسْرَةَ فَنظَرَةً إِلَى مَيْسَرَةٍ وَأَنْ تَصَدَّقُوا خَيْرٌ		
لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ		
فِيهِ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ		
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا		
تَدَايَيْتُمْ بِدَيْنٍ إِلَى أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوهُ		
وَلْيَكْتُبْ بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْبَ		
كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ		
الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ		
مِنْهُ شَيْئًا ۚ فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا		
أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْطِيعُ أَنْ يُمْلِئَ هُوَ فَلْيُمْلِلِ		
وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ ۚ وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِنْ		
رِجَالِكُمْ ۖ وَإِنْ لَمْ يَكُنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ		
مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا		

منزل

गिर पड़ेगा. सईद बिन जुबैर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि यह विशाही उस सूदख़ोर की है जो सूद को हलाल जाने.

(४) यानी सूद हराम होने से पहले जो लिया, उसपर कोई पकड़ नहीं.

(५) जो चाहे हुक़म फ़रमाए, जो चाहे हराम और मना करे. बन्दे पर उसकी आज्ञा का पालन लाज़िम है.

(६) जो सूद को हलाल जाने वह काफ़िर है. हमेशा जहन्नम में रहेगा, क्योंकि हर एक हराम क़तई का हलाल जानने वाला काफ़िर है.

(७) और उसको बरक़त से मेहरूम करता है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला उससे न सदका कुबूल करे, न हज़, न जिहाद, न और भलाई के काम.

(८) उसको ज़्यादा करता है और उसमें बरक़त फ़रमाता है. दुनिया में और आख़िरत में उसका बदला और सबाब बढ़ता है.

(९) यह आयत उन लोगों के वार में नाज़िल हुई जो सूद के हराम होने के आदेश उतरने से पहले सूद का लेन देन करते थे, और उनकी भारी रक़में दूसरों के ज़िम्मे बाकी थीं. इसमें हुक़म दिया गया कि सूद के हराम हो जाने के बाद पिछली सारी माँगें और सारे उधार छोड़ दिये जाएं और पहला मूक़रर किया हुआ सूद भी अब लेना जायज़ नहीं.

(१०) किसी मजाल कि अल्लाह और उसके रसूल से लड़ाई की कल्पना भी करे. चूनाये उन लोगों ने अपने सूदी मुतालिबे और माँगें और उधार छोड़ दिये और यह अर्ज किया कि अल्लाह तआला और उसके रसूल से लड़ाई की हम में क्या ताक़त. और सब ने तौबत की.

(११) ज़्यादा लेकर.

(१२) मूल धन घटा कर.

(१३) कर्जदार अगर तंगदस्त या नादार हो तो उसको मोहलत देना या कर्ज का कुछ भाग या कुल माफ़ कर देना बड़े इनाम का कारण है. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है संयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जिसने तंगदस्त को मोहलत दी या उसका कर्ज माफ़ किया, अल्लाह तआला उसको अपनी रहमत का साया अता फ़रमाएगा, जिस रोज़ उसके साए के सिवा कोई साया न होगा.

(१४) यानी न उसकी नेकियाँ घटाई जाएं न बुराईयाँ बढ़ाई जाएं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि यह सबसे आख़िरी आयत है जो हज़ूर पर नाज़िल हुई इसके बाद हज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इक्कीस रोज़ दुनिया में तशरीफ़ फ़रमा रहे और एक क़ौल के अनुसार नौ रातें, और एक में सात. लेकिन अशी ने हज़रत इब्ने अब्बास से यह रिवायत की, कि सब से आख़िर में आयते "रिबा" नाज़िल हुई.

सूरए बकरह - उन्तालीसवाँ सूक़

(१) चाहे वह दैन मबीअ हो या समत. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इससे बेज़े सलम मुराद है. बैअ

दूसरी याद दिला दे और गवाह जब बुलाए जाएं तो आने से इन्कार न करें^(१) और इसे भारी न जानो कि दैन छोटा है या बड़ा उसकी मीआद तक लिखित कर लो यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इन्साफ़ की बात है, इस में गवाही खूब ठीक रहेगी और यह उससे करीब है कि तुम्हें शूबह न पड़े मगर यह कि कोई सरेदस्त (तात्कालिक) का सौदा हाथों हाथ हो तो उसके न लिखने का तुम पर गुनाह नहीं^(२) और जब क्रय विक्रय करो तो गवाह को (या न लिखने वाला जरूर दे न गवाह)^(३) और जो तुम ऐसा करो तो यह तुम्हारा फ़िस्क (दुराचार) होगा और अल्लाह से डरो और अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह सब कुछ जानता है^(४) और अगर तुम सफ़र में हो^(५) और लिखने वाला न पाओ^(६) तो गिरी हो कब्जे में दिया हुआ^(७) और अगर तुम में एक की दूसरे पर इत्मीन न हो तो वह जिसे उसने अमीन (विश्वस्त) समझा था^(८) अपनी अमानत अदा करदे^(९) और अल्लाह से डरो जो उसका रव है और गवाही न छुपाओ^(१०) और जो गवाही छुपाएगा तो अन्दर से उसका दिल गुनाहगार है^(११) और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है^(१२)

فَتَذَكَّرُ أَحَدَهُمَا الْآخَرَ وَلَا يَأْبَ الشَّهَادَةُ إِذَا مَا دُعُوا وَلَا تَسْمَعُوا أَنْ تَكْتُبُوا صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ذَلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا وَأَشْهَدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ وَلَا يُضَارَكَ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ وَإِنْ تَفْعَلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهْنِ مَقْبُوضَةً فَإِنْ آمَنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي أُؤْتِنَ أَمَانَتَهُ وَلْيُسْئِقْ إِلَىٰ رَبِّهِ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ

सलम यह है कि किसी चीज़ को पेशगी क़ीमत लेकर बेचा जाए और मर्बाअ मुश्तरी का सुपुर्द करने के लिये एक मुदत तय कर ली जाए। इस दैन के जवाज़ के लिये जिस, तौअ, सिफ़त, मिक्दार, मुदत और मकाने अदा और मूल धन की मात्रा, इन चीज़ों का मालूम होना शर्त है।

- (२) यह लिखना मुस्तहब है, फ़ायदा इसका यह है कि भूल चूक और कर्ज़दार के इन्कार का डर नहीं रहता।
- (३) आपसी तरफ़ से कोई कमी बेशी न करे, न पक्षों में से किसी का पक्षपात या रियायत।
- (४) मतलब यह कि कोई लिखने वाला लिखने से मना न करे जैसे कि अल्लाह तआला ने उसको बर्माक़ा लिखने का इल्म दिया। उसके साथ पूरी ईमानदारी बरतते हुए, बिना कुछ रद्दो बदल किये दस्तावेज़ लिखे। यह लिखना एक क़ौल के मुताबिक़ फ़र्ज़ किफ़ायत है और एक क़ौल पर ऐन फ़र्ज़, उस सूरत में जब उसके सिवा और कोई लिखने वाला न पाया जाए। और एक क़ौल के अनुसार मुस्तहब है, क्योंकि इसमें मुग़लमान की ज़रूरत पूरी होने और इल्म की नअमत का शुक्र है। और एक क़ौल यह है कि पहले यह लिखना फ़र्ज़ था, फिर "ला युदारों कातिबुन" से स्थगित हुआ।
- (५) यानी अगर कर्ज़ लेने वाला पागल और मंदबुद्धि वाला हो या बच्चा या बहुत ज़्यादा बूढ़ा हो या ग़ुमा होने या ज़वान न जानने की वजह से अपने मतलब का दायान न कर सकता हो।
- (६) गवाह के लिये आज़ाद होना, बालिग़ होना और मुसलमान होना शर्त है। काफ़िरों की गवाही सिर्फ़ काफ़िरों पर मानी जाएगी।
- (७) अकेली औरतों की गवाही जायज़ नहीं, चाहे वो चार क्यों न हों, मगर जिन कामों पर मर्द सूचित नहीं हो सकते जैसे कि बच्चा जनना, ऐसी ज़वान लड़की या औरत होना जिसका क़ावार्थ भगं न हुआ हो और औरतों के ऐब, इसमें एक औरत की गवाही भी मानी जाती है। बड़े जुर्मों की सज़ा या क़त्ल वग़ैरह के क्रिमास में औरतों की गवाही बिल्कुल नहीं मानी जाएगी। सिर्फ़ मर्दों की गवाही मानी जाएगी। इसके अलावा और मामलों में एक मर्द और दो औरतों की गवाही भी मानी जाएगी। (तफ़सीरे अहमदी)।
- (८) जिनका सच्चा होना तुम्हें मालूम हो और जिनके नेक और शरीफ़ होने पर तुम विश्वास रखते हो।
- (९) इस आयत से मालूम हुआ कि गवाही देना फ़र्ज़ है। जब मुदद गवाहों को तलब करे तो उन्हें गवाही का छुपाना जायज़ नहीं। यह हुक़म बड़े गुनाहों की सज़ा के अल्लावा और बातों में है। लेकिन हुदूद में गवाह को ज़ाहिर करने या छुपाने का इख़्तियार है, बल्कि छुपाना अच्छा है। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमान की पर्दा पोशी करे, अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत में उसके ऐवां और बुराइयों पर पर्दा डालेगा। लेकिन चोरी में माल लेने की गवाही देना वाजिब है, ताकि जिसका माल चोरी गया है उसका हक़ नष्ट न हो। गवाह इतनी ऐहतियात कर सकता है कि चोरी का शब्द न कहे। गवाही में कबल इतना ही कह दे कि यह माल अमुक व्यक्ति ने लिया।
- (१०) चूंकि इस सूरत में लेन देन होकर मामला ख़त्म हो गया और कोई डर बाक़ी न रहा साथ ही ऐसी तिजारत और क्रय विक्रय

चालीसवाँ सूकू

अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अगर तुम जाहिर करो जो कुछ^(१) तुम्हारे जी में है या छुपाओ, अल्लाह तुम से उसका हिसाब लेगा^(२) तो जिसे चाहे वाख़शोगा^(३) और जिसे चाहे सज़ा देगा^(४) और अल्लाह हर चीज़ पर कादिर (सर्व-सक्षम) है^(५) ॥२८४॥ रसूल ईमान लाया उसपर जो उस के रब के पास से उस पर उतरा और ईमान वाले सब ने माना^(६) अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों को^(७) यह कहते हुए कि हम उसके किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते^(८) और अर्ज़ की कि हमने सुना और माना^(९) तेरी माफ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही तरफ़ फ़िरना है^(१०) ॥२८५॥ अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उसकी ताक़त भर, उसका फ़ायदा है जो अच्छा कमाया और उसका नुक़सान है जो बुराई कमाई^(११) ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूले^(१२) या चूकें, ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तूने हम से अगलों पर रखा था, ऐ रब हमारे और हम पर वह बोझ न डाल जिसकी हमें सहाय न हो और हमें माफ़ फ़रमादे और वाख़श दे और हम पर सेहर कर, तू हमारा मौला है तू काफ़िरों पर हमें मदद दे^(१३) ॥२८६॥

بَلِّغْ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِنْ تُبْدُوا
مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ
فَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ أَمِنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ
إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ
وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نَقَرُّقَ بَيْنَ أَحَدٍ
مِّنْ رُّسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ
رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝ لَا يَكْفُلُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا
وَسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ
رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا
وَلَا تَجْنِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الدِّينِ
مِن قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ
وَاعْفُ عَنَّا وَاعْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا إِنَّكَ مَوْلَانَا

مَثَلًا

अधिकतर जारी रहती है. इसमें किताब यानी लिखने और गवाही की पाबन्दी भी पड़ेगी:

(११) यह मुस्तहब है, क्योंकि इसमें एहतियात है.

(१२) 'युदारों' में हज़रत इब्ने अब्बास के मुताबिक़ मानी ये हैं कि दोनों पक्ष कातिबों और गवाहों को हानि नहीं पहुंचाएं, इस तरह कि वो अगर अपनी ज़रूरतों में मशगूल हों तो उन्हें मजबूर करें और उनके काम छुड़ाएं या लिखाई का वेतन न दें या गवाह को सफ़र खर्च न दें, अगर वह दूसरे शहर से आया है. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो का कौल "युदारों" में यह है कि लिखने वाले और गवाह कर्ज़ लेने वाले और कर्ज़ देने वाले, दोनों पक्षों को हानि न पहुंचाएं. इस तरह कि फ़ुरसत और फ़रागत होने के बावजूद बुलाने पर न आएँ, या लिखने में अपनी तरफ़ से कुछ घटा बढ़ा दें.

(१३) और कर्ज़ की ज़रूरत पेश आए.

(१४) और वसीक़ व दस्तावेज़ की लिखाई का अवसर न मिले तो इम्तीनान के लिये.

(१५) यानी कोई चीज़ कर्ज़ देने वाले के कब्ज़े में गिरवी के तौर पर दे दो. यह मुस्तहब है और सफ़र की हालत में रहन या गिरवी इस आयत से साबित हुआ. और सफ़र के अलावा की हालत में हदीस से साबित है. चुनांचे रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मदीनए तेय्यिबह में अपनी ज़िरह मुबारक यहूदी के पास गिरवी रखकर बीम साअ जौ लिये. इस आयत से रहन या गिरवी रखने की वैधता और कब्ज़े का शर्त होना साबित होता है.

(१६) यानी कर्ज़दार, जिसको कर्ज़ देने वाले ने अमानत वाला समझा:

(१७) इस अमानत से देन मुराद है.

(१८) क्योंकि इसमें हक़ रखने वाले के हक़ का नुक़सान है. यह सम्बोधन गवाहों को है कि वो जब गवाही के लिये तलब किये जाएं तो सच्चाई न छुपाएं और एक कौल यह भी है कि यह सम्बोधन कर्ज़दारों को है कि वो अपने अन्तःकरण पर गवाही देने में हिचकिचाएं नहीं.

(१९) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से एक हदीस है कि बड़े गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ शरीक करना और झूठी गवाही देना और गवाही को छुपाना है.

सूरए बक्ररह - चालीसवाँ सूकू

(१) बुराई.

(२) इन्सान के दिल में दो तरह के ख़याल आते हैं, एक वसवस के तौर पर. उनसे दिल का ख़ाली करना इन्सान की ताक़त में

तीसरा पारा (जारी)

सुरए आले इमरान

मदीने में उतरी^(१) आयतें २००, रूकू २०

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला

पहला रूकू

अलिफ़ लाम मीम^(१) अल्लाह है जिसके सिवा किसी की पूजा नहीं^(२) आप ज़िन्दा, औरों का क़ायम रखने वाला^(३) उसने तुम पर यह सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ (पुष्टि) फ़रमाती और उसने इस से पहले तौरात और इन्जील उतारी^(४) लोगों को राह दिखाती और फ़ैसला उतारा वेशक वो जो अल्लाह की आयतों के इन्कारी हुए^(५) उनके लिये सख्त अज़ाब है. और अल्लाह ग़ालिब बदला लेने वाला है^(६) अल्लाह पर कुछ छुपा नहीं ज़मीन में न आसमान में^(७) वही है कि तुम्हारी तस्वीर बनाता है माओं के पेट में जैसी चाहे^(८) उसके सिवा किसी की इबादत नहीं, इज़्ज़त वाला हिकमत वाला^(९) वही है जिसने तुमपर यह किताब उतारी इसकी कुछ आयतें साफ़ मानी रखती हैं^(१०) वो किताब की अस्ल हैं^(११) और दूसरी वो हैं जिनके मानी में इश्तिबाह (शक) है^(१२) वो जिनके दिलों में कज़ी है^(१३)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ مِنْ قَبْلُ هَٰذَا لِنُتْلِيَ السَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُّحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ فَأَمَّا الَّذِينَ

नहीं. लेकिन वह उनको बुरा जानता है और अमल में लाने का इरादा नहीं करता. उनका हदीस नफ़स और बसवसा कहने हैं. इसपर कोई पकड़ नहीं. बुझारी और मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है, सयद आलम सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के दिलों में जो बसवसे गुज़रते हैं, अल्लाह तआला उस वक़्त तक उनपर पकड़ नहीं करता जब तक वो अमल में न लाए जाएं या उनके साथ कलाम न करें. ये बसवसे इस आयत में दाख़िल नहीं. दूसरे दो ख़यालात जिनका मनुष्य अपने दिल में जगह देता है और उनको अमल में लाने का इरादा करता है. कुछ का इरादा करना कुछ है और गुनाह का इरादा करके अगर आदमी उसपर साबित रहे और उसका इरादा रखे लेकिन उस गुनाह को अमल में लाने के साथ उसको उपलब्ध न हो और वह मजबूरन उसका न कर सके तो उससे हिसाब लिया जाएगा. शेख़ अबू मनसूर मानुरीदी और शम्सुल अइम्मा हलतवादी इसी तरफ़ गए हैं. और उनकी दलील आयत “इन्ज़ल लज़ीना युहिबूना अन तशीज़ल फ़ाहिशतो” और हज़रत आयशा की हदीस, जिसका मज़मून यह है कि बन्दा जिस गुनाह का इरादा करता है, अगर वह अमल में न आए, जब भी उसपर पकड़ की जाती है. अगर बन्दे ने किसी गुनाह का इरादा किया फिर उसपर शर्मिन्दा हुआ और तौबा की तो अल्लाह उसे माफ़ फ़रमाएगा.

(२) अपने फ़ज़ल से ईमान वालों को.

(४) अपने इन्साफ़ से.

(५) जुबाज ने कहा कि जब अल्लाह तआला ने इस सूत में नमाज़, ज़कात, रोज़े, हज़ की फ़र्ज़ियत और तलाक़, इला, हैज़ और जिहाद के अहक़ाम और नवियों के क़िस्से बयान फ़रमाए, तो सूत के आख़िर में यह ज़िक्र फ़रमाया कि नविये करीम सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लम और ईमान वालों ने इस तमाम की तस्दीक़ फ़रमाई और क़ुरआन और उसके सारे क़ानून और अहक़ाम अल्लाह की तरफ़ से उतरने की तस्दीक़ की.

(६) ये उसूल और ईमान की ज़रूरतों के चार दर्जे हैं (१) अल्लाह पर ईमान लाना, यह इस तरह कि अकीदा रखें, और तस्दीक़ करें कि अल्लाह एक और क़बल एक है, उसका कोई शरीक और बराबर नहीं. उसके सारे नामों और सिफ़ात पर ईमान लाए और यकीन करें और मानें कि वह जानने वाला और हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है और उसके इल्म और कुदरत से कांडे चीज़ बाहर नहीं है. (२) फ़रिश्तों पर ईमान लाना. यह इस तरह है कि यकीन करें और मानें कि वो मौजूद हैं, मासूम हैं, पाक हैं, अल्लाह और उसके रसूलों के बीच अहक़ाम और पैग़ाम लाने वाले हैं. (३) अल्लाह की किताबों पर ईमान लाना, इस तरह कि जो किताबें अल्लाह तआला ने उतारी और अपने रसूलों पर बही के ज़रिये भेजी, वेशक बेशुबह सब सच्ची और अल्लाह की तरफ़ से हैं और क़ुरआन करीम तघदील, काट छोट, रद्दो बदल से महफूज़ है, और अल्लाह के आदेशों और उसके रहस्यों पर आधारीत है. (४) रसूलों पर ईमान लाना, इस तरह कि ईमान लाए कि वो अल्लाह के भेजे हुए हैं जिन्हें उसने अपने बन्दों की तरफ़ भेजा. उसकी वही क़ अमीन है, गुनाहों से पाक, मासूम हैं, सारी सृष्टि से अफ़ज़ल हैं. उनमें कुछ नबी कुछ नवियों से अफ़ज़ल हैं.

- (७) जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों ने किया कि कुछ पर इमान लाए और कुछ का इन्कार किया।
- (८) तेरे हुक्म और इरशाद को:
- (९) यानी हर जान को नेक कर्म का इनाम और सवाब मिलेगा और बुरे कर्मों का अज़ाब होगा। इसके बाद अल्लाह तआला ने अपने मूมิน बन्दों को दुआ मांगने का तरीका बताया कि वो इस तरह अपने परबर्दिगार से अज़े करें।
- (१०) और गलती या भूल चूक से तेरे किसी आदेश के पालन से मेहरूम रहें।

सूरए आले इमरान - पहला खूकू

(१) सूरए आले इमरान मदीनए तैय्यिबह में उतरी। इसमें बीस खूकू, दो सौ आयतें, तीन हजार चार सौ अस्सी शब्द और चौदह हजार पाँच सौ बीस अक्षर हैं।

(२) मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि यह आयत नज़रान के प्रतिनिधि मण्डल के बारे में उतरी जो साठ सवारों पर आधारित था। उस में चौदह सरदार थे और तीन उस क़ौम के बुजुर्ग और नेता। एक आक़िब जिसका नाम अब्दुल मसीह था। यह व्यक्ति क़ौम का अमीर अर्थात् मूत्रिया था और उसकी राय के बिना ईसाई कोई काम नहीं करते थे। दूसरा सैयद जिसका नाम एहम था। यह व्यक्ति अपनी क़ौम का मुख्य सचिव और वित्त विभाग का बड़ा अफ़सर था। ख़ाने पीने और रसद के सारे प्रबन्ध उसी के हुक्म से होते थे। तीसरा अयू हारिस बिन अलक़मा था। यह शम्स ईसाइयों के तमाम विद्वानों और पादरियों का सबसे बड़ा पेशवा था। रूम के बादशाह उसके इल्म और उसकी धार्मिक महारता के लिहाज़ से उसका आदर सत्कार करते थे। ये तमाम लोग ऊमदा क़ीमती पोशाकें पहनकर बड़ी शान से हज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मुनाज़िरा यानी धार्मिक बहस करने के इरादे से आए और मस्जिद अक़दस में दाख़िल हुए। हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उस वक़्त अस की नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे। उन लोगों की नमाज़ का वक़्त भी आगया और उन्होंने भी मस्जिद शरीफ़ ही में पूर्व दिशा की ओर मुंह करके नमाज़ शुरू कर दी। पूरी करने के बाद हज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बातचीत शुरू की। हज़ूर ने फ़रमाया तुम इस्लाम लाओ। कहने लगे हम आपसे पहले इस्लाम ला चुके। फ़रमाया यह ग़लत है, यह दावा झूठा है, तुम्हें इस्लाम से तुम्हारा यह दावा रोकता है कि अल्लाह के आलांदा है। और तुम्हारी सलीब परस्ती रोकती है, और तुम्हारा सुअर ख़ाना रोकता है। उन्होंने कहा अगर ईसा ख़ुदा के बेटे न हों तो बताइये उनका बाप कौन है। और सब के सब बोलने लगे। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, क्या तुम नहीं जानते कि बेटा बाप से ज़रूर मुशावेह होता है। उन्होंने इक्क़रार किया। फिर फ़रमाया क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब ज़िन्दा है, उसे मौत नहीं, उसके लिये मौत मुहाल है, और ईसा अलैहिस्सलाम पर मौत आने वाली है। उन्होंने इसका भी इक्क़रार किया। फिर फ़रमाया, क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब बन्दों के काम बताने वाला और उनकी हक़ीक़ी हिक़ाज़त करने वाला है और रोज़ी देने वाला है। उन्होंने कहा, हाँ। हज़ूर ने फ़रमाया क्या हज़रत ईसा भी ऐसे ही हैं। वो बोलते नहीं। फ़रमाया, क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह तआला पर आसमान और ज़मीन की कोई चीज़ छुपी हुई नहीं। उन्होंने इक्क़रार किया। हज़ूर ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अल्लाह की तालीम के बिना उसमें से कुछ जानते हैं। उन्होंने कहा, नहीं। हज़ूर ने फ़रमाया, क्या तुम नहीं जानते कि हज़रत ईसा गर्भ में रहे, पैदा होने वालों की तरह पैदा हुए, बच्चों की तरह खिलेप पिलाए गए, आदमियों वाली ज़रूरतें रखते थे। उन्होंने इसका इक्क़रार किया। हज़ूर ने फ़रमाया, फिर वह कैसे इलाह यानी मअबूद हो सकते हैं जैसा कि तुम्हारा गुमान है। इसपर वो सब श्वाभोश रह गए और उनसे कोई जवाब न बन पड़ा। इस पर सूरए आले इमरान की पहली से कुछ ऊपर अस्सी आयतें उतरीं। अल्लाह की विशेषताओं में हँस का मतलब है दायम वाक़ी यानी ऐसा हमेशगी रखने वाला जिसकी मौत मुमकिन ही न हो। क़ैय्यूम वह है जो अपनी ज़ात से कायम हो और दुनिया वाले अपनी दुनिया और आख़िरत की ज़िन्दगी में जो हाजतें रखते हैं, उसका प्रबन्ध फ़रमाए।

(३) इसमें नज़रान के प्रतिनिधि मण्डल के ईसाई भी शामिल हैं।

(४) मर्द, औरत, गोरा, काला, ख़ूबसूरत, बदसूरत, बग़ीरह। बुज़रारी और मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारी पैदाइश का मादा माँ के पेट में चालीस रोज़ जमा होता है, फिर इतने ही दिन गोश्त के टुकड़े की सूरत में रहता है, फिर अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता भेजता है जो उसका रिज़क़, उसकी उम्र, उसके कर्म, उसका अन्त, यानी उसका सौभाग्य और दुर्भाग्य लिखता है। फिर उसमें रूढ़ डालता है, तो उसकी क़सम, जिसके सिवा कोई पूजे जाने के काबिल नहीं है, आदमी जन्नतियों के से कर्म करता रहता है, यहाँ तक कि उसमें और जन्नत में हाथ भर का यानी बहुत कम फ़र्क़ रह जाता है। तो किताब मक्क़त करती है, और वह दोज़ख़ियों के से अमल करता रहता है, यहाँ तक कि उसमें और दोज़ख़ में एक हाथ का फ़र्क़ रह जाता है फिर किताब सबक़त करती है और उसकी ज़िन्दगी का नक़्श़ा बदलता है और वह जन्नतियों के से अमल करने लगता है। उसी पर उसका ख़ात्मा होता है और वह जन्नत में दाख़िल होता है।

(५) इसमें भी ईसाइयों का रव है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा का बेटा कहते और उनकी पूजा करते थे।

(६) जिसमें कोई संदेह या शक़ नहीं।

(७) कि अहक़ाम में उनकी तरफ़ रूज़ किया जाता है और हलाल व ह़राम में उन्हीं पर अमल।

(८) वो कुछ कारणों का ऐहतिमाल रखती हैं। उनमें से कौन सी वज़ह, कौन सा कारण मुराद है अल्लाह ही जानता है या जिसको अल्लाह तआला उसकी जानकारी दे।

فِي قُلُوبِهِمْ رَيْبٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا كَشَابَهُ مِنْهُ ابْتِغَاءَ
الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا
اللَّهُ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ
كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۝
رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ
لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝
رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْلِفُ الْوَعْدَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ
لِنَ تَعْبَى عَنْهُمْ أَمْوَالَهُمْ وَلَا أَوْلَادَهُمْ مِنَ
اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ۝ كَذَّابٌ
إِلَ فِرْعَوْنُ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
فَاخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝
قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَى

वों इशतिबाह वालो के पीछे पड़ते हैं^(१०) गुमराही चाहने^(११) और उसका पहलू ढूँढ़ने को^(१२) और उसका ठीक पहलू अल्लाह ही को मालूम है^(१३) और पुख्तो इल्म वाले^(१४) कहते हैं हम उसपर ईमान लाए^(१५) सब हमारे रब के पास से है^(१६) और नसीहत नहीं मानते मगर अक्ल वाले^(१७) ॥ ६॥ ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर वाद इसके कि तूने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रहमत अता कर. वेशक तू है बड़ा देने वाला ॥ ७॥ ऐ रब हमारे वेशक तू सब लोगों को जमा करने वाला है^(१८) उस दिन के लिये जिसमें कोई शुबह नहीं^(१९) वेशक अल्लाह का वादा नहीं बदलता^(२०) ॥ ९॥

दूसरा रुकू

वेशक वो जो काफिर हुए^(१) उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह से उन्हें कुछ न बचा सकेंगे और वही दोज़ख के ईधन हैं^(२०) जैसे फिराउन वालों और उनसे अगलों का तरीका, उन्होंने हमारी आयतें झुटलाई तो अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उनको पकड़ा और अल्लाह का अज़ाब सख्त^(२१) फ़रमादो काफिरों से, कोई दम जाता है कि तुम मग़लूब (पराजित)

- (१) यानी गुमराह और अधर्मी लोग, जो अपने नफ़्स के बहकावे के प्राबन्द हैं.
(२०) और उसके ज़ाहिर पर हुक़्म करते हैं या झूठी व्याख्या करते हैं और यह बेक़ नियत से नहीं बल्कि ...
(२१) और शक़ शुबह में डालने.
(२२) अपनी इच्छा के अनुसार, इसके बावजूद कि ये व्याख्या के योग्य नहीं. (जुमल और झ्राज़िन)
(२३) हकीकत में. (जुमल). और अपने क़रम और अता से जिसको वह नचाज़े.
(२४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है, आप फ़रमाते थे कि मैं पक्का इल्म जानने वालों में से हूँ, और मुजाहिद से रिवायत है कि मैं उनमें से हूँ जो रहस्य वाली आयतों की तावील या व्याख्या जानते हैं. हज़रत अतस बिन मालिक से रिवायत है कि पक्का इल्म जानने वाले वो हैं जिनमें चार विशेषताएँ हों, अल्लाह से डर, लोगों से अच्छा व्यवहार, दुनिया के जीवन में पाकीज़गी, और नफ़्स के साथ निरन्तर लड़ाई. (झ्राज़िन)
(२५) कि वह अल्लाह की तरफ़ से है और जो मानी उसकी मुराद है, सच्ची है और उसका नाज़िल फ़रमाता हिकमत है.
(२६) अहक़ाम हों या रहस्य.
(२७) और पक्के इल्म वाले कहते हैं.
(२८) हिस्साब या बदले के थारने.
(२९) वह क़यामत का दिन है.
(२०) तो जिसके दिल में कज़ी या टेढ़ापन हो वह हलाक़ होगा, और जो तरे सहसात से हिदायत पाए वह नसीब वाला होगा, निज़ात पाएगा. इस आयत से मालूम हुआ कि झूट ज़लूहियत यानी अल्लाह होने के विरुद्ध है. निहाज़त अल्लाह की तरफ़ झूट का ख़याल और निस्वत सज़ा बेअदबी है. (मदारीक़ व अद्व मसज़द सौरह)

सूरए आले इमरान - दूसरा रुकू

- (१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का विरोध करके.
(२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि जब बद्र में काफ़िरों का रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम परास्त कर चुके और मदीनए तायिबह वापस तशरीफ़ लाए तो हज़रत ने यहूदियों को जमा किया और फ़रमाया कि तुम अल्लाह से डरो और इस्लाम लाओ, इससे पहले कि तुम पर ऐसी मुसीबत आए जैसी बद्र में कुरैश पर आई. तुम जान चुके हो मैं अल्लाह का

होगे और दोज़ख की तरफ हांके जाओगे^(१) और वह बहुत ही बुरा विखेना है^(२) वेशक तुम्हारे लिये निशानी थी^(३) दो दलों में जो आपस में भिड़ पड़े^(४) एक जैसा अल्लाह की राह में लड़ता^(५) और दूसरा काफ़िर^(६) कि उन्हें आँखों देखा अपने से दूना समझें और अल्लाह अपनी मदद से जोर देता है जिसे चाहता है^(७) वेशक इसमें अक्लमन्दी के लिये ज़रूर देखकर सीखना है^(८) लोगों के लिये सजाई गई उन ख्वाहिशों की महबूत^(९) औरतें और बेटे और तले ऊपर सोने चांदी के ढेर और निशान किये हुए घोड़े और चौपाए और खेती, यह जीती दुनिया की पूंजी है^(१०) और अल्लाह है जिसके पास अच्छा ठिकाना^(११) है^(१२) तुम फ़रमाओ क्या मैं तुम्हें इससे^(१३) बेहतर चीज़ बता दूं परहेज़गारों के लिये, उनके रव के पास जन्नत है जिनके नीचे नहरें जारी, हमेशा उनमें रहेंगे और सुथरी वीवियां^(१४) और अल्लाह की खुशनूदी (रज़ामन्दी)^(१५) और अल्लाह बन्दों को देखता है^(१६) वो जो कहते हैं, ऐ रव हमारे हम ईमान लाए

بَلَاغُ الْمُرْسَلِ ٤٠
الْعَمَلُ
جَهَنَّمُ وَيُنْسِ الْيَهُودَ ۖ قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ
فِي فِتْنَةِ النَّصْرَةِ فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَأُخْرَى كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُمْ مِثْلَهُمْ رَأَى الْعَيْنِ
وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بَصِيرَةَ مَنْ يَشَاءُ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝ رُبَّنَّ لِلنَّاسِ حُبُّ
الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ
مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ
الْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۚ ذَلِكَ مَتَاعُ الدُّنْيَا
وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَاٰبِ ۝ قُلْ أَوْفُوا بِعَهْدِكُمْ
بِخَيْرٍ مِّنْ ذَٰلِكُمْ ۚ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ
جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ
بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّا أَصْنَا

भेजा हुआ रसूल है। तुम अपनी किताब में यह लिखा हुआ पाते हो। इसपर उन्होंने कहा कि कुरैश तो जंग की कला से अनजान हैं, अगर हम में मुक़बलता हुआ तो आपका मालूम हो जायगा कि लड़ने वाले ऐसे होते हैं। इसपर यह आयत उतरी और उन्हें ख़बर दी गई कि वो परास्त होंगे और क़त्ल किये जाएंगे, गिरफ़्तार किये जाएंगे, उनपर ज़िज़िया मुकर्र होगा। चुनौती ऐसा ही हुआ कि नबीय़ करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लेम ने एक रोज़ में छ सौ की तादाद को क़त्ल फ़रमाया और बहनों को गिरफ़्तार किया और ख़ैबर वालों पर ज़िज़िया मुकर्र फ़रमाया।

- (३) इसके मुख़तब यहूदी हैं, पर कुछ का कहना है कि सारे काफ़िर और कुछ के अनुसार ईमान वाले. (जुमल)
- (४) बद्र की लड़ाई में.
- (५) यानी नबीय़ करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लेम और आपके सहाबा, उनकी कुल संख्या तीन सौ तेरह थी. सत्तर मुहाजिर और २३६ अन्गारी, मुहाजिरों के सलाहकार हज़रत अली मुनज़ा थे और अनुसार के हज़रत सअद बिन उबादा रदियल्लाहो अन्हुम. इस पूरे लश्कर में कुल दस घोड़े, सत्तर ऊंट और छ ज़िरहें, सट तलवारें थीं. और इस घटना में चौदह सहाबा शहीद हुए, छ मुहाजिर और आठ अन्गारी.
- (६) काफ़िरों की संख्या नौसौ पचास थी। उनका सरदार उतबा बिन रबीआ था. और उनके पास सौ घोड़े थे, और सात सौ ऊंट और बहुत सी ज़िरहें और हथियार थे. (जुमल)
- (७) चाहें उसकी संख्या कम हो और सामान की कितनी ही कमी हो.
- (८) ताकि वामना के पुत्राभियों और अल्लाह की इबादत करने वालों के बीच फ़र्क और पहचान ज़ाहिर हो, जैसा कि दूसरी आयत में इशारा फ़रमाया "إِنَّمَا جَعَلْنَاهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ عَظِيمًا ۚ وَلِلَّذِينَ يَرْجُونَ رَبَّهُمْ وَأَتَوْهُ بِطَاعَتِهِ وَهُدًى وَأَنفُسَهُمْ يَسْتَغْفِرُ لَهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ" (यानी वेशक हमने ज़मीन का सिंघार किया जो कुछ उस पर है कि उन्हें आजमाएँ उनमें किस के काम बेहतर हैं) (सूरए अल-कहफ़, आयत सात)
- (९) इसमें कुछ असां नफ़ा पहुंचता है, फिर बट हो जाती है. इन्सान को चाहिये कि दुनिया के माल को ऐसे काम में खर्च करे जिसमें उसकी आग़्रिमत की दुरुस्ती और सआदत हो.
- (१०) ज़य्त, तो चाहिये कि इसकी सबन की जाय और नाशवान दुनिया की नश्वर चीज़ों से दिल न लगाया जाए.
- (११) दुनिया की पूंजी से.
- (१२) जो ज़नात वीमारियों और हर नापसन्द और दफ़रत के क़ाबिल चीज़ से पाक.
- (१३) और यह सबसे ज़त्तम बेअमत है.
- (१४) और उनके कर्म और अहवाल जानता और उनका अन्न या बदला देता है.

तू हमारे गुनाह माफ़ कर और हमें दोज़ख के अज़ाब से बचाले, सब वाले^(१५) (१६) और सच्चे^(१६) और अदब वाले और खुदा की राह में खर्चने वाले और पिछले पहर से माफ़ी मांगने वाले^(१७) (१७) अल्लाह ने गवाही दी कि उसके सिवा कोई मअबूद नहीं^(१८) और फरिश्तों ने और आलिमों ने^(१९) इन्साफ़ से कायम होकर, उसके सिवा किसी की इबादत नहीं, इज़्जत वाला हिकमत वाला^(२०) वेशक अल्लाह के यहां इस्लाम ही दीन है^(२०) और फूट में न पड़े किताब^(२१) मगर वाद इसके कि उन्हें इल्म आयुका^(२२) अपने दिलों की जलन से^(२३) और जो अल्लाह की आयतों का इन्कारी हो तो वेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है^(२४) फिर ऐ मेहबूब, अगर वो तुम से हुज्जत (तर्क वितर्क) करें तो फ़रमादो मैं अपना मुंह अल्लाह के हुज़ूर झुकाए हूँ और जो मेरे अनुयायी हुए^(२५) और किताबियों और अनपढ़ों से फ़रमाओ^(२६) क्या तुमने गर्दन रखी^(२६) तो अगर वो गर्दन रखें जब तो राह पागए और अगर मुंह फेरें तो तुम पर तो यही हुक्म पहुंचा देना है^(२७) और अल्लाह बन्दों को देख रहा है^(२८)

तीसरा रूकू

वो जो अल्लाह की आयतों से इन्कारी होते और पैगम्बरों

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَفِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ الصّٰبِرِيْنَ وَ
الصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰتِلِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالسُّتَغْفِرِيْنَ
بِالْاَسْحٰرِ ۝ شَهِدَ اللّٰهُ اَنْكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۝ وَ
الْمَلٰئِكَةُ وَاُولُو الْعِلْمِ قَاٰمًا بِالْقِسْطِ ۝ لَا اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيْمُ ۝ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۝
وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ
مَا جَاَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۝ وَمَنْ يَكْفُرْ
بَاٰيٰتِ اللّٰهِ قَاتَنَّ اللّٰهُ سَرِيْعَ الْحِسَابِ ۝ فَاِنْ
حَاجَّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اشْبَعَنِ
وَقُلْ لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاٰمِنِيْنَ اَسْلَمْتُمْ ۝
فَاِنْ اَسْأَلُوكُمْ فَقَدْ اهْتَدَوْا ۝ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا
عَلَيْكُمُ الْبَلَاءُ ۝ وَاللّٰهُ بِصِيْرٍ بِالْعِبَادِ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِآيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيَّيْنَ

(१५) जा ताअत और मुसाबत पर सब करें और गुवाहों से रुके रहें.

(१६) जितने क़ौल और इरादे और नियतें सब सच्ची हों.

(१७) इसमें रात के आज़िर में नमाज़ पढ़ने वाले भी. यह वक्त तन्हाई और दुआ कुबूल होने का है. हज़रत लुक्मान ने अपने बेटे से फ़रमाया, मुझे से कम न रहना कि वह तो सुयह से पुकार लगाए और तुम सोते रहा.

(२८) शाम के लोगों में से दो व्यक्ति हुज़ूर सयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए. जब उन्होंने मदीनाए तैय्यिह को देखा तो एक दूसरे से कहने लगा कि आज़िरी ज़माने के नबी के शहर की यह विशेषता है जो इस शहर में पाई जाती है. जब हुज़ूर के आस्ताने पर हाज़िर हुए तो उन्होंने हुज़ूर की शकलें पाके और हुलिये को तौरात के मुताबिक देखकर पहचान लिया और अर्ज़ किया, आप मुहम्मद हैं. हुज़ूर ने फ़रमाया, हाँ. फिर अर्ज़ किया कि आप अहमद हैं (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) फ़रमाया, हाँ. अर्ज़ किया, हम एक सवाल करते हैं, अगर आपने ठीक ठीक जवाब दे दिया तो हम आप पर ईमान ले आएं. फ़रमाया, प्रश्न. उन्होंने अर्ज़ किया कि अल्लाह की किताब में सब से बड़ी शहादत कौन सी है? इस पर आयत करीमा उतरी और इसको सुनकर वह दोनों व्यक्ति मुसलमान हो गए. हज़रत सईद बिन जुबैर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि काबए मुअज़्ज़मा में तीन सौ साठ बुत थे. जब मदीनाए तैय्यिह में यह आयत उतरी तो काबे के अन्दर वो सब सिजदे में गिर गए.

(२९) यानी वयियों और वलियों ने.

(२०) उसके सिवा कोई और दीन अल्लाह का पसन्दीदा नहीं. यहूदी और ईसाई वगैरह काफ़िर जो अपने दीन को अफ़ज़ल और मक़बूल कहते हैं, इस आयत में उनके दावे को वातिल कर दिया.

(२१) यह आयत यहूदियों और ईसाईयों के बारे में उतरी. जिन्होंने इस्लाम को छोड़ा और सयदुल अयिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तबुब्बत में विरोध किया.

(२२) वो अपनी किताबों में सयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नात और सिफ़त देकर चुके और उन्होंने पहचान लिया कि यही वह नबी हैं जिनकी आसमानी किताबों में ख़बरें दी गई हैं.

(२३) यानी उनके विरोध का कारण उनका हसद और दुनियावी तफ़े का लालच है.

(२४) यानी मैं और मेरे मानने वाले पूरी तरह अल्लाह तआला के फ़रमावश्वरदार और मुनीअ हैं, हमारा दीन तौहोद का दीन है जिसकी सच्चाई भी साबित हो चुकी है वह भी ख़द तुम्हारी अपनी किताबों से, तो इसमें तुम्हारा हमसे झगड़ना बिल्कुल ग़लत है.

(२५) जितने काफ़िर और किताबी हैं वो "उम्मीयीन" (अनपढ़ों) में दाख़िल है, उन्हीं में से अम्य के मुथिक भी हैं.

(२६) और दीने इस्लाम के सामने सब झुकाया या झुले प्रमाण कायम होने के बावजूद तुम अभी तक अपने कुफ़्र पर हो. यह दावते

को नाहक शहीद करते^(१) और इन्साफ़ का हुक्म करने वालों को क़त्ल करते हैं उन्हें खुशख़बरी दो दर्दनाक अज़ाब की^(२) ये हैं वो जिनके कर्म अकारत हुए दुनिया और आख़िरत में^(३) और उनका कोई मददगार नहीं^(४) क्या तुमने उन्हें न देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला^(५) अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाए जाते हैं कि वह उनका फैसला करे फिर इनमें का एक दल उससे मुंह फेर कर फिर जाता है^(६) यह साहस^(७) उन्हें इसलिये हुआ कि वो कहते हैं कभी हमें आग न छुएगी मगर गिनती के दिनों^(८) और उनके दिन में उन्हें धोखा दिया उस झूठ ने जो वांधते थे^(९) तो कैसी होगी जब हम उन्हें इकट्ठा करेंगे उस दिन के लिये जिसमें शक नहीं^(१०) और हर जान को उसकी कमाई पूरी भर दी जाएगी और उनपर जुल्म न होगा^(११) यूँ अज़्र कर ऐ अल्लाह मुल्क के मालिक तू जिसे चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और जिसे चाहे इज़ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे सारी

بَغِيرِ حَقٍّ ۚ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ
مِنَ النَّاسِ ۚ يَبْشِرُهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ
مِّنْ نَّصِيرِينَ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا
مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ
ثُمَّ يَتَوَلَّوْا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَسُنَا النَّارُ إِلَّا أَيْامًا
مَّعْدُودَاتٍ ۖ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِمْ مَا كَانُوا
يَفْتَرُونَ ۝ فَكَيْفَ إِذَا جُمِعَهُمْ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ
فِيهِ ۖ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا
يُظْلَمُونَ ۝ قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمَلِكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ
مَن تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاءُ وَتُعِزُّ
مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ ۚ إِنَّكَ الْخَبِيرُ بِإِثْمِكَ

इस्लाम का एक अन्दाज़ है, और इस तरह उन्हें सच्चे-दीन की तरफ़ बुलाया जाता है।

(२७) वह तुमने पुरा कर ही दिया। इस सं उन्होंने नफ़ा न उठाया तो नुक़सान में वो रहे। इसमें हुज़ुर सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तस्कीन फ़रमाई गई है कि आप उनके ईमान न लाने से दुखी न हों।

सूरए आले इमरान - तीसरा रूकू

(१) जैसा कि बनी इस्राईल ने मुबद्द का एक साअत के अन्दर तैतालीम नबियां को क़त्ल किया फिर जब उनमें से एक सौ बारह आबिदां यानी नेक परहेज़गार लोगों ने उठकर उन्हें नैकियों का हुक्म दिया और गुनाहों से रोका, उसी शाम उन्हें भी क़त्ल कर दिया। इस आयत में सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने के यहूदियों को फटकार है, क्योंकि वो अपने पूर्वजों के ऐसे बदतरीन कर्म से राज़ी हैं।

(२) इस आयत से मालूम हुआ कि नबियां की शान में ये अदसी कुफ़्र है। और यह भी कि कुफ़्र से तमाम कर्म अकारत हो जाते हैं।

(३) कि उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचाए।

(४) यानी यहूदी, कि उन्हें तीरात शरीफ़ के ज़लूम और अहक़ाम सिख़्राए गए थे। जिनमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विशेषताएं और अहवाल और इस्लाम की सच्चाई का वधान है। इससे लाज़िम आता था कि जब हुज़ुर तशरीफ़ फ़रमा हों और उन्हें क़ुरआन शरीफ़ की तरफ़ बुलाएं तो वो हुज़ुर पर और क़ुरआन शरीफ़ पर ईमान लाएं और उसके आदेशों का पालन करें, लेकिन उनमें से बहुतों ने ऐसा नहीं किया। इस पहलू से मिनल किताब से तीरात और किताबुल्लाह से क़ुरआन शरीफ़ मुग़द है।

(५) इस आयत के उतरने की परिस्थितियों में हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से एक रिवायत आई है कि एक बार सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बैतुल मक़दिस में तशरीफ़ ले गए और वहाँ यहूदियों को इस्लाम की तरफ़ बुलाया। नुएम इब्ने अग्र और हारिस इब्ने ज़ैद ने कहा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) आप किस दीन पर हैं ? फ़रमाया, मिल्लते इब्राहीमी पर। वो कहने लगे, हज़रत इब्राहीम तो यहूदी थे। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया तीरात लाओ, अभी हमारे तुम्हारे चीन फैसला हो जाएगा। इसपर न ज़मे और इन्कारी हो गए। इस पर यह आयत करोमा नाज़िल हुई। इस पहलू से आयत में किताबुल्लाह से तीरात मुग़द है। इन्हीं हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से एक रिवायत यह भी है कि ख़ैबर के यहूदियों में से एक मर्द ने एक औरत के साथ बलात्कार किया था और तीरात में ऐसे गुनाह की यज़ा पत्थर मार मार कर हलाक कर देना है। लेकिन चूंकि ये लोग यहूदियों में ऊंचे ख़ातदात के थे, इसलिये उन्होंने उनका संगवार करना ग़वार न किया और इस मामले को इस

भलाई तेरे ही हाथ है वेशक तू सब कुछ कर सकता है^(१०) (२६) तू दिन का हिस्सा रात में डाले और रात का हिस्सा दिन में डाले^(११) और मुर्दा से ज़िन्दा निकाले और ज़िन्दा से मुर्दा निकाले^(१२) और जिसे चाहे बेगिनती दे^(२७) मुसलमान काफ़िरों को अपना दोस्त न बनालें मुसलमानों के सिवा^(१३) और जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह से कुछ इलाका नहीं, मगर यह कि तुम उनसे कुछ डरो^(१४) और अल्लाह तुम्हें अपने क्रोध से डराता है और अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है^(२८) तुम फ़रमादो कि अगर तुम अपने जी की बात छुपाओ या जाहिर करो, अल्लाह को सब मालूम है और जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और हर चीज़ पर अल्लाह का क़ाबू है^(२९) जिस दिन हर जान ने जो भला काम किया हाज़िर पाएगी^(१५) और जो बुरा काम किया उम्मीद करेगी काश मुझमें और इसमें दूर का फ़ासला होता^(१६) और अल्लाह तुम्हें अपने अज़ाब से डराता है और अल्लाह वन्दों पर मेहरवान है^(३०)

وَالَّذِينَ

وَالَّذِينَ

عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ تُولِيهِمُ الْيَلَّ فِي النَّهَارِ وَ
تُولِيهِمُ النَّهَارَ فِي الْيَلِّ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ
وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ
بَغَيْرِ حِسَابٍ ۝ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ
أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ
فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ
تَقِيَةً وَيُخَذِّرُكُمْ اللَّهُ نَفْسَهُ ۝ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝
قُلْ إِنْ تَحْقُقُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْذَرُ يَعْلَمُهُ
اللَّهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ
نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُحْضَرَةً وَمَا عَلَيْكَ
مِنْ سَوْءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَكَ أَمْدًا بَعِيدًا
وَيُخَذِّرُكُمْ اللَّهُ نَفْسَهُ وَاللَّهُ رَؤُوفٌ بِالْعِبَادِ ۝

مَزْلُومٌ

उम्मीद पर सँयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास लाए कि शायद आप पत्थरों से हलाक करने का हुक्म न दें, मगर हुज़ूर ने उन दोनों को संगसार करने का हुक्म दिया, इस पर यहूदी गुस्से में आ गए और कहने लगे कि इस गुनाह की यह सज़ा नहीं, आपने ज़ुल्म किया, हुज़ूर ने फ़रमाया, फैसला तौरात पर रखो, कहने लगे यह इन्साफ़ की बात है, तौरात मंगाई गई और अब्दुल्लाह बिन मूरिया बड़े यहूदी आलिम ने उसको पढ़ा, उसमें संगसार करने का जो हुक्म था, उस को छोड़ गया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ने उसका हाथ हटाकर आयत पढ़ दी, यहूदी बहुत ज़लील हुए और वो यहूदी मर्द औरत हुज़ूर के हुक्म से संगसार किये गए, इसपर यह आयत उतरी.

(६) अल्लाह की किताब से मुंह फेरने की.

(७) यानी चालीस दिन या एक हफ़्ता, फिर कुछ ग़म नहीं.

(८) और उनका यह क़ौल था कि हम अल्लाह के घेरे हैं और उसके प्यारे हैं; वह हमें गुनाहों पर अज़ाब न करेगा, मगर बहुत थोड़ी मुद्दत के लिये.

(९) और वह क़्यामत का दिन है.

(१०) फ़न्ह मक्का के वक्ल शैयदुल अयिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी उम्मत का मुल्क फ़ारस और रोम की सल्तनत का वादा दिया तो यहूदी और मुनाफ़िकों ने उसका असम्भव समझा और कहने लगे, कहाँ मुहम्मद और कहाँ फ़ारस और रोम के मुल्क, वो बड़े ज़बरदस्त और निहायत मज़बूत हैं, इसपर यह आयत करीमा उतरी, और आश्चर्यकार हुज़ूर का वह वादा पूरा होकर रहा.

(११) यानी कभी रात को बढ़ाए और दिन को घटाए और कभी दिन को बढ़ाकर रात को घटाए, यह उसकी कुदरत है, तो फ़ारस और रोम से मुल्क लेकर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के गुलामों को अना करना उसकी ताक़त से क्या दूर है.

(१२) मुर्दे से ज़िन्दा का निकालना इस तरह है जैसे कि ज़िन्दा इन्सान को बेजान तुत्के से और चिड़िया के ज़िन्दा बच्चे को बेरुह अण्डे से, और ज़िन्दा दिल मूмин को मुर्दा दिल काफ़िर से, और ज़िन्दा इन्सान से बेजान तुत्के और ज़िन्दा चिड़िया से बेजान अण्डे और ज़िन्दा दिल मूмин से मुर्दा दिल काफ़िर.

(१३) हज़रत उवादा बिन सामित ने अहज़ाब की जंग के दिन शैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि मरे साथ पाँच सौ यहूदी हैं जो मेरे हिमायती हैं, मेरी राय है कि मैं दुश्मन के मुकाबले उनसे मदद हासिल करूँ, इसपर यह आयत उतरी और काफ़िरों को दोस्त और मददगार बनाने से मना फ़रमाया गया.

(१४) काफ़िरों से दोस्ती और महबूत मना और हराम है, उन्हें सज़ादार बनाना, उनसे व्यवहार करना नानायज़ है, अगर जान या माल का डर हो तो ऐसे वक़्त में सिर्फ़ जाहिरी बर्ताव जायज़ है.

(१५) यानी क़्यामत के दिन हर नफ़्स को क़मों की जज़ा यानी बदला मिलेगा और उसमें कुछ क़मी व कोताही न होगी.

चौथा सूक़

ऐ मेहबूब, तुम फ़रमादो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमाँवरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा^(१) और तुम्हारे गुनाह वख़्श देगा और अल्लाह वख़्शाने वाला मेहरबान है^(२) तुम फ़रमादो कि हुक्म मानो अल्लाह और रसूल का^(३) फिर अगर वो मुंह फ़ेरें तो अल्लाह को खुश नहीं आते काफ़िर^(४) वेशक अल्लाह ने चुन लिया आदम और नूह और इब्राहीम की सन्तान और इमरान की सन्तान को सारे जहान से^(५) यह एक नस्ल है एक दूसरे से^(६) और अल्लाह सुनता जानता है^(७) जब इमरान की बीबी ने अर्ज़ की^(८) ऐ रब मेरे मैं तेरे लिये मन्नत मानती हूँ जो मेरे पेट में है कि ख़ालिस तेरी ही ख़िदमत में रहे^(९) तो तू मुझ से कुबूल करले वेशक तू ही सुनता जानता^(१०) फिर जब उसे जना बोली ऐ रब मेरे यह तो मैं ने लड़की जनी^(११) और अल्लाह को ख़ूब मालूम है जो कुछ वह जनी और वह लड़का जो उसने मांगा इस लड़की सा नहीं^(१२) और मैं ने उसका नाम मरयम रखा^(१३) और मैं उसे और उसकी औलाद को तेरी पनाह में देती हूँ रांदे हुए शैतान से^(१४) तो उसे उसके रब ने अच्छी तरह कुबूल किया^(१५) और उसे अच्छा परवान चढ़ाया^(१६) और

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝
قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝ إِنْ اللَّهُ أَصْطَقَىٰ أَدَمَ وَ نُوْحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝ ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ ۖ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ ۖ وَإِنِّي سَتِيْتُهَا مَذْمُومًا ۖ وَإِنِّي أَعِيشُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتُهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا مَّعْلُومًا

(१६) यानी मैंने यह बुरा काम न किया होता।

सूरए आले इमरान - चौथा सूक़

(१) इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह की महबूत का दावा जब ही सच्चा हो सकता है जब आदमी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अनुकरण करने वाला हो और हुज़ूर की इताअत इस्तिफ़ाए करे। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कुरैश के पास टहरे जिन्होंने ख़ानए काबा में बुत स्थापित किये थे और उन्हें सजा सजा कर उनको सिद्धा कर रहे थे। हुज़ूर ने फ़रमाया, ऐ कुरैश, खुदा की क़सम तुम अपने पूर्वजों हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल के दीन के खिलाफ़ हो गए। कुरैश ने कहा, हम इन बुतों को अल्लाह की महबूत में पूजते हैं ताकि ये हमें अल्लाह से करीब करें। इसपर यह आयत उतरी और बताया गया कि अल्लाह की महबूत का दावा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अनुकरण और फ़रमाँवरदारी के बिना क़ाबिले कुबूल नहीं। जो इस दावे का सुबूत देना चाहे, हुज़ूर की गुलामी करे और हुज़ूर ने बुतों को पूजने से मना फ़रमाया, तो बुत परस्ती करने वाला हुज़ूर का नाफ़रमान और अल्लाह की महबूत के दावे में झूठा है।

(२) यही अल्लाह की महबूत की निशानी है और अल्लाह तआला की इताअत रसूल के अनुकरण के बिना नहीं हो सकती। बुझारी व मुस्लिम की हदीस में है, जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की।

(३) यहूदियों ने कहा था कि हम हज़रत इब्राहीम व इसहाक व याक़ूब अलैहिमुस्सलाम की औलाद से हैं और उन्हीं के दीन पर हैं। इसपर यह आयत उतरा, और बता दिया गया कि अल्लाह तआला ने इन हज़रत को इस्लाम के साथ बुजुर्गी अता फ़रमाई थी और तुम ऐ यहूदियों, इस्लाम पर नहीं हो, तुम्हारा यह दावा ग़लत है।

(४) उनमें आपस में नस्ल के सम्बन्ध भी हैं और आपस में ये हज़रत एक दूसरे के सहायक और मददगार भी।

(५) इमरान दो हैं, एक इमरान बिन यसहूर बिन फ़ाहिस बिन लावा बिन याक़ूब, ये तो हज़रत मूसा व हारून के वालिद हैं, दूसरे इमरान बिन मासान, यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वालिदा मरयम के वालिद हैं। दोनों इमरानों के बीच एक हज़ार आठ सौ साल का अंतर है। यहाँ दूसरे इमरान मुराद हैं। उनकी बीबी साहिबा का नाम हन्ना बिले फ़ाक़ूज़ा है। यह मरयम की वालिदा हैं।

(६) और तेरी इवादात के सिवा दुनिया का कोई काम उसके मुतअल्लिक न हो। वैतुल मक़दिस की ख़िदमत इसके ज़िम्मे हो। उलमा ने बाकिआ इस तरह ज़िफ़ किया है कि हज़रत ज़क़रिया और इमरान दोनों हमज़ुल्फ़ थे, यानी दो सगी बहनें एक एक के निकाह में

उसे ज़करिया की निगहवानी में दिया जब ज़करिया उसके पास उसकी नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उसके पास नया रिज़क़ (जीविका) पाते^(१२) कहा ऐ मरयम यह तेरे पास कहां से आया वोलीं वह अल्लाह के पास से है वेशक अल्लाह जिसे चाहे वे गिन्ती दे^(१३) ३७ - यहाँ^(१४) पुकारा ज़करिया ने अपने रव को बोला ऐ रव मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी औलाद वेशक तू ही है दुआ सुनने वाला ३८ तो फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी और वह अपनी नमाज़ की जगह खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था^(१५) वेशक अल्लाह आपको खुशख़बरी देता है यहया की जो अल्लाह की तरफ़ के एक कलिमे की^(१६) पुष्टि करेगा और सरदार^(१७) हमेशा के लिये औरतों से बचने वाला और नबी हमारे खासों में^(१८) ३९ - बोला ऐ मेरे रव मेरे लड़का कहां से होया मुझे तो पहुंच गया बुढ़ापा^(१९) और मेरी औरत बांझ^(२०) फ़रमाया अल्लाह यूँ ही करता है जो चाहे^(२१) ४० - अर्ज़ की ऐ मेरे रव मेरे लिये कोई निशानी कर दे^(२२) फ़रमाया तेरी निशानी यह है कि तीन दिन तू लोगों से बात न करे मगर इशारे से और अपने रव की बहुत याद कर^(२३) और कुछ दिन रहे और तड़के

حَسَنًا، وَكَلَّمَهَا زَكْرِيَّا: كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا، قَالَ: يَمْرَأَتُ أَلَيْكَ هَٰذَا، قَالَتْ: هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ، قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً، إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝ فَتَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا لِّبِكَلِمَةٍ مِنْ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ، قَالَ كَذَٰلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّي آيَةً، قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْرًا، وَادْكُرْ رَبَّكَ كَثِيرًا وَ

थीं. फ़ाक़ूज़ा की बेटी ईशाअ जो हज़रत यहया की बालिदा हैं और उनकी वहन हन्ना जो फ़ाक़ूज़ा की दूसरी बेटी और हज़रत मरयम की बालिदा है. वह इमरान की बीबी थीं. एक ज़माने तक हन्ना के औलाद नहीं हुई यहाँ तक कि बुढ़ापा आ गया और मायूसी हो गई. ये दोनों का ख़ानदान था और ये सब लोग अल्लाह के मक़बूल बन्दे थे. एक रोज़ हन्ना ने एक दरख़्त के साए में एक चिड़िया देखी जो अपने बच्चे को दाना चुगा रही थी. यह देखकर आपके दिल में औलाद का शौक पैदा हुआ और अल्लाह की बारगाह में दुआ की कि ऐ रव अगर तू मुझे बच्चा दे तो मैं उसे बैतुल मक़दिस का सेवक बनाऊँ और इस ख़िदमत के लिये हाज़िर कर दूँ. जब वह गर्भवती हुई और उन्होंने यह नज़्र मान ली तो उनके शौहर ने फ़रमाया कि यह तुमने क्या किया. अगर लड़की हो गई तो वह इस क़ाबिल कहाँ है. उस ज़माने में लड़कों का बैतुल मक़दिस की ख़िदमत के लिय दिया जाता था और लड़कियाँ औरतों की कुदरती मजबूरियाँ और ज़नाना कमज़ारियाँ और मर्दों के साथ न रह सकने की वजह से इस क़ाबिल नहीं समझी जाती थीं. इसलिये उन साहिबों को सज़ा फ़िक्र हुई. हन्ना की ज़चगी से पहले इमरान का देहान्त हो गया.

(७) हन्ना ने ये कलिमा एतिज़ार के तौर पर कहा और उनको हसरत व ग़म हुआ कि लड़की हुई तो नज़्र किस तरह पूरी हो सकेगी.

(८) क्योंकि यह लड़की अल्लाह तआला की अता है और उसकी मेहरबानी से बेटे से ज़्यादा बुज़ुर्गों ग़मने वाली हैं. यह बेटी हज़रत मरयम थीं और अपने ज़माने की औरतों में सबसे ज़्यादा ख़ुबसूरत और अफ़ज़ल थीं.

(९) मरयम के मानी हैं आविदा यानी इबादत करने वाली.

(१०) और नज़्र में लड़के की जगह हज़रत मरयम को क़बूल फ़रमाया. हन्ना ने विलादन के बाद हज़रत मरयम को एक कपड़े में लपेट कर बैतुल मक़दिस में पादरियों के सामने रख दिया. ये पादरी हज़रत हासन की औलाद में थे और बैतुल मक़दिस में इनका बड़ा मान था. चूँकि हज़रत मरयम उनके इमाम और उनका कुरबानियों के सग़दार की बेटी थीं और इल्म वालों का ख़ानदान था, इस लिये उन सब ने, जिनकी संख्या सत्ताईस थी, हज़रत मरयम को लेने और उनका पालन पोषण करने की इच्छा दिखाई. हज़रत ज़करिया ने फ़रमाया मैं इनका (मरयम का) सब से ज़्यादा हक़दार हूँ क्योंकि मेरी बीबी इनकी ख़ाला हैं. मामला इस पर ख़तम हुआ कि कुरआ डाला जाए. कुरआ हज़रत ज़करिया ही के नाम पर निकला.

(११) हज़रत मरयम एक दिन में इतना बढ़ती थीं जितना और बच्चे एक साल में.

(१२) वे फ़रल में थे जो ज़न्नत से उतरते और हज़रत मरयम ने किसी औरत का दूध न पिया.

(१३) हज़रत मरयम ने छोटी उम्र में बात शुरू की, जबकि वह पालने में परवरिश पा रही थीं, जैसा कि उनके बेटे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने भी पालने से ही कलाम फ़रमाया. यह आयत बलियों की क़समों अथवा चमत्कारों के सुबूत में है कि अल्लाह तआला उनके हाथों पर चमत्कार ज़ाहिर कर देता है. हज़रत ज़करिया ने जब यह देखा तो फ़रमाया जो पाक ज्ञान मरयम को देवक़्त बेफ़सल और बिना साधन के मंत्र अता फ़रमान की क्षमता रखती है, वह वेशक़ इसपर भी क़ादिर है कि मेरी बांझ बीबी की बड़ी

उसकी पाकी बोल (४१)

पाँचवां रूकू

और जब फ़रिश्ते ने कहा ऐ मरयम वेशक अल्लाह ने तुझे चुन लिया^(१) और खूब सुधरा किया^(२) और आज सारे जहान की औरतों से तुझे पसन्द किया^(३) (४२) ऐ मरयम अपने रव के हुजूर अदब से खड़ी हो^(४) और उस के लिये सिजदा कर और रूकू वालों के साथ रूकू कर (४३) ये गैव की खबरें हैं कि हम खुफ़िया तौर पर तुम्हें बताते हैं^(५) और तुम उनके पास न थे जब वो अपनी कलमों से कुरआ (लाटरी) डालते थे कि मरयम किसकी घरवरिश में रहें और तुम उनके पास न थे जब वो झगड़ रहे थे^(६) (४४) और याद करो जब फ़रिश्तों ने मरयम से कहा कि ऐ मरयम अल्लाह तुझे बशारत (खुशखबरी) देता है अपने पास से एक कलिमे की^(७) जिसका नाम है मसीह ईसा मरयम का बेटा, रूदार (प्रतापी) होगा^(८) दुनिया और आखिरत में ओर कुर्व (समीपता) वाला^(९) (४५) और लोगों से बात करेगा पालने में^(१०) और पक्की उम्र में^(११) और खासों में होगा (४६) बोली ऐ मेरे रव मेरे बच्चा कहां से होगा मुझे तो किसी शाख्स ने हाथ न लगाया^(१२) फ़रमाया अल्लाह यूँ ही पैदा करता है जो चाहे

سَمِّ بِالعِصِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۖ وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَكَةُ
يَمْرُؤُكُمْ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ
عَلَى نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ۝ يَمْرُؤُكُمْ أَهْلُكِ لِرَبِّكِ
وَاسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرَّاكِعِينَ ۝ ذَٰلِكَ
مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ إِذْ يَقُولُونَ أَفَلَا مَمْرُؤُكُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝ إِذْ قَالَتِ
الْمَلَكَةُ يَمْرُؤُكُمْ إِنَّ اللَّهَ يَبْشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِنْهُ ۖ
اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۖ وَيُكَلِّمُ
النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝
قَالَتِ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمَسِّنِي
بَشَرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكَ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ وَإِذَا قَضَىٰ

مَنْ

तंदुरुस्ती दे और मुझे इस बुढ़ापे की उम्र में उम्मीद टूट जाने के बाद भी बेटा अता फ़रमाए। इसी ख़याल से आप ने दुआ की जिसका बयान अगली आयत में है।

(४४) यानी वैतुल मर्यादा की मेहराब में दरवाज़े बन्द करके दुआ की।

(४५) हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम बहुत बड़े विद्वान थे। अल्लाह के हुज़ूर कुरआनियों आप ही पेश करने थे और मस्जिद शरीफ में आपकी आज्ञा के बिना कोई दाखिल नहीं हो सकता था। जिस वक़्त मेहराब में आप नमाज़ पढ़ रहे थे और बाहर आदमी दाखिले की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे, दरवाज़ा बन्द था, अचानक आपने एक सफ़ेदपोश जवान देखा। वो हज़रत ज़िब्रील थे। उन्होंने आपको बेटे की खुशख़बरी सुनाई जो “अन्नल्लाहा युवशिशरूका” (वेशक अल्लाह आपको खुशख़बरी देता है) में बयान फ़रमाई गई।

(४६) “कलिमा” से मुग़द मरयम के बेटे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हैं, कि उन्हें अल्लाह तआला ने “कुन” (हो जा) फ़रमाकर बिना बाप के पैदा किया और उपर सबसे पहले ईमान लाने और उनकी तस्दीक करने वाले हज़रत यहया हैं जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से उम्र में छ माह बड़े थे। ये दोनों ख़ाला ज़ाद भाई थे। हज़रत यहया की बालिदा अपनी बहन मरयम से मिलीं तो उन्हें गर्भवती होने की सूचना दी। हज़रत मरयम ने फ़रमाया मैं भी गर्भ से हूँ। हज़रत यहया की बालिदा ने कहा ऐ मरयम मुझे मालूम होता है कि मेरे पेट का बच्चा तुम्हारे पेट के बच्चे को सज़्दा करता है।

(४७) सैय्यिद उस रईस को कहते हैं जो बुजुर्गी वाला हो और लोग उसकी ख़िदमत और इताअत करें हज़रत यहया ईमान वालों के सरदार और इल्म, सहिष्णुता और दीन में उनके रईस अर्थात् सरदार थे।

(४८) हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने आश्चर्य के साथ अर्ज़ किया।

(४९) और उम्र एक सौ बीस साल की हो चुकी।

(५०) उनकी उम्र अठानवे साल की। सवाल का मक़सद यह है कि बेटा किस तरह अता होगा, क्या मेरी ज़वानी लौटाई जाएगी और बीबी का बांझपन दूर किया जाएगा, या हम दोनों अपने हाल पर रहेंगे।

(५१) बुढ़ापे में बेटा देना उसकी कुदरत से कुछ दूर नहीं।

(५२) जिससे मुझे अपनी बीबी के गर्भ का समय मालूम हो ताकि मैं और ज़्यादा शुक्र और इबादत में लग जाऊँ।

(५३) चुनौचें ऐसा ही हुआ कि आदमियों के साथ बात चीत करने से ज़वाने मुबारक तीन गंज़ तक बन्द रही, अल्लाह का ज़िक्र तथा तस्बीह आप कर सकते थे। यह एक बड़ा चमत्कार है कि जिस आदमी के शरीर के सारे अंग ग़दी और सालिम हों और ज़वान से तस्बीह और ज़िक्र अदा होती रहे मगर लोगों के साथ बात चीत न कर सके। और यह निशानी इसलिये मुक़र्र की गई थी कि इस अज़ीम इनाम का शुक्र अदा करने के अलावा ज़वान और किसी बात में मशगूल न हो।

जब किसी काम का हुक्म फ़रमाए तो उससे यही कहता है कि हो जा वह फ़ौरन हो जाता है (४७) और अल्लाह सिखाएगा किताब और हिकमत (बोध) और तौरात और इंजील (४८) और रसूल होगा बनी इस्राईल की तरफ़ यह फ़रमाता हुआ कि मैं तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूँ (४९) तुम्हारे रब की तरफ़ से कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्द की मूरत बनाता हूँ फिर उसमें फूंक मारता हूँ तो वह फ़ौरन परिन्द हो जाती है अल्लाह के हुक्म से (५०) और मैं शिफ़ा देता हूँ मादरज़ाद (पैदायशी) अंधे और सफ़ेद दाग वाले को (५१) और मैं मुँदें जिलाता हूँ अल्लाह के हुक्म से (५२) और तुम्हें वताता हूँ जो तुम खाते और जो अपने घरों में जमा कर रखते हो (५३) वेशक उन बातों में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो (४९) और पुष्टि करता आया हूँ अपने से पहली किताब तौरात की और इसलिये कि हलाल करूँ तुम्हारे लिये कुछ वो चीज़ें जो तुमपर हराम थीं (५४) और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लाया हूँ तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो (५०) वेशक मेरा तुम्हारा सबका रब अल्लाह है तो उसी को पूजो (५१) यह है सीधा रास्ता (५२) फिर जब

أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۖ وَيُعَلِّمُهُ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۚ وَرَسُولًا
إِلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُمْ بِآيَةٍ
مِّن رَّبِّكُمْ ۖ أَنِّي أَخْلَقُ لَكُمْ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ
الطَّيْرِ فَأَنْفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَ
أَبْرِئُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ ۖ وَأُخْرِجُ الْبُكْمَ بِإِذْنِ اللَّهِ
وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدْخُلُونَ فِي
بُيُوتِكُمْ ۖ إِن فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُمْ
مُؤْمِنِينَ ۖ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ
التَّوْرَةِ وَلِأُخْلِلَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ
وَجِئْتُكُمْ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَ
أَطِيعُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ ۖ فَاعْبُدُوهُ ۚ
هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۖ فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ

مَذَلَّ

सूरए आले इमरान - पाँचवां रूकू

- (१) कि औरत होने के बावजूद वैतुल मक़दिस की ज़िदमत के लिये भेंट में कुबूल फ़रमाया और यह बात उनके सिवा किसी औरत को न मिली। इसी तरह उनके लिये जन्नती ख़ाना भेजना, हज़रत ज़करिया को उनका पालक बनाना, यह हज़रत मरयम की महानता का प्रमाण है।
- (२) मर्द की पहुँच से और गुनाहों से और कुछ विद्वानों के अनुसार ज़नाना दोषों और मजबूरियों से।
- (३) कि बरीर बाप के बेटा दिया और फ़रिश्तों का कलाम सुनाया।
- (४) जब फ़रिश्तों ने यह कहा, हज़रत मरयम ने इतना लम्बा क़याम किया यानी इतनी देर तक नमाज़ में खड़ी रहीं कि आपके क़दमे मुबारक पर सूजन आ गई और पाँव फट कर खून जारी हो गया।
- (५) इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ग़ैब के इल्म अता फ़रमाए।
- (६) इसके बावजूद आपका इन घटनाओं की सूचना देना दोस प्रमाण है इसका कि आपको अज्ञात का ज्ञान यानी ग़ैब की जानकारी अता फ़रमाई गई।
- (७) यानी एक बेटे की।
- (८) बड़ी शान और मान और ऊँचे दर्जे वाला।
- (९) अल्लाह की बारगाह में।
- (१०) बात करने की उम्र से पहले।
- (११) आसमान से उतरने के बाद। इस आयत से साबित होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से ज़मीन की तरफ़ उतरेंगे जैसा कि हदीसों में आया है और दज़्जाल को क़त्ल करेंगे।
- (१२) और कायदा यह है कि बच्चा औरत और मर्द के मिलाप से होता है तो मुझे बच्चा किस तरह अता होगा। निकाह से या यूँही बिना मर्द के।
- (१३) जो मेरे नबुव्वत के दावे की सच्चाई का प्रमाण है।
- (१४) जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने नबुव्वत का दावा किया और चमत्कार दिखाए तो लोगों ने दरखास्त की कि आप एक चिमगादड़ पैदा करें। आपने मिट्टी से चिमगादड़ की सूरत बनाई फिर उसमें फूंक मारी तो वह उड़ने लगी। चिमगादड़ की विशेषता यह है कि वह उड़ने वाले जानवरों में बहुत सम्पूर्ण और अजीबतर जानवर है, और अल्लाह की कुदरत पर दलील बनने में सबसे बढ़कर, क्योंकि वह बिना पंखों के उड़ती है, और दांत रखती है, और हंसती है, और उसकी मादा के छाती होती है, और बच्चा जनती है,

ईसा ने उनसे कुफ़्र पाया^(२०) बोला कौन मेरे मददगार होते हैं अल्लाह की तरफ़. हवारियों(अनुयाइयों) ने कहा^(२१) हम खुदा के दीन के मददगार हैं हम अल्लाह पर ईमान लाए और आप गवाह होजाएं कि हम मुसलमान हैं^(२२) (५२) ऐ रब हमारे हम उसपर ईमान लाए जो तूने उतारा और रसूल के तावे(अधीन) हुए तू हमें हक़ पर गवाही देने वालों में लिख ले^(५३) और काफ़िरों ने मक्र(कपट) किया^(५४) और अल्लाह ने उनके हलाक की छुपवा तदवीर(युक्ति) फ़रमाई और अल्लाह सबसे बेहतर छुपी तदवीर वाला है^(५५) (५४)

छटा रूकू

याद करो जब अल्लाह ने फ़रमाया ऐ ईसा मैं तुझे पूरी उम्र पहुँचाऊंगा^(१) और तुझे अपनी तरफ़ उठा लूंगा^(२) और तुझे काफ़िरों से पाक करदूंगा और तेरे मानने वालों को^(३) क़यामत तक तेरा इन्कार करने वालों पर^(४) ग़लबा(आधिपत्य) दूंगा फिर तुम सब मेरी तरफ़ पलट कर आओगे तो मैं तुम में फ़ैसला फ़रमादूंगा जिस बात में झगड़ते हो^(५) तो वो जो काफ़िर हुए मैं उन्हें दुनिया व आख़िरत में सज़ा अज़ाब करूंगा और उनका कोई मददगार न होगा^(६) और वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अल्लाह उनका नेग उन्हें भरपूर देगा और ज़ालिम अल्लाह को नहीं भाते^(७) (५६)

الْكَفَرُ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ
نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ آمَنَّا بِاللَّهِ وَأَشْهَدُ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ
رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا
مَعَ الشَّاهِدِينَ وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ
الْمُكْرِينَ إِذْ قَالَ اللَّهُ لِيَعْقِلِي إِنْ هِيَ مُتَوَقِّعُكَ
وَرَأَيْتُكَ إِنْ هِيَ مُطَهَّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَحْكُمُ
بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ فَاَمَّا
الَّذِينَ كَفَرُوا فَاعَذِّبْهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ وَآمَّا
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أَجُورَهُمْ
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ذَلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ

जब कि उड़ने वाले जानवरों में य बात नहीं है.

(१५) जिसका कोई आम हो गया हो और डॉक्टर उसका इलाज करने से आजिज़ या अयोग्य हो. चूंकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में तिव यानी चिकित्सा शास्त्र चरम सीमा पर था और इसके जानने वाले इलाज में चमत्कार रखते थे. इस लिये उनको उसी क्रियम के चमत्कार दिखाए गए ताकि मालूम हो कि तिव के तरीक़े से जिसका इलाज सम्भव नहीं है उसको तन्दुरुस्त कर देना यकीनन चमत्कार और नबी के सच्चे होने की दलील है. वही का क़ौल है कि अक्सर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास एक दिन में पचास पचास हज़ार बीमारों का जमवट हो जाता था. उनमें जो चल सकता था वह ख़िदमत में हाज़िर होता था और जिसे चलने की ताक़त न होती थी उसके पास खुद हज़रत तशरीफ़ ले जाते और दुआ फ़रमाकर उसको तन्दुरुस्त करते और अपनी रिसालत पर ईमान लाने की शर्त कर लेते.

(१६) हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने चार व्यक्तियों को ज़िन्दा किया, एक आज़िर जिसका आपके साथ महबूत थी. जब उसकी हालत वाज़ुक हुई तो उसकी बहन ने आपको सूचना दी मगर वह आपसे तीन दिन की दूरी पर था. जब आप तीन रोज़ में वहाँ पहुँचे तो मालूम हुआ कि उसके इन्तिकाल को तीन दिन हो चुके हैं. आपने उसकी बहन से फ़रमाया हमें उसकी क़ब्र पर ले चल. वह ले गई. आपने अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाई. अल्लाह की कुदरत से आज़िर ज़िन्दा होकर क़ब्र से बाहर आया और लम्बे समय तक ज़िन्दा रहा और उसके औलाद हुई. एक बुढ़िया का लड़का, जिसका जनाज़ा हज़रत के सामने जा रहा था, आपने उसके लिये दुआ फ़रमाई, वह ज़िन्दा होकर जनाज़ा लेजाने वालों के क़त्थों से उतर पड़ा. कपड़े पहने, घर आया, ज़िन्दा रहा, औलाद हुई. एक आशिर की लड़की शाम को मरी. अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ से उसे ज़िन्दा किया. एक शाम बिन नूह जिन की वफ़ात को हज़ारों बरस गुज़र चुके थे. लोगों ने ख़्वाहिश की कि आप उनको ज़िन्दा करें. आप उनके बताए से क़ब्र पर पहुँचे और अल्लाह तआला से दुआ की. शाम ने सुना कोई कहने वाला कहता है "अज़िब रुहुल्लाह" यह सुनते ही वो डर के मारे उठ खड़े हुए और उन्हें गुमाव हुआ कि क़यामत कायम हो गई. इस हील से उनका आधा सर सफ़ेद हो गया, फिर वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए और उन्होंने हज़रत से दाम्मरास्त की कि दोबारा उन्हें सकरात यानी जान निकलने की तकलीफ़ न हो, उसके बिना वापस किया जाए. चुत्तांच उसी वक्त उनका इन्तिकाल हो गया. और "विइज़िल्लाह" (अल्लाह के हुक्म से) फ़रमाने में ईसाईयों का रद्द है जो हज़रत मसीह के खुदा होने के कायल या मानने वाले थे.

(१७) जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने बीमारों को अच्छा किया और मुर्दों को ज़िन्दा किया तो कुछ लोगों ने कहा कि यह तो जादू है, कोई और चमत्कार दिखाइये. तो आपने फ़रमाया कि जो तुम खाते हो और जो जमा कर रखते हो, मैं उसकी तुम्हें ख़बर देता

यह हम तुम पर पढ़ते हैं कुछ आयतें और हिकमत(बोध) वाली नसीहत(५८) ईसा की कहावत अल्लाह के नजदीक आदम की तरह है(५) उसे मनी से बनाया फिर फरमाया होजा वह फौरन हो जाता है(५९) ऐ सुनने वाले यह तेरे रब की तरफ से हक है तू शक वालों में न होना(६०) फिर ऐ मेहबूब, जो तुम से ईसा के बारे में हुज्जत(बहस) करें बाद इसके कि तुम्हें इल्म आचुका तो उन से फरमादो आओ हम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औरतों और तुम्हारी औरतों और अपनी जानें और तुम्हारी जानें फिर मुवाहिदा करें तो झूटों पर अल्लाह की लानत डालें(६१) यही वेशक सच्चा बयान है(६) और अल्लाह के सिवा कोई मअवूद(पूजनीय) नहीं(८) और वेशक अल्लाह ही गालिव है हिकमत वाला(६२) फिर अगर वो मुंह फेरें तो अल्लाह फ़सादियों को जानता है(६३)

सातवाँ सूक़

तूम फ़रमाओ, ऐ किताबियो ऐसे कलिमे की तरफ़ आओ जो हम में तुम में एकसाँ(समान) है(१) यह कि इबादत न करें मगर खुदा की और उसका शरीक किसी को न करें (२) और हम में कोई एक दूसरे को रब न बना ले अल्लाह के सिवा(३)

مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ۝ إِنْ مَثَلٌ عِيسَىٰ
عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ
لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنُ مِنَ
الْمُتَرَدِّينَ ۝ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَ
أَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ
ثُمَّ تَبْتَهِلْ فَنَجْعَلُ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ۝
إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا
اللَّهُ ۝ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ فَإِنْ
تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِم بِالْفُتُورِ ۝ قُلْ يَا أَهْلَ
الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ
أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ
بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا

مَثَلٌ

हूँ. इसी से साबित हुआ कि ग़ैब के उत्तम नबियों के चमत्कार हैं, और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दस्ते मुबारक पर यह चमत्कार भी ज़ाहिर हुआ. आप आदमी को बता देते थे जो वह कल आचुका और आज खाएगा और जो अगले वक़्त के लिये तैयार कर रखा है. आप के पास बच्चे बहुत से जमा हो जाते थे. आप उन्हें बताते थे कि तुम्हारे घर अमुक चीज़ तैयार हुई है, तुम्हारे घर वालों ने अमुक अमुक चीज़ ख़ाई है, अमुक चीज़ तुम्हारे लिये उठा रखी है. बच्चे घर जाते, रोते, घर वालों से वह चीज़ मांगते, घर वाले वह चीज़ देते और उनसे कहते कि तुम्हें किसने बताया. बच्चे कहते हज़रत ईसा ने. तो लोगों ने अपने बच्चों को आपके पास आने से रोका और कहा वो जादूगर हैं, उनके पास न बैठो. और एक मकान में सब बच्चों को जमा कर दिया. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बच्चों को तलाश करते तशरीफ़ लाए तो लोगों ने कहा, यहाँ नहीं हैं. आपने फ़रमाया फिर इस मकान में कौन है. उन्होंने कहा, सुअर हैं. फ़रमाया, ऐसा ही होगा. अब जो दर्वाज़ा खोलते हैं तो सब सुअर ही सुअर थे. मतलब यह कि ग़ैब की ख़बरें देना नबियों का चमत्कार है और नबियों के माध्यम के बिना कोई आदमी ग़ैब की बातों पर सूचित नहीं हो सकता.

(१८) जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत में हराम थीं जैसे कि ऊँट का गोश्त, मछली, चिड़ियाँ.

(१९) यह अपने बन्दे होने का इज़्ज़ार और अपने खुदा होने का इन्कार है. इसमें ईसाइयों का रव है.

(२०) यानी मूसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि यहूदी अपने कुफ़र पर कायम है और आपके क़त्ल का इरादा रखते हैं और इतनी खुली निशानियों और चमत्कारों से प्रभावित नहीं होते और इसका कारण यह था कि उन्होंने पहचान लिया था कि आप ही वह मसीह हैं जिनकी बशारत तौरात में दी गई है और आप उनके दीन को स्थगित करेंगे तो जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दावत का इज़्ज़ार फ़रमाया तो यह उनको बड़ा नागवार गुज़रा और वो आपको तकलीफ़ पहुंचाने और मार डालने पर तुल गए और आपके साथ उन्होंने कुफ़र किया.

(२१) हवारी वो महबूब और वफ़ादारी वाले लोग हैं जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दीन के मददगार थे और आप पर पहले ईमान लाए. ये बारह लोग थे.

(२२) इस आयत से ईमान और इस्लाम के एक होने की दलील दी जाती है. और यह भी मालूम होता है कि पहले नबियों का दीन इस्लाम था न कि यहूदियत या ईसाइयत.

(२३) यानी बनी इस्राईल के काफ़िरों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ कपट किया कि थोखे के साथ आपके क़त्ल का इन्तिज़ाम किया और अपने एक आदमी को इस काम पर लगा दिया.

(२४) अल्लाह तआला ने उनके कपट का यह बदला दिया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर उठा लिया और उस आदमी को हज़रत की शक़ल दे दी जो उनके क़त्ल के लिये तैयार हुआ था. चुनांचे यहूदियों ने उसका इसी शयह पर क़त्ल कर दिया. 'मक्र' शब्द अरब में 'सत्र' यानी छुपाने के मानी में है. इसीलिये छुपाने तदवीर को भी 'मक्र' कहते हैं. और वह तदवीर अगर अच्छे

मक़सद के लिये हो तो अच्छी और किसी बुरे काम के लिये हो तो नापसन्दीदा होती है। मगर उर्दू ज़बान में यह शब्द धोखे के मानी में इस्तेमाल होता है। इसलिये अल्लाह के बारे में हरगिज़ न कहा जाएगा और अब चूंकि अरबी में भी यह शब्द बुरे मतलब में इस्तेमाल होने लगा है इसलिये अरबी में भी अल्लाह की शान में इसका इस्तेमाल जायज़ नहीं। आयत में जहाँ कहाँ आया वह छुपवाँ तदवीर के मानी में है।

सूरए आले इमरान - छटा रूकू

- (१) यानी तुम्हें कुफ़्रफ़ार क़त्ल न कर सकेंगे. (मदारिक वगैरह)
- (२) आसमान पर बुजुर्गी और क़यामत का मुहल और फ़रिश्तों के रहने की जगह में बिना मौत के. हदीस शरीफ़ है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, हज़रत ईसा मेरी उम्मत पर ख़लीफ़ा होकर उतरेंगे, सलीब तोड़ेंगे, सुअरों को क़त्ल करेंगे, चालीस साल रहेंगे, निकाह फ़रमायेंगे, औलाद होगी, फिर आप का विसाल यानी देहान्त होगा. वह उम्मत कैसे हलाक हो जिसके अन्त में मैं हूँ और आग़िर ईसा, और बीच में मेरे घर वालों में से. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दमिश्क में पूर्वी मिनारे पर उतरेंगे. यह भी आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक हुज़रे में दफ़न होंगे.
- (३) यानी मुसलमानों को, जो आपकी नबुच्चत की तस्दीक करने वाले हैं.
- (४) जो यहूदी हैं.
- (५) नजरान के ईसाइयों का एक प्रतिनिधि मण्डल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में आया और वो लोग हुज़ूर से कहने लगे आप गुमान करते हैं कि ईसा अल्लाह के बन्दे हैं. फ़रमाया हाँ, उसके बन्दे और उसके रसूल हैं और उसके क़लिमें, जो कुंवारी बतूल अज़रा की तरफ़ भेजे गए. ईसाई यह सुनकर बहुत गुस्से में आए और कहने लगे, ऐ मुहम्मद, क्या तुमने कभी वे बाप का इन्सान देखा है. इससे उनका मतलब यह था कि वह ख़ुदा के बेटे हैं (अल्लाह की पनाह). इसपर यह आयत उतरी और यह बताया गया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सिर्फ़ बाँर बाप ही के हुए और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तो माँ और बाप दोनों के बग़ैर मिट्टी से पैदा किये गए तो जब उन्हें अल्लाह का पैदा किया हुआ मानते हो तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का पैदा किया हुआ और उसका बन्दा मानने में क्या हिचकिचाहट और आश्चर्य है.
- (६) जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नजरान के ईसाइयों को यह आयत पढ़कर सुनाई और मुवाहिले की दावत दी तो कहने लगे कि हम ग़ौर और सलाह कर लें, क़त्ल आपको ज़वाब देंगे. जब वो जमा हुए तो उन्होंने अपने सबसे बड़े आलिम और सलाहकार व्यक्ति आकिब से कहा ऐ अब्दुल मसीह, आपकी क्या राय है. उसने कहा तुम पहचान चुके हो कि मुहम्मद अल्लाह के भेजे हुए रसूल ज़रूर हैं. अगर तुमने उनसे मुवाहिला किया तो सब हलाक हो जाओगे. अब अगर ईसाइयत पर क़ायम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ो और घर लौट चलो. यह सलाह होने के बाद वो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने देखा कि हुज़ूर की गोद में तो इमाम हुसैन हैं और दस्ते मुबारक में हसन का हाथ और फ़ातिमा और अली हुज़ूर के पीछे हैं (रदियल्लाहो अन्हुम) और हुज़ूर उन सब से फ़रमा रहे हैं कि जब मैं दुआ करूँ तो तुम सब आमीन कहना. नजरान के सबसे बड़े आलिम (पादरी) ने जब इन हज़रत को देखा तो कहने लगा कि ऐ ईसाइयो, मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूँ कि अगर ये लोग अल्लाह से पहाड़ को हटाने की दुआ करें तो अल्लाह पहाड़ को हटा दे. इनसे मुवाहिला न करना, हलाक हो जाओगे और क़यामत तक धरती पर कोई ईसाई बाक़ी न रहेगा. यह सुनकर ईसाइयों ने हुज़ूर की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मुवाहिले की तो हमारी राय नहीं है. अन्त में उन्होंने जिज़िया देना मख़ूर किया मगर मुवाहिले के लिये तैयार न हुए. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, उसकी क़सम जिसके दस्त कुदरत में मेरी जान है, नजरान वालों पर अज़ाब करीब ही आचुका था, अगर वो मुवाहिला करते तो बन्दरों और सुअरों की सूरत में बिगाड़ दिये जाते और जंगल आग से भड़क उटना और नजरान और वहाँ की निवासी चिड़ियाँ तक नाबूद हो जाती और एक साल के अर्से में सारे ईसाई हलाक हो जाते.
- (७) कि हज़रत ईसा अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और उनका वह हाल है जो ऊपर बयान हो चुका.
- (८) इसमें ईसाइयों का भी रद्द है और सारे मुश्रिकों का भी.

सूरए आले इमरान - सातवाँ रूकू

- (१) और क़ुरआन, तौरात और इन्जील इसमें मुश्रतलिफ़ नहीं हैं.
- (२) न हज़रत ईसा को, न हज़रत उज़ैर को, न किसी और को.
- (३) जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों ने पादरियों और रब्बियों को बनाया कि उन्हें संज्दा करते और उनकी पूजा करते. (जुमल)

फिर अगर वो न मानें तो कह दो तुम गवाह रहो कि हम मुसलमान हैं (६४) ऐ किताब वालो इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो . तौरात और इंजील तो न उतरी मगर उनके बाद तो क्या तुम्हें अकल नहीं (६५) सुनते हो यह जो तुम हो (६६) उस में झगड़े जिसकी तुम्हें जानकारी थी (६७) तो उस में (६८) क्यों झगड़ते हो जिसकी तुम्हें जानकारी ही नहीं और अल्लाह जानेंता है और तुम नहीं जानते (६९) इब्राहीम यहूदी न थे और न ईसाई बल्कि हर बातिल (असत्य) से अलग मुसलमान थे और मुश्रिकों से न थे (७०) वेशक सब लोगों से इब्राहीम के ज्यादा हकदार वो थे जो उनके मानने वाले हुए (७१) और यह नबी (७२) और ईमान वाले (७३) और ईमान वालों का वाली (सरपरस्त) अल्लाह है (७४) किताबियों का एक दल दिल से चाहता है कि किसी तरह तुम्हें गुमराह कर दें और वो अपने ही आप को गुमराह करते हैं और उन्हें शऊर (आभास) नहीं (७५) ऐ किताबियो, अल्लाह को आयतों से क्यों कुफ़्र करते हो हालांकि तुम खुद गवाह हो (७६) ऐ किताबियो हक में

فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝ يَٰ أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَحْجُونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرَةُ وَلَا الْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ هَٰ أَأَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ جَاءْتُمْ فِي مَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِي مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ إِنَّ أَوَّلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لِلزَّيْنِ أَتَّبَعُوهُ وَهَٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَدَّتْ طَآئِفَةٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّوكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ يَٰ أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ۝ يَٰ أَهْلَ

مَنْ

(५) नजरान के ईसाइयों और यहूदियों के विद्वानों में बहस हुई. यहूदियों का दावा था कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम यहूदी थे और ईसाइयों का दावा था कि आप ईसाई थे. यह झगड़ा बहुत बढ़ा तो दोनों पक्षों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हक़म यानी मध्यस्त बनाया और आप से फैसला चाहा. इस पर यह आयत उतरी और तौरात के विद्वानों और इंजील के जानकारों पर उनकी अज्ञानता ज़ाहिर कर दी गई कि उनमें से हर एक का दावा उनकी जिहालत की दलील है. यहूदियत व ईसाइयत तौरात और इंजील उतरने के बाद पैदा हुई और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़माना, जिन पर तौरात उतरी, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से सदियों बाद का है और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, जिनपर इंजील उतरी, उनका ज़माना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद दो हज़ार बरस के करीब हुआ है और तौरात व इंजील किसी में आपको यहूदी या ईसाई नहीं कहा गया है, इसके बावजूद आपकी निखत यह दावा जिहालत और मूर्खता की चरम सीमा है.

(६) ऐ किताब वालो, तुम:

(६) और तुम्हारी किताबों में इसकी ख़बर दी गई थी यानी आखिरी ज़माने के नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़ाहिर होने और आपकी तारीफ़ और विशेषताओं की. जब ये सब कुछ पहचान कर भी तुम हज़ूर पर ईमान न लाए और तुमने इसमें झगड़ा किया.

(७) यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को यहूदी या ईसाई कहते हैं.

(८) और वास्तविकता यह है कि.

(९) तो न किसी यहूदी या ईसाई का अपने आपको दीन में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरफ़ मन्बूव करना या जोड़ना सही हो सकता है, न किसी मुश्रिक का. कुछ मुफ़ससिरो ने फ़रमाया कि इसमें यहूदियों और ईसाइयों पर ऐतिराज़ है कि वो मुश्रिक हैं.

(१०) और उनकी नबुवत के दौर में उनपर ईमान लाए और उनकी शरीअत का पालन किया.

(११) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(१२) और आपकी उम्मत के लोग.

(१३) यह आयत हज़रत मआज़ बिन जबल और हुज़ैफ़ा बिन यमान और अस्मार बिन यासिर के बारे में उतरी जिनको यहूदी अपने दीन में दाख़िल करने की कोशिश करते और यहूदियत की दावत देते थे और इसमें बताया गया कि यह उनकी ख़ाली हविस है, वो उन्हें गुमराह न कर सकेंगे.

(१४) और तुम्हारी किताबों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और विशेषताएं मौजूद हैं और तुम जानते हो कि वो सच्चे नबी हैं और उनका दीन सच्चा दीन है.

बातिल क्यों मिलाने हो^(१५) और हक़ क्यों छुपाते हो हालांकि तुम्हें खबर है^(१६)।

आठवाँ सूक़

और किताबियों का एक दल बोला^(१) वह जो ईमान वालों पर उतरा^(२) सुबह को उसपर ईमान लाओ और शाम को इन्कारी हो जाओ शायद वो फिर जाएं^(३) ^(१६२) और यकीन न लाओ मगर उसका जो तुम्हारे दीन का मानने वाला हो तुम फ़रमादो कि अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है^(४) (यकीन काहे का न लाओ) उसका कि किसी को मिले^(५) जैसा तुम्हें मिला या कोई तुमपर हुंजत (तर्क) ला सके तुम्हारे रवके पास^(६) तुम फ़रमादो कि फ़ज़ल (क़ृपा) तो अल्लाह ही के हाथ है जिसे चाहे दे और अल्लाह वुसअत (विस्तार) वाला इल्म वाला है^(७) अपनी रहमत से^(८) खास करता है जिसे चाहे^(९) और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है^(१०) और किताबियों में कोई वह है कि अगर तू उसके पास एक ढेर अमानत रखे तो वह तुझे अदा कर देगा^(११) और इनमें कोई वह है कि अगर एक अशरफ़ी उसके पास अमानत रखे तो वह तुझे फेर कर न देगा मगर जबतक तू उसके सर पर खड़ा हो^(१२) यह इसलिये कि वो कहते हैं कि अनपढ़ों^(१३) के मामले में हम पर कोई मुवाख़िज़ा (पकड़) नहीं और अल्लाह पर जानबूझ कर झूठ

الْكِتَابِ لِمَ تَلْسُونَهُ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ
وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ وَقَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ
الْكِتَابِ آمِنُوا بِالَّذِي أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجِئَهُ
النَّهَارُ وَالْأَمْسَ وَالْآخِرَةَ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۖ وَلَا تَوْمِنُوا
إِلَّا لِمَن يَبْعَ دِينَكُمْ ۚ قُلْ إِنِ الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ
أَنْ يُؤْتِيَهُ أَحَدٌ مِّثْلُ مَا أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَاجُّوكُمْ
عِندَ رَبِّكُمْ ۚ قُلْ إِنِ الْفَضْلُ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن
يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۖ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن
يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
مَنْ إِنْ تَأَمَّنْهُ يَقْتَارَ يُؤْذِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ
إِنْ تَأَمَّنْهُ يَبْتَرِ ۚ لَا يُؤْذِيهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ
عَلَيْهِ قَائِمًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي
الْأُمَمِينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ

مُؤْمِنُونَ

(१५) अपनी किताबों में फेर बदल करके.

सूरए आले इमरान - आठवाँ सूक़

- (१) और उन्होंने आपसी सलाह करके यह कपट सोचा.
- (२) यानी कुरआन शरीफ़.
- (३) यहूदी इस्लाम के विरोध में रात दिन नए नए छल कपट किया करते थे. ख़ैबर के यहूदियों के विद्वानों में से बारह ने आपस में सलाह करके एक यह कपट सोचा कि उनकी एक जमाअत सुबह को इस्लाम लाए और शाम को इस्लाम से फिर जाए और लोगों से कहे कि हमने अपनी किताबों में जो देखा तो साबित हुआ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) वो वादा किये गए नबी नहीं हैं जिनकी हमारी किताबों में ख़बर है, ताकि इस हरकत से मुसलमानों को दीन में संदेह पैदा हो. लेकिन अल्लाह तआला ने यह आयत उतारकर उनका यह राज़ खोल दिया और उनकी यह चाल न चल सकी और मुसलमान पहले से ख़बरदार हो गए.
- (४) और जो इसके सिवा है वह बातिल और गुमराह है.
- (५) दीन व हिदायत और किताब व हिकमत और बुजुर्गी.
- (६) क़यामत का दिन.
- (७) यानी नबुव्वत और रिसालत से.
- (८) इससे यह साबित होता है कि नबुव्वत जिस किसी को मिलती है, अल्लाह के फ़ज़ल से मिलती है. इसमें हक़ या अधिकार की बात नहीं होती. (सूत्रजिन)
- (९) यह आयत किताब वालों के बार में उतरी और इसमें ज़ाहिर फ़रमाया गया कि उनमें दो क्रिस्म के लोग हैं, अमानत वाले और ख़यानत वाले. कुछ तो ऐसे हैं कि बहुत सा माल उनके पास अमानत या सुरक्षित रखा जाए तो ज़रा सी कमी के बिना वक़्त पर अदा कर दें, जैसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम जिनके पास एक कुरेशी ने बारह सौ औकिया (एक औकिया = एक आऊन्स) सोना अमानत रखा था. आपने उसको वैसा ही अदा किया. और कुछ किताब वाले इतने बेईमान हैं कि थोड़े पर भी उनकी नियत बिगड़ जाती है, जैसे कि फ़र्रस बिन आज़ूरा जिसके पास किसी ने एक अशरफ़ी अमानत रखी थी, माँगते वक़्त उससे इनकारी हो गया.
- (१०) और जैसे ही देने वाला उसके पास से हटे, वह अमानत का माल डकार जाता है.

बांधते हैं^(१२) (७५) हाँ क्यों नहीं जिसने अपना अहद पूरा किया और परहेज़गारी की और बेशक परहेज़गार अल्लाह को खुश आते हैं^(१३) (७६) वो जो अल्लाह के अहद और अपनी कसमों के बदले ज़लील (तुच्छ) दाम लेते हैं^(१४) आखिरत में उनका कुछ हिस्सा नहीं और अल्लाह न उनसे बात करे न उनकी तरफ़ नज़र फ़रमाए क़यामत के दिन और न उन्हें पाक करे और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है^(१५) (७७) और इनमें कुछ वो हैं जो ज़वान फेरकर किताब में मेल करते हैं कि तुम समझो यह भी किताब में है और वह किताब में नहीं और वो कहते हैं यह अल्लाह के पास से है और वह अल्लाह के पास से नहीं और अल्लाह पर जान बूझकर झूठ बांधते हैं^(१६) (७८) किसी आदमी का यह हक़ नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हुक्म व पैग़म्बरी दे^(१७) फिर वह उन लोगों से कहे कि अल्लाह को छोड़ कर मेरे वन्दे हो जाओ^(१८) हाँ वह कहेगा कि अल्लाह वाले^(१९) हो जाओ इस वजह से कि तुम किताब सिखाते हो और इससे कि तुम दर्स (पठन) करते हो^(२०) (७९) और न तुम्हें यह हुक्म होगा^(२१) कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को खुदा ठहरा

يَعْلَمُونَ ۝ بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ ۖ إِنَّ اللَّهَ
يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ
وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ وَلَا يَكْتُمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ
الْحِسَابِ ۖ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَإِنَّ
مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلُونِ السِّنِّتَهُمْ بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ
مِنْ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنْ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ
عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ
الْكُذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ
اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنَّبُوءَةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ
كُونُوا عِبَادًا لِي مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ الْكِتَابَ وَمِمَّا كُنْتُمْ تُدْرُسُونَ ۝
وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُتَّخَذَ الْوَلَدُ الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا

مَرْثَا

(११) यानी जो किताब वाले नहीं है, उनका।

(१२) कि उसने अपनी किताबों में दूसरे दीन वालों के माल हज़म कर जाने का हुक्म दिया है, इसके बावजूद कि वो ख़ूब जानते हैं कि उनकी किताबों में ऐसा कोई हुक्म नहीं है।

(१३) यह आयत यहूदियों के पादरी और उनके रईस अबू राफ़े व क़ानाना दिन अबिल हुक्क़ और क़अब बिन अशरफ़ और हेर्यी बिन अम्रतव के बारे में उतरी जिन्होंने अल्लाह तआला का वह एहद छुपाया था जो सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने के बारे में उनसे तौरात में लिया गया। उन्होंने उसको बदल दिया और उसकी जगह अपने हाथों से कुछ का कुछ लिख दिया और झूठी क़सम खाई कि यह अल्लाह की तरफ़ से है और ये सब कुछ उन्होंने अपनी जमाअत के ज़हि़लों में रिश्वत और पैसा हासिल करने के लिये किया।

(१४) मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, तीन लॉग ऐसे हैं कि क़यामत के दिन अल्लाह न उनसे क़लाम फ़रमाए और न उनकी तरफ़ रहमत की नज़र करे, न उन्हें गुनाहों से पाक करे, और उन्हें दर्दनाक अज़ाब है फिर सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इस आयत का तीन बार पढ़ा। हज़रत अबूज़र रावी ने कहा कि वो लोग टोटे और नुक़सान में रहे। या रसूलल्लाह, वह कौन लॉग हैं। हज़ूर ने फ़रमाया इज़ार को टख़्तों से नीचे लटकाने वाला और एहसान मताने वाला और अपने तिजारीत माल का झूठी क़सम से रिवाज देने वाला। हज़रत अबू उमामा की हदीस में है, सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, जो किसी मुसलमान का हक़ मारने के लिये क़सम खाए, अल्लाह उसपर ज़न्नत हराम करता है और दोज़श्न लाज़िम करता है। सहाबा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, अगरचे थोड़ी ही चीज़ हो। फ़रमाया अगरचे बदूल की शाख़ ही क्यों न हो।

(१५) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत यहूदियों और ईसाइयों दोनों के बारे में उतरी कि उन्होंने तौरात और इंजिल में फेर बदल किया और अल्लाह की किताब में अपनी तरफ़ से जो चाह़ मिलाया।

(१६) और इल्म और अमल में क़माल अता फ़रमाए और गुनाहों से मासूम करे।

(१७) यह तबियों से असंभव है और उनकी तरफ़ इसकी निश्चय बोहतान है। नज़रान के ईसाइयों ने कहा कि हमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने हुक्म दिया है कि हम उन्हें ख़ मातें। इस आयत में अल्लाह तआला ने उनके इस क़ौल को झूटलाया और बताया कि तबियों की शान से ऐसा कहना संभव ही नहीं है। इस आयत के उतरने की परिस्थितियों में दूसरा क़ौल यह है कि अबू राफ़े यहूदी और सैयद नसरानी ने सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा “आ मुहम्मद, आप चाहते हैं कि हम आपकी इबादत करें और आपको ख़ मातें”। हज़ूर ने फ़रमाया, अल्लाह की पनाह, कि मैं रसूलल्लाह की इबादत का हुक्म करूँ, न मुझे अल्लाह ने इस का हुक्म दिया, न मुझे इसलिये भेजा।

(१८) रब्बानी के मानी आलिम, फ़क्कीह और बाअमल आलिम और निहायत दीनदार के हैं।

लो, क्या तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा बाद इसके कि तुम मुसलमान हो लिये^(१९) (८०)

नवाँ रुकू

और याद करो जब अल्लाह ने पैगम्बरों से उनका एहद लिया^(१) जो मैं तुमको किताब और हिकमत दूँ फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वो रसूल^(२) कि तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ (पुष्टि) फ़रमाए^(३) तो तुम ज़रूर ज़रूर उसपर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उसकी मदद करना फ़रमाया क्यों तुमने इकरार किया और उस पर मेरा भारी ज़िम्मा लिया सबने अर्ज़ की हमने इकरार किया फ़रमाया तो एक दूसरे पर गवाह हो जाओ और मैं आप तुम्हारे साथ गवाहों में हूँ^(४) तो जो कोई इस^(५) के बाद फिरे^(६) तो वही लोग फ़ासिक़ (दुराचारी) हैं^(७) (८२) तो क्या अल्लाह के दीन के सिवा और दीन चाहते हैं^(८) और उसी के हुज़ूर गर्दन रखे हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं^(९) खुशी से^(१०) और मजबूरी से^(११) और उसी की तरफ़ फिरे^(१२) (८३) यूँ कहो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतरा इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उनके बेटों पर और जो कुछ मिला मूसा और ईसा और नबियों को उनके रब से, हम उनमें किसी पर ईमान में फ़र्क़ नहीं करते^(१३) और हम उसी के हुज़ूर गर्दन झुकाए हैं^(१४) और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 اَيُّكُمْ بِالْكَفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝ وَاِذْ
 اخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لِمَا اَتَيْنَكُمْ مِنْ كِتَابٍ
 وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ
 لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ ۚ قَالَ اَاَقْرَضْتُمْ وَاخَذْتُمْ
 عَلٰى ذٰلِكُمْ اِضْرٰى ۚ قَالُوا اَقْرَضْنٰهُ ۚ قَالَ فَاَشْهَدُوْا
 وَاَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ فَمَنْ تَوَلّٰٓءَ بَعْدَ
 ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ اَفَغَيَّرَ دِيْنَ اللّٰهِ
 يَبْعُوْنَ وَلَئِهٖ اَسْلَمْنَا مِنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
 طَوْعًا وَّكَرْهًا ۚ وَالْبَیْهٖ يُرْجَعُوْنَ ۝ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ
 وَمَا اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا اُنْزِلَ عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ
 وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَا اُوْتِيَ مُوْسٰى
 وَعِيسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ
 اَحَدٍ مِنْهُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ وَمَنْ يَنْتَحِ

مَنْزِلًا

- (१९) इससे साबित हुआ कि इल्म और तालीम का फल ये होना चाहिये कि आदमी अल्लाह वाला हो जाए . जिसे इल्म से यह फ़ायदा न हो, उसका इल्म बर्था और बेकार है.
 (२०) अल्लाह तआला या उसका कोई नबी.
 (२१) ऐसा किसी तरह नहीं हो सकता.

सूरए आले इमरान -- नवाँ रुकू

- (१) हज़रत अली मुर्तज़ा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम और उनके बाद जिस किसी को नबुव्वत अता फ़रमाई उससे सैयदुल अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निव्वत एहद लिया और उन नबियों ने अपनी क़ौमों से एहद लिया कि अगर उनकी ज़िन्दगी में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ लाए तो आप पर ईमान लाएं और आपकी मदद करें. इससे साबित हुआ कि हुज़ूर सारे नबियों में सबसे अफ़ज़ल हैं.
 (२) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
 (३) इस तरह कि उनकी विशेषताएं और हाल इसके अनुसार हों जो नबियों की किताबों में बयान फ़रमाए गए हैं.
 (४) एहद.
 (५) और आने वाले नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने से पीछे हटे.
 (६) ईमान से बाहर.
 (७) एहद लिये जाने के बाद और दलीलें साफ़ हो जाने के बावजूद.
 (८) फ़रिश्ते और इन्सान और ज़िन्न.
 (९) दलीलों और प्रमाणों में नज़र करके और इन्साफ़ इस्तिथार करके. और ये फ़रमाँबरदारी उनको फ़ायदा देती और नफ़ा पहुंचाती है.
 (१०) किसी डर से या अज्ञाव के देख लेने से, जैसा कि काफ़िर मौत के क़रीब मजबूर और मायूस होकर ईमान लाता है. यह ईमान उसको क़यामत में नफ़ा न देगा.

चाहेगा वह कभी उससे कुबूल न किया जाएगा और वह आखिरत में घाटा उठाने वालों से है (८५) किस तरह अल्लाह ऐसी क्रौम की हिदायत चाहे जो ईमान लाकर काफिर हो गए (१३) और यचाही दे चुके थे कि रसूल (१३) सच्चा है और उन्हें खुली निशानियां आचुकी थीं (१४) और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता (८६) उनका बदला यह है कि उनपर लानत है अल्लाह और फ़रिश्तों और आदमियों की सब की (८७) हमेशा उसमें रहें न उनपर से अज़ाब हल्का हो और न उन्हें मोहलत दी जाए (८८) मगर जिन्होंने ने उसके वाद तौबह की (१५) और आपा संभाला तो ज़रूर अल्लाह बख़्शने वाला मेहरवान है (८९) वेशक वह जो ईमान लाकर काफिर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े (१६) उनकी तौबह कभी कुबूल न होगी (१७) और वही हैं वहके हुए (९०) जो काफिर हुए और काफिर ही मरे उन में किसी से ज़मीन भर सोना हरगिज़ कुबूल न किया जाएगा अगरचे (यद्यपि) अपनी ख़लासी (छुटकारा) को दे उनके लिये दर्दनक अज़ाब है और उनका कोई यार (सहायक) नहीं (९१)

غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ، وَهُوَ فِي
الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ ۝ كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا
كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَ
جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝
أُولَئِكَ جَزَاءُهمُ أَنْ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَخَفُونَ عَنْهُمْ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ
بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ أَزْدَادُوا كُفْرًا لَنْ
تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ، وَأُولَئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ
أَحَدِهِمْ مِلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوْ افْتَدَى بِهِ ۝
أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَالَهُمْ مِنْ تَصْرِينٍ ۝

(११) जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों ने किया कि कुछ पर ईमान लाए और कुछ का इन्कार किया।

(१२) हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत यहूदियों और ईसाइयों के बारे में उतरी कि यहूदी हज़रत के तशरीफ़ लाने से पहले आपक वसील से दुआएं करते थे। आपकी नबुवत के इज़्जारी थे और आपक तशरीफ़ लाने की प्रतीक्षा करते थे। जब हज़रत तशरीफ़ लाए तो हमद से आप का इन्कार करने लगे और काफिर हो गए। मारी यह है कि अल्लाह तआला ऐसी क्रौम को कैसे ईमान की तौफ़ीक़ दे जो जान पहचान कर और मान कर इन्कारी हो गई।

(१३) यानी नबियों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।

(१४) और वो रीशव चमत्कार देख चुकें थे।

(१५) और कुफ़्र से रुक गए। हारिस बिन सयीद अन्सारी का काफिरों के साथ जा मिलने के बाद शर्मिन्दगी हुई तो उन्होंने ने अपनी क्रौम के पास संदेश भेजा कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पूछें कि क्या मेरी तौबह कुबूल हो सकती है ? उनके बारे में यह आयत उतरी। तब वह मदीनए मुनबरा में तौबह करके हाज़िर हुए और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनकी तौबह कुबूल फ़रमाई।

(१६) यह आयत यहूदियों के बारे में उतरी, जिन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने के बाद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और ईज़ील के साथ कुफ़्र किया। फिर कुफ़्र में और बढ़े। सैयदे अबिया मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और क़ुरआन के साथ कुफ़्र किया और एक क्रौम यह है कि यह आयत यहूदियों और ईसाइयों के बारे में उतरी जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने से पहले तो अपनी किताबों में आपकी नात और विशंपत्ताएँ देखकर आप पर ईमान रखते थे और आपके तशरीफ़ लाने के बाद काफिर हो गए और फिर कुफ़्र में और सरग्त हो गए।

(१७) इस हाल में या मरने वक़्त या अगर वह कुफ़्र पर मरे।

पारा तीन समाप्त

(चौथा पारा - लन-तनालु)

सूरए आले इमरान जारी

दसवाँ रुकू

तुम कभी भलाई को न पहुंचोगे जब तक खुदा की राह में अपनी प्यारी चीज खर्च न करो^(१) और तुम जो कुछ खर्च करो अल्लाह को मालूम है^(२) सब खाने वनी इस्राईल को हलाल थे मगर वह जो याकूब ने अपने ऊपर हाराम कर लिया था तौरात उतरने से पहले तुम फरमाओ तौरात लाकर पढ़ो अगर सच्चे हो^(३) तो उसके वाद जो अल्लाह पर झूठ बांधे^(४) तो वही जालिम है^(५) तुम फरमाओ अल्लाह सच्चा है तो इब्राहीम के दीन पर चलो^(६) जो हर बातिल (असत्य) से अलग थे और शिर्क वालों में न थे^(७) वेशक सबमें पहला घर जो लोगों की इबादत को मुकर्रर हुआ वह जो मक्का में है वरकत वाला और सारे संसार का राहनुमा^(८) उसमें खुली हुई निशानियां हैं^(९) इब्राहीम के खड़े होने की जगह^(१०) और जो उसमें आए, अमन में हो^(११) और अल्लाह के लिये लोगों पर उस घर का हज करना है जो उस तक चल सके^(१२) और जो इन्कारी हो तो अल्लाह सारे संसार से वे परवाह है^(१३)

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۖ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حَلَالًا لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَءِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرَةُ ۚ قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَةِ فَاتْلُوهَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ فَمِنْ أَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۖ قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۖ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۖ إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِّلْعَالَمِينَ ۚ فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مَّقَامُ إِبْرَاهِيمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا ۚ وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ۚ

सूरए आले इमरान - दसवाँ रुकू

(१) 'विर' भलाई से अल्लाह तआला का डर और फरमावसदारी मुराद है . हजरत इब्न उमर रदियल्लाहो अन्हो ने फरमाया कि यहाँ खर्च करना आम है सारे सदकों का, यानी वाजिब हों या नफ़्त, सब इसमें दाखिल हैं . हसन का कौल है कि जो माल मुसलमानों को मेहबूब हो उसे अल्लाह की रज़ा के लिये खर्च करे, वह इस आयत में दाखिल है, चाहे एक खजूर ही हो. (ख़ाज़िन) उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ शकर की बोरियाँ खरीद कर सदका करते थे, उससे कहा गया इसकी कीमत ही क्यों नहीं देते. फरमाया, शकर मुझे पसन्द है. यह चाहता हूँ कि खुदा की राह में प्यारी चीज़ खर्च करूँ (मदारीक). बुग़्रारी और मुस्लिम की हदीस है कि हजरत अबू तलहा अन्सारी मदीने में बड़े मालदार थे. उन्हें अपनी जायदाद में बैरहा नाम का बाग बहुत प्यारा था. जब यह आयत उतरी तो उन्होंने ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की छिद्रमत में खड़े होकर अर्ज़ किया कि मुझे अपने माल में यह बाग सबसे प्यारा है. मैं इसको खुदा की राह में सदका करता हूँ. हुज़ूर ने इसपर खुशी ज़ाहिर की, और हजरत अबू तलहा ने हुज़ूर की इज़ाज़त से अपने रिश्तेदारों में उसको तक्सीम कर दिया. हजरत उमर फ़ारूक रदियल्लाहो अन्हो ने अबू मूसा अशअरी को लिखा कि मेरे लिये एक दासी खरीद कर भेजो . जब वह आई तो आपको बहुत पसन्द आई, आपने यह आयत पढ़कर अल्लाह के लिये उसे आज़ाद कर दिया.

(२) यहूदियों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा कि हुज़ूर अपने आपको हजरत इब्राहीम की मिल्लत पर ख़याल करते हैं, इसके बावजूद कि हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ऊंट का दूध और गोशत नहीं खाते थे, और आप खाते हैं, तो आप हजरत इब्राहीम की मिल्लत पर कैसे हुए? हुज़ूर ने फरमाया कि ये चीज़ें हजरत इब्राहीम पर हलाल थीं . यहूदी कहने लगे कि ये हजरत नूह पर भी हाराम थीं. और हम तक हाराम ही चली आई. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और बताया गया कि यहूदियों का यह दावा शलत है, बल्कि ये चीज़ें हजरत इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक, व याकूब पर हलाल थीं. हजरत याकूब ने किसी वजह से इनको अपने ऊपर हाराम फरमाया और यह पाबन्दी उनकी औलाद में बाकी रही. यहूदियों ने इसका इन्कार किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि तीघत इस मज़मून पर गवाह है, अगर तुम्हें इन्कार है तो तौरात लाओ . इसपर यहूदियों को अपनी बेइज़्ज़ती और रुखाई का डर हुआ और वो तौरात न ला सके. उनका झूठ ज़ाहिर हो गया और उन्हें शर्मिन्दगी उठानी पड़ी. इससे साबित हुआ कि पिछली शरीअतों में अहकाम स्थगित होते थे. इसमें यहूदियों का रव है जो स्थगन के कायल न थे. हुज़ूर सैयदे आलम उम्मी थे, यानी ज़ाहिर में पढ़े लिखे न थे. इसके बावजूद यहूदियों को तीघत से इल्ज़ाम देना और तौरात में लिखी बातों के आधार पर अपनी बात प्रमाणित करना आपका चमत्कार और आपकी नबी होने की दलील है. और इससे आपके खुदावाद गैरी इल्म

तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो, अल्लाह की आयतें क्यों नहीं मानते^(११) और तुम्हारे काम अल्लाह के सामने हैं^(१८) तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो क्यों अल्लाह की राह से रोकते हो^(१२) उसे जो ईमान लाए उसे टेढ़ा किया चाहते हो और तुम खुद उसपर गवाह हो^(१३) और अल्लाह तुम्हारे कौतुकों से खेबर नहीं^(१९) ऐ ईमान वालो अगर तुम कुछ किताबियों के कहे पर चले तो वो तुम्हारे ईमान के बाद तुम्हें काफ़िरों पर छोड़ने^(१४) ^(१००) और तुम किस तरह कुफ़र करोगे तुमपर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में उसका रसूल तशरीफ़ लाया और जिसने अल्लाह का सहारा लिया तो ज़रूर वह सीधी राह दिखाया गया^(१०१)

ग्यारहवाँ सूक़

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो जैसा उससे डरने का हक़ है और कभी न मरना मगर मुसलमान^(१०२) और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो^(१) सब मिलकर और आपस में फट न जाना^(२) और अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो जब तुम में बैर था उसने तुम्हारे दिलों में

قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِآيٰتِ اللّٰهِ ۖ
وَاللّٰهُ شَهِيدٌ عَلٰٓى مَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ يٰٓأَهْلَ
الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنِ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنِ امْن
تَبْعُوْهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شٰهَدَآءُ ۚ وَمَا اللّٰهُ
بِعَاقِلٍ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
اِنْ تَطْبَعُوْا قَرِيْبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اٰتَوٰا الْكِتٰبَ يَبْرُدُوْكُمْ
بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ۝ وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ
اَنْتُمْ تَنْتَلٰٓى عَلَيْهِمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَّسُوْلُهُ ۚ
وَمَنْ يَعْصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هٰدٰى اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ
تَقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُوْا اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَاَعْتَصِمُوْا
بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَلَا تَفَرَّقُوْا ۚ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءًا فَآلَفَ بَيْنَٔنَ فُلُوْا بِكُمْ

مِّنْ

का पता चलता है.

(३) और कहे कि इब्राहीम की मिल्लत में ऊंट के गोश्त और दूध का अल्लाह तआला ने हाराम किया था.

(४) कि वह इस्लाम और दीने मुहम्मदी है.

(५) यहूदियों ने मुसलमानों से कहा था कि बैतुल मक़दिस हमारा क़िबला है, काबे से अफ़ज़ल और इससे पहला है, नबियों की हज़रत की जगह और इबादत का क़िबला है. मुसलमानों ने कहा कि काबा अफ़ज़ल है. इसपर यह आयत उतरी और इसमें बताया गया कि सबसे पहला मक़ान जिसको अल्लाह तआला ने ताअत और इबादत के लिये मुक़रर किया, नमाज़ का क़िबला और हज़ और तवाफ़ का केंद्र बनाया, जिसमें नेकियों के सबाब ज़्यादा होते हैं, वह काबे मुअज़ज़मा है, जो मक्का शहर में स्थित है. हदीस शरीफ़ में है कि काबे मुअज़ज़मा बैतुल-मक़दिस से चालीस साल पहले बनाया गया.

(६) जो इसकी पाकी और फ़ज़ीलत के प्रमाण हैं. इन निशानियों में से कुछ ये हैं कि चिड़ियाँ काबा शरीफ़ के ऊपर नहीं बैठती और इसके ऊपर से होकर नहीं उड़ती बल्कि उड़ती हुई आती हैं तो इधर उधर हट जाती हैं, और जो चिड़ियाँ घीमार हो जाती हैं वो अपना इलाज यही करती हैं कि काबे की हवा में होकर गुज़र जाएं, इसी से उनको अच्छाई हो जाती है. और वही जानवर एक दूसरे को हरम में तकलीफ़ नहीं पहुँचाते, यहाँ तक कि कुत्ते इस ज़मीन में हिरन पर नहीं दौड़ते और वहाँ शिकार नहीं करते. और लोगों के दिल काबे की तरफ़ खिंचने हैं और उसकी तरफ़ नज़र करने से आँसु जारी होते हैं और हर जुमे की रात बलियाँ की रुहें इसके चारों तरफ़ हाज़िर होती हैं और जो कोई इसके निरादर और अपमान का इरादा करता है, बर्बाद हो जाता है. इन्हीं आयतों में से मक़ामे इब्राहीम वगैरह वो चीज़ें हैं जिनका आयत में बयान किया गया है. (मदारिक, ख़ाज़िन व तफ़सीरे अहमदी)

(७) मक़ामे इब्राहीम वह पत्थर है जिसपर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम काबा शरीफ़ के निर्माण के वक़्त खड़े होते थे और इसमें आपके क़दमों के निशान थे जो इतनी सदियों गुज़र जाने के बाद आज भी बाक़ी हैं.

(८) यहाँ तक कि अगर कोई व्यक्ति क़त्ल करके हरम में दाख़िल हो तो वहाँ न उसको क़त्न किया जाए, न उसपर हद कायम की जाए. हज़रत उमर फ़ारूक़ रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि अगर मैं अपने वालिद अन्ताब के क़ातिल का भी हरम शरीफ़ में पाऊँ तो उसको हाथ न लगाऊँ यहाँ तक कि वह वहाँ से बाहर आए.

(९) इस आयत में हज़ फ़र्ज़ होने का बयान है और इसका कि हज़ करने की क्षमता या ताक़त शर्त है. हदीस शरीफ़ में सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इसकी तफ़सीर ज़ाद और राहिला से फ़रमाई. ज़ाद यानी ताशा, ख़ाने पीने का इन्तिज़ाम इस क़द्र होता चाहिये कि जाकर वापिस आने तक के लिये काफ़ी हो और यह वापसी के वक़्त तक बाल बच्चों के नपके-यात्री आजीविका के अलावा होना चाहिये. रास्ते का सुरक्षित होना भी ज़रूरी है क्योंकि उसके वगैर क्षमता साबित नहीं होती.

(१०) इससे अल्लाह तआला का क्रोध ज़ाहिर होता है और यह मसअला भी साबित होता है कि फ़र्ज़ क़तई का इन्कार करने वाला

मिलाप कर दिया तो उसके फ़ज़ल से तुम आपस में भाई हो गए^(११) और तुम एक दोज़ख के ग़ार के किनारे पर थे^(१२) तो उसने तुम्हें उससे बचा दिया^(१३) अल्लाह तुमसे यूँही अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम हिदायत पाओ^(१०३) और तुम में एक दल ऐसा होना चाहिये कि भलाई की तरफ़ बुलाएँ और अच्छी बात का हुक्म दें और बुराई से मना करें^(१४) और यही मुराद को पहुँचे^(१५) और उन जैसे न होना जो आपस में फट गए और उनमें फूट पड़ गई^(१६) वाद इसके कि रौशन निशानियाँ उन्हें आचुकी थीं^(१७) और उनके लिये बड़ा अज़ाब है^(१०४) जिस दिन कुछ मुंह उजाले होंगे और कुछ मुंह काले तो वो जिनके मुंह काले हुए^(१८) क्या तुम ईमान लाकर काफ़िर हुए^(१९) तो अब अज़ाब चखो अपने कुफ़र का बदला^(१०५) और वो जिनके मुंह उजाले हुए^(२०) वो अल्लाह की रहमत में हैं वो हमेशा उसमें रहेंगे^(१०६) ये अल्लाह की आयतें हैं कि हम ठीक ठीक तुमपर पढ़ते हैं और अल्लाह संसार वालों पर जुल्म नहीं चाहता^(१०७)

अल-अन

८६

क़त्तल

فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا وَكُنْتُمْ عَلَى شَفَا حُفْرَةٍ
مِّنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُم مِّنْهَا ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ
آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَلَسَكُن مِّنكُمْ أُمَّةٌ
يَّدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا
كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ
الْبَيِّنَاتُ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ
تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ
اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ ۖ أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ
فَلَا تَقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ وَأَمَّا
الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ ۖ فَبِئْسَ لَكُمُ الْيَوْمَ
الَّذِينَ فِيهَا خَلَدُونَ ۚ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ تَتْلُوهَا
عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ ۝

मक़

काफ़िर है.

(११) जो सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सच्चे नबी होने का प्रमाणित करता है.

(१२) नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटला कर और आपकी तारीफ़ और विशिष्टताएं छपाकर, जो तौरान में बयान की गई हैं.

(१३) कि सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ तौरान में लिखी हुई है और अल्लाह को जो दीन प्रिय है वह इस्लाम ही है.

(१४) औस और ख़ज़रज के क़बीलों में पहले बड़ी दुश्मनी थी और मुद्दातों उनमें जंग जारी रही. सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सवके में इन क़बीलों के लोग इस्लाम लाकर आपस में दोस्त बने. एक दिन वो एक बैठक में प्यार महबूत की बातें कर रहे थे. शास बिन क्रैस यहूदी जो इस्लाम का बड़ा दुश्मन था, उस तरफ़ से गुज़रा और उनके आपसी मेल मिलाप को देख कर जल गया, और कहने लगा कि जब ये लोग आपस में मिल गए तो हमारा क्या टिकाना है. एक जवान को मुर्कर किया कि उनकी बैठक में बैठकर उनकी पिछली लड़ाइयों का जिक्र छोड़ें और उस ज़माने में हर एक क़बीला जो अपनी तारीफ़ और दूसरों की आलोचना में शेर लिखता था, पढ़ें. चुनांच उस यहूदी ने ऐसा ही किया और उसकी शरारत और भड़काने से दोनों क़बीलों के लोग गुस्से में आ गए और हथियार उठा लिये. करीब था कि क़त्ल ख़ून शुरू हो जाए, सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम यह ख़बर पाकर मद्दाज़िरीन के साथ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि ऐ इस्लामी जमाअत, यह क्या जिहालत को हरकतें हैं. मैं तुम्हारे बीच हूँ. अल्लाह ने तुम को इस्लाम की इज़ज़त दी, जिहालत की बला से निजात दी, तुम्हारे बीच उलफ़त और महबूत डाली, तुम फिर कुफ़र के ज़माने को तरफ़ लौटने हो. हज़ूर के इशारे ने उनके दिलों पर असर किया और उन्होंने समझा कि यह शैतान का धोखा और दुश्मन का कपट था. उन्होंने हाथों से हथियार फेंक दिये और रोते हुए एक दूसरे से लिपट गए और सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ फ़रमावशकारी के साथ चल आए, उनके बारे में यह आयत उतरी.

सूरए आले इमरान - ग्यारहवाँ रुकू

(१) "हक़िल्लाह" यानी अल्लाह की रस्सी की व्याख्या में मुफ़सिरो के कुछ क़ौल हैं. कुछ कहते हैं इससे क़ुरआन मुग़ाद है. मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में आया कि क़ुरआन पाक अल्लाह की रस्सी है, जिसने इसका अनुकरण किया वह हिदायत पर है, जिसने इस छोड़ा वह गुमराही पर है. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि "हक़िल्लाह" से जमाअत मुग़ाद है और फ़रमाया कि तुम जमाअत को लाज़िम करो कि वह हक़िल्लाह है, जिसकी मज़दूती से थामने का हुक्म दिया गया है.

और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह ही की तरफ़ सब कामों का पलटना है (१०९)

बारहवाँ सूक़

तुम बेहतर हो^(१) उन सब उम्मतों में जो लोगों में जाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर किताबी ईमान लाते^(२) तो उनका भला था उनमें कुछ मुसलमान हैं^(३) और ज्यादा काफ़िर (११०) वो तुम्हारा कुछ न विगाड़ेंगे मगर यही सताना^(४) और अगर तुमसे लड़ें तो तुम्हारे सामने से पीठ फेर जाएंगे^(५) फिर उनकी मदद न होगी (१११) उनपर जमा दी गई ख़्तारी (जिल्लत) जहां हो अमान न पाएंगे^(६) मगर अल्लाह की डोर^(७) और आदमियों की डोर से^(८) और अल्लाह के राज़ व (प्रकाप) के सज़ावार (हकदार) हुए और उनपर जमा दी गई मोहताजी^(९) यह इसलिये कि वो अल्लाह की आयतों से कुफ़र करते और पैगम्बरों को नाहक़ शहीद करते यह इसलिये कि नाफ़रमांवरदार और सरकश (वागी) थे (११२) एक से नहीं, किताबियों में कुछ वो हैं कि हक़ पर कायम हैं^(१०) अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं रात की घड़ियों में

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَ اِلٰى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْاُمُورُ ۚ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ
لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَتُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَلَوْ اَمَّنْ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ
خَيْرًا لّٰهُمْ مِنْهُمْ الْمُؤْمِنُونَ وَكَثَرُهُمُ الْفٰسِقُونَ ۝
لَنْ يَصُرُوْكُمْ اِلَّا اَدۡۤى ۚ وَاِنْ يُقَاتِلُوْكُمْ يُؤْلُوْكُمْ
الۡاَدۡبَارَ ثُمَّ لَا يُنصَرُونَ ۝ ضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ
الدِّيۡنَةَ اَيۡنَ مَا تَقِفُوۡا اِلَّا بِحَبِلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبِلٍ
مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُ وَبَعَصِبَ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ
عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوۡا يَكْفُرُوۡنَ
بَاٰيَاتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوۡنَ الْاَنْبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ ذٰلِكَ
بِمَا عَصَوْا وَاَكَانُوۡا يَعْتَدُوۡنَ ۝ لَّيْسُوۡا سَوَآءٍ مِّنْ
اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قٰئِمَةٌ يَتْلُوۡنَ اٰيَاتِ اللّٰهِ اَنۡاۤءَ

(२) जैसे कि यहूदी और ईसाई अलग अलग हो गए। इस आयत में उन कामों और हरकतों की मना किया गया है जो मुसलमानों के बीच फूट का कारण बनें। मुसलमानों का तरीका अहले सुन्नत का मज़हब है, इसके सिवा कोई राह इस्तिस्नान करना दोन में फूट डालना है जिससे मना किया गया है।

(३) और इस्लाम की बदौलत दुश्मनी से दूर होकर आपस में दींगी महबूबत पैदा हुई यहाँ तक कि आस और ख़ज़रज की वह मग़ाह्र लड़ाई जो एकसौ बीस साल से जारी थी और उसके कारण रात दिन क़त्ल का बाज़ार गर्म रहता था, सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़रिये अल्लाह तआला ने मिटा दी और जंग की आग ठंडी कर दी गई और युद्ध-ग्रस्त क़बीलों के बीच प्यार, दोस्ती और महबूबत की भावना पैदा कर दी।

(४) यांनी कुफ़र की हालत में, कि अगर उसी हाल में मर जाते तो दोज़ख़ में पहुंचते।

(५) ईमान की दौलत अता करके।

(६) इस आयत से जायज़ काम किये जाने और नाजायज़ कामों से अलग रहने की अनिवार्यता और बहुमत तथा सहमति के मानने की दलील दी गई।

(७) हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि नक़ियों का हुक्म देना और बुराइयों में संकना बेहतरीन ज़िहाद है।

(८) जैसा कि यहूदी और ईसाई आपस में विरोधी हुए और उनमें एक दूसरे के साथ दुश्मनी पक्की हो गई या जैसा कि ख़ुद तुम इस्लाम से पहले ज़िहालत के दौर में अलग अलग थे, तुम्हारे बीच शत्रुता थी, इस आयत में मुसलमानों को आपस में एक रहने का हुक्म दिया गया और मतभेद और उसके कारण पैदा करने से मना किया गया। हदीसों में भी इसकी बहुत ताक़ीद आड़े हैं, और मुसलमानों की जमाअत से अलग होने की मस्ज़नी से मनाही फ़रमाई गई है, जो फ़िर्का पैदा होता है, इस हुक्म का विरोध करके ही पैदा होता है और मुसलमानों की जमाअत में फूट डालने का जुर्म करता है और हदीस के इशारा के अनुसार वह शतान का शिकार है, अल्लाह तआला हमें इससे मेहफूज़ रखे।

(९) और सच्चाई सामने आ चुकी।

(१०) यांनी काफ़िर, तो उनसे ज़रूज कहा जाएगा।

(११) इसके मुख़्तार या तो तमाम काफ़िर हैं, उस सूरत में ईमान से मीसाक़ के दिन का ईमान मुग़द है, जब अल्लाह तआला ने उनसे फ़रमाया था कि क्या मैं तुम्हारा ख़ब नहीं हूँ, सबने “बला” यांनी “बेशक़” कहा था और ईमान लाए थे, अब जो दुनिया में काफ़िर हुए तो उनसे फ़रमाया जाता है कि मीसाक़ के दिन ईमान लाने के बाद तुम काफ़िर हो गए। हमन का कौल है कि इससे मुनाफ़िक़ लोग मुराद हैं ज़िन्हो ने ज़वान से ईमान जाहिर किया था और उनके दिल इन्कारी थे, इकरमा ने कहा कि वो किताब पाने हैं जो सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने से पहले वो हज़र पर ईमान लाए और हज़र के तशरीफ़ लाने के

और सच्चा करते हैं^(११) (११३) अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाते हैं और भलाई का हुक्म देते और बुराई से मना करते हैं^(१२) और नेक कामों पर दौड़ते हैं और ये लोग लायक हैं (११४) और वो जो भलाई करें उनका हक न मारा जाएगा और अल्लाह को मालूम हैं डर वाले^(१३) (११५) वो जो काफिर हुए उनके माल और औलाद^(१४) उनको अल्लाह से कुछ न बचा लेंगे और वह जहन्नमी हैं उनको हमेशा उसी में रहना^(१५) (११६) कहावत उसकी जो इस दुनिया की ज़िन्दगी में^(१६) खर्च करते हैं उस हवा की सी है जिसमें पाला हो वह एक ऐसी क्रीम की खेती पर पड़ी जो अपना ही बुरा करते थे तो उसे बिल्कुल मार गई^(१७) और अल्लाह ने उनपर जुल्म न किया हाँ वो खुद अपनी जानों पर जुल्म करते हैं (११७) ऐ ईमान वाले, यैरों को अपना राजदार न बनाओ^(१८) वो तुम्हारी बुराई में कमी नहीं करते उनकी आरजू है जितनी ईजा (कष्ट) तुम्हें पहुंचे बैर उनकी बातों से झलंक उठ और

النَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ۝ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَأُولَئِكَ مِنَ
الصَّالِحِينَ ۝ وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوا بِهِ
وَاللَّهُ عَلَيْهِم بِالْإِتْقَانِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ
تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ
شَيْئًا وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝
مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ
رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا
أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ
أَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا
بِطَانَةِ مَنْ دُونَكُمْ لَا يَأْلُوا لَكُمْ خِبَالًا وَدُّوْا
مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۝

बाद आपका इनकार करके काफिर हो गए। एक कौल यह है कि इसके मुखातब मुर्तद लोग हैं जो इस्लाम लाकर फिर गए और काफिर हो गए।

(१२) यानी ईमान वाले कि उस रोज़ अल्लाह के करम से वो खुश होंगे, उनके चेहरे चमकते दमकते होंगे, दाएं बाएं और सामने नूर होगा।

(१३) और किसी को बंजुर्भ अज़ाब नहीं देता और किसी नेकी का सवाब कम नहीं करता।

सूरए आले इमरान - बारहवाँ रुकू

(१) ऐ मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत ! यहूदियों में से मालिक बिन सैफ़ और वहब बिन यहूदा ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद वगैरह असहाबे रसूल से कहा, हम तुमसे बढ़कर हैं और हमारा दीन तुम्हारे दीन से बेहतर है, जिसकी तुम हमें दावत देते हो। इसपर यह आयत उतरी। तिरमिज़ी की हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला मंत्री उम्मत को गुमराही पर जमा नहीं करेगा और अल्लाह तआला का दस्ते रहमत जमाअत पर है, जो जमाअत से अलग हुआ वह दोज़ख में गया।

(२) नवियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर।

(३) जैसे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और यहूदियों में से उनके साथी और नज़ाशी और ईसाइयों में से उनके साथी।

(४) ज़बानी बुरा भला कहने और धमकी वगैरह से। यहूदियों में से जो लोग इस्लाम लाए थे जैसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथी, यहूदियों के सरदार उनके दुश्मन हो गए और उन्हें यातनाएं देने की फ़िक्र में रहने लगे। इसपर यह आयत उतरी और अल्लाह तआला ने ईमान लाने वालों को संतुष्ट कर दिया कि ज़बानी बुरा भला कहने के अलावा वो मुसलमानों को कोई कष्ट न पहुंचा सकेंगे। ग़लबा मुसलमानों को ही रहेगा और यहूदियों का अन्त ज़िल्लत और ख़राब है।

(५) और तुम्हारे मुकाबले की हिम्मत न कर सकेंगे। ये गैबी ख़बरें ऐसी ही सच साबित हुईं।

(६) हमेशा ज़लील ही रहेंगे, इज़ज़त कभी न पाएंगे। उसका असर है कि आज तक यहूदियों को कहीं की सल्लत मयस्सर न आई। जहाँ रहे, रियाया और गुलाम ही बन कर रहे।

(७) थाम कर यानी ईमान लाकर।

(८) यानी मुसलमानों की पनाह लेकर और उन्हें जिज़िया देकर।

(९) चुनांचे यहूदी को मालदार होकर भी दिल की दौलत नसीब नहीं होती।

वो^(१०) जो सीने में छुपाए हैं और बड़ा है हमने निशानियां तुम्हें खोल कर सुना दीं अगर तुम्हें अक्ल हो^(१०) (११८) सुनते हो यह जो तुम हो तुम तो उन्हें चाहते हो^(११) और वो तुम्हें नहीं चाहते^(१२) और हाल यह कि तुम सब किताबों पर ईमान लाते हो^(१३) और वो जब तुमसे मिलते हैं कहते हैं ईमान लाए^(१४) और अकेले हों तो तुमपर उंगलियां चवाएं गुस्से से तुम फरमादो कि मर जाओ अपनी घुटन में^(१५) अल्लाह खूब जानता है दिलों की बात (११९) तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगे^(१६) और तुम को बुराई पहुंचे तो उसपर खुश हों और अगर तुम सत्र और परहेजगारी किये रहो^(१७) तो उनका दाँव तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा वेशक उनके सब काम खुदा के घरे में हैं (१२०)

तेरहवाँ सूक़

और याद करो ऐ मेहबूब, जब तुम सुबह^(१) अपने दौलतखाने (मकान) से बाहर आए मुसलमानों को लड़ाई के मोर्चों पर कायम करते^(२) और अल्लाह सुनता जानता है (१२१) जब तुममें के दो दलों का इरादा हुआ कि नामदी कर जाएं^(३) और अल्लाह उनका सुभालने वाला है और मुसलमानों का अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये (१२२) और वेशक अल्लाह ने वदर में तुम्हारी मदद की जब तुम विल्कुल

وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ
الْآيَاتِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۝ هَآ أَنزَلْنَاهُ
تَحْوِيلَهُمْ وَلَا يُحِيبُونَكَ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ
كَلِمَةٍ وَإِذَا أُنذِرْتُمْ قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَصَوْا
عَلَيْكُمْ إِلَّا تَامِلٌ مِنَ الْعِطَاءِ قُلْ مُؤْتُوا عَيْظَكُمْ
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ إِنْ تَسْأَلُوا
حَسَنَةً سَأَلُوهَا رَوَانُ تَصْبِيحُكُمْ سَبَّحَةُ يَفْرَحُوا
بَهَا وَإِنْ تَصِدُّوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرَّكُمْ كَيْدُهُمْ
شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝ وَإِذْ عَدَاوَةٌ
مِّنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۝
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِذْ هَبَّتْ ظُلُمَاتٌ مِّنْكُمْ
أَنْ تَفْشَلَا ۝ وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ ۝

منها

(१०) जब हजरत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथी ईमान लाए तो यहूदी पादरियों ने जलकर कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर हममें से जो ईमान लाए हैं वो बुरे लोग हैं. अगर बुरे न हों तो अपने बाप दादा का दीन न छोड़ते. इसपर यह आयत उतरी. अता का कौल है कि "मिन अहलिल किताब उम्मतुम काइमतुन" (यानी किताब वालों में कुछ वो हैं कि सत्य पर कायम हैं) से चालीस मर्द नजरान वालों के, बत्तीस हबशा के, आठ रोम के मुगद हैं. जो हजरत ईसा के दीन पर थे. फिर सयदे सलाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए.

(११) यानी नमाज़ पढ़ते हैं, इससे या तो इशा की नमाज़ मुगद है जो किताब वाले वहीं पढ़ते या नदरजुद की नमाज़.

(१२) और दीन में खराबी नहीं लाते.

(१३) यहूदियों ने अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथियों से कहा था कि तुम इस्लाम कुबूल कर के टांट में पड़े तो अल्लाह तआला ने उन्हें खबर दी कि वो ऊंचे दर्जों के हकदार हुए और अपनी नेकियों का इनाम पाएंगे. यहूदियों को बकवास बहदा है.

(१४) जिनपर उन्हें बहुत वाज़ और गर्व है.

(१५) यह आयत बनी कुरैज़ा और नज़्र के बारे में उतरी. यहूदियों के सरदारों ने रियासत और माल हासिल करने की गरज़ से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ दुश्मनी की थी. अल्लाह तआला ने इस आयत में इरशाद फरमाया कि उनके माल और औलाद कुछ काम न आएंगे. वो रसूल की दुश्मनी में नाहक अपनी आक़िबत खराब कर रहे हैं. एक कौल यह भी है कि यह आयत कुरैश के मुश्रिकों के चारों में उतरी क्योंकि अबू जहल को अपनी दौलत और माल पर बड़ा घमण्ड था, और अबू सुफ़ियान ने वदर और उहद में मुश्रिकों पर बहुत माल खर्च किया था. एक कौल यह है कि यह आयत सारे काफ़िरों के चारों में आइ है, उन सब को बताया गया कि माल और औलाद में से कोई भी काम आने वाला और अल्लाह के अज़ाब से बचने वाला नहीं.

(१६) मुफ़सिरों का कहना है कि इससे यहूदियों का वह खर्च मुराद है जो अपने आलिमों और सरदारों पर करते थे. एक कौल यह है कि काफ़िरों के सारे नफ़क़ात और मदक़ात मुराद हैं. एक कौल यह है कि रियाकार का खर्च करना मुराद है. क्योंकि इन सब लोगों का खर्च करना या दुनियावादी नफ़े के लिये होगा या आख़िरत के फ़ायदे के लिये. अगर केवल दुनियावादी नफ़े के लिये हो, तो आख़िरत और अल्लाह की खुशी मक़सूद ही नहीं होती, उसका अमल दिखावे और ज़ाहिर के लिये होता है. ऐसे अमल का आख़िरत में क्या नफ़ा. और काफ़िर के सारे कर्म अकारत हैं. वह अगर आख़िरत की नियत से भी खर्च करे तो नफ़ा नहीं पा सकता. उन लोगों के लिये वह मिसाल विल्कुल पूरी उतरती है जो आयत में वयात की जाती है.

(१७) यानी जिस तरह कि यफ़ागी हवा ख़ती को बर्षाद कर देती है उसी तरह कुछ-इसकाफ़ यानी दाँव का वातिल कर देता है.

(१८) उनसे दाँवली न करो. महबूब के तअल्लुकात न रखो, वो भरोसे के कायिल नहीं हैं. कुछ मुसलमान यहूदियों से शिन्दारी

वेसरोसामान थे^(१) तो अल्लाह से डरो कहीं तुम शुक्रगुजार हो^(२) जब ऐ मेहबूब, तुम मुसलमानों से फ़रमाते थे क्या तुम्हें यह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हजार फ़रिश्ते उतार कर^(३) हां क्यों नहीं अगर तुम सब्र और तक्रवा करो और उसी दम तुमपर आ पहुँचें तो तुम्हारी मदद को पांच हजार फ़रिश्ते निशान वाले भेजेगा^(४) और यह फ़तह अल्लाह ने न की मगर तुम्हारी खुशी के लिये ओर इसीलिये कि इससे तुम्हारे दिलों को चैन मिले^(५) और मदद नहीं मगर अल्लाह ज़ालिम हिकमत वाले के पास से^(६) इसलिये कि काफ़िरों का एक हिस्सा काट दे^(७) या उन्हें ज़लील करे कि नामुराद फिर जाएं^(८) यह बात तुम्हारे हाथ नहीं या उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ (शक्ति) दे या उनपर अज़ाब करे कि वो ज़ालिम हैं^(९) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है जिसे चाहे वख़्श दे और जिसे चाहे अज़ाब करे ओर अल्लाह वख़्शाने वाला मेहरवान^(१०)

أَنْتُمْ أَوْلَىٰ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُشْكُرُونَ ﴿١﴾
إِذْ يَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُبَدِّلَكُمْ رَجُلًا بِثَلَاثَةِ أَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُنْزَلِينَ ﴿٢﴾
بَلَىٰ ۖ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّنْ فُورِهِمْ هَذَا يُبَدِّلْكُمْ رَجُلًا بِخَمْسَةِ أَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ﴿٣﴾ وَمَا جَعَلَ اللَّهُ إِلَّا بُشْرًا لَّكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ بِهِ ۖ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٤﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوا خَائِبِينَ ﴿٥﴾ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ﴿٦﴾ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

مَنْزِل

और दोस्ती और पड़ोस वगैरह के सम्बन्धों की बुनियाद पर मेल जोल रखते थे, उनके हक में यह आयत उतरी, काफ़िरों से दोस्ती और महबूत करना और उन्हें अपना बनाना नाजायज़ और मना है।

- (१९) गुस्सा और दुश्मनी ।
- (२०) तो उनसे दोस्ती न करो ।
- (२१) रिश्तेदारी और दोस्ती वगैरह सम्बन्धों के आधार पर ।
- (२२) और दीनी मतभेद की बुनियाद पर तुम से दुश्मनी रखते हैं ।
- (२३) और वो तुम्हारी किताब पर ईमान नहीं रखते ।
- (२४) यह मुनाफ़िकों यानी दोस्तानी प्रवृत्ति वालों का हाल है ।
- (२५) ऐ हमद करने वाले, मर जा ताकि तेरा रंज दूर हो सके, क्योंकि हसद की तकलीफ़ सिवाय मॉत के और कोई दूर नहीं कर सकता ।
- (२६) और इसपर वो दुखी हों ।
- (२७) और उनसे दोस्ती और महबूत न करो । इस आयत से मालूम हुआ कि दुश्मन के मुकाबले में सब्र और तक्रवा काम आता है ।

सूरए आले इमरान - तेरहवाँ रुकू

- (१) मदीनए नैयिबह में उहद के इरादे से ।
- (२) गभी मुफ़सिरो का क़ौल है कि बद्र की जंग में हारने के बाद काफ़िरों को बड़ा दुख था इसलिये उन्होंने बदला लेने के लिये एक बड़ा लश्कर इकट्ठा करके चढ़ाई की, जब रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़बर मिली कि काफ़िरों की फ़ौज उहद में उतरी है तो आपने सहाबा से सलाह की, इस बैठक में अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल को भी बुलाया गया जो इससे पहले कभी किसी सलाह के लिये बुलाया न गया था, अक्सर अन्वार की ओर इस अब्दुल्लाह की यह राय हुई कि हुज़ूर मदीनए नैयिबह में ही कायम रहें और जब काफ़िर यहाँ आए तब उनसे मुकाबला किया जाए, यहाँ सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मर्जी थी, लेकिन कुछ सहाबा की राय यह हुई कि मदीनए नैयिबह से बाहर निकल कर लड़ना चाहिये और इसी पर उन्होंने ज़ोर दिया, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने मकान में तशरीफ़ ले गये और हथियार लगाकर बाहर तशरीफ़ लाए, अब हुज़ूर को देखकर सहाबा को शर्मिलगी हुई और उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर को राय देना और उसपर ज़ोर देना हमारी ग़लती थी, इसे माफ़ फ़रमाया जाए और जो सरकार की मर्जी हो वही किया जाए, हुज़ूर ने फ़रमाया कि नदी के लिये अच्छा नहीं कि हथियार पहन कर जंग से पहले उतार दे, मुश्किल फ़ौज उहद में बुध/जुमेरात को पहुंची थी और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे

चौदहवाँ सूक़

ऐ ईमान वालो, सुद दूना दून न खाओ^(१) और अल्लाह से डरो इस उम्मीद पर कि भलाई मिले^(२) और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिये तैयार रखी है^(३) और अल्लाह व रसूल के फ़रमाँबरदार रहो^(४) इस उम्मीद पर कि तुम रहम किये जाओ^(५) और दौड़ो^(६) अपने रव की वख़िश और ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसकी चौड़ान में सब आसमान व ज़मीन आजाएँ^(७) परहेज़गारों के लिये तैयार रखी है^(८) वो जो अल्लाह की राह में खर्च करते हैं खुशी में और रंज में^(९) और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दरगुज़र (क्षमा) करने वाले और नेक लोग अल्लाह के मेहबूब हैं^(१०) और वो कि जब कोई वेहयाई या अपनी जानों पर जुल्म करें^(११) अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की माफ़ी चाहें^(१२) और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह के और अपने किये पर जान बूझकर अड़ न जाएँ^(१३) ऐसों को वदला उनके रव की वख़िश और जन्नतें हैं^(१४) जिनके नीचे नेहरें जारी हमेशा उनमें रहें और

أَمْثُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۝ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ ۖ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكُلُوبِ الْمُهَيَّيْنِ الْعَيْظِ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۖ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاجِسَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذُكِّرُوا اللَّهَ فَأَسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ ۖ وَمَن يَغْفِرَ اللَّهُ ذُنُوبَ إِلَّا اللَّهُ ۖ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ أُولَٰئِكَ جَزَاءُ هُم مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّتْ تَجْرِي مِّن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

मज़ल

वसल्लम जुमे के दिन तमाज़े जुमा के बाद एक अन्वारी के जनाज़े की तमाज़ पढ़कर ख़ाता हुए और पन्द्रह शबाल सर तीन हिजरी इतबार के दिन उहद में पहुँचे, यहाँ आप और आपके साथी उतरे और पहाड़ का एक दर्रा जो इस्लामी लश्कर के पीछे था, उस तरफ़ से डर था कि किसी वक्त दुश्मन पीछे से आकर हमला करें, इसलिये हुज़ूर ने अब्दुल्लाह बिन जुबैर को पचास तीर अन्दाज़ों के साथ वहाँ लगाया और फ़रमाया कि अगर दुश्मन इस तरफ़ से हमला करे तो तीरों की बारिश करके उनका भगा दिया जाए और हुक्म दिया कि कुछ भी हो जाए, यहाँ से न हटना और इस जगह को न छोड़ना, चाहे जीत हो या हार, अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल मुनाफ़िक्, जिसने मदीनए तय्यिबह में रहकर जंग करने की राय दी थी, अपनी राय के खिलाफ़ किये जाने की वजह से क्रुद्ध हुआ और कहने लगा कि हुज़ूर सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नई उम्र के लड़कों का कहना माना और मेरी बात की परवाह नहीं की, इस अब्दुल्लाह बिन उबई के साथ तीन सौ मुनाफ़िक् थे उनसे उसने कहा, जब दुश्मन इस्लामी लश्कर के सामने आजाए उस वक्त भाग पड़ना ताकि इस्लामी लश्कर तितर बितर हो जाए और तुम्हें देखकर और लोग भी भाग निकलें, मुसलमानों के लश्कर की कुल संख्या इन मुनाफ़िक् समेत एक हजार थी और मुशिकों की तादाद तीन हजार, मुक़बला शुरु होते ही अब्दुल्लाह बिन उबई अपने तीन सौ मुनाफ़िक् साथियों को लेकर भाग निकला और हुज़ूर के सान सौ सहाबा हुज़ूर के साथ रह गए, अल्लाह तआला ने उनको साबित क़दम रखा, यहाँ तक कि मुशिकों को पराजय हुई, अब सहाबा भागते हुए मुशिकों के पीछे पड़ गए और हुज़ूर सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जहाँ क़ायम रहने के लिये फ़रमाया, वहाँ क़ायम न रहे तो अल्लाह तआला ने उन्हें यह दिख़ाया कि बद्र में अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी की वरक़्त से जीत हुई थी, यहाँ हुज़ूर के हुक्म का विरोध करने का बर्तीजा यह हुआ कि अल्लाह तआला ने मुशिकों के दिल से डर और दहशत दूर फ़रमादी और वो पलट पड़े और मुसलमानों को परास्त होना पड़ा, रसूल क़रीम सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ एक जमाअत रही, जिसमें अब्दुल्ल व अली व अब्बास व तलह व सअद थे, इसी जंग में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुवास्क दांत शहीद हुए और चेहरे पर ज़ख़म आया, इसी के सम्बन्ध में यह आयत उतरी,

(३) ये दोनों समुदाय अन्वार में से थे, एक बनी सलाम ख़ज़रज़ में से और एक बनी हारिस ओस में से, ये दोनों लश्कर के राज़ थे, जब अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल मुनाफ़िक् भागा तो इन्होंने भी जाने का इरादा किया, अल्लाह तआला ने क़रम किया और इन्हें इससे मेहफूज़ रखा और वो हुज़ूर के साथ डटे रहे यहाँ उस नेअमत और एहसान का ज़िक्र फ़रमाया है,

(४) तुम्हारी तादाद भी कम थी, तुम्हारे पास हथियारों और सवारों की भी कमी थी,

(५) चुनांचे ईमान वालो ने बद्र के दिन सब और तक्वा से काम लिया, अल्लाह तआला ने वादे के मुताबिक पांच हजार फ़रिशतों की मदद भेजी और मुसलमानों की विजय और काफ़िरों की पराजय हुई,

(६) और दुश्मन की बहुतात और अपनी अल्पसंख्या से परेशानी और बेचैनी न हो,

(७) तो चाहिये कि बन्दा उस ज़ात पर तज़र रखे जो हाज़तमन्द को उसकी हाज़त की पूर्ति के साधन उपलब्ध कराता है, यानी अल्लाह तआला, और उसीपर शरोसा रखे,

अमल करने वालों का क्या अच्छा नेग है^(११) (१३६) तुमसे पहले कुछ तरीके बर्ताव में आचुके हैं^(१२) तो ज़मीन में चलकर देखो कैसा अन्जाम हुआ झुटलाने वालों का^(१३) (१३७) यह लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़गारों को नमीहत है^(१४) और न सुस्ती करो और न ग़म खाओ^(१५) तुम्हीं ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो^(१६) अगर तुम्हें^(१७) कोई तकलीफ़ पड़ती तो वो लोग भी वैसी ही तकलीफ़ पा चुके हैं^(१८) और ये दिन हैं जिनमें हमने लोगों के लिये धारियां रखी हैं^(१९) और इसलिये कि अल्लाह पहचान करावे ईमान वालों की^(२०) और तुम में से कुछ लोगों को शहादत का मरतबा दे और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को^(२१) और इसलिये कि अल्लाह मुसलमानों का निखार करदे^(२२) और काफ़िरों को मिटा दे^(२३) (१४१) क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी अल्लाह ने तुम्हारे गाज़ियाँ (धर्मयौद्धाओं) का इम्तिहान न लिया और न सब्र वालों की आजमायश की^(२४) (१४२) और तुम तो मौत की तमन्ना किया करते थे उसके मिलने से पहले^(२५) तो अब वह तुम्हें नज़र आई आँखों के सामने^(२६)

خَلِيلَيْن فِيهَا وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَمَلِينَ ۖ قَدْ
خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۖ فَنُزِّلُوا فِي الْأَرْضِ
فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۚ هَذَا
بَيِّنٌ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۚ
وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا ۚ وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ۚ إِن يَسْأَلْكُمُ قَرْبُ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ
قَرْبٌ مِّثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْآيَاتُ نُنَادِي بِهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ
وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۚ
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۚ وَلِيُمَيِّضَ اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا وَيُخَيِّطَ الْكَافِرِينَ ۚ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ
تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ
وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ ۚ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمْتَمُونَ الْمَوْتَ
مِنْ قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ ۚ فَقَدْ رَآيْتُمُوهُ وَأَنْتُمْ

مَنْزِل

(८) इस तरह कि उनके बड़े बड़े सरदार क़त्ल हों और गिरफ़्तार किये जाएं जैसा कि बद्र में पेश आया।

सूरए आले इमरान - चौदहवाँ रूकू

(१) इस आयत में सूद की मनाही फ़रमाई गई और उस ज़ियादती पर फटकारा गया जो उस ज़माने में प्रचलित थी कि जब मोआद आ जाती थी और कर्ज़दार के पास अदा की कोई शक्ति न होती तो कर्ज़ देने वाला माल ज़्यादा करके मुदत बढ़ा देता और ऐसा बार बार करते, जैसा कि इस मुल्क के सूद ख़ोर करते हैं और उसको सूद दर सूद कहते हैं। इससे साबित हुआ कि बड़े गुनाह से आदमी ईमान से बाहर नहीं हो जाता।

(२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, इसमें ईमान वालों का हिदायत है कि सूद बरकरार नो चीज़ें अल्लाह तआला ने हारम फ़रमाई उनको हलाल न जाने क्योंकि स्पष्ट (क़तई) हारम को हलाल जानना कुफ़्र है।

(३) कि रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अनुकरण अल्लाह की फ़रमाबंदारी है और रसूल की नाफ़रमानी करने वाला अल्लाह का फ़रमाबंदार नहीं हो सकता।

(४) तीब्र और फ़र्ज़ों की अदायगी और फ़रमाबंदारी और कर्म निष्ठा अपना कर।

(५) यह जन्नत के फैलाव का बयान है, इस तरह कि लोग समझ सकें क्योंकि उन्होंने सबसे बसीअ लम्बी चौड़ी जो चीज़ देखी है वह आसमान व ज़मीन ही है। इससे वो अन्दाज़ा कर सकते हैं कि अगर आसमान और ज़मीन के दर्ज़ दर्ज़ और परत परत बनाकर जोड़ दिये जाएं और सबका एक परत कर दिया जाए, इससे जन्नत के अरज़ का अन्दाज़ा होता है कि जन्नत कितनी विस्तृत है। हिरकिल बादशाह ने सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में लिखा कि जब जन्नत की ये बुसअत अर्थात फैलाव है कि आसमान और ज़मीन उसमें आ जाएं तो फिर दोज़ख़ कहाँ है। हुज़ुर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जवाब में फ़रमाया, गुब्बानल्लाह, जब दिन आता है तो रात कहाँ होती है। इस बात का अर्थ अत्यन्त गहरा है। ज़ाहिरी पहलू यह है कि आसमान की चाल से एक दिशा में दिन हासिल होता है तो उसकी विपरीत दिशा में रात होती है। इसी तरह जन्नत ऊपर की दिशा में है और दोज़ख़ नीचे की तरफ़ है। यहूदियों ने यही सवाल हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो से किया था, तो आपने भी यही जवाब दिया था। इसपर उन्होंने कहा कि तीरात में भी इसी तरह समझाया गया है। मानी ये हैं कि अल्लाह की कुदरत और इज़्जियार में कुछ दूर नहीं, जिस चीज़ को जहाँ चाहें रखें। यह इन्सान की तंगनज़री है कि किमी चीज़ का विस्तार और फैलाव देखकर हैरान होता है और पठने लगता है कि ऐसी बड़ी चीज़ कहाँ समाएगी। हज़रत अनुस बिन मालिक रदियल्लाहो अन्हो से पूछा गया कि जन्नत आसमान में है या ज़मीन में। फ़रमाया, कौन सी ज़मीन और कौन सा आसमान है जिसमें जन्नत समा सके। अर्ज किया गया फिर कहाँ है, फ़रमाया आसमानों

के ऊपर, अर्श के नीचे.

(६) इस आयत और इस से ऊपर की आयत "बन्तकुन्नारल्लती उईदत लिलकाफिरीन" से साबित हुआ कि जन्नत दांजन्न पैदा हो चुकी, मौजूद हैं.

(७) यानी हर हाल में खर्च करते हैं. बुखारी और मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया खर्च करो, तुमपर खर्च किया जाएगा, यानी खुदा की राह में दो, तुम्हें अल्लाह की रहमत से मिलेगा.

(८) यानी उनसे कोई बड़ा या छोटा गुनाह सरज़द हो.

(९) और तौबह करें और गुनाह से बाज़ आएँ और आइन्दा के लिए इस से दूर रहने का पक्का निश्चय करें कि यह कुबूल की जाने वाली तौबह की शर्तों में से है.

(१०) खज़ूर बेचने वाले तैवान के पास एक सुंदर औरत खज़ूर खरीदने आई. उसने कहा ये खज़ूर तो अच्छी नहीं हैं, ऊमदा खज़ूरें मकान के अन्दर हैं. इस बहाने से उसको मकान में ले गया और पकड़ कर लिपटा लिया और मुँह चूम लिया. औरत ने कहा खुदा से डर. यह सुनते ही उसको छोड़ दिया और शर्मिन्दा हुआ. और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हो कर हाल अर्ज़ किया. इस पर यह आयत "बल्लजीना इज़ा फ़अलू" (और वो कि जब करें) उतरी. एक कौल यह है कि एक अन्सारी और एक सक़फ़ी दोनों में महबूत थी और हर एक ने एक दूसरे को भाई बनाया था. सक़फ़ी जिहाद में गया और अपने मकान की देखरेख अपने भाई अन्सारी के सुपुर्द कर गया. एक रोज़ अन्सारी गोश्त लाया. जब सक़फ़ी की औरत ने गोश्त लेने के लिये हाथ बढ़ाया तो अन्सारी ने उसका हाथ चूम लिया और चूमते ही उसको सख्त पछतावा और शर्मिन्दगी हुई और वह जंगल में निकल गया, अपने सर पर खाक डाली और मुँह पर तमाचे मारे. जब सक़फ़ी जिहाद से वापस आया तो उसने अपनी बीवी से अन्सारी का हाल पूछा. उसने कहा खुदा ऐसे भाई न बढ़ाए और फिर सारी घटना बताई. अन्सारी पहाड़ों में रोता तौबह करता था. सक़फ़ी उसको तलाश करके सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खिदमत में लाया, उसके बारे में यह आयत उतरी.

(११) यानी फरमाँबरदारों के लिये बेहतर बदला है.

(१२) पिछली उम्मतों के साथ जिन्होंने दुनिया के लालच और इसकी लज़्ज़तों की तलब में नवियों रसूलों का विरोध किया. अल्लाह तआला ने उन्हें मोहलतें दीं, फिर भी वो सीधी राह पर न आए, तो उन्हें हलाक व बर्बाद कर दिया.

(१३) ताकि तुम सबक़ हासिल करो.

(१४) उसका जो उहद की जंग में पेश आया.

(१५) उहद की जंग में.

(१६) बद्र की लड़ाई में, इसके बावजूद उन्होंने दुस्साहम या कम-हिम्मती नहीं की और उनसे मुक़ाबला करने में सुस्ती से काम न लिया तो तुम्हें भी सुस्ती और कम-हिम्मती न चाहिये.

(१७) कभी किसी की बारी है, कभी किसी की.

(१८) संघ और महबूतों के साथ, कि उनको परिश्रम और नाकामी जगह से नहीं हटा सकती और उनके पाँच डगमगा नहीं सकते.

(१९) और उन्हें गुनाहों से पाक कर दे.

(२०) यानी काफ़िरों से जो मुसलमानों को तकलीफ़ पहुंचती हैं वो तो मुसलमानों के लिये शहादत और पाकीज़गी है, और मुसलमान जो काफ़िरों को क़त्ल करें तो यह काफ़िरों की बर्बादी और उनका उन्मूलन यानी जड़ से उखाड़ फेंकना है.

(२१) कि अल्लाह की रज़ा के लिये कैसे ज़रूरी खाते और तकलीफ़ उठाते हैं, इससे ऊपर कोप है जो उहद के दिन काफ़िरों के मुक़ाबले से भागे.

(२२) जब बद्र के शहीदों के दर्जों और गरतबे और उनपर अल्लाह तआला के इनाम और अहसान बयान फ़रमा दिये गए, तो जो मुसलमान वहाँ हाज़िर न थे उन्हें हसरत हुई और उन्होंने आरजू की काश किसी जिहाद में उन्हें हाज़िरी नसीब हो जाए और शहादत के दर्जें मिलें. उन्हीं लोगों ने हज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से उहद पर जाने के लिये आग्रह किया था. उनके बारे में यह आयत उतरी.

पन्द्रहवाँ रूकू

और मुहम्मद तो एक रसूल हैं^(१) उनसे पहले और रसूल हो चुके^(२) तो क्या वो इन्तिहाल फरमाएं या शहीद हों तो तुम उल्टे पाँव फिर जाओगे और जो उल्टे पाँव फिरगा अल्लाह का कुछ नुकसान न करेगा और जल्द ही अल्लाह शुक्र वालों को सिला (इनाम) देगा^(३) ॥ १४४ ॥ और कोई जान खुदा के हुक्म के बिना नहीं मर सकती^(४) सब का वक्त लिखा रखा है^(५) और जो दुनिया का इनाम चाह^(६) हम उसमें से उसे दें और जो आखिरत का इनाम चाहें हम उसमें से उसे दें^(७) और करीब है कि हम शुक्र वालों को सिला अता करें ॥ १४५ ॥ और कितने ही नवियों ने जिहाद किया उसके साथ बहुत खुदा वाले थे तो सुस्त न पड़े उन मुसीबतों में जो अल्लाह की राह में उन्हें पहुंची और न कमजोर हुए और न दबे^(८) और सब्र वाले अल्लाह को मेहबूब हैं ॥ १४६ ॥ और वो कुछ भी न कहते थे सिवा इस दुआ के^(९) कि ऐ रब हमारे बख्श दे हमारे गुनाह और जो ज़्यादातियाँ हमने अपने काम में कीं^(१०) और हमारे कदम जमा दे और हमें काफिर लोगों पर मदद दे^(११) ॥ १४७ ॥

अल عمران

१२

क़त्तल

تَنْظُرُونَ ۖ وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۖ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ أَفَأَمِنَ مَن مَّاتَ أَوْ قُتِلَ ۚ انْقَلَبْتُمْ
عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ ۚ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَىٰ عَقْبَيْهِ ۖ فَلَئِنْ
يَضُرَّ اللَّهُ شَيْئًا ۖ وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ۝
وَمَا كَانَ لِإِنْسٍ أَنْ يَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ كَثِيرًا
مُّوَجَّعًا ۖ وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا ۖ نُؤْتِهِ مِنْهَا ۖ
وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ ۖ نُؤْتِهِ مِنْهَا ۖ وَسَيَجْزِي
الشَّاكِرِينَ ۝ وَكَأَيِّن مِّن نَّبِيٍّ قُتِلَ ۖ مَعَهُ
رَبِّيُونَ كَثِيرٌ ۖ فَمَا وَهَنُوا لِمَا أَصَابَهُمْ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا ۖ وَاللَّهُ
يُحِبُّ الصَّابِرِينَ ۝ وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ إِلَّا أَن
قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي
أَمْرِنَا ۖ وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ

مَنْ

सूरए आले इमरान - पन्द्रहवाँ रूकू

- (१) और रसूलों के भेजे जाने का उद्देश्य रिसालत की तबलीग और हुज्जत का लाज़िम कर देना है, न कि अपनी क़ौम के बीच हमेशा मौजूद रहना।
- (२) और उनके मानने वाले उनके बाद उनके दीन पर बाक़ी रहे, उहद की लड़ाई में जब काफ़िरों ने पुकारा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम शहीद हो गए और शैतान ने यह झूठी अफवाह मशहूर की तो सहाबा को बहुत बेचैनी हुई और उनमें से कुछ लोग भाग निकले, फिर जब पुकार लगाई गई कि रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ रखते हैं तो सहाबा की एक जमाअत वापस आई, हुज़ूर ने उन्हें इस तरह भाग जाने पर बुरा भला कहा, उन्होंने ने अज़्र किया कि हमारे माँ बाप आप पर कुर्बान हों, आपकी शहादत की ख़बर सुनकर हमारे दिल टूट गए और हमसे उहदा न गया, इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि नवियों के बाद भी उम्मतों पर उनके दीन का अनुकरण लाज़िम रहता है, तां अगर ऐसा होता भी तो हुज़ूर के दीन का पालन और उसकी हिमायत लाज़िम रहती।
- (३) जो न फिर और अपने दीन पर जमा रहे, उनको शुक्र करने वाले फ़रमाया क्योंकि उन्होंने अपने डटे रहने से इस्लाम की नेअमत का शुक्र अदा किया, हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो फ़रमाते थे कि हज़रत अबू बक्र सिदीक रदियल्लाहो अन्हो शुक्र करने वालों के अमीन हैं।
- (४) इसमें जिहाद की तसीब है, और मुसलमानों को दुश्मन के मुकाबले पर बहादुर बनाया जाता है कि कोई व्यक्ति अल्लाह के हुक्म के बिना मर नहीं सकता, चाहे वो मौत के मुंह में घुस जाए, और जब मौत का वक्त आता है तो कोई तदवीर नहीं बचा सकती।
- (५) इससे आगे पीछे नहीं हो सकता।
- (६) और उसको अपने अमल और फ़रमाँबरदारी से दुनिया के फ़ायदे की तलब हो।
- (७) इससे साबित हुआ कि नियत पर सारा आधार है, जैसा कि बुश्रायी व मुस्लिम की हदीस में आया है।
- (८) ऐसा ही ईमानदार को चाहिये।
- (९) यानी दीन की हिमायत और जंग के मैदान में उनकी ज़बान पर कोई ऐसा शब्द न आता जिसमें घबराहट या परेशानी या डगमगाहट का शुबह भी होता, बल्कि वह दृढ़ संकल्प के साथ डटे रहते और दुआ करते।
- (१०) यानी तमाम छोटे बड़े गुनाह, इसके बावजूद कि वो लोग अल्लाह से डरने वाले थे फिर भी गुनाहों का अपनी तरफ़ जोड़ना उनकी विनीति, इन्किसारी और नफ़रत और बन्दगी के अदब में से है।
- (११) इससे यह मसअला मालूम हुआ कि हाज़त तलब करने से पहले तौबह इस्तिग़फ़ार दुआ के तरीक़ों में से है।

तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया का ईनाम दिया^(१२) और आखिरत के सवाब की खूबी^(१३) और नेकी वो अल्लाह को प्यारे हैं^(१४)।

सोलहवाँ सूक़

ऐ ईमान वाले ! अगर तुम काफ़िरों के कहे पर चले^(१) तो वो तुम्हें उल्टे पाँव लौटा देंगे^(२) फिर टोटा खाके पलट जाओगे^(३)।^(१४५) वल्कि अल्लाह तुम्हारा मौला है और वह सबसे बेहतर मददगार^(१५०) कोई दम जाता है कि हम काफ़िरों के दिल में रोव (भय) डालेंगे^(१) कि उन्होंने अल्लाह का शरीक ठहराया जिस पर उसने कोई समझ न उतारी उनका ठिकाना दोज़ख है और क्या बुरा ठिकाना नाइन्साफ़ों का^(१५१) और बेशक अल्लाह ने तुम्हें सच कर दिखाया अपना वादा जबकि तुम उसके हुक्म से काफ़िरों को क़त्ल करते थे^(१५२) यहां तक कि जब तुमने वुज़दिली या कायरता की और हुक्म में झगड़ा डाला^(१५३) और नाफ़रमानी की^(१५४) वाद इसकें कि अल्लाह तुम्हें दिखा चुका तुम्हारी खुशी की बात^(१५५) तुम में कोई दुनिया चाहता था^(१५६) और तुम में कोई आखिरत चाहता था^(१५७) फिर तुम्हारा मुंह उनसे फेर दिया कि तुम्हें आजमाए^(१५८) और बेशक उसने तुम्हें माफ़ कर दिया और अल्लाह मुसलमानों पर फ़ज़ल करता है^(१५९)।

الْكَافِرِينَ ۖ فَآتَاهُمُ اللَّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَ
حَسَنَ ثَوَابِ الْآخِرَةِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا
يَرُدُّوكُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ ۝ بَلِ
اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ ۝ سَلِّقُوا فِي
قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ ۖ بِمَا أَشْرَكُوا بِآلِلَّهِ
مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانٌ ۖ وَمَا لَهُمُ النَّارُ ۖ وَ
يُسْأَلُ مَثْوًى الظَّالِمِينَ ۝ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ
وَعْدَهُ إِذْ تَحْشُرُونَهُمْ بِأَذْنِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا فَشِلْتُمْ وَ
تَنَارَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِمَّن بَعْدَ مَا
أَرْسَلَكُمْ مَا تُحِبُّونَ ۖ مِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا وَ
مِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۖ ثُمَّ صَرَّفَكُمْ عَنْهُمْ
لِيَبْلِغَكُمْ ۖ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۖ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ

(१२) यानी विजय और कामयाबी और दुश्मनों पर ग़लबा ।

(१३) मग़फ़िरत और ज़न्नत और जितना हज़क बनता है, उससे कहीं ज्यादा इनाम ।

सूरए आले इमरान - सोलहवाँ सूक़

(१) चाहे वो यहूदी और ईसाई हों या मुनाफ़िक़ और मुथ़िक़ ।

(२) कुफ़र और बेदीनी की तरफ़ ।

(३) इस आयत से मालूम हुआ कि मुसलमानों पर लाज़िम है कि वो काफ़िरों से अलग रहें और हरगिज़ उनकी राय और सलाह पर अमल न करें और उनके कहे पर न चलें ।

(४) उहद की लड़ाई से वापस होकर जब अबू सुफ़ियान वगैरह अपने लश्कर वालों के साथ मक्का मुकर्रमा की तरफ़ रवाना हुए तो उन्हें इसपर अफ़सोस हुआ कि हमने मुसलमानों को बिल्कुल ख़त्म क्यों न कर डाला । आपस में सलाह करके इसपर तैयार हुए कि चलकर उन्हें ख़त्म कर दें । जब यह इरादा पक्का हुआ तो अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोव डाला और उन्हें डर हुआ और वो मक्का मुकर्रमा ही की तरफ़ वापस हो गए । अगरचे कारण तो विशेष था लेकिन रोव तमाम काफ़िरों के दिलों में डाल दिया गया कि दुनिया के सारे काफ़िर मुसलमानों से डरते हैं और अल्लाह के फ़ज़ल से इस्लाम सारे धर्मों पर ग़ालिब है ।

(५) उहद की लड़ाई में ।

(६) काफ़िरों की पराजय के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ जो तीर अंदाज़ थे वो कहने लगे कि मुथ़िकों को पराजय हो चुकी, अब यहाँ ठहरकर क्या करें । चलो कुछ लूट का माल हासिल करने की कोशिश करें । कुछ ने कहा कि अपनी जगह मत छोड़ो । रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया है कि तुम अपनी जगह कायम रहना, किसी हाल में जगह मत छोड़ना, जब तक मेरा हुक्म न आए । मगर लोग लूट के माल के लिये चल पड़े और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ दस से कम साथी रह गए ।

(७) कि मरकज़ छोड़ दिया और लूट का माल हासिल करने में लग गए ।

(८) यानी काफ़िरों की पराजय ।

(९) जो मरकज़ छोड़ कर लूट के लिये चल दिया ।

(१०) जो अपने मददगार अब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ अपनी जगह पर कायम रहकर शहीद हो गया ।

(११) और मुसीबतों पर तुम्हारे सब्र करने और डटे रहने की परीक्षा हो ।

जब तुम मुंह उठाए चले जाते थे और पीठ फेर कर किसी को न देखते और दूसरी जमाअत में हमारे रसूल तुम्हें पुकार रहे थे^(१२) तो तुम्हें गम का बदला गम दिया^(१३) और माफी इसलिये सुनाई कि जो हाथ से गया और जो उफ़ताद (मुसीबत) पड़ी उसका रंज न करो और अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है^(१४) फिर तुम पर गम के बाद चैन की नींद उतारी^(१५) कि तुम्हारी एक जमाअत को घेरें थी^(१६) और एक दल को^(१७) अपनी जान की पड़ी थी^(१८) अल्लाह पर वेजा गुमान करते थे^(१९) जाहिलियत या अज्ञानता के सं गुमान, कहते क्या इस काम में कुछ हमारा भी इख्तियार (अधिकार) है तुम फ़रमादो कि इख्तियार तो सारा अल्लाह का है^(२०) अपने दिलों में छुपाते हैं^(२१) जो तुम पर जाहिर नहीं करते, कहते हैं हमारा कुछ बस होता^(२२) तो हम यहां न मारे जाते, तुम फ़रमादो कि अगर तुम अपने घरों में होते जब भी जिनका मारा जाना लिखा जा चुका था अपनी क़त्लगाहों तक निकल कर आते^(२३) और इसलिये कि अल्लाह तुम्हारे सीनों की बात आजमाए और जो कुछ तुम्हारे दिलों

عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلَوْنَ
عَلَى أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أَخْرَجِكُمْ
فَأَنَّا بَكُمُ عَنَّا بَعِثَ لَكُمْ لِكَيْلًا تَحْزَنُوا عَلَى مَا فَاتَكُمْ
وَلَا مَا آصَابَكُمْ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۖ ثُمَّ
أَنزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمْنَةً نُبَأًا سَا
يَعْنَى طَائِفَةً مِّنْكُمْ ۖ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ
أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ
يَقُولُونَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ قُلْ إِنْ
الْأَمْرُ كُلُّهُ لِلَّهِ يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِمْ مَا لَا
يُبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ كَان لَنَا مِنَ الْأَمْرِ
شَيْءٌ مَا قُتِلْنَا هَهُنَا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ
لَبَرَّ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَى مَصَاجِعِهِمْ
وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحَّصَ مَا

(१२) कि खुदा के बन्दो, मंगी तरफ़ आओ ।

(१३) यानी तुमने जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म की अवहेलना करके आपको दुख पहुंचाया, उसके बदले तुम्हें पराजय के गम में डाल दिया।

(१४) जो रेब और डर दिलों में था; उसको अल्लाह तआला ने दूर कर दिया और अमन और राहत के साथ उनपर नींद उतारी, यहाँ तक कि मुसलमानों को ऊँघ आ गई और नींद उनपर छा गई, हज़रत अबू तलहा फ़रमाते हैं कि उहद के दिन नींद हमपर छा गई, हम मैदान में थे, तलवार हमारे हाथ से छूट जाती थी, फिर उठते थे, फिर छूट जाती थी।

(१५) और यह जमाअत मन्चे ईमान वालों की थी।

(१६) जो दोगली प्रवृत्ति के यानी मुनाफ़िक थे।

(१७) और वो ख़ौफ़ से परेशान थे, अल्लाह तआला ने वहाँ ईमान वालों का मुनाफ़िकों से इस तरह अलग किया था कि ईमान वालों पर तो अमन और इम्मीनान की नींद का ग़लबा था और मुनाफ़िक डर और दहशत में अपनी जानों के भय से परेशान थे, और यह खुली निशानी और साफ़ चमत्कार था।

(१८) यानी मुनाफ़िकों को यह गुमान हो रहा था कि अल्लाह तआला सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मदद न फ़रमाएगा, या यह कि हज़ूर शहीद हो गए, अब आपका दीन बाक़ी न रहेगा।

(१९) विजय और कामयाबी, मौत और ज़िन्दगी सब उसके हाथ है।

(२०) मुनाफ़िक अपना कुफ़्र और अल्लाह के वादे में अपना संदेह करना और जिहाद में मुसलमानों के चल आने पर पछताना।

(२१) और हमें समझ होती तो हम घर से न निकलते, मुसलमानों के साथ मक्के वालों से लड़ाई के लिये न आते और हमारे सरदार न मारे जाते, पहले क़ौल का कायल अब्दुल्लाह बिन उवई बिन सलूल मुनाफ़िक है और इस क़ौल का कायल मुअत्तब बिन कुयैर।

(२२) और घरों में बैठ रहना कुछ काम न आता, क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से जो लिख गया है उसके सामने तदबीर और बहाना बेकार है।

में है^(२३) उसे खोल दे और अल्लाह दिलों की बात खूब जानता है^(२४) **﴿१५४﴾** वेशक वो जो तुम में से फिर गए^(२५) जिस दिन दोनों फौजें मिली थीं उन्हें शैतान ही ने लगज़िश (भुलावा) दी उनके कुछ कर्मों के कारण^(२६) और वेशक अल्लाह ने उन्हें माफ़ फ़रमाद दिया वेशक अल्लाह वख़शने वाला हिल्म (सहिष्णुता) वाला है^(२७)

सत्तरहवाँ सूक़

ऐ ईमान वाले, इन काफ़िरों^(१) की तरह न होना जिन्होंने अपने भाइयों की निखत कहा जब वो सफ़र या जिहाद को गए^(२) कि हमारे पास होते तो न मरते और न मारे जाते इसलिये कि अल्लाह उनके दिलों में उसका अफ़सोस रखे और अल्लाह जिलाता और मारता है^(३) और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है^(४) और वेशक अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ वा मर जाओ^(५) तो अल्लाह की वख़िश (इनाम) और रहमत^(६) उनके सारे धन दौलत से बेहतर है^(७) और अगर तुम मरो या मारे जाओ तो अल्लाह की तरफ़ उठना है^(८) **﴿१५८﴾** तो कैसी कुछ अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ मेहबूब, तुम उनके लिये नर्म दिल

فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝
إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْبُتَيْنِ الْجَمْعِينَ ۖ
إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۖ
وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَكَلَّمُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا صَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ
كَانُوا غُرَبًا لَوْ كَانُوا عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا
فُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ ۚ
وَاللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝
وَلَيْنَ قِتْلَتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ
مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝ وَلَيْنَ مُتُّمْ
أَوْ قِتْلَتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ۝ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ
اللَّهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًا غَلِيظَ الْقَلْبِ

مَزَلْ

(२३) इग़लाय या दोगलाफ़न

(२४) उससे कुछ छुपा नहीं और यह आजमाइश दूसरों को ख़बरदार करने के लिये है

(२५) और उहद की लड़ाई में भाग गए और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ तरह या चौदह सहाबा के सिवा कोई बाक़ी न रहा

(२६) कि उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म के विपरीत अपनी जगह छोड़ी

सूरए आले इमरान - सत्तरहवाँ सूक़

(१) यात्री इन्हे उबई वगैरह दोगली प्रवृत्ति वाले लोग

(२) और इस सफ़र में मर गए या जिहाद में शहीद हो गए

(३) मौत और ज़िन्दगी उसी के इन्तियार में है, चाहे तो मुसाफ़िर और गांजी को सलामत लाग और सुरक्षित घर में बैठे हुए को मौत दे, उन मुसाफ़िरों के पास बैठ रहना क्या किसी को मौत से बचा सकता है, और जिहाद में जाने से कब मौत लाज़िम है, और अगर आदमी जिहाद में मारा जाए तो वह मौत घर की मौत से कहीं ज्यादा अच्छी है, जिहाज़ा मुसाफ़िरों का यह क़ौम वारि़ल और ख़ाली धांखा है, और उनका मक़सद मुसलमानों को जिहाद से नफ़रत दिलाना है, जैसा कि अगली आयत में इरशाद होता है

(४) और मान लो वह सूरत पेश ही आजाती है जिसका तुम्हें डर दिलाया जाता है

(५) जो ख़ुदा की राह में मरने पर हासिल होती है

(६) यहाँ बन्दगी के दर्जों में से तीनों दर्जों का बयान फ़रमाया गया पहला दर्ज़ा तो यह है कि बन्दा दोज़ख़ के डर से अल्लाह की इबादत करे, तो उसका दोज़ख़ के अज़ाब से अन्न दिया जाता है, इसकी तरफ़ "लमगाफ़िरतुम मिनल्लाह" (तो अल्लाह की बख़िश) में इशारा है, दूसरी क्रिम यो बन्द हैं जो जन्नत के शौक में अल्लाह की इबादत करते हैं, इस की तरफ़ "व-रहमतुन" (और रहमत) में इशारा है, क्योंकि रहमत भी जन्नत का एक नाम है, तीसरी क्रिम वह मुख़लिस बन्द हैं जो अल्लाह के इश्क और उसकी पाक ज़ान से महबूबत में उसकी इबादत करते हैं और उनका लक्ष्य उसकी ज़ान के सिवा और कुछ नहीं है, उन्हें अल्लाह तआला अपने करम के दायरे में अपनी नज़ली या प्रकाश से नवाज़ेगा, इसकी तरफ़ "ले इलल्लाहे तोहशरुन" (तो अल्लाह की तरफ़ उठना है) में इशारा है

हुए^(७) और अगर तुन्दमिजाज (कुछ स्वभाव) सख्त दिल होते^(८) तो वो जरूर तुम्हारे गिर्द से परेशान होजाते तो तुम उन्हें माफ़ फ़रमाओ और उनकी शफ़ाअत करो^(९) और कामों में उनसे मशवरा लो^(१०) और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो^(११) वेशक तबक्कुल (भरोसा करने) वाले अल्लाह को प्यारे हैं^(१२) और अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर गालिब नहीं आ सकता^(१३) और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो ऐसा कौन है जो फिर तुम्हारी मदद करे और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये^(१४) और किसी नबी पर ये गुमान नहीं हो सकता कि वह कुछ छुपा रखे^(१५) और जो छुपा रखे वह क़यामत के दिन अपनी छुपाई हुई चीज़ लेकर आएगा फिर हर जान को उनकी कमाई भरपूर दी जाएगी और उनपर जुल्म न होगा^(१६) तो क्या जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चला^(१७) वह उस जैसा होगा जिसने अल्लाह का ग़ज़व (प्रकोप) ओढ़ा^(१८) और उसका ठिकाना जहन्नम है और क्या बुरी जगह पलटने की^(१९) वो अल्लाह के यहाँ दर्जा दर्जा हैं^(२०) और अल्लाह उनके काम देखता है^(२१) वेशक अल्लाह का वज़ा एहसान हुआ^(२२) मुसलमानों पर कि उनमें उन्हीं में से^(२३) एक रसूल^(२४) भेजा जो उनपर उसकी आयतें पढ़ता है^(२५) और उन्हें पाक करता

لَا تَقْصُوا مِنْ حَوْلِكَ دَفَاعُ عَنْهُمْ وَاسْتَعْفُ
لَهُمْ وَشَاوَرَهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ۝ إِنَّ
يَنْصُرْكُمْ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ يَخْذُلْكُمْ فَمَنْ
ذَا الَّذِي يَنْصُرْكُمْ مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ ۚ وَمَنْ
يَغْلُ يَأْتِ بِمَا عَمِلَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ ثُمَّ تَوَفَّى كُلُّ
نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَفَمَنْ
اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ بِسَخَطِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ
وَمَا لَهُ يَحْكُمُ وَيُنْشِئُ الْمَصِيرَ ۝ هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ
اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِصِيرٍ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْ أَنْفُسِهِمْ
يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ

- (७) और आपके मिजाज में इस दर्जा लुप्त व कम और मेहरबानी और रहमत हुई कि उन्नत के दिन गुस्ता न फ़रमाया.
- (८) और सख्ती और दबाव से काम लेते.
- (९) ताकि अल्लाह तआला उन्हें माफ़ फ़रमाए.
- (१०) कि इसमें उनका दिल रखना भी है और सत्कार भी, और यह फ़ायदा भी कि मलाह व मशवरा सुन्नत हो जाएगा और आयन्द उम्मत इससे तफ़ा उठानी रहेगी. मशवरा के मानी हैं कि काम में राय लेना. इसमें इज्तिहाद का जायज़ होना और क़याम का तर्क होना साबित होता है. (मदारिक व अज़ाज़िन)
- (११) तबक्कुल के मानी हैं अल्लाह तआला पर भरोसा करना और कामों को उसके हवाले कर देना. उद्देश्य यह है कि बन्दे का भरोसा तमाम कामों में अल्लाह पर होना चाहिये. इससे मालूम हुआ कि मशवरा तबक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है.
- (१२) और अल्लाह की मदद वही पाता है जो अपनी शक्ति और ताक़त पर भरोसा नहीं करता, बल्कि अल्लाह तआला की कुदरत और रहमत का अभिलाषी रहता है.
- (१३) क्योंकि यह नबुव्वत यानी नबी होने की शान के ख़िलाफ़ है और सारे नबी मासूम हैं. उन से ऐसा संभव नहीं. न बहो (देव वाणी) में न और बहो में. और जो कोई व्यक्ति कुछ छुपा रखे उसका हुक्म इसी आयत में आगे बयान फ़रमाया जाता है.
- (१४) और उसकी आज्ञा की अवहेलना से बचा जैसे कि मुहाज़िर और अन्सार और उम्मत के नेक लोग.
- (१५) यानी अल्लाह का ताफ़रमान हुआ जैसे कि दाग़ली प्रवृत्ति वाले मुनाफ़िक और काफ़िर.
- (१६) हर एक का दर्जा और उसका स्थान अलग, नेक का अलग, बुर का अलग.
- (१७) मन्नत बड़ी नेअमत को कहते हैं और वेशक सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का रसूल बनकर तशरीफ़ लाना एक बड़ी नेअमत है, क्योंकि आदमी की पैदायश जिहालत, तामझी और कम अक़ली पर है तो अल्लाह तआला ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनमें भेज कर उन्हें गुमराही से सिद्धाई दी और हुक्म की बदौलत उन्हें दृष्टि प्रदान करके जिहालत या अज्ञानता से निकाला और आपके सद्क़े में सीधी सच्ची राह दिशाई. और आपके तुरफ़ल में अनगिनत नेअमते अता की.
- (१८) यानी उनके हाल पर मेहरबानी और अनुकम्पा फ़रमाने वाला और उनके लिये गौरव और इज़्ज़त का कारण, जिसकी पाकवाज़ी, सच्चाई, ईमानदारी और सदव्यवहार से वो परिचित हैं.
- (१९) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
- (२०) और उसकी किताब क़ुरआन मजीद उनको सुनाता है, इसके बावजूद कि उनके कान पहले कभी अल्लाह के कलाम या देववाणी से परिचित न हुए थे.

है^(२१) और उन्हें किताब व हिकमत(बोध) सिखाता है^(२२) और वो जरूर इस से पहले खुली गुमराही में थे^(२३) ॥१६४॥ क्या जब तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे^(२४) कि उससे दूनी तुम पहुंचा चुके हो^(२५) तो कहने लगे कि ये कहाँ से आई^(२६) तुम फ़रमादो कि वह तुम्हारी ही तरफ़ से आई^(२७) वेशक़ अल्लाह सब कुछ कर सकता है^(२८) ॥१६५॥ और वह मुसीबत जो तुम पर आई^(२९) जिस दिन दो फ़ौजें^(३०) मिली थीं वह अल्लाह के हुक्म से थी और इसलिये कि पहचान करा दे ईमान वालों की^(३१) ॥१६६॥ और इसलिये कि पहचान करा दे उनकी जो मुनाफ़िक़(दो गले) हुए^(३२) और उनसे^(३३) कहा गया कि आओ^(३४) अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मन को हटाओ^(३५) बोले अगर हम लड़ाई होती जानते तो जरूर तुम्हारा साथ देते और इस दिन ज़ाहिरी ईमान के मुकाबले में खुले कुफ़्र से ज़्यादा करीब हैं अपने मुँह से कहते हैं जो उनके दिल में नहीं और अल्लाह को मालूम है जो छुपा रहे हैं^(३६) ॥१६७॥ वो जिन्होंने अपने भाइयों के बारे^(३७) में कहा और आप बैठ रहे कि वो हमारा कहा मानते^(३८) तो न मारे जाते तुम फ़रमाओ तो अपनी ही मौत टाल दो अगर सच्चे हो^(३९) ॥१६८॥ और जो अल्लाह की राह में मारे गए^(४०) कभी उन्हें मुर्दा खयाल न करना बल्कि वो अपने रव के

وَالْحِكْمَةَ ۚ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝
أَوَلَمْ يَصَابِكُمْ مُصِيبَةٌ قَدْ أَصَبَتْكُمْ مِثْلُهَا ۚ
قُلْتُمْ إِنَّ هَذَا قُلُوبُ هَؤُلَاءِ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِكُمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ
النَّعْيِ الْجَمْعِينَ فِئَادِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ۝
وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ تَافَقُوا ۚ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا
فَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ اذْهَبُوا ۚ قَالُوا لَوْ تَعْلَمُ
فِتْنَا لَا تَبْعَدُكُمْ ۚ هُمْ يُلْكَفَرُ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ
وَمِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ مَا لَيْسَ
فِي قُلُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ۝ الَّذِينَ
قَالُوا الْإِحْوَاءُ بَرَاءٌ ۚ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُوا مَا قُتِلُوا ۚ
قُلْ فَاذْهَبُوا عَنْ أَنْفُسِكُمْ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ

مُتَرَجِم

- (२१) कुफ़्र और गुमराही और गुनाहों की प्रवृत्ति और दुर्व्यवहार और बुरी आदतों से।
(२२) और नफ़ा की, जानने और अमल करने, दोनों क्षमताओं को सम्पूर्ण करता है।
(२३) कि सत्य और असत्य, भलाई और बुराई में पहचान न रखते थे, और जिहालत और दिल के अंधेपन में गिरफ़्तार थे।
(२४) जैसी कि उहद की लड़ाई में पहुंची कि तुम में से सत्तर कत्ल हुए।
(२५) बद में कि तुम ने सत्तर को कत्ल किया, सत्तर को बन्दी बनाया।
(२६) और क्यों पहुंची जब कि हम मुसलमान हैं और हममें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मौजूद हैं।
(२७) कि तुम ने रसूल के करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मर्जी के खिलाफ़ मदीनह तैय्यिह से बाहर निकल कर जंग करने पर जोर दिया फिर वहाँ पहुंचने के बाद हुज़ूर के सज़्ज मना फ़रमाने के बावजूद लूट के माल के लिये अपनी जगह छोड़ी। यह कारण तुम्हारे कत्ल और पराजय का हुआ।
(२८) उहद में।
(२९) ईमान वालों और मुश्किों की।
(३०) यानी ईमान वाले और दांगली प्रवृत्ति वाले यात्री मुनाफ़िक़ छिप गए।
(३१) यानी अब्दुल्लाह बिन उयई बिन सलूल वगैरह मुनाफ़िक़ों से।
(३२) मुसलमानों की संख्या बढ़ाओ, दीन की हिफ़ाज़त के लिये।
(३३) अपने घर और माल का बचाने के लिये।
(३४) यानी दांगरी प्रवृत्ति, ज़वान पर कुठ, दिल में कुठ।
(३५) यानी उहद के शहीद जो वंश के हिसाब से उनके भाई थे, उनके हक़ में अब्दुल्लाह बिन उयई वगैरह मुनाफ़िक़ों ने।
(३६) और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जिहाद में न जाते या वहाँ से फिर आते।
(३७) रिवायत है कि जिस रोज़ मुनाफ़िक़ों ने यह बात कही, उसी दिन सत्तर मुनाफ़िक़ मर गए।
(३८) अक्सर मुफ़सिरो का क़ौल है कि यह आयत उहद के शहीदों के बारे में उतर, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि सय्यद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम्हारे भाई उहद में शहीद हुए, अल्लाह तआला ने उनकी रूहों को हरी चिट्ड़ियों के जिसम अता फ़रमाए, वो जन्नती नहरों पर सैर करते फिरते हैं, जन्नती में घाते हैं, जब उन्होंने घाते पीने रहने के पाक़ीज़ा पेश पाए, तो कहा कि हमारे भाइयों का कौन ख़बर दे कि हम जन्नत में ज़िन्दा हैं ताकि वो जन्नत से बेसमयती न करें और जंग से बैठ न रहें, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं उन्हें तुम्हारी ख़बर पहुंचाऊंगा, फिर यह आयत उतरी (अय दाऊद)। इससे साबित हुआ कि रूहें वाक्की हैं, जिस के बच होने के साथ बच नहीं होतीं।

पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं^(१५) (१६९) शायद (प्रसन्न) हैं उसपर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़ल (कृपा) से दिया^(१६) और खुशियाँ मना रहे हैं अपने पिछलों की जो अभी उनसे न मिले^(१७) कि उनपर न कुछ अन्देशा (डर) है और न कुछ ग़म (१७०) खुशियाँ मनाते हैं अल्लाह की नेमत और फ़ज़ल की और यह कि अल्लाह ज़ाया (नष्ट) नहीं करता अन्न (इनाम) मुसलमानों का^(१८) (१७१)

अठारहवाँ सूक़

वो जो अल्लाह व रसूल के बुलाने पर हाज़िर हुए बाद इसके कि उन्हें ज़ाह्य पहुंच चुका था^(१) उनके निकोकारों (सदाचारी) और परहेज़गारों के लिये बड़ा सवाब है (१७२) वो जिनसे लोगों ने कहा^(२) कि लोगों ने^(३) तुम्हारे लिये जत्था जोड़ा तो उनसे डरो तो उनका ईमान और ज़्यादा हुआ और बोले अल्लाह हमको वस है (१७३) और क्या अच्छा कारसाज़ (काम बनाने वाला)^(४) तो पलटे अल्लाह के एहसान और फ़ज़ल से^(५) कि उन्हें कोई वुराई न पहुंची और अल्लाह की खुशी पर चले^(६) और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है^(७) (१७४) वह तो शैतान ही है कि अपने दास्तों से धमकाता है^(८) तो उनसे न डरो^(९) और मुझसे डरो अगर ईमान रखते हो^(१०) (१७५) और ऐ मेहबूब, तुम उनका कुछ ग़म न

अल-अम्वाल

१००

क़िस्सातुल

اللّٰهُ اَمْوَالًا بَلْ اَحْيَا عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرَثُّوْنَ ۝
فَرِحْنَ بِمَا اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۝ وَكَسَبَتْهُمْ
بِالَّذِيْنَ كُنْتُمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ حَلْفِهِمْ ۝ اَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَخْزَنُوْنَ ۝ كَسَبَتْهُمْ رَبِّعَةً
مِّنْ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۝ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِلُّ اَ حْزَرَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ
مِنْ بَعْدِ مَا اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا
مِنْهُمْ ۝ وَاتَّقُوا اَجْرَ عَظِيْمٍ ۝ الَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ
النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ
فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۝ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ۝
فَاَتَقٰوْا رَبَّهُمْ ۝ مِّنْ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ
سُوْءٌ ۝ وَاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ۝
اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهُ ۝ فَلَا تَحْزَنُوْهُمْ

مَنْ

(३५) और ज़िन्दों की तरह खान पीते पेश करते हैं। आयत की पृष्ठभूमि इस बात को ज़ाहिर करती है कि ज़िन्दगी रुह और ज़िस्म दास्तों के लिये है। उलमा ने फ़रमाया कि शहीदों के ज़िस्म क़ब्रों में मेहफूज़ रहते हैं। मिट्टी उनको नुक़सान नहीं पहुंचाती और सहाबा के ज़माने में और उसके बाद अक्सर यह देखा गया है कि अगर कभी शहीदों की क़ब्र ख़ुल गई तो उनके ज़िस्म ताज़ा पाए गए (स्वाज़िन बौरह)।

(४०) फ़ज़ल और क़रामत और इनाम व एहसान, मौत के बाद ज़िन्दगी दी, अपना मुक़रब यानों प्रिय किया, जन्नत का रिज़क और उसकी नेअमत अता फ़रमाई, और इन मंज़िलों के हासिल करने के लिये शहादत की तौफ़ीक़ दी।

(४१) और दुनिया में ईमान और तक्वा पर हैं, जब शहीद होंगे, उनके साथ मिलेंगे और क़यामत के दिन अन्न और चैन के साथ उठाए जाएंगे।

(४२) बुध्दारी और मुस्लिम की हदीस में है, हुज़ूर ने फ़रमाया, जिस किसी का ख़ुदा की राह में ज़ह्म लगा वह क़यामत के दिन वैसा ही आएगा जैसा ज़ह्म लगने के वक़्त था। उसके ख़ून की ख़ुशबू कमूरी की हांगी और रंग ख़ून का। तिमिज़ी और नसाई की हदीस में है कि शहीद को क़त्ल से तक़लीफ़ नहीं होती, मगर ऐसी जैसे किसी को एक ख़राब लगे। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है शहीद के सारे गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं, सिवाय क़र्ज़ के।

सूरए आले इमरान - अठारहवाँ सूक़

(१) उहद की लड़ाई से तिपटने के बाद जब अबू सुफ़ियान अपने साथियों के हमराह राह मक़ाम पर पहुंचे तो उन्हें अफ़सोस हुआ कि वो वापस क्यों आएंगे, मुसलमानों का बिल्कुल स्वात्मा ही क्यों न कर दिया। यह ख़याल क़र्रं उन्होंने फिर वापस होने का इरादा किया। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने अबू सुफ़ियान के पीछे अपनी स्वात्मी का ऐलान फ़रमा दिया। सहाबा की एक जमाअत, जितकी तादाद सत्तर थी, और जो उहद की लड़ाई के ज़र्रों से चूर हो ग़रे थे, हुज़ूर के ऐलान पर हाज़िर हो गए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम इस जमाअत को लेकर अबू सुफ़ियान के पीछे स्वात्मा हो गए। जब हुज़ूर हमराजल असद स्थान पर पहुंचे, जो मदीन से आठ मील है, वहाँ मालूम हुआ कि मुशिक़ डर कर भाग गए, इस घटना के बारे में यह आपत उठी।

(२) यानी गुगम बिन मसज्द अथाज़ई ने।

(३) यानी अबू सुफ़ियान वसैरह मुशिक़ों ने।

(४) उहद की लड़ाई से वापस हुए अबू सुफ़ियान ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से पुकार कर कह दिया था कि अगले साल हमारी आपसी वद में लड़ाई होगी। हुज़ूर ने उनके जवाब में फ़रमाया, इय्या-अल्लाह। जब वह वक़्त आया और अबू सुफ़ियान मक्का वालों को

करो जो कुफ्र पर दौड़ते हैं^(११) वो अल्लाह का कुछ न विगाड़ेंगे और अल्लाह चाहता है कि आखिरत में उनका कोई हिस्सा न रखे^(१२) और उनके लिये बड़ा अज़ाब है^(१३) वो जिन्होंने ईमान के बदले कुफ्र मोल लिया^(१४) अल्लाह का कुछ न विगाड़ेंगे और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है^(१५) और कभी काफिर इस गुमान में न रहें कि वो जो हम उन्हें ढील देते हैं कुछ उनके लिये भला है हम तो इसीलिये उन्हें ढील देते हैं कि और गुनाह बढ़ें^(१६) और उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब है^(१७) अल्लाह मुसलमानों को इस हाल पर छोड़ने का नहीं जिसपर तुम हो^(१८) जब तक जुदा न कर दे गन्दे को^(१९) सुथरे से^(२०) और अल्लाह की शान यह नहीं ऐ आम लोगो तुम्हें ग़ैब का इल्म देदे हाँ अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे^(२१) तो ईमान लाओ^(२२) अल्लाह और उसके रसूलों पर और अगर ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिये बड़ा संवाव है^(२३) और जो बुख़ल(कंजूसी) करते हैं^(२४) उस चीज़ में जो अल्लाह ने

وَحَافُونَ إِنَّ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَلَا يَحْزُنُكَ
الَّذِينَ لَسَّارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَنْ يَصُرُوا
اللَّهُ شَيْئًا يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حِزًّا فِي
الْآخِرَةِ ۝ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اسْتَرَوْا
الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَصُرُوا اللَّهُ شَيْئًا ۝ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا
سُئِلُوا لَهُمْ حَيْرًا لَا نَفْسِهِمْ إِنَّمَا سُئِلُوا لَهُمْ
لِيَزِدُوا دُأْوًا أَوْ أَثْمًا ۝ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝ مَا كَانَ
اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ
يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۝ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِعَكُمْ
عَلَىٰ الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِيٰ مِنْ رُسُلِهِ مَنْ
يَشَاءُ ۝ فَأَمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۝ وَإِنْ تَوَلَّوْا
تَنَقَّبُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ

منزل

लेकर जंग के लिये खाना हुए तो अल्लाह तआला ने उनके दिल में डर डाला और उदबि वापस हो जाने का इरादा किया। इस मौके पर अबू सुफियान की नुपम बिन मसऊद अशजई से मुलाकात हुई जो उमरा करने आया था। अबू सुफियान ने कहा कि ये नुपम इस ज़माने में मेरी लड़ाई बद्र में मुहम्मद के साथ हो चुकी है और इस वक्त मुझे मुनासिब यह मालूम होता है कि मैं जंग में न जाऊं, वापस हो जाऊं, न मदीने जा और तदबीर के साथ मुसलमानों को जंग के मैदान में जाने से रोक, इनके बदले में मैं तुझे दस ऊंट दूंगा। नुपम ने मदीने पहुंच कर देखा कि मुसलमान जंग की तैयारी कर रहे हैं। उनसे कहने लगा कि तुम जंग के लिये जाना चाहते हो। मक्का वालों ने तुम्हारे लिये बड़ी फौजें जमा की हैं। ख़ुदा की क़सम तुम में से एक भी फिर कर न आएगा। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम मैं ज़रूर जाऊंगा चाहे मेरे साथ कोई भी न हो। फिर हुज़ूर सत्तर सवारों का साथ लेकर "हसुनल्लाहो व नेमल वकील" पढ़ते हुए खाना हुए। बद्र में पहुंचे, वहाँ आठ रत क़ायम किया। तिजारात का माल साथ था, उसको फ़रोसज़ किया, ख़ुब नफ़ा हुआ और सलामती के साथ मदीने वापस हुए, जंग नहीं हुई क्योंकि अबू सुफियान और मक्का वाले डर कर मक्का को लौट गए थे। इस घटना के सम्बन्ध में यह आयत उतरी।

- (५) अम्न और आफ़ियत के साथ तिजारात का मुनाफ़ा हासिल करके।
- (६) और दुश्मन के मुक़ाबले के लिये हिम्मत से निकले और ज़िहाद का संवाव पाया।
- (७) कि उसने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमावशकारी और ज़िहाद की तैयारी की नौफ़ीक़ दी और मुथ़िकों के दिलों में डर डाल दिया कि वो मुक़ाबले की हिम्मत न कर सकें और रास्ते से ही लौट गए।
- (८) और मुसलमानों को मुथ़िकों की बड़ी संख्या से डराने हैं जैसा कि नुपम बिन मसऊद अशजई ने किया।
- (९) यानी मुनाफ़िक़ और मुथ़िक जो शैतान के दोस्त हैं, उनका ख़ौफ़ न करो।
- (१०) क्योंकि ईमान का तकाज़ा ही यह है कि बन्दे को ख़ुदा ही का ख़ौफ़ हो।
- (११) चाहें वो कु़श के काफ़िर हों या मुनाफ़िक़ या यहूदियों के सरदार या अधर्मी, वो आपके मुक़ाबले के लिये किन्तन ही लश्कर जमा करें, कामयाब न होंगे।
- (१२) इसमें क़दरिय्या और मोअतज़िलत का रव है, और आयत इसपर दलील है कि अच्छाई और बुराई अल्लाह के इरादे से है।
- (१३) यानी मुनाफ़िक़ जो ईमान का कलिमा पढ़ने के बाद काफ़िर हुए या वो लोग जो ईमान की क्षमता रखने के बावजूद काफ़िर ही रहे और ईमान न लाए।
- (१४) सच्चाई से दुश्मनी और रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का विरोध करके। हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दर्याफ़्त किया गया, कौन शरह अच्छा है। फ़रमाया जिसकी उम्र लम्बी हो और कर्म नेक हों। अज़ा किया गया और बदतर कौन है। फ़रमाया, जिसकी उम्र लम्बी हो और कर्म ख़राब।
- (१५) ये इस्लाम का कलिमा पढ़ने वालो !

अपने फ़ज़ल से दी-हर गिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझे बल्कि वह उनके लिये बुरा है जल्द ही वह जिसमें बुखल किया था क़यामत के दिन उनके गले का तौक़ होगा^(१९) और अल्लाह ही वारिस है आसमानों और ज़मीन का^(२०) और अल्लाह तुम्हारे कामों का ख़बरदार है^(२०)

उन्नीसवाँ स्कू

बेशक अल्लाह ने सुना जिन्होंने कहा कि अल्लाह मोहताज है और हम ग़नी (मालदार)^(१) और अब हम लिख-रखेंगे उनका कहा^(२) और नवियों को उनका नाहक शहीद करना^(३) और फ़रमाएंगे कि चखा आग का अज़ाव^(१८१) यह बदला है उसका जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और अल्लाह बन्दों पर जुल्म नहीं करता^(१८२) वो जो कहते हैं अल्लाह ने हमसे इकरार कर लिया है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाए जब ऐसी कुरवानी का हुक्म न लाए जिसे आग खाए^(४) तुम फ़रमादो मुझसे पहले बहुत रसूल तुम्हारे पास खुली निशानियाँ और यह हुक्म लेकर आए जो तुम कहते हो फिर तुमने उन्हें क्यों शहीद किया अगर सच्चे हो^(५) (१८३) तो ऐ मेहबूब अगर वो तुम्हारी तकज़ीब करते हैं या तुम्हें झुटलाते हैं तो तुमसे अगले रसूलों को भी झुटलाया गया है

يَجْعَلُونَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمُ اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرٌ أَلَيْسَ لَهُمْ بَلٌّ هُوَ شَرٌّ لَهُمْ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلِلَّهِ مِيرَاتُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ يَسِّرُ مَا يَشَاءُ لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيَكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عٰهَدَ إِلَيْنَا الْآلِهَ أَنْ لَا يَرْسُولَ حَتَّى يَأْتِيَ بِنَبِيٍّ يَقُولُ أَتَأْكُلُهُ النَّارُ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ قَبْلِ يَاسِينَ بِالْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِنَّ كُنْتُمْ صَادِقِينَ فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ رَسُولٌ مِنْ قَبْلِكَ جَاءُوا

(१६) यानी मुनाफ़ि़क़ का।

(१७) सच्चे पक्के ईमान वाले से, यहाँ तक कि अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तुम्हारे अहवाल पर सूचित करके मुमिन और मुनाफ़ि़क़ हर एक का अलग कर दे। रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि सृष्टि के बनाने से पहले मेरी उम्मत मिट्टी की शकल में थी। उम्मी बस्त वह मेरे सामने अपनी सूरतों में पेश किये गये, जैसे कि हज़रत आदम पर पेश किये गए थे और मुड़ा इल्म दिया गया। कौन मुड़ा पर ईमान लाएगा, कौन कुफ़्र करेगा। यह ख़बर जब मुनाफ़ि़कों को पहुंची तो उन्होंने ने मज़ाक़ उड़ाते के अन्दाज़ में कहा कि मुहम्मद का गुमान है कि वो यह जानते हैं कि जो लोग अभी पैदा भी नहीं हुए, उनमें से कौन उनपर ईमान लाएगा, कौन कुफ़्र करेगा, इसके बावजूद कि हम उनके साथ हैं और वो हमें नहीं पहचानते। इसपर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मिनबर पर क़याम फ़रमाकर अल्लाह तआला की हम्द और तारीफ़ बयान करने के बाद फ़रमाया, उन लोगों का क्या हाल है जो मेरे इल्म पर ज़वान रखते हैं। आज से क़यामत तक जो कुछ होने वाला है उसमें से कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिस का तुम मुझसे ख़वाल करो और मैं तुम्हें उसकी ख़बर न दे दूँ। अब्दुल्लाह बिन हज़ाफ़ा सहमी ने खड़े होकर कहा कि मेरा बाप कौन है या रसूलल्लाह ? फ़रमाया हज़ाफ़ा फिर हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हा खड़े हुए, उन्होंने फ़रमाया या रसूलल्लाह हम अल्लाह के मअबूद और ख़ बने पर राज़ी हुए, इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हुए, कुरआन के इमाम होने पर राज़ी हुए, आपके नबी होने पर राज़ी हुए, हम आप से माफ़ी चाहते हैं; हज़रत ने फ़रमाया क्या तुम बाज़ आओगे, क्या तुम बाज़ आओगे फिर मिनबर से उतर आए। इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी। इस हदीस से साबित हुआ कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को क़यामत तक की तमाम चीज़ों का इल्म अता किया गया है और हज़रत के इल्म गैब पर ज़वान खोलना मुनाफ़ि़कों का तरीक़ा है।

(१८) तो उन बुजुर्गी वाले रसूलों को आज्ञात का ज्ञान यानी गैब देता है। और सैयदुल अन्बिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के हबीब, रसूलों में शर्वत बुजुर्गी वाले और बलन्द है। इस आयत से और इसके सिवा कई आयतों और हदीसों से साबित है कि अल्लाह तआला ने हज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को गैब के इल्म अता फ़रमाए। और आज्ञात का यह ज्ञान आपका चमत्कार है।

(१९) और तरदीक़ करो कि अल्लाह ने अपने बुजुर्गी वाले रसूलों को गैब पर सूचित किया है।

(२०) बुख़ल के मानी में अक्सर आलम इस तरफ़ गए हैं कि वाजिब का अदा न करना बुख़ल यानी कंज़ूमी है। इसीलिए बुख़ल पर ख़तरा फ़टकारें आई हैं। चुनावे इस आयत में भी एक फ़टकार आ रही है। तिरमिज़ी की हदीस में है, बुख़ल और दुर्व्यवहार से दो आदमों ईमानदार में जमा नहीं होती। अक्सर मुफ़स्सिग़ों ने फ़रमाया कि यहाँ बुख़ल यानी कंज़ूमी से ज़क़त न देने का तात्पर्य है।

(२१) बुख़रायी शरीफ़ की हदीस में है कि जिसको अल्लाह ने माल दिया और उसने ज़क़ात अदा न की, क़यामत के दिन वह माल माँप बनकर उसके गले में हार की तरह लिपटगा और यह कहकर डसता जाएगा कि मैं तेरा माल हूँ, मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ।

(२२) बही हमेशा रहने वाला, बाक्सी है, और सब मख़लूक फ़ानी। उन सब की मिल्क बानिन् हाते बानी है। ना विहायत नायमदी है कि इस न टहरने वाले माल पर कंज़ूमी की जाए और ख़ुदा की राह में न दिया जाए।

है (१८८) और अल्लाह ही के लिये है, आसमानों और जमीन की बादशाही (१८९) और अल्लाह हर चीज़ पर कादिर (शक्तिमान, समक्ष) है (१९०)।

बीसवाँ सूक़

वेशक आसमानों और जमीन की पैदायश और रात और दिन की आपसी बदलियों में निशानियाँ हैं (१) अक़ल वालों के लिये (२) (१९०) जो अल्लाह की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लेटे (३) और आसमानों और जमीन की पैदायश में गौर करते हैं (४) ऐ रब हमारे, तूने यह बेकार न बनाया (५), पाकी है तुझे तू हमें दोज़ख के अज़ाब से बचा ले (६) (१९१) ऐ रब हमारे वेशक जिसे तू दोज़ख में ले जाए उसे ज़रूर तूने रूखाई दी और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (१९२) ऐ रब हमारे हमने एक मुनादी (उदघोषक) को सुना (१९३) कि ईमान के लिये निदा (घोषणा) फ़रमाता है कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए, ऐ रब हमारे तू हमारे गुनाह वरख़ा दे और हमारी बुराइयाँ महब फ़रमादे (भुला दे) और हमारी मौत अच्छों के साथ कर (१९४) ऐ रब हमारे और हमें दे वह (१९५) जिस का तूने हमसे वादा किया है अपने रसूलों के ज़रिये और हमें क़यामत के दिन रूखा न कर वेशक तू वादा ख़िलाफ़ नहीं करता (१९६)।

وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَ
الْأَرْضِ ۝ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِنَّ فِي
خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ
لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ
اللَّهَ قِيَمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ
فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ
هَذَا بَاطِلًا ۝ سُبْحَنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝
رَبَّنَا إِنَّكَ مَن تَدْخِلُ النَّارَ فَقَدْ أَخْرَجْتَهُ ۝ وَمَا
لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا
يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ ۝ فَآمَنَّا ۝ رَبَّنَا
فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَا
مَعَ الْأَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ
وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۝ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝

मज़ल

पर उन्हें सब आसान हो जाए।

(१०) यहूदी और ईसाई।

(११) गुनाहों से।

(१२) अल्लाह ने आला ने तीरात और इंजील के बिद्वानों पर यह बाजिव किया था कि इन दोनों किताबों में सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तबुव्वत याबित करने वाली जो दलीलें हैं वो लोगों का ख़ूब अच्छी तरह ख़ोल कर समझाएँ और हरगिज़ न छुपाएँ।

(१३) और रिश्वतें लेकर हुज़ूर सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के गुणों और विशेषताओं को छुपाया जो तीरात और इंजील में बयान किये गए थे।

(१४) दीन की जानकारी का छुपाना मना है। हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस व्यक्ति से कुछ पूछा गया जिसको वह जानता है और उसने उसे छुपाया, क़यामत के दिन उसके आग की लगाम लगाई जाएगी। उलमा पर बाजिव है कि अपने इल्म से फ़ायदा पहुंचाएँ और सच्चाई ज़ाहिर करें और किसी बुरी ग़रज़ के लिये उसमें से कुछ न छुपाएँ।

(१५) यह आयत यहूदियों के बारे में उतरी जो लोगों को धोखा देने और गुमराह करने पर खुश हात और वादान होने के बावजूद यह पसन्द करते कि उन्हें आलम कहल जाए। इस आयत में खुद पसंदी करने वाले पर फिटकार है, और उसके लिये भी जो लोगों से अपने आपको आलम कहलवाते हैं या इसी तरह और कोई ग़लत विशेषता या गुण अपने लिये पसन्द करते हैं, उन्हें इससे सबक हासिल करना चाहिये।

(१६) इसमें उन गुस्ताख़ों का रद्द है जिनको न कहा था कि अल्लाह फ़कीर है।

सूरए आले इमरान - बीसवाँ सूक़

(१) सानेअ यानी निर्माता या विधाता, क़दीम यानी आदि, अलीम यानी जानकार, हकीम यानी हिकमत वाला और कादिर यानी शक्ति वाला, अर्थात् अल्लाह के अस्तित्व का प्रमाण देने वाली।

(२) जिनकी अक़ल गन्दे ख़यालों से पाक हो और सृष्टि के चमत्कारों को विश्वास और तर्क की नज़र से देखते हों।

(३) यानी तमाम एहवाल में। मुस्लिम शरीफ़ में रियायत है कि सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम मज़लिसों में अल्लाह का ज़िक्र फ़रमाते थे। बन्दे का कोई हाल अल्लाह की याद से ख़ाली नहीं होना चाहिये। हदीस शरीफ़ में है, जो ज़चती बाग़ों के फलों का मज़ा लेना चाहे उसे चाहिये कि अल्लाह के ज़िक्र की कसरत यानी ज़ियादती करे।

(४) और इसमें उनके बनाने वाले की कुदरत और हिकमत पर दलील लाते हैं यह कहते हुए कि...

तो उनकी दुआ सुन ली उनके रब ने कि मैं तुम में काम वाले की मेहनत अकारत नहीं करता मर्द हो या औरत तुम आपस में एक हो^(१) तो वो जिन्होंने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और लड़े और मारे गए मैं जरूर उनके सब गुनाह उतार दूंगा और जरूर उन्हें वागों में ले जाऊंगा जिनके नीचे नेहरें बहती हैं^(२) अल्लाह के पास का सवाब और अल्लाह ही के पास का सवाब है^(३) ऐ सुनने वाले काफिरों का शहरों में अहले गहले फिरना कभी तुझे धोखा न दे^(४) ^(१९६) थोड़ा बरतना उनका ठिकाना दोड़ा है और क्या ही बुरा बिछौना^(५) ^(१९७) लेकिन वो जो अपने रब से डरते हैं उनके लिये जन्नतें हैं जिनके नीचे नेहरें बहें हमेशा उनमें रहें अल्लाह की तरफ की मेहमानी और जो अल्लाह के पास है वह नेकों के लिये सबसे भला^(६) ^(१९८) और वेशक कुछ किताबी ऐसे हैं कि अल्लाह पर ईमान लाते हैं और उस पर जो तुम्हारी तरफ उतरा और जो उनकी तरफ उतरा^(७) उनके दिल अल्लाह के हुजूर झुके हुए^(८) अल्लाह की

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّمَّنْ ذُكِّرَ أَوْ أُنْثِيَ بَعْضُكُم مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَآخَرُجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأَوْذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَا أَكْفِرُنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَا دُخِلَتْهُمْ جَنَّاتُ جَعَزَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ۝ لَا يَغْرُوكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۝ مَتَاءٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَا لَهُمْ جَنَّتُهُمْ وَيُبْسِ الْمَهَادُ ۝ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتُ جَعَزَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلْآبِرِينَ ۝ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خَشَعَتِ لِرَبِّهِمْ

मकल

(१) बल्कि अपनी पहचान का प्रमाण बताया ।

(२) इस निदा करने वाले या पुकारने वाले से मुसद या सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं, जिनकी शान में "दाइयन इलल्लाहे यिदज्जिहो" (अल्लाह की तरफ बुलाने है उसी के हुक्म से) आया है या कुरआन शरीफ ।

(३) नबियों और नेक लोगों के कि हम उनके फरमावसरों में दाखिल किये जाएं ।

(४) वह फ़ज़ल, मेहमानी और रहमत ।

(५) और कर्मों के बदले में औरत व मर्द के बीच कोई अन्तर नहीं, उम्मुल मुमिनीन हजरत उम्मे सलमा रदियल्लाहो अन्हा ने अज़्र किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम, मैं हिजरत में औरतों का कुछ ज़िक्र ही नहीं सुनती, यानी मर्दों की फ़ज़ीलत तो मालूम हुई लेकिन यह भी मालूम हो कि औरतों को हिजरत का कुछ सवाब मिलेगा, इस पर यह आयत उतरी और उनकी तसल्ली फ़रमा दी गई कि सवाब का आधार कर्म पर है, औरत का हो या मर्द का ।

(६) यह सब अल्लाह का फ़ज़ल और करम है ।

(७) मुसलमानों की एक जमाअत ने कहा कि काफिर और मुश्रिक, अल्लाह तआला के दुश्मन तो ऐश व आराम से हैं और हम तंगी और मशक्कत में, इसपर यह आयत उतरी और उन्हें बताया गया कि काफिरों का यह ऐश थोड़ी देर की पूंजी है और अन्त खराब ।

(८) बुखारी और मुस्लिम की हदीस में है कि हजरत उमर रदियल्लाहो अन्हा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मकान पर हाज़िर हुए तो उन्होंने देखा कि जगत के सरदार एक चोरिये पर आराम फ़रमा हैं, चमड़े का तकिया जिनमें तारियल के रेशे भरे हुए हैं, सर मुबारक के नीचे है, बदन मुबारक पर चोरिये के निशान आ गए हैं, यह हाल देखकर हजरत फ़ाक्क रो पड़े, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने राने का कारण पूछा तो अज़्र किया, या रसूलल्लाह कैसर और किमरा (रोम और ईरान के बादशाह) तो ऐश और राहत में हों और आप अल्लाह के रसूल होकर इस हालत में फ़रमाया, क्या तुम्हें पसन्द नहीं कि उनके लिये दुनिया हो और हमारे लिये आखिरत ।

(९) हजरत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया यह आयत नज़ाशी हवशा के बादशाह के वार में उतरी, उनकी दफ़ात के दिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने सहाबों से फ़रमाया चलो और अपने भाई की नमाज़ पढ़ो जिसने दूसरे मुल्क में दफ़ात पाई है, हुज़ूर बक़ीअ शरीफ़ में तशरीफ़ ले गए और हवशा की ज़मीन आपके सामने की गई और नज़ाशी बादशाह का जनाज़ा पेश नज़र हुआ, उसपर आपने चार तकयीयों के साथ नमाज़ पढ़ी और उसके लिये मग़फ़िरत की दुआ की, सुब्बानल्लाह, क्या नज़र है, क्या शान है, हवशा की धरती अरब में सरकार के सामने पेश कर दी जाती है, मुवाफ़िक़ों ने इसपर ताता मारा और कहा देखो हवशा के ईसाई पर नमाज़ पढ़ रहे हैं जिसका आपने कभी देखा ही नहीं और वह आपके दीन पर भी न था, इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी ।

आयतों के बदले ज़लील दाम नहीं लेते^(१५) ये वों हैं जिनका सवाव(पुण्य) उनके रब के पास है और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है^(१६) ऐ ईमान वालो, सब करो^(१७) और सब में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहवानी(चौकसी) करो और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि कामयाब हो^(२००)

सूरए निसा

सूरए^(१) निसा मदीने में उतरी, आयतें १७६, रूकू चौबीस, अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

पहला रूकू

ऐ लोगो^(२) अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया^(३) और उसी में उस का जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द व औरत फैला दिये और अल्लाह से डरो जिसके नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो^(४) बेशक अल्लाह हर वक़्त तुम्हें देख रहा है^(१) और यतीमों को उनके माल दो^(५) और सुथरे^(६) के बदले गन्दा न लो^(७) और उनके माल अपने मालों में मिला कर न खा जाओ बेशक यह बड़ा गुनाह है^(८) और अगर तुम्हें डर हो कि

لا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝
سُورَةُ النِّسَاءِ مَكِّيَّةٌ (۱۲)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۝
وَاتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا الْحَبِيثَ ۚ بِالطَّيِّبِ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَوْثًا كَبِيرًا ۝ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا

(१४) नम्रता, विनीति, इन्किसारी और ख़ुलूस के साथ.

(१५) जैसा कि यहूदियों के सरदार लेते हैं.

(१६) अपने दीन पर और उसको किसी सख्ती और तकलीफ़ वगैरह की वजह से न छोड़ो. सब के मानी में जुनैद बग़दादी रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि सब नफ़्स को नागवार और नापसन्दीदा काम पर रोकना है, वगैर पछतावे के. कुछ का कहना है कि सब की तीन क्रियमें हैं (१) शिकायत का छोड़ देना (२) जो भाग्य में लिखा है उसे कुबूल कर लेना और (३) सच्चे दिल से अल्लाह की रज़ा तलाश करना.

(४) सूरए निसा - पहला रूकू

(१) सूरए निसा मदीनाए तैय्यिबह में उतरी, इसमें २४ रूकू, १७६ आयतें, ३०४५ कलिमे और १६०३० अक्षर हैं.

(२) ये सम्बोधन आया है तमाम आदमी की औलाद को.

(३) अबुल बशर हज़रत आदम से, जिनको माँ बाप के बगैर मिट्टी से पैदा किया था. इन्सान की पैदाइश के आरम्भ का बयान करके अल्लाह की कुदरत की महानता का बयान फ़रमाया गया. अगरचे दुनिया के बेदीन अपनी बेअक़ली और नासमझी से इसका मज़ाक उड़ाते हैं लेकिन समझ चाले और अक़ल वाले जानते हैं कि ये मज़मून ऐसी ज़बरदस्त बुरहान से साबित है जिसका इन्कार असंभव है. जन गणना का हिसाब बता देता है कि आज से सौ बरस पहले दुनिया में इन्सानों की संख्या आज से बहुत कम थी और इससे सौ बरस पहले और भी कम. तो इस तरह अतीत की तरफ़ चलते चलते इस कमी की हद एक ज़ात करार पाएगी या थूँ कहिये कि क़बीलों की बहुसंख्या एक व्यक्ति की तरफ़ ख़त्म हो जाती है. मसलन, सैयद दुनिया में कराड़ों पाए जाएंगे मगर अतीत की तरफ़ उनका अन्त सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की एक ज़ात पर होगा और बनी इम्राईल क़ितन भी ज़्यादा हों मगर इस तमाम ज़ियादती का ख़ात हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की एक ज़ात होगी. इसी तरह और ऊपर को चलना शुरू करें तो इन्सान के तमाम समुदायों और क़बीलों का अन्त एक ज़ात पर होगा, उसका नाम अल्लाह की किन्नावों में आदम अलैहिस्सलाम है और मुमकिन नहीं कि वह एक व्यक्ति मानव उत्पत्ति या इन्साती पैदायश के मामूली तरीक़े से पैदा हो सके. अगर उसके लिये बाप भी मान लिया जाय तो माँ कहाँ से आए. इसलिये ज़रूरी है कि उसकी पैदायश बगैर माँ बाप के हो और जब बगैर माँ बाप के पैदा हुआ तो यक़ीनन उन्हीं अनासिर या तत्वों से पैदा होगा जो उसके अस्तित्व या वुजूद में पाए जाते हैं. फिर तत्वों में से वह तत्व उसका टिकाना हो और जिसके सिया दूसरे में वह न रह सके, लाज़िम है कि वही उसके वुजूद में ग़ालिब हो. इसलिये पैदायश की निश्चय उसी तत्व की तरफ़ की जाएगी. यह भी ज़ाहिर है कि मानव उत्पत्ति का मामूली तरीक़ा एक व्यक्ति से जारी नहीं हो सकना, इसलिये उसके साथ एक और भी हो कि जोड़ा होजाए और वह दूसरा व्यक्ति जो उसके बाद पैदा हो तो हिक़मत का तकाज़ा यही है कि उसी के जिस्म से

यतीम(अनाथ) लड़कियों में इन्साफ़ न करोगे^(८) तो निकाह में लाओ जो औरतें तुम्हें खुश आएँ दो दो और तीन तीन और चार चार^(९) फिर अगर डरो कि दो वीवियों को बराबर न रख सकोगे तो एक ही करो या कनीज़ें(दासियाँ) जिनके तुम मालिक हो पर उससे ज़्यादा करीब है कि तुम से जुल्म न हो^(१०) (३) और औरतों का उनके मेहर खुशी से दो^(११) फिर अगर वो अपने दिल की खुशी से मेहर में से तुम्हें कुछ दें ताँ उसे खाओ रचता पचता^(१२) (४) और बेअक़लों को^(१३) उनके माल न दो जो तुम्हारे पास हैं जिनको अल्लाह ने तुम्हारी वसर औकात(गुज़ारा) किया है और उन्हें उसमें से खिलाओ और पहनाओ और उनसे अच्छी बात कहो^(१४) (५) और यतीमों को आजमाते रहो^(१५) यहाँ तक कि जब वह निकाह के क़ाबिल हों तो अगर तुम उनकी समझ ठीक देखो तो उनके माल उन्हें सुपुर्द कर दो और उन्हें न खाओ हद से बढ़कर और इस जल्दी में कि कहीं बड़े न हो जाएँ और जिसे हाजत(आवश्यकता) न हो वह बँचता रहे^(१६) और जो हाजत वाला हो वह मुनासिब हद तक खाए फिर जब तुम उनके माल उन्हें सुपुर्द कराँ तो उनपर ग़वाह करलो और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने को^(१७) मर्दों के लिये हिस्सा

فِي الْيَتَامَىٰ فَاتَّخِذُوا مَاطَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَبْنًى
وَتِلْكَ وَرَبِّعٌ ۖ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةٌ
أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَلِكَ أَدْنَىٰ ۖ أَلَّا تَعْلَمُوا ۚ
وَاتُوا النِّسَاءَ صِدْقَتهُنَّ نَحْلَةً ۚ وَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ
شَيْءٍ مِنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَرِيئًا ۚ وَلَا تَوْتُوا
السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَمًا
وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا
مَعْرُوفًا ۚ وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَإِنْ
أَسْتَمْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا
تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ وَمَنْ كَانَ
غَنِيًّا فَلْيَسْتَعِظْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ وَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ
فَاشْهَدُوا عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۚ لِلرِّجَالِ

مَوْلَا

पैदा किया जाए क्योंकि एक व्यक्ति के पैदा होने से नष्ट तो पैदा हो चुकी मगर यह भी लाज़िम है कि उसकी बनावट पहले इन्सान से साधारण उत्पत्ति के अलावा किसी और तरीके से हो, क्योंकि साधारण उत्पत्ति दो के बिना संभव ही नहीं और यहाँ एक ही है, लिहाज़ा अल्लाह की हिकमत ने हज़रत आदम की एक बाई पसली उनके साँते में निकाली और उससे उनकी बीबी हज़रत हव्वा को पैदा किया, चूँकि हज़रत हव्वा साधारण उत्पत्ति के तरीके से पैदा नहीं हुई इसलिये वह औलाद नहीं हो सकती जिस तरह कि इस तरीके के ख़िलाफ़ मानव शरीर से बहुत से कीड़े पैदा हुआ करते हैं, वो उसकी औलाद नहीं हो सकते हैं, तीव्र से जागकर हज़रत आदम ने अपने पास हज़रत हव्वा को देखा तो अपने जैसे दुसरे को पाने की महबूत दिल में पैदा हुई, उनसे फ़रमाया तुम कौन हो, उन्होंने अर्ज़ किया औरत, फ़रमाया, किस लिये पैदा की गई हो, अर्ज़ किया आपका दिल बहलाने के लिये, ताँ आप उनसे मानुस हुए।

(४) उन्हें तोड़ो या काटो मत, हदीस शरीफ़ में है, जो रिज़क में बढ़ीतरी चाहे उसको चाहिये कि अपने रिश्तेदारों के साथ मेहरबानी से पेश आए और उनके अधिकारों का ख़याल रखे।

(५) एक व्यक्ति की निगरानी में उसके अनाथ भतीज का बहुत सा माल था, जब वह यतीम बालिग़ हुआ और उसने अपना माल तलब किया तो चचा ने देने में इन्कार कर दिया, इसपर यह आयत उतरी, इसको सुनकर उस व्यक्ति ने यतीम का माल उसके हवाले किया और कहा कि हम अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं।

(६) यानी अपने हलाल माल।

(७) यतीम का माल जो तुम्हारे लिये ह़राम है, उसको अच्छा समझकर अपने रद्दी माल से न बदलो क्योंकि वह रद्दी तुम्हारे लिये हलाल और पाक है, और यह ह़राम और नापाक।

(८) और उनके अधिकार का ख़याल न रख सकोगे।

(९) आयत के मानी में विभिन्न क़ौल हैं, हसन का क़ौल है कि पहले ज़माने में मदीने के लोग अपनी सरपरस्ती वाली यतीम लड़की से उसके माल की वजह से निकाह कर लेते जबकि उसकी तरफ़ रायत न होती, फिर उसके साथ सहवास में अच्छा व्यवहार न करते और उसके माल के वारिस बनने के लिये उसकी मौत की प्रतीक्षा करते, इस आयत में उन्हें इससे रोका गया, एक क़ौल यह है कि लोग यतीमों की सरपरस्ती से ताँ बड़बुदाफ़ी होने के डर से घबराते थे और ज़िना की पर्वाह न करते थे, उन्हें बताया गया कि अगर तुम नाइन्साफ़ी के डर से यतीमों की सरपरस्ती से बचते हो तो ज़िना से भी डरो और इससे बचने के लिये जो औरतें तुम्हारे लिये हलाल हैं उनसे निकाह करो और ह़राम के करीब मत जाओ, एक क़ौल यह है कि लोग यतीमों की विलायत और सरपरस्ती में ताँ नाइन्साफ़ी का डर करते थे और बहुत से निकाह करने में कुछ भी नहीं हिचकिचाते थे, उन्हें बताया गया कि जब ज़्यादा औरतें निकाह में हों तो उनके हक़ में नाइन्साफ़ी होने से डरो, उतरी ही औरतों से निकाह करो जिनके अधिकार अदा कर सको, इन्कारमा ने हज़रत

है उसमें से जो छोड़ गए मां बाप और कराबत (रिश्तेदार) वाले और औरतों के लिये हिस्सा है उसमें से जो छोड़ गए मां बाप और कराबत वाले तर्का (माल व जायदाद) थोड़ा हो या बहुत, हिस्सा है अन्दाज़ा बांधा हुआ^(१०) ॥६॥ फिर बांटते वक़्त अगर रिश्तेदार और यतीम और मिस्कीन (दरिद्र)^(११) आजाएं तो उसमें से उन्हें भी कुछ दो^(१२) और उनसे अच्छी बात कहो^(१३) ॥८॥ और डरें^(१४) वो लोग अगर अपने वाद कमज़ोर औलाद छोड़ते तो उनका कैसा उन्हें खतरा होता तो चाहिये कि अल्लाह से डरें^(१५) और सीधी बात करें^(१६) ॥९॥ वो जो यतीमों का माल नाहक खाते हैं वो तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं^(१७) और कोई दम जाता है कि भड़कते धड़े में जाएंगे^(१८) ॥१०॥

दूसरा रूकू

अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है^(१) तुम्हारी औलाद के बारे में^(२) बेटे का हिस्सा दो बेटियों के बराबर है^(३) फिर अगर निरी लड़कियां हों अगरचे दो से ऊपर^(४) तो उनको तर्के की दो तिहाई और अगर एक लड़की हो तो उसका आधा^(५) और मैयत के मां बाप को हर एक को उसके तर्के से छटा, अगर

تَصِيبُ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَ
لِلنِّسَاءِ تَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدِ وَالْأَقْرَبُونَ
مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ تَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۚ وَإِذَا
حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينُ
فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۚ
وَلْيَخْشَ الَّذِينَ كُوتِرُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّتَهُ ضَعْفًا
خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۚ
إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنشَاءً
يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ ثَارًا ۚ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۚ
يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ
الْأُنثَىٰ ۚ فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ
ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ
وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّدُّ مِمَّا تَرَكَ

इनसे अब्बास से रिवायत की कि कुरैश दस दस बल्कि इससे ज्यादा औरतें करते थे और जब उनका बोझ न उठ सकता तो जो यतीम लड़कियां उनकी सपरसती में होती उनके माल खर्च कर डालते. इस आयत में फ़रमाया गया कि अपनी क्षमता देख लो और चार से ज्यादा न करो ताकि तुम्हें यतीमों का माल खर्च करने की ज़रूरत पेश न आए. इस आयत से मालूम हुआ कि आज़ाद मर्द के लिये एक वक़्त में चार औरतों तक से निकाह जायज़ है, चाहे वो आज़ाद हों या दासी. तमाम उम्मत की सहमति है कि एक वक़्त में चार औरतों से ज्यादा निकाह में रखना किसी के लिये जायज़ नहीं सिवाय रमूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के. यह आप की विशेषताओं में से है. अबू दाऊद की हदीस में है कि एक व्यक्ति इस्लाम लाए। उनकी आठ बीबीयाँ थीं. हुज़ूर ने फ़रमाया उनमें से चार रखना. तिरमिज़ी की हदीस में है कि मीलान बिन सलम सक्करी इस्लाम लाए. उनकी दस बीबीयाँ थीं. वो साथ मुसलमान हुईं. हुज़ूर ने हुक्म दिया, इनमें से चार रखो.

(१०) इससे मालूम हुआ कि बीबीयाँ के बीच इन्साफ़ फ़र्ज़ है. नई पुरानी, सब अधिकारों में बराबर हैं. ये इन्साफ़ लिबास में, खाने पीने में, रहने की जगह में, और रात के सहवास में अनिवार्य है. इन बातों में सब के साथ एक सा सुलूक हो.

(११) इससे मालूम हुआ कि मेहर की अधिकारी औरतें हैं न कि उनके सपरसत. अगर सपरसतों ने मेहर वसूल कर लिया हो तो उन्हें लाज़िम है कि वो मेहर हक़दार औरत को पहुंचा दें.

(१२) औरतों को इस्तिथार है कि वो अपने शौहरो का मेहर का कोई हिस्सा हिवा करें या कुल मेहर मगर मेहर बरख़्ताने के लिये उन्हें मजबूर करना, उनके साथ दुर्व्यवहार न करना चाहिये क्योंकि अल्लाह तआला ने " **تِنَانَا لَكُمْ** " फ़रमाया जिसका मतलब है दिल की खुशी के साथ माफ़ करना.

(१३) जो इतनी समझ नहीं रखते कि माल कहाँ खर्च किया जाए इसे पहचानें. और जो माल को बेमहल खर्च करते हैं और अगर उनपर छोड़ दिया जाए तो वो जल्द नष्ट कर देंगे.

(१४) जिससे उनके दिल की तसल्ली हो और वो पेशान न हों जैसे यह कि माल तुम्हारा है और तुम होशियार हो जाओगे तो तुम्हारे सुपुर्द कर दिया जाएगा.

(१५) कि उनमें होशियारी और मामला जानने की समझ पैदा हुई या नहीं.

(१६) यतीम का माल खाने से.

(१७) जिहालत के ज़माने में औरतों और बच्चों को बिरासत न देते थे. इस आयत में उस रस्म को वातिल किया गया.

(१८) अज़नबी, जिन में से कोई मैयत का वारिस न हो.

(१९) तक्सीम से पहले, और यह देना मुस्तहब है.

(२०) इसमें ख़ूबसूरत बहाना, अच्छा याद और भलाई की दुआ, सब शामिल है. इस आयत में मैयत के तर्के से ग़र वारिस

मैयत के औलाद हो^(१) फिर अगर उसकी औलाद न हो और मां बाप छोड़े^(२) तो मां का तिहाई फिर अगर उसके कई वहन भाई हों^(३) तो मां का छटा^(४) वाद उस वसियत के जो कर गया और दैन के^(५) तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तुम क्या जानो कि उनमें कौन तुम्हारे ज़्यादा काम आएगा^(६) यह हिस्सा बांधा हुआ है अल्लाह की तरफ़ से वेशक अल्लाह इल्म वाला हिकमत (बोध) वाला है^(७) और तुम्हारी वीवियाँ जो छोड़ जाएँ उसमें तुम्हें आधा है अगर उनके औलाद न हो फिर अगर उनकी औलाद हो तो उनके तर्के में से तुम्हें चौथाई है^(८) जो वसियत वो कर गई और दैन (ऋण) निकाल कर और तुम्हारे तर्के में औरतों का चौथाई है अगर तुम्हारे औलाद न हो, फिर अगर तुम्हारे औलाद हो तो उनका तुम्हारे तर्के में से आठवाँ^(९) जो वसियत तुम कर जाओ और दैन (ऋण) निकाल कर और अगर किसी ऐसे मर्द या औरत का तर्का बटता हो जिसने माँ बाप औलाद कुछ न छोड़े और मां की तरफ़ से उसका भाई या वहन है तो उनमें से हर एक को छटा फिर अगर

إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَتْهُ
أَبَوَاهُ فَلِلْأُمِّهِ الثُّلُثُ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِلْأُمِّهِ
السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهَا يَوْصِي بِهَا أَوْ دِينَ
أَبَائِهِمْ وَأُمَّهُنَّ أُولَئِكَ لَآتَوْنَهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ
نَفْعًا فَرِيضَةٌ مِنَ اللَّهِ إِنْ اللَّهُ كَانَ عَلِيمًا
حَكِيمًا وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَمْ
يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلِكُمُ
الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكَنَّ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِ يَوْصِيْنَ بِهَا
أَوْ دِينَ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكَنَّ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ
وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّنُنُ مِمَّا
تَرَكَنَّ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِ تَوْصُونَ بِهَا أَوْ دِينَ وَ
إِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورِثُ كَلَّةً أَوْ امْرَأَةً وَلَهُ أَخٌ
أَوْ أَخْتُ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ فَإِنْ كَانُوا

مَرَل

रिशतेदारों और यतीमों और मिस्कीनों को कुछ सदक़े के तौर पर देने और अच्छी बात कहने का हुक्म दिया, सहाबा के ज़माने में इसपर अमल था, मुहम्मद बिन सीरीन से रिवायत है कि उनके वालिद ने विरासत की तफ़सील के बज़त एक बकरी ज़िबह कराके खाना पकाया और रिश्तेदारों, यतीमों और मिस्कीनों को खिलाया और यह आयत पढ़ी, इब्ने सीरीन ने इसी मज़मून की उबैदा सलमानी से भी रिवायत की है, उसमें यह भी है कि कहा अगर यह आयत न आइ होती तो यह सदक़ा मैं अपने माल से करता, तीजा, जिसको सोपम कहते हैं और मुसलमानों का तरीका है, वह भी इसी आयत का अनुकरण है कि उसमें रिश्तेदारों यतीमों और मिस्कीनों पर सदक़ा होता है और कलिमे का ख़तम और कुरआने पाक की तिलावत और दुआ अच्छी बात है, इसमें कुछ लोगों को बंज़ा इसरा हो गया है जो बुजुर्गों के इस अमल का ख़ात तो तलाश कर न सके, जब कि इतना साफ़ कुरआन पाक में मौजूद था, अलबत्ता उन्होंने अपनी राय को दीन में दर्ज़ दिया और अच्छे काम को रोकने में जुट गये, अल्लाह हिदायत करे.

(२१) जिसके नाम वसियत की गई वह और यतीमों के सरपरस्त और वो लोग जो मौत के करीब मरने वाले के पास मौजूद हों.
(२२) और मरने वाले को औलाद के साथ मेहरदानी के अलावा कोई कार्यवाही न करें जिससे उसकी औलाद परेशान हो.
(२३) मरीज़ के पास उसकी मौत के करीब मौजूद होने वालों की सीधी बात तो यह है कि उसे सदक़ा और वसियत में यह राय दें कि वह उतने माल से करे जिससे उसकी औलाद तंगदस्त और वादार न रह जाए और वसी यानी जिसके नाम वसियत की जाए और वली यानी सरपरस्त की सीधी बात यह है कि वो मरने वाले की ज़रूरियत के साथ सदब्यवहार करे, अच्छे से बात करे जैसा कि अपनी औलाद के साथ करते हैं.

(२४) यानी यतीमों का माल नाहक खाना मानो आग खाना है, क्योंकि वह अज्ञाब का कारण है, हदीस शरीफ़ में है, क्रयामत के दिन यतीमों का माल खाने वाले इस तरह उड़ाए जाएंगे कि उनकी क़ब्रों से और उनके मुंह से और उनके कानों से धुआँ निकलता होगा तो लोग पहचानेंगे कि यह यतीम का माल खाने वाला है.

सूरए निसा - दूसरा रूकू

- (१) विरासत के बारे में.
- (२) अगर मरने वाले ने बंट बंटियाँ दोनों छोड़ी हों तो.
- (३) यानी बेटे का हिस्सा बेटे से आधा है और अगर मरने वाले ने सिर्फ़ लड़के छोड़े हों तो कुल माल उन का.
- (४) या दो.
- (५) इससे मालूम हुआ कि अगर लड़का अकेला वारिस रहा हो तो कुल माल उसका होगा क्योंकि ऊपर बेटे का हिस्सा बेटियों से दूना बताया गया है तो जब अकेली लड़की का आधा हुआ तो अकेले लड़के का उससे दूना हुआ और वह कुल है.

वो बहन भाई एक से ज्यादा हों तो सब तिहाई में शरीक हैं^(११) मैयत की वसियत और दैन निकाल कर जिसमें उसने नुकसान न पहुंचाया हो^(१२) यह अल्लाह का इरशाद (आदेश) है और अल्लाह इल्म वाला हिल्म (सहिष्णुता) वाला है^(१३) ये अल्लाह की हदें हैं और जो हुक्म माने अल्लाह और अल्लाह के रसूल का, अल्लाह उसे बागों में लेजाएगा जिनके नीचे नेहरें वहाँ हमेशा उनमें रहेंगे और यही है बड़ी कामयाबी^(१४) और जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करे और उसकी कुल हदों से बढ़ जाए अल्लाह उसे आग में दाखिल करेगा जिसमें हमेशा रहेगा और उसके लिये ख्वारी (ज़िल्लत) का अज़ाब है^(१५)^(१६)

तीसरा स्कू

और तुम्हारी औरतें जो बढकारी करें उनपर खास अपने में^(१) के चार मर्दों की गवाही लो फिर अगर वो गवाही दे दें तो उन औरतों को घर में बंद रखो^(२) यहाँ तक कि उन्हें मौत उखले या अल्लाह उनकी कुछ राह निकाले^(३)^(४) और तुम में जो मर्द औरत ऐसा काम करें उनको ईज़ा (कष्ट) दो^(५) फिर अगर वो तौबह कर लें और नेक होजाएँ तो उनका पीछा छोड़ दो बेशक अल्लाह बड़ा तौबह कुबूल करने वाला मेहरबान है^(६)^(७) वह तौबह जिसका कुबूल करना अल्लाह

الْكَثْرَ مِنْ ذَلِكَ فَمَنْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ وَصِيَّةً مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ خَلِيمٌ ۝ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يَدْخُلْهُ جَنَّتِ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يَدْخُلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ وَالَّذِينَ يَأْتِيَنَّ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَائِكُمْ فَمَا اسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةٌ مِنْكُمْ فَأَنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَفَّيَهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ۝ وَالَّذِينَ يَأْتِيَنَّهَا مِنْكُمْ فَادَّوْهُمَا ۚ فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝ إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ

- (६) चाहे लड़का हो या लड़की कि उनमें से हर एक को औलाद कहा जाता है.
- (७) यांनी सिर्फ माँ बाप छोड़ें और अगर माँ बाप के साथ शौहर या बीबी में से किसी को छोड़ा, तो माँ का हिस्सा बीबी का हिस्सा निकालने के बाद जो बाक़ी बचे उसका तिहाई होगा न कि कुल का तिहाई.
- (८) सगे चाहे सौतेले.
- (९) और एक ही भाई हो तो वह माँ का हिस्सा नहीं घटा सकता.
- (१०) क्योंकि वसियत और कर्ज़ विरासत की तक़रीम से पहले है. और कर्ज़ वसियत से भी पहले है. हदीस शरीफ में है "इन्नद देना कबलल वसियते" जिसका अर्थ यह होता है कि वसियत पर अमल करने से पहले मरने वाले का कर्ज़ अदा करना ज़रूरी है.
- (११) इसलिये हिस्सों का मुक़रर करना तुम्हारी राय पर न छोड़ा.
- (१२) चाहे एक बीबी हो या कई. एक होगी तो वह अकेली चौथाई पाएगी. कई होंगी तो सब उस चौथाई में बराबर शरीक होगी चाहे बीबी एक हो या कई, हिस्सा यही रहेगा.
- (१३) चाहे बीबी एक हो या ज्यादा.
- (१४) क्योंकि वो माँ के रिश्ते की बदौलत हक़दार हुए और माँ तिहाई से ज्यादा नहीं पाती और इसीलिये उनमें मर्द का हिस्सा औरत से ज्यादा नहीं है.
- (१५) अपने वारिसों को तिहाई से ज्यादा वसियत करके या किसी वारिस के हक़ में वसियत करके. वारिस के कर्ज़ कई किस्म हैं. असहाबे फ़राइज़ वो लोग हैं जिनके लिये हिस्सा मुक़रर है जैसे बेटी एक हो तो आधे माल की मालिक, ज्यादा हों तो सब के लिये दो तिहाई. पोती और पड़पोती और उससे नीचे की हर पोती, अगर मरने वाले के औलाद न हो तो बंदी के हुक्म में है. और अगर मैयत ने एक बेटी छोड़ी है तो वह उसके साथ छटा पाएगी और अगर मैयत ने बेटा छोड़ा तो विरासत से वंचित हो जाएगी, कुछ न पाएगी और अगर मरने वाले ने दो बेटियाँ छोड़ीं तो भी पोती वंचित यानी साक़ित हो गई. लेकिन अगर उसके साथ या उसके नीचे दर्जे में कोई लड़का होगा तो वह उसको इसबा बना देगा. सगी बहन मैयत के बेटा या पोता न छोड़ने की सूत में बेटियों के हुक्म में है. अल्लाही बहनें, जो बाप में शरीक हों और उनकी माएँ अलग अलग हों, वो सगी बहनों के न होने की सूत में उनकी मिसल है और दोनों किस्म की बहनें, यांनी सगी और अल्लाही, मैयत की बेटी या पोती के साथ इसबा हो जाती हैं और बेटे और पोते और उसके मातहत पोते और बाप के साथ साक़ित या वंचित और इमाम साहब के नज़दीक दादा के साथ भी मेहरूम हैं. सौतेले भाई बहन जो फ़क्त माँ में शरीक हों, उनमें से एक हो तो छटा और ज्यादा हों तो तिहाई और उनमें मर्द और औरत बराबर हिस्सा पाएंगे. और बेटे पोते और उसके मातहत के पोते और बाप दादा के हाने मेहरूम हो जाएंगे. बाप छटा हिस्सा पाएगा अगर मैयत ने बेटा या पोता या उससे नीचे की कोई पोती छोड़ी हो तो बाप छटा और वह बाक़ी भी पाएगा जो असहाबे फ़रज़ को देकर बचे. दादा यानी बाप का

ने अपने फ़ज़ल (कृपा) से लाज़िम कर लिया है वह उन्हीं की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी देर में तौबा करलें^(१) ऐसे पर अल्लाह अपनी रहमत से रज़ू (तबज्जुह) करता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है^(२) और वह तौबा उनकी नहीं जो गुनाहों में लगे रहते हैं^(३) यहां तक कि जब उनमें किसी को मौत आए तो कहे अब मैं ने तौबा की^(४) और न उनकी जो काफ़िर मरें उनके लिये हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है^(५) ऐ ईमान वालो, तुम्हें हलाल नहीं कि औरतों के वारिस बन जाओ ज़वरदस्ती^(६) और औरतों को रोको नहीं इस नियत से कि जो मेहर उनको दिया था उसमें से कुछ ले लो^(७) मगर उस सूरत में कि खुल्लमखुल्ला बेहयाई का काम करें^(८) और उनसे अच्छा बर्ताव करो^(९) फिर अगर वो तुम्हें पसन्द न आए^(१०) तो करीब है कि कोई चीज़ तुम्हें नापसन्द हो और अल्लाह उसमें बहुत भलाई रखे^(११) और अगर तुम एक बीबी के बदले दूसरी बदलना चाहो^(१२) और उसे ढेरों माल दे चुके हो^(१३) तो उसमें से कुछ वापिस न लो^(१४) क्या उसे वापिस

يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِحَمَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ
فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السَّيِّئَاتِ حَتَّىٰ إِذَا حَصَرَ أَحَدُهُمُ الْمَوْتُ قَالَ
إِنِّي تُوبْتُ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ
أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ
كَرْهًا وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِيَذْهَبُوا بِبَعْضِ مِمَّا
أَتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُبِينَةٍ
وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ
فَعَلَىٰ أَنْ تَكْرَهُمَا سَيًّا وَيَجْعَلُ اللَّهُ فِيهِ حَيًّا
كَثِيرًا ۝ وَإِنْ أَرَدْتُمْ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَكَانَ
زَوْجٍ وَآتَيْتُمْ أَحَدَهُنَّ قَطًّا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ

مَنْ

बाप, बाप के न होने की सूरत में बाप की मिसल है सिवाय इसके कि माँ को मेहरूम न कर सकेगा, माँ का छटा हिस्सा है, अगर मैयत ने अपनी औलाद या अपने बेटे या पोते या पड़पोते की औलाद या दहन भाई में से दो छोड़े हों चाहे वो सगे भाई हों या सौतेले और अगर उनमें से कोई छोड़ा न हो तो तो माँ कुल माल का तिहाई पाएगी और अगर मैयत ने शौहर या बीबी और माँ बाप छोड़े हों तो माँ को शौहर या बीबी का हिस्सा देने के बाद जो बाक़ी रहे उसका तिहाई मिलेगा और ज़दा का छटा हिस्सा है चाहे वह माँ की तरफ़ से हो यानी नानी या बाप की तरफ़ से हो यानी दादी, एक हाँ, ज्यादा हाँ, और करीब वाली दूर वाली के लिये आड़ हो जाती है, और माँ हर एक ज़दा यानी नानी और दादी को मेहरूम कर देती है, और बाप की तरफ़ की ज़दात यानी दादियाँ बाप के होने की सूरत में मेहरूब यानी मेहरूम हो जाती हैं, इस मूरत में कुछ न मिलेगा, ज़ौज को चौथा हिस्सा मिलेगा, अगर मैयत ने अपनी या अपने बेटे पोते परपोते वगैरह की औलाद छोड़ी हो और अगर इस क्रिम की औलाद न छोड़ी हो तो शौहर आधा पाएगा, बीबी मैयत की और उसके बेटे पोते वगैरह की औलाद होने की सूरत में आठवाँ हिस्सा पाएगी और न होने की सूरत में चौथाई, इसबात वो वारिस है जिनके लिये कोई हिस्सा निश्चित नहीं है, फ़ज़्र वारिसों से जो बाक़ी बचता है वो पाते हैं, इन में सबसे ऊपर बेटा है फिर उसका बेटा फिर और नीचे के पोते फिर बाप फिर उसका बेटा फिर और नीचे के पोते फिर बाप फिर दादा फिर बाप के मिलसिले में जहाँ तक कोई पाया जाए, फिर सगा भाई फिर सौतेला यानी बाप शरीक भाई फिर सगे भाई का बेटा फिर बाप शरीक भाई का बेटा फिर आज़ाद करने वाला और जिन औरतों का हिस्सा आधा या दो तिहाई है वो अपने भाईयों के साथ इसका हो जाती हैं और जो ऐसी न हों वो नहीं, ख़ून के रिश्तों, फ़ज़्र वारिस और इसबात के सिवा जो रिश्तेदार हैं वो ज़विल अरहाम में दाख़िल हैं और उनकी तरतीब इसबात की मिसल है,

(१६) क्योंकि कुल हदों के फ़लांगने वाला काफ़िर है, इसलिये कि मूिमन कैसा भी मुताहगार हो, ईमान की हद से तो न गुज़रेगा,

सूरए निसा - तीसरा रूकू

(१) यानी मुसलमानों में के,

(२) कि वो बदकारी न करने पाएं,

(३) यानी हद निश्चित करे या तौबह और निकाह की तौफ़ीक़ दे, जो मुफ़सिर इस आयत "अलफ़ाहिशता" (बदकारी) से ज़िना मुराद लेते हैं वो कहते हैं कि हब्स का हुक्म हद्दद यानी सज़ाएं नाज़िल होने से पहले था, सज़ाएं उतरने के बाद स्थगित किया गया, (सज़ाज़िन, ज़लालैन व तफ़सीरे अहमदी)

(४) झिड़कते, घुड़को, बुरा कहो, शर्म दिलाओ, ज़ुतियाँ मारो, (जलालैन, मदारिक व सज़ाज़िन वगैरह)

(५) हसन का क़ौल है कि ज़िना की सज़ा पहले ईज़ा यानी यातना मुक़रर की गई फिर कैद फिर कोई मारना या संगसार करना, इन्हे बहर का क़ौल है कि पहली आयत "बल्लती यातीना" (और तुम्हारी औरतों में ...) उन औरतों के बारे में है जो औरतों के

लोगे झूठ बांधकर और खुले गुनाह से^(१०) २० और किस तरह वापिस लोगे हालांकि तुम में एक दूसरे के सामने वेपर्दा हो लिया और वो तुम से गाढ़ा अहद (प्रतिज्ञा) ले चुकी^(११) २१ और वाप दादा की मनकूहा (विवाहिता) से निकाह न करो^(१२) मगर जो हो गुजरा वह वेशक वेहयाई^(१३) और ग़ज़ब (प्रकोप) का काम है और बहुत बुरी राह^(१४) २२

चौथा स्कू

हराम हुई तुम पर तुम्हारी माएं^(१) और बेटियां^(२) और वन्हें और फुफियां और खालाएं और भतीजियां^(३) और भान्जियां और तुम्हारी माएं जिन्होंने दूध पिलाया^(४) और दूध की वन्हें और औरतों की माएं^(५) और उनकी बेटियां जो तुम्हारी गोद में हैं^(६) तो उनकी बेटियों में हर्ज नहीं^(७) और तुम्हारे नस्ली बेटों की वीवियां^(८) और दो वन्हें इकट्ठी करना^(९) मगर जो हो गुजरा वेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरवान है^(१३)

النِّسَاء

۱۱۲

کتاب النِّسَاء

سَيِّئًا ۖ اَتَاخَذُوْنَهُ بُهْتَانًا ۚ وَاِنَّهَا مُبِينٌ ۝ وَكَيفَ
تَاخَذُوْنَهُ وَقَدْ اَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّ
اَخَذَ مِنْكُمْ مِّمَّنْكَ اَغْلَظًا ۝ وَلَا تَنْكِحُوا
مَا نَكَهَ اَبَاؤُكُمْ مِّنَ النِّسَاءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ
اِنَّهُ كَانَ فَاَحْشَةً وَّ مَقْتًا ۚ وَاَسَاءَ سَبِيْلًا ۝
حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَاَخَوَاتُكُمْ وَا
عَشْرَتُهُمْ وَاَخَوَاتُهُمْ وَاَبْنَاتُ الْاَخِي وَاَبْنَاتُ
اُمِّهِنَّ ۚ وَاَلَّتِي اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوَاتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ
وَاُمَّهُنَّ لِنِسَائِكُمْ ۚ وَرَبَائِبُكُمُ الَّتِي فِي حُجُورِكُمْ
مِّنْ نِّسَائِكُمُ الَّتِي كَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۚ وَاِنْ لَّمْ يَكُوْنُوا
دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۚ وَخَلَائِلُ اَبْنَائِكُمُ
الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۚ وَاَنْ يَّجْمَعُوْا بَيْنَ الْاَخْتَيْنِ
اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ اِنَّ اللهَ كَانَ عَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

سُورَةُ

साथ बुरा काम करती हैं और दूसरी आयत "बल्लजाने" (और तुममें जो मर्द....) लॉंडे बाज़ी या इगलाम करने वालों के बारे में उतरी. और जिना करने वाली औरतें और जिना करने वाले मर्द का हुक्म सूरत नूर में बयान फरमाया गया. इस तक्रदीर पर ये आयतें मन्सूख़ यानी स्थगित हैं और इनमें इमाम अबू हनीफ़ा के लिये ज़ाहिर दलील है उसपर जो वो फ़रमाते हैं कि लिवातत यानी लॉंडे बाज़ी में छोटी मांटी सज़ा है, बड़ा धार्मिक दण्ड नहीं.

(६) जुहाक कब क़ौल है कि जो तौबह मौत से पहले हो, वह करीब है यानी थोड़ी देर वाली है.

(७) और तौबह में देरी कर जाते हैं.

(८) तौबह कुबूल किये जाने का वादा जो ऊपर की आयत में गुज़रा वह ऐसे लोगों के लिये नहीं है. अल्लाह मालिक है, जो चाह करे. उनकी तौबह कुबूल करे या न करे. बख़्श दे या अज़ाब फ़रमाए, उस की मर्ज़ी. (तफ़सीर अहमदी)

(९) इससे मालूम हुआ कि मरते वक़्त काफ़िर की तौबह और उसका ईमान मक़बूल नहीं.

(१०) जिहालत के दौर में लोग माल की तरह अपने रिश्तेदारों की वीवियां के भी वारिस बन जाते थे फिर अगर चाहते तो मेहर के बिना उन्हें अपनी बीवी बनावकर रखते या किसी और के साथ शादी कर देते और खुद मेहर ले लेते या उन्हें कैद कर रखते कि जो विरासत उन्को ने पाई है वह देकर रिहाई हासिल कर लें या मर जाएं तो ये उनके वारिस हो जाएं. राज़ वो औरतें थिक्कून उनक हाथ में मजबूर होती थीं और अपनी मर्ज़ी से कुछ भी नहीं कर सकती थीं. इस रस्म का मिटाने के लिये यह आयत उतारी गई.

(११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया यह उसके सम्वन्ध में है जो अपनी बीवी से नफ़रत रखता हो और इस लिये दुर्व्यवहार करता हो कि औरत परशान होकर मेहर वापस कर दे या छोड़ दे. इसकी अल्लाह तअला ने मनाही फ़रमाई. एक क़ौल यह है कि लोग औरत को तलाक़ देते फिर वापस ले लेते, फिर तलाक़ देते. इस तरह उसको लटका कर रखते थे. न वह उनके पास आराम पा सकती, न दूसरी जगह ठिकाना कर सकती. इसको मना फ़रमाया गया. एक क़ौल यह है कि मरने वाले के सरपरस्त को ख़िताब है कि वो उसकी बीवी को न रोके.

(१२) शौहर की नाफ़रमानी या उसकी या उसके घर वालों की यातना, बदज़बानी या हरामकारी ऐसी कोई हालत हो तो ख़ुलाअ चाहने में हर्ज नहीं.

(१३) खिलाने पहनाने में, बान चीन में और मियाँ बीवी के व्यवहार में.

(१४) दुर्व्यवहार या सूत नापसन्द होने की वजह से, तो सब को और जुदाई मत चाहो.

(१५) नेक बेटा वगैरह.

(१६) यानी एक को तलाक़ देकर दूसरी से निकाह करना.

(१७) इस आयत से भारी मेहर मुकर्रर करने क जायज़ होने पर दलील लाई गई है. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने मिनबर पर से फ़रमाया

कि औरतों के मेहर भारी न करो. एक औरत ने यह आयत पढ़कर कहा कि ये इन्हे प्रभाव, अल्लाह हमें देना है और तुम मना करने हो. इसपर अमीरुल मूमिनीन हजरत उमर रदियल्लाहो अन्हा ने फरमाया, ये उमर, तुझसे हर शय्य ज्यादा समझदार है. जो चाहो मेहर मुकर्रर करा. मुद्दाकल्लाह, ऐसी थी सुलू के खलीफा के इम्माफ की शान और शरीफ नफ़ की पाकी. अल्लाह तआला हमें उनका अनुकरण करने की तौफ़ीक अता फरमाए. आमीन.

(१८) क्योंकि जुदाई तुम्हारी तरफ से है.

(१९) यह जिहालत वालों के उस काम का रद है कि जब उन्हें कोई दूसरी औरत पसन्द आती तो वो अपनी बीवी पर तोहमत यानी लांछन लगाते ताकि वह इससे परेशान होकर जो कुछ ले चुकी है वापस कर दे. इस तरीके को इस आयत में मना फरमाया गया और झूठ और गुनाह बताया गया.

(२०) वह अहद अल्लाह तआला का यह इस्साद है "फ इम्माकुन वि मअरुफिन फ तसरीहुम वि इहसानिन" यानी फिर भलाई के साथ रोक लेना है या बेकूड़े के साथ छोड़ देना है. (सूरए बक्रह, आयत २२९) यह आयत इस पर दलील है कि तद्दाई में हमविस्ती करने से मेहर वाजिब हो जाता है.

(२१) जैसा कि जिहालत के ज़माने में रिवाज था कि अपनी माँ के सिवा बाप के बाद उसकी दूसरी औरत को बेटा अपनी बीवी बना लेता था.

(२२) क्योंकि बाप की बीवी माँ के बराबर है, कहा गया है कि निकाह से हम-विस्ती मुग़द है. इससे साबित होता है कि जिससे बाप ने हमविस्ती की हो, चाहे निकाह करके या जिना करके या वह दासी हो, उसका वह मालिक होकर, उनमें से हर सूरन में बेट का उससे निकाह हराम है.

(२३) अब इसके बाद जिग क्रद औरते हराम है उनका वयान फरमाया जाता है. इनमें सात तो नयब से हराम हैं.

सूरए निसा - चौथा रूकू

(१) और हर औरत जिसकी तरफ बाप या माँ के ज़रिये से नसब पलटना हो, यानी दादियाँ व नानियाँ, चाहे क्रमीब की हों या दूर की, सब माएं हैं और अपनी वालिदा के हुक्म में दाख़िल हैं.

(२) पोतियाँ और नचासियाँ किसी दर्जे की हों, बेटियों में दाख़िल हैं.

(३) ये सब सगी हों या ग़नीली. इनके बाद उन औरतों का वयान किया जाता है जो सवब से हराम हैं.

(४) दूध के रिश्ते, दूध पीने की मुद्दत में थोड़ा दूध पिया जाए या बहुत सा, उसके साथ हरमत जुड़ जाती है. दूध पीने की मुद्दत हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो अन्हा के नज़दीक दो साल है. दूध पीने की मुद्दत के बाद जो दूध पिया जाए उससे हरमत नहीं जुड़ती. अल्लाह तआला ने रिज़ाअत (दूध पीने) को नसब की ज़म्ह किया है और दूध पिलाने वाली को दूध पीने वाले बच्चे की माँ और उसकी लड़की को बच्चे की बहन फरमाया. इसी तरह दूध पिलाई का शौहर दूध पीने वाले बच्चे का बाप और उसका बाप बच्चे का दादा और उसकी बहन उसकी फुफ़ी और उसका हर बच्चा जो दूध पिलाई के सिवा और किसी औरत से भी हो, चाहे वह दूध पीने से पहले पैदा हुआ या उसके बाद, वो सब उसके सौतेले भाई बहन हैं. और दूध पिलाई की माँ दूध पीने वाले बच्चे की नानी और उसकी बहन उसकी ख़ाला और उस शौहर से उसके जो बच्चे पैदा हों वो दूध पीने वाले बच्चे के दूध शरीक भाई बहन, और उस शौहर के अल्लाहा दूसरे शौहर से जो हों वह उसके सौतेले भाई बहन. इसमें अरल यह हदीस है कि दूध पीने से वो रिश्ते हराम हो जाते हैं जो नसब से हराम हैं. इसलिये दूध पीने वाले बच्चे पर उसके दूध माँ बाप और उनके नसबी और रिज़ाअत सुलू व फ़रोअ सब हराम हैं.

(५) बीवियों की माएं, बीवियों की बेटियाँ और बेटों की बीवियाँ. बीवियों की माएं सिर्फ़ निकाह का बन्धन होते ही हराम हो जाती हैं चाहे उन बीवियों से सोहबत या हमविस्ती हुई हो या नहीं.

(६) माद में होना ग़ालिबे हाल का वयान है, हरमत के लिये शर्त नहीं.

(७) उनकी माओं से तलाक़ या मौत वगैरह के ज़रिये से मोहबत से पहले जुदाई होने की सूत में उनके साथ निकाह जायज़ है.

(८) इसमें लेपालक निकल गए. उनकी औरतों के साथ निकाह जायज़ है. और दूध बेटे की बीवी भी हराम है क्योंकि वह सगे के हुक्म में है. और पोते परपोते बेटों में दाख़िल हैं.

(९) यह भी हराम है चाहे दोनों बहनों का निकाह में जमा किया जाए या मिल्क यमीन के ज़रिये से वती में. और हदीस शरीफ़ में फुफ़ी भतीजी और ख़ाला भांजी का निकाह में जमा करना भी हराम फरमाया गया. और क्रमबत यह है कि निकाह में हर ऐसी दो औरतों का जमा करना हराम है जिससे हर एक को मर्द फ़र्ज़ करने से दूसरी उसके लिये हलाल न हो, जैसे कि फुफ़ी भतीजी, कि अगर फुफ़ी को मर्द समझा जाए तो चचा हुआ, भतीजी उसपर हराम है और अगर भतीजी को मर्द समझा जाए तो भतीजा हुआ, फुफ़ी उसपर हराम है, हरमत दोनों तरफ़ है. और अगर सिर्फ़ एक तरफ़ से हो तो जमा हराम न होगी जैसे कि औरत और उसके शौहर की लड़की को मर्द समझा जाए तो उसके लिये बाप की बीवी तो हराम रहती है मगर दूसरी तरफ़ से यह बात नहीं है यानी शौहर की बीवी कि अगर मर्द समझा जाए तो यह अज़नबी होगा और कोई रिश्ता ही न रहेगा.

पारा चार समाप्त

पाँचवां पारा - वल-मुहसनात : (सूरए निसा - चौथा रुकू जारी)

और हराम हैं शौहरदार औरतें मगर काफ़िरों की औरतें जो तुम्हारी मिल्क में आ जाएं^(१०) यह अल्लाह का लिखा हुआ है तुमपर और उन^(११) के सिवा जो रहीं वो तुम्हें हलाल हैं कि अपने मालों के इबज़ तलाश करो कैद लाते^(१२) न पानी गिराते^(१३) तो जिन औरतों को निकाह में लाना चाहो उनके बंधे हुए मेहर उन्हें दे दो और करारदाद (समझौते) के बाद अगर तुम्हारे आपस में कुछ रज़ामन्दी हो जावे तो उसमें गुनाह नहीं^(१४) वेशक अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है^(१५) और तुममें बेमक़दूरी (असामर्थ्य) के कारण जिनके निकाह में आज़ाद औरतें ईमान वालीयां न हों तो उनसे निकाह करे जो तुम्हारे हाथ की मिल्क हैं ईमान वाली कनीज़ें^(१६) और अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है, तुम में एक, दूसरे से है तो उनसे निकाह करो^(१७) उनके मालिकों की इजाज़त से^(१८) और दस्तूर के मुताबिक़ उनके मेहर उन्हें दो^(१९) कैद में आतियां, न मस्ती निकालती और न यार बनाती^(२०) जब वो कैद में आजाएं^(२१) फिर बुरा काम करें तो उनपर उसकी सज़ा आधी है जो आज़ाद औरतों पर है^(२२) यह^(२३) उसके लिये

النِّسَاء

۱۱۳

المَحْصَنَاتُ

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمَانُكُمْ
كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ، وَأَجَلَ لَكُمْ مِمَّا وَرَاءَ ذَلِكَ
أَنْ تَبْتَغُوا بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصَنِينَ غَيْرَ مُسْفَحِينَ
فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ
فَرِيضَةً، وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا تَرَضَيْتُمْ بِهِ
مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ، إِنْ اللَّهُ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا
وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ
الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِنْ فَتْيِكُمْ
الْمُؤْمِنَاتِ، وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِكُمْ، بَعْضُكُمْ مِنْ
بَعْضٍ، فَاتَّكِحُوهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ
أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسْفَحَاتٍ
وَلَا مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ، فَإِذَا أُحْصِنَ فَإِنْ أَتَيْنَ
بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ

مَنْ

(१०) गिरफ्तार होकर बाँर अपने शौहरों के, वो तुम्हारे लिये इस्तवरा (घटकारा हो जाने) के बाद हलाल हैं, अगरच दाखल हव में उनके शौहर मौजूद हों क्योंकि तबायने दारन (अलग अलग मुक़नत) की वजह से उनकी शौहरां से फ़र्कत हो चुकी, हज़रत अबू सईद खुदरी रदीयल्लाह अन्हो ने फ़रमाया हमने एक राज़ बहुत सी कैदी औरतें पाई जिनके शौहर दाखल हव में मौजूद थे, तो हमने उनसे कुर्बत में बिलम्ब किया और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से मसअला पूछा, इसपर यह आपत उत्तरी.

(११) वो मेहरम औरतें जिनका ऊपर बयान किया गया.

(१२) निकाह से या मिल्के यमीन से, इस आयत से कई मसअले साबित हुए, निकाह में मेहर ज़रूरी है और मेहर निश्चित न किया हो, जब भी वाजिब होता है, मेहर माल ही होता है न कि ख़िदमत और तालीम वगैरह जो चीज़ें माल नहीं हैं, इतना क़बील जिसको माल न कहा जाए, मेहर होने का सलाहियत नहीं रखता, हज़रत जाबिर और हज़रत अली मुनज़ा रदीयल्लाहो अन्हुमा से बिवायत है कि मेहर की कम मिक़दार दस दरहम है, इससे कम नहीं हो सकता.

(१३) इससे हरामकारी मुराद है और यहाँ चिन्तावनी है कि ज़िना करने वाला सिर्फ़ अपनी वासना की पूर्ति करना है और मस्ती निकालना है और उसका काम सही लक्ष्य और अच्छे उद्देश्य से माली होता है, न औलाद हासिल करना, न नसल, न नसब मेहफूज़ रखना, न अपने नफ़्स का हराम से बचाव, इनमें से कोई बात उसके सामने नहीं आती, वह अपने नुस्के और माल को नष्ट करके दीन और दुनिया के घाटे में गिरफ़्तार होता है.

(१४) चाहे औरत निश्चित मेहर से कम करदे या बिल्कुल बरज़ा दे या मर्द मेहर की मात्रा और ज़्यादा कर दे.

(१५) यानी मुसलमानों की ईमानदार दासियाँ, क्योंकि निकाह अपनी दासी से नहीं होता; वह निकाह के बिना ही मालिक के लिये हलाल है, मतलब यह है कि जो शरअ ईमान वाली आज़ाद औरत से निकाह की क्षमता और तौक़्त न रखता हो वह ईमानदार दापी से निकाह करे, यह बात शर्माते की नहीं, जो शरअ आज़ाद औरत से निकाह की क्षमता रखता हो उसको भी मुसलमान बाँदी से निकाह करना जायज़ है, यह मसअला इस आपत में तो नहीं है, मगर ऊपर की आयत "وَأَهْلِلْنَا لَكُمْ مَا وَرَأَاهُ جَالِيكُمْ" से साबित है, ऐसे ही किताब वाली दासी से भी निकाह जायज़ है और मूमिना यानी ईमान वाली के साथ अफ़ज़ल व मुनहय है, जैसा कि इस आयत से साबित हुआ.

(१६) यह कोई शर्म की बात नहीं, फ़ज़ीलत ईमान से है, इसी को काफ़ी समझो.

(१७) इससे मालूम हुआ कि दापी को अपने मालिक की आज्ञा के बिना निकाह का हक़ नहीं, इसी तरह गुलाम का.

(१८) अगरच मालिक उनके मेहर के मालिक हैं लेकिन दासियों को देना मालिक ही को देना है क्योंकि खुद वो और जो कुछ उनके कब्ज़े में हो, सब मालिक का है, या ये मानी है कि उनके मालिकों की इजाज़त से उन्हें मेहर दो.

जिसे तुम में से जिना (व्यभिचार) का डर है और सब करना तुम्हारे लिये बेहतर है^(१९) और अल्लाह वरदाने वाला मेहरबान है^(२०)

पाँचवां सूकू

अल्लाह चाहता है कि अपने आदेश तुम्हारे लिये बयान करदे और तुम्हें अगलों के तरीके बतादे^(१) और तुमपर अपनी रहमत से रूजू (तबज्जुह) फ़रमाए और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है^(२६) और अल्लाह तुमपर अपनी रहमत से रूजू फ़रमाना चाहता है और जो अपने मज़ों के पीछे पड़े हैं वो चाहते हैं कि तुम सीधी राह से बहुत अलग हो जाओ^(३) ^(२७) अल्लाह चाहता है कि तुमपर तख़फ़ीफ़ (कमी) करे^(३) और आदमी कमज़ोर बनाया गया ^(२८) ऐ ईमान वाले, आपस में एक दूसरे के माल नाहक न खाओ^(४) मगर यह कि कोई सौदा तुम्हारी आपसी रज़ामन्दी का हो^(५) और अपनी जानें क़त्ल न करो^(६) बेशक अल्लाह तुमपर मेहरबान है^(२९) और जो ज़ुल्म व ज़्यादती से ऐसा करेगा तो ज़ल्द ही हम उसे अगम में दाखिल करेंगे और यह अल्लाह का आसान है^(३०) अगर बचते रहो बड़े गुनाहों से जिनकी तुम्हें मनाई है^(६) तो तुम्हारे और गुनाह^(५) हम वरदान देंगे और

العَذَابِ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَذَابَ مِنْكُمْ وَأَنْ
تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يُرِيدُ
اللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَاللَّهُ
يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ
الشَّهَوَاتِ أَنْ تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ۝ يُرِيدُ اللَّهُ
أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيفًا ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ
وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝
وَمَنْ يُفْعَلْ ذَلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَتُوفَ نُصْلُهُ
نَازًا ۝ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝ إِنْ تَجَنَّبُوا
كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نَغْفِرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ

مَزْلُومًا

(१९) यानी खुले छुपे किसी तरह बदकारी नहीं करतीं।

(२०) और शीघ्र-दर हा जागें।

(२१) जो शीघ्र-दर न हों, यानी पचास कंबड़े, क्योंकि आज़ाद के लिये सौ कोड़े हैं और दासियों को संगसार नहीं किया जाता।

(२२) दासी से निकाह करना।

(२३) दासी के साथ निकाह करने से, क्योंकि इससे गुलाम आलाद पैदा होगी।

सूरए निसा - पाँचवां सूकू

(१) नवियाँ और नेक बन्दों की।

(२) और हराम में लगकर उन्हीं की तरफ़ हो जाओ।

(३) और अपने क़त्ल व मेहरबानी से अहकाम आसान करें।

(४) उसको औरतों से और बासना से सब दुश्वार है। हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, औरतों में भलाई नहीं और उनकी तरफ़ से सब भी नहीं हो सकता। नेकों पर वो मालिब आती हैं, बुरे उपर मालिब आ जाते हैं।

(५) चोरी, ग़बन, झुर्द बुर्द और राजाघज़ तौर से क़ज़ा करलेना, जुआ, सूद जितने हराम तरीक़े हैं सब नाहक़ है, सब की मनाही है।

(६) वह तुम्हारे लिये हलाल है।

(७) ऐसे काम इस्तिन्यार करके जो दुनिया या आख़िरत में हलाक़त का कारण हों, इसमें मुमल्लमानों का क़त्ल करना भी आगया है और मूमिन का क़त्ल झुद अपना ही क़त्ल है, क्योंकि तमाम ईमान वाले एक ज़ान की तरह हैं। इस अस्यन से झुदकुशी यानी आत्महत्या की अवैधता भी साबित हुई। और नफ़स का अतुक़रण करके हराम में पड़ जाना भी अपने आपको हलाक़ करना है।

(८) और जितपर फटकार उतरी यानी अज़ाब का सादा दिया गया मिसल क़त्ल, जिना, चोरी वगैरह के।

(९) छोटें गुनाह, कुफ़्र और शिर्क तो न वरदान जायगा अगर आदमी उसी पर मुरा (अल्लाह की पनाह)। बाकी सारे गुनाह, छोटें हाँ या बड़े, अल्लाह की मज़ी में हैं, चाहे उनपर अज़ाब करे, चाहे माफ़ फ़रमाए।

तुम्हें इज्जत की जगह दाखिल करेंगे (३१) और उसकी आरजू न करो जिससे अल्लाह ने तुम में एक को दूसरे पर बढ़ाई दी (३०) मर्दों के लिये उनकी कमाई से हिस्सा है और औरतों के लिये उनकी कमाई से हिस्सा (३१) और अल्लाह से उसका फ़ज़ल (कृपा) मांगो वेशक अल्लाह सब कुछ जानता है (३२) और हमने सबके लिये माल के मुस्तहक (हकदार) बना दिये हैं जो कुछ छोड़ जाएं मां बाप और करावत वाले (रिश्तेदार) और वो जिनसे तुम्हारा हलफ़ बंध चुका (३२) उन्हें उनका हिस्सा दो वेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है (३३)

छटा रूकू

मर्द अफ़सर हैं औरतों पर (१) इसलिये कि अल्लाह ने उनमें एक को दूसरे पर बढ़ाई दी (२) और इसलिये कि मर्दों ने उनपर अपने माल खर्च किये (३) तो नैकवस्ते (खुशनसीब) औरतें अदब वालियां हैं खाविन्द (शौहर) के पीछे हिफ़ाज़त रखती हैं (४) जिस तरह अल्लाह ने हिफ़ाज़त का हुक्म दिया और जिन औरतों की नाफ़रमानी का तुम्हें डर हो (५) तो उन्हें समझाओ और उनसे अलग सोओ और उन्हें मारो (६) फिर अगर वो तुम्हारे हुक्म में आजाएं तो उनपर ज़ियादती की कोई राह न चाहो वेशक अल्लाह बलन्द बढ़ा है (७) (३४)

وَالْحَصْلَةُ ۝ ۱۱۵ ۝
مُدْحَلًا كَرِيْمًا ۝ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ
بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ ۚ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا
اَكْتَسَبُوا ۚ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اَكْتَسَبْنَ ۚ وَسَأَلُوا
اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ ۚ اِنَّ اللَّهَ كَانَ يَكِلُ شَيْءًا عَلَيْنَا ۝
وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيًّا مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْاَقْرَبُونَ
وَالَّذِينَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاتَوْهُمْ فَاصْبِرْ لَهُمْ ۚ
اِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝ اَلرِّجَالُ
قَوْمُونَ عَلَى النِّسَاءِ ۚ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَى
بَعْضٍ ۚ وَبِمَا اَنْفَقُوا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ۚ فَالْصَّالِحَاتُ
قَوْنَتٌ حُفَظَتْ لِلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ ۚ وَالَّتِي
يَخَافُونَ لُشُوزَهُنَّ فَعُظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي
الْمَضَاجِعِ وَاصْرَبُوهُنَّ ۚ اِنْ اَطَعَكُمْ فَلَا تَبْغُوا
عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ۚ اِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيْمًا كَبِيْرًا ۝

مَرْحَل

(२०) चाहे दुनिया के बातें से या दीन के, कि आपस में ईर्ष्या, हसद और दुश्मनी न पैदा हो। ईर्ष्या या तो हसद अत्यन्त बुरी चीज़ है। हसद वाला दूसरे को अच्छे हाल में देखता है तो अपने लिये उसकी इच्छा करता है और साथ में यह भी चाहता है कि उसका भाई उस नेअमत से मेहरूम हो जाए, यह मना है। बन्दे को चाहिये कि अल्लाह तआला की तरफ से उस जो दिया गया है, उसपर राज़ी रहे। अपने जिस बन्दे को जो बुज़ुर्गी दी, चाहे दीनत और माल की, या दीन में ऊँच दर्जे, यह उसकी हिकमत है। जब मीरास की आयत में "लिज्जकरे मिरलो हज़िल उनसयेन" उतरा और मरने वाले के तर्क में मर्द का हिस्सा औरत में देना मुकर्रर किया गया, तो मर्दों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि आखिरत में नैकियों का सचाब भी हमें औरतों से दुगना मिलेगा और औरतों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि गुनाह का अज़ाब हमें मर्दों से आधा होगा। इसपर यह आयत उतरी और इसमें बताया गया कि अल्लाह तआला ने जिसको जो फ़ज़ल दिया वह उसकी हिकमत है।

(२१) हर एक को उसके कर्मों का बदला। उम्मुल मुमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि हम भी अगर मर्द होते तो ज़िहाद करते और मर्दों की तरह जान कुर्बान करने का महात सबाब पाते। इसपर यह आयत उतरी और उन्हें तसल्ली दी गई कि मर्द ज़िहाद से सबाब हासिल कर सकते हैं तो औरतें शौहरों की फ़रमाँवरदारी और अपनी पवित्रता की हिफ़ाज़त करके सचाब हासिल कर सकती हैं।

(२२) इससे अक्द मवालात मुराद है। इसकी सूरत यह है कि कोई मजहलुन नसब अग़र दूसरे से यह कहे कि तू मेरा मौला है, मैं मर जाऊँ तो मेरा वारिस होगा और मैं कोई ज़िनायत करूँ तो तुझे दण्यत देनी होगी। दूसरा कहे मैं कुबूल किया। उस सूरत में यह अक्द सही हो जाता है और कुबूल करने वाला वारिस बन जाता है और दण्यत भी उसपर आजाती है और दुसरा भी उगी की तरह से मजहलुन नसब हो और ऐसा ही कहे और यह भी कुबूल करले तो उनमें से हर एक दूसरे का वारिस और उसकी दण्यत का जिम्मेदार होगा। यह अक्द साबित है। सहाबा रदियल्लाहो अन्हुम इसके कायल हैं।

सूरए निसा - छटा रूकू

(१) तो औरतों को उनकी इताअत लाज़िम है और मर्दों को हक है कि वो औरतों पर रिआया की तरह हुक्मरानी करें। हज़रत सयद विन रबीअ ने अपनी बीवी हबीबा को किसी ख़ता पर एक थपड़ मारा। उनके वालिद सयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की ख़िदमत में ले गए और उनके शौहर की शिकायत की। इस बारे में यह आयत उतरी।

(२) यात्री मर्दों को औरतों पर अक़्त और मूझवूझ और ज़िहाद व नवुच्चन, ख़िलाफ़त, इमामत, अज़ान, ख़ुल्वा, ज़माअत, ज़मुआ, नक़बीर,

और अगर तुमको मियां बीबी के झगड़े का डर हो^(५) तो एक पंच मर्द वालों की तरफ से भेजो और एक पंच औरत वालों की तरफ से^(६) ये दोनों अगर सुलह करना चाहें तो अल्लाह उनमें मेल करदेगा वेशक अल्लाह जानने वाला खबरदार है^(७) (३५) और अल्लाह की बन्दगी करो और उसका शरीक किसी को न ठहराओ^(८) और मां बाप से भलाई करो^(९) और रिश्तेदारों^(१०) और यतीमों और मोहताजों^(११) और पास के पड़ोसी और दूर के पड़ोसी^(१२) और करबट के साथी^(१३) और राहगीर^(१४) और अपनी बांदी (दासी) गुलाम से^(१५) वेशक अल्लाह को खुश नहीं आता कोई इतराने वाला वड़ाई मारने वाला^(१६) (३६) जो आप कंजूसी करें और औरों से कंजूसी के लिये कहें^(१७) और अल्लाह ने जो उन्हें अपने फ़ज़ल से दिया है उसे छुपाएं^(१८) और काफ़िरों के लिये हमने ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है^(३७) और वो जो अपने माल लोगों के दिखावे को खर्च करते हैं^(१९) और ईमान नहीं लाते अल्लाह और न क़यामत पर और जिसका साथी शैतान हुआ^(२०) तो

وَأِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَأَبْعُوا حُكْمًا مِّنْ أَهْلِهِ وَحُكْمًا مِّنْ أَهْلِهَا إِنْ يُرِيدُوا إِصْلَاحًا يُّوفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ۝
وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تَشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ۝
الَّذِينَ يَبِخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبَخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۝
وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِيقًا لِلنَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَن يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا

مَلِكًا

तथगिह और हद व किसान की शहादत के, और विरासत में दूने हिस्से और निकाह व तलाक़ के मालिक होने और नसबों के उनकी तरफ़ जोड़े जाने और नमाज़ रोज़े के पूरे तौर पर क़ाबिल होने के साथ, कि उनके लिये कोई ज़माना ऐसा नहीं है कि नमाज़ रोज़े के क़ाबिल न हों, और दाढ़ियों और अमांओं के साथ फ़ज़ीलत दी।

(३) इस आयत से मालूम हुआ कि औरतों की आजीविका मर्दों पर बाज़िव है।

(४) अपनी पवित्रता और शौहरो के घर, माल और उनके राज़ों की।

(५) उन्हें शौहर की नाफ़रमानी और उसकी फ़रमावशकारी न करने और उसके अधिकार का लिहाज़ न रखने के तबीजे समझाओ, जो दुनिया और आख़िरत में पश आते हैं और अल्लाह के अज़ाब का ख़ौफ़ दिलाओ और बताओ कि हमारा तुमपर शर्ई हक़ है और हमारी आज्ञा का पालन तुमपर फ़र्ज़ है। अगर इसपर भी न मानें...

(६) हल्की मार।

(७) और तुम गुनाह करते हो फिर भी वह तुम्हारी ताबह कुबूल फ़रमा लेता है तो तुम्हारे हाथ के नीचे की औरतें अगर ग़लती करने के बाद माफ़ी चाहें तो तुम्हें ज्यादा मंहरबानी से माफ़ करना चाहिये और अल्लाह की कुदरत और बरक़त का लिहाज़ रखकर ज़ुल्म से दूर रहना चाहिये।

(८) और तुम देखो कि समझाना, अलग सोना, मारना कुछ भी कारगर न हो और दांतों के मतभेद दूर न हुए।

(९) क्योंकि क़रीब के लोग अपने रिश्तेदारों के घलु हालात से परिचित होते हैं और मियाँ बीबी के बीच मिलाप की इच्छा भी रखते हैं और दांतों पक्षों को ऊपर भग़सा और इत्मीनान भी होता है और उससे अपने दिल की बात कहने में हिचकिचाहट भी नहीं होती है।

(१०) जानता है कि मियाँ बीबी में ज़ालिम कौन है। पंचों की मियाँ बीबी में जुदाई करदेने का इम्तिज़ाज नहीं।

(११) न जानदार को न बेजान को, न उसके ख़ब्र होने में, न उसकी इबादत में।

(१२) अदब और आदर के साथ और उनकी ख़िदमत में सदा चौकस रहना और ऊपर ख़र्च करने में कमी न करना। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने तीन बार फ़रमाया, जंगकी राक ख़ाक़ में लिपटे हज़रत अबू हुसैना ने अर्ज़ किया, या सल्लल्लाह किसकी ? फ़रमाया, जिसने बूंद माँ बाप पाए या उनमें से एक को पाया और ज़रती न हो गया।

(१३) हदीस शरीफ़ में है, रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने वालों की उम्र लम्बी और रिज़्क बरसोअ होता है। (युज़्बारी व मुस्लिम)

(१४) हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, मैं और यतीम की सरफ़रशी करने वाला ऐसे क़रीब होंगे जैसे कलाम और बीच की उंगली (युज़्बारी शरीफ़)। एक और हदीस में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, बंदा और मिरक़ीन की इमदाद और ख़बरगरीरी करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है।

(१५) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जिब्रील मुझे हमेशा पड़ोसियों के साथ एहसास करने की तर्कीद करते रहे,

कितना बुरा साथी है (३८) और उनका क्या नुकसान था अगर ईमान लाते अल्लाह और क़यामत पर और अल्लाह के दिये में से उसकी राह में खर्च करते (३९) और अल्लाह उनको जानता है (३९) अल्लाह एक ज़रा भर जुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी हो तो उसे दूनी करता और अपने पास से बड़ा सवाब देता है (४०) तो कैसी होगी जब हम हर उम्मत से एक गवाह लाएँ (४१) और ऐ मेहबूब, तुम्हें उन सबपर गवाह और निगहवान बनाकर लाएँ (४२) उस दिन तमन्ना करेंगे वो जिन्होंने कुफ़्र किया और रसूल की ताफ़रमानी की काश उन्हें मिट्टी में दबाकर ज़मीन बराबर करदी जाए और कोई बात अल्लाह से न छुपा सकेंगे (४३) (४२)

सातवाँ सूक़

ऐ ईमान वालो, नशे की हालत में नमाज़ के पास न जाओ (१) जबतक इतना होश न हो कि जो कहे उसे समझो और न नापाकी की हालत में वे नहाए मगर मुसाफ़िरी में (२) और अगर तुम बीमार हो (३) या सफ़र में या तुम में से कोई कज़ाए हाजत (पेशाब पाखाना) से आया (४) या तुमने औरतों को छुआ (५) और पानी न पाया (६) तो पाक मिट्टी से तयम्मूम करो (७) तो अपने मुंह और हाथों का मसह (हाथ फेरना)

فَسَاءَ قَرِينًا ۖ وَمَا دَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللّٰهِ وَ
الْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۖ وَكَانَ
اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيمًا ۖ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۖ
وَإِنْ تَكُ حَسَنَةً يُضَعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهِ
أَجْرًا عَظِيمًا ۖ فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ
وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا ۖ يَوْمَئِذٍ يُؤَدُّ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ بِهِمُ الْآرَضُ
وَلَا يَكْتُمُونَ اللّٰهَ حَدِيثًا ۖ لَّيَأِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تَقْرُبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَرَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا
مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ
تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرَضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ
أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ
تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا

سُورَةُ

इस हद तक कि गुमान होता था कि उनको वारिस करार दें।

(१६) यानी बीबी या जो सोहबत में रहे या सफ़र का साथी हो या साथ पड़े या मजलिस और मस्जिद में बग़बर बैठे।

(१७) और मुसाफ़िर व मेहमान, हदीस में है, जो अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान रखे उस चाहिये कि मेहमान की इज़ाज़त करे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

(१८) कि उन्हें उनकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ न दो और बुरा भला न कहो और खाना कपड़ा उनकी ज़रूरत के अनुसार दो। हदीस में है, रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जन्नत में बुरा व्यवहार करने वाला दाख़िल न होगा। (तिर्मिज़ी)

(१९) अपनी बड़ाई चाहने वाला घमण्डी, जो स्थितेदारों और पड़ोसियों को ज़लील समझे।

(२०) बुरज़ यानी कंजूसी यह है कि खुद ख़ाए, दूसरे को न दे, “शेह” यह है कि न ख़ाए न खिलाए, “सख़्रा” यह है कि खुद भी ख़ाए दूसरों को भी खिलाए, “जूद” यह है कि आप न ख़ाए दूसरों को खिलाए, यह आमत यहाँदियों के बारे में उतरी जो सैपदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ बयान करने में कंजूसी करते और आपके गुण छुपाते थे, इस से मालूम हुआ कि इल्म को छुपाना बुरी बात है।

(२१) हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह को पसन्द है कि बन्दे पर उसकी नेअमत ज़ाहिर हो, अल्लाह की नेअमत का इज़हार ख़लूस के साथ हो तो यह भी शुक्र है और इस लिये आदमी को अपनी हैसियत के लायक़ जायज़ लिबासों में बेहतर लिबास पहनना मुस्तहब है।

(२२) बुरज़ यानी कंजूसी के बाद फ़ुज़ूलख़र्ची की बुराई बयान फ़रमाई, कि जो लोग केवल दिख़ावे के लिये या नाम कमाने के लिये ख़र्च करते हैं और अल्लाह की खुशी हासिल करना उनका लक्ष्य नहीं होता, जैसे कि मुथिक और मुनाफ़िक़, ये भी उन्हीं के हुक्म में हैं जिन का हुक्म ऊपर गुज़र गया।

(२३) दुनिया और आख़िरत में, दुनिया में तो इस तरह कि वह शैतानी काम करके उसको खुश करता रहा और आख़िरत में इस तरह कि हर काफ़िर एक शैतान के साथ आग की ज़ंजीर में जकड़ा होगा। (सूराज़िन)

(२४) इसमें सरासर उनका नफ़ा ही था।

(२५) उस नबी को, और वह अपनी उम्मत के ईमान और कुफ़्र पर गवाही दें क्योंकि नबी अपनी उम्मतों के कामों से बा-ख़बर होते हैं।

(२६) कि तुम नबियों के सरदार हो और सारा जगत तुम्हारी उम्मत।

(२७) क्योंकि जब वो अपनी ग़लती का इत्कार करेंगे और क़सम खाकर कहेंगे कि हम मुथिक न थे और हमने ख़ता न की थी तो उनके मुंहों पर मुहर लगा दी जाएगी और उनके शरीर के अंगों को ज़बान दी जाएगी, वो उनके खिलाफ़ गवाही देंगे।

सूरा निसा - सातवाँ सूक़

(१) हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ ने सहाबा की एक जमाअत की दावत की, उसमें ख़ाने के बाद शराब पेश की गई, कुछ ने

करो^(८) बेशक अल्लाह मोफ़ करने वाला बख़्शने वाला है^(४३) क्या तुमने उन्हें न देखा जिनको किताब से एक हिस्सा मिला^(९) गुमराही मोले लेते हैं^(१०) और चाहते हैं^(११) कि तुम भी राह से बहक जाओ^(४४) और अल्लाह ख़ूब जानता है तुम्हारे दुश्मनों को^(१२) और अल्लाह काफ़ी है वाली (मालिक)^(१३) और अल्लाह काफ़ी है मददगार^(४५) कुछ यहूदी कलामों को उनकी जगह से फेरते हैं^(१४) और^(१५) कहते हैं हमने सुना और न माना और^(१६) सुनिये आप सुनाए न जाएं^(१७) और राइन कहते हैं^(१८) जबानें फेर कर^(१९) और दीन में तअन (लाछन) के लिये^(२०) और अगर वो^(२१) कहते कि हमने सुना और माना और हुज़ूर हमारी बात सुनें और हुज़ूर हमपर नज़र फ़रमाएं तो उनके लिये भलाई और रास्ती में ज़्यादा होता लेकिन उनपर तो अल्लाह ने लानत की उनके कुफ़्र की वजह से तो यकीन नहीं रखते मगर थोड़ा^(२२) ^(४६) ऐ किताब वाली ईमान लाओ उसपर जो हमने उतारा तुम्हारे साथ वाली किताब^(२३) की पुष्टि फ़रमाता इससे पहले कि हम बिगाड़ें कुछ मुंहों को^(२४) तो उन्हें फेर दें उनकी पीठ की तरफ़ या उन्हें लानत करें जैसी

بُجُوهَكُمْ وَأَيُّدِيَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ۝
الَّذِينَ أَوْتُوا بَصِيرًا مِنَ الْكِتَابِ
يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَنْ تَضِلُّوا السَّبِيلَ ۝
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ وَكَفَى بِاللَّهِ وَلِيًّا ۝ وَكَفَى
بِاللَّهِ نَصِيرًا ۝ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ
الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا
وَأَسْمَعُ غَيْرَ مُسْمِعٍ وَارْعِنَا لَيْتَ بِالسَّيِّئِينَ وَطْعِنَا
فِي الدِّينِ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا
وَأَسْمَعُ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ وَ
لَكِن لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا
مُصَدِّقًا لِمَا مَعَكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَطْغِي
وُجُوهًا فَتَرُدَّهَا عَلَى أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا

पी, क्योंकि उस वक़्त तक शराब हारम न हुई थी, फिर मगरिब की नमाज़ पढ़ी, इमाम नशे में “कुल या अय्युहल काफ़िरुना अअवुदो मा तअवुदुना व अनुम आविदुना मा अअवुद” पढ़ गए और दोनों जगह “ला” (नहीं) छोड़ गए और नशे में ख़बर न हुई, और आयत का मतलब ग़लत हो गया, इसपर यह आयत उतरी और नशे की हालत में नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमा दिया गया, तो मुसलमानों ने नमाज़ के वक़्तों में शराब छोड़ दी, इसके बाद शराब बिल्कुल हारम कर दी गई, इस से साबित हुआ कि आदमी नशे की हालत में कुफ़्र का कलिमा ज़बान पर लाने से काफ़िर नहीं होता, इसलिये कि “कुल या अय्युहल काफ़िरुना” में दोनों जगह “ला” का छोड़ देना कुफ़्र है, लेकिन उस हालत में हुज़ूर ने उसपर कुफ़्र का हुक्म न फ़रमाया बल्कि कुरआने पाक में उनका “या अय्युहल लज़ीना आमनु” (ऐ ईमान वालो) से ख़िताब फ़रमाया गया।

- (२) जबकि पानी न पाओ, तयम्मूम कर लो।
- (३) और पानी का इस्तेमाल ज़रूर करता हो।
- (४) यह किनाया है ये बुज़ू होने से।
- (५) यानी हमबिस्तरी की।
- (६) इसके इस्तेमाल पर क़ादिर न होने, चाहे पानी मौजूद न होने के कारण या दूर होने की वजह से या उसके हासिल करने का साधन न होने के कारण या सोंप, ख़तरनाक जंगली जानवर, दुश्मन शेरह कोई रुकावट होने के कारण।
- (७) यह हुक्म मरोज़ों, मुसाफ़िरों, जवाबत और हदस वालों को शामिल है, जो पानी न पाएं या उसके इस्तेमाल से मजबूर हों (मदारीफ़), साहबारी, हैज़ व निफ़ास से पाकी के लिये भी पानी से मजबूर होने की सूत में तयम्मूम जायज़ है, जैसा कि हदोस शरीफ़ में आया है।

(८) तयम्मूम का तरीक़ा :- तयम्मूम करने वाला दिल से पाकी हासिल करने की नियत करे, तयम्मूम में नियत शर्त है क्योंकि अल्लाह का हुक्म आया है, जो चीज़ मिट्टी की जिन्स से हो जैसे धूल, रेत, पत्थर, उद सबपर तयम्मूम जायज़ है, चाहे पत्थर पर धूल भी न हो लेकिन पाक होता इन चीज़ों में शर्त है, तयम्मूम में दो ज़बें हैं, एक बार हाथ मार कर चेहरे पर फेर लें, दूसरी बार हाथों पर, पानी के साथ पाक अरल है और तयम्मूम पानी से मजबूर होने की हालत में उसकी जगह लेता है, जिस तरह हदस पानी से ज़ायल होता है, उसी तरह तयम्मूम से, यहाँ तक कि एक तयम्मूम से बहुत से फ़र्ज़ और नफ़ल पढ़े जा सकते हैं, तयम्मूम करने वाले के पीछे गुसल और बुज़ू वाले की नमाज़ सही है, मजबूर बर्ती मुस्तलक में जब इस्लामी लश्कर रात को एक वीराने में उतरा जहाँ पानी न था और सुबह वहाँ से फूच करने का इशारा था, वहाँ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा का हार ख़ो गया, उसको तलाश के लिये सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने वहाँ क़याम फ़रमाया, सुबह हुई तो पानी न था, अल्लाह तआला ने तयम्मूम को आयत उतारी, उसैद बिद हदीस रदियल्लाहो अन्हा ने कहा कि ऐ आते अबूवक्र, यह तुम्हारी पत्नी हो बरकन नहीं है, यानी तुम्हारे

(२२) इतना कि अल्लाह ने उन्हें पैदा किये और रोज़ी दी और इतना काफ़ी नहीं जबतक कि इमान वाली बातों का न मानें और सब की तस्दीक न करें.

(२३) तौरात.

(२४) आँखें नाक कान फलकें बगैरह नक़्शा मिटा कर.

(२५) इन दोनों बातों में से एक जरूर लाज़िम है. और लातत तो उनपर ऐसी पड़ी कि दुनिया उन्हें बुरा कहती है. यहाँ नुफ़सियों के कुछ अलग अलग कौल हैं. कुछ इस फटकार का पड़ना दुनिया में बताते हैं, कुछ ओख़िरत में. कुछ कहते हैं कि लातत हो चुकी और फटकार पड़ गई. कुछ कहते हैं कि अभी इन्तिज़ार है. कुछ का कौल है कि यह फटकार उस सूरत में थी जबकि यहूदियों में से कोई ईमान न लाता और चूंकि बहुत से यहूदी ईमान ले आए, इसलिये शत नहीं पाई गई और फटकार उठ गई. हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम जो यहूदी आलिमों के बड़ों में से हैं, उन्होंने मुल्के शाम से वापस आते हुए रास्ते में यह आयत सुनी और अपने घर पहुंचने से पहले इसलाम लाकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह मैं नहीं ख़याल करता था कि मैं अपना मुंह पीठ की तरफ़ फिर जाने से पहले और चेहरे का नक़्शा मिट जाने से पहले आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो सकूंगा, यानी इस डर से उन्होंने ईमान लाने में जल्दी की क्योंकि तौरात शरीफ़ से उन्हें आपके सच्चे रसूल होने का यक़ीनी इल्म था, इसी डर से कअब अहवार जो यहूदियों में बड़ी बुजुर्गी रखते थे, हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो से यह आपन सुनकर मुसलमान हो गए.

(२६) मानी यह हैं कि जो कुफ़्र पर मरे उसकी वरिश्श नहीं. उसके लिये हमेशगी का अज़ाब है और जिसने कुफ़्र न किया हो, वह चाहे कितना ही बड़ा गुनाह करने वाला हो, और तौबह के बगैर मर जाए, तो उसका बदला अल्लाह की मर्ज़ी पर है, चाहे माफ़ फ़रमाए या उसके गुनाहों पर अज़ाब करे फिर अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाए. इस आयत में यहूदियों को ईमान की तरगीब है और इसपर भी प्रमाण है कि यहूदियों पर शरीअत के शब्दों में मुश्कि शब्द लागू होना सही है.

(२७) यह आयत यहूदियों और ईसाईयों के बारे में नाज़िल हुई जो अपने आपको अल्लाह का बेटा और उसका प्यारा बताते थे और कहते थे कि यहूदियों और ईसाईयों के सिवा कोई जन्नत में दाख़िल न होगा. इस आयत में बताया गया कि इन्सान का, दीनदारी, नेक काम, तरक़्वा और अल्लाह की वाग़्दाह में कुर्ब और मक़बूलियत का दावेदार होना और मुंह से अपनी तारीफ़ करना काम नहीं आता.

(२८) यानी बिल्कुल जुल्म न होगा. बन्ही सज़ा दी जाएगी जो उनका हक़ है.

(२९) अपने आपको बेगुनाह और अल्लाह का प्यारा बताकर.

सूरए निसा - आठवाँ रूक़

(१) यह आयत कअब बिन अशरफ़ बगैरह यहूदी आलिमों के बारे में उतरी जो सत्तर सवारों की जमाअत लेकर कुरैश से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जंग करने पर हलफ़ लेते पहुंचे, कुरैश ने उनसे कहा कि चूंकि तुम कित्ताब वाले हो इसलिये तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) के साथ ज़्यादा कुर्ब रखते हो, हम कैसे इत्मीनान करें कि तुम हमसे धाग़े के साथ नहीं मिल रहे हो. अगर इत्मीनान दिलाना हो तो हमारे बुतों को सज़्दा करो. तो उन्होंने शैतान की फ़रमाँवरदारी करके बुतों को सज़्दा किया, फिर अबू सुफ़ियान ने कहा कि हम ठीक राह पर हैं या मुहम्मद ? कअब बिन अशरफ़ ने कहा, तुम्ही ठीक राह पर हो. इसपर यह आयत उतरी और अल्लाह तआला ने उनपर लातत फ़रमाई कि उन्होंने हुज़ूर की दुश्मनी में मुश्कियों के बुतों तक को पूज लिया.

(२) यहूदी कहते थे कि हम सल्लत और नवुन्न के ज़्यादा हक़दार हैं तो हम कैसे अरबों का अनुकरण और फ़रमाँवरदारी करें. अल्लाह तआला ने उनके दावे को झुटला दिया कि उनका सल्लत में हिस्सा ही क्या है और मान लिया जाय कुछ होता भी, तो उनका बुग़्न और कंजूसी इस दर्जे की है कि...

(३) नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और ऐहले ईमान से.

उन्हें अपने फ़ज़ल से दिया^(४) तो हमने तो इब्राहीम की औलाद को किताब और हिकमत (बोध) अता फ़रमाई और उन्हें बड़ा मुल्क दिया^(५) (५४) तो उनमें कोई उसपर ईमान लाया^(६) और किसी ने उससे मुंह फेरा^(७) और दोज़ख काफ़ी है भड़कती आग^(८) (५५) जिन्होंने हमारी आयतों का इन्कार किया जल्द ही हम उनको आग में दाखिल करेंगे जब कभी उनकी खालें पक जाएंगी हम उनके सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अज़ाब का मज़ा लें वेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (५६) और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये जल्द ही हम उन्हें बाग़ों में ले जाएंगे जिनके नीचे नहरें वहाँ उन में हमेशा रहेंगे, उनके लिये वहाँ सुथरी बीबीयाँ हैं^(९) और हम उन्हें वहाँ दाखिल करेंगे जहाँ साया ही साया होगा^(१०) (५७) वेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सुपुर्द करो^(११) और यह कि जब तुम लोगों में फैसला करो तो इन्साफ़ के साथ फैसला करो^(१२) वेशक अल्लाह तुम्हें क्या ही ख़ूब नसीहत फ़रमाता

مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ
إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَهُمْ مُلْكًا عَظِيمًا ۖ
فِيهِمْ مَنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ صَدَّ عَنْهُ
وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا
سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كَلْبًا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ
بَدَلَهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۚ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ
مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا ظِلْلٌ ۖ إِنَّ اللَّهَ
يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا ۚ وَإِذَا
حَكُمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ
اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ مَبِيعًا

(४) नबुव्वत और विजय और मालबा और सम्मान वगैरह नेअमनें.

(५) जैसा कि हज़रत यूसुफ़ और हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान अलैहिमुस्सलाम को, तो अगर अपने हबीब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर करम और मेहरबानी की तो उससे क्यों जलने और हसद करते हैं.

(६) जैसे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथ वाले सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए.

(७) और ईमान से मंहरूम रहा.

(८) उसके लिये जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान ना लाए.

(९) जो हर निजासत, गन्दगी और नफ़रत के क़ाविल चीज़ों से पाक हैं.

(१०) यानी जन्नत का साया, जिसकी राहत, आमायश को न समझा जा सकता है, न ही बयाव किया जा सकता है.

(११) अमानतें रखने वालों और हाकिमों को अमानतें ईमानदारी के साथ हज़रत को अदा करने और फ़ैसलों में इन्साफ़ करने का हुक्म दिया. मुफ़सिरी का कहना है कि फ़राइज़ भी अल्लाह तआला की अमानतें हैं, उनकी अदायगी का हुक्म भी इसमें दाख़िल है.

(१२) पक्षों में से बिल्कुल किसी की रियायत न हो. उलमा ने फ़रमाया कि हाकिम को चाहिये कि पांच बातों में पक्षों के साथ बराबर क़म सुलूक करे. (१) अपने पास आने में जैसे एक को मौक़ा दे दूसरे को भी दे. (२) बैठने की जगह दोनों को एक सी दे. (३) दोनों की तरफ़ बराबर ध्यान दे. (४) बात सुनने में हर एक के साथ एक ही तरीक़ा रखे. (५) फ़ैसला देने में हक़ की रियायत करे, जिसका दूसरे पर अधिकार हो पूरा दिलाए. हदीस शरीफ़ में है, इन्साफ़ करने वालों का अल्लाह के कुर्व में तूरी निम्नग़ अता दोंगे. कुछ मुफ़सिरी ने इस आयत के उतरने की परिस्थितियों में इस घटना का ज़िक़्र किया है कि मक्का की विजय के क़ाबल में अलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसमान बिन तलहा, कावे के श्रादिम से कावे की चाबी ले ली. फिर जब यह शायन उनमें हो आग़ने यह चाबी उन्हें वापस दी और फ़रमाया कि अब यह चाबी हमेशा तुम्हारी रख में रहेगी. इसपर उसमान बिन तलहा हज़रत को हज़रत को आग़ने यह घटना थोड़ी थोड़ी तयदीलियों के साथ बहुत से मुहद्दिसों ने बयाव की है मगर हदीसों पर तज़र करने में यह सबो ग़ान्भू नहीं होती. क्योंकि इब्ने अब्दुल्लाह और इब्ने मुन्दा और इब्ने असीर की रिवायतों से मालूम होता है कि उसमान बिन तलहा साठ हिज़री में मदीनए तैय्यिबह हाज़िर होकर ईस्लाम ला चुके थे और उन्होंने फ़त्हे मक्का के रोज़ चाबी अपनी श्रुशी से पेश की थी. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसों से यही निष्कर्ष निकलता है.

हे वेशक अल्लाह सुनता देखता है (५८) ऐ ईमान वाले हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का (५९) और उनका जो तुम में हुक्मत वाले हैं (५९) फिर अगर तुम में किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे अल्लाह और रसूल के हुजूर रजु (पेश) करो और अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखते हो (५९) यह बेहतर है और इसका अंजाम सब से अच्छा (५९)

नवाँ रूकू

क्या तुमने उन्हें न देखा जिनका दावा है कि वो ईमान लाए उसपर जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और उसपर जो तुमसे पहले उतरा फिर चाहते हैं कि शैतान को अपना पंच बनाएं और उनको तो हुक्म यह था कि उसे बिल्कुल न मानें और इबलीस यह चाहता है कि उन्हें दूर बहका दे (६०) और जब उनसे कहा जाए कि अल्लाह को उतारी हुई किताब और रसूल की तरफ़ आओ तो तुम देखोगे कि मुनाफ़िक (दोमले लोग) तुमसे मुंह मोड़ कर फिर जाते हैं (६१) कैसी होगी जब उनपर कोई उफ़ताद (मुसीबत) पड़े (६१) बदला उसका जो उनके हाथों ने आगे भेजा (६१) फिर ऐ मेहबूब तुम्हारे हुजूर हाज़िर हों अल्लाह की क़सम खाते कि हमारा इरादा तो

بَصِيرًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَ
أَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَإِنْ
تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ
إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ذَلِكَ
خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۚ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ
يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا
أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا إِلَى الطَّاغُوتِ
وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ ۚ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ
أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ۚ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ
تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتُ
الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ۚ فَكَيْفَ إِذَا
أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ ۚ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ شُئْمٌ
جَاءَ وَكَانَ يُخْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا

مَنْعًا

(१३) कि रसूल की फ़रमाँबरदारी अल्लाह ही की फ़रमाँबरदारी है, बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, जिसने मेरी फ़रमाँबरदारी की उसने अल्लाह की फ़रमाँबरदारी की और जिसने मेरी नाफ़रमानी की, उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की.

(१४) इसी हदीस में हुजूर फ़रमाते हैं, जिसने सरदार की फ़रमाँबरदारी की उसने मेरी फ़रमाँबरदारी की, जिसने सरदार की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की. इस आयत से साबित हुआ कि मुसलमान सरदारों और हाकिमों की आज्ञा का पालन वाजिब है जब तक वो हक़ के अनुसार रहें और अगर हक़ के खिलाफ़ हुक्म करें, तो उनकी फ़रमाँबरदारी नहीं.

(१५) इस आयत से मालूम हुआ कि अहक़ाम तीन क्रिम के हैं, एक वो जो ज़ाहिर किताब यानी क़ुरआन से साबित हो, एक वो जो ज़ाहिर हदीस से, एक वो जो क़ुरआन और हदीस की तरफ़ क़यास के तौर पर रजु करने से. "उलिल अम्र" (जो हुक्मत करते हैं) में इमाम, अमीर, बादशाह, हाकिम, क़ाज़ी सब दाख़िल हैं. ख़िलाफ़ते कामिला तो ज़मानए मिसालत के बाद तीस साल रही, मगर ख़िलाफ़ते नाफ़िस अब्बासी ख़लीफ़ोंओं में भी थी और अब तो इमामत भी नहीं पाई जाती. क्योंकि इमाम के लिये क़ुरैश से होना शर्त है और यह बात अक्सर जगहों में ग़ायब है. लेकिन सुल्तान और इमारत बाक़ी है और चूंकि सुल्तान और अमीर भी उल्ल अम्र में दाख़िल हैं इसलिये हमपर उनकी इताअत भी लाज़िम है.

सूर निसा - नवाँ रूकू

(१) बिशर नामी एक मुनाफ़िक़ का एक यहूदी से झगड़ा था. यहूदी ने कहा चलो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से तय करा लें. मुनाफ़िक़ ने ख़याल किया कि हुजूर तो रिआयत किये बिना केवल सच्चा ही फ़ैसला देंगे. उसका मतलब हासिल न होगा. इसलिये उसने इमाम का दावा रखने के बावजूद यह कहा कि क़अब बिन अशरफ़ यहूदी को पंच बनाओ (क़ुरआन मजीद में तामूत से इस क़अब बिन अशरफ़ के पास फ़ैसला ले जाना मुराद है) यहूदी जानता था कि क़अब रिआयत ग़ाना है, इसलिये उसने सहधर्मी होने के बावजूद उसको पंच तसलीम नहीं किया. नाचार मुनाफ़िक़ को फ़ैसले के लिये सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में आना पड़ा. हुजूर ने जो फ़ैसला दिया, वह यहूदी के हक़ में हुआ. यहाँ से फ़ैसला सुनने के बाद फिर मुनाफ़िक़ यहूदी से ज़िद करने लगा और उसे मजबूर करके हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो के पास लाया. यहूदी ने आपसे अर्ज़ किया कि मेरा इसका मामला सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तय फ़रमा चुके, लेकिन यह हुजूर के फ़ैसले से राज़ी नहीं. आप से फ़ैसला चाहता है. फ़रमाया कि हाँ मैं अभी आकर फ़ैसला करता हूँ. यह फ़रमाकर मक़ान में तशरीफ़ ले गए और तलवार लाकर उस मुनाफ़िक़ का क़त्ल कर दिया और फ़रमाया जो अल्लाह और उसके रसूल के फ़ैसले से राज़ी न हो उसका मेरे पास यह फ़ैसला है.

भलाई और मेल ही था^(५२) उनके दिलों की तो बात अल्लाह जानता है तो तुम उनसे चश्मपोशी करो (नज़र फेरलो) और उन्हें समझा दो और उनके मामले में उनसे रसा बात कहो^(५३) और हमने कोई रसूल न भेजा मगर इसलिये कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअत (आज्ञा पालन) की जाए^(५४) और अगर जब वह अपनी जानों पर जुल्म करें^(५५) तो ऐ मेहबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों ओर फिर अल्लाह से माफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअत फ़रमाए तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पाएँ^(५६) तो ऐ मेहबूब तुम्हारे रब की क़सम वो मुसलमान न होंगे जबतक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनाएं फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उस से रुकावट न पाएं ओर जिसे मान लें^(५७) और अगर हम उनपर फ़र्ज़ करते कि अपने आपको क़त्ल कर दो या अपने घरवार छोड़ कर निकल जाओ^(५८) तो उनमें थोड़े ही ऐसा करते और अगर वो करते जिस बात की उन्हें नसीहत दी जाती है^(५९) तो इसमें उनका भला था और ईमान पर खूब जमना^(६०) और ऐसा होता तो ज़रूर हम उन्हें अपने पास से बड़ा सवाब देते^(६१) और ज़रूर उनको सीधी राह की हिदायत करते^(६२) और जो अल्लाह

وَتَوْفِيقًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ ۚ بِإِذْنِ اللَّهِ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُخْرُجُوا فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ أَوْ احْرُجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيثًا ۝ وَإِذَا لَا تَأْتِيَنَّهُمْ مِنَ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ۝ وَلَهْدِي لَهُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ

- (२) जिससे भागने बचने की कोई राह न हो जैसी कि विशर मुनाफ़िक़ पर पड़ी कि उसको हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने क़त्ल कर दिया।
- (३) कुफ़्र और दोहरी प्रवृत्ति और गुनाह, जैसा कि विशर मुनाफ़िक़ ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़ैसले से मुंह फेर कर किया।
- (४) और वह माफ़ी और शर्मन्दगी कुछ काम न दे, जैसा कि विशर मुनाफ़िक़ के मारे जाने के बाद उसके सरपरस्त उसके खून का बदला तलब करने आए और बेजा माज़िरते करने और बातें बनाने लगे। अल्लाह तआला ने उसके खून का कोई बदला न दिया क्योंकि वह मारे ही जाने के क़ाबिल था।
- (५) जो उनके दिल में असर कर जाए।
- (६) जबकि रसूल का भेजना ही इसलिये है कि वो फ़रमाँवरदारी के मालिक बनाए जाएं और उनकी आज्ञा का पालन फ़र्ज़ हो। तो जो उनके हुक्म से राज़ी न हो उसने रिसालत का तसलीम न किया, वह काफ़िर क़त्ल किये जाने के क़ाबिल है।
- (७) गुनाह और नाफ़रमानी करके।
- (८) इससे मालूम हुआ कि अल्लाह की बारगाह में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का बसीला और आपकी शफ़ाअत काम बनाने का ज़रिया है। सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ाते शरीफ़ के बाद एक अरब देहाती आपके मुबारक रौज़े पर हाज़िर हुआ और रौज़ा शरीफ़ की पाक मिट्टी अपने सर पर डाली और अर्ज़ करने लगा, या रसूलुल्लाह, जो आपने फ़रमाया हमने सुना और जो आप पर उतरा उसमें यह आयत भी है "وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا"। मैंने बेशक अपनी जान पर जुल्म किया और मैं आपके हज़ूर में अल्लाह से अपने गुनाह की वस्त्रिश चहाने हाज़िर हुआ तो मेरे रब से मेरे गुनाह की वस्त्रिश क़ाईये। इसपर क़ब्र शरीफ़ से आवाज़ आई कि तेरी वस्त्रिश की गई। इससे कुछ मसअले मालूम हुए। अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़त अर्ज़ करने के लिये उसके प्यारों का बसीला बनाना कामयाबी का ज़रिया है। क़ब्र पर हाज़त के लिये जाना भी "जाऊँ" में दाख़िल है। और पिछले नेक लोगों का तरीक़ा रहा है। वफ़ाते के बाद अल्लाह के प्यारों को "या" के साथ पुकारना जायज़ है। अल्लाह के मरक़बूल बन्दे मदद फ़रमाते हैं और उनकी दआ से हाज़त पूरी होती है।
- (९) मानो ये हैं कि जब तक आपके फ़ैसले और हुक्म की दिल की सच्चाई से न मान लें, मुसलमान नहीं हो सकते। सुद्दातल्लाह, इससे रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान जाहिर होती है। पहाड़ से आने वाला पानी जिससे बाग़ों में सिंचाई करते हैं, उसमें एक अन्मारी का हज़रत जुबैर रदियल्लाहो अन्हो से झगड़ा हुआ। मामला सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर पेश किया गया। हुज़ूर ने फ़रमाया, ऐ जुबैर तुम अपने बाग़ का पानी देकर अपने पड़ोसी की तरफ़ पानी छोड़ दो। यह अन्मारी को बुरा लगा और उसकी ज़बान से यह क़लिमा निकला कि जुबैर आपके फुकीज़ाद भाई हैं। इसके बावजूद कि फ़ैसले में हज़रत जुबैर

और उसके रसूल का हुक्म माने तो उसे उनका साथ मिलेगा जिनपर अल्लाह ने फ़ज़ल किया यानी नबी, (१२) और सिद्दीक़ीन (सच्चाई वाले) (१३) और शहीद (१४) और नेक लोग (१५) ये क्या ही अच्छे साथी हैं (६९) यह अल्लाह का फ़ज़ल है और अल्लाह काफ़ी है जानने वाला (७०)

दसवाँ सूक़

ऐ ईमान वाले होशियारी से काम लो (१) फिर दुश्मन की तरफ़ थोड़े थोड़े होकर निकलो या इकट्ठे चलो (७१) और तुम में कोई वह है कि ज़रूर देर लगाएगा (२) फिर अगर तुमपर कोई मुसीबत पड़े तो केहे खुदा का मुझपर एहसान था कि मैं उनके साथ हाज़िर न था (७२) और अगर तुम्हें अल्लाह का फ़ज़ल मिले (३) तो ज़रूर कहे (४) गोया तुममें उसमें कोई दोस्ती न थी ऐ काश मैं उनके साथ होता तो बड़ी मुराद पाता (७३) तो उन्हें अल्लाह की राह में लड़ना चाहिये जो दुनिया की ज़िन्दगी वेचकर आख़िरत लेते हैं और जो अल्लाह की राह में (५) लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब (विजयी) आए तो जल्द ही हम उसे बड़ा सवाब देंगे (७४) और तुम्हें क्या हुआ कि न लड़ो अल्लाह की राह

وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
مِّنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ
وَحَسَنَ أَوْلِيَٰكَ رَفِيقًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ
وَكُفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا ۚ يَٰ أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا
حِذْرَكُمْ ۚ فَإِنِ اتَّخَذْتُمُ الْأَعْدَاءَ حَمِيمًا ۖ وَإِن
مِّنْكُمْ لَمَن لَّيْطِئَنَّ ۖ فَإِنِ أَصَابَكُمْ مُّصِيبَةٌ ۖ قَالُ
قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْنَا إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ شَهِيدًا ۖ
وَلَكِنِ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللَّهِ لِيَقُولَنَّ كَأَن لَّمْ
يَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَّلِيَّتَنِي كُنتُمْ مَعَهُمْ
فَافْزُرُوا قَوْرًا عَظِيمًا ۖ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
الَّذِينَ يَكْفُرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۖ وَمَنْ
يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ
نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي

का अल्लाह की राह एहसान की हिदायत फ़रमाई गई थी लेकिन अन्सारी ने इसकी क़द्र न की तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुज़रत जुबैर को हुक्म दिया कि अपने बाग़ को भरपूर पानी देकर पानी रोक लो. इसपर आयत उतरी. (१०) जैसा कि बनी इस्राईल को मिस्र से निकल जाने और तौबह के लिये अपने आपको क़त्ल का हुक्म दिया था. साबित बिन कैस बिन शम्मास से एक यहूदी ने कहा कि अल्लाह ने हमपर अपना क़त्ल और घरबार छोड़ना फ़र्ज़ किया था, हमने उसका पूरा किया. साबित ने फ़रमाया कि अगर अल्लाह हमपर फ़र्ज़ करता तो हम भी ज़रूर हुक्म पूरा करते. इसपर यह आयत उतरी. (११) यानी रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमावशकारी और आपकी आज्ञा के पालने की. (१२) तो नबियों के मुख़लिस फ़रमावशदार, ज़न्नत में उनकी सोहबत और दर्शन से मेहरूम न होंगे. (१३) "सिद्दीक़" नबियों के सच्चे अनुयाइयों को कहते हैं, जो सच्चे दिल से उनकी राह पर कायम रहें. मगर इस आयत में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बड़ी बुजुर्गी वाले सहाबा मुराद हैं जैसे कि हुज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो तआला अन्हो. (१४) जिन्होंने न खुदा की राह में जाने दी. (१५) वह दीनदार जो बन्दों के हक़ और अल्लाह के हक़ दोनों अदा करें और उनके ज़ाहिर और छुपवाँ हाल अच्छे और पाक हों. हुज़रत साअबान सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ बहुत महबूब रखते थे. जुदाई की ताकत न थी. एक रोज़ इस क़द्र ग़मगीन और रंजीदा हाज़िर हुए कि रंग बदल गया था. हुज़ूर ने फ़रमाया आज रंग क्यों बदला हुआ है. अज़र किया न मुझे कोई बीमारी है न दर्द, सिवाय इसके कि जब हुज़ूर सामने नहीं होते तो बहुत ज़्यादा बहशत और परेशानी होती है. जब आख़िरत को याद करता हूँ तो यह अन्देशा होता है कि वहाँ में किस तरह दीदार पा सकूंगा. आप मुझे ऊँचे दर्जे में होंगे, मुझे अल्लाह तआला ने अपनी मेहरबानी से ज़न्नत दी भी तो उस ऊँचे मक़ाम तक पहुँच कहाँ. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें तसल्ली दी गई कि दर्जों के फ़र्क़ के बावजूद फ़रमावशदारों को मुलाक़ात और साथ रहने की नेअमत से नवाज़ा जाएगा.

सूरए निसा - दसवाँ सूक़

- (१) दुश्मन की घात से बचाओ और उसे अपने ऊपर मौक़ा न दो. एक क़ौल यह भी है कि हथियार साथ रखो. इससे मालूम हुआ कि दुश्मन के मुकाबले में अपनी हिफ़ाज़त की तदबीरें जायज़ हैं.
- (२) यानी दोगली प्रवृत्ति वाले मुनाफ़िक़.
- (३) तुम्हारी जीत हो और दुश्मन का माल यानी ग़नीमत हाथ आए.
- (४) वही जिसके कथन से यह साबित होता है कि...
- (५) यानी जिहाद फ़र्ज़ है और इसे छोड़ देने का तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं है.

में और कमजोर मर्दों और औरतों और बच्चों के वास्ते यह दुआ कर रहे हैं कि ऐ हमारे रब हमें इस बस्ती से निकाल जिसके लोग जालिम हैं और हमें अपने पास से कोई हिमायती दे दे और हमें अपने पास से कोई मददगार दे दे (७५) ईमान वाले अल्लाह की राह में लड़ते हैं (६) और काफिर शैतान की राह में लड़ते हैं तो शैतान के दोस्तों से (७) लड़ो वेशक शैतान का दाव कमजोर है (८) (७६)

ग्यारहवाँ सूक

क्या तुमने उन्हें न देखा जिनसे कहा गया अपने हाथ रोक लो (९) और नमाज़ कायम रखो और ज़कात दो फिर जब उनपर जिहाद फ़र्ज़ किया गया (१०) तो उनमें से कुछ लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे अल्लाह से डरे या इससे भी ज्यादा (११) और बोले ऐ रब हमारे तुने हमपर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया (१२) थोड़ी मुद्दत तक हमें और जीने दिया होता तुम फ़रमादो कि दुनिया का वरतना थोड़ा है (१३) और डर वालों

سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ
هَذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا وَاجْعَل لَّنَا مِنْ
لَدُنْكَ وَلِيًّا وَاجْعَل لَّنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ۝
الَّذِينَ آمَنُوا يقاتلون فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
يقاتلون فِي سَبِيلِ الظَّالِمِينَ فَقاتلوا أَوْلِيَاءَ
الشَّيْطَانِ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ۝ أَلَمْ تَرَ
إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ
اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كُتِبَتْ
عَلَيْنَا الْقِتَالُ لَوْلَا أَخْرَجْنَا إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ قُلْ
مَتَاءَ الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَى ۝

مَثَلًا

(६) इस आयत में मुसलमानों को जिहाद की रुचि दिलाई गई ताकि वो उन कमजोर मुसलमानों को काफिरों के अत्याचारी पंजे से छुड़ाए जिन्हें मक्कए मुकर्रमा में मुश्रिकों ने कैद कर लिया था और तरह तरह की यातनाएं और तकलीफों दे रहे थे और उनकी औरतों और बच्चों तक पर बेरहमी से अत्याचार कर रहे थे और वो लोग उनके हाथों में मजबूर थे इस हालत में वो अल्लाह तआला से रिहाई और मदद की दुआएं करते थे ये दुआएं कुबूल हुई और अल्लाह तआला ने अपने हवीव सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनका सरपरस्त और मददगार बनाया और उन्हें मुश्रिकों के हाथों से छुड़ाया और मक्कए मुकर्रमा फ़तह करके उनकी ज़बरदस्त मदद फ़रमाई।

(७) दीन के प्रचार और अल्लाह की खुशी के लिये

(८) यानी काफिरों का और वह अल्लाह की मदद के मुकाबल में क्या चीज़ है।

सूरए निसा - ग्यारहवाँ सूक

(१) जंग से मक्के के मुश्रिक मुसलमानों को बहुत तकलीफें देते थे हिजरत से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा की एक जमाअत ने हुज़ूर की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आप हमें काफिरों से लड़ने की इजाज़त दीजिये, उन्होंने ने हमें बहुत सताया है और बहुत तकलीफें पहुंचाते हैं हुज़ूर ने फ़रमाया कि उनके साथ जंग करने से हाथ रोको, नमाज़, और ज़कात, जो तुमपर फ़र्ज़ है, वह अदा करते रहो इससे साबित हुआ कि नमाज़ और ज़कान जिहाद से पहले फ़र्ज़ हुए।

(२) मदीना तैय्यिबह में और बद्र की हाज़िरी का हुक्म दिया गया।

(३) यह डर कुदरती था कि इन्सान की आदत है कि मौत और हलाकत से घबराता और डरता है।

(४) इसकी हिकमत क्या है, यह सवाल हिकमत की वजह दरियाफ़्त करने के लिये था न कि एतिमाज़ के तौर पर इसीलिये उनको इस सवाल पर फटकारा न गया, बल्कि तसल्ली वाला जवाब अता फ़रमा दिया गया।

(५) ख़त्म होजाने वाला और नश्वर है।

के लिये आखिरत अच्छी और तुमपर तागे वरावर जुल्म न होगा^(६) ॥ ७७ ॥ तुम जहां कहीं हो मौत तुम्हें आ लेगी^(७) अगरचे मजबूत किलों में हो और उन्हें कोई भलाई पहुंचे^(८) तो कहें यह अल्लाह की तरफ से है और उन्हें कोई बुराई पहुंचे^(९) तो कहें यह हुजूर की तरफ से आई^(१०) तुम फरमा दो सब अल्लाह की तरफ से है^(११) तो उन लोगों को क्या हुआ कोई बात समझते मालूम ही नहीं होते ॥ ७८ ॥ ऐ सुनने वाले तुझे जो भलाई पहुंचे वह अल्लाह की तरफ से है^(१२) और जो बुराई पहुंचे वह तेरी अपनी तरफ से है^(१३) और ऐ मेहबूब हमने तुम्हें सब लोगों के लिये रसूल भेजा^(१४) और अल्लाह काफी है गुनाह^(१५) ॥ ७९ ॥ जिसने रसूल का हुक्म माना वेशक उसने अल्लाह का हुक्म माना^(१६) और जिसने मुंह फेरा^(१७) तो हमने तुम्हें उनके बचाने को न भेजा ॥ ८० ॥ और कहते हैं हमने हुक्म माना^(१८) फिर जब तुम्हारे पास से निकल कर जाते हैं तो उनमें एक दल जो कह गया था उसके खिलाफ रात को मन्सूवे (योजनाएं) गाँठता है और अल्लाह लिख रखता है उनके रात के मन्सूवे^(१९) तो ऐ मेहबूब तुम उनसे चश्मपोशी करो और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह काफी है काम बनाने को ॥ ८१ ॥ तो क्या

وَلَا تَظْلَمُونَ قَتِيلًا ۝ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَدْرِكَكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشِيدَةٍ ۚ وَإِنْ تُضِبُّهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ وَإِنْ تُضِبُّهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِكَ ۚ قُلْ كُلُّ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ فَمَالِ هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونِ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ۝ مَّا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ وَمِمَّا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنَ نَّفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا ۚ وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝ مَن يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۚ وَمَن تَوَلَّى فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۚ وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ ۚ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّنُونَ ۚ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝ أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ

سُورَةُ

- (६) और तुम्हारे इनाम कम न किये जाएंगे तो जिहाद में डर और हिचकिचाहट से काम न लो।
- (७) और इससे रिहाई पाने की कोई सूरत नहीं और जब मौत अटल है तो बिस्तर पर मर जाने से ख़ुदा की राह में जान देना बेहतरी है कि यह आखिरत की सआदत या श्रुशानसीबी का कारण है।
- (८) पैदावार बग़ैरह के सस्ता और ज्यादा होने की।
- (९) मेहगाई और अकाल बग़ैरह।
- (१०) यह हाल मुनाफ़िकों का है कि जब उन्हें कोई सरस्ती पेश आती है तो उसको सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ जोड़ देते और कहते जब से यह आए हैं ऐसी ही सख्तियाँ पेश आया करती हैं।
- (११) मेहगाई हो या सस्तापन, अकाल हो या श्रुशहाली, रज हो या राहत, आराम हो या तकलीफ़, विजय हो या पराजय, हक़ीक़त में सब अल्लाह की तरफ से है।
- (१२) उसकी मेहरबानी और रहमत है।
- (१३) कि तूने ऐसे गुनाह किये कि तू इसका हक़दार हुआ। यहाँ बुराई की निखत बन्दे की तरफ मजाज़ है और ऊपर जो बयान हुआ वह हकीक़त थी। कुछ मुफ़ससों ने फ़रमाया कि बुराई की निखत बन्दे की तरफ अदब के तौर पर है। खुलासा यह है कि बन्दा जब अल्लाह की तरफ नज़र करे तो हर चीज़ को उसीकी तरफ से जाने और जब कारणों पर नज़र करे तो बुराइयों को अपने नफ़स की बुराई के कारण से समझे।
- (१४) अरब हों या अजम, आप तमाम सृष्टि के लिये रसूल बनाए गए और सारा जगत उम्मत बनाया गया। यह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ऊंचे दर्जे और इज़ज़त का बयान है।
- (१५) आपकी आम रिਸालत पर, तो सबपर आपकी आज्ञा का पालन और आपका अनुकरण फ़र्ज़ है।
- (१६) रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, जिसने मेरी फ़रमाँवरदारी की उसने अल्लाह की फ़रमाँवरदारी की और जिसने मुझसे महबूब की उसने अल्लाह से महबूब की। इसपर आजकल के गुस्ताख़ वददीनों की तरह उस ज़माने के कुछ मुनाफ़िकों ने कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम यह चाहते हैं कि हम उन्हें सब मान लें, जैसा ईसाईयों ने हज़रत ईसा बिन मरयम को सब माना, इसपर अल्लाह तआला ने उसके रद में यह आयत उतार कर अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़लाम की तस्दीक़ फ़रमादी कि वेशक रसूल की फ़रमाँवरदारी अल्लाह की फ़रमाँवरदारी है।
- (१७) और आपकी फ़रमाँवरदारी से मुंह फेरा।
- (१८) यह आयत मुनाफ़िकों के हक़ में उतरी जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में ईमान और फ़रमाँवरदारी स्तर्क करते थे और कहते थे कि हम हुज़ूर पर ईमान लाए हैं, हमने हुज़ूर की तस्दीक़ की है। हुज़ूर हमें जो हुक्म फ़रमाएँ उसकी

और सुलह का पयांम डालें तो अल्लाह ने तुम्हें उन पर कोई राह न रखी^(१२) ﴿९०﴾ अब कुछ और तुम ऐसे पाओगे जो ये चाहते हैं कि तुम से भी अमान में रहें और अपनी क़ौम से भी अमान में रहें^(१३) जब कभी उनकी क़ौम उन्हें फ़साद^(१४) की तरफ़ फेरे तो उसपर औंधे गिरते हैं फिर अगर वो तुमसे किनारा न करें और^(१५) सुलह की गर्दन न डालें और अपने हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल करो और ये हैं जिनपर हमने तुम्हें खुला इज्तिहार दिया^(१६) ﴿९१﴾

तेरहवाँ सूक़

और मुसलमानों को नहीं पहुंचता कि मुसलमान का खून करे मगर हाथ बहक कर^(१) और जो किसी मुसलमान को भूले से क़त्ल करे तो उसपर एक ममलूक (गुलाम) मुसलमान का आज़ाद करना है और खूबहा (जुर्माना) कि मकतूल (मृतक) के लोगों को सुपुर्द की जाए^(२) मगर यह कि वो माफ़ कर दें फिर अगर वह^(३) उस क़ौम से हो जो तुम्हारी दुश्मन है^(४) और खुद मुसलमान है तो सिर्फ़ एक ममलूक (गुलाम) मुसलमान का आज़ाद करना^(५) और अगर वह उस क़ौम में हो कि तुम में उनमें मुआहिदा (समझौता) है तो उसके लोगों को खूबहा (जुर्माना) सुपुर्द की जाए और एक मुसलमान ममलूक (गुलाम) आज़ाद करना^(६) तो जिसका हाथ न पहुंचे^(७)

السَّلَامُ ۖ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ۝
سَتَجِدُونَ آخَرِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلًّا رَدُّوهُ إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا فِيهَا فَإِنْ لَمْ يَعْتَزْلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَامَ وَيَكْفُوا أَيِّدِيهِمْ فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأُولَئِكَ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُبِينًا ۝ وَمَا كَانَ لِلْمُؤْمِنِينَ أَنْ يُقْتُلُوا مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَاً وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَاً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ وَمُؤْنَتُهُ وَدِيَّةُ مُسْلِمَةٍ إِلَى أَهْلِهِ إِلَّا أَنْ يَصَدَّقُوا فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ وَمُؤْنَتُهُ وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِيثَاقٌ فَدِيَّةُ مُسْلِمَةٍ إِلَى أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ مُؤْمِنَةٍ ۖ

مَنْ

(४०) यानी उससे ज्यादा कोई सच्चा नहीं इसलिये कि उसका झूट असंभव, नामुमकिन और मुहाल है क्योंकि झूट बुराई और ऐब है, हर बुराई और ऐब अल्लाह पर मुहाल है, वह सारे ऐबों से پاک है.

सूरह निसा - बारहवाँ सूक़

(१) मुनाफ़िकों की एक जमाअत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जिहाद में जाने से रुक गई थी. उसके बारे में सहाबा के दो पक्ष हो गए. एक पक्ष क़त्ल पर ज़ोर देता था और एक उनके क़त्ल से इन्कार करता था. इस मामले में यह आयत उतरी.

- (२) कि वो हुजूर के साथ जिहाद में जाने से मेहरूम रहें.
- (३) उनके कुफ़्र और ईर्तिदाद और मुश्रिकों के साथ मिलने के कारण, तो चाहिये कि मुसलमान भी उनके कुफ़्र में इम्तिदाद न करें.
- (४) इस आयत में काफ़िरों के साथ मेल जोल को मना किया गया है. चाहे वो ईमान का इज़हार ही करते हों.
- (५) और इससे उनके ईमान की तहकीक़ न हो ले.
- (६) ईमान और हिजरात से, और अपनी हालत पर कायम रहें.
- (७) और अगर तुम्हारी दोस्ती का दावा करें और मदद के लिये तैयार हों तो उनकी मदद कुबूल न करो.
- (८) यह झूट क़त्ल की तरफ़ राजेअ है. क्योंकि काफ़िरों और मुनाफ़िक़ीन के साथ मेल जोल किसी हाल में जायज़ नहीं और एहद से वह एहद मुराद है कि उस क़ौम को और जो उस क़ौम से जा मिले उसको अमन है. जैसा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले जाते वक़्त हिलाल बिन उमैर असलमी से मामला किया था.
- (९) अपनी क़ौम के साथ होकर.
- (१०) तुम्हारे साथ होकर.
- (११) लेकिन अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोब डाल दिया और मुसलमानों को उनके शर से मेहरूम रखा.
- (१२) कि तुम उनसे जंग करो. कुछ मुफ़सिरो का क़ौल है कि: यह हुक्म आयत "उक़्तुलुल मुश्रिकीना हैसो वजद तुमूहुम" (यानी तो मुश्रिकों को मारो जहां पाओ) (सूरह तौबह, आयत पांच) से मन्सूख़ हो गया.
- (१३) मदीनह तैयिबह में असद और ग़लफ़ान कबीले के लोग दिग्रार के लिये इस्लाम का क़ौलमा पढ़ते और अपने आप को मुसलमान जाहिर करते और जब उनमें से कोई अपनी क़ौम से मिलता और वो लोग उसे कहते कि तुम किस चीज़ पर ईमान लाए तो वो लोग कहते कि बदरी बिच्छुओं वगैरह पर. इस अन्दाज़ से उनका मतलब यह था कि दोनों मुनाफ़िक़ थे. उनके बारे में यह आयत उतरी.

वह लगातार दो महीने के रोजे रखे^(१) यह अल्लाह के यहाँ उसकी ताँवह है और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है^(२) और जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर कत्ल करे तो उसका बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उसमें रहे^(३) और अल्लाह ने उसपर ग़ज़व (प्रकोप) किया और उसपर लानत की और उसके लिये तैयार रखा बड़ा अज़ाब^(४) ऐ ईमान वालो जब तुम जिहाद को चलो तो तहक़ीक़ (जांच पड़ताल) करलो और जो तुम्हें सलाम करे उससे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं^(५) तुम जीती दुनिया का असवाब (सामान) चाहते हो तो अल्लाह के पास बहुतेरी ग़नीमतें (परिहार) हैं पहले तुम भी ऐसे ही थे^(६) फिर अल्लाह ने तुमपर ऐहसान किया^(७) कि तुम पर तहक़ीक़ (जांच) करना लाज़िम है^(८) वेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है^(९) बराबर नहीं वो मुसलमान कि वे उज़्र (बिना मजबूरी) जिहाद से बैठ रहें और वो कि ख़ुदा की राह में अपने मालों और जानों के साथ जिहाद करते हैं^(१०) अल्लाह ने अपनी जानों के साथ जिहाद करने वालों का दर्जा बैठने वालों से बढ़ा दिया^(११) और अल्लाह ने सब से भलाई का वादा फ़रमाया^(१२) और अल्लाह ने जिहाद वालों को^(१३) बैठने वालों पर बड़े सवाब

مَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً
مِّنَ اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَمَنْ
يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعِدًّا فَجَزَاءُ جَهَنَّمَ خَالِدًا
فِيهَا وَعُضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا
عَظِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا حُرِبْتُمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ آتَى
إِلَيْكُمُ السَّلَامَ كُنتُمْ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ مَغَائِمٌ كَثِيرَةٌ ۖ كَذَلِكَ
كُنْتُمْ مِن قَبْلُ فَمِنَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۖ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ لَا يَسْتَوِي
الْقَاعِلُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ

منزل

(१४) शिर्क या मुसलमानों से जंग.

(१५) जंग से बाज़ आकर.

(१६) उनके ख़ुले कुक़्र और मुसलमानों को तकलीफ़ें पहुंचाने के कारण.

सूरए निसा - तेरहवाँ रूक़

(१) यानी मूमिन काफ़िर की तरह मार डालने के क़ाबिल नहीं है, जिसका हुक्म ऊपर की आयत में आया. तो मुसलमान का क़त्ल करना बिना हक़ के रखा नहीं और मुसलमान की शान नहीं कि उससे किसी मुसलमान का क़त्ल हो, सिवाय इसके कि भूल से हो, इस तरह कि मारता था शिकार को, या हर्बी काफ़िर को, और हाथ बहक कर लग गया मुसलमान को, या यह कि किसी शस्त्र को हर्बी काफ़िर समझ कर मारा और था वह मुसलमान.

(२) यानी उसके वारिसों को दी जाए, वो उसे मीरास की तरह तक़सीम कर लें. दिख्यत क़त्ल होने वाले के तर्क के हुक्म में है. इससे मक्क़ूल का क़र्ज़ भी अदा किया जाएगा, बरिय्यत भी जारी की जाएगी.

(३) जो भूल से क़त्ल किया गया.

(४) यानी काफ़िर.

(५) लाज़िम है, और दिख्यत नहीं.

(६) यानी अगर मक्क़ूल जिम्मी हो तो उसका बही हुक्म है जो मुसलमान का.

(७) यानी वह किसी गुलाम का मालिक न हो.

(८) लगातार रोज़ा रखना यह है कि इन रोज़ों के बीच रमज़ान और १० से १३ ज़िलहज़ यानी तशरीक़ के दिन न हों और बीच में रोज़ों का सिलसिला किसी मजबूरी या बिना मजबूरी, किसी तरह तोड़ा न जाए. यह आयत अयाश बिन रबीआ मसज़ज़मी के हक़ में उतरी. वह हिज़रत से पहले मक्क़ए मुक़र्रमा में इस्लाम लाए और घर वालों के ख़ौफ़ से मदीनए तैय्यिबह जाकर पनाह ली. उनकी माँ का इससे बहुत बेकरारी हुई और उसने हारिस और अब्दुजहल, अपने दोनों बेटों से जो अयाश के सौतेले भाई थे, यह कहा कि खुदा की क़सम न मैं साए में बैठूँ, न ख़ाना चखूँ, न पानी पिऊँ, जब तक तुम अयाश का मेरे पास न ले आओ. वो दोनों हारिस बिन ज़ैद बिन अबी उदीसा को साथ लेकर तलाश के लिये निकले और मदीनए तैय्यिबह पहुंचकर अयाश को पालिया और उनको माँ की बेकरारी बैचेनी और ख़ाना पीना छोड़ने की ख़बर सुनाई और अल्लाह का बीच में देकर यह एहद किया कि हम दोन के बारे में तुम से कुछ न कहेंगे, इस तरह वो अयाश का मदीन से निकाल लाए और मदीने से बाहर आकर उनको बाँधा और हर एक ने सौ सौ कोड़े मारे, फिर माँ के पास लाए, तो माँ ने कहा मैं तेरे बन्धन न ख़ालूनी जबतक तू अपना दीन न छोड़ दे. फिर अयाश को

थूप में बंधा हुआ डाल दिया और इन मुसीबतों में पड़कर अयाश ने उनका कहा मान लिया और अपना दीन छोड़ दिया तो हारिस बिन जैद ने उनको बुरा भला कहा और कहा तू इसी दीन पर था, अगर यह सच्चा था तो तू ने सच्चाई को छोड़ दिया और अगर तू बातिल था तो तू बातिल दीन पर रहा। यह बात अयाश को बड़ी बुरी लगी और अयाश ने कहा कि मैं तुझका अकल्ला पाऊंगा तो खुदा की कसम जरूर कत्ल कर दूंगा। इसके बाद अयाश इस्लाम लाए और उन्होंने मदीना तैय्यिह हिजरत की और उनके बाद हारिस भी इस्लाम लाए और हिजरत करके रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खिदमत में पहुंचे। लेकिन उस रोज अयाश मौजूद न थे, न उन्हें हारिस के इस्लाम की सूचना मिली। कुवा के करीब अयाश ने हारिस को पालिया और कत्ल कर दिया तो लोगों ने कहा, अयाश तुमने बहुत बुरा किया, हारिस मुसलमान हो चुके थे। इसपर अयाश को बहुत अफसोस हुआ और उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खिदमत अकदस में जा कर वाकिआ अर्ज किया और कहा कि मुझे कत्ल के वक्त तक उनके इस्लाम लाने की खबर ही न हुई, इसपर यह आयत उतरी।

(९) मुसलमान को जान बूझकर कत्ल करना सख्त गुनाह और बड़ा बुरा काम है। हदीस शरीफ में है कि दुनिया का हलाक करना अल्लाह के नजदीक एक मुसलमान के हलाक करने से हलका है। फिर यह कत्ल अगर ईमान की दुश्मनी से हो या कतिल इस कत्ल को हलाल जानता हो तो यह भी कुफ्र है। “खुलूद” लम्बे समय के अर्थ में भी इस्तेमाल होता है। और कतिल अगर सिर्फ दुनियावी दुश्मनी से मुसलमान को कत्ल करे और उसके कत्ल को अच्छा ना जाने जब भी उसका बदला लम्बे समय के लिये जहन्नम है। “खुलूद” का लफ्ज लम्बी मुद्त के लिये इस्तेमाल होता तो कुरआने करीम में लफ्ज अबद मजकूर नहीं होता और काफिर के बारे में खुलूद हमेशा के अर्थ में आया है तो इसके साथ अबद भी जिक्र फरमाया गया है। यह आयत मुकैय्यस बिन खुबाबा के बारे में उतरी। उसके भाई बनी नज्जार करीब में मकतूल पाए गए थे और कतिल मालूम न था। बनी नज्जार ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म से दियत अदा करदी उसके बाद मुकैय्यस ने शैतान के बहकावे में एक मुसलमान को बेखबरी में कत्ल कर दिया और दियत के ऊट लेकर मक्के का चलता होगया और मुर्तद हो गया। यह इस्लाम में पहला शख्स है जो मुर्तद हुआ, यानी इस्लाम लाकर उससे फिर गया।

(१०) या जिसमें इस्लाम की अलामत व निशानी पाओ उससे हाथ रोको और जब तक उसका कुफ्र साबित न हो जाए, उसपर हाथ न डालो। अबू दाऊद व तिर्मिजी की हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जब कोई लश्कर रवाना फरमाते तो हुक्म देते अगर तुम मस्जिद देखो या अज्ञान सुनो तो कत्ल न करना। अक्सर फुक्रहाए फिराम ने फरमाया कि अगर यहूदी या ईसाई यह फहे कि मैं मूмин हूँ तो उसको मूмин न माना जाए, क्योंकि वह अपने अक़ादे को ही ईमान कहता है। और अगर “ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह” कहे जब भी उसके मुसलमान होने का हुक्म न किया जाएगा जब तक कि वह अपने दीन से बेजारी का इज़हार और उसके बातिल होने का ऐतिराफ न करे। इससे मालूम हुआ कि जो शख्स किसी कुफ्र में मुनबला हो उसके लिये उस कुफ्र से बेजारी और उसको कुफ्र जानना जरूरी है।

(११) यानी जब तुम इस्लाम में दाखिल हुए थे तो तुम्हारी ज़वान से कलिम शहादत सुनकर तुम्हारे जान माल मेहफूज़ कर दिये गए थे और तुम्हारा इज़हार बेपतिवार करार न दिया गया था। ऐसा ही इस्लाम में दाखिल होने वालों के साथ तुम्हें भी सुलूक करना चाहिये। यह आयत मर्वास बिन नहीक के बारे में उतरी जो पहले फिदक में से थे और उनके सिवा उनकी कौम का कोई शख्स इस्लाम न लाया था। इस कौम को खबर मिली कि इस्लामी लश्कर उनकी तरफ आ रहा है तो कौम के सब लोग भाग गए, मगर मर्वास टहरे रहे। जब उन्होंने दूर से लश्कर को देखा तो इस खयाल से कि कहीं कोई गैर मुस्लिम जमाअत हो, यह पहाड़ की चांटी पर अपनी बकरियाँ लेकर चढ़ गए। जब लश्कर आया और इन्होंने अल्लाहो अकबर की आवाज़ें सुनीं तो खुद भी तकवीर पढ़ते हुए उतर आए और कहने लगे “ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह, अस्सलामो अलैकुम। मुसलमानों ने ख्याल किया कि फिदक वाले तो सब काफिर हैं, यह शख्स मुसलमान होने के लिये ईमान का इज़हार कर रहा है, इस खयाल में उसामा बिन जैद ने उनको कत्ल कर दिया और बकरियाँ ले आए। जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में हाज़िर हुए तो तमाम माजरा अर्ज किया। हुज़ूर को बहुत दुश्म हुआ और फरमाया, तुमने उसके सामान के कारण उसको कत्ल कर दिया। इस पर यह आयत उतरी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसामा को हुक्म दिया कि मकतूल को बकरियाँ उसके घर वालों को वापस कर दो।

(१२) कि तुम को इस्लाम पर टहराव बरश्शा और तुम्हारा मूिम होना मशहूर किया।

(१३) ताकि तुम्हारे हाथ से कोई ईमान वाला कत्ल न हो।

(१४) इस आयत में जिहाद की तरसीव है कि बैठ रहने वाले और जिहाद करने वाले बराबर नहीं हैं। जिहाद करने वालों के ऊंचे दर्जे और सवाब हैं। और यह मसअला भी साबित होता है कि जो लोग बीमारी या बुढ़ापे या कमजोरी या अन्धेपन या हाथ पाँव के नाकारा होने और मजबूरी के कारण जिहाद में हाज़िर न हों, वो फज़ीलत और इनाम से मेहरूम न किये जाएंगे, अगर सच्ची नियत रखते हों। बुखारी शरीफ की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने गज़बा तबूक से वापसी के वक्त फरमाया, कुछ लोग मदीने में रह गए हैं। हम किसी घाटी या आबादी में नहीं चलते मगर वो हमारे साथ होते हैं। उन्हें मजबूरी ने रोक लिया है।

(१५) जो मजबूरी के कारण जिहाद में हाज़िर न हो सके, अगर वो नियत का सवाब पाएंगे लेकिन जिहाद करने वालों को अमल की फज़ीलत उससे ज्यादा हासिल है।

(१६) जिहाद करने वाले हों या मजबूरी से रह जाने वाले।

(१७) अगर मजबूरी के

से फज़ीलत (प्रधानता) दी है (९५) उसकी तरफ से दर्जे और बख्शीश और रहमत (९६) और अल्लाह बख्शने वाला मेहरवान है (९६)

चौदहवाँ सूक़

वो लोग जिनकी जान फ़रिश्ते निकालते हैं इस हाल में कि वो अपने ऊपर जुल्म करते थे उनसे फ़रिश्ते कहते हैं तुम काहे में थे कहते हैं कि हम ज़मीन में कमज़ोर थे (९५) कहते हैं क्या अल्लाह की ज़मीन कुशादा (विस्तृत) न थी कि तुम उसमें हिज़रत करते तो ऐसों का ठिकाना जहन्नम है और बहुत बुरी जगह पलटने की (९६) मगर वो जो दवा लिये गए मर्द और औरतें और बच्चे जिन्हें न कोई तदवीर बन पड़े (९७) न रास्ता जानें (९८) तो करीब है अल्लाह ऐसों को माफ़ फ़रमाए (९९) और अल्लाह माफ़ फ़रमाने वाला बख्शने वाला है (९९) और जो अल्लाह की राह में घरबार छोड़कर निकलेगा वह ज़मीन में बहुत जगह और गुंजायश पाएगा

عَلَى الْفَعِيدِينَ دَرَجَةً ۖ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۖ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْفَعِيدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ دَرَجَاتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ تَوَقَّعُوا إِلَيْكَ ظَالِمِينَ أَنفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ ۖ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ ۖ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَتَىٰ اللَّهُ فِيهَا ۖ فَتُهَا جَرُوا فِيهَا ۖ فَأُولَٰئِكَ مَا لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۖ إِلَّا الْمُسْتَضْعَفُونَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ۖ فَأُولَٰئِكَ عَسَىٰ اللَّهُ أَن يَغْفُو عَنْهُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۖ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَافًا كَثِيرًا

(१८) हदीस शरीफ में है, अल्लाह तआला ने मुज़ाहिदों के लिये जन्नत में सौ दर्जे रखे हैं, हर दो दर्जों में इतना फ़ासलाना है जैसे आसमान और ज़मीन में।

सूरए निसा - चौदहवाँ सूक़

(१) यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जिनोंने इस्लाम का कलिमा तो ज़बान से अदा किया मगर जिस ज़मान में हिज़रत फ़र्ज़ थी उस वक़्त हिज़रत न की और जब मुश्कि बद्र की लड़ाई में मुसलमानों के मुकाबले के लिये गए तो वे लोग उनके साथ हुए और काफ़िरों के साथ ही मारे भी गए। उनके हक़ में यह आयत उतरी और बताया गया कि काफ़िरों के साथ होना और हिज़रत का फ़र्ज़ तर्क करना अपनी जान पर जुल्म करना है।

(२) यह आयत सादित करती है जो शम्स किसी शहर में अपने दीन पर कायम न रह सकता हो और यह जाने कि दूसरी जगह जानें से अपने दीनी कर्तव्य अदा कर सकेगा, उसपर हिज़रत बाज़िब हो जाती है। हदीस में है जो शम्स अपने दीन को हिफ़ाज़त के लिये एक जगह से दूसरी जगह चला जाए, अगरचे एक बालिश ही क्यों न हो, उसके लिये जन्नत बाज़िब हो जाती है। और उसका हिज़रत इब्राहीम और सयद आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम का साथ मिलेगा।

(३) कुफ़र की ज़मीन से निकलने और हिज़रत करने की।

(४) कि वह मेहरबानी और करम वाला है और मेहरबान जो उम्मीद दिलाता है, पूरी करता है और यकीनन माफ़ फ़रमाएगा।

और जो अपने घर से निकला^(५) अल्लाह व रसूल की तरफ हिजरत करता फिर उसे मांत ने आलियां तो उसका यवाव अल्लाह के ज़िम्मे पर हो गया^(६) और अल्लाह बख्शने वाला मेहरवान है^(१००)

पन्द्रहवाँ सूकू

और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुमपर गुनाह नहीं कि कुछ नमाज़ें क़स्र (लघुता) से पढ़ो^(१) (यानी चार रकत वाली फ़र्ज़ नमाज़ दो रकत) अगर तुम्हें डर हो कि काफ़िर तुम्हें ईज़ा (कष्ट) देंगे^(२) वेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं^(१०१) और ऐ मेहबूब जब तुम उनमें तशरीफ़ फ़रमाओ^(३) फिर नमाज़ में उनकी इमामत करो^(४) तो चाहिये कि उनमें एक जमाअत तुम्हारे साथ हो^(५) और वो अपने हथियार लिये रहें^(६) फिर जब वो सिजदा कर लें^(७) तो हटकर तुम से पीछे हो जाएं^(८) और अब दूसरी जमाअत आए जो उस वक़्त तक नमाज़ में शरीक न थी^(९) अब वो तुम्हारे मुक़्तदी (अनुयायी) हों और चाहिये कि अपनी पनाह और अपने हथियार लिये रहें^(१०) काफ़िरों की तमन्ना है कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने माल असवाव से माफ़िल हो जाओ तो एक दफ़ा तुमपर झुक पड़ें^(११) और तुमपर मुज़ायक़ा (हर्ज) नहीं अगर तुम्हें मेंह के कारण तकलीफ़ हो या बीमार हो कि अपने

وَسَعَةً وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى
اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ
أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا
وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا
مُبِينًا وَإِذَا كُنْتُمْ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ
فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ
وَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ وَرَائِكُمْ وَلَسَاتِ
طَائِفَةٌ أُخْرَى لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ
وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ وَذَ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَوْ كَفُّوا عَنْكُمْ لَشَأْنُهُمْ وَأَمْ يُغْنِيكُمْ
فِيمَا لَكُمْ مِنْكُمْ مِيلَةً وَاحِدَةً وَلَا جُنَاحَ

(५) इसमें पहली आयत जब उतरी तो जुद्धअ बित ज़मरतुल लैसी ने उसे सुना, ये बहुत बड़े शस्त्र थे, कहने लगे कि मैं बूट दिये गए लोगों में से तो हूँ नहीं, क्योंकि मेरे पास इतना माल है कि जिससे मैं मदीना तैय्यबह हिजरत करके पहुंच सकता हूँ, खुदा की क़सम मक्का मुकर्रमा में अब एक रात न टहरूंगा, मुझे ले चलो, चुनांचे उनको चारपाई पर लेकर चले, तनईम आकर उनका इत्तिहाल हो गया, आखिर वक़्त उन्होंने अपना दायाँ हाथ बाएँ हाथ पर रखा और कहा, या रब यह तेरा और यह तेरे रसूल का, मैं उसपर बैअत करता हूँ जिसपर तेरे रसूल ने बैअत की, यह ख़बर पाकर सहाबए किराम ने फ़रमाया, काश चाँ मदीना पहुंचते तो उनका अन्न कितना बड़ा होता, और मुश्किल हंसे और कहने लगे कि जिस मतलब के लिये निकले थे वह न मिला, इस पर यह आयत उतरी.

(६) उसके बाद और उसकी मेहरबानी और कृपा से, क्योंकि हज़र और अधिकार के तरीके से कोई चीज़ उसपर बाज़िब नहीं उसकी शान इससे ऊपर है, जो फाँड़े नकी का इरादा करे और उसको पूरा करने से मजबूर हो जाए, वह उस फ़रमाँबरदारी का सबाब पाएगा, इल्म की तलव, जिहाद, हज, ज़ियारत, फ़रमाँबरदारी, पाक और सब्र वाली ज़िन्दगी और हलाल रोज़ी की तलाश के लिये बतन छोड़ना अल्लाह व रसूल की तरफ़ हिजरत करने जैसा है, इस राह में मरने वाला इनाम पाएगा.

सूरए निसा - पन्द्रहवाँ सूकू

(१) यानी चार रकअत वाली दो रकअत.

(२) काफ़िरों का डर क़स्र नमाज़ के लिये शर्त नहीं, यअज़ली बित उमैया ने हज़रत उमर रादियल्लाहो अन्हो से कहा कि हम तो अम्न में हैं फिर हम क्यों क़स्र करतें हैं? फ़रमाया इसका मुझे भी तअज्जुब हुआ था तो मैंने ग़ैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरियाफ़्त किया, हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम्हारे लिये यह अल्लाह की तरफ़ से मदक़ा है, तुम उसका मदक़ा कुबूल करो, इम से यह मसअला मालूम होता है कि सफ़र में चार रकअत वाली नमाज़ को पूरा पढ़ना जायज़ नहीं है, आयत उतरने के वक़्त सफ़र स्वतरे से ख़ाली नहीं होते थे इसलिये इम आयत में इसका ज़िक्र बयाने हाल है, क़स्र की शर्त नहीं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर की क़िरअत भी इसकी दलील है जिसमें "अय्यफतिनाकुम" (तुम्हें तकलीफ़ पहुंचाएंगे) वगैर इन-ख़िफतुम (अगर तुम्हें डर हो) के है, सहाबा का भी यही अमल था कि अम्न के सफ़र में भी क़स्र फ़रमाते थे, जैसा कि ऊपर की हदीस से साबित होता है, और हदीसों से भी यह साबित है, और पूरी चार पढ़ने में अल्लाह तआला के मदक़े का रद करना लाज़िम आता है, लिहाज़ा क़स्र ज़रूरी है.

सफ़र की मुद्दत :- जिस सफ़र में क़स्र किया जाता है उसकी कम से कम मुद्दत तीन रात दिन की दूरी है जो ऊँट या पैदल की दरमियाती रफ़्तार से तय की जाती हो और उसकी मिक़दारे शूअकी और दरिया और पहाड़ों में मुश्किलफ़ि हो जाती है, जो

हथियार खोल रखो और अपनी पनाह लिये रहो^(१२) बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिये ख़वारी का अज़ाब तैयार कर रखा है ^(१०२) फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो अल्लाह की याद करो खड़े और बैठे और करवटों पर लेटे^(१३) फिर जब मुतमइन(संतुष्ट) हो जाओ तो दस्तूर के अनुसार नमाज़ क़ायम करो बेशक नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त बांधा हुआ फ़र्ज़ है^(१४) ^(१०३) और काफ़िरों की तलाश में सुस्ती न करो अगर तुम्हें दुख पहुंचता है तो उन्हें भी दुख पहुंचता है जैसा तुम्हें पहुंचता है और तुम अल्लाह से वह उम्मीद रखते हो जो वो नहीं रखते और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है^(१५) ^(१०४)

सोलहवाँ सूक़

ऐ मेहबूब बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ सच्ची किताब उतारी कि तुम लोगों में फैसला करो^(१) जिस तरह तुम्हें अल्लाह दिखाए^(२) और दगा वालों की तरफ़ से न झगड़ो ^(१०५) और अल्लाह से माफ़ी चाहो बेशक अल्लाह वरदान वाला मेहरवान है ^(१०६) और उनकी तरफ़ से न झगड़ो जो अपनी जानों को ख़यानत(वेईमानी) में डालते हैं^(१) बेशक

عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَدَاءٌ مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ
مَرْضَىٰ أَنْ تَصُغُوا أَسْلِحَتَكُمْ وَخَذُوا حِذْرَكُمْ
إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۖ فَإِذَا
قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَمًا وَتَعُودُوا
عَلَىٰ جُؤُوبِكُمْ ۖ وَإِذَا طُمَأْنِنْتُمْ فَاقِمْوا الصَّلَاةَ ۚ
إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا ۚ
وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ ۚ إِنْ تَكُونُوا تَأْلَمُونَ
فَأَنْتُمْ بِأَلَمِ الْكُفْرَانِ ۚ وَتَكُونُونَ مِنَ الَّذِينَ
مَا لَا يَرْجُونَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۚ وَإِنَّا
أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
بِمَا أَرَادَ اللَّهُ ۚ وَلَا تَكُنْ لِلْخَائِبِينَ خَصِيمًا ۚ
وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۚ
وَلَا تَجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَلُونَ أَنفُسَهُمْ ۚ إِنَّ

مَنْزِل

मसाफ़्त या दूरी औसत रफ़्तार से चलने वाले तीन दिन में तय करने हों, उनके सफ़र में क़स्र होगा। मुसाफ़िर की जल्दी या देर का ऐतिबार नहीं, चाहे वह तीन दिन की दूरी तीन घंटों में तय करे, जब भी क़स्र होगा और अगर एक ग़ैज़ की मसाफ़्त तीन दिन से ज्यादा में तय करे तो क़स्र न हांगा। गरज़ ऐतिबार दूरी का है।

- (३) याती अपने असहाय में।
- (४) इसमें ख़ौफ़ की नमाज़ को जमाअत का बयान है। जिहाद में जब रसूल, करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मुश्रिफ़ों ने देखा कि आपने तमाम सहाबा के साथ ज़ोहर की नमाज़ जमाअत से अदा फ़रमाई तो उन्हें अफ़सोस हुआ कि उन्होंने उस वक़्त क्यों न हमला किया और आपस में एक दूसरे से कहने लगे कि क्या ही अच्छा मौक़ा था। उनमें से कुछ ने कहा, इसके बाद एक और नमाज़ है जो मुसलमानों को अपने माँ बाप से ज्यादा प्यारी है याती अख की नमाज़। जब मुसलमान इस नमाज़ के लिये खड़े हों तो पूरी कुब्त से हमला करके उन्हें क़त्ल कर दो। उस वक़्त हज़रत ज़िब्रील हाज़िर हुए और उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अज़्ञ किया या रसूलल्लाह यह नमाज़ ख़ौफ़ है और अल्लाह तआला फ़रमाता है “**वइज़ा कुन्ता फ़ीहिम**.” (और ऐ मेहबूब जब तुम उनमें तशरीफ़ फ़रमा हो)।
- (५) याती हाज़िरीन को दो जमाअतों में तक्सीम कर दिया जाए। एक उनमें से आपके साथ रहे, आप उन्हें नमाज़ पढ़ाएं और एक जमाअत दुश्मन के मुकाबले में क़ायम रहे।
- (६) याती जो लोग दुश्मन के मुकाबिल हों, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि अगर जमाअत के नमाज़ी मुराद हों तो वो लोग ऐसे हथियार लगाए रहें जिनसे नमाज़ में कोई ख़लल न हो जैसे तलवार, खंजर वगैरह। कुछ मुफ़ससिरी का क़ौल है कि हथियार साथ रखने का हुक़्म दोनों पक्षों के लिये है और यह एहतियात के करीब है।
- (७) याती दोनों सिजदे करके रक़अत पूरी कर लें।
- (८) ताकि दुश्मन के मुकाबले में खड़े हो सकें।
- (९) और अवतक़ दुश्मन के मुकाबिल थी।
- (१०) पनाह से ज़िरह वगैरह ऐसी चीज़ें मुराद हैं जिससे दुश्मन के हमले से बचा जासके। उनका साथ रखना बहरहाल बाज़िव है जैसा कि करीब ही इरशाद हांगा। “**बख़ुज़्ज़ हज़रकुम्**” (और चाहिये कि अपनी पनाह लिये रहें) और हथियार साथ रखना मुस्तहब है। नमाज़े ख़ौफ़ का मुख्यतः तरीक़ा यह है कि पहली जमाअत इमाम के साथ एक रक़अत पूरी करके दुश्मन के मुकाबिल जाए और दूसरी जमाअत जो दुश्मन के मुकाबिल खड़ी थी वह आकर इमाम के साथ दूसरी रक़अत पढ़े। फिर फ़क़त इमाम सलाम फ़ेरें और पहली जमाअत आकर दूसरी रक़अत वगैर क़िरअत के पूरी करके सलाम फ़ेरें क्योंकि ये लोग मसबूक हैं और पहली लाहिक़। हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इसी तरह नमाज़े ख़ौफ़ अदा फ़रमाता रिवायत किया है।

हुजूर के बाद सहाबा नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ते रहे हैं, ख़ौफ़ की हालत में दुश्मन के सामने इस तरीक़े से नमाज़ अदा करने से मालूम होता है कि जमाअत किस क़दर ज़रूरी है, सफ़र की हालत में अगर ख़ौफ़ की सूरात पेश आए तो उसका यह बयान हुआ, लेकिन अगर मुक़ीम को ऐसी हालत पेश आए तो वह चार रकअत वाली नमाज़ों में हर हर जमाअत का दो दो रकअत पढ़ाए और तीन रकअत वाली नमाज़ में पहली जमाअत को दो रकअत और दूसरी को एक.

(११) नबीयं करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ग़ज़वए ज़ातुरफ़ाज से जब फ़ारिग हुए और दुश्मन के बहुत आदमियों की गिरफ़्तार किया और लूट का माल हाथ आया और कोई दुश्मन मुक़ाबिल बाक़ी न रहा तो हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम क़ज़ाए हाज़त के लिये जंगल तथा तशरीफ़ ले गए तो दुश्मन की जमाअत में से हुबैरिस बिन हारिस महारवी यह ख़बर पाकर तलवार लिये हुए छुपा पहाड़ से उतरा और अचानक हुजूर के पास पहुँचा और तलवार ख़ींचकर कहने लगा या मुहम्मद, अब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा, हुजूर ने फ़रमाया अल्लाह तआला, और दुआ फ़रमाई, जब उसने हुजूर पर तलवार चलाते का इरादा किया, आँधे मुंह गिर पड़ा और तलवार हाथ से छूट गई, हुजूर ने वह तलवार लेकर फ़रमाया कि अब तुझे मुझसे कौन बचाएगा, कहने लगा मेरा बचाने वाला कोई नहीं है, फ़रमाया "अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाहो व अशहदो अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह पढ़ तो तेरी तलवार तुझे दूंगा, उसने इससे इन्कार किया और कहा मैं इसकी शहादत देता हूँ कि मैं कभी आपसे न लड़ूँगा और ज़िन्दगी भर आपके किसी दुश्मन की मदद न करूँगा, आपने उसको उसकी तलवार दे दी, कहने लगा, या मुहम्मद, आप मुझसे बेहतर हैं, फ़रमाया, हाँ हमारे लिये यही ठीक है, इसपर यह आयत उतरी और हथियार और बचाव साथ रखने का हुक्म दिया गया. (तफ़सीर अहमदी)

(१२) कि उसका साथ रखना हमेशा ज़रूरी है, इन्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अब्दुर रहमान बिन औफ़ ज़रूमी थे और उस वक़्त हथियार रखना उनके लिये बहुत तकलीफ़दह और बोझ था, उनके बारे में यह आयत उतरी और मजदूरी की हालत में हथियार खोल रखने की इजाज़त दी गई.

(१३) यानी अल्लाह का ज़िक्र हर हाल में करते रहो और किसी हाल में अल्लाह के ज़िक्र से गाफ़िल न रहो, हज़रत इन्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने हर फ़ज़्र की एक हद निश्चित की है, सिवाए ज़िक्र के, इसकी कोई हद न रखी, फ़रमाया, ज़िक्र करो ख़ड़े बैठे, कर्बों पर लेटे, रात में हो या दिन में, ख़ुश्वी में हो या तरी में, सफ़र में हो या अपने घर में, छुपवाँ और ज़ाहिर में, इससे नमाज़ों के बाद सलाम फेरते ही कलिमए तौहीद पढ़ने का प्रमाण मिलता है, जैसा कि मशायख़ की आदत है, और सही हदीसों से साबित है, ज़िक्र में तस्बीह, तहमीद, तहलील, तक्वीर, सना, दुआ सब दाख़िल हैं.

(१४) तो लाज़िम है कि उसके औकात की रियायत की जाय.

(१५) उहद की लड़ाई से जब अबू सुफ़ियान और उनके साथी लौटें तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने, ज़ा सहाबा उहद में हाज़िर हुए थे, उन्हें मुथ्रिकों के पीछे जाने का हुक्म दिया, सहाबा ज़रूमी थे, उन्होंने अपने ज़ग़मों की शिकायत की, इसपर यह आयत उतरी.

सूरए निसा - सोलहवाँ स्कू

(१) अतसार के क़बीले बनी ज़फ़र के एक शख्स तोअमा बिन उबैरक ने अपने पड़ोसी क़तादा बिन नोअमान की ज़िरह चुराकर आटे की बोरी में ज़ैद बिन सीमीन यहूदी के यहाँ छुपाई, जब ज़िरह की तलाश हुई और तोअमा पर शुबह किया गया तो वह इन्कार कर गया और क़सम खा गया, बोरी फटी हुई थी और उसमें से आटा गिरता जाता था, उसके नशान से लोग यहूदी के मकान तक पहुँचे और बोरी वहाँ पाई गई, यहूदी ने कहा कि तोअमा उस के पास रख गया है, यहूदियों की एक जमाअत ने इसकी गवाही दी, और तोअमा की क़ौम बनी ज़फ़र ने यह निश्चय कर लिया कि यहूदी की चोर बताएंगे और उसपर क़राम ख़ालेंगे ताकि क़ौम रुखा न हो और उनकी ख़्वाहिश थी कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तोअमा को बरी कर दें और यहूदी को सज़ा दें, इसीलिये उन्होंने हुजूर के सामने यहूदी के ख़िलाफ़ झूठी गवाही दी और तोअमा की हिमायत में बोलें, और इस गवाही पर कोई तर्क वितर्क न हुआ (इस घटना के मुतअल्लिक कई रिवायतें आई हैं और उनमें आपसी मतभेद भी हैं)

(२) और इल्म अता फ़रमाए, इल्मे यकीनी को जुहूर की क़ुच्चत की बज़ह से रूपत से तायीर फ़रमाया, हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हु से रिवायत है कि हरगिज़ कोई न कहे, जो अल्लाह ने मुझे दिखाया उसपर मैं ने फ़ैसला किया, क्योंकि अल्लाह तआला ने ये मन्सब ख़ास अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अता फ़रमाया, आपकी राय हमेशा सही होती है, क्योंकि अल्लाह तआला ने हकीकतों और होने वाली बातों की आपके सामने कर दिया है और दूसर लोगों की राय अन्दाज़ों का दर्जा रखती है.

(३) गुनाह करके.

अल्लाह नहीं चाहता किसी बड़े दगाबाज़ गुनहगार को (१०७) आदमियों से छुपाते हैं और अल्लाह से नहीं छुपते (१०८) और अल्लाह उनके पास है (१०९) जब दिल में वह बात तजवीज़ (प्रस्तावित) करते हैं जो अल्लाह को नापसन्द है (११०) और अल्लाह उनके कामों को घेरे हुए है (१११) सुनते हो यह जो तुम हो (११२) दुनिया की ज़िन्दगी में तो उनकी तरफ से झगड़े तो उनकी तरफ से कौन झगड़ेगा अल्लाह से क़यामत के दिन या कौन उनका वकील होगा (११३) और जो कोई बुराई या अपनी जान पर जुल्म करे फिर अल्लाह से वख़्शिश चाहे तो अल्लाह को वख़्शने वाला मेहरबान पाएगा (११४) और जो गुनाह कमाए तो उसकी कमाई उसी की जान पर पड़े और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है (११५) और जो कोई ख़ता या गुनाह कमाए (११६) फिर उसे किसी बे गुनाह पर थोप दे उसने ज़रूर बोहतान और खुला गुनाह उठाया (११७)

सत्तरहवाँ सूक़

और ऐ मेहबूब अगर अल्लाह का फ़ज़ल व रहमत तुमपर न होता (१) तो उनमें के कुछ लोग यह चाहते कि तुम्हें धोखा दे दें और वो अपने ही आपको बहका रहे हैं (२) और तुम्हारा

اللّٰهُ لَا يُجِبُّ مَنْ كَانَ خَوَاتًا أَثِيمًا ۝ يَسْتَحْفُونَ
مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَحْفُونَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ
إِذْ يُبَيِّنُونَ مَا لَا يَرْيَوْهُ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ
اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ۝ هَآأَنْتُمْ كَذَّابُونَ
عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدّٰنِيَةِ ۖ فَمَنْ يُجَادِلُ اللّٰهَ
عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ أَمْ مَنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝
وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ
اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُورًا رّٰحِيمًا ۝ وَمَنْ يَكْسِبْ
إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبْهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ
يَرْمِ بِهِ بَرِيًّا فَقَدْ اِخْتَلَفَ بَيْنَهُمَا ۖ وَإِنَّمَا مُبِينًا ۝
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ
لَكَ آتِفَةٌ مِنْهُمْ أَن يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا

مَذْكُورٌ

- (४) शर्म नहीं करते.
- (५) उनका हाल जानता है. उसपर उनका कोई राज़ छुप नहीं सकता.
- (६) जैसे तोअमा की तरफ़दारी में झूठी क़सम और झूठी गवाही.
- (७) ऐ तोअमा की क़ौम.
- (८) किसी को दूसरे के गुनाह पर अज़ाब नहीं फ़रमाता.
- (९) छोटें या बड़े.

सूरए निसा : सत्तरहवाँ सूक़

- (१) तुम्हें नबी और मामूम करके और राज़ों पर मुत्तला फ़रमा के.
- (२) क्योंकि इसका बवाल उन्हीं पर है.

कुछ न विगाड़ेंगे^(३) और अल्लाह ने तुमपर किताब^(४) और हिकमत (बोध) उतारी और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे^(५) और अल्लाह का तुमपर बड़ा फ़ज़ल है^(६) (११३) उनके अकसर मशवरों में कुछ भलाई नहीं^(७) मगर जो हुक्म दे ख़ैरात या अच्छी बात या लोगों में सुलह करने का और जो अल्लाह की रज़ा चाहने को ऐसा करे उसे जल्द ही हम बड़ा सवाब देंगे (११४) और जो रसूल का विरोध करे वाद इसके कि हक़ (सच्चा) रास्ता उसपर खुल चुका और मुसलमानों की राह से अलग राह चले हम उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरी जगह पलटने की^(८) (११५)

अठारहवाँ सूक़

अल्लाह इसे नहीं व़ख़शा कि उसका कोई शरीक ठहराया जाए और उससे नीचे जो कुछ है जिसे चाहे माफ़ फ़रमा देता है^(९) और जो अल्लाह का शरीक ठहराए वह दूर की गुमराही में पड़ा (११६) ये शिर्क वाले अल्लाह के सिवा नहीं पूजते मगर कुछ औरतों को^(१०) और नहीं पूजते मगर सरकश (बागी) शैतान को^(११) (११७) जिसपर

أَنفُسُهُمْ وَمَا يَصُرُونَكَ مِنْ شَيْءٍ وَأَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَيْكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝ لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝ إِنَّ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنثَاءً وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا سَيِّئَاتٍ مَّرِيدًا ۝ لَعَنَهُ اللَّهُ

مَزْلًا

- (३) क्योंकि अल्लाह तआला ने आपको हमेशा के लिये मासूम यानी गुनाहों से पाक किया है।
- (४) यानी कुरआने करीम।
- (५) दीन की बातों और शरीअत के आदेश और ग़ैब के इल्म। इस आयत से साबित हुआ कि अल्लाह तआला ने अपने हवीव सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का तमाम कायनात के उलूम अता फ़रमाए और किताब व हिकमत के रहस्यों और हक़ीक़तों पर सूचित किया। यह मसअला कुरआने करीम की बहुत सी आयतों और कई हदीसों से साबित है।
- (६) कि तुम्हें इन नेअमतों के साथ मुमताज़ किया।
- (७) यह सब लोगों के हक़ में आम है।
- (८) यह आयत दलील है इसकी कि सर्वसम्मति आख़िरी चीज़ है इसकी मुख़ालिफ़त जायज़ नहीं जैसे कि किताब व सुन्नत का विरोध जायज़ नहीं (मदारिक)। और इस से साबित हुआ कि मुसलमानों का तरीक़ा ही सीधी सच्ची राह है। हदीस शरीफ़ में आया है कि जमाअत पर अल्लाह का हाथ है। एक और हदीस में है कि बड़ी जमाअत का अनुकरण करो। जो मुसलमानों की जमाअत से अलग हुआ वह दोज़ख़ी है। इससे साफ़ है कि मज़हबे एहले सुन्नत वल जमाअत ही सच्चा मज़हब है।

सूरए निसा - अठारहवाँ सूक़

- (१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा का क़ौल है कि यह आयत एक बृद्ध अअरबी के बारे में नाज़िल हुई जिसने मय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी, मैं बूढ़ा हूँ, गुनाहों में डूबा हुआ हूँ, सिवाय इसके कि जब से मैंने अल्लाह को पहचाना और उसपर ईमान लाया, उस वक़्त से कभी मैं ने उसके साथ शिर्क न किया और उसके सिवा किसी और को वली न बनाया और ज़रअत के साथ गुनाहों से मुज़ला न हुआ और एक पल भी मैं ने यह गुनाह न किया कि मैं अल्लाह से भाग सकता हूँ, शर्मिन्दा हूँ, ताड़व हूँ, माफ़िरत चाहता हूँ, अल्लाह के यहाँ मेरा क्या हाल होगा। इस पर यह आयत उतरी। यह आयत इस बात पर कुरआन की दलील है कि शिर्क व़ख़शा न जाएगा, अगर मुथ़िक अपने शिर्क से तौबह करे और ईमान लाए तो उसकी तौबा व ईमान कुबूल है।
- (२) मादा बुतों को जैसे लात, उज़्ज़ा, मनात वगैरह। ये सब देवियाँ हैं और अरब के हर क़बीले का एक बुत था, जिसकी वा इवादात करते थे और उसको उस क़बीले की उन्मा (औरत) कहते थे। हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा की ख़िरअत और हज़रत इब्ने अब्बास की ख़िरअत से भी साबित होता है कि "इनास" (कुछ औरतों) से मुग़द बुत हैं। एक क़ौल यह भी है कि अरब के मुथ़िक अपने बातिल मअवूदाओं को ख़ुदा की बंटियाँ कहते थे और एक क़ौल यह है कि मुथ़िक बुतों को ज़ेवर पहनाकर औरतों की तरह सज़ाते थे।
- (३) क्योंकि उसी के व़क्वाव से बुतों को पूजते थे।

अल्लाह ने लअनत की और वोला^(४) क़सम है मैं ज़रूर तेरे बन्दों में से कुछ ठहराया हुआ हिस्सा लूंगा^(५) ॥११८॥ क़सम है मैं ज़रूर बहकाऊंगा और ज़रूर उन्हें आरज़ुएं दिलाऊंगा^(६) और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वो ज़ौपायों के कान चीरेंगे^(७) और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वो अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ें बदल देंगे^(८) और जो अल्लाह को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाए वह खुल्लम खुल्ला टोटे में पड़ा ॥११९॥ शैतान उन्हें वादे देता है और आरज़ुएं दिलाता है^(९) और शैतान उन्हें वादे नहीं देता मगर धोखे के^(१०) ॥१२०॥ उनका ठिकाना दोज़ख है उससे बचने की जगह न पाएंगे ॥१२१॥ और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कुछ देर जाती है कि हम उन्हें वागों में ले जाएंगे जिनके नीचे नेहरें वहाँ हमेशा हमेशा उन में रहें अल्लाह का सच्चा वादा और अल्लाह से ज्यादा किस की बात सच्ची ॥१२२॥ काम न कुछ तुम्हारे खयालों पर है^(११) और न किताब वालों की हवस पर^(१२) जो बुराई करेगा^(१३) उसका बदला पाएगा और अल्लाह के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएगा न मददगार^(१४) ॥१२३॥ और जो कुछ भले काम करेगा

وَقَالَ لَا تَخْذَنْ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۖ
وَلَا ضَلَالَتَهُمْ وَلَا مَئِيَّةَهُمْ وَلَا مُرْتَهَنَهُمْ فَلْيَبْشِرْنَ
أَذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَا مُرْتَهَنَهُمْ فَلْيَعْبِرْنَ خَلْقَ اللَّهِ ۖ
وَمَنْ يَخْذِلْ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا ۖ يَعِدُهُمْ وَيُبْغِثُهُمْ وَمَا
يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۖ أُولَٰئِكَ مَا لَهُمْ
جَهَنَّمُ وَلَا يُجَادُونَ عَنْهَا مُحِيطًا ۖ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَى
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَعْدَ اللَّهِ
حَقًّا ۖ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ۖ لَيْسَ
بِأَمَانِيَّتِكُمْ وَلَا أَمَانِي أَهْلِ الْكِتَابِ ۖ مَنْ يَعْمَلْ
سُوءًا يُجْزِ بِهِ ۖ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا
وَلَا نَصِيرًا ۖ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ دُونِ

मन्ज़ल

(४) शैतान.

(५) उन्हें अपना मुतीअ बनाऊंगा.

(६) तरह तरह की, कभी लम्बी उम्र की, कभी दुनिया के मज़ों की, कभी वातिल झाड़िशान की, कभी और कभी और.

(७) चुनांचे उन्होंने ने ऐसा किया कि ऊंटनी जब पांच बार ब्याह लेती तो वह उसके छोड़ देते और उससे नफ़ा उठाना अपने ऊपर ह़राम कर लेते और उसका दूध बुनों के लिये कर लेते और उसको बहीरा कहते थे. शैतान ने उनके दिल में यह डाल दिया था कि ऐसा करना इबादत है.

(८) मर्दाँ का औरतों की शक्ल में ज़राना लिवास पहनना, औरतों की तरह बात चीत और हरकतें करना, जिस्म को गोद कर सुरमा या सिंदूर चौरह ख़ाल में पैवस्त करके बेल-बूटे बनाना भी इसमें दाख़िल है.

(९) और दिल में तरह तरह की उम्मीदें और वसवसे डालता है ताकि इन्सान गुमराही में पड़े.

(१०) कि जिस चीज़ के दफ़े और फ़ायदे की आशा दिलाता है, वास्तव में उसमें सख़्त घाटा और नुक़सान होता है.

(११) जो तुमने सोच रखा है कि बुत तुम्हें नफ़ा पहुंचाएंगे.

(१२) जो कहते कि हम अल्लाह के बेटे और प्यारे हैं हमें आग कुछ दिन से ज्यादा न जलाएगी. यहूदियों और ईसाइयों का यह ख़याल भी मुश्क़िों की तरह वातिल है.

(१३) चाहें मुश्क़िों में से हो या यहूदियों और ईसाइयों में से.

(१४) यह फ़टकार काफ़िरों के लिये है.

मर्द हो या औरत और हा मुसलमान^(१५) तो वो जन्नत में दाखिल किये जाएंगे और उन्हें तिल भर नुकसान न दिया जाएगा^(१२४) और उससे बेहतर किसका दीन जिसने अपना मुंह अल्लाह के लिये झुका दिया^(१६) और वह नेकी वाला है और इब्राहीम के दीन पर^(१७) जो हर बातिल (असत्य) से अलग था और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना गहरा दोस्त बनाया^(१८) ^(१२५) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में और हर चीज पर अल्लाह का काबू है^(१९) ^(१२६)

उन्नीसवाँ सूक

और तुमसे औरतों के बारे में फ़तवा पूछते हैं^(१) तुम फ़रमा दो कि अल्लाह तुम्हें उनका फ़तवा देता है और वह जो तुमपर कुरआन में पढ़ा जाता है उन यतीम लड़कियों के बारे में कि तुम उन्हें नहीं देते जो उनका मुक़रर हैं^(२) और उन्हें निकाह में भी लाने से मुंह फेरते हो और कमज़ोर^(३) बच्चों के बारे में और यह कि यतीमों के हक़ में इन्साफ़ पर कायम रहो^(४) और तुम जो भलाई करो तो अल्लाह को उसकी खबर है^(५) ^(१२७) और अगर कोई औरत अपने शौहर की ज़ियादती या बेरग़बती (अलबते) का डर करे^(६) तो उनपर गुनाह नहीं कि आपस में सुलह करलें^(७) और सुलह खूब

وَالنِّسَاءِ ۖ وَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ
وَلَا يَطْلَمُونَ تَقَرُّرًا ۖ وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِّمَّنْ
أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ
إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا ۖ
وَاللَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَانَ
اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا ۖ وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي
النِّسَاءِ ۚ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ ۚ وَمَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ
فِي الْكِتَابِ فِي يَمْنَىٰ النِّسَاءِ الَّتِي لَا تَوْلُونَ
مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَشَرَعُونَ ۚ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ وَ
الْمُسْتَغْفِرِينَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۚ وَأَنْ تَقُومُوا لِلْيَمْنَىٰ
بِالْقِسْطِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ
بِهِ عَلِيمًا ۖ وَإِنْ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا
شُورًا أَوْ إِعْرَاصًا ۖ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهَا أَنْ يُصْلِحَا

(१५) इसमें इशारा है कि अजमाल यानी कर्म इमान में दाखिल नहीं।

(१६) यानी फ़रमावशकारी और इज्जलास इज्जियार किया।

(१७) जो मिलते इस्लामिया के मुवाफ़िक़ है। हज़रत इब्राहीम की शरीअत और मिलत सेयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मिलत में दाखिल है और दीने मुहम्मदी की विशेषताएं इसके अलावा है। दीने मुहम्मदी पर चलने से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की शरीअत और मिलत का अनुकरण हो जाता है। चूंकि अरब और यहूदी और ईसाई सब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दल से होने में गर्व रखते थे और आपकी शरीअत उन सबको प्यारी थी और शरीअत मुहम्मदी उसपर हावी है, तो उन सबको दीने मुहम्मदी में दाखिल होना और उसको कबूल करना लाज़िम है।

(१८) “ख़िल्लत” सच्ची यग़ानग़त और ग़ैर से नाता तोड़ने को कहते हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम यह गुण रखते थे इसलिये आपको “ख़िल्लत” कहा गया। एक कौल यह भी है कि ख़िल्लत उस मुद्दिव को कहते हैं जिसकी महबूत सम्पूर्ण हो और उसमें किसी किसम की रुकावट और नुक़सान न हो। यह मानी भी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम में पाए जाते हैं। सारे बतियों के जो कमांलाते हैं सब बतियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हासिल हैं। हज़रत अन्नाह के ख़िल्लत भी हैं जैसा कि बुग़ारी और मुस्लिम की हदीस में है और हवीव भी, जैसा कि तिरमिज़ी शरीफ़ की हदीस में है कि मैं अल्लाह का हवीव हूँ और यह गर्व से नहीं कहता।

(१९) और वह उसके इल्म और क़ुट्बन के इहते में है। इहता-बिल-इल्म यह है कि किसी चीज़ के लिये जितने कारण हो सकते हैं उसमें कोई कारण इल्म से बाहर न हो।

सूरए निसा - उन्नीसवाँ सूक

(१) जाहिलियत के ज़माने में अरब के लॉग औरत और छोटे बच्चों को मैयत के माल का वारिस नहीं मानते थे। जब मीरास की आयत उतरी तो उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम, क्या औरत और छोटे बच्चे वारिस होंगे। आपने उनको इस आयत से जवाब दिया। हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि यतीमों के सरपरस्तों का तरीका यह था कि अगर यतीम लड़की माल और मौदर्य वाली होती तो उससे थोड़े से मेहज़ पर निकाह कर लेते और अगर हुज़न और माल न रखती तो उसे छोड़ देते और अगर ख़ूबसूरत न होती और मालदार होती तो उससे निकाह न करते और इस डर से दूसरे के निकाह में न देते कि वह माल में हिस्सेदार हो जाएगा। अल्लाह ताअला ने ये आयतें उतार कर उन्हें इन आदतों से मना फ़रमाया।

(२) मीरास से।

(३) यतीम या अनाथ।

(४) उनके पूरे अधिकार उनको दो।

है^(५) और दिल लालच के फंदे में हैं^(६) और अगर तुम नेकी और परहेजगारी करो^(७) तो अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है^(८) और तुम से कभी न हो सकेगा कि औरतों को बराबर रखो और चाहे कितनी ही हिंसा (लालच) करो^(९) तो यह तो न हो कि एक तरफ़ पूरा झुक जाओ कि दूसरी को अघर में लटकती छोड़ दो^(१०) और अगर तुम नेकी और परहेजगारी करो तो वेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरवान है^(११) और अगर वो दोनों^(१२) अलग हो जाएं तो अल्लाह अपनी कुशायश (वरकत) से तुम में हर एक को दूसरे से बेनियाज़ (वेपरवाह) कर देगा^(१३) और अल्लाह कुशायश (वुख़्द) वाला हिकमत वाला है^(१४) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और वेशक ताकीद फ़रमा दी है हमने उनसे जो तुमसे पहले किताब दिये गए और तुमको कि अल्लाह से डरते रहो^(१५) और अगर कुफ़्र करो तो वेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में^(१६) और अल्लाह बेनियाज़ है^(१७) सब ख़ूबियों सराहा^(१८) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और अल्लाह काफी है कारसाज़^(१९) ऐ लोगो वह चाहे तो तुम्हें ले जाए^(२०) और औरों को ले आए और

بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسَ الشُّعْرَ وَإِنْ يَحْسَبُوا وَيَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۖ وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمِيلِ فَتَدْرِكُوا كَالْمُעَلَقَةِ ۖ وَإِنْ تَصْلَحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۖ وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا ۚ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ مِن قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنْ اتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَبِيدًا ۚ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۚ إِنَّ يَشَاءُ يُدْهِبَكُمْ أَثَرَهَا النَّاسَ وَيَأْتِ بِآخِرِينَ ۚ وَكَانَ

- (५) ज़िंदादगी तो इस तरह कि उससे अलग रहे, ख़ाने पहनने को न दे या कमी करे या मारे या बदज़बानी करे, और बेसाबती यह कि महबूत न रखे, बोल चाल छोड़ दे या कम करदे।
- (६) और इस सुल्ह के लिये अपने अधिकारों का बोझ कम करने पर राज़ी हो जाएं।
- (७) और ज़िंदादगी और जुदाई दोनों से बेहतर है।
- (८) हर एक अपनी राहत और आसाइश चाहता और अपने ऊपर कुछ मशक्कत ग़वार करके दूसरे की आसाइश को प्राथमिकता नहीं देता।
- (९) और नापसन्द होने के बावजूद अपनी मौजूदा औरतों पर सब्र करो और उनके साथ अच्छा बर्ताव करो और उन्हें तकलीफ़ दुख देने से और झगड़ा पैदा करने वाली बातों से बचते रहो और सोहबत और सहवास में नेक सुलूक करो और यह जानते रहो कि वो तुम्हारे पास अमानत हैं।
- (१०) वह तुम्हें तुम्हारे कमों का इनाम देगा।
- (११) धारी अगर कई बीवियाँ हों तो यह तुम्हारी क्षमता में नहीं कि हर काम में तुम उन्हें बराबर रखो। किसी को किसी पर तज़ीह न होने दो, न मेल महबूत में, न ख़्वाहिश और गोबत में, न इशरत और इस्तिलात में, न नज़र और तबज़्जुह में, तुम कांशिश करके यह तो कर नहीं सकते लेकिन अगर इतना तुम्हारी क्षमता या बस में नहीं है और इस वज़ह से इन नमाम पाबन्दियों का बोझ तुम पर नहीं रखा गया है और दिली महबूत और सच्चा प्यार जो तुम्हारा इस्तियार नहीं है उसमें बराबरी करने का तुम्हें हुक़्म नहीं दिया गया।
- (१२) बल्कि यह ज़रूर है कि जहाँ तक तुम्हें क़ुदरत और इस्तियार है वहाँ तक एक सा बर्ताव करो। महबूत इस्तियारी चीज़ नहीं, तो बातचीत, सदब्यवहार, ख़ाने पहनने, साथ रखने, ऐसी बातों में बराबरी करना तुम्हारे बस में है। इन बातों में दोनों के साथ एक सा सुलूक करना लाज़िम और ज़रूरी है।
- (१३) मियाँ बीवी आपस में सुल्ह न करें और वो जुदाई ही बेहतर समझें और ख़ुलअ के साथ अलाहदगी हो जाए या मर्द औरत को तलाक़ देकर उसका मेहर और इदत का ख़र्चापाती अदा करदे और इस तरह वह...
- (१४) और हर एक को बेहतर बदल या पर्याय अता फ़रमाएगा।
- (१५) उसकी फ़रमाँबरदारी करो और उसके हुक़्म के ख़िलाफ़ न करो, तौहीद और शरीअत पर कायम रहो। इस आयत से मालूम हुआ कि तक़्वा और परहेजगारी का हुक़्म पहले से है। तमाम उम्मतों को इसकी ताकीद होती रही है।
- (१६) तमाम जगत उसके फ़रमाँबरदारों से भरा है। तुम्हारे कुफ़्र से उसका क्या नुक़सान।
- (१७) तमाम सृष्टि से और उनकी इबादत से।

- (१) किसी की रियायत और तरफदारी में इन्साफ से न हटें और कोई सम्बन्ध और रिश्ता सत्य कहने में आड़े न आने पाए।
- (२) सत्य कहने में और जैसा चाहिये न कहो।
- (३) गवाही देने से।
- (४) जैसे कर्म होंगे वैसा बदला देगा।
- (५) यानी ईमान पर डटे रहो। यह अर्थ उस सूत्र में है कि “ या अय्युहल्लजीना आमनू ” का सम्बोधन मुसलमानों से होना और अगर खिताब यहूदियों और ईसाईयों से हो तो मानी ये होंगे कि ये कुछ किताबों और रसूलों पर ईमान लाते चालते, तुम्हें यह हुक्म है। और अगर सम्बोधन मुनाफिक़ीन से हो तो मानी ये हैं कि ये ईमान का ज़ाहिरी दावा करने चालते, सच्चे दिल से ईमान लाओ। यहाँ रसूल से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और किताब से कु़रआन पाक मुसद है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, यह आयत अब्दुल्लाह बिन सलाम और असद व उसैद और सअलबा बिन क़ैस और सलाम व सलमा व यामीन के बारे में उतरी। ये लोग किताब वालों के मुमिनीन में से थे। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अज़्र किया, हम आपपर और आपकी किताब पर और हज़रत मूसा पर, तीग़त पर और उज़ैर पर ईमान लाते हैं और इसके सिवा बाक़ी किताबों और रसूलों पर ईमान न लाएंगे। हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम अल्लाह पर और उसके रसूल मुहम्मदे मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) पर और कु़रआन पर और इसमें पहली हज़ किताब पर ईमान लाओ। इस पर यह आयत उतरी।
- (६) यानी कु़रआन पाक पर और उन तमाम किताबों पर ईमान लाओ ज़ाँ अल्लाह तआला ने कु़रआन से पहले अपने नबियों पर नाज़िल फ़रमाई।
- (७) यानी उनमें से किसी एक का भी इन्कार करे कि एक रसूल और एक किताब का इन्कार भी सब का इन्कार है।
- (८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत यहूदियों के बारे में उतरी जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम

वख़्तों^(१) न उन्हें राह दिखाएँ^(२) १३७) खुशख़बरी दो मुनाफ़िकों को कि उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है^(३) १३८) वो जो मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं^(४) क्या उनके पास इज़्जत ढूँढ़ते हैं तो इज़्जत तो सारी अल्लाह ही के लिये है^(५) १३९) और वेशक अल्लाह तुमपर किताब^(६) में उतार चुका कि जब तुम अल्लाह की आयतों को सुनो कि उनका इन्कार किया जाता और उनकी हंसी बनाई जाती है तो उन लोगों के साथ न बैठो जबतक वो और बात में मशगूल न हों^(७) वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो^(८) वेशक अल्लाह मुनाफ़िकों और काफ़िरों सब को जहन्नम में इकट्ठा करेगा^(९) १४०) वो जो तुम्हारी हालत तका करते हैं तो अगर अल्लाह की तरफ़ से तुमको फ़तह मिले कहेँ क्या हम तुम्हारे साथ न थे^(१०) और अगर काफ़िरों का हिस्सा हो तो उनसे कहेँ क्या हमें तुमपर क़ाबू न था^(११) और हमने तुम्हें मुसलमानों से वचाया^(१२) तो अल्लाह तुम सब में^(१३) क़यामत के दिन फैसला करदेगा^(१४) और अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानों पर कोई राह न देगा^(१५) १४१)

इक्कीसवाँ सूक़

वेशक मुनाफ़िक लोग अपने गुमान में अल्लाह को धोखा

وَلَا يَصْدُرُ عَنْهُمْ سُبِيلًا ۝ بَشِّرِ الْمُنَافِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ أُلِيقُوا فِي عَذَابِهِمُ الْعَذَابُ ۚ فَإِنَّ الْعَذَابَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۝ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتَ اللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا عَنْهَا حَتَّى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ إِنَّكُمْ إِذَا مَثَلْتُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ۝ الَّذِينَ يَكُونُ صُورًا بِكُمْ ۚ وَإِنْ كَانُوا لَكُمْ كُفْرًا مِنَ اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ ۚ وَإِنْ كَانُوا لِلْكَافِرِينَ نَصِيبًا ۚ قَالُوا أَلَمْ نَسْتَحِذْكُمْ عَلَيْهِمْ وَنَتَعَلَمَكُمُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ قَالَ اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَلَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ۚ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَدِعُونَ

مَنْ

पर ईमान लाए फिर बछड़ा पूज कर काफ़िर हुए फिर उसके बाद ईमान लाए, फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और इंजील का इन्कार करके काफ़िर हो गए फिर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और कुरआन का इन्कार करके और कुफ़्र में बढ़े, एक क़ौल यह है कि यह आयत मुनाफ़िकों के बारे में उतरी कि वो ईमान लाए फिर काफ़िर हो गए, ईमान के बाद फिर ईमान लाए, यानी उन्होंने अपने ईमान का इज़हार किया ताकि उनपर ईमान वालों के एहक़ाम जारी हों, फिर कुफ़्र में बढ़े यानी कुफ़्र पर उनकी मौत हुई,

(९) जबतक कुफ़्र पर रहें और कुफ़्र पर मरें क्योंकि कुफ़्र बर्ज़ा नहीं जाता मगर जबकि काफ़िर तौबह करे और ईमान लाए, जैसा कि फ़रमाया “كُلُّ لَيْلٍ لِيْنَا كَفَرٌ يَنْتَهِي بِهَا فَرَسٌ لَدُنَّ مَا كَدَ سَلَفٌ” (तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वो वाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वह उन्हें माफ़ फ़रमा दिया जाएगा) (सूरए अक्फ़ाल, आयत ३८).

(१०) यह मुनाफ़िकों का हाल है जिन का ख़याल था कि इस्लाम ग़ालिब न होगा और इसलिये वो काफ़िरों को कुव्वत और शानो शौकत वाला समझकर उनसे दोस्ती करते थे और उनसे मिलने में बढ़ाई जायते थे जबकि काफ़िरों के साथ दोस्ती वर्जित और उनके मिलने से इज़्जत की तलब बातिल.

(११) और उसके लिये जिस वह इज़्जत दें, जैसे कि नबी और ईमान वाले.

(१२) यानी कुरआन.

(१३) काफ़िरों के साथ दोस्ती और उनकी बैठकों में शरीक होना ऐसे ही और अधर्मियों और गुमराहों की मजलिसों में शिरकत और उनके साथ यात्रा और उटना बैठना मना फ़रमाया गया.

(१४) इससे साबित हुआ कि कुफ़्र के साथ राज़ी होने वाला भी काफ़िर है.

(१५) इससे उनकी मुराद लूट के माल में शिरकत करना और हिस्सा चाहना है.

(१६) कि हम तुम्हें क़त्ल करते, गिरफ़्तार करते, मगर हमने यह कुछ नहीं किया.

(१७) और उन्हें तरह तरह के बहानों से रोका और उनके राज़ों पर तुम्हें वास्त्रवर किया. तो अब हमारे इस मुलूक की कद्र करो और हिस्सा दो. (यह मुनाफ़िकों का हाल है)

(१८) से ईमानदारों और मुनाफ़िकों.

(१९) कि ईमान वालों को जन्नत अता करेगा और मुनाफ़िकों को जहन्नम में दाख़िल करेगा.

(२०) यानी काफ़िर न मुसलमानों को मिटा सकेंगे, न तर्क में परास्त कर सकेंगे. उलमा ने इस आयत से चन्द मसअले निकाले हैं.

(१) काफ़िर मुसलमान का वारिस नहीं. (२) काफ़िर मुसलमान के माल पर इस्तीला पाकर मालिक नहीं हो सकता. (३) काफ़िर को मुसलमान गुलाम ख़रीदने का हक़ नहीं. (४) ज़िम्मी के बदले मुसलमान क़त्ल न किया जाएगा (जुमल).

दिया चाहते हैं^(१) और वही उन्हें गाफिल करके मारेगा और जब नमाज़ को खड़े हों^(२) तो हारे जी से^(३) लोगों को दिखावा करते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते मगर थोड़ा^(४) १४२ बीच में डगमगा रहे हैं^(५) न इधर के और न उधर के^(६) और जिसे अल्लाह गुमराह करे तो उसके लिये कोई राह न पाएगा १४३ ऐ ईमान वाले काफ़िरों को दोस्त न बनाओ मुसलमानों के सिवा^(७) क्या यह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह के लिये खुली हुज्जत कर लो^(८) १४४ वेशक मुनाफ़िक दोज़ख के सबसे नीचे दर्जे में हैं^(९) और तू कभी उनका मददगार न पाएगा १४५ मगर वो जिन्होंने तौब की^(१०) और संवरे और अल्लाह की रस्सी मजबूत थामी और अपना दीन खालिस अल्लाह के लिये कर लिया तो ये मुसलमानों के साथ हैं^(११) और जल्द ही अल्लाह मुसलमानों को बड़ा सवाब देगा १४६ और अल्लाह तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम हक मानो और ईमान लाओ और अल्लाह है सिला (इनाम) देने वाला जानने वाला १४७

وَاللَّهُ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كَسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ مُذَبِّدِينَ بَيْنَ ذَلِكَ إِلَىٰ هَؤُلَاءِ وَلَا إِلَىٰ هَؤُلَاءِ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَنْ يَهْدِيَ لَهُ سَبِيلًا ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ أُرِيدُوا أَنْ تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ۖ إِنَّ السُّفْهَاءَ فِي الدِّينِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَنْ يَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ۖ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَوْفَ يُؤْتِي اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَدَائِكُمْ إِنَّ شُكْرَكُمْ وَآمَنْتُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا

सूरए निसा - इक्कीसवाँ रूकू

- (१) क्योंकि हकीकत में तो अल्लाह को धोखा देना सम्भव नहीं।
- (२) ईमान वालों के साथ।
- (३) क्योंकि ईमान तो है नहीं जिससे फ़र्मावरदारी की लज्जत और इबादत का लुत्फ हासिल हो केवल दिखावा है। इसलिये मुनाफ़िक को नमाज़ बोझ मालूम होती है।
- (४) इस तरह कि मुसलमानों के पास हुए तो नमाज़ पढ़ ली और अलग हुए तो गायब।
- (५) कुफ़्र और ईमान के।
- (६) न ख़ालिस मुमिन, न खुले काफ़िर।
- (७) इस आयत में मुसलमानों को बताया गया कि काफ़िरों को दोस्त बनाना मुनाफ़िकों की आदत है, तुम इससे बचो।
- (८) अपने दोशलेपन की, और जहन्नम के हक़दार हो जाओ।
- (९) मुनाफ़िक का अज़ाब काफ़िर से भी सज़ा है क्योंकि वह दुनिया में इस्लाम ज़ाहिर करके मुजाहिदों के हाथों से बचना रहा है और कुफ़्र के बावजूद मुसलमानों को धोखे में रखता और इस्लाम के साथ ठट्ठा करना उसकी आदत रही है।
- (१०) दोमती प्रवृत्ति से।
- (११) दोनों दुनियाओं में।

पारा पाँच समाप्त

छटा पारा - ला-युहिबुल्लाह (सूरए निसा - जारी)

अल्लाह पसन्द नहीं करना बुरी बात का ऐलान करना^(१२) मगर मज्लूम से^(१३) और अल्लाह सुनता जानता है^(१४)। अगर तुम कोई भलाई खुले आम करो या छुपाकर या किसी की बुराई से दरगुजर (क्षमा) करो तो बेशक अल्लाह माफ करने वाला कुदरत वाला है^(१५)। वो जो अल्लाह और उसके रसूलों को नहीं मानते और चाहते हैं कि अल्लाह से उसके रसूलों को अलग कर दें^(१६) और कहते हैं हम किसी पर ईमान लाए और किसी के इन्कारी हुए^(१७) और चाहते हैं कि ईमान और कुफ़्र के बीच में कोई राह निकाल लें^(१८) यही हैं ठीक ठीक काफ़िर^(१९) और हमने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है^(२०)। और वो जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाए और उनमेंसे किसी पर ईमान में फ़र्क न किया उन्हें जल्द ही अल्लाह उनके सवाब देगा^(२१) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है^(२२)।

बाईसवाँ सूक़

ऐ मेहबूब, किताब वाले^(१) तुमसे सवाल करते हैं कि उनपर आसमान से एक किताब उतार दो^(२) तो वो तो मूसा से इससे भी बड़ा सवाल कर चुके^(३) कि बोले हमें अल्लाह को खुल्लामखुल्ला दिखा दो तो उन्हें कड़क ने आ लिया उनके

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالشُّعْرِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَن ظَلِمَ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ۝ إِنَّ تَبْدُلًا خَيْرًا أَوْ تَخْفُوهُ أَوْ تَعْفُوا عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۝ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا ۖ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أَجْرُهُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَنْ تَنزِلَ عَلَيْهِمْ كِتَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىٰ أَكْبَرَ مِنْ ذَلِكَ فَقَالُوا أَرِنَا اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ

مَنْزِلًا

(१२) यानी किसी के छुपे हाल का ज़ाहिर करना। इसमें पीठ पीछे बुराई भी आगई, चुगलखोरी भी। समझदार वह है जो अपने दोषों को देखे। एक क़ौल यह भी है कि बुरी बात से गाली मुराद है।

(१३) कि उसको जायज़ है कि ज़ालिम के ज़ुल्म का बयान करे। वह चोर या ग़ासिब के बारे में कह सकता है कि उसने मेरा माल चुराया या ज़बरदस्ती कब्ज़ा किया। एक शस्त्र एक क़ौम का मेहमान हुआ था। उन्होंने अच्छी तरह उसकी मेज़बानी न की। जब वह वहाँ से निकला तो उनकी शिकायत करता निकला। इस घटना के बारे में यह आयत उतरी। कुछ मुफ़ससिं ने फ़रमाया कि यह आयत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के बारे में उतरी। सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम के सामने आपकी शान में एक शस्त्र ज़वान दराज़ी करता रहा। आपने कई बार ख़ामोशी की, मगर वह न रुका तो एक बार आपने उसको जवाब दिया। इसपर हज़रे अक़दम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम उठ खड़े हुए। हज़रत सिद्दीक़े अक़बर ने अज़ा किया, या रसूलल्लाह, यह शस्त्र मुझको बुरा भला कहता रहा तो हुज़ूर ने कुछ न फ़रमाया, मैं ने एक बार जवाब दिया तो हुज़ूर उठ गए। फ़रमाया, एक फ़रिश्ता तुम्हारी तरफ़ से जवाब दे रहा था, जब तुमने जवाब दिया तो फ़रिश्ता चला गया और शैतान आ गया। इसके बारे में यह आयत उतरी।

(१४) तुम उसके बन्दों को माफ़ करो, वह तुम्हें माफ़ फ़रमाएगा। हदीस में है, तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।

(१५) इस तरह कि अल्लाह पर ईमान लाए और उसके रसूलों पर न लाए।

(१६) यह आयत यहूदियों और ईसाइयों के बारे में नाज़िल हुई कि यहूदी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम के साथ कुफ़्र किया।

(१७) कुछ रसूलों पर ईमान लाना उन्हें कुफ़्र से वहीं बचाता क्योंकि एक नबी का इन्कार भी सारे रबियों के इन्कार के बराबर है।

(१८) बड़े गुनाह करने वालों भी इसमें दाख़िल हैं। क्योंकि वह अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान रखता है। मुअतज़िला सिर्फ़ कबीरा गुनाह करने वालों के लिये अज़ाब दिये जाने का अकीदा रखते हैं। इस आयत से उनके इस अकीदे का रद्द किया गया।

(१९) यह आयत सिफ़ते फ़ैअलिया (जैसे कि मग़फ़िरत व रहमत) के क़दीम होने को प्रमाणित करती है क्योंकि हुज़ूर के मानने वाले को कहना पड़ता है कि अल्लाह नआला (मआज़ल्लाह) अज़ल में ग़फ़ूर व रहीम नहीं था, फिर हो गया। उसके इस क़ौल को यह आयत वातिल करती है।

गुनाहों पर फिर बछड़ा ले बैठे^(१) बाद इसके कि रोशन आयतें^(२) उनके पास आ चुकीं तो हमने यह माफ़ फ़रमा दिया^(३) और हमने मूसा को रोशन(खुला) गलबा दिये^(४) (१५३) फिर हमने उनपर तुर को ऊंचा किया उनसे एहद लेने को और उनसे फ़रमाया कि हफ़्ते में हद से न बढ़ो^(५) और हमने उनसे गाढ़ा एहद लिया^(६) (१५४) तो उनकी कैसी बद-एहदियों के सबब हमने उनपर लअनत की और इसलिये कि वो अल्लाह की निशानियों के इन्कारी हुए^(७) और नबियों को नाहक़ शहीद करते^(८) और उनके इस कहने पर कि हमारे दिलों पर गलाफ़ हैं^(९) बल्कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र के सबब उनके दिलों पर मुहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े^(१०) और इसलिये कि उन्होंने कुफ़्र किया^(११) और मरयम पर वड़ा वोहतान(आरोप) उठया^(१२) और उनके इस कहने पर कि हमने मसीह ईसा मरयम के बेटे अल्लाह के रसूल को शहीद किया^(१३) और है यह कि उन्होंने न उसे क़त्ल किया और न उसे सूली दी बल्कि उनके लिये उनकी शबीह का(उनसे मिलता जुलता) एक बना दिया गया^(१४) और वो जो उसके बारे में विरोध कर रहे हैं ज़रूर उसकी तरफ़ से शुबह में पड़े हुए हैं^(१५) उन्हें उसकी कुछ भी

الْصُّعْقَةُ يُلَاقِيهِمْ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ
مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذَلِكَ وَأَنْتَبِهْنَا
مُوسَى سُلْطَانًا مُبِينًا ۝ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ
بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ وَفَلْنَا لَهُمْ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا
لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا
عَلِيًّا ۝ فِيمَا تَضَاهَوْهُمْ مِيثَاقَهُمْ وَكَفَرُوا بَآيَاتِ
اللَّهِ وَقَتْلِهِمُ الْأَنْبِيَاءَ بَغْيًا حَقًّا وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا
غُلْفٌ ۖ ذَلَّ بَلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ
إِلَّا قَلِيلًا ۝ وَبِكَفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَى مَرْيَمَ
بُهْتَانًا عَظِيمًا ۝ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ
عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ ۖ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا
صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ۖ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا
فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ ۖ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا

مَذَلٍّ

सूरए निसा - बाईसवाँ सूकू

- (१) बगावत के अन्दाज़ में.
- (२) एक साथ ही. यहूदियों में कअब बिन अशरफ़ फ़रख़्रास बिन आज़रा ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा कि अगर आप नबी हैं तो हमारे पास आसमान से एक साथ एक बार में ही किताब लाइये जैसा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तौरात लाए थे. यह सवाल उनका हिदायत और अनुकरण की तलब के लिये न था बल्कि सरकशी और बगावत से था. इसपर यह आयत उतरी.
- (३) यानी यह सवाल उनका भरपूर जिहालत से है और इस किस्म की जिहालतों में उनके बाप दादा भी गिरफ़्तार थे. अगर सवाल हिदायत की तलब के लिये होता तो पूरा कर दिया जाता मगर वो तो किसी हाल में ईमान लाने वाले न थे.
- (४) उसको पूजने लगे.
- (५) तौरात और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार जो अल्लाह तआला के एक होने और हज़रत मूसा की सच्चाई पर खुली दलील थ, और इसके बावजूद कि तौरात हमने एक साथ ही उतारी थी, लेकिन "बुरी ख़सलत वाले को हज़ार बहाने", अनुकरण के बजाय उन्होंने ख़ुदा के देखने का सवाल किया.
- (६) जब उन्होंने तौबह की. इसमें हज़ूर के ज़माने के यहूदियों के लिये उम्मीद है कि वो भी तौबह करें तो अल्लाह तआला उन्हें भी अपने करम से माफ़ फ़रमाए.
- (७) ऐसा क़ब्ज़ा अता फ़रमाया कि जब आपने बुरी इश्आइल को तौबह के लिये ख़ुद उनके अपने क़त्ल का हुक़म दिया, वो इन्कार न कर सकें और उन्होंने हुक़म माना.
- (८) यानी मछली का शिकार बग़ैरह जो अमल उस दिन तुम्हारे लिये हलाल नहीं, न करो. सूरए बक्रह में इन तमाम आदेशों की तफ़सील गुज़र चुकी.
- (९) कि जो उन्हें हुक़म दिया गया है, करें और जिससे रोका गया है, उससे दूर रहें. फिर उन्होंने इस एहद को तोड़ा.
- (१०) जो नबियों की सच्चाई के प्रमाण थे, जैसे कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार.
- (११) नबियों का क़त्ल करना तो नाहक़ है ही, किसी तरह हक़ हो ही नहीं सकता. लेकिन यहाँ मक़सूद यह है कि उनके घमण्ड में भी उन्हें इसका कोई हक़ न था.
- (१२) लिहाज़ा कोई नसीहत और उपदेश कारगर नहीं हो सकता.
- (१३) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ भी.
- (१४) यहूदियों ने दावा किया कि उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल कर दिया और ईसाइयों ने उसकी तस्दीक़ की थी.

खबर नहीं^(१७) मगर यह गुमान की पैरवी^(१८) और वेशक उन्होंने उसको क़त्ल नहीं किया^(१९) (१५७) वल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ़ उठा लिया^(२०) और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (१५८) कोई किताबी ऐसा नहीं जो उसकी मौत से पहले उसपर ईमान न लाए^(२१) और क़यामत के दिन वह उनपर गवाह होगा^(२२) (१५९) तो यहूदियों के बड़े जुल्म के^(२३) सबब हमने वो कुछ सुथरी चीज़ें कि उनके लिये हलाल थीं^(२४) उनपर हाराम फ़रमा दीं और इसलिये कि उन्होंने बहुतों को अल्लाह की राह से रोका^(२५) (१६०) और इसलिये कि वो सूद लेते हालांकि वो इससे मना किये गए थे और लोगों का माल नाहक खा जाते^(२६) और उनमें जो काफ़िर हुए हमने उनके लिये दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (१६१) हाँ जो उनमें इल्म में पक्के^(२७) और ईमान वाले हैं वो ईमान लाते हैं उसपर जो ऐ मेहबूब, तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुमसे पहले उतरा^(२८) और नमाज़ क़ायम रखने वाले और ज़कात देने वाले और अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को जल्द ही हम बड़ा सबाब देंगे (१६२)

तेईसवाँ रूकू

वेशक ऐ मेहबूब, हमने तुम्हारी तरफ़ वही भेजी जैसी वही नूह और उसके बाद के पैग़म्बरों को भेजी^(१) और हमने

اِنَّبَاءَ الظَّنِّ وَمَا تَتْلُوهُ يَقِينًا ۚ بَلْ رَفَعَهُ اللهُ
اِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ وَاِنْ مِنْ اَهْلِ
الْكِتَابِ اِلَّا كُيُوْنُ مِنْهُ قَبْلَ مَوْتِهِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ
يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۝ فَيُظْلِمُ مِنَ الدِّينِ هَادُوْا
حَرَمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدْرِهِمْ عَنْ
سَبِيْلِ اللهِ كَثِيْرًا ۝ وَاُخْذِهِمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا
عَنْهُ ۚ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ وَاَعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ لٰكِنِ الرَّاسِخُوْنَ
فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَا اُنْزِلَ
اِلَيْكَ وَمِمَّا اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ
وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ۚ اُولٰٓئِكَ سَنُوْثِرُهُمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ اِنَّا اَوْحَيْنَا
اِلَيْكَ كَمَا اَوْحَيْنَا اِلٰى نُوْحٍ وَالنَّبِيِّنَ مِنْ بَعْدِهٖ

مُزَل

अल्लाह तआला ने इन दोनों के दावे ग़लत कर दिये.

(१५) जिसको उन्होंने क़त्ल किया और ख़याल करते रहे कि यह हज़रत ईसा हैं, जबकि उनका यह ख़याल ग़लत था.

(१६) और यकीनी नहीं कह सकते कि वह क़त्ल होने वाला शय्यत कौन है. कुछ कहते हैं कि यह मक़तूल ईसा हैं, कुछ कहते हैं कि यह चेहरा तो ईसा का है और ज़िस्म उनका नहीं. लिहाज़ा यह वह नहीं. इसी संदेह में हैं.

(१७) जो वास्तविकता और हकीकत है.

(१८) और अटकलें दौड़ाना.

(१९) उनका क़त्ल का दावा झूटा है.

(२०) सही व सलाम आसमान की तरफ़. हदीसों में इसकी तफ़सील आई है. सूरए आले इमरान में इस घटना का ज़िक्र गुज़र चुका.

(२१) इस आयत की तफ़सीर में कुछ क़ौल हैं, एक क़ौल यह है कि यहूदियों और ईसाइयों को अपनी मौत के वक़्त जब अज़ाब के फ़रिश्ते नज़र आते हैं तो वो हज़रत ईमा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आते हैं. जिनके साथ उन्होंने कुछ किया था और उस वक़्त का ईमान कुबूल और विश्वासनीय नहीं. दूसरा क़ौल यह है कि क़यामत के करीब जब हज़रत ईमा अलैहिस्सलाम आसमान से उतरेंगे उस वक़्त के सारे किताब वाले उनपर ईमान ले आएंगे. उस वक़्त हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम शरीअत मुहम्मदी के मुताबिक़ हुक़म देंगे और उसी दीन के इमामों में से एक इमाम की हैसियत में होंगे. और ईसाइयों ने उनकी निस्वत जो गुमान बांधा रखे हैं उनको झुटलाएंगे, दीने मुहम्मदी का प्रचार करेंगे. उस वक़्त यहूदियों और ईसाइयों को या तो इस्लाम क़बूल करना होगा या क़त्ल करदिये जाएंगे. जिज़िया क़बूल करने का हुक़म हज़रत ईमा अलैहिस्सलाम के उतरने के वक़्त तक है. तीसरे क़ौल के अनुसार आयत के मानी यह हैं कि हर किताबी अपनी मौत से पहले सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान ले आएंगे. लेकिन मौत के वक़्त का ईमान मक़बूल नहीं, फ़ायदा न पहुंचाएगा.

(२२) यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम यहूदियों पर तो यह गवाही देंगे कि उन्होंने आपको झुटलाया और आपके बारे में बुरा भला कहा. और ईसाइयों पर यह कि उन्होंने आपको ख़ ठहराया और ख़ुदा का शरीक माना और किताब वालों में से जो लोग ईमान ले आएंगे उनके ईमान की भी आप गवाही देंगे.

(२३) एहद तांड़ने वगैरह, जिनका ऊपर की आयत में ज़िक्र हो चुका.

(२४) जिनका सूरए अनआम की आयत नं. १४६ "وَاللّٰهُ يَدْعُوْا اِلٰى رَحْمَتِهٖ ۚ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ" (और यहूदियों पर हमने हाराम किया) में बयान है.

(२५) रिश्वत वगैरह हाराम तरीक़ों से.

इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और उनके
बेटों और ईसा और अय्यूब और यूनस और हासन और
सुलेमान को वही को और हमने दाऊद को जुबूर अता
फरमाई (१६३) और रसूलों को जिनका जिक्र आगे हम
तुमसे (१) फरमा चुके और उन रसूलों को जिनका जिक्र तुमसे
न फरमाया (२) और अल्लाह ने मूसा से हकीकत में कलाम
फरमाया (३) (१६४) रसूल खुशखबरी देते (४) और डर सुनाते (५)
कि रसूलों के बाद अल्लाह के यहां लोगों को कोई मजबूरी
न रहे (६) और अल्लाह गालिव हिकमत वाला है (१६५)
लेकिन ऐ मेहबूब अल्लाह उसका गवाह है जो उसने तुम्हारी
तरफ उतारा वह उसने अपने इल्म से उतारा है और फरिश्ते
गवाह हैं और अल्लाह की गवाही काफ़ी (१६६) वो
जिन्होंने कुफ़्र किया (७) और अल्लाह की राह से रोका (८)
वेशक वो दूर की गुमराही में पड़े (१६७) वेशक जिन्होंने
कुफ़्र किया (९) और हद से बढ़े (१०) अल्लाह कभी उन्हें न
वशोगा (११) और न उन्हें कोई राह दिखाए (१६८) मगर
जहन्नम का रास्ता कि उसमें हमेशा हमेशा रहेंगे और यह

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيُحْيَىٰ
وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ
وَسُلَيْمَانَ وَأَتَيْنَا دَاوُدَ زُبُورًا ۚ وَرُسُلًا قَدْ
قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِن قَبْلُ ۖ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ
عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا ۚ رُسُلًا
نَّبِّئِينَ وَنُذِيرِينَ لِّئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ
حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝
لَكِنَّ اللَّهَ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ ۚ أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ
وَالْمَلَائِكَةُ يَشْهَدُونَ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدَّوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ
صَلَّوْا صَلَاتًا بَعِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا
لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيُغْفِرْ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ۝
إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ وَكَانَ

مَزْلُومًا

- (२६) हज़रत अब्दुल्लाह चित्त सलाम और उनके साथियों की तरह कि जो पुरज़ा इल्म और खुली अक्ल और भरपूर नज़र रखते थे
उन्होंने अपने इल्म से इस्लाम की हकीकत को जाना और नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए।
(२७) पहले नबियों पर।

सूरए निसा - तेईसवाँ सूक

- (१) यहदियों और ईसाईयों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जो यह सवाल किया था कि उनके लिये आसमान से
एक साथ ही किताब उतारी जाए तो वो आपकी नबुवत पर ईमान लाएं। इस पर यह आयत उतरी और उनपर तर्क कायम किया गया
कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सिवा बहुत से नबी हैं जिनमें से म्यारह के नाम यहाँ आयत में बयान किये गए हैं। किताब वालें
इन सबकी नबुवत को मानते हैं। इन सब हज़रत में से किसी पर एक साथ किताब न उतरी तो इस वजह से उनकी नबुवत तस्लीम
करने में किताब वालों को कुछ ऐतिराज़ न हुआ तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुवत तस्लीम करने में क्या मजबूरी
है। और रसूलों के भेजने का मक़सद लोगों की हिदायत और उनकी अल्लाह तआला की तौहीद और पहचान का पाठ देना और ईमान
को पुरज़ा करना और ईबादत के तरीक़े की सीख देना है। किताब के कई चरणों में उतरने से यह उद्देश्य भरपूर तरीक़े से हासिल होता
है कि थोड़ा थोड़ा आसानी से दिल में बैठता चला जाता है। इस हिकमत को न समझना और ऐतिराज़ करना हद दर्जे की मूर्खता
है।
(२) क़ुरआन शरीफ़ में नाम बनाम फ़रमा चुके हैं।
(३) और अबतक उनके नामों की तफ़सील क़ुरआने पाक में जिक्र नहीं फ़रमाई गई।
(४) तो जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बेवस्ता कलाम फ़रमाना दूसरे नबियों की नबुवत के आड़े नहीं आता, जिनसे
इस तरह कलाम नहीं फ़रमाया गया, ऐसे ही हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर किताब का एक साथ उतरना दूसरे नबियों की नबुवत
में कुछ भी आड़े नहीं आता।
(५) सबाब की, ईमान लाने वालों को।
(६) अज़ाब का, कुफ़्र करने वालों को।
(७) और यह कहने का मौक़ा न हो कि अगर हमारे पास रसूल आते तो हम ज़रूर उनका हुक्म मानते और अल्लाह के आज्ञाकारी और
फ़रमावरदार होते। इस आयत से यह मसअला मालूम होता है कि अल्लाह तआला रसूलों की तशरीफ़ आवरी से पहले लोगों पर अज़ाब नहीं
फ़रमाता जैसा दूसरी जगह इशारा फ़रमाया “वमा कुन्ना मुअज़्ज़िनीना हत्ता नंबअसा रसूलन” (और हम अज़ाब करने वाले नहीं जबतक रसूल
न भेज लें- सूरए वनी इम्राईल, आयत १५) और यह मसअला भी साबित होता है कि अल्लाह की पहचान शरीअत के बयान और नबियों की

अल्लाह को आसान है ﴿१६९﴾ ऐ लोगों तुम्हारे पास ये रसूल^(१३) हक के साथ तुम्हारे रब की तरफ से तशरीफ लाए तो ईमान लाओ अपने भले को और अगर तुम कुफ्र करो^(१४) तो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और जमीन में है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है ﴿१७०﴾ ऐ किताब वालो अपने दीन में ज़ियादती न करो^(१५) और अल्लाह पर न कहो मगर सच^(१६) मसीह ईसा मरयम का बेटा^(१७) अल्लाह का रसूल ही है और उसका एक कलिमा^(१८) कि मरयम की तरफ भेजा और उसके यहां की एक रूह, तो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ^(१९) और तीन न कहो^(२०) बाज़ रहो अपने भले का, अल्लाह तो एक ही खुदा है^(२१) पाकी उसे इससे कि उसके कोई वच्चा हो उसका माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है^(२२) और अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है ﴿१७१﴾

चौबीसवाँ सूक़

मसीह अल्लाह का बन्दा बनने से कुछ नफ़रत नहीं करता^(१) और न मुकर्रब फ़रिश्ते और जो अल्लाह की बन्दगी से नफ़रत और तकबुर (घमण्ड) करे तो कोई दम जाता है कि वह सबको अपनी तरफ हांकेगा^(२) ﴿१७२﴾

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ فَاٰمِنُوْا حَيْرًا لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقْوُلُوْا عَلٰى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۚ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيسٰى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهُ اُلْقِيَتْۢ اِلَى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ۚ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ ۚ وَلَا تَقْوُلُوْا ثَلٰثَةً ۚ اِنْتَهُوْا حَيْرًا لَّكُمْ ۚ اِنَّا نَلٰهُ اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ سُبْحٰنَهُ اَنْ يَّكُوْنَ لَهُ وَلَدٌ ۚ لَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَكَفَى بِاللّٰهِ وَكِيلًا ۝ لَنْ يَسْتَنْصِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ وَمَنْ يَسْتَنْصِفْ عَنْ عِبَادِيْهِ ۚ وَيَسْتَكْبِرْ فَيَحْشُرْهُمْ اِلَيْهِ حَبِيْعًا ۝

मज़ल

जवान से ही दारिल होती है, सिर्फ अक्ल से इस मंज़िल तक पहुंचना मयस्सर नहीं होता।

(८) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुवत का इन्कार करके।

(९) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नज़त और विशेषताएं छुपाकर और लोगों के दिलों में शुबह डाल कर, (यह हाल यहूदियों का है)

(१०) अल्लाह के साथ।

(११) अल्लाह की किताब में हुज़ूर के गुण बदलकर और आपकी नबुवत का इन्कार करके।

(१२) जब तक वो कुफ्र पर क़ायम रहे या कुफ्र पर मरे।

(१३) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।

(१४) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत का इन्कार करो तो इस में उनका कुछ नुकसान नहीं और अल्लाह तुम्हारे ईमान से बेनियाज़ है।

(१५) यह आयत ईसाइयों के बारे में उतरी जिनके कड़े सम्प्रदाय हो गए थे और हर एक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की निस्वत अलग अलग कुफ़्री अक़ीदा रखता था, नस्तूरी आपको खुदा का बेटा कहते थे, मरकुसी कहते कि वो तीन में के तीसरे हैं और इस कलिमे की तौजीहात में भी मतभेद था, कुछ तीन ताक़त्त मानते थे और कहते थे कि बाप, बेटा और रुहुलकुदुस, बाप से ज़ात, बेटे से ईसा, रुहुल कुदुस से उनमें डाली जाने वाली ज़िन्दगी मुराद लेते थे, तां उनके नज़दीक मअबूद तीन थे और इस तीन को एक बताते थे: "तीन में एक और एक तीन में" के चक्कर में गिरफ़्तार थे, कुछ कहते थे कि ईसा नासूतियत और उलूहियत के संगम है, माँ की तरफ से उनमें नासूतियत आई और बाप की तरफ से उलूहियत आई, यह फ़िरकाबन्दी ईसाइयों में एक यहूदी ने पैदा की जिसका नाम पोलूस था और उसीने उन्हें गुमराह करने के लिये इस किस्म के अक़ीदों की तालीम दी, इस आयत में किताब वालों को हिदायत की गई कि वो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में इफ़रात व तफ़रीत (बहुत ज्यादा, बहुत कम) से बाज़ रहें, खुदा और खुदा का बेटा भी न कहें और उनकी तौहीन भी न करें।

(१६) अल्लाह का शरीफ और बेटा भी किसी को न बनाओ और हुलूल व इत्तिहाद के ऐव भी मत लगाओ और इस सच्चे अक़ीदे पर रहो कि.....

(१७) है और उस मोहतरम के लिये इसके सिवा कोई नसब नहीं।

(१८) कि 'हो जा' फ़रमाया और वह वग़ैर बाप और पिता नुस्ते के केवल अल्लाह के हुक्म से पैदा हो गए।

(१९) और तस्दीक करो कि अल्लाह एक है, बेटे और औलाद से پاک है, और उसके रसूलों की तस्दीक करो और इसकी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के रसूलों में से हैं।

तो लोग जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनकी मजदूरी उन्हें भरपूर देकर अपने फ़ज़ल से उन्हें और ज़्यादा देगा और वो जिन्होंने^(१) नफ़रत और तक़बुर किया था उन्हें दर्दनाक सज़ा देगा और अल्लाह के सिवा न अपना कोई हिमायती पाएंगे न मददगार^(२) (१७३) ऐ लोगो बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से खुली दलील आई^(३) और हमने तुम्हारी तरफ़ रोशन नूर उतारा^(४) (१७४) तो वो जो अल्लाह पर ईमान लाए और उसकी रस्सी मज़बूत थामी तो जल्द ही अल्लाह उन्हें अपनी रहमत और अपने फ़ज़ल में दाख़िल करेगा^(५) और उन्हें अपनी तरफ़ सीधी राह दिखाएगा^(६) (१७५) ऐ मेहबूब तुमसे फ़तवा पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि अल्लाह तुम्हें कलाला^(७) में फ़तवा देता है अगर किसी मर्द का देहान्त हो जो बेऔलाद है^(८) और उसकी एक बहन हो तो तर्क में उसकी वहन का आधा है^(९) मर्द अपनी वहन का वारिस होगा अगर बहन की औलाद न हो^(१०) फिर अगर दो वहनें हों तर्क में उनका दो तिहाई और अगर भाई वहन हों मर्द भी और औरतें भी तो मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर, अल्लाह तुम्हारे लिये साफ़

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ
أَجْرَهُمْ وَنِزْلَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنَافُوا
وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ وَلَا يَجِدُونَ
لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ يٰٓأَيُّهَا
النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا
إِلَيْكُمْ نُورًا مُبِينًا ۝ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا
بِهِ فَسَيُجْزِيهِمْ فِي رَحْمَةِ مَوْلَاهُ وَفَضْلٍ ۖ وَيَهْدِيهِمْ
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ يَسْتَفْتُونَكَ ۚ قُلِ اللَّهُ
يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ ۚ إِنْ أَمْرُؤُا هَلَكَ لَيْسَ لَهُ
وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتُ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا
إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ ۚ وَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا
الثَّلَاثُ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِجَالًا وَنِسَاءً
فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۚ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ

مَنْزِلٌ

(२०) जैसा कि ईसाइयों का अक्कीदा है कि वह कुछे महज़ है.

(२१) कोई उसका शरीक नहीं.

(२२) और वह सब का मालिक है, और जो मालिक हो, वह बाप नहीं हो सकता.

सूरए निसा - चौबीसवाँ रुकू

(१) नज़रान के ईसाइयों का एक प्रतिनिधि मण्डल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ. उसने हुज़ूर से कहा कि आप हज़रत ईसा को ऐव लगाते हैं कि वह अल्लाह के बन्दे हैं. हुज़ूर ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा के लिये यह आर या शर्म की बात नहीं. इसपर यह आयत उतरी.

(२) यानी आख़िरत में इस घमण्ड की सज़ा देगा.

(३) अल्लाह की इबादत बज़ा लाने से.

(४) "वाज़ह दलील" या स्पूले प्रमाण से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पाक ज़ात मुसद्द है, जिनकी सच्चाई पर उनके चमत्कार ग्वाह हैं, और इन्कार करने वालों को हैरत में डाल देते हैं.

(५) यानी क़ुरआने पाक.

(६) और जन्नत और ऊंचे दर्जे अता फ़रमाएगा.

(७) कलाला उसको कहते हैं जो अपने बाद न बाप छोड़े न औलाद.

(८) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि वह बीमार थे तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत सिद्दीक़े अक़बर रदियल्लाहो अन्हो के साथ तबीयत पूछने तशरीफ़ लाए. हज़रत जाबिर बेहोश थे. हज़रत ने बुज़ू फ़रमाकर बुज़ू का पानी उनपर डाला. उन्हें फ़ायदा हुआ. आँख़ ख़ोल कर देखा तो हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हैं. अज़्र किया या रसूलल्लाह, मैं अपने माल का क्या इन्तज़ाम करूँ. इसपर यह आयत उतरी. (बुख़ारी व मुस्लिम). अबू दाऊद की रिवायत में यह भी है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत जाबिर रदियल्लाहो अन्हो से फ़रमाया, ऐ जाबिर मेरे इल्म में तुम्हारी मौत इस बीमारी से नहीं है. इस हदीस से कुछ मसअले मालूम हुए. बुज़ुओं के बुज़ू का पानी तबर्क़ है और उसको शिफ़ा पाने के लिये इस्तेमाल करना सुन्नत है. मरीज़ों की मिज़ाजपुरी और अयादत सुन्नत है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह तआला ने ग़ैब के उलूम अता किये हैं, इसलिये हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मालूम था कि हज़रत जाबिर की मौत इस बीमारी में नहीं है.

(९) अगर वह बहन सगी या बाप शरीक हो.

(१०) यानी अगर बहन बेऔलाद मरी और भाई रहा तो वह भाई उसके कुछ माल का वारिस होगा.

वयान फरमाता है कि कहीं बहक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ जानता है (१७६)।

५- सूरए माइदा

सूरए माइदा मदीना में उतरी और इसमें एक सौ बीस आयतें और सोलह रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) ऐ ईमान वालो अपने क़ौल (वचन) पूरे करो (२) तुम्हारे लिये हलाल हुए वे ज़वान मवेशी मगर वो जो आगे सुनाया जाएगा तुमको (३) लेकिन शिकार हलाल न समझो जब तुम एहराम में हो (४) वेशक अल्लाह हुक्म फरमाता है जो चाहे (५) ऐ ईमान वालो हलाल न ठहरा लो अल्लाह के निशान (६) और न अदब वाले महीने (७) और न हरम को भेजी हुई क़ुरबानियाँ और न (८) जिनके गले में अलामतें (चिन्ह) लटकी हुई (९) और न उनका माल और आवरु जो इज़त वाले घर का इरादा करके आएँ (१०) अपने रव का फ़ज़ल और उसकी खुशी चाहते और जब एहराम से निकलो तो शिकार कर सकते हो (११) और तुम्हें किसी क़ौम की दुश्मनी, कि उन्होंने तुम को मस्जिदे हराम से रोका था, ज़ियादती करने पर न उभारो (१२) और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर आपस में मदद न दो (१३) और अल्लाह से डरते रहो, वेशक अल्लाह का

التَّائِبِينَ

۱۷۷

سُورَةُ مَائِدَةٍ

أَنْ تَضِلُّوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۖ أُحِلَّتْ لَكُمْ
بِهَيْمَةِ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُنْتَلَىٰ عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي
الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ۚ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا
الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا
أَمْثِلَ الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَنْتَعُونَ فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ
وَرِضْوَانًا ۚ وَإِذَا حُلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ
شُرَّانُ قَوْمٍ أَن صَلَّوْا عَنْ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَن
تَعْتَدُوا ۚ وَآمَرُوا تُعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَعَاوَنُوا
عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ

مَذْكُورٌ

(५) सूरए माइदा - पहला रूकू

(१) सूरए माइदा मदीना तैय्यिह में उतरी; सिवाय आयत "अल यौमा अकमल्लो लकुम दीनकुम" के. यह आयत हज़रतुल वदाअ में अरफे के दिन उतरी और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़ुल्वे में इसको पढ़ा. इस सूरात में सोलह रूकू, एक सौ बीस आयतें और बारह हज़ार चारसौ चौंसठ अक्षर हैं.

(२) "क़ौल" के मानी में मुफ़सिरों के कुछ क़ौल हैं. इन्हे ज़रीर ने कहा कि किताब वालों को ख़िताब फ़रमाया गया है. मानी यह है कि ऐ किताब वालों में के ईमान वालो, हमने पिछली किताबों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने और आपकी फ़रमावरी करने के सम्बन्ध में जो एहद लिये हैं वो पूरे करो. कुछ मुफ़सिरों का क़ौल है कि ख़िताब ईमान वालों का है, उन्हें क़ौल के पूरे करने का हुक्म दिया गया है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इस क़ौल से मुराद ईमान और वो एहद हैं जो हलाल और हराम के बारे में क़ुरआने पाक में लिये गए हैं. कुछ मुफ़सिरों का कहना है कि इसमें ईमान वालों के आपसी समझौते मुराद हैं.

(३) यानी जिनकी हुस्मत शरीअत में आई है. उनके सिवा तमाम चौपाए तुम्हारे लिये हलाल किये गए.

(४) कि ख़ुश्की का शिकार एहराम की हालत में हराम है, और दरियाई शिकार जायज़ है, जैसा कि इस सूरात के आख़िर में आया.

(५) उसके दीन की बातें, मानी ये हैं कि जो चीज़ें अल्लाह ने फ़र्ज़ कीं और जो मना फ़रमाई, सबकी हुस्मत का लिहाज़ रखो.

(६) हज़ के महीने, जिन में किताब यानी लड़ाई वगैरह जाहिलियत के दौर में भी मना था; और इस्लाम में भी यह हुक्म बाक़ी रहा.

(७) वो क़ुरबानियाँ.

(८) अरब के लोग क़ुरबानियों के गले में हरम शरीफ़ के दरख़्तों की छाल वगैरह से गुलबन्द बुनकर डालते थे ताकि देखने वाले जान लें कि ये हरम को भेजी हुई क़ुरबानियाँ हैं और उनसे न उलझें.

(९) हज़ और उमरा करने के लिये. शरीह चिन हिन्द एक मशहूर शक्की (दुश्मन) था. वह मदीना तैय्यिह में आया और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा कि आप ख़ल्के ख़ुदा को क्या दावत देते हैं. फ़रमाया,

अजाब सख्त है (२) तुमपर हराम है (३) मुर्दार और खून और सुअर का गोشت और वह जिसके ज़िबह में गैर खुदा का नाम पुकारा गया और वो जो गला घोटने से मरे और बेधार की चीज़ से मारा हुआ और जो गिर कर मरा और जिसे किसी जानवर ने सींग मारा और जिसे कोई दरिन्दा खा गया, मगर जिन्हें तुम ज़िबह कर लो और जो किसी धान पर ज़िबह किया गया और पौसे डाल कर वाँटा करना यह गुनाह का काम है आज तुम्हारे दीन की तरफ से काफ़िरों की आस टूट गई (४) तो उनसे न डरो और मुझसे डरो आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल (पूर्ण) कर दिया (५) और तुमपर अपनी नेमत पूरी करी (६) और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया (७) तो जो भूख प्यास की शिदत (तेज़ी) में नाचार हो यूँ कि गुनाह की तरफ न झुके (८) तो बेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है (९) ऐ मेहबूब, तुम से पूछते हैं कि उनके लिये क्या हलाल हुआ तुम फरमा दो कि हलाल की गई तुम्हारे लिये पाक चीज़ें (१०) और जो शिकारी जानवर तुम ने सधा लिये (११) उन्हें शिकार पर दौड़ाते जो इल्म तुम्हें खुदा ने दिया उसमें से उन्हें सिखाते तो खाओ उस में से जो वो मारकर तुम्हारे लिये रहने दें (१२) और उसपर अल्लाह का नाम लो (१३) और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह को हिसाब करते देर नहीं लगती (१४)

الْعَقَاب ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالْدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْوَاجِ ذَلِكُمْ فُسْقٌ يَوْمَ يَبْسُ الدِّينِ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتِمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِإِسْمِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أَحَلَّ لَكُمْ قُلْ أَحَلَّ لَكُمْ الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُمُ مِنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

منزل

अपने रब के साथ ईमान लाने और अपनी रिसालत की तस्दीक करने और नमाज़ कायम रखने और ज़कात देने की, कहने लगा, बहुत अच्छी दावत है, मैं अपने सरदारों से राय ले लूँ तो मैं भी इस्लाम ले आऊँगा और उन्हें भी लाऊँगा, यह कहकर चला गया, हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसके आने से पहले ही अपने सहाबा को खबर दे दी थी कि रबीआ कबीले का एक शरअ आने वाला है जो शैतानी ज़बान बोलेगा, उसके चले जाने के बाद हुज़ूर ने फ़रमाया कि काफ़िर का चेहरा लेकर आया था और गद्दार और बदएहद की तरह पीठ फेर कर चला गया, यह इस्लाम लाने वाला नहीं, चुनांचे उसने बहाना किया और मदीना शरीफ़ से निकलते हुए वहाँ के मवेशी और माल ले गया, अगले साल यमामा के हाजियों के साथ तिजारत का बहुत सा सामान और हज़ की कलावा पोश कुरबानियाँ लेकर हज़ के इरादे से निकला, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने सहाबा के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे, राह में सहाबा ने शरीह को देखा और चाहा कि मवेशी उससे वापस ले लें, रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मना फ़रमाया, इसपर यह आयत उतरी और हुक्म दिया गया कि जिसकी ऐसी हालत हो उससे तआरुज़ नहीं करना चाहिये, (१०) यह बयाने अब्राहत है कि एहराम के बाद शिकार मुबाह हो जाता है, (११) यानी मक्का वालों ने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को और आपके सहाबा को हुदैबिया के दिन उमरे से रोक़ा, उनके इस दुश्मनी वाले काम का तुम बदला न लो, (१२) कुछ मुफ़सिरों ने फ़रमाया, जिसका हुक्म दिया गया उसका वज़ा लाना विर, ओर जिससे मना फ़रमाया गया उसको छोड़ देना तक़्वा, और जिसका हुक्म दिया गया उसको न करना "इस्म" (गुनाह), और जिससे मना किया गया उसको करना उदवान (जियादती) कहलाता है, (१३) आयत "इल्ला मा युतला अलैकुम" में जो ज़िक्र फ़रमाया गया था, यहाँ उसका बयान है और ग्यारह चीज़ों की हरमत का ज़िक्र किया गया, एक मुर्दार यानी जिस जानवर के लिये शरीअत में ज़िबह का हुक्म हो और वह बेज़िबह मर जाए, दूसरे वहने वाला खून, तीसरे सुअर का गोشت और उसके तमाम अंग, चौथे वह जानवर जिसके ज़िबह के वक़्त गैर खुदा का नाम लिया गया हो जैसा कि जाहिलियत के ज़माने में लोग बुतों के नाम पर ज़िबह करते थे और जिस जानवर को ज़िबह तो सिर्फ़ अल्लाह के नाम पर किया गया हो मगर दूसरे अक़ाल में वह गैर खुदा की तरफ़ मन्बूव रहा वह हग़म नहीं जैसे कि अब्दुल्लाह की गाय, अक़ीके का बकरा, बलीमे का जानवर या वह जानवर जिससे बलियों की आत्माओं की सवाब पहुंचाना मन्ज़ूर हो, उनको गैर वक़्त ज़िबह में बलियों के नामों के साथ नामज़द किया जाए मगर ज़िबह उनका फ़क़त अल्लाह के नाम पर हो, उस वक़्त किसी दूसरे का नाम न लिया जाए वो हलाल और पाक हैं, इस आयत में सिर्फ़ उसी को हग़म फ़रमाया गया है जिसको ज़िबह करते वक़्त गैरखुदा का नाम लिया गया हो, वहाबी जो ज़िबह की कैद नहीं लगाते वो आयत के मानी में ग़लती करते हैं और उनका कौल तमाभ जानी मानी तफ़सीरों के

खिलाफ है। और खुद आयत उनके मानी को बनने नहीं देती क्योंकि "मा जहिल्ला बिही" का अगर ज़िबह के वक्त के साथ सीमित न करें तो "इल्ला मा जक्केतुम" की छूट उसको लाहिक होगी और वो जानवर जो गिर वक़्त ज़िबह गिर खुदा के नाम से मौसूम रहा हो वह "इल्ला मा जक्केतुम" से हलाल होगा। गरज़ बहाबी को आयत से सनद लाने की कोई सवीन नहीं। पाँचवाँ गला घोट कर मारा हुआ जानवर, छटे वह जानवर जो लाठी, पत्थर, डेले, गोली, छर्रे यानी बिना धारदार चीज़ से मारा गया हो, सातवें जो गिर कर मरा हो चाहे पहाड़ से या कुंवे वगैरह में, आठवें वह जानवर जिसे दूसरे जानवर ने सींग मारा हो और वह उसके सदमे से मर गया हो, नवें वह जिसे किसी दरिन्दे ने थोड़ा सा ख़ायया हो और वह उसके ज़ख़्म की तकलीफ़ से मर गया हो लेकिन अगर ये जानवर मर गए हों और ऐसी घटनाओं के बाद ज़िन्दा बच रहे हों फिर तुम उन्हें बाक़ायदा ज़िबह करलो तो वो हलाल हैं, दसवें वह जो किसी थान पर पूजा की तरह ज़िबह किया गया हो जैसे कि जाहिलियत वालों ने कावे के चारों तरफ़ ३६० पत्थर नसब किये थे जिनकी वो इबादत करते थे और उनके लिये ज़िबह करते थे, ग्यारहवें, हिस्सा और हुक़्म जानने के लिये पाँसा डालना। जाहिलियत के दौर के लोगों को जब सफ़र या जंग या तिजारत या निकाह वगैरह के काम दरपेश होते तो वो तीरों से पाँस डालते और जो निकलता उसके मुताबिक़ अमल करते और उसको खुदा का हुक़्म मानते। इन सब से मना फ़रमाया गया।

(१४) यह आयत अरफ़े के दिन जो जुमे का था, उस बाद नाज़िल हुई। मानी ये हैं कि काफ़िर तुम्हारे दीन पर ग़ालिब आने से मायूस हो गए।

(१५) और उमूरे तकलीफ़ा में हाराम और हलाल के जो एहक़ाम हैं वो और क़यास के क़ानून सब मुक़म्मल कर दिये। इसीलिये इस आयत के उतरने के बाद हलाल व हाराम के बयान की कोई आयत नाज़िल न हुई। अगरचे "बन्तू योमन तुरजऊना फ़ीहे इल्ललाह" नाज़िल हुई मगर वह आयत नसीहत और उपदेश की है। कुछ मुफ़सिरी का क़ौल है कि दीन का मिल कराने के मानी इस्लाम को ग़ालिब करना है, जिसका यह असर है कि हज़जतुल वदाअ में जब यह आयत उतरी, कोई मुश्कि मुसलमानों के साथ हज़ में शरीक न हो सका। एक क़ौल यह भी है कि दीन का पूरा होना यह है कि वह पिछली शरीअतों की तरह स्थगित न होगा और क़यामत तक बाक़ी रहेगा। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो के पास एक यहूदी आया और उसने कहा कि ऐ अमीरुल मुमिनीन, आप की किताब में एक आयत है अगर वह हम यहूदियों पर उतरी होती तो हम उसके उतरने वाले दिन ईद मनाते। फ़रमाया, कौनसी आयत। उसने यही आयत "अलययोमा अकमल्लु लकुम" पढ़ी। आपने फ़रमाया, मैं उस दिन को जानता हूँ जिस दिन यह उतरी थी और इसके उतरने की जगह को भी पहचानता हूँ। वह जगह अरफ़ात की थी और दिन जुमे का। आप की मुराद इससे यह थी कि हमारे लिये वह दिन ईद है। तिरमिज़ी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है, आप ने भी एक यहूदी ने ऐसा ही किया। आपने फ़रमाया कि जिस दिन यह आयत उतरी उस दिन दो ईदें थीं, जुमा और अरफ़ा। इससे मालूम हुआ कि किसी दीनी कामपाबी के दिन को खुशी का दिन मनाया जायज़ और सहाबा से साबित है, वरना हज़रत उमर व इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा साफ़ फ़रमा देते कि जिस दिन कोई खुशी का वाक़िआ हो उसकी यादगार क़ायम करना और उस रोज़ को ईद मानना हम बिदअत जानते हैं। इससे साबित हुआ कि ईद मीलाद मनाया जायज़ है क्योंकि वह अल्लाह की सबसे बड़ी नेमत की यादगार और शुक्र गुज़ारी है।

(१६) मक्कए मुकर्रमा फ़तह फ़रमाकर।

(१७) कि उसके सिवा कोई और दीन कुबूल नहीं।

(१८) मानी ये हैं कि ऊपर हग़म चीज़ों का बयान कर दिया गया है, लेकिन जब ग़ाने पीने की कोई हलाल चीज़ मयसूर हो न आए और भूख़ प्यास की सख़्ती से जान पर बन जाए, उस वक़्त जान बचाव के लिये ज़रूरत भर का ख़ाने पीने की इज़ाज़त है, इस तरह कि गुनाह की तरफ़ मायल न हो यानी ज़रूरत से ज़्यादा न ख़ाए और ज़रूरत उसी क़दर ख़ाने से रफ़ा हो जाती है जिससे जान का ख़तरा जाता रहे।

(१९) जिनकी हुरमत क़ुरआन व हदीस, इज़माअ और क़यास से साबित नहीं हैं। एक क़ौल यह भी है कि तैय्यिवात वो चीज़ें हैं जिनको अरब और पाक तबीअत लोग पसन्द करते हैं और ख़वीस वो चीज़ें हैं जिनसे पाक तबीअत नफ़रत करती हैं। इससे मालूम हुआ कि किसी चीज़ की हुरमत पर दलील न होना भी उसके हलाल होने के लिये काफ़ी है। यह आयत अदी इब्ने हातिम और ज़ैद बिन महलहल के बारे में उतरी जिनका नाम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ज़ैदुल ख़ैर रखा था। इन दोनों साहिबों ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह, हम लोग कुत्ते और बाज़ के ज़रिये से शिकार करते हैं, तो क्या हमारे लिये हलाल है। तो इस पर यह आयत उतरी।

(२०) चाहे वह दरिन्दों में से हो, कुत्ते और चीते जैसे, या शिकारी परिन्दों में से, शिकारे, बाज़, शाहीन वगैरह जैस। जब उन्हें इस तरह सथा लिया जाए कि जो शिकार करें उसमें से न ख़ाएं और जब शिकारी उनको छोड़े तब शिकार पर जाएं, जब बुलाए, वापस आजाएं। ऐसे शिकारी जानवरों की मुअल्लम कहते हैं।

(२१) और खुद उसमें से न ख़ाएं।

(२२) आयत से जो निष्कर्ष निकलता है उसका ख़ुलासा यह है कि जिस शख़्स ने कुत्ता या शिकरा वगैरह कोई शिकारी जानवर शिकार पर छोड़ा तो उसका शिकार कुछ शर्तों से हलाल है (१) शिकारी जानवर मुसलमान का हो और सिखाया हुआ। (२) उसने शिकार को ज़ख़्म लगाकर मारा हो। (३) शिकारी जानवर विस्मिल्लाह अल्लाहो अकबर कहकर छोड़ा गया हो। (४) अगर शिकारी के पास शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो तो उसको विस्मिल्लाह अल्लाहो अकबर कहकर ज़िबह करे। अगर इन शर्तों में से कोई शर्त न पाई

आज तुम्हारे लिये पाक चीज़ें हलाल हुई और किताबियों का खाना^(२३) तुम्हारे लिये हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिये हलाल है और पारसा औरतें मुसलमान^(२४) और पारसा औरतें उनमें से जिनको तुम से पहले किताब मिली जब तुम उन्हें उनके मेहर दो कैद में लाते हुए^(२५) न मस्ती निकालते हुए और न आशना बनाते^(२६) और जो मुसलमान से काफ़िर हो उसका किया धरा सब अकारत गया और वह आखिरत में घाटे वाला है^(२७) ﴿५﴾

दूसरा रूकू

ऐ ईमान वालो जब नमाज़ को खड़े होना चाहो^(१) तो अपना मुंह धोओ और कोहनियों तक हाथ^(२) और सरों का मसह करो^(३) और गद्दों तक पाँव धोओ^(४) और अगर तुम्हें नहाने की हाजत जो तो खूब सुधरे हो लो^(५) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई पेशाब पाखाने से आया या तुमने औरतों से सोहबत की और उन सूरतों में पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मूम करो तों अपने मुंह और हाथों का उससे मसह करो अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर

التَّائِبِينَ

۱۳۹

بِسْمِ اللَّهِ

الْيَوْمَ أَحْلَلْ لَكُمْ الطَّيِّبَاتِ ۚ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ حَلَلٌ لَكُمْ ۖ وَطَعَامُكُمْ حَلَلٌ لَهُمْ ۚ وَالْمُحْصَنَاتُ
مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ مُحْصَيْنِينَ
غَيْرِ مُسْفَحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ ۚ وَمَن يَكْفُرْ
بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِّنَ
الْخُسِرِينَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى
الصَّلَاةِ فَغَسِّلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ
وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ وَإِن
كُنْتُمْ جُنُبًا فَأَطْفِرُوا ۚ وَإِن كُنْتُمْ مَّرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ
سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنْكُم مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ لَسْتُمْ
بِالنِّسَاءِ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا
فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ مِنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ اللَّهُ

مَنْعَ

गई, तो हलाल न होगा. मसलन, अगर शिकारी जानवर मुअल्लम (सिखाया हुआ) न हो या उसने ज़रम न किया हो या शिकार पर छोड़ते वक्त बिस्मिल्लाहे अल्लाहो अकबर न पढ़ा हो या शिकार जिन्दा पहुंचा हो और उसको ज़िवह न किया हो या सधाए हुए शिकारी जानवर के साथ बिना सिखाया हुआ जानवर शिकार में शरीक हो गया हो या ऐसा शिकारी जानवर शरीक हो गया हो जिसको छोड़ते वक्त बिस्मिल्लाहे अल्लाहो अकबर न पढ़ा गया हो या वह शिकारी जानवर मजूसी काफ़िर का हो, इन सब सूरतों में वह शिकार हराम है. तीर से शिकार करने का भी यही हुक्म है, अगर बिस्मिल्लाहे अल्लाहो अकबर कह कर तीर मारा और उससे शिकार ज़रमी हो कर गिर गया तो हलाल है और अगर न मरा तो दोबारा उस को बिस्मिल्लाहे अल्लाहो अकबर पढ़कर फिर से ज़िवह करे. अगर उसपर बिस्मिल्लाह न पड़े या तीर का ज़रम उस को न लगा या जिन्दा पाने के बाद उस को ज़िवह न किया, इन सब सूरतों में हराम है. (२३) याती उन के ज़वीहे. मुसलमान और किताबी का जिन्ह किया हुआ जानवर हलाल है चाहे वह मर्द हो, औरत हो, या बच्चा

- (२४) निकाह करने में औरत का पारसाई का लिहाज़ मुस्तहब है लेकिन निकाह की सहेत के लिए शर्त नहीं.
(२५) निकाह करके.
(२६) नाजायज़ तरीक से मस्ती निकालने से बेधड़क ज़िना करना, और आशना बनाने में छुपवाँ ज़िना मुयद है.
(२७) क्योंकि इस्लाम लाकर उससे फिर जाने से सारे अमल अख़स्त हो जाते हैं.

सूरए माइदा - दूसरा रूकू

(१) और तुम वेवज़ हो तो तुम पर वुज़ फ़र्ज़ है और वुज़ के फ़राइज़ ये चार हैं जो आगे बयान किए जाते हैं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा हज़ नमाज़ के लिए ताज़ा वुज़ करते थे. अगरचे एक वुज़ से भी बहुत सी नमाज़ें, फ़र्ज़ हों या नफ़ल, पढ़ी जा सकती हैं मगर हर नमाज़ के लिए अलग वुज़ करना ज़्यादा वरकत और सवाब दिलाता है. कुछ मुफ़सिरी का कहना है कि इस्लाम की शुरुआत में हर नमाज़ के लिए अलग वुज़ फ़र्ज़ था, बाद में मनसूख़ याती स्थगित किया गया और जबतक हदस बाक़ न हो, एक ही वुज़ से फ़र्ज़ और नफ़ल नमाज़ अदा करना जायज़ हुआ.

- (२) कोहनियों भी धोने के हुक्म में दाख़िल हैं जैसा कि हदीस से साधित है. अकसर उलमा इसी पर हैं.
(३) चौथाई सर का मसह फ़र्ज़ है. यह भिकदार हदीसे मुंगीरा से साधित है और यह हदीस आप्त का बयान है.
(४) यह वुज़ का चौथा फ़र्ज़ है. सही हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कुछ लोगों को पाँव पर मसह करते देखा तो मना फरमाया. और अता से रिवायत है वह कसम खाकर फ़रमाते हैं कि मेरी जानकारी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा में से किसी ने भी वुज़ में पाँव का मसह न किया.

कुछ तंगी रखे, हाँ यह चाहता है कि तुम्हें खूब सुथरा कर दे और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दे कि कहीं तुम एहसान मानो (६) और याद करो अल्लाह का एहसान अपने ऊपर (७) और वह एहद जो उसने तुम से लिया (८) जब कि तुमने कहा हमने सुना और माना (९) और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह दिलों की बात जानता है (१०) ऐ ईमान वालों अल्लाह के हुक्म पर खूब कायम हो जाओ इन्साफ़ के साथ गवाही-देते (११) और तुम को किसी क्रोम की दुश्मनी इसपर न उभारे कि इन्साफ़ न करो, इन्साफ़ करो वह परहेजगारी से ज्यादा करीब है और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है (१२) ईमान वाले नेकी करने वालों से अल्लाह का वादा है कि उनके लिये बख्शिश और बड़ा सवाब है (१३) और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाई, वही दोज़ख़ वाले हैं (१४) ऐ ईमान वालों, अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो जब एक क्रोम ने चाहा कि तुम पर दस्तदराज़ी (अत्याचार) करें तो उसने हाथ तुमपर से रोक दिये (१५)

لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ
وَلِيَبْلِغَ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَاذْكُرُوا
نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الّذِي وَاثَقَكُمْ بِهِ ۖ
إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ يَٰٓأَيُّهَا الّذِينَ آمَنُوا
كُونُوا قَوْمِ اللَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ
شَتَانُ قَوْمٍ عَلَىٰ ٱلَّذِينَ قَدْ ءَامَنُوا ۚ هُوَ أَقْرَبُ
لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝
وَعَدَ اللَّهُ الّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۖ لَهُمْ
مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ يَٰٓأَيُّهَا الّذِينَ
آمَنُوا ۖ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۖ إِذْ هُمْ قَوْمٌ
أَن يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۖ

मज़ल

(५) जनाबत यानी शारीरिक तौर से नापाक हो जाने से पूरी तहास्त लाज़िम होती है। जनाबत कभी जागते में जोश या वासना के साथ वीर्य के निकलने से होती है और कभी नींद में वीर्य निकलने से। जिसके बाद असर पाया जाए। यहाँ तक कि अगर स्नाब याद आया मगर तरीक़ न पाई तो गुस्ल बाजिव न होगा और कभी आगे पीछे की जगहों में लिंग के अगले भाग के दाख़िल किये जाने से काम करने वाले दोनों व्यक्तियों के हक़ में, चाहे वीर्य निकले या न निकले, ये तमाम सूरतें जनाबत (नापाकी) में दाख़िल हैं। इनसे गुस्ल बाजिव हो जाता है। हेज़ (माहवारी) और ज़चगी के बाद की नापाकी से भी गुस्ल बाजिव हो जाता है। माहवारी का मसअला सूरए बक्ररह में गुज़र चुका और ज़चगी की नापाकी का मूजिबे गुस्ल होना इजमाअ से साबित है। तयम्मूम का बयान सूरए निसा में गुज़र चुका।

(६) कि तुम्हें मुसलमान किया।

(७) नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बैअत करते वक़्त अक़बा की रात और बैअते रिज़वान में।

(८) नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का हर हुक्म हर हाल में।

(९) इस तरह कि क़राबत और दुश्मनी का कोई असर तुम्हें इन्साफ़ से न हटा सके।

(१०) यह आयत पुश्ता प्रमाण है इस पर कि दोज़ख़ में दाख़लता सिवाए काफ़िर के और किसी के लिये नहीं।

(११) एक बार नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक मन्ज़िल में क़याम किया। सहाबा अलग अलग दरख़्तों के साए में आराम करने लगे। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी तलवार एक पेड़ में लटका दी। एक अअराबी मौक़ा पाकर आया और छुपकर उसने तलवार ली और तलवार ग्रीच कर हुज़ूर से कहने लगा, ऐ मुहम्मद, तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा। हुज़ूर ने फ़रमाया, अल्लाह। यह फ़रमाया था कि हज़रत जिब्रील ने उसके हाथ से तलवार गिरा दी। नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने तलवार लेकर फ़रमाया कि तुझे मुझसे कौन बचाएगा। कहने लगा, कोई नहीं। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके रसूल हैं। (तफ़सीर अबुस्सऊद)

और अल्लाह से डरो और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये (११)

तीसरा रूकू

और वेशक अल्लाह ने बनी इस्राईल से एहद लिया^(१) और हमने उनमें बारह सरदार कायम किये^(२) और अल्लाह ने फरमाया वेशक मैं^(३) तुम्हारे साथ हूँ ज़रूर अगर तुम नमाज़ कायम रखो और ज़कात दो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उनकी ताज़ीम (आदर) करो और अल्लाह को क़ज़्र हसन दो^(४) वेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिनके नीचे नेहरें बहें फिर उसके बाद जो तुम में से कुफ़्र करे वह ज़रूर सीधी राह से वहका^(५) (१२) तो उनकी कैसी बंद-एहदियों (बचन भंग)^(६) पर हमने उन्हें लानत की और उनके दिल सख़्त कर दिये अल्लाह की बातों को^(७) उनके ठिकानों से बदलते हैं और भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी गई^(८) और तुम हमेशा उनकी एक न एक दगा पर मुत्तला (सूचित) होते रहोगे^(९) सिवा थोड़ों के^(१०) तो उन्हें माफ़ कर दो और उनसे दरगुज़रो (भमा करो)^(११) वेशक एहसान वाले अल्लाह को मेहबूब हैं (१३) और वो जिन्होंने ने दावा किया कि हम नसारा (ईसाई) हैं हमने उनसे

وَأَتَقُوا اللَّهَ دَوْعًا ۖ وَاللَّهُ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝
وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ وَبَعَثْنَا
مِنْهُمْ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا ۖ وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ
لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ
بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا
لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ فِيمَا نَقُصُّهُمْ
مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً
يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ ۖ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا
ذُكِّرُوا بِهِ ۖ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَى خَآئِنَةٍ مِنْهُمْ
إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۚ إِنَّ اللَّهَ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرَكَ

सूरत माइदा - तीसरा रूकू

- (१) कि अल्लाह को इबादत करेंगे, उसके साथ किसी को शरीक न करेंगे. तौरात के आदेशों का पालन करेंगे.
- (२) हर गिरोह पर एक सरदार, जो अपनी क़ौम का ज़िम्मेदार हो कि वो एहद पूरा करेंगे और हुक्म पर चलेंगे.
- (३) मदद और सहायता से.
- (४) यानी उसकी राह में खर्च करो.
- (५) बाकिआ यह था कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से वादा फ़रमाया था कि उन्हें और उनकी क़ौम को पाक सरज़मीन का वारिस बनाएगा जिसमें कनआनी ज़ब्तार यानी अत्याचारी रहते थे . तो फिरऔन क हलाक के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का हुक्म हुआ कि बनी इस्राईल को पाक सरज़मीन को तरफ़ ले जाओ, मैं ने उसको तुम्हारे लिये सुकून की जगह बताया है तो वहाँ जाओ और जो दुश्मन वहाँ हैं उनपर जिहाद करो. मैं तुम्हारी मदद फ़रमाऊंगा . और ये मूसा, तुम अपनी क़ौम के हर हर गिरोह में से एक एक सरदार बनाओ इस तरह बारह सरदार मुक़र्रर करो. हर एक उनमें से अपनी क़ौम के हुक्म मानने और एहद पूरा करने का ज़िम्मेदार हो. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सरदार चुनकर बनी इस्राईल को लेकर रवाना हुए. जब अरीहा के करीब पहुंचे तो जासूसों को हालात का जायज़ा लेने के लिये भेजा. वहाँ उन्होंने देखा कि लोग बहुत लम्बे चौड़े, ताक़तवर, दबदबे और रोब वाले हैं. ये उनसे डर कर वापस आगए और आकर उन्होंने अपनी क़ौम से सारा हाल कहा. जबकि उनको इससे मना किया गया था. लेकिन सब ने एहद तोड़ा. सिवाय कालिब बिन यूकन्ना और यूशअ बिन नून के कि ये एहद पर कायम रहे.
- (६) कि उन्होंने अल्लाह का एहद तोड़ा और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वाद आने वाले नबियों को झुटलाया और क़त्ल किया, किताब के आदेशों की अवहेलना की.
- (७) जिसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तारीफ़ और गुणगान है और जो तौरात में बयान की गई हैं.
- (८) तौरात में, कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अनुकरण करें और उनपर ईमान लाएं.
- (९) क्योंकि दगा और ख़यानत और एहद तोड़ना और नबियों के साथ बदएहदी उनकी और उनके पूर्वजों की पुरानी आदत है.
- (१०) जो ईमान लाएं.
- (११) और जो कुछ उनसे पहले हुआ उसपर पकड़ न करो. कुछ मुफ़र्रिसों का कहना है कि यह आयत उस क़ौम के बारे में उतरी जिन्होंने पहले तो नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से एहद किया फिर तोड़ा. फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उसपर सूचित किया और यह आयत उतारी. उस सूत्र में मानी ये हैं कि उनके इस एहद तोड़ने से दरगुज़र कीजिये जबतक कि वो ज़ंम से रुके रहें और जिज़िया अदा करने से मना न करें.

एहद किया^(१२) तो वो भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी गई^(१३) तो हमने उनके आपस में क़यामत के दिन तक बेर और बुज़ (द्वेष) डाल दिया^(१४) और बहुत जल्द अल्लाह उन्हें बता देगा जो कुछ करते थे^(१५) (१४) ऐ किताब वालों^(१६) वेशक तुम्हारे पास हमारे यह रसूल^(१७) तशरीफ़ लाए कि तुमपर ज़ाहिर फ़रमाते हैं बहुत सी वो चीज़ें जो तुमने किताब में छुपा डाली थीं^(१८) और बहुत सी माफ़ फ़रमाते हैं^(१९) वेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आया^(२०) और रौशन किताब^(२१) (१५) अल्लाह उससे हिदायत देता है उसे जो अल्लाह की मर्जी पर चला सलामती के रास्ते और उन्हें अंधेरियों से रौशनी की तरफ़ ले जाता है अपने हुक्म से और उन्हें सीधी राह दिखाता है (१६) वेशक काफ़िर हुए वो जिन्होंने कहा कि अल्लाह मसीह मरयम का बेटा ही है^(१७) तुम फ़रमा दो फिर अल्लाह का कोई क्या कर सकता है अगर वह चाहे कि हलाक करदे मसीह मरयम के बेटे और उसकी माँ और तमाम ज़मीन वालों को^(१८) और अल्लाह ही के लिये हैं सल्लनत आसमानों और ज़मीन और उनके दरमियान की जो चाहे पैदा करता है और अल्लाह सब कुछ

أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا تِمَتَّا ذِكْرُوا بِهِ فَأَعْرَبْنَا
بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَسَوْفَ
يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝ يٰ أَهْلَ الْكِتَابِ
قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ
تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ ۖ قَدْ جَاءَكُمْ
مِّنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُّبِينٌ ۝ يَهْدِي لِنُورٍ بِهٖ اللَّهُ
مَن اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُمُ
مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ
اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ
مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَن يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ
مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَفَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۚ وَلِلَّهِ
مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ يَخْلُقُ

मज़ल

- (१२) अल्लाह तआला और उसके रसूलों पर ईमान लाने का।
(१३) इन्जील में, और उन्होंने एहद तोड़ा।
(१४) क़तादा ने कहा कि जब ईसाईयों ने अल्लाह की किताब (इन्जील) पर अमल करना छोड़ दिया, और रसूलों की नाफरमानी की, फ़र्ज़ अदा न किये, हुदूद की परवाह न की, तो अल्लाह तआला ने उनके बीच दुश्मनी डाल दी।
(१५) यानी क़यामत के दिन वो अपने चरित्र का बदला पाएँगे।
(१६) यहूदियों और ईसाईयों।
(१७) सैयदे आलम, मुहम्मदे मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम)।
(१८) जैसे कि आपते रज़्म और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के गुण और हुज़ूर का इसका बयान फ़रमाना चमत्कार है।
(१९) और उनका ज़िक्र भी नहीं करते, न उनकी पकड़ करते हैं, क्योंकि आप उसी चीज़ का ज़िक्र फ़रमाते हैं जिसमें मसलिहत हो।
(२०) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नूर फ़रमाया गया क्योंकि आपसे कुफ़्र का अंधरा दूर हुआ और सच्चाई का रास्ता खुला।
(२१) यानी क़ुरआन शरीफ़।
(२२) हज़रत इब्ने अब्बास (रदियल्लाहो अन्हुमा) ने फ़रमाया कि तज़रान के ईसाईयों से यह कथन निकला, और ईसाईयों के याकूबिया व मत्कानिया (सम्राटायों) का यह मज़हब है कि वो हज़रत मसीह को अल्लाह बताते हैं क्योंकि वो हुलूल के कायल हैं और उनका झूठा अक़ीदा यह है कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा के बदन में प्रवेश किया, अल्लाह तआला ने इस आपत में इस अक़ीदे पर कुफ़्र का हुक्म दिया और उनके मज़हब का ग़लत होना बयान फ़रमाया।
(२३) इसका जवाब यही है कि कोई कुछ नहीं कर सकता तो फिर हज़रत मसीह को खुदा बताना कितनी खुली ग़लती है।

कर सकता है (१७) और यहूदी और ईसाई बोले कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं (१८) तुम फरमादो फिर तुम्हें क्यों तुम्हारे गुनाहों पर अज़ाब फरमाता है (१९) बल्कि तुम आदमी हो उसकी मखलूक़ात (सृष्टि) से जिसे चाहे बख़्शता है और जिसे चाहे सज़ा देता है और अल्लाह ही के लिये है सल्तनत आसमानों और ज़मीन और इन के दरमियान की और उसीकी तरफ़ फ़िरना है (२०) ऐ किताब वालो वेशक़ तुम्हारे पास हमारे ये रसूल (२१) तशरीफ़ लाए कि तुमपर हमारे आदेश ज़ाहिर फ़रमाते हैं बाद इसके कि रसूलों का आना मुद्दतों (लम्बे समय तक) बन्द रहा था (२२) कि कभी कहो कि हमारे पास कोई खुशी और डर सुनाने वाला न आया तो ये खुशी और डर सुनाने वाले तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए हैं और अल्लाह को सब कुदरत है (२३)

चौथा स्कू

और जब मूसा ने कहा अपनी क़ौम से ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो कि तुम में से पैग़म्बर किये (१) और तुम्हें वादशाह किया (२) और तुम्हें वह दिया जो आज सारे संसार में किसी को न दिया (३) (२०) ऐ क़ौम उस पाक ज़मीन में दाख़िल हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिखा

مَا يَشَاءُ ۖ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَىٰ نَحْنُ ابْنُؤُا اللّٰهِ وَاجْبًا ۚ وَكَذٰلِكَ قُلْنَا لِمَنْ يَّعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاءُ ۚ وَاللّٰهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَرَالَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فُتُوْرٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْ بَشِيْرٍ وَلَا نَذِيْرٍ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّ نَذِيْرٌ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يُقُوْمُ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلْ فِيْكُمْ اَنْبِيَا ًّ وَجَعَلَكُمْ مَّلُوْكَا ًّ وَاَشْرَكُمْ مَّا لَمْ يُوْنِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ يُقُوْمُ اَدْخُلُوْا الْاَرْضَ الْمُبٰرَكَةَ الَّتِي كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا

(२४) सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास किताब वाले आए और उन्होंने दीन के मामले में आपसे बात चीत शुरू की. आपने उन्हें इस्लाम की दावत दी और अल्लाह की नाफ़रमानी करने से उसके अज़ाब का डर दिलाया तो वो कहने लगे कि ऐ मुहम्मद ! आप हमें क्या डराते हैं ? हम तो अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं. इसपर यह आयत उतरी और उनके इस दावे का ग़लत होना ज़ाहिर फ़रमाया गया.

(२५) यानी इस बात का तुम्हें भी इज़्ज़र है कि गिन्ती के दिन तुम जहन्नम में रहोगे, तो सोचो कोई बाप अपने बेटे की या कोई शख्स अपने प्यारे को आग में जलाता है ? जब ऐसा नहीं, तो तुम्हारे दावे का ग़लत होना तुम्हारे इज़्ज़र से साबित है.

(२६) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(२७) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने तक ५६९ बरस की मुद्दत नबी से ख़ाली रही. इसके बाद हुज़ूर के तशरीफ़ लाने की मिन्नत का इज़हार फ़रमाया जाता है कि निहायत ज़रूरत के वक़्त तुम पर अल्लाह तआला की बड़ी नेमत भेजी गई और अब ये कहने का मौक़ा न रहा कि हमारे पास चेतावनी देने वाले तशरीफ़ न लाए.

सूरए माइदा - चौथा स्कू

(१) इस आयत से मालूम हुआ कि नबियों की तशरीफ़ आवरी नेमत है. और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को उसके ज़िक्र करने का हुक्म दिया कि वह बरक़तों और इनाम का सबब है. इससे मौलाद की मेहफ़िलों के अच्छी और बरक़त वाली होने की सनद मिलती है.

(२) यानी आज़ाद और शान व इज़ज़त वाले होने और फ़िराजियों के हाथों कैद होने के बाद उनकी गुलामी से छुटकारा हासिल करके ऐश व आराम की ज़िन्दगी पाना बड़ी नेमत है. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि बनी इस्राईल में जो ख़ादिम और औस्त और सेवारी रखता, वह मलक़ कहलाया जाता.

(३) जैसे कि दरिया में रास्ता बनाया, दुश्मन को डूबो देना, मत्त और सलवा उतरना, पत्थर से चश्मे जारी करना, बादल को सायबान बनाना वगैरह.

है और पीछे न पलटो^(४) कि नुकसान पर पलटोगे^(२१) बोलें ऐ मूसा उसमें तो बड़े जबरदस्त लोग हैं और हम उसमें हरगिज़ दाखिल न होंगे जबतक वो वहाँ से निकल न जाएँ^(२२) हौं वो वहाँ से निकल जाएँ तो हम वहाँ जाएँ^(२३) दो मर्दाने कि अल्लाह से डरने वालों में से थे^(२४) अल्लाह ने उन्हें नवाज़ा (प्रदान किया)^(२५) बोलें कि ज़बरदस्ती दर्वाज़े में^(२६) उनपर दाखिल हो अगर तुम दर्वाज़े में दाखिल हो जाओगे तो तुम्हारा ही गल्बा है^(२७) और अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है^(२८) बोलें^(२९) ऐ मूसा हम तो वहाँ^(३०) कभी न जाएंगे जबतक वो वहाँ हैं तो आप जाइये और आपका रव, तुम दोनों लड़ो हम यहाँ बैठे हैं^(३१) मूसा ने अर्ज़ की कि ऐ रव मेरे मुझे इख्तियार नहीं मगर अपना और अपने भाई का तो तू हमको उन वेहुकमों से अलग रख^(३२) फ़रमाया तो वह ज़मीन उसपर हराम है^(३३) चालीस बरस तक भटकते फिरें ज़मीन में^(३४) तो तुम उन वेहुकमों का अफ़सोस न खाओ^(३५)

पाँचवां स्कू

और उन्हें पढ़कर सुनाओ आदम के दो बेटों की सच्ची

تَرْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ ۝ قَالَُوا لِيُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ ۚ وَإِنَّا لَكُنْ نَدْخُلُهَا حَتَّىٰ يُخْرِجُوا مِنْهَا ۚ وَإِن يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دُخِلُونَ ۝ قَالَ نَجْلِسُ مِنَ الَّذِينَ يَخْفَوْنَ أَنَعَمْ اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۖ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ عَلَيْهِمُونَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ قَالَُوا لِيُوسَىٰ إِنَّا لَكُنْ نَدْخُلُهَا أَبَدًا مَّا دَامُوا فِيهَا فَادْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي فَافْرِقْ بَيْنَنَا وَقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝ قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۖ يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝ وَآتَلَ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ ۖ

- (४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को अल्लाह की नेमतें याद दिलाने के बाद उनको अपने दुश्मनों पर जिहाद के लिये निकलने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि ऐ क़ौम, पाक सरज़मीन में दाखिल हो जाओ, उस ज़मीन को पाक इंगलिये कहा गया कि वह नवियों की शरती थी, इससे मालूम हुआ कि नवियों के रहने से ज़मीनों को भी इज़ाज़त मिलती है और दूसरों के लिये वह बरकत का कारण होती है, क़त्नबी से मत्कूल है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम लववाने पर्वत पर चढ़े तो आप से कहा गया, देखिये जहाँ तक आपकी नज़र पड़ने वह जगह पाक है, और आपकी ज़रियत की मीमास है, यह सरज़मीन तूर और उसके आसपास की थी और एक क़बूल यह है कि तमाम मुल्क शाम,
- (५) कालिव बिन यूक़्ना और यूशअ बिन तूर जो उन नक़ीबों में से थे जिन्हें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब्बारों का हाल दरियाफ़्त करने के लिये भेजा था,
- (६) हिदायत और एहद पूरा करने के साथ, उन्होंने जब्बारों का हाल सिर्फ़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया और इसको ज़ाहिर न किया, दूसरे नक़ीबों के विपरीत कि उन्होंने ज़ाहिर कर दिया था,
- (७) शहर के,
- (८) क्योंकि अल्लाह तआला ने मदद का वादा किया है और उसका वादा ज़रूर पूरा होना, तुम जब्बारीन के बड़े बड़े ज़िस्मों से मत डरो, हमने उन्हें देखा है, उनके ज़िस्म बड़े हैं और दिल कमज़ोर हैं, उन दोनों ने जब यह क़त्ल तो बनी इस्राईल बहुत क्रुद्ध हुए और उन्होंने चाहा कि उनपर पत्थर बरसाएँ,
- (९) बनी इस्राईल,
- (१०) जब्बारीन के शहर में,
- (११) और हमें उनकी सोहबत और कुर्ब से बचाया, यह मानी कि हमारे उनके बीच फ़ैसला फ़रमाया,
- (१२) उसमें दाखिल न हो सकेंगे,
- (१३) वह ज़मीन जिसमें ये लोग भटकते फिरे, नौ फ़रसंग थी और क़ौम छ लाख जंगी जो अपने सामान लिये तमाम दिन चलते थे, जब शाम होती तो अपने कों वहीं पाते जहाँ से चले थे, यह उनपर उक़ूबत थी सिवाय हज़रत मूसा व हारून व यूशअ व कालिव के, कि उनपर अल्लाह तआला ने आसानी फ़रमाई और उनकी मदद की, जैसा कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिये आग को ठण्डा और सलामती बनाया और इतनी बड़ी जमाअत का इतनी छोटी ज़मीन में चालीस बरस आबारा और हैरान-फिरना और किसी का वहाँ से निकल न सकना, चमत्कारों में से है, जब बनी इस्राईल ने उस जंगल में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से खाने पीने-वस्त्र ज़रूरतों और तकलीफ़ों की शिकायत की तो अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा की दुआ से उनको आसमानी ग़िज़ा मन्ना-सलवा अता फ़रमाया और लिबास खुद उनके बदन पर पैदा किया जो जिस के साथ बढ़ता था और एक सफ़ेद पत्थर तूर पर्वत का इनायत किया कि जब सफ़र से रुकते और कहीं ठहरते तो हज़रत उस पत्थर पर लाठी मारते, इससे बनी इस्राईल के बारह ग़िरोहों के लिये बारह चश्मे जारी हो जाते और साया करने के लिये एक बादल भेजा और तोह में जितने

खबर^(१) जब दोनों ने एक नियाज़ (भेंट) पेश की तो एक की कुबूल हुई और दूसरे की कुबूल न हुई बोला कसम है मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा^(२) कहा अल्लाह उसी से कुबूल करता है जिसे डर है^(३) (२७) बेशक अगर तू अपना हाथ मुझपर बढ़ाएगा कि मुझे क़त्ल करे तो मैं अपना हाथ तुमपर न बढ़ाऊंगा कि तुझे क़त्ल करूं^(४) मैं अल्लाह से डरता हूँ जो मालिक है सारे संसार का (२८) मैं तो यह चाहता हूँ कि मेरा^(५) और तेरा गुनाह^(६) दोनों तेरे ही पल्ले पड़े तो तू दोजखी हो जाए और बेइन्साफ़ों की यही सज़ा है (२९) तो उसके नफ़्स ने उसे भाई के क़त्ल का चाव दिलाया तो उसे क़त्ल कर दिया तो रह गया नुक़सान में^(७) (३०) तो अल्लाह ने एक कौवा भेजा ज़मीन कुरेदता कि उसे दिखाए कैसे अपने भाई की लाश छुपाए^(८) बोला हाय खराबी, मैं इस कौवे जैसा भी न हो सका कि मैं अपने भाई की लाश छुपाता तो पछताता रह गया^(९) (३१) इस सबब से हमने बनी इस्राईल पर लिख दिया कि जिसने

اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقْبِلُ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ
مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ
اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۝ كَيْنَ بَسَطْتَ إِلَى يَدِكَ
لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَنَّكَ
إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝ إِنِّي أُرِيدُ
أَنْ تَبُوَ أَبَائِي وَأُثْبِتُكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ
النَّارِ ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ۝ فَطَوَّعَتْ لَهُ
نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝
فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ
كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ ۚ قَالَ يُوزِلُنِي الْأَغْصَانُ
أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ
أَخِي ۚ فَأَصْبَحَ مِنَ التَّوَّابِينَ ۝ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ
كَتَبْنَا عَلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا

مِثْلًا

लोग दाख़िल हुए थे जिनमें से चौबीस साल से ज्यादा उम्र के थे, सब वहीं मर गए, सिवाय यूशअ बिन नून और कालिब बिन यूक़त्ता के, और जिन लोगों ने पाक सज़ागीन में दाख़िल होने से इन्कार किया उनमें से कोई भी दाख़िल न हो सका और कहा गया है कि तीह में ही हज़रत दाऊद और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात हुई, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात से चालीस बरस बाद हज़रत यूशअ को नबुव्वत अता की गई और ज़बारीन पर ज़िह्द का हुक्म दिया गया, आप बाकी बचे बनी इस्राईल को साथ लेकर गए और ज़बारीन पर ज़िह्द किया,

सुरा माइदा - पाँचवां सूक़

(१) जिनका नाम हाबील और काबील था, इस ख़बर की सुनाने से मक़सद यह है कि हसद की बुग़ाई मालूम हो और सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से हसद करने वालों को इस से सबक़ हासिल करने का मौक़ा मिले, सीरत बौग़ह के उलमा का वयान है कि हज़रत हवा के हमल में एक लड़का एक लड़की पैदा होते थे और एक हमल के लड़के का दूसरे हमल की लड़की के साथ निकाह किया जाता था और जबकि आदमी सिर्फ़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद में सीमित थे, तो निकाह की और कोई विधि ही न थी, इसी तरीक़े के अनुसार हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने काबील का निकाह हव्वा से, जो हाबील के साथ पैदा हुई थी, और हाबील का इक़लीमा से, जो काबील के साथ पैदा हुई थी, करना चाहा, काबील इसपर राज़ी न हुआ और चूँकि इक़लीमा ज्यादा ख़ुबगूरत थी इसलिए उसका तलवगार हुआ, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि वह तेरे साथ पैदा हुई है, इसलिये तेरी बहन है, उसके साथ तेरा निकाह हलाल नहीं है, कहने लगा यह तो आपकी राय है, अल्लाह ने यह हुक्म नहीं दिया, आपने फ़रमाया, जो तुम दोनों कुरबानीयाँ लाओ जिसकी कुरबानी कुबूल हो जाए वही इक़लीमा का हक़दार है, उस ज़माने में जो कुरबानी मक़बूल होती थी, आसमान से एक आग़ उतरकर उसको खा लिया करती थी, काबील ने एक बोरी गेहूँ और हाबील ने एक बकरी कुरबानी के लिये पेश की, आसमानी आग़ ने हाबील की कुरबानी को ले लिया और काबील के गेहूँ छोड़ गई, इसपर काबील के दिन में बहुत जलन और हसद पैदा हुआ

(२) जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हज़ के लिये मक़र्रमा तशरीफ़ ले गए तो काबील ने हाबील से कहा, मैं तुझको क़त्ल करूँगा, हाबील ने कहा क्यों ? कहने लगा, इसलिये कि तेरी कुरबानी कुबूल हुई, मेरी न हुई और तू इक़लीमा का हक़दार ठहरा, इसमें मेरी ज़िल्लत है,

(३) हाबील के इस कहने का यह मतलब है कि कुरबानी का कुबूल फ़रमाते अल्लाह का काम है, वह परहेज़गारों की कुरबानी कुबूल फ़रमाता है, तू परहेज़गार होता तो तेरी कुरबानी कुबूल होती, यह झुठे तेरे कर्मों का नतीजा है, इसमें मेरा क्या दख़ल है,

(४) और मेरी तरफ़ से शुरुआत हो जबकि मैं तुझ से ज्यादा मज़बूत और ताक़त वाला हूँ, यह सिर्फ़ इसलिये है कि...

(५) यानी मुझे क़त्ल करने का,

(६) जो इससे पहले तूने किया कि वालिद की नाफ़रमानी की, हसद किया और अल्लाह के फ़ैसले को न माना,

कोई जान क़त्ल की बग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद किये^(१०) तो जैसे उसने सब लोगों को क़त्ल किया^(११) और जिसने एक जान को जिला लिया उसने जैसे सब लोगों को जिला लिया^(१२) और वेशक उनके^(१३) पास हमारे रसूल रौशन दलीलों के साथ आए^(१४) फिर वेशक उनमें बहुत उसके बाद ज़मीन में ज़ियादती करने वाले हैं^(१५) (३२) वो कि अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते^(१६) और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं उनका बदला यही है कि गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं या सुली दिये जाएं या उनके एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटे जाएं या ज़मीन से दूर कर दिये जाएं, यह दुनिया में उनकी रूस्वाई है और आख़िरत में उनके लिये बड़ा अज़ाब^(३३) मगर वो जिन्होंने तौबह करली इससे पहले कि तुम उनपर काबू पाओ^(१७) तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरवान है^(३४)

छटा रूकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और उसकी तरफ़ वसीला ढूँडो^(१) और उसकी राह में जिहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह (भलाई) पाओ^(२५)

يَغْيِرْ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ
النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا
النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولُنَا بِالْبَيِّنَاتِ
ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ
لَكُسُفُونَ ۝ إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا
أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِّنْ
خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ
جِزَاؤُهُ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَنْ تَقْرَأُوا
عَلَيْهِمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَفُوٌّ رَّحِيمٌ ۝ يَأَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ
وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ إِنَّ

مَنْ

- (७) और परेशानी में पड़ा कि इस लाश को क्या करे क्योंकि उस वक़्त तक कोई इन्सान मरा ही न था, एक मुद्दत तक लाश को पीठ पर लादे फिरा।
- (८) रिवायत है कि दो कौए आपस में लड़े उनमें से एक ने दूसरे को मार डाला फिर ज़िन्दा कौए ने अपनी चोंच से ज़मीन कुद कर गढ़ा किया, उसमें मरे हुए कौए को डाल कर मिट्टी से दबा दिया, यह देखकर क़ाबील को मालूम हुआ कि लाश को दफन करना चाहिये, चुनांचे उसने ज़मीन खोद कर दफन कर दिया, (जलालीन, मदारिक वगैरह)
- (९) अपनी नादानी और परेशानी पर, और यह शर्मिन्दगी गुनाह पर न थी कि तौबह में शुमार हो सकती या शर्मिन्दगी का तौबह होना सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत के साथ ख़ास हो, (मदारिक)।
- (१०) यानी ताहक ख़ून किया कि न तो मक्कतूल को किसी ख़ून के बदले क्रियास के तौर पर मारा न शिर्क व कुफ़्र या क़ानून तोड़ने वगैरह किसी सज़ा ज़ुर्म के कारण मारा।
- (११) क्योंकि उसने अल्लाह तआला की रियायत और शरीअत की हदों का लिहाज़ न रखा।
- (१२) इस तरह कि क़त्ल होने या डूबने या जलाने जैसे हलाकत के कारणों से बचाया।
- (१३) यानी बनी इस्राईल के।
- (१४) ख़ुल चमत्कार भी लाए और अल्लाह के एहक़ाम और शरीअत भी।
- (१५) कि कुफ़्र और क़त्ल वगैरह ज़ुर्म करके सीमाओं का उल्लंघन करते हैं।
- (१६) अल्लाह तआला से लड़ना यही है कि उसके वलियों से दुश्मनी करे जैसे कि हंदीस शरीफ़ में आया, इस आयत में डाकुओं की सज़ा का बयान है, सन ६ हिजरी में अरीना के कुछ लोग मदीनए तय्यिबह आकर इस्लाम लाए और बीमार हो गए, उनके रंग पीले हो गए, पेट बढ़ गए, हुज़ूर ने हुक्म दिया कि सक्क के ऊंटों का दूध और पंशाव मिला कर पिया करें, ऐसा करने से वो तन्दुरुस्त हो गए, अच्छे होकर वो मुर्तद हो गए और पन्द्रह ऊंट लेकर अपने वतन को चलते बने, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनकी तलाश में हज़रत यसार को भेजा, उन लोगों ने उनके हाथ पाँव काटे और तकलीफ़ देकर उन्हें शहीद कर डाला, फिर जब ये लोग हुज़ूर की ख़िदमत में गिरफ़्तार करके हाज़िर किये गए तो उनके बारे में यह आयत उतरी, (तफ़सीर अहमदी)
- (१७) यानी गिरफ़्तारी से पहले तौबह करलाने से वह आख़िरत के अज़ाब और डकैती की सज़ा से तो बच जाएंगे मगर माल की वापसी और क्रियास बन्दों का हक़ है, यह बाक़ी रहेगा, (तफ़सीर अहमदी)

सूरए माइदा - छटा रूकू

- (१) जिसकी बदौलत तुम्हें उसका कुर्ब हासिल हो।

बेशक वो जो काफिर हुए जो कुछ जमीन में है सब और उसकी बराबर और अगर उनकी मिल्क हो कि उसे देकर क़यामत के अज़ाब से अपनी जान छुड़ाए तो उनसे न किया जाएगा और उनके लिये दुख का अज़ाब है^(२) (३६) दोज़ाब से निकलना चाहेंगे और वो उससे न निकलेंगे और उनको दवामी (स्थायी) सज़ा है (३७) और जो मर्द या औरत चोर हो^(३) तो उनके हाथ काटो^(४) उनके किये का बदला अल्लाह की तरफ़ से सज़ा और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (३८) तो जो अपने जुल्म के बाद तौब करे और संवर जाए तो अल्लाह अपनी मेहर (अनुकम्पा) से उसपर रूजू करमाएगा^(५) बेशक अल्लाह वख़्शने वाला मेहरवान है (३९) क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह के लिये है आसमानों और जमीन की बादशाही, सज़ा देता है जिसे चाहे और वख़्शता है जिसे चाहे और अल्लाह सब कुछ कर सकता है^(६) (४०) ऐ रसूल तुम्हें शमगीन (दुखी) न करें वो जो कुफ़्र पर दीड़ते हैं^(७) जो कुछ वो अपने मुंह से कहते हैं हम ईमान लाए और उनके दिल

الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا
وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
مَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ بَرِيدُونَ
أَنْ يُخْرِجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا لَهُمْ بِخُرُوجِهَا مِنْهَا
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ
فَقُطِعُوا أَيْدِيُهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا ۝ مِنَ
اللَّهِ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ
ظُلُمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ
عَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ
لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَا أَيُّهَا
الرَّسُولُ لَا يَحْزَنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ
مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ

- (२) यानी काफ़िरों के लिये अज़ाब लाज़िम है और इससे रिहाई पाने का कोई रास्ता नहीं है।
- (३) और उसकी चोरी दोबार के इकरार या दो मर्दों की शहादत (गवाही) से हक्म के सामने साबित हो और जो माल चुराया है, दस दरहम से कम का न हो, (इन्हे मसज्द की हदीस)
- (४) यानी दायाँ, इसलिये कि हज़रत इब्ने मसज्द रदियल्लाहो अन्हो की क़िरात में "एमानुहमा" आया है, पहली बार की चोरी में दायाँ हाथ काट जायगा, फिर दावारा अगर करे तो बायाँ पाँव, उसके बाद भी अगर चोरी करे, तो कैद किया जाए, यहाँ तक कि तौब कर, चोर का हाथ काटना तो बाज़िव है और चोरी गया माल मौजूद हो तो उसका वापस करना भी बाज़िव और अगर वह ज़ाय हो गया हो तो ज़मान (मुआवज़ा) बाज़िव नहीं (तफ़सीर अहमदी)।
- (५) और आख़िरत के अज़ाब से उसको निजात देगा।
- (६) इससे मालूम हुआ कि अज़ाब करना और रहमत फ़रमाना अल्लाह तआला की मज़ी पर है, वह मालिक है, जो चाहे करे, किसी का ऐतिराज़ की हिम्मत नहीं, इससे नूदगिया और मोअतज़िला सम्प्रदायों की काट हो गई जो फ़रमाँवरदार पर रहमत और गुनहगार पर अज़ाब करना अल्लाह तआला पर बाज़िव कहते हैं।
- (७) अल्लाह तआला सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को 'या अय्युहर रसूल' के इज़्ज़त वाले सम्बोधन के साथ मुख़ातब फ़रमाकर आपकी तस्कीन फ़रमाता है कि ऐ हबीब, मैं आपका सददगार और सहायक हूँ, मुनाफ़िकों के कुफ़्र में जल्दी करने यानी उनके कुफ़्र जाहिर करने और काफ़िरों के साथ दोस्ती और सहयोग करने से आप दुखी न हों।

मुसलमान नहीं^(८) और कुछ यहूदी झूठ खूब सुनते हैं^(९) और लोगों की खूब सुनते हैं^(१०) जो तुम्हारे पास हाज़िर न हुए अल्लाह की बातों को उनके ठिकानों के बाद बदल देते हैं कहते हैं यह हुक्म तुम्हें मिले तो मानो और यह न मिले तो बचो^(११) और जिसे अल्लाह गुमराह करना चाहे तो हरगिज़ तू अल्लाह से उसका कुछ बना न सकेगा वो है कि अल्लाह ने उनका दिल पाक करना न चाहा उन्हें दुनिया में रूखाई है और आखिरत में बड़ा अज़ाब^(४१) बड़े झूठ सुनने वाले, वड़े हरामखोर^(१२) तो अगर तुम्हारे हज़ूर हाज़िर हों^(१३) तो उनमें फैसला फ़रमाओ या उनसे मुंह फेर लो^(१४) और अगर तुम उनसे मुंह फेर लोगे तो वो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे^(१५) और अगर उनमें फैसला फ़रमाओ तो इन्साफ़ से फैसला करो वेशक इन्साफ़ वाले अल्लाह को पसन्द हैं^(४२) और वो तुम से किस तरह फैसला चाहेंगे हालांकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है^(१६) फिर भी

قُلُوبُهُمْ ۚ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۖ سَمْعُونَ
لِلْكَذِبِ سَمْعُونَ لِقَوْمٍ آخَرِينَ ۖ لَمْ يَأْتُواكَ
بِحَزْمٍ مِّنَ الْقَوْلِ مِن بَعْدِ مَوَاضِعِهِ ۚ يَقُولُونَ
إِنْ أَوْتَيْنَا هَٰذَا فَخُذُوا ۚ وَإِنْ لَّمْ تَأْتُوا
فَاخْذُوا ۚ وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ ۖ فَكُن مِّنْ بَلَدٍ
لَّهُ ۖ مِنَ اللَّهِ شَيْءٌ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ
اللَّهُ أَن يُطَهِّرْ قُلُوبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖ
وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ سَمْعُونَ
لِلْكَذِبِ أَكْثُونَ لِلْصَّحَابِ ۖ فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُمْ
بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ
فَكُن يَصْطَرُّوكَ شَيْئًا ۚ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ
بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ وَكَيْفَ
يُحْكُمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ

مَزَل

(८) यह उनकी दोस्तली प्रवृत्ति का बयान है।

(९) अपने सरदारों से और उनकी झूठी बातों को कुत्तल करते हैं।

(१०) माशाअल्लाह, आलाहज़रत रहमतुल्लाह अलैह ने बहुत सही अनुवाद फ़रमाया। इस जगह आम मुफ़ससों और अनुवादकों से मालती हुई कि उन्होंने आपन के ये मानी बयान किये कि मुनाफ़िक और यहूदी अपने सरदारों की झूठी बातें सुनते हैं। आपकी बातें दूसरी क़ौम की ख़ातिर काव धर कर सुनते हैं जिसके वो जासूस हैं। मगर ये मानी सही नहीं हैं और कुरआन का अन्दाज़ इससे बिल्कुल मेल नहीं खाता। यहाँ मुराद यह है कि ये लोग अपने सरदारों की झूठी बातें खूब सुनते हैं और लोगों यात्री ख़ैबर के यहूदियों की बातों को खूब मानते हैं जिनके अहवाल का आपन में बयान आ रहा है। (तफ़सीर अद्वयसुद्द, जुमल)

(११) ख़ैबर के यहूदियों के शर्ग़ोशों में से एक विवाहित मर्द और विवाहित औरत ने ज़िना किया। इसकी सज़ा तौरात में संगसार करना थी। यह उन्हें ग़वारा न था, इसलिये उन्होंने चाहा कि इस मुक़दम का फैसला हुज़ूर सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से कराए। चुनांचे इन दोनों मुजरिमों को एक जमाअत के साथ मदीनए तैय्यिबह भेजा और कह दिया कि अगर हुज़ूर हद का हुक्म दें तो मान लेना और संगसार करने का हुक्म दें तो मत मानना। वो लोग बनी कुरैज़ा और बनी नुज़र के यहूदियों के पास आए और ख़याल किया कि ये हुज़ूर के हम-बतन हैं और उनके साथ आपकी सुलह भी है, उनकी सिफ़ारिश से काम चल जायेगा। चुनांचे यहूदियों के सरदारों में से कअब बिन अग़रफ़ व कअब बिन असद व सईद बिन अग्र व मालिक बिन सैफ़ व किनाता बिन अबिलहक़ीक़ वग़ैरह, उन्हें लेकर हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मसअला दरियाफ़्त किया। हुज़ूर ने फ़रमाया क्या मंग फ़ैसला मानोगे ? उन्होंने इक्करा किया। और तब आपने रज़्ज उतरी और संगसार करने का हुक्म दिया गया। यहूदियों ने इस हुक्म को मानने से इन्कार किया। हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम में एक ज़वान गोरा क़ाना फ़िदफ़ का रहने वाला इब्ने सूरिया नाम का है, तुम उससे जानते हो कहे लगे हैं। फ़रमाया वह कैसा आदमी है। कहने लगे कि आज़ धरती पर यहूदियों में उसकी टक्कर का आलिम नहीं। तौरात का अकेला आलिम है। फ़रमाया उसको बुलाओ। चुनांचे बुलाया गया। जब वह हाज़िर हुआ तो हुज़ूर ने फ़रमाया, यहूदियों में सबसे बड़ा आलिम तू ही है ? अर्ज़ किया लोग तो ऐसा ही कहते हैं। हुज़ूर ने यहूदों से फ़रमाया, इस मामले में इसकी बात मानोगे ? सब ने इक्कार किया। तब हुज़ूर ने इब्ने सूरिया से फ़रमाया, मैं तुझ अल्लाह की क़सम देता हूँ जिसके सिवा कोई मअवूद नहीं, जिसने हज़रत मूसा पर तौरात उतारी और तुम लोगों को मिस्र से निकाला, तुम्हारे लिये दरिया में रास्ते बनाए, तुम्हें निजात दी, फिरऔनियों को डूबाया, तुम्हारे लिये बादल को सायबान बनाया, मन्न व सलवा उतारा, अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई जिसमें हलाल हराम का बयान है। क्या तुम्हारी किताब में ब्याह मर्द व औरत के लिये संगसार करने का हुक्म है। इब्ने सूरिया ने अर्ज़ किया, वेशक़ है, उसीकी क़सम जिसका आपने मुझसे ज़िक्र किया। अज़ाब नाज़िल होना का डर न होता तो मैं इक्कार न करता और झूठ बोल देता मगर यह फ़रमाइये कि आपकी किताब में इसका क्या हुक्म है। फ़रमाया जब चार सच्चे और भरोसे वाले ग़वाहों की ग़वाही से खुले तौर पर ज़िना साबित हो जाए तो संगसार करना बाज़िब हो जाता है। इब्ने सूरिया ने अर्ज़ किया अल्लाह की क़सम ऐसा ही तौरात में है, फिर हुज़ूर ने इब्ने सूरिया से दरियाफ़्त फ़रमाया कि अल्लाह के हुक्म में तबदीली किस तरह बाक़

उसी से मुंह फेरते हैं^(१२) और वो ईमान लाने वाले नहीं^(१३)।

सातवाँ स्कू

बेशक हमने तौरात उतारी उसमें हिदायत और नूर है उसके मुताबिक यहूद को हुक्म देते थे हमारे फ़रमाँबरदार नबी और आलिम और फ़कीह (धर्मशास्त्री) कि उनसे अल्लाह की किताब की हिफ़ाज़त चाही गई थी^(१४) और वो उसपर गवाह थे तो^(१५) लोगों से न डरो और मुझसे डरो और मेरी आयतों के बदले जलील क़ीमत न लो^(१६) और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे^(१७) वही लोग काफ़िर हैं^(१८) और हमने तौरात में उनपर वाजिब किया^(१९) कि जान के बदले जान^(२०) और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और ज़ख़्मों में बदला है^(२१) फिर जो दिल की खुशी से बदला करा दे तो वह उसका गुनाह उतार देगा^(२२) और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे तो वही लोग ज़ालिम हैं^(२३) और हम उन नबियों के पीछे उनके निशाने क़दम (पदचिन्ह) पर ईसा मरयम के बेटे

الْكَافِرُونَ

१५९

سورة النور

ثُمَّ يَكُونُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢﴾
إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ يَحْكُمُ
بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَا دُوا
وَالرَّبِّيُّونَ وَالْأَخْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ
اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ
وَاحْشَوْا اللَّهَ وَلَا تَتَّبِعُوا بِآيَاتِي تَمَنَّا قَلِيلًا
وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْكَاذِبُونَ ﴿١٣﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ
بِالنَّفْسِ ۖ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ ۖ وَالْأَنفَ بِالْأَنفِ
وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ ۖ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۖ وَالْجُرُومَ
قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ۚ
وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الظَّالِمُونَ ﴿١٤﴾ وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ

مَرْيَمَ

हुई, उसने अर्ज किया कि हमारा दस्तूर यह था कि हम किसी शरीफ़ को पकड़ते तो छाड़ देते और गरीब आदमी पर हद कायम करते, इस तरह शरीफ़ों में ज़िना बहुत बढ़ गया, यहाँ तक कि एक बार बादशाह के चचाज़ाद भाई ने ज़िना किया तो हमने उसको संगसार न किया, फिर एक दूसरे शस्त्र ने अपनी क़ौम की औसत से ज़िना किया तो बादशाह ने उसको संगसार करना चाहा, उसकी क़ौम उठ खड़ी हुई और उन्होंने कहा कि जबतक बादशाह के भाई को संगसार न किया जाए उस वक़्त तक इसकी हरगिज़ संगसार न किया जाएगा, तब हमने जमा होकर गरीब शरीफ़ सबके लिये संगसार करने के बजाय यह सज़ा निकाली कि चालीस कोड़े मारे जाएँ और मुँह काला करके गंधे पर उलटा बिठाकर घुमाया जाए, यह सुनकर यहूदी बहुत बिगड़े और इन्हे सूरिया से कहने लगे, तूने हज़रत को बड़ी जल्दी ख़बर दे दी और हमने जितनी तेरी तारीफ़ की थी, तू उसका हक़दार नहीं, इन्हे सूरिया ने कहा कि हुज़ूर ने मुझे तौरात की क़सम दिलाई, अगर मुझे अज़ाब के नाज़िल होने का डर न होता तो मैं आपको ख़बर न देता, इसके बाद हुज़ूर के हुक्म से उन दोनों ज़िना करने वालों को संगसार किया गया, और यह आयत उतरी (स्त्राज़िन)।

(१२) यह यहूदियों के हाकिमों के बारे में है जो रिश्वत लेकर हराम को हलाल करते और शरीअत के हुक्म बदल देते थे, रिश्वत का लेना देना दोनों हराम हैं, हदीस शरीफ़ में रिश्वत लेने देने वाले दोनों पर लअवत आई है।

(१३) यानी किताब वाले,

(१४) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को इज़्तियार दिया गया कि किताब वाले आपके पास कोई मुक़दमा लाएं तो आपको इज़्तियार है, फ़ैसला फ़रमाएं या न फ़रमाएं,

(१५) क्योंकि अल्लाह तआला आपको निगहबान है,

(१६) कि बिबाहित मर्द और शाहरदार औरत के ज़िना की सज़ा रज़्म यानी संगसार करना है,

(१७) इसके बावज़ूद कि तौरात पर ईमान लाने के दावेदार भी हैं और उन्हें यह भी मालूम है कि तौरात में संगसार का हुक्म है, उसको न मानना और आपकी नबुवत के इन्कार होते हुए भी आपसे फ़ैसला चाहना अत्यन्त आश्चर्य की बात है,

सूरए माइदा - सातवाँ स्कू

(१) कि इसको अपने सीनों में मेहफूज़ रखें और इसके पाठ में लगें ताकि वह किताब भुलाई न जाए और उसके आदेश ज़ाया न हों, (स्त्राज़िन), तौरात के मुताबिक नबियों का हुक्म देना जो इस आयत में आया है उससे साबित होता है कि हम से पहली शरीअतों के जो अहक़ाम अल्लाह और रसूल ने बयात फ़रमाए हों और उनके छोड़ने का हमें हुक्म न दिया हो, स्थगित न किये गए हों, वो हमपर लाज़िम होते हैं, (जुमल व अवससन्द)

(२) ऐ यहूदियो, तुम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की प्रशंसा और विशेषताओं और रज़्म का हुक्म जो तौरात में आया है, उसके ज़ाहिर करने में,

को लाए, तस्दीक (पुष्टि) करता हुआ तौरात की जो उससे पहले थी^(१) और हमने उसे इंजील दी जिसमें हिदायत और नूर है और तस्दीक फरमाती है तौरात की कि उससे पहले थे और हिदायत^(२) और नसीहत परहेजगारों को^(३) ॥४६॥ और चाहिये कि इंजील वाले हुक्म करें उसपर जो अल्लाह ने उसमें उतारा^(४) और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करें तो वही लोग फासिक (दुराचारी) हैं^(५) ॥४७॥ और ऐ मेहबूब हमने तुम्हारी तरफ सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक फरमाती^(६) और उनपर मुहफिज़ और गवाह तो उनमें फ़ैसला करो अल्लाह के उतारे से^(७) और ऐ सुनने वाले उनकी ख्वाहिशों की पैरवी न करना अपने पास आया हुआ हक (सत्य) छोड़कर, हमने तुम सबके लिये एक एक शरीअत और रास्ता रखा^(८) और अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही उम्मत कर देता मगर मंज़ूर यह है कि जो कुछ तुम्हें दिया उसमें तुम्हें आजमाए^(९) तो भलाईयों की तरफ़ सबकत (पहल करो) चाहो तुम सबका फिरना अल्लाह ही की तरफ़ है तो वह तुम्हें बता देगा जिस बात में तुम झगड़ते थे^(१०) ॥४८॥ और यह कि ऐ मुसलमान

مَرِّمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ
وَإِنِّي أَنزِلُ فِيهِ هُدًى وَنُورًا وَمُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً
لِّلْمُتَّقِينَ ۝ وَلِيَحْكُمَ أَهْلَ الْإِنجِيلِ بِمَا أَنزَلَ
اللَّهُ فِيهِ ۝ وَمَن لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَ
مُهَيِّمًا عَلَيْهِ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ
وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۚ لِكُلِّ
جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِن لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا
آتَاكُم فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ وَإِن أَحْكَمُ

مَنْزِلٌ

- (२) यानी अल्लाह के आदेशों में डेर फेर हर सूत बना है, चाहे लोगों के डर और उनकी नाराज़ी के अन्देश से हो, या माल दौलत और शान व शौकत के लालच से।
- (४) - इसका इन्कारी होकर।
- (५) इस आयत में अगरचे यह बयान है कि तौरात में यहूदियों पर क्रियास के ये अहकाम थे लेकिन चूंकि हमें उनके छोड़ देने का हुक्म नहीं दिया गया इसलिये हम पर ये अहकाम लाज़िम रहेंगे, क्योंकि पिछली शरीअतों के जो अहकाम श्रुत व रसूल के बयान से हम तक पहुंच और स्थिति न हुए हों वो हमपर लाज़िम हुआ करते हैं जैसा कि ऊपर की आयत से साबित हुआ।
- (६) यानी अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया तो उसकी जान मक़तूल के बदले में ली जाग़ी चाहे वह मक़तूल मर्द हो या औरत, आज़ाद हो या गुलाम, मुस्लिम हो या ज़िम्मी, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि मर्द का औरत के बदले क़त्ल न करते थे, इसपर यह आयत उतरी। (मदरिफ़)
- (७) यानी एक सा होने और वसूरी की रिआयत ज़रूरी है।
- (८) यानी जो क़ातिल या ज़नायत करने वाला अपने ज़ुर्म पर शर्मिन्दा होकर गुनाहों के बदले से बचने के लिये खुशी से अपने ऊपर शरीअत का हुक्म जारी कराए तो क्रियास उसके ज़ुर्म का कफ़ारा हो जाएगा और आख़िरत में उसपर अज़ाब न होगा। (जलालैन व जुमल)। कुछ मुफ़सिरों ने इसके ये मानी बयान किये हैं कि जो हक़ वाला क्रियास (खून के ताबाद) को माफ़ करदे तो यह माफ़ी उसकी लिये कफ़ारा है। (मदरिफ़)। तफ़सीर अहमदी में है, यह तमाम क्रियास जब ही होंगे जब कि हक़ वाला माफ़ न करे और अगर वह माफ़ करदे तो क्रियास साफ़ित हो जाएगा।
- (९) तौरात के अहकाम के बयान के बाद इंजील के अहकाम का ज़िक्र शुरू हुआ और बताया गया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तौरात की तस्दीक फ़रमाने वाले थे कि वह अल्लाह की तरफ़ से उतरी और स्थगन से पहले इसपर अमल बाज़िव था। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शरीअत में इसके कुछ अहकाम स्थगित हुए।
- (१०) इस आयत में इंजील के लिये लफ़्ज़ “हुदन” (हिदायत) दो जगह इशारा हुआ, पहली जगह गुमराही व जिहालत से बचाने के लिये रहनुमाई मुराद है, दूसरी जगह “हुदन” से नबियों के सरदार अल्लाह के हदीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी की बशारत मुराद है जो हुज़ूर अलैहिस्सलामों वममलाम की नुबुवत की तरफ़ लोगों की राहयावी का सबब है।
- (११) यानी नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने और आपकी नुबुवत की तस्दीक करने का हुक्म।
- (१२) जो इससे पहले नबियों पर उतरी।
- (१३) यानी जब किताब वाले अपने मुक़दमे आपके पास लाएं तो आप कुरआने पाक से फ़ैसला फ़रमाएं।
- (१४) यानी व्यवहार और कर्म हर एक के ख़ास है और असल दोन सबका एक हज़रत अली मुर्तज़ा रदीयल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि ईमान हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से यही है कि “ला इलाहा इल्लल्लाह” की शहादत और जो अल्लाह तआला की तरफ़ से आया है उसका

अल्लाह के उतारे पर हुक्म कर और उनकी इच्छाओं पर न चल और उनसे बचता रह कि कहीं तुझे लगज़िश (डगमगा) न दे दें किसी हुक्म में जो तेरी तरफ़ उतरा फिर अगर वो मुह फेरें^(१६) तो जान लो कि अल्लाह उनके कुछ गुनाहों की^(१७) सज़ा उनको पहुंचाता है^(१८) और देशक बहुत आदमी वेहुक्म^(१९) हैं तो क्या जाहिलियत (अज्ञानता) का हुक्म चाहते हैं^(२०) और अल्लाह से बेहतर किसका हुक्म यकीन वालों के लिये^(२०)...

आठवाँ रूकू

ऐ ईमान वाले यहूदियों और ईसाइयों को दोस्त न बनाओ^(१) वो आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं^(२) और तुम में जो कोई उनसे दोस्ती रखेगा तो वह उन्हीं में से है^(३) बेशक अल्लाह वे इन्साफ़ों को राह नहीं देता^(४) ॥ ५१ ॥ अब तुम उन्हें देखो जिनके दिलों में आज़ार है^(५) कि यहूद और नसारा (ईसाई) की तरफ़ दौड़ते हैं और कहते हैं हम डरते हैं कि हमपर कोई गर्दिश (मुसीबत) आजाए^(६) तो ज़नबीक है कि अल्लाह फ़तह (विजय) लाए^(७) या अपनी तरफ़ से कोई हुक्म^(८) फिर उसपर जो अपने दिलों में छुपाया था^(९)

الْحَمْدُ لِلّٰهِ

१५१

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

بَيَّنَّهُمْ بِمَا أُنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ
وَأَحْذَرُهُمْ أَنْ يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا أُنْزَلَ اللَّهُ
إِلَيْكَ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَاغْلَمْ ۖ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ
أَنْ يُضَيِّبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ ۚ وَإِنْ كَثِيرًا مِّنَ
النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ۝ فَحُكْمُ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ
وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَةَ
أَوْلِيَاءَ ۚ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ
فَإِنَّهُ مِنْهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ۝ فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ
يُّسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَى أَنْ تُصِيبَنَا
دَآئِرَةٌ ۖ فَعَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ
مِّنْ عِنْدِهِ فَيُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسْرَوْا فِي أَنْفُسِهِمْ

مَنْزِل

इक़रार करना और शरीअत व तरीका हर उम्मत का ख़ास है।

(१५) और इम्तिहान में डाले ताकि ज़ाहिर होजाए कि हर ज़माने के मुनासिब जो अहक़ाम दिये, क्या तुम उनपर इस यकीन और अक़ीदे के साथ अमल करते हो कि उनका विरोध अल्लाह तआला की मर्ज़ी से हिक्मत और दुनिया व आख़िरत की लाभदायक मसलहतों पर आधारित है या सत्य को छोड़कर नफ़स के बहकाने का अनुकरण करते हो। (तफ़सीर अबुसज्द)

(१६) अल्लाह के उतारे हुए हुक्म से।

(१७) जिन में यह एंगराज़ यानी अवज़ा भी है।

(१८) दुनिया में क़त्ल व गिरफ़्तारी और ज़िला-बतवी के साथ और तमाम गुनाहों की सज़ा आख़िरत में देगा।

(१९) जो सरदार गुमराही और जुल्म और अल्लाह के अहक़ाम के विरुद्ध जाता था। बनी नुज़ैर और बनी कु़रैज़ा यहूदियों के दो क़बीले थे, उनमें आपस में एक दूसरे का क़त्ल होता रहता था, जब सैयद आलम मल्लल्लाहो अलैह वसल्लम मदीना तैय्यिबह तशरीफ़ लाए तो ये लोग अपना मुक़दमा हुज़ुर की ख़िदमत में लाए और बनी कु़रैज़ा ने कहा कि बनी नुज़ैर हमारे भाई हैं। हम वो एक ही दावा की औलाद हैं, एक दीन रखते हैं, एक किताब (तौरात) मानते हैं, लेकिन अगर बनी नुज़ैर हम में से किसी का क़त्ल करें तो उसके तावान में हम सत्तर वसक खज़ूर देते हैं, और अगर हममें से कोई उनके किसी आदमी को क़त्ल करे तो हमसे उसके बदले में एक सौ चालीस वसक लेते हैं। आप इसका फ़ैसला फ़रमा दें। हुज़ुर ने फ़रमाया, मैं हुक्म देता हूँ कि कु़रैज़ा वालों और नुज़ैर वालों का ख़ून बराबर है। किसी को दूसरे पर बरतरी नहीं। इसपर बनी नुज़ैर बहुत नाराज़ हुए और कहने लगे हम आपके फ़ैसले से सज़ी नहीं हैं, आप हमारा दुश्मन हैं, हम ज़लील करना चाहते हैं। इस पर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि क्या जाहिलियत की गुमराही और जुल्म का हुक्म चाहते हैं।

सुरए माइदा - आठवाँ रूकू

(१) इस आयत में यहूदियों और ईसाईयों के साथ दोस्ती और सहयोग यानी उनकी मदद करना, उनसे मदद चाहना, उनके साथ महबूब के रिश्ते रखना, मना फ़रमाया गया। यह हुक्म आम है अगरचें आपस किसी ख़ास घटना के मौक़े पर उतरी हो। यह आयत हज़रत इबादा बिन स़ामित सहाबी और अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के बारे में उतरी जो मुनाफ़िक्कों का सरदार था। हज़रत इबादा रदियल्लाहो अहो ने फ़रमाया कि यहूदियों में मेरे बहुत से दोस्त हैं जो बड़ी शाल वाले, बड़ी ताक़त वाले हैं, अब मैं उनकी दोस्ती से बेज़ार हूँ, और अल्लाह व रसूल के सिवा मर दिल में ओर किसी की महबूब की गुंजायश नहीं। इसपर अब्दुल्लाह बिन उबई ने कहा कि मैं तो यहूदियों की दोस्ती से बेज़ारी नहीं कर सकता, मुझे पेश आने वाले हादसों का डर है, और मुझे उनके साथ सहाय्य रखनी ज़रूरी है। हुज़ुर सैयद आलम मल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने उससे फ़रमाया कि यहूदियों की दोस्ती का दम भरना तेरा ही काम है, इबादा का यह काम नहीं। इसपर यह आयत उतरी। (ख़ाज़िर)

पछताते रह जाएँ (५:२) और (१०) ईमान वाले कहते हैं क्या यही हैं जिन्होंने अल्लाह की कसम खाई थी अपने हलफ में पूरी कोशिश से कि वो तुम्हारे साथ हैं, उनका किया धरा सब अकारत गया तो रह गए नुकसान में (११) (५:३) ऐ ईमान वाले तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा (१२) तो बहुत जल्द अल्लाह ऐसे लोग लाएगा कि वो अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उनका प्यारा, मुसलमानों पर नर्म और काफिरों पर सख्त अल्लाह की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत (भर्त्सना) करने वाले की मलामत का अन्देशा (भय) न करेंगे (१३) यह अल्लाह का फज़ल है जिसे चाहे दे। और अल्लाह बुरात वाला इल्म वाला है (५:४) तुम्हारे दोस्त नहीं मगर अल्लाह और उसका रसूल और ईमान वाले (१४) कि नमाज़ कायम रखते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए हैं (१५) (५:५) और जो अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों को अपना दोस्त बनाए तो वेशक अल्लाह ही का दल गालिव है (५:६)

لَا يُبَيِّنُ ۖ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهَؤُلَاءِ
الَّذِينَ آفَسُوا بِاللهِ جَهْدَ آيْمَانِهِمْ ۖ إِنَّهُمْ
لَمَعَكُمْ حَبِطَتْ أَعْيَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَسِرِينَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ
فَسَوْفَ يَأْتِي اللهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ ۖ
أُولَئِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۖ
يَجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ وَلَا يَخَافُونَ
لَوْمَةً لَئِيمَةً ۚ ذَلِكَ فَضْلُ اللهِ يُؤْتِيهِ مَنْ
يَشَاءُ ۚ وَاللهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللهُ
وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ
وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ۝ وَمَنْ يَتَوَلَّ
اللهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ
اللهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

मज़ल

(२) इससे मालूम हुआ कि काफिर कोई भी हों, उनमें आपस में कितनी ही इस्त्रिलाफ हों, मुसलमानों के मुक़ाबले में वो सब एक हैं “अल कुफ़ो उम्मतुन वाहिदतुन” (मदारीक)

(३) इसमें बहुत सख्ती और ताक़ीद है कि मुसलमानों पर यहूदियों और ईसाइयों और इस्लाम के हर विरोधी से अलग रहना वाजिब है (मदारीक व श्राज़िन)

(४) जो काफिरों से दोगली करके अपनी जानों पर जुल्म करते हैं, हज़रत अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहो अन्हो का क़ातिब ईसाई था, हज़रत अमीरुल मुमिनीन उमर रदियल्लाहो अन्हो ने उनसे फ़रमाया कि ईसाई से क्या वास्ता, तुमने यह आयत नहीं सुनी, “या अय्युहल्लज़ीना आमतु ला तत्तख़िज़ुल यहूद” (ऐ ईमान वाले, यहूदियों और ईसाइयों को दोस्त न बनाओ- सूरए मायदह, आयत ५१)। उन्होंने अज़ किया, उसका दीन उसके साथ, मुझे तो उसकी किताबत से मतलब है। अमीरुल मुमिनीन ने फ़रमाया कि अल्लाह ने उन्हें ज़लील किया तुम उन्हें इज़्ज़त न दो, अल्लाह ने उन्हें दूर किया, तुम उन्हें करीब न करो। हज़रत अबू मूसा ने अज़ किया कि दौरे उसके बसरा की हुक्मत का काम चलाना कठिन है, यानी इस ज़रूरत से, मजबूरी से उसको ख़्वा है कि इस योग्यता का दूसरा आदमी मुसलमानों में नहीं मिलत। इस पर अमीरुल मुमिनीन ने फ़रमाया, ईसाई मर गया वस्सलाम, यानी फ़र्ज़ करो कि वह मर गया, उस वक़्त जो इन्तिज़ाम करेंगे वही अब करें और उसमें हसीज़ काम न लो, यह आख़िरी बात है (श्राज़िन)

(५) यानी दोगली प्रवृत्ति

(६) जैसा कि अब्दुल्लाह बिन उवई मुनाफ़िक ने कहा।

(७) और अपने रसूल मुहम्मदे मुस्तफ़ि सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को विजयी और कामयाब करे और उनके दीन का तमाम दीनों पर ग़ालिव करे और मुसलमानों को उनके दुश्मन यहूदियों और ईसाइयों वगैरह काफिरों पर ग़ालिब दे, चुनावें यह ख़बर सच्ची मानित हुई और अल्लाह तआला के करम से मक्का मुक़र्रमा और यहूदियों के इलाक़े फ़तह हुए (श्राज़िन वगैरह)

(८) जैसे कि सरज़मीन हिजाज़ को यहूदियों से पाक करना और वहाँ उनका नामा निशान बाकी न रखना या मुनाफ़िकों के राज़ ख़ोल कर उन्हें ख़्वा करना (श्राज़िन व ज़लालेन)

(९) यानी दोगली प्रवृत्ति या ऐसी प्रवृत्ति रखने वालों का यह ख़याल कि सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुक़ाबले में कामयाब न होंगे।

(१०) मुनाफ़िकों का पदों ख़ुलने पर

(११) कि दुनिया में ज़लील व ख़्वा हुए और आख़िरत में हमेशा के अज़ाब के सज़ाबार

(१२) काफिरों के साथ दोगली और सहयोग बेदोनी और अधर्म के बराबर है, इसके मना किये जान के बाद अधर्मियों का त्रिक फ़रमाया, और मुनंद हान से पहले लोगों के दीन से फिर जान कर ख़बर दो, चुनावें यह ख़बर सच हुई और बहुत लोग दीन से फिरे

नवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी खेल बना लिया है^(१) वो जो तुमसे पहले किताव दिये गए और काफिर^(२) उनमें किसी को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरते रहो अगर ईमान रखते हो^(३) और जब तुम नमाज़ के लिये अज़ान दो तो उसे हंसी खेल बनाते हैं^(४) यह इसलिये कि वो निरे बेअकल लोग हैं^(५) तुम फ़रमाओ ऐ कितावियो तुम्हें हमारा क्या बुरा लगा यही न कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उसपर जो हमारी तरफ़ उतरा और उसपर जो पहले उतरा^(६) और यह कि तुम में अक्सर बेहुकम हैं^(७) तुम फ़रमाओ क्या मैं बता दूँ जो अल्लाह के यहाँ इससे बदतर दर्जे में हैं^(८) वो जिनपर अल्लाह ने लअनत की और उनपर ग़ज़ब फ़रमाया और उनमें से कर दिया वन्दर और सुअर^(९) और शैतान के पुजारी उनका ठिकाना ज़्यादा बुरा है^(१०) और ये सीधी राह से ज़्यादा बहके^(११) और जब तुम्हारे पास आए^(१२) तो कहते हैं कि हम मुसलमान हैं और वो आते वक़्त भी काफ़िर थे और

لَا تَتَّخِذُوا الدِّينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُؤًا وَ
لَعِبًا مِّنَ الدِّينِ أَوْتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ
وَالْكَفَّارَ أَوْلِيَاءَ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِذَا نَادَيْتُم إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا
هُزُؤًا وَلَعِبًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۝
قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقِبُونَ مَثَآئِلَ
أَن أَمَّا بِاللهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ
مِّن قَبْلُ ۚ وَإِنَّ أَكْثَرَكُمْ فٰسِقُونَ ۝ قُلْ هَلْ
أَنبَيْتُكُمْ بِشَيْءٍ مِّنْ ذَلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ ۚ
مَنْ لَعَنَهُ اللَّهُ وَعَصْبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمْ
الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ ۚ أُولَٰئِكَ
سَرْمَكَنًا ۖ وَأَضَلُّ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝ وَ
إِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكَفْرِ

مَثَلُ

(१३) यह सिफ़्त जिनकी है वो कौन हैं, इसमें कई क़ौल हैं, हज़रत अली मुस्तज़ा व हमन व क़नादा ने कहा कि ये लोग हज़रत अबूवक्र और उनके साथी हैं, जिनको ने नबीय क़राम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद मुर्तद होने और ज़क़ान से इक़ारी होने वालों पर जिहाद किया, अयाज़ बिन ग़नम अशअरी से रिवायत है कि जब यह आयत उतरी, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अबू मुसा अशअरी की निरबत फ़रमाया कि यह उनकी क़ौम है, एक क़ौल यह है कि ये लोग यमन निवासी हैं जिनकी तारीफ़ बुख़ारी और मुस्लिम शरीफ़ की हदीसों में आई है, सदी का क़ौल है कि ये लोग अन्धारे हैं जिनको रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत की और इन क़ौलों में कुछ विरोध नहीं क्योंकि इन सब हज़रत में ये गुण होना सही हैं।

(१४) जिनके साथ सहयोग हराम है, उनका ज़िक्र फ़रमाने के बाद उनका बयान फ़रमाया जिनके साथ सहयोग बाजिब है, हज़रत जाविर सदीयल्लाहो अल्लो ने फ़रमाया कि यह आयत हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम के हक़ में नाज़िल हुई, उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, हमारी क़ौम बुनैज़ा और नुज़ैर ने हमें छोड़ दिया और क़रम ख़ाली कि वो हमारे साथ हम-नशीरी न करेंगे, इसपर यह आयत उतरी तो अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा हम राज़ी हैं अल्लाह के सब ख़ौन पर, इसक़ रसूल के नबी होने पर, मुमिनीन के दोस्त होने पर और आयत का हुक़म सारे ईमान वालों के लिये आम है, सब एक दूसरे के दोस्त और प्यारे हैं।

(१५) वाक्य “बहुम राकिज़” (समक्ष झुके हुए हैं) दो वजह रखता है, एक यह कि पहले जुमलों पर मअतूफ़ हो, दूसरी यह कि हाल वाक़े हो, पहली वजह सबसे ज़ाहिर और मज़बूत है, और आलाहज़रत मुहम्मदसे बंगलरी रहमतुल्लाह अलैहे का अनुवाद भी इसी के मुताबिक़ है, दूसरी वजह पर दो पहलू हैं, एक यह कि “युक्कीयूना व यूतूना” दोनों क्रियाओं के कर्ताओं से हाल वाक़े हुआ, उस सूत में मानी ये होंगे कि वह पूरी एकाग्रता और दिल की गहराई से नमाज़ क़ायम करते और ज़क़त देते हैं, (तफ़सीर अबूसऊद), दूसरा पहलू यह है कि सिर्फ़ “यूतूना” के कर्ता से हाल वाक़े हुआ, उस सूत में मानी ये होंगे कि नमाज़ क़ायम करते हैं और चिनमता के साथ ज़क़त देते हैं, (जुमल) कुछ का कहना है कि यह आयत हज़रत अली मुस्तज़ा सदीयल्लाहो अल्लो की शान में है कि आपने नमाज़ में सवाल करने वाले को अंगूठी-सदका दी थी, वह अंगूठी आपकी उंगली में ढीली थी, आसानी से एक ही बार में निकल गई, लेकिन इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने तफ़सीर क़बीर में इसका मज़ही से रद किया है और इसके ग़लत होने के कई कारण बताए हैं।

सूरए माइदा - नवाँ रूकू

(१) रफ़ाआ बिन ज़ैद और सबीद बिन हारिस दोनों इस्लाम ज़ाहिर करने के बाद मुनाफ़िक़ हो गए, कुछ मुसलमान उनसे महबूत रखते थे, अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और बताया कि ज़बान से इस्लाम ज़ाहिर करना और दिल में कुफ़्र छुपाए रखना, दीन को हंसी खेल बनाना है।

जाते वक्त भी काफिर और अल्लाह खूब जानता है जो छुपा रहे हैं (६१) और उन (११) में तुम बहुतों को देखोगे कि गुनाह और ज़ियादती और हरामखोरी पर दौड़ते हैं (६२) वेशक बहुत ही बुरे काम करते हैं (६३) इन्हें क्यों नहीं मना करते उनके पादरी, और दवेश गुनाह की बात कहने और हराम खाने से वेशक बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं (१३) (६३) और यहूदी बोले अल्लाह का हाथ बांधा हुआ है (१४) उनके हाथ बांधे जाएं (१५) और उनपर इस कहने से लअनत है बल्कि उसके हाथ कुशादा हैं (१६) अता फरमाता है जैसे चाहे (१७) और ऐ महबूब ये (१८) जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा उससे उनमें बहुतों को शरारत और कुछ कुफ़्र में तरक्की होगी (१९) और वर डाल दिया (२०) जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है (२१) और ज़मीन में फ़साद के लिये दौड़ते फिरते हैं और अल्लाह फ़सादियों को नहीं चाहता (६४) और अगर किताब वाले ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो ज़रूर हम उनके

وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ۝ وَتَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يَسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْبِهِمُ الشُّحْتُ لَيْسَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبُّنِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْبِهِمُ الشُّحْتُ لَيْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَعْلُومَةٌ ۖ عَلَتْ أَيْدِيَهُمْ وَلَعَنُوا بِمَا قَالُوا بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ وَالْقَلِيلُ بَلِيَهُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكُنَّا عَنْهُمْ

مَرْحُومِينَ

- (२) यानी मूर्तिपूजक मुश्किलों का किताब वालों से भी बुरे हैं. (स्वार्जित)
- (३) क्योंकि खुदा के दुश्मनों के साथ दोस्ती करना ईमान बाने का काम नहीं.
- (४) कलबी का कौल है कि जब रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुअज़्ज़ित समाज के लिये अज्ञान कहता और मुसलमान उन्ते तो यहूदी संगत और टट्टा करते. इसपर यह आयत उतरी. सदी का कहना है कि मदीना तैयिबह में जब मुअज़्ज़ित अज्ञान में "अशहदा अन ला इलाहा इल्लल्लाह" और "अशहदा अन्ना मुहम्मद रसूलुल्लाह" कहता तो एक यहूदी यह कहा करता कि ज़न जाग़ झुटा. एक रात उसका श्रादिम आग लाया, वह और उसके घर के लोग सो रहे थे. आग से एक चिंगारी उड़ी और वह यहूदी और उसके घर के लोग और सारा घर जल गया.
- (५) जो ऐसी बुरी और त्रिहालत की बातें करते हैं. इस आयत से मालूम हुआ कि अज्ञान कुुरआनी आयत से भी साबित है.
- (६) यहूदियों की एक जमाअत ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरियाफ्त किया कि आप नबियों में से किस का मानते हैं, इस सवाल से उनका मतलब यह था कि आप हज़रत ईसा को न मानें तो वो आप पर ईमान ले आएं. लेकिन हुज़ुर ने इसके जवाब में फ़रमाया कि मैं अल्लाह पर ईमान रखता हूँ और जो उसने हम पर उतारा और जो हज़रत इब्राहीम व इस्माईल व इसहाक व याक़ूब और उनकी औलाद पर उतारा और जो हज़रत मूसा व ईसा को दिया गया यानी तीरात और इंजोल और जो और नबियों को उनके रब की तरफ़ से दिया गया. ग़व को मानता हूँ. हम नबियों में फ़र्क़ नहीं करते कि किसी को मानें और किसी को न मानें. जब उन्हें मालूम हुआ कि आप हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की नबुवत को भी मानते हैं तो वो आपकी नबुवत का इन्कार कर बैठे और कहने लगे जो ईसा को मानें, हम उसपर ईमान न लाएंगे. इसपर यह आयत उतरी.
- (७) कि इस सच्चे दीन वालों को तो तुम सिर्फ़ अपनी दुश्मनी ही से दुरा कहते हो और तुमपर अल्लाह नआला ने लअनत की है और ग़ज़ब फ़रमाया और आयत में जो बयान है, वह तुम्हारा हाल हुआ तो बदतर दर्जे में तो तुम खुद हो, कुछ दिल में सोचो.
- (८) मूर्तों बिगाड़ के.
- (९) और वह ज़हन्नम है.
- (१०) यह आयत यहूदियों की एक जमाअत के बारे में उतरी जिन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की स्प्रिदमत में हाज़िर होकर अपने ईमान और मद्बत का इज़हार किया और कुफ़्र और गुमराही छुपाई. अल्लाह नआला ने यह आयत उतार कर अपने हदीथ सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनके हाल की शरकर दी.
- (११) यानी यहूदी.
- (१२) गुनाह हर बुराई और नाफ़रमानी को शामिल है. कुछ मुफ़सिरी का कहना है कि गुनाह से तीरात के मज़मून का पढ़ना और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जो विशेषताएं और गुण हैं उनको छुपाना और ज़ियादती से तीरात के अन्दर अपनी तफ़्फ़ से कुछ पढ़ा

गुनाह उतार देते और ज़रूर उन्हें चैन के वागों में ले जाते (६५) और अगर वो क़ायम रखते तौरात और इंजील (२३) और जो कुछ उनकी तरफ़ उनके रब की तरफ़ से उतरा (२३) तो उन्हें रिज़क मिलता है ऊपर से और उनके पांव के नीचे से (२४) उनमें कोई गिरोह (दल) अगर ऐतिदाल (संतुलन) पर है (२५) और उनमें अक्सर बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं (२६) (६६)

दसवाँ स्कू

ऐ रसूल पहुंचा दो जो कुछ उतरा तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ़ से (१) और ऐसा न हो तो तुम ने उसका पयाम (संदेश) न पहुंचाया और अल्लाह तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से (२) वेशक अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता (६७) तुम फ़रमा दो ऐ किताब वालो तुम कुछ भी नहीं हो (३) जबतक न क़ायम करो तौरात और इंजील और जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा (४) और वेशक ऐ मेहबूब वह जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा उस से उनमें बहुतों को शरारत और कुफ़्र की ओर तरक्की होगी (५) तो तुम काफ़िरों का कुछ ग़म न खाओ (६८) वेशक वो जो अपने आपको मुसलमान कहते हैं (६) और इसी तरह यहूदी और सितारों को पूजने वाले और ईसाई, इनमें जो कोई

سَيَاتِرِهِمْ وَلَا دَخَلَهُمْ جَنَّتِ الْعَالَمِينَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ
أَقَامُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ
مِّن رَّبِّهِمْ لَا كُفَرُوا مِنْ قَوْمِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ
مِنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ سَاءَ مَا
يَعْمَلُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ
مِّن رَّبِّكَ ۚ وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَغْتَ رِسَالَتَهُ
وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۚ إِنِ اللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ كَسْتُمْ عَلَى
شَيْءٍ حَتَّى تُؤْمِنُوا بِالْتَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَمَا أُنْزِلَ
إِلَيْكُمْ مِّن رَّبِّكُمْ ۚ وَلَكِن يَذَّكَّرُ أَكْثَرُ مِنْهُمْ ۚ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ إِنِ الَّذِينَ آمَنُوا
وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئُونَ وَالنَّصَارَىٰ مِمَّنْ آمَنَ

مَنْ

देना और हरामखोरी से सिखाने का यह मुगद है. (स्वाज़िन)

(१३) कि लोगों को गुनाहों और बुरे कामों से नहीं रोक्ते. इससे मालूम हुआ कि जलमा पर नसीहत और दुगई से रोकना बाजिब है, और जो शस्त्र बुरी बात से मना करने को छोड़े, और दुगई के इन्कार से रुक्न रहे, वह गुनाह करने वाले जैसा है.

(१४) यानी मआज़ल्लाह वह बरखील यानी कंज़ूस है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाह अन्हुमा ने फ़रमाया कि यहूदी बहुत खुशहाल और काफ़ी मालदार थे. जब उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झूटलाया और विरोध किया तो उनकी राज़ी कम हो गई. उस वक़्त एक यहूदी ने कहा कि अल्लाह का हाथ बांधा है, यानी मआज़ल्लाह वह रिज़क देने और ख़र्च करने में कंज़ूसी करता है. उनके इस कहने पर किसी यहूदी ने मना न किया बल्कि राज़ी रहे, इसीलिए यह सबक कहा हुआ ख़ार दिया गया और यह आयत उनके बार में उतरी.

(१५) तंगी और दादो-दहिश से. इस इशाराद का यह असर हुआ कि यहूदी दुनिया में सबसे ज़्यादा कंज़ूस हो गए या ये मानी हैं कि उनके हाथ जहन्नम में बांधे जाएं और इसतरह उन्हें दोज़ख़ की आग में डाला जाए, उनकी इस बहदा बात और गुफ़्तारों की सज़ा में.

(१६) वह सख़ावत वाला और करम वाला है.

(१७) अपनी हिकमत के अनुसार, इसमें किसी को ऐतिराज़ की मजाल नहीं.

(१८) कुरआन शरीफ़.

(१९) यानी जितना कुरआन पाक उतरता जाएगा उतना हम्द और दुस्मनी बढ़ती जाएगी और वो उसके साथ कुफ़्र और सरकशी में बढ़ते रहेंगे.

(२०) वो हमेशा आपस में अलग अलग रहेंगे और उनके दिल कभी न मिलेंगे.

(२१) और उनकी मदद नहीं फ़रमाता, वह ज़लील होता है.

(२२) इस तरह कि तबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने और आपकी फ़रमावशकारी करने कि तौरात व इंजील में इसका हुक्म दिया गया है.

(२३) यानी तमाम किताबें जो अल्लाह तआला ने अपने रसूलों पर उतारीं, सबमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ज़िक्र और आप पर ईमान लाने का हुक्म है.

(२४) यानी रिज़क की बहुतायत होती और हर तरफ़ से पहुंचता. इस आयत से मालूम हुआ कि दीन की पाबन्दी और अल्लाह तआला की फ़रमावशकारी से रिज़क में विसार होता है.

(२५) हद से आगे नहीं जाता, ये यहूदियों में से बा लोग हैं जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए.

(२६) जो कुफ़्र पर ज़म हुआ है.

सच्चे दिल से अल्लाह और क्रयामत पर ईमान लाए और अच्छे काम करे तो उनपर न कुछ डर है और न कुछ गम (६९) वेशक हमने वनी इस्राईल से एहद लिया (७०) और उनकी तरफ रसूल भेजे जब कभी उनके पास कोई रसूल वह बात लेकर आया जो उनके नफ्स की ख्वाहिश न थी (७१) एक दिल को झुटलाया और एक दिल को शहीद करते हैं (७२) और इस गुमान में हैं कि कोई सज़ा न होगी (७३) तो अंधे और बेहरे होगे (७४) फिर अल्लाह ने उनकी तौबह कुबूल की (७५) फिर उनमें बहुतेरे अंधे और बेहरे होगे और अल्लाह उनके काम देख रहा है (७६) वेशक काफिर हैं वो जो कहते हैं कि अल्लाह वही मसीह मरयम का बेटा है (७७) और मसीह ने तो यह कहा था ऐ वनी इस्राईल अल्लाह की वन्दगी करो जो मेरा रब (७८) है और तुम्हारा रब वेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो अल्लाह ने उसपर ज़न्नत हारम करदी और उसका ठिकाना दोज़ख है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (७९) वेशक काफिर हैं वो जो कहते हैं

بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَارْسَلْنَا إِلَيْهِمْ رَسُولًا قُلْنَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى أَنْفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ۝ وَحَسِبُوا أَنَّ تَكُونَ فِتْنَةً فَتَبُونَا وَصَبُّوا ثَمًّا ۝ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَبُّوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ ۝ وَابْتَصَرْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ۝ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۝ وَقَالَ الْمَسِيحُ يَبْنِي إِسْرَءِيلَ يَلْعَبُ ۝ وَابْعُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۝ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ

مَثَلٌ

सूरए माइदा - दसवां स्कू

- (१) और कुछ अन्देशा न करो।
- (२) यानी काफ़िरो से जो आपके क़त्ल का इरादा रखते हैं, सफ़रों में रात को हुज़ुर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का पहरा दिया जाता था, जब यह आयत उतरी, पहरा हटा दिया गया और हुज़ुर ने पहरेदारों से फ़रमाया कि तुम लोग चले जाओ, अल्लाह तआला ने मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाई।
- (३) किसी दीन व मिल्लत में नहीं।
- (४) यानी कुरआने पाक इन किताबों में सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बात और आप पर ईमान लाने का हुक्म है, जब तक हुज़ुर पर ईमान न लाएं, तौरात व इन्जील के अनुकरण का दावा सही नहीं हो सकता।
- (५) क्योंकि जितना कुरआने पाक उतरता जाएगा, यं मफ़्फ़र दुश्मनी से इसके इन्कार में और सन्नती करते जाएंगे।
- (६) और दिन में ईमान नहीं रखते, मुनाफ़िक़ हैं।
- (७) तौरात में, कि अल्लाह तआला और उसके रसूलों पर ईमान लाएं और अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ अमल करें।
- (८) और उन्होंने नबियों के आदेशों को शरहते इन्जिओं के ख़िलाफ़ पाया तो उनमें से।
- (९) नबियों को झुटलाने में तो यहूदी और ईसाई सब शरीक़ हैं मगर क़त्ल करना, यह ख़ास यहूदियों का काम है, उन्होंने बहुत से नबियों का शहीद किया जिनमें से हज़रत ज़करिया और हज़रत यहा अलैहुमसलाम भी हैं।
- (१०) और ऐसे सन्न जुमों पर भी अज़ाब न किया जाएगा।
- (११) सल्लवाई को देखने और सुनने से, यह उनकी असीम अज्ञानता और अत्यन्त कुफ़्र और सत्य कुबूल करदे से बिल्कुल ही मुँह फेर लेने का वयान है।
- (१२) जब उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद तौबह की उसके बाद दोआया।
- (१३) ईसाइयों का कई समुदाय है उनमें से याक़ूबिया और मल्कानिया का यह कहना था कि मरयम ने मअवूद जना और यह भी कहते थे कि मअवूद ने ईसा की ज़ात में प्रवेश किया और वह उनके साथ एक हो गया तो ईसा मअवूद हो गए।
- (१४) और मैं उसका बन्दा हूँ, मअवूद नहीं।

अल्लाह तीन खुदाओं में का तीसरा है^(१५) और खुदा तो नहीं मगर एक खुदा^(१६) और अगर अपनी बात से बाज न आए^(१७) तो जो उनमें काफिर मरेंगे उनको जरूर दर्दनाक अज्ञाव पहुंचेगा^(१८) तो क्यों नहीं रूजू करते अल्लाह की तरफ और उससे वख्शीश मांगते और अल्लाह वख्शने वाला मेहरवान^(१९) मसीह मरयम का बेटा नहीं मगर एक रसूल^(२०) उससे पहले बहुत रसूल हो गुजरे^(२१) और उसकी माँ सिद्दीका (सच्ची) है^(२२) दोनों खाना खाते थे^(२३) देखो तो हम कैसी साफ़ निशानियां इनके लिये बयान करते हैं फिर देखो वो कैसे आँध जाते हैं^(२४) तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हो जो तुम्हारे नुक़सान का मालिक न नफ़ा का^(२५) और अल्लाह ही सुनता जानता है^(२६) तुम फ़रमाओ ऐ किताब वालो अपने दीन में नाहक़ ज़ियादती न करो^(२७) और ऐसे लोगों की ख्वाहिश पर न चलो^(२८) जो पहले गुमराह हो चुके और बहुतों को गुमराह किया और सीधी राह से वहक गए^(२९)

الْبَيْتُ

१९८

سُورَةُ

ثَلَاثَةٌ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا إِلَهُ وَاحِدٌ وَإِنْ لَمْ يَدْنِهِمْ عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ أَفَلَا يَتَتَوَبُّونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لَهُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۚ كَانَا يَأْكُلَنِ الطَّعَامَ ۚ أَنْظِرْ كَيْفَ تُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ أَنْظِرْ أَتَى يُؤْفَكُونَ ۝ قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِنْ قَبْلُ وَ أَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝

منزل

(१५) यह क़ौल ईसाइयों के सम्प्रदाय मरक़सिया व नस्रुरिया का है। अक्सर मुफ़सिरी का क़ौल है कि इसमें उनकी मूराद यह थी कि अल्लाह और मरयम और ईसा तीनों इलाह हैं और इलाह होना इन सब में मुश्तरक है। मुत्फलिमीन फ़रमाते हैं कि ईसाई कहते हैं कि बाप, बेटा, रूहुलकुदुस, ये तीनों एक इलाह हैं।

(१६) न उसका कोई सानी न सानिभ। वह वहदानियत के साथ मौसूफ़ है, उसका कोई शरीक नहीं। बाप, बेटे, दीवी, राखसे पाक।

(१७) और त्रिमूर्ति के मानने वाला रहे; तौहीद इस्तिघार न की।

(१८) उनको मअबूद मानना ग़लत, नातिल और कुफ़्र है।

(१९) वो भी चमत्कार रखते थे। ये चमत्कार उनके सच्चे नबी होने की दलील थे। इसी तरह हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम भी रसूल हैं, उनके चमत्कार भी उनकी नबुव्वत के प्रमाण हैं, उन्हें रसूल ही मानना चाहिये, जैसे और नबियों को चमत्कार पर ख़ुदा नहीं मानते, उनका भी ख़ुदा न मानो।

(२०) जो अपने सब के क़निमान और उसकी किताबों की तस्दीक़ करने वाली हैं।

(२१) इसमें ईसाइयों का रद है कि इलाह यानी मअबूद ग़िज़ा का मोहताज नहीं हो सकता, तो जो ग़िज़ा ग्राम, जिस्म रखे, उस जिस्म में तबदली हो, ग़िज़ा उसका बदल वने, वह कैसे मअबूद हो सकता है।

(२२) यह शिर्क के नातिल होने की एक और दलील है। इसका ख़ुलासा यह है कि मअबूद (जिसकी पूजा की जा सके) वही हो सकता है जो नफ़ा नुक़सान वग़ैरह हर चीज़ पर ज़ाती कुदरत और इस्तिघार रखता हो। जो ऐसा न हो, वह इलाह यानी पूजनीय नहीं हो सकता और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नफ़ा नुक़सान के अपनी ज़ात से मालिक न थे, अल्लाह तआला के मालिक करने से मालिक हुए, तो उनकी निरखत अल्लाह होने का अक़ीदा नातिल है। (तफ़सीर अबूसज्द)

(२३) यहूदियों की ज़ियादती तो यह कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की नबुव्वत ही नहीं मानते और ईसाइयों की ज़ियादती यह कि उन्हें मअबूद ठहराते हैं।

(२४) यानी अपने अधर्मों बाप दादा वग़ैरह की।

ग्यारहवाँ स्कू

लअनत किये गए वो जिन्होंने कुफ्र किया बनी इस्राईल में दाऊद और ईसा मरयम के बेटे की ज़वान पर^(१) ये^(२) बदला उनकी नाफरमानी और सरकशी का^(३) जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे^(४) उनमें तुम बहुतों को देखोगे कि काफिरों से दोस्ती करते हैं क्या ही बुरी चीज़ अपने लिये खुद आगे भेजी यह कि अल्लाह का उनपर गज़व (प्रकोप) हुआ और वो अज़ाब में हमेशा रहेंगे^(५) और अगर वो ईमान लाते^(६) अल्लाह और उन नबी पर और उसपर जो उन की तरफ उतरा तो काफिरों से दोस्ती न करते^(७) मगर उन में तो बहुतेरे फ़ासिक (दुरचारी) हैं^(८) ज़रूर तुम मुसलमानों का सबसे बड़कर दुश्मन यहूदियों और मुश्रिकों को पाओगे और ज़रूर तुम मुसलमानों की दोस्ती में सबसे ज़्यादा क़रीब उनको पाओगे जो कहते थे हम नसारा (ईसाई) हैं^(९) यह इसलिये कि उनमें आलिम और दर्वेश (महात्मा) हैं और ये घमण्ड नहीं करते^(१०)

لِإِنِّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَى لِسَانِ
دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا
يَعْتَدُونَ ۝ كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ
فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ تَرَى كَثِيرًا
مِنْهُمْ يَقُولُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ
لَهُمْ أَنفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ
هُمُ خَالِدُونَ ۝ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوا لَهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ
كَثِيرًا مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ
عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا
وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَضُرُّكَ ۖ ذَلِكَ يَكُ مِنْهُمْ
فَتَنَاسِيْنَ وَرَهْبَانًا ۖ وَآلَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝

منزل

सूरए माइदा - ग्यारहवाँ स्कू

(१) ईला के रहने वालों ने जब सीमा का उल्लंघन किया और सतीचर के दिन शिफार न करने का जो हुक्म था, उसकी अवहेलना की तो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने उनपर लअनत की और उनके हक में बददुआ फ़रमाई तो वो बन्दरों और मुथरों की सूख में फर दिये गए, और मायदा वालों ने जब आसमान से उतरी नेमत खाने के बाद कुफ्र किया तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उनके हक में बददुआ की तो वो सुअर और बन्दर हो गए और उनकी संख्या पांच हज़ार थी. (ज़ुमल बारीक) कुछ मुफ़रिग़ों का कहना है कि यहूदी अपने पूर्वजों पर गर्व किया करते थे और कहते थे हम नबियों की औलाद हैं, इस आयत में उन्हें बताया गया कि इन नबियों ने उनपर लअनत की है. एक कौल यह है कि हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा अलैहुमस्सलाम ने सैयद आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी की ख़ुशख़बरी दी और हुज़ूर पर ईमान न लाने और कुफ्र करने वालों पर लअनत की.

(२) लअनत.

(३) आयत में साबित हुआ कि बुराई से लोगों को रोकना वाजिब है. और बुराई को मना करने से रुका रहना गरज़ गुनाह है. तिरमिज़ी की हदीस में है कि जब बनी इस्राईल गुनाहों में गिरफ़्तार हुए तो उनके उलमा ने पहले तो उन्हें मना किया, जब वो न माने तो फिर वो उलमा भी उनसे मिल गए और खाने पीने उठने बैठने में उनके साथ शामिल हो गए. उनके इस गुनाह और ज़िद का यह नतीजा हुआ कि अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा अलैहुमस्सलाम की ज़वान से उनपर लअनत उतारी.

(४) इस आयत से साबित हुआ कि काफ़िरों से दोस्ती और उनके साथ रिश्तदारी हराम और अल्लाह तआला के ग़ज़व का कारण है.

(५) सच्चाई और महबूत के साथ, बरीर दोगली प्रवृत्ति के.

(६) इससे साबित हुआ कि मुश्रिकों के साथ दोस्ती और सहयोग दोगली प्रवृत्ति की निशानी है.

(७) इस आयत में उनकी प्रशंसा है जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने तक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दीन पर रहे और सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तब्युत मालूम होने पर हुज़ूर पर ईमान ले आए. इस्लाम की शुरुआत में जब कुरैश के काफ़िरों ने मुसलमानों को बहुत तकलीफ़ें दीं तो सहाबए किराम में से ग्यारह मर्द और चार औरतों ने हुज़ूर के हुक्म से हबशा की तरफ़ हिज़रत की. इन मुहाजिरों के नाम ये हैं : हज़रत उस्मान और उनकी ज़ौजए ताहिरा हज़रत रुक़ैया दुस्तर ग़मूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हज़रत जुबैर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अब्दुर रहमान बिन आफ़, हज़रत अबू हुज़ैफ़ा और उनकी बीबी हज़रत सहेला बिनो सुहैल और हज़रत मुसअब बिन उमैर, हज़रत अबू सलमा और उनकी बीबी हज़रत उम्मे सलमा बिनो उमैया, हज़रत उस्मान बिन मतऊन, हज़रत आमिर बिन रबीआ और उनकी बीबी हज़रत लैला बिनो असी ख़सीमा, हज़रत हातिव बिन अम्र,

हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल्लुम. ये हज़रत नबुच्चन के पांचवें साल ख़ब मास में दरिया का सफ़र करके हवशा पहुंचे. इस हज़रत को हज़रत उल्ला कहते हैं. उनके बाद हज़रत ज़अफ़र बिन अबी तालिब गए और फिर मुसलमान खाना होते रहे यहाँ तक कि बच्चों और औरतों के अलावा मुहाजिरों की तादाद ब्यासी मंदों तक पहुंच गई. जब कुरैश को इस हज़रत के बारे में मालूम हुआ तो उन्होंने एक जमाअत तोहफ़े वगैरह लेकर नज़ाशी बादशाह के पास भेजी. उन लोगों ने शाही दरबार में जाकर बादशाह से कहा कि हमारे मुल्क में एक शख्स ने नबुच्चन का दावा किया है और लोगों को नादान बना डाला है. उनकी जमाअत जो आपके मुल्क में आई है वह यहाँ फ़साद फैलाएगी और आपकी रियाया को बागी बनाएगी. हम आपको ख़बर देने के लिये आए हैं और हमारी कौम दरख़ास्त करती है कि आप उन्हें हमारे हवाले कीजिये. नज़ाशी बादशाह ने कहा, हम उन लोगों से बात कर लें. यह कहकर मुसलमानों को तलब किया और उनसे पूछा कि तुम हज़रत ईसा और उनकी चालिदा के हक़ में क्या अर्कीदा रखते हो. हज़रत ज़अफ़र बिन अबी तालिब ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अल्लाह के बंदे और उसके रसूल और कलिमतुल्लाह और रुहुल्लाह हैं और हज़रत मरयम कुंवारी पाक हैं. यह सुनकर नज़ाशी ने ज़मीन से एक लकड़ी का टुकड़ा उठाकर कहा, ख़ुदा की कसम तुम्हारे आका ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के कलाम में इतना भी नहीं बढ़ाया जितनी यह लकड़ी. यानी हुज़ूर का इरशाद हज़रत ईसा के कलाम के बिल्कुल अनुकूल है. यह देखकर मक्के के मुश्रिकों के चेहरे उतर गए. फिर नज़ाशी ने कुरआन शरीफ़ सुनने की ख़्वाहिश की. हज़रत ज़अफ़र ने सूरए मरयम तिलावत की. उस वक़्त दरबार में ईसाई आलिम और दवैश मौजूद थे. कुरआन करीम सुनकर वे इस्तिस्फ़ा रांने लगे और नज़ाशी ने मुसलमानों से कहा तुम्हारे लिये मेरी सलतत में कोई ख़तरा नहीं. मक्के के मुश्रिक नाकाम फिर और मुसलमान नज़ाशी के पास बहुत इज़्ज़त और आसायश के साथ रहे और अल्लाह के फ़रज़ से नज़ाशी को ईमान की दौलत हासिल हुई. इस घटना के बारे में यह आयत उतरी.

(८) इससे साबित हुआ कि इल्म हासिल करना और अहंकार और घमण्ड छोड़ देना बहुत काम आने वाली चीज़ें हैं और इनकी बदौलत हिदायत नसीब होती है.

पारा छः समाप्त

सातवाँ पारा - व इज़ासमिऊ

(सुरए माइदा जारी)

और जब सुनते हैं वह जो रसूल की तरफ़ उतरा^(९) तो उनकी आँखें देखो कि आँसुओं से उबल रही हैं^(१०) इसलिये कि वो हक़ को पहचान गए कहते हैं ऐ हमारे रब हम ईमान लाए^(११) तो हमें हक़ के गवाहों में लिख ले^(१२) (८३) और हमें क्या हुआ कि हम ईमान न लाए अल्लाह पर और उस हक़ पर कि हमारे पास आया और हम तमा (लालच) करते हैं कि हमें हमारा रब नेक लोगों के साथ दाखिल करे^(१३) (८४) तो अल्लाह ने उनके इस कहने के बदले उन्हें वाग़ दिये जिनके नीचे नेहरें वहाँ हमेशा उनमें रहेंगे यह बदला है नेकों का^(१४) (८५) और वो जिन्होंने ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाई वो हैं दोख़ख़ वालें (८६)

बारहवाँ सूक़

ऐ ईमान वालों^(१) हाराम न ठहराओ वो सुधरी चीज़ें कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल कीं^(२) और हद से न बढ़ो वेशक़ हद से बढ़ने वाले अल्लाह को नापसन्द हैं (८७) और खाओ जो कुछ तुम्हें अल्लाह ने रोज़ी दी हलाल पाकीज़ा और डरो अल्लाह से जिसपर तुम्हें ईमान है (८८) अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता तुम्हारी ग़लतफ़हमी की क़समों पर^(३) हाँ उन क़समों पर पकड़ फ़रमाता है जिन्हें तुमने

وَاذْكُرُوا مَا أُتِيَ إِلَى الرَّسُولِ تِلْكَ أُخِيذُوا بِهَا
تَقِيضُ مِنَ الدَّمِ بِمَا عَرَفْتُمْ مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ
رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ وَمَا لَنَا
لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْغَمُ أَنْ
يُبْدِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ فَكَانَ لَهُمْ
اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَدِيدٌ تَحْرِى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ
يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْزَنُوا طَيِّبَاتٍ مِمَّا
أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ وَكُلُوا مِنْ رِزْقِكُمْ اللَّهُ حَلَالٌ طَيِّبٌ
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ لَا يُؤَاخِذُكُمُ
اللَّهُ بِاللَّغْوِ إِيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا

(९) यानी कुरआन शरीफ़.

(१०) यह उनके दिल की रिक्तता का बयान है कि कुरआने करीम के दिल पर असर करने वाली बातें सुनकर सं पड़ते हैं. चुनावी नज़ाशी बादशाह की दरबारान पर हज़रत ज़अफ़र ने उसके दरबार में सुरए मरयम और सुरए नाहा की आयतें पढ़ कर सुनाई तो नज़ाशी बादशाह और उसके दरबारी जिन में उसकी क़ौम के उलमा मौजूद थे सब फूटफूट कर रोने लगे. इसी तरह नज़ाशी की क़ौम के सत्तर आदमी जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे, हज़रत से सुरए यामीन सुन कर बहुत रोए.

(११) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर और हमने उनके सच्चे होने की गवाही दी.

(१२) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत में दाखिल कर जो क़यामत के दिन सारी उम्मतों के गवाह होंगे. (यं उन्हें इंजील में मालूम हो चुका था)

(१३) जब हबशा का प्रतिनिधि मण्डल इस्लाम अपनाकर वापस हुआ तो यहूदियों ने उसपर मलामत की, उसके जवाब में उन्होंने यह कहा कि सच्चाई साफ़ हो गई तो हम क्यों ईमान न लाते यानी ऐसी हालत में ईमान न लाना मलामत की बात है, न कि ईमान लाना क्योंकि यह दोनों जगह में भलाई का कारण है.

(१४) जो सच्चाई और दिल की गहराई के साथ ईमान लाएं और सच्चाई का इक़रार करें.

सुरए माइदा - बारहवाँ सूक़

(१) सहाबा की एक जमाअत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का बअज़ (ब्याख्यान) सुनकर एक रोज़ हज़रत उस्मान बिन मतऊन के यहाँ जमा हुई और उन्होंने आपस में दुनिया छोड़ने का एहद किया और इसपर सहमत हुई कि वो टाट पढ़ेंगे, हमेशा दिन में रोज़ा रखेंगे, रात अल्लाह की इबादत में जाग कर गुज़ारा करेंगे, बिस्तर पर न लेंगे, गोश्त और चिकनाई न खाएंगे, औरतों से जुदा रहेंगे, ख़ुश्रू न लगाएंगे. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें इस इरादे से रोक दिया गया.

(२) यानी जिस तरह हाराम को छोड़ा जाता है, उस तरह हलाल चीज़ों का मत छोड़ो और न किसी हलाल चीज़ का बढ़ा चढ़ाकर यह कहो कि हमने इसे अपने ऊपर हाराम कर लिया.

(३) ग़लत फ़हमी की क़सम यह है कि आदमी किसी घटना को अपने ख़याल में ग़ही जान कर क़सम खाते और हकीकत में वह ऐसी न हो. ऐसी क़सम पर क़फ़ारा नहीं.

उसका खाना तुम्हारे और मुमाफ़िरी के फ़ायदे को और तुम पर हराम है खुशकी का शिकार^(१०) जब तक तुम एहराम में हो और अल्लाह से डरो जिसकी तरफ़ तुम्हें उठना है^(११) अल्लाह ने अदब वाले घर कावे को लोगों के क़याम का वाइस(कारण) किया^(१२) और हुज्रत(इज़्ज़त) वाले महीने^(१३) और हरम की कुरवानो और गले में अंलामत(निशानी) लटकी जानवरों को^(१४) यह इसलिये कि तुम यकीन करो कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और यह कि अल्लाह सब कुछ जानता है^(१५) जान रखो कि अल्लाह का अज़ाब सख्त है^(१६) और अल्लाह वाख़्शने वाला मेहरवान^(१७) रसूल पर नहीं मगर हुक्म पहुंचाना^(१८) और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते और जो तुम छुपाते हो^(१९) तुम फ़रमाओ कि गन्दा और सुधरा बराबर नहीं^(२०) अगरचे तुझे गन्दे की कसरत(बहुतात) भाए तो अल्लाह से डरते रहो ऐ अक्ल वालो कि तुम फ़लाह(भलाई) पाओ^(२००)

चौदहवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो ऐसी बातें न पूछो जो तुमपर ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगे^(१) और अगर उन्हें उस वक़्त पूछोगे कि कुरआन उतर रहा है तो तुमपर ज़ाहिर करदी जाएंगी

وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلنَّيَّارَةِ ۚ وَحُرْمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْيَتِيمَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ اْعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ۝ قُلْ لَا يَسْتَوِي الْحَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْحَبِيثِ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْمَعُوا عَنْ أَشْيَاءٍ إِنْ تُبَدِّلَ لَكُمْ نُسُوكُكُمْ ۚ وَإِنْ تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ

مَنْ

जानवर की तरह होना मुग़द है. (मदफ़िरी व तफ़सीरी अहमदी)

- (६) यानी कीमती का अन्दाज़ा करें और कीमत वहाँ की मानी जाएगी जहाँ शिकार मारा गया हो या उसके करीब के मक़ाम की.
- (७) यानी कफ़राने के जानवर का हरम अरिफ़ के बाहर ज़िद्द करना दुस्त नहीं है. मक्कए मुकर्रमा में होना चाहिये और ख़ास कावे में भी ज़िद्द जायज़ नहीं, इसी लिये कावे को पहुंचती फ़रमाया, कावे के अन्दर न फ़रमाया. और कफ़राना ख़ाने या ग़ेजे से अदा किया जाए तो उसके लिये मक्कए मुकर्रमा में होना की क़द नहीं, बाहर भी जायज़ है. (तफ़सीरी अहमदी वग़ैरह)
- (८) यह भी जायज़ है कि शिकार की कीमत का ग़ल्ता ख़रीद कर फ़कीरों को इस तरह दे कि हर मिस्कीन को सदक़ा फ़ित्र के बराबर पहुंचे और यह भी जायज़ है कि इस कीमत में जितने मिस्कीनों के ऐसे हिस्से होंते थे उतने ग़ेजे रखे.
- (९) यानी इस हुक्म से पहने जो शिकार मारे.
- (१०) इस आयत में यह मसअला बयान फ़रमाया गया कि एहराम पहने आदमी के लिये दरिया का शिकार हलाल है और खुशकी का हराम. दरिया का शिकार वह है जिसकी पैदाइश दरिया में हो और खुशकी का वह जिसकी पैदाइश खुशकी में हो.
- (११) कि वहाँ दीनी और दुनियावी कामों का क़याम होता है. डरा हुआ वहाँ पनाह लेता है. बूढ़ों को वहाँ आश्र मिलता है, व्यापारी वहाँ नफ़ा पाते हैं, हज़ उमरा करने वाले वहाँ हाज़िर होकर मनासिक (संस्कार) अदा करते हैं.
- (१२) यानी ज़िल्ज़ज को जिसमें हज़ किया जाता है.
- (१३) कि उनमें सवाब ज़्यादा है. उन सब को तुम्हारी भलाइयों के क़याम का कारण बनाया.
- (१४) तो हरम और एहराम की पाकी का ख़याल रखो. अल्लाह तआला ने अपनी रहमतों का ज़िक्र फ़रमाते के बाद अपनी मिफ़्त “शदीदुल इकाब” (सख्त अज़ाब देने वाला) ज़िक्र फ़रमाई ताकि ख़ौफ़ और रिज़ा से ईमान की पूर्ति हो. इसके बाद अपनी दुसअत व रहमत का इज़हार फ़रमाया.
- (१५) तो जब रसूल हुक्म पहुंचाकर फ़सिा हो गए तो तुमपर फ़रमावरी लाज़िम और हुज्रत कायम हो गई और बहाने की मुंजाइश बाकी न रही.
- (१६) उसको तुम्हारे ज़ाहिर और बातित, दोगलेपन और फ़रमावरी सब की जानकारी है.
- (१७) यानी हलाल व हराम, अष्ट और बुग़, मुस्लिम और काफ़िर और ख़रा व ख़ोटा एक दर्जे में नहीं हो सकता.

सूरए माइदा - चौदहवाँ रूकू

- (१) कुछ लोग सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बहुत से बेफ़ायदा सवाल किया करते थे. यह सरकार के मिज़ाज पर बाइ होता

अल्लाह उन्हें माफ़ कर चुका है^(१) और अल्लाह वरखने वाला हिल्म(सहिष्णुता) वाला है^(२) तुमसे अगली एक क्रौम ने उन्हें पूछा^(३) फिर उनसे इन्कारी हो बैठे^(४) अल्लाह ने मुकर्रर नहीं किया है काम चरा हुआ और न बिजार और न वसीला और न हामी^(५) हाँ, काफ़िर लोग अल्लाह पर झूठ इफ़तिरा(मिथ्यारोप) बांधते हैं^(६) और उनमें अकसर निरे वेअक़ल हैं^(७) और जब उनसे कहा जाए आओ उस तरफ़ जो अल्लाह ने उतारा और रसूल की तरफ़^(८) कहें हमें वह बहुत है जिसपर हमने अपने बाप दादा को पाया, क्या अगरचे उनके बाप दादा न कुछ जानें न राह पर हों^(९) ऐ ईमान वाले तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुआ जब कि तुम राह पर हो^(१०) तुम सबकी रूजू(पलटना) अल्लाह ही की तरफ़ है फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे^(११) ऐ ईमान वाले^(१२) तुम्हारी आपस की गवाही जब तुम में किसी को मौत आए^(१३) वसीयत करते वक़्त तुम में के दो विश्वसनीय शख्स हैं या ग़ौरों में के दो जब तुम मुल्क में सफ़र को जाओ फिर तुम्हें

تَبَدَّلْكُمْ عَنْهَا وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝
قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا
كَافِرِينَ ۝ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ
وَلَا وَصِيَّةٍ وَلَا حَامٍ ۚ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝
وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى
الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا
أَوَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَحْتَدُونَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسُكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ
مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
شَهَادَةٌ بَيْنَكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ
الْوَصِيَّةِ اثْنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ أُخْرَيْنِ مِنْ غَيْرِكُمْ

مَنْزِلٌ

था. एक दिन फ़रमाया कि जाँ जो पूछना हो पूछ लो. मैं हर बात का जवाब दूँगा. एक शख्स ने पूछा कि मेरा अंजाम क्या है. फ़रमाया जहन्नम. दूसरे ने पूछा कि मेरा बाप कौन है, आपने उसके अरली बाप का नाम बता दिया जिसके तुलफ़ से वह था जबकि उसकी माँ का शौहर और था जिसका यह शख्स बेटा कहलाता था. इसपर यह आयत उतरी. और फ़रमाया गया कि ऐसी बातें न पुछो जो ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें नागवार गुज़रें. (तफ़सीर अहमदी) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है कि एक रोज़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने खुत्बा देने हुए फ़रमाया कि जिसको जाँ पूछना हो पूछ लो. अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी ने ख़द होकर पूछा कि मेरा बाप कौन है. फ़रमाया हुज़ाफ़ा. फिर फ़रमाया और पूछो. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने उठकर ईमान और रिसालत के इक्कार के साथ माज़िस्त पेश की. इन्ने शहाब की रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा की माँ ने उनसे शिकायत की और कहा कि तू बहुत नालायक बेटा है, तुझे क्या मालूम कि जिहालत के ज़माने की औरतों का क्या हाल था. अल्लाह ने करे तेरी माँ से कोई कुपूर हुआ दाता तो आज वह कैसी रुखा होती. इसपर अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा ने कहा कि अगर हुज़ूर किसी हबशी गुलाम को मेरा बाप बता दें तो मैं यकीन के साथ मान लेता. बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि लोग उड़ा बवाने के अन्दाज़ में इस किस्म के सवाल किया करते थे, कोई कहता मेरा बाप कौन है, कोई पूछता मेरी ऊंटनी गुम होगई है वह कहाँ है. इसपर यह आयत उतरी. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने खुत्बे में हज़र फ़ज़्र हान का बयान फ़रमाया. इसपर एक शख्स ने कहा क्या हर साल हज़ फ़ज़्र है. हुज़ूर ने ख़ामोशी रखी. सवाल करने वाले ने सवाल दोहराया तो इश्आद फ़रमाया कि जो मैं बयान न करूं उसपर मत अड़ो. अगर मैं हाँ कह देता तो हर साल हज़ फ़ज़्र हो जाता और तुम न कर सकत. इससे मालूम हुआ कि अहक़ाम हुज़ूर के इश्आद के तहत है, जो फ़ज़्र फ़रमा दें वह फ़ज़्र हो जाए, न फ़रमाएँ, न हो.

(२) इस आयत से साबित हुआ कि जिस काम की शरीअत में मना न आए वह किया जासकता है. हज़रत सलमान रदियल्लाहो अन्हो की हदीस में है कि हलाल वह है जो अल्लाह ने अपनी किताब में हलाल फ़रमाया, हराम वह है जिसको उसने अपनी किताब में हराम फ़रमाया और जिस के बारे में कुछ न फ़रमाया वह माफ़ है तो तकलीफ़ में न पड़ो. (अज़ज़िन)

(३) अपने नवियों से और वे ज़रूरत सवाल किये. नवियों ने अहक़ाम बयान फ़रमाएँ तो उनपर अमल न कर सके.

(४) जिहालत के ज़माने में काफ़िरों का यह तरीक़ा था कि जो ऊंटनी पाँच बार बच्चा जनती और अग़्गिरी बार उसके नर होता उसका कान चीर दें, फिर न उसपर सवारी करते न उसको ज़िबह करते. न पानी और चारे से हंकाते. और जब सफ़र पेश होता या कोई बीमार होता तो यह मन्नत मानते कि अगर मैं साह्र से सकुशल वापस आऊँ या स्वस्थ होजाऊँ तो मेरी ऊंटनी साइबा (बिजार) है और उससे भी नफ़ा उठना हराम जानते और उसको आज़ाद छोड़ देते और बकरी जब सात बार बच्चा जन चुकती तो अगर सातवीं बच्चा नर होता तो उसको मर्द म्नाते और अगर मादा होती तो बकरीयों में छोड़ देते और ऐसे ही अगर नर व मादा दोनों होते और कहते कि यह अपने भाई से मिल गई है उसको बसीला कहते और जब नर ऊंट से दस गर्भ हासिल होजाते तो उसको छोड़ देते न उसपर सवारी करते न उससे काम लेते न उसको चारों पानी पर से रोक्ते, उसको हामी कहते. (मदारिक) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि बहीरा वह है जिसका दूध बुतों के लिये रोक्ते थे. कोई उस जानवर का दूध

मौत का हादसा पहुंचे उन दोनों को नमाज़ के बाद रोक़ो^(१२) वो अल्लाह की क़सम खाएं अगर तुम्हें कुछ शक पड़े^(१३) हम हलाक के बदले कुछ माल न खरीदेंगे^(१४) अगरचे करीब का रिश्तेदार हों और अल्लाह की गवाही न छुपाएंगे ऐसा करें तो हम ज़रूर गुनाहगारों में हैं^(१०६) फिर अगर पता चले कि वो किसी गुनाह के सज़ावार (हक़दार) हुए^(१५) तो उनकी जगह दो और खड़े हों उनमें से कि उस गुनाह यानी झूठे गवाही ने उनका हक़ लेकर उनको नुक़सान पहुंचाया^(१६) जो मयत से ज़्यादा करीब हों तो अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही ज़्यादा ठीक है उन दो की गवाही से और हम हद से न बढ़ें^(१७) ऐसा हो तो हम ज़ालिमों में हों^(१०७) यह क्रौरवतर है उससे कि गवाही जैसी चाहिये अदा करें या डरें कि कुछ क़समें रद्द कर दी जाएं उनकी क़समों के बाद^(१८) और अल्लाह से डरो और हुक्म सुनो और अल्लाह वेहुक्मों को राह नहीं देता^(१०८)

पन्द्रहवाँ रूक़

जिस दिन अल्लाह जमा फ़रमाएगा रसूलों को^(१) फिर फ़रमाएगा तुम्हें क्या जवाब मिला^(२) अर्ज़ करेंगे हमें कुछ इल्म नहीं वेशक़ तू ही है सब ग़ैवों (अज्ञात) का जानने वाला^(३)^(१०९) जब अल्लाह फ़रमाएगा ऐ मरयम के बेटे ईसा याद करो

إِنْ أَنْتُمْ صَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةُ
الْمَوْتِ تَحْسِبُونَهَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمُونَ بِاللَّهِ
إِنْ أَنْتُمْ لَا تَسْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَلَا
تَكُنْتُمْ شُهَدَاءَ اللَّهِ إِنْ آتَا أَلَيْنَ الْأَمْرَيْنِ ۝ فَإِنْ عَثُرَ
عَلَىٰ أَنْهَذَا اسْتَحَقَّ إِثْمًا فَأَخْرَجَ يَقُومِينَ مَقَامَهَا
مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأُولَٰئِينَ فَيُقْسِمُونَ بِاللَّهِ
لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتَيْهَا وَمَا اعْتَدَيْنَا ۝ إِنْ آتَا
أَلَيْنَ الظَّالِمِينَ ۝ ذَلِكَ أَذَىٰ أَنْ يَبَأْتُوا بِاللَّشَّاءِ
عَلَىٰ وَجْهٍهَا أَوْ يَخَافُوا أَنْ تَرُدَّ أَيْمَانُ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْعَوْا ۝ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْفَاسِقِينَ ۝ يَوْمَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا
أُجِبْتُمْ ۝ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا بِأَنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝
إِذْ قَالَ اللَّهُ لِيَعْقِبِي ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي

مَنْزِل

न दोहता और झाड़वां वह जिसका अपने बुतों के लिये छान्ड देते थे कोई उससे काम न लेता. ये रस्म जिहालत के ज़माने में इस्लाम के दौर तक चली आरही थी. इस आयत में उनको ग़लत क़दर दिया गया.

(१०) क्योंकि अल्लाह तआला ने इन जातवरों को ह़राम नहीं किया. उसकी तरफ़ इसकी निरवत ग़लत है.

(११) जो अपने समझों के कहने में इन चीज़ों को ह़राम समझते हैं, इतनी समझ नहीं रखते कि जो चीज़ अल्लाह और उसके रसूल ने ह़राम न की उसको कोई ह़राम नहीं कर सकता.

(१२) यानी अल्लाह और रसूल के हुक्म का अनुकरण करो और समझालो कि ये चीज़ें ह़राम नहीं.

(१३) यानी शप दादा का अनुकरण जब दुश्मन होता कि वो जानकारी रखते और सीधी राह पर होते.

(१४) मुसलमान काफ़िरों की मेहरबानी पर अफ़सोस करते थे और उन्हें दुश्मन होता था कि काफ़िर दुश्मनी में पड़कर इस्लाम की दौलत से मेहरम रहे. अल्लाह तआला ने उनकी तमिल्ली फ़रमादी कि इसमें तुम्हारा कुछ नुक़सान नहीं. अल्लाह को हों कां हों और ना के ना मानने का फ़र्ज़ अदा करके तुम अपना कर्त्तव्य पूरा कर चुके. तुम अपनी नेकी का सबाब पाओगे. अल्लाह दिन मुबारक ने फ़रमाया इस आयत में "अब विल मअरुफ़ व नहीये अनिल मुन्कर" यानी अल्लाह ने जिस काम का हुक्म दिया उसे करना और जिससे मना किया उससे रूके रहना, इसकी अनिवार्यता की बहुत ताफ़ीद की है. क्योंकि अपनी फ़िक्र रखने के मानी ये है कि एक दूसरे की ख़बरगोरी करे, नेकियों की ख़चि दिलाए और बुराइयों से रोक. (स्त्राज़िन)

(१०) मुहाज़िग़ों में से बदील, जो हज़रत अम्र इब्ने आम के मवाली में से थे, त्रिज़ालत के इयादे से शाम की तरफ़ दो ईसाइयों के साथ खाना हुए. उनमें से एक का नाम तमीम बिन औस दोरी था और दूसरे का अदी बिन बुदा. शाम पहुंचते ही बदील बीमार हो गए और उन्होंने अपने सारे सामान की एक सूची लिखकर सामान में डाल दी और साथियों को इसकी सूचना न दी. जब बीमारी बढ़ी तो बदील ने तमीम व अदी दोनों का वसीयत की कि उनकी सारी पूंजी मदीना शरीफ़ पहुंच कर उनके घर वालों को दें. बदील की वफ़ात हो गई. इन दोनों ने उनकी मौत के बाद उनका सामान देखा, उसमें एक चांदी का प्याला था, जिसपर यत्ति का काम बना हुआ था, उसमें तीन सौ मिस्काल चांदी था. बदील यह प्याला बादशहाह को भेंट करने के इयादे से लाए थे. उनकी मृत्यु के बाद उनके दोनों साथियों ने इस प्याले को गायब कर दिया और अपने काम से निपटने के बाद जब ये लोग मदीनाए तैयिबह पहुंचे तो उन्होंने बदील का सामान उनके घर वालों के सुपुर्द कर दिया. सामान खोलने पर सूची उनके हाथ आई जिसमें सारी पूंजी की तफ़सील थी. जब सामान का सूची से मिलाया तो प्याला न पाया. अब वो तमीम और अदी के पास पहुंचे और उन्होंने पूछा कि क्या बदील ने कुछ सामान बेचा भी था. उन्होंने कहा, नहीं. पूछा, क्या कोई त्रिज़ालती मामला किया था. उन्होंने कहा, नहीं. फिर पूछा बदील बहुत समय तक बीमार रहे, क्या उन्होंने अपने इलाज़ में कुछ ख़र्च किया. उन्होंने कहा, नहीं. वो तो शहर पहुंचते ही बीमार हांगए और जल्द ही उनका इत्काल हो गया. इसपर घरवालों ने कहा कि उनके सामान में एक सूची मिली है उसमें चांदी का एक प्याला सोने का काम किया हुआ, जिसमें तीन सौ मिस्काल चांदी है, यह भी लिखा है. तमीम व अदी ने कहा हमें नहीं मालूम. हमें तो जो वसीयत की थी उसक

मेरा एहसान अपने ऊपर और अपनी मां पर^(१) जब मैं ने पाक रूह से तेरी मदद की^(२) तू लोगों से बात करता पालन में^(३) और पक्की उग्र हां कर^(४) और जब मैं ने तुझे सिखाई किताब और हिकमत(बोध)^(५) और तौरात और इंजील और जब तू मिट्टी से परिन्द की सी मूरत में हुक्म से बनाता फिर उसमें फूंक मारता तो वह मेरे हुक्म से उड़ने लगती^(६) और तू मांदरजाद(जन्मजात) अन्धे और सफेद दाग वाले को मेरे हुक्म से शिफा देता और जब तू मुर्दों को मेरे हुक्म से ज़िन्दा निकालता^(७) और जब मैं ने बनी इस्राईल को तुझ से रोका^(८) जब तू उन के पास रौशन निशानियां लेकर आया तां उनमें के काफिर बोले कि यह^(९) तो नहीं मगर खुला जादू^(१०) और जब मैं ने हवारियां(अनुयाइयों)^(११) के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे रसूल पर^(१२) ईमान लाओ बोले हम ईमान लाए और गवाह रह कि हम मुसलमान हैं^(१३) ॥१११॥ जब हवारियां ने कहा ऐ ईसा मरयम के बेटे क्या आपका रव ऐसा करेगा कि हम पर आसमान से एक ख़वान उतारे^(१४) कहा अल्लाह से डरो अगर ईमान रखते हो^(१५) ॥११२॥ बोले हम चाहते हैं^(१६) कि उसमें से खाएं और हमारे दिल ठहरें^(१७) और हम आँखों देख लें कि आपने

عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالِدَتِكَ ۖ إِذْ أُوتِيَ نُوحٌ الْكِتَابَ ۚ وَإِذْ عَلَّمْنَاكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۚ وَإِذْ أَخْلَقْنَا مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَفَنَّمْهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي وَتَبْرِئُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي ۚ وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي ۚ وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۖ وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ امْنُؤُوا بِي وَبِرَسُولِي ۚ قَالُوا أَمَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۖ إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَعْيسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنْزِلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ ۚ قَالَ اتَّبِعُوا اللَّهَ إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۖ قَالُوا نَرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَنَحْمِلَ مِنْهَا

مَنْزِلٌ

अनुसार सामान हमने दे दिया, प्याले की हमें खबर भी नहीं, मुकदमा रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के दरबार में पेश हुआ, तमीम व अदी वहाँ भी इन्कार पर जम रहे और क्रसम खाली, इसपर यह आयत उतरी, (स्वाज़िन) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हमा की रिवायत में है कि फिर वह प्याला मक्कए मुकर्रमा में पकड़ा गया, जिस व्यक्ति के पास था उसने कहा कि मैंने यह प्याला तमीम व अदी से खरीदा है, प्याले के मालिक के सरपरशों में से दो व्यक्तियों ने खड़े होकर क्रसम खाई कि हमारे गवाही इनकी गवाही से ज्यादा सच्ची है, यह प्याला हमारे कुजुर्ग का है, इस बारे में यह आयत उतरी, (तिरमिज़ी)

(११) याही मौत का क़त्ल करीब आए, ज़िन्दगी की उम्मीद न रहे, मौत की निशानियां ज़ाहिर हों,

(१२) इस नमाज़ से अस् की नमाज़ मुसद है, क्योंकि वह लोगों के जमा होने का वक़्त होता है, हमने रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि नमाज़े ज़ाहिर या अन्, क्योंकि हिजाज़ के लोग मुकदमे उसी वक़्त करते थे, हदीस शरीफ़ में है कि जब यह आयत उतरी तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने अस् की नमाज़ पढ़कर अदी और तमीम को बुलाया, उन दोनों ने क्रसम खाई, इसके बाद मक्कए मुकर्रमा में वह प्याला पकड़ा गया तो जिस व्यक्ति के पास था उसने कहा कि मैंने अदी और तमीम से खरीदा है, (मदारीफ़)

(१३) उनकी अमानत और दायत में और वो यह कहें कि....

(१४) याही झूठी क्रसम न ख़ाएँ और किसी की ख़ातिर ऐसा न करें,

(१५) ख़ियानत के या झूठ वरीस के,

(१६) और वो मरने वाले के घर वाले और रिश्तेदार हैं,

(१७) चुनाव बदल की घटना में जब उनके दोनों साथियों की ख़ियानत ज़ाहिर हुई तो बदल के वारिसों में से दो व्यक्ति खड़े हुए और उन्होंने क्रसम खाई कि यह प्याला हमारे कुजुर्ग का है, और हमारी गवाही इन दोनों की गवाही से ज्यादा ठीक है,

(१८) माही का हासिल यह है कि इस मामले में जो हुक्म दिया गया कि अदी व तमीम की क्रसमों के बाद मान बरामद होने पर मरने वाले के वारिसों की क्रसमें ली गई, यह इसलिये कि लोग इस घटना से सबक लें और गवाहियों में सच्चाई का रास्ता न छोड़ें और इससे डरते रहें कि झूठी गवाही का अंजाम शर्मिन्दगी और ख़ुबाई है, मुद्दों पर क्रसम नहीं, लेकिन यहाँ जब माल पाया गया तो मुद्दा अलैहिमा ने दावा किया कि उन्होंने मरने वाले से खरीद लिया था, अब उनकी हैसियत मुद्दों की हो गई और उनके पास इसका कोई मुवत न था लिहाज़ा उनके ख़िलाफ़ मरने वाले के वारिसों से क्रसम ली गई,

सूरए माइदा - पन्द्रहवाँ सूक़

(१) याही क़यामत के दिन,

(२) याही जब तुमने अपनी उम्मतों का ईमान की दायत दी तो उन्होंने क्या जवाब दिया, इस मवाल में इन्कार करने वालों को

हम से सच फरमाया^(२०) और हम उसपर गवाह हो जाएं^(२१) ॥११३॥ ईसा मरयम के बेटे ने अर्ज की ऐ अल्लाह ऐ रब हमारे हमपर आसमान से एक ख़वान उतार कि वह हमारे लिये ईद हो^(२२) हमारे अगले पिछ्लों की^(२३) और तेरी तरफ से निशानी^(२४) और हमें रिज़क दे और तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है^(२५) अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं इसे तुम पर उतारता हूँ फिर अब जो तुम में कुफ़्र करेगा^(२६) तो बेशक मैं उसे वह अज़ाब दूंगा कि सारे ज़हान में किसी पर न करूंगा^(२७) ॥११५॥

सोलहवाँ सूक़

और जब अल्लाह फ़रमाएगा^(१) ऐ मरयम के बेटे ईसा क्या तूने लोगों से क़ह दिया था कि मुझे और मेरी माँ को दो ख़ुदा बना लो अल्लाह के सिवा^(२) अर्ज करेगा पाकी है तुझे^(३) मुझे रवा नहीं कि वह बात कहूँ जो मुझे नहीं पहुंचती^(४) अगर मैं ने ऐसा कहा हो तो ज़रूर तुझे मालूम होगा तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो तेरे इल्म में है बेशक तू ही है सब ग़ैबों (अज्ञात) का जानने वाला^(५) ॥११६॥ मैंने तो उनसे न कहा मगर वही जो तूने मुझे हुक्म दिया था कि अल्लाह को पूजो जो मेरा भी रब और तुम्हारा भी रब और मैं उनपर मुत्तला (वाख़वर) था

قُلُوبُنَا وَلَعَلَّمْنَا أَنْ قَدْ صَدَقْتُنَا وَلَكُونْ عَلَيْهَا
مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ
رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا
عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ ۝ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ
خَيْرُ الرّٰزِقِينَ ۝ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنْزِلُهَا عَلَيْكُمْ
فَإِنْ يَكْفُرْ بَعْدَ ذَلِكَ فَأَيُّ الْعَادَاتِ الْكَا
فِرَةِ ۝ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ ۝ وَإِذْ قَالَ اللَّهُ
لِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ أَنْتَ ثَلَاثُ لَيَالٍ أَنْتَ ثَلَاثُ لَيَالٍ
وَأَمِّي الْهَيْئِ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۝ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ
لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقِّكَ إِنْ كُنْتُ ثَلَاثَةً فَقَدْ
عَلِمْتُ أَنَّكَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا
أَمَرْتَنِي بِهِ أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۝ وَكُنْتُ

مُؤْتَلً

तरफ़ इशारा है.

- (३) तबियाँ का यह जवाब उनके हृद दर्जा अंदेव की शान ज़ाहिर करता है कि वो अल्लाह के इल्म के सामने अपने इल्म को बिल्कुल नज़र में न लाएंगे और क़ाबिले ज़िक्क़ करार न देंगे और मामला अल्लाह तआला के इल्म और इन्साफ़ पर छोड़ देंगे.
- (४) कि मैंने उनको पाक किया और ज़गत की औरतों पर उनको फ़ज़ीलत दी.
- (५) यानी हज़रत ज़िन्नल से कि वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ रहते और ज़रूरत पड़ने पर उनकी मदद करते.
- (६) कम उम्र में, और यह चमत्कार है.
- (७) इस आयत से साबित होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क़यामत से पहले तथरीफ़ लाएंगे क्योंकि पक्की उम्र का वक़्त आने से पहले आप उठा लिय गए. दोबारा तथरीफ़ लाने के वक़्त आप तैतीस साल के जवान की सूरत में होंगे और इस आयत के अनुसार कलाम फ़रमाएंगे और जो पालने में फ़रमाया "इन्नी अब्दुल्लाह" (मैं अल्लाह का बन्दा हूँ) वही फ़रमाएंगे. (जुमल)
- (८) यानी इल्मों के राज़.
- (९) यह भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का चमत्कार था.
- (१०) अंध और सफ़ेद दाग़ वाले को आँख़ वाला और स्वस्थ करना और मुर्दों को क़ब्रों से ज़िन्दा करके निकालना, यह सब अल्लाह के हुक्म से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के महान चमत्कार हैं.
- (११) यह एक और नेअमत का बयान है कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को यहूदियों की शराबतों से मेहफूज़ रखा जिन्होंने हज़रत के ख़ुले चमत्कार देखकर आपके क़त्ल का इरादा किया. अल्लाह तआला ने आप को आसमान पर उठा लिया और यहूदी तामुराद रह गए.
- (१२) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार.
- (१३) हवारी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथी और आपके ख़ास लोग हैं.
- (१४) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर.
- (१५) ज़ाहिर और बातिन में महबूत रखने वाले और फ़रमाविरदार.
- (१६) मानी ये हैं कि क्या अल्लाह तआला इस बारे में आपकी दुआ क़बूल फ़रमाएगा.
- (१७) और अल्लाह से डरो ताकि यह मुग़द होसिल हो. कुछ मुफ़सिरो ने कहा, मानी ये हैं कि तमाम उम्मतों में गिराला सवाल करने में अल्लाह से डरो, या ये मानी हैं कि उसकी कुदरत पर ईमान रखते हो तो इसमें आगे पीछे न हो: हवारी ईमान वाले, अल्लाह को पहचानने वाले और उसकी कुदरत पर यकीन करने वाले थे. उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से अर्ज किया.

जब तक मैं उनमें रहा फिर जब तूने मुझे उठा लिया^(१६) तू ही उनपर निगाह रखता था और हर चीज़ तेरे सामने हाज़िर है^(१७) अगर तू उन्हें अज़ाब करे तो वो तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो वेशक तू ही है ग़ालिब हिकमत वाला^(१८) अल्लाह ने फ़रमाया कि यह^(१९) है वह दिन जिसमें सच्चा को^(२०) उनका सच काम आएगा उनके लिये बाग़ हैं जिनके नीचे नेहरे वहाँ हमेशा हमेशा उनमें रहेंगे अल्लाह उन से राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी यह है बड़ी कामयाबी^(२१) अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनमें है सब की सल्तनत और वह हर चीज़ पर क़ादिर है^(२२)

६- सूरए अनआम

सूरए अनआम मक्के में उतरी, इसमें १६५ आयतें और बीस रूकू हैं.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१)

पहला रूकू

सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने आसमान और ज़मीन बनाए^(२) और अंधेरियाँ और रौशनी पैदा की^(३) उसपर^(४) काफ़िर लोग अपने रव के बराबर छहराते हैं^(५) वही है जिसने तुम्हें^(६) मिट्टी से पैदा किया फिर एक मीआद (मुदत) का हुक्म रखा^(७) और एक निश्चित वादा उसके यहां है^(८) फिर

عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ
أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ
إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ
أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ
الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا
عَنْهُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

سُورَةُ الْأَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ ۝ ١٥٥
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ
الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ۝
هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا ۝

مَنْزِل

(१८) बसन्त हासिल करने के लिये.

(१९) और पक्का यकीन हो और जैसा कि हमने अल्लाह की कुदरत को दलील से जाना है, आँखों से देखकर उसको और पक्का कर लें.

(२०) वेशक आप अल्लाह के रसूल हैं.

(२१) अपने बाद वालों के लिये. हवारियों के यह अर्ज़ करने पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें तीस राज़ रखने का हुक्म फ़रमाया और कहा जब तुम इन राज़ों से फ़ारिग हो जाओगे तो अल्लाह तआला से जो दुआ करोगे, कुबूल होगी. उन्होंने राज़ रखकर आसमान से ख़ाना उतरने की दुआ की. उस वक़्त हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने ग़ुल फ़रमाया और मोटा लिवास पहना और दो रकअत नमाज़ अदा की और सर झुकाया और रोकर यह दुआ की जिसका अगली आयत में बयान है.

(२२) यानी हम इसके उतरने के दिन का ईद बनाएं, इसका आदर करें, ख़ुशियाँ मनाएं, तेरी इबादत करें, शुक्र अदा करें. इस से मालूम हुआ कि जिस शेर अल्लाह तआला की ख़ास रहमत उतर उस दिन को ईद बनाना और ख़ुशियाँ मनाना, इबादत करना, अल्लाह का शुक्र अदा करना नक़ लोगों का तरीक़ा है और कुछ शक़ नहीं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का तशरीफ़ लाना अल्लाह तआला की सबसे बड़ी नेअमत और रहम है, इसलिये हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पैदायश के दिन ईद मनाना और मीलाद शरीफ़ पढ़कर अल्लाह का शुक्र अदा करना और ख़ुशी ज़ाहिर करना अच्छी बात है और अल्लाह के प्यारे बन्दों का तरीक़ा है.

(२३) जो दीनदार हमारे ज़माने में हैं उनकी और जो हमारे बाद आएँ उनकी.

(२४) तेरी कुदरत की और मेरी नबुव्वत की.

(२५) यानी आसमान से ख़ाना उतरने के बाद.

(२६) चुनांचे आसमान से ख़ाना उतरा, इसके बाद जिनको उनमें से कुछ किया उनकी शकलें बिगाड़ दी गई और वो गुअर बना दिये गये और तीन दीन के अन्दर सब मर गए.

सूरए माइदा - सोलहवाँ रूकू

(१) क़यामत के दिन ईसाइयों की तौबीअ के लिये.

- (२) इस सम्बोधन को मुतकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम काँप जायें और.....
- (३) सारे दोषों और बुराइयों से और इससे कि तरा कोई शरीक हो सके.
- (४) यानी जब कोई तरा शरीक नहीं हो सकता तो मैं यह लोगों से कैसे कह सकता था.
- (५) इल्म को अल्लाह की तरफ़ निखत करना और मामला उसको सौंप देना और अल्लाह की बड़ाई के सामने अपनी भिस्कीनी जाहिर करना, यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के अदब की शान है.
- (६) "तवफ़फ़ैतनी" (तुम मुझ उठा लिया) क शब्द से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मौत साबित करना सही नहीं क्योंकि अब्बल तो शब्द "तवफ़फ़ा" यानी उठा लेना मौत के लिये इन्सा नहीं, किसी चीज़ के पूरे तौर पर लेने को कहते हैं चाहे वह बिना मौत के हो जैसा कि कुरआन शरीफ़ में इरशाद हुआ "अल्लाहो यतवफ़फल अनफ़ुसा मोतिहा वल्लती लम तमुत फ़ी मनामिहा" (अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उनको मौत के वक़्त और जो न मरे उन्हें उनके सोते में) (सूरए जुमर, आयत ४२). दूसरे, जब यह सवाल जवाब क़यामत के दिन का है तो अगर शब्द "तवफ़फ़ा" मौत के मानी में भी मान लिया जाए जब भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मौत दोबारा उतरने से पहले इससे साबित न हो सकेगी.
- (७) और मेरा इनका किसी का हाल तुझसे छुपा नहीं.
- (८) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मालूम है कि चीम में कुछ लोग कुफ़्र पर अड़े रहे, कुछ ईमान की दौलत से मलामाल हुए, इसलिये आप अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ करते हैं कि इतम से जो कुफ़्र पर कायम रहे, उनपर तू अज़ाब फ़रमाए तो बिल्कुल सही और मुनासिब और इन्साफ़ है क्योंकि इन्हीं ने तुर्क पूरा होने के बाद कुफ़्र अपनाया, और जो ईमान लाए उन्हें तू बरश्नो तो तेरी मेहरबानी है और तेरा हर काम हिकमत है.
- (९) क़यामत का दिन.
- (१०) जो दुनिया में सच्चाई पर रहे, जैसे कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम.
- (११) सच्चे को सवाब देने पर भी और झूठे को अज़ाब फ़रमाने पर भी. आयत के मानी ये हैं कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर, जो हो सकती है, कुदरत रखता है. (जुमल) झूठ वगैरह ऐब और बुराईयाँ अल्लाह तआला के लिये सोची भी नहीं जा सकतीं. उनको अल्लाह की कुदरत के अन्तर्गत और इस आयत से साबित करना ग़लत और वातिल है.

(६) सूरए अनआम - पहला स्कू

- (१) सूरए अनआम मक्क़ में उतरी. इसमें बीस स्कू और १६५ आयतें, नीचे हज़ार एक सौ कलिमे और बारह हज़ार नौसी पैंतीस अक्षर हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कुल सूरत एक ही रात में मक्क़े मुक़र्रमा में उतरी और इसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिशते आए जिन से आसमानों के किनारे भर गए. यह भी एक रिवायत में है कि वो फ़रिशते तस्वीह करतें और अल्लाह की पाकी बोलतें आए और रीयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम "सुद्धाना रब्बियल अज़ीम" फ़रमाते हुए सिजदे में चले गए.
- (२) हज़रत कअब अहबार रदियल्लाहो अन्हु ने फ़रमाया, तीरात में सब से पहली यही आयत है. इस आयत में बन्दों का इस्तमना की शान के साथ अल्लाह की तीरीफ़ बयान करने की तालीम फ़रमाई गई है और आसमान व ज़मीन की उत्पत्ति का ज़िक्र इसलिये है कि उनमें देखने वालों के लिये कुदरत के बहुत से चमत्कार, हिक़मतें और सबक़ लेने वाली और फ़ायदे वाली बातें हैं.
- (३) यानी हर एक अन्धेरी और रौशनी, चाहे वह अन्धेरी रात की हो या कुफ़्र की या जिहोलत की या ज़हन्नम की. और रौशनी चाहे दिन की हो या ईमान और हिदायत व इल्म व जन्नत की. अन्धेरी का बहुवचन और रौशनी का एक वचन से बयान करने में इस तरफ़ इशारा है कि वातिल की राहें बहुत सी हैं और सच्चाई का रास्ता सिर्फ़ एक, दीने इस्लाम.
- (४) यानी ऐसे प्रमाणों पर सूचित होने और कुदरत की ऐसी निशानियाँ देखने के बावजूद.
- (५) दूसरों को, यहाँ तक कि पत्थरों को पूजते हैं जबकि इस बात का इज़्ज़ार करते हैं कि आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला अल्लाह है.
- (६) यानी तुम्हारी अस्ल हज़रत आदम को, जिनकी वस्ल से तुम पैदा हुए. इसमें मुश्क़ों का रस है जो कहते थे कि जब हम ग़ल क़ मिट्टी हो जाएंगे फिर कैसे ज़िन्दा किये जाएंगे. उन्हें बताया गया कि तुम्हारी अस्ल मिट्टी ही से है तो फिर दोबारा पैदा किये जाने पर क्या आश्चर्य. जिस कुदरत वाले ने पहले पैदा किया उसकी कुदरत से मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने का असंभव समझना नादानी है.
- (७) जिसके पूरा हो जाना पर तुम मर जाओगे.
- (८) मरने के बाद उठाने का.

तुम लोग शक करते हो (२) और वही अल्लाह है आसमानों और ज़मीन का (१) उसे तुम्हारा छुपा और ज़ाहिर सब मालूम है और तुम्हारे काम जानता है (३) और उनके पास कोई भी निशानी अपने स्व की निशानियों से नहीं आती मगर उससे मुंह फेर लेते हैं (४) तो बेशक उन्होंने सत्य को झुटलाया (५) जब उनके पास आया तो अब उन्हें खबर हुआ चाहती है उस चीज़ की जिसपर हंस रहे थे (६) क्या उन्होंने न देखा कि हमने उनसे पहले (७) कितनी संगतें खपा दीं उन्हें हमने ज़मीन में वह जमाव दिया (८) जो तुमको न दिया और उनपर मूसलाधार पानी भेजा (९) और उनके नीचे नेहरें वहाई (१०) तो उन्हें हमने उनके गुनाहों के सबब हलाक किया (११) और उनके बाद और संगत उठाई (१२) और अगर हम तुमपर कागज़ में कुछ लिखा हुआ उतारते (१३) कि वो उसे अपने हाथों से छूते जब भी काफ़िर कहते कि यह नहीं मगर खुला जादू (१४) और बोले (१५) उनपर (१६) कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया और अगर हम फ़रिश्ता उतारते (१७)

اَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَنَا ثُمَّ أَنْتُمْ تُنْكِرُونَ ۝ وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ۝ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ اٰيَةٍ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ اَنْبَاؤُا مَا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ مَّكَّنْهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ يَكُنْ لَكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ مِدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْاَنْهَارَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ فَاهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَاَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِينَ ۝ وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلْيَسُوْهُ بِاٰيٰتِنَا لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِنْ هٰذَا اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَا اُنْزِلَ عَلَيْنَا مَلَكٌ ۝ وَلَوْ

مَنْزِلٌ

- (१) उसका कोई शरीक नहीं.
- (२) यहाँ सत्य से या कुरआन शरीफ की आयतें मुराद हैं या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके चमत्कार.
- (३) कि वह कैसी महानता वाली है और उसकी हंसी बताने का अंजाम कैसा बवाल और अज़ाब.
- (४) पिछली उम्मतों में से.
- (५) ताक़त व माल और दुनिया के बहुत से सामान देकर.
- (६) जिससे खेतियाँ हरी भरी हों.
- (७) जिससे बाग़ फले फूले और दुनिया की ज़िन्दगानी के लिये ऐश व राहत के साधन उपलब्ध हों.
- (८) कि उन्होंने नबियों को झुटलाया और उनका यह सामान उन्हें हलाक से न बचा सका.
- (९) और दूसरे ज़माने वालों को उनका उत्तराधिकारी किया. मतलब यह है कि गुज़री हुई उम्मतों के हाल से सबक और नसीहत हासिल करनी चाहिये कि वो लांग ताक़त, दौलत और माल की कसरत और औलाद की बहुतायत के बावजूद कुफ़्र और बगावत की वजह से हलाक कर दिये गए तो चाहिये कि उनके हाल से सबक हासिल करके ग़फ़लत की तौद से जागें.
- (१०) यह आयत नज़र बिन हारिस और अब्दुल्लाह बिन उमैय्या और नोफ़ल बिन अब्दुलद के बारे में उतरी जिन्होंने कहा था कि मुहम्मद पर हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जबतक तुम हमारे पास अल्लाह की तरफ़ से किताब न लाओ जिसके साथ चार फ़रिश्ते हों, वो गवाही दें कि यह अल्लाह की किताब है और तुम उसके रसूल हो. इसपर यह आयत उतरी और बताया गया कि ये सब हील बहाने हैं अगर कागज़ पर लिखी हुई किताब उतार दी जाती और वो उसे अपने हाथों से छूकर और टटोल कर देख भी लेते और यह कहने का मौक़ा भी न होता कि नज़रबन्दी करदी गई थी. किताब उतरती नज़र आई, था कुछ भी नहीं, तो भी ये बदतरीबी ईमान लाने वाले न थे, उसको जादू बताते और जिस तरह चाँद चिर जाने को जादू बताया था और उस चमत्कार को देखकर ईमान न लाए थे उसी तरह इसपर भी ईमान न लाते क्योंकि जो लोग दुश्मनी के कारण इन्कार करते हैं वो आयतों और चमत्कारों से फ़ायदा नहीं उठा पाते.
- (११) मुश्रिक लोग.
- (१२) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर.
- (१३) और फिर भी ये ईमान न लाते.

तो काम तमाम हो गया होता^(२२) फिर उन्हें माहलत (अवकाश) न दी जाती^(२३) (८) और अगर हम नबी को फ़रिश्ता करते^(२४) जब भी उसे मर्द ही बनाते^(२५) और उनपर वही शुबह रखते जिसमें अब पड़े हैं^(२६) और ज़रूर ऐ मेहबूब तुमसे पहले रसूलों के साथ भी ठट्ठा किया गया तो वो जो उनसे हंसते ये उनकी हंसी उनको ले बैठी^(२७) (१०)।

दूसरा रूकू

तुम फ़रमा दो^(१) ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ^(२) (११) तुम फ़रमाओ किस का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है^(३) तुम फ़रमाओ अल्लाह का है^(४) उसने अपने करम (दया) के ज़िम्मे पर रहमत लिख ली है^(५) बेशक ज़रूर तुम्हें क़यामत के दिन जमा करेगा^(६) इसमें कुछ शक नहीं वो जिन्होंने ने अपनी जान नुक़सान में डाली^(७) ईमान नहीं लाते^(१२) और उसी का है जो कुछ बसता है रात और दिन में^(८) और वही है सुनता जानता^(९) (१३) तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा किसी और को वाली बनाऊं^(१०) वह अल्लाह जिसने आसमान और ज़मीन पैदा किये और वह खिलाता है और खाने से पाक है^(११) तुम फ़रमाओ मुझे हुक्म हुआ है कि सबसे पहले गर्दन रखूँ^(१२) और हरगिज़ शिर्क वालों में से न होना^(१४) तुम फ़रमाओ अगर मैं अपने रव की नाफ़रमानी करू तो मुझे

أَنْزَلْنَا مَلَكًا لِّقَضَى الْأَمْرِ ثُمَّ لَا يَنْظُرُونَ ۝ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَا يَلْبِسُونَ ۝ وَلَقَدْ اسْتَهْزَأُ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَخَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ الظُّرُوفُ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ۝ قُلْ لِّسَنُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝ قُلْ لِلَّهِ كُتُبٌ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةِ ۝ لِيَجْزِيََكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۝ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۝ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ أَعْبُدُوا اللَّهَ أَتَّخِذُ وَلِيًّا قَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يَطْعَمُ ۝ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ

مَنْزِل

(२२) यानी अज़ाब बाजिब हो जाता और यह अल्लाह की सुन्नत है कि जब काफ़िर कोई निशानी तलब करें और उसके बाद भी ईमान न लाएं तो अज़ाब बाजिब हो जाता है और वो हत्ताक कर दिये जाते हैं।

(२३) एक क्षण की भी, और अज़ाब में देरी न की जाती तो फ़रिश्ते का उतरना जिसको वो तलब करते हैं, उन्हें क्या नफ़ा देता।

(२४) यह उन काफ़िरों का जवाब है जो नबी अलैहिस्सलाम को कहा करते थे कि यह हमारी तरह आदमी हैं और इसी पागलपन में वो ईमान से मेहरूम रहते थे। इन्हीं इन्सानों में से रसूल भेजने की हिकमत बताई जाती है कि उनके फ़ायदा उठाने और नबी की तालीम से फैज़ उठाने की यही सूरत है कि नबी आदमी की सूरत में आए क्योंकि फ़रिश्ते को उसकी असली सूरत में देखने की तो ये लोग हिम्मत न कर सकते, देखते ही दहशत से बंहा हो जाते या मरजाते, इसलिये अगर मान लो रसूल फ़रिश्ता ही बनाया जाता।

(२५) और इन्सान की सूरत ही में भेजते ताकि ये लोग उसको देख सकें, उसका कलाम सुन सकें, उससे दीन के अहक़ाम मालूम कर सकें। लेकिन अगर फ़रिश्ता आदमी की सूरत में आता तो उन्हें फिर वही कहने का मौक़ा रहता कि यह आदमी है, तो फ़रिश्ते को नबी बनाने का क्या फ़ायदा होता।

(२६) वो अज़ाब में जकड़े गए। इसमें नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है कि आप दुखी न हों, काफ़िरों का पहले नबियों के साथ भी यही तरीक़ा रहा है और इसका बबाले उन काफ़िरों को उठाना पड़ा है। इसके अलावा मुश्कि को चेतावनी है कि पिछली उम्मतों के हाल से सबक लें और नबियों के साथ अदब से पेश आए ताकि पहलों की तरह अज़ाब में न जकड़े जाएं।

सूरत अनआम - दूसरा रूकू

(१) ऐ हबीब सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, इन हंसी बनावे वालों से कि तुम।

(२) और उन्होंने कुछ और झुटलाने का क्या फल पाया।

(३) अगर वो इसका जवाब न दें तो...

(४) क्योंकि इसके सिवा और कोई जवाब ही नहीं और वो इसके ख़िलाफ़ नहीं कर सकते क्योंकि वुत, जिनको मुश्कि पूजते हैं, वो बेजान हैं, किसी चीज़ के मालिक होने की सलाहियत नहीं रखते। खुद दूसरे की मिल्कियत में हैं। आसमान व ज़मीन का वही मालिक हो सकता है जो आप ज़िन्दा रखने की कुदरत रखने वाला, अनादि व अनन्त, हर चीज़ पर सक्षम, और सब का हाकिम हो, तमाम चीज़ें उसके पैदा करने से अस्तित्व में आई हैं, ऐसा सिवाय अल्लाह के कोई नहीं। इसलिये तमाम सृष्टि का मालिक उसके सिवा कोई नहीं हो सकता।

बड़े दिन^(१३) के अज़ाब का डर है^(१५) उस दिन जिससे अज़ाब फेर दिया जाए^(१४) जरूर उसपर अल्लाह की मेहर (कृपा) हुई और यही खुली कामयाबी है^(१६) और अगर तुझे अल्लाह काई बुराई^(१५) पहुंचाए तो उसके सिवा उसका कोई दूर करने वाला नहीं और अगर तुझे भलाई पहुंचाए^(१६) तो वह सब कुछ कर सकता है^(१७) और वही गालिब है अपने बन्दों पर और वही है हिकमत वाला खबरदार^(१८) तुम फरमाओ सबसे बड़ी गवाही किसकी^(१९) तुम फरमाओ कि अल्लाह गवाह है मुझमें और तुममें^(२०) और मेरी तरफ इस कुरआन की वही (देववाणी) हुई है कि मैं इससे तुम्हें डराऊं^(२०) और जिन जिनको पहुंचे^(२१) तो क्या तुम^(२२) यह गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ और खुदा हैं तुम फरमाओ^(२३) कि मैं यह गवाही नहीं देता^(२४) तुम फरमाओ कि वह तो एक ही मअवूद (आराध्य) है^(२५) और मैं बेज़ार हूँ उनसे जिनको तुम शरीक ठहराते हो^(२६) जिनको हमने किताब दी^(२७) उस नबी को पहचानते हैं^(२८) जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं^(२९) जिन्होंने अपनी जान नुकसान में डाली वो ईमान नहीं लाते^(३०)

तीसरा खूक

और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे^(३) या उसकी आयतें झुटलाए वेशक ज़ालिम फ़लाह न

عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ مَنْ يُصِرْ
عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْبَاقِي ۝
وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ يَضْرِبْ فَلَاكَ شَفْ لَهٗ إِلَّا هُوَ
وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِيْخِرْ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْحَكِيمُ ۝
قُلْ أَيْ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۚ قُلْ اللَّهُ شَهِيدُ
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ هَذَا الْقُرْآنِ لِأُنْذِرَكُمْ
بِهِ وَمَنْ يُلْغَ أَتَيْكُمْ لَتَشْهَدُوا أَنَّ مَعَ اللَّهِ
الْهَةَ أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ
وَاحِدٌ وَإِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَشْرِكُونَ ۝ الَّذِينَ اتَّخَذُوا
الْكِتَابَ يَغْفِرُونَ لَكُمْ بِغَيْرِ قَوْلٍ ۚ إِنَّا لَنَدِينُ
حَسْرَتًا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ
مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ إِنَّهُ

مَلَكٌ

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتْلُوهُ

(१५) यानी उसने रहमत का वादा किया और उसका वादा तोड़े जाने और झूठ से दूर है और रहमत आम है, दानी हो या दुनियावी, अपनी पहचान और नीहीद और इल्म की तरफ हिदायत फरमाना भी रहमत में दाखिल है और काफिरों का मोहलत देना और अज़ाब में जल्दी न करना भी, कि इससे उन्हें तीव्र और सफ़ाई का मौक़ा मिलता है. (जुमल बग़रह)

(१६) और कर्मों का बदला देगा.

(१७) कुछ इस्तिनयार करके.

(१८) यानी सारी सृष्टि उसी की मिल्क है, और वह सबका पैदा करने वाला मालिक और ग़व है.

(१९) उससे कोई चीज़ दुपी नहीं.

(२०) जब काफ़िरों ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अपने बाप दादा के दीन की तरफ बुलाया तो यह आयत उतरी.

(२१) यानी सृष्टि सब उसकी मोहताज है, वह सब से बेतियाज़, बे पर्वाह.

(२२) क्योंकि नबी अपनी उम्मत से दीन में पहले होते हैं.

(२३) यानी क़यामत के दिन.

(२४) और निजात दी जाए.

(२५) बीमारी या तंगदस्ती या और कोई बला.

(२६) सेहत व दीलत बग़रह की तरह.

(२७) कादिर मूलक है यानी सर्वशक्तिमान. हर चीज़ पर ज़ाती कुदरत रखता है. कोई उसकी मज़ी के खिलाफ़ कुछ नहीं कर सकता तो कोई उसके सिवा पूजनीय हो सकता है. यह शिर्क का रद करने वाली एक असरदार दलील है.

(२८) मक्का वाले रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहने लगे कि ऐ मुहम्मद, हमें कोई ऐसा दिग्ग़ाड़ये जो आपक नबी होने की गवाही देता हो. इसपर यह आयत उतरी.

(२९) और इतनी बड़ी और कुबूल करने के काबिल गवाही और किसकी हो सकती है.

(३०) यानी अल्लाह तआला मेरी नबुव्वत की गवाही देता है ऐसा इसलिये कि उसने मेरी तरफ़ इस कुरआन की वही फ़रमाई और यह ऐसा चमत्कार है कि तुम ज़वान वाले होने के बावजूद इसके मुकाबले से आजिज़ रहे तो इस किताब का मुझपर उतरना अल्लाह की तरफ़ से मेरे रसूल होने की गवाही है. जब यह कुरआन अल्लाह तआला की तरफ़ से यकीनी गवाही है और मेरी तरफ़ वही फ़रमाया गया ताकि मैं तुम्हें डराऊं कि तुम अल्लाह के हुक्म की मुख़ालिफ़त न करो.

पाएंगे (२१) और जिस दिन हम सब को उठाएंगे फिर मुश्रिकों से फरमाएंगे कहाँ हैं तुम्हारे वो शरीक जिन का तुम वावा करते थे (२२) फिर उनकी कुछ बनावट न रही (२३) मगर यह कि बोले हमें अपने रव अल्लाह की कसम कि हम मुश्रिक न थे (२४) देखो कैसा झूठ बोधा खुद अपने ऊपर (२५) और गुम गई उन से जो बातें वनाते थे (२६) और उनमें कोई वह है जो तुम्हारी तरफ कान लगाता है (२७) और हमने इनके दिलों पर गलाफ कर दिये हैं कि उसे न समझें और उनके कान में टैट (खई) और अगर सारी निशानियाँ देखें तो उनपर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब तुम्हारे हुजूर तुमसे झगड़ते हाज़िर हों तो काफिर कहें ये तो नहीं मगर अगलों की दास्तानें (२८) और वो इससे रोकते (२९) और इससे दूर भागते हैं और हलाक नहीं करते मगर अपनी जानें (३०) और उन्हें शऊर (आभास) नहीं (३१) और कभी तुम देखो जब वो आग पर खड़े किये जाएंगे तो कहेंगे काश किसी तरह हम वापस भेजे जाएं (३२) और अपने रव की आयतें न झुटलाएं और मुसलमान हो जाएं (३३) वल्कि उनपर खुल गया जो पहले छुपाते थे (३४) और अगर वापस

لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ
لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا آيِنُ شُرَكَائِكُمُ الَّذِينَ كُنْتُمْ
تَرْعَمُونَ ۝ ثُمَّ لَمْ يَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ
رَبَّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ۝ أَنْظِرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَى
أَنْفُسِهِمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ وَوَعَدُهمُ
مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۖ وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ
يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِنْ يَرَوْا كَلِمًا مِنْ
يَوْمِنَا بِنَاءً حَتَّى إِذَا جَاءَهُمْ يَكِيدُوا لَكُمْ يُقُولُ
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَهُمْ
يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْهَوْنَ عَنْهُ ۖ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا
أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ وَلَوْ تَرَى إِذْ وَقَفُوا عَلَى
النَّارِ فَقَالُوا يَلَيْسَتْ نَارُ وَلَا تُكْذِبُ بِآيَاتِ رَبِّنَا
وَتَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ بَلْ كَذَّبُوا مَا كَانُوا

मन्ज़र

(२१) यानी मेरे वाद क़यामत तक आने वाले जिन्हें कुरआने पाक पहुंचे चाहे वो इंसान हों या जिन, उन सबको मैं अल्लाह के हुक्म के विरोध से डराऊँ। हदीस शरीफ में है कि जिस शख्स को कुरआने पाक पहुंचा, मानो कि उसने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को देखा और आपका मूबारक कलाम सुना। हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहो अन्हां ने फरमाया कि जब यह आयत उतरी तो हुजूर ने किसरा और क़सर वगैरह वादशाहों को इस्लाम की दावत के पत्र खाना किये। (मदायिक व ख़ाज़िन) इसकी तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि “मन बलगा” (जिन जिनको पहुंचे) के मानी ये हैं कि इस कुरआन से मैं तुमको डराऊंगा और वो डराएँ जिनको यह कुरआन पहुंचे। तिरमिज़ी की हदीस में है कि अल्लाह तराताज़ा करे उसको जिसने हमारा कलाम सुना और ज़ेया सुना, वैसा पहुंचाया। बहुत से पहुंचाए हुए, सुनने वाले से ज़्यादा पहल हाते हैं और एक रिवायत में है, सुनने वाले से ज़्यादा अफ़क़ह यानी समझने बूझने वाले होते हैं। इससे फ़िक्कह के ज़ारतकारों की महानता मालूम होती है।

(२२) ऐ मुश्रिक लोगो।

(२३) ऐ हवीब सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम।

(२४) जो गवाही तुम देते हो और अल्लाह के साथ दूसरे मअबूद ठहराते हो।

(२५) उसका तो कोई शरीक नहीं।

(२६) इस आयत से साबित हुआ कि जो शख्स इस्लाम लाए उसको चाहिये कि तौहीद और रिसालत की गवाही के साथ इस्लाम के हर मुआलिफ़ अक़ीदे और दीन से विरोध ज़ाहिर करे।

(२७) यानी यहूदियाँ और ईसाइयाँ के जलमा जिन्होंने तीरात व इंजील पाई।

(२८) आपके हुलियए शरीफ़ यानी नख़शियन और आपके गुण और विशेषताओं से, जो इन किताबों में दर्ज हैं।

(२९) किसी शक व संदेह के बिना।

सूरए अनआम - तीसरा रूकू

(१) उसका शरीक ठहराए या जो बात उसकी शान के लायक न हो, उसकी तरफ़ जोड़े।

(२) यानी कुछ माज़िन न मिली, कोई बहाना न पा सके।

(३) कि उम्र भर के शिर्क ही में इन्कार कर बैठे।

(४) अबू सुफ़ियान, बलीद, नज़र और अबू जहल वगैरह जमा होकर संयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की कुरआने पाक की तिलमल सुनने लगे तो नज़र से उसके साथियों ने कहा कि मुहम्मद क्या कहते हैं। कहने लगा, मैं नहीं जानता; ज़बान को हरकत

يُخْفُونَ مِنْ قَبْلِ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لَنَا نَهْوَاعُنْهُ ۖ
 إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۖ وَقَالُوا إِن هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا
 نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۖ وَلَوْ تَرَى إِذْ وَقَفُوا عَلَىٰ رَءِيسِهِمْ
 قَالَ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا قَالَ فَذُقُوا
 الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۖ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا
 بِلِقَاءِ اللَّهِ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا
 يَسِّرْنَا عَلَىٰ مَا فَرَقْنَا فِيهَا ۖ وَهُمْ يَخْلُونَ أَوْ زَارَهُمْ
 عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۖ إِلَّا سَاءَ مَا يَزُرُونَ ۖ وَمَا الْحَيَاةُ
 الدُّنْيَا إِلَّا لُغْبٌ وَلَهْوٌ ۖ وَلِلْآخِرَةِ خَيْرٌ
 لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۖ قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ
 لِيَكْزُوكَ الذِّبَىٰ يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لَا يَكْذِبُونَكَ وَلَكِنْ
 الظَّالِمِينَ بَايَاتِ اللَّهِ يَجْعَلُونَ ۖ وَلَقَدْ كَذَّبْتَ رَسُولٌ
 مِنْ قَبْلِكَ فَصَبِّرُوا عَلَىٰ مَا كَذَّبُوا وَأَوْدُوا حَتَّىٰ

مَدَن

भेजे जाएं तो फिर वही करें जिससे मना किये गए थे और
 बेशक वो जरूर झूठे हैं (२८) और बोले (२९) वह तो यही
 हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है और हमें उठना नहीं (३०) (२९)
 और कभी तुम देखो जब अपने रब के हुज़ूर खड़े किये
 जाएंगे फ़रमाएगा क्या यह हक़ (सच) नहीं (३१) कहेंगे क्यों
 नहीं हमें अपने रब की क़सम, फ़रमाएगा तो अब अज़ाब
 चखो बदला अपने कुफ़्र का (३०)

चौथा रूकू

वेशक हार में रहे वो जिन्होंने अपने रब से मिलने से इन्कार
 किया यहां तक कि जब उनपर क़यामत अचानक आ गई
 बोले हाय अफ़सोस हमारा इसपर कि इसके मानने में हमने
 घूक की और वो अपने (३१) बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए हैं
 और कितना बुरा बोझ उठाए हुए हैं (३२) और दुनिया
 की ज़िन्दगी नहीं मगर खेल कूद (३३) और वेशक पिछला घर
 भला उनके लिये जो डरते हैं (३४) तो क्या तुम्हें समझ नहीं (३५)
 हमें मालूम है कि तुम्हें रंज देती है वह बात जो ये कह रहे
 हैं (३६) तो वो तुम्हें नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम अल्लाह की
 आयतों से इन्कार करते हैं (३७) और तुम से पहले झुटलाए
 गए तो उन्होंने सब्र किया इस झुटलाने और ईज़ाएं (पीड़ाएं)
 पाने पर यहां तक कि उन्हें हमारी मदद आई (३८) और

देते हैं और पहलों के क्रिसं कहते हैं जैसे मैं तुम्हें सुनाया करता हूँ अब सुफ़ियान ने कहा कि इसका इन्कार करने से मर जाना बेहतर
 है इसपर यह आयत उतरी।

(२९) इससे उनका मतलब कलामे पाक के अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल होने का इन्कार करना है।

(३०) यानी मुश्रिक लोगों को क़ुरआन शरीफ़ से या रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से और आपपर ईमान लाने और
 आपका अनुकरण करने से रोकते हैं यह आयत मक्के के काफ़िरों के बारे में उतरी जो लोगों का सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे
 वसल्लम पर ईमान लाने और आपकी मजलिस में हाज़िर होने और क़ुरआन सुनने से रोकते थे और खुद भी दूर रहते थे कि कहीं
 मुबारक कलाम उनके दिलों पर असर न कर जाए हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत हुज़ूर के चचा
 अबू तालिब के बारे में उतरी जो मुश्रिकों को तो हुज़ूर को तकलीफ़ पहुंचाने से रोकते थे और खुद ईमान लाने से बचते थे।

(३१) यानी इसका नुक़सान खुद उन्हीं को पहुंचता है।

(३२) दुनिया में।

(३३) जैसा कि ऊपर इसी रूकू में बयान हो चुका कि मुश्रिकों से जब फ़रमाया जाएगा कि तुम्हारे शरीक कहाँ हैं तो वो अपने
 कुफ़्र को छुपा जाएंगे और अल्लाह की क़सम खाकर कहेंगे कि हम मुश्रिक न थे इस आयत में बताया गया कि फिर जब उन्हें ज़ाहिर
 हो जाएगा जो वो छुपाते थे, यानी उनका कुफ़्र इस तरह ज़ाहिर होगा कि उनके शरीर के अंग उनके कुफ़्र और शिर्क की गवाहीयाँ देंगे,
 तब वो दुनिया में बापस जाने की तमन्ना करेंगे।

(३४) यानी काफ़िर जो रसूल भेजे जाते और आख़िरत के इन्कारी हैं इसका बाक़िआ यह था कि जब नबीय क़रीम सल्लल्लाहो
 अलैहे वसल्लम ने काफ़िरों को क़यामत के एहवाल और आख़िरत की ज़िन्दगानी, ईमानदारों और फ़रमाँवरदारों के ग़वाब, काफ़िरों
 और ताफ़रमातों पर अज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया तो काफ़िर कहने लगे कि ज़िन्दगी तो बस दुनिया ही की है।

(३५) यानी मरने के बाद।

(३६) क्या तुम मरने के बाद ज़िन्दा नहीं किये गए।

सूरए अनआम :- चौथा रूकू

(१) गुनाहों के।

(२) हदीस शरीफ़ में है कि काफ़िर जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उसके सामने बहुत भयानक डरावनी और बहुत बड़बूदार

अल्लाह की बातें बदलने वाला कोई नहीं^(१) और तुम्हारे पास रसूलों की खबरें आही चुकी हैं^(२) और अगर उनका मुंह फेरना तुमको बुरा लगा है^(३) तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग तलाश कर लो या आसमान में कोई ज़ीना फिर उन के लिये निशानी ले आओ^(४) और अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर इकट्ठा कर देता तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ नादान न बन^(५) मानते तो वही हैं जो सुनते हैं^(६) और उन मुर्दा दिलों^(७) को अल्लाह उठाएगा^(८) फिर उसकी तरफ़ हाँके जाएंगे^(९) और बोले^(१०) उनपर कोई निशानी क्यों न उतरी उनके रब की तरफ़ से^(११) तुम फ़रमाओ कि अल्लाह कादिर है कि कोई निशानी उतारे लेकिन उनमें बहुत निरे जाहिल हैं^(१२) और नहीं कोई ज़मीन में चलने वाला और न कोई परिन्दा कि अपने परों पर उड़ता है मगर तुम जैसी उम्मतें^(१३) हमने इस किताब में कुछ उठा न रखा^(१४) फिर अपने रब की तरफ़ उठाए जाएंगे^(१५) और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई वेहरे और गुंगे हैं^(१६) अंधेरो में^(१७) अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे सीधे रास्ते डाल दे^(१८) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर तुमपर अल्लाह का

अَنَّهُمْ نَصْرًا، وَلَا مَبْدِلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ، وَلَقَدْ جَاءَكَ
مِنْ رَبِّكَ الْمُرْسَلِينَ ۝ وَإِنْ كَانَ كِبَارُكَ عَلَيْكَ
إِغْرَاصَهُمْ فَإِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ
أَوْ سُلَامًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ، وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهَدْيِ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْخَالِينَ ۝
إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْعَوْنَ، وَالْمَوْتَى يَبْعَثُهُمْ
اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝ وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ
مِّن رَّبِّهِ، قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُنْزِلَ آيَةً
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَا ظَلِيرٍ يَّطِيرُ بِحَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَلَكُمْ، مَا فَرَّطْنَا
فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ۝ وَالَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُومٌ وَكُلٌّ فِي الظَّلُمَاتِ، مِمَّنْ نَّشَأُ اللَّهُ
يُضِلُّهُ، وَمِمَّنْ نَّشَأُ يَجْعَلُهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

मज़ल

सूरत आएगी, वह काफ़िर से कहेगी तू मुझे पहचानता है, काफ़िर कहेगा, नहीं, तो वह काफ़िर से कहेगी, मैं तेरा ख़बीस अमान यानी कुकर्म हूँ, दुनिया में तू मुझपर सवार रहा, आज मैं तुझपर सवार हूँ और तुझ तमाम सृष्टि में रूखा करूंगा, फिर वह उसपर सवार हो जाता है।

(३) जिसे बज़ा अर्थात् ठहराव नहीं, जल्द गुज़र जाती है, और नेकियाँ और फ़रमाँवरदारियाँ अगरचे मूँमिन से दुनिया ही में हुई हों, लेकिन वो अख़िरत के कामों में से हैं।

(४) इससे साबित हुआ कि पाकबाज़ों और नेक लोगों के कर्मों के सिवा दुनिया में जो कुछ है, सब बुराई ही बुराई है।

(५) अज़नब बिन शरीक और अबू जहल की आपसी मुलाक़ात हुई तो अज़नब ने अबू जहल से कहा, ऐ अबुल हिक्म (काफ़िर अबू जहल को यही पुकारते थे) यह एकान्त की जगह है और यहाँ कोई ऐसा नहीं जो मेरी तेरी बात पर सूचित हो सके, अब तू मुझे ठीक ठीक बता कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) सच्चे हैं या नहीं, अबू जहल ने कहा कि अल्लाह की कसम, मुहम्मद बेशक सच्चे हैं, कभी कोई झूठी बात उनकी ज़वान पर न आई, मगर बात यह है कि ये कुसई की औलाद हैं और लिवा (झंडा), सिक्कापत (पानी पिलाना), डिजाबत, नदवा वगैरह, तो सारे सत्कार उन्हें हासिल ही हैं, नबुव्वत भी उन्हीं में हो जाए तो बाक़ी कुरैशियों के लिये सम्मान क्या रह गया, तिरमिज़ी ने हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत की कि अबू जहल ने हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा, हम आपको नहीं झुटलाते, हम तो उस किताब का झुटलाने हैं जो आप लाए, इसपर यह आयत उतरी।

(६) इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है कि कौम हुज़ूर की सच्चाई का विश्वास रखती है लेकिन उनके ज़ाहिरी झुटलाने का कारण उनका हसद और दुश्मनी है।

(७) आयत के ये मानी भी होते हैं कि ऐ हबीब, आपका झुटलाया जाना अल्लाह की आयतों का झुटलाया जाना है और झुटलाने वाले ज़ालिम।

(८) और झुटलाने वाले हलाक कर दिये गए।

(९) उसके हुक्म को कोई पलट नहीं सकता, रसूलों की मदद और उनके झुटलाने वालों की हलाकत, उसने जिस समय लिख दी है, ज़रूर होगी।

(१०) और आप जानते हैं कि उन्हें काफ़ियों से कैसी तकलीफ़ें पहुँची, ये नज़र के सामने रखकर आप दिल को इम्मीनान में रखें।

(११) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बहुत इच्छा थी कि सब लोग इस्लाम ले आएँ, जो इस्लाम से मेहरूम रहते, उनकी मेहरूमी आपको बहुत अज़रती।

(१२) मकररद उनके ईमान की तरफ़ से रसूलों अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मीद तोड़ना है, ताकि आपसे उनके इन्कार

अज्ञाव आए या कयामत कायम हो, क्या अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे^(१३) अगर सच्चे हो^(१४) ॥४०॥ वल्कि उसी को पुकारोगे तो वह अगर चाहे^(१५) जिसपर उसे पुकारते हो उसे उखले और शरीकों को भूल जाओगे^(१६) ॥४१॥

पाँचवां खूकू

आर बेशक हमने तुमसे पहली उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो उन्हें सख्ती और तकलीफ़ से पकड़ा^(१) कि वो किसी तरह गिड़गिड़ाएं^(२) ॥४२॥ तो क्यों न हुआ कि जब उनपर अज्ञाव आया तो गिड़गिड़ाए होते लेकिन दिल तो सख्त हो गए^(३) और शैतान ने उनके काम निगाह में भले कर दिखाए^(४) ॥४३॥ फिर जब उन्होंने भुला दिया जो नसीहतें उनको की गई थीं^(५) हमने उनपर हर चीज़ के दर्वाज़े खोल दिये^(६) यहाँ तक कि जब खुश हुए उसपर जो उन्हें मिला^(७) तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया^(८) अब वो आस टूटे रह गए^(९) ॥४४॥ तो जड़ काट दी गई ज़ालिमों की^(१०) और सब खूबियों सराहा अल्लाह रब सारे संसार का^(११) ॥४५॥ तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर अल्लाह तुम्हारे कान और आँख लेले और तुम्हारे दिलों पर मोहर कर दे^(१२) तो अल्लाह के सिवा कौन खुदा है कि तुम्हें यह चीज़ ला दे^(१३)

قُلْ اَرَايَكُمْ اِنْ اَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ اَوْ اَتَتْكُمْ السَّاعَةُ
اَعْبَرَاللَّهُ تَدْعُونَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ يٰۤاَيُّهَا
تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ اِلَيْهِ ۚ اِنْ شَاءَ وَ
تُنْسُونَ مَا تَنْشُرُونَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا اِلٰى اُمَمٍ
مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنَاهُمْ بِالْبَاسِ ۚ وَالضَّرَآءِ لَعَلَّهُمْ
يَتَضَرَّعُونَ ۝ فَلَوْلَا اِذَا جَاءَهُمْ بِاسُنَا تَضَرَّعُوا
وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ فَلَمَّا سَوَّآ مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَخَجْنَا عَلَيْهِمْ
اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتّٰى اِذَا فِرْحَانُهُمْ اُوتُوا اَخَذْنَاهُمْ
بَغْتَةً ۚ فَاِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ۝ فَطَمَعَ ذٰۤاِبِرُ الْقُوٰرِ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ قُلْ
اَرَاَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللَّهُ سَعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَحَمَّرَ
عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِ اللَّهِ يٰۤاَتِيْكُم بِهٖ ۚ اَنْظُرْ

مَزْلُومٌ

करने और ईमान न लाने से दुख और तकलीफ़ न हो।

(१३) दिल लगाकर समझाने के लिये वही नसीहत क़बूल करते हैं और सच्चे दीन की दावत तसलीम करते हैं।

(१४) यानी काफ़िर लोग।

(१५) कयामत के दिन।

(१६) और अपने कर्मों का बदला पाएंगे।

(१७) मक्कह के काफ़िर।

(१८) काफ़िरों की गुमराही और सरकशी इस हद तक पहुंच गई कि वो कई निशानियों और चमत्कार, जो उन्होंने सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से देखे थे, उनपर भरोसा न किया और सबका इन्कार कर दिया और ऐसी आयत तलव करने लगे जिसके साथ अल्लाह का अज्ञाव हो जैसा कि उन्होंने कहा था “अल्लाहुम्मा इन काना हाज़ा हुबल हक्क मिन इन्दिका फ-अमनिर अलैना हिज़ारतम मिनस समाए” यानी या रब अगर यह सत्य है तेरे पास से तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा। (तफ़सीर अबुसऊद)

(१९) नहीं जानते कि इसका उत्तरना उनके लिये बता है कि इन्कार करने ही हत्ताक कर दिये जायेंगे।

(२०) यानी तमाम जानदार चाह वो मवेशी हों या जंगली जानवर या चिड़ियाँ, तुम्हारी तरह उम्मतें हैं, कुछ मुफ़्फ़िग़ों ने फ़रमाया कि ये पशु पक्षी तुम्हारी तरह अल्लाह को पहचानते, एक मानते, उसकी तस्बीह पढ़ते, इबादत करने हैं, कुछ का कहना है कि वो मख़लूक होंगे में तुम्हारी तरह हैं, कुछ ने कहा कि वो इन्सान की तरह आपसी प्रेम संग्रते हैं और एक दूसरे की बात समझते हैं, कुछ का क़ौल है कि रोज़ी तलव करने, हत्ताक से बचने, वर मादा की पहचान रखने में तुम्हारी तरह हैं, कुछ ने कहा पैदा होना, मरने, मरने के बाद हि़साब के लिये उठने में तुम्हारी तरह हैं।

(२१) यानी सारे उलूम और तमाम “माकाना व मायकून” (यानी जो हुआ और जो होने वाला है) का इसमें बयान है और सारी चीज़ों की जानकारी इसमें है, इस किताब से या क़ुरआन शरीफ़ मुराद है या त्हीह मंहफ़ूज़। (ज़मल बमैरह)

(२२) और तमाम जानदारों, पशु पक्षियों का हि़साब हांगा, इसके बाद वो ख़ाक़ कर दिये जायेंगे।

(२३) कि हक़ मानना और हक़ बोलना उन्हें हासिल नहीं।

(२४) त्रिहालत और आशचर्य और कुफ़र के।

(२५) इस्लाम की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

(२६) और जिनको दुनिया में मअबूद मानते थे, उनमें हाज़ल ख़ाई चाहेंगे।

(२७) अपने इस दावे में कि मआज़ल्लाह वुत मअबूद हैं, तो इस वक़्त उन्हें पुकारो अगर ऐसा न करांगे।

(२८) तो इस ग़ुपीयत को।

देखो हम किस किस रंग से आयतें बयान करते हैं फिर वो मुंह फेर लेते हैं (४६) तुम फरमाओ भला बताओ तो अगर तुम पर अल्लाह का अज्ञाव आए अचानक (१३) या खुल्लमखुल्ला (१३) तो कौन तवाह होगा सिवा जालिमों के (१३) (४७) और हम नहीं भेजते रसूलों को मगर खुशी और डर सुनाते (१४) तो जो ईमान लाए और संवरे (१५) उनको न कुछ डर न कुछ गम (४८) और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई उन्हें अज्ञाव पहुंचेगा बदला उनकी बेहुकमी का (४९) तुम फरमा दो मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खजाने हैं और न यह कहूं कि मैं आप गैब जान लेता हूँ और न तुमसे यह कहूं कि मैं फरिश्ता हूँ (१६) मैं तो उसीका तावे (अधीन) हूँ जो मुझे वही आती है (१७) तुम फरमाओ क्या बरावर होजाएंगे अंधे और अंधियारे (१८) तो क्या तुम गौर नहीं करते (५०)

छटा रूकू

और इस कुरआन से उन्हें डराओ जिन्हें खोफ (भय) हो कि अपने रव की तरफ यूँ उठाए जाएं कि अल्लाह के सिवा न उनका कोई हिमायती हो न कोई सिफारिशो इस उम्मीद पर कि वो परहेज़गार होजाएं (५१) और दूर न करो उन्हें जो अपने रव को पुकारते हैं सुबह और शाम उसकी रज़ा

كَيْفَ تَصْرِفُ الْأَيُّتِ ثُمَّ هُمْ يَصِدُّونَ ۝ قُلْ
ارْءَيْكُمْ إِن أَنُكُم عَذَابُ اللَّهِ بَعَثَ أَوْ جَهْرَةً
هَلْ يَهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمُ الظَّالِمُونَ ۝ وَمَا تُرْسِلُ
الرُّسُلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ فَمَنْ آمَنَ
وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝
وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يُمَسِّمُ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا
يُفْسِقُونَ ۝ قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ
وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ۚ إِن
اتَّبَعُوا إِلَّا مَا يُوْحَىٰ إِلَيَّ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ
وَالْبَصِيرُ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ۝ وَانذِرْ بِهِ الَّذِينَ
يَخَافُونَ أَن يُخْشَرُوا ۚ إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ
دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَلَا
تُطْرَدُ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم بِالْغَدَاوَةِ وَالْعَشِيِّ

مَنْزِل

(२९) जिन्हें अपने झूठे अस्सीदे में मअयूद जानते थे और उनकी तरफ नज़र भी न करोगे क्योंकि तुम्हें मालूम है कि वो तुम्हारे काम नहीं आ सकते.

सूरए अनआम - पाँचवां रूकू

- (१) दरिद्रता, गरीबी और बीमारी वगैरह में जकड़ा.
- (२) अल्लाह की तरफ रूजू करें, अपने गुनाहों से बाज़ आए.
- (३) वो अल्लाह की बारगाह में तीबा करने, माफ़ी मांगने के वजाय कुफ़्र और झुटलाने पर अड़े रहें.
- (४) और वो किसी तरह नसीहत लेने की तैयार न हुए, न पेश आई मुसीबतों से, न नबियों के उपदेशों से.
- (५) सेहत व सलामती और रिज़क में बढ़ोतरी और आराम वगैरह न.
- (६) और अपने आपको उसका हकदार समझने और क़ारून की तरह घमण्ड करने लगें.
- (७) और अज्ञाव में जकड़ा.
- (८) और सब के सघ हलाक कर दिये गए, कोई बाक़ी न छोड़ा गया.
- (९) इससे मालूम हुआ कि मुमराहों, बेदीनों और ज़ालिमों की हलाकत अल्लाह तआला की नेअमत है, इसपर शुक्र करना चाहिये.
- (१०) और इल्म व मअरिफ़त का निज़ाम दरहने बरहम हो जाए.
- (११) इसका जवाब यही है कि कोई नहीं. तो अब तीहीद यानी अल्लाह के एक होने पर दलील क़ायम होगई कि जब अल्लाह के सिवा कोई इतनी कुदरत और अधिकार वाला नहीं तो इबादन का हकदार सिर्फ़ वही है और शिर्क बहुत घुस जुल्म और जुर्म है.
- (१२) जिसके नशान और चिन्ह पहले से मालूम न हों.
- (१३) आँखों देग़ने.
- (१४) यानी काफ़िरों के, कि उन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया और यह हलाकत उनके हक में अज्ञाव है.
- (१५) ईमानदारों को जन्नत व सवाब की वशारत देने और काफ़िरों को जहन्नम व अज्ञाव से डराने.
- (१६) नेक अमल करें.
- (१७) काफ़िरों का तरीक़ा था कि वो सैयदे आलम-सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से तरह तरह के सवाल किया करते थे. कभी कहते कि आप रसूल हैं तो हमें बहुत सी दीलत और माल दीजिये कि हम कभी मोहताज न हों. हमारा लिये पहाड़ों को सोना कर दीजिये.

चाहते^(१) तुमपर उनके हिसाब से कुछ नहीं और उनपर तुम्हारे हिसाब से कुछ नहीं^(२) फिर उन्हें तुम दूर करो तो यह काम इन्साफ़ से कुछ नहीं फिर उन्हें तुम दूर करो तो यह काम इन्साफ़ से परे है^(३) और यूँही हमने उन्हें एक को दूसरे के लिये फ़ितना (मुसीबत) बनाया कि मालदार काफ़िर मोहताज मुसलमानों को देखकर^(४) कहें क्या ये हैं जिनपर अल्लाह ने एहसान किया हम में से^(५) क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता हक़ मानने वालों को^(६) और जब तुम्हारे हुज़ूर वो हाज़िर हों जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उनसे फ़रमाओ तुमपर सलाम हो तुम्हारे रब ने अपने करम के ज़िम्मे पर रहमत लाज़िम करली है^(७) कि तुम में जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर उसके वाद तीवा करे और संवर जाए तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरवान है^(८) और इसी तरह हम आयतों को तफ़्सील से बयान फ़रमाते हैं^(९) और इसलिये कि मुजरिमों का रास्ता ज़ाहिर हो जाए^(१०)^(११)

सातवाँ रूक़

तुम फ़रमाओ मुझे मना किया गया है कि उन्हें पूजूं जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो^(१) तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पर नहीं चलता^(२) यूँ हो तो मैं बहक जाऊँ और राह पर न रहूँ^(३) तुम फ़रमाओ मैं तो अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील (प्रमाण) पर हूँ^(४) और तुम उसे

يُرِيدُونَ وَجْهَهُ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونُ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ وَكَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوا أَهَؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنْ بَيْنِنَا أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ۝ وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآيَاتِ فَقُلْ سَلَمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۚ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَكَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ الْآيَاتِ وَلِتُنَبِّئَ السَّيِّئَ الْمُجْرِمِينَ ۚ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلْ لَا آتِيَهُمْ أَهْوَاءُكُمْ قَدْ صَلَتُ إِذَا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۝ قُلْ إِنِّي عَلَى بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ مَا عِنْدِي

मज़ल

कभी कहते कि पिछली और आगे की ख़बरें सुनाइये और हमें हमारे भविष्य की ख़बर दीजिये, क्या क्या होगा ताकि हम मुनाफ़ा हासिल करें और नुक़सान से बचने के लिये पहले से प्रबन्ध कर लें। कभी कहते, हमें क़यामत का वक़्त बताइये क्या आसपी। कभी कहते आप कैसे मसूल हैं जो ख़ाते पीते भी हैं, निकाह भी करने हैं। उनकी इन तमाम बातों का हम आयत में जवाब दिया गया कि यह क़लाम निहायत बेमहल और जिहालत का है। क्योंकि जो व्यक्ति किसी बात का दावा कर उससे वही बातें पूछी जा सकती हैं जो उसके दावे से सम्बन्धित हों। ग़ैर ज़रूरी बातों का पूछना और उनको उस दावे के ख़िलाफ़ तर्क बनाना अत्यन्त दर्जे की जिहालत और अज्ञानता है। इस लिये इरशाद हुआ कि आप फ़रमा दीजिये कि मेरा दावा यह तो नहीं कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं जो तुम मुझ से माल दौलत का सवाल करो और उसकी तरफ़ तबज़्जह न करूँ तो नबुचत का इन्कार फरदा। न मेरा दावा ज़ाती ग़ैब दानी का है कि अगर मैं तुम्हें पिछली या आयन्दा की ख़बरें न बताऊँ तो मेरी रिसालत मानने में उज्र कर सकूँ। न मैं ने फ़रिशता होने का दावा किया है कि ख़ाना पीना निकाह करना एतिराज़ की बात हो। तो जिन चीज़ों का दावा ही नहीं किया उनका सवाल बेमहल और उसका जवाब देना मुझपर लाज़िम नहीं। मेरा दावा नबुचत और रिसालत का है और जब उसपर ज़ररदग़्न दलीलें और मज़बूत प्रमाण क़ायम हो चुके तो ग़ैर मुतअल्लिक़ वार्ते पेश करना क्या मानी ख़रता है। इस से साफ़ स्पष्ट हो गया कि इस आयत को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ग़ैब पर सूचित किये जाने की नफ़ी के लिये तर्क बनाना ऐसा ही बेमहल है जैसा काफ़िरों का इन संवालों को नबुचत के इन्कार की दस्तावेज़ बनाना बेमहल था। इसके अलावा इस आयत से हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अता किये गए इल्म का इन्कार किसी तरह मुग़द ही नहीं हो सकता क्योंकि उस सूत्र में आयतों के बीच टकराव और परस्पर विरोध का क़ायल होना पड़ेगा जो ग़लत है। मुफ़सिर्सों का यह भी कहना है कि हुज़ूर का "ला अक़ूलो लकुम" फ़रमाना धित्थना के रूप में है। (ख़ाज़िन, मदारिक व जुमल सौग़ह)

(१८) और यही नबी का काम है। तो मैं तुम्हें वही दूँगा जिसकी मुझे इज़ाज़त होगी, वही करूँगा जिसका मुझे हुक्म मिला हो।

(१९) मूमिन व काफ़िर, आलम व जाहिल।

सूरए अनआम - छटा रूक़

(१) काफ़िरों की एक जमाअत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में आई तो उन्होंने देखा कि हुज़ूर के चारों तरफ़ ग़रीब सहाबा की एक जमाअत हाज़िर है जो मामूली दर्जे के लिबास पहने हुए हैं। यह देखकर वो कहने लगे कि हमें इन लोगों

झुटलाते हो, मेरे पास नहीं जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो^(१) हुक्म नहीं मगर अल्लाह का वह हक़ फ़रमाता है और वह सब से बेहतर फैसला करने वाला^(२) तुम फ़रमाओ अगर मेरे पास होती वह चीज़ जिसकी तुम जल्दी कर रहे हो^(३) तो मुझमें तुम में काम ख़त्म हो चुका होता^(४) और अल्लाह ख़ूब जानता है सितम करने वालों को^(५) और उसीके पास हैं कुंजियाँ ग़ैब (अज्ञात) की उन्हें वही जानता है^(६) और जानता है जो कुछ खुशकी और तुरी में है, और जो पत्ता गिरता है वह उसे जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन की अंधेरियों में और न कोई तर और खुशक जा एक रोशन किताब में न लिखा हो^(७) और वही है जो रात को तुम्हारी रूहें निकालता है^(८) और जानता है जो कुछ दिन में कमाओ फिर तुम्हें दिन में उठाता है कि ठहराई हुई मीआद पूरी हो^(९) फिर उसीकी तरफ़ फिरना है^(१०) फिर वह बता देगा जो कुछ तुम करते थे^(११)

आठवाँ सूक़

और वही ग़ालिब (बलवान) है अपने बन्दों पर और तुमपर निगहवान भेजता है^(१) यहां तक कि जंव तुम में किसी को मौत आती है हमारे फ़रिश्ते उसकी रूह निकालते हैं^(२) और वो कुसूर (गलती) नहीं करते^(३)

مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۖ إِنْ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ يَقْضِ الْحَقُّ	وَهُوَ خَيْرُ الْفَصِّلِينَ ۖ قُلْ لَوْ أَنَّ عِنْدِي مَا
تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَفُضِي الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ	وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ۖ وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا
يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ	وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٌ فِي
ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَاسٍ إِلَّا فِي	كِتَابٍ مُبِينٍ ۖ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَ
يَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ	لِيُقَضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ
يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ وَهُوَ الْفَاضِلُ فَوقَ	عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ
أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ۖ	

مزل

के पास बैठने शर्म आती है, अगर आप इन्हें अपनी मजलिस से निकाल दें तो हम आप पर ईमान ले आएं और आप की म्निदमत में हाज़िर रहें, हुज़ूर ने इसको स्वीकार न फ़रमाया, इसपर यह आयत उतरी,

(२) सब का हिसाब अल्लाह पर है, वही सारी सृष्टि को संजी देने वाला है, उसके सिवा किसी के ज़िम्मे किसी का हिसाब नहीं, मतलब यह कि वह कमज़ोर फ़कीर जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ आपके दरबार में कुर्ब पाने के मुस्तहिक हैं, उन्हें दूर न करना ही ठीक है,

(३) हसद के तौर पर,

(४) कि उन्हें ईमान और हिदायत नसीब की, इसके बावजूद कि वो लोग फ़कीर ग़रीब हैं, और हम रईस और सरदार हैं, इससे उनका मतलब अल्लाह तआला पर ऐतिराज़ करना है कि ग़रीब अमीर पर सबक़त का हक़ नहीं रखते तो अगर वह हक़ मोता जिस पर ये ग़रीब हैं तो वो हमसे ऊंचे न होते,

(५) अपने फ़ज़ल व करम से वादा फ़रमाया,

(६) ताकि मन्वाई ज़ाहिर हो और उसपर अमल किया जाए,

(७) ताकि उससे परहेज़ किया जाए, दूर रहा जाए,

सूरए अनआम - सातवाँ सूक़

(१) क्योंकि यह अक्ल और नक़ल दोनों के ख़िलाफ़ है,

(२) यानी तुम्हारा तरीक़ा नफ़स का अनुकरण है न कि दलील का अनुकरण, इसलिये तुम्हारे तरीक़े को अपनाया नहीं जा सकता,

(३) और मुझे उसकी पहचान हासिल है, मैं जानता हूँ कि उसके सिवा कोई पूजे जान के कायिल नहीं, रोशन दलील क़ुरआन शरीफ़ और चमत्कार और ताहीद के प्रमाण सबको शामिल है,

(४) काफ़िर हंसी में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा करते थे कि हम पर जल्दी अज़ाब उतरवाइये, इस आयत में उन्हें जवाब दिया गया और ज़ाहिर कर दिया गया कि हुज़ूर से यह सवाल करना निहायत बंजा है,

(५) यानी अज़ाब,

(६) मैं तुम्हें एक घड़ी की मोहलत न देता और तुम्हें ख़ब का मुख़ालिफ़ देखकर बंधड़क़ हलाक़ कर डालता, लेकिन अल्लाह तआला हिक़्म वाला है, अज़ाब देने में जल्दी नहीं फ़रमाता,

(७) तो जिसे वह चाहे, वही ग़ैब पर सूचित हो सकता है, बिना उसके बताए कोई ग़ैब नहीं जान सकता, (वाहिदी)

फिर फेरे जाते हैं अपने सच्चे मौला अल्लाह की तरफ, सुनता है उसी का हुक्म है^(१) और वह सबसे जल्द हिसाब करने वाला^(२) है^(३) तुम फरमाओ वह कौन है जो तुम्हें निजात (छुटकारा) देता है जंगल और दरिया की आफतों से जिसे पुकारते हो गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता कि अगर वह हमें इससे बचावे तो हम जरूर एहसान मानेंगे^(४) है^(५) तुम फरमाओ अल्लाह तुम्हें निजात देता है उस से और हर वेचैनी से फिर तुम शरीक ठहराते हो^(६) है^(७) तुम फरमाओ वह क़ादिर है कि तुमपर अज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पांव के तले (नीचे) से या तुम्हें भिड़ा दे मुख़लिफ़ ग़िरोह करके और एक को दूसरे की सख़्ती चखाए, देखो हम कैसे तरह तरह से आयतें बयान करते हैं कि कहीं उनको समझ हो^(८) है^(९) और उसे^(१०) झुटलाया तुम्हारी क़ौम ने और यही हक़ (सत्य) है, तुम फरमाओ मैं तुमपर कुछ कराइया नहीं^(११) है^(१२) हर चीज़ का एक वक़्त मुक़रर (निश्चित) है^(१३) और बहुत जल्द जान जाओगे^(१४) है^(१५) और ऐ सुनने वाले जब तू उन्हें देखे जो हमारी आयतों में पड़ते हैं^(१६) तो उनसे मुंह फेर ले^(१७) जबतक और बात में पड़े और जो कहीं तुझे शैतान भुला दे तो याद आए पर ज़ल्लियों के पास न बैठ

ثُمَّ رُدُّوْا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰهُمُ الْحَقُّ ۚ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۚ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ۝ قُلْ مَنْ يُّنْجِيْكُمْ مِنْ ظِلْمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ لَّيْنٌ اٰتَيْنَا مِنْ هٰذَا لَنُكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ قُلِ اللّٰهُ يُّنْجِيْكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْكِرُوْنَ ۝ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذٰبًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلِيْسَكُمْ شَيْعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَآسًا ۚ اَنْظُرْ كَيْفَ تُصَوِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ۝ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۚ لِّكُلِّ نَبِيٍّ مُّسْتَقَرٌّ ۚ وَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاٰتِ الْاٰيٰتِ يَخُوْضُوْنَ فِيْ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حُلٰلٰتٍ عٰثِرَةٍ ۚ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ

मज़ल

- (८) रीशत क़िताब से लौहे मेहफूज़ मुराद है, अल्लाह तआला ने पिटले और अगले सारे ज़लूम इसमें दर्ज फ़रमा दिये.
- (९) तो तुमपर नौद टा जाती है और तुम्हारी क्षमताएं अपने हाल पर बाकी नहीं रहती हैं.
- (१०) और उग्र अपनी हद को पहुंचें.
- (११) आख़िरत में. इस आयत में मरने के बाद ज़िन्दा होने पर दलील ज़िक्र फ़रमाई गई. जिस तरह शेर साने के वक़्त एक तरह की मौत तुमपर भंजी जाती है जिससे तुम्हारे हवाय़ मुअत्तल हो जाते हैं और चलना फिरना पकड़ना और जागने के सारे काम शिथिल हो जाते हैं, उसके बाद वेदारी के वक़्त अल्लाह तआला सारे अंगों को उनकी क्षमताएं प्रदान करता है. यह ख़ुला प्रमाण है इस बात का कि वह तमाम ज़िन्दगानी की क्षमताओं को मौत के बाद अता करने पर इसी तरह की क़ुदरत रखता है.

सूरए अनआम - आठवाँ रूकू

- (१) फ़रिश्ते, जिनका किगमन क़लिवीन कहते हैं. वो आदमी की बेकी और बदी लिखते रहते हैं. हर आदमी के साथ दो फ़रिश्ते हैं, एक दाएं एक बाएं. दाएं तरफ़ का फ़रिश्ता बेकियाँ लिखता है और बाएं तरफ़ का फ़रिश्ता बुराईयाँ. बन्दों को चाहिये कि होशियार रहें और बुराईयाँ और गुनाहों से बचें क्योंकि हर एक काम लिखा जा रहा है और क़यामत के दिन वह लेखा तमाम सृष्टि के मामले पढ़ा जाएगा तो गुनाह कितनी रूम्बाई का कारण होंगे. अल्लाह पनाह दे. आमीन.
- (२) इन फ़रिश्तों से मुराद या तो अकेले मलकुल मौत हैं. उस सूरत में बहुवचन आदर और सम्मान के लिये है. या मलकुल मौत उन फ़रिश्तों समेत मुराद हैं जो उनके सहायक हैं. जब किसी की मौत का वक़्त करीब आता है तो मौत का फ़रिश्ता अल्लाह के हुक्म से अपने सहायक फ़रिश्तों को उसकी रूह निकालने का हुक्म देता है. जब रूह हलक़ तक पहुंचती है तो ख़ुद मलकुल मौत रूह निकालते हैं. (खाज़िन)
- (३) और अल्लाह के हुक्म को पूरा करने में उनसे कोताही नहीं होती और उनके कामों में सुखी और विलम्ब का सवाल नहीं होता. वो अपने कर्तव्य ठीक वक़्त पर अदा करते हैं.
- (४) और उस दिन उसके सिवा कोई हुक्म करने वाला नहीं.
- (५) क्योंकि उसको सोचने, जानने या गिन्ती करने की ज़रूरत नहीं जिस में दर हो.
- (६) इस आयत में क़ाफ़िरों को चेतावनी दी गई है कि ख़ुशकी और तरी के सफ़र में जब वो आफ़नों में मुबतिला होकर पेशान होतें हैं और ऐसी रज़ि़य़ाँ पेश आती हैं जिनसे दिल चौंप जाते हैं और ख़तरं दिलों को बँचैत करदें हैं, उस वक़्त वुत परगन भी वुनों को भूल जाता है और अल्लाह तआला ही से दुआ करता है, उसी के समझ गिड़गिड़ाता है और कहता है कि इस मुसीबत से अगर तूने मुझे छुटकारा दिलाया तो मैं शुक्रगुज़ार होऊंगा और तरी नेअमत का हक़ बजा लाऊंगा.
- (७) और शुक्रगुज़ारी के बजाय ऐसी बड़ी नाशुकी करते हो, यह जानते हुए कि वुत निक्ममे हैं, किसी काम के नहीं, फिर उन्हें अल्लाह का

﴿६८﴾ और परहेजगारों पर उनके हिसाब से कुछ नहीं^(१४) हां नसीहत देना शायद वो बाज़ आएँ^(१५) ﴿६९﴾ और छोड़ दे उनको जिन्होंने अपना दीन हंसी खेल बना लिया और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखा दिया और कुरआन से नसीहत दो^(१६) कि कहीं कोई जान अपने किये पर पकड़ी न जाए^(१७) अल्लाह के सिवा न उसका कोई हिमायती हो न सिफारशी और अगर अपने इक्ज सारे बदले दे तो उससे न लिये जाएं, ये हैं^(१८) वो जो अपने किये पर पकड़े गए उन्हें पीने का खोलता पानी और दर्दनाक अज़ाब बदला उनके कुफ़ का^(१९) ﴿७०﴾

नवाँ सूक़

तुम फ़रमाओ^(१) क्या हम अल्लाह के सिवा उसको पूजें जो हमारा न भला करे न बुरा^(२) और उलटे पांव पलटा दिये जाएं वाद इसके कि अल्लाह ने हमें राह दिखाई^(३) उसकी तरह जिसे शैतान ने ज़मीन में राह भुला दी^(४) हैरान है उसके साथी उसे राह की तरफ़ बुला रहे हैं कि इधर आ तुम फ़रमाओ कि अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है^(५) और

الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرِى مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦٨﴾
وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَلَكِنْ ذَكَرُوا لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَعَزَّوهُمْ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهِ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَا تَنْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا شَفِيعًا وَإِنْ تَعْدِلْ كُلُّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا أُولَئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾ قُلْ أَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُزِّلْ عَلَى آخِرِينَ بَعْدَ إِذْ هَدَيْنَا اللَّهَ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانًا لَهُ أَصْحَابٌ يُدْعُونَ إِلَى الْهُدَى اثْنَيْنِ أَقْلٌ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَى ﴿٧١﴾

منزل

शरीफ़ करते हो, कितनी बड़ी गुमराही है।

(८) मुफ़सिरी का इसमें मतभेद है कि इस आयत में कौन लोग मुसद हैं। एक जमाअत ने कहा कि इससे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत मुराद है और आयत उन्हीं के बारे में उतरी है। दुस्ररी की हदीस में है कि जब यह उतरा कि वह कादिर है, तुमपर अज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से, तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया तेरी ही पनाह मांगता हूँ, और जब यह उतरा, या तुम्हें भिड़ा दे मुज्जलिफ़ गिरोह करके और एक को दूसरे की सज़्नी चखाए, तो फ़रमाया मैं तेरी ही पनाह माँगता हूँ, और जब यह उतरा, या तुम्हें भिड़ा दे मुज्जलिफ़ गिरोह करके और एक को दूसरे की सज़्नी चखाए, तो फ़रमाया यह आसान है। मुस्लिम की हदीस में है कि एक दिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मस्जिद बनी मुआविया में दो रकअत नमाज़ अदा फ़रमाई और इसके बाद लम्बी दुआ की। फिर सहाबा की तरफ़ मुतवज्जेह होकर फ़रमाया, मैंने अपने खं से तीन सवाल किये, इन में से सिर्फ़ दो कुबूल फ़रमाए गए, एक सवाल तो यह था कि मेरी उम्मत को आम अकाल से हलाक न फ़रमाए, यह कुबूल हुआ। एक यह था कि उन्हें मार्क यानी पानी में डुबोकर हलाक न फ़रमाए, यह भी कुबूल हुआ। तीसरा सवाल यह था कि उनमें आपस में जंग और झगड़ा न हो, यह कुबूल न हुआ।

(९) यानी कुरआन शरीफ़ को, या अज़ाब के उतरने को।

(१०) मेरा काम हिदायत है, दिलों की ज़िम्मेदारी मुझपर नहीं।

(११) यानी अल्लाह तआला ने जो ख़बरें दीं उनके लिये समय निश्चित हैं। वो ठीक उसी समय घटेंगी।

(१२) ताबों, गालियों और हंसी मज़ाक के साथ।

(१३) और उनके साथ उठना बैठना छोड़कर। इस आयत से मालूम हुआ कि बेदीनों की जिस मजलिस में दीन का सत्कार न किया जाना हो, मुसलमान को वहाँ बैठना जायज़ नहीं। इससे साबित हो गया कि कफ़िरों और बेदीनों के जलस, जिनमें वो दीन के ख़िलाफ़ बोलते हैं, उनमें जाना, उन्हें सुनना जायज़ नहीं और उनके रद और जवाब के लिये जाना उनके साथ उठने बैठने में शामिल नहीं, बल्कि यह सच्चाई ज़ाहिर करना है, और यह मना नहीं जैसा कि अगली आयत में आता है।

(१४) यानी ताना देने और मज़ाक उड़ाने वालों के गुनाह उन्हीं पर हैं, उन्हीं से इसका हिसाब होगा, परहेजगारों पर नहीं। मुसलमानों ने कहा था कि हमें गुनाह का डर है, जबकि हम उन्हें छोड़ें और मना न करें। इसपर यह आयत नाज़िल हुई।

(१५) इस आयत से मालूम हुआ कि नसीहत और उपदेश और सच्चाई के इज़हार के लिये उनके पास बैठना जायज़ है।

(१६) और शरीअत के आदेश बताओ।

(१७) और अपने जुर्मों के कारण जहन्नम के अज़ाब में गिरफ़्तार न हो।

(१८) दीन को हंसी खेल बनाने वाले और दुनिया के दीवाने।

وَأْمُرْنَا لِنُسَلِّمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَ أَنْ أَقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَآتُوا زَكَاةَ ۝ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۝
وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۝ وَلَهُ
الْمُلْكُ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۝ عَلِيمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۝
وَهُوَ الْحَكِيمُ الْحَكِيمُ ۝ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ
أَزَّرَ أَنْتَجِدُ أَصْنَامًا إِلَهَ ۝ إِنِّي أَرَأَيْتَ إِنْ كُنْتُ
فِي صُلْبٍ مُبِينٍ ۝ وَكَذَلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ
مَلَكُوتَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونُ مِنَ
الْمُوقِنِينَ ۝ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى كَوْكَبًا ۝
قَالَ هَذَا رَبِّي ۝ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ
الْأَفْلَاقَ ۝ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَذَا رَبِّي ۝
فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَيْنَ لَمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ

منزل

हमें हुक्म है कि हम उसके लिये गर्दन रख दें^(१) जो रब है
सारे संसार का^(२) और यह कि नमाज़ कायम रखो और
उस से डरो और वही है जिसकी तरफ तुम्हें उठना है^(३)
और वही है जिसने आसमान व ज़मीन ठीक बनाए^(४) और
जिस दिन फ़ना (नष्ट) हुई हर चीज़ को कहेगा होजा वह
फ़ौरन हो जाएगी, उसकी बात सच्ची है और उसीकी सल्तनत
है जिस दिन सूर (शंख) फूँका जाएगा^(५) हर छुपे और ज़ाहिर
का जानने वाला और वही है हिकमत वाला खबरदार^(६)
और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप^(७) आजर से कहा
क्या तुम बुतों को खुदा बनाते हो, वेशक मैं तुम्हें और
तुम्हारी क्रौम को खुली गुमराही में पाता हूँ^(८) और
इसी तरह हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आसमानों
और ज़मीन की^(९) और इसलिये कि वह आँखों देखे यकीन
वालों में हो जाए^(१०) फिर जब उनपर रात का
अन्धेरा आया एक तारा देखा^(११) बोले इसे मेरा रब ठहराते
हो, फिर जब वह डूब गया बोले मुझे खुश नहीं आते डूबने
वाले^(१२) फिर जब चांद चमकता देखा बोले इसे मेरा रब
बताते हो फिर जब वह डूब गया कहा अगर मुझे मेरा रब

सुरा अनआम - नवाँ सूक़

- (१) ऐ मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, उन मुश्किं में जो अपने बाप दादा के दीन की तरफ़ आपका बुलाने हैं .
- (२) और उसमें कोई कुदरत नहीं.
- (३) और इस्लाम और तीहीद की नेअमत अता फ़रमाई और बुतपरस्ती के बदतरीन बचाल से बचाया.
- (४) इस आयत में सच और झूठ की तरफ़ बुलाने वालों की एक उपमा बयान फ़रमाई गई कि जिस तरह मुसाफ़िर अपने साथियों के साथ था, जंगल में भूतों और शैतानों ने उसको रास्ता बहका दिया और कहा मंज़िल मकसूद की यही राह है और उसके साथी उसको सीधी राह की तरफ़ बुलाने लगे. वह हैरान रह गया, किधर जाए. अंजाम उसका यही होगा कि अगर वह भूतों की राह पर चल दे तो हलाक हो जाए या और साथियों का कहा माने तो सलामत रहेगा और मंज़िल पर पहुँच जाएगा. यही हाल उस शम्शका का है जो इस्लाम के तरीके से बहका और शैतान की राह पर चला. मुसलमान उसको सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाने हैं. अगर उनकी बात मानेगा, राह पाएगा वरना हलाक हो जाएगा.
- (५) यानी जो रास्ता अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये साफ़ और खुला फ़रमा दिया और जो दीन (इस्लाम) उनके लिये निश्चित किया वही हिदायत व नूर है और जो इसके सिवा है वह बातिल दीन है.
- (६) और उसीकी फ़रमावर्दारी करें और ख़ास उसीकी इबादत करें.
- (७) जिनसे उसकी भरपूर कुदरत और उसका सम्पूर्ण इल्म और उसकी हिकमत और कारीगरी ज़ाहिर है.
- (८) कि नाम को भी कोई सल्तनत का दावा करने वाला न होगा . सारे शासक सारे बादशाह और सब दुनिया की सल्तनत का घमण्ड करने वाले देखेंगे कि दुनिया में जो वो सल्तनत का दावा करते थे, वह मूलतः और झूठा था.
- (९) कामूस में है कि आजर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के चचा का नाम है. इमाम अल्लामा जलालुद्दीन सिन्वती ने "मसालिकुल हुनफ़ा" में भी ऐसा ही लिखा है. चचा को बाप कहना सारे मुल्कों में आम है ख़ासकर अरब में. कुरआने करीम में है, "नअबुदो इलाहका व इलाहा आबाइका इब्राहीमा व इस्माईला व इम्हाका इलाही वाहिदन" यानी बोलो हम पूजेंगे उसे जो खुदा है आपका और आपके बाप के आवा इब्राहीम व इस्माईल व इम्हाक का एक खुदा. (सुरा पक़रह, आयत १:२) इसमें हज़रत इस्माईल को हज़रत याक़ूब के 'आबा' में ज़िक्र किया गया है जब कि आप चचा हैं. हदीस शरीफ़ में भी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा को "अब" फ़रमाया. चुनावे इश़ाद किया "रुह अलैया अबी" और यहाँ अबी से हज़रत अब्बास मुग़ाद हैं.
- (१०) यह आयत अरब के मुश्किं पर हज़रत है जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बुजुर्ग जानते थे और उनकी बुजुर्गी को

हिदायत न करता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में होता^(१४) ﴿७७﴾ फिर जब सूरज जगमगाता देखा बोले इसे मेरा रब कहते हो^(१५) यह तो इन सब से बड़ा है फिर जब वह डूब गया कहा ऐ क्रौम में खेज़ार हूँ इन चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो^(१६) ﴿७८﴾ मैं ने अपना मुंह उसकी तरफ़ किया जिसने आसमान और ज़मीन बनाए एक उसीका होकर^(१७) और मैं मुश्रिकों में नहीं^(१८) और उनकी क्रौम उनसे झगड़ने लगी कहा क्या अल्लाह के बारे में मुझसे झगड़ते हो तो वह मुझे राह बता चुका^(१९) और मुझे उनका डर नहीं जिन्हें तुम शरीक बताते हो^(२०) हां जो मेरा ही रब कोई बात चाहे^(२१) मेरे रब का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है, तो क्या तुम नसीहत नहीं मानते^(२२) और मैं तुम्हारे शरीकों से कैसे डरूँ^(२३) और तुम नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का शरीक उसको ठहराया जिसकी तुमपर उसने कोई सनद न उतारी, तो दोनों गिरोहों में अमान का ज़्यादा हक़दार कौन है^(२४) अगर तुम जानते हो^(२५) वो जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी नाहक चीज़ की आमज़िश (मिश्रण) न की उन्हीं के लिये अमान है और वही राह पर है^(२६)

दसवाँ रूकू

और यह हमारी दलील है कि हमने इब्राहीम को उसकी क्रौम

مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ۝ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسُ بَارِعَةً
قَالَ هَذَا رَبِّي هَذَا أَكْبَرُ ۚ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ
يُقَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ۝ إِنِّي وَجْهِي
وَجْهِيَ لِلدِّينِ فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ حَنِيفًا
وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَحَاجَّةً قَوْمَهُ ۚ قَالَ
أَتَحْجَوْنِي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ۚ وَلَا أَخَافُ مَا
تُشْرِكُونَ بِهِ ۚ إِلَّا أَن يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۚ وَسِعَ رَبِّي
كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝ وَكَيْفَ
أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُمْ
بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنْزِلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ قَائِلُ
الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝
الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ
لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ ۝ وَتِلْكَ حُجَّتُنَا

مَنْزِلَةٌ

मानते थे, उन्हें दिखाया जाता है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बुतपरस्ती को कितना बड़ा ऐब और गुमराही बताते हैं, अगर तुम उन्हें मानते हो तो बुत परस्ती तुम भी छोड़ दो:

(१४) यानी जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का दीन में समझ अना फ़रमाई ऐसे हो उन्हें आसमानों और ज़मीन के मुल्क दिखाते हैं, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया इससे आसमानों और ज़मीन की उत्पत्ति मुराद है, मुजाहिद और ग़ईद बिन जुबैर कहते हैं यह इस तरह कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को पत्थर पर खड़ा किया गया और आपके लिये आसमानों के पदें खाल दिये गए यहाँ तक कि आपने अर्श व कुर्सी और आसमानों के सारे चमत्कार और जन्नत में अपने मक़ाम को देखा, आपके लिये ज़मीन के पदें उठा दिये गए यहाँ तक कि आपने सब से नीचे की ज़मीन तक नज़र की और ज़मीनों के तमाम चमत्कार देखे, मुफ़सिरों का इसमें मतभेद है कि यह देखना सर की आँखों से था या दिल की आँखों से, (दुरे मन्सूर, ख़ाज़िन वग़ैरह)

(१५) क्योंकि हर ज़ाहिर और छुपी चीज़ उनके सामने करदी गई और इन्सानों के कर्मों में से कुछ भी उनसे छुपा न रहा,

(१६) तफ़सीर के जानकार और सीरत के माहिरी कं बयान है कि नमरुद इब्ने कनआन बड़ा अत्याचारी बादशाह था, सबसे पहले उसने ताज़ सर पर रख़ा, यह बादशाह लोगों से अपनी पूजा कराता था, उसके दरबार में ज्योतिषी और जादूगर बहुत से थे, नमरुद ने ख़्वाब देखा कि एक सितारा निकला है, उसकी रौशनी के सामने चाँद सूरज विल्कुल बेनूर हो गए, इससे वह बहुत डरा, जादूगरों से इसकी ताबीर पूछी, उन्होंने कहा कि इस साल तेरे राज्य में एक लड़का पैदा होगा जो तेरे पतन का कारण बनेगा और तेरे दीन वाले उसके हाथ से हलाक होंगे, यह ख़बर सुनकर वह परेशान हुआ और उसने हुक्म दिया कि जो बच्चा पैदा हो, क़त्ल कर दिया जाए और मर्द औरतों से अलग रहे और इसकी चौकसी के लिये एक विभाग कायम कर दिया गया, अल्लाह के हुक्म को कौन टाल सकता है, हज़रत इब्राहीम की बालिदा गर्भवती हुई और जादूगरों ने नमरुद को इसकी ख़बर भी दे दी कि वह बच्चा गर्भ में आगया है, लेकिन चूंकि हज़रत की बालिदा की उम्र कम थी, उनका गर्भ किसी तरह पहचाना ही न गया, जब ज़चगी का समय निकट आया तो आपकी बालिदा एक तहज़ाने में चली गई जो आपके बालिद न शहर से दूर ख़ोदकर तैयार किया था, वहाँ आप को पैदायश हुई और वहीं आप रहे, पत्थरों से उस तहज़ाने का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता था, रोज़ाना बालिदा साहिबा दूध पिला आती थी और जब वहाँ पहुंचती तो देखती कि आप अपनी उंगली के पोर चूस रहे हैं और उनसे दूध निकल रहा है, आप बहुत जल्द बढ़ते थे, एक महीने में इतना जितने दूसरे बच्चे एक साल में, इसमें मतभेद है कि आप तहज़ाने में कितने साल रहे, कुछ कहते हैं सात साल, कुछ तेरह बरस, कुछ सत्तर बरस, यह बात यकीनी है कि तबी हर हाल में मासूम होते हैं और वो अपनी ज़िन्दगी की शुरुआत से आख़िर तक अल्लाह वाले होते हैं, एक दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी बालिदा से पूछा मेरा रब (पालने वाला) कौन है ? उन्होंने फ़रमाया, मैं, फ़रमाया, तुम्हारा पालने वाला कौन है ? कहा, तुम्हारे बालिद, फ़रमाया, उनका रब कौन है, बालिदा ने कहा, ख़ामोश रहो, और अपने शौहर से जाकर कहा कि जिस लड़के की निश्चय यह मशहूर है कि वह ज़मीन वालों का दीन बदल

पर अता फ़रमाई हम जिसे चाहें दर्जो बलन्द करें^(१) वेशक तुम्हारा रब हिकमत व इल्म वाला है^(२) और हमने उन्हें इस्फ़ाक और यअकूव अता किये, उन सबको हमने राह दिखाई और उनसे पहले नूह को राह दिखाई और उसकी औलाद में से दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को और हम ऐसा ही बदला देते हैं नेकी करने वालों को^(३) और ज़करिया और यहया और ईसा और इलियास को ये सब हमारे कुर्व के लायक हैं^(४) और इस्माइल और यसअ और यूनस और लूत को और हमने हर एक को उसके वक्त में सबपर फ़ज़ीलत (बुजुर्गी) दी^(५) और कुछ उनके बाप दादा और औलाद और भाइयों में से कुछ को^(६) और हमने उन्हें चुन लिया और सीधी राह दिखाई^(७) यह अल्लाह की हिदायत है कि अपने बन्दों में जिसे चाहे दे और अगर वो शिर्क करते तो ज़रूर उनका किया अकारत जाता^(८) ये हैं जिनको हमने किताब और हुक्म और नबुव्वत (पैगम्बरी) अता की तो अगर ये लोग^(९) इससे इन्कारी हों तो हमने उसके लिये एक ऐसी कौम लगा रखी है जो इन्कार वाली नहीं^(१०) ये हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत की तो तुम उन्हीं की राह

اتَّبِعْهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۖ نَرَفَعُ دَرَجَاتٍ مِّنْ شَاءَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۚ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِيلَاسَ ۚ كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ ۝ وَاسْمُعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُوشَعَ ۚ لُوْطًا وَكَوْلًا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ۝ وَمِن آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ ۚ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أَنْتَنَّهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَ النَّبُوَّةَ ۚ فَإِن يَكْفُرْ بِهَا هَٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا بِكَافِرِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهِدْهُمْ

مَنْ

देगा, वह तुम्हारा ही बेटा है। और सारी बात चीत बयान की। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने शुरू ही में तौहीद की हिमायत और कुफ़्र का रद्द शुरू फ़रमा दिया और जब एक सूरअ की राह से रात के वक्त आपने ज़ोहरा या मुश्तरी सितारा देखा तो हज़्ज़न कायम करनी शुरू कर दी। क्योंकि उस ज़माने के लोग बुताओं और सितारों का पूजा करते थे। आपने एक अत्यन्त उमदा तरीक़े से उन्हें प्रमाण की तरफ़ बुलाया जिससे वो इस नतीजे पर पहुंचे कि सारा जगत किसी का पैदा किया हुआ है और ऐसी चीज़ मअबूद नहीं हो सकती। मअबूद वही है जिसके इच्छितार और कुदरत से जगत में परिवर्तन होते रहते हैं।

(१४) इसमें कौम को चेतावनी है कि चाँद को मअबूद ठहराए वह गुमराह है। क्योंकि उसका एक हालत से दूसरी हालत में बदलना इस बात का सुबूत है कि वह किसी का पैदा किया हुआ है, अपने में कोई कुदरत नहीं रखता।

(१५) 'शम्स' यानी सूरज के लिये अरबी में पुल्लिंग व स्त्रीलिंग दोनों ही इस्तेमाल किये जा सकते हैं यहाँ 'हाज़ा' पुल्लिंग लाया गया। इसमें सम्मान की सीज़ है कि 'रब' शब्द की रिआयत के लिये स्त्रीलिंग न लाया गया।

(१६) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने साबित कर दिया कि सितारों में छोटे से बड़े तक कोई भी रब होने की योग्यता नहीं रखता। उनका मअबूद होना बातिल है और कौम जिस शिर्क में गिरफ़्तार है आपने उससे बेज़ारी ज़ाहिर की और इसके बाद सच्चे दीन का बयान फ़रमाया जो आगे आता है।

(१७) यानी इस्लाम के, बाक़ी सब धर्मों से अलग रहकर। इससे मालूम हुआ कि सच्चे दीन की स्थापना और मज़बूती तब ही हो सकती है जब कि झूठे धर्मों से बेज़ारी हो।

(१८) अपनी तौहीद और पहचान की।

(१९) क्योंकि वो बेजान बुत हैं, न नुक़सान पहुंचा सकते हैं न नफ़ा दे सकते हैं उनसे क्या डरना। आपने मुथ्रिकों से ज़याद में फ़रमाया था जिन्होंने आपसे कहा था कि बुतों से डरो, उनको बुरा कहने से कहीं आपको कुछ नुक़सान न पहुंच जाए।

(२०) वह होगी क्योंकि मेरा रब हर चीज़ पर भरपूर कुदरत रखता है।

(२१) जो बेजान और नफ़ा नुक़सान पहुंचाने से मेहरुम हैं।

(२२) अल्लाह के एक होने में विश्वास रखने वाला था उसके साथ शरीक ठहराने वाला।

सूरए अनआम - दसवाँ रूक़

(१) इल्म और सूझ बूझ, समझदारी और बुजुर्गी के साथ जैसा कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दर्जे ऊंचे किये दुनिया में इल्म व हिकमत व नबुव्वत के साथ और आख़िरत में कुर्व और सबाद के साथ।

चलो^(१) तुम फरमाओ मैं कुरआन पर तुम से कोई उजरत (वितन) नहीं मांगता, वह तो नहीं मगर नसीहत सारे जगत को^(२) (९०)

ग्यारहवाँ सूक़

और यहूद ने अल्लाह की कद्र न जानी जैसी चाहिये थी^(३) जब बोले अल्लाह न किसी आदमी पर कुछ नहीं उतारा तुम फरमाओ किसने उतारी वह किताब जो मूसा लाए थे रोशनी और लोगों के लिये हिदायत जिसके तुमने अलग अलग क़ाज़ि बनाए ज़ाहिर करते हो^(४) और बहुत से छुपा लेते हो^(५) और तुम्हें वह सिखाया जाता है^(६) जो न तुम को मालूम था न तुम्हारे बाप दादा को, अल्लाह कहे^(७) फिर उन्हें छोड़ दो उनकी वेहूदगी में उन्हें खेलता^(८) (९१) और यह है बरकत वाली किताब कि हमने उतारी^(९) तस्दीक़ (पुष्टि) फरमाती उन किताबों की जो आगे थीं और इसलिये कि तुम डर सुनाओ सब वस्तियों के सरदार को^(१०) और जो कोई सारे जगत में उसके गिर्द हैं और जो आखिरत पर ईमान लाते हैं^(११) उस किताब पर ईमान लाते हैं और अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं^(१२) और उस से वह कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे^(१३) या कहे मुझे वही (देव वाणी) हुई और वही न हुई^(१४) और जो कहे अभी मैं डराता हूँ ऐसा जैसा अल्लाह ने उतारा^(१५) और कभी तुम देखो जिस वक़्त ज़ालिम मौत की सख्तियों में हैं फ़रिश्ते हाथ फैलाए हुए हैं^(१६) कि निकालो अपनी जानें, आज तुम्हें

اَفْتَلِهٖ قُلُوبُ لَا اَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ
لِّلْعَالَمِيْنَ ۝ وَمَا قَدَرُواْ اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ اِذْ قَالُواْ مَا
اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰٓى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ قُلْ مَنۢ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ
الَّذِیۡ جَاءَ بِهٖ مُّوْسٰی نُوْرًا وَهٰدًی لِّلنَّاسِ فَيُحْجَلُونَ
فَرٰطِیْسَ یُبْدُوْنَهَا وَیُخْفَوْنَ کَیْفِیًّا ۚ وَعَلٰیکُمْ مَّا لَمْ
تَعْلَمُوْا اَنْتُمْ وَاٰبَاؤُکُمْ قُلِ اللّٰهُ ثُمَّ دَرٰهُمْ فِیْ حَوْصِیْمٍ
یَّلْبَسُوْنَ ۝ وَهٰذَا کِتٰبُ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَکٌ مُّصَدِّقٌ لِّذِی
بَیْنَ یَدَیْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْکُرْیِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۚ وَالَّذِیْنَ
یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰی صَلَٰتِهِمْ
یُحٰثِطُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِّنۡ اَفْکَرِیْ عَلَی اللّٰهِ کَذِبًا
اَوْ قَالَ اَوْحٰی اِلَیَّ وَلَمْ یُؤْمِرْ بِهٖ شَیْءٌ ۚ وَمَنْ قَالَ سَاۡزِلُ
مِثْلَ مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَوْ تَرٰۤی اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِیْ عَمْرٰتِ
الْمَوْتِ وَالمَلٰٓئِکَةِ یَاسِطُوْا اٰیٰتِیْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْا اَنْفُسَکُمْ

मल

(२) नबुच्च और रिसालत के साथ. इस आयत से इसपर सन्द लाई जाती है कि नबी फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं क्योंकि आलम अल्लाह के सिवा सारे मौजूद चीज़ों को शामिल है. फ़रिश्ते भी इसमें दाख़िल हैं तो जब तमाम जगत वालों पर फ़ज़ीलत दी तो फ़रिश्तों पर भी फ़ज़ीलत साबित हो गई. यहाँ अल्लाह तआला ने अज़रह नबियों का ज़िक्र फ़रमाया और इस ज़िक्र में तरतीब या क्रम न ज़माने के ऐतिवार से है न बुजुर्गी के. लेकिन जिस शान से नबियों के नाम बयान फ़रमाए गए हैं उसमें एक अजीब लतीफ़ है, वह यह कि अल्लाह तआला ने नबियों की हर एक ज़माअत को एक ख़ास तरह की क़रामत और बुजुर्गी के साथ मुमताज़ फ़रमाया तो हज़रत नूह व इब्राहीम व इस्हाक़ व याक़ूब का पहले ज़िक्र किया क्योंकि ये नबियों के उसूल हैं यानी उनकी औलाद में बहुत से नबी हुए जितका नसब उहाँ की तरफ़ पलटता है. नबुच्च के बाद दर्जों के लिहाज़ से मुल्क, इज़्तिहार और सल्लत और सत्ता है. अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद और सुलेमान को इनमें से बहुत कुछ अता फ़रमाया. ऊँचे दर्जों में मुसीबत और क़त्ल पर सब्र करना भी शामिल है. अल्लाह तआला ने हज़रत अय्यूब को इसके साथ मुमताज़ किया. फिर मुल्क और सब्र के दोनों दर्जे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बरश्ते कि आपने मुदतों सज़्जियों और तकलीफ़ों पर सब्र फ़रमाया. फिर अल्लाह तआला ने नबुच्च के साथ मिश्र प्रदेश अता किया. चमत्कार और ताक़त भी ऊँचे दर्जों में आती है. अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा और हज़रत हारून को ये दोनों चीज़ें अता फ़रमाई. पाकबाज़ी और माया मोह का त्याग भी ऊँचे दर्जे की निशानी है. हज़रत ज़क़रिया और हज़रत यहया और हज़रत ईसा और हज़रत इलियास को इसके साथ मख़मूज़ फ़रमाया. इन नबियों के बाद अल्लाह तआला ने उन नबियों का बयान फ़रमाया कि जिनके न अनुयायी बाक़ी रहे न उनकी शरीअत, जैसे कि हज़रत इम्राईल, हज़रत यसअ, हज़रत यूनुस, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम. इस शान से नबियों का बयान फ़रमाने में उनकी क़रामतों और विशेषताओं का एक अदभुत क्रम नज़र आता है.

(३) हमने बुजुर्गी दी.

(४) यानी मक्का वाले.

(५) इस क़ौम से या ईसाई मुराद हैं या मुहाजिर या रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा या हज़ूर पर ईमान लाते वाले सब लोग. इस आयत से साबित है कि अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मदद फ़रमाएगा और आपके दीन को कुब्त देगा और उसको दूसरे तमाम दीनों पर ग़ालिब करेगा. चुनांचे ऐसा ही हुआ और यह ग़ैबी ख़बर सच हुई.

(६) उलमा ने इस आयत से यह मसअला साबित किया है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम नबियों से अफ़ज़ल हैं क्योंकि जो विशेषताएँ, चमत्कार और गुण अलग अलग दूसरे नबियों को दिये गए थे, नबीये क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये उन सब को जमा फ़रमा दिया और आपको हुक़म दिया “फ़बिह्दाहुमुक़्तदिह” यानी तो तुम उन्हीं की राह चलो. (सूरए अनुआम, आयत ९०) तो जब आप तमाम नबियों की विशेषताएँ रखते हैं तो वेशक़ सबसे अफ़ज़ल हुए.

ख़वारी का अज़ाब दिया जाएगा बदला उसका कि अल्लाह पर झूठ लगाते थे^(११) और उसकी आयतों से तक़व्वर (घमण्ड) करते^(१२) और बेशक़ तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था^(१३) और पीठ पीछे छोड़ आए जो माल व मत्ता हमने तुम्हें दिया था और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखते जिनका तुम अपने में साझा बताते थे^(१४) बेशक़ तुम्हारे आपस की डोर कट गई^(१५) और तुम से गए जो दावे करते थे^(१६) (१४)

बारहवाँ सूक़

वेशक़ अल्लाह दाने और गुटली को चीरने वाला है^(१) ज़िन्दा को मुर्दे से निकालने^(२) और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालने^(३) यह है अल्लाह, तुम कहाँ ओंधे जाते हो^(४) (१५) तारीकी (अंधेरा) चाक करके सुबह निकालने वाला और उसने रात को चैन बनाया^(५) और सूरज और चांद को हिसाब^(६) यह साधा है ज़वरदस्त जानने वाले का^(७) (१६) और वही है जिसने तुम्हारे लिये तारे बनाए कि उनसे राह पाओ ख़ुशकी और तरी के अंधेरो में हमने निशानियाँ तफ़सील से (विस्तार से) बयान कर दीं इल्म वालों के लिये^(८) (१७) और वही है जिसने तुमको एक जान से पैदा किया^(९) फिर कहीं तुम्हें ठहरना है^(१०) और कहीं अमानत रहना^(११) वेशक़ हमने

الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ۝ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ نُوحًا فَادَّعَاكُمْ كَمَا خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُمْ مَا خَوَّلَكُمْ وَرَأَيْكُمْ ظُهُورَكُمْ وَمَا تَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَدْ تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَصَلَ عَنْكُم مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۚ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمْ اللَّهُ فَآلَىٰ تَوْفَكُونَ ۝ فَآلَىٰ الْإِصْبَارِ ۚ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ ۚ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ

مَنْ

(७) इस आयत से साबित हुआ कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम सृष्टि की तरफ़ भेजे गए हैं और आपकी दावत सारी सृष्टि को आम है और गारा जगत आपकी उम्मत है (स्वाज़िन)

सूरए अनआम - ग्यारहवाँ सूक़

(१) और उसको पहचानने से मेहरूम रहे और अपने बन्दों पर उसकी जो रहमत और करम है उसको न जाना, यहूदियों की एक जमाअत अपने बड़े पादरी मालिक इब्न सैफ़ को लेकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बहस करने आई, हुज़ूर ने फ़रमाया मैं तुझे उस परवर्दिगार की क़सम देता हूँ जिसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात उतारी, क्या तौरात में तुने यह देखा है “इन्नल्लाह यवशदुल हिवल समीन” यानी अल्लाह को मोटा आलम वापसन्द है, कहने लगा, हाँ यह तौरात में है, हुज़ूर ने फ़रमाया तू मोटा आलम ही तो है, इसपर वह गुस्से में भरकर कहने लगा कि अल्लाह ने किसी आदमी पर कुछ नहीं उतारा, इसपर यह आयत उतरी और इसमें फ़रमाया गया, किसने उतारी वह किताब जो मूसा लाए थे, तो वह लाजवाब हो गया और यहूदी उस से नाराज़ हो गए और उसको झिड़कने लगे और उसको पादरी के ओहदे से हटा दिया, (मदारीक और स्वाज़िन)

(२) इन में से कुछ को जिसका इज़हार अपनी इच्छा के अनुसार समझते हो,

(३) जो तुम्हारी इच्छा के खिलाफ़ करते हैं जैसे कि तौरात के वो हिस्से जिनमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और उनकी विशंपनाओं का बयान है,

(४) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तालीम और क़ुरआन शरीफ़ से,

(५) यानी जब वो इसका जवाब न दे सकें कि वह किताब किसने उतारी तो आप फ़रमा दीजिये कि अल्लाह ने,

(६) क्योंकि जब आपने तर्क पूरा कर दिया और उपदेश और संदेश अन्त तक पहुँचा दिया और उनके लिये बहाने बनाने की कोई गुंजायश न छोड़ी, इसपर भी वो बाज़ न आए, तो उन्हें उनकी बेहूदगी में छोड़ दीजिये, यह काफ़िरों के हित में फिटकार है,

(७) यानी क़ुरआन शरीफ़,

(८) “बस्तिवों का सरदार” मक्कए मुकर्रमा है, क्योंकि वह तमाम ज़मीन वालों का क़िबला है,

(९) और क़यामत व आख़िरत और मरने के बाद उठने का यकीन रखते हैं और अपने अंजाम से गाफ़िल और बेख़बर नहीं हैं,

(१०) और नबुवत का झूठा दावा करें,

(११) यह आयत मुसैलमा कज़ज़ाब के बारे में उतरी जिसने यमामा यमन प्रदेश में नबुवते का झूठा दावा किया था, वही हनीफ़ा क़बीले के कुछ लोग उसके धोखे में आ गए थे, यह कज़ज़ाब हज़रत अबू बक्र सिदीक की खिलाफ़त के ज़माने में अमीर हमज़ा

तफ़सील से आयतें बयान कर दीं समझ वालों के लिये (९८) और वही है जिसने आसमान से पानी उतारा तो हमने उससे हर उगने वाली चीज़ निकाली (९९) तो हमने उससे निकाली सब्जी जिसमें से दाने निकलते हैं एक दूसरे पर चढ़े हुए और खजूर के गांभे से पास पास अच्छे और अंगूर के बाग और जैतून और अनार किसी बात में मिलते और किसी बात में अलग, उसका फल देखो जब फले और उसका पकना बेशक उसमें निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिये (१००) और (१०१) अल्लाह का शरीक ठहराया जिन्नो को (१०२) हालांकि उसी ने उनको बनाया और उसके लिये बेटे और बेटियाँ घड़ लीं जिहालत से, पाकी ओर बरतरी है उसको उनकी बातों से (१००)

तेरहवाँ सूकू

वे किसी नमूने के आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला, उसके बच्चा कहाँ से हो हालांकि उसकी औरत नहीं (१०१) और उसने हर चीज़ पैदा की (१०२) और वह सब कुछ जानता है (१०३) यह है अल्लाह तुम्हारा रब (१०४) और उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ का बनाने वाला तो उसे पूजो वह जो हर चीज़ पर निगहवान है (१०५) आँखें उसे इहाता (धिराव) नहीं करती (१०६) और सब आँखें उसके इहाते (धेरे) में हैं, और वही है पूरा वातिन पूरा खबरदार (१०७) तुम्हारे पास आँखें खोलने वाली दलीलें आई तुम्हारे रब की

يَقْفَهُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُتَرَاكِبًا ۖ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّاتٍ مِنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ انْظُرُوا إِلَى ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُصِفُونَ ۝ يَذَرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ مَا أَتَى يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةً ۖ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ فَاعْبُدُوهُ ۖ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝ لَا تَدْرِكُهُ الْبَصَارُ ۖ وَهُوَ يُدْرِكُ الْبَصَارَ ۖ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝ قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِنْ

रदियल्लाहो अन्को के क़ातिल बद्रशी के हाथों मारा गया।

(१२) यह आयत अब्दुल्लाह बिन अबी सरह, जो वही की किताबत करता था, उसके बारे में उतरी। जब आयत “बलकद ख़लकनुल इन्साना” उतरी उसने इसे लिखा और आख़िर तक पहुँचते पहुँचते इन्सान की पैदायश की तफ़सील पर सूचित होकर आश्चर्य में पड़ गया और इस हालत में आयत का आख़िरी हिस्सा “तबारक़ल्लाहो अहमनुल ख़ालिकीन” बेइख़्तियार उसकी ज़बान पर जारी हो गया। इसपर उसको यह घमण्ड हुआ कि मुझपर वही आने लगी और वह इस्लाम से फिर गया। यह न समझा कि वही के नूर और क़लाम की शक्ति और हुन से आयत का आख़िरी क़लिमा ज़बान पर आगया, इसमें उसकी योग्यता का कोई दर्ज़न न था। क़लाम की शक्ति खुद अपने आख़िर को बता दिया करती है। जैसे कभी कोई शायर अच्छा मज़मून पढ़े, वह मज़मून खुद क़ाफ़िया बना देता है और सुनने वाले शायर से पहले क़ाफ़िया पढ़ देते हैं। उनमें ऐसे लोग भी होते हैं जो हरगिज़ वैसा शेर कहने की क्षमता नहीं रखते, तो क़ाफ़िया बताना उनकी योग्यता नहीं, क़लाम की शक्ति है। और यहाँ तो वही का नूर और नबी के नूर से सीते में रोशनी आती थी। चुआंचे मजलिस शरीफ़ से जुदा होने और इस्लाम से फिर जाने के बाद फिर वह एक जुमला भी ऐसा बताने पर क़ादिर न हुआ, जो क़ुरआन के क़लाम से मिल सकता। अन्त में हुज़ूर के ज़माने में ही मक्का की विजय से पहले फिर इस्लाम ले आया।

(१३) आत्माएँ निकालने के लिये झिड़के जाते हैं और कहते जाते हैं।

(१४) नबुव्वत और वही के झूठे दावे करके और अल्लाह के लिये शरीक और सीवी बच्चे बताकर।

(१५) न तुम्हारे साथ माल है न ऐश्वर्य, न औलाद, जितकी महबूत में तुम उम्र भर गिरफ़्तार रहें, न वो बुत, जिन्हें पूजा किये। आज उनमें से कोई तुम्हारे काम न आया। यह क़ाफ़ियों से क़यामत के दिन फ़रमाया जाएगा।

(१६) कि वो इबादत के हक़दार होने में अल्लाह के शरीक हैं (मआज़ल्लाह)।

(१७) और इलाके टूट गए, ज़माअत बिखर गई।

(१८) तुम्हारे वो तमाम झूठे दावे जो तुम दुनिया में किया करते थे, वातिल हो गए।

सूरए अनआम - बारहवाँ सूकू

(१) तीहीद और नबुव्वत के बाद अल्लाह तआला ने अपनी भरपूर कुदरत व इल्म और हिक्मत की दलीलें बयान फ़रमाई क्योंकि सबसे बड़ा लक्ष्य अल्लाह तआला और उसकी सिफ़त और अहक़ाम की पहचान है, और यह जानना कि वही सारी चीज़ों को पैदा

करने वाला है और जो ऐसा हो वही पूजने के कर्तबिल हो सकता है, न कि वो वुत जिन्हें मुश्किल पूजने हैं. खुशक दाना और गुटली को चीर कर उनसे सब्जा और दरख्त पैदा करना और ऐसी पथरीली जमीनों में उनके नर्म रेशों को रखा करता जहाँ लोहे की सलाखें और कुदालें भी काम न कर सकें, उसकी कुदरत के कैसे चमत्कार हैं.

(२) जानदार सब्जों को बेजान दान और गुटली से और इन्सान व हैवान को चीर्य से और चिड़िया को अंडे से.

(३) जानदार दरख्त से बेजान गुटली और दान को, और इन्सान और हैवान से नुस्के को, और चिड़िया से अंडे का, यह उसके चमत्कार और कुदरत और हिकमत है.

(४) और ऐसे प्रमाण क्रायम होते के बाद क्या ईमान नहीं लाते और मौत के बाद उठने का यकीन नहीं करने. जो बेजान नुस्के से जानदार हैवान पैदा करता है, उसकी कुदरत से मुर्दे को जिन्दा करना क्या दूर है.

(५) कि आदमी उसमें चैन पाता है और दिन की थकान और कसलमन्दी को सुकून से दूर करती है और रातों को जागने वाले इबादत गुज़ार एकान्त में अपने स्व की इबादत से चैन पाते हैं.

(६) कि उनके दौर और सैर से इबादतों और मामलात के समय मालूम हो.

(७) यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से.

(८) माँ के गर्भ में या ज़मीन के ऊपर.

(९) बाप की पीठ में या ख़ब के अन्दर.

(१०) पानी एक और उससे जो चीज़ें उगाई वो क्रिम क्रिम की और रंगारंग.

(११) इसके बावजूद कि कुदरत, हिकमत और चमत्कारों की इन दलीलों और इस इनआम और इकराम और इन नेअमतों के पैदा करने और अता फ़रमाने का तकाज़ा यह था कि उस मेहरबान बिगड़ी बनाने वाले स्व पर ईमान लाते, इसके बेजाय वुत परसों ने यह सितम किया. (जो आयत में आगे दिया है) कि ...

(१२) कि उनकी फ़रमाविरदारी और अनुकरण करके मूर्तिपूजक हो गए.

सूरए अनआम - तेरहवाँ रूकू

(१) और वे औरत औलाद नहीं होनी और पत्नी उसकी शान के लायक नहीं क्योंकि कोई चीज़ उस जैसी नहीं.

(२) तो जो हैं वह उसकी मख़लूक यानी उसकी पैदा की हुई हैं. और मख़लूक औलाद नहीं हो सकती तो किसी मख़लूक को औलाद बताना ग़लत और बातिल है.

(३) जिसकी विशेषताएं बयान हुई और जिसकी ये विशेषताएं हो वही पूजनीय है.

(४) चाहे वो रिज़क हो, या मौत या गर्भ.

(५) 'इदराक' यानी इहता करने के मानी हैं कि जो चीज़ देखें, उसके हर तरफ़ और सारी हदों की जानकारी रखना. इदराक की यही तफ़सीर हज़रत सईद बिन मुसैयब और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से नक़ल की गई है. और मुफ़सिरों की बड़ी ज़माअत इदराक की तफ़सीर इहते से करती हैं और इहता उसी चीज़ का हो सकता है जिसकी दिशाएं और सीमाएं हो. अल्लाह तआला के लिये दिशा और सीमा असंभव है तो उसका इदराक और इहता भी संभव नहीं. यही पहले सुन्नत का मज़हब है. ख़ारिजी और मोअतज़िलों वगैरह गुमराह फिरक इदराक और रिवायत में फ़र्क नहीं करते इसलिये वो इस गुमराही में गिरफ़्तार हो गए कि उन्होंने दीदार इलाही को मुहाले अक़ली करार दे दिया, इसके बावजूद कि न देख सकना न जानने के लिये लाज़िम है. वरना जैसा कि अल्लाह तआला तमाम मौजूदात के विपरीत बिला कैफ़ियत व दिशा जाना जा सकता है, ऐसे ही देखा भी जा सकता है, क्योंकि अगर दूसरी चीज़ें बगैर कैफ़ियत और दिशा के देखी नहीं जा सकती तो जानी भी नहीं जा सकती. राज़ इसका यह है कि रुयत और दीद अर्थात् दर्शन के मानी ये हैं कि नज़र किसी चीज़ को, जैसी कि वह हो, वैसा जाने तो जो चीज़ दिशा वाली होगी उसकी दीद या दर्शन दिशा अर्थात् आकार में होगा और जिसके लिये आकार न होगा उसका दर्शन बिना आकार होगा. अल्लाह का दीदार आख़िरत में ईमान वालों को होगा, यह पहले सुन्नत २. अक़ीदा और कुरआन व हदीस और सहाबा के क़ौल और बहुत सी दलीलों से साबित है. कुरआन शरीफ़ में फ़रमाया "तुजुहुं यौमइज़ेन नादिरतुन इला रब्बिहा नाज़िरह" कुछ मुंह उस दिन तरो ताज़ा होंगे अपने स्व को देखते. (सूरए क़ियामत, आयत २२). इससे साबित है कि ईमान वालों को क़ियामत के दिन उनके स्व का दीदार उपलब्ध होगा. इसके अलावा और बहुत सी आयतों और कई सही हदीसों की रिवायतों से साबित है. अगर अल्लाह का दीदार असंभव होता तो हज़रत मुसा अलैहिस्सलाम दीदार का सवाल न करते "रब्बे अरिनी नज़ुर इलेका" (ऐ स्व मैं तुझे देखना चाहता हूँ) इशाराद न करते और उनके जवाब में "इनिस तकरा मकानहू फ़सौफ़ा तरानी" न फ़रमाया जाता. इन दलीलों से साबित होगया कि आख़िरत में ईमान वालों के लिये अल्लाह का दीदार शरीअत में साबित है और इसका इनकार गुमराही है.

तरफ से तो जिसने देखा तो अपने भले को और जो अंधा हुआ अपने बुरे को और मैं तुमपर निगहवान नहीं (१०४) और हम इसी तरह आयतें तरह तरह से बयान करते हैं (६) और इसलिये कि काफिर बोल उठें कि तुम तो पढ़े हो और इसलिये कि उसे इल्म वालों पर वाजेह (सपष्ट) कर दें (१०५) उसपर चलो जो तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ से वही होती है (७) उसके सिवा कोई मअवूद (पूजनीय) नहीं और मुश्किों से मुंह फेर लो (१०६) और अल्लाह चाहता तो वो शिर्क नहीं करते और हमने तुम्हें उनपर निगहवान नहीं किया और तुम उनपर करोड़े नहीं (१०७) और उन्हें गाली न दो जिनको वो अल्लाह के सिवा पूजते हैं कि वो अल्लाह की शान में वेअदवी करेंगे जियादती और जिहालत से (८) यूही हमने हर उम्मत की निगाह में उसके अमल (कर्म) भले करदिये हैं फिर उन्हें अपने रब की तरफ फिरना है और वह उन्हें बता देगा जों करते थे (१०८) और उन्होंने अल्लाह की कसम खाई अपने हलफ में पूरी कोशिश से कि अगर उनके पास कोई निशानी आई तो जरूर उस पर ईमान लाएंगे, तुम फरमादो कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं (९) और तुम्हें (१०) क्या खबर कि जब वो आएँ तो ये ईमान न लाएंगे (१०९) और हम फेर देते हैं उनके दिलों और आँखों को (११) जैसा कि वो पहली बार ईमान न लाए थे (१२) और उन्हें छोड़ देते हैं कि अपनी सरकशी (वशावत) में भटका करे (११०)

رَبِّكُمْ فَمَنْ أَنْصَرَ لِنَفْسِهِ وَمَنْ عَنِ فَعَلِيهَا
وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ۖ وَكَذَلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِرَبِّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ ۖ وَتَعْلَمُونَ مَا
أَوْحَى إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَأَعْرِضْ عَنِ
الشُّشْرَكِينَ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا ۚ وَمَا جَعَلْنَاكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۚ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۖ وَلَا تَسْأَلُوا
الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَسْأَلُوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ
عِلْمٍ ۚ كَذَلِكَ تَتَّبِعُنَا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ
مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ وَأَنْتُمْ بِآلِهِ
جَاهِدُوا أَيْمَانَكُمْ لِكِنْ جَاءَ تَهُمْ آيَةٌ لِّيُؤْمِنُوا بِهَا ۚ قُلْ
إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ
لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَتَقَرَّبْ أَقْدَانَهُمْ وَأَبْصُرْهُمْ كَمَا لَمْ
يُؤْمِنُوا بِأَوَّلِ مَرَّةٍ وَكَذَلِكَ هُمْ فِي طُعْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۖ

مَذَك

(६) कि हुज्रत या तर्क लाजिम हां.

(७) और काफिरों की फुजूल बातों पर ध्यान न दो. इसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की तसल्ली है कि आप काफिरों की बकवास से दुखी न हों. यह उनकी बदतसीबी है कि ऐसी रौशन दलीलों से फायदा न उठाएं.

(८) कतादा का कौल है कि मुसलमान काफिरों के बुतों की बुराई किया करते थे ताकि काफिरों को तसीहत हो और वा बुत परस्ती की बुराई जान जाएं मगर उन जाहिलों ने बजाए तसीहत पकड़ने के अल्लाह की शात में वेअदवी के साथ ज़बान ग्योलनी शुरू की. इसपर यह आयत नाज़िल हुई. अगरचे बुतों को बुरा कहना और उनकी हकीकत का इज़हार ताअत और सबाव है, लेकिन अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की शात में काफिरों की वेअदवी को रोकने के लिये इसको मना फरमाया गया. इन्हे अंबारी का कौल है कि यह हुक्म पहले ज़माने में था, जब अल्लाह तआला ने इस्लाम को कुच्चन अता फरमाई, यह हुक्म स्थगित हो गया.

(९) वह जब चाहता है अपनी हिक्मत के हिसाब से उतारता है.

(१०) एं मुसलमाना !

(११) सच्चाई के मानने और देखने से.

(१२) उन निशानियों पर जो नबी सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के मुबारक हाथ पर जाहिर हुई थीं, जैसे चाँद का दो टुकड़ों में चिर जाना, वगैरह जैसे खुले चमत्कार.

पारा सात समाप्त

आठवाँ पारा - वलौ-अन्नना

(सुरए अनआम जारी)

चौदहवाँ सूक

और अगर हम उनकी तरफ़ फ़रिश्ते उतारते^(१) और उनसे मुँह बाँते करते और हम हर चीज़ उनके सामने उठा लाते जब भी वो ईमान लाने वाले न थे^(२) मगर यह कि खुदा चाहता^(३) मगर उनमें बहुत निरे जाहिल हैं^(४) (१११) और इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन किये हैं आदमियों और जिनों में के शैतान कि उनमें से एक दूसरे पर छुपवा डालता है बनावट की बात^(५) धोखे को और तुम्हारा रव चाहता तो वो ऐसा न करते^(६) तो उन्हें उनकी बनावटों पर छोड़ दो^(७) (११२) और इसलिये कि उस^(८) की तरफ़ उनके दिल झुकें जिन्हें आखिरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और गुनाह कमाएँ जो उन्हें गुनाह कमाना है^(९) (११३) तो क्या अल्लाह के सिवा मैं किसी और का फ़ैसला चाहूँ और वही है जिसने तुम्हारी तरफ़ मुफ़रसल (विस्तार से) किताब उतारी^(१०) और जिनको हमने किताब दी वो जानते हैं कि यह तेरे रब की तरफ़ से सच उतरा है^(११) तो ऐ सुनने वाले तू कभी शक वालों में न हो^(१२) और पूरी है तेरे रब की बात सच और इन्साफ़ में उसकी बातों का कोई बदलने वाला नहीं^(१३) और वही है सुनता जानता^(१४) (११५)

وَلَوْ أَنَّا نُنَزِّلُ الْكِتَابَ وَرَبِّكَ
وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا
إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ يَجْهَلُونَ
وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيْطِينًا إِلَّا نُسْ
وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ
غُرُورًا وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ
وَلِتَصْغَى إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
وَلِتُزْصَوْهُ وَلِتَقْتَرِفُوا مَا هُمْ مُقْتَرِفُونَ
أَفَعَيِّرُ
اللَّهُ أُنْتَبِئِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ
الْكِتَابَ مُفَصَّلًا وَالَّذِينَ اتَّخَذْتُمُ الْكِتَابَ
يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنْزَلٌ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونُوا
مِنَ الْمُنْتَرَيْنِ وَتَكُنْتَ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَ
عَدْلًا لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَهُوَ السَّمِيعُ

مَنْزِل

सुरए अनआम - चौदहवाँ सूक

- (१) इज जरीर का कौल है कि यह आयत हंसी बनाने वाले कुरैश के बारे में उतरी, उन्होंने सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि ऐ मुहम्मद, आप हमारे मुँहों को उठा लाइये, हम उनसे पूछ लें कि आप जो कहते हैं वह सच है या नहीं, और हमें फ़रिश्ते दिखाइये जो आपके रसूल होने की गवाही दें या अल्लाह और फ़रिश्तों को हमारे सामने लाइये, इसके जवाब में यह आयत उतरी.
- (२) वो सग़्त दिल वाले हैं.
- (३) उसकी मर्जी जो होती है वही होता है, जो उसके इल्म में खुशनुसीब है वो ईमान से माला माल होते हैं.
- (४) नहीं जानते कि ये लोग वो निशानियाँ बल्कि इससे भी ज्यादा देखकर ईमान लाने वाले नहीं. (जुमल व मदारीक)
- (५) यानी बसबसे और छलकपट की बातें बहकाने के लिये.
- (६) लेकिन अल्लाह तआला अपने बन्दों में से जिस चाहता है परीक्षा में डालता है ताकि उसके मेहनत पर सब करने से जाहिर हो जाए कि यह बड़े सवाब पाने वाला है.
- (७) अल्लाह उन्हें बदला देगा, रुखा करेगा और आपकी मदद फ़रमाएगा.
- (८) बनावट की बात.
- (९) यानी कुरआन शरीफ़ जिसमें अच्छे कामों का हुक्म, बुरे कामों से दूर रहने के आदेश, सवाब के वादे, अज़ाब की चेतावनी, सच और झूठ का फ़ैसला और मेरी सच्चाई की गवाही और तुम्हारे झूठे इल्ज़ामों का बयान है. सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मुश्किल कहा करने थे कि आप हमारे और अपने बीच एक मध्यस्थ मुक़रर कर लीजिये. उनके जवाब में यह आयत उतरी.
- (१०) क्योंकि उनके पास इसकी दलीलें हैं.
- (११) न कोई उसके निश्चय को बदलने वाला, न हुक्म को रद्द करने वाला, न उसका वादा झूठा हो सके. कुछ मुफ़रसियों ने फ़रमाया कि क़त्आम जब सम्पूर्ण है तो उसमें दोष या तबदीली हो ही नहीं सकती और वह क़यामत तक हर किस्म के रद्दोबदल से मेहफूज़ है. कुछ मुफ़रसि़र फ़रमाते हैं मानी ये हैं कि किसी की कुदरत नहीं कि कुरआन पाक में तहरीफ़ यानी रद्दोबदल कर सके क्योंकि अल्लाह तआला ने इसकी हिफ़ाज़त की ज़मानत अपने करम के ज़िम्मे ले ली है. (तफ़रीरे अबू सऊद)

और ऐ सुनने वाले ज़मीन में अक्सर वो हैं कि तु उनके कहे पे चले तो तुझे अल्लाह की राह से बहकावे, वो सिर्फ़ गुमान के पीछे हैं^(१२) और निरी अटकलें दोड़ते हैं^(१३) तेरा रब खूब जानता है कि कौन बहका उसकी राह से और खूब जानता है हिदायत वालों को^(१४) तो, खाओ उसमें से जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया^(१५) अगर तुम उसकी आयतें मानते हो^(१६) और तुम्हें क्या हुआ कि उसमें से न खाओ जिस^(१७) पर अल्लाह का नाम लिया गया वह तुम से मुफ़ससल (स्पष्ट) बयान कर चुका जो कुछ तुमपर हराम हुआ^(१८) मगर जब तुम्हें उससे मजबूरी हो^(१९) और बेशक बहुतेरे अपनी ख्वाहिशों से गुमराह करते हैं बे जाने, बेशक तेरा रब हद से बढ़ने वालों को खूब जानता है^(२०) और छोड़ो खुला और छुपा गुनाह, वो जो गुनाह कमाले हैं जल्द ही अपनी कमाई की सज़ा पाएंगे^(२१) और उसे न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम न लिया गया^(२२) और वह बेशक नाफ़रमानी है, और बेशक शैतान अपने दोस्तों के दिलों में डालते हैं कि तुम से झगड़ें और अगर तुम उनका कहना

الْعَلِيمُ ۝ وَإِنْ تَطْمَأَنَّكُمْ أَكْثَرُ مَنْ فِي الْأَرْضِ
يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ
وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ
مَنْ يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝
فَكُلُوا مِمَّا ذُكِّرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ
مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِّرَ اسْمُ
اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَضَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا
مَا اضْطُرَرْتُمْ إِلَيْهِ ۚ وَإِنْ كَثِيرًا لَيُضِلُّونَ بِأَهْوَاءِهِمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝
وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ
الْإِثْمَ سَيَجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا
مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفُسْقٌ ۚ وَإِنَّ
الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادُوا لَكُمْ ۚ وَإِنْ

(१२) अपने जाहिल और गुमराह बाप दादा का अनुकरण करते हैं, दूरदृष्टि और सच्चाई को पहचानने से मेहरूम हैं।

(१३) कि यह हलाल है और यह हराम और अटकल से कोई चीज़ हलाल हराम नहीं हो जाती जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हलाल किया वह हलाल, और जिसे हराम किया वह हराम।

(१४) यानी जो अल्लाह के नाम पर ज़िक्र किया गया, न वह जो अपनी मौत मरा या बुतों के नाम पर ज़िक्र किया गया, वह हराम है, हलाल होता अल्लाह के नाम पर ज़िक्र होने से जुड़ा हुआ है, यह मुश्किलों के उस ऐतिराज़ का जवाब है जो उन्होंने मुसलमानों पर किया था कि तुम अपना क़त्ल किया हुआ खाने हो और अल्लाह का मारा हुआ यानी जो अपनी मौत मरे, उसका हराम जानते हो।

(१५) ज़बीहा ।

(१६) इससे साबित हुआ कि हराम चीज़ों का तफ़सील से ज़िक्र होता है और हराम होने के सुबूत के लिये हराम किये जाने का हुक्म दरकार है और जिस चीज़ पर शरीअत में हराम होने का हुक्म न हो वह मुबाह यानी हलाल है।

(१७) तो बहुत ही मजबूरी की हालत में या अगर जाने जाने का ख़ौफ़ हो तो जान बचाने भर की ज़रूरत के लिये जायज़ है।

(१८) ज़िक्र के वक़्त, चाहे इस तरह कि वह जानवर अपनी मौत मर गया हो या इस तरह कि उसको वग़ैर बिस्मिल्लाह के या ग़ैर स्मूदा के नाम पर ज़िक्र किया गया हो, ये सब हराम हैं, लेकिन जहाँ मुसलमान ज़िक्र करने वाला ज़िक्र के वक़्त “बिस्मिल्लाह अल्लाहो अकबर” कहना भूल गया, वह ज़िक्र जायज़ है।

मानो^(१९) तो उस वक्त तुम मुश्किल हो^(२०) (१२१)

पन्द्रहवाँ सूकू

और क्या वह कि मुर्दा था हमने उसे ज़िन्दा किया^(१) और उसके लिये एक नूर कर दिया^(२) जिससे लोगों में चलाता है^(३) वह उस जैसा हो जाएगा जो अंधेरियों में है^(४) उनसे निकलने वाला नहीं; यूँही काफ़िरों की आंख में उनके कर्म भले कर दिये गए हैं (१२२) और इसी तरह हमने हर वस्ती में उसके मुजरिमों के सरगाने (सरदार) किये कि उसमें दाव खेलें^(५) और दाव नहीं खेलते मगर अपनी जानों पर और उन्हें समझ नहीं^(६) (१२३) और जब उनके पास कोई निशानी आए तो कहते हैं हम कभी ईमान न लाएंगे जब तक हमें भी वैसा न मिले जैसा अल्लाह के रसूलों को मिला^(७) अल्लाह खूब जानता है जहाँ अपनी रिसालत रखे^(८) जल्द ही मुजरिमों को अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत पहुँचेगी और सख्त अज़ाब, बदला उनके मक़ (मक़कारी) का (१२४) और जिसे अल्लाह राह दिखाना चाहे उसका सीना इस्लाम के लिये खोल देता है^(९) और जिसे गुमराह करना चाहे उसका सीना तंग खूब रूका हुआ कर देता है^(१०) जैसे किसी की ज़बरदस्ती से आसमान पर चढ़ रहा है, अल्लाह यूँही अज़ाब डालता है ईमान न लाने वालों को (१२५)

أَطَعْتُمْهُمْ إِنَّكُمْ لَشُرُكُونَ ۖ أَوْ مَن كَانَ مَيِّتًا فَاحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَنَزْنٍ مِّثْلَهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا ۚ كَذَلِكَ زَيَّنَّا لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرًا مَّحْرُومًا لِّيُكْرَهُوا فِيهَا ۖ وَمَا يَنْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۚ وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ أَتَوْا لَن تُؤْمِنَ حَتَّى تُؤْتِيَهُمْ آيَةٌ ۚ أَوْ يَرْسُلَ اللَّهُ إِلَهُهُ أَوْ يَأْتِيَهُمْ سُلَيْمٌ أَوْ كَذِبٌ أَوَّلًا ۚ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْفَاسِقِينَ ۚ وَكَذَلِكَ يَهْدِي اللَّهُ الْبَاطِلِينَ ۚ وَكَذَلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ

مَثَلٌ

(१९) और अल्लाह के हेतु किये हुए का हलाल जाने.

(२०) क्योंकि दीन में अल्लाह के हुक्म को छोड़ना और दूसरे के हुक्म को मानना, अल्लाह के सिवा किसी और को हाकिम करार देना शिर्क है.

सूरए अनआम - पन्द्रहवाँ सूकू

(१) मुर्दों से काफ़िर और ज़िन्दा से मूмин मुराद है, क्योंकि कुफ़्र दिलों के लिये मौत है और ईमान ज़िन्दगी.
(२) नूर से ईमान मुराद है जिसकी बदौलत आदमी कुफ़्र की अन्धेरियों से छुटकारा पाता है. क़तादा का कौल है कि नूर से अल्लाह की किताब यानी क़ुरआन मुराद है.
(३) और बीनाई यानी दृष्टि हासिल करके सच्चाई की राह पहचान लेता है.
(४) कुफ़्र व ज़िहालत और दिल के अंधेपन की यह एक मिसाल है जिसमें मूмин और काफ़िर का हाल बयान फ़रमाया गया है कि हिदायत पाने वाला मूмин उस मुर्दे की तरह है जिसने ज़िन्दगी पाई और उसको नूर मिला जिससे वह अपनी मंज़िल की राह पाता है. और काफ़िर की मिसाल उसकी तरह है जो तरह तरह की अन्धेरियों में गिरफ़्तार हुआ और उसे निकल न सके, हमेशा हैरत में पड़ा रहे. ये दोनों मिसालें हर मूмин और काफ़िर के लिये आम हैं, अगरचे हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा के कौल के मुताबिक़ इनके उतरने की परिस्थिति यह है कि अबू ज़हल ने एक रोज़ रैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर कोई नापाक चीज़ फेंकी थी. उस रोज़ हज़रत अमीर हमज़ा रदियल्लाहो अन्हु शिकार क्रो गए हुए थे. जिस वक्त वह हाथ में कमान लिये हुए शिकार से वापस आए तो उन्हें इस घटना की सूचना मिली. अगरचे वह अभी तक ईमान नहीं लाए थे, मगर यह ख़बर सुनकर उन्हें बहुत गुस्सा आया. वह अबू ज़हल पर चढ़ गए और उसको कमान से मारने लगे और अबू ज़हल आजिज़ी और ख़ुशामद करने लगा और कहने लगा, अबू युअला (हज़रत अमीर हमज़ा की कुनियत है) क्या आप ने नहीं देखा कि मुहम्मद कैसा दीन लाए और उन्होंने हमारे मअबूदों को बुरा कहा और हमारे बाप दादा की मुशालिफ़त की और हमें बदअक़ल बताया. इसपर हज़रत अमीर हमज़ा ने फ़रमाया तुम्हारे बराबर बदअक़ल कौन है कि अल्लाह को छोड़ कर पत्थरों को पूजते हो. मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं. उसी वक्त हज़रत अमीर हमज़ा इस्लाम ले आए. इसपर यह आयत उतरी. तो हज़रत अमीर हमज़ा का हाल उसके जैसा है जो मुर्दा था, ईमान न रखता था, अल्लाह तआला ने उसको ज़िन्दा किया और अन्दर का नूर अता किया और अबू ज़हल का हाल यही है कि वह कुफ़्र और ज़िहालत की तारीकी में गिरफ़्तार रहे और...

और यह^(११) तुम्हारे रब की सीधी रोह है। हमने आंयतें तफसील से वयान कर दीं नसीहत वालों के लिये^(१२) उनके लिये सलामती का घर है अपने रब के यहाँ और वह उनका मौला है यह उनके कामों का फल है^(१३) और जिस दिन उन सब को उठाएगा और फेरमाएगा ऐ जिन के गिरोह तुमने बहुत आदमी घेर लिये^(१४) और उनके दोस्त आदमी अर्ज करेंगे ऐ हमारे रब हम में एक ने दूसरे से फायदा उठाया^(१५) और हम अपनी उस भीआद (मुदत) को पहुंच गए जो तुने हमारे लिये मुकरर फेरमाई थी^(१६) फेरमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है हमेशा उसमें रहो मगर जिसे खुदा चाहे^(१७) ऐ मेहबूब बेशक तुम्हारा रब हिकमत वाला इल्म वाला है^(१८) और यूही हम जालिमों में एक को दूसरे पर मुसल्लत (मवार) करते हैं बदला उनके किये का^(१९)

सोलहवाँ सूकू

ऐ जिन्नो और आदमियों के गिरोह, क्या तुम्हारे पास तुम में के रसूल न आए थे तुमपर मेरी आयतें पढ़ते और तुम्हें ये दिन^(१) देखने से डराते^(२) कहेंगे हमने अपनी जानों पर गवाही दी^(३) और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फरेव दिया और खुद अपनी जानों पर गवाही देंगे कि वो काफिर थे^(४) यह^(५) इसलिये कि तेरा रब वस्तियों को^(६)

لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَهَذَا صِرَاطٌ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۚ
قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُذَكَّرُونَ ۖ لَهُمْ دَارُ
السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ۚ يَبْعَثُ الْجِنَّ قَدْ اسْتَكْبَرْتُمْ
مِنَ الْإِنسِ ۚ وَقَالَ أَوْلِيُوهُمْ مِّنَ الْإِنسِ رَبَّنَا
اسْمِعْ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ ۚ وَكَلَعْنَا أَعْنَاقَنَا
أَجَلْتَ لَنَا ۚ قَالَ التَّارِثُونَ كُمُ خَلِدِينَ فِيهَا إِلَّا
مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۖ وَكَذَلِكَ
نُكَلِّمُ بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ
يَبْعَثُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رَسُلٌ مِّنكُمْ
يَقْضُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ
هَذَا ۚ قَالُوا شَهِدْنَا عَلَى أَنْفُسِنَا وَغَدَرَتْهُمْ
الْحَيَوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا

مَذَل

- (१) और तरह तरह के वहावाँ और थोड़े और मक्कारी से लोगों को बहकात और दातिल को रिवाज देन की कोशिश करने हैं।
- (२) कि उसका क्याल उन्हीं पर पड़ता है।
- (३) याती जबतक हमारे पास वही न आए और हम नबी न बनाया जाए। कलीद बिन मुगीमा ने कहा था कि अगर नबुच्चत हक हो तो उसका ज्यादा हकदार मैं हूँ क्योंकि मेरी उम्र मुहम्मद से ज्यादा है, और माल भी। इसपर यह आयत उतरी।
- (४) याती अल्लाह जानता है कि नबुच्चत की योग्यता और इसका हक किसको है, किसको नहीं। उम्र और माल से कांई नबुच्चत का हकदार नहीं हो सकता। ये नबुच्चत के तलबगार तो हमसे, छलकपट, बद एहदी कोरह बुरे कामों में गिरफ्तार हैं, ये कहाँ और नबुच्चत की महान उपाधि कहें।
- (५) उसको ईमान की ताहीक देता है और उसके दिल में रोशनी पैदा करता है।
- (६) कि उसमें इल्म और ताहीद और ईमान की दलीलों की गुंजायश न हो तो उसकी ऐसी हालत होती है कि जब उसका ईमान की दअवत दी जाती है और इस्लाम की तरफ बुलाया जाता है तो वह उसपर भारी गुजरता है और उसका बहुत दुशवार मालूम होता है।
- (७) दीने इस्लाम।
- (८) उनको बहकाया और अपने रास्त पर ले गए।
- (९) इस तरह कि इंसानों ने बासनाओं और गुनाहों में उनसे मदद पाई और जिन्नो ने इंसानों को अपना भतीअ बनाया। आखिरफार उसका नतीजा पाया।
- (१०) वक्त गुजर गया। क़यामत का दिन आया, हसरत और शर्मिन्दगी बाकी रह गई।
- (११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फेरमाया कि यह क़ौम की तरफ पलटती है जिसकी तरबत अल्लाह के इल्म में है कि वो इस्लाम लांगे और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम की तरदीक करेंगे और जहन्नम से निकाले जाएंगे।
- (१२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फेरमाया कि अल्लाह जब किसी क़ौम की भलाई चाहता है तो अन्धों को उनपर मुसल्लत करता है, बुराई चाहता है तो युगों को। इसमें यह नतीजा निकलता है कि जो क़ौम ज़ालिम होती है उसपर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत किया जाता है। तो जो उस ज़ालिम के पंजे से रिहाई चाहें उन्हें चाहिये कि जुल्म करना छोड़ दें।

सूरए अनआम - सोलहवाँ सूकू

- (१) याती क़यामत का दिन।
- (२) और अल्लाह के अज़ाय का डर दिलाते।

जुल्म से तैवाह नहीं करता कि उनके लोग वेखवर हों^(१३१) (१३१) और हर एक के लिये^(१३२) उनके कामों से दर्जे हैं और तेरा रब उनके आमाal (कर्मों) से वेखवर नहीं^(१३२) और ऐ मेहबूब तुम्हारा रब वेपवाई है रहमत वाला, ऐ लोगो वह चाहे तो तुम्हें ले जाए^(१३३) और जिसे चाहे तुम्हारी जगह लादे जैसे तुम्हें औरों की औलाद से पैदा किया^(१३३) (१३३) वेशक जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है^(१३४) ज़ख़र आने वाली है और तुम थका नहीं सकते^(१३४) तुम फ़रमाओ ऐ मेरी कौम तुम अपनी जगह पर काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूँ, तो अब जानना चाहते हो किसका रहता है आखिरत का घर, वेशक ज़ालिम फ़लाह (भलाई) नहीं पाते^(१३५) और^(१३५) अल्लाह ने जो खेती और मवेशी पैदा किये उनमें उसे एक हिस्सेदार ठहराया तो बोले यह अल्लाह का है उनके ख़याल में और यह हमारे शरीकों का^(१३६) तो वह जो उनके शरीकों का है वह तो खुदा को नहीं पहुंचता, और जो खुदा का है वह उनके शरीकों को पहुंचता है क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं^(१३६) (१३६) और यूँही बहुत मुश्कियों की निगाह में उनके शरीकों ने औलाद का क़त्ल भला कर दिखाया है^(१३७) कि

كَفَرِينَ ۚ ذَٰلِكَ أَنَّ لَّمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ
بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا غَافِلُونَ ۚ وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِّمَّا
عَمِلْتُمْ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۚ وَرَبُّكَ
الْعَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۚ إِنْ يَشَأْ يُدْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ
مِنْ بَعْدِكُمْ مَا يَشَاءُ كَمَا أَنتَ كُنْتُمْ مِنْ دُورٍ ۚ يَبْقَىٰ
قَوْمُ الْآخِرِينَ ۚ إِنْ مَا تُوعَدُونَ لَآتٍ ۚ وَمَا أَنْتُمْ
بِمُعْجِزِينَ ۚ قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ ۚ إِنِّي
عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ مَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ
الدَّارِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۚ وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا
ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَٰذَا
لِلَّهِ بِرِيعِهِمْ ۚ وَهَٰذَا لِشُرَكَائِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ
فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَى
شُرَكَائِهِمْ ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ

मूल

- (२) काफ़िर, जिन्न और इन्सान इक्कार करेंगे कि रसूल उनके पास आए और उन्होंने ज़वाली संदेश पहुंचाए और उस दिन के पेश आने वाले हालात का ख़ाफ़ दिलाया, लेकिन काफ़िरों ने उनको झुटलाया और उनपर ईमान न लाए. काफ़िरों का यह इक्कार उस वक़्त होगा जबकि उनके शरीर के सारे अंग उनके शिर्क और कुफ़्र की गवाही देंगे.
- (५) क़यामत का दिन बहुत लम्बा होगा और इसमें हालात बहुत मुक़्तलिफ़ पेश आएंगे, जब काफ़िर ईमान वालों के इनआम और इज़्ज़त व सम्मान को देखेंगे तो अपने कुफ़्र और शिर्क से इन्कारी हो जाएंगे और इस ख़याल से कि शायद इन्कारी हो जाने से कुछ काम बने, यह कहेंगे “बल्लाहे सच्चिना मा कुन्न मुश्किनी” यानी खुदा की क़सम हम मुश्कि न थे. उस वक़्त उनके मुंहों पर मोहरें लगा दी जाएंगी और उनके शरीर के अंग उनके कुफ़्र और शिर्क की गवाही देंगे. इसी के बारे में इस आयत में इरशाद फ़रमाया “व शहिद अला अन्कुसिहिम अन्नहम कानू काफ़िरीन” (और खुद अपनी जानों पर गवाही देंगे कि वो काफ़िर थे)
- (५) यानी रसूलों का भेजा जाना.
- (६) उनकी पाप क़रने की प्रवृत्ति और...
- (७) बल्कि रसूल भेजे जाते हैं, वो उन्हें हिदायतें फ़रमाते हैं, तर्क स्थापित करते हैं इसपर भी वो सरकशी करते हैं, तब हलाक किये जाते हैं.
- (८) चाहे वह नक़ हो या बुरे. नैकी और बदी के दर्जे हैं. उन्हीं के मुताबिक़ सवाब और अज़ाब होगा.
- (९) यानी हलाक कर दें.
- (१०) और उनका उत्तराधिकारी बनाया.
- (११) वह चीज़ चाहे क़यामत हो या मरने के बाद या हिस्सा या सवाब और अज़ाब.
- (१२) ज़िहालत के ज़माने में मुश्कियों का तरीक़ा था कि वो अपनी खेतियों और दरख़्तों के फ़लों और चापापों और तमाम मालों में से एक हिस्सा तो अल्लाह के लिये मुक़र्र करते थे. उसको तो मेहमावों और दरिद्रों पर ख़र्च कर देते थे. और जो बुतों के लिये मुक़र्र करते थे, वह ख़ास उनपर और उनके सेवकों पर ख़र्च करते. जो हिस्सा अल्लाह के लिये मुक़र्र करते, अगर उसमें से कुछ बुतों वाले हिस्से में मिल जाता तो उसे छोड़ देते. और अगर बुतों वाले हिस्से में से कुछ इसमें मिलता तो उसको निकाल कर फिर बुतों ही के हिस्से में शामिल कर देते. इस आयत में उनकी इस ज़िहालत और बदअक़ली का बयान फ़रमा कर उनपर तंबीह फ़रमाई गई.
- (१३) यानी बुतों का.
- (१४) और अत्यन्त दर्जे की अज़ानता में गिरफ़्तार हैं. अपने पैदा करने वाले, नभमें देने वाले रब की इज़्ज़त और ज़लाल की उन्हें ज़रा भी पहचान नहीं. और उनकी मूर्खता इस हद तक पहुंच गई कि उन्होंने बजान बुतों, पत्थर की तरवीरों को जगत के सारे काम बनाने वाले के बराबर कर दिया और जैसा उसके लिये हिस्सा मुक़र्र किया, वैसा ही बुतों के लिये भी किया. वेशक यह बहुत ही

उन्हें हलाक करें और उनका दीन उनपर मुशतवह (संदिग्ध) कर दें^(१६) और अल्लाह चाहता तो ऐसा न करते तो तुम उन्हें छोड़ दो वो हैं और उनके इफ़तिरा (मिथ्यारोप)^(१७) और बोले^(१८) ये मवेशी और खेती-रोकी^(१९) हुई है इसे वही खाए जिसे हम चाहें अपने झूठे खयाल से^(२०) और कुछ मवेशी हैं जिनपर चढ़ना हराम ठहराया^(२१) और कुछ मवेशी के ज़िन्दा पर अल्लाह का नाम नहीं लेते^(२२) यह सब अल्लाह पर झूठ बांधना है बहुत जल्द वह उन्हें बदला देगा उनके इफ़तिराओं (आरोपों) का^(२३) और बोले जो उन मवेशी के पेट में है वह निरा हमारे मर्दा का है^(२४) और हमारी औरतों पर हराम है, और मरा हुआ निकले तो वह सब^(२५) उसमें शरीक हैं, करीब है कि अल्लाह उन्हें उनकी बातों का बदला देगा वेशक वह हिकमत व इल्म वाला है^(२६) वेशक तवाह हुए वो जो अपनी औलाद को क़त्ल करते हैं अहमक़ाना (मुखपना) जिहालत से^(२७) और हराम ठहराते हैं वह जो अल्लाह ने उन्हें रोकी दी^(२८) अल्लाह पर झूठ बांधने को^(२९) वेशक वो बहके और राह न पाई^(३०) (१२०)

सत्तरहवाँ सूक़

और वही है जिसने पैदा किये बाग़ कुछ ज़मीन पर छए हुए^(१) और कुछ वे छए (फैले) और खजूर और खेती जिसमें

مِنَ الْمُشْرِكِينَ قَتَلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاؤُهُمْ لِيُرْثُوهُمْ وَلَيْلِيَسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ۝ وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْتُ حِمْرَهَا لَا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَنْ نَشَاءُ بَرْعِمْهُمْ وَأَنْعَامٌ حَرَمَتْ طَهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءٌ عَلَيْهِمْ سَيَكْفَرُ بِهِمْ بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُنُورِنَا وَمَخْرُومٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا وَإِنْ يَكُنْ مَيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيَنَّهُمْ وَسَفْهُهُمْ إِنَّهُ هَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ

बुरा काम और अत्यन्त गुमराही है, इसके बाद उनकी अज्ञानता और गुमराही की एक और हालत बयान की जाती है। (१५) यहाँ शरीकों से मुग़द बाँ शैतान हैं जिनकी फ़रमावशदारी के शौक में मुश्रिक अल्लाह तआला की नाफ़रमानी ग़वार करते थे और ऐसे बुरा काम और जिहालत की बातें करते थे जिनको सही बुद्धि कभी ग़वार न कर सके और जिनके बुरे होने में मामूली समझ के आदमी को भी द्विचक्षिच्छाद न हो। बुरा परस्ती की शोभित से वो भ्रष्ट बुद्धि में गिरफ़्तार हुए कि जानबूझ से बदतर हो गए और औलाद, जिसके साथ हर जानवर का कुदरती प्यार होता है, शैतान के अनुकरण में उसका ये गुनाह ख़ून करना उठाने ग़वार किया और इसको अच्छा समझने लगे।

(१६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ये लांग पहले हज़रत इस्माईल के दीन पर थे, शैतानों ने उनको बहका कर इन गुमराहियों में डाला ताकि उन्हें हज़रत इस्माईल के सत्ते से फेर दें।

(१७) मुश्रिक लांग अपने कुछ मवेशियों और खेतियों को अपने झूठे मशबूदों के साथ नामज़द करके कि।

(१८) वर्जित यानी इसके इस्तेमाल पर प्रतिबन्ध है।

(१९) यानी बुना की संवा करने वाले वगैरह।

(२०) जिनका वहीरा, सायरा, हामी कहते हैं।

(२१) बल्कि उन बुना के नाम पर ज़िन्दा करते हैं और इन तमाम कामों की निखत ख़याल करने हैं कि उन्हें अल्लाह ने इसका हुक़म दिया है।

(२२) सिर्फ़ उन्हीं के लिये हलाल है, अगर ज़िन्दा पैदा हो।

(२३) मर्द और औरत।

(२४) यह आपत जिहालत के दौर के उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जो अपनी लड़कियों को निशायत ग़मदिली और बेरहमी के साथ ज़िन्दा ज़मीन में गाड़ दिया करते थे। ग़बीआ और मुदिर वगैरह कबीलों में इसका बहुत रिवाज था और जिहालत के ज़माने के कुछ लोग लड़कों को भी क़त्ल करते थे। और बेरहमी का यह आलम था कि कुत्तों को पालन पोषण करते और औलाद को क़त्ल करते थे। उनकी निखत यह इशारा हुआ कि तवाह हुए। इसमें शक नहीं कि औलाद अल्लाह तआला की नेअमत है और इसकी हलाकत से अपनी ग़ंख्या कम होती है। अपनी नख़ल मिटती है। यह दुनिया का घाटा है, घर की तबाही है, और आख़िरत में उसपर बड़ा अज़ाब है, तो यह अमल दुनिया और आख़िरत दोनों में तबाही का कारण हुआ और अपनी दुनिया और आख़िरत को तबाह कर लेता और औलाद जैसी प्यारी चीज़ के साथ इसतग़्हर की बेरहमी और क़त्ल ग़वार करना बहुत बड़ी अज्ञानता और मूर्खता है।

(२५) यानी वहीरा सायरा हामी वगैरह जो बयान हो चुके।

وَعَبِيرٌ مَعْرُوشٌ وَالْفَخْلُ وَالزَّرْعُ مُخْتَلِفًا أُكْلُهُ
وَالزَّيْتُونُ وَالزَّمَانُ مُشْتَابِهًا وَغَيْرُ مُتَشَابِهٍ
كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ
وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝ وَمِنَ
الْأَعْمَارِ حُمُولَةٌ وَفَرَسًا كُلُوا مِنَّا زَمْرًا فَكَبَّمُ اللَّهُ
وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوبَ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝
ثَمِينَةٌ أَزْوَاجٍ مِنَ الصَّانِ اثْنَيْنِ وَمِنَ النَّعْرِ
اثْنَيْنِ ۝ قُلْ آلَ الذَّكْرِينِ حَرَّمَ أَمِ الْاُنْثِيَيْنِ أَمَّا
اِسْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثِيَيْنِ ۝ تَبَيَّنُونِي بِعِلْمٍ
اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ
الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۝ قُلْ آلَ الذَّكْرِينِ حَرَّمَ أَمِ الْاُنْثِيَيْنِ
أَمَّا اِسْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثِيَيْنِ ۝ اَمْ كُنْتُمْ
شُهَدَاءَ اِذْ وَضَعَكُمُ اللَّهُ فِيْهِمَا فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ

شَدَّ

रंग रंग के खाने^(२६) और जैतून और अनार किसी बात में मिलते^(२७) और किसी में अलग^(२८) खाओ उसका फल जब फल लाए और उसका हक दो जिस दिन कटे^(२९) और बेजा न खर्चो^(३०) वेशक बेजा खर्चने वाले उसे पसन्द नहीं^(३१) और मवेशी में से कुछ वोझ उठाने वाले और कुछ जमीन पर बिछे^(३२) खाओ उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें रोजी दी और शतान के क्रदमों पर न चलो वेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है^(३३) आठ नर और मादा एक जोड़ भेड़ का और एक जोड़ बकरी का तुम फरमाओ क्या उसने दोनों नर हराम किये या दोनों मादा या वह जिसे दानों मादा पेट में लिये हैं^(३४) किसी इत्म से बताओ अगर तुम सच्चे हो^(३५) और एक जोड़ ऊँट का और एक जोड़ गाय का तुम फरमाओ क्या उसने दोनों नर हराम किये या दोनों मादा या वह जिसे दानों मादा पेट में लिये हैं^(३६) क्या तुम मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें यह हुक्म दिया^(३७) तो उससे बहककर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे कि लोगों को अपनी

- (२६) क्योंकि वां ये गुमान करते हैं कि ऐसे बुर कामों का अल्लाह ने हुक्म दिया है और इनका यह खयाल अल्लाह पर झूठ बांधना है।
(२७) सच्चाई की।

सूरए अनआम - सत्तरहवाँ सूकू

- (१) याती टट्टियाँ पर कायम किये हुए अंगूर वगैरह किसम के।
(२) रंग और मजे और मात्रा और शुश्रू में आपस में मुसल्लिफ़।
(३) जैसे कि रंग में या पत्तों में।
(४) जैसे मजे और असर में।
(५) मानी ये हैं कि ये चीज़ें जब फलें, खाना तो उसी वक़्त से तुम्हारे लिये जायज़ है और उसकी ज़क़ात यानी दसवाँ हिस्सा उसके पूरे होने के बाद वाजिब होता है, जब ख़ाती कटती जाए या फल तोड़े जाएं। लकड़ी, घास, घस के सिवा ज़मीन की बाकी पैदावार में, अगर यह पैदावार बारिश से हो, तो उसमें दसवाँ हिस्सा वाजिब होता है। और अगर रहट वगैरह से हो तो पाँचवाँ हिस्सा।
(६) इमाम अहमद रज़ा श्राँ रहमतुल्लाह अलैह ने इसराफ़ का अनुवाद बेजा खर्च करना फरमाया। बहुत ही उमदा अनुवाद है। अगर कुन माल खर्च कर डाला और अपने बाल बच्चों को कुछ न दिया और खुद फ़क्क़ार बन बैठा तो रादी का कौल है कि यह बेजा खर्च है। और अगर मदका देने ही से हाथ रोक लिया तो यह भी बेजा है, जैसा कि सईद बिन मुसयब गदियल्लाहो अन्हा ने फरमाया। मुफ़्तियान का कौल है कि अल्लाह की इताअत के सिवा और काम में जो माल खर्च किया जाए वह कम भी हो तो बेजा खर्च है। ज़हरी का कौल है कि इसके मानी ये हैं कि बुराई में खर्च न करो। मुजाहिद ने कहा कि अल्लाह के हक़ में कमी करना बेजा खर्च है। अगर बूकुबैस पहाड़ सांना हो और उस पूरे का शुदा की राह में खर्च करदो तो बेजा खर्च न हो और एक दरहम बुरे काम में खर्च करो तो बेजा खर्च कहलाए।
(७) चीपाए दो किसम के होते हैं, कुछ बड़े जो लादने के काम में आते हैं, कुछ छोटें जैसे कि बकरी वगैरह जो इस काबिल नहीं। उनमें से जो अल्लाह ने ख़ाला न हलाल किये, उन्हें श्राओ और जिहालत के दौर के लांगों की तरह अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ों को हराम न ठहराओ।
(८) यानी अल्लाह ने ख़ाला ने न भेड़ बकरी के नर हराम किये, न उनकी मादाएं हराम कीं। न उनकी औलाद। तुम्हारा यह काम कि कभी नर हराम ठहराओ, कभी मादा कभी इनके बच्चे, ये सब तुम्हारे दिमाग़ की उपज है और नफ़स के वहकाव का अनुकरण। कोई हलाल चीज़ किसी के हराम करने से हराम नहीं होती।
(९) इस आयत में जिहालत के दौर के लांगों को फटकारा गया, जो अपनी तरफ़ से हलाल चीज़ों को हराम ठहरा लिया करते

जिहालत से गुमराह कर वेशक अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता (१४४)

अठारहवाँ सूक

तुम फ़रमाओ^(१) मैं नहीं पाता उसमें जो मेरी तरफ़ वही (देव वाणी) हुई किसी खाने वाले पर कोई खाना हराम^(२) मगर यह कि मुर्दार हो या रंगों का बहता हुआ खून^(३) या वद जानवर (सुअर) का गोश्त वह निजासत (अपवित्रता) है या वह वेहुक्मी का जानवर जिसके ज़िह्न में गौर खुदा का नाम पुकारा गया तो जो नाचार हुआ^(४) न यूँ कि आप स्वाहिश करें और न यूँ कि ज़रूरत से वक़े तो वेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरवान है^(५) (१४५) और यहूदियों पर हमने हराम किया हर नाखुन वाला जानवर^(६) और गाय और बकरी की चर्बी उनपर हराम की मगर जो उनकी पीठ में लगी हो या आँत या हड्डी से मिली हो, हमने यह उनकी सरकशी (विद्रोह) का बदला दिया^(७) और वेशक हम ज़रूर सच्चे हैं (१४६) फिर अगर वो तुम्हें झुटलाए तो तुम फ़रमाओ कि तुम्हारा रब वसीअ (व्यापक) रहमत वाला है^(८) और उसका अज़ाब मुजरिमों पर से नहीं टाला जाता^(९) (१४७) अब कहेंगे मुश्किक कि^(१०) अल्लाह चाहता तो न हम शिकं करते न हमारे बाप दादा न हम कुछ हराम ठहराते^(११) ऐसा ही उनसे अगलों ने झुटलाया था यहां तक कि हमारा अज़ाब चखा^(१२)

أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ
اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۖ قُلْ لَا أَجِدُ فِي
مَا أُوْحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ
يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَّسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خَيْرٍ فَإِنَّهُ
رَجَسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۖ فَكُنِ صَاطِرًا عَلَىٰ
بَإِغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۖ وَبِذَلِكَ
الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُلْفُرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالنَّعَمِ
حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَبَلَتْ ظُهُورُهُمَا
أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُكُمْ بِنِعْمِ
وَلَا تَلْعَدُوا ۖ فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبِّكُمْ ذُو
رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِينَ ۖ سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ
اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ط

منزل

थे, जिनका बयान ऊपर की आयतों में आ चुका है। जब इस्लाम में अहकाम का बयान हुआ तो उन्होंने सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से झगड़ा किया और उनका वक्ता मालिक बिन औफ़ जिस्मी सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खिदमत में हाज़िर होकर कहने लगा कि या मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम), हमने सुना है आप उन चीज़ों को हराम करते हैं जो हमारे बाप दादा करते आए हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया, तुमने बग़ैर किसी अरल के कुछ किस्में चीज़ों की हराम कर लीं और अल्लाह तआला ने आठ नर और मादा अपने बन्दों के खाने और उनसे नफ़ा उठाने के लिये पैदा किये। तुमने कहाँ से इन्हें हराम किया। इन में तापाकी नर की तरफ़ से आई या मादा की तरफ़ से। मालिक बिन औफ़ यह सुनकर सतथ और भौचक्का रह गया, कुछ बोल न सका। नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, बोलता क्यों नहीं? कहने लगा, आप फ़रमाइए, मैं सुनूँगा। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कलाम की कुबत और ज़ोर ने जिहालत शालों के वक्ता को साफ़ित और हैरान कर दिया और वह बोल ही क्या सकता था। अगर कहता कि नर की तरफ़ से तापाकी आई, तो लाज़िम होता कि सारे नर हराम हों। अगर कहता कि मादा की तरफ़ से, तो ज़रूरी होता कि हर एक मादा हराम हो और अगर कहता कि जो पेट में है वह हराम है, तो फिर सब ही हराम हो जात, क्योंकि जो पेट में रहता है वह नर होता है या मादा। वो जो सीमाएं कायम करते थे और कुछ को हराम और कुछ को हलाल ठहराते थे। इस तर्क ने उनके इस दावे को झुटा साबित कर दिया। इसके अलावा उनसे ये पूछना कि अल्लाह ने नर हराम किये हैं या मादा या उनके बच्चे, यह नबुव्वत के इक्कार करने वाले विरोधी को नबुव्वत का इक्कार करने पर मजबूर करता था क्योंकि जब तक नबुव्वत का वास्ता न हो तो अल्लाह तआला की मज़ी और उसका किसी चीज़ को हराम फ़रमाना कैसे जाना जा सकता है। चुनावे अगले वाक्य ने इसको साफ़ किया है।

(१०) जब यह नहीं है और नबुव्वत का तो इक्कार नहीं करते, तो हलाल हराम के इन अहकाम को अल्लाह की तरफ़ जोड़ना खुला झूट और ख़ालिस मन घडन है।

सूरए अनआम - अठारहवाँ सूक

(१) इन जाहिल मुश्किकों से जो हलाल चीज़ों को अपनी नफ़सानी स्वाहिश से हराम कर लेते हैं।

(२) इसमें चेतावनी है कि किसी चीज़ का हराम होना शरीअत के हुक्म से होता है न कि नफ़स की स्वाहिश से। तो जिस चीज़ का हराम होना शरीअत में न आए उसको नाजायज़ और हराम कहना ग़लत है। हराम होने का सुवूत चाहे कुरआन से हो या हदीस से, यही विश्वसनीय है।

तुम फरमाओ क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है कि उसे हमारे लिये निकालो, तुम तां निरे गुमान के पीछे हो और तुम यही तख्मीने (अनुमान) करते हो^(१३) (१४८) तुम फरमाओ तो अल्लाह ही की हुक्मत (तर्क) पूरी है^(१४) तो वह चाहता तो तुम सबकी हिदायत फरमाता^(१४९) तुम फरमाओ लाओ अपने वो गवाह जो गवाही दें कि अल्लाह ने उसे हराम किया^(१५) फिर अगर वो गवाही दे बैठे^(१६) तो तू ऐ सुनने वाले उनके साथ गवाही न देना और उनकी ख्वाहिशों के पीछे न चलना जो हमारी आयतें झुटलाते हैं और जो आखिरत पर ईमान लाते और अपने रब का बराबर वाला ठहराते हैं^(१७) (१५०)

उन्नीसवाँ सूक़

तुम फरमाओ आओ मैं तुम्हें पढ़ सुनाऊँ जो तुमपर तुम्हारे रब ने हराम किया^(१) यह कि उसका कोई शरीक न करो और माँ बाप के साथ भलाई करो^(२) और अपनी औलाद कत्ल न करो मुफ़लिसी के कारण, हम तुम्हें और उन्हें सब को रिज़क देंगे^(३) और वेह्याइयों के पास न जाओ जो उसमें खुली हैं और जो छुपी^(४) और जिस जान की अल्लाह ने हुरमत (इज़्जत) रखी उसे नाहक न मारो^(५) यह तुम्हें हुक्म फरमाया है कि तुम्हें अक़ल हो^(६) (१५१) और यतीमों के माल

كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّى ذَاقُوا بَأْسَاءَ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ قُلْ فِیْلِهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ قُلْ هَلَمْ شَهِدْكُمْ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَذَا فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدُوا مَعَهُمْ وَلَا تَتَّبِعِ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَغْدِلُونَ قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبِّي عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ وَنَحْنُ نَرُفُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ وَصَّيْتُكُمْ

مَنْزِل

- (३) तो जो खून बहता न हो जैसे कि ज़िगर, तिल्ली, वह हराम नहीं है।
- (४) और ज़रूरत ने उसे उन चीज़ों में से किसी के खाने पर मजबूर किया, ऐसी हालत में बर्चन होकर उसने कुछ खाया।
- (५) उसपर पकड़ न फ़रमाएगा।
- (६) जो उंगली खरता हो, चाहे चौपाया हो या पक्षी। इसमें ऊँट और शूतुर मुर्ग़ दाख़िल हैं। (मदारिक) कुछ मुफ़सिरीयों का कहना है कि यहाँ शूतुर मुर्ग़ और बतख़ और ऊँट खास तौर से मुग़द हैं।
- (७) यहूदी अपनी मरक्बरी के कारण इन चीज़ों से महरूम किये गए, लिहाज़ा ये चीज़ें उनपर हराम नहीं और हमारी शरीअत में गाय बकरी की चर्बी और बतख़ और शूतुर मुर्ग़ हलाल हैं। इसीपर सहाबा और ताबईन का सहमत है। (तफ़सीर अहमदी)
- (८) झूठों को मोहलत देना है और अज्ञात में जल्दी नहीं फ़रमाता, नाकि उन्हें ईमान लाने का मौक़ा मिले।
- (९) अपने वक़्त पर आ ही जाता है।
- (१०) यह ख़बर ग़ैब है कि जो बात वो कहने वाले थे वह बात पहले से बयान फ़रमा दी।
- (११) हमने जो कुछ किया, यह सब अल्लाह की मर्ज़ी से हुआ। यह दलील है इसकी कि वह उसमे राज़ी है।
- (१२) और यह झूट बहाना उनके कुछ काम न आया, क्योंकि किसी काम का मर्तीयत अर्थात मर्ज़ी में होना उसकी इच्छा और निश्चित होने को लाज़िम नहीं। मर्ज़ी वही है जो नबियों के वास्ते से बताई गई और उसका हुक्म फ़रमाया गया।
- (१३) और सलत अटकलें चलाते हो।
- (१४) कि उसने रसूल भेजे, किताबें उतारी और सच्ची राह साफ़ कर दी।
- (१५) जिसे तुम अपने लिये हराम करार देते हो और कहते हो कि अल्लाह तआला ने हमें इसका हुक्म दिया है। यह गवाही इसलिये तलब की गई कि ज़ाहिर हो जाए कि काफ़िरों के पास कोई गवाह नहीं है और जो वो कहते हैं वह उनकी बनाई हुई बात है।
- (१६) इसमें चेतावनी है कि अगर यह गवाही वाक़ हो भी तो वह केवल अनुकरण हुआ और झूट और वातिल होगा।
- (१७) युतों को मअबूद मानते हैं और शिर्क में गिरफ़्तार हैं।

सूरए अनआम - उन्नीसवाँ सूक़

- (१) उसका बयान यह है।
- (२) क्योंकि तुमपर उनके बहुत अधिकार हैं। उन्होंने तुम्हारा पालन पोषण किया, तुम्हारी तरबियत की, तुम्हारे साथ शफ़क़त और

के पास न जाओ मगर बहुत अच्छे तरीके से^(१) जबतक वह अपनी जवानी को पहुँचे^(२) और नाप और तौल इत्साफ़ के साथ पूरी करो, हम किसी जान पर बौझ नहीं डालते मगर उसकी ताकत भर और जब बात कहो तो इत्साफ़ की कहो अगरचे तुम्हारे रिश्तेदार का मामला हो, और अल्लाह ही का अहद पूरा करो यह तुम्हें ताकीद फ़रमाई कि कहीं तुम नसीहत मानो^(३) और यह कि^(४) 'यह है मेरा सीधा रास्ता तो इसपर चलो और और राहें न चलो'^(५) कि तुम्हें उसकी राह से जुदा करदेगी यह तुम्हें हुक्म फ़रमाया कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले^(६) फिर हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई^(७) पूरा एहसान करने को उसपर जो नेकी करने वाला है और हर चीज़ की तफ़सील और हिदायत और रहमत कि कहीं वो^(८) अपने रव से मिलने पर ईमान लाए^(९) (१:५४)

बीसवाँ सूक़

और यह वरकत वाली किताब^(१) हमने उतारी तो इसकी पैरवी (अनुकरण) करो और परहेज़गारी करो किं तुमपर रहम हो^(२) कभी कहो कि किताब तो हमसे पहले दो गिरोहों पर उतरी थी^(३) और हमें उनके पढ़ने पढ़ाने की कुछ

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۖ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا تَكْلِفُوا نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدُوا ۚ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۚ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ذَٰلِكُمْ وَصَّيْكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۚ وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَٰلِكُمْ وَصَّيْكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۚ ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهَدَىٰ ذُرِّيَّتَهُ لَعَلَّهُمْ يَلْقَوْنَ رَبَّهُمْ وَيُؤْمِنُونَ ۚ وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۚ أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَتَيْنَا الْكِتَابَ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۖ

مترجم

मेहरबानी का मुलूक किया, तुम्हारी हर ख़तरा से चौकसी की उनके अधिकारों का ख़याल न करना और उनके साथ अच्छे मुलूक न करना हयाम है.

(३) इसमें औलाद ज़िन्दा ज़मान में गाड़ देने और मार डालने की हुमत यानी अवैधता बयान फ़रमाई गई है, जिसका ज़ाहिरा में रिवाज था कि बा. अक्सर दरिद्रता के डर से औलाद को हलाक करने थे. उन्हें बताया गया कि सज़ा देने वाला तुम्हारा उनका सब का अल्लाह है फिर क्यों क़त्ल जैसे सख्त जुर्म में पड़ते हो.

(४) क्योंकि इन्सान जब खुले और ज़ाहिर गुनाह से बचे और छुपे गुनाह से परहेज़ न करे तो उसका ज़ाहिर गुनाह से बचना भी अल्लाह के लिये नहीं, लोगों को दिखाने और उनकी बदगोई अथात आलोचना से बचने के लिये है. और अल्लाह की रज़ा और सबाब का हक़दार वह है जो उसके डर से गुनाह छोड़ दे.

(५) वो काम जिनसे क़त्ल जायज़ होता है, यह हैं :- मुर्तद होना यानी इस्लाम से फिर जाना या किसान या व्याहें हुए का ज़िना. वुस्त्रारी व मुस्लिम की हदीस में है कि सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, कोई मुसलमान जो लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह की गवाही देता हो उसका ख़ून हलाल नहीं, मगर इन तीन कारणों में से, कि एक कारण से या तो व्याहें होने के बावजूद उससे ज़िना सरज़द हुआ हो, या उसने किसी को नाहक़ क़त्ल किया हो और उसका बदला उसपर आता हो या वह दीन छोड़कर मुर्तद हो गया हो.

(६) जिससे उसका फ़ायदा हो.

(७) उस वक़्त उसका माल उसके सुपुर्द कर दो.

(८) इन दोनों आयतों में जो हुक्म दिया गया.

(९) जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हो, यहूदियत हो या ईसाईयत या कोई और मिल्लत.

(१०) तीरान शरीफ़.

(११) यानी बनी इस्राईल.

(१२) और मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब होने और सबाब और अज़ाब दिये जाने और अल्लाह का दीदार होने की तस्दीक करें.

सूरए अनआम - बीसवाँ सूक़

(१) यानी क़ुरआन शरीफ़ ज़िरामें अत्यन्त भलाई, अत्यन्त फ़ायदे और अत्यन्त वरकतें हैं. और जो क़यामत तक बाक़ी रहेगा और रद्दो बदल, परिवर्तन और संशोधन वगैरह से मेहफूज़ रहेगा.

खबर न थी^(२) ॥१५६॥ या कहो कि अगर हमपर किताब उतरती तो हम उनसे ज़्यादा ठीक राह पर होते^(३) तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की रोशन दलील और हिदायत और रहमत आई^(४) तो उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन जो अल्लाह की आयतों को झुटलाए और उनसे मुंह फेरे, बहुत जल्द वो जो हमारी आयतों से मुंह फेरते हैं हम उन्हें वड़े अज़ाब की सज़ा देंगे बदला उनके मुंह फेरने का ॥१५७॥ काहे के इन्तिज़ार में हैं^(५) मगर यह कि आएँ उनके पास फ़रिश्ते^(६) या तुम्हारे रब का अज़ाब या तुम्हारे रब की एक निशानी आए^(७) जिस दिन तुम्हारे रब की वह एक निशानी आएगी किसी जान को ईमान लाना काम न देगा जो पहले ईमान न लाई थी या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी^(८) तुम फ़रमाओ रस्ता देखो^(९) हम भी देखते हैं ॥१५८॥ वो जिन्होंने अपने दीन में अलग अलग राहें निकालीं और कई गिरोह होगए^(१०) ऐ मेहबूब तुम्हें उनसे कुछ इलाका नहीं, उनका मामला अल्लाह ही के हवाले है फिर वह उन्हें बता देगा जो कुछ वो करते थे^(११) ॥१५९॥ जो एक नेकी लाए तो उसके लिये उस जैसी दस हैं^(१२) और जो बुराई लाए तो उसे बदला न

وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَفِيلِينَ ۖ أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۖ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۚ سَجِيزُ الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ۚ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ ۚ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا ۚ قُلِ انْتَضَرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِبَعًا لَسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ إِنَّمَا نَبَأُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يَنْبِئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۚ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ

تِلْكَ آيَاتُ

(२) यानी यहूदियों और ईसाइयों पर तौरात और इंजिल।

(३) क्योंकि वह हमारी ज़बान ही में न थी, न हम किसीने उसके मानी बताए। अल्लाह तअला ने कुरआन शरीफ उतार के उनके इस बहाने की काट फ़रमा दी।

(४) काफ़िरों की एक जमाअत ने कहा था कि यहूदियों और ईसाइयों पर किताबें उतरनी मगर वो बदअक्ली में गिरफ़्तार रहे, उन किताबों से नफ़ा न उठा सके। हम उनकी तरह कमअक़ल और नादान नहीं हैं। हमारी अक़लें सही हैं। हमारी अक़ल और समझ बड़ा ऐसी है कि अगर हमपर किताब उतरती तो हम ठीक राह पर होते। कुरआन उतार कर उनका यह बहाना भी काट दिया गया। चुनावें आएँ इरशाद होता है।

(५) यानी यह कुरआने पाक जिसमें खुला तर्क और साफ़ बयान और हिदायत व रहमत है।

(६) जब वहदानियत और रिसालत पर ज़बरदस्त तर्क कायम हो चुके, और कुफ़्र व गुमराही के अज़ीदों का झूठ ज़ाहिर कर दिया गया, तो अब ईमान लाने में क्यों हिचकिचाहट है, क्या इन्तिज़ार बाक़ी है।

(७) उनकी रूहें निकालने के लिये।

(८) क़यामत की निशानियों में से। अक्सर मुफ़सिरों के नज़दीक इस निशानी से सूरज का पश्चिम से निकलना मुराद है। तिरमिज़ी की हदीस में भी ऐसी ही आया है। बुज़ुरारी व मुस्लिम की हदीस में है कि क़यामत कायम न होगी जबतक सूरज पश्चिम से न निकले और जब वह पश्चिम से निकलेगा और उसे लोग देखेंगे तो सब ईमान लाएंगे और यह ईमान नफ़स न देगा।

(९) यानी फ़रमाँबरदारी न की थी। मानी ये हैं कि निशानी आनेसे पहले जो ईमान न लाए, निशानी के बाद उसका ईमान कुबूल नहीं। इसी तरह जो निशानी से पहले तौबा न करे, निशानी के बाद उसकी तौबा कुबूल नहीं। जो ईमानदार पहले से नफ़स काम करते होंगे, निशानी के बाद भी उनके कर्म मक्बूल होंगे।

(१०) उनमें से किसी एक का यानी मौत के फ़रिश्तों का आगमन या अज़ाब या निशानी आने का।

(११) यहूदियों और ईसाइयों के जैसे। हदीस शरीफ़ में है, यहूदी ७१ सम्रदाय हो गए उनमें से सिर्फ़ एक निजान पाया हुआ है, बाक़ी राय दोज़ख़ी। और ईसाई बहतर सम्रदाय हो गए, एक निजान पाया हुआ, बाक़ी दोज़ख़ी। और मेरी उम्मत तेहतर सम्रदाय हो जाएगी, वो पथ के सब दोज़ख़ी होंगे सिवाए एक के, जो वही जमाअत है। और एक रिवायत में है कि जो मेरी और मेरे सहाबा की राह पर है।

(१२) और आख़िरत में उन्हें अपने किये का अंजाम मालूम हो जाएगा।

(१३) यानी एक नेकी करने वाले को दस नेकियों का सबाब और यह भी सीमित तरीक़े पर नहीं, बल्कि अल्लाह तअला जिसके लिये जितना चाहे उसकी नेकियों को बढ़ाए। एक के सात सौ करे या बेहिसाब अना फ़रमाए। असल यह है कि नेकियों का सबाब केवल

मिलेगा मगर उसके बराबर और उनपर जुल्म न होगा (१६०) तुम फरमाओ वेशक मुझे मेरे रब ने सीधी राह दिखाई (१६१) ठीक इब्राहीम के दीन की मिल्कत जो हर बातिल से अलग थे, और मुश्रिक न थे (१६२) तुम फरमाओ वेशक मेरी नमाज़ और मेरी कुरवानियां और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिये है जो रब सारे जगत का (१६३) उसका कोई शरीक नहीं मुझे यही हुक्म हुआ है और मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ (१६४) तुम फरमाओ क्या अल्लाह के सिवा और रब चाहूँ हालांकि वह हर चीज़ का रब है (१६५) और जो कोई कुछ माए वह उसी के ज़िम्मे है और कोई वोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी (१६६) फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ फिरना है (१६७) वह तुम्हें बता देगा जिसमें विरोध करते थे (१६८) और वही है जिसने ज़मीन में तुम्हें नायब किया (१६९) तुम में एक को दूसरे पर दजों बलन्दी दी (१७०) कि तुम्हें आजमाए (१७१) उस चीज़ में जो तुम्हें अता की वेशक तुम्हारे रब को अज़ाव करते देर नहीं लगती और वेशक वह ज़रूर वख़्शने वाला मेहरवान है (१७२)

فَلَهُ عَشْرُ امْتَا لَهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ قُلْ اِشْرَىٰ هٰذِنِي رَبِّيَ اِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ دِيْنًا قَيِّمًا ۝ مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيفًا ۝ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُلْ اِنْ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۝ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ ۝ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ قُلْ اَعْلٰمُ اللّٰهِ اَبْعٰى رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۝ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۝ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ اُخْرٰى ۝ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خٰلِفٰٓةَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَا اَتٰكُمْ ۝ اِنْ رَبِّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۝ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

मन्ज़ल

फ़रज़ है, यही मज़हब है पहले सून्नत का और बुराई की उतनी ही सज़ा, यह इस्लाम है।

(१४) यानी इस्लाम जो अल्लाह को मकबूल है।

(१५) इसमें कुरैश के काफ़िरों का रद है जो गुमान करते थे कि वो हज़रत इब्राहीम के दीन पर हैं, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मुश्रिक और बुत परस्त न थे तो बुत परस्ती करने वाले मुश्रिकों का यह दावा कि वह इब्राहीमी मिल्कत पर हैं, बातिल है।

(१६) अबलियत या तो इस ऐतिवार से है कि नवियों का इस्लाम उनकी उम्मत पर मुकद्दम होता है या इस ऐतिवार से कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सारी सृष्टि में पहले हैं तो ज़रूर मुसलमानों यानी इस्लाम वालों में अबल हुए।

(१७) काफ़िरों ने नविये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि आप हमारे दीन की तरफ़ लौट आइये और हमारे मअबूदों की इबादत कीजिये, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि वलीद बिन मुगीरह कहता था कि मेरा रास्ता इस्तिथार करो, इसमें अगर कुछ गुनाह है तो मेरी गर्दन पर, इसपर यह आयत उतरी और यताया गया कि वह ग़म्ता बालित है, खुदाशनास किस तरह गवाग कर सकता है कि अल्लाह के सिवा किसी और को रब बनाए और यह भी बातिल है कि किसी का गुनाह दूसरा उठा सके।

(१८) हर शख्स की पकड़ उसके अपने गुनाह में होगी, दूसरे के गुनाह में नहीं।

(१९) क़यामत के दिन।

(२०) क्योंकि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम नवियों के सिलसिले को ख़त्म करने वाले हैं, आपके बाद कोई नयी नहीं और आपकी उम्मत आख़िरी उम्मत है, इसलिये उनको ज़मीन में पहलों का ख़लीफ़ा किया कि उसके मालिक हों।

(२१) शक्ल सूरत में, हुस्नो ज़माँल में, रिज़्क व माल में, इल्म व अक्ल में, कुब्त और क़नाम में।

(२२) यानी आजमाइश में डाले कि तुम इज़ज़त और शान की नेअमत पाकर कैसे शुक्रगुज़ार रहते हो और आपस में एक दूसरे के साथ किस क्रिम के सुलूक करते हो।

७ - सूरतुल अअराफ़

सूरए अअराफ़ मक्का में उतरी, इसमें दो सौ छ आयतें और चौबीस रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) अलिफ़-लाम-मीम-सौद, ^(१) ऐ मेहबूब ! एक किताब तुम्हारी तरफ़ उतारी गई तो तुम्हारा जी उससे न रुके^(२) इसलिये कि तुम उससे डर सुनाओ और मुसलमानों को नसीहत^(३) ऐ लोगो उसपर चलो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रव के पास से उतरा^(४) और उसे छोड़कर और हाकिमों के पीछे न जाओ बहुत ही कम समझते हो^(५) और कितनी ही बस्तियां हमने हलाक कीं^(६) तो उनपर हमारा अज़ाव रात में आया या जब वो दोपहर को सोते थे^(७) ^(८) तो उनके मुंह से कुछ न निकला जब हमारा अज़ाव उनपर आया मगर यही बोले कि हम ज़ालिम थे^(९) ^(१०) तो वेशक ज़रूर हमें पूछना है जिनके पास रसूल गए^(११) और वेशक हमें पूछना है रसूलों से^(१२) ^(१३) तो ज़रूर हम उनको बता देंगे^(१४) अपने इल्म से और हम कुछ ग़ायब न थे^(१५) और उस दिन तौल ज़रूर होनी है^(१६) तो जिनके पल्ले भारी हुए^(१७) वही मुराद को पहुंचे^(१८) और जिनके पल्ले हलके हुए^(१९) तो वही हैं जिन्होंने अपनी जान



७ - सूरए अअराफ़ - पहला रूकू

(१) यह सूरत मक्काए मुकर्रमा में उतरी. एक रिवायत में है कि यह सूरत मक्की है. सिवाय पाँच आयतों के, जिनमें से पहली “ब असअलुहुम अनिल करप्रतिल्ली” है. इस सूरत में दो सौ छ आयतें, चौबीस रूकू, तीन हजार तीन सौ पच्चीस कलिमें और चौदह हजार दस हुरूफ़ हैं.

(२) इस ख़याल से कि शायद लोग न मानें और इससे अलग रहें और इसे झुटलावे पर तुलें हों.

(३) यानी कुरआन शरीफ़, जिसमें हिदायत व बुर का बयान है. जुजाज ने कहा कि अनुकरण करो कुरआन का और उस चीज़ का जो नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम लाए, क्योंकि यह सब अल्लाह का उतारा हुआ है, जैसा कि कुरआन शरीफ़ में फ़रमाया “मा आताकुमुरसूलो फ़ख़्रुहो.” यानी जो कुछ रसूल तुम्हारे पास लाएं उसे अपना लो और जिससे मना फ़रमाएं उससे बाज़ रहो.

(४) अब अल्लाह के हुक्म का अनुकरण छोड़ने और उससे आँख फेरने के नतीजे पिछली क़ीमों के हालात में दिख़ाए जाते हैं.

(५) मानी ये हैं कि हमारा अज़ाव ऐसे वक़्त आया जबकि उन्हें ख़याल भी न था. या तो रात का वक़्त था, और वो आराम की नींद सोते थे, या दिन में कैलूले का वक़्त था, और वो राहत में मसरूफ़ थे. न अज़ाव उतरने की कोई निशानी थी, न क़रीना, कि पहले से अगाह होते. अचानक आ गया. इससे काफ़िरों का चंतावनी दी जाती है कि वो अम्न और राहत के साधनों पर धमण्ड न करें. अल्लाह का अज़ाव जब आता है तो अचानक आता है.

(६) अज़ाव आने पर उन्होंने अपने जुर्म का ऐतिराफ़ किया और उस वक़्त का ऐतिराफ़ भी कोई फ़ायदा नहीं देता.

(७) कि उन्होंने रसूलों को दअवत का क्या जवाब दिया और उनके हुक्म की क्या तामील आर्थात अनुकरण किया.

(८) कि उन्होंने अपनी उम्मतों को हमारे संदेश पहुंचाए और उन उम्मतों ने उन्हें क्या जवाब दिया.

(९) रसूलों को भी और उनकी उम्मतों को भी कि उन्होंने दुनिया में क्या किया.

(१०) इस तरह कि अल्लाह तआला एक तराजू कायम फ़रमाएगा जिसका हर पलड़ा इनका चिरतुन होगा जितना पूर्व और पश्चिम के बीच विस्तार है. इब्न जौज़ी ने कहा कि हदीस में आया है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने तराजू (मीज़ान) देखने की दग़व़ास्त की. जब मीज़ान दिख़ाई गई और आपने उसके पलड़ों का बिस्तार देखा तो अर्ज़ किया या رب, किसकी ताक़त है कि इनका नेकियाँ से भर सके. इश्शाद हुआ कि ऐ दाऊद, मैं जब अपने चन्दों से राज़ी होता हूँ तो एक ख़ज़ूर से इसको भर देता हूँ. यानी थोड़ी सी नेकी भी कुबूल हो जाए तो अल्लाह के फ़ज़्र से इतनी बढ़ जाती है कि मीज़ान को भर दे.

(११) नेकियाँ ज़्यादा हुई.

घाटे में डाली उन ज़ियादतियों का बदला जो हमारी आयतों पर करते थे^(१३) (९) और वेशक हमने तुम्हें ज़मीन में जमाव बनाए^(१४) बहुत ही कम शुक्र करते हो^(१५) (१०)

दूसरा रूकू

और वेशक हमने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक्शे बनाए फिर हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो वो सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस, यह सज्दे वालों में न हुआ^(१६) फ़रमाया किस चीज़ ने तुझे रोका कि तूने सज्दा न किया जब मैंने हुक्म दिया था^(१७) बोला मैं उससे बेहतर हूँ तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया^(१८) (१२) फ़रमाया तू यहाँ से उतर जा तुझे नहीं पहुंचता कि यहां रहकर घमण्ड करे निकल^(१९) तू है ज़िल्लत वालों में^(२०) (१३) बोला मुझे फुरसत दे उस दिन तक कि लोग उठाए जाएं^(२१) (१४) फ़रमाया तुझे मोहलत है^(२२) (१५) बोला तो कसम इसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उनकी ताक में वैठूंगा^(२३) (१६) फिर ज़रूर मैं उनके पास आऊंगा उनके आगे और उनके पीछे और उनके दाएँ और उनके बाएँ से^(२४) और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुज़ार न

بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ۝ وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَ
جَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝
وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ
اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ لَمْ يَكُنْ مِنَ
السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ مَا مَنَعَكَ آلَا تَسْجُدُ إِذْ أَمَرْتُكَ ۚ
قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي مِنْ نَارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ
طِينٍ ۝ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ
تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ۝ قَالَ
أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ إِنَّكَ مِنَ
النَّظِيرِينَ ۝ قَالَ فِيمَا أُغْوِيْتَنِي لَأَفْعِدَنَّ لَهُمْ
صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ ثُمَّ لَا تَبْيَهُهُمْ مِنْ بَيْنِ
أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ
شَمَائِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ۝ قَالَ

مَنْزِل

- (१२) और उसमें कोई बेकी न हुई, यह काफ़िरों का हाल होगा जो ईमान से महज़्म है और इस वज़ह से उनका कोई अमल मक्बूल नहीं।
(१३) कि उनको छोड़ते थे, झुटलाते थे, उनकी इताअत से मुंह मोड़ते थे।
(१४) और अपनी मेहरबानी से तुम्हें राहतें दीं, इसके बावजूद तूम...
(१५) शुक्र की हक्कीकत, नेअमत का तसबुर और उसका इज़हार है और नाशुकी, नेअमत को भूल जाना और उसको छुपाना।

सूरए अअराफ़ - दूसरा रूकू

- (१) इसमें साबित होता है कि हुक्म अनिवार्यता के लिये होता है और सज्दा न करने का कारण दरियाफ्त फ़रमाया तौयीअ के लिये है, और इसलिये कि शेतात की दुश्मनी और उसका क़ुक्र और घमण्ड और अपनी असल पर गर्व करना और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के अगल का निगदर करना ज़ाहिर हो जाए।
(२) इससे उसकी मुराद यह थी कि आग मिट्टी से उत्तम और महान है तां जिसकी असल आग होगी यह उससे उत्तम होगा जिसकी असल मिट्टी हो। और उस ख़बीस का यह ख़याल ग़लत और बातिल है, क्योंकि अफ़ज़ल वह है जिस मालिक व मौला फ़ज़ीलत दे, फ़ज़ीलत का आधार असल व जौहर पर नहीं, बल्कि मालिक की फ़रमाँवरदारी पर है। और आग का मिट्टी से उत्तम होना, यह भी सही नहीं है, क्योंकि आग में क्रोध और तेज़ी और ऊंचाई छूने की हविस है, यह कारण घमण्ड का हाता है। और मिट्टी से इल्म, हया और सब्र का आदर प्राप्त होता है, मिट्टी से मुन्क आवाद होते हैं, आग से नष्ट, मिट्टी अमानतदार है, जो चीज़ उसमें रखी जाए, उसको मेहफूज़ रखे और बढ़ाए, आग फ़ना कर देती है, इसके बावजूद लुत्फ़ यह है कि मिट्टी आग का बुझा देती है और आग मिट्टी का फ़ना नहीं कर सकती, इसके अलावा इब्लीस की मूर्खता और कदूता यह कि उसने खुले प्रमाण के हाते हुए उसके मुक़ाबले में अपने अन्दाज़ से काम लेना चाहा और जो अन्दाज़ा खुले हुक्म और प्रमाण के खिलाफ़ हो वह ज़रूर मरदूद है।
(३) ज़न्नत से, कि यह जगह फ़रमाँवरदारी और विनयता वालों के लिये है, इन्कार और सरकशी करने वालों की नहीं।
(४) कि इन्सात तेरा तस्कार करेगा और हर ज़बात तुझपर लअनत करेगी और यही घमण्ड वाले का अंजाम है।
(५) और इस मुदत की मोहलत सूरए हिज़्र में बयान फ़रमाई गई "इन्नका मिनल मुन्जरीना इला यौमिल वक्तिन मअलूम" तू उनमें है जिनको उस मअलूम वक्त के दिन तक मोहलत है, (सूरए हिज़्र, आयत २७). और यह वक्त पहली बार के सूर फूंक जाने का है, जब सब लोग मर जाएंगे, शेतात व मुदों के ज़िन्दा होने के वक्त तक की मोहलत चाही थी और इसमें उसका मतलब यह था कि मौत की सम्झनी से बच जाए, यह क़बूल न हुआ और पहले सूर तक की मोहलत दी गई।
(६) कि वही आदम के दिल में बसबसे डालूँ और उन्हें बातिल की तरफ़ माइल करूँ, गुवाहों की रुचि दिलाऊँ, तेरी इताअत और इयादत से रोकूँ, और गुमराही में डालूँ।

पाएगा^(८) १७

फरमाया यहाँ से निकल जा रद किया गया, रांदा हुआ, ज़रूर जो उनमें से तेरे कहे पर चला मैं तुम सबसे जहन्नम भर दूंगा^(९) १८ और ऐ आदम तू और तेरा जोड़ा^(१०) जन्नत में रहो तो उससे जहाँ चाहो खाओ और उस पेड़ के पास न जाना कि हद से बढ़ने वालों में होगे^(११) १९ फिर शैतान ने उनके जी में खतरा डाला कि उनपर खोलदे उनकी शर्म की चीज़ें^(१२) जो उनसे छुपी थीं^(१३) और बोला तुम्हें तुम्हारे रब ने इस पेड़ से इसलिये मना फरमाया है कि कहीं तुम दो फ़रिश्ते हो जाओ या हमेशा जीने वाले^(१४) २० और उनसे क़सम खाई कि मैं तुम दोनों का भला चाहने वाला हूँ^(१५) तो उतार लाया उन्हें धोखे से^(१६) फिर जब उन्होंने वह पेड़ चखा उनपर उनकी शर्म की चीज़ें खुल गई^(१७) और अपने वदन पर जन्नत के पत्ते चिपटाने लगे, और उन्हें उनके रब ने फ़रमाया क्या मैं ने तुम्हें इस पेड़ से मना न किया और न फ़रमाया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है^(१८) २२ दोनों ने अज़्र की ऐ रब हमारे हमने अपना

الْأَعْرَابُ

٢١١

تِلْكَ آيَاتُهَا

أَخْرَجَ مِنْهَا مَذْءُومًا مَّدْحُورًا لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ وَيَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ فَوَسْوَسَ إِلَيْهَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوَائِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَكَتَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ ۝ وَقَاسَمَهُمَا إِيَّايَ لَكُمَا لَيْنَ الصَّاحِيحَيْنِ ۝ فَدَلَّهُمَا بِعُرْوَةٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوَاتُهُمَا وَطَفِقَا يَعْصِفْنَ عَلَيْهَا مِنْ وَرَقٍ الْجَنَّةِ وَنَادَاهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكَ الشَّجَرَةِ وَأَقُلْتُ لَكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا عَنَّا وَإِنَّ لَنَا

مَنْزِلٌ

(७) यानी चारों तरफ़ से उन्हें घेर कर सीधी राह से रोकूंगा।

(८) चूंकि शैतान बनी आदम को गुमराह करने और पासनाओं तथा बुराइयों में गिरफ़्तार करने में अपनी अतान्त कांशिश ग्रन्थ करने का इसराद कर चुका था, इसलिए उसे गुमान था कि वह बनी आदम को धक्का लेगा, उन्हें धांखा देकर अल्लाह की नअमतों के शुक्र और उसकी फ़रमावज़दारी से रोक देगा।

(९) तुझको भी और तेरी सन्तान को भी, और तेरा अनुकरण करने वाले आदमियों को भी, सबको जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा। शैतान को जन्नत से तिकाल देने के बाद हज़रत आदम को ख़िलाफ़ फ़रमाया जो आगे आना है।

(१०) यानी हज़रत हब्बा।

(११) यानी ऐसा बसचमा डाला कि जिसका नतीजा यह हो कि वो दोनों आपस में एक दूसरे के सामने नंगे हो जाएं। इस आयत से यह मसअला साबित हुआ कि वह जिस्म जिसको अंगत कहते हैं उसका छुपाना ज़रूरी और ख़ालना मना है, और यह भी साबित हुआ कि उसका खोलना हमेशा से अक़्त के नज़दीक़ ख़राब और तबीअत के नागचार रहा है।

(१२) इससे मालूम हुआ कि इन दोनों सादियों ने अबतक एक दूसरे का मुंह न देखा था।

(१३) कि जन्नत में रहा और कभी न मरो।

(१४) यानी ये हैं कि इब्नीस मलक़ ने झूठी क़सम खाकर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को धांखा दिया और पहला झूठी क़सम ख़ानेवाला इन्नीस हो है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को गुमान भी न था कि कोई अल्लाह की क़सम खाकर झूठ बोल सकता है।

(१५) और जन्नती लियस जिस्म से अलग हो गए और उनमें एक दूसरे से अपना वदन छुपा न सका, उम वक़्त तक उनमें से किसी ने खुद भी अपना छुपा हुआ वदन न देखा था और न उस वक़्त तक इसकी ज़रूरत ही पेश आई थी।

(१६) ऐ आदम और हब्बा, अपनी सन्तान समेत जो तुम में है।

आप बुरा किया तो अगर तू हमें बख़्शे और हमपर रहम न करे तो हम ज़ख़र नुक़सान वालों में हुए (२३) फ़रमाया उत्तरो (१५) तुम में एक दूसरे का दुश्मन है और तुम्हें ज़मीन में एक वक़्त तक ठहरना और बरतना है (२४) फ़रमाया उसी में जियोगे और उसी में मरोगे और उसी में उठाए जाओगे (१५) (२५)

तीसरा रूकू

ऐ आदम की औलाद वेशक हमने तुम्हारी तरफ़ एक लिबास वह उतारा कि तुम्हारी शर्म की चीज़ें छुपाए और एक वह कि तुम्हारी आरायश (सजावट) हो (१) और परहेज़गारी का लिबास वह सब से भला (२) यह अल्लाह की निशानीयों में से है कि कहीं वो नसीहत मानें (२६) ऐ आदम की औलाद (३) ख़बरदार तुम्हें शैतान फ़ितने (मुसीबत) में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को वहिश्त (स्वर्ग) से निकाला उतरवा दिये उनके लिबास कि उनकी शर्म की चीज़ें उन्हें नज़र पड़ीं, वेशक वह और उसका कुम्वा तुम्हें वहां से देखते हैं कि तुम उन्हें नहीं देखते (४) वेशक हमने शैतानों को उनका दोस्त किया है जो ईमान नहीं लाते (२७) और जब कोई बेहयाई करे (५) तो कहते हैं हमने इसपर अपने बाप दादा को पाया और अल्लाह ने हमें इसका हुक्म दिया (६) तो फ़रमाओ

وَلَا تَتَّبِعُوا الْاَوَّلَانَ
تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ قَالَ
اَهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ
مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِينٍ ۝ قَالَ فِيْهَا تُخَيَّوْنَ وَ
فِيْهَا تُمُوتُوْنَ وَفِيْهَا تُخْرَجُوْنَ ۝ يٰٰٓاٰدَمُ
قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْآتِكَمْ وَرِيشًا
وَلِبَاسًا ثَقْوٰى ۚ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۚ ذٰلِكَ مِنْ اٰيَاتِ اللّٰهِ
لَعَلَّكُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝ يٰٰٓاٰدَمُ لَا يَفْتِنَنَّكَ الشَّيْطٰنُ
كَمَا اَخْرَجَ اٰبَوَيْكَ مِنَ الْجَنَّةِ يَتَزَوَّجُ مِنْهَا
لِبَاسًا سَوَآءًا لِّمَا بَيْنَكُمُ ۚ اِنَّهُۥ يَرٰكُمْ هُوَ وَتُبَيِّلُهُۥ مِنْ
حَيْثُ لَا تَرَوْهُمْ ۚ وَاِنَّا جَعَلْنَا الشَّيْطٰنَ اَوْلِيَاً
لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَاِذَا قَعَلُوْا فَاجَشَّةً قَالُوْا
وَجَدْنَا عَلَيْهِمُ الْاَبَآءَ ۚ وَاللّٰهُ اَصْرٰتُنَا بِهَا ۚ قُلْ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَمُرُّ بِالْفَحْشَآءِ ۚ اَتَقُوْلُوْنَ عَلٰى اللّٰهِ

مَزْلُومٌ

(१७) क़यामत के दिन हिसाब के लिये.

सूरए अअराफ़ - तीसरा रूकू

(१) यानी एक लिबास तो वह है जिससे बदन छुपाया जाए और गुप्तांग ढंके जाएं और एक लिबास वह है जिसमें जीवन और श्रंगार हो और यह भी उचित कारण है .

(२) परहेज़गारी का लिबास ईमान, शर्म, नक़ आदतें, अच्छे कर्म हैं. यह वेशक ज़ाहिरी श्रंगार के लिबास से बेहतर हैं.

(३) शैतान की हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के साथ दुश्मनी का बयान फ़रमाकर बनी आदम को चेतावनी दी जा रही है और हाशियार किया जा रहा है कि वह शैतान के बसबस और उसके छलकपट और बेवक़्फ़े से बचते रहें. जो हज़रत आदम के साथ ऐसा धोखा कर चुका है वह उनकी औलाद के साथ क्या चूकने वाला है.

(४) अल्लाह तआला ने ज़िन्नो को ऐसी समझ दी है कि वो इन्सानों को देखते हैं और इन्सानों को ऐसी दृष्टि नहीं मिली कि वो ज़िन्नो को देख सकें. हदीस शरीफ़ में है कि शैतान इन्सान के जिस्म में ख़ून की राहों में घेर जाता है. हज़रत जुन्नून मिस्री रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि अगर शैतान ऐसा है कि वह तुम्हें देखता है तुम उसे नहीं देख सकते, तो तुम ऐसे से मदद चाहो जो उसका देखता है और वह उसे न देख सके यानी अल्लाह करीम, सत्तार, रहीम, ग़फ़ार से मदद चाहो.

(५) और कोई बुरा काम या गुनाह उनसे हो, जैसा कि ज़िहलत के दौर में लोभ, मर्द और औरत, तंगे होकर काबे का तयाफ़ करने थे. अन्ना का कौल है कि बेहयाई शिर्क है और हकीकत यह है कि हर बुरा काम और तमाम गुनाह छोटे बड़े इसमें दाख़िल हैं. अगरचें यह आसत ख़ास तंगे होकर तयाफ़ करने के बारे में आई हो. जब काफ़िरों की ऐसी बेहयाई के कामों पर उनकी कटु आलोचना की गई तो इसपर उन्होंने जो कहा वह आगे आता है.

(६) काफ़िरों ने अपने बुरे कामों के दो बहाने बयान किये, एक तो यह कि उन्होंने अपने बाप दादा को यही काम करने पाया, लिहाज़ा उनके अनुकरण में ये भी करते हैं. यह तो जाहिल बदकार का अनुकरण हुआ और यह किसी समझ वाले के बज़दीक जायज़ नहीं. अनुकरण किया जाता है इल्म और तक़्वा वालों का, न कि जाहिल गुमराह का. दूसरा बहाना उनका यह था कि अल्लाह ने उन्हें इन कामों का हुक्म दिया है. यह केवल झूठ और बाह्यता है. चुनाव अल्लाह तआला रद फ़रमाता है.

(७) यानी जैसे उसने तुम्हें शून्य से अस्तित्व दिया ऐसे ही मौन के दाद ज़िन्दा फ़रमाएगा. ये आख़िरत की ज़िन्दगी का इन्कार करने

वेशक अल्लाह वेहयाई का हुक्म नहीं देता, क्या अल्लाह पर वह बात लगाते हो जिसकी तुम्हें खबर नहीं (२८) तुम फ़रमाओ मेरे रब ने इन्साफ़ का हुक्म दिया है और अपने मुंह सीधे करो हर नमाज़ के वक़्त और उसकी इबादत करो निरे उसके वैसे होकर जैसे उसने तुम्हारा आगाज़ (आरम्भ) किया वैसे ही पलटोगे (२९) एक फिरक़े (समुदाय) को राह दिखाई (३०) और एक फिरक़े की गुमराही साबित हुई (३१) उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर शैतान को वाली (सरपरस्त) बनाया (३२) और समझते यह हैं कि वो राह पर हैं (३३) ऐ आदम की औलाद, अपनी ज़ीनत (सजावट) लो जब मस्जिद में आओ (३४) और खाओ पियो (३५) और हद से न बढ़ो, वेशक हद से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं (३६)

चौथा रूकू

तुम फ़रमाओ, किस ने हाराम की अल्लाह की वह ज़ीनत जो उसने अपने बन्दों के लिये निकाली (३७) और पाक रिज़क़ (रोज़ी) (३८), तुम फ़रमाओ कि वह ईमान वालों के लिये है दुनिया में और क़यामत में तो ख़ास उन्हीं की है हम यूँही मुफ़रसल (विस्तार से) आयतें बयान करते हैं (३९) इल्म वालों के लिये (४०) (४१) तुम फ़रमाओ, मेरे रब ने तो वेहयाइयां हाराम फ़रमाई हैं (४२) जो उनमें खुली हैं और जो छुपी और गुनाह और नाहक़ ज़ियादती और यह (४३) कि अल्लाह का शरीक़ करो जिसकी

مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ وَأَقِيمُوا
وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ۚ فَرِيقًا هَدَىٰ
وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۚ إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا
الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ
أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ۚ يَبْكِي أَدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِندَ
كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ
لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۚ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي
آخَرَهُ لِعِبَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ ۚ قُلْ هِيَ
لِلَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ۚ كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ لِقَاءَ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۚ
قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّي الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا
وَمَا بَطَّنَ ۚ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا

مَنْ

बालों पर तर्क है और इससे यह भी मान्य होता है कि जब उसीकी तरफ़ पलटना है और वह कर्मों का बदला देगा तो फ़रमावगदारी और इबादतों को उसके लिये विशेष करना ज़रूरी है।

(८) ईमान और अल्लाह की पहचान की और उन्हें फ़रमावगदारी और इबादत की तौफ़ीक़ दी।

(९) वो काफ़िर है।

(१०) उनकी फ़रमावगदारी की, उनके कहे पर चले, उनके हुक्म से कुछ और गुनाहों का रास्ता अपनाया।

(११) यानी श्रृंगार और श्रृंगार का लिवास। और एक कथन यह है कि कंधी करना, खुशबू लगाना श्रृंगार में दाख़िल है। और सुन्नत यह है कि आदमी अच्छी सूत के साथ नमाज़ के लिये हाज़िर हो क्योंकि नमाज़ में रब से मांगना होता है, तो इसके लिये श्रृंगार करना, इत्र लगाना मुस्तहब, जैसा कि गुप्तांग ढाँपना और पाकी बाज़िब है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, जाहिलियत के दौर में दिन में मर्द और औरतें तंगे होकर तवाफ़ करते थे। इस आयत में गुप्तांग ढुपाने और कपड़े पहनने का हुक्म दिया गया और इसमें दलील है कि गुप्तांग का ढाँपना नमाज़ व तवाफ़ और हर हाल में बाज़िब है।

(१२) कल्बी का क़ौल है कि बनी आभिर हज़ के ज़माने में अपनी ख़ुराक बहुत ही कम कर देते थे और गोशत व चिकनाई तो बिल्कुल ही न छूते थे और इसको हज़ का आदर जाते थे। मुसलमानों ने उन्हें देखकर अज़्र किया, या रसूलल्लाह, हमें ऐसा करने का ज़्यादा हक़ है। इसपर उत्तर कि ख़ाओ और पियो, गोशत हो या सिर्फ़ चिकनाई। और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो और वह यह है कि पेट भर जाने के बाद भी ख़ाने रहो या हाराम की पर्वाह न करो और यह भी फ़ुज़ूल ख़र्ची है कि जो चीज़ अल्लाह नआला ने हाराम नहीं की, उसका हाराम कर लो। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया जो चाहे ख़ा और जो चाहे पहन, फ़ुज़ूल ख़र्ची और घमण्ड से बचना रह। इस आयत में दलील है कि ख़ाने पीने की तमाम चीज़ें हलाल हैं, सिवाय उनके जिनपर शरीअत में हुक्म की दलील क़ायम हो क्योंकि यह क़ायदा निश्चय और सर्वमान्य है कि असल तमाम चीज़ों में अवाहत है मगर जिसपर शरीअत ने पाबन्दी लगाई हो और उसकी हुक्म दलीले मुस्तक़िल से साबित हो।

सूरए अअराफ़ - चौथा रूकू

(१) चाहें लिवास हो या और ज़ीनत व श्रृंगार का सामान।

(२) और ख़ाने पीने की मज़ेदार चीज़ें। आयत में आम बयान है। हर ख़ाने की चीज़ इसमें दाख़िल है कि जिसके हाराम होने पर कोई खुला हुक्म न आया हो (ख़ाज़िन)। तो जो लांग तथा ग़रहवी, मीलाद शरीफ़, बुजुगों की फ़तिहा, उर्स, शहादत की मजलिसों

उसने सनद न उतारी और यह^(१) कि अल्लाह पर वह बात कहो जिसका इल्म नहीं रखते^(२) और हर गिरोह का एक वादा है^(३) तो जब उनका वादा आया एक घड़ी न पीछे हो न आगे^(४) ऐ आदम की औलाद अगर तुम्हारे पास तुम में के रसूल आए^(५) मेरी आयतें पढ़ते तो जो परहेजगारी करे^(६) और संवरे^(७) तो उसपर न कुछ डर और न कुछ गम^(८) और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई और उनके मुकाबले घमण्ड किया वो दोज़खी हैं, उन्हें उसमें हमेशा रहना^(९) तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसने अल्लाह पर झूट बांधा या उसकी आयतें झुटलाई उन्हें उनके नसीब का लिखा पहुंचेगा^(१०) यहां तक कि जब उनके पास हमारे भेजे हुए^(११) उनकी जान निकालने आए तो उनसे कहते हैं कहां हैं वो जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते थे, कहते हैं वो हम से गुम गए^(१२) और अपनी जानों पर आप गवाही देते हैं कि वो काफ़िर थे^(१३) अल्लाह उनसे^(१४) फ़रमाता है कि तुमसे पहले जो और जमाअतें (दल)

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطٰنًا وَّ اَنْ تَقُوْلُوْا عَلٰى
اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَّلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ وَاِذَا جَآءَ
اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِرُوْنَ ۝
يٰۤاٰدَمُ اِمَّا يٰتِيْبُكَ رُسُلُ مِّنْكَمْ يَقْضُوْنَ
عَلَيْكَمُ اٰيٰتِيْ فَبَرِنِ اَتَقْبِ وَاَصْلَحْ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَاَلَّذِيْنَ كَذَبُوْا بِاٰيٰتِنَا
وَاَسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ۝ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلٰى اللّٰهِ
كِذْبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۚ اُولٰٓئِكَ يَبْتَغِيْهِمُ اللّٰهُ
مِّنْ اَكْثَرِ الْكِتٰبِ حَتّٰى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ
قَالُوْا اٰيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ قَالُوْا
صَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَاٰنُوْا
مُشْرِكِيْنَ ۝ قَالَ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ اَمْ كَفٰرُوْنَ ۝

मन्त्र

बीरह की शीरीनी, सबील के शरबत को वर्जित कहते हैं, वो इस आयत का खिलाफ़ करके गुनाहगार होते हैं और इसका अर्थ कहना अपनी राय का दीन में दख़िल करना है और यही विद्वत और गुमराही है।

- (३) जिनसे हलाल और हराम के अहकाम मालूम हों।
- (४) जो ये जानते हैं कि अल्लाह एक है, उसका कोई शरीक नहीं है, वह जो हराम करे वही हराम है।
- (५) यह सम्बोधन मुश्रिकों से है जो नंग होकर काबे का तवाफ़ करते थे और अल्लाह तआला की हलाल की हुई पाक चीज़ों का हराम कर लेते थे। उनसे फ़रमाया जाता है कि अल्लाह तआला ने ये चीज़ें हराम नहीं कीं और उनसे अपने बन्दों को नहीं रोका। जिन चीज़ों को उसने हराम फ़रमाया वो ये हैं जो अल्लाह तआला बयान फ़रमाता है। इनमें से बेहयाइयाँ हैं जो खुली हुई हों या छुपी हुई। यानी जिनका सम्बन्ध बातों से है या कर्मों से।
- (६) हराम किया।
- (७) हराम किया।
- (८) निश्चित समय, जिसपर मोहलत ख़त्म हो जाती है।
- (९) मुफ़स्सिरों के इसमें दो क़ौल हैं। एक तो यह कि “रसूल” से तमाम रसूल मुराद हैं। दूसरा यह कि ख़ास सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुराद हैं जो तमाम सृष्टि की तरफ़ रसूल बनाए गए और बहुचर्चा सम्मान के लिये हैं।
- (१०) मना की हुई चीज़ों से बचें।
- (११) आज्ञा का पालन करें और इबादतें पूरी करें।
- (१२) यानी जिनती उम्र और रोज़ी अल्लाह ने उनके लिये लिख दी है, उनको पहुंचेगी।
- (१३) मौत का फ़रिश्ता और उसके सहायक, इन लोगों की उम्र और रोज़ियाँ पूरी होने के बाद।
- (१४) उनका कहीं नाम निशान ही नहीं।
- (१५) उन काफ़िरों से क़यामत के दिन।
- (१६) दाज़िब में।

धीं जिन्न और आदमियों की, आग में गई उन्हीं में जाओ जब एक दल^(१६) दाख़िल होता है दूसरे पर लानत करता है^(१७) यहां तक कि जब सब उसमें जा पड़े तो पिछले पहलों को कहेंगे^(१८) ऐ रब हमारे, इन्होंने हमको बहकाया था तो उन्हें आग का दूना अज़ाब दे, फ़रमाएगा, सबको दूना है^(१९) मगर तुम्हें ख़बर नहीं^(२०) (३८) और पहले पिछलों से कहेंगे, तो तुम कुछ हमसे अच्छे न रहे^(२१) तो चखो अज़ाब, बदला अपने किये का^(२२) (३९)

पाँचवां रूक़

वो जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई और उनके मुकाबले में घमण्ड किया उनके लिये आसमान के दरवाज़े न खोले जाएंगे^(१) और न वो जन्नत में दाख़िल हों जबतक सुई के नाके ऊंट दाख़िल न हो^(२) और मुजरिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं^(३) (४०) उन्हें आग ही विछौना और आग ही ओढ़ना^(४) और ज़ालिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं^(५) (४१) और वो जो ईमान लाए और ताक़त भर अच्छे काम किये हम किसी पर ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं रखते, वो जन्नत वाले हैं उन्हें

قَبْلَكُمْ مِنَ الْحِجْرِ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كَلِمًا دَخَلَتْ
أُمَّةٌ لَعَنَتْ أَخْتَهَا حَتَّى إِذَا ارْكَبُوا فِيهَا جَمِيعًا
قَالَتْ أَخْرَبَهُمْ إِيَّاهُمْ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ أَضَلُّونَا
فَأَرْبَهُمْ عَذَابًا صِغْفًا مِنَ النَّارِ قَالَ لِكُلِّ
صِغْفٍ وَلَكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَقَالَتْ أُولَاهُمْ
إِخْرَبَهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ
لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى
يَلْبِغَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخَيْبِ ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي
الْمُجْرِمِينَ ۝ لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ
غَوَاشٍ ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَفِّرُ نَفْسًا إِلَّا وَسْعَهَا

मन्ज़र

- (१७) जो उसके दीन पर था तो मुश्किलों पर लानत करेंगे और यहूदी यहूदीयों पर और ईसाई ईसाइयों पर।
(१८) यानी पहलों की निश्चय अल्लाह तआला से कहेंगे।
(१९) क्योंकि पहले श्रुद भी गुमराह हुए और उन्होंने दूसरों को भी गुमराह किया और पिछले भी ऐसे ही हैं कि श्रुद गुमराह हुए और गुमराहों का ही अनुकरण करते रहे।
(२०) कि तुम में से हर पक्ष के लिये कैसा अज़ाब है।
(२१) कुफ़्र और गुमराही में दोनों बराबर हैं।
(२२) कुफ़्र का और बुरे कर्मों का।

सूरए अअराफ़ - पाँचवां रूक़

- (१) न उनके कर्मों के लिये, न उनकी आत्माओं के लिये, क्योंकि उनके कर्म और आत्माएं दोनों श्रवीस हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि काफ़िरों की आत्माओं के लिये आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाते और ईमान वालों की आत्माओं के लिये खोले जाते हैं। इब्ने जरीह ने कहा कि आसमान के दरवाज़े न काफ़िरों के अमल के लिये खोले जाएं न आत्माओं के लिये याती न ज़िन्दगी में उनका अमल ही आसमान पर जा सकता है, न मीत के बाद आत्मा। इस आयत की तफ़सीर में एक कौल यह भी है कि आसमान के दरवाज़े न खोले जाने के ये मानी हैं कि वह श्रैर व वरकन और रहमत उतरने से मेहरूम रहते हैं।
(२) और यह असम्भव, तो काफ़िरों का जन्नत में दाख़िल होना असम्भव, क्योंकि असम्भव पर जो निर्भर हो वह असम्भव होता है। इससे साबित हुआ कि काफ़िरों का जन्नत से मेहरूम रहना यकीनी बात है।
(३) मुजरिमीन से यहाँ काफ़िर मुराद हैं क्योंकि ऊपर उनकी सिफ़त में अल्लाह की निशानियों का झुटलाने और उनसे घमण्ड करने का बयान हो चुका है।
(४) यानी ऊपर नीचे हर तरफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है।
(५) जो दुनिया में उनके बीच थे और तज़ीअतें साफ़ करदी गई और उनमें आपस में न बाकी रही मगर महबूत और भाई चारगी।

हमेशा उसी में रहना (४२) और हमने उनके सीनों में से कीने (द्विष) खींच लिये (४३) उनके नीचे नेहरे बहेगी और कहेंगे (४४) सब खूबियां अल्लाह को जिसने हमें इसकी राह दिखाई (४५) और हम राह न पाते अगर अल्लाह हमें राह न दिखाता वेशक हमारे रव के रगूल हक लाए (४६) और निदा (पुकार) हुई कि यह जन्नत तुम्हें मीरास मिली (४७) सिला (इनाम) तुम्हारे कर्मों का (४८) और जन्नत वालों ने दोज़ख वालों को पुकारा कि हमें तो मिल गया जो सच्चा वादा हमसे हमारे रव ने किया था (४९) तो क्या तुमने भी पाया जो तुम्हारे रव ने (५०) सच्चा वादा तुम्हें दिया था, बोले हां और बीच में मनादी (उद्घोषक) ने पुकार दिया कि अल्लाह की लअनत ज़ालिमों पर (५१) जो अल्लाह की राह से रोकते हैं (५२) और उससे कजी (टेढ़ापन) चाहते हैं (५३) और अखिरत का इन्कार रखते हैं (५४) और जन्नत व दोज़ख के बीच में एक पर्दा है (५५) और अअराफ़ (ऊँचाइयों) पर कुछ मर्द होंगे (५६) कि दोनों फ़रीक (पक्षों) को उनकी परेशानियों से प्रहचानेंगे (५७)

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَ نَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍ تَجَرَّى مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنَّ هَدَانَا اللَّهُ ۖ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلٌ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ وَنُودُوا أَنْ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَنَادَا أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبَّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مِثْلًا مِثْلَهُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا نَعَمْ ۖ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَفُورُونَ ۝ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۖ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَتِهِمْ ۖ

मन्ज़िल

हज़रत अली मुरतज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि यह हम वद वालों के बारे में उतरा, और यह भी आप से रिवायत है कि आप ने फ़रमाया, मुझे उम्मीद है कि मैं और उस्मान और तलहा और जुबैर उनमें से हों जिनके बारे में अल्लाह तआला ने “व नज़अता माफ़ी सुदुरिहिम मिन गिल्लिन” (और हमने उनके सीनों में से कीने खींच लिये) फ़रमाया. हज़रत अली मुरतज़ा के इस इशाराद ने राफ़ज़िहत की बुनियाद ही काटकर रख दी.

(६) ईमान वाले, जन्नत में दाख़िल होते वक़्त.

(७) और हमें ऐसे अमल की तौफ़ीक़ दी जिसका यह इनाम और सबाब है, और हमपर मेहरबानी और रहमत फ़रमाई और अपने कर्म से जहन्नम के अज़ाब से मेहफूज़ किया.

(८) और जो उन्होंने हमें दुनिया में सबाब की ख़बरें दीं वो सब हमने ज़ाहिर देख लीं. उनकी हिदायत हमारे लिये अत्यन्त लुत्फ़ और कर्म की बात थी.

(९) मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, जब जन्नत में दाख़िल होंगे, एक पुकारने वाला पुकारेगा, तुम्हारे लिये ज़िन्दगानी है, कभी न मरोगे, तुम्हारे लिये तन्दुरुस्ती है, कभी बीमार न होगे, तुम्हारे लिये राहत है, कभी तंग हाल न होंगे. जन्नत को मीगास फ़रमाया गया, इसमें इशारा है कि वह सिर्फ़ अल्लाह के कर्म से हासिल हुई.

(१०) और रसूलों ने फ़रमाया था कि ईमान और फ़रमाँवरदारी पर इनाम और सबाब पाओगे.

(११) कुफ़र और नाफ़रमानी पर अज़ाब का.

(१२) और लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने से मना करते हैं.

(१३) यानी यह चाहते हैं कि अल्लाह के दीन को बदल दें और जो तरीका अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये मुकर्रर फ़रमाया है, उसमें परिवर्तन कर दें. (स्वाज़िन)

(१४) जिसको अअराफ़ कहते हैं.

(१५) ये फ़िस तयके के होंगे, इसमें विभिन्न कथन हैं. एक क़ौल तो यह है कि ये वो लोग होंगे जिनकी नफ़ियाँ और बुराइयाँ बराबर हों, वो अस्लाम पर ठहरे रहेंगे. जब जन्नत वालों की तरफ़ देखेंगे तो उन्हें सलाम करेंगे और दोज़ख़ वालों की तरफ़ देखेंगे तो कहेंगे, याबर हमें ज़ालिम क़ौम के साथ न कर. आख़िरकार जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे. एक क़ौल यह है कि जो लोग जिहाद में शहीद हुए मगर उनके माँ बाप उनसे नाराज़ थे, वो अअराफ़ में ठहराए जाएंगे. एक क़ौल यह है कि जो लोग ऐसे हैं कि उनके माँ बाप में से एक उनसे राज़ी हो, एक नाराज़, वो अअराफ़ में रखे जाएंगे. इन कथनों से मालूम होता है कि अअराफ़ वालों का दर्जा जन्नत वालों से कम है. मुजाहिद का क़ौल है कि अअराफ़ में नेक लोग, फ़कीर और उलमा होंगे और उनका वहाँ ठहरना इसलिये होगा कि दूसरे उनके दर्जे और बुजुर्गी को देखें. और एक क़ौल यह है कि अअराफ़ में नबी होंगे और वो उस ऊँचे मक़ाम में सारे क़यामत वालों पर

और वो जन्नतियों को पुकारेंगे कि सलाम तुमपर थे^(१५) जन्नत में न गए और इसका लालच रखते हैं^(१६) और जब उनकी^(१७) आंखें दोज़खियों की तरफ़ फ़िरेंगी कहेंगे ऐ रब हमारे हमें ज़ालिमों के साथ न कर^(१८)

छटा रूकू

और अअराफ़ वाले कुछ मंदों को^(१) पुकारेंगे जिन्हें उनकी पेशानी से पहचानते हैं कहेंगे तुम्हें क्या काम आया तुम्हारा जल्था और वह जो तुम घमण्ड करते थे^(२) ^(१८) क्या ये हैं वो लोग^(३) जिनपर तुम क्रसमें खाते थे कि अल्लाह इनपर अपनी रहमत कुछ न करेगा^(४) इनसे तो कहा गया कि जन्नत में जाओ न तुम को डर न कुछ ग़म^(५) ^(१९) और दोज़ख वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे कि हमें अपने पानी का कुछ फैज़ (लाभ) दो या उस खाने का जो अल्लाह ने तुम्हें दिया^(६) कहेंगे बेशक अल्लाह ने इन दोनों को काफ़िरों पर हराम किया है^(७) ^(२०) जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया^(८) और दुनिया की ज़िन्दगी में उन्हें धोखा दिया^(९) तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे जैसा हमारी आयतों से इन्कार

وَنَادُوا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلِّمُوا عَلَيْكُمْ ۖ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ۖ وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ ۖ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مِمَّنْ أَلْقَوْهُمُ الظَّالِمِينَ ۖ وَنَادَى أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُمْ بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَى عَنْكُمْ جَنَّتُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ۖ أَهَلْؤُكَ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۖ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ۖ وَنَادَى أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۖ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهَا عَلَى الْكَافِرِينَ ۖ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ فَالْيَوْمَ نَنسُوهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا ۖ وَمَا

مَثَلُ

विशिष्ट किये जाएंगे और उनकी फ़ज़ीलत और मद्दतना का इज़हार किया जाएगा ताकि जन्नती और दोज़ख़ी उनको देखें और वो उन सबके अहवाल और सवाब व अज़ाब की मात्रा का अवलाकन करें. इन क़ौलों पर अअराफ़ वाले जन्नतियों से अफ़ज़ल लोग होंगे क्योंकि वो बाक़ियों से दर्जे में महान हैं. इन तमाम कथनों में कोई टकराव नहीं है. इसलिये कि हो सकता है कि हर तबक के लोग अअराफ़ में ठहराए जाएं और हर एक के ठहराए जाने की हिक्मत अलग है.

(१६) दोनों पक्षों से जन्नती और दोज़ख़ी भुगत हैं. जन्नतियों के चहरे सफ़ेद और ताज़ा होंगे और दोज़ख़ियों के चहरे काले और आँखें नीली, यही उनकी निशानियां हैं.

(१७) अअराफ़ वाले अभी तक.

(१८) अअराफ़ वालों की.

सूरए अअराफ़ - छटा रूकू

(१) काफ़िरों में से.

(२) और अअराफ़ वाले ग़रीब मुसलमानों की तरफ़ इशारा करके काफ़िरों से कहेंगे.

(३) जिनको तुम दुनिया में हकीर या तुच्छ समझते थे, और....

(४) अब देख लो कि जन्नत के हमेशा के पेश ओर राहत में किस इज़त और सम्मान के साथ हैं.

(५) हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि जब अअराफ़ वाले जन्नत में चले जाएंगे तो दोज़ख़ियों को भी लालच आएगा और वो अर्ज़ करेंगे, या रब जन्नत में हमारे रिश्तेदार हैं इज़ाज़त अता फ़रमा कि हम उन्हें देखें, उनसे बात करें. इज़ाज़त दी जाएगी तो वो अपने रिश्तेदारों को जन्नत की नेअमतों में देखेंगे और पहचानेंगे. लेकिन जन्नत वाले उन दोज़ख़ी रिश्तेदारों को न पहचानेंगे क्योंकि दोज़ख़ियों के मुंह काले होंगे, सूतें बिगड़ी हुई होंगी. तो वो जन्नतियों का नाम ले लेकर पुकारेंगे. कोई अपने बाप को पुकारेगा, कोई भाई को, और कोई कहेगा, मैं जल गया मुझपर पानी डालो और तुम्हें अल्लाह ने दिया है, ग़ाने को दो, इसपर जन्नत वाले.

(६) कि हलाल और हराम में अपनी नफ़सानियत के गुलाम हुए, जब ईमान की तरफ़ उन्हें दअवत दी गई तो हंसी उड़ाने लगे.

(७) इसकी लज़ातों में आख़िरत को भूल गए.

(८) कुरआन शरीफ़.

करते थे (५१) और वेशक हम उनके पास एक किताब लाए (५२) जिसे हमने एक बड़े इल्म से मुफ़ससल (विस्तृत) किया हिदायत व रहमत ईमान वालों के लिये (५३) काहे की राह देखते हैं मगर इसकी कि इस किताब का कहा हुआ अन्जाम सामने आए जिस दिन इसका बताया हुआ अन्जाम वाले होगा (५४) बोल उठेंगे वो जो इसे पहले से भुलाए बैठे थे (५५) कि वेशक हमारे रब के रसूल हक लाए थे तो हैं कोई हमारे सिफ़ारिशो जो हमारी शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करेंगे या हम वापस भेजे जाएं कि पहले कामों के खिलाफ़ करें (५६) वेशक उन्होंने अपनी जानें नुक़सान में डालीं और उनसे खोए गए जो वोहतान (लांछन) उठाते थे (५७) (५८)

सातवाँ सूक़

वेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन (५९) छ दिन में बनाए (६०) फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक़ है (६१) रात दिन को एक दूसरे से ढांकता है कि जल्द उसके पीछे लगा आता है और सूरज और चांद और तारों को बनाया सब उसके हुक्म के दवे हुए, सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना बड़ी वरक़त वाला, हे अल्लाह रब सारे जगत का (६२) अपने रब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता वेशक हद से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं (६३) (६४) और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ (६५) उसके सवरने के बाद (६६)

كَانُوا بِالْبَيِّنَاتِ يَجْحَدُونَ ۝ وَلَقَدْ جِئْتُم بِكِتَابٍ فَضَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ هَلْ يُظْهَرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ ۚ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلَهُ يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَنَا مِنْ شَفْعَةٍ فَيشْفَعُوا ۚ لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ قَدْ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ إِنَّ رَبَّكُمْ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ يُعْشَىٰ الْيَوْمَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا ۚ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ مُسَوَّراتٌ بِأَمْرِهِ ۚ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۚ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝

- (५९) और वह क़यामत का दिन है।
(६०) न उसपर ईमान लाते थे न उसके अनुसार अमल करते थे।
(६१) यानी वजाय क़ुर्र के ईमान लाएं और वजाय बुलाई और नाफ़रमानी के ताअत और फ़रमावरेदारी इस्तिवार करें। मगर न उन्हें शफ़ाअत मिलेगी न दुनिया में वापस भेजे जाएंगे।
(६२) और झूट बकते थे कि बुत झुदा के शरीक हैं और अपने पुजारियों की शफ़ाअत करेंगे। अब आश्रित में उन्हें मालूम हो गया कि उनके ये दावे झूट थे।

सूरए अअराफ़ - सातवाँ सूक़

- (१) उन तमाम चीज़ों समेत जो उनके बीच है, जैसा कि दूसरी आयत में आया "क्लक़द ख़लक़नस समावात क़ल अदां वमा वैनहुमा फ़ी सिनन अय्यामिन" (वेशक हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है छ दिन में बनाया- सूरए अअराफ़, आयत ३८)
(२) छ दिन से दुनिया के छ दिनों की मिक़दार मुराद है क्योंकि ये दिन तो उस वक़्त थे नहीं, सूरज ही न था, जिससे दिव होना और अल्लाह तआला कादिर था कि एक क्षण में या उससे कम में पैदा फ़रमाता, लेकिन इतने असे में उनकी पैदाइश फ़रमाना उसकी हिक़मत का तक्राज़ा है और इससे शन्दों को अपने काम एक के बाद एक करने का सबक़ मिलता है।
(३) यह इस्तिवा मुतशाविहान में से है, यानी क़ुरआन के जो राज़ जिनक़ इल्म सिफ़े अल्लाह तआला का और उसके बनाए से किसी और को है, हम इसपर ईमान लाते हैं कि अल्लाह तआला की इस "इस्तिवा" से जो मुराद है, वह हक़ है, हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि इस्तिवा मालूम है और उसकी कैफ़ियत मजहूल और उसपर ईमान लाना वाजिब, आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया इसके मानी ये हैं कि आफ़रीनश का ख़ात्मा अर्थ पर जा टहरा, अपने क़लाम के राज़ अल्लाह ही बेहतर जानें।
(४) दुआ अल्लाह तआला से भलाई तलब करने को कहते हैं और यह इबादत में दाख़िल है, क्योंकि यह दुआ करने वाला अपने आपको आजिज़ व मोदताज और अपने परवर्दिगार को हक़ीकी जुदरन वाला और हाज़त पूरी करने वाला मानता है, इसीलिये हदीस शरीफ़ में आया "अद दुआओ मुख़्बुल इबादते" यानी दुआ इबादत का गूदा है, गिड़गिड़ाते से अपनी आजिज़ी और फ़रियाद मुराद है और दुआ का अदब यह है कि आहिस्ता दुआ करना, खुलेआम दुआ करने से सत्तर दर्जा ज़्यादा अफ़ज़ल है, इसमें उलमा का

और उससे दुआ करो डरते और तमा (लालच) करते, वेशक अल्लाह की रहमत नेकों से करीब है (५६) और वही है कि हवाएं भेजता है उसकी रहमत के आगे खुशखबरी सुनाती (५७) यहां तक कि जब उठा लाएं भारी बांदल हमने उसे किसी मुंदा शहर की तरफ चलाया (५८) फिर उससे पानी उतारा फिर उससे तरह तरह के फल निकाले। इसी तरह हम मुंदों को निकालेंगे (५९) कहीं तुम नसीहत मानो (५९) और जो अच्छी ज़मीन है उसका सब्ज़ा अल्लाह के हुक्म से निकलता है (६०) और जो खराब है उसमें नहीं निकलता मगर थोड़ा मुश्किल (६१) से हम यूँही तरह तरह से आयतें वयान करते हैं (६२) उनके लिये जो एहसान मानें (६३)

आठवाँ सूक़

वेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ भेजा (१) तो उसने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो (२) उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद (आराध्य) नहीं (३) वेशक मुझे तुमपर बड़े दिन के अज़ाब का डर है (४) उसकी क़ौम से सरदार बोले वेशक हम तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं (५) कहा ऐ मेरी क़ौम मुझमें गुमराही नहीं, मैं तो सारे जगत के रब का रसूल

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝
وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۚ إِذَا أَقْلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ كَذَلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرِجُ نَبَاتًا شَدِيدَ إِذْنٍ رَبِّهِ ۚ وَالَّذِي خَبَتْ لَا يَخْرِجُ إِلَّا زَكَاةً ۚ كَذَلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ لِّيَشْكُرُوا ۝
لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِن إِلَهِ غَيْرُهُ ۚ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِي إِنَّا لَنَرُّكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

मज़ल

इस्तिस्फ़ा है कि इबादतों में इज़हार अफ़ज़ल है, या इस्त्राफ़। कुछ कहते हैं कि इस्त्राफ़ यानी छुपाना अफ़ज़ल है क्योंकि वह रिया यानी दिखावे से बहुत दूर है। कुछ कहते हैं कि इज़हार यानी ज़ाहिर करना, ख़ालिफ़ा अफ़ज़ल है इसलिये कि इससे दुसरों को इबादत की रुचि पैदा होती है। तिरमिज़ी ने कहा कि अगर आदमी अपने नफ़्स पर रिया का अन्देशा रखता हो तो उसके लिये इस्त्राफ़ यानी छुपाना अफ़ज़ल है। और अगर दिल साफ़ हो, रिया का अन्देशा न हो तो इज़हार अफ़ज़ल है। कुछ हज़रतों से फ़रमाते हैं कि फ़र्ज़ इबादतों में इज़हार अफ़ज़ल है। फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद ही में बंदतर है और ज़क़ात का इज़हार करके देना ही अफ़ज़ल और नफ़्स इबादतों में, चाहे वह नमाज़ हो या सदाका वगैरह, इनमें इस्त्राफ़ बेहतर है। दुआ में हदे से बढ़ना कई तरह होता है, इसमें से एक यह भी है कि बहुत बलन्द आवाज़ से चीख़े।

- (५) कुफ़्र और घुरह और जुल्म करक़।
- (६) नवियों के तशरीफ़ लाने, हक़ की दअवत फ़रमाने, अहक़ाम वयान करने, इत्साफ़ क़यम फ़रमाने के बाद।
- (७) वारिश और रहमत से यहाँ में मुराद है।
- (८) जहाँ वारिश न हुई थी, सब्ज़ा न जमा था।
- (९) यानी जिस तरह मुंदा ज़मीन को वीरानी के बाद ज़िन्दगी अता फ़रमाता और उसको हग़भग और तरो ताज़ा करता है और उसमें खेती, दरख़्त, फल फूल पैदा करता है, ऐसे ही मुंदों को क़ब्रों से ज़िन्दा करके उठाएगा, क्योंकि जो सुशुक लकड़ी से तरो ताज़ा फल पैदा करने पर क़ादिर है उसे मुंदों का ज़िन्दा करना क्या मुश्किल है। कुदरत की निशानी देख लेने के बाद अक़ल वाले और मही समझ वाले को मुंदों के ज़िन्दा किये जाने में कोई शक़ बाक़ी नहीं रहता।
- (१०) यह ईमान वाले की मिसाल है। जिस तरह उमदा ज़मीन पानी से नफ़ा पाती है और उसमें फूल फल पैदा होते हैं उसी तरह जब मूमिन के दिल पर क़ुरआनी नूर की वारिश होती है तो वह उससे नफ़ा पाता है, ईमान लाना है, नाअतों और इबादतों से फलता फूलता है।
- (११) यह काफ़िर की मिसाल है, जैसे ख़राब ज़मीन वारिश से नफ़ा नहीं पाती, ऐसे ही काफ़िर क़ुरआने पाक से फ़ायदा नहीं उठा पाता।
- (१२) जो तौहीद और ईमान पर तर्क और प्रमाण हैं।

सूरए अअराफ़ - आठवाँ सूक़

(१) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बालिद का नाम लमक़ है। वह अख़्तूय़ अलैहिस्सलाम के फ़रज़न्द हैं। अख़्तूय़ हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का नाम है। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम चालीस या पचास साल की उम्र में नवुच्चत से सम्मानित किये

हूँ (६१) तुम्हें अपने रब की रिसालतें (संदेश) पहुंचाता और तुम्हारा भला चाहता और मैं अल्लाह की तरफ से वह इल्म रखता हूँ जो तुम नहीं रखते (६२) और क्या तुम्हें इसका अचंभा हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक नसीहत आई तुम में के एक मर्द की मारिफत (द्वारा) (६३) कि वह तुम्हें डराए और तुम डरो और कहीं तुम पर रहम हो (६३) तो उन्होंने उसे (६४) झुटलाया तो हमने उसे और जो (६५) उसके साथ किशती में थे निजात दी और अपनी आयतें झुटलाने वालों को डुबो दिया, वेशक वह अंधा गिरोह था (६४) (६५)

नवाँ रूकू

और आद की तरफ (६६) उनकी विरादरी से हूद को भेजा (६७) कहा ऐ मेरी क्रौम अल्लाह को वन्दगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअवूद नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं (६८) उसकी क्रौम के सरदार बोले वेशक हम तुम्हें बेवकूफ समझते हैं और वेशक हम तुम्हें झूटों में गुमान करते हैं (६९) कहा ऐ मेरी क्रौम मुझे बेवकूफी से क्या सम्बन्ध मैं तो परवर्दिगारे आलम का रसूल हूँ (६९) तुम्हें अपने रब की

قَالَ يَقَوْمُ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ
مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَبْلِغْكُمْ رَسُولِي مَا أَفْعَلُ
أَوْ عَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَى
رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ
تُزَكَّوْنَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَانْجَبَيْنَاهُ وَالَّذِينَ
مَعَهُ فِي الْفُلِكِ وَاعْرِفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ۝ وَإِلَى
عَادِ أَخَاهُمْ هُودًا ۝ قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ
مَا لَكُمْ مِّن إِلَهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ قَالَ
الْمَلَآئِكَةُ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي
سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنُظَنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ قَالَ
يَقَوْمُ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّن

مَنْزِلٍ

गए. ऊपर की आयतों में अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत की दलीलें और अपनी सनअत के चमत्कार बयान फ़रमाए जिनसे उसके एक हान और मअवूद होने का सुबूत मिलता है और मरने के बाद उठने और ज़िन्दा होने की सेहत पर खुली दलीलें फ़ायम कीं. इसके बाद नवियों का ज़िक्र फ़रमाता है और उनके उन मामलों का, जो उन्हें उम्मतों के साथ पेश आए. इसमें नबीय क़ौम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है कि केवल आप ही की क्रौम ने हक़ कुबूल करने से इन्कार नहीं किया, बल्कि पहली उम्मतें भी इन्कार करती रहीं और नवियों को झुटलाने वालों का अंजाम दुनिया में हलाकत और आख़िरत में भारी अज़ाब है. इसमें ज़ाहिर है कि नवियों को झुटलाने वाले अल्लाह के ग़ज़ब और प्रकोप के हक़दार होते हैं. जो व्यक्ति सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाया, उसका भी यही अंजाम होगा. नवियों के इन तज़क़िरो में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नयुवत की ज़बरदस्त दलील है, क्योंकि हुज़ूर उम्मी थे यानी ज़ाहिर में पढ़े लिखे न थे. फिर आपका इन घटनाओं को तफ़सील से बयान करना, श्रास तौर से ऐसे मुल्क में, जहाँ किताब वालों के ज़लमा काफ़ी मौजूद थे, और सरस्त्र विरोधी भी थे, ज़रासी बात पाने तो बहुत शोर मचाते, वहाँ हुज़ूर का इन घटनाओं को बयान करना और किताब वालों का श्रामोश और स्तब्ध तथा आश्चर्य चकित रह जाना, खुली दलील है कि आप सच्चे नबी हैं और अल्लाह तआला ने आपपर ज़ुलूम के दर्वाज़ खोल दिये हैं.

- (२) बन्दी इयादत के लायक है.
- (३) तो उसके सिवा किसी को न पूजो.
- (४) क़यामत के दिन का या तूफ़ान के दिन का, अगर तुम मेरी नसीहत कुबूल न करो और सीधी राह पर न आओ.
- (५) जिसका तुम ख़ूब जानते हो और उसके नसब को पहचानते हो.
- (६) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को.
- (७) उनपर ईमान लाए और.
- (८) जिस सत्य नज़र न आता था. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि उनके दिल अन्धे थे, मअरिफ़त यानी रब का पहचानने के नूर से उनको फ़ायदा न था.

सूरए अअराफ़ - नवाँ रूकू

- (१) यहाँ आद प्रथम मुराद है. यह हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की क्रौम है, और आद द्वितीय हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क्रौम है, उसी का समूद कहते हैं. इन दोनों के बीच सौ बरस का फ़ासला है. (जुमल)
- (२) हूद अलैहिस्सलाम ने.
- (३) अल्लाह के अज़ाब का.

रिसालतें(संदेश) पहुंचाता हूँ और तुम्हारा मोअतमिद(विश्वासपात्र) और भला चाहने वाला हूँ^(४) (६८) और क्या तुम्हें इसका अचंभा हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक नसीहत आई तुम में से एक मर्द की मअरिफत कि वह तुम्हें डराए और याद करे जब उसने तुम्हें नूह की क़ौम का जानशीन(उत्तराधिकारी) किया^(५) और तुम्हारे बदन का फैलाव बढ़ाया^(६) तो अल्लाह की नेअमतें याद करो^(७) कि कहीं तुम्हारा भला हो^(८) बोलें क्या तुम हमारे पास इसलिये आए हो^(९) कि हम एक अल्लाह को पूजें और जो^(१०) हमारे बाप दादा पूजते थे उन्हें छोड़ दें तो लाओ^(११) जिसका हमें वादा दे रहे हो अगर सच्चे हो^(१२) कहा^(१३) ज़रूर तुमपर तुम्हारे रब का अज़ाब और मज़ब(क्रोध) पड़ गया^(१४) क्या मुझसे खाली इन नामों में झगड़ रहे हो जो तुमने अपने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये^(१५) अल्लाह ने उनकी कोई सनद न उतारी, तो रास्ता देखो^(१६) मैं भी तुम्हारे साथ देखता हूँ^(१७) तो हमने उसे और उसके साथ वालों को^(१८) अपनी एक बड़ी रहमत फ़रमाकर निजात दी^(१९) और जो

رَبِّ الْعَلَمِينَ ۝ أُولَئِكَ رُسُلُ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِرٌ أَوْ عَاجِبٌ ۝ أَوْ عَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِنْكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۚ وَادْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ ۚ وَرَادَّكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصُطَةً ۚ فَادْكُرُوا إِلَّا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا ۚ فَاتِّبِعْنَا بِمَا تَعْبُدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ رِجْسٌ وَعَصْبٌ ۚ أَلْتَجِدُونَنِي فِي سَمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مِمَّا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ فَانْتَظِرُوا إِلَيَّ مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝ فَانْجِئْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ

منزل

- (४) यानी रिसालत के दावे में सच्चा नहीं जात.
- (५) काफ़िरों का हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की शान में यह निरादर और अपमान का क़त्नाम, कि तुम्हें वेवकूफ़ समझते हैं, झूटा ख़याल करते हैं, अत्यन्त दर्जे की बेअदबी और कमीनगी थी. और वो हक़दार इस बात के थे कि उन्हें सज़ा से सज़ा जवाब दिया जाता, मगर आपने अपने अख़लाक़ और अदब और बित्तमता की शान से जो जवाब दिया, उसमें मुकाबले की शान ही न पैदा होत दी और उनकी जिहालत से चश्मपोशी फ़रमाई. इससे दुनिया का सबक़ मिलता है कि गिरे हुए और ख़राब ख़सलत वाले लोगों से इस तरह सम्बोधन करना चाहिये. इसके साथ ही आपने अपनी रिसालत और ख़ैरख़्वाही और अमानत का ज़िक़्र फ़रमाया. इससे यह मसअला मालूम हुआ कि इल्म और क़माल वाले को ज़रूरत के वक़्त अपने मत्सब और क़माल का ज़ाहिर करना जायज़ है.
- (६) यह उसका कितना बड़ा एहसान है.
- (७) और बहुत ज़्यादा कुव्वत और लंबा क़द प्रदान किया.
- (८) और ऐसे नेअमत देने वाले पर ईनाम लाओ और फ़रमाँवरदारी और इबादतें बजा लाकर उसके एहसान का शुक्र अदा करो.
- (९) यानी अपने इबादत ख़ाने से. हज़रत हूद अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम की बस्ती से अलग एक एकान्त जगह में इबादत किया करते थे. जब जब आपके पास वही आती तो क़ौम के पास आकर सुना देते.
- (१०) बुत.
- (११) वह अज़ाब.
- (१२) हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने.
- (१३) और तुम्हारी सरक़शी से तुमपर अज़ाब आता बाजिब और लाज़िम होगा.
- (१४) और उन्हें पूजने लगे और मअबूद मानने लगे जबकि उनकी कुछ हकीक़त ही नहीं है और उलूहियत के मानी से बिल्कुल ख़ाली और अतज़ान है.
- (१५) अल्लाह के अज़ाब का.
- (१६) जो उनके अनुयायी थे और उनपर ईमान लाए थे.
- (१७) उस अज़ाब से जो हूद क़ौम पर उतरा.

हमारी आयतें झुटलाते^(१८) थे उनकी जड़ काट दी^(१९) और वो ईमान वाले न थे^(२०)

दसवाँ स्कू

और समुद्र की तरफ^(१) उनकी विरादरी से सालेह को भेजा, कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं वेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से^(२) रौशन दलील आई^(३) यह अल्लाह का नाका (ऊंटनी) है^(४) तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए और इसे बुराई से हाथ न लगाओ^(५) कि तुम्हें दर्दनाक अज़ाब आएगा^(६) और याद करो^(७) जब तुमको आद का जानशीन किया और मुल्क में जगह दी कि नर्म ज़मीन में महल बनाते हो^(८) और पहाड़ों में मकान तराशते हो^(९) तो अल्लाह की नेअमतेँ याद करो^(१०) और ज़मीन में फ़साद मचाते न फ़िरो^(११) उसकी क़ौम के घमण्डी कमज़ोर मुसलमानों से बोले क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने रब के रसूल हैं बोले वह जो कुछ लेकर भजे

مِمَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا
وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِلَىٰ شُؤْدِ آخَاهُمْ
صَلِحًا ۖ قَالَ يُقَوْمُوا عِبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِن
إِلَٰهِ غَيْرِهِ ۚ قَدْ جَاءَ نَكْمٌ تَيْنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۚ هَذِهِ
نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ ۖ قَدَرُوهَا تَاكُلُ فِي أَرْضِ
اللَّهِ وَلَا تَمْسُوهَا سَوْءٌ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ أَلِيمٌ ۝
وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ عَادٍ وَ
بَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ سَهُولِهَا
قُصُورًا وَتَتَّخِذُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۚ قَاذِرُوكُمُ الْآءِ
اللَّهُ وَلَا تَعْتَوُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ قَالَ
الْمَلَائِكَةُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لِلَّذِينَ
اسْتَضَعُّوهُ لَبِئْسَ مِنْهُمْ أَعْمَلُونَ ۚ إِنَّ
صَلِحًا مَّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ

مَنْزِلَ

(१८) और हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को झुटलाते.

(१९) और इस तरह हलाक कर दिया कि उनमें से एक भी न बचा. संक्षिप्त घटना यह है कि आद क़ौम अहकाफ़ में रहती थी जो अम्मान और हज़रमौत के बीच यमन इलाक़े में एक रेगिस्तान है. उन्होंने ज़मीन को फ़िरक़ (बिभाजित) से भर दिया था, और दुनिया की क़ौमों को, अपनी ज़फ़ा-कारियों से, अपने ज़ोर और शक्ति के घमण्ड में कुचल डाला था. ये लोग बुत परस्त थे. उनके एक बुत का नाम सदा, एक का समूद, एक का हवा था. अल्लाह तआला ने उनमें हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को भेजा. आपने उन्हें तीहीद का हुक्म दिया, शिर्क और बुत परस्ती और जुल्म और ज़फ़ाकारी से मना किया. इसपर वो लोग इक्करी हुए, आपको झुटलाते लगे और कहने लगे हम से ज़्यादा बलवान कौन है. कुछ आदमी उनमें से हज़रत हूद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए, वो थोड़े थे और अपना ईमान छुपाए रखते थे. उन ईमान लाने वालों में से एक शरस का नाम मुसिद बिन सअद बिन अदीर था, वह अपना ईमान छुपाए रखते थे. क़ौम ने सरकशी की ओर अपने नबी हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को झुटलाया और ज़मीन में फ़साद किया और सितमगारियों में ज़ियादती की और बड़ी मज़बूत इमारतें बनाई. मालूम होता था कि उन्हें गुमान है कि वो दुनिया में हमेशा ही रहेंगे. जब उनकी तौबत यहाँ तक पहुंची तो अल्लाह तआला ने बारिश रोक दी. तीन साल बारिश न हुई. अब वो बहुत मुसीबत में पड़े. उस ज़माने में दस्तूर यह था कि जब कोई बला या मुसीबत उतरती थी, तो लोग वैतुल्लाहिल ह्राम में हाज़िर होकर अल्लाह तआला से उसके दूर होने की दुआ करते थे. इसीलिये उन लोगों ने एक प्रतिनिधि मण्डल वैतुल्लाह को खाना किया. इस प्रतिनिधि मण्डल में क़ील बिन अब्ज़ा और नईम बिन हज़ाल और मुसिद बिन सअद थे. ये वही साहिब हैं जो हज़रत हूद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए थे और अपना ईमान छुपाए रखते थे. उस ज़माने में मक्कए मुकर्रमा में अमालीक की सुकूनत थी और उन लोगों का सरदार मुआविया बिन वक्र था. इस शरस का तनिहाल आद क़ौम में था. इसी नाते से यह प्रतिनिधि मण्डल मक्कए मुकर्रमा के हवाली में मुआविया बिन वक्र के यहाँ मुकीम हुआ. उसने उन लोगों का बहुत सम्मान किया, अच्छी आओ भगत की. ये लोग वहाँ शराब पीते और बांदियों का नाच देखते थे. इस तरह उन्होंने ऐशो आराम में एक महीना बसर किया. मुआविया को ख़याल आया कि ये लोग तो ग्रहत में पड़ गए और क़ौम की मुसीबत को भूल गए, जो वहाँ बला में फंसी हुई है. मगर मुआविया बिन वक्र को यह ख़याल भी था कि अगर वह इन लोगों से कहे तो शायद वो ये ख़याल करें कि अब इसको मेज़बानी भारी पड़ने लगी है. इसलिये उसने गाने वाली बांदी को ऐसे शंघ दिये जिनमें आद क़ौम की हाज़त का बयान था. जब बांदी ने वह नज़्म गाई तो उन लोगों को याद आया कि हम उस क़ौम की मुसीबत की फ़रियाद करने के लिये मक्कए मुकर्रमा भेजे गए हैं. अब उन्हें ख़याल हुआ कि हम शरीफ़ में दाख़िल होकर क़ौम के लिये पानी बरसने की दुआ करें. उस वक़्त मुसिद बिन सअद ने कहा कि अल्लाह की क़सम तुम्हारी दुआ से पानी न बरसेगा लेकिन अगर तुम अपने नबी की फ़रमाँबरदारी करो और अल्लाह तआला से तौबह करो तो बारिश होगी. उस वक़्त मुसिद ने अपने इस्लाम का इज़हार कर दिया. उन लोगों ने मुसिद को छोड़ दिया और खुद मक्कए मुकर्रमा जाकर दुआ की. अल्लाह तआला ने तीन बादल भेजे, एक

गए हम उसपर ईमान रखते हैं^(१०) (७५) घमण्डी बोले जिसपर तुम ईमान लाए हम उससे इन्कार है^(११) (७६) फिर^(१२) नाके की कूचें काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले ऐ सालेह हमपर ले आओ^(१३) जिसका तुम वादा कर रहे हो अगर तुम रसूल हो^(१४) (७७) तो उन्हें जलजलले ने आलिया तो सुबह को अपने घरों में आंधे पड़े रह गए^(१५) (७८) तो सालेह ने उनसे मुंह फेरा^(१६) और कहा ऐ मेरी क्रौम वेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत (संदेश) पहुंचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम भला चाहने वालों के गर्जी (पसन्द करने वाले) ही नहीं^(१७) (७९) और लूत को भेजा^(१८) जब उसने अपनी क्रौम से कहा क्या यह वह वेहयाई करते हो जो तुम से पहले जगत में किसी ने न की^(१९) (८०) तो मर्दा के पास शहवत (वासना) से जाते हो^(२०) औरतें छोड़कर वल्कि तुम लोग हद से गुजर गए^(२१) (८१) और उसकी क्रौम का कुछ जवाब न था मगर यही कहना कि उन^(२२) को अपनी वस्ती से निकाल दो ये लोग तो पाकीजगी (पवित्रता) चाहते हैं^(२३) (८२) तो हमने उसे^(२४) और उसके घर वालों को छुटकारा दिया मगर उसकी औरत वह रह जाने वालों में हुई^(२५) (८३)

بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالذِّمِّ
اِمْتَنَمْنَا بِهِ كَافِرُونَ ۝ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا
عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يُصْلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا
إِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَآخَذَهُمُ الرَّجْفَةُ
فَصَبَّوْا فِي دَارِهِمْ جُثَثِينَ ۝ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَ
قَالَ يَقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رَسُولَ رَبِّي وَنَصَحْتُ
لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُحِبُّونَ التَّصْحِيحِينَ ۝ وَ لَوْ طَا
إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَنَا تُؤَنُّونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ
بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ۝ ائْتِكُمْ كِتَابُؤُنَ
الرِّجَالِ شَهْوَةً مِنْ دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ
مُتَسْرِفُونَ ۝ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا
أَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَبْطِغُونَ ۝
فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۚ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۝

मंज़ल

सफ़ेद, एक सुर्ख, एक भियाह, और आसमान से पुकार हुई कि ऐ कौल, अपने और अपनी क्रौम के लिये इनमें से एक वादल इस्त्रियाह कर. उसने काला वादल चुना, इस ग्रवाल से कि इससे बहुत सा पानी बरसगा. चुनाव वह अन्न आद क्रौम की तरफ़ चला और वो लोग उसको देखकर बहुत गुश हुए. मगर उसमें से एक हवा चली. वह इस शिद्दत की थी कि ऊंटों और आदमियों को उड़ा उड़ा कर कहीं से कहीं ले जाती थी. यह देखकर वो लोग घरों में घुस गए और अपने दरवाज़े बन्द कर लिये. मगर हवा की तेज़ी से बच न सके. उसने दरवाज़े भी उखड़े दिये और उन लोगों का हलाक भी कर दिया. और अल्लाह की क़ुदरत से काली चिड़ियाँ आई, जिन्होंने उनकी लाशों को उठाकर समुन्दर में फेंक दिया. हज़रत हूद ईमान वालों को लेकर क्रौम में अलग हो गए थे. इसलिये वो सलामत रहे. क्रौम के हलाक होने के बाद ईमानदारों को साथ लेकर मक्कह मुकर्रमा तशरीफ़ लाए और आखिर उम्र शरीफ़ तक वहीं अल्लाह तआला की इबादत करते रहे.

सूरए अअराफ़ - दसवाँ रूकू

- (१) जो हिजाज़ और शाम के बीच सरज़मीने हज़र में रहते थे.
- (२) मेरी नबुव्वत की सच्चाई पर.
- (३) जिसका बयान यह है कि...
- (४) जो न किसी पीठ में गद्दी न किसी पेट में न किसी तर से पैदा हुई, न मांदा सं, न गर्भ में गद्दी न उसकी उत्पत्ति दर्जा व दर्जा पूरी हुई, वल्कि आद के तरीक़े के खिलाफ़ वह पहाड़ के एक पत्थर से यकायक पैदा हुई. उसकी यह पैदायश चमत्कार है. वह एक दिन पानी पीती है और तमाम समुद सम्प्रदाय एक दिन. यह भी एक चमत्कार है कि एक ऊंटनी एक कबीले के बराबर पी जाय. इसके अलावा उसके पीने के रोज़ उसका दूध दोहा जाता था और वह इतना होता था कि सारे कबीले का काफी हो और पानी की जगह ले ले. यह भी चमत्कार. और तमाम वहशी जानवर और हैवानात उसकी बारी के रोज़ पानी पीने से रुक रहते थे. यह भी चमत्कार. इतने चमत्कार हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के सच्चे नबी होने की खुली दलीलें हैं.
- (५) न मारो, न हंकाओ, अगर ऐसा किया तो यही नतीजा होगा.
- (६) ऐ समुद क्रौम.
- (७) गर्मी के मौसम में आराम करने के लिये.
- (८) सर्दी के मौसम के लिये.
- (९) और उसका शुक्र बजा लाओ.

- (२०) वह काफिरा श्री और उसी काम से महबूत रग्वती थी।
 (२१) अजीब तरह का, जिसमें ऐसे पत्थर बरस कि मरक और आग से बने थे। एक कौल यह है कि वस्ती में रहने वाले, जो वहाँ टहरे हुए थे, वो तो ज़मीन में धँसा दिये गए और जो सफ़र में थे वो इस बारिश से हलाक कर दिये गए।
 (२२) मुजाहिद ने कहा कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम उतरे और उन्होंने अपना बाज़ू लूट काम की बस्तियों के नीचे डाल कर उस टुकड़े को उग्राड़ लिया और आसमान के करीब पहुँचकर उमको ओंछा करके गिरा दिया। इसके बाद पत्थरों की बारिश की गई।

सूरए अअराफ़ - ग्यारहवाँ रूकू

- (१) हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम ने.
 (२) जिससे मेरी नबुव्वत व रिसालत यक्कीनी तौर पर साबित होती है। इस दलील से चमत्कार मुराद है.
 (३) उनके हक़ ईमानदारी के साथ पूरे पूरे अदा करो.
 (४) और दीन का अनुकरण करने में लोगों के रास्ते में अड़चन न बनो.
 (५) तुम्हारी संख्या ज़्यादा कर दी तो उसकी नेअमत का शुक्र करो और ईमान लाओ.
 (६) सबक सीखने के उद्देश्य से पिछली उम्मतों के हालात और गुज़रे हुए ज़मानों में सरकशी करने वालों के अंजाम देखो और सोचो.
 (७) यानी अगर तुम मेरी रिसालत में विरोध करके दो सम्प्रदाय हो गए, एक सम्प्रदाय ने माना और एक इन्कारि हुआ.
 (८) कि तस्दीक करने वाले ईमानदारों को इज़्ज़त दे और उनकी मदद फ़रमाए और झुटलाने वालों और इन्कार करने वालों को हलाक करे और उन्हें अज़ाब दे.
 (९) क्योंकि वह सच्चा हाकिम है.

पारा आठ समाप्त

नवां पारा - कालल-मलउ (सूरए अअराफ़ जारी) ग्यारहवाँ रुकू (जारी)

उसकी क़ौम के घमण्डी सरदार बोले ऐ शुएव क़सम है कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले मुसलमानों को अपनी वस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में आजाओ, कहा^(१०) क्या अगरचे हम बेज़ार हों^(११) ॥८८॥ ज़रूर हम अल्लाह पर झूठ बांधेंगे अगर तुम्हारे दीन में आजाएं बाद इसके कि अल्लाह ने हमें इससे बचाया है^(१२) और हम मुसलमानों में किसी का काम नहीं कि तुम्हारे दीन में आए मगर यह कि अल्लाह चाहे^(१३) जो हमारा रव है, हमारे रव का इल्म हर चीज़ को घेरे है, अल्लाह ही पर भरोसा किया^(१४) ऐ हमारे रव हम में और हमारी क़ौम में हक़ (सच्चा) फैसला कर^(१५) और तेरा फैसला सबसे बेहतर है^(१६) और उसकी क़ौम के काफ़िर सरदार बोले कि अगर तुम शुएव के तावे (अधीन) हुए तो ज़रूर तुम नुक़सान में रहोगे^(१७) तो उन्हें ज़लजले ने आ लिया तो सुबह अपने घरों में औंधे पड़े रह गए^(१८) ॥८९॥ शुएव को झुटलाने वाले मानो उन घरों में कभी रहे ही न थे शुएव को झुटलाने वाले ही तबाही में पड़े^(१९) तो शुएव ने उनसे मुंह

काल अल्लाह अल्लाह अल्लाह
يُشْعِبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قُرَيْشٍ أَوْ
لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كُرْهِيْنَ
قَدْ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ
بَعْدَ إِذْ جِئْنَا اللَّهَ مِنْهَا وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ
فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ
شَيْءٍ عِلْمًا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبُّنَا افْتَرَى بَيْنَنَا وَ
بَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝ وَقَالَ
الْمَلَائِكَةُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَكِنَّ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِذْ
كُنْتُمْ خَالِفُونَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا
فِي دَارِهِمْ جُثَثِينَ ۝ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا
كَانَ لَكُمْ يَحْنُ فِيهَا الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا
هُمْ الْخَاسِرِينَ ۝ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَكْفُرُونَ لَقَدْ

منزل

नवां पारा - सूरए अअराफ़ - ग्यारहवाँ रुकू जारी

- (१०) शुएव अलैहिस्सलाम ने.
- (११) मतलब यह है कि हम तुम्हारा दीन न कुबूल करेंगे और अगर तुमने हमपर ज़बरदस्ती की, जब भी न मारेंगे क्योंकि...
- (१२) और तुम्हारे झूठे दीन के दाँपों और शक्त होने का इल्म दिया है.
- (१३) और उसको हलाक करना मंज़ूर हो और ऐसा ही लिखा हो.
- (१४) अपने सारे कामों में वही हमें ईमान पर कायम रखेगा, वही अक़ीदे और विश्वास का ज़्यादा और मज़बूत करेगा.
- (१५) ज़ुज़ाज़ ने कहा कि इसके ये मानी हो सकते हैं कि ऐ रव हमारे काम का ज़ातिय फ़रमादे. मुराद इससे यह है कि इनपर ऐसा अज़ाब उतार जिससे इनका झूटा और ग़लती पर होना और हज़रत शुएव अलैहिस्सलाम और उनके अनुयाइयों का सच्चाई पर होना ज़ाहिर हो.
- (१६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने इस क़ौम पर जहन्नम का दरवाज़ा खोला और उनपर दोज़ख़ की शदीद गर्मी भेजी जिससे सौरा बन्द हो गए. अब न उन्हें साया काम देता था, न पानी. इस हालत में वो तहज़ान में दाख़िल हुए ताकि वहाँ कुछ अन्न मिले लेकिन वहाँ बाहर से ज़्यादा गर्मी थी. वहाँ से निकल कर जंगल की तरफ़ भागे. अल्लाह तआला ने एक बादल भेजा जिसमें बहुत ठण्डी और अच्छी लगने वाली हवा थी. उसके साथ में आए और एक ने दूसरे को पुकार कर जमा कर लिया. मर्द आँगने बन्धे सब इकट्ठा हो गए, तो वह अल्लाह के हुक्म से आग बनकर भड़क उठा और वो इसमें इस तरह जल गए जैसे भाड़ में कोई चीज़ भून जाती है. फ़त्नादा का क़ौल है कि अल्लाह तआला ने हज़रत शुएव अलैहिस्सलाम को एका वालों की तरफ़ भी भेजा था और मदयन वालों की तरफ़ भी. एका वाले तो बादल से हलाक किये गए और मदयन वाले ज़लजले में गिरफ़्तार हुए और एक भयानक आवाज़ से हलाक हो गए.

फेरा^(१३) और कहा ऐ मरी क्रौम में तुम्हें अपने रब की रिसालत (संदेश) पहुंचा चुका और तुम्हारे भले को नसीहत की^(१४) तो कैसे गम करू काफिरों का^(१५)

बारहवाँ सूकू

और न भेजा हमने किसी वस्ती में कोई नवी^(१) मगर यह कि उसके लोगों ने सख्ती और तकलीफ में पकड़ा^(२) कि वो किसी तरह जारी करें^(३) (रोएं) ^(१५) फिर हमने बुराई की जगह भलाई बदल दी^(४) यहाँ तक कि वो बहुत होगए^(५) और बोले वेशक हमारे बाप दादा को रंज और राहत पहुंचे थे^(६) तो हमने उन्हें अचानक उनकी गफलत में पकड़ लिया^(७) ^(१५) और अगर वस्तियों वाले ईमान लाते और डरते^(८) तो जरूर हम उनपर आसमान और ज़मीन से वरकतें खोल देते^(९) मगर उन्होंने तो झुटलाया^(१०) तो हमने उन्हें उनके किये पर गिरफ्तार किया^(११) ^(१६) क्या वस्तियों वाले^(१२) नहीं डरते कि उनपर हमारा अज़ाव रात को आए जब वो सोते हों^(१३) या वस्तियों वाले नहीं डरते कि उनपर हमारा अज़ाव दिन चढ़े आए जब वो खेल रहे हों^(१४) ^(१६) क्या अल्लाह की छुपवाँ तदवीर (युक्ति) से देखवर हैं^(१५) तो अल्लाह की छुपी तदवीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले^(१६) ^(१७)

तेरहवाँ सूकू

और क्या वो जो ज़मीन के मालिकों के वाद उसके वारिस हुए उन्हें

الْبَعْثُكُمْ رَسُولًا رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ فَكَيْفَ آلَيْتُمْ
عَلَى قَوْمٍ كَافِرِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّنْ
نَّبِيِّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَاءِ لَعَلَّهُمْ
يَضُرَّعُونَ ۝ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ
عَفَوْا وَقَالُوا قَدْ مَتَّسَ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ
فَأَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّ
أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ
مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُمْ
بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ۝ أَوْ آمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ
أَن يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضَعْفَىٰ وَهُمْ يُلْعَبُونَ ۝ أَفَأَمِنُوا
مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ۝
أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ

مَنْ

(१७) जब उनपर अज़ाव आया.

(१८) मगर तुम किसी तरह ईमान न लाए.

सूर अअराफ - बारहवाँ सूकू

- (१) जिसको उसकी क्रौम ने न झुटलाया हो.
- (२) दरिद्रता और तंगदस्ती और बीमारी में गिरफ्तार किया.
- (३) घमण्ड छोड़ें, नीचा करें, अल्लाह के आदेशों का पालन करें.
- (४) कि सख्ती और तकलीफ के बाद राहत और आसामश पहुंचता और बदली व भालों नेअमन मिलता इनाअन व शुक्रगुजारी चाहता है.
- (५) उनकी तादाद भी ज्यादा हुई और माल भी बढ़.
- (६) यानी ज़माने का दस्तूर हो यह है कि कभी तकलीफ होती है, कभी राहत. हमारे बाप दादा पर भी ऐसे हालात गुज़र चुके हैं. इससे उनका भ्रमसद यह था कि पिछला ज़माना जो सख्तियों में गुज़रा है, वह अल्लाह तआला की तरफ से कुछ फिटकार और गज़ा न था. तो अपना दोन नहीं छोड़ना चाहिये. व उन लोगों ने सख्ती और तकलीफ से कोई नसीहत हासिल की, न राहत और आसाम से उनमें कोई शुक्र और फ़रमावशकारी की भावना पैदा हुई, वो गफलत में डूबे रहे.
- (७) जब कि उन्हें अज़ाव का ख़याल भी न था. इन घटनाओं से सबक हासिल करना चाहिये. और बन्दों को मुनाह व राक़बी छोड़ कर, अपने मालिक की खुशी और रज़ा चाहने वाला होना चाहिये.
- (८) और खुदा व मूल की इनाअन इज्जियार करने और जिस चीज़ को अल्लाह और रसूल ने मना फ़रमाया, उससे मुंह रकने.
- (९) हर तरफ से उन्हें अच्छाई पहुंचती, वक़्त पर रफ़ा देव वाला वारिज़ होता, ज़मीन से ख़रीत फल करगन से पैदा होते, गिरक की फ़राशों होते, अन्न व सलामती रहती, आफ़तों से मेहफूज़ रहने.
- (१०) अल्लाह के रसूलों का.
- (११) और तरह तरह के अज़ाव में ज़क़ड़ा.
- (१२) काफ़िर, चाहे वो मुक़र्र मुक़मा के रहने वाले या आम पाम के या क़री और के.
- (१३) और अज़ाव आने से नाफ़िल हो.

हिदायत न मिली कि हम चाहें तो उन्हें उनके गुनाहों पर आफत पहुंचाएं^(१) और हम उनके दिलों पर मोहर करते हैं कि वो कुछ नहीं सुनते^(२) ॥१००॥ ये वस्तियाँ हैं^(३) जिनके अहवाल हम तुम्हें सुनाते हैं^(४) और वेशक उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें^(५) लेकर आए तो वो^(६) इस काविल न हुए कि वो उस पर ईमान लाते जिसे पहले झुटला चुके थे^(७) अल्लाह यूँ ही छाप लगा देता है काफ़िरों के दिलों पर^(८) ॥१०१॥ और उनमें अक्सर कौं हमने क़ौल का सच्चा न पाया^(९) और ज़रूर उनमें अक्सर को वेहूकम ही पाया^(१०) फिर उन^(११) के बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों^(१२) के साथ फिरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा तो उन्होंने उन निशानियों पर ज़ियादती की^(१३) तो देखो कैसा अंजाम हुआ फ़साद फैलाने वालों का^(१४) ॥१०३॥ और मूसा ने कहा ऐ फिरऔन मैं सारे जगत के रव का रसूल हूँ^(१५) ॥१०४॥ मुझे सज़ावार (लाज़िम) है कि अल्लाह पर न कहूँ मगर सच्ची बात^(१६) मैं तुम सबके पास तुम्हारे रव की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ^(१७) तो वनी इस्राईल को मेरे साथ छोड़ दे^(१८) ॥१०५॥ वोला अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो लाओ अगर सच्चे हो^(१९) ॥१०६॥ तो मूसा

أَهْلِيهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصَبْنَهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَلَطَبْنَا
عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۖ تِلْكَ الْقُرْآنُ
نَقَّصْ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِهَا ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِهَا كَذِبُوا مِنْ
قَبْلُ ۖ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ۖ وَمَا
وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ ۖ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ
لَفَاسِقِينَ ۖ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمُ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۖ وَقَالَ مُوسَىٰ يُفِرُّعُونَ إِلَيَّ
رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ
عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ ۖ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ
فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ قَالَ إِنْ كُنْتَ جِئْتَ
بِآيَةٍ فَأْتِ بِهَا ۖ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۖ قَالَ لَقَدْ

مَنْتِلُ

(१४) और उसके दिल देने और दुनिया की रेअमत देने पर घमण्डी होकर, उसके अज़ाब से बचे फ़िक्र हो गए.

(१५) और उसके सच्चे बन्दे उसका डर रखते हैं. रबीअ बिन ख़सीम की बंदी ने उनसे कहा; क्या कारण है, मैं देखती हूँ सब लोग सोते हैं और आप नहीं सोते. फ़रमाया, ऐ आँखों की रौशनी, तेरा बाप रात को सोने से डरता है, यानी यह कि ग़ाफ़िल होकर सो जाना कहीं अज़ाब का कारण न हो.

सूरए अअराफ़ - तेरहवाँ सूकू

- (१) जैसा कि हमने उनके पूर्वजों को उनकी नाफ़रमानी के कारण हलाक किया.
- (२) और कोई उपदेश व नसीहत नहीं मानते.
- (३) हज़रत नूह की क़ौम और आद व समुद और हज़रत लूत की क़ौम और हज़रत शूऐब की क़ौम.
- (४) ताकि मालूम हो कि हम अपने रसूलों की और उनपर ईमान लाने वालों की अपने दुश्मनों या तो काफ़िरों के मुकाबले में मदद किया करते हैं.
- (५) यानी खुल चमत्कार.
- (६) मरते दम तक.
- (७) अपने कुफ़्र और झुटलाते पर ज़मे ही रहे.
- (८) जिनकी निखत उसके इल्म में है कि कुफ़्र पर कायम रहें और कभी ईमान न लाएँ.
- (९) उन्होंने अल्लाह के एहद पूरे न किये. उनपर जब भी कोई मुसीबत आती तो एहद करते कि चारबू तू अगर हमें छुड़ा दे तो हम ज़रूर ईमान ले आएँगे. फिर जब छूट जाते तो एहद से फिर जाने. (मदारिक).
- (१०) जिनका वयात हुआ वो नबी.
- (११) यानी खुल चमत्कार, जैसे कि चमकती हथेली और ज़िन्दा होती लाटी वगैरह.
- (१२) उन्हें झुटलाया और कुफ़्र किया.
- (१३) क्योंकि रसूल की यही शान है, वो कभी ग़लत बात नहीं कहते और अल्लाह का संदेश पहुंचाने में उनका झूट संभव नहीं.
- (१४) जिससे मेरा नबी होना साबित है और वह निशानी चमत्कार है.
- (१५) और अपनी कैद से आज़ाद कर दे ताकि वो मेरे साथ पाक सज़्ज़मीन में चले जाएँ जो उनका वतन है.

ने अपना असा (लाठी) डाल दिया वह फ़ौरन एक अज़ग़र (अजगर) हो गया^(१६) (१०७) और अपना हाथ गिरेवान में डाल कर निकाला तो वह देखने वालों के सामने जगमगाने लगा^(१७) (१०८)

चौदहवाँ सूक़

फ़िरऔन की क्रौम के सरदार बोले यह तो एक इल्म वाला जादूगर है^(१) (१०९) तुम्हें तुम्हारे मुल्क^(२) से निकालना चाहता है, तो तुम्हारी क्या सलाह है^(३) (११०) बोले इन्हें और इनके भाई^(४) को ठहरा और शहरों में लोग जमा करने वाले भेज दे^(५) (१११) कि हर इल्म वाले जादूगर को तेरे पास लेआए^(६) (११२) और जादूगर फ़िरऔन के पास आए बोले कुछ हमें इनाम मिलेगा अगर हम गालिव (विजयी) आए^(७) (११३) बोला हाँ और उस वक़्त तुम मुकर्रव (नज़दीकी) हो जाओगे^(८) (११४) बोले ऐ मूसा या तो^(९) आप डालें या हम डालने वाले हों^(१०) (११५) कहा तुम्हीं डालो^(११), जब उन्होंने डाला^(१२) लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें डराया और बड़ा जादू लाए^(१३) (११६) और हमने मूसा को वही फ़रमाई कि अपना असा (लाठी) डाल तो नागाह (अचानक) उनकी बनावटों को निगलने लगा^(१४) (११७) तो हक़ (सत्य) सावित हुआ और उनका काम बातिल (निरस्त) हुआ^(१५) (११८) तो यहाँ वो मग़लूब (पराजित) पड़े और ज़लील होकर

عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۖ وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنُّظُورِ ۖ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا السَّحَرُ عَلَيْهِمْ ۖ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَبِأَذَا تَأْمُرُونَ ۖ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ ۖ وَارْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۖ يَا تَوَكُّ بِكُلِّ شَجَرٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ۖ قَالَ نَعَمْ وَإِنِمْ كُنْتُمْ لَمِنَ الْمُفْسِدِينَ ۖ قَالُوا لِيُؤْتِنَا إِمَّا أَنْ تُلْقَى وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ۖ قَالَ أَلْقُوا ۖ فَكَانَ الْقَوْمُ يَسْكَرُونَ أَغْيَيْنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ ۖ وَجَاءَ وَبَسَجَرٍ عَظِيمٍ ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۖ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ فَغُلِبُوا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا

مَنْزِلٌ

(१६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने असा डाला तो वह एक बड़ा अजगर बन गया, पीले रंग का. मुँह खोले हुए ज़मीन से एक मील ऊँचा अपनी दूध पर खड़ा हो गया और एक जबड़ा उसने ज़मीन पर खड़ा और एक शाही मटल की दीवार पर. फिर उसने फ़िरऔन की तरफ़ रुख़ किया तो फ़िरऔन अपने तख़्त से कूद कर भागा और डर से उसकी हवा निकल गई और लोगों की तरफ़ रुख़ किया तो ऐसी भाग पड़ी कि हज़ारों आदमी आपस में कुचल कर मर गए. फ़िरऔन घर में जाकर चीख़ने लगा, ऐ मूसा, तुम्हें उसकी क्रमम जिसने तुम्हें रसूल बनाया, इसका पकड़ लो, मैं तुमपर ईमान लाता हूँ और तुम्हारे साथ बनी इज़्राईल को भेज देता हूँ. हज़रत मूसा ने असा उठा लिया तो पहलें की तरह लाठी हो था. (१७) और उसकी रौशनी और चमक सूरज के प्रकाश पर गालिव आ गई.

सूरए अअराफ़ - चौदहवाँ सूक़

- (१) जिसने जादू से नज़र बन्दी की और लोगों का लाठी अजगर नज़र आने लगी और गंधवाँ रंग का हाथ सूरज से ज्यादा चमकदार मालूम होने लगा.
- (२) मिश्र.
- (३) हज़रत हारून.
- (४) जो जादू में माहिर हो और सबसे योग्य. चुनौते लोग खाना हुए और आसपास के क्षेत्रों में तलाश करके जादूगरों को ले आए.
- (५) पहलें अपनी लाठी.
- (६) जादूगरों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का यह अदब किया कि आपको पहन करने को कहा और आपकी उजाज़न के बिना अपने अमल या मंत्र तंत्र में मशगूल न हुए. इस अदब का बदला उन्हें यह मिला कि अल्लाह तआला ने उन्हें ईमान और हिदायत में पुरस्कृत किया.
- (७) यह फ़रमाना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का इसलिये था कि आप उनकी कुछ परवाह न करने थे और पक्का भरोसा रखते थे कि उनके चमत्कारों के सामने जादू नाकाम और परास्त होगा.
- (८) अपना सामान, जिसमें बड़े बड़े रस्से और शहतीर थे. तो वो अजगर नज़र आने लगे और मैदान उनसे भरा मालूम होने लगा.
- (९) जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी लाठी डाली तो वह एक बड़ा अजगर बन गई. इब्ने ज़ैद का कहना है कि यह

पलटे (११९) और जादूगर सिजदे में गिरा दिजे गए (१२०) बोले हम ईमान लाए जगत के रब पर (१२१) जो रब है मूसा और हारून का (१२२) फिर ओन बोला तुम उसपर ईमान लाए पहले इसके कि मैं तुम्हें इजाजत दूँ यह तो बड़ा जअल (धोखा) है जो तुम सबने (१३) शहर में फैलाया है कि शहर वालों को इससे निकाल दो (१२) तो अब जान जाओगे (१३) (१२३) क्रम है कि मैं तुम्हारे एक तरफ के हाथ और दूसरी तरफ के पाँव काटूंगा फिर तुम सब को सूली दूंगा (१४) (१२४) बोले हम अपने रब की तरफ फिरने वाले हैं (१५) (१२५) और तुझे हमारा क्या बुरा लगा यही ना कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वो हमारे पास आई, ऐ हमारे रब हमपर सब्र उंडेल दे (१६) और हमें मुसलमान उठा (१७) (१२६)

पन्द्रहवाँ सूक

और फिर ओन की क्रौम के सरदार बोले क्या तू मूसा और उसकी क्रौम को इस लिपे छोड़ता है कि जो ज़मीन में फसाद फैलाए (१) और मूसा तुझे और तेरे ठहराए हुए मंअबूदों की छोड़ दे (२) बोला अब हम उनके बेटों को कत्ल करेंगे और उनकी बेटियों को जिन्दा रखेंगे और हम वेशक उनपर गालिब (विजयी) हैं (३) (१२७) मूसा ने अपनी क्रौम से फरमाया अल्लाह की मदद चाहो (४) और सब्र करो (५) वेशक ज़मीन

صُغِرْنَ ۖ وَالْقَى السَّحَرَةُ سُجُودِينَ ۖ قَالُوا
أَمَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ۖ
قَالَ فَرَعُونَ آمَنْتُمْ بِهِ قَبْلَ أَنْ أَدْنِ لَكُمْ ۖ إِنَّ
هَذَا لَكُم مَكْرُئُشُوءٌ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا
مِنْهَا أَهْلَهَا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۖ لَا قُطْعَنَ أَيْدِيكُمْ
وَأَرْجُلُكُمْ مِنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَأَصْلَبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ۖ
قَالُوا إِنَّا إِلَى رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۖ وَمَا نُنْقِمُ مِنْكَ
إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِآيَاتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَتْكَا ۖ رَبَّنَا أَفْرِغْ
عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَقَّنَا مُسْلِمِينَ ۖ وَقَالَ الْبَلَاءُ مِنْ
قَوْمِ فَرَعُونَ أَكْثَرُ مُوسَى وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي
الْأَرْضِ وَيَذُرْكُمُ ۖ قَالَ سَنَقْتُلُ أَبْنَاءَهُمْ
وَسَتَسْجِي نِسَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ فَاهِرُونَ ۖ قَالَ
مُوسَى لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا ۖ إِنَّ

مَنْ

सम्मलन इस्कंदरिया में हुआ था और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के अजगर की दुम समन्दर के पार पहुंच गई थी। वह जादूगरों की मन्त्रकर्मियों को एक एक करके तिगल गया और तमाम रस्से लट्टे, जो उन्होंने जमा किये थे, जो तीन सौ जंटों का बंडा था, सब का अन्त कर दिया। जब मूसा अलैहिस्सलाम ने लाटी को अपने दस्त मुबारक में लिया तो पहल की तरह लाटी हो गई और उसकी मोटाई और बज़्रन अपनी हालत पर रहा। यह देखकर जादूगरों ने पहचान लिया कि मूसा की लाटी अन्न नहीं और इन्सान की कुदरत ऐसा चमत्कार नहीं दिखवा सकती। तब यह आसमानी बात है। यह बात समझकर बोले, “आमन्न दि रब्बिल आलमीन” यानी हम ईमान लाए जगत के रब पर, कहने हुए सन्ने में गिर गए।

(१०) यात्री यह चमत्कार देखकर उनपर ऐसा असर हुआ कि वो बेइस्त्रिया सन्ने में गिर गए। मालूम होता था कि किसीने साथ पकड़कर ज़मीन पर लगा दिया।

(११) यात्री तुमने और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने, सब ने मिलकर।

(१२) और खुद इस पर कब्र करती।

(१३) कि मैं तुम्हारे साथ किस तरह पेश आता हूँ।

(१४) नील के किनारे, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फरमाया कि दुनिया में पहला सूनी देने वाला, पहला हाथ पाँव काटने वाला, फिर ओन है। फिर ओन की इस बात पर जादूगरों ने यह जवाब दिया जो अगली आयत में आया है।

(१५) तो हमें मान का क्या राम, क्योंकि मरे कर हमें अपने रब की मूलाकात और उसकी रहमत नसीब होगी। और जब सबका उसी की तरफ पलटना है तो वह खुद हमारे तैरे बीच फैसला फरमा देगा।

(१६) यात्री हमको भरपूर सब्र अता फरमा और इतना अधिक दे जैसे किसी पर पानी उंडेल दिया जाता है।

(१७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फरमाया, ये लोग दिव के पहले पहर में जादूगर थे और उसी रात्र आखिर पहर में शहीद।

सूरए अअराफ़ - पन्द्रहवाँ सूक

(१) यात्री मिस्र में तेरा विरोध कर और वहाँ के निवासियों का दीन बदले, और यह उन्होंने इसलिये कहा था कि जादूगरों के साथ छे लाश्र आदमी ईमान ले आए थे। (मदागिक)

(२) कि न तेरी उपायता कर, न तेरे मुकम्मर किये हुए देवी देवताओं की। यदी का कहना है कि फिर ओन ने अपनी क्रौम के

का मालिक अल्लाह है^(६) अपने बन्दों में जिसे चाहे वारिस बनाए^(७) और आखिर मैदान परहेज़गारों के हाथ है^(८) (१२८) वोले हम सताए गए आपके आने से पहले^(९) और आपके तशरीफ़ लाने के बाद^(१०) कहा करीब है कि तुम्हारा रव तुम्हारे दुश्मन को हलाक करे और उसकी जगह ज़मीन का मालिक तुम्हें बनाए फिर देखें कैसे काम करते हो^(११) (१२९)

सोलहवाँ रूक़

और वेशक हमने फिरऔन वालों को वरसों के क़हत (अकाल) और फलों के घटाने से पकड़ा^(१) कि कहीं वां नसीहत मानें^(२) (१३०) तो जब उन्हें भलाई मिलती^(३) कहते यह हमारे लिये है^(४) और जब बुराई पहुंचती तो मूसा और उसके साथ वालों से वदगुमानी लेते^(५) सुन लो उनके नसीवे की शामत तो अल्लाह के यहाँ है^(६) लेकिन उनमें अक्सर को खबर नहीं^(७) (१३१) और वोले तुम कैसी भी निशानी लेकर हमारे पास आओ कि हमपर उससे जादू करो हम किसी तरह तुमपर ईमान लाने वाले नहीं^(८) (१३२) तो भेजा हमने उनपर तूफ़ान^(९) और टिड्डी और घुन (या कलनी या जुएं) और मेंडक और खून अलग अलग निशानियाँ^(१०) तो उन्होंने

الْأَرْضَ لِلّٰهِ يُؤْتِيهَا مَنْ يَّشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝ قَالُوا أَوْزَيْنَا مِنْ قَبْلُ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا قَالَ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عُدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝ وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّيَرِ ۖ وَتَقْصُصَ مِنَ الشَّارِبِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ۝ وَإِذَا جَاءَتْهُمْ الْحَسَنَةُ قَالُوا إِنَّا لِلّٰهِ ۖ وَإِنْ تَصْبِهِمْ سَيِّئَةٌ يَّظُنُّوْا بِسُوْسِهِ وَمِنْ مَّعَدَةٍ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا ظَنُّهُمْ ۖ عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۖ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۖ قَارِئْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالصَّفَّادِغَ وَالْدَّمَ آيَاتٍ مُّفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا

मज़ल

लिये कुत वनवा दिये थे और उनकी पूजा का हुक्म देता था, और कहता था कि मैं तुम्हारा भी रव हूँ और इन वनों का भी। कुछ मुफ़्फ़िसरों ने फ़रमाया कि फिरऔन दहरिया था, यानी दुनिया के पैदा करने वाले का इन्कार करने वाला। उसका ख़याल था कि आत्म में मिश्रित की चलाते वाले सिनारे हैं। इसीलिये उमन सिनारों की सूतों पर मूर्तियाँ बनवाई थीं। उनकी श्रुद भी इबादत करता था और दूसरों का भी उनकी इबादत का हुक्म देता था और अपने आपको ज़मीन का मालिक और स्वामी कहता था, इसीलिये “अना रबुकुमुल अमला” कहता था।

(५) फिरऔनी क़ौम के सदस्यों ने फिरऔन से यह जो कहा था कि क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को इमालिये छोड़ता है कि वां ज़मीन में फ़साद फैलाया। इससे उनका मतलब फिरऔन को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और आपके क़ौम के क़त्ल पर उभरना था। जब उन्होंने ऐसा किया तो मूसा अलैहिस्सलाम ने उनको अज़ाब उतरने का डर दिलाया और फिरऔन अपनी क़ौम की ख़ान्दश पर क़ुदरत नहीं रखता था क्योंकि वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार की कुब्त से प्रभावित हो चुका था। इसीलिये उसने अपनी क़ौम से यह कहा कि हम बनी इस्राईल के लड़कों का क़त्ल करेंगे, लड़कियों को छोड़ देंगे। इससे उसका मतलब यह था कि हम तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम की संख्या घटाकर उनकी कुब्त का कम करेंगे और जनता में अपनी बात रखने के लिये यह भी कह दिया कि हम वेशक उनपर ग़ालिब हैं, लेकिन फिरऔन के इस क़ौल से कि हम बनी इस्राईल के लड़कों का क़त्ल करेंगे, बनी इस्राईल में कुछ परेशानी पैदा हो गई। और उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से इसकी शिकायत की। इसके जवाब में आपने यह फ़रमाया जो इसके बाद आता है।

(५) यह काफी है।

(५) मुसीबतों और बलाओं पर, और घबराओ नहीं।

(६) और मिश्र प्रदेश भी इसमें दाख़िल है।

(७) यह फ़रमाकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को आशा दिलाई कि फिरऔन और उसकी क़ौम हलाक होगी और बनी इस्राईल उनकी ज़मीनों और शहरों के मालिक होंगे।

(८) उन्हीं के लिये विजय और कामयाबी है, और उन्हीं के लिये बेहतर और उमदा अंजाम।

(९) कि फिरऔनियाँ ने तरह तरह की मुसीबतों में जकड़ रखा था और लड़कों को बहुत ज़्यादा क़त्ल किया था।

(१०) कि अब वह फिर हमारी औलाद के क़त्ल का इरादा रखता है, तो हमारी मदद करेगी और ये मुसीबतें सब दूर की जाएंगी।

(११) और किस तरह नेअमत का शुक्र अदा करते हैं।

घमण्ड किया^(१) और वो मुजरिम क्रौम थी^(२) और जब उनपर अज़ाव पड़ता कहते ऐ मूसा हमारे लिये अपने रब से दुआ करो उस अहद के कारण जो उसका तुम्हारे पास है^(३) वेशक अगर तुम हमपर अज़ाव उठा दोगे तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएंगे और बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ करदेंगे^(४) फिर जब हम उनसे अज़ाव उठा लेते एक मुदत के लिये जिस तक उन्हें पहुंचना है जभी वो फिर जाते^(५) तो हमने उनसे बदला लिया तो उन्हें दरिया में डुबो दिया^(६) इस लिये कि हमारी आयतें झुटलाते और उनसे वेखबर थे^(७) और हमने उस क्रौम को^(८) जो दवाली गई थी उस ज़मीन^(९) के पूरव पश्चिम का वारिस किया जिसमें हमने बरकत रखी^(१०) और तेरे रब का अच्छा वादा बनी इस्राईल पर पूरा हुआ, बदला उनके सब्र का और हमने वरवाद कर दिया^(११) जो कुछ फिरऔन और उसकी क्रौम बनाती और जा चुनाइयाँ उठाते थे^(१२) और हमने^(१३) बनी इस्राईल को दरिया पार उतारा तो उनका गुज़र एक ऐसी क्रौम पर हुआ कि अपने बुतों के आगे आसन मारे थे^(१४) बोले ऐ मूसा हमें एक खुदा बनादे जैसा इनके लिये इतने खुदा हैं, वोला तुम

مُجْرِمِينَ ۝ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا لِيُؤْسَ
أَدْعُ كُنَّا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ
عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ ۖ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي
إِسْرَءِيلَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرِّجْزَ إِلَىٰ أَجَلٍ هُمْ
بِلُغْوِهِ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ۝ فَانْتَقَبْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ
فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا
غَافِلِينَ ۝ وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضَعُونَ
مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا ۖ
وَتَكُنَّتْ حَكِيمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ
بِمَا صَبَرُوا ۖ وَدَمَرْنَا مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ فِرْعَوْنَ وَ
قَوْمَهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ۝ وَجَوْرَنَا بِبَنِي
إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ يَعْكُفُونَ عَلَىٰ
أَصْنَامِهِمْ ۚ قَالُوا لِيُؤْسَ اجْعَلْ لَنَا إِلَهًا كَمَا

مَنْ

सूरए अअराफ़ - सोलहवाँ सूक़

- (१) और दरिद्रता और भुखमरी की मुसीबत में जकड़ा।
- (२) और कुफ़्र और बुग़ाईयों से बाज़ आएँ, फिरऔन ने अपनी चार सौ बरस की उम्र में तीन सौ बीस साल तो इस आराम के साथ गुज़ारे थे कि इस मुदत में कभी दर्द या बुख़ार या भूख़ में नहीं पड़ा था, अब दुष्काल की सरज़नी उनपर इग़लिय डाली गई कि वो इस सरज़नी ही से खुदा को याद करें और उसकी तरफ़ पलटें, लेकिन वो अपने कुफ़्र में इतने पक्के हो चुके थे कि इन तकलीफ़ों से भी उनकी सरक़शी बढ़ती ही रही।
- (३) और सरसाई व बहुतात व अन्न और आफ़ियत होती।
- (४) यानी हम इसके मुस्तद्दिक़ यानी हक़दार ही हैं, और इसको अल्लाह का फ़ज़्र न मानते और अल्लाह का शुक्र न अदा करते।
- (५) और कहते कि ये बलाएँ इनकी बज़ह से पहुंचीं, अगर ये न होते तो ये मुसीबतें न आतीं।
- (६) जो उसने लिख दिया है, बड़ी पहुंचता है, और यह उनके कुफ़्र के कारण है, कुछ मुफ़रिसों का कहना है कि मानी ये हैं कि बड़ी शामत तो वह है जो उनके लिये अल्लाह के यहाँ है, यानी दाज़ात्र का अज़ाव।
- (७) जब उनकी सरक़शी यहाँ तक पहुंची तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उनके हक़ में बददुआ की आपकी दुआ कुबूल हुई।
- (८) जब जादूगरों के ईमान लाने के बाद भी फिरऔनी अपने कुफ़्र और सरक़शी पर जमे रहे, तो उनपर अल्लाह की निशानियाँ एक के बाद एक उतरने लगीं, क्योंकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की थी कि या रब, फिरऔन ज़मीन में बहुत सरक़श हो गया है और उसकी क्रौम ने यहद तोड़ा है, उन्हें ऐसे अज़ाव में जकड़, जो उनके लिये सज़ा हो, और मेरी क्रौम और बाद वालों के लिये सबक़, तो अल्लाह तआला ने तूफ़ान भेजा, बादल आया, अथरा हुआ, कसरत से बारिश होने लगी, फिरऔन के घरों में पानी भरगया, यहाँ तक कि वो उसमें ग़रे रह गए और पानी उनकी गर्दन की हंसलियों तक आगया, उनमें जो बंठा डूब गया, न हिल सकने थे, न कुछ काम कर सकते थे, सबीचर से सबीचर तक, सात रोज़ तक इसी मुसीबत में रहे, हालांकि बनी इस्राईल के घर उनके घरों से मिले हुए थे, उनके घरों में पानी न आया, जब ये लोग तंग आ गए तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया, हमारे लिये दुआ फ़रमाइये कि यह मुसीबत दूर हो तो हम आपपर ईमान लाएँ और बनी इस्राईल को आपके साथ भेज दें, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई, तूफ़ान की मुसीबत दूर हुई, ज़मीन में यह हरियाली आई जो पहले कभी न देखी थी, खेतियाँ ख़ूब हुईं, दरख़्त ख़ूब फ़ले, तो फिरऔनी कहने लगे, यह पानी तो रेअमत था और ईमान न लाए, एक महीना तो टीक से गुज़रा, फिर अल्लाह तआला ने टिड्डी भेजी, यह खेतियाँ और फ़ल, दरख़्तों के पत्ते, मकानों के दरवाज़े, छतें, तख़्त, सामान, यहाँ तक कि लांहे की कीलें तक घ्रा गईं और फिरऔनियों के घरों में भर गईं, अब मिस्रियों ने परेशान होकर फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से दुआ

ज़रूर जाहिल लोग हो^(१०) (१३८) यह हाल तो बर्बादी का है जिसमें ये^(११) लोग हैं और जो कुछ कर रहे हैं निरा वातिल(मिथ्या) है^(१३९) कहा क्या अल्लाह के सिवा तुम्हारा और कोई खुदा तलाश करूँ हालांकि उसने तुम्हें ज़माने भर पर फ़ज़ीलत(बुजुर्गी) दी^(१४०) और याद करो जब हम ने तुम्हें फिराओन वालों से छुटकारा दिलाया कि तुम्हें बुरी मार देते तुम्हारे बेटे ज़िक्क करते और तुम्हारी बेटियाँ बाक़ी रखते, और इसमें रब का बड़ा फ़ज़ल हुआ^(१४१) (१४१)

सत्तरहवाँ सूक़

और हमने मूसा से^(१) तीस रात का वादा फ़रमाया और उनमें^(२) दस और बढ़ाकर पूरी की तो उसके रब का वादा पूरी चालीस रात का हुआ^(३) और मूसा ने^(४) अपने भाई हारून से कहा मेरी क्रोम पर भरे नायब(सहायक) रहना और इस्लाह(सुधार) करना और फ़सादियों की राह को दखल न देना^(५) और जब मूसा हमारे वादे पर हाज़िर हुआ और उससे उसके रब ने कलाम फ़रमाया^(६) अर्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे अपना दीवार(दर्शन) दिखा कि मैं तुझे देखूँ, फ़रमाया तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा^(७) हाँ इस पहाड़ की

لَهُمُ الرِّهَةُ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ قومٌ تجهلون ۖ إِنَّ هَؤُلَاءِ
مُتَّبِعُونَ مَا هُمْ فِيهِ وَبَطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ
قَالَ أَغْيَبَ اللَّهُ بَعِيْثَكُمْ إِلَهًا وَهُوَ فَضْلُكُمْ
عَلَى الْعَالَمِينَ ۖ وَإِذْ أَخْبَيْنَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ
بِسُوءِكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۖ يَقْتُلُونَ أَبْنَاءَكُمْ
وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۖ وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ
مِّنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ۖ وَوَعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ
لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَاهَا بِعَشْرِ فَمَتَّ مِيقَاتِ رَبِّيَ ۖ أَرْبَعِينَ
لَيْلَةً ۖ وَقَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي
قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ۖ
وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ ۖ قَالَ
رَبِّ ارْنِي أَنْظُرَ إِلَيْكَ ۖ قَالَ لَنْ تَرَانِي وَلَكِنْ
أَنْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ

مَنْزِلٌ

की दरख़ास्त की और ईमान लाने का वादा किया। उसपर एहद लिया। सात दिन यानी सनीचर में सनीचर तक टिंडी की मुसीबत में जकड़े रहे, फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ से छुटकारा पाया। ख़ेतिशों और फल जो बाक़ी रह गए थे, उन्हें देखकर कहने लगे, ये हमें काफ़ी हैं, हम अपना दीन नहीं छोड़ते, चुनांचे ईमान न लाए और एहद पूरा न किया और अपने बुरे कर्मों में लग गए। एक महीना ठीक से गुज़रा, फिर अल्लाह तआला ने ज़ुंए या घुन का अज़ाब उतारा। कुछ का कहना है कि ज़ुंए, कुछ कहते हैं घुन, कुछ कहते हैं एक और छोटा कीड़ा। इस कीड़े ने जो ख़ेतिशों और फल बाक़ी बचे थे वह ख़ा लिये। कपड़ों में घुस जाता था और खाल को काटना था। ख़ान में भर जाता था। अगर कोई दस बोरी गेहूँ चक्की पर ले जाता तो तीन मंग वापस लाता, बाक़ी सब कीड़े ख़ा जाते। ये कीड़े फिराओनियों के बाल, पलकें, भीवें चाट गए, जिस पर चंचक की तरह भर जाने। मोता दूभर कर दिया था। इस मुसीबत से फिराओनी चीख़ पड़े और उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया हम तौबह करते हैं। आप इस बला के दूर होने की दुआ फ़रमाइये। चुनांचे सात रोज़ के बाद यह मुसीबत भी हज़रत की दुआ से दूर हुई, लेकिन फिराओनियों ने फिर एहद तोड़ा और पहले से ज़्यादा बुरे काम करने लगे। एक महीना अमन में गुज़रने के बाद फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बंद दुआ की तो अल्लाह तआला ने मँडक भेजे और यह हाल हुआ कि आदमी बैठता था तो उसकी बैठक में मँडक भर जाने थे। बात करने के लिये मुंह खोलता तो मँडक फूट कर मुंह में पहुंचता। हांडियों में मँडक, ख़ानों में मँडक, चूल्हों में मँडक भर जाने थे, आग बूझ जाती थी। लेटने थे तो मँडक ऊपर सवार होते थे। इस मुसीबत से फिराओनी रो पड़े और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ की, अबकी बार हम पक्की तौबह करते हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उनसे एहद लिया और दुआ की तो सात दिन बाद यह मुसीबत भी दूर हुई। एक महीना आराम से गुज़रा, लेकिन फिर उन्होंने एहद तोड़ दिया और अपने क़ुर्र की तरफ़ लौटे। फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बंद दुआ फ़रमाई तो तमाम कुंओं का पानी, नेहरों और चश्मों का पानी, नील नदी का पानी, यहाँ तक कि उनके लिये हर पानी ख़ून बन गया। उन्होंने फिराओन से इसकी शिकायत की तो कहने लगा कि मूसा ने जादू से तुम्हारी नज़र बन्दी कर दी। उन्होंने कहा, कैसी नज़र बन्दी, हमारे बरतनों में ख़ून के सिवा पानी का नाम निशान ही नहीं। तो फिराओन ने हुक्म दिया कि मिस्री बनी इस्राईल के साथ एक ही बर्तन से पानी लें। तो जब बनी इस्राईल निकालते तो पानी निकलता, मिस्री निकालते तो उसी बर्तन से ख़ून निकलता। यहाँ तक कि फिराओनी ओरतें प्यास से आजिज़ होकर बनी इस्राईल की ओरतों के पास आईं, उनसे पानी मांगा तो वह पानी उनके बर्तन में आते ही ख़ून हो गया। तो फिराओनी औरतें कहने लगीं कि तू अपने मुंह में पानी लेकर मंग मुंह में कुल्ली कर दे। जबतक वह पानी इस्राईली औरत के मुंह में रहा, पानी था, जब फिराओनी औरत के मुंह में पहुंचा, ख़ून हो गया। फिराओन खुद प्यास से परेशान हुआ तो उसने गीले दरख़्तों की तमी चूरी, वह तमी मुंह में पहुंचते ही ख़ून हो गईं। मात गेज़ तक ख़ून के सिवा कोई चीज़ पीने को न मिली तो फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से दुआ की दरख़ास्त की और ईमान लाने का वादा किया। हज़रत मूसा ने दुआ फ़रमाई। यह मुसीबत भी दूर हुई मगर ईमान फिर भी न लाए।

(९) एक के बाद दूसरी और हर अज़ाब एक हफ़्ता कायम रहता और दूसरे अज़ाब से एक माह का फ़ासला होता।

तरफ देख ये अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो बहुत जल्द तू मुझे देख लेगा^(१०) फिर जब उसके रव ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया उसे टुकड़े टुकड़े कर दिया और मूसा गिरा वेहोश, फिर जब होश हुआ बोला पाकी है तुझे मैं तेरी तरफ रुजू लाया (पलटा) और मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ^(११) फरमाया ऐ मूसा मैं ने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों (संदेश) और अपने कलाम से तो ले जो मैंने तुझे अता फरमाया और शुक्र वालों में हो^(१२) और हमने उसके लिये तख्तियों में^(१३) लिख दी हर चीज़ की नसीहत और हर चीज़ की तफ़सील, और फरमाया ऐ मूसा इसे मज़बूती से ले और अपनी क़ौम को हुक्म दे कि इसकी अच्छी बातें अपनाएं^(१४) बहुत जल्द मैं तुम्हें दिखाऊंगा वेहुकों का घर^(१५) और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में नाहक अपनी वड़ाई चाहते हैं^(१६) और अगर सब निशानियां देखें उनपर ईमान न लाएं, और अगर हिदायत की राह देखें उसमें चलना पसन्द न करें^(१७) और गुमराही का रास्ता नज़र पड़े तो उसमें चलने को मौजूद हो जाएं यह इसलिये कि उन्होंने हमारी आयतें झुटलाई और उनसे वेख़बर बने^(१८) और जिन्होंने

الاعتراف

२२३

क़ान

تَرْبِيٍّ فَلَمَّا تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ
مُوسَىٰ صَوِقًا فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَنَكَ ثَبَّتْ
إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ يُوسُفُ إِنَّ
أَصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَتِي وَبِكَ لَاجِي ۝
فَخُذْ مَا آتَيْنَكَ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ وَكُتِبْنَا لَهُ
فِي الْأَوَّامِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا
لِكُلِّ شَيْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا
بِأَحْسَنِهَا سَأُرِيكُمْ دَارَ الْفَاسِقِينَ ۝ سَاصْرِفْ
عَنْ آيَاتِي الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَلَنْ يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ إِلَّا يُؤْمِنُوا بِهَا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ
الرَّشَادِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ
يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۝ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا
عَنْهَا غَافِلِينَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ

مَعْرُوفٍ

(१०) और दज़रत मूसा अलौहिस्सलाम पर ईमान न लाए।

(११) कि वह आपकी दुआ कुबूल फरमाएगा।

(१२) यानी नील नदी में, जब चार बार उन्हें अज़ाबों से निज़ात दी गई और वो किसी एहद पर क़ायम न रहे और ईमान न लाए और क़फ़र न छोड़ा, तो वह मौआद पूरी होने के बाद, जो उनके लिये मुकरर फरमाई गई थी, उन्हें अल्लाह नआला ने दुबा कर हत्नाक कर दिया।

(१३) चिन्कल भी ध्यान न देते और तबज़ह न करते थे।

(१४) यानी बनी इस्राईल को।

(१५) यानी मित्र और शत्रु।

(१६) नहरों, दरख्तों, फलों, खेतियों और पैदावार की बहुतायत से।

(१७) इन तमाम इमारतों, महलों और बागों को।

(१८) फिराँज और उसकी क़ौम को दरखास मुहरम के इवान के बाद।

(१९) और उनकी इबादत करने थे, इब्ने ज़रीह ने कहा कि ये वून गाय की शकल के थे, उनका देखकर बनी इस्राईल।

(२०) कि इतनी निशानियाँ देखकर भी न समझे कि अल्लाह एक है, उसका कोई शरीक नहीं, उसके सिवा कोई पूजनीय नहीं, और फिराँज की इबादत जायज़ नहीं।

(२१) वून परगन, भूर्ति पूजक।

(२२) यानी खुदा वह नहीं होता जो तलाश करके बना लिया जाए, बल्कि खुदा वह है जिसने तुम्हें वुजुगी दी क्योंकि वह वुजुगी देने और एहसान पर सक्षम है, तो वही इबादत के लायक है।

(२३) यानी जब उसने तुम पर ऐसी अज़ीम नेअमन फरमाई तो तुम्हें कब मज़ता है कि तुम उसके सिवा और किसी की इबादत करो।

सूरए अअराफ़ - सत्तरहवाँ सूक़

(१) तीसरा अता फरमाने के लिये त्रिलहज़ा मन्वीने की।

(२) त्रिलहज़ा की।

(३) मूसा अलौहिस्सलाम को बनी इस्राईल से वादा था कि जब अल्लाह नआला उनके मुन्बत कि जोर को तब फरमा

हमारी आयतें और आखिरत के दरवार को झुटलाया उनका सब किया धरा अकारत गया उन्हें क्या बदला मिलेगा मगर वही जो वो करते थे (१४८)

अठारहवाँ सूक़

और मूसा के^(१) वाद उसकी क्रौम अपने जेवरों से^(२) एक वछड़ा बना बैठी बेजान का धड़^(३) गाय की तरह आवाज़ करता क्या न देखा कि वह उनसे न बात करता है और न उन्हें कुछ राह बताए^(४) उसे लिया और वो ज़ालिम थे^(५) (१४८) और जब पछताए और समझे कि हम वहके बोले अगर हमारा रब हमपर मेहर (मेहरबानी) न करे और हमें न वख़ो तो हम तबाह हुए (१४९) और जब मूसा^(६) अपनी क्रौम की तरफ़ पलटा गुस्से में भरा झुंझलाया हुआ^(७) कहा तुम ने क्या बुरी मेरी जानशीनी (उत्तराधिकार) की मेरे वाद^(८) क्या तुमने अपने रब के हुक्म से जल्दी की^(९) और तख़्तियाँ डालदीं^(१०) और अपने भाई के सर के बाल पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगा^(११) कहा ऐ मेरे माँ जाए^(१२) क्रौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे मार डालें तू मुझपर दुश्मनों की न हँसा^(१३) और मुझे ज़ालिमों में न मिला^(१४) (१५०) अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे और मेरे भाई

الْأَجْرَ حِطَّتْ أَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَى مِنْ
بَعْدِهِ مِنْ جُلَيْهِمْ عَجَلًا جَسَدًا لَّهُ خَوَارٌ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ
لَا يَكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا
ظَالِمِينَ ۝ وَلَمَّا سَقَطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ
قَدْ ضَلُّوا قَالُوا لَئِنْ لَمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا
لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَى إِلَى
قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي
مِنْ بَعْدِي ۝ أَعْجَلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۝ وَالْقَوْمُ الْأَكْوَابُ
وَإِذْ يَرْأْسُ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ قَالَ ابْنَ أُمِّرَانَ
الْقَوْمُ اسْتَخَفُّونَنِي وَكَانُوا يَفْتُلُونَنِي ۝ فَلَا
تَسْمِعْ بِيَ الْأَعْدَاءُ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ
الظَّالِمِينَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِإِخْوَتِي وَاَدْخِلْنَا

مَثَلٌ

देगा तो वह उनके पास अल्लाह तआला की तरफ़ से एक किताब लाएंगे जिसमें हलाल और हराम का बयान होगा। जब अल्लाह तआला ने फ़िरऔन को हलाक किया तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने रब से उस किताब के उतारने की दरख़्वास्त की। हुक्म हुआ कि तीस गोत्रे रखो। जब वो गोत्रे पूरे कर चुके तो आपका अपने मुंह में एक तरह की वू मेहमूस हुई आपने मिसबाक की। फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया कि हमें आपके मुबास्क मुंह से बड़ी अच्छी खुशू आया करती थी, आपने मिसबाक करके उसको ख़त्म कर दिया। अल्लाह तआला ने हुक्म फ़रमाया कि माद ज़िलहज़ में दस गोत्रे और रखें और फ़रमाया कि ऐ मूसा, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि गोत्रेदार के मुंह की खुशू में नज़दीक क़नूरी की सुगंध से ज़ादा अच्छी है।

(४) पहाड़ पर प्रार्थना के लिये जाते वक़्त।

(५) आयत से साबित हुआ कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से क़लाम फ़रमाया। इसपर हमारा ईमान है, और हमारी क्या हकीकत है कि हम इस क़लाम की हकीकत से बहस कर सकें। किताबों में आया है कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम क़लाम सुनने के लिये हाज़िर हुए तो आपने तहारत की और पाक़ीज़ा लियास पहना और रोज़ा रखकर तुर पहाड़ पर हाज़िर हुए। अल्लाह तआला ने एक वादल ज़ारा जिसने पहाड़ को हर तरफ़ से चार फ़रसंग के बराबर ढक लिया। शैतान और ज़मीन के जानवर, यहाँ तक कि साथ रहने वाले फ़रिश्ते तक वहाँ से अलग कर दिये गए और आपके लिये आसमान ख़ाल दिया गया। आपने फ़रिश्तों को साफ़ देखा कि हवा में खड़े हैं और आपने अल्लाह के अर्श को साफ़ देखा, यहाँ तक कि तख़्तियों पर क़लमों की आवाज़ सुनी और अल्लाह तआला ने आप से क़लाम फ़रमाया। आपने उसकी बारागाह में अपनी बातें पेश कीं। अपने अपना क़लाम करीम सुनाकर तवाज़ा। हज़रत ज़िब्रील अलैहिस्सलाम आपके साथ थे लेकिन जो अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया वह उन्होंने ने कुछ न सुना। हज़रत मूसा का क़लाम रब्बानी की लज़ज़त ने उसके दीदार का आरज़ूमन्द बनाया। (श्वाज़िन बग़ैरह)

(६) इन आँखों से सवाल करके, बल्कि अल्लाह का दीदार चिन्ता सवाल के, केवल उसकी अता और मेहरबानी से हासिल होगा, वह भी इन फ़ानी यानी वश्वर आँखों से नहीं, बल्कि बाक़ी आँख से, यानी कोई इल्मान मुझे दुनिया में देखने की ताक़त नहीं रखता। अल्लाह तआला ने यह नहीं फ़रमाया कि मेरा देखना सम्भव नहीं। इससे साबित हुआ कि अल्लाह का दीदार सम्भव है, अगरचे दुनिया में न हो। क्योंकि सही हदीसों में है कि क़यामत के दिन ईमान वाले अपने रब के दीदार से फ़ैज़याव किये जाएंगे। इसके अलावा यह कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अफ़्रिफ़ बिल्वाह यानी अल्लाह को पहचानने वाले हैं। अगर अल्लाह का दीदार सम्भव न होता तो आप हरगिज़ सवाल न फ़रमाते।

(७) और पहाड़ का साबित रहना सम्भावना की बात है, क्योंकि उसकी निरवत फ़रमाया “जअलहू दक्कन” उसको पाश पाश कर दिया। तो जो चोत्र अल्लाह तआला की की हुई हैं, और जिसको वह मौज़ूद फ़रमाए, मुमकिन है कि वह न मौज़ूद हो अगर

को बख़्शा दे^(१५) और हमें अपनी रहमत के अन्दर ले ले तू सव मेहर वालों से बढ़कर मेहर वाला^(१५:२)

उन्नीसवाँ सूक़

वेशक वो जो वछड़ा ले बैठे बहुत जल्द उन्हें उनके रब का ग़ज़व (क्रोध) और ज़िल्लत पहुंचना है दुनिया की ज़िन्दगी में, और हम ऐसा ही बदला देते हैं वोहतान हायों (आरोपियों) को^(१५:२) और जिन्होंने बुराइयों की और उनके बाद तौबा की और ईमान लाए तो उसके बाद तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेहरबान है^(१५:३) और जब मूसा का गुस्सा थमा तख्तियाँ उठलीं और उनकी तहरीर (लेख) में हिदायत और रहमत है उनके लिये जो अपने रब से डरते हैं^(१५:४) और मूसा ने अपनी क्रौम से सत्तर मर्द हमारे वादे के लिये चुने^(१५) फिर जब उन्हें ज़लज़ले ने लिया^(१६) मूसा ने अर्ज़ की ऐ रब मेरे तू चाहता तो पहले ही इन्हें और मुझे हलाक कर देता^(१७) क्या तू हमें उस काम पर हलाक फ़रमाएगा जो हमारे वेअक़ल्लों ने किया^(१८) वह नहीं मगर तेरा आजमाना, तू उससे वहकाए जिसे चाहे और राह दिखाए जिसे चाहे, तू हमारा मौला (मालिक) है तो हमें बख़्शा दे और हमपर मेहर (कृपा) कर और तू सबसे बेहतर बख़्शने वाला है^(१५:५) और हमारे लिये

अलफ़्ता

२३०

क़ाल क़ल

فِي رَحْمَتِكَ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذَلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ۝ وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَأَمَّوْا ۖ إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبَ أَخَذَ الْاَلْوَاهَ ۖ وَفِي نُحُوتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِأَرْبِهِمْ يَرْهُبُونَ ۝ وَاخْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّيَشْفَعُوا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّايَ أَتَهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ مِنَّا ۖ إِنَّ هِيَ إِلَّا وَشْوَشُكَ ۖ تَفْضِلُ بَيْنَا مَن نَّشَاءُ وَتَهْدِي مَن نَّشَاءُ ۖ أَنْتَ وَلِيِّنَا ۖ فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ۝ وَاكْتُبْ لَنَا

مَنْزِل

उसको न मौजूद करें, क्योंकि वह अपने काम में मुस्तज़ार है। इससे साबित हुआ कि पहाड़ का टहरा रहना सम्भव बात है, असम्भव नहीं और जो चीज़ सम्भव बात पर मुअल्लक की जाए, वह भी मुमकिन ही होती है, मुद्दाल नहीं होती। लिहाज़ा अल्लाह का दीदार, जिसको पहाड़ के साबित रहने पर मुअल्लक फ़रमाया गया, वह मुमकिन हुआ तो उनका क़ौल ग़लत है, जो अल्लाह का दीदार असम्भव बताते हैं।

(८) बनी इस्राईल में से।

(९) तौरात की, जो सात या दस थीं, ज़बरजद या ज़मरूद की।

(१०) उसके आदेशों का अनुकरण करें।

(११) जो आख़िरत में उनका ठिकाना है। हसन और अता ने कहा कि वेहुक्मों के घर से जहन्नम मुराद है। क़तादा का क़ौल है कि मानी ये हैं कि मैं तुम्हें शाम में दाख़िल करूंगा और गुज़री हुई उम्मतों की मंज़िलें दिखाऊंगा जिन्होंने अल्लाह तआला की मुख़ालिफ़त की, ताकि तुम्हें इससे सबक मिले। अतिया औफ़ी का क़ौल है कि “वेहुक्मों का घर” से फिरऔन और उसकी क्रौम के मकानात मुराद हैं, जो मिस्त्र में हैं। सदी का क़ौल है कि इससे काफ़िरो की मंज़िलें मुराद हैं। क़लबी का कहना है कि आद व समूद और हलाक हुई उम्मतों की मंज़िलें मुराद हैं, जिनपर अरब के लोग अपने सफ़रों में होकर गुज़रा करते थे।

(१२) जुन्नून रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला क़ुरआन की हिकमत से एहले बातिल के दिलों का सम्मान नहीं फ़रमाता। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, मुराद यह है कि जो लोग मेरे बन्दों पर जुल्म करते हैं और मेरे वलियों से लड़ते हैं, मैं उन्हें अपनी आयतों के कुबूल और तस्दीक से फेर दूंगा ताकि वो मुझपर ईमान न लाएं। यह उनकी दुश्मनी की सज़ा है कि उन्हें हिदायत से मेहरूम किया गया।

(१३) यही घमण्ड का फल और घमण्डी का अंजाम है।

सूरए अअराफ़ - अठारहवाँ सूक़

(१) तू की तरफ़ अपने रब की प्रार्थना के लिये जाने के।

(२) जो उन्होंने फिरऔन की क्रौम से अपनी ईद के लिये कुछ समय के लिये उधार लिये थे।

(३) और उसके मुंह में हज़रत जिब्रील की घोड़ी के क़दमों के नीचे की मिट्टी डाली जिसके अमर से वह...

(४) दूषित है, आजिज़ है, जमाद है या हैवान, दोनों तकदीरों पर सलाहियत नहीं रखता कि पूजा जाए।

(५) कि उन्होंने अल्लाह तआला की इबादत से मुंह फेरा और ऐसे आजिज़ और नाक़िस बख़्शे को पूजा।

इस दुनिया में भलाई लिख^(६) और आखिरत में वेशक हम तेरी तरफ रुजू लाएं फरमाया^(७) मेरा अजाब जिसे चाहूँ दूँ और मेरी रहमत हर चीज़ को घेरे है^(८) तो बहुत जल्द मैं^(९) नमतों को^(१०) उनके लिये लिख दूंगा जो डरते और ज़कात देते हैं और वो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं^(११) वो जो गुलामी करेंगे उस रसूल बपड़े गैब की खबर देने वाले की^(१२) जिसे लिखा हुआ पाएंगे अपने पास तौरात और इंजील में^(१३) वो उन्हें भलाई का हुक्म देगा और बुराई से मना फरमाएगा और सुथरी चीज़ें उनके लिये हलाल फरमाएगा और गन्दी चीज़ें उनपर हराम करेगा और उनपर से वो बोझ^(१४) और गने के फंदे^(१५) जो उनपर^(१६) थे उतारेगा तो वो जो उसपर ईमान लाएं और उसकी तज़ीम (आदर) करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी (अनुकरण) करें जो उसके साथ उतरा^(१७) वही बामुराद हुए^(१८) १:५७

बीसवाँ सूकू

तुम फरमाओ ऐ लोगो मैं तुम सबकी तरफ उस अल्लाह का रसूल हूँ^(१) कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी को है, उसके सिवा कोई मअवूद नहीं, जिलाए और मारे, तो ईमान

فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُنَا
إِلَيْكَ ۖ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۚ وَ
رَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ
يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا
يُؤْمِنُونَ ۚ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ
الَّذِي يُبْعَثُونَ ۚ مَكْتُوبًا ۚ عِنْدَهُمْ فِي
التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ رِيَاسَةٌ ۚ مِمَّنْ بَالِغُ رُفٍّ وَيُنْهَضُ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ
الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ
عَلَيْهِمْ ۚ فَاَلَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ
وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُقْلِحُونَ ۚ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ
إِلَيْكُمْ جَمِيعًا ۚ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ

سُورَةُ

- (६) अपने सब की उपासना पूरी करके तूर पर्वत से...
- (७) इसलिये कि अल्लाह तआला ने उनको खबर दे दी थी कि सामरी ने उनकी क़ौम को गुमराह कर दिया.
- (८) कि लोगों को बछड़ा पूजने से न रोका.
- (९) और मेरे तौरात लेकर आने का इन्तिज़ार न किया.
- (१०) तौरात की, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने.
- (११) क्योंकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अपनी क़ौम का ऐसी बदतरीन बुराई में पड़ जाना बहुत बुरा लगा, तब हज़रत हारून अलैहिस्सलाम ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से.
- (१२) मैंने क़ौम को रोकने और उनका उपदेश और तसीहत करने में कोई कमी नहीं की, लेकिन.
- (१३) और मेरे साथ ऐसा सुतूक न करो जिससे वो खुश हों.
- (१४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने भाई की बात कुबूल करके अल्लाह की बास्ताह में.
- (१५) अगर हम में किसी से कोई कमी या ज़ियादती हो गई. यह हुआ आपने भाई को राज़ी करने और दुश्मनों की जलन दूर करने के लिये फरमाई.

सूरए अअराफ़ - उन्नीसवाँ सूकू

- (१) इस आयत से साबित हुआ कि गुनाह, चाहे छोटे हों या बड़े, जब बन्दा उनसे तौबह करता है तो अल्लाह तबारक व तआला अपने फ़ज़ल व रहमत से उन सबको माफ़ कर देता है.
- (२) कि वो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह के समक्ष हाज़िर होकर क़ौम की ग़ौपूजा की ख़ता पर माफ़ी माँगे. चुनांचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उन्हें लेकर हाज़िर हुए.
- (३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फरमाया कि भूकम्प में जकड़े जाने का कारण यह था कि क़ौम ने जब बछड़ा कायम किया था, ये उनसे अलग न हुए थे. (ख़ाज़िन)
- (४) यानी मीक़ात में हाज़िर होने से पहले, ताकि बनी इज़्राईल उन सबकी हलाकत अपनी आँखों से देख लेते और उन्हें मुझ पर क़त्ल की तोहमत लगाने का मौक़ा न मिलता.
- (५) यानी हमें हलाक न कर, और अपनी मेहरबानी फरमा.
- (६) और हमें फ़रमाँबरदारी की तौफ़ीक़ अता फरमा.

- (७) अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से।
 (८) मुझ इन्जिलियार है, सब मेरे ममलूक और बन्दे हैं, किसी को ऐतिराज़ की मजाल नहीं।
 (९) दुनिया में नेक और बंद सब को पहुंचती है।
 (१०) आखिरत की।

(११) यहाँ मुफ़्स्सिरों की सहमति के अनुसार, रसूल से सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुराद हैं। आपका ज़िक्र रिसालत के गुण से किया गया, क्योंकि आप अल्लाह और उसकी सृष्टि के बीच माध्यम हैं। रिसालत के कर्तव्य अदा करने हैं। अल्लाह तआला के आदेश, शरीअत और बेय-अवैय बातों के अहकाम बन्दों तक पहुंचाते हैं। इसके बाद आपकी प्रशंसा में नबी फ़रमाया गया। इसका अनुवाद आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह ने अज्ञात की ख़बरें देने वाले किया है, और यह अन्यन्त दुर्लभ अनुवाद है, क्योंकि "नबी" ख़बर को कहते हैं, जो जानकारी की नज़र से मुफ़ीद हो और झूट से ख़ाली। क़ुरआन शरीफ़ में यह शब्द इस अर्थ में कसरत से इस्तेमाल हुआ है। एक जगह इरशाद हुआ "कुल हुवा नवज़न अज़ीमुन" (तुम फ़रमाओ वह बड़ी ख़बर है - सूरए ख़ाद, आयत ६७) एक जगह फ़रमाया "तिल्का मिन अम्बाइल गैब नूहीहा इलक" (ये गैब की ख़बरें हम तुम्हारी तरफ़ वही करते हैं - सूरए हूद, आयत ४९) एक जगह फ़रमाया "क़लम्मा अम्बाअहुम बि अस्माइहिम" (जब उसने यानी आदम ने उन्हें सबके नाम बता दिये - सूरए बक्ररह - आयत ३३) और कई आयतें हैं जिनमें यह शब्द इस मानी में आया है। फिर यह शब्द या कर्ता के मानी में हांवा या कर्म के मानी में। पहली सूत में इसके मानी गैब की ख़बरें देने वाले और दूसरी सूत में इसके मानी होंगे गैब की ख़बरें दिये हुए, और दोनों मानी को क़ुरआन शरीफ़ से पुष्टि मिलती है। पहले अर्थ की पुष्टि इस आयत से होती है "नब्बिअ इबादी" (यानी ख़बर दो मेरे बन्दों को - सूरए हिज़र, आयत ४९). दूसरी आयत में फ़रमाया "कुल अउ नब्बिअकुम" (तुम फ़रमाओ क्या मैं तुम्हें उस से बेहतर चीज़ बता दूं - सूरए आले इमरान, आयत १५). और इसी प्रकार का है हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का इरशाद जो क़ुरआन शरीफ़ में आया "उनब्बिअकुम बिमा ताकुलूना वमा तदख़िरून" (और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते हो और जो अपने घरों में जमा कर रखते हो - सूरए आले इमरान, आयत ४९) . और दूसरी सूत की नाईद इस आयत से होती है "नब्बानियल अलीमुल ख़बीर" (मुझ इल्म वाले ख़बरदार ने बताया - सूरए तहरीम, आयत ३). और हज़ीज़त में नबी गैब की ख़बरें देने वाले ही होते हैं। तफ़्सीर ख़ाज़िन में है कि आपके गुण में नबी फ़रमाया क्योंकि नबी होना महान और उत्तम दर्जों में से है और यह इसका प्रमाण है कि आप अल्लाह के नज़दीक बहुत बलन्द दर्जा रखने वाले और उसकी तरफ़ से ख़बर देने वाले हैं। उम्मी का अनुवाद आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह ने वे पढ़े फ़रमाया। यह अनुवाद बिल्कुल हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा के इरशाद के मुताबिक़ है और यकीनन उम्मी होना आपके चमत्कारों में से एक चमत्कार है कि दुनिया में किसी में पढ़े नहीं और फ़िदाव वह लाए जिसमें पिछड़ों और आने वालों और अज्ञात की जानकारी है। (ख़ाज़िन)

(१२) यानी तौरात व इंज़ील में आपकी बात और प्रशंसा और आपका नबी होना लिखा पाएंगे। हज़रत अता इब्ने यसार ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रदियल्लाहो अन्हो से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वो गुण दरियाफ़्त किये जो तौरात में बयान किये गए हैं। उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर के जो औराफ़ अर्थात गुण और विशेषताएं क़ुरआन शरीफ़ में आए हैं उन्हीं में की कुछ विशेषताएं तौरात में बयान की गई हैं। इसके बाद उन्होंने पढ़ना शुरू किया "ऐ नबी हमने तुम्हें भेजा गवाह और खुशख़बरी देने और डराने वाला और उम्मतों का दिग्दर्शन बनाकर। तुम मेरे बन्दे और मेरे रसूल हो। मैं ने तुम्हारा नाम मुनवक्कलन रखा, न बुरे व्यवहार वाले हो, न सफ़्त मित्राज, न बाज़ारों में आवाज़ बलन्द करने वाले, न बुराई से बुराई को दूर करो, लेकिन ख़ताकारों का माफ़ करते हो और उनपर एहसान फ़रमाने हो। अल्लाह तआला तुम्हें न उठाएगा जबतक कि तुम्हारी वरक़त से ग़ैर मुस्तज़ीम मिल्लत को इस तरह राशन न फ़रमादे कि लांग सच्चाई और विश्वास के साथ "लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" पुकारने लगें और तुम्हारी बदौलत अंधी औंधे देखने वाली और बेहरे कान सुनने वाले और पदों में लिपटे हुए दिल कुशादा हो जाएंगे।" हज़रत कअव अहवार से हुज़ूर की विशेषताओं में तौरात शरीफ़ का यह मज़मून भी नक़ल हुआ कि अल्लाह तआला ने आपकी प्रशंसा में फ़रमाया कि मैं उन्हें हर ख़ूबी के क़ाबिल करूंगा और हर अच्छी स़िफ़त और आदत अता फ़रमाऊंगा और दिल के इन्मीतान और प्रतिष्ठा को उनका लियाम बनाऊंगा और ताअतों व एहसान को उनका तरीक़ा करूंगा और तक्रबा को उनका ज़मीर और हिक़मत को उनका राज़दार और सच्चाई और निष्ठा को उनकी तबीअत और माफ़ करने तथा मेहरबान होने को उनकी आदत और इत्साफ़ को उनकी प्रकृति और हफ़ के इज़हार को उनकी शरीअत और हिदायत को उनका इमाम और इस्लाम को उनकी मिल्लत बनाऊंगा। अहमद उनका नाम है। सृष्टि को उनके सदक़ में गुमराही के बाद हिदायत और जिहालत के बाद इल्म व मअरिफ़त और गुमनामी के बाद बलन्दी और इज़ज़त अता करूंगा और उन्हीं की वरक़त से क़िल्लत के बाद महबूत इनायत करूंगा। उन्हीं की बदौलत विभिन्न क़बीलों, अलग अलग ख़्वाहिशों और विरोध रखने वाले दिलों में उत्क़त पैदा करूंगा और उनकी उम्मत को सारी उम्मतों से बेहतर करूंगा। एक और हदीस में तौरात शरीफ़ से हुज़ूर की ये विशेषताएं नक़ल की गई हैं। मेरे बन्दे अहमदे मुस्तज़ार, उनका जन्मस्थान मक्क़ए मुक़र्रमा और हिज़रत स्थल मदीनए तैय्यिबह है, उनकी उम्मत हर हाल में अल्लाह की बहुत प्रशंसा करने वाली है। ये कुछ नक़लें अहदीस से पेश की गईं। आममानी फ़िदावें हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की प्रशंसा और गुणगान से भरी हुई थीं। फ़िदाव वाले हज़ ज़माने में अपनी फ़िदावों में काट छोट करने रहे और उनकी बड़ी कोशिश इसी में रही कि हुज़ूर का ज़िक्र अपनी फ़िदावों में नाम को न छोड़ें। तौरात व इंज़ील वग़ैरह उनके हाथ में थीं इसलिये उन्हें इसमें कुछ मुश्किल न थी, लेकिन हज़ाग़ परिवर्तन करने के बाद भी मौजूदा ज़माने की वायक़ल में हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वशाहत का कुछ न कुछ विशाव वाक़ी ग़ हो गया।

लाओ अल्लाह और उसके रसूल वेपढ़े गैब बताने वाले पर कि अल्लाह और उसकी बातों पर ईमान लाते हैं और उनकी गुलामी करो कि तुम राह पाओ (१:५८) और मूसा की क़ौम से एक गिरोह है कि हक़ की राह बताता और उसी से (१) इन्साफ़ करता (१:५९) और हमने उन्हें बाँट दिया बारह क़बीले गिरोह गिरोह और हमने वही भेजी मूसा को जब उससे उसकी क़ौम ने (१) पानी मांगा कि उस पत्थर पर अपना असा (लाय) मारो तो उसमें से बारह चश्मे फूट निकले (२) हर गिरोह ने अपना घाट पहचान लिया और हमने उनपर अब्र (बादल) सायवान किया (३) और उनपर मन्नो सलवा उतारा, खाओ हमारी दी हुई पाक चीज़ें और उन्होंने (४) हमारा कुछ नुक़सान न किया लेकिन अपनी ही जानों का बुरा करते थे (१:६०) और याद करो जब उन (५) से फ़रमाया गया इस शहर में बसो (६) और इसमें जो चाहो खाओ और कहो गुनाह उतरे और दरवाज़े में सिजदा करते दाख़िल हो हम तुम्हारे गुनाह वरख़ा देंगे, बहुत जल्द नेकों को ज़्यादा अता फ़रमाएंगे (१:६१)

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ قَامُوا بِاللهِ وَ
رَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمَاتِهِ
وَاتَّبَعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَمِنْ قَوْمِ مُوسَى
أُمَّةٌ يَهْتَدُونَ بِالْحَقِّ وَيُبْغِضُونَ ۖ وَكَفَّعْنَاهُمْ
اِثْنَيْ عَشَرَ نَفْسًا ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى
إِذْ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ ۖ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ
فَاتَّبَعْتَ مِنْهُ اِثْنًا عَشَرَ عِثَّةً ۖ قَدْ عَلِمَ
كُلُّ أَتَّاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ ۖ
وَأَنزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّاءَ وَالسَّلَوى ۖ كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ
مَا رَزَقْنَكُمْ ۖ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ۝ وَإِذْ قِيلَ لَهُمْ اسْكُنُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ
وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ ۖ وَقُولُوا حِطَّةً ۖ وَادْخُلُوا الْبَابَ
سُجَّدًا تُغْفِرُ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ ۖ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ۝

منزل

चुनांचे ब्रिटिश एन्ड फॉरिन बायबल सोसायटी लाहौर १९३१ ई. की छपी हुई बायबल में यूहन्ना को इंजील के बाब चौदह की सोलहवीं आयत में है : और मैं बाप से दरख्वास्त करूंगा तो वह तुम्हें दूसरा मददगार वरखोगा कि अब तक तुम्हारे साथ रहे.” “मददगार” शब्द पर टिप्पणी है उसमें इसके मानी वकील या शफ़ीअ लिखे तो अब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद ऐसा आने वाला जो शफ़ीअ हो, और अब्दुल आबाद तक रहे यानी उसका दीन कभी स्थगित न हो, सिवाय सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कौन है.

फ़िर उन्तीसवीं और तीसवीं आयत में है : “और अब मैंने तुमसे उसके होने से पहले कह दिया है ताकि जब हो जाए तो तुम यकीन करा इसके बाद मैं तुमसे बहुत सी बातें नहीं करूंगा क्योंकि दुनिया का सरदार आता है और मुझ में उसका कुछ नहीं”. कैसी साफ़ बशारत है और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत को हुजूर की विलादत का कैसा मुन्नज़िर बनाया और शौक़ दिलाया है, और दुनिया का सरदार ख़ास सैयदे आलम का अनुवाद है और यह फ़रमाता कि मुझ में उसका कुछ नहीं, हुजूर की महानता का इज़हार और उनके हुजूर अपना भरपूर अदब और विनम्रता है. फिर इसी किताब के अध्याप सोलह की सातवीं आयत में है : “लेकिन मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिये फ़ायदेमन्द है क्योंकि अगर मैं न जाऊँ तो वह मददगार तुम्हारे पास न आएगा लेकिन अगर जाऊँ तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा”. इसमें हुजूर की बशारत के साथ इसका भी साफ़ इज़हार है कि हुजूर ख़ातिमुल अम्बिया हैं. आपका जुद्ध जब ही होगा जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी तशरीफ़ ले जाएंगे.

इसकी तरहवीं आयत में है: लेकिन जब वह पानी सच्चाई की रूढ़ आएगा तो तुमको सारी सच्चाई की राह दिखाएगा, इसलिये कि वह अपनी तरफ़ से न कहेगा, लेकिन जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और तुम्हें आयन्दा की ख़बरें देगा.” इस आयत में बताया गया कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आगमन पर दीने इलाही की तकमील हो जाएगी और आप सच्चाई की राह याती सच्चे दीन को पूरा कर देंगे. इससे यही नतीजा निकलता है कि उनके बाद कोई नबी न होगा और ये कलामे कि अपनी तरफ़ से न कहेगा जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, ख़ास “मा यन्निको अनिल हवा इन हुवा इल्ला वहयुय यूहा” (और वह कोई बात अपनी ख़्वादिश से नहीं करते, वह तो नहीं मगर वही जो उन्हें की जाती है - सूरए नज़्म, आयत ५) का अनुवाद है, और यह ज़ुमला कि तुम्हें आयन्दा की ख़बर देगा, इसमें साफ़ बयान है कि वह नबीय अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम गैबी उलूम तालीम फ़रमाएंगे जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया : युअल्लिमुकुम मालम तक्ज़ू तअलमून (और तुम्हें वो सिखाया जो तुम नहीं जानते थे) और “मा हुवा अलल गैब बिदनीन” (और यह नबी गैब बताने में क़ज़ूस नहीं - सूरए तकवीर, आयत २४).

(१३) यानी सख़्त तकलीफ़ें जैसे कि तौबह में अपने आप को क़त्ल करना और शरीर के जिन अंगों से गुनाह हुए हों. उनका काट डालना.

(१४) यानी मुश्किल आदेश जैसे कि बदन और कपड़े के जिस स्थान को नापाकी लगे. इसको कैंची से काट डालना और ग़नीमतों

तो उनमें के ज़ालिमों ने बात बदल दी उसके खिलाफ़ जिसका उन्हें हुक्म था^(१) तो हमने उनपर आसमान से अज़ाब भेजा बदला उनके जुल्म का^(१०) (१६२)

इक्कीसवाँ सूक़

और उनसे हाल पूछो उस बस्ती का कि दरिया किनारे थी^(१) जब वो हफ़्ते के वारे में हद से बढ़ते^(२) जब हफ़्ते के दिन उनकी मछलियां पानी पर तैरती उनके सामने आतीं और जो दिन हफ़्ते का न होता, न आतीं, इस तरह हम उन्हें आजमाते थे उनकी बेहुकमी के कारण^(३) और जब उनमें से एक गिराह ने कहा क्यों नसीहत करते हो उन लोगों को जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उन्हें साख़्त अज़ाब देने वाला, बोले तुम्हारे रब के हज़ूर माज़िरत (क्षमा याचना) को^(४) और शायद उन्हें डर हो^(५) (१६४) फिर जब भुला बैठे जो नसीहत उन्हें हुई थी हमने वचा लिये वो जो बुराई से मना करते थे और ज़ालिमों को बुरे अज़ाब में पकड़ा बदला उनकी नाफ़रमानी का^(६) (१६५) फिर जब उन्होंने ने गुमानिअत (निपेध) के हुक्म से सरकशी (बगावत) की

अलफ़्ज़ान

२३८

क़ाल शक़

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ۖ وَسَأَلَهُمُ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ مِمَّا يُبْعَدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِينَتُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرْعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ ۖ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ كَذَلِكَ ۖ نَبْلُوهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۖ وَإِذْ قَالَتْ أُمَةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تُعْطُونَ قَوْمًا ۚ اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۚ قَالُوا مَعْذِرَةُ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَعَلَاهُمْ يَتَّقُونَ ۖ فَلَمَّا نَسُوا مَا يُدْعَوْنَ بِهِ أَنْجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَنَابِهِم مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِمْ ۖ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۖ فَلَمَّا عَثَوْا عَنْ مَا نُهَوُّوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً

مَثَلًا

وَقَالَ لَهُمْ
مَنْ هَؤُلَاءِ
الَّذِينَ يُنَادُونَكَ
بِغَيْرِ اسْمِ اللَّهِ
عَلَىٰ أَنْ تَكُونَ
مِنَ الْمُتَّقِينَ

का जलाना और गुनाहों का मकानों के दरवाज़ों पर ज़ाहिर होना बग़ैरह.

(१५) यानी मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर.

(१६) इस नूर से क़ुरआन शरीफ़ मुराद है, जिससे मूмин का दिल ग़ैशन होता है और शक व जिहालत की अंधेरियाँ दूर होती हैं और शक व यकीन का प्रकाश फैलता है.

सूरए अअराफ़ - बीसवाँ सूक़

(१) यह आयत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की आम तबुच्च की दलील है कि आप सारे जगत के रसूल हैं और कुल सृष्टि आपकी उम्मत. बुझारी व मुस्लिम की हदीस है, हज़ूर फ़रमाते हैं, पाँच चीज़ें मुझे ग़री अता हुई जो मुझसे पहले किसी को न मिलीं (१) हर नबी ख़ास क़ौम की तरफ़ भेजा जाता था, और मैं लाल और काले की तरफ़ भेजा गया. (२) मेरे लिये ग़मीमते हलाल की गईं और मुझसे पहले किसी के लिये नहीं हुई थीं. (३) मेरे लिये ज़मीन पाक और पाक करने वाली (तयम्मूम के क़ाबिल) और मस्जिद की गईं, जिस किसी को कहीं नमाज़ का वक़्त आए वहीं पढ़ ले. (४) दुश्मन पर एक महीने की मुसाफ़त तक मेरा रोब डाल कर मेरी मदद फ़रमाई गई. (५) और मुझे शफ़ाअत अता फ़रमाई गई. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में यह भी है कि मैं तमाम सृष्टि की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया और मेरे साथ अम्बिया ख़त्म किये गए.

(२) यानी सच्चाई से.

(३) तेह में.

(४) हर गिराह के लिये एक चश्मा.

(५) ताकि धूप से अन्न में रहे.

(६) नाशुक्की करके.

(७) बनी इस्राईल.

(८) यानी बैतुल मक़दिस में.

(९) यानी हुक्म तो यह था कि "हिततुन" कहते हुए दरवाज़ में दाख़िल हों. हितत, तीवह और इस्तग़फ़ार का कलमा है, लेकिन वो बजाय इसके हंसी से "हितत फ़ी शईरा" कहते हुए दाख़िल हुए.

(१०) यानी अज़ाब भेजने का कारण उनका जुल्म और अल्लाह के अहक़ाम का विरोध करना है.

हमने उनसे फ़रमाया हो जाओ बन्दर धुतकारे हुए^(१६६) और जब तुम्हारे रव ने हुक्म सुना दिया कि ज़रूर क्रयामत के दिन तक उन^(१६७) पर ऐसे को भेजता रहूंगा जो उन्हें बुरी मार चखाए^(१६८) वेशक तुम्हारा रव ज़रूर जल्द अज़ाब वाला है^(१६९) और वेशक वह बाधने वाला मेहरवान है^(१७०) और उन्हें हमने ज़मीन में बिखेर दिया गिरोह गिरोह, उनमें कुछ नेक हैं^(१७१) और कुछ और तरह के^(१७२) और हमने उन्हें भलाईयों और बुराईयों से आजमाया कि कहीं वो रज़ू लाएं^(१७३) फिर उनकी जगह उनके बाद वो^(१७४) नाखिलफ़ आए कि किताब के वारिस हुए^(१७५) इस दुनिया का माल लेते हैं^(१७६) और कहते अब हमारी वज़िअत होगी^(१७७) और अगर वैसा ही माल उनके पास और आए तो ले लें^(१७८) क्या उनपर किताब में अहद न लिया गया कि अल्लाह की तरफ़ निस्वत न करें मगर हक़ और उन्होंने इसे पढ़ा^(१७९) और वेशक पिछला घर बेहतर है परहेज़गारों को^(१८०) तो क्या तुम्हें अक़ल नहीं^(१८१) और वो जो किताब को मज़बूत धामते हैं^(१८२) और उन्होंने नमाज़ क़ायम रखी, और हम नेकों का नेग नहीं गंवाते^(१८३)

خَسِبِينَ ۝ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ
إِلَیْ یَوْمِ الْقِیَمَةِ مَنْ یُسَوِّمُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۝
إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِیعُ الْعِقَابِ ۝ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِیمٌ ۝
وَقَطَّعَهُمْ فِی الْأَرْضِ أُمَمًا مِنْهُمْ الصَّالِحُونَ وَ
مِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ وَبَلَّوْنَهُمْ بِأَحْسَنَاتِ
لَعْنَهُمْ یَرْجِعُونَ ۝ فَخَلَفَ مِنْ بَعدِهِمْ خَلْفٌ
وَرِثُوا الْكِتَابَ بِأَحْذَانٍ عَرِضٍ هَذَا الْأَذَلِّ وَ
یَقُولُونَ سَیَعْفَرُ لَنَا ۚ وَإِنْ یَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِثْلُهُ
یَأْخُذُوهُ ۚ أَلَمْ یُؤْخَذْ عَلَیْهِمْ مِثْلُ الْكِتَابِ
أَنْ لَا یَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ وَدَرَسُوا مَا فِیهِ
وَالدَّارُ الْآخِرَةُ خَیْرٌ لِلَّذِینَ یتَّقُونَ ۚ أَفَلَا
تَعْقِلُونَ ۝ وَالَّذِینَ یتَسَكَّبُونَ بِالْكِتَابِ وَاقْأُوا
الصَّلَاةَ دُرُكًا لَا تُضِیعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِینَ ۝ وَإِذْ

مَلَأَ

सूरए अअराफ़ - इक्कीसवाँ सूक़

(१) हज़रत नबीय़े क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़िताब है कि आप अपने करीब रहने वाले यहूदीयों से इस बस्ती वालों का हाल पूछें। इस सवाल का मक़सद यह था कि काफ़िरों पर ज़ाहिर कर दिया जाय कि कुफ़्र और बुराई उनका पुराना तरीक़ा है। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़ुशत और हज़ूर के चमत्कारों का इन्कार करना, यह उनके लिये कोई नई बात नहीं है। उनके पहले भी कुफ़्र पर अड़े रहे हैं। इसके बाद उनके पूर्वजों का हाल ख़याल फ़रमाया, कि वो अल्लाह के हुक्म के विरोध के कारण बन्दरों और सुअरों की शक्ल में बिगाड़ दिये गए। इस बस्ती में इस्तिलाफ़ है कि वह कौन सी थी। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि वह एक गाँव मिस्र और मदीना के बीच है। एक कौल है कि मदनन व तूर के बीच। ज़हरी ने कहा कि वह गाँव तबरीय़ा शाम है और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा की एक रिवायत में है कि वह मदनन है। कुछ ने कहा ईला है। हकीक़त का इल्म अल्लाह तआला को है।

(२) कि पाबन्दी के बाबुज़द शनिवार के रोज़ शिकार करते। इस बस्ती के लोग तीन गिरोहों में बंट गए थे। एक तिहाई ऐसे लोग थे जो शिकार से बाज़ रह और शिकार करने वालों को मना करते थे और एक तिहाई ख़ामाश थे, दूसरों को मना न करने थे, और मना करने वालों से कहते थे, ऐसी क़ीम को क्यों नसीहत करते हो ज़िन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है। और एक गिरोह वा ख़ताकार लोग थे ज़िन्हें ने अल्लाह के हुक्म का विरोध किया और शिकार किया और ख़ाया और बेचा और जब वो इस बुराई से बाज़ न आए तो मना करने वाले गिरोह ने कहा कि हम तुम्हारे साथ रहन सहन न रखेंगे और गाँव को तक्लीम करके बीच में एक दीवार ख़ींच दी। मना करने वालों का एक दरवाज़ा अलग था, जिससे आते जाते थे। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ताकारों पर लअनत की। एक रोज़ मना करने वालों ने देखा कि ख़ताकारों में से कोई न निकला, तो उन्होंने ख़याल किया कि शायद आज शराब के नशे में मदहोश हो गए होंगे। उन्हें देखने के लिये दीवार पर चढ़ ता देखा कि वो बन्दरों की शक्ल कर दिये गए थे। अब ये लोग दरवाज़ा खोल कर दाख़िल हुए तो वो बन्दर अपने रिश्तेदारों का पहचानते थे, और उनके पास आकर कपड़े सूँघते थे और ये लोग इन बन्दर हो जाने वालों को नहीं पहचानते थे। इन लोगों ने उनसे कहा, क्या हम लोगों ने तुम से मना नहीं किया था, उन्हीं ने सर के इशारे से कहा हाँ। और वो सब हलाक हो गए और मना करने वाले सलामत रहे।

(३) ताकि हमपर बुरी बातों से रोकना छोड़ने का इल्ज़ाम न रहे।

(४) और वो नसीहत से नफ़ा उठा सकें।

(५) वो बन्दर हो गए और तीन रोज़ इसी हाल में रहकर हलाक हो गए।

(६) यहूदी लोग।

हमला कर तो जवान निकाले और छोड़ दे तो जवान निकाले^(२१) यह हाल है उनका जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई तो तुम नसीहत सुनाओ कि कहीं वो ध्यान करें^(२२) क्या बुरी कहावत है उनकी जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई और अपनी ही जान का बुरा करते थे^(२३) जिसे अल्लाह राह दिखाए तो वही राह पर है और जिसे गुमराह करे तो वही नुकसान में रहे^(२४) और वेशक हमने जहन्नम के लिये पैदा किये बहुत जिन और आदमी^(२५) वो दिल रखत हैं जिन में समझ नहीं^(२६) और वो आँखें जिन से देखते नहीं^(२७) और वो कान जिन से सुनते नहीं^(२८) वो चौपायों की तरह हैं^(२९) बल्कि उनसे बढ़कर गुमराह^(३०) वही गफलत में पड़े हैं^(३१) और अल्लाह ही के हैं बहुत अच्छे नाम^(३२) तो उसे उनसे पुकारो और उन्हें छोड़ दो जो उसके नामों में हक से निकलते हैं^(३३) वो जल्द अपना किया पाएंगे^(३४) और हमारे बनाए

الْكَلْبُ ۚ إِنَّ تَحْمِلَ عَلَيْهِ يَلْهَثُ أَوْ تَتْرُكُهُ
يَلْهَثُ ذَلِكَ مِثْلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا ۚ
فَأَفْصَحَ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ سَاءَ
مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا وَ أَنْفُسَهُمْ
كَانُوا يَظْلِمُونَ ۝ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِى ۚ
وَمَنْ يَضِلَّ فَلَا إِلَهَ لَهُمُ الْخَيْرُونَ ۝ وَلَقَدْ
ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۚ
لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا ۚ وَلَهُمْ أَعْيُنٌ
لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا ۚ وَلَهُمْ أُذُنٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ
أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْغَافِلُونَ ۝ وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ
بِهَا ۚ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ ۚ
سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَمِمَّنْ خَلَقْنَا

مِثْلًا

(२१) जब बनी इस्राईल ने सज़ा तकलीफों की वजह से तौरात के अहकाम के कुबूल करने से इन्कार किया तो हज़रत ज़िब्रील ने अल्लाह के हुक्म से एक पहाड़ जिसका आकार उनके लश्कर के बराबर यानी एक फ़रसंग लम्बाई और एक फ़रसंग चौड़ाई थी, उठाकर सायबान की तरह उनके सरों के करीब कर दिया और उनसे कहा गया कि तौरात के आदेश कुबूल करो वरना यह पहाड़ तुम पर गिरा दिया जाएगा. पहाड़ को सरों पर देखकर सब सिज्दे में गिर गए मगर इस तरह कि बायाँ गाल और भी तो उन्होंने सिज्दे में रख दी और दाईं आँख से पहाड़ को देखते रहे कि कहीं गिर न पड़े. चुनांचे अवतक यहूदियों के सज़्दे की यही शान है.

(२२) इराद और फोशिश से.

सूरए अअराफ़ - बाईसवाँ सूक़

(१) हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पीठ से उनकी सन्तान निकाली और उनसे एहद लिया. आयतों और हदीसों दोनों पर नज़र करने से यह मालूम होता है कि सन्तान का निकालना इस सिलसिले के साथ था जिस तरह कि दुनिया में एक दूसरे से पैदा होंगे और उनके लिये रबूबियत और रहदानीयत की दलीलें क़ायम फ़रमा कर और अक़ल देकर उनसे अपनी रबूबियत की शहादत तलब फ़रमाई.

(२) अपने ऊपर, और हमने तैसी रबूबियत और रहदानीयत का इन्कार किया. यह गवाह होता इसलिये है...

(३) हमें कोई चेतावनी नहीं दी गई थी.

(४) जैसा उन्हें देखा, उनके अनुकरण और शासन में वैसा ही करते रहे.

(५) यह उच्च करने का मौक़ा न रहा, जब कि उनसे एहद ले लिया गया और उनके पास रसूल आए और उन्होंने उस एहद को याद दिलाया और तौहीद पर प्रमाण क़ायम हुए.

(६) ताकि बन्दे समझ से काम लेकर और विचार करके सत्य और ईमान कुबूल करें.

(७) शिर्क व कुफ़्र से तौहीद व ईमान की तरफ़ और चमत्कार वाले नबी के बताने से अपने एहदे मीसाक़ को याद करें और उसके अनुसार अमल करें.

(८) यानी बलअम बाऊर जिसका वाक़िआ मुफ़स्सिरों ने इस तरह बयान किया है कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ज़ब्तारीन से जंग करने का इरादा किया और साम प्रदेश में तशरीफ़ लाए तो बलअम बाऊर की क़ौम उसके पास आई और उससे कहने लगी कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बहुत तेज़ मिज़ाज हैं और उनके साथ बड़ा लश्कर है. वो यहाँ आए हैं, हमें हमारे क्षेत्र से निकाल देंगे और क़त्ल करेंगे और हमारी जगह बनी इस्राईल को इस प्रदेश में आबाद करेंगे. तेरे पास इस्मे आज़म है और तेरी दुआ कुबूल

हुओं में एक गिरोह वह है कि हक बताएं और उसपर इन्साफ करें^(११) (१८१)

तेईसवाँ रूकू

और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता^(१२) अज़ाब की तरफ ले जाएंगे जहाँ से उन्हें खबर न होगी^(१३) और मैं उन्हें ढील दूंगा^(१४) वेशक मेरी छुपवाँ तदवीर (युक्ति) बहुत पक्की है^(१५) (१८२) क्या सोचते नहीं कि उनके साहब को जुनून से कोई इलाका नहीं, वो तो साफ डर सुनाने वाले हैं^(१६) (१८४) क्या उन्होंने निगाह की आसमानों और ज़मीन की सल्तनत में और जो चीज़ अल्लाह ने बनाई^(१७) और यह कि शायद उनका वादा नज़दीक आगया हो^(१८) तो इसके बाद और कौन सी बात पर यकीन लाएंगे^(१९) (१८५) जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं और उन्हें छोड़ता है कि अपनी सरकशी में भटक करे^(२०) (१८६) तुम से क्रयामत को पूछते हैं^(२१) कि वह कब को ठहरी है, तुम फ़रमाओ इसका इल्म तो मेरे ख के पास है उसे वही उसके वक़्त पर ज़ाहिर करेगा^(२२) भारी पड़ रही है आसमानों और ज़मीन में, तुम पर न आएगी मगर अचानक, तुम से ऐसा पूछते हैं मानो तुमने उसे ख़ूब तहकीक़

अल्लाह
۲۲۲
قَالَ الْمَلِكُ
أَمَةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ۝ وَ
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ
حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَأُمْلِي لَهُمْ ۖ إِن كَيْدِي
مَتِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا لِمَ يَصَاحِبُهُمْ مِّنْ
جَنَّتَيْنِ ۖ هَؤُلَاءِ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَنْظُرُوا فِي
مَلَكُوتِ السَّمٰوٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ ٱللَّهُ مِنْ
شَيْءٍ ۚ وَٱنْ عَلٰى أَنْ يَكُونَ قَدِ افْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۚ
فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ ٱلْهُدٰى يَوْمِنُونَ ۝ مِّنْ
ٱللَّهِ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ
يَعْصُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ ٱلسَّاعَةِ ۖ آيَٰتُ
مُرْسَلَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّى ۚ لَا يُجَلِّيهَا
لَوْفِيهَا ۖ ٱلْأَهُوَ ثَقُلَتْ فِى السَّمٰوٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ وَلَا
تَآتِيكُمْ ۖ ٱلْأَبْعَثَةُ ۚ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۚ

مَثَل

होती है तो निकल और अल्लाह तआला से दुआ कर कि अल्लाह तआला उन्हें यहाँ से हटा दे। बलअम बाऊर ने कहा, तुम्हारा बुरा हो, हज़रत मूसा नबी हैं और उनके साथ फ़रिश्ते हैं और ईमानदार लोग हैं, मैं कैसे उनपर दुआ करूँ। मैं जानता हूँ, जो अल्लाह तआला के नज़दीक उनका दर्जा है। अगर मैं ऐसा करूँ तो मेरी दुनिया और आख़िरत बर्बाद हो जाएगी। मगर कौम उसपर ज़ोर देती रही और बहुत रोई पीटी। बलअम बाऊर ने कहा कि मैं अपने ख की मज़ी मालूम कर लूँ और उसका यही तरीका था कि जब कोई दुआ करता, पहले अल्लाह की मज़ी मालूम कर लेता और स्बाब में उसका जवाब मिल जाता। चुनांचे इस बार भी उसका यही जवाब मिला कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनके साथियों के ख़िलाफ़ दुआ न करना। उसने कौम से कह दिया कि मैंने अपने ख से इज़ाज़त चाही थी मगर मेरे ख ने उनपर दुआ करने की मुमामातन फ़रमा दी। तब कौम ने उसको त्राहफ़े और नज़राने दिये जो उसने कुबूल किये। और कौम ने अपना सवाल जारी रखा तो फिर दूसरी बार बलअम बाऊर ने ख तबाराक व तआला से इज़ाज़त चाही। उसका कुछ जवाब न मिला। उसने कौम से कह दिया कि मुझे इस बार कुछ जवाब ही न मिला। कौम के लोग कहने लगे कि अगर अल्लाह को मंज़ूर न होता तो वह पहले की तरह दोबारा भी मना फ़रमाता और कौम का ज़ोर और भी ज़्यादा हुआ। यहाँ तक कि उन्होंने उसको फ़ितन में डाल दिया और आख़िरकार वह बददुआ करने के लिये पहाड़ पर चढ़ा तो जो बददुआ करता था, अल्लाह तआला उसकी ज़वान उसकी कौम की तरफ़ फेर देता था और अपनी कौम के लिये जो भलाई की दुआ करता था, बजाय कौम के बनी इस्राईल का नाम उसकी ज़वान पर आता था। कौम ने कहा, ऐ बलअम यह क्या कर रहा है, बनी इस्राईल के लिये दुआ कर रहा है और हमारे लिये बददुआ। कहा यह मेरे इज़्तिहार की बात नहीं, मेरी ज़वान में कादू में नहीं है। और उसकी ज़वान बाहर निकल पड़ी तो उसने अपनी कौम से कहा, मेरी दुनिया और आख़िरत दोनों बर्बाद हो गईं। इस आयत में उसका बयान है।

(१) और उनका अनुकरण न किया।

(१०) और ऊँचा दर्जा अता फ़रमा कर नेकों की मंज़िल में पहुँचाते।

(११) और दुनिया के जादू में आ गया।

(१२) यह एक ज़लील जानवर के साथ तशबीह है कि दुनिया का लालच रखने वाला अगर उसको नसीहत करे तो मुफ़ीद नहीं, वह लालच में जकड़ा रहता है, छोड़ दो तो उसी लालच में गिरफ़्तार। जिस तरह ज़वान निकालना कुत्ते की लाज़मी तबीअत है, ऐसे ही लालच उनके लिये लाज़िम हो गया।

(१३) यानी काफ़िर जो अल्लाह की निशानियों को अच्छी तरह जान कर उनसे मुंह फेरते हैं और उनका काफ़िर होना अल्लाह के इल्मे अज़ली में है।

(१४) यानी सच्चाई से मुंह फेर के अल्लाह की निशानियों के देखने समझने से मेहरूम हो गए और यही दिल का आस काम था।

(१५) सच्चाई और हिदायत की राह और अल्लाह की निशानियाँ और उसके एक होने के प्रमाण.

(१६) उपदेश और नसीहत को मानने वाले कानों से सुनने और दिल व हवास रखने के बावजूद वो दीन की बातों में उनसे नफ़ा नहीं उठाते, लिहाज़ा...

(१७) कि अपने दिल और सोचने, देखने, समझने की शक्तियाँ से अल्लाह तआला की पहचान नहीं करते हैं. श्रान पीने के दुनियावी कामों में सारे हवानात भी अपने हवास से काम लेते हैं. इन्सान भी इतना ही करता रहा तो उसको जानवरों पर क्या बरतनी और बुजुर्गी.

(१८) क्योंकि चौपाया भी अपने फ़ायदे की तरफ़ बढ़ता है और नुक़सान से बचता और उससे पीछे हटता है. और काफ़िर जहन्नम की राह चलकर अपना नुक़सान इस्तिफ़ार करता है, तो उससे बढ़तर हुआ. जब आदमी की रूढ़ शहवात यानी वासनाओं पर ग़ालिब आ जाती है तो वह फ़रिश्तों से बढ़ जाता है, और जब वासनाएं रूढ़ पर ग़ालिब आ जाती हैं तो ज़मीन के जानवरों से बढ़तर हो जाता है.

(१९) हदीस शरीफ़ में है, अल्लाह तआला के नितानवे नाम जिस किसी ने याद कर लिये, जन्नती हुआ. उलमा की इसपर सहमति है कि अल्लाह के नाम नितानवे की संख्या में घिरे नहीं हैं. हदीस का मतलब सिर्फ़ यह है कि इतने नामों के याद करने से इन्सान जन्नती हो जाता है. अब जहल ने कहा था कि मुहम्मद का दावा तो यह है कि यह एक परवर्दिगार की इबादत करते हैं फिर वह अल्लाह और रहमान दो को क्यों पुकारते हैं. इसपर यह आयत उतरी और उस कम अक़ल जाहिल को बताया गया कि मअबूद तो एक ही है, नाम उसके बहुत है.

(२०) उसके नामों में हक़ और इस्तिफ़ामत से निकलना कई तरह पर है. एक तो यह है कि उसके नामों को कुछ बिगाड़ कर ग़ैरों पर लागू करना, जैसे कि मुश्रिकों ने इलाह का लान, और अज़ीज़ का उज्ज़ा, और मन्नान का मनात करके अपने वुताँ के नाम रखे थे, यह नामों में सच्चाई से मुंह फेरना और नाजायज़ है. दूसरे यह कि अल्लाह तआला के लिये ऐसा नाम मुकर्रर किया जाए जो कुरआन व हदीस में न आया हो, यह भी जायज़ नहीं जैसे कि सख़ी या रफ़ीक़ कहना. तीसरे हुसं अदब की रियायत करना, तो फ़क़त या-दारों, या-मानिओ कहना जायज़ नहीं. बल्कि दूसरे नामों के साथ मिलाकर कहा जाएगा, या दारों, या नाफ़िओ, या मुअतियों, या ख़ालिकुल ख़ल्क. चौथे यह कि अल्लाह तआला के लिये कोई ऐसा नाम मुकर्रर किया जाए, जिसके मानी ग़लत हों, यह भी सख़्त नाजायज़ है. पाँचवें, ऐसे नाम रखना जिनका मतलब मालूम नहीं, और यह नहीं जाना जा सकता कि वो अल्लाह तआला की शान के लायक़ हैं या नहीं.

(२१) यह ग़िराह सच्चाई की राह दिखाने वाले उलमा का है. इस आयत से यह मसअला साबित हुआ कि हर ज़माने के पहले हक़ की सहमति हुज्जत है. और यह भी साबित हुआ कि कोई ज़माना हक़ परस्ती और दीन की हिदायत देने वालों से ख़ाली न होगा, जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि मेरी उम्मत का एक ग़िराह क़यामत तक सच्चे दीन पर क़ायम रहेगा, उसको किसी की दुश्मनी और विरोध नुक़सान न पहुंचा सकेगी.

सूरए अअराफ़ - तेईसवाँ रूकू

(१) यानी एक के बाद एक, दर्जा ब दर्जा.

(२) उनकी उम्रें लम्बी करके.

(३) जब नबीयें अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ कर रात के वक़्त एक एक क़बीले को पुकारा और फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह के अज़ाब से डराने वाला हूँ. और आपने उन्हें अल्लाह का ख़ौफ़ दिलाया और पेश आने वाले वाकिआत और घटनाओं का ज़िक़्र किया तो उनमें से किसी ने आपकी तरफ़ जुनून की निस्वत की. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया क्या उन्होंने सोच और समझदारी से काम न लिया और आक्रिबत अन्देशी और दूरदर्शता बिल्कुल छोड़ दो और यह देखकर कि नबीयों के सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बातों और कामों में उनके विपरीत हैं और दुनिया और इसकी लज़्ज़तों से आपने मुंह फेर लिया है और आख़िरत की तरफ़ ध्यान लगा दिया है और अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाने और उसका ख़ौफ़ दिलाने में रात दिन मशग़ूल हैं, उन लोगों ने आपकी तरफ़ जुनून की निस्वत करदी, यह उनकी ग़लती है.

(५) इन सब में उसकी बहदानियत और भरपूर हिक़मत और कुदरत की रौशन दलीलें हैं.

(६) और वो कुछ पर मर जाएं और हमेशा के लिये जहन्नमी हो जाएं, ऐसे हाल में समझ वाले पर ज़रूरी है कि वह सोचे समझे, दलीलों पर तज़र करे.

(७) यानी कुरआन शरीफ़ के बाद और कोई रसूल आने वाला नहीं जिसका इन्तिज़ार हो, क्योंकि आप पर नबीयों का मिलसिला ख़त्म हो गया.

(८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि यहूदियों ने नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो हमें बताइये कि क़यामत कब क़ायम होगी, क्योंकि हमें उसका वक़्त मालूम है. इसपर यह आयत उतरी.

कर (खोज) रखा है तुम फरमाओ इसका इल्म तो अल्लाह ही के पास है लेकिन बहुत लोग जानते नहीं^(१०) (१८७) तुम फरमाओ मैं अपनी जान के भले बुरे का खुद मुख्तार नहीं^(११) मगर जो अल्लाह चाहे^(१२) और अगर मैं गैब जान लिया करता तो यूँ होता कि मैंने बहुत भलाई जमा करली और मुझे कोई बुराई न पहुँची^(१३) मैं तो यही डर^(१४) और खुशी सुनाने वाला हूँ उन्हें जो ईमान रखते हैं^(१८८)

चौबीसवाँ रुकू

वही है जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया^(१) और उसी में से उसका जोड़ा बनाया^(२) कि उससे चैन पाए, फिर जब मर्द उसपर छाया उसे एक हलका सा पेट रह गया^(३) तो उसे लिये फिरा की, फिर जब वोझल पड़ी, दोनों ने अपने रव से दुआ की - ज़रूर अगर तू हमें जैसा चाहे बच्चा देगा तो वेशक हम शुक्रगुजार होंगे^(४८९) फिर जब उसने उन्हें जैसा चाहिये बच्चा अता फरमाया, उन्होंने उसकी अता में उसके साझी ठहराए, तो अल्लाह को बरतरी है उनके शिक से^(५०) (१९०) क्या उसे शरीक करते हैं जो कुछ न बनाए^(५१) और वो खुद बनाए हुए हैं^(१९१) और न वो उनको कोई मदद पहुँचा सकें और न अपनी जानों की मदद करें^(५२) (१९२) और अगर तुम उन्हें^(५३) राह की तरफ बुलाओ तो तुम्हारे

अल्लाह

२४३

काल

قُلْ إِنَّمَا عَلَّمَهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ قُلْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ صَلَاةَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ وَمَا شَاءَ اللَّهُ وَكَوْنَتُمْ كَالْغَيْبِ لَا سَتَكُنْتُمْ مِنَ الْغَيْبِ وَمَا مَسْنِي السَّوْءُ إِنَّا إِنَّا لَا نَذِيرُ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيًّا فَمَرَّتْ بِهِ ۚ فَلَمَّا أَثْقَلَتْ دَعَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَنُكَفِّرَنَّ مِنَ الشُّكْرِينَ ۚ فَلَمَّا أَتَاهَا صَالِحًا جَعَلَهُ شُرَكَاءَ فِيهَا ۚ فَلَمَّا شَفَعَا اللَّهُ عَنَّا يَشْرِكُونَ ۚ أَيَشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ۚ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ۚ وَإِنْ نَدْعُوهُمْ ۚ

مَنْ

(९) क़यामत के वक़्त का बताता रिसालत के लवाज़िम से नहीं है जैसा कि तुमने करार दिया और ऐ यहूदियों, तुम ने जो उसका वक़्त जानने का दावा किया, ये भी ग़लत है. अल्लाह तआला ने इसको छुपा कर रखा है, और इसमें उसकी हिक्मत है.

(१०) इसके छुपा कर रखे जाने की हिक्मत तफ़सीर रुहुल ब्यान में है कि कुछ बुजुर्ग इस तरफ गए हैं कि नविये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह तआला के बताए से क़यामत का वक़्त मालूम है और ये इस आयत के विषय के विरुद्ध नहीं.

(११) ग़ज़वए बनी मुस्तलक से वापसी के वक़्त राह में तेज़ हवा चली. चौपाए भागे तो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़बर दी कि मदीनए तैय्यिबह में रिफ़ाआ का इत्किफ़ाल हो गया और यह भी फ़रमाया कि देग्रो मेरी ऊंटनी कहाँ है. अब्दुल्लाह बिन उचई मुनाफ़िक् अपनी क़ौम से कहने लगा इनका कैसा अजब हाल है कि मदीने में मरने वाले की ख़बर तो दे रहे हैं और अपनी ऊंटनी का पता नहीं मालूम कि कहाँ है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर उसका यह क़ौल भी छुपा न रहा. हुज़ूर ने फ़रमाया मुनाफ़िक् लोग ऐसा ऐसा कहते हैं और मेरी ऊंटनी उस घाटी में है और उसकी नकेल एक दरख़्त में उलझ गई है. चुनांचे जैसा फ़रमाया था उसी शाव से ऊंटनी पाई गई. इसपर यह आयत उतरी. (तफ़सीर कबीर)

(१२) वह हक्कीकी मालिक है, जो कुछ है उसकी अता से है.

(१३) यह क़लाम अदब और विनयता के तीर पर है. मानी ये हैं कि मैं अपनी ज़ात से ग़ैब नहीं जानता. जो जानता हूँ वह अल्लाह तआला के बताए से और उसकी अता से. (ख़ाज़िन). आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैहे ने फ़रमाया, भलाई जमा करना और बुराई न पहुँचना उसी के इस्तिफ़ार में हो सकता है जो ज़ाती कुदरत रखे और ज़ाती कुदरत वही रखेगा जिसका इल्म भी ज़ाती हो, क्योंकि जिसकी एक सिफ़त ज़ाती है, उसकी सारी सिफ़त ज़ाती. तो मानी ये हुए कि अगर मुझे ग़ैब का इल्म ज़ाती होता तो कुदरत भी ज़ाती होती और मैं भलाई जमा कर लेता और बुराई न पहुँचने देता. भलाई से मुराद राहते और कामयावियों और दुश्मनों पर ग़ल्बा है. यह भी हो सकता है कि भलाई से मुराद सरकशों का मुतीअ, और नाफ़रमानों का फ़रमाँवरदार, और काफ़िरो का मूमिन कर लेना हो और बुराई से बदरख़्त लोगों का बाबुजूद दावत के मेहरूम रह जाना. तो हासिले क़लाम. यह होगा कि अगर मैं नफ़ा नुक़सान का ज़ाती इस्तिफ़ार रखता तो ऐ मुनाफ़िक् और काफ़िरो, तुम सबको मूमिन कर डालता और तुम्हारी कुफ़्र की हालत देखने की तकलीफ़ मुझे न पहुँचती.

(१४) सुनाने वाला हूँ काफ़िरो को.

सूरए अअराफ़ - चौबीसवाँ रुकू

(१) अकरमा का क़ौल है कि इस आयत में आम ख़िताब है हर एक शख्स को, और मानी ये हैं कि अल्लाह वही है जिसने

पीछे न आएँ^(१) तुमपर एक सा है चाहे उन्हें पुकारो या चुप रहो^(२) (१९३) बेशक वो जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम्हारी तरह बन्दे हैं^(३) तो उन्हें पुकारो फिर वो तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो^(४) (१९४) क्या उनके पाँव हैं जिनसे चलें या उनके हाथ हैं जिनसे गिरफ्तार (पकड़) करें वा उनकी आँखें हैं जिनसे देखें या उनके कान हैं जिनसे सुनें^(५) तुम फ़रमाओ कि अपने शरीकों को पुकारो और मुझपर दाव चलो और मुझे मोहलत न दो^(६) (१९५) बेशक मेरा वाली अल्लाह है जिसने किताव उतारी^(७) और वह नेकों को दोस्त रखता है^(८) (१९६) और जिन्हें उसके सिवा पूजते हो वो तुम्हारी मदद नहीं कर सकते और न खुद अपनी मदद करें^(९) (१९७) और अगर तुम उन्हें राह की तरफ़ बुलाओ तो न सुनें और तू उन्हें देखे कि वो तेरी तरफ़ देख रहे हैं^(१०) और उन्हें कुछ भी नहीं सूझता^(११) (१९८) ऐ मेहबूब माफ़ करना इस्तिथार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो^(१२) (१९९) और ऐ सुनने वाले

الْهُدَى لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَلُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا ۚ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا ۚ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا ۚ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ قُلْ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُوا ۚ فَلَا تُنْظَرُونَ ۝ إِنَّ وَلِيََّ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ۝ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ۝ وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَسْعَوْا وَتَرَاهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝ جَذِ الْعُقُوفَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ۝ وَإِنَّمَا

مَنْزِلٌ

तुममें से हर एक को एक जान से यानी उसके बाप से पैदा किया और उसकी जिनस से उसकी बीबी का बनाया, फिर जब वो दांतों जमा हुए और गर्भ जाहिर हुआ और इन दोनों ने तन्दुरुस्त बच्चे की दुआ की और ऐसा बच्चा मिलने पर शुक्र अदा करने का एहद किया फिर अल्लाह तआला ने उन्हें वैसा ही बच्चा इनायत फ़रमाया, उनकी हालत यह हुई कि कभी तो वो उस बच्चे की निरखत प्राकृतिक तत्वों की तरफ़ करते जैसा कि दहरियों का हाल है, कभी सितारों की तरफ़, जैसा सितारों की पूजा करने वालों का हाल है, कभी बुतों की तरफ़, जैसा कि बुत परस्तों का तरीका है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह उनके शिर्क से बरतार है, (तफ़सीर कदीर)

(२) यानी उसके बाप की जिनस से उसकी बीबी बनाई.

(३) मर्द का छाना इशारा है हमबिस्तर होने से और हलका सा पेंट रहना, गर्भ के शुरू की हालत का बयान है.

(४) कुछ मुफ़सिरो का क़ील है कि इस आयत में कुश को ख़िताब है जो कुसई की औलाद हैं उनसे फ़रमाया गया कि तुम्हें एक शस्त्र कुसई से पैदा किया और उसकी बीबी उसी की जिनस से अर्धी कर्षी की, ताकि उससे चैन व आराम पाए, फिर जब उनकी दरख़्वास्त के मुताबिक़ उन्हें तन्दुरुस्त बच्चा इनायत किया तो उन्होंने अल्लाह की इस अना में दूसरों को शरीक बनाया और अपने चारों बेटों का नाम अबदे मनाफ़, अब्दुल उज़्ज़ा, अब्दे कुसई और अब्दुद दार रखा.

(५) यानी बुतों को, जिन्होंने कुछ नहीं बनाया.

(६) इसमें बुतों की बेकुदरती, शिर्क के ग़लत होने का बयान और मुथ्रिकों की भरपूर जिहालत का इज़हार है, और बताया गया है कि इबादत का मुस्तहक़ बही हो सकता है जो इबादत करने वाले को नफ़ा पहुंचाए और उसका नुक़सान दूर करने की कुदरत रखता हो. मुथ्रिक जिन बुतों को पूजते हैं उनकी बेकुदरती इस दर्जे की है कि वो किसी चीज़ के बनाने वाले नहीं, किसी चीज़ के बनाने वाले तो क्या होते, खुद अपनी ज़ात में दूसरे से बेतियाज़ नहीं, आप मख़लूक हैं, बनाने वाले के मोहताज़ हैं. इससे बढ़कर बेइस्तिथारी यह है कि वो किसी की मदद नहीं कर सकते और किसी की कस मदद करें, खुद उन्हें नुक़सान पहुंचे तो दूर नहीं कर सकते. कांडें उन्हें तोड़ दें, गिरा दें, जो चाहें करें, वो उससे अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते. ऐसे मजबूर, बेइस्तिथार को पूजना इन्निहा दर्जे की जिहालत है.

(७) यानी बुतों का.

(८) क्योंकि वो न सुन सकते हैं, न समझ सकते हैं.

(९) वो हर हाल में मजबूर व बेवस हैं. ऐसे को पूजना और मजबूद बनाना बड़ी कमअक़ली है.

(१०) और अल्लाह के बन्दे और मख़लूक किसी तरह पूजने के काबिल नहीं. इसपर भी अगर तुम उन्हें मजबूद कहते हो.

(११) यह कुछ भी नहीं तो फिर अपने से कमतर को पूजकर क्यों ज़लील होते हो.

अगर शैतान तुझे कोई कौचा^(१७) दे तो अल्लाह की पनाह मांग वेशक वही सुनता जानता है^(२००) वेशक वो जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी खयाल की ठेंस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उनकी आँखें खुल जाती हैं^(१८)^(२०१) और वो जो शैतानों के भाई हैं^(१९) शैतान उन्हें गुमराही में खींचते हैं फिर कमी नहीं करते^(२०२) और ऐ मेहबूब जब तुम उनके पास कोई आयत न लाओ तो कहते हैं तुमने दिल से क्यों न बनाई तुम फ़रमाओ मैं तो उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ मेरे रब से वही (देव बाणी) होती है, यह तुम्हारे रब की तरफ़ से आँखें खोलना है और हिदायत और रहमत मुसलमानों के लिये^(२०३) और जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगाकर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुमपर रहम हो^(२०४) और अपने रब को अपने दिल में याद करो^(२०५) ज़ारी (विलाप) और डर से और वे आवाज़ निकले ज़बान से सुबह और शाम^(२०६) और माफ़िलों में न होना^(२०७) वेशक वो जो तेरे रब के पास हैं^(१९) उसकी इबादत से घमण्ड नहीं करते और उसकी पाकी बोलते और उसीको सज़ा करते हैं^(२०८)

الْعَزَازِ

२३५

قَالَ اللَّهُ

يَنْزِعُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعًا فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَافٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ ۝ وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ۝ وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا قُلْ إِنَّمَا أَتِيكُمْ بِمَا يُوْحَىٰ إِلَيَّ مِنْ رَبِّي هَذَا بَصَآئِرٌ مِّنْ رَبِّكُمْ وَهَذَا وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَادْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرَّعًا وَخَيْفَةً وَذُكُونًا لِّجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْعُدُوِّ وَالْأَصْلَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَبِشِرُونَ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ۝

مَزَل

(१२) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब बुत परस्ती की आलोचना और तस्कार किया और बुतों की बेइश्रित्यारी का बयान फ़रमाया, तो मुश्रिकों ने धमकाया और कहा कि बुतों को बुरा कहने वाले तबाह हो जाते हैं, बर्बाद हो जाते हैं, ये बुत उन्हें हलाक कर देते हैं। इसपर यह आयत उतरी कि अगर बुतों में कुछ कुदरत समझते हो तो उन्हें पुकारो और मुझे नुक़सान पहुंचावें मैं उनसे मदद लों, और तुम भी जो धाग्रा थड़ी कर सकते हो, वह मेरे मुकाबले में करो और उसमें देर न करो मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मअबूदों की कुछ भी परवाह नहीं। और तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।

(१३) और मेरी तरफ़ बही भेजी, और मेरी इज़्ज़त की।

(१४) और उनकी रक्षा और सहायता करने वाला है। उसपर भरोसा रखने वालों को मुश्रिकों वगैरह का क्या डर। तुम और तुम्हारे मअबूद मुझे कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकते।

(१५) तो मेरा क्या बिगाड़ सकेंगे।

(१६) क्योंकि बुतों की तस्वीरें इस शकल की बनाई जाती थीं जैसे कोई देख रहा है।

(१७) कोई बसबसा डाले।

(१८) और वो इस बसबस को दूर कर देते हैं और अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करते हैं।

(१९) यानी काफ़िर लोग।

(२०) इस आयत से साबित हुआ कि जिस वक़्त कुरआन शरीफ़ पढ़ा जाए, चाहे नमाज़ में या नमाज़ से बाहर, उस वक़्त सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब है। सारे सहाबए किराम इस तरफ़ हैं कि यह आयत मुक़तदी के सुनने और ख़ामोश रहने के बारे में है। और एक क़ौल यह भी है कि इस से नमाज़ व ख़ुल्वा दोनों में ग़ौर से सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब साबित होता है। हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हां की हदीस में है, आपने कुछ लोगों को सुना कि वो नमाज़ में इमाम के साथ क़िरअत करते हैं तो नमाज़ से फ़ारिस होकर फ़रमाया, क्या अभी वक़्त नहीं आया कि तुम इस आयत के मानी समझो। गरज़ इस आयत से इमाम के पीछे क़िरअत करने की मुमानिअत साबित होती है। और कोई हदीस ऐसी नहीं है जिसको इसके मुकाबले में तर्क क़रार दिया जायके। इमाम के पीछे क़िरअत की नाईद में सबसे ज़्यादा भरोसा जिस हदीस पर किया जाता है वह है “ला सलाता इल्ला बि फ़ातिहतल किताब” मगर इस हदीस से इमाम के पीछे क़िरअत वाजिब होना तो साबित नहीं होता सिर्फ़ इतना साबित होता है कि बिना फ़ातिहा नमाज़ क़ामिल नहीं होती। तो जबकि हदीस “क़िरअतुल इमाम लहू क़िरअतुन” से साबित है कि इमाम का क़िरअत करना ही मुक़तदी का क़िरअत करना है तो जब इमाम ने क़िरअत की और मुक़तदी ख़ामोश रहा तो उसकी क़िरअत हुक्मिया हुई, उसकी नमाज़ बे क़िरअत कहाँ रही। यह क़िरअते हुक्मिया है तो इमाम के पीछे क़िरअत न करने से कुरआन व हदीस दोनों पर अमल हो जाता है। और क़िरअत करने से आयत के अनुकरण से दूरी होती है लिहाज़ा ज़रूरी है कि इमाम के पीछे फ़ातिहा वगैरह कुछ न पढ़े।

८- सूरत अनफाल

सूरत अनफाल मदीने में उतरी, इसमें ७५ आयतें और बस रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)

पहला रुकू

ऐ मेहबूब ! तुम से गनीमतों (युद्ध के बाद हाथ आने वाला माल) को पूछते हैं (१) तुम फ़रमाओ गनीमतों के मालिक अल्लाह और रसूल हैं (२) तो अल्लाह से डरो (३) और आपस में मेल रखो और अल्लाह और रसूल का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो (४) ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह याद किया जाए (५) उनके दिल डर जाएं और जब उनपर उसकी आयतें पढ़ी जाएं उनका ईमान तरक्की पाए और अपने रव ही पर भरोसा करें (६) (७) वो जो नमाज़ क़ायम रखें और हमारे दिये से हमारी राह में खर्च करें (८) यही सच्चे मुसलमान हैं उनके लिये दर्जे हैं उनके रव के पास (९) और बख्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी (१०) (११) जिस तरह ऐ मेहबूब तुम्हें तुम्हारे रव ने तुम्हारे घर से हक के साथ वरामद किया (१२) और वेशक मुसलमानों का एक ग़िरोह उसपर नाखुश था (१३) (१४) सच्ची बात में तुम से झगड़ते थे (१५) बाद इसके कि ज़ाहिर हो चुकी (१६) मानो वो आँखों



(२१) ऊपर की आयत के बाद इस आयत के देखने से मालूम होता है कि क़ुरआन शरीफ़ सुनने वाले को श्यामांश रहता और आवाज़ निकालने बिना दिल में ज़िक्र करना लाज़िम है। (तफ़सीर इब्ने जरीर)। इससे इमाम के पीछे ऊंची या नीची आवाज़ से क़ुरआन की मुआनित सावित होती है और दिल में अल्लाह की अज़मत और ज़लाल का तसबुह ज़िक्र करती है। ज़िक्र-बिला-जह्र और ज़िक्र-बिला-इज़्ज़त दोनों के श्रुति प्रमाण हैं। जिस शरूम को जिस क्रिम के ज़िक्र में ज़ाक़ शौक़ और भरपूर एकाग्रता मिले, उसके लिये वही अफ़ज़ल है। (रदुल मोहतार वगैरह)

(२२) शाम, अस्म और मगरिव के बीच का वक़्त है। इन दोनों वक़्तों में ज़िक्र अफ़ज़ल है, क्योंकि फ़ज्र की नमाज़ के बाद ग़ूरज निकलने तक, इसी तरह अस्म नमाज़ के बाद सूरज डूबने तक, नमाज़ मना है। इस लिये इन वक़्तों में ज़िक्र मुरतब हुआ, ताकि बन्दे के तमाम अक़ान कुब्रत और ताअत में मशग़ूल रहें।

(२३) यानी मलायक़ मुकर्रवीन, युजुगी वाले फ़रिशते।

(२४) यह आयत सज़्दे वाली आयतों में से है जिनके पढ़ने और सुनने से सज़्दा लाज़िम आता है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, जब आदमी सज़्दे की आयत पढ़कर सज़्दा करता है तो शैतान रोता है और कहता है, अफ़सास, वही आदम का सज़्दे का हुक्म दिया गया। वह सज़्दा करके ज़हती हो गया और मुझे सज़्दे का हुक्म दिया गया तो मैं इन्कार करके ज़हदमी हो गया।

(८) सूरत अनफाल - पहला रुकू

(१) यह सूरत मदीनी है, सिबाय सात आयतों के, जो मक्का मुकर्रमा में उतरी और “इज़ यमकुरा विकलज़ीना” से शुरू होती है। इसमें नौ रुकू, पठहतर आयतें, एक हज़ार पठहतर कलिमे और पाँच हज़ार अस्सी अक्षर हैं।

(२) हज़रत उबादा बिन सामित रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है उन्होंने फ़रमाया कि यह आयत हम यद्र वालों के हक़ में उतरी। जब शत्रु के माल के बारे में हमारे बीच मतभेद हुआ और झगड़े की नीयत आ गई तो अल्लाह तआला ने मामला हमारे हाथ से निकाल कर अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुपुर्द कर दिया। आपने वह माल बारबर तफ़सीम कर दिया।

(३) जैसे चाहें तफ़सीम फ़रमाएं।

(४) और आपस में इज़्ज़िलाफ़ न करो।

(५) तो उसकी अज़मत व ज़लाल से।

(६) और अपने सारे काम उसके सुपुर्द कर दें।

देखी मौत की तरफ हाँके जाते हैं^(६) और याद करो जब अल्लाह ने तुम्हें वादा दिया था कि इन दोनों गिरोहों^(७) में एक तुम्हारे लिये है और तुम यह चाहते थे कि तुम्हें वह मिले जिसमें काँटों का खटका नहीं और कोई नुकसान न हो^(८) अल्लाह यह चाहता था कि अपने कलाम से सच को सच कर दिखाए^(९) और काफ़िरों की जड़ काट दे^(१०) कि सच को सच करे और झूट को झूट^(११) पड़े बुरा मानें मुजरिम^(१२) जब तुम अपने रव से फ़रियाद करते थे^(१३) तो उसने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम्हें मदद देने वाला हूँ हजारों फ़रिश्तों की क़तार से^(१४) और यह तो अल्लाह ने किया मगर तुम्हारी खुशी को और इसलिये कि तुम्हारे दिल चैन पाएँ और मदद नहीं मगर अल्लाह की तरफ़ से^(१५) वेशक अल्लाह मालिव हिकमत वाला है^(१६)

दूसरा सूक़

जब उसने तुम्हें ऊँघ से घेर दिया तो उसकी तरफ़ से चैन थी^(१) और आसमान से तुमपर पानी उतारा कि तुम्हें उससे सुधरा करदे और शैतान की नापाकी तुमसे दूर फ़रमादे और तुम्हारे दिलों को डारस बंधाए और उससे तुम्हारे क्रदम

وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۚ وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى
الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ
الشُّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ
يُجِئَ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ۚ
لِيُجِئَ الْحَقَّ وَيَبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۚ
إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي
مُمِدُّكُمْ بِآلِيفٍ مِّنَ السَّمَاءِ مُرَدِّفِينَ ۚ وَمَا
جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرًا وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ
وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ۚ إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسُ أَمْنَةً مِّنْهُ وَ
يُنْزِلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ
وَيُزِيلَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَى
قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۚ إِذْ يُوحَىٰ

(६) उनके कर्मों के बराबर, क्योंकि ईमान वालों के एहवाल इन विशेषताओं में अलग अलग हैं इसलिये उनके दर्जे भी अलग अलग हैं।

(८) जो हमेशा इज़्ज़त और सम्मान के साथ बिना मेहनत और मशक्कत अता की जाए।

(९) यानी मदीनाए तैय्यिबह से बद्र की तरफ़।

(१०) क्योंकि वो देख रहे थे कि उनकी संख्या कम है, हथियार थोड़े हैं, दुश्मन की तादाद भी ज़्यादा है, और वह हथियार वगैरह का बड़ा सामान रखता है। मुश्किल वक़्त आ रहा है कि अब सुफ़ियान के शाम प्रदेश से एक काफ़िले के साथ आने की ख़बर पाकर सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने सहाबा के साथ उनके मुकाबले के लिये खाना हुए। मक्काए मुकर्रमा से अब ज़हल कुरैश का एक भारी लश्कर लेकर काफ़िले की सहायता के लिये खाना हुआ। अब सुफ़ियान तो रास्ते में कतराकर अपने काफ़िले के साथ समन्दर तट की राह चल पड़े। अब ज़हल से उसके साथियों ने कहा कि काफ़िला तो बच गया अब मक्का वापस चलो, तो उसने इन्कार कर दिया और वह सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से लड़ने के इरादे से बद्र की तरफ़ चल पड़ा। सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने सहाबा से सलाह मशवरा किया और फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझसे वादा फ़रमाया है कि वह काफ़िरों के दोनों गिरोहों में से एक पर मुसलमानों को विजयी करेगा, चाहे काफ़िला हो या कुरैश का लश्कर। सहाबा ने इससे सहमति की, मगर कुछ को यह बहाना हुआ कि हम इस तैयारी से नहीं चले थे और न हमारी संख्या इतनी है न हमारे पास काफ़ी हथियार हैं। यह रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुरा लगा और हुज़ूर ने फ़रमाया कि काफ़िला तो साहिल की तरफ़ निकल गया और अब ज़हल सामने से आ रहा है, इसपर उन लोगों ने फिर अज़्र किया या रसूलल्लाह, काफ़िले का ही पीछा कीजिये और दुश्मन के लश्कर को छाँड़ दीजिये। यह बात हुज़ूर के मिज़ाज को नागवार हुई तो हज़रत सिद्दीक़े अक़बर और हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हुमा ने खड़े होकर अपनी महबूत, फ़रमाँबरदारी और कुरबानी की स्वाहिश का इज़हार किया और बड़ी कुबूत और मज़बूती के साथ अज़्र किया कि वो किसी तरह हुज़ूर की मुबारक मर्ज़ी के ख़िलाफ़ सुस्ती करने वाले नहीं हैं। फिर और सहाबा ने भी अज़्र किया कि अल्लाह ने हुज़ूर को जो हुक्म दिया उसके मुताबिक़ तशरीफ़ ले चलो, हम साथ हैं, कभी पीछे न हटेंगे। हम आप पर ईमान लाए, हमने आपकी तरदीक़ की, हमने आपके साथ चलने के एहद किये हैं। हमें आपके अनुकरण में समन्दर के अन्दर कूद जाने से भी कोई हिचकिचाहट नहीं है। हुज़ूर ने फ़रमाया, चलो, अल्लाह की वरक़त पर भरोसा करो, उसने मुझे वादा दिया है। मैं तुम्हें वशान्त देता हूँ, मुझे दुश्मनों के गिरने की जगह नज़र आ रही है। और हुज़ूर ने काफ़िरों के मरने और गिरने की जगहें नाम बनाम बतादी और एक एक की जगह पर निशाना लगा दिये और यह चमत्कार देखा गया कि उनमें से जो मर कर गिरा उसी निशान पर गिरा, उससे इधर उधर न हुआ।

(११) और कहते थे कि हमें कुरैश के लश्कर का हाल ही मालूम न था कि हम उनके मुकाबले की तैयारी करके चलते।

الْزَّكَاةَ

۲۳۸

قَالَ اللَّهُ

जमादे^(१११) जब ऐ मेहबूब, तुम्हारा सब फ़रिश्तों को वही भेजता था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ तुम मुसलमानों को साबित रखो^(११२) बहुत जल्द काफ़िरों के दिलों में हैबत डालूंगा तो काफ़िरों की गर्दनो से ऊपर मारो और उनकी एक एक पोर (जोड़) पर चोट लगाओ^(११३) यह इसलिये कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से मुखालिफ़त की, और जो अल्लाह और उसके रसूल से मुखालिफ़त करे तो वेशक अल्लाह का अज़ाब सख्त है^(११४) यह तो चखो^(११५) और उसके साथ यह है कि काफ़िरों को आग का अज़ाब है^(११६) ऐ ईमान वालो जब काफ़िरों के लाम से तुम्हारा मुकाबला हो तो उन्हें पीठ न दो^(११७) और जो उस दिन उन्हें पीठ देगा लड़ाई का हुनर करने या अपनी जमाअत में जा मिलने को तो वह अल्लाह के ग़ज़व में पलटा और उसका ठिकाना दोज़ाख है और क्या बुरी जगह पलटने की^(११८) तो तुमने उन्हें क़त्ल न किया बल्कि अल्लाह ने^(११९) उन्हें क़त्ल किया और ऐ मेहबूब वह खाक जो तुमने

رَبُّكَ إِلَى الْمَلَكِكَةِ إِنِّي مَعَكُمْ فَاذْكُرُوا الَّذِينَ
آمَنُوا سَالِفِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا
الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا
مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۚ ذَٰلِكُمْ يَأْتِيهِمُ شَاقٌّ ۚ
وَرَسُولُهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ
اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ
لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ۖ يَأْتِيهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا
تُولُوهُمْ الْأَدْبَارَ ۚ وَمَنْ يُولِهِمْ يَوْمَئِذٍ
دُبْرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ
فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ
وَيُسْأَلُ الْمَصِيرُ ۖ فَلَمْ تُقَاتِلُوهُمْ وَلَكِنَّ
اللَّهَ قَتَلَهُمْ ۖ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ

مَنْعَهُ

(१२) यह बात कि हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जो कुछ करते हैं अल्लाह के हुकम से करते हैं और आपने ऐलान फ़रमा दिया है कि मुसलमानों को गैबी मदद पहुंचेगी।

(१३) यानी कुरैश से मुकाबला उन्हें ऐसा भयानक मालूम होता है।

(१४) यानी अबू सुफ़ियान के काफ़िले और अयूजहल के लश्कर।

(१५) यानी अबू सुफ़ियान का काफ़िला।

(१६) सच्चे दीन को ग़लबा दे, उसको ऊंचा और बलन्द करे।

(१७) और उन्हें इस तरह हलाक करे कि उनमें से कोई वापसी न बचे।

(१८) यानी इस्लाम को विजय और मज़बूती अता फ़रमाए और कुफ़्र को मिटाए।

(१९) मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है, बद्र के ग़ेज़ स्पूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुश्रिकों को देखा कि हज़ार हैं और आपके साथी तीन सौ दस से कुछ ज़्यादा, तो हुज़ूर क़िवले की तरफ़ मुतवज्जह हुए और अपने मुवारक हाथ फैला कर अपने सब से यह दुआ करने लगे, या रब, जो तूने मुझसे वादा फ़रमाया है, पूरा कर. या रब, जो तूने मुझसे वादा फ़रमाया, इनायत फ़रमा, या रब, अगर तू पहले इस्लाम की इग़ जमाअत को हलाक कर देगा, तो ज़मीन में तेरी पूजा नहीं होगी. इसी तरह हुज़ूर दुआ करते रहे यहाँ तक कि आपके कन्धे से चादर शरीफ़ उतर गई तो हज़रत अबूबक्र हाज़िर हुए और चादर मुवारक हुज़ूर के कन्धे पर डाली और अज़्र किया, या रबीयल्लाह, आपकी दुआ अपने सब के साथ काफ़ी हो गई. वह बहुत जल्द अपना वादा पूरा फ़रमाएगा. इस पर यह आयत उतरी.

(२०) चुनांचे पहले हज़ार फ़रिश्ते आए, फिर तीन हज़ार, फिर पांच हज़ार. हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मुसलमान उस रोज़ काफ़िरों का पीछा करते थे और काफ़िर मुसलमान के आगे आगे भागता जाता था, अचानक ऊपर से कोई की आवाज़ आती थी और सवार का यह कलिया सुना जाता था "इक्रदम ख़रोम" यानी आगे बढ़ एक ख़रोम (ख़रोम हज़रत जिब्रिल अलैहिस्सलाम के घोड़े का नाम है) और नज़र आता था कि काफ़िर गिर कर मर गया और उसकी नाक तलवार से उड़ा दी गई और चेहरा ज़रमी हो गया. सहाबा ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अपने यह आँखों देखे मंज़र बयान किये तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि यह तीसरे आसमान की मदद है. अबू जहल ने हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो से कहा कि कहाँ से मार आती थी, मारने वाला तो हमको नज़र नहीं आता था. आपने फ़रमाया फ़रिश्तों की तरफ़ से, तो कहने लगा फिर वही तो ग़ालिब हुए, तुम तो ग़ालिब नहीं हुए.

(२१) तो बन्दे को चाहिये कि उसीपर भरोसा करे और अपने ज़ोर और कुब्रत और सामान व संग्रहा पर ताज़ न करे.

फैंकी तुमने न फैंकी बल्कि अल्लाह ने फैंकी और इसलिये कि मुसलमानों को उससे अच्छा इनाम अता फ़रमाए, वेशक अल्लाह सुनता जानता है^(१०) (१७) तो लो और उसके साथ यह है कि अल्लाह काफ़िरो का दाव सुस्त करने वाला है^(१८) ऐ काफ़िरो अगर तुम फ़ैसला मांगते हो तो यह फ़ैसला तुमपर आचुका^(१९) और अगर बाज़ आओ तो तुम्हारा भला है^(२०) और अगर, तुम फिर शरारत करो तो हम फिर सज़ा देंगे और तुम्हारा जत्था तुम्हें कुछ काम न देगा चाहे कितना ही बहुत हो और उसके साथ यह है कि अल्लाह मुसलमानों के साथ है^(२१)

तीसरा सूकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो^(१) और सुन सुनाकर उससे न फ़िरो^(२) और उन जैसे न होना जिन्होंने कदा हमने सुना और वो नहीं सुनते^(३) (२१) वेशक सब जानवरों में बदतर अल्लाह के नज़दीक वो हैं जो वहेरें गुंगे हैं जिनको अकल नहीं^(४) (२२) और अगर अल्लाह उन्हें कुछ भलाई^(५) जानता तो उन्हें सुना देता और अगर^(६) सुना देता जब भी आखिर मुंह फेर कर पलट जाते^(७) (२३) ऐ ईमान वालो अल्लाह और

كَانَ الْإِنشَاءُ ٢٨٩

رَبِّهِ وَلِيَبْلِي الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءٌ حَسَنًا ۚ إِنَّ
اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ ذَالِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنٌ
كَيِّدُ الْكَافِرِينَ ۝ إِنَّ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمْ
الْفَتْحُ ۚ وَإِنْ تَدْهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَإِنْ تَعُوذُوا
لَعُدَّ ۚ وَكَفَىٰ تَعْنَىٰ عَنْكُمْ فِتْنَتُكُمْ شَيْئًا ۚ وَلَوْ
كَثُرَتْ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا
تَوَلَّوْا عُنْدَهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا
كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝ إِنَّ
شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا
يَعْقِلُونَ ۝ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَّأَسْمَعَهُمْ وَلَوْ
أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ

منزل

सूरए अनफ़ाल - दूसरा सूकू

(१) हज़रत इब्न मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि ग़वदगी अगर जंग में हो तो अमन है और अल्लाह की तरफ़ से है, और नमाज़ में हो तो शैतान की तरफ़ से है। जंग में ऊँच का अमन होना इससे ज़ाहिर है कि जिस ज़ाव का डर हो उसे नींद और ऊँच नहीं आती, वह शत्रुओं और बंदूकों में रहता है। सफ़्त डर के वक़्त ऊँच आना, अमन पाने और डर निकल जाने की दलील है। कुछ मुफ़सिरो ने कहा है कि जब मुसलमानों को डर हुआ और बहुत ज़्यादा प्यास लगी तो उनपर ऊँच डाल दी गई जिससे उन्हें राहत हासिल हुई और थकन और प्यास दूर हुई और वो दुश्मन से जंग करने पर क़ादिर हुए। यह ऊँच उनके हक़ में नेअमत थी और एक साथ सबका आई। बड़ी जमाअत का सफ़्त डर की हालत में इस तरह एक साथ ऊँच जाना, ख़िलाफ़ आदत है। इसलिये कुछ उलमा ने फ़रमाया, यह ऊँच चमत्कार के हुक्म में है। (ख़ाज़िन)

(२) यद्र के दिन मुसलमान ग़ैरमान में उतरे, उनके और उनके जानवरों के पाँव रेत में धंस जाते थे और मुश्रिक उनसे पहले पानी पग़ क़दज़ा कर चुके थे, सहावा में कुछ हज़रत को बुज़ू की, कुछ को गुसल की ज़रूरत थी और प्यास की सफ़ती थी, तो शैतान ने धसवगा डाला कि तुम गुमान करने हो कि तुम हक़ पर हो, तुम में अल्लाह के नबी हैं और तुम अल्लाह वाले हो और हाल यह है कि मुश्रिक लोग ग़ालिब होकर पानी पर पहुँच गए, तुम वग़ैर बुज़ू और गुसल किये नमाज़ें पढ़ने हो तो तुम्हें दुश्मन पर विजयी होने की किये तरह उम्मीद है, तो अल्लाह तआला ने मेहर भेजा जिससे जंगल साराब हो गया और मुसलमानों ने उससे पानी पिया और गुसल किये और बुज़ू किये और अपनी सचारियों को पिलाया और अपने बर्तनों को भरा और गुवार बँट गया, ज़मीन इस क़ाबिल हो गई कि उसपर क़दम ज़मने लगे और यह नेअमेत विजय और कामयाबी हासिल होने की दलील है।

(३) उनकी मदद करके और उन्हें बशारत दे कर।

(४) अबूदाउद ज़मारी, जो यद्र में हाज़िर हुए थे, फ़रमाने हैं कि मैं मुश्रिक की गर्दन मारने के लिये उसके दरपे हुआ, उसका सर मेरी तलवार पहुँचने से पहले ही कट कर गिर गया, तो मैंने जान लिया कि उसको किसी और ने क़त्न किया, सहल बिन हनीफ़ फ़रमाने हैं कि यद्र के दिन हम में से कोई तलवार से इशारा करना था तो उसकी तलवार पहुँचने से पहले ही मुश्रिक का सर जिसम से जुदा होकर गिर जाता था। रसूल आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक मुट्ठी कंकरीयों काफ़िरो पग़ फेंक कर मारी तो कोई काफ़िर गेरा न बना जिसकी आँखों में उसमें से कुछ पड़ा न हो। यद्र का यह वाक़िआ शुक्रवार की सुबह सत्तरह रमज़ान सन दो हिजरी में पेश आया।

(५) जो यद्र में पेश आया और काफ़िर मक़तूल और कैद हुए, यह तो दुनिया का अज़ाब है।

(६) आख़िरत में।

रसूल के बुलाने पर हाजिर हो^(५) जब रसूल तुम्हें उस चीज के लिये बुलाए जो तुम्हें ज़िन्दगी बख्शेगी^(६) और जान लो कि अल्लाह का हुक्म आदमी और उसके दिली इरादों में हायल (बाधक) हो जाता है और यह कि तुम्हें उसकी तरफ़ उटना है^(७) और उस फ़ितने से डरते रहो जो हरगिज़ तुम में ख़ालिस ज़ालिमों को ही न पहुँचेगी^(८) और जान लो कि अल्लाह का अज़ाब सख्त है^(९) और याद करो^(१०) जब तुम थोड़े थे मुल्क में दबे हुए^(११) डरते थे कि कहीं लोग तुम्हें अचानक न ले जाएं तो उसने तुम्हें^(१२) जगह दी और अपनी मदद से ज़ोर दिया और सुधरी चीज़ें तुम्हें रोज़ी दें^(१३) कि कहीं तुम एहसान मानो^(१४) ऐ ईमान वाले अल्लाह और रसूल से दगा न करो^(१५) और न अपनी अमानतों में जान बूझकर ख़यानत^(१६) और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब फ़ितने हैं^(१७) और अल्लाह के पास बड़ा सबाब है^(१८) २८

चौथा रूकू

ऐ ईमान वाले अगर अल्लाह से डरोगे^(१) तो तुम्हें वह देगा जिस से हक़ (सत्य) को बातिल (झूट) से अलग कर लो और तुम्हारी बुराइयां उतार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बड़े फ़ज़ल (बुजुर्गी) वाला है^(२) २९

لَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ
وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَٰهٌ تَحْشَرُونَ ۝ وَاتَّقُوا
فِتْنَةً لَا تُصِيبُنَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً ۖ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ وَادْكُرُوا
إِذْ أَنتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ
تَخَافُونَ أَن يَخَطَفَكُمْ الْإِنْسَاءُ فَأُولَٰئِكَ
بِأَنصُرِهِمْ ۖ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَ
تَخُونُوا أَمْنَكُمْ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ وَاعْلَمُوا أَنَّمَا
أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ
أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا
اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ وَإِذْ

منزل

- (७) यानी अगर काफ़िर तुमसे ज़्यादा भी हों तो उनके मुकाबले से न भागो।
(८) यानी मुसलमानों में से जो जंग में काफ़िरों के मुकाबले से भागा वह अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हुआ, उसका ठिकाना दोज़ख़ है। सिवाय दो हालतों के, एक तो यह कि लड़ाई का हुनर या कर्तव्य करने के लिये पीछे हटा हो, वह पीट देने और भागने वाला नहीं है। दूसरे, जो अपनी ज़माअत में मिलने के लिये पीछे हटा, वह भी भागने वाला नहीं समझा जाएगा।
(९) जब मुसलमान वज़्र की लड़ाई से लौटे तो उनमें से एक कहता था कि मैं ने फ़त्तों को क़त्ल किया दूसरा कहता कि मैंने उसका क़त्ल किया। इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि इस क़त्ल को तुम अपने ज़ोर और कुच्चन से मत जोड़ो कि हकीकत में अल्लाह की मदद और उसकी तक्वियन और ताईद है।
(१०) विजय और कामयाबी।
(११) यह सम्बोधन मुश्रिकों से है जिन्होंने वज़्र में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जंग की और उनमें से अबू ज़हल ने अपनी और हुज़ूर की निशत यह दुआ कि यावर हम में जो तेरे नज़दीक अच्छा हो, उसकी मदद कर और जो बुरा हो, उसे मुसीबत में जकड़। और एक रिवायत में है कि मुश्रिकों ने मक्कह मुक़र्रमा से वज़्र को चलते वक़्त काबल मुअज़्ज़मा के पदों में लिपट कर यह दुआ की थी कि यावर अगर मुहम्मद सच्चाई पर हों, तो उनकी मदद फ़रमा और अगर हम हक़ पर हैं, तो हमारी मदद कर। इसपर यह आयत उतरी कि जो फ़ैसला तुमने चाहा था वह कर दिया गया और जो समूह सच्चाई पर था, उसको विजय दी गई। यह तुम्हारा मांग हुआ फ़ैसला है। अब आसमानी फ़ैसले से भी, जो उनका तलब किया हुआ था, इस्लाम की सच्चाई साबित हुई। अब ज़हल भी इस जंग में ज़िल्लत और रुखाई के साथ मारा गया और उसका सर रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में हाज़िर किया गया।
(१२) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ दुश्मनी और हुज़ूर के साथ जंग करने से।

सुरा अनफ़ाल - तीसरा रूकू

- (१) क्योंकि रसूल की फ़रमाँवरदारी और अल्लाह की फ़रमाँवरदारी एक ही चीज़ है, जिसने रसूल को इताअत की, उसने अल्लाह की इताअत की।
(२) क्योंकि जो सुन कर फ़ायदा न उठाए, और नसीहत हासिल न करे, उसका सुनना सुनना ही नहीं है। यह मुनाफ़िकों और मुश्रिकों का हाल है। मुसलमानों को इस हाल से दूर रहने का हुक्म दिया जाता है।
(३) न वो सत्य सुनते हैं, न सत्य बोलते हैं, न सच्चाई को समझते हैं, काब और ज़बान और अक़ल से फ़ायदा नहीं उठाते। जातवरों से भी गए गुज़र हैं। क्योंकि वो जान बूझकर वहां गूंग बनते हैं और अक़ल से दुश्मनी करते हैं। यह आयत वनी अब्दुद-दार चित कुसई के हक़ में उतरी जो कहते थे कि जो कुछ मुहम्मद लाए, हम उससे वहां गूंग अंध हैं। ये सब लोग उहद की लड़ाई

में मारे गए और उनमें से सिर्फ़ दो व्यक्ति ईमान लाए, मुसअब बिन उमैर और सुवैयित बिन हरमला।

(४) यानी सिद्ध और साबत।

(५) मौजूदा हालत में, यह जानते हुए, कि उनमें सिद्ध और साबत नहीं हैं।

(६) अपनी दुश्मनी, और सच्चाई से विरोध के कारण।

(७) क्योंकि रसूल का बुलाना अल्लाह ही का बुलाना है। बुधारी शरीफ़ में सईद बिन मुअल्ला से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ता था, मुझे रसूल ने अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पुकारा। मैं ने जवाब न दिया। फिर मैं ने ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया था रसूलल्लाह, मैं नमाज़ पढ़ रहा था। हुज़ूर ने फ़रमाया, क्या अल्लाह तआला ने यह नहीं फ़रमाया है कि अल्लाह और रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो। ऐसा ही-दूसरी हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत उबई बिन कअब नमाज़ पढ़ते थे। हुज़ूर ने उन्हें पुकारा। उन्होंने जल्दी नमाज़ पूरी करके सलाम अर्ज़ किया। हुज़ूर ने फ़रमाया तुम्हें जवाब देने से किस चीज़ ने रोका। अर्ज़ किया, हुज़ूर मैं नमाज़ में था। हुज़ूर ने फ़रमाया, क्या तुमने क़ुरआन पाक में यह नहीं पाया कि अल्लाह और रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो। अर्ज़ किया, वेशक, आयन्दा ऐसा न होगा।

(८) इस चीज़ से या ईमान मुराद है, क्योंकि काफ़िर मूर्ख होता है, ईमान में उसका ज़िन्दगी हासिल होती है। क़तादा ने कहा कि वह चीज़ क़ुरआन है, क्योंकि इससे दिलों की ज़िन्दगी है और इसमें निजात है, और दोनों जगत की इस्मत है। मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा कि वह चीज़ जिहाद है, क्योंकि उसकी बदौलत अल्लाह तआला तिल्लत के बाद इज़ज़त अता फ़रमाता है। कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि वह शहादत है, इसलिये कि शहीद अपने रब के नज़दीक ज़िन्दा हैं।

(९) बल्कि अगर तुम उससे न डरें और उसके कारणों यानी ममनूआत को तर्क न किया और वह फ़ितना नाज़िल हुआ तो यह न होगा कि उसमें ख़ास ज़ालिम और बदक़ोंग़ ही जकड़े हों बल्कि वह तेक और बद सबको पहुंच जाएगा। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ईमान वालों को हुक्म दिया कि वो अपने बीच ममनूआत न हों दें, यानी अपनी ताक़त भर बुराइयों को रोके और गुनाह करने वालों को गुनाह से मना करें। अगर उन्होंने ऐसा न किया तो अज़ाब उन सब को आम होगा, ख़ताकार और ग़ैर ख़ताकार सबको पहुंचेगा। हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ख़ास लोगों के अमल पर आम अज़ाब नहीं करता जबतक कि आम तौर पर लोग ऐसा न करें कि ममनूआत को अपने बीच होता देखते रहें और उसके रोकने और मना करने पर कादिर हों, इसके बावजूद न रोके, न मना करें। जब ऐसा होता है तो अल्लाह तआला अज़ाब में ख़ास और आम सब को जकड़ता है। अब दाऊद की हदीस में है कि जो शय्य किसी क़ौम में बुराई में सक्रिय हो और वो लोग कुदरत के बावजूद उसको न रोके, तो अल्लाह तआला उन्हें मरने से पहले अज़ाब में जकड़ता है। इससे मालूम हुआ कि जो क़ौम अल्लाह की मना की हुई चीज़ों से नहीं रुकती, और लोगों को गुनाहों से नहीं रोकती, वह अपने इस फ़र्ज़ के छोड़ने की सज़ा में अज़ाब में जकड़ी जाती है।

(१०) ऐ ईमान वाले मुहाज़िरिन, इस्लाम के शुरु में हिजरत करने से पहले मक्कह मुकर्रमा में।

(११) कुवैश तुमपर ग़ालिब थे और तुम।

(१२) मदीनह तैयिबह में।

(१३) यानी ग़नीमत के माल, जो तुमसे पहले किसी उम्मत के लिये हलाल नहीं किये गए थे।

(१४) फ़र्ज़ों का छोड़ देना अल्लाह तआला से ख़यानत करना है और सुन्नत का तर्क करना रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से। यह आयत अब लुबाबा हासुन बिन अब्दुल मुन्नर अन्सारी के हक़ में नाज़िल हुई। वाक़िआ यह था कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बनी कुवैज़ा के यहूदियों का दो हफ़्ते से ज़्यादा समय तक घिराव किया। वो इस घिराव से तंग आ गए और उनके दिल डर गए, तो उनसे उसके सरदार कअब बिन असद ने यह कहा कि अब तीन शक्तें हैं, या तो उस शय्य यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तस्दीक करो और उनकी बैअत कर लो, क्योंकि ख़ुदा की क़सम, वह अल्लाह के भंजे हुए नबी हैं, यह ज़ाहिर हो चुका। और यह वही रसूल हैं जिनका ज़िक़्र तुम्हारी किताब में है। उनपर ईमान ले आएं, तो जान माल आल औलाद सब मेहफूज़ रहेंगे। मगर इस बात को क़ौम ने न माना तो कअब ने दूसरी शक़ल पेश की और कहा कि तुम अगर इसे नहीं मानते तो आओ पहले हम अपने बीच बच्चों को क़त्ल कर दें फिर तलवारें खींचकर मुहम्मद और उनके साथियों के मुकाबले में आएँ कि अगर हम इस मुकाबले में हलाक भी हो जाएँ तो हमारे साथ अपने बाल बच्चों का ग़म तो न रहे। इसपर क़ौम ने कहा कि बाल बच्चों के बाद जीना ही किस काम का। तो कअब ने कहा कि यह भी मंज़ूर नहीं है तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सुलह की दरख़्वास्त करो, शायद उसमें बेहतर की कोई सूत निकल आए। तो उन्होंने हुज़ूर से सुलह की दरख़्वास्त की लेकिन हुज़ूर ने मंज़ूर नहीं फ़रमाया, सिवाय इसके कि अपने हक़ में सअद बिन मआज़ के फ़ैसले को मंज़ूर करें। इसपर उन्होंने कहा कि हमारे पास अब लुबाबा का भेज दीजिये क्योंकि अब लुबाबा से उनके सम्बन्ध थे और अब लुबाबा का माल और उनकी औलाद और उनके बाल बच्चे सब बनी कुवैज़ा के पास थे। हुज़ूर ने अब लुबाबा को भेज दिया। बनी कुवैज़ा ने उनसे राय दरियाफ़्त की कि क्या हम सअद बिन मआज़ का फ़ैसला मंज़ूर कर लें कि जो कुछ वो हमारे हक़ में फ़ैसला दें वह हमें कुबूल हो। अब लुबाबा ने अपनी गर्दन पर हाथ फेर कर इशारा किया कि यह तो गले कटवाने की बात है। अब लुबाबा कहते हैं कि मेरे क़दम अपनी ज़ग़ह से हटने न पाए थे कि मेरे दिल में यह बात जम गई कि मुझसे अल्लाह और उसके रसूल की ख़यानत बाके हुई। यह सोचकर वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में तो न आए, सीधे मस्जिद शरीफ़ पहुंचे और मस्जिद शरीफ़ के एक सुतून से अपने आपका बंधवा लिया और अल्लाह की क़शम ख़ाई कि न कुछ ख़ाएंगे न पियंगे यहाँ तक कि मर जाएँ या अल्लाह तआला उनकी तौय्य

और ऐ मेहबूब ! याद करो जब काफ़िर तुम्हारे साथ धोखा करते थे कि तुम्हें बन्द कर लें या शहीद कर दें या निकाल दें^(१) और वो अपना सा धोखा करते थे और अल्लाह अपनी छुपवा तदबीर फ़रमाता था और अल्लाह की छुपवा तदबीर सबसे बेहतर^(२) और जब उनपर हमारी आयतें पढ़ी जाएं तो कहते हैं हाँ हमने सुना हम चाहते तो ऐसी हम भी कह देते यह तो नहीं मगर अगलों के क्रिस्से^(३) और जब बोले^(४) कि ऐ अल्लाह अगर यही (क़ुरआन) तेरी तरफ़ से हक़ है तो हमपर आसमान से पत्थर बरसा या कोई दर्दनाक अज़ाब हम पर ला^(५) और अल्लाह का काम नहीं कि उन्हें अज़ाब करे जब तक ऐ मेहबूब तुम उन में तशरीफ़ फ़रमा हो^(६) और अल्लाह उन्हें अज़ाब करने वाला नहीं जब तक वो वख़्शिश मांग रहे हैं^(७) और उन्हें कया है कि अल्लाह उन्हें अज़ाब न करे वो तो मस्जिदे हराम से रोक रहे हैं^(८) और वो इसके अहल (योग्य) नहीं^(९) इसके औलिया तो परहेज़गार ही हैं मगर उनमें अक्सर को इल्म नहीं^(१०) और काबे के पास उनकी नमाज़ नहीं मगर सीटी

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيَّبْسُوْكُمْ اَوْ يَّخْرُجُوْكُمْ وَيَنْكَرُوْنَ وَيَنْكُرُ اللّٰهُ وَاللّٰهُ خَبِيْرُ الْمَكِيْرِيْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰیٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَفَعُنَا لِقُلُوْبُنَا مِثْلَ هٰذَا اِنْ هٰذَا اِلَّا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَاِذَا قَالُوْا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَابًا مِّنَ السَّمَاءِ اَوْ اَنْتَنَّا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَمَا لَهُمْ اِلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْا اَوْلِيَآءَ اِنْ اَوْلِيَآءُ اِلَّا الْمُتَّفِقُوْنَ وَلٰكِنْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ صَلَٰتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَاۡءً وَتَصَدِيۡقًا

मिल

कुबूल करे. समय समय पर उनकी बीबी आकर उन्हें नमाज़ों के लिये और इन्सानी हाजतों के लिये खोल दिया करतीं और फिर बांध दिये जाते थे. हुज़ूर को जब यह ख़बर पहुंची तो फ़रमाया कि अब तुबाबा मेरे पास आते तो मैं उनके लिये मग़फ़िरत की दुआ करता लेकिन जब उन्होंने यह किया है तो मैं उन्हें न खोलूंगा जब तक अल्लाह तआला उनकी ताबह कुबूल न करे. वह सात दिन बंधे रहे, न कुछ खाया, न पिया. यहाँ तक कि बेहोश होकर गिर गए. फिर अल्लाह तआला ने उनकी ताबह कुबूल की. सहाबा ने उन्हें ताबह कुबूल होने की खुशख़बरी दी तो उन्होंने कहा मैं खुदा की क़सम न खोलूंगा जब तक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुझे खुद न खोलें. हज़रत ने उन्हें अपने मुबारक हाथों से खोल दिया. अब तुबाबा ने कहा, मेरी ताबह उस वक़्त पूरी होगी जब मैं अपनी क़ौम की बस्ती छोड़ दूँ जिसमें मुझ से यह ख़त सज़ाद हुई और मैं अपने कुल मान को अपनी मिल्क में निकाल दूँ. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, तिहाई माल का सदका करना काफी है. उनके बारे में यह आयत उतरी. (१५) कि अख़िरत के कामों में रुकावट बनता है.

(१६) तो समझ वाले को चाहिये कि उसी का तलबगार रहे और माल व औलाद के कारण उसमें मेहरूम न हो.

सूरए अनफ़ाल - चौथा खूक

(१) इस तरह कि गुनाह छोड़ो और ताअत बजा लाओ.

(२) इसमें उस घटना का बयान है जो हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अहूमा ने बयान फ़रमाई कि कुरैश के काफ़िर कमेटी शर (दारुन नदवा) में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निरवत मशवरा करने के लिये जमा हुए. इब्नीसे लईन एक बड़े की मुरत में आया और कहने लगा कि मैं कब्ज़ का शेरार हूँ मुझे तुम्हारे इम इज्मिआ या सम्मेलन की सूचना मिली तो मैं आया. मुझसे तुम कुछ न छुपाना. मैं तुम्हारा दोस्त हूँ और इस मामले में बेहतर राय से तुमहारी मदद करूंगा. उन्होंने उसको शामिल कर लिया और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में रायजरी शुरू हुई. अबुल बख़री ने कहा कि मेरी राय यह है कि मुहम्मद को पकड़कर एक मकान में कैद कर दो और मज़बून बन्धनों से बांध दो और दरवाज़ा बन्द कर दो. सिर्फ़ एक ग़ुरार छोड़ दो जिससे कभी कभी खाना पानी दिया जाए और यहाँ हलाक़ हाक़ ग़द जाएं. इसपर शैतान लईन जो कब्ज़ का शेरार बना हुआ था, बहुत नायुश हुआ और कहा अत्यन्त बुरी राय है. यह ख़बर मशहूर होगी और उनके साथी आपसे और तुमसे मुकाबला करेंगे और उनको तुम्हारे हाथ से छुड़ा लेंगे. लोगों ने कहा, शेरारे नज़्दी टीक कहता है. फिर दिशाम चित धम खड़ा हुआ. उसने कहा मेरी राय यह है कि उनको ऊट पर सवार करके अपने शहर से निकाल दो, फिर वह जो कुछ भी करें, इससे तुम्हें कुछ नुक़सान नहीं. इब्नीसे ने इस राय को भी नापसन्द किया और कहा, जिस शरार ने तुम्हारे हाथ उड़ा दिये और तुम्हारे बुद्धिमानों को हरात कर दिया, उसको तुम दूसरों की तरफ़ भेजते हो. तुमने उसकी मीठी ज़बान, तलवार की तरह कट करने वाले बोल, और दिलकशी नहीं देखी है. अगर

तुमने ऐसा किया तो वह दूसरी कौम के दिलों को अपने क़ाबू में कर के उन लोगों के साथ तुमपर चढ़ाई करेगा. सबन कहा शीखे नब्दी की राय टीक मालूम होती है. इस पर अबू जहल खड़ा हुआ और उसने यह राय दी कि कुरैश के हर ख़ानदान से एक एक अच्छे नरस वाला जवान चुना जाए और उनको तेज़ तलवार दी जाए. वो सब एक-बार में मुहम्मद पर हमला करके क़त्ल करदे तो वही हाशिम कुरैश के सारे क़बीलों से न लड़ सकेंगे. ज़्यादा से ज़्यादा यह है कि खून का मुआविज़ा देना पड़ेगा, वह दे देंगे. इन्हींसे लड़ने ने इस प्रस्ताव को पसन्द किया और अबू जहल की बहुत तारीफ़ की और इसीपर सब की सहमति हो गई. हज़रत ज़िन्नल अलैहिस्सलाम ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर बाकिआ अर्ज़ किया और अर्ज़ किया कि हुज़ूर अपनी रज़ावगाह में रात को न रहें. अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि मदीनए तैय्यिदह का इरादा फ़रमाएं. हुज़ूर ने अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अहो को रात में अपने विस्तर पर रहने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि हमारी चादर ओढ़ो, तुम्हें कोई नागवार बात पेश न आएगी. हुज़ूर अपने मकान से बाहर तशरीफ़ लाए और एक मुठ्ठी धूल दसने मुबारक में ली और आयत "इन्ना जअलना फ़ी अअनाकिहिम अज़लालन-----" पढ़कर घिराव करने वालों पर मारी. सब की आँखों और सरो पर पहुंची, सब अंधे हो गए और हुज़ूर को न देख सके और हुज़ूर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ के साथ गारे सौर में तशरीफ़ ले गए और हज़रत अली को लोगों की अमानतें पहुंचाने के लिये मक्कए मुक़र्रमा में छोड़ा. मुश्कि गत भर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मकान का पहरा देते रहे. सुन्न को जब क़त्ल के इरादे से आक्रमण किया तो देखा कि हज़रत अली हैं. उनसे हुज़ूर का दरियाफ़्त किया कि कहाँ हैं. उन्होंने ने फ़रमाया, हमें मालूम नहीं. तो तलाश के लिये निकले. जब गार पर पहुंचे तो मक़दी के जाले देखकर कहने लगे कि अगर इसमें दाख़िल होते तो ये जाले बाक़ी न रहते. हुज़ूर इस गार में तीन दिन रहे फिर मदीने को ख़ाना हुए.

(३) यह आयत नज़र दिन हारिस के हक़ में उतरी जिसने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से क़ुरआने पाक सुनकर कहा था कि हम चाहते तो हम भी ऐसी ही क़िताब कहे लेते. अल्लाह तआला ने उनका यह कथन नक़्त किया कि इसमें उनकी हद दर्जे की बेहयाई और बेशर्मी है कि क़ुरआने पाक की फ़साहत और बलागत देखने और अरघ के चोटी के बिट्ठाओं का क़ुरआन करीम जैसी एक सूरत बना लाने की चुनौती देने और उन सब के अपना सा मुंह लेकर रह जाने के बाद नज़र दिन हारिस का यह क़लिमा कहना और ऐसा झूठा दावा करना निहायत ज़लाल हरकत है.

(४) काफ़िर, और उनमें यह कहने वाला या नज़र दिन हारिस था या अबू जहल, जैसा कि बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है.

(५) क्योंकि रहमतुल-लिल-आलमीन बनाकर भेजे गए हो और अल्लाह की सुन्नत यह है कि जबतक किसी क़ौम में उसके नबी मौजूद हों, उनपर आम बर्बादी का अज़ाब नहीं भेजता, जिसके कारण सब के सब हलाक हो जाएं और कोई न बचे. मुफ़सिरों की एक जमाअत का क़ौल है कि यह आयत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर उस वक़्त उतरी जब आप मक्कए मुक़र्रमा में मुक़ीम थे फिर जब आपने हज़रत फ़रमाई और कुछ मुसलमान रह गए, जो इस्तेफ़ार किया करते थे तो "वमा कानल्लाहो मुअज़िबहुम" नाज़िल हुआ जिसमें बताया गया कि जब तक इस्तेफ़ार करने वाले ईमानदार मौजूद रहेंगे उस वक़्त तक भी अज़ाब न आएगा. फिर जब वो हज़रत भी मदीनए तैय्यिदह को ख़ाना हो गए तो अल्लाह तआला ने मक्क़ की विजय का इज़्ज दिया और ये अज़ाबे मौजूद आगया, जिसकी निग़वत इस आयत में फ़रमाया "वमा लहुम अल्ला युअज़िबहुमुल्लाह". मुहम्मद वित इरहाक़ ने कहा कि "मा कानल्लाहो लियुअज़िबहुम" भी काफ़िरों का क़ौल है जो उनसे हिफ़ायत के तौर पर नज़्ज़ किया गया है. अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने उनकी जिहालत का ज़िक्र फ़रमाया कि इस क़द्र अहमक़ हैं. आप ही तो यह कहते हैं कि याच, ये तेरी तरफ़ से हक़ है तो हमपर नाज़िल कर और आप ही यह कहते हैं कि या मुहम्मद, जब तक आप हैं अज़ाब नाज़िल न होगा, क्योंकि कोई उम्मत अपने नबी की मौजूदगी में हलाक नहीं की जाती.

(६) इस आयत से साबित हुआ कि इस्तेफ़ार अज़ाब से अम्न में रहने का ज़रिया है. हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के लिये दो अमानें उतारीं, एक मेरा उनमें तशरीफ़ फ़रमा होना, एक उनका इस्तेफ़ार करना.

(७) और ईमान वालों का क़ाबे के तवाफ़ के लिये नहीं आने देते, जैसा कि हुदैवियह की घटना के साल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा को रोक.

(८) और क़ाबे के प्रबन्ध में हिस्सा लेने का कोई इख़्तियार नहीं रखते क्योंकि मुश्कि हैं.

और ताली^(१) तो अब अज़ाब चखो^(२) बदला अपने कुफ़र का^(३) वेशक काफ़िर अपने माल खर्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोके^(४) तो अब उन्हें खर्च करेंगे फिर वो उनपर पछतावा होंगे^(५) फिर मग़लूब (पराजित) कर दिये जाएंगे, और काफ़िरों का हथ (अंजाम) जहन्नम की तरफ़ होगा^(६) इसलिये कि अल्लाह गन्दे को सुधरे से अलग फ़रमा दे^(७) और निजासतों (गन्दगियों) को तले ऊपर रखकर सब एक ढेर बनाकर जहन्नम में डाल दे वही नुक़सान पाने वाले हैं^(८) ^(१५) ^(३७)

पाँचवां रूकू

तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वो बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वह उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा^(१) और अगर फिर वही करें तो अगलों का दस्तूर (तरीका) गुज़र चुका^(२) ^(३८) और अगर उनसे लड़ो यहाँ तक कि कोई फ़साद^(३) बाक़ी न रहे और सारा दीन अल्लाह का होजाए फिर अगर वो बाज़ रहें तो अल्लाह उनके काम देख रहा है^(४) ^(३९) और अगर वो फिर^(५) तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला है^(६) तो क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार^(७) ^(४०)

فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ اِنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا يَنْفِقُونَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدَّوْا
عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ ۖ فَسَيَنْفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ
عَلَيْهِمْ حَسْرَةٌ ثُمَّ يَغْلِبُونَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ۝ لِيَمِيزَ اللّٰهُ الْخَبِيثَاتِ
مِنَ الطّٰيِبَاتِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَاتِ بَعْضُهُمْ
عَلٰى بَعْضٍ ۖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُونَ ۝ قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا اِنْ يَنْتَهُوْا يُغْفَرْ
لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُودُوْا فَقَدْ مَّصَّتْ
سِنْتُ الْاَوَّلِيْنَ ۚ وَقٰنِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنُ فِتْنَةٌ
وَيَكُوْنَ الَّذِيْنَ كَلَّهَ اللّٰهُ ۚ فَاِنْ اَنْتَهُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَاِنْ كُوْلُوْا فَاَعْلَمُوْا
اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰكُمْ ۖ رِغْمَ السُّوْلِ ۚ وَرِغْمَ النَّصِيْرِ ۝

منزل

(१) यानी नमाज़ की जगह सीटी और ताली बजाते हैं, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि कु़रैश नंगे होकर ख़ाना कावा का तवाफ़ करते थे और सीटियाँ तालियाँ बजाते थे और ये काम उनका था तो अक्कीदे से था कि सीटी और ताली बजाना इबादन है, या इस शरारत से कि सैयदे आलम (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) को नमाज़ में परेशानी हो।

(१०) क़त्ल और कैद का, बद्र में।

(११) यानी लोगों को अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने से रोके, यह आयत काफ़िरों में से उन बारह कु़रैशियों के बारे में उतरी जिनको न काफ़िर लश्कर का ख़ाना अपने जिम्मे लिया था और हर एक उनमें से लश्कर को ख़ाना देता था हर रोज़ दस ऊंट।

(१२) कि माल भी गया और काम भी न बना।

(१३) यानी अगर वह काफ़िरों को ईमान वालों से मुमताज़ कर दे।

(१४) कि दुनिया और आख़िरत के टोटे में रहे और अपने माल खर्च करके आख़िरत का अज़ाब माल लिया।

सूरए अनफ़ाल - पाँचवां रूकू

(१) इस आयत से मालूम हुआ कि काफ़िर जब कुफ़र से बाज़ आए और इस्लाम लाए तो उसका पहला कुफ़र और गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

(२) कि अल्लाह तआला अपने दुश्मनों को हलाक करता है और अपने नवियों और बलियों की मदद करता है।

(३) यानी शिर्क।

(४) ईमान लाने से।

(५) तुम उसकी मदद पर भरोसा रखो।

पारा नौ समाप्त

दसवां पारा- वअलमू (सूरए अनफ़ाल जारी)

और जान लो कि जो कुछ गनीमत (सुख के बाद हाथ आया माल) लो^(६) तो उसका पांचवाँ हिस्सा खास अल्लाह और रसूल और करावत (रिशतेदार) वालों और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों का है^(७) अगर तुम ईमान लाए हो अल्लाह पर और उसपर जो हमने अपने बन्दे पर फ़ैसले के दिन उतारा जिसमें दोनों फ़ौजें मिली थीं^(८) और अल्लाह सब कुछ कर सकता है^(९) जब तुम नाले के किनारे थे^(१०) और काफ़िर परले किनारे और काफ़िला^(११) तुमसे तराई में^(१२) और अगर तुम आपस में कोई वादा करते तो ज़रूर वक्त पर बराबर न पहुंचते^(१३) लेकिन यह इसलिये कि अल्लाह पूरा करे जो काम होना है^(१४) कि जो हलाक हो दलील से हलाक हो^(१५) और जो जिये दलील से जिये^(१६) और वेशक अल्लाह ज़रूर सुनता है^(१७) जब कि ऐ मेहबूब अल्लाह तुम्हें काफ़िरों को तुम्हारे ख़ाव में थोड़ा दिखाता था^(१८) और ऐ मुसलमानो अगर वह तुम्हें बहुत करके दिखाता तो ज़रूर तुम वुजदिली करते और मामले में झगड़ा डालते^(१९) मगर अल्लाह ने बचा लिया^(२०) बेशक वह दिलों की बात जानता है^(२१) और जब लड़ते वक्त^(२२)

وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ خُصْمَهُ
وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ وَ
ابْنِ السَّبِيلِ ۚ إِن كُنتُمْ أَمُنْتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أُنزَلْنَا
عَلَيْكُمْ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ التَّفَاقُ ۚ
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدُوِّ
الَّذِينَ هُمْ بِالْعُدُوِّ وَالْغُصْبِ وَالزُّكْبِ اسْفَلُ
مِنْكُمْ ۚ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لَا تَخْتَلِفُمْ فِي الْيَمِينِ ۚ
وَلَكِنْ يَفْضِي اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لَّيْهْلِكَ
مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَبَحْيَىٰ مِنْ كَيْ عَنْ
بَيِّنَةٍ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ۖ إِذْ يُرِيكُمُ اللَّهُ
فِي مَنَازِلِكُمْ قُلُوبًا وَلَوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ فَتُنَتُمْ
وَلَكِنَّا زَعَمْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۚ إِنَّهُ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۖ وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذْ

सूरए अनफ़ाल - पाँचवाँ - रूकू (जारी)

- (६) चाहे कम या ज्यादा, गनीमत वह माल है जो मुसलमानों को काफ़िरों से जंग में विजय के बाद हासिल हो. माले गनीमत पाँच हिस्सों पर तक्सीम किया जाए, इसमें से चार हिस्से लड़ने वालों के लिये.
- (७) गनीमत का पाँचवाँ हिस्सा, फिर पाँच हिस्सों पर तक्सीम होगा. इनमें से एक हिस्सा जो कुल माल का पच्चीसवाँ हिस्सा हुआ, वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के लिये है, और एक हिस्सा आपके पहले करावत के लिये, और तीन हिस्से यतीमों और मिस्कीनों मुसाफ़िरों के लिये. रसूल करीम के बाद हुज़ूर और आपके पहले करावत के हिस्से भी यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों को मिलेंगे और यह पाँचवाँ हिस्सा इन्हीं तीन पर तक्सीम हो जाएगा. यही कौल है इमाम आजम अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो अन्हो का.
- (८) इस दिन से बद्र का दिन मुराद है और दोनों फ़ौजों से मुसलमानों और काफ़िरों की फ़ौजें. और यह घटना सवह या उन्नीस रमज़ान को पेश आई. रसूलुल्लाह के सहाबा की संख्या तीन सौ दस से कुछ ज्यादा थी और मुथिक हज़ार के करीब थे. अल्लाह तआला ने उन्हें परास्त किया. उनमें से सत्तर से ज्यादा मारे गए और इतने ही गिरफ़्तार हुए.
- (९) जो मदीनए तैयिबह की तरफ़ है.
- (१०) कुरैश का, जिसमें अबू सुफ़ियान वगैरह थे.
- (११) तीन मील के फ़ासल पर समुद्र तट की तरफ़.
- (१२) यानी अगर तुम और वो आपस में जंग का कोई समय निर्धारित करते, फिर तुम्हें अपनी अल्पसंख्या और बग़ामानी और उनकी कसरत और सामान का हाल मालूम होता तो ज़रूर तुम दहशत और अन्देश से मीआद में इस्तिलाफ़ करते.
- (१३) यानी इस्लाम और मुसलमानों की जीत और दीन का अम्मान और दीन के दुश्मनों की हलाकत, इसलिये तुम्हें उसने व मीआदी जमा कर दिया.
- (१४) यानी खुला तर्क कायम होने और इब्रत का मुआयना कर लेने के बाद.
- (१५) मुहम्मद वित इस्लाम ने कहा कि हलाक से कुछ और हयात से ईमान मुराद है. मानी ये है कि जो कोई काफ़िर हो, उसका चाहिये कि पहले हुज़त या तर्क कायम करे और ऐसे ही जो ईमान लाए वह यकीन के साथ ईमान लाए और हुज़त एवं दलील से जान ले कि यह सच्चा दीन है. बद्र का वाकिआ खुली निशानियों में से है. इसके बाद जिसने कुछ इस्तियार किया वह घमण्डी है और अपने नफ़स का धांधला देता है.
- (१६) यह, अल्लाह तआला की नेअमत थी कि नबी सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को काफ़िरों की संख्या थोड़ी दिखाई गई और

التَّائِبِينَ فِي آعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّبُكُمْ فِي آعْيُنِهِمْ
لِيَفْضِلَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا وَإِلَى اللَّهِ
تُرْجَعُ الْأُمُورُ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُلْتُمْ فِيهِ
فَاتَّبِعُوا وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ
وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا
وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ
وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ
بَطْرًا وَرِثَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ
اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ وَإِذْ زَيْنٌ
لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَاهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمْ
الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ فَلَمَّا تَرَآتِ
الْفِئَتَيْنِ تَكَصَّ عَلَى عَقَبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِحْتُ
فِيكُمْ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ

तुम्हें करके दिखाए^(१०) और तुम्हें उनकी निगाहों में थोड़ा
किया^(११) कि अल्लाह पूरा करे जो काम होना है^(१२) और
अल्लाह की तरफ सब काम पलटने वाले हैं^(१३)

छटा रुकू

ऐ ईमान वालो जब किसी फौज से तुम्हारा मुकाबला हो तो
साबित कदम(डटे) रहो और अल्लाह की याद बहुत करो^(१)
कि तुम मुराद को पहुंचाओ^(२) और अल्लाह और उसके
रसूल का हुक्म मानो और आपस में झगड़ो नहीं कि फिर
बुझदिली करोगे और तुम्हारी बंधी हुई हवा जाती रहेगी^(३)
और सत्र करो, बेशक अल्लाह सत्र वालों के साथ है^(४)
और उन जैसे न होना जो अपने घर से निकले इतराते और
लोगों के दिखाने को और अल्लाह की राह से रोकते^(५) और
उनके सब काम अल्लाह के क़ाबू में हैं^(६) और जबकि
शैतान ने उनकी निगाह में उनके काम भले कर दिखाए^(७)
और वोला आज तुमपर कोई शख्स ग़ालिब आने वाला नहीं
और तुम मेरी पनाह में हो तो जब दोनों लश्कर आमने
सामने हुए उलटे पाँव भागा और बोला मैं तुमसे अलग हूँ^(८)
मैं वह देखता हूँ जो तुम्हें नज़र नही आता^(९) मैं अल्लाह से

आपने अपना यह ख़्वाब सद्दाबा से बयान किया। इससे उनकी हिम्मतें बढ़ीं और अपनी कम ताक़ती का अन्देशा न रहा और उन्हें
दुश्मन पर ज़ुरअत पैदा हुई और दिल मज़बूत हुए। नवियों का ख़्वाब सच्चा होता है। आपको काफ़िर दिखाए गए थे और ऐसे काफ़िर
जो दुनिया से वे ईमान जाएं और कुफ़्र पर ही उनका अन्त हो। वो थोड़े ही थे, क्योंकि जो लश्कर मुकाबले पर आया था उसमें काफ़ी
लोग वो थे जिन्हें अपनी ज़िन्दगी में ईमान नसीब हुआ और ख़्वाब में कम संख्या की ताबीर कमज़ोरी से है। चुनांचे अल्लाह तआला
ने मुसलमानों को ग़ालिब फ़रमाकर काफ़िरों की कमज़ोरी ज़ाहिर फ़रमा दी।

(१७) और अड़िग रहने या भाग छूटने के बीच हिचकिचाते हुए रहने।

(१८) तुमको बुझदिली, हिचकिचाहट और आपसी मतभेद से।

(१९) ऐ मुसलमानों!

(२०) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहू अन्हा ने फ़रमाया कि वो हमारी नज़रों में इतने कम जब कि मैंने अपने बराबर वाले
एक आदमी से पूछा क्या तुम्हारे गुमान में काफ़िर सत्तर होंगे, उसने कहा मेरे ख़याल में सौ हैं और थे हज़ार।

(२१) यहाँ तक कि अबूजहल ने कहा कि इन्हें रस्सियों में बाँध लो जैसे कि वह मुसलमानों की जमाअत को इतना कम देख रहा
था कि मुक़बला करने और युद्ध करने के लायक भी ख़याल नहीं करता था और मुश्रिकों को मुसलमानों की संख्या थोड़ी दिखाने
में यह हिक़मत थी कि मुश्रिक मुक़ाबले पर जम जाएं, भाग न पड़ें और यह बात शुरु में थी, मुक़ाबला होने के बाद उन्हें मुसलमान
बहुत अधिक नज़र आने लगे।

(२२) यानी इस्लाम का ग़लबा और मुसलमानों की जीत और शिक की दमन और मुश्रिकों का अपमान और रसूल करीम
सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लिम के चमत्कार का इज़हार कि जो फ़रमाया था वह हुआ कि अल्पसंख्यक जमाअत भारी शरकम लश्कर
पर ग़ालिब आई।

सूरए अनफ़ाल - छटा रुकू

(१) उससे मदद चाहो और काफ़िरों पर काबू पाने की दुआएं करो। इससे मालूम हुआ कि इन्सान को हर हाल में लाज़िम है
कि वह अपने दिल और ज़वान को अल्लाह के ज़िक्र में लगाए रखे और किसी सन्नौ और परेशानी में भी उससे ग़ाफ़िल न हो।

(२) इस आयत से मालूम हुआ कि आपसी झगड़ें शिथिलता, कमज़ोरी और बेवक़ारी का कारण हैं
और यह भी मालूम हुआ कि आपसी झगड़ों से मेहफूज़ रहने की विधि ख़ुदा और रसूल की
फ़रमाँबरदारी और दीन का पालन है।

डरता हूँ^(४) और अल्लाह का अज़ाब सख्त है^(४८)

सातवाँ रूकू

जब कहते थे मुनाफ़िक़^(१) और वो जिनके दिलों में आज़ार है^(२) कि ये मुसलमान अपने दीन पर घमण्डी हैं^(३), और जो अल्लाह पर भरोसा करे^(४) तो बेशक अल्लाह^(५) मालिब हिकमत वाला है^(४९) और कभी तू देखे जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं मगर रहे हैं उनके मुंह और उनकी पीठ पर^(५०), और चबो आग का अज़ाब^(५०) यह^(५१) बदला है उसका जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा^(५२) और अल्लाह बन्दों पर जुल्म नहीं करता^(५३) जैसे फ़िरऔन वालों और उनसे अगलों का तरीका^(५४), वो अल्लाह की आयतों से इन्कारी हुए तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ा, बेशक अल्लाह कुव्वत वाला सख्त अज़ाब वाला है^(५५) यह इसलिये कि अल्लाह किसी क्रौम से जो नेअमत उन्हें दी थी बदलता नहीं जबतक वो ख़ुद न बदल जाए^(५६) और बेशक अल्लाह सुनता जानता है^(५७) जैसे फ़िरऔन वालों और उनसे अगलों का तरीका, उन्होंने अपने रब की

وَاللّٰهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ اِذْ يَقُولُ الْمُنٰفِقُوْنَ
وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ عَزَّوَلَّ ۝ دِيْنُهُمْ
وَمَنْ يَتَّوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۝ اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَلَّ ۝
وَلَوْ تَرَىٰ اِذْ يَتَوَكَّلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۝ الْمَلٰٓئِكَةُ
يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ ۝ وَاَذْبَاۤرُهُمْ ۝ وَذُوْقُوْا
عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ اَيْدِيَكُمْ
وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلٰمٍ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ كَذٰبُ الْ
فِرْعَوْنِ ۝ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۝ كَفَرُوْا بِآيٰتِ اللّٰهِ
فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۝ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا لِّعَمَلِهِ
اَنْعَمَهَا عَلٰٓى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرَ مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۝ وَ
اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ كَذٰبُ الْاِلٰهِيْنَ ۝ فِرْعَوْنُ
وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۝ كَذَّبُوْا بِآيٰتِ رَبِّهِمْ

مَرْكُز

(३) उनका सहायक और मददगार.

(४) यह आयत कु़रैश के काफ़िरों के बारे में उतरी जो बद्र में बहुत डरते और घमण्ड करते आए थे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने दुआ की - या रब ये कु़रैश आगे घमण्ड और अहंकार में डूबे हुए और जंग के लिये तैयार. तेरे रसूल को झुटलाते हैं. या रब, अब वह मदद इनायत हो जिसका तूने वादा किया था. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जब अबू सुफ़ियान ने देखा कि काफ़िले को कोई ख़तरा नहीं रहा तो उन्होंने कु़रैश के पास संदेश भेजा कि तुम काफ़िले की मदद के लिये आए थे, अब उसके लिये कोई ख़तरा नहीं है, इस लिये वापस जाओ. इसपर अबू ज़हल ने कहा कि ख़ुदा की क़सम हम वापस न होंगे यहाँ तक कि हम बद्र में उतरें, तीन दिन वहाँ ठहरें, ऊंट ज़िक्क करें, बहुत से ख़ाने पकाएं, शराब पियें, कनीज़ों का गाना बजाता सुनें. अरब में हमारी शोहरत हो और हमारी हैबत हमेशा बाकी रहे. लेकिन अल्लाह को कुछ और ही मंज़ूर था. जब वो बद्र में पहुंचे तो शराब के ज़ाम को जगह उन्हें मौत का प्याला पीना पड़ा और कनीज़ों के गाने बजाने के बदले रोने वालीयां उन्हें रोंदी. अल्लाह तआला मूमिनों को हुक्म फ़रमाता है कि इस वाक़ए से सबक पकड़ें और जान लें कि घमण्ड और अहंकार का अंजाम ख़राब है. बन्दे को इख़लास और ख़ुदा व रसूल की इताअत चाहिये.

(५) और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुशमनी और मुसलमानों के विरोध में जो कुछ उन्होंने किया था उसपर उनकी प्रशंसा की और उन्हें बुरे कामों पर कायम रहने की रुचि दिलाई और जब कु़रैश ने बद्र में जाने पर सहमति कर ली तो उन्हें याद आया कि उनके और बनी बज़्र कबीले के बीच शत्रुता है. संभव था कि वो यह ख़याल करके वापसी का इरादा करते. यह शैतान को मंज़ूर न था. इसलिये उसने यह धोखा किया कि वह सुराक़्ह बिन मालिक बिन जअसम बनी कनानह के सरदार की सूत्र में नमूदार हुआ और एक लश्कर और एक झण्डा साथ लेकर मुशिकों से आ मिला. और उनसे कहने लगा कि मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार हूँ आज तुम पर कोई मालिब आने वाला नहीं. जब मुसलमानों और काफ़िरों के दोनों लश्कर आमने सामने हुए तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक मुट्ठी मिट्टी मुशिकों के मुंह पर मारी और वो पीठ फेर कर भागे और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम इब्नीसे लईन की तरफ़ बढ़े जो सुराक़्ह की शक़ल में हारिस बिन हिशाम का हाथ पकड़े हुए था. वह हाथ छुड़ा कर अपने गिरोह समेत भागा. हारिस पुकारता रह गया, सुराक़्ह, सुराक़्ह, तुम तो हमारे ज़ामिन हुए थे, कहाँ जाते हो. कहने लगा मुझे वह नज़र आता है जो तुम नहीं देख पा रहे हो. इस आयत में इसी घटना का बयान है.

(६) और अम्न की जो ज़िम्मेदारी ली थी उससे सुबुकदोश होता हूँ. इस पर हारिस बिन हिशाम ने कहा कि हम तेरे भरोसे पर आए थे, तू इस हालत में हमें रुखा करेगा. कहने लगा -

(७) यानी फ़रिश्तों की फ़ौज.

आयतें झुटलाई तो हमने उनको उनके गुनाहों के कारण हलाक किया और हमने फिरऔन वालों को डुबो दिया^(१) और वो सब ज़ालिम थे^(२) वेशक सब जानवरों में बदतर अल्लाह के नज़दीक वो हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और ईमान नहीं लाते^(३) वो जिन से तुमने मुआहिदा (समझौता) किया था फिर हर बार अपना एहद तोड़ देते हैं^(४) और डरते नहीं^(५) तो अगर तुम उन्हें कहीं लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसा क़त्ल करो जिससे उनके बचे हुआ को भगाओ^(६) इस उम्मीद पर कि शायद उन्हें इब्रत (सीख) हो^(७) और अगर तुम किसी क़ौम से दगा का डर करो^(८) तो उनका एहद उनकी तरफ़ फेंक दो बराबरी पर^(९) वेशक दगा वाले अल्लाह को पसन्द नहीं^(१०)

आठवाँ रुकू

और हरगिज़ काफ़िर इस घमण्ड में न रहें कि वो^(१) हाथ से निकल गए वेशक वो आजिज़ नहीं करते^(२) और उनके लिये तैयार रखो जो कुव्वत तुम्हें वन पड़े^(३) और जितने घोड़े बांध सको कि उनसे उनके दिलों में धाक बिठाओ जो अल्लाह के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन हैं^(४) और उनके सिवां कुछ औरों के दिलों में जिन्हें तुम नहीं जानते^(५) अल्लाह उन्हें जानता है, और अल्लाह की राह में

فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِدُنُوبِهِمْ وَأَعْرَفْنَاهُ الْفِرْعَوْنَ ۖ وَ
كُلُّ كَانُوا ظَالِمِينَ ۝ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ
اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ
عَاهَدَتْ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْفُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي
كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۝ فَمَا تَقْفُهُمْ فِي
الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِرَأْمٍ مِّنْ خَلْقِهِمْ لَعَلَّهِمْ يَدْعُرُونَ ۝
وَأَمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْبِذْ إِلَيْهِمْ
عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ۝ وَلَا
يُحْسِنَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبُوءًا إِنَّهُمْ لَا يُعْجِرُونَ ۝
وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ
الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَ
أَخْرَجَ مِنْ دُونِهِمْ ۖ لَا تَعْلَمُونَهُمُ ۚ اللَّهُ
يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تَنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

منزل

(८) कहीं वह मुझे हलाक न कर दे, जब काफ़िरों को हार हुई और वो पराजित होकर मक्का मुकर्रमा पहुंचे तो उन्होंने मशहूर किया कि हमारी हार और पराजय का कारण सुराकह हुआ, सुराकह को यह ख़बर पहुंची तो उसे अचंभा हुआ और उसने कहा ये लोग क्या कहते हैं, न मुझे उनके आने की ख़बर, न जाने की, पराजय हो गई तब मैंने सुना है, कुरैश ने कहा, तू अमुक अमुक दिन हमारे पास आया था, उसने क़सम खाई कि यह ग़लत है, तब मालूम हुआ कि वह ग़ैतान था।

सूरए अनफ़ाल - सातवाँ रुकू

- (१) मदीने के,
- (२) ये मक्का मुकर्रमा के कुछ लोग थे जिन्होंने कलिमा तो पढ़ लिया था मगर अभी तक उनके दिलों में शक़ शুবह बाक़ी था, जब कुरैश के काफ़िर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जंग के लिये निकले, यह भी उनके साथ बद्र में पहुंचे, वहाँ जाकर मुसलमानों को कम तादाद में देखा तो शक़ और बढ़ा और मुर्तद हो गए और कहने लगे,
- (३) कि अपनी कम ग्रंथ के बावजूद ऐसे भारी लश्कर के मुकाबले में आगए, अल्लाह तआला फ़रमाता है,
- (४) और अपना काम उसके सुपुर्द करदे और उसके फ़ज़ल और एहसान पर संतुष्ट हो,
- (५) उसका हाफ़िज़ और नासिर है,
- (६) लोहे के गदा जो आग में लाल किये हुए हों और उनसे जो ज़ख़्म लगता है उससे आग पड़ती है और जलन हानती है, उनसे मारकर फ़रिश्ते काफ़िरों से कहते हैं,
- (७) मुसीबत और अज़ाब,
- (८) यानी जो तुमने कमाया, कुफ़्र और गुनाह,
- (९) किसी पर बेजुर्म अज़ाब नहीं करता और काफ़िर पर अज़ाब करना इन्ज़ाफ़ है,
- (१०) यानी इन काफ़िरों की आदत कुफ़्र और सरकशी में फिरौनी और उनसे पहलों जैसी है, तो जिस तरह वो हलाक किये गए, ये भी बद्र के दिन क़त्ल और कैद में मुजिला किये गए, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जिस तरह फ़िरअनियों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की नबुव्वत को यकीन जानकर उनको झुटलाया, यही हाल इन लोगों का है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत को जान पहचान कर झुटलाते हैं,
- (११) और अधिक बदतर हाल में मुजिला न हों जैसे कि अल्लाह तआला ने मक्के के काफ़िरों को रोज़ी देकर भूख की तकलीफ़ दूर की, अन्न देकर ख़ाफ़ से निजात दिलाई और उनकी तरफ़ अपने हवीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नबी बनाकर भेजा, उन्होंने

जो कुछ खर्च करोगे तुम्हें पूरा दिया जाएगा^(१) और किसी तरह घाटे में नहीं रहोगे^(६०) और अगर वो सुलह की तरफ झुके तो तुम भी झुको^(६१) और अल्लाह पर भरोसा रखो बेशक वही है सुनता जानता^(६२) और अगर वो तुम्हें धोखा दिया चाहें^(६३) तो बेशक अल्लाह तुम्हें काफ़ी है, वही है जिसने तुम्हें ज़ोर दिया अपनी मदद का और मुसलमानों का^(६४) और उनके दिलों में मेल कर दिया^(६५) और अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है सब खर्च कर देते उनके दिल न मिला सकते^(६६) लेकिन अल्लाह ने उनके दिल मिला दिये बेशक वही है गालिब हिकमत वाला^(६७) ऐ ग़ैव की खबरें वताने वाले (नबी) अल्लाह तुम्हें काफ़ी हैं और ये जितने मुसलमान तुम्हारे पैरो (मानने वाले) हुए^(६८)

नवाँ खूकू

ऐ ग़ैव की खबरें वताने वाले ! मुसलमानों को जिहाद की तरगीब (प्रेरणा) दो, अगर तुम में के बीस सन्न वाले होंगे दो सौ पर गाबिल होंगे, और अगर तुम में के सौ हों तो काफ़िरों के हजार पर गालिब आएंगे इसलिये कि वो समझ नहीं रखते^(६९) अब अल्लाह ने तुमपर से तखफ़ीफ़ (कटौती)

يُوفِّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۝ وَإِنْ جَنَحُوا
لِلْسُلَيْمِ فَأَجْتَمَعْنَا لَهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ
فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي آتَاكَ بِبَصِيرَةٍ وَ
بِالْمُؤْمِنِينَ ۝ وَالْفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَوْ أَنْفَقْتَ مَا
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِمَّا آفَتْ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ
وَلَكِنَّ اللَّهَ أَلْفَ بَيْنَهُمْ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ خُذْ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
عَلَى الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عَشْرُونَ صَبِرُونَ
يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۝ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ
يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَا يَفْقَهُونَ ۝ أَلَنْ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ

مَنْزِلَ

इन नेअमतों पर शुक तो न किया, उल्टे यह सरकशी की कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाया, उनका झूठ बहाने पर उतारु हुए और लोगों को अल्लाह की राह से रोक। सदी का कौल है कि अल्लाह की नेअमत सौयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं।

(१२) ऐसे ही ये कुरैश के काफ़िर हैं जिन्हें बद्र में हलाक किया गया।

(१३) इब्न शरद दवाबे और इसके बाद की आपतें बनी कुरैज़ा के यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई जिनका रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से एहद था कि वो आप से न लड़ेंगे न आपके दुशमनों की मदद करेंगे, उन्होंने एहद तोड़ा और मक्के के मुश्रिकों ने जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जंग की तो उन्होंने हथियारों से उनकी मदद की फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मअज़िरत की कि हम भूल गए थे और हमसे गलती हो गई, फिर दोबारा एहद किया और उसकी भी तांड़ा, अल्लाह तआला ने उन्हें सब जानवरों से बदतर बताया क्योंकि काफ़िर सब जानवरों से बदतर हैं और कुफ़्र के साथ साथ एहद तोड़ने वाले भी हों तो और भी ख़राब।

(१४) अल्लाह से, न एहद तोड़ने के ख़राब नतीजे से, और न इससे शरमाते हैं जब कि एहद तोड़ना हम समझ बूझ वालों के लिये शर्मनाक जुर्म है और एहद तोड़ने वाला सबके नज़दीक बे एतिबार हो जाता है, जब उनकी बेग़ैरती इस दर्जे पहुंच गई तो यकीनन वो जानवरों से बदतर हैं।

(१५) और उनकी हिम्मतें तोड़ दो और उनकी जमाअतों की मुत्तशिर कर दो।

(१६) और वो नसीहत कुबूल करें।

(१७) और ऐसी संभावनाएं पाई जाएं जिनसे साबित हो कि वो उज़्र करेंगे और एहद पर क़ायम न रहेंगे।

(१८) यानी उन्हें इस एहद की मुख़ालिफ़त करने से पहले आगाह कर दो कि तुम्हारी यद एहदी के निशान पाए गए इस लिये वह एहद ऐतिबार के काबिल न रहा, उसकी पाबन्दी न की जाएगी।

सूरए अनफ़ाल - आठवाँ खूकू

(१) बद्र की लड़ाई से भाम कर क़त्ल और कैद से बच गए और मुसलमानों के

(२) अपने मिरफ़तार करने वाले को, उसके बाद मुसलमानों को ख़िताब होता है।

(३) चाहे वो हथियार हों या क़िले या तीर अन्दाज़ी, मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि सौयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इस आपत की तफ़सीर में कुबूल के मानी रमी यानी तीर अन्दाज़ी बताया।

(४) यानी काफ़िर मक्के वाले हों या दूसरे।

फ़रमाई और उसे इल्म है कि तुम कमज़ोर हो तो अगर तुम में से सौ सत्र वाले हों दो सौ पर ग़ालिब आएंगे, और अगर तुम में के हजार हों तो दो हजार पर ग़ालिब आएंगे अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह सत्र वालों के साथ है (६६) किसी नबी को लायक़ नहीं कि काफ़िरों को ज़िन्दा कैद करे जब तक ज़मीन में उनका खून खूब न बहाए (६७) तुम लोग दुनिया का माल चाहते हो (६८) और अल्लाह आखिरत चाहता है (६९) और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (६७) अगर अल्लाह पहले एक बात लिख न चुका होता (७०) तो ऐ मुसलमानों तुम ने जो काफ़िरों से बदले का माल ले लिया उसमें तुमपर बड़ा अज़ाब आता (६८) तो खाओ जो ग़नीमत तुम्हें मिली हलाल पाकीज़ा (६९) और अल्लाह से डरते रहो वेशक अल्लाह वरख़ाने वाला मेहरबान है (६९)

दसवाँ रूक़

ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले ! जो कैदी तुम्हारे हाथ में हैं उनसे फ़रमाओ (७१) अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिल में भलाई जानी (७२) तो जो तुमसे लिया गया (७३) उससे बेहतर तुम्हें अता फ़रमाएगा और तुम्हें वरख़ाने देगा और अल्लाह वरख़ाने वाला मेहरबान है (७४) और ऐ मेहबूब अगर वो (७५) तुमसे दगा चाहेंगे (७६) तो उससे पहले अल्लाह ही की ख़यानत कर चुके

أَنْ فِيكُمْ ضِعْفًا فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِّائَةٌ مَّبَايِرَةٌ
يَعْلَمُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَعْلَمُوا
أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۚ مَا كَانَ
لِنَبِيِّ أَنْ يَكُونَ لَهُ آسَرَةٌ حَتَّىٰ يَبْتَغِيَنَّ فِي
الْأَرْضِ شُرَيْدًا وَنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۗ وَاللَّهُ يُرِيدُ
الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ لَوْ كُنْتُمْ مِنَ الَّذِينَ
سَبَقُ لَكُمُ فِيهَا أَخَذْتُمْ عَذَابَ عَظِيمٍ ۚ فَكُلُوا
وَمِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ
عَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ يَأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ
مِّنَ الْأَسْرَةِ إِنْ يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا
يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أَخَذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرَ لَكُمْ ۚ وَ
اللَّهُ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۚ وَإِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ
فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۚ

(७१) इन्हे ज़ेद का क़ौल है कि यहाँ औरों से मुनाफ़िक़ मुराद हैं, इसन का क़ौल है कि काफ़िर जिन्न.

(७२) उसका भरपूर इनाम मिलेगा.

(७३) उसने सुलह कुबूल कर ली.

(७४) उनसे सुलह का इज़हार धोखा देने के लिये करें.

(७५) जैसा कि औस व झज़रज क़बीलों में महबूत और दोस्ती पैदा कर दी, जबकि उनमें सौ बरस से ज़्यादा की दुश्मनी थी और बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ होती रहती थीं. यह सिर्फ़ अल्लाह की मेहरबानी है.

(१०) यानी उनकी आपसी दुश्मनी इस हद तक पहुंच गई थी कि उन्हें मिला देने के सारे साधन बेकार हो चुके थे और कोई सूत बाक़ी न रही थी. ज़ग़ ज़ग़ ग़ी बात में बिगड़ जाते और सदियों तक जंग बाक़ी रहती. किसी तरह दो दिल न मिल सकते. जब रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ लाए और अरब लोग आपपर ईमान लाए और उन्होंने आपका अनुकरण किया तो यह हालत दूर हुई और ईमानी महबूतें पैदा हुईं. यह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का रौशन चमत्कार है.

(११) सईद बिन जुबैर हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि यह आयत हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो के ईमान लाने के बारे में उतरी. ईमान से सिर्फ़ तैंतीस मर्द और छह औरतें माला माल हो चुकी थीं तब हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ईमान लाए. इस क़ौल की बिना पर यह आयत मक्की है. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म से मदनी सूत में लिखी गई. एक क़ौल यह है कि यह आयत बद्र की लड़ाई में जंग शुरू होने से पहले उतरी. इस सूत में यह आयत मदनी है. और मूमिनीन से यहाँ एक क़ौल में अन्सार, एक में तमाम मुहाजिर और अन्सार मुराद हैं.

सूरए अनफ़ाल - नवाँ रूक़

(१) यह अल्लाह तआला की तरफ़ से वादा और बशारत है कि मुसलमानों की जमाअत साबिर रहें तो अल्लाह की मदद से दस गुने काफ़िरों पर ग़ालिब रहेगी, क्योंकि काफ़िर जाहिल हैं और उनकी गरज़ जंग से, न सवाब हासिल करने की है, न अज़ाब का ख़ौफ़ है. जादवों की तरह लड़ते भिड़ते हैं. तो वो अल्लाह के लिये लड़ने वालों के मुकाबले में क्या ठहर सकेंगे. बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो मुसलमानों पर फ़र्ज़ कर दिया गया कि मुसलमानों का एक नफ़र दस के मुकाबले से न भागे. फिर आयत "अलआना ख़फ़फ़ल्लाहो" नाज़िल हुई तो यह लाज़िम किया गया कि एक नफ़र सौ दो सौ के मुकाबले में कायम रहे यानी दस गुने से मुकाबले की अनिवार्यता स्थापित हुई और दुगने के मुकाबले में भागना मना रखा गया.

(२) और काफ़िरों के क़त्ल में बढ़ा चढ़ा कर कुफ़्र की ज़िल्लत और इस्लाम की शान का इज़हार न करे। मुस्लिम शरीफ़ वसय्यरह की हदीसों में है कि जंग वद्र में सत्तर काफ़िर कैद करके सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के समक्ष लाए गए। हुज़ूर ने उनके शर में सहाबा से मशवरा तलब किया। अबूबक़र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अहो ने अर्ज़ किया कि यह आपकी क़ौम और क़र्बाले के लोग हैं मेरी राय में इन्हें फ़िदिया लेकर छोड़ दिया जाए। इससे मुसलमानों की कुव्वत भी पहुंचगी और क्या अजब है कि अल्लाह तआला इन लोगों को इस्लाम नसीब करे। हज़रत उमर रदियल्लाहो अहो ने फ़रमाया कि उन लोगों ने आपको झुटलाया, आपको मक्क़म मुक़र्रमा में न रहने दिया। ये कुफ़्र के सरदार और सरपरस्त हैं, इनकी गर्दन उड़ाइये। अल्लाह तआला ने आपको फ़िदिया से ग़नी किया है। अली मुर्तज़ा को अक़ील पर और हज़रत हमज़ा को अब्बास पर और मुझ मर रिश्तेदार पर मुक़र्रर कीजिये कि उनकी गर्दन मार दें। आख़िरकार फ़िदिया ही लेने की राय करार पाई और जब फ़िदिया लिया गया तो आयत उतरी।

(३) यह सम्बोधन ईमान वालों का है, और माल से फ़िदिया मुराद है।

(४) यानी तुम्हारे लिये आख़िरत का सवाब जो काफ़िरों के क़त्ल और इस्लाम की इज़ज़त पर निर्भर है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अहो ने फ़रमाया कि यह हुक्म बद्र में था जब कि मुसलमान थोड़े थे। फिर जब मुसलमानों की संख्या अधिक हुई और वो अल्लाह के करम से ताक़तवर हुए तो कैदियों के हक़ में नाज़िल हुई "फ़ इम्मा मन्नम वअदु व इम्मा फ़िदाउन" (फिर उसके बाद चाहे पहचान करके छोड़ दो, चाहे फ़िदिया ले लो - सूरह मुहम्मद, आयत ४) और अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और मूमीनीन को इज्जियार दिया कि चाहे काफ़िरों को क़त्ल करें चाहे उन्हें गुलाम बनाएं, चाहे फ़िदिया लें, चाहे आज्ञाद करें। वद्र के कैदियों का फ़िदिया चालीस ओक़िया सोना प्रति कैदी था जिसके सोलह सौ दिरहम हुए।

(५) यह कि इज्जिहाद पर अमल करने वाले की पकड़ न की जाएगी। और यहाँ सहाबा ने इज्जिहाद ही किया था और उनकी फ़िक्र में यही बात आई थी कि काफ़िरों को ज़िन्दा छोड़ देने में उनके दीन का कुव्वत मिलती है और इसपर तज़र नहीं की गई कि क़त्ल में इस्लाम की इज़ज़त और काफ़िरों के लिये सबक़ है। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इस दीनी मामले में सहाबा की राय दरियाफ़्त फ़रमाना इज्जिहाद के जायज़ होने की दलील है। या "किताबुम मिनल्लाहे सयक़ा" से वह मुराद है जो उसने नौहें मेहफूज़ में लिखा कि वद्र वालों पर अज़ाब न किया जाएगा।

(६) जब ऊपर की आयत उतरी तो नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा ने जो फ़िदिये लिये थे उनसे हाथ रोक लिये। इसपर यह आयत उतरी और बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी ग़नीमतें हलाल की गईं, उन्हें ख़ाओ। सही हदीसों में है अल्लाह तआला ने हमारे लिये ग़नीमतें हलाल कीं, हम से पहले किसी के लिये हलाल न की गई थीं।

सूरह अनफ़ाल - दसवाँ स्कू

(१) यह आयत हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहो अहो के बारे में उतरी जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चचा हैं। यह क़ुरैश के काफ़िरों के उन दस सरदारों में से थे जिन्होंने वद्र की लड़ाई में काफ़िरों के लश्कर के ख़ाने की ज़िम्मेदारी ली थी और यह इस ख़र्च के लिये बीस ओक़िया सोना साथ लेकर चले थे (एक ओक़िया चालिस दिरहम का तांता है) लेकिन उनके ज़िम्मे जिस दिन ख़िलाना टहरा था, ख़ास उसी रोज़ जंग का बाकिआ पेश आया और लड़ाई में ख़ाना ख़िलाने की फ़ुरत और समय न मिला तो यह बीस ओक़िया उनके पास बच रहा। जब वह गिरफ़्तार हुए और यह सोना उनसे ले लिया गया तो उन्होंने दरख़्वास्त की कि यह सोना उनके फ़िदिये में लगा लिया जाए। मगर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इन्कार फ़रमाया। इरशाद किया जा चीज़ हमारी मुज़्जातिफ़्त में ख़र्च करने के लिये लाए थे वह न छोड़ी जाएगी। और हज़रत अब्बास पर उनके दो भतीजों अक़ील इब्ने अबी तालिब और नोफ़ल बिन हारिस के फ़िदिये का बार भी डाला गया। तो हज़रत अब्बास ने अर्ज़ किया या मुहम्मद, तुम मुझे इस हाल में छोड़ोगे कि मैं बाक़ी उम्र क़ुरैश से मांग मांग कर बसर किया करूँ। तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि फिर वह सोना कहाँ है जो तुम्हारे मक्क़म मुक़र्रमा से चलने वक़्त तुम्हारी बीबी उम्मुल फ़त्तन ने दफ़्त किया है और तुम उनसे कह आप हाँ कि ख़बर नहीं मुझे क्या हादसा पेश आए, अगर मैं जंग में काम आजाऊँ तो यह तेरा है, और अब्दुल्लाह और उयैदुल्लाह का, और फ़ज़ल और क़स्सिम का (सब उनके बेटे थे)। हज़रत अब्बास ने अर्ज़ किया कि आपको कैसे मालूम हुआ। हुज़ूर ने फ़रमाया मुझ मर ख़ब दी है। इसपर हज़रत अब्बास ने अर्ज़ किया मैं ग़वाही देता हूँ वेशक़ आप सच्चे हैं और मैं ग़वाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और वेशक़ आप उसके बन्दे और रसूल हैं। मर इस राज़ पर अल्लाह के सिवा कोई सूचित न था। और हज़रत अब्बास ने अपने भतीजों अक़ील और नोफ़ल को हुक्म दिया वो भी इस्लाम ले आए।

(२) ईमान की सच्चाई और नियत की दुरुस्ती से।

(३) यानी फ़िदिया।

(४) जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास बहरीन का माल आया जिसकी भिक्कदार अरसी हजार थी तो हुज़ूर ने ज़ोहर की नमाज़ के लिये बुज़ू किया और नमाज़ से पहले पहले कुल का कुल माल तंक्सीम कर दिया और हज़रत अब्बास रदियल्लाहो अहो को हुक्म दिया कि इसमें से ले लो। तो जितना उनसे उठ सका उतना उन्होंने ले लिया। यह फ़रमाते थे कि यह उससे बेहतर है कि जो अल्लाह ने मुझ से लिया और मैं उसकी मग़फ़िरत की उम्मीद रखता हूँ। उनकी मालदारी का यह हाल हुआ कि उनके बीस गुलाम थे, सब के सब ताजिर और उनमें सब से कम पूंजी जिसकी थी उसकी बीस हजार की थी।

(५) वो कैदी।

हैं जिस पर उसने इतने तुम्हारे काबू में दे दिये^(६) और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है^(७) बेशक जो ईमान लाए और अल्लाह के लिये^(८) घर बार छोड़े और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से लड़े^(९) और वो जिन्होंने जगह दी और मदद की^(१०) वो एक दूसरे के वारिस हैं^(११) और वो जो ईमान लाए^(१२) और हिजरत न की तुम्हें उनका तर्का कुछ नहीं पहुंचता जबतक हिजरत न करें और अगर वो दीन में तुमसे मदद चाहें तो तुमपर मदद देना वाजिब (अनिवार्य) है मगर ऐसी क़ौम पर कि तुम में उनमें मुआहिदा है, और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है^(१३) और काफिर आपस में एक दूसरे के वारिस हैं^(१४) ऐसा न करोगे तो ज़मीन में फ़ितना और बड़ा फ़साद होगा^(१५) और वो जो ईमान लाए और हिजरत की और अल्लाह की राह में लड़े और जिन्होंने जगह दी और मदद की वही सच्चे ईमान वाले हैं, उनके लिये वरिश्श है और इज़्ज़त की रोज़ी^(१६)

وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجْهَهُدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَمَيُّهَا جَرُوا مَا لَكُمْ مِنْ وَلَا يَتَّبِعُهُمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يَمَيُّهَا جَرُوا ۚ وَإِنْ اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمْ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا تَفْعَلُوهُ لَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجْهَهُدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

منزل

- (६) तुम्हारी बेअत से फिर कर, और कुछ इस्तिथार करके।
 (७) जैसा कि वो बद्र में देख चुके हैं कि क़त्ल हुए, गिरफ़्तार हुए। आयन्दा भी अगर उनके यही तौर तरीक़े रहे तो उन्हें उसी का उम्मीदवार रहना चाहिये।
 (८) और उसी के रसूल की महबूत में उन्होंने अपन।
 (९) ये पहले पहले के मुहाजिर हैं।
 (१०) मुसलमानों की, और उन्हें अपने मकानों में ठहराया। ये अन्सार हैं। इन मुहाजिरों और अन्सार दोनों के लिये इशाराद होता है।
 (११) मुहाजिर अन्सार के और अन्सार मुहाजिर के। यह विरासत आयत "وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجْهَهُدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ" (और अपने माल अल्लाह की किताब में एक दूसरे से ज्यादा करीब हैं - सूरए अहज़ाब, आयत ६) से स्थगित हो गई।
 (१२) और मक्कए मुकर्रमा ही में मुक़ीम रहे।
 (१३) उनके और ईमान वालों के बीच विरासत नहीं। इस आयत से साबित हुआ कि मुसलमानों को काफ़िरों के साथ उठने बैठने और उनकी विरासत से मना किया गया और उनसे अलग रहने का हुक्म दिया गया और मुसलमानों पर आपस में मेल जोल रखना लाज़िम किया गया।
 (१४) यानी अगर मुसलमानों में आपस में सहकार्य और सहयोग न हो और वो एक दूसरे के मददगार होकर एक ताक़त न बन जाएं तो कुफ़्कार मज़बूत होंगे और मुसलमान कमज़ोर, और यह बड़ा फ़ितना व फ़साद है।
 (१५) पहली आयत में मुहाजिरों और अन्सार के आपसी सम्बन्धों और उनमें से हर एक के दूसरे के सहायक व मददगार होने का बयान था। इस आयत में उन दोनों के ईमान की तस्दीक और उनपर अल्लाह की रहमत होने का ज़िक्र है।

और जो वाद को ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया वो भी तुम्हीं में से हैं^(१५) और रिश्ते वाले एक दूसरे से ज्यादा नज़दीक हैं अल्लाह की किताब में^(१६) वेशक अल्लाह सब कुछ जानता है^(१७)

९- सूरए तौबह

पहला रूकू

(१) सूरए तौबह मदीना में उतरी, इसमें १२९ आयतें और १६ रूकू हैं।

बेज़ारी का हुक्म सुनाना है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से उन मुश्किों को जिनसे तुम्हारा मुआहिदा था और वो कायम न रहे^(१) तो चार मेहीने ज़मीन पर चलो फिरो और जान रखो कि तुम अल्लाह को थका नहीं सकते^(२) और यह कि अल्लाह काफ़िरो को रूखा करने वाला है^(३) और मुनादी पुकार देना है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से सब लोगों में बड़े हज़ के दिन^(४) कि अल्लाह बेज़ार है मुश्किों से और उसका रसूल तो अगर तुम तौबह करो^(५) तो तुम्हारा भला है और अगर मुंह फेरो^(६) तो जान लो कि तुम अल्लाह को न थका सकोगे^(७) और काफ़िरो को खुशखबरी सुनाओ दर्दनाक अज़ाब की^(८) मगर वो मुश्कि जिनसे तुम्हारा मुआहिदा था फिर

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجْهَهُدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنْكُمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝
(۹) سُورَةُ التَّوْبَةِ مَكِّيَّةٌ (۱۱۳) مَآثِرًا
بَرَاءَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الشُّرَكِيِّينَ ۖ فَيَسْخَرُونَ فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْتَمُوا أَنْكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِينَ اللَّهَ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ مُخِزُّ الْكَافِرِينَ ۝ وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَرِئٌ مِنَ الشُّرَكِيِّينَ ۚ وَرَسُولُهُ ۚ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۚ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الشُّرَكِيِّينَ

منزل

(१६) और तुम्हारे ही हुक्म में है ऐ मुहाजिरो और ऐ अन्सार, मुहाजिरो के कई तबके हैं, एक वो हैं जिन्होंने पहली बार मदीना तैयिबह को हिजरत की, इन्हें मुहाजिरीने अब्लीन कहते हैं, कुछ वो हज़रात हैं जिन्हो ने पहले हवशा हिजरत की, फिर मदीना तैयिबह की तरफ, उन्हें असहाबुल हिजरत कहते हैं, कुछ हज़रात वो हैं जिन्हो ने सुलह हदबिया के बाद मक्का की विजय से पहले हिजरत की, ये असहाबे हिजरते सानिया कहलाते हैं, पहली आयत में मुहाजिरीने अब्लीन का जिक्र है और इस आयत में असहाब हिजरते सानिया का।

(१७) इस आयत से हिजरत से सम्बन्धित विरासत स्थिति की गई और सग सम्बन्धियों की विरासत साबित हुई।

(९) सूरए तौबह - पहला रूकू

(१) सूरए तौबह मदीना है मगर इसके आखिर की आयतें "لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ" से आखिर तक, उनको कुछ उलमा मक्की कहते हैं, इस सूरात में सौलह रूकू, १२९ आयतें, चार हज़ार अठ्ठातर कलिमे और दस हज़ार चार सौ अठ्ठासी अक्षर हैं, इस सूरात के दस नाम हैं इनमें से तौबह और बराअत दो नाम ख़ास हैं, इस सूरात के अबल में बिस्मिल्लाह नहीं लिखी गई, इसकी अरल वजह यह है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम इस सूरात के साथ बिस्मिल्लाह लेकर नाज़िल ही नहीं हुए थे और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बिस्मिल्लाह लिखने का हुक्म नहीं फ़रमाया, हज़रात अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हा से रिवायत है कि बिस्मिल्लाह अमान है और यह सूरात तलवार के साथ अम्न उठा देने के लिये उतरी।

(२) अरब के मुश्किों और मुसलमानों के बीच एहद था, उनमें से कुछ के सिवा सब ने एहद तोड़ा तो इन एहद तोड़ने वालों का एहद ख़त्म कर दिया गया और हुक्म दिया गया कि चार महीने वो अम्न के साथ जहाँ चाहें गुज़रें, उनसे कोई रोक टोक न की जाएगी, इस असे में उन्हें मौका है, ख़ूब सोच समझ लें कि उनके लिये क्या बेहतर है, और अपनी एहतिधानें कर लें और जान लें कि इस मुहद के बाद इस्लाम कुबूल करना होगा या फ़तल, यह सूरात सन १० हिजरी में मक्का की विजय से एक साल बाद उतरी, रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इस सन में हज़रात अबूबक्र सिद्दीक रदियल्लाहो अन्हा को अमीरे हज़ मुक़र्रर फ़रमाया था और उनके बाद अली मुर्तज़ा को हाजियों की भीड़ में यह सूरात सुनाने के लिये भेजा, चूनांचे हज़रात अली ने दस ज़िलहज को बड़े शैतान के पास खड़े होकर निदा की, ऐ लोगों, मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह के रसूल का भेजा हुआ आया हूँ, लोगों ने कहा, आप क्या पयाम लाए हैं ? तो आपने तीस या चालीस आयतें इस मुबारक सूरात की पढ़ी, फिर फ़रमाया, मैं चार हुक्म लाया हूँ (१) इस साल के बाद कोई मुश्कि कावे के पास न आए (२) कोई शरख़ नंगा होकर कावे का तवाफ़

उन्होंने तुम्हारे एहद में कुछ कमी नहीं की^(१०) और तुम्हारे मुकाबिल किसी को मदद न दी तो उनका एहद ठहरी हुई मुद्दत तक पूरा करो, वेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है^(११) फिर जब हुरमत वाले महीने निकल जाएं तो मुश्रिकों को मारो^(१२) जहाँ पाओ^(१३) और उन्हें पकड़ो और कैद करो और हर जगह उनकी ताक में बैठे फिर अगर वो तौबह करें^(१४) और नमाज़ कायम रखें और ज़कात दें तो उनकी राह छोड़ दो, ^(१५) वेशक अल्लाह वख़्शने वाला मेहरवान है^(१६) और ऐ मेहबूब अगर कोई मुश्रिक तुमसे पनाह मांगे^(१७) तो उसे पनाह दो कि वह अल्लाह का कलाम सुने फिर उसे उसकी अम्न की जगह पहुंचा दो^(१८) यह इसलिये कि वो नादान लोग हैं^(१९) ^(२०)

दूसरा रूकू

मुश्रिकों के लिये अल्लाह और उसके रसूल के पास कोई एहद क्योंकिर होगा^(१) अगर वो जिनसे तुम्हारा मुआहिदा मस्जिदे हारम के पास हुआ, ^(२) तो जबतक वो तुम्हारे लिये एहद पर कायम रहें तुम उनके लिये कायम रहो वेशक परहेज़गार अल्लाह को खुश आते हैं^(३)

ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوا شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ
أَحَدًا فَأَتَيْنَا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ إِنَّ
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝ فَإِذَا انسَلَخَ الْأَشْهُرُ
الْحَرَامُ فَأَفْتُوا الشُّرَكِيَّ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ
وَحْدَهُمْ وَاحْصِرُوهُمْ وَأَعَدُّوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصِدٍ
فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ
فَخَلُّوا أَسْبَابَهُمْ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَإِنْ
أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ
يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ۝ كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ
عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ
عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوا
لَكُمْ فَاسْتَقْبِلُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ ۝

मिर्ज़ा

न करे: (१) जन्नत में ईमान वाले के अलावा कांडे दाखिल न होंगे। (२) जिसका रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ एहद है वह एहद अपनी मुद्दत तक रहेगा और जिसकी मुद्दत निर्धारित नहीं है उसकी मोआद चार माह पर पूरी हो जाएगी। मुश्रिकों ने यह सुनकर कहा कि ऐ अली, अपने चचा के बेटे को खबर दो कि हमने एहद पीट पीट फेंक दिया हमारे उनके बीच कांडे एहद नहीं है, सिवाय नेजे वाज़ी और तलवार वाज़ी के। इस वाक्य में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक की ख़िलाफ़त की तरफ़ लतीफ़ इशारा है कि हज़रत ने हज़रत सिद्दीक अकबर को तो अमीर हज़ बनाया और हज़रत अली को उनके पीछे सूरफ़ वग़ाहत पड़ने के लिये भेजा; तो हज़रत अबू बक्र इमाम हुए और हज़रत अली मुक़्तदी। इससे हज़रत अबू बक्र की हज़रत अली पर फ़ज़ीलत साबित हुई।

(३) और इस मोहलत के बावजूद उसकी पकड़ से बच नहीं सकते।

(४) दुनिया में क़त्ल के साथ और आख़िरत में अज़ाब के साथ।

(५) हज़ को हज़्जे अक़बर फ़रमाया इसलिये कि उस ज़माने में उमर का हज़्जे असगर कहा जाता था। एक क़हल यह भी है कि इस हज़ को हज़्जे अक़बर इमलिये कहा गया कि उस माल रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़ फ़रमाया था और चूँकि यह जुमए को बाक़े हुआ था इसलिये मुसलमान उस हज़ को, जो जुमए के दिन हो, हज़्जे वदाअ ज़ैसा जान कर हज़्जे अक़बर कहते हैं।

(६) कुफ़्र और उज्र से।

(७) ईमान लाने और तौबह करने से।

(८) यह बड़ी चुनौती है और इसमें यह ललकार है कि अल्लाह तआला अज़ाब उतारने पर क़ादिर और सक्षम है।

(९) और उसको उसकी शर्तों के साथ पूरा किया। ये लोग बनी ज़मरह थे जो क़व़ाता का एक क़बीला है। उनकी मुद्दत के गो माह बाक़ी रहे थे।

(१०) जिन्होंने ने एहद तोड़ा।

(११) हरम से बाहर या हरम में, किसी बक़्त या स्थान का निर्धारण नहीं है।

(१२) शिर्क और कुफ़्र से, और ईमान क़बूल कर लें।

(१३) और कैद से रिहा कर दो और उनके साथ सख़्ती न करो।

(१४) मोहलत के महीने गुज़रने के बाद, ताकि आप से तौबीह के मसअल और क़ुरआन शरीफ़ सुनें जिसकी आप दावत देते हैं।

(१५) अगर ईमान न लाए। इस से साबित हुआ कि मोहलत दिये गए शरत्स को तकलीफ़ न दी जाए और मुद्दत गुज़रने के बाद उसका दाख़ल इस्लाम में ठहरने का हक़ नहीं।

(१६) इस्लाम और उसकी हकीक़त को नहीं जानते, तो उन्हें अम्न देना ख़ास हिक़मत है ताकि कलामुल्लाह सुनें और समझें।

भला किस तरह^(१) उनका हाल तो यह है कि तुमपर काबू पाएं तो न करावत का लिहाज करें न एहद का, अपने मुंह से तुम्हें राजी करते हैं^(२) और उनके दिलों में इन्कार है और उनमें अक्सर बेहुयम हैं^(३) अल्लाह की आयतों के बदले थोड़े दाम मोल लिये^(४) तो उसकी राह से रोका^(५) वेशक वो बहुत ही बुरे काम करते हैं^(६) किसी मुसलमान में न करावत का लिहाज करें न एहद का^(७) और वही सरकश है^(८) फिर अगर वो^(९) तौवह करें और नमाज़ कायम रखें और ज़कात दें तो वो तुम्हारे दीनी भाई हैं,^(१०) और हम आयतें मुफ़स्सल बयान करते हैं जानने वालों के लिये^(११) और अगर एहद करके अपनी कसमें तोड़ें और तुम्हारे दीन पर मुँह आएँ तो कुफ़्र के संरगनों से लड़ो^(१२) वेशक उनकी कसमें कुछ नहीं इस उम्मीद पर कि शायद वो वाज़ आएँ^(१३) क्या उस क्रौम से न लड़ोगे जिन्होंने अपनी कसमें तोड़ीं^(१४) और रसूल के निकालने का इरादा किया^(१५), हालांकि उन्हीं की तरफ़ से पहल हुई है,

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ
إِلًّا وَلَا ذِمَّةً يُرْضَوْنَ كَمِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَى
فُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَسِقُونَ ۝ اِشْتَرَوْا بِآيَاتِ
اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدَدُوا عَنْ سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ
سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَرْقُبُونَ فِي
مُؤْمِنٍ إِلَّا وَلَا ذِمَّةً ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ۝
فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ
فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَوَقَّضِلَ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَعْلَمُونَ ۝ وَإِنْ تَكَفَّتُوا أَيَّامًا عَنْهُم مِّنْ بَعْدِ
عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا ۚ إِنَّ
الْكُفْرَ إِتْمَمَ لَا إِيمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ۝
أَلَا تَقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا
بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ

منزل

सूरए तौवह - दूसरा रूकू

- (१) कि वो बहाना वाज़ी और एहद-शिकनी किया करते हैं.
- (२) और उनसे कोई एहद-शिकनी ज़ाहिर न हुई जैसा कि बनी कवाना और बनी ज़मरह ने की थी.
- (३) एहद पूरा करेंगे और कस कौल पर कायम रहेंगे.
- (४) ईमान और एहद पूरा करने के वादे करके.
- (५) एहद तोड़ने वाले कुफ़्र में सरकश, वे मुख्त, झूट से न शर्माते वाले. उन्कोने...
- (६) और दुनिया के थोड़े से नफ़े के पीछे ईमान और कुरआन छोड़ बैठे, और जो रसूल करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहा अलैहे वसल्लम से एहद किया था वह अब सुफ़ियान के थोड़े से लालच देने से तोड़ दिया.
- (७) और लोगों को दीने इलाही में दाख़िल होने से तोड़ दिया.
- (८) जब मौक़ा पाएँ क़त्ल कर डालें, तो मुसलमानों को भी चाहिये कि जब मुश्क़ों पर पकड़ मिल जाए तो उनसे दरगुज़र न करें.
- (९) कुफ़्र और एहद तोड़ने से वाज़ आएँ और ईमान कुबूल करके.
- (१०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहा अन्हुमा ने फ़रमाया कि इस आयत से साबित हुआ कि क्रिबला वालों के ख़ून हराम है.
- (११) इससे साबित हुआ कि आयतों की तफ़सील पर जिसकी नज़र हो, वह आलिम है.
- (१२) इस आयत से साबित हुआ कि जो काफ़िर ज़िम्मी दीने इस्लाम पर ज़ाहिर तअन करे उसका एहद वाक़ी नहीं रहता और वह ज़िम्मे से ख़ारिज हो जाता है, उसका क़त्ल करना जायज़ है.
- (१३) इस आयत से साबित हुआ कि काफ़िरों के साथ जंग करने से मुसलमानों की गरज़ उन्हें कुफ़्र और बदआमाली से रोक देना है.
- (१४) और सुलह हुदैबिया का एहद तोड़ा और मुसलमानों के हलीफ़ कुज़ाआ के मुकाबिल बनी बक्र की मदद की.
- (१५) मक्कए मूक़रमा से दाख़ल नदवा में मशरूफ़ करके.

क्या उनमें डरत हो, तो अल्लाह इसका ज़्यादा मुस्तहक है कि उससे डरो अगर ईमान रखते हो (१३) तो उनसे लड़ो अल्लाह उन्हें अज़ाब देगा तुम्हारे हाथों और उन्हें रुस्वा करेगा (१४) और तुम्हें उनपर मदद देगा (१५) और ईमान वालों का जी ठण्डा करेगा (१६) और उनके दिलों की घुटन दूर फ़रमाएगा (१७), और अल्लाह जिसकी चाहे तौयह कुबूल फ़रमाए (१८), और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है (१९) क्या इस गुमान में हो यूँही छोड़ दिये जाओगे, और अभी अल्लाह ने पहचान न कराई उनकी जो तुम में से जिहाद करेंगे (२०) और अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों के सिवा किसी को अपना राज़दार न बनाएंगे (२१) और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है (२२)

करते हैं और ज़कात देते हैं^(१) और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते,^(२) तो क़रीब है कि ये लोग हिदायत वालों में हों^(३) तो क्या तुमने हाजियों की सबील (प्याऊँ) और मस्जिदे हराम की खिदमत उसके बराबर ठहराली जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया, वो अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं, ओर अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता^(४) ^(१९) वो जो ईमान लाए और हिज़रत की ओर अपने माल जान से अल्लाह की राह में लड़े अल्लाह के यहाँ उनका दर्जा बड़ा है,^(५) और वही मुराद को पहुँचे^(६) ^(२०) उनका रब उन्हें खुशी सुनाता है अपनी रहमत और अपनी रज़ा की^(७) और उन बाग़ों की जिनमें उन्हें सदा की नेअमत है^(८) ^(२१) हमेशा हमेशा उनमें रहेंगे, बेशक अल्लाह के पास बड़ा संवाव है^(२२) ऐ ईमान वालो अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न समझो अगर वो ईमान पर कुफ़्र पसन्द करें, और तुम में जो कोई

وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَن يَكُونُوا
مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۝ أَجَعَلْتُم سِقَايَةَ الْحَآئِمِ
وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنِ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَجَاهِدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ
اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ
آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۖ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ ۚ
وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ
بِرَحْمَةٍ مِنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَعَلَتْ لَهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ
مُّقِيمٌ ۖ خُلْدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ
أَجْرٌ عَظِيمٌ ۖ يَٰ أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا
آبَاءَكُمْ وَأَخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ
عَلَى الْإِيمَانِ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَوَلَّيْكَ

مَنْزِلَةٌ

इस्लामी और तोहीद के इबादत ख़ाने को आबाद भी करें.

(३) क्योंकि कुफ़्र की हालत के कर्म मक़बूल नहीं, न मेहमावदारी न हाजियों की खिदमत, न कैदियों का रिहा कराना, इसलिये कि काफ़िर का कोई काम अल्लाह के लिये तो होता नहीं, लिहाज़ा उसका अमल सब अकारत है, और अगर वह उसी कुफ़्र पर मरजाए तो ज़ह्रम में उनके लिये हमेशा का अज़ाब है.

(४) इस आयत में यह बयान किया गया कि मस्जिदों के आबाद करने के मुस्तहिक ईमान वाले हैं. मस्जिदों के आबाद करने में ये काम भी दाख़िल हैं, झाड़ू देना, सफ़ाई करना, रौशनी करना और मस्जिदों को दुनिया की बातों से और ऐसी चीज़ों से मेहफूज़ रखना जिनके लिये वो नहीं बनाई गई. मस्जिदे इबादत करने और ज़िक्र करने के लिये बनाई गई हैं और इल्म का पाठ भी ज़िक्र में दाख़िल है.

(५) यानी किसी की रज़ा को अल्लाह की रज़ा पर किसी अन्देश से भी प्राथमिकता नहीं देते. यही मानी है अल्लाह से डरने और ग़ैर से न डरने के.

(६) मुराद यह है कि काफ़ि़मों को ईमान वालों से कुछ निस्वत नहीं, न उनके कर्मों को उनके कर्मों से, क्योंकि काफ़िर के कर्म व्यर्थ हैं चाहे वो हाजियों के लिये सबील लगाएं या मस्जिदे हराम की खिदमत करें, उनके आमाज़ को ईमान वालों के आमाज़ के बराबर क़रार देना जुल्म है. बद्र के दिन जब हज़रत अब्बास गिरफ़्तार होकर आए तो उन्होंने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा से कहा कि तुमको इस्लाम और हिज़रत और जिहाद में सबक़्त हासिल है. तो हमको भी मस्जिद हराम की खिदमत और हाजियों के लिये सबील लगाने का गौरव प्राप्त है. इसपर यह आयत उतरी और ख़बरदार किया गया कि जो अमल ईमान के साथ न हों वो बेकार हैं.

(७) दूसरों से.

(८) और उन्हीं को दुनिया और आख़िरत की खुशतसीबी मिली.

(९) और यह सबसे बड़ी खुशख़बरी है, क्योंकि मालिक की रहमत और खुशबूदी बन्दे का सबसे बड़ा मक़सद और प्यारी मुराद है.

उनसे दोस्ती करेगा तो वही ज़ालिम हैं^(१०) ॥२३॥ तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतों और तुम्हारा कुटुम्ब और तुम्हारी कमाई के माल और वह सुद जिसके नुक़सान का तुम्हें डर है और तुम्हारी पसन्द का मकान ये चीज़ें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए^(११) और अल्लाह फ़ासिकों को राह नहीं देता ॥२४॥

चौथा खूकू

बेशक अल्लाह ने बहुत जगह तुम्हारी मदद की^(१२) और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कसरत (ज़्यादा नफ़री) पर इतरा गए थे तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई^(१३) और ज़मीन इतनी वसाओ (विस्तृत) होकर तुम पर तंग होगई^(१४) फिर तुम पीठ देकर फिर गए ॥२५॥ फिर अल्लाह ने अपनी तसकीन उतारी अपने रसूल पर^(१५) और मुसलमानों पर^(१६) और वो लश्कर उतारे जो तुम ने न देखे^(१७) और काफ़िरों को अज़ाब दिया^(१८) और इन्कार करने वालों की यही सज़ा है ॥२६॥ फिर उसके बाद अल्लाह जिसे चाहेगा

وَالَّذِينَ
۲۲۵
وَالَّذِينَ
هُمُ الظَّالِمُونَ ۖ قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ
وَأَخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ
اقتَرَفْتُمُوهَا وَبَنَاءُكُمْ وَآسَافُكُمْ تُحْسِنُونَ كَسَادَهَا وَ
مَسْكِنٍ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَ
رَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ
اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝
لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۖ وَيَوْمَ
حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ
شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ
وَلَّيْتُمُ مُدْبِرِينَ ۝ ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى
رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ
تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ
الْكَاذِبِينَ ۝ ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَلَى
مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

(१०) जब मुसलमानों को मुश्किों के साथ मिलने जुलने, उठने बैठने और हर तरह के सम्बन्ध तोड़ने का हुक्म दिया गया तो कुछ लोगों ने कहा यह कैसे सम्भव है कि आदमी अपने बाप भाई चाचा रिश्तेदारों से सम्बन्ध तोड़दे, इसपर यह आयत उतरी और बताया गया कि काफ़िरों से सहयोग जायज़ नहीं चाहे उनसे कोई भी रिश्ता हो, चुनोचने आगे इशारा फ़रमाया।

(११) और जल्दी आने वाले अज़ाब में जकड़े या देर में आने वाले में, इस आयत से साबित हुआ कि दीन के मेहफूज़ रखने के लिये दुनिया की मशक़क़त बरदाश्त करना मुसलमान पर लाज़िम है और अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमावशकारी के मुकाबिले दुनिया के ताल्लुक़ात की कुछ हैसियत नहीं और खुदा व रसूल की महबूत ईमान की दलील है।

सूरए तौबह - चौथा खूकू

(१) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ग़ज़वात यानी लड़ाईयों में मुसलमानों को काफ़िरों पर ग़लबा अता फ़रमाया, जैसा कि बद्र और कुर्ज़ा और नुज़ैर और हुदैबिया और मक्का की विजय में।

(२) हुनैन एक घाटी है ताइफ़ के करीब, मक्करा मुकर्रमा से चन्द मील के फ़ासले पर, यहाँ मक्का की विजय से थाने ही रोज़ बाद कबीले हवाज़िन व सक्रीफ़ से जंग हुई, इस जंग में मुसलमानों की संख्या बहुत ज़्यादा, बारह हजार या इससे अधिक थी और मुश्कि चार हजार थे, जब दोनों लश्कर आमने सामने हुए तो मुसलमानों में से किसी ने अपनी कसरत यानी बड़ी संख्या पर नज़र करके कहा कि अब हम हरगिज़ नहीं हारेंगे, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बहुत बुरा लगा, क्योंकि हुज़ूर हर हाल में अल्लाह पर भरोसा फ़रमाते थे और तादाद के कम या ज़्यादा होने पर नज़र न रखते थे, जंग शुरू हुई और समूह लड़ाई हुई, मुश्कि भागे और मुसलमान ग़नीमत का माल लाने में व्यर्थ हो गए तो भागे हुए लश्कर ने इस मौक़े का फ़ायदा उठाया और तीरों की बारिश शुरू कर दी, और तीर अन्दाज़ी में वो बहुत माहिर थे, नतीजा यह हुआ कि इस हंगामे में मुसलमानों के क़दम उखड़ गए, लश्कर भाग पड़ा, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास सिबाय हुज़ूर के चचा हज़रत अब्बास और आपके चचाज़ाद अबू सुफ़ियान बिन हारिस के और कोई बाक़ी न रहा, हुज़ूर ने उस वक़्त अपनी सग़री को काफ़िरों की तरफ़ आगे बढ़ाया और हज़रत अब्बास को हुक्म दिया कि वह बलन्द आवाज़ से अपने साथियों को पुकारे, उनके पुकारने से दो लोग तब्दीक़ तब्दीक़ कहते हुए पलट आए और काफ़िरों से जंग शुरू हो गई, जब लड़ाई ख़ूब गर्म हुई, तब हुज़ूर ने अपने दस्ते मुबारक में कंकरीयाँ लेकर काफ़िरों के मुँहों पर मारी और फ़रमाया, मुहम्मद के रब की क़सम, भाग निकले, कंकरीयों का मारना था कि काफ़िर भाग पड़े और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनकी ग़नीमत मुसलमानों को तब्दीकीय फ़रमा दी, इन आयतों में इसी घटना का बयान है।

(३) और तुम वहाँ ठहर न सके।

तौबह देगा^(८) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है^(९) ॥ २७ ॥
 ईमान वालों मुश्रिक निरे नापाक हैं^(१०) तो इस सब के बाद वो
 मस्जिदे हराम के पास न आने पाएँ^(११) और अगर तुम्हें
 मोहताजी (दरिद्रता) का डर है^(१२) तो बहुत जल्द अल्लाह तुम्हें
 धनवान कर देगा अपने फ़ज़ल से अगर चाहे^(१३) तेशक अल्लाह
 इत्म व हिकमत वाला है^(१४) लड़ो उनसे जो ईमान नहीं लाते
 अल्लाह पर और क़यामत पर^(१५) और हराम नहीं मानते उस
 चीज़ को सिजको हराम किया अल्लाह और उसके रसूल ने^(१६)
 और सच्चे दीन^(१७) के तावे (अधीन) नहीं देते यानी वो जो
 किताब दिये गए जबतक अपने हाथ से जिज़िया न दें ज़लील
 होकर^(१८) ॥ २९ ॥

पाँचवां सूक़

और यहूदी बोले उज़ैर अल्लाह का बेटा है^(१) और नसरानी
 (ईसाई) बोले मसीह अल्लाह का बेटा है, ये बातें वो अपने मुंह से
 बकते हैं^(२) अगले काफ़िरों की सी बात बनाते हैं अल्लाह उन्हें मारे,
 कहाँ औंध जाते हैं^(३) ॥ ३० ॥ उन्होंने अपने पादरियों और जोगियों

مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
 اٰمَنُوا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَفْرَبُوْا الْمَسْجِدَ
 الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْبَكُۢهُ
 فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمْ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ اِنْ شِئْتُمْ ۚ اِنَّ
 اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
 بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ
 اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَيَّدُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ
 اٰتَوُا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ
 صٰغِرُوْنَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللّٰهِ
 وَقَالَتِ النَّصٰرَةُ الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ
 بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهَوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ
 قَبْلُ ۚ فَتَنَّهُمُ اللّٰهُ اَتٰى يُّوْقِفُوْنَ ۝ اِتَّخَذُوْا
 اَحْبَابَهُمْ وَرَهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

مَنْ

- (४) कि इत्मीनान के साथ अपनी जगह क़ायम रहे.
- (५) कि हज़रत अब्बास रदियल्लाहो अन्हो के पुकारने से नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में वापस आए.
- (६) यानी फ़रिश्ते जिन्हें काफ़िरों ने चितकबरे धाड़ों पर सफ़ेद लिबास पहने अमामा बांधे देग़्रा. ये फ़रिश्ते मुसलमानों की शौकत बढ़ाने के लिये आए थे. इस जंग में उन्होंने लड़ाई नहीं की. लड़ाई सिर्फ़ बद्र में की थी.
- (७) कि पकड़े गए, मारे गए, उनके अयाल और अमवाल मुसलमानों के हाथ आए.
- (८) और इस्लाम की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएगा, चुनांचे हवाज़िन के बाक़ी लोगों को तौफ़ीक़ दी और वो मुसलमान होकर रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हुज़ूर ने उनके क़ैदियों को रिहा फ़रमा दिया.
- (९) कि उनका बालिन ख़बीस है और वो न तहारत करते हैं न नापाकियों से बचते हैं.
- (१०) न हज़ के लिये, न उमरे के लिये. और इस साल से मुराद सन नौ हिज़री है. और मुश्रिकों के मना करने के मानी ये हैं कि मुसलमान उनको रोके.
- (११) कि मुश्रिकों को हज़ से रोक देने से व्यापार को नुक़सान पहुंचेगा और मक्का वालों की तंगी पेश आएगी.
- (१२) इकरिमा ने कहा, ऐसा ही हुआ. अल्लाह तआला ने उन्हें ग़नी कर दिया. बारिशें ग़ूब हुई, पैदावार कसरत से हुई. मक्कातिल ने कहा कि यमन प्रदेश के लोग मुसलमान हुए और उन्होंने मक्का वालों पर अपनी काफ़ी दौलत ख़र्च की. अगर चाहे फ़रमाने में तालीम है कि बन्दे को चाहिये कि अच्छाई और भलाई की तलब और आफ़तों के दूर होने के लिये हमेशा अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह रहे और सारे कामों की उसीकी मज़ी से जुड़ा जाने.
- (१३) अल्लाह पर ईमान लाना यह है कि उसकी ज़ात और सारी सिफ़ात और विशेषताओं को माने और जो उसकी शान के लायक न हो, उसकी तरफ़ निखत न करे. कुछ मुफ़सि़रों ने रसूलों पर ईमान लाना भी अल्लाह पर ईमान लाने में दाख़िल करार दिया है. तो यहूदी और ईसाई अगरचे अल्लाह पर ईमान लाने का दावा करते हैं लेकिन उनका यह दावा बिल्कुल ग़लत है क्योंकि यहूदी अल्लाह के लिये जिस्म और तश्बीह के, और ईसाई अल्लाह के हज़रत ईसा के शरीर में प्रवेश कर जाने को मानते हैं. तो वो किस तरह अल्लाह पर ईमान लाने वाले हो सकते हैं. ऐसे ही यहूदियों में से जो हज़रत उज़ैर को और ईसाई हज़रत मसीह को झुदा का बेटा कहते हैं, तो उनमें से कोई भी अल्लाह पर ईमान लाने वाला न हुआ. इसी तरह जो एक रसूल को झुटलाए, वह अल्लाह पर ईमान लाने वाला नहीं. यहूदी और ईसाई बहुत से नबियों को झुटलाते हैं लिहाज़ा वो अल्लाह पर ईमान लाने वालों में नहीं. मुजाहिद का क़ौल है कि यह आयत उस वक़्त उतरी जबकि नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को रोम से जंग करने का हुक्म दिया गया, और इसीके ताज़िल होने के बाद मज़बूत तबूक हुआ. क़त्बी का क़ौल है कि यह आयत यहूदियों के क़बीले कुरैज़ा और नुज़ैर के हक़ में उतरी. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे सुलह मंज़ूर फ़रमाई और यही पहला जिज़िया है जो मुसलमानों

को अल्लाह के सिवा खुदा बना लिया^(१) और मरयम के बेटे मसीह को^(२) और उन्हें हुक्म न था^(३) मगर यह कि एक अल्लाह को पूजें उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसे पाकी है उनके शिर्क से^(४) चाहते हैं कि अल्लाह का नूर^(५) अपने मुंह से बुझा दें और अल्लाह न मानेगा मगर अपने नूर का पूरा करना^(६) पड़े बुरा मानें काफिर^(७) वही हैं जिसने अपना रसूल^(८) हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर मालिब करे^(९) पड़े बुरा मानें मुश्रिक^(१०) ऐ ईमान वालो बेशक बहुत पादरी और जोगी लोगों का माल नाहक खा जाते हैं^(११) और अल्लाह की राह से^(१२) रोकते हैं और वो कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते^(१३) उन्हें खुशखबरी सुनाओ दर्दनाक अज़ाब की^(१४) जिस दिन वह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में^(१५) फिर उससे दारोंगे उनकी पेशानियाँ और कर्वटें और पीठें^(१६) यह है वह जो तुमने अपने लिये जोड़ कर रखा था तो अब चखो मज़ा उस

وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا
إِلَهًا وَاحِدًا لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ سُبْحَنَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ
يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَبْجِ
اللَّهُ إِلَّا أَنْ يَتِمَّ نُورُهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ هُوَ
الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْأَحْبَارِ وَ
الرُّهْبَانِ كَيَّاكُونُ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَ
يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ
الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يَنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا
فِي نَارٍ جَهَنَّمَ فَتَكُلَّىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ
وَأُظْهُورُهُمْ هَذَا مَا كُنْتُمْ لَا تَفْقَهُمْ فَذُوقُوا
مَثَلَهُ

को मिला और पहली जिल्लत है जो काफ़िरों को मुसलमानों के हाथ से पहुँची।
(१४) कुरआन और हदीस में, और कुछ मुफस्सिरों का क़ौल है कि मानी ये हैं कि तौरात व इंजील के मुताबिक अमल नहीं करते, उनमें हेर फेर करते हैं, और अहक़ाम अपने दिल से घड़ते हैं।
(१५) इस्लाम दीने इलाही।
(१६) एहद में बन्धे किताब वालों से जो ख़िराज लिया जाता है उसका नाम जिज़िया है। यह जिज़िया तक्द लिया जाता है। इसमें उधार नहीं। जिज़िया देने वाले को खुद हाज़िर होकर देना चाहिये। पैदल हाज़िर हो, खड़े होकर पेश करें। जिज़िया कुबूल करने में तुर्क व हिन्दू किताब वालों के साथ जुड़े हैं सिवा अरब के मुश्रिकों के, कि उनसे जिज़िया कुबूल नहीं। इस्लाम लाने से जिज़िया मुकर्रर करने की हिक्मत यह है कि काफ़िरों को मोहलत दी जाए ताकि वो इस्लाम की विशेषताओं और दलीलों की शक्ति देखें और पिछली किताबों में सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़बर और हुज़ूर की तारीफ़ देखकर इस्लाम लाने का मौक़ा पाएं।

सूरए तौबह - पाँचवाँ स्कू

- (१) किताब वालों की बेदीनी का जो ऊपर ज़िक्र फ़रमाया गया यह उसकी तफ़सील है कि वो अल्लाह की जनाब में ऐसे ग़लत अक्कीदे रखते हैं और मश्रलूक को अल्लाह का बेटा बनाकर पूजते हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में यहूदियों की एक जमाअत आई। वो लोग कहने लगे कि हम आपका अनुकरण कैसे करें, आपने हमारा किबला छोड़ दिया और आप उज़ैर को खुदा का बेटा नहीं समझते। इसपर यह आयत उतरी।
- (२) जिनपर व कोई दलील न प्रमाण, फिर अपनी जिहालत से इस खुले झूट को मानते भी हैं।
- (३) और अल्लाह तआला के एक होने पर, तर्क कायम होने और खुले प्रमाण मिलने के बावजूद, इस कुफ़्र में पड़ते हैं।
- (४) अल्लाह के हुक्म को छोड़कर उनके हुक्म के पाबन्द हुए।
- (५) कि उन्हें भी खुदा बनाया और उनकी निस्वत यह ग़लत अक्कीदा रखा कि वो खुदा या खुदा के बेटे हैं या खुदा ने उनके अन्दर प्रवेश किया है।
- (६) उनकी किताबों में, व उनके नबियों की तरफ़ से।
- (७) यानी इस्लाम या सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत की दलीलें।
- (८) और अपने दीन को ग़लब देना।
- (९) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।
- (१०) और उसकी हुज़्जत मज़बूत करे और दूसरे दीनों को उससे स्थगित करे। चुनांचे ऐसा ही हुआ। ज़ुहाक का क़ौल है कि यह

जोड़ने का (३५) बेशक महीनों की गिनती अल्लाह के नज़दीक बारह महीने हैं (३६) अल्लाह की किताब (३७) जब से उसने आसमान और ज़मीन बनाए उनमें से चार हुरमत (धर्मनिषेध) वाले हैं, (३८) यह सीधा दीन है तो इन महीनों में (३९) अपनी जान पर जुलम न करो और मुश्कों से हर वक़्त लड़ो जैसा वो तुम से हर वक़्त लड़ते हैं, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है (४०) (३६) उनका महीने पीछे हटाना नहीं मगर और कुफ़्र में बढ़ना (४१) इससे काफ़िर बहकाए जाते हैं एक बरस उसे (४२) हलाल छरारते हैं और दूसरे बरस उसे हराम मानते हैं कि उस गिनती के बराबर हो जाएं जो अल्लाह ने हराम फ़रमाई (४३) और अल्लाह के हराम किये हुए हलाल करलें, उनके बुरे काम उनकी आँखों में भले लगते हैं, और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता (३७)

छटा रूकू

ऐ ईमान वालो तुम्हें क्या हुआ जब तुम से कहा जाए कि खुदा की राह में कूच करो तो बोझ के मारे ज़मीन में बैठ जाते हो (१) क्या तुमने दुनिया की ज़िन्दगी आखिरत के

مَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَلِكََ الَّذِينَ الْقِيَمُ ۚ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝ إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضِلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُخَلِّفُونَ عَامًا وَيُخَرِّمُونَ عَامًا لِيُؤْخِطُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيَجْلُوهَا مَا حَرَّمَ اللَّهُ ۚ رَبِّينَ لَهُمْ سُوءُ أَعْمَالِهِمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ اتَّقُوا اللَّهَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ إِذَا قُلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ أَنْزِلْتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاءُ

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नज़ूल के वक़्त ज़ाहिर होगा जबकि कोई दीन वाला ऐसा न होगा जो इस्लाम में दाख़िल न हो जाए. हज़रत अबू हुरैरा की हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में इस्लाम के सिवा हर मल्लत हलाक हो जाएगी.

(११) इस तरह कि दीन के आदेश बदल कर लोगों से रिश्वत लेते हैं और अपनी किताबों में, सोने के लालच में, हेर फेर करते हैं और पिछली किताबों की जिन आयतों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और विशेषताएं दर्ज हैं, माल हासिल करने के लिये उनमें गलत व्याख्याएं और फेर बदल करते हैं.

(१२) इस्लाम से, और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने से.

(१३) कंजूसी करते हैं और माल के हुक्क अदा नहीं करते, ज़कात नहीं देते. सदी का कौल है कि यह आयत ज़कात का इन्कार करने वालों के बारे में उतरी जबकि अल्लाह तआला ने पादरियों और राहियों के लालच का बयान फ़रमाया, तो मुसलमानों को माल जमा करने और उसके हुक्क अदा न करने से डराया. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि जिस माल की ज़कात दी गई वह ख़ज़ाना नहीं, चाहे दफ़ीना ही हो. और जिसकी ज़कात न दी गई, वह ख़ज़ाना है जिसका ज़िक्र कुरआन में हुआ कि उसके मालिक को उससे दाग़ दिया जाएगा. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सहाबा ने अर्ज़ किया कि सोने चाँदी का तो यह हाल मालूम हुआ फिर कौन सा माल बेहतर है जिसको जमा किया जाए. फ़रमाया, ज़िक्र करने वाली ज़वान और शुक्र करने वाला दिल, और नेक बीबी जो ईमानदार की उसके ईमान पर मदद करें यानी परहेज़गार हो कि उसकी सोहबत से ताअत व इबादत का शौक़ बढ़े. (तिरमिज़ी). माल का जमा करना मुबाह है, मज़मूम नहीं जब कि उसके हुक्क अदा किये जाएं. हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ और हज़रत तलहा वग़ैरह सहाबा मालदार थे और जो सहाबा कि माल जमा करने से नफ़रत रखते थे वो उनपर ऐतिराज़ नु करते थे.

(१४) और गर्मी की सरयती से सफ़ेद हो जाएगा.

(१५) ज़िस्म के चारों तरफ़, और कहा जाएगा.

(१६) यहाँ यह बयान फ़रमाया गया कि शरीअत के एहकाम चाँद के महीनों पर हैं.

(१७) यहाँ अल्लाह की किताब से, या लौहे मेहफूज़ मुराद है या कुरआन, या वह हुक्म जो उसने अपने बन्दों पर लाज़िम किया.

(१८) तीन जुड़े जुलकादा, ज़िलहज व मुहर्रम और एक अलग रजब. अरब लोग जिहालत के दौर में भी इन महीनों का आदर करते थे और इनमें लड़ाई क़त्ल और खून हराम जानते थे. इस्लाम में इन महीनों की हुरमत और अज़मत और ज़्यादा की गई.

(१९) गुनाह और नाफ़रमानी से.

(२०) उनकी मदद फ़रमाएगा.

वदले पसन्द कर ली और जीती दुनिया का असबाब आखिरत के सामने नहीं मगर थोड़ा^(२८) अगर न कूच करोगे तो^(२९) तुम्हें सख्त सज़ा देगा और तुम्हारी जगह और लोग ले आएगा^(३०) और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे, और अल्लाह सब कुछ कर सकता है^(३१) अगर तुम मेहबूब की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उनकी मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ लेजाना हुआ^(३२) सिर्फ़ दो जान से जब वो दोनों^(३३) ग़ार में थे जब अपने यार से^(३४) फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक अल्लाह हमारे साथ है तो अल्लाह ने उसपर अपना सकीना उतारा^(३५) और उन फ़ौजों से उसकी मदद की जो तुमने न देखी^(३६) और काफ़िरों की बात नीचे डाली^(३७) अल्लाह ही का बोल वाला है, और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है^(३८) कूच करो हलकी जान से चाहे भारी दिल से^(३९) और अल्लाह ही राह में लड़ो अपने माल व जान से यह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर जानो^(४०) अगर कोई करीब माल या मुतवस्सित (दरमियानी) सफ़र होता^(४१) तो ज़रूर तुम्हारे साथ जाते^(४२) मगर उनपर तो मशक्कत

الْحَيَاةَ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ۖ إِلَّا تَنْفِرُوا يُعَذِّبَكُمُ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ
إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذَا أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَى ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۖ
لَا تَنْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَا تَبْغُوكُمْ وَلَكِنْ بَعَدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّكَّةُ ۗ

मज़ल

(२९) नसी शब्दकोष में समय के पीछे करने को कहते हैं और यहाँ शहरे हराम (वर्जित महीने) की हुरमत का दूसरे महीने की तरफ़ हटा देना मुराद है। जिहालत के दौर में अरब, वर्जित महीनों यानी जुलक़अदा व ज़िलहज व मुहर्रम व रजब की पाकी और महानता के मानने वाले थे। तो जब कभी लड़ाई के ज़माने में ये वर्जित महीने आजाते तो उनको बहुत भारी गुज़रते। इसलिये उन्होंने यह किया कि एक महीने की पाकी दूसरे की तरफ़ हटाने लगे। मुहर्रम की हुरमत सफ़र की तरफ़ हटा कर मुहर्रम में जंग जारी रखते और बजाय इसके सफ़र की माहें हराम बना लेते और जब इससे भी हुरमत हटाने की ज़रूरत समझते तो उसमें भी जंग हलाल कर लेते और रबीउल अबल को माहें हराम करार देते इस तरह हुरमत साल के सारे महीनों में घूमती और उनके इस तरीक़े से वर्जित महीनों की विशेषता ही बाक़ी न रही। इसी तरह हज को मुस्त्रलिफ़ महीनों में घुमाते फिरते थे। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़्ज़तुल वदाअ में ऐलान फ़रमाया कि नसी के महीने गए गुज़र हो गए, अब महीनों के आँकात जो अल्लाह की तरफ़ से मुक़रर किये गए हैं, उनकी हिफ़ाज़त की जाए और कोई महीना अपनी जगह से न हटाया जाए। इस आयत में नसी को वर्जित करार दिया गया और कुफ़्र पर कुफ़्र की ज़ियादती बताया गया, क्योंकि इसमें वर्जित महीनों में जंग की हुरमत को हलाल जानना और खुदा के हराम किये हुए को हलाल कर लेना पाया जाता है।

(२२) यानी वर्जित महीने को या इस हटाने को।

(२३) यानी वर्जित महीने चार ही रहे, इसकी तो पाबन्दी करते हैं, और उनकी निश्चितता तोड़ कर अल्लाह के हुक्म की मुस्त्रालिफ़त जो महीना हराम था उसे हलाल कर लिया, उसकी जगह दूसरे को हराम करार दे दिया।

सुरए तौबह - छटा रूकू

(१) और सफ़र से घबराते हो। यह आयत मज़बूत तबूक की तरसीब में नाज़िल हुई। तबूक एक जगह है शाम के आस पास, मदीनए तैयिबह से चौदह मज़िल दूरी पर। रजब सन ती हज़री में ताइफ़ से वापसी के बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़बर पहुंची कि अरब के ईसाइयों की तहरीक और प्रेरणा से हरकल रूम के बादशाह ने रूमियों और शामियों का एक भारी लश्कर तैयार किया है और वह मुसलमानों पर हमले का इरादा रखता है। तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुसलमानों का जिहाद का हुक्म दिया। यह ज़माना अत्यन्त तंगी, दुष्काल और सख़्त गर्मी का था। यहाँ तक कि दो दो आदमी एक एक ख़जूर पर बसर करते थे। सफ़र दूर का था। दुश्मन बड़ी तादाद में और मज़बूत थे। इसलिये कुछ क़बीले बैठ रहे और उन्हें उस वक़्त जिहाद में जाना भारी मालूम हुआ। इस मज़बूत में बहुत से मुनाफ़िकों का पर्दा फ़ाश और हाल जाहिर हो गया। हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहो अन्हो ने इस मज़बूत में बड़ा दिल ख़ोल कर ख़र्च किया। दस हज़ार मुजाहिदों को सामान दिया और दस हज़ार दीनार इस मज़बूत पर ख़र्च किये। नौ सौ ऊंट और सौ घोड़े साज़ सामान समेत इसके अलावा हैं। और सहाबा ने भी ख़ूब ख़र्च किया। उनमें सबसे पहले

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो हैं जिन्होंने अपना कुल माल हाज़िर कर दिया, जिसकी मिक़दार चार हज़ार दिरहम थी। और हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने अपना आधा माल हाज़िर किया। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तीस हज़ार का लश्कर लेकर रवाना हुए। हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो को मदीनए तैय्यिवह में छोड़ा। अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथी मुनाफ़िक़ सनीयतुल वदाअ तक साथ चलकर रह गए। जब इस्लामी लश्कर तबूक में उतरा तो उन्होंने देखा कि चश्मे में पानी बहुत थोड़ा है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसके पानी से उसमें कुल्ली फ़रमाई जिसकी वरक़त से पानी जोश में आया और चश्मा भर गया। लश्कर और उसके सारे जानवर अच्छी तरह सैराब हुए। हज़रत ने काफ़ी अरसा यहाँ क़याम फ़रमाया। हरक़्त अपने दिल में आपको सच्चा नबी जानता था, इसीलिये उसे डर हुआ और उसने आप से मुकाबला न किया। हज़रत ने आस पास के इलाक़ों में लश्कर भेजे। चुनांचे हज़रत श्वालिद को चार सौ से ज़्यादा सवारों के साथ दोम्मतुल जुन्दल के हाकिम अकीदर के मुकाबिल भेजा और फ़रमाया कि तुम उसको नील गाय के शिकार में पकड़ लो। चुनांचे ऐसा ही हुआ। जब वह नील गाय के शिकार के लिये किले से उतरा तो हज़रत श्वालिद बिन बलीद रदियल्लाहो अन्हो उसको गिरफ़्तार करके हुज़ूर की ख़िदमत में लाए। हुज़ूर ने जिज़िया मुक़रर फ़रमाकर उसको छोड़ दिया। इसी तरह ईला के हाकिम पर इस्लाम पेश किया और जिज़िया पर सुलह फ़रमाई। वापसी के वक़्त जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीने के करीब तश्रीफ़ लाए तो जो लोग जिहाद में साथ होने से रह गए थे, वो हाज़िर हुए। हुज़ूर ने सहाबा से फ़रमाया कि उनमें से किसी से क़लाम न करें और अपने पास न बिटाएं जबतक हम इज़ाज़त न दें। तो मुसलमानों ने उनसे मुंह फेर लिया, यहाँ तक कि बाप और भाई की तरफ़ भी तबज्जह न की। इसी बारे में ये आयतें उतरीं।

- (२) कि दुनिया और उसकी सारी माया नश्वर है और आख़िरत और उसकी सारी नेअमतेँ बाक़ी रहने वाली हैं।
- (३) ऐ मुसलमानो, रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म के मुताबिक़ अल्लाह तआला।
- (४) जो तुम से बेहतर और फ़रमाँवरदार होंगे। तात्पर्य यह है कि अल्लाह तआला अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विजय और उनके दीन की इज़ाज़त देने का ख़ुद जिम्मेदार है। तो अगर तुम रसूल की आज्ञा का पालन करने में जल्दी करोगे तो यह सआदत तुम्हें नसीब होगी और अगर तुमने सुस्ती की तो अल्लाह तआला दूसरों को अपने नबी की ख़िदमत की नेअमत से नवाजेगा।
- (५) यानी हिज़रत के वक़्त मक्कए मुक़र्रमा से, जबकि काफ़िरों ने कमेटी घर में हुज़ूर के क़त्ल और कैद वग़ैरह के बुरे बुरे मशवरे किये थे।
- (६) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो।
- (७) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत सिद्दीक़े अक़बर रदियल्लाहो अन्हो से। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो का सहाबी होना इस आयत से साबित है। हसन बिन फ़रज़ ने फ़रमाया जो शरअ हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ के सहाबी होने का इन्कार करे वह कुरआनी आयत का इन्कारी होकर काफ़िर हुआ।
- (८) और दिल को इतमीनान अता फ़रमाया।
- (९) उनसे मुराद फ़रिश्तों की फ़ौजे हैं जिन्होंने काफ़िरों के मुंह फेर दिए और वो आपको देख न सके और बद्र व अहज़ाब व हुनैन में भी उन्हीं ग़ैबी फ़ौजों से मदद फ़रमाई।
- (१०) कुफ़्र और शिर्क की दावत को परत फ़रमाया।
- (११) यानी खुशी से या भारी दिल से, और एक क़ौल यह है कि कुब्त के साथ, या कमज़ोरी के साथ और व सामानी से या भरपूर साथियों के साथ।
- (१२) कि जिहाद का सवाब बैठ रहने से बेहतर है, तो मुस्तइदी के साथ तैयार हो और आलस्य न करो।
- (१३) और दुनियावी नफ़े की उम्मीद होती और सख़्त मेहनत और मशक्क़त का अन्देशा न होता।
- (१४) यह आयत उन मुनाफ़िक़ों की शान में उतरी जिन्होंने ग़ज़वए तबूक में जाने से हिचकिचाहट दिग़ाई थी।

(मेहनत) का रास्ता दूर पड़ गया और अब अल्लाह की कसम खाएंगे^(१५) कि हमसे बन पड़ता तो जरूर तुम्हारे साथ चलते, ^(१६) अपनी जानों को हलाक करते हैं^(१७) और अल्लाह जानता है कि वो बेशक जरूर झूटे हैं^(१८)

सातवाँ रूकू

अल्लाह तुम्हें माफ़ करे^(१) तुमने उन्हें क्यों इज़्ज (आज्ञा) दे दिया जबतक खुले न थे तुमपर सच्चे और ज़ाहिर न हुए थे झूटे^(४३) और वो जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखते हैं तुमसे छुट्टी न मांगेंगे उससे कि अपने माल और जान से जिहाद करें और अल्लाह ख़ूब जानता है परहेज़गारों को^(४४) तुमसे यह छुट्टी वही माँगते हैं जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान नहीं रखते^(२) और उनके दिल शक में पड़े हैं तो वो अपने शक में डाँवाडोल है^(४५) उन्हें निकलना मंज़ूर होता^(३) तो उसका सामान करते मगर खुदा ही को उनका उठना नापसन्द हुआ तो उनमें काहिली भरदी^(४) और फ़रमाया गया कि बैठे रहो बैठे रहनेवालों के साथ^(४६) अगर वो तुम में निकलते तो उनसे सिवा नुक़सान के तुम्हें कुछ न बढ़ता और तुम में फ़ितना डालने को तुम्हारे बीच में गुराबें (कौए) दौड़ाते^(५) और तुम में उनके जासूस मौजूद

وَسَيُخْلِقُونَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ
يُهْلِكُونَ اَنْفُسَهُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ
عَمَّا اَللّٰهُ عَنْكَ لِمَ اَذْنَتْ لَهُمْ حَتّٰى يَتَّبِعُوْنَ
لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمُ الْكَذٰبِيْنَ
لَا يَسْتَاذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
اَنْ يُجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ وَاللّٰهُ عَلَيْهِمْ
بِالتَّقْوٰى اِنَّمَا يَسْتَاذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ
فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ
لَاَعَدَّوْا لَهُ عُدَّةً وَلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ اِتِّبَاعَهُمْ
فَتَبَطُّهُمْ وَقَبِلَ اَفْعَدُوْا مَعَ الْفٰعِدِيْنَ
لَوْ اَوْصَعُوْا خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَا رَاَدُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَلَا اَوْصَعُوْا
خَلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَ نَفْسَكُمْ الْفِتْنَةَ وَفِيْكُمْ سٰغُوْنَ

مَزْل

(१५) ये मुनाफ़िक और इस तरह विवशता दिख़ाएंगे।

(१६) मुनाफ़िकों की इस विवशता और बहाने बाज़ी से पहले ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बर और नबुव्वत की दलीलों में से है, चुनावें जैसा फ़रमाया था वैसा ही पेश आया और उन्होंने यही बहाने बाज़ी की और झूटी क़समें खाईं।

(१७) झूटी क़सम खाकर, इस आयत से साबित हुआ कि झूटी क़समें खाना हलाकत का कारण है।

सूरए तौबह - सातवाँ रूकू

(१) "अल्लाह तुम्हें माफ़ करे" से क़लाम की शुरुआत सम्बोधित व्यक्ति के आदर और सम्मान को बढ़ा चढ़ाकर दिख़ाने के लिये है, और अरब की भाषा में यह आम बात है कि सामने वाले की ताज़ीम और इज़ज़त के लिये ऐसे क़लिमे बोले जाते हैं, काज़ी अयज़ रहमतुल्लाह अलैह ने शिफ़ा शरीफ़ में फ़रमाया, जिस किसी ने इस सवाल को प्रकोप करार दिया उसने ग़लती की, क्योंकि ग़ज़वए तबूक में हाज़िर न होने और घर रह जाने की इज़ाज़त माँगने वालों को इज़ाज़त देना न देना दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के इस्तिज़ार में था और आप इसमें मुक़्तार थे, चुनावें अल्लाह तआला ने फ़रमाया "फ़ाज़न मिलन शिअता मिहूम" आप उनमें से जिसे चाहे इज़ाज़त दीजिये, तो "लिम अज़िन्ता लहुम (तुमने उन्हें क्यों इज़्ज दे दिया) फ़रमाया, गुस्से के लिये नहीं बल्कि यह इज़हार है कि अगर आप उन्हें इज़ाज़त न दें तो भी वो जिहाद में जाने वाले न थे, और "अल्लाह तुम्हें माफ़ करे" का मानी ये हैं कि अल्लाह तआला माफ़ करे, गुनाह से तो तुम्हें वास्ता ही नहीं, इस में सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की भरपूर इज़ज़त अफ़ज़ाई और तस्कीन व तसल्ली है कि मुबारक दिल पर "तुमने उन्हें क्यों इज़ाज़त दे दी" फ़रमाने से कोई बोझ न हो।

(२) यानी मुनाफ़िक लोग।

(३) न इधर के हुए न उधर के हुए, न क़फ़िरों के साथ रह सके न ईमान वालों का साथ दे सके।

(४) और जिहाद का इरादा रखते।

(५) उनके इज़ाज़त चाहने पर।

(६) बैठ रहने वालों से औरतें बच्चे बीमार और अपंग लोग मुराद हैं।

(७) और झूटी झूटी बातें बनावकर फ़साद फैलाने।

हैं, (८) और अल्लाह खूब जानता है ज़ालिमों को (४७) बेशक उन्होंने पहले ही फ़ितना चाहा था (९) और ऐ मेहबूब तुम्हारे लिये तदवीरें उलटी पलटी (१०) यहां तक कि हक़ आया (११) और अल्लाह का हुक्म ज़ाहिर हुआ (१२) और उन्हें नागवार था (४८) और उनमें कोई तुमसे यूँ अर्ज़ करता है कि मुझे रूखसत दीजिये और फ़ितने में न डालिये (१३) सुन लो वो फ़ितने ही में पड़े (१४) और बेशक ज़हन्नम घेरे हुए है काफ़िरों को (४९) अगर तुम्हें भलाई पहुंचे (१५) तो उन्हें घुरा लगे और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे (१६) तो कहें (१७) हमने अपना काम पहले ही ठीक कर लिया था और खुशियां मनाते फिर जाएं (५०) तुम फ़रमाओ हमें न पहुंचेगा मगर जो अल्लाह ने हमारे लिये लिख दिया, वह हमारा मौला है, और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये (५१) तुम फ़रमाओ तुम हमपर किस चीज़ का इन्तिज़ार करते हो मगर दो ख़ुबियों में से एक का (१८) और हम तुमपर इस इन्तिज़ार में हैं कि अल्लाह तुमपर अज़ाब डाले अपने पास से (१९) या हमारे हाथों (२०) तो अब राह देखो हम भी तुम्हारे साथ राह देख रहे हैं (२१) (५२) तुम फ़रमाओ कि दिल से खर्च करो या नागवारी से तुमसे

لَهُمْ عِندَ اللَّهِ عَلَيْهِمْ بِالظَّالِمِينَ ۖ لَقَدْ ابْتِغُوا
الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّى جَاءَ
الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَرِهُونَ ۖ وَفِيهِمْ
مَنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَفْتِنِّي ۖ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ
سَقُوطُهُمْ وَإِنْ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۖ إِنْ
تُصِيبَكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِنْ تُصِيبَكَ مُصِيبَةٌ
يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا
وَهُمْ فَرِحُونَ ۖ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ
اللَّهُ لَنَا ۖ هُوَ مَوْلَانَا ۖ وَعَلَى اللَّهِ فَلَئِيكَوَكُلِّ
الْمُؤْمِنُونَ ۖ قُلْ هَلْ تَرَبُّصُونَ بِنَا إِلَّا أَحَدٌ
الْحُسَيْنِيُّ ۖ وَنَحْنُ نَرَبُّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمْ اللَّهُ
بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ بِيَايِدِنَا ۖ فَتَرَبُّصُوا
إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرَبِّصُونَ ۖ قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ

- (८) जो तुम्हारी बातें उतक पहुंचाएं।
(९) और वो आपके सहाबा को दीन से रोकने की कोशिश करते जैसा कि अबुल्लाह बिन उबई सलोल मुनाफ़िक़ ने उहद के दिन किया कि मुसलमानों का बहकाने के लिये अपनी जमाअत लेकर वापस हो गया।
(१०) और उन्होंने तुम्हारा काम बिगाड़ने और दीन में फ़साद डालने के लिये बहुत छल कपट किये।
(११) यानी अल्लाह तआला की तरफ़ से सहायता और मदद।
(१२) और उसका दीन ग़ालिब रहा।
(१३) यह आयत जद बिन कैस मुनाफ़िक़ के बारे में उतरी जब नबीये करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ग़ज़वए तबूक के लिये तैयारी फ़रमाई तो जद बिन कैस ने कहा, या रसूलल्लाह, मेरी कौम जानती है कि मैं औरतों का बड़ा शैदाई हूँ, मुझे डर है कि मैं रूम की औरतों को देखूंगा तो मुझसे सब न हो सकेगा, इसलिये आप मुझे यहीं ठहरने की इजाज़त दीजिये और उन औरतों में फ़ितना न डालिये, मैं आपकी माल से मदद करूंगा, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लहो अन्हुमा फ़रमाते हैं कि यह उसका बहाना था और उसमें दोहरी प्रवृत्ति के सिवा कोई बुराई न थी, रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसकी तरफ़ से मुंह फेर लिया और उसे ठहर जाने की इजाज़त दे दी, उसके बारे में यह आयत उतरी।
(१४) क्योंकि जिहाद से रुक रहना और रसूले अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म का विरोध बहुत बड़ा फ़ितना है।
(१५) और तुम दुश्मन पर विजयी हो और ग़नीमत तुम्हारे हाथ आए।
(१६) और किसी तरह की सस्ती पेश आए।
(१७) मुनाफ़िक़, कि चालाकी से जिहाद में न जाकर।
(१८) या तो विजय और ग़नीमत मिलेगी या शहादत और मरफ़ित, क्योंकि मुसलमान जब जिहाद में जाता है तो वह अगर ग़ालिब हो जब तो विजय और माल और बड़ा इनाम पाता है और अगर अल्लाह की राह में मारा जाए तो उसका शहादत हासिल होती है, जो उसकी सबसे बड़ी मुराद है।
(१९) और तुम्हें आद व समूद की तरह हलाक़ करे।
(२०) तुमको क़त्ल और कैद के अज़ाब में गिरफ़्तार करे।
(२१) कि तुम्हारा क्या अंजाम होता है।

हरगिज़ कुबूल न होगा^(२२) बेशक तुम बहुत लोग हो^(२३) और वो जो खर्च करते हैं उसका कुबूल होना बन्द न हुआ मगर इसीलिये कि वो अल्लाह और रसूल के इन्कारी हुए और नमाज़ को नहीं आते मगर जी हारे ओर खर्च नहीं करते मगर नागवारी से^(२४) ^(२५) तो तुम्हें उनके माल और उनकी औलाद का अचंभा न आए अल्लाह यही चाहता है कि दुनिया की ज़िन्दगी में इन चीज़ों से उनपर बवाल डाले और कुफ़्र ही पर उनका दम निकल जाए^(२६) ^(२७) और अल्लाह की क्रस्में खाते हैं^(२८) कि वो तुम में से हैं^(२९) और तुम में से नहीं^(३०) हों वो लोग डरते हैं^(३१) ^(३२) और अगर पाएं कोई पनाह या गार (खोह) या समा जाने की जगह तो रस्सियां तुड़ाते उधर फिर जाएंगे^(३३) ^(३४) और उनमें कोई वह है कि सदक़े (दान) बाँटने में तुमपर तअना करता है^(३५) तो अगर उसमें^(३६) से कुछ मिले तो राज़ी होजाएं और न मिले तो जभी वो नाराज़ हैं^(३७) और क्या अच्छा होता अगर वो इस पर राज़ी होते जो अल्लाह व रसूल ने उनको दिया और कहते हमें अल्लाह

كُرْهًا لَّن يَتَقَبَّلَ مِنْكُمْ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا
فَاسِقِينَ ۝ وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ يَقْبَلُوا مِنْهُمْ نَفَقَتَهُمْ
إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ
الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَى وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ
كِرْهُونَ ۝ فَلَا تَعْجَبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ
إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَيَزْهُقَ أَنْفُسَهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ وَيَخْلِفُونَ
بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَيُنْكَرُ مَا هُمْ وَمَا هُمْ وَنُكِرَ
قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ۝ لَوْ يَجِدُونَ مَلْعًا أَوْ مَعْرِبَةً
أَوْ مَدَّحَلًا لَّوَلُوا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْحَدُونَ ۝ وَمِنْهُمْ
مَنْ يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا
رَضُوا وَإِنْ لَمْ يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ۝
وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۝

مَنْ

- (२२) यह आयत जद बिन कैस मुनाफ़िक् के जवाब में उतरी जिसने जिहाद में न जाने की इजाज़त तलब करने के साथ यह कहा था कि मैं अपने माल से मदद करूंगा। इस पर अल्लाह तआला नेफरमाया कि तुम ख़ुशी से दो या नख़ुशी से, तुम्हारा मान कुबूल न किया जाएगा, यानी रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम उसको न लेंगे क्योंकि यह देना अल्लाह के लिये नहीं है।
- (२३) क्योंकि उन्हें अल्लाह की रज़ा और ख़ुशी मंज़ूर नहीं।
- (२४) तो वह माल उनके हक़ में राहत का कारण न हुआ बल्कि बवाल हुआ।
- (२५) मुनाफ़िक् लोग इसपर।
- (२६) यानी तुम्हारे दीन व मिल्लत पर हैं, मुसलमान हैं।
- (२७) तुम्हें धोखा देते और झूठ बोलते हैं।
- (२८) कि अगर उनकी दोगली प्रवृत्ति ज़ाहिर हो जाए तो मुसलमान उनके साथ वही मामला करेंगे जो मुश्रिकों के साथ करते हैं। इसलिये वो तक्फ़िया (सामने कुछ और अन्दर कुछ) करके अपने आपको मुसलमान ज़ाहिर करते हैं।
- (२९) क्योंकि उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम और मुसलमानों से इन्तिहा दर्जे की दुश्मनी है।
- (३०) यह आयत जुल-ख़ुवैसिरह तमीमी के वार में उतरी। इस शरह का नाम हरकूस बिन ज़ुहैर है और यही ख़ारिजियों की अस्ल और बुनियाद है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ग़नीमत का माल बाँट रहे थे तो जुल-ख़ुवैसिरह ने कहा, या रसूलल्लाह इन्साफ़ कीजिये। हुज़ूर ने फ़रमाया, तुझे ख़राबी हो, मैं न इन्साफ़ करूंगा तो कौन करेगा। हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने अर्ज़ किया, मुझे इजाज़त दीजिये कि इस मुनाफ़िक् की गर्दन मार दूँ। हुज़ूर ने फ़रमाया कि इसे छोड़ दो। इसके और भी साथी हैं कि तुम उनकी नमाज़ों के सामने अपनी नमाज़ों को और उनके राज़ों के सामने अपने राज़ों को हज़ीर देयांगे। वो कुरआन पढ़ेंगे और उनके ग़लों से न उतरेगा। वो दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से।
- (३१) सदक़ात और दीन।

काफ़ी है अब देता है हमें अल्लाह अपने फ़ज़ल से और अल्लाह का रसूल हमें अल्लाह ही की तरफ़ राबत (रुचि) है (३२) (५९)

आठवाँ सूक़

ज़कात तो उन्हीं लोगों के लिये है^(१) मोहताज़ और निरे नादार और जो उसे तहसील (ग्रहण) करके लाएं और जिनके दिलों को इस्लाम से उत्पन्न दी जाए और गर्दन छुड़ाने में और कर्ज़दारों को और अल्लाह की राह में और मुसाफ़िर को, यह ठहराया हुआ है अल्लाह का और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है (६०) और उनमें कोई वो है कि उन ग़ैब की ख़बरें देने वाले को सताते हैं^(२) और कहते हैं वो तो कान हैं तुम फ़रमाओ तुम्हारे भले के लिये कान हैं अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मुसलमानों की बात पर यक़ीन करते हैं^(३) और जो तुम में मुसलमान हैं उनके वास्ते रहमत हैं और जो रसूलुल्लाह को ईज़ा देते हैं उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है (६१) तुम्हारे सामने अल्लाह की क़सम खाते हैं^(४) कि तुम्हें राज़ी कर लें^(५) और अल्लाह व रसूल का हक़ ज़्यादा था कि उसे राज़ी करते अगर ईमान रखते थे (६२) क्या उन्हें ख़बर नहीं कि जो ख़िलाफ़ करे अल्लाह और उसके रसूल का तो उसके लिए जहन्नम की आग है कि

وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ
وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ۝ إِنَّمَا
الصَّدَقَتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا
وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغُرِمَاتِ وَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۖ فَرِيضَةً مِّنْ
اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَمِنْهُمْ الَّذِينَ
يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ أُذُنٌ ۚ قُلْ أُذُنُ
خَيْرٌ لَّكُمْ يَوْمَنُ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ بِالْمُؤْمِنِينَ
وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ ۖ وَالَّذِينَ
يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝
يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُم لَيُرْضَوْنَ ۖ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ
أَعْلَمُ ۚ أَن يُرْضَوْا ۚ إِنَّ كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۝ أَلَمْ
يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَن يُحَادِدِ اللَّهَ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ فَأَن

(३२) कि हमपर अपना फ़ज़ल और फैलाए और हमें लोगों के मालों से बेपर्वाह करदे, बे नियाज़ कर दे.

सूरए तौबह - आठवाँ सूक़

(१) जब मुनाफ़िक्को ने सदक़ात के बँटवारे में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर तअना क़स्र तो अल्लाह तआला ने इस आपत में बयान फ़रमा दिया कि सदक़ात के मुस्तहिक़ सिर्फ़ यही आठ क़िस्म के लोग हैं, इन्हीं पर सदक़े ख़र्च किये जाएंगे. इसके सिवा और कोई मुस्तहिक़ नहीं और रसूल के करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सदक़े के माल से कोई वास्ता ही नहीं. आप पर और आपकी औलाद पर सदक़ा हराम है तो तअना करने वालों को ऐतिराज़ का क्या मौक़ा. सदक़े से इस आपत में ज़कात मुग़ाद है. ज़कात के मुस्तहिक़ आठ क़िस्म के लोग क़रार दिये गए हैं. इनमें से मुअत्तिफ़तुल कुतूब बिइजमाए सहाबा साकिन हो गए क्योंकि जब अल्लाह तबारक व तआला ने इस्लाम को ग़ालब दिया तो अब इसकी हाज़त न रही. यह इजमाअ ज़मानए सिद्दीक़ में मुअक्किद हुआ. फ़कीर वह है जिसके पास अदना चीज़ हो और जबतक़ उसके पास एक वक़्त के लिये कुछ हो उसके सवाल हलाल नहीं. मिरकीन वह है जिसके पास कुछ न हो, वह सवाल कर सकता है. आमिलीन वो लोग हैं जिन को इमाम ने सदक़े वसूल करने पर रज़ा हो. उन्हें इमाम इतना दे जो उनके और उनके सम्बन्धियों के लिये काफ़ी हो. अगर आमिल ग़नी हो तो भी उसको लेना जायज़ है. आमिल सैयद या हाशमी हो तो वह ज़कात में से न ले. गर्दन छुड़ाने से मुग़ाद यह है कि जिन गुलामों को उनके मालिकों ने मक़ातिब कर दिया हो और एक मिक्दर माल की मुक़र्र करदी हो कि इस क़द्र वो अदा करें तो आज़ाद हैं, वो भी मुस्तहिक़ हैं. उनको आज़ाद कराने के लिये ज़कात का माल दिया जाए. क़र्ज़दार जो बग़ैर किसी गुनाह के क़र्ज़ में जकड़े गए हो और इतना माल न रखते हों जिससे क़र्ज़ अदा करें तो उन्हें क़र्ज़ की अदायगी के लिये ज़कात के माल से मदद दी जाए. अल्लाह की राह में ख़र्च करने से बेसामान मुजाहिदों और नादार हाजियों पर ख़र्च करना मुग़ाद है. इन्हे सदील से वो मुसाफ़िर मुग़ाद हैं जिनके पास माल न हो. ज़कात देने वाले को यह भी जायज़ है कि वह इन तमाम क़िस्मों के लोगों को ज़कात दे, और यह भी जायज़ है कि इनमें से किसी एक ही क़िस्म को दे. ज़कात उन्हीं लोगों के साथ ख़ास की गई, तो उनके अलावा और दूसरे काम में ख़र्च न की जाएगी न मस्जिद की तामीर में, न मुदें के क़फ़न में, न उसके क़र्ज़ की अदायगी में. ज़कात बनी हाशिम को और ग़नी और उनके गुलामों को न दी जाए. और न आदमी अपनी बीबी और औलाद और गुलामों को दे. (ताफ़सीर अहमदी व मदरिक)

(२) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को. मुनाफ़िक् लोग अपने जलसों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में बुरी बुरी बातें बका करते थे. उनमें से कुछ ने कहा कि अगर हुज़ूर को ख़बर हो-गई तो हमारे हक़ में अच्छा न होगा. जुलास बिन सुवैद मुनाफ़िक् ने कहा हम जो चाहें कहें, हुज़ूर के सामने मुक़र जाएंगे और क़सम ख़ालेंगे. वह तो कान है, उनसे जो कह दिया जाए, सुन कर मान लेते हैं. इसपर अल्लाह तआला ने यह आपत उत्तारी और यह फ़रमाया कि अगर वह सुनने वाले भी हैं तो ख़ैर और सलाह के,

हमेशा उसमें रहेगा, यही बड़ी रूसवाई है (६३) मुनाफ़िक डरते हैं कि इन^(१) पर कोई सूरत ऐसी उतरे जो^(२) उनके दिलों की छुपी^(३) जता दे, तुम फ़रमाओ हंस जाओ, अल्लाह को ज़रूर ज़ाहिर करना है जिसका तुम्हें डर है (६४) और ऐ मेहबूब अगर तुम उनसे पूछो तो कहेंगे कि हम तो यूँही हंसी खेल में थे, (१) तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल से हंसते हो (६५) वहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके मुसलमान होकर, (१०) अगर हम तुम में से किसी को माफ़ करें (११) तो औरों को अज़ाब देंगे इसलिये कि वो मुजरिम थे (१२) (६६)

नवाँ सूकू

मुनाफ़िक मर्द (जिनके दिल में कुछ, ज़बान पर कुछ) और मुनाफ़िक औरतें एक थेली के चट्टे चट्टे हैं^(१), बुराई का हुक्म दें^(२) और भलाई से मना करें^(३) और अपनी मुट्ठी बंद रखें^(४) वो अल्लाह को छोड़ बैठे^(५) तो अल्लाह ने उन्हें छोड़ दिया^(६) वेशक मुनाफ़िक वही पक्के बेहुक्म हैं (६७) अल्लाह ने मुनाफ़िक मर्दों और मुनाफ़िक औरतों और काफ़िरों को जहन्नम की आग का वादा दिया

لَهُ نَارُ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ذَلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ۝ يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلِ اسْتَهِرُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ مُحَرِّرٌ مَّا تُخْتَارُونَ ۝ وَلَكِنَّ سَاءَ لَهُمْ كَيْفُولُنَا إِنَّا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلِ أَبِ اللَّهِ وَالْيَوْمِ وَالرَّسُولِ ۚ كُنْتُمْ تُسْتَهْزَءُونَ ۝ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ إِنَّ نَعَفٍ عَنْ طَائِفَةٍ مِّنْكُمْ يُغَذِّبُ طَائِفَةٌ بِأَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ ۚ أَسُوا اللَّهَ فَرَسَبَهُمْ ۚ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ

मन्ज़र

यानी अच्छी बातों के सुनने और मानने वाले हैं, शर और फ़साद के नहीं।

(३) न मुनाफ़िकों की बात पर।

(४) मुनाफ़िक इसलिये।

(५) मुनाफ़िक अपनी बैठकों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुरा भला कहा करते थे और मुसलमानों के पास आकर उससे मुकर जाते थे और क्रमों ग्रा ग्रा कर अपनी सफ़ाई और वेगुनाही साबित करते थे। इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि मुसलमानों को राज़ी करने के लिये कस्में ग़ाने से ज्यादा अहम अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करना था, अगर ईमान रखते थे तो ऐसी हरकतें क्यों कीं जो खुदा और रसूल की नाराज़ी का कारण हों।

(६) मुसलमानों।

(७) मुनाफ़िकों।

(८) दिलों की छुपी चीज़ उनकी दोहरी प्रवृत्ति है और वह दुश्मनी जो वो मुसलमानों के साथ रखते थे और उसको छुपाया करते थे। सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चमत्कार देखने और आपकी ग़वी ख़बरें सुनने और उनका पूरा हाने देखने के बाद मुनाफ़िकों को डर हुआ कि कहीं अल्लाह तआला कोई ऐसी सूरत नाज़िल न फ़रमाए जिससे उनकी पोल खुल जाए और उनकी रूसवाई हो। इस आयत में इस का बयान है।

(९) ग़जब तबूक में जाते हुए मुनाफ़िकों के तीव्र तफ़र्रों में से दो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निरयत हंसी से कहते थे कि उनका ख़याल है कि रूम पर ग़ालिब आ जाएंगे। कितना दूर का ख़याल है। और एक तफ़र्र बोलना तो न था मगर इन बातों का सुनकर हंसता था। हुज़ूर ने उनको तलब फ़रमाकर इशारा फ़रमाया कि तुम ऐसा ऐसा कह रहे थे। उन्होंने कहा हम रास्ता काटने के लिये हंसी खेल के तीर पर दिल लगी की बातें कर रहे थे। इसपर यह आयत उतरी और उनका यह वहाना कुबूल न किया गया और उनके लिये फ़रमाया गया जो आगे इशारा होता है।

(१०) इस आयत से साबित होता है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी और अपमान कुफ़्र है, जिस तरह भी हो, उसमें वहाना कुबूल नहीं।

(११) उसके तीव्र कर लेने और सच्चे दिल से ईमान लाने से। मुहम्मद बिन इब्नाक का कौल है कि इसमें वही शक़्स मुपाद है जो हंसता था, मगर उसने अपनी ज़बान से कोई गुस्ताख़ी की बात न कही थी। जब यह आयत उतरी तो उसने तीव्र की और सच्चे दिल से ईमान लाया और उसने दुआ की कि याख़ मूझ अपनी यह में ऐसी मौत दे कि कोई यह कहने वाला न हो कि मैं ने गुस्ल दिया, मैंने क़य़न दिया, मैंने दफ़न किया। चुग़ांचे ऐसा ही हुआ कि वह जंग यमामा में शहीद हुए और उनका पता ही न चला, उनका नाम यहया बिन हमीर अथर्ज था और चूँकि उन्होंने हुज़ूर को गुग क़दर से ज़बान रोक़ी थी, इसलिये उन्हें तीव्र और ईमान की तीफ़ीक़ मिली।

(१२) और अपने जुर्म पर कायम रहे और तीव्र न की।

है जिसमें हमेशा रहेंगे, वह उन्हें बस है, और अल्लाह की उनपर तानत है और उनके लिये कायम रहने वाला अज़ाब है॥६८॥ जैसे वो जो तुम से पहले थे तुमसे ज़ोर में बढ़कर थे और उनके माल और औलाद तुमसे ज़्यादा तो वो अपना हिस्सा^(११) बरत गए तो तुमने अपना हिस्सा बरता जैसे अगले अपना हिस्सा बरत गए और तुम बेहूदगी में पड़े जैसे वो पड़े थे^(१२) उनके अमल अकारत गए दुनिया और आखिरत में; ओर वही लोग घाटे में हैं^(१३)॥६९॥ क्या उन्हें^(१४) अपने से अगलों की खबर न आई^(१५) नूह की क़ौम^(१६) और आद^(१७) और समूद^(१८) और इब्राहीम की क़ौम^(१९) और मदन^(२०) वाले और वो बस्तियाँ कि उलट दी गई^(२१) उनके रसूल रौशन दलीलें उनके पास लाए थे^(२२) तो अल्लाह की शान न थी कि उनपर जुल्म करता^(२३) बल्कि वो खुद ही अपनी जानों पर ज़ालिम थे^(२४)॥७०॥ और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं^(२५) भलाई का हुक्म

جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعْنُهُمُ
 اللَّهُ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ كَالَّذِينَ مِنْ
 قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَكَثَرُوا مَالًا وَ
 أَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَائِقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَائِقِكُمْ
 كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَائِقِهِمْ
 وَخُضْتُمْ كَالَّذِينَ خَاضُوا أُولَئِكَ حِطَّةٌ
 آَعَمَّا لَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآٰخِرَةِ ۚ وَأُولَئِكَ هُمُ
 الْخٰسِرُونَ ۝ اَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
 قَوْمٌ نُوحٍ وَّعَادٍ وَثَمُودَ ۙ وَقَوْمٌ اٰنْزَلْنَاهُمْ
 وَاَصْحٰبُ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَةَ ۙ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ
 بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوا
 اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ
 بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاُ بَعْضٍ مِّمَّا مَرُوْنَ بِالْمَعْرُوفِ

सूरए तौबह - नवाँ सूकू

- (१) वो राव दोहरी प्रवृत्ति और बुरे अस्माल में एक से हैं, उनका हाल यह है कि.
- (२) यानी कुकुर और गुनाह और रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाने का. (ख़ाज़िन)
- (३) यानी ईमान और रसूल की तस्दीक और उनकी फ़रमाँवरदारी से.
- (४) खुदा की राह में श्रम करने से.
- (५) और उन्होंने उसकी इताअत और रज़ा तलबी न की.
- (६) और सबाब व फ़ज़ल से मेहरूम कर दिया.
- (७) दुनिया की वासनाओं और लज़ज़तों का.
- (८) और तुमने बातिल का अनुकरण और अल्लाह व रसूल को झुटलाने और ईमान वालों के साथ मश्वील करने में उनकी राह इस्तिनयार की.
- (९) उन्हीं क़ाफ़िरों की तरह, ऐ मुनाफ़िक्को, तुम टोटे में हो और तुम्हारे कर्म व्यर्थ हैं.
- (१०) यानी मुनाफ़िक्कों को.
- (११) गुज़री हुई उम्मतों का हाल मालूम न हुआ कि हमने उन्हें अपनी आज्ञा के विरोध और अपने रसूल की नाफ़रमानी पर किस तरह हलाक किया.
- (१२) जो तूफ़ान से हलाक की गई.
- (१३) जो दवा से हलाक किये गए.
- (१४) जो ज़लज़ले और भूकम्प से हलाक किये गए.
- (१५) जो नेअमर्त छीन लिये जाने से हलाक की गई. और नमरुद मछर से हलाक किया गया.
- (१६) यानी हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम, जो रोज़ बादल के अज़ाब से हलाक की गई.
- (१७) और उलट पुलट कर डाली गई. वो लूत क़ौम की वस्तियाँ थीं. अल्लाह तआला ने उन छः का ज़िक्र फ़रमाया, इसलिये कि शाम व इराक़ व यमन के प्रदेश जो अरब प्रदेश से विलकुल करीब करीब हैं, उनमें उन हलाक की हुई क़ौमों के निशान बाक़ी हैं और अरब लोग उन जगहों पर अक्सर गुज़रते रहते हैं.
- (१८) उन लोगों ने तस्दीक करने की जगह अपने रसूलों को झुटलाया जैसा कि ऐ मुनाफ़िक्को तुम कर रहे हो. डरो, कि उन्हीं की तरह अज़ाब में न जकड़ दिये जाओ.
- (१९) क्योंकि वह हिकमत वाला है, बग़ैर ज़ुर्म के सज़ा नहीं फ़रमाता.

दें^(२०) और बुराई से मना करें और नमाज़ कायम रखें और जकात दें और अल्लाह व रसूल का हुक्म मानें, ये हैं जिनपर बहुत जल्द अल्लाह रहम करेगा, वेशक अल्लाह गालिब हिकमत वाला है^(२१) अल्लाह ने मुसलमान मदीं और मुसलमान औरतों को बागों का वादा दिया है जिनके नीचे नहरें वहें उनमें हमेशा रहेंगे और पाकीज़ा मकानों का^(२२) बसने के बागों में, और अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी^(२३) यही है, बड़ी मुराद पानी^(२४)

दसवाँ रूकू

ऐ गैब की खबरें देने वाले (नबी) जिहाद फ़रमाओ काफ़िरों और मुनाफ़िकों पर^(१) और उनपर सख्ती करो, और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और क्या ही बुरी जगह पलटने की^(२) अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्होंने न कहा^(३) और वेशक ज़रूर उन्होंने कुफ़्र की बात कही और इस्लाम में आकर कफ़िर होगा और वह चाहा था जो उन्हें न मिला^(४) और उन्हें क्या बुरा लगा यही ना कि अल्लाह व रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़ल से ग़नी कर दिया^(५) तो अगर वो तौबह करें

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَ
يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ۝ وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَمَسْكِنٍ طَيِّبَةٍ فِي جَنَّاتٍ عَذْنٍ ۝ وَرِضْوَانٍ
مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ
وَأَغْلَظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَا وَلَهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ۝ يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا ۚ وَلَقَدْ
قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَ
هَتُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا ۚ وَمَا تَقْوُوا إِلَّا أَن آغْنِيَهُمُ
اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ مِنْ فَضْلِهِ ۚ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ

مَذِلٌّ

(२०) कि कुफ़्र और नवियों को झुटलाकर अज़ाब के हक़दार बनें.

(२१) और आपस में दीनी महबूत और सहयोग रखते हैं और एक दूसरे के मददगार और सहायक हैं.

(२२) यानी अल्लाह व रसूल पर ईमान लाने और शरीअत का अनुकरण करने का.

(२३) हसन रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि जन्नत में मोती और सुनर याक़ूत और ज़बरजद के महल ईमान वालों को दिये जाएंगे.

(२४) और तमाम नेअमतों से बढ़कर और अल्लाह के चाहन वालों की सबसे बड़ी तमन्ना. अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदर्क में पूरी करे.

सूरए तौबह - दसवाँ रूकू

(१) काफ़िरों पर तो तलवार और जंग से और मुनाफ़िकों पर हज़मत व तर्क कायम करके.

(२) इमाम बग़बी ने बलबी से नक़ल किया कि यह आयत जुलास बिन सुवैद के बारे में उतरी. वाकिआ यह था कि एक रोज़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने तबूक में खुत्बा फ़रमाया उसमें मुनाफ़िकों का ज़िक्र किया और उनकी बदहाली और दुर्दशा का ज़िक्र फ़रमाया. यह सुनकर जुलास ने कहा कि अगर मुहम्मद सच्चे हैं तो हम लोग यथां से बदतर. जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीने वापस तशरीफ़ लाए तो आमिर बिन कैस ने हुज़ूर से जुलास का कहा बयान किया. जुलास ने इन्कार किया और कहा, या रसूलल्लाह, आमिर ने मुझ पर झूठ बोला. हुज़ूर ने दोनों को हुक्म फ़रमाया कि मिम्बर के पास क़सम खाएं. जुलास ने अस के बाद मिम्बर के पास खड़े होकर अल्लाह की क़सम खाई कि यह बात उसने नहीं कही और आमिर ने उसपर झूठ बोला. फिर आमिर ने खड़े होकर क़सम खाई कि वेशक यह अल्लाज़ जुलास ने कहे और मैं ने उसपर झूठ नहीं बोला. फिर आमिर ने हाथ उठाकर अल्लाह के हुज़ूर में दुआ की, या रब अपने नबी पर सच्चे की तस्दीक़ फ़रमा. इन दोनों के जाने से पहले ही हज़रत ज़िब्रील यह आयत लेकर नाज़िल हुए. आयत में "फ़इयं यतूबू विका ख़ैरुल्लहुम" सुनकर जुलास खड़े हो गए, अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, सुनिये अल्लाह ने मुझे तौबह का मौका दिया. आमिर बिन कैस ने जो कहा सच कहा. मैंने वह बात कही थी और अब मैं तौबह और इस्ताफ़ार करता हूँ. हुज़ूर ने उनकी तौबह कुबूल फ़रमाई और वो अपनी तौबह पर ज़मे रहे.

(३) मुजाहिद ने कहा कि जुलास ने राज़ खुल जाने के डर से आमिर के क़त्ल का इरादा किया था. उसकी निश्चयत अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह पूरा न हुआ.

(४) ऐसी हालत में उनपर शुक्र बाज़िब था, न कि नाशुक्री.

तो उनका भला है और अगर मुंह फेरें^(५) तो अल्लाह उन्हें सख्त अज़ाब करेगा दुनिया और आखिरत में, और ज़मीन में कोई न उनका हिमायती होगा न मददगार^(६) (७४) और उनमें कोई वो है जिन्होंने अल्लाह से एहद किया था कि अगर हमें अपने फ़ज़ल स देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जाएंगे^(७) (७५) तो जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़ल से दिया उसमें कंजूसी करने लगे और मुंह फेर कर फलट गए^(८) (७६) तो उसके पीछे अल्लाह ने उनके दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उससे मिलेंगे, बदला इसका कि उन्होंने अल्लाह से वादा झूटा किया और बदला इसका कि झूट बोलते थे^(९) (७७) क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उनके दिल की छुपी और उनकी सरगोशी (खुसर फुसर, काना फूसी) को जानता है और यह कि अल्लाह सब शैयों का बहुत जानने वाला है^(१०) (७८) वो जो ऐब लगाते हैं उन मुसलमानों को कि दिल से ख़ैरात करते हैं^(११) और उनको जो नहीं पाते मगर अपनी मेहनत से^(१२) तो उनसे हंसते हैं^(१३) अल्लाह उनकी हंसी की सज़ा देगा और

حَيَّرَ لَهُمْ ۚ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا يَعْدُبُهُمُ اللَّهُ
عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ
فِي الْأَرْضِ مِنْ وَكِيلٍ ۚ وَلَا تُصَلِّ ۚ وَمِنْهُمْ
مَنْ عٰهَدَ اللَّهَ لَئِنْ آتٰهُنَّ مِنْ فَضْلِهِ
لَتَصَدَّقْنَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُنَّ مِنَ الظَّالِمِينَ ۚ فَلَمَّا
آتٰهُمْ مِنْ فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ
مُغْرَضُونَ ۚ فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ
إِلَى يَوْمٍ يَكُونُ لَكُمْ يَوْمُ الْاٰخِرَةِ
وَعَدُوَّةٌ بَيْنًا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۚ أَلَمْ يَعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ
عَلَمُ الْغُيُوبِ ۚ الَّذِينَ يَكْمُرُونَ الْمُطَّوِّعِينَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ
إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ ۚ سَخِرَ اللَّهُ

مِنْهُمْ

(५) नौबत और ईमान से और कुफ़र और दोगली प्रवृत्ति पर अड़े रहें.

(६) कि उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा सके.

(७) सअलबा बिन हातिब ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दरख्वास्त की कि उसके लिये मालदार होने की दुआ फ़रमाएँ. हज़ूर ने फ़रमाया, ऐ सअलबा, थोड़ा माल जिसका तू शुक्र अदा करे उस बहुत से बेहतर है, जिसका शुक्र अदा न कर सके. दोबारा फिर सअलबा ने हाज़िर होकर यही दरख्वास्त की और कहा, उसी की क़सम जिस ने आप को सच्चा नदी बनाकर भेजा, अगर वह मुझे माल देगा तो मैं हर हक़ वाले का हक़ अदा करूँगा. हज़ूर ने दुआ फ़रमाई. अल्लाह तआला ने उसकी बकरियों में बरकत फ़रमाई और इतनी बढ़ी कि मदीने में उनकी गुन्जायश न हुई तो सअलबा उनको लेकर जंगल में चला गया और जुमा व जमाअत की हाज़िरी से भी मेहरूम हो गया. हज़ूर ने उसका हाल पूछा तो सअलबा ने अर्ज़ किया कि उसका माल बहुत बढ़ गया है और अब जंगल में भी उसके माल की गुन्जायश न रही. हज़ूर ने फ़रमाया कि सअलबा पर अफ़सोस. फिर हज़ूर ने ज़कात वसूल करने वाले भेजे. लोगों ने उन्हें अपने अपने सदक़े दिये. जब सअलबा से जाकर उन्होंने सदक़ा माँगा उसने कहा यह तो टैक्स हो गया, जाओ मैं सोच लूँ. जब ये लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में वापस आए तो हज़ूर ने उनके कुछ अर्ज़ करने से पहले दो बार फ़रमाया सअलबा पर अफ़सोस. तब यह आयत उतरी. फिर जब सअलबा सदक़ा लेकर हाज़िरे हुआ तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे इसके कुबूल करने से मना फ़रमाया है. वह अपने सर पर खाक डालकर वापस हुआ. फिर इस सदक़े को हज़रत अबूबक्र सिदीक़ की ख़िलाफ़त के दौर में उनकी ख़िदमत में लाया. उन्होंने भी उसे कुबूल न फ़रमाया. फिर सैयदना उमर रदियल्लाहो अन्हो के दौर ख़िलाफ़त में उनकी ख़िदमत में लाया. उन्होंने भी कुबूल न किया. और हज़रत उस्मान रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त के ज़माने में ये शय्य हलाक़ हो गया. (मदारिक)

(८) इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने फ़रमाया कि इस आयत से साबित होता है कि एहद तोड़ना और वादा करके फिर जाना, इस सबसे दोगली प्रवृत्ति पैदा होती है. मुसलमान पर लाज़िम है कि इन बातों से दूर रहे और एहद पूरा करने और वादा वफ़ा करने में पूरी कोशिश करे. हदीस शरीफ़ में है कि मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं, जब बात करे झूट बोलें, जब वादा करे ख़िलाफ़ करे, जब उसके पास अमानत रखी जाए, ख़यानत करे.

(९) उसपर कुछ छुपा हुआ नहीं. मुनाफ़िक़ों के दिलों की बात भी जानता है और वो जो आपस में एक दूसरे से कहें वह भी.

(१०) जब सदक़े की आयत उतरी तो लोग सदक़ा लाए. उनमें कोई बहुत सारा सदक़ा लाया. उन्हें तो मुनाफ़िक़ों ने रियाकार कहा, और कोई एक साअ (माढ़े तीन सेर) लाए तो उन्हें कहा, अल्लाह को इसकी क्या परवाह. इसपर यह आयत उतरी. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रियायत है कि जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने लोगों को सदक़े की राबत दिलाई तो हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ चार हज़ार दिरहम लेकर आए और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह, मेरा कुल माल आठ हज़ार

उनके लिये दर्दनाक अज्ञाव है (७९) तुम उनकी माफ़ी चाहो या न चाहो अगर तुम सत्तर बार उनकी माफ़ी चाहो तो अल्लाह हरगिज़ उन्हें नहीं बख़्शेगा, (८०) यह इसलिये कि वो अल्लाह और उसके रसूल से इन्कारी हुए और अल्लाह फ़ासिकों (व्यभिचारियों) को राह नहीं देता (८०)

ग्यारहवाँ सूक़

पीछे रह जाने वाले इसपर खुश हुए कि वो रसूल के पीछे बैठ रहे (८१) और उन्हें ग़वारा न हुआ कि अपने माल और जान से अल्लाह की राह में लड़ें और वोले इस गर्मी में न निकलो, तुम फ़रमाओ जहन्नम की आग सबसे सख्त गर्म है किसी तरह उन्हें समझ होती (८२) तो उन्हें चाहिये कि थोड़ा हंसें और बहुत रोएं (८३) बदला उसका जो कमाते थे (८४) फिर ऐ मेहबूब (८५) अगर अल्लाह तुम्हें उनमें (८६) से किसी गिरोह की तरफ़ वापस ले जाए और वो (८७) तुमसे जिहाद को निकलने की इजाज़त मांगे तो तुम फ़रमाना कि तुम कभी मेरे साथ न चलो और हरगिज़ मेरे साथ किसी दुश्मन से न लड़ो तुमने पहली बार बैठ रहना पसन्द किया तो बैठ रहो

مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ اِسْتَغْفِرُ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرُ لَهُمْ اِنْ تَسْتَغْفِرُ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ فَبَرِحَ الْخٰلِفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خَلْفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْا اَنْ يُجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا لَّوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝ فَلْيُضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَاءُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ اِنْ رَّجِعَكَ اللّٰهُ اِلَى طَائِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَلَنْ تَقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۗ اِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْفُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاَفْعُدُوْا مَعَ

मूल

दिरहम था, चार हज़ार तो यह जुदा की राह में हाज़िर है और चार हज़ार मैंने घर वालों के लिये रोक लिये हैं, हुज़ूर ने फ़रमाया, अल्लाह उसमें भी बरकत फ़रमाए, हुज़ूर की दुआ का असर यह हुआ कि उनका माल बहुत बढ़ा, यहाँ तक कि जब उनकी वफ़ात हुई तो उन्होंने दो बीबियाँ छोड़ीं, उन्हें आठवाँ हिस्सा मिला, जिसकी मिक़दार एक लाख साठ हज़ार दिरहम थी।

(११) अबू अक़ील अन्सारी एक साअ खज़ूरे लेकर हाज़िर हुए और उन्होंने हुज़ूर की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैंने आज रात की पानी खींचने की मज़दूरी की, उसकी उज्रत दो साअ खज़ूर मिलीं, एक साअ तो मैंने घर वालों के लिये छाड़ा और एक साअ अल्लाह की राह में हाज़िर है, हुज़ूर ने यह सद्क़ा कुबूल फ़रमाया और इसकी कद्र की।

(१२) मुनाफ़िक़ और सद्क़े की क़ेमी पर शर्म दिलाते हैं।

(१३) ऊपर की आयतें जब उतरीं और मुनाफ़िक़ों की दोहरी प्रवृत्ति खुल कर सामने आ गई और मुसलमानों पर उनका हाल खुल गया तो मुनाफ़िक़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपसे माफ़ी मांगने लगे, कहने लगे कि आप हमारे लिये इस्तफ़ार कीजिये, इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि अल्लाह तआला हरगिज़ उनकी मफ़िरत न फ़रमाएगा, चाहे आप कितना ही बढ़ा चढ़ाकर इस्तफ़ार करें।

(१४) जो ईमान से बाहर हों, जब तक कि वो कुफ़्र पर रहें, (मदारिके)

सूरए तौबह - ग्यारहवाँ सूक़

(१) और मज़बूए तबूक में न गए।

(२) तो थोड़ी देर की गर्मी बरदाश्त करते और हमेशा की आग में जलने से अपने आपको बचाते।

(३) यानी दुनिया में खुश होना और हंसना, चाहे कितनी ही लम्बी मुद्दत के लिये हो, मगर वह आख़िरत के रोने के मुक़ाबल में थोड़ा है, क्योंकि दुनिया मिटने वाली है और आख़िरत हमेशा के लिये कायम रहने वाली।

(४) यानी आख़िरत का रोना दुनिया में हंसने और बुरे काम करने का बदला है, हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम जानते वह जो मैं जानता हूँ तो थोड़ा हंसते, बहुत रोते।

(५) मज़बूए तबूक के बाद।

(६) पीछे रह जाने वाले।

(७) अगर वह मुनाफ़िक़ जो तबूक में जाने से बैठ रहा था।

पीछे रह जाने वालों के साथ (८३) और उनमें से किसी की मयत पर कभी नमाज़ न पढ़ना न पढ़ाना और न उसकी कब्र पर खड़े होना, वेशक अल्लाह और रसूल से इन्कारी हुए और फ़िस्क (दुराचार) ही में मर गए (८४) और उनके माल या औलाद पर अचंभा न करना, अल्लाह यही चाहता है कि उसे दुनिया में उनपर बवाल करे और कुफ़्र ही पर उनका दम निकल जाए (८५) और जब कोई सूरत उतरे कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के हमराह जिहाद करो तो उनके मक़दूर (सामर्थ्य) वाले तुमसे ख़ूबसत माँगते हैं और कहते हैं हमें छोड़ दीजिये कि बैठ रहने वालों के साथ होलें (८६) उन्हें पसन्द आया कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ होजाएं और उनके दिलों पर मोहर कर दी गई (९०) तो वो कुछ नहीं समझते (९१) (८७) लेकिन रसूल और जो उनके साथ ईमान लाए उन्होंने अपने मालों जानों से जिहाद किया और उन्हीं के लिये भलाईयाँ हैं (९२) और यही मुराद को पहुँचे (८८) अल्लाह ने उनके लिये तैयार कर रखी हैं बहिश्तें जिनके नीचे नेहरें हमेशा उनमें रहेंगे, यही बड़ी मुराद मिलनी है (८९)

अल्लह

१८९

अल्लह

الْخَلِيفِينَ وَلَا تَصِلَ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ
أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَ
رَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَسِقُونَ وَلَا تُعْجِبَكَ
أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّا نُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ
بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ
وَإِذَا أَنْزَلْتُ سُورَةً أَنْ أَمُوءَ بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ
رَسُولِهِ اسْتَأْذِنَكَ أُولُوا الظُّلُمِ مِنْهُمْ وَقَالُوا
ذَرْنَا نَكُنْ مَعَ الْقَاعِدِينَ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ
الْخَوَالِفِ وَطَمِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ
لَكِنَّ الرُّسُولَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَهْدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ وَأُولَئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ وَأُولَئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَذَّتْ
تَجَرَّتْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا

मक़दूर

(८) औरतों, बच्चों, बीमारों, और अपाहिजों के. इससे साबित हुआ कि जिस व्यक्ति से छल कपट जाहिर हो, उससे अलग रहना चाहिये और केवल इस्लाम का दावा करने वाला होने से मुसाहिबत और मुआफ़िकत जायज़ नहीं होती. इसीलिये अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ मुनाफ़िकों के जिहाद में जाने को मना फ़रमा दिया. आजकल जो लोग कहते हैं कि हर कलामा पढ़ने वाले को मिला लो और उसके साथ इतिहाद और मेल जोल करो, यह इस कुरआनी हुक्म के बिल्कुल ख़िलाफ़ है.

(९) इस आयत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मुनाफ़िकों के जनाज़े की नमाज़ और उनके दफ़न में शिरक़त करने से मना फ़रमाया गया. इस आयत से साबित हुआ कि काफ़िर के जनाज़े की नमाज़ किसी हाल में जायज़ नहीं और काफ़िर की कब्र पर दफ़न व ज़ियारत के लिये खड़ा होना भी मना है. और यह जो फ़रमाया और फ़िस्क ही में मर गए यहाँ फ़िस्क से कुफ़्र मुराद है. कुरआने करीम में एक और जगह भी फ़िस्क कुफ़्र के मानी में आया है, जैसे कि आयत "अफ़मन काना मूमिनन कमन काना फ़ासिक़न" (तो क्या जो ईमान वाला है वह उस जैसा हो जाएगा जो बेहुक़म है - सूरत सज्दा, आयत १८) में. फ़ासिक़ के जनाज़े की नमाज़ है, इसपर सहाबा और तावईन की सहमति है, और इसपर उलमाए सालिहीन का अमल और यही अहले सुन्नत व जमाअत का मज़हब है. इस आयत में मुसलमानों के जनाज़े की नमाज़ का सुवूत भी मिलता है. और इसका फज़्र किफ़ायत होना हदीसे मशहूर से साबित होता है. जिस शरख़ के मूमिन या काफ़िर होने में शुबह हो, उसके जनाज़े की नमाज़ न पढ़ी जाए. जब कोई काफ़िर मर जाए और उसका सरपरस्त मुसलमान हो तो उसको चाहिये कि मसनून तरीक़े से मुस्ल न दे बल्कि नज़ासत की तरह उसपर पानी बहा दे और न कफ़ने मसनून दे. बल्कि उतने कपड़े में लपेटे जिससे सतर छुप जाए और न सुन्नत तरीक़े पर दफ़न करे, न सुन्नत तरीक़े पर कब्र बनाए, सिर्फ़ ग़द्दा खोदे और दबा दे. अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल मुनाफ़िकों का सरदार था. जब वह मर गया तो उसके बेटे अब्दुल्लाह ने जो नेक मुसलमान, मुख़लिस सहाबी और कसरत से इबादत करने वाले थे, उन्होंने यह ख्वादिश की कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनके बाप अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल के कफ़न के लिये अपनी मुबारक क़मीज़ इनायत फ़रमा दें और उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दें. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो की राय उसके ख़िलाफ़ थी. लेकिन चूँकि उस वक़्त तक मुमानिअत नहीं हुई थी और हज़ूर को मालूम था कि मेरा यह अमल एक हज़ार आदमियों के ईमान लाने का कारण होगा, इसलिये हज़ूर ने अपनी क़मीज़ भी इनायत फ़रमाई और जनाज़े में शिरक़त भी की. क़मीज़ देने की एक वजह यह थी कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास, जो बद्र में कैदी होकर आए थे, तो अब्दुल्लाह बिन उबई ने अपना क़र्ता उन्हें पहनाया था. हज़ूर को इसका बदला देना भी मंज़ूर था. इसपर यह आयत उतरी और इसके बाद फिर कभी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने किसी मुनाफ़िक के जनाज़े में शिरक़त न फ़रमाई और हज़ूर की वह मसलिहत भी पूरी हुई. चुनावें काफ़िरों ने देखा कि ऐसा सरख़ दुश्मन जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कुतों से बरक़त हासिल करना चाहता है तो उसके अक़ीदे में भी आप अल्लाह

बारहवाँ सूक़

और बहाने बनाने वाले ग़वार आए^(१) कि उन्हें ख़सत दी जाए और बैठ रहे वो जिन्होंने अल्लाह व रसूल से झूट बोला था^(२) जल्द उनमें के काफ़िरो को दर्दनाक अज़ाब पहुंचेगा^(३) ॥९०॥ बूढ़ों पर कुछ हरज नहीं^(४) और न बीमारों पर^(५) और न उनपर जिन्हें ख़र्च की ताक़त न हो^(६) जबकि अल्लाह और रसूल के शुभ चिन्तक रहें^(७) नेकी वालों पर कोई राह नहीं^(८) और अल्लाह वरख़ने वाला मेहरबान है^(९) और न उनपर जो तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों कि तुम उन्हें सवारी अता फ़रमाओ^(१०) तुमसे यह जवाब पाएं कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं जिसपर तुम्हें सवार करूँ इसपर यूँ वापस जाएं कि उनकी आँखों से आँसू उबलते हों इस ग़म से कि ख़र्च की ताक़त न पाई^(११) मुआख़ज़ा (जवाब तलबी) तो उनसे है जो तुमसे ख़सत मांगते हैं और वो दौलतमंद हैं^(१२) उन्हें पसन्द आया कि औरतों के साथ पीछे बैठ रहें और अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर कर दी तो वो कुछ नहीं जानते^(१३)

ذٰلِكَ الْقَوْرُ الْعَظِيْمُ ۝ وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ
الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ ۝ سَيُصِيبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى
وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يَنْفِقُوْنَ حَرْمٌ اِذَا
نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهِ ۝ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ
سَبِيْلٍ ۝ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ
اِذَا مَا اتُّوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا اَجِدُ مَا
اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۝ تَوَلَّوْا وَاَعْيَنُوْهُمْ تَفِيْضٌ مِنَ
الدَّامِرِ ۝ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يَنْفِقُوْنَ ۝ اِنَّمَا
السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْكَ وَهُمْ
اَغْنِيَاءُ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۝
وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلَى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

منزل

के हवीव और उसके सच्चे रसूल हैं . यह सोचकर हज़ार काफ़िर मुसलमान हो गए .

- (१०) उनके कुफ़्र और दोगली प्रवृत्ति इस्तिफ़ार करने के कारण.
(११) कि जिहाद में कैसी हलाकत और दिल की ख़राबी है.
(१२) दोनों ज़हान की.

सूरए तौबह - बारहवाँ सूक़

- (१) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में जिहाद में रह जाने का बहाना करने . जुहाक का कौल है कि यह आमिर बिन तुफैल की ज़माअत थी . उन्होंने ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अज़ा की कि या नबीयल्लाह , अगर हम आपके साथ जिहाद में जाएं तो कबीलाएँ तैय के अरब हमारी दीवियों बच्चों और जानवरों को लूट लेंगे . हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया , मुझे अल्लाह ने तुम्हारे हस्त से ख़बरदार किया है और वह मुझे तुमसे ये नियाज़ करेगा . अम्र बिन उला ने कहा कि उन लोगों ने झूटा बहाना बनाकर पेश किया था .
(२) यह दूसरे ग़िरोह का हाल है जो बिना किसी विवशता के बैठ रहे . ये मुनाफ़िक थे , उन्होंने ईमान का झूटा दावा किया था .
(३) दुनिया में क़त्ल होने का , और आख़िरत में ज़हन्नम का .
(४) बातिल वालों का ज़िक्र फ़रमाने के बाद , सच्चे उज्ब वालों के बारे में फ़रमाया कि उनपर से जिहाद की अनिवार्यता उतर गई है . ये कौन लोग हैं , उनके कुछ तक्के बयान फ़रमाए . पहले बूढ़े , फिर बूढ़े बच्चे औरतें , और वो शरप्स भी इन्हीं में दाख़िल है जो पैदायशी क्रमज़ोर , और नाकारा हों .
(५) यह दूसरा तक्का है जिसमें अस्थे , लंगड़े , अपाहिज भी दाख़िल हैं .
(६) और जिहाद का सामान न कर सकें , ये लोग रह जाएं तो इनपर कोई गुनाह नहीं .
(७) उनकी फ़रमाँबरदारी करें और मुजाहिदों के घर वालों का ध्यान रखें .
(८) हिसाब और पकड़ की .
(९) रसूले अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा में से कुछ लोग जिहाद में जाने के लिये हाज़िर हुए . उन्होंने ने हुज़ूर से सवारी की दरख़्वास्त की . हुज़ूर ने फ़रमाया कि मेरे पास कुछ नहीं जिसपर मैं तुम्हें सवार करूँ , तो वो राते वापस हुए . उनके बारे में यह आयत उतरी .
(१०) जिहाद में जाने की कुदरत रखते हैं इसके बावजूद .
(११) कि जिहाद में क्या लाभ और पुण्य यात्री सवाव है .

पारा दस समाप्त

ग्यारहवां पारा - यअतजिरुन
(सूरए तौबह जारी)

तुमसे वहाने बनाएँ^(११) जब तुम उनकी तरफ लौट कर जाओगे, तुम फरमाना, वहाने न बनाओ, हम हरगिज तुम्हारा यक्रीन न करेंगे, अल्लाह ने हमें तुम्हारी ख़बरें दे दी हैं, और अब अल्लाह व रसूल तुम्हारे काम देखेंगे^(१३) फिर उसकी तरफ़ पलटकर जाओगे जो छुपे और जाहिर सबको जानता है वह तुम्हें जता देगा जो कुछ तुम करते थे^(१४) अब तुम्हारे आगे अल्लाह की क़सम खाएँगे जब^(१५) तुम उनकी तरफ़ पलट कर जाओगे इसलिये कि तुम उनके ख़याल में न पड़ो^(१६) तो हाँ तुम उनका ख़याल छोड़ो^(१७) वो तो निरं पत्नीद हैं^(१८) और उनका ठिकाना जहन्नम है, बदला उसका जो कमाते थे^(१९)^(२०) तुम्हारे आगे क़समें खाते हैं कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ तो अगर तुम उनसे राज़ी होजाओ^(२१) तो वेशक अल्लाह तो फ़ासिक़ (दुराचारी) लोगों से राज़ी न होगा^(२२)^(२३) ग़वार^(२४) कुफ़्र और निफ़ाक़ (दोगलेपन) में ज़्यादा साख़्त हैं^(२५) और इसी काविल कि अल्लाह ने जो हुक्म अपने रसूल पर उतारे उससे जाहिल रहें और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है^(२६) और कुछ ग़वार वो हैं कि जो अल्लाह की राह में ख़र्च करें तो उसे तावान समझें^(२७) और तुमपर गर्दिशें आने के इन्तिज़ार में रहें^(२८) उन्हीं पर है वरी गर्दिश (आपत्ति)^(२९) और अल्लाह

تَعْتَذِرُونَ ﴿٢٨١﴾

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ فَإِنْ أَتَيْنَاهُمْ بِبَيِّنَاتٍ مِنْ رَبِّهِمْ قُلْ لَا تَعْتَذِرُوا لَنْ تُؤْمِنَ كُمْ قَدْ نَبَأَ اللَّهُ مِنْ أَنْبَاءِكُمْ وَسَيَرَّ اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨٢﴾ سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لَنُحَرِّضَنَّهُمْ ۖ فَاغْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ إِنَّهُمْ رِجْسٌ ۖ وَمَا وَهُمْ جَزَاءٌ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٢٨٣﴾ يَحْلِفُونَ لَكُمْ لَنُحَرِّضَنَّهُمْ ۖ فَإِنْ تُرَضُوا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُرَضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٨٤﴾ الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٨٥﴾ وَالْأَعْرَابُ مَنْ يَتَّخِذْ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ

منزل

सूरए तौबह - बारहवाँ सूकू (जारी)

(१२) और झूठा बहाना पेश करे, ये जिहाद से रहे जाने वाले मुनाफ़िक तुम्हारे इस सफ़र से वापस होने के वक्त।
 (१३) कि तुम दोहरी प्रवृत्ति से तोवह करते हो, या इसपर कायम रहते हो। कुछ मुफ़सिरो ने कहा कि उन्होंने वादा किया था कि आगे चल कर वो मूमिना की मदद करेंगे। हो सकता है कि उसी की निश्चत फ़रमाया गया हो कि अल्लाह व रसूल तुम्हारे काम देखेंगे कि तुम अपने इस एहद का भी ख़फ़र करते हो या नहीं।
 (१४) अपने इस सफ़र से वापस होकर मदीनए नैब्बियह में।
 (१५) और उनपर मलामत और क्रोध न करो।
 (१६) और उनसे परहेज़ करो। कुछ मुफ़सिरो ने फ़रमाया, मुग़द यह है कि उनके साथ बैठना उनसे बोलना छोड़ दो। चुनांचे जब नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो हुज़ूर ने मुग़लमानों को हुक़्म दिया कि मुनाफ़िकों के पास न बैठें, उनसे बात चीत न करें। क्योंकि उनके वातिन ख़बीस और कर्म बुरे हैं। और मलामत व इताय से उनकी इस्लाह न होगी, इसलिये कि।
 (१७) और अपवित्रता के पाक करने का कोई तरीक़ा नहीं है।
 (१८) दुनिया में बुरा कर्म। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया यह आयत ज़द बिन क़ैस और मअनब बिन क़रीर और उनके साथियों के हक़ में नाज़िल हुई। ये अस्सी मुनाफ़िक थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि उनके पास न बैठो, उनसे क़नाम न करो। मक़ातिल ने कहा कि यह आयत अब्दुल्लाह बिन उवई के बारे में उतरी। उसने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने क़सम खाई थी कि अब क़भी वह जिहाद में जाने में सुस्ती न करेगा और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से प्रार्थना की थी कि हुज़ूर उससे ग़ज़ी हो जाएं। इसपर यह आयत और इसके बाद वाली आयत उतरी।
 (१९) और उनके उज़्र और बहाने कुबूल करलो तो इससे उन्हें कुछ नफ़ा न होगा, क्योंकि अगर तुम उनकी क़स्मों का एतियाफ़ भी कर ला।
 (२०) इसलिये कि वह उनके कुफ़्र और दोहरी प्रवृत्ति का जानता है।
 (२१) जंगल के रहने वाले।

सुनता जानता है (१८) और कुछ गाँव वाले वो हैं जो अल्लाह और क़यामत पर यकीन रखते हैं (१९) और जो खर्च करें उसे अल्लाह की नज़दीकियों और रसूल से दुआएँ लेने का ज़रीया समझें (२०) हाँ हाँ वह उनके लिये करीब हो जाने का साधन है, अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाखिल करेगा, बेशक अल्लाह दखलने वाला मेहरबान है (२१)

तेरहवाँ सूक़

और सब में अगले पहले मुहाजिर (१) और अन्सार (२) और जो भलाई के साथ उनके पीछे चलने वाले हुए (३) अल्लाह उनसे राज़ी (४) और वो अल्लाह से राज़ी (५) और उनके लिये तैयार कर रखे हैं बाग़ जिनके नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उनमें रहें, यही बड़ी कामयाबी है (१००) और तुम्हारे आस पास (६) के कुछ ग़वार मुनाफ़िक हैं, और कुछ मदीना वाले उनकी आदत हो गई है निफ़ाक़ (दोगलापन), तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं (७) जल्द हम उन्हें दोबारा (८) अज़ाब करेंगे फिर बड़े अज़ाब की तरफ़ फेरे जाएंगे (९) (१०१) और कुछ और हैं जो अपने गुनाहों के मुक़िर (इकरारी) हुए (१०) और मिलाया एक काम अच्छा (११) और दूसरा बुरा (१२), करीब है कि अल्लाह उनकी तौबह कुबूल करे, बेशक

عَلَيْهِمْ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا بَيْنَهُ قُرْبَىٰ عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَاتِ
الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَىٰ لَهُمْ ۖ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ
فِي رَحْمَتِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالشَّيْقُونَ
الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ
اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ ۖ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا
عَنْهُ ۚ وَاعْتَدَ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَمِنَ
حَوْكَمٍ مِّنَ الْأَعْرَابِ مَنُفِقُونَ ۚ وَمِنَ أَهْلِ الْمَدِينَةِ
مَرَدُّوا عَلَىٰ النَّفَاقِ ۚ لَا تَعْلَمُهُمْ ۚ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۚ
سَعَدَ بِرَبِّكَ مَرَّتَيْنِ ۖ ثُمَّ يَرُدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝
وَأُخْرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا
وَأُخْرَسَيْنَاهُ ۖ عَسَىٰ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ

(२२) क्योंकि वो इस्लाम की मजलिसों और ज़लमा की साहबत से दूर रहते हैं।

(२३) क्योंकि वो जो कुछ खर्च करते हैं, अल्लाह की खुशी और मवाय हासिल करने के लिये तो करते नहीं, रियाकारी और मुसलमानों के ख़ौफ़ से खर्च करते हैं।

(२४) और ये राह देखते हैं कि कब मुसलमानों का जोर कम हो और कब वो मग़लूब और परास्त हों। उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह को क्या मंज़ूर है। वह बतला दिया जाता है।

(२५) और वही रंज और यत्ना और बदहाली में जकड़े जाएंगे। यह आयत असद व ग़ितफ़ान व तमीम के क़बीलों के देहातियों के हक़ में उतरी। फिर अल्लाह तआला ने उनमें से जिनका घूट दी उनका ज़िक्र अगली आयत में है। (ख़ाज़िन)

(२६) मुजाहिद ने कहा कि ये लोग क़बीलए मज़ैनाह में से बनी मक्क़रिन हैं। कस्बी ने कहा, वो असलम और शफ़फ़ार और जुहैना के क़बीलों हैं। बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि कुरैश और अन्सार और जुहैना और मज़ैनाह और असलम और शुजाअ और शफ़फ़ार मवाली हैं, अल्लाह और रसूल के सिवा कोई उनका मौला नहीं।

(२७) कि जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में सदक़ लाएँ तो हुज़ूर उनके लिये ख़ैर बरक़त व मग़फ़िरत की दुआ फ़रमाएँ। यही रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का तरीक़ा था। यही फ़ातिहा की असल है कि सदक़ के साथ दुआ मग़फ़िरत की जाती है। लिहाज़ा फ़ातिहा को बिदाअत और ना रया बताना कुरआन और हदीस के ख़िलाफ़ है।

सूरए तौबह - तेरहवाँ सूक़

(१) वो लोग जिन्होंने दोनों क़ियलों की तरफ़ नमाज़ें पढ़ीं या यज़्र चले या बैअते रिज़वान वाले।

(२) बैअते अक़बए ज़ला वाले, जो छः सहाबा थे और बैअते अक़बए सानिया वाले; जो बारह थे। और बैअते अक़बए सालिसा वाले जो सत्तर सहाबा थे, ये हुज़ूरत साबिकीन अन्सार कहलाते हैं। (ख़ाज़िन)

(३) कहा गया है कि उनसे बाकी मुहाजिर और अन्सार मुग़द हैं। तो अब तमाम सहाबा इसमें आएँ और एक क़ौल यह है कि अनुयायी होने वालों से क़यामत तक के वो ईमानदार मुग़द हैं जो ईमान व आज्ञा पालन और नेकी में अन्सार और मुहाजिरों की राह चले।

(४) उसकी बारगाह में उनके नेक कर्म कुबूल।

(५) उसके सवाब और अता यानी इनाम से खुश।

(६) यानी मदीनाएँ तैय्यिह के आस पास के प्रदेश।

(७) इसके मानी था तो ये हैं कि ऐसा जानना ज़िमका असर उन्हें मालूम हो, वह हमारा जानना है कि हम उन्हें अज़ाब करेंगे। या

अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है (१०२) ऐ मेहबूब उनके माल में से ज़कात निकलवाओ जिससे तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो और उनके हक में दुआए ख़ैर करो (१३) बेशक तुम्हारी दुआ उनके दिलों का चैन है और अल्लाह सुनता जानता है (१०३) क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों को तौबह कुबूल करता और सदैव खुद अपने दस्ते कुदरत में लेता है और यह कि अल्लाह ही तौबह कुबूल करने वाला मेहरबान है (१०४) और तुम फ़रमाओ काम करो अब तुम्हारे काम देखेगा अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमान, और जल्द उसकी तरफ़ पलटोगे जो छुपा और खुला सब जानता है तो वो तुम्हारे काम तुम्हें जताएगा (१०५) और कुछ (१०६) मौक़फ़ रखे गए अल्लाह के हुक्म पर या उनपर अज़ाब करे या उनकी तौबह कुबूल करे (१०७) और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है (१०८) और वो जिन्होंने मस्जिद बनाई (१०९) नुक़सान पहुंचाने को (११०) और कुफ़्र के कारण (१११) और मुसलमानों में तफ़रिका (११२) डालने को और उसके इन्तिज़ार में जो पहले से अल्लाह और उसके रसूल का विरोधी है (११३) और वो ज़रूर क्रसमें खाएंगे हमने तो भलाई ही चाही, और अल्लाह गवाह है कि वो बेशक झूठे हैं (१०६)

غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ
وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ
لَّهُمْ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ
وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ السَّوَابُ الرَّحِيمُ ۝ وَقُلْ أَعْمَلُوا فَسِرَّ
اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَتَرَدُونَ
إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝ وَآخَرُونَ مَرْجُونَ لَا مِرَّ لَِلَّهِ إِمَّا
يَعْلَمُهُمْ وَإِنَّمَا يُؤَيَّبُ عَلَيْهِمْ ۝ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا
وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَأَرْضَادًا لِلَّذِينَ حَارَبَ
اللَّهُ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَادْنَا
إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۝ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ لَا تَقُمْ

हुज़ूर से मुनाफ़िकों के हाल जानने की तफ़्ती बरैतिबारे साविक है और इसका इल्म बाद को अता हुआ जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया, “*بَلَا تَأْخُذُكَ هَٰذِهِ ۖ ذَرُّهُ ۖ ذَرْوُ الْكَافِرِينَ*” (और ज़रूर तुम उन्हें बात के उम्बूब में पहचान लोगे - सूर अल-अनबाल, आयत २०) (जुमल). कबूबी व सदी ने कहा कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने जुमुए के रोज़ मन्बूब के लिये खड़े होकर नाम बनाम फ़रमाया, निकल ऐ फ़लाँ, तू मुनाफ़िक है, निकल ऐ फ़लाँ तू मुनाफ़िक है, तो मस्जिद से चन्द लांगों को रूखा करके निकाला. इससे भी मालूम होता है कि हुज़ूर को इसके बाद मुनाफ़िकों के हाल का इल्म अता किया गया.

(८) एक बार तो दुनिया में रुखाई और क़त्ल के साथ और दूसरी बार क़त्ल में.
(९) यानी जोज़र के अज़ाब की तरफ़, जिसमें हमेशा गिरफ़्तार रहेंगे.
(१०) और उन्होंने दूसरों की तरह झूठे बहाने न किये और अपने किये पर शर्मिन्दा हुए. अक्सर मुफ़सिगों का कहना है कि यह आयत मदीना तैय्यिबह के मुसलमानों की-एक जमाअत के हक़ में नाज़िल हुई जो ग़ज़व तबूक में हाज़िर न हुए थे. उसके बाद शर्मिन्दा हुए और तौबह की ओर कहा, अफ़सोस हम गुमराहियों के साथ या औरतों के साथ रह गए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम और आपक सहाबा जिहाद में हैं. जब हुज़ूर अपने सफ़र से वापस हुए और मदीना के करीब पहुंचे तो उन लोगों ने क्रसम खाई कि हम अपने आपको मस्जिद के सुतारों से बाँध देंगे और हरगिज़ न खोलेंगे, यहाँ तक कि हुज़ूर ही खोलें. ये क्रसम खाकर वो मस्जिद के सुतारों से बंध गए. जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए और उन्हें देखा तो फ़रमाया, ये कौन हैं ? अर्ज़ किया गया, ये वो लोग हैं जो जिहाद में हाज़िर होने से रह गए थे. इन्होंने अल्लाह से एहद किया है कि ये अपने आपको न खोलेंगे जबतक हुज़ूर उनसे राज़ी होकर श्रुद उन्हें न खोलें. हुज़ूर ने फ़रमाया, और मैं अल्लाह की क्रसम खाता हूँ कि मैं उन्हें न खोलूंगा, न उनकी माफ़ी कुबूल करूंगा जबतक कि मुझे अल्लाह की तरफ़ से उनके खोलने का हुक्म न मिल जाए. तब यह आयत उतरी और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने उन्हें खोला तो उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, ये माल हमारे रह जाने के कारण हुए, इन्हें लीजिये और सदका कीजिये और हमें पाक कर दीजिये और हमारे लिये माफ़िस्त की दुआ फ़रमाइये. हुज़ूर ने फ़रमाया, मुझे तुम्हारे माल लाने का हुक्म नहीं दिया गया. इसपर अगली आयत उतरी “*خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ*”.

(११) यहाँ नेक कर्मों से या कुसूर का ऐतिराफ़ और तौबह मुराद है या इस पीछे रह जाने से पहले ग़ज़वात में नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के साथ हाज़िर होना या फ़रमाँवरदारी और तक्वा के तमाम कर्म. इस सूरात में यह आयत सार मुसलमानों के हक़ में होगी.

(१२) इससे जिहाद से रह जाना मुराद है.

(१३) आयत में जो सदका आया है उसके माली में मुफ़सिगों के कई क़ौल हैं. एक तो यह है कि यह ग़ैर वाजिब सदका था जो

उस मस्जिद में तुम कभी खड़े न होना^(२२) बेशक वह मस्जिद कि पहले ही दिन से जिसकी बुनियाद परहेजगारी पर रखी गई है^(२३) वह इस काविल है कि तुम उसमें खड़े हो, उसमें वो लोग हैं कि खूब सुथरा होना चाहते हैं^(२४) और सुथरे अल्लाह को प्यारे हैं^(२५) तो क्या जिसने अपनी बुनियाद रखी अल्लाह के डर और उसकी रज़ा पर^(२६) वह भला या वह जिसने अपनी नींव चुनी एक गिराऊ गढ़े के किनारे तो^(२७) वह उसे लेकर जहन्नम की आग में डे पड़ा^(२८) और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता^(२९) वो तामीर जो चुनी हमेशा उनके दिलों में खटकती रहेगी^(३०) मगर यह कि उनके दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं^(३१) और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है^(३२)

चौदहवाँ सूक़

बेशक अल्लाह ने मुसलमानों से उनके माल और जान खरीद लिये हैं इस बदले पर कि उनके लिये जन्नत है^(१) अल्लाह की राह में लड़ें तो मारें^(२) और मरें^(३) उसके करम के ज़िम्मे सच्चा वादा तौरात और इंजील और कुरआन में^(४) और अल्लाह से ज़्यादा क़ौल (कथन) का पूरा कौन तो खुशियां मनाओ अपने सौदे की जो तुमने उससे किया है,

فِيهِ أَبَدًا مَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ
يَوْمٍ أَسَقَىٰ أَنْ تَقُومَ فِيهِ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ
يَتَّخِذُوا لِلَّهِ يُحِبُّ الْبَطْحَرَيْنِ ۖ أَفَمَنْ أُسِّسَ
بُنْيَانُهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ
أُسِّسَ بُنْيَانُهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ
فِي نَارٍ جَهَنَّمَ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝
لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا
أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ
اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ
لَهُمُ الْجَنَّةُ ۚ وَيَقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَ
يُقْتَلُونَ ۚ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقٌّ فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ
وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا
بِلِقَائِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ وَذَلِكَ هُوَ الْقَوْمُ

مُتَذَكِّرُونَ

कफ़फ़ारे के तौर पर उन साहियों ने दिया था जिनका ज़िक्र ऊपर की आयत में है। दूसरा क़ौल यह है कि इस सदक़े से मुराद वह ज़कात है जो उनके ज़िम्मे बाजिब थी, वो तायब हुए और उन्होंने ज़कात अदा करनी चाही तो अल्लाह तआला ने उसके लेने का हुक्म दिया। इमाम अबूबक्र राजी जस्सारा ने इस क़ौल की तरज़ीह दी है कि सदक़े से ज़कात मुराद है (ख़ाज़िन)। मदारिक में है कि सुन्नत यह है कि सदक़ा लेने वाला सदक़ा देने वाले के लिये दुआ कर और बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ की हदीस है कि जब कोई नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास सदक़ा लाता, आप उसके हक़ में दुआ करते, मेरे बाप ने सदक़ा हाज़िर किया तो हुज़ूर ने दुआ फ़रमाई "अल्लाहुम्मा सल्ल अला अबी औफ़ा"। इस आयत से साबित हुआ कि फ़ातिहा में जो सदक़ा लेने वाले सदक़ा पाकर दुआ करते हैं, यह कुरआन और हदीस के मुताबिक है।

(१४) इसमें तौबह करने वालों की वशारत दी गई कि उनकी तौबह और उनके सदक़ात मक़बूल हैं। कुछ मुफ़ससिरो का क़ौल है कि जिन लोगों ने अब तक तौबह नहीं की, इस आयत में उन्हें तौबह और सदक़े की तरगीब दी गई।

(१५) पीछे रहजाने वालों से।

(१६) शज़राए तबूक से रह जाने वाले तीन ज़िस्म के थे, एक मुनाफ़िक्क, जो दोहरी प्रवृत्ति के आदी थे, दूसरे वो लोग जिन्होंने कुरूर के एतिसाफ़ और तौबह में जल्दी की, जिनका ऊपर ज़िक्र हो चुका, तीसरे वो जिन्होंने न देरी की, जो भके रहे और जल्दी तौबह न की। यही इस आयत से मुराद है।

(१७) यह आयत मुनाफ़िक्को की एक जमाअत के बारे में उतरी जिन्होंने मस्जिदे कुब्रा को नुक़सान पहुंचाने और ज़मकी जमाअत ख़िख़रने के लिये इसके करीब एक मस्जिद बना ली थी। उसमें एक बड़ी चाल थी, वह यह कि अबू आमिर जो जिहालत के ज़माने में ईसाई पादरी हो गया था, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मदीनए तैय्यिबह तशरीफ़ लाने पर हुज़ूर से कहने लगा, यह कौन सा दीन है जो आप लाए हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि मैं मिल्लते हनीफ़िया, दीने इब्राहीम लाया हूँ। कहने लगा मैं उसी दीन पर हूँ। हुज़ूर ने फ़रमाया नहीं। उसने कहा कि आपने इसमें कुछ और मिला दिया है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि नहीं, मैं ख़ानिस साफ़ मिल्लत लाया हूँ। अबू आमिर ने कहा, हम में से जो झूठा हो, अल्लाह उसको मुसाफ़िरत में तह्रा और बंक्स करके हलाक करे। हुज़ूर ने आमीन फ़रमाया। लोगों ने उसका नाम अबू आमिर फ़ासिक्क रख दिया। उहद के दिन अबू आमिर फ़ासिक्क ने हुज़ूर से कहा कि जहाँ कहीं कोई क़ौम आपसे जंग करने वाली मिलेगी, मैं उसके साथ होकर आप से जंग करूंगा। चुनांचे जंग हुनैन तक उसका यही मामूल रहा और वह हुज़ूर के साथ मग़रफ़े जंग रहा। जब हवाज़िन को हार हुई और वह मायूस होकर शाम प्रदेश की तरफ़ भागा तो उसने मुनाफ़िक्को को ख़बर भेजी कि तुम से जो ग्रामांत जंग हो सके, कुव्वत और हथियार, सब जमा करो और मेरे लिये एक मस्जिद बनाओ। मैं रूम के बादशाह के पास जाता हूँ वहाँ से रूम का लश्कर लेकर आऊंगा और (सैयदे आलम) मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) और उनके सहाबा को निकालूंगा। यह ख़बर पाकर उन लोगों ने मस्जिदे ज़िगर बनाई थी और सैयदे आलम

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज किया था, यह मस्जिद हमने आसानी के लिये बना दी है कि जो लोग बूढ़ और कमजोर हैं वो इसमें फ़रमात से नमाज़ पढ़ लिया करें। आप इसमें एक नमाज़ पढ़ दीजिये और वरक़्त की दुआ फ़रमा दीजिये। हज़ूर ने फ़रमाया कि अब तो मैं सफ़र तबूक के लिये तैयारी कर रहा हूँ। बापसी पर अल्लाह की मज़ी होगी तो वहाँ नमाज़ पढ़ लूँगा। जब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ग़ज़वण तबूक से वापस होकर मदीना शरीफ़ के करीब एक गाँव में ठहरे, तो मुनाफ़िक्कों ने आपसे दरम्मासत की कि उनकी मस्जिद में तशरीफ़ ले चलें। इसपर यह आयत उतरी और उनके ग़लत इरादों का इज़हार फ़रमाया गया। तब रसूलुल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कुछ सहाबा को हुक्म दिया कि इस मस्जिद को ढा दें और जला दें। चुनाव ऐसा ही किया गया और अब आमिर राहिव शाम प्रदेश में सफ़र की हालत में तन्हाई और बेक़सरी में हलाक हुआ।

(१८) मस्जिद कुबा वालों के।

(१९) कि वहाँ खुदा और रसूल के साथ कुफ़र करें और दोहरी प्रवृत्ति को कुबल दें।

(२०) जो मस्जिद कुबा में नमाज़ के लिये जमा होते हैं।

(२१) यानी अब आमिर राहिव।

(२२) इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मस्जिद ज़िगर में नमाज़ पढ़ने को मना किया गया। जो मस्जिद घमण्ड व दिम्नावा या अल्लाह की रज़ा के अलावा और किसी मक़सद के लिये या नापाक माल से बनाई गई हो वह मस्जिद ज़िगर के साथ लाहिक है। (मदरिक)

(२३) इससे मुराद मस्जिद कुबा है, जिसकी बुनियाद रसूलुल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने रखी और जबतक हज़ूर ने कुबा में क़याम फ़रमाया, उसमें नमाज़ पढ़ी। बुज़्तारी शरीफ़ की हदीस में है कि रसूलुल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हर हफ़्त मस्जिद कुबा में नमाज़ पढ़ने तशरीफ़ लाते थे। दूसरी हदीस में है कि मस्जिद कुबा में नमाज़ पढ़ने का भवाव उमर के बराबर है। मुफ़सिरों का एक कोल यह भी है कि इससे मस्जिद नदीना मुराद है और इसमें भी हदीस आई हैं। इन बातों में कुछ विरोधाभास नहीं, क्योंकि आयत का मस्जिद कुबा के हक़ में नाज़िल होना इसको मुत्तलज़िम नहीं कि मस्जिद मदीना में ये शिरोपताएं न हों।

(२४) तमाम नज़ासतों या गुनाहों से। यह आयत मस्जिद कुबा वालों के हक़ में नाज़िल हुई। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे फ़रमाया, ऐ ग़िराहे अन्वार, अल्लाह तआला ने तुम्हारी तारीफ़ फ़रमाई, तुम बुज़्ज और इस्तज़ा के वक़्त क्या अमल करते हो। उन्होंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह, हम बड़ा इस्तज़ा तीन डेलों से करते हैं। उसके बाद फिर पानी से पाकी करते हैं। नज़ासत अगर निकलने की जगह से बढ जाए तो पानी से इस्तज़ा बाज़िव है, वरना मुस्तहब। डेलों से इस्तज़ा सुन्नत है। नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इसपर पाबन्दी फ़रमाई और कमी छोड़ा भी।

(२५) जैसे कि मस्जिद कुबा और मस्जिद मदीना।

(२६) जैसे कि मस्जिद ज़िगर वाल।

(२७) मुराद यह है कि जिस शय्स ने अपने दीन की बुनियाद तबूक और अल्लाह की रज़ा की मज़बूत सतह पर रखी, वह बेहतर है, न कि वह जिसने अपने दीन की नीव वाक़िल और दोहरी प्रवृत्ति के गिराऊ गढ़े पर रखी।

(२८) और उसके गिराए जाने का सदमा बाक़ी रहेगा।

(२९) चाहें क़त्ल होकर या मरकर या क़ब्र में या जहन्नम में। मानी ये हैं कि उनके दिलों का ग़म व गुस्सा मरते दम तक बाक़ी रहेगा और ये मानी भी हो सकते हैं कि जबतक उनके दिल अपने कुसूर की शर्मिन्दगी और अफ़सोस से टुकड़े टुकड़े न हों और वो सच्चे दिन से तीव्र न कर लें, उस वक़्त तक वो इसी रंज और ग़म में रहेंगे। (मदरिक)

सूरए तौबह - चौदहवाँ स्कू

(१) खुदा की राह में जान माल ख़र्च करके ज़न्नत पाने वाले ईमानदारों की एक मिसाल है जिससे भरपूर मेहरबानी का इज़हार होता है कि अल्लाह तआला ने उन्हें ज़न्नत अता फ़रमाता उनके जान व माल का एवज़ करार दिया और अपने आपको ख़रीदार फ़रमाया। यह सर्वात्म भम्मान है कि वह हमारा ख़रीदार बने और हमसे ख़रीदे, किन्तु चीज़ को, न हमारी बनाई हुई, न हमारी पैदा की हुई, जान है तो उसकी पैदा की हुई, माल है तो उसका अता किया हुआ। जब अन्वार ने रसूलुल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अफ़्वा की रात बैअत की तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा रदियल्लाहो अन्हो ने अर्ज की, या रसूलुल्लाह अपने ख़ब के लिये और अपने लिये कुछ शर्त फ़रमा लीजिये जो आप चाहें। फ़रमाया मैं अपने ख़ब के लिये तो यह शर्त करता हूँ कि तुम उसकी इबादत करो और किसी का उसका शरीक न ठहराओ। और अपने लिये यह कि जिन चीज़ों से तुम अपने जान माल को बचाते और मेहफूज़ रखते हो, उसको मेरे लिये भी ग़वारा न करो। उन्होंने अर्ज किया कि हम ऐसा करें तो हमें क्या मिलेगा। फ़रमाया ज़न्नत।

(२) खुदा के दुश्मनों को।

(३) खुदा की राह में।

(४) इससे साबित हुआ कि तमाम शरीअतों और मिल्लतों में जिहाद का हुक्म था।

और यही बड़ी कामयाबी है (१११) तौबह वाले (५) इबादत वाले (६) सराहने वाले (७) रोज़े वाले, रूकू वाले, सज्दा वाले (८) भलाई के बताने वाले और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की हदें निगाह रखने वाले (९) और खुशियाँ सुनाओ मुसलमानों को (१०) (११२) नबी और ईमान वालों को लायक नहीं कि मुश्कियों की बख्शिश चाहें अगरचे वो रिश्तेदार हों (११) जबकि उन्हें खुल चुका कि वो दोज़ाबी हैं (१२) (११३) और इब्राहीम का अपने बाप (१३) की बख्शिश चाहना वह तो न था मगर एक वादे के कारण जो उससे कर चुका था (१४) फिर जब इब्राहीम को खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है उससे तिनका तोड़ दिया (१५) वेशक इब्राहीम जरूर बहुत आहें करने वाला (१६) मुतहम्मिल (सहनशील) है (११४) और अल्लाह की शान नहीं कि किसी क्रौम को हिदायत वाद गुमराह फ़रमाए (१७) जब तक उन्हें साफ़ न बता दे कि किस चीज़ से उन्हें बचना है (१८) वेशक अल्लाह सब कुछ जानता है (११५) वेशक अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत, जिलाता है और मारता है और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई वाली और न मददगार (११६)

الْعَظِيمُ ۝ التَّائِبُونَ الْعِبَادُونَ الْحَمِيدُونَ
السَّائِحُونَ الرَّكْعُونَ السُّجِدُونَ الْأُمْرُونَ
بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَفِظُونَ
لِحُدُودِ اللَّهِ ۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالْزِينِ أَمْرًا أَنْ يَتَّخِذُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولَىٰ قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ
إِبْرَاهِيمَ ۝ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا آيَاهُ ۚ فَكَفَىٰ تَبَيُّنًا لَهُ أَنَّكَ
عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۝
وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ
يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ
اللَّهَ لَهُ مَلَكُوتُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ دِيحِي وَيُيَسِّرُ وَمَا
لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ لَقَدْ

مَنْ

(५) तमाम गुनाहों से.

(६) अल्लाह के फ़रमाँवरदार बन्दे जो सच्चे दिल से उसकी इबादत करते हैं और इबादत का अपने ऊपर लाज़िम जानते हैं.

(७) जो हर हाल में अल्लाह की प्रशंसा करते हैं.

(८) यानी नमाज़ों के पाबन्द और उनको ख़ूबी से अदा करने वाले.

(९) और उसके आदेशों का पालन करने वाले, ये लोग ज़बती हैं.

(१०) कि वो अल्लाह से किया हुआ एहद पूरा करेंगे तो अल्लाह तआला उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा.

(११) इस आयत के उतरने की परिस्थितियों में मुफ़सिरो के विभिन्न क़ौल हैं. (१) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने चचा अबू तालिब से फ़रमाया था कि मैं तुम्हारे लिये इस्ताफ़ार करूंगा जबतक कि मुझे मना न किया जाए. तो अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़रमाकर मना फ़रमा दिया. (२) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने अपने रब से अपनी वालिदा की क़ब्र की ज़ियारत की इजाज़त चाही. उसने मुझे इजाज़त दे दी. फिर मैंने उनके लिये इस्ताफ़ार की इजाज़त चाही, तो मुझे इजाज़त न दी और मुझपर यह आयत नाज़िल हुई "मा काना लिन नविष्य..." (नबी और ईमान वालों के लायक नहीं कि मुश्कियों की बख्शिश चाहें अगरचे वो रिश्तेदार हों - सूर ए तौबह, आयत ११३) आयत उतरने की परिस्थिति की यह वज़ह सही नहीं है, क्योंकि यह हदीस हाकिम ने रिवायत की ओर इसको सही बताया और ज़हबी ने हाकिम पर भरोसा करके मौज़ात में इसको सही बताया, लेकिन मुहम्मदसिरुल मुस्तदरक में ज़हबी ने इस हदीस का ज़ईफ़ बताया और कहा कि अय्यूब बिन हानी को इब्ने मुईज़ ने ज़ईफ़ बताया है. इसके अलावा यह हदीस बुख़ारी की हदीस के विरुद्ध भी है जिसमें इस आयत के उतरने का कारण आपकी वालिदा के लिये इस्ताफ़ार करना नहीं बताया गया बल्कि बुख़ारी की हदीस से यही साबित है कि अबू तालिब के लिये इस्ताफ़ार करने के बारे में यह हदीस आई. इसके अलावा और हदीसों, जो इस मज़मून की हैं जिनको तिबरानी और इब्ने सअद और इब्ने शाहीन और इब्ने रिबायत किया है, वो सबकी सब ज़ईफ़ हैं. इब्ने सअद ने तबक़ात में हदीस निकालने के बाद उसको ग़लत बताया और मुहम्मदसिरुल मुस्तदरक में ज़हबी ने इस हदीस को अस्तअज़ीम बल मिन्नत में इस मज़मून की सारी हदीसों को कमज़ोर बताया. लिहाज़ा यह वज़ह शाने नुज़ूल में सही नहीं और यह साबित है, इसपर बहुत दलीलें क़ायम हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वालिदा अल्लाह की वहदत को मानने वाली और दीने इब्राहीम पर थी. (३) कुछ सहाबा ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अपने पूर्वजों के लिये इस्ताफ़ार करने की प्रार्थना की थी. इसपर यह आयत उतरी.

(१२) शिर्क पर भरो.

(१३) यानी आज़र.

(१४) इससे या तो वह वादा मुराद है जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आज़र से किया था कि अपने रब से तारी मसफ़िरत की

वेशक अल्लाह की रहमतें मुतवज्जह हुई उन-गंव की खबरें वताने वाले और उन मुहाजिरीन और अन्सार पर जिन्होंने मुश्किल की घड़ी में उनका साथ दिया^(११) वाद इसके कि क़रीब था कि उनमें कुछ लोगों के दिल फिर जाएं^(१२) फिर उनपर रहमत से मुतवज्जह हुआ^(१३) वेशक वह उनपर बहुत मेहरबान रहम वाला है^(१४) और उन तीन पर जो मौकूफ़ (रोके) रखे गए थे^(१५) यहाँ तक कि जब ज़मीन इतनी वसी (विस्तृत) होकर उनपर तंग होगई^(१६) और वा अपनी जान से तंग आए^(१७) और उन्हें यकीन हुआ कि अल्लाह से पनाह नहीं मगर उसी के पास फिर^(१८) उनकी तौबह कुबूल की कि तौबह किये हुए रहें, वेशक अल्लाह ही तौबह कुबूल करने वाला मेहरबान है^(१९)

पन्द्रहवाँ सूक़

ऐ ईमान वाले अल्लाह से डरो^(१) और सच्ची के साथ हो^(२) (११९) मदीना वालों^(३) और उनके गिर्व देहातवालों को शोभा न था कि रसूलुल्लाह से पीछे बैठ रहें^(४) और न यह कि उनकी जान से अपनी जान प्यारी समझें^(५) यह इसलिये कि उन्हें जो प्यास या तकलीफ़ या भूख अल्लाह की राह में पहुंचती है और जहाँ ऐसी जगह क़दम रखते हैं^(६) जिससे काफ़िरों को गुस्सा आए और जो

تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۝ وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِفُوا حَتَّىٰ إِذَا صَافَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَصَافَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لَبَتُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ۝ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَؤُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ

दुआ करेगा या वह वादा मुराद है जो आज़र ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से इस्लाम लाने का किया था। हज़रत अली मुर्ताज़ा रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि जब यह आयत उतरी, “सअस्तग़फ़िरो लका रब्बी” (क़रीब है कि मैं तेरे लिये अपने ख़ब से माफ़ी माँगूँगा - सूरए मरयम, आयत ४७) तो मैं ने सुना कि एक शफ़्त अपने माँ वाप के लिये दुआए माग़फ़िरत कर रहा है। जबकि वो दांता मुश्किल थे, तो मैं ने कहा तू मुश्किलों के लिये माग़फ़िरत की दुआ करता है, उसने कहा, क्या इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आज़र के लिये दुआ न की थी, यह भी तो मुश्किल था, ये वाकिआ मैंने संपदे आलाम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अस्त्रज किया। इसपर यह आयत उतरी और बताया गया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का इस्तग़फ़ार इस्लाम की उम्मीद से था जिसका आज़र आपसे वादा कर चुका था और आप आज़र से इस्तग़फ़ार का वादा कर चुके थे, जब वह उम्मीद जाती रही तो आपने उससे अपना सम्बन्ध तोड़ लिया।

(१५) और इस्तग़फ़ार करना छोड़ दिया।

(१६) कसरत से दुआ माँगने वाले, गिड़गिड़ाते वाले।

(१७) यानी उनपर गुमराही का हुक्म करे और उन्हें गुमराहों में दाख़िल फ़रमा दे।

(१८) मानो ये हैं कि जो चीज़ बजित है और उसमें रुक़्त रहना वाजिब है, उसपर अल्लाह तआला तद तक अपने बन्दों की पकड़ नहीं फ़रमाता जबतक उसकी मुमानिअत यानी अवैधता का साफ़ ऐलान अल्लाह की तरफ़ से न आजाए। लिहाज़ा मुमानिअत से पहले उस काम को करने में हर्ज नहीं। (मदारीक) इससे मालूम हुआ कि जिस चीज़ की शरीअत से मुमानिअत न हो, वह जायज़ है। जब ईमान वालों को मुश्किलों के लिये इस्तग़फ़ार करने से भेना फ़रमाया गया तो उन्हें डर हुआ कि हम पहले जो इस्तग़फ़ार कर चुके हैं कहीं उसपर पकड़ न हो। इस आयत से उन्हें तसल्ली दी गई और बताया गया कि मुमानिअत का बयान होने के बाद उस काम को करते रहने से पकड़ की जाती है।

(१९) यानी ग़ज़व तबूक में, जिसे ग़ज़वए उसरत भी कहते हैं। इस ग़ज़वे में उसरत का यह हाल था कि दस दस आदमियों की सवारी के लिये एक एक ऊंट था। थोड़ा थोड़ा करके इसी पर सवार हो लेंगे थे। और खाने की कमी का यह हाल था कि एक एक ख़जूर पर कई कई आदमी बसर करते थे। इस तरह कि हर एक ने थोड़ी थोड़ी चूस कर एक घूँट पानी पी लिया। पानी की भी अत्यन्त कमी थी। गर्मी सज़न थी, प्यास का ग़लबा और पानी ग़ायब, इस हाल में सहावा अपनी सच्चाई और यकीन और ईमान और महबूत के साथ हज़ूर पर मर मिटने के लिये डटे रहे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह, अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाइये, फ़रमाया, क्या तुम्हें यह ख़्वाहिश है, अर्ज किया जी हाँ, तो हज़ूर ने दान मुबारक उठा कर दुआ फ़रमाई और अभी हाथ उठे हुए ही थे कि अल्लाह तआला ने बादल भेजा, बारिश हुई और लश्कर सैराव हुआ, लश्कर वालों ने अपने अपने वर्तन भर लिये, इसके बाद जब आगे चले तो ज़मीन सूखी थी, बादल ने लश्कर के बाहर बारिश ही नहीं की, वह ख़ास इसी लश्कर को सैराव करने

कुछ किसी दुश्मन का विगाड़ते हैं^(१०) इस सबके बदले उनके लिये नेक कर्म लिखा जाता है^(११) वेशक अल्लाह नेकों का नेग नष्ट नहीं करता^(१२०) और जो कुछ खर्च करते हैं छोटा^(१३) या बड़ा^(१४) और जो नाला तय करते हैं सब उनके लिये लिखा जाता है ताकि अल्लाह उनके सबसे बेहतर कर्मों का उन्हें सिला (पुरस्कार) दे^(१५) ^(१२१) और मुसलमानों से ये तो हो नहीं सकता कि सब के सब निकलें^(१२) तो क्यों न हो कि उनके हर गिरोह में से^(१३) एक दल निकले कि दीन की समझ हासिल करें और वापस आकर अपनी क़ौम को डर सुनाएं^(१४) इस उम्मीद पर कि वो बचें^(१५) ^(१२२)

सोलहवाँ सूक़

ऐ ईमान वालो जिहाद करो उन काफ़िरों से जो तुम्हारे क़रीब हैं^(१) और चाहिये कि वो तुम में सख्ती पाएं और जान रखो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है^(२) ^(१२३) और जब कोई सूरत उतरती है तो उनमें कोई कहने लगता है कि उसने तुम में किसके ईमान को तरक्की दी^(३) और वो खुशियाँ मना रहे हैं^(४) ^(१२४) और जिनके दिलों में आज़ार है^(५) उन्हें और पलीदी पर पलीदी बढ़ाई^(६) और वो कुफ़्र ही

مِنْ عَدُوٍّ تَبَيَّنَ إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَلَا يُنْفِقُونَ
نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا
إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ
كُلِّ فِرْقَةٍ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ
وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَحْذَرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ
يَلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ وَلْجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَعَلِمُوا
أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝ وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ
فَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ أَيْدِيكُمْ زَادَتْهُ هَذِهِ آيَاتًا ۚ فَأَمَّا
الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ وَ
أَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَى

के लिये भेजा गया था.

(२०) और वो इस सख्ती में रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अलग होना गवारा करें.

(२१) और वो साबिर रहे और अडिग रहे और उनकी वफ़ादारी मेहफूज़ रही और जो ख़तरा दिल में गुज़रा था उसपर शर्मिन्दा हुए.

(२२) तौबह से जिनका ज़िक्र आयत "وَأَخْرَجْنَا مُوسَىٰ إِلَى الْيَمِينِ" (और कुछ मौक़ूफ़ रखे गए अल्लाह के हुक्म पर - सूरत तौबह, आयत १०६) में है. ये तीन लोग, क़अब बिन मालिक, हिलाल बिन उमैया और मरह बिन रबीअ हैं. ये सब अन्सारी थे. रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने तबूक से वापस हांकर उनसे जिहाद में हाज़िर न होने के कारण पूछे और फ़रमाया, ठहरो जबतक अल्लाह तआला तुम्हारे लिये कोई फैसला फ़रमाए. मुसलमानों को उन लोगों से मिलने जुलने बोलने चालने से मना फ़रमाया, यहाँ तक कि उनके रिश्तेदारों और दोस्तों ने उनसे बातचीत छोड़ दी. ऐसा मालूम होता था कि उनको कोई पहचानता ही नहीं और उनकी किसी से शनाहसाई ही नहीं. इम हाल पर उन्हें पचास दिन गुज़रे.

(२३) और उन्हें कोई ऐसी जगह न मिल सकी जहाँ एक पल के लिये उन्हें क़रार होता. हर वक़्त परेशानी और रंज, बेचैनी में जकड़े हुए थे.

(२४) रंज और ग़म की सख्ती से, न कोई साथी है, जिससे बात करें, न कोई दुख़ बाँटने वाला, जिस दिल का हाल सुनाएं. बहशत और तन्हाई है, और रात दिन का रोना धिलकना.

(२५) अल्लाह तआला ने उनपर रहम फ़रमाया और.

सूरत तौबह - पन्द्रहवाँ सूक़

(१) गुनाह और बुराई छोड़ दो.

(२) जो ईमान में सच्चे हैं, वफ़ादार हैं, रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तस्दीक़ दिल की गहराइयों से करते हैं. सईद बिन जुबैर का क़ौल है कि सादिकीन (सच्चे) से हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर मुराद हैं. इन्हे ज़रीर कहते हैं कि मुहाज़िर लोग. हज़रत इब्ने अब्बास कहते हैं कि वो लोग जिनकी नियत मज़बूत रही और दिल व कर्म सच्चे. और वो सच्चे दिल के साथ मज़बूत तबूक में हाज़िर हुए. इस आयत से साबित हुआ कि सहमति हुज्जत यानी तर्क है, क्योंकि सच्चे के साथ रहने का हुक्म फ़रमाया, इससे उनके क़ौल का कुबूल करना लाज़िम आता है.

(३) यहाँ पहले मदीना से मदीनाए तैयिबह के निवासी मुराद हैं, चाहे वो मुहाज़िर हों अनाज़.

(४) और जिहाद में हाज़िर न हों.

पर मर गए^(१२५) क्या उन्हें^(१) नहीं सूझता कि हर साल एक या दोबारा आजमाए जाते हैं^(२) फिर न तो तौबह करते हैं न नसीहत मानते हैं^(३) और जब कोई सूरत उतरती है उनमें एक दूसरे को देखने लगता है^(४) कि कोई तुम्हें देखता तो नहीं^(५) फिर पलट जाते हैं^(६) अल्लाह ने उनके दिल पलट दिये^(७) कि वो नासमझ लोग हैं^(८) ^(१२६) वेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुममें से वह रसूल^(९) जिनपर तुम्हारा मशक्कत (परिश्रम) में पड़ना भारी है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान^(१०) ^(१२८) फिर अगर वो मुंह करें^(११) तो तुम फ़रमा दो कि मुझे अल्लाह काफ़ी है उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वह बड़े अर्श का मालिक है^(१२) ^(१२९)

१०- सूरए यूनुस

पहला रूकू

सूरए यूनुस मक्का में उतरी इसमें १०९ आयतें और ग्यारह रूकू हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) ये हिकमत (बाँध) वाली किताब की आयतें हैं^(२) क्या लोगों को इसका अचम्भा हुआ कि हमने उनमें से एक मर्द

५८८
 ۞

۞

رَحِيمُهُمْ وَمَا تَوْأَمَهُمْ كُفَرُونَ ۞ أَوَلَا يَرَوْنَ
 أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا
 يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذْكُرُونَ ۞ وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ
 نَّظَرُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ هَلْ يَرِيكُمْ مِنْ أَحَدٍ ثُمَّ
 انصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا
 يَفْقَهُونَ ۞ لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ
 عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ
 رَحِيمٌ ۞ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا
 هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۞

(۱۰) سُورَةُ يُونُسَ مَكِّيَّةٌ (۵۱)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرَّسُولَ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ۞ أَكَانَ لِلنَّاسِ
 عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ

مَنْزِلٌ

- (१) बल्कि उन्हें हुक्म था कि सख्ती और तकलीफ़ में हज़ूर का साथ न छोड़ें और सख्ती के मौज़े पर अपनी जानें आप पर कुशवान करें।
- (२) और काफ़िरों की धरती को अपने घोड़ों के सुभों से रौंदते हैं।
- (३) क़ैद करके या क़त्ल करके, या ज़ख्मी करके या परास्त करके।
- (४) इस से साबित हुआ कि जो व्यक्ति अल्लाह के अनुकरण का इरादा करे, उसका उठना बैठना चलना फिरना ख़ामोश रहना सब नेकियाँ हैं। अल्लाह के यहाँ लिखी जाती हैं।
- (५) यानी कम जैसे कि एक खज़ूर।
- (६) जैसा कि हज़रत उस्माने गनी रदियल्लाहो अन्हो ने जैसे उसरत में ख़र्च किया।
- (७) इस आयत से जिहाद की फ़ज़ीलत और एक बेहतरीन अमल होना साबित हुआ।
- (८) और एक दम अपने वतन ख़ाली कर दें।
- (९) एक जमाअत वतन में रहे और।
- (१०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि अरब के क़बीलों में से हर हर क़बीले से जमाअतें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हज़ूर में हाज़िर होतीं और वां हज़ूर से दीन की बातें सीखते और इल्म हासिल करते और अहक़ाम दरियाफ़्त करते, अपने लिये और अपनी क़ौम के लिये। हज़ूर उन्हें अल्लाह व रसूल की फ़रमाँवरदारी का हुक्म देते और नमाज़ ज़कात व़श्रह की तालीम देते। जब वो लोग अपनी क़ौम में पहुंचते तो ऐलान कर देते कि जो इस्लाम लाए वह हमसे है और लोगों को खुदा का शरीफ़ दिलाते और दीन के विरोध से डराते यहाँ तक कि लोग अपने माँ बाप को छोड़ देते और रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उन्हें दीन के तमाम ज़ख्मी उलूम तालीम फ़रमा देते (ख़ाज़िन)। यह रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ज़बरदस्त चमत्कार है कि बिल्कुल बे पढ़े लिखे लोगों को बहुत थोड़ी देर में दीन के अहक़ाम का आलिम और क़ौम का हादी बना देते। इस आयत से कुछ मसअले मालूम हुए। इल्मे दीन हासिल करना फ़र्ज़ है। जो चीज़ें बन्द पर फ़र्ज़ वाजिब हैं और जो उसके लिये मना और हारम हैं उनका सीखना परम अनिवार्य है। और उससे ज़्यादा इल्म हासिल करना फ़र्ज़ किफ़ायी है। हदीस शरीफ़ में है, इल्म सीखना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है। इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहे ने फ़रमाया कि इल्म सीखना नफ़ल नमाज़ से अफ़ज़ल है। इल्म हासिल करने के लिये सफ़र करने का हुक्म हदीस शरीफ़ में है। जो शरअ इल्म हासिल करने के लिये राह चले, अल्लाह उसके लिये जन्नत की राह आसान करता है। (तिरमिज़ी)। फ़िक़ह सबसे ऊंचे दर्जे का इल्म है। हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला जिसके लिये बेहतरी चाहता है उसको दीन में फ़कीह बना देता है। मैं तक्सीम करने वाल हूँ और अल्लाह देने वाला (बुख़ारी व मुस्लिम)। हदीस में है, एक फ़कीह शैतान पर हज़ार आबिदों से ज़्यादा सख्त है। (तिरमिज़ी)।

फिरक दीन के अहकाम के इल्म कौं कहते हैं।

(१५) अज्ञाते इनाही से, दीन के अहकाम को पालन करके।

सूरए तौबह - सोलहवाँ सूक

- (१) किताल तमाम काफिरों से वाजिब है, करीब के हों या दूर के, लेकिन करीब वाले पहले आते हैं फिर उनसे जा जुड़ हों। ऐसे ही दर्जा व दर्जा।
- (२) उन्हें मल्का देता है और उनकी मदद फरमाता है।
- (३) यानी मुनाफिक आपस में हंसी के तौर पर ऐसी बात कहते हैं उनके जवाब में इशारा होता है।
- (४) शक और दोगली प्रवृत्ति का।
- (५) कि पहले जितना उनका था उसीके इन्कार के बवाल में गिरफ्तार थे, अब जो और उनका उसके इन्कार की लात में भी गिरफ्तार हुए।
- (६) यानी मुनाफिकों को।
- (७) बीमारियों, सख्तियों और दुष्काल बरिह के साथ।
- (८) और आँखों से निकल भागने के इशारे करता है और कहता है।
- (९) अगर देखता हुआ तो बैठ गए बरना निकल गए।
- (१०) कुछ की तरफ।
- (११) इस कारण से।
- (१२) अपने नफा नुकसान को नहीं सोचते।
- (१३) मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम असी करशी, जिनके हसब नसब को तुम खूब पहचानते हो कि तुम में सब से आली नसब हैं, और तुम उनके मिदक यानी सच्चाई और अमानतदारी, पाकीजा चरित्र, तक्वा और मदगुणों को भी खूब जानते हो। एक किरात में "अस्सिकुम" है, इसके मानी ये हैं कि तुम में सबसे ज्यादा नफीस और शरीफ और बुजुर्गी वाले। इस आयत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ आवरी यानी आपके मीलादे मुबारक का बयान है। तिरमिजी की हदीस से भी साबित है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी पैदायश का बयान खड़े होकर फरमाया। इससे मालूम हुआ कि मीलादे मुबारक की मेहफिल की असल कुरआन और हदीस से साबित है।
- (१४) इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अपने दो नामों से इज्जत वरशी। यह हुजूर की बुजुर्गी का कमाल है।
- (१५) यानी मुनाफिक और काफिर आप पर ईमान लाने से इन्कार करें।
- (१६) हाकिम ने मुस्तदरक में उबई बिन कअब से एक हदीस रिवायत की है कि "लकद जाअकुम" से आखिर गूरन तक दोनों आयतें कुरआन शरीफ में सब के बाद उतरीं।

(१०) सूरए यूनुस - पहला सूक

- (१) सूरए यूनुस मक्की है, सिवाए तीन आयतों के "फड़न कुन्ता फी शक्किन" से। इसमें ग्यारह सूक, एक सौ नौ आयतें, एक हजार आठ सौ बत्तीस कलिमें और नौ हजार निवाचे अक्षर हैं।
- (२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फरमाया, जब अल्लाह तआला ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को रिसालत अता फरमाई और आपने उसका इज़हार किया तो अरब इन्कारी हो गए और उनमें से कुछ ने यह कहा कि अल्लाह इससे बरतर है कि किसी आदमी का रसूल बचाए। इसपर ये आयतें उतरीं।
- (३) काफिरों ने पहले तो आदमी का रसूल होना आश्चर्य की बात और न मानने वाली चीज़ करार दिया, फिर जब हुजूर के चमत्कार देखे और यकीन हुआ कि ये आदमी की शक्ति और क्षमता से ऊपर हैं, तो आपको जादूगर बनाया। उनका यह दावा तो झूट और गलत है, मगर इसमें भी अपनी तुच्छता और हुजूर की महानता का ऐतिराफ पाया जाना है।
- (४) यानी तमाम सृष्टि के कामों का अपनी इच्छा और मर्ज़ों के अनुसार प्रवृत्ति फरमाता है।
- (५) इसमें वुन परस्तों के इस कौल का जवाब है कि वुन उनकी शफाअत करेंगे। उन्हें बताया गया कि शफाअत उनके सिवा कोई न कर सकेगा जिन्हें अल्लाह इसकी इजाज़त देगा। और शफाअत की इजाज़त पाने वाले ये अल्लाह के मुफ़्तूल बन्दे होंगे।
- (६) जो आसमान और ज़मीन का विधान और सारे कामों का प्रवृत्तिक है। उसके सिवा कोई मजबूद नहीं, फ़क़त वही पूजे जाने के लायक है।
- (७) क़यामत के दिन, और यही है।
- (८) इस आयत में हथ नथ और मआद का बयान और इससे इन्कार करने वालों का रद्द है। और इसपर निहायत खूबसूरत अन्दाज़

को वही (देववाणी) भेजी कि लोगों को डर सुनाओ^(१) और ईमान वालों को खुशखबरी दो कि उनके लिये उनके रब के पास सच का मक़ाम है, काफ़िर बोले बेशक यह तो खुला जादूगर है^(२) बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन छ दिन में बनाए फिर अर्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक है काम की तदबीर फ़रमाता है^(३) कोई सिफ़ारिशो नहीं मगर उसकी इजाज़त के बाद^(४) यह है अल्लाह तुम्हारा रब^(५) तों उसकी बन्दगी करो, तो क्या तुम ध्यान नहीं करते^(६) उसी की तरफ़ तुम सबको फिरना है^(७) अल्लाह का सच्चा वादा, बेशक वह पहली बार बनाता है फिर फ़ना के बाद दोबारा बनाएगा कि उनको जो ईमान लाए और अच्छे काम किये इन्साफ़ का सिला (इनाम) दे^(८) और काफ़िरों के लिये पीने को खोलता पानी और दर्दनाक अज़ाब बदला उनके कुफ़्र का^(९) वही है जिसने सूरज को जगमगाता बनाया और चांद चमकता और उसके लिये मंज़िलें ठहराई^(१०) कि तुम बरसों को गिनती ओर^(११) हिसाब जानो अल्लाह ने उसे न बनाया मगर हक़^(१२) निशानियां तफ़रील से बयान फ़रमाता है इल्म वालों के लिये^(१३) बेशक रात और दिन का

تُؤْتِي

۲۸۹

يُفَصِّلُ

وَيُبَشِّرُ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ۝
إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدِيرُ الْأَمْرَ مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا مِنْ بَعْدِ ۚ اذِّنْ لَهُ ۚ ذِكْرُكُمْ ۚ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۚ فَاعْبُدُوهُ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۚ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالنِّسَابِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْجِسَابِ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ فِي اخْتِلَافِ الْكَلِمِ

مَنْزِلٍ

- में दलील कायम फ़रमाई गई है, कि वह पहली बार बनाता है और विभिन्न अंगों को पैदा करता है और उन्हें जोड़ता है। तां मीन के साथ अलग होजाने के बाद उनका दोबारा जोड़ना और बने हुए इन्सान को नष्ट होजाने के बाद दोबारा बना देना और वही जान जो उस शरीर से जुड़ी थी, उसका इस बदन की दुरुस्ती के बाद फिर उसी शरीर से जोड़ देना, उसकी कुदरत और क्षमता से क्या दूर है। और इस दोबारा पैदा करने का उद्देश्य कर्मों का बदल देना यानी फ़रमाँवरदार को इनाम और गुनाहगार को अज़ाब देना है।
- (९) अठ्ठाईस मंज़िलें जो बारह बुजों में बंटी है। हर बुज के लिये ढाई मंज़िलें हैं। चांद हर रात एक मंज़िल में रहता है। और महीना तीस दिन का हो तो दो रात, वरना एक रात छुपता है।
- (१०) महीनों, दिनों, घड़ियों का।
- (११) कि उससे उसकी कुदरत और उसके एक होने के प्रमाण ज़ाहिर हों।
- (१२) कि उनमें ग़ौर करके नफ़ा उठाएं।

बदलता आना और जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया उनमें निशानियाँ हैं डर वालों के लिये (६) वेशक वो जो हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते (१३) और दुनिया की ज़िन्दगी पसन्द कर बैठे और इसपर मुतमईन (संतुष्ट) हो गए (१४) और वो जो हमारी आयतों से ग़फ़लत करते हैं (१५) उन लोगों का ठिकाना दोज़ख है बदला उनकी कमाई का (८) वेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनका रब उनके ईमान के कारण उन्हें राह देगा (१६) उनके नीचे नेहरें बहती होंगी नेअमत के बाग़ों में (१७) उनकी दुआ उसमें यह होगी कि अल्लाह तुझे पाकी है (१८) और उनके मिलते वक़्त खुशी का पहला बोल सलाम है (१९) और उनकी दुआ का खातिमा यह है कि सब ख़ूबियों सराहा अल्लाह जो रब है सारे जगत का (२०) (१९)

दूसरा रूकू

और अगर अल्लाह लोगों पर बुराई ऐसी जल्द भेजता जैसी वह भलाई की जल्दी करते हैं तो उनका वादा पूरा हो चुका होता (१) तो हम छोड़ते उन्हें जो हमसे मिलने की उम्मीद नहीं रखते कि अपनी सरक़शी (विद्रोह) में भटका करें (२) (११) और जब आदमी को (३) तकलीफ़ पहुँचती है हमें पुकारता है लेटे ओर बैठे और खड़े (४) फिर जब हम उसकी तकलीफ़ दूर कर देते हैं चल देता है (५) गोया कभी किसी तकलीफ़ के

وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا يَتَّقُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِأَحْيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنَّنُوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَافِلُونَ ۝ أُولَٰئِكَ مَاؤُهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِآيَاتِهِمْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ دَعْوُهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۝ وَأِخْرُ دَعْوِهِمْ ۝ إِنَّ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَلَوْ يَجْعَلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَفُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ ۝ فَنَذَرَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُعْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَاكَ لِحَبِيبِهِ ۝ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ صُورَهُ مَرَّكَانَ لَمْ يَذْكُرْنَا إِلَّا

مَنْذِرًا

- (१३) क़यामत के दिन और सबाब व अज़ाब का नहीं मानते।
 (१४) और इस नश्वर को हमेशा पर प्राथमिकता दी, और उम्र उसकी तलब में गुज़ारी।
 (१५) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि यहाँ आयतों से सैयदे आलाम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज्ञाते पाक और क़ुरआन शरीफ़ मुराद है। और ग़फ़लते करने से मुराद उनसे मुंह फेरना है।
 (१६) जन्नतों की तरफ़। क़तादा का क़ौल है कि मूमिन जब अपनी क़ब्र से निकलेंगे तो उसका अमल ख़ूबसूरत शकल में उसके सामने आएगा। यह शरूब कहेंगे, तू कौन है? वह कहेगा, मैं तेरा अमल हूँ। और उसके लिये नूर होगा और जन्नत तक पहुँचाएगा। काफ़िर का मामला विपरीत होगा। उसका अमल बुरी शकल में नमूदार होकर उसे जहन्नम में पहुँचाएगा।
 (१७) यानी जन्नत वाले अल्लाह तआला की तस्बीह, स्तुति, प्रशंसा में मशगूल रहेंगे और उसके ज़िक्र से उन्हें फ़रहत यानी ठण्डक और आनन्द और काफ़ी लज़्ज़त हासिल होगी।
 (१८) यानी जन्नत वाले आपस में एक दूसरों का सत्कार सलाम से करेंगे या फ़रिश्ते उन्हें इज़्ज़त के तौर पर सलाम अर्ज़ करेंगे या फ़रिश्ते रब तआला की तरफ़ से उनके पास सलाम लाएंगे।
 (१९) उनके क़लाम की शुरुआत अल्लाह की बड़ाई और प्रशंसा से होगी और क़लाम का अन्त अल्लाह की महानता और उसके गुणगान पर होगा।

सूरए यूनुस - दूसरा रूकू

- (१) यानी अगर अल्लाह तआला लोगों की बद-दुआएं, जैसे कि वो ग़ज़ब के वक़्त अपने लिये और अपने बाल बच्चों और माल के लिये करते हैं, और कहते हैं हम हलाक हो जाएंगे, ख़ुदा हमें ग़ारत करे, बर्बाद करे और ऐसे ही कलाम अपनी औलाद और रिश्तेदारों के लिये कह गुज़रते हैं, जिस हिन्दी में कोसना कहते हैं, अगर वह दुआ ऐसी जल्दी कुबूल करती जाती जैसी जल्दी वो अच्छाई की दुआओं के कुबूल होने में चाहते हैं, तो उन लोगों का अन्त हो चुका होता और वो कब के हलाक हो गए होते, लेकिन अल्लाह तआला अपने क़रम से भलाई की दुआ कुबूल फ़रमाने में जल्दी करता है, बद-दुआ के कुबूल में नहीं। नज़र बिन हाग़िब ने कहा था या रब, यह दीने इस्लाम अगर तेरे नज़दीक सच्चा है तो हमारे ऊपर आसमान से पत्थर बरसा। इसपर यह आयत उतरी और

पहुंचने पर हमें पुकारा ही न था, यूँही भले कर दिखाए हैं हद से बढ़ने वाले को^(१) उनके काम^(१२) और बेशक हमने तुमसे पहली संगतें^(१३) हलाक फ़रमादीं जब वो हद से बढ़े^(१४) और उनके रसूल उनके पास रौशन दलीलें लेकर आए^(१५) और वो ऐसे थे ही नहीं कि ईमान लाते, हम यूँही बदला देते हैं मुजरिमों को^(१६) फिर हमने उनके बाद तुम्हें ज़मीन में जानशीन किया कि देखें तुम कैसे काम करते हो^(१७) और जब उनपर हमारी रौशन आयतें^(१८) पढ़ी जाती हैं तो वो कहने लगते हैं जिन्हें हमसे मिलने की उम्मीद नहीं^(१९) कि इसके सिवा और क़ुरआन ले आइये^(२०) या इसी को बदल दीजिये^(२१) तुम फ़रमाओ मुझे नहीं पहुंचता कि मैं इसे अपनी तरफ़ से बदल दूँ मैं तो उसी का तावे(अधीन) हूँ जो मेरी तरफ़ वही (देववाणी) होती है^(२२) मैं अपने रव की नाफ़रमानी करूँ^(२३) तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब का डर है^(२४) तुम फ़रमाओ अगर अल्लाह चाहता तो मैं इसे तुमपर न पढ़ता न वह तुमको उससे ख़बरदार करता^(२५) तो मैं इससे पहले तुम में अपनी एक उम्र गुज़ार चुका हूँ^(२६) तो क्या तुम्हें अक़ल नहीं^(२७) तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बाँधे^(२८) या उसकी आयतें झुटलाए, बेशक मुजरिमों का भला न

يُؤْتِي ۝ ٢٩١ ۝ يُعَذِّبُكَ ۝
 ضَرَبْتُمْ سَهْلًا كَذَلِكَ يُزِيلُ لِلْمُتَسِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
 وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۝ وَ
 جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۝
 كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ
 خَلِيفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ
 تَعْمَلُونَ ۝ وَإِذَا تَتَلَا عَلَيْنَهُمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۝ قَالَ
 الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا إِنَّا بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَذَا
 أَوْ بَدِّلَهُ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَبْدِلَهُ مِنْ تِلْقَائِي
 نَفْسِي ۝ إِنْ أَتَيْتُمْ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۝ إِنِّي أَخَافُ أَنْ
 عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قُلْ لَوْ شَاءَ
 اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرِكُمْ بِهِ ۝ فَقَدْ
 لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِمَّنْ قَبْلِهِ ۝ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ فَمَنْ
 أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْآيَاتِ

बताया गया कि अगर अल्लाह तआला काफ़िरों के अज़ाब में जल्दी फ़रमाता, जैसा कि उनके लिये माल और औलाद वगैरह दुनिया की भलाई देने में जल्दी फ़रमाई, तो वो सब हलाक हो चुके होते।

(२) और हम उन्हें मोहलत देते हैं और उनके अज़ाब में जल्दी नहीं करते।

(३) यहाँ आदमी से काफ़िर मुराद है।

(४) हर हाल में, और जबतक उसकी तकलीफ़ दूर न हो, दुआ में मशगूल रहता है।

(५) अपने पहले तरीक़े पर, और वही कुफ़्र की राह अपनाता है और तकलीफ़ के वक़्त को भूल जाता है।

(६) यानी काफ़िरों को।

(७) - मक़सद यह है कि इस्लाम बला के वक़्त बहुत ही बसबरा है और राहत के वक़्त बहुत नाशुक्रा। जब तकलीफ़ पहुंचती है तो खड़े लेटे बैठे हर हाल में दुआ करता है। जब अल्लाह तकलीफ़ दूर करदता है तो शुक्र नहीं अदा करता और अपनी पहली हालत की तरफ़ लौट जाता है। यह हाल गाफ़िल का है। अक़ल वाले मूमिन हर हाल इसके चिपरीत है। वह मुसीबत और बला पर सन्न करता है, राहत और आशापश में शुक्र करता है, तकलीफ़ और राहत की सारी हालतों में अल्लाह के समक्ष गिड़गिड़ाता और दुआ करता है। एक मक़ाम इससे भी ऊंचा है, जो ईमान वालों में भी ग़्यास बन्दों को हासिल है कि जब कोई मुसीबत और बला आती है, उस पर सन्न करते हैं। अल्लाह की मज़ी पर दिल से राज़ी रहते हैं और हर हाल में शुक्र करने हैं।

(८) यानी उम्मतें हैं।

(९) और कुफ़्र में जकड़े गए।

(१०) जो उनकी सच्चाई की बहुत साफ़ दलीलें थीं, उन्होंने न माना और नबियों की तमदीक़ न की।

(११) ताकि तुम्हारे साथ तुम्हारे कर्मों के हिस्साव से मामला फ़रमाए।

(१२) जिनमें हमारी तौहीद और बुत परस्ती की बुराई और बुत परस्ती की सज़ा का बयान है।

(१३) और आग़िरत पर ईमान नहीं रखने।

(१४) जिसमें बुतों की बुराई न हो।

(१५) काफ़िरों की एक जमाअत ने नबीय़ करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा कि अगर आप चाहते हैं कि हम आप पर ईमान ले आएँ तो आप इस क़ुरआन के सिवा दूसरा क़ुरआन लाइये जिसमें लात, उज़्ज़ा और मनात वगैरह देवी देवताओं की बुराई और उनकी पूजा छोड़ने का हुक्म न हो और अगर अल्लाह ऐसा क़ुरआन न उतारे तो आप अपनी तरफ़ से बना लीजिये या उसी क़ुरआन को बदल कर हमारी मज़ी के मुताबिक़ कर दीजिये तो हम आप पर ईमान ले आएँगे। उनका यह क़नाम

होगा (१७) और अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ (२३) को पूजते हैं जो उनका कुछ भला न करे और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारिशि हैं (२४) तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह को वह बात बताते हो जो उसके इल्म में न आसमानों में है न ज़मीन में, (२५) उसे पाकी और वरतरी है उनके शिर्क से (१८) और लोग एक ही उम्मत थे (२६) फिर मुख़लिफ़ हुए और अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती (२७) तो यहीं उनके इख़्तिलाफ़ों का उनपर फ़सला हो गया होता (२८) (१९) और कहते हैं उनपर उनके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी (२९) तुम फ़रमाओ ग़ैब तो अल्लाह के लिये है अब रास्ता देखो, मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूँ (२०)

तीसरा सूक़

और जब कि हम आदमियों को रहमत का मज़ा देते हैं किसी तकलीफ़ के बाद जो उन्हें पहुँची थी जबी वो हमारी आयतों के साथ दाव चलते हैं (३१) तुम फ़रमा दो अल्लाह की खुफ़िया तदबीर सबसे जल्द हो जाती है (३२) वेशक हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे मक़ (कपट) लिख रहे हैं (३३) (२१) वही है कि तुम्हें खुशकी और तरी में चलाता है (३४) यहां तक कि जब

إِنَّهُ لَا يُغْلِيهِ الْمُجْرِمُونَ ۖ وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۖ قُلْ أَنْتَبِئْتُمْ إِنَّهُ لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۖ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ فَاخْتَلَفُوا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفَقِصْنَا بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۖ وَيَقُولُونَ لَوْلَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا ۚ إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۖ وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسْتَمٍّ إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ فِي آيَاتِنَا ۚ قُلْ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُوبُونَ مَا تَنْكُرُونَ ۖ هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي

या तो मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर था या उन्होंने तजुर्वे और इम्तिहान के लिये ऐसा कहा था कि अगर यह दूसरा कुरआन बना लाए या इसको बदल दें तो साबित हो जाएगा कि कुरआन अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, अल्लाह तआला ने अपने हथीव सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हुक्म दिया कि इसका यह जवाब दें जो आयत में वधान होता है,

(१६) मैं इसमें कोई परिवर्तन, फ़र बदल, कमी वेशी नहीं कर सकता, ये मेरा क़लाम नहीं, अल्लाह का क़लाम है,

(१७) या उसकी किताब के आदेशों को बदलूँ,

(१८) और दूसरा कुरआन बनाता इन्सान की क्षमता ही से बाहर है और सृष्टि का इससे मजबूर होना ख़ूब ज़ाहिर हो चुका है,

(१९) यानी इसकी तिलावत और पाठ केवल अल्लाह की मर्ज़ी से है,

(२०) और चालीस साल तुम में रहा हूँ इस ज़माने में मैं तुम्हारे पास कुछ नहीं लाया और मैं ने तुम्हें कुछ नहीं सुनाया, तुमने मेरे हालात को ख़ूब देखा परखा है, मैं ने किसी से एक अक्षर नहीं पढ़ा, किसी किताब का अध्ययन नहीं किया, इसके बाद यह महान किताब लाया जिसके सामने हर एक क़लाम तुच्छ और निरर्थक हो गया, इस किताब में नफ़ीस उलूम हैं, उमूल और अक़ीद हैं, आदेश और संस्कार हैं, और सदय्यवहार की तालीम है, ग़ैबी ख़बरे हैं, इसकी फ़साहत व चलागत ने प्रदेश भर के बोलने वालों और भाषा शास्त्रियों को गुंगा बहारा बना दिया है, हर समझ वालों के लिये यह बात सूरज से ज्यादा ग़ौशन हो गई है कि यह अल्लाह की तरफ़ से भेजी गई वही के बिना सम्भव ही नहीं,

(२१) कि इतना समझ सको कि यह कुरआन अल्लाह की तरफ़ से है, बन्दों की कुदरत नहीं कि इस जैसा बना सकें,

(२२) उसके लिये शरीक बतार,

(२३) चुन,

(२४) यानी दुनिया के कामों में, क्योंकि आग़िरत और मरने के बाद उठने का तो वो अक़ीदा ही नहीं रखते,

(२५) यानी उसका जुज़ूद ही नहीं, क्योंकि जो चीज़ मौजूद है, वह ज़रूर अल्लाह के इल्म में है,

(२६) एक दीने इस्लाम पर, जैसा कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने में काबील के हाबील का क़त्ल करने के वक़्त आदम अलैहिस्सलाम और उनकी सलान एक ही दीन पर थे, इसके बाद उनमें मतभेद हुआ, एक क़ौल यह है कि नूह अलैहिस्सलाम तक एक दीन पर रहे फिर मतभेद हुआ तो नूह अलैहिस्सलाम भेजे गए, एक क़ौल यह है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के किशती से उतरते वक़्त सब लोग एक ही दीन पर थे, एक क़ौल यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एहद से सब लोग एक दीन पर थे यहाँ तक कि अम्र बिन लहदी ने दीन बदला, इस मूरत में "अन्नास" से मुराद ख़ास अब होगा, एक क़ौल यह है कि लोग एक दीन पर थे यानी कुफ़र पर, अल्लाह तआला ने नबियों को भेजा, तो कुछ उनमें से ईमान लाए, कुछ उलमा ने कहा कि मानी ये हैं कि लोग अपनी पैदायश में तेक प्रकृति पर थे फिर उन में मतभेद हुआ, हदीस शरीफ़ में है, हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है, फिर उसके

तुम किशती में हो और वो अच्छी हवा से उन्हें लेकर चले और उसपर खुश हुए^(१८) उनपर आधी का झोका आया और हर तरफ लहरों ने उन्हें आ लिया और समझ लिये कि हम घिर गए उस वक्त अल्लाह को पुकारते हैं निरे उसके बन्दे होकर कि अगर तू इससे हमें बचा लेगा तो हम जरूर शुक्र अदा करने वालों में होंगे^(१९) फिर अल्लाह जब उन्हें बचा लेता है जभी वो जमीन में नाहक जियादती करने लगते हैं^(२०) ऐ लोगो तुम्हारी जियादती तुम्हारी ही जानों का ववाल है दुनिया के जीते जी वरत लो फिर तुम्हें हमारी तरफ फिरना है उस वक्त हम तुम्हें जता देंगे जो तुम्हारे कौतुक थे^(२१) दुनिया की जिन्दगी की कहावत तो ऐसी ही है जैसे वह पानी कि हमने आसमान से उतारा तो उसके कारण जमीन से उगन वाली चीजें सब घनी होकर निकालीं जो कुछ आदमी और चौपाए खाते हैं^(२२) यहाँ तक कि जब जमीन ने अपना सिंगार ले लिया^(२३) और खूब सज गई और उसके मालिक समझे कि यह हमारे वस में आगई^(२४) हमारा हुक्म उसपर आया रात में या दिन में^(२५) तो हमने उसे कर दिया काटी हुई मानो कल थी ही नहीं^(२६) हम यूही आयते तफसील

الْفُلُكِ وَجَوَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا
جَاءَهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ
مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ هَ لَئِنْ أَجَبْتَنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ
الشَّاكِرِينَ ۝ فَلَمَّا أَجَبَهُمْ إِذَا هُمْ يُبْعَثُونَ فِي الْأَرْضِ
بَعْدَ الْحَقِّ دَيَّا بِهَا النَّاسُ إِنَّمَا نَبْعَثُكُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ
مَتَاءَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ
الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ ۖ حَتَّىٰ إِذَا
أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا
أَنَّهُمْ قَائِرُونَ عَلَيْهَا ۖ إِنَّهَا أَمْرًا لَبِيًّا أُوْتِيَهَا
فَجَعَلْنَاهَا حَاصِدًا ۖ كَأَن لَّمْ تَغْنَبِ بِالْأَمْسِ ۚ كَذَٰلِكَ

मौ बाप उसको यहूदी बनाते हैं या ईसाई बनाते हैं या मजूसी बनाते हैं, हदीस में फ़ितरत से फ़ितरते इस्लाम मुराद है।

(२७) और हर उम्मत के लिये एक मोआद निश्चित न कर दी गई होती या आसमां का बदला क्रयामत तक उठाकर न रखा गया होता।

(२८) अज़ाब उतरने से।

(२९) पहले बातिल का तरीका है कि जब उनके खिलाफ मज़बूत दलील कायम होती है और वो जवाब से लाचार हो जाते हैं, तो उस दलील का जिक्र इस तरह टांड देते हैं जैसे कि वह पेश ही नहीं हुई और यह कहा करते हैं कि दलील लाओ ताकि सुनने वाले इस भ्रम में पड़ जाए कि उनके मुक़ाबले में अब तक कोई दलील ही कायम नहीं की गई है। इस तरह काफ़िरों ने हुज़ूर के चमत्कार, विशेषतः क़ुरआन शरीफ़ जो सबसे बड़ा चमत्कार है, उसकी तरफ से आँखें बन्द करके यह कहना शुरू किया कि कोई निशानी क्यों नहीं उतरी। मानो कि चमत्कार उन्होंने देखे ही नहीं और क़ुरआन पाक को वो निशानी समझते ही नहीं। अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाया कि आप फ़रमा दीजिये कि ग़ैब तो अल्लाह के लिये है, अब रास्ता देखो, मैं भी तुम्हारे साथ ग़ाह देख रहा हूँ। तक्ररीर का जवाब यह है कि खुली दलील इसपर कायम है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर क़ुरआन पाक का ज़ाहिर होना बहुत ही अजीमुश-शान चमत्कार है क्योंकि हुज़ूर उनमें पैदा हुए, उनके बीच पले बढ़े, तमाम ज़माने हुज़ूर के उनकी आँखों के सामने गुज़रे, वो ख़ूब जानते हैं कि आप ने न किसी किताब का अध्ययन किया न किसी उस्ताद की शागिर्दी की, यक़वारगी क़ुरआन आप पर ज़ाहिर हुआ और ऐसी बेमिसाल आलातरीन किताब का ऐसी शान के साथ उतरना बही के वग़ैर सम्भव ही नहीं। यह क़ुरआन के खुले चमत्कार होने की दलील है। और जब ऐसी मज़बूत दलील कायम है तो नबुव्वत का इकरार करने के लिये किसी दूसरी निशानी का तलब करना बिल्कुल ग़ैर ज़रूरी है। ऐसी हालत में इस निशानी का उतारना या न उतारना अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर है, चाहे करे चाहे न करे। तो यह काम ग़ैब हुआ और इसके लिये इत्तिज़ार लाज़िम आया कि अल्लाह क्या करता है। लेकिन वह ग़ैर ज़रूरी निशानी जो काफ़िरों ने तलब की है, उतारे या न उतारे, नबुव्वत साबित हो चुकी और रिस्सालत का सुबूत चमत्कारों से कमाल को पहुँच चुका।

सूरा यूनुस - तीसरा रूकू

(१) मक्का वालों पर अल्लाह तआला ने दुष्काल डाल दिया जिसकी मुसीबत में वो सात बरस गिरफ़्तार रहे यहाँ तक कि हलाकत के करीब पहुँचे। फिर उसने रहम फ़रमाया, बारिश हुई, ज़मीनी पर हरियाली छाई, तो अगरचे इस तकलीफ़ और राहत दोनों में कुदरत की निशानियाँ थीं और तकलीफ़ के बाँटे राहत बड़ी महान नेअमत थी, इसपर शुक्र लाज़िम था, मगर वजाय इसके उन्होंने नसीहत न मानी और फ़साद व कुफ़्र की तरफ पलटे।

(२) और उसका अज़ाब देर नहीं करता।

(विस्तार)से बयान करते हैं और करने वालों के लिये^(१५) (२४) और अल्लाह सलामती के घर की तरफ पुकारता है^(१६) और जिसे चाहे सीधी राह चलाता है^(१७) (२५) भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी अधिक^(१८) और उनके मुंह पर न चढ़ेगी सियाही और न खवारी^(१९) वही जन्नत वाले हैं, वो उसमें हमेशा रहेंगे^(२०) और जिन्होंने बुराईयाँ कमाई^(२१) तो बुराई का बदला उसी जैसा^(२२) और उनपर जिल्लत चढ़ेगी, उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा, मानो उनके चेहरों पर अंधेरी रात के टुकड़े चढ़ा दिये हैं^(२३) वही दो जख वाले हैं वो उसमें हमेशा रहेंगे^(२४) और जिस दिन हम उन सब को उठाएंगे^(२५) फिर मुश्कों से फरमाएंगे अपनी जगह रहो तुम और तुम्हारे शरीक^(२६) तो हम उन्हें मुसलमानों से जुदा कर देंगे और उनके शरीक उनसे कहेंगे तुम हमें कब पूजते थे^(२७) (२८) तो अल्लाह गवाह काफ़ी है हम में और तुम में कि हमें तुम्हारे पूजने की खबर भी न थी^(२९) यहाँ पर हर जान जांच लेगी जो आगे भेजा^(३०) और अल्लाह की तरफ फेरे जाएंगे जो उनका सच्चा मौला

فَصَلِّ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُفَكِّرُونَ ۝ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۖ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فُغْمَةٌ ۖ فَجَعَلْنَا مِنَ الْآبَالِ مَطْلَبًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَبِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ ۖ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِلَّا نَاكِبُونَ ۖ فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۖ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْإِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَوِيلِينَ ۖ هُنَالِكَ تَبْلَوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْكَفَتْ وَ

- (३) और तुम्हारी छुपवाँ तदबीरें कमों का लेखा जोखा रखने वाले फ़रिश्तों पर भी छुपी हुई नहीं हैं तो जानने वाले ख़बर रखने वाले अल्लाह से कैसे छुप सकती हैं।
- (४) और तुम्हें दूरियाँ तय करने की कुदरत देता है। ख़ुश्की में तुम पैदल और सवार मंज़िलें तय करते हो और नदियों में, किशतियों और जहाज़ों से सफ़र करते हो। वह तुम्हें ख़ुश्की और तरी दोनों में घूमने फिरने के साधन अता फ़रमाता है।
- (५) यानी किशतियाँ।
- (६) कि हवा अनुकूल है, अचानक।
- (७) तेरी नेअमतों के, तुझपर ईमान लाकर और श्वास तेरी इबादत करके।
- (८) और वादे के ख़िलाफ़ करके कुफ़्र और गुनाहों में जकड़े जाते हैं।
- (९) और उनका तुम्हें बदला देंगे।
- (१०) ग़ल्ले और फल और हरियाली।
- (११) ख़ूब फूली फली, हरी भरी और तरी ताज़ा हुई।
- (१२) कि खेतिपाँ तैयार हो गई, फल पक गए, ऐसे वक़्त।
- (१३) यानी अचानक हमारा अज़ाब आया, चाहे बिजली गिरने की शक़ल में या ओले बरसने या आंधी चलने की सूरत में।
- (१४) यह उन लोगों के हाल की एक मिसाल है जो दुनिया के चाहने वाले हैं और आख़िरत की उन्हें कुछ परवाह नहीं। इसमें बहुत अच्छे तरीके पर समझाया गया है कि दुनियावी ज़िन्दगानी उम्मीदों का हरा बाग़ है, इसमें उम्र ख़ोकर जब आदमी उस हद पर पहुँचता है जहाँ उसको मुराद मिलने का इत्मीनान हो और वह कामयाबी के नशे में मस्त हो, अचानक उसको मौत पहुँचती है और वह सारी लज़्ज़तों और नेअमतों से मेहरूम हो जाता है। क़तादा ने कहा कि दुनिया का तलबगार जब बिल्कुल बेफ़िक्र होता है, उस वक़्त उसपर अल्लाह का अज़ाब आता है और उसका सारा सामान जिससे उसकी उम्मीदें जुड़ी थीं, नष्ट हो जाता है।
- (१५) ताकि वो नफ़ा हासिल करें और शक़ तथा वहम के अंधेरों से छुटकारा पाएं और नश्वर दुनिया की नापायदारी से बाख़बर हों।
- (१६) दुनिया की नापायदारी बयात फ़रमाने के बाद हमेशगी की दुनिया की तरफ़ दावत दी। क़तादा ने कहा कि दाद-सलाम जन्नत है। यह अल्लाह की भरपूर रहमत और मेहरबानी है कि अपने बच्चों को जन्नत की दावत दी।
- (१७) सीधी राह देने इस्लाम है। बुख़ारी की हदीस में है, नबीयं करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में फ़रिश्ते हाज़िर हुए, आप ख़्वाब में थे। उनमें से कुछ ने कहा कि आप ख़्वाब में हैं और कुछ ने कहा कि आँखें ख़्वाब में हैं, दिल वेदार है। कुछ कहने लगे कि इनकी कोई मिसाल तो बयान करो, तो उन्होंने कहा, जिस तरह किसी शय्य ने एक मकान बनाया और उसमें तरह तरह

है और उनकी सारी बनावटें^(२०) उनसे गुम हो जाएंगी।^(२१) (३०)

चौथा खूक

तुम फ़रमाओ तुम्हें कौन रोज़ी देता है आसमान और ज़मीन से^(२) या कौन मालिक है कान और आँखों का^(३) और कौन निकालता है ज़िन्दा को मुर्दे से और निकालता है मुर्दा को ज़िन्दा से^(४) और कौन तमाम कामों की तदवीर (युक्ति) करता है तो अब कहेंगे कि अल्लाह^(५) तो तुम फ़रमाओ तो क्यों नहीं डरते^(६) (३१) तो यह अल्लाह है तुम्हारा सच्चा रब^(७) फिर हक़ के वाद क्या है मगर गुमराही^(८) फिर कहाँ फिरे जाते हो^(९) (३२) यूँही साबित हो चुकी है तेरे रब की बात फ़ासिकों (दुराचारियों)^(१०) पर तो वो ईमान नहीं लाएंगे (३३) तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में^(११) कोई ऐसा है कि पहले बनाए फिर फ़ना (विनाश) के वाद दोबारा बनाए^(१२) तुम फ़रमाओ अल्लाह पहले बनाता है फिर फ़ना के वाद देवारा बनाएगा तो कहाँ आँधे जाते हो^(१३) (३४) तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है कि हक़ की राह दिखाए^(१४) तुम फ़रमाओ कि अल्लाह हक़ की राह दिखाता है, तो क्या जो हक़ की राह दिखाए उसके हुक्म पर चलना चाहिये या उसके जो खुद ही राह न पाए जबतक राह न दिखाया

رُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَهُمُ الْحَقُّ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۖ قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَ الْأَرْضِ أَمَنْ يَبْلُغُكَ السَّمْعُ وَالْأَبْصَارُ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۖ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ۖ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۚ فَذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ الْحَقُّ ۖ فَمَاذَا بَعَدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ ۚ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ ۚ كَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۖ قُلْ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۖ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ ۚ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ ۖ قُلْ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ ۖ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمَّنْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يُهْدَىٰ

مَنْ

की नेअमतें उपलब्ध कीं और एक बुलाने वाले को भेजा कि लोगों को बुलाए, जिसने उस बुलाने वाले की फ़रमाँवरदारी की, उस मकान में दाख़िल हुआ और उन नेअमतों का स्वाधा पिया और जिसने बुलाने वाले की आवाज़ न मानी, वह मकान में दाख़िल न हो सका न कुछ ग़्रा मका। फिर वो कहने लगे कि इस मिसाल पर ग़हराई से गौर करो कि समझ में आए, मकान ज़न्नत है, बुलाने वाले मुहम्मद है, जिसने उनकी फ़रमाँवरदारी की, उसने अल्लाह की फ़रमाँवरदारी की।

(१८) भलाई वालों से अल्लाह के फ़रमाँवरदार बन्दे, ईमान वाले मुराद हैं, और यह जो फ़रमाया कि उनके लिये भलाई है, इस भलाई से जन्नत मुराद है और “इससे भी ज़्यादा” का मतलब है, अल्लाह का दीदार, मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि जन्नतियों के जन्नत में दाख़िल होने के बाद अल्लाह तआला फ़रमाएगा, क्या तुम चाहते हो कि तुमपर और ज़्यादा इनायत करूँ, वो अर्ज़ करेंगे या रब, क्या तूने हमारे ख़ेदरे ग़फ़ेद नहीं किये, क्या तूने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमाया, क्या तूने हमें दोज़ग़्र से निज़ात नहीं दी, हुज़ूर ने फ़रमाया, फिर पर्दा उठा दिया जाएगा तो अल्लाह का दीदार उन्हें हर नेअमत से ज़्यादा प्यारा होगा, सही हदीस की किताबों में बहुत सी ग़ियायतें यह साबित करती हैं कि आयत में “इससे भी ज़्यादा” से अल्लाह का दीदार मुराद है।

(१९) कि यह बात जहन्नम वालों के लिये है।

(२०) यानी कुफ़्र और गुनाह में जकड़ गए।

(२१) ऐसा नहीं कि जैसे नेकियों का सवाब दस गुना और सात सौ गुना किया जाता है ऐसे ही बदियों का अज़ाब भी बढ़ा दिया जाए, बल्कि जितनी बदी होगी उतना ही अज़ाब किया जाएगा।

(२२) यह हाल होगा उनकी रूसियाही का, खुदा की पनाह।

(२३) और तमाम सृष्टि को हिमाब के मैदान में जमा करेंगे।

(२४) यानी वो बुत जिन्हें तुम पूजते थे।

(२५) क़यामत के दिन एक घड़ी ऐसी सज़्ज़ती की होगी कि बुत अपने पुजारियों की पूजा का इन्कार करदेंगे और अल्लाह की क़सम ख़ाकर कहेंगे कि हम न सुनते थे, न देखते थे, न जानते थे, न समझते थे कि तुम हमें पूजते हो, इसपर बुत परस्त कहेंगे कि अल्लाह की क़सम हम तुम्हीं का पूजते थे तो बुत कहेंगे।

(२६) यानी उस मैदान में सब को मालूम हो जाएगा कि उन्होंने पहले जो कर्म किये थे वो कैसे थे, अच्छे या बुरे, नफ़ा वाले या घाट वाले।

(२७) बुतों को खुदा का शरीफ़ बताना और मअयूद ठहराना।

(२८) और झूठी और बेहकीकत साबित होंगी।

जाए^(१३) तो तुम्हें क्या हुआ कैसा हुक्म लगाते हो^(१४) और^(१५) उनमें अक्सर तो नहीं चलते मगर गुमान पर^(१६) बेशक गुमान हक का कुछ काम नहीं देता, बेशक अल्लाह उनके कामों की जानता है^(१७) और कुरआन की यह शान नहीं कि कोई अपनी तरफ से बनाले वे अल्लाह के उतारे^(१८) हाँ वह अगली किताबों की तस्दीक (पुष्टि) है^(१९) और लौह में जो कुछ लिखा है सबकी तफसील है इसमें कुछ शक नहीं है जगत के सब की तरफ से है^(२०) क्या ये कहते हैं^(२१) कि उन्होंने इसे बना लिया है, तुम फरमाओ^(२२) तो इस जैसी कोई एक सूरत ले आओ और अल्लाह को छोड़कर जो मिल सकें सबको बुला लाओ^(२३) अगर, तुम सच्चे हो^(२४) वल्कि उसे झुटलाया जिसके इल्म पर काबू न पाया^(२५) और अभी उन्होंने इसका अंजाम नहीं देखा, ^(२६) ऐसे ही उनसे अगलों ने झुटलाया था^(२७) तो देखो जालिमों का कैसा अंजाम हुआ^(२८) ^(२९) और उनमें^(३०) कोई इस^(३१) पर ईमान लाता है और उनमें कोई इसपर ईमान नहीं लाता है, और तुम्हारा सब फसादियों को खूब जानता है^(३२) ^(३३)

पाँचवां सूक

और अगर वो तुम्हें झुटलाए^(१) तो फरमा दो कि मेरे लिये मेरी करनी और तुम्हारे लिये तुम्हारी करनी^(२) तुम्हें मेरे काम से इलाका नहीं और मुझे तुम्हारे काम से तअल्लुक

فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ وَمَا يَنْتَعِمُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَى مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ وَ مِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ وَرَبِّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ إِنِّي أَعْمَلُ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ أَنْتُمْ بَرِيءُونَ مِمَّا أَعْمَلُ

مَثَلٌ

सूरए यूनुस - चौथा सूक

- (१) आसमान से मेंह बरमाकर और ज़मीन से हरियाली उगाकर.
- (२) और ये हवास या इन्द्रियाँ तुम्हें किसने दिये हैं, किसने ये चमत्कार तुम्हें प्रदान किये हैं, कौन इन्हें मुहनों सुरक्षित रखता है.
- (३) इन्सान का वीर्य से और वीर्य को इन्सान से, चिड़िया को अंडे से और अंडे को चिड़िया से. मूमिन को काफिर से और काफिर को मूमिन से, आलिम को जाहिल से और जाहिल को आलिम से.
- (४) और उसकी सम्पूर्ण कुदरत का ऐतिराफ़ करेंगे और इसके सिवा कुछ चारा न होगा.
- (५) उसके अज़ाब से, और क्यों बुतों को पूजते और उनको मअबूद बनाते हो जबकि वो कुछ कुदरत नहीं रखते.
- (६) जिसकी ऐसी भरपूर कुदरत है.
- (७) यानी जब ऐसी श्रुती दलीलें और साफ़ प्रमाणों से साबित होगया कि इबादत के लायक सिर्फ़ अल्लाह है, तो उसके अलावा सब बातिल और गुमराही. और जब तुमने उसकी कुदरत को पहचान लिया और उसकी श्रमता का ऐतिराफ़ कर लिया तो.
- (८) जो कुफ़्र में पक्के हो गए. सब की बात से मुराद है अल्लाह की तरफ़ से जो लिख दिया गया. या अल्लाह तआला का इशाराद "لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا" (मैं तुम सबसे जहन्नम भर दूंगा - सूरए अअराफ़, आयत १८).
- (९) जिन्हें ऐ मुश्रिको, तुम मअबूद टहराते हो.
- (१०) इसका जवाब ज़ाहिर है कि कोई ऐसा नहीं क्योंकि मुश्रिक भी यह जानते हैं कि पैदा करने वाला अल्लाह ही है, लिहाज़ा ये मुस्तफ़ा सलतल्लाहो अलैका वसल्लम.
- (११) और ऐसी रीशन दलीलें कायम होने के बाद सीधे रास्ते से मुंह फेरने हो.
- (१२) तर्क और दलीलें कायम करके, रसूल भेजकर, फितानें उतार कर, समझ वालों को अक्ल और नज़र अता फरमा कर. इसका खुला जवाब यह है कि कोई नहीं, तो ऐ हबीब.
- (१३) जैसे कि तुम्हारे बुत हैं कि किसी जगह जा नहीं सकते जबतक कि कोई उठा लेजाने वाला उन्हें उठाकर न लें जाए. और न किसी चीज़ की हकीकत को समझें और न सच्चाई की राह का पहचानें, वगैर इसके कि अल्लाह तआला उन्हें ज़िन्दगी, अक्ल और नज़र दे. तो जब उनकी मजबूरी का यह आलम है तो वो दूसरों को क्या राह बता सकेंगे. ऐसों को मअबूद बनाना, फरमाविरदारी करना

नहीं^(१४१) और उनमें कोई वो है जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं^(१४२) तो क्या तुम बहरों को सुना दोगे अगरचे उन्हें अकल न हो^(१४३) और उनमें कोई तुम्हारी तरफ तकता है^(१४४) क्या तुम अंधों को राह दिखा दोगे अगरचे वो न सूझें^(१४५) वेशक अल्लाह लोगों पर कुछ जुल्म नहीं करता^(१४६) हाँ लोग ही अपनी जानों पर जुल्म करते हैं^(१४७) और जिस दिन उन्हें उठाएगा^(१४८) मानो दुनिया में न रहे थे मगर उस दिन की एक घड़ी^(१४९) आपस में पहचान करेंगे^(१५०) कि पूरे घाटे में रहे वो जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुटलाया और हिदायत पर न थे^(१५१) और अगर हम तुम्हें दिखा दें कुछ^(१५२) उसमें से जो उन्हें वादा दे रहे हैं^(१५३) या तुम्हें पहले ही अपने पास बुला ले^(१५४) हर हाल में उन्हें हमारी तरफ पलट कर आना है फिर अल्लाह गवाह है^(१५५) उनके कामों पर^(१५६) और हर उम्मत में एक रसूल हुआ^(१५७) जब उसका रसूल उनके पास आता^(१५८) उन पर इन्साफ़ का फैसला कर दिया जाता^(१५९) और उनपर जुल्म न होता^(१६०) और कहते हैं यह वादा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो^(१६१) तुम फ़रमाओ मैं अपनी जान के बुरे भले का (ज़ाती) इस्तिथार नहीं रखता मगर जो अल्लाह चाहे^(१६२) हर गिरोह का एक वादा है^(१६३) जब उनका वादा

يُؤْتِي

۲۹۷

بَشِيرَاتٍ

وَإِنَّا بِرَحْمَةٍ مِّنَّا لَعَامِلُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ؕ أَفَأَنْتَ تَسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ ؕ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يَبْصُرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَٰكِنَّ النَّاسَ أَنفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ كَانَ لَرَّكَشَتِئِنَّ الْأَسَاةَ مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۖ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝ وَإِنَّمَا تَرِيكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ تَتَوَقَّيْتُكَ فَإِنَّا نَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ۝ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ؕ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي صَرًّا

مَزْلَمٌ

कितना गलत और बेहूदा है।

(१४) मुश्किल लोग।

(१५) जिसकी उनके पास कोई दलील नहीं, न उसके ठीक होने का इरादा और यकीन, शक में पड़े हुए हैं और यह खयाल करने हैं कि पहले लोग भी बुत पूजते थे, उन्होंने कुछ तो समझा होगा।

(१६) मक्का के काफ़िरों ने यह वहम किया था कि कुरआन शरीफ़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने खुद बना लिया है। इस आयत में उनका यह वहम दूर फ़रमाया गया कि कुरआन करीम ऐसी किताब ही नहीं जिसकी निश्चय शक हो सके। इसकी मिसाल बनाने से सारी सृष्टि लाचार है तो यकीनन वह अल्लाह की उतारी हुई किताब है।

(१७) तीरात और इंजील वगैरह की।

(१८) काफ़िर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निश्चय।

(१९) अगर तुम्हारा यह खयाल है तो तुम भी अरब हो, ज़बान और अदब, फ़साहत और बलागत के दावेदार हो, दुनिया में कोई इन्सान ऐसा नहीं है जिसके कलाम के मुकाबिल कलाम बनाने को तुम असम्भव समझते हो। अगर तुम्हारे खयाल में यह इन्सान का कलाम है।

(२०) और उनसे मदद लो और सब मिलकर कुरआन जैसी एक सूत तो बनाओ।

(२१) यानी कुरआन शरीफ़ का समझने और जानने के बगैर उन्होंने इसे झुटलाया और यह निरी जिहलत है कि किसी चीज़ को जाने बगैर उसका इन्कार किया जाए। कुरआन शरीफ़ में ऐसे जलूम शामिल होना, जिसे इल्म और अकल वाले न छू सकें, इस किताब की महानता और बुजुर्गी ज़ाहिर करता है। तो ऐसी उत्तम जलूम वाली किताब का मानना चाहिये या न कि इसका इन्कार करना।

(२२) यानी उस अज़ाब को जिसकी कुरआन शरीफ़ में चुनौतियाँ हैं।

(२३) दुश्मन से अपने रसूलों को, बगैर इसके कि उनके चमत्कार और निशानियाँ देखकर सांच समझ से काम लें।

(२४) ओर पहली उम्मत अपने नबियों को झुटलाकर कैसे कैसे अज़ाबों में जकड़ी गई तो ऐ हबीब सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, आप की झुटलाने वालों की डरना चाहिये।

(२५) मक्का वाले।

(२६) नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम या कुरआन शरीफ़।

(२७) जो दुश्मनी से ईमान नहीं लाते और कुफ़्र पर अड़े रहते हैं।

आएगा तो एक घड़ी न पीछे हटें न आगे बढ़ें (४९) तुम फरमाओ भला बंताओ तो अगर उसका अज़ाब (५३) तुमपर रात को आए (५४) या दिन को (५५) तो उसमें वह कौन सी चीज़ है कि मुजरिमों को जिसकी जल्दी है (५०) तो क्या जब (५६) हो पड़ेगा उस वक़्त उसका यकीन करेंगे (५७) क्या अब मानते हो पहले तो (५८) इसकी जल्दी मचा रहे थे (५१) फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा हमेशा का अज़ाब चखो तुम्हें कुछ और बदला न मिलेगा मगर वही जो कमाते थे (५२) और तुमसे पूछते हैं क्या वह (५०) हक़ है, तुम फरमाओ, हाँ मेरे रब की कसम बेशक वह ज़रूर हक़ है और तुम कुछ थका न सकोगे (५३) (५३)

छटा रूकू

और अगर हर ज़ालिम जान ज़मीन में जो कुछ है (५१) सब की मालिक होती ज़रूर अपनी जान छुड़ाने में देती (५२) और दिल में चुपके चुपके पशोमान हुए जब अज़ाब देखा और उनमें इन्साफ़ से फ़ैसला कर दिया गया और उनपर जुल्म न होगा (५४) सुन लो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में (५३) सुन लो बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है मगर उनमें अक्सर को ख़बर नहीं (५५) यह

وَلَا تَعْلَمُ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٥٠﴾ قُلِ الَّذِينَ يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ إِنَّمَا يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ وَأَنَّهُمْ لَا يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾ قُلِ الَّذِينَ يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ إِنَّمَا يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ وَأَنَّهُمْ لَا يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٢﴾ قُلِ الَّذِينَ يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ إِنَّمَا يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ وَأَنَّهُمْ لَا يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٣﴾ قُلِ الَّذِينَ يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ إِنَّمَا يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ وَأَنَّهُمْ لَا يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٤﴾ قُلِ الَّذِينَ يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ إِنَّمَا يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ وَأَنَّهُمْ لَا يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٥﴾ قُلِ الَّذِينَ يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ إِنَّمَا يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ وَأَنَّهُمْ لَا يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٦﴾ قُلِ الَّذِينَ يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ إِنَّمَا يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ وَأَنَّهُمْ لَا يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾ قُلِ الَّذِينَ يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ إِنَّمَا يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ وَأَنَّهُمْ لَا يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾ قُلِ الَّذِينَ يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ إِنَّمَا يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ وَأَنَّهُمْ لَا يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٩﴾ قُلِ الَّذِينَ يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ إِنَّمَا يَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّؤْمِنُونَ وَأَنَّهُمْ لَا يَتَذَكَّرُونَ ﴿٦٠﴾

सूरए यूनिस - पाँचवां रूकू

- (१) ये मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, और उनकी राह पर आने और सच्चाई और हिदायत कुबूल करने की उम्मीद टूट जाए।
- (२) हर एक अपने अमल का बदला पाएगा।
- (३) किसी के अमल पर दूसरे की पकड़ न होगी, जो पकड़ा जाएगा अपने कर्मों पर पकड़ा जाएगा, यह फ़रमान चेतावनी के तौर पर है कि तुम नसीहत नहीं मानते और हिदायत कुबूल नहीं करते तो इसका बवाल खुद तुमपर होगा, किसी दूसरे को इससे नुकसान नहीं।
- (४) और आपसे कुज़आन शरीफ़ और दीन के अहक़ाम सुनते हैं और दुश्मनी की वजह से दिल में जगह नहीं देते और कुबूल नहीं करते, तो यह सुनना बेकार है, वो हिदायत से नफ़रत न पाने में बेहरों की तरह हैं।
- (५) और वो न हवास से काम लें न अक्ल से।
- (६) और सच्चाई की दलीलों और नबुव्वत की निशानियों का देखता है, लेकिन तस्दीक नहीं करता और इस देखने से नतीजा नहीं निकलता, फ़ायदा नहीं उठाता, दिल की नज़र से मेहरूम और बातों वाली अन्दर का अन्धा है।
- (७) बल्कि उन्हें हिदायत और राह पाने के सारे सामान अता फ़रमाता है और रीशन दलीलें कायम फ़रमाता है।
- (८) कि इन दलीलों में ग़ौर नहीं करते और सच्चाई साफ़ स्पष्ट होजाने के बावजूद खुद गुमराही में गिरफ़्तार होते हैं।
- (९) क़ब्रों से, हिसाब के मैदान में हाज़िर करने के लिये, तो उस दिन की हैबत और वहशत से यह हाल होगा कि वो दुनिया में रहने की मुहत्त की बहुत थोड़ा समझेंगे और यह ख़याल करेंगे कि....
- (१०) और इसकी वजह यह है कि चूंकि काफ़िरों ने दुनिया की चाह में उम्रें नष्ट कर दीं और अल्लाह की फ़रमावशकारी, जो आज काम आती, बजा न लाए तो उनकी ज़िन्दगी का वक़्त उनके काम न आया, इसलिये वो उसे बेहुत ही कम समझेंगे।
- (११) क़ब्रों से निकलते वक़्त तो एक दूसरे को पहचानेंगे जैसा दुनिया में पहचानते थे, फिर क़यामत के दिन की हील और दहशतनाक मज़र देखकर यह पहचान बाक़ी न रहेगी, एक क़ौल यह है कि क़यामत के दिन पल पल हाल बदलेंगे, कभी ऐसा हाल होगा कि एक दूसरे को पहचानेंगे, कभी ऐसा कि न पहचानेंगे और जब पहचानेंगे तो कहेंगे।
- (१२) जो उन्हें घाटे से बचाती।

- (१३) अज़ाब.
- (१४) दुनिया ही में आपके ज़मानाएँ हयात में, तो वह मुलाहिज़ा कीजिये.
- (१५) तो आख़िरत में आपको उनका अज़ाब दिखाएंगे. इस आयत से साबित हुआ कि अल्लाह तआला अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को काफ़िरों के बहुत से अज़ाब और उनकी ज़िल्लत और रुमवाइयाँ आपकी दुनियावी ज़िन्दगी ही में दिखाएगा. चुनावों के बाद वीरह में दिखाई गई और जो अज़ाब काफ़िरों के लिये कुफ़्र और झुटलाने के कारण आख़िरत में मुकर्रर फ़रमाता है वह आख़िरत में दिखाएगा.
- (१६) ख़बर वाला है, अज़ाब देने वाला है.
- (१७) जो उन्हें सच्चाई की तरफ़ बुलाता और फ़रमाँवरदारी और ईमान का हुक्म करता.
- (१८) और अल्लाह के आदेशों की तबलीग़ या प्रचार करता, तो कुछ लोग ईमान लाते और कुछ झुटलाते और इन्कारी हो जाते हो.
- (१९) कि रसूल को और उनपर ईमान लाने वालों को निजात दी जाती और झुटलाने वालों को अज़ाब से हलाक़ कर दिया जाता. आयत की तफ़सीर में दूसरा क़ौल यह है कि इस में आख़िरत का बयान है और मानी ये हैं कि क़यामत के दिन हर उम्मत के लिये एक रसूल होगा जिसकी तरफ़ वह मन्सूब होगी. जब वह रसूल हिसाब के मैदान में आएगा और मूमिन व काफ़िर पर शहदात देगा तब उनमें फ़ैसला किया जायगा कि ईमान वालों को निजात होगी और काफ़िर अज़ाब में ज़क़ड़े जाएंगे.
- (२०) जब आयत "इम्मा नुरियन्नका" में अज़ाब की चेतावनी दी गई तो काफ़िरों ने सरक्शी से यह कहा कि ऐ मुहम्मद, जिस अज़ाब का आप वादा देते हैं वह कब आएगा, उसमें क्या देर है. उस अज़ाब को जल्द लाइये. इसपर यह आयत उतरी.
- (२१) यानी दुश्मनों पर अज़ाब उतरना और दोस्तों की मदद करना और उन्हें ग़ल्वा देना, यह सब अल्लाह की मर्ज़ी है और अल्लाह की मर्ज़ी में.
- (२२) उसके हलाक़ और अज़ाब का एक समय निर्धारित है, लौह मेहफूज़ में लिखा हुआ है.
- (२३) जिसकी तुम जल्दी करते हो.
- (२४) जब तुम गाफ़िल पड़े सोते हो.
- (२५) जब तुम रोज़ी रोटी के कामों में मशगूल हो.
- (२६) वह अज़ाब तुमपर नाज़िल.
- (२७) उस यक़ीन का यक़ीन कुछ फ़ायदा न देगा और कहा जाएगा.
- (२८) झुटलाने और मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर.
- (२९) यानी दुनिया में जो अमल करते थे और नवियों को झुटलाने और कुफ़्र में लगे रहते थे उसी का बदला.
- (३०) उड़ाए जाने और अज़ाब, जिसके नाज़िल होने की आपने हमें ख़बर दी.
- (३१) यानी वह अज़ाब तुम्हें ज़रूर पहुंचेगा.

सूरए यूनुस - छटा रकू

- (१) माल मत्ता, ख़ज़ाता और दफ़ीना.
- (२) और क़यामत के दिन उसको रिहाई के लिये फ़िदिया कर डालती, मगर यह फ़िदिया क़बूल नहीं और तमाम दुनिया की दौलत ख़र्च करके भी रिहाई सम्भव नहीं, जब क़यामत में यह मंज़र पेश आया और काफ़िरों की उम्मीदें टूटीं.
- (३) ता काफ़िर किसी चीज़ का मालिक ही नहीं बल्कि वह खुद भी अल्लाह का ममलूक है, उसका फ़िदिया देना सम्भव ही नहीं.

जिलाता और मारता है और उसी की तरफ फिरोगे (५६) ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आई (५७) और दिलों की सेहत और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिये (५८) तुम फरमाओ अल्लाह ही के फ़ज़ल (अनुकम्पा) और उसी की रहमत और उसीपर चाहिये कि खुशी करें (५९) वह उनके सब धन दौलत से बेहतर है (६०) तुम फरमाओ भला बताओ तो वह जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये रिज़क (जीविका) उतारा उसमें तुम ने अपनी तरफ से हराम व हलाल ठहरा लिया (६१) तुम फरमाओ क्या अल्लाह ने इसकी तुम्हें इजाज़त दी या अल्लाह पर झूट बांधते हो (६२) और क्या गुमान है उनका जो अल्लाह पर झूट बांधते हैं कि क़यामत में उनका क्या हाल होगा, बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़ल करता है (६३) मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते (६४)

सातवाँ रकू

और तुम किसी काम में हो (१) और उसकी तरफ से कुछ कुरआन पढ़ो और तुम लोग (२) कोई काम करो हम तुमपर गवाह होते हैं जब तुम उसको शुरू करते हो, और तुम्हारे रब से ज़र्रा भर कोई चीज़ ग़ायब नहीं ज़मीन में न आसमान

يَعْلَمُونَ ۝ هُوَ يَجِي وَيُيَبِّتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝
يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ
وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ ۖ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ
لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ قُلْ يَفْضِلُ اللَّهُ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ
فَلْيَفْرَحُوا ۖ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ
مَّا أَتَزَلَّ اللَّهُ لَكُمْ ۖ مِنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ
حَرَامًا وَحَلَالًا ۖ قُلْ أَلَمْ أَذِّنْ لَكُمْ ۖ أَمْرٌ عَلَى
اللَّهِ تَفْتَرُونَ ۝ وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ
عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَذُو
فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝
وَمَا تَكُونُ فِي شَأٍ وَمَا تَتَنَلَّوْا مِنْهُ مِنْ
قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ
شُهُودًا إِذْ تُفْعِلُونَ فِيهِ ۖ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ

مَنْ

(४) इस आयत में कुरआन शरीफ के आने और इस में मौजूद नसीहतों, शिफा, हिदायत और रहमत का बयान है कि यह किताब इन बड़े फ़ायदों से ओत प्रोत है। नसीहत के मानी है वह चीज़ जो इन्सान को उसकी पसन्द की चीज़ की तरफ बुलाए और ख़तरे से बचाए। ख़लील ने कहा कि यह देवी की नसीहत करना है जिससे दिल में नमी पैदा हो। शिफा से मुराद यह है कि कुरआन शरीफ दिल के अन्दर की बीमारियों को दूर करता है। दिल की ये बीमारियाँ दुश्चार, ग़लत अक़ीदे और मौत की तरफ ले जाने वाली जिहालत हैं। कुरआने पाक इन तमाम रोगों को दूर करता है। कुरआने क़दीम की विशिष्टता में हिदायत भी फ़रमाया, क्योंकि वह गुमराही से बचाता और सच्चाई की राह दिख़ाता है और ईमान वालों के लिये रहमत, इसलिये फ़रमाया कि वह इससे फ़ायदा उठाते हैं।

(५) किसी प्यारी और मेहबूब चीज़ के पाने से दिल को जो लज़्ज़त हासिल होती है उसको फ़रह कहते हैं। मानी ये है कि ईमान वालों का अल्लाह के फ़ज़ल और रहमत पर श्रुश होना चाहिये कि उसने उन्हें नसीहतों, और दिलों की अच्छाई और ईमान के साथ दिल की राहत और सुकून अता फ़रमाए। हज़रत इब्ने अब्बास व हसन व क़तादा ने कहा कि अल्लाह के फ़ज़ल से इस्लाम और उसकी रहमत से कुरआन मुराद है। एक कौल यह है कि फ़ज़लुल्लाह से कुरआन और रहमत से हदीसे मुराद हैं।

(६) जैसे कि जिहालत वालों ने बहीरा, सायबा वगैरह को अपनी मज़ी से हराम करार दे लिया था।

(७) इस आयत से साबित हुआ कि किसी चीज़ को अपनी तरफ से हलाल या हराम करना मना और ख़ुदा पर झूट जोड़ना है। आजकल बहुत लोग इसमें जकड़ हुए हैं। ममनूज़ात पानी वर्जित चीज़ों को हलाल कहते हैं और जिन चीज़ों के इस्तेमाल की अल्लाह व रसूल ने इजाज़त दी है, उसको हराम। कुछ सूद को हलाल करने पर अड़े हैं, कुछ तरवीरों को, कुछ खेल तमाशों को, कुछ औरतों को बेक़ैदियाँ और बेपर्दगीयाँ को, कुछ भूख़ हड़ताल को, जो आत्म हत्या है, हलाल समझते हैं। और कुछ लोग हलाल चीज़ों को हराम ठहराने पर तुले हुए हैं, जैसे मीलाद की महफ़िल को, फ़तिहा को, ग्यारहवीं को और ईसाले रावाब के दूगरे तरीकों को, कुछ मीलाद शरीफ और फ़तिहा व तोशा की शीरीनी और तबर्क़ को, जो सब हलाल और पाक चीज़ें हैं, ताजायज़ और वर्जित बताते हैं।

(८) कि रसूल भेजता है, किताबें नाज़िल फ़रमाता है, और हलाल व हराम से वास्त्रवर फ़रमाता है।

सूरए यूनुस - सातवाँ रकू

(१) ऐ हदीदे अक़रम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लाम.

(२) ऐ मुसलमानो.

में और न उससे छांटी और न उससे बड़ी कोई नहीं जो एक रौशन किताब में न हो^(३) (६१) सुन लो वेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ डर है न कुछ गम^(४) (६२) वो जो ईमान लाए और परहेजगारी करते हैं^(५) उन्हें खुशखबरी है दुनिया की ज़िन्दगी में^(६) और आखिरत में, अल्लाह की वार्ते बदल नहीं सकती^(७) वही बड़ी कामयाबी है^(८) (६४) और तुम उनकी बातों का गम न करो^(९) वेशक इज़्जत सारी अल्लाह ही के लिये है^(१०) वही सुनता जानता है^(११) (६५) सुन लो वेशक अल्लाह ही के मुल्क हैं जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीनों में^(१२) और काहे के पीछे जा रहे हैं^(१३) वो जो अल्लाह के सिवा शरीक पुकार रहे हैं, वो तो पीछे नहीं जाते मगर गुमान के और वो तो नहीं मगर अटकलें दौड़ाते^(१४) (६६) वही है जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई कि उसमें चैन पाओ और दिन बनाया तुम्हारी आँखें खोलता^(१५)

مَرَّتِكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝ أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ لَا يَتَغَيَّرُ كَيْفَ كَلِمَاتِ اللَّهِ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ

(३) 'किताबे मुबीन' यानी रौशन किताब से लोहे मेहफूज़ मुराद है।

(४) 'वली' की असल विला से है जो कुर्ब और नुसरत के मानी में हैं। अल्लाह का वली वह है जो फ़ज़्रों से अल्लाह का कुर्ब हासिल करे और अल्लाह की फ़रमावशकारी में लगा रहे और उसका दिल अल्लाह के जलाल के नूर को पहचानने में इत्बा हो जब देखे, अल्लाह की कुदरत की दलीलों को देखे और जब सुने अल्लाह की आयतें ही सुने, और जब बोले तो अपने स्व की प्रशंसा और तारीफ़ ही के साथ बोले, और जब हरकत करे अल्लाह की आज्ञा के पालन में ही हरकत करे, और जब कोशिश करे उसी काम में कोशिश करे जो अल्लाह के करीब पहुंचने का ज़रिया हो। अल्लाह के ज़िक्र में न थके और दिल की आँख से खुदा के सिवा गैर को न देखे। यह विशेषता वलियों की है। बन्दा जब इस हाल पर पहुंचता है तो अल्लाह उसका वली और सहायक और मददगार होता है। मुनकल्लिमीन कहते हैं, वली वह है जो प्रमाण पर आधारित सही अक़ीद रखता हो और शरीअत के मुताबिक नक़्क़र करे। कुछ आरिफ़ीन ने फ़रमाया कि विलायत नाम है अल्लाह के कुर्ब और अल्लाह के साथ मशगूल रहने का। जब बन्दा इस मक़ाम पर पहुंचता है तो उसका किसी चीज़ का डर नहीं रहता और न किसी चीज़ से मेहरूम होने का ग़म होता है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि वली वह है जिससे देखने से अल्लाह याद आए। यही तबरी की हदीस में भी है। इब्ने ज़ैद ने कहा कि वली वही है जिसमें वह सफ़्त और गुण हों जो इस आयत में बयान किया गया है। "अल्लज़ीना आमनू वक़ानू यत्तकून" यानी ईमान और तक्वा दोनों का संगम हो। कुछ उलमा ने फ़रमाया, वली वो है जो ख़ालिस अल्लाह के लिये महबूब करे। वलियों की यह विशेषता कई हदीसों में आई है। कुछ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया, वली वो हैं जो फ़रमावशकारी से अल्लाह के कुर्ब की तलाश करते हैं और अल्लाह तआला क़रामत और बुज़ुर्गी में उनके काम बनाता है। या वो जिन की हिदायत के प्रमाण के साथ अल्लाह क़फ़ील हों और वो उसकी बन्दगी का हक़ अदा करने और उसकी सृष्टि पर रहम करने के लिये वक़फ़ हो गए। ये अर्थ और इबारतें अगरचे विभिन्न हैं लेकिन उनमें विरोधाभास कुछ भी नहीं है क्योंकि हर एक इबारत में वली की एक एक विशेषता बयान कर दी गई है जिस अल्लाह का कुर्ब हासिल होता है। ये तमाम विशेषताएं और गुण उसमें होते हैं। विलायत के दर्जों और मरतबों में हर एक अपने दर्जे के हिसाब से बुज़ुर्गी और महानता रखता है।

(५) इस खुशख़बरी से या तो वह मुराद है जो परहेजगार ईमानदारों का क़ुरआन शरीफ़ में जा बजा दी गई है या बेहतरीन ख़्वाब मुराद है जो मूमिन देखता है या उसके लिये देखा जाता है जैसा कि बहुत सी हदीसों में आया है और इसका कारण यह है कि वली का दिल और उसकी आत्मा दोनों अल्लाह के ज़िक्र में डूबे रहते हैं। तो ख़्वाब के वक़्त अल्लाह के ज़िक्र के सिवा उसके दिल में कुछ नहीं होता। इसलिये वली जब ख़्वाब देखता है तो उसका ख़्वाब सच्चा और अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके हक़ में खुशख़बरी होती है। कुछ मुफ़सिरी ने इस खुशख़बरी से दुनिया की नेकनामी भी मुराद ली है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि सैयद आलम

बेशक उसमें निशानियाँ हैं सुनने वालों के लिये^(१२) (६७) वोले अल्लाह ने अपने लिये औलाद बनाई^(१३) पाकी उसको, वही वेनियाज़ है, उसी का है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में^(१४) तुम्हारे पास इसकी कोई भी सनद नहीं, क्या अल्लाह पर वह बात बताते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं^(६८) तुम फ़रमाओ वो जो अल्लाह पर झूट बांधते हैं उनका भला न होगा^(६९) दुनिया में कुछ बरत लेना है फिर उन्हें हमारी तरफ़ वापस आना फिर हम उन्हें सख़्त अज़ाब चखाएंगे बदला उनके कुफ़्र का^(७०)

आठवाँ सूक़

और उन्हें नूह की ख़बर पढ़कर सुनाओ वस उसने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुमपर शाक़ (भारी) गुज़रा है मेरा खड़ा होना^(१) और अल्लाह की निशानियाँ याद दिलाना^(२) तो मैं ने अल्लाह ही पर भरोसा किया^(३) तो मिलकर काम करो और अपने झूटे मअबूदों समेत अपना काम पक्का कर लो तुम्हारे काम में तुमपर कुछ गुंजलक न रहे फिर जो हो सके मेरा कर लो और मुझे मुहलत न दो^(४) (७१) फिर अगर तुम मुंह फेरो^(५) तो मैं तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता^(६) मेरा अन्न (फल, बदला) तो नहीं मगर अल्लाह पर और^(७) और मुझे हुक्म है कि मैं मुसलमानों से हूँ^(७२)

لَقَوْمٍ يَسْعَوْنَ ۖ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ ۖ هُوَ الْغَنِيُّ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلٰطِيْنٍ بِهٰذَا اَتَقُوْلُوْنَ عَلٰى اِلٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۚ قُلْ اِنَّ الدِّيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلٰى اِلٰهِ الْكُذِبَ لَا يَفْعَلُوْنَ ۚ مَتٰءٌ فِى الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نَذِيْقُهُمُ الْعَذٰبَ الشَّدِيْدَ ۚ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۚ وَاَثَلُ عَلَيْهِمْ نَبَا نُوْحٍ ۖ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يُقُوْمُ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِىْ وَتَذٰكِرِىْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلٰى اِلٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاٰجْمَعُوْا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اَقْضُوا اِلَیَّ وَلَا تَنْظُرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَالَتْكُمْ مِّنْ اٰجِرٍ ۚ اِنْ اٰجِرِىْ اِلَّا عَلٰى اللّٰهِ ۚ وَاَمَرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۚ فَلَذٰبُوْهُ

مِّنْ

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज किया गया, उस शास्त्र के लिये क्या इरशाद फ़रमाते हैं जो नेक कर्म करता है और लोग उसकी तारीफ़ करते हैं. फ़रमाया यह मूँमिन के लिये खुशख़बरी है. उलमा फ़रमाते हैं कि यह खुशख़बरी अल्लाह की रज़ा और अल्लाह के महबूब फ़रमाते और सृष्टि के दिल में महबूब डाल देने की दलील है, जैसा कि हदीस में आया है कि उसको ज़मीन में मक़बूल कर दिया जाता है. फ़नादा ने कहा कि फ़रिश्ते मौत के समय अल्लाह तआला की तरफ़ से खुशख़बरी देते हैं. अता का क़ौल है कि दुनिया की खुशख़बरी तो वह है जो फ़रिश्ते मौत के समय सुनाते हैं और आख़िरत की खुशख़बरी वह है जो मूँमिन को जान निकलने के बाद सुनाई जाती है कि उससे अल्लाह राज़ी है.

(६) उसके वादे ख़िलाफ़ नहीं हो सकते जो उसने अपनी किताब में और अपने रसूलों की ज़बान से अपने वलियों और अपने फ़रमाँवरदार बन्दों से फ़रमाए.

(७) इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली फ़रमाई गई कि काफ़िर बदनसीब, जो आपको झुटलाते हैं और आपके ख़िलाफ़ बुरे बुरे मशवरे करते हैं, उसका कुछ ग़म न फ़रमाए.

(८) वह जिसे चाहे इज़ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे. ऐ सैयदुल अम्बिया, वह आपका नासिर और मददगार है. उसने आपको और आपके सद्क़ में आपके फ़रमाँवरदारों को इज़ज़त दी, जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया कि अल्लाह के लिये इज़ज़त है और उसके रसूल के लिये और ईमान वालों के लिये.

(९) सब उसके ममलूक अर्थात् गुलाम हैं. उसके तहत क़ुदरत और अधिकार, और जो गुलाम है वह सब नहीं हो सकता. इसलिये अल्लाह के सिवा हर एक को पूजना ग़लत है. यह तौहीद की एक ज़मदा दलील है.

(१०) यानी किस दलील का अनुकरण करते हैं. मुराद यह है कि उनके पास कोई दलील नहीं.

(११) और बेदलील केवल ग़लत गुमाश से अपने शानिल और झूटे मअबूदों को खुदा का शरीक ठहराते हैं, इसके बाद अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत और नेअमत का इज़हार फ़रमाता है.

(१२) और आराम करके दिन की थकन दूर करो.

(१३) रौशन, ताकि तुम अपनी ज़रूरतों और रोज़ी ग़ंटी के सामान पूरे कर सको.

(१४) जो सुने और समझे कि जिसने इन चीज़ों को पैदा किया, वही मअबूद है. उसका कोई शरीक नहीं. इसके बाद मुश्रिकों का एक कथन ज़िक़्र फ़रमाता है.

(१५) काफ़िरों का यह कलिमा अत्यन्त बुरा और इन्तिहा दर्जे की आजानता का है. अल्लाह तआला इसका रद्द फ़रमाता है.

(१६) यहाँ मुश्रिकों के इस कथन के तीन रद्द फ़रमाए, पहला रद्द तो कलिमए सुक़ातहू में है जिसमें बताया गया कि उसकी ज़ात

तो उन्होंने उसे^(१) झुटलाया तो हमने उसे और जो उसके साथ किशती में थे उसको निजात दी और उन्हें हमने नायब (प्रतिनिधि) किया^(२) और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई उनको हमने डुबो दिया तो देखो डराए हुआ का अंजाम कैसा हुआ^(३) फिर उसके बाद और रसूल^(४) हमने उनकी क्रौम की तरफ भेजे तो वो उनके पास रौशन दलीलें लाए तो वो ऐसे न थे कि ईमान लाते उसपर जिसे पहले झुटला चुके थे, हम यूँही मुहर लगा देते हैं सरकशों के दिलों पर^(५) फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ अपनी निशानियाँ लेकर भेजा तो उन्होंने घमण्ड किया और वो मुजरिम लोग थे^(६) तो जब उनके पास हमारी तरफ से हक़ आया^(७) बोले यह तो ज़रूर खुला जादू है^(८) मूसा ने कहा क्या हक़ की निस्वत ऐसा कहते हो जब वह तुम्हारे पास आया क्या यह जादू है^(९) और जादूगर मुराद को नहीं पहुँचते^(१०) बोले क्या तुम हमारे पास इसलिये आए हो कि हमें उससे^(११) फेर दो जिसपर हमने अपने बाप दादा को पाया और ज़मीन में तुम्हारी दोनों की बड़ाई रहे और हम तुमपर ईमान लाने के नहीं^(१२) और फ़िरऔन^(१३) बोला हर जादूगर इल्म वाले को मेरे पास

فَتَجْنِيهِ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَ
وَاعْرِفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا
إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَبَاءُوا بِآيَاتِنَا فَكَاذِبًا كَانُوا يَكُونُوا
كَذَّابِينَ مِنْ قَبْلُ ۖ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ
الْمُعْتَدِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ وَهَارُونَ
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا
قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُم الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا
قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ
لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ أَسِحْرٌ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّاجِدُونَ ۝
قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَلْفِتْنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ
آبَاءَنَا وَتَكُونُ لَكُمُ الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ ۖ وَمَا
نَحْنُ لَكُمُ بِمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ اسْتَوُوا

منزل

बेटे या औलाद से पाक है कि वाहिदे हकीकती है, दूसरा रद हुवल गनिखो फ़रमाने में है कि वह तमाम सृष्टि से बेनियाज़ है, तो औलाद उसके लिये कैस हो सकती है. औलाद तो या कमज़ोर चाहते है जो उससे कुब्त हासिल करे या फ़कीर चाहता है जो उससे मदद ले या ज़लील चाहता है जो उसके ज़रीये इज़्ज़त हासिल करे. गरज़ जो चाहता है वह हाजत रखता है. तो जो गनी हो या ग़ैर मोहताज हो उसके लिये औलाद किस तरह हो सकती है. इसके अलावा बेटा वालिद का एक हिस्सा होता है, तो वालिद होना, मिश्रित होना ज़रूरी, और मिश्रित होना संभव होने को, और हर संभव ग़ैर का मोहताज है, तो हादिस हुआ, लिहाज़ा मुहाल हुआ कि गनी कदीम के बेटा हो. तीसरा रद लूह मा फ़िस्समावाते वमा फ़िल अदे में है कि सारी सृष्टि उसकी ममलूक है और ममलूक होना बेटा होने के साथ नहीं जमा होता. लिहाज़ा उनमें से कोई उसकी औलाद नहीं हो सकत.

सूरए यूनुस - आठवाँ रूकू

- (१) और लम्बी मुद्दत तक तुममें टहरना.
- (२) और इसपर तुमने मंर क़त्ल करने और निकाल देने का इरादा किया है.
- (३) और अपना मामला उस एक अल्लाह के संपुर्द किया जिसका कोई शरीक नहीं.
- (४) मुझे कुछ परवाह नहीं है. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का यह क़ताम विनम्रता के तौर पर है. मतलब यह है कि मुझे अपने कुदरत वाले, कुब्त वाले परवर्दिगार पर पूरा पूरा भरोसा है, तुम और तुम्हारे वे इफ़्तियार मअबूद मुझे कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकते.
- (५) मेरी नसीहत से.
- (६) जिसके फ़ौत होने का मुझे अफ़सोस है.
- (७) वही मुझे बदला देगा. मतलब यह है कि मेरा उपदेश और नसीहत ग़्रास अल्लाह के लिये है किसी दुनिया की गरज़ से नहीं.
- (८) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को.
- (९) और हलाक होने वालों के बाद ज़मीन में टहराया.
- (१०) हूद, सालेह, इब्राहीम, लूत, शूऐब वग़ैरहुम, अलैहिमुस्सलाम.
- (११) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वास्ते से, और फ़िरऔनियों ने पहचान कर, कि ये सत्य है, अल्लाह की तरफ़ से है, तो नफ़सानियत और हठधर्मी से.
- (१२) हरगिज़ नहीं.
- (१३) फ़िरऔनी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से.
- (१४) दीन व मिल्लत और बुत परग़्ती व फ़िरऔन परग़्ती.

ले आओ (७९) फिर जब जादूगर आए उनसे मूसा ने कहा डालो जो तुम्हें डालना है (८०) फिर जब उन्होंने डाला मूसा ने कहा यह जो तुम लाए यह जादू है (८१) अब अल्लाह इसे बातिल करदेगा, अल्लाह फ़साद वालों का काम नहीं बनाता (८२) और अल्लाह अपनी बातों से (८३) हक़ को हक़ कर दिखाता है पड़े बुरा मानें मुजरिम (८४)

नवाँ रूकू

तो मूसा पर ईमान न लाए मगर उसकी क्रौम की औलाद से कुछ लोग (८५) फिरऔन और उसके दरबारियों से डरते हुए कि कहीं उन्हें (८६) हटने पर मजबूर न कर दें और बेशक फिरऔन ज़मीन पर सर उठाने वाला था, और बेशक वह हद से गुज़र गया (८७) और मूसा ने कहा ऐ मेरी क्रौम अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए तो उसी पर भरोसा करो (८८) अगर तुम इस्लाम रखते हो (८९) वाले हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया, इलाही हमको ज़ालिम लोगों के लिये आजमाइश न बना (९०) और अपनी रहमत फ़रमाकर हमें काफ़िरों से निजात दे (९१) और हमने मूसा और उसके भाई को वही भेजी कि मिस्र में अपनी क्रौम के लिये

يَكُلُّ سِحْرَ عَلِيمٍ ۖ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلقُونَ ۖ فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُمْ بِهِ ۖ السَّحَرَةُ إِنَّ اللَّهَ سَيَبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضْلِيهِ عَمَلُ الْمُفْسِدِينَ ۖ وَيُحْيِي اللَّهُ الْحَيَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۖ فَمِمَّا أَمَرَ لِمُوسَىٰ إِلَّا ذَرِيَّتَهُ مِنْ قَوْمِهِ عَلَىٰ خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَن يَفْتِنَهُمْ ۖ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ۖ وَقَالَ مُوسَىٰ يَقُومُونَ كُنْتُمْ أَمْنًا بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا ۖ إِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِينَ ۖ فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۖ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَن تَبَوَّآ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ

مِصْرَ

- (१५) सरकश और घमण्डी न चाहा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार का मुकाबला बातिल से करे और दुनिया को इस भ्रम में डाले कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार जादू की किस्म से हैं इसलिये वह।
(१६) रस्से शहतीर वगैरह और जो तुम्हें जादू करना है करो। यह आपने इसलिये फ़रमाया कि हक़ और बातिल, सच और झूठ ज़ाहिर हो जाए और जादू के कमाल, जो वो करने वाले हैं, उनका फ़साद साफ़ खुल कर सामने आ जाए।
(१७) न कि वो आयते और अल्लाह की निशानियाँ, जिनको फिरऔन ने अपनी व ईमानी से जादू बताया।
(१८) यात्री अपन हुक्म, अपनी क्षमता और कुदरत और अपने इस वादे से कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जादूगरों पर गालिब करेगा।

सूरए यूनुस - नवाँ रूकू

(१) इसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है कि आप अपनी उम्मत के ईमान लाने का बहुत एहतिमाम फ़रमाते थे, और उनके मुंह फेर लेने से दुखी हो जाने थे। आपकी तसल्ली फ़रमाई गई कि हालांकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इतना बड़ा चमत्कार दिखाया, फिर भी थोड़े लोगों ने ईमान कुबूल किया। ऐसी हालत में नबियों का पेश आती रही है, आप अपनी उम्मत के मुंह फेर लेने से रंजीदा न हों। मिन क़ौमिही में जो ज़मीर है, वह या तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ पलटता है, उस सूरत में क़ौम की सन्तान से बनी इसाईल मुराद होंगे जिनकी औलाद मिस्र में आपके साथ थी। एक क़ौल यह है कि इससे वो लोग मुराद हैं जो फिरऔन के क़त्ल से बच रहे थे क्योंकि जब बनी इसाईल के लड़के फिरऔन के हुक्म पर क़त्ल किये जाते थे तो बनी इसाईल की कुछ औरतें जो फिरऔन की औरतों से कुछ मेल जोल रखती थीं, वो जब बच्चा जनती थीं तो उसकी जान के डर से वह बच्चा फिरऔनी क़ौम की औरतों की दे डालतीं। ऐसे बच्चे जो फिरऔनियों के घरों में पले थे, उस रोज़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आए जिस दिन अल्लाह तआला ने आपको जादूगरों पर विजय अना की थी। एक क़ौल यह है कि यह ज़मीर फिरऔन की तरफ़ पलटती है, और फिरऔनी क़ौम की सन्तान मुराद है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि वह फिरऔनी क़ौम के थोड़े लोग थे जो ईमान लाए।

(२) दीन से।

(३) कि बन्दा होकर ख़ुदाई का दावेदार हुआ।

(४) वह अपने फ़रमाँबरदारों की मदद और दुश्मनों को हलाक़ फ़रमाता है। इस आयत से साबित हुआ कि अल्लाह पर भरोसा करना ईमान के कमाल का तकाज़ा है।

(५) यात्री उन्हें हमपर गालिब न कर, ताकि वो ये गुमान न करें कि वो हक़ पर हैं।

मकानात बनाओ और अपने घरों को नमाज़ की जगह करो^(९) और नमाज़ कायम रखो और मुसलमानों को खुशखबरी सुनाओ^(१०) और मूसा ने अर्ज की ऐ रब हमारे तुने फ़िरऔन और उसके सरदारों को आरायश (अलंकार)^(११) और माल दुनिया की ज़िन्दगी में दिये ऐ रब हमारे इसलिये कि तेरी राह से वहकावें, ऐ रब हमारे उनके माल वबाद कर दे^(१२) और उनके दिल सख्त करदे कि ईमान न लाएं जबतक दर्दनाक अज़ाब न देख लें^(१३) फ़रमाया तुम दोनों की दुआ कुबूल हुई^(१४) तुम साबित कदम रहो नादानों की राह न चलो^(१५) और हम बनी इस्राईल की दरिया पार लें गए तो फ़िरऔन और उसके लश्करों ने उनका पीछा किया सरकशी और जुल्म से यहां तक कि जब उसे डूबने ने आ लिया^(१६) वोला मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मअबूद नहीं सिवा उसके जिसपर वनी इस्राईल ईमान लाए और मैं मुसलमान हूँ^(१७) क्या अब^(१८) और पहले से नाफ़रमान रहा और तू फ़सादी था^(१९)

يَعْنِي زُفَرَانٌ ۝ ۳۰ ۝ يُؤْتَا وَاجْعَلُوا يَوْمَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ
أَنْتَ فَرَعَوْنُ وَمَلَكُ زَيْنَةَ وَأَمْوَالًا فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ
رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَى
قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝
قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوُكُمْ فَاستَقِيمُوا وَلَا
تَتَّبِعُوا سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَجُورُنَا
بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَاتَّبَعَهُمْ فَرَعَوْنُ وَ
جُودَهُ نَعْيًا وَعَدَاءٌ حَتَّى إِذَا أَذْرَكَهُ الْعَرَقُ
قَالَ أَمِنْتُ أَنَّهُ لَكَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ
بَنُو إِسْرَءِيلَ يَا أَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أَلَمْ
وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ۝

मज़ल

- (९) और उनके जुल्म और सितम से बचा:
- (१०) कि क़िवले की तरफ़ मुंह करो. हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम का क़िवला काबा शरीफ़ था. और शुरु में बनी इस्राईल को यही हुक्म था कि वो घरों में छुप कर नमाज़ पढ़े ताकि फ़िरऔनियों की शरारत और तक्लीफ़ से सुरक्षित रहें.
- (११) अल्लाह की मदद की और जन्नत की.
- (१२) उमदा निवास, नफ़ीस फ़र्श, कीमती ज़ेवर; तरह तरह के सामान.
- (१३) कि वो तेरी नेअमतों पर शुक्र के बजाय दिलेर और जरी हांकर गुनाह करते हैं. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की यह दुआ कुबूल हुई और फ़िरऔनियों के दिरहम व दीनार कौरह पत्थर होकर रह गए. यहाँ तक कि फल और खाने की चीज़ें भी और ये उन निशानियों में से एक है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को दी गई थीं.
- (१४) जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उन लोगों के ईमान लाने से निराश हो गए तब आपने उनके लिये यह दुआ की. और ऐसा ही हुआ कि वो डूबने के वक़्त तक ईमान न लाए. इससे मालूम हुआ कि क़िमी शरय के लिये कुफ़र पर मरने की दुआ करना कुफ़र नहीं है. (मदारीक)
- (१५) दुआ की निस्वत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम व हज़रत हारून अलैहिस्सलाम दोनों की तरफ़ की गई हालांकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम दुआ करते थे और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम आमीन कहते थे. इससे मालूम हुआ कि आमीन कहने वाला भी दुआ करने वालों में गिना जाता है. यह भी साबित हुआ कि आमीन दुआ है. लिहाज़ा उसके लिये छुपा रहना ही मुनासिब है. (मदारीक). हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ और उसके कुबूल होने के बीच चालीस बरस का फ़ासला हुआ.
- (१६) दावत और तक्लीफ़ पर.
- (१७) जो दुआ के कुबूल होने में देर होने की हिक्मत नहीं जानते.
- (१८) तब फ़िरऔन.
- (१९) फ़िरऔन ने कुबूल हांन की तमना के साथ ईमान का मज़मून तीन बार दोहरा कर अदा किया लेकिन यह ईमान कुबूल न हुआ क्योंकि फ़रिश्तों और अज़ाब के देखने के बाद ईमान मक़बूल नहीं. अगर इख़्तियार की हालत में वह एक बार भी यह कलिमा कहता तो उसका ईमान कुबूल कर लिया जाता. लेकिन उसने वक़्त खो दिया. इसलिये उससे यह कहा गया जो आयत में आगे बयान किया गया है.
- (२०) बचैनी की हालत में, जबकि गर्क में जकड़ा गया है और ज़िन्दगी की उम्मीद बाक़ी नहीं रही, उस वक़्त ईमान लाता है.
- (२१) झुद गुमराह था, दूसरों को गुमराह करता था. रिवायत है कि एक बार हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के पास एक सवाल लाए जिसका मज़मून यह था कि बादशाह का क्या हुक्म है ऐसे गुलाम के बारे में जिसने एक शरय के माल व नेअमत में

आज हम तेरी लाश को उतरा देंगे (बाकी रखेंगे) कि तू अपने पिछलों के लिये निशानी हों^(१) और वेशक लोग हमारी आयतों से नाफिल हैं^(२)

दसवाँ रूकू

और वेशक हमने बनी इस्राईल को इज्जत की जगह दी^(३) और उन्हें सुथरी रोजी अता की तो इख्तिलाफ में न पड़े^(४) मगर इल्म आने के बाद^(५) वेशक तुम्हारा रव कयामत के दिन उनमें फैसला कर देगा जिस बात में झगड़ते थे^(६) और ऐ सुनने वाले अगर तुझ कुछ शुबह हो उसमें जो हमने तेरी तरफ उतारा^(७) तो उनसे पूछ देख जो तुम से पहले किताब पढ़ने वाले हैं^(८) वेशक तेरे पास तेरे रव की तरफ से हक आया^(९) तो तू हरगिज शक वालों में न हो^(१०) और हरगिज उनमें न होना जिन्होंने अल्लाह की आयतें झुटलाई कि तू खसारे (घाटे) वालों में हो जाएगा^(११) वेशक वो जिनपर तेरे रव की बात ठीक पड़ चुकी है^(१२) ईमान न लाएंगे^(१३) अगरचे सब निशानियाँ उनके पास आईं जवतक दर्दनाक अज़ाब न देख लें^(१४) तो हुई

كَأَيُّومَ نُخَيِّدُكَ بِدَنِّكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلَقَكَ
آيَةً وَإِنْ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا
لَعَفُولُونَ ۖ وَلَقَدْ يَوَّنَا بَيْنِي إِسْرَءِيلَ مُبَوَّأً
صِدْقٍ وَرَزَقْنَهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا
حَتَّى جَاءَهُمُ الْعِلْمُ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۖ وَإِنْ
كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْأَلِ الَّذِينَ
يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ ۖ لَقَدْ جَاءَكَ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۖ
وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ
فَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ
عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ
كُلُّ آيَةٍ حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۖ فَلَوْ لَا

परवरिश पाई फिर उसकी नाशुकी की और उसके हक का इन्कारी हो गया और अपने आप मौला होने का दावदार बन गया। इसपर फिरऔन ने यह जवाब लिखा कि जो गुलाम अपने आज़ा की नेअमतों का इन्कार करे और उसके मुक़ाबल में आए उसकी सज़ा यह है कि उसका दरिया में डुबो दिया जाए। जब फिरऔन डूबने लगा तो हज़रत ज़िदील ने बही फ़तवा उसके सामने कर दिया और उसने उसका पहचान लिया।

(१९) तफ़सीर के उलमा कहते हैं कि जब अल्लाह तआला ने फिरऔन और उसकी क़ौम को डुबाया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम का उनकी हलाकत की ख़बर दी तो कुछ बनी इस्राईल को शुबह रहा और फिरऔन की महाबता और हबत जो उनके दिलों में थी उसके कारण उन्हें उसकी हलाकत का यकीन न आया। अल्लाह के हक्स से दरिया ने फिरऔन की लाश किनारे पर फेंक दी। बनी इस्राईल ने उसको देखकर पहचाना।

सूरए यूनुस - दसवाँ रूकू

(१) इज्जत की जगह से या तो मिस्र देश और फिरऔनियाँ की सम्पत्तियाँ मुराद है या शाम प्रदंश और कुदस व उर्दुन जो अत्यन्त हरे भरे और उपजाऊ इलाक़े हैं।

(२) बनी इस्राईल, जिनके साथ ये घटनाएँ हो चुकीं।

(३) इल्म से मुराद यहाँ या तो तौरात है जिसके मानी में यहूदी आपस में मतभेद रखते थे, या गैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी है कि इससे पहले तो यहूदी आपस में मानने वाले और आपकी नबुवत पर सहमत थे और तौरात में जो आपकी विशपताएँ दर्ज थीं उनको मानते थे। लेकिन तशरीफ़ लाने के बाद विरोध करने लगे, कुछ ईमान लाए और कुछ लोगों ने हसद और दुश्मनी से कुफ़ किया। एक क़ौल यह है कि इल्म से क़ुरआन मुराद है।

(४) इस तरह कि ऐ नबियाँ के सग़्दार, आप पर ईमान लाने वालों का जन्नत में दाख़िल फ़रमायगा और आपका इन्कार करने वालों का जहन्नम में अज़ाब देगा।

(५) अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वारसे से।

(६) याती किताब वालों के उलमा जैसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथी, ताकि वो नूज़काँ सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुवत का इत्मीनान दिलाएँ और आपकी बात और तरीफ़, जो तौरात में लिखी है, वह सुनाकर शक दूर करें। शक इन्सान के नज़दीक किसी बात में दोनों तरफ़ों का बराबर होना है, चाहे वह इस तरह हो कि दोनों तरफ़ बराबर करीने पाए जाएं। चाहे इस तरह कि किसी तरफ़ भी कोई करीबा न हो। तहकीक़ करने वालों के नज़दीक शक ज़िहालत की क्रिस्मों से है और ज़िहालत

होती न कोई बस्ती^(१०) कि ईमान लाती^(११) तो उसका ईमान काम आता हाँ यूनुस की काम जब ईमान लाए हमने उनसे रूसवाई का अज़ाब दुनिया की ज़िन्दगी में हटा दिया और एक वक़्त तक उन्हें बरतने दिया^(१२) और अगर तुम्हारा रव चाहता ज़मीन में जितने हैं सबके सब ईमान ले आते^(१३) तो क्या तुम लोगों की ज़बरदस्ती करोगे यहाँ तक कि मुसलमान हो जाएं^(१४) और किसी जान की कुदरत नहीं कि ईमान ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से^(१५) और अज़ाब उनपर डालता है जिन्हें अक़ल नहीं^(१६) तुम फ़रमाओ देखो^(१७) आसमानों और ज़मीन में क्या है^(१८) और आयतें और रसूल उन्हें कुछ नहीं देते जिनके नसीब में ईमान नहीं^(१९) तो उन्हें काहे का इन्तिज़ार है मगर उन्हीं लोगों के से दिनों का जो उनसे पहले हो गुज़रे^(२०) तुम फ़रमाओ तो इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ^(२१) फिर हम अपने रसूलों और ईमान वालों को निजात देंगे, बात यही है हमारे करम के ज़िम्मे पर हक़ है मुसलमानों की निजात देना^(२२)

ग्यारहवाँ सूकू

तुम फ़रमाओ ऐ लोगो अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से

كَانَتْ قَرْيَةً أَمَدَتْ فَفَقَعَهَا إِيْمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ
يُوسُفَ ۖ لَمَّا آمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ غَظَابَ الْجَحْرِ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۖ وَلَوْ
شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مِنَ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ جَمِيعًا
أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۖ
وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَ
يَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۖ
قُلِ انْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَمَا
تُعْطَى الْأَيُّ وَاللَّهُدُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ
فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ قُلِ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ
الْمُنْتَظِرِينَ ۖ ثُمَّ نَبَيِّنَا رَسُولَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ
حَقًّا عَلَيْنَا نَحْنُ الْمُؤْمِنِينَ ۖ قُلِ يَأَيُّهَا النَّاسُ إِن

مَثَل

और शक़ में आम व ग़्रास मुतलक़ की निश्चय है कि हर एक शक़ जिहालत है और हर जिहालत शक़ नहीं।

(७) जो साफ़ प्रमाणों और रौशन निशानियों से इतना रौशन है कि उसमें शक़ की मजाल नहीं।

(८) यानी वह क़ौल उनपर साबित हो चुका जो लौहे मेहफूज़ में लिख दिया गया है और जिसकी फ़रिश्तों ने ख़बर दी है कि ये लोग काफ़िर मरेंगे, वो ...

(९) और उस वक़्त का ईमान लाभदायक नहीं।

(१०) उन बस्तियों में से जिनको हमने हलाक़ किया।

(११) और सच्चे दिल से तौबत करती, अज़ाब उतरने से पहले. (मदारीफ़)

(१२) क़ौमे यूनुस का हाल यह है कि नैन्वा प्रदेश मूसल में ये लोग रहते थे और कुफ़र व शिर्क में जकड़े हुए थे. अल्लाह तआला ने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को उनकी तरफ़ भेजा. आपने उनका बुत परस्ती छोड़ने और ईमान लाने का हुक्म दिया. उन लोगों ने इन्कार किया. हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को झुटलाया. आपने उन्हें अल्लाह के हुक्म से अज़ाब उतरने की ख़बर दी. उन लोगों ने आपस में कहा कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने कभी कोई बात ग़लत नहीं कही है देखो अगर वह रात को यहाँ रहे जब तो कोई अन्देशा नहीं और अगर उन्होंने रात यहाँ न गुज़ारी तो समझ लेना चाहिये कि अज़ाब आया. रात में हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम वहाँ से तशरीफ़ ले गए. सुबह को अज़ाब के चिह्न ज़ाहिर हो गए. आसमान पर काला डरावना बादल आया और बहुत सा धुआँ जमा हुआ. सारे शहर पर छा गया. यह देखकर उन्हें घबराहट होगया कि अज़ाब आने वाला है. उन्होंने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की तलाश की और आपको न पाया. अब उन्हें और ज़्यादा डर हुआ तो वो अपने बच्चों औरतों और जानवरों के साथ जंगल को निकल गए. मोटे कपड़े पहने और तौबत व इस्लाम का इज़हार किया. शहर से बीबी और माँ से बच्चे अलग हो गए और सब ने अल्लाह की बारगाह में रोना और मिट्टीगड़ना शुरू किया और कहा, जो यूनुस अलैहिस्सलाम लाए, हम उस पर ईमान लाए और सच्ची तौबत की. जो अन्धाचार उनसे हुए थे उनको दूर किया, पराए माल वापस किये, यहाँ तक कि अगर एक पत्थर दूसरे का किसी की बुनियाद में लग गया था तो बुनियाद उग्राड़ कर पत्थर निकाल दिया और वापस कर दिया. और अल्लाह तआला से सच्चे दिल से माफ़िरन की दुआएँ कीं. अल्लाह तआला ने उनपर रहम किया. दुआ कुबूल फ़रमाई, अज़ाब उठा दिया गया. यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि जब अज़ाब उतरने के बाद फिरऔन का ईमान और उसकी तौबत कुबूल न हुई, क़ौमे यूनुस की तौबत कुबूल फ़रमाने और अज़ाब उठा देने में क्या हिक़मत है. उलमा ने इसके कई जवाब दिये हैं. एक तो यह कि यह ग़्रास करम था, हज़रत यूनुस की क़ौम के साथ. दूसरा जवाब यह है कि फिरऔन अज़ाब में जकड़े जाने के बाद ईमान लाया, जब ज़िन्दगी की उम्मीद ही बाकी न रही और क़ौमे यूनुस से जब अज़ाब करीब हुआ तो वो उसमें मुबतिला होने से पहले ईमान ले आए और अल्लाह दिलों का हाल जानने वाला है. सच्चे दिल वालों की सच्चाई और आचार का उसको इत्म है.

किसी शुबह में हो तो मैं तो उसे न पूजूंगा जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो^(१) हाँ उस अल्लाह को पूजता हूँ जो तुम्हारी जान निकालेगा^(२) और मुझे हुक्म है कि ईमान वालों में हूँ^(३) और यह कि अपना मुंह दीन के लिये सीधा रख सबसे अलग होकर^(४) और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना^(५) और अल्लाह के सिवा उसकी वन्दगी न कर जो न तेरा भला कर सके न बुरा, फिर अगर ऐसा करे तो उस वक़्त तू ज़ालिमों में होगा^(६) और अगर तुझे अल्लाह कोई तकलीफ़ पहुंचाए तो उसका कोई टालने वाला नहीं उसके सिवा, और अगर तेरा भला चाहे तो उसके फ़ज़ल (कृपा) का रद करने वाला कोई नहीं^(७) उसे पहुंचाता है अपने वन्दों में जिसे चाहे, और वही बख़्शने वाला मेहरबान है^(८) तुम फ़रमाओ ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ आया^(९) तां जो राह पर आया वह अपने भले को राह पर आया^(१०) और जो बंधका बंध अपने बुरे को बंधका,^(११) और कुछ में करोड़ा नहीं^(१२) और उसपर

كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِّن دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ
تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَلَكِن أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي
يَتَوَكَّلُكُمْ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ
وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا
لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا
مِنَ الظَّالِمِينَ وَإِنْ يَسْسُكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا
كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ
لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ
الْعَفُورُ الرَّحِيمُ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ
الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ فَكَمِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي
لِنَفْسِهِ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلَّ عَلَيْهِ وَمَا
أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ

مَثَل

(१३) यानी ईमान लाना पहले से लिखी खुशखबरी पर निर्भर है, ईमान वही लाएंगे जिसका अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाएगा, इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तसल्ली है कि आप चाहते हैं कि सब ईमान लें आएँ और मोर्शी राह इस्तिथार करें, फिर जो ईमान से मेहरबान रह जाते हैं उनका आपको ग़म होता है, इसका आपको ग़म न होना चाहिये, क्योंकि जो पहले से बुरे दिल वाला लिखा हुआ है, वह ईमान न लाएगा।

(१४) और ईमान में ज़बरदस्ती नहीं हो सकती क्योंकि ईमान होता है तस्दीक और इज़ाब से, और ज़बरदस्ती या दबाव से दिल की तस्दीक दाखिल नहीं होती।

(१५) उसकी मज़ी से।

(१६) दिल की आँखों से और ग़ौर करो कि।

(१७) जो अल्लाह तआला के एक होने का प्रमाण देता है।

(१८) नूह, आद व समूद की तरह।

(१९) कि तुम्हारी हलाकत और अज़ाब के, रबीअ बिन आनस ने कहा कि अज़ाब का डर दिलाने के बाद अगली आयत में यह बयान फ़रमाया कि जब अज़ाब होता है तो अल्लाह तआला रसूल को और उनके साथ ईमान लाने वालों का निजात अता फ़रमाता है।

सूरए यूनुस - ग्यारहवाँ सूक़

(१) क्योंकि वह मज़लूक है, इबादत के लायक नहीं।

(२) क्योंकि वह क़ादिर, मुज़्तार, सन्ना मअयूद, इबादत के लायक है।

(३) यानी सच्चे दिल से मूмин रहो।

(४) वही नफ़ा नुक़सान का मालिक है, सारी सृष्टि उसी की मोहताज है, वही हर चीज़ पर क़ादिर और मेहरबानी व रहमत वाला है, बन्दों को उसकी तरफ़ साबत और उसका ख़ौफ़ और उसी पर भरोसा और उसी पर विश्वास चाहिये और नफ़ा नुक़सान जो कुछ भी है वही।

(५) हक़ से यहाँ क़ुरआन मुग़ाद है या इस्लाम या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।

(६) क्योंकि इसका लाभ उसी को पहुंचेगा।

(७) क्योंकि उसका बवाल उसी पर है।

(८) कि तुमपर ज़बरदस्ती करूँ।

चलो जो तुमपर वही होती है और सब करो^(९) यहाँ तक कि अल्लाह हुक्म फ़रमाए^(१०) और वह सबसे बेहतर हुक्म फ़रमाने वाला है^(११) १०९

११- सूरए हूद

सूरए हूद मक्का में उतरी, इसमें १२३ आयतें और दस रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान, रहमत वाला^(१) यह एक किताब है जिसकी आयतें हिकमत (बोध) भरी हैं^(२) फिर तफ़सील की गई^(३) हिकमत वाले खबरदार की तरफ़ से^(४) कि बन्दगी न करो मगर अल्लाह की, बेशक मैं तुम्हारे लिये उसकी तरफ़ से डर और खुशी सुनाने वाला हूँ^(५) और यह कि अपने रब से माफ़ी मांगो फिर उसकी तरफ़ तौबह करो, तुम्हें बहुत अच्छा वरतना देगा^(६) एक ठहराए वादे तक और हर फ़ज़ीलत (प्रतिष्ठा) वाले को^(७) उसका फ़ज़ल (अनुकम्पा) पहुंचाएगा^(८) और अगर मुंह फेरो तो तुमपर बड़े दिन^(९) के अज़ाब का ख़ौफ़ करता हूँ^(१०) तुम्हें अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है^(११) और वह हर चीज़ पर क़ादिर (शक्तिमान) है^(१२) सुनो वो अपने सीने दोहरे करते हैं कि अल्लाह सँ पर्दा करें^(१३) सुनो जिस वक़्त वो अपने कपड़ों सँ सारा वदन ढांप लेते हैं उस वक़्त भी अल्लाह उनका छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है, बेशक वह दिलों की बात जानने वाला है^(१४)

سُورَةُ هُودٍ مَكِّيَّةٌ - (٥٢)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرَّسُكْتُبُ أَحْكَمْتُ إِلَيْهِ ثُمَّ فَضَّلْتُ مِنْ لَدُنْ

حَكِيمٍ خَيْرٍ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي لَكُمْ

مِّنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ۖ وَإِنْ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ

تَوْبُوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ

مُّسَيٍّ وَيُوْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۖ وَإِنْ

تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَثِيرٍ ۖ

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ

أَلَا إِنَّهُمْ يَكُونُونَ صُدُورَهُمْ لَيَسْتَخِفُّوهُ ۖ أَفَلَا

حِزْنٌ يَسْتَعْشُونَ ثِيَابَهُمْ ۖ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ

وَمَا يُعْلِنُونَ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۖ

(९) काफ़िरों के झुटलाने और उनके तक़्सीफ़ पहुंचाने पर।

(१०) मुश्किलों से जंग करने और कित्तियों से ज़िज़िया लेने का।

(११) कि उनके हुक्म में ग़लती और ख़ता की गुंजायश नहीं और वह बन्दों के ख़ुले छुपे हालात सबका जानने वाला है। उसका फ़ैसला दलील और ग़वाह का मोहताज़ नहीं।

११ - सूरए हूद - पहला रूकू

(१) सूरए हूद मक्की है। हसन व अक़रमह वग़ैरह मुफ़सिरी ने फ़रमाया कि आयत “व अक़िमिस्सलाता तरफ़यिन्नहारे” के सिवा बाक़ी सारी सूरात मक्की है। मक्कातिल ने कहा कि आयत “फलअल्लका तारिकुन” और “उलाइका यूमिनुना बिही” और “इन्नल हसनाते युज़हिन्नस सैय्बिआत” के अलावा सारी सूरात मक्की है। इसमें दस रूकू, १२३ आयतें, एक हज़ार छ सौ कलिम और नौ हज़ार पांच सौ सड़सठ अक्षर हैं। हदीस में है सहाबा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, हुज़ूर पर बुढ़ापे के आसार दिख़ने लगे। फ़रमाया, मुझे सूरए हूद, सूरए वाकिआ, सूरए अम्मा यतसाअलून और सूरए इज़श-शमस कुच्चिरन ने बूढ़ा कर दिया (तिरमिज़ी)। सम्भवतः यह इस धंजह से फ़रमाया कि इन सूरातों में क़यामत और मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब किताब होने और ज़न्नत व दोज़ख़ का बयान है।

(२) जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद हुआ “तिल्का आयातुल किताबिल हकीम” (यह हिकमत वाली किताब की आयतें हैं - १०:१) कुछ मुफ़सिरी ने फ़रमाया “उहकिमत” (हिकमत से भरी) के मानी ये हैं कि उनकी तज़म मोहक़म और उरतुवार की गईं। इस सूरात में मानी ये होंगे कि इस में कोई ख़ामी राह पा ही नहीं सकती। वह बिताए मोहक़म है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि कोई किताब इनकी नासिख़ नहीं, जैसा कि ये दूसरी किताबों और शरीअतों की नासिख़ हैं।

(३) और सूरात सूरात और आयत आयत अलग अलग ज़िक़्र की गईं या अलग अलग उतारी गईं या अक़ीदे, अहक़ाम, नसीहतें, फ़िस्से और ग़ैबी ख़बरें इन में तफ़सील और बिस्तार से बयान फ़रमाई गईं।

- (४) लम्बी उम्र और भरपूर राहत व ऐश और बहुत सा रिक्क. इससे मालूम हुआ कि सच्चे दिल से तौबह व इस्तेफाफर करना उम्र लम्बी होने और आजीविका में विस्तार होने के लिये वैधर्मीय अमल है.
- (५) जिसने दुनिया में अच्छे कर्म किये हों उसकी फरमाँवरदारियाँ और नेकियाँ ज्यादा हों.
- (६) उसको जन्नत में कर्मों के हिसाब से दर्जे अता फरमाएगा. कुछ मुफस्सिरों ने कहा आयत के मानी यह हैं कि जिसने अल्लाह के लिये अमल किया, अल्लाह तआला आयन्दा के लिये उसे नेक कर्म और फरमाँवरदारी की तोफ़ीक़ देता है.
- (७) यानी क्रयामत के दिन.
- (८) आग़िरत में वहाँ नेकियों का इनाम और बुराइयों की सज़ा मिलेगी.
- (९) दुनिया में रोज़ी देने पर भी, मौत देने पर भी, मौत के बाद ज़िन्दा करने और मवाद व अज़ाब पर भी.
- (१०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, यह आयत अज़नस चिन शरीक के बारे में उतरी. यह बहुत मीठा बोलने वाला व्यक्ति था. रसूलुं करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने आता तो बहुत खुशामद की बातें करता और दिल में दुश्मनी छुपाए रखता. इसपर यह आयत उतरी. मानी ये हैं कि वो अपने सीतों में दुश्मनी छुपाए रखते हैं जैसे कपड़े की तह में कोई चीज़ छुपाई जाती है. एक क़ौल यह है कि कुछ दोहरी प्रवृत्ति वालों की आदत थी कि जब रसूलुं करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का सामना होता तो भीना और पीट झुकते और सर नीचा करते, चंहरा छुपा लेते ताकि उन्हें हज़ूर देख न पाएं. इसपर यह आयत उतरी. बुरख़ारी ने इन लोगों में एक हदीस रिवायत की कि मुसलमान पेशाव पाख़ाने और हमबिस्तरी के वक़्त अपने बदन ख़ोलने से शरमाने थे. उनके हक़ में यह आयत उतरी कि अल्लाह से बन्दे का कोई हाल छुपा ही नहीं है लिहाज़ा चाहिये कि वह शरीअत की इजाज़तों पर अमल करता रहे.

पारा ग्याराह समाप्त

सूरए हूद पहला रूकू जारी

और ज़मीन पर चलने वाला कोई^(११) ऐसा नहीं जिसका रिज़क़ (रोज़ी) अल्लाह के करम के ज़िम्मे पर न हो^(१२) और जानता है कि कहाँ ठहरेगा^(१३) और कहाँ सुपुर्द होगा^(१४) सब कुछ एक साफ़ वयान करने वाली किताब^(१५) में है^(६) और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छ दिन में बनाया और उसका अर्श पानी पर था^(१६) कि तुम्हें आजमाएँ^(१७) तुम में किस का काम अच्छा है और अगर तुम फ़रमाओ कि बेशक तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे कि यह^(१८) तो नहीं मगर खुला जादू^(१९) है^(७) और अगर हम उनसे अज़ाब^(२०) कुछ गिनती की मुदत तक हटा दें तो ज़रूर कहेंगे किस चीज़ ने रोका है^(२१) सुन लो जिस दिन उनपर आएगा उन से फेरा न जाएगा और उन्हें घेरगा वही अज़ाब जिसकी हंसी उड़ाते थे^(८)

दूसरा रूकू

और अगर हम आदमी को अपनी किसी रहमत का मज़ा दें^(१) फिर उसे उससे छीन लें, ज़रूर वह बड़ा नाउम्मीद नाशुक्रा है^(२) और अगर हम उसे नेमत का मज़ा दें उस मुसीबत के बाद जो उसे पहुंची तो ज़रूर कहेगा कि वुराइयाँ मुझ से दूर हुई, बेशक वह खुश होने वाला बड़ाई मारने वाला है^(३) मगर जिन्होंने सब्र किया और

وَمَا مِن دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَوْمَ تُنْقَرُهَا وَسَجْدَ رُكُوعًا	وَمَا مِن دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَوْمَ تُنْقَرُهَا وَسَجْدَ رُكُوعًا
مُسْتَقَرًّا وَمُسْتَوْدَعًا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝	مُسْتَقَرًّا وَمُسْتَوْدَعًا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ	وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ
أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ	أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ
أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِن قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَقْبُوءُونَ مِنْ	أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِن قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَقْبُوءُونَ مِنْ
بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا	بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا
سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ وَلَئِن أَخَذْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِلَى	سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ وَلَئِن أَخَذْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِلَى
أَمَةٍ مَّعَدًا وَوَدَّ لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۚ أَلَّا يَوْمَ	أَمَةٍ مَّعَدًا وَوَدَّ لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۚ أَلَّا يَوْمَ
يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا	يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا
بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ وَلَئِن أَدْنَا الْإِنْسَانَ مِمَّا رَحِمْنَا	بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ وَلَئِن أَدْنَا الْإِنْسَانَ مِمَّا رَحِمْنَا
ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ ۚ إِنَّهُ لَيَكُوفُ كَافُورٌ ۝ وَلَئِن	ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ ۚ إِنَّهُ لَيَكُوفُ كَافُورٌ ۝ وَلَئِن
أَدْنَا نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَاءٍ مَشَتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ	أَدْنَا نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَاءٍ مَشَتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ
السَّيِّئَاتِ عَنِّي ۚ إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ	السَّيِّئَاتِ عَنِّي ۚ إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ

مثل

सूरए हूद - पहला रूकू (जारी)

- (११) जानदार हो.
- (१२) यानी वह अपनी कृपा से हर जानदार की अजीविका की देखभाल करता है.
- (१३) यानी उसके रहने की जगह का जानता है.
- (१४) सुपुर्द होने की जगह से, या दफ़्त होने का स्थान मुराद है, या मकान या मौत या कब्र.
- (१५) यानी लौहे मेहफूज़.
- (१६) यानी अर्श के नीचे पानी के सिवा और कोई मख़लूक न थी. इससे यह भी मालूम हुआ कि अर्श और पानी आसमानों और ज़मीनों की पैदायश से पहले पैदा फ़रमाए गए.
- (१७) यानी आसमान व ज़मीन और उनके बीच सृष्टि को पैदा किया, जिसमें तुम्हारे फ़ायदे और मसलिहत हैं ताकि तुम्हें आजमायश में डाले और ज़ाहिर हो कि कौन शुक्र गुज़ार तक़वा वाला फ़रमाँवरदार है और.
- (१८) यानी कुरआन शरीफ़ ज़िम में मरने के बाद उठाए जाने का वयान है यह.
- (१९) यानी डूढ़ और धांग्रा.
- (२०) जिसका वादा किया है.
- (२१) वह अज़ाब क्यों नहीं उतरता, क्या देर है. काफ़िरों का यह जल्दी करना झुटलाने और हंसी बनाने का तौर पर है.

सूरए हूद - दूसरा रूकू

- (१) स्वास्थ और अमन का या आजीविका के विस्तार और धन का.
- (२) कि दायारा इस नेअमत के पाने से मायूस हो जाता है और अल्लाह के फ़रज़ से अपनी आशा तोड़ लेता है और सब्र व रज़ा पर ज़मा नहीं रहता और पिछली नेअमत की नाशुकी करता है.
- (३) शुक्र गुज़ार होने और नेअमत का हक़ अदा करने के बजाय.

अच्छे काम किये^(४) उनके लिये बख्शिश और बड़ा सवाब है^(५) तो क्या जो वही (देववाणी) तुम्हारी तरफ होती है उसमें से कुछ तुम छोड़ दोगे और उसपर दिलतंग होगे^(६) इस बिना पर कि वो कहते हैं उनके साथ कोई खजाना क्यों नहीं उतरा या उनके साथ कोई फरिश्ता आता, तुम तो डर सुनाने वाले हो^(७) और अल्लाह हर चीज़ पर मुहाफ़िज़ (रक्षक) है^(८) क्या ये कहते हैं कि इन्होंने इसे जी से बना लिया, तुम फ़रमाओ कि तुम ऐसी बनाई हुई दस सूरतें ले आओ^(९) और अल्लाह के सिवा जो मिल सके^(१०) सबको बुला लो अगर तुम सच्चे हो^(११) (१३) तो ऐ मुसलमानो और वो तुम्हारी इस बात का जवाब न दे सके तो समझ लो कि वह अल्लाह के इल्म ही से उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई सच्चा मअबूद नहीं, तो क्या अब तुम मानोगे^(१२) (१४) जो दुनिया की ज़िन्दगी और आरायश चाहता हो^(१३) हम उसमें उनका पूरा फल दे देंगे^(१४) और उसमें कमी न देंगे^(१५) ये हैं वो जिनके लिये आखिरत में कुछ नहीं मगर आग और अकारत गया जो कुछ वहां करते थे और नाबूद

صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ
وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ
إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنْزِلَ
عَلَيْهِ كِتَابٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكَ ۚ إِنَّهَا أَنْتَ نَذِيرٌ
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ
قُلْ فَأْتُوا بِشُرُوفٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيَةٍ ۚ وَادْعُوا
مَنْ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝
فَلِئَلَّكُمْ يَشْحَبُوا لَكُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّمَا أُنْزِلَ بِهِ عِلْمُ
اللَّهِ وَأَنَّ لِلَّهِ الْإِلَهَ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝
مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ
إِلَيْهِمْ أَغْمًا لَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ۝
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۚ
وَحَبِطَ مَا صَبَعُوا فِيهَا وَبُطِلَ مَا كَانُوا

- (४) मुसीबत पर साबिर और नेअमत पर शाकिर रहे.
- (५) तिरमिज़ी ने कहा कि इस्तिफ़हाम नकार के अर्थ में है यानी आपकी तरफ जो वही होती है वह सब आप उन्हें पहुंचाएं और दिल तंग न हो. यह तबलीगा रिस्सालत की ताकीद है, हालांकि अल्लाह तआला जानता है कि उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपनी नबुव्वत का हक़ अदा करने में कमी करने वाले नहीं हैं और उसने उनको इससे मअसूम फ़रमाया है. इस ताकीद में रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली भी है और काफ़िरों की माफ़ूसी भी. उनका हंसी उड़ाना नबुव्वत और तबलीगा के काम में अड़चन नहीं हो सकता. अब्दुल्लाह बिन उमैय्या मय्यज़ूमी ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि अगर आप सच्चे रसूल हैं और आपका ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है तो उसने आप पर ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा या आपके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा जो आपकी रिस्सालत की गवाही देता. इसपर यह आयत उतरी.
- (६) तुम्हें क्या परवाह, अगर काफ़िर न मानें और हंसी बनाएं.
- (७) मक्के के काफ़िर कुरआन शरीफ़ की निस्वत.
- (८) क्योंकि इन्सान अगर ऐसा क़त्लाम बना सकता है तो इस जैसा बनाता तुम्हारी क्षमता से बाहर न होगा. तुम अरब हो, अच्छी और साफ़ ज़बान वाले हो, कोशिश करो.
- (९) अपनी मदद के लिये.
- (१०) इसमें कि यह क़त्लाम इन्सान का बनाया हुआ है.
- (११) और यकीन रखोगे कि यह अल्लाह की तरफ़ से है यानी कुरआन का चमत्कार और क़माल देख लेने के बाद ईमान और इस्लाम पर जमे रहें.
- (१२) और अपनी कायरता से आख़िरत पर नज़र न रखना हो.
- (१३) और जो कर्म उन्होंने दुनिया की चाह के लिये किये हैं उनका बदला सेहत व दौलत, रिज़क में विस्तार और औलाद में बहूतान वगैरह से दुनिया ही में पूरा कर देंगे.
- (१४) ज़िहाक ने कहा कि यह आयत मुश्रिकों के बारे में है कि अगर वो दूसरों के काम आए या मोहताजों को दें या फिरा पंगशन हाल की मदद करें या इस तरह कि कोई और नेकी करें तो अल्लाह तआला रिज़क में विस्तार वगैरह से उनके कर्मों का बदला दुनिया ही में दे देता है और आख़िरत में उनके लिये कोई हिस्सा नहीं. एक क़ील यह है कि यह आयत मुनाफ़िक्कों के बारे में उतरी जो आख़िरत के सवाब पर तो विश्वास नहीं रखते थे और ज़िहादों में ग़नीमत का माल हासिल करने के लिये शामिल होते थे.
- (१५) वह उसकी मिसल हो सकता है जो दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी आरायश चाहता हो पंगस नहीं. इन दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है. राशन दलील से वह अक्ली दलील मुराद है जो इस्लाम की सच्चाई का प्रमाणित करे और उस व्यक्ति से जो अपने रय की तरफ़

हुए जो उनके कर्म थे^(१६) तो क्या वो जो अपने रब की तरफ से रौशन दलील पर हो^(१७) और उसपर अल्लाह की तरफ से गवाह आए^(१८) और इस से पहले मूसा की किताब^(१९) पेशवा और रहमत, वो उसपर^(२०) ईमान लाते हैं और जो उसका इन्कारी हो सारे गिरोहों में^(२१) तो आग उसका वादा है, तो ऐ सुनने वाले तुझे कुछ इस में शक न हो, बेशक वह हक है तेरे रब की तरफ से लेकिन बहुत आदमी ईमान नहीं रखते^(२२) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे^(२३) वो अपने रब के हुज़ूर पेश किये जाएंगे^(२४) और गवाह कहेंगे ये हैं जिन्होंने अपने रब पर झूट बोला था, अरे ज़ालिमों पर खुदा की लअनत^(२५) जो अल्लाह की राह से रोकते हैं और उसमें कजी चाहते हैं और वही आखिरत के इन्कारी हैं^(२६) वो थकाने वाले नहीं ज़मीन में^(२७) और न अल्लाह से अलग उनके कोई हिमायती^(२८) उन्हें अज़ाब पर अज़ाब होगा^(२९)

هُود

३॥

وَمَنْ كَذَّبَ

يَعْمَلُونَ ۖ أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ
شَاهِدًا مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كُتِبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً
أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ
فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ
مِن رَّبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ
يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ
الَّذِينَ كَذَّبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى
الظَّالِمِينَ ۖ ۝ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَيَبْغُونَهَا عَوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ۖ
أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا
كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۚ يَضْعَفُ
لَهُمُ الْعَذَابُ مَآ كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا

مَنْزِلَهُ

से रौशन दलील पर हो, वो यहूदी मुराद हैं जो इस्लाम लाए जैसे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम.

(१६) और उसकी सेहत की गवाही दे. यह गवाह कुरआन शरीफ है.

(१७) यानी तौरात.

(१८) यानी कुरआन पर.

(१९) चाहे कोई भी हो. हदीस शरीफ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया, उसकी कसम जिसके दस्ते कुदरत में मुहम्मद की जान है, इस उम्मत में जो कोई भी है यहूदी हो या नसरानी, जिसको भी मेरी ख़बर पहुंचे और वह मेरे दीन पर ईमान लाए बिना मर जाए, वह ज़रूर जहन्नमी है.

(२०) और उसके लिये शरीक और औलाद बताए. इस आयत से साबित होता है कि अल्लाह तआला पर झूट बोलना जुल्म है.

(२१) क़यामत के दिन, और उनसे कर्म पूछे जाएंगे और फ़रिशतों की उनपर गवाही ली जाएगी.

(२२) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि क़यामत के दिन काफ़िरों और दोमली प्रवृत्ति वालों को सारी सृष्टि के सामने कहा जाएगा कि ये वो हैं जिन्होंने अपने रब पर झूट बोला, ज़ालिमों पर खुदा की लअनत. इस तरह वो सारी सृष्टि के सामने रुखा किये जाएंगे.

(२३) अल्लाह को. अगर वह उनपर अज़ाब करना चाहे, क्योंकि वो उसके क़ब्ज़े और उसकी मिल्क में है, न उससे भाग सकते हैं, न बच सकते हैं.

(२४) कि उनकी मदद करें और उन्हें इसके अज़ाब से बचाएं.

(२५) क्योंकि उन्होंने लोगों को खुदा की राह से रोकने और मरने के शब्द उठाने का इन्कार किया.

वो न सुन सकते थे और न देखते^(२४) (२०) वही हैं जिन्होंने अपनी जानें घाटे में डालीं और उनसे खोई गई जो बातें जोड़ते थे^(२१) चाहे अनचाहे वही आखिरत में सबसे ज्यादा नुकसान में हैं^(२२) (२२) वेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और अपने रब की तरफ रुजू लाए वो जन्नत वाले हैं वो उसमें हमेशा रहेंगे^(२३) दोनों फरीक (पक्षों)^(२४) का हाल ऐसा है जैसे एक अंधा और बहरा और दूसरा देखता और सुनता^(२५) क्या उन दोनों का हाल एक सा है^(२६) तो क्या तुम ध्यान नहीं करते^(२७)

तीसरा सूक

और वेशक हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा^(१) कि मैं तुम्हारे लिये साफ डर सुनाने वाला हूँ^(२) कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो वेशक मैं तुमपर एक मुसीबत वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ^(३) (२६) तो उसकी कौम के सरदार जो काफिर हुए थे बोले हम तो तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते हैं^(४) और हम नहीं देखते कि तुम्हारी पैरवी (अनुकरण) किसी ने की हो मगर हमारे कमीनों ने^(५) सरसरी नज़र से^(६) और हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते^(७) बल्कि हम तुम्हें^(८) झूठा खयाल करते हैं^(२७) बोला ऐ मेरी कौम भला वताओ तो अगर मैं अपने रब की

كَانُوا يُصِرُّونَ ۖ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ
وَصَلَّ عَنْهُمْ مِمَّا كَانُوا يَفْعَرُونَ ۖ لَا حَرَمَ أَنَّهُمْ
فِي الْآخِرَةِ هُمْ الْآخَسَرُونَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ وَآخَبْتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ
كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصْمَىٰ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِينَ
مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۚ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ
قَوْمِهِ ۖ إِذِ ابْنَىٰ كُنُوزَ مَبِينٍ ۚ أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا
اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ الْيَوْمِ ۖ فَقَالَ
الْمَلَائِكَةُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا تَرَكُ إِلَّا
بَشَرًا مِثْلَنَا وَمَا تَرَكُ أَتَّبِعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ
أَرَادُوا لَنَا بِاِدْيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ
فَضْلٍ بَلْ نَحْنُكُمْ كَذِبِينَ ۖ قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ

مَثَلًا

(२६) कतादा ने कहा कि वो सत्य सुनने से बहरे हो गए, तो कोई खैर की बात सुनकर नफा नहीं उठाते और न वह कुदरत की निशानियाँ देखकर फायदा उठाते हैं।

(२७) कि उन्होंने जन्नत की जगह जहन्नम को इस्तिवार किया।

(२८) यानी काफिर और मूमीन।

(२९) काफिर उसकी तरह है जो न देखे न सुने, यह दूषित है, और मूमीन उसकी तरह है जो देखता भी है और सुनता है, वह सम्पूर्ण है, सत्य और असत्य की पहचान रखता है।

(३०) हरगिज़ नहीं।

सूरए हूद - तीसरा सूक

(१) उन्होंने कौम से फरमाया।

(२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फरमाया कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम चालीस साल के बाद नबी बनाए गए और नौ सौ पचास साल अपनी कौम की दावत फरमाते रहे और तूफान के बाद साठ बरस दुनिया में रहे, तो आपकी उम्र एक हज़ार पचास साल की हुई। इसके अलावा उम्र शरीफ के बारे में और भी कौल हैं। (खाज़िन)

(३) इस गुमराही में बहुत सी उम्मतें पड़ कर, इस्लाम में भी बहुत से बदनसीब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बशर कहते हैं और हमसरी और दराबरी का फ़ासिद ख़याल रखते हैं। अल्लाह तआला उन्हें गुमराही से बचाए।

(४) कमीनों से मुराद उनकी, वो लोग थे जो उनकी नज़र में छोटे पेशे रखते थे। हकीकत यह है कि उनका यह कौल ख़ालिस जिहालत था, क्योंकि इन्सान का मर्तया दीन के पालने और रसूल की फ़रमाँबरदारी से है, माल, मनसब और पेशे को इसमें दख़ल नहीं। दीनदार, नेक सीरत, पेशावर को हिक्मत से देखना और तुच्छ समझना जिहालत का काम है।

(५) यानी बग़ैर ग़ौरे फ़िक्र के।

(६) माल और रियासत में, उनका यह कौल भी जिहालत भरा था, क्योंकि अल्लाह के नज़दीक बन्द के लिये ईमान और फ़रमाँबरदारी बुज़र्गी का कारण है, न कि माल और रियासत।

(७) नबुव्वत के दावे में और तुम्हारे मानने वालों को इसकी तस्दीक में।

तरफ़ से दलील पर हूँ^(८) और उसने मुझे अपने पाँस से रहमत वरिणी^(९) तो तुम उससे अंधे रहे, क्या हम उसे तुम्हारे गले चपेट दें और तुम बेज़ार हो^(१०) ॥२८॥ और ऐ कौम मैं तुम से कुछ इसपर^(११) माल नहीं मांगता^(१२) मेरा अन्न तो अल्लाह ही पर है और मैं मुसलमानों को दूर करने वाला नहीं^(१३) बेशक वो अपने रव से मिलने वाले हैं^(१४) लेकिन मैं तुमको निरे जाहिल लोग पाता हूँ^(१५) ॥२९॥ और ऐ कौम मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा अगर मैं उन्हें दूर करूँगा, तो क्या तुम्हें ध्यान नहीं^(१६) ॥३०॥ और मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं और न यह कि मैं ग़ैब (अज्ञात) जान लेता हूँ और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ^(१७) और मैं उन्हें नहीं कहता जिनको तुम्हारी निगाहें हकीर (तुच्छ) समझती हैं कि हरगिज़ उन्हे अल्लाह कोई भलाई न देगा, अल्लाह ख़ूब जानता है जो उनके दिलों में है^(१८) ऐसा करूँ^(१९) तो ज़रूर मैं ज़ालिमों में से हूँ^(२०) ॥३१॥ वोले ऐ नूह हम से झगड़े और बहुत ही झगड़े तो लेआओ जिसका^(२१) हमें वादा दे रहे हो अगर तुम सच्चे हो^(२२) ॥३२॥ वोला वह तो अल्लाह तुमपर लाएगा अगर चाहे और तुम

إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَأَتَّبِعِ رَحْمَةً
مِّنْ عِنْدِي فَصَبِّتْ عَلَيْكُمْ ۖ أَلَيْسَ لَكُم مَّا كُنْتُمْ
لَهَا كَارِهُونَ ۖ وَيَقُولُ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۖ
إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدٍ ۖ الَّذِينَ
آمَنُوا إِنَّهُمْ مُّلْقُوا رَبِّهِمْ وَلَكِنِّي آتَاكُمْ مِّمَّا
تَجْهَلُونَ ۖ وَيَقُولُ مَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ
طَرَدْتُهُمْ ۖ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۖ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي
خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي
مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَنْ
يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ ۖ
إِنِّي إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ۖ قَالُوا يَبْنُوهُمْ قَدْ جَدَلْتُنَا
فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ
مِنَ الصّٰدِقِينَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَنْتِظِرُكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ

- (८) जो मेरे दावे की सच्चाई पर गवाह हो।
(९) यानी नबुच्चत अता की।
(१०) और हज़रत या तर्क का नापसन्द रखते हो।
(११) यानी तबलीगी रिश्तालत पर।
(१२) कि तुमपर इसका अदा करना बोझ हो।
(१३) यह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उनकी उस बात के जवाब में फ़रमाया था जो लोग कहते थे कि ऐ नूह, नीचे लोगों को अपनी बैठक से निकाल दीजिये ताकि हमें आपकी मजलिस में बैठने से शर्म न आए।
(१४) और उसके कुर्ब से फ़ायज़ होंगे तो मैं उन्हें कैसे निकाल दूँ।
(१५) ईमानदारों को नीच कहने हो और उनकी क्रूर नहीं करते और नहीं जानते कि वो तुम से बेहतर है।
(१६) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कौम ने आपकी नबुच्चत में तीन संदेह किये थे। एक शूबह तो यह कि “मा नरा लकुम अलैना मिन फ़दलिन” कि हम तुम में अपने ऊपर कोई बढ़ाई नहीं पाते। यानी तुम माल दौलत में हमसे ज्यादा नहीं हो। इसके जवाब में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया “ला अकुलो लकुम इन्दी ख़ज़ाइनुल्लाह” यानी मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं। तां तुम्हारा यह ऐतिराज़ बिल्कुल बे बुनियाद है। मैंने कभी माल की फ़ज़ीलत नहीं जताई और दुनिया की दौलत की तुम को आशा नहीं दिलाई और अपनी दावत को माल के साथ नहीं जोड़ा। फिर तुम यह कैसे कह सकते हो कि हम तुम में कोई माली फ़ज़ीलत नहीं पाते और तुम्हारा यह ऐतिराज़ बिल्कुल बेहदा है। दूसरा शूबह कौम ने यह किया था “मा नराकत तबअका इल्लाल लज़ीना हुम अराज़िलुना बादियर राये” यानी हम नहीं देखते कि तुम्हारी किसी ने पैरवी की हो मगर हमारे कमीनों ने। सरसरी नज़र से मतलब यह था कि वो भी सिर्फ़ ज़ाहिर में मूभिन हैं, बातिन में नहीं। इसके जवाब में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया कि मैं नहीं कहता कि मैं ग़ैब जानता हूँ तो मेरे अहक़ाम ग़ैब पर आधारित हैं ताकि तुम्हें यह ऐतिराज़ करने का मौक़ा नाता। जब मैंने यह कहा ही नहीं तां ऐतिराज़ बे महल है और शरीअत में ज़ाहिर का ऐतिबार है। लिहाज़ा तुम्हारा ऐतिराज़ बिल्कुल बेजा है। साथ ही “ला अजलमुल ग़ैब” फ़रमाने में कौम पर एक लतीफ़ तअरीज़ भी है कि किसी के बातिन पर हुक्म लगाना उसका काम है जो ग़ैब का इल्म रखता हो। मैंने तो इसका दावा नहीं किया, ज़रफ़ मैं नहीं हूँ। तुम किस तरह कहते हो कि वो दिल से ईमान नहीं लाए। तीसरा संदेह इस कौम का यह था कि “मा नराका इल्ला बशरम मिसलुना” यानी हम तुम्हें अपने ही ज़ंसा आदमी देखते हैं। इसके जवाब में फ़रमाया कि मैंने अपनी दावत को अपने फ़रिश्ता होने पर आधारित नहीं किया था कि तुम्हें यह ऐतिराज़ का मौक़ा मिलता कि जताते तो थे वह अपने आप को फ़रिश्ता और थे बशर। लिहाज़ा तुम्हारा यह ऐतिराज़ भी झूठा है।
(१७) नेकी या बुराई, सच्ची वफ़ादारी या दोहरी प्रवृत्ति।

थका न सकोगे^(१९) (३३) और तुम्हें मेरी नसीहत नफ़ा न देगी अगर मैं तुम्हारा भला चाहूँ जबकि अल्लाह तुम्हारी गुमराही चाहे, वह तुम्हारा रब है और उसी की तरफ़ फिरोगे^(२०) (३४) क्या ये कहते हैं कि इन्होंने उसे अपने जी से बना लिया^(२१) तुम फ़रमाओ अगर मैं ने बना लिया होगा तो मेरा गुनाह मुझ पर है^(२२) और मैं तुम्हारे गुनाह से अलग हूँ^(२३)

चौथा सूक़

और नूह को वही हुई कि तुम्हारी क्रौम से मुसलमान न होंगे मगर जितने ईमान ला चुके तो ग़म न खा उसपर जो वो करते हैं^(२४) (३६) और किशती बनाओ हमारे सामने^(२५) और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों के वारे में मुझसे बात न करना^(२६) वो ज़रूर डुबाए जाएंगे^(२७) (३७) और नूह किशती बनाता है, और जब उसकी क्रौम के सरदार उसपर गुज़रते उसपर हंसते^(२८) बोले अगर तुम हमपर हंसते हो तो एक वक़्त हम तुमपर हँसेंगे^(२९) जैसा तुम हंसते हो^(३०) (३८) तो अब जान जाओगे किसपर आता है वह अज़ाब कि उसे रूखा करे^(३१) और उतरता है वह अज़ाब जो हमेशा रहे^(३२) (३९) यहाँ तक कि जब हमारा

شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۖ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُضْحِي
إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَنْصِبَ لَكُمْ أَنْهَ ۚ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ
أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ يُرَبُّكُمْ وَأِلَهُكُمْ ۚ تَرْجِعُونَ ۚ أَمْ
يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ لَعَلِّي إِجْرَائِي
وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَجْعَلُونَ ۚ وَأَوْحَىٰ إِلَيَّ نُوحٌ
أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا
تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۚ وَاصْنَعِ الْفُلَكَ
بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبُنِي فِي الَّذِينَ
ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُمْ مُّعْرِضُونَ ۚ وَاصْنَعِ الْفُلَكَ وَكَلَّمَا
مَرْعِيَهُ مَلَأْ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۚ قَالَ
إِنْ تَسْخَرُوا مِنِّي فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا
تَسْخَرُونَ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ
يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۚ حَتَّىٰ إِذَا

منزل

- (१८) यानी अगर मैं उनके ज़ाहिरी ईमान का झुटलाकर उनके बातिव पर इल्ज़ाम लगाऊँ और उन्हें निकाल दूँ।
(१९) और अल्लाह का शुक्र है कि मैं ज़ालिमों में से हरगिज़ नहीं हूँ तो ऐसा कभी न करूँगा।
(२०) अज़ाब।
(२१) उसको अज़ाब करने से, यानी न उस अज़ाब को रोक सकोगे और न उससे बच सकोगे।
(२२) आखिरत में वही तुम्हारे अअमाल का बदला देगा।
(२३) और इस तरह खुदा के कलाम और उसे मानने से बचते हैं और उसके रसूल पर लौछने लगाते हैं और उनकी तरफ़ झूठ बाँधते हैं जिसकी सच्चाई खुल प्रमाणों और मज़बूत तर्कों से साबित हो चुकी है, लिहाज़ा अब उसने।
(२४) ज़रूर इसका बवाल आएगा लेकिन अल्लाह के करम से मैं सच्चा हूँ तो तुम समझ लो कि तुम्हारे झुटलाने और इन्कार का बवाल तुम पर पड़ेगा।

सूरए हूद - चौथा सूक़

- (१) यानी कुफ़्र और आपको झुटलाना और आपका कष्ट देना, क्योंकि अब आपके दुश्मनों से बदला लेने का वक़्त आ गया।
(२) हमारी हिफ़ाज़त में हमारी तालीम से।
(३) यानी उनकी शफ़ाअत और अज़ाब दूर होने का दुआ न करना, क्योंकि उनका डूबना लिख दिया गया है।
(४) हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से साल के दरख़्त बाँपे। बीस साल में ये दरख़्त तैयार हुए। इस असे में कोई बच्चा पैदा न हुआ। इससे पहले जो बच्चे पैदा हो चुके थे वो बालिग हो गए और उन्होंने भी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दावत कुबूल करने से इन्कार कर दिया और हज़रत नूह किशती बनाने में मशगूल हुए।
(५) और कहते थे नूह क्या कर रहे हो, आप फ़रमाने ऐसा मकान बनाता हैं जो पानी पर चले। यह सुनकर हंसते, क्योंकि आप किशती जंगल में बनाते थे, जहाँ दूर दूर तक पानी न था। वो लोग मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में यह भी कहते थे कि पहले तो आप नबी थे, अब बढ़ई हो गए।
(६) तुम्हें हलाक होता देखकर।
(७) किशती देखकर। रिवायत है कि यह किशती दो साल में तैयार हुई। इसकी लम्बाई तीन ग़ज़, चौड़ाई पचास ग़ज़, ऊँचाई तीस ग़ज़ थी, (इस में और भी कथन हैं) इस किशती में तीन दर्जे बनाए गए थे। निचले दर्जे में जातियर और दरिन्दे, बीच के तबक़े में चौपाए वगैरह, और ऊपर के तबक़े में खुद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और आपके साथी और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का

हुकूम आया^(१०) और तनूर उबला^(११) हमने फ़रमाया किश्ती में सवार करले हर जिन्स(नस्ल) में से एक जोड़ा नर और मादा और जिनपर बात पड़ चुकी है^(१२) उनके सिवा अपने घरवालों और बाकी मुसलमानों को और उसके साथ मुसलमान न थे मगर थोड़े^(१३) (४०) और बोला इसमें सवार हो^(१४) अल्लाह के नाम पर इसका चलना और इसका टहरना^(१५) बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है^(१६) और वह उन्हें लिये जा रही है ऐसी मौजों में जैसे पहाड़^(१७) और नूह ने अपने बेटे को पुकारा और वह उससे किनारे था^(१८) ऐ मेरे बच्चे हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ न हो^(१९) (४२) बोला अब मैं किसी पहाड़ की पनाह लेता हूँ वह मुझे पानी से बचा लेगा, कहा आज अल्लाह के अज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं मगर जिसपर वह रंहम करे, और उनके बीच में मौज आड़े आई तो वह डूबतों में रह गया^(२०) (४३) और हुकूम फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और आसमान थम जा और पानी खुशक कर दिया गया और काम तमाम हुआ और किश्ती^(२१) जूदी पहाड़ पर टहरी^(२२) और फ़रमाया गया कि दूर हों वे इन्साफ़ लोग^(२३) और नूह ने अपने रब को पुकारा अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरा बेटा भी

نُوحٌ

۳۱۵

وَتِلْكَ آيَاتُ الْكُرْآنِ الَّتِي نُنَزِّلُهَا عَلَيْكَ

جَاءَ أَمْرُنَا وَقَارَ التَّنُورُ فَلَنَّا حِمْلُ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ وَمَا آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ۝ وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرِبَهَا وَمُزْسِمُهَا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ سَوَادٌ نُوْحٌ ابْنُهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَتَّبِعُنِي أَزْكَبَ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ۝ قَالَ سَاوِي إِلَى جَبَلٍ يَعْصِمُنِي مِنَ الْمَاءِ ۝ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ رَحِمَ ۝ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ۝ وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكِ وَبَسْمَاءُ أَقْلَعِي وَغِيصَ الْمَاءُ وَفُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِلْكَافِرِينَ ۝ وَنَادَى نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي

مَنْزِلٌ

जसदे सुवारक, जो औरतों और मर्दों के बीच हाथल था, और खाने का सामान था, पक्षी भी ऊपर के ही तबके में थे, (आजिन ब मदारिक)

(८) दुनिया में और डूबने का अज़ाब है.

(९) यानी आग्निरत का अज़ाब.

(१०) अज़ाब व हलाकत का.

(११) और पानी ने इसमें से जोश मारा, तन्दूर से, या ज़मीन का ऊपरी हिस्सा मुराद है, या यही तन्दूर जिसमें रोटी पकाई जाती है, इसमें भी कुछ कौल हैं. एक यह है कि वह तन्दूर पत्थर का था, हज़रत हब्बा का, जो आपको तबके में पहुंचा था, और वह या शाम में था, या हिन्द में. तन्दूर का जोश मारना अज़ाब आने की निशानी थी.

(१२) यानी उनके हलाक का हुकूम हो चुका है. और उन से मुराद आपकी बीबी बाइला जो ईमान न लाई थी और आपका बेटा कनआन है. चुगांचे हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उन सबको सवार किया. जानवर आपके पास आते थे और आपका दायाँ हाथ नर पर और बायाँ मादा पर पड़ता था और आप सवार करते जाते थे.

(१३) मक़ातिल ने कहा कि कुल मर्द औरत बहत्तर थे. इसमें और कथन भी हैं. सही संख्या अल्लाह जानता है. उनकी तादाद और किसी सही हदीस में नहीं आई है.

(१४) यह कहते हुए कि

(१५) इसमें तालीम है कि बन्दे को चाहिये जब कोई काम करना चाहे तो बिस्मिल्लाह पढ़कर शुरू करे ताकि उस काम में बरकत हो और वह भलाई का कारण बने. ज़िहाक ने कहा कि जब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम चाहते थे कि किश्ती चले तो बिस्मिल्लाह फ़रमाते थे. किश्ती चलने लगती थी, और जब चाहते थे कि टहर जाए, बिस्मिल्लाह फ़रमाते थे, टहर जाती थी.

(१६) चालीस दिन रात आसमान से वर्षा होती रही और ज़मीन से पानी उबलता रहा, यहाँ तक कि सारे पहाड़ डूब गए.

(१७) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से अलग था, आपके साथ सवार न हुआ था.

(१८) कि हलाक हो जाएगा. यह लड़का दोमाली प्रवृत्ति का था. अपने बाप पर खुद को मुसलमान ज़ाहिर करता था और अन्दर अन्दर काफ़िरों के साथ मिला हुआ था. (हुसैनी)

(१९) जब तूफ़ान अपनी चरम सीमा पर पहुंचा और काफ़िर डूब चुके तो अल्लाह का हुकूम आया.

(२०) छः महीने सारी धरती की परिक्रमा यानी तवाफ़ करके.

(२१) जो मूसल या शाम की सीमाओं में स्थित है. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम किश्ती में दसवीं रजब को बैठे और दसवीं मुहर्रम को किश्ती जूदी पहाड़ पर टहरी. तो आपने उसके शुक्र का रोज़ा रखा और अपने सारे साथियों का भी रोज़े का हुकूम फ़रमाया.

तो मेरा घर वाला है^(२२) और वेशक तेरा वादा सच्चा है और तू सबसे बढ़कर हुक्म वाला^(२३) (४५) फ़रमाया ऐ नूह वह तेरे घरवालों में नहीं^(२४) वेशक उसके काम बड़े नालायक हैं तो मुझ से वह बात न मांग जिसका तुझे इल्म नहीं^(२५) मैं तुझे नसीहत फ़रमाता हूँ कि नादान न बन^(४६) अर्ज़ की ऐ मेरे रव मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि तुझसे वह चीज़ माँगू जिसका मुझे इल्म नहीं, और अगर तू मुझे न बख़्शे और रहम न करे तो मैं ज़िंयाँकार (तुक़सान वाला) हो जाऊँ^(४७) फ़रमाया गया ऐ नूह किशती से उतर हमारी तरफ़ से सलाम और वरकतों के साथ^(२६) जो तुझपर है और तेरे साथ के कुछ ग़िरोहों पर^(२७) और कुछ ग़िरोह हैं जिन्हें हम दुनिया वरतने देंगे^(२८) फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दर्दनाक अज़ाब पहुंचाएंगे^(२९) (४८) ये ज़ौद की ख़बरें हम तुम्हारी तरफ़ वही (अल्लाह का कलाम) करते हैं^(३०) इन्हें न तुम जानते थे न तुम्हारी क़ौम इस^(३१) से पहले तो सब्र करो^(३२), वेशक भला अंजाम परहेज़गारों का^(३३) (४९)

पाँचवां सूक़

और आद की तरफ़ उनके हम क़ौम हूद को^(३) कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो^(४) उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद

مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَكَمِينَ ۝ قَالَ يُنُومُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ ۝ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۖ إِنِّي أَعْطُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ ۖ وَالْأُتُغَفَّرُ لِي وَتَرْحَمَنِي أَكُنْ مِنَ الْخَيْرِينَ ۝ قِيلَ يُنُومُ ۖ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ ۖ وَعَلَىٰ أُمَمٍ مِّمَّنْ مَعَكَ ۖ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَكْسُهُمُ مِمَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ ۖ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هَذَا ۖ فَاصْبِرْ ۚ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ۖ ۝ وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودٌ ۖ قَالَ يُقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهِ غَيْرُهُ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا

مَنْزِل

- (२२) और तूने मुझ से मेरे और मेरे घर वालों की निजात का वादा फ़रमाया।
 (२३) तो इसमें क्या हिक्मत है, शीख़ अबू मन्सूर मातुरीदी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का बेटा कनआन मुनाफ़िक़ था और आपके सामने शूद को ईमान वाला ज़ाहिर करता था, अगर वह अपना कुफ़्र ज़ाहिर कर देता तो अल्लाह तआला से उसकी निजात की दुआ न करते, (मदारिक)
 (२४) इससे साबित हुआ कि नसब के रिश्ते से दीन का रिश्ता ज़्यादा मज़बूत है।
 (२५) कि वह मांगने के क़ाबिल है या नहीं।
 (२६) इन वरकतों से आपकी सन्तान और आपके अनुयाइयों की कसरत और बहुतांत मुग़द है कि बहून से नबी और दीन के इमाम आपकी पाक नरल से हुए, उनकी निस्वत फ़रमाया कि ये वरकतें...
 (२७) मुहम्मद बिन कअब ख़ुज़ाई ने कहा कि इन ग़िरोहों में क़यामत तक होने वाला हर मूमिन दाख़िल है।
 (२८) इससे हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बाद पैदा होने वाले काफ़िर ग़िरोह मुग़द हैं जिन्हें अल्लाह तआला उनकी मीआदों तक फ़राख़ी, ग़ेश और रिज़क में बुहतात अता फ़रमाएगा।
 (२९) आख़िरत में।
 (३०) ये सम्बोधन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को फ़रमाया।
 (३१) ख़बर देन।
 (३२) अपनी क़ौम की तकलीफ़ों पर, जैसा कि नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम की तकलीफ़ों पर सब्र किया।
 (३३) कि दुनिया में कामयाब और विजयी और आख़िरत में इनाम और अज़ा बदला पाए हुए।

सूरए हूद - पाँचवां सूक़

- (१) नबी बनाकर भेजा, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को "अम्ह" नसब के ऐतिबार से कहा गया है इसी लिये आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैहे ने इस शब्द का अनुवाद हम क़ौम किया।
 (२) उसकी तौहीद को मानते रहो, उसके साथ किरी को शरीक न करो।

नहीं तुम तो निरे मुफ़्तरी (झूठे) हो^(३) ॥५०॥ ऐ कौम मैं उसपर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता, मेरी मजदूरी तो उसीके ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया^(४) तो क्या तुम्हें अक्ल नहीं^(५) ॥५१॥ और ऐ मेरी कौम अपने रब से माफ़ी चाहो^(६) फिर उसकी तरफ़ रज़ू लाओ तुमपर जोर का पानी भेजेगा और तुममें जितनी शक्ति है उससे और ज्यादा देगा^(७) और जुर्म करते हुए रूग्दानी (विरोध) न करो^(८) ॥५२॥ बोले ऐ हूद तुम कोई दलील लेकर हमारे पास न आएं^(९) और हम खाली तुम्हारे कहने से अपने खुदाओं को छोड़ने के नहीं न तुम्हारी बात पर यकीन लाएं^(१०) ॥५३॥ हम तो यही कहते हैं कि हमारे किसी खुदा की तुम्हें बुरी झपट पहुंची^(११) कहा मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं बेज़ार हूँ उन सब से जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा उसका शरीक ठहराते हो^(१२) ॥५४॥ तुम सब मिलकर मेरा बुरा चाहो^(१३) फिर मुझे मुहलत न दो^(१४) ॥५५॥ मैंने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब, कोई चलने वाला नहीं^(१५) जिसकी छोटी उसकी कुदरत के कब्जे में न हो^(१६) वेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर मिलता है^(१७) ॥५६॥ फिर अगर तुम मुंह फेरो तो मैं तुम्हें पहुंचा चुका जो तुम्हारी तरफ़ लेकर भेजा गया^(१८) और मेरा रब तुम्हारी जगह औरों

مُفْتَرُونَ ۖ يَقُولُ لَا اسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ اجْرًا اِنْ اَجْرِي اِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي ۚ اَفَلَا تَتَّقُونَ ۚ وَيَقُولُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُؤَوُّوْا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَّوَلَوْا مُجْرِمِينَ ۚ قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ بِاِنْ تَقُولُ اِلَّا اَعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوْءٍ ۚ قَالَ اِنِّيْ اَشْهَدُ اَللّٰهُ وَاشْهَدُوْا اِنِّيْ بَرِيْءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۚ مِنْ دُوْنِهِ فَعَلَيْكُمْ وَاِنِّيْ حَمِيْدٌ لَّكُمْ تَنْظِرُونَ ۚ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۚ مَا مِنْ دَآئِبَةٍ اِلَّا هُوَ اَخْذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ اِنْ رَبِّيْ عَلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ قَالَنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّا اُرْسِلْتُ بِهٖ اِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَحْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ

- (३) जो बुतों का खुदा का शरीक बताते थे।
- (४) जितने रसूल तशरीफ़ लाए सवने अपनी कौमों से यही फ़रमाया और नसीहत ख़ालिस वही है जो किसी लालच से न हो।
- (५) इतना समझ सको कि जो केवल बेगरज़ नसीहत करता है वह यही नसीहत शुभचिंतक और सच्चा है। वास्तव यान्ना जो किसी का गुमराह करता है, ज़रूर किसी न किसी मतलब और किसी न किसी उद्देश्य से करता है। इससे सच झूठ में आसानी से पहचान की जा सकती है।
- (६) ईमान लाकर, जब आद कौम ने हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की दावत कुबूल न की तो अल्लाह नआला ने उनके कुफ़्र के कारण तीन साल तक बारिश बन्द करदी और बहुत सख्त दुष्काल नमूदार हुआ और उनकी औरतों को बाँझ कर दिया। जब ये लोग बहुत परेशान हुए तो हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने वादा फ़रमाया कि अगर वो अल्लाह पर ईमान लाएं और उसके रसूल की तस्दीक करें और उसके समक्ष तौबह व इस्तीफ़ा करें तो अल्लाह नआला बारिश भेजेगा और उनकी ज़मीनों को हरा भरा करके ताज़ा ज़िन्दगी अता फ़रमाएगा और कुबूल और औलाद देगा। हज़रत इमाम हसन रदियल्लाहो अन्हो एक बार अमीरे मुआविया के पास तशरीफ़ ले गए तो आप से अमीर मुआविया के एक नौकर ने कहा कि मैं मालदार आदमी हूँ मगर मेरे कोई औलाद नहीं है मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइये जिससे अल्लाह मुझे औलाद दे, आपने फ़रमाया कि रोज़ाना इस्तीफ़ा पढ़ा करो, उसने इस्तीफ़ा की यहाँ तक कसरत की कि रोज़ाना सात सौ बार इस्तीफ़ा पढ़ने लगा। इसकी वरकत से उस शख्स के दस बेटे हुए, यह ख़बर हज़रत मुआविया को हुई तो उन्होंने उस शख्स से फ़रमाया कि तूने हज़रत इमाम से यह क्या न दरियाफ़्त किया कि यह अमल हुज़ूर ने कहाँ से हासिल फ़रमाया, दूसरी बार जब उस शख्स की हाज़िरी इमाम की ख़िदमत में हुई तो उसने यह दरियाफ़्त किया, इमाम ने फ़रमाया कि तू ने हज़रत हूद का कौल नहीं सुना जो उन्होंने फ़रमाया "यज़िदकुम कुबलत इला कुबलतिकुम" और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का यह इरशाद "युमदिदकुम बि अमवालिं व वनीन", रिज़क में कसरत और औलाद पाने के लिये इस्तीफ़ा का बहुतात के साथ पढ़ना कुरआनी अमल है।
- (७) माल और औलाद के साथ।
- (८) मेरी दावत से।
- (९) जो तुम्हारे दावे की सच्चाई का प्रमाण है, और यह बात उन्होंने बिल्कुल ग़लत और झूठ कही थी, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने उन्हें ज़ा चमत्कार दिखाए थे उन सब से इन्कार कर बैठे।
- (१०) क़ौमी तुम जो बुतों का बुरा कहते हो, इसलिये उन्होंने तुम्हें दीवाना कर दिया, मतलब यह है कि अब जो कुछ कहते हो यह

को ले आएगा^(१६) और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे^(१७) वेशक मेरा रब हर चीज़ पर निगहवान है^(१८) और जब हमारा हुक्म आया हमने हूद और उसके साथ के मुसलमानों को^(१९) अपनी रहमत फ़रमाकर बचा लिया^(२०) और उन्हें^(२१) सख्त अज़ाब से निजात दी^(२२) और ये आद हैं^(२३) कि अपने रब की आयतों से इन्कारी हुए और उसके रसूलों की नाफ़रमानी की और हर वड़े सरकश (नाफ़रमान) हठधर्म के कहने पर चले^(२४) और उनके पीछे लगी इस दुनिया में लअनत और क़यामत के दिन, सुन लो वेशक आद अपने रब से इन्कारी हुए, अरे दूर हों आद हूद की क़ौम^(२५)

छटा रूकू

और समूद की तरफ़ उनके हम क़ौम सालेह को^(१) कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो^(२) उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं^(३) उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया^(४) और उसमें तुम्हें बसाया^(५) तो उससे माफ़ी चाहो फिर उसकी तरफ़ रूजू लाओ, वेशक मेरा रब करीब है हुआ सुनने वाला^(६) बोले ऐ सालेह इससे पहले तो तुम हम में होनहार मालूम होते थे^(७) क्या तुम हमें इससे मना करते हो कि अपने बाप दादा के मअबूदों को पूजें और वेशक जिस बात की तरफ़ हमें बुलाते हो हम उससे एक वड़े धोखा डालने

وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا إِنْ رَّبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَظِيظٌ ۝
وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَحْنُ الْغَالِبُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
بِرَحْمَةِ رَبِّهِمْ وَمِنَ عَذَابٍ عَلِيمٍ ۝
وَبَلَّغْ عَادَ مَجْدُهَا يَا أَيُّهَا رَّبُّهُمْ وَعَصُوا رُسُلَهُ
وَاتَّبِعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝ وَاتَّبِعُوا فِي هَذِهِ
الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا
رَبَّهُمْ ۝ أَلَا بَعْدَ الْعَادِ الْإِسْرَافُ ۝ وَاللَّهُ تَعَالَى
أَخَاهُمْ صَاحِبًا ۝ قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ
مِنْ إِلَهِ غَيْرِهِ ۝ هُوَ أَنشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَ
اسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوا لَهُ ثُمَّ تَوَلَّوْا إِلَيْهِ
إِنْ رَبِّي قَرِيبٌ مُجِيبٌ ۝ قَالُوا يَظْلِمُ قَدْ كُنْتَ
فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَذَا ۝ أَتَنْهَانَا أَنْ نَعْبُدَ
مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّ لَإِفْكًا بَيْنَنَا وَتَدْعَاؤَنَا

दीवानगी की बातें हैं।

- (११) यानी तुम और वो जिन्हें तुम मअबूद सझते हो, सब मिलकर मुझे नुक़सान पहुंचाने की कांशिश करो।
- (१२) मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मअबूदों की और तुम्हारी मक्कारियों की कुछ परवाह नहीं है और मुझे तुम्हारी शानों शीकत और कुबूल से कुछ डर नहीं, जिन का तुम मअबूद कहते हो, वो पत्थर बेजान हैं, न किसी को नफ़ा पहुंचा सकते हैं न नुक़सान, उनकी क्या हकीकत कि वो मुझे दीवाना बना सकते, यह हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का चमत्कार है कि आपने एक ज़बरदस्त और ताक़तवर क़ौम से, जो आपके खून की प्यासी और जान की दुश्मन थी, इस तरह के कलामान फ़रमाए और कुछ भी ख़ौफ़ न किया और वह क़ौम अत्यन्त दुश्मनी के बावजूद आपको तकलीफ़ न पहुंचा सकी।
- (१३) इसी में बनी आदम और हैवान सब आ गए।
- (१४) यानी वह सबका मालिक है और सब पर मालिक और कुदरत वाला और क्षमता वाला है।
- (१५) और हुज़त साबित हो चुकी।
- (१६) यानी अगर तुमने ईमान से मुंह फेरा और जो अहक़ाम में तुम्हारी तरफ़ लाया है उन्हें कुबूल न किया तो अल्लाह तुम्हें हलाक कर देगा और तुम्हारे बजाय एक दूसरी क़ौम को तुम्हारे इलाक़ों और तुम्हारे मालों का मालिक बना देगा, जो उसकी तीहीद में अक्कीदा रखते हो और उसकी इबादत करें।
- (१७) क्योंकि वह इस से पाक है कि उसे कोई तकलीफ़ पहुंचे लिहाज़ा तुम्हारे मुंह फेरने का जो नुक़सान है वह तुम्हें को पहुंचेगा।
- (१८) और किसी की कहनी करनी उससे छुपी नहीं, जब क़ौम हूद ने नसीहत कुबूल न की तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उनके अज़ाब का हुक्म लागू हुआ।
- (१९) जिनकी संख्या चार हज़ार थी।
- (२०) और क़ौम आद को हवा के अज़ाब से हलाक कर दिया।
- (२१) यानी जैसे मुसलमानों को दुनिया के अज़ाब से बचाया ऐसे ही आख़िरत के।
- (२२) यह सम्बांधत है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत को और "तिल्क़" इशारा है क़ौम आद की क़ब्रों और उनके मकानों वीरह की तरफ़, मक़सद यह है कि ज़मीन में चलो उन्हें देखो और सबक पकड़ो।

वाले शक में हैं (६२) बोला ऐ मेरी क्रीम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ से रीशन दलील पर हूँ और उसने मुझे अपने पास से रहमत बख्शी (६३) तो मुझे उससे कौन बचाएगा और मैं उसकी नाफरमानी करूँ (६४) तो तुम मुझे सिवा चुकसान के कुछ न बचाओगे (६५) और ऐ मेरी क्रीम यह अल्लाह का नाका (ऊंटनी) है तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए और इसे बुरी तरह हाथ न लगाना कि तुमको नज़दीक अज़ाब पहुंचेगा (६६) तो उन्होंने (६७) उसकी कूचें काटी तो सालेह ने कहा अपने घरों में तीन दिन और वरत लो (६८) यह वादा है कि झूटा न होगा (६९) फिर जब हमारा हुक्म आया हमने सालेह और उसके साथ के मुसलमानों को अपनी रहमत फ़रमाकर (७०) बचा लिया और उस दिन की रूसवाई से, वेशक तुम्हारा रब कबी (शक्तिशाली) इज़्जत वाला है (७१) और ज़ालिमां को चिंघाड़ ने आ लिया (७२) तो सुबह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए (७३) मानो कभी यहाँ बसे ही न थे, सुन लो वेशक समूद अपने रब से इन्कारी हुए, अरे लअनत हो समूद पर (७४)

إِلَيْهِ مُرِيبٌ ۝ قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ
عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَأَنْبِئِي مِنْهُ رَحْمَةً فَكُنْ
يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ لَفُتَا تَزِيدُونَنِي
غَيْرَ تَخْصِيرٍ ۝ وَيَقَوْمِ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ
آيَةٌ فَذُرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا
بِسَوْءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۝ فَعَقَرُوهَا
فَقَالَ كَتُمْتُمُونَا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ذَرْكُ
وَعْدًا غَيْرُ مَكْدُوبٍ ۝ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا بَخَّيْنَا
صُلِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِن
خِزْيِ يَوْمِئِذٍ إِنْ رَبُّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝
وَآخِذِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي
دِيَارِهِمْ جُثَيِّمِينَ ۝ كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا أَلَا إِنَّ
ثَمُودَ أَكْفَرًا بِرَبِّهِمْ ۝ أَلَا بُعْدًا لِّثَمُودَ ۝

सूरए हूद - छटा रूकू

- (१) भंजा तो हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने उन से.
- (२) और उसकी बहदानियत को मानो.
- (३) सिर्फ़ वही इयादत के लायक है, क्योंकि.
- (४) तुम्हारे दादा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को इससे पैदा करके और तुम्हारी नस्ल की असल नुतकों के मादों को इस से बताकर.
- (५) और ज़मीन को तुमसे आवाद किया. जिहाक ने 'इस्तअमरकुम' के मानो ये बयान किये हैं कि तुम्हें लम्बी उम्र दी यहाँ तक कि उनकी उम्र तीन सौ बरस से लेकर हज़ार बरस तक की हुई.
- (६) और हम उम्मीद करते थे कि तुम हमारे सरदार बनोगे क्योंकि आप कमज़ोरों की मदद करने थे. फ़कीरों पर सज़ावत फ़रमाते थे. जब आपने तौहीद की दावत दी और बुतों की बुराईयाँ बयान कीं तो क्रीम की उम्मीद आपसे कट गई और कहने लगे.
- (७) हिक्मत और नबुव्वत अता की.
- (८) रिसालत की तयलीग और बुत परस्ती से रोकने में.
- (९) यानी मुझे तुम्हारे घाटे का अनुभाव और ज़्यादा होगा.
- (१०) क्रीम समूद ने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम से चमत्कार तलब किया था (जिसका बयान सूरए अअराफ़ में हो चुका है) आपने अल्लाह तआला से दुआ की तो अल्लाह के हुक्म से पत्थर से ऊंटनी पैदा हुई. यह ऊंटनी उनके लिये निशानी और चमत्कार था. इस आयत में उस ऊंटनी के बारे में अहकाम इश्शाद फ़रमाए गए कि उसे ज़मीन में चरने दो और कोई तकलीफ़ न पहुंचाओ. बरता दुनिया ही में अज़ाब में जकड़े जाओगे और मोहलत न पाओगे.
- (११) अल्लाह के हुक्म का विरोध किया और बुधवार के.
- (१२) यानी जुमुए तक जाँ कुछ दुनिया का रेश करना है करलो. शनिवार को तुमपर अज़ाब आएगा. पहले रोज़ तुम्हारे चेहरे पीले हो जाएंगे, दूसरे रोज़ सुर्ख और तीसरे रोज़, यानी जुमुए को काले, और सनीचर को अज़ाब नाज़िल हो जाएगा.
- (१३) चुगांचे ऐसा ही हुआ.
- (१४) इन बलाओं से.
- (१५) यानी भयातक आवाज़ ने जिसकी हैबत से उनके दिल फट गए और वो सब के सब मर गए.

सातवाँ सूक

और वेशक हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास^(१) खुशखबरी लेकर आए, बोले सलाम^(२) कहा सलाम फिर कुछ देर न की कि एक बछड़ा भुना-ले आए^(३) ॥६९॥ फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ नहीं पहुंचते उनको ऊपरी समझा और जी ही जी में उनसे डरने लगा, बोले डरिये नहीं हम लूत क्रौम की तरफ़^(४) भेजे गए हैं ॥७०॥ और उसकी बीबी^(५) खड़ी थी वह हंसने लगी तो हमने उसे^(६) इसहाक की खुशखबरी दी और इसहाक के पीछे^(७) यअकूब की^(८) ॥७१॥ - बोली हाय खराबी क्या मेरे बच्चा होगा और मैं वूझी हूँ^(९) और ये हैं मेरे शौहर वूढ़े^(१०) वेशक यह तो अचंभे की बात है ॥७२॥ फ़रिश्ते बोले क्या अल्लाह के काम का अचंभा करती हो अल्लाह की रहमत और उसकी वरकतें तुमपर इस घर वालों, वेशक^(११) वही है सब खूबियों वाला इज्जत वाला ॥७३॥ फिर जब इब्राहीम का डर कम हुआ और उसे खुशखबरी मिली हम से लूत क्रौम के बारे में झगड़ने लगा^(१२) ॥७४॥ वेशक इब्राहीम तहम्मूल वाला बहुत आहें करने वाला रज्जू लाने वाला है^(१३) ॥७५॥ ऐ इब्राहीम इस खयाल में न पड़ वेशक तेरे रब का हुक्म आ चुका, और वेशक उनपर अज़ाब आने वाला है कि फेरा

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا
سَلَامٌ قَالَ سَلَامٌ فَمَا لَبِثَ أَنْ جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِيذٍ ۝
فَلَمَّا رَأَى أَن يُصَلِّى إِلَيْهِ تُكْرَهُمْ وَأَوْجَسَ
مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَى
قَوْمٍ لَّوُطٍ ۝ وَامْرَأَتُهُ قَائِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنَاهَا
بِإِسْحَقَ ۖ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَقَ يَعْقُوبَ ۝ قَالَتْ
يُؤْتِكُنِي إِيلَٰدًا وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَذَا بَعْلِي شَيْخًا
إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ۝ قَالُوا أَتَعْجَبِينَ مِنْ أَمْرِ
اللَّهِ رَحِمَتُ اللَّهِ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ
إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ۝ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ
الرُّؤُوءُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَى يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ
لُوطٍ ۝ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ۝
بِإِبْرَاهِيمَ أَعْرَضَ عَنْ هَٰذَا إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ

منزل

सूरए हूद - सातवाँ सूक

- (१) सादा-रूप नौजवानों की सुंदर शक्तों में हज़रत इस्हाक और हज़रत यअकूब अलैहिस्सलाम की पैदाइश की.
- (२) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने.
- (३) मुफ़स्सिरों ने कहा है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बहुत ही मेहमान नवाज़ थे. बग़ैर मेहमान के खाना न खाने. उस वक़्त ऐसा इतिफ़ाक़ हुआ कि पन्द्रह रोज़ से कोई मेहमान न आया था. आप इस ग़म में थे. इन मेहमानों को देखते ही आपने उनके लिये खाना लाने में जल्दी फ़रमाई. चूँकि आप के यहाँ ग़रयें बहुत थीं इसलिये बछड़े का भुना हुआ गोشت सामने लाया गया. इससे मालूम हुआ कि ग़ाय का गोشت हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दस्तख़्वात पर ज़्यादा आता था और आप उसका पसन्द फ़रमाते थे. ग़ाय का गोشت खाने वाले अगर सुचनते इब्राहीम अलैहिस्सलाम अदा करने की नियत करें तो ज़्यादा सबाब पाएँ.
- (४) अज़ाब करने के लिये.
- (५) हज़रत सारा पद के पीछे.
- (६) उसके बेटे.
- (७) हज़रत इस्हाक के बेटे.
- (८) हज़रत सारा को खुशख़बरी देने की वजह यह थी कि औलाद की खुशी औरतों को नदों से ज़्यादा होती है. और यह कारण भी था कि हज़रत सारा के कोई औलाद न थी और इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम मौजूद थे. इस खुशख़बरी के साथ साथ एक खुशख़बरी यह भी थी कि हज़रत सारा की उम्र इतनी लम्बी होगी कि वो पोने को भी देखेंगी.
- (९) मेरी उम्र नब्बे से ऊपर हो चुकी है.
- (१०) जिनकी उम्र एक सौ बीस साल की हो गई है.
- (११) फ़रिश्तों के कलाम के माने ये हैं कि तुम्हारे लिये क्या आश्चर्य की बात है, तुम इस घर में हो जो चमत्कारों और अल्लाह तआला की रहमतों और वरकतों का केन्द्र बना हुआ है. इस आयत से साबित हुआ कि बीबियों पहले बेटे में शामिल हैं.
- (१२) यात्री कलाम और सवाल करने लगा और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मुजादिला यह था कि आप ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि क्रौमे लूत की बस्तियों में अगर पचास ईमानदार हों तो भी उन्हें हलाक करोगे. फ़रिश्तों ने कहा, नहीं. फ़रमाया अगर चालीस हों, उन्होंने कहा ज़ब भी नहीं. आपने फ़रमाया, और तीस हों. उन्होंने कहा, जब भी नहीं. आप इस तरह फ़रमाते रहे. यहाँ तक कि आपने फ़रमाया, अगर एक मुसलमान मर्द मौजूद हो तब हलाक कर दोगे. उन्होंने कहा, नहीं. तो आपने फ़रमाया, इस में लूत अलैहिस्सलाम हैं. इसपर फ़रिश्तों ने कहा, हमें मालूम है जो वहाँ हैं. हम हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को और उनके घर वालों को

न जाएगा (७६) और जब लूत के पास हमारे फ़रिश्ते आए (७७) उसे उनका ग़म हुआ और उनके कारण दिल तंग हुआ और बोला यह बड़ी सख़ी का दिन है (७८) और उसके पास उसकी क़ौम दौड़ती आई और उन्हें आगे ही से बुरे कामों की आदत पड़ी थी (७९) कहा ऐ क़ौम यह मेरी क़ौम की बेटियाँ हैं ये तुम्हारे लिये सुथरी हैं तो अल्लाह से डरो (८०) और मुझे मेरे मेहमानों में रूखा न करो, क्या तुम में एक आदमी भी नेक चलन नहीं (८१) बोले तुम्हें मालूम है कि तुम्हारी क़ौम की बेटियों में हमारा कोई हक़ नहीं (८२) और तुम ज़रूर जानते हो जो हमारी ख़ाहिश है (८३) बोले ऐ काश मुझे तुम्हारे मुकाबिल ज़ोर होता या किसी मज़बूत पाए की पनाह लेता (८४) फ़रिश्ते बोले ए लूत हम तुम्हारे सब के भेजे हुए हैं (८५) वो तुम तक नहीं पहुँच सकते (८६) तो अपने घर वालों को रातों रात ले जाओ और तुम में कोई पीठ फेर कर न देखे (८७) सिवाए तुम्हारी औरत के उसे भी वही पहुँचना है जो उन्हें पहुँचेगा, (८८) बेशक उनका वादा सुबह के वक़्त है (८९) क्या

رَبِّكَ وَانْتَهَمُ إِلَيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ۝
وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيقَىٰ إِلَيْهِمْ وَصَاقٍ
بِهِمْ ذُرْعًا وَقَالَ هَذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ۝ وَجَاءَهُ
قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ ۚ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ
السَّيِّئَاتِ ۚ قَالَ يَقَوْمِ كَهَؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ
لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَخْزُونِ فِي صَنِيعِي ۚ أَلَيْسَ
مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيدٌ ۚ قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا
فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ۝
قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ أَوْ إِيَّايَ إِلَهٌ رَّكُنٌ
شَدِيدٌ ۚ قَالُوا يَلُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ
يَصْلُوا إِلَيْكَ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ
وَلَا يَلْفُتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا امْرَأَتُكَ ۚ إِنَّهُ مُصِيبُهَا
مَا أَصَابَهُمْ ۚ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۚ أَلَيْسَ الصُّبْحُ

बचाएंगे सिवाए उनकी औरत के. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मक़सद यह था कि आप अज़ाब में डर चाहते थे ताकि इस बस्ती वालों को कुछ और गुनाह से बाज़ आने के लिये एक फ़ुरसत और मिल जाए. चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की विशेषता में इशाराद होता है.

(१३) इन विशेषताओं से आपकी रिक़कत क़त्ब और आपकी राफ़त व रहमत मालूम होती है. जो इस बहस का कारण हुई. फ़रिश्तों ने कहा.

(१४) हसीन सूरतों में, और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने उनकी हैअत और ज़माल का देखा तो क़ौम की ख़बासत और बदअमली का ख़याल करके.

(१५) रिवायत है कि फ़रिश्तों को अल्लाह का हुक्म यह था कि वो क़ौमे लूत को उस वक़्त तक हलाक न करें जबतक कि हज़रत लूत अलैहिस्सलाम खुद इस क़ौम की बद अमली पर चार बार ग़वाही न दें. चुनांचे जब ये फ़रिश्ते हज़रत लूत अलैहिस्सलाम से मिले तो आपने उनसे फ़रमाया क्या तुम्हें इस बस्ती वालों का हाल मालूम न था. फ़रिश्तों ने कहा, इनका क्या हाल है. आपने फ़रमाया मैं ग़वाही देता हूँ कि अमल के एतियार से बस्ती के ऊपर यह बदतरीन बस्ती है. यह बात आपने चार बार फ़रमाई. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की औरत जो काफ़िरा थी, निकली और उसने अपनी क़ौम को जाकर ख़बर कर दी कि हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के यहाँ ऐसे ख़ूबसूरत मेहमान आए हैं जिनकी तरह का अब तक कोई शख्स नज़र नहीं आया.

(१६) और कुछ शर्मों-हया बाज़ी न रही थी. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने.

(१७) और अपनी बीबियों से तअल्लुक रखो कि ये तुम्हारे लिये हलाल है. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने उनकी औरतों को जो क़ौम की बेटियाँ थीं बुज़र्ग़ाना शफ़क़त से अपनी बेटियाँ फ़रमाया ताकि इस हुनने इज़्ज़ाक़ से वो फ़ायदा उठाएँ और हमियन सीखें.

(१८) यानी हमें उनकी ग़ाबत नदी.

(१९) यानी मुझे अगर तुम्हारे मुकाबले की ताक़त होती या ऐसा क़बीला रखता जो मेरी मदद करता तो तुम से मुकाबला और लड़ाई करता. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने अपने मक़ान का द्वार बन्द कर लिया था और अन्दर से यह बातचीत फ़रमा रहे थे. क़ौम ने चाहा की दीवार तोड़ दे. फ़रिश्तों ने आपका दुख़ और बेचैनी देखी तो.

(२०) तुम्हारा पाया मज़बूत है. हम इन लोगों को अज़ाब करने के लिये आए हैं. तुम दार खोल दो और हमें और उन्हें छोड़ दो.

(२१) और तुम्हें कोई तकलीफ़ या नुक़सान नहीं पहुँचा सकते. हज़रत ने दरवाज़ा खोल दिया. क़ौम के लोग मक़ान में घुस आए. हज़रत जिब्रील ने अल्लाह के हुक्म से अपना बाज़ू उनके मुँह पर मारा सब अंध हो गए और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के मक़ान से निकल भागे. उन्हें रास्ता नज़र नहीं आता था. यह कहते जाते थे हाय हाय लूत के घर में बड़े जादूगर हैं, उन्होंने हमें जादू कर दिया.

सुबह करीब नहीं (८१) फिर जब हमारा हुक्म आया हमने उस बस्ती के ऊपर उसका नीचा कर दिया (८२) और उसपर कंकर के पत्थर लगातार बरसाए (८३) जो निशान किये हुए तेरे रव के पास हैं (८४) और वो पत्थर कुछ ज़ालिमों से दूर नहीं (८५) (८६)

आठवाँ सूक़

और (९) मदयन की तरफ़ उनके हमक़ौम शुऐब को (१०) कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं (११) और नाप और तौल में कमी न करो वेशक मैं तुम्हें आसूदा हाल (खुशहाल) देखता हूँ (१२) और मुझे तुमपर घेर लेने वाले दिन के अज़ाब का डर है (१३) (१४) और ऐ मेरी क़ौम नाप और तौल इन्साफ़ के साथ पूरी करो और लोगों को उनकी चीज़ें घटा कर न दो और ज़मीन में फ़साद मचाते न फ़िरो (१५) अल्लाह का दिया जो वच रहे वह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम्हें यकीन हो (१६) और मैं कुछ तुमपर निगहबान नहीं (१७) (१८) वोले ऐ शुऐब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह हुक्म देती है कि हम अपने बाप दादा के खुदाओं को छोड़ दें (१९) या अपने माल में जो चाहे न करें (२०) हाँ जी तुम्हीं बड़े अक्लमन्द नेक चलन हो (२१)

يَقْرَبُ ۖ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ ۖ مَّنصُودٍ ۖ
مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ ۚ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ
بَبَعِيدٍ ۚ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ
يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ وَلَا
تَنقُصُوا الْبِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ إِنِّي أَرَاكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنِّي
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ۖ وَيَقَوْمِ أَوْفُوا
بِالْبِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ
أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۚ
يَقِيَّتُ اللَّهُ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۚ
وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ۚ قَالُوا يَشْعِيبُ أَصْلُوكَ
تَأْمُرُكَ أَنْ تَتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَنْ تَفْعَلَ
فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَكِيمُ الرَّشِيدُ ۚ

مَثَلُهُ

फ़रिश्तों ने हज़रत लूत अलैहिस्सलाम से कहा.

(२२) इस तरह आपके घर के सारे लोग चले जाएं.

(२३) हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने कहा, यह अज़ाब कब होगा. हज़रत जिब्रील ने कहा.

(२४) हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं तो इससे जल्दी चाहता हूँ. हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा.

(२५) यानी उलट दिया, इस तरह कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने ज़मीन के जिस टुकड़े पर क़ौम लूत के शहर थे, उसके नीचे अपना बाजू डाला और उन पाँचों शहरों को, जिनमें सबसे बड़ा सद्धूम था, और उनमें चार लाख आदमी बरते थे, इतना ऊंचा उठाया कि वहाँ के कुत्तों और मुर्गों की आवाज़ें आसमान पर पहुंचने लगीं और इस आहिस्तापी से उठाया कि किसी बर्तन का पानी न गिरा और कोई सोने वाला न जागा. फिर उस बलन्दी से उस ज़मीन के टुकड़े को आँधा करके पलटा.

(२६) उन पत्थरों पर ऐसा निशान था जिन से वो दूसरों से मुमताज़ यानी छिंके हुए थे. क़तादा ने कहा कि उनपर लाल लकीरें थीं. हसन व सदी का क़ौल है कि उनपर मोहरें लगी हुई थीं और एक क़ौल यह है कि जिस पत्थर से जिस शर्रस की हलाकत मंज़ूर थी, उसका नाम उस पत्थर पर लिखा था.

(२७) यानी मक्का वालों से.

सूरए हूद - आठवाँ सूक़

(१) हमने भेजा मदयन शहर के निवासियों की तरफ़.

(२) आपने अपनी क़ौम से.

(३) पहले तो आपने तौहीद और इबादत की हिदायत फ़रमाई कि वो सारे कामों में सब से अहम है. उसके बाद जिन बुरी आदतों में वो जकड़े हुए थे उनसे मना फ़रमाया और इशारा किया.

(४) ऐसे हाल में आदमी को चाहिये कि नेअमत की शुक़ गुज़ारी करे और दूसरों का अपने माल में फ़ायदा पहुंचाए, न कि उनके अधिकारों में कमी करे. ऐसी हालत में इस ख़यानत की आदत से डर है कि कहां इस नेअमत से मेहरूम न कर दिये जाओ.

(५) कि जिससे किसी को रिहाई मयससर न हो और सब के सब हलाक हो जाएं. यह भी हो सकता है कि उस दिन के अज़ाब से आखिरत का अज़ाब मुराद हो.

(६) यानी हराम माल छोड़ने के बाद हलाल जितना भी बचे वही तुम्हारे लिये बेहतर है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहा अन्हुमा ने फ़रमाया कि पूरा तौलने और नापने के बाद जो बचे वह बेहतर है.

ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तां अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक रौशन दलील पर हूँ^(१०) और उसने मुझे अपने पास से अच्छी रोज़ी दी^(११) और मैं नहीं चाहता हूँ कि जिस बात से तुम्हें मना करता हूँ आप उसके खिलाफ़ करने लगूँ^(१२) मैं जहां तक बने संचारना ही चाहता हूँ, और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही की तरफ़ से है, मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की तरफ़ रूजू होता हूँ^(१३) और ऐ मेरी क़ौम तुम्हें मेरी ज़िद यह न कमवा दे कि तूम पर पड़े जो पड़ा था नूह की क़ौम या हूद की क़ौम या सालेह की क़ौम पर, और लूत की क़ौम तो कुछ तुम से दूर नहीं^(१४) और अपने रब से माफ़ी चाहो फिर उसकी तरफ़ रूजू लाओ, वेशक मेरा रब मेहरवान महबूत वाला है^(१५) बोले ऐ शुएब हमारी समझ में नहीं आती तुम्हारी बहुत सी बातें और वेशक हम तुम्हें अपने में कमज़ोर देखते हैं^(१६) और अगर तुम्हारा कुम्वा न होता^(१७) तो हमने तुम्हें पथराव कर दिया होता और कुछ हमारी निगाह में तुम्हें इज़ज़त नहीं^(१८) कहा, ऐ मेरी क़ौम क्या तुमपर मेरे कुम्वे का दबाव अल्लाह से ज़्यादा है^(१९) और उसे तुमने अपनी पीठ के पीछे डाल रखा^(२०) वेशक जो कुछ तुम करते हो सब मेरे रब के वस में है^(२१) और ऐ क़ौम तुम अपनी जगह अपना काम किये जाओ मैं अपना काम

قَالَ يَقُومُ رَبِّيَنِي اِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي
وَرَزَقْنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا وَمَا اُرِيدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ
اِلٰى مَا اَنْهَيْتُكُمْ عَنْهُ اِنْ اُرِيدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا
اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي اِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَالْيَاثِبُ ۝ وَيَقُومُ لَا يُجِرُ مَتَكُمْ شِقَاقِي اَنْ
يُّصِيبَكُمْ مِّثْلُ مَا اَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ اَوْ قَوْمَ هُودٍ اَوْ
قَوْمَ صَالِحٍ ۝ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيدٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُكُمْ
رَبُّكُمْ ثُمَّ تَوَبُّوْا اِلَيْهِ اِنْ رَّبِّيْ رَحِيْمٌ ۝ وَدَّوُدُ
۝ يَشْعَبُ مَا نَفَقْتُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰكَ
فِيْنَا ضَعِيْفًا ۝ وَلَوْ لَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ ۝ وَمَا اَنْتَ
عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ۝ قَالَ يَقُومُ اَرَهْطِيْ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّن
اللّٰهِ ۝ وَاتَّخَذَ ثَمُوْدُ ۝ وَرَاٰكُمْ ظَهْرًا اِنْ رَّبِّيْ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ مُّحِيْطٌ ۝ وَيَقُومُ اَعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ

(१०) कि तुम्हारे कर्मां पर पकड़ थकड़ करूं, उलमा ने फ़रमाया कि कुछ नवियों को जंग की इज़ाज़त थी, जैसे हज़रत मूसा, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम, कुछ वो थे जिन्हें लड़ने का हुक्म न था, हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम उन्हीं में से हैं, सारा दिन नसीहत फ़रमाते, उपदेश देते और सारी रात नमाज़ में गुज़ारते, क़ौम आप से कहती कि इस नमाज़ से आप को क्या फ़ायदा, आप फ़रमाते, नमाज़ अच्छाइयों का हुक्म देती है, दुराइयों से रोकती है, तो इसपर वो हंसी में यह कहते जो अगली आयत में आया है।

(११) मूर्ति पूजा न करें।

(१२) मतलब यह था कि हम अपने माल के मालिक हैं, चाहे कम नापें चाहे कम तौलें।

(१३) सूझबूझ और हिदायत पर।

(१४) यानी नबुव्वत और रिस्ालत या हलाल माल और हिदायत व मअरिफ़त, तो यह कैसे हो संक़ता है कि मैं तुम्हें वुत परस्ती और गुनाहों से मना न करूं, क्योंकि नबी इसीलिये भेजे जाते हैं।

(१५) इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि क़ौम ने हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम के हिल्म और हिदायत वाला हांवे को स्वीकार किया था और उनका यह क़लाम हंसी में न था, बल्कि मत्क़सद यह था कि आप हिल्म और महान बुद्धिमत्ता के बाबुजूद हमकां अपने माल का अपनी मज़ी के अनुसार इस्तेमाल करने से क्यां संक़ते हैं, इसका जवाब जो हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया उसका हासिल यह है कि जब तुम मेरी सूझ बूझ कां मानते हो तो तुम्हें यह समझ लेना चाहिये कि मैं ने अपने लिये जां बात पसन्द की है यह वही हांगी जां सब के लिये बेहतर हो, और वह ग़ुदा की तीहीद को मानना और नाप तौल में श्रयानत से दूर रहना है, मैं इसका पाबन्दी से आमिल हूँ तो तुम्हें समझ लेना चाहिये कि यहाँ तरीक़ा बेहतर है।

(१६) उन्हें कुछ ज़्यादा ज़माना नहीं गुज़रा है न कुछ दूर के रहने वाले थे तो उनके हाल से सबक़ पकड़ो।

(१७) कि अगर हम आपके साथ कुछ ज़ियादती करें तो आपमें बचाव की ताक़त नहीं।

(१८) जां दीन में हमारा साथी है और जिसको हम अज़ीज़ रखते हैं।

(१९) कि अल्लाह के लिये तो तुम मेरे क़त्ल से बाज़ न रहे और मेरे परिवार की वजह से बाज़ रहे और तुमने अल्लाह के नबी का तो एंहतिराम न किया और परिवार का सम्मान किया।

(२०) और उसके हुक्म की कुछ परवाह न की।

करता हूँ, अब जाना चाहते हो किस पर आता है वह अज्ञाव कि उसे रूखा करेगा और कौन झूठा है^(१८) और इन्तिज़ार करो^(१९) मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ^(२०) और जब^(२१) हमारा हुक्म आया हमने शुऐब और उसके साथ के मुसलमानों को अपनी रहमत फ़रमाकर बचा लिया और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया^(२२) तो सुबह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गये^(२३) गोया कभी वहाँ वैसे ही न थे, अरे दूर हों मदयन जैसे दूर हुए समूद^(२४) ^(२५)

नवाँ रूकू

वेशक हमने मूसा को अपनी आयतों^(१) और साफ़ गलबे के साथ^(२) फिरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा तो वो फिरऔन के कहने पर चले^(३) और फिरऔन का काम रास्ती का न था^(४) ^(५) अपनी क्रौम के आगे होगा क़यामत के दिन तो उन्हें दोज़ख में ला उतारेगा^(६) और वह क्या ही बुरा घाट उतरने का^(७) और उनके पीछे पड़ी इस जगत में लअनत और क़यामत के दिन^(८) क्या ही बुरा इनाम जो उन्हें मिला^(९) ये वस्तियों^(१०) की ख़बरें हैं कि हम तुम्हें सुनाते हैं^(११) इनमें कोई खड़ी है^(१२) और कोई कट

إِنِّي عَامِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيكِ عَدَاِبٌ
يُخْرِئِهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ وَأَرْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ
رَقِيبٌ ۝ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَحْنُ شُعَبِيًّا وَالَّذِينَ
أَمْنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا ۖ وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا
الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جُثَيِّنَ ۖ كَانُوا
يَعْنُوا فِيهَا ۖ أَلَا بُعْدَ الْمَدِينِ كَمَا بَعْدَتْ ثَمُودُ
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَأَتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۖ وَمَا
أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِشَيْئٍ ۖ يُقَدِّمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَيُسَّ إِلَٰهَهُمُ الْمَوْرُودُ ۖ وَأَتَّبَعُوا
فِي هٰذِهِ لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُسَّ إِلَٰهَهُمُ
الْمَرْفُودُ ۖ ذٰلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرْآنِ نَقُصُّهُ عَلَيْكَ
مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ۖ وَمَا ظَلَمْتَهُمْ وَلَكِنْ

مَنْزِلٌ

(१८) अपने दावों में, यानी तुम्हें जल्द मालूम हो जाएगा कि मैं सच्चाई पर हूँ या तुम, और अल्लाह के अज्ञाव से शक्ती की शक़ावत ज़ाहिर हो जाएगी।

(१९) आक्रियते-अग्र और अन्जाम-कार का।

(२०) उनके अज्ञाव और हलाक के लिये।

(२१) हज़रत ज़िब्रील अलैहिस्सलाम ने भयावक आवाज़ में कहा “मृत जमीअन” यानी सब मर जाओ। इस आवाज़ की दहशत से उनके दम निकल गए और सब मर गए।

(२२) अल्लाह की रहमत से, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि कभी दो उम्मतें एक ही अज्ञाव में नहीं जकड़ी गईं, सिवाय हज़रत शुऐब और हज़रत सालह अलैहुमस्सलाम की उम्मतों के। लेकिन हज़रत सालह की क्रौम को उनके नीचे से भयावक आवाज़ ने हलाक किया और हज़रत शुऐब की क्रौम को ऊपर से।

सूरए हूद - नवाँ रूकू

(१) और कुफ़्र में जकड़ गए और मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान न लाए।

(२) वह खुली गुमराही में था, क्योंकि बशर होने के बावजूद खुदाई का दावा करता था और खुल्लमखुल्ला ऐसे अत्याचार करता था जिसका शैतानी काम होना ज़ाहिर और यकीनी था। वह कहाँ और खुदाई कहाँ, और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ हिदायत और सच्चाई थी। आपकी सच्चाई की दलीलों, खुली आयतों और चमत्कारों को वो लोग देख चुके थे, फिर भी उन्होंने आपके अनुकरण से मुंह फेरा और ऐसे गुमराह का अनुकरण किया। तो जब वह दुनिया में कुफ़्र और गुमराही में अपनी क्रौम का पेशवा था, ऐसे ही जहन्नम में उनका इमाम होगा और।

(४) जैसा कि उन्हें नील नदी में ला डाला था।

(५) यानी दुनिया में भी मलजून और आख़िरत में भी लअनत में जकड़ें।

(६) यानी गुज़री हुई उम्मतें।

(७) कि तुम अपनी उम्मतों को उनकी ख़बरें दो ताकि वो सबक पकड़ें। उन वस्तियों की हालत ख़तियों की तरह है कि।

(८) उसके मकानों की दीवारें मौजूद हैं, खंडहर पाए जाते हैं। निशान बाक़ी हैं जैसे कि आद व समूद के इलाक़े।

गई^(१) (१००) और हमने उनपर जुल्म न किया बल्कि खुद उन्होंने^(१०) अपना बुरा किया तो उनके मअबूद जिन्हें^(११) अल्लाह के सिवा पूजते थे उनके कुछ काम न आए^(१२) जब तुम्हारे रब का हुक्म आया और उनसे^(१३) उन्हें हलाक के सिवा कुछ न बढ़ा^(१०१) और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उनके जुल्म पर वेशक उसकी पकड़ दर्दनाक करी है^(१०२) (१०२) वेशक इसमें निशानी^(१५) है उसके लिये जो आखिरत के अज़ाब से डरे, वह दिन है जिसमें सब लोग^(१६) इकट्ठे होंगे और वह दिन हाज़िरी का है^(१०३) और हम उसे^(१७) पीछे नहीं हटाते मगर एक गिनी हुई मुदत के लिये^(१८) (१०४) जब वह दिन आएगा कोई खुदा के हुक्म बिना बात न करेगा^(१९) तो उन में कोई बदवख्त है और कोई खुशनसीब^(१०५) तो वह जो बदवख्त है वो तो दोज़ाख में हैं वो उसमें गंधे की तरह रेंकेंगे^(१०६) वो उसमें रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा^(२०) वेशक तुम्हारा रब जो चाहे करे^(१०७) और वह खुशनसीब हुए वो जन्नत में हैं

ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ لَمَّا جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتَحَيَّبُ ۝ وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقَرْيَةَ وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ۚ ذَلِكَ يَوْمٌ مَجْزُومٌ لَّهُ النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمٌ مَشْهُودٌ ۝ وَمَا نُوَجِّدُ إِلَّا لِأَجَلٍ مُعَدَّدٍ ۚ يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلُمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ ۝ فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُّوا فِيهِ النَّارُ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ ۚ خَلِيدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ فَعَالٌ لِمَا يُرِيدُ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ سَعَدُوا فِيهِ الْجَنَّةُ خَلِيدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ

مَنْ

(१) याती कटी हुई खेती की तरह बिल्कुल बेनामो निशान हो गई और उसका कोई चिह्न बाकी न रहा जैसे कि बूह अलैहिससलाम की क़ौम के इलाके.

(१०) कुफ़्र और गुमराही से.

(११) जिहालत और गुमराही से.

(१२) और एक कण अज़ाब दूर न कर सकें.

(१३) बुतों और झूटे मअबूदों.

(१४) तो हर अत्याचारी को चाहिये कि इन वाक़िआत से सबक सीखे और तौबह में जल्दी करे.

(१५) सबक और नसीहत.

(१६) अगले पिछले हिसाब के लिये.

(१७) जिसमें आसमान वाले और ज़मीन वाले सब हाज़िर होंगे.

(१८) याती क़यामत के दिन.

(१९) याती जो मुदत हमने दुनिया के बाकी रहने की निश्चित की है उसके ख़त्म होने तक.

(२०) तमाम सृष्टि साक्षित अर्थात् ख़ामोश होगी. क़यामत का दिन बहुत लम्बा होगा. इसमें अहवाल अलग अलग होंगे. कुछ हालतों में हैबत की सख़्ती से किसी को अल्लाह की आज्ञा के बिना बात ज़वान पर लाने की कुदरत न होगी. और कुछ हालतों में आज्ञा दी जाएगी कि लोग कलाम करेंगे और कुछ हालतों में हौल और दहशत कम होगी. उस वक़्त लोग अपने मामलों में झगड़ेंगे और अपने मुक़दम पेश करेंगे.

(२१) शफ़ीक़ बलख़ी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया, खुशनसीबी या सआदत की पाँच निशानियाँ हैं (१) दिल की नमी (२) रोने की कसरत (३) दुनिया से नफ़रत (४) उम्मीदों का छोटा होना (५) लज्जा या हया. और बदवख़्ती याती दुर्भाग्य की निशानियाँ भी पाँच हैं (१) दिल की सख़्ती (२) आँख की खुश्की (३) दुनिया की सावत (४) बड़ी बड़ी उम्मीदें (५) बेहयाई.

(२२) इतना भीर ज़्यादा रहेंगे, और इस ज़ियादती का कोई अन्त नहीं. तो मानी ये हुए कि हमेशा रहेंगे, कभी इससे रिहाई न पाएंगे. (तफ़सीर जलालैन)

हमेशा उसमें रहेंगे। जब तक आसमान व जमीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा^(२३) यह बख्शिष है कभी खत्म न होगी^(१०८) तो ऐ सुनने वाले धोखे में न पड़ उससे जिसे ये काफ़िर पूजते हैं^(२४) ये वैसा ही पूजते हैं जैसा पहले इनके बाप दादा पूजते थे^(२५) और वेशक हम उनका हिस्सा उन्हें पूरा फेर देंगे जिसमें कमी न होगी^(१०९)

दसवाँ रूकू

और वेशक हमने मूसा को किताब दी^(१) तो उसमें फूट पड़ गई^(२) अगर तुम्हारे रब की एक बात^(३) पहले न हो चुकी होती तो जभी उनका फैसला कर दिया जाता^(४) और वेशक वो उसकी तरफ़ से^(५) धोखा डालने वाले शक में हैं^(६)^(११०) और वेशक जितने हैं^(७) एक एक को तुम्हारा रब उसका अमल पूरा भर देगा, उसे उन कामों की ख़बर है^(८)^(१११) तो क़ायम रहो^(९) जैस तुम्हें हुक्म है और जो तुम्हारे साथ रूजू लाया है^(१०) और ऐ लोगो सरगोशी (कानाफूसी) न करो, वेशक वह तुम्हारे काम देख रहा है^(११)^(११२) और ज़ालिमों की तरफ़ न झुको कि तुम्हें आग छुएगी^(१२) और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई हिमायती नहीं^(१३) फिर मदद न पाओगे^(१४)^(११३) और नमाज़ क़ायम रखो दिन के दोनों

وَالْأَرْضُ الْأَمَّا شَاءَ رَبُّكَ عَطَاءٌ غَيْرُ مَجْدُوذٍ ۝
فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْْبُدُ هُؤُلَاءُ مَا يَعْْبُدُونَ
إِلَّا كَمَا يَعْْبُدُ آبَاؤُهُمْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَإِنَّا لَنُوقُوهُمْ
نَصِيبُهُمْ غَيْرُ مَنْقُوصٍ ۖ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى
الْكِتَابَ فَأَخْتَلَفَ فِيهِ ۖ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِّنْ رَبِّكَ لَفَظِ لِّقَاصِهِمْ ۖ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ
مِّنْهُ مُرِيبٍ ۖ وَإِن كَلَّا لَبَنَّا يُؤَفِّقُهُمْ رَبُّكَ
أَعْمَالَهُمْ ۖ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۖ فَاسْتَقِمْ
كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۖ وَلَا تَرْكُؤْا إِلَى الدِّينِ
ظُلُمًا ۖ أَفْتَسْكُمُ النَّارَ ۖ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ
مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ۖ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي
النَّهَارِ وَزُلْفًا مِّنَ اللَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ

مِثْلَهُنَّ

- (२३) इतना और ज्यादा रहेंगे और इस ज़ियादती की कोई हद नहीं। इससे हमेशागी मुराद है। चुरांचे इश्राद फ़रमाता है।
(२४) वेशक यह उस बुत परस्ती पर अज़ाब दिये जाएंगे जैसे कि पहली उम्मतें अज़ाब में जकड़ी गईं।
(२५) और तुम्हें मालूम हो चुका कि उनका अंजाम क्या होगा।

सूरए हूद - दसवाँ रूकू

- (१) यानी तौरात .
(२) कुछ उसपर ईमान लाए और कुछ ने कुफ़ किया।
(३) कि उनके हिसाब में जल्दी न फ़रमाएगा। मख़लूक के हिसाब और बदले का दिन क़यामत का दिन है।
(४) और दुनिया ही में अज़ाब में जकड़े जाते।
(५) यानी आपकी उम्मत के काफ़िर कुरआने करीम की तरफ़ से।
(६) जिसने उनकी अक़लों को हैरान कर दिया।
(७) तमाम ख़लक, तस्दीक करने वाले हों या झुटलाने वाले, क़यामत के दिन।
(८) उसपर कुछ छुपा हुआ नहीं। इसमें नेकियों और तस्दीक करने वालों के लिये तो खुशख़बरी है कि वो नेकी का बदला पाएंगे और काफ़िरों और झुटलाने वालों के लिये फ़टकार है कि वो अपने कर्मों की सज़ा में गिरफ़्तार होंगे।
(९) अपने रब के हुक्म और उसके दीन की दावत पर।
(१०) और उसने तुम्हारा दीन कुबूल किया है। वो दीन और फ़रमाँबरदारी पर क़ायम रहे। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, मुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह सक्फ़री ने रसूल करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अज़्र किया कि मुझे दीन में एक ऐसी बात बता दीजिये कि फिर किसी सं पृथ्वी की हाज़त न रहे। फ़रमाया, “आमन्नो विल्लाह” कह और क़ायम रह।
(११) किसी की तरफ़ झुकना उसके साथ मेल महबूत रखने को कहते हैं। अबुल आलिया ने कहा कि मानी ये हैं कि ज़ालिमों के कर्मों से राज़ी न हो। सदी ने कहा उनके साथ उठना बैठना न रखो। क़तादा ने कहा मुश्किों से न मिलो। इससे मालूम हुआ कि खुदा के नाफ़रमानों के साथ यानी काफ़िरों, वेदीनों और गुमराहों के साथ मेल जोल रिश्तेदारी सहयोग और महबूत उनकी हों में हों मिलावना, उनकी खुशामद में रहना वर्जित है।
(१२) कि तुम्हें उसके अज़ाब से बचा सके। यह हाल तां उनका है जो ज़ालिमों से मेल जोल और महबूत रखें और इसीसे उनके

किनारों^(१३) और कुछ रात के हिस्से में^(१४) बेशक नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं^(१५) यह नसीहत है नसीहत मानने वालों को^(१६) और सब करो कि अल्लाह नेकों का नेग नष्ट नहीं करता^(१७) तो क्यों न हुए तुम से अगली संगतों में^(१८) ऐसे जिन में भलाई का कुछ हिस्सा लगा रहा होता कि ज़मीन में फ़साद से रोकते^(१९) हों उनमें थोड़े थे वही जिनको हमने निजात दी^(२०) और ज़ालिम उसी ऐश के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया^(२१) और वो गुनहगार थे^(२२) और तुम्हारा रव ऐसा नहीं कि वस्तियों को वे वजह हलाक करदे और उनके लोग अच्छे हों^(२३) और अगर तुम्हारा रव चाहता तो सब आदमियों को एक ही उम्मत कर देता^(२४) और वो हमेशा इख़्तिलाफ़ में रहेंगे^(२५) मगर जिनपर तुम्हारे रव ने रहम किया^(२६) और लोग उसी लिये बनाए हैं^(२७) और तुम्हारे रब की बात पूरी हो चुकी कि बेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा जिन्नों और आदमियों को मिला कर^(२८) और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की खबरें सुनाते हैं जिस से तुम्हारा दिल ठहराए^(२९) और उस सूरत में तुम्हारे पास हक़ आया^(३०) और मुसलमानों को पन्द (उपदेश) व नसीहत^(३१)

السَّيِّئَاتِ ۚ ذَٰلِكَ ذِكْرُكَ لِلذَّكَرَيْنِ ۖ وَاصْبِرْ
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۖ فَلَوْلَا
كَانَ مِنَ الْقَرُورِ مِنْ قَبْلِكَ ۖ أُولَٰؤِا بِقِيَمَةٍ
يَتَّبِعُونَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ
أَنجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ
وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ۖ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ
الْقُرْآنَ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ۖ وَلَوْ شَاءَ
رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۚ وَلَا يَذَرُ الْوَلَدَ
مُخْتَلِفِينَ ۖ إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَٰلِكَ خَلَقَهُمْ
وَتَنَزَّلَتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۖ وَكَذَٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ
أَنبِيَآءِ الرُّسُلِ مَا نَتَّبِعُ بِهٖ فَوَادَكَ ۚ وَجَاءَكَ فِي
هَٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ۖ وَقُلْ

مَنْ

हाल का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है जो खुद ज़ालिम हैं।

(१३) दिन के दो किनारों से सुबह शाम मुराद हैं। ज़वाल से पहले का वक़्त सुबह में और बाद का शाम में दाख़िल है। सुबह की नमाज़ फ़ज्र और शाम की नमाज़ ज़ोहर और अस्म है।

(१४) और रात के हिस्सों की नमाज़ें मगरिब और इशा हैं।

(१५) नेकियों से मुराद या यही पंजगाना नमाज़ें हैं जो आयत में बयान हुई या मुतलक ताअतें या “सुक्रानल्लाहे बल हम्दु लिल्लाहे बला इलाहा इल्लल्लाहो वल्लाहो अकबर” पढ़ना। आयत से मालूम हुआ कि नेकियाँ छोटे मोटे गुनाहों के लिये कफ़फ़ारा होती हैं चाहें वो नेकियाँ नमाज़ हो या सदका या ज़िक्र या इस्तेग़फ़ार या कुछ और। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि पाँचाँ नमाज़ें और जुमुआ दूसरे जुमए तक और एक रियायत में है कि एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक, ये सब कफ़फ़ारा हैं उन गुनाहों के लिये जो इनके बीच हों जब कि आदमी बड़े गुनाहों से बचे। एक शख्स ने किसी औरत को देखा और उससे कोई खफ़ीफ़ यानी मामूली सी हरकत बेहिजाबी की सरज़द हुई उसपर वह शर्मिन्दा हुआ और रसूले करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपना हाल अर्ज़ किया इसपर यह आयत उतरी। उस शख्स ने अर्ज़ किया कि छोटे गुनाहों के लिये नेकियों का कफ़फ़ारा होना क्या ख़ास मेरे लिये है। फ़रमाया, नहीं सब के लिये।

(१६) यानी पहली उम्मतों में जो हलाक की गई।

(१७) मानी ये हैं कि उन उम्मतों में ऐसं नेकी वालें नहीं हुए जो लोगों को ज़मीन में फ़साद करने से रोकते और गुनाहों से मना करते, इसी लिये हमने उन्हें हलाक कर दिया।

(१८) वो नबियों पर ईमान लाए और उनके अहक़ाम पर फ़रमाँवरदार रहे और लोगों को फ़साद से रोकते रहे।

(१९) और नेअमतों, लज़ीज़ चीज़ों और ख़ाहिशात और वासनाओं के आदी हो गए और कुक़ व गुमारही में डूबे रहे।

(२०) तो सब एक दीन पर होते।

(२१) कोई किसी दीन पर कोई किसी पर।

(२२) वो सच्चे दीन पर सहमत रहेंगे और उसमें इख़्तिलाफ़ न करेंगे।

(२३) यानी इख़्तिलाफ़ वालें इख़्तिलाफ़ के लिये और रहमत वाले सहमत के लिये।

(२४) क्योंकि उसको इल्म है कि बातिल के इख़्तियार करने वाले बहुत होंगे।

(२५) और नबियों के हाल और उनकी उम्मतों के सुलूक देखकर आपको अपनी क़ीम की तक्लीफ़ का बर्दाश्त करना और उस पर सब फ़रमाना आसान हो।

(२६) और नबियों और उनको उम्मतों के तज़क़िरे बाक़र के अनुसार बयान हुए जो दूसरी किताबों और दूसरे लोगों को हासिल नहीं

और काफ़िरो से फ़रमाओ तुम अपनी जगह काम किये जाओ^(२८) हम अपना काम करते हैं^(२९) ॥१२१॥ और राह देखो, हम भी राह देखते हैं^(३०) ॥१२२॥ और अल्लाह ही के लिये हैं आसमानों और ज़मीन के गैब^(३१) और उसी की तरफ़ सब कामों की रूजू है तो उसकी वन्दगी करो और उसपर भरोसा रखो, और तुम्हारा रब तुम्हारे कामों से गाफ़िल नहीं^(३२) ॥१२३॥

१२- सूरए यूसुफ़

सूरए यूसुफ़, मक्का में उतरी, इसमें १११ आयतें और १२ रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) ये रौशन किताब की आयतें हैं^(२) ॥१॥ वेशक हमने इसे अरबी कुरआन उतारा कि तुम समझो^(३) ॥२॥ हम तुम्हें सबसे अच्छा बयान सुनाते हैं^(४) इसलिये कि हमने तुम्हारी तरफ़ इस कुरआन की वही (देववाणी) भेजी, अगरचे वेशक इससे पहले तुम्हें खबर न थी^(५) ॥३॥ याद करो जब यूसुफ़ ने अपने बाप^(६) से कहा ऐ मेरे बाप मैंने ग्यारह तारे और सूरज और चांद देखे उन्हें अपने लिये सिजदा करते देखा^(७) ॥४॥ कहा ऐ मेरे बच्चे अपना ख़्वाब अपने भाइयों से न कहना^(८) कि



यानी जो वाकिआत बयान फ़रमाए गए वो हक़ भी है।

- (२७) ...भी कि गुज़री हुई उम्मतों के हालात और उनके अंजाम से सबक़ पकड़ें।
- (२८) बहुत जल्द उम्मा का नतीजा पा जाओगे।
- (२९) जिसका हमें हमारे रब ने हुक्म दिया।
- (३०) तुम्हारे अंजामकार यानी अन्त की।
- (३१) उससे कुछ छुपा नहीं सकता।

(१२) सूरए यूसुफ़ - पहला रूकू

(१) सूरए यूसुफ़ मक्की है। इसमें बारह रूकू हैं, १११ आयतें, एक हज़ार छ सौ कलिमें और सात हज़ार एक सौ छियासठ अक्षर हैं। यहूदी उलमा ने अरब के शरीफ़ों से कहा था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) से दरियाफ़्त करा कि हज़रत यअक़ूब की औलाद शाम प्रदेश से मिस्र में किस तरह पहुंची और उनके वहाँ जाकर आबाद होने का क्या कारण हुआ और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाकिआ क्या है। इसपर ये मुबारक सूरत उतरी।

(२) जिसका चमत्कार और कमाल और अल्लाह की तरफ़ से होना साफ़ है और इल्म वालों के तज़दीक़ संदेह से परे है। इसमें हलाल व हराम, शरीअत की हदें और अहक़ाम साफ़ बयान फ़रमाए गए हैं। एक कौल यह है कि इसमें पहलों के हालात रौशन तौर पर दर्ज हैं और सच झूट को अलग अलग कर दिया गया है।

(३) जो बहुत से अजायब और अनोखी बातों और हिक्मतों और इबारतों पर आधारित है। उसमें दीन व दुनिया के बहुत फ़ायदे और सुल्लानों और रियाया और उलमा के हालात और औरतों की विशेषताओं और दुश्मनों की तकलीफ़ों पर सब और उनपर क़ायू पाने के बाद उनसे तजावुज़ करने का बड़िया बयान है, जिससे सुनने वाले में सद्ग़ति और पाकीज़ा आदतें पैदा होती है। वेहज़र हक़ायक़ के लेखक ने कहा कि इस बयान का अहसन होना इस कारण से है कि यह किस्सा इन्सान के हालात के साथ भरपूर मुशाबिहत रखता है। अगर यूसुफ़ से दिल का, और यअक़ूब से रूह को, और शहील से नफ़्स को, यूसुफ़ के भाइयों से मज़बूत हवास को तावीर किया जाए और सारे किस्से को इन्सानों के हालात में मुताबिक़त दी जाए, चुनांचे उन्होंने वह मुताबिक़त बयान भी की है जो यहाँ तवालात के डर से दर्ज नहीं की जा।

(४) हज़रत यअक़ूब इब्ने इसहाक़ इब्ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम।

(५) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब देखा कि आसमान से ग्यारह सितारें उतरे और उनके साथ सूरज और चांद भी हैं उन सब ने आप

वो तेरे साथ कोई चाल चलेंगे^(१) बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है^(२) और इसी तरह तुझे तेरा रब चुन लेगा^(३) और तुझे बातों का अंजाम निकालना सिखाएगा^(४) और तुझपर अपनी नेमत पूरी करेगा और बाकूय के घर वालों पर^(५) जिस तरह तेरे पहले दोनों बाप दादा इब्राहीम और इसहाक पर पूरी की^(६) बेशक तेरा रब इल्म व हिकमत वाला है^(७)

दूसरा रूक

बेशक यूसुफ और उसके भाईयों में^(१) पूछने वालों के लिये निशानियाँ हैं^(२) जब बोले^(३) कि ज़रूर यूसुफ और उसका भाई^(४) हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारे हैं और हम एक जमाअत (समूह) हैं^(५) बेशक हमारे बाप खुल्लम खुल्ला उनकी महब्वत में डूबे हुए हैं^(६) यूसुफ को मार डालो या कहीं ज़मीन में फेंक आओ^(७) कि तुम्हारे बाप का मुँह सिर्फ तुम्हारी ही तरफ रहे^(८) और उसके वाद फिर नेक हो जाना^(९) उनमें एक कहने वाला^(१०) बोला कि यूसुफ को मारो नहीं^(११) और उसे अंधे कुएँ में डाल दो कि कोई चलता उसे आकर ले जाए^(१२) अगर तुम्हें करना है^(१३) बोले ऐ हमारे बाप आप को क्या हुआ कि यूसुफ के मामले में हमारा भरोसा नहीं करते और हम तो

فَبَيِّنْ لَكَ كَيْدَ إِرَاقِ الشَّيْطَانِ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٍّ مُبِينٍ ۝ وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِلْمُتَسَاءِلِينَ ۝ إِذْ قَالَ الْيُوسُفُ لِأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَيَّ أَيْنَا مَنَا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ اقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَظْهِرُوا أَرْضَكُمْ يَحُلْ لَكُمْ وَجْهٌ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ۝ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَالْقُوَّةُ فِي عَجَبَاتِ الْجَبِّ يَلْتَقِطُهُ بَعْضُ السَّيَّارِ إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ ۝ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا

مَرْءٌ

को सज्जा किया . यह ख़ाब जुमूग की रात को देखा . यह रात शवे-क़द्र थी . सितारों की ताबीर आपके म्यारह भाई हैं और सूरज आपके वालिद, और चाँद आपकी वालिदा या ख़ाला . आपकी वालिदा का नाम राहील है . सदी का क़ौल है कि चूँकि राहील का इन्तिफ़ाल हो चुका था इसलिये कमर से आपकी ख़ाला मुग़ाद हैं . सज्जा करने से तवाज़ो करना और फ़रमाँवरदार होना मुग़ाद है . एक क़ौल यह है कि हकीकत में सज्जा ही मुग़ाद है, क्योंकि उस ज़मान में सलाम की तरह ताज़ीम का सज्जा था . हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ उस वक़्त बारह साल थी और रात और सत्तरह के क़ौल भी आए हैं . हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम से बहुत ज़्यादा महब्वत थी इस लिये उनके साथ उनके भाई हसद करते थे . हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम इसपर बाज़वदर थे इसलिये जब हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम ने यह ख़ाब देखा तो हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने

(६) क्योंकि वो इसकी ताबीर को समझ लेंगे . हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम जानते थे कि अल्लाह तआला हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम को नबुव्वत के लिये बुज़ुर्गी अता करेगा और दोनों ज़पत की नेअमतें और महानता इनायत करेगा, इस लिये आपको भाइयों के हसद का डर हुआ और आपने फ़रमाया .

(७) और तुम्हारी हलाकत की कोई नदवीर मोचेंगे .

(८) उनको दुश्मनी और हसद पर उभारेगा . इसमें ईमा है कि हज़रत यूसुफ के भाई अगर उनके लिये कष्ट और तकलीफ़ देने के प्रयास करेंगे, तो इसका कारण शैतान का बहकावा होगा . (ख़ाज़िन) बुज़ुरी और मुस्लिम की हदीस में है, रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, अच्छा ख़ाब अल्लाह की तरफ से है . चाहिये कि उसको अपने प्यारे से बयान किया जाए और बुरा ख़ाब शैतान की तरफ से है . जब कोई देखने वाला वह ख़ाब देखे तो चाहिये कि अपनी बाई तरफ तीन बार थुंक्थुकाए और यह पढ़े “अज़्ज़ो बिल्लाहे मिनश शैतानिर रज़ीम वमिन शर्र हाज़िहिर रुया” .

(९) “इज्तिबा” यानी चुन लेना, यानी अल्लाह तआला का किसी बन्दे को बुज़ुर्गी अता करना . इसके मानी ये हैं कि किसी बन्दे को अल्लाह अपने फ़ैज़ के साथ मख़सूस करे जिससे उसको तरह तरह के चमत्कार और कमालात बिना परिश्रम और कोशिश के हासिल हों . यह दर्जा नबियों के साथ ख़ास है और उनकी बदौलत उनके ख़ास करीबी नेकों, शहीदों और अच्छाई करने वालों को भी ये नेअमत अता की जाती है .

(१०) इल्म और हिकमत अता करेगा और पिछली किताबों और नबियों की हदीसों के राज़ खोलेंगा . मुफ़स्सिरों ने इस से ख़ाब की ताबीर मुग़ाद ली है . हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम ख़ाब की ताबीर के बड़े मास्त्र थे .

(११) नबुव्वत अता फ़रमाकर, जो ऊंची उपाधियों से है, और सृष्टि की सारी उपाधियाँ इससे कम हैं और सल्लतनें देकर, दीन और दुनिया की नेअमतों से मालामाल करके .

इसका भला चाहने वाले हैं (११) कल इसे हमारे साथ भेज दीजिये कि मेवे खाए और खेले (१२) और वेशक हम इसके निगहवान हैं (१३) (१४) बोला वेशक मुझे रंज देगा कि इसे ले जाओ (१५) और डरता हूँ कि इसे भेड़िया खाले (१६) और तुम इससे बेखबर रहो (१७) (१८) बोले अगर इसे भेड़िया खा जाए और हम एक जमाअत (दल) हैं जब तो हम किसी मसरफ़ (काम) के नहीं (१९) (२०) फिर जब उसे ले गए (२१) और सब की राय यही ठहरी कि उसे अंधे कुएं में डाल दें (२२) और हमने उसे वही (देववाणी) भेजी (२३) कि जरूर तू उन्हें उनका यह काम जता देगा (२४) ऐसे वक़्त कि वो न जानते होंगे (२५) (२६) और रात हुए अपने बाप के पास रोते हुए आए (२७) (२८) बोले ऐ हमारे बाप हम दौड़ करते निकल गए (२९) और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ा तो उसे भेड़िया खा गया और आप किसी तरह हमारा यक़ीन न करेंगे अगरचे हम सच्चे हों (३०) (३१) और उसके कुर्ते पर एक झूटा खून लगा लाए (३२) कहा बल्कि तुम्हारे दिलों ने एक बात तुम्हारे वास्ते बना ली है (३३) तो सब अच्छा और अल्लाह ही से मदद चाहता हूँ उन बातों पर जो तुम बता रहे हो (३४) (३५) और एक क़ाफ़िला आया (३६) उन्होंने अपना पानी लाने वाला भेजा (३७) तो उसने अपना डोल डाला (३८) बोला आहा कैसी खुशी की बात है यह तो एक लड़का है

لَهُ لَنَسْخُوهٖ ۝ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَزْكُمَ وَيَلْعَبُ وَ
اِنَّ لَهُ لَحَفِظُوْنَ ۝ قَالَ اِنِّیْ لَيَحْزُنُنِیْ اَنْ تَذْهَبُوْا
بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاکُلَهُ الذِّیْبُ وَ اَنْتُمْ عَنْهُ
غٰفِلُوْنَ ۝ قَالُوْا لَیْنِ اَکَلَهُ الذِّیْبُ وَ لَحْنُ عَصِیۃُ اِنَّا
اِذَا الْخَبْرُوْنَ ۝ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَ اٰمَحُوْا اَنْ یَّجْعَلُوْهُ
فِیْ عَیۡبَتِ الْحِیۡتِ ۝ وَاَوْحٰیۤ اِلَیْہِۭ لَشَیْطٰنِہٖمْ بِاَمْرِہِمۡ
ہٰذَا وَاھُمۡ لَا یَشْعُرُوْنَ ۝ وَاَجَآءُوْا اَبَآھُمۡ عِشَآءً
یَّیْکُوْنُ ۝ قَالُوْا یٰۤاَبَآءَکَآ اِنَّا ذَھَبْنَا سَنَیۡقُ وَ تَرٰکَنَا
یُوْسُفَ عِنۡدَا مَتَاعِنَا فَاکُلْہُ الذِّیْبُ وَ مَا اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ
لَّنَا وَلَوْ کُنَّا صٰدِقِیۡنَ ۝ وَاَجَآءُوْ عَلٰی قَبِیضِہٖ بِدِیۡمٍ
کَذِیۡبٍ ۭ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَکُمۡ اَنْفُسُکُمۡ اَمْرًا فَصَبِرْ
مَحْمِلٌ ۭ وَاَللّٰهُ الْمُسْتَعٰنُ عَلٰی مَا تَصِفُوْنَ ۝ وَاَجَآءَتِ
سَیَّارَةٌ ۭ فَاَرْسَلُوْا وَاَرَادُوْہُمۡ فَاَدْلٰی دَلُوْہُ ۭ قَالَ لَیْسَ بَیۡ

(१२) कि उन्हें नबुच्चत अता फरमाई. कुछ मुफ़सिरी ने फरमाया कि इस नेअमत से मुग़द यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को नमरुद की आग से छुटकारा दिया और अपना ख़लील यानी दोस्त बनाया और हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम को हज़रत यअक़ूब और बेटे अता किये.

सूरए यूसुफ़ - दूसरा रूक़

- (१) हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम की पहली बीवी लिया बिले लियात आपके मौमू की बेटी हैं. उनसे आपके छः बेटे हुए रुबील, शमऊन, लावा, यहूदा, ज़बूलन, यशजर. और चार बेटे हरम से हुए दान, नफ़्ताली, जावा, आशर. उनकी माएं ज़ुल्फ़ह और बिल्हा. लिया के इत्काल के बाद हज़रत यअक़ूब ने उनकी बहन राहील से निकाह फ़रमाया. उनसे दो बेटे हुए यूसुफ़ और बिन यामीन. ये हज़रत यअक़ूब के बारह बेटे हैं. इन्हीं को अस्वात कहते हैं.
- (२) पूछने वालों से यहूदी मुग़द हैं जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का हाल और आलादे हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम के कनआन प्रदेश से मिस्र प्रदेश की तरफ़ मुत्तक़िल होने का कारण दरियाफ़्त किया था. जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हालात बयान फ़रमाए और यहूदियों ने उनको तौरात के मुताबिक़ पाया तो उन्हें हैरत हुई कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने किताबें पढ़ने और उलमा और धर्मशास्त्रियों की मजलिस में बंटने और किसी से कुछ सीखने के बग़ैर इस क़द्र सही वाकिआत कैसे बयान फ़रमाए. यह दलील है कि आप ज़रूर नबी हैं और क़ुरआन शरीफ़ ज़रूर अल्लाह तआला का भेजा हुआ क़लाम है और अल्लाह तआला ने आप को पाक इल्म से नवाज़ा. इसके अलावा इस वाक़ए में बहुत से सबक़ और हिक़मतें हैं.
- (३) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई.
- (४) हकीक़ी बिन यामीन.
- (५) क़बी है, ज़्यादा काम आ सकते हैं, ज़्यादा फ़ायदा पहुंचा सकते हैं. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम घोट हैं क्या कर सकते हैं.
- (६) और यह बात उनके ख़याल में न आई कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वालिदा का उनकी अल्पायु में इत्काल हो गया इसलिये वह ज़्यादा प्यार दुलार और मद्दबत के हक़दार हुए और उनमें हिंदायत और साफ़ सुथर होने की वो निशानियाँ पाई जाती हैं जो दूसरे भाइयों में नहीं है. यही कारण है कि हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम का हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ ज़्यादा मद्दबत है. ये सब बातें ख़याल में न लाकर, उन्हें अपने वालिद का हज़रत यूसुफ़ से ज़्यादा मद्दबत करना बुरा लगा और उन्होंने आपस में

और उसे एक पूंजी बनाकर छुपा लिया^(३४) और अल्लाह जानता है जो वो करते हैं^(३५) ॥१९॥ और भाइयों ने उसे खोटे दामों गिनती के रूपों पर बेच डाला, और उन्हें उसमें कुछ रसावत (रुचि) न थी^(३६) ॥२०॥

तीसरा स्कू

और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे खरीदा वह अपनी औरत से बोला^(३७) इन्हें इज्जत से रखो^(३८) शायद इन से हमें नफ़ा पहुंचे^(३९) या इनको हम बेटा बना लें^(४०) और इसी तरह हमने यूसुफ़ को इस ज़मीन में जमाव दिया और इसलिये कि उसे बातों का अंजाम सिखाएं^(४१) और अल्लाह अपने काम पर गालिव (बलवान) है मगर अक्सर आदमी नहीं जानते^(४२) ॥२१॥ और जब अपनी पूरी कुव्वत को पहुंचा^(४३) हमने उसे हुक्म और इल्म अता फ़रमाया^(४४) और हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को^(४५) और वह जिस औरत^(४६) के घर में था उसने उसे लुभाया कि अपना आपा न रोके^(४७) और दरवाज़े सब बन्द कर दिये^(४८) और बोली आओ मैं तुम्हीं से कहती हूँ^(४९) कहा अल्लाह की पनाह^(५०) वह अज़ीज़ तो मेरा रब यानी पर्वरिश करने वाला है उसने मुझे अच्छी तरह रखा^(५१) वेशक ज़ालिमों का भला नहीं होता^(५२) ॥२३॥ और वेशक औरत ने उसका इरादा किया और वह भी औरत का इरादा करता अगर अपने रब की दलील न देख लेता^(५३) हमने यूँही किया कि उससे बुराई और बेहयाई को फेर दे^(५४) वेशक वह हमारे

هَذَا غُلْمٌ وَاسْتَرَوْهُ بِضَاعَةٍ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝
وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ
مِنَ الزَّاهِدِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ
لَا مَرَآتِي أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عِنْدِي أَنْ يَنْفَعَتَا أَوْ
تُنْجِذَهُ وَلَكِنْ أَوْكَذِّبُكَ مَكَثًا يُوسُفُ فِي الْأَرْضِ
وَلِنَعْلَمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَى
أَمْرِهِ وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ
أَشَدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَلِكَ نُجْزِي الْمُحْسِنِينَ
وَرَأَوْنَاهُ الْيَتِيمَ الَّذِي يَتَرَبَّصُّ عَنْ نَفْسِهِ وَعَلَقَتْ
الْأَبْوَابُ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ
رَبِّي أَحْسَنُ مَثْوَايَ إِنَّهُ لَا يُغْلِبُ الظَّالِمُونَ ۝ وَلَقَدْ
هَمَمْتُ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنْ رَأَى بُرْهَانَ رَبِّهِ
كَذَلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ إِنَّهُ مِنْ

مَنْ

मिलकर मशवरा किया कि कोई ऐसी तदबीर सोचनी चाहिये जिससे हमारे वालिद साहिब को हमारी तरफ़ ज्यादा महबूत हो. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा है कि शैतान भी इस मशवरे की बैठक में शरीक हुआ और उसने हज़रत यूसुफ़ के क़त्ल की राय दी और मशवरे की बात चीत इस तरह हुई.

(७) आबादियों से दूर, बस यही सूत है जिन से.

(८) और उन्हें बस तुम्हारी ही महबूत हो और किसी की नहीं.

(९) और तौबह कर लेना.

(१०) यानी यहूदा या रूबील.

(११) क्योंकि क़त्ल महापाप है.

(१२) यानी कोई मुसाफ़िर वहाँ गुज़र और उन्हें किसी मुल्क को ले जाए इससे भी उद्देश्य पूरा है कि न वहाँ रहेंगे न वालिद साहिब की मेहरबानी की नज़र इस तरह उनपर होगी.

(१३) इस में इशारा है कि चाहिये तो यह कि कुछ भी न करो लेकिन अगर तुमने इरादा कर ही लिया है तो बस इतने पर ही सन्न कर लो. चुनाव सब इसपर सहमत हो गए और अपने वालिद से.

(१४) यानी तफ़रीह के हलाल तरीकों से आनंद उठाएँ जैसे कि शिकार और तीर अन्दाज़ी वगैरह.

(१५) उनकी पूरी देखभाल करेंगे.

(१६) क्योंकि उनकी एक घड़ी की जुदाई ग़बारा नहीं है.

(१७) क्योंकि उस इलाक़े में भेड़िये और ख़तरनाक जानवर बहुत हैं.

(१८) और अपनी सैर तफ़रीह में लग जाओ.

(१९) लिहाज़ा इन्हें हमारे साथ भेज दीजिये. अल्लाह की तरफ़ से यूँही तदबीर थी. हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने इजाज़त दे दी. चलते समय हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कमीज़, जो जन्नत की हरी थी और जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम को कपड़ उतार कर आग में डाला गया था, हज़रत ज़िबील अलैहिस्सलाम ने वह कमीज़ आपको पहनाई थी, वह मुबारक कमीज़ हज़रत इब्राहीम से हज़रत इस्हाक़ को और उनसे उनके बेटे हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम को पहुंची थी, वह कमीज़ हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के गले में

हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने तावीज़ बनाकर डाल दी.

(२०) इस तरह जब तक हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम उन्हें देखते रहे वहीं तक तो वह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपने कंधों पर सवार किये हुए इज़्रत व एहतियाम के साथ ले गए. जब दूर निकल गए और हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम की नज़रों में गायब हो गए तो उन्होंने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर पटक़ा और दिला में जो दुश्मनी थी वह ज़ाहिर हुई. जिसकी तरफ़ जानें थे जाने देना था, और ख़ाब जो किसी तरह उन्होंने सुन पाया था, उसपर बुरा भला कहते थे, और कहते थे: अपने ख़ाब को बुला कि वह अब तुझे हमारे हाथों से छुड़ाए. जब सन्त्रियों हद को पहुंची तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने यहूदा से कहा खुदा से डरो और इन लोगों को इनकी ज़ियादतियों से रोको. यहूदा ने अपने भाइयों से कहा कि मैं ने तुम से एहद किया था याद करो, क़त्ल की नहीं ठहरी थी. तब वो उन हस्तियों से बच आए.

(२१) चुनाने उन्होंने ऐसा किया. यह कुंआं कनआव से तीन फ़रसंग के फ़ारसले पर बैतुल मक़दिस के आगे पास था उर्दुन प्रदेश में स्थित था. ऊपर से इसका मुंह तंग था और अन्दर से चौड़ा था. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हाथ पाँव बांधकर क़मीज़ उतार कर कुएं में छोड़ा. जब वह उसकी आधी गहराई तक पहुंचे, तो रस्सी छोड़ दी ताकि आप पानी में गिर कर डूब जाओ. हज़रत ज़िब्रील अल्लाह के हुक्म से पहुंचे और उन्होंने आपको एक पत्थर पर बिठा दिया जो कुएं में था और आपके हाथ खोल दिये और चढ़ते वक़्त हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क़मीज़ जो तावीज़ बनाकर आपके गले में डाल दी थी वह खोल कर आपको पहना दी. उससे अंधेरे कुएं में रोशनी हो गई. सुक़ानल्लाह. नवियों के मुबारक ज़िम्मों की क्या वरक़्त कि एक क़मीज़ जो उस वरक़्त वाले वदन से धुल गई, उसने अंधेरे कुएं में उजाला कर दिया. इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला के चह्रीतों और करीबी बन्दों के कपड़ों और दूसरी चीज़ों से वरक़्त हाशियन करना शरीअत में साबित और नवियों की सुन्नत है.

(२२) हज़रत ज़िब्रील अलैहिस्सलाम के वास्त से, था इल्हाम के तौर पर, कि आप दुश्मनी न हों, हम तुम्हें गहरें कुएं से बलन्द मक़म पर पहुंचाएंगे और तुम्हारे भाइयों का हाजतमन्द बनाकर तुम्हारे पास लाएंगे और उन्हें तुम्हारे हुक्म के मानहत करेंगे और ऐसा होगा.

(२३) जो उन्होंने इस वक़्त तुम्हारे साथ किया.

(२४) कि तुम यूसुफ़ हो, क्योंकि उस वक़्त तुम्हारी शान ऐसी ऊंची होगी. तुम सल्तनत व हुकूमत के तख़्त पर हांगे कि वो तुम्हें न पहचानेंगे. अल्लासल, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई उन्हें कुएं में डाल कर वापस हुए और उनकी क़मीज़ जो उतार ली थी उसको एक बक़री के बच्चे के खून में रंग कर साथ ले लिया.

(२५) जब मक़ान के करीब पहुंचे, उनके चीख़ने की आवाज़ हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने सुनी तो घबराकर बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे, क्या तुम्हें बक़रियों में कुछ नुक़सान हुआ. उन्होंने कहा, नहीं. फ़रमाया, फिर क्या मुसीबत पहुंची. और यूसुफ़ कहाँ हैं.

(२६) यानी हम आपस में एक दूसरे से दौड़ करते थे कि कौन आगे निकले. इस दौड़ में हम दूर निकल गए.

(२७) क्योंकि न हमारे साथ कोई ग़वाह है न कोई ऐसी दलील और निशानी है जिससे हमारी ग़ल्चाई साबित हो.

(२८) और क़मीज़ को फाड़ना भूल गए. हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम वह क़मीज़ अपने मुबारक चेहरे पर रखकर बहुत रोए और फ़रमाया, अनोग़्रा और होशियार भेड़िया था जो मेरे बेटे को तो खा गया और क़मीज़ को फाड़ा तक नहीं. एक रियायत में यह भी है कि वह एक भेड़िया पकड़ लाए और हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम से कहने लगे कि यह भेड़िया है जिसने यूसुफ़ को खाया है. आपने उस भेड़िये से दोरियापन फ़रमाया. वह अल्लाह के हुक्म से बोल उठा कि हज़रत ने मेरे आपके बेटे को खाया और न नवियों के साथ कोई भेड़िया ऐसा कर सकता है. हज़रत ने उस भेड़िये को छोड़ दिया और बेटों से.

(२९) और बाकिआ इसके ख़िलाफ़ है.

(३०) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम तीन राज़ कुएं में रहे, इसके बाद अल्लाह तआला ने उन्हें उससे रिज़ात अता फ़रमाई.

(३१) जो मदयन से मिस्र की तरफ़ जा रहा था. वह रास्ता भटक कर उस जंगल में आ पड़ा जहाँ आवादी से बहुत दूर यह कुंआं था और इसका पानी ख़ासी था, मगर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वरक़्त से मीठा हो गया. जब वह क़ाफ़िले वाले उस कुएं के करीब उतर तो.

(३२) जिसका नाम मालिक बिन ज़अर ख़ज़ाई था. यह शरय़ मदयन का रहने वाला था. जब वह कुएं पर पहुंचा.

(३३) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने वह डोल पकड़ लिया और उसमें लटक गए. मालिक ने डोल खींचा. आप बाहर तशरीफ़ लाए. उसने आपका रौंदर्य और ख़ूबसूरती देखी तो अत्यन्त प्रसन्नता में भरकर अपने यारों को ख़ुशख़बरी दी.

(३४) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई जो इस जंगल में अपनी बक़रियाँ चराने थे वो देखभाल रखते थे. आज जो उन्होंने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुएं में न देखा तो उन्हें तलाश हुई और क़ाफ़िले में पहुंचे. वहाँ उन्होंने मालिक बिन ज़अर के पास हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखा तो वो उसे कहने लगे कि यह गुलाम है. हमारे पास से भाग आया है, किसी काम का नहीं है. नाफ़रमान है. अगर ख़रीदा तो हम इसे सज़ा बेच देंगे. फिर उसे कहीं इतनी दूर लेजाता कि उसकी ख़बर भी हमारे सुनने में न आए. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उनके डर से ख़ामोश खड़े रहे और कुछ बोले नहीं.

(३५) जिनकी तादाद क़नादा के क़ौल के मुताबिक़ बीस दिरहम थी.

(३६) फिर मालिक और उसके साथी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को मिस्र में लाए. उस ज़माने में मिस्र का बादशाह रैयान बिन नज़दान अमलीकी था और उसने अपना राज़ पाट क़ितफ़ीर मिस्री के हाथ में दे रखा था. सारे ख़ज़ाने उसी के हाथ में थे. उसको अज़ीज़ मिस्र कहते थे और वह बादशाह का ख़ज़ीर आज़म था. जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम मिस्र के बाज़ार में बेचने के लिये लाए गए तो हर शरय़ के दिल

मैं आपकी तलब पैदा हुई। खरीदारों ने कीमत बढ़ाना शुरू की यहाँ तक कि आपके वज़न के बराबर सोना, उतनी ही चांदी, उतनी ही कस्तूरी, उतना ही हरिरे कीमत मुक़रर हुई आपका वज़न चार सौ रत्न था, और उम्र शरीफ़ उस वक़्त तेरह या सोलह साल की थी। अज़ीज़े मिस्त्र ने इस कीमत पर आप को ख़रीद लिया और अपने घर ले आया। दूसरे ख़रीदार उसके मुक़ाबले में ख़ामोश हो गए।

सूरफ़ यूसुफ़ - तीसरा रूकू

- (१) जिसका नाम जुलैख़्वा था।
- (२) ठहरने की जगह उमदा हो, लिवांस और ख़ाना पीना उत्तम किस्म का हो।
- (३) और वो हमारे कामों में अपनी सूझ बूझ और होशियारी से हमारे लिये नफ़ा पहुंचाने वाले और बेहतर मददगार हों और सल्लत के कामों और हुक़ूमत की ज़िम्मेदारी संभालने में हमारे काम आएँ क्योंकि हिदायत की निशानी उनके चहरे पर मौजूद है।
- (४) यह क़िताफ़र ने इसलिये कहा कि उसके कोई औलाद न थी।
- (५) यानी ख़्वाबों की तावीर।
- (६) शबाब और यौवन अपनी चरम सीमा पर आया और उम्र शरीफ़ ज़िहाक के क़ौल के मुताबिक़ बीस साल की, और सदी के अनुसार तीस की और कल्बी के कथनानुसार अठारह और तीस के बीच हुई।
- (७) यानी इल्म के साथ अमल और दीन की जानकारी अता की। कुछ उलमा ने कहा कि हुक़म से सच्चा बोल और इल्म से ख़्वाब की तावीर मुराद है। कुछ ने फ़रमाया इल्म चीज़ों की हकीक़त जानना और हिक़मत इल्म के मुताबिक़ अमल करना है।
- (८) यानी जुलैख़्वा।
- (९) और उसके साथ मशगूल हो कर उसकी नाजायज़ ख़्वाहिश को पूरा करें। जुलैख़्वा के मकान में एक के बाद एक सात दरवाज़े थे। उसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर तो यह ख़्वाहिश पेश की।
- (१०) ताले लगा दिये।
- (११) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने।
- (१२) वह मुझे इस बुराई से बचाए जिसकी तू तलबगार है। मतलब यह था कि यह काम हराम है। मैं इसके पास जाने वाला नहीं।
- (१३) उसका बदला यह नहीं कि मैं उसकी अमानत में ख़यानत करूँ, जो ऐसा करे वह ज़ालिम है।
- (१४) मगर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने रब की बुरहान देखी और इस ग़लत इरादे से मेहफूज़ रहे और बुरहाने इस्मत नदुबत है। अल्लाह तआला ने नवियों के पाक नफ़सों को दुराचार और नीच कर्मों से पाक पैदा किया है और अच्छे संस्कारों और पाक अख़लाक़ पर उनको बनाया है इसलिये वो हर बुरे कर्म से दूर रहते हैं। एक रिवायत यह भी है कि जिस वक़्त जुलैख़्वा आपके पीछे पड़ी उस वक़्त आपने अपने वालिद हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम को देखा कि अपनी पाक उंगली मुबारक दातों के नीचे दबाकर दूर रहने का इशारा फ़रमाते हैं।
- (१५) और ख़यानत तथा ज़िना से मेहफूज़ रखें।
- (१६) जिन्हें हमने बुजुर्गों दी है और जो हमारी इताअत व फ़रमाँबरदारी में सच्चे दिल से लगे हैं। अलहासिल, जब जुलैख़्वा आपके पीछे पड़ी तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम भागे और जुलैख़्वा उनके पीछे उन्हें पकड़ने भागी। हज़रत जिस दरवाज़े पर पहुंचते जाते थे, उसका ताला खुल कर गिरता चला जाता था।
- (१७) आख़िरकार जुलैख़्वा हज़रत तक पहुंची और आपका कुर्ता पीछे से पकड़ कर खींचा कि आप निक्कलने न पाएं, मगर आप ग़ालिब आए।
- (१८) यानी अज़ीज़े मिस्त्र।
- (१९) फ़ौरन ही जुलैख़्वा ने अपनी बेगुनाही ज़ाहिर करने और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपने मक़र से डराने के लिये बहाना तराशा और शौहर से।
- (२०) इतना कहकर उसे डर हुआ कि कहीं अज़ीज़ गुस्से में आकर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के क़त्ल पर न तुल जाए और यह जुलैख़्वा की महबूब की तीव्रता कब ग़वार कर सकती थी, इसलिये उसने कहा।
- (२१) यानी इसको कांडे लगाए जाएं। जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने देखा कि जुलैख़्वा उलटा आप पर इल्ज़ाम लगाती है, आपके लिये कैद और सज़ा की सूरत पैदा करती है तो आपने अपनी बेगुनाही का इज़हार और हालात की हकीक़त का बयान ज़रूरी समझा और।
- (२२) यानी यह मुझसे बुरे काम की तलबगार हुई। मैंने उससे इन्कार किया और मैं भागा। अज़ीज़ ने कहा कि यह बात किस तरह मान ली जाए। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि घर में एक चार माह का बच्चा पालने में है जो जुलैख़्वा के माँमूँ का लड़का है उससे पूछना चाहिये। अज़ीज़ ने कहा कि चार माह का बच्चा क्या जाने और कैसे बोले। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला उसको ज़बान देने और उससे मेरी बेगुनाही की गवाही अदा करा देने पर तैयार है। अज़ीज़ ने उस बच्चे से पूछा। अल्लाह की कुदरत से वह बच्चा बोल पड़ा और उसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तस्दीक़ की और जुलैख़्वा के क़ौल को ग़लत

चुने हुए बन्दों में से है^(१६) ॥२४॥ और दोनों दरवाजे की तरफ दौड़े^(१७) और औरत ने उसका कुर्ता पीछे से चीर लिया और दोनों को औरत का मियाँ^(१८) दरवाजे के पास मिला^(१९) बोली क्या सज़ा है इसकी जिसने तेरी घरवाली से वदी चाही^(२०) मगर यह कि कैद किया जाए या दुख की मार^(२१) ॥२५॥ कहा इसने मुझको लुभाया कि मैं अपनी हिफाज़त न करूँ^(२२) और औरत के घरवालों में से एक गवाह ने^(२३) गवाही दी अगर इनका कुर्ता आगे से चिरा है तो औरत सच्ची है और इन्होंने गलत कहा^(२४) ॥२६॥ और अगर इनका कुर्ता पीछे से चाक हुआ तो औरत झूठी है और ये सच्चे^(२५) ॥२७॥ फिर जब अज़ीज़ ने उसका कुर्ता पीछे से चिरा देखा^(२६) बोला वेशक यह तुम औरतों का चरित्र है, वेशक तुम्हारा चरित्र बड़ा है^(२७) ॥२८॥ ऐ यूसुफ़ तुम इसका खयाल न करो^(२८) और ऐ औरत तू अपने गुनाह की माफ़ी मांग^(२९) वेशक तू खता करने वालों में है^(३०) ॥२९॥

चौथा रूकू

और शहर में कुछ औरतें वोलों^(१) अज़ीज़ की वीबी अपने नौजवान का दिल लुभाती है वेशक उनकी महबूत उसके दिल में पैर गई है हम तो उसे खुल्लमखुल्ला खुद-रफ़्ता पाते हैं^(२) ॥३०॥ तो जब जुलैखा ने उनका चर्चा सुना तो उन औरतों को बुला भेजा^(३) और उनके लिये मसनदें तैयार

عِبَادَنَا الْمُخْلِصِينَ ۖ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ
مِنْ دُبُرٍ ۖ وَالْفَيّاسُ يَدَّهَا لَدَا الْبَابِ ۖ قَالَتْ مَا جَزَاءُ
مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۖ قَالَ هِيَ رَأَوْدَتْنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ
مِنْ أَهْلِهَا ۖ إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ
وَهُوَ مِنَ الْكَذِبِينَ ۖ وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ
دُبُرٍ فَكَذَّابَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۖ فَلَمَّا رَأَىٰ قَمِيصَهُ
قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كِبِدِكُنَّ ۖ إِنْ كِيدُ كُنَّ
عَظِيمٌ ۖ يُوسُفُ اعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۖ وَاسْتَغْفِرِي
لِذَنبِكَ ۚ إِنَّكَ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِئِينَ ۖ وَقَالَ نِسْوَةٌ
فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ
قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ۖ
فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ

बताया. चुनांचे अलगाव तआला फ़रमाता है.

(२३) यानी उस बच्चे ने.

(२४) क्योंकि यह सूत बताती है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम आगे बढ़े और जुलैखा ने उन्हें दूर किया तो कुर्ता आगे से फटा.

(२५) इसलिये कि यह हाल साफ़ बताता है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उससे भागते थे और जुलैखा पीछे से पकड़ती थी इसलिये कुर्ता पीछे से फटा.

(२६) और जान लिया कि हज़रत यूसुफ़ सच्चे हैं और जुलैखा झूठी हैं.

(२७) फिर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरफ़ मुतवज्जह हो कर अज़ीज़ ने इस तरह मअज़िरत की.

(२८) और इसपर ग़म न करो वेशक तुम पाक हो. इस क़ताम से यह मतलब भी था कि इसका किसी से ज़िक्र न करना ताकि चर्चा न हो और बात न फैल जाए. इसके अलावा भी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बेगुनाही की बहुत सी निशानीयाँ मौजूद थीं. एक तो यह कि कोई शरीफ़ तबीअत इन्सान अपने एहसास करने वाले के साथ इस तरह की ख़यालन रचा नहीं रखता. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने ऊंचे संस्कारों के साथ किस तरह ऐसा कर सकते थे. दूसरे यह कि देखने वालों ने आपको भागते आते देखा और तालिब की यह शाय नहीं होती. वह पीछे होता है, भागता नहीं. भागता वही है जो किसी बात पर मजबूर किया जाए और वह उसे ग़वारो न करे. तीसरे यह कि औरत ने बड़ा भारी सिंगार किया था और वह ग़ैर मामूली सज़वज में थी. इससे मालूम होता है कि साबत और ऐहतिमाम केवल उसकी तरफ़ से था. चौथे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का तक्वा और तहासत जो एक लम्बी मुदत तक देखा जा चुका था उससे आपकी तरफ़ ऐसे दुर काम की जोड़ना किसी तरह ऐतिबार के काबिल नहीं हो सकता था. फिर अज़ीज़ जुलैखा की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगा.

(२९) कि तू ने बेगुनाह पर लांछन लगाया है.

(३०) अज़ीज़े मिस्त्र ने अगरचे इस किस्से को बहुत दशया लेकिन यह ख़बर छुप न सकी और बात फैल ही गई.

सूरए यूसुफ़ - चौथा रूकू

(१) यानी मिस्त्र के शरीफ़ और प्रतिष्ठित लोगों की औरतें.

(२) इस इश्क़ में उसको अपनी इज़्ज़त और पदों और शर्म का लिहाज़ भी न रहा.

(३) यानी जब उसने सुना कि मिस्त्र के शरीफ़ों की औरतें उसको हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की महबूत पर मलामत करती हैं

की^(४) और उनमें हर एक को छुरी दी^(५) और यूसुफ^(६) से कहा इनपर निकल आओ^(७) जब औरतों ने यूसुफ को देखा उसकी बड़ाई बोलने लगी^(८) और अपने हाथ काट लिये^(९) और बोलीं अल्लाह को पाकी है ये तो आदमी की जिन्स से नहीं^(१०) मगर कोई इज्जत वाला फरिश्ता^(११) जुलैखा ने कहा तो ये हैं वो जिनपर तुम मुझे ताना देती थीं^(१२) और वेशक मैंने इनका जी लुभाना चाहा तो इन्होंने अपने आपको बचाया^(१३) और वेशक अगर वह यह काम न करेंगे जो मैं उनसे कहती हूँ तो जरूर कैद में पड़ेंगे और वो जरूर जिल्लत उठाएंगे^(१४) ^(३२) यूसुफ ने अर्ज की ऐ मेरे रब मुझे कैद खाना ज्यादा पसन्द है इस काम से जिसकी तरफ ये मुझे बुलाती हैं और तू मुझसे इनका मक़ (छल-कपट) न फेरेगा^(१५) तो मैं इनकी तरफ माइल (आकर्षित) होऊंगा और नादान बनूंगा^(३३) तो उसके रब ने उसकी सुन ली और उससे औरतों का मक़ (कपट) फेर दिया, वेशक वही सुनता जानता है^(१६) ^(३४) फिर सब कुछ निशानियां देख दिखाकर पिछली मत उन्हें यही आई कि जरूर एक मुद्दत तक उसे कैद खाने में डालें^(१७) ^(३५)

पाँचवां रूकू

और उसके साथ कैद खाने में दो जवान दाखिल हुए^(१) उनमें एक^(२) बोला मैंने ख्वाब देखा कि^(३) शराब निचोड़ता हूँ और दूसरा बोला^(४) मैं ने ख्वाब देखा कि मेरे सर पर कुछ रोटियाँ

لَهُنَّ مُتَّكَا وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا ۖ
قَالَتِ الْآخِرَةُ عَلَى الْأُولَىٰ: فَلِمَ رَأَيْتَهُ أَكْبَرَتْهُ وَقَطَّعْنَ
أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا إِنْ هَذَا
إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ۖ قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ
وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۚ وَلَئِن لَّمْ
يَفْعَلْ مَا أَمَرَهُ لَيَسْجُنَ ۖ وَلَيَكُونَنَّ مِنَ الصَّغِيرِينَ ۖ
قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ
وَلَا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ
الْجَاهِلِينَ ۖ فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۖ ثُمَّ بَدَأُ لَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا رَأَوُا
الْآيَاتِ لِيَسْجُنَنَّهُ فَتَىٰ حَيْنٍ ۖ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ
فَتَيْنٍ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا ۖ وَ
قَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أُجْلَىٰ فَوْقَ رَأْسِي خُبْرًا تَأْكُلُ

مَثَلُ

तो उसने चाहा कि वह अपना उज्र उन्हें ज़ाहिर कर दे. इसलिये उसने उनकी दावत की और मिस्र के शरीफों की चालीस औरतों को बुलाया. उनमें वो सब भी थीं जिनोंने उसका बुरा भला कहा था. जुलैखा ने उन औरतों को बहुत इज्जत और सम्मान के साथ मेहमान बनाया.

(४) अत्यन्त शानदार जिनपर वो बहुत इज्जत और आराम से तकिये लगा कर बैठीं और दस्तर खान बिटाए गए और किसम किसम के खाने और मेवे चुने गए.

(५) ताकि खाने के लिये उससे गोश्त काटें और मेवे तराशें.

(६) ...को उमदा लिव्वास पहना कर.

(७) पहले तो आप ने इन्कार किया लेकिन जब ज्यादा जोर डाला गया तो उसकी मुग़्गालिफ़त और दुश्मनी के अन्देशों से आप को आना ही पड़ा.

(८) क्योंकि उन्होंने इस सौंदर्य के साथ नवुन्नत और रिसालत के तूर और विनम्रता की निशानियाँ और शाहाना हैबत और इक्तिदार और माया मोह और दुनिया की सुंदर चीज़ों की तरफ से बेनियाज़ी की शान देखी तो आश्चर्य चकित रह गईं और आपकी महानता और देहशत दिलों में भर गई और आपकी ख़ुबसूरती ने ऐसा असर किया कि वह औरतें अपना आप भूल गईं.

(९) नीबू की कज्राय. और दिल हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ ऐसे मशगूल हुए कि हाथ कटने की तकलीफ़ का ज़रा एहसास न हुआ.

(१०) कि ऐसा सौंदर्य आदमी में देखा ही नहीं गया और उसके साथ नफ़स की यह पाकी कि मिस्र के ऊँचे खानदानों की ख़ुबसूरत औरतें अच्छे लिबासों और सिंगार तथा सज्जद के साथ सामने मौजूद हैं और आप किसी की तरफ नज़र नहीं फ़रमाने और बिल्कुल रुख़ नहीं करते.

(११) अब तुमने देख लिया और तुम्हें मालूम हो गया कि मेरी दीवानगी कुछ आश्चर्य की और मलामत करने वाली बात नहीं है.

(१२) और किसी तरह मेरी तरफ न झुके. इसपर मिस्री औरतों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से कहा कि आप जुलैखा का कहना मान लीजिये. जुलैखा बोली.

(१३) और चारा और कातिलों और नाफ़रमानों के साथ जेल में रहेंगे क्योंकि उन्होंने मेरा दिल लिया और मेरी नाफ़रमानी की और वियोग की तलवार से मेरा खून बहाया, तो यूसुफ़ को भी ख़ुशगवार खाना पीना और आराम की नींद सोना नहीं मिलेगा, जैसा मैं

हैं जिन में से परिन्दे खाते हैं, हमें इसकी ताबीर बताइये, वेशक हम आपको नेकी करने वाला देखते हैं। (३६) यूसुफ ने कहा जो खाना तुम्हें मिला करता है वह तुम्हारे पास न आने पाएगा कि मैं उसकी ताबीर उसके आने से पहले तुम्हें बता दूंगा। (३७) यह उन इल्मों में से है जो मुझे मेरे स्व ने सिखाया है, वेशक मैंने उन लोगों का दीन न माना जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वो आखिरत से इन्कारी हैं। (३८) और मैंने अपने बाप दादा इब्राहीम और इसहाक और याक़ूब का दीन इस्तिस्नान किया। (३९) हमें नहीं पहुंचता कि किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक ठहराएँ। (४०) यह अल्लाह का एक फ़ज़ल है हम पर और लोगों पर मगर अक्सर लोग शुक नहीं करते। (४१) ऐ मेरे कैद खाने के दोनों साथियो क्या अलग अलग स्व (४२) अच्छे या एक अल्लाह जो सब पर ग़ालिब (बलवान)। (४३) तुम उसके सिवा नहीं पूजते मगर निरे नाम जो तुम और तुम्हारे बाप दादा ने तराश लिये हैं। (४४) अल्लाह ने उनकी कोई सनद न उतारी, हुक्म नहीं मगर अल्लाह का, उसने फ़रमाया कि उसके सिवा किसी को न पूजो। (४५) यह सीधा दीन है। (४६) लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (४७) ऐ कैदखाने के दोनों साथियो तुम में एक तो अपने स्व (बादशाह) को

الطَّيْرُ مِنْهُ دَبَّحْنَا بِتَأْوِيلِهِ ۚ إِنَّا تَرَيْنَا مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۖ
قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَانِهِ إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِ
قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ۚ ذَلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي ۚ إِنِّي
تَرَكْتُ بِلِلَّةِ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ
كَافِرُونَ ۖ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ
وَيَعْقُوبَ ۚ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نَشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ
ذَلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۖ يُصَاحِبُ السِّجْنِ ۚ أَرْبَابٌ
مُتَفَرِّقُونَ خَبَرُوا اللَّهَ الْوَاحِدَ الْقَهَّارَ ۚ مَا تَعْبُدُونَ
مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءَ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ
مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ أَمَرَ أَلَّا
تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۖ يُصَاحِبُ السِّجْنِ ۚ أَمَّا أَحَدُكُمَا

जुदाई की तकलीफ़ों में मुसीबतें झेलती और सदमों में परेशानी के साथ वक़्त काटती हैं, यह भी तो कुछ तकलीफ़ उठाएँ, मेरे साथ मज़मल में शाहाना विस्तर पर ऐश गवारा नहीं तो कैद ख़ाने के चुभने वाले योरिये पर तंगे बदन का दुश्मना गवारा करो, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम यह सुनकर मजलिस से उठ गए और मिस्री औरतों मलामत करने के बहाने से बाहर आई और एक एक ने आपसे अपनी इच्छाओं मुरादों का इज़हार किया, आपको उनकी बातें बहुत बुरी लगीं तो बारगाहे इलाही में, (आज़िब व मदारीफ़ व हुसैनी)

(१४) और अपनी इस्मत की पनाह में न लेगा।

(१५) जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से उम्मीद पूरी होने की कोई सूत न देखी तो मिस्री औरतों ने जुलैखा से कहा कि अब यही मुनासिब मालूम होता है कि दो तीन दिन तक यूसुफ़ को कैद ख़ाने में रखा जाए ताकि वहाँ की सज़िस्तियाँ देखकर उन्हें न अमत और राहत की क़द्र हो और वह तेरी दरख़्वास्त क़बूल करें, जुलैखा ने इस राय को माना और अज़ीज़ से कहा कि मैं इस इब्री गुलाम की बजह से बदनाम हो गई हूँ और मेरी तबीअत उससे दफ़रत करने लगी है, मुनासिब यह है कि उनका कैद किया जाए ताकि लोग समझ लें कि वह ख़तावार हैं और मैं मलामत से बरी हूँ, यह बात अज़ीज़ की समझ में आ गई।

(१६) चुनांचे उन्होंने ऐसा किया और आपको कैदे ख़ाने में भेज दिया।

सूरए यूसुफ़ - पाँचवां स्कू

(१) उनमें से एक तो मिस्र के शाहे आज़म बलीद बिन दज़वान अमलीकी का रसोई प्रबन्धक था और दूसरा उसको शराब पिलाते वाला, उन दोनों पर यह इल्ज़ाम था कि उन्होंने बादशाह को ज़हर देना चाहा, इस जुर्म में दोनों कैद किये गए, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जब कैद ख़ाने में दाख़िल हुए तो आपने अपने इल्म का इज़हार शुरू कर दिया और फ़रमाया कि मैं ख़्वाबों की ताबीर का इल्म रखता हूँ।

(२) जो बादशाह को शराब पिलाता था।

(३) मैं एक बाग़ में हूँ वहाँ एक अंगूर के दरख़्त में तीन ख़ोशे पके लगे हैं, बादशाह का प्याला मेरे हाथ में है, मैं उन ख़ोशों से।

(४) यानी रसोई प्रबन्धक।

(५) कि आप दिन में ग़ोज़े से रहते हैं, सारी रात नमाज़ में गुज़ारते हैं, जब कोई जेल में बीमार होता है उसकी देखभाल करते हैं, जब किसी पर तंगी होती है, उसके लिये अच्छाई की राह निकालते हैं, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उनके ताबीर देने से पहले अपने चमत्कार का इज़हार और तीहीद की दावत शुरू कर दी और यह ज़ाहिर फ़रमा दिया कि इल्म में आपका दर्जा इससे ज्यादा है जितना वो लोग आपकी निस्वत मानते हैं, चूंकि ताबीर का इल्म अन्दाज़े पर आधारित है इसलिये आपने चाहा कि उन्हें ज़ाहिर फ़रमा दें कि

शराब पिलाएगा^(१६) रहा दूसरा^(१७) वह सूली दिया जाएगा तो परिन्दे उसका सर खाएंगे^(१८) हुक्म हो चुका उस बात का जिसका तुम सवाल करते थे^(१९) (४१) और यूसुफ ने उन दोनों से जिसे वचता समझा^(२०) उससे कहा अपने स्व (बादशाह) के पास मेरा जिक्र करना^(२१) तो शैतान ने उसे भुला दिया कि अपने स्व (बादशाह) के सामने यूसुफ का जिक्र करे तो यूसुफ कई बरस और जेलखाने में रहा^(२२) (४२)

छटा रूकू

और बादशाह ने कहा मैं ने ख्वाब में देखा सात गाएं मोटी कि उन्हें सात दुबली गाएं खा रही हैं और सात वाले हरी और दूसरी सात सूखी^(१) ऐ दरबारियो मेरे ख्वाब का जवाब दो अगर तुम्हें ख्वाब की ताबीर आती हो^(२) (४३) बोले परेशान ख्वाबें हैं और हम ख्वाब की ताबीर नहीं जानते^(४४) और बोला वह जा उन दोनों में से बचा था^(३) और एक मुदत बाद उसे याद आया^(४) मैं तुम्हें इसकी ताबीर बताऊंगा मुझे भेजो^(५) (४५) ऐ यूसुफ सिद्दीक (सच्चे) हमें ताबीर दीजिये सात मोटी गावां की जिन्हें सात दुबली खाती हैं और सात हरी वाले और दूसरी सात सूखी^(६) शायद मैं लोगों की तरफ

فَيَسْتَقِي رُبَّهُ خُمْرًا ۖ وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ
الطَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ ۚ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِينَ
وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ
فَأَنسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ
سِنِينَ ۖ وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ
سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعٌ سُتَبِلَاتٍ خُضْرٍ
وَأُخْرٍ بَيْضَاتٍ ۚ أَيُّهَا الْمَلَأَ أَفْتُونِي فِي رَأْيَا ۖ إِن كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُونَ ۖ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۖ وَمَا
نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعِلْمِينَ ۖ وَقَالَ الَّذِي نَجَا
مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ
فَارْسِلُونِ ۖ يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي
سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ
سُتَبِلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخْرٍ بَيْضَاتٍ ۖ لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ

مَزَلٍ

आप गैब की यत्कीनी ख़बरें देने की क्षमता रखते हैं और इससे मन्त्रलूक आजिज़ है. जिसको अल्लाह तआला ने गैबी उनूम अता फ़रमाए हों उसके नज़दीक ख्वाब की ताबीर क्या बड़ी बात है. उस वक़्त चमत्कार का इज़हार आपने इस लिये फ़रमाया कि आप जानते थे कि इन दोनों में एक जल्द ही फांसी दिया जाएगा. तां आपने चाहा कि उसको कुफ़्र से निकाल कर इस्लाम में दाख़िल कर दें और जहन्नम से बचालें. इससे मालूम हुआ कि आलम अगर अपनी इल्मी महानता का इज़हार इसलिये करे कि लोग उससे नफ़ा उठाएं तो यह जायज़ है. (मदारीक व ख़ाज़िन)

- (६) उसकी मात्रा और उसका रंग और उसके आने का वक़्त और यह कि तुमने क्या ख़ाया या कितना ख़ाया, कब ख़ाया.
- (७) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने चमत्कार का इज़हार फ़रमाने के बाद यह भी ज़ाहिर फ़रमा दिया कि आप नबियों के ख़ानदान से हैं और आपके बाप दादा नहीं हैं जिनका ऊंचा दर्ज़ा दुनिया में मशहूर है. इससे आपका मक़सद यह था कि सुनने वाले आपकी दावत कुबूल करें और आपकी ह़िदायत को मानें.
- (८) तौहीद इस्तिस्लाम करना और शिर्क से बचना.
- (९) उसकी इबादत बजा नहीं लाते और मन्त्रलूक परस्ती करते हैं.
- (१०) जैसे कि वुत परग़तों ने बना रखे हैं कोई सोने का, कोई चांदी का, कोई तांबे का, कोई लोहे का, कोई लकड़ी का, कोई पत्थर का, कोई और चीज़ कन, कोई छोटा, कोई बड़ा. मगर सब के सब निकम्मे बेकार, न नफ़ा दे सकें, न नुक़सान पहुंचा सकें. ऐसे झूट मअबूद.
- (११) कि न कोई उसका मुक़ाबिल हो सकता है न उसके हुक्म में दख़ल दे सकता है, न उसका कोई शरीक है, न उस जैसा. सब पर उसका हुक्म जारी और सब उसके ममलूक.
- (१२) और उनका नाम मअबूद मन्त्र लिया है जबकि वो बेहक़ीक़त पत्थर हैं.
- (१३) क्योंकि सिर्फ़ वही इबादत के लायक़ है.
- (१४) जिस पर दलीलें और निशानियाँ कायम हैं.
- (१५) तौहीद और अल्लाह की इबादत की दावत देने के बाद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ख्वाब की ताबीर की तरफ़ तबज्जह फ़रमाई और इश़ाद किया.
- (१६) यानी बादशाह का साक़ी तो अपने ओहदे पर बहाल किया जाएगा और पहले की तरह बादशाह को शराब पिलाएगा और तीन ख़ाशे जो ख्वाब में बयान किये गए हैं ये तीन दिन हैं. इतने ही दिन कैद ख़ाने में रहेगा फिर बादशाह उसका बुला लेंगा.
- (१७) यानी रसोई और ख़ान का इन्तिज़ाम रखने वाला.
- (१८) हज़रत इब्ने मसज़द रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि ताबीर सुनकर उन दोनों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से कहा कि

लौट कर जाऊं शायद वो आगाह हों^(१) (४६) कहा तुम खेती करोगे सात बरस लगातार^(२) तो जो करो उसे उसकी बाल में रहने दो^(३) मगर थोड़ा जितना खालो^(४) (४७) फिर उसके बाद सात करें बरस आएं^(५) कि खा जाएंगे जो तुमने उनके लिये पहले से जमा कर रखा था^(६) मगर थोड़ा जो बचालो^(७) (४८) फिर उनके बाद एक बरस आएगा जिसमें लोगों को मेंह दिया जाएगा और उसमें रस निचोड़ेंगे^(८) (४९)

सातवां रूकू

और बादशाह बोला कि उन्हें मेरे पास ले आओ, तो जब उसके पास एलची आया^(१) कहा अपने रव (बादशाह) के पास पलट जा फिर उससे पूछ^(२) क्या हाल है उन औरतों का जिन्होंने अपने हाथ काटे थे वेशक मेरा रव उनका धोखा जानता है^(३) (५०) बादशाह ने कहा ऐ औरतों तुम्हारा क्या काम था जब तुमने यूसुफ का दिल लुभाना चाहा वोलो अल्लाह को पाकी है हमने उनमें कोई बंदी न पाई अजीज की औरत बोली अब असली बात खुल गई मैं ने उनका जी लुभाना चाहा था और वो वेशक सच्चे हैं^(४) (५१) यूसुफ ने कहा यह मैं ने इस लिये किया कि अजीज को मालूम हो जाए कि मैं ने पीठ पीछे उसकी खयानत (विश्वास घात) न की और अल्लाह दगावाज़ों का मक्र नहीं चलने देता^(५) (५२)

لَعَلَّكُمْ يَعْلَمُونَ ۝ قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَابًّا ۝ فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَأْكُلُونَ ۝ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَنَةٌ شَدِيدٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَحْصُونَ ۝ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْرِضُونَ ۝ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ۝ قَالَ مَا خَطْبُكِ إِذْ رَأَوْدَتْنِ يُوسُفُ عَنْ نَفْسِهِ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ النَّاسُ خُصَصَ الْحَقُّ أَنَا وَارَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الضَّالِّينَ ۝ ذَلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِبِينَ ۝

मौल

ख्याब तो हमने कुछ भी नहीं देखा हम तो हंसी कर रहे थे, हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया,

(१९) जो मैंने कह दिया वह ज़रूर बाँके हांगा, तुमने ख्याब देखा हो या न देखा हो, अब यह हुक्म टल नहीं सकता,

(२०) यानी साक़ी को,

(२१) और मेरा हाल बयान करना कि कैद ख़ाने में एक मज़लूम बेगुनाह कैद है और उसकी कैद को एक ज़माना गुज़र चुका है,

(२२) अक़मर मुफ़सिरो ने कहा है कि इस घटना के बाद हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम सात बरस और कैद में रहे और पांच बरस पहले रह चुके थे और इस मुदत के गुज़रने के बाद जब अल्लाह तआला को हज़रत यूसुफ का कैद से निकालना मन्ज़ूर हुआ तो मिस्र के शाह आज़म रैयान बिन वर्दीद ने एक अजीब ख्याब देखा जिससे उसको बहुत परेशानी हुई और उसने मुल्क के तांत्रिकों और जादूगरों और ताबीर देने वालों को जमा करके उनसे अपना ख्याब बयान किया,

सूरए यूसुफ - छटा रूकू

(१) जो हरी पर लिपटीं और उन्होंने हरी को सुखा दिया,

(२) यानी साक़ी,

(३) कि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम ने उससे फ़रमाया था कि अपने मालिक के सामने मेरा ज़िक्र करना, साक़ी ने कहा कि,

(४) कैद ख़ाने में, वहाँ ख्याब की ताबीर के एक आलिम हैं, तो बादशाह ने उसको भेज दिया, वह कैद ख़ाने में पहुंचकर हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ करने लगा,

(५) यह ख्याब बादशाह ने देखा है और मुल्क के सारे उलमा और जानकार लोग इसकी ताबीर से आजिज़ रहे हैं, हज़रत इसकी ताबीर इशाराद फ़रमाएं,

(६) ख्याब की ताबीर से, और आपके इल्म और बुज़ुर्गी और ऊंचे दर्जे को जानें और आपको इस मेहनत से रिहा करके अपने पास बुलाएं, हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम ने ताबीर दी और,

(७) ज़माने में ख़ूब पैदावार होगी, सात मोटी गायों और सात हरी बालों से इसी की तरफ़ इशारा है,

(८) ताकि ख़राब न हो और आपत्तों से मंफूज़ रहे,

- (९) उसपर से भूसी उतार लो और उसे साफ़ कर लो. बाकी को ज़ख़्मी या भंडार बना कर महफूज़ कर लो.
- (१०) जिनकी तरफ़ दुबली गायों और सूखी बालों में इशारा है.
- (११) और भंडार कर लिया था.
- (१२) बीज के लिये ताकि उससे खेती करो.
- (१३) अंगूर का और तिल ज़ैतून के तेल निकालेंगे. यह साल काफी खुशहाली का होगा. ज़मीन हरी भरी ताज़ा होगी. दरख़्त ग़ुलफ़लेंगे. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से यह ताबीर सुनकर एलची वापस हुआ और बादशाह की ख़िदमत में जाकर ताबीर बयान की. बादशाह को यह ताबीर बहुत पसन्द आई और उसे यकीन हुआ कि जैसा हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा है वैसा ज़रूर होगा. बादशाह को शौक पैदा हुआ कि इस ख़्वाब की ताबीर खुद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मुबारक ज़यान से सुने.

सूरए यूसुफ़ - सातवाँ रुकू

- (१) और उसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में बादशाह का संदेश अर्ज़ किया तो आपने.
- (२) यानी उससे दरख़ास्त कर कि वह पूछे, तफ़्तीश करे.
- (३) यह आपने इसलिये फ़रमाया ताकि बादशाह के सामने आपकी बेगुनाही मालूम हो जाए और यह उसको मालूम हो कि यह लम्बी कैद बे वज़ह हुई ताकि आयन्दा हासिदों को डेकें मारने का मौक़ा न मिले. इससे मालूम हुआ कि तादमत या लांछन दूर करने की कांशिश करना ज़रूरी है. अब क़ासिद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास से यह पयाम लेकर बादशाह की ख़िदमत में पहुंचा. बादशाह ने सुनकर औरतों को जमा किया और उनके साथ अज़ीज़ की औरत को भी.
- (४) जुलैख़ा.
- (५) बादशाह ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास पयाम भेजा कि औरतों ने आपकी पाकी बयान की और अज़ीज़ की औरत ने अपने ग़ुनाह का इक़रार कर लिया इस पर हज़रत.

पारा बारह समाप्त

तेरहवां पारा - वमा-उबरिओ (सूरए यूसुफ़ जारी)

और मैं अपने नफ्स(मन) को बेकुसूर नहीं बताता^(६) बेशक नफ्स तो बुराई का बड़ा हुकम देने वाला है मगर जिसपर मेरा रब रहम करे^(७) बेशक मेरा रब बंखने वाला मेहरबान है^(८) और बादशाह बोला उन्हें मेरे पास ले आओ कि मैं उन्हें खास अपने लिये चुन लूं^(९) फिर जब उससे बात की कहा बेशक आज आप हमारे यहाँ मुअज़्ज़ज़(सम्मानित) मोतमिद(विश्वस्त) हैं^(१०) ५४ यूसुफ़ ने कहा मुझे ज़मीन के खज़ानों पर करदे, बेशक मैं हिफ़ाज़त वाला इल्म वाला हूँ^(११) ५५ और यूँही हमने यूसुफ़ को उस मुल्क पर कुदरत वख़शी, उसमें जहाँ चाहे रहे^(१२) हम अपनी रहमत^(१३) जिस चाहे पहुँचाएँ और हम नेकों का नेग ज़ाया(नष्ट) नहीं करते ५६ और बेशक आखिरत का सवाब उनके लिये बेहतर जो ईमान लाए और परहेज़गार रहे^(१४) ५७

आठवाँ रुकू -

और यूसुफ़ के भाई आए तो उसके पास हाज़िर हुए तो यूसुफ़ ने उन्हें^(१) पहचान लिया और वो उससे अंजान रहे^(२) ५८ और जब उनका सामान मुहैया कर दिया^(३) कहा अपना सौतेला भाई^(४) मेरे पास ले आओ क्या नहीं देखते कि मैं पूरा नापता हूँ^(५) और मैं सब से बेहतर मेहमान नवाज़ हूँ ५९ फिर अगर उसे लेकर मेरे पास न आओ तो

وَمَا يَرَىٰ نَفْسِي ۖ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ ۖ
إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۖ وَقَالَ
الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ أَتَحْلِيصُهُ لِنَفْسِي ۖ فَلَبِثَا كَلِمَةً
قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ۖ قَالَ
اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ عَلَيْكُمْ ۖ
وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ ۖ يَتَّبِعُوا مِنْهَا
حَيْثُ يَشَاءُ ۖ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيعُ
أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۖ وَلَا جُزْءَ الْأَجْرِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ
آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۖ وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ
فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ۖ وَلَبِثَا
جَهَنَّمَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ ۖ قَالَ ائْتُونِي بِآيَةٍ لَّكُمْ مِّنْ
إِيمَانِكُمْ أَتَأْتُونَ آبَاءَكُمْ فِي الْأَيْكِلِ وَأَنَا خَيْرُ
الْمُنْزِلِينَ ۖ فَإِن لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَّكُمْ

मन्ज़ल

सूरए यूसुफ़ - सातवाँ रुकू (जारी)

(६) जुलैज़्ज़ा के इकरार और ऐतिराफ़ के बाद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जो यह फ़रमाया था कि मैंने अपनी बेगुनाही का इज़हार इसलिये चाहा था ताकि अज़ीज़ को यह मालूम हो जाए कि मैं ने उसकी ग़ैर हाज़िरी में उसकी ख़यानत नहीं की है और उसकी बीबी की इज़्ज़त ख़राब करने से दूर रहा हूँ और जो इज़्ज़ाम मुझपर लगाए गए हैं, मैं उनसे पाक हूँ, इसके बाद आपका ख़याले मुबारक इस तरफ़ गया कि इसमें अपनी तरफ़ पाकी की निश्चय और अपनी नेकी का बयान है, ऐसा न हो कि इसमें घमण्ड और अहंकार की भावना भी आए, इसी लिये, अल्लाह तआला की वाग़्दाह में विनम्रता से अर्ज़ किया कि मैं अपने नफ्स को बेकुसूर नहीं मानता, मुझे अपनी बेगुनाही पर घमण्ड नहीं है और मैं गुनाह से बचने को अपने नफ्स की ख़ूबी क़रार नहीं देना, नफ्स की जिन्ना का यह हाल है कि,

(७) यानी अपने जिस ख़ास बन्दे को अपने करम से मासूम करे तो उसका बुराईया स बचना अल्लाह क़ फ़रज़ और रहमत से है और गुनाहों से मेहफूज़ रखना उसी की मेहरबानी है,

(८) जब बादशाह को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के इल्म और आपकी अमानत का हाल मालूम हुआ और वह आपके अच्छे सव्र और अच्छे अदब, कैद ख़ाने वालों के साथ एइसान, मेहनतों और तकलीफ़ों के बावजूद साबित क़दम रहने पर सूचित हुआ तो उसके दिल में आपका बहुत ही ज़्यादा अक्कीदा पैदा हुआ,

(९) और अपना ख़ास बना लूं, चुनांचे उसने प्रतिष्ठित लोगों की एक जमाअत, बहतरीन सवारियों और शाही साज़ों सामान और उमदा तिव़ास लेकर कैद ख़ाने भेजी ताकि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अत्यन्त आदर और सत्कार के साथ शाही महल में लाएं, उन लोगों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ख़िदमत में हाज़िर होकर बादशाह का मंदेश अर्ज़ किया, आपने कुबूल फ़रमाया और कैद ख़ाने से निकलते वक़्त कैदियों के लिये दुआ फ़रमाई, जब कैद ख़ाने से बाहर नशरीफ़ लाए तो उसके दरवाज़े पर लिखा कि यह बला का घर, ज़िन्दों की क़ब्र और दुश्मनों की बदगोई और सच्चा के इम्तिहान की जगह है, फिर ग़ुलन फ़रमाया और पोशाक पहन कर शाही महल की तरफ़ ख़ाना हुए, जब क़िले के दरवाज़े पर पहुंचे तो फ़रमाया मेरा रब मुझे काफ़ी है, उसकी पनाह बड़ी और उसकी तारीफ़ महान, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, फिर क़िले में दाख़िल हुए, बादशाह के सामने पहुंचे तो यह दुआ की कि ऐ मेरे रब, मैं तेरे फ़रज़ से इसकी भलाई तलब करता हूँ और इसकी और दूसरों की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ, जब बादशाह

तुम्हारे लिये मेरे यहाँ नाप नहीं और मेरे पास न फ़टकना (६०) बोले हम इसकी ख्वाहिश करेंगे उसके बाप से और हमें यह ज़रूर करना (६१) और यूसुफ़ ने अपने गुलामों से कहा इनकी पूंजी इनकी खुर्जियों में रख दो (६२) शायद वो इसे पहचानें जब अपने घर की तरफ़ लौट कर जाएं (६३) शायद वो वापस आएँ (६४) फिर जब वो अपने बाप की तरफ़ लौटकर गए (६५) बोले ऐ हमारे बाप हमसे गल्ला रोक दिया गया है (६६) तो हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिये कि गल्ला लाएँ और हम ज़रूर इसकी हिफ़ाज़त करेंगे (६७) कहा क्या इसके बारे में तुमपर वैसा ही भरोसा कर लूँ जैसा पहले इसके भाई के बारे में किया था (६८) तो अल्लाह सबसे बेहतर निगहवान और वह हर मेहरवान से बढ़कर मेहरवान (६९) और जब उन्होंने अपना सामान खोला अपनी पूंजी पाई कि उनको फेर दी गई है बोले ऐ हमारे बाप अब हम और क्या चाहें यह है हमारी पूंजी कि हमें वापस कर दी गई और एक ऊंट का बोझा और ज़्यादा पाएँ, यह दुनिया वादशाह के सामने कुछ नहीं (७०) (७१) कहा मैं हरगिज़ इसे तुम्हारे साथ न भेजूँगा जबतक तुम मुझे अल्लाह का यह एहद न दे दो (७२) कि ज़रूर उसे लेकर आओगे मगर

يُؤْتِيهِ

۳۳۸

وَمَا يُؤْتِيهِ

عِنْدِي وَلَا تَقْرُبُونِ ۝ قَالُوا سَرَّادُ عَنْهُ
أَبَاكَ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ۝ وَقَالَ لِفَتَاتِهِ اجْعَلُوا
بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا
إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ فَلَمَّا رَجَعُوا
إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ
مَعَنَا آخَانًا نَّكَتِلْ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝ قَالَ هَلْ
أَمْنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا أَمَنَّاكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ ۝
قَالَ اللَّهُ خَيْرَ حَافِظٍ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝ وَلَمَّا
فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ ۝
قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي هَذِهِ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا
وَنَبِئُكَ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانًا وَنَزِدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ
ذَلِكَ كَيْلُ يَسِيرٍ ۝ قَالَ كُنْ أُرْسِلْكَ مَعَكُمْ حَتَّى
تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَنْ

مَوْلَىٰ

से तज़र मिली तो आपने अरबी में सलाम फ़रमाया, वादशाह ने दरियाफ़्त किया, यह क्या ज़वान है, फ़रमाया, यह मेरे चचा हज़रत इस्माईल की ज़वान है, फिर आपने उसको इब्रानी में दुआ दी, उसने पूछा, यह कौन ज़वान है, फ़रमाया यह मेरे अब्बा की ज़वान है, वादशाह ये दोनों ज़वानों न समझ सका, जबकि वह सत्तर ज़वानों जानता था, फिर उसने जिस ज़वान में हज़रत से बात की, आपने उसी ज़वान में उसको जवाब दिया, उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ तीस साल की थी, इस उम्र में इल्म का यह चमत्कार देखकर वादशाह बहुत हैरान हुआ और उसने आप को अपने बराबर जगह दी.

(१०) वादशाह ने दख़्ख़रत की कि हज़रत उसके ख़्वाब की तावीर अपनी मुबारक ज़वान से सुना दें, हज़रत ने उस ख़्वाब की पूरी तफ़सील भी सुना दी, जिस जिस तौर से कि उसने देखा था, जबकि आपसे यह ख़्वाब पहले संक्षेप में ख़्वाब किया गया था, इससे वादशाह को बहुत आश्चर्य हुआ, कहने लगा कि आपने मेरा ख़्वाब हूँ वह बयान फ़रमा दिया, ख़्वाब तो अजीब था ही, मगर आपका इस तरह बयान फ़रमा देना उससे भी ज़्यादा अजीब है, अब तारीर इशारा हो जाए, आपने तारीर बयान फ़रमाने के बाद इशारा फ़रमाया कि अब लाज़िम है कि ग़ल्ले जमा किये जाएँ और इन ख़ुशहाली के सालों में कसबत से ख़न्ती कराई जाए और ग़ल्ले वालों समेत सुरक्षित किये जाएँ और जनता की पैदावार में से पाँचवाँ हिस्सा लिया जाए, इससे जो जमा होगा वह मिस्र और आस पास के प्रदेशों के रहने वालों के लिये काफ़ी होगा, फिर ख़ल्क खुदा हर हर तरफ़ से तेरे पास ग़ल्ला ख़रीदने आएगी और तेरे यहाँ इतने ख़जाने और माल भंडार जमा होंगे जो तुझ से पहलों के लिये जमा न हुए, वादशाह ने कहा यह इन्ज़िलाम कौन करेगा.

(११) यानी अपनी सल्तनत के सारे ख़जाने मेरे सुपुर्द कर दे, वादशाह ने कहा, आपसे ज़्यादा इसका मुस्तहिक और कौन हो सकता है, उसने इसको मंज़ूर कर लिया, हदीस के मसाल में सरदारी की तलब को मना फ़रमाया गया है, इसके मानी ये हैं कि जब मुल्क में योग्य और सक्षम लोग हों और अल्लाह के आदेशों का क़ायम रखना किसी एक शख्स के साथ ख़ास न हो, उस वक़्त सरदारी तलब करना मक़रूह है, लेकिन जब एक ही शख्स योग्य और सक्षम हो तो उसको अल्लाह के एहक़ाम क़ायम करने के लिये इमारत यानी सरदारी तलब करना जायज़ बल्कि वाजिब है, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम इसी हाल में थे, आप जानते थे कि सख़्त दुष्काल पड़ने वाला है जिसमें इन्सान को राहत और आसामिश पहुँचाने का यही रास्ता है कि हुक्मत की बाग़ डोर को आप अपने हाथ में लें, इसलिये आपने सरदारी तलब फ़रमाई, ज़ालिम वादशाह की तरफ़ से ओहदे कुबूल करना इन्साफ़ क़ायम करने की नियत से जायज़ है, अगर दीन के अहक़ाम का जारी करना काफ़िर या फ़ासिक वादशाह की मदद के बिना सम्भव न हो तो ऐसी सूरत में उससे सहायता लेना जायज़ है, अपनी ख़ूबियों का बयान घमण्ड और अहंकार के लिये नाजायज़ है, लेकिन दूसरों को नफ़ा पहुँचाने या ख़ल्क के अधिकारों की हिफ़ाज़त करने के लिये अगर इज़हार की ज़रूरत पेश आए तो मना नहीं, इसी लिये हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने वादशाह से फ़रमाया कि मैं हिफ़ाज़त और इल्म वाला हूँ.

(१२) सब उर्वक इन्तेमाल के तहत है, सरदारी तलब करने के एक साल बाद वादशाह ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बुलाकर

आपकी तलवार की और तलवार और मोहर आपके सामने पेश की और आपको सोने के तख्त पर बिठाया जिसमें जवाहिर जड़े हुए थे और अपना मुल्क आपके हाथ में दिया और कित्तफ्री (अजीजे मिस्) को गद्दी से उतार कर आपको उसकी जगह रखा. सारे खजाने आपके मातहत कर दिये और खुद आपकी रियाया की तरह हो गया कि आपकी राय में दरख्त न देता और आपके हर हुक्म को मानता. उस ज़माने में अजीजे मिस् का इत्तिकाल हो गया. बादशाह ने उसके मरने के बाद जुलैखा का निकाह हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के साथ कर दिया. जब यूसुफ अलैहिस्सलाम जुलैखा के पास पहुंचे और उससे फ़रमाया, क्या यह उससे बेहतर नहीं है जो तू चाहती थी. जुलैखा ने अर्ज किया ऐ सिदीक़, मुझे मलामत न कीजिये. मैं ख़ूबसूरत थी, नौजवान थी, ऐश में थी और अजीजे मिस् औरतों से तअल्लुक ही न रखता था. आपको अल्लाह तआला ने यह हुस्न व जमाल अता किया है. मेरा दिल इस्तिषार से बाहर हो गया. अल्लाह तआला ने आप को गुनाहों से हमेशा के लिये मेहफूज़ रखा है, आप मेहफूज़ ही रहे. हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम ने जुलैखा को अनछुई पाया और उससे आपके दो बेटे हुए, इफ़रासीम और मयया और मिस् में आपकी हुक्मत मज़बूत हुई. आपने इन्साफ़ की बुनियादें कायम कीं. हर मर्द औरत के दिल में आपकी महबूत पैदा हुई. और आपने दुष्काल के दिनों के लिये गल्ले के भंडार जमा करने की तदबीर फ़रमाई. इसके लिये बड़े बड़े आलीशान भंडारख़ाने बनवाए और बहुत ज़्यादा ज़ख़ीरे जमा किये. जब शूशहली के साल गुज़र गए और कहत और सूखा का ज़माना आया तो आपने बादशाह और उसके ख़ादिमों के लिये ख़ज़ाना सिर्फ़ एक वक़्त का ख़ावा मुक़रर फ़रमा दिया. एक रोज़ दोपहर के वक़्त बादशाह ने हज़रत से भूख की शिकायत की. आपने फ़रमाया, यह कहत और दुष्काल की शुरुआत है. पहले साल में लोगों के पास जो ज़ख़ीरें थीं, सब ख़त्म हो गए. बाज़ार ख़ाली हो गए. मिस् वाले हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम से ज़िन्स ख़रीदने लगे और उनके सारे दिरहम दीनार आपके पास आ गए. दूसरे साल ज़ेवर और जवाहिरात से गल्ला ख़रीदा और वो तमाम आपके पास आ गए. लोगों के पास ज़ेवर और जवाहिरात की क्रिस्म से कोई चीज़ न रही. तीसरे साल चौपाए और जानवर देकर गल्ले ख़रीदे और मुल्क में कोई किसी जानवर का मालिक न रहा. चौथे साल में गल्ले के लिये तमाम गुलाम और दासियाँ बेच डालीं. पाँचवें साल सारी ज़मीनें और अमला और जागीरें बेच कर हज़रत से गल्ला ख़रीदा और ये सारी चीज़ें हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के पास पहुंच गईं. छठे साल जब कुछ न रहा तो उन्होंने अपनी ओलादें बेचीं. इस तरह गल्ले ख़रीद कर वक़्त गुज़ारा. सातवें साल वां लोग खुद विक्र गए और गुलाम बन गए और मिस् में कोई आज़ाद मर्द न औरत बाक़ी न रहा, जो मर्द था वह हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम का गुलाम था, जो औरत थी वह आपकी दासी थी. लोगों की ज़वान पर था कि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की सी अज़मत और ज़लाल कभी किसी बादशाह को हासिल नहीं हुआ. हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम ने बादशाह से कहा, तू ने देखा अल्लाह का मुझपर कैसा करम है. उसने मुझपर ऐसा अज़ीम एहसान फ़रमाया है. अब उनके हक्क में तेरी क्या राय है. बादशाह ने कहा जो हज़रत की राय, हम आपके फ़रमाँवरदार हैं. आपने फ़रमाया मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुझको गवाह करता हूँ कि मैं ने सारे मिस् वासियों को आज़ाद कर दिया और उनके तमाम माल और जागीरें वापस कर दीं. उस ज़माने में हज़रत ने कभी पेट भर खाना नहीं खाया. आप से अर्ज किया गया इतने ज़वरदस्त ख़ाज़ानों के मालिक होकर आप भूख रहते हैं. फ़रमाया इस डर से कि पेट भर जाए तो कहीं भूखों को न भूल जाऊँ. सुक़ानल्लाह, क्या पाकीज़ा संस्कार हैं. मुफ़सिरीन फ़रमाते हैं कि मिस् के सारे औरत मर्द को हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के ख़रीदे हुए गुलाम और दासियाँ बनाने में अल्लाह तआला की यह हिक्मत थी कि किसी को कहने का मौक़ा न हो कि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम गुलाम की शान में आए थे और मिस् के एक शख्स के ख़रीदे हुए हैं बल्कि सच मिस्ती उनके ख़रीदे और आज़ाद किये हुए गुलाम हों. और हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम ने जो उस हालत में सज़ किया उसका यह इनाम दिया गया.

(१३) यानी मुल्क और दौलत या नवुबत.

(१४) इससे साबित हुआ कि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के लिये आख़िरत का अज़्र व सवाब उससे बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल और आला है, जो अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया में अता फ़रमाया. इन्हे ऐनिया ने कहा कि मूमिन अपनी नेकियों का फल दुनिया और आख़िरत दोनों में पाता है और काफ़िर जो कुछ पाता है, दुनिया ही में पाता है. आख़िरत में उसके कोई हिस्सा नहीं. मुफ़सिरी ने बयान किया है कि जब दुष्काल और कहत की तीव्रता बढ़ी और बला आम हो गई, तमाम प्रदेश सूखे की सख्त मुसीबत में जकड़ गए और हर दिशा से लोग गल्ला ख़रीदने के लिये मिस् पहुंचने लगे. हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम किसी को एक ऊंट के बांझ से ज़्यादा गल्ला नहीं देने थे ताकि बराबरी रहे और सब की मुसीबत दूर हो. कहत की जैसी मुसीबत मिस् और सारे प्रदेश में आई, ऐसी ही कनआन में भी आई. उस वक़्त हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने बिन यामीन के सिवा अपने दसों बेटों को गल्ला ख़रीदने मिस् भेजा.

सूरए यूसुफ - आठवाँ ख़ूक़

(१) देग़्रते ही.

(२) क्योंकि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम को कुएं में डालने से अब तक चालिस साल का लम्बा ज़माना गुज़र चुका था. उनका यह ख़याल था कि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम का इत्तिकाल हो चुका होगा. यहाँ आप शाही तख्त पर शाहाना लिबास में शानो शीक़त के साथ जलवा फ़रमा थे. इसलिये उन्होंने आपको न पहचाना और आपसे इब्रानी ज़बान में बात की. आप ने भी उसी ज़बान में जवाब दिया. आपने फ़रमाया तुम कौन लोग हो. उन्होंने अर्ज किया हम शाम के रहने वाले हैं जिस मुसीबत में दुनिया जकड़ी हुई

यह कि तुम घिर जाओ^(१३) फिर जब उन्होंने याकूब को एहद दे दिया कहा^(१४) अल्लाह का ज़िम्मा है उन बातों पर जो हम कह रहे हैं^(१५) और कहा ऐ मेरे बेटों^(१६) एक दरवाजे से न दाखिल होना और अलग अलग दरवाजों से जाना^(१७) मैं तुम्हें अल्लाह से बचा नहीं सकता^(१८) हुक्म तो सब अल्लाह ही का है, मैं ने उसी पर भरोसा किया, और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा चाहिये^(१९) और जब वो दाखिल हुए जहाँ उनके बाप ने हुक्म दिया था^(२०) वह उन्हें कुछ अल्लाह से बचा न सकता हूँ याकूब के जी में एक खाहिश थी जो उसने पूरी करली और वेशक वह इल्म वाला है हमारे सिखाए से मगर अक्सर लोग नहीं जानते^(२१) ॥६८॥

नवाँ रुकू

और जब वो यूसुफ़ के पास गए^(१) उसने अपने भाई को अपने पास जगह दी^(२) कहा यक़ीन जान मैं ही तेरा भाई हूँ^(३) तो ये जो कुछ करते हैं उसका ग़म न खा^(४) ॥६९॥ फिर जब उनका सामान मुहैया कर दिया^(५) प्याला अपने भाई के कजावे में रख दिया^(६) फिर एक मुनादी (उदघोषक) ने निदा(एलान) की ऐ क़ाफ़िले वालो

يُوسُفُ

۳۳۹

وَمَا يُغْنِي عَنْهُمْ

يُعَاطِ بِكُمْ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْتَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَا
مَا تَقُولُ وَكِيلٌ ۝ وَقَالَ يَبْنَئِي لَا تَدْخُلُوا
مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُتَفَرِّقَةٍ ۝
وَمَا أَعْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا
لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝
وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ
يُبْعَثِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي
نَفْسٍ يَعْظُونَ فَضْهًا وَإِنَّ لَدُوْهُمْ لَمَّا عَلَنَهُ
وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوا
عَلَى يُوسُفَ أَوَّلَ إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا
أَخُوكَ فَلَا تَبْتَسِمْ بِنَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السَّقَايَةَ فِي
رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذِنَ مُؤَدِّنُ أَيَّتْهَا الْعِيذُ لَكُمْ

مَزْلُومٌ

है उसी में हम भी हैं। आप से गल्ला खरीदने आए हैं। आपने फ़रमाया, कहीं तुम जासूस तो नहीं हो। उन्होंने कहा हम अल्लाह की क़सम खाते हैं हम जासूस नहीं हैं। हम सब भाई हैं एक बाप की औलाद हैं। हमारे वालिद काफ़ी बुजुर्ग उम्र वाले सीधे सच्चे आदमी हैं। उनका नाम हज़रत यअक़ूब है, वह अल्लाह के नबी हैं। आपने फ़रमाया तुम कितने भाई हो। कहने लगे, थे तो हम बारह, मगर एक भाई हमारे हमारे साथ जंगल में गया था, हलाक हो गया और वह वालिद साहब को हम सबसे प्यारा था। फ़रमाया अब तुम कितने हो। अर्ज़ किया दस। फ़रमाया म्यारहवाँ कहीं है। कहा वह वालिद साहब के पास है क्योंकि जो हलाक हो गया वह उसीका सगा भाई था। अब वालिद साहब की उसी से कुछ तसल्ली होती है। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने इन भाइयों की बहुत इज़्ज़त की और बहुत आओ भगत की।

(३) हर एक का ऊंट भर दिया और सफ़र ख़र्च दे दिया।

(४) यानी बिन यामीन।

(५) उसको ले आओगे तो एक ऊंट गल्ला उसके हिस्से का और ज़्यादा ढुंगा।

(६) जो उन्होंने क़ीमत में दी थी ताकि जब वो अपना सामान खोलें तो अपनी पूंजी उन्हें मिल जाए और क़हत के ज़माने में काम आए और छुपकर उनके पास पहुंचे ताकि उन्हें लेने में शर्म भी न आए और यह करम और एहसान दुबारा आने के लिये उनकी साबत का कारण भी हो।

(७) और उसका वापस करना ज़रूरी समझें।

(८) और बादशाह के सदब्यवहार और उसके एहसान का ज़िक्र किया। कहा कि उसने हमारी वह इज़्ज़त और सम्मान किया कि अगर आपकी औलाद में से कोई होता तो भी ऐसा न कर सकता। फ़रमाया अब अगर तुम मिस्र के बादशाह के पास जाओ तो मेरी तरफ़ से सलाम पहुंचा देना और कहना कि हमारे वालिद तेरे हक़ में तेरे इस मुलूक की बज़ह से दुआ करते हैं।

(९) अगर आप हमारे भाई बिन यामीन को न भेजेंगे तो गल्ला न मिलेगा।

(१०) उस वक़्त भी तुमने हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया था।

(११) क्योंकि उसने उम्रसे ज़्यादा एहसान किये हैं।

(१२) यानी अल्लाह की क़सम न खाओ।

(१३) और उसको लेकर तुम्हारी ताक़त से बाहर हो जाए।

(१४) हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम।

(१५) मिस्र में।

(१६) ताकि बुरी बज़र से मेहफूज़ रहो। बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि बज़र बरहक़ है। पहली बार हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने

वेशक तुम चोर हो (७०) बोले और उनकी तरफ मुतवज्जह हुए तुम क्या नहीं पाते (७१) बोले बादशाह का पैमाना नहीं मिलता और जो उसे लाएगा उसके लिये एक ऊंट का बोझ है और मैं उसका ज़ामिन हूँ (७२) बोले खुदा की कसम तुम्हें खूब मालूम है कि हम ज़मीन में फ़साद करने नहीं आए और न हम चोर हैं (७३) बोले फिर क्या सज़ा है उसकी अगर तुम झूठे हो (७४) बोले उसकी सज़ा यह है कि जिस के असबाब में मिले वही उसके बदले में गुलाम बने (७५) हमारे यहां ज़ालिमों की यही सज़ा है (७६) तो पहले उनकी खुर्तियों की तलाशी शुरू की अपने भाई (७७) की खुर्तियों से पहले फिर उसे अपने भाई की खुर्तियों से निकाल लिया (७८) हमने यूसुफ़ को यही तदबीर बताई (७९) बादशाही कानून में उसे नहीं पहुंचता था कि अपने भाई को ले ले (८०) मगर यह कि खुदा चाहे (८१) हम जिसे चाहें दर्जों बलन्द करें (८२) और हर इल्म वाले से ऊपर एक इल्म वाला है (८३) भाई बोले अगर यह चोरी करे (८४) तो वेशक इससे पहले इसका भाई चोरी कर चुका है (८५) तो यूसुफ़ ने यह बात अपने दिल में रखी और उनपर ज़ाहिर न की, जी में कहा तुम बदतर जगह हो (८६) और अल्लाह खूब

لَسْرِقُونَ ۖ قَالُوا وَاقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقِدُونَ ۖ
قَالُوا تَفْقِدُ صَوَاءَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ بَجَاءَ بِهِ مِنْ حِلٍّ لِّبِئْسَ
وَأَنَا بِهِ رَعِيْمٌ ۖ قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ فَاِجْعَلُنَا
لِنُقْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا بِسَرِقِيْنَ ۖ قَالُوا
فَمَا جَزَاؤُهُ اِنْ كُنْتُمْ كَاذِبِيْنَ ۖ قَالُوا جَزَاؤُهُ
مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ ۚ كَذٰلِكَ
تُجْزٰى الظّٰلِمِيْنَ ۖ فَبَدَا بِاَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وِعَاۤءِ
اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاۤءِ اَخِيْهِ ۚ كَذٰلِكَ
كَذٰنَا لِيُؤْصَفَ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ ۚ فِي دِيْنِ
الْمَلِكِ اِلَّا اَنْ يَّشَاءَ اللّٰهُ ۚ تَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مِّنْ
نَّشَاۤءٍ ۚ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۖ قَالُوا اِنْ يَّسْرِقْ
فَقَدْ سَرَقَ اَمْرًا لَّهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاسْتَرٰهَا يُوْسُفُ
فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرُّ

مُتَرٰ

यह नहीं फ़रमाया था इसलिये कि उस वस्तु तक कोई यह न जानता था कि यह सब भाई एक बाप की औलाद हैं, लेकिन अब चूंकि जार चुके थे इसलिये दज़र होजाने को संभावना थी, इस वस्ते आपने अलग अलग होकर दाखिल होने का हुक्म दिया, इससे मालूम हुआ कि आपनों और मुसीबतों से बचने की तदबीर और मुनासिब एहतियात नवियों का तरीका है, इसके साथ ही आपने कम अल्लाह को सौंप दिया कि एहतियातों के बावजूद अल्लाह पर तक्कल और एतिलाद है, अपनी तदबीर पर भरोसा नहीं.

(१७) यानी जो तदबीर में लिखा है वह तदबीर से टाला नहीं जा सकता.

(१८) यानी शहर के विभिन्न दरवाज़ों से तो उनका अलग अलग होकर दाखिल होना.

(१९) जो अल्लाह तआला अपने नेकों को इल्म देता है.

सूरए यूसुफ - नवाँ रूकू

(१) और उन्होंने कहा कि हम आपके पास अपने भाई बिन यामीन को ले आए तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, तुमने बहुत अच्छा किया, फिर उन्हें इज़्रत के साथ मेहमान बनाया और जगह जगह दस्तार ख़ान लगाए गए और हर दस्तार ख़ान पर दो दो को बिठाया गया, बिन यामीन अकेले रह गए तो वह रो पड़े और कहने लगे कि आज अगर मेरे भाई यूसुफ़ ज़िन्दा होते तो मुझा अपने साथ बिठाते, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम्हारा एक भाई अकेला रह गया और आपने बिन यामीन को अपने दस्तार ख़ान पर बिठाया.

(२) और फ़रमाया कि तुम्हारे हलाक शुदा भाई की जगह मैं तुम्हारा भाई हो जाऊं तो क्या तुम पसन्द करोगे? बिन यामीन ने कहा कि आप जैसा भाई किस मिले, लेकिन यअक़ूब अलैहिस्सलाम का बेटा और ग़हीन (हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बालिदा) की आँखों का दूर होना तुम्हें कैसे हासिल हो सकता है, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम रो पड़े और बिन यामीन को गले से लगा लिया और.

(३) यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम)

(४) वेशक अल्लाह ने हम पर एहतियात किया और हमें ख़ीर के साथ जमा फ़रमाया और अभी इस राज़ की भाइयों को ख़बर न देना, यह सुनकर बिन यामीन खुशी से झूम उठे और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से कहने लगे, अब मैं आपसे जुदा न होऊंगा, आपने फ़रमाया, बालिद साहब को मेरी जुदाई का बहुत ग़म पहुंच चुका है, अगर मैंने तुम्हें भी रोक लिया तो उन्हें और ज्यादा ग़म होगा, इसके अलावा रोकने की इसके सिवा और कोई सबील भी नहीं है कि तुम्हारी तरफ़ कोई ग़लत बात जुड़ जाए, बिन यामीन ने कहा इसमें कोई हर्ज नहीं.

(५) और हर एक को एक ऊंट के बोझ के बराबर गल्ला दे दिया और एक ऊंट के बोझ के बराबर बिन यामीन के नाम ख़ास कर दिया.

जानता है जो बातें बनाते हो (७७) बोलें ऐ अजीज़ इसके एक बाप हैं बूढ़े बड़े (२०) तो हम में इसकी जगह किसी को ले लो वेशक हम तुम्हारे एहसान देख रहे हैं (७८) कहा (२१) खुदा की पनाह कि हम लें मगर उसी को जिसके पास हमारा माल मिला (२२) जब तो हम ज़ालिम होंगे (७९)

दसवाँ स्कू

फिर जब इससे ना उम्मीद हुए अलग जाकर कानाफूसी करने लगे, उनका बड़ा भाई बोला क्या तुम्हें खबर नहीं कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का एहद ले लिया था और उससे पहले यूसुफ़ के हक में तुमने कैसी तकसीर (अपराध) की तो मैं यहाँ से न टलूंगा यहां तक कि मेरे बाप (१) इजाज़त दें या अल्लाह मुझे हुक्म फ़रमाए (२) और उसका हुक्म सबसे बेहतर है (८०) अपने बाप के पास लौट कर जाओ फिर अर्ज़ करो कि ऐ हमारे बाप वेशक आपके बेटे ने चोरी की (३) और हम तो इतनी ही बात के गवाह हुए थे जितनी हमारे इल्म में थी (४) और हम ग़ैब के निगहबान न थे (५) (८१) और उस क़ाफ़िले से जिसमें हम आए और हम वेशक सच्चे

يُؤْتِي

۳۴۱

وَمَا الْغَيْبُ

مَكَانًا ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ۖ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدًا مَكَانَهُ ۚ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۖ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَن تَأْخُذَ بَلَدًا ۖ إِنَّا وَجَدْنَا مُتَاعًا عِنْدَهُ ۖ إِنَّا إِذَا ظَلَمْنَا لَنَا ۖ فَلَمَّا اسْتَلَبْتُمُوهُ مِنْهُ خَلْتُمُو نَجِيًّا ۖ قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ ۖ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ ۖ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّىٰ يَأْذَنَ لِي إِلَىٰ أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِي ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۖ ارْجِعُوا إِلَىٰ أَبِيكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۖ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلَّمَنَا ۖ وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ۖ وَسَكِلَ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۖ وَإِنَّا

مَنْزِل

(६) जो बादशाह के पानी पीने का सोने का जवाहिरात से जड़ा हुआ था और उस वक़्त उससे गल्ला नापने का काम लिया जाता था. यह प्याला बिन यामीन के कज़ाबे में रख दिया गया और क़ाफ़िला कनआन के इरादे से खाना हो गया. जब शहर के बाहर जा चुका तो भंडार खाने के कारकुनों को मालूम हुआ कि प्याला नहीं है. उनके ख्याल में यही आया कि यह क़ाफ़िले वाले ले गए. उन्होंने उसकी तलाश के लिये आदमी भेजे.

(७) इस बात में, और प्याला तुम्हारे पास निकले.

(८) और हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम की शरीअत में चोरी की यही सज़ा मुकर्रर थी. चुनांचे उन्होंने कहा कि.

(९) फिर यह क़ाफ़िला मिश्र लाया गया और उन साहिबों को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दरबार में हाज़िर किया गया.

(१०) पानी बिन यामीन.

(११) पानी बिन यामीन की शूर्जी से प्याला वरामद किया.

(१२) अपने भाई के लेने की. इस मामले में भाइयों से पूछें ताकि वो हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम की शरीअत का हुक्म बताएं जिससे भाई मिल सके.

(१३) क्योंकि मिश्र के बादशाह के क़ानून में चोरी की सज़ा मारना और दो गुना माल लेना मुकर्रर थी.

(१४) पानी यह बात खुदा की मज़्नी से हुई कि उनके दिल में डाल दिया कि सज़ा भाइयों से पूछें और उनके दिल में डाल दिया कि वो अपनी सुन्नत के मुताबिक जवाब दें.

(१५) इल्म में जैसे कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दर्जे बलन्द फ़रमाए.

(१६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हर आलिम के ऊपर उससे ज़्यादा इल्म रखने वाला आलिम होता है. यहाँ तक कि ये सिलसिला अल्लाह तआला तक पहुँचता है. उसका इल्म सबके इल्म से बरतार है. इस आपत में माबित हुआ कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई आलिम थे और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उन सबसे ज़्यादा आलिम थे. जब प्याला बिन यामीन के सामान से निकला तो भाई शर्मिन्दा हुए और उन्होंने सर झुकाए और.

(१७) पानी सामान में प्याला निकलने से सामान वाले का चोरी करना तो यकीनी नहीं लेकिन अगरचे ये काम उसका हो.

(१८) पानी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और जिसको उन्होंने चोरी करार देकर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरफ़ निखत किया. वो घटना यह थी कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के नाता का एक बुत था जिसको वह पूजते थे. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने चुपके से वह बुत लिया और तोड़कर रास्ते में गन्दगी के अन्दर डाल दिया. यह हकीकत में चोरी न थी, बुत परस्ती का मिटाना था. भाइयों का इस जिक्र से यह मक़सद था कि हम लोग बिन यामीन के सौतेले भाई हैं. यह काम हो तो शायद बिन यामीन का हो, न हमारी इसमें शिक़्त, व हमें इसकी सूचना.

हैं^(१९) ॥८२॥ कहा^(२०) तुम्हारे नपस (मन) ने तुम्हें कुछ हीला (वहाना) बना दिया तो अच्छा सत्र है क़रीब है कि अल्लाह उन सब को मुझ से ला मिलाए^(२१) बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है ॥८३॥ और उनसे मुंह फेरा^(२२) और कहा हाय अफ़सोस यूसुफ़ की जुदाई पर और उसकी आँखें ग़म से सफ़ेद हो गई^(२३) तो वह गुस्सा खाता रहा ॥८४॥ बोले^(२४) खुदा की क़सम आप हमेशा यूसुफ़ की याद करते रहेंगे यहाँ तक कि ग़ोर किनारे जा लगे या जान से गुज़र जाए ॥८५॥ कहा मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रियाद अल्लाह ही से करता हूँ^(२५) और मुझे अल्लाह की वो शानें मालूम हैं जो तुम नहीं जानते^(२६) ॥८६॥ ऐ बेटो जाओ यूसुफ़ और उसके भाई का पता लगाओ और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो, बेशक अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर लोग^(२७) ॥८७॥ फिर जब वो यूसुफ़ के पास पहुँचे बोले ऐ अज़ीज़ हमें और हमारे घर वालों को मुसीबत पहुँची^(२८) और हम बेक्रदर पूँजी लेकर आए हैं^(२९) तो हमें पूरा नाप दीजिये^(३०) और हम पर ख़ैरात कीजिये^(३१) बेशक अल्लाह ख़ैरात वालों का सिला देता है^(३२) ॥८८॥

لَصِدْقُونَ ۖ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْراً ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۖ وَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَفَى عَلَى يَوْسُفَ وَابَيْضَتْ عَيْنُهُ مِنَ الْحُزَنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ۖ قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتَوْا تَذَكَّرُ يَوْسُفَ ۖ كَيْ تَكُونَ حَرَصًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ۖ قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ يَبْنِي أَدْهَبُوا فَتَحَسَبُوا مِنْ يَوْسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَأْيِسُوا مِنْ رَوْحِ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ لَا يَأْيِسُ مِنْ رَوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ۖ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَنَا الصُّرْمُ وَجِئْنَا بِضَاعَةٍ مُزْجَاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۖ إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ۖ

मन्ज़ल

- (१९) इससे जिसकी तरफ़ चोरी की निम्नत करते हो, क्योंकि चोरी की निम्नत हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरफ़ तो ग़लत है, वह काम तो शिर्क का मिटाना और इबादत था और तुमने जो यूसुफ़ के साथ किया, बड़ी ज़ियादतियाँ हैं.
- (२०) उनसे महबूब रसूल हैं और उन्हीं से उनके दिल को तसल्ली है.
- (२१) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने.
- (२२) क्योंकि तुम्हारे फ़ैसले से हम उसी का लेने के मुस्तहक़ हैं जिसके सामान में हमारा माल मिला. अगर हम उसके बदले दूसरे का ले.

सूरए यूसुफ़ - दसवाँ रूकू

- (१) मेरे वापस आने की.
- (२) मेरे भाई को ख़लाली देकर या उसको छोड़कर तुम्हारे साथ चलने का.
- (३) यानी उनकी तरफ़ चोरी की निम्नत की गई.
- (४) कि प्यारा उनके सामान में निकला.
- (५) और हमें ख़बर न थी कि यह सूरत पेश आएगी. हकीकत क्या है अल्लाह ही जाने और प्यारा किस तरह बिन यामीन के सामान से निकला.
- (६) फिर ये लोग अपने वालिद के पास आए और सफ़र में जो पेश आया था उसकी ख़बर दी और बड़े भाई ने जो कुछ बना दिया वह सब वालिद से अर्ज़ किया.
- (७) हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने, कि चोरी की निम्नत बिन यामीन की तरफ़ ग़लत है और चोरी की सज़ा गुलाम बनाना यह भी कोई क्या जाने अगर तुम फ़नवा न देने और तुम्हीं न बताते तो.
- (८) यानी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को और उनके दोनों भाइयों को.
- (९) हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने, बिन यामीन की ख़बर सुनकर, और आपका ग़म और दुख़ चरम सीमा को पहुँच गया.
- (१०) रोते रोते आँख़ की सियाही का रंग जाता रहा और बीनाई कमज़ोर हो गई. हसन रदियल्लाहो अन्हो ने कहा कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की जुदाई में हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम अस्सी वरस रोते रहे. ऐसा रोना जो तकलीफ़ और नुमाइश से न हो और उसके साथ अल्लाह की शिकायत और बेसब्री न पाई जाए, रहमत है. उन ग़म के दिनों में हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम की ज़वाने मुबारक पर कभी कोई कलिमा बेसब्री का न आया.

बोले कुछ खबर है तुम ने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या किया था जब तुम नादान थे^(१९) (८९) बोले क्या सचमुच आप ही यूसुफ हैं कहा मैं यूसुफ हूँ और यह मेरा भाई वेशक अल्लाह ने हमपर एहसान किया^(२०) वेशक जो परहेजगारी और सब करे तो अल्लाह नेकों का नेग ज़ाया (नष्ट) नहीं करता^(२१) (९०) बोले खुदा की कसम वेशक अल्लाह ने आपको हमपर फज़ीलत दी और वेशक हम खता वाले थे^(२२) (९१) कहा आज^(२३) तुमपर कुछ मलामत नहीं अल्लाह तुम्हें माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से बढ़कर मेहरवान है^(२४) (९२) मेरा यह कर्ता लेंजाओ^(२५) इसे मेरे बाप के मुंह पर डालो उनकी आँखें खुल जाएंगी और अपने सब घर भर को मेरे पास ले आओ^(२६) (९३)

ग्यारहवाँ स्कू

जब काफ़िला मिस्र से जुदा हुआ^(१) वहाँ उनके बाप ने^(२) कहा वेशक मैं यूसुफ़ की खुशबू पाता हूँ अगर मुझे न कहो कि सठ गया है^(३) (९४) बेटे बोले खुदा की कसम आप अपनी सी पुरानी खुदरफ्तगी (बेखुदी) में हैं^(४) (९५) फिर जब खुशी सुनाने वाला आया^(५) उसने वह कर्ता यअक़ूब के मुंह पर डाला उसी वक़्त उसकी आँखें फिर आई कहा मैं न कहता

يُوسُفُ ۝ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ لِحُوتِهِمْ ۝ قَالُوا إِنَّكَ لَأَنْتَ يُوسُفُ ۝ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَذَا أَخِي قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝ قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ أَثَرْنَا اللَّهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا لَكَاظِمِينَ ۝ قَالَ لَا تَثْرِيْبٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يُغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝ اذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَذَا فَالْقُوْهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُفَنِّدُونِ ۝ قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ۝ فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۝ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا

مَنْزِل

- (११) यूसुफ़ के भाई अपने वालिद से.
- (१२) तुम से या और किसी से नहीं.
- (१३) इससे मालूम होता है कि हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम जानते थे कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ज़िन्दा हैं और उनसे मिलने की उम्मीद रखते थे. यह भी जानते थे कि उनका ख़ाब सच्चा है, ज़रूर सामने आएगा. एक रियायत यह भी है कि आपने हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम से पूछा कि क्या तुमने मेरे बेटे यूसुफ़ की रूढ़ निकाली है. उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं. इस से भी आपको उनकी ज़िन्दागी का इत्मीनान हुआ और आपने अपने बेटों से फ़रमाया.
- (१४) यह सुनकर हज़रत यूसुफ़ के भाई फिर मिस्र की तरफ़ ख़ाना हुए.
- (१५) यानी तंगी और भूख की सरज़्ती और ज़िस्मों का दुबला हो जाना.
- (१६) ख़दी, ख़ोटी, जिसे कोई सौदागर माल की ख़ीमत में कुबूल न करे. वो कुछ ख़ोटे दिरहम थे और घर के सामान से कुछ पुरानी चीज़ें.
- (१७) जैसा ख़रे दामों से देते थे.
- (१८) यह नाक्रिम और ख़राब पूंजी कुबूल करके.
- (१९) उनका यह हाल सुनकर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को रोना आगया और आँखों से आँसू निकलने लगे और.
- (२०) यानी यूसुफ़ को मारना, कुंए में गिराना, बेचना, वालिद से अलग करना और उनके बाद उनके भाई को तंग रखना, परेशान करना, तुम्हें याद है. यह फ़रमाते हुए हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हंसी आ गई. उन्होंने आपके मोती जैसे दांतों को देखकर पहचान लिया कि यह यूसुफ़ के हुस की शान है.
- (२१) हमें जुदाई के बाद सलामती के साथ मिलाया और दुनिया व दीन की नेअमतों से नवाज़ा.
- (२२) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई माफ़ी के तौर पर.
- (२३) उसी का नतीजा है कि अल्लाह ने आप को इज़्ज़त दी, बादशाह बनाया और हमें मिस्रकीन और दरिद्र बनाकर आपके सामने लाया.
- (२४) अगरचे मलामत और तस्कार करने का दिन है, मगर मेरी तरफ़ से.
- (२५) इसके बाद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उनसे अपने वालिद का हाल पूछा. उन्होंने कहा आपकी जुदाई के ग़म में रोते रोते उनकी आँखें जानी रहीं. आपने फ़रमाया.
- (२६) जो मेरे वालिद ने तार्वीज़ बनाकर मेरे गले में डाल दिया था.

सूरए यूसुफ़ - ग्यारहवाँ स्कू

- (१) और कनआन की तरफ़ ख़ाना हुआ.

था कि मुझे अल्लाह की वो शानें मालूम हैं जो तुम नहीं जानते^(५) (९६) वाले ऐ हमारे बाप हमारे गुनाहों की माफ़ी मांगिये बेशक हम ख़तावार हैं^(६) कहा जल्द मैं तुम्हारी बख़्शिश अपने रब से चाहूंगा बेशक वही बख़्शने वाला मेहरबान है^(७) (९८) फिर जब वो सब यूसुफ़ के पास पहुंचे उसने अपने माँ^(८) बाप को अपने पास जगह दी और कहा मिस्र में^(९) दाखिल हो अल्लाह चाहें तो अमान के साथ^(१०) (९९) और अपने माँ बाप को तख़्त पर बिठाया और सब^(११) उसके लिये सिजदे में गिरे^(१२) और यूसुफ़ ने कहा ऐ मेरे बाप यह मेरे पहले ख़्याव की ताबीर है^(१३) बेशक उसे मेरे रब ने सच्चा किया, और बेशक उसने मुझपर एहसान किया कि मुझे कैद से निकाला^(१४) और आप सब को गाँव से ले आया बाद इसके कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों में नाचाक़ी (शत्रुता) करा दी थी, बेशक मेरा रब जिस बात को चाहे आसान करदे, बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है^(१५) (१००) ऐ मेरे रब बेशक तूने मुझे एक सलतनत दी और मुझे छुपी बातों का अंजाम निकालना सिखाया, ऐ आसमानों और ज़मीन के बनाने वाले तू मेरा काम बनाने

تَعْلَمُونَ ۝ قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ۝ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَّلَهُ إِلَيْهِ أَبُوهُمْ وَقَالَ ادْخُلُوا مَصْرًا إِنَّ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ۝ وَرَفَعَ أَبُوبِهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا ۝ وَقَالَ يَا بَنَاتِ هَذَا تَأْوِيلُ رُؤْيَايَ مِنْ قَبْلُ فَقَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۚ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ أَنْتَ وَلِيِّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ تَتَوَقَّئِي مَسلَبًا

مَنْزِل

(२) अपने पोतों और पास वालों से.

(३) क्योंकि वह इस गुमान में थे कि अब हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) कहों, उनकी वफ़ात भी हो चुकी होगी.

(४) लश्कर के आगे आगे, वह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई यहूदा थे. उन्होंने कहा कि हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम के पास ख़ून लगी वह कमीज़ भी मैं ही लेकर गया था, मैंने ही कहा था कि यूसुफ़ को भेड़िया खा गया, मैं ने ही उन्हें दुखी किया था, आज कुर्ता भी मैं ही लेकर जाऊंगा और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी की खुशख़बर भी मैं ही सुनाऊंगा. तो यहूदा नंगे सर नंगे पाँव कुर्ता लेकर अरसी फ़रसँग दौड़ते आए. रास्ते में खाने के लिये सात रोटियाँ साथ लाए थे. खुशी का यह आलम था कि उनको भी रास्ते में खाकर तमाम न कर सके.

(५) हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने दरियापत फ़रमाया, यूसुफ़ कैसे हैं. यहूदा ने अर्ज़ किया हज़रत वह मिस्र के बादशाह हैं. फ़रमाया, मैं बादशाह की क्या करूँ. यह बताओ किस दीन पर हैं? अर्ज़ किया, दीने इस्लाम पर. फ़रमाया, अल्लाह का शुक्र है. अल्लाह की नेअमत पूरी हुई हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई पर.

(६) हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने सुबह के वक़्त नमाज़ के बाद हाथ उठाकर अल्लाह तआला के दरबार में अपने बेटों के लिये दुआ की, वह कुबल हुई और हज़रत यअक़ूब को वही फ़रमाई गई कि बेटों की ख़ता बख़्श दी गई. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने वालिदे माज़िद का उनके अहल और औलाद समेत बुलाने के लिये अपने भाइयों के साथ दो सौ सवारियों और बहुत सा सामान भेजा था. हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने मिस्र का इरादा फ़रमाया और अपने घर वालों को जमा किया. कुल मर्द औरतें बहतर या तिरतर जन थे. अल्लाह तआला ने उनमें यह बरकत अता फ़रमाई कि उनकी नस्ल इतनी बढ़ी कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ बनी इझाईल मिस्र से निकले तो छः लाख से ज़्यादा थे, जब कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़माना सिर्फ़ चार सौ साल बाद है. अलहासिल, जब हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम मिस्र के करीब पहुंचे तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने मिस्र के बादशाह आज़म का अपने वालिद की तशरीफ़ आवरी की सूचना दी और चार हज़ार लश्करी और बहुत से मिथी सवारों का हमराह लेकर आप अपने वालिद साहिब के स्वागत के लिये सैकड़ों रेशमी झण्डे उड़ाते क़त्तार बांधे ख़ाना हुए. हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम अपने बेटे यहूदा के हाथ का सहारा लिये तशरीफ़ ला रहे थे. जब आपकी नज़र लश्कर पर पड़ी और आपने देखा रंगिस्तान सजे धजे सवारों से भरा हुआ है, फ़रमाया ऐ यहूदा, क्या यह मिस्र का फ़िरऔत है? जिसका लश्कर इस शान से आ रहा है. अर्ज़ किया, नहीं यह हज़रत के बेटे यूसुफ़ हैं. हज़रत जिब्रील ने आपको हैरत में देखकर अर्ज़ किया, हवा की तरफ़ नज़र फ़रमाइयें. आपकी खुशी में शरीफ़ हाने फ़रिश्ते हाज़िर हुए हैं, जो मुद्दतों आपके ग़म के कारण रोते रहे हैं. फ़रिश्तों की तस्बीह ने और घोड़ों के हिनहिनाने और तबल और नक्कारों शहनाइयों की आवाज़ों ने अजीब दृश्य पैदा किया था. यह मुद्दर्रम की दसवीं तारीख़ थी. जब ये दोनों हज़रत, वालिद और बेटे, करीब हुए. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने सलाम अर्ज़ करने का इरादा ज़ाहिर किया. हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया कि

वाला है दुनिया और आखिरत में, मुझे मुसलमान उठा और उनसे मिला जो तेरे खास कुर्व (समीपता) के लायक हैं^(१५) ॥१०१॥ ये कुछ ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ वही (देव वाणी) करते हैं, और तुम उनके पास न थे^(१६) जब उन्होंने अपना काम पक्का किया था और दाव चल रहे थे^(१७) ॥१०२॥ और अक्सर आदमी तुम कितना ही चाहो ईमान न लाएंगे^(१८) ॥१०३॥ और तुम इसपर उनसे कुछ उज़रत (मज़दूरी) नहीं मांगते यह^(१९) तो नहीं मगर सारे जगत को नसीहत^(२०) ॥१०४॥

बारहवाँ सूकू

और कितनी निशानियाँ हैं^(१) आसमानों और ज़मीन में कि अक्सर लोग उनपर गुज़रते हैं^(२) और उनसे वे ख़बर रहते हैं^(३) ॥१०५॥ और उनमें अक्सर वो हैं कि अल्लाह पर यकीन नहीं लाते मगर शिर्क करते हुए^(४) ॥१०६॥ क्या इससे निडर हो बैठे कि अल्लाह का अज़ाब उन्हें आकर घेरले या क़यामत उनपर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर न हो^(५) ॥१०७॥ तुम फ़रमाओ^(६) यह मेरी राह है मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, मैं और जो मेरे क़दमों पर चलें दिल की आँखें रखते हैं^(७) और अल्लाह को पाकी है^(८) और मैं शरीक करने वाला नहीं^(९) ॥१०८॥ और हमने तुम से पहले जितने रसूल भेजे सब मर्द ही थे^(१०) जिन्हें हम वही (देव वाणी) करते और सब शहर के रहने वाले थे^(११) तो क्या ये लोग ज़मीन पर चले नहीं

تَوَفَّيْنَا

۳۲۵

وَمَا أَتَيْنَا

وَالْحَقِّقُ بِالْصَّالِحِينَ ۝ ذَٰلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ
نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ
وَهُمْ يَمْكُرُونَ ۝ وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ
بِمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا تَسْلُمُ عَلَيْهِمْ مِنْ أَجْدٍ ۖ إِنْ
هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝ وَكَآيِنٌ مِنْ آيَةٍ فِي
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا
مُعْرِضُونَ ۝ وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ
مُشْرِكُونَ ۝ أَفَأَمِنُوا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِنْ
عَذَابِ اللَّهِ أَتَوَاتَتْهُمْ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ۝ قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ
عَلَىٰ بَصِيرَةٍ ۖ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا
أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا
رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ مِنَ أَهْلِ الْقُرَىٰ ۖ أَفَلَمْ يَسِيرُوا

مِثْلَ

जरा रुक जाइये और बालिद को सलाम से शुरुआत करने का मौक़ा दीजिये. चुनांचे हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, “अस्सलामो अलैका या मुज़हिबल अहज़ाब” यानी ए दुख दर्द के दूर करने वाले सलामती हो तुमपर. और दोनों साहिबों ने उतर कर एक दूसरे को गले लगाया और ख़ूब रोए. फिर उस सजी हुई आरामगाह में दाख़िल हुए जो पहले से आपके इस्तक़्वाल के लिये ऊमदा ख़ैमे वग़ैरह गाड़कर आसता की गई थी. यह प्रवेश मिस् की सीमा में अन्दर था. इसके बाद दूसरा प्रवेश ख़ास शहर में है. जिसका बयान अगली आयत में है.

- (७) माँ से या ख़ास बालिदा मुराद हैं अगर उस वक़्त तक ज़िन्दा हों या ख़ाला. मुफ़स्सिरों के इस बारे में कई अक़वाल हैं.
- (८) यानी ख़ास शहर में.
- (९) जब मिस् में दाख़िल हुए और हज़रत यूसुफ़ अपने तख़्त पर जलवा अफ़रोज़ हुए. आपने अपने बालिदैन का सत्कार किया.
- (१०) यानी बालिदैन और सब भाई.
- (११) यह सिद्धा सम्मान और चिन्मत्ता का था जो उनकी शरीअत में जायज़ था जैसे कि हमारी शरीअत में किसी वुज़र्ग की ताज़ीम के लिये क़याम और मुसाफ़ह और हाथों का चूमना जायज़ है. इबादत का सिद्धा अल्लाह तआला के सिवा और किसी के लिये कभी जायज़ नहीं हुआ, न हो सकता है, क्योंकि यह शिर्क है और हमारी शरीअत में सिद्धा ताज़ीम भी जायज़ नहीं.
- (१२) जो मैं ने बचपन की हालत में देखा था.
- (१३) इस मौक़े पर आपने कुएं का ज़िक्र न किया ताकि भाइयों का शर्मिन्दगी न हो.
- (१४) इतिहासकारों का बयान है कि हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम अपने बेटे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास मिस् में चौबीस साल बेहतरनी ऐशो आराम में ख़ुशहाली के साथ रहे. वफ़ात के करीब आपने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वसीयत की कि आपका जनाज़ा शाम प्रदेश में लेजाकर अज़े मुक़द्दसा में आपके बालिद हज़रत इम्हाक़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र ग़रीफ़ के पास दफ़न किया जाए. इस वसीयत की तामील की गई और वफ़ात के बाद साल की लकड़ी के ताबूत में आपका मुबारक जिस्म शाम में लाया गया. उसी वक़्त आपके भाई ऐस की वफ़ात हुई थी और आप दोनों भाइयों की पैदायश भी साथ हुई थी और दफ़न भी एक ही क़ब्र में किये गए. दोनों साहिबों की उम्र एक सौ पैंतालीस साल की थी. जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने बालिद और चचा को दफ़न करके मिस् की तरफ़ वापस हुए तो आपने यह दुआ की जो अगली आयत में दर्ज़ है.
- (१५) यानी हज़रत इब्राहीम व हज़रत इम्हाक़ व हज़रत यअक़ूब अलैहिमुस्सलाम नबी सब मअसूम हैं. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की यह दुआ उम्मत की तालीम के लिये है कि वह अच्छे अन्त की दुआ मांगते रहें. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने बालिद के

तो देखते उनसे पहलों का क्या अंजाम हुआ^(१) और वेशक आखिरत का घर परहेज़गारों के लिये बेहतर तो क्या तुम्हें अक्ल नहीं^(१०९) यहाँ तक जब रसूलों की ज़ाहिरी असबाब की उम्मीद न रही^(१०) और लोग समझे कि रसूलों ने उनसे ग़लत कहा था^(११) उस वक़्त हमारी मदद आई तो जिसे हमने चाहा वधा लिया गया^(१२) और हमारा अज़ाब मुजरिम लोगों से फेरा नहीं जाता^(११०) वेशक उनकी ख़बरों से^(१३) अक्लमन्दों की आँखें खुलती हैं^(१४) यह कोई बनावट की बात नहीं^(१५) लेकिन अपने से अगले कामों की^(१६) तस्दीक़ (पुष्टि) है और हर चीज़ का तफ़्सीली (विस्तृत) बयान और मुसलमानों के लिये हिदायत और रहमत^(१११)

१३- सूरए रअद

सूरए रअद मदीने में उतरी, इसमें ४३ आयतें, ६ रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) ये किताब की आयतें हैं^(२) और वो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा^(३) हक़ है^(४) मगर अक्सर आदमी ईमान नहीं लाते^(५)^(१)

فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَلَكَ الْأَخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ اتَّقَوْا ۚ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَ
كَتَمُوا أَنَّهُمْ قَدْ كَذَّبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا ۖ فَنُجِّى
مَنْ نَشَاءُ ۚ وَلَا يَرُدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۝
لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ
مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ ۚ وَلَكِنْ تَصْدِيقُ الَّذِي
بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَ
رَحْمَةٌ لِّلْقَوْمِ الْيُؤْمِنُونَ ۝

(۱) بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ (۲) هَٰذَا نَتْلُوهُ عَلَيْكَ آيَاتِ الْكِتَابِ ۖ وَالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ
مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

مترجم

बाद तेईस साल रहे, इसके बाद आपकी वफ़ात हुई, आपके दफ़न की जगह में मिस्र वालों के बीच सन्नत मतभेद हुआ, हर महल्ले वाले बरक़्त हासिल करने के लिये अपने ही महल्ले में दफ़न करने पर अड़े थे, आखिर यह राय करार पाई कि आपको नील नदी में दफ़न किया जाए ताकि पानी आपकी क़ब्र से छूटा हुआ गुज़रे और इसकी बरक़्त से सारे मिस्र निवासियों का फ़ैज़ मिले, दुनांचे आपको संगे सिख़्राम या संगे मरमर के ताबूत में नील नदी के अन्दर दफ़न किया गया और आप वहीं रहे यहाँ तक कि चार सौ बरस बाद हज़रत मुसा अलैहिस्सलाम ने आपका ताबूत शरीफ़ निकाला और आपके बाप दादा के पास शाम प्रदेश में दफ़न किया।

(१६) यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों के।

(१७) इसके बावजूद ऐ नबीयों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम, आपका इन तमाम घटनाओं को इस तफ़्सीली से बयान फ़रमाना ग़ैबी ख़बर और चमत्कार है।

(१८) कुरआन शरीफ़।

सूरए यूसुफ़ - बारहवाँ रूकू

(१) ख़ालिफ़ और उसकी तौहीद और सिफ़ात को साबित करने वाली, इन निशानियों से हलाक हुई उम्मतों के आसार या अवशेष मुराद हैं, (मदारिक)

(२) और उनका अवलोकन करते हैं लेकिन सोच विचार नहीं करते, सबक़ नहीं पकड़ते।

(३) अक्सर मुफ़स्सिरों के नज़दीक़ यह आयत मुश्क़ों के रद में उतरी जो अल्लाह तआला के ख़ालिफ़ और राज़िक़ होने का इज़्ज़ार करने के साथ बुत परस्ती करके शैरों को इबादत में उसका शरीक़ करते थे।

(४) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम, उन मुश्क़ों से, कि अल्लाह के एक होने यानी तौहीद और दीने इस्लाम की दावत देना।

(५) इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम और उनके सहाबा अच्छे तरीक़े पर और बड़ी हिदायत पर हैं, यह इल्म के ख़ज़ाने, ईमान के भंडार और रहमान के लश्कर हैं, इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हु ने फ़रमाया तरीक़ा इस्तिथार करने वालों को चाहिये कि गुज़रे हुआ का तरीक़ा अपनाएं, वो संपदे आलम सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम के सहाबा हैं जिनके दिल उम्मत में सबसे ज़्यादा पाक, इल्म में सबसे ग़हरे, तक्विलुफ़ में सब से कम, ये ऐसे हज़रत हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने नबी अलैहिस्सलामो वसल्लम की सोहबत और उनके दीन की इशाअत के लिये बुज़ुर्गी दी।

(६) तमाम दोषों और कमियों और शरीकों और भिन्नताओं और समानताओं से।

अल्लाह है जिसने आसमानों को बलन्द किया वे सुतनों (खम्भों) के कि तुम देखो^(६) फिर अर्श पर इस्तिवा फरमाया जैसा उसकी शान के लायक है और सूरज और चांद को मुसब्बर (वशीभूत) किया^(७) हर एक एक ठहराए हुए वादे तक चलता है^(८) अल्लाह काम की तदेवीर फरमाता और तफसील से निशानियां बताता है^(९) कहीं तुम अपने रव का मिलना यकीन करो^(१०) और वही है जिसने जमीन को फैलाया और उसमें लंगर^(११) और नेहरे बनाई और जमीन में हर क्रिस्म के फल दो दो तरह के बनाए^(१२) रात से दिन को छुपा लेता है, वेशक इसमें निशानियां हैं ध्यान करने वालों को^(१३) और जमीन के मुख्तलिफ़ (विभिन्न) क़तए (खंड) हैं और हैं पास पास^(१४) और बाग हैं अंगूर के और खेती और खजूर के पेड़ एक धाले से आगे और अलग अलग सब को एक ही पानी दिया जाता है, और फलों में हम एक को दूसरे से बेहतर करते हैं, वेशक इसमें निशानियां हैं अक्लमन्दों के लिये^(१५) और अगर तुम अचंभा करो^(१६) तो अचंभा तो उनके इस कहने का है कि क्या हम मिट्टी होकर फिर नए वनेंगे^(१७) वो हैं जो अपने रव से

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَحَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى يُدِيرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا رَوْحَيْنِ اشْنَجَيْنِ ۝ إِنْ لَبِثَ أَنْتُمْ إِلَّا نَفْسًا تُنْفَكِرُونَ ۝ وَفِي الْأَرْضِ قَطْعٌ مُّتَبَعُونَ وَجِثٌّ مِنْ آعَابٍ وَ زَرْعٌ وَنَحِيلٌ صُنُوفٌ وَغَيْرُ صُنُوفٍ يُسْفَىٰ بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُقْضِلُ بَعْضُهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأَكْلِ ۝ إِنْ فِي ذَلِكَ لَايَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَإِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ إِذَا كُنَّا تُرَابًا إِنْآ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ

مَذَل

- (७) न फ़रिशने न किसी औरत को नबी बनाया गया। यह मक्का वालों का जवाब है जिन्होंने कहा था कि अल्लाह ने फ़रिशनों को क्यों नबी बनाकर नहीं भेजा। उन्हें बताया गया कि यह क्या आश्चर्य की बात है। पहले ही से कभी फ़रिशने नबी होकर न आए।
- (८) हसन रदियल्लाहो अन्हां ने फ़रमाया कि पहले बादिआ और जिन्नत और औरतों में से कभी कोई नबी नहीं किया गया।
- (९) नवियों के झुटलाने से किस तरह हलाक किये गए।
- (१०) यानी लोगों को चाहिये कि अल्लाह के अज़ाब में देरी होने और ऐशों आराम के देर तक रहने पर घमण्डी न हो जाए क्योंकि पहली उम्मतों को भी बहुत मोहलतें दी जा चुकी हैं यहाँ तक कि जब उनके अज़ाबों में बहुत देरी हुई और जाहिरी कारणों को देखते हुए रसूलों को कौम पर दुनिया में जाहिर अज़ाब आने की उम्मीद न रही। (अवुरसऊद)
- (११) यानी कौमों ने गुमान किया कि रसूलों ने उन्हें जो अज़ाब के वादे दिये थे वो पूरे होने वाले नहीं। (मदारिक शरीरह)
- (१२) अपने बन्दों में से यानी फ़रमाँबरदारी करने वाले ईमानदारों को बचाया।
- (१३) यानी नवियों की और उनकी कौमों की।
- (१४) जैसे कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बाक़र से बड़े बड़े नतीजें निकलते हैं और मालूम होता है कि सब का वनीजा सलामती और बुज़र्गी है और तकलीफ़ पहुंचाने और बुरा चाहने का अज़ाम शर्मिन्दगी। अल्लाह पर भरोसा रखने वाला कामयाब होता है और बन्दे को सज़्ज़ियाँ के पेश आने से मायूस न होना चाहिये। अल्लाह की रहमत साथ दे तो किसी के बुरा चाहने से कुछ न बिगड़े। इसके बाद कुरआने पाक की निम्न इरशाद होता है।
- (१५) जिसको किसी इन्सान ने अपनी तरफ़ से बना लिया हो क्योंकि इसका चमत्कार और अनोखापन इसके अल्लाह की तरफ़ से होने को क़तई तौर पर साबित करता है।
- (१६) तौरात इंजील बरीरह आसमानी किताबों की।

१२ - सूरए रअद - पहला रूकू

- (१) सूरए रअद मक्की है और एक सिवायत हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से यह है कि दो आयतों “لَا يَزَالُ لُجُجُ لُجُجُ لُجُجُ” और “يَزَالُ لُجُجُ لُجُجُ” के सिवा बाक़ी सब मक्की हैं। दूसरा कौल यह है कि यह सूरत मदीनी है। इसमें छः रूकू, तैंतालीस या पैंतालीस आयतें, आठ सौ पचपन कलाम और तीन हज़ार पांच सौ छः अक्षर हैं।
- (२) यानी कुरआन शरीफ़ की।
- (३) यानी कुरआन शरीफ़।

इन्कारी हुए और वो हैं जिन की गर्दनो में तौक होंगे^(१८) और वो दोज़ाख वाले हैं, उन्हें उसी में रहना^(१९) और तुम से अज़ाब की जल्दी करते हैं रहमत से पहले^(२०) और उनसे अगलों की सज़ाएं हो चुकीं^(२१) और वेशक तुम्हारा रब तो लोगों के जुल्म पर भी उन्हें एक तरह की माफ़ी देता है^(२२) और वेशक तुम्हारे रब का अज़ाब सख्त है^(२३) और काफ़िर कहते हैं उनपर उनकी तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी^(२४) तुम तो डर सुनाने वाले हो और हर क्रौम के हादी^(२५)

दूसरा रूकू

अल्लाह जानता है जो कुछ किसी मादा के पेट में है^(१) और पेट जो कुछ घटते और बढ़ते हैं^(२) और हर चीज़ उसके पास एक अन्दाज़े से है^(३) हर छुपे और खुले का जानने वाला सबसे बड़ा बलन्दी वाला^(४) बराबर हैं जो तुम में वात आहिस्ता कहे और जो आवाज़ से और जो रात में छुपा है और जो दिन में राह चलता है^(५) आदमी के लिये बदली वाले फ़रिश्ते हैं उसके आगे और पीछे^(६) कि खुदा के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं^(७) वेशक अल्लाह

الْأَعْلَىٰ فِي أَعْنَاقِهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۖ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلَتُ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلَىٰ ظُلُمِهِمْ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۖ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْسِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيصُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۖ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ۖ عَلِيمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ۖ سَوَاءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ أَسَرَ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۖ لَهُ مُعَقِّبَاتٌ مِّن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِّن أَمْرِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ

مَنْزِل

(४) कि इस में कुछ शुबह नहीं.

(५) यानी मक्का के मुश्रिक यह कहते हैं कि यह क़लाम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का है, उन्होंने श्रुद बन ... इस आयत में उनका रद्द फ़रमाया. इसके बाद अल्लाह तआला ने अपने रब होने की दलीलें और अपनी कुदरत के चमत्कार बयान ... आप जो उसके एक होने को प्रमाणित करते हैं.

(६) इसके दो मानी हो सकते हैं, एक यह कि आसमानों को बिना सुतूनों के बलन्द किया जैसा कि तुम उनको देखते हो यानी हकीकत में कोई सुतून ही नहीं है. ये मानी भी हो सकते हैं कि तुम्हारे दंग्रने में आने वाले सुतूनों के बग़ैर बलन्द किया. इस तकदीर पर मानी ये हांग कि सुतून तो हैं मगर तुम्हारे दंग्रने में नहीं आते. पहला क़ील ज़्यादा सही है इसी पर सहमति है. (ख़ाज़िन व जुमल)

(७) अपने बन्दा के मुनाफ़े और अपने इलाकों के फ़ायदे के लिये वो आज्ञानुसार घुम रहे हैं.

(८) यानी दुनिया के नाश के समय तक. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि "अज़ले मुसम्मा" यानी "ठहराए हुए वादे" से उनके दर्जे और मंज़िलें मुराद है यानी वो अपनी मंज़िलों और दर्जों में एक हद तक गर्दिश करते हैं जिस से उल्लंघन नहीं कर सकते. सूरज और चांद में से हर एक के लिये सैर ख़ास यानी विशेष दिशा की तरफ़ तेज़ या सुस्त रफ़्तार और हरकत की ख़ास मात्रा निर्धारित की है.

(९) अपनी बहदानियत और भरपूर कुदरत की.

(१०) और जानो कि जो इन्सान को शून्य के बाद फिर से मांजुद करने में सक्षम है वो उसको मौत के बाद भी ज़िन्दा करने पर क़ादिर है.

(११) यानी मज़बूत पहाड़.

(१२) काले संक्रंद, कड़वे मीठे, छंटे बड़े, खुश्क और तर, गर्म और सर्द बग़ैरह.

(१३) जो समझें कि ये सारी निशानियाँ बनाने वाले और संभाल रखने वाले के अस्तित्व का प्रमाण देती हैं.

(१४) एक दूसरे से मिले हुए. उनमें से कोई खेती के क़ाबिल है क़ेई नहीं, कोई पथरीला कोई रेतीला.

(१५) हसन बसरी रदियल्लाहो अन्हु ने फ़रमाया इस में बनी आदम के दिलों की एक मिसाल है कि जिस तरह ज़मीन एक थी, उसके विभिन्न टुकड़े हुए, उनपर आसमान से एक ही पानी बरसा, उससे मुग़्नलिफ़ क्रिस्म के फल फूल, बेल बूटे, अच्छे बुरे पैदा हुए. इसी तरह आदमी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से पैदा किये गए. उनपर आसमान से हिदायत उतरी. इस से कुछ लोग नर्म दिल हुए उनमें एकाग्रता और लगन पैदा हुई. कुछ सग़्न हो गए, वो खेल तमाशों बुराइयों में गिरफ़्तार हुए तो जिस तरह ज़मीन के टुकड़े अपने फूल फल में अलग अलग हैं उसी तरह इन्सानों दिल अपनी भावनाओं और रहस्यों में अलग हैं.

(१६) ए मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम, काफ़िरों के झुटलाने से, जबकि आप उनमें सच्चे और अमावत वाले मशहूर थे.

(१७) और उन्होंने कुछ न समझा कि जिसने शुरु में बग़ैर मिसाल के पैदा कर दिया उसको दांबारा पैदा करना क्या मुश्किल है.

(१८) क़यामत के दिन.

(१९) मक्का के मुशिक, और यह जल्दी करना हंसी के तौर पर था. और रहमत से सलामती और आफ़ियत मुराद है.

(२०) वो भी रसूलों को झुटलाते और अज़ाब की हंसी उड़ाते थे. उनका हाल देखकर सबक़ हासिल करना चाहिये.

(२१) कि उनके अज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता और उन्हें मोहलत देता है.

(२२) जब अज़ाब फ़रमाए.

(२२) काफ़िरों का यह क़ौल अत्यन्त बेईमानी का क़ौल था. जितनी आयतें उतर चुकी थीं और चमत्कार दिखाए जा चुके थे सबको उन्होंने शून्य करार दे दिया. यह परले दर्जे की नाइंसाफी और सत्य से दुश्मनी है. जब हुज्जत क़ायम हो चुके, तर्क पूरा हो जाए और खुले और साफ़ प्रमाण पेश कर दिये जाएं और ऐसी दलीलों से मतलब साबित कर दिया जाए जिनके जवाब से मुश्रालिफ़ीन के सार इल्म वाले हुनर वाले आश्चर्य चकित और विवश रह जाएं और उन्हें मुंह खोलना और ज़वान हिलाना असम्भव हो जाए, ऐसी खुली निशानियाँ और साफ़ प्रमाण और ज़ाहिर चमत्कार देखकर यह कह देना कि कोई निशानी क्यों नहीं उतरती, चमकतं दिन में उजाले का इन्कार कर देने से भी ज़्यादा शराब और बातिल है और हकीकत में यह सच्चाई को पहचान कर उससे मुंह मोड़ लेना और दुश्मनी है. किसी बात पर जब मज़बूत प्रमाण क़ायम हो जाए, फिर उसपर दोबारा दलील क़ायम करनी ज़रूरी नहीं रहती. ऐसी हालत में दलील तलब करना मात्र दुश्मनी होती है. जबतक कि दलील को ज़रूरी न कर दिया जाए, कोई शरय्स दूसरी दलील के तलब करने का हक़ नहीं रखता. अगर यह सिलसिला क़ायम कर दिया जाए कि हर शरय्स के लिये नई दलील नया प्रमाण क़ायम किया जाए जिसको वह मांगे और वही निशानी लाई जाय जों वह तलब करे, तो निशानियों का सिलसिला कभी ख़त्म न होगा. इसलिये अल्लाह की हिकमत यह है कि नबियों को ऐसे चमत्कार दिये जाते हैं जिन से हर व्यक्ति उनकी सच्चाई और नबुव्वत का यक़ीन कर सके. उनके दौर के लोग ज़्यादा अभ्यास और महारत रखते हैं जैसे कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में जादू का इल्म अपने कमाल को पहुंचा हुआ था और उस ज़माने के लोग जादू के बड़े माहिर कामिल थे तां हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को वह चमत्कार अता हुआ जिसने जादू को बातिल कर दिया और जादूगरों को यक़ीन दिला दिया कि जो कमाल हज़रत मूसा ने दिख़ाया वह अल्लाह की निशानी है, जादू से उसका मुकाबला संभव नहीं. इसी तरह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को वसल्लाम के ज़माने में चिकित्सा विद्या यानी डाक्टरी का इल्म चरम सीमा पर था. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बीमारियाँ अच्छा करने और मुर्दे ज़िन्दा करने का वह चमत्कार अता फ़रमाया गया जिससे तिव के माहिर आजिज़ हो गए. वो इस यक़ीन पर मजबूर थे कि यह काम तिव से नामुमकिन है. ज़रूर यह अल्लाह की कुदरत का ज़बरदस्त निशान है. इसी तरह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक ज़माने में अरब की ज़वान दानी, फ़साहत और बलागत बलन्दी पर थी. वो लोग बोल चाल में सारी दुनिया पर छाए हुए थे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को वह चमत्कार अता फ़रमाया गया जिसने आपके मुश्रालिफ़ों को आजिज़ और हैरान कर दिया. उनके बड़े से बड़े लोग और उनके पहले कमाल की जमाअतें कुरआन शरीफ़ के मुकाबले में एक छोटी सी इबारत न पेश कर सके और कुरआन शरीफ़ के इस कमाल ने साबित कर दिया कि बेशक़ यह अल्लाह का क़लाम और उसकी महान निशानी है. और इस जैसा बना लाना इन्सान के बस की बात नहीं. इसके अलावा और सैकड़ों चमत्कार सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पेश फ़रमाए जिन्होंने हर तबके के इन्सानों को आपकी सच्चाई और रिसालत का यक़ीन दिला दिया. इन चमत्कारों के होते हुए यह कह देना कि कोई निशानी क्यों नहीं उतरी, किस क़द्र हठधर्मी, दुश्मनी और सच्चाई से मुकरना है.

(२४) अपनी नबुव्वत की दलील पेश करने और संतोपजनक चमत्कार दिखाकर अपनी रिसालत साबित कर देने के बाद अल्लाह के अहक़ाम पहुंचाने और ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाने के सिवा आप पर कुछ लाज़िम नहीं. हर शरय्स के लिये उसकी तलब की हुई अलग अलग निशानियाँ पेश करना आप पर ज़रूरी नहीं जैसा कि आप से पहले हादियों यानी नबियों का तरीका रहा है.

सूरए रअद - दूसरा रूकू

(१) नर मादा, एक या ज़्यादा.

(२) यानी मुहत में किसी का गर्भ जल्दी बाहर आणा किसी का देर में. गर्भ की कम से कम मुहत जिसमें बच्चा पैदा होकर ज़िन्दा रह सके, छ माह है और ज़्यादा से ज़्यादा दो साल. यह हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया और इसी के हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह क़ायल हैं. कुछ मुफ़सिरो ने यह भी कहा है कि पेट के घटने बढ़ने से बच्चे का मज़बूत, पूरा बनना या अधूरा बनना मुराद है.

(३) कि इससे घट बढ़ नहीं है.

(४) हर दोष से पाक.

(५) यानी दिल की छुपी बातें और ज़वान से खुल्लमखुल्ला कही हुई और रात को छुपकर किये हुए काम और दिन को ज़ाहिर तौर पर किये हुए काम, सब अल्लाह तआला जानता है, कोई उसके इल्म से बाहर नहीं है.

(६) वुज़ारी और मुग़लिम की हदीस में है कि तुम मे फ़रिश्ते नौबत व नौबत यानी बारी बारी आते हैं. रात और दिन में और नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े अस्म में जमा होते हैं. नए फ़रिश्ते रह जाते हैं और जो फ़रिश्ते रह चुके हैं वो चले जाते हैं. अल्लाह तआला उनसे दरियाफ़्त फ़रमाता है कि तुमने मेरे बन्दे को किस हाल में छोड़ा. वो अर्ज करते हैं कि नमाज़ पढ़ते पाया और नमाज़ पढ़ते छाड़ा.

किसी क्रौम से अपनी नेअमत नहीं बदलता जबतक वह खुद^(८) अपनी हालत न बदलें और जब अल्लाह किसी क्रौम से बुराई चाहे^(९) तो वह फिर नहीं सकती और उसके सिवा उसका कोई हिमायती नहीं^(१०) ॥११॥ वही है तुम्हें बिजली दिखाता है डर को और उम्मीद को^(११) और भारी बदलियाँ उठाता है^(१२) और गरज उसे सराहती हुई उसकी पाकी बोलती है^(१३) और फ़रिश्ते उसके डर से^(१४) और कड़क भेजता है^(१५) तो उसे डालता है जिस पर चाहे, और वो अल्लाह में झगड़ते होते हैं^(१६) और उसकी पकड़ सख्त है^(१७) उसी का पुकारना सच्चा है^(१८) और उसके सिवा जिनको पुकारते हैं वो^(१९) उनकी कुछ नहीं सुनते मगर उसकी तरह जो पानी के सामने अपनी हथेलियाँ फैलाए बैठा है कि उसके मुँह में पहुँच जाए^(२०) और वह कभी न पहुँचेगा और काफ़िरों की हर दुआ भटकती फिरती है^(२१) ॥१४॥ और अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जितने आसमानों और ज़मीन में हैं खुशी से^(२२) चाहे मजबूरी से^(२३) और उनकी परछाइयाँ हर सुबह शाम^(२४) ॥१५॥ तुम फ़रमाओ कौन रब है आसमानों और ज़मीन का, तुम खुद ही फ़रमाओ अल्लाह^(२५) तुम फ़रमाओ तो क्या उसके सिवा तुम ने वो हिमायती बना लिये

لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُعَيِّرُوهُمَا بِأَنفُسِهِمْ ۚ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءَ أَفْكَلٍ مَّرَدٍّ لَهُ ۚ وَمَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَالٍ ۚ هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۚ وَيُسَيِّرُ الرِّعْدَ بِحَمْدِهِ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ ۚ وَهُوَ شَدِيدُ الْحِجَالِ ۚ لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۚ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كِبَاسٌ مِّنْ أَلْمَاءٍ ۚ لَّيْسَ لَهُمْ شَيْءٌ يُّنَالِعُهُ ۚ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۚ وَ لِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُمْ بِالْعُدُوِّ وَالْأَصَالِ ۚ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ قُلِ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُ مِنْ

سُورَةُ

(७) मुजाहिद ने कहा, हर बन्दे के साथ एक फ़रिश्ता हिफ़ाज़त के लिये है जो सोते जागते ज़िन्न व इत्स और मूर्खी जातवरों से उसकी हिफ़ाज़त करता है और हर सतान वाली चीज़ को उससे रोक देता है सिवाय उसके जिसका पहुँचना अल्लाह के हुक्म से हो।

(८) गुनाहों में जकड़ कर।

(९) उसके अज़ाब और हलाक का इरादा फ़रमाए।

(१०) जो उसके अज़ाब को रोक सके।

(११) कि उससे गिर कर नुकसान पहुँचाने का ख़ौफ़ होता है और बारिश से नफ़ा उठाने की उम्मीद या कुछ को ख़ौफ़ होता है। जैसे मुसाफ़िरों को जो सफ़र में हों और कुछ को फ़ायदे की उम्मीद जैसे कि कास्तकार वगैरह।

(१२) गरज यानी बादल से जो आवाज़ होती है उसके तस्बीह करने के मानी ये हैं कि उस आवाज़ का पैदा होना कुदरत वाले पैदा, करने वाले, और हर दोष और कमी से پاک के वुजूद यानी अस्तित्व की दलील है। कुछ मुफ़सिरो ने फ़रमाया कि तस्बीह रअद से वह मुशब्ह है कि उस आवाज़ को सुनकर अल्लाह के बन्दे उसकी तस्बीह करते हैं। कुछ मुफ़सिरो का क़ौल है कि रअद एक फ़रिश्ता है जो बादल पर तैनात है उसको चलाता है।

(१३) यानी उसकी हैबत और ज़लाल से उसकी तस्बीह करते हैं।

(१४) सायका (कड़क) वह सख्त आवाज़ है जो आसमान और ज़मीन के बीच से उतरती है फिर उसमें आग पैदा हो जाती है। या अज़ाब या मौत और वह अपनी ज़ात में एक ही चीज़ है और ये दोनों चीज़ें उसी से पैदा होती हैं। (स्वार्जिन)

(१५) हसन रदियल्लाहो अलैहो से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहो वसल्लम ने अगव के एक अत्यन्त सरकश काफ़िर को इस्लाम की दावत देने के लिये अपने सहाबा की एक जमाअत भेजी। उन्होंने उसकी दावत दी। कहने लगा, मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहो वसल्लम) का ख़ास कौल है जिसकी तुम दावत देते हो। क्या वह सोन या चांदी या लोहे का या ताँबे का है। मुसलमानों को यह बात बहुत बुरी लगी और उन्होंने वापस आकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहो वसल्लम से अर्ज़ किया कि ऐसा काफ़िर दिल सरकश देखने में नहीं आया। हुज़ूर ने फ़रमाया, उसके पास फिर जाओ। उसने फिर वही बात की और इतना और कहा कि मैं मुहम्मद की दावत कुतूल करके ऐसे ख़ास मान लूँ जिसे न मैंने देखा है न पहचाना। ये हज़रात फिर वापस हुए और उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर उसकी ख़वायत तो और तस्क्की पर है। फ़रमाया, फिर जाओ। ये फिर गए। जिस वक़्त उससे बातें कर रहे थे और वह ऐसी ही काले दिल की बातें बक रहा था, एक बादल आया, उससे बिजली चमकी और कड़क हुई और बिजली गिरी और उस काफ़िर को जला दिया। ये लोग उसके पाय बँटे रहे। जब वहाँ से वापस हुए तो राह में उन्हें सहाबए किराम की एक और जमाअत मिली। वो कहने लगे, कहिये वह शरअ जल गया। उन लोगों ने कहा कि आप लोगों को कैसे मालूम हो गया। उन्होंने कहा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहो वसल्लम के पास वही आई है “व गुर सिलुस सवाइका फ़यूसीवो विहा मय यशाओ वहुम युजादिलुना फ़िल्लाह” (और कड़क भेजना है तो उस डालता है जिस पर चाहे और वह अल्लाह में झगड़ते होते हैं - सूरए रअद, आयत १३) कुछ मुफ़सिरो ने जिक्र किया

हैं जो अपना भला बुरा नहीं कर सकते हैं^(२३) तुम फ़रमाओ क्या बराबर हो जाएंगे अंधा और अंधियारा^(२४) या क्या बराबर हो जाएंगी अंधेरियां और उजाला^(२५) क्या अल्लाह के लिये ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्होंने अल्लाह की तरह कुछ बनाया तो उन्हें उनका और उसका बनाना एक सा मालूम हुआ^(२६) तुम फ़रमाओ अल्लाह हर चीज़ का बनाने वाला है^(२७) और वह अकेला सब पर गालिब है^(२८) ^(१६) उसने आसमान से पानी उतारा तो नाले अपने अपने लायक वह निकले तो पानी की रौ (धारा) उस पर उभरे हुए झाग उठा लाई, और जिसपर आग दहकाते हैं^(२९) गहना या और असबाब^(३०) बनने को उससे भी कैसे ही झाग उठते हैं अल्लाह बताता है कि हक़ और वातिल की यही मिसाल है, तो झाग तो फुक कर दूर हो जाता है, और वह जो लोगों के काम आए ज़मीन में रहता है^(३१) अल्लाह यूँही मिसालें बयान फ़रमाता है ^(१७) जिन लोगों ने अपने स्व का हुक्म माना उन्हीं के लिये भलाई^(३२) और जिन्होंने उसका हुक्म न माना^(३३) अगर ज़मीन में जो कुछ है वह सब और उस जैसा और इसकी मिल्क में होता तो अपनी जान छुड़ाने को दे

وَمَا يُؤْمِنُ إِلَّا قَوْمُهُ ۚ لَآ يَشْعُرُونَ إِلَّا تَأْخِذُهُمْ نَارُهَا ۚ وَلَا ضَرْبًا ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۚ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَةُ وَالنُّورُ ۚ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۚ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۚ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حُلِيَّةٍ أَوْ مُتَعَارٍ رَبِّدْ مِثْلَهُ ۚ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۚ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ۚ لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَتَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۚ

मज़ल

है कि आमिर बिन तुफैल ने अरबद बिन रबीअ से कहा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) के पास चलो, मैं उन्हें बातों में लगाऊँगा, तू पीछे से तलवार मारना, यह सलाह करके वो हज़र के पास आए और आमिर ने बात शुरू की, बहुत लम्बी बात चीत के बाद कहने लगा कि अब हम जाते हैं और एक बड़ा भारी लश्कर आप पर लाएंगे, यह कहकर चला गया, बाहर आकर अरबद से कहने लगा कि तू तलवार क्यों नहीं मारी, उसने कहा कि जब मैं तलवार मारने का इरादा करता था तो तू बीच में आ जाता था, मर्याद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन लोगों के निकलते वक़्त यह दुआ फ़रमई, “अल्लाहुम्मक फ़िहिमा विमा शिअता”, जब ये दोनों मदीने शरीफ़ से बाहर आए तो उनपर विजली गिरी, अरबद जल गया और आमिर भी उसी राह में बड़ी दुर्दशा में मरा, (हसनै)

(१६) मअबूद जानकर यानी काफ़िर जो बुतों की इबादत करते हैं और उनसे मुरादे मांगते हैं,

(१७) तो हथेलियाँ फैलाने और बुलाने से पानी कुँए से निकल कर उसके मुँह में न आएगा क्योंकि पानी को न इल्म है न शज़र जो उसकी प्यास की ज़रूरत को जाने और उसके बुलाने को समझे और पहचाने न उसमें यह कुदरत है कि अपनी जगह से हरकत करे और अपनी प्रकृति के विपरीत ऊपर चढ़कर बुलाने वाले के मुँह में पहुँच जाए, यही हाल बुतों का है कि न उन्हें बुत परस्तों के पुकारने की ख़बर है न उनकी हाज़त का शज़र, न वो उसके नफ़े पर कुछ कुदरत रखते हैं,

(१८) जैसे कि मूमिन,

(२०) जैसे कि मुनाफ़िक और काफ़िर,

(२१) अल्लाह को सज़्दा करती हैं, जुज़ाज़ ने कहा कि काफ़िर ग़ैर-अल्लाह को सज़्दा करता है और उसका साथी अल्लाह को, इब्ने अंबारी ने कहा कि कुछ बर्दद नहीं कि अल्लाह तआला पृष्ठर्द्धियों में ऐसी समझ पैदा करे कि वो उसको सज़्दा करें, कुछ कहने हैं सिज़दे से साफ़ का एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ माइल होना और आफ़ताब चढ़ने और उतरने के साथ लम्बा और छोटा होना मुराद है, (ग़ज़ज़िन)

(२२) क्योंकि इस सवाल का इसके सिवा और कोई जवाब ही नहीं और मुश्किक ग़ैरुल्लाह की इबादत करने के बावजूद इसके इज़रारी हैं कि आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला अल्लाह है, जब यह बात सबको मान्य है तो,

(२३) यानी बुत, जब उनकी यह बेवसी और बेचारगी है तो दूसरों को क्या नफ़ा नुक़सान पहुँचा सकते हैं, ऐसी को मअबूद बनाना और हक़ीक़ी पैदा करने वाले, रिज़क देने वाले, क़बी और सक्षम को छोड़ना अबल दर्जे की गुमराही है,

(२४) यानी काफ़िर और मूमिन,

(२५) यानी कुफ़र और ईमान,

(२६) और इस वज़ह से हक़ उनपर मुश्तयह हो गया और वो बुत परस्ती करने लगे, ऐसा तो नहीं है बल्कि जिन बुतों को वो पूजते हैं अल्लाह की मरज़लूक की तरह कुछ बनाना तो दूर, वो वस्तु की चीज़ों की तरह भी कुछ बना नहीं सकते, विचथ और विकम्मे हैं, ऐसे पत्थरों का पूजना अक्ल और समझ के विल्कुल ख़िलाफ़ है,

देते, यही हैं जिनका बुरा हिसाब होगा^(३५) और उनका ठिकाना जहन्नम है, और क्या ही बुरा बिछौना^(३८)

तीसरा रूकू

तो क्या वह जो जानता है जो कुछ तुम्हारी तरफ तुम्हारे रब के पास से उतरा हक है^(३९) वह उस जैसा होगा जो अंधा है^(४०) नसीहत वही मानते हैं जिन्हें अकल है^(४१) वो जो अल्लाह का एहद पूरा करते हैं^(४२) और क्रौल (वचन) बांधकर फिरते नहीं^(४३) और वो कि जोड़ते हैं उसे जिसके जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया^(४४) और अपने रब से डरते हैं और हिसाब की बुराई से अन्देशा (शंका) रखते हैं^(४५) और वो जिन्होंने सन्न किया^(४६) अपने रब की रजा चाहने को और नमाज़ कायम रखी और हमारे दिये से हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर कुछ खर्च किया^(४७) और बुराई के बदले भलाई करके टालते हैं^(४८) उन्हीं के लिये पिछले घर का नफ़ा है^(४९) वसने के बाग़ जिनमें वो दाखिल होंगे और जो लायक हों^(५०) उनके बाप दादा और वीबियों और औलाद में^(५१) और फ़रिश्ते^(५२) हर दरवाज़े से उनपर^(५३) यह कहते आएं^(५४) सलामती हो तुम पर, तुम्हारे सन्न का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला^(५५) और वो जो अल्लाह का एहद उसके पक्के

أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۖ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَ
بِئْسَ الْمِهَادُ ۖ أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّ نَزَلَ إِلَيْكَ
مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ
أُولَٰئِكَ الْأَكْبَابُ ۖ الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا
يُنْقِضُونَ الْمِيثَاقَ ۖ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ
بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ
الْحِسَابِ ۖ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِعَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَ
أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوْا زَكَاةً مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً
وَيُؤْتُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى
الدَّارِ ۖ جَنَّاتٌ عِدْنُ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ
أَبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ
عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۖ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَبِعَيْنِ
عُقْبَى الدَّارِ ۖ وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ

منزل

- (२७) जो मख़लूक होने की सलाहियत रखे उस सब का ख़ालिक अल्लाह ही है और कोई नहीं तो दूसरे को इबादत में शरीक करना समझ वाला किस तरह ग़वार कर सकता है.
- (२८) सब उसके इस्तिनयार और कुदरत के अन्तर्गत हैं.
- (२९) जैसे कि सोना चांदी तांबा बग़ैरह.
- (३०) बर्तन बग़ैरह.
- (३१) ऐसे बातिल अगरचे कितना ही उभर जाए और कभी कभी झाग की तरह हद से ऊंचा हो जाए मगर आख़िर मिट जाता है और सच्चाई अरल चीज़ और साफ़ जौहर की तरह बाकी और सलामत रहती है.
- (३२) यानी जन्नत.
- (३३) और कुफ़्र किया.
- (३४) कि हर बात पर पकड़ की जाएगी और उसमें से कुछ बरश्शा न जाएगा. (जलालैन व श्राज़िन)

सूरए रअद - तीसरा रूकू

- (१) और उसपर ईमान लाता है और उसके मुताबिक़ अमल करता है.
- (२) हक़ को नहीं जानता, कुरआन पर ईमान नहीं लाता, उसके मुताबिक़ अमल नहीं करता. यह आयत हज़रत हमज़ा इब्ने अब्दुल मुत्तलिब और अबू जहल के बारे में उतरी.
- (३) उसके रब होने की गवाही देते हैं और उसका हुक्म मानते हैं.
- (४) यानी अल्लाह की तमाम किताबों और उसके कुल रसूलों पर ईमान लाते हैं और कुछ को मान कर और कुछ से इन्कार करके उनमें फ़र्क़ नहीं करते. या ये मानी हैं कि रिश्तेदारी के हक़ का ख़याल रखते हैं और रिश्ता काटते नहीं. इसी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की रिश्तेदारियाँ और ईमानी रिश्ते भी दाख़िल हैं. सैयदों का आदर और मुसलमानों के साथ दोस्ती और एहसान और उनकी मदद और उनकी तरफ़ से मुदाफ़िअत यानी बचाव और उनके साथ शफ़क़त और सलाम दुआ और मुसलमान मरीज़ों की देखभाल और अपने दोस्तों ख़ादिमों पड़ोसियों और सफ़र के साथियों के अधिकारों का ख़याल रखना भी इसमें दाख़िल है. शरीअत में इसका लिहाज़ रखने पर बहुत जगह काफ़ी ज़ोर दिया गया है. अक्सर सही हदीसों भी इस विषय में आई हैं.
- (५) और हिसाब के वक़्त से पहले ख़ुद अपने अन्दर का हिसाब करते हैं.
- (६) ताअतों और मुसीबतों पर, और गुनाहों से रुके रहे.
- (७) नवाफ़िल का छुपाना और फ़र्ज़ का ज़ाहिर करना अफ़ज़ल है.

होने^(१३) के बाद तोड़ते और जिसके जोड़ने को अल्लाह ने फ़रमाया उसे क़ता करते (काटते) और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं^(१४) उनका हिस्सा लअनत ही है और उनका नसीब बुरा घर^(१५) २५ अल्लाह जिसके लिये चाहे रिज़क कुशादा और^(१६) तंग करता है और काफ़िर दुनिया की ज़िन्दगी पर इतरा गए^(१७) और दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबिल नहीं मगर कुछ दिन बरत लेना २६

चौथा सूक़

और काफ़िर कहते उनपर कोई निशानी उनके रब की तरफ़ से क्यों न उतरी, तुम फ़रमाओ वेशक़ अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करता है^(१) और अपनी राह उसे देता है जो उसकी तरफ़ रज़ू लाए २७ वो जो ईमान लाए और उनके दिल अल्लाह की याद से चैन पाते हैं सुन लो अल्लाह की याद ही में दिलों का चैन है^(२) २८ वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनको खुशी है और अच्छा अंजाम^(३) २९ इसी तरह हमने तुमको इस उम्मत में भेजा जिससे पहले उम्मतें हो गुज़री^(४) कि तुम उन्हें पढ़कर सुनाओ^(५) जो हमने तुम्हारी तरफ़ वही (देववाणी) की और वो रहमान के इन्कारी हो रहे हैं^(६) तुम फ़रमाओ वह मेरा रब है उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया

مِبْشَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَ
يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ
سُوءُ الدَّارِ ۝ اللَّهُ يُبْسِطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَ
يَقْدِرُ ۚ وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَا
أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ
يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أُنَابَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا
وَوُضِعَ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ
تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
طُوبَى لَهُمْ وَحُسْنُ مَا بَ ۝ كَذَلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي
أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لَتَتْلُوا عَلَيْهِمْ
الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَنِ قُلْ
هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ

(८) बदक़लामी का जवाब मीठे बोलों से देते हैं और जो उन्हें मेहरूम करता है उसपर अता करते हैं, जब उनपर जुल्म किया जाता है, माफ़ करते हैं, जब उनसे पैचन्द काटा जाता है, मिलाते हैं और जब गुनाह करते हैं, तौबह करते हैं, जब नाजायज़ काम देखते हैं, उसे बदलते हैं, जिहालत के बदले हिल्म और तकलीफ़ के बदले सन्न करते हैं।

(९) यानी मूमिन हों।

(१०) अगरचे लोगों ने उनके से अमल न किये हों जब भी अल्लाह तआला उनके सम्मान के लिये उनके उनके दर्जे में दाख़िल फ़रमाएगा।

(११) हर एक रोज़ो शब में तौहफ़ों और रज़ा की खुशख़बरी लेकर जन्नत के।

(१२) आदर और सम्मान के तौर पर।

(१३) और उसको कुबूल कर लेने।

(१४) कुफ़्र और गुनाह के काम करके।

(१५) यानी जहन्नम।

(१६) जिसके लिये चाहे।

(१७) और शुक्रगुज़ार न हुए, दुनिया की दौलत पर इतराना और घमण्ड करना हराम है।

सूरए रअद - चौथा सूक़

(१) कि वह आपतें और चमत्कार उतरने के बाद भी यह कहता रहता है कि कोई निशानी क्यों नहीं उतरी, कोई चमत्कार क्यों नहीं आया, अनेक चमत्कारों के बावजूद गुमराह रहता है।

(२) उसकी रहमत और फ़ज़ल और उसके एहसास और करम को याद करके बेकरार दिलों को करार और इत्मीनान हासिल होता है, अगरचे उसके इन्साफ़ और प्रकोप की याद दिलों को डरा देती है जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया : “इन्मल मूमिनूनल्लज़ीना इज़ा जुक़िरल्लाहो वज़िलत कुलुबुहुम” (यानी ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह याद किया जाए, उनके दिल डर जाएं - सूरए अन्फ़ाल, आयत २)। हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने इस आपत की तफ़सीर में फ़रमाया कि मुसलमान जब अल्लाह का नाम लेकर क़सम खाता है, दूसरे मुसलमान उसका यक़ीन कर लेते हैं और उनके दिलों को इत्मीनान हो जाता है।

(३) तूरा यशारत है राहत व नेअमत और खुशी व खुशहाली की, सईद बिन जुबैर रदियल्लाहो अन्हो ने कहा तूरा हबशी ज़वान में जन्नत का नाम है, हज़रत अबू हुरैरा और दूसरे सहाबा से रिवायत है कि तूरा जन्नत के एक दरज़त का नाम है जिसका साया हर

और उसी की तरफ़ मेरी रूजू है (३०) और अगर कोई ऐसा कुरआन आता जिससे पहाड़ टल जाते (३१) या ज़मीन फट जाती या मुर्दे बातें करते जब भी ये काफ़िर न मानते (३२) वल्कि सब काम अल्लाह ही के इख्तियार में हैं (३३) तो क्या मुसलमान इससे नाउम्मीद न हुए (३४) कि अल्लाह चाहता तो सब आदमियों को हिदायत कर देता (३५) और काफ़िरों को हमेशा उनके किये की सख्त धमक पहुंचती रहेगी (३६) या उनके घरों के नज़दीक उतरेगी (३७) यहां तक कि अल्लाह का वादा आए (३८) वेशक अल्लाह वादा खिलाफ़ी नहीं करता (३९) (३१)

पाँचवां स्कू

और वेशक तुम से अगले रसूलों से भी हंसी की गई तो मैंने काफ़िरों को कुछ दिनों ढील दी फिर उन्हें पकड़ा (१) तो मेरा अज़ाब कैसा था (२) तो क्या वह हर जान पर उसके कर्मों की निगहदाशत रखता है (३) और वो अल्लाह के शरीक ठहराते हैं, तुम फ़रमाओ उनका नाम तो लो (४) या उसे वह बताते हो जो उसके इल्म में सारी ज़मीन में नहीं (५) या यूँही ऊपरी बात (६) वल्कि काफ़िरों की निगाह में उनका धोखा अच्छा ठहरा है और सह से रोके गए (७) और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं (३३)

مَنْ تَابَ ۖ وَلَوْ اَنْ قَرَأْنَا سِرَّاتِ بِهٖ الْجِبَالِ اَوْ
قُطِعَتْ بِهٖ الْاَرْضُ اَوْ كَلِمَ بِهٖ الْمَوْتِ ۖ بَلْ يَنْتَوِي
الْاَمْرُ جَمِيعًا ۚ اَفَلَمْ يَأْتِ الْذِّينَ اٰمَنُوْا اَنْ تَو
يَسَّاءُ اللّٰهُ لَهْدٰى النَّاسَ جَمِيعًا ۚ وَلَا يَزَالُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُ
قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَبَاقِ وَعْدُ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝ وَلَقَدْ اَسْتَهْزِئْ بِرُسُلٍ مِّنْ
قَبْلِكَ ۚ فَامْلِكْتَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتَهُمْ ۚ فَكَيْفَ
كَانَ عِقَابِ ۝ اَقَمْنَ هُوَقَاتِيْمَ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا
كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاءَ ۚ قُلْ سَبُّوْهُمْ ۚ اَمْرٌ
تُّنَبِّئُوْنَ ۚ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ اَمْرٌ بِظَاهِرٍ مِّنَ
الْقَوْلِ ۚ بَلْ رَّيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرَهُمْ ۚ وَصَدُّوا
عَنِ السَّبِيْلِ ۚ وَمَنْ يُضِلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

मज़ल

जन्नत में पहुंचेगा. यह दरगज़ जन्नत में है और इसकी अस्त जड़ सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के वनन्द मकान में और इसकी शाखें जन्नत के हर घर हर महल में. इसमें सियाही को छोड़कर हर क्रिम के रंग और ख़ुशनुमाइयाँ है, हर तरह के फल और मंत्र इसमें फलते हैं. इसकी जड़ से काफ़िर और सलसवील की नहरें जारी हैं.

(४) ता तुम्हारी उम्मत सब से पिछली उम्मत है और तुम नवियों के सिलसिल का ख़त्म करने वाले हो. तुम्हें बड़ा शान से नबुव्वत अता की.

(५) वह महान किताब.

(६) क़तादा और मक़ातिल वग़ैरह का क़ौल है कि यह आयत सुलह हुदैबियह में उतरी जिसका मंक्षिप्त वाक़िआ यह है कि सुहैल दिन अम्र जब सुलह के लिये आया और सुलहनामा लिखने पर सहमति हो गई तो सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने हज़रत अली मुरतज़ा रदियल्लाहो अन्हो से फ़रमाया लिखो "बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम" काफ़िरों ने इसमें झगड़ा किया और कहा कि आप हमारे तरीक़े के अनुसार "बिस्मिकल्लाहुम्मा" लिखवाइये. इसके बारे में आयत में इशारा होता है कि वो ग़मान के इकारा हो रहे हैं.

(७) अपनी जगह से.

(८) कुरैश के काफ़िरों ने सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से कहा था अगर आप यह चाहें कि हम आपकी नबुव्वत मानें और आपका अनुकरण करें तो आप कुरआन पढ़कर इसकी तासीर से मक्का के पहाड़ हटा दीजिये ताकि हमें ख़ेतियाँ करने के लिये सिस्तत मैदान मिल जाएं और ज़मीन फाड़कर चरने जारी कीजिये ताकि हम ख़ेतों और बाग़ों को उनसे सींच सकें और क़मड़े बिन क़गाव वग़ैरह हमारे मरे हुए बाप दादा को ज़िन्दा कर दीजिये वो हम से कह जाएं कि आप नबी हैं. इसके जवाब में यह आयत उतरी और बतला दिया गया कि ये झूल हवाले करने वाले फ़िरी हाल में भी ईमान लाने वाले नहीं.

(९) ता ईमान बही लागगा जिसको अल्लाह चाहें और तौफ़ीक़ दे. उसके सिवा और कोई ईमान लाने वाला नहीं, अगरचे उन्हें बही निशान दिखा दिए जाएं जो वो तलब करें.

(१०) यानी काफ़िरों के ईमान लाने से चाहे उन्हें क़िन्दरी हो निशानियाँ दिखाइया दी जाएं और क्या मुसलमानों को इसका यकीनो इन्म नहीं.

(११) वग़ैर फ़िरी निशानों के, लेकिन वह जो चाहता है और बही हिकमत है. यह जवाब है उन मुसलमानों का जिन्होंने काफ़िरों के नई नई निशानियाँ तलब करने पर यह चाहा था जो काफ़िर भी कोई निशानी तलब करे बही उसको दिखायी जाए. इसमें उन्हें बतला दिया गया कि जब ज़बरदस्त निशान शा चुके और शक और शक की सारे राहें बन्द करदी गईं, दीन की मच्चाई चमकने दिन में

उन्हें दुनिया के जीत अजाब होगा^(१) और वेशक आखिरत का अजाब सब से सख्त है, और उन्हें अल्लाह से वचाने वाला कोई नहीं^(२) अहवाल उस जन्नत का कि डर वालों के लिये जिसका वादा है उसके नीचे नेहरें बहती हैं, उसके मेवे हमेशा और उमका साया^(३) डर वालों का तो यह अंजाम है^(४) और काफ़िरों का अंजाम आग^(५) और जिनको हमने किताब दी^(६) वो उसपर खुश होते जो तुम्हारी तरफ उतरा और उन गिरोहों में^(७) कुछ वो हैं कि उसके बाज़ (कुछ थोड़े) से इन्कारी हैं तुम फ़रमाओ मुझे तो यही हुक्म है कि अल्लाह की बन्दगी करू और उसका शरीक न ठहराऊँ मैं उसी की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मुझे फिरना^(८) और इसी तरह हमने उसे अरबी फ़ैसला उतारा^(९) और ऐ सुनने वाले अगर तू उनकी ख्वाहिशों पर चलेगा^(१०) वाद इसके कि तुझे इल्म आचुका तो अल्लाह के आगे न तेरा कोई हिमायती होगा न वचाने वाला^(११)

छटा रसू

और वेशक हमने तुम से पहले रसूल भेजे और उनके लिये वीवियाँ^(१) और वच्चे किये और किसी रसूल का काम नहीं कि कोई निशानी ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से हर वादे की एक लिखत है^(२)

وَمَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي	وَمَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي
وَعِدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ أُكُلُهَا	وَعِدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ أُكُلُهَا
دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى	دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى
الْكَافِرِينَ النَّارُ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا لَكِنَّمَا الْكِتَابُ	الْكَافِرِينَ النَّارُ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا لَكِنَّمَا الْكِتَابُ
بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرْ بَعْضَهُ	بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرْ بَعْضَهُ
قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ ۝	قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ ۝
إِلَيْهِ أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَآبٍ ۝ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ	إِلَيْهِ أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَآبٍ ۝ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ
حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَنْ يَتَّبِعَنَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا	حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَنْ يَتَّبِعَنَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ وَلَا	جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ وَلَا
وَاقٍ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا	وَاقٍ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا
لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۝ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ	لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۝ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ
يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَلِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ۝	يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَلِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ۝

مَنْزِل

ज़्यादा ज़ाहिर हो चुकी, इन खुल प्रमाणों के बावजूद लोग मुकर गए, सच्चाई को न माना, ज़ाहिर हो गया कि वो दुश्मनी पर तुल हैं और दुश्मन किसी दलील से भी नहीं माना करता, तो मुसलमानों को अब उनसे सच्चाई स्वीकार करने की क्या उम्मीद, क्या अब तक उनकी दुश्मनी देखकर और खुली और ज़ाहिर निशानियों से उनके मुंह फेर लेने को देखकर भी उनसे सच्चाई के कुचल करने की उम्मीद की जा सकती है, अलबत्ता अब उनके ईमान लाने और मान जाने की यही सूरत है कि अल्लाह तआला उन्हें मजबूर करे और उनका इन्जियार छीन ले, इस तरह की हिदायत चाहता तो तमाम आदमियों का हिदायत फ़रमा देता और कोई काफ़िर न रहता, मगर आजमाइश और मुसीबतों से गुज़रने की हिक्मत का यह तकाज़ा नहीं।

(१२) यानी वो इस झुटलाने और दुश्मनी के कारण तरह तरह के हादसों, मुसीबतों और आफ़तों और बलाओं में जकड़े रहेंगे कभी कहत में, कभी लुटने में, कभी मार जाने में, कभी कैद में।

(१३) और उनकी बेचैनी और परेशानी का कारण होगा और उनतक मुसीबतों के नुक़सान पहुंचेंगे।

(१४) अल्लाह की तरफ़ से फ़तह और मदद आए और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लेम और उनका दीन ग़ालिब हो और मक्क़े मुकर्रमा फ़तह किया जाए, कुछ मुफ़सिरीयों ने कहा कि इस वादे से क़यामत का दिन मुराद है जिसमें कर्मों का बदला दिया जाएगा।

(१५) इसके बाद अल्लाह तआला रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लेम को तसल्ली फ़रमाता है कि इस क्रिम के येहदा सवाल और हंसी ठट्टे से आप दुखी न हों क्योंकि हादियों को हमेशा ऐसे वाक्फ़ात पेश आया ही करते हैं, चुनांचे इशाराद फ़रमाता है।

सूरए रअद - पाँचवां रसू

(१) और दुनिया में उन्हें कहत व क़त्ल व कैद में जकड़ा और आख़िरत में उनके लिये जहन्नम का अजाब।

(२) नेक की भी, बद की भी, यानी क्या अल्लाह तआला उन बुतों जैसा हो सकता है जो ऐसे नहीं हैं न उन्हें इल्म है, न कुदरत, जो आजिज़, मजबूर और बे शज़र हैं।

(३) वो हैं कीन।

(४) और जो उसके इल्म में न हो वह निरा झूट और बातिल है, हो ही नहीं सकता क्योंकि उसका इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है लिहाज़ा उसके लिये शरीक होना बातिल और ग़लत।

(५) के दरपे हांते हो ज़िगकी कुछ असल और हकीकत नहीं।

(६) यानी हिदायत और दीन की राह से।

अल्लाह जो चाहे मिटाता और साबित करता है^(३) और अरल लिखा हुआ उसी के पास है^(४) ३९ और अगर हम तुम्हें दिखाएँ कोई वादा^(५) जो उन्हें दिया जाता है या पहले ही^(६) अपने पास बुलाएं तो हर हाल में तुमपर तो सिर्फ पहुंचाना है और हिसाब लेना^(७) हमारा ज़िम्मा^(८) ४० क्या उन्हें नहीं समझता कि हम हर तरफ से उनकी आवादी घटाते आ रहे हैं^(९) और अल्लाह हुक्म फरमाता है उसका हुक्म पीछे डालने वाला कोई नहीं^(१०) और उसे हिसाब लेते देर नहीं लगती ४१ और उनसे अगले^(११) थोखा कर चुके हैं तो सारी छुपवाँ तदवीर का मालिक तो अल्लाह ही है^(१२) जानता है जो कुछ कोई जान कमाए^(१३) और अव जाना चाहते हैं काफिर किसे मिलता है पिछला घर^(१४) ४२ और काफिर कहते हैं तुम रसूल नहीं, तुम फरमाओ अल्लाह गवाह काफ़ी है मुझ में और तुम में^(१५) और वह जिस किताब का इल्म है^(१६) ४३

१४- सूरए इब्राहीम

सूरए इब्राहीम मक्का में उतरी, इसमें ५२ आयतें, सात रूकू हैं

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बंहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) अलिफ़ लाम रा, एक किताब है^(२) कि हमने तुम्हारी तरफ उतारी कि तुम लोगों को^(३) अंधेरियों से^(४) उजाले में लाओ

يٰۤاَيُّهَا اللّٰهُ مَا يَسْأَلُ وَيُثَبِّتُ ۖ وَعِنْدَهُ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝ وَاِنْ مَّا تُرِيكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ اَوْ تَتَوَقَّيْكَ فَاِنَّمَا عَلَيَّكَ الْبَلَدُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اُظْرَافِهَا ۚ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَبَلَغَهُ الْكَذِبُ جَمِيعًا ۚ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۚ وَسَيَعْلَمُ الْكٰفِرُ لِمَنْ عَقَبَى الدّٰارُ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اَلَسْتُمْ مُّرْسَلًا ۚ قُلْ كَفَىٰ بِاللّٰهِ شَهِيدًا ۚ بَيِّنٰى وَبَيِّنٰتُكُمْ ۚ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتٰبِ ۝

(۱) (۲) (۳) (۴) (۵) (۶) (۷) (۸) (۹) (۱۰) (۱۱) (۱۲) (۱۳) (۱۴) (۱۵) (۱۶)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ اَلرَّسُوْلُ کَتَبَ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْکَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ

مذلل

(७) क़त्ल और कैद का.

(८) यानी उसके मेरे और उसका साथ हमेशा का है उसमें से कोई दूटने कटने या खत्म होने वाला नहीं. जन्नत का हाल अजीब है. उसमें न सूरज है न चँद न अंधेरा है. इसके बावजूद कभी न दूर होने वाला साथ है.

(९) यानी तक्रबा वालों के लिये जन्नत है.

(१०) यानी वह यहूदी और ईसाई जो इस्लाम लाए जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम वगैरह और हबशा और नज्रान के ईसाई.

(११) यहूदियों, ईसाइयों और मुश्रिकों के, जो आपकी दुश्मनी में डूबे हैं और उन्होंने खुद ही चढ़ाइयों की हैं.

(१२) इसमें क्या बात इन्कार के काबिल है. क्यों नहीं मानते.

(१३) यानी जिस तरह पहले नबियों का उनकी ज़वातों में अहकाम दिये गए थे उसी तरह हमने यह कुरआन ये नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप पर अरबी ज़वान में उतारा. कुरआने करीम को 'हुक्म' (फैसला) इसलिये फरमाया कि इसमें अल्लाह की इबादत और उसकी तौहीद और उसके दीन की तरफ दावत और तमाम नकलीफ़ों और एहकाम और हलाल व हराम का बयान है. कुछ उलमा ने फरमाया चूंकि अल्लाह तआला ने तमाम ख़ल्क पर कुरआन शरीफ़ को कुबूल करने और उसके मुताबिक़ अमल करने का हुक्म फरमाया, इसलिये इसका नाम हुक्म रखा.

(१४) यानी काफ़िरों के, जो अपने दीन की तरफ बुलाते हैं.

सूरए रअद - छटा रूकू

(१) काफ़िरों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यह ऐव लगाया कि वह निकाह करते हैं. अगर वही होते तो दुनिया तर्क कर देते. बीबी बच्चे से कुछ वास्ता न रखते. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें बताया गया कि बीबी बच्चे होना नबुव्वत के विरुद्ध नहीं है. निहाज़ा ये एतिसाज़ बेजा है और पहले जो रसूल आ चुके हैं वो भी निकाह करते थे उनके भी बीबियाँ और बच्चे थे.

(२) उस से पहले और बाद में नहीं हो सकता चाहे वह अज़ाब का वादा हो या कोई और.

(३) सईद बिन जुबैर और क़तादा ने इस आयत की तफ़सीर में कहा कि अल्लाह जिन अहकाम को चाहता है मन्सूख़ या स्थगित फरमाता है जिन चाहता है वाकी रखता है. इन्हीं इन्जे जुबैर का एक क़ौल यह है कि बन्दों के गुनाहों में से अल्लाह जो चाहता है माफ़ फरमा कर मिटा देता है और जो चाहता है साबित रखता है. अक़रमह का क़ौल है कि अल्लाह तआला तौबह से जिस गुनाह

(५) उनके रब के हुक्म से उसकी राह^(६) की तरफ जो इज़्जत वाला सब खूबियों वाला है अल्लाह^(७) कि उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में^(८) और काफ़िरों की खराबी है एक सख्त अज़ाब से^(९) जिन्हें आखिरत से दुनिया की ज़िन्दगी प्यारी है और अल्लाह की राह से रोकते^(१०) और उसमें कज़ी चाहते हैं . वो दूर की गुमराही में हैं^(११) (३) और हमने हर रसूल उसकी क़ौम ही की ज़वान में भेजा^(१२) कि वह उन्हें साफ़ बताए^(१३) फिर अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और वही इज़्जत हिक्मत वाला है^(१४) और वेशक हमने मूसा को अपनी निशानियाँ^(१५) लेकर भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरियों से^(१६) उजाले में ला और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिला^(१७) वेशक उसमें निशानियाँ हैं हर बड़े सब्र वाले शुक्र करने वाले को^(१८) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा^(१९) याद करो अपने ऊपर अल्लाह का एहसान जब उसने तुम्हें फ़िराओन वालों से निजात दी जो तुमको बुरी मार देते थे और तुम्हारे बेटों को ज़िंवाह करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रखते और

إِلَى الثُّورَةِ يَأْذِنُ لَيْبِهِمْ إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ
الْحَبِيدِ ۝ اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۝ وَوَيْلٌ لِلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝
الَّذِينَ يَسْتَعْجِلُونَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ
وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۝ أُولَٰئِكَ
فِي ضَلٰلٍ بَعِيدٍ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا
بِلِسَانٍ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ فَيُضِلَّ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ
وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۝ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَلَقَدْ
أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ
إِلَى النُّورِ ۝ وَذَكَرَهُمْ بِآيَاتِهِمْ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ
إِذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ
فِرْعَوْنَ ۝ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيَدْعُونَ

مَذٰلُ

को चाहता है मिटाता है और उसकी जगह नेकियों कायम करता है. इसकी तफ़सीर में और भी बहुत क़ौल हैं.

(४) जिसको उसने आदिकाल में लिखा. यह अल्लाह का इल्म है या उम्मुल किताब से लौहे मेहफूज़ मुराद है जिसमें सारे जगत और सृष्टि में होने वाले सारे वाक़िआत और घटनाओं और सारी चीज़ों का हाल दर्ज है और इसमें हेर फेर या परिवर्तन नहीं हो सकता.

(५) अज़ाब का.

(६) हम तुम्हें-

(७) और कर्मों का बदला देना.

(८) तो आप काफ़िरों के इन्कार करने से रंजीदा और दुखी न हों और अज़ाब की जल्दी न करें.

(९) और ज़मीने शिर्क की वुसअत और फैलाव दम वदम कम कर रहे हैं और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये काफ़िरों के आस पास की ज़मीने एक के बाद एक फ़तह होती चली जाती है. और उनके लश्कर को विजयी करता है और उनके दीन को गल्ला देता है.

(१०) उसका हुक्म लागू है किसी की मज़ाल नहीं कि उसमें क्यों ओर क्या, या फेर बदल कर सके. जब वह इस्लाम को गल्ला देना चाहे और कुफ़र को पस्त करना चाहे तो किसकी मज़ाल और ताक़त कि उसके हुक्म में दख़ल दे सके.

(११) यानी गुज़री हुई उम्मतों के काफ़िर अपने नबियों के साथ.

(१२) फिर बग़ैर उसकी मर्ज़ी के किसी की क्या चल सकती है और जब हकीकत यह है तो मख़यूक का क्या डर.

(१३) हर एक की कोशिश अल्लाह तआला को मालूम है, उसके तज़दीक उनका बदला भी निरधारित है.

(१४) यानी काफ़िर बहुत जल्द जान लेंगे कि आखिरत की राहत ईमान वालों के लिये है और वहाँ की ज़िल्लत और ख़्तारी काफ़िरों के लिये है.

(१५) जिसने मेरे हाथों में खुले चमत्कार और मज़बूत निशानियाँ ज़ाहिर फ़रमा कर मेरे नबी होने की गवाही दी.

(१६) चाहे यहूदी उलमा में से तौरात का जानने वाला हो या ईसाईयों में से इंजील का आलिम, वह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत को अपनी किताबों में देखकर जानता है. इन उलमा में से अक्सर आपकी नबुव्वत की गवाही देते हैं.

१४ - सूरए इब्राहीम - पहला रूक़

(१) सूरए इब्राहीम मक्की है सिवाय आयत "अलम तरा इलल्लज़ीना वहलू नेअमतल्लाहे कुफ़रन" और इसके बाद वाली आयत के. इस सूरा में सात रूक़, बावन आयतें, आठ सौ इकसठ कलिमे और तीन हज़ार चार सौ चौतीस अक्षर हैं.

- (२) यह कुरआन शरीफ़.
- (३) कुफ़्र व गुमराही व जिहालत व बहकावे की.
- (४) ईमान के.
- (५) जुलमात को बहु वचन और नूर को एक वचन से बयान फ़रमाने में मक़सद यह है कि दीन हक़ की राह एक है और कुफ़्र और गुमराही के तरीक़े बहुत.
- (६) यानी दीने इस्लाम.
- (७) वह सब का ख़ालिक और मालिक है, सब उसके बन्दे और ममलूक, तो उसकी इबादत सब पर लाज़िम और उसके सिवा किसी की इबादत रवा नहीं.
- (८) और लोगों को दीने इस्लामी क़बूल करने में सेकते हैं.
- (९) कि सच्चाई से बहुत दूर हो गए हैं.
- (१०) जिसमें वह रसूल बवाकर भेजा गया. चाहे उसकी दअवत आम हो और दूसरी क़ौमों और दूसरे मुल्कों पर भी उसका अनुकरण लाज़िम हो जैसा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत तमाम आदमियों और जिनों बल्कि सारी ख़ल्क की तरफ़ है और आप सब के नबी हैं जैसा कि क़ुरआने करीम में फ़रमाया गया “लियकूना लिलआलमीना नज़ीर” (यानी उत्तारा क़ुरआन अपने बन्दे पर जो सारे जगत को डर सुनाने वाला हो - सूरए फ़ुरक़ान, आयत १).
- (११) और जब उसकी क़ौम अच्छी तरह समझ ले तो दूसरी क़ौमों को अनुवाद के ज़रिये से वो आदेश पहुंचा दिये जाएं और उनके मानी समझा दिये जाएं. कुछ मुफ़सिरो ने इस आयत की तफ़सीर में यह भी फ़रमाया है कि “क़ौमिही” की ज़मीर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ पलटती है और मानी ये हैं कि हमने हर रसूल को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़वान यानी अरबी में वही फ़र्माई. ये मानी भी एक रिवायत में आए हैं कि वही हमेशा अरबी ज़वान में उतरी फिर अम्बिया अलैहिमुस्सलाम ने अपनी क़ौमों के लिये उनकी ज़वानों में अनुवाद फ़रमा दिया. (इल्कान, हुसैनी) इससे मालूम होता है कि अरबी तमाम ज़वानों में सबसे अफ़ज़ल है.
- (१२) जैसे लाटी और रौशन हथैली वग़ैरह, साफ़ चमत्कार.
- (१३) कुफ़्र की विकास कर, ईमान के-
- (१४) क़ामूस में है कि अय्यामिल्लाह से अल्लाह की नेअमते मुराद हैं. हज़रत इब्ने अब्बास व उबई बिन कअब व मुजाहिद व क़तादा ने भी “अय्यामिल्लाह” की तफ़सीर अल्लाह की नेअमते फ़रमाई. मुक़ातिल का क़ौल है कि “अय्यामिल्लाह” से वो बड़ी बड़ी घटनाएं मुराद हैं जो अल्लाह के हुक्म से घटीं. कुछ मुफ़सिरो ने फ़रमाया कि अय्यामिल्लाह से वो दिन मुराद हैं जिनमें अल्लाह ने अपने बन्दों पर इनाम किये जैसे कि बनी इस्राईल पर मन्न और सलवा उतारने का दिन, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिये दरिया में रास्ता बनाने का दिन. (ख़ाज़िन, मदारीक़ व मुफ़रदाते राग़िब). इन अय्यामिल्लाह में सब से बड़ी नेअमत के दिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पैदाइश और मअराज के दिन हैं, उनकी याद क़ायम करना भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल है. इसी तरह और बुजुर्गों पर जो अल्लाह की नेअमते हुई या जिन दिनों में वो महान घटनाएं पेश आईं जैसा कि दसवीं मुहर्रम को क़र्बला का वाक़िआ, उनकी यादगार क़ायम करना भी “अल्लाह के दिनों की याद” में शामिल है. कुछ लोग भीलाद शरीफ़, मअराज शरीफ़ और ज़िक़े शहादत के दिनों के मज़सूस किये जाने में क़लाम करते हैं. उन्हें इस आयत से नसीहत पकड़नी चाहिये.
- (१५) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का अपनी क़ौम को यह इरशाद फ़रमाया “अल्लाह के दिनों की याद” की तअमील है.

उसमें^(१६) तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़ल हुआ^(६)

दूसरा सूक़

और याद करो जब तुम्हारे रब ने सुना दिया कि अगर एहसान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा^(१) और अगर नाशुकी करो तो मेरा अज़ाब सख़्त है^(७) और मूसा ने कहा अगर तुम और ज़मीन में जितने हैं सब काफ़िर हो जाओ^(२) तो बेशक अल्लाह बेपर्वाह सब ख़ूबियों वाला है^(८) क्या तुम्हें उनकी ख़बरें न आईं जो तुम से पहले थीं नूह की क़ौम और आद और समूद और जो उनके बाद हुए, उन्हें अल्लाह ही जाने^(३) उनके पास उसके रसूल रौशन दलीलें लेकर आए^(४) तो वो अपने हाथ^(५) अपने मुंह की तरफ़ ले गए^(५) और बोले हम इन्कारी हैं उसके जो तुम्हारे हाथ भेजा गया और जिस राह^(६) की तरफ़ हमें बुलाते हो इसमें हमें वह शक़ है कि बात खुलने नहीं देता^(९) उनके रसूलों ने कहा क्या अल्लाह में शक़ है^(८) आसमान और ज़मीन का बनाने वाला, तुम्हें बुलाता है^(९) कि तुम्हारे कुछ गुनाह बरख़्शो^(१०) और मौत के निश्चित वक़्त तक तुम्हारी ज़िन्दगी बेअज़ाब काट दे, वोले तुम तो हमीं जैसे आदमी हो^(११) तुम चाहते हो कि हमें उससे अलग रखो जो हमारे बाप दादा पूजते थे^(१२)

وَمَا يُؤْمِنُ

۳۵۴

وَمَا يُؤْمِنُ

أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝ وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرًا أَنتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۖ فَإِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ حَمِيدٌ ۝ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثمودَ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ ۖ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۖ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَعْيُنَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝ قَالَتْ رُسُلُهُم أَفِى اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ قَالُوا إِنَّا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

مَثَلُنَا

(१६) यानी निजात देने में.

सूरए इब्राहीम - दूसरा सूक़

(१) इस आयत से मालूम हुआ कि शुक्र से नेअमत ज़्यादा होती है. शुक्र की अरत यह है कि आदमी नेअमत का तसव्वुर और उसका इज़हार करे. शुक्र की हकीकत यह है कि देने वाले की नेअमत का उसकी तअज़ीम के साथ एतिराफ़ करे और नफ़स को उसका ख़ुशगुन बनाए. यहाँ एक बारीकी है वह यह कि बन्दा जब अल्लाह तआला की नेअमतों और उसके तरह तरह के फ़ज़ल व करम और ऐहसान का अध्ययन करता है तो उसके शुक्र में लग जाता है. इससे नेअमतें ज़्यादा होती हैं और बन्दे के दिल में अल्लाह तआला की महब्वत बढ़ती चली जाती है. यह मक़ाम बहुत बरतर है और इससे ऊंचा मक़ाम यह है कि नेअमत देने वाले की महब्वत यहाँ तक मालिब हो कि दिल को नेअमतों की तरफ़ ख़िंचाव बाकी न रहे. यह मक़ाम सिद्दीक़ों का है. अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से हमें शुक्र की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए.

(२) तो तुम ही नुक़सान पाओगे और तुम ही नेअमतों से मेहरूब रहोगे.

(३) कितने थे.

(४) और उन्होंने चमत्कार दिखाए.

(५) अत्यन्त क्रोध से.

(६) हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि वो गुस्से में आकर अपने हाथ काटने लगे. हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि उन्होंने किताबुल्लाह सुनकर हैरत से अपने मुंह पर हाथ रखे. गरज़ यह कोई न कोई इन्कार की अदः थी.

(७) यानी तौहीद और ईमान.

(८) क्या उसकी तौहीद में हिचकिचाहट है. यह कैसे हो सकता है. उसकी दलीलें तो अत्यन्त ज़ाहिर हैं.

(९) अपनी ताअत और ईमान की तरफ़.

(१०) जब तुम ईमान ले आओ, इसलिये कि इस्लाम लाने के बाद पहले के गुनाह बरख़्श दिये जाते हैं सिवाए बन्दों के हुक्क के, और इसी लिये कुछ गुनाह फ़रमाया.

(११) ज़ाहिर में हमें अपने जैसे मालूम होते हो फिर कैसे माना जाए कि हम तो नबी न हुए और तमहं यह फ़ज़ीलत मिल गई.

(१२) यानी बुत परस्ती से.

अब कोई रौशन सनद (प्रमाण) हमारे पास ले आओ^(१०) (१०) उनके रसूलों ने उनसे कहा^(११) हम हैं तो तुम्हारी तरह इन्सान मगर अल्लाह अपने बन्दों में जिसपर चाहे एहसान फ़रमाता है^(१२) और हमारा काम नहीं कि हम तुम्हारे पास कुछ सनद ले आएँ मगर अल्लाह के हुक्म से और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये^(१३) (११) और हमें क्या हुआ कि अल्लाह पर भरोसा न करें^(१४) उसने तो हमारी राहें हमें दिखा दीं^(१५) और तुम जो हमें सता रहे हो हम ज़रूर इसपर सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये^(१६) (१२)

तीसरा रूकू

और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम ज़रूर तुम्हें अपनी ज़मीन^(१) से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन पर हो जाओ, तो उन्हें उनके रब ने वही (देववाणी) भेजी कि हम ज़रूर इन ज़ालिमों को हलाक करेंगे^(२) और ज़रूर हम तुमको उनके बाद ज़मीन में बसाएंगे^(३) यह उसके लिये है जो^(४) मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अज़ाब का हुक्म सुनाया है उससे खौफ़ करे^(५) और उन्होंने^(६) फ़ैसला मांगा और हर सरकश हटधर्म नामुराद हुआ^(७) (१५) जहन्नम

تَرِيدُونَ أَنْ تَصْدُقُوا عَنْكَ كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا
فَاتُّوْنَا بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ
تُحْنُوا إِلَّا بَشْرٌ مِثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَانٍ إِلَّا
بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝
وَمَا لَنَا أَلَّا تَتَوَكَّلَ عَلَىٰ اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا
وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا أَدَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلرُّسُلِ هُمْ
لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ فَأَوْفَىٰ
إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْدِيَنَّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَنُسَكِّنَنَّكُمْ
الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَ
خَافَ وَعَبَدَ ۝ وَاسْتَغْفِرُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ
عَنِيدٍ ۝ وَمَنْ زَارَاهُ جَهَنَّمَ وَ يَسْتَفِ مِنْ مَّاءٍ

مَنْزِل

- (१३) जिससे तुम्हारे दावे की सच्चाई साबित हो. यह कलाम उनका दुश्मनी और सरकशी से था और हालांकि नबी आपतें ला चुके थे, चमत्कार दिखा चुके थे, फिर भी उन्होंने नई सनद मांगी और पेश किये हुए चमत्कार को शून्य करार दिया.
- (१४) अच्छा यही मानो.
- (१५) और नबुच्चत और रिसालत के साथ बुजुर्गी देता है और इस महान उपाधि के साथ नवाज़ता है.
- (१६) वही दुश्मनों का शर दफा करता है और उससे मेहफूज़ रखता है.
- (१७) हमसे ऐसी हो ही नहीं सकता क्योंकि हम जानते हैं कि जो कुछ अल्लाह ने लिख दिया है वही हांगा. हमें उसपर पूरा भरोसा और भरपूर ऐतिमाद है. अब तुराब रदियल्लाहो अन्हो का कौल है कि तबक्कुल बदन को बन्दगी में डालना, दिल को अल्लाह के साथ जोड़े रखना, अता पर शुक्र, दला पर सब्र का नाम है.
- (१८) और हिदायत व निजात के तरीके हम पर खोल दिये. हम जानते हैं कि सारे काम उसकी कुदरत और इस्तियार में हैं.

सूरए इब्राहीम - तीसरा रूकू

- (१) यानी अपने इलाके.
- (२) हदीस शरफ़ि में है, जो अपने हमसाए को तकलीफ़ देता है अल्लाह उसके घर का उसी हमसाए को मालिक बनाता है.
- (३) क़यामत के दिन.
- (४) यानी नबियों ने अल्लाह तआला से मदद तलब की या उम्मतों ने अपने और रसूलों के बीच अल्लाह तआला से.
- (५) मानी ये हैं कि नबियों की मदद फ़रमाई गई और उन्हें विजय दी गई और सच्चाई के दुश्मन सरकश काफ़िर नामुराद हुए और उनके छुटकारे की कोई सबील न रही.

उसके पीछे लगा और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा (१६) मुश्किल से उसका थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी (१७) और उसे हर तरफ से मौत आएगी, और मरेगा नहीं और उसके पीछे एक गाढ़ा अज़ाब (१८) अपने रब से इन्कारियों का हाल ऐसा है कि उनके काम हैं (१९) जैसे राख कि उस पर हवा का सख्त झोंका आया आंधी के दिन में (२०) सारी कमाई में से कुछ हाथ न लगा, यही है दूर की गुमराही (२१) क्या तुने न देखा कि अल्लाह ने आसमान व ज़मीन हक के साथ बनाए (२२), अगर चाहे तो तुम्हें ले जाए (२३) और एक नई मखलूक (प्राणी-वर्ग) ले आए (२४) (२५) और यह (२६) अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं (२७) और सब अल्लाह के हुज़ूर (२८) खुल्लम खुल्ला हाज़िर होंगे तो जो कमज़ोर थे (२९) बड़ाई वालों से कहेंगे (३०) हम तुम्हारे ताबे थे क्या तुम से हो सकता है कि अल्लाह के अज़ाब में से कुछ हम पर से टाल दो, (३१) कहेंगे अल्लाह हमें हिदायत करता तो हम तुम्हें करते, (३२) हम पर एक सा है चाहे बेकरारी करें या सब्र से रहें हमें कहीं पनाह नहीं (३३)

चौथा रूकू

और शैतान कहेगा जब फैसला हो चुकेगा (३४) वेशक अल्लाह

صَدِيدٌ ۝ يَجْزَعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيعُهُ وَيَأْتِيهِ
الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمُعِيذٍ ۝ وَمِنْ
وَرَأْيِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۝ مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي
يَوْمٍ عَاصِفٍ لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَى شَيْءٍ ۝
ذَلِكَ هُوَ الصَّلَاحُ الْبَعِيدُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ إِنَّ يَئُودُ يُدْهِبُكُمْ وَ
يَأْتِي بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ
بِعَزِيزٍ ۝ وَبَرِّزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ
اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَمَا كُنَّا مُعْتَبَرِينَ
عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۝ قَالُوا لَوْ هَدَانَا
اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجْرَعْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا
لَنَا مِنْ مَحْصِيصٍ ۝ وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ

مَنْزِلٌ

- (१६) हदीस शरीफ़ में है कि जहन्नमी को पीप का पानी पिलाया जाएगा जब वह मुंह के पास आया तो उसको बहुत नागवार मालूम होगा। जब और करीब होगा तो उससे चेहरा भुन जाएगा और सर तक की खाल जल कर गिर पड़ेगी। जब पियेगा तो आंतें कट कर निकल जाएंगी। (अल्लाह की पनाह)
- (१७) यानी हर अज़ाब के बाद उससे ज्यादा सख्त और बुरा अज़ाब होगा। (अल्लाह की पनाह दोज़ाब के अज़ाब से और अल्लाह के ग़ज़ब से)।
- (१८) जिनको वो नेक काम समझते थे जैसे कि मोहताजों की मदद, मुसाफ़िरों की सहायता और बीमारों की ख़बरगिरी वगैरह, चूँकि ईमान पर मबनी नहीं इसलिये वो सब बेकार हैं और उनकी ऐसी मिसाल है।
- (१९) और वह सब उड़ गई और उसके कण बिखर गए और उसमें कुछ बाक़ी न रहा। यही हाल है क़ाफ़िरों के कर्मों का कि उनके शिर्क और कुफ़्र की वजह से सब बर्बाद और बातिल हो गए।
- (२०) उनमें बड़ी हिक़मतें हैं और उनकी पैदाइश बेकार नहीं है।
- (२१) शून्य करदे, ख़त्म कर दे।
- (२२) बजाय तुम्हारे जो फ़रमाँवरदार हो, उसकी कुदरत से यह क्या दूर है जो आसमान और ज़मीन पैदा करने पर क़ादिर है।
- (२३) ख़त्म करना और मौजूद फ़रमाना।
- (२४) क़यामत के दिन।
- (२५) और दौलतमन्दों और प्रभावशाली लोगों के अनुकरण में उन्होंने कुछ इस्तियार किया था।
- (२६) कि दीन और अक़ीदों में।
- (२७) यह क़लाम उनका फटकार और दुश्मनी के तौर पर होगा कि दुनिया में तुम ने गुमराह किया था और सीधी राह से राक़ था और बढ़ बढ़ कर बातें किया करते थे अब वो दावे क्या हूँ। अब उस अज़ाब में से ज़रा सा तो टालो। क़ाफ़िरों के सरदार इसके जवाब में।
- (२८) जब खुद ही गुमराह हो रहे थे तो तुम्हें क्या राह दिखाते। अब छुटकारे की कोई राह नहीं है न क़ाफ़िरों के लिये शफ़ाअत। आओ रोएं और फ़रियाद करें। पांच सौ बरस फ़रियाद करेंगे, रोएंगे और कुछ काम न आया तो कहेंगे कि अब सब्र करके देखो शायद उससे कुछ काम निकले। पांच सौ बरस सब्र करेंगे, वह भी काम न आया तो कहेंगे कि।

ने तुमको सच्चा वादा दिया था^(१) और मैं ने जो तुमको वादा दिया था^(२) वह मैं ने तुम से झूटा किया और मेरा तुम पर कुछ काबू न था^(३) मगर यही कि मैं ने तुमको^(४) बुलाया तुमने मेरी मान ली^(५) तो अब मुझपर इल्जाम न रखो^(६) खुद अपने ऊपर इल्जाम रखो न मैं तुम्हारी फरियाद को पहुंच सकूँ न तुम मेरी फरियाद को पहुंच सको, वह जो पहले तुमने मुझे शरीफ ठहराया था^(७) मैं उससे सख्त वेज़ार हूँ वेशक ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अज़ाब है^(८) और वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये, वो वागों में दाखिल किये जाएंगे जिनके नीचे नहरें बहती, हमेशा उनमें रहें अपने रब के हुक्म से, उसमें उनके मिलते वक्त का इकराम(सत्कार) सलाम है^(९) क्या तुमने न देखा अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई पाकीज़ा बात की^(१०) जैसे पाकीज़ा दरख्त जिसकी जड़ कायम और शाखें आसमान में^(११) हर वक्त अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से^(१२) और अल्लाह लोगों के लिये मिसालें बयान फ़रमाता है कि कहीं वो समझें^(१३) और गन्दी बात^(१४) की मिसाल जैसे एक गन्दा पेड़^(१५) कि ज़मीन के ऊपर से काट

الْأَمْرَانَ اللَّهُ وَعَدَكُمْ وَعَدَ الْحَقِّ وَعَوَدْتُكُمْ
فَاخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا
أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تَكُونُوا لِلْمُؤْمِنِينَ
أَنْفُسُكُمْ مَا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِمُصْرِخِي إِيَّايَ
كَفَرْتُمْ بِمَا أَشْرَكْتُمْ مِنْ قَبْلُ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ وَأَدْخِلِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ تَجَيَّسُ فِيهَا سَلَامٌ ۖ أَلَمْ تَرَ
كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ
طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۖ
تُؤْتِي أَكْلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۖ وَيَضْرِبُ اللَّهُ
الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۖ وَمَثَلُ
كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ ۖ اجْتُثَّتْ مِنْ

सूरए इब्राहीम - चौथा स्कू

- (१) और हिसाब से फ़ारिग हो जाएंगे, जन्नती जन्नत का और दोज़ज़री दोज़ज़र का हुक्म पाकर जन्नत और दोज़ज़र में दाखिल हो जाएंगे, दोज़ज़री शैतान पर मलामत करेंगे और उसको बुरा कहेंगे कि बदनसीब तूने हमें गुमराह करके इस मुसीबत में डाला तो वह जवाब देगा कि.
- (२) कि मरने के बाद फिर उठना है और आखिरत में नेकियों और बदियों का बदला मिलेगा, अल्लाह का वादा सच्चा था सच्चा हुआ.
- (३) कि न मरने के बाद उठना, न जज़ा, न जन्नत, न दोज़ज़र.
- (४) न मैं ने तुम्हें अपने अनुकरण पर मजबूर किया था, या यह कि मैं ने अपने वादे पर तुम्हारे सामने कोई तर्क और प्रमाण पेश नहीं किया था.
- (५) वसवसे डालकर गुमराही की तरफ़.
- (६) और बग़ैर तर्क और प्रमाण के तुम मेरे बहकाए में आए जब कि अल्लाह तआला ने तुम से वादा फ़रमाया था कि शैतान के बहकावे में न आना. और उसके रसूल उसकी तरफ़ से दलीलें लेकर तुम्हारे पास आए और उन्होंने तर्क पेश किये और प्रमाण कायम किये तो तुमपर ख़ुद लाज़िम था कि तुम उनका अनुकरण करते और उनकी रीशान दलीलों और खुले चमत्कार से मुंह न फेरते और मेरी बात न मानते और मेरी तरफ़ इल्तिफ़ात न करते, मगर तुमने ऐसा न किया.
- (७) क्योंकि मैं दुश्मन हूँ और मेरी दुश्मनी ज़ाहिर है और दुश्मन से भले की आशा रखना ही मूर्खता है तो....
- (८) अल्लाह का उसकी इबादत में. (फ़ाज़िम)
- (९) अल्लाह तआला की तरफ़ से और फ़रिश्तों की तरफ़ से और आपस में एक दूसरे की तरफ़ से.
- (१०) याती कलिमए तौहीद की.
- (११) ऐसे ही कलिमए ईमान है कि उसकी जड़ मूिमन के दिल की ज़मीन में साबित और मज़बूत होती है और उसकी शाखें याती अमल आसमान में पहुंचते हैं और उसके फल याती बरकत और सवाब हर वक्त हासिल होते हैं. हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सहाबए किराम से फ़रमाया, वह दरख्त बताओ जो मूिमन की तरह है, उसके पत्ते नहीं गिरते और हर वक्त फल देता है (याती जिस तरह मूिमन के अमल अकारत नहीं होते) और उसकी बरकतें हर वक्त हासिल रहती हैं. सहाबा ने सोचा कि ऐसा कौन सा दरख्त है जिसके पत्ते न गिरते हों और उसका फल हर वक्त मौजूद रहता हो. चुनांचे जंगल के दरख्तों के

दिया गया अब उसे कोई कियाम (स्थिरता) नहीं^(१५) (२६) अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को हक़ वात पर^(१६) दुनिया की ज़िन्दगी में^(१७) और आखिरत में^(१८) और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह करता है^(१९) और अल्लाह जो चाहे करे^(२०)।

पाँचवां सूक़

क्या तुमने उन्हें न देखा जिन्होंने अल्लाह की नेअमत नाशुकी से बदल दी^(१) और अपनी क्रौम को तवाही के घर ला उतारा^(२) वो जो दोज़ख है उसके अन्दर जाएंगे और क्या ही बुरी ठहरने की जगह^(३) और अल्लाह के लिये बराबर वाले ठहराए^(४) कि उसकी राह से बहकावें, तुम फ़रमाओ^(५) कुछ बरत लो कि तुम्हारा अंजाम आग़ है^(६) (३०) मेरे उन बन्दों से फ़रमाओ जो ईमान लाए कि नमाज़ क़ायम रखें और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर खर्च करें उस दिन के आने से पहले जिसमें न सौदागरी होगी^(७) न याराना^(८) (३१) अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन बनाए और आसमान से पानी उतारा तो उससे कुछ फल तुम्हारे खाने को पैदा किये और तुम्हारे लिये किशती को मुसख़बर (वशीभूत) किया कि उसके हुक़म से दरिया में चले^(९) और तुम्हारे लिये नदियाँ मुसख़बर की^(१०) (३२)

فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝ يُثَبِّتُ اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي
الْآخِرَةِ ۝ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ ۝ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا
يَشَاءُ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا
وَاحْتَلَوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۝ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا
وَيَبْسُ الْقَدَارُ ۝ وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَثَدًا لِيُضِلَّوْا عَنْ
سَبِيلِهِ ۝ قُلْ تَتَّبِعُوا فَإِنْ مَصِيبَكُمْ إِلَى النَّارِ ۝ قُلْ
لِعِبَادِي الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُنْفِقُوا
مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِنْ قَبْلِ أَنْ يَبَاقِيَ
يَوْمَ لَا بِنِعَ فِيهِ وَلَا خَلْلٌ ۝ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ
بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلُوكَ
لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ۝

नाम लिये . जब ऐसा कोई दरख्त ख़याल में न आया तो हज़ूर ने दरियाफ़्त किया . फ़रमाया, वह ख़ज़ूर का दरख़्त है . हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो ने अपने वालिद हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो से अज़्र किया कि जब हज़ूर ने दरियाफ़्त फ़रमाया था तो मेरे दिल में आया था कि ख़ज़ूर का दरख़्त है लेकिन बड़े बड़े सहाबा नशरीफ़ फ़रमा थ, मैं छोटा था इसलिये मैं अदब से ख़ामोश रहा . हज़रत उमर ने फ़रमाया अगर तुम बता देते तो मुझे बड़ी खुशी होती .

(१२) और ईमान लाएं, क्योंकि मिसालों से मानी अच्छी तरह दिल में बैठ जाते हैं .

(१३) यानी कुफ़्री क़लाम .

(१४) इन्द्रायन की तरह का जिसका मज़ा कड़वा, बू नागवार या लहसन की तरह बदबूदार .

(१५) क्योंकि जड़ उसकी ज़मीन में साबित और मज़बूत नहीं, शाख़ों उसकी बलन्द नहीं होतीं . यही हाल है कुफ़्री क़लाम का कि उसकी कोई अख़्त साबित नहीं और कोई तर्क और प्रमाण नहीं रखता, जिससे मज़बूती हो, न उसमें भलाई और बरक़्त कि वह कुबूलियत की ऊंचाई पर पहुंच सके .

(१६) यानी ईमान का क़लाम .

(१७) कि वो परेशानी और मुसीबत के वक़्तों में भी साबिर और अडिग़ रहने हैं और सच्चाई की राह और दीन से नहीं हटने यहाँ तक कि उनकी ज़िन्दगी का अन्त ईमान पर होता है .

(१८) यानी क़ब्र में कि आख़िरत की मंज़िलों की पहली मंज़िल है . जब मुक्कर-नकीर आकर उनसे पूछते हैं कि तुम्हारा रब कौन है, तुम्हारा दीन क्या है, और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ इशारा करके दरियाफ़्त करने हैं कि इनकी निखत बू क्या कहता है . तो मूमिन इस मंज़िल में अल्लाह के फ़रज़ से जमा रहता है और कह देता है कि मेरा रब अल्लाह है, मेरा दीन इस्लाम है और यह मेरे नबी हैं मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम, अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल . फिर उसकी क़ब्र चौड़ी कर दी जाती है और उसमें जन्नत की हवाएं और खुशबुएं आती हैं और वह रोशन करदी जाती है और आसमान से पुकार होती है कि मेरे बन्दे ने सच कहा .

(१९) वो क़ब्र में मुक्कर-नकीर को सही जवाब नहीं दे सकते और हर सवाल के जवाब में यही कहते हैं हाय हाय मैं नहीं जानता . आसमान से पुकार होती है मेरा बन्दा झूटा है इसकें लिये आग़ का फ़र्श दिखाओ, दोज़ख़ का लिबास पहनाओ, दोज़ख़ की तरफ़ दरवाज़ा खोल दो . उसको दोज़ख़ की गर्मी और दोज़ख़ की लपट पहुंचती है और क़ब्र इतनी तंग हो जाती है कि एक तरफ़ की पसलियाँ दूसरी तरफ़ आ जाती हैं . अज़ाब करने वाले फ़रिश्ते उसपर मुक़रर कर दिये जाते हैं जो उसे लोहे के ग़दाओं से मारते हैं .

और तुम्हारे लिए सूरज और चांद मुसख़्बर किए जा बराबर चल रहे हैं^(११) और तुम्हारे लिए रात और दिन मुसख़्बर किए^(१२) ३३ और तुम्हें बहुत कुछ मुंह मांगा दिया और अगर अल्लाह की नेअमतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे, वेशक आदमी बड़ा ज़ालिम बड़ा नाशुक्रा है^(१३) ३४

छटा रूकू :

और याद करो जब इब्राहीम ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब इस शहर^(१) को अमान वाला कर दे^(२) और मुझे मेरे वेटों को वुतों के पूजने से बचा^(३) ३५ ऐ मेरे रब वेशक वुतों ने बहुत लोग वहका दिये^(४) तो जिसने मेरा साथ दिया^(५) वह तो मेरा है और जिसने मेरा कहा न माना तो वेशक तू बख़्शने वाला मेहरवान है^(६) ३६ ऐ मेरे रब मैं ने अपनी कुछ औलाद एक नाले में बसाई जिसमें खेती नहीं होती तेरे हुस्मत (प्रतिष्ठा) वाले घर के पास^(७) ऐ हमारे रब इसलिये कि वो^(८) नमाज़ कायम रखें तो तू लोगों के कुछ दिल उनकी तरफ़ माइल करदे^(९) और उन्हें कुछ फल खाने को दे^(१०) शायद वो एहसान मानें^(११) ३७ ऐ हमारे रब तू जानता है जो हम छुपाते है और जो ज़ाहिर करते, और अल्लाह पर कुछ छुपा नहीं, ज़मीन में और न आसमान में^(१२) ३८ सब खूबियाँ अल्लाह को जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल व इस्हाक़ दिये वेशक मेरा रब दुआ सुनने वाला है^(१३) ३९ ऐ

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ
الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ وَآتَاكُم مِّنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ ۚ وَإِن
تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفَّارٌ
ۚ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ لِّهَذَا الْبَيْتِ
أَمْنًا وَاجْعَلْنِي وَبَنِيَّ أَقْبَدًا ۚ رَبِّ اجْعَلْ لِّي
إِلَهُنَّ أَصْلَحَ لِّكُنُوزٍ مِّنَ النَّاسِ ۖ فَمَنْ يَتَّبِعْنِي
فَإِنَّهُ مِنِّي ۖ وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ دُرِّيَّتِي بُوَادٍ غَيْرِ ذِي
رِزْقٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۖ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ
فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ ۖ وَارْزُقْهُمْ
مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا
نُخْفِي وَمَا نَعْلِنُ ۚ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ
فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي

(अल्लाह हमें क़ब्र के अज़ाब से मंज़ूर रखे और ईमान में मज़बूत रखे - आमीन)

सूरए इब्राहीम - पाँचवाँ रूकू :

(१) बुझारी शरीफ की हदीस में है कि उन लोगों से मुसद मक्का के काफ़िर हैं और वह नेअमत जिसकी शुक़ुज़ारी उन्होंने न की वह अल्लाह के हबीब हैं सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कि अल्लाह तआला ने उनके वुजूद से इस उम्मत को नवाज़ा और उनकी ज़ियारत का सौभाग्य दिया. लाज़िम था कि इस महान नेअमत का शुक़ वजा लाते और उनका अनुकरण करके और ज़्यादा मेहरबानी के हक़दार बनते. इसके बदले उन्होंने नाशुक्रों की और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इन्कार किया और अपनी क़ौम को, जो दीन में उनके सहमत थे, हलाकत के मुंह में पहुंचाया.

(२) यानी वुतों को उसका शरीक़ किया.

(३) ऐ मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) इन काफ़िरों से, कि थोड़े दिन दुनिया कि ख़्वाहिशों का..

(४) आग़िस्त में.

(५) कि ख़रीद फ़रोज़ यांनी क़य बिक़य यांनी माली मुआवज़े और फ़िदिये ही से कुछ नफ़ा उठाया जा सके.

(६) कि उस से नफ़ा उठाया जाए बल्कि बहुत से दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे. इस आयत में नफ़सानी और तबई दोस्ती की बर्फी है और ईमानी दोस्ती जो अल्लाह की महबूत के कारण से हो वह बाकी रहेगी जैसा कि सूरए जुझरफ़ में फ़रमाया "अल अख़िल्लाओ योमइज़िम वअदुहुम लिबअदिन अदुबन इल्लल मुत्कीन" (यानी ग़हरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़गार - सूरए जुझरफ़, आयत ६७)

(७) और इससे तुम फ़ायदे उठाओ.

(८) कि उनसे काम लो.

(९) न थकें न रुकें, तुम उनसे नफ़ा उठाते हो.

(१०) आराम और काम के लिये.

(११) कि कुफ़्र और गुनाह करके अपने आप पर ज़ुल्म करता है और अपने रब की नेअमत और उसके एहसान का हक़ नहीं मानता. हज़रत इज़ अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इन्सान से यहाँ अबूजहल मुसद है. जुज़ाज का क़ील है कि इन्सान इम्म-ज़िन्म है, यहाँ इससे काफ़िर मुसद है.

सूरए इब्राहीम - छटा रूकू

(१) मक्कए मुकर्रमा.

(२) कि क्रयामत के क़रीब दुनिया के वीरान होने के वक़्त तक यह वीरानी से मेहफूज़ रहे या इस शहर वाले अम्न में हों. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यह दुआ कुबूल हुई. अल्लाह तआला ने मक्कए मुकर्रमा को वीरान होने से अम्न दिया और कोई भी उसके वीरान करने पर कादिर न हो सका. उसको अल्लाह तआला ने ह़रम बनाया कि उसमें न किसी इन्सान का ख़ून बहाया जाए न किसी पर जुल्म किया जाए, न वहाँ शिकार मारा जाए, न सब्ज़ा काटा जाए.

(३) अल्लाह के नबी अलैहिमुस्सलाम बुत परस्ती और तमाम गुनाहों से मअसूम हैं. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का यह दुआ करना अल्लाह की चाग़ाह में विनम्रता और हाज़त के इज़हार के लिये है कि हालांकि तूने अपने क़रम से मअसूम किया लेकिन हम तेरे फ़ज़ल व रहम की तरफ़ हाज़त का हाथ फैलाए रखते हैं.

(४) यानी उनकी गुमराही का सबब हुए कि वो उन्हें पूजने लगे.

(५) और मेरे अक्कीदे और दीन पर रहा.

(६) चाहे तो उसे हिदायत करे और तौबह की तौफ़ीक अता फ़रमाए.

(७) यानी इस वादी में जहाँ अब मक्कए मुकर्रमा है. ज़ुरियन से मुग़द हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम हैं. आप शाम प्रदेश में हज़रत हाजिरा की मुबारक कोख से पैदा हुए. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बीबी हज़रत सारा के कोई औलाद न थी इस वजह से उन्हें इर्ष्या पैदा हुई और उन्होंने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहा कि आप हाजिरा और उनके बेटे को मेरे पास से हटा दीजिये. अल्लाह की हिक़मत ने यह एक कारण पैदा किया था. चुनाने वही आई कि आप हाजिरा व इस्माईल को उस धरती में ले जाएं (जहाँ अब मक्कए मुकर्रमा है). आप उन दोनों को अपने साथ बुराक़ पर सवार करके शाम से सरज़मीने ह़रम में लाए और काबए मुक़द्दसा के पास उतारे. यहाँ उस वक़्त न कोई आबादी थी, न कोई चश्मा, न पानी. एक तोषादान में ख़ज़ूर और एक बर्तन में पानी उन्हें देकर आप वापस हुए. हज़रत हाजिरा ने अर्ज़ किया कि आप कहीं जाते हैं और हमें इस घाटी में बेसहारा छोड़े जाते हैं. लेकिन आपने इसका कोई जवाब नहीं दिया और उनकी तरफ़ नज़र न की. हज़रत हाजिरा ने कई बार यही अर्ज़ किया और जवाब न पाया तो कहा कि क्या अल्लाह ने आपको इसका हुक्म दिया है. आपने फ़रमाया, हाँ. उस वक़्त उन्हें इत्मीनान हुआ. हज़रत इब्राहीम चले गए और उन्होंने अल्लाह की चाग़ाह में हाथ उठाकर यह दुआ की जो आयत में बयान की गई है. हज़रत हाजिरा अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को दूध पिलाने लगीं. जब वह पानी ख़त्म हो गया और प्यास की सरज़मी हुई और साहबज़ादे का गला भी प्यास से सूख गया तो आप पानी की तलाश में सफ़र और मर्वा के बीच दीं. ऐसा सात बार हुआ. यहाँ तक कि फ़रिश्ते के पर मारने से या हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के मुबारक क़दम से इस सूखी ज़मीन में एक चश्मा (जमज़म) नमूदार हुआ. आयत में पानी वाले घर से बैतुल्नाह मुग़द है जो तूफ़ान वृष्टि से पहले काबए मुक़द्दसा की जगह था और तूफ़ान के वक़्त आसमान पर उठा लिया गया था. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का यह वाक़िआ आपके आग में डाले जाने के बाद हुआ. आग के वाक़ा में आपने दुआ न फ़रमाई थी और इस वाक़ा में दुआ भी की और ग़िड़ग़िड़ाए भी. अल्लाह तआला की कारसज़ी पर भरोसा करके दुआ न करना भी तबक्कुल और बेवज़र है लेकिन दुआ का मक़रम उससे भी अफ़ज़ल है. तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का इस वाक़ए के आग़िर में दुआ फ़रमाना इसलिये है कि आप क़माल के जीवे पर दम चढ़म तरक्की पर हैं.

(८) यानी इस्माईल और उनकी औलाद इस वीरान घाटी में तेरे ज़िक्र और इबादत में मशग़ूल हों और तेरे बैतुल ह़राम के पास.

(९) दूसरे स्थानों से यहाँ आएँ और उनके दिल इस पाक मकान के दर्शन के शौक में खिंचे. इसमें ईमानदारों के लिये यह दुआ है कि उन्हें बैतुल्नाह का हज़ नसीब हो और अपनी यहाँ रहने वाली सन्तान के लिये यह कि वो दर्शन के लिये आने वालों से फ़ायदा उठाते रहें. सरज़ यह दुआ दीन और दुनिया की यरक़तों पर आधारित है. हज़रत की दुआ कुबूल हुई. क़बीलए जुग़हुम ने इस तरफ़ से गुज़रते हुए एक पक्षी देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि बयावान में पक्षी कैसा. शायद कहीं चश्मा निकला. तलाश की तो देखा कि ज़मज़म भीक़ में पानी है. यह देखकर उन लोगों ने हज़रत हाजिरा से वहाँ बसने की इज़ाज़त चाही. उन्होंने इस शर्त पर इज़ाज़त दी कि पानी में नुम्हारा हक़ न होगा. वो लोग वहाँ बस गए. हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जवान हुए तो उन लोगों ने आपकी पाकी और तक़््वा की देखकर अपने ख़ातदान में आपकी शादी कर दी. कुछ अरसा बाद हज़रत हाजिरा का इन्तिक़ाल हो गया. इस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यह दुआ पूरी हुई और आपने दुआ में यह भी फ़रमाया.

(१०) उसी का फ़ल है कि कई तरह की फ़सलें रबी व ख़रीफ़ बगीरह के मेवे वहाँ एक ही वक़्त में मौजूद मिलते हैं.

(११) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने एक और बेटे की दुआ की थी. अल्लाह तआला ने कुबूल फ़रमाई तो आपने उनका शुक्र अदा किया और अल्लाह की चाग़ाह में अर्ज़ किया.

मेरे रब, मुझे नमाज़ का क़ायम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को^(१२) ऐ हमारे रब, मेरी दुआ सुन ले^(१३) ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे माँ बाप को^(१४) और सब मुसलमानों को जिस दिन हिसाब क़ायम होगा^(१५)।

सातवाँ रूकू

और हरगिज़ अल्लाह को देखबर न जानना ज़ालिमों के काम से^(१) उन्हें ढील नहीं दे रहा है मगर ऐसे दिन के लिये जिसमें^(२) आँखें खुली की खुली रह जाएंगी, वेतहाशा दौड़ते निकलेंगे^(३) अपने सर उठाए हुए कि उनकी पलक उनकी तरफ़ लौटती नहीं^(४) और उनके दिलों में कुछ सकत न होगी^(५) और लोगों को इस दिन से डराओ^(६) जब उनपर अज़ाब आएगा तो ज़ालिम^(७) कहेंगे ऐ हमारे रब थोड़ी देर हमें^(८) मुहलत दे कि हम तेरा बुलाना मानें^(९) और रसूलों की गुलामी करें^(१०) तो क्या तुम पहले^(११) क़सम न खा चुके थे कि हमें दुनिया से कहीं हटकर जाना नहीं^(१२) और तुम उनके घरों में वसे जिन्होंने अपना बुरा किया था^(१३) और तुमपर खूब खुल गया हमने उनके साथ कैसा किया^(१४) और हम ने तुम्हें मिसालें देकर बता दिया^(१५) और वैशक वो^(१६) अपना सा दाव चले^(१७)

وَهَبْ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْعِيلَ وَاسْتَقِ إِنَّ رَبِّي
لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ
ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَ
لِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ وَلَا
تَحْسَبَنَّ اللَّهُ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ إِنَّمَا
يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمَ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ مُهْطِعِينَ
مُقْنِعِي رُؤُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَأَوْ
فَدَتْهُمْ هَوَاهُ وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ
الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا آخِرْنَا إِلَىٰ آجَلٍ
قَرِيبٍ يُجِيبُ دَعْوَتَكَ وَتَتَّبِعِ الرُّسُلَ أَوَلَمْ تَكُونُوا
أَفْهَمَ مَنْ قَبْلَ مَا لَكُمْ مِنْ زَوَالٍ وَسَكَنْتُمْ فِي
مَسْكِنٍ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ
فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ وَقَدْ مَكَرُوا

-मालूम-

(१२) क्योंकि कुछ के बारे में तो आपको अल्लाह के बताए सं मालूम था कि काफ़िर होंगे इसलिये कुछ सन्तान के वास्ते नमाज़ों की पाबन्दी और सुरक्षा की दुआ की।

(१३) ईमान की शान्ति के साथ, या माँ बाप से हज़रत आदम और हवा मुराद हैं।

सूरए इब्राहीम - सातवाँ रूकू

- (१) इसमें मज़लूम को तसल्ली दी गई कि अल्लाह तआला ज़ालिम से उसका बदला लेगा।
- (२) हौल और दहशत से।
- (३) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरफ़ जा उन्हें मेहशर के मैदान की तरफ़ बुलाएंगे।
- (४) कि अपने आप को देख सकें।
- (५) आश्चर्य और दहशत की शिद्दत से। क़तादा ने कहा कि दिल सीतों से निकल कर गलां में आ फंसेंगे, न बाहर निकल सकेंगे न अपनी जगह वापस जा सकेंगे। मानी ये हैं कि उस दिन हौल और दहशत की तीव्रता का यह आलम होगा कि सर ऊपर उठें होंगे, आँखें खुली की खुली रह जाएंगी। दिल अपनी जगह टहर न पाएंगे।
- (६) यानी काफ़िरों को क़यामत के दिन का श्राफ़ दिलाओ।
- (७) यानी काफ़िर।
- (८) दुनिया में वापस भेज दे और।
- (९) और तेरे एक होने यानी तेरी तौहीद पर ईमान लाएं।
- (१०) और हम से जो कुसूर हो चुके उसकी तलाफी करें। इसपर उन्हें फटकारा जाएगा और फ़रमाया जाएगा।
- (११) दुनिया में।
- (१२) और क्या तुमने मरने के बाद उठाए जाने और आग़िस्त का इन्कार न किया था।
- (१३) कुफ़्र और गुवाह करके, जैसे कि कौम वृद्ध व आद व समूद वगैरह।
- (१४) और तुमने अपनी आँखों से उनकी मंज़िलों में अज़ाब के निशान देखे और तुम्हें उनकी हलाकत और बर्बादी की ख़बरें मिलीं। यह सब कुछ देखकर और जान कर तुमने सबक न पकड़ा और तुम कुफ़्र से वाज़ न आए।
- (१५) ताकि तुम तदवीर न करो और समझो और अज़ाब और हलाकत से अपने आप को बचाओ।
- (१६) इस्लाम को बचाने और कुफ़्र की सहायता करने के लिये नबीयें अक़रम सल्लाहो वसल्लम के साथ।
- (१७) कि उन्होंने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़त्ल करने या कैद करने या निकाल देने का इरादा किया।

और उनका दाव अल्लाह के क़ाबू में है और उनका दाव कुछ ऐसा न था कि जिससे ये पहाड़ टल जाएं^(१८) (४६) तो हरगिज़ खयाल न करना कि अल्लाह अपने रसूलों से वादा खिलाफ़ करेगा^(१९) वेशक अल्लाह ग़ालिब है बदला लेने वाला^(४७) जिस दिन^(२०) बदल दी जाएगी ज़मीन इस ज़मीन के सिवा और आसमान^(२१) और लोग सब निकल खड़े होंगे^(२२) एक अल्लाह के सामने जो सब पर ग़ालिब है^(४८) और उस दिन तुम मुजरिमों^(२३) को देखोगे कि वेड़ियों में एक दूसरे से जुड़े होंगे^(२४) (४९) उनके कुर्ते राल के होंगे^(२५) और उनके चेहरे आग बाँप लेगी^(५०) इसलिये कि अल्लाह हर जान को उसकी कमाई का बदला दे, वेशक अल्लाह को हिसाब करते कुछ देर नहीं लगती^(५१) यह^(२६) लोगों को हुक्म पहुंचाना है और इसलिये कि वो उससे डराए जाएं और इसलिये कि वो जान लें कि वह एक ही मअबूद है^(२७) और इसलिये कि अक़ल वाले नसीहत मानें^(५२)

१५-सूरए हिज़

सूरए हिज़ मक्का में उतरी, इसमें ९९ आयतें और ६ रूकू हैं .

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) अलिफ़-लाम-रा ! ये आयतें हैं किताब और रौशन कुरआन की^(१)

وَمَا أَرْسَلْنَا
 ۳۶۲
 الْغَفْرِ

مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرَهُمْ وَإِنْ كَانَ مَكْرَهُمْ
 لَيَرْوُلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخَلِّفًا
 وَعْدَهُ رَسُولُهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ يَوْمَ
 نَبْدَلُ الْأَرْضَ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمُوتَ وَكَبُرُوا
 بِاللَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ
 مُّقْرَّبِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝ سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطَرَانٍ
 وَتَعْشَىٰ وُجُوهُهُمْ النَّارُ ۝ لِيُجْزَيَنَّ اللَّهُ كُلَّ
 نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝
 هَذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنذِرُوا بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّ
 هُوَالَهُ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۝

(۱۵) سُورَةُ الْغَفْرِ مَكِّيَّةٌ (۵۲) (۵۳)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 الرَّسُولُ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُبِينٍ ۝

مَزْلُومٌ

(१८) यानी अल्लाह की आयतें और रसूल की शरीअत के अहक़ाम जो अपनी मज़बूती में अडिग पहाड़ों की तरह हैं, मुहाल है कि काफ़िरों के छल और उनकी बहाने बाज़ियों से अपनी जगह से टल सकें.

(१९) यह तो सम्भव ही नहीं है. वह ज़रूर वादा पूरा करेगा और अपने रसूल की मदद फ़रमाएगा, उनके दीन को ग़ालिब करेगा, उनके दुश्मनों को हलाक़ करेगा.

(२०) इस दिन से क़यामत का दिन मुग़ाद है.

(२१) ज़मीन और आसमान की तबदीली में मुफ़सिरों के दो क़ौल हैं, एक यह कि उनकी विशेषताएं बदल दी जाएंगी जैसे ज़मीन समतल हो जाएगी, न उसपर पहाड़ बाक़ी रहेंगे, न ऊंचे टीले, न गहरे ग़ार, न दरख़्त, न इमारत, न किसी बस्ती और सल्तनत के निशान. आसमान पर कोई सितारा बाक़ी न रहेगा और सूरज चांद की रौशनियाँ ख़त्म हो जाएंगी. यह तबदीली विशेषतओं की है, ज़ात की नहीं. दूसरा क़ौल यह है कि आसमान और ज़मीन की ज़ात ही बदल दी जाएगी. इस ज़मीन की जगह एक दूसरी चांदी की ज़मीन होगी. सफ़ेद और साफ़, जिसपर न कभी ख़ून बहाया गया हो न गुनाह किया गया हो और आसमान सोने का होगा. यह दो क़ौल अगरचे आपस में अलग अलग मालूम होते हैं मगर इन में से हर एक सही है. और जमा की वज़ह यह है कि पहले गुण बदले जाएंगे और दूसरी बार हिसाब के बाद दूसरा परिवर्तन होगा, उसमें ज़मीन और आसमान की ज़ातें ही बदल जाएंगी.

(२२) अपनी क़ब्रों से.

(२३) यानी काफ़िरों.

(२४) अपने शैतानों के साथ बन्धे हुए.

(२५) काले रंग बदबूदार जिनसे आग के शोले और ज़्यादा तेज़ हो जाएं (मदारिक व ख़ाज़िन) . तफ़सीर बैज़ावी में है कि उनके बदवों पर राल लीप दी जाएगी. वह कुर्ते की तरह हो जाएंगी. उसकी जलन और उसके रंग की वदहत और बदबू से तकलीफ़ पाएंगे.

(२६) कुरआन शरीफ़.

(२७) यानी इन आयतों से अल्लाह तआला की तौहीद की दलीलें पाएं.

१५-सूरए हिज़ - पहला रूकू

(१) सूरए हिज़ मक्की है, इसमें ८ रूकू, नितानवे आयतें, ८ सौ चबन कलिमे और दो हज़ार सात सौ साट अक्षर हैं.

चौदहवां पारा- रुबमा

(सूरए हिज्र - पहला रुकू जारी)

बहुत आरजूएं करेंगे काफिर^(२) काश मुसलमान होते उन्हें छोड़ दो^(३) कि खाएं और वरतें^(४) और उम्मीद^(५) उन्हें खेल में डाले तो अब जाना चाहते हैं^(६) और जो वस्ती हमने हलाक की उसका एक जाना हुआ नविश्ता (लेखा) था^(७) कोई गिराह (जनसन्तुह) अपने वादे से आगे न बढ़े न पीछे हटे^(८) और बोले^(९) कि ऐ वो जिन पर कुरआन उतरा वेशक तुम मजनून हो^(१०) हमारे पास फरिश्ते क्यों नहीं लाते^(११) अगर तुम सच्चे हो^(१२) हम फरिश्ते बेकार नहीं उतारते और वो उतरें तो उन्हें मुहलत न मिले^(१३) वेशक हमने उतारा है यह कुरआन और वेशक हम खुद इसके निगहवान हैं^(१४) और वेशक हमने तुमसे पहले अंगली उम्मतों में रसूल भेजे^(१५) और उनके पास कोई रसूल नहीं आता मगर उससे हंसी करते हैं^(१६) ऐसे ही हम उस हंसी को उन मुजरिमों^(१७) के दिलों में राह देते हैं^(१८) वो उसपर^(१९) ईमान नहीं लाते और अगलों की राह पड़ चुकी है^(२०) और अगर हम उनके लिये आसमान में कोई दरवाजा खोल दें कि दिन

رَبِّكَ يُدْعِي إِلَى الْإِسْلَامِ ۖ وَكَانَ الْإِسْلَامُ مُسْلِمِينَ ۝
 ذَرَهُمْ يَأْكُلُوا وَيَشْرَبُوا وَيَلْعَبُوا ۖ الْإِسْلَامُ فَسُوفَ
 يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا
 كِتَابٌ مُعْلُومٌ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا
 يَسْتَأْذِرُونَ ۝ وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ
 الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۝ لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْبَلَدِ كَذِبٌ
 إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ مَا نُنْزِلُ إِلَّا الْبَلَدِ كَذِبٌ
 إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنْظَرِينَ ۝ إِنَّا نَحْنُ
 نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا
 مِنْ قَبْلِكَ فِي شُعَيْبٍ الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ
 رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ كَذَلِكَ نَسْلُكُهُ
 فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَقَدْ خَلَتْ
 سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِنَ السَّمَاءِ
 مَزَلُ

सूरए हिज्र - पहला रुकू जारी

(२) ये आरजूएं, या मौत के वक्त अज्ञात देखकर होंगी जब काफिर का मालूम हो जाएगा कि वह गमराही में था, या आखिरत में क्रयामत के दिन की सज्जियां और हाल और अपना अन्त देखकर, ज़ुंजुज का कौल है कि काफिर जब कभी अपने अज्ञात का हाल और मुसलमानों पर अल्लाह की रहमत देखेंगे, हर बार आरजूएं करेंगे कि

(३) ऐ मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम).

(४) दुनिया की लज़्ज़तें.

(५) लम्बी ज़िन्दगी, नेअमतों और लज़्ज़तों की, जिसके कारण वो ईमान से मेहरूम हैं.

(६) अपना अन्त. इसमें चेतावनी है कि लम्बी उम्मीदों में गिरफ्तार होना और दुनिया की लज़्ज़तों की तलब में डूब जाना ईमानदार की शान नहीं. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हु ने फ़रमाया, लम्बी उम्मीदें आखिरत की भुलाती हैं और ख्वाहिशों का अनुकरण सन्वाई से रोकता है.

(७) लौहें मेहफूज़ में, उसी निर्धारित समय पर वह हलाक हुई.

(८) मक्का के काफिर, रसूल सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम से.

(९) उनका यह कौल हंसी उड़ाने के तौर पर था जैसा कि फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की निखत कहा था "इन्ना रसूलकुमुल लज़ी उरसिला इलैकुम लमजनून" (यानी वाला, तुम्हारे ये रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं, ज़रूर अकल नहीं रखते - सूरए शुअरा, आयत २७)

(१०) जो तुम्हारे रसूल हाने और कुरआन शरीफ़ के अल्लाह की किताब हाने की गवाही दें.

(११) अल्लाह तआला इसके जवाब में फ़रमाता है.

(१२) फ़िलहाल अज्ञात में गिरफ्तार कर दिये जाएं.

(१३) कि फेर बदल और कमी वेशी से इसकी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं. तमाम ज़िन्न और इन्सान और सारी सृष्टि के बस में नहीं है कि इस में एक अक्षर की भी कमी वेशी कर या फेर बदल करें. चूंकि अल्लाह तआला ने कुरआन करीम की हिफ़ाज़त का वादा फ़रमाया है, इस लिये यह विशिष्टता सिर्फ़ कुरआन शरीफ़ ही की है, दूसरी किसी किताब को यह बात मयमसर नहीं. यह हिफ़ाज़त कई तरह पर है. एक यह कि कुरआन करीम को चमत्कार बनाया कि बशर का कलाम इसमें मिल ही न सके, एक यह कि इसको ऐतिराज़ और मुकाबल से मेहफूज़ किया कि कोई इस जैसा कलाम बचाने पर कादिर न हो, एक यह कि सारी सृष्टि को इसके नेस्त नाबूद और ख़त्म करने या मिटाने से आजिज़ कर दिया कि काफिर अपनी सारी दुश्मनी के बावजूद इस पाक किताब को मिटाने से आजिज़ है.

को उसमें चढ़ते (१४) जब भी यही कहते कि हमारी निगाह बांध दी गई, बल्कि हमपर जादू हुआ (१५) (१५)

दूसरा सूकू

और वेशक हमने आसमान में बुर्ज बनाए (१) और तो देखने वालों के लिये आरास्ता किया (२) (१६) और उसे हमने हर शैतान मरदूद से मेहफूज़ रखा (३) (१७) मगर जो चोरी छुपे सुनने जाए तो उसके पीछे पड़ता है रौशन शोला (४) (१८) और हमने ज़मीन फैलाई और उसमें लंगर डाले (५) और उसमें हर चीज़ अंदाज़े से उगाई (१९) और तुम्हारे लिये उसमें रंज़ियां कर दीं (६) और वो कर दिये जिन्हें तुम रिज़क नहीं देते (७) (२०) और कोई चीज़ नहीं जिसके हमारे पास खज़ाने न हों (८) और हम उसे नहीं उतारते मगर एक मालूम अंदाज़ से (२१) और हम ने हवाएं भेजीं वादलों को बारबर (फलदायक) करने वालियाँ (९) तो हमने आसमान से पानी उतारा फिर वह तुम्हें पीने को दिया और तुम कुछ उसके खज़ानची नहीं (१०) (२२) और वेशक हम ही जिलाएं और हम ही मारें और हम ही वारिस हैं (११) (२३) और वेशक हमें मालूम हैं जो तुम में आगे बढ़े और वेशक हमें मालूम है जो तुम में पीछे रहे (१२) (२४)

فَطَوَّلُوا فِيهِ يَعْجُرُونَ ۝ لَقَالُوا إِنَّمَا سَكَّرْنَا
أَبْصَارَنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَسْخُورُونَ ۝ وَلَقَدْ
جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّظِيرِينَ ۝ وَ
حَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ۝ إِلَّا مَنْ اسْتَرَقَ
السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ شَيْطَانٌ مُبِينٌ ۝ وَالْأَرْضُ مَدَدْنَاهَا
وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ
مَوْزُونٍ ۝ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَسْتُمْ لَهُ بِرُزْقِينَ ۝ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا
خَزَائِنُهُ رَوْحًا يُؤْتِيهِ إِلَّا بِقَدَرٍ مَعْلُومٍ ۝ وَأَرْسَلْنَا
الرِّيحَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ ۝
وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ۝ وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَ
نُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْنَا
الْمُسْتَفْزِلِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ۝

मज़ल

(१४) इस आयत में बताया गया है कि जिस तरह मक्का के काफ़िरों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जिहालत की बातें कीं और बंडवदी से आपको मजतून या पागल कहा, पुराने ज़माने से काफ़िरों की यही आदत रही है और वो रसूलों के साथ टूट्टा कर्त रहें हैं, इसमें नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है।

(१५) यानी मक्का के मुश्रिक।

(१६) यानी नवियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम या कुरआन पर।

(१७) कि वो नबियों को झुटलाकर अल्लाह के अज़ाब से हलाक होते रहे हैं, यही हाल उनका है, तो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से डरते रहना चाहिये।

(१८) यानी इन काफ़िरों की दुश्मनी इस दर्जे पहुंच गई है कि अगर उनके लिये आसमान में दरवाज़ा खोल दिया जाए और उन्हें उसमें चढ़ना मिले और दिन में उससे गुज़रें और आँखों से देखें, जब भी न मारें और यह कह दें कि हमारी नज़रबन्दी की गई और हम पर जादू हुआ, तो जब खुद अपने आँखों से देखें, उन्हें यकीन हासिल न हुआ, तो फ़रिश्तों के आने और गवाही देने से, जिसका ये तलब करते हैं, उन्हें क्या फ़ायदा होगा।

सूरए हिज़्र - दूसरा सूकू

(१) जो गर्दिश (ध्रमण) करने वाले ग्रहों की मंज़िलें हैं, वो बारह हैं : हमल (मेष), सौर (वृषभ), जौज़ा (मिथुन), सरतान (कर्क), अमद (सिंह), सम्बला (कन्या), मीज़ान (तुला), अक़रब (वृश्चिक), क़ौस (धनु), जदी (मकर), दलव (कुम्भ), हुन (मीन)।

(२) सितारों से।

(३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, शैतान आसमानों में दाख़िल होते थे और वहाँ की स्वरं ज्योतिषियों के पास लाते थे, जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए तो शैतान तीन आसमानों से रोक दिये गए, जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादत हुई, तो तमाम आसमानों से रोक दिये गए।

(४) शहाब उस सितारों को कहते हैं जो शोले की तरह रौशन होता है और फ़रिश्ते उससे शैतानों को मारते हैं।

(५) पहाड़ों के, ताकि वो सलामत और स्थिर रहे और हलक न करें।

(६) ग़ल्ल, फ़ल वगैरह।

(७) दासी, गुलाम, चौपाए और संवक, वगैरह।

(८) ख़ज़ाने होना, यानी इक़तदार, सत्ता और इस्त्रियार, मानी ये हैं कि हम हर चीज़ के पैदा करने पर कादिर हैं जितनी चाहें

और वेशक तुम्हारा रब ही उन्हें क़यामत में उठाएगा^(१३)
वेशक वही इल्म व हिकमत वाला है^(१५)

तीसरा सूक़

और वेशक हमने आदमी को^(१) बजती हुई मिट्टी से बनाया जो अस्ल में एक सियाह गारा थी^(२) ^(२६) और जिन्न को उससे पहले बनाया वेधुए की आग से^(३) ^(२७) और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं आदमी को बनाने वाला हूँ बजती मिट्टी से जो बंदबूदार सियाह गारे से है^(४) ^(२८) तो जब मैं उसे ठीक कर लूँ और उसमें अपनी तरफ़ की खास इज़्जत वाली रूह फूँक दूँ^(५) तो उसके^(६) लिये सिजदे में गिर पड़ना^(७) ^(२९) तो जितने फ़रिश्ते थे सब के सब सिजदे में गिरे^(८) ^(३०) सिवा इवलीस के, उसने सज्दा वालों का साथ न माना^(९) ^(३१) फ़रमाया ऐ इवलीस तुझे क्या हुआ कि सज्दा करने वालों से अलग रहा^(१०) ^(३२) बोला मुझे ज़ेबा (मुनासिब) नहीं कि व़शर को सज्दा करूँ जिसे तूने वजती मिट्टी से बनाया जो सियाह बूदार गारे से थी^(११) ^(३३) फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा कि तू मरदूद है^(१२) ^(३४) और वेशक क़यामत तक तुझपर लअनत है^(१३) ^(३५) बोला ऐ मेरे रब तू मुझे मुहलत दे उस दिन तक कि वो उठाए जाए^(१४) ^(३६) फ़रमाया तू उनमें है जिनको मुहलत है ^(३७)

وَاِنْ رَبُّكَ هُوَ يُحْشِرُهُمْ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَّسْنُوْنٍ ۝ وَاجْعَلْ خَلْقَهٗ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ۝ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَّسْنُوْنٍ ۝ فَاِذَا سَوَّيْتَهٗ وَفَضَحْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوحِیْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اٰجْمَعُوْنَ ۝ اِلَّا اِبْلِیْسَ ۝ اَبٰی اَنْ یَّکُوْنَ مَعَ السَّٰجِدِيْنَ ۝ قَالَ یٰۤاِبْلِیْسُ مَا لَکَ اَلَّا تَکُوْنُ مَعَ السَّٰجِدِيْنَ ۝ قَالَ لَمْ اَکُنْ لَاسِجِدَ لَبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَّسْنُوْنٍ ۝ قَالَ فَاخْرِجْ مِنْهَا ۝ فَاِنَّکَ رَجِیْمٌ ۝ وَاِنْ عَلَیْکَ الْاَلْعٰنَةُ اِلَیَّ یَوْمِ الدِّیْنِ ۝ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِیْ اِلَیَّ یَوْمٍ یُّبْعَثُوْنَ ۝ قَالَ فَاِنَّکَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝ اِلَیَّ یَوْمِ الْوَقْتِ ۝

مَذَل

और जो अन्दाज़ा हिकमत के मुताबिक हो .

(९) आबादियों को पानी से भरती और सैराब करती हैं.

(१०) कि पानी तुम्हारे इज़्तिफ़ार में हो, जबकि तुम्हें इसकी हज़त है. इसमें अल्लाह तआला की कुदरत और बन्दों की विवशता की बड़ी दलील है.

(११) यानी सारी सृष्टि नष्ट होने वाली है और हम ही बाक़ी रहने वाले हैं और मुल्क का दावा करने वाले की मिल्क ज़ाया (नष्ट) हो जायगी और सब मालिकों का मालिक बाक़ी रहेगा.

(१२) यानी पहली उम्मतें और उम्मतें मुहम्मदिया, जो उम्मतों में सबसे पिछली है या वो जो ताअन और भलाई में पहल करने वाले हैं और जो सुखी से पीछे रह जाने वाले हैं या वो जो बुजुर्गों हासिल करने के लिये आगे बढ़ने वाले हैं और जो उच्च में पीछे रह जाने वाले हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नमाज़ की जमाअत की पहली सफ़ की अच्छाइयों वयान की, तो सहाबा में पहली सफ़ में शामिल होने की होड़ लगी और उनकी भीड़ होने लगी. जिन लोगों के मकान मस्जिद शरीफ़ से दूर थे, वो अपने मकान बेचकर करीब में मकान खरीदने की कोशिश करने लगे ताकि पहली सफ़ में जगह मिलने से कभी मेहरूम न हों. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें तसल्ली दी गई कि सवाब नियतों पर हैं और अल्लाह तआला अगलों को भी जानता है और जो उच्च से पीछे रह गए हैं उनको भी जानता है और उनकी नियतों से भी बाअबर है और उसपर कुछ छुपा हुआ नहीं है.

(१३) जिस हाल पर वो मरे होंगे.

सूरए हिज़ - तीसरा सूक़

(१) यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सूखी.

(२) अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो दस्त कुदरत ने ज़मीन से एक मुट्ठी ग्राक ली, उसको पानी में शमीर किया. जब वह गारा मियाह हो गया और उसमें वृ पैदा हुई, तो उसमें इल्हामी सूरत बनाई. फिर वह सूख कर शुष्क हो गया, तो जब हवा उसमें जाती तो वह वजता और उसमें आवाज़ पैदा होती. जब सूख की गर्मी में वह पक्का हो गया तो उसमें रूह फूँकी और वह इन्सान हो गया.

(३) जो अपनी गर्मी और लताफ़त से मसामों में दाख़िन हो जाती है.

(४) और उसको ज़िन्दगी अता फ़रमाई.

उस मालूम वक़्त के दिन तक ^(१) (३८) वोला ऐ रब मेरे क़सम इसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं उन्हें ज़मीन में भुलाव दूंगा ^(२) और ज़रूर मैं उन सब को ^(३) बेराह करूंगा ^(४) मगर जो उनमें तेरे चुने हुए बन्दे हैं ^(५) (४०) फ़रमाया यह रास्ता सीधा मेरी तरफ़ आता है ^(६) (४१) वेशक मेरे ^(७) बन्दों पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं सिवा उन गुमराहों के जो तेरा साथ दें ^(८) (४२) और वेशक जहन्नम उन सबका वादा है ^(९) (४३) उसके सात दरवाज़े हैं ^(१०) हर दरवाज़े के लिये उनमें से एक हिस्सा बटा हुआ है ^(११) (४४)

चौथा रूक़

वेशक डर वाले वाग़ों और चश्मों में हैं ^(१) (४५) उनमें दाख़िल हो सलामती के साथ अमान में ^(२) (४६) और हमने उनके सीनों में जो कुछ ^(३) कीने थे सब खींच लिये ^(४) आपस में भाई हैं ^(५) ताज़ों पर रू वरू बैठे ^(६) (४७) न उन्हें उसमें कुछ तकलीफ़ पहुंचे न वो उसमें से निकाले जाएं ^(७) (४८) ख़बर दो ^(८) मेरे बन्दों को कि वेशक मैं ही हूँ बख़्शने वाला मेहरवान ^(९) (४९) और मेरा ही अज़ाब दर्दनाक अज़ाब है ^(१०) (५०) और उन्हें अहवाल सुनाओ इब्राहीम के मेहमानों का ^(११) (५१) जब वो उसके पास आए तो बोले सलाम ^(१२) कहा हमें तुम से डर मालूम होता है ^(१३) (५२)

الْمَعْلُومُ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَا أُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ۝ قَالَ هَذَا جِرَاطٌ عَلَىٰ مُسْتَقِيمٍ ۝ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَنٌ إِلَّا مَنْ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَوِينَ ۝ وَإِنْ جَهَلْتُمْ لَكُمْ عَذَابُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ۝ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ إِيَّاهُمْ ۝ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ۝ لَا يَسُوهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرِجِينَ ۝ يَتَّبِعُ عِبَادِي أَتَىٰ أَنَا الْعَفْوَ الرَّحِيمُ ۝ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ۝ وَتَبَتُّهُمْ عَنْ صَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ۝ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ۝ قَالُوا

- (५) ...के आदर और सम्मान.
- (६) और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज़्दा न किया तो अल्लाह तआला ने.
- (७) कि आसमान और ज़मीन वाले तुमपर लअनत करेंगे और जब क़यामत का दिन आएगा तो उस लअनत के साथ हमेशा के अज़ाब में जकड़ दिया जाएगा जिस से कभी रिहाई न होगी. यह सुनकर शैतान.
- (८) यानी क़यामत के दिन तक. इससे शैतान का मतलब यह था कि कभी न मरे, क्योंकि क़यामत के बाद कोई न मरगा और क़यामत तक की उसने मांहलत मांग ही ली. लेकिन उसकी दुआ का अल्लाह तआला ने इस तरह कुबूल किया कि.
- (९) जिसमें सारी सृष्टि मर जाएगी और वह नफ़्फ़रए उल्ला है, तो शैतान के मुर्दा रहने की मुद्दत नफ़्फ़रए उल्ला, यानी सूर के पहली बार फूंक जाने से दूसरी बार फूंक जाने तक, चालीस बरस है और उसका इस क़दर मोहलत देना, उसके सम्मान के लिये नहीं, बल्कि उसकी बला, शक़ाबत और अज़ाब की ज़ियादती के लिये है. यह सुनकर शैतान.
- (१०) यानी दुनिया में गुनाहों की सज़ात दिलाऊंगा.
- (११) दिलों में बसबसा डाल कर.
- (१२) जिन्हें तूने अपनी तौहीद और इबादत के लिये बरगुज़ादा फ़रमा लिया उसपर शैतान का बसबसा और उसका बहकावा न चलमा
- (१३) इमानदार.
- (१४) यानी जो काफ़िर कि तेरे अनुयायी और फ़रमावेरदार हो जाएं और तेरे अनुकरण का इरादा कर लें.
- (१५) इन्नीस का भी और उसका अनुकरण करने वालों का भी.
- (१६) यानी सात तयके. इन्हे ज़ुरह का क़ाल है कि दोज़ख़ के सात दर्जे हैं - जहन्नम, लज़ा, हुतमा, सईर, सक्कर, ज़हीम, दाविया.
- (१७) यानी शैतान का अनुकरण करने वाले भी सात हिस्सों में बंटें हैं उनमें से हर एक के लिये जहन्नम का एक दर्जा सुरक्षित है.

सूरए हिज़ - चौथा रूक़

- (१) उससे कहा जाएगा कि.
- (२) यानी जन्नत में दाख़िल हो, अन्न व सलामती के साथ. न यहाँ से निकाले जाओ, न मौत आए, न कोई आफ़त रुनुमा हो, न कोई ख़ाफ़, न परेशानी.
- (३) दुनिया में.

उन्होंने कहा डरिये नहीं हम आपको एक इल्म वाले लड़के की बशारत (खुशखबरी) देते हैं^(१०) (५३) कहा क्या इसपर मुझे बशारत देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुंच गया अब काहे पर बशारत देते हो^(११) (५४) कहा हमने आपको सच्ची बशारत दी है^(१२) आप नाउम्मीद न हों^(१३) (५५) कहा अपने रब की रहमत से कौन नाउम्मीद हो मगर वही जो गुमराह हुए^(१४) (५६) कहा फिर तुम्हारा क्या काम है ऐ फ़रिश्तो^(१५) (५७) बोले हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं^(१६) (५८) मगर लूत के घर वाले, उन सबको हम बचालेंगे^(१७) (५९) मगर उसकी औरत हम ठहरा चुके हैं कि वह पीछे रह जाने वालों में हैं^(१८) (६०)

पाँचवां स्कू

तो जब लूत के घर फ़रिश्ते आए^(१) (६१) कहा तुम तो कुछ बेगाने लोग हो^(२) (६२) कहा वल्कि हम तो आपके पास वह^(३) लाए हैं जिसमें ये लोग शक करते थे^(४) (६३) और हम आपके पास सच्चा हुक्म लाए हैं और वेशक हम सच्चे हैं^(५) (६४) तो अपने घर वालों को कुछ रात रहे लेकर बाहर जाइये और आप उनके पीछे चलिये और तुम में कोई पीछे फिर कर न देखे^(६) और जहां को हुक्म है सीधे चले जाइये^(७) (६५) और हमने उसे उस हुक्म का फ़ैसला सुना

لَا تَوَجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ۝ قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰ أَن مَّسْنِي الْعِكْبَرُ فِيمَ تَبَشِّرُونَ ۝ قَالُوا بَشِّرْنَا بِالْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ الْقَاطِبِينَ ۝ قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ۝ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ۝ وَإِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمَجْرُومٌ ۝ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا إِنَّهَا لَمِنَ الْغَابِرِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّتَكَبِرُونَ ۝ قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝ وَآتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝ فَاسْرِبْ أَهْلَكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُ وَاحِدٌ تَوْصَرُونَ ۝ وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَٰؤُلَاءِ

مَكُونُ

- (४८) और उनके अन्तःकरण को ईर्ष्या, हसद, दुश्मनी और कटुता वगैरह, युरी ख़सलतों से पाक कर दिया. वो ----
- (५०) एक दूसरे के साथ महबूत करने वाले. हज़रत अली मर्तजा रदियल्लाहो अन्ही ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि मैं और उस्मान और तलहा और जुबैर उन्हीं में से हैं, यानी हमारे सीतों से दुश्मनी और कटुता और हसद व ईर्ष्या निकाल दी गई है. हम आपस में ख़ालिस महबूत रखने वाले हैं. इसमें राफ़ज़ियों का रव है.
- (६६) ऐ मुहम्मदे मुस्तफ़ा, सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.
- (६७) जिन्हें अल्लाह तआला ने इसलिये भेजा था कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बेटे की ख़ुशख़बरी दें और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम को हलाक करें. ये मेहमान हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम थे, कई फ़रिश्तों के साथ.
- (८८) यानी फ़रिश्तों ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सलाम किया और आपका आदर सत्कार किया तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनसे.
- (९०) इसलिये कि बं इज़ाज़त और बे वक़्त आए और ख़ाना नहीं ख़ाया.
- (९०) यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की, इसपर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने.
- (९१) यानी ऐसे बुढ़ापे में औलाद होना अजीब बात है, किस तरह औलाद हांगी. क्या हमें फिर जवान किया जाएगा या इसी हालत में बेटा अता फ़रमाया जायगा. फ़रिश्तों ने--
- (९२) अल्लाह का हुक्म इसपर जारी हो चुका कि आपके बेटा हो और उसकी सन्तान बहुत फैले.
- (९३) यानी मैं उसकी रहमत से नाउम्मीद नहीं, क्योंकि रहमत से निराश काफ़िर होते हैं. हौ उसकी मुन्नत, जो दुनिया में जारी है, उससे यह बात अजीब मालूम हुई. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रिश्तों से ---
- (९४) यानी इस बशारत के सिवा और क्या काम है जिसके लिये तुम भेजे गए हो.
- (९५) यानी क़ौमे लूत की तरफ़, कि हम उन्हें हलाक करें.
- (९६) क्योंकि वो ईमानदार हैं.
- (९७) अपने कुक़्र के कारण.

सूरए हिज़ - पाँचवां स्कू

- (१) ख़ुदख़ुश नौजवानों की शकल में. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को डर हुआ कि क़ौम उनके पीछे पड़ जायगी, तो आपने फ़रिश्तों से ---
- (२) व तो यहाँ के निवासी हो, न कोई मुसाफ़िर की निशाानी तुम में पाई जाती है. क्यों आए हो, फ़रिश्तों ने ----

दिया कि सुबह होते इन काफ़िरों की जड़ कट जाएगी^(११) ॥६६॥
और शहर वालों^(१२) खुशियां मनाते आए^(१३) ॥६७॥ लूत ने कहा
घं मेरे मेहमान हैं^(१४) मुझे फ़ज़ीहत न करा^(१५) ॥६८॥ और
अल्लाह सं डरो और मुझे रूखा न करो^(१६) ॥६९॥ बोले
क्या हमने तुम्हें मना न किया था कि औरों के मामले में
दाख़ल न दो^(१७) ॥७०॥ कहा ये क़ौम की औरतें मेरी बेटियां हैं
अगर तुम्हें करना है^(१८) ॥७१॥ ऐ मेहबूब तुम्हारी जान की
क्रसम^(१९) वेशक वो अपने नश में भटक रहे हैं^(२०) ॥७२॥ तो
दिन निकलते उन्हें चिंघाड़ न आ लिया^(२१) ॥७३॥ तां हमने
उस बस्ती का ऊपर का हिस्सा उसके नीचे का हिस्सा कर
दिया^(२२) और उनपर कंकर के पत्थर बरसाए^(२३) ॥७४॥ वेशक
उसमें निशानियां हैं समझ वालों के लिये^(२४) ॥७५॥ और वेशक
वह बस्ती उस राह पर है जो अब तक चली है^(२५) ॥७६॥
वेशक उसमें निशानियां हैं ईमान वालों को^(२६) ॥७७॥ और
वेशक झाड़ी वाले ज़रूर ज़ालिम थे^(२७) ॥७८॥ तो हमने
उनसे बदला लिया^(२८) और वेशक ये दोनों बस्तियां^(२९) खुले
रास्ते पर पड़ती हैं^(३०) ॥७९॥

छटा रूकू

और वेशक हिज़्र वालों ने रसूलों को झुटलाया^(३१) ॥८०॥
और हमने उनको अपनी निशानियां दीं^(३२) तो वो उनसे मुंह
फेरे रहे^(३३) ॥८१॥ और वो पहाड़ों में घर तराशते थे

مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ۝ وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدْيَنَةِ
يَسْتَبْشِرُونَ ۝ قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ۝
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْذَلُوا ۝ قَالُوا أَوْلَٰئِكَ تَنْهَكُ
عَنِ الْعَمَلِينَ ۝ قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ كُنْتُمْ
فَاعِلِينَ ۝ لَعَنَّاكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝
فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ۝ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا
سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ سِجِّيلٍ ۝
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ۝ وَإِنَّهَا
لَاسَبِيلٌ مُّقِيمٌ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝
وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ ظَالِمِينَ ۝ فَانْتَقَمْنَا
مِنْهُمْ ۝ وَإِنَّهَا لِبِأَمَامٍ مُّبِينٍ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ
أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسِلِينَ ۝ وَأَتَيْنَهُمْ آيَاتِنَا
فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ وَكَانُوا يَنْحِتُونَ

مَزْنٍ

قَالَ

- (३) अज़ाब, जिसके उतरने का आप अपनी क़ौम को ख़ौफ़ दिलाया करते थे.
- (४) और आपको झुटलाते थे.
- (५) कि क़ौम पर क्या बर्तावाज़िल हुई और वो किस अज़ाब में जकड़े गए.
- (६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हुक्म शाम प्रदेश को जाने का था.
- (७) और तमाम क़ौम अज़ाब से हलाक कर दी जाएगी.
- (८) यानी सदूम शहर के रहने वाले हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम के लोग. हज़रत लूत के यहाँ ख़ूबसूरत नौजवानों के आने की ख़बर सुनकर ग़लत इरादे और तापाक नियत सं.
- (९) और मेहमान का सत्कार लाज़िम होता है, तुम उनके निरादर का इरादा करके.
- (१०) कि मेहमान की ख़ुवाई मेज़वान के लिये ख़िजात और शर्मिन्दगी का कारण होती है.
- (११) उनके साथ बुरा इरादा करके. इसपर क़ौम के लोग हज़रत लूत अलैहिस्सलाम से ----
- (१२) तो उनसे निकाह करो और हराम से बाज़ रहो. अब अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाता है.
- (१३) और अल्लाह की सृष्टि में सं कोई जान अल्लाह की बारगाह में आपकी पाक जान की तरह इज़्ज़त और पाकी नहीं रखती और अल्लाह तआला ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्र के सिवा किसी की उम्र और ज़िन्दगी की क्रसम याद नहीं फ़रमाई. यह दर्ज़ा सिर्फ़ हुज़ूर ही का है. अब इस क्रसम के बाद इशारा होता है.
- (१४) यानी हालनाक और भयावक आवाज़ न.
- (१५) इस तरह कि हज़रत ज़िब्रिल अलैहिस्सलाम उस ज़मीन के टुकड़े को उठाकर आसमान के करीब ले गए और वहाँ से आँधा करके ज़मीन पर डाल दिया.
- (१६) और काफ़िने उसपर गुज़रते हैं और अल्लाह के राज़ब के निशान उनके देखने में आते हैं.
- (१७) यानी काफ़िर थे. ऐका झाड़ी को कहते हैं. इन लोगों का शहर हरे भरे जंगलों और हरियालियों के बीच था. अल्लाह तआला ने हज़रत शूएब अलैहिस्सलाम को उन लोगों पर रसूल बना कर भेजा. उन लोगों ने ताफ़रमानी की, और हज़रत शूएब अलैहिस्सलाम का झुटलाया.
- (१८) यानी अज़ाब भेज कर हलाक किया.
- (१९) यानी क़ौम लूत के शहर और ऐका वालों के ---

वेखोफ़^(१) (८२) तो उन्हें सुबह होते बिंघाड़ ने आ लिया^(२) (८३) तो उनकी कमाई कुछ उनके काम न आई^(३) (८४) और हमने आसमान और ज़मीन और जो कुछ इनके बीच है वेकार न बनाया और वेशक क़यामत आने वाली है^(४) तो तुम अच्छी तरह दरगुज़र करो^(५) (८५) वेशक तुम्हारा रब ही बहुत पैदा करने वाला जानने वाला है^(६) (८६) और वेशक हमने तुमको सात आयतें दीं जो दोहराई जाती हैं^(७) और अज़मत (श्रेष्ठता) वाला कुरआन^(८) (८७) अपनी आंख उठाकर उस चीज़ को न देखो जो हमने उनके कुछ जोड़ों को बरतने को दी^(९) और उनका कुछ ग़म न खाओ^(१०) और मुसलमानों को अपने रहमत के परों में ले लो^(११) (८८) और फ़रमाओ कि मैं ही हूँ साफ़ डर सुनाने वाला (इस अज़ाब से) (८९) जैसा हमने बांटने वालों पर उतारा^(१२) (९०) जिन्होंने कलामे इलाही को तिकके वोटी कर लिया^(१३) (९१) तो तुम्हारे रब की क़सम हम ज़रूर उन सब से पूछेंगे^(१४) (९२) जो कुछ वो करते थे^(१५) (९३) तो साफ़ कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है^(१६) और मुथ्रिकों से मुंह फेर लो^(१७) (९४) वेशक उन हंसने वालों पर हम तुम्हें किफ़ायत करते हैं^(१८) (९५) जो अल्लाह के साथ दूसरा मअबूद ठहराते हैं तो अब जान जाएंगे^(१९) (९६) और वेशक हमें मालूम है कि उन की

مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا أَمْثَلُونَ ۖ فَأَخَذْتَهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ۚ فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ ۖ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَأَتِيَةٌ ۖ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ۚ وَلَقَدْ أَنْتَبَذْنَا سَبَإَ مِمَّنِ الْمَنَافِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ۚ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ ۖ وَخَفُضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ۚ وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ۚ كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِبِينَ ۚ الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۚ فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۚ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۚ إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ۚ

مَنْزِل

(२०) जहाँ आदमी गुज़रते हैं और देखते हैं तो ये मक्का वाला तुम उनको देखकर क्यों सबक नहीं पकड़ते।

सूरए हिज़्र - छटा रूकू

- (१) हिज़्र एक घाटी है, मदीना और शाम के बीच, जिसमें क़ौम समूद रहती थी। उन्होंने अपने नबी हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को झुटलाया और एक नदी को झुटलाया सारे नवियों का झुटलाया है, क्योंकि हर रसूल सारे नवियों पर ईमान लाने की दावत देता है।
- (२) कि पत्थर से ऊँटी पैदा की, जो बहुत से चमत्कारों पर आधारित थी, जैसे कि उसका बहुत बड़ा शरीर होना और पैदा होते ही बच्चा बनना और कसरत से दूध देना कि सारी क़ौम समूद को काफ़ी हो, वगैरह। यह सब हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के चमत्कार और क़ौम समूद के लिये हमारी निशानियाँ थीं।
- (३) और ईमान न लाए।
- (४) कि उन्हें उनके गिरने और उसमें तक्क लगाए जाने का डर था, और वो समझते थे कि यह घर तबाह नहीं हो सकता, उनपर कोई आफ़त नहीं आ सकती।
- (५) और वो अज़ाब में गिरफ़्तार हुए।
- (६) और उनके मालमत्ता और उनके मज़बूत मकान उन्हें अज़ाब से न बचा सके।
- (७) और हर एक को उसके कर्मों की जज़ा मिलेगी।
- (८) ये मुन्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, और अपनी क़ौम की तकलीफ़ों और यातनाओं पर सन्न करो। यह हुक्म क़िनाल की आयत से स्थगित हो गया।
- (९) उसी ने सब को पैदा किया और वह अपनी सृष्टि के तमाम हाल जानता है।
- (१०) नमाज़ की रकअतों में, यानी हर रकअत में इक़दी जाती हैं और इन सात आयतों से सूरए फ़ातिहा मुराद है, जैसा कि बुघ़ारा और मुस्लिम की हदीसों में आया।
- (११) मानी ये हैं कि ये नवियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, हमने आपको ऐसी नेअमतें अता फ़रमाईं जिनके सामने दुनिया की नेअमतें हकीर हैं, तो आप दुनिया की माया से बेनियाज़ रहें, जो यहूदियों और ईसाइयों वगैरह, मुग़लानिक़ क्रिस्म के काफ़िरों का दी गई। हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि हम में से नहीं जो कुरआन की यदौलत हर चीज़ से बेनियाज़ न हो गया। यानी कुरआन ऐसी नेअमत है जिसके सामने दुनिया की नेअमतें कुछ भी नहीं।
- (१२) कि वो ईमान न लाए।

वातां से तुम दिल तंग होते हो^(१७) ॥९७॥ तो अपने रब को सराहते हुए उसकी पाकी बोलो और सज्दे वालों में हो^(१८) ॥९८॥ और मरते दम तक अपने रब की इबादत में रहो^(१९) ॥९९॥

१६- सूरए नहल

पहला रूकू

सूरए नहल मक्का में उतरी, इसमें १२८ आयतें, और १६ रूकू हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) अव आता है अल्लाह का हुक्म तो इसकी जल्दी न करो^(२) पाकी और बरतरी है उसे उन शरीकों से^(३) ॥१॥ फ़रिशतों को ईमान की जान यानी वही (देववाणी) लेकर अपने जिन वन्दों पर चाहे उतारता है^(४) कि डर सुनाओ कि मेरा सिवा किसी की वन्दगी नहीं तो मुझसे डरो^(५) ॥२॥ उसने आसमान और ज़मीन बजा बनाए^(६) वह उनके शिर्क से बरतर (उत्तम) है^(७) ॥३॥ (उसने) आदमी को एक निथरी बूंद से बनाया^(८) तो जभी खुला झगड़ालू है^(९) ॥४॥ और चौपाए पैदा किये उनमें तुम्हारे लिये गर्म लिवास और फ़ायदे हैं^(१०) ॥५॥ और उनसे खाते हो^(११) ॥६॥ और तुम्हारा उनमें तजम्मुल (वैभव) है जब उन्हें शाम को वापस लाते हो और जब घरने को छोड़ते

النحل ۳۶۲

الَّذِينَ يَعْلَمُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝
وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ۝ وَاعْبُدْ
رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝

(۱۶) سُورَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ (۶۰) بِرَبِّهَا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَنزَلَ اللَّهُ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى
عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ
أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنذِرُوا
أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ۝ خَلَقَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ خَلَقَ
الْإِنْسَانَ مِنْ تُفْلَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۝
وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ

(१३) और उन्हें अपने कर्म से नवाज़ो।

(१४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अल्हे वसल्लम ने फ़रमाया कि बाँटने वालों से यहूदी और ईसाई मुराद हैं। चूँकि वो कुरआन पाक के कुछ हिस्से पर ईमान लाए जो उनके ख़याल में उनकी किताबों के अनुसार था, और कुछ से इन्कार कर दिया। क़तादा और इब्ने साइब ने कहा कि बाँटने वालों से क़ुरैश के काफ़िर मुराद हैं जिनमें कुछ कुरआन को जादू, कुछ ज्योतिष और कुछ मन बड़लत फ़िरसे कहते थे। इस तरह उन्होंने कुरआन शरीफ़ के हक़ में अपने कौल बाँट रखे थे। एक कौल यह है कि बाँटने वालों से वो बारह लोग मुराद हैं जिन्हें काफ़िरों ने मक्कए मुकर्रमा के रास्तों पर तैनात किया था। हज़ के ज़माने में हर हर रास्ते पर उनका एक एक व्यक्ति बैठा जाता था और वह आने वालों को बहकाने और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अल्हे वसल्लम से नफ़रत दिलाने के लिये एक एक बात मुकर्रर कर लेता था। कोई आने वालों से यह कहता था कि उनकी बातों में न आना कि वह जादूगर हैं। कोई कहता कि वह झूठे हैं, कोई कहता कि वह पागल हैं, कोई कहता कि वह तांत्रिक हैं, कोई कहता वह शायर हैं। यह सुनकर लोग जब ख़ातए काबा के दरवाज़े पर आते वहाँ बलीद बिन मुगीरा बैठा रहता था। उससे नबीये करीम सल्लल्लाहो अल्हे वसल्लम का हाल पूछते और कहते कि हमने मक्कए मुकर्रमा आते हुए शहर के किनारे उनके बारे में ऐसा सुना, वह कह देता ठीक ही सुना। इस तरह लोगों को बहकाने और गुमराह करते। उन लोगों को अल्लाह तआला ने हलाक किया।

(१५) क़यामत के दिन।

(१६) और जो कुछ वो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अल्हे वसल्लम और कुरआन की निस्वत कहते थे।

(१७) इस आयत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अल्हे वसल्लम को रिसालत की तबलीग़ और इस्लाम की दावत के इज़हार का हुक्म दिया गया। अब्दुल्लाह बिन उबैद का कौल है कि इस आयत के उतरने के वक़्त तक इस्लाम की दावत एलाव के साथ नहीं की जाती थी।

(१८) यानी अपना दीन ज़ाहिर करने पर मुश्किफ़ों की मालामत करने की परवाह न करो और उनकी तरफ़ तवज्जह न दो और उनके मज़ाक़ उड़ाते का ग़म न करो।

(१९) क़ुरैश के काफ़िरों के पाँच सरदार आस बिन वाइल सहमी, असबद बिन मुत्तलिब, असबद बिन अब्द यगूस और हारिस बिन कैस और इन सब का अफ़सर बलीद बिन मुगीरा मज़ज़ूमी, ये लोग नबीये करीम सल्लल्लाहो अल्हे वसल्लम को बहुत कष्ट देते थे और आपक साथ ठग़ा करते थे। असबद बिन मुत्तलिब के लिये सैयदे आलम सल्लल्लाहो अल्हे वसल्लम ने दुआ की थी कि यारव उस का अन्धा करदे। एक दिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अल्हे वसल्लम मस्जिद हराम में तशरीफ़ फ़रमा थे। ये पाँचों आए और उन्होंने हमेशा की तरह तअन देना और मज़ाक़ उड़ाना शुरू किया और तवाफ़ में लग गए। उसी हाल में हज़रत जिब्रीले अमीन हज़र की म्ग्रिदमत में पहुंचे और उन्होंने बलीद बिन मुगीरा की पिंडली की तरफ़, आस के तलबे की तरफ़, असबद बिन मुत्तलिब की आँखों की तरफ़, असबद बिन अब्द यगूस के पेट की तरफ़ और हारिस बिन कैस के थर की तरफ़ इशारा किया और कहा, मैं इनका श

हो(६) और वो तुम्हारे वोझ उठकर ले जाते हैं ऐसे शहर की तरफ़ कि उस तक न पहुंचते मगर अधमरे होकर, बेशक तुम्हारा रब बहुत मेहरबान रहमत वाला है(१)(७) और घोड़े और खच्चर और गधे कि उनपर सवार हो और जीनत (शोभा) के लिये और वह पैदा करेगा(१०) जिसकी तुम्हें खबर नहीं(११)(८) और बीच की राह(१२) ठीक अल्लाह तक है और कोई राह टेढ़ी है(१३) और चाहता तो तुम सब को राह पर लाता(१४)(९)

दूसरा रूकू

वही है जिसने आसमान से पानी उतारा उससे तुम्हारा पीना है और उससे दरख्त हैं जिन से चराते हो(१)(१०) उस पानी से तुम्हारे लिये खेती उगाता है और जैतून और खजूर और अंगूर और हर क्रिस्म के फल(२) बेशक उसमें निशानी है(३) ध्यान करने वालों को(११) और उसने तुम्हारे लिये मुसख़्खर किये रात और दिन और सूरज और चांद और सितारे उसके हुक्म के बांधे हैं, बेशक आयत में निशानियां हैं अक्लमन्दों को(४)(१२) और वह जो तुम्हारे लिये ज़मीन में पैदा किया रंग विरंग(५) बेशक उसमें निशानी है

وَالَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ۝ يُبْقِيَتْ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعُ وَالزَّيْتُونُ وَالنَّخِيلُ وَالْأَعْنَابُ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ وَسَخَّرْنَا لَكُمْ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِ رَبِّ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا ذَرَأْنَا لَكُمْ

منزل

दफ़ा करूँगा। चुनांचे थोड़े ही असें में ये हलाक हो गए। बलीद बिन मुगीरा तीर बेचने वाली की दुकान के पास से गुज़रा उसके तहबन्द में एक तीर चुभा मगर उसने घमण्ड से उसको निकालने के लिये सर गीचा न किया। इससे उसकी पिंडली में ज़र्रम आया और उसी में मर गया। आस इज़्ज वाईल के पौंव में काँटा लगा और नज़र न आया। उससे पाँव सूज गया और वह भी मर गया। असबद बिन मुनालिय की आँखों में ऐसा दर्द हुआ कि दीवानों की तरह सर दीवार में मारता था उसी में मर गया यह कहता हुआ मरा कि मुझे मुहम्मद ने क्रतल किया। और असबद बिन अब्दे यगूस के बदन में पानी कम हो गया। कल्बी की रिवायत है कि उसका लू लगी और उसका मुँह इतना काला हो गया कि घर वालों ने न पहचाना और निकाल दिया। इसी हाल में यह कहता हुआ मर गया कि मुझको मुहम्मद के रब ने क्रतल किया। और हरिस बिन क्रैस की नाक से खून और पीप जारी हुआ उसी में हलाक हो गया। उन्हीं के हक़ में यह आयत उतरी. (त्राज़िन)

(२०) अपना अन्त.

(२१) और उनके नअनों और मज़ाक़ और शिर्फ़ और कुफ़्र की बातों से आपको मलाल होता है और दुख़ पहुंचता है.

(२२) कि खुदा परस्तां के लिये तस्वीह और इबादत में मशगूल होना ग़म का बेहतरीन इलाज है. हदीस शरीफ़ में है कि जब सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लवम को कोई अहम बाक़िआ पेश आता तो नमाज़ में मशगूल हो जाते.

१६ - सूरए नहल - पहला रूकू

(१) सूरह नहल मक्की है, मगर आयत "फ़याकिव विमिल्ले मा ऊकिवुम बिहो" से आख़िर सूरत तक जो आयतें हैं, वो मदीनए तैय्यिह में उतरीं. इसमें और अक्रवाल भी हैं. इस सूरत में सोलह रूकू, १२८ आयतें, दो हज़ार आठ सौ चालीस कलिमे और सात हज़ार सात सौ अक्षर हैं.

(२) जब काफ़िगं ने बादा किये गए अज़ाब के उतरने और क़यामत के क़यम होने की जल्दी झुटलाने और मज़ाक़ के तीर पर की. इसपर यह आयत उतरी और बता दिया गया कि जिसकी तुम जल्दी करते हो वह कुछ दूर नहीं, बहुत ही करीब है और अपने बक़्त पर यकीनन होगा और जब होगा तो तुम्हें उससे छुटकारे की कोई राह न मिलेगी और वो वुन जिन्हें तुम पूजते हो, तुम्हारे कुछ काम न आएंगे.

(३) वह बाहिद है, उसका कोई शरीक नहीं.

(४) और उन्हें नबुव्वत और रिशालत के साथ चुज़ुर्गी देता है.

(५) और मेरी ही इज़ादन कर्गे और मेरे सिवा किसी को न पूजो, क्योंकि मैं वह हूँ कि ---

(६) जिन में उसकी तीहोद की येशुमार दलीलें हैं.

याद करने वालों को (१३) और वही है जिसने तुम्हारे लिये दरिया मुसख़्खर किया (१४) कि उसमें से ताज़ा गोश्त खाते हो (१५) और उसमें से गहना निकालते हो जिसे पहनते हो (१६) और तू उसमें किशियां देखे कि पानी चीर कर चलती हैं और इसलिये कि तुम उसका फ़ल तलाश करो और कहीं ऐहसान मानो (१७) और उसने ज़मीन में लंगर डाले (१८) कि कहीं तुम्हें लेकर न कांपे और नदियां और रस्ते कि तुम राह पाओ (१९) (२०) और अलामतें (लक्षण) (२१) और सितारे से वो राह पाते हैं (२२) (२३) तो क्या जो बनाए (२४) वह ऐसा होजाएगा जो न बनाए (२५) तो क्या तुम नसीहत नहीं मानते (२६) और अगर अल्लाह की नेअमतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे (२७) बेशक अल्लाह वख़्शने वाला मेहरबान है (२८) और अल्लाह जानता है (२९) जो छुपाते और ज़ाहिर करते हो (३०) और अल्लाह के सिवा जिन को पूजते हैं (३१) वो कुछ भी नहीं बनाते और (३२) वो खुद बनाए हुए हैं (३३) (३४) मुर्दे हैं (३५) ज़िन्दा नहीं और उन्हें ख़बर नहीं लोग कब उठाए जाएंगे (३६) (३७)

فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِنَآئِكَ لَوْ أَامِنَهُ لَكُنَّ أَطْرِبًا وَتَسَخَّرُ جُؤَامُهُ حَالِيَةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلَ مَوَآخِرَ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَالْقَلْبُ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِي أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَعَلَيْتِ وَيَا تَتَجَمَّعُهُمْ يَهْتَدُونَ ۝ أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَبْغُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ۝ أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝

مَنْزِل

(७) यानी मनी या वीर्य से, जिसमें न हिंस है न हरकत, फिर उसको अपनी भरपूर कुब्त से इन्सान बनाया, शक्ति और ताकत अता की. यह आयत उर्बे बिन झलफ के बारे में उतरी जो मरने के बाद ज़िन्दा होने का इन्कार करता था. एक बार वह किसी मुर्दे की गली हुई हड्डी उठा लाया और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहने लगा कि आपका यह ख़याल है कि अल्लाह तआला इस हड्डी को ज़िन्दागी देगा. इसपर यह आयत उतरी और निहायत नफ़ीस जवाब दिया गया कि हड्डी तो कुछ न कुछ शारीरिक शक्ति रखती है. अल्लाह तआला तो वीर्य के एक छोटे से वे हिस्से हरकत क़तरे से तुझ जैसा झगंडालू इन्सान पैदा कर देता है. यह देखकर भी तू उसकी कुदरत पर ईमान नहीं लाता.

(८) कि उनकी नस्ल से दौलत बढ़ाते हो, उनके दूध पीते हो और उनपर सवारी करते हो.

(९) कि उसने तुम्हारे नफ़े और आराम के लिये ये चीज़ें पैदा कीं.

(१०) ऐसी अजीब और अनाखी चीज़ें.

(११) इसमें वां तमाम चीज़ें आगई जो आदमी के नफ़े, राहत, आराम और आसायश के काम आती हैं और उस वक़्त तक मौजूद नहीं हुई थीं. अल्लाह तआला को उनका आइन्दा पैदा करना मन्ज़ूर था जैसे कि स्टीमर, रेलें, मोटर, हवाई जहाज़, विद्युत शक्ति से काम करने वाले आले व उपकरण, भाप और बिजली से चलने वाली मशीनें, सूचना और प्रसारण और ख़बर रसानी, दूर संचार के सामान और खुदा जाने इसके अलावा उसको क्या क्या पैदा करना मन्ज़ूर है.

(१२) याती सीधा सच्चा रास्ता और दीने इस्लाम, क्योंकि दो जगहों के बीच जितनी राहें निकाली जाएं, उनमें जो बीच की राह होगी, सीधी होगी.

(१३) जिसपर चलने वाला अरल मंज़िल को नहीं पहुंच सकता. कुफ़्र की सारी राहें ऐसी ही हैं.

(१४) सीधे रस्ते पर.

सूरए नहल - दूसरा रूकू

(१) अपने जानवरों की और अल्लाह तआला -

(२) मुख़लिफ़ सूरत ब-रंग, मज़े, बू, आसियत वाले कि सब एक ही पानी से पैदा होते हैं और हर एक के गुण दूसरे से जुदा हैं. ये सब अल्लाह की नेअमतें हैं.

(३) और उसकी कुदरत और हिकमत और बहदानियत की.

तीसरा रूकू

तुम्हारा मअबूद एक मअबूद है^(१) तो वो जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते उनके दिल इन्कारी हैं^(२) और वो मगरूर (घमण्डी) हैं^(३) ॥२२॥ हकीकत में अल्लाह जानता है जो छुपाते और जो ज़ाहिर करते हैं वेशक वह घमण्डियों को पसन्द नहीं फ़रमाता ॥२३॥ और जब उनसे कहा जाए^(४) तुम्हारे रब ने क्या उतारा^(५) कहें अगलों की कहानियां हैं^(६) ॥२४॥ कि क़यामत के दिन अपने^(७) बोझ पूरे उठाएं और कुछ बोझ उनके जिन्हें अपनी जिहालत से गुमराह करते हैं, सुन लो क्या ही बुरा बोझ उठाते हैं^(८) ॥२५॥

चौथा रूकू

वेशक उनके अगलों ने^(९) धोखा किया था तो अल्लाह ने उनकी घुनाई को नीच से लिया तो ऊपर से उनपर छत गिर पड़ी और अज़ाब उनपर वहां से आया जहां कि उन्हें ख़बर न थी^(१०) ॥२६॥ फिर क़यामत के दिन उन्हें रुस्वा करेगा और फ़रमाएगा कहां हैं मेरे वो शरीक^(११) जिन में तुम झाड़ते थे^(१२) इल्म वाले^(१३) कहेंगे आज सारी रुस्वाई और बुराई^(१४) काफ़िरों पर है ॥२७॥

الْهَكْمُ لِلَّهِ وَاحِدٌ ۖ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
قُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝ لَا جَرَمَ
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۖ إِنَّهُ لَا
يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا
أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا سَاطِطُ الْأَوَّلِينَ ۖ لِيُخِيلُوا
أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ وَمِنْ أَوْزَارِهِ
الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ أَلَسَاءَ مَا يَزُرُّونَ ۝
قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ فَإِنَّ اللَّهَ بُنْيَا لَهُمْ
مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ ۖ وَ
أَسْهَمُ الْعَذَابِ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝ ثُمَّ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ
كُنْتُمْ تَشَاقُونَ فِيهِمْ ۖ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ
إِنَّا الْخِزْيُ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

مَزْلُوم

- (४) जो इन चीज़ों में ग़ौर करके समझें कि अल्लाह तआला ही इम्तिyार वाला और करने वाला है और सब ऊंच नीच उसकी कुदरत और शक्ति के अन्तर्गत हैं।
- (५) चाहे जानदारों की क्रिम से हो या दरख्तों की या फलों की।
- (६) कि उसमें किसियों पर सवार होकर सफ़र करा या गाँतें लगा कर, उसकी तह तक पहुँचो या उस में से शिकार करो।
- (७) यानी मछली।
- (८) यानी मोती और मूंगा।
- (९) भारी पहाड़ों के।
- (१०) अपने उद्देश्यों और लक्ष्यों की तरफ़।
- (११) बगाई, जिन से तुम्हें रस्ते का पता चलें।
- (१२) खुशकी और तरी और इससे उन्हें रस्ते और क़िवले की पहचान होती है।
- (१३) इन सारी चीज़ों के अपनी कुदरत व हिकमत से यानी अल्लाह तआला -
- (१४) किसी चीज़ को ओग आज़िज़ व बेकुदरत हो जैसे कि बुत, तो आक़िल को कब सज़ावार है कि ऐसे ख़ालिक और मालिक की इबादत छोड़कर आज़िज़ और बेइम्तिyार बुतों की पूजा करे या उन्हें इबादत में उसका शरीक टहराए।
- (१५) उनके शुक्र की अदायगी की बात तो दूर रही।
- (१६) कि तुम्हारे शुक्र की अदायगी से मअज़ूर होने के बावजूद अपनी नेअमतों से तुम्हें महसूस नहीं फ़रमाता।
- (१७) तुम्हारी सारी कहानी और करनी।
- (१८) यानी बुतों को।
- (१९) बनाएँ क्या, कि -
- (२०) और अपने अस्तित्व में बनाने वाले के मोहताज और बाँ -
- (२१) बंजान।
- (२२) ताँ ऐसे मजबूर और बंजान बेइल्म मअबूद कैसे हो सकते हैं। इन खुली दलीलों से साबित हो गया कि -

सूरए नहल - तीसरा रूकू

- (१) अल्लाह तआला, जो अपनी ज़ात और सिफ़ात में तज़ीर और शरीक से پاک है।

वो कि फ़रिश्ते उनकी जान निकालते हैं इस हाल पर कि वो अपना बुरा कर रहे थे^(२) अब सुलह डालेंगे^(३) कि हम तो कुछ बुराई न करते थे^(४) हाँ क्यों नहीं बेशक अल्लाह ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कौतुक थे^(५) (२८) अब जहन्नम के दरवाज़ों में जाओ कि हमेशा उसमें रहो, तो क्या ही बुरा ठिकाना घमण्डियों का^(२९) और डर वालों^(३०) से कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा, वोले ख़ूबी^(३१) जिन्होंने इस दुनिया में भलाई की^(३२) उनके लिये भलाई है^(३३) और बेशक पिछला घर सबसे बेहतर, और ज़रूर^(३४) क्या ही अच्छा घर परहेज़गारों का^(३५) बसने के वाग़ जिनमें जाएंगे उनके नीचे नेहरें वहती उन्हें वहाँ मिलेगा जो चाहें^(३६) अल्लाह ऐसा ही सिला देता है घरहेज़गारों को^(३७) वो जिनकी जान निकालते हैं फ़रिश्ते सुथरेपन में^(३८) यह कहते हुए कि सलामती हो तुम पर^(३९) जन्नत में जाओ बदला अपने किये का^(४०) काहे के इन्तिज़ार में हैं^(४१) मगर इसके कि फ़रिश्ते उनपर आएँ^(४२) या तुम्हारे रब का अज़ाब आए^(४३) उनसे अगलों ने भी ऐसा ही किया^(४४) और अल्लाह

الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ
فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ شَوْءٍ إِلَّا
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ فَادْخُلُوا
أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوًى
الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلَ
رَبُّكُمْ قَالُوا خَيْرٌ ۚ الَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا
حَسَنَةً ۚ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ
الْمُتَّقِينَ ۝ جَنَّتٌ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُجْرَى مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۚ كَذَلِكَ
يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ
طَيِّبِينَ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۖ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ
الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرٌ رَبِّكَ ۚ كَذَلِكَ فَعَلَ

مَزْلُومٌ

- (२) वह दानियत के.
- (३) कि सच्चाई ज़ाहिर हो जाने के बावजूद उसका अनुकरण नहीं करना.
- (४) यानी लोग उनसे पूछें कि -
- (५) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाह अलैहे वसल्लम पर, तो -
- (६) यानी झूटे क़िसमें कोई मानने की बात नहीं. यह आयत नज़र बिन हारिस के बारे में उतरी, उसने बहुत सी कहानियाँ याद कर ली थीं. उससे जब कोई क़ुरआन शरीफ़ की निस्वत पूछता तो वह जानने के बावजूद कि क़ुरआन शरीफ़ चमकूत किताब और सत्य व हिदायत से भरपूर है, लोगों का गुमराह करने के लिये यह कह देता कि ये पहले लोगों की कहानियाँ हैं और ऐसी कहानियाँ मुझे भी बहुत याद हैं. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि लोगों को गुमराह करने का अंजाम यह है -
- (७) गुनाहों और गुमराही और सीधी राह से विचलित करने के -

सूरए नहल - चौथा रकू

- (१) यानी पहली उम्मतों ने अपने नबियों के साथ -
- (२) यह एक मिसाल है कि पिछली उम्मतों ने अपने रसूल के साथ छलकपट करने के लिये कुछ योजनाएं बनाई थीं. अल्लाह तआला ने उन्हें ख़ुद उन्हीं के मन्सूबों में हलाक किया और उनका हाल ऐसा हुआ जैसे किसी कौम ने कोई बलन्द इमारत बनाई फिर वह इमारत उनपर गिर पड़ी और वो हलाक हो गए. इसी तरह काफ़िर अपनी मक्कारियों से ख़ुद बर्बाद हुए. मुफ़ससिरो ने यह भी ज़िक्र किया है कि इस आयत में अगले छलकपट करने वालों से नमरूद बिन कनआन मुराद है जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने में ज़मीन का सबसे बड़ा बादशाह था. उसने बाबुल में बहुत ऊंची एक इमारत बनाई थी जिसकी ऊंचाई पांच हज़ार गज़ थी और उसका छल यह था कि उसने यह ऊंची इमारत अपने ख़याल में आसमान पर पहुंचने और आसमान वालों से लड़ने के लिये बनाई थी. अल्लाह तआला ने हवा चलाई और वह इमारत उनपर गिर पड़ी और वो लोग हलाक हो गए.
- (३) जो तुम ने षड़ लिये थे और -
- (४) मुसलमानों से -
- (५) यानी उन उम्मतों के नबी और उलमा जो उन्हें दुनिया में ईमान की दावत देते और नसीहत करते थे और ये लोग उनकी बात न मानते थे.
- (६) यानी अज़ाब .

ने उनपर कुछ जुल्म न किया हां वो खुद ही^(३३) अपनी जानों पर जुल्म करते थे^(३३) तो उनकी बुरी कमाइयां उनपर पड़ी^(३४) और उन्हें घेर लिया उसने^(३५) जिस पर हंसते थे^(३४)

पाँचवां सूकू

और मुश्रिक बोले अल्लाह चाहता तो उसके सिवा कुछ न पूजते न हम और न हमारे बाप दादा और न उससे अलग होकर हम कोई चीज हराम ठहराते^(३) ऐसा ही उनसे अगलों ने किया^(३) तो रसूलों पर क्या है मगर साफ़ पहुंचा देना^(३)^(३५) और बेशक हर उम्मत में हमने एक रसूल भेजा^(३) कि अल्लाह को पूजो और शैतान से बचो तो उनमें^(३) किसी को अल्लाह ने राह दिखाई^(३) और किसी पर गुमराही ठीक उतरी^(३) तो जमीन में चल फिर कर देखो कैसा अंजाम हुआ झुटलाने वालों का^(३)^(३६) अगर तुम उनकी हिदायत की हिर्स (लोभ) करो^(३) तो बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता जिसे गुमराह करे और उनका कोई मददगार नहीं^(३)^(३७) और उन्होंने अल्लाह की कसम खाई अपने हलफ़ में हद की

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ فَاصْبِرْ لَهُمْ سَيِّئَاتِ مَا عَمِلُوا وَخَافَ بِهَمِّ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنَ قَبْلِهِمْ فَهَلْ عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ إِنْ تَحْرِصْ عَلَى هَذِهِمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ

مَنْزِلٍ

(७) यानी कुफ़्र में जकड़े हुए थे.

(८) और मरते वक़्त अपने कुफ़्र से मुकर जाएंगे और कहेंगे -

(९) इसपर फ़रिश्ते कहेंगे -

(१०) लिहाज़ा यह इन्कार तुम्हें मुफ़ीद नहीं.

(११) यानी ईमानदारों.

(१२) यानी कुरआन शरीफ़ जो ख़ुबियों का जमा करने वाला और अच्छाइयों और बरकतों का सांत और दीन और दुनिया के खुले और छुपे क़मालात का सरचश्मा है. अरब के क़बीले हज़ के दिनों में हज़रत नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हाल की तहकीक़ के लिये मक्कए मुकर्रमा को एलची भेजते थे. ये एलची जब मक्कए मुकर्रमा पहुंचते और शहर के किनारे रास्तों पर उन्हें काफ़िरों के कारिन्दे मिलते, (जैसा कि पहले ज़िक्र हो चुका है) उनसे ये एलची नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का हाल पूछते तो वो बहकाने पर ही तैनात होते थे, उनमें से कोई हुज़ूर को जादूगर कहता, कोई तांत्रिक, कोई शायर, कोई झूठा, कोई पागल और इसके साथ यह भी कह देते कि तुम उनसे न मिलना यहीं तुम्हारे लिये बेहतर है. इसपर एलची कहते कि अगर हम मक्कए मुकर्रमा पहुंच कर बाहर उनसे मिले अपनी क़ौम की तरफ़ वापस हां तो हम बुरे एलची होंगे और ऐसा करना एलची के कर्तव्यों की अवहेलना और क़ौम की ख़यालत होगी. हमें जांच पड़ताल के लिये भेजा गया है. हमारा फ़र्ज़ है कि हम उनके अपनों और परायां सब से उनके हाल की तहकीक़ करें और जो कुछ मालूम हां उसमें क़मी बेशी किये बिना क़ौम को सूचित करें. इस ख़याल से वो लोग मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हो कर सहाबए किराम से भी मिलते थे और उनसे आपके हाल की पूछ ताछ करते थे. सहाबए किराम उन्हें तमाम हाल बताते थे और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हालात और क़मालात और कुरआन शरीफ़ के मज़ामीन से सूचित करते थे. उनका ज़िक्र इस आयत में फ़रमाया गया.

(१३) यानी ईमान लाए और वेक कर्म किये.

(१४) यानी हयाते तैय्यिबह है और फ़क़्र व विजय व रिज़क़ में बहुतात दौरेह नेअमते.

(१५) आख़िरत की दुनिया.

(१६) और यह बात जन्नत के सिवा किसी को कहीं भी हासिल नहीं.

(१७) कि वो शिर्क और कुफ़्र से पाक होते हैं और उनकी क़हरी व करनी और आचार व संस्कार और आदतें पवित्र और पाकीज़ा होती हैं. फ़रमाँबरदारी साथ होती है, हराम और वर्जित के दाग़ों से उनके कर्म का दामन मैला नहीं होता. रूह निकाले जाने के वक़्त उनको जन्नत और रिज़्वात और रहमत व करामत की ख़ुशख़बरी दी जाती है. इस हालत में मौत उन्हें ख़ुशगवार मालूम होती है और जान फ़रहत और सुख के साथ जिस्म से निकलती है और फ़रिश्ते इज़्ज़त के साथ उसे निकालते हैं. (ख़ाज़िन)

कोशिश से कि अल्लाह मुझे न उठाएगा^(१०) हां क्यों नहीं^(११) सच्चा वादा उसके जिम्मे पर लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते^(१२) ॥३८॥ इस लिये कि उन्हें साफ़ बतादे जिस बात में झगड़ते थे^(१३) और इसलिये कि काफ़िर जान लें कि वो झूठे थे^(१४) ॥३९॥ जो चीज़ हम चाहें उससे हमारा फ़रमाना यही होता है कि हम कहें होजा वह फ़ौरन हो जाती है^(१५) ॥४०॥

छटा रूकू

और जिन्होंने अल्लाह की राह में^(१) अपने घर वार छोड़े मज़लूम होकर ज़रूर हम उन्हें दुनिया में अच्छी जगह देंगे^(२) और वेशक आख़िरत का सवाब बहुत बड़ा है किसी तरह लोग जानते^(३) ॥४१॥ वो जिन्होंने सब्र किया^(४) और अपने रव ही पर भरोसा करते हैं^(५) ॥४२॥ और हमने तुमसे पहले न भेजे मगर मर्द^(६) जिनकी तरफ़ हम वही (देववाणी) करते तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं^(७) ॥४३॥ रौशन दलीलें और किताबें लेकर^(८) और ऐ मेहबूब हमने तुम्हारी तरफ़ यह यादगार उतारी^(९) कि तुम लोगों से बयान करदो जो^(१०) उनकी तरफ़ उतरा और कहीं वो ध्यान करें^(११) तो क्या जो लोग बुरे मक्र (कपट) करते हैं^(१२) इससे नहीं डरते कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धंसा दे^(१३) या उन्हें वहाँ से अज़ाब आए जहाँ से उन्हे ख़बर

النحل	३८	سورة النحل
اَيُّهَا النَّاسُ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَنْ يَمُوتُ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝		
لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يُخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَذِبِينَ ۝ إِنَّا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا لَنُبَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الدِّينِ حَسَنَةً ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَكْثَرَ لِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝		
وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رَجُلًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ فَسَأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝		
أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ		
مَزْلًا		

(१८) रिवायत है कि मौत के वक़्त फ़रिश्ता ईमान वाले के पास आकर कहता है ऐ अल्लाह के दास्त, तुझ पर सलाम और अल्लाह तआला तुझ पर सलाम फ़रमाता है और आख़िरत में उनसे कहा जाएगा...

(१९) काफ़िर क्यों ईमान नहीं लाते, किस चीज़ के इन्तिज़ार में हैं.

(२०) उनकी रूहें निकालने...

(२१) दुनिया में या क़यामत के दिन.

(२२) यानी पहली उम्मतों ने भी कि कुफ़्र और झुटलाने पर अड़े रहे.

(२३) कुफ़्र अपना कर.

(२४) और उन्होंने अपने बुरे कर्मों की सज़ा पाई.

(२५) अज़ाब.

सूरए नहल - पाँचवां रूकू

(१) बहीरा और सायबा की तरह. इससे उनकी मुराद यह थी कि उनका शिर्क करना और इन चीज़ों को ह़राम करार दे लेना अल्लाह की मर्ज़ी से है. इसपर अल्लाह तआला ने फ़रमाया.

(२) कि रसूलों को झुटलाया और ह़लाक़ को ह़राम किया और ऐसे ही हंसी मज़ाक की बातें कर्नी.

(३) सच्चाई का ज़ाहिर कर देना और शिर्क के ग़लत और बुरा होने पर सूचित करना.

(४) और हर रसूल को हुक्म दिया कि वो अपनी क़ौम से फ़रमाएं.

(५) उम्मतों —

(६) वो ईमान लाए.

(७) वो अपनी अज़ली दुश्मनी और हटधर्मी से कुफ़्र पर मरे और ईमान से मेहरूम रहे.

(८) जिन्हें अल्लाह ने ह़लाक़ किया और उनके शहर वीरान किये. उजड़ी बस्तियां उनके ह़लाक़ की ख़बर देती हैं. इसका देग़्रकर समझ लो कि अगर तुम भी उनकी तरह कुफ़्र और झुटलाने पर अड़े रहे तो तुम्हारा भी ऐसा ही अंज़ाम होता है.

(९) ऐ मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, इस हाल में कि ये लोग उनमें से हैं जिनकी गुमराही साबित हो चुकी और उनकी शक्रावत पुरानी है.

(१०) एक मुश्क़ि एक मुसलमान का कर्ज़दार था. मुसलमान ने उससे अपनी ग़्रम मांगी. बात चीन के दौरान उसने इस तरह की

न हो^(१३) ॥४५॥ या उन्हें चलते फिरते^(१४) पकड़ ले कि
थका नहीं सकते^(१५) ॥४६॥ या उन्हें नुकसान देते देते
गिरफ्तार करले कि वंशक तुम्हारा रब बहुत मेहरवान
रहमत वाला है^(१६) ॥४७॥ और क्या उन्होंने न देखा कि
जो^(१७) चीज़ अल्लाह ने बनाई है उसकी परछाईयां दाएं और
वाएं झुकती हैं^(१८) अल्लाह को सज्दा करती और वो उसके
हुजूर जलील हैं^(१९) ॥४८॥ और अल्लाह ही का सज्दा
करते हैं जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ जमीन में
चलने वाला है^(२०) और फ़रिश्ते और वो घमण्ड नहीं करते ॥४९॥
अपने ऊपर अपने रब का ख़ौफ़ करते हैं और वही करते हैं
जो उन्हें हुक्म हो^(२१) ॥५०॥

सातवाँ रूकू

अल्लाह ने फ़रमा दिया वो खुदा न ठहराओ^(१) वह तो एक
ही मअवूद है तो मुझी से डरो^(२) ॥५१॥ और उसी का है
जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और उसी की फ़रमावरदारी
अनिवार्य है, तो क्या अल्लाह के सिवा किसी दूसरे से
डरोगे^(३) ॥५२॥ और तुम्हारे पास जो नेअमत है सब
अल्लाह की तरफ़ से है फिर जब तुम्हें तकलीफ़ पहुंचती
है^(४) तो उसी की तरफ़ पनाह ले जाते हो^(५) ॥५३॥ फिर जब
वह तुम से घुराई ढाल देता है तो तुममें एक गिराह अपने

بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَشْعُرُونَ ۖ أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقْلِيهِمْ فَمَا هُمْ
بِمُعْجِزِينَ ۖ أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ ۖ فَإِنَّ رَبَّكُمْ
لَعَزِيزٌ رَحِيمٌ ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ
يَكْفُرُوا ظِلْمًا لِلَّهِ عَنِ الْبَيِّنَاتِ وَالشَّكَاكِلِ سَجْدًا لِلَّهِ
وَهُمْ ذَاخِرُونَ ۖ وَلِلَّهِ كَيْسُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةِ وَهُمْ لَا يُشْكَرُونَ
يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِنْ قُوَّتِهِ وَيَقْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۖ
وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا آلَ الْهَبَيْنِ إِنْ هِيَ إِلَّا نَسَا هُوَ إِلَهُ
وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونَ ۖ وَلَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا ۖ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ۖ وَمَا
بِكُمْ مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ
فَأَلَيْكُمْ تَجَرُّونَ ۖ ثُمَّ إِذَا كُشِفَ الضُّرُّ عَنْكُمْ إِذَا

مَنْزِل

क़सम खाई कि उसकी क़सम, जिससे मैं मरने के बाद मिलने की नमज़ा ग़्म्रता हूँ, इसपर मुश्किल न पड़ा कि क्या होगा यह ख़याल
है कि तू मरने के बाद उठेगा और मुश्किल न क़सम खा कर कहा कि अल्लाह मुझे न उठाएगा, इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया
गया।

- (११) यानी ज़ुल्म उठाएगा,
- (१२) इस उठाने की हिकमत और उसकी कुदरत, वंशक वह मुद्दों का उठाएगा,
- (१३) यानी मुद्दों को उठाने में कि वह सत्य है,
- (१४) और मुद्दों के ज़िन्दा किये जाने का इन्कार ग़लत,
- (१५) तो हमें मुद्दों का ज़िन्दा करना क्या दुश्वार है,

सूरए नहल - छठा रूकू

- (१) उसके दीन की ख़ातिर हिजरत की, क़तादा ने कहा यह आयत सहाबा के हक़ में उतरी जितपर मक्का वालों ने बहुत ज़ुल्म
किये और उन्हें दीन की ख़ातिर बतन छोड़ना ही पड़ा, कुछ उनमें से हवशा चले गये फिर वहाँ से मदीना तैय्यिबह आए और कुछ
मदीना शरीफ़ ही को हिजरत कर गए, उन्होंने,
- (२) वह मदीना तैय्यिबह है जिसको अल्लाह तआला ने उनके लिये हिजरत का शहर बनाया,
- (३) यानी काफ़िर या वो लोग जो हिजरत करने से रह गए कि इसका बदला कितना अज़ीम है,
- (४) बतन की जुदाई और काफ़िरों का ज़ुल्म और जान माल के ख़र्च करने पर,
- (५) और उसके दीन की वज़ह से जो पेश आए उसपर राज़ी हैं और दुनिया से नाता तोड़कर बिल्कुल हक़ की तरफ़ मुतपज़्जह हैं,
सालिक फे लिये यह सुलूक की चरम सीमा है,
- (६) यह आयत मक्का के मुश्किलों के ज़वाब में उतरी जिन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वमल्लम फी नबुव्वत का इस तरह
इन्कार किया था कि अल्लाह तआला की शान इससे बरतार है कि वह किसी इन्सान का रसूल बनाए, उन्हें बताया गया कि अल्लाह
को सुन्नत इसी तरह जारी है, हमेशा उसने इन्सानों में से मुद्दों ही को रसूल बनाकर भेजा,
- (७) हदीस शरीफ़ में है कि जिहालत की बीमारी का इलाज उलमा से पूछना है इसलिये उलमा से पूछो, वो तुम्हें बता देंगे कि

रव का शरीक ठहराने लगता है^(५४) कि हमारी दी हुई नअमतों की नाशकरी करें तो कुछ वरत लो^(५५) कि बहुत जल्द जान जाओगे^(५६) और अनजानी चीजों के लिये^(५७) हमारी दी हुई रोजी में से^(५८) हिस्सा मुकरर करते हैं, खुदा की कसम तुम से जरूर सवाल होना है जो कुछ झूठ बांधते थे^(५९) और अल्लाह के लिये वेदियां ठहराते हैं^(६०) पाकी है उसको^(६१) और अपने लिये जो अपना जी चाहता है^(६२) और जब उनमें किसी को वेदी होने की खुशखबरी दी जाती है तो दिन भर उसका मुंह^(६३) काला रहता है और वह गुस्सा खाता है^(६४) लोगों से^(६५) छुपता फिरता है उस वशाहत की वुराई के कारण, क्या उसे जिल्लत के साथ रखेगा या उसे मिट्टी में दबा देगा^(६६) अरे बहुत ही बुरा हुक्म लगाते हैं^(६७) जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते उन्हीं का बुरा हाल है और अल्लाह की शान सबसे बलन्द^(६८) और वही इज्जत व हिकमत वाला है^(६९)

आठवाँ सूक

और अगर अल्लाह लोगों को उनके जुल्म पर गिरफ्त करता^(१) तो ज़मीन पर कोई चलने वाला नहीं छोड़ता^(२) लेकिन उन्हें एक ठहराए हुए वादे तक मुहलत देता है^(३) फिर जब उनका वादा आएगा न एक घड़ी पीछे हटें न आगे

قَرِيبٌ مِّنْكُمْ يَرْيَهُمْ يُشْرِكُونَ ۖ لِيَكْفُرُوا بِمَا
أَنبَأَهُمْ ۖ فَتَسْتَعْوَأَ قُفُوفٌ لَّعَلَّهُمْ ۖ وَيَجْعَلُونَ
لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۖ تَأْتِيهِمْ كُشُوفُ
عَمَّا كُنتُمْ تَقْتَرُونَ ۖ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَدَنَ
سُبْحَنَهُ ۖ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُونَ ۖ وَإِذَا لُبُّوا أَحَدَهُمْ
بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهَهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۖ
يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَبِهِ ۖ أَيَسْكَهُ
عَلَىٰ هُونٍ أَمْرٌ يَدُّ شُكْلَهُ فِي الشَّرَابِ ۖ أَلَا سَاءَ مَا
يَحْكُمُونَ ۖ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
مَثَلُ الشَّوْءِ ۖ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ۖ وَلَوْ يَوَازِئُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِم مَّا
تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ يُؤَخَّرُهُمْ
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا

مَنْزِلٌ

अल्लाह की सुन्नत यँही जारी रही कि उसने मर्दों को रसूल बना कर भेजा.

(८) मुफ़सिरोँ का एक क़ौल यह है कि मानी ये हैं कि रौशत दलीलों और किताबों के जानने वालों से पूछे अगर तुम को दलील और किताब का इल्म न हो. इस आयत से इमामों की तकलीद या अनुकरण का बाजिब होना साबित होता है.

(९) यानी कुत्रआन शरीफ.

(१०) हुक्म.

(११) रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा के साथ, और उनकी तकलीफ़ के दरपै रहने हैं और छुप छुप कर फ़माद-अंगेज़ी की तदवीरें करने हैं जैसे कि मक्का के काफ़िर.

(१२) जैसे क़ासून को धंसा दिया था.

(१३) चुनावों ऐसा ही हुआ कि बद्र में हलाक किये गए जबकि वो यह नहीं समझते थे.

(१४) मक्कर और हज़र में, हर एक हाल में.

(१५) श्रुदा को अज़ाब करने से.

(१६) कि हिलम करता है और अज़ाब में जल्दी नहीं करता.

(१७) सायादार.

(१८) मुबद्द और ग़ाम.

(१९) श्रार और आजिज़ और मुतीअ और मुसश्शर.

(२०) सज़्दा दो तरह पर है, एक ताअत और इबादत का सज़्दा जैसा कि मुसलमानों का सज़्दा अल्लाह के लिये, दूसरा सज़्दा फ़कायना, फ़रमाँवरदारी व श्रुज्ज का सज़्दा, जैसा कि साया वगैरह का सज़्दा. हर चीज़ का सज़्दा उसकी हैसियत के हिसाब से है. मुसलमानों और फ़रिशों का सज़्दा इबादत और ताअत का सज़्दा है और उनके सिवा हर एक का सज़्दा फ़रमाँवरदारी और श्रुज्ज का सज़्दा है.

(२१) इस आयत से साबित हुआ कि फ़रिशें मुकल्लफ़ हैं और जब साबित कर दिया गया कि तमाम आसमान और ज़मीन की कायनात अल्लाह के हज़ूर झुकने वाली और उसकी इबादत और ताअत करने वाली हैं और सब उसके ममलूक और उसी की कुदरत और ताक़त के मानहत हैं, तो शिर्क से मना फ़रमाया.

सूरए नहल - सातवाँ रूकू

- (१) क्योंकि दो खुदा तो हो ही नहीं सकते.
- (२) मैं ही वह बरहक और सच्चा मअबूद हूँ जिसका कोई शरीक नहीं.
- (३) इसके बावजूद कि सच्चा मअबूद सिर्फ वही है.
- (४) चाहे फ़क्र की, या मर्ज की, या और कोई.
- (५) उसी से दुआ मांगते हो, उसी से फ़रियाद करते हो.
- (६) और उन लोगों का अंजाम यह होता है.
- (७) और कुछ रोज़ इस हालत में ज़िन्दगी गुज़ार लो.
- (८) कि उसका नतीजा क्या हुआ.
- (९) यानी बुतों के लिये जिनका मअबूद और नफ़ा दुक़सान पहुंचाने वाला होना उन्हें मालूम नहीं.
- (१०) यानी ख़तियों और चौपायों वगैरह में से.
- (११) बुतों को मअबूद और कुर्वत देने वाले और बुत परस्ती को खुदा का हुक्म बताकर.
- (१२) जैसे कि ख़ुज़ाअह और क़ानाह कहते थे कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं.
- (१३) वह बरतर है औलाद से और उसकी शान में ऐसा कहना निहायत बेअदबी और कुफ़्र है.
- (१४) यानी कुफ़्र के साथ, यह हद से ज़्यादा बदतमीज़ी भी है कि अपने लिये बेटे पसन्द करते हैं और बेटियाँ नापसन्द करते हैं और अल्लाह तआला के लिये, जो मुतलक औलाद से पाक है, औलाद का साबित करना ऐब लगाना है, उसके लिये औलाद में भी वह साबित करते हैं जिस को अपने लिये तुच्छ और शर्म का कारण मानते हैं.
- (१५) ग़म से.
- (१६) शर्म के मार.
- (१७) जैसा कि मुदर व ख़ुज़ाअह और तमीम के काफ़िर लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ देते थे.
- (१८) कि अल्लाह तआला के लिये बेटियाँ साबित करते हैं जो अपने लिये उन्हें इस क़द्र नागवार हैं.
- (१९) कि वह वालिद और बलद सब से पाक और मुनज़ज़ है. कोई उसका शरीक नहीं, ज़लाल और कमाल की सारी विशेषताओं का मालिक.

सूरए नहल - आठवाँ रूकू

- (१) यानी गुनाहों पर पकड़ और अज़ाब में जल्दी फ़रमाता.
- (२) सबको हलाक कर देता, ज़मीन पर चलने वाले से या काफ़िर मुराद है जैसा कि दूसरी आयत में आया है "इन्ना शरद दबाब्ने इन्दल्लाहिल लज़ीना कफ़रु" (बेशक सब जानवरों में बदतर अल्लाह के नज़दीक वो हैं जिन्होंने कुफ़्र किया - सूरए अनफ़ाल, आयत ५५) या ये मानी हुए कि धरती पर किसी चलने वाले को बाकी नहीं छोड़ता जैसा कि नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में जो कोई ज़मीन पर था, उन सब को हलाक कर दिया. सिर्फ़ वही बाकी रहे जो ज़मीन पर न थे, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के साथ किशती में थे. एक क़ौल यह भी है कि मानी ये हैं कि ज़ालिम को हलाक कर देता और उनकी दरख़्त कट जातीं फिर ज़मीन में कोई दाक़ी न रहता.
- (३) अपने फ़ज़ल, करम और हिल्म से ठहराए. वादे से या उम्र का अन्त मुराद है या क़यामत.

बढ़ें (६१) और अल्लाह के लिये वह ठहराते हैं जो अपने लिये नागवार है (६२) और उनकी ज़बाने झूठों कहती हैं कि उनके लिये भलाई है, (६३) तो आप ही हुआ कि उनके लिये आग है और वो हव से गुज़ारे हुए हैं (६४) खुदा की क़सम हमने तुमसे पहले कितनी उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो शैतान ने उनके कौतुक उनकी आँखों में भले कर दिखाए (६५) तो आज वही उनका रफ़ीक़ है (६६) और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है (६७) और हमने तुमपर यह किताब न उतारी (६८) मगर इसलिये कि तुम लोगों पर रौशन कर दो जिस बात में इख़िलाफ़ करें (६९) और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिये (७०) और अल्लाह ने आसमानों से पानी उतारा तो उससे ज़मीन को (७१) ज़िन्दा कर दिया उसके मरे पीछे (७२) वेशक़ इसमें निशानी है उनको जो कान रखते हैं (७३) (६५)

नवाँ सूक़

और वेशक़ तुम्हारे लिये चौपायों में निगाह हासिल होने की जगह है (७४) हम तुम्हें पिलाते हैं उस चीज़ में से जो उनके पेट में है गोबर और खून के बीच में से खालिस दूध गले से

يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ۖ وَيَجْعَلُونَ
لِللّٰهِ مَا يَكْفُرُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكُذْبَ أَنَّ
لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۖ لَا جَرَءَ أَنْ لَهُمُ النَّارُ وَأَنَّهُمْ
مُّفْرَطُونَ ۖ تَاللّٰهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ
مِّن قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ
وَلِيَّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ وَمَا
أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي
اخْتَلَفُوا فِيهِ ۖ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۖ
وَاللّٰهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْيَرَ بِهِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْنِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ
يَسْمَعُونَ ۖ وَإِن لَّكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ
نُشْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ ۖ مِن بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ
لَبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ ۖ وَمِنْ ثَمَرَاتِ

منزل

(४) यानी बेटियाँ और शरीक़.

(५) यानी जन्नत. काफ़िर अपने कुफ़्र और बोहतान और खुदा के लिये बेटियाँ बताने के बावजूद अपने आप को सच्चाई पर समझते थे और कहते थे कि अगर मुहम्मद सच्चे हों और सृष्टि मरने के बाद फिर उठाई जाए तो जन्नत हमीं को मिलेगी क्योंकि हम सच्चाई पर हैं. उनके बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(६) जहन्नम में ही छोड़ दिये जाएंगे.

(७) और उन्होंने अपनी बुराईयों को नेकियाँ समझा.

(८) दुनिया में उसी के कहे पर चलते हैं. और जो शैतान को अपना दोस्त और मालिक बनाए वह ज़रूर ज़लील और ख़्बार हो. या ये मानी हैं कि आख़िरत के दिन शैतान के सिवा उन्हें कोई दोस्त और साथी न मिलेगा और शैतान खुद ही अज़ाब में गिरफ़्तार होगा, उनकी क्या मदद कर सकेगा.

(९) आख़िरत में.

(१०) यानी क़ुरआन शरीफ़.

(११) दीन के कामों से.

(१२) ज़िन्दगी से हरियाली और ताज़गी प्रदान करके.

(१३) यानी शुष्क और उजाड़ होने के बाद.

(१४) और सुनकर समझते हैं और गौर करते हैं वो इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि जो सच्ची कुदरत वाला ज़मीन को उसकी मौत यानी उगाने की शक्ति नष्ट हो जाने के बाद फिर ज़िन्दगी देता है वह इन्सान को उसके मरने के बाद वेशक़ ज़िन्दा करने की कुदरत रखता है.

सूरए नहल - नवाँ सूक़

(१) अगर तुम इसमें गौर करो तो बेहतर नतीजे हासिल कर सकते हो और अल्लाह की हिकमत के चमत्कार पर तुम्हें आग़ही हासिल हो सकती है.

सहल उतरता पीने वालों के लिये^(२) (६६) और खजूर और अंगूर के फलों में से^(३) कि उससे नबीज़ (मदिरा) बनाते हो और अच्छा रिज़क^(४) वेशक उसमें निशानी है अक्ल वालों को (६७) और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी को इलहाम (गैबी निर्देश) किया कि पहाड़ों में घर बना और दरख्तों में और छतों में (६८) फिर हर क्रिस्म के फल में से खा और^(५) अपने रब को राहें चल कि तेरे लिये नर्म व आसान हैं^(६) उसके पेट से एक पीने की चीज़^(७) रंग विरंगी निकलती है^(८) जिसमें लोगों की तंदुरुस्ती है^(९) वेशक इसमें निशानी है^(१०) ध्यान करने वालों को^(११) (६९) और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया^(१२) फिर तुम्हारी जान क़वज़ (निकालेगा) करेगा^(१३) और तुम में कोई सबसे नाकिस (अकर्मण्य) उम्र की तरफ़ फेरा जाता है^(१४) कि जानने के बाद कुछ न जाने^(१५) वेशक अल्लाह सब कुछ जानता है सब कुछ कर सकता है (७०)

दसवाँ रूकू

और अल्लाह ने तुम में एक को दूसरे पर रिज़क में बड़ाई दी^(१) तो जिन्हें बड़ाई दी है वो अपना रिज़क अपने बांटी

التَّحِيلُ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝
وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ۝
ثُمَّ كُلِي مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلًّا يَخْرِجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝
وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ ۝ وَمِنْكُمْ مَّنْ يَبْذُلْ إِلَىٰ آثِلِ الْعُمَىٰ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۝ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝
وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۝ فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا بِرِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ۝ أَفَبِنِعْمَةِ اللَّهِ

(२) जिसमें किसी चीज़ की मिलावट का सवाल नहीं जबकि जानवर के जिस्म में गिज़ा की एक ही जगह जहाँ चारा घास भूसा पहुंचता है और दूध खून गोबर सब उसी गिज़ा से पैदा होते हैं. उनमें से एक दूसरे से मिलने नहीं पाता. दूध में न खून की रंगत आपाती है न गोबर की बू. अत्यन्त साफ़ और उमदा निकलता है. इससे अल्लाह की हिक्मत का चमत्कार ज़ाहिर है. ऊपर मसअला उठाए जाने का बयान हां चुका यानी मुर्दों का ज़िन्दा किये जाने का. काफ़िर इससे इन्कारी थे और इसमें दो संदेह पेश थे एक तो यह कि जो चीज़ फ़ासिद हो गई और उसकी ज़िन्दगी जाती रही उसमें दोबारा फिर ज़िन्दगी किस तरह लौटेगी. इस शुबह को इस आयत से दूर फ़रमा दिया गया कि तुम देखते रहो कि हम मुर्दा ज़मीन को शुष्क होने के बाद आसमान से पानी बरसा कर ज़िन्दगी अता फ़रमा दिया करते हैं. तो कुदरत का यह फ़ैज़ देखने के बाद किसी मज़लूक का मरने के बाद ज़िन्दा होना ऐसे कुदरत रखने वाले की ताक़त से दूर नहीं. दूसरा शुबह काफ़िरों का यह था कि जब आदमी मर गया और उसके शरीर के अंग विखर गए और ख़ाक में मिल गए, वो अंग किस तरह जमा किये जाएंगे और ख़ाक के ज़रों से उन्हें किस तरह अलग किया जाएगा. इस आयत में जो साफ़ दूध का बयान फ़रमाया उस में गौर करने से वह शुबह बिल्कुल मिट जाता है कि अल्लाह की कुदरत की यह शान तो ग़ोज़ाना देखने में आती है कि वह गिज़ा के मिले जुले कणों से ख़ालिस दूध निकालता है और उसके आस पास की चीज़ों की मिलावट तक उसमें नहीं हो पाती. उस हिक्मत वाले रब की कुदरत से क्या दूर है कि इन्सान शरीर के अंगों के विखर जाने के बाद फिर इक़ठा फ़रमा दे. शाफ़ीक़ बलख़्सी रदियल्लाहो अन्हां ने फ़रमाया कि नेअमत की सम्पूर्णता यही है कि दूध ख़ालिस नज़र आए और उसमें खून और गोबर के रंग और बू का नाम तक न हो बरना नेअमत पूरी न होगी और नबीअत उसका कुबूल न करेगी जैसी साफ़ नेअमत रब की तरफ़ से पहुंचती है, बन्दे को लाज़िम है कि वह भी परवर्दिगार के साथ सच्चे दिल से मामला करे और उसके कर्म दिखावे और नफ़स के बहकाव की मिलावट से पाक साफ़ हां ताकि कुबूल किये जाएं.

(३) हम तुम्हें रस पिलाते हैं.

(४) यानी सिक़ा और राव और ख़ुर्मा और मक्ख़न. मक्ख़न और अंगूर बौरह का रस जब इस क़दर पका लिया जाए कि दो तिहाई जल जाए और एक तिहाई बाक़ी रहे और तेज़ हो जाए उसको नबीज़ कहते हैं. यह नशे की हद तक न पहुंचे ओर ख़ुमार न जाए तो शीख़रन के नज़दीक हलाल है और यही आयत और बहुत सी हदीसों उनकी दलील हैं.

(५) फ़लों की तलाश में.

(६) अल्लाह के फ़ज़ल से जिनका तुझे इलहाम किया गया है यहाँ तक कि तुझे चलता फिरता दुश्वार नहीं और तू कितनी ही दूर निकल जाए, राह नहीं बहकती और अपनी जगह वापस आ जाती है.

गुलामों को न फेर देंगे कि वो सब उसमें बराबर हो जाएँ^(८) तो क्या अल्लाह की नेअमत से इन्कार करते हैं^(९) ॥७१॥ और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी जिन्स से औरतें बनाई और तुम्हारे लिये तुम्हारी औरतों से बेटे और पोते नवासे पैदा किये और तुम्हें सुथरी चीज़ों से रोज़ी दी^(१०) तो क्या झूठी बात^(११) पर यकीन लाते हैं और अल्लाह के फ़ज़ल^(१२) से इन्कारी होते हैं^(१३) ॥७२॥ और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं^(१४) जो उन्हें आसमान और ज़मीन से कुछ भी रोज़ी देने का इख़्तियार नहीं रखते न कुछ कर सकते हैं^(१५) ॥७३॥ तो अल्लाह के लिये मानिदा (समान) न ठहराओ^(१६) वेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते^(१७) ॥७४॥ अल्लाह ने एक कहावत बयान फ़रमाई^(१८) एक बन्दा है दूसरे की मिल्क आप कुछ मक़दूर (सामर्थ्य) नहीं रखता और एक वह जिसे हमने अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी अता फ़रमाई तो वह उसमें से खर्च करता है छुपे और ज़ाहिर^(१९) क्या वो बराबर हो जाएंगे^(२०) सब ख़ूबियां अल्लाह को हैं वल्कि उनमें अक्सर को ख़बर नहीं^(२१) ॥७५॥ और अल्लाह ने कहावत बयान फ़रमाई दो मर्द एक गूंगा जो कुछ काम नहीं कर सकता^(२२) और वह अपने आक्रा पर बोझ है जिपर भेजे कुछ भलाई न

يَجْعَلُ اللَّهُ ۞ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ
أَزْوَاجًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ وَ
حَفَدَةً وَزَكَّرَ لَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ أَقْبَالَ بَاطِلٍ
يُؤْمِنُونَ وَيَنْصَحَتِ اللَّهُ هُمْ يَكْفُرُونَ ۞ وَ
يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْبُلِكُ لَهُمْ رِزْقًا
مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ۞
فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ إِنِ اللَّهُ يَعْلَمُ وَ
أَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۞ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا
مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنْ
رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا هَلْ
يَسْتَوُونَ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۞
وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا تَجْلِينَ أَحَدُهُمَا أَبْكُمُ لَا
يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ كَلٌّ عَلَى مَوْلَاهُ أَيْمًا

مَثَلًا

(७) याती शहद.

(८) सफ़ेद, पीला और लाल.

(९) और सबसे ज़्यादा फ़ायदा पहुंचाने वाली दवाओं में से है और बहुत सी मअज़ूनों याती चयनप्राप्त में शामिल किया जाता है.

(१०) अल्लाह तआला की कुदरत और हिकमत पर.

(११) कि उसने एक कमज़ोर मक्खी को ऐसी सूझ बूझ अता की और ऐसी शक्तियाँ प्रदान कीं. पाक है वह ज्ञात और अपनी सिफ़ात में शरीक से मुतज़ज़ह. इस से फ़िक्र करने वालों को इसपर भी तंबीह हो जानी है कि वह अपनी भरपूर कुदरत से एक अदना कमज़ोर सी मक्खी को यह सिफ़त अता फ़रमाता है कि वह विभिन्न प्रकार के फूलों और फलों से ऐसे स्वादिष्ट अंग हासिल करे जिनसे बढ़िया शहद बने जो निहायत ख़ुशगवार हो, पाक साफ़ हो, ख़राब होने और सड़ने से दूर हो. तो जो कुदरत और हिकमत वाली ज्ञात एक मक्खी को इस मादें के जमा करने की कुदरत देती है वह अगर मरे हुए इन्सान के बिखरे हुए अंगों का जमा कर दे तो उसकी कुदरत से क्या दूर है. मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने का असंभव समझने वाले कितने मूर्ख हैं. इसके बाद अल्लाह तआला अपने बन्दों पर अपनी कुदरत की वो निशानियाँ ज़ाहिर फ़रमाता है जो ख़ुद उनमें और उनके हालात में नुमायँ हैं.

(१२) शून्य से और नाश के बाद ज़िन्दगी अता फ़रमाई, कैसी अनाखी कुदरत है.

(१३) और तुम्हें ज़िन्दगी के बाद मौत देगा जब तुम्हारी मुदत पूरी हो जो उसने निर्धारित फ़रमाई है चाहे बचपन में या जवानी में या बुढ़ापे में.

(१४) जिसका ज़माना इन्सानी उम्र के दर्जों में साठ साल के बाद आता है कि अंग और शक्तियाँ सब नाकारा हो जाती है और इन्सान की यह हालत हो जाती है.

(१५) और नासमझी में बच्चों से गया गुज़रा हो जाए. इन परिवर्तनों में अल्लाह की कुदरत के कैसे चमत्कार दिखने में आते हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मुसलमान अल्लाह के फ़ज़ल से इससे मेहफूज़ हैं. लम्बी उम्र और ज़िन्दगी से उन्हें अल्लाह के हुज़ूर में बुज़ुर्गी और अक़ल और मअरिफ़त की ज़ियादती हासिल होती है और हो सकता है कि अल्लाह की तरफ़ लौ लगाने का ऐसा ग़लवा हो कि इस दुनिया से रिश्ता कट जाए और मक्बूल बन्दा दुनिया की तरफ़ देखने से परहेज़ करे. अक़ममा का क़ौल है कि ज़ियने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा वह इस तुच्छ उम्र की हालत को न पहुंचेगा कि इल्म के बाद केवल वे इल्म हो जाए.

सूरए नहल - दसवाँ सूक़

(१) तो किसी को मानी किया, किसी को फ़कीर, किसी को मालदार, किसी को नादार, किसी को मालिक, किसी का गुलाम.

लाए^(१) क्या बराबर हो जाएगा यह और वह जो इन्साफ का हुक्म करता है और वह सीधी राह पर है^(२) ॥ ७६ ॥

ग्यारहवाँ सूक

और अल्लाह ही के लिये हैं आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें^(३) और क़यामत का मामला नहीं मगर जैसे एक पलक का मारना वल्कि उससे भी क़रीब^(४) वेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है ॥ ७७ ॥ और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट से पैदा किया कि कुछ न जानते थे^(५) और तुम्हें कान और आँखें और दिल दिये^(६) कि तुम एहसान मानो^(७) ॥ ७८ ॥ क्या उन्होंने परिन्दे न देखे हुक्म के बांधे आसमान की फ़ज़ा में, उन्हें कोई नहीं रोकता^(८) सिवा अल्लाह के, वेशक इसमें निशानियाँ हैं ईमान वालों का^(९) ॥ ७९ ॥ और अल्लाह ने तुम्हें घर दिये बसने को^(१०) और तुम्हारे लिये चौपायों की खालों से कुछ घर बनाए^(११) जो तुम्हें हलके पड़ते हैं तुम्हारे सफ़र के दिन और मंज़िलों पर ठहरने के दिन और उनकी ऊन और ववरी और वालों से कुछ गृहस्थी का सामान^(१२) और बरतने की चीज़ें एक वक़्त तक ॥ ८० ॥

يُوجِبُهُ لَا يَأْتِ بِغَيْرِ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ
يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ وَاللَّهُ
غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا
لَهُ الْبَصَرُ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۖ وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا
تَعْلَمُونَ شَيْئًا ۖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ
وَالْأَفْئِدَةَ ۖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۖ أَلَمْ يَزُوا إِلَى
الظَّالِمِينَ مُسْحَرِينَ فِي جَوِّ السَّمَاءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا
اللَّهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۖ وَاللَّهُ
جَعَلَ لَكُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمْ
مِنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ
ظَفَرِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۖ وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَ
أَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا إِلَى حِينٍ ۖ

مَزَل

(२) और दासी गुलाम आक्राओं के शरीक हो जाएं. जब तुम अपने गुलामों को अपना शरीक बनाना ग़बारा नहीं करते तो अल्लाह के बन्दों और उसके ममलूकों को उसका शरीक टहरावा कैसे ग़बारा करते हो. सुक़ानल्लाह ! यह बुन परस्ती का केसा उमदा, दिल में घर कर लंने वाला, और समझ में आ जाने वाला रद है.

(३) कि उसको छाड़कर मख़लूक को पूजते हैं.

(४) क्रिम क्रिम के ग़ल्लों, फ़लों, मेवों, खाने पीने की चीज़ों से.

(५) यानी शिक और बुन परस्ती.

(६) अल्लाह के फ़ज़ल और नअमत से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुबारक ज़ान या इस्लाम मुराद है. (मदारिक)

(७) यानी बुतों को.

(८) उसका किसी को शरीक न करो.

(९) यह कि.

(१०) जैसे चाहता है इस्तेमाल करता है. तो वह आजिज़ ममलूक गुलाम और यह आज़ाद मालिक सान्निधे माल जो अल्लाह के फ़ज़ल से क़ुदरत और इज़्तिहार रखता है.

(११) हरगिज़ नहीं. तो जब गुलाम और आज़ाद बराबर नहीं हो सकते, जबकि दोनों अल्लाह के बन्द हैं, तो पैदा करने वाले, मालिक, क़ुदरत वाले अल्लाह के साथ बेक़ुदरत और बेइज़्तिहार बुन कैसे शरीक हो सकते हैं और उनको उसके जैसा करार देना केसा बड़ा जुल्म और जिहालत है.

(१२) कि ऐसे खुले प्रमाण और साफ़ तर्क के हांतें हुए शिक करना कितने बड़े बयाल और अज़ाब का कारण है.

(१३) न अपनी किसी से कह सके न दूसरे की समझ सकें.

(१४) और किसी काम न आए. यह मिसाल काफ़िर की है.

(१५) यह मिसाल ईमान वालों की है. मानी ये हैं कि काफ़िर नाकारा गूंग गुलाम की तरह है. वह किसी तरह मुसलमान की मिसल नहीं हो सकता जो इन्साफ़ का हुक्म करता है और सीधी राह पर क़ायम है. कुछ मुफ़ससिरों का क़ौल है कि गूंग नाकारा गुलाम से बुतों का उपमा दी गई और इन्साफ़ का हुक्म देना अल्लाह की शान का बयाल हुआ. इस सूरा में मानी ये हैं कि अल्लाह नआला के साथ बुतों को शरीक करना ग़लत है क्योंकि इन्साफ़ क़ायम करने वाले बादशाह के साथ गूंग और नाकारा गुलाम का क्या जोड़.

सूरए नहल - ग्यारहवाँ सूक

(१) इसमें अल्लाह तआला के क़माल इल्म का बयान है कि वो सारे अज़ाद का जानने वाला है. उसपर कोई छपने वाली चीज़

और अल्लाह ने तुम्हें अपनी बनाई हुई चीज़ों^(११) से साए दिये^(१२) और तुम्हारे लिये पहानों में छुपने की जगह बनाई^(१३) और तुम्हारे लिये कुछ पहनावे बनाए कि तुम्हें गर्मी से बचाए और कुछ पहनावे^(१४) कि लड़ाई में तुम्हारी हिफाज़त करें^(१५) यूँही अपनी नेअमत तुम पर पूरी करता है^(१६) कि तुम फ़रमान मानो^(१७) ﴿८१﴾ फिर अगर वो मुंह फेरें^(१८) तो ऐ मेहबूब तुम पर नहीं मगर साफ़ पहुँचा देना^(१९) ﴿८२﴾ अल्लाह की नेअमत पहचानते हैं^(२०) फिर उसके इन्कारी होते हैं^(२१) और उनमें अकसर काफ़िर हैं^(२२) ﴿८३﴾

बारहवाँ सूक़

और जिस दिन हम उठाएंगे हर उम्मत में से एक गवाह^(२) फिर काफ़िरों को न इजाज़त हो (३) न वो मनाए जाएं^(४) ﴿८४﴾ और जुल्म करने वाले^(५) जब अज़ाब देखेंगे उसी वक़्त से न वह उनपर से हटका हों न उन्हें मुहलत मिले^(६) और शिर्क करने वाले जब अपने शरीकों को देखेंगे^(७) कहेंगे ऐ हमारे रब ये हैं हमारे शरीक कि हम तेरे सिवा पूजते थे तो वो उनपर बात फेंकेंगे कि तुम वेशक झूठे हो^(८) ﴿८६﴾ और उस दिन^(९) अल्लाह की तरफ़ आजिज़ी (विनीतता) से

النحل

३८५

مكتسب

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُمْ
مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيَكُمُ
الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيَكُمُ بَاسِكُمْ كَذٰلِكَ يَتِمُّ
نِعْمَتُهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَسْلِمُونَ ۝ ۙ فَاَن تَوَلَّوْا
فَاَنَّا عَلَيَّكَ الْبَلَدُ الْبَیْنُ ۝ يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ
اللّٰهِ ثُمَّ يَنكُرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمْ الْكَفَرُونَ ۝ ۙ وَيَوْمَ
نُبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝ ۙ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
الْعَذَابَ فَلَا يَخَفُّ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝
وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اٰسْرَكُوْا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا
هٰؤُلَاءِ شُرَكَائُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ
فَاَلْقُوا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ تَكْذِبُوْنَ ۝ ۙ وَالْقَوْلُ
اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ السَّامِ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوْا

مَعْلُومٌ

छुपी नहीं रह सकती. कुछ मुफ़सिरो का क़ौल है कि इस से मुग़द क़यामत का इल्म है.

(२) क्योंकि पलक मारना भी समय चाहता है जिसमें पलक की हरकत हासिल हो और अल्लाह तआला जिस चीज़ का हाना चाहे, वह 'कुन' फ़रमाते ही हो जाती है.

(३) और अपनी पैदाइश की शुरुआत और बुनियादी प्रकृति में इल्म और मअरिफ़त से ख़ाली थे.

(४) कि इन से अपनी पैदाइशी अज्ञानता और जिहालत दूर करा.

(५) और इल्म व अमल से फ़ैज़ उठाकर देने वाले का शुक्र बजा लाओ और उसकी इबादत में लग जाओ और उसकी नेअमतों के हुक्क अदा करो.

(६) गिरन से जबकि ज़िम्मा, जां प्रकृति से भारी है, गिरना चाहता है.

(७) कि उसने उन्हें ऐसा पैदा किया कि वह हवा में उड़ सकते हैं और अपने भारी वजन की प्रवृत्ति के खिलाफ़ हवा में टहर रहते हैं, गिरते नहीं. और हवा को ऐसा पैदा किया कि इसमें उनकी उड़ान मुमकिन है. ईमानदार इस में गौर करके अल्लाह की क़दरत का ऐतिराफ़ करते हैं.

(८) जिनमें तुम आराम करने हो.

(९) तम्बू या ख़ैमे वगैरह की तरह.

(१०) बिछाने ओढ़ने की चीज़ें. यह आयत अल्लाह की नेअमतों के बयान में है, मगर इससे इशारे क़ तौर पर ऊन और पशमीन और बालों की तहारत और उनसे नफ़ा उठाने की इजाज़त साबित होती है.

(११) मकानों, दीवारों, छतों, दरख़्तों और बादल वगैरह.

(१२) जिसमें तुम आराम करते हो.

(१३) सार वगैरह कि अमीर गरीब सब आराम कर सकें.

(१४) ज़िरह और वाज़ूबन्द वगैरह.

(१५) कि तीर तलवार नेज़ वगैरह से बचाव का सामान हो.

(१६) दुनिया में तुम्हारी ज़रूरतों के साधन पैदा फ़रमाकर.

(१७) और उसकी नेअमतों का ऐतिराफ़ करके ईमान लाओ और सच्चा दीने इस्लाम क़बूल करो.

(१८) और ऐ सैयद आलम सल्लल्लाहु अलैका वसल्लम, वो आप पर ईमान लाते और आपकी तरदीक़ करने से मुंह मोड़ें और अपने कुफ़्र पर डटे रहें.

(१९) और जब आपने अल्लाह का संदेश पहुँचा दिया तो आपका काम पूरा हो चुका और न मानने का बवाल उनकी गर्दन पर रहा.

करके तोड़ दिया^(१) अपनी क्रसमें आपस में एक वेअस्तल बहाना बनाते हो कि कहीं एक गिरोह दूसरे गिरोह से ज्यादा न हो^(१०) अल्लाह तो इससे तुम्हें आजमाता है,^(११) और जरूर तुमपर साफ ज़ाहिर कर देगा क़यामत के दिन^(१२) जिस बात में झगड़ते थे^(१३) और अल्लाह चाहता तो तुमको एक ही उम्मत करदेता^(१४) लेकिन अल्लाह गुमराह करता है^(१५) जिसे चाहे और राह देता है^(१६) जिसे चाहे, और जरूर तुमसे^(१७) तुम्हारे काम पूछे जाएंगे^(१८) और अपनी क्रसमें आपस में वेअस्तल बहाना न बना लो कि कहीं कोई पाँव^(१९) जमने के बाद न डगमगाए और तुम्हें बुराई चखनी हो^(२०) बदला उसका कि अल्लाह की राह से रोकते थे और तुम्हें बड़ा अज़ाब हो^(२१) और अल्लाह के एहद पर थोड़े दाम मोल न लो,^(२२) बेशक वह^(२३) जो अल्लाह के पास है तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानते हो^(२४) जो तुम्हारे पास है^(२५) हो चुकेगा और जो अल्लाह के पास है^(२६) हमेशा रहने वाला है और जरूर हम सब करने वालों को उनका वह सिला देंगे जो उनके सब से अच्छे काम के क़ाबिल हो^(२७) जो अच्छा काम करे

يَقُولُ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَعٌ مِنْ أُمَّةٍ
إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۖ وَلِيُبَيِّنَ لَكُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يَصْطَلُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَ
يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۖ وَلَتَسْتَطْعْنَ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ
وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمُ
بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا الشَّوْءَ ۖ مَا صَدَقْتُمْ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ وَلَا تَشْتَرُوا
بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ
لَكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ مَا عِنْدَكُمْ يَنْقَدُ
وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۖ وَلَنَجْزِيَنَ الَّذِينَ صَبَرُوا
أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ مَنْ عَمِلَ
صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْشِئَ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ

مَنْ لَمْ

- सूरए अनआम, आयत ३८). तिरमिज़ी की हदीस में है कि सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पेश आने वाले फ़ितनो की ख़बर दी. सहाबा ने उनसे छुटकारे का तरीक़ा दरियाफ़्त किया. फ़रमाया, अल्लाह की किताब में तुम से पहले बाकिआत की भी ख़बर है और तुमसे बाद के बाकिआत की भी. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है फ़रमाया जो इल्म चाहे वह क़ुरआन को लाज़िम कर ले. इसमें अगलों और पिछलों की ख़बरें हैं. इमाम शाफ़ई रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि उम्मत के सारे उलूम हदीस की शरह हैं और हदीस क़ुरआन की. यह भी फ़रमाया कि नबीये करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जो कोई हुक्म भी फ़रमाया वह वही था जो आपको क़ुरआन शरीफ़ से मालूम हुआ. अबूबक्र बिन मुजाहिद से मन्कूल है उन्होंने एक दिन फ़रमाया कि दुनिया में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो अल्लाह की किताब यानी क़ुरआन शरीफ़ में बयान न हुई हो. इसपर किसी ने उनसे कहा, सरायों का ज़िक्र कहीं है. फ़रमाया इस आयत में "لَيْسَ أَلَيْكُمُ جُنَاحٌ أَنْ تَقُولُوا هَذَا مِثْلُ مَا قُلْنَا لَكُمْ" (इसमें तुमपर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो ख़ास किसी की सुकूनत के नहीं और उनके घरतने का तुम्हें इस्तिथार है - सूरए बूर, आयत २९) इब्ने अबुल फ़ज़ल मसी ने कहा कि अगलों पिछलों के तमाम उलूम क़ुरआन शरीफ़ में हैं. गरज़ यह किताब सारे उलूम की जमा करने वाली है. जिस किसी को इसका जितना इल्म मिला है, उतना ही जानता है.

सूरए नहल - तेरहवाँ रूकू

(१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इन्साफ़ तो यह है कि आदमी "ला इलाहा इल्लल्लाह" की गवाही दे और नेकी और फ़ज़्र अदा करे. आप ही से एक और रिवायत है कि इन्साफ़ शिर्क का तर्क करना और नेकी अल्लाह की इस तरह इबादत करना गोया वह तुम्हें देख रहा है और दूसरों के लिये वही पसन्द करना जो अपने लिये पसन्द करते हो. अगर वह मूмин हो तो उसके ईमान की बरकतों की तरक्की तुम्हें पसन्द हो और अगर काफ़िर हो तो तुम्हें यह पसन्द आए कि वह तुम्हारा इस्लामी भाई हो जाए. उन्हीं से एक और रिवायत है उसमें है कि इन्साफ़ तौहीद है और नेकी इस्लाम. इन तमाम रिवायतों के बयान करने का ढंग अगरचे जुदा जुदा है लेकिन मतलब और तात्पर्य एक ही है.

(२) और उनके साथ अनुकंपा और नेक सुलूक करने का.

(३) यानी हर शर्मनाक और ख़राब क़ौल और काम.

(४) यानी शिर्क और कुफ़्र और गुनाह और शरीअत द्वारा मना की गई सारी बातें.

(५) यानी जुल्म और अहंकार से. इब्ने ऐनियाने इस आयत की तफ़सीर में कहा कि इन्साफ़ ज़ाहिर और बातिन दोनों में बराबर सच्चाई और फ़रमाँबरदारी विधानों को कहते हैं और एहसान यह है कि बातिन का हाल ज़ाहिर से बेहतर हो और बेहयाई, बुरी बात

मर्द हो या औरत ओर हो मुस्लमान^(१०) तो जरूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलाएंगे, और जरूर उन्हें उनका नेग देंगे जो उनके सब से बेहतर काम के लायक हो^(११) तो जब तुम कुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह मांगो शैतान मरदूद से^(१२) (९८) वेशक उसका कोई क़ाबू उनपर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं^(१३) (९९) उसका क़ाबू तो उनहीं पर है जो उससे दोस्ती करते हैं और उसे शरीक ठहराते हैं^(१००)

चौदहवाँ सूक़

और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलें^(१) और अल्लाह ख़ूब जानता है जो उतारता है^(२) काफ़िर कहें तुम तो दिल से बना लाते हो^(३) बल्कि उनमें अक्सर को जानकारी नहीं^(४) (१०१) तुम फ़रमाओ इसे पाकीज़गी (पवित्रता) की सूह^(५) ने उतारा तुम्हारे रब की तरफ़ से ठीक ठीक कि इससे ईमान वालों को अडिग करे और हिदायत और खुशख़बरी मुसलमानों को^(६) (१०२) और वेशक हम जानते हैं कि वो कहते हैं यह तो कोई आदमी सिखाता है, जिसकी तरफ़ ढालते हैं उसकी ज़बान अजमी है और यह

حَيَوَةٌ طَيِّبَةً ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ
بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۚ إِنَّهُ لَكَيْسٌ لَّهِ
سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۚ
إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ هُمْ
بِهِ مُشْرِكُونَ ۚ وَإِذَا بَدَلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ
وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا يُزِيلُ ۚ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ ۚ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۚ قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ
الْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا
وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ۚ وَلَقَدْ نَعْلَمُ
أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي
يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْصَىٰ وَهَذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ
مُّبِينٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللّٰهِ

और सरकशी यह है कि ज़ाहिर अच्छा हो और बातिन ऐसा न हो. कुछ मुफ़ससिरो ने फ़रमाया इस आयत में अल्लाह तआला ने तीन चीज़ों का हुक्म दिया और तीन से मना फ़रमाया. इन्साफ़ का हुक्म दिया और वह न्याय और मसावात यानी बराबरी है कहनी और करनी में. इसके मुकाबले में फ़हश यानी बेहयाई है वह बुरे कर्म और बुरे बोल हैं. और एहसान का हुक्म फ़रमाया. वह यह है कि जिसने जुल्म किया उसको माफ़ करो और जिसने बुराई की उसके साथ भलाई करो. इसके मुकाबले में मुनकर यानी बुरी बात है यानी एहसान करने वाले के एहसान का इन्कार करना. तीसरा हुक्म इस आयत में रिश्तेदारों को देने और उनके साथ मेहरबानी और शफ़क़त और महबूत का फ़रमाया, इसके मुकाबिल बग़्ग है और वह अपने आप को ऊंचा ख़ींचना और अपने सगे सम्बन्धियों के अधिकार ख़त्म करना है. इब्न मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि यह आयत तमाम अच्छाई बुराई के बयान की जमा करने वाली है. यही आयत हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रदियल्लाहो अन्हो के इस्लाम का कारण बनी जो फ़रमाते हैं कि इस आयत के उतरने से ईमान में दिल में जड़ पकड़ गया. इस आयत का असर इतना ज़बरदस्त हुआ कि बलीद बिन मुगीरा और अबू जहल जैसे सख़्त दिल काफ़िरों की ज़बानों पर भी इसकी तअरीफ़ आ ही गई. इसलिये यह आयत हर ख़ुल्ब के आख़िर में पढ़ी जाती है.

(६) यह आयत उन लोगों के बारे में उतरी जिन्होंने रसूलु करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इस्लाम पर बैअत की थी. उन्हें अपने एहद को पूरा करने का हुक्म दिया गया और यह हुक्म इन्सान के हर नेक एहद और वादे की शामिल है.

(७) उसके नाम की क़सम खाकर.

(८) तुम एहद और क़समें तोड़कर.

(९) मक्कए मुकर्रमा में रीतह बित्ने अब्र एक औरत थी जिसकी तबीयत में बहुत वहम था और अक़्त में फ़ुतूर. वह दोपहर तक मेहवत करके सूत काता करती और अपनी दासियों से भी क़्तवाती और दोपहर के वक़्त उस काते हुए सूत की तोड़ डालती और दासियों से भी तोड़वाती. यही उसका रोज़ का काम था. मानी ये हैं कि अपने एहद को तोड़कर उस औरत की तरह बेवक़ूफ़ न बनी.

(१०) मुजाहिद का क़ौल है कि लोगों का तरीक़ा यह था कि एक क़ौम से हलफ़ करते और जब दूसरी क़ौम को उससे ज़्यादा तादाद या माल या ताक़त में ज़्यादा पाते तो पहलों से जो हलफ़ किये थे, तोड़ देते और अब दूसरे से हलफ़ करते. अल्लाह तआला ने इसको मना फ़रमाया और एहद पूरा करने का हुक्म दिया.

(११) कि फ़रमाँबरदार और गुनाहगार ज़ाहिर हो जाए.

(१२) कर्मों का बदला देकर.

(१३) दुनिया के अन्दर.

(१४) कि तुम सब एक दीन पर होते.

(१५) अपने इन्साफ़ से.

रौशन अरबी ज़बान^(१०३) बेशक वो जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते^(१०४) अल्लाह उन्हें राह नहीं देता और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है^(१०५) झूट बुहतान वही बांधते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते^(१०६) और वही झूठे हैं^(१०७) जो ईमान लाकर अल्लाह का इन्कारी हो^(१०८) सिवा उसके जो मजबूर किया जाए और उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो^(१०९) हाँ वो जो दिल खोलकर^(११०) काफ़िर हो उनपर अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) है और उनको बड़ा अज़ाब है^(१११) यह इसलिये कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत में प्यारी जानी^(११२) और इसलिये कि अल्लाह (ऐसे) काफ़िरों को राह नहीं देता^(११३) ये हैं वो जिनके दिल और कान और आँखों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है^(११४) और वही ग़फ़लत में पड़े हैं^(११५) आप ही हुवा कि आख़िरत में वही ख़राब हैं^(११६) फिर बेशक तुम्हारा रब उनके लिये जिन्होंने अपने घर छोड़े^(११७) बाद इसके कि सताए गए^(११८) फिर उन्होंने^(११९) जिहाद किया और साबिर रहे बेशक तुम्हारा रब

التخل

३८९

سورة

لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ
إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ
كَفَرِ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أَكْرَهَ
وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ
بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْكَافِرِينَ أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى
قُلُوبِهِمْ وَسَمِعَتْهُمْ لَمْ يَأْمُرْهُمْ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْعَافُونَ لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ
الْخَاسِرُونَ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ
مَا قُتِلُوا ثُمَّ جَاهِدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ

مَنْزِلٍ

- (१६) अपने फ़ज़ल से.
- (१७) क़यामत के दिन.
- (१८) जो तुमने दुनिया में किये.
- (१९) सीधी राह और इस्लाम के तरीक़े से.
- (२०) यानी अज़ाब.
- (२१) आख़िरत में.
- (२२) इस तरह कि तश्वर दुनिया के थोड़े से नफ़े पर उसको तोड़ दो.
- (२३) बदला और सवाब.
- (२४) दुनिया का सामान, यह सब फ़ना हो जायगा और ख़त्म ---
- (२५) उसकी रहमत का ख़ज़ाना और आख़िरत का सवाब.
- (२६) यानी उनकी छोटी से छोटी नेकी पर भी वह अन्न और सवाब दिया जायगा जो वो अपनी बड़ी नेकी पर पाते (अबू सऊद).
- (२७) यह ज़रूर शर्त है क्योंकि काफ़िरों के अअमाल और कर्म बेकार हैं. नेक कर्मों का सवाब बाला होने के लिये ईमान शर्त है.
- (२८) दुनिया में हलाल रिज़क और क़नाअत अता फ़रमा कर और आख़िरत में जन्नत की नेअमतेँ देकर. कुछ उलमा ने फ़रमाया कि अच्छी ज़िन्दगी से इबादत की लज़ज़त मुराद है. मूमिन अगरचे फ़कीर भी हो, उसकी ज़िन्दगानी दौलतमन्द काफ़िर के पेश से बेहतर और पाकीज़ा है क्योंकि ईमान वाला जानता है कि उसकी रोज़ी अल्लाह की तरफ़ से है. जो उसने लिख दिया उसपर राज़ी हांता है और मूमिन का दिल लालच की परेशानियों से मेहफूज़ और आराम में रहता है. काफ़िर जो अल्लाह पर तज़र नहीं रखता वह लालची रहता है और हमेशा दुख और हसद और माल हासिल करने के चक्कर में परेशान रहता है.
- (२९) यानी क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत शुरू करते वक़्त "अज़ज़ो बिल्लाहे मिन श शैतानिर रज़ीम" पढ़ो, यह मुस्तहब है. अज़ज़ो के मसाइल सूरए फ़ातिहा की तरफ़ीर में बयान हो चुके.
- (३०) वो शैतानी बसबसे कुबूल नहीं करते.

सूरए नहल - चौदहवाँ सक्क

- (१) और अपनी हिक्मत से एक हुक्म को मन्सूख़ या स्थगित करके दूसरा हुक्म दें. मक्का के मुश्रिक अपनी जिहालत से तसन्न यानी स्थगन पर ऐतिराज़ करते थे और इसकी हिक्मतों से अनजान होने के कारण इसको हंसी का विषय बनाते थे और कहते थे

उस^(१०) के बाद ज़रूर बख़्शने वाला है मेहरबान^(११०)

पन्द्रहवाँ सूकू

जिस दिन हर जान अपनी ही तरफ़ झगड़ती आएगी^(१) और हर जान को उसका किया पूरा भर दिया जाएगा और उनपर जुल्म न होगा^(२) ^(१११) और अल्लाह ने कहावत बयान फ़रमाई^(३) एक वस्ती^(४) कि अमान व इत्मीनान से थी^(५) हर तरफ़ से उसकी रोज़ी कसरत से आती तो वह अल्लाह की नेअमतों की नाशुक्री करने लगी^(६) तो अल्लाह ने उसे यह सज़ा चखाई कि उसे भूख और डर का पहनावा पहनाया^(७) बदला उनके किये का^(११२) और वेशक उनके पास उन्हीं में से एक रसूल तशरीफ़ लाया^(८) तो उन्होंने उसे झुटलाया तो उन्हें अज़ाब ने पकड़ा^(९) और वो वे इन्साफ़ थे^(११३) तो अल्लाह की दी हुई रोज़ी^(१०) हलाल पाकीज़ा खाओ^(११) और अल्लाह की नेअमत का शुक्र करो अगर तुम उसे पूजते हो^(११४) तुम पर तो यही हराम किया है मुर्दार और खून और सुअर का गोश्त और वह जिसके ज़िबह करते वक़्त ग़ैर खुदा का नाम पुकारा गया^(१२) फिर जो लाचार हो^(१३) न ख्वाहिश करता न हद से बढ़ता^(१४) तो वेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है^(११५) और न

بَعْدَهَا لَعْفُودٌ رَّحِيمٌ ۝ يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ
نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتَوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ
مَا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَصَرَبَ اللَّهُ
مَثَلًا قُرْبَىٰ ۖ كَانَتْ أُمَةً مُّطْمَئِنَّةً بِأَيْدِيهَا
رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ
اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا
كَانُوا يُصْنَعُونَ ۝ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ
فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝
فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاشْكُرُوا
لِنِعْمَتِ اللَّهِ إِنَّ كُنتُمْ لَأَيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝ إِنَّهَا
حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا
أُهْلِلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا
عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَلَا تَقُولُوا

مَزْلُومٌ

कि मुहम्मद एक रोज़ एक हुक्म देते हैं, दूसरे रोज़ और दूसरा ही हुक्म देते हैं. वो अपने दिल से बातें बनाते हैं. इसपर यह आयत उतरी.

- (२) कि इसमें क्या हिक्मत, और उसके बन्दों के लिये इसमें क्या मसलिहत है.
- (३) अल्लाह तआला ने इसपर काफ़िरों की जिहालत का बख़ान किया और इरशाद फ़रमाया.
- (४) और वो स्थान और तबदीली की हिक्मत, और फ़ायदों से ख़बरदार नहीं और यह भी नहीं जानते कि क़ुरआन शरीफ़ की तरफ़ ग़लत बात जोड़ने की निस्वत हो ही नहीं सकती क्योंकि जिस क़लाम के मिसल बनाना आदमी की ताक़त से बाहर है वह किसी इन्सान का बनाया हुआ कैसे हो सकता है. लिहाज़ा सैयदे आलम को ख़िताब हुआ.
- (५) यानी हज़रत ज़िब्रील अलैहिस्सलाम .
- (६) क़ुरआन शरीफ़ की मिटास और उसके उलून की नूरानियत जब दिलों को जीतने लगी और काफ़िरों ने देखा कि दुनिया इसकी गिरवीदा (वशीभूत) होती चली जाती है और कोई तदबीर इस्लाम की मुख़ालिफ़त में कामयाब नहीं होती तो उन्होंने तरह तरह की बातें जोड़नी शुरू कर दीं. कभी इसको जादू बताया, कभी पहलों के किस्से और कहानियाँ कहा, कभी यह कहा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह ख़ुद बना लिया है. हर तरह कोशिश की कि किसी तरह लोग इस किताबे मुक़दस की तरफ़ से बदगुमान हों. इन्हीं मक्कारियों में से एक मक़र यह भी था कि उन्होंने एक अजमी गुलाम की निस्वत यह कहा कि वह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सिखाता है. इसके रद में यह आयत उतरी और इरशाद फ़रमाया गया कि ऐसी ग़लत बातें दुनिया में कौन कुबूल कर सकता है. जिस गुलाम की तरफ़ काफ़िर निस्वत करते हैं वो तो अजमी है. ऐसा क़लाम बनाना उसकी ताक़त में तो क्या होता, तुम्हारे फ़सीह और बलीग लोग जिनकी ज़वानदानी पर अरब वालों को गर्व है, वो सब कें सब हैरान हैं और चन्द जुमले क़ुरआन जैसे बनाना उन्हें अराम्भव और उनकी क्षमता से बाहर है तो एक ग़ैर अरब की तरफ़ ऐसी बात जोड़ना किस क़द्र ग़लत, झूट और बेशर्मी का काम है. ख़ुदा की शान, जिस गुलाम की तरफ़ काफ़िर यह निस्वत करते थे उसको भी इस क़लाम के चमत्कार ने जीत लिया और वह भी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़रमाँवरदारों में शामिल हो गया और सच्चे दिल से ईमान ले आया.
- (७) और उसकी पुष्टि या तस्दीक नहीं करते.
- (८) क़ुरआन के इन्कार और रसूल अलैहिस्सलाम को झुटलाने के कारण.
- (९) यानी झूट बोलना और ग़लत सलत बान जोड़ना बेईमानी ही का काम है . इस आयत से मालूम हुआ कि झूट बड़े गुनाहों में सबसे बुरा गुनाह है.
- (१०) वह अल्लाह के ग़ज़ब में नहीं. यह आयत अम्मार दिन यासिर के हक़ में उतरी. उन्हें ओर उनके वालिद यासिर और उनकी

कहो उसं जो तुम्हारी ज़वानें झूट वयान करती हैं यह हलाल है और यह हुराम है कि अल्लाह पर झूट बांधो^(१५) वेशक जो अल्लाह पर झूट बांधतं हैं उनका भला न होगा^(१६) थोड़ा वरतना है^(१७) और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है^(१८) और ख़ास यहूदियों पर हमने हुराम फ़रमाई वो चीज़ें जो पहले तुम्हें हमने सुनाई,^(१९) और हमने उनपर जुल्म न किया हों वही अपनी जानों पर जुल्म करते थे^(२०) फिर वेशक तुम्हारा रब उनके लिये जो नादानी से^(२१) बुराई कर बैठें फिर उसके बाद^(२२) तौबह करें और संवर जाएं वेशक तुम्हारा रब उसके बाद ज़रूर वरख़ने वाला मेहरबान है^(२३)

सोलहवाँ रूकू

वेशक इब्राहीम एक इमाम था^(१) अल्लाह का फ़रमाँवरदार और सब से अलग^(२) और मुश्रिक न था^(३) उसके एहसानों पर शुक्र करने वाला, अल्लाह ने उसे चुन लिया^(४) और उसे सीधी राह दिखाई^(५) और हमने उसे दुनिया में भलाई दी^(६) और वेशक वह आख़िरत में कुर्व (नज़दीकी)

لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَذَا حَلْلٌ وَ هَذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَمًا مَّا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا الشُّوْءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْهُ بَعْدَ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِنًا لِّلَّهِ حَنِيفًا دَلَّمْ يَكُ مِنَ الشِّرْكِ يَنْ شَاكِرًا لِّأَنْعَمِهِ إِجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ وَاتَّيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَإِنَّا فِي الْآخِرَةِ

مَنْزِلٌ

बालिदा सुर्मया और मुहैब और बिलाल और ख़दाब और सालिम रदियल्लाहो अल्लहू कों पकड़कर काफ़िरों ने सख्त नकलीफ़ और घातना अं दीं ताकि वो इस्लाम से फिर जाएं लेकिन ये लोग न फिर. तो काफ़िरों ने अम्मार कें भों वाप कों बहुत बरहमी से क़त्ल किया और अम्मार बूढ़े थे, भाग नहीं सकते थे, उन्होंने मजबूर होकर जब देखा कि जान पर वन गई है तो अनचाहे दिल से कुफ़्र का कलिमा बोल दिया. रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कों ख़बर दी गई कि अम्मार काफ़िर हो गए. फ़रमाया हरगिज़ नहीं. अम्मार सर से पाँव तक ईमान से भरे पुर हैं और उनके गोश्त और ख़ून में ईमान रच बस गया है. फिर अम्मार रोंते हुए ख़िदमत अक़दस में हाज़िर हुए. हुज़ूर ने फ़रमाया क्या हुआ. अम्मार ने अर्ज़ किया, ऐ ख़ुदा के रसूल बहुत ही दुःख हुआ और बहुत ही बुरे कलिमों मरी ज़वान पर जारी हुए. इशारा फ़रमाया, उस वक़्त तेंरे दिल का क्या हाल था? अर्ज़ किया दिल ईमान पर ख़ूब जमा हुआ था. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने शफ़क़त व रहमत फ़रमाई और फ़रमाया कि अगर फिर ऐसा वक़्त आ पड़े तो यही करना चाहिये. इसपर यह आयत उतरी (ख़ाज़िन). आयत से मालुम हुआ कि मजबूरी की हालत में अगर दिल ईमान पर जमा हुआ हो तो कलिमा कुफ़्र का बोलना जायज़ है जबकि आदमी कों अपनी जान या किसी अंग के ज़ाय़ा हो जाने का ख़ौफ़ हो. अगर इस हालत में भी सन्न करे और क़त्ल कर डाला जाय तो वह अन्न का हक़दार और शहीद होगा जैसा कि हज़रत ख़बीब रदियल्लाहो अल्लहू ने सन्न किया और वह सुली पर चढ़ाकर शहीद कर दिये गए. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें सैयदुश-शुहदा फ़रमाया. जिस शख्स कों मजबूर किया जाए, अगर उसका दिल ईमान पर जमा हुआ न हो, वह कुफ़्र का कलिमा ज़वान पर लाने से काफ़िर हो जाएगा. अगर कोई शख्स बिना मजबूरी के हंसी के तौर पर या जिहालत से कुफ़्र का कलिमा ज़वान पर लाए, काफ़िर हो जाएगा. (तफ़सीर अहमदी)

(१२) रज़ामन्दी और ऐतिक़ाद के साथ.

(१३) और जब यह दुनिया इर्तिदाद यानी इस्लाम से फिर जाने पर इक़दाम करने का कारण है.

(१४) न वो ग़ौर करते हैं न उपदेश और नसीहतों पर कान धरते हैं, न हिदायत और सही बात का रास्ता देखते हैं.

(१५) अपनी आगे की ज़िन्दगी और अंजाम नहीं सोचते.

(१६) कि उनके लिये हमेशा का अज़ाब है.

(१७) और मक्कए मुकर्रमा से मदीनए तैय्यिबह कों हिजरत की.

(१८) काफ़िरों ने उनपर सख़्त्रियाँ कीं और उन्हें कुफ़्र पर मजबूर किया.

(१९) हिजरत के बाद.

(२०) हिजरत व जिहाद व सन्न.

सूरए नहल - पन्दरहवाँ रूकू

- (१) वह क्रयामत का दिन है जब हर एक 'नफ्सी-नफ्सी' कहता होगा और सब को अपनी अपनी पड़ी होगी।
- (२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि क्रयामत के दिन लोगों में दुश्मनी और वैजारी इस हद तक बढ़ेगी कि रूह और जिगम में झगड़ा होगा। रूह कहेगी याबर न मेरे हाथ था कि मैं किसी को पकड़ती, न पाँव था कि चलती, न और थी कि देखती। जिगम कहेगा या रब मैं तो लकड़ी की तरह था, न मेरा हाथ पकड़ सकता था, न पाँव चल सकता था, न और देख सकता था। जब यह रूह तूरी किरन की तरह आई तो इससे मेरी ज़बान बोलने लगी, और देखने लगी, पाँव चलने लगे। जो कुछ किया रूह ने किया। अल्लाह तआला एक मिसाल बयान फ़रमाया कि एक अंधा और एक लूटा दोनों बाग़ में गए। अंधे को फल नज़र नहीं आते थे और लूटे का हथ उन तक नहीं पहुँचता था तो अंधे ने लूटे को अपने ऊपर सवार कर लिया इस तरह उन्होंने फल तोड़े तो सज़ा के दोनों ही मुस्तहक़ हुए। इसलिये रूह और जिगम दोनों अपराधी हैं।
- (३) ऐसे लोगों के लिये जिन पर अल्लाह तआला ने इनआम किया और वो इस नेअमत पर घमण्डी होकर नाशुक्री करने लगे और काफ़िर हो गए। यह कारण अल्लाह तआला की नाराज़ी का हुआ उनकी मिसाल ऐसी समझो जैसे कि ---
- (४) मक्का जैसी।
- (५) न उसपर दुश्मन चढ़ता, न वहाँ के लोग क़त्ल और कैद की मुसीबत में गिरफ़्तार किये जाते।
- (६) और उसने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाया।
- (७) कि सात बरस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बद दुआ से कहत और सूत्रा की मुसीबत में गिरफ़्तार रहे यहाँ तक कि मुर्दाग़ खाते थे। फिर अन्न और इन्मीनान के बजाय झीर और दहशत उनपर छा गया और हर वक़््त मुसलमानों के हमले का डर रहने लगा।
- (८) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक हाथों से अता फ़रमाई।
- (९) भूख और भय से।
- (१०) जो उसने सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक हाथों से अता फ़रमाई।
- (११) बजाय उन हज़म और शरीस चीज़ों के जो खाया करते थे, लूट, छीन-झपट और बुरे तरीक़ों से हासिल की गई। सारे ही मुफ़सिरी के नज़दीक़ इस आयत का सम्बोधन मुसलमानों से है और एक क़ौल मुफ़सिरी का यह भी है कि यह ख़िताब मक्का के मुश्रिकों से है। क़लबी ने कहा कि जब मक्का वाले कहत और सूत्रा के कारण भूख से परेशान हुए और तकलीफ़ की बर्दाश्त न रही तो उनके सरदारों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अज्ञे किया कि आप से दुश्मनी तो मर्द करते हैं और नों बच्चों को जो तकलीफ़ पहुँच रही है उसका ख़याल फ़रमाइये। इसपर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इजाज़त दी कि उनके ख़ाने पीने का इन्ज़ाम किया जाए। इस आयत में इसका बयान हुआ। इन दोनों क़ौलों में पहला क़ौल ज्यादा सही है। (ख़ाज़िन)
- (१२) यानी उसको बुतों के नाम पर जिन्न किया गया हो।
- (१३) और उन हज़म चीज़ों से कुछ खाने पर मजबूर हो।
- (१४) यानी ज़रूरत की मात्रा पर सब करके।
- (१५) जिहल्लत के ज़माने के लोग अपनी तरफ़ से कुछ चीज़ों का हलाल कुछ चीज़ों को हज़म कर लिया करते थे और इसकी निस्वत अल्लाह तआला की तरफ़ कर दिया करते थे। इससे मना फ़रमाया गया और इसका अल्लाह पर झूट जड़ना बनाया गया। आजकल भी जो लोग अपनी तरफ़ से हलाल चीज़ों को हज़म बना देते हैं, जैसे मोलाद शरीफ़ की मिठाई, फ़ातिहा, ग़्यारहवीं, उर्स चौराह इत्यादि सवाब की चीज़ें जिन की हुरमत शरीअत में नहीं आई, उन्हें इस आयत के हुक़म से डरना चाहिये कि ऐसी चीज़ों की निस्वत यह कह देना कि यह शरीअत के हिसाब से हज़म है, अल्लाह तआला पर झूट बोलना है।
- (१६) और दुनिया की कुछ ही दिनों की आसाइश है जो बख़्ती रहने वाली नहीं।
- (१७) है आख़िरत में।
- (१८) सूरए अनआम की आयत "व अल्लज़ीना हादू व हरमना कुल्ला जी जुफ़ुरिन् ----" में (यानी और यहूदियों पर हमने हज़म किया हर ताब्रन वाला जानवर - सूरए अनआम, आयत १४७)।
- (१९) बगावत और गुनाह करके जिसकी सज़ा में वो चीज़ें उनपर हज़म हुईं जैसा कि आयत "फ़ विजुल्मि मिनल्लज़ी हादू हरमना अलैहिम तथिवातिन उहिल्लत लहुम" (तो यहूदियों के बड़े जुल्म के कारण हमने वो कुछ सुथरी चीज़ें कि उनके लिये हलाल थीं, उनपर हज़म फ़रमा दीं - सूरए निरा, आयत १६०) में इशारा फ़रमाया गया।
- (२०) बिना अंज़ाम सोचे।
- (२१) यानी तावह के।

सूरए नहल - सोलहवाँ रूकू

- (१) नेक आदतें और पसन्दीदा अज़लाक़ और अच्छी सिफ़त का संगम।

के काबिल है (१२२) फिर हमने तुम्हें वही भेजी कि इब्राहीम के दीन की पैरवी करो जो हर बातिल से अलग था और मुश्रिक न था (१२३) हफ़्ता तो उन्हीं पर रखा गया था जो उसमें मुख़्तलिफ़ (अलग अलग) हो गए (१२४) और वेशक तुम्हारा रब क़यामत के दिन उनमें फ़ैसला कर देगा जिस बात में इख़्तिलाफ़ (विरोध, मतभेद) करते थे (१२४) अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ (१२५) पक्की तदवीर और अच्छी नसीहत से (१२६) और उनसे उस तरीक़े पर बहस करो जो सब से बेहतर हो (१२७) वेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बहका और वह ख़ूब जानता है राह वालों को (१२८) और अगर तुम सज़ा दो तो वैसी ही सज़ा दो जैसी तुम्हें तकलीफ़ पहुंचाई थी (१२९) और अगर तुम सब्र करो (१३०) तो वेशक सब्र वालों को सब्र सबसे अच्छा (१३१) और ऐ मेहबूब तुम सब्र करो और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है और उनका ग़म न खाओ और उनके धोखों से दिल तंग न हो (१३२) वेशक अल्लाह उनके साथ है जो डरते हैं और जो नेकियां करते हैं (१३३)

لَيِّنَ الصَّالِحِينَ ۖ ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ
مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۖ
إِنَّا جَعَلْنَا السَّبْطَ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۖ
وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۖ أَدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ
بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۖ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي
هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِبَن صُلٍّ عَنْ
سَبِيلِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۖ وَإِنْ عَاقَبْتُمْ
فَعَاqِبُوا بِوَسِيلِ مَا عَوْقَبْتُمْ بِهِ ۖ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ
لَهُوَ خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ ۖ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا
بِاللَّهِ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ
مِّمَّا يَكْرَهُونَ ۖ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا
وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ ۚ

منزل

- (२) दीने इस्लाम पर क़ायम.
- (३) इसमें काफ़िरों को झुटलाया है जो अपने आपको हज़रत इब्राहीम के दीन पर ख़याल करते थे.
- (४) अपना नबी और ख़लील यानी दोस्त बनाने के लिये.
- (५) रिसालत व माल-दौलत व औलाद व लोकप्रियता, कि सारे दीन वाले, मुसलमान, यहूदी और ईसाई और अरब के मुश्रिक लोग सब उनका आदर करते और उनसे महबूत रहते हैं.
- (६) इतिवाअ से मुराद यहाँ अक़ीदों और दीन के उसूलों में सहमति है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इस अनुकरण का हुक्म किया गया. इसमें आपकी महानता, यश और दर्जे की बलन्दी का इज़हार है कि आपका दीने इब्राहिमी से सहमत होना हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिये उनकी तमाम बुजुर्गी और क़माल में सबसे ऊँचा सम्मान है.
- (७) यानी शनिवार की तअज़ीम, उस रोज़ शिकार तर्क करना और वक़्त इबादत के लिये फ़ारिस करना यहूद के लिये फ़र्ज़ किया गया था. इसका बाक़िआ इस तरह हुआ था कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें जुमुए के दिन का सत्कार करने का हुक्म दिया था और इश्आद किया था कि सप्ताह में एक दिन अल्लाह तआला की इबादत के लिये ख़ास करो. उस दिन में कुछ काम न करो. इसमें उन्होंने विरोध किया और कहा वह दिन शुक्रवार नहीं बल्कि शनिवार होना चाहिये. एक छोटी सी जमाअत को छोड़कर, जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हुक्म की तअमील में शुक्रवार पर ही राज़ी हो गई थी, अल्लाह तआला ने यहूदियों को इज़ाज़त दे दी और शिकार हारम फ़रमाकर आजमाइश में डाल दिया. तो जो लोग जुमुए यानी शुक्रवार पर राज़ी हो गए थे वो तो फ़रमाँवरदार रहे और उन्होंने इस हुक्म का पालन किया. बाक़ी लोग सब्र न कर सके, उन्होंने शिकार किये. नतीजा यह हुआ कि मूरत विपाड़ दी गई. यह बाक़िआ तफ़सील के साथ सूरए अअराफ़ में बयान हो चुका है.
- (८) इस तरह कि फ़रमाँवरदार को सवाब देगा और गुनाहगार को सज़ा. इसके बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सम्बोधित किया जाता है.
- (९) यानी ख़ल्क को दीने इस्लाम की तरफ़ बुलाओ.
- (१०) पक्की तदवीर से वह मज़बूत दलील मुराद है जो सच्चाई को साफ़ और शुबह व संदेह को दूर कर दे. और अच्छी नसीहत से नेकी और अच्छाई की तरफ़ीब मुराद है.
- (११) बेहतर तरीक़े से मुराद यह है कि अल्लाह तआला की तरफ़ उसकी आयतों और दलीलों से बुलाएं. इससे मालूम हुआ कि सच्चाई की तरफ़ बुलाना और दीन की सच्चाई के इज़हार के लिये मुनाज़िरा या बहस करना जायज़ है.
- (१२) यानी सज़ा ग़लती के हिसाब से हो, उससे ज़्यादा न हो. उहद की लड़ाई में काफ़िरों ने मुसलमानों के शहीदों के चेहरों का ज़रम़ी करके उनकी शक्तों को बदल डाला था, उनके पेट चाक कर दिये थे, उनके अंग काटे थे, उन शहीदों में हज़रत हमज़ा भी

थे . सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम ने जब उन्हें देखा तो हुजूर को बहुत दुख हुआ और हुजूर ने क्रसम खाई कि एक हज़रत हमज़ा रदियल्लाहो अन्हो का बदला सत्तर काफ़िरों से लिया जाएगा और सत्तर का यही हाल किया जाएगा. इसपर यह आयत उतरी, तो हुजूर ने वह इरादा तर्क फ़रमा दिया और अपनी क्रसम का कफ़रारा दिया. मुस्ला यानी नाक कान वगैरह काट कर किसी की शक्ल और आकार बिगाड़ देना शरीअत में हराम है. (मदारिक)

(१३) और बदला न लो.

(१४) अगर वो ईमान लाएं.

(१५) क्योंकि हम तुम्हारे मददगार और सहायक हैं.

पारा चौदाह समाप्त



पन्द्रहवां पारा - सुब्हानल्लज़ी

१७ - सूरए बनी इस्राईल

पहला रूकू

सूरए बनी इस्राईल मक्का में उतरी, इसमें १११ आयतें और १२ रूकू हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) पाकी है उसे^(२) जो अपने बन्दे^(३) को रातों रात ले गया^(४) मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा तक^(५) जिसके गिर्दा गिर्द हमने बरकत रखी^(६) कि हम उसे अपनी अज़ीम निशानियाँ दिखाएं, वेशक वह सुनता देखता है^(७) और हमने मूसा को किताब^(८) अता फ़रमाई और उसे बनी इस्राईल के लिये हिदायत किया कि मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न ठहराओ^(९) ऐ उनकी औलाद जिनको हमने नूह के साथ^(१०) सवार किया वेशक वह बड़ा शुक्र गुज़ार बन्दा था^(११) और हमने बनी इस्राईल को किताब^(१२) में वही (देव वाणी) भेजी कि ज़रूर तुम ज़मीन में दोबारा फ़साद मचाओगे^(१३) और ज़रूर बड़ा घमण्ड करोगे^(१४) फिर जब उनमें पहली वार^(१५) का वादा आया^(१६) हमने तुमपर अपने बन्दे भेजे सख्त लड़ाई वाले^(१७) तो वो शहरों के अन्दर तुम्हारी तलाश को घुसे^(१८) और यह एक वादा था^(१९) जिसे पूरा होना^(२०) फिर हमने उनपर उलट कर तुम्हारा हमला कर दिया^(२१) और तुमको मालों और बेटों से मदद दी और तुम्हारा जत्था बढ़ा दिया^(२२)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

३९३

سُبْحَنَ الَّذِي

سُبْحَنَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنَ الْأَيْمَانِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝ وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ أَلا تَتَّخِذُوا مِنْ دُونِي وَكَيْلًا ۚ ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ۝ وَقَضَيْنَا إِلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَنْعَلُنَّ عُقُلًا كِبِيرًا ۝ فَذَآ جَاءَ وَعْدُ أُولَٰئِهِمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَنَا أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَآءُوا خُلَلٌ مُّطِيرًا ۝ وَكَانَ وَعْدُ مَفْعُولًا ۝ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَاهُمْ أَكْثَرَ تَفْئِيرًا ۝

مَزْلُومٌ

१७ - सूरए बनी इस्राईल - पहला रूकू

(१) सूरए बनी इस्राईल का नाम सूरए अस्वा और सूरए सुब्कान भी है। यह सूरत मक्की है मगर आठ आयतें व इन कादू ल-यफ़-तिन-नका से नसीरन तक, यह कौल क़तादा का है। मगर बैज़ावी का कहना है कि यह सूरत सारी की सारी मक्की है। इस सूरत में बारह रूकू और एक सौ दस आयतें बसरी हैं और कूफी एक सौ ग्यारह और पांच सौ तैंतीस कलिमे और तीन हज़ार चार सौ साठ अक्षर हैं।

(२) पाक है उसकी ज़ात हर एब और दोष से।

(३) मेहबूब मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लाहो अलैहे वसल्लम।

(४) शबे मेअराज।

(५) जिसका फ़ासला चालीस मंज़िल यानी सवा महीने से ज़्यादा की ग़ाह है। जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम शबे मेअराज ऊंचे दर्जे और बलन्द रूबे पर बिराजमान हुए तो रब तआला ने ख़िताब फ़रमाया ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम यह फ़ज़ीलत और यह सम्मान मैंने तुम्हें क्यों अता फ़रमाया। अर्ज़ किया, इसलिये कि तूने मुझे अब्द यानी बन्दे की हैसियत से अपनी तरफ़ मन्सूब किया। इसपर यह आयत उतरी। (ख़ाज़िन)

(६) दीनी भी, दुनियावी भी, कि वह पाक धर्ती, वही उतरने की जगह और नदियों की इबादत ग़ाह और उनके टहरने की जगह और इबादत का किबला है। और नहरों और दरख़्तों की बहुतात से वह ज़मीन हरी भरी तर्रो ताज़ा और मेवों और फलों की बहुतात से बेहतरीन आराम और राहत की जगह है। मेअराज शरीफ़ नबीये क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का एक बड़ा चमत्कार और अल्लाह तआला की भारी नेअमत है और इससे हुज़ूर का अल्लाह की बारगाह में वह कुर्ब ज़ाहिर होता है जो मस्त्रलूक में आपके सिवा किसी को हासिल नहीं। नबुबत के बारहवें साल हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मेअराज से तवाज़े गए, महीने में इख़्तिलाफ़ है। मगर मशहूर यही है कि सताईस्वी रजब को मेअराज हुई। मक्का मुकर्रमा से हुज़ूर पुरनूर का बैतुल मक़दिस तक रात के छोटे हिस्से में तशरीफ़ ले जाना क़ुरआनी आयत से साबित है। इसका इन्कार करने वाला काफ़िर है। और आसमानों की सैर

अगर तुम भलाई करोगे अपना भला करोगे^(११) और बुरा करोगे तो अपना, फिर जब दूसरी बार का वादा आया^(१२) कि दुश्मन तुम्हारा मुंह बिगाड़ दें^(१३) और मस्जिद में दाखिल हों^(१४) जैसे पहली बार दाखिल हुए थे^(१५) और जिस चीज़ पर काबू पाएं^(१६) तवाह करके बर्बाद कर दें^(१७) करीब है कि तुम्हारा रब तुमपर रहम करे^(१८) और अगर तुम फिर शरारत करो^(१९) तो हम फिर अज़ाब करेंगे^(२०) और हमने जहन्नम को काफ़िरों का क़ैदखाना बनाया है^(२१) बेशक यह कुरआन वह राह दिखाता है जो सबसे सीधी है^(२२) और खुशी सुनाता है ईमान वालों को जो अच्छे काम करें कि उनके लिये बड़ा सवाब है^(२३) और यह कि जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते हमने उनके लिये दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है^(२४)

दूसरा रूकू

और आदमी बुराई की दुआ करता है^(१) जैसे भलाई मांगता है^(२) और आदमी बड़ा जल्दबाज़ है^(३) और हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया^(४) तो रात की निशानी मिटी हुई रखी^(५) और दिन की निशानियाँ दिखाने वाली^(६) कि अपने रब का फ़ज़ल तलाश करो^(७) और^(८) वरसों की गिनती और हिसाब जानो^(९) और हमने हर चीज़ ख़ूब अलग अलग ज़ाहिर फ़रमा दी^(१०) और हर

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لَا تُفْسِدُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا
فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا
الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلِمُوا
تَنْهِيًا ۚ عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُمْ وَإِنْ عُدْتُمْ
عُذْنًا وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ۚ إِنَّ هَٰذَا
الْقُرْآنَ يُهْدِي لِلَّذِينَ هِيَ أَقْوَمُ وَيُخَيِّرُ الْمُؤْمِنِينَ
الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنْ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ۚ
وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَغْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا
أَلِيمًا ۚ وَيَذَرُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ وَ
كَانَ الْإِنْسَانُ مَجْهُولًا ۚ وَجَعَلْنَا الْيَلَّ وَالنَّهَارَ آيَاتٍ
فَنَحْنُ آيَةُ الْيَلِّ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً
لِتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَ
الْحِسَابَ ۚ وَكُلُّ شَيْءٍ فَضْلُنَا نَقْصِيلاً ۚ وَكُلُّ

مَزْلُومٌ

और कुर्व की मंज़िलों में पहुंचना सही हदीसों से साबित है जो हंदे तवातुर के करीब पहुंच गई हैं। इसका इन्कार करने वाला गुमराह है। मेअराज शरीफ़ वेदारी की हालत में जिस्म और रूह दोनों के साथ बाक़े हुई। इसी पर एहले इस्लाम की सर्वसम्मति है। और रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा इसी की मानते हैं। कुरआनी आयतों और हदीसों से भी यही निष्कर्ष निकलता है। तीरा और मागान फ़लसफ़े के औहामे फ़ासिदा महज़ बातिल हैं। अल्लाह की कुदरत के मानने वाले के सामने रां सार संदेह महज़ बेहकीकत है। हज़रत जिब्रील का बुराक़ लेकर हाज़िर होना, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बेहद अदब और ऐहतिराम के साथ सवार करके ले जाना, बैतुल मक़दिस में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का नवियों की इमामत फ़रमाना, फिर वहाँ से आसमानों की सैर की तरफ़ मुतवज्जह होना, जिब्रीले अमीन का हर हर आसमान का दर्वाज़ा खुलवाना और हर हर आसमान पर वहाँ के साहिबे मक़ाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की ज़ियारत करना और हुज़ूर का सम्मान करना, तशरीफ़ आवरी की मुबारक-बादे देना, हुज़ूर का एक आसमान से दूसरे आसमान की तरफ़ सैर फ़रमाना, वहाँ के चमत्कार देखना और तमाम मुक़र्रीबीन की आग़िरी मंज़िल सिद-रतुल-मुन्हा को पहुंचना जहाँ से आगे बढ़ने की किसी बड़े से बड़े फ़रिश्ते की भी मजाल नहीं है। जिब्रीले अमीन का वहाँ मजदूरी ज़ाहिर करके रह जाना, फिर ग़्यास कुर्व के मक़ाम में हुज़ूर का तरक्कियाँ फ़रमाना और उस अअला कुर्व में पहुंचना कि जिसके तसचुर तक सृष्टि की सोचने और विचार करने की शक्ति नहीं पहुंच सकती, वहाँ अल्लाह की रहमत और करम का हासिल करना और इनआमों और अच्छी नेअमतों से नवाज़ा जाना और आसमान व ज़मीन के फ़रिश्तों और उनसे ज़्यादा इल्म पाना और उम्मत के लिये नमाज़ें फ़र्ज़ होना, हुज़ूर का शफ़ाअत फ़रमाना, जन्नत व दोज़ाब की सैर और फिर वापस अपनी जगह तशरीफ़ लाना और इस वाक़ा की ख़बरें देना, काफ़िरों का उसपर आलोचना करना और बैतुल मक़दिस की इमारत का हाल और शाम प्रदेश जाने वाले काफ़िरों की कैफ़ियत हुज़ूर अलैहिस्सलामो वसल्लाम से दरियाफ़्त करना, हुज़ूर का सब कुछ बताना और काफ़िरों के आने पर उनकी पुष्टि होना, ये तमाम सहाबा की विश्वसनीय हदीसों से साबित है। और बहुत सी हदीसों में इन सारी बातों के बयान और उनकी तफ़सीलें आई हैं।

(७) यानी तौरात.

(८) किश्ती में.

(९) यानी वूह अलैहिस्सलाम बहुत शुक्र किया करते थे. जब कुछ ग़्याते पीते पहनते तो अल्लाह तआला की हम्द यानी तशरीफ़ करते और उसका शुक्र वजा लाते और उनकी सलान पर लाज़िम है कि वह अपने इज़्ज़त वाले दादा के तरीक़े पर कायम रहे.

(१०) तौरात .

इन्सान की किस्मत हमने उसके गले से लगा दी^(११) और उसके लिये क़्यामत के दिन एक नविश्ता (भाग्यपत्र) निकालेंगे जिसे खुला हुआ पाएगा^(१२) ॥१३॥ फ़रमाया जाएगा कि अपना नामा (लेखा) पढ़ आज तू खुद ही अपना हिसाब करने का बहुत है^(१४) जो राह पर आया वह अपने ही भले को राह पर आया,^(१५) और जो बहका तो अपने ही बुरे को बहका^(१६) और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी^(१७) और हम अज़ाब करने वाले नहीं जबतक रसूल न भेज लें^(१८) ॥१५॥ और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं उसके खुशहालों^(१९) पर एहकाम भेजते हैं फिर वो उसमें बेहुक्मी करते हैं तो उसपर बात पूरी हो जाती है तो हम उसे तवाह करके वर्वाद कर देते हैं^(२०) और हमने कितनी ही संगतें (क्रौमें)^(२१) नूह के बाद हलाक कर दीं^(२२) और तुम्हारा रब काफी है अपने बन्दों के गुनाहों से खबरदार देखने वाला^(२३) ॥१७॥ जो यह जल्दी वाली चाहे^(२४) हम उसे उसमें जल्दी दे दें जो चाहें जिसे चाहें^(२५) फिर उसके लिये जहन्नम कर दें कि उसमें जाए मज़म्मत (निंदा) किया हुआ धक्के खाता^(२६) और जो आखिरत चाहे ओर उसकी सी कोशिश करे^(२७) और हो

إِنْسَانٍ الْزَمْنَهُ طَائِرَةً فِي عُنُقِهِ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَشْهُورًا ۖ اقْرَأْ كِتَابَكَ ۖ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۚ مَن اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ تَبْعَثَ رَسُولًا ۚ وَإِذَا أَرَدْنَا أَن نُهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ ۖ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ۚ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِن بَعْدِ نُوحٍ ۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ حَسِيبًا ۚ بَصِيرًا ۚ مَن كَانَ يَرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَن نُّرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ ۖ يَصْلَاهَا مَدْمُومًا مَّدْحُورًا ۚ وَمَن أَرَادَ الْآخِرَةَ ۖ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيُهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُم مِّنَ الْغَايَةِ ۚ

मन्ज़र

- (११) इससे ज़मीने शाम और बैतुल मक़दिस मुराद हैं और दो बार के फ़साद का वयान अगली आयत में आता है।
 (१२) और जुल्म और विद्रोह में जकड़ गए।
 (१३) के फ़साद के अज़ाब।
 (१४) और उन्होंने तौरात के आदेशों का विरोध किया और हराम कामों और गुनाहों में पड़ गए और हज़रत शंअया नबी अलैहिस्सलाम और एक क़ौल के मुताबिक हज़रत अरमिया को क़त्ल किया। (बैज़ावी वगैरह)
 (१५) बहुत ज़ोर और क्रुचत वाले, उनको तुमपर हावी किया और वो सन्नारीब और उसकी फ़ौजें हैं या बुद्धि नसर या जालूत जिन्होंने बनी इस्राईल के उलमा को क़त्ल किया। तौरात को जलाया, मस्जिद को ख़राब किया और सत्तर हज़ार को उनमें से गिरफ़्तार किया।
 (१६) कि तुम्हें लूटें और क़त्ल और कैद करें।
 (१७) अज़ाब का, कि लाज़िम था।
 (१८) जब तुम ने तौबह की और घमण्ड और फ़साद से बाज़ आए तो हमने तुमको दौलत दी और उनपर ग़लबा इनायत फ़रमाया जो तुमपर मुसल्लत हो चुके थे।
 (१९) तुम्हें उस भलाई का बदला मिलेगा।
 (२०) और तुमने फिर फ़साद बरपा किया, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल पर तुले। अल्लाह तआला ने उन्हें बचाया और अपनी तरफ़ उठा लिया। और तुमने हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया अलैहुमसलाम को क़त्ल किया, तो अल्लाह तआला ने तुम पर फ़ारस और रूम वालों को मुसल्लत कर दिया कि तुम्हारे दो दुश्मन तुम्हें क़त्ल करें या कैद करें और तुम्हें इतना परेशान करें।
 (२१) कि रंज और परेशानी के भाव तुम्हारे चेहरों से ज़ाहिर हों।
 (२२) यादी बैतुल मक़दिस में और उसको वीरान करें।
 (२३) और उसको वीरान किया था, तुम्हारे पहले फ़साद के वक़्त।
 (२४) बनी इस्राईल के इलाकों से, उसको ---
 (२५) दूसरी बार के बाद भी, अगर तुम दोबारा तौबह करो, और गुनाहों से बाज़ आओ।
 (२६) तीसरी बार।
 (२७) चुनांचे ऐसा ही हुआ, और उन्होंने फिर अपनी शरारत की तरफ़ पलटा ख़ाया और मुस्तफ़ा जाने रहमन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पाक दौर में हुज़ुरे अक़दस को झुटलाया, तो क़्यामत तक के लिये उनपर ज़िल्लत लाज़िम कर दी गई और मुसलमान उनपर मुसल्लत फ़रमा दिये गए, जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में यहूदियों की निरबत आया "दुरिबत अलैहिषुज ज़िल्लतु" यानी उनपर

ईमान वालों तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी^(१९) (१९) हम सबको मदद देते हैं उनको भी^(२०) और उनको भी^(२१) तुम्हारे रब की अंता से^(२२) और तुम्हारे रब की अंता पर रोक नहीं^(२३) (२०) देखो हमने उनमें एक को एक पर कैसी बड़ाई दी^(२४) और बेशक आखिरत दर्जों में सब से बड़ी और फ़ज़ल (इज़्ज़त) में सबसे अउला (उत्तम) है^(२५) ऐ सुनने वाले अल्लाह के साथ दूसरा खुदा न ठहरा कि तू बैठ रहेगा मज़मूम किया जाता बेकस^(२६) (२२)

तीसरा रूकू

और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उसके सिवा किसी को न पूजो और माँ वाप के साथ अच्छा सुलूक करो, अगर तेरे सामने उनमें एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं^(१) तो उनसे हूँ न कहना^(२) (२३) और उन्हें न झिड़कना और उनसे तअज़ीम (आदर) की बात कहना^(३) और उनके लिये आजिज़ी (नम्रता) का वाज़ू बिछा^(४) नर्म दिली से और अज़्र कर कि ऐ मेरे रब, तू इन दोनों पर रहम कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन में पाला^(५) (२४) तुम्हारा रब खूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है^(६) अगर तुम लायक हुए^(७) तो वेशक वह तौबह करने वालों को बाँधने वाला है^(८) (२५) और रिश्तेदारों को उनका हक़ दे^(९) और मिस्कीन और मुसाफ़िर को^(१०) और फ़ज़ूल न उड़ा^(११) (२६) वेशक उड़ाने वाले शैतानों के भाई हैं^(१२) और शैतान अपने रब का बड़ा नाशूक्रा है^(१३) (२७)

مَشْكُورًا ۝ كَلَّا تُمَدُّ هَٰؤُلَاءِ وَهَٰؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۖ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَخْطُورًا ۖ أَنْظِرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلِلْآخِرَةِ الْكِبَرُ دَرَجَاتٍ ۖ وَالْأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ۚ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَّخَذُورًا ۚ وَفَضَّلْنَا رَبِّكَ أَلا تَعْبُدَ إِلَّا إِلَٰهَنَا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ إِنَّمَا يُبَلِّغُنَّ عَنْكَ الْكِبَرُ إِذَا هُمَا أُكْلَاهُمَا ۖ فَلَا تَقُلْ لَهُمَا آفٌ وَلَا تُنْهَرُ بِهِمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۖ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ۚ رَبِّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِكُمْ ۖ إِنْ تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ۚ وَأَبْذُلَ الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَسْرَٰكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تَبْذُرْ نَبْذِيرًا ۚ إِنَّ الْمُبْتَدِرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِمْ كَفُورًا ۖ

مَزْن

जमा दी गई ख़्तारी - सूरए आले इमरान, आयत ११२)

(२८) वह अल्लाह की तौहीद और उसके रसूलों पर ईमान लाना और उनका अनुकरण करना है.

सूरए बनी इस्राईल - दूसरा रूकू

- (१) अपने लिये और अपने घर वालों के लिये और अपने माल के लिये और अपनी औलाद के लिये और मुस्से में आकर उन सबको कोसता है और उनके लिये बद दुआएं करता है.
- (२) अगर अल्लाह तआला उसकी यह बद दुआ कुबूल करले तो वह शख्स या उसके घर वाले और माल हलाक हो जाएं. लेकिन अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल व करम से उसको कुबूल नहीं फ़रमाता.
- (३) कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि इस आयत में इन्सान से काफ़िर मुराद है और बुराई की बददुआ से उसका अज़ाब में ज़ल्दी करना. और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि नज़र बिन हारिस काफ़िर ने कहा, या रब अगर यह दीने इस्लाम तेरे नज़दीक सच्चा है तो हम पर आस्मान से पत्थर बरसा, दर्दनाक अज़ाब भेज. अल्लाह तआला ने उसकी यह दुआ कुबूल कर ली और उसकी गर्दन मारी गई.
- (४) अपनी वहदानियत और कुदरत पर दलील देने वाली.
- (५) यानी रात को अंधेरा किया ताकि इसमें आराम किया जाए.
- (६) रौशन, कि इसमें सब चीज़ें नज़र आएं.
- (७) और रोज़ी की कमाई और मेहनत के काम आसानी से अंजाम दे सके.
- (८) रात दिन के दौर से.
- (९) दीन और दुनिया के कामों के औज़ात.
- (१०) चाहे उसकी ज़रूरत दीन में हो या दुनिया में. मतलब यह है कि हर चीज़ की तफ़सील फ़रमा दी जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद है "مَا كُفِّرَتْ عَنْهُ فِئْلٌ كِتَابَةٍ مِّنْ شَيْءٍ" यानी और हमने इस किताब में कुछ उठा न रखा (सूरए अनआम, आयत ३८). और एक और आयत में इरशाद है : "وَنَزَّلْنَا الْأَنْعَامَ لِكُلِّ قَوْمٍ لِّكُلِّ شَيْءٍ" यानी और हमने तुमपर से कुनआन उतारा

कि हर चीज़ का रीशन बयान है (सूरए नहल, आयत ८९). गरज़ इन आयतों से साबित है कि कुरआन शरीफ़ में सारी चीज़ों का बयान है. सुक़ानल्लाह ! क्या किताब है, कैसी इसकी सम्पूर्णता. (जुमल, झाज़िन व मदारिक)

(११) यानी जो कुछ उसके लिये मुक़द्दर किया गया है, अच्छा या बुरा, खुशनसीबी या बदनसीबी, वह उसका इस तरह लाज़िम है जैसे गले का हार, जहाँ जाए साथ रहे, कभी अलग न हो. मुजाहिद ने कहा कि हर इन्सान के गले में उसकी सआदत यानी खुशनसीबी या शक़ावत यानी बदकिस्मती और हट धर्मी का लेखा डाल दिया जाता है.

(१२) वह उसका आमालनामा यानी कर्मों का लेखा होगा.

(१३) उसका सबाब बन्नी पाग़ा.

(१४) उसके वहकने का गुनाह और बवाल उसपर.

(१५) हर एक के गुनाहों का बाँझ उसी पर होगा.

(१६) जो उम्मत की उसके कर्तव्यों से आगाह फ़रमाए और सीधी सच्ची राह उनको बता दे और हुज़्रत कायम फ़रमाए.

(१७) और सरदारों...

(१८) यानी झुटलाने वाली उम्मतें.

(१९) आद, समूद और ह की तरह.

(२०) ज़ाहिर और बातिन का जानने वाला, उससे कुछ छुपाया नहीं जा सकता.

(२१) यानी दुनिया का तलवगार हो.

(२२) यह ज़रूरी नहीं कि दुनिया के तालिब की हर स्वाहिश पूरी की जाए और उसे दिया ही जाए और वह जो मांगे वही दिया जाए. ऐसा नहीं है, बल्कि उनमें से जिसे चाहते हैं देते हैं और जो चाहते हैं देते हैं. कभी ऐसा होता है कि मेहरूम कर देते हैं और कभी ऐसा होता है कि वह बहुत चाहता है और थोड़ा देते हैं. कभी ऐसा कि ऐश चाहता है, तकलीफ़ देते हैं. इन हालातों में काफ़िर दुनिया और आख़िरत के टोटे में रहा और अगर दुनिया में उसको उसकी मुराद देदी गई तो आख़िरत की बदनसीबी और शक़ावत जब भी है. इसके विपरीत मूमिन, जो आख़िरत का तलवगार है, अगर वह दुनिया में फ़क़ से यानी दरिद्रता से भी बसर कर गया तो आख़िरत की हमेशा की नेअमत उसके लिये है. और अगर दुनिया में भी अल्लाह की कृपा से उसको ऐश मिला तो दोनों जग़त में कामयाब, गरज़ मूमिन हर हाल में कामयाब है. और काफ़िर अगर दुनिया में आराम पा भी ले, तो भी क्या ? क्योंकि —

(२३) और नेक अमल करे.

(२४) इस आयत में मालूम हुआ कि कर्म की मक़बूलियत के लिये तीन बातें ज़रूरी हैं, एक, नेक नियत, दूसरे कोशिश यानी अमल को उसके पूरे संस्कारों के साथ अदा करना, तीसरे ईमान जो सबसे ज़्यादा ज़रूरी है.

(२५) जो दुनिया चाहते हैं.

(२६) जो आख़िरत के तलवगार हैं.

(२७) दुनिया में रोज़ी देते हैं और हर एक का अंज़ाम उसके हाल के अनुसार.

(२८) दुनिया में सब उससे फ़ैज़ उठाते हैं, अच्छे हों या बुरे.

(२९) माल व क़माल व शान शौक़्त और दौलत में.

(३०) दोस्त, साथी और मददगार के बिना.

सूरए बनी इस्राईल - तीसरा रूकू

(१) कमज़ोरी बढ़े, शरीर के अंगों में कुच्चत न रहे और जैसा तू बचपन में उनके पास बेताक़्त था ऐसे ही वो उम्र के आख़िर में तेरे पास कमज़ोर रह जाएं.

(२) यानी कोई ऐसा क़लिमा ज़वान से व निकालना जिससे यह समझा जाए कि उनकी तरफ़ से तबीअत पर कुछ बोझ है.

(३) और बहुत ज़्यादा अदब के साथ उनसे बात करना. माँ बाप को उनका नाम लेकर न पुकारे, यह अदब के ख़िलाफ़ है. और इसमें उनके दिल दुखने का डर है. लेकिन वो सामने न हों तो उनका नाम लेकर जिज़्र करना जायज़ है. माँ बाप से इस तरह क़त्लाम करे जैसे गुनाह और म़दक़ अपन मालिक से करता है.

(४) यानी चिनमना और मेहरबानी और झुककर पेश आ और उनके साथ थके वक़्त में शफ़क़त व मेहरबत का व्यवहार कर कि उन्होंने ने तेरी मजबूरी के वक़्त तुझे प्यार दुलार से पाला था. और जो चीज़ उन्हें दरकार हो वह उनपर ख़र्च करने में पीछे मत हट.

(५) मतलब यह है कि दुनिया में बेहतर सुलूक और ख़िदमत को कितना भी बढ़ाया चढ़ाया जाए, लेकिन माँ बाप के एहसान का हक़ अदा नहीं होता. इसलिये बन्दे को चाहिये कि अल्लाह की बारगाह में उनपर फ़ज़ल व रहमत फ़रमाने की दुआ करे और अर्ज़ करे कि यावर मंगी ख़िदमत उनके एहसान का बदला नहीं हो सकती, तू उनपर करम कर कि उनके एहसान का बदला हो. इस आयत में साबित हुआ कि मुसलमान के लिये रहमत और मरफ़हत की दुआ ज़ाफ़ज़ और उसे फ़ायदा पहुंचाने वाली है. मुर्दा के ईसाले सबाब में भी उनके लिये रहमत की दुआ होती है, लिहाज़ा इसके लिये यह आयत असल है. माँ बाप काफ़िर हों तो उनके लिये हिदायत और ईमान की दुआ कर कि यही उनके हक़ में रहमत है. हदीस शरीफ़ में है कि माँ बाप की ख़ामन्दी में अल्लाह नआला की ख़ा

और अगर तू उनसे^(१३) मुंह फेरे अपने रब की रहमत के इन्तिज़ार में जिसकी तुझे उम्मीद है तो उनसे आसान बात कह^(१४) ॥२८॥ और अपना हाथ अपनी गर्दन से बंधा हुआ न रख और न पूरा खोल दे कि तू बैठ रहे मलामत किया हुआ थका हुआ^(१५) ॥२९॥ वेशक तुम्हारा रब जिसे चाहे रिज़क कुशादा देता और^(१६) कंस्ता है, वेशक वह अपने बन्दों को खूब जानता^(१७) देखता है ॥३०॥

चौथा रूकू

और अपनी औलाद को क़त्ल न करो मुफ़लिसी (वरिद्रता) के डर से^(१) हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी, वेशक उनका क़त्ल बड़ी ख़ता है ॥३१॥ और बदकारी के पास न जाओ वेशक वह बेहयाई है और बहुत ही बुरी राह ॥३२॥ और कोई जान जिसकी हुरमत (प्रतिष्ठा) अल्लाह ने रखी है नाहक़ न मारो और जो नाहक़ मारा जाए तो वेशक हमने उसके वारिस को क़ाबू दिया है^(२) तो वह क़त्ल में हद से न बढ़े^(३) ज़रूर उसकी मदद होनी है^(४) ॥३३॥ और यतीम के माल के पास न जाओ मगर उस राह से जो सबसे भली है^(५) यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंचे^(६) और एहद पूरा करो^(७) वेशक एहद से सवाल होना है ॥३४॥ और नापो तो पूरा और बराबर तराजू से तोलो, यह बेहतर है और इसका

وَمَا تَعْرَضْنَ عَنْهُمْ إِنِّي عَنْ رَحْمَةِ رَبِّكَ تَرْجُوها
فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ۖ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً
إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا
مَّحْسُورًا ۚ إِن رَّبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ
خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ لَّحَنَ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ إِنَّ قَتْلَهُمْ
كَانَ خَطَا كَبِيرًا ۖ وَلَا تَقْرَبُوا الرِّزْقَ إِن كَانَ فَاحِشَةً
وَسَاءَ سَيِّئًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ
إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَن قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيهِ
سُلْطَانًا فَلَا يَسْرِفُ فِي الْقَتْلِ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا ۖ
وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ
يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۖ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۚ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ
مَسْئُولًا ۖ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ

مَنْزِل

और उनकी नाराज़ी में अल्लाह न आला की नाराज़ी है। दूसरी हदीस में है, माँ बाप की आज्ञा का पालन करने वाला जहन्नमी न होगा और उनका नाफ़रमान कुछ भी अमल करे, अज़ाब में जकड़ा जाएगा। एक और हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया माँ बाप की नाफ़रमानी से बचो इसलिये कि जन्नत की खुशबू हज़ार बरस की राह तक आती है और नाफ़रमान वह खुशबू न पाएगा, न सगे रिश्तों को तोड़ने वाला, न बूढ़ा बलात्कार, न घमण्ड से अपनी इज़ार टख़नों से नीचे लटकाने वाला।

(६) माँ बाप की फ़रमावशकारी का इरादा और उनकी ख़िदमत का शौक़।

(७) और तुम से माँ बाप की ख़िदमत में कमी बाक़े हुई तो तुमने तौबह की।

(८) उनके साथ मेहरबानी करो और महबूत और मेल जोल और ख़बरगिरी और मौक़े पर मदद और अच्छा सुलूक और अगर बां मेहरमों में से हो और मोहताज हो जाएं तो उनका ख़र्च उठाना, यह भी उनका हक़ है और मालदार रिश्तेदार पर लाज़िम है। कुछ मुफ़रिसां ने इस आयत की तफ़सीर में कहा है कि रिश्तेदारों से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ रिश्ते रखने वाले मुराद हैं और उनका हक़ यानी पाँचवां हिस्सा देना और उनका आदर सत्कार करना है।

(९) उनका हक़ दाँ, यानी ज़कात।

(१०) यानी नाजायज़ काम में ख़र्च न कर। हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि “तबज़ीर” माल का नाहक़ में ख़र्च करना है।

(११) कि उनकी राह चलते हैं।

(१२) तो उसकी राह इश्रितयार करना न चाहिये।

(१३) यानी रिश्तेदारों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों से। यह आयत मेहरजअ व बिलाल व सुहैब व सालिम व ख़बाब सहाबए रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में उतरी जो समय समय पर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अपनी ज़रूरतों की पूर्ति के लिये कुछ न कुछ मांगते रहते थे। अगर किसी वक़्त हज़रत के पास कुछ न होता तो आप हया से उनका सामना न करते और ख़ामोश हो जाते इस इन्तिज़ार में कि अल्लाह तआला कुछ भेजे तो उन्हें अता फ़रमाएँ।

(१४) यानी उनकी खुशदिली के लिये, उनसे वादा कीजिये या उनके हक़ में दुआ फ़रमाइये।

(१५) यह मिसाल है जिससे ख़र्च करने में मध्यमार्ग पर चलने की हिदायत मंज़ूर है और यह बताया जाता है कि न तो इस तरह हाथ रोको कि बिल्कुल ख़र्च ही न करो और यह मालूम हो गया कि हाथ गले से बांध दिया गया है, देने के लिये हिल ही नहीं सकता। ऐसा करना तो मलामत का कारण होता है कि कंज़ूस को सब बुरा कहते हैं। और न ऐसा हाथ खोलो कि अपनी ज़रूरतों से लिये भी कुछ बाक़ी न रहे, एक मुसलमान बीबी के सामने एक यहूदी औरत ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मखावत का बयान

अंजाम अच्छा (३५) और उस बात के पीछे न पड़ जिसका तुझे इल्म नहीं (३६) बेशक कान और आँख और दिल इन सब से सवाल होना है (३६) और ज़मीन में इतराता न चल (३७) बेशक हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बलन्दी में पहाड़ों को न पहुँचेगा (३७) यह जो कुछ गुज़रा इन में की बुरी बात तेरे रब को ना पसन्द है (३८) यह उन वहियों (देव-वाणियों) में से है जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी तरफ़ भेजीं हिकमत की बातें (३९) और ऐ सुन्ने वाले अल्लाह के साथ दूसरा खुदा न ठहरा कि तू जहेन्नम में फेंका जाएगा तअने पाता धक्के खाता (३९) क्या तुम्हारे रब ने तुम को बेटे चुन दिये और अपने लिये फ़रिशतों से बेटियाँ बनाई (४०) बेशक तुम बड़ा बोल बोलते हो (४०)

पाँचवां रूक़

और बेशक हमने इस कुरआन में तरह तरह से बयान फ़रमाया (४१) कि वो समझें (४१) और इससे उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़रत (४२) तुम फ़रमाओ अगर उसके साथ और खुदा होते जैसा ये वकते हैं जब तो वो अर्श के मालिक की तरफ़ कोई राह ढूँड निकालते (४२) उसे पाकी और बरतरी उनकी बातों से बड़ी बरतरी (४३) उसकी पाकी बोलते हैं सातों आसमान और ज़मीन और जो कोई उनमें हैं (४४) और कोई चीज़ नहीं (४५) जो उसे सराहती हुई उसकी

الْمُسْتَقِيمِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا وَلَا تَقِفْ
مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ
كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا وَلَا تَنْشِ فِي
الْأَرْضِ مَرْحَاءً إِنَّكَ لَنْ تُخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ
الْجِبَالَ طُولًا كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ
مَكْرُوهًا ذَلِكَ مِمَّا أَوْحَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ
وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتُلْقَى فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا
مَذْمُومًا أَفَأَصْحَابُكُمْ رَبُّكُم بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ
الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا مَا تَعْلَمُونَ قَوْلًا عَظِيمًا وَلَقَدْ
صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا
تُفُورًا قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذَا
لَا يَنْتَعَزُونَ عَنِ الْعَرْشِ سَبِيلًا سُبْحَنَهُ وَ
تَعَالَى عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا تَسْمِعُ لَهُ السَّمَوَاتُ

किया और उसमें इस हद तक बढ़ा चढ़ा कर कहा कि हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बढ़कर बता दिया और कहा कि हज़रत मूसा की सज़ावत इस इन्तिहा पर पहुँची हुई थी कि अपनी ज़रूरतों के अलावा जो कुछ भी उनके पास होता, मांगने वाले को देने से नहीं हिचकिचाते. यह बात मुसलमान बीबी को नागवार गुज़री और उन्होंने कहा कि सारे नबी बुजुर्गों व कमाल वाले हैं. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उदारता और सज़ावत में कुछ संदेह नहीं, लेकिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दर्जा सबसे ऊँचा है और यह कहकर उन्होंने चाहा कि हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सज़ावत और करम की आजमाइश उस गहूँदी औरत को कर दी जाए चुनांचे उन्होंने अपनी छोटी बच्ची को भेजा कि हुज़ूर से क़मीज़ माँग लाए. उस वक़्त हुज़ूर के पास एक ही क़मीज़ थी जो आप पहने हुए थे, वही उतार कर अता फ़रमा दी और आप ने मकान के अन्दर तशरीफ़ रखी, शर्म से बाहर न आए यहाँ तक कि अज़ान का वक़्त हो गया. अज़ान हुई. सहाबा ने इन्तिज़ार किया, हुज़ूर तशरीफ़ न लाए तो सब को फ़िक्र हुई. हाल मालूम करने के लिये सरकार के मुदारक मकान में हाज़िर हुए तो देखा कि पाक यदन पर क़मीज़ नहीं है. इसपर यह आयत उतरी.

(१६) जिसे चाहे उसके लिये तंगी करता और उसको.

(१७) और उनकी हालतों और मसलहतों को.

सूरए बनी इस्राईल - चौथा रूक़

(१) जिहालत के दौर में लोग अपनी लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ दिया करते थे और इसके कई कारण थे. नादारी व मुफ़लिसी का डर, लूट का ख़ौफ़. अल्लाह तआला ने इसको मना फ़रमाया.

(२) किस्सास लेने का. आयत से साबित हुआ कि किस्सास लेने का हक़ बली को है और वह ख़ून के रिश्ते के हिसाब से हैं. और जिसका बली न हो उसका बली सुल्तान है.

(३) और जिहालत के ज़माने की तरह एक मक्कतूल के बदले में कई कई को या बजाए क़ातिल के उसकी क़ौम और जमाअत के और किसी व्यक्ति को क़त्ल न करे.

(४) याती बली की या मक्कतुले मज़लूम की या उस शख्स की जिसको बली नाहक़ क़त्ल करे.

(५) यह यह है कि उसकी हिफ़ाज़त करो और उसको बढ़ाओ.

(६) और वह अठारह साल की उम्र है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हा के नज़दीक यही मुख़्तार हैं और हज़रत इमामे आजम

पाकी न बोले^(१) हाँ तुम उनकी तस्बीह नहीं समझते^(२) वेशक वह हिल्म (सहिष्णुता) वाला बख्शने वाला है^(३) (४४) और ऐ मेहबूब तुमने कुरआन पढ़ा हमने तुम पर और उनमें कि आखिरत पर ईमान नहीं लाते एक छुपा हुआ पर्दा कर दिया^(४) (४५) और हमने उनके दिलों पर गिलाफ़ (पर्दे) डाल दिये हैं कि उसे न समझें और उनके कानों में टैट^(५) और जब तुम कुरआन में अपने अकेले रब की याद करते हो वो पीठ फेरकर भागते हैं नफ़रत करते^(६) हम खूब जानते हैं जिस लिये वो सुनते हैं^(७) जब तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और जब आपस में मशवरा करते हैं जब कि ज़ालिम कहते हैं तुम पीछे नहीं चले मगर एक ऐसे मर्द के जिस पर जादू हुआ^(८) (४६) देखो उन्होंने तुम्हें कैसी तशबीहें (उपमाएं) दीं तो गुमराह हुए कि राह नहीं पा सकते^(९) और बोले क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे क्या सच मुच नए बनकर उठेंगे^(१०) (४७) तुम फ़रमाओ कि पत्थर या लोहा हो जाओ^(११) (४८) या और कोई मखलूक (प्राणीवर्ग) जो तुम्हारे खयाल में बड़ी हो^(१२) तो अब कहेंगे हमें कौन फिर पैदा करेगा, तुम फ़रमाओ वही

السَّامِعُ وَالْأَرَضُ وَمَنْ فِيهِنَّ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يَسْمِعُ
بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَقْضَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ
حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ
وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَسْتُورًا ۝ وَ
جَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ
وَقْرًا وَإِذَا ذُكِرْتَ بِكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَوْ أَنَّ
أُولَآئِهِمْ يُفْقَرُونَ ۝ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ
يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَى إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ
إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ۝ أَنْظِرْ كَيْفَ صَرَبُوا
لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝ وَ
قَالُوا إِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرَفَآئِئًا إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ
خَلْقًا جَدِيدًا ۝ قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ۝ أَوْ
خَلْقًا مِمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا

مَنْزِل

अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह ने अलामात ज़ाहिर न होने की हालत में बालिग होने की मुदत की इत्तिहा अठारह साल फ़रार दी.
(अहमदी)

- (७) अल्लाह का भी, बन्दों का भी.
- (८) यानी जिस चीज़ को देखा न हो उसे न कहो कि मैं ने देखा . जिसको सुना न हो उसकी निश्चय यह न कहो कि मैं ने सुना. इन्हे हनीफ़ा से मन्कूल है कि झूठी गवाही न दो . इन्हे अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा कहते हैं किसी पर वह इज़्ज़ाम न लगाओ जो तुम न जानते हो.
- (९) कि तुमने उनसे क्या काम लिया.
- (१०) घमण्ड और अपनी शान दिखाने से.
- (११) मानी ये हैं कि घमण्ड और झूठी शान दिखाने से कुछ लाभ नहीं.
- (१२) जिनकी सच्चाई पर अक्ल गवाही दे और उनसे नफ़स की दुरुस्ती हो, उनकी रियायत या उनका खयाल रखना लाज़िम है कुछ मुफ़सिरो ने फ़रमाया कि इन आयतों का निष्कर्ष तौहीद और बेग़बती और आखिरत की तरफ़ साबत दिलाना है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया ये अठारह आयतें "ला तजअल मअल्लाहे इलाहन आग्ररा" से "मदहूरा" तक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तस्वीरों में थीं. इनकी शुरुआत तौहीद के हुक्म से हुई और अन्त शिर्क की मुमानिअत पर. इससे मालूम हुआ कि हर हिकमत की बुनियाद तौहीद और ईमान है और कोई क़ौल और अमल इसके बिना कुबूल नहीं.
- (१३) यह हिकमत के ख़िलाफ़ बात किस तरह कहते हो.
- (१४) कि अल्लाह तआला के लिये औलाद साबित करते हो जो जिस्म की विशेषता से है और अल्लाह तआला इससे पाक. फिर उसमें भी अपनी बड़ाई रखते हो कि अपने लिये तां बटे पसन्द करते हो और उसके लिये बेटियाँ बताते हो. कितनी बेअदबी और गुस्ताख़ी है.

सूरए बनी इस्राईल - पाँचवां रूकू

- (१) दलीलों से भी, मिसालों से भी, हिकमतों से भी, इब्रतों से भी और जगह जगह इस मज़मून को तरह तरह से बयान फ़रमाया.
- (२) और नसीहत हासिल करें.
- (३) और सच्चाई से दूरी.
- (४) और उससे मुकाबला करते, जैसा बादशाहों का तरीक़ा है.

जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया, तो अब तुम्हारी तरफ़ मसख़रगी (ठठोल) से सर हिलाकर कहेंगे यह कब है^(५) तुम फ़रमाओ शायद नज़दीक ही हो^(५१) जिस दिन वह तुम्हें बुलाएगा^(५२) तो तुम उसकी हम्द करते चले आओगे^(५३) और समझोगे कि न रहे थे^(५४) मगर थोड़ा^(५५)

छटा रूकू

और मेरे^(५) बन्दों से फ़रमाओ^(५) वह बात कहें जो सबसे अच्छी हो^(५) बेशक शैतान उनके आपस में फ़साद डाल देता है, बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है^(५३) तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है वह चाहे तो तुम पर रहम करे^(५४) चाहे तो तुम्हें अज़ाब करे, और हमने तुमको उनपर करोड़ा बना कर न भेजा^(५५) और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं^(५६) और बेशक हमने नबियों में एक को एक पर बड़ाई दी^(५७) और दाऊद को जुबूर अता फ़रमाई^(५८) तुम फ़रमाओ पुकारो उन्हें जिनको अल्लाह के सिवा गुमान करते हो तो वो इख़्तियार नहीं रखते तुम से तकलीफ़ दूर करने और न फेर देने का^(५९) वो मक़बूल (प्रिय) बन्दे जिन्हें ये काफ़िर पूजते हैं^(६०) वो आप ही अपने रब की तरफ़ वसीला (आश्रय) ढूँढते हैं कि उनमें कौन ज़्यादा मुकर्रब (समीपस्थ) है^(६१) उसकी रहमत की

قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ: فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَى هُوَ قُلِ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ۝ يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۝ وَقُلِ لِعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ بَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ۝ رَبِّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۚ إِنَّ يَسْنَا بَرَحْمَكُمُ ۚ وَإِنْ يَسْنَا يَعْتَدِبْكُمْ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۚ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَلَقَدْ فَطَرْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَى بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاوُدَ دَبُورًا ۚ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ رَعَيْتُمْ مِّنْ دُونِهِ فَلَا تَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ

مَزْلُومٌ

(५) अपने अस्तित्व की ज़वान से, इस तरह कि उनके वजूद बनाने वाले की कुदरत और हिकमत के प्रमाण हैं। या बोलती ज़वान से, और यही सही है। बहुत सी हदीसों में इसी तरह आया है और बुजुर्गों ने भी यही बताया है।

(६) पत्थर, सज्जा (बनस्पति) और जानदार।

(७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया हम ज़िन्दा चीज़ अल्लाह तआला की तस्बीह करती है और हर चीज़ की ज़िन्दगी उसकी हैसियत के अनुसार है। मुफ़सिरी ने कहा कि दर्वाज़ा खोलने की आवाज़ और छत का चटखना यह भी तस्बीह करना है और इन सब की तस्बीह "सुक़ानल्लाहो व बिहमिदीही" है। हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हु से मन्कूल है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुबारक उंगलियों से पानी के चम्चे जारी होते हमने देखे और यह भी हमने देखा कि ख़ाते वक़्त में ख़ाता तस्बीह करता था (बुख़ारी शरीफ़) हदीस शरीफ़ में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, मैं उस पत्थर को पहचानता हूँ जो मेरी नबुव्वत के ज़माने में मुझे सलाम करता था। (मुस्लिम शरीफ़) इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम लकड़ी के एक सुतून से तकिया फ़रमा कर झुनवा दिया करते थे। जब मिम्बर बनाया गया और हुज़ूर उसपर जलवा अफ़रोज़ हुए तो वह सुतून रोषा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसपर मेहरबानी का हाथ फेरा और शफ़क़्त फ़रमाई और तस्कीन दी (बुख़ारी शरीफ़)। इन सारी हदीसों से बेजान चीज़ों का क़लाम और तस्बीह करना साबित हुआ।

(८) ज़वानों की भिन्नता या अलग अलग होने के कारण या उनके मानी समझने में दुश्वारी की वजह से।

(९) कि बन्दों की ग़फ़रत पर अज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता।

(१०) कि वो आपको न देख सकें। जब आयत "तच्चत यदा" उतरी तो अबू लहब की औरत पत्थर लेकर आई। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत अबू बक्र रदियल्लाहो अन्हु के साथ तशरीफ़ रखते थे। उसने हुज़ूर को न देखा और हज़रत अबू बक्र सिदीक़ रदियल्लाहो अन्हु से कहने लगी, तुम्हारे आका कहां हैं, मुझे मालूम हुआ है उन्होंने ने मेरी बुराई की है। हज़रत सिदीक़ रदियल्लाहो अन्हु ने फ़रमाया, वो कविता नहीं करते हैं। तो वह यह कहती हुई वापस हुई कि मैं उनका सर कुचलने के लिये यह पत्थर लाई थी। हज़रत सिदीक़े अक़बर रदियल्लाहो अन्हु ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि उसने हुज़ूर को देखा नहीं। फ़रमाया, मेरे और उसके बीच एक फ़रिश्ता खड़ा रहा। इस घटना के बारे में यह आयत उतरी।

(११) बोझ, जिसके कारण वो कुरआन नहीं सुनते।

(१२) यानी सुनते भी हैं तो टट्टा करने और झुटलाने के लिये।

(१३) तो उनमें से कुछ आपको पागल कहते हैं, कुछ जादूगर, कुछ तांत्रिक, कुछ शायर।

(१४) यह बात उन्होंने बड़े आश्चर्य से कही और मरने और खाक में मिल जाने के बाद ज़िन्दा किये जाने को उन्होंने ने बहुत दूर

उम्मीद रखते और उसके अज्ञाव से डरते हैं^(१२) वेशक तुम्हारे रब का अज्ञाव डर की चीज़ है^(१३) और कोई बस्ती नहीं मगर यह कि हम उसे क़यामत के रोज़ से पहले नेस्त कर देंगे या उसे सख्त अज्ञाव देंगे^(१४) यह किताब में^(१५) लिखा हुआ है^(१६) और हम ऐसी निशानियां भेजने से यूँही बाज़ रहे कि उन्हें अगलों ने झुटलाया,^(१७) और हमने समूद को^(१८) नाफ़ा (ऊंटनी) दिया आँखें खोलने को^(१९) तो उन्होंने उसपर जुल्म किया^(२०) और हम ऐसी निशानियां नहीं भेजते मगर डराने को^(२१) और जब हमने तुम से फ़रमाया कि सब लोग तुम्हारे रब के क़ावू में हैं^(२२) और हमने न किया यह दिखावा^(२३) जो तुम्हें दिखाया था^(२४) मगर लोगों की आजमाइश (परीक्षा) को^(२५) और वह पेड़ जिस पर क़ुरआन में लअनत है^(२६) और हम उन्हें डराते हैं^(२७) तो उन्हें नहीं बढ़ती मगर सरकशी (नाफ़रमानी)^(२८) ६००

सातवाँ रूकू

और याद करो जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो^(१) तो उन सबने सज्दा किया सिवा इब्लीस के, बोला क्या मैं इसे सज्दा करूँ जिसे तूने मिट्टी से बनाया^(२) बोला^(३) देख तो जो यह तूने मुझसे इज़्ज़त वाला रखा^(४) अगर तूने मुझे क़यामत तक मुहलत दी तो ज़रूर मैं उसकी औलाद को पीस डालूँगा^(५) मगर थोड़ा^(६) ६२२ फ़रमाया दूर हो^(७) तो उनमें जो तेरे कहने पर चलेगा तो वेशक सब

عَذَابُهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۝ وَإِنْ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّكَ فِي ذَلِكَ مِنْ الْكُتُبِ مَسْطُورًا ۝ وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۖ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۖ وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَحْوِيلًا ۖ وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ ۖ وَنُخَوِّفُهُمْ ۖ وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۖ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ قَالَ أَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرْتُمْ عَلَىٰ لَيْنٍ ۖ أَمْ أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ لَا تَخْتَنِكَن ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا ۖ قَالَ أَذْهَبَ فَمَنْ يَبْعَكَ مِنْهُمْ

سُورَةُ

समझा. अल्लाह तआला ने उनका रद किया और अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इरशाद फ़रमाया.

(१५) और ज़िन्दगी से दूर हो. जान उससे कमी न जुड़ी हो तो भी अल्लाह तआला तुम्हें ज़िन्दा करेगा और पहली हालत की तरफ़ वापस फ़रमाएगा. तो फिर हड्डियाँ और इस ज़िस्म के ज़रों का क्या कहना, उन्हें ज़िन्दा करना उसकी कुदरत से क्या दूर है. उनसे तो जान पहले जुड़ी रह चुकी है.

(१६) यात्री क़यामत कब कायम होगी और मुँह कब उठाए जाएंगे.

(१७) क़ब्रों से क़यामत के मैदान की तरफ़.

(१८) अपने सरों से मिट्टी झाड़ते और “सुन्नानकल्लाहुम्मा व बिहन्दिका” कहते और यह इक़रार करते कि अल्लाह ही पैदा करने वाला है, मरने के बाद उठाने वाला है.

(१९) दुनिया में या क़ब्रों में.

सूरए बनी इस्राईल - छटा रूकू

(१) ईमानदार.

(२) कि वो काफ़िरों से ---

(३) नर्म हो या पाकीज़ा हो, अदब और सभ्यता की हो, नेकी और हिदायत की हो. काफ़िर अगर बेहदगी करें तो उनका जवाब उनके ही अन्दाज़ में न दिया जाए. मुश्किल मुसलमानों के साथ बदक़लामी करते और उन्हें कष्ट देते थे. उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इसकी शिकायत की, इसपर यह आयत उतरी. और मुसलमानों को बताया गया कि वो काफ़िरों की जिहालत वाली बातों का वैसा ही जवाब न दें, सब करें और “अल्लाह तुम्हें हिदायत दे” कह दिया करें. यह हुक्म जिहाद और क़िताल के हुक्म से पहले था, बाद को मन्सूख़ या स्थगित हो गया. इरशाद फ़रमाया गया “या अय्युहन् नबिअ्यो जाहिदिल कुफ़रारा बल मुनाफ़िकीना बग़लुज़ अलैहिम” यात्री ऐ ग़ैब की ख़बर देने वाले (नबी), जिहाद फ़रमाओ काफ़िरों और मुनाफ़िकों पर और उनपर सज़ा करो. (सूरए तौबह, आयत ७३) और एक क़ौल यह है कि यह आयत हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में उतरी. एक काफ़िर ने उनकी शान में बेहूदा क़लिमा ज़वान से निकाला था. अल्लाह तआला ने उन्हें सब करने और माफ़ फ़रमाने का हुक्म फ़रमाया.

(४) और तुम्हें तौबह और ईमान की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए.

का बदला जहन्नम है भरपूर सज़ा (६३) और डिंगा दे उनमें से जिसपर क्रुदरत पाए अपनी आवाज़ से (९) और प्यादों का (८) और उनका साझी हो मालों और बच्चों में (९) और उन्हें वादा दे (१०) और शैतान उन्हें वादा नहीं देता मगर धोखे से (६४) बेशक जो मेरे बन्दे हैं (११) उनपर तेरा कुछ क़ाबू नहीं, और तेरा रब काफ़ी है काम बनाने को (१२) (६५) तुम्हारा रब वह है कि तुम्हारे लिये दरिया में किशती रवाँ (प्रवाहित) करता है कि (१३) तुम उसका फ़ज़ल तलाश करो, बेशक वह तुमपर मेहरबान है (६६) और जब तुम्हें दरिया में मुसीबत पहुंचती है (१४) तो उसके सिवा जिन्हें पूजते हैं सब गुम हो जाते हैं (१५) फिर जब वह तुम्हें खुशकी की तरफ़ निजात देता है तो मुंह फेर लेते हो (१६) और आदमी बड़ा नाशुक्रा है (६७) क्या तुम (१७) इससे निडर हुए कि वह खुशकी ही का कोई किनारा तुम्हारे साथ धंसा दे (१८) या तुमपर पथराव भेजे (१९) फिर अपना कोई हिमायती न पाओ (२०) (६८) या इससे निडर हुए कि तुम्हें दोबारा दरिया में ले जाए फिर तुमपर जहाज़ तोड़ने वाली आंधी भेजे तो तुम को तुम्हारे कुफ़्र के सबब डुबो दे फिर अपने लिये कोई ऐसा न पाओ कि उसपर हमारा पीछ कर (२१) (६९) और बेशक हमने आदम की औलाद को इज़ज़त दी (२२) और

فَإِنْ جَهِتُمْ جَزَاءً مَّقْضُورًا ۝ وَاسْتَفْزِرْ مِنْ
اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَ
رَجْلِكَ وَشَارِكِهِمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدِهِمْ وَمَا
يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۝ إِنَّ عِبَادِي لَكِنَّ لَكَ
عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ۝ رَبُّكُمُ الَّذِي يُرْسِلُ
لَكُمْ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَنْتَقُوا مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ كَانَ
بِكُمْ رَحِيمًا ۝ وَإِذَا امْتَسَكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ
تَدْعُونَ إِلَّا إِلَٰهًا فَلَمَّا تَجِدُكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَ
كَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ۝ أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يُخْغِبْ بِكُمْ جَانِبَ
الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ
وَكِيلًا ۝ أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَ كُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرٰى
فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ السَّمَاءِ فَيَكْفُرْ بِكُمْ
ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ۝ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا

مَنْ

- (५) कि तुम उनके कर्मों के ज़िम्मेदार होते.
- (६) सब की हालतों को ओर इसको कि कौन किस लायक है.
- (७) ख़ास बुजुर्गियों के साथ जैसे कि हज़रत इब्राहीम को ख़लील किया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कलीम और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हबीब.
- (८) जुबुर अल्लाह की किताब है जो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर उतरी. इसमें एक सौ पचास सूरे हैं. सब में दुआ और अल्लाह तआला की तारीफ़ और हम्द और बढ़ाई है. न इसमें हलाल व हराम का बयान, न फ़रायज़, न हुदूद व फ़क़ाम. इस आयत में ख़ास तौर से हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का नाम लेकर ज़िक्र फ़रमाया गया. मुफ़ससियों ने इसके कुछ कारण बयान किये हैं. एक यह कि इस आयत में बयान फ़रमाया गया कि नबियों में अल्लाह तआला ने कुछ को कुछ पर बुजुर्गी दी फिर इश़ाद किया कि हज़रत दाऊद को जुबुर अता की जबकि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को नबुव्वत के साथ मुल्क भी अता किया. या लेकिन उसका ज़िक्र न फ़रमाया. इसमें तम्बीह है कि आयत में जिस बुजुर्गी का ज़िक्र है वह इल्म की बुजुर्गी है न कि राजपाट और दीलत की. दूसरी वजह यह है कि अल्लाह तआला ने जुबुर में फ़रमाया है कि मुहम्मद ख़ातिमुल अम्बिया हैं और उनकी उम्मत सब उम्मतों से बेहतर. इसी वजह से आयत में हज़रत दाऊद और जुबुर का ज़िक्र ख़ास तरीक़े 'त' फ़रमाया गया. तीसरी वजह यह है कि यहूदियों का गुमान था कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद कोई नबी नहीं और तौरात के बाद कोई किताब नहीं. इस आयत में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को जुबुर अता फ़रमाने का ज़िक्र करके यहूदियों को झुटला दिया गया और उनके दावे को ग़लत साबित कर दिया गया. गरज़ कि यह आयत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सबसे ज्यादा बुजुर्गी और महानता साबित करती है.
- (९) काफ़िर जब सरज़ कहत में गिरफ़्तार हुए और नीयत यहाँ तक पहुंची कि कुत्ते और मुर्दार खा गए और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जुबुर में फ़रियाद लाए और आपसे दुआ की प्रार्थना की. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि जब बुतों को ख़ुदा मानते हो तो इस वक़्त उन्हें पुकारो और वो तुम्हारी मदद करें और जब तुम जानते हो कि वो तुम्हारी मदद नहीं कर सकते तो क्यों उन्हें मअबूद बनाते हो.
- (१०) जैसे कि हज़रत ईसा और हज़रत उज़ैर और फ़रिश्ते. इन्हे मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया यह आयत अरबों की एक जमाअत के बारे में उतरी जो ज़िन्नो के एक समूह को पूजते थे. वो जिन्नत इस्लाम ले आए और उनके पूजने वालों को ख़बर न हुई. अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और उन्हें शर्म दिलाई.
- (११) ताकि जो सबसे ज्यादा करीब ओर प्यारा हो उसका वसीला बनाएं. इसमें मालूम हुआ कि प्यारे और करीबी बन्दों को अल्लाह की बारगाह में वसीला बनाना जायज़ और अल्लाह के मक़बूल बन्दों का तरीक़ा है.
- (१२) काफ़िर उन्हें किस तरह मअबूद समझते हैं.

उनको खुशकी और तरी में^(१३) सवार किया और उनको सुथरी चीज़ें रोज़ी दीं^(१४) और उनको अपनी बहुत मखलूक से अफ़ज़ल किया^(१५) ﴿७०﴾

आठवाँ रूकू

जिस दिन हम हर जमाअत को उसके इमाम के साथ बुलाएंगे^(१) तो जो अपना नामा (कर्मलेखा) दाएं हाथ में दिया गया ये लोग अपना नामा पढ़ेंगे^(२) और तागे भर उनका हक़ न दिया जाएगा^(३) ﴿७१﴾ और जो इस ज़िन्दगी में^(४) अंधा हो वह आख़िरत में अंधा है^(५) और भी ज़्यादा गुमराह^(६) और वह तो क़रीब था कि तुम्हें कुछ लाज़िश (डगमगाहट) देते हमारी वही से जो हमने तुमको भेजी कि तुम हमारी तरफ़ कुछ और निस्वत करदो और ऐसा होता तो वो तुमको अपना गहरा दोस्त बना लेते^(७) ﴿७२﴾ और अगर हम तुम्हें^(८) अडिग न रखते तो क़रीब था कि तुम उनकी तरफ़ कुछ थोड़ा सा झुकते^(९) ﴿७३﴾ और ऐसा होता तो हम तुमको दूनी उम्र और दोचन्द (दूनी) मौत^(१०) का मज़ा देते फिर तुम हमारे मुक़ाविल अपना कोई मददगार न पाते^(११) और वेशक़ क़रीब था कि वो तुम्हें इस ज़मीन से^(१२) डिगा दें कि तुम्हें इससे बाहर कर दें और ऐसा होता तो वो तुम्हारे पीछे न ठहरते मगर थोड़ा^(१३) ﴿७४﴾ दस्तूर उनका जो हमने तुमसे पहले रसूल भेजे^(१४) और तुम हमारा

بِئَاتِ الرَّسُولِ

२०३

سُبْحَانَ الَّذِي

بِئَاتِ أَدَمَ وَمَحَلَّهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَأَيْنَهُمْ مِنَ
الطَّبَاتِ وَقَطَّلْنَهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا
تَفْضِيلًا ۖ يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمامِهِمْ فَمَنْ
أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا
يُظْلَمُونَ فِي شَيْءٍ ۖ وَمَنْ كَانَ فِي هَٰذَا أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي
الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۖ وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ
عَنِ الذِّنِّ أَوْ حُبِّنَا إِلَيْكَ لِنَفْتِنَ عَلَيْكَ عَافٍ ۖ
وَإِذَا لَا تَخَذُوكَ خَلِيلًا ۖ وَلَوْ لَا أَنْ تَبْتَنِكَ لَقَدْ
كَدَبْتَ تَزَكَّىٰ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ۖ إِذَا الْأَذْفَنُكَ ضَعْفَ
الْحَيَوَةِ وَضَعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ۖ
وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ
مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبَثُونَ خَلْقَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ سَنَّةَ
مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا

مَثَلٌ

(१३) क़त्त वगैरह के साथ जब वो कुफ़्र करें और गुनाहों में मुजिल्ता हों, हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया जब किसी बरती में ज़िना और सूद की कसरत होती है तो अल्लाह तआला उसकी हलाक़त का हुक्म देता है।

(१४) लीहें मेहफूज़ में।

(१५) इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मक्का वालों ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि सफ़ा पहाड़ को सोना कर दें और पहाड़ों को मक्का की धरती से हटा दें, इसपर अल्लाह तआला ने अपने हवीव को वही फ़रमाई कि आप फ़रमाएं तो आपकी उम्मत को मोहलत दी जाए और अगर आप फ़रमाएं तो जो उन्हों ने तलब किया है वह पूरा किया जाए लेकिन अगर फिर भी वो ईमान न लाए तो उन्को हलाक़ करके नेस्त-नाबूद कर दिया जाएगा, इस लिये कि हमारी सुन्नत यही है कि जब कोई क़ौम निशानी मांगे और फिर ईमान न लाए तो हम उसे हलाक़ कर देते हैं और मोहलत नहीं देते, ऐसा ही हमने पहलों के साथ किया है, इसी बयान में यह आयत उतरी।

(१६) उनकी तलब के अनुसार।

(१७) यानी ख़ुली और साफ़ हुज़्रत या तर्क।

(१८) और कुफ़्र किया कि उसके अल्लाह की तरफ़ से हाने से इन्क़ारी हो गए।

(१९) जल्द आने वाले अज़ाब स।

(२०) उसकी कुदरत के तहत, तो आप तबलीग़ फ़रमाइये और किसी का ख़ौफ़ न कीजिये, अल्लाह आप का निगहबान है।

(२१) यानी अल्लाह की निशानियों के चमत्कारों का निरीक्षण।

(२२) मेअराज की रात, जागने की हालत में।

(२३) यानी मक्का की, चुनांचे जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें मेअराज की ख़बर दी तो उन्होंने उसे झुटलाया और कुछ इस्लाम से फिर गए और हंसी बनाने के अन्दाज़ में बैतुल मक़दिस का नक्श़ा पूछने लगे, हुज़ूर ने सारा नक्श़ा बता दिया तो इसपर काफ़िर आपको जादूगर कहने लगे।

(२४) यानी ज़क्क़ूम दरज़त जो जहन्नम में पैदा होता है, उसको आजमाइश का कारण बना दिया, यहां तक कि अबू जहल ने कहा कि मुहम्मद तुम को जहन्नम की आग से डराते हैं कि वह पत्थरों का जला देगी फिर यह भी कहते हैं कि उसमें दग्ध जंगे, आग में दरज़त कहाँ रह सकता है, यह ऐतिराज़ उन्होंने किया और अल्लाह की कुदरत से गाफ़िल रहे, यह न समझे कि उस कुदरत और इस्तिथार वाले की कुदरत से आग में दरज़त पैदा करना कुछ असंभव नहीं, समन्दल एक कीड़ा होता है जो आग में पैदा होता, आग ही में रहता है, तुर्क इलाकों में उसके ऊन की

तौलियाँ बनाई जाती थीं जो मैली हो जाने पर आग में डाल कर साफ़ कर ली जाती थीं और जलती न थीं। शत्रु मुर्ग अंगारे खा जाता है। अल्लाह की कुदरत से आग में दस्त पैदा करना क्या दूर है।
(२५) दीन और दुनिया के ख़ौफ़नाक कामों में।

सूरए बनी इस्राईल - सातवाँ स्कू

- (१) तहियत का यानी आदर और तअज़ीम का।
- (२) शैतान।
- (३) और इसको मुझपर बुजुर्गी दी और इसको सच्चा कराया तो मैं क्रसम खाता हूँ कि ----
- (४) गुमराह करके।
- (५) जिन्हें अल्लाह बचाए और मेहफूज़ रखे वो उसके मुख़लिस बन्दे हैं। शैतान के इस कलाम पर अल्लाह तआला ने उससे।
- (६) तुझे पहले सूर फूँके जाने तक मोहलत दी गई।
- (७) वसवसे डाल कर और गुनाह की तरफ़ बुलाकर। कुछ उलमा ने फ़रमाया कि इससे मुराद भाने वजाने, खेल तमाशे की आवाज़ें हैं। इन्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जो आवाज़ अल्लाह तआला की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मुंह से निकले वह शैतानी आवाज़ है।
- (८) यानी अपने सब छल पूरे कर ले और अपने सारे लश्क़रों से मदद ले।
- (९) जुजाज़ ने कहा कि जो गुनाह माल में हो या औलाद में, इस्तीस उसमें शरीक है जैसे कि सूद और माल हासिल करने के दूसरे हराम तरीक़े और फ़िस्क और ममनूआत में ख़र्च करना और ज़क़ात न देना, ये माली काम हैं जिनमें शैतान की शिरक़त है और ज़िना और नाज़ायज़ तरीक़े से औलाद हासिल करना, ये औलाद में शैतान की हिस्सेदारी है।
- (१०) अपनी ताअत या अनुकरण पर।
- (११) नेक मुख़लिस नबी और बुजुर्गी और अच्छाई वाले लोग।
- (१२) उन्हें तुझ से मेहफूज़ रखेगा और शैतानी विचार और वसवसों को दूर फ़रमाएगा।
- (१३) उनमें व्यापार के लिये सफ़र करके।
- (१४) और डूबने का भय होता है।
- (१५) और उन झूठे मअबूदों में से किसी का नाम ज़वान पर नहीं आता। उस वक़्त अल्लाह तआला से हाज़तरवाई चाहते हैं।
- (१६) उसकी तौहीद में, और फिर उन्हीं नाकारा दुतों की पूजा शुरू कर देते हो।
- (१७) दरिया से छुटकारा पाकर।
- (१८) जैसा कि क़ारून को धंसा दिया था। मक़सद यह है कि खुश्की और तरी, सब उसकी कुदरत के अन्तर्गत हैं। जैसा वह समन्दर में डुबाने और बचाने दोनों में समझ है, ऐसा ही खुश्की में भी ज़मीन के अन्दर धंसा देने और मेहफूज़ रखने दोनों पर क़ादिर है। खुश्की हो या तरी हर कहीं बन्दा उसकी रहमत का मोहताज़ है। वह ज़मीन में धंसाने पर भी क़ादिर है और यह भी क्षमता रखता है कि -
- (१९) जैसा क़ौमे लूत पर भेजा था।
- (२०) जो तुम्हें बचा सके।
- (२१) और हमसे पूछ सके कि हमने ऐसा क्यों किया, क्योंकि हम कुदरत और इस्तियार वाले हैं, जो चाहते हैं करते हैं, हमारे काम में कोई दस्त देने वाला और दम मारने वाला नहीं।
- (२२) अक्ल व इल्म, बोलने की शक्ति, पाकीज़ा सूरत, अच्छा रंग रूप, और रोज़ी रोटी कमाने की युक्तियाँ और सारी चीज़ों पर क़ाबू और क़ब्ज़ा अता फ़रमाकर और इसके अलावा और बहुत सी बुजुर्गी देकर।
- (२३) जानवरों और दूसरी सवारियों और किशतियों और जहाज़ों इत्यादि में।
- (२४) मज़ेदार और उमदा, हर तरह की ग़िज़ाएँ, ख़ूब अच्छी तरह पंकी हुई, क्योंकि इन्सान के सिवा सब जानवरों में पकी हुई ग़िज़ा और किसी की ख़ुसाक नहीं।
- (२५) हसन का क़ौल है कि 'बहुत मख़लूक' से कुल सृष्टि मुराद है। और बहुत का शब्द कुल के मानी में बोला जाता है। क़ुरआन करीम में भी इशारा हुआ "व अक्सरुहुम काज़िबूना" यानी उनमें से बहुत में झूठे हैं (सूरए शुअरा, आयत २२३) और 'मा यन्तबिअ अक्सरुहुम इल्ला ज़न्ना' यानी और उनमें अक्सर तो नहीं चलते मगर गुमान पर (सूरए यूनुस, आयत ३६), में "अक्सर" यानी बहुत शब्द कुल के अर्थ में है। लिहाज़ा इसमें फ़रिश्ते भी दाख़िल हैं और आदमियों में से सर्वोत्तम यानी नबी ख़ास फ़रिश्तों में अफ़ज़ल हैं और आदमियों में में नेक और अच्छे लोग आम फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं। हदीस शरीफ़ में है कि मूमिन अल्लाह के नज़्दीक फ़रिश्तों से ज़्यादा बुजुर्गी रखता है। वजह यह है कि फ़रिश्ते ताअत पर मजबूर हैं यही उनकी सृष्टि है, उनमें अक्ल है, वासना नहीं और जानवरों में शहवत है अक्ल नहीं और आदमी अक्ल और शहवत दोनों रखता है। तो जिसने अक्ल को वासना या शहवत पर ग़ालिब किया

कानून बदलता न पाओगे (७७)

नवाँ सूकू

नमाज़ कायम रखो सूरज ढलने से रात की अंधेरी तक^(१) और सुबह का कुरआन^(२) वेशक सुबह के कुरआन में फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं^(३) (७८) और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद करो यह ख़ास तुम्हारे लिये ज़्यादा है^(४) करीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहाँ सब तुम्हारी हम्द (स्तुति) करें^(५) (७९) और यूँ अज़्र करो कि ऐ मेरे रब मुझे सच्ची तरह दाख़िल कर और सच्ची तरह बाहर ले जा^(६) और मुझे अपनी तरफ़ से मददगार ग़लवा दे^(७) (८०) और फ़रमओ कि हक़ (सत्य) आया और बातिल (असत्य) मिट गया^(८) वेशक बातिल (असत्य) को मिटना ही था^(९) (८१) और हम कुरआन में उतारते हैं वह चीज़^(१०) जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रहमत है^(११) और उससे ज़ालिमों को^(१२) नुक़सान ही बढ़ता है^(१३) और जब हम आदमी पर एहसान करते हैं^(१४) मुंह फेर लेता है और अपनी तरफ़ दूर हट जाता है^(१५) और जब उसे बुराई पहुंचे^(१६) तो नाउम्मीद हो जाता है^(१७) (८२) तुम फ़रमाओ सब अपने कैंडे पर काम करते हैं^(१८) तो तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कौन ज़्यादा राह पर है^(१९) (८३)

दसवाँ सूकू

और तुम से रूह को पूछते हैं, तुम फ़रमाओ, रूह मेरे रब के हुक्म से एक चीज़ है और तुम्हें इल्म न मिला मगर थोड़ा^(१) (८४)

تَحْوِيلًا ۝ اَقِمِ الصَّلَاةَ لِلذِّكْرِ الشَّمْسِ إِلَى عَسَى الْبَيْلِ
وَقُرْآنَ الْفَجْرِ ۝ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۝
وَمِنَ الْبَيْلِ فَتَجِدْ بِهِ نَافِلَةً ۝ لَكَ عَلَيْنَا أَنْ يَبْعَثَكَ
رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُودًا ۝ وَقُلْ رَبِّ اذْخُلْنِيْ مَدْخَلَ
صِدْقٍ ۝ وَأَخْرِجْنِيْ مَخْرَجِ صِدْقٍ ۝ وَاجْعَلْ لِّيْ مِنْ
لَّدُنْكَ سُلْطَانًا نَّصِيرًا ۝ وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ
الْبَاطِلُ ۝ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۝ وَنُنَزِّلُ مِنَ
الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ ۝ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَلَا يَزِيدُ
الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ۝ وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ
أَعْرَضَ وَنَأْيَ بِجَانِبِهِ ۝ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَكُفِّرًا ۝
قُلْ كُلُّ يَعْمَلُ عَلَى شَاكْرٍ ۝ فَكَلِّمُوا أَعْلَامَكُمْ بِمَنْ
هُوَ أَهْلٌ ۝ سَبِيلًا ۝ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۝ قُلِ
الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّيْ ۝ وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ۝

مَنْزِل

वह फ़रिश्तों से अफ़ज़ल है और जिसने शहवत को अज़ल पर ग़ालिब किया वह जानवरों से गया गुज़रा है।

सूरए बनी इस्राईल - आठवाँ सूकू

- (१) जिसका दुनिया में वह अनुकरण करता था, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, इसमें वह इमामे ज़मौं मुसद है जिसकी दावत पर दुनिया में लोग चले, चाहे उसने हक़ की तरफ़ बुलाया हो या बातिल की तरफ़, हाज़िल यह है कि हर क़ौम अपने सरदार के पास जमा होगी, जिसके हुक्म पर दुनिया में चलती रही उन्हें उसीके नाम से पुकारा जाएगा कि ऐ फ़लों के अनुयाइयों !
- (२) नेक लोग जो दुनिया में नज़र वाले थे और सीधी राह पर रहे, उनको उनका कर्म लेखा या नामग आमात दाएं हाथ में दिया जाएगा, वो उसमें नेकियाँ और नाअतें देखेंगे तो उसको ज़ौक़-शौक़ से पढ़ेंगे और जो बदबन्त हैं, काफ़िर हैं, उनके नामग अमाल बाएं हाथ में दिये जाएंगे, वो उन्हें देखकर शर्मिन्दा होंगे और दहशत से पूरी तरह पड़ न पाएंगे।
- (३) याती कर्मों के सवाब में उनसे ज़रा सी भी कमी न की जाएगी।
- (४) दुनिया की, हक़ के देखने से।
- (५) निजात की राह से मानी ये हैं कि जो दुनिया में काफ़िर गुमराह है, वह आख़िरत में अंश होगा क्योंकि दुनिया में तौबत मक़बूल है और आख़िरत में तौबत मक़बूल नही।
- (६) सक्कीफ़ का एक प्रतिनिधि मण्डल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लेम के पास आकर कहने लगा कि अगर आप तीन बातें मान लें तो हम आपकी बैअत कर लें, एक तो यह कि नमाज़ में झुकेंगे नहीं याती सूकू सज्दा न करेंगे, दूसरे यह कि हम अपने बुत अपने हाथों से न तोड़ेंगे, तीसरे यह कि लात का पूजेंगे तो नहीं मगर एक साल उससे नफ़ा उठा लें कि उसके पूजने वाले जो चढ़ाव लाएं, उनको बुसूल कर लें, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लेम ने फ़रमाया, उस दीन में कुछ भलाई नहीं जिसमें सूकू और सज्दा न हो और बुतों को तोड़ने की दावत तुम्हारी मज़ी और लात उज़्ज़ा से फ़ायदा उठाने की इजाज़त मैं हरगिज़ न दूंगा, वो कहने लगे,

हम चाहते हैं कि आपकी तरफ से हमें ऐसा सम्मान मिले जो दूसरों को न मिला हो ताकि हम फ़ख़्र कर सकें. इसमें अगर आपको आशंका हो कि अरब शिफायत करेंगे तो आप उनसे कह दीजियेगा कि अल्लाह का हुक्म ऐसा ही था. इसपर यह आयत उतरी.

(७) मअसूम करके.

(८) के अज़ाब.

(९) यानी अरब से. मुश्किों ने सहमत होकर चाहा कि सब मिलकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अरब प्रदेश से बाहर कर दें लेकिन अल्लाह तआला ने उनका यह इरादा पूरा न होने दिया और उनकी यह मुराद बर न आई. इस वाक्य के बारे में यह आयत उतरी. (ख़ाज़िन)

(१०) और जल्दी हलाक कर दिये जाते.

(११) यानी जिस क़ौम ने अपने बीच से अपने रसूल को निकाला, उनके लिये अल्लाह की सुन्नत यही रही कि उन्हें हलाक कर दिया.

सूरए बनी इस्राईल - नवाँ स्कू

(१) इसमें जोहर से इशा तक की चार नमाज़ें आ गईं.

(२) इससे फ़ज्र की नमाज़ मुराद है और इसको कुरआन इसलिये फ़रमाया गया कि क़िरअत एक स्कन है और जुज़ से कुल तअवीर किया जाता है जैसा कि कुरआने करीम में नमाज़ को स्कू और सज्दों से भी बयान किया गया है. इससे मालूम हुआ कि क़िरअत नमाज़ का हिस्सा है.

(३) यानी नमाज़े फ़ज्र में रात के फ़रिशते भी मौजूद होते हैं और दिन के फ़रिशते भी आ जाते हैं.

(४) तहज्जुद, नमाज़ के लिये नींद को छोड़ने या इशा बाद एक नींद लेकर उठने पर जो नमाज़ पढ़ी जाए, उसको कहते हैं. हदीस शरीफ़ में तहज्जुद की नमाज़ की बहुत फ़ज़ीलतें आई हैं. तहज्जुद की नमाज़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर फ़र्ज़ थी. जमहूर का यही क़ौल है. हुज़ूर की उम्मत के लिये यह नमाज़ सुन्नत है. तहज्जुद की कम से कम दो रकअतें और बीच की चार रकअतें और ज़्यादा से ज़्यादा आठ रकअतें हैं. और सुन्नत यह है कि दो दो रकअत की नियत से पढ़ी जाए. अगर आदमी एक तिहाई रात की इबादत करना चाहे और दो तीहाई सोना तो रात के तीन हिस्से कर ले. बीच तिहाई में तहज्जुद पढ़ना अफ़ज़ल है और अगर चाहे कि आधी रात सोए और आधी रात इबादत करे तो आधिरा तीहाई अफ़ज़ल है. जो शख्स तहज्जुद को नमाज़ का आदी हो उसके लिये तहज्जुद छोड़ना मकरूह है. जैसा कि बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है. (रहूल मुहतार)

(५) और मक़ामे मेहमूद मक़ामे शफ़ाअत है कि उसमें अगले पिछले सब हुज़ूर की तअरीफ़ बयान करेंगे. इसी पर सर्वसहमति है.

(६) जहाँ भी मैं दाख़िल हूँ और जहाँ से भी मैं बाहर आऊँ, चाहे वह कोई मक़ान हो या मन्सब यानी उपाधि हो या काम. कुछ मुफ़सिरों ने कहा मुराद यह है कि मुझे क़ब्र में अपनी रज़ा और पाकी के साथ दाख़िल कर और दोबारा उठाते वक़्त इज़ज़त और जुज़्गी के साथ बाहर ला. कुछ ने कहा, मानी ये हैं कि मुझे अपनी इताअत में सच्चाई के साथ दाख़िल कर और अपनी मनाही (अवैधताओं) से सच्चाई के साथ ख़ारिज़ फ़रम. और इसके मानी में एक क़ौल यह भी है कि नबुव्वत की उपाधि में मुझे सच्चाई के साथ दाख़िल कर और सच्चाई के साथ दुनिया से ख़ुन्नसत के वक़्त नबुव्वत के ज़रूरी अधिकार और कर्तब्य पूरे करा दे. एक क़ौल यह भी है कि मुझे मदीनए तैयिबह में पसन्दीदा दाख़िला इनायत कर और मक्कए मुकर्रमा से मेरा निकलना सच्चाई के साथ कर, इससे मेरा दिल दुखी न हो. मगर यह तर्क उस सूरत में सहीह हो सकता है जब कि यह आयत मदीनी न हो जैसा कि अल्लामा सिधूती ने 'क़ौल' फ़रमा कर इस आयत के मदीनी होने का क़ौल ज़र्दफ़ होने की तरफ़ इशारा किया.

(७) वह शक्ति अता फ़रमा जिससे मैं तेरे दुश्मनों पर ग़ालिब रहूँ और वह तर्क और हुज़्जत जिससे मैं हर मुश्रालिफ़ पर विजय पाऊँ और वह खुला ग़लबा जिससे मैं तेरे दीन को मज़बूत करूँ. यह दुआ कुबूल हुई और अल्लाह तआला ने अपने हबीब से उनके दीन को ग़ालिब करने और उन्हें दुश्मनों से मेहफूज़ रखने का वादा फ़रमाया.

(८) यानी इस्लाम आया और कुफ़्र मिट गया, या कुरआन आया और शैतान हलाक हुआ.

(९) क्योंकि अगरचे बातिल को किसी वक़्त में दौलत और शानो शौक़त हासिल हो मगर उसको स्थिरता या पायदारी नहीं. उसका अन्त बर्बादी और ख़वारी है. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि नथिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़तह के दिन मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो काबे के चारों तरफ़ तीन सौ साठ बुत नसब किये हुए थे जिनको लोहे और रंग से जोड़ कर मज़बूत किया गया था. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक हाथ में एक लकड़ी थी. हुज़ूर यह आयत पढ़कर उस लकड़ी से जिस बुत की तरफ़ इशारा फ़रमाते जाते थे वह गिरता जाता था.

(१०) सूरतें और आयतें.

(११) कि उससे ज़ाहिर और बातिन, बाहर और अन्दर के रोग, गुमराही और अज्ञानता दूर होतें हैं और ज़ाहिर और बातिन की संहत हासिल होती है. झूठे अक्कीदे और बुरे आचार विचार मिट जाते हैं और सच्चे अक्कीदे और अल्लाह तआला की सही पहचान और सदाचार और बढ़िया संस्कार हासिल होते हैं क्योंकि यह किताब यानी कुरआन मजीद ऐसे उलूम और दलीलों पर आधारित है जो वहमाँ और शैतानी अंधेरों को अपने प्रकाश से नेत नाबूद कर देती हैं और इसका एक एक अक्षर बरकतों का ख़ज़ाना है जिससे बदन के रंग और आमेब दूर होते हैं.

और अगर हम चाहते तो यह वही (देव वाणी) जो हमने तुम्हारी तरफ़ की इसे ले जाते^(१) फिर तुम कोई न पाते कि तुम्हारे लिये हमारे हुज़ूर इसपर विकालत करता^(२) मगर तुम्हारे रब की रहमत^(३) वेशक तुमपर उसका बड़ा फ़ज़ल है^(४) तुम फ़रमाओ अगर आदमी और जिन्न सब इस बात पर मुत्तफ़िक्क (सहमत) हो जाएं कि^(५) इस क़ुरआन की मानिंद (जैसा) ले आएँ तो इसका मिस्ल न ला सकेंगे अगरचे उनमें एक दूसरे का मददगार हो^(६) और वेशक हमने लोगों के लिये इस क़ुरआन में हर क्रिस्म की मसल (कहावत) तरह तरह वयान फ़रमाई तो अक्सर आदमियों ने न माना मगर ना शुक्री करना^(७) और बोले कि हम तुमपर हरगिज़ ईमान न लाएंगे यहां तक कि तुम हमारे लिये ज़मीन से कोई चश्मा बहादो^(८) या तुम्हारे लिये खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो फिर तुम उसके अन्दर बहती नहरें रवां करो^(९) या तुम हम पर आसमान गिरा दो जैसा तुमने कहा है टुकड़े टुकड़े या अल्लाह और फ़रिश्तों को ज़ामिन ले आओ^(१०) या तुम्हारे लिये सोने का घर हो या तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ जाने पर भी हरगिज़ ईमान न

وَلَكِنْ شِئْنَا لَنُدْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا ۖ إِلَّا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَظَرٍّ ۖ قُلْ لِّیْنَ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَیْكَ اَنْ یَّاتُوا بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا یَأْتُوْنَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِیْرًا ۚ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هَٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَیْ اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۚ وَكَانُوا لَنْ تُؤْمِنَ لَكَ حَتّٰی تَفْجَرَلَنَا مِنْ الْاَرْضِ یَبْئُوءُا ۚ اَوْ یَكُوْنُ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِیْلِ وَعِندٍ فَمُتَجَرِّا لَّا تُهْرِجُهَا فُتْیْرًا ۚ اَوْ تُسْقَطُ السَّمَاءُ كَمَا رَعِمَتْ عَلَیْنَا كِسْفًا اَوْ تَاْتِیْ بِاللّٰهِ وَالْمَلَائِكَةِ فِیْئِیْلًا ۚ اَوْ یَكُوْنُ لَكَ بَیْتُ مِّنْ زُخْرَفٍ اَوْ تَرْفَعِیْ فِی السَّمَاءِ وَلَنْ تُؤْمِنَ لِرُقِیْبِكَ حَتّٰی تُنْزَلَ عَلَیْنَا مِثْلُ

(१२) यानी काफ़िरों को जो इसे झुटलाते हैं।

(१३) यानी काफ़िर पर कि उसको सेहत और विस्तार अता करते हैं तो वह हमारे ज़िक्र व दुआ और फ़रमाँवसदारी और शुक्र की अदायगी से ...

(१४) यानी घमण्ड करता है।

(१५) कांई सरस्ती और हानि और कोई दरिद्रता और अकस्मात, तो गिड़गिड़ाकर और रो रो कर दुआएं करता है और उन दुआओं के कुबूल का असर ज़ाहिर नहीं होता।

(१६) भूमि को ऐसा न चाहिये, अगर दुआ के कुबूल होने में देर हो तो वह निराश न हो। अल्लाह तआला की रहमत का उम्मीदवार रहे।

(१७) हम अपने तरीक़े पर, तुम अपने तरीक़े पर, जिसका जौहर बुजुर्गों, शराफ़त और पाकी चाली ज्ञात है। उससे अच्छे कर्म और सच्चे और नेक संस्कार सादिर होते हैं और जिसका मन या नफ़स ख़बीस है उससे बुरे कर्म सरज़द होते हैं।

सूरए बनी इस्राईल - दसवाँ रूक़

(१) क़ुरैश मशघरे के लिये जमा हुए और उनमें आपस में बातचीत यह हुई कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) हममें रहे ओर कभी हमने उनको सच्चाई और अमानत में कमज़ोर न पाया। कभी उनपर लांछन लगाने का अवसर न आया। अब उन्होंने ने नबी होने का दावा कर दिया तो उनकी सीरत, चरित्र और उनके चाल चलन पर कोई ऐब लगाना तो संभव नहीं। यहूदियों से पूछना चाहिये कि ऐसी हालत में क्या किया जाए। इस मतलब के लिये एक जमाअत यहूदियों के पास भेजी गई। यहूदियों ने कहा कि उनसे तीन सवाल करो अगर तीनों के जवाब न दें तो वह नबी नहीं और अगर तीनों के जवाब दे दें जब भी नबी नहीं और अगर दो का जवाब दे दें, एक का जवाब न दें तो वह सच्चे नबी हैं। वो तीन सवाल ये हैं : असहाबे कहफ़ का वाक़िआ, जुल क़रनैन का वाक़िआ और रूह का हाल। चुनावे क़ुरैश ने हुज़ूर से ये सवाल किये। आपने असहाबे कहफ़ और जुल क़रनैन के वाक़िआत तो बिस्तार से बयान फ़रमा दिये और रूह का मामला अस्पष्टता में रखा जैसा कि तीरात में अस्पष्ट रखा गया था। क़ुरैश ये सवाल करके बड़े पछतावे और शर्मिन्दगी में पड़े। इसमें मतभेद है कि सवाल रूह की हकीक़त से था या उसकी मख़लूक़ियत या निर्मिति से सम्बन्धित था। जवाब दोनों का हो गया और आपत में यह भी बता दिया गया कि मख़लूक़ का इल्म अल्लाह के इल्म के सामने बहुत कम है अगरचे 'मा ऊत्तीतुम' यानी तुम्हें न मिला का सम्बोधन यहूदियों के साथ खास हो।

तआला ने मुझे रसूल बनाकर भेजा और मुझपर अपनी किताब उतारी और हुक्म दिया कि मैं तुम्हें उसके मानने पर अल्लाह की रज़ा और आखिरत की नेअमत की श्रेश्ठाख़बरी दूँ और इन्कार करने पर अल्लाह के अज़ाब का डर दिलाऊँ। मैं ने तुम्हें अपने रब का संदेश पहुंचाया अगर तुम इस कुबूल करो तो यह तुम्हारे लिये दुनिया और आखिरत का सौभाग्य है और न माना तो मैं सब क़त्ला और अल्लाह के फ़ैसले की राह देखूँगा। इसपर उन लोगों ने कहा, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम) अगर आप हमारी बातों को कुबूल नहीं करते हैं तो इन पहाड़ों को हटा दीजिये और मैदान साफ़ निकाल दीजिये और नेहरे जारी कर दीजिये और हमारे मर हुए बाप दादा को ज़िन्दा कर दीजिये, हम उनसे पूछ देंगे कि आप जो फ़रमाते हैं क्या यह सच है। अगर वो कहेंगे तो हम मान लेंगे। हज़ूर ने फ़रमाया मैं इन बातों के लिये नहीं भेजा गया हूँ, जो पहुँचाने के लिये मैं भेजा गया, वह मैंने पहुँचा दिया, अगर तुम मानो तो तुम्हारा नसीब, न मानो तो मैं ख़ुदाई फ़ैसले का इन्तिज़ार करूँगा। काफ़िरों ने कहा, फिर आप अपने रब से कहकर एक फ़रिश्ता बुलवा लीजिये जो आपकी तरदीक करे और अपने लिये चास और महल और सोने चाँदी के ख़ज़ाने तलब कीजिये। फ़रमाया कि मैं इसलिये नहीं भेजा गया। मैं बशीर और नज़ीर बना कर भेजा गया हूँ। इस पर कहने लगे तो हम पर आसमान गिरवा दीजिये और उनमेंसे कुछ बोले कि हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जबतक आप अल्लाह को और फ़रिश्तों को हमारे सामने न लाएंगे। इसपर हज़ूर उस मजलिस से उठ कर चले आए और अब्दुल्लाह बिन उमैया आपके साथ उठा और आप से कहने लगा ख़ुदा की क़स्म मैं कभी तुमपर ईमान न लाऊँगा जबतक तुम सीढ़ी लाकर आसमान पर न चढ़ो और मेरी नज़रों के सामने वहाँ से एक किताब और फ़रिश्तों की एक जमाअत लेकर न आओ। और ख़ुदा की क़स्म अगर यह भी करो तो मैं समझता हूँ कि मैं फिर भी न मानूँगा। रसूल करीम ने जब देखा कि ये लोग इस क़द्र ज़िद और दुश्मनी में हैं और सच्चाई से उनकी कटुता हृद से गुज़र गई है तो आपको उनकी हालत पर दुःख हुआ। इसपर यह आयत उतरी।

(९) जो हमारे सामने तुम्हारी सच्चाई की गवाही दें।

(१०) मेरा काम अल्लाह का संदेश पहुँचा देना है, वह मैं ने पहुँचा दिया, जिस क़द्र चमत्कार और निशानियाँ यकीन और इत्मीनान के लिये दरकार हैं उनसे बहुत ज़्यादा मेरा परवर्दिगार ज़ाहिर फ़रमा चुका। हुज्जत ख़त्म हो गई। अब यह समझ लो कि रसूल के इन्कार करने और अल्लाह की आयतों से मुंह फेरने का क्या परिणाम होता है।

सूरए बनी इस्राईल - ग्यारहवाँ रूकू

(१) रसूलों को बशर ही जानते रहे और उनके नबी होने और अल्लाह तआला के प्रदान किये हुए क़मालों का स्वीकार नहीं किया। यही उनके क़फ़ की असल थी और इसीलिये वो कहा करने थे कि कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा गया। इसपर अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से फ़रमाता है कि ऐ हबीब उन से ----

(२) वहाँ उसमें बसत।

(३) क्योंकि वह उनकी ज़िन्स से होना लेकिन जब ज़मीन में आदमी बसत है तो उनका फ़रिश्तों में से रसूल तलब करना अत्यन्त बेजा है।

(४) मेरी सच्चाई और नबुव्वत के कर्तव्यों की अदायगी और तुम्हारे झुटलाने और दुश्मनी पर।

(५) और तोफ़ीक़ न दे।

(६) जो उन्हें हिदायत करें।

(७) घसिटता हुआ।

(८) जैसे वो दुनिया में सच्चाई के देखने, बोलने और सुनने से अंधे, मूंगे, बहरे बने रहे, ऐसे ही उटाए जाएंगे।

बनाए^(९) उन लोगों की मिसल(समान) बना सकता है^(१०) और उसने उनके लिये^(११) एक मीआद(अवधि) ठहरा रखी है जिसमें कुछ शुबह नहीं, तो जालिम नहीं मानते वे नाशुकी किये^(१२) (१९) तुम फरमाओ अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत के खजानों के मालिक होते^(१३) तो उन्हें भी रोक रखते इस डर से कि खर्च न हो जाएं और आदमी बड़ा कंजूस है^(१००)

बारहवाँ स्कू

और वेशक हमने मूसा को नौ रौशन निशानियां दीं^(१) तो बनी इस्राईल से पूछो जब वह^(२) उनके पास आया तो उससे फिरऔन ने कहा ऐ मूसा मेरे खयाल में तो तुमपर जादू हुआ^(३) (१०१) कहा यकीनन तू खूब जानता है^(४) कि उन्हें न उतारा मगर आसमानों और ज़मीन के मालिक ने दिल की आँखें खोलने वालियां^(५) और मेरे गुमान में तो ऐ फिरऔन तू ज़रूर हलाक होने वाला है^(६) (१०२) तो उसने चाहा कि उनको^(७) ज़मीन से निकाल दे, तो हमने उसे और उसके साथियों को सबको डुबा दिया^(८) (१०३) और इसके बाद हमने बनी इस्राईल से फरमाया इस ज़मीन में बसो^(९) फिर जब आखिरत का वादा आएगा^(१०) हम तुम सबको घाल मेल ले आएंगे^(११) (१०४) और हमने कुरआन को हक़ (सत्य) ही के साथ उतारा और हक़ ही के साथ उतरा^(१२) और हमने तुम्हें न भेजा मगर खुशी और डर सुनाता^(१३) (१०५) और कुरआन हमने अलग अलग करके^(१४) उतारा कि तुम इसे लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो^(१५) और हमने इसे बतदरीज रह रह कर उतारा^(१६) (१०६) तुम फरमाओ कि

مِثْلَهُمْ وَيَجْعَلُ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى الظَّالِمُونَ
إِلَّا كُفُورًا ۝ قُلْ لَوْ أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي
إِذَا أَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ۝
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَنَسَى بَنِي إِسْرَءِيلَ
إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يَمُوسَى
مَسْحُورًا ۝ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَآ أَنزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِصَافِرٍ وَاقٍ ۝ لَأَظُنُّكَ يُفْرِعُونَ
مَشُورًا ۝ فَأَرَادَ أَنْ يَنْتَقِمَ مِنْ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَ
مَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ۝ وَقُلْنَا مِنْ بَعْدِهِ لِبَنِي إِسْرَءِيلَ
اَسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ۝
وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا
وَنَذِيرًا ۝ وَفَرَأَيْنَا فَتَقَرَّنَاهُ لِنُنْفِرَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى
مَكْنَتٍ ۝ وَنَزَّلْنَاهُ تَنزِيلًا ۝ قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ
مُتَوَلِّ

- (९) ऐसे बड़े और विस्तार वाले, वह...
(१०) यह उसकी कुदरत से कुछ अजीब नहीं.
(११) अज़ाब की, या मौत और फिर से उठाए जाने की.
(१२) खुली दलील और साफ़ हुज्जत क़ायम होने के बावजूद.
(१३) जितकी कुछ इन्तिहा नहीं.

सूरए बनी इस्राईल - बारहवाँ स्कू

- (१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फरमाया, वो नौ निशानियां ये हैं : असा (लाटी), यदे बेज़ा (चमकती रौशन हथैली), वह उक़्दा जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़बाने मुबारक में था, फिर अल्वाह नआला ने उसको हल फरमाया, दरिया का फटना और उसमें रस्ते बनाना, तूफ़ान, टिंडी, घुन, मैदक, खून. इन में से आखिरी छ का विस्तृत बयान तबे पार के छठे स्कू में गुज़र चुका.
(२) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम.
(३) यानी मआज़ल्लाह जादू के असर से तुम्हारी अक़ल जगह पर न रही. या 'मसहूर' जादूगर के अर्थ में है और मतलब यह है कि ये चमत्कार जो आप दिखाने हैं, ये जादू के करिश्मे हैं. इसपर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने --
(४) ऐ दुश्मन फिरऔन.
(५) कि इन आयतों से मेरी सच्चाई और मेरा जादूगर न होना और इन आयतों का खुदा की तरफ़ से होना ज़ाहिर है.
(६) यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ से फिरऔन के उस क़ौल का जवाब है कि उसने आपको मसहूर कहा था मगर उसका क़ौल झूठा था जिसे वह खुद भी जानता था, मगर उसकी कुदरत ने उसमें कहलाया और आपका इश्हाद था सच्चा और सही. चूनांचे वंसा ही बाक़े हुआ.

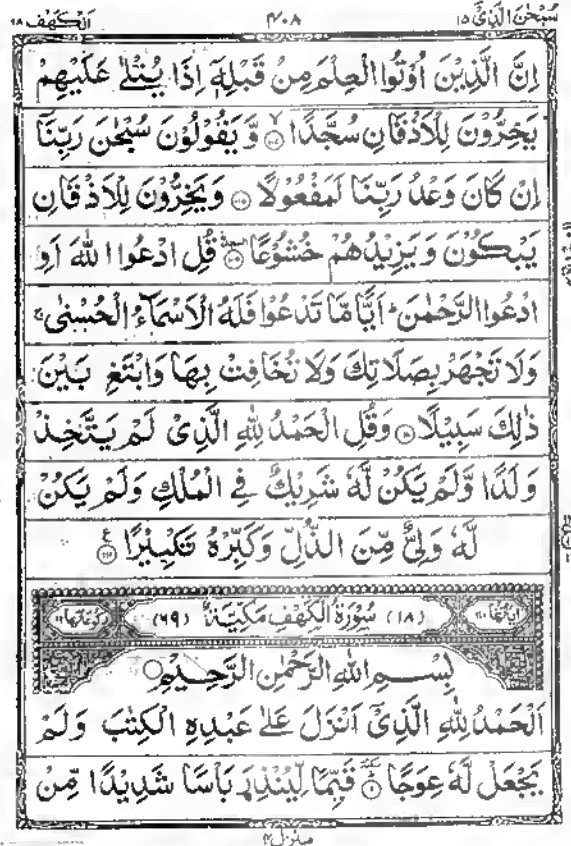
तुम लोग उसपर ईमान लाओ या न लाओ^(१६) बेशक वो जिन्हें इसके उतरने से पहले इल्म मिला^(१७) जब उनपर पढ़ा जाता है ठोड़ी के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं^(१८) और कहते हैं, पाकी है हमारे रब को बेशक हमारे रब का वादा पूरा होना था^(१९) और ठोड़ी के बल गिरते हैं^(२०) रोते हुए और यह कुरआन उनके दिल का झुकना बढ़ाता है^(२१) तुम फ़रमाओ अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर, जो कहकर पुकारो सब उसी के अच्छे नाम हैं^(२२) और अपनी नमाज़ न बहुत आवाज़ से पढ़ो न विल्कुल आहिस्ता और इन दोनों के बीच में रास्ता चाहो^(२३) और यूँ कहो सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने अपने लिये वच्चा इख्तियार न फ़रमाया^(२४) और वादशाही में कोई उसका शरीक नहीं^(२५) और कमज़ोरी से कोई उसका हिमायती नहीं^(२६) और उसके बड़ाई बोलने को तकवीर कहो^(२७)

१८- सूरए कहफ़

सूरए कहफ़ मक्का में उतरी, इसमें ११० आयतें, और १२ रूकू हैं

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने अपने बन्दे^(२) पर किताब उतारी^(३) और उसमें कोई कज़ी न रखी^(४) अदल (इन्साफ़) वाली किताब कि^(५) अल्लाह के सज़ा अज़ाब से डराए और



- (७) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को और उनकी क़ौम को, मिस्र की।
 (८) और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को और उनकी क़ौम को हमने सलामती अता फ़रमाई।
 (९) यानी मिस्र और शाम की ज़मीन में, (मराज़िन व क़नबी)
 (१०) यानी क़यामत।
 (११) क़यामत के मैदान में, फिर नेकों और बुरों को एक दूसरे से अलग कर देंगे।
 (१२) शैतानों की मिलौनी से मेहफूज़ रहा और किसी फेर बदल ने उसमें राह न पाई। तिवियान में है कि हक़ से मुराद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज्ञाते मुबारक है। आसत का यह वाक्य हर एक बीमारी के लिये आजमाया हुआ इलाज है। बीमारी वाली जगह पर हाथ रखकर इसे पढ़कर फूँक दिया जाए तो अल्लाह के हुक्म से बीमारी दूर हो जाती है। मुहम्मद बिन समाक बीमार हुए तो उनके अनुयायी उनका क़ारुरा (पेशाब) लेकर एक ईसाई चिकित्सक के पास इलाज के लिये गए। राह में एक साहब मिले, बहुत सुन्दर और अच्छे लिवास में, उनके जिस्मे मुबारक से निहायत पाकीज़ा खुशबू आ रही थी। उन्होंने फ़रमाया, कहाँ जाते हो। उन लोगों ने कहा इन्हे समाक का क़ारुरा दिखाने के लिये अमुक चिकित्सक के पास जाते हैं। उन्होंने फ़रमाया, सुक़ानल्लाह, अल्लाह के बली के लिये ख़ुदा के दुश्मन से मदद चाहते हो। क़ारुरा फैफ़े, वापस जाओ और उनसे कहो कि दर्द की जगह पर हाथ रखकर पढ़ो “बिल्हक्के अज़लनाहो व बिल्हक्के नज़ल” यह फ़रमाकर वह बुजुर्ग गायब हो गए। उन लोगों ने वापस होकर इन्हे समाक से वाफ़िआ बयान किया। उन्होंने दर्द की जगह पर हाथ रखकर ये क़लिमे पढ़े, फ़ौरन आराम हो गया और इन्हे समाक ने फ़रमाया कि वह हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम थे।
 (१३) तेईस साल के असें में।
 (१४) ताकि उसके मज़ामीन आसानी से सुनने वालों की समझ में बैठ जाएं।
 (१५) मसलिहतों और ज़रूरत के अनुसार।
 (१६) और अपने लिये आख़िरत की नेअमत इख्तियार करो या जहन्नम का अज़ाब।
 (१७) यानी किताबियों में के ईमानदार लेगा जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले इन्तिज़ार और जुस्तजू में थे। हज़ूर अलैहिस्सलामो वसल्लाम के तशरीफ़ लांन के बाद इस्लाम लाए जैसा कि ज़ैद बिन अब्र बिन नुफ़ैल और सलमान

ईमान वालों को जो नेक काम करें बशारत दे कि उनके लिये अच्छा सवाब है (२) जिसमें हमेशा रहेंगे (३) और उन (६) को डराए जो कहते हैं कि अल्लाह ने अपना कोई बच्चा बनाया (४) इस बारे में न वो कुछ इल्म रखते हैं न उनके वाप दावा (५) कितना बड़ा बोल है कि उनके मुंह से निकलता है निरा झूठ कह रहे हैं (५) तो कहीं तुम अपनी ज्ञान पर खेल जाओगे उनके पीछे अगर वो इस बात पर (६) ईमान न लाए गम से (६) बेशक हमने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ उस पर है (७) कि उन्हें आजमाएं उनमें किस के काम बेहतर हैं (७) और वेशक जो कुछ उसपर है एक दिन हम उसे पटपर मैदान कर छोड़ेंगे (८) क्या तुम्हें मालूम हुआ कि पहाड़ की खोह और जंगल के किनारे वाले (९) हमारी एक अजीब निशानी थे (९) जब उन नौजवानों ने (१०) गार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे (१०) और हमारे काम में हमारे लिये राहयावी (रास्ता पाने) के सामान कर (१०) तो हमने उस गार से उनके कानों पर गिनती के कई वरस थपका (११) (११)

لَدُنْهُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ
أَن لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۖ مَا كُنْتُمْ فِيهِ أَبْنَاءَ ۚ وَ
يُنذِرُ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ وَلَدًا ۚ مَا لَهُمْ بِهِ
عِلْمٌ وَلَا لِابَائِهِمْ ۚ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ
أَفْوَاهِهِمْ ۚ إِنَّ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ۚ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ
نَفْسًا عَلَى آثَارِهِمْ ۚ إِنْ آمَنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ
إِسْقَا ۚ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا
لِّنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا
عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۚ أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ
الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۚ إِذْ أَوَى
الْفَتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ
رِزْقًا وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۚ فَضَرْبَنَا
عَلَى أَذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۚ ثُمَّ

مَرْثَل

फ़ारसी और अबू ज़र इत्यादि। रदियल्लाहो अन्दुम।

(१८) जो उसने अपनी पहली किताबों में फ़रमाया था कि आखिरी ज़माने के रबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को भेजेंगे।

(१९) अपने रब के समक्ष चिन्मत्ता और नर्म दिली से।

(२०) कुरआने करीम की तिलावत के वक़्त रीना मुस्तहब है। तिरमिज़ी और नसाई की हदीस में है कि वह शरय जहन्नम में न जायगा जो अल्लाह के डर से रांग।

(२१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्दुमा ने फ़रमाया कि एक रात सय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने लम्बा सज्दा किया और अपने सज्दे में या अल्लाहो या रहमान फ़रमाते रहे। अबू ज़हल ने सुना तो कहने लगा कि मुहम्मद हमें तो कई मअबूदों के पूजने में मना करते हैं और अपने आप दो फ़ों पुकारते हैं, अल्लाह को और रहमान को। इसके जवाब में यह आयत उतरी और बताया गया अल्लाह और रहमान दो नाम एक ही मअबूदे बरहक के हैं चाहे किसी नाम से पुकारो।

(२२) यानी बाँच की आवाज़ से पढ़ो जिससे मुक्तदी आसानी से सुन लें। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम भक्का मुक़र्रमा में जब अपने सद्बा की इमामत फ़रमाते तो किरात बलन्द आवाज़ से फ़रमाते। मुश्रिक सुनते तो कुरआने पाक को और उसके उतारने वाले को और जिन पर उतरा, सबको गालियाँ देते। इसपर यह आयत उतरी।

(२३) जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों का गुमान है।

(२४) जैसा कि मुश्रिक लोग कहते हैं।

(२५) यानी वह कमज़ोर नहीं कि उसको किसी हिमायती या मददगार की ज़रूरत हो।

(२६) हदीस शरीफ़ में है, क्रयामत के दिन जन्नत की तरफ़ सबसे पहले वही बुलाए जाएंगे जो हर हाल में अल्लाह की तअरीफ़ करते हैं। एक और हदीस में है कि बेहतरीन दुआ "अल्हम्दु लिल्लाह" है और बेहतरीन ज़िक्र "ला इलाहा इल्लल्लाहो" है। (तिरमिज़ी) मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है: "ला इलाहा इल्लल्लाहो, अल्लाहो अक़बर, मुहम्मदु सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम" इस आयत का नाम आयतुल इज़ज़ है। रबी अब्दुल मुत्तलिब के बच्चे जब बोलना शुरू करते थे तो उनको सब से पहले यही आयत "कुलिल हम्दु लिल्लाहिल्लिज़ी" सिखाई जाती थी।

१८ - सूरए कहफ़ - पहला रूक़

(१) इस सूरत का नाम कहफ़ है। यह सूरत मक्की है, इसमें एक सौ दस आयत और एक हज़ार पाँच सौ मतहत्तर कलिमे और छ हज़ार तीन सौ साठ अक्षर और बारह रूक़ हैं।

- (२) मुहम्मदे मुस्ताफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।
- (३) यानी कुरआन शरीफ, जो उसकी बेहतरीन नेअमत और बन्दों के लिये निजात और भलाई का कारण है।
- (४) न लफ्ज़ी न मअनवी, न उसमें इस्तिलाफ, न विपमताएं।
- (५) काफ़िरों को।
- (६) काफ़िर।
- (७) ख़ालिस जिहालत से यह आरोप लगाते हैं और ऐसी झूठ बात बकते हैं।
- (८) यानी कुरआन शरीफ पर।
- (९) इसमें नबीय़े करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तमल्ली फ़रमाई गई कि आप इन बेईमानों के ईमान से मेहरूम रहने पर इस क़द्र रंज और ग़म न कीजिये अपनी प्यारी जान को इस दुश्म से हलाक़त में न डालिये।
- (१०) वो चाहे जानदार हो या पेड़ पौधे या खनिज हो या नेहेरे।
- (११) और कौन परहेज़गारी इस्तिथार करता और वर्जित तथा अवैध बातों से बचता है।
- (१२) और आबाद होने के बाद वीरान कर देंगे और पेड़ पौधे वगैरह जो चीज़ें सजावट की थीं उनमें से कुछ भी बाक़ी न रहेगा तो दुनिया की अस्थिरता, नो-पायदार जीने पर मत रीझो।
- (१३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि रक़ीम उस वादी का नाम है जिसमें असहाबे कहफ़ हैं। आयत में उन लोगों की निम्नत फ़रमाया कि वो ...
- (१४) अपनी काफ़िर क़ीम से अपना ईमान बचाने के लिये।
- (१५) और हिदायत और नुसरत और रिज़क़ और माफ़िरत और दुश्मनों से अमन अता फ़रमा। असहाबे कहफ़ यानी गार वाले लोग कौन हैं? सही यह है कि सात हज़रत थे अगरचे उनके नामों में किसी क़द्र मतभेद है लेकिन हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा की ग़िवायत पर जो ख़ाज़िन में है उनके नाम ये हैं (१) मक़सलमीना (२) यमलीखा (३) मरूतस (४) बैनूतस (५) सारीनूतस (६) जूनवानस (७) कुशफ़ीत (८) तुनूतस और उनके कुत्ते का नाम क़ितमीर है। ये नाम लिखकर दरवाज़े पर लगा दिये जाएं तो मकान जलने से मेहरफूज़ रहता है। माल में रख दिये जाएं तो वह चोरी नहीं जाता, किश्ती या जहाज़ उनकी बरक़त से डूबता नहीं, भागा हुआ व्यक्ति उनकी बरक़त से वापस आ जाता है। कहीं आग लगी हो और ये नाम कपड़े में लिखकर डाल दिये जाएं तो वह बुझ जाती है, बच्चे के रोने, मीआदी धुआ़र, सरदर्द, सूखे की बीमारी, खुश्की व तंगी के सफ़र में जान माल की हिराज़त, अक़ल की तीव्रता, क़ैदियों की अज़ादी के लिये ये नाम लिखकर तअवीज़ की तरह बाज़ में बांधे जाएं। (जुमल) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद इंगील वालों की हालत ख़राब हो गई, वो युन परस्ती में गिरफ़तार हो गए और दूसरों को युन परस्ती पर मजबूर करने लगे। उनमें दक्कियातूस बादशाह बड़ा जाचिर था। जो युन परस्ती पर राज़ी न होता, उसको क़त्ल कर डालता। असहाबे कहफ़ अफ़सूस शहर के शरीफ़ और प्रतिष्ठित लोगों में से थे। दक्कियातूस के जुल्म और अत्याचार से अपना ईमान बचाने के लिये भाग और करीब के पहाड़ में एक गुफ़ा यानी गार में शरण ली। यहाँ सो गए। तीन सौ चरग से ज़्यादा असें तक उसी हाल में रह। बादशाह का तलाश से मालूम हुआ कि वो गार के अन्दर हैं तो उसने हुक्म दिया कि गार को एक पथरीली दीवार खींच कर बन्द कर दिया जाय ताकि वो उसमें मर कर रह जाएं और वह उनकी क़ब्र हो जाए। यही उनकी सज़ा है। हुक्मत के जिस अधिकारी को यह काम सुपुर्द किया गया वह नेक आदमी था, उसने उन लोगों के नाम, संख्या, पूरा बाकिआ रंग की तस्वीर पर ख़ोद कर तांबे के सन्दूक में दीवार की बुनियाद के अन्दर मेहरफूज़ कर दिया। यह भी बयान किया गया है कि इसी तरह की एक तस्वीर शाही ख़ज़ाने में भी मेहरफूज़ करा दी गई। कुछ समय बाद दक्कियातूस हलाक़ हुआ। ज़माने गुज़र, सल्तनतें बदलीं, यहाँ तक कि एक नेक बादशाह गद्दी पर बैठा उसका नाम बंसलद था। उसने ६८ साल हुक्मत की। फिर मुल्क में फ़िक्तो व डी और फूट पैदा हुई और कुछ लोग मरने के बाद उठने और क़यामत आने के इन्क़ारी हो गए। बादशाह एक फ़क़ान मकान में बन्द हो गया और उसने सो कर अल्लाह की बारगाह में दुआ की, या ख़ कोई ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा दे कि दुनिया को मुर्दों के उठने और क़यामत का यक़ीन हासिल हो। उसी ज़माने में एक शख्स ने अपनी बकरियों के लिये आराम की जगह हासिल करने को उसी गुफ़ा को चुना और दीवार गिरा दी। दीवार गिरने के बाद कुछ ऐसी हैबत छाई कि गिरने वाले भाग गए। असहाबे कहफ़ अल्लाह के हुक्म से ताज़ादम होकर उठे, चेहरे खिले हुए, तबीअतें खुश, ज़िन्दगी की तराताज़गी मौजूद। एक ने दूसरे को सलाम किया। नमाज़ के लिये खड़े हो गए। फ़ारिस होकर यमलीखा से कहा कि आप जाइयें और बाज़ार में कुछ ख़ाने को भी लाइयें और यह ख़बर भी लाइयें कि दक्कियातूस को हम लोगों के बारे में क्या इग़ादा है। वो बाज़ार गए और नगरद्वार पर इस्लामी निशानी देखीं। नए नए लोग पाए। उन्हें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नाम की क़स्में ख़ाने सुना। आश्चर्य हुआ, यह क्या मामला है। कल तो कोई शख्स अपना ईमान ज़ाहिर नहीं कर सकता था। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नाम लेने से क़त्ल कर दिया जाता था। आज इस्लामी निशानियाँ नगरद्वार पर ज़ाहिर हैं, लोग बिना किसी डर के हज़रत ईसा के नाम की क़सम खाते हैं। फिर आप तानबाई की दुकान पर गए। ख़ाना ख़रीदने के लिये उसको दक्कियातूसी सिक्का दिया जिसका चलन सदियों पहले बन्द हो गया था और उसका देखने वाला तफ़ कोई बाक़ी न बचा था। बाज़ार वालों ने ख़याल किया कि इनके हाथ कोई पुराना ख़ज़ाना लग गया है। इन्हें पकड़ कर हाकिम के पास ले गए। वह नेक आदमी था उसने भी इनसे पूछा कि ख़ज़ाना कहाँ है। इन्होंने कहा ख़ज़ाना कहाँ नहीं है। यह रूपया हमारा अपना है। हाकिम ने कहा यह बात किसी तरह यक़ीन करने वाली नहीं इसमें जो सब

फिर हम ने उन्हें जगाया कि देखें^(१५) दोनों गिरोहों में कौन उनके ठहरने की मुदत ज्यादा ठीक बताता है^(१६)

दूसरा रूकू

हम उनका ठीक ठीक हाल तुम्हें सुनाएं, वो कुछ जवान थे कि अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनको हिदायत बढ़ाई^(१७) और हमने उनकी ढारस बंधाई जब^(१८) खड़े होकर बोले कि हमारा रब वह है जो आसमान और ज़मीन का रब है हम उसके सिवा किसी मअवूद को न पूजेंगे ऐसा हो तो हमने ज़रूर हद से गुज़री हुई बात कही^(१९) यह जो हमारी क़ौम है उसने अल्लाह के सिवा खुदा बना रखे हैं, क्यों नहीं लाते उनपर कोई रौशन सनद (प्रमाण) तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे^(२०) और जब तुम उनसे और जो कुछ वो अल्लाह के सिवा पूजते हैं सब अलग हो जाओ तो गार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिये अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे काम में आसानी के सामान बना देगा^(२१) और ऐ मेहबूब तुम सूरज को देखोगे कि जब निकलता है तो उनके गार से दाईं तरफ़ बच जाता है और जब डूबता है तो उनमें बाईं तरफ़ कतरा जाता है^(२२) हालांकि वो उस गार के खुले मैदान में

الْحَقِّقَاتِ

२१०

سُبْحَانَ الَّذِي

بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْجَرْيِينَ أَحْصَى لِمَا لَبِثُوا
أَمَدًا ۖ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ
فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۖ وَرَبَطْنَا
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُو مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا
إِذَا شِطَطْنَا ۖ هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ
إِلَهَةً لَوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ مِّنْ
أَزْوَاجِهِمْ فَأَتَرَاهُمْ عَلَىٰ اللَّهِ كَذِبًا ۖ وَإِذْ
اٰخَرْنَا لَهُمُومًا وَمَا يَعْزُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأَوَّا إِلَىٰ الْكَهْفِ
يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ
أَمْرِكُمْ مَّرْفَقًا ۖ وَتَرَىٰ الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ شَرُّوْ
عَنِ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْبَيْتِ وَإِذَا عَدَبْتَ ثَقَرُضُهُمْ
ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ مَذَلِكُمْ

مَنْزِل

मौजूद है वह तीन सौ बरस से ज्यादा का है। हम लोग बूढ़े हैं हमने तो कभी यह सिक्का देखा नहीं। आप ने फ़रमाया जो मैं पूछूँ वह ठीक ठीक बताओ तो राज़ हल हो जाएगा। यह बताओ कि दक्कियानूस बादशाह किस हाल और ख़याल में है। हाकिम ने कहा आज धरती पर इस नाम का कोई बादशाह नहीं। सैंकड़ों बरस हुए जब इस नाम का एक बेईमान बादशाह गुज़रा है। आपने फ़रमाया कल ही तो हम उसके डर से जान बचाकर भागे हैं। मेरे साथी करीब के पहाड़ में एक गार के अन्दर शरण लिये हुए हैं। चलो मैं तुम्हें उनसे मिला दूँ। हाकिम और शहर के बड़े लोग और एक बड़ी भीड़ उनके साथ गार पर पहुंची असहाबे कहफ़ यमलीख़ा के इन्तिज़ार में थे। बहुत से लोगों के आने की आवाज़ और खटके सुनकर समझे कि यमलीख़ा पकड़े गए और दक्कियानूसी फ़ौज़ हमारी तलाश में आ रही है। अल्लाह की हम्द और शुक्र बजा लाने लगे। इतने में ये लोग पहुंचे। यमलीख़ा ने सारी कहानी सुनाई। उन हज़रात ने समझ लिया कि हम अल्लाह के हुक्म से इतना लम्बा समय तक सोए और अब इस लिये उठाए गए कि लोगों के लिये मौत के बाद ज़िन्दा किये जाने की दलील और निशानी हो। हाकिम गार के मुँह पर पहुंचा तो उसने तांबे का एक सन्दूक देखा। उसको खोला तो तख़्ती बरआमद हुई उसमें उन लोगों के नाम और उनके कुत्ते का नाम लिखा था और यह भी लिखा था कि यह जमाअत अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिये दक्कियानूस के डर से इस गार में शरणागत हुई। दक्कियानूस ने ख़बर पाकर एक दीवार से उन्हें गार में बन्द कर देने का हुक्म दिया। हम यह हाल इस लिये लिखते हैं कि जब कभी गार खुले तो लोग हाल पर सूचित हो जाएं। यह तख़्ती पढ़कर सब को आश्चर्य हुआ और लोग अल्लाह की हम्द और सना बजा लाए कि उसने ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमादी जिससे मरने के बाद उठने का यक़ीन हासिल होता है। हाकिम ने अपने बादशाह बेदरूस को इस घटना की सूचना दी। वह अमीरों और प्रतिष्ठित लोगों की लेकर हाज़िर हुआ और अल्लाह के शुक्र का सज़्दा किया कि अल्लाह तआला ने उसकी दुआ कुबूल की। असहाबे कहफ़ बादशाह से गले मिले और फ़रमाया हम तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द करते हैं। बरसलामो अलैक व रहमतुल्लाहे व बरक़ातुहू। अल्लाह तेरी और तेरी सलतनत की हिफ़ाज़त फ़रमाए और जिन्नों और इन्सानों के शर से बचाए। बादशाह खड़ा ही था कि वो हज़रात अपनी ख़ाबगाहों की तरफ़ वापस होकर फिर सो गये और अल्लाह ने उन्हें वफ़ात दी। बादशाह ने साल के सन्दूक में उनके बदनो को मेहफूज़ किया और अल्लाह तआला ने रोब से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाई कि किसी की ताक़त नहीं कि वहाँ पहुंच सके। बादशाह ने गुफ़ा के मुँह पर मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और एक ख़ुशी का दिन निश्चित किया कि हर साल लोग ईद की तरह वहाँ आया करें। (ख़ाज़िन बगैरह) इससे मालूम हुआ कि नेक लोगों में उर्स का तरीक़ा बहुत पुराना है।

(१६) यानी उन्हें ऐसी नींद सुला दिया कि कोई आवाज़ जगा न सके।

(१७) कि असहाबे कहफ़ के ----

हैं^(१) ये अल्लाह की निशानियों से है, जिस अल्लाह राह दे तो राह पर है, और जिसे गुमराह करे तो हरगिज़ उसका कोई हिमायती राह दिखाने वाला न पाओगे^(१७)

तीसरा रूकू

और तुम उन्हें जागता समझो^(१) और वो सोते हैं और हम उनकी दाई बाई कर्वट बदलते हैं^(२) और उनका कुत्ता अपनी कलाईयां फैलाए हुए है गार की चौखट पर^(३) ऐ सुनने वाले अगर तू उन्हें झांक कर देखे तो उनसे पीठ फेर कर भागे और उनसे हैबत (डर) में भर जाए^(४) ^(१८) और यूंही हमने उनको जगाया^(५) कि आपस में एक दूसरे से अहवाल पूछें^(६) उनमें एक कहने वाला बोला^(७) तुम यहां कितनी देर रहे कुछ बोले कि एक दिन रहे या दिन से कम^(८) दूसरे बोले तुम्हारा रव खूब जानता है जितना तुम ठहरे^(९) तो अपने में एक को यह चांदी लेकर^(१०) शहर में भेजो फिर वह गौर करे कि वहां कौन सा खाना ज़्यादा सुथरा है^(११) कि तुम्हारे लिये उसमें से खाना लाए और चाहिये कि नमीं करे और हरगिज़ किसी को तुम्हारी इत्तिला न दे^(१२) वेशक अगर वो तुम्हें जान लेंगे तो तुम्हें पथराव करेंगे^(१३) या अपने दीन^(१४) में फेर लेंगे और ऐसा हुआ तो तुम्हारा कभी भला न होगा^(१५) और इसी तरह हमने उनकी इत्तिला कर दी^(१६) कि लोग जान लें^(१७) कि अल्लाह का वादा सच्चा है

أَيُّتُ اللَّهِ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِلْ
فَلَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُرْشِدًا ۝ وَتَحْسَبُهُمْ آيَاتُنَا
وَهُمْ رُفُودَةٌ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ
الشِّمَالِ ۝ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعْتَ
عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُغْبًا ۝ وَ
كَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ ۝ قَالَ قَائِلٌ
مِنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۝ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضُ يَوْمٍ ۝
قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۝ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ
بَيْرُقًاكُمْ هَٰذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ ۝ فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَا
طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ ۝ وَلَا
يُسْخَرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۝ إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ
يَرْحَمُوكُمْ أَوْ يُعَذِّبُوكُمْ ۝ فِي صَلَاتِهِمْ ۝ وَكُنْ تَفْلِحُوا ۝ إِذَا
أَبَدْنَا ۝ وَكَذَلِكَ أَغْتَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيُغْلَبُوا ۝ إِنَّ وَعْدَ

مَنْزِلٍ

सूरए कहफ़ - दूसरा रूकू

- (१) दक्कियानूस बादशाह के सामने.
- (२) और उसके लिये शरीक और औलाद ठहराए, फिर उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा.
- (३) यानी उनपर सारे दिन छाया रहती है और सूर्योदय से सूर्यास्त तक किसी वस्तु भी धूप की गर्मी उन्हें नहीं पहुंचती.
- (४) और ताज़ा हवाएं उनको पहुंचती है.

सूरए कहफ़ - तीसरा रूकू

- (१) क्योंकि उनकी आँखें खुली है.
- (२) साल में एक बार दसवीं मुहर्रम को.
- (३) जब वो कर्वट लेते हैं, वह भी कर्वट बदलता है. तफ़सीरे सअलवी में है कि जो कोई इन कलिमात "व कल्बुहुम वासितुन ज़िरा ऐहे विल बसीद" को लिखकर अपने साथ रखे, कुत्ते के कष्ट से अन्न में रहे.
- (४) अल्लाह तआला ने ऐसी हैबत से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाई है कि उन तक कोई जा नहीं सकता. हज़रत अमीर मुआविया जंगे रुम के वक़्त कहफ़ की तरफ़ गुज़रे तो उन्होंने असहाय कहफ़ पर दाख़िल होना चाहा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने उन्हें मना किया और यह आयत पढ़ी. फिर एक जमाअत हज़रत अमीर मुआविया के हुक्म से दाख़िल हुई तो अल्लाह तआला ने एक ऐसी हवा चलाई कि सब जल गए.
- (५) एक लम्बी मुदत के बाद.
- (६) और अल्लाह तआला की कुदरत अज़ीमा को देखकर उनका यक़ीन ज़्यादा हो और वो उसकी नेअमतों का शुक्र अदा करें.
- (७) याती मकसलमीना जो उनमें सबसे बड़े और उनके सरदार हैं.
- (८) क्योंकि वो गार में सूर्योदय के वक़्त दाख़िल हुए थे और जब उठे तो सूरज डूबने के करीब था इससे उन्हें गुमान हुआ कि यह वही दिन है. इससे साबित हुआ कि इज़्ज़िहाद जायज़ और ज़न्ने मालिव की बुनियाद पर क़ौल करना दुरुस्त है.
- (९) उन्हें या तो इल्हाम से मालूम हुआ कि लम्बा समय गुज़र चुका या उन्हें कुछ ऐसे प्रमाण मिले जैसे कि बालों और नाख़ुनों का बढ़ जाना. जिससे उन्होंने ख़याल किया कि समय बहुत गुज़र चुका.

और कयामत में कुछ शुबह नहीं, जब वो लोग उनके मामले में आपस में झगड़ने लगे^(१६) तो बोले उनके गार पर कोई ईमारत बनाओ उनका रब उन्हें खूब जानता है, वो बोले जो इस काम में गालिव रहे थे^(१७) कसम है कि हम तो उनपर मस्जिद बनाएंगे^(१८) ॥२१॥ अब कहेंगे^(१९) कि वो तीन हैं चौथा उनका कुत्ता और कुछ कहेंगे पांच हैं छटा उनका कुत्ता वे देखे अलाउतका (अटकल पंच्य) बात^(२०) और कुछ कहेंगे सात हैं^(२१) और आठवां उनका कुत्ता, तुम फ़रमाओ मेरा रब उनकी गिनती खूब जानता है^(२२) उन्हें नहीं जानते मगर थोड़े^(२३) तो उनके बारे में^(२४) बहस न करो मगर उत्तनी ही बहस जो ज़ाहिर हो चुकी^(२५) और उनके^(२६) बारे में किसी किताब से कुछ न पूछो ॥२२॥

चौथा स्कू

और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल यह करू या कल कर दूंगा ॥२३॥ मगर यह कि अल्लाह चाहे^(१) और अपने रब की याद कर जब तू भूल जाए^(२) और यूँ कह कि करीब है मेरा रब मुझे उस^(३) से नज़दीकतर रास्ती (सच्चाई) की राह दिखाए^(४) ॥२४॥ और वो अपने गार में तीन सौ वरस ठहरे नौ ऊपर^(५) ॥२५॥ तुम फ़रमाओ अल्लाह खूब

الْحَقُّ

۲۱۲

سُبْحَانَ الَّذِي

اللَّهُ حَقٌّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ
بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُيُوتًا ۚ رَدُّهُمْ
أَعْلَمُ بِهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ
عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۖ سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ سَرَّابُهُمْ
كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادُسُهُمْ كَلْبُهُمْ
رَجَبًا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامُنُهُمْ كَلْبُهُمْ
قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعَدْلِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۚ
فَلَا تُمَارَ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ
وَمِنْهُمْ أَحَدًا ۚ وَلَا تَقُولَنَّ لِي سَأَلَ عِرْقِي فَاعِلٌ
ذَلِكَ عَدَا ۚ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ فَوَادُّكُمْ سَرَابٌ
إِذَا لَيْسَتْ وَقُلْ عَسَىٰ أَنْ يَهْدِيَنَا رَبِّي لِقُرْبٍ
مِّنْ هَذَا بَشَدًا ۖ وَلَئِنْ كُنَّا فِي كُفْرٍ لَّثَلَاثَةٌ مِّائَةٍ
سِنِينَ ۚ وَازْدَادُوا تَسَعًا ۖ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا

مَذَل

(१०) यानी दक्कियानूसी सिक्के के रुपये जो घर से लेकर आए थे और भोते वक्त अपने सरहाने रख लिये थे, इससे मालूम हुआ कि मुसाफिर को खर्च साथ में रखना तबस्कुत के तरीके के खिलाफ़ नहीं है, चाहिये कि अल्लाह पर भरोसा रखे.

(११) और इसमें कोई शुबह हरमत का नहीं.

(१२) और बुरी तरह कल्ल करे.

(१३) यानी अत्याचार से काफ़िरों की जमाअत ----

(१४) लोगों का दक्कियानूस के मरने और मुदत गुज़र जाने के बाद.

(१५) और बेदरुस की क़ौम में जो लोग मरने के बाद ज़िन्दा होने का इन्कार करते हैं उन्हें मालूम हो जाए.

(१६) यानी उनकी वफ़ात के बाद उनके गिर्द ईमारत बनाने में

(१७) यानी बेदरुस बादशाह और उसके साथी.

(१८) जिसमें मुसलमान नमाज़ पढ़ें और उनके कुर्ब से बरकत हासिल करें. (मदारिक) इससे मालूम हुआ कि बुजुर्गों के मज़ारात के करीब मस्जिदें बनाना ईमान वालों का पुराना तरीका है और कुरआन शरीफ़ में इसका ज़िक्र फ़रमाता और इसको मना न करना इस काम के दुरुस्त होने की मज़बूत दलील है. इससे यह भी मालूम हुआ कि बुजुर्गों से जुड़े स्थानों में बरकत हासिल होती है इसीलिये अल्लाह वालों के मज़ारात पर लोग बरकत हासिल करने के लिये जाया करते हैं और इसीलिये कब्रों की ज़िंघारत सुन्नत और सवाब वाली है.

(१९) ईसाई, जैसा कि उनमें से सैय्यिद और आक्बि ने कहा.

(२०) जो बेजान कह दी, किसी तरह सही नहीं हो सकती.

(२१) और ये कहने वाले मुसलमान हैं. अल्लाह तआला ने उनके क़ील को साबित रखा क्योंकि उन्होंने जो कुछ कहा वह नबी अलैहिस्सलातो वसलाम से इल्म हासिल करके कहा.

(२२) क्योंकि जहानों की तफ़सील और गुज़री हुई दुनिया और आने वाली दुनिया का इल्म अल्लाह ही को है या जिसका वह अना फ़रमाए.

(२३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मैं उन्हीं थोड़ों में से हूँ जिसका आयत में इम्तिना फ़रमाया यानी छेक दिया.

(२४) किताब वालों से.

(२५) और हुरआन में नाज़िल फ़रमा दी गई. आप इतने पर ही इन्तिफा करें. इस मामले में यहदियों की जिहालत का इज़हार करने की फ़िक्र न करें.

जानता है वो जितना ठहरे^(१) उसी के लिये आसमानों और ज़मीनों के सब ग़ैब वह क्या ही देखता और क्या ही सुनता है^(२) उसके सिवा उनका^(३) कोई वाली (संरक्षक) नहीं और वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता^(४) और तिलावत करो जो तुम्हारे रब की किताब^(५) तुम्हें वही (देववाणी) हुई; उसकी बातों का कोई बदलने वाला नहीं^(६) और हरगिज़ तुम उसके सिवा पनाह न पाओगे^(७) और अपनी जान उनसे मानूस रखो जो सुबह शाम अपने रब को पुकारते हैं उसकी रज़ा चाहते हैं^(८) और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें, क्या तुम दुनिया की ज़िन्दगी का सिंगार चाहोगे, और उसका कहा न मानो जिसका दिल हमने अपनी याद से गाफ़िल कर दिया और वह अपनी इबाहिश के पीछे चला और उसका काम हद से गुज़र गया^(९) और फ़रमा दो कि हक़ (सत्य) तुम्हारे रब की तरफ़ से है^(१०) तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़र करे^(११) बेशक हमने ज़ालिमों^(१२) के लिये वह आग तैयार कर रखी है जिसकी दीवारें उन्हें घेर लेंगी और अगर^(१३) पानी के लिये फ़रियाद करें तो उनकी फ़रियाद रसी होगी उस पानी से कि चर्ख़ दिये हुए धात की तरह है कि उनके मुंह भून देगा क्या ही बुरा पीना है^(१४) और दोज़ख़ क्या ही बुरी ठहरने की जगह^(१५) बेशक जो ईमान लाए और

لِيُنْشِئَ لَهُ عَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۝ وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَلَكِنْ تَجِدُ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝ وَاصْبِرْ نَفْسَکَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنُکَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرْطًا ۝ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّکُمْ ۖ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُکْفُرْ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ ۖ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۚ إِنَّ الدَّانِينَ

منزل २

(२६) यानी असहाब कहफ़ के.

सूरए कहफ़ - चौथा रूकू

- (१) यानी जब किसी काम का इरादा हो तो यह कहना चाहिये कि इयाअल्लाह ऐसा करेगा. वगैर इयाअल्लाह के न कहें. मक्का वालों ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जब असहाब कहफ़ का हाल पूछा था तो हुज़ूर ने फ़रमाया कल बनाऊंगा और इयाअल्लाह नहीं फ़रमाया था. कई रोज़ वही नहीं आई. फिर यह आयत उतरी.
- (२) यानी इयाअल्लाह कहना याद न रहे तो जब याद आए, कह ले. हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया, जबतक उस मजलिस में रहे. इस आयत की तफ़सीर में कई कौल हैं. कुछ मुफ़सिरों ने फ़रमाया मानी ये हैं कि अगर किसी नमाज़ को भूल गया तो याद आते ही अदा करे (बुधारी व मुस्लिम) कुछ आरिफ़ों ने फ़रमाया मानी ये हैं कि अपने रब को याद कर, जब तू अपने आपको भूल जाग क्योंकि ज़िक्र का क़माल यही है कि ज़ाकिर उसमें फ़ना हो जाए जिसका ज़िक्र करे.
- (३) असहाब कहफ़ के वाक़ए के बयान और उसकी ख़बर देने.
- (४) यानी ऐसे चमत्कार अना फ़रमाए जो मेरी नवुन्नत पर इससे भी ज़्यादा जाहिर दलील दें जैसे कि अगले नबियों के हलान का बयान और अज़ात का इल्म और क़यामत तक पेश आने वाली घटनाओं और वाक़िआत का बयान और चाँद के चिर जाने और जातवरों से अपनी गवाही दिलवाना इत्यादि. (ख़ाज़ि व जुमल)
- (५) और अगर वह इस मुद्दत में झगड़ा करें तो.
- (६) उसी का फ़रमाना हक़ है. नज़रान के ईसाइयों ने कहा था तीन सौ बरस तो ठीक है और नौ की ज़ियादती कैसी है इसका हमें इल्म नहीं. इसपर यह आयत उतरी.
- (७) कोई ज़ाहिर और कोई बातिल उससे छुपा नहीं.
- (८) आसमान और ज़मीन वालों का.
- (९) यानी कुरआन शरीफ़.
- (१०) और किसी को उसके फ़य़ बदल की कुदरत नहीं.
- (११) यानी इज़्ज़लास के साथ हर वक़्त अल्लाह की फ़रमाबंदारी में लगे रहते हैं. काफ़िरों के सरदारों की एक जमाअत ने सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि हमें मरीबों और बुरे हालाँ के साथ बैठते शर्म आती है अगर आप उन्हें सांख़त

नेक काम किये हम उनके नेग जाया नहीं करते जिनके काम अच्छे हों^(१०) ॥३०॥ उनके लिये बसने के बाग हैं उनके नीचे नदियां बहें वो उसमें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे^(११) और सब्ज कपड़े किरव और कनादीज के पहनेंगे वहाँ तख्तों पर तकिया लगाए^(१२) क्या ही अच्छा सवाव और जन्नत क्या ही अच्छी आराम की जगह^(१३) ॥

पाँचवां रूक

और उनके सामने दो मदों का हाल बयान कर^(१) कि उनमें एक को^(२) हमने अंगूरों के दो बाग दिये और उनको खजूरों से ढांप लिया और उनके बीच बीच में खेती रखी^(३) ॥३२॥ दोनों बाग अपने फल लाए और उसमें कुछ कमी न दी^(४) और दोनों के बीच में हमने नहर बनाई^(५) और वह^(६) फल रखता था^(७) तो अपने साथी^(८) से बोला और वह उससे रद्दो बदल करता था^(९) मैं तुझसे माल में ज्यादा हूँ और आदमियों का ज्यादा जोर रखता हूँ^(१०) ॥३४॥ अपने बाग में गया^(११) और अपनी जान पर जुल्म करता हुआ^(१२) बोला मुझे गुमान नहीं कि यह कभी फना हो^(१३) और मैं गुमान नहीं करता कि क्रयामत क्रायम हों और अंगूर में^(१४)

أَمْثَلُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نَعَمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۖ وَاصْرَبْ لَهُمْ مَثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَخَفَّفْنَاهُمَا بِخَلٍّ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا رِجًّا ۖ وَكَانَ الْجَنَّتَيْنِ اثْنَتَيْنِ ۖ أَكَلَهَا كُلُّهُمَا وَلَمْ يُظْلَمُوا مِنْهُ شَيْئًا ۖ وَكَفَرْنَا بِمَا كَانَا عَنْهَا ۖ وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ۖ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ ۖ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَذِهِ أَبَدًا ۖ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۖ وَلَئِنْ رُودَّتْ

से अलग कर दें तो हम इस्लाम ले आएँ और हमारे इस्लाम ले आने से बहुत से लोग इस्लाम ले आएँगे। इसपर यह आपत उत्तरी।
(१२) यानी उसकी ताफ़ीक से, और सच और झूट जाहिर हो चुका। मैं तो मुसलमानों को उनकी गरीबी के कारण तुम्हारा दिल रखने के लिये अपनी मजलिस से जुदा नहीं करूँगा।

(१३) अपने परिणाम को सोच ले और समझ ले कि -----

(१४) यानी काफ़िरों।

(१५) प्यास की सख्ती से।

(१६) अल्लाह की पनाह, हज़रत इब्ने अब्बास रसियल्लाहो अन्दुमा ने फ़रमाया वह गन्दा पानी है ज़ेतून के तेल की तलछट की तरह। तिरमिज़ी की हदीस में है कि जब वह मुँह के कगीव किया जाएगा तो मुँह की खाल उससे जल कर गिर पड़ेगी। कुछ मुफ़ससिरो का क़ौल है कि वह पिघलाया हुआ रांग और पीतल है।

(१७) बल्कि उन्हें उनकी नेकियों की जज़ा देते हैं।

(१८) हर ज़न्नती को तीन तीन कंगन पहनाए जाएंगे, सोने और चांदी और मोतियों के। सही हदीस में है कि कुज़ का पानी जहाँ जहाँ पहुँचता है वो सारे अंग बहिश्ती ज़ेवरों से सजाए जाएंगे।

(१९) बादशाहों की सी शान और ठाट वाट के साथ होंगे।

सूरए कहफ - पाँचवां रूक

(१) कि काफ़िर और ईमान वाले इसमें और गौर करके अपना अपना अंजाम समझें और इन दो मदों का हाल यह है।

(२) यानी काफ़िर को।

(३) यानी उन्हें निहायत बेहतरीन तरीक़ के साथ मुस्तब किया।

(४) बहार ख़ूब आई।

(५) बाग वाला, उसके अलावा और भी।

(६) यानी बहुत सा माल, सोना चाँदी वगैरह, हर किसम की चीज़ें।

(७) ईमानदार।

(८) और इतरा कर और अपने माल पर घमण्ड करके कहने लगा कि —

(९) मेरा कुटुम्ब कबीला बड़ा है, मुलाज़िम, ख़िदमतगार, नौकर चाकर बहुत हैं।

(१०) और मुसलमान का हाथ पकड़ कर उसको साथ ले गया। वहाँ उसको गर्व से हर तरफ़ लिये फिरा और हर हर चीज़ दिख़ाई।

अपने रब की तरफ़ फिर गया भी तो ज़रूर उस बाग़ से बहतर पलटने की जगह पाऊंगा^(१५) (३६) उसके साथी^(१५) ने उससे उलट फेर करते हुए जवाब दिया क्या तू उसके साथ कुफ़्र करता है जिसने तुझे मिट्टी से बनाया फिर निघरे पानी की बूंद से फिर तुझे ठीक मर्द किया^(१५) (३७) लेकिन मैं तो यही कहता हूँ कि वह अल्लाह ही मेरा रब है और मैं किसी को अपने रब का शरीक नहीं करता हूँ (३८) और क्यों न हुआ कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे अल्लाह हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर अल्लाह की मदद का^(१६) अगर तू मुझे अपने से माल व औलाद में कम देखता था^(१७) (३९) तो करीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से अच्छा दे^(१८) और तेरे बाग़ पर आसमान से बिजलियां उतारे तो वह पटपर मैदान होकर रह जाए^(१९) (४०) या उसका पानी ज़मीन में धंस जाए^(२०) फिर तू उसे कभी तलाश न कर सके^(२१) (४१) और उसके फल घेर लिये गए^(२२) तो अपने हाथ मलता रह गया^(२३) उस लागत पर जो उस बाग़ में खर्च की थी और वह अपनी दृष्टियों पर गिरा हुआ था^(२४) और कह रहा है ऐ काश मैं ने अपने रब का किसी को शरीक न किया होता (४२) और उसके पास कोई जमाअत न थी कि अल्लाह के सामने उसकी मदद

إِلَىٰ رَبِّي لِأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۖ قَالَ
لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي
خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ تُظْفِكُ ثُمَّ سَوَّاهُ
رَجُلًا ۚ لَّيْسَ اللَّهُ هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي
أَحَدًا ۚ وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتُ مَا
شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ إِنَّ تَرَكْنَا أَهْلَ
مِنْكَ مَا لَا وَوَلَدًا ۚ فَعَلَىٰ رَبِّي أَن يُؤْتِيَنِي
خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ
السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ۚ أَوْ يُصْبِحَ مَاؤُهَا
غَوْرًا فَلَن تَسْتَظِرَّ لَهُ طَلَبًا ۚ وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ
فَأَصْبَحَ يَقْلِبُ كَفْيَهُ عَلَىٰ مَا أَنْفَقَ فِيهَا وَهِيَ
خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ
بِرَبِّي أَحَدًا ۚ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ

मन्त्र

(११) कुफ़्र के साथ, और बाग़ की ज़ीनत और ज़बाइश और रीतक और बहार देखकर मग़रूर हो गया और..

(१२) जैसा कि तेरा गुमान है, फ़र्ज़ कर.

(१३) क्योंकि दुनिया में भी मैं ने बेहतरीन जगह पाई है.

(१४) मुसलमान.

(१५) अक़ल और बालिगपन, कुब्त और ताक़त अता की और तू सब कुछ पाकर काफ़िर हो गया.

(१६) अगर तू बाग़ देखकर माशाअल्लाह कहता और ऐतिराफ़ करता कि यह बाग़ और उसकी सारी उपज और नफ़ा अल्लाह तआला की मर्ज़ी और उसके फ़ज़ल और करम से हैं और सब कुछ उसके इस्त्रियार में है चाहे उसको आबाद रखे चाहे वीरान कर दे/ ऐसा कहता तो यह तेरे हक़ में बेहतर होता. तूने ऐसा क्यों नहीं कहा.

(१७) इस बजह से धमण्ड में जकड़ा हुआ था और अपने आप को बड़ा समझता था.

(१८) दुनिया में या आख़िरत में.

(१९) कि उसमें सब्ज़े का नामो निशान बाक़ी न रहे.

(२०) नीच चला जाय कि किसी तरह निकाला न जा सके.

(२१) चुनाव ऐसा ही हुआ, अज़ाब आया.

(२२) और बाग़ बिल्कुल वीरान हो गया.

(२३) पशमानी और हसरत से.

(२४) इस हाल को पहुँच कर उसको मूмин की नसीहत याद आती है और अब वह समझता है कि यह उसके कुफ़्र और सरकशी का नतीजा है.

करती न वह बदला लेने के काविल था^(१५) ४३) यहाँ खुलता है^(१६) कि इख्तार सच्चे अल्लाह का है, उसका सवाब सब से बेहतर और उसे मानने का अंजाम सब से भला ४४)

छटा रूकू

और उनके सामने^(१) दुनिया की ज़िन्दगी की कहावत बयान करो^(२) जैसे एक पानी हमने आसमान से उतारा तो उसके कारण ज़मीन का सक्का घना होकर निकला^(३) कि सूखी घास हो गया जिसे हवाएं उड़ाएं^(४) और अल्लाह हर चीज़ पर क़ाबू वाला है^(५) ४५) माल और बेटे यह जीती दुनिया का सिंगार है^(६) और बाक़ी रहने वाली अच्छी बातें^(७) उनका सवाब तुम्हारे रब के यहाँ बेहतर और वह उम्मीद में सबसे भली ४६) और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे^(८) और तुम ज़मीन को साफ़ खुली हुई देखोगे^(९) और हम उन्हें उठाएंगे^(१०) तो उनमें से किसी को न छोड़ेंगे ४७) और सब तुम्हारे रब के हुज़ूर परा बांधे पेश होंगे^(११) बेशक तुम हमारे पास वैसे ही आए जैसा हमने तुम्हें पहली बार बनाया था^(१२) बल्कि तुम्हारा गुमान था कि हम हरगिज़ तुम्हारे लिये कोई वादे का वक़्त न रखेंगे^(१३) ४८) और अअमाल नामा रखा जाएगा^(१४) तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उसके लिखे से डरते होंगे और^(१५) कहेंगे हाय ख़राबी हमारी इस

مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۚ هَذَا لَكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقُّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ۚ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيحُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۚ الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبَاقِيَتُ الصَّالِحَاتُ ۚ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ۚ وَيَوْمَ نَسِيرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً ۚ وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۚ وَاعْرِضْهُ عَلَىٰ رَبِّكَ صَفَاءً لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ لَكُمْ مَوْعِدًا ۚ وَوَضِعَ الْكِتَابَ فَكَّرَ الْمُجْرِمِينَ ۚ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يُيَسِّرُنَا بِاللَّهِ هَذَا الْكِتَابُ

(१५) कि नष्ट हुई चीज़ का वापस कर सकता।

(१६) और ऐसे हालात में भालूम होता है।

सूरए कहफ़ - छटा रूकू

(१) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।

(२) कि उसकी हालत ऐसी है।

(३) ज़मीन तरो ताज़ा हुई, फिर क़रीब ही ऐसा हुआ।

(४) और पयागन्दा कर दें।

(५) पैदा करने पर भी और नष्ट करने पर भी। इस आयत में दुनिया की ताज़गी, हो भरे पन और उसके नाश और हलाक होने की सबज़ से उपमा दी गई है कि जिस तरह हरियाली खिल कर नष्ट हो जाती है और उसका नाम निशान बाक़ी नहीं रहता, यही हालत दुनिया की क्षण भर ज़िन्दगी की है, उसपर घमण्ड करना या मर मिटना अक़ल का काम नहीं।

(६) क़ब्र की राह और आख़िरत के लिये तोशा नहीं। दज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि माल और औलाद दुनिया की खेती हैं और नेक काम आख़िरत की और अल्लाह नआला अपने बहुत से बन्दों को ये सब अन्ता करता है।

(७) बाक़ी रहने वाली अच्छी बातों से नेक कर्म मुराद हैं जिनके फल इलाक़ के लिये बाक़ी रहते हैं जैसा कि पाँचों वक़्त की नमाज़ें और अल्लाह का ज़िक्र और स्तुति। हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने "बाक़ी रहने वाली अच्छी बातों" की कसरत का हुक्म फ़रमाया। महाबा ने अर्ज़ किया कि वो क्या है, फ़रमाया "अल्लाहो अक़बर, लाइलाहा इल्लल्लाह, सुबहानल्लाह बलहम्दु लिल्लाहे बला होला बला कुबता इल्ला बिल्लाहे" पढ़ना।

(८) कि अपनी जगह से उग्रड़ कर बादल की तरह खाना होंगे।

(९) न उस पर कोई पहाड़ होगा, न इमारत, न दरज़ज़।

(१०) क़ब्रों से और हिसाब के मैदान में हाज़िर करेंगे।

(११) हर हर उम्मत की जमाअत की पंक्तियाँ अलग अलग, अल्लाह नआला उनसे फ़रमाएगा।

(१२) ज़िन्दा, नंगे बदन, नंगे पाँव, माल और दौलत के बिना।

(१३) जो वादा कि हम ने नबियों की ज़बान पर फ़रमाया था। यह उनमें फ़रमाया जाएगा जो लोग मग्ने के वाद ज़िन्दा किये जानें।

नविशते(लेखे) को क्या हुआ न इसने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा जिसे घेर न लिया हो, और अपना सब किया उन्होंने सामने पाया और तुम्हारा रब किसी पर जुल्म नहीं करता^(१६) (४९)

सातवाँ सूक़

और याद करो जब हमने फ़रिश्तों को फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो^(१) तो सवने सज्दा किया सिवा इब्लिस के कि जिन्न क्रौम से था तो अपने रब के हुक्म से निकल गया^(२) भला क्या उसे और उसकी औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो^(३) और वो तुम्हारे दुश्मन हैं ज़ालिमों को क्या ही बुरा बदला मिला^(४) (५०) न मैं ने आसमानों और ज़मीन को बनाते वक़्त उन्हें सामने बिठा लिया था न खुद उनके बनाते वक़्त और न मेरी शान कि गुमराह करने वालों को बाजू बनाऊँ^(५) (५१) और जिस दिन फ़रमाएगा^(६) कि पुकारो मेरे शरीकों को जो तुम गुमान करते थे तो उन्हें पुकारेंगे वो उन्हें जवाब न देंगे और हम उनके^(७) दरमियान एक हलाकत का मैदान कर देंगे^(८) (५२) और मुजरिम दोज़ख को देखेंगे तो यक़ीन करेंगे कि उन्हें उसमें गिरना है और उससे फिरने की कोई जगह न पाएंगे^(९) (५३)

आठवाँ सूक़

और वेशक हमने लोगों के लिये इस कुरआन में हर किसम

لَا يُعَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْطَاهَا وَ
وَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا وَلَا يَظُنُّ رَبُّكَ
أَحَدًا ۖ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ
فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ
عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ أَفَتَتَّبِعُ عَنْهُ وَذُرِّيَّتَهُ أُولَٰئِكَ
مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ
بَدَلًا ۝ مَا أَشْهَدُ لَهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّينَ
عَصْدًا ۝ وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَاءِيَ
الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا ۝ وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ
فَطَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاعِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا
مَصْرَفًا ۖ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ

مُذَلَّلًا

और क़यामत क़ायम होने के इन्कारी थे.

(१४) हर व्यक्ति का कर्म-लेखा उसके हाथ में. मूमिन का दाएं में और काफ़िर का बाएं में.

(१५) उसमें अपनी बुराइयाँ लिखी देखकर.

(१६) न किसी पर बेजुर्म अज़ाब करे, न किसी की नेकियाँ घटाए.

सूरए कहफ़ - सातवाँ सूक़

(१) ताज़ीम और आदर का.

(२) और हुक्म हान के बावजूद उसने सज्दा न किया तो ऐ बनी आदम !

(३) और उनकी इनाअत इस्तिफ़ाए करते हो.

(४) कि अल्लाह की फ़रमावर्दारी करने की जगह शैतान के अनुकरण में जकड़े गए.

(५) मानी ये हैं कि चीज़ों के पैदा करने में तन्हा और अकेला हूँ न कोई मेरा सलाहकार, न कोई सहायक. फिर मैं सिवा और किसी की इवाअत किस तरह दुश्मन हो सकती है.

(६) अल्लाह तआला काफ़िरों से ---

(७) यानी बुतों और बुत परस्तों के, या हिदायत वालों और गुमराही वालों के.

(८) हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मौबिक जहन्नम की एक घाटी का नाम है.

की मिसल तरह तरह बयान फरमाई^(१) और आदमी हर चीज़ से बढ़कर झगड़ालू है^(२) ॥५४॥ और आदमियों को किस चीज़ ने इससे रोका कि ईमान लाते जब हिदायत^(३) उनके पास आई और अपने रव से माफ़ी मांगते^(४) मगर यह कि उनपर अगलों का दस्तूर आए^(५) या उनपर क्रिस्म क्रिस्म का अज़ाब आए^(६) ॥५५॥ और हम रसूलों को नहीं भेजते मगर^(७) खुशी और^(८) डर सुनाने वाले और जो काफ़िर हैं वो वातिल के साथ झगड़ते हैं^(९) कि उससे हक़ (सत्य) को हटा दें और उन्होंने मेरी आयतों की ओर जो डर उन्हें सुनाए गए थे^(१०) ॥५६॥ उनकी हंसी बना ली. और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसे उसके रव की आयतें याद दिलाई जाएं तो वह मुंह फेर ले^(११) और उनके हाथ जो आगे भेज चुके^(१२) उसे भूल जाए, हमने उनके दिलों पर गलाफ़ कर दिये हैं कि कुरआन न समझें और उनके कानों में भारीपन^(१३) और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी हरगिज़ कभी राह न पाएंगे^(१४) ॥५७॥ और तुम्हारा रव बख़्शने वाला रहमत वाला है, अगर वह उन्हें^(१५) उनके लिये पकड़ता तो जल्द उनपर अज़ाब भेजता^(१६) बल्कि उनके

مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرُ شُكْرًا ۚ
جَدَلًا ۚ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ
الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ
سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝
وَمَا تُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ
وَيَجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا
بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا أُنذِرُوا هُزُوًا ۝
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ
عَنْهَا وَلَيْسَٰى مَا قَدْ مَتَّ يَدَاهُ مَالًا جَعَلْنَا عَلَىٰ
قُلُوبِهِمُ الْكِتَابَ أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ
وَإِنْ تَذَعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِلَّا أَلْفًا ۝
وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۚ لَوْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا
كُنتُمْ تَعْمَلُ لَغَدَّ لَكُمْ الْعَذَابُ ۚ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ

مَنْزِلٌ

सूरए कहफ़ - आठवाँ रूकू

- (१) ताकि समझें और नसीहत पकड़ें.
- (२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यहाँ आदमी से मुराद नज़र इब्ने हारिस है और झगड़ने से उसका कुरआन पाक में झगड़ा करना. कुछ ने कहा उबई बिन सलफ़ मुराद है. कुछ मुफ़स्सिरों का कौल है कि सारे काफ़िर मुराद है. कुछ के नज़दीक आयत आम मानी में है और यही सबसे ज़्यादा सही है.
- (३) यानी कुरआन शरीफ़ या रसूल मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पाक मुबारक ज्ञात.
- (४) मानी ये हैं कि उनके लिये उज़्र की जगह नहीं है क्योंकि उन्हें ईमान और इस्ताफ़ार से कोई नहीं रोक सकता.
- (५) यानी वह हलाकत जो मुक़द्दर है, उसके बाद.
- (६) ईमानदारों और फ़रमाँवरदारों के लिये सबाब की.
- (७) बड़ेमानों नाफ़रमानों के लिये अज़ाब का.
- (८) और रसूलों को अपनी तरह का आदमी कहते हैं.
- (९) अज़ाब के.
- (१०) और नसीहत पकड़ें और उनपर ईमान न लाए.
- (११) यानी बुराई और गुनाह और नाफ़रमानी, जो कुछ उसने किया.
- (१२) कि हक़ बात नहीं सुनते.
- (१३) यह उनके हक़ में है जो अल्लाह के इल्म में ईमान से मेहरम हैं.
- (१४) दुनिया ही में.
- (१५) लेकिन उसकी रहमत है कि उसने मोहलत दी और अज़ाब में जल्दी न फ़रमाई.

लिये एक वादे का वक्त है^(१६) जिसके सामने कोई पनाह न पाएंगे^(१७) और ये वस्तियां हमने तवाह कर दीं^(१८) जब उन्होंने जुल्म किया^(१९) और हमने उनकी वर्वादी का एक वादा कर रखा था^(२०)

नवाँ सूकू

और याद करो जब मूसा^(१) ने अपने खादिम से कहा^(२) मैं वाज़ न रहूंगा जबतक वहाँ न पहुँचूँ जहाँ दो समन्दर मिले हैं^(३) या करनों^(४) चला जाऊँ^(५) फिर जब वो दोनों उन दरियाओं के मिलने की जगह पहुँचे^(६) अपनी मछली भूल गए और उसने समन्दर में अपनी राह ली सुरंग बना ली^(७) फिर जब वहाँ से गुज़र गए^(८) मूसा ने खादिम से कहा हमारा सुबह का खाना लाओ वेशक हमें अपने इस सफ़र में बड़ी मशक्कत (परिश्रम) का सामना हुआ^(९) फिर बोला, भला देखिये तो जब हमने इस चट्टान के पास जगह ली थी तो वेशक मैं मछली का भूल गया और मुझे शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करूँ, और उसने^(१०) तो समन्दर में अपनी राह ली अचंभा है^(११) मूसा ने कहा यही तो हम चाहते थे^(१२) तू पीछे पलटे अपने क़दमों के निशान देखते^(१३) तो हमारे वन्दों में से एक वन्दा पाया^(१४) जिसे हमने अपने पास से रहमत दी^(१५) और उसे

لَنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْجِلًا ۖ وَتِلْكَ الْقُرَىٰ
أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ
مَوْجِدًا ۖ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتْنِهِ لَا آتِبُكُمْ حَتَّىٰ
أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ۖ فَلَمَّا بَلَغَا
مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ
فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۖ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتْنِهِ إِنِّي
نَاسِيًا ذَاكَ لَقِيتُ مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ۖ
قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ
الْحُوتَ وَمَا أَتْلُوهُ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ ۖ
وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۖ قَالَ ذَلِكِ
مَا كُنَّا نَبْغِي ۖ فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ۖ
فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا اتَّبِعَهُ رَحْمَةً مِنْ
عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِنْ لَدُنَّا عِلْمًا ۖ قَالَ لَهُ

مَرْكَبًا

(१६) यानी क़यामत का दिन, दोबारा उठाए जाने और हिमाय का दिन.

(१७) वहाँ के रहने वालों को हलाक कर दिया और वो वस्तियाँ वीरान हो गईं. उन वस्तियों से लूट, आद, समुद्र याँदर ज़मीनों की वस्तियाँ मुराद हैं.

(१८) सच्चाई को न माना और क़ुफ़्र इज़्तिहार किया.

सूरए कहफ़ - नवाँ सूकू

(१) इन्हे इमरान, इज़्रत वाले नबी, तीरात और खुले चमन्कार बाने.

(२) जिनका नाम यूशअ इन्हे नून है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत और सोहबत में रहने थे और आप से इल्म हासिल किया करते थे और आपके बाद आपके बलीअद हैं.

(३) पूर्व की दिशा में फ़ारस सागर, रुम सागर और मजमऊल बहरैन वह स्थान हैं जहाँ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हज़रत ख़िद्व अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात का वादा दिया गया था इसलिये आपने वहाँ पहुँचने का पक्का इरादा किया और फ़रमाया कि मैं अपनी कांशिश जारी रखूंगा जबतक कि वहाँ पहुँचूँ.

(४) अगर वह जगह दूर हो, फिर यह हज़रत रोटी और ग़ारी भुनी मछली टोकरी में तोशे के तौर पर लेकर खाना हुए.

(५) जहाँ एक पत्थर की चट्टान थी और अमृत का चश्मा था तो वहाँ दोनों हज़रत ने आराम किया और सो गए. भुनी हुई मछली टोकरी में ख़िन्दा हो गई और कूद कर दरिया में गिरी और उसपर से पानी का बहाव रुक गया और एक मेहराब सी बन गई. हज़रत यूशअ को जागने के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से उसका ज़िक्र करना याद न रहा चुनांचे इरशाद होता है.

(६) और चलते रहे यहाँ तक कि दूसरे दिन ग़्याने का वक्त आया तो हज़रत -----

(७) थकान भी है और भूख का जोर भी है और यह बात जबतक मजमऊल बहरैन पहुँचे थे पेश न आई थी, मंज़िले मक़सूद से आगे बढ़कर थकान और भूख मालूम हुई. इस में अल्लाह न आला की हिकमत थी कि मछली याद करें और उसकी तलब में मंज़िले मक़सूद की तरफ़ वापस हो. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के यह फ़रमाने पर खादिम ने मअज़िरत की ओर -----

(८) यानी मछली ने.

(९) मछली का जाना ही तो हमारा मक़सद हासिल करब की कांशिश है और जिन की तलब में हम चलें हैं उनकी मुलाक़ात वहीं होगी.

(१०) जो चादर आँड़े आराम फ़रमा रहा था. यह हज़रत ख़िद्व थे. ख़िद्व शब्द लुगत में तीन तरह आया है ख़िद्व, ख़ज़िग और ख़ज़्र. यह लक़ब है और इस लक़ब की वजह यह है कि जहाँ बैठते हैं या दमाज़ पढ़ते हैं वहाँ अगर पास ख़ुशक हो तो हरी भरी हो जाती

अपना इल्म लदुन्नी अता किया^(११) (६५) उससे मूसा ने कहा क्या मैं तुम्हारे साथ रहूँ इस शर्त पर कि तुम मुझे सिखादोगे नेक बात जो तुम्हें तअलीम हुई^(१२) (६६) कहा आप मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे^(१३) (६७) और उस बात पर क्योंकि सत्र करेंगे जिसे आपका इल्म नहीं घेरे है^(१४) (६८) कहा बहुत जल्द अल्लाह चाहे तो तुम मुझे साविर पाओगे और मैं तुम्हारे किसी हुक्म के खिलाफ़ न करूँगा^(१५) (६९) कहा तो अगर आप मेरे साथ रहते हैं तो मुझसे किसी बात को न पूछना जबतक मैं खुद उसका ज़िक्र न करूँ^(१६) (७०)

दसवाँ स्कू

अब दोनों चले यहाँ तक कि जब किशती में सवार हुए^(१) उस वन्दे ने उसे चीर डाला^(२) मूसा ने कहा क्या तुमने इसे इसलिये चीरा कि इसके सवारों को डुबा दो, वेशक़ यह तुमने बुरी बात की^(३) (७१) कहा मैं न कहता था कि आप मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे^(४) (७२) कहा, मुझ से मेरी भूल पर गिरफ़्त न करो^(५) और मुझ पर मेरे काम में मुश्किल न डालो^(६) (७३) फिर दोनों चले^(७) यहाँ तक कि जब एक लड़का मिला^(८) उस वन्दे ने उसे क़त्ल कर दिया मूसा ने कहा, क्या तुमने एक सुधरी जान^(९) वे किसी जान के बदले क़त्ल कर दी, वेशक़ तुमने बहुत बुरी बात की^(१०) (७४)

الکتاب

४८०

سُورَةُ الْاَنْعَامِ

مُوسَىٰ هَلْ أَتَيْتُكَ عَلَىٰ أَنْ تُعَلِّمَ مِنِّي
عَلِمْتَ رُشْدًا ۖ قَالَ إِنَّا لَنْ نَسْتُطِيعَ
مَعِيَ صَبْرًا ۚ وَكَيفَ صَبْرًا عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ
بِهِ خُبْرًا ۚ قَالَ سَتَجِدُنِي إِنِ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا
وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ۚ قَالَ فَإِنِ اسْتَعَيْنِي
فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ
ذِكْرًا ۚ فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ
خَرَقَهَا ۚ قَالَ أَخَرَقْتُهَا لِتُفْرِقَ أَهْلَهَا ۚ لَقَدْ
جِئْتُ شَيْئًا مِمَّا ۚ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّا لَنْ
نَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۚ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا
نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ۚ
فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا أَهْبَا عَلَمًا فَقَتَلَهُ ۚ قَالَ أَقْتَلْتُ
نَفْسًا رَكِبْتُهَا ۚ بَعِيرٍ نَفْسٍ ۚ لَقَدْ جِئْتُ شَيْئًا مِمَّا ۚ

مَزْن

है. आपका नाम बलिया विन मन्वान और कुनियत अबुल अब्बास है. एक क़ौल यह है कि आप बनी इस्राईल में से हैं. एक क़ौल यह है कि आप शहजादे हैं. आपने दुनिया त्याग कर सत्यास इस्तिफ़ाया फ़रमाया.

(११) इस उद्दमत से या तबुच्चन मुग़द है या विलायत या इल्म या लम्बी उम्र. आप बली तो यकीनन हैं आपके नदी होने में मतभेद है. (१२) यानी अज्ञान का इल्म. मुफ़सिरों ने फ़रमाया इल्म लदुन्नी वह है जो वन्दे को इल्हाम के तौर से हासिल हो. हदीस शरीफ़ में है जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को देखा कि सफ़ेद चादर में लिपटे हुए हैं तो आपने उन्हें सलाम किया. उन्होंने पूछा कि तुम्हारे इलाक़े में सलाम कहाँ ? आपने फ़रमाया मैं मूसा हूँ. उन्होंने कहा कि बनी इस्राईल के मूसा? फ़रमाया कि जी हाँ. फिर

(१३) इससे मालूम हुआ कि आदमी को इल्म की तलब में रहना चाहिये चाहे वह कितना ही बड़ा आलम हो. यह भी मालूम हुआ कि जिससे इल्म सीखे उसके साथ विनम्रता और आदर से पेश आए. (मदारीक) ख़िज़्र ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के जवाब में —

(१४) हज़रत ख़िज़्र ने यह इसलिये फ़रमाया कि वह जानते थे कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बर्जित और अवैध काम देखेंगे और नवियाँ से सम्भव ही नहीं कि वो अवैध काम देखकर सत्र कर सकें. फिर हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने इस बेसब्री का उज्र भी खुद ही बयान फ़रमाया और कहा.

(१५) और ज़ाहिर में वो इन्कारी हैं. हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि एक इल्म अल्लाह तआला ने मुझ को ऐसा अता फ़रमाया जो आप नहीं जानते थे और एक इल्म आपको ऐसा अता फ़रमाया जो मैं नहीं जानता था. मुफ़सिरों और हदीस के जानकार कहते हैं कि जो इल्म हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने अपने लिये खास फ़रमाया वह वातिन और दिल के अन्दर की बात जानने का इल्म है और क़माल वालों के लिये यह बड़प्पन की बात है. चूनांचे बताया गया है कि हज़रत सिद्दीक़ को नमाज़ चर्गरह नेकियों की बुनियाद पर सहाबा पर फ़ज़ीलत नहीं बल्कि उनकी फ़ज़ीलत उस चीज़ से है जो उनके सीने में है यानी इल्म वातिन और छुपी बातों का इल्म, क्योंकि जो काम करेंगे वह हिक़मत से होंगे अगरच देखने में ख़िलाफ़ मालूम हों.

(१६) इससे मालूम हुआ कि आगिद और शिष्य के कर्तव्यों में से है कि वह शौख और उस्ताद के कामों पर आलोचना न करें और प्रतीक्षा कर कि वह खुद ही उसकी हिक़मत ज़ाहिर फ़रमा दें. (मदारीक, अबू सऊद)

सूरए कहफ़ - दसवाँ सूक़

- (१) और किश्ती वालों ने हज़रत ख़िन्न अलैहिस्सलाम को पहचान कर कुठ लिये बिना सवार कर लिया.
- (२) और बसूले या कुलहाड़ी से उसका एक तंज़ा या दो तंज़े उग्राड़ डाले, इसके बावजूद किश्ती में पानी न आया.
- (३) हज़रत ख़िन्न ने.
- (४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने.
- (५) क्योंकि भूल चूक पर शरीअत की पकड़ नहीं.
- (६) यानी किश्ती से उतर कर एक स्थान पर गुज़रे जहाँ लड़कें खेल रहे थे.
- (७) जो उनमें ख़ूबसूरत था और बालिग़ न हुआ था . कुठ मुफ़सिरों ने कहा जवान था और डाका डालता था.
- (८) जिसका कोई गुनाह साबित न था.

पारा पन्द्रह समाप्त

सोलहवां पारा- काला अलम

(सूरए कहफ - दसवाँ रुकू जारी)

कहा^(९) मैं ने आपसे न कहा था कि आप हरगिज़ मेरे साथ न ठहर सकेंगे^(१०) (७५) कहा इसके बाद मैं तुम से कुछ पूछू तो फिर मेरे साथ न रहना वंशक मेरी तरफ से तुम्हारा उज्र पूरा हो चुका^(११) (७६) फिर दोनों चले यहाँ तक कि जब एक गाँव वालों के पास आए^(१२) उन दहकानों से खाना मांगा उन्होंने उन्हें दावत देनी कुबूल न की^(१३) फिर दोनों ने उस गाँव में एक दीवार पाई कि गिरा चाहती है, उस वन्दे ने^(१४) उसे सीधा कर दिया मूसा ने कहा तुम चाहते तो इसपर कुछ मज़दूरी ले लेते^(१५) (७७) कहा यह^(१६) मेरी और आपकी जुदाई है. अब मैं आप को इन बातों का फेर बताऊंगा जिन पर आप से सब्र न हो सका^(१७) (७८) वह जो किशती थी वह कुछ मोहताजों की थी^(१८) कि दरिया में काम करते थे तो मैंने चाहा कि उसे ऐवदार कर दूं और उनके पीछे एक वादशाह था^(१९) कि हर सावुत किशती ज़वरदस्ती छीन लेता^(२०) (७९) और वह जो लड़का था उसके माँ बाप मुसलमान थे तो हमें डर हुआ कि वह उनको सरकशी और कुफ़्र पर चढ़ावे^(२१) (८०) तो हमने चाहा कि उन दोनों का रब उससे बहतर^(२२) सुधरा और उससे ज़्यादा मेहरबानी में करीब अता करे^(२३) (८१)

الْكَافَّة

२२१

قَالَ الْمَلَأُ

قَالَ اَلَمْ اَتْلُ لَكَ اٰتَاكَ لَمْ تَسْتَطِعْ مَعِيَ

صَبْرًا ۝ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَ هٰذَا فَلَا

تُصَلِّبُنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّيْ عَذْرًا ۝ فَانْطَلَقَا

حَتّٰى اِذَا اَتٰتِيَا اَهْلَ قَرْيَةٍ اَسْتَطَعْنَا اَهْلُهَا فَاَبَوْا

اَنْ يُصَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُرِيدُ اَنْ

يَنْقُضَ فَاَقَامَهُ ۚ قَالَ كُوْثِرْتُ لَكَ اَنْتَ وَبَنُوْكَ عَلَيْهِ

اَجْرًا ۝ قَالَ هٰذَا اِفْرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاَتَّبِعُكَ

بِنَاوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝ اَمَّا السَّفِيْنَةُ

فَكَانَتْ لِمَسْكِيْنَ يَعْشَوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرَدُوْا اَنْ

اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَّرَآءَهُمْ مَلِكٌ يَّاخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ

غَضَبًا ۝ وَاَمَّا الْعُلَمَاءُ فَكَانَ اَبْوَاهُ مُؤْمِنِيْنَ

فَخَشِينَا اَنْ يُرْهِفَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۝ فَاَرَدْنَا

اَنْ يُبَيِّدَ لَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَوَةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ۝

مَنْزِل

(सूरए कहफ - दसवाँ रुकू जारी)

(९) हज़रत ख़िज़्र ने कि ऐ मूसा -----

(१०) इसके जवाब में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ---

(११) हज़रत इब्ने अब्बास ग़दियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया इस गाँव से मुराद अन्ताकिया है, वहाँ इन हज़रात ने.

(१२) और मेज़बानी पर तैयार न हुए. हज़रत क़नाद से ग़िवायत है कि वह बस्ती बहुत बदनर है जहाँ मेहमानों की आवभगत न की जाए.

(१३) यानी हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने अपना मुबारक हाथ लगाकर अपनी करामत से.

(१४) क्योंकि यह तो हमारी राज़त का वस्तु है, और बस्ती वालों ने हमारी कुछ आवभगत नहीं की. ऐसी हालत में उनका काम बनाने पर उजरत लेना मुनासिब था. इसपर हज़रत ख़िज़्र ने.

(१५) वक़्त या इस बार का इन्कार.

(१६) और उनके अन्दर जो राज़ थे, उनका इज़हार कर दूंगा.

(१७) जो दस भाई थे, उनमें पाँच तो अपंग थे जो कुछ नहीं कर सकते थे, और पाँच स्वस्थ थे जो -----

(१८) कि उन्हें बापसी में उसकी तरफ़ गुज़रना होता. उस बादशाह का नाम जलन्दी था. किशती वालों को उसका हाल मालूम न था और उसका तरीका यह था.

(१९) और अगर ऐबदार होती, छोड़ देते. इसलिये मैं ने उस किशती को ऐवदार कर दिया कि वह उन गरीबों के लिये बच रहे,

(२०) और वह उसकी महबूत में दीव से फिर जाएँ और गुमराह हो जाएँ, और हज़रत ख़िज़्र का यह अन्देशा इस कारण था कि वह अल्लाह के बताए से उसके अन्दर का हाल जानते थे. मुस्लिम शरफ़ि की हदीस में है कि यह लड़का काफ़िर ही पैदा हुआ था. इमाम सुबकी ने फ़रमाया कि अन्दर का हाल जानकर बन्धे को क़त्ल कर देना हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के साथ ख़ास है. उन्हें इसकी इजाज़त थी. अगर कोई बर्तों किसी बन्धे के ऐसे हाल पर गुनित हो तो उसको क़त्ल करना जायज़ नहीं. किन्तु वे असाइस में हैं कि जब ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि तुमने सुथरी जान को क़त्ल कर दिया तो यह उन्हें बुरा सा लगा और उन्होंने लड़के का कन्धा तोड़कर उसका गोस्त चीरा तो उसके अन्दर लिखा हुआ था, काफ़िर है, कभी अल्लाह पर ईमान न लाएगा. (ज़ुमल)

(२१) बन्धा गुनाहों और अपवित्रता से पाक और ---

रही वह दीवार, वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी^(२३) और उसके नीचे उनका खज़ाना था^(२४) और उनका बाप नेक आदमी था,^(२५) तो आपके रब ने चाहा कि वो दोनों अपनी जवानी को पहुंचें^(२६) और अपना खज़ाना निकालें आपके रब की रहमत से और यह कुछ मैं ने अपने हुक्म से न किया,^(२७) यह फेर है उन बातों का जिसपर आपसे सत्र न हो सको^(२८) ﴿८२﴾

ग्यारहवाँ सूक़

और तुम से^(१) जुल करनैन को पूछते हैं,^(२) तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें उसका ज़िक्र पढ़कर सुनाता हूँ^(३) बेशक हमने उसे ज़मीन में काबू दिया और हर चीज़ का एक सामान अता फ़रमाया^(४) ﴿८४﴾ तो वह एक सामान के पीछे चला^(५) ﴿८५﴾ यहाँ तक कि जब सूरज डूबने की जगह पहुंचा उसे एक काली कीचड़ के चश्मे में डूबता पाया^(६) और वहाँ^(७) एक क़ौम मिली^(८) हमने फ़रमाया, ऐ जुल करनैन या तो तू उन्हें अज़ाब दे^(९) या उनके साथ भलाई इख़्तियार करे^(१०) ﴿८६﴾ अज़ की कि वह जिसने जुल्म किया^(११) उसे तो हम बहुत जल्द सज़ा देंगे^(१२) फिर अपने रब की तरफ़ फेरा जाएगा^(१३) वह उसे बुरी मार देगा^(१४) और जो ईमान लाया और नेक काम किया तो उसका बदला भलाई है^(१५) और बहुत

الکھف

२२२

قال الله

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزُ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ذَلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۖ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْقَرْيَتَيْنِ قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُم مِّنْهُ ذِكْرًا ۚ إِنَّا مَكْنُئًا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِن كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۚ فَاتَّبَعَ سَبَبًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ ۖ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۚ قُلْنَا يَذَنُ الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَنْ تُعَذِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ۚ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا ثَكْرًا ۖ وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءٌ ۖ الْحَسَنَىٰ ۖ وَنَسْأَلُ لَهُ مِن مِّن

منزل

(२२) जो मैं बाप के साथ अदब और सदब्यवहार और महबूत रखता हो, रिवायत है कि अल्लाह तआला ने उन्हें एक बेटी अना की जो एक नबी के तिकाह में आई और उससे नबी पैदा हुए, जिन के हाथ अल्लाह तआला ने एक उम्मत को हिदायत दी, बन्दे को चाहिये कि अल्लाह तआला के लिखे पर राजी रहे, इसी में बेहतरी होती है।

(२३) जिनके नाम असरम और सरिम थे।

(२४) तिरमिज़ी की हदीस में है कि उस दीवार के नीचे सोना चांदी गड़ा हुआ था, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया उसमें सोने की एक तरख़ी थी उसपर एक तरफ़ लिखा था उस का हाल अजीब है, जिसे मौत का यकीन हो उसको ख़ुशी किस तरह होती है, उसका हाल अजीब है जो तक्रदीर का यकीन रखे उसको गुस्सा कैसे आता है, उसका हाल अजीब है जिस रिज़क का यकीन हो, वह क्यों लालच में पड़ता है, उसका हाल अजीब है जिसे हिसाब का यकीन हो वह कैसे ग़ाफ़िल रहता है, उसका हाल अजीब है जिसको दुनिया के पतन और परिवर्तन का यकीन हो वह कैसे संतुष्ट होता है और उसके साथ लिखा था "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" और दूसरी तरफ़ उस तरख़ी पर लिखा था मैं अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई मअ्यूद नहीं, मैं यकता हूँ मेरा कोई शरीक नहीं, मैं ने अच्छाई और बुराई पैदा की, उसके लिये ख़ुशी जिसे मैं ने अच्छाई के लिये पैदा किया और उसके हाथों पर भलाई जारी की, उसके लिये तबाही जिसको शर के लिये पैदा किया और उसके हाथों पर बुराई जारी की।

(२५) उसका नाम काशेह था और यह ब्यक्ति परहेज़गार था, हज़रत मुहम्मद इब्ने मुनक्कदर ने फ़रमाया अल्लाह तआला बन्दे की नेकी से उसकी औलाद को और उसकी औलाद की औलाद को और उसके कुटुम्ब वालों को और उसके महल्लादारों को अपनी हिफ़ाज़त में रखता है।

(२६) और उनकी अक़ल का मिल हो जाए और वह तौहहतवर और मज़बूत हो जाएं।

(२७) बल्कि अल्लाह के हुक्म और इल्हाम से किया।

(२८) कुछ लोग बली को नबी से बड़ा देख कर गुमराह हो गए और उन्होंने यह ख़याल किया कि हज़रत मूसा को हज़रत ख़िज़्र से इल्म हासिल करने का हुक्म दिया गया जबकि हज़रत ख़िज़्र बली हैं और हकीकत में बली को नबी से बड़ा मानना ख़ुला कुफ़्र है और हज़रत ख़िज़्र नबी हैं और अगर ऐसा न हो जैसा कि कुछ का गुमान है तो यह अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हक़ में आजमाइश है, इसके अलावा यह कि किताब वाले इसे मानते हैं कि यह बनी इस्राईल के पैग़म्बर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का वाकिआ ही नहीं बल्कि मूसा बिन मासान का वाकिआ है और बली तो नबी पर ईमान लाने से बली बनता है तो यह नामुमकिन है कि वह नबी से बड़ा जाए (मदारिक), अक्सर उलमा इसपर हैं और सुफ़ियाँ के बड़े और इस्लाम वालों की इसपर सहमति है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम जिन्दा हैं, शैख़ अबू अग्र बिन सलाह ने अपने फ़तावा में फ़रमाया कि हज़रत ख़िज़्र

जल्द हम उसे आसान काम कहेंगे (१४) फिर एक सामान के पीछे चला (१५) (८९) यहाँ तक कि जब सूरज निकलने की जगह पहुँचा उसे ऐसी क्रौम पर निकलता पाया जिनके लिये हमने सूरज से कोई आड़ न रखी (१६) (९०) बात यही है और जो कुछ उसके पास था (१७) सब को हमारा इल्म घेरे है (१८) (९१) फिर एक सामान के पीछे चला (१९) (९२) यहाँ तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुँचा उनसे उधर कुछ ऐसे लोग पाए कि कोई बात समझते मालूम न होते थे (२०) (९३) उन्होंने कहा ऐ जुल करनैन वेशक याजूज माजूज (२१) ज़मीन में फ़साद मचाते हैं तो क्या हम आपके लिये कुछ माल मुकर्रर कर दें इसपर कि आप हमें और उनमें एक दीवार बना दें (२२) (९४) कहा वह जिसपर मुझे मेरे रब ने क़ाबू दिया है बेहतर है (२३) तो मेरी मदद ताकत से करो (२४) मैं तुम में और उनमें एक मज़बूत आड़ बना दूँ (२५) (९५) मेरे पास लोहे के तख्ते लाओ, (२६) यहाँ तक कि जब वो दीवार दोनों पहाड़ों के किनारों से बराबर कर दी कहा धौको, यहाँ तक कि जब उसे आग कर दिया कहा लाओ मैं इसपर गला हुआ ताँबा उंडेल दूँ (२७) तो याजूज माजूज उसपर न चढ़ सके और न उसमें सुराख कर सके (२८) कहा (२९) यह मेरे रब की रहमत है, फिर जब मेरे रब का वादा आएगा (३०)

قَالَ الْمَلَأُ ۖ ثُمَّ اتَّبَعَ سَبِيلًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ
الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ يَجْعَلْ لَهُم مِّنْ
دُونِهَا سَبِيلًا ۚ كَذٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۚ
ثُمَّ اتَّبَعَ سَبِيلًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ
دُونِهِمَا قَوْمًا لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۚ قَالُوا يٰذَا
الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يٰا جُوعَ وَمَا جُوعٌ مُّفْسِدٌ وَنَ فِي الْاَرْضِ
فَهَلْ نَجْعَلْ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ نَّجْعَلَ بَيْنِنَا وَبَيْنَهُمْ
سَدًّا ۚ قَالَ مَا مَكْنٰى فِىْهِ رَبِّىْ حٰثِرٌ فَاَعْيُنُوْنِىْ
بِقُوَّةٍ ۖ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۚ اَتُؤْتٰى زُبْرًا مُّكْدٰى
حَتّٰىٓ اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفِخُوْا ۚ
حَتّٰىٓ اِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۚ قَالَ اَتُؤْتٰى اَفْرِمْ عَلَيْهِ قَطْرًا ۚ
فَبَا ۚ اسْتَطَاعُوْا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ۚ
قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَبِّىْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَهُ

बेशतर उलमा के नज़दीक ज़िन्दा हैं. यह भी कहा गया है कि हज़रत ख़िज़्र और इलियास दोनों ज़िन्दा हैं और हर साल हज़ के ज़मान में मिलते हैं. यह भी आया है कि हज़रत ख़िज़्र ने अमृत के चश्मे में स्नान फ़रमाया और उसका पानी पिया . सही क्या है इसका इल्म तो अल्लाह ही को है. (ख़ाज़िज़)

सूरए कहफ़ - ग्यारहवाँ सूकू

- (१) अबू जहल वगैरह मक्का के काफ़िर या यहूदी, इम्तिहान के तौर पर ----
- (२) जुल करनैन का नाम इस्कन्दर है. यह हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के ख़ालाज़ाद भाई हैं. इन्होंने इस्कन्दरिया बसाया और उसका नाम अपने नाम पर रखा . हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम उनके वज़ीर और इण्ड के इन्वार्ज थे. दुनिया में ऐसे चार बादशाह हुए हैं जो सारे जगत पर राज करते थे. दो ईमान वाले, हज़रत जुल करनैन और हज़रत सुलैमान अला वल्लिह्मा व अलैहिस्सलाम, और दो काफ़िर, नमरूद और बुरज़े नस्सर. और बहुत जल्द एक पौचवें बादशाह और इस उम्मत से होने वाले हैं जिनका नाम हज़रत इमाम मेहदी है, उनकी हुकूमत सारी धरती पर होगी. जुल-करनैन के नबी होने में मतभेद है. हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया, वह न नबी थे, न फ़रिश्ते, अल्लाह से महबूत करने वाले बन्दे थे. अल्लाह ने उन्हें मेहबूब बनाया.
- (३) जिस चीज़ की, ख़ल्क यानी सृष्टि को हाज़त होती है और जो कुछ बादशाहों को प्रदेश फ़तह करने और दुश्मनों से लड़ने में दरकार होता है, वह सब प्रदान किया.
- (४) सबब या साधन वह चीज़ है जो उद्देश तक पहुँचने का ज़रिया हो, चाहे इल्म हो या कुदरत, तो जुलकरनैन ने जिस उद्देश्य का इरादा किया उसी का साधन इस्त्रियार किया.
- (५) जुल करनैन ने कितावों में देखा था कि साम की औलाद में से एक व्यक्ति अमृत के चश्मे का पानी पियेगा और उसके मौत न आएगी. यह देखकर वह उस चश्मे की तलाश में पूर्व और पश्चिम की तरफ़ रवाना हुए और आपके साथ हज़रत ख़िज़्र भी थे. वह तो चश्मे तक पहुँच गए और उन्होंने पी भी लिया मगर जुल करनैन के भाग्य में न था उन्होंने न पाया. इस सफ़र में पश्चिम की तरफ़ रखा हुआ तो जहाँ तक आवादी है वो सब मंज़िलें तय कर डालीं और पश्चिम दिशा में वहाँ पहुँचे जहाँ आवादी का नामो निशान बाक़ी न रहा, वहाँ उन्हें सूरज अस्त होते समय ऐसा नज़र आया जैसे कि वह काले चश्मे में डूबता है जैसा कि दरिया में सफ़र करने वाले को पानी में डूबता मेहसूस होता है.

الكهف

۴۲۷

قال الكوفي

उसे पाश पाश कर देगा, और मेरे रब का वादा सच्चा है^(१९) (९८) और उस दिन हम उन्हें छोड़ देंगे कि उनका एक गिरोह दूसरे पर रेला आवेगा और सूर फूँका जाएगा^(२०) तो हम सब को^(२१) इकट्ठा कर लाएंगे^(२२) (९९) और हम उस दिन जहन्नम काफ़िरो के सामने लाएंगे^(२३) (१००) वो जिनकी आंखों पर मेरी याद से पर्दा पड़ा था^(२४) और हक़ (सत्य) बात न सुन सकते थे^(२५) (१०१)

बारहवाँ सूक़

तो क्या काफ़िर यह समझते हैं कि मेरे बन्दों को^(१) मेरे सिवा हिमायती बना लेंगे,^(२) वेशक हमने काफ़िरो की मेहमानी को जहन्नम तैयार कर रखी है^(३) (१०२) तुम फ़रमाओ क्या हम तुम्हें बता दें कि सब से बढ़कर नाक़िस (दूषित) कर्म किन के हैं^(४) (१०३) उनके जिनकी सारी कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में गुम गई^(५) और वो इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं^(६) (१०४) ये लोग जिन्होंने अपने रब की आयतों और उसका मिलना न माना^(७) तो उनका किया धरा सब अकारत है तो हम उनके लिए क़यामत के दिन कोई तौल न क़ायम करेंगे^(८) (१०५) यह उनका बदला है जहन्नम उसपर कि उन्होंने ने कुफ़्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों की हंसी बनाई^(९) (१०६) वेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये फ़िरदौस के बाग़ उनकी मेहमानी है^(१०)

ذَكَرْنَا وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۖ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوتُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ۖ وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا ۚ
الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ۖ أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ إِنَّا أَعْتَدْنَا الْجَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ۖ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۚ
الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۖ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِمْ فَبُطِثُوا أَعْمَالَهُمْ ۖ فَلَا يُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزَنًا ۖ ذَٰلِكَ جَزَاءُ وَهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ۖ
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ

مَنْزِلٍ

(६) उस चश्मे के पास.

(७) जो शिकार किये हुए जानवरों की ग़ालों पहने थे. इसके सिवा उनके बदन पर और कोई लिबास न था और दरिया के मुर्दा जानवर उनकी ख़ुराक थे, ये लोग काफ़िर थे.

(८) और उनमें जो इस्लाम में दाख़िल न हो, उसको क़त्ल कर दे.

(९) और उन्हें शरीअत के आदेशों की तअलीम दे अगर वो ईमान लाए.

(१०) यानी कुफ़्र और शिर्क इस्तिन्यार किया, ईमान न लाया.

(११) क़त्ल करेंगे. यह उसकी दुनियावी सज़ा है.

(१२) क़यामत में.

(१३) यानी जन्नत.

(१४) और उसका ऐसी चीज़ों का हक़म देंगे जो उसपर आसान हों, दुश्वार न हों. अब ज़ुल करन के निखत इरशाद फ़रमाया जाता है कि वह ----

(१५) पूरब की दिशा में.

(१६) उस स्थान पर जिस के और मूर्य के बीच कोई चीज़ पहाड़ दरख़्त चग़ैर अड़ी नहीं थी न वहाँ कोई इमारत क़ायम हो सकती थी और वहाँ के लोगों का यह हाल था कि सूर्योदय के वक़्त गुफ़ाओं में घुस जाने थे और ज़वाल के बाद निकल कर अपना काम काज करते थे.

(१७) फ़ौज, लश्कर, हथियार, सलतन्त का सामान. और कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया, सलतन्त और प्रशासन व हुक़मत करने की योग्यता.

(१८) मुफ़स्सिरों ने "कज़ालिफ़ा" (वात यही है) के मानी में यह भी कहा है कि तात्पर्य यह है कि ज़ुल करन के जैसा पश्चिमी क़ौम के साथ मुलूक किया था, ऐसा ही पूरब वालों के साथ भी किया, क्योंकि ये लोग भी उनकी तरह काफ़िर थे. तो जो उनमें से ईमान लाए उनके साथ एहसान किया और जो कुफ़्र पर अड़े रहे, उन पर अज़ाब.

(१९) उत्तर की दिशा में. (अज़ाज़िन)

- (२०) क्योंकि उनकी ज़बान अजीब थी, उनके साथ इशारे बग़ैरह की मदद से बड़ी कठिनाई से बात की जा सकती थी।
- (२१) यह याफ़िस बिन नूह अलैहिस्सलाम की औलाद से फ़सादी गिनाह हैं, उनकी संख्या बहुत ज़्यादा है। ज़मीन में फ़साद करते थे। रबीअ के ज़माने में निकलते थे तो खेतियाँ और सब्ज़े सब खा जाते थे, कुछ न छोड़ते थे और सूखी चीज़ें लादकर ले जाते थे। आदमियों को खा लेते थे, दरिन्दों, बड़शी जानवरों, साँपों, बिन्दुओं तक को खा जाते थे। हज़रत जुल-क़रनैन से लोगों ने उनकी शिकायत की कि वो ----
- (२२) ताकि वो हम तक न पहुंच सकें और हम उनकी शरारतों और आतंक से सुरक्षित रहें।
- (२३) यानी अल्लाह के फ़ज़न से मेरे पास बहुत सा माल और किस्म किस्म का सामान मौजूद है, तुमसे कुछ लेने की हाज़त नहीं।
- (२४) और जो काम मैं बताऊँ, वह पूरा करो।
- (२५) उन लोगों ने अर्ज़ किया, फिर हमारे लिये क्या सेवा है, फ़रमाया ----
- (२६) और बुनियाद खुदवाई, जब पानी तक पहुंची तो उसमें पत्थर पिघलाए हुए तांबे से जमाए गए और लोहे के तख़्ते ऊपर नीचे कर उनके बीच लकड़ी और कोयला भर दिया और आग दे दी। इस तरह यह दीवार पहाड़ की ऊंचाई तक बलन्द कर दी गई और दोनों पहाड़ों के बीच कोई जगह न छोड़ी गई। ऊपर से पिघला हुआ तांबा दीवार में पिना दिया गया। यह सब मिलकर एक सरस्त जिस्म बन गया।
- (२७) जुल-क़रनैन, कि ----
- (२८) और याजूज माजूज के निकलने का वक़्त आ पहुंचा, क़यामत के करीब ----
- (२९) हर्दास शरीफ़ में है कि याजूज माजूज रोज़ाना इस दीवार को तोड़ते हैं और दिन भर मेहनत करते करते जब इसके तोड़ने के करीब होते हैं तो उनमें कोई कहता है अब चलो बाक़ी क़ल तोड़ लेंगे। दूसरे दिन जब आते हैं तो वह अल्लाह के हुक्म से दीवार और ज़्यादा मज़बूत हो जाती है। जब उनके निकलने का वक़्त आएगा तो उनमें कहने वाला कहेगा अब चलो, बाक़ी दीवार क़ल तोड़ लेंगे, इत्थाअल्लाह, इत्थाअल्लाह कहने का यह फ़ल होगा कि उस दिन की मेहनत ज़ाया न जाएगी और अगले दिन उन्हें दीवार उतनी टूटी मिलेगी जितना पहले रोज़ तोड़ गए थे। अब वह निकल जाएंगे और ज़मीन में फ़साद उठाएंगे, क़त्ल व ग़्नत करंगे और चश्मों का पानी पी जाएंगे। जानवरों, दरख़्तों को और जो आदमी हाथ आएँगे उनको खा जाएंगे। मक्कए मुकर्रमा, मदीनए तैय्यिबह और बैतुल मक़दिस में दाख़िल न हो सकेंगे। अल्लाह तआला हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ से उन्हें हलाक करेगा इस तरह कि उनकी गर्दनों में कीड़े पैदा होंगे जो उनकी हालाक़त का कारण होंगे। इससे साबित होता है कि याजूज माजूज का निकलना।
- (३०) क़यामत करीब होने की निशानियों में से है।
- (३१) यानी सारी सृष्टि को अज़ाब और सबाब के लिए क़यामत के दिन।
- (३२) कि उसको साफ़ देखें।
- (३३) और वह अल्लाह की आयतों और क़ुरआन और हिदायत, और क़ुदरत के प्रमाणों और ईमान से अंधे बने रहे और उनमें से किसी चीज़ को वो न देख सके।
- (३४) अपने दुर्भाग्य से, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ दुश्मनी रखने के कारण।

सूरए कहफ़ - बारहवाँ रूक़

- (१) जैसा कि हज़रत ईसा और हज़रत उज़ैर और फ़रिशत।
- (२) और उससे कुछ नफ़ा पाएंगे, ये गुमान ग़लत है। बल्कि वो बन्दे उससे बेज़ार हैं और वेशक़ हम उनके इस शिर्क पर अज़ाब करेंगे।
- (३) यानी वो कौन लोग हैं जो अमल करके थके और मेहनत उठाई और यह उम्मीद करते रहे कि उन कर्मों पर पुण्य से नवाज़े जाएंगे मगर इसके बजाय हलाक़त और बर्बादी में पड़े। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया वो यहूदी और ईसाई हैं। कुछ मुफ़सिरो ने कहा कि वो पादरी लोग हैं जो दुनिया से अलग थलग रहते थे। हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि ये ख़ारिजी लोग हैं।
- (४) और कर्म बातिल हो गए।
- (५) रसूल और क़ुरआन पर ईमान न लाए और मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब और सबाब व अज़ाब के इन्क़ारी रह।
- (६) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन कुछ लोग ऐसे कर्म लाएंगे जो उनके ख़याल में मक्कए मुकर्रमा के पहाड़ों से बड़े होंगे लेकिन जब वो तौले जाएंगे तो उनमें वज़न कुछ न होगा।

﴿१०७﴾ वो हमेशा उन ही में रहेंगे उनसे जगह बदलना न चाहेंगे^(८) ﴿१०८﴾ तुम फ़रमा दो अगर समन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही हो तो ज़रूर समन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी अगरचे हम वैसा ही और उसकी मदद को ले आएँ^(९) ﴿१०९﴾ तुम फ़रमाओ ज़ाहिर सूरते बशरी में तो मैं तुम जैसा हूँ^(१०) मुझे वही आती है कि तुम्हारा मअबुद एक ही मअबुद है^(११) तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब को बन्दगी में किसी को शरीक न करे^(१२) ﴿११०﴾

१९- सूरए मरयम

पहला रूकू

सूरए मरयम मक्का में उतरी, इसमें ९८ आयतें, ६ रूकू हैं। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) काफ़-हा-या-ऐन-सॉद^(२) यह ज़िक्र है तेरे रब की उस रहमत का जो उसने अपने बन्दे ज़करिया पर की^(३) जब उसने अपने रब को आहिस्ता पुकारा^(४) अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी हड्डी कमज़ोर हो गई^(५) और सर से बुढ़ापे का भभूका फूटा और ऐ मेरे रब मैं तुझे पुकार कर कभी नामुराद न रहा^(६) और मुझे अपने वाद अपने करावत वालों (रिश्तेदारों) का डर है^(७) और मेरी औरत बाँझ है तो मुझे अपने पास से कोई ऐसा दे डाल जो मेरा काम उठा

قَالَ كَذِبًا ۚ ۞ ۲۲۵ ۞

الْفَرْدَوْسِ نُزُلًا ۚ ۞ خَلِيدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۚ ۞ قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَكَلِمَتِ رَبِّي لَنَفِذَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَعَكَ كَلِمَتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَادًا ۚ ۞ قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أَنَّمَا إِلَهُ الْكَوْكَلِ ۚ ۞ وَاحِدًا ۚ ۞ فَمَن كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ ۚ ۞ أَحَدًا ۚ ۞

سُورَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ (۱۹) (۲۲۵)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

كَطَبِعَ ۚ ۞ ذَكَرْ رَحْمَتَ رَبِّكَ عَبْدًا ذَكِرَ يَا ۚ ۞ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ۚ ۞ قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۚ ۞ وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِن وَرَائِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِن لَّدُنكَ وَلَدًا ۚ ۞

(७) हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जब अल्लाह से मांगो तो फ़िरदीस मांगो क्योंकि वह जन्नतों में सबसे बीच और सबसे बलन्द है और उसपर रहमान का अर्श है और उसी से जन्नत की नेहरे जारी होती हैं। हज़रत कअब ने फ़रमाया कि फ़िरदीस जन्नतों में सबसे अउला है, इसमें नेकियों का हुक्म करने वाले और बदियों से रोकने वाले ऐश करेंगे।

(८) जिस तरह दुनिया में इल्मान कैसी ही बेहतर जगह हो, उस से और बलन्द जगह की तलब रखता है। यह बात वहाँ न होगी क्योंकि वो जानते होंगे कि अल्लाह के फ़ज़ल से उन्हें बहुत ऊँचा मकान और उसमें रहना हासिल है।

(९) यानी अगर अल्लाह तआला के इल्म व हिकमत के कलिमात लिखे जाएँ और उनके लिये सारे समन्दरों का पानी सैशनाई बना दिया जाए और सारी सृष्टि लिखे तो वो कलिमात ख़त्म न हों और यह सारा पानी ख़त्म हो जाए और इतना ही और भी ख़त्म हो जाए, मतलब यह है कि उसके इल्म और हिकमत का अन्त नहीं। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यहदियों ने कहा ऐ मुहम्मद ! (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) आपका ख़याल है कि हमें हिकमत दी गई और आपकी किताब में है कि जिस हिकमत दी गई उस बहुत सी भलाई दी गई, फिर आप कैसे फ़रमाते हैं कि तुम्हें नहीं दिया गया मगर थोड़ा इल्म, इसपर यह आपत उतरी, एक क़ौल यह है कि जब आपत “बमा ऊतीतुम मिनल इल्मे इल्ला क़लीलन” उतरी तो यहदियों ने कहा कि हमें तौरात का इल्म दिया और उसमें हर चीज़ का इल्म है, इसपर यह आपत उतरी, मतलब यह है कि कुल चीज़ का इल्म भी अल्लाह के इल्म के सामने कम है और ज़रूरी भी निस्वत नहीं रखता जितनी एक बूंद की समन्दर से हो।

(१०) कि मुझ पर आदमी की सी तकलीफ़ें और बीमारियाँ आती हैं और विशेष सूरत में भी आपका जैसा नहीं कि अल्लाह तआला ने आपको हुस्र और सूरत में सबसे अउला और ऊँचा किया और हक्कीकत और रूह और वातन के ऐतिबार से तो सारे तबी आदमियों की विशेषताओं और गुणों से ऊँच हैं जैसा कि काज़ी अयाज़ की शिफ़ा में है और शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने मिशकात की शरह में फ़रमाया कि नबियों के जिस्म और ज़ाहिरी बातें तो आदमियों की तरह रखी गई और उनकी आत्मा और वातन आदमियत से ऊँची और नूयनियत की बलन्दी पर हैं, शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने सूरए बददुहा की तफ़सीर में फ़रमाया कि आपकी बशरियत का वुजूद असला न रहे और अनवारे हक़ का मालवा आप पर अलद दशम हासिल हो, हर हाल में आपकी ज्ञान और कमालात में आप का कोई भी मिसल नहीं, इस आपत में आपको अपनी ज़ाहिरी सूरते बशरिया के बयान का इज़हार चिन्मत्ता के लिये हुक्म फ़रमाया गया, यही फ़रमाया है हज़रत इब्ने अब्बास

ले^(१५) वह मेरा जानशीन हो और यअकूब की औलाद का वारिस हो, और ऐ मेरे रब उसे पसन्दीदा कर^(१६) ऐ ज़करिया हम तुझे खुशखबरी सुनाते हैं एक लड़के की जिनका नाम यहया है इसके पहले हमने इस नाम का कोई न किया^(१७) अर्ज की ऐ मेरे रब मेरे लड़का कहाँ से होगा मेरी औरत तो बाँझ है और मैं बुढ़ापे से सूख जाने की हालत को पहुँच गया^(१८) फ़रमाया ऐसा ही है, ^(१९) तेरे रब ने फ़रमाया वह मुझे आसान है और मैंने तो इससे पहले तुझे उस वक़्त बनाया जब तू कुछ भी न था^(२०) अर्ज की ऐ मेरे रब मुझे कोई निशानी दे; ^(२१) फ़रमाया तेरी निशानी यह है कि तू तीन रात दिन लोगों से कलाम न करे भला चंगा होकर^(२२) तो अपनी क़ौम पर मज़िद से बाहर आया ^(२३) तो उन्हें इशारे से कहा कि सुबह शाम तस्बीह करते रहो^(२४) ऐ यहया किताब ^(२५) मज़बूत थाम और हमने उसे बचपन ही में नबुव्वत दी^(२६) और अपनी तरफ़ से मेहरबानी^(२७) और सुथराई^(२८) और कमाल डर वाला था^(२९) और अपने माँ बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था ज़बरदस्त व नाफ़रमान न था^(३०) और सलामती है उसपर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन मुर्दा उठया जाएगा^(३१)

दूसरा रूकू

और किताब में मरयम को याद करो^(१) जब अपने घर वालों

وَلْيَا يَرْثُنِي وَيَرِثْ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۚ يٰزَكَرِيَّا اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ اسْمُهُ يَحْيٰى ۖ لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۚ قَالَ رَبِّ اَنْتَ الْكَبِيرُ عِيتِيًّا ۚ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلٰى هٰذَا ۖ وَقَدْ خَلَقْنٰكَ مِنْ قَبْلُ وَاَمَرْنَاكَ بِشَيْءٍ ۚ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْ اٰيَةً ۚ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۚ فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بِكُودٍ وَعَشِيًّا ۚ لِيُصْبِيْ خَدَّ الْكِتٰبِ بِقُوَّةٍ ۚ وَاتَيْنٰهُ الْحَكْمَ صَبِيًّا ۚ وَحَنَّاۤ اَمْرًا لَّدُنَّا وَكُوْلُوْهُ ۚ وَكَانَ تَقِيًّا ۚ وَوَدَّ اَبُوۡ الدِّيَّهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبًا ۚ عَصِيًّا ۚ وَسَلَّمْ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ ۚ وَيَوْمَ يَمُوْتُ ۚ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۚ وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ مَرْيَمَ اِذْ اُنْتَبَذَتْ

وَالْقُرْآنُ

مَرْيَمَ

रदियल्लाहो अहममा ने. (मज़ज़िन) किसी को जायज़ नहीं कि हज़ूर को अपने जैसा बशर कहे क्योंकि जो कलिमात इज़ज़त वाले लोग विनम्रता के तौर पर कहते हैं उनका कहना दूसरों के लिये जायज़ नहीं होता. दूसरे यह कि जिसको अल्लाह तआला ने बड़ी बुजुर्गी और बलन्द दर्जे अता फ़रमाए हों उसकी इस बुजुर्गी और दर्जों का ज़िक्र छोड़ कर ऐसी सामान्य विशेषता या गुण का ज़िक्र करना जो हर व्यक्ति में पाया जाए, उन कमालात के न मानने के बराबर है. तीसरे यह कि क़ुरआन शरीफ़ में जगह जगह काफ़िरों का तरीका बताया गया है कि वो नवियों को अपने जैसा बशर कहते थे और इसी से गुमराही में जकड़े गए. फिर इस आयत के बाद आयत 'युहू इलैया' में हज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के विशेष इल्म और अल्लाह की बारगाह में उनकी बुजुर्गी का वयान है.

(११) उसका कोई शरीक नहीं.

(१२) बड़े शिर्क से भी बचे और रिया यानी दिखावे से भी, जिसको छोटा शिर्क कहते हैं. मुस्लिम शरीफ़ में है कि जो शरय्य सूरए कहफ़ की पहली दस आयतें हिफ़ज़ करे, अल्लाह तआला उसको दज्जाल के फ़िल्ने से मेहफूज़ रखेगा. यह भी हदीस शरीफ़ में है कि जो शरय्य सूरए कहफ़ को पढ़े वह आठ रोज़ तक हर फ़िल्ने से मेहफूज़ रहेगा.

१९ - सूरए मरयम - पहला रूकू

(१) सूरए मरयम मक्का में उतरी, इसमें छ रूकू, अठानवे आयतें, सात सौ अस्सी कलिमे हैं.

(२) क्योंकि आहिरतगी, दिखावे से दूर और इस्त्रासा से भरपूर होती है. इसके अलावा यह भी फ़ायदा था कि बुढ़ापे की उम्र में जबकि आपकी उम्र पछहतर या अस्सी वरस की थी, लोग बुरा भला कहें. इसलिये भी इस दुआ का दुपाना या आहिस्ता रखना मुनासिब था. एक कौल यह भी है कि बुढ़ापे की कमज़ोरी की वजह से हज़रत की आवाज़ भी कमज़ोर हो गई थी. (मदारीक, मज़ज़िन)

(३) यानी बुढ़ापे की कमज़ोरी इस हद को पहुँच गई कि हड्डी जो बहुत मज़बूत अंग है उसमें कमज़ोरी आ गई तो बाकी अंगों की हालत का क्या वयान हो.

(४) कि सारा सर सफ़ेद हो गया.

(५) हमेशा तूने मेरी दुआ कुबूल की.

(६) चचाज़ाद क़ौसर का कि वो शरीर लोग हैं कहीं मेरे बाद दीन में अइचन न करें जैसा कि बनी इस्राईल से देखने में आ चुका है.

مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۖ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ
حِجَابًا ۖ فَلَرَّسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا
سَوِيًّا ۖ قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتُ
نَبِيًّا ۖ قَالَ إِنَّا أَنْزَلْنَا رَسُولَ رَبِّكِ ۖ إِذْ هَبَّ لَكَ عُلْمًا
زَكِيًّا ۖ قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلْمٌ وَلَمْ يُمَسِّسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ
أَكُ بَغِيًّا ۖ قَالَ كَذَلِكَ ۖ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَى هَيْئٍ ۖ
وَمَجْعَلُهُ آيَةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً ۖ وَمَا كَانَ أَمْرًا
مَقْضِيًّا ۖ فَتَحَكَّمَتْهُ فَاتَّخَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ۖ
فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۖ قَالَتْ يَلَيْسَتْنِي
مِثْلُ قَبْلِ هَذَا ۖ وَكُنْتُ نَسِيًّا مَنَسِيًّا ۖ فَكَادَتْهَا مِنْ
تَحْتِهَا أَنْ تَخْرُجَنِي ۖ فَلَا جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۖ وَ
هَزَّاهُ إِلَيْكَ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ ۖ فَسَقَطَ عَلَيْكَ رُطْبًا
جَبِيًّا ۖ فَكُلِي وَاشْرَبِي وَفَرِّجِي عَيْنًا ۖ وَمَا تَرَيْنَ مِنْ

مَنْزِلٍ

से पूरव की तरफ़ एक जगह अलग हो गई^(१६) तो उनसे उधर^(१७) एक पर्दा कर लिया, तो उसकी तरफ़ हमने अपना रूहानी भेजा^(१८) वह उसके सामने एक तंदुरुस्त आदमी के रूप में ज़ाहिर हुआ^(१९) बोली मैं तुझसे रहमान की पनाह मांगती हूँ अगर तुझे खुदा का डर है^(२०) बोला मैं तेरे रव का भेजा हुआ हूँ कि मैं तुझे एक सुथरा बेटा दूँ^(२१) बोली मेरे लड़का कहाँ से होगा मुझे तो किसी आदमी ने हाथ न लगाया न मैं बदकार हूँ^(२२) कहा यूँही है^(२३) तेरे रव ने फ़रमाया है कि ये^(२४) मुझे आसान है, और इस लिये कि हम उसे लोगों के वास्ते निशानी^(२५) करें और अपनी तरफ़ से एक रहमत^(२६) और यह काम ठहर चुका है^(२७) अब मरयम ने उसे पेट में लिया फिर उसे लिये हुए एक दूर जगह चली गई^(२८) फिर उसे जनने का दर्द एक खजूर की जड़ में ले आया^(२९) बोली हाय किसी तरह मैं इससे पहले मर गई होती और भूली विसरी हो जाती^(३०) तो उसे^(३१) उसके तले से पुकारा कि ग़म न खा^(३२) बेशक तेरे रव ने नीचे एक नहर बहा दी है^(३३) और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला तुझपर ताज़ी पक्की खजूरें गिरेंगी^(३४) तो खा और पी और आँख ठन्डी रख, ^(३५) फिर अगर तू किसी आदमी को देखे^(३६) तो कह देना मैंने आज रहमान का रोज़ा माना है तो आज

(७) और मेरे इल्म का हामिल हो.

(८) कि तू अपने फ़ज़्र से उसको नबुव्वत अता फ़रमाए . अल्लाह तआला ने हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की दुआ कुबूल फ़रमाई और इशाराद फ़रमाया.

(९) इस सवाल का उद्देश यह दरियाफ़्त करना है कि बेटा कैसे दिया जायगा, क्या दोबारा जवानी प्रदान की जाएगी या इसी हाल में बेटा अता किया जायगा.

(१०) तुम्हीं दोनों से लड़का पैदा फ़रमाना मन्ज़ूर है.

(११) तां जा शून्य से सब कुछ पैदा करने में सक्षम है उससे बुद्धिपे में आलाद अता फ़रमाना क्या अजब है.

(१२) जिससे मुझे अपनी बीबी के गर्भवती होने की पहचान हो.

(१३) सही सालिम होकर वग़ैर किसी बीमारी के और बग़ैर गूंगा होने के. चुनांचे ऐसा ही हुआ कि उन दिनों आप लोगों से बात न कर सके. जब अल्लाह का ज़िक्र करना चाहते, ज़बान खुल जाती.

(१४) जो उसकी नमाज़ की जगह थी और लोग मेहराब के पीछे इन्तिज़ार में थे कि आप उनके लिये दर्वाज़ा खोलें तो वो दाख़िल हों और नमाज़ पढ़ें. जब हज़रत ज़करिया बाहर आए तो आपका रंग बदला हुआ था बोल नहीं सकते थे. यह हाल देखकर लोगों ने पूछा क्या हाल है ?

(१५) और आदत के अनुसार फ़ज़्र और अस्त्र की नमाज़ें अदा करते रहे. अब हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने अपने कलाम न कर सकने से जान लिया कि आप की बीबी साहिबा गर्भवती हो गई और हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की पैदायश से दो साल बाद अल्लाह तआला ने फ़रमाया.

(१६) यानी तौरात को.

(१७) जबकि आपकी उम्र शरीफ़ तीन साल की थी उस वक़्त में अल्लाह तआला ने आपको सम्पूर्ण बुद्धि अता फ़रमाई और आपकी तरफ़ वही की. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा का यही क़ौल है और इतनी सी उम्र में समझ बूझ और बुद्धिमत्ता और ज्ञान चमत्कार में से है और जब अल्लाह के करम से यह हासिल हो तो इस हाल में नबुव्वत मिलना भी कुछ अचरज की बात नहीं. इसलिये इस आयत में हुक्म से मुराद नबुव्वत है. यही क़ौल सही है. कुछ मुफ़स्सिरों ने इससे हिक्मत यानी तौरात की जानकारी और दीन की सूझ बूझ भी मुराद ली है. (ख़ाज़िन, मदारिक, कबीर). कहा गया है कि उस कमसिनी के ज़माने में बच्चों ने आपको खेल के लिये बुलाया तो आपने फ़रमाया "मा लिल लोअवे ख़ुलिकना" यानी हम खेल के लिये पैदा नहीं किये गए.

- (१८) अन्ता की और उनके दिल में रिश्तन और रहमत रखी कि लोगों पर महरबानी करें।
 (१९) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ज़कात से यहाँ ताअत और इज़लास मुराद है।
 (२०) और आप अल्लाह तआला के शौफ़ से बहुत रोया करते थे यहाँ तक कि आपके गालों पर आँसुओं के निशान बन गए थे।
 (२१) यानी आप बहुत विनम्र और मिलनसार थे और अल्लाह तआला के फ़रमावरदार।
 (२२) कि ये तीनों दिन बहुत डर वाले हैं क्योंकि इनमें आदमी वह देखता है जो उसने पहले नहीं देखा इसलिए इन तीनों अवसरों पर बहुत वहशत और घबराहट होती है। अल्लाह तआला ने यंहया अलैहिस्सलाम को सम्मानित किया कि उन्हें इन तीनों अवसरों पर अमन और सलामती दी।

सूरए मरयम - दूसरा रूकू

- (१) यानी ऐ नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, कुरआन शरीफ़ में हज़रत मरयम का वाकिआ पढ़कर इन लोगों को सुनाइये ताकि इन्हें उनका हाल मालूम हो।
 (२) और अपने मकान में या बैतुल मक़दिस की पूर्वी दिशा में लोगों से जुदा होकर इबादत के लिये तर्हाई में बैठें।
 (३) यानी अपने और घर वालों के दरमियान।
 (४) जिब्रईल अलैहिस्सलाम।
 (५) यही अल्लाह की मर्जी है कि तुम्हें वग़ैर मर्द के छुए ही लड़का प्रदान करे।
 (६) यानी वग़ैर बाप के बंटा देना।
 (७) और अपनी कुदरत का प्रमाण।
 (८) उनके लिये जो उसके दीन का अनुकरण करें, उसपर ईमान लाएं।
 (९) अल्लाह के इल्म में। अब न रद हो सकता है न बदल सकता है। जब हज़रत मरयम को इत्मीनान हो गया और उनकी परेशानी जाती रही तो हज़रत जिब्रील ने उनके गिरेबान में या आस्तीन में या दामन में या मुंह में दम किया और वह अल्लाह की कुदरत से उसी समय गर्भवती हो गई। उस वक़्त हज़रत मरयम की उम्र तेरह या दस साल की थी।
 (१०) अपने घर वालों से और वह जगह बैतुल लहम थी। वहब का तर्ज़ है कि सबसे पहले जिस शख्स को हज़रत मरयम के गर्भ का इल्म हुआ वह उनका चचाज़ाद भाई यूसुफ़ बड़ई है जो बैतुल मक़दिस की मस्जिद का ख़ादिम था और बहुत बड़ा इबादत गुज़ार व्यक्ति था। उसको जब मालूम हुआ कि मरयम गर्भवती हैं तो काफ़ी हैरत हुई। जब चाहता था कि उनपर लांछन लगाए तो उनकी इबादत और तक्वा और हर वक़्त का हाज़िर रहना किसी वक़्त ग़ायब न होना याद करके ख़ामोश हो जाता था। और जब गर्भ का ख़याल करता था तो उनको बुरी समझना मुश्किल मालूम होता था। आख़िर में उसने हज़रत मरयम से कहा कि मेरे दिल में एक बात आई है, बहुत चाहता हूँ कि ज़वान पर न लाऊँ मगर अब रहा नहीं जाता। आप कहें तो मैं बोल दूँ ताकि मेरे दिल की परेशानी दूर हो जाए। हज़रत मरयम ने कहा कि अच्छी बात कहो। तो उसने कहा कि ऐ मरयम मुझे बताओ कि क्या ख़ेती बीज के बिना और पेड़ बारिश के बिना और वन्या बाप के बिना हो सकता है। हज़रत मरयम ने कहा कि हाँ, तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने जो सबसे पहले ख़ेती पैदा की वह बीज के बिना पैदा की और पेड़ अपनी कुदरत से बारिश के बिना उगाए। क्या तू यह कह सकता है कि अल्लाह तआला पानी की मदद के बिना दरख़्त पैदा करने की क्षमता नहीं रखता। यूसुफ़ ने कहा मैं यह तो नहीं कहना शक़ मैं मानता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है जिसे "होज़ा" फ़रमाए वह हो जाती है। हज़रत मरयम ने कहा कि क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम और उनकी बीवी को माँ बाप के बिना पैदा किया। हज़रत मरयम की इस बात से यूसुफ़ का शक़ दूर हो गया और हज़रत मरयम गर्भ के कारण कमज़ोर हो गई थीं इस लिये वह मस्जिद की ख़िदमत में उनकी सहायता करने लगा। अल्लाह तआला ने हज़रत मरयम के दिल में डाला कि वह अपनी क़ौम से अलग चली जाएं। इसलिये वह बैतुल-लहम में चली गईं।
 (११) जिसका पेड़ जंगल में सूख गया था। तेज़ सर्दी का वक़्त था। आप उस पेड़ की जड़ में आई ताकि उससे ठेक लगाएं और फ़ज़ीहत व लांछन के डर से ----
 (१२) जिब्रईल ने घाटी की ढलान से।
 (१३) अपनी तर्हाई का और खाने पीने की कोई चीज़ मौजूद न होने का और लोगों के बुरा भला कहने का।
 (१४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने या हज़रत जिब्रईल ने अपनी एड़ी ज़मीन पर मारी तो मिटे पानी का एक चश्मा जारी हो गया और ख़जूर का पेड़ हरा भरा हो गया, फल लाया। वो फल पक्कर रसदार हो गए और हज़रत मरयम से कहा गया ----
 (१५) जो ज़रूरी के लिये बेहतरीन मिज़ा है।
 (१६) अपने बेटे ईसा से ---
 (१७) कि तुझसे बच्चे को पूछता है।
 (१८) पहले ज़माने में बोलने का भी रोज़ा था जैसा कि हमारी शरीअत में खाने और पीने का रोज़ा होता है। हमारी शरीअत में चुप

हरगिज़ किसी आदमी से बात न करूंगी^(१८) (२६) तो उसे गोद में ले अपनी क्रीम के पास आई^(१९) बोले ऐ मरयम वेशक तूने बहुत बुरी बात की (२७) ऐ हारून की वहन^(२०) तेरा बाप^(२१) बुरा आदमी न था और न तेरी माँ^(२२) बदकार^(२८) इसपर मरयम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया^(२३) वह बोले हम कैसे बात करें उससे जो पालने में बच्चा है (२४) (२९) बच्चे ने फ़रमाया, मैं हूँ अल्लाह का बन्दा^(२५) उसने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया^(२६) (३०) और उसने मुझे मुबारक किया^(२७) मैं कहीं हूँ और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जबतक जियूँ^(२८) और अपनी माँ से अच्छा सुलूक करने वाला^(२९) और मुझे ज़बरदस्त बदबख्त न किया (३२) और वही सलामती मुझ पर^(३१) जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूँ और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊँ^(३०) (३३) यह है ईसा मरयम का बेटा, सच्ची बात जिसमें शक करते हैं^(३१) (३४) अल्लाह को लायक़ नहीं कि किसी को अपना बच्चा ठहराए पाकी है उसको^(३२) जब किसी काम का हुक्म फ़रमाता है तो यूँही कि उससे फ़रमाता है हो जा वह फ़ौरन हो जाता है^(३३) और ईसा ने कहा वेशक अल्लाह रब है मेरा और तुम्हारा^(३४) तो उसको बन्दगी करो यह राह सीधी

الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ۖ فَاتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ ۖ قَالُوا يَمْرُؤٌمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ۖ يَا خَتُّهُ هَرُونَ مَا كَانَ أَبُوكَ أَمْرًا سَوًّا وَمَا كَأَنْتِ أُمُّكَ بَعِيًّا ۖ فَانْشَارَتْ إِلَيْهِ ۖ قَالُوا كَيْفَ نَكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۖ قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ۖ آتَانِي الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۖ وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ ۖ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ ۖ مَا دُمْتُ حَيًّا ۖ وَبَرًّا بِوَالِدَاتِي ۖ وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا سَفِيًّا ۖ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۖ ذَلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۖ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۖ مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ ۖ سُبْحَنَهُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّهُ يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۖ وَلَئِنْ اللَّهُ رَزَقَكُمْ فَأَعْتَدُوهُ هَذَا

مَزْلُ

रहने का रोज़ा स्थगित हो गया. हज़रत मरयम को श्रामोशी की वज्र मानने का इसलिये हुक्म दिया गया ताकि हज़रत ईसा कलाम फ़रमाएँ और उनका बोलना मज़बूत प्रमाण हो जिससे लांछन दूर हो जाए. इससे कुछ बातें मालूम हुई. जाहिलों के जवाब में श्रामोशी बेहतर है. कलाम का अफ़ज़ल शरयस की तरफ़ तफ़वीज़ करना अच्छा है. हज़रत मरयम ने भी इशारे से कहा कि मैं किसी आदमी से बात न करूंगी.

(१९) जब लोगों ने हज़रत मरयम को देखा कि उनकी गोद में बच्चा है तो ग़ेए और ग़मगीन हुए क्योंकि वो नेक घराने के लोग थे और.

(२०) और हारून या तो हज़रत मरयम के भाई का नाम था या तो बनी इस्राईल में से निहायत बुज़ुर्ग और नेक शरयस का नाम था जिनके तक्रबा और परहेज़गारी से उपमा देने के लिये उन लोगों ने हज़रत मरयम को हारून की वहन कहा या हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के भाई हज़रत हारून की तरफ़ निस्वत की जबकि उनका ज़माना बहुत दूर था और हज़ार बरस का समय गुज़र चुका था मगर चूंकि यह उनकी नस्ल से थी इसलिये हारून की वहन कह दिया जैसा कि अरबों का मुहावरा है कि वो तमीमी को या अम्मा तमीम कहते हैं.

(२१) यानी इमरान.

(२२) हन्ना.

(२३) कि जो कुछ कहना है खुद उनसे कहो. इसपर क्रीम के लोगों को गुस्सा आया और ---

(२४) यह बातचीत सुनकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दूध पीना छोड़ दिया और अपने बाएँ हाथ पर टिक कर क्रीम की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और दाएँ हाथ से इशारा करके कलाम शुरू किया.

(२५) पहले बन्दा होने का इकरार किया ताकि कोई उन्हें खुदा और खुदा का बेटा न कहे क्योंकि आपकी निस्वतयह तोहमत लगाई जाने वाली थी. और यह तोहमत अल्लाह तआला पर लगती थी. इसलिये ग़मूल के मन्सब का तक्राज़ा यही था कि वालिदा की बेग़ुनाही का बयान करने से पहले उस तोहमत को दूर कर दें जो अल्लाह तआला की ज़ाने पाक पर लगाई जाएगी और इसी से वह तोहमत भी दूर हो गई जो वालिदा पर लगाई जाती, क्योंकि अल्लाह तआला इस बलन्द दर्जे के साथ जिस बन्दे को नवाज़ता है यकीनन उसकी पैदाइश और उसकी सृष्टि निहायत पाक और ताहिर है.

(२६) किताब से इंजील मुराद है. हसन का क़ौल है कि आप वालिदा के पेट ही में थे कि आपको तौरात का इल्हाम फ़रमा दिया गया था और पालने में थे जब आपको नवुच्चत अना कर दी गई और इस हालत में आपका कलाम फ़रमाना आपका चमत्कार है. कुछ मुफ़सिरां ने आयत के मानी यह भी बयान किये हैं कि यह नवुच्चत और किताब की ख़बर थी जो बहुत जल्द आप को मिलने

है (३६) फिर जमाअतें आपस में मुख्तलिफ़ हो गई (३७) तो ख़राबी है काफ़िरों के लिये एक बड़े दिन की हाज़िरी से (३८) कितना सुनंगे और कितना देखेंगे जिस दिन हमारे पास हाज़िर होंगे (३९) मगर आज ज़ालिम खुली गुमराही में हैं (४०) और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का (४१) जब काम हो चुकेगा (४२) और वो ग़फ़लत में हैं (४३) और नहीं मानते (४४) वेशक ज़मीन और जो कुछ उस पर है सब के वारिस हम होंगे (४५) और वो हमारी ही तरफ़ फ़िरेंगे (४६)

तीसरा रूकू

और किताब में (१) इब्राहीम को याद करो वेशक वह सच्चा (२) था (नबी) (३) ग़ैब की ख़बरें बताता . जब अपने बाप से बोला (४) ऐ मेरे बाप क्यों ऐसों को पूजता है जो न सुने न देखे और न कुछ तेरे काम आए (५) ऐ मेरे बाप वेशक मेरे पास (६) वह इल्म आया जो तुझे न आया तो तू मेरे पीछे चला आ (७) मैं तुझे सीधी राह दिखाऊँ (८) ऐ मेरे बाप शैतान का बन्दा न बन (९) वेशक शैतान रहमान का नाफ़रमान है (१०) ऐ मेरे बाप मैं डरता हूँ कि तुझे रहमान का कोई अज़ाब पहुंचे तो तू शैतान का दोस्त हो जाए (११)

صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۝ قَوْلُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَّشْهَدٍ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَكِنَ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ۝ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۖ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ۖ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۖ يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ۖ يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِنَ الرَّحْمَنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ۖ قَالَ أَأَرَأَيْتَ أَنْتَ

مَنْ

वाली थी.

(२७) यानी लोगों के लिये नफ़ा पहुंचाने वाला और भलाई की तअलीम देने वाला, अल्लाह तआला और उसकी तौहीद की दावत देने वाला.

(२८) बनाया.

(२९) जा हज़रत यहया पर हुई.

(३०) जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने यह कलाम फ़रमाया तो लोगों को हज़रत मरयम की बेगुनाही और पाक़िज़गी का यक़ीन हो गया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इतना फ़रमाकर ख़ामोश हो गए और इसके बाद कलाम न किया जबतक कि उस उम्र का पहुंचे जिसमें बच्चे बोलने लगते हैं. (ख़ाज़िन)

(३१) कि यहूदी तो उन्हें जादूगर और झूठा कहते हैं (मआज़ल्लाह), और ईसाई उन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा और तीन में का तीसरा कहते हैं. इसके बाद अल्लाह तआला अपनी तज़्वीह बयान फ़रमाता है.

(३२) इससे.

(३३) और उसके सिवा कोई रब नहीं.

(३४) और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में ईसाईयों के कई फ़िरके हो गए, एक यअक़ूबिया, एक नस्तूरिया, एक मलकनिया. यअक़ूबिया कहता था कि वह अल्लाह है, ज़मीन पर उतर आया था, फिर आसमान पर चढ़ गया. नस्तूरिया का क़ौल है कि वह ख़ुदा का बेटा है, जबतक चाहा उसे ज़मीन पर रख़ा फिर उठा लिया और तीसरा सम्प्रदाय कहता था कि वह अल्लाह के बन्दे हैं, मस्रलूक हैं, नबी ह. यह ईमान वाला समुदाय था. (मदारिक)

(३५) बड़े दिन से क़यामत का दिन मुराद है.

(३६) और उस दिन का देखना और सुनना कुछ नफ़ा न देगा जब उन्होंने दुनिया में सच्चाई की दलीलों को नहीं देखा और अल्लाह की चेतावनियों को नहीं सुना. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि यह कलाम तहदीद के तौर पर है कि उस रोज़ ऐसी हौलनाक बातें सुनंगे और देखेंगे जिनसे दिल फ़ट जाए.

(३७) न हज़क देखें, न हज़क सुनें. बहरे, अन्ये बने हुए हैं. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा और मअवूद ठहराते हैं जबकि उन्होंने खुले शब्दों में अपने बन्दे होने का ऐलान फ़रमाया.

(३८) हदीस शरीफ़ में है कि जब काफ़िर जन्नत की मन्ज़िलों को देखेंगे जिनसे वो मेहरुम किये गए तो उन्हें हसरत और शर्मिन्दगी होगी कि काश वो दुनिया में ईमान ले आए होते.

(३९) और जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में पहुंचेंगे, ऐसा सख़्त दिन दरपेश है.

बोला क्या तू मेरे खुदाओं से मुंह फेरता है ऐ इब्राहीम वेशक अगर तू^(१०) बाज़ न आया तो मैं तुझे पथराव करूंगा और मुझ से लम्बे ज़माने तक बेइलाका होजा^(११) (४६) कहा वस तुझे सलाम है^(१२) करीब है कि मैं तेरे लिये अपने रब से माफ़ी मांगूंगा^(१३) (४७) वेशक वह मुझ पर मेहरवान है और मैं एक किनारे हो जाऊंगा^(१४) तुमसे और उन सबसे जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हो और अपने रब को पूजंगा^(१५) करीब है कि मैं अपने रब की वन्दगी से बदवख्त न होऊँ^(१६) (४८) फिर जब उनसे और अल्लाह के सिवा उनके मअबूदों से किनारा कर गया^(१७) हम ने उसे इस्हाक़^(१८) और यअक़ूब^(१९) अता किये और हर एक को ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया (४९) और हमने उन्हें अपनी रहमत अता की^(२०) और उनके लिये सच्ची वलन्दे नामवरी रखी^(२१) (५०)

चौथा रूक़

और किताब में मूसा को याद करो वेशक वह चुना हुआ था और रसूल था, ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (५१) और उसे हमने तूर की दाईं तरफ़ से पुकारा^(१) और अपना राज़ कहने को करीब किया^(२) (५२) और अपनी रहमत से उसका भाई हारून अता किया (ग़ैब की ख़बरें बताने वाला) नबी^(३) (५३) और किताब में इस्माईल को याद करो^(४) वेशक वह वादे का सच्चा था^(५) और रसूल था, ग़ैब की ख़बरें बताता^(६) और अपने घर वालों को^(७) नमाज़ और

عَنِ الرَّحْمٰنِ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَیْنِ لَّمْ تَنْتَهَ لَا رُجُۡمُکَ
وَاَهْجُرْنِیْ نَبِیَّۨا ۙ قَالَ سَلٰمٌ عَلَیْکَ سَاَسْتَغْفِرُ لَکَ رَبِّیْ
اِنَّہٗ کَانَ بِنِیَّۨتِیْۙ وَاَعَزَّ لَکُمۡ وَمَا تَدْعُوۡنَ مِنْ دُوۡنِ
اِلٰہِیْ وَاَدْعُوۡا رَبِّیْ ۚ عَلٰی اَنَّ اَکُوۡنَ بِدُعَآءِ رَبِّیْ
شَقِیۡبًا ۙ فَلَمَّا اَعَزَّ لَہُمۡ وَمَا یَعْبُدُوۡنَ مِنْ دُوۡنِ
اِلٰہِیْ ۙ وَهَبْنَا لَہٗ اِسْمٰۤیۡلَ وَیَعْقُوۡبَ ۙ وَکُلًّا جَعَلْنَا نَبِیَّۨا ۙ
وَوَهَبْنَا لَہُمۡ مِنْ رَّحْمٰتِنَا وَجَعَلْنَا لَہُمۡ لِسَانَ
صٰدِقٍ عَلِیَّۨا ۙ وَاذْکُرْ فِی الْکِتٰبِ مُوۡسٰی ۙ اِنَّہٗ کَانَ
مُخْلِصًا وَّکَانَ رَسُوۡلًا نَّبِیَّۨا ۙ وَنَادٰیۡنَہٗ مِنْ جَانِبِ
الطُّوۡرِ الْاَیۡمَنِ وَکَرِّۡنَہٗ نَبِیَّۨا ۙ وَوَهَبْنَا لَہٗ مِنْ
رَّحْمٰتِنَا اِخٰۤاءَ هٰرُوۡنَ نَبِیَّۨا ۙ وَاذْکُرْ فِی الْکِتٰبِ اِسْمٰعِیۡلَ
اِنَّہٗ کَانَ صٰدِقَ الْوَعْدِ وَّکَانَ رَسُوۡلًا نَّبِیَّۨا ۙ وَکَانَ
یٰۤاَمْرًا اٰہِلَہٗ بِالصَّلٰوۃِ وَ الزَّکٰوۃِ ۙ وَکَانَ عِنۡدَ رَبِّہٖ

مَذٰلَہٗ

- (४०) और उस दिन के लिये कुछ फ़िक्क नहीं करते.
(४१) यानी सब फ़ना हो जाएंगे, हम ही बाकी रहेंगे.
(४२) हम उन्हें उनके कर्मों का बदला देंगे.

सूरए मरयम - तीसरा रूक़

- (१) यानी कुरआन में.
(२) यानी सच्चाई में सर्वोत्तम. कुछ मुफ़ससियों ने कहा कि सिद्दीक के मानी हैं तस्दीक करने में सबसे भवान, जो अल्लाह तआला और उसकी वहदानियत और उसके बतियों और रसूलों की और मरने के बाद उठने की तस्दीक करें और अल्लाह तआला के आदेश पूरे करें.
(३) यानी बुत परस्त आज़र से.
(४) यानी इबादत मअबूद की हद दर्जा तअज़ीम है, इसका वही मुस्तहिक्क हो सकता है जो गुण वाला और नअमेतें अता करने वाला हो न कि बुत जैसी नाकारा मख़लूक. मतलब यह है कि अल्लाह वहदहू लाशरीका लूह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं.
(५) मेरे रब की तरफ़ से मअरिफ़त इलाही का.
(६) मेरा दीन कुबूल कर.
(७) जिस से अल्लाह के कुर्ब की मंज़िल तक पहुंच सके.
(८) और उसकी फ़रमाँवरदारी करके कुछ और शिर्क में जकड़ा हुआ न हो.
(९) और लअनत और अज़ाब में उसका साथी हो. इस नसीहत और हिदायत से आज़र ने नफ़ा न उठाया और इसके जवाब में.
(१०) बुतों का विरोध और उनको बुरा कहने और उनके दोष बयान करने से.
(११) ताकि मेरे हाथ और ज़वान से अम्न में रहे. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने.
(१२) यह सलाम अलग हो जाने का था.
(१३) कि वह तुझे तीव्र और ईमान की तीफ़ीक़ देकर तेरी मग़फ़िरत करे.

जकात का हुक्म देता और अपने रब को पसन्द था^(१५) (५५) और किताब में इद्रीस को याद करो^(१६) बेशक वह सच्चा था, ग़ैब की खबरें देता^(१७) और हमने उसे बलन्द मकान पर उठा लिया^(१८) (५६) ये हैं जिन पर अल्लाह ने एहसान किया ग़ैब की खबरें बताने वालों में से आदम की औलाद से^(१९) और उनमें जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था^(२०) और इब्राहीम^(२१) और यअक़ूब की औलाद से^(२२) और उनमें से जिन्हें हमने राह दिखाई और चुन लिया, ^(२३) जब उनपर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं, गिर पड़ते सज्दा करते और रोते^(२४) (५७) तो उनके बाद उनकी जगह वो नाख़लफ़ आए^(२५) जिन्होंने नमाज़ें गंवाई और अपनी ख्वाहिशों के पीछे हुए^(२६) तो बहुत जल्द वो दोज़ख में गई का जंगल पाएंगे^(२७) (५८) मगर जिन्होंने तौबह की और ईमान लाए और अच्छे काम किये तो ये लोग जन्नत में जाएंगे और उन्हें कुछ नुक़सान न दिया जाएगा^(२८) (६०) बसने के वाग़ जिनका वादा रहमान ने अपने^(२९) बन्दों से ग़ैब में किया, ^(३०) बेशक उसका वादा आने वाला है^(३१) वो उसमें कोई बेकार बात न सुनेंगे मगर सलाम, ^(३२) और उन्हें उसमें उनका रिज़क है सुबह शाम^(३३) (६२)

مَرْحُومًا ۝ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۚ وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ ذُرِّيَةِ آدَمَ وَ مِنْ حَمَلِنَا مَعَ نُوحٍ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَةِ إِبْرَاهِيمَ ۚ وَإِسْرَءِيلَ ۚ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا ۚ فُخِّلَتْ مِنْ بَعْدِهِمْ خُلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسُوفَ يَلْقَوْنَ عَذَابًا ۚ الْأَمِنْ تَابَ وَأَمِنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ۚ جَنَّاتُ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ۚ لَا يَسْعَوْنَ فِيهَا تَعْوَالًا إِلَّا سَلَامًا وَلَهُمْ فِيهَا زَوْجُهُمْ فِيهَا بَكْرَةٌ وَعِشْيَاءٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَجْنَتُهُ ۚ أَلَّتْهُمْ زَفِيرٌ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۚ

मज़ल

(१५) बाबुल शहर से शाम की तरफ़ हिजरत करके.

(१६) जिसने मुझे पैदा किया और मुझ पर एहसान फ़रमाए.

(१७) इसमें बताया कि जैसे तुम बुतों की पूजा करके वदतसीब हुए, खुदा के पूजने वाले के लिये यह बात नहीं, उसकी बन्दगी करने वाला सग़्न दिल और मेहरूम नहीं होता .

(१८) पवित्र स्थल की तरफ़ हिजरत करके.

(१९) बेटे.

(२०) बेटे के बेटे यानी पोते . इसमें इशारा है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ इतनी लम्बी हुई कि आपने अपने पोते हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम को देखा. इस आयत में यह बताया गया कि अल्लाह के लिये हिजरत करने और अपने घर वार छोड़ने का यह इनाम मिला कि अल्लाह तआला ने बेटे और पोते अता फ़रमाए.

(२१) कि माल और औलाद बहुत से इनायत किये.

(२२) कि हर दीन वाले मुसलमान हों, चाहे यहूदी चाहे ईसाई, सब उनकी तअरीफ़ करते हैं और नमाज़ों में उन पर और उनकी आल पर दुरुद पढ़ा जाता है.

सूरए मरयम - चौथा रूक़

(१) तूर एक पहाड़ का नाम है जो मिस्र और मदयन के बीच है. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मदयन से आते हुए तूर की उस दिशा से जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दाईं तरफ़ थी एक दरख्त से पुकारा गया “या मूसा इन्नी अनल्लाहो रबुल आलमीन” यानी ऐ मूसा मैं ही अल्लाह हूँ सारे जग़त का पालने वाला.

(२) कुर्ब का दर्जा अता फ़रमाया . पर्दे उठा दिये गए यहाँ तक कि आपने मरीरे अक़्लाम सुनी और आपकी कड़ो मन्ज़िलत बलन्द की गई और आपसे अल्लाह तआला ने कलाम फ़रमाया.

(३) जबकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की किं यावद, मेरे घर वालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना. अल्लाह तआला ने अपने करम से यह दुआ कुबूल फ़रमाई और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को आपकी दुआ से नबी किया और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बड़े थे .

(४) जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बेटे और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दादा हैं.

(५) नबी सब ही सच्चे होते हैं लेकिन आप इस गुण में विशेष शोहरत रखते हैं. एक बार किसी जगह पर आप से कोई व्यक्ति

कह गया कि आप यहीं ठहरीय जबतक मैं वापस आऊँ. आप उस जगह उसके इन्तिज़ार में तीन रोज़ ठहर रहे. आप ने सब का वादा किया था. जिन्ह के मौके पर इस शान से उसका पूरा फ़रमाया कि सुनानल्लाह.

(६) और अपनी क्रोम ज़रहम को जिन की तरफ़ आपका भेजा गया था.

(७) अपनी ताअेत और सदक़्म और इस्तक़्माल और विशेष गुणों के कारण.

(८) आपका नाम अब्रनूत्र है. आप हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बालिद के दादा हैं. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाद आप ही पहले स्मूल हैं. आपके बालिद हज़रत शीस अलैहिस्सलाम इब्ने आदम अलैहिस्सलाम हैं. सबसे पहले जिस शरय्य ने क़लम से लिखा, वह आप ही हैं. कपड़ों के सीने और सिले कपड़े पहनने की शुरुआत भी आप ही से हुई. आपसे पहले लोग खालें पहनते थे. सब से पहले हथियार बनाने वाले, तराजू और पैमाने कायम करने वाले और ज्योतिष विद्या और हिगाव में नज़र फ़रमाने वाले भी आप ही हैं. ये सब काम आप ही से शुरू हुए. अल्लाह तआला ने आप पर तीस सहीफ़े उतारे और आसमानी किताबों के ज्यादा पढ़ने पढ़ाने के कारण आपका नाम इद्रीस हुआ.

(९) दुनिया में उन्हें ऊँचे उलम अता किये या ये मानी हैं कि आसमान पर उठा लिया और यही ज्यादा सही है. बुझारी और मुस्लिम की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने मेअराज़ की रात हज़रत इद्रीस को चाँधे आसमान पर देखा. हज़रत कअब अहवार वगैरह से रिवायत है कि हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम ने मौत के फ़रिश्ते से फ़रमाया कि मैं मौत का मज़ा चखना चाहता हूँ, कैसा होता है. तुम मेरी रूह निकाल कर दिख़ाओ. उन्होंने इस हुक्म की तअमील की और रूह निकाल कर उसी शक्त आप की तरफ़ लाँटा दी. आप ज़िन्दा हो गए. फ़रमाया अब मुझे जहन्नम दिख़ाओ ताकि अल्लाह का ख़ाफ़ ज्यादा हो. चुनांचे यह भी किया गया. जहन्नम देखकर आपने जहन्नम के दारोगा मालिक से फ़रमाया कि दर्वाज़ा खोलो मैं इसपर गुज़रना चाहता हूँ. चुनांचे ऐसा ही किया गया और आप उस पर से गुज़रे. फिर आप ने मौत के फ़रिश्ते से फ़रमाया कि मुझे जन्नत दिख़ाओ वह अपक़ो जन्नत में ले गए. आप दर्वाज़ा खोलवाकर जन्नत में दाख़िल हुए. थोड़ी देर इन्तिज़ार करके मौत के फ़रिश्ते ने कहा कि आप अब अपने मक़ाम पर तशरीफ़ ले चलिये. फ़रमाया अब मैं यहाँ से कहीं न जाऊंगा. अल्लाह तआला ने फ़रमाया है “कुल्लो नफ़िसन ज़ाइक़तुल मौत” वह मैं चख ही चुका हूँ. और यह फ़रमाया है “बइम मिनकुम इल्ला वारिदुहा” कि हर शरय्य का जहन्नम पर गुज़रना है तो मैं गुज़र चुका अब मैं जन्नत में पहुँच गया और जन्नत में पहुँचने वालों के लिये अल्लाह तआला ने फ़रमाया है “वमा हुम मिन्ना विमुख़रिजीन” कि वो जन्नत से न निकाले जाएंगे. अब मुझे जन्नत से चलने को क्यों कहते हो. अल्लाह तआला ने मलकुल मौत को वहाँ फ़रमाई कि इद्रीस ने जो कुछ किया मेरी इजाज़त से किया और वह मेरी इजाज़त से जन्नत में दाख़िल हुए. उन्हें छोड़ दो वह जन्नत ही में रहेंगे. चुनांचे आप वहाँ ज़िन्दा हैं.

(१०) यानी हज़रत इद्रीस और हज़रत नूह.

(११) यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम जो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पोते और आपके बेटे साम के बेटे हैं.

(१२) की औलाद से हज़रत इस्माईल व हज़रत इसहाक व हज़रत यअक़ूब.

(१३) हज़रत मूसा और हज़रत हारून और हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया और हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलाम.

(१४) शरीअत की व्याख्या और हकीक़त खोलने के लिये.

(१५) अल्लाह तआला ने इन आयतों में ख़बर दी कि अम्बिया अल्लाह तआला की आयतों को सुनकर गिड़गिड़ा कर ख़ौफ़ से रोते और सज़्दे करते थे. इससे साबित हुआ कि कुरआन शरीफ़ दिल लगाकर सुनना और रोना मुस्तहब है.

(१६) यहूदियों और ईसाइयों वगैरह की तरह.

(१७) और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी की जगह गुनाहों को इस्तिथार किया.

(१८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया “गई” जहन्नम में एक घाटी है जिसकी गर्मी से जहन्नम की दूसरी वादियाँ भी पनाह मांगती हैं. यह उन लोगों के लिये है जो ज़िन्ना के आदी और उसपर अड़े हों और जो शराब के आदी हों और जो सूद खाने वाले हों और जो माँ बाप की नाफ़रमानी करने वाले हों और जो झूठी गवाही देने वाले हों.

(१९) और उनके कर्मों के बदले में कोई कमी न की जाएगी.

(२०) ईमानदार नेक और तौबह करने वाले.

(२१) यानी इस हाल में कि जन्नत उनसे गायब है उनकी नज़र के सामने नहीं या इस हाल में कि वो जन्नत से गायब हैं उसका मुशाहिदा या अवलोकन नहीं करते.

(२२) फ़रिश्तों का या आपस में एक दूसरे का.

(२३) यानी हमेशा, क्योंकि जन्नत में रात और दिन नहीं हैं. जन्नत वाले हमेशा नूर ही में रहेंगे. या मुराद यह है कि दुनिया के दिन की मिक़दार में दो बार जन्नती नअमने उनके सामने पेश की जाएंगी.

यह वह वाग है जिसका वारिस हम अपने बन्दों में से उसे करेंगे जो परहेज़गार है (६३) (और जिब्रईल ने मेहबूब से अर्ज़ की) (६४) हम फ़रिशते नहीं उतरते मगर हुज़ूर के रव के हुक्म से उसी का है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे और जो उसके बीच है (६५) और हुज़ूर का रव भूलने वाला नहीं (६६) आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच में है सब का मालिक तो उसे पूजो और उसकी बन्दगी पर सावित रहो, क्या उसके नाम का दूसरा जानते हो (६७)

पाँचवां रूकू

और आदमी कहता है क्या जब मैं मर जाऊंगा तो ज़रूर अनक़रीब जिलाकर निकाला जाऊंगा (६८) और क्या आदमी को याद नहीं कि हमने इससे पहले उसे बनाया और वह कुछ न था, (६९) तो तुम्हारे रव की क़सम हम उन्हें (७०) और शैतानों सब को घेर लाएंगे (७१) और उन्हें दोज़ख़ के आस पास हाज़िर करेंगे, घुटनों के बल गिरे (७२) फिर हम (७३) हर गिरोह से निकालेंगे जो उनमें रहमान पर सबसे ज़्यादा वेवाक़ होगा (७४) फिर हम ख़ूब जानते हैं जो उस आग में भूजने के ज़्यादा लायक़ हैं (७५) और तुम में कोई ऐसा नहीं जिसका गुज़र दोज़ख़ पर न हो, (७६) तुम्हारे रव के ज़िम्मे पर यह ज़रूर ठहरी हुई बात है (७७) फिर हम डर वालों को वचा लेंगे (७८) और ज़लियों को उसमें छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे (७९) और जब उनपर हमारी रौशन आयतें पड़ी जाती हैं (८०) काफ़िर मुसलमानों से कहते हैं कौन

قَالَ الْقَوْمُ
وَمَا نَنْتَزِلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا
خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝ رَبُّ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ
لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ۝ يَقُولُ الْإِنْسَانُ
إِذَا مَاتَ لَسَوْفَ أَخْرَجُ حَيًّا ۝ أَوْ لَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ
أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكْ شَيْئًا ۝ فَوَرَبِّكَ
لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ
جِثِيًّا ۝ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَهْبًا أَشَدُّ عَلَى
الرَّحْمَنِ عَذِيًّا ۝ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا
صِلِيًّا ۝ وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا
مَّقْضِيًّا ۝ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ
فِيهَا جِثِيًّا ۝ وَإِذَا تَنَاسَلْتُمْ عَلَيْهُمْ أَيْنَنَا بَيِّنَاتٍ قَالِ
الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا ۝ أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ

مَنْزِلٌ

- (२४) युज़रारी शरीफ़ में हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जिब्रईल से फ़रमाया ऐ जिब्रईल जितना तुम हमारे पास आया करते हो इस से ज़्यादा क्यों नहीं आत। इसपर यह आयत उतरी।
(२५) याती तमाम मकानों का यही मालिक है, हम एक मकान से दूसरे मकान की तरफ़ वक्तो हरकत करने में उसके हुक्म और मर्ज़ी के अन्तर्गत हैं, वह हर हरकत और मुकून का जानने वाला और मफ़लन और भूल चूक में पाक है।
(२६) जब चाहे हमें आपकी ख़िदमत में भेजे।
(२७) याती किसी को उसके साथ नाम की शिरक़त भी नहीं और उसका एक होना इतना ज़ाहिर है कि मुश्किं ने भी अपने किसी मअबूदे वार्तिल का नाम अल्लाह नहीं रखा।

सूरए मरयम - पाँचवां रूकू

- (१) इन्सान से यहाँ मुराद वो काफ़िर हैं जो मौत के बाद ज़िन्दा किये जाते के इन्कारी थे जैसे कि उयई बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुगीरा, उन्हीं लोगों के हक़ में यह आयत उतरी और यही इसके उतगने की परिस्थिति है।
(२) तो जिसने मअदूम को मौजूद फ़रमाया उसकी कुदरत से मुर्दे को ज़िन्दा कर देना क्या आश्चर्य।
(३) याती मौत के बाद उठाए जाने का इन्कार करने वालों के साथ।
(४) याती काफ़िरों को उनके गुमराह करने वाले शैतानों के साथ इस तरह कि हर काफ़िर शैतान के साथ एक जंजीर में जकड़ा होगा।
(५) काफ़िरों के।
(६) याती दोज़ख़ में दाख़िल होने में, जो सबसे ज़्यादा सरकश और कुफ़्र में सन्नत होगा वह आगे किया जाएगा, कुछ रिवायतों में है कि काफ़िर सब के सब जहन्नम के गिर्द जंजीरों में जकड़े, तीक़ डाले हुए हाज़िर किये जाएंगे फिर जो कुफ़्र और सरकशी में सन्नत होंगे वो पहले जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे।
(७) नेक हो या बुरा, मगर नेक सलामत रहेंगे और जब उनका गुज़र दोज़ख़ पर होगा तो दोज़ख़ से आवाज़ उठेगी कि ऐ मूमिन गुज़र जा कि तेरे नूर ने मेरी लपट ठण्डी कर दी, हसन और क़तादा से रिवायत है कि दोज़ख़ पर गुज़रने से पुल सिरान पर गुज़रना

से गिरोह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है^(११) (७३) और हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपा दीं^(१२) (कौमें हलाक कर दीं) कि वो उनसे भी सामान और नमूद (दिखावे) में बेहतर थे^(७४) तुम फ़रमाओ जो गुमराही में हो तो उसे रहमान खूब ढील दे, ^(१३) यहां तक कि जब वो देखें वो चीज़ जिसका उन्हें वादा दिया जाता है या तो अज़ाब^(१४) या क़यामत^(१५) तो अब जान लेंगे कि किस का बुरा दर्जा है और किसकी फ़ौज कमज़ोर^(१६) (७५) और जिन्होंने हिदायत पाई^(१७) अल्लाह उन्हें और हिदायत बढ़ाएगा^(१८) और बाक़ी रहने वाली नेक बातों का^(१९) तेरे रब के यहां सब से बेहतर सवाब और सबसे भला अंजाम^(२०) (७६) तो क्या तुमने उसे देखा जो हमारी आयतों का इनकारी हुआ और कहता है मुझे ज़ख़र माल व औलाद मिलेंगे^(२१) (७७) क्या ग़ैब को झांक आया है^(२२) या रहमान के पास कोई क़रार रखा है^(७८) हरगिज़ नहीं^(२३) अब हम लिख रखेंगे जो वह कहता है और उसे खूब लम्बा अज़ाब देंगे^(७९) और जो चीज़ें कह रहा है^(२४) उनके हर्मी वारिस होंगे और हमारे पास अकेला आएगा^(२५) (८०) और अल्लाह के सिवा और खुदा वना लिये^(२६) कि वो उन्हें ज़ोर दें^(२७) (८१) हरगिज़ नहीं^(२८) कोई दम जाता है कि वो^(२९) उनकी वन्दगी से इन्कारी होंगे और उनके मुखालिफ़ हो जाएंगे ^(३०) (८२)

छटा रूकू

क्या तुम ने न देखा कि हमने काफ़िरों पर शैतान भेजे^(१) कि

قَالَ الْقَوْمُ ۝ ۳۳ ۝ وَمَقَامًا وَاحْسَنُ نَدِيًّا ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ۝ هُمْ اَحْسَنُ اَنْثًا وَرِيًّا ۝ قُلْ مَن كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلَيْسَ دَلٰلَةُ الرَّحْمٰنِ مَدًّا ۚ حَتّٰى اِذَا رَاوْا مَا يُوْعَدُوْنَ ۚ اِنَّمَا الْعَذَابُ وَابًا ۚ وَاِنَّمَا السَّاعَةُ ۚ فَيَسْئَلُوْنَ مَن هُوَ ۚ سَرَّ مَكَانًا ۚ وَاَصْعَفُ جُنْدًا ۚ وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اِهْتَدَوْا هُدًى ۚ وَاَلْبَقِيَّتُ الصّٰلِحٰتُ ۚ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا ۚ وَخَيْرٌ مَّرَدًّا ۚ اَفَرَأَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِآيٰتِنَا ۚ وَقَالَ لَّوْ تَنِيْنُ مَا لَا ۚ وَوَلَدًا ۚ اَطْلَمَ الْعَيْبُ ۚ اِمَّا اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۚ كَلٰٓءَ سَتَكُنُّبُ مَا يَقُوْلُ ۚ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۚ وَنَنْزِلُ مَا يَقُوْلُ ۚ وَيَا تَنِيْنَا فَرَدًّا ۚ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِلٰهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ۚ كَلٰٓءَ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِيْ ۚ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ صِدًّا ۚ اَلْخَرْتُمْ اَنَّا اَرْسَلْنَا

مَزْلُم

मुराद है जो दोज़र पर है.

(८) यानी जहन्नम में दाख़िला अल्लाह के आदेशों में से है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर लाज़िम किया है.

(९) यानी ईमानदारों को .

(१०) नज़र बिन हारिस बरगरह के जैसे कुरैश के काफ़िर बनाव सिंगार करके, बालों में तेल डाल कर, कंधियाँ करके, उमदा लिबास पहन कर घनण्ड के साथ ग़रीब फ़क़ीर --

(११) मतलब यह है कि जब आयतें उतारी जाती हैं और दलीलें और निशानियाँ पेश की जाती हैं तो काफ़िर उनमें तो ग़ौर नहीं करते और उनसे फ़ायदा नहीं उठाते, इसकी जगह दौलत और माल और लिबास और मकान पर घमण्ड करते हैं.

(१२) उम्मतें हलाक कर दीं.

(१३) दुनिया में उसकी उग्र लम्बी करके और उसको गुमराही और बुराई में छोड़कर.

(१४) दुनिया का क़त्ल और गिरफ़्तारी.

(१५) जो तरह तरह की ख़्वाइँ और अज़ाब पर आधारित है.

(१६) काफ़िरों की शैतानी फ़ौज या मुसलमानों का बुरी लश्कर. इसमें मुश्किों के उस कौल का रद है जो उन्होंने कहा था कि कौन से गिरोह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है.

(१७) और ईमान लाए.

(१८) इसपर इस्तक्रामत अता फ़रमाकर और अधिक सूझबूझ और तौफ़ीक़ देकर.

(१९) ताअतें और आख़िरत के सारे कर्म और पाँचों वज़त की नमाज़ और अल्लाह तआला की स्तूति और ज़िक्र और सारे नेक कर्म, ये सब बाक़ी रहने वाली नेक बातें हैं कि मूमिन के काम आती हैं.

(२०) काफ़िरों के कर्मों के विपरीत कि वा निक्कमे, निरर्थक और बातिल है.

(२१) बुझ्तारी और मुस्लिम की हदीस में है कि हज़रत ख़वाब दिन अरत का जिहालत के ज़माने में आस दिन वाइल सहमी पर क़र्ज़ था. वह उसके पास तक्राज़े को गए ता आस ने कहा कि मैं तुम्हारा क़र्ज़ अदा न करूँगा जबतक तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) से फिर न जाओ और कुछ इस्तिथार न कर लो. हज़रत ख़वाब ने फ़रमाया ऐसा कभी नहीं हो सकता यहाँ तक कि तू

वो उन्हें खूब उछलते हैं^(१) (८३) तो तुम जल्दी न करो, हम तो उनकी गिनती पूरी करते हैं^(२) (८४) जिस दिन हम परहेज़गारों को रहमान की तरफ़ ले जाएंगे मेहमान बनाकर^(३) (८५) और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ़ हाँकेंगे प्यासे^(४) (८६) लोग शफ़ाअत के मालिक नहीं मगर वही जिन्होंने रहमान के पास करार रखा है^(५) (८७) और काफ़िर बोले^(६) रहमान ने औलाद इख्तियार की^(७) (८८) वेशक तुम हद की भारी बात लाए, ^(८) (८९) क़रीब है कि आसमान उस से फट पड़े और ज़मीन शक़ हो जाए और पहाड़ गिर जाएं टै कर^(९) (९०) उस पर कि उन्होंने रहमान के लिये औलाद वताई^(१०) (९१) और रहमान के लिये लायक़ नहीं कि औलाद इख्तियार करे^(११) (९२) आसमानों और ज़मीन में जितने हैं सब उसके हुज़ूर बन्दे होकर हाज़िर होंगे^(१२) (९३) वेशक वह उनका शुमार जानता है और उनको एक एक करके गिन रखा है^(१३) (९४) और उनमें हर एक क़यामत के रोज़ उसके हुज़ूर अकेला हाज़िर होगा^(१४) (९५) वेशक वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये, बहुत जल्द उनके लिये रहमान महबूत कर देगा^(१५) (९६) तो हमने यह क़ुरआन तुम्हारी ज़बान में यूँही आसान फ़रमाया कि तुम इससे डर वालों को खुशख़बरी दो और झगड़ालू लोगों को इससे डर सुनाओ^(१६) (९७) और हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपाई (कौमें हलाक कीं) ^(१७) क्या तुम उनमें

الشَّيَاطِينِ عَلَى الْكَافِرِينَ تَوَزُّهُمْ أَزًّا ۚ فَلَا تَجْعَلُ عَلَيْهِمْ إِنْسَانًا نَّعْدًا لَّهُمْ عَذَابًا ۚ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا ۚ وَنُسَوِّيُ الْجَائِرِينَ إِلَى جَهَنَّمَ وَرِدًّا ۚ لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۚ وَقَالُوا إِنَّا نَتَّخِذُ الرَّحْمَنَ وَلَدًا ۚ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ۚ تَكَادُ السَّنُوتُ يَبْفَظُنَّ مِنْهُ وَتَكْشِفُ الْأَرْضُ وَتَخْرِجُ الْجِبَالَ هَدًّا ۚ أَنْ دَعَا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ۚ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ۚ إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا إِلَى الرَّحْمَنِ عَبْدًا ۚ لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۚ وَكُلُّهُمْ أَيْدِيهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَرْدًا ۚ إِنْ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا ۚ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ لَيْسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لَدًّا ۚ وَكَذَلِكَ نَكُنَّا قَبْلَهُمْ مِنْ قُرْنٍ

مَذْلُومٍ

मरे और मरने के बाद ज़िन्दा होकर उठे. वह कहने लगा क्या मैं मरने के बाद ज़िन्दा होकर उठूँगा. हज़रत ख़वाब ने कहा हाँ. आस ने कहा तो फिर मुझे छाड़िये यहाँ तक कि मैं मर जाऊँ और मरने के बाद फिर ज़िन्दा होऊँ और मुझे माल व औलाद मिले, जब ही आपका क़र्ज़ अदा करूँगा. इसपर ये आयतें उतरतीं.

- (२२) और उसने लौहे मेहफूज़ में देख लिया है कि आग़िरत में उसको माल और औलाद मिलनी.
- (२३) ऐसा नहीं है तो ----
- (२४) यानी माल और औलाद उन सब से उसकी मिल्क और उन्हें इस्तेमाल करने का हक़ सब उसके हलाक होने से उट जाएगा और -
- (२५) कि न उसके पास माल होगा न औलाद और उसका ये दावा करना झूटा हो जाएगा.
- (२६) यानी मुश्किलों ने बुतों को मअवूद बनाया और उनको पूजने लगे इस उम्मीद पर ---
- (२७) और उनकी मदद करें और उन्हें अज़ाब से बचाएं.
- (२८) ऐसा हो ही नहीं सकता.
- (२९) बुत, जिन्हें ये पूजते थे.
- (३०) उन्हें झुटलाग़े और उन पर लानत करेंगे. अल्लाह तआला उन्हें ज़बान देगा और वह कहेंगे याख़ उन्हें अज़ाब कर.

सूरए मरयम - छटा रूकू

- (१) यानी शैतानों को उनपर छोड़ दिया और उन पर क़ब्ज़ा दे दिया.
- (२) और गुाहों पर उभारते हैं.
- (३) कर्मों के बदले के लिये या सांसों की फ़ना के लिये या दिनों महीनों और बरसों की उस अवधि के लिये जो उनके अज़ाब के वास्ते निर्धारित है.
- (४) हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि ईमान वाले परहेज़गार लोग हथ्र में अपनी क़ब्रों से सदा करके उठाए जाएंगे और उनकी सवारियों पर सोने की ज़ीने और पालान होंगे.
- (५) ज़िल्लत और अपमान के साथ, उनके कुक़ के कारण.
- (६) यानी जिन्हें शफ़ाअत की आज्ञा मिल चुकी है, वही शफ़ाअत करेंगे. या ये मानी हैं कि शफ़ाअत सिर्फ़ ईमान वालों की होगी

किसी को देखते हो या उनकी भनक (ज़रा भी आवाज) सुनते हो^(१५) (१८)

२०-सूरए तौहा

सूरए तौहा मक्का में उतरी, इसमें १३५ आयतें और ८ रूकू हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१)

पहला रूकू

तौहा, (१) ऐ मेहबूब हमने तुमपर यह कुरआन इसलिये न उतारा कि तुम मशक़क़त में पड़ो^(२) हों उसको नसीहत जो डर रखता हो^(३) उसका उतारा हुआ जिसने ज़मीन और ऊंचे आसमान बनाए^(४) वह बड़ी मेहर (कृपा) वाला, उसने अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक है^(५) उसका है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और जो कुछ उनके बीच में और जो कुछ इस गीली मिट्टी के नीचे है^(६) और अगर तू बात पुकार कर कहे तो वह तो भेद को जानता है और उसे जो उससे भी ज़्यादा छुपा है^(७) अल्लाह, कि उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसी के हैं सब अच्छे नाम^(८) और कुछ तुम्हें मुसा की ख़बर आई^(९) जब उसने एक आग देखी तो अपनी बीबी से कहा ठहरो मुझे एक आग नज़र पड़ी है शायद मैं तुम्हारे लिये उससे से कोई चिंगारी लाऊं या आग पर रास्ता पाऊं^(१०) फिर जब आग के पास आया^(११) निदा(पुकार) फ़रमाई गई कि ऐ मूसा^(१२) वेशक मैं तेरा रव हूँ तो तू अपने जूते उतार डाल^(१३) वेशक तू पाक जंगल तुवा में है^(१४) और मैं ने तुझे पसन्द किया^(१५) अब

هَلْ نَحْشُ مِنْهُمْ مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۖ

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا ۖ سُبْحَانَكَ ۖ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طه ۖ مَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَى ۖ إِلَّا تَذَكُّرًا ۚ

لِمَنْ يَخْشَى ۖ تَنْزِيلًا مِمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمُوتِ

الْعُلَى ۖ الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۖ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ

وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ۖ وَإِنْ

تَجَهَّرَ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۖ اللَّهُ لَا إِلَهَ

إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۖ وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۖ

إِذْ رَأَاهُ تَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا

لَعَلِّي آتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جُدَلٍ ۖ عَلَى الْثَّارِ هَدَى ۖ

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ لَبِيسُهُ ۖ إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ

نَعْلَيْكَ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۖ وَأَنَا أَخَذْتُكَ

مِنْ

और वही उससे फ़ायदा उठाएंगे। हदीस शरीफ़ में है, जो ईमान लाया और जिसने लाइलाहा इल्लल्लाह कहा उसके लिये अल्लाह के नज़दीक एहद हैं।

(७) यानी यहूदी, ईसाई और मुश्क जो फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटीयाँ कहते थे कि ---

(८) और अत्यन्त बुरे और ग़लत दर्जे का कलिमा तुमने मुंह से निकाला।

(९) यानी ये कलिमा ऐसी बेअदबी और गुस्ताख़ी का है कि अगर अल्लाह तआला ग़ज़ब फ़रमाए तो उसपर सारे जगत का निज़ाम दरहम दरहम उलट पुलट कर दे। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि काफ़िरों ने जब यह गुस्ताख़ी की और ऐसा अपमान-जवक कलिमा मुंह से निकाला तो ज़िन्न और इम्ताओं के सिवा आसमान, ज़मीन, पहाड़ वगैरह तमाम सृष्टि परेशानी से बेचैन हो गई और हलाकत के करीब पहुंच गई। फ़रिश्तों को गुस्सा आया और जहन्नम को जोश आया। फिर अल्लाह तआला ने अपनी पाकी बयान फ़रमाई।

(१०) वह इससे पाक है और उसके लिये औलाद होना मुहाल है, मुमकिन नहीं।

(११) बन्दा होने का इक़्रार करने हुए और बन्दा होना और औलाद होना जमा हो ही नहीं सकता और औलाद ममलूक नहीं होती, जो ममलूक है हरगिज़ औलाद नहीं।

(१२) सब उसके इल्म में हैं और हर एक की सांसों और सारे अहवाल और तमाम काम उसकी गिनती में हैं। उसपर कुछ छुपा नहीं, सब उसकी तदबीर और तक्रदीर के तहत में हैं।

(१३) बगैर माल और औलाद और सहायक व मददगार के।

(१४) यानी अपना मेहबूब बनाएगा और अपने बन्दों के दिल में उनकी महबूत डाल देगा। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि जब अल्लाह तआला किसी बन्दे को अपना मेहबूब करता है तो ज़िब्रईल से फ़रमाता है कि अमुक मेरा मेहबूब है। ज़िब्रईल उससे महबूत करने लगते हैं फिर वह आसमानों में पुकार लगाते हैं कि अल्लाह तआला इस बन्दे को मेहबूब रखता है सब इसको मेहबूब

कान लगा कर सुन जो तुझे वही (देववाणी) होती है (१३) वेशक मैं ही हूँ अल्लाह कि मेरे सिवा कोई मअवूद नहीं तो मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिये नमाज़ कायम रख (१४) वेशक क़यामत आने वाली है करीब था कि मैं उसे सबसे छुपाऊँ (१५) कि हर जान अपनी कोशिश का बदला पाए (१६) तो हरगिज़ तुझे (१७) उसके मानने से वह बाज़ न रखे जो उस पर इमान नहीं लाता और अपनी ख्वाहिश के पीछे चला (१८) फिर तू हलाक हो जाए (१९) और यह तेरे दाएं हाथ में क्या है ऐ मूसा (२०) अर्ज़ की यह मेरा असा (लाठी) है, (२१) मैं इस पर तकिया लगाता हूँ और इससे अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूँ और मेरे इसमें और काम हैं (२२) फ़रमाया इसे डाल दे ऐ मूसा (२३) तो मूसा ने डाल दिया तो जभी वह दौड़ता हुआ सांप हो गया (२४) फ़रमाया इसे उठा ले और डर नहीं अब हम इसे फिर पहले की तरह कर देंगे (२५) और अपना हाथ अपने बाज़ू से मिला (२६) ख़ूब सफ़ेद निकलेगा बे किसी मर्ज़ के (२७) एक और निशानी (२८) कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियां दिखाएँ (२९) फिर औन के पास जा (३०) उसने सर उठाया (३१) (३२)

दूसरा रूकू

अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिये मेरा सीना खोल दे (३३) और मेरे लिये मेरा काम आसान कर (३४) और मेरी ज़वान की गिरह खोल दे (३५) कि वह मेरी बात समझे (३६) और मेरे लिये मेरे घर वालों में से एक वज़ीर कर दे (३७) वह कौन मेरा भाई हारून (३८) उससे मेरी कमर मजबूत

فَاسْتَوَيْ لِمَا يُوْنُسُ ۝ اَتَيْنِيْ اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا
فَاعْبُدْنِيْ ۝ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِنُكْرِيْ ۝ اِنَّ السَّاعَةَ اَتِيَةٌ
اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِلْمُجْرِمِ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعُ ۝ فَلَا
يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هُوَ فَكَرَدٰى ۝
وَمَا تِلْكَ بِمَبِينِكَ لِيُؤْسَ ۝ قَالَ هِيَ عَصَايَ اَتُكْوٰى
عَلَيْهَا وَاَهْشَ بِهَا عَلٰى غَمَمٰى وَلِيْ فِيْهَا مَارِبٌ
اٰخَرٰى ۝ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوسٰى ۝ فَالْقٰهَا ۝ فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ
تَسْعٰى ۝ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۝ فَنفَخْتُ فِيْهَا مِنْ رُّوْحِيْ
اَلْاَوَّلٰى ۝ وَاَضْمَمْتُ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ فَخَرَجْتَ بِصَبَآءٍ مِّنْ
غَيْرِ سُوْءٍ اٰيَةٍ ۝ اٰخَرٰى ۝ لِّلرَّبِّكَ مِنَ الْاٰيٰتِ الْكُبْرٰى ۝
اِذْ هَبَّ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهُ طَغٰى ۝ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ
صَدْرِيْ ۝ وَيَسِّرْ لِيْ اَمْرِيْ ۝ وَاَحْلِلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ
يَفْقَهُوا قَوْلِيْ ۝ وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ۝

مّٰزِل

- (१३) और बन्दों को उसके आने की ख़बर न दूँ और उसके आने की ख़बर न दी जाती अगर इस ख़बर देने में यह हिकमत न होती।
(१४) और उसके ख़ौफ़ से मुनाह छोड़े और नेकियाँ ज़्यादा करे और हर वक़्त तौबह करता रहे।
(१५) ऐ मूसा की उम्मत, सम्बोधन ज़ाहिर में मूसा अलैहिस्सलाम को है और मुराद इससे आपकी उम्मत है। (मदारिक)
(१६) अगर तू उसका कहना माने और क़यामत पर इमान न लाए तो —
(१७) इस सवाल की हिकमत यह है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी लाठी को देख लें और यह बात दिल में ख़ूब पक्की हो जाए कि यह लाठी है ताकि जिस वक़्त वह साँप की शकल में हो तो आप के मन पर कोई परेशानी न हो। या यह हिकमत है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को मानूस किया जाए ताकि गुफ़्तगू या संवाद की हैबत कम हो। (मदारिक वग़ैरह)
(१८) इस लाठी में ऊपर की तरफ़ दो शाखें थीं और इसका नाम नबआ था।
(१९) जैसे कि तोशा और पानी उठाने और ख़तरनाक जानवर को दूर भगाने और दुश्मन से लड़ाई में काम लेने वग़ैरह। इन फ़ायदों का ज़िक्र करना अल्लाह की नेअमतों के शुक्र के तौर पर था। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से।
(२०) और अल्लाह की कुदरत दिखाई गई कि जो लाठी हाथ में रहती थी और इतने काम आती थी अब अचानक वह ऐसा भयावक अजगर बन गई। यह हाल देखकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ख़ौफ़ हुआ तो अल्लाह तआला ने उनसे।
(२१) यह फ़रमाते ही ख़ौफ़ जाता रहा यहाँ तक कि आपने अपना मुबारक हाथ उसके मुँह में डाल दिया और वह आपके हाथ लगते ही पहले की तरह लाठी बन गई। अब इसके बाद एक और चमत्कार अता फ़रमाया जिसकी निम्नत इशारा होता है।
(२२) यानी दाएं हाथ की हथेली दाएं बाजू से बग़ल के नीचे मिला कर निकालिये तो सूरज की तरह चमकता निगाहों को चका चौंध करता ओर...
(२३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुबारक हाथ से रात और दिन में सूरज की तरह तुर धानी प्रकाश ज़ाहिर होता था और यह चमत्कार आपके बड़े चमत्कारों में से है। जब आप दावारा अपना हाथ बग़ल के नीचे रखकर बाजू से मिलाते तो हाथ पहले की हालत पर वापस आ जाता।

कर(३१) और उसे मेरे काम में शरीक कर(३२) कि हम ब-कसरत तेरी पाकी वोले(३३) और ब-कसरत तेरी याद कर(३४) वेशक तू हमें देख रहा है(३५) फ़रमाया ऐ मूसा तेरी मांग तुझे अता हुई(३६) और वेशक हमने(३७) तुझ पर एक बार और एहसान फ़रमाया(३८) जब हमने तेरी माँ को इल्हाम किया (दिल में डाला) जो इल्हाम करना था(३९) कि इस बच्चे को सन्दूक में रखकर दरिया में(४०) डाल दे तो दरिया इसे किनारे पर डाले कि इसे वह उठले जो मेरा दुश्मन और उस का दुश्मन(४१) और मैं ने तुमपर अपनी तरफ़ की महबूत डाली(४२) और इसलिये कि तू मेरी निगाह के सामने तैयार हो(४३) तेरी बहन चली(४४) फिर कहा क्या मैं तुम्हें वो लोग बतादूँ जो इस बच्चे की परवरिश करें(४५) तो हम तुझे तेरी माँ के पास फेर लाए कि उसकी आँख(४६) ठण्डी हो और ग़म न करे(४७) और तूने एक जान को क़त्ल किया(४८) तो हमने तुझे ग़म से निजात दी और तुझे ख़ूब जांच लिया(४९) तो तू कई वरस मदयन वालों में रहा(५०) फिर तू एक ठहराए हुए वादे पर हाज़िर हुआ ऐ मूसा(५१) और मैं ने तुझे ख़ास अपने लिये बनाया(५२) तू और तेरा भाई दोनों मेरी निशानियाँ(५३) लेकर जाओ और मेरी याद में सुस्ती न करना(५४) दोनों फिरऔन के पास जाओ वेशक उसने सर उठया(५५) तो

هَؤُلَاءِ أَحِبِّي ۖ أَشَدُّ بِهِ أَنْرَى ۖ وَ أَشْرِكُهُ فِي
أَمْرِي ۖ كَيْ نُسَخِّكَ كَثِيرًا ۖ وَ نَذْكُوكَ كَثِيرًا ۖ إِنَّكَ
كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ۖ قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يُمُوسَى ۖ
وَلَقَدْ مَتَّعْنَا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَى ۖ إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ
مَا يُوحَىٰ ۖ أَلَيْسَ أَفْذَىٰ فِيهِ ۖ فِي الثَّابُوتِ فَأَفْذَىٰ فِيهِ ۖ فِي
الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَ
عَدُوٌّ لَّهُ ۖ وَ أَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِنِّي ۖ وَ لَا تُصْنَمَ عَلَىٰ
عَيْنِي ۖ إِذْ تَسْتَشِيرُ أَخِيكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن
يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَ لَا
تَحْزَنَ ۖ وَ قَتَلْتَ نَفْسًا فَجَعَيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَ قَتَلْتَ
نُفُوسًا ۖ فَلْيَنْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ۖ ثُمَّ جِئْتَ
عَلَىٰ قَدَرٍ يُّمُوسَى ۖ وَ اصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ۖ إِذْ هَبْ
أَنْتَ وَ أَخُوكَ بِآيَاتِي ۖ وَ لَا تَنْبِئَا فِي ذِكْرِي ۖ إِذْ هَبْنَا

مَثَلًا

- (२४) आपकी नबुच्चत की सच्चाई की, लाठी के बाद इस निशानी को भी लीजिये.
(२५) रसूल हांकर.
(२६) और कुफ़्र में हद से गुज़र गया और खुदाई का दावा करने लगा.

सूरए ताहा - दूसरा स्कू

- (१) और इसे रिसालत का वज़न सहने के लिये फैला दे.
(२) जो छुटपन में आग का अंगारा मुंह में रख लेने से पड़ गई है. इसका वाकिआ यह था कि वचपन में आप एक दिन फिरऔन की गोद में थे. आपने उसकी दाढ़ी पकड़ कर उसके मुंह पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा इसपर उसे गुस्सा आया और उसने आपको क़त्ल का इरादा किया. आसिया ने कहा कि ऐ बांदाशाह यह नादान बच्चा है, इसे क्या समझे. तू चाहे तो आजमा ले. इस आजमाइश के लिये एक थाल में आग और एक थाल में लाल याक़ूत आपके सामने पेश किये गए. आपने याक़ूत लेने चाहे मगर फ़रिश्ते ने आपका हाथ अंगारे पर रख दिया और वह अंगारा आपके मुंह में दे दिया. इससे ज़बाने मुबारक जल गई और लुकनत यानी थोड़ा तोतला पुन पैदा हो गया. इसके लिये आपने यह दुआ की.
(३) जा मरा सहायक आर भरास वाला हो.
(४) यानी नबुच्चत के कामों और अल्लाह के संदेश लोगों तक पहुंचाने में.
(५) नमाज़ों में भी और नमाज़ों के बाहर भी.
(६) हमारे हालात का जानने वाला है. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की इस दर्ज़ास्त पर अल्लाह तआला ने.
(७) इससे पहले.
(८) दिल में डाल कर या ख़्वाब के ज़रिये से, जबकि उन्हें आपकी पैदाइश के वक़्त फिरऔन की तरफ़ से आपको क़त्ल कर डालने का अन्देशा हुआ.
(९) यानी नील नदी में.
(१०) यानी फिरऔन, चुनांचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा ने एक सन्दूक बनाया और उसमें रूई बिछाई और हज़रत मूसा

उससे नर्म बात कहना^(१३) इस उम्मीद पर कि वह ध्यान करे या कुछ डरे^(१४) ॥४४॥ दोनों ने अर्ज किया ऐ हमारे रब बेशक हम डरते हैं कि वह हम पर ज़ियादती करे या शरारत से पेश आए^(१५) ॥४५॥ फ़रमाया डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ^(१६) सुनता ओर देखता^(१७) ॥४६॥ तो उसके पास जाओ और उससे कहो कि हम तेरे रब के भेजे हुए हैं तो यअकूब की औलाद को हमारे साथ छोड़ दे^(१८) और उन्हें तकलीफ़ न दे, ^(१९) बेशक हम तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से निशानी लाए हैं ^(२०) और सलामती उसे जो हिदायत की पैरवी करे^(२१) ॥४७॥ बेशक हमारी तरफ़ वही (देववाणी) हुई है कि अज़ाब उस पर है जो झुटलाए^(२२) और मुंह फेरे^(२३) ॥४८॥ बोला तो तुम दोनों का ख़ुदा कौन है ऐ मूसा^(२४) ॥४९॥ कहा हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसके लायक़ सूरत दी ^(२५) फिर राह दिखाई^(२६) ॥५०॥ बोला^(२७) अगली संगतों (क्रौमों) का क्या हाल है^(२८) ॥५१॥ कहा उनका इल्म मेरे रब के पास एक किताब में है^(२९) मेरा रब न बहके न भूले^(३०) वह जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन बिछौना किया और तुम्हारे लिये उसमें चलती राहें रखीं और आसमान से पानी उतारा^(३१) तो हम ने उससे तरह तरह के सब्जे के जोड़े निकाले^(३२) ॥५२॥ तुम खाओ और अपने मवेशियों को चराओ, ^(३३) बेशक

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۖ فَقَوْلَا لَهُ قَوْلًا ثَلَاثًا ۚ لَعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ۚ قَالَ رَبَّنَا إِنَّا نَتَخَفُ أَنْ يَفْطُرَ عَلَيْنَا أَوْ أَنْ يَطْغَىٰ ۚ قَالَ لَا تَخَافَا إِنِّي مَعَكُمَا أَسْمَعُ ۖ وَآرَىٰ ۖ فَأْتِيهِ قَوْلًا أَنَا رَسُولُ رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ وَلَا تَعْلِبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّنْ رَبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ۚ إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَبَ وَتَوَلَّىٰ ۚ قَالَ فَكَيْفَ رَبِّكُمْ يُؤْتِيهِ ۚ قَالَ رَبَّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ حَلْفَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ۚ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ۚ قَالَ عَلَّمَهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَبْصُلُ رَبِّي وَلَا يُنْسَىٰ ۖ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَوَسَّلَكَ لَكُمُ فِيهَا سُبُلًا وَآزَلَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ أَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ۖ كُلُّوهُ وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۚ إِنَّ فِي

مَنْزِلٍ

अलैहिस्सलाम को उसमें रखकर सन्दूक बन्द कर दिया और उसकी दराज़े रोगने कीर से बन्द कर दीं, फिर उस सन्दूक की नील नदी में बहा दिया, इस नदी से एक बड़ी नहर निकल कर फिरऔन के महल से गुज़रती थी, फिरऔन अपनी बीवी आसिया के साथ नेहर के किनारे बंटा हुआ था, नेहर में सन्दूक आता देखकर उसने गुलामों और दासियों को उसके निकालने का हुक्म दिया, वह सन्दूक निकाल कर सामने लाया गया, खोला तो उसमें एक तूरावी शकल लड़का, जिसकी पेशानी से वजाहत और यश की प्रतिभा झलक रही थी, नज़र आया, देखते ही फिरऔन के दिल में ऐसी महबूत पैदा हुई कि वह आशिक हो गया और अकल व हवास जगह पर न रहे, इसकी निस्वत अल्लाह तआला फ़रमाता है,

(११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने उन्हें मेहबूब बनाया और सृष्टि का मेहबूब कर दिया और जिसको अल्लाह अपनी मेहबूबियत से नवाज़ता है, दिलों में उसकी महबूत पैदा हो जाती है जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया, यही हाल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का था, जो आपको देखता था, उसी के दिल में आपकी महबूत पैदा हो जाती थी, क़तादा ने कहा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की आँखों में ऐसी कशिश थी जिस देखकर हर देखने वाले के दिल में महबूत जोश मारने लगती थी,

(१२) यानी मंगी हिफ़ाज़त और निगहबानी में परवरिश पाए,

(१३) जिसका नाम मरयम था ताकि वह आप के हाल की खोज करे और मालूम करे कि सन्दूक कहाँ पहुँचा, आप किसके हाथ लगे जब उसने देखा कि सन्दूक फिरऔन के पास पहुँचा और वहाँ दूध पिलाने के लिये दाइयाँ हाज़िर की गईं और आपने किसी की छाती को मुँह न लगाया तो आपकी बहन ने,

(१४) उन लोगों ने इसको मन्ज़ूर किया वह अपनी वालिदा को ले गईं, आपने उनका दूध कुबूल फ़रमाया,

(१५) आपके दीदार या दर्शन से,

(१६) यानी जुदाई का ग़म दूर हो - इसक़ बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के एक और वाकए का ज़िक्र फ़रमाया जाता है,

(१७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फिरऔन की क्रौम के एक काफ़िर को मारा था, वह मर गया, कहा गया है कि उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ बारह साल थी इस वाकए पर आप को फिरऔन की तरफ़ से अन्देशा हुआ,

(१८) मेहनत और मशक़क़त में डाल कर और उनसे ख़लासी अता फ़रमा कर,

(१९) मदयन एक शहर है मिस्र से आठ मंज़िल फ़ायले पर, यहाँ हज़रत शूरेब अलैहिस्सलाम रहते थे, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मिस्र से मदयन आए और कई बरस तक हज़रत शूरेब अलैहिस्सलाम के पास ठहरे और उनकी सुपुत्री मफ़ूरा के साथ आपका निकाह

हुआ।

(२०) यानी अपनी उम्र के चालीसवें साल और यह वह दिन है कि नवियों की तरफ़ इस दिन में वही की जाती है।

(२१) अपनी बही और रिसालत के लिये ताकि तू मेरे इरादे और मेरी हुज्जत पर तसर्फ़ करे और मेरी हुज्जत पर कायम रहे और मेरे और मेरी सृष्टि के बीच ख़िलाफ़ पहुंचने वाला हो।

(२२) यानी चमत्कार।

(२३) यानी उसको नमी से नसीहत फ़रमाना और नमी का हुक्म इस लिये था कि उसने बचपन में आपकी ख़िदमत को थी और कुछ मुफ़ससियों ने फ़रमाया कि इस नमी से मुराद यह है कि आप उससे वादा करें कि अगर वह ईमान कुबूल करेगा तो सारी उम्र जवान रहेगा, कभी बुढ़ापा न आएगा और मरने तक उसकी सल्लत बाकी रहेगी। और खाने पीने और निकाह की लज़तें मरने तक बाकी रहेंगी और मौत के बाद जन्नत में दाख़िला मिलेगा। जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन से ये वादे किये तो उसको यह बात बहुत पसन्द आई मगर वह कोई काम हामान के मशवरे के बिना नहीं करता था। हामान मौजूद न था। जब वह आया तो फ़िरऔन ने उसको यह सूचना दी और कहा कि मैं चाहता हूँ कि मूसा की हिदायत पर ईमान कुबूल कर लूं। हामान कहेन लगा, मैं तो तुझको अक़ल वाला और समझदार जानता था। तू ख़ुश है, बन्दा बनना चाहता है। तू मअबूद है, आविद बनने की इच्छा है। फ़िरऔन ने कहा, तूने ठीक कहा। और हज़रत हारून मिस्र में थे। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म किया कि वह हज़रत हारून के पास आएँ और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को वही की कि हज़रत मूसा से मिलें। चुनांचे वह एक मंज़िल चलकर आपसे मिले और जो वही उन्हें हुई थी उसकी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को सूचना दी।

(२४) यानी आपकी तालीम और नसीहत इस उम्मीद के साथ होती चाहिये ताकि आपके लिये अन्न और उसपर हुज्जत का इल्ज़ाम और उन्न की काट हो जाए और हकीकत में होना तो वही है जो अल्लाह ने लिख दिया है।

(२५) अपनी मदद से।

(२६) उसकी कहनी और करनी को।

(२७) और उन्हें बन्दगी और असीरी से रिहा कर दे।

(२८) मेहनत और मशक्कत से सख्त काम लेकर।

(२९) यानी चमत्कार जो हमारी नबुव्वत की सच्चाई के प्रमाण हैं। फ़िरऔन ने कहा वो क्या हैं तो आपने चमकती हथैली का चमत्कार दिखाया।

(३०) यानी दोनों जगह में उसके लिये सलामती है, वह अज़ाब से मेहफूज़ रहेगा।

(३१) हमारी नबुव्वत को और उन आदेशों को जो हम लाए।

(३२) हमारी हिदायत से हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन को यह संदेश पहुंचा दिया तो वह ---

(३३) हाथ को इसके लायक कि किसी चीज़ को पकड़ सके, पाँव को इसके काबिल कि चल सके, जबान को इसके मुनासिब कि बोल सके, आँख को इसके अनुसार कि देख सके, कान को ऐसा कि सुन सके।

(३४) और इसकी पहचान और जानकारी दी कि दुनिया की ज़िन्दगी और आख़िरत की सआदत के लिये अल्लाह की दी हुई नअमतों को किस तरह काम में लाया जाए।

(३५) फ़िरऔन।

(३६) यानी जो उम्मतें गुज़र चुकी हैं जैसे कि नूह, आद और समूद को कौम, जां बुतों को पूजते थे और मरने के बाद ज़िन्दा करके उठाए जाने के इन्कारी थे, इसपर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने।

(३७) यानी लौहे मेहफूज़ में उनके सारे हालात लिखे हैं क़यामत के दिन उन्हें उन क़र्मों का बदला दिया जाएगा।

(३८) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का कलाम तो यहाँ ख़त्म हो गया अब अल्लाह तआला मक्का वालों को सम्बोधित करके इसका अन्त फ़रमाता है।

(३९) यानी क्रिस्म क्रिस्म की हरियालीयाँ, विभिन्न रंगतों, सुगंधों, शक़लों के, कुछ आदमियों के लिये, कुछ जानवरों के लिये।

इसमें निशानियाँ हैं अक्ल वालों को (५४)

तीसरा रूकू

हमने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया^(१) और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे^(२) और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे^(३) (५५) और बेशक हमने उसे^(४) अपनी सब निशानियाँ^(५) दिखाई तो उसने झुटलाया और न माना^(६) (५६) बोला क्या तुम हमारे पास इसलिये आए हो कि हमें अपने जादू के कारण हमारी ज़मीन से निकाल दो ऐ मूसा^(७) (५७) तो ज़रूर हम भी तुम्हारे आगे वैसा ही जादू लाएंगे^(८) तो हम में और अपने में एक वादा ठहरा दो जिससे न हम बदला ले न तुम हमवार जगह हो (५८) मूसा ने कहा तुम्हारा वादा मेले का दिन है^(९) और यह कि लोग दिन चढ़े जमा किये जाएं^(१०) (५९) तो फिरऔन फिरा अपने दाँव इकट्ठे किये^(११) फिर आया^(१२) (६०) उनसे मूसा ने कहा तुम्हें खाराबी हो अल्लाह पर झूठ न बाँधो^(१३) कि वह तुम्हें अज़ाब से हलाक करदे, और बेशक नामुराद रहा जिसने झूठ बाँधा^(१४) (६१) तो अपने मामले में बाहम मुख्तलिफ़ हो गए^(१५) और छुप कर सलाह की (६२) बोले बेशक ये दोनों^(१६) ज़रूर जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से अपने जादू के ज़ोर

ذٰلِكَ لَا يَتْلُو الْاٰتِیَّ مِنْهَا خَلْقَكُمْ وَ فِیْهَا نُعِیْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اٰخَرَةً ۝ وَكَفَدَ اٰرْبِنَةُ اٰیٰتِنَا كُلَّهَا ۝ فَكَذَّبَ وَكَتٰبَ ۝ اٰجِئْتُنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ یٰمُوسٰی ۝ فَاٰتِنَا بِآیٰتِكَ بِسِحْرِ وُثْنِنَا ۝ فَاجْعَلْ بَیْنَنَا وَبَیْنَكَ مَوْعِدًا اَلَّا تَخْلَفُنَا ۝ وَكَفَدَ مَكَاثًا سُوْیَ ۝ قَالَ مَوْعِدُكُمْ یَوْمَ الزَّیْنَةِ ۝ وَاَنْ یُّحْشَرَ النَّاسُ ۝ صَبٰحِی ۝ فَتَوَلٰی فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَیْدًا ثُمَّ اٰتٰ ۝ قَالَ لَمَمَ مُوسٰی وَبَلَکُمُ لَا تَفْکُرُوْا عَلٰی الْاِلٰهِ کَذِبًا ۝ فِیْسُجِّنْکُمْ بِعَذَابٍ ۝ وَكَفَدَ خَابَ مِنْ اَفْکَرٍ ۝ فَتَنَّا زُجُوْا اَمْرَهُمْ بَیْنَهُمْ وَاَسْرُوْا النَّجْوٰی ۝ قَالُوْا اِنْ هٰذِیْنِ لَسِحْرٰنِ یُرِیْدٰنِ اَنْ یُّخْرِجَکُمْ مِّنْ اَرْضَکُمْ بِسِحْرِهِمَا ۝ وَیَذْهَبَا بِطَرِیْقَتَکُمْ

مُذَلَّ

(४०) यह बात अबाहत और नअमेत के ज़िक्र के लिये है। यानी हमने ये सब निकाले, तुम्हारे लिये इनका खाना और अपने जानवरों को चराता मुवाह यानी जायज़ करके।

सूरए ताँहा - तीसरा रूकू

- (१) तुम्हारे बड़े दादा हज़रत आदम को उससे पैदा करके।
- (२) तुम्हारी मौत और दफ़न के वक़्त।
- (३) क़यामत के दिन।
- (४) यानी फिरऔन को।
- (५) यानी कुल आपतों जां हज़रत मूसा को अता फ़रमाई थीं।
- (६) और उन आपतों को जादू बताया और सच्चाई कुबूल करने से इन्कार किया और ---
- (७) यानी हमें भिख से निकाल कर खुद उस पर क़ब्ज़ा करो और वादशाह बन जाओ।
- (८) और जादू में हमारा मुक़ाबला होगा।
- (९) इस मेले से फिरऔनियों का मेला मुराद है जो उनकी ईद थी और उसमें वो सज धज के जमा होते थे। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह दिन आशूरा यानी दसवीं मुहर्रम का था और उस साल ये तारीख़ शनिवार को पड़ी थी। उस दिन को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इसलिये निर्धारित किया कि यह दिन उनकी ऊंची शौकत यानी पराकाष्ठा का दिन था उसको मुक़रर करना अपनी भरपूर कुबूल का इज़हार है। इसमें यह भी हिक़मत थी कि सच्चाई के जुहर और बातिल की रूखाई के लिये ऐसा ही वक़्त मुनासिब है जबकि आस पास के तमाम लोग जमा हों।
- (१०) ताकि ख़ूब रीशती फैल जाए और देखने वाले इम्मीनान से देख सकें और हर चीज़ साफ़ साफ़ नज़र आए।
- (११) बड़ी भारी तादाद में जादूगरों को इकट्ठा किया।
- (१२) वादे के दिन उन सब को लेकर।
- (१३) किसी को उसका शरीक करके।
- (१४) अल्लाह तआला पर।
- (१५) यानी जादूगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का यह क़त्ताम सुनकर आपस में अलग अलग हो गए। कुछ कहने लगे कि यह भी हमारे जैसे जादूगर हैं, कुछ ने कहा कि ये बातें जादूगरों की नहीं, वो अल्लाह पर झूठ बाँधने को मना करते हैं।

से निकाल दें और तुम्हारा अच्छा दीन ले जाएँ (६३) तो अपना दाँव (फरेब) पक्का कर लो फिर परा बाँध कर आओ, और आज मुराद को पहुंचा जो गालिब (विजयी) रहा (६४) बोले (१९) ऐ मूसा या तो तुम डालो (२०) या हम पहले डालें (२१) (६५) मूसा ने कहा बल्कि तुम्हीं डालो, (२०) जभी उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ उनके जादू के ज़ोर से उनके खयाल में दौड़ती मालूम हुई (२१) (६६) तो अपने जी में मूसा ने खौफ पाया (६७) हमने फरमाया डर नहीं वेशक तू ही गालिब है (६८) और डाल तो दे जो तेरे दाएँ हाथ में है (२२) और उनकी वनावटों को निगल जाएगा, वो जो बनाकर लाए हैं वह तो जादूगर का धोखा है, और जादूगर का भला नहीं होता कहीं आवे (२३) (६९) तो सब जादूगर सज्दे में गिराए गए बोले हम उसपर ईमान लाए जो हासून और मूसा का रव है (२४) (७०) फिर और बोला क्या तुम उस पर ईमान लाए इसके पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, वेशक वह तुम्हारा वड़ा है जिसने तुमको जादू सिखाया (२५) तो मुझे क्रसम है ज़रूर मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटूंगा (२६) और तुम्हें खजूर के टुंड पर सूली चढ़ाऊंगा और ज़रूर तुम जान जाओगे कि हम में किस का अज़ाब सख्त और देरपा है (२७) (७१)

المثلث. فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ اسْتَوُوا صَفًّا. وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَى. قَالُوا لَيُمُوسَىٰ أَمَّا أَنْ تُلْقِيَ وَإِنَّمَا أَنْ تَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَى. قَالَ بَلَىٰ أَفْقُوا. فَإِذَا حِجَابُهُمْ وَعَصِيَّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَى. فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسَى. قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى. وَآلِي مَا فِي بُيُوتِكِ تَلْقَفُ مَا صَنَعُوا. إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدٌ سَحِيرٌ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى. قَالَتِ السَّحَرَةُ سَجْدًا قَالُوا أَمَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَى. قَالَ أَمْنُكُمْ لَهُ قَبْلُ أَنْ أَدْنَىٰ لَكُمْ دِرَاسَةً لَكَيْزُكُمْ الَّذِي عَلَيْكُمْ السَّحَرَةُ فَلَا قُطْعَنَ أَيْدِيكُمْ وَأَنْجَلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصْلَكُمْ فِي جُدُوعِ النَّحْلِ وَلَتَعْلَمَنَّ آيُنَا أَسَدًا عَدَابًا وَأَبْقَى. قَالُوا

مَزَل

(१६) यानी हज़रत मूसा और हज़रत हासून.

(१७) जादूगर.

(१८) पहले अपनी लाठी.

(१९) अपने सामान, शुरुआत करना जादूगरों ने अदब के तौर पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मुबारक राय पर छोड़ा और उसकी बरकत से आखिरकार अल्लाह तआला ने उन्हें ईमान की दीलत से नवाज़ा.

(२०) यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इसलिये फरमाया कि जो कुछ जादू के धोखे हैं पहले वो सब ज़ाहिर कर चुकें, उसके बाद आप चमत्कार दिखाएँ और सत्य झूट को मिटाएँ और चमत्कार जादू को बातिल कर दें. तो देखने वालों को बसीरत और इब्रत हासिल हो. चुन्नांचे जादूगरों ने रस्सियाँ लाठियाँ बग़ैरह जो सामान लाए थे सब डाल दिया और लोगों की नज़र बन्दी कर दी.

(२१) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि ज़मीन साँपों से भर गई और मीलों मैदान में साँप ही साँप दौड़ रहे हैं और देखने वाले इस झूठी नज़र बन्दी से मसहूर यानी वशीभूत हो गए हैं. कहीं ऐसा न हो कि कुछ चमत्कार देखने से पहले ही इस के असर में आजाएँ और चमत्कार न देखें.

(२२) यानी अपनी लाठी.

(२३) फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी लाठी डाली, वह जादूगरों के तमाम अजगरों और साँपों को निगल गई और आदमी उसके डर से घबरा गए. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे अपने मुबारक हाथ में लिया तो पहले की तरह लाठी बन गई. यह देखकर जादूगरों को यक़ीन हुआ कि यह चमत्कार है जिससे जादू मुकाबला नहीं कर सकता और जादू की नज़रबन्दी इसके सामने नहीं टिक सकती.

(२४) सुक़ानल्लाह ! क्या अजीब हाल था, जिन लोगों ने अभी कुछ के नशे में रस्सियाँ और लाठियाँ डाली थीं, अभी चमत्कार देख कर उन्होंने ने शुक़ और सज्दे के लिये सर झुका दिये और गर्दन डाल दीं. बताया गया है कि इस सज्दे में उन्हें जन्नत और दोज़ख़ दिखाई गई और उन्होंने जन्नत में अपनी मंज़िलें देख लीं.

(२५) यानी जादू में वह कामिल उस्ताद और तुम सबसे ऊंचा है (मआज़ल्लाह).

(२६) यानी दाएँ हाथ ओर बाएँ पाँव.

(२७) इससे फिर और मलऊन की मुराद यह थी कि उसका अज़ाब ज़्यादा सख्त है या सारे जगत के रव का. फिर और का यह घमण्ड भरा कलिमा सुनकर वो जादूगर ---

वोले हम हरगिज़ तुझे तरजीह (प्राथमिकता) न देंगे उन रौशन दलीलों पर जो हमारे पास आई^(२८) हमें अपने पैदा करने वाले की कसम तो तू कर चुक जो तुझे करना है^(२९) तू इस दुनिया ही की ज़िन्दगी में तो करेगा^(३०) ॥७२॥ वेशक हम अपने रव पर ईमान लाए कि वह हमारी ख़ताएं वरखा दे और वह जो तूने हमें मजबूर किया जादू पर^(३१) और अल्लाह बेहतर है^(३२) और सब से ज़्यादा वाकी रहने वाला^(३३) ॥७३॥ वेशक जो अपने रव के हुज़ूर मुजरिम^(३४) होकर आए तो ज़रूर उसके लिये जहन्नम है जिस में न मरे^(३५) न जिये^(३६) ॥७४॥ और जो उसके हुज़ूर ईमान के साथ आए कि अच्छे काम किये हों^(३७) तो उन्हीं के दर्जे ऊंचे^(३८) वसने के वाग़ जिनके नीचे नेहरं वहाँ हमेंशा उनमें रहें, और यह सिला है उसका जो पाक हुआ^(३९) ॥७५॥

चौथा रूकू

और वेशक हमने मूसा को वही (देववाणी) की^(१) कि रातों रात मेरे बन्दों को ले चल^(२) और उनके लिये दरिया में सूखा रास्ता निकाल दे^(३) तुझे डर न होगा कि फिरऔन आ ले और न ख़तरा^(४) ॥७७॥ तो उनके पीछे फिरऔन पड़ा अपने लश्कर लेकर^(५) तो उन्हें दरिया ने ढांप लिया जैसा ढांप लिया^(६) ॥७८॥ और फिरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह

عَلَيْهِ

عَلَيْهِ

كُنْ تَوَثَّرَكَ عَلَى مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي
فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ ؕ إِنَّا تَقْضِي هَٰذِهِ
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ؕ إِنَّا أَمَّا بِرَبِّنَا لِنَغْفِرَ لَنَا خَطِيئَتَنَا
وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَى
إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ
جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ؕ وَمَنْ يَأْتِهِ
مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ
الْعُلَىٰ ؕ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ؕ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّىٰ ؕ
وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اسْرِ بِعَبَادِي
فَاصْرِبْ لَهُمْ حَرِيصًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ؕ لَا تَخَفْ
دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ ؕ فَاتَّبَعَهُمْ فَرَعَوْنَ يَجُودُونَ
فَغَشَّيْهُمْ مِنَ اللَّيْلِ مَا غَشَّيَهُمْ ؕ وَأَصْلَ فَرَعُونَ

مَزْل

(२८) चमकती हथैली और हज़रत मूसा की लाटी - कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा है कि उनका तर्क यह था कि अगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार को भी जादू कहता है तो बता वो रस्से और लाटियाँ कहाँ गईं. कुछ मुफ़स्सिर कहते हैं कि "रौशन दलीलों" से मुराद ज़न्नत और उसमें अपनी मंज़िलों का देखना है.

(२९) हमें उसकी कुछ पर्वाह नहीं.

(३०) आगे तो तेरी कुछ मजाल नहीं और दुनिया क़श्वर और यहाँ की हर चीज़ नष्ट होने वाली है. तू मेहरबान भी हो तो हमेशा की ज़िन्दगी नहीं दे सकता फिर दुनिया की ज़िन्दगी और इसकी सारी राहतों के पतन का क्या ग़म. विशेष कर उसको जो जानता है कि आख़िरत में दुनिया के कर्मों का बदला मिलेगा.

(३१) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुकाबले में. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि फिरऔन ने जब जादूगरों का हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुकाबले के लिये बुलाया था तो जादूगरों ने फिरऔन से कहा था कि हम हज़रत मूसा को सोता हुआ देखना चाहते हैं. चुवाने इसकी कोशिश की गई और उन्हें ऐसा अवसर दिया गया. उन्होंने देखा कि हज़रत सो रहे हैं और लाटी पहना दे रही है. यह देखकर जादूगरों ने फिरऔन से कहा कि मूसा जादूगर नहीं हैं क्योंकि जादूगर जब सोता है तो उस वक़्त उसका जादू काम नहीं करता मगर फिरऔन ने उन्हें जादू करने पर मजबूर कर दिया. इसकी माफ़ी के वो अल्लाह तआला से तालिब और उम्मीदवार हैं.

(३२) फ़रमाँबरदारों को सवाब देने में.

(३३) नाफ़रमानों पर अज़ाब करने के लिहाज़ से.

(३४) यानी फिरऔन जैसे काफ़िर.

(३५) कि मरकर ही उससे छूट सके.

(३६) ऐसा जीना जिससे कुछ नफ़ा उठा सके.

(३७) यानी जिनका ईमान पर ख़ात्मा हुआ हो और उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में नेक कर्म किये हों, फ़र्ज़ और नफ़ल अदा किये हों.

(३८) कुफ़र की नापाकी और गुनाहों की गन्दगी से.

सूरए ताँहा - चौथा रूकू

(१) जबकि फिरऔन चमत्कार देखकर सह पर न आया और नसीहत हासिल न की और वनी इस्राईल पर अत्याचार और अधिक करने लगा.

(२) मिस्र से, और तब दरिया के किनारे पहुंचे और फिरऔनी लश्कर पीछे से आए तो अन्देशा न कर.

किया और राह न दिखाई^(३) ऐ वनी इस्राईल, बेशक हमने तुमको तुम्हारे दुश्मन^(४) से निजात दी और तुम्हें तूर की दाईं तरफ़ का वादा दिया^(५) और तुम पर मन्न और सलवा उतारा^(६) खाओ जो पाक चीज़ें, हमने तुम्हें रोज़ी दी और उसमें ज़ियादती न करो^(७) कि तुम पर मेरा ग़ज़व उतरे और जिस पर मेरा ग़ज़व उतरा बेशक वह गिरा^(८) और बेशक मैं बहुत बख़्शाने वाला हूँ उसे जिसने तौवह की^(९) और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा^(१०) और तूने अपनी क्रौम से क्यों जल्दी की ऐ मूसा^(११) अर्ज़ की कि वो ये हैं मेरे पीछे और ऐ मेरे रब तेरी तरफ़ में जल्दी करके हाज़िर हुआ कि तू राज़ी हो^(१२) फ़रमाया तो हमने तेरे आने के वाद तेरी क्रौम को^(१३) बला में डाला और उन्हें सामरी ने गुमराह कर दिया^(१४) तो मूसा अपनी क्रौम की तरफ़ पलटा^(१५) गुस्से में भरा, अफ़सोस करता^(१६) कहा ऐ मेरी क्रौम क्या तुमसे तुम्हारे रब ने अच्छा वादा न किया था^(१७) क्या तुम पर मुदत लम्बी गुज़री या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़व (प्रकोप) उतरे तो तुमने मेरा

قَوْمَهُ وَمَا هَدَاهُ ۝ يَذِيئُ إِسْرَائِيلَ قَدْ أَنْجَيْنَاكُمْ مِنْ عَدُوِّكُمْ وَوَعَدْنَاكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّاءَ وَالسَّلْوَةَ ۝ كَلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۝ وَمَنْ يَحِلَّ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوِيَ ۝ وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَى ۝ وَمَا أَجْعَلُكَ عَنْ قَوْمِكَ يَمُوتُ ۝ قَالَ هُمْ أَوْلَاءُ عَلَيَّ أَتْرَى وَعَجَلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَى ۝ قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ الشَّامِرِيُّ ۝ فَرَجَعَهُ مُوسَى إِلَى قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَقُولُ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعَدًّا حَسْبًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدْتُمْ أَنْ يَحِلَّ عَلَيْكُمْ

مَزَل

- (३) अपनी लाठी मार कर.
- (४) नदी में डूबने का, मूसा अलैहिस्सलाम का हुक्म पाकर रात के पहले पहर सत्तर हजार वनी इस्राईल को साथ लेकर मिस्र से चले पड़े.
- (५) जिन में छ लाख फ़िरऔनी थे.
- (६) वो डूब गए और पानी उनके सरों से ऊंचा हो गया.
- (७) इसके बाद अल्लाह तआला ने अपने और एहसाद का ज़िक्र किया और फ़रमाया.
- (८) यानी फ़िरऔन और उसकी क्रौम.
- (९) कि हम मूसा अलैहिस्सलाम को वहाँ तौरात अता फ़रमाएंगे जिसपर अमल किया जाए.
- (१०) तेर में और फ़रमाया.
- (११) नाशुक्की और नेअमत को झुटलाकर और उन नेअमतों को गुनाहों में ख़र्च करके या एक दूसरे पर जुल्म करके.
- (१२) जहन्नम में, और हलाक हुआ.
- (१३) शिर्क से.
- (१४) आग़िर दम तक.
- (१५) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब अपनी क्रौम में से सत्तर आदमी चुन कर तौरात लेने तूर पर नशरीफ़ ले गए, फिर रब के कलाम के शौक में उनसे आगे बढ़ गए, उन्हें पीछे छोड़ दिया और फ़रमा दिया कि मेरे पीछे पीछे चले आओ. इसपर अल्लाह तआला ने फ़रमाया "बमा अजलका" (क्यों जल्दी की), तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ---
- (१६) यानी तेरी रज़ा और ज़्यादा हो. इस आयत से इज़्तिहाद का जायज़ होना साबित हुआ. (मदारीक)
- (१७) जिन्हें आपने हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के साथ छोड़ा है.
- (१८) बछड़े को पूजा की दावत देकर. इस आयत में गुमराह करने की निखत सामरी की तरफ़ फ़रमाई गई क्योंकि वह उसका कारण हुआ. इससे साबित हुआ कि किसी चीज़ को कारण की तरफ़ निखत करना जायज़ है. इसी तरह कह सकते हैं कि माँ बाप ने पाला पोसा, दीनी पेशवाओं ने हिदायत की और बलियों ने हाज़त दूर फ़रमाई, बुजुर्गों ने बला दूर की. मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया है कि काम ज़ाहिर में नियत और कारण की तरफ़ जोड़ दिये जाते हैं जबकि हकीकत में उनका बनाने वाला अल्लाह तआला है और क़ुरआन शरीफ़ में ऐसी निखत बहुतायत से आई हैं. (ख़ाज़िन)
- (१९) चालीस दिन पूरे करके तौरात लेकर.
- (२०) उनके हाल पर.

वादा खिलाफ किया^(२३) (८६) बोले हमने आपका वादा अपने इख्तियार से खिलाफ न किया लेकिन हमसे कुछ बोझ उठवाए गए उस क्रौम के गहने के^(२४) तो हमने उन्हें^(२५) डाल दिया फिर इसी तरह सामरी ने डाला^(२६) (८७) तो उसने उनके लिये एक बछड़ा निकाला बेजान का धड़ गाय की तरह बोलता^(२७) तो बोले^(२८) यह है तुम्हारा मअवूद और मूसा का मअवूद, तो भूल गए^(२९) (८८) तो क्या नहीं देखते कि वह^(३०) उन्हें किसी बात का जवाब नहीं देता और उनके किसी बुरे भले का इख्तियार नहीं रखता^(३१) (८९)

पाँचवां रूकू

और बेशक उन से हासून ने इससे पहले कहा था कि ऐ मेरी क्रौम यूंही है कि तुम उसके कारण फ़ितने में पड़े^(१) और वेशक तुम्हारा रब, रहमान है तो मेरी पैरवी करो और मेरा हुक्म मानो^(२) बोले हम तो उस पर आसन मारे जम (पूजा के लिये बैठे) रहेंगे^(३) जब तक हमारे पास मूसा लौट के आए^(४) (९१) मूसा ने कहा ऐ हासून तुम्हें किस बात ने रोका था जब तुम ने इन्हें गुमराह होते देखा था^(५) (९२) कि मेरे पीछे आते^(६), तो क्या तुमने मेरा हुक्म न माना^(७) (९३) कहा ऐ मेरे माँजाए न मेरी दाढ़ी पकड़ो और न मेरे सर के बाल, मुझे यह डर हुआ कि तुम कहोगे तुमने वनी इस्राईल

عَصَبٌ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمْ مَوْعِدِي ۖ قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلِكِنَا وَلَكِنَّا حُبَلْنَا أَوْ سَازَا مِنْ زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَدْ تَلَّهَا وَكَذَلِكَ النِّفَى السَّامِرِيُّ ۖ فَأَخَذَهُ لَهُمْ عَجَلًا جَسَدًا لَهُ خَوَاسِرٌ فَقَالُوا هَذَا إِلَهُكُمْ وَإِلَهُ مُوسَى ه فَتَنِي ۖ أَفَلَا يَرَوْنَ أَكَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ صَدْرًا وَلَا نَفْعًا ۖ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِنْ قَبْلُ يَقَوْمُ إِنِّي تَنَبَّيْتُ بِهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ۖ قَالُوا لَنْ نَتَّبِعَكَ عَلَيْهِ عَكْفِينَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَى ۖ قَالَ يَلَهُوْنَ مَا مَعَكُمْ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ۖ أَكَّا نَتَّبِعِنَ ۖ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ۖ قَالَ يَبْنَؤُمْ لَا تَأْخُذْ بِلِحَيَّتِي وَلَا بِرَأْسِي إِنِّي خَشِيتُ أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتُ بَيْنَ بَنِي إِسْرَءِيلَ

مَنْ

- (२१) कि वह तीरात अता फ़रमाएगा जिसमें हिदायत है, तूर है. हजार सूरतें हैं, हर सूरत में हजार आयतें हैं.
(२२) और ऐसा गलत काम किया कि बछड़े को पूजने लगे. तुम्हारा वादा तो मुझसे यह था कि मेरे हुक्म पर चलोगे और मेरे दीन पर कायम रहोगे.
(२३) यानी फ़िरऔनी क्रौम के ज़ेवरों के जो वनी इस्राईल ने उन लोगों से उधार मांग लिये थे.
(२४) सामरी के हुक्म से आग में.
(२५) उन ज़ेवरों को जो उसके पास थे और उस श्राक का जो हज़रत ज़िब्रील अलैहिस्सलाम के घोड़े के कदम के नीचे से उसने हासिल की थी.
(२६) ये बछड़ा सामरी ने बनाया और इसमें कुछ छेद इस तरह रखे कि जब उनमें हवा दाख़िल हो तो उससे बछड़े की आवाज़ की तरह आवाज़ पैदा हो. एक कौल यह भी है कि वह हज़रत ज़िब्रील के घोड़े के कदम के नीचे की धूल डालने से ज़िन्दा हो कर बछड़े की तरह बोलता था.
(२७) सामरी और उसके अनुयायी.
(२८) यानी मूसा मअवूद को भूल गए और उसको यहाँ छोड़ कर उसकी खोज में तूर पर चले गए. कुछ मुफ़सिरो ने कहा कि “भूल गए” का कर्त्ता सामरी है और मानी यह हैं कि सामरी ने जो बछड़े को मअवूद बनाया वह अपने रब को भूल गया.
(२९) बछड़ा.
(३०) ख़िताब से भी मजबूर और नफ़ा नुक़सान से भी लाचार, वह किस तरह मअवूद हो सकता है.

सूरए तौहा - पाँचवां रूकू

- (१) तो उसे न पूजो.
(२) बछड़े की पूजा पर कायम रहेंगे और तुम्हारी बात न मानेंगे.
(३) इसपर हज़रत हासून अलैहिस्सलाम उनसे अलग हो गए और उनके साथ बारह हजार वो लोग जिन्होंने बछड़े की पूजा नहीं की थी. जब मूसा अलैहिस्सलाम वापस तशरीफ़ लाए तो आपने उनके शोर मचाने और बाजे बजाने की आवाज़ें सुनीं जो बछड़े के चारों तरफ़ नाचते थे. तब आपने अपने सत्तर साथियों से फ़रमाया यह फ़ितने की आवाज़ है. जब करीब पहुंचे और हज़रत हासून को देखा तो दीनी गैरत से जो आपकी प्रकृति थी, जोश में आकर उनके सर के बाल दाएं हाथ में और दाढ़ी बाएं में पकड़ी और.

में तफरका (फूट) डाल दिया और तुमने मेरी बात का इन्तिज़ार न किया^(१४) ॥९४॥ मूसा ने कहा अब तेरा क्या हाल है ऐ सामरी^(१५) ॥९५॥ वोला मैं ने वह देखा जो लोगों ने न देखा^(१६) तो एक मुट्ठी भरली फ़रिश्ते के निशान से फिर उसे डाल दिया^(१७) और मेरे जी को यही भला लगा^(१८) ॥९६॥ कहा तू चलता वन^(१९) कि दुनिया की ज़िन्दगी में तेरी सज़ा यह है कि^(२०) तू कहे छू न जा^(२१) और वेशक तेरे लिये एक वादे का वक़्त है^(२२) जो तुझसे खिलाफ़ न होगा और अपने उस मअवूद को देख जिसके सामने तू दिन भर आसन मारे (पूजा के लिये) रहा^(२३) कसम है हम ज़रूर इसे जिलाएंगे फिर रेज़ा रेज़ा करके दरिया में वहाएंगे^(२४) ॥९७॥ तुम्हारा मअवूद तो वही अल्लाह है जिसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं, हर चीज़ को उसका इल्म घेरे है^(२५) हम ऐसा ही तुम्हारे सामने अगली ख़बरें बयान फ़रमाते हैं और हमने तुम को अपने पास से एक ज़िक्र अता फ़रमाया^(२६) ॥९८॥ जो उससे मुंह फेरे^(२७) तो वेशक वह क़यामत के दिन एक बोझ उठाएगा^(२८) ॥९९॥ वो हमेशा उसमें रहेंगे^(३०) और वह क़यामत के दिन उनके हक़ में क्या ही बुरा बोझ होगा, ॥१००॥ जिस दिन सूर फूँका जाएगा^(३१) और हम उस दिन मुजरिमों को^(३२) उठाएंगे नीली आँखें^(३३) ॥१०१॥ आपस में चुपके

قَالَ

قَالَ

قَالَ

وَلَمْ تَرْوُبْ قَوْلِي ۖ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا مَرْيَمُ ۖ
قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً
مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلَتْ لِي
نَفْسِي ۖ قَالَ فَادْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَنْ
تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تَحْلِفَهُ ۖ
وَأَنْظُرِي إِلَى إِلَهِكِ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا
لَّنْ نَنْفِقَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۖ إِنَّمَا إِلَهُكُمُ
اللَّهُ الَّذِي لَكَ الْإِهْوَاءُ وَيَسْمَعُ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۖ
كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۖ وَقَدْ
أَنْبَأْنَاكَ مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ۖ مِّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ
يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وِزْرًا ۖ خَلِدِينَ فِيهِ وَسَاءَ لَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَمَةِ حِمْلًا ۖ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ
الْجَرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۖ يَخْتَطِفُونَ أَوْلَادَهُمْ

مَنْزِل

- (४) और मुझे ख़बर दे दंते यानी जब उन्होंने तुम्हारी बात न मानी थी तो तुम मुझ से क्यों नहीं आ मिले तुम्हारा उनसे जुदा होना भी उनके हक़ में एक ज़ज्र (चिंतावनी) होता.
- (५) यह सुनकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सामरी की तरफ़ मुतवज्जह हुए, चुनांचे.
- (६) तूने ऐसा क्यों किया, इसकी वज़ह बता.
- (७) यानी मैं ने हज़रत जिब्रिल को देखा और उनके पहचान लिया. वह ज़िन्दगी के घोड़े पर सवार था. मेरे दिल में यह बात आई कि मैं उनके घोड़े के कदम की धूल ले लूँ.
- (८) उस बछड़े में जिसे बनाया था.
- (९) और यह काम मैं ने अपने ही मन के बहकावे पर किया, कोई दूसरा इसका कारण न था. इसपर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ...
- (१०) दूर हो जा.
- (११) जब तुझ से कोई मिलना चाहे जो तेरे हाल से वाकिफ़ न हो तो उस से ---
- (१२) यानी सबसे अलग रहना, न तुझ से कोई छुए, न तू किसी से छुए, लोगों से मिलना उसके लिये पूरे तौर पर वर्जित करार दिया गया और मुलाकात, बात चीत, क्रय विक्रय, लेन देन, हर एक के साथ हराम कर दी गई और अगर संयोग से कोई उससे छू जाता तो वह और छूने वाला दोनों सज़ा बुख़ार में जकड़ जाते. वह जंगल में यही शोर मचाता फिरता कि कोई छू न जाना और वह शियाँ और दरिन्दों में ज़िन्दगी के दिन अत्यन्त बुरी हालत में गुज़ारता था.
- (१३) यानी अज़ाब के वादे का, अग्निरेत में इस दुनियावी अज़ाब के बाद तेरे शिर्क और फ़साद फैलाने पर.
- (१४) और उसकी इबादत पर कायम रहा.
- (१५) चुनांचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐसा किया और जब आप सामरी के उस फ़साद को मिटा चुके तो बनी इस्राईल को सम्बोधित करके सच्चे दीन का बयान फ़रमाया और इरशाद किया.
- (१६) यानी कुरआन शरीफ़ कि वह सर्वोत्तम ज़िक्र और जो इसकी तरफ़ ध्यान लगाए उसके लिये इस बुजुर्गी वाली किताब में मोक्ष और बरकतें हैं और इस पवित्र ग्रन्थ में पिछली उम्मतों के ऐसे हालात का बयान है जो ग़ौर करने और सबक़ पकड़ने के लायक़ हैं.
- (१७) यानी कुरआन से और उस पर ईमान न लाए और उसकी हिदायतों से फ़ायदा न उठाए.
- (१८) गुनाहों का भारी बोझ.
- (१९) यानी उस गुनाह के अज़ाब में.
- (२०) लोगों को महशर में हाज़िर करने के लिये. इसमें मुराद सूर का दूसरी बार फूँका जाना है.
- (२१) यानी काफ़िरी के इस हाल में.

لَيْسْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ۚ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ ۚ اِذْ يَقُولُ
 اَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً اِنْ لَيْسْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ۚ وَيَسْأَلُونَكَ
 عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۖ فَيَذَرُهَا
 قَاعًا صَفْصَفًا ۚ لَا تَرَاهُ فِيهَا عِوَجًا وَّلَا اَمْتًا ۖ
 يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ۚ وَخَشَعَتِ
 الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ۖ
 يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اُذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ
 وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيهِمْ وَمَا
 خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ اَمْرٍ ۚ وَعَلَّتِ الْوُجُوهُ
 لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۚ وَمَنْ
 يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَفُ
 ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ۚ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا
 وَصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ

चुपके कहते होंगे कि तुम दुनिया में न रहे मगर दस रात^(२३) (१०३) हम खूब जानते हैं जो वो^(२४) कहेंगे जब कि उनमें सबसे बेहतर राय वाला कहेगा कि तुम सिर्फ एक ही दिन रहे थे^(२५) (१०४)

छटा रूकू

और तुम से पहाड़ों को पूछते हैं^(१) तुम फ़रमाओ इन्हें मेरा रब रेज़ा रेज़ा करके उड़ा देगा (१०५) तो ज़मीन को पटपर (घटियल मैदान) हमवार करके छोड़ेगा (१०६) कि तू इसमें नीचा ऊँचा कुछ न देखे (१०७) उस दिन पुकारने वाले के पीछे दौड़ेंगे^(२) उसमें कजी न होगी^(३) और सब आवाज़ें रहमान के हुज़ूर^(४) पस्त होकर रह जाएंगी तो तू न सुनेगा मगर बहुत आहिस्ता आवाज़^(५) (१०८) उस दिन किसी की शफ़ाअत काम न देगी मगर उसकी जिसे रहमान ने^(६) इज़्ज (आज़ा) दे दिया है और उसकी बात पसन्द फ़रमाई (१०९) वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे^(७) और उनका इल्म उसे नहीं घेर सकता^(८) (११०) और सब मुंह झुक जाएंगे उस ज़िन्दा क़ायम रहने वाले के हुज़ूर^(९) और वेशक नामुराद रहा जिसने जुल्म का वोझ लिया^(१०) (१११) और जो कुछ नेक काम करे और हो मुसलमान तो उसे न ज़ियादती का ख़ौफ़ होगा न नुक़सान का^(११) (११२) और यूँही हमने इसे अरबी क़ुरआन उतारा और इस में तरह तरह से अज़ाब के

(२२) और काले मुंह.

(२३) आख़िरत की मुसीबतें और वहाँ की ख़ौफ़नाक मंज़िलें देखकर उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी को अवधि बहुत कम मालूम होगी.

(२४) आपस में एक दूसरे से.

(२५) कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि वो उस दिन की सज़्ज़ियाँ देखकर अपने दुनिया में रहने की अवधि भूल जाएंगे.

सूरए ताहा - छटा रूकू

(१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि सक्कीफ़ कबीले के एक आदमी ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लेम से पूछा कि क़यामत के दिन पहाड़ों का क्या हाल होगा . इसपर ये आयत उतरी.

(२) जो उन्हें क़यामत के दिन हिसाब के मैदान की तरफ़ बुलाएगा और पुकारेगा कि चलो रहमान के समक्ष पेश होने को और यह पुकारने वाले हज़रत इसाफ़ील होंगे.

(३) और उस बुलाने से कोई मुंह नहीं मोड़ पाएगा.

(४) हैबत और ज़लाल से.

(५) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इसमें सिर्फ़ होंटों की हरकत होगी.

(६) शफ़ाअत करने का.

(७) यानी सारा गुज़रा हुआ और सारा आने वाला और दुनिया और आख़िरत के सारे काम. यानी अल्लाह का इल्म बन्दों को ज़ात और सिफ़ाअत और समस्त हालात को घेरे हुए है.

(८) यानी सारी सृष्टि का इल्म अल्लाह की ज़ात का इहाता नहीं कर सकता. उसकी ज़ात की जानकारी सृष्टि के इल्म की पहुंच से बाहर है. वह अपने नामों और गुणों और क्षमताओं और हिक़मत की निशानियों से पहचाना जाता है. कुछ मुफ़स्सिरों ने आयत के ये मानी बयान किये हैं कि ख़ल्क के उलूम ख़ालिक से सम्बन्धित जानकारी का इहाता नहीं कर सकते.

(९) ओर हर एक इज़्ज और नियाज़ की शान के साथ हाज़िर होगा, किसी में सरकशी न रहेगी. अल्लाह तआला के क़हर व हुकूमत का सम्पूर्ण इज़हार होगा.

वादे दिये^(१३) कि कहीं उन्हें डर हो या उनके दिल में कुछ सोच पैदा करे^(१३) (११३) तो सब से बलन्द है अल्लाह सच्चा वादशाह,^(१४) और कुरआन में जल्दी न करो जब तक इस की वही (देववाणी) तुम्हें पूरी न होले^(१५) और अर्ज करो कि ऐ मेरे रब मुझे इल्म ज्यादा दे^(११४) और बेशक हमने आदम को इससे पहले एक ताकीदी हुक्म दिया था^(१६) तो वह भूल गया और हमने उसका इरादा न पाया^(११५)

सातवाँ रूकू

और जब हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस; उसने न माना^(११६) तो हमने फ़रमाया ऐ आदम बेशक यह तेरा और तेरी बीबी का दुश्मन है^(१) तो ऐसा न हो कि वो तुम दोनों को जन्नत से निकाल दे फिर तू मशक्कत में पड़े^(२) (११७) बेशक तेरे लिये जन्नत में यह है कि न तू भूखा हो न नंगा हो^(११८) और यह कि तुझे न इसमें प्यास लगे न धूप^(३) (११९) तो शैतान ने उसे वसवसा दिया बोला ऐ आदम क्या मैं तुम्हें बता दूँ हमेशा जीने का पेड़^(४) और वह बादशाही कि पुरानी न पड़े^(५) (१२०) तो उन दोनों ने उसमें से खा लिया अब उनपर उनकी शर्म की चीज़ें ज़ाहिर हुई^(६) और जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे^(७) और आदम से अपने रब के हुक्म में लगज़िश वाक़े हुई^(१२१) तो जो मतलब चाहा था उसकी राह न पाई^(८) फिर उसके रब ने चुन लिया तो उस पर अपनी रहमत से

طه १

३४५

قَالَ الْكَافِرُ

أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۖ فَتَعْلَىٰ اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ
وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَىٰ إِلَيْكَ
وَحْيُهُ ۚ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۖ وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ
آدَمَ مِنْ قَبْلِ قَسَمِي وَلَمْ نَجِدْ لَهُ عَزْمًا ۖ وَ
إِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا
إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۖ فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَذَا عَدُوٌّ لَكَ
وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكَ مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰ ۖ
إِنَّ لَكَ الْأَثَرِجُومَ فِيهَا وَلَا تَعْرِى ۖ وَأَنَّكَ
لَا تَطْمَؤُنَّ فِيهَا وَلَا تَضْحَىٰ ۖ فَوَسَّوَسَ إِلَيْهِ
الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةٍ
الْحَدِيدِ وَمُلْكٍ لَا يَبُلَىٰ ۖ فَاكْلا مِنْهَا فَبَدَتْ
لَهُمَا سَوَاتُهُمَا وَطَفِيفًا يُخْصِفْنَ عَلَيْهُمَا مِنْ
وَرَقِ الْجَنَّةِ ۖ وَعَصَىٰ آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَىٰ ۖ ثُمَّ

مَنْ

- (१०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने इसकी तफ़सीर में फ़रमाया जिसने शिर्क किया वह टोटे में रहा. बेशक शिर्क सबसे बुरा जुर्म है और जो इस जुर्म में जकड़ा हुआ हिसाब के मैदान में आए उससे बढ़कर नामुराद कौन है.
- (११) इस आयत से मालूम हुआ कि फ़रमाँबरदारी और नेक कर्म सब की कुबूलियत ईमान के साथ जुड़ी है कि ईमान हो तो सब नेकियाँ फ़ारआमद हैं और ईमान न हो, सारे अमल बेकार.
- (१२) फ़ज़्रों के छोड़ने और मना की हुई बातों की अपनाने पर.
- (१३) जिससे उन्हें नेकियों की राबत और बुराइयों से नफ़रत हो और वो नसीहत हासिल करें.
- (१४) जो अस्ल मालिक है और तमाम वादशाह उसके मोहताज़.
- (१५) जब हज़रत जिब्रील कुरआन शरीफ़ लेकर उतरते थे तो हुज़ूर सल्लाहो अलैहे वसल्लम उनके साथ पढ़ते थे और जल्दी करते थे ताकि ख़ूब याद हो जाए. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि आप मशक्कत न उठाएं और सूरए क़यामह में अल्लाह तआला ने ख़ुद ज़िम्मा लेकर आपकी और ज़्यादा तसल्ली फ़रमा दी.
- (१६) कि जिस दरख़्त के पास जाने से मना किया गया है उसके पास न जाएं.

सूरए ताँहा - सातवाँ रूकू

- (१) इस से मालूम हुआ कि बुजुर्गी और प्रतिष्ठा वाले को तस्लीम न करना और उसका आदर करने से मुंह फेरना हसद, ईर्ष्या और दुश्मनी की दलील है. इस आयत में शैतान का हज़रत आदम को सज्दा न करना आपके साथ उसकी दुश्मनी की दलील क़रार दिया गया.
- (२) और अपनी ग़िज़ा, आहार और ख़ुराक के लिये ज़मीन जोतने, खेती करने, दाना निकालने, पीसने, पकाने की मेहनत में जकड़ा जाए और चूँकि औरत का नफ़्का यानी गुज़ारा भत्ता मर्द के जिम्मे है इसलिये उसकी सारी मेहनत की निस्वत सिर्फ़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तरफ़ फ़रमाई गई.

طه

۲۲۴

قال الكوفي

اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَنُتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَاهُ ۝ قَالَ اهْبِطَا
 مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَمَا يَأْتِيَنَّكُمْ
 مِّنِّي هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْغَى ۝
 وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً
 ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَعْمًى ۝ قَالَ رَبِّ لِمَ
 حَشَرْتَنِي أَعْمًى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ۝ قَالَ كَذَلِكَ
 أَتَىكَ آيَاتُنَا فَنَسِيْنَهَا ۚ وَكَذَلِكَ الْيَوْمَ تُنْصَى ۝
 وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمَرْ بِآيَاتِ رَبِّهِ ۚ
 وَلِلْعَذَابِ الْآخِرَةِ أَشْدُّ وَأَبْقَى ۝ أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ
 كُمُ أَهْلَكُنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْفُرُوقِ يَشْكُونُ فِي
 مَسْكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَى ۝
 وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَ
 أَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ

مُتَمِّتٌ

रूजू फ़रमाई और अपने खास कुर्ब (समीपता) की राह दिखाई (१२२) फ़रमाया तुम दोनों मिलकर जन्नत से उतरो तुम में एक दूसरे का दुश्मन है फिर अगर तुम सब को मेरी तरफ़ से हिदायत आए (१) तो जो मेरी हिदायत का पैरो हुआ वह न वहके (१०) न बदवस्त हो (११) (१२३) और जिसने मेरी याद से मुंह फेरा (१२) तो बेशक उसके लिये तंग ज़िन्दगी है, (१३) और हम उसे क़यामत के दिन अंधा उठाएंगे (१२४) कहेगा ऐ रव मेरे मुझे तूने क्यों अंधा उठाया मैं तो अंखियारा था (१४) (१२५) फ़रमाएगा यूँही तेरे पास हमारी आयतें आई थीं (१५) तूने उन्हें भुला दिया और ऐसे ही आज तेरी कोई ख़बर ने लेगा (१६) (१२६) और हम ऐसा ही बदला देते हैं जो हद से बड़े और अपने रव की आयतों पर ईमान न लाए और बेशक आख़िरत का अज़ाव सबसे सख़्त तर और सब से देरपा है (१२७) तो क्या उन्हें इससे राह न मिली कि हमने उनसे पहले कितनी संगतें (क्रौमें) हलाक कर दीं (१७) कि यह उनके बसने की जगह चलते फिरते हैं (१८) बेशक इसमें निशानियाँ हैं अक्ल वालों को (१९) (१२८)

आठवाँ सूक़

और अगर तुम्हारे रव की एक बात न गुज़र चुकी होती (१) तो ज़रूर अज़ाव उन्हें (२) लिपट जाता और अगर न होता एक वादा ठहराया हुआ (३) (१२९) तो उनकी बातों पर सब करो और अपने रव को सराहते हुए उसकी पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले (४) और उसके डूबने से पहले (५) और

- (३) हर तरह का ऐशो राहत जन्नत में मौजूद है . मेहनत और परिश्रम से बिल्कुल अमन है.
- (४) जिसको खा कर खाने वाले को हमशा की ज़िन्दगी हासिल होती है.
- (५) और उसमें पतन न आए.
- (६) यानी जन्नती लिबास उनके शरीर से उतर गए.
- (७) गुप्तांग छुपाने और बदन ढकने के लिये.
- (८) और उस दरज़त के ख़ान से हमशा की ज़िन्दगी न मिली. फिर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ताँवह और इस्तिफ़ाफ़र में लग गए और अल्लाह की बारगाह में सैयदे आत्म सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बसीले या माध्यम से दुआ का.
- (९) यानी फ़िताव और रसूल.
- (१०) यानी दुनिया में.
- (११) आख़िरत में, क्योंकि आख़िरत का दुर्भाग्य दुनिया में सच्चाई के रास्ते से बहकने का नतीजा है. जो कोई अल्लाह की फ़िताव और सच्चे ग़मूल का अनुकरण करे और उनके आदेशानुसार चले, वह दुनिया में बहकने से और आख़िरत में उसके अज़ाव और ख़ालि से छुटकारा पाएगा.
- (१२) और मेरी हिदायत से मुंह फेरा.
- (१३) दुनिया में क़र्र में या आख़िरत में या दीन में या इन सब में. दुनिया की तंग ज़िन्दगी यह है कि हिदायत का अनुकरण न करने से बुरे कर्म और हारम में पड़ या क़नाअत से मेहरूम होकर लालच में गिरफ़्तार हो जाए और माल मत्ता की बहुतायत से भी उसका मन की शान्ति और चैत प्राप्त न हो. हर चीज़ की तलब में आबारा हो और लालच के दुष्ट से कि यह नहीं, वह नहीं, हाल अंधरा और समय ख़राब रहे. और अल्लाह पर भरोसा करने वाले मूमिन की तरह उसको सुकून और शान्ति हासिल हो न हो जिसको पाक ज़िन्दगी कहते हैं. और क़र्र की तंग ज़िन्दगी यह है कि हदीस शरीफ़ में आया कि काफ़िर पर निदानवे अज़गर उसकी क़र्र में मुसल्लत किये जाते हैं. हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया. यह आयत असबद वित अब्दुल उज़्ज़ा मय़ज़ुमी के वार में उतरी और क़र्र की ज़िन्दगी से मुराद क़र्र का इस सज़्ज़ी से दवाना है जिस से एक तरफ़ की पसलियाँ दूसरी तरफ़ आ जाती हैं और आख़िरत में तंग ज़िन्दगी ज़हन्नम के अज़ाव हैं जहाँ ज़क़ूम और ख़ोलना हुआ पानी

रात की घड़ियों में उसकी पाकी बोलो^(६) और दिन के किनारों पर^(७) इस उम्मीद पर कि तुम राजी हो^(८) (१३०) और ऐ सुत्रे वाले अपनी आँखें न फैला उसकी तरफ जो हम ने काफ़िरो के जोड़ों को बरतने के लिये दी है जितनी दुनिया की ताज़गी^(९) कि हम उन्हें इसके कारण फ़ितने में डालें^(१०) और तेरे रब का रिज़क^(११) सब से अच्छा और सबसे देरपा है^(१२) और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दे और खुद इस पर साबित रह, कुछ हम तुझसे रोज़ी नहीं मांगते^(१३) हम तुझे रोज़ी देंगे^(१४) और अंजाम का भला परहेज़गारी के लिये^(१५) और काफ़िर बोले थे^(१६) अपने रब के पास से कोई निशानी क्यों नहीं लाते^(१७) और क्या उन्हें इसका वयान न आया जो अगले सहीफ़ों (धर्मग्रन्थों) में है^(१८) (१३३) और अगर हम उन्हें किसी अज़ाब से हलाक कर देते रसूल के आन से पहले तो^(१९) ज़रूर कहते ऐ रब हमारे तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों पर चलते इससे पहले कि ज़लील व ख़ुस्वा होते^(२०) (१३४) तुम फ़रमाओ सब राह देख रहे हैं^(२१) तो तुम भी राह देखो तो अव जान जाओगे^(२२) कि कौन हैं सीधी राह वाले और किसने हिदायत पाई^(२३)

بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا
وَمِنْ أَنَاثَى الْبَيْلِ فَسَيْمِ وَأَطْرَافِ النَّهَارِ لَعَلَّكَ
تَرْحَمُهُ ۖ وَلَا تَمْدَنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ
أَزْوَاجًا مِنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ
فِيهِ ۖ وَوَرِّقْ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۖ وَأَمْرٌ أَهْلَكَ
بِالصَّلَاةِ وَأَصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا سَعْلَكَ رِزْقًا نَحْنُ
نَرْزُقُكَ ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا
يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِنْ رَبِّهِ ۖ أَوَلَمْ تَأْتِهِمْ بَيِّنَةٌ مَا فِي
الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ۖ وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِنْ
وَلِيِّهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْ كُنَّا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا
فَنَنْبِئَ بِإِيلَتِكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَذِلَّ وَنُخْزَىٰ ۖ
قُلْ كُلٌّ مُتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ
أَصْحَبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ۖ

مَنْ

और जहन्नमियों के खून और उनके पीप खाने पीने को दिये जाएंगे और दिन में तंग ज़िन्दगी यह है कि नेकी की राहें तंग हो जाएं और आदमी हलाल कामों में पड़ जाए। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हूमा ने फ़रमाया कि बन्दे को थोड़ा मिले या बहुत, अगर ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं तो उसमें कुछ भलाई नहीं और यह तंग ज़िन्दगी है। (तफ़सीर कबीर, ख़ाज़िन और मदरिफ़ सौगह)

(१४) दुनिया में।

(१५) तो उन पर ईमान न लाया और —

(१६) जहन्नम की आग में जला करेगा।

(१७) जो रसूलों को नहीं मानती थीं।

(१८) यानी कु़रैश अपने सफ़रों में उनके इलाक़ों पर गुज़रते हैं और उनकी हलाकत के निशान देखते हैं।

(१९) जो सबक पकड़ें और समझें कि नबियों को झुटलाने और उनके विरोध का अंजाम बुरा है

सूरए ताँहा - आठवाँ रूकू

(१) यानी यह कि उम्मत मुहम्मदिया के अज़ाब में विलम्ब किया जाएगा।

(२) दुनिया ही में।

(३) यानी क़यामत के दिन।

(४) इससे फ़ज्र की नमाज़ मुराद है।

(५) इस से ज़ाहर और अख की नमाज़ें मुराद हैं जो दिन के आखिरी निस्फ़ यानी उत्तरार्ध में सूरज के ज़वाल और गुरुब के बीच स्थित हैं।

(६) यानी मगरिब और इशा की नमाज़ें पढ़ो।

(७) फ़ज्र और मगरिब की नमाज़ें। इनका ताकीद के लिये दोहराया गया और कुछ मुफ़स्सिर “इबने से पहले” से अख की नमाज़ और “दिन के किनारों पर” से ज़ाहर मुराद लेते हैं। उनकी तौजीह यह है कि ज़ाहर की नमाज़ ज़वाल के बाद है और उस वक़्त दिन के पहले आधे हिस्से और दूसरे आधे हिस्से के किनारे मिलते हैं, पहले आधे हिस्से का अंत है और दूसरे आधे की शुरुआत। (मदरिफ़, ख़ाज़िन)

(८) अब्बल्लाह के फ़ज्र और अता और उसके इनआम और इकराम से कि तुम्हें उम्मत के हक़ में शफीअ बनावर तुम्हारी शफ़ाअत कुन्तल फ़रमाए और तुम्हें राज़ी कर जैसा कि उसने फ़रमाया है “व लसौफ़ा युअतीका रबुका फ़तरदा” यानी और वेशक़ करीब है

कि तुम्हारा सब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे। (सुरह दुहा १३:५)

(९) यानी यहूदी और ईसाई काफ़िरों वगैरह को जो दुनियावी सामान दिया है, मूमिन को चाहिये कि उसको अच्छरज की बज़र से न देखे। हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि नाफ़रमानों की शाना शौकत न देखो लेकिन यह देखो कि गुनाह और बुराई की ज़िल्लत किस तरह उनकी गर्दनो से नमूदार है।

(१०) इस तरह कि जितनी उनपर नेअमत ज्यादा हो उतनी ही उनकी सरकशी और उनकी ज़िदे बढ़ें और बां आख़िरत की सज़ा के मुस्तहिक हों।

(११) यानी जन्नत और उसकी नेअमते।

(१२) और इसकी ज़िम्मेदारी नहीं डालते कि हमारी ख़ल्क को रोज़ी दे या अपने नफ़्स और अपने कुटुम्ब की रोज़ी का ज़िम्मेदार हो, बल्कि -----

(१३) और उन्हें भी, रोज़ी के ग़म में न पड़, अपने दिल को आख़िरत की फ़िक्र के लिये आज़ाद रख कि जो अल्लाह के काम में होता है अल्लाह उसके काम बनाता है।

(१४) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।

(१५) जो उनकी नबुव्वत की सच्चाई पर दलील हो जबकि बहुत सी आयतें आ चुकी थीं और चमत्कारों का लगातार जुहूर हो रहा था। फिर काफ़िर उन सबसे अन्ध बने और उन्होंने हुज़ूर की निस्वत यह कह दिया कि आप अपने सब के पास से कोई निशानी क्यों नहीं लाते। इसके जवाब में अल्लाह तआला फ़रमाता है।

(१६) यानी क़ुरआन और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शूशरबरी और आपकी नबुव्वत और तशरीफ़ लाने का ज़िक्र, ये कैसी बड़ी निशानियाँ हैं। इनके हंते हुए और किसी निशानी की तलब करने का क्या मौक़ा है।

(१७) क़यामत के दिन।

(१८) हम भी और तुम भी। मुथिक्को ने कहा था कि हम ज़माने की घटनाओं और इन्क़लाब का इन्तिज़ार करने हैं कि कब मुसलमानों पर आएँ और उनकी कहानी का अन्त हो। इसपर यह आयत उतरी और बताया गया कि तुम मुसलमानों की तबाही और बर्बादी की राह देख रहे हो और मुसलमान तुम्हारे पकड़े जाते और तुम पर अज़ाब आने का इन्तिज़ार कर रहे हैं।

(१९) जब ख़ुदा का हुक्म आएगा और क़यामत कायम होगी।

पारा सोलाह समाप्त

सत्तरहवाँ पारा - इक्तरबा

२१-सूरए अंबिया

सूरए अंबिया मक्का में उतरी, इसमें ११२ आयतें, सात रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ^(१) लोगों का हिसाब नज़दीक और वो ग़फ़लत में मुंह फेरे हैं ^(२) जब उनके रव के पास से उन्हें कोई नई नसीहत आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए ^(३) उनके दिल खेल में पड़े हैं ^(४) और ज़ालिमों ने आपस में छुपवाँ सलाह की ^(५) कि ये कौन हैं एक तुम ही जैसे आदमी तो हैं ^(६) क्या जादू के पास जाते हो देख भाल कर ^(७) नबी ने फ़रमाया मेरा रव जानता है आसमानों और ज़मीन में हर बात को और वही है सुनता जानता ^(८) वल्कि बोले परेशान ख्वाबें हैं ^(९) वल्कि उनकी घड़त (घड़ी हुई चीज़) है ^(१०) वल्कि यह शायर हैं ^(११) तो हमारे पास कोई निशानी लाएं जैसे अगले भेजे गए थे ^(१२) इनसे पहले कोई बस्ती ईमान न लाई जिसे हमने हलाक किया, तो क्या ये ईमान लाएंगे ^(१३) और हमने तुमसे पहले न भेजे मगर मर्द जिन्हें हम वही (देववाणी) करते ^(१४) तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म न हो ^(१५)

الْأَنْبِيَاءُ

२२१

اِقْتَرَبَ



२१ - सूरए अंबिया - पहला रूकू

(१) सूरए अंबिया मक्का में उतरी. इसमें सात रूकू, एक सौ बारह आयतें, एक हज़ार एक सौ छियासी कलिमें और चार हज़ार आठ सौ नब्बे अक्षर हैं.

(२) याती कर्मों के हिसाब का समय, क़यामत का दिन करीब आ गया और लोग अभी तक ग़फ़लत में हैं. यह आयत दोबारा उठाए जाने का इल्का करने वालों के बारे में उतरी जो मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को नहीं मानते थे और क़यामत के दिन को गुज़रे हुए ज़माने के रीतिबारे से करीब फ़रमाया गया, क्योंकि जितने दिन गुज़रते हैं आने वाला दिन करीब होता जाता है.

(३) न उससे नसीहत पकड़ें, न सबक हासिल करें, न आने वाले वक़्त के लिये कुछ तैयारी करें.

(४) अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हैं.

(५) और उसके छुपाने में बहुत हद से बढ़े मगर अल्लाह तआला ने उनका राज़ ख़ोल दिया और बयान फ़रमा दिया कि वो रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में यह कहते हैं.

(६) यह क़ुर्र का एक उसूल था कि जब यह बात लोगों के दिमाग़ में बिटा दी जाएगी कि वह तुम जैसे वशर हैं तो फिर कोई उन पर ईमान न लाएगा. हज़ूर के ज़माने के काफ़िरों ने यह बात कही और इस को छुपाया, लेकिन आजकल के कुछ बेबाक यह कलिमा ग़ैलान के साथ कहते हैं और नहीं शरमाते. काफ़िर यह बात कहते वक़्त जानते थे कि उनकी बात किसी के दिल में ज़मीनी नहीं क्योंकि लोग रात दिन चमत्कार देखते हैं, वो किस तरह यकीन करेंगे कि हज़ूर हमारी तरह वशर हैं. इसलिये उन्होंने चमत्कारों को जादू बताया और कहा —

(७) उससे कोई चीज़ छुप नहीं सकती चाहे कितने ही पदों और राज़ में रखी गई हो, उनका राज़ भी उस में ज़ाहिर फ़रमा दिया गया. इसके बाद क़ुरआन शरीफ़ से उन्हें सख़्त परेशानी और हैरानी लाहक़ थी कि इसका किस तरह इल्का करें. वह ऐसा खुला चमत्कार है जिसने सारे मुल्क के प्रतिष्ठित माहिरों को आश्चर्य चकित और बेवस कर दिया है और वह इसकी दो चार आयतों जैसा कलाम बना कर नहीं ला सकें. इस परेशानी में उन्होंने क़ुरआन शरीफ़ के बारे में विभिन्न बातें कही जिन का बयान अगली आयत में है.

(८) उनको नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम वही या अल्लाह का कलाम समझ गए हैं. काफ़िरों ने यह कह कर सोचा कि यह बात ठीक नहीं बैठेगी, तो अब उस को छोड़ कर कहने लगे.

और हमने उन्हें^(१५) खाली बदन न बनाया कि खाना न खाएं^(१६) और न वो दुनिया में हमेशा रहें^(१७) फिर हमने अपना वादा उन्हें सच्चा कर दिखाया^(१८) तो उन्हें निजात दी और जिन को चाही^(१९) और हद से बढ़ने वालों को^(२०) हलाक कर दिया^(२१) बेशक हमने तुम्हारी तरफ^(२२) एक किताब उतारी जिसमें तुम्हारी तामबरी (प्रसिद्धि) है^(२३) तो क्या तुम्हें अक्ल नहीं^(२४) (१०)

दूसरा सूकू

और कितनी ही वस्तियां हमने तबाह कर दीं कि वो सितम करने वाली थीं^(१) और उनके वाद और कौम पैदा की^(२) तो जब उन्होंने^(३) हमारा अजाब पाया जभी वो उससे भागने लगे^(४) (१२) न भागो और लौट के जाओ उन आसयाशों की तरफ जो तुम को दी गई थीं और अपने मकानों की तरफ शायद तुम से पूछना हो^(५) (१३) बोले हाय खराबी हमारी, बेशक हम जालिम थे^(६) (१४) ता वो यही पुकारते रहे यहाँ तक कि हमने उन्हें कर दिया काटे हुए^(७) वुझे हुए^(८) और हमने आसमान और जमीन और जो कुछ उनके बीच है वेकार न बनाए^(९) (१६) अगर हम कोई बहलावों इख्तियार करना चाहते^(१०) तो अपने पास से इख्तियार करते अगर हमें करना होता^(११) (१७) वल्कि हम हक को

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا لَا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوا خَالِدِينَ ۝ ثُمَّ صَدَقْنَاهُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجَيْنَاهُمْ وَمَنْ نَشَاءُ وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِينَ ۝ كَذَلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝ فَلَمَّا أَحْسَسُوا بِأَسَاسِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَرْكُضُونَ ۝ لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوا إِلَى مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسْكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَسْأَلُونَ ۝ قَالُوا بَلْ يَنْبَغِي إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ فَمَا زَالَتْ تِلْكَ دَعْوَاهُمْ حَتَّى جَعَلْنَاهُمْ حَصِيدًا خَامِدِينَ ۝ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَعِينِينَ ۝ وَكَوْزِدْنَا أَنْ نَتَّخِذَ لَهُمْ آلًا تَخَذُ لَهُ مِنْ لَدُنَّا ۚ إِنْ كُنَّا فَعَالِينَ ۝ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى

مَنْزِلٍ

(९) यह कह कर झ्रवाल हुआ कि लोग कहेंगे कि अगर यह कलाम हज़रत का बनाया हुआ है और तुम उन्हें अपने जैसा बशर कहते हो तो तुम ऐसा कलाम क्यों नहीं बना सकते. यह सोच कर इस बात को भी छोड़ा और कहने लग.

(१०) और यह कलाम शायरी है. इसी तरह की बातें बनावते रहे, किसी एक बात पर कायम न रह सके और झूटे लोगों का यही हाल होता है. जब उन्होंने समझा कि इन बातों में से कोई बात भी चलने वाली नहीं है तो कहने लगे.

(११) इसके रद और जवाब में अल्लाह तआला फरमाता है.

(१२) मानी यह है कि उनसे पहले लोगों के पास जो निशानियाँ आई, तो वो उन पर ईमान न लाए और उन्हें झुटलाने लगे और इस कारण हलाक कर दिये गए. तो क्या यह लोग निशानी देख कर ईमान ले आएंगे जबकि इनकी सरकशी और हठधर्मी उनसे बढ़ी हुई है.

(१३) यह उनके पिछले कलाम का रद है कि नबियों का इन्सान की सूरत में तशरीफ लाना नबूवत के विरुद्ध नहीं है. हमेशा ऐसा ही होता रहा है.

(१४) क्योंकि न जानने वालों को इससे चारा ही नहीं कि जानने वाले से पूछें और जिहालत की बीमारी का इलाज यही है कि आलिम से सवाल करें और उसके हुक्म पर चले. इस आयत से तक्लीद के वाजिब होने का सुबूत मिलता है. यहाँ उन्हें इस वालों से पूछने का हुक्म दिया गया है कि उन से पूछो कि अल्लाह के रसूल इन्सान की शक्त में आए थे कि नहीं. इससे तुम्हारी आशंका और संदेह का अंत हो जाएगा.

(१५) यानी नबियों को.

(१६) तो उत्तर ग्राने पीने का संतिराज करना और कहना - यह रसूल नहीं है जो हमारी तरह ग्राता पीता है - केवल भ्रम और बेजा है. सारे नबियों का यही हाल था, वो सब ग्राने भी थे और पीने भी थे.

(१७) उनके दुश्मनों को हलाक करने और उन्हें छुटकारा देने का.

(१८) यानी ईमानदारों को, जिन्होंने नबियों की तरदीक की.

(१९) जो नबियों को झुटलाने थे.

(२०) ये कुरैश वालों ---

(२१) अगर तुम इसपर अमल करो या ये मानी है कि वह किताब तुम्हारी जवान में है, या यह कि तुम्हारे लिये नसीहत है या यह कि उसमें तुम्हारे दीन और दुनिया के कामों और ज़रूरतों का वयात है.

(२२) कि ईमान लाकर इस इज़्ज़त और बज़ुर्गी और सौभाग्य को हासिल करो.

वातिल पर फैंक मारते हैं तो वह उसका भेजा निकाल देता है तो जभी वह मिटकर रह जाता है^(१०) और तुम्हारी खराबी है^(११) उन बातों से जो बनाते हो^(१२) ॥१८॥ और उसी के हैं जितने आसमानों और ज़मीन में हैं^(१३) और उसके पास वाले^(१४) उसकी इबादत से घमण्ड नहीं करते और न थकें^(१५) रात दिन उसकी पाकी बोलते हैं और सुस्ती नहीं करते^(१६) ॥२०॥ क्या उन्होंने ज़मीन में से कुछ ऐसे खुदा बना लिये हैं^(१७) कि वो कुछ पैदा करते हैं^(१८) ॥२१॥ अगर आसमान व ज़मीन में अल्लाह के सिवा और खुदा होते तो ज़रूर वो^(१९) तवाह हो जाते^(२०) तो पाकी है अल्लाह अर्श के मालिक को उन बातों से जो ये बनाते हैं^(२१) ॥२२॥ उससे नहीं पूछा जाता जो वह करे^(२२) और इन सबसे सवाल होगा^(२३) ॥२३॥ क्या अल्लाह के सिवा और खुदा बना रखे हैं तुम फ़रमाओ^(२४) अपनी दलील लाओ^(२५) ये कुरआन मेरे साथ वालों का ज़िक्र है^(२६) और मुझसे अगलों का तज़क़िरा (वर्णन)^(२७) बल्कि उनमें अकसर हक़ को नहीं जानते तो वो मुंह फेरने वाले हैं^(२८) ॥२४॥ और हमने तुम से पहले कोई रसूल न भेजा मगर यह कि हम उसकी तरफ़ वही (देववाणी) फ़रमाते कि मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं तो मुझी को पूजो^(२९) ॥२५॥ और बोले रहमान ने बेटा इख्तियार किया^(३०) पाक है

الْبَاطِلُ كَيْدَ مَعَهُ ۖ فَإِذَا هُوَ رَاحِقٌ ۚ وَلَكُمْ الْوَيْلُ
مِمَّا تَصِفُونَ ۚ وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ
وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ
وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۚ يَسْبَحُونَهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
لَا يَفْتُرُونَ ۚ أَمَّا اتَّخَذَ إِلَهَهُ مِنَ الْأَرْضِ
هُمْ يُنْشِرُونَ ۚ لَوْ كَانَ فِيهِمَا إِلَهٌ إِلَّا اللَّهُ
لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحَنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا
يَصِفُونَ ۚ لَا يَسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ۚ
أَمَّا اتَّخَذَ مِنْ دُونِهِ إِلَهَةً ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ
هَذَا إِذْ كُرِمْنَا مَعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِي ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ فَهُمْ مُعْرِضُونَ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَا
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا
إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ۚ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ

مُؤَلَّ

सूरफ़ अंबिया - दूसरा रूकू

- (१) यानी काफ़िर थीं.
- (२) यानी उन ज़ालिमों ने.
- (३) मुफ़रिसियों ने ज़िक्र किया है कि यमन प्रदेश में एक बस्ती है जिसका नाम हुषूर है, वहाँ के रहने वाले अरब थे. उन्होंने अपने नबी को झुटलाया और उनको क़त्ल किया तो अल्लाह तआला ने उनपर बुर्रतें बरस कर मुसल्लत कर दिया. उसने उन्हें क़त्ल किया और गिरफ़्तार किया और उसका यह अमल जारी रहा तो ये लोग बस्ती छोड़ कर भागे तो फ़रिश्ताओं ने उनसे ख़य़म के तौर पर कहा (जो अगली आयत में है)
- (४) कि तुम पर क्या गुज़री और तुम्हरी माल-मत्ता क्या हुई तो तुम पुछने वाले को अपने इल्म और मुशाहदे या अवलोकन से जवाब दे सको.
- (५) अज़ाब देग़ने के बाद उन्होंने गुनाह का इक़रार किया और लज्जित हुए, इसलिये यह ऐतिहासिक उन्हें काम न आया.
- (६) खेत की तरह, कि तलवारों से टुकड़ें टुकड़े कर दिये गए और बुझी हुई आग की तरह हो गए.
- (७) कि उनसे कोई फ़ायदा न हो बल्कि इसमें हमारी हिक़मतें हैं. इसके साथ साथ यह है कि हमारे बन्दे उनसे हमारी कुदरत और हिक़मत पर इस्तदलाल करें और उन्हें हमारे औसाफ़ और गुणों और कमाल की पहचान हो.
- (८) बीबी और बेटे की तरह जैसा कि ईसाई कहते हैं और हमारे लिये बीबी और बेटियाँ बताते हैं अगर यह हमारे हक़ में मुमकिन होता.
- (९) क्योंकि बीबी बेटे वाले, बीबी बेटे अपने पास रखते हैं, मगर हम इसमें पाक हैं हमारे लिये यह संभव ही नहीं.
- (१०) मानी ये है कि हम झूठे लोगों के झूठ को सच्चाई के बयान से मिटा देते हैं.
- (११) ऐ बदनसीब काफ़िरो !
- (१२) अल्लाह की शान में कि उसके लिये बीबी और बच्चा टहराते हो.
- (१३) वह सब का मालिक है और सब उसके ममलूक, तो कोई उसकी औलाद कैसे हो सकता है. ममलूक होना और औलाद होना दो अलग अलग चीज़ें हैं.
- (१४) उसके प्यारे जिन्हें उसके करम से उसके दरबार में कुर्ब और सम्मान हासिल है.
- (१५) हर वक़्त उसकी तरबीह में रहते . हज़रत कअब अहबार ने फ़रमाया कि फ़रिश्ताओं के लिये तस्बीह ऐसी है जैसे कि बनी आदम के लिये साँस लेना.

वह^(१९) बल्कि बन्दे हैं इज़्ज़त वाले^(२०) ॥२६॥ वात में उससे सबक़त(पहल) नहीं करते और वह उसी के हुक्म पर कारबन्द होते हैं ॥२७॥ वह जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है^(२१) और शफ़ाअत नहीं करते मगर उसके लिये जिसे वह पसन्द फ़रमाए^(२२) और वो उसके ख़ौफ़ से डर रहे हैं ॥२८॥ और उनमें जो कोई कहे कि मैं अल्लाह के सिवा मअबूद हूँ^(२३) तो उसे हम जहन्नम की जज़ा देंगे . हम ऐसी ही सज़ा देते हैं सितमगारों को ॥२९॥

तीसरा ख़ुकू

क्या काफ़िरों ने यह ख़याल न किया कि आसमान और ज़मीन बन्द थे तो हमने उन्हें खोला^(१) और हमने हर जानदार चीज़ पानी से बनाई^(२) तो क्या वो ईमान लाएंगे ॥३०॥ और ज़मीन में हम ने लंगर डाले^(३) कि उन्हें लेकर न कांपे, और हमने उसमें कुशादा(खुली) राहें रखीं कि कहीं वो राह पाएं. ॥३१॥ और हमने आसमान को छत बनाया निगाह रखी गई^(४) और वो^(५) उसकी निशानियों से मुंह फेरते हैं^(६) ॥३२॥ और वही है जिसने बनाए रात^(७) और दिन^(८)

وَلَدًا سُبْحَنَهُ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ۝ لَا يَسْئِفُونَهُ
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ۝ يَعْلَمُ مَا
بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ
ارْتَضَىٰ وَهُمْ مِنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ۝ وَ مَنْ
يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَهٌ مِنْ دُونِهِ فَذَلِكَ نَجْزِيهِ
جَهَنَّمَ كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ أَوَلَمْ يَرِ
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا
رَتْقًا فَفَقَعْنَاهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ
حَيٍّ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ
أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا
لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝ وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَفْعًا
مَحْفُوظًا وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ۝ وَهُوَ
الَّذِي خَلَقَ الْيَلَّ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۝

मज़ल

(१६) ज़मीन की सम्पत्ति से, जैसे सोना, चांदी, पत्थर वांग्रह.

(१७) ऐसा तो नहीं है और न यह हो सकता है कि जो खुद बंजान हों वह किसी को जान दे सकें. तो फिर उसके मअबूद ठहराना और खुदा क़रार देना कितना खुला झूठ है . खुदा वही है जो हर मुमकिन पर क़ादिर हो, जो सक्षम नहीं, वह खुदा कैसे.

(१८) आसमान और ज़मीन.

(१९) क्योंकि अगर खुदा से वो खुदा मुग़ाद लिये जाएं जिनकी खुदाई को धुत परस्त मानते हैं तो जगन में फ़साद का होता लाज़िम है क्योंकि वो पत्थर बंजान हैं, संसार चलाने की ज़रूर भी क्षमता नहीं रखते और अगर वो खुदा फ़र्ज़ किये जाएं तो दो हाल से ख़ाली नहीं, या वो दोनों सहमत होंगे या अलग अलग विचार के. अगर किसी एक बात पर सहमत हुए तो लाज़िम आएगा कि एक बात दोनों की क्षमता में हो और दोनों की कुदरत से अस्तित्व में आए. यह असंभव है और अगर सहमत न हुए तो एक चीज़ के सम्बन्ध में दोनों के इरादे या एक साथ बाक़े होंगे और एक ही वक़्त में वह मौजूद और मअदूम याानी हाज़िर और ग़ायब दोनों हो जायगी या दोनों के इरादे बाक़े न हों और चीज़ न मौजूद हो न ग़ायब हो, या एक का इरादा पूरा हो और दूसरे का न हो. ये तमाम सूरेतें भी संभव नहीं हैं तो साबित हुआ कि फ़साद हर सूत में लाज़िम है. तौहीद की यह निहायत मज़बूत मिसाल है और इसकी तफ़्सील कलाम के इमामों की किताबों में दर्ज हैं. यहाँ संक्षेप में बस इतना ही काफ़ी है. (तफ़्सीर कबीर वग़ैरह)

(२०) कि उसके लिये आलाद और शरीक ठहराते हैं.

(२१) क्योंकि वह हक़ीक़ी मालिक है, जो चाहे करे, ज़िग़े चाहे इज़्ज़त दे, जिस चाहे ज़िल्लत दे, जिस चाहे सीभाग्य दे, जिस चाहे दुर्भाग्य दे. वह सब का हाक़िम है, कोई उसका हाक़िम नहीं जो उससे पृष्ठ सके.

(२२) क्योंकि सब उसके बन्दे हैं, ममलूक हैं, सब पर उसकी फ़रमाँबरदारी और अनुकरण लाज़िम है. इससे तौहीद की एक और दलील मिलती है. जब सब उसके ममलूक हैं तो उनमें से कोई खुदा कैसे हो सकता है. इसके बाद समझाने के तौर पर फ़रमाया.

(२३) ऐ हबीब(सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम) उन मुश्शिकीय से, कि तुम अपने इस झूठे दावे पर ---

(२४) और हुज्जत कायम करा चाहे अक़ली हो या नक़ली. मगर न कोई अक़ली दलील ला सकने हो जैसा कि बयान किये हुए प्रमाणों से ज़ाहिर हो चुका और न कोई नक़ली दलील याानी किसी का क़हा हुआ पेश कर सकते हो क्योंकि सारी आसमाती किताबों में अल्लाह के एक होने का बयान है और सब में शिर्क को ग़लत क़रार दिया गया है.

(२५) साथ वालों से मुग़ाद आप की उम्मत है. कुआन शरीफ़ में इसका ज़िक़र है कि इसका फ़रमाँबरदारी पर क्या सवाब मिलेगा और मुनाहां पर क्या अज़ाब किया जाएगा.

(२६) याानी पहले नबियों की उम्मतों का और इसका कि दुनिया में उनके साथ क्या किया गया और आख़िरत में क्या किया जाएगा.

(२७) और ग़ौर नहीं करने और नहीं सांचते कि इमान लाना उनके लिए ज़रूरी है.

और सूरज और चांद हर एक एक घेरे में पैर रहा है^(१०) (३३) और हमने तुम से पहले किसी आदमी के लिये दुनिया में हमेशगी (निरन्तरता) न बनाई^(११) तो क्या अगर तुम इन्तिकाल फ़रमाओ तो ये हमेशा रहेंगे^(१२) (३४) हर जान को मौत का गज़ा चखना है और हम तुम्हारी आजमाइश (परीक्षा) करते हैं बुराई और भलाई से^(१३) जानने का^(१४) और हमारी ही तरफ़ तुम्हें लौट कर आना है^(१५) (३५) और जब काफ़िर तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठट्ठा^(१६) क्या ये वो हैं जो तुम्हारे खुदाओं को बुरा कहते हैं और वो^(१७) रहमान ही की याद से इन्कारी हैं^(१८) (३६) आदमी जल्दबाज़ बनाया गया . अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा मुझ से जल्दी न करो^(१९) (३७) और कहते हैं कब होगा यह वादा^(२०) अगर तुम सच्चे हो^(२१) (३८) किसी तरह जानते काफ़िर उस वक़्त को जब न रोक सकेंगे अपने मुंहों से आग^(२२) और न अपनी पीठों से और न उनकी मदद हो^(२३) (३९) बल्कि वह उनपर अचानक आ पड़ेगी^(२४) तो उन्हें वे हवास कर देगी फिर न वो उसे फेर सकेंगे और न उन्हें मुहलत दी जाएगी^(२५) (४०) और वेशक तुम से अगले रसूलों के साथ

كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝ وَمَا جَعَلْنَا لِلْبَشَرِ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَأَنْ يَمُوتَ فَهُمْ الْخَالِدُونَ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۖ وَنَبْلُوكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا يَتَخَذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ۖ أَهَذَا الَّذِي يُذَكِّرُ الْهَتَكُم ۖ وَهُمْ يَذْكُرُ الرَّحْمَنُ هُمْ كَفَرُونَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَجَلٍ ۖ سَأُورِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكْفُونُ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ۝ بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدْمًا وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝ وَلَقَدْ اسْتَهْزَأُ بِرُسُلٍ مِنْ

- (२८) यह आयत खुदाआ के बार में उतरी, जिन्होंने फ़रिश्तों को खुदा की बेटियाँ कहा था.
(२९) उसकी ज्ञान इससे पाक है कि उसके औलाद हो.
(३०) यानी फ़रिश्ते उसके बुजुर्गों वाले बन्दे हैं.
(३१) यानी जो कुछ उन्होंने ने किया और जो कुछ वो आयन्दा करेंगे.
(३२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, यानी जो तीहीद का मानने वाला हो.
(३३) यह कहने वाला इब्नीस है जो अपनी इबादत की दावत देता है. फ़रिश्तों में और कोई ऐसा नहीं जो यह कलिमा कहे.

सूरए अंबिया - तीसरा सूक

- (१) बन्द होना या तो यह है कि एक दूसरे से मिला हुआ था उनमें अलहदगी पैदा करके उन्हें खोला, या ये मानी हैं कि आसमान बंद था, इस अर्थ में कि उससे वर्षा नहीं होती थी. ज़मीन बन्द थी, इस अर्थ में कि उस से कुछ पैदा नहीं होता था. तो आसमान का खोलना यह है कि उससे बारिश होने लगी और ज़मीन का खोलना यह है कि उससे हरियाली पैदा होने लगी.
(२) यानी पानी को जानदारों की ज़िन्दगी का कारण किया. कुछ मुफ़ससिरा ने कहा, मानी ये हैं कि हर जानदार पानी से पैदा किया हुआ है और कुछ ने कहा कि इससे नुस्खा या बीज मुराद है.
(३) मज़बूत पहाड़ों के.
(४) अपने सफ़रों में, और जिन जगहों का इरादा करें वहाँ तक पहुंच सकें.
(५) गिरने से.
(६) यानी काफ़िर.
(७) यानी आसमानी जगह, सूरज चांद सितारे और अपने अपने आसमानों में उनकी हरकतों की कैफ़ियत, और अपने निकलने के स्थानों से उनके निकलने और दबने और उनके अहवाल, जो दुनिया के बनाने वाले के अस्तित्व और उसके एक होने और उसकी भरपूर कुदरत और अपार हिक्मत के प्रमाण हैं. काफ़िर उन सब से नज़रें फेरते हैं और उन प्रमाणों से लाभ नहीं उठाते.
(८) अंधेरी, कि उसमें आराम करें.
(९) रौशन, कि उसमें रोज़ी रोटी वगैरह के काम करें.
(१०) जिस तरह कि तैराक पानी में.
(११) रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लतुम के दुश्मन अपनी गुमराही और दुश्मनी से कहते थे कि हम ज़माने या समय की चालों

ठट्टा किया गया^(१५) तो मसखरगी (ठट्टा) करने वालों का ठट्टा
उन्हीं को लं बँठा^(१६) ॥४३॥

चौथा सूक्त

तुम फ़रमाओ रात दिन तुम्हारी निगहबानी कौन करता है
रहमान से^(१) वल्कि वो अपने रब की याद से मुंह फेरे
हैं^(२) ॥४२॥ क्या उनके कुछ खुदा है^(३) जो उनको हम से
बचाते हैं^(४) वो अपनी ही जानों को नहीं बचा सकते^(५) और
न हमारी तरफ़ से उनकी यारी हो^(६) ॥४३॥ वल्कि हमने उनको^(७)
और उनके बाप दादा को बर्तावा दिया^(८) यहाँ तक कि
ज़िन्दगी उनपर दराज़ (लम्बी) हुई^(९) तो क्या नहीं देखते कि
हम^(१०) ज़मीन को उसके किनारों से घटाते आ रहे हैं^(११) तो
क्या ये ग़ालिब होंगे^(१२) ॥४४॥ तुम फ़रमाओ कि मैं तुम को
सिर्फ़ वही (देववाणी) से डराता हूँ^(१३) और वहरे पुकारना
नहीं सुनते जब डराए जाएं^(१४) ॥४५॥ और अगर उन्हें
तुम्हारे रब के अज़ाब की हवा सू जाए तो ज़रूर कहेंगे हाय
ख़राबी हमारी वेशक हम ज़ालिम थे^(१५) ॥४६॥ और हम
अदल (न्याय) की तराजूएं रखेंगे क़यामत के दिन तो किसी
जान पर कुछ जुल्म न होगा, और अगर कोई चीज़^(१६) राई
के दाने के बराबर हो तो हम उसे ले आएंगे, और हम काफ़ी

قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا	۴۲۷	۱۷
بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ قُلْ مَنْ يَكْلَأُكُمْ بِاللَّيْلِ وَ		
النَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ		
مُعْرِضُونَ ۝ أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِنْ دُونِنَا		
لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِنَّا يُصْحَبُونَ ۝		
بَلْ مَتَّعْنَا هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ		
أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا		
أَنَّهُمُ الْغَالِبُونَ ۝ قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۚ		
وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ۝		
وَلَكِنَّ مَسْئَلَهُمْ فِيهِ مِنْ عَذَابٍ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ		
يَوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ		
الْقِسْطَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ۚ وَإِنْ		
كَانَ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۚ وَكَفَى		

مَزْلُومٌ

की प्रतीक्षा कर रहे हैं. बहुत जल्द ऐसा वक़्त आने वाला है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का देहान्त होजाएगा. इसपर यह
आयत उतरी और फ़रमाया गया कि रसूल के दुश्मनों के लिये यह कोई ख़ुशी की बात नहीं. हमने दुनिया में किसी आदमी के लिये
हमेशा का रहना नहीं सखा.

(१२) और उन्हें मौत के पंजे से छुटकारा मिल जाएगा. जब ऐसा नहीं है तो फिर ख़ुश किस बात पर होते हैं. दख़ीक़त यह है कि ----

(१३) यानी राहत और तफ़्तीफ़, स्वास्थ्य और बीमारी, मालदारी और ग़रीबी, नफ़ा और नुक़सान में.

(१४) ताकि ज़ाहिर हो जाए कि सत्र और शुक्र में तुम्हारा क्या दर्जा है.

(१५) हम तुम्हें तुम्हारे कर्मों का बदला देंगे.

(१६) यह आयत अब ज़हल के बार में उतरी. हुज़ूर तशरीफ़ लिये जाते थे वह आपको देखकर हंसा और कहने लगा कि यह बनी
अब्दे मनाफ़ के नबी है और आपस में एक दूसरे से कहने लगे.

(१७) काफ़िर.

(१८) कहते हैं कि हम रहमान को जानते ही नहीं. इस जिहालत और गुमराही में जकड़ जाते हैं वाबुजूद आपके साथ ठट्टा करते
हैं और नहीं देखते कि हमी के काबिल ख़ुद उनका अपना हाल है.

(१९) यह आयत नज़र दिन हरिस के बार में नाज़िल हुई जो कहता था कि जल्दी अज़ाब उतरवाइए. इस आयत में फ़रमाया गया
कि अब मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाऊँगा यानी जो वादे अज़ाब के दिये गए हैं उनका वक़्त करीब आ गया है. चुनावे व़द के दिन
वह दृश्य उनकी नज़र के सामने आया.

(२०) अज़ाब का या क़यामत का, ये उनकी जल्दी करने का बयान है.

(२१) दाज़य़ की.

(२२) अगर वां यह जानते होते तो कुफ़र पर क़ायम न रहते और अज़ाब में जल्दी न करते.

(२३) क़यामत.

(२४) तौब़ह और मअज़िरत की.

(२५) ऐ मेदयूव (सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम).

(२६) और वो अपने मज़ाफ़ और हंसी बनाने के बवाल और अज़ाब में गिरफ़्तार हुए. इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम
की मसल्लती फ़रमाई गई कि आपके साथ ठट्टा करने वालों का यही अंजाम होता है.

हैं हिसाब को (४७) और वेशक हमने मूसा और हारून को फ़ैसला दिया (४८) और उजाला (४९) और परहेज़गारों को नसीहत (५०) (४८) वो जो वे देखे अपने रव से डरते हैं और उन्हें क़यामत का डर लगा हुआ है (४९) और यह है बरकत वाला ज़िक्र कि हमने उतारों (५०) तो क्या तुम उसके इन्कारी हो (५०)

पाँचवां रूकू

और वेशक हमने इब्राहीम को (५१) पहले ही से उसकी नेक राह अता कर दी और हम उससे ख़बरदार थे (५२) जब उसने अपने बाप और क़ौम से कहा ये मूर्तें क्या हैं (५३) जिनके आगे तुम आसन मारे (पूजा के लिये) हो (५४) बोले हमने अपने बाप दादा को उनकी पूजा करते पाया (५५) कहा वेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा सब खुली गुमराही में हो (५६) बोले क्या तुम हमारे पास हज़क लाए हो या यूँही खेलते हो (५७) कहा बल्कि तुम्हारा रव वह है जो रव है आसमानों और ज़मीन का जिसने उन्हें पैदा किया और मैं इसपर गवाहों में से हूँ (५८) और मुझे अल्लाह की क़सम है मैं तुम्हारे बुतों का चुरा चाहुंगा बाद इसके कि तुम फिर जाओ पीठ देकर (५९) तो उन सब को (६०) चुरा कर

بَنَّا حَسِبِينَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ وَ هَارُونَ
الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَذِكْرًا لِلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ۝
وَهَذَا ذِكْرُ مُبْرِكٍ أَنْزَلْنَاهُ ۖ أَفَأَنْتُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ۝
وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ
عَلِيمِينَ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَذِهِ الشَّمَائِلُ
الَّتِي أَنْتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ ۝ قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا
لَهَا عِبَادِينَ ۝ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَ آبَاؤُكُمْ
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ
أَنْتَ مِنَ اللَّاعِبِينَ ۝ قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبُّ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ ۖ وَأَنَا عَلَىٰ
ذَلِكَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَ تَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ
أَصْنَافَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ۝ فَجَعَلَهُمْ

مَنْزِلٌ

सूरए अबिया - चौथा रूकू

- (१) यानी उसके अज़ाब में.
- (२) जब ऐसा है तो उन्हें अल्लाह के अज़ाब का क्या डर हो और वो अपनी हिफ़ाज़त करने वालों को क्या पहचानें.
- (३) हमारे सिवा उनके ख़याल में.
- (४) और हमारे अज़ाब में मेहफूज़ रखते हैं ऐसा तो नहीं है और अगर वो अपने बुतों के बारे में यह अक्कीदा रखते हैं तो उनका हाल यह है कि.
- (५) अपने पूजने वालों का क्या चन्ना सकेंगे.
- (६) यानी काफ़िरों को.
- (७) और दुनिया में उन्हें नअमत और मोहलत दी.
- (८) और वो इस से और घमण्डी हुए और उन्होंने गुमान किया कि वो हमेशा ऐसे ही रहेंगे.
- (९) काफ़िरों के रहने की जगह की---
- (१०) दिन प्रतिदिन मुसलमानों को उस पर तसल्लुत दे रहे हैं और एक शहर के बाद दूसरा शहर फ़तह होता चला आ रहा है, इस्लाम की सीमाएं बढ़ रही हैं और कुफ़्र की धरती घटती चली आती है. और मक्का मुकर्रमा के आस पास के इलाकों पर मुसलमानों का तसल्लुत होता जाता है, क्या मुथ़िक जो अज़ाब तलब करने में जल्दी कर रहे हैं, इसको नहीं देखते और सबक नहीं पकड़ते.
- (११) जिनके क़ब्ज़े से ज़मीन दम व दम निकलती जा रही है. या रसुले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनके सहाबा जो अल्लाह के फ़ज़ल से फ़तह पा रहे हैं और उनके क़ब्ज़े दम व दम बढ़ते जा रहे हैं.
- (१२) और अज़ाब इलाही का उसी की तरफ़ से ख़ौफ़ दिलाता है.
- (१३) यानी काफ़िर, हिदायत करने वाले और ख़ौफ़ दिलाने वाले के क़लाम से तफ़ा न उठाने में चेहरे की तरह हैं.
- (१४) नबी की बात पर कान न ख़रा और उन पर ईमान न लाए.
- (१५) कर्मों में से.
- (१६) यानी तौरात अता की जो सच झूट में अन्तर करने वाली है.
- (१७) यानी रीशनी है, कि उससे मोक्ष की राह मालूम होती है.
- (१८) जिससे वो नसीहत हासिल करते हैं और दीन की बातों का इल्म हासिल करने हैं.
- (१९) अपने हबीब मुहम्मद मुसलमान सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर, यानी क़ुरआन शरीफ़, यह बहुत सी भलाई वाला है और ईमान लाने वालों के लिये इसमें बड़ी बरकतें हैं.

दिया मगर एक को जो उन सबका बड़ा था^(१) कि शायद वो उससे कुछ पूछें^(२) ॥५८॥ बोले किस ने हमारे खुदाओं के साथ यह काम किया वेशक वह ज़ालिम है^(३) ॥ उनमें के कुछ बोले हमने एक जवान को उन्हें बुरा कहते सुना जिसे इब्राहीम कहते हैं^(४) ॥६०॥ बोले तो उसे लोगों के सामने लाओ शायद वो गवाही दें^(५) ॥६१॥ बोले क्या तुमने हमारे खुदाओं के साथ यह काम किया, ऐ इब्राहीम^(६) ॥६२॥ फ़रमाया बल्कि उनके उस बड़े ने किया होगा^(७) तो उनसे पूछो अगर बोलते हों^(८) ॥६३॥ तो अपने जी की तरफ़ पलटें^(९) और बोले वेशक तुम्हीं सितमगार हो^(१०) ॥६४॥ फिर अपने सरों के बल आँधाए गए^(११) कि तुम्हें खूब मालूम है ये बोलते नहीं^(१२) ॥६५॥ कहा तो क्या अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हें नफ़ा दे^(१३) और न नुक़सान पहुंचाए^(१४) ॥६६॥ तुफ़ है तुम पर और उन बुतों पर जिन को अल्लाह के सिवा पूजते हो तो क्या तुम्हें अक़ल नहीं^(१५) ॥६७॥ बोले उनको जला दो और अपने खुदाओं की मदद करो अगर तुम्हें करना है^(१६) ॥६८॥ हमने फ़रमाया ऐ

جُذُودًا إِلَّا كَيْثَرًا لَهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ۝
قَالُوا مَنْ فَعَلَ هَذَا بِالْهَيْتِنَا إِنَّهُ لَمِنَ الظَّالِمِينَ ۝
قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ۝
قَاتُوا بِهِ عَلَىٰ أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ۝
قَالُوا أَنْتَ فَعَلْتَ هَذَا بِالْهَيْتِنَا يَا إِبْرَاهِيمُ ۝
قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَذَا فَسَاءَ لَهُمْ إِنْ كَانُوا
يَنْظِقُونَ ۝ فَرَجَعُوا إِلَىٰ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوا لَأَنكُمْ
أَنْتُمُ الظَّالِمُونَ ۝ ثُمَّ نَكَسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ
عَلِمْتَ مَا هَؤُلَاءِ يَنْظِقُونَ ۝ قَالَ أَكَتَعْبُدُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ ۝
أَفِ لَكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَفَلَا
تَعْقِلُونَ ۝ قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ فاعِلِينَ ۝ قُلْنَا يَبْنَؤُا كُونِي بَرْدًا

मूल

सूरए अबिया - पाँचवाँ सूकू

- (१) उनकी शुरु की उम्र में बालिग होने के.
- (२) कि वह हिदायत और नबुवत के पात्र हैं.
- (३) यानी बुत जो दरिद्यों, परिद्यों और इन्सानों की सूरत में बने हुए हैं.
- (४) और उनकी इबादत में लगे हो.
- (५) तो हम भी उनके अनुकरण में वैसा ही करने लगे.
- (६) चूँकि उन्हें अपने तरीके का गुमराही होना बहुत ही असंभव लगता था और उसका इन्कार करना वो बहुत बड़ी बात जानते थे, इसलिये उन्होंने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से यह कहा कि क्या आप यह बात सही तीर पर हमें बता रहे हैं या ग़ल के तीर पर फ़रमा रहे हैं. इसके जवाब में आपने अल्लाह तआला के ख़ होने की ताईद करके ज़ाहिर कर दिया कि आप मज़ाक के तीर पर क़त्नाम फ़रमाने वाले नहीं हैं बल्कि सच्चाई का इज़हार फ़रमाते हैं. चूनांचे आपने ---
- (७) अपने मंलो को. वाकिआ यह है कि उस क़ौम का सालाना मेला लगता था. जंगल में जाते और शाम तक वहाँ खेलकूद बाच गानों में लगे रहते. वापसी के समय बुतख़ाने आते और बुतों की पूजा करते. इसके बाद अपने मकानों को चले जाते. जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनकी एक जमाअत से बुतों के बारे में तर्क वितर्क किया तो उन लोगों ने कहा कि कन का हमारी इंद है आप वहाँ चलें, देखें कि हमारे दीन और तरीके में क्या बहारा है और कैसा मज़ा आता है. जब वह मेले का दिन आया और आपसे मेले चलने का कहा गया तो आप बहाना बनाकर रुक गए. वो लोग चले गए. जब उनके बाक़ी लोग और कमज़ोर व्याकिन जा आहिस्ता आहिस्ता जा रहे थे, गुज़रे तो आपने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे बुतों का बुग़ा चाहूंगा. इसको कुछ लोगों ने सुना और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बुत ख़ाने की तरफ़ लौटे.
- (८) यानी बुतों को तोड़ कर.
- (९) छोड़ दिया और बसुला उसके कथे पर रख दिया.
- (१०) यानी बड़े बुत से कि इन छोट बुतों का क्या हाल है ये क्यों टूटे और बसुला तेरी गर्दन पर कैसा ख़ा है और उन्हें इसकी बेबसी ज़ाहिर हो और होश आए कि ऐसे लाचार ख़ुदा नहीं हो सकते. या ये मानी हैं कि वो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पूछें और आपका तर्क क़ायम करने का मौक़ा मिले. चूनांचे जब क़ौम के लोग शाम का वापस हुए और बुत ख़ाने में पहुंचे और उन्होंने देखा कि बुत टूटे पड़े हैं तो --
- (११) यह ख़बर नमरुद जब्बार और उसके सरदारों का पहुंची तो -----

आग ठण्डी होजा और सलामती इब्राहीम पर^(१४) ६९ और उन्होंने ने उसका बुरा चाहा तो हमने उन्हें सब से बढ़कर जियांकार (घाटे वाला) कर दिया^(१५) ७० और हमने उसे और लूत को^(१६) निजात वख्शी^(१७) उस जमीन की तरफ^(१८) जिसमें हमने दुनिया वालों के लिये वरकत रखी^(१९) ७१ और हमने उसे इस्हाक अता फरमाया,^(२०) और यअकूब पोता और हमने उन सब को अपने खास कुर्व का अधिकारी किया^(२१) ७२ और हमने उन्हें इमाम किया कि^(२२) हमारे हुक्म से बुलाते हैं और हमने उन्हें वही (देववाणी) भेजी अच्छे काम करने और नमाज़ कायम रखने और ज़कात देने की, और वो हमारी वन्दगी करते थे^(२३) ७३ और लूत को हमने हुक्मत और इल्म दिया और उसे उस वस्ती से निजात वख्शी जो गन्दे काम करती थी,^(२४) वेशक वो बुरे लोग बेहुक्म थ. और हमने उसे^(२५) ७४ अपनी रहमत में दाखिल किया, वेशक वह हमारे खास कुर्व (नजदीकी) के अधिकारियों में है^(२६) ७५

छटा रुकू

और नूह को जब इससे पहले उसने हमें पुकारा तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे और उसके घर वालों को बड़ी सख्ती से निजात दी^(२७) ७६ और हमने उन लोगों पर उसका मदद दी जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई, वंशक वां

وَسَلَّمْنَا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۖ وَارَادُوا بِهِ كَيْدًا ۖ فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ ۖ وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ۖ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۚ وَكُلًّا جَعَلْنَا صَالِحِينَ ۖ وَجَعَلْنَاهُمْ إِبْرَاهِيمَ يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَإِقَامَ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءَ الزَّكَاةِ وَكَانُوا لَنَا عِبِيدِينَ ۖ وَلُوطًا آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرَارِ ۚ الَّتِي كَانَتْ تَعْمَلُ الْخَبِيثَاتِ لَهُمْ كَانُوا قَوْمٌ سَوْءٌ فُضِّلِينَ ۖ وَأَدْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۖ وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۖ وَنَصَرْنَاهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا لَهُمْ كَانُوا

مَنْزِل

- (१२) कि यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही का काम है या उनके पुत्रों की निश्चय ऐसा कलाम सुना गया. मतलब यह था कि शहादत या गवाही कायम हो तो वो आपके पीछे पड़ें. चुनावें हज़रत बुलाए गए और वो लोग.
- (१३) आपने इसका तो कुछ जवाब न दिया और तर्क वितर्क की गलत से जवाब में एक अनोखी हज़रत कायम की.
- (१४) इस गुस्से से कि उसके होते तुम छोटों को पूजते हो. उसके कब्जे पर बसूला जाने से ऐसा ही अन्दाज़ा लगाया जा सकता है. मुझ से क्या पूछना, पूछना हो ----
- (१५) वो खुद बताए कि उनके साथ यह किसने किया. मतलब यह था कि कौम गौर करे कि जो बोल नहीं सकता, जो कुछ कर नहीं सकता, वह खुदा नहीं हो सकता. उसकी खुदाई का अक्कीदा झूठा है, चुनावें जब आपने यह फरमाया.
- (१६) और यमझे कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हक पर हैं.
- (१७) जो ऐसे मजबूरों और बे इच्छितयारों को पूजते हो. जो अपने कब्जे पर से बसूला न हटा सकें, वह अपने पुजारी को मुसीबत से क्या बचा सकेगा और उसके क्या काम आ सकेगा.
- (१८) और सच्ची बात कहने के बाद फिर उनकी बदबस्ती उनके सरो पर सवार हुई और वो कुफ्र की तरफ पलटे और झूठी बहस शुरू करदी और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहने लगे.
- (१९) तो हम उनसे कैसे पूछें और ऐ इब्राहीम, तुम हमें उनसे पूछने का कैसे हुक्म देते हो.
- (२०) अगर उसे पूजा.
- (२१) अगर उसका पूजना बन्द कर दो.
- (२२) कि इना भी समझ सका कि ये वुत पूजने के काबिल नहीं. जब हज़रत पूरी हो गई और वो लोग जवाब देने से लाचार हुए तो ...
- (२३) नमरुद और उसकी ज़ौम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जला डालने पर सहमत हो गई और उन्होंने आपको एक मकान में कैद कर दिया और कौसा गाँव में एक इमारत बनाई और एक महीने तक पूरी कांशिशों से किसम किसम की लकड़ियाँ जमा कीं और एक बड़ी आग जलाई जिसकी तपन से हवा में उड़ने वाले पक्षी जल जाते थे. और एक गोफन खड़ी की और आपको बांधकर उसमें रखकर आग में फेंका. उस वक़्त आपकी जवाने मुबारक पर "हम्बीयल्लाहो व नेअमल वकील" जारी था. जिब्रिल ने अमीन ने आपसे अर्ज़ किया कि क्या कुछ काम है, आपने फरमाया, तुम से नहीं. जिब्रिल ने अर्ज़ किया, तो अपने रज में सवाल कीजिये. फरमाया, सवाल करने से उसका मेरे हाल को जानना मेरे लिये काफी है.
- (२४) तो आग ने आपकें बन्धनों के सिवा और कुछ न जलाया और आग की गर्मी ख़त्म हो गई और राशती बरसती रही.

वुरे लोग थे तो हमने उन सब को डुबो दिया (७७) और दाऊद और सुलैमान को याद करो जब खेती का एक झगड़ा चुकाते थे जब रात को उसमें कुछ लोगों की बकरियाँ छूटीं (७८) और हम उनके हुक्म के वक्त हाज़िर थे (७८) हमने वह मामला सुलैमान को समझा दिया (७९) और दोनों को हुक्मत और इल्म अता किया (८०) और दाऊद के साथ पहाड़ मुसख़र फ़रमा दिये कि तस्वीह करते और परिन्दे (८१) और ये हमारे काम थे (८२) और हमने उसे तुम्हारा एक पहनावा बनाना सिखाया कि तुम्हें तुम्हारी आंच (ज़ख्मी होने) से बचाए (८३) तो क्या तुम शुक्र करोगे (८४) और सुलैमान के लिये तेज़ हवा मुसख़र कर दी कि उसके हुक्म से चलती उस ज़मीन की तरफ़ जिसमें हमने बरकत रखी (८५) और हम को हर चीज़ मालूम है (८६) और शैतानों में से वो जो उसके लिये गोता लगाते (८७) और इसके सिवा और काम करते (८८) और हम उन्हें रोके हुए थे (८९) (९०) और अय्यूब को (याद करो) जब उसने अपने रब को पुकारा (९१) कि मुझे तकलीफ़ पहुंची और तू सब मेहर वालों से बढ़कर मेहर वाला है (९२) तो हमने उसकी दुआ सुन ली तो हमने दूर कर दी जो तकलीफ़ उसे थी (९३) और हमने उसे उसके घरवाले और

قَوْمَ سَوَاءٍ فَأَعْرِقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ وَدَاوُدَ وَ
سُلَيْمَانَ إِذْ يَخْتَلِمُنَ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفَسَتْ فِيهِ
غَمَمُ الْقَوْمِ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شَاهِدِينَ ۝ فَفَهَّمْنَاهَا
سُلَيْمَانَ ۝ وَكَلَّا أَتَيْنَا حُكْمًا وَعِلْمًا ۝ وَسَخَّرْنَا
مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ وَكُنَّا فَاعِلِينَ ۝
وَعَلَّمْنَاهُ صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَّكُمْ لِنُخَصِّنْكُمْ مِنَ
بَاسِكُمْ ۚ فَبَلَّ أَنْتُمْ شَاكِرُونَ ۝ وَاسْلُكُنَا
الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي بِأَمْرِنَا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي
بُرَكْنَا فِيهَا ۚ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عَالِمِينَ ۝ وَمِنَ
الشَّيَاطِينِ مَنْ يَغُوصُّونَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا دُونَ
ذَلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حَافِظِينَ ۝ وَآيُوبَ إِذْ
نَادَى رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ
الرَّاحِمِينَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ

سُورَةُ

(२५) कि उनकी मुराद पूरी न हुई और कोशिश विफल हुई और अल्लाह तआला ने उस क़ौम पर मच्छर भेजे जो उनके गोश्त खा गए और खून पी गए और एक मच्छर नमरूद के दिमाग में घुस गया और उसकी हलाकत का कारण हुआ।

(२६) जो उनके भतीजे, उनके भाई हारान के बेटे थे, नमरूद और उसकी क़ौम से।

(२७) और इराक़ से।

(२८) खाना किया।

(२९) इस ज़मीन से शाम प्रदेश मुराद है। उसकी बरकत यह है कि यहाँ काफ़ी नदी हुए और सारे जगत में उनकी दीनी बरकतें पहुंचीं और हरियाली के ऐतिवार से भी यह क्षेत्र दूसरे क्षेत्रों से श्रेष्ठ है। यहाँ कसरत से नेहरे हैं, पानी पाकीज़ा और खुशगवार है, दरख्तों और फलों की बहुतायत है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़लस्तीन स्थान पर तशरीफ़ लाए और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम मौतफ़िकह में।

(३०) और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से बेटे की दुआ की थी।

(३१) लोगों को हमारे दीन की तरफ़।

(३२) उस वंशी का नाम सद्म था।

(३३) यानी हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को।

सूरए अबिया - छटा रूकू

(१) यानी तूफ़ान से और शरीर लोगों के झुटलाने से।

(२) उनके साथ कोई चराने वाला न था, वो खेती खा गईं। यह मुक़दमा हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के सामने पेश हुआ। आपने प्रस्ताव किया कि बकरियाँ खेती वाले को दे दी जाएं, बकरियों की क़ीमत खेती के नुक़सान के बराबर थी।

(३) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के सामने जब यह मामला पेश हुआ तो आपने फ़रमाया कि दोनों पक्षों के लिये इससे ज्यादा आसानी की शकल भी हो सकती है। उस वक्त हज़रत की उम्र शरीफ़ ग्यारह साल की थी। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने यह प्रस्ताव पेश किया कि बकरी वाला काशत करे और जब तक खेती वाला बकरियों के दूध बौरह से फ़ायदा उठाए और खेती इस हालत पर पहुंच जाने के बाद खेती वाले को खेती दे दी जाय, बकरी वाले को उसकी बकरियाँ वापस कर दी जाएं। यह प्रस्ताव हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने पसन्द फ़रमाया। इस मामले में ये दोनों हुक्म इज़्तिहादी थे और उस शरीअत के अनुसार थे। हमारी शरीअत में हुक्म यह है कि अगर चराने वाला साथ न हो तो जानवर नुक़सान करे उसका ज़माना लाज़िम नहीं। मुजाहिद का क़ौल है कि हज़रत दाऊद

उनके साथ उतने ही और अता किये^(१३) अपने पास से रहमत फरमाकर और बन्दगी वालों के लिये नसीहत^(१४) और इस्माईल और इदीस और जुल-किफल को (याद करो), वो सब सब वाले थे^(१५) और उन्हें हमने अपनी रहमत में दाखिल किया, वेशक वो हमारे खास कुर्व के हकदारों में हैं^(१६) और जुन्नून को (याद करो)^(१७) जब चला गुस्से में भरा^(१८) तो गुमान किया कि हम उसपर तंगी न करेंगे^(१९) तो अंधेरियों में पुकारा^(२०) कोई मअवूद नहीं सिवा तेरे, पाकी है तुझको, वेशक मुझसे बेजा हुआ^(२१) तो हमने उसकी पुकार सुन ली और उसे गम से निजात वांछी,^(२२) और ऐसी ही निजात देंगे मुसलमानों को^(२३) और ज़करिया को (याद करो), जब उसने अपने रब को पुकारा ऐ मेरे रब मुझे अकेला न छोड़^(२४) और तू सब से बेहतर वारिस^(२५) तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे^(२६) यहया अता फरमाया और उसके लिये उसकी वीवी संवारी^(२७) वेशक वो^(२८) भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और डर से, और हमारे हज़ूर गिड़गिड़ाते हैं^(२९)

صَبْرًا وَاتَّبَعْنَاهُ أَهْلَهُ وَمَثَلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِندِنَا وَذِكْرُنَا لِلْعَابِدِينَ ۝ وَلَا سَعْيَ لَكَ إِذْ رَأَيْتَ بِذَا الْكَفْلِ كُلِّ مِنَ الصُّبْرِيِّنَ ۝ وَأَدْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُمْ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ وَذَا النُّونِ إِذْ ذَهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَن لَّنْ نَقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَىٰ فِي الظُّلُمَاتِ أَن لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ ۚ وَكَذَلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَذِكْرُكَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَوَهَبْنَا لَهُ يَحْيَىٰ وَأَصَدَقْنَا لَهُ رُوحَهُ إِنَّهُمْ كَانُوا يُسْرِعُونَ فِي الْحَزَنِ ۚ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا وَكَانُوا لَنَا خَشِيعِينَ ۝

मन्ज़ल

अलैहिस्सलाम ने जो फ़ैसला किया था, वह इस मसअले का हुक्म था और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने जो तजवीज़ फ़रमाई, यह सुलह की सूत थी।

(४) इज्जिहाद के कारणों और अहकाम के तरीक़े वगैरह का, जिन उलमा को इज्जिहाद की योग्यता हासिल है उन्हें इन बातों में इज्जिहाद का हक़ है जिसमें वो क़िताब और सुन्नत का हुक्म न पाएं और अगर इज्जिहाद में ख़ता भी हो जाए तो भी उनपर पकड़ नहीं। बुझारी व मुस्लिम की हदीस है सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जब हुक्म करने वाला इज्जिहाद के साथ हुक्म करे और उस हुक्म में दुरुस्त हो तो उसके लिये दो सवाब हैं और अगर इज्जिहाद में ग़लती हो जाए तो एक सवाब।

(५) पत्थर और पक्षी आपके साथ आपकी संगत में तस्बीह करते थे।

(६) यानी जंग में दुश्मन के मुकाबले में काम आए और वह ज़िरह यानी बक्तर है। सब से पहल ज़िरह बनाने वाले हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम हैं।

(७) इस ज़मीन से मुराद शाम है जो आपका निवास था।

(८) नदी की गहराई में दाख़िल होकर, समुन्दर की तह से आपके लिये ज़वाहरात निकाल कर लाने।

(९) अजीब अजीब सनअतें, इमारतें, महल, बर्तन, शीशे की चीज़ें, साबुन वगैरह बनाना।

(१०) कि आप के हुक्म से बाहर न हों।

(११) यानी अपने रब से दुआ की। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम, हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की सन्तान में से हैं। अल्लाह तआला ने आपको हर तरह की नेअमतें अता फ़रमाई थीं। हुस व सूरत भी, औलाद की बहुतात भी, माल मत्ता भा। अल्लाह तआला ने आपको आजमाइश में डाला और आपके बेटे और औलाद मक़ान के गिरने से दब कर मर गए। तमाम मवेशी जिन में हज़ारों ऊट हज़ारों बकरियाँ थीं सब मर गए। सारी ख़ेतिशों और बाग़ बर्बाद हो गए, कुछ भी बाक़ी न रहा और जब आप को इन चीज़ों के हलाक़ होवे और ज़ाया होने की ख़बर दी जाती थी तो आप अल्लाह की तअरीफ़ करते और फ़रमाते मेरा क्या है जिसका था उसने लिया। जब तक मुझे दिया और मेरे पास ख़्वा उरका शुक्र अदा नहीं हो सकता। मैं उसकी मर्ज़ी पर राज़ी हूँ। फिर आप बीमार हुए। सारे शरीर में छाले पड़ गए। बदन सब का सब ज़ख़्मों से भर गया। सब लोगों ने छोड़ दिया, बस आपकी वीवी साहिबा आपकी सेवा करती रही। यह हालत सालों साल रही। आख़िरकार कोई ऐसा कारण पेश आया कि आप ने अल्लाह की बारगाह में दुआ की।

(१२) इस तरह कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि ज़मीन पर पाँव मारिये। आपने मारा, एक चश्मा ज़ाहिर हो गया। हुक्म दिया गया इस से स्नान कीजिये। गुस्ल किया तो शरीर के ऊपर की सारी बीमारियाँ दूर हो गईं। फिर आप चालीस क़दम चले, फिर दोबारा ज़मीन पर पाँव मारने का हुक्म हुआ। आपने फिर पाँव मारा उसमें भी एक चश्मा ज़ाहिर हुआ जिसका पानी बहुत ठण्डा था। आपने अल्लाह के हुक्म से पिया, इससे अन्दर की सारी बीमारियाँ दूर हो गईं और आप को भरपूर संहत हासिल हुई।

और उस औरत को जिसने अपनी पारसाई निगाह रखी^(१८) तो हमने उसमें अपनी रूह फूँकी^(१९) और उसे और उसके बेटे को सारे जगत के लिये निशानी बनाया^(२०) (१९) बेशक तुम्हारा यह दीन एक ही दीन है^(२१) और मैं तुम्हारा रव हूँ^(२२) तो मेरी इबादत करो^(२३) और औरों ने अपने काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिये^(२४) सब को हमारी तरफ़ फिरना है^(२५) (२३)

सातवाँ सूक़

तो जो कुछ भले काम करे ओर हो ईमान वाला तो उसकी कोशिश की वेक़दरी नहीं, और हम उसे लिख रहे हैं^(२६) और हराम है उस वस्ती पर जिसे हमने हलाक किया कि फिर लौट कर आएँ^(२७) (२६) यहां तक कि जब खोले जाएंगे याजूज व माजूज^(२८) और वो हर वलन्दी से कुलकते होंगे^(२९) और करीब आया सच्चा वादा^(३०) तो जभी आँखें फट कर रह जाएंगी काफ़िरों की^(३१) हाय हमारी खराबी बेशक हम^(३२) इस से ग़फ़लत में थे बल्कि हम ज़ालिम थे^(३३) (३०) बेशक तुम^(३४) और जो कुछ अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो^(३५) सब जहन्नम के ईंधन हो, तुम्हें उसमें जाना^(३६) अगर ये^(३७) खुदा होते जहन्नम में न जाते और

وَالَّتِي أَحْصَيْنَتْ فَرْجَهَا فَكَفَعْنَا فِيهَا مِنْ رُوحِنَا
وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ۝ إِنَّ هَذَا
أَمْرُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ۝
وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ كُلَّ إِلَيْنَا لُجُوعُونَ ۝
فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ
لِسَعِيدِهِ ۖ وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ۝ وَحَرَّمْنَا عَلَىٰ قُرَيْشٍ
أَهْلَئِهَا أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ
يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ۝
وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَإِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ
أَبْصَارُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يَوِيلُكُنَا قَدْ كُنَّا فِي
غَفْلَةٍ ۖ مِنْ هَذَا بَلْ كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ إِنَّا نَكُفِّرُكُمْ وَمَا
تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۖ أَأَنْتُمْ لَهَا
وَارِدُونَ ۝ لَوْ كَانَ هُوَ إِلَّا إِلَهًا مَّا وَمَرَدُّوهَا ۖ

मक़ल

(१३) हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुम और कई मुफ़सिरी ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने आपकी सारी औलाद को जिन्दा फ़रमा दिया और आपको उत्तरी ही औलाद और इनायत की, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा की दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने आपकी बीवी साहिबा को दोबारा ज़वानी अता की और उनके बंहुत से बच्चे हुए।

(१४) कि वो इस बाइरूप से बताओं पर सब करने और उसके महान् पुण्य से बाइबर हो और सब करें और सबाइ पाएं।

(१५) कि उन्होंने महान् और बलाओं और इबादतों की मशक़तों पर सब किया।

(१६) यानी हज़रत यूनुस इब्ने मना को।

(१७) अपनी क़ौम से जिसने उनकी दावत न कुबूल की थी और नसीहत न मानी थी और कुफ़्र पर क़ायम रही थी। आपने गुमान किया कि यह हिज़रत आपके लिये जायज़ है क्योंकि इसका कारण सिर्फ़ कुफ़्र और काफ़िरों के साथ दुश्मनी और अल्लाह के लिये ग़ज़ब करना है। लेकिन आपने इस हिज़रत में अल्लाह के हुक्म का इल्तिज़ार न किया।

(१८) तो अल्लाह तआला ने उन्हें मछली के पेट में डाला।

(१९) कई तरह की अंधेरियाँ थीं। नदी की अंधेरी, रात की अंधेरी, मछली के पेट की अंधेरी। इन अंधेरियों में हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने अपने रव से इम तरह दुआ की कि —

(२०) कि मैं अपनी क़ौम से तेरी इजाज़त पाने से पहले अलग हुआ। हदीस शरीफ़ में है कि जो काई मुसीबत का मारा अल्लाह कि वारगाह में इन शब्दों से दुआ करे, तो अल्लाह तआला उसकी दुआ कुबूल फ़रमाता है।

(२१) और मछली को हुक्म दिया तो उसने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को दरिया के किनारे पहुंचा दिया।

(२२) मुसीबतों और तकलीफ़ों से जब वो इम से फ़रियाद करें और दुआ करें।

(२३) यानी वे-औलाद बल्कि वारिस अता फ़रमा।

(२४) सृष्टि की फ़ना के बाद बाकी रहने वाला। मतलब यह है कि अगर तू मुझे वारिस न दे तब भी मुझे कुछ ग़म नहीं क्योंकि तू बेहतर वारिस है।

(२५) नेक बेटा।

(२६) जो बाइज़ थी उसको बच्चा पैदा करने के काबिल बनाया।

(२७) यानी वो नदी ज़िक्र गुज़रा।

(२८) पूरे तीर पर कि किसी तरह कोई बशर उसकी पारसाई को छू न सका। इससे मुराद हज़रत मरयम हैं।

(२९) और उसके पेट में हज़रत ईसा को पैदा किया।

(३०) अपनी भरपूर कुदरत की कि हज़रत ईसा को उसकी कोख से बाहर बाप के पैदा किया।

इन सबको हमेशा उस में रहना^(१०१) (१९) जो उसमें रेंकेंगे^(११) और वो उसमें कुछ न सुनेंगे^(१२) (१००) वेशक वो जिनके लिये हमारा वादा भलाई का हो चुका वो जहन्नम से दूर रखे गए हैं^(१३) (१०१) वो उसकी भनक (हल्की सी आवाज़ भी) न सुनेंगे^(१४) और वो अपनी मन मानती ख्वाहिशों में^(१५) हमेशा रहेंगे^(१०२) उन्हें गम में न डालेगी वह सबसे बड़ी घबराहट^(१६) और फ़रिश्ते उनकी शेरवाई को आएंगे^(१७) कि यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुम से वादा था^(१०३) जिस दिन हम आसमान को लपेटेंगे जैसे सिज़िल फ़रिश्ता^(१८) अअमाल नामे को लपेटता है, जैसे पहले उसे बनाया था वैसे ही फिर कर देंगे^(१९) यह वादा है हमारे ज़िम्मे हमको इसका ज़रूर करना^(१०४) और वेशक हमने जुबूर में नसीहत के बाद लिख दिया कि इस ज़मीन के बारिस मेरे नेक वन्दे होंगे^(१०५) (१०५) वेशक यह कुरआन काफ़ी है इबादत वालों को^(१०६) (१०६) और हमने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जगत के लिये^(१०७) (१०७) तुम फ़रमाओ मुझे तो यही वही (देववाणी) होती है कि तुम्हारा खुदा नहीं मगर एक अल्लाह, तो क्या तुम मुसलमान होते हो^(१०८) (१०८)

وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ لَهُمْ فِيهَا زَوْجُرُ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ۝ لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۝ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ۝ لَا يَخَزَنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۝ يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِ لِلْكَتِّبِ ۝ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ ۝ وَعَدًا عَلَيْنَا ۝ إِنَّا كُنَّا فَعَلِينَ ۝ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ۝ إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ غَيْبِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِكَ إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ ۝ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ۝

- (३१) दीने इस्लाम : यही सारे नवियों का दीन है . इसके सिवा जितने दीन हैं सब झूठे हैं . सब को इस्लाम पर क़ायम रहना लाज़िम है .
 (३२) न मेरे सिवा कोई दूसरा रब, न मेरे दीन के सिवा और कोई दीन .
 (३३) यानी दीन में विरोध किया और सम्यदायों में बंट गए .
 (३४) हम उन्हें उनके कर्मों का बदला देंगे .

सूरए अंबिया - सातवाँ सूक़

- (१) दुनिया की तरफ़, कर्मों के प्रायश्चित और हाल को बदलने के लिये, यानी इसलिये कि उनका वापस आना असंभव है . मुफ़सिरों ने इसके ये मानी भी बयान किये हैं कि जिस दस्ती वालों को हमने हलाक किया उनका शिर्क और कुफ़्र से वापस आना असंभव है यह मानी उस सूत में है जबकि शब्द “फिर” को अतिशक्ति करार दिया जाए और अगर अतिरिक्त न हो तो मानी ये होंगे कि आख़िरत में उनका ज़िन्दगी की तरफ़ न लौटना असंभव है . इसमें दांवारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करने वालों का रव है और ऊपर जो “सब को हमारी तरफ़ फिरना है” और “इसकी कोशिश बेकदरी नहीं” फ़रमाया गया, उसकी ताकीद है . (तरफ़मीरे कबीर वग़ैरह)
 (२) क़यामत के करीब, और याजूज माजूज दो ब्रह्मीलों के नाम हैं .
 (३) यानी क़यामत .
 (४) इस दिन की हौल और दहशत से, और कहेंगे .
 (५) दुनिया के अन्दर .
 (६) कि रसूलों की बात न मानते थे और उन्हें झुटलाते थे .
 (७) ऐ मुश्रिक लोगो !
 (८) यानी तुम्हारे देवी देवता .
 (९) देवी देवता जैसा कि तुम्हारा गुमान है .
 (१०) बुतों को भी और उनके पूजने वालों को भी .
 (११) और अज़ाब की तीव्रता से चीखेंगे और दहाड़ेंगे .
 (१२) जहन्नम के उबाल की सख़्ती से . हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया जब जहन्नम में वो लोग रह जाएंगे जिन्हें उसमें हमेशा रहना है तो वो आग के ताबूतों में बन्द किये जाएंगे . वह ताबूत और ताबूतों में, फिर वह ताबूत और ताबूतों में . उन ताबूतों

फिर अगर वो मुंह फेंकें (२७) तो फ़रमा दो, मैं ने तुम्हें लड़ाई का ऐलान कर दिया बराबरी पर और मैं क्या जानूँ (२८) कि पास है या दूर है वह जो तुम्हें वादा दिया जाता है (२९) (१०९) वेशक अल्लाह जानता है आवाज़ की बात (२९) और जानता है जो तुम छुपाते हो (३०) (११०) और मैं क्या जानूँ शायद वह (३१) तुम्हारी जांच हो (३२) और एक वक़्त तक वरतवाना (३३) (१११) नबी ने अर्ज़ की कि ऐ मेरे रब हक़ फ़ैसला फ़रमा दे (३४) और हमारे रब रहमान ही की मदद दरकार है उन बातों पर जो तुम बताते हो (३५) (११२)

२२-सूरए हज

सूरए हज मदीने में उतरी, इसमें ७८ आयतें, दस रूकू हैं.

पहला रूकू :

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) ऐ लोगो अपने रब से डरो (२) वेशक क़यामत का ज़लज़ला (३) बड़ी सख़्त चीज़ है (४) जिस दिन तुम उसे देखोगे हर दूध पिलाने वाली (५) अपने दूध पीते को भूल जाएगी और हर गाभिनी (६) अपना गाभ डाल देगी (७) और तू लोगों को देखेगा जैसे नशे में हैं और वो नशे में न होंगे (८) मगर यह कि अल्लाह की मार कड़ी है (९) और कुछ लोग वो हैं कि

۲۱۲

سُورَةُ الْحَجِّ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرْوِيهَا تَدَأَلُّ كُلُّ مُرْضَعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَىٰ وَمَا هُمْ بِسُكَارَىٰ وَلَٰكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ

الْحَجَّ

पर आग की मंखें जड़ दी जाएंगी तो वो कुछ न सुनंग और न कोई उन में किसी का देखेगा.

(१३) इसमें ईमान वालों के लिये बशारत है. हज़रत अली मुरतज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने यह आयत पढ़कर फ़रमाया कि मैं उन्हीं में हूँ और अबू बक्र और उमर और उमामा और तलहा और जुबैर और सअद और अब्दुर्रहमान बिन आफ़ (रदियल्लाहो अन्हुम). रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम एक दिन काबरा मुअज़्ज़मा में दाख़िल हुए. उस वक़्त कुरैश के सरदार हनीम में मौजूद थे और काबा शरीफ़ के चारों तरफ़ तीन सौ साठ बुत थे. तज़र बिन हारिस सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने आया और आपसे कलाम करने लगा. हज़ूर ने उसका जवाब देकर ख़ामोश कर दिया और यह आयत तिलावत फ़रमाई : “इन्कुम वमा तअबुदूना भिन दूनिल्लाहे हसबो जहन्नमा” यानी तुम और जो कुछ अल्लाह के सिवा पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं. यह फ़रमाकर हज़ूर तशरीफ़ ले आए. फिर अब्दुल्लाह बिन ज़बअरी सहमी आया और उसको बलीद बिन मुगीरा ने इस मुफ़्तगू की ख़बर दी. कहने लगा कि खुदा की क़सम, मैं होता तो उनसे तर्क वितर्क करता. इसपर लोगों ने रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुलाया. इन्हे ज़बअरी कहने लगा कि आप ने यह फ़रमाया है कि और जो कुछ तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं. हज़ूर ने फ़रमाया, हाँ. कहने लगा, यहूदी तो हज़रत उज़ैर को पूजते हैं, और ईसाई हज़रत ईसा को और बनी मलीह फ़रिश्तों को पूजते हैं. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और बयान फ़रमाया कि हज़रत उज़ैर और मसीह और फ़रिश्ते वो हैं जिनके लिये भलाई का वादा हो चुका और वो जहन्नम से दूर रखे गए हैं और हज़ूर सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि वास्तव में यहूदी और ईसाई वगैरह शैतान की पूजा करते हैं. इन जवाबों के बाद उस को दम मारने की हिम्मत न रही और वह ख़ामोश रह गया और दर हकीकत उसका ऐतिराज़ भरपूर दूश्मनी से था क्योंकि जिस आयत पर उसने ऐतिराज़ किया था उसमें “मा तअबुदूना” है और मा अरबी ज़बान में निर्जीव के लिये बोला जाता है. यह जानते हुए उसने अंधा वनकर ऐतिराज़ किया. यह ऐतिराज़ तो ज़बान जानने वालों के लिये ग़ुल्ला हुआ बातिल था. मगर ज़्यादा बयान के लिये इस आयत में व्याख्या फ़रमा दी गई.

(१४) और उसके जोश की आवाज़ भी उन तक न पहुंचेगी. वो जन्नत की मंज़िलों में आराम फ़रमा होंगे.

(१५) अल्लाह तआला की नअमतों और करामतों में.

(१६) यानी सूर का आख़िरी बार फ़ूँका जाता.

(१७) क़ब्रों से निकलते वक़्त मुबारकवाद देते, और यह कहते ...

(१८) जो आदमी के मरते समय कर्म लिखता है उसके ...

(१९) यानी हमने जैसे पहले अदम यानी शून्य से बनाया था वैसे ही फिर शून्य करने के बाद पैदा कर देंगे या ये मानी हैं कि जैसा माँ के पेट से बंगा बिना ख़त्ता किया हुआ पैदा किया था ऐसा ही मरने के बाद उठाएंगे.

अल्लाह के मामले में झगड़ते हैं वे जाने बूझे और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं^(८३) जिस पर लिख दिया गया है कि जो इसकी दोस्ती करेगा तो यह जरूर उसे गुमराह कर देगा और उसे दोज़ख के अज़ाब की राह वताएगा^(८४) ऐ लोगो अगर तुम्हें क़यामत के दिन जीने में कुछ शक हो तो यह सौर करो कि हमने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से^(८५) फिर पानी की बूंद से^(८६) फिर खून की फुटक से^(८७) फिर गोشت की वोटी से नक़्श आनी और बेवनी^(८८) ताकि हम तुम्हारे लिये निशानियां ज़ाहिर फ़रमाएं^(८९) और हम ठहराए रखते हैं माओं के पेट में जिसे चाहें एक निश्चित मीआद तक^(९०) फिर तुम्हें निकालते हैं वच्चा फिर^(९१) इसलिये कि तुम अपनी जवानी को पहुंचो^(९२) और तुम में कोई पहले मर जाता है और कोई सबसे निकम्मी उम्र तक डाला जाता है^(९३) कि जानने के बाद कुछ न जाने^(९४) और तू ज़मीन को देखे मुरझाई हुई^(९५) फिर जब हमने उसपर पानी उतारा तरो ताज़ा हुई और उभर आई और हर रौनकदार जोड़ा^(९६) उगा लाई^(९७) यह इसलिये है कि अल्लाह ही हक़ है^(९८) और यह कि वह

فِي اللَّهِ يَغْيِرُ عِلْمُهُ وَيَتَغَيَّرُ كُلُّ شَيْءٍ مَرِيدٌ
كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَإِنَّهُ يُضِلُّهُ وَ
يَهْدِيهِ إِلَى عَذَابِ السَّعِيرِ ۝ يَكَايَهَا النَّاسُ
إِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ
مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِّنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِّنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِّنْ
مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ
وَنُقَرِّرُ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى
ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِنَبْلُوَكُمْ أَشَدَّكُمْ
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفَّىٰ وَمِنْكُمْ مَّنْ يَّرْتَدُّ إِلَىٰ
أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا
وَتَرَىٰ الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنْبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ
بَهِيٍّ ۝ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُخَيِّ

(२०) इस ज़मीन से मुराद जन्नत की ज़मीन है और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि काफ़िरी की ज़मीन मुराद है जिनको मुसलमान फ़क्त करेंगे और एक क़ौल यह है कि शाम की ज़मीन मुराद है।

(२१) कि जो इसका अनुकरण करे और इसके अनुसार कर्म करे, वह जन्नत पाए और मुराद हासिल करे और इबादत वालों से भूमिन मुराद है और एक क़ौल यह है कि उम्मेने मुहम्मदिया मुराद है जो पाँचों वक़्त नमाज़ें पढ़ते हैं, रमज़ान के राज़े रखते हैं, हज़ करतें हैं।

(२२) कोई हो, जिन्न हो या इन्सान, ईमानदार हो या काफ़िर, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हुज़ूर का रहमत होना आम है, ईमान वाले के लिये भी और उसके लिये भी जो ईमान न लाया, भूमिन के लिये तो आप दुनिया और आख़िरत दोनों में रहमत हैं और जो ईमान न लाया उसके लिये आप दुनिया में रहमत हैं कि आपकी वजह से अज़ाब में विलम्ब हुआ और धंसाने, सूखने बिगाड़ने और इसी तरह के दूसरे अज़ाब उठा दिये गए, तफ़सीर: मृदुल बयान में बुज़ुर्गों का यह क़ौल नक़ल किया है कि आयत के मानी ये हैं कि हमने आपको नहीं भेजा मगर सबके लिये भरपूर रहमत बनावर, सारे जगत के लिये रहमत, चाहे आलमे अर्वाह हों या आलमे अज़साम, सबोध हों या अबोध, और जो तमाम जगत के लिये रहमत हों, उसके लिये लाज़िम है कि वह सारे जगत से अफ़ज़ल हो।

(२३) और इस्लाम न लाएं।

(२४) ख़ुदा के बताए बिना, यानी यह बात अक़ल और अन्दाज़े से जानने की नहीं है, यहाँ दरायत की तफ़्सीर फ़रमाई गई, दरायत कहने हैं अन्दाज़े और अनुमान से जानने को, इसी लिये अल्लाह तआला के वास्ते शब्द दरायत इस्तेमाल नहीं किया जाता और क़ुरआन शरीफ़ के इतलाफ़ात इसपर दलील हैं, जैसा कि फ़रमाया “मा कुन्ना तदरी मल कितायां बलल ईमानो” यानी इससे पहले न तुम किताब जानते थे न शरीअत के अहक़ाम की तफ़्सील (सूरए थौरा, आयत ५२), लिहाज़ा यहाँ अल्लाह की तालीम के बिना केवल अपनी अक़ल और अनुमान से जानने की तफ़्सीर है न कि मुतलक़ इल्म की, और मुतलक़ इल्म की तफ़्सीर कैसे हो सकती है जब कि इसी स्फ़ू के शुरू में आ चुका है “बक़रतबल वअदुल हक़को” यानी क़रीब आया सच्चा वादा (सूरए अंबिया, आयत ९७), तो कैसे कहा जा सकता है कि वादे का क़ुर्व और दूरी किसी तरह मालूम नहीं, ख़ुलासा यह है कि अपनी अक़ल और अन्दाज़े से जानने की तफ़्सीर है, न कि अल्लाह के बताए से जानने की।

(२५) अज़ाब का या क़यामत का।

(२६) ज़ा ऐ काफ़िरो! तुम एलात के साथ इस्लाम पर तअने के तौर से कहते हो।

(२७) अपने दिलों में यानी नबी की दुश्मनी और मुसलमानों से द्वेष जो तुम्हारे दिलों में छुपा हुआ है, अल्लाह उसका भी जानता है, सब का बदला देगा।

- (२८) यानी दुनिया में अज्ञात में तारीख या विलम्ब करना.
- (२९) जिससे तुम्हारा हाल ज़ाहिर हो जाए.
- (३०) यानी मौत के वक़्त तक.
- (३१) मेरे और उनके बीच, जो मुझे झुटलाते हैं, इस तरह कि मेरी मदद कर और उनपर अज्ञात नाज़िल फ़रमा. यह हुआ कुबूल हुई और बढ़ और अहज़ाब और हुनैन वग़ैरह के काफ़िर अज्ञात में गिरफ़्तार हुए.
- (३२) शिर्क और कुफ़्र और बे ईमानी की.

२२ - सूरए हज - पहला रूकू

- (१) सूरए हज हज़रत इब्ने अब्बास और मुजाहिद के क़ौल के अनुसार मक्क़ में उत्तरी सिवाए छ आयतों के जो "हाज़ाने ख़रमाने" से शुरू होती हैं. इस सूरा में दस रूकू, ७८ आयतें, एक हज़ार दो सौ इक़साने क़लिमात और पाँच हज़ार पछतर अक्षर हैं.
- (२) उसके अज्ञात का ख़ाफ़ करो और उसकी फ़रमाँवरदारी में लग जाओ.
- (३) जो क़यामत की निशानियाँ में से है और क़यामत के करीब सूरज के पश्चिम से निकलने के नज़दीक़ वाक़ होगा.
- (४) उसकी दहशत से.
- (५) यानी गर्भ वाली उस दिन के होल से.
- (६) गर्भ गिर जाएंगे.
- (७) बल्कि अल्लाह के अज्ञात के ख़ाफ़ से लोगों के होश जात रहेंगे.
- (८) यह आयत नज़र बित हारिस के बारे में उतरी जो बड़ा ही झगड़ालू था और फ़रिश्तों का ख़ुदा की वंदियाँ और क़ुरआन को पहलों के क्रिसं बताता था और मौत के बाद उठाए जाने का इन्कार करता था.
- (९) शैतान के अनुकरण के नुक़सान बताकर दोबारा उठाए जाने वालों पर हुज़त क़ायम फ़रमाई जाती है.
- (१०) तुम्हारी नस्ल की असल यानी तुम्हारे सबसे बड़े दादा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को उससे पैदा करके.
- (११) यानी वीर्य की बूंद से उनकी तमाम सन्तान को.
- (१२) कि नुक़स गन्दा ख़ून हो जाता है.
- (१३) यानी सूरात वाली और बग़ैर सूरात वाली. बुझारो और मुस्लिम की हदीस में है, सैयद आलम माल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया तुम लोगों की पैदायश का मादा माँ के पेट में चालीस रोज़ तक नुक़स रहता है फिर इनती ही मुदत में बसा हुआ ख़ून हो जाता है, फिर इनती ही मुदत गोश्त की थोटी की तरह रहता है. फिर अल्लाह तआला फ़रिश्ता भेजता है जो उसका रिज़क़, उसकी उम्र, उसके कर्म, उसके बुरे या अच्छे होने को लिखता है, फिर उसमें रूह फूंकता है. (हदीस) अल्लाह तआला इन्सान की पैदाइश इस तरह फ़रमाता है और उसको एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ मुन्क़िल करता है, यह इसलिये बयात फ़रमाया गया है.
- (१४) और तुम अल्लाह की भरपूर कुदरत और हिक़मत को जानो और अपनी पैदाइश की शुरूआत के हालात पर नज़र करके समझ लो कि जो सच्ची कुदरत वाला बेजान मिट्टी में इन इक़लाब करके जानदार आदमी बना देता है, वह मर हुए इन्सान को ज़िन्दार करे तो उसकी कुदरत से क्या दूर है.
- (१५) यानी पैदायश के वक़्त तक.
- (१६) तुम्हें उम्र देने हैं.
- (१७) और तुम्हारी अक़ल और कुन्वन् कामिल हो.
- (१८) और उसको इतना बुझाया आ जाता है कि अक़ल और हवास अपनी जगह नहीं रहने और ग़ंसा हो जाता है.
- (१९) और जो जानता हो वह भूल जाए. अकरमह ने कहा कि जो क़ुरआन को हमेशा पढ़ता रहेगा, इस हालत को न पहुँचेगा. इसके बाद अल्लाह तआला मरने के बाद उठने पर दूसरी दर्ज़ाल बयान फ़रमाता है.
- (२०) ख़ुश्क़ और बिना हरियाली का.
- (२१) यानी हर क्रिसम का ख़ुशनुमा सब्ज़ा.
- (२२) ये दलीलें बयान फ़रमाने के बाद निष्कर्ष बयान फ़रमाया जाता है.
- (२३) और यह जो कुछ ज़िक़्र किया गया, आदमी की पैदायश और सृष्टी वंजर् ज़मीन को हरा भरा कर देना, उसके अस्तित्व और हिक़मत की दलीलें हैं, इन से उसका बुज़ुद भी साबित होता है.
- (२४) यह आयत अबू ज़हल वग़ैरह काफ़िरों की एक जमाअत के बारे में उतरी जो अल्लाह तआला की सिफ़ात में झग़डा करने थे और उसकी तरफ़ ऐसे गुण जोड़ा करते थे जो उसकी शान के लायक़ नहीं. इस आयत में बताया गया कि आदमी को कांडे वान बग़ैर जानकारी और बिना प्रमाण और तर्क के नहीं कहनी चाहिये. ख़ासकर शान इलाही में. और जो बात इन्म वाले के सिब्लाफ़ बेइल्मी से कही जाएगी, वह झूट होगी फिर उसपर यह अन्दाज़ कि ज़ार दे और घमण्ड के तौर पर.
- (२५) और उसके दीन में फ़र दे.
- (२६) चुनांचे वज़ में वह ज़िल्लत और ख़्तारी के साथ मारा गया.

मुझे जिलाएगा और यह कि वह सब कुछ कर सकता है (६) और इसलिये कि क़यामत आने वाली उसमें कुछ शक नहीं और यह कि अल्लाह उठाएगा उन्हें जो क़ब्रों में हैं (७) और कोई आदमी वह है कि अल्लाह के वारे में यूँ झगड़ता है कि न तो इल्म न कोई दलील और न कोई रोशन नविश्ता (लेखा) (८) हक़ से अपनी गर्दन मोड़े हुए ताकि अल्लाह की राह से वहका दे (९) उसके लिये दुनिया में रूसवाई है (१०) और क़यामत के दिन हम उसे आग का अज़ाब चखाएंगे (११) यह उसका बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा (१२) और अल्लाह वन्दों पर जुल्म नहीं करता (१३) (१४)

दूसरा रूकू

आर कुछ आदमी अल्लाह की वन्दगी एक किनारे पर करते हैं, (१) फिर अगर उन्हें कोई भलाई पहुँच गई जब तो चैन से हैं, और जब कोई जांच आकर पड़ी, (२) मुहं के बल पलट गए, (३) दुनिया ओर आखिरत दोनों का घाटा, (४) यही है खुला नुक़सान (५) (११) अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हैं जो उनका बुरा भला कुछ न करे, (६) यही है दूर की गुमराही (१२) ऐसे को पूजते हैं जिसके नफ़े से (१३) नुक़सान की तवक्को

الْمَوْتَىٰ وَآلَهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ وَآَنَّ السَّاعَةَ
آتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا ۚ وَأَنَّ اللَّهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي
الْقُبُورِ ۚ وَمَنْ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ۚ ثَأْنِي
عَظْفِهِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّهُ فِي الدُّنْيَا
خِزْيٌ ۚ وَنَذِيقُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَذَابَ الْحَرِيقِ ۚ
ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْت يَدَكَ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
الْبَغِيَّةَ ۚ وَمَنْ النَّاسِ مَنْ يُعْبُدُ اللَّهَ عَلَىٰ
حَرْفٍ ۚ فَإِنْ أَصَابَهُ خَيْرٌ اطْمَأَنَّ بِهِ ۚ وَإِنْ
أَصَابَتْهُ فَتْنَةٌ ائْتَدَبَ عَلَىٰ وَجْهِهِ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةَ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۚ يَدْعُوا
مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَمَا لَا يَضُرُّهُ ۚ ذَلِكَ
هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۚ يَدْعُوا لَكِنُ ضَرَّةً أَقْرَبُ
مَنْزِلَ

(२७) और उससे कहा जाएगा.

(२८) यानी जो तूने दुनिया में किया, कुफ़र और झुटलाना.

(२९) और किसी को बे ज़ुर्म नहीं पकड़ता.

सूरए हज - दूसरा रूकू

(१) उस में इम्मीनान से दाख़िल नहीं होते और उन्हें पायदारी हासिल नहीं होती. शक़ शुद्ध संदेह और आशंका में पड़े रहते हैं जिस तरह पहाड़ के किनारे खड़ा हुआ आदमी डगमगाता रहता है. यह आयत अरब देहातियों की एक जमाअत के बारे में उतरी जा आस पास से आकर मदीने में दाख़िल होते और इस्लाम लाते थे. उनकी हालत यह थी कि अगर वो ख़ुब स्वस्थ रहे और उनकी दौलत बढ़ी और उनके बेटा हुआ तब तो कहते थे कि इस्लाम अच्छा दीन है, इसमें आकर हमें फ़ायदा हुआ और अगर कोई बात अपनी उम्मीद के खिलाफ़ हुई जैसे कि बीमार पड़ गए या लड़की हो गई या माल की कमी हुई तो कहते थे जबसे हम इस दीन में दाख़िल हुए हैं हमें नुक़सान ही हुआ और दीन से फिर जाते थे. ये आयत उनके हक़ में उतरी और बताया गया कि उन्हें अभी दीन में पायदारी ही हासिल नहीं हुई, उनका हाल यह है.

(२) किसी क्रिम की सज़ा पेश आई.

(३) मर्तद होगए और कुफ़र की तरफ़ लौट गए.

(४) दुनिया का घाटा तो यह कि जो उनकी उम्मीदें थीं वो पूरी न हुई और दीन से फिरने के कारण उनका क़त्ल जायज़ हुआ और आख़िरत का घाटा हमेशा का अज़ाब.

(५) वो लोग मर्तद होने के बाद बुत परस्ती करते हैं और...

(६) क्यो कि वह बेजान है.

(७) यानी जिसकी पूजा के ख़याली नफ़े से उसके पूजने के...

(८) यानी दुनिया और आख़िरत के अज़ाब की.

(९) वो बुत.

(१०) फ़र्मावदारी पर ईनआम और नाफ़रमावों पर अज़ाब.

(आशा) ज्यादा है, (८) वेशक (९) क्या ही बुरा मौला और वेशक क्या ही बुरा साथी (१३) वेशक अल्लाह दाखिल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और भले काम किये बागों में जिन के नीचे नेहरें वृहें, वेशक अल्लाह करता है जो चाहे (१०) (१४) जो यह खयाल करता हो कि अल्लाह अपने नबी (११) की मदद न फरमाएगा दुनिया (१२) और आखिरत में (१३) तो उसे चाहिये कि ऊपर को एक रस्सी ताने फिर अपने आपको फांसी देले फिर देखे कि उसका यह दाँव कुछ ले गया उस बात को जिसकी उसे जलन है (१५) (१५) और बात यही है कि हमने यह कुरआन उतारा रोशन आयतों और यह कि अल्लाह राह देता है जिसे चाहे (१६) वेशक मुसलमान और यहूदी और सिक्खों पूजने वाले और ईसाई और आग की पूजा करने वाले और मूर्तिपूजक वेशक अल्लाह उन सब में क़यामत के दिन फ़ैसला कर देगा, (१७) वेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है (१८) क्या तुमने न देखा (१९) कि अल्लाह के लिये सज्दा करते हैं वो जो आसमानों और ज़मीन में हैं और सूरज और चांद और तारे और पहाड़ और दरख्त और चौपाए (२०) और बहुत आदमी (२१)

مِنْ نَفْعِهِ ۖ لَيْسَ الْمَوْلَىٰ وَلَيْسَ الْعَشِيرُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ۚ مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدَهُ مَا بِهِ غَبِطٌ ۚ وَكَذَٰلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِيَ مَنْ يُرِيدُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِقِينَ وَالنَّاصِرِينَ وَالْمُجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ

(११) हज़रत मुहम्मद मुन्नफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(१२) मैं उनके दीन को गलवा अता फ़रमा कर.

(१३) उनके दर्जे बलन्द करके.

(१४) यानी अल्लाह तआला अपने नबी की मदद ज़रूर फ़रमाएगा. जिसे उससे जलन हो, वह अपनी आखिरी कोशिश ख़त्म भी कर दे और जलन में मर भी जाए तो भी कुछ नहीं कर सकता.

(१५) मूस्विन का जन्नत अता फ़रमाएगा और काफ़िरों को, किसी क़िस्म के भी हों, जहन्नम में दाख़िल करेगा.

(१६) ऐ हबीबे अक़रम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम !

(१७) एकसूई वाला सज्दा, जैसा अल्लाह चाहे.

(१८) यानी मूभिनीन, इसके अलावा सज्दा ताअत और सज्दा इबादत भी.

(१९) यानी काफ़िर.

और बहुत वो हैं जिनपर अज्ञाव मुकर्रर (निश्चित) हो चुका^(१९) और जिसे अल्लाह जलील करे^(२०) उसे कोई इज्जत देने वाला नहीं वेशक अल्लाह जो चाहे करे^(२१) ये दो फरीक (पक्ष) हैं^(२२) कि अपने रब में झगड़े, ^(२३) तो जो काफिर हुए उनके लिये आग के कपड़े ब्याँते (काटे) जाए हैं, ^(२४) और उनके सरो पर खोलता पानी डाला जाएगा^(२५) जिससे गल जाएगा जो कुछ उनके पेटों में है और उनकी खालें^(२६) और उनके लिये लोहे के गुर्ज (गदा) हैं^(२७) जब घुटन के कारण उसमें से निकलना चाहेंगे^(२८) फिर उसी में लौटा दिये जाएंगे, और हुक्म होगा कि चखो आग का अज्ञाव^(२९)

तीसरा सूकू

वेशक अल्लाह दाखिल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम-किये बहिश्ता (स्वर्ग) में जिनके नीचे नहरें वहें उसमें पहनाए जाएंगे सोने के कंगन और मोती, ^(३०) और वहां उनकी पोशाक रेशम है^(३१) और उन्हें पाकीजा वात की हिदायत की गई^(३२) और सब खूबियों सराहे की राह बताई गई^(३३) वेशक वो जिन्होंने ने कुफ्र किया और रोक्ते हैं अल्लाह की राह^(३४) और उस अदब (आदर) वाली

وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ وَكَثِيرٌ حَقٌّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۚ وَمَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۚ هَٰؤُلَاءِ خَصْمِينَ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۚ فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِعَتْ لَهُمْ شِيَابٌ مِّنْ سَائِرِ ۖ يَصُبُّ مِّنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ۖ يُصْهِرُ فِيهِمَا فَا فِي بُطُونِهِمْ ۖ وَالْجُلُودُ ۖ وَلَهُمْ مَقَامٌ مِّنْ مِّنْ حَدِيدٍ ۖ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِّنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا ۖ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَدْخُلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۖ وَهَدًى إِلَى الْقُتَيْبِ مِنَ الْقَوْلِ ۖ وَهَدًى إِلَى صِرَاطٍ الْحَمِيدِ ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا	अज्ञाव
--	--------

मौल

- (२०) उसकी शक्कावत और बुराई के कारण.
- (२१) यानी ईमान वाले और पाँचों किस्म के काफिर जिनका जिक्र ऊपर किया गया है.
- (२२) यानी इस दीन के बारे में और उसकी सिफत में.
- (२३) यानी आग उन्हें हर तरफ से घेर लेगी.
- (२४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, ऐसा तेज़ गर्म कि अगर उसकी एक बूंद दुनिया के पहाड़ों पर डाल दी जाए तो उनको गला डाले.
- (२५) हदीस शरीफ में है, फिर उन्हें वैसा ही कर दिया जाएगा. (तिरमिज़ी)
- (२६) जिनसे उनको मारा जाएगा.
- (२७) यानी दांजम में से, तो गुज़ों से मारकर.

सूरए हज - तीसरा सूकू

- (१) ऐसे जिनकी चमक पूर्व से पश्चिम तक रौशन कर डाले. (तिरमिज़ी)
- (२) जिसका पहना दुनिया में मर्दों को हराम है. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, जिसने दुनिया में रेशम पहना, आख़िरत में न पहनेगा.
- (३) यानी दुनिया में, और पाकीजा वात से तौहीद का कलिमा मुराद है. कुछ मुफ़ससिगों ने कहा, बुख़आन मुराद है.
- (४) यानी अल्लाह का दीन, इस्लाम.
- (५) यानी उसके दीन और उसकी इताअत से.
- (६) यानी उस में दाख़िल होने से. यह आयत मुफ़ियान बिन हर्ब बग़ैरह के बारे में उतरी जिन्होंने सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका था. मस्जिद हारम से या म्बास काबा मुराद है, जैसा कि इमाम शाफ़ई

मस्जिद से^(६) जिसे हमने सब लोगों के लिये मुकर्रर किया कि उसमें एकसा हक़ (अधिकार) है वहां के रहने वाले और परदेसी का और जो उसमें किसी ज़ियादती का नाहक़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अज़ाब चखाएंगे^(७) ॥२५॥

चौथा रूकू

और जबकि हमने इब्राहीम को उस घर का ठिकाना ठीक वता दिया^(८) और हुक्म दिया कि मेरा कोई शरीक न कर और मेरा घर सुधरा रख^(९) तवाफ़ (परिक्रमा) वालों और एतिकाफ़ (मस्जिद में बैठना) वालों और रूकू सज्दे वालों के लिये^(१०) ॥२६॥ और लोगों में हज की आम निदा (घोषणा) कर दे^(११) वो तेरे पास हाज़िर होंगे प्यादा और हर दुबली ऊंटनी पर कि हर दूर की राह से आती है^(१२) ॥२७॥ ताकि वो अपना फ़ायदा पाए^(१३) और अल्लाह का नाम लें^(१४) जाने हुए दिनों में^(१५) इसपर कि उन्हें रोज़ी दी बेज़बान चौपाए^(१६) तो उनमें से खुद खाओ और मुसीबत के मारे मोहताज़ (दरिद्र) को खिलाओ^(१७) ॥२८॥ फिर अपना मैल कुचेल उतारें^(१८) और अपनी मन्नतें पूरी करें^(१९) और उस आज़ाद घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें^(२०) ॥२९॥ बात यह है और जो अल्लाह की हुर्मतों (निषेधों) का आदर करे^(२१) तो वह

وَيُصَدِّقُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْ
بَادِ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِالْحَادِ بِظُلْمٍ نُدِقْهُ
مِنْ عَذَابِ الْبَاسِ ۖ وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ
الْبَيْتِ أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ
لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ۝
وَإِذْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَى
كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ۝
لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي
آيَاتٍ مَعْلُومَاتٍ ۖ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ
الْأَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا أَمْرَ الْفَقِيرِ ۝
ثُمَّ لِيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلِيُوفُوا نُدُورَهُمْ وَلِيَطَّوِّفُوا
بِالْبَيْتِ الْعَمِيقِ ۖ ذَلِكَ ۖ وَمَنْ يُعْظَمِ حُرْمَتِ

منزل

रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं, उस सूरत में मानी ये होंगे कि वह सारे लोगों का क़िबला है, वहाँ के रहने वाले और परदेसी सब बराबर हैं, सब के लिये उस का आदर और पाकी और उसमें हज के संस्कारों की अदायगी एक सी है, और तवाफ़ और गमाज़ की फ़ज़ीलत में शहरी और परदेसी के बीच कोई अन्तर नहीं, और इमाम आजम अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो अन्हो के तज़दीक यहाँ मस्जिद हराम से मक्कए मुकर्रमा यानी पूरा हरम मुराद है, इस सूरत में मानी ये होंगे कि हरम शरीफ़ शहरी और परदेसी सब के लिये एकसा है, उसमें रहने और टहरने का हर किसी को हक़ है सिवाय इसके कि कोई किसी को निकाले नहीं, इसी लिये इमाम साहिब मक्कए मुकर्रमा की ज़मीन के क़य चिक़य और क़िराए को मना फ़रमाते हैं, जैसा कि हदीस शरीफ़ में है सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि मक्कए मुकर्रमा हरम है इसकी ज़मीनें बेची न जाएं, (तफ़सीर अहमदी)

(७) “किसी ज़ियादती का नाहक़ इरादा करे” नाहक़ ज़ियादती से या शिर्क और बुत परस्ती मुराद है, कुछ मुफ़सिरी ने कहा कि हर बर्जित क़ौल और काम मुराद है, यहाँ तक कि श्रादिम को गाली देना भी, कुछ ने कहा इससे मुराद है हरम में बग़ैर इहराम के दाख़िल होना, या मना की हुई बातों का करना जैसे शिकार मारना और पेड़ काटना, और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया मुराद यह है कि जो तुझे न क़त्ल करे, तू उसे क़त्ल करे या जो तुझ पर जुल्म न करे, तू उस पर जुल्म करे, हज़रत इब्ने अब्बास से सिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन अनीस को दो आदमियों के साथ भेजा था जिन में एक मुहाज़िर था दूसरा अन्सारी, उन लोगों ने अपनी अपनी वंशावली यानी नसब बयान किये तो अब्दुल्लाह बिन अनीस का गुस्सा आया और उसने अन्सारी को क़त्ल कर दिया और खुद हर्तद होकर मक्कए मुकर्रमा की तरफ़ भाग गया, इसपर यह आयत उतरी,

सूरए हज - चौथा रूकू

(१) काबा शरीफ़ की तामीर के वक़्त, पहले यह इमारत हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने बनाई थी, तूफ़ाने नूह के वक़्त वह आसमान पर उठा ली गई, अल्लाह तआला ने एक हवा मुकर्रर की जिसने उसकी जगह को साफ़ कर दिया और एक क़ौल यह है कि अल्लाह तआला ने एक बादल भेजा जो श्वास उस स्थान के मुक़ाबिल था जहाँ काबाए मुअज़्ज़मा की इमारत थी, इस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को काबे की जगह बताई गई और आपने उस पुरानी बुनियाद पर काबे की इमारत तामीर की और अल्लाह तआला ने आपको वही फ़रमाई,

(२) शिर्क से और बुतों से और हर क्रिम की नापाक़ियों से,

(३) यानी नमाज़ियों के,

(४) चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अबू कुबैस पहाड़ पर चढ़कर जगत के लोगों को आवाज़ दी कि बैतुल्लाह का हज

उसके लिये उसके रब के यहाँ भला है और तुम्हारे लिये हलाल किये गए वेज़बान चौपाए^(१५) सिवा उनके जिनको मुमानिअत(मनाही) तुम पर पड़ी जाती है^(१६) तो दूर हो वुत्तों गन्दगी से^(१७) और वचो झूठी बात से^(३०) एक अल्लाह के होकर कि उसका साझी किसी को न करो और जो अल्लाह का शरीक करे वह मानो गिरा आसमान से कि परिन्दे उसे ले जाते हैं^(१८) या हवा उसे किसी दूर जगह फेंकती है^(१९) ^(३१) बात यह है और जो अल्लाह के निशानों का आदर करे तो यह दिलों की परहेज़गारी से है^(२०) ^(३२) तुम्हारे लिये चौपायों में फ़ायदें हैं^(२१) एक निश्चित मीआद तक^(२२) फिर उनका पहुँचना है उस आज़ाद घर तक^(२३) ^(३३)

पाँचवाँ रूकू

और हर उम्मत के लिये^(१) हमने एक क़ुरवानी मुकर्रर फ़रमाई कि अल्लाह का नाम लें उसके दिये हुए वेज़बान चौपायों पर^(२) तो तुम्हारा मअवूद एक मअवूद है^(३) तो उसी के हुज़ूर गर्दन रखो^(४) और ऐ मेहबूब ख़ुशी सुना दो उन तवाज़ो वालों को^(३४) कि जब अल्लाह का ज़िक्र होता है उनके दिल डरने लगते हैं^(५) और जो मुसीबत पड़े उसके सहने वाले और नमाज़ क़ायम रखने वाले और

الحجّة

३५८

بَقَرَةُ

اللّٰهُ فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَأُحِلَّتْ لَكُمْ
الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُنْتَظَرُ عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ
مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ۚ حُنَفَاءَ
لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللّٰهِ
فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الظُّيُورُ أَوْ
تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحَابٍ ۚ ذَٰلِكَ
وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللّٰهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ ۚ
لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَا
إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۚ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنَسَكًا
لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةٍ
الْأَنْعَامِ ۚ وَاللَّهُ وَاحِدٌ ۚ فَلَهُ أَسْلِمُوا
وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ۚ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ
وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمْ

مَنْزِل

करों. जिनकी क्रिस्मत में हज़ है उन्होंने ने बापों की पीठ और माओं के पेट से जवाब दिया : “लबैक अल्लाहुम्मा लबैक” हम हाज़िर हैं ऐ हमारे रब, हम हाज़िर हैं. हमन रदियल्लाहो अन्हो का क़ौल है कि इस आयत में “अज़्ज़िन” यानी “आम पुकार कर दे” का सम्बोधन सयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को है. चुनांचे आखिरी हज़ में एलाउ फ़रमा दिया और इरशाद किया कि ऐ लोगो, अल्लाह ने तुम पर हज़ फ़र्ज़ किया तो हज़ करो.

(५) और बहुत ज़्यादा सफ़र और घूमने से दुबली हो जाती हैं.

(६) दीनी भी और दुनियावी भी जो इस इबादत के साथ ख़ास हैं, दूसरी इबादत में नहीं पाए जात.

(७) ज़िक्र के समय .

(८) जाने हुए दिनों से ज़िलहज़ का अशरा यानी दस दिन मुग़द हैं जैसा कि हज़रत अली और इब्ने अब्बास व हसन और क़तादा रदियल्लाहो अन्हुम का क़ौल है और यही मज़हब है हमारे इमाम आजम हज़रत अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो अन्हो का और साहिबन के तब्दीक जाने हुए दिनों से कुर्बानी के दिन मुग़द हैं. यह क़ौल है हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो का और हर सूरत में यहाँ इन दिनों से ख़ास ईद का दिन मुग़द है. (तफ़सीर अहमदी)

(९) ऊँट, गाय, बकरी और भेड़.

(१०) हर एक कुर्बानी से, जिन का इस आयत में बयान है, ख़ाना जायज़ है, बाकी कुर्बानियों से जायज़ नहीं. (तफ़सीर अहमदी)

(११) मूँठ कतरबाएँ, नाज़ुन तराशें, बग़लें और पेड़ के बाल साफ़ करें.

(१२) जो उन्होंने मानी हों.

(१३) इससे तवाफ़े ज़ियारत यानी हज़ का फ़र्ज़ तवाफ़ मुग़द है. हज़ के मसाइल तफ़सील से सूरए बक्रा पारा दो में ज़िक्र हो चुके.

(१४) यानी उसके एहक़ाम की, चाहे वो हज़ के संस्कार हों या उनके सिवा और आदेश. कुछ मुफ़सिरों ने इस से हज़ के संस्कार मुग़द लिये हैं और कुछ ने बतै हराम, व मशअरे हराम व शहरे हराम व बलदे हराम व मस्जिदे हराम मुग़द लिये हैं.

(१५) कि उन्हें ज़िक्र करके ख़ाओ.

(१६) क़ुरआन शरीफ़ में, जैसे कि सुरए माइदा की आयत “हुर्मत अलैकुम” में बयान फ़रमाई गई.

(१७) जिनकी पूजा करना बदतरीन ग़द्गी में लिख़ना है.

(१८) और वोटी बोटी करके खा जाते हैं.

(१९) मुग़द यह है कि शिर्क करने वाला अपनी जान को बहुत बुरी हलाक़त में डालता है. ईमान को बलन्दी में आसमान से मिसाल दी गई है और ईमान छोड़ने वाले को आसमान से गिराने वाले के साथ और उसकी तफ़सानी ख़ाहिशों को जो उसके विचारों को उलट

हमारे दिये से खर्च करते हैं^(६) (३५) और कुरवानी के डीलदार जानवर ऊंट और गाय हमने तुम्हारे लिये अल्लाह की निशानियों से किये^(७) तुम्हारे लिये उनमें भलाई है^(८) तो उनपर अल्लाह का नाम लो^(९) एक पाँव बंधे तीन पाँव से खड़े^(१०) फिर जब उनकी कर्वटें गिर जाएं^(११) तो उनमें से खुद खाओ^(१२) और सत्र से बैठने वाले और भीख माँगने वाले को खिलाओ, हमने यही उनको तुम्हारे वस में दे दिया कि तुम एहसान मानो^(१३) अल्लाह को हरगिज न उनके गोشت पहुँचते हैं न उनके खून, हाँ तुम्हारी परहेज़गारी उसतक पहुँचती है^(१४) यही उनको तुम्हारे वस में कर दिया कि तुम अल्लाह की थड़ाई वो लो इसपर कि तुम को हिदायत फ़रमाई, और ऐ मेहबूब खुश ख़वरी सुनाओ नेकी वालों को^(१५) (३७) वेशक अल्लाह बलाएं टालता है मुसलमानों की^(१६) वेशक अल्लाह दोस्त नहीं रखता हर बड़े दगाबाज़ नाशुक्र को^(१७) (३८)

छटा रूकू

परवानगी (आज्ञा) अता हुई उन्हें जो काफ़िर से लड़ते हैं^(१) इस विना पर कि उनपर जुल्म हुआ^(२) और वेशक अल्लाह उनकी मदद करने पर ज़रूर कादिर (सक्षम) है^(३) वो जो अपने घरों से नाहक निकाले गए^(४) सिर्फ़ इतनी बात पर कि उन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है^(५) और अल्लाह

وَالْمُؤَيَّي الصَّلَوةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ
وَالْبَدَنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا حَاثِرَةٌ فَادْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافٍ
فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا
الْقَارَةَ وَالْبُعْتَرَ كَذَلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ
لَنْ يَنَالَ اللَّهُ لُحُومَهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلَكِنْ يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ
كَذَلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَيُثِيرَ الْمُحْسِنِينَ
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ
كَفُورٍ أَذِنَ لِلَّذِينَ يُفْتَنُونَ بِأَنَّهُمْ طُلُبُوا
وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ عَلَىٰ نَفْسِهِمْ لَقَدْ أَيْدَىٰ الَّذِينَ
أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَنْ يَقُولُوا

مَرْحَلَةٌ

पुलट करती हैं, बोटी बांटी ले जाने वाले पक्षियों के साथ और शैतानों को जो उसको गुमराही की घाटी में फेंकते हैं, हवा के साथ उपमा दी गई है और इस नफ़ीस मिसाल से शिक के वुरा परिणाम समझाया गया।

(२०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह के निशानों से मुराद कुरवानी के जानवर हैं और उनका आदर यह है कि मांट ताज़े ख़ूबसूरत और कीमती लिये जाएं।

(२१) ज़रूरत के वक़्त उनपर सवार होने और उनका दूध पीने के।

(२२) यानी उनके ज़िद्ध के वक़्त तक।

(२३) यानी हरम शरीफ़ तक जहाँ वो ज़िद्ध किये जाएं।

सूरए हज - पाँचवां रूकू

(१) पिछली ईमानदार उम्मतों में से।

(२) उनके ज़िद्ध के वक़्त।

(३) तो ज़िद्ध के वक़्त सिर्फ़ उसी का नाम लो, इम आयत में दलील है इसपर कि ख़ुदा के नाम का ज़िक्र करना ज़िद्ध के लिये शर्त है, अल्लाह तआला ने हर उम्मत के लिये मुक़र्र फ़रमा दिया था कि उसके लिये तक़्र्रब के तरीक़े पर कुरवानी करें और तमाम कुरवानियों पर उसी का नाम लिया जाए।

(४) और सच्चे दिल से उसकी आज्ञा का पालन करो।

(५) उसके हैबत और ज़लाल से।

(६) यानी सदक़ा देते हैं।

(७) यानी उसके दीन के फ़ैनाम से।

(८) दुनिया में नफ़ा और आख़िरत में अज़्र और सचाव।

(९) उनके ज़िद्ध के वक़्त जिस हाल में कि वो हों।

(१०) ऊंट के ज़िद्ध का यही मसूून तरीक़ा है।

(११) यानी ज़िद्ध के बाद उनके पहलू ज़मीन पर गिरे और उनकी हरकत ठहर जाए।

(१२) अगर तुम चाहो।

अगर आदमियों में एक को दूसरे से दफा न फ़रमाता^(१) तो ज़रूर ढा दी जातीं खानकाहें (आश्रम)^(२) और गिरजा^(३) और कलीसे^(४) और मस्जिदें^(५) जिनमें अल्लाह का बहुत नाम लिया जाता है, और वेशक अल्लाह ज़रूर मदद फ़रमाएगा उसकी जो उसके दीन की मदद करेगा, वेशक ज़रूर अल्लाह कुदरत वाला ग़ालिब है^(६) वो लोग कि अगर हम उन्हें ज़मीन में क़ाबू दें^(७) तो नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें और भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोकें^(८) और अल्लाह ही के लिये सब कामों का अंजाम^(९) और अगर ये तुम्हें झुटलाते हैं^(१०) तो बेशक उन से पहले झुटला चुकी है नूह की क़ौम और आद^(११) और समूद^(१२) और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम^(१३) और मदन वाले^(१४) और मूसा को झुटलाया गया^(१५) तो मैं ने काफ़िरों को ढील दी^(१६) फिर उन्हें पकड़ा^(१७) तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब^(१८) और कितनी ही वस्तियां हमने खपा दीं (हलाक कर दीं)^(१९) कि वो सितमगार थीं^(२०) तो अब वो अपनी छतों पर बैठ पड़ी हैं और कितने कुंवें बेकार पड़े^(२१)

رَبَّنَا اللَّهُ ۖ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضُهُمْ
بِبَعْضٍ لَّهَدَمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَصَلَوَاتٌ وَ
مَسَاجِدُ يُذَكِّرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۚ
وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ
عَزِيزٌ ۝ الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ
أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَآمَرُوا
بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَاللَّهُ عَاقِبَةُ
الْأُمُورِ ۝ وَإِنْ يَكْذِبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودٌ ۚ وَقَوْمُ
إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ۚ وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ ۚ وَكَذَّبَ
مُوسَىٰ فَأَصْلَحَتْ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْنَاهُمْ
فَلَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝ فَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ
أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ

مَذَلٍ

(१३) यानी कुरबानी करने वाले सिर्फ़ नियत की सच्चाई और तक्रबा की शतों की रियायत से अल्लाह तआला को राज़ी कर सकते हैं, जिहालत के ज़माने के काफ़िर अपनी कुरबानीयों के ख़ून से काबे की दीवारों को गन्दा करते थे और इसको तक्रर का साधन मानते थे, इसपर यह आयत उतरी.

(१४) सबाब की.

(१५) और उनकी मदद फ़रमाता है.

(१६) यानी काफ़िरों को, जो अल्लाह और उसके रसूल की ख़ियालत और ख़ुदा की नेअमतों की नाशुकी करते हैं.

सूरए हज - छटा रूकू

(१) जिहाद की .

(२) मक्के के काफ़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथियों को रोज़मर्रा हाथ और ज़वान से सस्त्र यातनाएं देने थे और कष्ट पहुंचाते रहते थे और सहाबा हुज़ूर के पास इस हाल में पहुंचते थे कि किसी का सर फटा है, किसी का हाथ टूटा है, किसी का पाँव बंधा हुआ है. रोज़ाना इस किसम की शिकायतें हुज़ूर की बारगाह में पहुंचती थीं और सहाबा किराम काफ़िरों के अत्याचारों और यातनाओं की हुज़ूर के दरबार में फ़रियाद करते थे. हुज़ूर यह फ़रमा दिया करते कि सब करो, मुझे अभी जिहाद का हुक्म नहीं दिया गया. जब हुज़ूर ने मदीनए तैय्यिबह को हिजरत फ़रमाई तब यह आयत उतरी और यह वह पहली आयत है जिसमें काफ़िरों के साथ जंग करने की इज़ाज़त दी गई है.

(३) और बेवतन किये गए.

(४) और यह सच्चा क़लाम है और सच्चाई पर घरों से निकालना और बेवतन करना बिल्कुल नाहक.

(५) जिहाद की इज़ाज़त दे कर और सीमाएं निर्धारित फ़रमाकर, तो नतीजा यह होता कि मुश्कियों का शलबा हो जाता और कोई दीनो मिल्लत वाला उनके ज़ालिम हाथों से न बचता.

(६) पादरियों की.

(७) ईसाइयों के.

(८) यहूदियों के.

(९) मुसलमानों की.

(१०) और उनके दुश्मनों के मुकाबिल उनकी मदद फ़रमाएं.

और कितने महल गच किये हुए^(१३) (४५) तो क्या ज़मीन में न चले^(१४) कि उनके दिल हों जिन से समझें^(१५) या कान हों जिन से सुनें^(१६) तो यह कि आँखें अन्धी नहीं होतीं^(१७) बल्कि वो दिल अंधे होते हैं जो सीनों में हैं^(१८) (४६) और ये तुम से अज़ाब मांगने में जल्दी करते हैं^(१९) और अल्लाह हरगिज़ अपना वादा झूठा न करेगा^(२०) और वेशक तुम्हारे रब के यहाँ^(२१) एक दिन ऐसा है जैसे तुम लोगों की गिनती में हजार बरस^(२२) (४७) और कितनी बस्तियाँ कि हमने उनको ढील दी इस हाल पर कि वो सितमगार थीं फिर मैं ने उन्हें पकड़ा^(२३) और मेरी ही तरफ पलट कर आता है^(२४) (४८)

सातवाँ सूकू

तुम फ़रमा दो कि ऐ लोगो मैं तो यही तुम्हारे लिये खुला डर सुनाने वाला हूँ^(२५) तो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिये बख्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी^(२६) (५०) और वो जो कोशिश करते हैं हमारी आयतों में हार जीत के इरादों से^(२७) वो जहन्नमी हैं^(२८) (५१) और हमने तुमसे पहले जितने रसूल या नबी भेजे^(२९) सब पर कभी यह घटना घटी कि जब उन्होंने पढ़ा तो शैतान ने उनके पढ़ने में लोगों पर

عُرُوشَهَا وَيُثْرِ مُعْطَلَةٍ وَقَصِيرٍ مَّشِيدٍ ۝
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونُ لَهُمْ قُلُوبٌ
يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا، فَإِنَّهَا لَا
تَعْنَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْنَى الْقُلُوبُ الَّتِي
فِي الصُّدُورِ ۝ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَ
لَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ وَإِنْ يَوْمًا عَبْدَ
رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ۝ وَكَانَ مِنْ
قَرْنٍ قَرِيْبَةٍ أَمْكَيْتَ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ
أَخَذْنَاهَا ۝ وَاللَّهِ الْمَصِيرُ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا
النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ نَدِيرٌ مُبِينٌ ۝ قَالَتِ
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۝ وَرِزْقٌ
كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِرِينَ
أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ

سُورَةٍ

(११) इसमें ख़बर दी गई है कि आयन्दा मुहाजिरों को ज़मीन में क़ब्ज़ा अता फ़रमाने के बाद उनकी सीरतें ऐसी पवित्र रहेंगी और वो दीन के मामलों में सच्चे दिल से लगे रहेंगे, इसमें झुलफ़ाए राशिदीन के न्याय और उनके तक्वा और परहेज़गारी की दलील है जिन्हें अल्लाह तआला ने शौकत, प्रतिष्ठा और हुकूमत अता फ़रमाई और न्याय करने वाली सीरत अता की।

(१२) ऐ हदीबे अकरम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम !

(१३) हज़रत हूद की क़ौम।

(१४) हज़रत सालेह की क़ौम।

(१५) यारी हज़रत शुऐब की क़ौम।

(१६) यहाँ मूसा की क़ौम न फ़रमाया, क्योंकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम बनी इस्राईल ने आपको झुटलाया न था बल्कि फिरऔन की क़ौम किनियों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को झुटलाया था। इन क़ौमों का बयान और हर एक के अपने रसूलों का झुटलाना का बयान सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम की तसल्ली के लिये है कि काफ़िरों का यह पुराना तरीक़ा है, पिछले बयानों के साथ भी यही तरीक़ा रहा है।

(१७) और उनके अज़ाब में विलम्ब किया और उन्हें मोहलत दी।

(१८) और उनके कुफ़र और सरकशी की सज़ा दी।

(१९) आप का झुटलाने वालों को चाहिये कि अपना परिणाम मोचें और सबक़ पकड़ें।

(२०) और वहाँ के रहने वालों को हलाक कर दिया।

(२१) यानी वहाँ के रहने वाले काफ़िर थे।

(२२) कि उनसे कोई पानी भरने वाला नहीं।

(२३) बीरान पड़े हैं।

(२४) काफ़िर कि इन हालात का अवलोकन करें, देखें।

(२५) कि बयानों का झुटलाने का क्या परिणाम हुआ और सबक़ पकड़ें।

(२६) पिछली उम्मतों के हालात और उनका हलाक होना और उनकी बस्तियाँ की बीरानी कि उससे नसीहत मिले।

(२७) यारी काफ़िरों की ज़ाहिरी हिंस यारी दृष्टि दानिल नहीं हुई है वो इन आँखों से देखने की चीज़ें देखते हैं।

(२८) और दिलों ही का अस्था होना बहुत बुरा है, इसी लिये आदमी दीन की राह पाने से मेहरूम रहता है।

(२९) यानी मक्के के काफ़िरों जैसे नज़र बिन हारिस बसौरह, और यह जल्दी करना उनका हंसी बनाने के तौर से था।

(३०) और ज़रूर वाद के मुताबिक़ अज़ाब उतरेगा, चुनांचे यह वादा बद्र में पूरा हुआ।

कुछ अपनी तरफ से मिला दिया तो मिटा देता है अल्लाह उस शैतान के डाले हुए को फिर अल्लाह अपनी आयतें पक्की कर देता है^(५२) और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है^(५२) ताकि शैतान के डाले हुए को फ़िल्सा कर दे^(५३) उनके लिये जिनके दिलों में बीमारी है^(५४) और जिनके दिल सख्त हैं^(५५) और वेशक सितमगार हैं^(५६) धुर के झगड़ालू हैं^(५७) और इसलिये कि जान लें वो जिनको इल्म मिला है^(५८) कि वह^(५९) तुम्हारे रब के पास से हक़ (सत्य) है तो उस पर ईमान लाएं तो झुक जाएं उस के लिये उनके दिल, और वेशक अल्लाह ईमान वालों को सीधी राह चलाने वाला है^(६०) और काफ़िर उससे^(६१) हमेशा शक में रहेंगे यहां तक कि उनपर क़यामत आ जाए अचानक^(६२) या उनपर ऐसे दिन का अज़ाव आए जिस का फ़ल उनके लिये कुछ अच्छा न हो^(६३)^(५५) वादशाही उस दिन^(५६) अल्लाह ही की है वह उनमें फ़ैसला कर देगा तो जो ईमान लाए और^(५७) अच्छे काम किये वो चैन के वाग़ों में हैं^(५८) और जिन्होंने

قَبْلَكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّى أَلْقَى
الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ ۖ فَبِئْسَ اللَّهُ مَا يُلْقِي
الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكُمُ اللَّهُ الْيَتِمَ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ۝ لِيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ فِتْنَةً
لِّلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ
وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝ وَلِيَعْلَمَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ
فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ
لَهَادِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝
وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِنْهُ
حَتَّى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ
يَوْمٍ عَقِيمٍ ۝ أَلَمْ يَكُنْ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ يَحْكُمُ
بَيْنَهُمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي

مَنْزِلٍ

- (३१) आग्रित में अज़ाव का.
- (३२) तो ये कुफ़र क्या समझ कर अज़ाव की जल्दी करते हैं.
- (३३) और दुनिया में उन पर अज़ाव उतारा.
- (३४) आग्रित में.

सूरए हज - सातवाँ रूक़

- (१) जो कभी टूट नहीं, वह ज़ब्रत है.
- (२) कि कभी इन आयतों का जादू कहते हैं, कभी कबिता, कभी पिछलों के किस्स और वो यह ख़याल करते हैं कि इस्लाम के साथ उनका यह छल चल जाएगा.
- (३) नबी और रसूल में फ़र्क़ है. नबी आम है और रसूल ख़ास. कुछ मुफ़सिरी ने फ़रमाया कि रसूल शरीअत की व्याख्या करने वाले होते हैं और नबी उसके सरक्षक और निगहबान. जब सूरए नज्म उतरी तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मस्जिद हराम में उसकी तिलावत फ़रमाई और बहुत अहिस्ता अहिस्ता आयतों के बीच रुक रुक कर जिसमें सुनने वाले ग़ौर भी कर सकें और याद करने वालों को याद करने में मदद भी मिले. जब आपने आयत "ब मनातस सालिसतल उग्ररा" पढ़कर दस्तूर के मुनाशिर वक्फ़ा फ़रमाया तो शैतान ने मुश्रिकों के कान में इस से मिलाकर दो कलिमें ऐसे कह दिये जिन से बुता की तारीफ़ निकलती थी. जिब्रईले अमीन ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह हाल अज़ा किया. इससे हुज़ूर को दुःख हुआ. अल्लाह तआला ने आप की तसल्ली के लिये यह आयत उतारी.
- (४) जो पैग़म्बर पढ़ते हैं और उन्हें शैतानी कलिमों की मिलावट से मेहफूज़ फ़रमाता है.
- (५) और मुसीबत और आज़माइश बना दे.
- (६) शक और दोहरी प्रवृत्ति की.
- (७) हक़ को क़बूल नहीं करते और य. मुश्रिक हैं.
- (८) यानी मुश्रिक और दोहरी प्रवृत्ति वाले लोग.
- (९) अल्लाह के दीन का और उसकी आयतों का.
- (१०) यानी क़ुरआन शरीफ़.
- (११) यानी क़ुरआन से या दीने इस्लाम से.

कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाई उनके लिये जिल्लत का अज़ाब है (५७)

आठवाँ सूक़

और वो जिन्होंने अल्लाह की राह में अपने घर वार छोड़े (५१) फिर मारे गए या मर गए तो अल्लाह ज़रूर उन्हें अच्छी रोज़ी देगा (५२) और बेशक अल्लाह की रोज़ी सबसे बेहतर है (५८) ज़रूर उन्हें ऐसी जगह ले जाएगा जिसे वो पसंद करेंगे (५३) और बेशक अल्लाह इल्म और हिल्म वाला है (५९) बात यह है, और जो बदला ले (५४) जैसी तकलीफ़ पहुंचाई गई थी फिर उसपर ज़ियादती की जाए (५५) तो बेशक अल्लाह उसकी मदद फ़रमाएगा (५६) वंशक अल्लाह माफ़ करने वाला वरख़ाने वाला है (५७) यह इसलिये कि अल्लाह तआला रात को डालता है दिन के हिस्से में (५८) और दिन को लाता है रात के हिस्से में और इसलिये कि अल्लाह सुनता देखता है (६१) यह इसलिये (५९) कि अल्लाह ही हक़ है और उसके सिवा जिसे पूजते हैं (६०) वही वातिल (झूट) है और इसलिये कि अल्लाह ही बलन्दी बढ़ाई वाला है (६२) क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा तो सुवह को ज़मीन (६३) हरियाली हो गई, बेशक अल्लाह पाक ख़बरदार

اَفَرَأَيْتَ اِذَا كُنَّا اِلَآهًا مَّا نَكْتُمُ الْكَاذِبِينَ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَاُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوا اَوْ مَاتُوا ۖ لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَبِيرُ الرَّزِيقِ ۝ لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يََّرْضَوْنَ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ ذٰلِكَ وَمَنْ عَاقَبْ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيُصْرَفَهُ اللّٰهُ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝ ذٰلِكَ يَٰۤاَنۡ اللّٰهُ يُوَلِّیۡهِ الْبَیۡلَ فِی النَّهَارِ وَیُوَلِّیۡهِ النَّهَارَ فِی الْبَیۡلِ ۚ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِیۡعٌ بَصِیۡرٌ ۝ ذٰلِكَ يَٰۤاَنۡ اللّٰهُ هُوَ الْحَقُّ ۚ وَاَنَّ مَا یَدْعُوۡنَ مِنْ دُوۡنِہٖ هُوَ الْبَاطِلُ ۚ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِیُّ الْکَبِیۡرُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَتُصْبِحُ

مَزۡلٰجًا

(१२) या मौत, कि वह भी छोटी क़्यामत है.

(१३) इससे वदर का दिन मुराद है. जिसमें क़ाफ़िरों के लिये कुछ आसानी और राहत न थी और कुछ मुफ़र्रिमां न कहा कि इस रोज़ से क़्यामत मुराद है.

(१४) यानी क़्यामत के दिन.

(१५) उन्होंने.

सूरह हज - आठवाँ सूक़

(१) और उसकी रज़ा के लिये अज़ीज़ों (प्रियजनों) और रिश्तेदारों का छोड़कर बतन से निकलें और मक्क़ा मुक़र्रमा से मदीना तैय्यबह की तरफ़ हिजरत की.

(२) यानी जन्नत का रिज़क, जो कभी बन्द या ख़त्म न हो.

(३) यहाँ उनकी हर मुराद पूरी होगी और कोई नाग़बारी पेश न आएगी. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से आपके कुछ सहाबा ने अज़्र किया या सल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम, हमारे जो साथी शहीद हो गए. हम जानते हैं कि अल्लाह की वारगाह में उनके बड़े दर्जे हैं और हम ज़िहादों में हुज़ूर के साथ रहेंगे, लेकिन अगर हम आपके साथ रहे और वे शहादत के मौत आइं तो आख़िरत में हमारे लिये क्या है. इसपर ये आयतें उतरीं.

(४) कोई मूमिन जुल्म का, मुश्रिक से.

(५) ज़ालिम की तरफ़ से उस बंचतन करके.

(६) यह आयत मुश्रिकों के वार में उतरी जिन्होंने मुहर्रम महीने की आख़िरी तारीख़ों में मुसलमानों पर हमला किया और मुसलमानों ने मुबारक महीने की पवित्रता के ख़याल से लड़ना न चाहा, मगर मुश्रिक न माने और उन्होंने जंग शुरू कर दी. मुसलमान उनके मुकाबले में डट रहे. अल्लाह तआला ने उनकी मदद फ़रमाई.

(७) यानी मज़लूम और पीड़ित की मदद फ़रमाना इसलिये है कि अल्लाह जो चाहे उस पर क़ादिर और सक्षम है और उसकी कुदरत और क्षमता की निशानियां ज़ाहिर हैं.

(८) यानी कभी दिन को बढ़ाता, रात को घटाता है और कभी रात को बढ़ाता दिन को घटाता है, इसके सिवा कोई उसपर कुदरत नहीं रखता. जो ऐसा कुदरत वाला है, वह जिसकी चाहे मदद फ़रमाए और जिसे चाहें ग़ालिब करे.

(९) यानी, और यह मदद इस लिये भी है.

(१०) यानी वुत.

है (६३) उसी का माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ सब खूबियों सराहा है (६४)

नवाँ रूकू

क्या तुने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे बस में कर दिया जो कुछ ज़मीन में है (१) और किशती कि दरिया में उसके हुक्म से चलती है (२) और वह रोके हुए है आसमानों को कि ज़मीन पर न गिर पड़े मगर उसके हुक्म से, बेशक अल्लाह आदमियों पर बड़ी मेहर वाला मेहरवान है (३) (६५) और वही है जिसने तुम्हें ज़िन्दा किया (४) फिर तुम्हें मारगा (५) फिर तुम्हें जिलाएगा (६) बेशक आदमी बड़ा नाशुक्रा है (७) (६६) हर उम्मत के (८) लिये हमने इबादत के क़ायदे बना दिये कि वह उनपर चले (९) तो हरगिज़ वो तुम से इस मामले में झगड़ा न करें (१०) और अपने रब की तरफ़ बुलाओ (११) बेशक तुम सीधी राह पर हो (६७) और अगर वो (१२) तुम से झगड़े तो फ़रमा दो कि अल्लाह ख़ूब जानता है तुम्हारे क़ौतुक (६८) अल्लाह तुम में फ़ैसला कर देगा क़यामत के दिन जिस बात में विरोध कर रहे हो (१३) (६९) क्या तुने न जाना कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन

الْحَمْدُ	۴۴۲	الْقُرْآنُ
الْأَرْضُ مُخْصَرَةً إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَمِيدُ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلُكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۚ وَيُيَسِّرُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَكَرِيمٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ۚ لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُبَايِعُوكَ فِي الْأَمْرِ ۚ وَادْعُ إِلَىٰ دِينِكَ إِنَّكَ لَعَلَّ هَٰذَا مُسْتَقِيمٌ ۚ وَإِنْ جَدَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۚ اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۚ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي		

(११) सच्चे सं.

सूरए हज - नवाँ रूकू

- (१) जानवर वगैरह, जिन पर तुम सवार होते हो और जिनसे तुम काम लेते हो.
- (२) तुम्हारे लिये उसके चलाने के वास्ते हवा और पानी को आधीन किया.
- (३) कि उसने उनके लिये लाभ के दरवाज़े खोले और तरह तरह के नुकसान से उनका संरक्षित किया.
- (४) बेजान नुस्के से पैदा फ़रमा कर.
- (५) तुम्हारी उम्में पूरी होने पर.
- (६) दाबारा उठाए जाने के दिन सूबाव और अज़ाब के लिये.
- (७) कि इतनी नैअमतों के बावजूद उसकी इबादत से मुंह फ़ेरता है और बेजान मन्त्रलूक की पूजा करता है.
- (८) दीन वालों और क़ौमों में सं.
- (९) और आमिल हो.
- (१०) यानी दीन के काम या ज़बीहे के मामले में. यह आयत बदील इन्ने बरका और वंशर बिन मुफ़ियान और यज़ीद इब्न ख़रीम के बारे में उतरी. उन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाही अलैहि वसल्लम के सहारा से कहा था क्या कारण है जिस जानवर को तुम ख़ुद क़त्न करते हो उसे तो खाते हो और जिसको अल्लाह मारता है उसको नहीं खाते. इसपर यह आयत उतरी.
- (११) और लोगों को उस पर ईमान लाने और उसका दीन क़बूल करने और उसकी इबादत में लगने की दावत दो.
- (१२) तुम्हारे देने के बावजूद.
- (१३) और तुम पर सच्चाई ज़ाहिर हो जाएगी.

में है, वेशक यह सब एक किताब में है^(१५) वेशक यह^(१५) अल्लाह पर आसान है^(१५) ॥७०॥ और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं^(१५) जिन की कोई सनद उसने न उतारी और ऐसों को पूजते हैं^(१५) और सिलमगारों का^(१५) कोई मददगार नहीं^(१५) ॥७१॥ और जब उनपर हमारी रौशन आयतें पड़ी जाएं^(१५) तो तुम उनके चेहरों पर विगड़ने के आसार देखोगे जिन्होंने क़फ़ किया क़रीब है कि लिपट पड़ें उनको जो हमारी आयतें उनपर पड़ते हैं, तुम फ़रमा दो क्या मैं तुम्हें बता दूं जो तुम्हारे इस हाल से भी^(१५) बदतर है, वह आग है, अल्लाह ने उसका वादा दिया है काफ़िरों को और क्या ही बुरी पलटने की जगह^(१५) ॥७२॥

दसवाँ रूकू

ऐ लोगो एक कहावत फ़रमाई जाती है इसे कान लगाकर सुनो^(१) वो जिन्हें अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो^(१) एक मक्खी न बना सकेंगे अगरचे सब उस पर इकट्ठे हो जाएं^(१) और अगर मक्खी उनसे कुछ छिन कर ले जाए^(१) तो उससे छुड़ा न सकें^(१) कितना कमज़ोर चाहने वाला और वह जिसको चाह^(१) ॥७३॥ अल्लाह की क़दर न जानी जैसी

السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ إِنَّ
ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ
بِهِ عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ
عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٌ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ
كَفَرُوا الْمُنْكَرَ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ
يَتَّبِعُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا قُلْ أَفَأَنْتُمْ كُمُّ بِشَرِّ
مِنْ ذَلِكَمُ الشَّارِعِ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمْ مِثْلُ
فَأَسْتَعُوزُوا بِالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوْ اجْتَمَعُوا لَهُ ۚ وَ
إِنْ يُسَلِّبْهُمْ الدُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ
مِنْهُ صَعَفَ الظَّالِمِ الْبَطُولُ ۝ مَا قَدَرُوا

مزل

- (१४) यानी लौह मेहफूज़ में.
(१५) यानी उन सब की जानकारी या सारी घटनाओं का लौह मेहफूज़ में दर्ज फ़रमाता.
(१६) इसके बाद काफ़िरों की जिहालतों का बयान फ़रमाया जाता है कि वो ऐसों की इबादन करने हैं जो पूजे जाने के काबिल नहीं.
(१७) यानी बुतों का.
(१८) यानी उनके पास अपने इस काम की न कोई अक़ली दलील है न तकली. केवल जिहालत और नादानी से गुमग़ही में पड़े हुए हैं और जो किसी तरह पूजे जाने के मुस्तहिक नहीं उनको पूजते हैं. यह सज़्ज ज़लम् है.
(१९) यानी मुश्रिकों का.
(२०) जो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा सके.
(२१) और क़ुरआन करीम उन्हें सुनाया जाए जिसमें अहक़ाम का बयान और हलाल व हराम की नफ़सील है.
(२२) यानी तुम्हारे इस गुस्से और नागवारी से भी जो क़ुरआन शरीफ़ सुनकर तुममें पैदा होती है.

सूरए हज - दसवाँ रूकू

- (१) और इसमें ख़ूब गौर करो. वह कहावत यह है कि तुम्हारे बुत.
(२) उनकी बेबसी और बेक़ुदरती का यह हाल है कि वह निहायत छोटी सी चीज़.
(३) तो अक़ल वाले को कब ज़रूरत है कि ऐसों को मअबूद ठहराए. ऐसों को पूजा और मअबूद करार देना कितनी पले दर्जे की जिहालत है.
(४) वह शहद और केसर वीरह, जो मुश्रिक बुतों के मुँह और सरों पर मलते हैं, जिसपर मक्खियाँ भिनकती हैं.
(५) ऐसों को ख़ुदा बनाना और मअबूद ठहराना कितना अजीब और समझदारी से दूर है.
(६) चाहने वाले से बुत परस्त और चाहे हुए से बुत मुराद है, या चाहने वाले से मक्खी मुराद है. जो बुत पर से शहद और केसर

चाहिये थी^(७) वेशक अल्लाह कुव्वत वाला तालिब है^(८) अल्लाह चुन लेता है फ़रिश्तों में से रसूल^(९) और आदमियों में से^(१०) वेशक अल्लाह सुनता देखता है^(११) जानता है जो उनके आगे है, जो उनके पीछे है^(१२) और सब कामों की रूजू अल्लाह की तरफ़ है^(१३) ऐ ईमान वाले रूजू और सज्दा करो^(१४) और अपने रब की बन्दगी करो^(१५) और भले काम करो^(१६) इस उम्मीद पर कि तुम्हें छुटकारा हो^(१७) और अल्लाह की राह में जिहाद करो जैसा हक़ है जिहाद करने का^(१८) उसने तुम्हें पसन्द किया^(१९) और तुम पर दीन में कुछ तंगी न रखी^(२०) तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन^(२१) अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है अगली किताबों में और इस क़ुरआन में ताकि रसूल तुम्हारा निगहवान व गवाह हो^(२२) और तुम ज़कात दो और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो, ^(२३) वह तुम्हारा मौला है, तो क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार^(२४)

الله حقّ قدره ۞ ان الله لقوى عزيز ۞ الله يصطفى من الملائكة رسلا ۞ ومن الناس ۞ ان الله سميع بصير ۞ يعلم ما بين ايديهم ۞ وما خلفهم ۞ ولا الله ترجع الامور ۞ بآيها الذين امنوا ازكعوا واسجدوا واعبدوا ربكم وافعلوا الخير لعلكم تفلحون ۞ وجاهدوا في الله حق جهاده ۞ هو اجتنبكم وما جعل عليكم في الدين من حرج ۞ ملّة ابيكم ابراهيم ۞ هو سمىكم المسلمين ۞ من قبل ۞ وفي هذا ليكون الرسول شهيدا عليكم ۞ وتكونوا شهداء على الناس ۞ فاقيموا الصلوة واتوا الزكوة واعتصموا بالله ۞ هو مولىكم ۞ ونعم المولى ونعم النصير ۞

- की इच्छुक है। और मतलूब यानी चाहा हुआ से बुत। और कुछ ने कहा कि तालिब से बुत मुराद है और मतलूब से मक्करी।
- (७) और उसकी महानता व पहचानी जिन्होंने ने ऐसों को श्रुदा का शरीक किया जो मक्करी से भी कमज़ोर हैं। मअबूद वही है जो कुदरत सम्पूर्ण रखे।
- (८) जैसे जिब्रईल, मीकाइल परीरह।
- (९) जैसे हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और सैयद आलम सलवातुल्लाहे अलैहिम अज़मईन। यह आयत उन काफ़िरों के रद में उतरी जिन्होंने ने बशर के रसूल होने का इन्कार किया था और कहा था कि बशर रसूल कैसे हो सकता है। इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और इश्ताद फ़रमाया कि अल्लाह मालिक है, जिसे चाहे अपना रसूल बनाए। वह इन्सानों में से भी रसूल बनाता है और फ़रिश्तों में से भी, जिन्हें चाहे।
- (१०) यानी दुनिया के कामों का भी और आख़िरत के कामों को भी या उन गुज़र हुए कर्मों का भी और आगे आने वाले हालात को भी।
- (११) अपनी नमाज़ों में, इस्लाम के शुरु के दौर में नमाज़, वीर रूकू और सज्दे की थी। फिर नमाज़ में रूकू और सज्दे का हुक्म फ़रमाया गया।
- (१२) यानी रूकू और सज्दे ग़्रास अल्लाह तआला के लिये हों और इबादत सच्चे दिल से करां।
- (१३) दूसरों के काम आना, सद्व्यवहार इत्यादि नेकियाँ।
- (१४) यानी सच्ची नियत के साथ दीन के फैलाने के लिये।
- (१५) अपने दीन और इबादत के लिये।
- (१६) बल्कि ज़रूरत के अवसरों पर तुम्हारे लिये सहूलत कर दी जैसे कि सफ़र में नमाज़ का क़स और रोज़े के इफ़्तार की इजाज़त और पानी न पाने या पानी से हाथि होने की हालत में गुस्ल और बुज़ू की जगह तयम्मूम, तो तुम दीन का अनुकरण करो।
- (१७) जो दीने मुहम्मदी में दाख़िल है।
- (१८) राज़े क़यामत कि तुम्हारे पास श्रुदा का पयाम पहुँचा दिया।
- (१९) कि उन्हें उन रसूलों ने अल्लाह तआला के आदेश पहुँचा दिये। अल्लाह तआला ने तुम्हें यह इज़ज़त और बुज़ूर्गी अता फ़रमाई।
- (२०) उस पर सदा कायम रहो।
- (२१) और उसके दीन पर कायम रहो।

अष्टारहवाँ पारा - क़द अफ़लहा

२३- सूरए मूमिनून

सूरए मूमिनून मक्का में उतरी, इसमें ११८ आयतें, ६ सूक़ हैं।
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)

पहला सूक़

वेशक़ मुराद को पहुंचे (१) ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं (२) और वो जो किसी बेहूदा बात की तरफ़ मुंह नहीं करते (३) और वो कि ज़कात देने का काम करते हैं (४) और वो जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं (५) मगर अपनी बीवियों या शरई दासियों पर, जो उनके हाथ की मिल्क हैं कि उनपर कोई मलामत नहीं (६) तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे, वही हद से बढ़ने वाले हैं (७) और वो जो अपनी अमानतों और अपने एहद की रियायत (लिहाज़) करते हैं (८) और वो जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं (९) यही लोग वारिस हैं (१०) कि फिरदौस की मीरास पाएंगे, वो उसमें हमेशा रहेंगे (११) और वेशक़ हमने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया (१२) फिर उसे (१३) पानी की बूंद किया एक मज़बूत ठहराव में (१४) फिर हमने उस पानी की बूंद को खून की फुटक किया, फिर खून की फुटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियाँ, फिर उन



२३ - सूरए मूमिनून - पहला सूक़

- (१) सूरए मूमिनून मक्का में उतरी, इसमें ६ सूक़, एक सौ अष्टारह आयतें, एक हज़ार आठ सौ चालीस कलिमें और चार हज़ार आठ सौ दो अक्षर हैं।
- (२) उनके दिलों में ख़ुदा का ख़ौफ़ होता है और उनके अंग साकिन होते हैं, कुछ मुफ़सिरों ने फ़रमाया कि नमाज़ में एकाग्रता यह है कि उसमें दिल लगा हो और दुनिया से ध्यान हटा हुआ हो और नज़र सच्चे की जगह से बाहर न जाए और आँखों के कोनों से किसी तरफ़ न देखे और कोई बेज़रूरत काम न करे और कोई कपड़ा शानों पर न लटकाए, इस तरह कि उसके दोनों किनारे लटकने हों और आपस में मिले न हों और उंगलियाँ न चटख़ाए और इस किस्म की हस्तों से दूर रहे, कुछ ने फ़रमाया कि एकाग्रता यह है कि आसमान की तरफ़ नज़र न उठाए।
- (३) हर बुराई और बुरी बात से दूर रहते हैं।
- (४) यानी उसके पाबन्द हैं और हमेशा उसकी अदायगी करते हैं।
- (५) अपनी बीवियों और दासियों के साथ जाइज़ तरीक़े पर कुर्बन करने में।
- (६) कि हलाल से हराम की तरफ़ बढ़ते हैं, इससे मालूम हुआ कि हाथ से शहवत निकालना या हस्तमैथुन करना हराम है, सईद बिन जुबैर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने एक उम्मत को अज़ाय किया जो अपनी शर्मगाहों से ग़्रल करते थे।
- (७) चाहे वो अमानतें अल्लाह की हों या लोगों की, और इसी तरह एहद ख़ुदा के साथ हों या बन्दों के साथ, सब को पूरा करना लाज़िम है।
- (८) और उन्हें उनके वक्तों में उनकी शर्तों और संस्कारों के साथ अदा करते हैं और फ़रायज़, वाजिबान, सुन्नत और नफ़ल सबकी निगहबानी करते हैं।
- (९) मुफ़सिरों ने फ़रमाया कि इन्सान से मुराद यहाँ हज़रत आदम हैं।
- (१०) यानी उसकी नसल को।
- (११) यानी गर्भाशय में।

हड्डियों पर गोश्त पहनाया, फिर उसे और सूरत में उठान दी^(१२) तो बड़ी वरकत वाला है अल्लाह, सब से बेहतर बनाने वाला^(१४) फिर उसके बाद तुम ज़रूर^(१३) मरने वाले हो^(१५) फिर तुम सब क़यामत के दिन^(१४) उठए जाओगे^(१६) और बेशक हमने तुम्हारे ऊपर सात राहें बनाई^(१५) और हम ख़ल्क से गाफ़िल नहीं^(१६)^(१७) और हमने आसमान से पानी उतारा^(१७) एक अंदाज़े पर^(१८) फिर उसे ज़मीन में ठहराया और बेशक हम उसके ले जाने पर क़ादिर (सक्षम) हैं^(१९)^(२०) तो उस से हमने तुम्हारे बाग़ पैदा किये ख़जूरों और अंगूरों के तुम्हारे लिये उनमें बहुत से मेवे हैं^(२०) और उनमें से खाते हो^(२१)^(२२) और वह पेड़ पैदा किया कि तूरे सीना से निकलता है^(२३) लेकर उगता है तेल और खाने वालों के लिये सालन^(२३)^(२४) और बेशक तुम्हारे लिये चौपायों में समझने का मक़ाम है, हम तुम्हें पिलाते हैं उसमें से जो उनके पेट में है^(२५) और तुम्हारे लिये उनमें बहुत फ़ायदे हैं^(२५) और उन से तुम्हारी ख़ुराक है^(२६)^(२७) और उनपर^(२७) और किशती पर^(२८) सवार किये जाते हो^(२८)

दूसरा रूकू

और बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उसने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पुजो उसके सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं, तो क्या तुम्हें डर नहीं^(१)^(२) उसकी क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ़्र किया बोले^(३) यह तो

الْعَاقِبَةُ مُضْغَةٌ فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظًا فَكُنُوسًا الْعَظِيمَ
لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ
الْخَالِقِينَ ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَنُيْتُونَ ثُمَّ إِنَّكُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ
وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَتْهُ فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِنَّا عَلَى ذَهَابٍ بِهِ
لَقَادِرُونَ ۚ فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّتٍ وَمِنْ نَجِيلٍ ۚ
أَعْنَابٍ لَكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۚ وَ
شَجَرَةٍ تُخْرِجُ مِنْ طَوْرِ سَيْئَةٍ تُثْبِتُ بِالذَّهْنِ وَصَنِيعَ
الْأَكْلِينَ ۚ وَإِن لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةٌ لِّتُؤْذِنُوا بِمَا
فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا
تَأْكُلُونَ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفَالِكِ نَحْلُونَ ۚ وَلَقَدْ
أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمِهِ فَقَالَ يَتُوبُوا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مَا

وَقَالَ

فَعَلُوا

مَنْ

- (१२) यानी उसमें रूह डाली . उस बंजान को जानदार किया, बोलने, सुनने और देखने की शक्ति अता की.
- (१३) अपनी उम्र पूरी होने पर.
- (१४) हिसाब और बदले के लिये.
- (१५) इतम मुराद सात आसमान हैं जो फ़रिशतों के चढ़ने उतरने के रस्ते हैं.
- (१६) सब की कहनी, क़मी और अन्तःकरण को जानते हैं. कोई चीज़ हम से छुपी नहीं.
- (१७) यानी पानी बरसाया.
- (१८) जितना हमारे इल्म और हिक़मत में सृष्टि की हाज़तों के लिये चाहिये.
- (१९) जैसा अपनी कुदरत से उतारा, ऐसा ही इसपर भी कुदरत रखते हैं कि उसको मिटा दें. तो बन्दों को चाहिये कि इस नेअमत की शुक्रगुज़ारी से हिफ़ाज़त करें.
- (२०) तरह तरह के.
- (२१) जाड़े और गर्मी वगैरह मौसमों में, और ऐश करते हो.
- (२२) इस दरख़्त से मुराद ज़ैतून है.
- (२३) यह उस में अजीब गुण है कि वह तेल भी है कि तेल के फ़ायदे उससे हासिल किये जाते हैं, ज़लाया भी जाता है, दवा के तरीके पर भी काम में लाया जाता है और सालन का काम भी देता है कि अकेले उससे रोटी ग्राई जा सकती है.
- (२४) यानी दूध शूशगवार, जो अच्छा आहार होता है.
- (२५) कि उनके ग़ाल, ख़ाल, ऊन वगैरह से काम लेते हो.
- (२६) कि उन्हें ज़िन्ह करके ख़ा लेने हो.
- (२७) शूशकी में.
- (२८) दरियाओं में.

सूरए मूमिनून - दूसरा रूकू

- (१) उसके अज़ाब का, जो उसके सिवा औरों का पूजते हो.

नहीं मगर तुम जैसा आदमी चाहता है कि तुम्हारा बड़ा बने^(३) और अल्लाह चाहता^(४) तो फ़रिश्ते उतारता, हमने तो यह अगले बाप दादाओं में न सुना^(५) (२४) वह तो नहीं मगर एक दीवाना मर्द तो कुछ ज़माने तक उसका इन्तिज़ार किये रहो^(६) (२५) नूह ने अर्ज की ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा^(७) इसपर कि उन्होंने मुझे झुटलाया^(८) (२६) तो हमने उसे वही (देववाणी) भेजी कि हमारी निगाह के सामने^(९) और हमारे हुक्म से किशती बना फिर जब हमारा हुक्म आए^(१०) और तनूर उबले^(११) तो उसमें विख ले^(१२) हर जोड़े में से दो^(१३) और अपने घर वाले^(१४) मगर इनमें से वो जिनपर बात पहले पड़ चुकी^(१५) और इन ज़ालिमों के मामले में मुझे से बात न करना^(१६) ये ज़रूर डूबोए जाएंगे^(१७) फिर जब ठीक बैठ ले किशती पर तू और तेरे साथ वाले तो कह सब खूबियाँ अल्लाह को जिसने हमें उन ज़ालिमों से निजात दी^(१८) और अर्ज कर^(१९) कि ऐ मेरे रब मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू सबसे बेहतर उतारने वाला है^(२०) बेशक इसमें^(२१) ज़रूर निशानियाँ हैं^(२२) और वेशक ज़रूर हम जांचने वाले थे^(२३) (३०) फिर उनके^(२४)

لَكُمْ مِنَ اللَّهِ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۚ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ ۖ يُرِيدُ أَنْ يَفْضَلَ عَلَيْكُمْ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً مِّن سَمْعِنَا ۚ بِهَذَا فِي آيَاتِنَا الْأُولَىٰ ۚ إِنَّ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَبَصُّوهُ ۚ إِنَّهُ جَبِينٌ ۚ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي ۖ بِمَا كَذَبُونَ ۚ فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَوَحْيِنَا ۖ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُورُ ۖ فَاسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تَحْطِئْ بِنَفْسِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ۚ فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلِكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّيْنَاكَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۚ وَقُلْ رَبِّ انزِلْنِي مُنزَلًا مُّبَارَكًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّمَن كَانَ

مَنْزِلًا

- (२) अपनी क़ौम के लोगों से, कि.
- (३) और तुम्हें अपना ताबअे बनाए.
- (४) कि रसूल को भेजे और मग़लूक परस्ती की मुमलिवत फ़रमाए.
- (५) कि बशर भी रसूल होता है, यह उनकी अत्यन्त मूर्खता थी कि बशर का रसूल होना तो न मना, पत्थरों को खुदा मान लिया और उन्होंने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की निखत यह भी कहा.
- (६) यहाँ तक कि उसका जुनून दूर हो, ऐसा हुआ तो ख़ैर, वरना उसको क़त्ल कर डालना. जब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हुए और उनके हिदायत पाने की उम्मीद न रही तो हज़रत..
- (७) और उस क़ौम को हलाक कर.
- (८) यानी हमारी हिमायत और हिफ़ाज़त में.
- (९) उनकी हलाकत का, और अनाब के विशान नमूदार हों.
- (१०) और उससे पानी निकालते, तो यह अलामत है अज़ाब के शुरु होने की.
- (११) यानी किशती में पशु पक्षियों के.
- (१२) नर और मादा.
- (१३) यानी अपनी ईमानदार बीबी और ईमानदार औलाद या सारे ईमान रखने वाले.
- (१४) और अल्लाह तआला के लिखे हुए में उनका अज़ाब और हलाकत निश्चित हो चुकी. वह आपका एक बेटा था कनआन नाम का और एक औरत कि ये दोनों काफ़िर थे. आपने अपने तीन बेटों साम, हाम, याफ़स और उनकी बाबियों को और दूसरे ईमान वालों को सवार किया. कुल लोग जो किशती में थे, उनकी तादाद अट्ठहत्तर थी, आधे मर्द और आधी औरतें.
- (१५) और उनके लिये निजात तलब न करना, दुआ न फ़रमाना.
- (१६) किशती से उतरते बक़्त या उसमें सवार होते बक़्त.
- (१७) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के वाक़ए में और उसमें जो सच्चाई के दुश्मनों के साथ किया गया.
- (१८) और इब्रतें और नसीहतें और अल्लाह की क़ुदरत के प्रणाम हैं.
- (१९) उस क़ौम के, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को उसमें भेज कर और उनको हिदायत और नसीहत का ज़िम्मेदार बताकर ताकि ज़ाहिर हो जाए कि अज़ाब उतरने से पहले कौन नसीहत कुबूल करता और फ़रमाँबरदारी की पुष्टि करता है और कौन नाफ़रमान झुटलाने और विरोध पर अड़ा रहता है.

वाद हमने और संगत (क्रौम) पैदा की^(२१) ॥३१॥ तो उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेजा^(२२) कि अल्लाह की बन्दगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोई खुदा नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं^(२३) ॥३२॥

तीसरा रूकू

और बोले उस क्रौम के सरदार जिन्होंने ने कुफ़ किया और आखिरत की हाज़िरी^(१) को झुटलाया और हमने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में चैन दिया^(२) कि यह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी जो तुम खाते हो उसी में से खाता है और जो तुम पीते हो उसी में से पीता है^(३) ॥३३॥ और अगर तुम किसी अपने जैसे आदमी की इताअत (आज्ञा पालन) करो जब तो तुम ज़रूर घाटे में हो^(४) ॥३४॥ क्या तुम्हें यह वादा देता है कि तुम जब मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाओगे उसके बाद फिर^(५) निकाले जाओगे^(६) ॥३५॥ कितनी दूर है, कितनी दूर है, जो तुम्हें वादा दिया जाता है^(७) ॥३६॥ वो तो नहीं मगर हमारी दुनिया की ज़िन्दगी^(८) कि हम मरते जीते हैं^(९) और हमें उठना नहीं^(१०) ॥३७॥ वह तो नहीं मगर एक मर्द जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा^(११) और हम उसे मानने के नहीं^(१२) ॥३८॥ अर्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा इसपर कि उन्होंने मुझे झुटलाया^(१३) ॥३९॥ अल्लाह ने फ़रमाया कि कुछ देर जाती है कि वे सुन्न करेगे पछताते हुए^(१४) ॥४०॥ तो उन्हें आ लिया सच्ची चिंघाड़ ने^(१५) तो हमने उन्हें घास कूड़ा कर दिया^(१६) तो दूर हों^(१७) ज़ालिम लोग^(१८) ॥४१॥ फिर

لَمُبْتَلِينَ ۝ ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝
فَارْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ
مَنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ
قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا الْآخِرَةِ ۖ وَأَنزَلْنَا
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ ۖ يَأْكُلُ
مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ۚ وَلَئِنْ
أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذَا لَخُسِرُونَ ۝ أَيْعِدُكُمْ
أَنُكُمُ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنُكُمُ تُخْرَجُونَ ۚ
هَیْهَاتَ هَیْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ۚ إِن هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا
الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۚ إِن هُوَ إِلَّا
رَجُلٌ ۖ أَفَتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ۝
قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونَ ۚ قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ
لَيُصِصَنَّ لِي يَمِينُ ۖ فَاخَذْنَاهُمُ الصَّبِيحَةَ بِأَحْقَى فُجَعَلْنَاهُمْ

- (२०) यानी वृह की क्रौम के अज़ाब और हलाकत के.
(२१) यानी आद और क्रौम दूद.
(२२) यानी दूद अलैहिस्सलाम, और उनकी मअरिफ़त उस क्रौम का हुक्म दिया.
(२३) उसके अज़ाब का कि शिर्क छोड़ो और ईमान लाओ.

सूरए मूमिनून - तीसरा रूकू

- (१) और वहाँ के सबाब और अज़ाब वगैरह.
(२) यानी कुछ काफ़िर जिन्हें अल्लाह तआला ने राहत, पेश और दुनिया की नेअमत अता फ़रमाई थी, अपने नबी सल्लल्लाहां अलैहे वसल्लाम की निश्चय अपनी क्रौम के लोगों से कहने लगे.
(३) यानी ये अगर नबी होते तो फ़रिश्तों की तरह खाने पीने से پاک होते. इन अन्दर के अन्धों ने नबुच्चत के कमालों को न देख़ा, और खाने पीने के गुण देख़कर नबी को अपनी तरह बशर कहने लग. यह बुनियाद उनकी गुमराही की हुई. चुनाने इसी से उन्होंने यह बतीजा निकाला कि आपस में कहने लगे.
(४) क्रौमों से ज़िन्दा.
(५) यानी उन्होंने मरने के बाद ज़िन्दा होने को बहुत दूर जाना और समझा कि ऐसा कभी होने वाला ही नहीं और इसी झूठे ख़याल के आधार पर कहने लगे.
(६) इसमें उनका मतलब यह था कि इस दुनिया की ज़िन्दगी के सिवा और कोई ज़िन्दगी नहीं, सिर्फ़ इतना ही है.
(७) कि हम में से कोई मग्ना है, कोई पैदा होता है.
(८) मरने के बाद, और अपने रसूल अलैहिस्सलाम की निश्चय उन्होंने यह कहा.
(९) कि अपने आपको उसका नबी बताया और मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी.
(१०) पैग़म्बर अलैहिस्सलाम जब उनके ईमान से मायूस हुए और उन्होंने देख़ा कि क्रौम अन्धन सरक़सी पर है तो उनके लिये बद

उनके बाद हमने और संगतों (क्रौमों) पैदा कीं^(११) ॥४२॥ कोई उम्मत अपनी मीआद से न पहले जाए न पीछे रहे^(१२) ॥४३॥ फिर हमने अपने रसूल भेजे एक पीछे दूसरा, जब किसी उम्मत के पास उसका रसूल आया उन्होंने उसे झुटलाया^(१३) तो हमने अगलों से पिछले मिला दिये^(१४) और उन्हें कहानियां कर डाला^(१५) तो दूर हों वो लोग कि ईमान नहीं लाते^(१६) ॥४४॥ फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी आयतों और रौशन सनद (प्रमाण)^(१७) के साथ भेजा^(१८) ॥४५॥ फिर औन और उसके दरबारियों की तरफ तो उन्होंने घमण्ड किया^(१९) और वो लोग गल्ला पाए हुए थे^(२०) ॥४६॥ तो बोलें क्या हम ईमान ले आए अपने जैसे दो आदमियों पर^(२१) और उनकी क्रौम हमारी बन्दगी कर रही है^(२२) ॥४७॥ तो उन्होंने उन दोनों को झुटलाया तो हलाक किये हुआँ में हो गए^(२३) ॥४८॥ और वेशक हमने मूसा को किताब अता फरमाई^(२४) कि उनको^(२५) हिदायत हो^(२६) ॥४९॥ और हमने मरयम और उसके बेटे को^(२७) निशानी किया और उन्हें ठिकाना दिया एक बलन्द ज़मीन^(२८) जहाँ बसने का मक़ाम^(२९) और निगाह के सामने बहता पानी^(३०) ॥५०॥

चौथा रूकू

ऐ पैगम्बरों, पाकीज़ा चीज़ें खाओ^(१) और अच्छे काम करो, मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ^(२) ॥५१॥ और वेशक यह तुम्हारा दीन एक ही दीन है^(३) और मैं

عُثَاءً قَبْعًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ
بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ۖ مَا تَبِيقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا
وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۖ ثُمَّ أَرْسَلْنَا رَسُولَنَا تَتْرَاهُمْ كَلِمًا
جَاءَ أُمَّةٌ رَسُولُهَا كَذِبُهُ فَاتَّبَعَنَا بَعْضُهُمْ بَعْضًا
وَجَعَلْتَهُمْ أَحَادِيثَ قَبْعًا لِقَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ ثُمَّ
أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ
مُتَبِينٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا
عَالِينَ ۖ فَقَالُوا إِنَّا نُرِيبُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا
عِبَادُونَ ۖ فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ۖ
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۖ وَ
جَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً ۖ وَأَوَيْنَهُمَا إِلَىٰ رُبُوعٍ
ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ۖ يَأْتِيهِمَا الرُّسُلُ كُلُّوَا مِنَ
الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۖ

مَرْكَبًا

दुआ की और अल्लाह की बारगाह में ...

- (११) अपने कुफ़्र और झुटलाने पर, जबकि अल्लाह का अज़ाब देखेंगे.
- (१२) यानी वो अज़ाब और हलाकत में डाले गए.
- (१३) यानी वो हलाक होकर घास कूड़े की तरह हो गए.
- (१४) यानी खुदा की रहमत से दूर हों नवियों को झुटलाने वाले.
- (१५) जैसे क्रौम सालेह और क्रौमे लूत और क्रौमे शूऐब बग़ैर.
- (१६) जिसके लिये हलाकत का जो समय निर्धारित है वह ठीक उसी वक़्त हलाक होगा, उसमें कुछ आगे पीछे नहीं हो सकता.
- (१७) और उसकी हिदायत को न माना और उस पर ईमान न लाए.
- (१८) और बाद वालों को पहलों की तरह हलाक कर दिया.
- (१९) कि बाद वाले अफ़साने की तरह उनका हाल बयान किया करें और उनके अज़ाब और हलाकत का बयान इब्रत का कारण हो.
- (२०) जैसे लाठी और चमकती हथेली बग़ैर चमक-ए.
- (२१) और अपने घमण्ड के कारण ईमान न लाए.
- (२२) बनी इस्राईल पर अपने अत्याचार से, जब हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहुमसलाम ने उन्हें ईमान की दावत दी.
- (२३) यानी हज़रत मूसा और हज़रत हारून पर.
- (२४) यानी बनी इस्राईल हमारे हुक्म के तहत हैं, तो यह कैसे ग़वार हो कि उसी क्रौम के दो आदमियों पर ईमान लाकर उनके फ़रमावज़दार बन जाएं.
- (२५) और दुवाँ दिये गए.
- (२६) यानी तीरात शरीफ़, फिरऔन और उसकी क्रौम की हलाकत के बाद.
- (२७) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क्रौम बनी इस्राईल को.
- (२८) यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बग़ैर बाप के पैदा फ़रमाकर अपनी कुदरत की ---
- (२९) इस से मुराद या बैतुल मक़दिस है या दमिश्क या फ़लस्तीन, कई क़ौल हैं.
- (३०) यानी हमवार, समतल, लम्बी चीड़ी, फलों वाली ज़मीन, जिसमें रहने वाले राहत के साथ हंसी मुशी बसर करते हैं.

तुम्हारा रब हूँ तो मुझसे डरो (५२) तो उनकी उम्मतों ने अपना काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिया (५३) हर गिरोह जो उसके पास है उस पर खुश है (५४) तो तुम उनको छोड़ दो उनके नशे में (५५) एक वक़्त तक (५६) क्या ये खयाल कर रहे हैं कि वो जो हम उनकी मदद कर रहे हैं माल और बेतों से (५७) ये जल्द जल्द उनको भलाइयाँ दंते हैं (५८) बल्कि उन्हें ख़बर नहीं (५९) वेशक वो जो अपने रब के डर से सहमे हुए हैं (६०) और वो जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं (६१) और वो जो अपने रब का कोई शरीक नहीं करते (६२) और वो जो देते हैं जो कुछ दें (६३) और उनके दिल डर रहे हैं यूँ कि उनको अपने रब की तरफ़ फ़िरना है (६४) ये लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और यही सब से पहले उन्हें पहुंचे (६५) और हम किसी जान पर बोझ नहीं रखते मगर उसकी ताक़त भर और हमारे पास एक किताब है कि हक़ (सच) बोलती है (६६) और उनपर जुल्म न होगा (६७) बल्कि उनके दिल उससे (६८) ग़फ़लत में हैं और उनके काम उन कामों से जुदा हैं (६९) जिन्हें वो कर रहे हैं (७०) यहाँ तक कि जव हमने उनके अमीरों को अज़ाब में पकड़ा (७१) तो ज़भी वो फ़रियाद करने लगे (७२) (७३)

وَأَن هَذِهِ أُمّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ۝
فَتَقَطّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا كُلٌّ حُزْبٌ مِّمَّا لَدَيْهِمْ ۝
فَرِحُوا ۝ فَذَرَهُمْ فِي عَمْرَتِهِمْ حَتَّىٰ حَبِيرٍ ۝ أَيْحَسِبُونَ ۝
أَنَّمَا عَزَدُهُمْ بِهِ مِنْ مَّالٍ وَبَيْنَيْنَ ۝ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي ۝
الْخَيْرَاتِ ۝ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ إِنَّا الَّذِينَ هُمْ مِّنْ حَشِيَّةٍ ۝
رَّبِّهِمْ مُّشْفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا كَرِهُوا ۝ يُؤْمِنُونَ ۝
وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ۝ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا ۝
أَنُؤُوا وَقُلُوبُهُمْ وَجَلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ۝
أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا شَاقِقُونَ ۝ وَلَا ۝
تُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا مَكْتُبٌ يَّتَنَقَّطُونَ ۝
بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي عَمْرَةٍ مِّنْ ۝
هَذَا وَهُمْ أَعْمَالٌ مِّنْ دُونِ ذَلِكَ هُمْ لَهَا عَمَلُونَ ۝
حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِالْعَذَابِ إِذْ هُمْ يُجْكِرُونَ ۝

सूरए मूमिनून - चौथा रूकू

- (१) यहाँ पैगम्बरों से मुराद या तमाम रसूल हैं और हर एक रसूल को उनके ज़माने में यह पुकार की गई, या रसूलों से मुराद ख़ास सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं, या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कई क़ौल हैं।
- (२) उनका बदला अता फ़रमाऊंगा।
- (३) यानी इस्लाम।
- (४) और अलग अलग सम्प्रदाय हो गए, यहूदी, ईसाई, मजूसी वगैरह।
- (५) और अपने ही आपको सच्चाई पर जानता है और दूसरों को वातिल पर समझता है। इस तरह उनके बीच दीन का इस्तिस्लाम है। अब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सम्बोधन होता है।
- (६) यानी उनके कुफ़्र और मुमराही और उनकी जिहालत और ग़फ़लत में।
- (७) यानी उनकी मौत के वक़्त तक।
- (८) दुनिया में।
- (९) और हमारी ये नेअमतें उनके कर्मों का बदला हैं, या हमारे राज़ी होने के प्रमाण हैं, ऐसा खयाल करना ग़लत है, वास्तविकता यह नहीं है।
- (१०) कि हम उन्हें ढील दे रहे हैं।
- (११) उन्हें उसके अज़ाब का डर है। हज़रत हसन बसरी रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि मूमिन नेकी करता है और ख़ुदा से डरता है और काफ़िर बुराई करता है और निडर रहता है।
- (१२) और उसकी किताबों को मानते हैं।
- (१३) ज़क़ान और सदकात, या ये मानी हैं कि नेक कर्म करते हैं।
- (१४) निरमिज़ी की हदीस में है कि हज़रत उम्मुल मूमिनीन आयशा सिदीका रदियल्लाहो अन्हा ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पूछा कि क्या इस आपत में उन लोगों का क्या है जो शराब पीते हैं और चोरी करते हैं। फ़रमाया ए सिदीका की आँखों के नूर, ऐसा नहीं। यह उन लोगों का विवरण है जो राज़ रखते हैं, सदेक देते हैं और डरते रहते हैं कि कहीं ये कर्म टुकड़ा न दिये जाएं।
- (१५) यानी नेकियों को, मानी ये हैं कि वो नेकियों में और उम्मतों पर पहल करते हैं।

आज फ़रियाद न करो, हमारी तरफ़ से तुम्हारी मदद न होगी (६५) वेशक मेरी आयतें (२२) तुम पर पड़ी जाती थीं तो तुम अपनी एड़ियों के वल उलटे पलटते थे (२३) (६६) हरम की खिदमत पर बढ़ाई मारते हो (२४) रात को वहाँ बेहूदा कहानियाँ बकते (२५) (६७) हक़ को छोड़े हुए (२६) क्या उन्होंने बात को सोचा नहीं (२७) या उनके पास वह आया जो उनके बाप दादा के पास न आया था (२८) (६८) या उन्होंने अपने रसूल को न पहचाना (२९) तो वो उसे बेगाना (पराया) समझ रहे हैं (३०) (६९) या कहते हैं उसे सौदा (जूनन) है (३१) बल्कि वो तो उनके पास हक़ (सत्य) लाए (३२) और उनमें अक्सर को हक़ बुरा लगता है (३३) (७०) और अगर हक़ (३४) उनकी ख्वाहिशों का पालन करता (३५) तो ज़रूर आसमान और ज़मीन और जो कोई उनमें है सब तवाह हो जाते (३६) बल्कि हम उनके पास वह चीज़ लाए (३७) जिस में उनकी नामवरी थी तो वो अपनी इज़ज़त से ही मुंह फेरे हुए हैं (७१) क्या तुम उनसे कुछ उजरत मांगते हो (३८) तो तुम्हारे रब का अज़्र (वदला) सब से भला और वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला (३९) (७२) और वेशक तुम उन्हें सीधी राह की तरफ़ बुलाते हो (४०) (७३) और वेशक जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते ज़रूर सीधी राह से (४१) कतराए हुए हैं (७४) और अगर हम उनपर रहम करें और जो मुसीबत (४२) उन पर पड़ी है टाल दें तो ज़रूर भटपना

لَا تَجْرُوا الْيَوْمَ بِإِغْمَارِكُمْ فَمَا لَا تَنْصَرُونَ ۝ قُلْ كَانَتْ
الْبَيْتُ تُنْطَلُ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تُنْكِرُونَ ۝
مُسْتَكْبِرِينَ ۝ بِهِ سِمًا تَنْهَجُونَ ۝ أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا
الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمْ الْأَوَّلِينَ ۝
أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ۝ أَمْ
يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلْ جَاءَهُم بِالْحَقِّ وَكَثُرَهُمْ
لِلْحَقِّ كِرْهُونَ ۝ وَلَوْ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ
السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَتَيْنَهُمْ بِذِكْرِهِمْ
فَمَنْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْرِضُونَ ۝ أَمْ نَسْتُلْهُمْ خَرْجًا
فَحَرَامٌ رَبِّكَ حَبِيرٌ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝ وَلَا تَكُ
لِتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَإِنَّ الدِّينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنُكَيِّبُونَ ۝ وَلَوْ
رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلْجُودُ فِي طُعْيَانِهِمْ
مَذَلٌّ

- (१६) उसमें हर व्यक्ति के कर्मों का लेखा है और वह लोहे मेहफूज़ है।
(१७) न किसी की नेकी घटाई जाएगी न बदी बढ़ाई जाएगी . इसके बाद काफ़िर्नों का ज़िक्र किया जाता है।
(१८) यानी क़ुरआन शरीफ़ से।
(१९) जो ईमानदारों के ज़िक्र किये गए।
(२०) और वह दिन प्रतिदिन क़त्ल किये गए और एक क़ौल यह है कि इस अज़ाब से मुराद फ़ाफ़ी और भुखमरी की वह मुसीबत है जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुआ से उनपर डाली गई थी और उस अकाल से उनकी हालत यहाँ तक पहुंच गई थी कि वो कुत्ते और मुर्दार तक खा गए थे।
(२१) अब उनका जवाब यह है कि ---
(२२) यानी क़ुरआन शरीफ़ की आयतें।
(२३) और इन आयतों को न मानते थे और ऊपर ईमान न लाते थे।
(२४) और यह कहते हुए कि हम हरम वाले हैं और अल्वाह के घर के पड़ोसी हैं, हम पर कोई ग़ालिब न होगा, हमें किसी का डर नहीं।
(२५) कावे के चारों तरफ़ जमा होकर, और उन कहानियों में अक्सर क़ुरआन शरीफ़ की बुराई और उसको जादू और शायरी कहना और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में बेजा बातें कहना होता था।
(२६) यानी नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को और आप पर ईमान लाने को और क़ुरआन को।
(२७) यानी क़ुरआन शरीफ़ में और नहीं किया और इसके चमत्कार पर नज़र नहीं डाली जिससे उन्हें मालूम होता कि यह रब का क़लाम है, इसकी तरदीक़ लाज़िम है और जो कुछ इसमें कहा गया है वह सब सच है और मानने की चीज़ है। और सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सच्चाई होने पर इसमें ख़ुले प्रमाण हैं।
(२८) यानी रसूल का नशरीफ़ लाना ऐसी निराली बात नहीं है जो कभी पहले ज़माने में हुई ही न हो और वो यह कह सकें कि हमें ख़बर ही न थी कि ख़ुदा की तरफ़ से रसूल आया भी करते हैं . पहले कभी कोई रसूल आया होता और हमने उसका ज़िक्र सुना होता तो हम क्यों इस रसूल (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) को न मानते, यह बहाना करने का मौज़न भी नहीं, क्योंकि पहली उम्मतों में रसूल आचुक् हैं और ख़ुदा की किताबें उतर चुकी हैं।
(२९) और हुज़ूर की उम्र शरीफ़ के कुल हालात को न देखो और आप के ऊंचे ख़ानदान, सच्चाई और अमानतदारी और असाधारण

(एहसान-फरामोशी) करें अपनी सरकशी में बहकते हुए^(५३) (७५) और बेशक हमने उन्हें अज़ाब में पकड़ा^(५४) तो न वो अपने रब के हुज़ूर में झुके न गिड़गिड़ाते हैं^(५५) (७६) यहाँ तक कि जब हमने उनपर खोला किसी सख्त अज़ाब का दरवाज़ा^(५६) तो वो अब उसमें नाउम्मीद पड़े हैं^(७७)

पाँचवां स्कू

और वही है जिसने बनाए तुम्हारे लिये कान और आँखें और दिल^(५७) तुम बहुत ही कम हक मानते हो^(५८) (७८) और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ उठना है^(५९) (७९) और वही जिलाए और मारे और उसी के लिये हैं रात और दिन की तबदीलियाँ^(६०) तो क्या तुम्हें समझ नहीं^(६०) (८०) बल्कि उन्होंने वही कही जो अगले^(६१) कहते थे (८१) बोले क्या जब हम मर जाएं और मिट्टी और हड्डियां हो जाएं क्या फिर निकाले जाएंगे^(६२) बेशक यह वादा हम को और हम से पहले हमारे बाप दादा को दिया गया यह तो नहीं मगर वही अगली दास्तानें^(६३) (८२) तुम फ़रमाओ किसका माल है ज़मीन और जो कुछ इसमें है अगर तुम जानते हो^(६४) (८४) अब कहेंगे कि अल्लाह का^(६५) तुम फ़रमाओ फिर क्यों नहीं सोचते^(६६) (८५) तुम फ़रमाओ कौन है मालिक आसमानों का और मालिक बड़े अर्श का^(६७) अब कहेंगे यह अल्लाह ही की शान है

يَعْمَهُونَ ۝ وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَعَاذُوا لِيَوْمِهِمْ وَمَا يَنْصُرُهُوْنَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمُ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذْأَنَّهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ۝ قَالُوا إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّنَا لَمَبْعُوثُونَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هَٰذَا مِنْ قَبْلُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ قُلْ لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا

مَنْزِلٌ

सूझ बूझ, सदचरित्र, सदव्यवहार और विनम्रता और मेहरबानी वगैरह पाकीज़ा विशेषताओं और गुणों और बिना किसी से सीखे आपके इल्म में कामिल और तमाम सृष्टि से ज़्यादा जानकार और सर्वोत्तम होने को न जाना, क्या ऐसा है?

(३०) हकीकत में यह बात तो नहीं बल्कि वो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को और आपके गुणों और चमत्कारों को ख़ुब जानते हैं और आपकी बुजुर्गी वाली विशेषताएं ज़माने भर में मशहूर हैं।

(३१) यह भी सरासर ग़लत है, क्योंकि वो जानते हैं कि आप जैसा सूझ बूझ वाला और सम्पूर्ण बुद्धि का मालिक व्यक्ति उनके देखने में नहीं आया।

(३२) यानी कुरआन शरीफ़, जो अल्लाह की तौहीद और दीन के अहकाम पर आधारित है।

(३३) क्योंकि इसमें नफ़्सानी ग़्वाहिशों का विरोध है इसलिये वो रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनकी विशेषताओं और कमालात को जानने के बावजूद सच्चाई का विरोध करते हैं। अक्सर की क़ैद से साबित होता है कि यह हाल उनमें बहुत से लोगों का है चुनावे उनमें कुछ ऐसे भी थे जो आपको सच्चाई पर जानते थे और सच्चाई उन्हें बुरी भी नहीं लगती थी लेकिन वो अपनी क़ौम की तरफ़दारी या उनके तअनों के डर से ईमान न लाए जैसे कि अबू तालिब।

(३४) यानी कुरआन शरीफ़।

(३५) इस तरह कि इस में वो विषय बयान होते हैं जिनकी काफ़िर ग़्वाहिश करते हैं जैसे कि चन्द ख़ुदा होना और ख़ुदा के बेटेयाँ और बेटे होना, वगैरह कुफ़्र की बातें।

(३६) और सारे जगत का निज़ाम बिगड़ जाता, उलट पुलट हो जाता।

(३७) यानी कुरआन पाक।

(३८) उन्हें हिदायत करने और सच्ची राह बताने पर, ऐसा तो नहीं और वो क्या हैं और आपको क्या दे सकते हैं, तुम अगर अन्न चाहो।

(३९) और उसका फ़ज़ल आप पर बहुत बड़ा और जो नेअमतेँ उसने आपको अना फ़रमाई वो बहुतायत से और उत्तम, तो आपको उनकी क्या चिन्ता। फिर जब वो आपके गुणों और चमत्कारों से वाकिफ़ भी हैं, कुरआन शरीफ़ का चमत्कार भी उनकी निगाहों के सामने है और आप उनसे हिदायत और नसीहत का कोई बदला भी तलब नहीं करते तो अब उन्हें ईमान लाने में क्या मजबूरी रही।

(४०) तो उनपर लाज़िम है कि आपकी दावत कुबूल करें और इस्लाम में दाख़िल हों।

(४१) यानी सच्चे दीन से।

तुम फ़रमाओ फिर क्यों नहीं डरते^(११) (८७) तुम फ़रमाओ किस के हाथ है हर चीज़ का काबू^(१२) और वह पनाह देता है और उसके खिलाफ़ कोई पनाह नहीं दे सकता अगर तुम्हें इल्म हो^(१३) (८८) अब कहेंगे यह अल्लाह ही की शान है, तुम फ़रमाओ फिर किस जादू के थोखे में पड़े हो^(१४) (८९) बल्कि हम उनके पास सच्चाई लाए^(१५) और वो वेशक झूटे हैं^(१६) (९०) अल्लाह ने कोई बच्चा इख्तियार न किया^(१७) और न उसके साथ कोई दूसरा खुदा^(१८) यूँ होता तो हर खुदा अपनी मखलूक ले जाता^(१९) और ज़रूर एक दूसरे पर अपनी तअल्ली (महानता) चाहता^(२०) पाकी है अल्लाह को इन बातों से जो ये बनाते हैं^(२१) (९१) जानने वाला हर छुपे और ज़ाहिर का तो उसे बलन्दी है उनके शिर्क से^(९२)

छटा रूकू

तुम अज़्र करो कि ऐ मेरे रब अगर तू मुझे दिखाए^(१) जो उन्हें वादा दिया जाता है^(२) (९३) तो ऐ मेरे रब मुझे इन ज़ालिमों के साथ न करना^(३) (९४) और वेशक हम क़ादिर (सक्षम) हैं कि तुम्हें दिखा दें जो उन्हें वादा दे रहे हैं^(४) (९५) सब से अच्छी भलाई से बुराई को दफ़ा करो^(५) हम ख़ूब जानते हैं जो बातें ये बनाते हैं^(६) (९६) और तुम अज़्र करो कि ऐ मेरे रब तेरी पनाह शैतानों के वसवसों से^(७) (९७) और ऐ मेरे रब तेरी पनाह कि वो मेरे पास आएँ^(८) (९८) यहां तक कि जब उनमें किसी को मौत आए^(९) तो कहता है कि ऐ मेरे रब मुझे वापस फेर दीजिये^(१०) (९९) शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊँ उसमें जो छोड़ आया हूँ^(११)

تَتَّقُونَ ۖ قُلْ مَنْ مِّنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ
وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِلَّا مَن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ
قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ ۖ بَلْ أَتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ
لَكَاذِبُونَ ۖ مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ
مِنْ إِلَٰهٍ إِذَا الذَّهَبُ كُلُّهُ إِلَٰهٌ مَّا حَلَقَ وَلَعَلَّا بَعْضُهُمْ
عَلَىٰ بَعْضٍ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ۚ عَلِيمِ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ فَتَعَلَّىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۚ قُلْ رَبِّ إِنَّمَا تُرِيدُنِي
مَّا يُوعَدُونَ ۚ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ
وَرَأَيْتُ عَلَىٰ أَنْ تُرِيدَ مَا نَعِدُهُمْ يُقَدِّرُونَ ۖ اذْفَعْ بِأَلْتِي
هِيَ أَحْسَنُ السَّبِيَّةِ ۚ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ۖ وَ
قُلْ رَبِّ ائْتِنِي بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ۖ وَأَعُوذُ
بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ رَبِّ اجْعَلْنِي ۖ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ

مَكِّيَّةٌ

(४२) सात साल के दुष्काल की.

(४३) यानी अपने कुफ़र और दुश्मनी और सरकशी की तरफ़ लौट जाएंगे और यह चापलूसी जाती रहेगी और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और ईमान वालों की दुश्मनी और घमण्ड जो उनका पहला तरीका था वही अपना लेंगे. जब क़ुरैश सय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुआ से सात साल के दुष्काल में जकड़े गए और हालत बहुत ख़राब हो गई तो अब सुफ़ियान उनकी तरफ़ से नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अज़्र किया कि क्या आप अपने ख़याल में सारे जगत के लिये रहमत बना कर नहीं भेजे गए. आपने फ़रमाया, वेशक़: तो अब सुफ़ियान ने कहा कि बड़ों का तो आपने बद्र में क़त्ल कर डाला, औलाद जो रही वह आपकी बद्र दुआ से इस हालत को पहुंची कि दुष्काल की मुसीबत में गिरफ़्तार हुई, भुख़मरी से तंग आगई, लोग भूख़ की बेताबी से हड्डियाँ चाब गए, मुर्दार तक खा गए हैं. मैं आपको अल्लाह को क़सम देता हूँ और कराबत की, आप अल्लाह से दुआ कीजिये कि हम से दुष्काल दूर फ़रमाए. हुज़ूर ने दुआ फ़रमाई और उन्होंने इस बला से छुटकारा पाया. इस घटना के बारे में ये आयतें उतरीं.

(४४) दुष्काल के या क़त्ल के.

(४५) बल्कि अपनी हठधर्मी और सरकशी पर हैं.

(४६) इस अज़ाब से या दुष्काल मुराद है जैसा कि ऊपर की रिवायत में आया या बद्र के दिन का क़त्ल. यह इस क़ौल की वुतियाद पर है कि दुष्काल बद्र से पहले हुआ. और कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि इस सरत अज़ाब से मौत मुराद है. कुछ ने कहा कि क़यामत.

सूरए मूमिनून - पाँचवां रूकू

(१) ताकि सुनो और देखो और समझो और दीन और दुनिया का मुताफ़्फ़ा हासिल करो.

(२) कि तुम ने उन नेअमतों की क़द्र न जानी और उनसे फ़ायदा न उठाया और कानों, आँखों और दिलों से अल्लाह की आयतों के मुनने, देखने, समझने और अल्लाह को जानने और उसका हक़ पहचान कर शुक्रगुज़ार बनने का नफ़ा न उठाया.

- (3) क़यामत के दिन.
- (4) उनमें से हर एक का दूसरे के बाद आना और अंधेरे और उजाले और कर्मा वेशी में हर एक का दूसरे से विभिन्न होना ये सब कुदरत के निशान हैं.
- (5) कि उनसे नसीहत पकड़ो और उनमें खुदा की कुदरत देख कर मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को स्वीकार करो और ईमान लाओ.
- (6) यानी उनसे पहले काफ़िर.
- (7) जिनकी कुछ भी हकीकत नहीं. काफ़िरों के इस कथन का रद्द फ़रमाने और उनपर हुज्जत कायम फ़रमाने के लिये अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहू अलैहिं वसल्लम से इरशाद फ़रमाया.
- (8) उसके ख़ालिक और मालिक को तो बताओ.
- (9) क्योंकि इसके सिवा कोई जवाब ही नहीं और मुश्किल अल्लाह तआला की ख़ालिकीयत को मानते भी हैं. जब वो यह जवाब दें.
- (10) कि जिसने ज़मीन को और उसकी सृष्टि को शुरू में पैदा फ़रमाया, वह ज़रूर मुद्दों का ज़िन्दा करने पर कादिर है.
- (11) उसके अलावा दूसरे को पूजने और शिर्क करने से और उसके मुद्दों को ज़िन्दा करने पर कादिर होने का इन्कार करने से.
- (12) और हर चीज़ पर हकीकती कुदरत और इस्तिyार किस का है.
- (13) तो जवाब दो.
- (14) यानी किस शैतानी शोखे में हो कि तौहीद और फ़रमाँवरदारी को छोड़कर सच्चाई को झूट समझ रहे हो. जब तुम मानते हो कि हकीकती कुदरत उसी की है और उसके खिलाफ़ कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता, तो दूसरे की इबादत बिल्कुल बेकार है.
- (15) कि अल्लाह के न औलाद हो सकती है, न उसका शरीक. ये दोनों बातें मुहाल हैं.
- (16) जो उसके लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं.
- (17) वह इस से पाक है, क्योंकि आकार और ज़िन्स से पाक है और औलाद वही हो सकती है जो एक ज़िन्स हो.
- (18) जो ख़ुदा होने में शरीक हो.
- (19) और उसको दूसरे के कब्ज़े में न छोड़ता.
- (20) और दूसरे पर अपनी बरतरी और अपना ग़लबा पसन्द करता क्योंकि टक्कर की हुक्मतों में यही होता है. इससे मालूम हुआ कि दो ख़ुदा होना बातिल है, ख़ुदा एक ही है और हर चीज़ उसके तहत और कब्ज़े में है.
- (21) कि उसके लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं.

सूरए मूमिनून - छटा रूकू

- (1) यह अज़ाब.
- (2) और उनका करीन और साथी न बनाना. यह दुआ तवाज़ो और बन्दगी के इज़हार के तरीक़े पर है, जब कि मालूम है कि अल्लाह तआला आपको उनका साथी न करेगा. इसी तरह मअसूम नबी इस्तिyार किया करते हैं. जबकि उन्हें मोक्ष और अल्लाह की मेहरबानी का यकीनी इल्म होता है. यह सब विनम्रता और बन्दगी का इज़हार है.
- (3) यह जवाब है उन काफ़िरों का जो अज़ाब का इन्कार करते और उसकी हंसी उड़ाते थे. उन्हें बताया गया कि अगर तुम ग़ौर करो तो समझ लो कि अल्लाह तआला इस वादे के पूरा करने में सक्षम है. फिर इन्कार की वजह और हंसी बताने का कारण क्या? और अज़ाब में जो विलम्ब हो रहा है उसमें अल्लाह की हिक्मतें हैं कि उनमें से जो ईमान वाले हैं वो ईमान ले आएँ और जिनकी नसलें ईमान लाने वाली हैं, उन से वो नसलें पैदा हो लें.
- (4) इस वाक्य के मानी बहुत फैले हुए हैं. इसके ये मानी भी हैं कि तौहीद जो आला बेहतरी है उससे शिर्क की बुराई को दफ़ा फ़रमाए, और यह भी कि फ़रमाँवरदारी और परहेज़गारी को रिवाज देकर गुनाह और बुराई दफ़ा कीजिये, और यह भी कि अपने सदब्यवहार से ख़ताकारों पर इस तरह मेहरबानी और रहमत फ़रमाए जिससे दीन में सुखी न हो.
- (5) अल्लाह और उसके रसूल की शान में, तो हम उसका बदला देंगे.
- (6) जिनसे वो लोगों को धोखा देकर बुराई और पापों में ज़कड़ते हैं.
- (7) यानी काफ़िर मौत के वक़्त तक तो अपने कुक़्र और सरकशी और ख़ुदा और रसूल के झुटलाने और मरने के बाद दांवारा ज़िन्दा किये जाने के इन्कार पर अड़ा रहता है और जब मौत का वक़्त आता है और उसका जहन्नम में उसका जो स्थान है दिखाया जाता है और जन्नत का वह स्थान भी दिखाया जाता है जो ईमान लाने की सूखत में उसे मिल सकता था.
- (8) दुनिया की तरफ़.
- (9) और नेक कर्म करके अपने गुनाहों का प्रायश्चित करे, इसपर उसको फ़रमाया जाएगा.
- (10) हसरत और शर्मिन्दगी से, यह होने वाली नहीं और इसका कुछ फ़ायदा नहीं.

हिश्ता! यह तो एक बात है जो वह अपने मुंह से कहता है^(१०) और उनके आगे एक आइ है^(११) उस दिन तक जिसमें उठाए जाएंगे^(१००) तो जब सूर फूँका जाएगा^(१२) तो न उनमें रिश्ते रहेंगे^(१३) और न एक दूसरे की बात पूछे^(१४) तो जिनकी तौलें^(१५) भारी हों लीं वही मुराद को पहुंचे^(१०२) और जिनकी तौलें हलकी पड़ीं^(१६) वही हैं जिन्होंने अपनी जानें घाटे में डालीं हमेशा दोज़ख में रहेंगे^(१०३) उनके मुंह पर आग लपट मारेगी और वो उसमें मुंह चिड़ाए होंगे^(१०४) क्या तुम पर मेरी आयतें न पड़ी जाती थीं^(१०५) तो तुम उन्हें झुटलाते थे^(१०६) कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर हमारी बदबख्ती मालिव आई और हम गुमराह लोग थे^(१०६) ऐ हमारे रब हमको दोज़ख से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं^(१०७) रब फ़रमाएगा दुल्कारे पड़े रहो इसमें और मुझसे बात न करो^(१०८) वेशक मेरे बन्दों का एक गिरोह कहता था ऐ हमारे रब हम ईमान लाए तू हमें बख्श दे और हम पर रहम कर और तू सबसे बेहतर रहम करने वाला है^(१०९) तो तुमने उन्हें ठट्ठा बना

كَأَلَّا إِنَّمَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَمِنْ وَرَائِهِم
بَرْزَخٌ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۖ فَإِذَا نُفِثَ فِي الصُّورِ
فَلَا أَسْمَاءَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۖ فَمَنْ
ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ قَاوِلًا لِّكَ هُمُ الْبَاقُونَ ۖ وَمَنْ
خَفَّتْ مَوَازِينُهُ قَاوِلًا لِّلَّذِينَ خَسِرُوا
أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۖ تَتَلَفَعُ وُجُوهُهُمْ
النَّارَ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ۖ أَلَمْ تَكُنْ أَلَيْسَ تَتْلَى
عَلَيْكُم مَّا كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۖ قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ
عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ۖ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۖ قَالَ اخْسِئُوا فِيهَا
وَلَا تُكَلِّمُونَ ۖ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي
يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الرَّاحِمِينَ ۖ فَاتَّخَذَ ثَمُودُ هَمَّ سَخِرَ بِهَا حَتَّى أَسْوَأَ

مَزَلٍ

- (११) जो उन्हें दुनिया की तरफ वापस होने से रोकती है और वह मौत है। (ख़ाज़िन) कुछ मुफ़ससियों ने कहा कि बरज़ख़ मौत के वक़्त से ज़िन्दा उठाए जाने तक की मुद्दत को कहते हैं।
- (१२) पहली बार, जिसे नफ़थ़ए ऊला (सूर का पहली बार फूँका जाना) कहते हैं, जैसा कि हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है।
- (१३) जिन पर दुनिया में गर्व किया करते थे और आपस के झूठ और झानदान के तअल्लुकान टूट जाएंगे और रिश्ते की महबूतें बाज़ी न रहेंगी और यह हाल होगा कि आदमी अपने भाई और माँ बाप और बीबी और बेटों से भांगगा।
- (१४) जैसे कि दुनिया में पूछते थे, क्योंकि हर एक अपने ही हाल में अकड़ा होगा। फिर दूसरी बार सूर फूँका जाएगा और हिसाब के बाद लोग एक दूसरे का हाल पूछेंगे।
- (१५) नेक कर्म और अच्छी बातों से।
- (१६) नेकियाँ न होने के कारण, और वो काफ़िर हैं।
- (१७) तिरमिज़ी की हदीस है कि आग उनको भून डालेगी और ऊपर का होंट सुकड़ कर आधे सर तक पहुंचेगा और नीचे का नाफ़ तक लटक जाएगा, दांत झुले रह जाएंगे और उनसे फ़रमाया जाएगा।
- (१८) दुनिया में।
- (१९) तिरमिज़ी की हदीस है कि दोज़ख़ी लोग जहन्नम के दारोगा मालिक को चालीस बरस तक पुकारते रहेंगे। इसके बाद वह कहेंगा कि तुम जहन्नम में ही पड़े रहोगे। फिर वो रब को पुकारेंगे और कहेंगे ऐ हमारे रब हमें दोज़ख़ से निकाल, और यह पुकार उनकी दुनिया से दूनी उम्र की मुद्दत तक जारी रहेगी। इसके बाद उन्हें यह जवाब दिया जाएगा जो अगली आयत में है। (ख़ाज़िन) और दुनिया की उम्र कितनी है इसमें कई कौल हैं। कुछ ने कहा कि दुनिया की उम्र सात हज़ार बरस है, कुछ ने कहा, बारह हज़ार बरस, कुछ ने कहा, तीस लाख साठ बरस, असल मुद्दत अल्लाह तआला को ही मालूम है। (तज़क़िरह कर्तबी)
- (२०) अब उनकी उम्मीदें टूट जाएंगी और यह जहन्नम वालों का अन्तिम कलाम होगा, फिर इसके बाद उन्हें कलाम करना नसीब न होगा, रोते, चीख़ते, डक़रते, भीकते रहेंगे।
- (२१) ये आयतें क़ुरैश के काफ़िरों के बारे में उतरीं जो हज़रत बिलाल और हज़रत अम्मार और हज़रत सुहैब और हज़रत ख़न्बाब वगैरह रदियल्लाहो अन्हुम, मारीब सहावा से ठटोल करते थे।
- (२२) यानी उनके साथ ठटोल करने में इतने लीन हुए कि -----
- (२३) अल्लाह तआला ने काफ़िरों से।
- (२४) यानी दुनिया में, और क़ब्र में।
- (२५) यह जवाब इस बजह से देंगे कि उस दिन की दहशत और अज़ाब की हैबत से उन्हें अपने दुनिया में रहने की अस्थि याद न

लिया^(१३) यहाँ तक कि उन्हें बनाने के शाल(काम) में^(१२) मेरी याद भूल गए और तुम उनसे हंसा करते^(११०)।
 वेशक आज मैं ने उनके सत्र का उन्हें यह बदला दिया कि
 वही कामयाब हैं^(१११)। फ़रमाया^(११) तुम ज़मीन में कितना
 ठहरे^(१४) बरसों की गिनती से^(११२) बोले हम एक दिन
 रहे या दिन का हिस्सा ^(१५) तो गिनती वालों से दर्यापुत्र
 फ़रमा^(१६) ^(११३) फ़रमाया तुम न ठहरे मगर थोड़ा^(१७)
 अगर तुम्हें इत्म होता^(११४) तो क्या यह समझते हो कि
 हमने तुम्हें वेकार बनाया और तुम्हें हमारी तरफ़ फ़िरना
 नहीं^(१८) ^(११५) तो बहुत बलन्दी वाला है अल्लाह सच्चा
 बादशाह, कोई मअवूद नहीं सिवा उसके, इज़्ज़त वाले अर्श
 का मालिक^(११६) और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे
 ख़ुदा को पूजे जिस की उसके पास कोई सनद(प्रमाण)
 नहीं^(१९) तो उसका हिसाब उसके रब के यहाँ है वेशक
 काफ़िरों का छुटकारा नहीं^(११७) और तुम अर्ज़ करो ऐ
 मेरे रब वख़्श दे^(१०) और रहम फ़रमा और तू सबसे बरतार
 रहम करने वाला^(११८)।

२४-सूरण नूर

सूरए नूर मदीना में उतरी, इसमें ६४ आयतें, ९ सूकू हैं.

पहला सूक

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१)

ذِكْرِي وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ تَضَحَكُونَ ۝ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ
الْيَوْمَ بِمَا صَابَرُوا وَأَتَاهُمْ ۝ هُمُ الْفَآئِزُونَ ۝ قُلْ كَمْ
لَيْسْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ۝ قَالُوا لَيْسَ بِنَا يَوْمًا أَوْ
بَعْضُ يَوْمٍ فَسْئَلُ الْعَادِيْنَ ۝ قُلْ إِنْ لَيْسَتْ بِنَا إِلَّا قَلِيلًا
لَوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّنَا خَلَقْنَاكُمْ
عَبَثًا وَإِنَّكُمْ إِلَيْنَا لَآتِرْجِعُونَ ۝ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ
الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۝ وَمَنْ
يَبْدَعْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ ۚ فَإِنَّا
حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۝ وَقُلْ
رَبِّ اعْفُوفْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝

سُورَةُ التَّوْحِيدِ مَكِّيَّةٌ (١٠٣) وَنَافِلَةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سُورَةُ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَاهَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ

صغول ۴۴

रहेगी और उन्हें शक हो जाएगा, इसीलिये कहेंगे.

(२६) यादी उन फ़रिश्ताओं से, जिन को तूने बन्दों की उम्में और उनके कर्म लिखने पर नियुक्त किया. इसपर अल्लाह ताअला ने.

(२७) आग्निस्त की अपेक्षा.

(२८) और आश्रित में जज़ा के लिये उठना नहीं बल्कि तुम्हें इबादत के लिये पैदा किया कि तुम पर इबादत लाज़िम करें और आश्रित में तुम हमारी तरफ लौट कर आओ तो तुम्हारे कर्मों का बदला दें.

(२९) यानी अल्लाह के सिवा किसी की पूजा मात्र बातिल और प्रमाण रहित है।

(३०) ईमान वालों को.

२४ - सूरए नूर - पहला सूकू

(१) सूरण नूर मदीने में उतरी, इसमें नौ रुक्कू, चौंसठ आयतें हैं.

यह एक सूरत है कि हमने उतारी और हमने इसके एहकाम फर्ज किये^(२) और हमने इसमें रौशन आयतें नाज़िल फरमाईं कि तुम ध्यान करो^(३) जो औरत बदकार हो और जो मर्द तो उनमें हर एक को सौ कोड़े लगाओ^(४) और तुम्हें उनपर तरस न आए अल्लाह के दीन में^(५) अगर तुम ईमान लाते हो अल्लाह और पिछले दिन पर, और चाहिये कि उनकी सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक ग़िरोह हाज़िर हो^(६) बदकार मर्द निकाह न करे मगर बदकार औरत या शिर्क वाली से और बदकार औरत से निकाह न करे मगर बदकार मर्द या मुश्रिक^(७) और यह काम^(८) ईमान वालों पर हाराम है^(९) और जो पारसा औरतों को ऐव (लांछन) लगाए, फिर चार गवाह मुआयना के न लाएं तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और उनकी कोई गवाही कभी न मानो^(१०) और वही फ़ासिक हैं^(११) मगर जो इसके बाद तौवह कर लें और संवर जाएं^(१२) तो वेशक अल्लाह बख़्शन वाला मेहरबान है^(१३) और वो जो अपनी औरतों को ऐव लगाएं^(१४) और उनके पास अपने बयान के सिवा गवाह न हों तो ऐसे किसी की गवाही यह है कि चार बार गवाही दे अल्लाह के नाम से कि वह सच्चा है^(१५) और पाँचवें यह कि अल्लाह की

لَعَنَكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةً جَلْدَةً وَلَا تَأْخُذْ بَعِثَهَا رَأْفَةً فِي دِينِ اللَّهِ إِنَّ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَيْشَ هَذَا عَذَابٌ بِهَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ الزَّانِي لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَحُرْمَةُ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحْلِهِمْ أَرْبَعُ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۝ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ

مَنْزِل

(२) और उनपर अमल करना बन्दों पर अनिवार्य किया।

(३) यह सम्बोधन शासकों को है कि जिस मर्द या औरत से ज़िना सरज़द हो उसकी सज़ा यह है कि उसके सौ कोड़े लगाओ। शादी शुदा आदमी अगर ज़िना करे तो उसे रज़म यानी संगसार किया जाए जैसा कि हदीस शरीफ में आया है कि रसूलने अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आदेश पर माइज़ रदियल्लाहो अन्हां को संगसार किया गया। अगर ज़िना करने वाला आज़ाद न हो, या मुसलमान न हो, या आक्रिल वालिग न हो, या उसने कभी अपनी बीबी के साथ संभोग न किया हो, या जिसके साथ किया हो उसके साथ ग़लत तरीक़े से निकाह हुआ हो, तो इन सब के लिये कोड़े लगाने का हुक़्म है। मर्द को कोड़े लगाने के वक़्त खड़ा किया जाए और उसके सारे कपड़े उतार दिये जाएं, सिवाय तहबंद के और उसके सारे शरीर पर कोड़े लगाए जाएं, सर और चेहरा और लिंग की जगह छोड़ कर। कोड़े इस तरह लगाए जाएं कि उनकी मार गोश्त तक न पहुँचे और कांडा औसत दर्जे का हो। औरत को कोड़े लगाने के समय खड़ा न किया जाए, न उसके कपड़े उतारें जाएं। अलबत्ता अगर पोस्तीन या रुईदार कपड़े पहने हो तो उतार दिये जाएं। यह हुक़्म आज़ाद मर्द और औरत के लिये है। दासी और गुलाम की सज़ा इसकी आधी यानी पचास कोड़े हैं जैसा कि सूरण निमा में बयान हो चुका। ज़िना का सुबूत या तो चार मर्दों को गवाहियों से होता है या ज़िना करने वाले के चार बार इक़रार कर लेने से। फिर भी इमाम या क़ाज़ी बार बार दर्याफ़्त करेगा और पूछेगा कि ज़िना से क्या मुआद है, कहाँ किया, किससे किया, कब किया। अगर इन सबको बयान कर दिया तो ज़िना माफ़ित होगा, बरना नहीं। और गवाहों को साफ़ साफ़ अपना देखना बयान करना होगा, इसके बिना सुबूत न होगा। लिखात या तो लौटबाज़ी ज़िना में दाख़िल नहीं है इसलिये इस काम से हद वाजिब नहीं होती लेकिन गुनाह वाजिब होता है और इस गुनाह में सहाबा के चन्द क़ौल आए हैं : आग में जला देना, डुबो देना, ऊँचाई से गिराना और ऊपर से पत्थर बरसाना। बुरा काम करने वालों और जिसके साथ किया जाए, दोनों के लिये एक ही हुक़्म है। (तफ़सीर अहमदी)

(४) यानी सज़ाओं को पूरा करने में कमी न करो और दीन में मज़बूत और डटे रहो।

(५) ताकि सबक हासिल हो।

(६) क्योंकि बुरे की रुचि बुरे ही की तरफ़ हांती है। नेक़ों का बुरे की तरफ़ रुचि नहीं होती। मुहाज़िरों में कुछ बिल्कुल गरीब थे, न उनके पास कुछ माल था, न उनका कोई अज़ीज़ करीब था, और बदकार मुश्रिक औरतों दौलतमन्द और मालदार थीं। यह देखकर किसी मुहाज़िर को खयाल आया कि अगर उनसे निकाह कर लिया जाए तो उनकी दौलत काम में आएगी। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से उन्होंने ने इसकी इज़ाज़त चाही इसपर यह आपत उतरी और उन्हें इससे रोक दिया गया।

(७) यानी बदकारों से निकाह करना।

(८) शुरु इस्लाम में ज़िना करने वाली औरत से निकाह हाराम था। बाद में आयत "وَنَكِهُنَّ" से यह हुक़्म मन्सूख़

लानत हो उसपर अगर झूटा हो (७) और औरत से यूँ सज़ा टल जाएगी कि वह अल्लाह का नाम लेकर चार बार गवाही दे कि मर्द झूटा है (१३) (८) और पाँचवीं यूँ कि औरत पर ग़ज़व अल्लाह का अगर मर्द सच्चा हो (१४) (९) और अगर अल्लाह का फ़ज़ल (कृपा) उसकी रहमत तुम पर न होती और यह कि अल्लाह तौवह कुबूल फ़रमाता, हिकमत वाला है (१०)

दूसरा रूकू

तो तुम्हारा पर्दा खोल देता वेशक वह कि यह बड़ा वोहतान (आरांफ) लाए हैं तुम्हीं में की एक जमाअत है (१) उसे अपने लिये घुरा न समझो, बल्कि वह तुम्हारे लिये बेहतर है (२) उनमें हर शख्स के लिये वह गुनाह है जो उसने कमाया (३) और उनमें वह जिसने सबसे बड़ा हिस्सा लिया (४) उसके लिये बड़ा अज़ाब है (५) (११) क्यों न हुआ जब तुमने उसे सुनाया कि मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने अपनों पर नेक गुमान किया होता (६) और कहते यह खुला वोहतान है (७) (१२) उस पर चार गवाह क्यों न लाए तो जब गवाह न लाए तो वही अल्लाह के नज़दीक झूटें हैं (१३) और अगर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत

اللَّهُ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَذَّابِينَ وَيُجَادِلُ عَنْهَا
الْعَدَابُ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ
الْكَذَّابِينَ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ
كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَ
رَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ إِنْ الَّذِينَ جَاءُوا
بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ لَا نَحْسَبُهُ شَرًّا لَكُمْ بَلْ هُوَ
خَيْرٌ لَكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ
وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ
لَوْ لَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ
خَيْرًا وَقَالُوا هَذَا إِفْكٌ مُبِينٌ لَوْ لَا جَاءُوا
عَلَيْكُمْ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ
فَأُولَئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَذَّابُونَ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَكُنْتُمْ فِي مَآ
مُزَل

यानी स्थगित हो गया।

(९) इस आयत से कुछ बातें साबित हुई (१) जो व्यक्ति किसी नेक मर्द या औरत पर ज़िना का आरोप लगाए, उसपर चार आँखों देखे गवाह पेश न कर सके तो उसपर हद वाजिव हो जाती है यानी अस्सी चोड़े। आयत में शब्द “मोहसिनात” यानी पारसा नेक औरतों विशेष घटना के कारण आया या इसलिये कि औरतों को आरोप लगाना आम हो गया है। (२) और ऐसे लोग जो ज़िना के आरोप में सज़ा पाएँ और उनपर हद जारी हो चुकी हो, गवाही देने के योग्य नहीं रह जाते, कभी उनकी गवाही कुबूल नहीं की जाती। पारसा से मुराद वो हैं जो मुसलमान मंशमन्द यानी आकिल वालिग, आज़ाद और ज़िना से پاک हों। (३) ज़िना की शहादत के लिये कम से कम चार गवाह होने चाहियें। (४) जिसपर आरोप लगाया गया है अगर वह दावा न करे तो क़ज़ी पर हद कायम करना लाज़िम नहीं। (५) दावा करने का हक़ उसी का है जिसपर आरोप लगाया गया हो, अगर वह ज़िन्दा हो और अगर वह मर गया हो तो उसके बेटे पांते का भी है। (६) गुलाम अपने मालिक पर और बेटा अपने बाप पर क़ज़फ़ यानी अपनी माँ पर ज़िना का आरोप लगाने का दावा नहीं कर सकता। (७) क़ज़फ़ के अलफ़ाज़ ये हैं कि वह खुल्लमखुल्ला किसी को ज़ानी कहे या यह कहे कि तू अपने बाप से नहीं है या उसके बाप का नाम लेकर कहे कि तू उसका बेटा नहीं है या उसको ज़िना करने वाली औरत का बेटा कहकर पुकारें और हो उसकी माँ पारसा और नेक बीबी, तो ऐसा व्यक्ति क़ाज़िफ़ हो जाएगा और उस पर तोहमत यानी आरोप की हद आएगी। (८) अगर ग़ैर मोहसिन को ज़िना का आरोप लगाया, जैसे किसी गुलाम को या काफ़िर को या ऐसे व्यक्ति को जिसका कभी ज़िना करना साबित हो तो उस पर क़ज़फ़ की हद कायम न होगी बल्कि उसपर तअज़ीर (सज़ा) वाजिव होगी और यह तअज़ीर (सज़ा) शरई हाकिम के हुक़म के मुताबिक़ तीन से उन्नीस तक चोड़े लगाना है। इसी तरह अगर किसी शख्स ने ज़िना के सिवा और किसी बुरे काम की तोहमत लगाई और पारसा और नेक मुसलमान को ऐ फ़ासिक़, ऐ काफ़िर, ऐ ख़बीस, ऐ चोर, ऐ बदकार, ऐ मुद्रन्नस, ऐ वेईमान, ऐ लौंडयाज़, ऐ ज़िन्दीक, ऐ दय्यस, ऐ शराबी, ऐ सूदख़ोर, ऐ बदकार औरत के बच्चे, ऐ हरामज़ादे, इस किस्म के अलफ़ाज़ कहे तो भी उसपर तअज़ीर वाजिव होगी। (९) इमाम यानी शरई हाकिम को और उस शख्स को, जिसे तोहमत लगाई गई हो, सुबूत में पहले माफ़ करने का हक़ है। (१०) अगर तोहमत लगाने वाला आज़ाद न हो बल्कि गुलाम हो तो उसके चालीस चोड़े लगाए जाएंगे। (११) तोहमत लगाने के जुर्म में जिसको हद लगाई हो उसकी गवाही किसी मामले में भरोसे की नहीं चाहें वह तौवह करे। लेकिन रमज़ान का चांद दंग्रन के बाव में तौवह करने और उसके आदिल होने की सूरत में उसका क़ौल कुबूल कर लिया जाएगा क्योंकि यह वास्तव में शहादत नहीं है इसीलिये इसमें शहादत शब्द और शहादत का निसाब भी शर्त नहीं।

(१०) अपने अहवाल को दुख़्त कर लें।

(११) ज़िना का।

(१२) औरत पर ज़िना का आरोप लगाने में.

(१३) उस पर ज़िना की तोहमत लगाने में.

(१४) उसको लिआत कहते हैं. जब मर्द अपनी बीवी पर ज़िना का आरोप लगाए और अगर मर्द व औरत दोनों शहादत यात्री गवाही के योग्य हों और औरत उसपर दावा करे तो मर्द पर लिआत बाजिव हो जाता है. अगर वह लिआत से इनकार करदे तो उसको उस वक़्त तक कैद रखा जाएगा जब तक वह लिआत करे या अपने झूट का इकरार हो. अगर झूट का इकरार करे तो उसको हद्द कज़फ़ लगाई जाएगी जिसका बयान ऊपर हो चुका है. और अगर लिआत करना चाहे तो उसको चार बार अल्लाह की कसम खाकर कहना होगा कि वह उस औरत पर ज़िना का आरोप लगाने में सच्चा है और पांचवीं बार यह कहना होगा कि अल्लाह की तआनत मुझपर अगर मैं यह आरोप लगाने में झूटा हूँ. इतना करने के बाद मर्द पर से कज़फ़ की हद्द साकित हो जाएगी और औरत पर लिआत बाजिव होगा. इनकार करनी तो कैद की जाएगी यहाँ तक कि लिआत मन्ज़ूर करे या शीहर के इल्ज़ाम लगाने की पुष्टि करे. अगर पुष्टि की तो औरत पर ज़िना की हद्द लगाई जाएगी और अगर लिआत करना चाहे तो उसको चार बार अल्लाह की कसम के साथ कहना होगा कि मर्द उसपर ज़िना की तोहमत लगाने में झूटा है और पांचवीं बार यह कहना होगा कि अगर मर्द उस इल्ज़ाम लगाने में सच्चा हो तो मुझ पर खुदा का राज़ब हो. इतना कहने के बाद औरत से ज़िना की हद्द उठ जाएगी और लिआत के बाद क़ाज़ी के तफ़रीक़ करने से अलाहदगी बाक़े होगी और यह अलाहदगी तलाक़े बाइन होगी. और अगर मर्द पहले शहादत से न हो जैसे कि गुलाम हो या काफ़िर हो या उसपर कज़फ़ की हद्द लग चुकी हो तो लिआत न होगा और तोहमत लगाने से मर्द पर कज़फ़ की हद्द लगाई जाएगी. और अगर मर्द पहले शहादत में से हो और औरत में यह योग्यता न हो इस तरह कि वह बौदी हो या काफ़िर या उस पर कज़फ़ की हद्द लग चुकी हो या बन्ची हो या पागल हो या ज़िना करने वाली हो, उस सूत में मर्द पर न हद्द होगी न लिआत. यह आयत एक सहाबी के हज़क़ में उतरी जिन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दरियाफ़्त किया था कि अगर आदमी अपनी औरत को ज़िना में जकड़वा देगा तो क्या करे. न उस वक़्त गवाहों के तलाश करने की फ़ुर्सत है और न बग़ैर गवाही के वह यह बात कट सकता है क्योंकि उसे कज़फ़ की हद्द का अन्देशा है. इसपर यह आयत उतरी, और लिआत का हुक्म दिया गया.

सूरए नूर - दूसरा स्कू

(१) बड़े बोहतान से मुराद हज़रत उम्मुल मूमिनीन आयशा सिद्दीका रदियल्लाहो अन्हा पर तोहमत लगाता है. सन पांच हिजरी में राज़वए बनी मुस्तलक़ से वापसी के वक़्त काफ़िला मर्दाने के करीब एक पड़ाव पर ठहरा तो उम्मुल मूमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीका रदियल्लाहो अन्हा ज़रूरत के लिये किसी गांशे में तशरीफ़ ले गईं. वहाँ आपका हार टूट गया, उसकी तलाश में लग गईं. उधर काफ़िला चल पड़ा और आपकी मेहमिल शरीफ़ (डाली) ज़ेद पर कस दी गई और लोगों को यही ख़याल रहा कि उम्मुल-मूमिनीन इसी में हैं. काफ़िला चल दिया. आप आकर काफ़िले की जगह बैठ गईं इस ख़याल से कि मेरी तलाश में काफ़िला ज़रूर वापस होगा. काफ़िले के पीछे गिरी पड़ी चीज़ उठाने के लिये एक आदमी रहा करता था. उस मौक़े पर हज़रत सफ़वान इस काम पर थे. जब वह आए और उन्होंने आपको देखा तो ऊँची आवाज़ से इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राज़िऊन पुकारा. आपने कपड़े से पर्दा कर लिया. उन्होंने अपनी ज़ेदनी बिटाई, आप उस पर सवार होकर लश्कर में पहुँचीं. मुनाफ़िक़ों ने अपने दिल की कालिश से ग़लत अफ़वाहें फैलाई और आपकी शान में बुरा भला कहना शुरू किया. कुछ मुसलमान भी उनके बहकावे में आ गए और उनकी ज़बात से भी अपशब्द निकले. उम्मुल मूमिनिन बीमार हो गईं और एक माह तक बीमार रहीं. इस ज़माने में उन्हें ख़बर न हुई कि मुनाफ़िक़ उनकी निश्चय क्या बक रहे हैं. एक दिन उम्मे मिस्तह से उन्हें यह ख़बर मालूम हुई और इससे आपकी बीमारी और बढ़ गई. इस दुश्ख में इस तरह रोई कि आपके आँसू न थमते थे और न एक पल के लिये नींद आती थी. इस हालत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर बही आई और हज़रत उम्मुल मूमिनीन की पाकी में ये आयतें उतरीं और आपकी इज़ज़त और दर्ज़ा अल्लाह तआला ने इतना बढ़ाया कि क़ुरआन शरीफ़ की बहुत सी आयतों में आपकी बुजुर्गी और पाकी बयान फ़रमाई गईं. इस दौरान सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ग़िम्दर पर से क़सम के साथ फ़रमा दिया था कि मुझे अपनी बीबी की पाकी और ख़ूबी यकीन से मालूम है. तो जिस शख्स ने उनके बारे में बुरा कहा है उसकी तरफ़ से मेरे पास कौन मअज़िरत पेश कर सकता है. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ यकीनन झूठे हैं, उम्मुल मूमिनीन यकीनन पाक हैं. अल्लाह तआला ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पाक शरीर को मक्क़ी के बैटने से मेहफूज़ रखा कि वह ग़ल्बी पर बँटनी है. कैसे हो सकता है कि आपको बुरी औरत की सोहबत से मेहफूज़ न रखे. हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हा ने भी इसी तरह हज़रत सिद्दीका की पाकी और तद्दारत बयान की और फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने आपका साथ ज़मीन पर न पड़ने दिया ताकि उस साए पर किसी का क़दम न पड़े तो जो सब आपके साथ को मेहफूज़ रखता है, किस तरह मुमकिन है कि वह आपकी बीबी को मेहफूज़ न फ़रमाए. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि एक जुएं का खून लगने से सब ने आपको जूते उतार देने का हुक्म दिया, जो सब आपके जूतों की इतनी सी नापाकी ग़बारा न फ़रमाए, मुमकिन नहीं कि वह आपकी बीबी को नापाकी ग़बारा करे. इस तरह बहुत से सहाबा और बहुत सी सहाबियात ने क़स्में खाईं. आयत उतरने से पहले ही उम्मुल मूमिनीन को तरफ़ से दिल संतुष्ट था. आयत उतरने के बाद उनकी इज़ज़त और बुजुर्गी और बढ़ गईं. तो बुरा कहने वालों की बुराई अल्लाह और उसके रसूल और सहाबा के बर्ज़ीक़ बानित है और बुरा कहने वालों के लिये सज़ा मुसीबत है.

(२) कि अल्लाह तआला तुम्हें उस पर जज़ा देगा और हज़रत उम्मुल मूमिनीन की शान और उनकी पाकीज़गी ज़ाहिर फ़रमाएगा.

तुम पर दुनिया और आखिरत में न होती^(१८) तो जिस चर्च में तुम पड़े उस पर तुम्हें बड़ा अज्ञाव पहुंचता^(१८) जब तुम ऐसी बात अपनी ज़वानों पर एक दूसरे से सुनकर लाते थे और अपने मुंह से वह निकालते थे जिसका तुम्हें इल्म नहीं और उसे सहल समझते थे^(१९) और वह अल्लाह के नज़दीक बड़ी बात है^(१९) और क्यों न हुआ जब तुमने सुना था कहा होता कि हमें नहीं पहुंचता कि ऐसी बात कहे^(१९) इलाही पाकी है तुझे^(१९) यह बड़ा बोहतान है^(१९) अल्लाह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि अब कभी ऐसा न कहना अगर ईमान रखते हो^(१९) और अल्लाह तुम्हारे लिये आयतें साफ़ बयान फ़रमाता है, और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है^(१९) वो लोग जो चाहते हैं कि मुसलमानों में बुरा चर्चा फैले उनके लिये दर्दनाक अज्ञाव है दुनिया^(१९) और आखिरत में^(१९) और अल्लाह जानता है^(१९) और तुम नहीं जानते^(१९) और अगर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत तुम पर न होती और यह कि अल्लाह तुम पर बहुत मेहरबान रहमत वाला है तो तुम इसका मज़ा चखते^(१९) २०

तीसरा स्कू

ऐ ईमान वाला शैतान के क़दमों पर न चलो, और जो शैतान के क़दमों पर चले तो वेहयाई और बुरी ही बात बतलाएगा^(१९) और अगर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम में कोई भी कभी सुधरा न

أَفَضُّمُ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِالسِّلْتِمْ وَ تَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَ تَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا ۖ وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ۖ وَلَوْ لَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا ۖ سُبْحَنَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ۖ يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا ۖ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَيُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۖ إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۖ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رَءُوفٌ ذَرِيمٌ ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوبَ الشَّيْطَانِ ۖ وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوبَ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۖ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مَن

مَنْ

القول

चुनांचे इस मिलमिल में उसने अज्ञाव अत्यंत उतारी.

(२) यांनी उसके कर्मों के हिमाय से, कि किसी ने तूफ़ान उठाया, किसी ने आरोप लगाने वाले की ज़बानी हिमायत की, कांडे हंस दिया, किसी ने झामोशी के साथ सुन लिया. जिसने जो किया, उसका बदला पाएगा.

(४) कि अपने दिल में यह तूफ़ान घड़ा और इसको मशहूर करता फिरा और वह अब्दुल्लाह बिन अब्दुल बिन सलोल मुनाफ़िक है.

(५) आग्रिग्त में. रिवायत है कि उन बोहतान लगाने वालों पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म से दद कायम की गई और असी असी कांडे लगाए गए.

(६) क्योंकि मुसलमान को यह हुक्म है कि मुसलमान के साथ नेक गुमान करे और बुरा खयाल करना मना है. कुछ गुमराह बेवाक यह कह गुज़रने हैं कि सैयद आलम को मआज़ल्लाह इस मामले में बदगुमानी पैदा हो गई थी. ऐसे लोग आरोपी और झूठ हैं और रसूल की शान में ऐसी बात कहते हैं जो ईमान वालों के हक में भी लायक नहीं. अल्लाह तआला मूनिनीन से फ़रमाता है कि तुमने नेक गुमान क्यों न किया. तो कैसे संभव था कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बदगुमानी करते और हुज़ूर की निम्नत बदगुमानी का शब्द कहना दिल का कालापन है, ख़ास कर ऐसी हालत में जबकि बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि हुज़ूर ने क़यम के साथ फ़रमाया कि मैं जानता हूँ कि मेरे घर वाले पाक हैं, जैसा कि ऊपर बयान हो चुका. इस से मालूम हुआ कि मुसलमान पर बदगुमानी करना जायज़ नहीं और जब किसी नेक शख्स पर आरोप लगाया जाय तो बिना सबूत दूसरे मुसलमान को उसकी हिमायत और पुष्टि करना ठीक नहीं.

(७) बिल्कुल झूठ है, वे झूठकत है.

(८) और तुम पर मेहरबानी नज़रू न आती, जिसमें से तौबह के लिये मोहलत देना भी है, और आग्रिग्त में माफ़ फ़रमाता भी.

(९) और खयाल करते थे कि उसमें बड़ा गुनाह नहीं.

(१०) महा पाप है.

(११) यह हमारे लिये ठीक नहीं क्योंकि ऐसा हो ही नहीं सकता.

(१२) उससे कि तेरे नबी की बीबी को बुराई और नापाकी पहुंचे. यह संभव ही नहीं कि किसी नबी की बीबी बदकार हो सके, अगरचे उसका कुछ में ज़फ़ड़ा जाना संभव है क्योंकि नबी काफ़िरों की तरफ़ भेजे जाते हैं तो ज़रूरी है कि जो चीज़ काफ़िरों के नज़दीक भी नज़रन के काबिल हो उससे वो पाक हों और ज़ाहिर है कि औरत को बदकारी उनके नज़दीक नफ़रत के काबिल है.

हो सकता^(१) हों अल्लाह सुधरा कर देता है जिसे चाहे^(२) और अल्लाह सुनता जानता है^(३) और क्रसम न खाएं वो जो तुम में फ़ज़ीलत (बुजुर्गी) वाले^(४) और गुंजायश (सामर्थ्य) वाले हैं^(५) कराबत वालों (रिश्तेदारों) और मिस्कीनों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को देने की और चाहिये कि माफ़ करें और दरगुज़रें, क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि अल्लाह तुम्हारी वख़्शिश करे, और अल्लाह वख़्शने वाला मेहरवान है^(६) ^(१२२) बेशक वो जो ऐब (दोष) लगाते हैं अनजान^(७) पारमा ईमान वालियों को^(८) उनपर लअनत है दुनिया और आखिरत में और उनके लिये बड़ा अज़ाब है^(९) ^(१२३) जिस दिन^(१०) उनपर गवाही देंगी उनकी ज़वानें^(११) और उनके हाथ और उनके पांव जो कुछ करते थे^(१२) उस दिन अल्लाह उन्हें उनकी सच्ची सज़ा पूरी देगा^(१३) और जान लेंगे कि अल्लाह ही खुला हुआ सत्य है^(१४) ^(१२४) गन्दियां गन्दों के लिये और गन्दे गन्दियों के लिये, ^(१५) और सुधरियां सुधरों के लिये और सुधरे सुधरियों के लिये, वो^(१६) पाक हैं उन बातों से जो यह^(१७) कह रहे हैं, उनके लिये वख़्शिश और इज़ज़त की रोज़ी है^(१८) ^(१२५)

चौथा रूकू

ऐ इमान वालो अपने घरों के सिवा और घरों में न जाओ

أَحَدٍ أَبَدًا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُرِيتِي مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَلَا يَأْتِلُ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنْ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغُفْلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لَعُنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ نَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنُهُمْ وَأَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ يَوْمَ نَبْشِطُ الشَّجَرَاتِ ثُمَّ يُعْتَقُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ۝ الْحَبِيبَاتِ لِلْحَبِيبَاتِ وَالْحَبِيبُونَ لِلْحَبِيبَاتِ وَالطَّيِّبَاتِ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۝ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ

مُزَوَّلٍ

- (१३) यानी इस दुनिया में, और वह हद कायम करता है. चुनांचे इन्हे ऊर्बई और हस्सान और मिस्तह के हद लगाई गई. (मदारिक)
- (१४) दोज़ख़, अगर बिना तौबह के मर जाएं.
- (१५) दिलों के राज़ और बातों के हालात.
- (१६) और अल्लाह का अज़ाब तुम्हें मोहलत न देता.

सूरए नूर - तीसरा रूकू

- (१) उसके बसवसों में न यड़ा और आरोप लगाने वालों की बातों पर कान न लगाओ.
- (२) और अल्लाह तआला उसको तौबह और अच्छे कामों की तौफीक न देता और मगफ़िरत और माफ़ी न फ़रमाता.
- (३) तौबह कुबूल फ़रमाकर.
- (४) और इज़ज़त वाले हैं दीन में.
- (५) माल और दीलत में. यह आयत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में उतरी. आपने क्रसम खाई थी कि मिस्तह के साथ सुलूक न करेंगे और वह आपकी ख़ाला के बेटे थे. ग़रीब थे, मुहाजिर, बद्र वाले थे, आप ही उनका ख़र्चा उठाने थे. मगर चूंकि उम्मुल मुमिनीन पर आरोप लगाने वालों के साथ उन्होंने हिमायत दिग़्नाई थी इसलिये आपने यह क्रसम खाई थी. इसपर यह आयत उतरी.
- (६) जब यह आयत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पढ़ी तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो ने कहा, बेशक मेरी आरज़ू है कि अल्लाह मेरी मगफ़िरत करे और मैं मिस्तह के साथ जो सुलूक करता था उस को कभी बन्द न करूँगा. चुनांचे आपने उसको जारी फ़रमा दिया. इस आयत से मालूम हुआ कि जो व्यक्ति किसी काम पर क्रसम खाए फिर मालूम हो कि उसका करना ही बेहतर है तो चाहिये कि उस काम को करे और क्रसम का कफ़़ारा दे. सही हदीस में यही आया है. इस आयत से हज़रत सिद्दीक़ अक़बर रदियल्लाहो अन्हो की फ़ज़ीलत साबित हुई. इस से आपकी शान और बलन्द दर्जा ज़ाहिर होना है कि अल्लाह तआला ने आप को बुजुर्गी वाला फ़रमाया और ...
- (७) औरतों को जो बदकारी और बुराई को जानती भी नहीं और बुरा ख़याल उनके दिल में भी नहीं गुज़रता और ...
- (८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पाक बीवियों के औसाफ़ और गुण हैं, एक क़ौल यह भी है कि इससे सारी नेक और ईमानदार औरतें मुराद हैं. उनके पंख लगाने वालों पर अल्लाह

जब तक इजाज़त न ले लो^(१) और उनके साकिनों पर सलाम न कर लो,^(२) यह तुम्हारे लिये बेहतर है कि तुम ध्यान करो^(३) फिर अगर उनमें किसी को न पाओ^(४) जब भी वे मालिकों की इजाज़त के उनमें न जाओ^(५) और अगर तुम से कहा जाए वापस जाओ तो वापस हो^(६) यह तुम्हारे लिये बहुत सुथरा है, अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है^(७) इसमें तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो ख़ास किसी की सुकूनत (निवास) के नहीं^(८) और उनके वरतने का तुम्हें इख़्तियार है और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो^(९) मुसलमान मदों को हुकम दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें^(१०) और अपनी शर्म गाहों की हिफ़ाज़त करें,^(११) यह उनके लिये बहुत सुथरा है, वेशक अल्लाह को उनके कामों की ख़बर है^(१२) और मुसलमान औरतों को हुकम दो कि अपनी निगाहें कुछ नीची रखें^(१३) और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और अपना वनाव न दिखाएं^(१४) मगर जितना खुद ही ज़ाहिर है और दोपट्टे अपने गिरेवानों पर डाले रहें और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने शौहरों पर या अपने बाप^(१५) या शौहरों के बाप^(१६) या अपने बेटे^(१७) या शौहरों के बेटे^(१८) या अपने भाई या अपने

بَيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَتَسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهَا ذَلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا
أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۝ وَإِنْ قِيلَ
لَكُمْ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا هُوَ أَزْكَى لَكُمْ ۝ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا
بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۝ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا
تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ۝ قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوْا
مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۝ ذَلِكُمْ أَزْكَى
لَهُمْ ۝ إِنْ اللَّهُ خَيْرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۝ وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ
يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ
وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ
بِخُمُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ ۝ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ
إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ

तआला लअनन फ़रमाता है.

(१) यह अब्दुल्लाह बिन उबई दिन सलोल मुनाफ़िक के बारे में हैं (इजाज़त).

(२) यानी क़यामत के दिन.

(३) ज़वानों का ग़वाही देना, तो उनके मुंहों पर मोहरें लगाए जाने से पहले होगा और उसके बाद मुंहों पर मोहरें लगा दी जाएंगी, जिससे ज़वानें बन्द हो जाएंगी और अंग बोलने लागें और दुनिया में जो कर्म किये थे उनकी ख़बर देंगे जैसे कि आंग इशारा है.

(४) जिसके वो मुसलमान हैं.

(५) यानी मौजूद, ज़ाहिर है उसी की क़ुदरत से हर चीज़ कर बुजुद है. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि मानी ये हैं कि काफ़िर दुनिया में अल्लाह तआला के बादों में शक करते थे. अल्लाह तआला आख़िरत में उन्हें उनके कर्मों का बदला देकर उन बादों का सच्चा होना ज़ाहिर फ़रमा देगा. क़ुरआन शरीफ़ में किसी गुनाह पर ऐसा क्रोध और तफ़रार और ताक़ीद नहीं फ़रमाई गई जैसी कि हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा के ऊपर वोहताब बांधने पर फ़रमाई गई. इससे सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बुजुर्गी और दर्ज की बलबंदी ज़ाहिर होती है.

(६) यानी बुरे के लिये बुरा लायक है. बुरी औरत बुरे मर्द के लिये और बुरे मर्द बुरी औरत के लिये. और बुरा आदमी बुरी बातों पर अड़ा होता है और बुरी बातें बुरे आदमी की आदत होती हैं.

(७) यानी पाक मर्द और औरतें, जिन में से हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा और सफ़वान हैं.

(८) आरोप लगाने वाले बुरे लोग.

(९) यानी सुथरों और सुथरियों के लिये ज़न्नत में. इस आयत से हज़रत आयशा सिद्दीका की भरपूर इज़ज़त और बुजुर्गी साबित हुई कि वह पाक और साफ़ पैदा की गई हैं. क़ुरआन शरीफ़ में उनकी पाक़ी का बयान फ़रमाया गया है. उन्हें मग़फ़िरत और रिज़क करीम का वादा दिया गया. हज़रत उम्मुल भूमिनीन आयशा सिद्दीका रदियल्लाहो अन्हा को अल्लाह तआला ने बहुत से गुण अता फ़रमाए जो आपके लिये गर्व के काबिल हैं. उनमें से कुछ ये हैं कि ज़िरील अलैहिससलाम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हज़ूर में एक हमीर पर आपको तख़ीर लाए और अर्ज़ किया कि यह आपकी घोड़ी है. और यह कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आपके सिवा किसी कुंवारी से निकाह न फ़रमाया. और यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बफ़ात आपकी गोद में और आपकी नौबत के दिन हुई और आप ही का मुबारक हुज़रा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की आरामगाह और आपका पाक़ रौज़ा हुआ. और यह कि कभी कभी हज़ूर पर ऐसी हालत में बही उतरी कि हज़रत सिद्दीका आपके साथ लिहाफ़ में होती. और यह कि हज़रत सिद्दीक अक़बर रदियल्लाहो अन्हा, रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के प्यारे ख़लीफ़ा की बेटी

हैं . और यह कि आप पाक पैदा की गई और आपसे मगफिरत और रिज्के करीम का वादा फरमाया गया.

सूरए नूर - चौथा रूकू

(१) इस आयत से साबित हुआ कि गैर के घर में वे इजाज़त दाखिल न हो और इजाज़त लेने का तरीका यह भी है कि ऊंची आवाज़ से मुकानल्लाह या अलहमुदिल्ल्लाह या अल्लाहो अकबर कहे या खकारे, जिससे मकान वालों को मालूम हो कि कोई आना चाहता है या यह कहे कि क्या मुझ अन्दर आने की इजाज़त है. गैर के घर से वह घर मुग़द है जिसमें गैर रहता हो चाहे उसका मालिक हो या न हो.

(२) गैर के घर जाने वाले की अगर मकान वाले से पहले ही भेंट हो जाए तो पहले सलाम कहे फिर इजाज़त चाहे, इस तरह कहे अस्सलामो अलैकुम, क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है. हदीस शरीफ़ में है कि सलाम को कलाम पर पहले दो. हज़रत अब्दुल्लाह की किरअत भी इसी पर दलालत करती है. उनकी किरअत यूँ है "हन्ना तुसल्लिमू अला अहलिहा वतस्ताज़िनु". और यह भी कहा गया है कि पहले इजाज़त चाहे फिर सलाम क़रे. (मदारिक, कश्शाफ़, अहमदी) अगर दरवाज़े के सामने खड़े होने में बेपर्दगी का अन्देश हो तो दाएं या बाएं खड़े होकर इजाज़त तलब करे. हदीस शरीफ़ में है, अगर घर में माँ हो जब भी इजाज़त तलब करे. (मुअना इमामे मालिक)

(३) यानी मकान में इजाज़त देने वाला मौजूद न हो.

(४) क्योंकि गैर की मिल्क में तसरूफ़ करने के लिये उसकी रज़ा ज़रूरी है.

(५) और इजाज़त तलब करने में ज़्यादा जोर न दो. किसी का दरवाज़ा बहुत जोर से खटखटाना और जोर से चीखना, उलमा और बुजुर्गों के दरवाज़ों पर ऐसा करना, उनको जोर से पुकारना मकरूह और अंदब के खिलाफ़ है.

(६) जैसे सराय और मुसाफ़िर खाना वगैरह, कि उसमें जाने के लिये इजाज़त होगिल करने की हाज़त नहीं. यह आयत उन सहाबा के जवाब में उतरी जिन्होंने इजाज़त की आयत उतरने के बाद पूछा था कि भक्कफ़ मुकर्रमा और मदीनए तैयिबह के बीच और शाम के रस्ते में जो मुसाफ़िर खाने बने हुए हैं क्या उनमें दाखिल होने के लिये भी इजाज़त लेना ज़रूरी है.

(७) और जिस चीज़ का देखना जायज़ नहीं उस पर नज़र न डालें. मर्द का बदन नाफ़ के नीचे से घुटने के नीचे तक औरत है. उसका देखना जायज़ नहीं. और औरतों में से अपनी मेहरमों और गैर की दासी का भी यही हुक्म है मगर इतना और है कि उनके पेट और पीठ का देखना भी जायज़ नहीं. आज़ाद अजनबी औरत के सारे शरीर का देखना मना है. मगर ज़रूरत के वक़्त क़ाज़ी और गवाह को और उस औरत से निकाह की ख़्वाहिश रखने वाले को चेहरा देखना जायज़ है. अगर किसी औरत के ज़रिये से हाल मालूम कर सकता हो तो न देखे और तबीव का पीड़ित अंग का उतना देखना जायज़ है जितनी ज़रूरत हो. अमर्द लइक़ की तरफ़ भी वासना से देखना हराम है. (मदारिक व अहमदी)

(८) और ज़िना व हराम से बचें . या ये मानी हैं कि अपनी शर्मगाहों को छुपाएं और पर्दे का प्रबन्ध रखें.

(९) और गैर मर्दों को न देखें. हदीस शरीफ़ में है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पाक बीबीयों से कुछ मैयंद आनम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में थीं, उसी वक़्त इब्ने उम्मे मक्तूम आए. हज़ूर ने बीबियों को पर्दे का हुक्म दिया. उन्होंने अर्ज किया कि वह तो नाबीना हैं. फ़रमाया तुम तो नाबीना नहीं हो. (तिरमिज़ी, अबू दाऊद) इस हदीस से मालूम हुआ कि औरतों को भी नामेहरम का देखना और उसके सामने होना जायज़ नहीं.

(१०) ज़ाहिर यह है कि यह हुक्म नमाज़ का है न नज़र का, क्योंकि आज़ाद औरत का तमाम शरीर औरत है. शौहर और मेहरम के सिवा और किसी के लिये उसके किसी हिस्से का देखना वे ज़रूरत जायज़ नहीं और इलाज वगैरह की ज़रूरत से जायज़ है. (तफ़सीरे अहमदी)

(११) और उन्हीं के हुक्म में दादा, परदादा वगैरह तमाम उसूल.

(१२) कि वो भी मेहरम हो जाते हैं.

(१३) और उन्हीं के हुक्म में हैं उनकी औलाद.

(१४) कि वो भी मेहरम हो गए.

(१५) और उन्हीं के हुक्म में हैं चचा, मामू वगैरह तमाम मेहरम. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने अबू उबैदा बिन जराह को लिखा था कि काफ़िर एहले किताब की औरतों को मुसलमान औरतों के साथ हम्माम में दाखिल होने से मना करें. इससे मालूम हुआ कि मुसलमान औरत को काफ़िर औरत के सामने अपना बदन खोलना जायज़ नहीं. औरत अपने गुलाम से भी अजनबी की तरह पर्दा

भतीजे या अपने भानजे^(१५) या अपने दीन की औरतें या अपनी कनीज़ें जो अपने हाथ की मिल्क हों^(१६) या नौकर बशर्ते कि शहवत वाले मर्द न हों^(१७) या वो बच्चे जिन्हें औरतों की शर्म की चीज़ों की खबर नहीं^(१८) और ज़मीन पर पाँच ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उनका छुपा हुआ सिंगार^(१९) और अल्लाह की तरफ़ तौबह करो ऐ मुसलमानो सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम भलाई पाओ^(२०) और निकाह करदो अपनों में उनका जो बेनिकाह हों^(२१) और अपने लायक़ बन्दों और कनीज़ों का, अगर वो फ़कीर हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा अपने फ़ज़ल (कृपा) के कारण^(२२) और अल्लाह वुसअत (कुशादगी) वाला इल्म वाला है^(२३) और चाहिये कि बचे रहें^(२४) वो जो निकाह का मक़दूर (क्षमता) नहीं रखते^(२५) यहां तक कि अल्लाह मक़दूर वाला करदे अपनी कृपा से^(२६) और तुम्हारे हाथ की मिल्क वांदी गुलामों में से जो यह चाहें कि कुछ माल कमाने की शर्त पर उन्हें आज़ादी लिख दो तो लिख दो^(२७) अगर उनमें कुछ भलाई जानो^(२८) और इसपर उनकी मदद करो अल्लाह के माल से जो तुम को दिया^(२९) और मजबूर न करो अपनी

अधूर

२९३

قَالَ أَفْلَحَ

أَبْنَائِهِمْ أَوْ أَبْنَاءَ بُعُولَتِهِمْ أَوْ إِخْوَانِهِمْ أَوْ
بَنِي إِخْوَانِهِمْ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِمْ أَوْ نِسَائِهِمْ أَوْ مَا
مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ أَوِ الشَّيْعِينَ غَيْرَ أُولِي الْأَرْبَةِ
مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الْيَتَامَى الَّذِينَ لَهُمْ بَطْنٌ عَلَى عَوْرَتِ
النِّسَاءِ سَوَاءً يَضْرِبُنَ بِأَجْلِهِمْ لِيَعْلَمَ مَا يَخْفَيْنَ مِنْ
زَيِّنَتِهِمْ وَتَوْبُوْا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا إِنَّهُ الْمُؤْمِنُونَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَاتَّكِحُوا الْاَيَّامِي مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ
مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۝ إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۝ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ وَلْيَسْتَعْفِفِ
الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّى يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ
فَضْلِهِ ۝ وَالَّذِينَ يَبْتِغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۝ وَأَتَوْهُمْ
مِّنْ مَّالِ اللَّهِ الَّذِي أَتَاكُمْ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ

مَنْ

करे . (मदारिक वगैरह)

(१६) उनपर अपना सिंगार ज़ाहिर करना मना नहीं और गुलाम उनके हुक्म में नहीं, उसको अपनी मालिका की ज़ीनत की चीज़ें देखना जायज़ नहीं.

(१७) जैसे कि ऐसे बूढ़े हों जिन्हें बिल्कुल भी शहवत बाज़ी न रही हो, और हों नेक, हताफी इमामों के नज़दीक ख़रसी और हिज़दे वगैरह हुम्ते नज़र में अज़नबी का हुक्म रखते हैं. इस तरह बुरा काम करने वाले मुखन्नस से भी पर्दा किया जाए जैसा कि मुस्लिम की हदीस से साबित है.

(१८) वो अभी नादान और नाबालिग हैं.

(१९) यानी औरतें घर के अन्दर चलने में भी पाँच इस क़दर आहिस्ता रखें कि उनके ज़ेवर की झनकार न सुनी जाए. इसीलिये चाहिये कि औरतें वाजेदार झांझन न पहनें. हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला उस क़ौम की दुआ कुबूल नहीं फ़रमाता जिन की औरतें झांझन पहनती हों. इससे समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ दुआ के कुबूल न होने का कारण है तो ख़ास औरत की आवाज़ और उसकी बेपर्दगी कैसी अल्लाह के अज़ाब का कारण होगी. पर्दे की तरफ़ से बेपर्वाही तबाही का कारण है. (तफ़सीर अहमदी)

(२०) चाहें मर्द या औरत, कुंवारे या ग़ैर कुंवारे.

(२१) इस गिना में मुराद या कनाअत है कि वह बेहतरीन गिना है, जो कनाअत करने वाले को कुफ़्र से दूर कर देता है, या किरायात कि एक का ख़ाना दो के लिये काफी हो जाए जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है, या मियाँ और बीबी के दो रिज़क़ों का जमा हो जाना या निकाह की बरक़त से फ़र्राज़ी जैसा कि अमीरुल मुमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है.

(२२) हरामकारी से.

(२३) जिन्हें मेहर और नफ़का उपलब्ध नहीं.

(२४) और मेहर व नफ़का अदा करने के काबिल हो जाएं. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जो निकाह की कुदरत रखे वह निकाह करे कि निकाह पारसाई और पाकवाज़ी में मददगार है और जिसे निकाह की कुदरत न हो वह रोज़े रखे कि यह शहवतों को तोड़ने वाले हैं.

(२५) कि वह इस क़दर माल अदा करके आज़ाद हो जाएं और इस तरह की आज़ादी को किताबत कहते हैं. और आयत में इसका अर्थ इस्तहबाब के लिये है और यह इस्तहबाब इस शर्त के साथ मशरूत है जो इसके बाद ही आयत में आया है. हुबैतब बिन अब्दुल उज़ज़ा के गुलाम सबीह ने अपने मौला से किताबत की दरग़्ज़ास्त की. मौला ने इन्कार किया. इसपर यह आयत उतरी तो हुबैतब ने उसको सौ दीनार पर मुक़ातिब कर दिया और उनमें से बीस उसका वय़श दिये, बाक़ी उसने अदा कर दिये.

(२६) भलाई से मुराद अमानत और ईमानदारी और कमाई पर कुदरत रखना है कि वह हलाल रोज़ी से माल हासिल करके आज़ाद

कनीज़ों को बदकारी पर जब कि वो बचना चाहें ताकि तुम दुनियावी ज़िन्दगी का कुछ माल चाहो^(२८) और जो उन्हें मजबूर करेगा तो बेशक अल्लाह वाद इसके कि वह मजबूरी ही की हालत पर रहें बख्शने वाला मेहरबान है^(२९) ॥३३॥ और बेशक हमने उतारी तुम्हारी तरफ़ रौशन आयतें^(३०) और कुछ उन लोगों का वयान जो तुम से पहले हो गुजरे और डर वालों के लिये नसीहत^(३१) ॥

पाँचवां रूकू

अल्लाह नूर है^(१) आसमानों और ज़मीन का, उसके नूर की^(२) मिसाल ऐसी जैसे एक ताक़ कि उसमें चिराग़ है, वह चिराग़ एक फ़ानूस में है, वह फ़ानूस मानो एक सितारा है मोती सा चमकता रौशन होता है बरकत वाले पेड़ ज़ैतून से^(३) जो न पूरब का न पश्चिम का^(४) करीब है कि उसका तेल^(५) भड़क उठे अगरचे उसे आग न छुए, नूर पर नूर है^(६) अल्लाह अपने नूर की राह बताता है जिसे चाहता है, और अल्लाह मिसालें बयान फ़रमाता है लोगों के लिये, और अल्लाह सब कुछ जानता है^(७) ॥३५॥ उन घरों में जिन्हें बलन्द करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है^(८) और उनमें उसका नाम लिया जाता है अल्लाह की तस्वीह करते हैं उनमें सुबह और शाम^(९) ॥३६॥ वो मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न ख़रीद फ़रोख़्त अल्लाह की याद^(१०) और नमाज़

عَلَى الْيَعْلَى إِنْ أَرَدَنْ تَحَصَّنَا لَتَبْتَعُوا عَرْضَ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَمَنْ يُكْرِهْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِمْ
عَفْوٌ رَحِيمٌ ۝ وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ
وَمَثَلًا لِّلَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً
لِّلْمُتَّقِينَ ۝ اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ مِثْلُ
نُورِهِ كَمِثْلِ نُورِ كَوْكَبٍ دَرِيٍّ يُونُودٍ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ
رَّيُّونَهُ لَّا شَرِقِيَّةٌ وَلَا غَرْبِيَّةٌ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضْفَىٰ ۖ وَلَوْ
لَمْ تَسْأَلْهُ نَارٌ نُّورًا عَلَىٰ نُورٍ لَّيَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَنْ
يَشَاءُ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۖ وَاللَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ فِي يَوْمٍ أُدِنَ اللَّهُ أَنْ تَرْفَعَ وَيُذْكَرَ
فِيهَا أَسْمَاءُ ۖ يَسْجُدُ لَهَا فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۖ
رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ

مَثَلٌ

हो सके और मौला को माल देकर आज़ादी हासिल करने के लिये भीख न माँगता फिरे, इसीलिये हज़रत सलमान फ़ारसी रदियल्लाहो अन्हो ने अपने गुलाम को आज़ाद करने से इन्कार कर दिया जो सिवाय भीख के रोज़ी का कोई साधन नहीं रखता था।

(२७) मुसलमानों को इशारा है कि वो मुक़ातिब गुलामों को ज़कात वग़ैरह दे कर मदद करें जिससे वो आज़ादी का बदल देकर अपनी गर्दन छुड़ा सकें।

(२८) यानी माल के लालच में अस्थे होकर दासियों को बदकारी पर मजबूर न करें। यह आयत अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल मुनाफ़ि़क के बारे में उतरी जो माल हासिल करने के लिये अपनी दासियों को बदकारी पर मजबूर करता था, उन दासियों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से उसकी शिकायत की, इसपर यह आयत उतरी।

(२९) और गुनाह का वबाल मजबूर करने वाले पर।

(३०) जिन्हें ने हलाल और हराम, हूदूद, अहक़ाम, सबको साफ़ स्पष्ट कर दिया।

सूरए नूर - पाँचवां रूकू

(१) नूर अल्लाह तआला के नामों में से एक नाम है, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, मानी ये हैं कि अल्लाह आसमान और ज़मीन का हिदायत करने वाला है, तो आसमानों और ज़मीन वाले उसके नूर से सच्चाई की राह पाते हैं और उसकी हिदायत से गुमराही की हैरत से छुटकारा पाते हैं, कुछ मुफ़सिरों ने फ़रमाया, मानी ये हैं कि अल्लाह तआला आसमान और ज़मीन का मुनब्वर करने वाला है, उसने आसमानों को फ़रिश्तों से और ज़मीन को नबियों से मुनब्वर किया।

(२) अल्लाह के नूर से मूमिन के दिल की वह नूरानियत मुराद है जिससे वह हिदायत पाता है और राह हासिल करता है, कुछ मुफ़सिरों ने इस नूर से क़ुरआन मुराद लिया और एक तफ़सीर यह है कि इस नूर से मुराद सैयदे कायनात अफ़दलुल मौजूदात हज़रत रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं।

(३) यह दरख़्त बहुत बरकतों वाला है क्योंकि इसका तेल जिसे ज़ैत कहते हैं निहायत साफ़ और पाकीज़ा रौशनी देता है, सर में भी लगाया जाता है, सालन की जगह रोटी से भी ख़ाया जाता है, दुनिया के और किसी तेल में यह ख़ूबी नहीं है, और ज़ैतून दरख़्त के पत्ते नहीं गिरते, (ख़ाज़िन)

(४) बल्कि बीच का है कि न उमे गर्मी से हानि पहुंचे न सर्दी से और वह निहायत फ़ायदा पहुंचाने वाला है और उसके फल बहुत ऐतिदाल में हैं।

कायम रखने^(१०) और ज़क्रात देने से^(११) डरते हैं उस दिन से जिसमें उलट जाएंगे दिल और आँखें^(१२) ॥३७॥ ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उनके सब से बेहतर काम का और अपने फ़ज़ल (कृपा) से उन्हें इनाम ज़्यादा दे, और अल्लाह रोज़ी देता है जिसे चाहे वे गिन्ती ॥३८॥ और जो काफ़िर हुए उनके काम ऐसे हैं जैसे धूप में चमकता रेत किसी जंगल में कि प्यासा उसे पानी समझे, यहां तक जब उसके पास आया तो उसे कुछ न पाया^(१३) और अल्लाह को अपने करीब पाया तो उसने उसका हिसाब पूरा भर दिया, और अल्लाह जल्द हिसाब कर लेता है^(१४) ॥३९॥ या जैसे अंधेरियों किसी कुंडे के (गहराई वाले) दरिया में^(१५) उसके ऊपर मौज, मौज के ऊपर और मौज, उसके ऊपर बादल, अंधेरे हैं एक पर एक^(१६) जब अपना हाथ निकाले तो सुझाई देता मालूम न हो,^(१७) और जिसे अल्लाह नूर न दे उसके लिये कहीं नूर नहीं^(१८) ॥४०॥

छटा रूकू

क्या तुमने न देखा कि अल्लाह की तस्बीह करते हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं और परिन्दे^(१) पर फैलाए, सबने जान रखी है अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह, और अल्लाह उनके कामों को जानता है ॥४१॥ और अल्लाह ही

إِقَامِ الصَّلَاةَ وَإِيتَاءَ الزَّكَاةَ يَجَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يَرِزُّ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَّمْسُهَا الظَّنُّ مَاءً حَيًّا إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ قُوَّةً حِسَابُهُ ۖ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ أَوْ كَظُلُمٍ فِي بَحْرٍ مُّجْتَمِعٍ يَغْشَىٰ مَوْجٌ مِّن قُوَّةٍ مَّوْجٌ مِّن قُوَّةٍ سَحَابٌ ۖ ظَلُمَتْ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكِدْ يَرِيهَا وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْخَرُ لَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرِ صَفَّيْتُ كُلِّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ وَلِلَّهِ مُلْكُ

مَنْزِلَہ

(५) अपनी सफ़ाई और नताफ़्त के कारण खुद.

(६) इस उपमा के मानी में इल्म वालों के कई कौल हैं : एक यह कि नूर से मुराद हिदायत हैं, और मानी ये हैं कि अल्लाह तआला की हिदायत बहुत ज़्यादा ज़ाहिर है कि आलम मेहसूसत में इसकी तस्बीह ऐसे रौशनदान से हो सकती है जिसमें साफ़ शफ़फ़ाफ़ फ़ानूस हां, उस फ़ानूस में ऐसा चिराग़ हो जो बहुत ही बेहतर और साफ़ ज़ैतून से रौशन हो कि उसकी रौशनी निहायत आला और साफ़ हो. एक कौल यह है कि यह मिसाल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने कअब अहबार से फ़रमाया कि इस आयत के मानी बयान करो. उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मिसाल बयान फ़रमाई. रौशनदान (ताक़) तो हज़ूर का सीना शरीफ़ है और फ़ानूस आपका मुबारक दिल है और चिराग़ नबुव्वत, कि नबुव्वत के दरख़्त से रौशन है और इस नूरे मुहम्मदी की रौशनी इस दर्जा भरपूर है कि अगर आप अपने नबी होने का बयान भी न फ़रमाएं जब भी ख़ल्क पर ज़ाहिर हो जाए. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि रौशनदान तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का सीना मुबारक है और फ़ानूस आपका नूरानी दिल और चिराग़ वह नूर जो अल्लाह तआला ने उसमें रखा है, कि पूर्वी है न पश्चिमी, न यहूदी, न ईसाई. एक शजर मुबारक से रौशन है. वह शजर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम है. नूरे क़रने इब्राहीम पर नूरे मुहम्मदी, नूर पर नूर है. मुहम्मद बिन कअब क़ज़ी ने कहा कि रौशनदान और फ़ानूस तो हज़रत इमाम ईल अलैहिस्सलाम हैं और चिराग़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और शजर मुबारक हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम कि अक्सर नबी आपकी नसर से हैं और शर्की व गर्बी न होने के ये मानी हैं कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम न यहूदी थे न ईसाई क्योंकि यहूदी मगरिब की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हैं और ईसाई पूर्व की तरफ़. करीब है कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के गुण, कमाले वही उतरने से पहले ही सृष्टि पर ज़ाहिर हो जाएं. नूर पर नूर यह कि नबी हैं नस्ले नबी से. नूरे मुहम्मदी है नूरे इब्राहीमी पर. इसके अलावा और भी बहुत कौल हैं. (ख़ाज़िन)

(७) और उनकी तअज़ीम और पाकी की. मुराद इन घरों से मस्जिदें हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया मस्जिदें बैतुल्लाह हैं ज़मीन में.

(८) तस्बीह से मुराद नमाज़ हैं. सुक़ की तस्बीह से फ़र्र और शाम से ज़ोहर, अस्, मगरिब और इशा मुराद हैं.

(९) और उसके दिल तथा ज़बान से ज़िक्र करने और नमाज़ के वक्तों पर मस्जिदों की हाज़िरी में.

(१०) और उन्हें वक्त पर अदा करने से. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो बाज़ार में थे. मस्जिद में नमाज़ के लिये इक़ामत कही गई. आपने देखा कि बाज़ार वाले उठे और दुकानें बन्द करके मस्जिद में दाख़िल हो गए. तो फ़रमाया कि आयत रिज़ालुन ला तुल्हीहिम यानी वो मर्द जिन्हें माफ़िल नहीं करता कोई सौदा... ऐसे ही लोगों के हक़ में है

الْأَرْضِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَّامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ وَيُنَزَّلُ مِنْ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۝ يَقْرُبُ اللَّهُ إِلَيْكَ وَالنَّهَارُ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لَأُولِي الْأَبْصَارِ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَاءٍ ۖ فَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى بَطْنِهِ ۖ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى رِجْلَيْنِ ۖ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى أَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ لَقَدْ أَرْسَلْنَا آيَاتٍ مُبِينَاتٍ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّى فَرِيقٌ

के लिये है सत्तनत आसमानों और ज़मीन की, और अल्लाह ही की तरफ़ फिर जाना (४२) क्या तुने न देखा कि अल्लाह नर्म नर्म चलाता है बादल को (४३) फिर उन्हें आपस में मिलाता है (४४) फिर उन्हें तह पर तह कर देता है तो तू देखे कि उसके बीच में से मेंह निकालता है, और उतारता है आसमान से उसमें जो बर्फ़ के पहाड़ हैं उन में से कुछ ओले (४५) फिर डालता है उन्हें जिस पर चाहे (४६) और फेर देता है उन्हें जिससे चाहे (४७) करीब है कि उसकी विजली की चमक आँख ले जाए (४८) अल्लाह बदली करता है रात और दिन की, (४९) वेशक इसमें समझने का मक़ाम है निगाह वालों को (५०) और अल्लाह ने ज़मीन पर हर चलने वाला पानी से बनाया, (५१) तो उन में कोई अपने पेट पर चलता है, (५२) और उनमें कोई दो पाँव पर चलता है (५३) और उनमें कोई चार पाँव पर चलता है (५४) अल्लाह बनाता है जो चाहे, वेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है (५५) वेशक हमने उतारीं साफ़ बयान करने वाली आयतें (५६) और अल्लाह जिसे चाहे सीधी राह दिखाए (५७) और कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह और रसूल पर और हुक्म माना फिर कुछ उनमें के उसके बाद फिर जाते हैं, (५८) और वो मुसलमान नहीं (५९) और जब बुलाए जाएं अल्लाह और उसके

(११) उसके वक़्त पर.

(१२) दिलों का उलट जाना यह है कि डर की सख़्ती और बेचैनी से उलट कर गले तक चढ़ जाएंगे न बाहर निकलें न नीचे उतरें. और आँखें ऊपर चढ़ जाएंगी. या मानी ये हैं कि काफ़िरों के दिल कुफ़्र और शिर्क से ईमान और यकीन की तरफ़ पलट जाएंगे और आँखों से पर्दे उट जाएंगे. यह तो उस दिन का बयान है. आयत में यह इशारा फ़रमाया गया कि वो फ़रमाँबरदार बन्दे जो ज़िक्र और इताअत में निहायत मुस्तइद रहते हैं और इबादत की अदायगी में सरगम रहते हैं. इस हुस्ने अमल के बावजूद उस रोज़ से डरे रहते हैं और समझते हैं कि अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा न हो सका.

(१३) यानी पानी समझ कर उसकी तलाश में चला. जब वहाँ पहुँचा तो पानी का नामो निशान न था. ऐसे ही काफ़िर अपने ख़याल में बेकियाँ करता है और समझता है कि अल्लाह तआला से उसका सवाब पाएगा. जब क़यामत की मंज़िलों में पहुँचेगा तो सवाब न पाएगा बल्कि बड़े अज़ाब में जकड़ा जाएगा और उस वक़्त उसकी हसरत और उसका ग़म प्यास से कहीं ज़्यादा होगा.

(१४) काफ़िरों के कर्मों की मिसाल ऐसी है.

(१५) समन्दरों की गहराई में.

(१६) एक अंधेरा, दरिया की गहराई का, उसपर एक और अंधेरा, मौजों के ज़ोर का, उसपर और अंधेरा, बादलों की घिरी हुई घटा का. इन अंधेरियों की सख़्ती का यह आलम कि जो इस में हो वह...

(१७) जबकि अपना हाथ बहुत करीब अपने ज़िस्म का अंग है, जब वह भी नज़र न आए तो और दूसरी चीज़ क्या नज़र आएगी. ऐसा ही हाल है काफ़िर का कि वह मलत अक़ीदा और दृढ़ी करनी व कहनी के अंधेरों में गिरफ़्तार है. कुछ मुफ़सिरो ने फ़रमाया कि दरिया के कुण्डे और उसकी गहराई से काफ़िर के दिल का और मौजों से जिहालत और शक और हैरत को जो काफ़िर के दिल पर छाए हुए हैं और बादलों से मोहर को जो उनके दिलों पर है, उपमा दी गई है.

(१८) रास्ता वही पाता है जिसे वह राह दे.

सूरत नूर - छटा रूकू

(१) जो आसमान और ज़मीन के बीच में हैं.

(२) जिस प्रदेश और जिन शहरों की तरफ़ चाहे.

(३) और उनके अलग अलग दुकड़ों को एक जगह कर देता है.

रसूल की तरफ कि रसूल उनमें फ़ैसला फ़रमाए तो जभी उनका एक फ़रीक मुंह फेर जाता है (४८) और अगर उनकी डिगरी हो (उनके हक़ में फ़ैसला हो) तो उसकी तरफ आए मानते हुए (४९) क्या उनके दिलों में बीमारी है (५०) या शक रखते हैं (५१) या ये डरते हैं कि अल्लाह और रसूल उनपर जुल्म करेंगे, (५२) बल्कि वो खुद ही ज़ालिम हैं (५३)

सातवाँ सूक़

मुसलमानों की बात तो यही है (५४) जब अल्लाह और रसूल की तरफ बुलाए जाएं कि रसूल उनमें फ़ैसला फ़रमाए कि अर्ज करें हमने सुना और हुक्म माना और यही लोग मुराद को पहुंचे (५५) और जो हुक्म माने अल्लाह और उसके रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़गारी करे तो यही लोग कामयाब हैं (५६) और उन्होंने (५७) अल्लाह की क़सम खाई अपने हलफ़ में हद की कोशिश से कि अगर तुम उन्हें हुक्म दोगे तो वो ज़रूर जिहाद को निकलेंगे, तुम फ़रमाओ क़समें न खाओ (५८) शरीअत के मुताबिक़ (अनुसार) हुक्म वरदारी चाहिये, अल्लाह जानता है जो तुम करते हो (५९) तुम फ़रमाओ हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का (६०) फिर अगर तुम मुंह फ़ेरो (६१) तो रसूल के ज़िम्मे वही है जो उसपर लाज़िम किया गया (६२) और तुम पर वह है जिसका वोश तुम पर रखा गया (६३) और अगर रसूल की

مِنْهُمْ مَّنْ بَعْدَ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝ وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ۝ أَفِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَمْ ارْتَابُوا أَمْ يَخَافُونَ أَنْ يَحْيِفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولَهُ ۚ بَلْ أُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَئِكَ هُمُ الْبَالِغُونَ ۝ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيُخْلِشِ اللَّهُ لِنَفْسِهِ فَاُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَنْ تُحَرِّمَهُمْ لِيُخْرِجَنَّ قُلَّ لَا تُقْبَلُوا، طَاعَةً مَّعْرُوفَةً وَإِنْ اللَّهُ حَبِيبٌ بَيْنَا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ، فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا

مَنْ

- (४८) इसके मानी या तो ये हैं कि जिस तरह ज़मीन में पत्थर के पहाड़ हैं ऐसे ही आसमान में बर्फ के पहाड़ अल्लाह ने पैदा किये हैं और यह उसकी कुदरत से परे नहीं। उन पहाड़ों से ओले बरसाता है, या ये मानी हैं कि आसमान से ओलों के पहाड़ के पहाड़ बरसाता है यानी काफ़ी ओले बरसाता है। (मदारिक वौरह)
- (४९) और जिसके जान माल को चाहता है, उनसे हलाक और तबाह करता है।
- (५०) उसके जान माल को मेहफूज़ रखता है।
- (५१) और रौशनी की तेज़ी से आँखों को बेकार कर दे।
- (५२) कि रात के बाद दिन लाता है और दिन के बाद रात।
- (५३) यानी जानवरों की सारी जिनसों को पानी की जिनस से पैदा किया और पानी इनकी अस्ल है और ये सब अस्ल में एक होने के बावजूद आपस में कितने अलग अलग हैं। ये सृष्टि-कर्ता के इल्म और हिकमत और उसकी भरपूर कुदरत की रौशन दलील है।
- (५४) जैसे कि साँप और मछली और नहुत से कीड़े।
- (५५) जैसे कि आदमी और पक्षी।
- (५६) जानवरों और दरिन्दों के जैसे।
- (५७) यानी क़ुरआन शरीफ़ जिसमें हिदायत और अहक़ाम और हलाल हराम का खुला बयान है।
- (५८) और सीधी राह जिसपर चलने से अल्लाह की रज़ा और आख़िरत की नेअमतेँ उपलब्ध हों, इस्लाम है। आयतों का ज़िक़्र फ़रमाने के बाद यह बताया जाता है कि इन्सान तीन फ़िक़रों में बंट गए एक वो जिन्होंने ज़ाहि़र में सच्चाई की तस्दीक़ की और अन्दर से झुटलाते रहे, वो मुनाफ़िक़ हैं। दूसरे वो जिन्होंने ज़ाहि़र में भी तस्दीक़ की और बातिन में भी मानते रहे, ये सच्चे दिल के लोग हैं, तीसरे वो जिन्होंने ज़ाहि़र में भी झुटलाया और बातिन में भी, वो काफ़िर हैं। उनका ज़िक़्र क्रमानुसार फ़रमाया जाता है।
- (५९) और अपने क़ौल की पाबन्दी नहीं करते।
- (६०) मुनाफ़िक़ हैं, क्योंकि उनके दिल उनकी ज़बानों का साथ नहीं देते।
- (६१) काफ़िर और दोहरी प्रवृत्ति वाले बार बार तजुर्बा कर चुके थे और उन्हें पुरा यक़ीन था कि सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का फ़ैसला सरासर सच्चा और न्यायपूर्वक़ होता है इसलिये उनमें जो सच्चा होता वह तो ख़्वाहि़श करता था कि हुज़ूर उसका फ़ैसला फ़रमाएं और जो नाहक़ पर होता वह जानता था कि रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सच्ची अदालत से वह अपनी नान्यायज़ मुराद नहीं पा सकता इसलिये वह हुज़ूर के फ़ैसले से डरता और घबराता था। बिशर नामी एक मुताफ़िक़ था। एक

फरमाँवरदारी करोगे राह पाओगे और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना^(१) ﴿५४﴾ अल्लाह ने वादा दिया उनको जो तुम में से ईमान लाए और अच्छे काम किये^(२) कि ज़रूर उन्हें ज़मीन में खिलाफ़त देगा^(३) जैसी उनसे पहलों को दी,^(४) और ज़रूर उनके लिये जमा देगा उनका वह दिन जो उनके लिये पसन्द फ़रमाया है^(५) ज़रूर उनके अगले ख़ौफ़ को अमन से बदल देगा,^(६) मेरी इबादत करें मेरा शरीक किसी को न ठहराएं ओर जो इसके बाद नाशुकी करे तो वही लोग बेहुकम हैं^(७) और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो और रसूल की फ़रमाँवरदारी करो इस उम्मीद पर कि तुम पर रहम हो^(८) हरगिज़ काफ़िरों का ख़याल न करना कि वो कहीं हमारे क़ावू से निकल जाएं ज़मीन में और उनका ठिकाना आग है और ज़रूर क्या ही बुरा अंजाम^(९) ﴿५७﴾

आठवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो चाहिये कि तुम से इज़्ज़(आज़ा) लें तुम्हारे हाथ के माल गुलाम^(१) और वो जो तुम में अभी ज़बानी को न पहुंचे^(२) तीन वक़्त^(३) सुबह की नमाज़ से पहले^(४) और जब तुम अपने कपड़े उतार रखते हो दोपहर को^(५) और इशा नमाज़ के बाद^(६) ये तीन वक़्त तुम्हारी शर्म के हैं,^(७)

عَلَيْهِ مَا حَيْثُ وَعَلَيْكُمْ مَا حَيْثُكُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا
تَهْتَدُوا وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝
وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَيَسْتَخْفِنَهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخَفَّ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ۖ وَكَيْفَ يَكُنْ لَهُمْ دِينُ الَّذِي ارْتَضَى لَهُمْ
وَكَيْفَ يَكُنْ لَهُمْ مَنْ بَعْدَ خَوْفِهِمْ أَمْ أَنْ يَعْبدُوا نَبِيَّ لَا
يَشْرَكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ وَاقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَاطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِي النَّارِ
وَلَيْسَ الْمَصِيرُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنَكُمْ
الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ
ثَلَاثَ مَرَّاتٍ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ

مَنْ

ज़मीन के मामले में उसका एक यहूदी से झगड़ा था. यहूदी जानता था कि इस मामले में वह सच्चा है और उसको यकीन था कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सच्चा फ़ैसला फ़रमाते हैं इसलिये उसने ख़्वाहिश की कि यह मुक़दमा हुज़ूर से फ़ैसल कराया जाए. लेकिन मुनाफ़िक् भी जानता था कि वह बातिल पर है और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम न्याय और इन्साफ़ में किसी की रियायत नहीं करते इसलिये वह हुज़ूर के फ़ैसले पर तो राज़ी न हुआ, कअब बिन अशरफ़ यहूदी से फ़ैसला कराने पर अड़ गया और हुज़ूर की निस्वत कहने लगा कि वह हम पर जुल्म करेंगे. इसपर यह आयत उतरी.

(१८) कुफ़्र या दोहरी प्रवृत्ति की.

(१९) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत में.

(२०) ऐसा तो है नहीं क्योंकि वो ख़ूब जानते हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का फ़ैसला सच्चाई का उल्लंघन कर ही नहीं सकता और कोई बेईमान आपकी अदालत से पराया हक़ मारने में सफल नहीं हो सकता. इसी वजह से वो आपके फ़ैसले से परहेज़ करते हैं.

सूरए नूर - सातवाँ रूकू

(१) और उनको यह अदब का तरीक़ा लाज़िम है कि..

(२) यानी मुनाफ़िक्क़े ने. (मदारिक)

(३) कि झूठी क़सम गुनाह है.

(४) ज़बानी इत्ताअत और अमली विरोध, उससे कुछ छुपा नहीं.

(५) सच्चे दिल और सच्ची नियत से.

(६) रसूल अलैहिस्सलातो वसल्लाम की फ़रमाँवरदारी से, तो इसमें उनका कुछ गुक्रसान नहीं.

(७) यानी दीन की तबलीग़ और अल्लाह के आदेशों का पहुंचा देना, इसको रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अच्छी तरह अदा कर दिया और वह अपने फ़र्ज़ से सुबुकदोश हो चुके.

(८) यानी रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इत्ताअत और फ़रमाँवरदारी.

(९) यानी रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बहुत खुले तौर पर पहुंचा दिया.

(१०) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बही उतरने से तेरह साल तक मक्कए मुकर्रमा में सहाबा के साथ क़ायम किया

और काफ़िरों की यातनाओं पर जो दिन रात होती रहती थीं, सब किया फिर अल्लाह के हुक्म से मदीनाए तैयिबह का हज़रत फ़रमाइए और अन्सार के घरों को अपने रहने से इज़्ज़त बरक़ी मगर कुरैश इसपर भी बाज़ न आए. ग़ज़मर्रा उनकी तरफ़ से जंग के ग़ैलान होते और तरह तरह की धमकियाँ दी जातीं. सहाबए रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हर वक़्त ख़तरे में रहते और हथियार साथ रखते. एक दिन एक सहाबी ने फ़रमाया, कभी ऐसा ज़माना आएगा कि हमें अम्न मयस्सर हो और हथियारों के बोझ से निजात मिले. इसपर यह आयत उतरी.

(११) और काफ़िरों के बजाय तुम्हारा शासन स्थापित होगा. हदीस शरीफ़ में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस जिस चीज़ पर रात दिन गुज़रे हैं उन सब पर दीने इस्लाम दाख़िल होगा.

(१२) हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान वग़ैरह अम्बिया अलैहिमुस्सलाता वससलाम को, और जैसी कि भिन्न और शाम के ज़बारीन को हलाक करके बनी इस्राईल को ख़िलाफ़त दी और इन मुल्कों पर उनको मुसल्लत किया.

(१३) यानी दीने इस्लाम को तमाम दीनों पर ग़ालिब फ़रमाया.

(१४) चुनावे यह वादा पूरा हुआ. अरब की धरती से काफ़िर मिटा दिये गए. मुसलमानों का क़ब्ज़ा हुआ. पूर्व और पश्चिम के प्रदेश अल्लाह तआला ने उनके लिये फ़तह फ़रमाए. इन मुल्कों के इलाक़े और ख़ज़ाने उनके क़ब्ज़े में आए, दुनिया पर उनका रोब छा गया. इस आयत में हज़रत अबूबक्र सिदीक़ रदियल्लाहो अन्हो और आपके बाद होने वाले बड़े ख़लीफ़ाओं की ख़िलाफ़त की दलील है क्योंकि उनके ज़माने में बड़ी फ़तूहात हुई और किसरा वग़ैरह बादशाहों के ख़ज़ाने मुसलमानों के क़ब्ज़े में आए और अम्न, इज़्ज़त और दीन का ग़लवा हासिल हुआ. त्रिमिज़ी और अबू दाऊद की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़िलाफ़त मेरे बाद तीस साल है फिर मुल्क होगा. इसकी तफ़सील यह है कि हज़रत अबूबक्र सिदीक़ रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त दो बरस तीन माह, हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त दस साल छ माह, हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त बारह साल और हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त चार साल बी माह और हज़रत इमाम हसन रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त छ माह हुई. (ख़ाज़िन)

सूरए नूर - आठवाँ सूक़

(१) और दासियाँ. हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा कहते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक अन्सारी गुलाम मदलज बिन अग्र को दोपहर के वक़्त हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो को बुलाने के लिये भेजा. वह गुलाम वैसे ही हज़रत उमर के मक़ान में चला गया, जबकि हज़रत उमर बेतक़ल्लुफ़ अपनी दौलतसरा में तशरीफ़ रखते थे. गुलाम के अचानक चले जाने से आपके दिल में ख़याल आया कि काश गुलामों को इज़ाज़त लेकर मक़ानों में दाख़िल होने का हुक्म होता. इसपर यह आयत उतरी.

(२) बल्कि अभी बालिग़ होने की उम्र के करीब हैं. बालिग़ होने की उम्र इमाम अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो अन्हो के नज़्दीक़ लड़के के लिये अठ्ठारह साल और लड़की के लिये सत्तरह साल और आम उलमा के नज़्दीक़ लड़के और लड़की दोनों के लिये पन्द्रह साल है. (अहमदी)

(३) यानी इन तीनों वक़्तों में इज़ाज़त हासिल करें जिनका बयान इसी आयत में फ़रमाया जाता है.

(४) कि वह वक़्त है ख़्वाबगाहों से उठने और शबरन्नाबी का लियास उतार कर वेदारी के कपड़े पहनने का.

(५) क़ैलुला करने के लिये, और तहबन्द बाँध लेने हो.

(६) कि वह वक़्त है वेदारी का लिबास उतार कर सोने का लिबास पहनने का.

(७) कि इन वक़्तों में एकान्न और तन्हाई होती है, बदन छुपाने का बहुत एहतियाम नहीं होता. हो सकता है कि बदन का कोई हिस्सा खुल जाए, जिसके ज़ाहिर होने से शर्म आती है. लिहाज़ा इन वक़्तों में गुलाम और बच्चे भी इज़ाज़त के बिना दाख़िल न हों. (ख़ाज़िन वग़ैरह)

इन तीन के बाद कुछ गुनाह नहीं तुम पर न उनपर^(८), आना जाना रखते हैं तुम्हारे यहाँ एक दूसरे के पास,^(९) अल्लाह यूँही बयान करता है तुम्हारे लिये आयतें, और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है^(१०) और जब तुम में लड़के^(११) जवानी को पहुँच जाएं तो वो भी इज़्ज़न मांगें^(१२) जैसे उनके अगलों^(१३) ने इज़्ज़न मांगा, अल्लाह यूँही बयान करता है तुम से अपनी आयतें, और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है^(१४) और वूढ़ी घर में बैठने वाली औरतें^(१५) जिन्हें निकाह की आरज़ू नहीं उनपर कुछ गुनाह नहीं कि अपने ऊपर के कपड़े रखें जब कि सिंगार न चमकाएं^(१६) और उससे भी बचना^(१७) उनके लिये और बेहतर है, और अल्लाह सुनता जानता है^(१८) न अंधे पर तंगी^(१९) और न लगंडे पर मुजायका (हरज) और न बीमार पर रोक और न तुम में किसी पर कि खाओ अपनी औलाद के घर^(२०) या अपने बाप के घर या अपनी माँ के घर या अपने भाइयों के यहाँ या अपनी बहनों के घर या अपने चचाओं के यहाँ या

ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَ هُنَّ طَوُّفُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝
وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنَ الدِّينِ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ وَأَنْ يَسْتَغْفِفْنَ خَيْرٌ لَهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيمٌ عَلِيمٌ ۝
لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ

مَنْزِلٌ

- (८) यानी इन तीन वक्तों के सिवा बाकी वक्तों में गुलाम और बच्चे बिना इजाज़त दाखिल हो सकते हैं क्योंकि वो...
(९) काम और खिदमत के लिये तो उन पर हर वक्त इजाज़त मांगना अनिवार्य होता हरज का कारण होगा और शरीअत में हरज का काम मना है. (मदारीक)
(१०) यानी आज्ञाद.
(११) सारे वक्तों में.
(१२) उनसे बड़े मदों.
(१३) जिनकी उम्र ज्यादा हो चुकी और औलाद होने की उम्र न रही और बुढ़ापे के कारण.
(१४) और बाल, सीना, पिंडली वगैरह न खोलें.
(१५) ऊपर के कपड़ों को पहने रहना.
(१६) सईद बिन मुसैयब रदियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि सहाबा नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जिहाद को जाते तो अपने मकानों को चाबियाँ नाबीना और बीमारों और अपाहिजों को दे जाते जो इन मजबूरियों के कारण जिहाद में न जा सकते और उन्हें इजाज़त देते कि उनके मकानों से खाने को चीज़ें लेकर खाएं. मगर वो लोग इसको गवारा न करते, इस खयाल से कि शायद यह उनको दिल से पसन्द न हो. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें इसकी इजाज़त दी गई. और एक क़ौल यह है कि अंधे अपंग और बीमार लोग तन्दुरुस्तों के साथ खाने से बचते कि कहीं किसी को नफ़रत न हो. इस आयत में उन्हें इजाज़त दी गई. एक क़ौल यह है कि जब अंधे नाबीना अपंग किसी मुसलमान के पास जाते और उसके पास उनके खिलाने के लिये कुछ न होता तो वो उन्हें किसी रिश्तेदार के यहाँ खिलाने के लिये ले जाता. यह बात उन लोगों को गवारा न होती. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें बताया गया कि इसमें कोई हरज नहीं है.
(१७) कि औलाद का घर अपना ही घर है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, तू और तेरा माल तेरे बाप का है. इसी तरह शौहर के लिये बीवी का और बीवी के लिये शौहर का घर भी अपना ही घर है.

नवाँ सूक

قَدْ أَفْلَحَ مَن زَكَّاهُ ۖ
وَمَا أَفْلَحَ مَن بَدَّلَاهُ ۚ
إِذَا نَزَلَ بِرُوحِ الْقُدُسِ
تَبَيَّنَ لَهُ الْآيَاتُ
وَالْحُكْمُ فَذَكَرَ
إِن مِّن مِّن شَيْءٍ إِلَّا
عِندَنا خَزَائِنُهَا
وَمَا يُفْلِحُ الْكَافِرُ إِلَّا
إِلَىٰ عَذَابٍ أَلِيمٍ

सूरण नूर - नवाँ स्तूप

- (१) जैसे कि जिहाद और जंग की तदबीर और शुक्रवार व ईदैन और हर मशवरा और हर इज्जिमा, जो अल्लाह के लिये हो.
- (२) उनका इजाजत चाहना फरमावैरदारी का निशान और ईमान सही और दुरुस्त होने की दलील है.
- (३) इससे मालूम हुआ कि बेहतर यही है कि हाज़िर रहें और इजाज़त तलब न करें. इमामों और दीनी पेशवाओं की मजलिस में भी बिना इजाज़त न जाना चाहिये. (मदारिक)

रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है, ^(५) वेशक अल्लाह जानता है जो तुम में चुपके निकल जाते हैं किसी चीज़ की आड़ लेकर, ^(६) तो डरें वो जो रसूल के हुक्म के खिलाफ़ करते हैं कि उन्हें कोई फ़िल्ता पहुंचे ^(७) या उनपर दर्दनाक अज़ाब पड़े ^(८) ६३ सुन लो वेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, वेशक वह जानता है जिस हाल पर तुम हो, ^(९) और उस दिन को जिसमें उसकी तरफ़ फेरे जाएंगे ^(१०) तो वह उन्हें बता देगा जो कुछ उन्होंने किया, और अल्लाह सब कुछ जानता है ^(११) ६४

२५- सूरए फुरक़ान

सूरए फुरक़ान मक्का में उतरी, इसमें ७७ आयतें, ६ रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ^(१) बड़ी बरकत वाला है वह जिसने उतारा क़ुरआन अपने बन्दे पर ^(२) जो सारे जगत को डर सुनाने वाला हो ^(३) १ वह जिसके लिये है आसमानों और ज़मीन की बादशाहत और उसने न इस्तियार फ़रमाया बच्चा ^(४) और उसकी सल्लतन में कोई साझी नहीं ^(५) उसने हर चीज़ पैदा करके ठीक अन्दाज़े पर रखी ^(६) २

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ لِوَاذٍ ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ ۚ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ۝ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَرَهُ تَقْدِيرًا ۝

مَزْن

- (५) क्योंकि जिसको रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पुकारें, उस पर जवाब देना और हुक्म राजा लाना बाज़िब हो जाता है और अदब से हाज़िर होना लाज़िम आता है और क़रीब हाज़िर होना के लिये इज़ाज़त तलाश करें और इज़ाज़त ही से वापस हो और एक मानी मुफ़र्रिसों ने ये भी बयान किये हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को आवाज़ दे या पुकारे तो अदब और सम्मान के साथ, आपके पाक अल्काब से, नर्म आवाज़ के साथ, विनम्रता और आजिज़ी से, “या नबियल्लाह, या रसूलल्लाह, या हबीबल्लाह कह कर।
- (६) मुनाफ़िक़ लोंगों पर शुक्रवार के दिन मस्जिद में टहर कर नवीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के स्मृत्य का सुनना भारी गुज़रता था तो वो चुपके चुपके आहिस्ता आहिस्ता सहाबा की आड़ लेकर सरकते सरकते मस्जिद से निकल जाते थे। इसपर यह आयत उतरी।
- (७) दुनिया में तकलीफ़ या क़त्ल या ज़लज़ले या अन्य भयानक दुर्घटनाओं या ज़ालिम बादशाह का मुसल्लत होना या दिल का मश्रत होकर अल्लाह की मअरिफ़त और उसकी पहचान से मेहरम रहना।
- (८) आश्रित में।
- (९) ईमान पर, या निफ़ाक़ यानी दोहरी प्रवृत्ति पर।
- (१०) जज़ा के लिये, और वह दिन क़यामत का दिन है।
- (११) उससे कुछ छुपा नहीं।

२५ - सूरए फुरक़ान - पहला रूकू

- (१) सूरए फुरक़ान मक्के में उतरी। इसमें ६ रूकू, ७७ आयतें, ८९२ कलिमें और ३७०३ अक्षर हैं।
- (२) यानी सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर।
- (३) इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत के सार्वजनिक होने का बयान है कि आप सारी सृष्टि की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गए, जिन्हें हो या इन्सान, फ़रिश्ते हो या दूसरी मख़लूक़, सब आपके उम्मीती हैं क्योंकि आलम मासिबल्लाह को कहते हैं और उसमें ये सब दाख़िल हैं। फ़रिश्तों को इससे अलग करना, जैसा कि जलालैन में शैख़ महल्ली से और कदीर में इमाम राज़ी से और शअबलि ईमान में चेहकी से सादिग़ हुआ, बे-दलील है। और इज़माअ का दावा साबित नहीं। चुनौतें इमाम सुवकी और वाज़री और इब्न हज़म और सिध्दीनी ने इसका तअक्क़ुब किया और खुद इमाम राज़ी को तसलीम है कि आलम अल्लाह को छोड़कर सब का कहते हैं। तो वह सारी सृष्टि को शामिल है, फ़रिश्तों को इससे अलग करने पर कोई दलील नहीं। इसके अलावा मुस्लिम शरीफ़

और लोगों ने उसके सिवा और खुदा ठहरा लिये^(४) कि वो कुछ नहीं बनाते और खुद पैदा किये गए हैं और खुद अपनी जानों के भले बुरे के मालिक नहीं और न मरने का इस्तिथार न जीने का न उठने का^(५) और काफिर बोले^(६) यह तो नहीं मगर एक बोहतान जो उन्होंने बना लिया है^(७) और इसपर और लोगों ने^(८) उन्हें मदद दी है, बेशक वो^(९) जुल्म और झूट पर आए^(१०) और बोले^(११) अगलों की कहानियां हैं जो उन्होंने^(१२) लिख ली हैं तो वो उनपर सुबह शाम पढ़ी जाती हैं^(१३) तुम फ़रमाओ इसे तो उसने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन की हर छुपी बात जानता है^(१४) बेशक वह वरख़्ने वाला मेहरबान है^(१५) और बोले^(१६) इस रसूल को क्या हुआ खाना खाता है और बाज़ार में चलता है, ^(१७) क्यों न उतारा गया उनके साथ कोई फ़रिश्ता कि उनके साथ डर सुनाता^(१८) या ग़ैब से उन्हें कोई ख़ज़ाना मिल जाता या उनका कोई बाग़ होता जिसमें से

الفرقان

५०२

قَدْ أَفْلَحَ

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ آلِهَةً لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا
وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ ضَرًّا
وَلَا نَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَوَةً وَلَا
نُشُورًا ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا
إِفْكٌ افْتَرَاهُ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ ۝
فَقَدْ جَاءُوا ظُلُمًا وَزُورًا ۝ وَقَالُوا آسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَى عَلَيْهِ بُكْرَةً
وَأَصِيلًا ۝ قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ
فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا
رَحِيمًا ۝ وَقَالُوا مَا هَذَا الرَّسُولُ يَأْكُلُ
الطَّعَامَ وَيَشْهِي فِي الْأَسْوَاقِ لَوْ لَا أَنْزَلَ
إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونُ مَعَهُ نَذِيرًا ۝ أَوْ يُلْقَى
إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا

مَنْزِلٌ

قَدْ أَفْلَحَ

की हदीस में है - उर्सिल्लु इलल श्रल्ले काफ़्फ़तन, यानी मैं सारी सृष्टि की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया. अल्लामा अली क़ारी ने मिर्कात में इसकी शरह में फ़रमाया, यानी तमाम मौजूदात की तरफ़, जिन्न हों या इन्सान, फ़रिश्ते हों या जानवर या पेड़ पौदे या पत्थर. इस मरअले की पूरी व्याख्या तफ़सील के साथ इमाम कुस्तलानी की मवाहिबुल लदुनियह में है.

- (४) इसमें यहूद और ईसाइयों का रद है जो हज़रत उज़ैर और मसीह अलैहुमसलाम को खुदा का बेटा कहते हैं.
- (५) इसमें बुत परस्तों का रद है जो बुतों की खुदा का शरीक ठहराते हैं.
- (६) यानी बुत परस्तों ने बुतों को खुदा ठहराया जो ऐसे आजिज़ और बेकुदस्त हैं.
- (७) यानी नज़र बिन हारिस और उसके साथी कुरआन की निस्वत, कि..
- (८) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने.
- (९) और लोगों से नज़र बिन हारिस की मुराद यहूदी थे और अदाम व यसार वगैरह एहले किताब.
- (१०) नज़र बिन हारिस वगैरह मुश्रिक, जो यह बेहूदा बात कहने वाले थे.
- (११) वही मुश्रिक लोग कुरआन शरीफ़ की निस्वत, कि यह रुस्तम और सफ़न्दयार वगैरह के किस्सों की तरह.
- (१२) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने.
- (१३) यानी कुरआन शरीफ़ अज़ात यानी ग़ैब के उलूम पर आधारित है. यह साफ़ दलील है इसकी कि वह अल्लाह की तरफ़ से है जो सारे ग़ैब जानता है.
- (१४) इसीलिये काफ़िरों को मोहलत देता है और अज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता.
- (१५) कुरैश के काफ़िर.
- (१६) इससे उनकी मुराद यह थी कि आप नबी हांते तो न खाते न बाज़ारों में चलते और यह भी न होता तो...
- (१७) और उनकी तस्दीक करता और उनकी नबुव्वत की गवाही देता.
- (१८) मालदारों की तरह.

खाते, (१८) और ज़ालिम बोले (१९) तुम तो पैरवी नहीं करते मगर एक ऐसे मर्द की जिसपर जादू हुआ (२०) ऐ मेहबूब देखो कैसी कहावतें तुम्हारे लिये बना रहे हैं, तो गुमराह हुए कि अब कोई राह नहीं पाते (२१)

दूसरा रूकू

बड़ी वरकत वाला है वह कि अगर चाहे तो तुम्हारे लिये बहुत बेहतर उससे कर दे (१) जन्नतें जिनके नीचे नेहरें बहें और करेगा तुम्हारे लिये ऊंचे ऊंचे महल (२०) बल्कि ये तो क़यामत को झुटलाते हैं, और जो क़यामत को झुटलाए हमने उसके लिये तैयार कर रखी है भड़कती हुई आग (२१) जब वह उन्हें दूर जगह से दीखेंगी (२) तो सुनेंगे उसका जोश मारना और चिंघाड़ना (२२) और जब उसकी किसी तंग जगह में डाले जाएंगे (३) जंजीरों में जकड़े हुए (४) तो वहां मौत मांगेंगे (५) (२३) फ़रमाया जाएगा आज एक मौत न मांगो और बहुत सी मौतें मांगो (२४) तुम फ़रमाओ क्या यह (५) भला या वो हमेशगी के वाग़ जिसका वादा डर वालों को है, वह उनका सिला और अंजाम है (२५) उनके लिये वहाँ

وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا
أَنْظُرْ كَيْفَ صَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا
فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝ تَبَارَكَ الَّذِي
إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِنْ ذَلِكَ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَلُ لَكَ
قُصُورًا ۝ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا
لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝ إِذَا رَأَتْهُمْ
مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ سَبَعُوا لَهَا تَغِيظًا وَ
زُفِيرًا ۝ وَإِذَا الْفُتُورُ مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُقَرَّبِينَ
دَعَا هُنَالِكَ ثُبُورًا ۝ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا
وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ۝ قُلْ أَذَلِكَ خَيْرٌ
أَمْ حِجَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ
لَهُمْ جَزَاءً وَاصِيًّا ۝ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ

مَزْلُومٌ

(१९) मुसलमानों से.

(२०) और मआज़ल्लाह, उसकी अक़ल जगह पर न रही. ऐसी तरह तरह की बेहूदा बातें उन्हीं ने बर्कीं.

सूरए फुरक़ान - दूसरा रूकू

- (१) यात्री शीघ्र आपको उस ख़ज़ाने और वाग़ से बेहतर अता फ़रमादे जो ये काफ़िर कहते हैं.
- (२) एक बरस की राह से या सौ बरस की राह से. दोनों क़ौल हैं. और आग का देखना कुछ दूर नहीं. अल्लाह तआला चाहें तो उसको ज़िन्दिगी, बुद्धि और देखने की शक्ति अता फ़रमा दे. और कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि मुग़ाद जहन्नम के फ़रिश्तों का देखना है.
- (३) जो निहायत कर्ब और बेचैनी पैदा करने वाली हो.
- (४) इस तरह कि उनके हाथ गर्दनों से मिलाकर बांध दिये गए हों या इस तरह कि हर हर काफ़िर अपने अपने शैतान के साथ जंजीरों में जकड़ा हुआ हो.
- (५) और हाय ऐ मौत आजा, हाय ऐ मौत आजा, का शोर मचाएंगे. हदीस शरीफ़ में है कि पहले जिस शख्स का आग का लिबास पहनाया जाएगा वह इब्लीस है और उसकी ज़ुरियत उसके पीछे होगी और ये सब मौत मौत पुकारते होंगे. उनसे...
- (६) क्योंकि तुम तरह तरह के अज़ाबों में जकड़े जाओगें.
- (७) अज़ाब और जहन्नम की भयानकता, जिसका ज़िक्र किया गया.

मनमानी मुरादें हैं जिनमें हमेशा रहेंगे, तुम्हारे रब के ज़िम्मे वादा है मांगा हुआ^(८) (१६) और जिस दिन इकट्ठा करेगा उन्हें^(९) और जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हैं^(१०) फिर उन मअबूदों से फ़रमाएगा क्या तुमने गुमराह कर दिये ये मेरे बन्दे या ये खुद ही राह भूले^(११) (१७) वों अर्ज़ करेंगे पाकी है तुझ को^(१२) हमें सज़ावार (मुनासिव) न था कि तेरे सिवा किसी और को मौला बनाएं^(१३) लेकिन तूने उन्हें और उनके बाप दादाओं को बरतने दिया^(१४) यहाँ तक कि वो तेरी याद भूल गए, और ये लोग थे ही हलाक होने वाले^(१५) (१८) तो अब मअबूदों ने तुम्हारी बात झुटला दी तो अब तुम न अज़ाब फेर सको न अपनी मदद कर सको, और तुम में जो ज़ालिम है हम उसे बड़ा अज़ाब चखाएंगे^(१९) और हमने तुमसे पहले जितने रसूल भेजे सब ऐसे ही थे खाना खाते और बाज़ारों में चलते^(२०) और हमने तुममें एक को दूसरे की जांच किया है^(२१) और ऐ लोगो क्या तुम सब करोगे^(२२) और ऐ मेहबूब तुम्हारा रब देखता है^(२३) (२०)

خَلِيدِينَ ۝ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ۝ وَ
يَوْمَ يَخْشَرُهُمْ ۖ وَمَا يَعْجِدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
فَيَقُولُ ۖ أَنْتُمْ أَصْلَلْتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ
هُمْ صَلَّوْا السَّبِيلَ ۖ قَالُوا سُبْحَنَكَ مَا كَانَ
يَنْبَغِي لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ
أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَأَبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا
الذِّكْرَ ۖ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ۖ فَقَدْ كَذَّبُكُمْ
بِمَا تَقُولُونَ ۖ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا
وَمَنْ يَظْلِمِ مِنْكُمْ نَذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ۖ
وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا
أَنَّهُمْ لَيًّا كَلُونَ الطَّعَامَ وَ يَسْتَوُونَ فِي
الْأَسْوَاقِ ۖ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً
أَتَصْبِرُونَ ۖ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا

मज़ल

(८) यानी मांगने के लायक या वह जो ईमान वालों ने दुनिया में यह अर्ज़ करके मांगा - ख़्बना आतिना फ़िद दुनिया हसनतों व फ़िल आज़िरते हसनतों, या यह अर्ज़ करके - ख़्बना व आतिना मा वअत्तना अला रुसुलिका.

(९) यानी मुश्कियों को.

(१०) यानी उनके बातिल मअबूदों को, चाहे वो जानदार हों या ग़ैर जानदार. कल्बी ने कहा कि इन मअबूदों से बुत मुराद हैं. उन्हें अल्लाह तआला बोलने की शक्ति देगा.

(११) अल्लाह तआला हकीकते हल का जानने वाला है उससे कुछ छुपा नहीं. यह सवाल मुश्कियों को ज़लील करने के लिये है कि उनके मअबूद उन्हें झुटलाएं तो उनकी हसरत और ज़िल्लत और ज़्यादा हो.

(१२) इससे कि कोई तेरा शरीक हो.

(१३) तो हम दूसरे को क्या तेरे ग़ैर के माबूद बनाने का हुक्म दे सकते थे. हम तेरे बन्दे हैं.

(१४) और उन्हें माल, औलाद और लम्बी उम्र और सेहत व सलामती इनायत की.

(१५) शर्की. इसके बाद काफ़िरों से फ़रमाया जाएगा.

(१६) यह काफ़िरों के उस तअने का जवाब है जो उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर किया था कि वह बाज़ारों में चलते हैं, खाना खाते हैं. यहाँ बताया गया कि यह सारे काम नबुव्वत के विपरीत नहीं हैं बल्कि ये सारे नबियों की आदतें रही हैं. लिहाज़ा यह तअना केवल जिहालत और दुश्मनी है.

(१७) शरीफ़ जब इस्लाम लाने का इरादा करते थे तो ग़रीबों को देख कर यह ख़याल करते कि ये हम से पहले इस्लाम ला चुके, इनको हमपर एक फ़ज़ीलत रहेगी. इस ख़याल से वो इस्लाम से दूर रहते और शरीफ़ों के लिये ग़रीब लोग आजमाइश बन जाते. एक क़ौल यह है कि यह आयत अबू ज़हर और बलीद बिन अक़बा और आस बिन बाइल सहमी और नज़र बिन हारिस के बारे में उतरी. उन लोगों ने हज़रत अबू ज़र और इब्ने मसऊद और अम्मार बिन यासिर और विलाल व सुहैब व आमिर बिन फ़हीरा को देखा कि पहले से इस्लाम लाए हैं तो घमण्ड से कहा कि हम भी इस्लाम ले आएंगे तो उन्हीं जैसे हो जाएंगे तो हम में और उनमें फ़र्क ही क्या रह जाएगा. एक क़ौल यह है कि यह आयत मुसलमान फ़कीरों की आजमाइश में उतरी जिनकी कुशैश के काफ़िर हंसी बनावत थे और कहते थे कि ये लोग मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का अनुकरण करने वाले लोग हैं जो हमारे गुलाम और नीच हैं. अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और उन ईमान वालों से फ़रमाया. (ख़ाज़िर)

(१८) इस ग़रीबी और सख़्ती पर, और काफ़िरों की इस बदग़ोई पर.

(१९) उसका जो सब करे और उसको जो बेसब्री करे.

पारा अठ्ठाराह समाप्त

उन्नीसवाँ पारा - व कालल्लज़ीना सूरए फुरक़ान (जारी) तीसरा रूकू

और बोले वो जो^(१) हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते, हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे^(२) या हम अपने रब को देखते^(३) बेशक अपने जी में बहुत ही ऊंची खींची और बड़ी सरकशी (नाफ़रमानी) पर आए^(४) ॥२१॥ जिस दिन फ़रिश्तों को देखेंगे^(५) वह दिन मुजरिमों की कोई खुशी का न होगा^(६) और कहेंगे, इलाही हम में उनमें कोई आड़ करदे रूकी हुई^(७) ॥२२॥ और जो कुछ उन्होंने काम किये थे^(८), हमने क़स्द (इरादा) फ़रमाकर उन्हें वारीक वारीक गुबार (धूल) के बिखरे हुए ज़र्र कर दिया कि रौज़न (छेद) की धूप में नज़र आते हैं^(९) ॥२३॥ जन्नत वालों का उस दिन अच्छा ठिकाना^(१०) और हिसाब के दोपहर के बाद अच्छी आराम की जगह^(११) ॥२४॥ और जिस दिन फट जाएगा आसमान बादलों से और फ़रिश्ते उतारे जाएंगे पूरी तरह^(१२) ॥२५॥ उस दिन सच्ची बादशाही रहमान की है, और वह दिन काफ़िरों पर सख्त है^(१३) ॥२६॥ और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथ चवा चवा लेगा^(१४) कि हाय किसी तरह से मैं ने रसूल के साथ राह ली होती^(१५) ॥२७॥ बाए खराबी मेरी, हाय किसी तरह मैं ने फ़लाने (अमुक) को दोस्त न बनाया होता^(१६) ॥२८॥ बेशक उसने मुझे बहका दिया मेरे पास आई हुई नसीहत से, ^(१७) और शैतान आदमी को बे मदद छोड़ देता है^(१८) ॥२९॥ और रसूल ने अज़्र की कि ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने इस कुरआन

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَ رَبِّهِمْ أَتَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ تُرْسِلُ رَبَّنَا لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْا عُتُوًّا كَبِيرًا ۝ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَ لَكُمْ يَوْمَئِذٍ لِلْجَعِيمِ وَيَقُولُونَ خِزْيَافَةٌ عَجُوزٌ ۝ وَقِيلَ لِمَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَنْثُورًا ۝ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا ۝ وَيَوْمَ تَشْهَقُ السَّمَاءُ بِالسَّيْمِ وَتُرْزَلُ الْمَلَائِكَةُ تَنْزِيلًا ۝ الْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَنِ ۝ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ۝ وَيَوْمَ يَعْصُ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ لِيَلَنِّي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَيْبًا ۝ يُوبِلُنِي لِيَتَنَّبَنِي لِمَ اتَّخَذْتُ لَدُنِّي خَلِيلًا ۝ لَقَدْ أَصَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۝ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَدُوْلًا ۝ وَقَالَ الرَّسُولُ يَرَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا

مَزْنًا

सूरए फुरक़ान - तीसरा रूकू

- (१) काफ़िर हैं, हथ और मरने के बाद दोबारा उठाए जाने का नहीं मानते इसी लिये ...
- (२) हमारे लिये रसूल बनाकर या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुच्चत और रिसालत के गवाह बनाकर.
- (३) वह खुद हमें ख़बर दे देना कि सैयदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके रसूल हैं.
- (४) और उनका घमण्ड चरम सीमा को पहुँच गया और सरकशी हद से गुज़र गई कि चमत्कारों का अवलोकन करने के बाद, फ़रिश्तों के अपने ऊपर उतरने और अल्लाह तआला को देखने का सवाल किया.
- (५) यानी मौत के दिन या क़यामत के दिन.
- (६) क़यामत के दिन फ़रिश्ते ईमान वालों को खुशख़बरी सुनाएंगे और काफ़िरों से कहेंगे कि तुम्हारे लिये कोई खुशख़बरी नहीं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते कहेंगे कि मूभित के सिवा किसी के लिये जन्नत में दाख़िल होना हलान नहीं. इस लिये वह दिन काफ़िरों के वास्ते बहुत निराशा और दुःख का होगा.
- (७) इस कलाम से वो फ़रिश्तों से पनाह चाहेंगे.
- (८) कुर्र की हालत में, जैसे रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक, मेहमानदारी और अनाथों का ख़याल ख़तरा वगैरह.
- (९) न हाथ से छुए जाएं न उनका साथी हो. मुसद यह है कि वो कर्म बातिल कर दिये गए. उनका कुछ फ़न और कोई फ़ायदा बर्दा क्योंकि कर्मों की कुबूलियत के लिये ईमान शर्त है और वह उनके पास न था. इसके बाद जन्नत वालों की बुद्धि बयान होती है.
- (१०) और उनका स्थान उन घमण्डी मुश्किों से बलन्द और बेहतर.
- (११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, दुनिया का आसमान फटेगा और वहाँ के रहने वाले फ़रिश्ते उतरेंगे और वो सारे ज़मीन वालों से अधिक हैं, जिन्न और इन्सान सबसे. फिर दूसरा आसमान फटेगा, वहाँ के रहने वाले उतरेंगे, वो दुनिया के आसमान के रहने वाले और जिन्न और इन्सान सब से ज़्यादा हैं. इसी तरह आसमान फटते जाएंगे और हर आसमान वालों की संख्या

को छोड़ने के काविल ठहरा लिया^(११) (३०) और इसी तरह हमने हर नबी के लिये दुश्मन बना दिये थे मुजरिम लोग,^(१२) और तुम्हारा रव काफ़ी है हिदायत करने और मदद देने को^(१३) और काफ़िर बोले, कुरआन उनपर एक साथ क्यों न उतार दिया^(१४) हमने यूही धीरे धीरे इसे उतारा है कि इससे तुम्हारा दिल मज़बूत करें^(१५) और हमने इसे ठहर ठहर कर पढ़ा^(१६) (३२) और वो कोई कहावत तुम्हारे पास न लाएंगे^(१७) मगर हम हक़ (सत्य) और इससे बेहतर बयान ले आएंगे^(१८) वो जो जहन्नम की तरफ़ हांके जाएंगे अपने मुंह के बल, उनका ठिकाना सबसे बुरा^(१९) और वो सबसे गुमराह^(२०)

चौथा खूकू

और वेशक हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई और उसके भाई हाशिम को वज़ीर किया^(२१) तो हमने फ़रमाया, तुम दोनों जाओ उस क्रोम की तरफ़ जिसने हमारी आयतें झुटलाई^(२२) फिर हमने उन्हें तवाह करके हलाक कर दिया^(२३) और नूह की क्रोम को^(२४) जब उन्होंने रसूलों को झुटलाया^(२५), हमने उनको डुबो दिया और उन्हें लोगों के लिये निशानी कर दिया,^(२६) और हमने ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है^(२७) और आद और समूद^(२८) और कुंवें वालों को^(२९) और उनके बीच में बहुत सी संगतें (क्रोमों)^(३०) (३८) और हमने सब से मिलाते बयान फ़रमाई^(३१) और सबको

هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ ۖ وَكَفَى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۖ كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ۖ وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ۝ الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۖ وَلَقَدْ أَنبَاْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ وَزِيرًا ۖ فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا فَدَمْغْنَهُمْ تَدْمِيمًا ۖ وَقَوْمَ نُوحٍ لَمَّا كَذَبُوا الرُّسُلَ ۖ أَعْرَفْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ آيَةً ۖ وَأَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ وَعَادًا وَثَمُودًا وَأَصْحَابَ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَلِكَ كَثِيرًا ۖ وَكُلًّا صَبَرْنَا لَهُ

مَنْزِلٌ

अपने मातहतों से ज्यादा है, यहाँ तक कि सातवाँ आसमान फटेगा, फिर कर्बवी फ़रिश्ते उतरेंगे, फिर अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते और यह क़यामत का दिन होगा।

(१२) और अल्लाह के फ़ज़ल से मुसलमानों पर आसान, हदीस शरीफ़ में है कि क़यामत का दिन मुसलमानों पर आसान किया जाएगा यहाँ तक कि वो उनके लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ से हल्का होगा जो दुनिया में पढ़ी थी।

(१३) निराशा और शर्मिलगी से, यह हाल अंगरंचे काफ़िरों के लिये आया है मगर अक़बह बिन अबी मुईत से इसका ख़ास गम्बख़ है, अक़बह उबई बिन ख़लफ़ का गहरा दोस्त था, हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़रमाने से उसने लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह की गवाही दी और उसके बाद उबई बिन ख़लफ़ के जोर डालने से फिर मुर्तद होगया, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसको मकतूल होने की ख़बर दी, चुनौत्ये बद्र में मारा गया, यह आयत उसके बारे में उतरी कि क़यामत के दिन उसका इतिहा दर्ज की हसरत और निदामत होगी, इस हसरत में वह अपने हाथ चाब चाब लेगा।

(१४) ज़न्नत और निज़ात की और उनका अनुकरण किया होता और उनकी हिदायत कुबूल की जाती।

(१५) यानी कुरआन और इमान से।

(१६) और बला और अज़ाब उतरने के वक़्त उससे अलाहिदागी करता है, हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहो अन्हो से अबू दाऊद और तिरमिज़ी में एक हदीस आई है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, आदमी अपने दोस्त के दिन पर होता है तो देखना चाहिये किस को दोस्त बनाता है, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, हमनशीनी न करो मगर इमानदार के साथ और ख़ाना न खिंलाओ मगर परहेज़गार को, बेदीन और बदमज़हब की दोस्ती और उसके साथ मिलना जुलना और महबूब और सत्कार मना है।

(१७) किसी ने उसको जादू कहा, किसी ने शेअर, और वो लोग इमान लाने से मेहरूम रहे, इसपर अल्लाह नआला ने हुज़ूर को तसल्ली दी, और आपस मदद का वादा फ़रमाया जैसा कि आगे इरशाद होता है।

(१८) यानी नबियों के साथ यदनसीबों का यही सुलूक रहा है।

(१९) जैसा कि तौरात व इज़ील व जुबूर में से हर एक किताब एक साथ उतरी थी, काफ़िरों की यह आलोचना बिल्कुल फुज़ूल और निरर्थक है क्योंकि क़ुरआन मजीद का चमत्कारी होना हर हाल में एक सा है चाहे एक बार उतरे या थोड़ा थोड़ा करके, बल्कि थोड़ा थोड़ा उतरने में इसके चमत्कारी होने का और भी भरपूर प्रमाण है कि जब एक आयत उतरी और सृष्टि का उसके जैसा क़लाम बनाने से आजिज़ होना ज़ाहिर हुआ,

तवाह करके मिटा दिया (३९) और ज़रूर ये (१) हो आए हैं उम वरती पर जिस पर बुरा बरसाव बरसा था, (२०) तो क्या ये उसे देखते न थे, (२१) बल्कि उन्हें जी उठने की उम्मीद थी ही नहीं (२२) (४०) और जब तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठट्ठा, (२३) क्या ये हैं जिन का अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा (४१) करीब था कि ये हमें हमारे खुदाओं से बहका दें अगर हम उनपर सत्र न करते (२४) और अब जाना चाहते हैं जिस दिन अज़ाब देखेंगे (२५) कि कौन गुमराह था (२६) (४२) क्या तुमने उसे देखा जिसने अपने जी की ख्वाहिश को अपना खुदा बना लिया, (२७) तो क्या तु; उसकी निगहबानी का जिम्मा लोगें (२८) (४३) या यह समझते हो कि उनमें बहुत कुछ सुनते या समझते हैं, (२९) वो तो नहीं मगर जैसे चौपाए बल्कि उनसे भी बदतर गुमराह (३०) (४४)

पाँचवां रूकू

ऐ मेहबूब क्या तुमने अपने रब का न देखा (१) कि कैसा फैलाया साया (२) और अगर चाहता तो उसे ठहराया हुआ कर देता (३) फिर हमने सूरज को उसपर वलील किया (४५) फिर हमने आहिस्ता आहिस्ता उसे अपनी तरफ समेटा (४६) और वही है जिसने रात को तुम्हारे लिये पर्दा किया और नींद को आराम, और दिन बनाया उठने के लिये (४७)

الْأَمْثَالِ كُلًّا تَبَرُّنَا تَبِيرًا ۖ وَلَقَدْ آتَوْنَا عَلَى الْقَرْيَةِ
الَّتِي أَطْرَقَتْ مَطَرُ السَّوَادِ أَفْلَمَ يَكُونُوا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ
كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ۖ وَإِذَا رَأَوْكَ إِذَا يَقْتَحِدُونَكَ
إِلَّا هُرُورًا ۖ هَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۖ إِنْ كَادَ
لَيُضِلَّنَا عَنْ الْهَيْثِنَا لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ
يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۚ مَنْ أَضَلَّ سَبِيلًا ۖ
أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ ۚ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ
وَكِيلًا ۖ أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَتَّبِعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ
إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۖ الْحَمْدُ
لِلَّهِ رَبِّكَ ۖ كَيْفَ مَدَّ الْقَطْلَ ۚ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا
ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۖ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا
قَبْضًا بَسِيرًا ۖ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الَّيْلَ لِبَاسًا
وَالنَّوْمَ سُبَاتًا ۖ وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ۖ وَهُوَ الَّذِي

مِيزَان

फिर दूसरी उतरी, इसी तरह इसका चमत्कार ज़ाहिर हुआ। इस तरह बरसत आयत-आयत होंकर कुरआने पाक उतगना रहा और हर हम उगकी बेमिसाली और लोगों की आजिजी और लाचारी ज़ाहिर होती रही। गरज़ काफ़िरों का ऐतिसाज़ केवल बेकार और व्यर्थ है। आगम में अल्लाह तआला थोड़ा थोड़ा करके उतारने की हिकमत ज़ाहिर फ़रमाता है।

(२०) और संदेश का सिलसिला जारी रहने से आसक दिन को तस्कीन होता रहे और काफ़िरों का हर हर असमं पर तबाय मिलने रहे। इसके अलावा यह भी फ़ायदा है कि इस याद करना सहल और आसान हो।

(२१) जिब्रईल की ज़यान से थोड़ा थोड़ा बीस या तेईस साल की मुदत में, या ये मानी है कि हम ने आयत के बाद आयत थोड़ा थोड़ा करके उतारा। कुछ ने कहा कि अल्लाह तआला ने हमें फिरात में ठहर ठहर कर इत्मीनान से पढ़ने और कुरआन शरीफ़ को अच्छी तरह अदा करने का हुक्म फ़रमाया जैसा कि दूसरी आयत में इशारा हुआ व रत्तिलिल कुरआना तर्तीला (और कुरआन खूब ठहर ठहर कर पढ़ो - सूरए मुज़म्मिल, आयत ५)

(२२) यानी मुश्किल आपके दीन के झिलाफ़ या आपकी तबुबत में आलौचना करने वाला कोई सवाल पेश न कर सकेंगे।

(२३) हदीस शरीफ़ में है कि आदमी क़यामत के दिन तीन तरीक़ों पर उठाए जाएंगे, एक ग़िरोह सवागियों पर, एक समूह पैदल और एक ज़माअत मुंह के बल घिसटती हुई। अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह, वो मुंह के बल कैसे चलेंगे। फ़रमाया जिसने पाँच पर चलाया है वही मुंह के बल चलाएगा।

सूरए फ़ुरक़ान - चौथा रूकू

(१) यानी फिरातों की क़ौम की तरफ़, चुनौती वह दोनों हज़रत उनकी तरफ़ गए और उन्हें खुदा का ख़ाफ़ दिनाया और अपनी सिसालत का प्रचार किया, लेकिन उन बदवस्तों ने उन हज़रत का झुटलाया।

(२)भी हलाक कर दिया।

(३) यानी हज़रत नूह और हज़रत इब्राहिम को और हज़रत शीस को, या यह बात है कि एक रसूल का झुटलाना सात रसूलों का झुटलावा है, तो जब उन्होंने हज़रत नूह को झुटलाया तो सच रसूलों का झुटलाया।

(४) कि बाद वालों के लिये इब्रत हो।

(५) और हज़रत हूद अलौहिस्सलाम की क़ौम आद, और हज़रत सालेह अलौहिस्सलाम की क़ौम समूद, इन दोनों फ़ौमों को भी हलाक किया।

(६) यह हज़रत शुऐब अलौहिस्सलाम की क़ौम थी जो बुतों का पूजती थी, अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ हज़रत शुऐब

अलैहिसलाम को भेजा, आपने उन्हें इस्लाम की तरफ बुलाया, उन्होंने सरकशी की, हज़रत शुऐब अलैहिसलाम को झुटलाया और आपको कष्ट दिये, उन लोगों के मकान कुएं के गिर्द थे, अल्लाह तआला ने उन्हें हलाक किया और यह सारी क्रीम अपने मकानों समेत उस कुएं के साथ ज़मीन में धंस गई, इसके अलावा और अक़बाल भी हैं।

(७) यानी आद और समूद क़ौम और कुएं वालों के बीच में बहुत सी उम्मतें हैं जिनको नवियों को झुटलाने के कारण अल्लाह तआला ने हलाक किया।

(८) और हुज्जतें क़ायम कीं और उनमें से किसी को बिना हुज्जत पूरी किये हलाक न किये।

(९) यानी मक्के के काफ़िर अपनी निज़ारतों में शाम के सफ़र करते हुए बार बार।

(१०) इस वस्ती से मुराद समूद है जो लूत क़ौम की पांच वस्तियों में सबसे बड़ी वस्ती थी, इन वस्तियों में एक सब से छोटी वस्ती के लोग तो उस बुरे काम से दूर थे जिसमें बाक़ी चार वस्तियों के लोग जकड़े हुए थे, इसीलिये उन्होंने निज़ात पाई और वो चार वस्तियाँ अपने बुरे कर्म के कारण आसमान से पत्थर बरसाकर हलाक कर दी गईं।

(११) कि इज़त पकड़ते और ईमान लाते।

(१२) यानी मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने के क़ायल न-थं कि उन्हें आग्निस्त के अज़ाब सवाब की चिन्ता होती।

(१३) और कहते हैं।

(१४) इससे मालूम हुआ कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दायत और आपके चमत्कारों ने काफ़िरों पर इतना असर किया था और सच्चे दीन को इस क़द्र साफ़ और स्पष्ट कर दिया था कि स्वयं काफ़िरों को यह इक़रार है कि अगर वो अपनी हठ पर न ज़मे रहते तो क़रीब था कि बुत परस्ती छोड़ दें और इस्लाम ले आएँ यानी इस्लाम की सच्चाई उनपर ख़ूब ख़ुल चुकी थी और शक़ शुबह मिटा दिया गया था, लेकिन वो अपनी हठ और ज़िद के कारण मेहरूम रहे।

(१५) आग्निस्त में।

(१६) यह उसका जवाब है कि काफ़िरों ने कहा था क़रीब है कि ये हमें हमारा ख़ुदाओं से बहका दें, यहाँ बताया गया है कि वहकें हुए तुम ख़ुद हो और आग्निस्त में ये तुम को ख़ुद मालूम हो जाएगा और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ वहकाने की निम्नत क़बूल बेजा और निरर्थक है।

(१७) और अपनी नफ़सानी ख़्वाहिश को पूजने लगा, उसी का फ़रमाँवरदार हो गया, वह हिदायत किस तरह कुबूल करेगा, रिवायत है कि जिहालन के ज़माने के लोग एक पत्थर को पूजते थे और जब कहीं उन्हें कोई दूसरा पत्थर उससे अच्छा नज़र आता, तो पहले को फेंक देते और दूसरे को पूजने लगते।

(१८) कि ख़्वाहिश परस्ती से रोक दो।

(१९) यानी वो अपनी भरपूर दुश्मनी से न आपकी बात सुनते हैं न प्रमाणों और तर्क की समझते हैं, धंहर और नासमझ बने हुए हैं।

(२०) क्योंकि चौपाए भी अपने स्व की तस्वीह करते हैं, और जो उन्हें खाने को दे, उसके फ़रमाँवरदार रहते हैं और एहसान करने वाले को पहचानते हैं और तक्लीफ़ देने वाले से घबराते हैं, नफ़ा देने वाले की तलब करते हैं, घाटा देने वाले से बचते हैं, चराहामाहों की राहें जानते हैं, ये काफ़िर उनसे भी बुरे हैं कि न स्व की इताअत करते हैं, न उसके एहसान का पहचानते हैं, न शैतान जैसे दुश्मन की घातों का समझते हैं, न सवाब जैसी बड़े नफ़े वाली चीज़ के तालिब हैं, न अज़ाब जैसी सज़ा ख़तरनाक हलाकत से बचते हैं।

सूरए फ़ुरक़ान - पाँचवाँ रूक़ू

(१) कि उसकी सनअत(सूजन-शक्ति) और कुदरत कितनी अजीब है।

(२) सुब्हे सादिक़ के निकलने के बाद से सूर्योदय तक, कि उस वक़्त सारी धरती पर साया ही साया हांता है, न धूप है न अंधेरा।

(३) कि सूरज के निकलने से भी न मिटता।

(४) कि उदय होने के बाद मूज़ जितना ऊपर होता गया, साया सिमटना गया।

(५) कि उसमें रोज़ी तलाश करो और कामों में जुट जाओ, हज़रत लुक्मान ने अपने बेटे से फ़रमाया, जैसे सोने हो फिर उठने हो ऐसे ही मरोगे और मौत के बाद फिर उठोगे।

(६) यहाँ ग़हमत से मुराद चारिश है।

और वही है जिसने हवाएं भेजीं अपनी रहमत के आगे, खुशखबरी सुनाती हुई, (६) और हमने आसमान से पानी उतारा पाक करने वाला (६८) ताकि हम उससे ज़िन्दा करें किमी मुर्दा शहर को (७) और उसे पिलाएं अपने बनाए हुए बहुत से चौपाए और आदमियों को (८९) और वेशक हमने उनमें पानी के फेरे रखे (९०) कि वो ध्यान करें, (९१) तो बहुत लोगों ने न माना मगर नाशुकी करना (५०) और हम चाहते तो हर वस्ती में एक डर सुनाने वाला भेजते (९२) (५१) तो काफ़िरों का कहा न मान और इस कुरआन से उनपर जिहाद कर, बड़ा जिहाद (५२) और वही है जिसने मिले हुए वहाए दो समन्दर, यह मीठा है बहुत मीठा और यह खारी है बहुत तलख, और इन के बीच में पर्दा रखा और रोकी हुई आइ (९३) (५३) और वही है जिसने पानी से (९४) बनाया आदमी, फिर उसके रिश्ते और सुसराल मुकर्रर की (९५) और तुम्हारा रब कुदरत वाला है (९६) (५४) और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं (९७) जो उनका भला बुरा कुछ न करे, और काफ़िर अपने रब के मुक़ाविल शैतान को मदद देता है (९८) (५५) और हमने तुम्हें न भेजा मगर (९९) खुशी और (१००) डर सुनाता (५६) तुम फ़रमाओ मैं इस (९९) पर तुम से कुछ उजरत (वेतन) नहीं मांगता मगर जो चाहे कि अपने रब की तरफ़ राह ले (१००) (५७) और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो कभी न मरेगा (९९) और उसे सराहते हुए

أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۖ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ۚ لِنُخْرِجَ بِهِ بَلْدَةً قَدِيمًا وَأُتْبِقِبَهُ مِنَّا خَلْقًا نَعَامًا ۖ وَاتَّخَذْنَا لِكُلِّ قَوْمٍ نَذِيرًا ۚ وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَكَّرُوا ۚ فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۖ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَوْمٍ فَزِيَةً تَذِيرًا ۚ فَلَا تُطِيعُ الْكَافِرِينَ ۖ وَجَاهِدْهُمْ بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا ۚ وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۖ وَجَعَلْ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَرَجْعًا مَّحْجُورًا ۚ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۚ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۚ وَ يُعِيدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۚ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا نَبِيرًا ۚ وَ نَذِيرًا ۚ قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا مِنَ شَاءِ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۚ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي

مَنْزِلٌ

(७) जहाँ की ज़मीन शुष्की से बेजान हो गई.

(८) कि कभी किसी शहर में बारिश हो कभी किसी में, कभी कहीं ज्यादा हो कभी कहीं अलग तौर से, अल्लाह की हिकमत के अनुसार. एक हदीस में है कि आसमान से रात दिन की तमाम घड़ियों में बारिश होती रहती है. अल्लाह तआला उसे जिस प्रदेश की तरफ़ चाहता है फेरता है और जिस धरती को चाहता है सैराब करता है.

(९) और अल्लाह तआला की कुदरत और नेअमत में गौर करें.

(१०) और आप पर से डराने का बोझ कम कर देते लेकिन हमने सारी बस्तियों को डराने का बांझ आप ही पर रखा ताकि आप सारे जगत के रसूल होकर कुल रसूलों की फ़ज़ीलतों और बुजुर्गियों के संगम हों और नबुव्वत आप पर ख़त्म हो कि आप के बाद फिर कोई नबी न हो.

(११) कि न मीठा ख़ारी हो, न ख़ारी मीठा, न कोई किसी के स्वाद को बदल सके जैसे कि दज़लह, दरियाए शेर में मीलों तक चला जाता है और उसके पानी के स्वाद में कोई परिवर्तन नहीं आता. यह अल्लाह की अजीब शान है.

(१२) यानी नुत्ते से.

(१३) कि नसल चले.

(१४) कि उसने एक नुत्ते से दो किस्म के इन्सान पैदा किए, नर और मादा. फिर भी काफ़िरों का यह हाल है कि उसपर ईमान नहीं लाते.

(१५) यानी बुतों को.

(१६) क्योंकि बुत परस्ती करना शैतान को मदद देना है.

(१७) ईमान और फ़रमाँवरदारी पर ज़न्नत की.

(१८) कुफ़्र और गुमराही पर जहन्नम के अज़ाब का.

(१९) तबलीग़ और हिदायत.

(२०) और उसका कुर्ब और उसकी रज़ा हासिल करे. मुराद यह है कि ईमानदारों का ईमान लाया और उनका अल्लाह की फ़रमाँवरदारी में जुट जाना ही मेरा बदला है क्योंकि अल्लाह तआला मुझे उसपर जज़ा अता फ़रमाएगा, इसलिये कि उम्मत क नक़ लोगों के ईमान और उनकी नेकियों के सबाब उन्हें भी मिलते हैं और उनके नबियों को भी, जिनकी हिदायत से वो इम दर्जे पर पहुँचे.

(२१) उसी पर भरोसा करना चाहिये क्योंकि मरने वाले पर भरोसा करना समझ वाले की शान नहीं है.

उसकी पाकी बोलो, (२२) और वही काफी है अपने बन्दों के गुनाहों पर खबरदार (२३) ५८ जिसने आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन के बीच है छ दिन में बनाए (२४) फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक है (२५) वह बड़ी मंहर वाला, तो किसी जानने वाले से उसकी तारीफ़ पूछ (२६) ५९ और जब उनसे कहा जाए (२७) रहमान को सज्दा करो कहते हैं रहमान क्या है क्या हम सज्दा कर लें जिसे तुम कहो (२८) और इस हुक्म ने उन्हें और बिदकना बकाया (२९) ६०

छटा रसू

बड़ी बरकत वाला है जिसने आसमान में बुर्ज बनाए (१) उनमें चिराग़ रखा (२) और चमकता चाँद (६१) और वही है जिसने रात और दिन की बदली रखी (३) उसके लिये जो ध्यान करना चाहे या शुक्र का इरादा करे (६२) और रहमान के वो बन्दे कि ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं (४) और जब जाहिल उनसे बात करते हैं (५) तो कहते हैं वस सलाम (६३) और वो जो रात काटते हैं अपने रब के लिये सज्दे और क़याम में (६४) और वो जो अर्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमसे फेर द जहन्नम का अज़ाब, वेशक़ उसका अज़ाब गले का गिल (फन्दा) है (६५) वेशक़ वह बहुत ही बुरी टहरने की जगह है (६६) और वो कि जब खर्च करते हैं, न हद से बढ़ें और न तंगी करें (६) और इन दोनों के बीच

الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَنُ فَسُئِلَ بِهِ خَيْرًا ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۚ تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَفَمَرَأٰمُنِيرًا ۚ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنۢ أَرَادَ أَنۢ يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۚ وَبِأَذۡرِ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَسْتَوْنَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ۚ وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ۚ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۚ إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۚ وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا

मंज़ल

- (२२) उसकी तस्बोह और तारीफ़ करो, उसकी फ़रमाँबख़्तारी करो और शुक्र अदा करो.
- (२३) न उगये किसी का गुनाह छुपे, न कोई उसकी पकड़ से अपने को बचा सके.
- (२४) यानी उत्तरी मात्रा में, क्योंकि रात और दिन और ग़रज तो थे ही नहीं और उत्तरी मात्रा में पैदा करना अपनी मख़लूक को आहिस्तागी और इन्मीनान सिखाते के लिये है, चरना वो एक पल में सब कुछ पैदा करने की कुदरत रखता है.
- (२५) बुद्धियों का मज़हब यह है कि इस्तिवा और इस जैसे जो भी शब्द आए हैं हम उन पर ईमान रखते हैं और उनकी कौफ़ियत के पाँडे नहीं पड़ते, उसको अल्लाह ही जाने, कुछ मुफ़ससों ने इस्तिवा को दलन्दी और दस्तरी के मानी में लिया है और यही बेहतर है.
- (२६) इसमें इन्सान को सम्बोधन है कि हज़रत रहमान की विशेषताएँ और सिफ़ात पहचानने वाले भग्न्य से पूछें ...
- (२७) यानी जब सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुशिकों से फ़रमाएँ कि...
- (२८) इसमें उनका मक़सद यह है कि रहमान को जानने नहीं और यह बातिल है जो उन्होंने दुश्मनी के तहत कहा क्योंकि अरबी ज़बान जायने वाला ग़ृध्र जायता है कि रहमान का अर्थ बहुत रहमत वाला है और यह अल्लाह तआला ही की विशेषता है.
- (२९) यानी मज्दे का हुक्म उनके लिये और ज़्यादा ईमान से दूरी का कारण हुआ.

सूरए फ़ुरकान - छटा रसू

- (१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि बुर्ज से सात ग्रहों की मंज़िलें मुराद हैं जिनकी तादाद बारह है - (१) हमल (मेष), (२) सौर (वृषभ), (३) जोज़ा (मिथुन), (४) सरतान (कर्क), (५) अमद (सिंह), (६) सुबुला (कन्या), (७) मीज़ान (तुला), (८) अक़रब (वृश्चिक), (९) क़ौस (धनु), (१०) ज़दी (मकर), (११) दलूव (कुम्भ), (१२) हूत (मीन).
- (२) चिराग़ से यहाँ ग़रज मुराद है.
- (३) कि उनमें एक के बाद दूसरा आता है और उसका क़ायम मुक़ाम होता है कि ज़िमका अमल रात या दिन में से किसी एक में कज़ा हो जाए तो दूसरे में अदा करे. ऐसा ही फ़रमाया हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने और रात दिन का एक दूसरे के बाद आना और क़ायम मुक़ाम होना अल्लाह तआला की कुदरत और हिक़मत का प्रमाण है.
- (४) इन्मीनान और चिन्कार के साथ. चिन्मता की शां से, कि घमण्डी तरीक़े से ज़ूते ख़टख़टाते, पाँव ज़ोर से मारने, झराने, कि

एतिदाल(संतुलन) पर रहें^(१०) ॥६७॥ और वो जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअवूद को नहीं पूजते^(११) और उस जान को जिसकी अल्लाह ने हुरमत(इज्जत) रखी^(१२) नाहक नहीं मारते और वदकारी नहीं करते,^(१३) और जो यह काम करे वह सज़ा पाएगा, बढ़ाया जाएगा उसपर अज़ाब क़यामत के दिन^(१४) और हमेशा उसमें ज़िल्लत से रहेगा ॥६९॥ मगर जो तौबह करे^(१५) और ईमान लाए^(१६) और अच्छा काम करे^(१७) तो ऐसी की वुराइयों को अल्लाह भलाईयों में बदल देगा,^(१८) और अल्लाह वरदान वाला मेहरवान है ॥७०॥ और जो तौबह करे और अच्छा काम करे तो वह अल्लाह की तरफ़ रूजू लाया जैसी चाहिये थी ॥७१॥ और जो झूठी गवाही नहीं देते^(१९) और जब वेहूदा पर गुज़रते हैं अपनी इज्जत संभाले गुज़र जाते हैं^(२०) ॥७२॥ और वो कि जब उन्हें उनके रब की आयतें याद दिलाई जाएं तो उन पर^(२१) वहरे अंधे होकर नहीं गिरते^(२२) ॥७३॥ और वो जो अर्ज करते हैं ऐ हमारे रब हमें व हमारी बीवियों और हमारी औलाद से आँखों की ठण्डक^(२३) और हमें परहेजगारों का पेशवा बना^(२४) ॥७४॥ उनको जन्नत का सब से ऊँचा वाला खाना इनाम मिलेगा बदला उनके सब्र का और वहाँ मुजर और सलाम के साथ उनकी पेशवाई होगी^(२५) ॥७५॥ हमेशा उसमें रहेंगे, क्या ही अच्छी ठहरने और वसने की

وَلَمْ يَقْتُلُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ۝ وَالَّذِينَ لَا
يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي
حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ
أَثَامًا ۚ يُضْعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيُحْلِلُ
فِيهِ مِمَّا تَابَ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَأُولَٰئِكَ يَبْدِلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۚ وَكَانَ اللَّهُ
عَفُورًا رَحِيمًا ۝ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ
إِلَى اللَّهِ مِنَّا بَآ ۝ وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا
بِالْفُجُورِ مُوَكَرَّمًا ۝ وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ
لَمْ يَخْرُجُوا عَلَيْهَا ضُمًّا وَعَيْبًا ۚ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ
رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَرْوَاحِنَا وَدَرَجَاتِنَا فَكْرَةً ۖ أَعْيُنٌ وَ
اجْتَلْنَا لِلتَّقِيّينَ إِمَامًا ۝ أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرُورَةَ
بِمَا صَبَرُوا وَيُلْقَوْنَ فِيهَا تَجَنُّبَةً وَسَلَامًا ۝ خَلِيدِينَ

مَنْ

यह घमण्डियों का तरीका है और शरीअत ने इसे मना फ़रमाया है,

(५) और कोई नामवार कलिमा या वेहूदा या अदब और तहज़ीब के खिलाफ़ बातें कहते हैं,

(६) यह सलाम मुताश्चित्त का है यानी जाहिलों के साथ बहस या लड़ाई इग़ा करने से परहेज़ करने हैं या ये मारी हैं कि ऐसी बात कहते हैं जो दुश्मन हो और उसमें फ़ट और गुनाह से मेहफूज़ रहें, हसन बसरी ने फ़रमाया कि यह तो उन बन्दों के दिन का हाल है और उनकी रात का बयान आगे आता है, मुराद यह है कि उनकी मजलिसी ज़िन्दगी और लोगों के साथ व्यवहार ऐसा पाकीज़ा है, और उनकी एकान्त की ज़िन्दगी और सच्चाई के साथ सम्बन्ध यह है जो आगे बयान किया जाना है,

(७) यानी नमाज़ और इबादत में रात भर जागते हैं और रात अपने रब की इबादत में गुज़ारते हैं और अल्लाह तआला अपने करम से थोड़ी इबादत वालों को भी रात भर जागने का सचाब अता फ़रमाता है, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जिस किसी ने इशा के बाद दो रक़अत या ज़्यादा नफ़र पढ़े वह रात भर जागने वालों में दाख़िल है, मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत उस्मान गनी रदियल्लाहो अन्हु से रिवायत है कि जिसने इशा की नमाज़ जमाअत से अदा की उसने आधी रात के क़याम का सचाब पाया और जिसने फ़ज्र भी जमाअत के साथ अदा की वह सारी रात इबादत करने वाले की तरह है,

(८) यानी लाज़िम, जुदा न होने वाला, इस आयत में उन बन्दों की शब-वेदारी और इबादत का त़िक़ फ़रमाने के बाद उनकी उस दुआ का बयान किया, इससे यह ज़ाहिर करना मक़सूद है कि वो इतनी ज़्यादा इबादत करने के बावज़ूद अल्लाह तआला का ख़ाफ़ खाते हैं और उसके समक्ष गिड़गिड़ाते हैं,

(९) इसराफ़ गुनाहों में ख़र्च करने को कहते हैं, एक वुज़ुर्ग ने कहा कि इसराफ़ में भलाई नहीं, दूसरे वुज़ुर्ग ने कहा नेकी में इसराफ़ ही नहीं, और तंगी करना यह है कि अल्लाह तआला के निर्धारित अधिकारों को अंदा करने में कमी करे, यही हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने किसी हक़ को मना किया उसने तंगी की और जिसने नाहक में ख़र्च किया उसने इसराफ़ किया, यहाँ उन बन्दों के ख़र्च करने का हाल बयान फ़रमाया जा रहा है कि वो इसराफ़ और तंगी के दोनों बुरे तरीक़ों से बचते हैं,

(१०) अब्दुल मलिक बिन मरवान ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रदियल्लाहो अन्हु से अपनी बंटी ब्याहत वक़्त ख़र्च का हाल पूछा तो हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि नेकी दो बुराइयों के बीच है, इससे मुराद यह थी कि ख़र्च में बीच का तरीका इस्तिस्नान करना नेकी है और वह इसराफ़ यानी हद से अधिक ख़र्च करने और तंगी के बीच है जो दोनों बुराइयों हैं, इससे अब्दुल मलिक ने पहचान लिया कि वह इस आयत के मज़मून की तरफ़ इशारा कर रहे हैं, मुफ़सि़रों का ज़ात है कि इस आयत में जिन

जगह (७६) तुम फरमाओ (२३) तुम्हारी कुछ कब्र नहीं मेरे रव के यहाँ अगर तुम उसे न पूजो तो तुमने झुटलाया (२५) तो अब होगा वह अज्ञाव कि लिपट रहेगा (२८) (७७)

२६- सूरए शुअरा

सूरए शुअरा मक्का में उतरी, इसमें २२७ आयतें, ११ रूक हैं।

पहला रूक

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) तौ-सीन-मीम (१) ये आयतें हैं रौशन किताब की (२) (२) कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उनके गम में कि वो ईमान नहीं लाए (३) (३) अगर हम चाहें तो आसमान से उनपर कोई निशानी उतारें कि उनके ऊंचे ऊंचे उसके झुंझुर झुके रह जाए (४) (४) और नहीं आती उनके पास रहमान की तरफ से कोई नई नसीहत मगर उससे मुंह फेर लेते हैं (५) (५) तो वेशक उन्होंने झुटलाया तो अब आया चाहती हैं खबरें उनके ठट्टे की (६) (६) क्या उन्होंने ज़मीन को न देखा हमने उसमें कितने इज़्जत वाले जोड़े उगाए (७) (७) वेशक उसमें ज़रूर निशानी है (८) और उनके अक्सर ईमान लाने वाले नहीं (८) और वेशक तुम्हारा रव ज़रूर वही इज़्जत वाला मेहरबान है (९) (९)

दूसरा रूक

और याद करो जब तुम्हारे रव ने मूसा को निदा फरमाई कि ज़ालिम लोगों के पास जा (१०) जो फिरऔन की क्रौम है (१)

وَقَالَ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْكَ سَيِّئَاتِكَ وَلَنَجْزِيَنَّكَ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ قُلْ مَا يَعْبُودُ آبَاؤُكُمْ رَبِّنَا وَلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ۝

سُورَةُ الشُّعَرَاءِ مَكِّيَّةٌ (٢٢٧)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ لَعَلَّكَ بَآخِئٍ نَفْسِكَ أَلا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ إِن نَشَأْ نُنزِلْ عَلَيْهُمْ مِن السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْيُنُهُمْ لَهَا خُضُعِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنَ الرَّحْمَنِ مُحَدَّثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ۝ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنْتَبَاهُ مَا كَانُوا بِهِ كَيْسَتُهُمْ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُو الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ إِنَّ ابْنِي الْقَوْمِ

हज़रत का ज़िक्र है वो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बड़े सहाबा हैं जो न स्वाद के लिये खाते हैं, न ख़वसुरती और जीनत (श्रंगार) के लिये पहनते हैं, भूख़ रोकना, तब ढौपना, सर्दी गर्मी की तकलीफ़ से बचना, इतना ही उनका मक़सद है।

(११) शिर्क से बरी और बेज़ार हैं।

(१२) और उसका ख़ून मुवाह न किया जैसे कि मूमिन और एहद वाले उसका ...

(१३) नेक़ों से . इन बड़े गुनाहों की नफ़ी फ़रमाने में काफ़िरों पर तअरीज़ है जो इन बुराइयों में जकड़े हुए थे।

(१४) याती वह शिर्क के अज्ञाव में भी गिफ़्तार होगा और इन गुनाहों का अज्ञाव उसपर और ज़्यादा किया जाएगा।

(१५) शिर्क और बड़े गुनाहों से।

(१६) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर।

(१७) याती तौबह के बाद नेकी अपनाए।

(१८) याती बुराई करने के बाद नेकी की तौफ़ीक़ देकर या ये मानी कि बुराईयों को तौबह से मिटा देगा और उनकी जगह ईमान और फ़रमावशकारी वग़ैरह नेक़ियाँ क़ायम फ़रमाएगा। (मदारीक़) मुस्लिम की हदीस में है कि क़यामत के दिन एक व्यक्ति हाज़िर किया जाएगा, फ़रिशते अल्लाह के हुक्म से उसके छोटे गुनाह एक एक करके उसको याद दिलाते जाएंगे, वह इक़रार करता जाएगा और अपने बड़े गुनाहों के पेश होने से डरना होगा, इसके बाद कहा जाएगा कि हर एक बुराई के बदले तुझे नेकी दी गई, यह बयान फ़रमाते हुए सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह तआला की बन्दानवाज़ी और उसकी करम की शान पर खुशी हुई और नूरानी चहरे पर सुरुज से तबस्सुम के निशान ज़ाहिर हुए।

(१९) और झूठों की मजलिस से अलग रहने हैं और उनके साथ मुत्रालिफ़्त नहीं करते।

(२०) और अपने आप को लहव (व्यर्थ कर्म) और बातिल से प्रभावित नहीं होने देते, ऐसी मजलिसों से परहेज़ करत हैं।

(२१) अनज़ावे तरीके से, अज्ञावता के अन्दाज़ में।

(२२) कि न सोचें न समझें बल्कि होश के कानों से सुनते हैं और देखने वाली आँख से देखने हैं और नसीहत से फ़ायदा उठाने

क्या वो न डरेंगे^(१)॥११॥ अर्ज की ऐ मेरे रब मैं डरता हूँ कि वो मुझे झुटलाएंगे^(२)॥१२॥ और मेरा सीना तंगी करता है^(३) और मेरी ज़बान नहीं चलती^(४) तो तू हारून को भी रसूल कर^(५)॥१३॥ और उनका मुझपर एक इल्ज़ाम है^(६) ता मैं डरता हूँ कहीं मुझे^(७) क़त्ल करदें^(८)॥१४॥ फ़रमाया यूँ नहीं^(९) तुम दोनों मेरी आयतें लेकर जाओ हम तुम्हारे साथ सुनते हैं^(१०)॥१५॥ तो फिरऔन के पास जाओ फिर उससे कहो हम दोनों उसके रसूल हैं जो रब है सारे जगत का^(१६) कि तू हमारे साथ वनी इस्राईल को छोड़ दे^(१०)॥१७॥ बोला क्या हमने तुम्हें अपने यहाँ बचपन में न पाला और तुमने हमारे यहाँ अपनी उम्र के कई वरस गुज़ारे^(११)॥१८॥ और तुमने किया अपना वह काम जो तुमने किया^(१२) और तुम नाशुक्रे थे^(१३)॥१९॥ मूसा ने फ़रमाया, मैंने वह काम किया जबकि मुझे राह की ख़बर न थी^(१४)॥२०॥ तो मैं तुम्हारे यहाँ से निकल गया जब कि तुम से डरा^(१५) तो मेरे रब ने मुझे हुक्म अता फ़रमाया^(१६) और मुझे पैग़म्बरों से किया^(२१) और यह कोई नेअमत है जिसका तू मुझ पर एहसान जताता है कि तूने गुलाम बनाकर रखे वनी इस्राईल^(१७)॥२२॥ फिरऔन बोला और सारे जगत का रब क्या है^(१८)॥२३॥ मूसा ने फ़रमाया रब आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके बीच में है अगर तुम्हें यकीन हो^(१९)॥२४॥ अपने

الظّٰلِمِيْنَ ۝ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۝ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّیْۤ اَخَافُ اَنْ یَّكْذِبُوْنَ ۝ وَیُضِیْقُوْا صَدْرِیْ ۝ وَکَا یُطْلِقُوْا لِسَاقِیْ فَارْسِلْ لِیْ هٰرُوْنَ ۝ وَلَهُمْ عَلٰی ذٰلِکَ فَاخَافُ اَنْ یَّقْتُلُوْا ۝ قَالَ کَلَّا ۚ فَاذْهَبْ بِاٰیٰتِنَا اِنَّا مَعْکُمْ مُّسْمِعُوْنَ ۝ فَاٰتِیَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَا اِنَّا رُسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنٰیۤ اِسْرَءٰیِلَ ۝ قَالَ اَلَمْ نُرِیْکَ فِیْنَا وَلِیْدًا ۚ وَلِیْثًا فِیْنَا مِنْ عُمُرَکَ سِنِیْنَ ۝ وَفَعَلْتَ فَعَلْتَنَکَ الْکِبٰیۤ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْکٰفِرِیْنَ ۝ قَالَ فَعَلْنٰهَا اِذَا وَاِنَا مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝ فَفَرَرْتُ مِنْکُمْ لَمَّا خِفْتُکُمْ فَوَهَبْ لِیْ رَبِّیْ حُكْمًا وَجَعَلْ لِّیْ مِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ۝ وَتِلْکَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلٰی اَنْ عَبَدْتُ بُنٰیۤ اِسْرَءٰیِلَ ۝ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

مَرْسُوْلًا

हैं और इन आयतों पर फ़रमाव्यवहारी के साथ अमल करते हैं.

(२३) यानी फ़रहत और मुन्न. मुराद यह है कि हमें वीवियाँ और नेक औलाद, परहेज़गार और अल्लाह से डरने वाली, अता फ़रमा कि उनके अच्छे कर्म, अल्लाह व रसूल के अहकाम का पालन देखकर हमारी आँखें ठण्डी और दिल खुश हों.

(२४) यानी हमें ऐसा परहेज़गार और ऐसा इबादत वाला और खुदापरस्त बना कि हम परहेज़गारों की पेशवाई के ज़ाबिल हों और वो दीन के कामों में हमारा अनुकरण करें. कुछ मुफ़ससिगं ने फ़रमाया कि इसमें दलील है कि आदमी का दीनी पेशवाई और सरदारी की सग़बत और तलब चाहिये. इन आयतों में अल्लाह तआला ने अपने नेक बन्दों के गुण बयान फ़रमाए. इसके बाद उनकी जज़ा ज़िक्र फ़रमाई जाती है.

(२५) फ़रिश्ते अदब के साथ उनका सत्कार करेंगे या अल्लाह तआला उनकी तरफ़ सलाम भेजेगा.

(२६) ऐ नबियों के सरदार, मक्के वालों से कि

(२७) मेरे रसूल और मेरी किनाब को ...

(२८) यानी हमेशा का अज़ाब और लाज़मी हलाकत.

२६ - सूरए शुअरा - पहला रूकू

(१) सूरए शुअरा मक्के में उतरी, सिवाय आखिर की चार आयतों के जो "बश्शुअराओ यन्विजुहुम" से शुरू होती है. इस सूरा में ग्यारह रूकू, दो सौ सत्ताईस आयतें, एक हजार दो सौ उनासी कलिमे और पाँच हजार पाँच सौ चालीस अक्षर हैं.

(२) यानी कुरआने पाक की, जिसका चमत्कार ज़ाहिर है और जो सच्चाई को बातिल से अलग करने वाला है. इसके बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मेहरबानी और करम के अन्दाज़ में सम्बोधन होता है.

(३) जब मक्का वाले ईमान न लाए और उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाया तो हुज़ूर पर उनकी मेहरबानी बहुत भारी गुज़री. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी कि आप इस क़दर ग़म न करें.

(४) और कैई गुमराही और नाफ़रमानी के साथ गर्दन न उठा सके.

(५) यानी दम-व-दम उनका क़फ़ बढ़ता जाता है कि जो नसीहत, ज़िक्र और जो वही उतरती है वो उसका इन्कार करते चल जाते हैं.

(६) यह चेतावनी है और इसमें डराना है कि चंद्र के दिन या क़यामत के रोज़ जब उन्हें अज़ाब पहुंचेगा तब उन्हें ख़बर होगी कि कुरआन और रसूल के झुटलाने का यह परिणाम है.

- (७) यानी तरह तरह के बेहतरीन और नफ़ा देने वाले पेड़ यौधे पैदा किये. शअबी ने कहा कि आदमी ज़मीन की पैदावर है. जो ज़रती है वह इज़रत वाला और करीम, और जो जहन्नी है वो बदवज़रत और मलामत पाया हुआ है.
- (८) अल्लाह तआला की भग्नूर कुदरत पर.
- (९) काफ़िरों से बदला लेता और ईमान वालों पर मेहरबानी फ़रमाता है.

सूरए शुअरा - दूसरा रूकू

- (१) जिन्होंने कुफ़्र और गुमराही से अपनी जानों पर जुल्म किया और बनी इस्राईल को गुलाम बनाकर और उन्हें तरह तरह की यातनाएं देकर उन पर अन्याचार किया. उस क़ौम का नाम क्रिन्नी है. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को उनकी तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया था कि उन्हें उनकी बदकिरदारी पर अल्लाह के अज़ाब से डराएं.
- (२) अल्लाह मे और अपनी जानों को अल्लाह तआला पर ईमान लाकर और उसकी फ़रमाँबरदारी करके उसके अज़ाब से न बचाएंगे. इसपर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की वाग्दाह में..
- (३) उनके झुटलाने से.
- (४) यानी धान चीत करने में किसी क़दर तकल्लुफ़ होता है. उस तकलीफ़ की बज़ह से जो बचपन में मुंह में आम का अंगारा रख लेने की बज़ह से ज़वान में हाँ गई है.
- (५) ताकि वह रिसालत के प्रचार में मेरी मदद करें. जिस वक़्त हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को शाम में नबुव्वत दी गई उस वक़्त हज़रत हारून अलैहिस्सलाम मिन्न में थे.
- (६) कि मैंने क्रिन्नी को मारा था.
- (७) उसके बदले में.
- (८) तुम्हें क़त्ल नहीं कर सकते और अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की प्रार्थना मन्ज़ूर फ़रमा कर हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को भी नबी कर दिया और दोनों को हुक्म दिया.
- (९) जो तुम कहो और जो तुम्हें दिया जाए.
- (१०) ताकि हम उन्हें शाम की धरती पर ले जाएं. फिरऔन ने चारसौ बरस तक बनी इस्राईल को गुलाम बनाए रखा था. उस वक़्त बनी इस्राईल की तादाद छ लाख तीस हज़ार थी. अल्लाह तआला का यह हुक्म पाकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मिन्न की तरफ़ रवाना हुए. आप पशमीने का जुब्बा पहने हुए थे. मुवारक हाथ में लाठी थी जिसके सिरे पर ज़ंबील लटकी हुई थी जिसमें साफ़र का तोशा था. इस शान से आप मिन्न में पहुंच कर अपने मकान में दाख़िल हुए. हज़रत हारून अलैहिस्सलाम वहीं थे. आपने उन्हें ख़बर दी कि अल्लाह तआला ने मुझे रसूल बनाकर फिरऔन की तरफ़ भेजा है और आप को भी रसूल बनाया है कि फिरऔन को ख़ुदा की तरफ़ दावत दो. यह सुनकर आपकी वालिदा साहिबा घबराई और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहने लगीं कि फिरऔन तुम्हें क़त्ल करने के लिये तुम्हारी तलाश में है. जब तुम उसके पास जाओगे तो तुम्हें क़त्ल करेगा. लेकिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उनके यह फ़रमाने से न रुके और हज़रत हारून को साथ लेकर रात के वक़्त फिरऔन के दरवाज़े पर पहुंचे. दरवाज़ा ख़टख़टाया, पूछा आप कौन हैं ? हज़रत ने फ़रमाया मैं हूँ मूसा, सारे जगत के रब का रसूल. फिरऔन को ख़बर दी गई. सुबह के वक़्त आप बुलाए गए. आप ने पहुंचकर अल्लाह तआला की रिसालत अदा की और फिरऔन के पास जो हुक्म पहुंचाने पर आप मुक़र्रर किये गए थे, वह पहुंचाया. फिरऔन ने आपको पहचाना.
- (११) मुफ़सिरो ने कहा तीस बरस. उस ज़माने में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फिरऔन के लिबास पहनते थे और उसकी सज़ारियां में सवार होते थे और उसके बेटे मशहूर थे.
- (१२) क्रिन्नी को क़त्ल किया.
- (१३) कि तुमने हमारी नेअमत का शुक्रिया अदा न किया और हमारे एक आदमी को क़त्ल कर दिया.
- (१४) मैं न जानता था कि घूसा मारने से वह शख्स मर जाएगा. मेरा मारना अदब सिख़ाने के लिये था न कि क़त्ल के लिये.
- (१५) कि तुम मुझे क़त्ल करोगे और मदयन शहर को चला गया.
- (१६) मदयन से वापसी के वक़्त. हुक्म से यहाँ था नबुव्वन मुराद है या इल्म.
- (१७) यानी इसमें तेरा क्या एहसान है कि तू ने मेरी तरबियत की और बचपन में मुझे रखा, खिलाया, पहनाया, क्योंकि मेरे तुझ तक पहुंचने का कारण तो यही हुआ कि तूने बनी इस्राईल को गुलाम बनाया, उनकी औलाद को क़त्ल किया. यह तेरा जुल्म इसका कारण हुआ कि मेरे माँ बाप मुझे पाल पोस न सके और मुझे दरिया में डालने पर मजबूर हुए. तू ऐसा न करता तो मैं अपने बालबैन के पास रहता. इसलिये यह बात क्या इस काविल है कि इसका एहसान जताया जाए. फिरऔन मूसा अलैहिस्सलाम की इस तक़रीर में लाजवाब हो गया और उसने अपने बालने का ढंग बदला और यह गुफ़्तगू छोड़ कर दूसरी बात शुरू की.
- (१८) जिसका तुम अपने आपका रसूल बताते हो.
- (१९) यानी अगर तुम चीज़ों को प्रमाण से जानने की योग्यता रखते हो तो उन चीज़ों की पैदायश उसके अस्तित्व यानी होने का खुला प्रमाण है. ईकान यानी यज़ीन उस इल्म को कहते हैं जो तर्क से या प्रमाण से हासिल हो. इसीलिये अल्लाह तआला की शान

आस पास वालों से बोला क्या तुम गौर से सुनते नहीं^(२०) ॥२५॥ मूसा ने फ़रमाया रव तुम्हारा और तुम्हारे अंगले बाप दादाओं का^(२१) ॥२६॥ बोला तुम्हारे ये रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं ज़रूर अकल नहीं रखते^(२२) ॥२७॥ मूसा ने फ़रमाया रव पूरब और पश्चिम का और जो कुछ उन के बीच है^(२३) अगर तुम्हें अकल हो^(२४) ॥२८॥ बोला अगर तुम ने मेरे सिवा किसी और को खुदा ठहराया तो मैं ज़रूर तुम्हें क्रैद कर दूंगा^(२५) ॥२९॥ फ़रमाया क्या अगरच मैं तेरे पास रोशन चीज़ लाऊँ^(२६) ॥३०॥ कहा तो लाओ अगर सच्चे हो^(२७) ॥३१॥ तो मूसा ने अपना असा डाल दिया जभी वह साफ़ खुला अजगर हो गया^(२८) ॥३२॥ और अपना हाथ^(२९) निकाला तो जभी वह देखने वालों की निगाह में जगमगाने लगा^(३०) ॥३३॥

तीसरा सूक

बोला अपने गिर्द के सरदारों से कि बेशक ये जानकार जादूगर हैं^(३४) चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें अपने जादू के जोर से, तब तुम्हारी क्या सलाह है^(३५) ॥३५॥ वो बोले इन्हें और इनके भाई को ठहराए रहो और शहरों में जमा करने वाले भेजो^(३६) ॥३६॥ कि वो तेरे पास ले आएँ हर बड़े जानकार जादूगर को^(३७) ॥३७॥ तो जमा किये गए जादूगर एक मुकर्रर दिन के बादे पर^(३८) ॥३८॥ और लोगों से कहा गया क्या तुम जमा हो गए^(३९) ॥३९॥ शायद हम उन जादूगरों ही की पैरवी करें अगर ये मालिव आएँ^(४०) ॥४०॥ फिर जब

وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ۖ قَالَ لَنْ
حَوْلَهُ إِلَّا سَعْمُونَ ۖ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ
الْأَوَّلِينَ ۖ قَالَ إِنْ رَسُولُكُمْ إِلَيْكُمْ
لَسَجُونٌ ۖ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا
إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۖ قَالَ لَنْ اتَّخَذَتِ إِلَٰهًا غَيْرِي
لَجَعَلْتُكَ مِنَ السَّاجِدِينَ ۖ قَالَ أَوْ لَوْ جَعَلْتُكَ يَتِيًّا
مُيَبِّينٌ ۖ قَالَ فَاتِّبِعْ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۖ
قَالَ لَنْ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثَعْبَانٌ مُّبِينٌ ۖ وَنَزَعُ يَدَهُ
فَإِذَا هِيَ بِيضَةٌ لِلنَّظِيرِينَ ۖ قَالَ لَسَلَا حَوْلَهُ إِنْ
هَذَا السَّحَرُ عَلَيْهِمْ ۖ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ
بِسِحْرِهِ ۖ فَإِذَا تَأْمُرُونَ ۖ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَبْعَثْ
فِي الْمَلَائِكَةِ حِشْرِينَ ۖ يَأْتُواكَ بِكُلِّ سَحَابٍ عَلَيْهِمْ
فَجِئِمَ السَّحَرَةُ لِبَيِّقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۖ وَقِيلَ

مَرَّةً

में “नूक़िन” यक़ीन वाला नहीं कहा जाता.

(२०) उस वक़्त उसके चारों तरफ़ उसकी क़ौम के प्रतिष्ठित लोगों में से पाँच सौ व्यक्ति ज़ेबों से सजे, सांन की कुर्सीयों पर बैठे थे. उन से फ़िरऔन का यह कहना क्या तुम गौर से नहीं सुनते, इस अर्थ में था कि वो आसमान और ज़मीन को क़दीम गमझते थे और उनके नष्ट किये जाने के इन्कारी थे. मतलब यह था कि जब ये चीज़ें क़दीम याती अपने आप बुजुद में आईं तो इन के लिये रव की क्या ज़रूरत. अब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उन चीज़ों से इस्तदलाल पेश करना चाहा जिनकी पैदाइश और जिनकी फ़ना देखने में आचुकी है.

(२१) याती अगर तुम दूसरी चीज़ों से इस्तदलाल नहीं कर सकते तो खुद तुम्हारे नूफ़स में इस्तदलाल पेश किया जाता है. अपने आपको जानते हो, पैदा हुए हो, अपने बाप दादा को जानते हो कि वो नष्ट हो गए: तो अपनी पैदाइश से और उनके नष्ट हो जाने से पैदा करने और मिटा देने वाले के अस्तित्व का सुबूत मिलता है.

(२२) फ़िरऔन ने यह इसलिये कहा कि वह अपने सिवा किसी मअबूद के अस्तित्व का मानने वाला न था और जो उसके मअबूद होते थे अक़ीदा न रखे उसका समझ से बंचित कहना था. हक़ीक़त में इस तरह की गुफ्तगू मजबूरी और लाचारी के बलून बादमी की ज़वान पर आती है. लेकिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हिदायत का फ़ज़्र पूरी तरह निभाया और उसकी इस सारां तिरर्थक बातचीत के बाबुजुद फिर अनिश्चित बयान की तरफ़ मुनबज्जह हुए.

(२३) क्योंकि पूर्व से सूर्य का उदय करना और पश्चिम में डूब जाना और साल की फ़सलों में एक निर्धारित हिसाब पर चलना और हवाओं और बारिशों वगैरह के प्रबन्ध, यह सब उसके बुजुद याती अस्तित्व और क्षमता याती कुदमत के प्रमाण हैं.

(२४) अब फ़िरऔन आश्चर्य चकित हो गया और अल्ताह की कुदमत के चिह्नों के इन्कार की राह बाक़ी न रही और कोई जवाब उससे न बन पड़ा.

(२५) फ़िरऔन की क्रैद क़त्ल से बदतर थी. उसका जेल स़ातातंग, अंधेरा, गहरा गढ़ था. उसमें अक़लना डाल देता था, न वहाँ कोई आजाज़ सुनाई देती थी, न कुछ नज़र आता था.

(२६) जो मेरी रिसालत का प्रणाम हो. मुराद इससे चमत्कार है. इसपर फ़िरऔन ने.

(२७) लाटी अजगर बन कर आसमान की तरफ़ एक मील के दरावर उड़ी फिर उतर कर फ़िरऔन की तरफ़ आई और कहने लगी,

जादूगर आए फिरऔन से बोले क्या हमें कुछ मज़दूरी मिलेगी अगर हम गालिव आए (४१) बोला हाँ और उस वक़्त तुम मेरे मुकर्रव (नज़दीकी) हो जाओगे (४२) मूसा ने उनसे फ़रमाया डालो जो तुम्हें डालना है (४३) तो उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाटियाँ डालीं और बोले फिरऔन की इज़्जत की क़सम वेशक़ हमारी ही जीत है (४४) तो मूसा ने अपना असा डाला ज़भी वह उनकी बनावटों को निगलने लगा (४५) अब सज़्दे में गिरे (४६) जादूगर बोले हम ईमान लाए उसपर जो सारे जगत का रब है (४७) जो मूसा और हासून का रब है (४८) फिरऔन बोला क्या तुम उसपर ईमान लाए पहले इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ वेशक़ वह तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया, (४९) तो अब जानना चाहते हो (५०) मुझे क़सम है वेशक़ मैं तुम्हारे हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटूंगा और तुम सब को सूली दूंगा (५१) वो बोले कुछ नुक़सान नहीं (५२) हम अपने रब की तरफ़ पलटने वाले हैं (५३) हमें तमअ (लालच)

لِّلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَمِعُونَ ۖ لَكُنَّا تُبَيْعُ السَّحَرَةِ
إِنْ كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۖ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا
لِفِرْعَوْنَ أَيُّنَا لَاجِرٌ إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ۖ
قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذَا لَمِنَ الْمَقْرَبِينَ ۖ قَالَ لَهُمْ مُوسَى
أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلقُونَ ۖ فَلَمَّا لَوَّى جِبَا لَهُمْ
وَعَصَبُهُمْ قَالُوا بَعِزَّةٌ فَفِرْعَوْنُ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ۖ فَاَلْقَى
مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثَلْجٌ مُّطْفَأٌ ۖ قَالُوا
السَّحَرَةُ سِحْرٌ بَيْنَ ۖ قَالُوا أَمَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ
رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ۖ قَالَ أَمْنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ
أَذِّنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَيْدٌ يُّرِيدُ الَّذِي عَلَيْكُمْ السَّحَرَةُ
فَلَسَوْفَ نَعْلَمُونَ ۖ لَا تَقْطَعْنَ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ
خِلَافِ وَلَا وَصَّيْنَكُمْ أَجْمَعِينَ ۖ قَالُوا لَا صَیْرَ
إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۖ إِنَّا نَنْظُرُ أَنْ يُغْفَرَ لَنَا

مَنْزِل

ऐ मूसा हुक़्म दीजिये. फिरऔन ने घबराकर कहा उसकी क़सम जिसने तुम्हें रसूल बनाया, इसे पकड़ो. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे हाथ में लिया तो पहले की तरह लाटी हो गई. फिरऔन कहने लगा, इसके सिवा और भी कोई चमत्कार है. आपने फ़रमाया हाँ. और उसको चमकती हथैली दिखाई.

(२८) गिरेवान में डालकर.

(२९) उमस सूरज की गी किरन ज़ाहिर हुई.

सूरए शुअरा - तीसरा रूक़

(१) क्योंकि उस ज़माने में जादू का बहुत रिवाज़ था इसलिये फिरऔन ने ख़याल किया यह बात चल जाएगी और उसकी क़ौम के लोग इस थोख़े में आकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम में नफ़रत करने लगेंगे और उनकी बात कुबूल न करेंगे.

(२) जो जादू के इल्म में उनके कहने के मुताबिक़ मूसा अलैहिस्सलाम से बढ़ कर हो और वो लोग अपने जादू से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कारों का मुकाबला करें ताकि हज़रत मूसा के लिये हुज़्जत बाक़ी न रहे और फिरऔन के लोगों को यह कहने का मौक़ा मिल जाए कि यह काम जादू से हो जाते हैं लिहाज़ा नबुव्वत की दलील नहीं.

(३) वह दिन फिरऔन की क़ौम की ईद का था और इस मुकाबले के लिये चाश्त का समय निर्धारित किया गया था.

(४) ताकि देखो कि दोनों पक्ष क्या करते हैं और उनमें कौन जीतता है.

(५) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर. इससे उनका तात्पर्य जादूगरों का अनुकरण करना न था बल्कि सरज़ यह थी कि इस बहाने लोगों को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के अनुकरण से रोकें.

(६) तुम्हें दरबारी बनाया जाएगा, तुम्हें विशेष उपाधियाँ दी जाएंगी, सब से पहले दाख़िल होने की इजाज़त दी जाएगी, सबसं बाद नफ़ दरबार में रहोगे. इसके बाद जादूगरों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि क्या हज़रत अपनी लाटी पहले डालेंगे या हमें इजाज़त है कि हम अपना जादूई सामान डालें.

(७) ताकि तुम उसका अंजाम देख लो.

(८) उन्हें अपनी जीत का इम्तीनान था क्योंकि जादू के कामों में जो इन्तिहा के काम थे ये उनको काम में लाए थे और पूरा यकीन रखते थे कि अब कोई जादू इसका मुकाबला नहीं कर सकता.

(९) जो उन्होंने जादू के ज़रिये बनाई थी यात्री उनकी रस्सियाँ और लाटियाँ जो जादू से अजगर बनकर दीड़ते नज़र आ रहे थे. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लाटी अजगर बनकर उन सब को निगल गई फिर उसको हज़रत मूसा ने अपने मुबारक हाथ में लिया

हैं कि हमारा रब हमारी खताएं बख्श दे इसपर कि हम सबसे पहले ईमान लाए^(१०) (५१)

चौथा रूकू

और हमने मूसा को वही भेजी कि रातों रात मेरे बन्दों को^(१) ले निकल वेशक तुम्हारा पीछा होना है^(२) (५२) अब फिरऔन ने शहरों में जमा करने वाले भेजे^(३) (५३) कि ये लोग एक थोड़ी जमाअत हैं^(४) (५४) और वेशक वो हम सब का दिल जलाते हैं^(५) (५५) और वेशक हम सब चौकन्ने हैं^(६) (५६) तो हमने उन्हें^(७) बाहर निकाला बागों और चश्मों^(८) (५७) और खजानों और उमदा मकानों से^(९) (५८) हमने ऐसा ही किया और उनका चारिस कर दिया बनी इस्राईल को^(१०) (५९) तो फिरऔनियों ने उनका पीछा किया दिन निकले^(११) (६०) फिर जब आमना सामना हुआ दोनों गिरोहों का^(१२) मूसा वालों ने कहा हमको उन्होंने आ लिया^(१३) (६१) मूसा ने फरमाया यूं नहीं, ^(१४) वेशक मेरा रब मेरे साथ है वह मुझे अव राह देता है^(१५) (६२) तो हमने मूसा को वही (देववाणी) फरमाई कि दरिया पर अपना असा मार^(१६) तो जभी दरिया फट गया^(१७) तो हर हिस्सा हो गया जैसे बड़ा पहाड़^(१८) (६३) और वहाँ करीब लाए हम दूसरों को^(१९) (६४) और हमने बचा लिया मूसा और उसके सब

رَبَّنَا خَطِيئَتَا أَنْ كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي ۖ إِنَّكَ مُتَّبِعُونَ ۖ فَارْسَلْ فِرْعَوْنَ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۖ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَشُرُومَةٌ ۖ قَلِيلُونَ ۖ وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ ۖ وَ إِنَّا لَجَبِيئٌ حَذِرُونَ ۖ فَأَخْرَجْنَهُمْ مِنْ جَنَّتِ وَ عَيْوُنَ ۖ وَكُنُوزَ وَمَقَامِرَ كَرِيمٍ ۖ كَذَٰلِكَ ۖ وَأَوْثَرْنَا بِهَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ فَاتَّبَعُوهُمْ مُشْرِقِينَ ۖ فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَمْعُ قَالَ أَحَبُّ مُوسَىٰ إِنَّا لَمَذْكُورُونَ ۖ قَالَ كَلَّا ۖ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۖ فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ۖ وَأَزَلْنَا ثَمَّ الْآخِرِينَ ۖ وَ أَجَبْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ۖ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخِرِينَ ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ

مَنْزِلٌ

तो वह पहले की तरह हो गई, जब जादूगरों ने यह देखा तो उन्हें शकीन हो गया कि यह जादूगर नहीं है.

(१०) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तुम्हारे उस्ताद हैं इसीलिये वह तुम से बढ़ गए.

(११) कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए.

(१२) इससे उद्देश यह था कि आम लोग डर जाएं और जादूगरों को देखकर लोग हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान न ले आए.

(१३) चाहे दुनिया में कुछ भी पेश आए क्योंकि.

(१४) ईमान के साथ और हमें अल्लाह तआला से रहमत की उम्मीद है.

(१५) फिरऔन की जनता में से या उस भीड़ में से, उस वाक्य के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कई साल वहाँ क़ायम फ़रमाया और उन लोगों को हक़ की दावत देते रहे लेकिन उनकी सरकशी बढ़ती गई.

सूरए शुअरा - चौथा रूकू

(१) यानी बनी इस्राईल का मिस्त्र से.

(२) फिरऔन और उसके लश्कर पीछ करंगे, और तुम्हारे पीछे पीछे दरिया में दाख़िल होंगे, हम तुम्हें लिज़ात देंगे और उन्हें डूबा देंगे.

(३) लश्करों को जमा करने के लिये, जब लश्कर जमा होगए तो उनकी कसरत के मुक़ाबिल बनी इस्राईल की संख्या थोड़ी मालूम होने लगी, चुनान्ने फिरऔन ने बनी इस्राईल की निस्वत कहा.

(४) हमारी मुश्रालिफ़्त करके और हमारी इजाज़त के बिना हमारी सरज़मीन से निकल कर.

(५) हथियार बाँधे तैयार हैं.

(६) यानी फिरऔनियों को.

(७) फिरऔन और उसके क़ौम के मर्क़ यानी डूबने के बाद.

(८) और उनमें से हर एक ने दूसरे को देखा.

(९) अब वो हम पर क़ाबू पा लेंगे, न हम उनके मुक़ाबले की ताक़त रखते हैं, न भागने की जगह है क्योंकि आगे दरिया है.

(१०) अल्लाह के वादे पर पूरा पूरा भरोसा है.

(११) चुनान्ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दरिया पर लाठी मारी.

(१२) और उसके बारह हिस्से वमूदार हुए.

साथ वालों को^(१५) (६५) फिर दूसरों को डूबो दिया^(१६) (६६) वेशक इसमें जरूर निशानी है, ^(१७) और उनमें अक्सर मुसलमान न थे^(१८) (६७) और वेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला^(१९) मेहरबान है^(२०) (६८)

पाँचवां सूक़

और उनपर पढ़ो ख़बर इब्राहीम की^(१) (६९) जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम क्या पूजते हो^(२) (७०) बोले हम वुतों को पूजते हैं फिर उनके सामने आसन मारे रहते हैं^(३) (७१) फ़रमाया क्या वो तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारो^(४) (७२) या तुम्हारा कुछ भला बुरा करते हैं^(५) (७३) बोले वल्कि हमने अपने बाप दादा को ऐसा ही करते पाया^(६) (७४) फ़रमाया ता क्या तुम देखते हो ये जिन्हें पूज रहे हो^(७) (७५) तुम और तुम्हारे अगले बाप दादा^(८) (७६) वेशक वो सब मेरे दुश्मन हैं^(९) मगर पर्वरदिगारे आलम^(१०) (७७) वो जिसने मुझे पैदा किया^(११) तो वह मुझे राह देगा^(१२) (७८) और वह जो मुझे खिलाता और पिलाता है^(१३) (७९) और जब मैं बीमार हूँ तो वही मुझे शिफ़ा देता है^(१४) (८०) और वह मुझे वफ़ान (मृत्यु) देगा फिर मुझे ज़िन्दा करेगा^(१५) (८१) और वह जिसको मुझे आस लगी है कि मेरी ख़ताएं क़यामत के दिन व़ख़ोगा^(१६) (८२) ऐ मेरे रब मुझे हुक्म अता कर^(१७) और मुझे उनसे मिला दे जो तेरे ख़ास कुर्ब (ममीपता) के अधिकारी हैं^(१८) (८३) और मेरी सच्ची नामवरी रख पिछलों में^(१९) (८४) और मुझे उनमें कर जो चैन के बाग़ों के चारिस हैं^(२०) (८५)

अष्टावक्र

५१७

وَقَالَ الَّذِينَ

مُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنْ رَبَّكَ لَهْوُ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۖ وَاتَّخَذَ عَلَيْهِمْ مَثَلًا إِبْرَاهِيمَ ۖ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۖ قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَّلُهَا عَنْكُمِينَ ۖ قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ۖ أَوْ يَنْفَعُوكُمْ أَوْ يُضُرُّونَ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُونَ ۖ قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۖ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ الْأَقْدَمُونَ ۖ فَإِنَّكُمْ عَادُوْنَ لِي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ۖ الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ۖ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ۖ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ۖ وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ۖ وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ۖ رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَالْحِفْظَ فِي الْأَصْلَاحِينَ ۖ وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ۖ وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ۖ

मिर्जा

(१३) और उनके बीच झुंझ रहे।

(१४) यानी फ़िरऔन और फ़िरऔनियां का, यहाँ तक कि वो बनी इस्राईल के रास्तों पर चल पड़े जो उनके लिये दरिया में अल्लाह की कुदरत से पैदा हुए थे।

(१५) दरिया से सलामत निकाल कर।

(१६) यानी फ़िरऔन और उसकी क़ौम का इस तरह कि जब बनी इस्राईल कुल के कुल दरिया से पार होगा और सारे फ़िरऔनी दरिया के अन्दर आगए ता दरिया अल्लाह के हुक्म से मिल गया और पढ़ले की तरह हो गया और फ़िरऔन अपनी क़ौम सहित डूब गया।

(१७) अल्लाह की कुदरत पर और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का चमत्कार।

(१८) यानी मिस्र निवासियों में सिर्फ़ फ़िरऔन की बीबी आसिया और हिज़क़ील, जिनको फ़िरऔन की मूमिन औलाद कहते हैं, वो अपना ईमान छुपाए रहते थे और फ़िरऔन के चचाज़ाद थे और मरयम जिसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र का निशान बताया था, जब कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उनके तावूत को दरिया से निकाला।

(१९) कि उमने फ़ाफ़िरी को गर्क करके बदला लिया।

(२०) ईमान वालों पर जिन्हें गर्क होने से बचाया।

सूरए शुअरा - पाँचवां सूक़

(१) यानी मुश्रिकों पर।

(२) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जानते थे कि वह लोग बुत परस्त हैं इसके बावजूद आपका सवाल फ़रमाता इसलिये था ताकि उन्हें दिख़ा दें कि जिन चीज़ों को वो लोग पूजते हैं वो किसी तरह उसके मुस्तहिक़ नहीं।

(३) जय यह कुछ नहीं तो उन्हें तुमने मअबूद कैसे ठहराया।

(४) कि ये न इल्म रखते हैं न कुदरत, न कुछ सुनते हैं न कोई नफ़ या नुक़सान पहंचा सकते हैं।

और मेरे बाप को बाइस दे^(१०) वेशक वह गुमराह है^(८६)
और मुझे रूखा न करना जिस दिन सब उठाए जाएंगे^(१८)^(८७)
जिस दिन न माल काम आएगा न वेटे^(८८) मगर वह जो
अल्लाह के हुजूर हाज़िर हुआ सलामत दिल लेकर^(११)^(८९)
और करीब लाई जाएगी जन्नत परहेज़गारों के लिये^(१०)^(९०)
और ज़ाहिर की जाएगी दोज़ख गुमराहों के लिये^(९१)
और उन से कहा जाएगा^(११) कहां हैं वो जिन को तुम पूजते
थे^(९२) अल्लाह के सिवा, क्या वो तुम्हारी मदद करेंगे^(१२)
या बदला लेंगे^(९३) तो औंधा दिये गए जहन्नम में वह और
सब गुमराह^(१३)^(९४) और इक्लीस के लश्कर सारे^(१२)^(९५)
कहेंगे और वो उसमें आपस में झगड़ते होंगे^(९६) खुदा की
क्रसम वेशक हम खुली गुमराही में थे^(९७) जब कि तुम्हें
सारे जगत के रब के बराबर ठहराते थे^(९८) और हमें न
बहकाया मगर मुजरिमों ने^(१४)^(९९) तो अब हमारा कोई
सिफारिशि नहीं^(१५)^(१००) और न कोई गमाख्वार
दोस्त^(१०)^(१०१) तो किसी तरह हमें फिर जाना होता^(१०)
कि हम मुसलमान हो जाते^(१०२) वेशक इसमें निशानी
है, और उनमें बहुत ईमान वाले न थे^(१०३) और वेशक
तुम्हारा रब ही इज़्जत वाला मेहरबान है^(१०४)

छटा रूकू

नूह की क़ौम ने पैगम्बरों को झुटलाया^(१)^(१०५) जबकि

وَاعْفُ لِي إِنَّهُ كَانَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ
يُبْعَثُوْنَ ۝ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُوْنَ ۝ اِلَّا
مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ
لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَبُرِزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ۝ وَقِيلَ لَهُمْ
اَيُّكُمْ كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ هَلْ يَنْصُرُكُمْ
اَوْ يَنْصُرُوْنَ ۝ فَكَلَبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْعَاوُنُ ۝ وَجُنُوْدُ
اِبْلِيسَ اٰجْمَعُوْنَ ۝ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ۝
تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِذْ نُسَوِّیْكُمْ بَرٍ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَمَا اَصْلُنَا اِلَّا الْمَجْرُمُوْنَ ۝ فَمَا لَنَا
مِنْ شٰفِعِيْنَ ۝ وَلَا صٰدِقٍ حَمِيْمٍ ۝ فَلَوْ اَنَّ لَنَا
كُرَّةً فَتَكُوْنُ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰیةٌ
وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ۝ كَذٰبَتْ قَوْمٌ نُّوحٍ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ

مَنْزِل

- (५) मैं उनका पूजा आना गवारा नहीं कर सकता.
- (६) मेरा रब है, मेरे काम बनाने वाला है. मैं उसकी इबादत करता हूँ, वही इबादत के लायक है उसके गुण ये हैं.
- (७) कुछ नहीं से सब कुछ फ़रमाया और अपनी इताअन के लिये बचाया.
- (८) दोस्ती के आदाब की, त्रस्य कि पहले दिवायत फ़रमा चुका है दीव और दुनिया की नेक बातों की.
- (९) मैं मेरा राज़ी देने वाला है.
- (१०) मेरा बीमारियों को दूर करता है. इब्ने अता ने कहा, मानी ये हैं कि जब मैं ख़लक की दीव से बीमार होता हूँ तो सच्चाई के अवलाकन से मुझे शिफा याती अच्छाई अता फ़रमाता है.
- (११) मौत और ज़िन्दगी उसकी कुदरत के अन्तर्गत है.
- (१२) नबी मअसूम हैं. गुनाह उनसे होते ही नहीं. उनका इतिफ़ाफ़र याती माफ़ी माँगना अपने रब के समक्ष विनम्रता है. और उम्मत के लिये माफ़ी माँगने की तालीम है. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अल्लाह के इन गुणों को बयान करना अपनी क़ौम पर हज़रत कायम करना है कि मअबूद वही हो सकता है जिसके ये गुण हैं.
- (१३) हुकम से या इल्म मुराद है या हिकमत या नबुव्वत.
- (१४) याती नबी अलैहिमुस्सलाम. और आपकी यह दुआ कुबूल हुई. चुनान्ने अल्लाह तआला फ़रमाता है "व इन्नह फ़िल आग्रितं लमिनस सॉलिहीन".
- (१५) याती उन उम्मतों में जो मेरे बाद आए. चुनान्ने अल्लाह तआला ने उनको यह अता फ़रमाया कि तमाम दीनों वाले उनसे महबूत रखते हैं और उनकी तारीफ़ करते हैं.
- (१६) जिन्हें तू जन्नत अता फ़रमाएगा.
- (१७) तीव्र और ईमान अता फ़रमाकर, और यह दुआ आपने इस लिये फ़रमाई कि जुदाई के वक्त आपके बालिद ने आपसे ईमान लाने का वादा किया था. जब ज़ाहिर हो गया कि वह ख़ुदा का दुश्मन है, उसका वादा झूट था, तो आप उससे बेज़ार हो गए, जैसा कि सूरए बराअत में है "माकानस-तिग़फ़ारो इब्राहीमा लिअवीहे इल्ला अन मौइदतिन वअदहा इय्याहां फ़लम्मा तवय्यना लह अन्नह अदुबुन लिल्लाहे तवररआ मिहो". याती और इब्राहीम का अपने बाप की यस्त्रिश चाहना वह तो न था मगर एक वादे के मयब जो उससे कर चुका था, फिर जब इब्राहीम को ख़ुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है, उससे तिनका तोड़ दिया, वेशक इब्राहीम ज़न्न

उनसे उनके हम क्रौम नूह ने कहा क्या तुम डरते नहीं^(१) (१०६) वेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का भेजा हुआ अमीन हूँ^(२) (१०७) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो^(३) (१०८) और मैं उस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता, मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जगत का रब है^(४) (१०९) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो^(५) (११०) बोले क्या हम तुम पर ईमान ले आएँ और तुम्हारे साथ कमीने हुए हैं^(६) (१११) फ़रमाया मुझे क्या ख़बर उनके काम क्या है^(७) (११२) उनका हिसाब तो मेरे रब ही पर है^(८) अगर तुम्हें हिस (ज्ञान) हो^(९) (११३) और मैं मुसलमानों को दूर करने वाला नहीं^(१०) (११४) मैं तो नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला^(११) (११५) बोले ऐ नूह अगर तुम बाज़ न आए^(१२) तो ज़रूर संगसार (पथराव) किये जाओगे^(१३) (११६) अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी क्रौम ने मुझे झुटलाया^(१४) (११७) तो मुझ में और उनमें पूरा फ़ैसला करदे और मुझे मेरे साथ वाले मुसलमानों को निजात दे^(१५) (११८) तो हमने बचा लिया उसे और उसके साथ वालों को भरी हुई किश्ती में^(१६) (११९) फिर उसके बाद^(१७) हमने वाक़ियों को डुवो दिया^(१८) (१२०) वेशक इसमें ज़रूर निशानी है, और उनमें अकसर मुसलमान न थे^(१९) (१२१) और वेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरवान है^(२०) (१२२)

لَهُمْ أَخْرُهُمْ نُوحٌ أَلَّا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ قَالُوا أَلَنُؤْمِنُ بِكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَزْدُلُونَ ۖ قَالَ وَمَا عَلَيَّ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ إِنْ حَسِبْتُمْ أَنِّي لَا عَلَىٰ رِئْیَ لَوْ تَشْعُرُونَ ۖ وَمَا أَتَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۖ قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَنُوحٌ لَنُكَوِّنَنَّكَ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ۖ قَالَ رَبِّ إِنِّي قَوْمِي كَذَّبُونِ ۖ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ فَانْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلِ الْمَشْحُونِ ۖ ثُمَّ اعْرِفْنَا بَعْدَ الْبَاقِينَ ۖ إِنِّي فِي ذَلِكَ لِأَيُّهُ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ كَذَّبَتْ

مَثَل

बहुत आहें फ़ने वाला मुतहम्मिल है. (सूरए तौबह, आयत ११४).

(१८) यानी क़्यामत के दिन.

(१९) जो शिर्क, कुफ़्र और दांढरी प्रज्ञति से पाक हो उसको उसका माल भी नफ़ा देगा जो राहे ख़ूदा में ख़र्च किया हो और आलाद भी जो सालाह हो, जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि जब आदमी मरता है, उसके अमल मुतक़्ते हो जाते हैं सिवाय तीन के. एक सदक़ए ज़ारिया, दूसरा वह माल जिससे लोग नफ़ा उठाएँ, तीसरी नेक आलाद जो उसके लिये दुआ करे.

(२०) कि उसको देखेंगे.

(२१) मलामत और फटकार के तौर पर, उनके कुफ़्र व शिर्क पर.

(२२) अल्लाह के अज़ाय से बचाकर.

(२३) यानी बुत और उनके पुजारी सब आँधे करके जहन्नम में डाल दिये जाएंगे.

(२४) यानी उसका अनुकरण करने वाले जिन्न हों या इनात. कुछ मुफ़ससिगों ने कहा कि इन्नीस के लश्क़ों से उसकी सन्तान मुग़द है.

(२५) जिन्नोने बुत परगनी की दावत दी या वो पहले लोग जिनका हमने अनुकरण किया या इन्नीस और उसकी सन्तान ने.

(२६) जैस कि ईमान वालों के लिये अम्बिया और औलिया और फ़रिशते और मूमिनीन शफ़ाअत करने वाले हैं.

(२७) जो काम आए, यह बात काफ़िर उस वक़्त कहेंगे जब देखेंगे कि अम्बिया और औलिया और फ़रिशते और वेक बन्दे इमानदारों की शफ़ाअत कर रहे हैं और उनकी दोस्ती काम आ रही है. हदीस शरीफ़ में है कि जन्नती कहगा, में उस दोमन का क्या हान है और वह दांस्त गुनाहों की वजह से जहन्नम में होगा. अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि इसके दोस्त का निकाला और जन्नत में दाख़िल करा तो जो लोग जहन्नम में दाख़ी रह जाएंगे वो ये कहेंगे कि हमारा कोई सिफ़ारशी नहीं है और न कोई दुख बाँटने वाला दोस्त. हसन रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया, ईमानदार दोस्त बढ़ाओ क्योंकि वो क़्यामत के दिन शफ़ाअत करेंगे.

(२८) दुनिया में.

सूरए शुअरा - छटा रूकू

(१) यानी नूह अलेहिससलाम का झुटलाता सारे पैग़म्बरों को झुटलाता है क्योंकि दीन सारे रसूलों का एक है और हर एक नबी लोगों का नमाम नवियों पर ईमान लाने की दावत देते हैं.

(२) अल्लाह तआला से, कि कुफ़्र और गुनाह का त्याग करो.

सातवाँ सूकू

आद ने रसूलों को झुटलाया^(१) (१२३) जबकि उनसे उनके हक़ क़ौम हूद ने फ़रमाया कि क्या तुम डरते नहीं^(२) (१२४) वेशक़ मैं तुम्हारे लिये अमानत दार रसूल हूँ^(३) (१२५) तो अल्लाह से डरो^(४) और मेरा हुक्म मानो^(५) (१२६) और मैं तुम से इस पर कुछ उजरत नहीं मांगता, मेरा अज़्र तो उसी पर है जो सारे जगत का रब^(६) (१२७) कया हर बलन्दी पर एक निशान बनाते हो राहगीरों से हंसने को^(७) (१२८) और मज़बूत महल चुनते हो इस उम्मीद पर कि तुम हमेशा रहांगे^(८) (१२९) और जब किसी पर गिरफ्त करते हो तो बड़ी वेददी से गिरफ्त करते हो^(९) (१३०) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो^(१०) (१३१) और उससे डरो जिसने तुम्हारी मदद की उन चीज़ों से कि तुम्हें मालूम है^(११) (१३२) तुम्हारी मदद की चौपायों और वेदों^(१२) (१३३) और बाग़ों और चश्मों (झरनों) से^(१३) (१३४) वेशक़ मुझे तुम पर डर है एक बड़े दिन के अज़ाब का^(१४) (१३५) वोले हमें बराबर है चाहें तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में न हो^(१५) (१३६) यह तो नहीं मगर वही अगलों की रीति^(१६) (१३७) और हमें अज़ाब होना नहीं^(१७) (१३८) तो उन्होंने उसे झुटलाया^(१८) तो हमने उन्हें हलाक़ किया^(१९) वेशक़ इसमें ज़रूर निशानी है और उनमें बहुत मुसलमान न थे^(२०) (१३९) और वेशक़ तुम्हारा रब ही इज़ज़त वाला मेहरबान है^(२१) (१४०)

عَادَ الْمَرَّسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجِرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ۖ وَتَتَّخِذُونَ مَصَارِعَ لَكُمْ تُخْلِدُونَ ۖ وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ ۖ وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ ۚ أَمَدَّكُمْ بِالْعِلْمِ وَبِالنِّينِ ۖ وَجَعَلَ وَعْيُونَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۚ قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَضْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَعَّظِينَ ۚ إِنْ هَذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ۖ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ۚ فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ كَذَّبَتْ

مَثَلٌ

(३) उसकी वही और रिसालत की तबलीग़ पर, और आपकी अमानत आपकी क़ौम मानती थी जैसा कि सैयदे आलन मुल्लल्लाहा अलैहे वसल्लम के अमीन और ईमानदार हांन पर सारा अरब सहमत था.

(४) जा मैं तौहीद और ईमान और अल्लाह की फ़रमाँवरदारी के बारे में देता हूँ.

(५) यह बात उन्होंने घमण्ड से कही. मरीवों के पास बैला उन्हें ग़वाह न था. इसमें वो अपना अपमान समझते थे. इसलिये ईमान जैसी नेअमत से मेहरम रहे. कमीने से उनकी मुग़द मरीव और ब्यवसायी लोग थे और उनको ज़लील, तुच्छ और कमीना कहना, यह क़ाज़िना का घमण्ड था वरना वास्तव में व्यवसाय और पेशा हैसियत दीन से आदमी को ज़लील नहीं करता. ग़िता अस्ल में दीनी अमीरी है और नसब तज़वा का नसब. मूमिन को ज़लील कहना जाइज़ नहीं, चाहे वह कितना ही मोहताज और ग़ादर हो या वह किसी नसब का हो. (मदारिक)

(६) वे क्या पेशा करते हैं, मुझे इससे क्या मतलब. मैं उन्हें अल्लाह की तरफ़ दावत देता हूँ.

(७) वही उन्हें जज़ा देगा.

(८) तो न तुम उन्हें ऐव लगाओ, न पेशों के कारण उनसे मुंह फेरो. फिर क़ौम ने कहा कि आप कमीनों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिये ताकि हम आप के पास आएँ और आपकी बात मानें. इसके जवाब में फ़रमाया.

(९) यह मेरी शान नहीं कि मैं तुम्हारी संसी इच्छाओं को पूरा करूँ और तुम्हारे ईमान के लालच में मुसलमानों को अपने पास से निकाल दूँ.

(१०) खुले प्रमाण के साथ, जिस से सन्वाई और वातिल में फ़र्क़ हो जाए तो जो इमान लाए वही मेरे करीब है और जो ईमान न लाए, वही दूर.

(११) दावत और डराने से.

(१२) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बारगाह में.

(१३) तेरी वही और रिसालत में. मुग़द आपकी यह थी कि मैं जो उन के हक़ में बददुआ करता हूँ उसका कारण यह नहीं है कि उन्होंने मुझे संगसार करने की थमकी दी. न यह कि उन्होंने मेरे मानने वालों को ज़लील समझा. बल्कि मेरी दुआ का कारण यह है कि उन्होंने मेरे क़लाम को झुटलाया और तेरी रिसालत को कुबूल करने से इन्कार किया.

(१४) उन लोगों की शामते आमाँल से.

(१५) जो आदमियों, पक्षियों और जानवरों से भरी हुई थी.

आठवाँ रूकू

समूह ने रसूलों को झुटलाया (१४१) जब कि उनसे उनके हमक्रौम सालेह ने फ़रमाया क्या डरते नहीं (१४२) वेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानतदार रसूल हूँ (१४३) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो (१४४) और मैं तुमसे कुछ इसपर उजरत नहीं मांगता मेरा अन्न तो उसी पर है जो सारे जगत का रब है (१४५) क्या तुम यहाँ की (१) नेअमतों में चैन से छोड़ दिये जाओगे (१४६) वागों और झरनों (१४७) और खेतों और खजूरों में जिनका शगूफ़ा (कली) नर्म नाजुक (१४८) और पहाड़ों में से घर ताराशते हो उस्तादी से (१४९) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो (१५०) और हद से बढ़ने वालों के कहने पर न चलो (१५१) वो जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं (१५२) और बनाव नहीं करते (१५३) वोले तुम पर तो जादू हुआ है (१५४) तुम तो हमीं जैसे आदमी हो, तो कोई निशानी लाओ (१५५) अगर सच्चे हो (१५६) फ़रमाया ये ऊंटनी है एक दिन इस के पीने की वारी (१५७) और एक निश्चित दिन तुम्हारी वारी (१५८) और इसे वुराई के साथ न छुओ (१५९) कि तुम्हें बड़े दिन का अज़ाब आ लेगा (१६०) इस पर उन्होंने उसकी कुँचे काट दीं (१६१) फिर सुबह को पछताते रह गए (१६२) तो उन्हें अज़ाब ने आ लिया, (१६३) वेशक

क़ुर्आन

५२

قَالَ الَّذِينَ

تَتَوَدُّ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ ضَلِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنْ كُنْتُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ ۚ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجَبْتُمْ إِلَّا عَلَى رِبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَنْتُمْ كُنْتُمْ فِي مَا هُمْنًا أَمِينِينَ ۚ فِي جَنَّتٍ وَعُيُونٍ ۚ وَزُرُوعٍ وَنَحْلٍ طَلْعُهَا هَضْبٌ ۚ وَتَجْتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَرِهُينَ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ ۚ وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ۚ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ۚ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۚ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا ۚ فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۚ قَالَ هَذِهِ نَاقَةُ رَبِّهَا شَرِبَ وَلَكُمْ شَرِبَ يَوْمَ مَعْلُومٍ ۚ وَلَا تَمْسُوْهَا سَوْءَ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ فَعَقَرُوْهَا فَاصْبِرُوا لِمَا مِئِينَ ۚ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۚ

مَنْزِل

(१६) यानी हज़रत ब्रह्म अलैहिस्सलाम और उनके साथियों को निजात देने के बाद.

सूरए शुअरा - सातवाँ रूकू

- (१) आद एक कबीला है और अरल में यह एक शरश का नाम है जिसकी सन्तान से यह कबीला है.
- (२) और मेरी तकज़ीव न करो यानी भुड़ो न झुटलाओ.
- (३) कि उस पर चढ़कर गुज़रने वालों से उट्टा करो और यह उस क़ौम की आदत थी. उन्होंने रास्ते पर ऊंची बुनियादें बना ली थीं वहाँ बैठकर राहगीरों को परेशान करते और खेल करते.
- (४) और कभी न मरोगे.
- (५) तलवार से क़त्ल करके, कोड़े मारकर, बहुत बेरहमी से.
- (६) यानी वो नेअमतें जिन्हें तुम जानते हो, आगे उनका बयान फ़रमाया जाता है.
- (७) अगर तुम मेरी नाफ़रमानी करो. इसका जवाब उनकी तरफ से यह हुआ कि ...
- (८) हम किसी तरह तुम्हारी बात न मानेंगे और तुम्हारी दावत कुबूल न करेंगे.
- (९) यानी जिन चीज़ों का आपने ख़ौफ़ दिलाया. यह पहलों का दस्तूर है, वो भी ऐसी ही बातें कहा करते थे. इससे उनकी मुराद यह थी कि हम उन बातों का ऐतिवार नहीं करते, उन्हें झूट जानते हैं. या आयत के मानी ये हैं कि मौत और ज़िन्दगी और ईमारतें बनाना पहलों का तरीका है.
- (१०) दुनिया में न मरने के बाद उठना न आख़िरत में हिसाब.
- (११) यानी हूद अलैहिस्सलाम को.
- (१२) हया के अज़ाब से.

सूरए शुअरा - आठवाँ रूकू

- (१) यानी दुनिया की.
- (२) कि ये नेअमतें कभी ज़ायल न हों और कभी अज़ाब न आए, कभी मौत न आए. आगे उन नेअमतों का बयान है.

इसमें जरूर निशानी है, और उनमें बहुत मुसलमान न थे (१५८) और वेशक तुम्हारा रब ही इज्जत वाला मेहरबान है (१५९)

नवाँ सूकू

लूत की कौम ने रसूलों को झुटलाया (१६०) जब कि उनसे उनके हमकौम लूत ने फरमाया क्या तुम नहीं डरते (१६१) वेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानतदार रसूल हूँ (१६२) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो (१६३) और मैं इसपर तुमसे कुछ उजरत नहीं मांगता, मेरा अन्न तो उसी पर है जो सारे जगत का रब है (१६४) क्या मखलूक में मर्दों से बुरा काम करते हो (१६५) और छोड़ते हो वह जो तुम्हारे लिये तुम्हारे रब ने जोरूप बनाई वस्ति तुम लोग हद से बढ़ने वाले हो (१६६) वोले ऐ लूत अगर तुम बाज़ न आए (१) तो जरूर निकाल दिये जाओगे (१६७) फरमाया मैं तुम्हारे काम से वेज़ार हूँ (१६८) ऐ मेरे रब मुझे और मेरे घर वालों को इनके काम से बचा (१६९) तो हमने उसे और उसके सब घर वालों को निजात दक्षी (१७०) मगर एक बुढ़िया कि पीछे रह गई (१७१) फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया (१७२) और हमने उनपर एक बरसाव बरसाया (१) तो क्या ही बुरा बरसाव था डराए गयों का (१७३) वेशक इसमें जरूर निशानी है और उनमें बहुत मुसलमान न थे (१७४)

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ۚ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَتَأْتُونَ الذَّكَرَانَ مِنَ الْعُلَمِينَ ۚ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ۚ قَالُوا لَيْنَ لَمْ تَنْتَهِ يَلُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ۚ قَالَ إِنِّي لَعَلَيْكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ۚ رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ۚ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۚ إِلَّا نَجَّيْنَاهُ فِي الْغَيْرِينَ ۚ ثُمَّ دَمَرْنَا الْأَخْرِينَ ۚ وَامْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ النَّارِذِينَ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَإِنَّ

مَزَلَهُ

- (३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फरमाया कि "उस्तादी से" का मतलब घमण्ड है, मानी ये हुए कि कागिगरी पर घमण्ड करते, इतराते.
- (४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फरमाया कि हद से बढ़ने वालों से मुराद मुश्किल लोग हैं, कुछ मुफ़रिगों ने कहा - वो नो व्यक्ति हैं जिनोंने ऊँटनी को क़त्ल किया.
- (५) कुफ़्र और ज़ुल्म और गुनाहों के साथ.
- (६) ईमान लाकर और न्याय स्थापित करके और अल्लाह के फ़रमाँबरदार होकर, मानी ये हैं कि उनका फ़साद दोस है जिसमें किसी तरह की नेकी का शायदा भी नहीं और कुछ फ़साद करने वाले ऐसे भी होते हैं कि कुछ फ़साद भी करते हैं, कुछ नेकी भी उनमें होती है, मगर ये ऐसे नहीं हैं.
- (७) यानी बार बार बहुतायत से जादू हुआ है, जिसकी वजह से अक़ल ठिकाने पर नहीं रही. (मआज़ल्लाह)
- (८) अपनी सच्चाई की.
- (९) रिसालत के दावे में.
- (१०) इसमें उससे मज़ाहिमत मत करो, यह एक ऊँटनी थी जो उनके चमत्कार तलब करने पर उनकी म्वाहिश के अनुसार हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की दुआ से पत्थर से निकली थी, उसका सीना साठ गज़ का था, जब उसके पीने का दिन होना तो वह बहों का सारा पानी पी जाती और जब लोगों के पीने का दिन होता तो उस दिन न पीती. (मदारीफ़)
- (११) न उसको मारो और न उसकी कूँचें काटो.
- (१२) अज़ाब उतरने की वजह से उस दिन को बड़ा फ़रमाया गया ताकि मालूम हो कि वह अज़ाब इस क्रूर बड़ा और सख्त था कि जिस दिन उतरा उसको उसकी वजह से बड़ा फ़रमाया गया.
- (१३) कूँचें काटने वाले व्यक्ति का नाम क्रिदार था और दो लोग उसके कमरूत से राज़ी थे इसलिये कूँचें काटने की निखत उन २ की तरफ़ की गई.
- (१४) कूँचें काटने पर अज़ाब उतरने के डर से न कि गुनाहों पर तौबह करने हेतु शर्मिन्दा हुए हों, या यह बात कि अज़ाब के निशान देखकर शर्मिन्दा हुए, ऐसे वक़्त की शर्मिन्दगी लाभदायक नहीं.

और वेशक तुम्हारा रव ही इज्जत वाला मेहरवान है (१७५)

दसवाँ सूक

वन वालों ने रसूलों को झुटलाया (१७६) जब उनसे शूएब ने फ़रमाया क्या डरते नहीं (१७७) वेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानतदार रसूल हूँ (१७८) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो (१७९) और मैं इस पर तुमसे कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अन्न तो उसी पर है जो सारे जगत का रव है (१८०) नाप पूरा करो और घटाने वालों में न हो (१८१) और सीधी तराजू से तोलो (१८२) और लोगों की चीज़ें कम करके न दो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फ़िरो (१८३) और उससे डरो जिसने तुम को पैदा किया और अगली मखलूक को (१८४) बोले तुम पर जादू हुआ है (१८५) तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी (१८६) और वेशक हम तुम्हें झूठा समझते हैं (१८७) तो हमपर आसमान का कोई टुकड़ा गिरादो अगर तुम सच्चे हो (१८८) फ़रमाया मेरा रव ख़ुब जानता है जो तुम्हारे कौतुक है (१८९) तो उन्होंने उसे झुटलाया तो उन्हें शामियाने वाले दिन के अज्ञाव ने आ लिया, वेशक वह बड़े दिन का अज्ञाव था (१९०)

رَبِّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَ أَصْحَابُ لَيْكَةِ
الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝
إِنِّي كُنتُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ۝ أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝
وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۝ وَلَا تَبْخُسُوا النَّاسَ
أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ وَ
اتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبَالَ الْأَوَّلِينَ ۝ قَالُوا
إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَخَّرِينَ ۝ وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا
وَإِنْ نَظُنُّكَ لَمِنَ الْكَذِبِينَ ۝ فَاسْقُطْ عَلَيْنَا كِسْفًا
مِّنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّ
أَعْلَمُ بِمَا نَعْمَلُونَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَآخَذَهُمْ عَذَابُ
يَوْمِ الظِّلَّةِ ۝ إِنَّهُ كَانَ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ إِنَّ

مِثْلَهُ

(१५) जिसकी उन्हें ख़बर दी गई थी, तो हलाक हो गए.

सूरए शुअरा - नवाँ सूक

- (१) इसके ये मानी भी हो सकते हैं कि क्या मखलूक में ऐसी नीच कर्म के लिये तुम्हीं रह गए हो, जगत के और लोग भी तो हैं, उन्हें देखकर तुम्हें शर्माता चाहिये, ये मानी भी हो सकते हैं कि बहुत सी औरतें होते हुए भी इस बुरे काम को करना बहुत बड़ी दुर्गई है.
- (२) कि हलाल पवित्र को छोड़कर हाराम और बुरे में पड़ते हो.
- (३) नसीहत करने और इस काम को बुरा कहने से.
- (४) शहर से और तुम्हें यहाँ न रहने दिया जाएगा.
- (५) और मुझे उससे बड़ी दुश्मनी है. फिर आपने अल्लाह की बाग़ाह में दुआ की.
- (६) उसकी शामतें आमाँल में मेहफूज़ रख.
- (७) यानी आपकी बेटीयों को और उन सारे लोगों को जो आप पर ईमान लाए थे.
- (८) जो आपकी बीबी थी और वह अपनी ज़ौम के इस काम पर राज़ी थी और जो गुनाह पर राज़ी हो, वह गुनाहगार के हुक्म में होता है. इसीलिये वह बुद्धिया अज्ञाव में गिरफ़्तार हुई और उसने निजात न पाई.
- (९) पत्थरों का या गन्धक और आग का.

सूरए शुअरा - दसवाँ सूक

- (१) यह वन मदयन के करीब था इसमें बहुत से दुरग्न और झाड़ियाँ थीं. अल्लाह तआला ने हज़रत शूएब अलैहिस्सलाम का उनकी तरफ़ भेजा था जैसा कि मदयन वालों की तरफ़ भेजा था और ये लोग हज़रत शूएब अलैहिस्सलाम की ज़ौम के न थे.
- (२) उन सारे नवियों की दावत का यही विषय रहा क्योंकि वो सब हज़रत अल्लाह तआला के ख़ाफ़ और उसकी फ़र्मावरदारी और इबादत की यच्च दिल से अदायगी का हुक्म देते और रिसालत की तवाहीश पर कोई उजरत नहीं लेते थे लिहाज़ा सब ने यही फ़रमाया.
- (३) लोगों के अधिकार कम न करो नाप और तौल में.
- (४) रहज़नी और लूट मार करके और ख़ेतियाँ तबाह करके, यही उन लोगों की आदतें थीं. हज़रत शूएब अलैहिस्सलाम ने उन्हें उन से मना फ़रमाया.

वेशक इसमें जरूर निशानी है, और उनमें बहुत मुसलमान न थे (१९०) और वेशक तुम्हारा रव ही इज़्जत वाला मेहरबान है (१९१)

ग्यारहवाँ रूकू

और वेशक ये कुरआन सारे जगत के रव का उतारा हुआ है (१९२) इसे रूहुल अमीन (जिब्रील) लेकर उतरा (१९३) तुम्हारे दिल पर (१) कि तुम डर सुनाओ (१९४) रौशन अरबी ज़बान में (१९५) और वेशक इसका चर्चा अगली किताबों में है (१९६) और क्या यह उनके लिये निशानी न थी (१) कि उस नबी को जानते हैं वनी इस्राईल के आलिम (१९७) और अगर हम इसे किसी गैर अरबी व्यक्ति पर उतारते (१९८) कि वह उन्हें पढ़कर सुनाता जब भी उसपर ईमान न लाते (१९९) हमने यूँही झुटलाना पैरा दिया है मुजरिमों के दिलों में (२००) वो इसपर ईमान न लाएंगे यहाँ तक कि देखें दर्दनाक अज़ाब (२०१) तो वह अचानक उनपर आ जाएगा और उन्हें खबर न होगी (२०२) तो कहेंगे क्या हमें कुछ मुहलत मिलेगी (२०३) तो क्या हमारे अज़ाब की जल्दी करते हैं (२०४) भला देखो तो अगर कुछ बरस हम उन्हें बरतने दें (२०५) फिर आए उन पर जिसका वो वादा दिये जाते हैं (२०६) तो क्या काम आएगा उनके

الْحَمْدُ لِلّٰهِ

५२३

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

فِيْ ذٰلِكَ لَايَةُ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيْمُ ۝ وَإِنَّهُ لَشَدِيدُ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ نَزَلَ بِهَ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ۝ عَلٰى
قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝ بِلِسَانٍ عَرَبِيّ
مُّبِيْنٍ ۝ وَإِنَّهُ لَفِيْ زُرِّيْ الْاَوَّلِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَكُنْ
لَهُمْ اٰيَةٌ اَنْ يَّعْلَمَهُ عَلَمُوْا نَبِيّٖ اِسْرَءٰئِيْلَ ۝ وَلَوْ
نَزَّلْنَاهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ۝ فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا
كَانُوْا بِهٖ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ سَكَّنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ
الْمُجْرِمِيْنَ ۝ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوْا الْعَذَابَ
الْاَلِيْمَ ۝ فَيَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝
فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ۝ اَفَبِعَدَاۤءِنَا
يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ اَفَرَأَيْتْ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ۝ ثُمَّ
جَآءَهُمْ مَا كَانُوْا يُوعَدُوْنَ ۝ مَا اَعْنٰى عَنْهُمْ مَا كَانُوْا

مَثَلُ

(५) नबुच्चत का इन्कार करने वाले, नबियों के बारे में आम तौर पर यही कहा करते थे जैसा कि आजकल के कुछ बुरे अक्कीदे चालें कहते हैं.

(६) नबुच्चत के दावे में.

(७) और जिस अज़ाब के तुम मुस्तहिक हो वह जो अज़ाब चाहंगा तुम पर उतारेगा.

(८) जो कि इस तरह हुआ कि उन्हें शदीद गर्मी पहुंची, हवा बन्द हुई और सात रोज़ गर्मी के अज़ाब में गिरफ्तार रहे. तहश्रानों में जाते, वहाँ और ज्यादा गर्मी पाते. इसके बाद एक बादल आया, सब उसके नीचे जमा हो गए. उससे आग बरसी और सब जल गए. इस घटना का बयान सूरफ अअरफ़ में और सूरफ हूद में गुज़र चुका है.

सूरफ शुअरा - ग्यारहवाँ रूकू

(१) रूहुल अमीन से हज़रत जिब्रील मुराद हैं जो वही के अमीन हैं.

(२) ताकि आप उसे मेहफूज़ रखें और समझें और न भूलें. दिल का ख़ास करना इसलिये है कि वास्तव में उसी से सम्बोधन है और तमीज़ व अक्ल और इस्तियार का मक़ाम भी वही है. सारे अंग उसके मातहत हैं. हदीस शरीफ़ में है कि दिल के दुरुस्त होने से तमाम बदन दुरुस्त हो जाता है और उसके ख़राब होने से सब जिस्म ख़राब और राहत और खुशी दुख और ग़म का मक़ाम दिल ही है. जब दिल की खुशी होती है, सारे अंगों पर उसका असर पड़ता है. तो वह सरदार की तरह है. वही केन्द्र है अक्ल का. तो अमीरे मुतलक हुआ और तकलीफ़ जो अक्ल और समझ के साथ जुड़ी हुई है उसी की तरफ़ लौटी.

(३) 'इज़हू' की ज़मीर का मरजअ अगर कुरआन हो तो उसके मानी ये होंगे कि उसका ज़िक्र सारी आसमानी किताबों में है और अगर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ ज़मीर राजअ हो तो मानी ये होंगे कि अगली किताबों में आपकी तारीफ़ और विशंपता का बयान है.

(४) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुच्चत और रिसालत के सच्चे होने पर.

(५) अपनी किताबों से और लोगों को ख़बरें देते हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मक्का वालों ने मदीन के यहूदियों के पास अपने भरोसे वाले आदमियों को यह पूछने के लिये भेजा कि क्या आज़िगी ज़माने के नबी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निरबत उनकी किताबों में कोई ख़बर है. इसका जवाब यहूदी उलमा ने यह दिया कि यही उनकी ज़माना है और उनकी नअत और सिफ़त तौरात में मौजूद है. यहूदी उलमा में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और इब्ने यामीन और

वह जो वरतते थे^(११) ॥२०७॥ और हमने कोई बस्ती हलाक न की जिसे डर सुनाने वाले न हों^(१२) ॥२०८॥ नसीहत के लिये और हम जुल्म नहीं करते^(१३) ॥२०९॥ और इस कुरआन को लेकर शैतान न उतरे^(१४) ॥२१०॥ और वो इस क्राविल नहीं^(१५) और न वो ऐसा कर सकते हैं^(१६) ॥२११॥ वो तो सुनने की जगह से दूर कर दिये गए हैं^(१७) ॥२१२॥ तो तू अल्लाह के सिवा दूसरा खुदा न पूज कि तुझ पर अज़ाब होगा^(१८) ॥२१३॥ और ऐ मेहबूब, अपने करीबतर रिश्तेदारों को डराओ^(१९) ॥२१४॥ और अपनी रहमत का बाजू विछाओ^(२०) अपने मानने वाले मुसलमानों के लिये^(२१) ॥२१५॥ तो अगर वो तुम्हारा हुक्म न मानें तो फ़रमा दो मैं तुम्हारे काम से बेइलाफ़ा हूँ^(२२) ॥२१६॥ और उसपर भरोसा करो जो इज़्जत वाला मेहरवान है^(२३) ॥२१७॥ जो तुम्हें देखता है जब तुम खड़े होते हो^(२४) ॥२१८॥ और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को^(२५) ॥२१९॥ बेशक वही सुनता जानता है^(२६) ॥२२०॥ क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि किसपर उतरते हैं शैतान^(२७) ॥२२१॥ शैतान उतरते हैं बड़े वोहतान वाले गुनहगार पर^(२८) ॥२२२॥ शैतान अपनी सुनी हुई^(२९) उनपर डालते हैं और उनमें अक्सर झूठे हैं^(३०) ॥२२३॥ और शायरों की पैरवी गुमराह करते हैं^(३१) ॥२२४॥ क्या तुमने न देखा कि वो हर नाले में सरगर्दा (परेशान) फिरते हैं^(३२) ॥२२५॥ और वो कहते हैं जो नहीं करते^(३३) ॥२२६॥

يَسْتَعِينُونَ ۖ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْنٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ۖ
وَذُرِّي ۖ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ۖ وَمَا نُنَزِّلُ بِهِ الشَّيْطَانُ ۖ
وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ ۖ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۖ لَاسِيَهُمْ عَنِ السَّمْعِ
لَعَزُؤُورُونَ ۖ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَكُونُ
مِنَ الْمَعْدُومِينَ ۖ وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۖ
وَإِخْفُضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ
فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنَّي بِرَبِّي مِمَّا تَعْمَلُونَ ۖ وَتَوَكَّلْ
عَلَى الْعَرْشِ الرَّحِيمِ ۖ الَّذِي يَرَبُّكَ حِينَ تَقُومُ ۖ وَ
تَقْلُبُكَ فِي السَّجْدِينَ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۖ هَلْ
أَنْتُمْ كُمْ عَلَى مَنْ نُنَزِّلُ الشَّيْطَانُ ۖ تَنْزِيلٌ عَلَى كُلِّ
أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۖ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثُرُهُمْ كَذِبُونَ ۖ
وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ۖ أَلَمْ تَرَأَهُمْ فِي كُلِّ
وَإِدْيَهِمْ مَوْتٌ ۖ وَأَنْتُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ۖ

مَزْن

- सअलबा और असद और उसैद, ये हज़रात, जिन्होंने ने नौगात में हुज़ूर की विशेषणाएं और गुण पढ़े थे, हुज़ूर पर ईमान लाए।
- (६) यानी ये हैं कि हम ने यह कुरआन शरीफ़ एक फ़सीह बलीग़ अरबी नबी पर उतारा जिसकी फ़माहत्त अरब वालों को तसलीम है और वो जानते हैं कि कुरआन शरीफ़ एक चमत्कार है और उस जैसी एक सूरत बनाने से भी सारी दुनिया लाचार है। इसके अलावा किताबी उलमा की सहमति है कि इसके उतरने से पहले इसके उतरने की ख़ुशख़बरी और उस नबी की सिफ़त उनकी किताबों में उन्हें मिल चुकी है। इससे क़तई तौर पर साबित होता है कि ये नबी अल्लाह के भेजे हुए हैं और यह किताब उसकी नाज़िल फ़रमाई हुई है। और काफ़िर जो तरह तरह की बेहूदा बातें इस किताब के बारे में कहते हैं, सच झूठ हैं। खुद काफ़िर हिरत में हैं कि इसके ख़िलाफ़ क्या बात कहें। इसलिये कभी इसको पहलों के क्रिसे कहते हैं, कभी शेअर, कभी जादू और कभी यह कि मआज़ल्लाह इस को खुद ग़ैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बना लिया है, और अल्लाह तआला की तरफ़ इसकी ग़ालत निख़त कर दी है। इस तरह के बेहूदा ऐतिराज़ दुश्मन हर हाल में कर सकता है, यहाँ तक कि अगर बिलफ़र्ज़ यह कुरआन किसी ग़ैर अरबी व्यक्ति पर उतारा जाता, जो अरबी की महारत न रखता और इसके वावजूद वह ऐसा चमत्कारी कुरआन पढ़कर सुनाता, जब भी ये लोग इसी तरह कुफ़्र करते जिस तरह इन्होंने ने अब कुफ़्र और इन्कार किया क्योंकि इन के कुफ़्र और इन्कार का कारण दुश्मनी है।
- (७) यानी उन काफ़िरों के, जिनका कुफ़्र इम्तिज़ार करना और उस पर अड़े रहना हमारे इल्म में है तो उनके लिये हिदायत का कोई भी तरीक़ा इम्तिज़ार किया जाए, किसी हाल में वो कुफ़्र से पलटने वाले नहीं।
- (८) ताकि हम ईमान लाएं और तस्दीक करें लेकिन उस वक़्त मोहलत न मिलेगी। जब सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने काफ़िरों को इस अज़ाब की ख़बर दी तो हमी के अन्दाज़ में कहने लगे कि यह अज़ाब कब आएगा। इसपर अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है।
- (९) और फ़ौरन हलाक न कर दें।
- (१०) यानी अल्लाह का अज़ाब।
- (११) यानी दुनिया की ज़िन्दगानी और उसका ऐश, चाहे लम्बा भी हो लेकिन न वह अज़ाब को दफ़ा कर सकेगा न उसकी सख़्ती कम कर सकेगा।
- (१२) पहले हुज़ूर कायम कर देते हैं, डर सुनाने वालों को भेज देते हैं, उसके बाद भी जो लोग राह पर नहीं आते और सच्चाई को कुबूल नहीं करते, उन पर अज़ाब करते हैं।

(१३) इसमें काफ़िरों का रव है जो कहते थे कि जिस तरह शैतान तांत्रिकों के पास आसमानी ख़बरें लाते हैं उसी तरह मअज़ल्लाह सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास कुरआन लाते हैं . इस आयत ने उनके इस ख़याल को बातिल कर दिया कि यह ग़लत है.

(१४) कि कुरआन लाएं.

(१५) क्योंकि यह उनकी ताक़त से बाहर है.

(१६) यानी नवियों की तरफ़ जो बही होती है उसको अल्लाह तआला ने मेहफूज़ कर दिया. जब तक कि फ़रिश्ता उसको रसूल की बारगाह में पहुंचाए, उससे पहले शैतान उसको नहीं सुन सकते . इसके बाद अल्लाह तआला अपने बन्दों से फ़रमाता है.

(१७) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के करीब के रिश्तेदार बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब हैं. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें ऐलान के साथ डराया और ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया जैसा कि सही हदीसों में आया है.

(१८) यानी मेहरबानी और करम फ़रमाओ.

(१९) जो सच्चे दिल से आप पर ईमान लाएं, चाहे वो आप से रिश्तेदारी रखते हों या न रखते हों.

(२०) यानी अल्लाह तआला, तुम अपने सारे काम उसके हवाले कर दो.

(२१) नमाज़ के लिये या दुआ के लिये या हर उस मक़ाम पर जहाँ तुम हो.

(२२) जब तुम अपने तहज़ुद पढ़ने वाले साथियों के हालात जानने के लिये रात को दौरा करते हो. कुछ मुफ़सिरों ने कहा मानी ये हैं कि जब तुम इमाम होकर नमाज़ पढ़ाते हो और क्रियाम, रूकू, सज्दों और कुज्द में गुज़रते हो. कुछ मुफ़सिरों ने कहा मानी ये कि वह आप की आँखों की हरकत को देखता है नमाज़ों में, क्योंकि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आगे पीछे एकसा देखते थे. और हज़रत अबू हुसैरह रदियल्लाहो अन्हो की हदीस में है, ख़ुदा की क्रमम मुझ पर तुम्हारी एकाग्रता और रूकूअ छुपा हुआ नहीं है, मैं तुम्हें अपनी पीठ पीछे देखता हूँ . कुछ मुफ़सिरों ने फ़रमाया कि इस आयत में सज्दा करने वालों से ईमान वाले मुराद हैं और मानी ये हैं कि हज़रत आदम और हब्बा के ज़माने से लेकर हज़रत अब्दुल्लाह और बीबी आमिना अत्रून तक, ईमान वालों की पीठ ओर कोश्र में आप के दौरे को मुलाहिज़ा फ़रमाता है . इससे साबित हुआ कि आपके सारे पूर्वज हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक सब के सब ईमान वाले हैं. (मदारिक व जुमल वगैरह)

(२३) तुम्हारी कहनी व करनी और तुम्हारी नियत को . इसके बाद अल्लाह तआला उन मुथ्रिकों के जवाब में, जो कहते थे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) पर शैतान उतरते हैं, यह इश्आद फ़रमाता है.

(२४) मुसैलिमा वगैरह तांत्रिक जैसे.

(२५) जो इन्होंने फ़रिश्तों से सुनी होती है.

(२६) क्योंकि वो फ़रिश्तों से सुनी हुई बातों में अपनी तरफ़ से बहुत झूट मिला देते हैं. हदीस शरीफ़ में है कि एक यात सुनते हैं तो सौ झूट उसके साथ मिलाते हैं और यह भी उस वक़्त तक था जब कि वह आसमान पर पहुंचने से रांके न गए थे.

(२७) उनके शेरों में, कि उनको पढ़ते हैं. रिवाज दंते हैं जबकि वो शेर झूट और बातिल होते हैं. यह आयत काफ़िर शायरों के बारे में उतरी जा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बुराई में कविता करते थे और कहते थे कि जैसा मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) कहते हैं ऐसा हम भी कह लेते हैं. और उनकी क़ौम के गुमराह लोग उनसे इन कविताओं को नक़ल करते थे. आयत में उन लोगों की मज़म्मत या भर्त्सना फ़रमाई गई.

(२८) और हर तरह की झूठी यातें बनाते हैं और हर बातिल में बढ़ा चढ़ा कर बोलते हैं, झूठी तारीफ़ करते हैं, झूठी बुराई करते हैं.

(२९) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि अगर किसी का जिस्म पीप से भर जाए तो यह उसके लिये इससे बदनर है कि कविता से पुर हो. मुसलमान कवि जो इस तरीके से परहेज़ करते हैं, इस हुक्म से अलग रखे गए.

(३०) इसमें इस्लाम के शायरों को अलग रखा गया . वो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की प्रशंसा लिखते हैं, अल्लाह तआला की हम्द लिखते हैं, इस्लाम की तारीफ़ लिखते हैं, नबीहो की अच्छी बातें लिखते हैं, उसपर इनाम और सबाब पाते हैं. बुख़ारी शरीफ़ में है कि मस्जिद नबवी में हज़रत हस्सान के लिये मिम्बर बिछवाया जाता था, वह उस पर खड़े होकर रसूलो करीम सल्लल्लाहो अलैहे

मगर वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये^(३०) और ज्यादा से ज्यादा अल्लाह की याद की^(३१) और बदला लिया^(३२) वाद उसके कि उनपर जुल्म हुआ^(३३) और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम^(३४) कि किस करवट पर पलटा खाएंगे^(३५) (२२७)

२७ - सूरए नम्ल

सूरए नम्ल मक्का में उतरी, इसमें ९३ आयतें, ७ रूकू हैं

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) ये आयतें हैं कुरआन और रोशन किताब की^(२) हिदायत और खुशखबरी ईमान वालों को^(३) जो नमाज़ कायम रखते हैं^(४) और ज़कात देते हैं^(५) और वो आखिरत पर यकीन रखते हैं^(६) वो जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते, हमने उनके कौतुक उनकी निगाह में भले कर दिखाए हैं^(७) तो वो भटक रहे हैं। ये वो हैं जिनके लिये वड़ा अज़ाब है^(८) और यही आखिरत में सबसे बड़कर नुक़सान में^(९) और वेशक़ तुम कुरआन सिखाए जाते हो हिकमत वाले इल्म वाले की तरफ़ से^(१०) जब कि मूसा ने अपनी घर वाली से कहा^(११) मुझे एक आग नज़र पड़ी है, बहुत जल्द मैं तुम्हारे पास उसकी कोई खबर लाता हूँ या

وَقَالَ الَّذِينَ
۵۲۶
وَقَالَ الَّذِينَ

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ
كَثِيرًا وَأَتَصَرَّوْا مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا وَسَيَعْلَمُ
الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طَسَّ تَلَكَّ أَيْتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُبِينٍ ۝
هُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ
وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ
يَعْمَهُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ
فِي الْآخِرَةِ هُمْ الْآخَسَرُونَ ۝ وَإِنَّكَ تَشَقِّى الْقُرْآنَ
مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ۝ إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لَا هَلْهٰ
إِنِّي أَنتُ نَارًا سَآتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ آتِيكُمْ

مُؤَلَّ

वसल्लाम के फ़रमानों और तारीफ़ पढ़ते थे और काफ़िरों की आलोचनाओं का जवाब देते थे और सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनके हक़ में दुआ फ़रमाते आते थे। बुख़ारी की हदीस में है कि सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कुछ शेअर हिकमत होते हैं। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुबारक मजलिस में अक्सर कविता पाठ होता था जैसा कि तिरमिज़ी में जाबिर बिन समरह से रिवायत है। हज़रत आयशा सिदीका रदियल्लाहो अल्लो ने फ़रमाया कि शेअर कलाम है, कुछ अच्छा होता है कुछ बुरा, अच्छे को लो, बुरे को छोड़ दो। शअबी ने कहा कि हज़रत अबूयक़ सिदीक शेअर कहते थे। हज़रत अली उन सब से ज्यादा शेअर फ़रमाने वाले थे। रदियल्लाहो अल्लो अज़मईन।

(३१) और कविता उनके लिये अल्लाह की याद से ग़फ़लात का कारण न हो सकी। बल्कि उन लोगों ने जब शेअर कहा भी तो अल्लाह तआला की प्रशंसा और उसकी तौहीद और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और सहावा और उम्मत के नेक लोगों की तारीफ़ और हिकमत, बोध, नसीहत, उपदेश और अदब में।

(३२) काफ़िरों से उनकी आलोचना का।

(३३) काफ़िरों की तरफ़ से, कि उन्होंने मुसलमानों की और उनके पेशवाओं की बुराई की। उन हज़रत ने उसको दफ़्त किया और उसके जवाब दिये। ये बुरे नहीं हैं बल्कि सबाब के मुस्तहक़ हैं। हदीस शरीफ़ में है कि मूगिन अपनी तलवार से भी जिहाद करता है और अपनी ज़बान से भी, यह उन हज़रत का जिहाद है।

(३४) यानी मुश्किल लोग जिन्होंने न सृष्टि में सबसे अफ़ज़ल हस्ती रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बुराई की।

(३५) मौत के बाद। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अल्लो ने फ़रमाया जहन्नम की तरफ़, और वह बुरा ही ठिकाना है।

२७ - सूरए नम्ल - पहला रूकू

(१) सूरए नम्ल मक्का में उतरी, इसमें सात रूकू, तिरानवे आयतें, एक हज़रत तीन सौ सत्रह कलिम और चार हज़ार सात सौ तिरानवे अक्षर हैं।

(२) जो सच और झूट में फ़र्क़ करती है और जिसमें इल्म और हिकमत के ख़ज़ाने रम्ये गए हैं।

(३) और उसपर हमेशगी करते हैं और उसकी शतों और संस्कार और तमाम अधिकारों की हिफ़ाज़त करते हैं।

(४) खुश दिली से।

(५) कि वो अपनी बुराइयों को शवहात यानी वासनाओं के कारण से भलाई जाते हैं।

بِشَهَابٍ قَبَسَ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهَا
 نُودِيَ أَنْ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۖ وَ
 سُبْحَنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ يُمُوسَى إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ
 الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَأَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ
 كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّى مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۖ يُمُوسَى
 لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدُنِيَ الْمُهْلَكُونَ ۝ إِلَّا
 مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلْ حِسَابًا بَعْدَ سَوَاءٍ فَلَا يَعْقِلُ
 رَجِيمٌ ۝ وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخَرُّمَ بَيْضَاءَ
 مِنْ غَيْرِ سَوَاءٍ فِي تِسْعِ آيَاتٍ إِلَى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ
 إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ آيَاتُنَا
 مُبْصِرَةً قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ وَبَحَدُوا بِهَا
 وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلُمًا وَعُلُوًّا فَانْظُرْ كَيْفَ
 كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ

مَنْزِلَةً

उसमें से कोई चमकती चिंगारी लाऊंगा ताकि तुम तापो^(१०) ॥६॥
 फिर जब आग के पास आया, निदा(पुकार) की गई कि
 बरकत दिया गया वह जो इस आग की जलवा-गाह(दर्शन
 स्थल) में है यानी मूसा और जो उसके आस पास हैं यानी
 फ़रिश्ते^(११) और पाकी है अल्लाह को जो रब है सारे जगत
 का ॥८॥ ऐ मूसा बात यह है कि मैं ही हूँ अल्लाह इज़्जत
 वाला हिकमत वाला ॥९॥ और अपना असा डाल दे^(१२) फिर
 मूसा ने उसे देखा लहराता हुआ मानो साँप है पीठ फेर कर
 चला और मुड़कर न देखा, हमने फ़रमाया ऐ मूसा डर नहीं
 वेशक मेरे हुज़ूर रसूलों को डर नहीं होता^(१३) ॥१०॥ हाँ जो
 कोई ज़ियादती करे^(१४) फिर बुराई के बाद भलाई से बदले
 तो वेशक मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूँ^(१५) ॥११॥ और
 अपना हाथ अपने गिरेवान में डाल निकलेगा सफ़ेद चमकता
 वे ऐव^(१६) नौ निशानियों में^(१७) फिर औन और उसकी कौम
 की तरफ़, वेशक वो बेहुकम लोग हैं ॥१२॥ फिर जब हमारी
 निशानियाँ आंखें खोलती उनके पास आई^(१८) बोले यह तो
 खुला जादू है ॥१३॥ और उनके इन्कारी हुए और उनके
 दिलों में उनका यक़ीन था^(१९) जुल्म और घमण्ड से, तो देखो
 कैसा अंजाम हुआ फ़सादियों का^(२०) ॥१४॥

दूसरा रुकू

और वेशक हमने दाऊद और सुलेमान को बड़ा इल्म अता

- (६) दुनिया में क़त्ल और गिरफ्तारी.
- (७) उनका परिणाम हमेशा का अज़ाब है. इसके बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सम्बोधन होता है.
- (८) इसके बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का एक वाक़िआ बयान किया जाता है जो इल्म की गहरी बातों और हिकमत की बारीकियों पर आधारित है.
- (९) मदयन से मिस्र को सफ़र करते हुए अंधेरी रात में, जबकि बर्फ़ पड़ने से भारी सर्दी पड़ रही थी और रास्ता खो गया था और बीबी साहिबा को ज़चमी का दर्द शुरू हो गया था.
- (१०) और सर्दी की तकलीफ़ से अन्न पाओ.
- (११) यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की फ़ज़ीलत है, अल्लाह तआला की तरफ़ से बरकत के साथ.
- (१२) चूनांवे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से अपनी लाठी डाल दी और वह साँप हो गई.
- (१३) न साँप का, न किसी चीज़ का, यानी जब मैं उन्हें अन्न दूँ तो फिर क्या अन्देशा.
- (१४) उसको डर होगा और वह भी जब तौबत करे.
- (१५) तौबत कुबूल करता हूँ और बख़्श देता हूँ. इसके बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को दूसरी निशानी दिखाई गई, फ़रमाया गया.
- (१६) यह निशानी है उन ...
- (१७) जिन के साथ रसूल बना कर भेजे गए हो.
- (१८) यानी उन्हें चमत्कार दिखाए गए.
- (१९) और वो जानते थे कि वेशक ये निशानियाँ अल्लाह की तरफ़ से हैं लेकिन इसके बावजूद अपनी ज़बानों से इन्कार करते रहे.
- (२०) कि डुबो कर हलाक किये गए.

सूरए नमल - दूसरा रुकू

- (१) यानी क़ज़ा का इल्म और राजनीति. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को पहाड़ों और पक्षियों की तस्वीर का इल्म दिया और हज़रत सुलेमान को चौपायों और पक्षियों की बोलियों का. (ख़ाज़िन)

फरमाया^(१) और दोनों ने कहा सब खूबियां अल्लाह को जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर वजुर्गी बख्शी^(२) (१५) और सुलैमान दाऊद का जानशीन हुआ^(३) और कहा ऐ लोगो हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई और हर चीज में से हमको अता हुआ^(४) वेशक यही ज़ाहिर फ़ज़ल है^(५) (१६) और जमा किये गए सुलैमान के लिये उसके लश्कर, जिन्न और आदमियों और परिन्दों से, तो वो रोके जाते थे^(६) (१७) यहां तक कि जब च्यूटियों के नाले पर आए^(७) एक च्यूटी बोली^(८) ऐ च्यूटियो, अपने घरों में चली जाओ तुम्हें कुचल न डालें सुलैमान और उनके लश्कर बेख़वरी में^(९) (१८) तो उसकी बात से मुस्कुरा कर हंसा^(१०) और अर्ज़ की ऐ मेरे रव मुझे तौफ़ीक़ (सामर्थ्य) दे कि मैं शुक्र करूं तेरे एहसान का जो तूने^(११) मुझपर और मेरे माँ वाप पर किये और यह कि मैं वह भला काम कर सकूँ जो तुझे पसन्द आए और मुझे अपनी रहमत से अपने उन बन्दों में शामिल कर जो तेरे ख़ास कुर्व के हक़दार हैं^(१२) (१९) और परिन्दों का जायज़ा लिया तो बोला मुझे क्या हुआ कि

وَسُلَيْمَنُ عَلِمًا وَقَالَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي فَضَّلَنَا
عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَوَسَرْتُ
سُلَيْمَنُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عَلِمْنَا مَنَاطِقَ
الطَّيْرِ وَأَوْتَيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ
الْبَاسِ ۝ وَحُشِرَ لِسُلَيْمَنَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ وَ
الْإِنسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا
عَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ ۖ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّمْلُ
ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ ۖ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَنُ وَجُنُودُهُ ۖ
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ فَنَسَبَ سَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَ
قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَن أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ
عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَن أَعْلَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ
وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ۝ وَ
تَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَىٰ الْهَدْيَ ۚ أَمْ كَانَ

मज़ल

- (२) नबुच्चत और हुक्मत अता फ़रमा कर और जिन्न व इन्सान और शैतानों को उनके आधीन करके.
- (३) नबुच्चत और इल्म और मुल्क में.
- (४) यानी दुनिया और आग़िरत की नेअमतेँ बहुतात से हमको अता की गई.
- (५) रिवायत है कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने पूर्व और पश्चिम की धरती की हुक्मत अता की. चालीस साल आप उसके मालिक रहे फिर सारी दुनिया की हुक्मत दी गई. जिन्न, इन्सान, शैतान, पक्षी, चौपाए, जानवर, सब पर आपकी हुक्मत थी और हर एक चीज़ की ज़वान आप को अता फ़रमाई और अजीब अनोखी सनअतेँ आप के ज़माने में काम में लाई गई.
- (६) आग बढ़ने से ताकि सब इकट्ठे हो जाएं, फिर चलाए जाते थे.
- (७) यानी ताड़फ़ या शाम में उस बादी पर गुज़रे जहाँ चूटियाँ बहुत थीं.
- (८) जो चूटीयों की रानी थी, वह लंगड़ी थी. जब हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा उस वक़्त नौ जवान थे, आपने पूछा कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की चूटी मादा थी या नर. हज़रत क़तादह ख़ामोश हो गए तो इमाम साहिब ने फ़रमाया कि वह मादा थी. आपसे पूछा गया कि यह आप को किस तरह मालूम हुआ. आपने फ़रमाया क़ुरआन शरीफ़ में इरशाद हुआ “क़ालत नम्लतुन” अगर नर होती तो “क़ाला नम्लतुन” आता. (सुक्रानल्लाह, इससे हज़रत इमाम की शाने इल्म मालूम होती है) गरज़ जब उस चूटी की रानी ने हज़रत सुलैमान के लश्कर को देखा तो कहने लगी.
- (९) यह उसने इसलिये कहा कि वह जानती थी कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम नबी हैं, इन्साफ़ वाले हैं, अत्याचार और ज़ियादती आपकी शान नहीं है. इसलिये अगर आप के लश्कर से चूटियाँ कुचल जाएंगी तो बेख़वरी ही में कुचल जाएंगी कि वो गुज़रते हों और इस तरफ़ तबज़्जोह न करें. चूटी की यह बात हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने तीन मील से सुन ली और हवा हर शय्स का क़नाम आपके मुबारक कानों तक पहुंचाती थी. जब आप चूटियों की घाटी पर पहुंचे तो आपने अपने लश्करों को टहरने का हुक्म दिया यहाँ तक कि चूटियाँ अपने घरों में दाख़िल हो गईं. हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का सफ़र अगरचे हवा पर था मगर दूर नहीं कि ये मक़ाम आपके उतरने की जगह हो.
- (१०) नबियों का हंसना तबस्सुम ही होता है जैसा कि हदीसों में आया है. वो हज़रात कहकहा मार कर नहीं हंसते थे.
- (११) नबुच्चत और हुक्मत और इल्म अता फ़रमाकर.
- (१२) नबी और औलिया हज़रात.

मैं हुदहुद को नहीं देखता या वह वाकई हाज़िर नहीं (२०) ज़रूर मैं उसे सख्त अज़ाब करूँगा (२१) या ज़िद्द करूँगा या कोई रौशन सनद (प्रमाण) मेरे पास लाए (२२) तो हुदहुद कुछ ज़्यादा दूर न ठहरा और आकर (२३) अर्ज़ की कि मैं वह बात देख आया हूँ जो हुज़ूर ने न देखी और मैं सवा शहर से हुज़ूर के पास एक यक़ीनी ख़बर लाया हूँ (२४) मैं ने एक औरत देखी (२५) कि उनपर वादशाही कर रही है और उसे हर चीज़ में से मिला है (२६) और उसका वज़ा तख़्त है (२७) मैं ने उसे और उसकी क़ौम को पाया कि अल्लाह को छोड़कर सूरज को सज्दा करते हैं (२८) और शैतान ने उनके कर्म उनकी निगाह में संवार कर उनको सीधी राह से रोक दिया (२९) तो वो राह नहीं पाते (३०) क्यों नहीं सज्दा करते अल्लाह को जो निकालता है आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें (३१) और जानता है जो कुछ तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो (३२) अल्लाह है कि उसके सिवा कोई सच्चा मअबूद नहीं, वह बड़े अर्श का मालिक है (३३) सुलैमान ने फ़रमाया, अब हम देखेंगे कि तूने सच कहा या तू झूठों में है (३४) मेरा यह फ़रमान ले जाकर उनपर डाल फिर उनसे अलग हट कर देख कि वो क्या जवाब देते हैं (३५) वह औरत बोली, ऐ सरदारो बेशक मेरी तरफ़ एक इज़्ज़त

مِنَ الْعَالَمِينَ ۝ لَا عَذِيبَةَ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَا أَذِيبُكَ
أَوْ لِيَا تَبَيَّنَ سُلْطَانُ مُبِينٍ ۝ فَكَتَكَ غَيْرَ بَعِيدٍ
فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنْتًا
يَقِينٍ ۝ إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ۝ وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا
يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيْنُ لَهُمُ الشَّيْطَانُ
أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ۝
أَلَا يَسْجُدُونَ لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمَوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝ اللَّهُ
لَدَالَهُ الْأَهْوَاءُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝ قَالَ سَنَنْظُرُ
أَصْدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَذَّابِينَ ۝ إِذْ هَبَّ بِكَيْتِي
هَذَا فَالْقِهْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّى عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا
يَرْجِعُونَ ۝ قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَى الْأُلُفَى إِلَى كَيْتٍ

مَكَلَدٍ

(१३) उसके पर उखाड़कर, या उसका उसके प्यारों से अलग करके या उसका उसके करीब वालों का स्वादिम बनाकर या उसको ग़ैर जानकारों के साथ कैद करके और हुदहुद को मसलहत के अनुसार अज़ाब करना आपके लिये हलाल था और जब पक्षी आप के आधीन किये गए थे तो उनके अदब और सियामत सिखाना इसकी ज़रूरत है.

(१४) जिससे उसकी मजज़री और लाचारी ज़ाहिर हो.

(१५) बहुत विनम्रता और इन्क़ियारी और अदब के साथ माफ़ी चाह कर.

(१६) जिसका नाम बिल्कीस है.

(१७) जाँ बादशाहों की शान के लायक होता है.

(१८) जिसकी लम्बाई अस्सी गज़, चौड़ाई चालीस गज़, सोने चाँदी का, जवाहिरात से सजा हुआ.

(१९) क्योंकि वो लोग सूरज परस्त मजूसी थे.

(२०) सीधी राह से मुराद सच्चाई का तरीक़ा और दाँते इस्लाम है.

(२१) आसमान की छुपी चीज़ों से मोह और ज़मीन की छुपी चीज़ों से पेड़ पौधे मुराद हैं.

(२२) इसमें सूरज के पुजारियों बल्कि सारं बातिल परस्तों का रव है जो अल्लाह तआला के सिवा किसी को भी पूजें. मक़सूद यह है कि इबादत का मुस्तहिक़ सिर्फ़ वही है जो आसमान और ज़मीन की सृष्टि पर कुदरत रखता ही और सारी जानकारी का मालिक हो, जो ऐसा नहीं, वह किसी तरह इबादत का मुस्तहिक़ नहीं.

(२३) फिर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने एक ख़त लिखा जिसका मज़मून यह था कि “अल्लाह के बन्दे, दाऊद के बेटे सुलैमान की तरफ़ से शहरे सबा की रानी बिल्कीस के लिये ... अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ... उसपर सलाम जो हिदायत कुबूल करे, उसके बाद मुद्दा यह कि तुम मुझ पर बलन्दी न चाहो और मेरे हुज़ूर फ़रमाँचरदार होकर हाज़िर हो. उसपर आपने अपनी मोहर लगाई और हुदहुद से फ़रमाया.

(२४) चुनान्ने हुदहुद वह मुबारक ख़त लेकर बिल्कीस के पास पहुंचा. उस वक़्त बिल्कीस के चारों तरफ़ उसके बज़ीरों और सलाहकारों की भीड़ थी. हुदहुद ने वह ख़त बिल्कीस की गोद में डाल दिया और वह उसका देखकर ख़ौफ़ से लरज़ गई और फिर उसपर मोहर देख कर.

(२५) उसने उस ख़त को इज़्ज़त वाला या तो इसलिये कहा कि उसपर मोहर लगी हुई थी. उसने जाना कि कित्ताब का भेजने वाला बड़ी बुजुर्गी वाला बादशाह है. या इसलिये कि उस ख़त की शुरूआत अल्लाह तआला के नामे पाक से थी फिर उसने बताया कि वह ख़त किस की तरफ़ से आया है. चुनान्ने कहा.

वाला खत डाला गया^(२५) ॥२९॥ देशक वह सुलैमान की तरफ से है और वेशक वह अल्लाह के नाम से है जो बहुत मेहरवान रहम वाला^(२६) ॥३०॥ यह कि मुझ पर बलन्दी न चाहो^(२७) और गर्दन रखते मेरे हुजूर हाज़िर हो^(२८) ॥३१॥

तीसरा रूकू

वोली, ऐ सरदारो मेरे इस मामले में मुझे राय दो, मैं किसी मामले में कोई क़तई फ़सला नहीं करती जब तक तुम मेरे पास हाज़िर न हो^(२९) ॥३२॥ वां वोले हम ज़ोर वाले और बड़ी सख़्त लड़ाई वाले हैं^(३०) और इज़्तिहार तेरा है तू नज़र कर कि क्या हुक़म देती है^(३१) ॥३३॥ वोली वेशक बादशाह जब किसी वस्ती में^(३२) दाख़िल होते हैं उसे तवाह कर देते हैं और उसके इज़्जत वालों को^(३३) ज़लील और ऐसा ही करते हैं^(३४) ॥३४॥ और मैं उनकी तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूँ फिर देखूंगी कि एलची क्या जवाब लेकर पलटे^(३५) ॥३५॥ फिर जब वह^(३६) सुलैमान के पास आया फ़रमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो, तो जो मुझे अल्लाह ने दिया^(३७) वह बेहतर है उससे जो तुम्हें दिया^(३८) बल्कि तुम ही अपने तोहफ़े पर खुश होते हो^(३९) ॥३६॥ पलट जा उनकी तरफ़ तो ज़रूर हम उनपर वो लश्कर लाएंगे जिन की उन्हें ताक़त न होगी और ज़रूर हम उनको इस शहर से ज़लील करके निकाल देंगे यूँ कि वो परत होंगे^(४०) ॥३७॥ सुलैमान ने फ़रमाया ऐ दरबारियो तुम में कौन है कि वह उसका तख़्त

كَرِيمٌ ۝ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمٍ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ أَلَا تَعْلَمُونَ عَلَىٰ وَأَتُونِي مُسْلِمِينَ ۝ قَالَتْ يَأَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ۝ قَالُوا نَحْنُ أَوْلُوا قُوَّةٍ وَأُولُوا بَأْسٍ شَدِيدٍ ۝ وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانْظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ۝ قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعِزَّةً أَهْلِهَا إِذْ لَّهُمْ وَكَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ۝ وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنْظُرْهُ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَنُ قَالَ أَسْهَدُ وَنَحْنُ بِمَالٍ فَتَمَّا اشْتَرِ اللَّهُ خَيْرٌ مِمَّا أَنتُمْ بِلَاحِدٍ ۝ بَلْ أَنتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ۝ ارْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَّاَتِيبَنَّهُمْ بِخُبْرٍ لَّا قَبْلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا إِذْ لَّهُمْ وَهُمْ ضَعُفُونَ ۝ قَالَ يَأَيُّهَا الْمَلَأُ أَيُّكُمْ

مَوْلَا

(२६) यानी मेरे हुक़म को पूरा करो और घमण्ड न करो जैसा कि कुछ बादशाह किया करते हैं.

(२७) फ़रमावशकारी की शान से, ख़त का यह मज़मून सुनाकर बिल्कीस अपने सलाहकारों वज़ीरों की तरफ़ मुतवज्जह हुई.

सूरए नम्ल - तीसरा रूकू

(१) इससे उनकी मुराद यह थी कि अगर तेरी राय जंग की हो तो हम लोग उसके लिये तैयार हैं, बहादुर और साहसी हैं, कुचन और शक्ति के मालिक हैं, बहुत से लश्कर रखते हैं, जंगों का अनुभव भी है.

(२) ऐ राती, हम तेरी फ़रमावशकारी करेंगे, तेरे हुक़म के मुताज़िर हैं. इस जवाब में उन्होंने यह इशारा किया कि उनकी राय जंग की है या उनका इरादा यह हो कि हम जंगी लोग हैं. राय और मशवरा हमारा काम नहीं है, तू खुद अक्ल और तदबीर वाली है. हम हर हाल में तेरी आज्ञा का पालन करेंगे. जब बिल्कीस ने देखा कि ये लोग जंग की तरफ़ झुके हैं तो उसने उन्हें उनकी राय की ख़ता पर आगाह किया और जंग के नतीजे सामने किये.

(३) अपने ज़ोर और कुचन से.

(४) क़त्ल और कैद और अपमान के साथ.

(५) यही बादशाहों का तरीक़ा है. बादशाहों की आदत का, जो उसको इल्म था उसकी बुनियाद पर उसने यह कहा और मुराद उसकी यह थी कि जंग उचित नहीं है. उसमें मुल्क और मुल्क के निवासियों की तबाही व बरबादी का ख़तरा है. उसके बाद उसने अपनी राय का इज़हार किया और कहा.

(६) इससे मालूम हो जाएगा कि वह बादशाह हैं तो हदिया कुबूल कर लेंगे और अगर नहीं हैं तो भेंट स्वीकार न करेंगे और सिवा उसके हम उनके दीन का अनुकरण करें, वह और किसी बात से राज़ी न होंगे. तो उसने पाँच सौ गुलाम और पाँच सौ दासियाँ बहनरीन लिबास और ज़वरा के साथ सज़ा कर सोने चाँदी की ज़ीनों पर सवार करके भेजे और पाँच सौ ईंटें सोने की और जवाहर व ताज और मुश्क व अंबर वगैरह वगैरह, एक ख़त के साथ अपने ऐलची के हमराह ख़ाता किये. हुदहुद यह देखकर चल दिया और उसने हज़रत सुलैमान अलेहिस्सलाम के पास सारी ख़बर पहुंचाई. आपने हुक़म दिया कि सोने चाँदी की ईंटें बनाकर सत्ताईस मोल श्वेतफल के मैदान में बिछा दी जाएं और उसके चारों तरफ़ सोने चाँदी की ऊँची दीवार बना दी जाए और समन्दर व झुंझकी के सुन्दर जानवर और ज़िन्नात के बच्चे मैदान के दाएं बाएं हाज़िर किये जाएं.

मेरे पास ले आए पहले इसके कि वह मेरे हुज़ूर मुतीअ (फरमांवरदार) होकर हाज़िर हो^(१२) ॥३८॥ एक बड़ा ख़बीस जिन्न बोला कि मैं वह तख़्त हुज़ूर में हाज़िर करदूंगा इसके पहले कि हुज़ूर इजलास वरखास्त करें^(१३) और मैं बेशक उसपर कुंवत वाला अमानतदार हूँ^(१४) ॥३९॥ उसने अर्ज़ की जिसके पास किताब का इल्म था^(१५) कि मैं उसे हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले^(१६) फिर जब सुलैमान ने तख़्त को अपने पास रखा देखा कहा यह मेरे रब के फ़ज़ल से है ताकि मुझे आज्ञाए कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री, और जो शुक्र करे वह अपने भले को शुक्र करता है^(१७) और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब वे पर्वाह है सब ख़ूबियों वाला^(१८) सुलैमान ने हुक्म दिया औरत का तख़्त उसके सामने वनावट बदल कर बेगाना करदो कि हम देखें कि वह राह पाती है या उनमें होती है जो नावाक़िफ़ रहे^(१९) फिर जब वह आई उससे कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है, बोली गोया यह वही है,^(२०) और हमको इस वाक़ए (घटना) से पहले ख़बर मिल चुकी^(२१) और हम फ़रमांवरदार हुए^(२२) ॥४२॥ और उसे रोका^(२३) उस चीज़ ने जिसे वह अल्लाह के सिवा पूजती थी, बेशक वह काफ़िर लोगों में से थी^(२४) उससे कहा गया सेहन (आंगन) में आ^(२५) फिर जब उसने उसे देखा उसे गहरा पानी समझी

يَا تَبْنِي بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَنْ يَأْتُوْنِي مُسْلِمِيْنَ ۝ قَالَ
عَفَرَيْتُ مِنَ الْجِنِّ اَنَا اَتِيْتُكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ
مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيْٓ اٰمِيْنُ ۝ قَالَ
الَّذِيْ عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اِنَّا اَتَيْنٰكَ بِهٖ قَبْلَ
اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَاَهُ مُسْتَقْرِئًا عِنْدَهُ
قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْٓ لِيَبْلُوْنِيْٓ ؕ اَشْكُرُ اَمْ
اَكْفُرُ ۚ وَمَنْ شَكَرَ فَاَتَيْنٰهُ مِنْۢ بَيْنِنَاۤ اِزْكَىٰ ۚ وَمَنْ كَفَرَ
فَاِنَّ رَبِّيْٓ عَنِّيْ كَرِيْمٌ ۝ قَالَ تَكَرَّرَ لَهَا عَرْشُهَا تَنْظُرَ
اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ۝ فَلَمَّا
جَاءَتْ قِيْلَ اَهْلِكِيْ اَعْرَاشُكَ ۚ قَالَتْ كَاَنَّهُ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ۝ وَصَدَّهَا
مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ
كَافِرِيْنَ ۝ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ

مَنْ

(७) यानी बिल्कीस का परामर्श, अपनी जमाअत समेत हदिया लेकर.

(८) यानी दीन और नवुच्चत और हिकमत व मुल्क.

(९) दुनिया का माल अस्वाव.

(१०) यानी तुम घमण्डी हो. दुनिया पर घमण्ड करते हो. और एक दूसरे के हदिये पर खुश होते हो. मुझे न दुनिया में खुशी होती है न उसकी हाज़त. अल्लाह तआला ने मुझे इतना बहुत कुछ अता फ़रमाया है कि औरों को न दिया. दीन और नवुच्चत से मुझको बुजुर्गी दी. उसके बाद सुलैमान अलैहिस्सलाम ने वपद के सरदार मुदिर इब्ने अम्र से फ़रमाया कि ये हदिये लेकर ...

(११) यानी अगर वह मेरे पास मुसलमान होकर हाज़िर न हुए तो यह अंजाम होगा. जब कासिद हदिये लेकर बिल्कीस के पास वापस गए और तमाम हालत सुनाए तो उसने कहा, बेशक वह नबी हैं और हमें उनसे मुकाबले की ताकत नहीं. उसने अपना तग़्त अपने सात महलों में से सबसे पिछले महल में मेहफूज़ करके तमाम दरवाज़ों पर ताले डाल दिये और उनपर पहरदार मुक़रर कर दिये और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होने का इन्निज़ाम किया ताकि देखे कि आप उसको क्या हुक्म फ़रमाते हैं और वह एक भारी लश्कर लेकर आपकी तरफ़ ख़ाना हुई जिसमें बारह हज़ार नवाब थे और हर नवाब के साथ हज़ारों लश्करी. जब इतने करीब पहुंच गई कि हज़रत से सिर्फ़ एक फ़रसंग (लगभग तीन मील) का फ़ासला रह गया.

(१२) इससे आपका मक़सद यह था कि उसका तग़्त हाज़िर करके उसको अल्लाह तआला की कुदरत और अपनी नवुच्चत पर दलायत करने वाला चमत्कार दिखाएं. कुछ ने कहा है कि आपने चाहा कि उसके आगे से पहले उसकी वनावट बदल दे और उससे उसकी अक़्त का इम्तिहान फ़रमाएं कि पहचान सकती है या नहीं.

(१३) और आपका इजलास सुबह से दोपहर तक होता था.

(१४) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, मैं उससे जल्द चाहता हूँ.

(१५) यानी आपके वज़ीर आसिफ़ दिन बख़्शिया, जो अल्लाह तआला का इमने आज्ञम जानने थे.

(१६) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, लाओ हाज़िर करो. आसिफ़ ने अर्ज़ किया, आप नबी इब्ने नबी हैं और जो रुखा अल्लाह की वारगाह में आपको हासिल है, यहाँ किस को मय़सर है. आप दुआ करें तो वह आपके पास ही होगा. आपने फ़रमाया, तुम सब कहने हो और दुआ की. उगी वस्तु तग़्त ज़मीन के नीचे चलकर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की क़ुरी के करीब नमूदा हुआ.

(१७) कि इस शुक्र का तफ़ा खुद उस शुक्रगुज़ार की तरफ़ पलटता है.

(१८) इस जवाब से उसकी अक़लमन्दी का क़माल मालूम हुआ. अब उससे कहा गया कि यह तेरा ही सिंहासन है, दरवाज़ा बन्द

और अपनी साकें (पिंडलियां) खोलें^(२३) सुलैमान ने फ़रमाया यह तो एक चिकना सेहन है शीशों जड़ा^(२४) औरत ने अर्ज को ऐ मेरे रब मैंने अपनी जान पर जुल्म किया^(२५) और अब सुलैमान के साथ अल्लाह के हुजूर गर्दन रखती हूँ जो रब सारे जगत का^(२६) ॥४४॥

चौथा रूकू

और वेशक हमने समुद्र की तरफ़ उनके हमक़ौम सालेह को भेजा कि अल्लाह को पूजो^(१) तो जभी वो दो गिरोह होगए^(२) झगड़ा करते^(३) ॥४५॥ सालेह ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम क्यों बुराई की जल्दी करते हो^(४) भलाई से पहले^(५) अल्लाह से बख़्शिअ क्यों नहीं मांगते^(६) शायद तुम पर रहम हो^(७) ॥४६॥ बोले हमने बुरा शगुन लिया तुमसे और तुम्हारे साथियों से^(८) फ़रमाया तुम्हारी वदशगुनी अल्लाह के पास है^(९) बल्कि तुम लोग फ़िल्ने में पड़े हो^(१०) ॥४७॥ और शहर में नौ व्यक्ति थे^(११) कि ज़मीन में फ़साद करते और संवार न चाहते ॥४८॥ आपस में अल्लाह की क़समें खाकर बोले हम ज़रूर रात को छापा मारेंगे सालेह और उसके घरवालों पर^(१२) फिर उसके वारिस से^(१३) कहेंगे इस घर वालों के क़त्ल के वक़्त हम हाज़िर न थे वेशक हम सच्चे हैं ॥४९॥ और उन्होंने अपना सा मक्र किया और हमने अपनी खुफ़िया (छुपवा) तदवीर फ़रमाई^(१४) और वो गाफ़िल रहे ॥५०॥ तो देखो कैसा अंजाम

حَسِبْنَاهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِيهَا قَالَ إِنَّهُ
صَرْمٌ مَّمَرٌّ مِّنْ قَوَارِيرِهِ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ
نَفْسِي وَاسْكَنْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنْ
اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَيْنِ يَخْتَصِمُونَ
قَالَ يَقُومِر لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ
قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ قَالَ طَّيَّرَكُمْ
عِنْدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ وَكَانَ فِي
الْمَدِينَةِ نِسْعَةٌ رَهْطٌ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا
يُصْلِحُونَ قَالُوا اتَّقَاسُوا بِاللَّهِ كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ
أَهْلَهُ ثُمَّ لَقُوا لَوْلَا رَبُّنَا مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ
أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ وَمَكْرُومًا مَكْرًا وَمَكْرًا

करने, ताला लगाने, पहरेदार दिठाने का क्या फ़ायदा हुआ ? इसपर उसने कहा.

- (१९) अल्लाह तआला की कुदरत और आपकी नबुव्वत की सच्चाई की, हुदहुद के बाकए से और वपद के सरदार से.
- (२०) हमने आपकी फ़रमावरी और आपकी इनाअत इस्तिपार की.
- (२१) अल्लाह की इबादत और तौहीद से, या इस्लाम की तरफ़ बढ़ने से.
- (२२) वह सहन शफ़ाफ़ आदगीने का था. उसके नीचे पानी जारी था. उसमें मछलियाँ थीं और उसके बीच में हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का तख़्त था जिसपर आप बैठे थे.
- (२३) ताकि पानी में चलकर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हो.
- (२४) यह पानी नहीं है, यह सुनकर बिल्कीस ने अपनी पिंडलियाँ छुपा लीं और इससे उसको बड़ा अचरज हुआ और उसने यक़ीन किया कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का मुल्क और हुक्मत अल्लाह की तरफ़ से है. इन चमत्कारों से उसने अल्लाह तआला की तौहीद और आपकी नबुव्वत पर इस्तिदलाल किया. अब हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने उसको इस्लाम की तरफ़ बुलाया.
- (२५) कि तेरे ग़ैर को पूजा, सूरज की उपासना की.
- (२६) चुनाने उसने सच्चे दिल से तौहीद और इस्लाम की कुबूल किया और ख़ालिस अल्लाह तआला की इबादत इस्तिपार की.

सुरए नम्ल - चौथा रूकू

- (१) और किसी को उसका शरीक न करो.
- (२) एक ईमानदार और एक काफ़िर.
- (३) हर पक्ष अपने ही को सच्चाई पर कहता और दोनों आपस में झगड़ते. काफ़िर गिरोह ने कहा, ऐ सालेह, जिस अज़ाब का तुम वादा देते हो उसको लाओ अगर रसूलों में से हो.
- (४) यानी बला और अज़ाब का.
- (५) भलाई से मुराद आफ़ियत और रहमत है.
- (६) अज़ाब उतरने से पहले, कुफ़्र से तौबह कर के, ईमान लाकर.
- (७) और दुनिया में अज़ाब न किया जाए.

हुआ उनके मक़ का हमने हलाक कर दिया उन्हें^(१५) और उनकी सारी क़ौम को^(१६) (५१) तो ये हैं इनके घर ढे पड़े, बदला इनके जुल्म का, वेशक इसमें निशानी है जानने वालों के लिये^(१७) और हमने उनको वचा लिया जो ईमान लाए^(१८) और डरते थे^(१९) (५२) और लूत को जब उसने अपनी क़ौम से कहा क्या बेहयाई पर आते हो^(२०) और तुम सूझ रहे हो^(२१) (५३) क्या तुम मर्दों के पास मस्ती से जाते हो औरतें छोड़कर^(२२) बल्कि तुम जाहिल लोग हो^(२३) (५४) तो उसकी क़ौम का कुछ जवाब न था मगर यह कि बोले लूत के घराने को अपनी वस्ती से निकाल दो, ये लोग तो सुधरापन चाहते हैं^(२४) (५५) तो हमने उसे और उसके घर वालों को निजात दी मगर उसकी औरत को हमने ठहरा दिया था कि वह रह जाने वालों में है^(२५) (५६) और हमने उनपर एक बरसाव बरसाया^(२६) तो क्या ही बुरा बरसाव था डराए हुआ का^(२७) (५७)

पाँचवां सूक़

तुम कहां सब ख़ूबियां अल्लाह को^(१) और सलाम उसके चुने हुए वन्दों पर^(२) क्या अल्लाह बेहतर^(३) या उनके बनाए हुए शरीक^(४) (५८)

مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۚ أَنَا ذَمُّنُهُمْ وَقَوْمُهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ
فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةٌ بِمَا ظَلَمُوا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۖ وَانْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَ
كَانُوا يَتَّقُونَ ۖ وَلَوْ طَآءُ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ
الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ۖ أَيْبَكُمُ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ
شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ۖ
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ
مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ۖ فَانْجَيْنَاهُ
وَآهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۚ قَدَرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ ۖ وَ
أَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۚ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۖ
قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ
أَصْطَفَى ۚ اللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ۚ

مَزْل

(८) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम जब भेजे गए और क़ौम ने झुटलाया उसके कारण वारिश रुक गई. अकाल हो गया, लोग भूखों मरने लगे, उसको उन्होंने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की तशरीफ़ आवरी की तरफ़ निखत किया और आपकी आमद को बदशगुनी समझा.

(९) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि बदशगुनी जो तुम्हारे पास आई, यह तुम्हारे कुफ़्र के कारण अल्लाह तआला की तरफ़ से आई.

(१०) आजमाइश में डाले गए या अपने दीन के कारण अज़ाब में जकड़े हुए हो.

(११) यानी समूद के शहर में जिसका नाम हजर है. उनके शरीफ़ज़ादों में से नौ व्यक्ति थे जिनका सरदार क़दार बिन सालिफ़ था. यही लोग हैं जिन्होंने ऊंटनी की कूँचें काटने की कोशिश की थी.

(१२) यानी रात के वक़्त उनको और उनकी औलाद का और उनके अनुयाइयों को जो उनपर ईमान लाए, क़त्ल कर देंगे.

(१३) जिसको उनके ख़ून का बदला तलब करने का हक़ होगा.

(१४) यानी उनके छलकपट का बदला यह दिया कि उनके अज़ाब में जल्दी फ़रमाई.

(१५) यानी उन नौ व्यक्तियों को. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने उस रात हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के मक़ान को हिफ़ाज़त के लिये फ़रिश्ते भेजे तां का नौ व्यक्ति हथियार बांध कर तलवारें ख़ींच कर हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के दरवाज़े पर आए. फ़रिश्तों ने उनके पत्थर मारे. बां पत्थर लगते थे और मारने वाले नज़र नहीं आते थे. इस तरह उन नौ को हलाक किया.

(१६) भयानक आवाज़ से.

(१७) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम पर.

(१८) उनकी नाफ़रमानी से. उन लोगों की तादाद चार हज़ार थी.

(१९) इस बेहयाई से मुराद उनकी बदकारी है.

(२०) यानी इस काम की बुराई जानते हो या ये मानी हैं कि एक दूसरे के सामने बेपर्दा खुल्लम खुल्ला बुरा काम करते हो या ये कि तुम अपने से पहले नाफ़रमानी करने वालों की तवाही और उनके अज़ाब के आसार देखते हो फिर भी इस बुरे काम में लगें हो.

(२१) इसके बावजूद कि मर्दों के लिये औरतें बनाई गई हैं. मर्दों के लिये मर्द और औरतों के लिये औरतें नहीं बनाई गई. इसलिये यह काम अल्लाह तआला की हिक़मत का चिरोथ है.

- (२२) जो ऐसा काम करते हो.
- (२३) और इस गन्दे काम को मना करते हैं.
- (२४) अज्ञात में.
- (२५) पत्थरों का.

सूरए नम्ल - पाँचवां स्कू

- (१) यह सम्बंधन है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को कि पिछली उम्मतों के हलाक पर अल्लाह तआला की हम्द बज लाए.
- (२) यानी अम्बिया व मुरसलीन पर. हज़रते इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फरमाया कि चुने हुए बन्दों से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहावा मुराद हैं.
- (३) खुदा परस्तों के लिये, जो ख़ास उसकी इबादत करें और उस पर ईमान लाएं और वह उन्हें अज़ाब और हलाकत से बच्ये.
- (४) यानी वुत, जो अपने पुजारियों के कुछ काम न आ सकें. तो जब उनमें काई भलाई नहीं, वो कोई तफ़ा नहीं पहुंचा सकते तब उनका पूजना और मअबूद मानना बिल्कुल बेजा है. और इसके बाद कुछ क्रिम बयान की जाती हैं जो अल्लाह तआला के एक हों और उसकी सम्पूर्ण कुदरत को प्रमाणित करती हैं.

पारा उन्नीस समाप्त

बीसवाँ पारा- अम्मन खलक (सूरए नम्ल - पाँचवाँ रुकू जारी)

या वह जिसने आसमान और ज़मीन बनाए^(५) और तुम्हारे लिये आसमान से पानी उतारा, तो हमने उससे वाग उगाए रीनक वाले, तुम्हारी तांकत न थी कि उनके पेड़ उगाते^(६) क्या अल्लाह के साथ कोई और खुदा है^(७) बल्कि वो लोग राह से कतराते हैं^(८) (६०) या वह जिसने ज़मीन बसने को बनाई और उसके बीच में नेहरें निकालीं और उसके लिये लंगर बनाए^(९) और दोनों समन्दरों में आड़ रखी^(१०) क्या अल्लाह के साथ कोई और खुदा है बल्कि उनमें अक्सर जाहिल हैं^(११) (६१) या वह जो लाचार की सुनता है^(१२) जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई और तुम्हें ज़मीन का वारिस करता है^(१३) क्या अल्लाह के साथ कोई और खुदा है, बहुत ही कम ध्यान करते हो^(६२) या वह जो तुम्हें राह दिखाता है^(१४) अंधेरियों में खुशकी और तरी की^(१५) और वह कि हवाएं भेजता है अपनी रहमत के आगे खुशखबरी सुनाती^(१६) क्या अल्लाह के साथ कोई और खुदा है, वरतर है अल्लाह उनके शिर्क से^(६३) या वह जो खलक (सृष्टि) की शुरूआत फ़रमाता है फिर उसे दोबारा बनाएगा^(१७) और वह जो तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है, ^(१८) क्या अल्लाह के साथ कोई और खुदा है, तुम फ़रमाओ कि अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो^(१९) (६४)

अَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَارْتَلٰ اِلٰهًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ مَآءٍ فَاَنْزَلْنٰهُ حَذٰیقًا ذٰلِكَ بِهَـٰجَةٍ مَّا كَانُ لَكُمْ اَنْ تَنْبَغُوا شَجَرًا مِّنْ اِلٰهٍ مَّعَ اللّٰهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْبَدُوْنَ ۝ اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَافَهَا اَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِیَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا مَّعَ اللّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاہُ وَیَكْشِفُ السُّوءَ وَیَجْعَلُ لَّكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ اِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قَلِیْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَمَّنْ یَّهْدِیْكُمْ فِی ظُلُمَآتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ یُرْسِلُ الرِّیْحَ بُشْرًا بَیْنَ یَدَیْ رَحْمَتِہٖ ؕ اِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ تَعَالٰی اللّٰهُ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ۝ اَمَّنْ یَّبْدُءُ الْخَلْقَ ثُمَّ یُعِیْدُہٗ وَمَنْ یُّزِیْرُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قُلْ هَآءِیْٓ اَبْرَہٰمَ اَنۡکُمۡ اِنْ کُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝

मन्ज़र

सूरए नम्ल - पाँचवाँ रुकू जारी

- (५) अज़ीम-तरीन चीज़ें, जां देखने में आती हैं और अल्लाह तआला की महानता, क्षमता और भरपूर कुदरत की दलील हैं, उनका बयान फ़रमाया. माती ये हैं कि क्या बुत बेहतर हैं या वह जिसने आसमान और ज़मीन जैसी अज़ीम और अज़ीब मसज़ूक बनाई.
- (६) यह तुम्हारी कुदरत में न था.
- (७) क्या कुदरत के ये प्रमाण देखकर ऐसा कहा जा सकता है. हरगिज़ नहीं. वह वाहिद है, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं.
- (८) जो उसके लिये शरीक ठहराते हैं.
- (९) भारी पहाड़, जो उसे हरकत से रोकते हैं.
- (१०) कि ख़ारी मीटे मिलने न पाएँ.
- (११) जो अपने सब की तौहीद और उसकी कुदरत और शक्ति को नहीं जानते और उस पर इमान नहीं लाने.
- (१२) और हाज़त दूर फ़रमाता है.
- (१३) कि तुम उसमें रहो और एक ज़माने के बाद दूसरे ज़माने में उसका इस्तेमाल करो.
- (१४) तुम्हारे उद्देश्य और मक़सदों की.
- (१५) सितारों से और चिल्लां या निशानियों से.
- (१६) रहमत से मुराद यहाँ बारिश है.
- (१७) उसकी मौत के बाद. अगरचे मौत के बाद ज़िन्दा किये जाने को काफ़िर नहीं मानते ये लेकिन जब कि इसपर तर्क और प्रमाण कायम हैं तो उनका इक़रा न करना कुछ लिहाज़ के क़ाबिल नहीं बल्कि जब वो शुरू की पैदाइश के काइल हैं तो उन्हें दोबारा पैदाइश या दोहराए जाने का मानना पड़ेगा क्योंकि शुरूआत दोहराए जाने पर भारी प्रमाण रखती है. तो अब उनके लिये इनकार के किसी बहाने की कोई जगह बाक़ी न रही.
- (१८) आसमान से बारिश और ज़मीन से हरियाली.
- (१९) अपने इस दावे में कि अल्लाह तआला के सिवा और भी मअबूद हैं. तो बताओ जो जो गुण और क़मालात ऊपर बयान किये गए वो किस में हैं. और जब अल्लाह के सिवा ऐसा कोई नहीं तो फिर किसी दूसरे को किस तरह मअबूद ठहराते हो. यहाँ "हाँ"

तुम फ़रमाओ ग़ैब नहीं जानते जो कोई आसमानों और ज़मीन में है मगर अल्लाह^(२०) और उन्हें ख़बर नहीं कि कब उठाए जाएंगे^(२१) क्या उनके इल्म का सिलसिला आखिरत के जानने तक पहुँच गया^(२२) कोई नहीं वो उसकी तरफ़ से शक में हैं^(२३) बल्कि वां उससे अंधे हैं^(२४)

छटा रूकू

और काफ़िर बोले क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जाएंगे क्या हम फिर निकाले जाएंगे^(२५) वेशक उसका वादा दिया गया हमको और हमसे पहले हमारे बाप दादाओं को यह तो नहीं मगर अगलों की कहानियाँ^(२६) तुम फ़रमाओ ज़मीन में चलकर देखो कैसा हुआ अंजाम मुजरिमों का^(२७) और तुम उनपर ग़म न खाओ^(२८) और उनके मक़्र(कपट) से दिल तंग न हो^(२९) और कहते हैं कब आएगा यह वादा^(३०) अगर तुम सच्चे हो^(३१) तुम फ़रमाओ करीब है कि तुम्हारे पीछे आ लगी हो कुछ वो चीज़ जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो^(३२) और वेशक तेरा रब फ़ज़ल वाला है आदमियों पर^(३३) लेकिन अक्सर आदमी हक़(सत्य) नहीं मानते^(३४) और वेशक तुम्हारा रब जानता है जो उनके सीनों में छुपी है और जो वो ज़ाहिर करते हैं^(३५) और जितने ग़ैब हैं आसमानों और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं^(३६)

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۚ بَلِ أَذْرَكَ عَنْهُمْ فِي الْآخِرَةِ سُبُلَ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْهَا بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُونَ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاءُ وَنَحْنُ أَصْنَاءُ نَعْتَصِرُ ۚ لَقَدْ وَعِدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَآبَاءُ وَنَحْنُ مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۚ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي حَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۚ وَيَقُولُونَ مَتَى هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ قُلْ عَنِّي أَنْ يَكُونَ رَدِفٌ لَّكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۚ إِنَّ هَٰذَا

मज़ल

बुरहानकुम" यानी अपनी दलील लाओ फ़रमाकर उनकी लाचारी और बातिल होने का इज़हार मन्ज़ूर है.

(२०) वही जानने वाला है ग़ैब यानी अज्ञात का. उसको इम्तिज़ार है जिसे चाहें बताए. चुनान्ने अपने प्यारे नवियों को बताता है जैसा कि सूरए आले इमरान में है "वमा कानल्लाहो लियुत लिअकुम अलल ग़ैब वलाकिन्नल्लाहा यजतबी मिर रुसुलिही मय यशाओ" यानी अल्लाह की शान नहीं कि तुम्हें ग़ैब का इल्म दे. हाँ अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों में से जिसे चाहे. और बहुत सी आयतों में अपने प्यारे रसूलों को ग़ैबी उलूम अता फ़रमाने का वयाद फ़रमाया गया और ख़ुद इसी पारे में इससे अगले रूकू में आया है: "वमा मिन शाइवतिन फ़िस्समाए वल अद इल्ला फ़ी किताबिम मुबीन" यानी जितने ग़ैब हैं आसमान और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं. यह आयत मुश्रिकों के बारे में उतरी जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से क़यामत के आने का वक़्त पूछा था.

(२१) और उन्हें क़यामत आने का इल्म और यकीन हासिल हो गया, जो वो उसका वक़्त पूछते हैं.

(२२) उन्हें अब तक क़यामत के आने का यकीन नहीं है.

सूरए नमल - छटा रूकू

(१) अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा.

(२) यानी (मआज़ल्लाह) झुटी बातें.

(३) कि वो इन्कार के कारण अज़ाब से हलाक किये गए.

(४) उनके मुँह फेरने और झुटलाने और इस्लाम से मेहरूब रहने के कारण.

(५) क्योंकि अल्लाह आपका हाफ़िज़ और मददगार है.

(६) यानी यह अज़ाब का वादा कब पूरा होगा.

(७) यानी अल्लाह का अज़ाब, चुनान्ने वह अज़ाब बढ़ के दिन उनपर आ ही गया और बाकी का मौत के बाद पाएंगे.

(८) इसीलिए अज़ाब में दरी करता है.

(९) और शुक्राज़ारी नहीं करते और अपनी जिहालत से अज़ाब की जल्दी करते हैं.

(१०) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ दुश्मनी रखना और आपके विरोध में छलकपट करना सब कुछ अल्लाह

वेशक यह कुरआन जिक्र फरमाता है वनी इस्राईल से अक्सर वो बातें जिसमें वो इखिलाफ (मतभेद) करते हैं^(१२) ﴿७६﴾ और बेशक वह हिदायत और रहमत है मुसलमानों के लिये^(१३) ﴿७७﴾ वेशक तुम्हारा रब उनके आपस में फ़ैसला फ़रमाता है अपने हुक्म से और वही है इज़्जत वाला इल्म वाला^(७८) तो तुम अल्लाह पर भरोसा करो, वेशक तुम रौशन हक़ पर हो^(७९) वेशक तुम्हारे सुनाए नहीं सुनते मुर्दे^(८०) और न तुम्हारे सुनाए वेहरे पुकार सुनें जब फिरें पीठ दे कर^(८१) ﴿८०﴾ और अंधों को^(८२) गुमराही से तुम हिदायत करने वाले नहीं तुम्हारे सुनाए तो वही सुनते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं^(८३) और वो मुसलमान हैं^(८४) और जब बात उनपर आ पड़ेगी^(८५) हम ज़मीन से उनके लिये एक चौपाया निकालेंगे^(८६) जो लोगों से कलाम करेगा^(८७) इसलिये कि लोग हमारी आयतों पर ईमान न लाते थे^(८८) ﴿८२﴾

सातवाँ रूकू

और जिस दिन उठाएंगे हम हर गिरोह में से एक फ़ौज जो हमारी आयतों को झुटलाती है^(९) तो उनके अगले रोके जाएंगे कि पिछले उनसे आ मिलें^(१३) यहां तक कि जब सब हाज़िर होंगे^(१४) फ़रमाएगा क्या तुम ने मेरी आयतें झुटलाई हालांकि तुम्हारा इल्म उनतक न पहुंचा था^(१५) या क्या काम करते थे^(१६) ﴿८४﴾ और बात पड़ चुकी उनपर^(१७) उनके जुल्म के कारण तो वो अब कुछ नहीं बोलते^(१८) ﴿८५﴾

الْقُرْآنَ يَقْضُ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۖ وَإِنَّهُ لَهْدَىٰ وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝ إِنَّكَ لَا تَسْمَعُ الْمَوْتَى وَلَا تَسْمَعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلُوا مُمْدِيرِينَ ۝ وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعُصَىٰ عَنِ صَلَاحِهِمْ إِذَا تَسْمَعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۝ وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مَّمَّنْ يَكْذِبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَوْقَالُ الْكَذِبِ بِآيَاتِنَا وَلَمْ يُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّا ذَاكُنْتُمْ تُعَمَلُونَ ۝ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يُلَاقُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا الْبَيْلَ

مَدِينًا

को मालूम है, वह उसकी सज़ा देगा.

(११) यानी लौहे मेहफूज़ में दर्ज हैं और अल्लाह के फ़ज़ल से जिनके उनका देखना मयस्सर है उनके लिये जाहिर हैं.

(१२) दीनी कामों में किताब वालों ने आपस में मतभेद किया, उनके बहुत से सम्प्रदाय हो गए और आपस में बुरा बना कहने लगे तो कुरआने करीम ने उसका बयान फ़रमाया. ऐसा बयान किया कि अगर वो इन्साफ़ करें और उसको कुबूल करें और इस्लाम लाएं तो उनमें यह आपसी मतभेद बाक़ी न रहे.

(१३) मुर्दा से मुग़द यहाँ काफ़िर लोग हैं जिनके दिल मुर्दा हैं. चुनान्ये इसी आयत में उनके मुकाबले में ईमान वालों का बयान फ़रमाया "तुम्हारे सुनाए तो वही सुनते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं". जो लोग इस आयत से मुर्दों के न सुनने पर वहस करते हैं उनका तर्क ग़लत है. चूंकि यह मुर्दा काफ़िर को कहा गया है और उन से भी बिल्कुल ही हर कलाम के सुनने का इन्कार मुग़द नहीं है बल्कि नसीहत और उपदेश और हिदायत की बातें कुबूल करने वाले कानों से सुनने की नफ़ी है और मुग़द यह है कि काफ़िर मुर्दा दिल हैं कि नसीहत से फ़ायदा नहीं उठाते. इस आयत के मानी ये बताना कि मुर्दे नहीं सुनते, बिल्कुल ग़लत है. सही हदीसों से मुर्दों का सुनना साबित है.

(१४) मानी ये हैं कि काफ़िर मुंह फेरने और न मानने की वजह से मुर्दे और वहेर जैसे हो गए हैं कि उन्हें पुकारना और सच्चाई की तरफ़ बुलाना किसी तरह लाभदायक नहीं होता.

(१५) ज़िनकी नज़र या दृष्टि जाती रही और दिल अन्धे हो गए.

(१६) जिनके पास समझने वाले दिल हैं और जो अल्लाह के इल्म में ईमान की सआदत से लाभान्वित होने वाले हैं. (बैज्जावी व कबीर व अबूसऊद व मदरिक)

(१७) यानी उनपर अल्लाह का सज़ा होगा और अज़ाब बाजिय हो जाएगा और हुज़्रत पूरी हो चुकेगी इस तरह कि लोग अच्छाई पर अमल और बुराई से दूर रहना छोड़ देंगे और उनकी दुस्ख़्ती की कोई उम्मीद बाक़ी न रहेगी यानी क़्यामत करीब हो जाएगी और उसकी निशानियाँ जाहिर होने लगेंगी और उस वक़्त तौबह का कोई फ़ायदा न होगा.

(१८) इस चौपाए को दाब्तुल-अर्ज़ कहते हैं. यह अजीब शक़ल का जानवर होगा जो सफ़ा पहाड़ से निकल कर सारे शहरों में बहुत जल्द फिरेगा. फ़साहत के साथ कलाम करेगा. हर व्यक्ति के माथे पर एक निशान लगाएगा. ईमान वालों की पेशानी पर हज़रत मुसा

क्या उन्होंने न देखा कि हमने रात बनाई कि उसमें आराम करें और दिन को बनाया सुझाने वाला, बेशक इसमें ज़रूर निशानियां हैं उन लोगों के लिये कि ईमान रखते हैं (८६) और जिस दिन फूँका जाएगा सूर (८७) तो घबराए जायेंगे जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं (८८) मगर जिसे खुदा चाहे (८९) और सब उसके हुज़ूर हाज़िर हुए आजिज़ी (गिड़गिड़ाते) करते (९०) और तू देखेगा पहाड़ों को, खयाल करेगा कि वो जमे हुए हैं और वो चलते होंगे बादल की चाल (९१) यह काम है अल्लाह का जिसने हिकमत से बनाई हर चीज़, बेशक उसे खबर है तुम्हारे कामों की (९२) जो नेकी लाए (९३) उसके लिये इससे बेहतर सिला है (९४) और उनको उस दिन की घबराहट से अमान है (९५) और जो वदी लाए (९६) तो उनके मुंह औंधाए गए आग में (९७) तुम्हें क्या बदला मिलेगा मगर उसी का जो करते थे (९८) मुझे तो यही हुक्म हुआ है कि पूजू इस शहर के रब को (९९) जिसने इसे हुर्मत वाला किया है (१००) और सब कुछ उसी का है, और मुझे हुक्म हुआ है कि फ़रमावरदारों में हूँ (१०१) और यह कि कुरआन की तिलावत (पाठ) करूँ (१०२) तो जिसने राह पाई उसने अपने भले को राह पाई (१०३) और जो बहके (१०४) तो फ़रमा दो कि मैं तो यही डर सुनाने वाला हूँ (१०५) और फ़रमाओ कि

لَيْسَ كُنُوزُهُ فِيهَا وَالنَّهَارُ مُبْصِرُهَا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ۚ وَكُلُّ أَتَوَةٍ ذَوِئَرَيْنِ ۝ وَكَرِهَ الْجِبَالُ تَحْسِبُهَا جَائِدَةً وَهِيَ ثَمَرٌ مِّمَّا السَّحَابُ صَنَعَ اللَّهُ الَّذِي اتَّقَ ۖ كُلُّ شَيْءٍ إِذْ أَنَّهُ خَبِيرٌ ۖ بِمَا تَفْعَلُونَ ۝ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فِرْعَ يَوْمٍ مُّذِ ۚ آمِنُونَ ۝ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكَيْتٌ وَجُوهُهُمْ فِي النَّارِ ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّمَا أَمْرُهُ أَنْ أُعْبَدَ رَبِّ هَذِهِ الْبَلَدَةِ ۚ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۚ وَأَمْرُهُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَإِنْ أَثَلُّوا الْقُرْآنَ ۚ فَسَوْفَ ائْتَدَىٰ بِأَيْمَانِهِمْ لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ صَدَّقَ فَقُلْ إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ

مَذَرًا

की लाठी से तूराती लकीर खींचेगा। काफ़िर की पेशानी पर हज़रत सुलैमान की अंगूठी से काली मोहर लगाएगा।

(१९) साफ़ सुथरी ज़बान में, और कहेगा यह मूмин है, यह काफ़िर है।

(२०) यानी कुरआन पाक पर ईमान न लाते थे जिसमें मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब व अज़ाब और दाबतुल-अज़ के निकलने का बयान है। इसके बाद की आयत में क़यामत का बयान फ़रमाया जाता है।

सूरए नमल - सातवाँ सूक़

(१) जाँ कि हमने अपने नवियों पर उतारीं, फ़ौज़ से मुराद बड़ी जमाअत है।

(२) क़यामत के राज़ हिसाब के मैदान में।

(३) और तुमने उनकी पहचान हासिल न की थी, बग़ैर सोचे समझे ही उन आयतों का इन्कार कर दिया।

(४) जब तुमने उन आयतों को भी नहीं सोचा, तुम बेकार तो नहीं पैदा किये गए थे।

(५) अज़ाब साबित हो चुका।

(६) कि उनके लिये कोई हुज़त और कोई गुफ्तगू बाक़ी नहीं है। एक क़ौल यह भी है कि अज़ाब उन पर इस तरह आ जाएगा कि वो बोल न सकेंगे।

(७) और आयत में मरने के बाद उठने पर दलील है इसलिये कि जो दिन की रौशनी को रात के अंधेरे से और रात के अंधेरे को दिन के उजाले से बदलने पर क़ादिर है वह मुर्दे को ज़िन्दा करने पर भी क़ादिर है। इसके अलावा रात और दिन की तबदीली से यह भी मालूम होता है कि उसमें उनकी दुनियावी ज़िन्दगी का इन्तिज़ाम है। तो यह बेकार नहीं किया गया बल्कि इस ज़िन्दगानी के कर्मों पर अज़ाब और सवाब का दिया जाना हिकमत पर आधारित है और जय दुनिया कर्मभूमि है तो ज़रूरी है कि एक आख़िरत भी हो, वहाँ की ज़िन्दगानी में यहाँ के कर्मों का बदला मिले।

(८) और उसके फूटने वाले इश्वाक़ील अलौहेससलाम होंगे।

(९) ऐसा घबराना जो मौत का कारण होगा।

(१०) और जिसके दिल को अल्लाह तआला सुकून अता फ़रमाए, हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहो अन्हां से रिवायत है कि ये शहीद लोग हैं जो अपनी तलवारों गलों में डाले अर्श के चारों तरफ़ हाज़िर होंगे, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया वो शहीद

डाल दे और न डर^(१३) और न गम कर^(१४) वेशक हम उसे तेरी तरफ़ फेर लाएंगे और उसे रसूल बनाएंगे^(१५) (७) तो उसे उठा लिया फिरऔन के घर वालों ने^(१६) कि वह उनका दुश्मन और उनपर गम हो^(१७) वेशक फिरऔन और हामान^(१८) और उनके लश्कर खताकार थे^(१९) (८) और फिरऔन की बीबी ने कहा^(२०) यह बच्चा मेरी और तेरी आंखों की ठण्डक है, इसे क़त्ल न करो शायद यह हमें नफ़ा दे या हम इसे बेटा बना लें^(२१) और वो ख़बर धे^(२२) (९) और सुक़ को मूसा की माँ का दिल बेसब्र हो गया^(२३) ज़रूर करीब था कि वह उसका हाल खोल देती^(२४) अगर हम ढारस न वंधाते उसके दिल पर कि उसे हमारे वादे पर यकीन रहे^(२५) (१०) और उसकी माँ ने उसकी बहन से कहा^(२६) उसके पीछे चली जा, तो वह उसे दूर से देखती रही और उनको ख़बर न थी^(२७) (११) और हमने पहले ही सब दाइयां उसपर हराम कर दी थीं^(२८) तो बोली क्या मैं तुम्हें बता दूँ ऐसे घर वाले कि तुम्हारे इस बच्चे को पाल दें और वो इसके ख़ैरखाह (शुभचिंतक) हैं^(२९) (१२) तो हमने उसे उसकी माँ की तरफ़ फेरा कि माँ की आंख ठण्डी हो और गम न खाए और जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते^(३०) (१३)

दूसरा ख़ू

और जब अपनी जवानी को पहुंचा और पूरे ज़ोर पर

رَأَوْهُ إِلَيْكَ وَجَاعِلُهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ قَالَتْ قُلَّةُ
أَلْ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا إِنَّ فِرْعَوْنَ وَ
هَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِئِينَ ۝ وَقَالَتِ امْرَأَتُ
فِرْعَوْنَ قُرْتُ عَيْنِي لِئَلَّا تُفْتَلُوهُ ۖ عَسَىٰ أَنْ
يَنْفَعَنِيَ أَوْ يَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَأَصْبَحَ
فُؤَادُ أَمْرِمُوسَىٰ فِرْعَاوِنًا كَادَتْ لَتُبْدِي بِهِ لَوْلَا
أَنْ رَبَّنَا عَلَّ قَلْبَهَا لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَ
قَالَتْ لِأُخْتِي قُصِّيهِ ۖ فَبَصَّرَتْ بِهِ عَنْ جُنُبٍ وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ۖ وَحَرَمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ
فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ
وَهُمْ لَهُ لَٰصِقُونَ ۝ فَوَدَدْنَا لَآءِ أَوَّلِهِ كَيْ تَقَرَّ
عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلَنَعْلَمَنَّ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنْ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ

مَنْ خَلَقَ

(२५) इन निशानियों से मुराद चाँद का दो टुकड़ों में बंट जाना वगैरह चमत्कार हैं और वो मुसीबतें जो दुनिया में आईं जैसे कि बद्र में काफ़िरों का क़त्ल होना, फ़रिश्तों का उन्हें मारना।

२८ - सूरए क़सस - पहला ख़ू

(१) सूरए क़सस मक्के में उतरी सिवाय चार आयतों के जो “अल्लज़ीना आतैनाहुमुल किताब” से शुरू होकर “ला नन्मिल ज़हि्लीन” पर ख़त्म होती हैं। इस सूरात में एक आयत “इन्नल लज़ी फ़रदा” ऐसी है जो मक्काए मुक़र्रमा और मदीनाए तैय्यिबह के बीच उतरी। इस सूरात में नौ ख़ू, अठासी आयतें, चार सौ इक्तालीस कलिमे और पांच हज़ार आठ सौ अक्षर हैं।

(२) जो सत्य को असत्य से अलग करती है।

(३) यानी मिस्त्र प्रदेश में उसका क़ज़ा था और वह अत्याचार और घमण्ड में चरम सीमा को पहुंच गया था। यहाँ तक कि उसने अपना बन्दा होना भी भुला दिया था।

(४) यानी बनी इस्राईल को।

(५) यानी लड़कियों को ख़िदमतगारी के लिये ज़िन्दा छोड़ देता और बेटों को ज़िन्दा करने का कारण यह था कि तांत्रिकों ने उससे कहा दिया था कि बनी इस्राईल में एक बच्चा पैदा होगा जो तेरे मुल्क के पतन का कारण होगा। इसलिये वह ऐसा करता था और यह उसकी अत्यन्त मूर्खता थी क्योंकि वह अगर अपने ख़याल में तांत्रिकों को सच्चा समझता था तो यह बात होती ही थी। लड़कों को क़त्ल कर देने से क्या फ़ायदा था और अगर वह सच्चा नहीं जानता था तो ऐसी बेकार बात का क्या लिहाज़ था और क़त्ल करना क्या मानी रखता था।

(६) कि वो लोगों को नेकी की राह बताएँ और लोग नेकी में उनका अनुकरण करें।

(७) यानी फिरऔन और उसकी क़ौम की माल मत्ता इन कमज़ोर बनी इस्राईल को दे दें।

(८) मिस्त्र और शाम की।

(९) कि बनी इस्राईल के एक बेटे के हाथ से उसके मुल्क का पतन और उनकी हलाकत हो।

(१०) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बालिदा का नाम य़ुहाविज़ है। आप लादी बिन य़अक़ूब की नरल से हैं। अल्लाह तआला ने

आया^(१) हमने उसे हुक्म और इल्म अता फ़रमाया,^(२) और हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकां को^(३) और उस शहर में दाखिल हुआ^(४) जिस वक़्त शहर वाले दोपहर के ख़ाव में बेख़बर थे^(५) तो उसमें दो मर्द लड़ते पाए, एक मूसा के गिरोह से था^(६) और दूसरा उसके दुश्मनों से^(७) तो वह जो उसके गिरोह से था^(८) उसने मूसा से मदद मांगी उस पर जो उसके दुश्मनों से था, तो मूसा ने उसके घंसा मारा^(९) तो उसका काम कर दिया^(१०) कहा यह काम शैतान की तरफ़ से हुआ^(११) वेशक वह दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला^(१२) अज़ की ऐ मेरे रब मैंने अपनी जान पर ज़ियादती की^(१३) तो मुझे बख़्श दे तो रब ने उसे बख़्श दिया, वेशक वही बख़्शने वाला मेहरवान है^(१४) अज़ की ऐ मेरे रब, जैसा तूने मुझपर एहसान किया तो अब^(१५) हरगिज़ मैं मुजरिमों का मददगार न हूँगा^(१६) तो सुबह की उस शहर में डरते हुए इत्तिज़ार में कि क्या होता है^(१७) जभी देखा कि वह जिसने कल उनसे मदद चाही थी फ़रियाद कर रहा है^(१८) मूसा ने उससे फ़रमाया वेशक तू खुला गुमराह है^(१९) तो जब मूसा ने चाहा कि उस पर गिरफ़्त करे जो उन दोनों का दुश्मन है^(२०) वह बोला ऐ मूसा क्या तुम मुझे वैसा ही क़त्ल करना चाहते हो जैसा तुमने कल एक व्यक्ति को

أَتَيْنَهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِنْ شِيعَتِهِ وَهَٰذَا مِنْ عَدُوِّهِ ۖ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِّنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِّنْ عَدُوِّهِ ۖ فَوَكَرَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ ۖ قَالَ هَٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قَالَ رَبِّ إِنَّمَا أَتَمَمْتُ عَلَيْكَ فَلَئِنْ أَكُونُ ظَهِيرًا لِّلْمُجْرِمِينَ ۖ فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۖ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ ۚ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ إِنَّكَ لَعَوِيُّ مُبِينٌ ۝ فَلَمَّا أَن أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۖ قَالَ يُؤْمَسِي آثُرِيذُ ۖ أَن تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا

مَذَل

उन्को स्वाब में या फ़रिश्ते के ज़रीये या उनके दिल में डाल कर इल्हाम फ़रमाया।

(११) चुगान्वे वह कुछ दिन आपको दूध पिलाती रही। इस असें मैं न आप रोते थे न उनकी गोद में कोई हरकत करते थे, न आप की बहन के सिवा और किसी को आपकी विलादत की सूचना थी।

(१२) यानी पड़ोसी जान गए हैं, वो चुगालख़ोरी करेंगे और फिरऔन इस मुबारक बेटे के क़त्ल के पीछे पड़ जाएगा।

(१३) यानी मिस की नील नदी में बिना डर के डाल दे और उसके डूबने और हलाक होने का अन्देशा न कर।

(१४) उसकी जुदाई का।

(१५) तो उन्होंने ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तीन माह दूध पिलाया और जब आप का फिरऔन की तरफ़ से अन्देशा हुआ तो एक सन्दूक में रखकर (जो ख़ास तौर पर इस मक़सद के लिये बनाया गया था) रात के वक़्त नील नदी में बहा दिया।

(१६) उस रात की सुबह को, और उस सन्दूक को फिरऔन के सामने रखा और वह खोला गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम निकले जो अपने अंगूठे से दूध चूसते थे।

(१७) आख़िरकार।

(१८) जो उसका वज़ीर था।

(१९) यानी नाफ़रमान, तो अल्लाह तआला ने उन्हें यह सज़ा दी कि उनके हलाक करने वाले दुश्मन की उन्हीं से परवरिश कराई।

(२०) जबकि फिरऔन ने अपनी क़ीम के लोगों के उकसाने से मूसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल का इरादा किया।

(२१) क्योंकि यह इसी क़ाबिल है। फिरऔन की बीबी आसिया बहुत नेक बीबी थीं। नबियों की नस्ल से थीं। ग़रीबों और दरिद्रों पर मेहरबानी करती थीं। उन्होंने फिरऔन से कहा कि यह बच्चा साल भर से ज़्यादा उम्र का मालूम होता है और तूने इस साल के अन्दर पैदा होने वाले बच्चों के क़त्ल का हुक्म दिया है। इसके अलावा मालूम नहीं यह बच्चा नदी में किस प्रदेश से आया। तुझ जिस बच्चे का डर है वह इसी मुल्क के बनी इस्राईल का बताया गया है। आसिया की यह बात उन लोगों ने मान ली।

(२२) उससे जो परिणाम होने वाला था।

(२३) जब उन्होंने सुना कि उनके सूपुत्र फिरऔन के हाथों में पहुंच गए।

(२४) और ममता के जोश में हाथ बेटे हाथ बेटे पुकारती थीं।

(२५) जो वादा हम कर चुके हैं कि तेरे इस बेटे को तेरी तरफ़ फेर लाएंगे।

(२६) जिनका नाम मरयम था, कि हाल मालूम करने के लिये।

(२७) कि यह उस बच्चे की बहन है और उसकी निगरानी करती है।

(२८) चुनान्वं जितनी दाइयाँ हाज़िर की गईं उनमें से किसी की छाती आपने मुंह में न ली. इससे उन लोगों को बहुत चिन्ता हुई कि कहीं से कोई ऐसी दाई मिले जिसका दूध आप पी लें. दाइयों के साथ आपकी बहन भी यह हाल देखने चली गई थीं. अब उन्होंने मौका पाया.

(२९) चुनान्वे वह उनकी स्वादिष्ट पर अपनी बालिदा का बुला लाई. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फिरऔन की गोद में थं और दूध के लिये रोते थे. फिरऔन आपको शफ़क़त के साथ बहलाता था. जब आपकी बालिदा आई और आपने उनकी खुशबू पाई तो आपको क़रार आया और आपने उनका दूध मुंह में लिया. फिरऔन ने कहा तू इस बच्चे को कौन है कि उसने तेरे सिवा किसी के दूध को मुंह भी न लगाया. उन्होंने कहा मैं एक औरत हूँ, पाक साफ़ रहती हूँ, मेरा दूध खुशगवार है, जिस्म खुशबूदार है, इसलिये जिन बच्चों के मिज़ाज में तफ़ासत होती है वो और औरतों का दूध नहीं लेते हैं. मेरा दूध पी लेते हैं. फिरऔन ने बच्चा उन्हें दिया और दूध पिलाने पर उन्हें मुक़र्रर करके बेटे को अपने घर ले जाने की आज्ञा दी. चुनान्वं आप अपने मकान पर ले आई और अल्लाह तआला का वादा पूरा हुआ. उस वक़्त उन्हें पूरा इम्मीनान हो गया कि ये बेटा ज़रूर नबी होगा. अल्लाह तआला उस वादे का ज़िक्र फ़रमाता है.

(३०) और शक में रहने हैं. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी बालिदा के पास दूध पीने के ज़माने तक रहे और इस ज़माने में फिरऔन उन्हें एक अशरफ़ी रोज़ देता रहा. दूध छूटने के बाद आप हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फिरऔन के पास ले आई और आप वहाँ पलते रहे.

सूरए क़सस - दूसरा रूकू

(१) उम्र शरीफ़ तीस साल से ज़्यादा हो गई.

(२) यानी दीन और दुनिया की मसलिहतों का इल्म.

(३) वह शहर या तो मन्फ़ था जो मिस्र की सीमाओं में है. अरब उसकी माफ़ह है. किन्ती ज़वान में इस लफ़्ज़ के मारी हैं तीस. यह पहला शहर है जो तूफ़ाने नूह के बाद आबाद हुआ. इस प्रदेश में हाम के बेटे मिस्र ने निवास किया. ये निवास करने वाले कुल तीस थे इसलिये इसका नाम माफ़ह हुआ. फिर इसकी अरबी मन्फ़ हुई. था वह हाबीन था जो मिस्र से दो फ़रसंग (छ मील) की दूरी पर था. एक क़ौल यह भी है कि वह शहर ऐने शम्स था. (जुमल व ख़ाज़िन)

(४) और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वस्सलाम के छुपवाँ तौर पर दाख़िल होने का कारण यह था कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जवान हुए तो आपने हक़ का बयान और फिरऔन और उसके लोगों की गुमराही का रद शुरू किया. बनी इस्राईल के लोग आपकी बात सुनते और आपका अनुकरण करते. आप फिरऔनियों के दीन का विरोध फ़रमाने होते होते इसका चर्चा हुआ और फिरऔनी ज़ुलत में हुए. इसलिये आप जिस बस्ती में दाख़िल होते, ऐसे वक़्त दाख़िल होते जब वहाँ के लोग ग़फ़लत में हों. हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि वह दिन ईद का था, लोग अपने खेल तमाशों में लगे हुए थे. (मदारिक व ख़ाज़िन)

(५) बनी इस्राईल में से.

(६) यानी किन्ती क़ौम फिरऔन से. यह इस्राईली पर ज़वरदस्ती कर रहा था ताकि उसपर लकड़ी का बोझ लाद कर फिरऔन की रसोई में ले जाए.

(७) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के.

(८) पहले आपने किन्ती से कहा कि इस्राईली पर जुल्म न करो, उसे छोड़ दो. लेकिन वह न माना और बुरा भला कहने लगा तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसको उस जुल्म से रोकने के लिये घुंसा मारा.

(९) यानी वह मर गया और आपने उसको रेत में दफ़न कर दिया. आपका इरादा क़त्ल करने का न था.

(१०) यानी उस किन्ती का इस्राईली पर जुल्म करना, जो उसकी हलाक़त का कारण हुआ. (ख़ाज़िन)

(११) यह क़लाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का बिनाम्रता के तौर पर है क्योंकि आप से कोई गुनाह सर्जद नहीं हुआ और नबी मअसूम हैं उन से गुनाह नहीं होते. किन्ती का मारना जुल्म को दबाने और मज़लूम की मदद करने के लिये था. यह किसी क़ौम में भी गुनाह नहीं. फिर भी अपनी तरफ़ गुनाह की निस्वत करना और माफ़ी चाहना, ये अल्लाह के मुक़र्रब बन्दों का दस्तूर ही है.

(१२) यह करम भी कर कि मुझे फिरऔन की सोहबत और उसके यहाँ रहने से भी बचा कि उसी वर्ग में गिना जाना, यह भी एक तरह का मददगार होना है.

(१३) कि खुदा जाने उस किन्ती के मारे जाने का क्या नतीजा निकले और उसकी क़ौम के लोग क्या करें.

(१४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि फिरऔन की क़ौम के लोगों ने फिरऔन को सूचना दी कि किसी बनी इस्राईल ने हमारे एक आदमी को मार डाला है. इसपर फिरऔन ने कहा कि क़ातिल और ग़वाहों को तलाश करो. फिरऔनी ग़श्त करते फिरते थे और उन्हें कोई सबूत नहीं मिलता था. दूसरे दिन जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फिर ऐसा इतिफ़ाक़ पेश आया कि वह बनी इस्राईल जिसने एक दिन पहले उनसे मदद चाही थी, आज फिर एक फिरऔनी से लड़ रहा है और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का देखकर उनसे फ़रियाद करने लगा तब हज़रत ...

(१५) मुराद यह थी कि रोज़ लोगों से लड़ता है अपने आप को भी मुसीबत और परेशानी में डालता है और अपने मददगारों को भी. क्यों ऐसे अवसरों से नहीं बचता और क्यों एहतियात नहीं करता. फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को रहम आया और आपने

कत्ल कर दिया तुम यही चाहते हो कि ज़मीन में सख्तगीर बने और इस्लाह (सुधार) करना नहीं चाहते^(१७) (१९) और शहर के परले किनारे से एक व्यक्ति^(१८) दौड़ता आया कहा ऐ मूसा वेशक दरबार वाले^(१९) आपके कत्ल का मशवरा कर रहे हैं तो निकल जाइये^(२०) मैं आपका भला चाहने वाला हूँ^(२१) (२०) तो उस शहर से निकला डरता हुआ इस इन्तिज़ार में कि अब क्या होता है, अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे सितमगारों से बचा ले^(२२) (२१)

तीसरा रूकू

और जब मदयन की तरफ़ मुतबज्जेह हुआ^(१) कहा करीब है कि मेरा रब मुझे सीधी राह बताए^(२) (२२) और जब मदयन के पानी पर आया^(३) वहाँ लोगों के एक गिरोह को देखा कि अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं और उनसे उस तरफ़^(४) दो औरतें देखीं कि अपने जानवरों को रोक रही हैं^(५) मूसा ने फ़रमाया तुम दोनों का क्या हाल है^(६) वो बोलीं हम पानी नहीं पिलाते जब तक सब घरवाहे पिलाकर फेर न ले जाएं^(७) और हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं^(८) (२३) तो मूसा ने उन दोनों के जानवरों को पानी पिलाया फिर साए की तरफ़ फिरा^(९) अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं उस खाने का जो तू मेरे लिये उतारे मोहताज हूँ^(१०) (२४) तो उन दोनों में से एक उसके पास आई शर्म से चलती हुई^(११) बोली मेरा बाप तुम्हें बुलाता है कि तुम्हें मज़दूरी दे उसकी जो तुम ने हमारे

بِالْأَمْسِ إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي
الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمَصْلُحِينَ ۝ وَجَاءَ
رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْبَدْيَةِ يَسْئَلُ قَالَ يَهُوسَى إِنْ
الْمَلَكُ يَأْتِيكُمْ بِكَ لِيَقْتُلَكَ فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ
النَّاصِحِينَ ۝ فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي
مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَمَّا تَوَجَّاهُ تَلَقَّاهُ مَدِينٌ قَالَ
عَلَى رَبِّي أَنْ يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ وَلَمَّا وَرَدَ
مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِنَ النَّاسِ يَسْقُونَ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا
قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّى يُصَدِّقَ الرِّعَاءَ وَأَبُونَا شَيْخٌ
كَبِيرٌ ۝ فَسَقْنَاهُمَا ثُمَّ تَوَلَّى إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ
إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ۝ فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا
تَتَشَوَّيْ عَلَى اسْتِخْيَارٍ قَالَتْ إِنَّ ابْنِي يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ

مَدْيَنَ

चाहा कि उसको फिरऔनी के ज़ुल्म के पंजे से रिहाई दिलाएं।

(१६) यानी फिरऔनी पर, तो इश्आईली गलती से यह समझा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मुझ से ख़फ़ा हैं, मुझे पकड़ना चाहते हैं। यह समझकर।

(१७) फिरऔनी ने यह बात सुनी और जाकर फिरऔन को सूचना दी कि कल के फिरऔनी मक्कूल के क़ातिल हज़रत मूसा हैं। फिरऔन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के कत्ल का हुक्म दिया और लोग हज़रत मूसा को ढूँढ़ने निकले।

(१८) जिसको मूमिने आले फिरऔन कहते हैं, यह ख़बर सुनकर करीब की राह से ----

(१९) फिरऔन के।

(२०) शहर से।

(२१) यह बात शूभंछा और मसलिहत अन्देशी से कहता हूँ।

(२२) यानी फिरऔन और क़ौम से।

सूरए क़सस - तीसरा रूकू

(१) मदयन वह स्थान है जहाँ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम तशरीफ़ रखते थे। उसको मदयन इब्ने इब्राहीम कहते हैं। मिस्र से यहाँ तक आठ रोज़ की दूरी थी। यह शहर फिरऔन की सल्तनत की सीमाओं से बाहर था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसका रस्ता भी न देखा था, न कोई सवारी साथ थी, न तोशा, न कोई हमराही। शहर में दरख्तों के पत्तों और ज़मीन के सब्जे के सिवा खाने की और कोई चीज़ न मिलती थी।

(२) चूनाँवे अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता भेजा जो आपको मदयन तक ले गया।

(३) यानी कुँबे पर, जिस से वहाँ के लोग पानी लेते और अपने जानवरों को पिलाते थे। यह कुँबा शहर के किनारे था।

(४) यानी मदौ से अलग।

(५) इस प्रतीक्षा में कि लोग फ़ारिग हो और कुँबा ख़ाली हो, क्योंकि कुँबे को मज़बूत और जोर-आवर लोगों ने घेर रखा था। उनकी भीड़ में औरतों से संभव न था कि अपने जानवरों को पानी पिला सकती।

जानवरों को पानी पिलाया है^(१२) जब मूसा उसके पास आया और उसे बातें कह सुनाई^(१३) उसने कहा डरिये नहीं आप बच गए ज़ालिमों से^(१४) (२५) उनमें की एक बोली^(१५) ऐ मेरे बाप इन को नौकर रख लो^(१६) वेशक बेहतर नौकर वह जो ताक़तवर अमानतदार हो^(१७) (२६) कहा मैं चाहता हूँ कि अपनी दोनों बेटियों में से एक तुम्हें ब्याह दूँ^(१८) इस मेहर पर कि तुम आठ वरस मेरी चाकरी करो^(१९) फिर अगर पूरे दस वरस कर लो तो तुम्हारी तरफ़ से है^(२०) और मैं तुम्हें मशक्कत (मेहनत) में डालना नहीं चाहता^(२१) करीब है इन्शाअल्लाह तुम मुझे नेकों में पाओगे^(२२) (२७) मूसा ने कहा यह मेरे और आपके बीच इकरार हो चुका मैं इन दोनों में जो मीआद पूरी कर दूँ^(२३) तो मुझ पर कोई मुतालिबा (मांग) नहीं, और हमारे इस कहे पर अल्लाह का ज़िम्मा है^(२४) (२८)

चौथा स्कू

फिर जब मूसा ने अपनी मीआद पूरी कर दी^(२५) और अपनी बीबी को लेकर चला^(२६) तूर की तरफ़ से एक आग देखी^(२७) अपनी घर वाली से कहा तुम ठहरो मझे तूर की तरफ़ से एक आग नज़र पड़ी है शायद मैं वहाँ से कुछ ख़बर लाऊँ^(२८) या तुम्हारे लिये कोई आग की चिंगारी लाऊँ कि तुम तापो^(२९) फिर जब आग के पास हाज़िर हुआ पुकार की

أَجْرًا سَقَيْتَ لَنَا فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝
قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَا أَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ۝
قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَأْجُرَنِي ثَمَنِي حَجَاجَةً فَإِنِ اتَّخَذْتَ عَسْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَمْسُقَ عَلَيْكَ سِجْدَتِي إِنَّ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝
قَالَ ذَلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ وَاللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۝
فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا عَلَى الْوَعْلَى إِنِّيكُمْ وَنَهَارُ الْغَدِ ۝
فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ مِنْ

مَلَكٍ

(६) पानी अपने जानवरों को पानी क्यों नहीं पिलातीं.

(७) क्योंकि न हम मदों की भीड़ में जा सकते हैं न पानी खींच सकते हैं. जब ये लोग अपने जानवरों को पानी पिलाकर वापस हो जाते हैं तो हौज़ में जो पानी बच रहता है वह हम अपने जानवरों को पिला लेते हैं.

(८) कमज़ोर हैं, खुद यह काम नहीं कर सकते, इसलिये जानवरों को पानी पिलाने की ज़रूरत हमें पेश आई. जब मूसा अलैहिस्सलाम ने उनकी बातें सुनीं तो दिल भर आया और रहम आया और वहीं दूसरा कुँवाँ जो उसके करीब था और एक बहुत भारी पत्थर उसपर ढका हुआ था जिसको बहुत से आदमी मिल कर न हटा सकते थे, आपने अकेले उसे हटा दिया.

(९) धूप और गर्मी की सख्ती थी और आपने कई रोज़ से खाना नहीं खाया था, भूख का गल्बा था इसलिये आराम हासिल करने की गरज़ से एक दरख्त के साँप में बैठ गए और अल्लाह की बारगाह में.

(१०) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को खाना देखे पूरा हफ़्ता गुज़र चुका था. इस बीच में एक निवाला न खाया था. आपका पेट पीठ से मिल गया था. इस हालत में अपने स्व से गिज़ा तलब की और इसके बावजूद कि अल्लाह की बारगाह में अत्यंत कुर्ब और बुजुर्गी रखते हैं, इस चिन्मयता के साथ रोटी का एक टुकड़ा तलब किया. जब वो लड़कियाँ उस रोज़ बहुत जल्द अपने मकान वापस हो गईं तो उनके वालिद ने फ़रमाया कि आज इतनी जल्दी वापस आने का कारण क्या हुआ ? अर्ज़ किया कि हमने एक नेक मर्द पाया उसने हम पर रहम किया और हमारे जानवरों को सैराव कर दिया. इसपर उनके वालिद ने एक बेटी से फ़रमाया कि जाओ और उस नेक आदमी की मेरे पास बुला लाओ.

(११) चेहरा आरतीन से ढके, जिस्म छुपाए. यह बड़ी बेटी थी, इन्का नाम सफ़ूरा है और एक कौल यह भी है कि वह छोटी बेटी थीं.

(१२) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उजरत लेने पर तो राज़ी न हुए लेकिन हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की ज़ियारत और उनकी मुलाक़ात के इरादे से चले और उन ख़ातून से फ़रमाया कि आप मेरे पीछे रह कर रास्ता बताती जाइये. यह आपने पदों के एहतिमांम के लिये फ़रमाया और इस तरह तशरीफ़ लाए. जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के पास पहुंचे तो खाना हाज़िर था. हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, बैठिये खाना खाइये. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने मंज़ूर न किया और अज़ूज़ो बिल्लाह फ़रमाया. हज़रत शुऐब ने फ़रमाया क्या कारण, खाने में क्या उज्र है, क्या आप को भूख नहीं है. फ़रमाया कि मुझे डर है कि यह खाना मेरे उस काम का बदला न हो जो मैंने आपके जानवरों को पानी पिलाकर अंजाम दिया है. क्योंकि हम वो लोग हैं कि अच्छे काम पर उजरत कुबूल नहीं करते. हज़रत शुऐब ने फ़रमाया, जवान, ऐसा नहीं है. यह खाना आपको काम के बदले में नहीं बल्कि मेरी और मेरे बाप दादा की आदत है कि हम मेहमान की ख़ातिर करते हैं, खाना खिलाते हैं, तो आप बैठे और आपने खाना खाया.

- (१३) और सारी घटनाएं और हालात जो फिरऔन के साथ गुजरे थे, अपनी पैदायश से लेकर किन्ही के कुत्ल और फिरऔनियों के आपके जान के पीछे पड़ने तक के, सब हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम से बयान कर दिये।
- (१४) यानी फिरऔन की हुकूमत और सल्तनत नहीं। इस से साबित हुआ कि एक शस्त्र की खबर पर अमल करना जायज़ है चाहे वह गुलाम हो या औरत हो। और यह भी साबित हुआ कि अजनबी औरत के साथ एहतियात से चलना जायज़ है।
- (१५) जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को बुलाने के लिये भेजी गई थी, बड़ी या छोटी।
- (१६) कि यह हमारी बकरियाँ चराया करें, यह काम हमें न करना पड़े।
- (१७) हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने बेटी से पुछा कि तुम्हें उन की कुबत और अमानत का क्या इल्म। उन्होंने अर्ज किया कि कुबत तो इस से ज़ाहिर है कि उन्होंने अकेले कुँवों पर से वह पत्थर उठा लिया जिस को दस से कम आदमी नहीं उठा सकते और अमानत इससे ज़ाहिर है कि उन्होंने हमें देखकर सर झुका लिया और नज़र न उठाई और हम से कहा कि तुम पीछे चलो, ऐसा न हो कि हवा से तुम्हारा कपड़ा उड़े और बदन का कोई हिस्सा ज़ाहिर हो। यह सुनकर हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से।
- (१८) यह निकाह का वादा था। अक्द के अल्फ़ाज़ न थे क्योंकि अक्द के लिये माज़ी यानी भूतकाल का सीगा ज़रूरी है और ऐसे ही मन्कूहा का निर्धारण भी ज़रूरी है।
- (१९) आज़ाद मर्द का आज़ाद औरत से निकाह किसी दूसरे आज़ाद शस्त्र की ख़िदमत करने या बकरीयाँ चराने को मेहर करार देकर जायज़ है। अगर आज़ाद मर्द ने किसी मुद्त तक औरत की ख़िदमत करने को या कुरआन की तालीम को मेहर करार देकर निकाह किया तो निकाह जायज़ है। और ये चीज़ें मेहर न हो सकेंगी बल्कि उस सूरत में मेहरे मिसल लाज़िम होंगे। (हिदायह व अहमदी)
- (२०) यानी यह तुम्हारी मेहरबानी होगी और तुमपर बाज़िव न होगा।
- (२१) कि तुम पर पूरे दस साल लाज़िम कर दूँ।
- (२२) तो मेरी तरफ़ से अच्छा मामला और एहद की पूर्ति ही होगी। और 'इन्शाअल्लाह तआला' आपने अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ और मदद पर भरोसा करने के लिये फ़रमाया।
- (२३) चाहे दस साल की या आठ साल की।
- (२४) फिर जब आपको अक्द हो चुका तो हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने अपनी बेटी को हुक्म दिया कि वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को एक लाटी दे जिस से वह बकरीयाँ की निगहबानी करें और ख़तरनाक जानवरों को भगाए। हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के पास बहियों की कई लाटियाँ थीं। साहिबज़ादे साहिब का हाथ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की लाटी पर पड़ा जो आप ज़न्नत में लाए थे और नबी उसके वारिस होने चल आए थे और वह हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम को पहुँची थी। हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने यह लाटी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को दी।

सूरए क्रसस - चौथा रूक़

- (१) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम। इन्हे अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि आपने बड़ी मीआद यानी पूरे दस साल पूरे किये फिर हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम से मिस की तरफ़ वापस जाने की इजाज़त चाही। आपने इजाज़त दी।
- (२) उनके बालिद की इजाज़त से मिस की तरफ़।
- (३) जबकि आप जंगल में थे, अंधेरी रात थी, सर्दी सख्त पड़ रही थी, रास्ता ग़ो गया था, उस वक़्त आप ने आग़ दग्ध कर।
- (४) राह की, कि किस तरफ़ है।
- (५) जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सीधे हाथ की तरफ़ था।
- (६) वह दरख़्त उन्नाब(अंगूर) का था या उसज का (उसज एक काँटेदार दरख़्त है जो जंगल में होता है)।

गई मंदान के दाएं किनारे से^(५) बरकत वाले मक़ाम में पेड़ से^(६) कि ऐ मूसा बेशक मैं ही हूँ अल्लाह, रब सारे जगत का^(७) (३०) और यह कि डाल दे अपना असा^(८) फिर जब मूसा ने उसे देखा लहराता हुआ मानों सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़ कर न देखा^(९) ऐ मूसा सामने आओ और डर नहीं, बेशक तुझे आमान है^(१०) (३१) अपना हाथ^(११) गिरेवान (कुर्ते के गले) में डाल, निकलेगा सफ़ेद चमकता हुआ बेऐव^(१२) और अपना हाथ अपने सीने पर रख ले डर दूर करने को^(१३) तो ये दो हुज्जतें हैं तेरे रब की^(१४) फिर औन और उसके दरबारियों की तरफ़, बेशक वो वेहुक्म लोग हैं (३२) अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं ने उनमें एक जान मार डाली है^(१५) तो डरता हूँ कि मुझे क़त्ल कर दें (३३) और मेरा भाई हासून उसकी ज़बान मुझसे ज़्यादा साफ़ है तो उसे मेरी मदद के लिये रसूल बना कि मेरी तस्दीक़ करे, मुझे डर है कि वो^(१६) मुझे झुटलाएंगे (३४) फ़रमाया क़रीब है कि हम तेरे वाज़ू को तेरे भाई से कुव्वत देंगे और तुम दोनों को मल्ला अता फ़रमाएंगे तो वो तुम दोनों का कुछ नुक़सान न कर सकेंगे हमारी निशानियों के कारण, तुम दोनों और जो

شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يُمُوسَىٰ إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تُهَكُّوْا كَأَنَّهُ جَانٌّ وَلِي مُدِيرًا ۝ وَلَمْ يُعَقِّبْ يَمُوسَىٰ أَقْبَلَ وَلَا تَخَفْ ۚ إِنَّكَ مِنَ الْآمِنِينَ ۝ أَسْأَلُكَ يَدَكَ فِي جَيْدِكَ تَخْوِجُ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۚ وَأَضْمَمُ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ ۚ فَذَنِّكَ بُرْهَانٍ مِنْ رَبِّكَ ۚ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَوَلَدِهِ إِذْ أَنْتُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّ ارْنِي ۖ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۝ وَأَنِّي هَرُونَ ۖ هُوَ أَفْضَمُ مِنِّي ۖ إِنَّا فَارُسُلُهُ مَعِيَ ۖ رَادًّا يُصَدِّقُنِي ۖ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝ قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكَ مُلْكًا ۖ فَلَا يَمْلِكُونَ إِلَيْكَ ۖ يَا بَلِيَّةُ ۖ أَنْتُمْ وَمَنِ اتَّبَعَكُمْ

مَنْ

(७) जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हरे भरे दरख्त में आग देखी तो जान लिया कि अल्लाह तआला के सिवा किसी की यह कुदरत नहीं और बेशक इस कलाम का कहने वाला अल्लाह तआला ही है। यह भी नक़ल किया गया है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने यह कलाम सिर्फ़ कानों ही से नहीं बल्कि अपने मुबारक जिस्म के हर अंग से सुना।

(८) चुनाने आपने अपनी लाठी डाल दी और वह साँप बन गई।

(९) तब पुकारा गया।

(१०) कोई ख़तरा नहीं।

(११) अपनी क़मीज़ के।

(१२) सूर्य किरण की तरह। तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपना मुबारक हाथ गले में डाल कर निकाला तो उसमें ऐसी तेज़ रीशनी थी जिससे आँखें झपकें।

(१३) ताकि हाथ अपनी असली हालत पर आए और डर दूर हो जाए। इन्ने अब्बास रदीयल्लाह अउम्मा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को सीने पर हाथ रखने का हुक्म दिया ताकि जो डर साँप देखने के वक़्त पैदा हो गया था, दूर हो जाए और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद जो डरा हुआ अपना हाथ सीने पर रखेगा उसका डर दूर हो जाएगा।

(१४) यानी लाठी और चमकता हुआ हाथ तुम्हारी रिसालत की निशानियाँ हैं।

(१५) यानी किन्ती मेरे हाथ से मारा गया है।

(१६) यानी फिरऔन और उसकी क़ैम।

(१७) फिरऔन और उसकी क़ैम पर।

(१८) उन बदवसीयों ने चमत्कारों का इन्कार कर दिया और उनके जादू बताया। मतलब यह कि जिस तरह सारे किस्म के जादू झूठे

तुम्हारी पैरवी करेंगे मालिव (विजयी) आओगे^(१९) (३५) फिर जब मूसा उनके पास हमारी रौशन निशानियां लाया बोले यह तो नहीं मगर बनावट का जादू^(२०) और हमने अपने अगले बाप दादाओं में ऐसा न सुना^(२१) (३६) और मूसा ने फ़रमाया मेरा रब खूब जानता है जो उसके पास से हिदायत लाया^(२२) और जिसके लिये आखिरत का घर होगा^(२३) वेशक ज़ालिम मुराद को नहीं पहुंचते^(२४) (३७) और फिरऔन बोला ऐ दरबारियो, मैं तुम्हारे लिये अपने सिवा कोई खुदा नहीं जानता, तो ऐ हामान मेरे लिये गारा पकाकर^(२५) एक महल बना^(२६) कि शायद मैं मूसा के खुदा को झांक आऊं^(२७) और वेशक मेरे गुमान में तो वह^(२८) झूटा है^(२९) (३८) और उसने और उसके लश्करियों ने ज़मीन में बेजा बड़ाई चाही^(३०) और समझे कि उन्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं^(३१) (३९) तो हमने उसे और उसके लश्कर को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया^(३२) तो देखो कैसा अंजाम हुआ सितमगारों का^(३३) और उन्हें हमने^(३४) दो जखियों का पेशवा बनाया कि आग की तरफ़ बुलाते हैं^(३५) और कयामत के दिन उनकी मदद न होगी^(३६) और इस

الْعَلِيُّونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا يَبَيِّنَاتٍ
قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُفْتَرٍ وَمَا سَمِعْنَا بِهَذَا
فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَى رَبِّي أَعْلَمُ
بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِ رَبِّهِ وَمَنْ يَكُونُ لَهُ
عَاقِبَةُ الدَّارِ إِلَّا لَهُ لَا يَقُولُ الظَّالِمُونَ ۝ وَقَالَ
فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ إِلَهِ غَيْرِي ۝
فَأَوْقَدْ لِي يَهَامُنُ عَلَى الظِّلِّينَ فَاجْعَلْ لِي صَرْحًا
نَعْلِي أَطْلِعْ إِلَى إِلَهِ مُوسَى وَإِنِّي لَا أَظُنُّهُ مِنَ
الْكَاذِبِينَ ۝ وَاسْتَكْبَرُ هُوَ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ
يَغْبِرُ الْحَقُّ وَظَنُّوا أَنَّهُم لَنَالَيْنَا لَا يَرْجِعُونَ ۝
فَاخْذِنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝ وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يَدْعُونَ
إِلَى النَّارِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُنصَرُونَ ۝ وَاتَّبَعْنَاهُمْ

مَنْ

होते हैं उसी तरह मआज़ल्लाह यह भी है।

- (१९) यानी आप से पहले ऐसा कभी नहीं किया गया, या ये मानी हैं कि जो दावत आप हमें देते हैं वह ऐसी नई है कि हमारे बाप दादा में भी ऐसी नहीं सुनी गई थी।
- (२०) यानी जो हक पर है और जिसको अल्लाह तआला ने नबुव्वत से नवाजा।
- (२१) और वह वहाँ की नेअमतों और रहमतों के साथ नवाजा जाएगा।
- (२२) यानी काफ़िरों की आखिरत की भलाई उपलब्ध नहीं।
- (२३) ईंट तैयार कर कहते हैं कि यही दुनिया में सबसे पहले ईंट बनाने वाला है। यह ब्यवसाय इससे पहले न था।
- (२४) बहुत ऊंची।
- (२५) चुनान्ने हामान ने हज़ारों कारीगरों और मज़दूरों को जमा किया, ईंटें बनवाई और इमारती सामान जमा किया और इतनी ऊंची इमारत बनवाई कि दुनिया में उसके बराबर कोई इमारत ऊंची न थी। फिरऔन ने यह ख़याल किया कि (मआज़ल्लाह) अल्लाह तआला के लिये भी मकान है और वह जिसमें है कि उसतक पहुंचना उसके लिये सम्भव होगा।
- (२६) यानी मूसा अलैहिस्सलाम।
- (२७) अपने इस दावे में कि उसका एक मअबूद है जिसने उसे अपना रसूल बनाकर हमारी तरफ़ भेजा है।
- (२८) और सच्चाई को न माना और असत्य पर रहे।
- (२९) और सब डूब गए।
- (३०) दुनिया में।
- (३१) यानी कुफ़्र और गुनाहों की दावत देते हैं जिस से जहन्नम के अज़ाब के मुस्तहक़ हों और जो उनकी इताअत करे वो भी जहन्नमी हो जाए।
- (३२) यानी रुखाई और रहमत से दूरी।

दुनिया में हमने उनके पीछे लअनत लगाई^(१२) और कयामत के दिन उनका बुरा है^(१२)

पाँचवां रूकू

और वेशक हमने मूसा को किताब अता फरमाई^(१) बाद इसके कि अगली संगतें (क्रौमैं)^(२) हलाक फरमा दी जिसमें लोगों के दिल की आँखें खोलने वाली बातें और हिदायत और रहमत ताकि वो नसीहत मानें^(३) और तुम^(४) तूर की जानिब मगरिब में न थे^(५) जब कि हमने मूसा को रिसालत का हुक्म भेजा^(६) और उस वक़्त तुम हाज़िर न थे^(७) मगर हुआ यह कि हमने संगतें (क्रौमैं) पैदा कीं^(८) कि उनपर लम्बा ज़माना गुज़रा^(९) और न तुम मदयन वालों में मुक़ीम (ठहरे हुए) थे उनपर हमारी आयतें पढ़ते हुए हाँ हम रसूल बनाने वाले हुए^(१०) और न तुम तूर के किनारे थे जब हमने निदा फरमाई^(११) हाँ तुम्हारे रब की मेहर है (कि तुम्हें ग़ैब के इल्म दिये)^(१२) कि तुम ऐसी क्रौम को डर सुनाओ जिसके पास तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला न आया^(१३) यह उम्मीद करते हुए कि उनको नसीहत हो^(१४) और अगर न होता कि कभी पहुंचती उन्हें कोई मुसीबत^(१५) उसके कारण जो उनके हाथों ने आगे भेजा^(१६) तो कहते ऐ हमारे रब तूने क्यों न भेजा हमारी तरफ़ कोई रसूल कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और ईमान लाते^(१७)

فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُمْ مِنَ الْمَقْبُوحِينَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بِصَاحِبِ اللَّتَائِسِ وَهَدَىٰ وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْعَرَبِ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَلَكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًّا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُو عَلَيْهِمُ آيَاتِنَا وَلَكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ۝ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِنْ رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَتْهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَلَوْ لَا أَنْ تُصِيبَهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمْتِ أَيْدِيَهُمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْ لَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ وَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

مَزْلُوم

सूरए कसस - पाँचवां रूकू

- (१) यानी तौरात .
- (२) नूह, आद और समूद वगैरह क्रौमों की तरह.
- (३) ऐ नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम.
- (४) वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मीकात था.
- (५) और उनसे कलाम फरमाया और उन्हें मुक़र्रब किया.
- (६) यानी बहुत सी उम्मतें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद.
- (७) तो वो अल्लाह का एहद भूल गए और उन्होंने उसकी फ़रमाँबरदारी छोड़ दी. इसकी हकीकत यह है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क्रौम से सैयदे आलम हबीब मुक़र्रम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हक़ में और आप पर ईमान लाने के सम्बन्ध में एहद लिये थे. जब लम्बा ज़माना गुज़रा और उम्मतों के बाद उम्मतें गुज़रती चली गईं तो वो लोग उन एहदों को भूल गए और उसकी वफ़ा छोड़ दी.
- (८) तो हम ने आप को इल्म दिया और पहलों के हालात से सूचित किया.
- (९) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तौरात अता फरमाने के वक़्त.
- (१०) जिन से तुम उनके हालात बयान फरमाते हो. आप का इन बातों की ख़बर देना आपकी नयुब्वत की ज़ाहिर दलील है.
- (११) इस क्रौम से मुराद मक्के वाले हैं जो उस ज़माने में थे जो हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बीच पाँच सौ बरस की मुदत का है.
- (१२) अज़ाब और सज़ा.
- (१३) यानी जो कुफ़्र और गुनाह उन्होंने किया.
- (१४) मानी आयत के ये हैं कि रसूलों का भेजना ही हुज़रत के लिये है कि उन्हें यह बहाना बनावे की गुब्बाइश न रहे कि हमारे पास रसूल नहीं भेजे गए इसलिये गुमराह हो गए. अगर रसूल आते तो हम ज़रूर फ़रमाँबरदार होते और ईमान लाते.
- (१५) यानी सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

फिर जब उनके पास हज़र आया^(१५) हमारी तरफ़ से, बोले^(१६) उन्हें क्यों न दिया गया जो मूसा को दिया गया^(१७) क्या उसके इन्कारी न हुए थे जो पहले मूसा को दिया गया^(१८) बोले दो जादू है एक दूसरे की पुश्ता (सहायता) पर और बोले हम उन दोनों के इन्कारी हैं^(१९) (४८) तुम फ़रमाओ तो अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो इन दोनों किताबों से ज़्यादा हिदायत की हो^(२०) मैं उसकी पैरवी (अनुकरण) करूंगा अगर तुम सच्चे हो^(२१) (४९) फिर अगर वो तुम्हारा फ़रमाना कुबूल न करें^(२२) तो जान लो कि^(२३) वस वो अपनी ख्वाहिशों के पीछे हैं, और उससे बढ़कर गुमराह कौन जो अपनी ख्वाहिश की पैरवी (अनुकरण) करे अल्लाह की हिदायत से जुदा, वेशक अल्लाह हिदायत नहीं फ़रमाता ज़ालिम लोगों को^(२४)

छटा रकू

और वेशक हमने उनके लिये बात मुसलसल उतारी^(१) कि वो ध्यान करें^(२) जिनको हमने इससे पहले^(३) किताब दी वो इसपर ईमान लाते हैं^(४) और जब उनपर ये आयतें पड़ी जाती हैं कहते हैं हम इसपर ईमान लाए वेशक यही सत्य है हमारे रब के पास से हम इससे पहले ही गर्दन रख चुके थे^(५) (५३) उनकी उनका बदला दोबाला दिया जाएगा^(६) बदला उनके सब का^(७) और वो भलाई से बुराई को टालते

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ
مِثْلُ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ أَوَلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ
مِنْ قَبْلُ قَالُوا سِحْرَانِ تَظَاهَرَا وَقَالُوا إِنَّا بِكُمْ
كَافِرُونَ ۝ قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ
أَهْدَىٰ مِنْهُمَا أَتَّبَعُهُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَإِنْ لَّمْ
يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا يُتَّبَعُونَ أَهْوَاءَهُمْ وَمَنْ
أَضَلَّ مِمَّنْ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللَّهِ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَقَدْ
وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا
الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا يُنْتَلَىٰ
عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ إِنَّ الْحَقَّ مِنْ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا
مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ
بِمَا صَبَرُوا وَيُدْرَأُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ وَمِنَّا

مَنْ

(१६) मक्का के काफ़िर.

(१७) यानी उन्हें कुरआन करीम एक साथ क्यों नहीं दिया गया जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पूरी तौरात एक ही बार में अता की गई थी. या ये मानी हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को लाठी और चमकनी हथेली जैसे चमत्कार क्यों न दिये गए. अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(१८) यहूदियों ने कुरैश को सन्देश भेजा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार तलाव करें. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि जिन यहूदियों ने यह सवाल किया है क्या वो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के और जो उन्हें अल्लाह की तरफ़ से दिया गया है उसके इन्कारी न हुए.

(१९) यानी तौरात के भी और कुरआन के भी. इन दोनों को उन्होंने जादू कहा और एक किरात में "साहिशान" है. उस सूरात में मानी ये होंगे कि दोनों जादूगर हैं यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम. मक्का के मुथ्रिकों ने मदीना के यहूदियों के सरदारों के पास एलची भेजकर पूछा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में पिछली किताबों में कोई ख़बर है. उन्होंने जवाब दिया कि हाँ हज़ूर की तारीफ़ और गुणगान उनकी किताब तौरात में मौजूद है. जब यह ख़बर कुरैश को पहुंची तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निखत कहने लगे कि वो दोनों जादूगर हैं. उन में एक दूसरे का सहायक और मददगार है. इसपर अल्लाह तआला ने फ़रमाया.

(२०) यानी तौरात और कुरआन से.

(२१) अपने इस कौल में कि ये दोनों जादूगर हैं. इसमें चेतवनी है कि वो इसकी जैसी किताब लाने से मजबूर हैं चुनाने आगे इशारा फ़रमाया जाता है.

(२२) और ऐसी किताब न ला सकें.

(२३) उनके पास कोई तर्क, कोई हज़मत नहीं है.

सुरए कसस - छटा रकू

(१) यानी कुरआन शरीफ़ उनके पास धीरे-धीरे लगातार आया, बादे और डर, और क्रिस्से और नसीहतों और उपदेश ताकि समझें और ईमान लाएं.

हैं^(६) और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में खर्च करते हैं^(७) (५४) और जब वेहूदा बात सुनते हैं उससे तगाफुल करते (मुंह फेरते) हैं^(८) और कहते हैं हमारे लिये हमारे कर्म और तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म, बस तुम पर सलाम^(९) हम जाहिलों के ग़र्ज़ी (चाहने वाले) नहीं^(१०) (५५) वेशक यह नहीं कि तुम जिसे अपनी तरफ से चाहो हिदायत करदो, हाँ अल्लाह हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे और वह खूब जानता है हिदायत वालों को^(११) (५६) और कहते हैं अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत का अनुकरण करें तो लोग हमारे मुल्क से हमें उचक ले जाएंगे^(१२) क्या हमने उन्हें जगह न दी अमान वाली, हरम में^(१३) जिस की तरफ हर चीज़ के फल लाए जाते हैं हमारे पास की रोजी लेकिन उनमें बहुतों को इल्म नहीं^(१४) (५७) और कितने शहर हमने हलाक कर दिये जो अपने ऐश (विलास) पर इतरा गए थे,^(१५) तो ये हैं उनके मकान^(१६) कि उनके वाद इन में सुकूनत न हुई मगर कम^(१७) और हमी वारिस हैं^(१८) (५८) और तुम्हारा रब शहरों को हलाक नहीं करता जब तक उनके अस्ल मरजेअ (केन्द्र) में रसूल न भेजे^(१९) जो उनपर हमारी आयतें पढ़ें^(२०) और हम शहरों को हलाक नहीं करते मगर जब उनके (साकिन) निवासी सितमगार (अत्याचारी) हों^(२१) (५९) और जो कुछ चीज़ तुम्हें दी गई है वह दुनियावी ज़िन्दगी का

رَزَقْنَهُمْ يُنْفِقُونَ ۝ وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا تَبْتَغِ الْجَاهِلِينَ ۝ إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝ وَقَالُوا إِن تَبِيعَ الْهُدَىٰ مَعَكَ نَخْطِفُ مِنْ أََرْضِنَا أَوْ لَمْ نُمَكِّنْ لَمْ حَرَمًا أَمِنًا يُجِبِّي إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ رِزْقًا مِنْ لَدُنَّا وَ لَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَعِيشَتَهَا ۚ فَمَلَكَ مَسْكَنُهُمْ لَمْ تَمَكِّنْ مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۚ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ۝ وَمَا أَوْتَيْنَهُمْ مِنْ شَيْءٍ

मज़ल

(२) यानी कुरआन शरीफ से, या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पहले, यह आयत किताब वालों के मूमिन लोगों हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके सहाबा के हक में उतरी और एक क़ौल यह है कि यह उन इंजील वालों के हक में उतरी जो हबशा से आकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए, ये चालीस लोग थे जो जअफ़र बिन अबी तालिब के साथ आए थे, जब उन्होंने मुसलमातां की हाज़त और रोज़ी की तंगी देखी तो बाराह रिसालत में अज़ किया कि हमारे पास माल है, हुज़ूर इजाज़त दें तो हम वापस जाकर अपने माल ले आएँ और उनसे मुसलमातां की ख़िदमत करें, हुज़ूर ने इजाज़त दे दी और वो जाकर अपने माल ले आए और उनसे मुसलमातां की ख़िदमत की, उनके हक में यह आयतें “मिम्मा रज़कनाहुम युनफ़िकून” तक उतरी, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ये आयतें अस्सी पहले किताब के हक में उतरीं जिन में चालीस नज़रान के और बत्तीस हबशा के और आठ शाम के थे,

(३) यानी कुरआन उतरने से पहले ही हम अल्लाह के हबीब मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान रखने थे कि वो सच्चे नबी हैं क्योंकि तौरात और इंजील में उनका ज़िक्र है,

(४) क्योंकि वह पहली किताब पर भी ईमान लाए और कुरआने पाक पर भी,

(५) कि उन्होंने अपने दीन पर सब किया और मुश्रिकों की तकलीफ़ पर भी, बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन क्रिम के लोग ऐसे हैं जिन्हें दो अन्न मिलेंगे, एक पहले किताब का वह व्यक्ति जो अपने नबी पर भी ईमान लाया और मुझ पर भी, दूसरा वह गुलाम जिसने अल्लाह का हक़ भी आदा किया और अपने मालिक का भी, तीसरा वह जिसके पास दासी थी जिससे कुर्वत करता था फिर उसको अच्छी तरह अदब सिखाया, अच्छी तालीम दी और आज्ञाद करके उससे निकाह किया, उसके लिये भी दो अन्न हैं,

(६) ताअत से गुनाह को और इल्म से शानना या तकलीफ़ को, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि तौहीद की शहादत यानी अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाह से शिर्क को,

(७) ताअत में यानी सद्क़ा करते हैं,

(८) मुश्रिक लोग मक्कए मुकर्रमा के ईमानदारों को उनका दीन छोड़ने और इस्लाम कुबूल करने पर गालियाँ देते और बुरा कहते, ये लोग उनकी वेहूदा बातें सुनकर टाल जाते,

(९) यानी हम तुम्हारी बेहूदा बातों और गालियों के जबाब में गालियाँ नहीं देंगे, यह आयत जिहाद की आयत द्वारा स्थगित कर दी गई,

वर्तावा और उसका सिंगार है^(१२) और जो अल्लाह के पास है^(१३) वह बेहतर और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला^(१४) तो क्या तुम्हें अक़ल नहीं^(१५) (६०)

सातवाँ सूक़

तो कहा वह जिसे हमने अच्छा वादा दिया^(१) तो वह उससे मिलेगा उस जैसा है जिसे हमने दुनियावी ज़िन्दगी का बर्ताव बरतने दिया फिर वह क़यामत के दिन गिरफ़्तार करके हाज़िर लाया जाएगा^(२) (६१) और जिस दिन उन्हें पुकारेगा^(३) तो फ़र्माएगा कहाँ है मेरे वो शरीक जिन्हें तुम^(४) गुमान करते थे^(५) (६२) कहेंगे कि वो जिनपर बात साबित हो चुकी^(६) ऐ हमारे रव ये हैं वो जिन्हें हमने गुमराह किया हमने इन्हें गुमराह किया जैसे खुद गुमराह हुए थे^(७) हम इन से वेज़ार होकर तेरी तरफ़ रुज लाते (पलटते) हैं वो हम को न पूजते थे^(८) (६३) और उनसे फ़रमाया जाएगा अपने शरीकों को पुकारो^(९) तो वो पुकारेंगे तो वो उनकी न सुनेंगे और देखेंगे अज़ाब, क्या अच्छा होता अगर वो राह पाते^(१०) (६४) और जिस दिन उन्हें पुकारेगा वो फ़रमाएगा^(११) तुमने रसूलों को क्या ज़वाब दिया^(१२) (६५) तो उस दिन उनपर ख़बरें अंधी हो जाएंगी^(१३) कि वो कुछ पूछ ग़ल्ल न करेंगे^(१४) (६६) तो वह जिसने तौबह की^(१५) और ईमान लाया^(१६) और अच्छा काम किया करीब है कि वह राह पा जाए^(१७) (६७)

فَمَنَّا عَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ اَقَمْنَ وَعَدَ بِنَهْ وَعَدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنَاهُ مَتَآءَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُزْعِمُوْنَ ۝ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَٰؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اٰغْوَيْنَاۤ اَغْوَيْنَاهُمْ كَمَاۤ اَغْوَيْنَاۤ تَبَرَّأْنَا اِلَيْكَ مَا كَانُوْا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ۝ وَقَبِيْلٌ اَدْعَوُا شُرَكَآءَكُمْ فَلَذَّعُوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِیْبُوْا لَهُمْ وَّرَاوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَا اٰجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَعَبَّيْتُمْ عَلَيْهِمُ الْاَنْبِيَاۥ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُوْنَ ۝ فَاَمَّا مَن تَابَ وَ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰى اَنْ يَكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ

मिर्ल

(१०) उनके साथ मेल जोल उठना बैठना नहीं चाहते. हमें जिहालत की हरकतें ग़वार नही.

(११) जिनके लिये उसने हिदायत लिख दी जो दलीलों से सबक लेने और सच बात मानने वाले हैं. मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि यह आयत अबू तालिब के हक़ में उतरी. नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसे उनकी मौत के वक़्त फ़रमाया ऐ चचा कहो लाइलाहा इल्लल्लाह. मैं तुम्हारे लिये क़यामत के दिन ग़वाह रहूँगा. उन्होंने कहा कि अगर मुझे क़ुरैश के शर्म दिलाने का डर न होता तो मैं ज़रूर ईमान लाकर तुम्हारी आँखें ठण्डी करता. इसके बाद उन्होंने यह शेर अरब पढ़े-

ब लक़द अलिम्नो बिअन्ना दीना मुहम्मदिन

मिन ख़ैरे अदियानिल बरिष्यते दीना

लौलल मलामतो औ हिज़ारो मुसबतिन

ल-वजद-तनी समुहम चिज़ाका मुबीना.

याती मैं यकीन से जानता हूँ कि मुहम्मद का दीन सारे जगत के दीनों से बेहतर है. अगर मलामत और बदगोई का अन्देशा न होता तो मैं निहायत सफ़ाई के साथ इस दीन को कुबूल करता. इसके बाद अबू तालिब का इल्तिकाल हो गया. इसपर यह आयत उतरी. (१२) याती अरब प्रदेश से एक दम निकाल दंगे. यह आयत हारिस बिन उस्मान बिन नौफ़ल बिन अब्दे मनाफ़ के हक़ में उतरी. उसने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि हम यह तो यकीन से जानते हैं कि जो आप फ़रमाते हैं वह सत्य है लेकिन अगर हम आपका अनुकरण करें तो हमें डर है कि अरब के लोग हमें शहर निकाला दे देंगे और हमारे बतन में न रहने देंगे. इस आयत में इसका जवाब दिया गया.

(१३) जहाँ के रहने वाले मार काट से अमन में हैं और जहाँ जानवरों और हरियाली तक की अमन है.

(१४) और वो अपनी जिहालत से नहीं जानते कि यह रोज़ी अल्लाह तआला की तरफ़ से है और अगर समझ होती तो जानते कि ख़ौफ़ और अमन भी उसी की तरफ़ से है और ईमान लाने में शहर निकाले का ख़ौफ़ न करते.

(१५) और उन्होंने ने सरकशी इश्तियार की थी कि अल्लाह तआला की दी गई रोज़ी खाते हैं और पूजते हैं बुतों को. मक्का वालों की ऐसी क़ौम के बुरे परिणाम से डर दिलाया जाता है, जिन का हाल उनकी तरह था कि अल्लाह तआला की नेअमतें पाते और शुक्र न करते. इन नेअमतों पर इतराते, वो हलाक कर दिये गए.

(१६) जिनके निशान बाक़ी हैं और अरब के लोग अपनी यात्राओं में उन्हें देखते हैं.

(१७) कि कोई मुसाफ़िर या राहगीर ज़मन थोड़ी देर के लिये टहर जाता है फिर ख़ाली पड़े रहते हैं.

और तुम्हारा रब पैदा करता है जो चाहे और पसन्द फरमाता है^(१६) उनका^(१७) कुछ इख्तियार नहीं, पाकी और वरतरी है अल्लाह को उनके शिर्क से^(१८) और तुम्हारा रब जानता है जो उनके सीनों में छुपा है^(१९) और जो ज़ाहिर करते हैं^(२०) ^(६९) और वही है अल्लाह कि कोई खुदा नहीं उसके सिवा, उसी की तारीफ है दुनिया^(२१) और आखिरत में और उसी का हुक्म है^(२२) और उसी की तरफ़ फिर जाओगे^(२३) तुम फ़रमाओ^(२४) भला देखो तो अगर अल्लाह हमेशा तुमपर क़यामत तक रात रखे^(२५) तो अल्लाह के सिवा कौन खुदा है जो तुम्हें रौशनी ला दे^(२६) तो क्या तुम सुनते नहीं^(२७) ^(७१) तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर अल्लाह क़यामत तक हमेशा दिन रखे^(२८) तो अल्लाह के सिवा कौन खुदा है जो तुम्हें रात लादे जिसमें आराम करो^(२९) तो क्या तुम्हें सूझता नहीं^(३०) ^(७२) और उसने अपनी क़ृपा से तुम्हारे लिये रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उसकी मेहरबानी ढूँढो ^(३१) और इसलिये कि तुम सत्य मानो^(३२) ^(७३) और जिस दिन उन्हें पुकारेगा तो फ़रमाएगा कि कहाँ है मेरे वो शरीक जो तुम बकते थे^(७४) और हर

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ
الْخِيَرَةُ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝
وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا كُنْتُمْ تُصَدِّقُونَ وَمَا كُنْتُمْ تُكْفِرُونَ ۝
وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْحُكْمُ فِي الْأُولَىٰ وَ
الْآخِرَةِ ۚ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ قُلْ
أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ الْآيِلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ مِنْ آلِهِ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَآءٍ أَوْ فَلَآ
تَسْعَوْنَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ
النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مِنْ آلِهِ غَيْرُ اللَّهِ
يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۚ أَوْ فَلَآ تُبْصِرُونَ ۝
وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ الْآيِلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآئِيَ الَّذِينَ

مَنْزِل

- (१८) उन मकानों के, यानी वहाँ के रहने वाले ऐसे हलाक हुए कि उनके बाद उनका कोई उत्तराधिकारी बाक़ी न रहा. अब अल्लाह के सिवा उन मकानों का कोई वारिस नहीं. ख़ल्क (सृष्टि) की फ़ना के बाद वही सब का वारिस है.
(१९) यानी केन्द्रीय स्थान में. कुछ मुफ़ससिओं ने कहा कि उम्मुल कुरा से मुराद मक्का मुकर्रमा है और रसूल से मुराद ख़ानिमुन नबीय्यीन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लवम.
(२०) और उन्हें तबलीग़ कर और ख़बर दे कि अगर वो ईमान न लाएं तो उनपर अज़ाब किया जाएगा ताकि उनपर हुज़त लाज़िम हो और उनके लिये बहाने की कोई गुंजाइश बाक़ी न रहे.
(२१) रसूल को झुटलाते हों, अपने कुफ़्र पर अड़े हों और इस कारण अज़ाब के मुस्तहक़ हों.
(२२) जिसकी बका बहुत थोड़ी और जिसका अंजाम फ़ना.
(२३) यानी आख़िरत के फ़ायदे.
(२४) तमाम बुराइयों से ख़ाली, कभी न टूटने वाला.
(२५) कि इतना समझ सको कि बाक़ी, फ़ानी से बेहतर है. इसीलिये कहा गया है कि जो शरख़ आख़िरत को दुनिया पर प्राथमिकता न दे, वह नासमझ है.

सूरए क़सस - सातवाँ रूकू

- (१) जन्नत का सबाब.
(२) ये दोनों हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते. इन में पहला, जिस अच्छा वांदा दिया गया, मूमिन है और दूसरा काफ़िर.
(३) अल्लाह तआला, धिक्कार के तौर पर.
(४) दुनिया में मेरा शरीक.
(५) यानी अज़ाब वाजिब हो चुका और वो लोग गुमराहों के शरादार और कुफ़्र के अगुवा हैं.
(६) यानी वो लोग हमारे बहकाने से, अपनी मज़ी से गुमराह हुए. हमारी उनकी गुमराही में कोई फ़र्क़ नहीं. हमने उन्हें मजबूर न किया था.
(७) बल्कि वो अपनी ख़्वाहिशों के पुजारी और अपनी वासनाओं के आधीन थे.
(८) यानी काफ़िरों से फ़रमाया जाएगा कि अपने दुतों को पुकारो, वो तुम्हें अज़ाब से बचाएंगे.
(९) दुनिया में, ताकि आख़िरत में अज़ाब न देखते.

गिरोह में से हम एक गवाह निकाल कर^(३१) फ़रमाएंगे अपनी दलील लाओ^(३२) तो जान लेंगे^(३३) कि हक अल्लाह का है और उन से खोई जाएंगी जो बनावटें करते थे^(३४) ॥७५॥

आठवाँ रूकू

वेशक क़ारून मूसा की क्रौम से था^(१) फिर उसने उनपर ज़ियादती की और हमने उसको इतने खज़ाने दिये जिनकी कुंजियाँ एक ज़ोरावर जमाअत पर भारी थीं जब उससे उसकी क्रौम^(२) ने कहा इतरा नहीं^(३) वेशक अल्लाह इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता^(४) ॥७६॥ और जो माल तुझे अल्लाह ने दिया है उससे आखिरत का घर तलब कर^(५) और दुनिया में अपना हिस्सा न भूल^(६) और एहसान कर^(७) जैसा अल्लाह ने तुझपर एहसान किया और^(८) ज़मीन में फ़साद न चाह, वेशक अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता^(९) ॥७७॥ बोला यह^(१०) तो मुझे एक इल्म से मिला है जो मेरे पास है^(११) और क्या उसे यह नहीं मालूम कि अल्लाह ने इससे पहले वो संगतों (क्रौमों) हलाक फ़रमा दीं जिनकी शक्तियाँ उससे सख्त थीं और जमा उससे ज़्यादा^(१२) और मुजरिमों से उनके गुनाहों की पूछ नहीं^(१३) ॥७८॥ तो अपनी

فَقُلْنَا

كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ وَزَعَيْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ۝ فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مَوْسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءَ بِالْعُصْبَةِ ۚ أُولَٰئِكَ الْفُقَرَاءُ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ۖ وَابْتَغَىٰ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا ۚ وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفُسَادَ ۚ فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝ قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۚ أَوَلَمْ يَعْلَم أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَآكُثَرُ جَمْعًا وَلَا يُسْأَلُ

مَزُون

- (३०) यानी काफ़िरों से पूछेगा।
- (३१) जो तुम्हारी तरफ़ भेज गए थे और सत्य की तरफ़ बुलाते थे।
- (३२) और कोई बहाना और तर्क उन्हें बज़र न आएगा।
- (३३) और अत्यन्त दहशत से साक्षित रह जाएंगे या कोई किसी से इसलिये न पूछेगा कि जवाब से लाचार होने में सब के सब बराबर हैं, फ़रमावशदार हों या फ़रमाने वाले, काफ़िर हों या काफ़िर बनाने वाले।
- (३४) शिर्क से।
- (३५) अपने स्व पर और उस तमाम पर जो स्व की तरफ़ से आया।
- (३६) यह आयत मुश्रिकों के जवाब में उतरी जिन्होंने कहा था कि अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नबुव्वत के लिये क्यों बुजुर्गी दी। यह क़ुरआन मक्का और ताइफ़ के किसी बड़े व्यक्ति पर क्यों न उतरा। इस क़त्नाम का क़ायल बलीद बिन मुगीरा था और बड़े आदमी से वह अपने आप को और अर्वा बिन मसऊद सक्फ़ही को मुग़द लेना था। और फ़रमाया गया कि रसूलों का भेजना उन लोगों के इच्छितयार से नहीं है। अल्लाह तआला की मर्ज़ी है, अपनी हिकमत वही जानता है। उन्हें उसकी मर्ज़ी में दख़्त की क्या मजाल।
- (३७) यानी मुश्रिकों का।
- (३८) यानी कुफ़्र और रसुले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुश्मनी, जिसको ये लोग छुपाते हैं।
- (३९) अपनी ज़बानों से ख़िलाफ़े बाक़े जैसे कि नबुव्वत में नअते देना और क़ुरआने पाक को झुटलाना।
- (४०) कि उसके औलिया दुनिया में भी उसकी हम्द करते हैं और आख़िरत में भी उसकी हम्द से लज्ज़त उठाते हैं।
- (४१) उसी की मर्ज़ी हर चीज़ में लागू और जारी है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अपने फ़रमावशदारों के लिये मग़फ़िरत का और नाफ़रमानों के लिये शफ़ाअत का हुक्म फ़रमाता है।
- (४२) ए हबीब सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, मक्का वालों से।
- (४३) और दिन निकाले ही नहीं।
- (४४) जिसमें तुम अपनी रोज़ी के काम कर सको।
- (४५) होश के कानों से, कि शिर्क से बाज़ आओ।
- (४६) रात होने ही न दे।
- (४७) और दिन में जो काम और मेहनत की थी उसकी थकन दूर करो।

क्रौम पर निकला अपनी सजावट में^(१२) बोले वो जो दुनिया की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी तरह हम को भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला बेशक उसका बड़ा नसीब है^(१३) और बोले वो जिन्हें इल्म दिया गया^(१४) खराबी हो तुम्हारी अल्लाह का सवाब बेहतर है उसके लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे^(१५) और यह उन्हीं को मिलता है जो सत्र वाले हैं^(१६) तो हमने उस^(१७) और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया तो उसके पास कोई जमाअत न थी कि अल्लाह से वचाने में उसकी मदद करती^(१८) और न वह बदला ले सका^(१९) और कल-जिसने उसके मर्तबे (उपाधि) की आरजू की थी, सुन्ह^(२०) कहने लगे अजब बात है अल्लाह रिज़्क (रोज़ी) फैलाता है अपने बन्दों में जिसके लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है^(२१) अगर अल्लाह हमपर एहसान न फ़रमाता तो हमें भी धंसा देता, ऐ अजब काफ़िरो का भला नहीं^(२२)

नवाँ सूक़

यह आख़िरत का घर^(१) हम उनके लिये करते हैं जो ज़मीन में घमण्ड नहीं चाहते और न फ़साद, और आक्रियत परहेज़गारों ही की^(२) है^(३) जो नेकी लाए उसके लिये उससे बेहतर

عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ۝ فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لَبِيتَ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حِظٍّ عَظِيمٍ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَن أَمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا وَلَا يُلْقَاهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ۝ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُوهُ وَهُوَ مِنَ الدُّنْيَا اللَّهُ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنتَصِرِينَ ۝ وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ وَيْكَأَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَوْ لَا أَن مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَاءُ دُونِكُمْ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۝ تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي

مَزَلَةٍ

- (२८) कि तुम कितनी बड़ी ग़लती में हो जो उसके साथ और को शरीक करते हो.
- (२९) रोज़ी हासिल करने की कोशिश करो.
- (३०) और उसकी नेअमतों का शुक्र दजा लाओ.
- (३१) यहाँ ग़वाह संख़ूल मुराद हैं जो अपनी अपनी उम्मतों पर शहादत देंगे कि उन्हों ने उन्हे स्व के संदेश पहुंचाए और नसीहतें कीं.
- (३२) यानी शिर्क और ग़मूलों का विरोध तुम्हारा तरीका था, इसपर क्या दलील है, पेश करो.
- (३३) स्व होने और मअबूद होने का ...
- (३४) दुनिया में कि अल्लाह तआला के साथ शरीक ठहराते थे.

सूरए क़सस - आठवाँ सूक़

- (१) क़ारून हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चचा पुसहर का बेटा था. बहुत सुन्दर आदमी था, इसलिये लोग उसे मुनब्वर कहते थे, और बनी इस्राईल में तौरात का सबसे बेहतर पढ़ने वाला था. रादारी के समय में बहुत चित्त और अच्छे व्यवहार का आदमी था. दौलत हाथ आते ही उसका हाल बदल गया और सामरी की तरह मुनाफ़िक़ हो गया. कहा गया है कि फ़िरऔन ने उसको बनी इस्राईल पर हाकिम बना दिया था.
- (२) यानी बनी इस्राईल के ईमानदार लोग.
- (३) माल की बहुतायत पर.
- (४) अल्लाह की नेअमतों का शुक्र करके और माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करके.
- (५) यानी दुनिया और आख़िरत के लिये अमल कर कि अज़ाब से निजात पाए. इसलिये कि दुनिया में इन्सान का हकीकी हिस्सा यह है कि आख़िरत के लिये अमल करे, सदका देकर, रिश्तेदारों के काम आकर और अच्छे कर्मों के साथ. इसकी तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि अपनी सेहत, दौलत और ज़वानी और कुच्चत को न भूल इससे फ़ि उनके साथ आख़िरत तलब करे. हदीस में है कि पांच चीज़ों को पाँच से पहले ग़नीमत जानो. ज़वानी को बुढ़ापे से पहले, स्वास्थ्य को बीमारी से पहले, दौलत को दरिद्रता से पहले, फ़राग़त को शग़ल से पहले और ज़िन्दगी को मौत से पहले.
- (६) अल्लाह के बन्दों के साथ.
- (७) गुनाह करके और जुल्म व बगावत करके.
- (८) यानी क़ारून ने कहा कि यह माल.

(९) इस इल्म से मुराद या तीरात का इल्म है या कीमिया का इल्म जो उसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से हासिल किया था और उसके ज़रिये से रांग को चांदी और तांबे को सोना बना लेता था, या तिजारात का इल्म या खेती बाड़ी का इल्म या दूसरे व्यवसायों का इल्म. सहल ने फ़रमाया जिसने अहंकार किया, उसने भलाई न पाई.

(१०) यानी शक्ति और माल में उससे ज्यादा थे और बड़ी जमाअतें रखते थे. उन्हें अल्लाह तआला ने हलाक कर दिया. फिर यह क्यों कुब्त और माल की कसरत पर घमण्ड करता है. वह जानता है कि ऐसे लोगों का अंत हलाकत है.

(११) उनसे पूछने की हाज़त नहीं क्योंकि अल्लाह तआला उनका हाल जानने वाला है. इसलिये उन्हें जानकारी देने के लिये सवाल न होगा बल्कि उनके धिक्कार और फटकार के लिये होगा.

(१२) बहुत से सवार साथ लिये, ज़ेवरों से सजे, लिबास पहने, सुसज्जित घोड़ों पर सवार.

(१३) यानी बनी इस्राईल के बिद्वान.

(१४) उस दौलत से जो क़ारून को दुनिया में मिली.

(१५) यानी नेक कर्म सत्र करने वालों का ही हिस्सा हैं और इसका सबाब वही पाते हैं.

(१६) यानी क़ारून को.

(१७) क़ारून और उसके घर के धंसाने की घटना उलमा ने यह लिखी है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को दरिया के पार ले जाने के बाद मज्बूह की रियासत हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की सौंपी. बनी इस्राईल अपनी क़ुरबानियाँ उनके पास लाते और वह मज्बूह में रखते. आसमान से आम उतर कर उनके खा लेती थी. क़ारून को हज़रत हारून की इस उपाधि पर हसद हुआ. उसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि रिसालत तो आपकी हुई और क़ुरबानी की सरदारी हारून की. मैं कुछ भी न रहा. जब कि मैं तीरात का बहुत बड़ा पढ़ने वाला हूँ. मैं इसपर सब नहीं कर सकता. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह उपाधि हारून को मैंने नहीं दी, अल्लाह ने दी है. क़ारून ने कहा ख़ुदा की क़सम, मैं आपकी तस्दीक़ न करूंगा जब तक इसका मुवूत आप मुझे न दिखा दें. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल के रईसों को जमा करके फ़रमाया कि अपनी लाटियों ले आओ. उन्हें सब को अपने कुब्बे में जमा किया. रात भर बनी इस्राईल उन लाटियों का पहरा देते रहे. सुबह को हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की लाटी में कौंपलें फूटीं और पत्ते निकल आए. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, ऐ क़ारून तूने देखा. क़ारून बोला यह आप के जादू से कुछ अजीब नहीं. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उसका बहुत ख़याल रखते थे और वह आपको हर समय तकलीफ़ देता था और उसकी सरकशी और घमण्ड और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ दुश्मनी रोज़ बरोज़ बढ़ रही थी. उसने एक मक़ान बनाया जिसका दरवाज़ा सोने का था और उसकी दीवारों पर सोने के तस्त्रे लगाए. बनी इस्राईल सुक़ शाम उसके पास आते, ख़ाना खाते, बातें वनाते, उस हंसाते. जब ज़कात का हुक्म उतरा तो क़ारून मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया. उसने आप से तय किया कि दिरहम और दीनार और मवैशी वगैरह में से हज़ारसौ हिस्सा ज़कात देगा. लेकिन घर जाकर हिसाब किया तो उसके माल में से इतना भी बहुत ज़्यादा होता था. उसके नफ़स ने इतनी भी हिम्मत न की और उसने बनी इस्राईल को जमा करके कहा कि तुम ने मूसा की हर बात में फ़रमाँबरदारी की अब वह तुम्हारे माल लेना चाहते हैं. क्या कहते हो. उन्होंने कहा आप हमारे बड़े हैं जो आप चाहें हुक्म दीजिये. कहने लगा कि अमुक बदचलन औरत के पास जाओ और उससे एक शुल्क निर्धारित करो कि वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर लांछन लगाए. ऐसा हुआ तो बनी इस्राईल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की छोड़ देंगे. चुनान्ने क़ारून ने उस औरत को हज़ार अशरफ़ी और हज़ार रुपया और बहुत से चांदे करके यह लांछन लगाने पर तय किया और दूसरे रोज़ बनी इस्राईल को जमा करके हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया और कहने लगा कि बनी इस्राईल आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं कि आप उन्हें उपदेश और नसीहत फ़रमाएं. हज़रत तशरीफ़ लाए और बनी इस्राईल में ख़दे होकर आपने फ़रमाया कि ऐ बनी इस्राईल जो चोरी करेगा उसके हाथ काटे जाएंगे, जो लांछन लगाएगा उसके अस्सी कोड़े मारें जाएंगे. और जो ज़िना करेगा उसके अगर बीबी नहीं हैं तो सौ कोड़े मारें जाएंगे और अगर बीबी है तो संगसार किया जाएगा यहाँ तक कि मर जाए. क़ारून कहने लगा कि यह हुक्म सब के लिये है, चाहे आप ही हो. फ़रमाया, चाहे मैं ही क्यों न हूँ. कहने लगा बनी इस्राईल का ख़याल है कि आपने अमुक बदकार औरत के साथ बुरा काम किया है. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, उसे बुलाओ. वह आई. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, उसकी क़सम जिमने बनी इस्राईल के लिये दरिया फाड़ा और उसमें रस्ते बनाए और तीरात उतारी, सब कह दे. वह औरत डर गई और अल्लाह के रसूल पर लांछन लगाकर उन्हें तकलीफ़ देने की उसमें हिम्मत न हुई. और उसने अपने दिल में कहा कि इससे तौबह करना बेहतर है. और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि जो कुछ क़ारून कहलाना चाहता है अल्लाह की क़सम यह झूट है और उसने आप पर लांछन लगाने के बदले में मेरे लिये बहुत सा माल ख़रीदा है. हज़रत मूसा अपने रब के हुज़ूर रोते हुए सज़दे में गिरे और अर्ज़ करने लगे या रब अगर मैं तेरा रसूल हूँ तो मेरी वजह से क़ारून पर ग़ज़ब फ़रमा. अल्लाह तआला ने आप को वही फ़रमाई कि मैं ने ज़मीन को आपकी फ़रमाँबरदारी का हुक्म दिया है आप उसको जो चाहें हुक्म दें. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल से फ़रमाया, ऐ बनी इस्राईल अल्लाह तआला ने मुझे क़ारून की तरफ़ भेजा है जैसा फिरऔन की तरफ़ भेजा था. जो क़ारून का साथी हो उसके साथ उसकी जगह ठहरा रहे, जो मेरा साथी हो जुदा हो जाए. सब लोग क़ारून से अलग हो गए, सिवा दो व्यक्तियों के कोई उसके साथ न रहा. फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ज़मीन को हुक्म दिया कि उन्हें पकड़ ले तो वो घुटनों तक धंस गए. फिर आपने यही फ़रमाया तो कमर तक धंस गए, फिर आपने यही फ़रमाया, यहाँ तक कि वो लोग गर्दनो तक धंस गए. अब वो बहुत रोते गिड़गिड़ाते

है^(३) और जो बदी लाए बदकाम वालों को बदला न मिलेगा मगर जितना किया था^(८४) वैशक जिसने तुमपर कुरआन फर्ज किया^(४) वह तुम्हें फेर ले जाएगा जहाँ फिरना चाहते हो^(५) तुम फरमाओ मेरा रब खूब जानता है उसे जो हिदायत लाया और जो खुली गुमराही में है^(६)^(८५) और तुम उम्मीद न रखते थे कि किताब तुमपर भेजी जाएगी^(७) हाँ तुम्हारे रब ने रहमत फरमाई तो तुम हरगिज़ काफ़िरों की पुश्ती (सहायता) न करना^(८)^(८६) और हरगिज़ वो तुम्हें अल्लाह की आयतों से न रोकें बाद इसके कि वो तुम्हारी तरफ़ उतारी गई^(९) और अपने रब की तरफ़ बुलाओ^(१०) और हरगिज़ शिर्क वालों में से न होना^(११)^(८७) और अल्लाह के साथ दूसरे खुदा को न पूज, उसके सिवा कोई खुदा नहीं, हर चीज़ फ़ानी है सिवा उसकी ज़ात के, उसी का हुक्म है और उसी की तरफ़ फिर जाओगे^(१२)^(८८)

الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝
مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۚ وَمَنْ
جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ إِنَّ إِلَهَ الْدُّنْيَةِ قَرِصٌ
عَلَيْكَ الْفُرْآنُ لَرَأْدُكَ إِلَىٰ مَعَادٍ قُلْ رَبِّي
أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ
مُّبِينٍ ۝ وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُلْقَىٰ إِلَيْكَ
الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا
لِلْكَافِرِينَ ۚ وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ
إِذْ أَنْزَلْتَ إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ
لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

مَنْزِلٌ

थे और क़ारून आपको अल्लाह की क़सम देता था और रिश्तेदारी का वास्ता देता था मगर आपने कांई तबज़्जह न दी यहाँ तक कि वो बिल्कुल धंस गए और ज़मीन बराबर हो गई. क़तादह ने कहा कि वो क़यामत तक धंसते ही चले जाएंगे. बनी इस्राईल ने कहा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने क़ारून के मकान और उसके खज़ानों और माल की वजह से उसके लिये बद दुआ की. यह सुनकर आपने अल्लाह तआला से दुआ की तो उसका मकान और उसके खज़ाने और माल सब ज़मीन में धंस गए.

(१८) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से.

(१९) अपनी उस आरज़ू पर शर्मिन्दा होकर.

(२०) जिसके लिये चाहे.

सूरए क़सस - नवाँ सूकू

(१) यानी ज़न्नत.

(२) मेहमूद.

(३) दस गुना सबाब.

(४) यानी उसके पढ़ने और तब्कीग और आदेशों पर अमल लाज़िम किया.

(५) यानी मक्कए मुक़र्रमा में. मुराद यह है कि अल्लाह तआला आपको मक्का की फ़तह के दिन मक्कए मुक़र्रमा में बड़ी शान और सम्मान और अधिकार के साथ दाख़िल करेगा. वहाँ के रहने वाले सब आप के आधीन होंगे. शिर्क और उसके हामी ज़लील और रूसवा होंगे. यह आयत जहफ़ह में उतरी जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीने की तरफ़ हिज़रत करते हुए वहाँ पहुंचे और आपको अपने और अपने पूर्वजों के जन्मस्थान मक्कए मुक़र्रमा का शौक़ हुआ तो जिब्रईले अमीन आए और उन्होंने अज़्र किया कि क्या हुज़ुर को अपने शहर मक्कए मुक़र्रमा का शौक़ है. फ़रमाया हाँ. उन्होंने अज़्र किया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है और यह आयत पढ़ी. 'मआद' यानी जहाँ फिरना चाहते हो, की तफ़रीर मौत और क़यामत और जन्नत से भी की गई है.

(६) यानी मेरा रब जानता है कि मैं हिदायत लाया और मेरे लिये उसका अज़्र और सबाब है. और मुश्रिक लोग गुमराही में हैं और सग़्न अज़ाब के मुस्तहिक. यह आयत मक्का के काफ़िरों के जवाब में उतरी जिन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निखत कहा था "इन्का लफ़ी दलालिम मुबीन" यानी आप ज़रूर खुली गुमराही में हैं. (मआज़ल्लाह).

(७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह सम्बोधन ज़ाहिर में नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की है और मुराद इससे ईमान वाले हैं.

२९- सूरए अन्कबूत

सूरए अन्कबूत मक्का में उतरी, इसमें ६९ आयतें, ७ रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ^(१) अलिफ़, लाम, मीम ^(२) क्या लोग इस घमण्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें, हम ईमान लाए और उनकी आजमाइश न होगी ^(३) ^(४) और वेशक हमने उनसे अगलों को जांचा ^(५) तो जरूर अल्लाह सच्चाओं को देखेगा और जरूर झूठों को देखेगा ^(६) ^(७) या ये समझे हुए हैं वो जो बुरे काम करते हैं ^(८) कि हम से कहीं निकल जाएंगे ^(९) क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं ^(१०) जिसे अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो ^(११) तो वेशक अल्लाह की मोआद जरूर आने वाली है ^(१२) और वही सुनता जानता है ^(१३) ^(१४) और जो अल्लाह की राह में कोशिश करे ^(१५) तो अपने ही भले को कोशिश करता है ^(१६) वेशक अल्लाह वेपरवाह है सारे जगत से ^(१७) ^(१८) और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये हम जरूर उनकी बुराइयाँ उतार देंगे ^(१९) और जरूर उन्हें उस काम पर बदला देंगे जो उनके सब कामों में अच्छा था ^(२०) ^(२१) और हमने आदमी को ताकीद की अपने माँ



- (८) उनके सहायक और मददगार न होना.
(९) यानी काफ़िरों की बहकाने वाली बातों में न आना और उन्हें ठुकरा देना.
(१०) ख़लक को अल्लाह तआला की तौहीद और उसकी इबादत की दावत दो.
(११) उनकी सहायता और तरफ़दारी न करना.
(१२) आश्रित में, और वही कर्मों की जज़ा देगा.

२९ - सूरए अन्कबूत - पहला रूकू

- (१) सूरए अन्कबूत मक्के में उतरी, इस में सात रूकू, उन्तर आयतें, वो सौ अस्सी कलिमे, चार हज़ार एक सौ पैंसठ अक्षर हैं.
(२) तक्लीफ़ों की सख़्ती और क़िरम क़िरम की तक्लीफ़ें और फ़रमाँवरदारी के ज़ौक और ख़्वाहिशात के त्याग और जान और माल के बदल से उन के ईमान की हकीकत ख़ूब ज़ाहिर हो जाए और मुख़लिस मूमिन और मुनाफ़िक़ में इमतिyलज़ ज़ाहिर हो जाए. ये आयत उन हज़रात के हक़ में नाज़िल हुई जो मक्कए मुकर्रमा में थे और उन्होंने इस्लाम का इक़रार किया तो असहाबे रसूल (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) ने उन्हें लिखा कि सिर्फ़ इक़रार काफ़ी नहीं जब तक कि हिज़रत न करां. उन साहिबों ने हिज़रत की और मदीने का इरादा क़के ख़ाना हुए. मुथ़िकीन ने उनका पीछा किया और उन से जंग की. कुछ हज़रात उनमें से शहीद हो गए, कुछ बच गए. उनके हक़ में ये दो आयतें नाज़िल हुई. और हज़रत इब्ने अब्बास (रदियल्लाहो तआला अन्हुमा) ने फ़रमाया कि उन लोगों से मुराद सलमा बिन हिशाम और अय्याश बिन अबी रबीआ और बलीद बिन बलीद और अम्मार बिन यासिर वग़ैरह है जो मक्कए मुकर्रमा में ईमान लाए. और एक क़ौल यह है कि यह आयत हज़रत अम्मार के हक़ में नाज़िल हुई जो ख़ुदा-परस्ती की वजह से सताए जाते थे और कुफ़रार उन्हें सख़्त तक्लीफ़ें दंत थे. एक क़ौल यह है कि ये आयतें हज़रत उमर (रदियल्लाहो तआला अन्हो) के गुलाम हज़रत महजेअ बिन अब्दुल्लाह के हक़ में नाज़िल हुई जो यद्र में सबसे पहले शहीद होने वाले हैं. सय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन के बारे में फ़रमाया कि महजेअ शहीदों के सरदार हैं और इस उम्मत में ज़न्नत के दरवाज़े की तरफ़ पहले वो पुकारे जाएंगे. उनके माता पिता और उनकी पत्नी को उनका बहुत दुःख हुआ तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की फिर उनकी तसल्ली फ़रमाई.
(३) तरह तरह की परीक्षाओं में डाला. उनमें से कुछ वो हैं जो आरे से चीड़ डाले गए. कुछ लोहे की कंधियों से पुरज़े-पुरज़े किये गए. और सच्चाई और वफ़ादारी की जगह मज़बूत और काइम रहे.

बाप के साथ भलाई की^(१५) और अगर वो तुझ से कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराए जिसका तुझे इल्म नहीं तो तू उनका कहा न मान^(१६) मेरी ही तरफ़ तुम्हारा फिरना है तो मैं बता दूंगा तुम्हें जो तुम करते थे^(१७) और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये, ज़रूर हम उन्हें नेकों में शामिल करेंगे^(१८) और कुछ आदमी कहते हैं हम अल्लाह पर ईमान लाए फिर जब अल्लाह की राह में उन्हें कोई तकलीफ़ दी जाती है^(१९) तो लोगों के फ़िलने को अल्लाह के अज़ाब के बराबर समझते हैं^(२०) और अगर तुम्हारे रब के पास से मदद आए^(२१) तो ज़रूर कहेंगे हम तो तुम्हारे ही साथ थे^(२२) क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता जो कुछ जंगत भर के दिलों में है^(२३) और ज़रूर अल्लाह ज़ाहिर कर देगा ईमान वालों को^(२४) और ज़रूर ज़ाहिर कर देगा मुनाफ़िकों (दोसलों) को^(२५) और काफ़िर मुसलमानों से बोले, हमारी राह पर चलो और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे,^(२६) हालांकि वो उनके गुनाहों में से कुछ न उठाएंगे, बेशक वो झूठे हैं^(२७) और बेशक ज़रूर अपने^(२८) बोझ उठाएंगे, अपने बोझों के साथ और बोझ^(२९) और ज़रूर क़यामत के दिन पूछे जाएंगे जो कुछ वोहतान उठाते थे^(३०)

بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَنْتُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةً لِلنَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ وَلَئِن جَاءَ نَصْرٌ مِّن رَّبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۚ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ۝ وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ السَّافِلِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلَنَحْمِلَ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ ۝ مِّن خَطِيئَتِهِمْ مِّن شَيْءٍ إِنَّهُمْ لَكَذِبُونَ ۝ وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ ۚ وَلَيَسْئَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا

मन्ज़ल

दूसरा स्कू

और बेशक हमने नूह को उसकी कौम की तरफ़ भेजा तो

- (४) हर एक का हाल ज़ाहिर फ़रमा देगा.
- (५) शिर्क और गुनाहों में कैसे हुए हैं.
- (६) और हम उनसे बदला न लेंगे.
- (७) उठाने और हिसाब से डरे या सचाब की उम्मीद रखे.
- (८) उसने सचाब और अज़ाब का जो वादा फ़रमाया है ज़रूर पूरा होने वाला है . चाहिये कि उसके लिये तैयार रहे. और नेक कार्य में जल्दी करें.
- (९) बंदों की बात चीत और कर्मों को.
- (१०) चाहें दीन के दुश्मनों से लड़ाई करके या नफ़स और शैतान की मुशालिफ़त करके और अल्लाह के हुक्म की फ़रमाँबरदारी पर साबिर और क़ाईम रह कर.
- (११) इस का फ़ायदा और पुण्य पाएगा.
- (१२) इंसान और जिन्नत और फ़रिश्ते और उनके कर्मों और ईबादतों से उसका हुक्म और मना फ़रमाना बंदों पर रहमत और करम के लिये है.
- (१३) नेकियों की वजह से.
- (१४) यानी अच्छे कर्म पर.
- (१५) एहसान और अच्छे बर्ताव की यह आसत और सूरए लुक़्मान और सूरए अहक़ाफ़ की आयतें सअद बिन अबी वक्कास रदियल्लाहो तआला अहो के हक़ में और इब्ने इस्हाक़ के मुताबिक़ सअद बिन मालिक ज़ोहरी के हक़ में नाज़िल हुई. उनकी माँ हमन्ना बिनते अबी सुफ़यान बिन उमैया बिन अन्दे शम्स थीं. हज़रत सअद अग़लों और पहलों में से थे. और अपनी माँ के साथ अच्छा बर्ताव करते थे. जब आप इस्लाम लाए तो आप की माँ ने कहा कि तूने ये क्या नया काम किया? खुदा की क़सम ! अगर तू इससे वाज़ न आया तो मैं खाऊँ न पिऊँ. यहाँ तक कि मर जाऊँ और तेरी हमेशा के लिये वदनामी हो. और माँ का हंयारा कहा जाए. फिर उस बुढ़िया ने भूख़ हड़ताल कर दी. और पूरे एक दिन-रात न ख़ाया न पिया और न ही साए में बैठी. इससे कमज़ोर हो गई. फिर एक रात-दिन और इसी तरह रही. तब हज़रत सअद उसके पास आए और आप ने उससे फ़रमाया कि ऐ माँ, अगर तेरी सौ जानें हों और एक-एक करके सब ही निकल जाएं तो भी मैं अपना दीन छोड़ने वाला नहीं. तू चाहे खा, चाहे मत खा. जब वो हज़रत सअद की तरफ़ से निराश हो गई कि ये अपना दीन छोड़ने वाले नहीं तो ख़ाने पीने लगी. इसपर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़रमाई और हुक्म दिया कि माता-पिता के साथ अच्छा बर्ताव किया जाए. और अगर वो कुछ का हुक्म दें, तो

वह उनमें पचास साल कम हजार बरस रहा^(१) तो उन्हें तूफ़ान ने आ लिया और वो ज़ालिम थे^(२) (१४) तो हमने उसे^(३) और किशती वालों को^(४) बचा लिया और उस किशती को सारे जगत के लिये निशानी किया^(५) (१५) और इब्राहीम को^(६) जब उसने अपनी क्रौम से फ़रमाया कि अल्लाह को पूजो और उससे डरो उसमें तुम्हारा भला है अगर तुम जानते (१६) तुम तो अल्लाह के सिवा बुतों को पूजते हो और निरा झूट गढ़ते हो^(७) वेशक वो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम्हारी रोज़ी के कुछ मालिक नहीं तो अल्लाह के पास रिज़क ढूँढो^(८) और उसकी बन्दगी करो और उसका एहसान मानो, तुम्हें उसी की तरफ़ फिरना है^(९) (१७) और अगर तुम झुटलाओ^(१०) तो तुमसे पहले कितने ही गिरोह झुटला चुके हैं^(११) और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुँचा देना (१८) और क्या उन्होंने न देखा अल्लाह किस तरह सृष्टि की शुरुआत फ़रमाता है^(१२) फिर उसे दोबारा बनाएगा^(१३) वेशक यह अल्लाह को आसान है^(१४) (१९) तुम फ़रमाओ ज़मीन में सफ़र करके देखो^(१५) अल्लाह कैसे पहले बनाता है^(१६) फिर अल्लाह दूसरी उठान उठाता है^(१७) वेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है (२०)

فَاَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝ فَاَنْجَيْنَاهُ وَاَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَاَنْزَلْنَاهُ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ اِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ اَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ اِفْكَارًا الَّذِيْنَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ اِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَاِنْ تَكْذِبُوا فَقَدْ كَذَّبَ اِمَمٌّ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ اِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ مَرَّةً ذَلِكُمْ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْاَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَا الْخَلْقَ ثُمَّ اِنَّ اللَّهَ يُنْشِئُ النَّشْأَةَ الْاٰخِرَةَ مَرَّةً ۝ اِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ

مَنْ

न माना जाए।

(१६) क्योंकि जो चीज़ मालूम न हो, उसको किसी के कहे से मान लेना तक्लीद है। इस का मतलब ये हुआ कि असलियत में मेरा कोई शरीक नहीं है, तब ज्ञान और तहकीक से तो कोई भी किसी को मेरा शरीक मान ही नहीं सकता। ये नामुमकिन है। रहा तक्लीद के तौर पर बग़ैर इल्म के मेरे लिये शरीक मना लेना, ये बहुत ही बुरा है। इसमें माता-पिता की हरगिज़ बात न मान। ऐसी फ़रमाँबरदारी किसी मख़लूक की जाईज़ नहीं जिस में खुदा की नाफ़रमानी हो।

(१७) तुम्हारे किरदार का फल देख।

(१८) कि उन के साथ हथ फ़रमाएंगे ओर सालेहीन से मुराद अबिया और औलिया हैं।

(१९) यानी दीन की वज़ह से कोई तक्लीफ़ पहुँचती है जैसे कि काफ़िरों का तक्लीफ़ पहुँचाना।

(२०) और जैसा अल्लाह के अज़ाब से डरना चाहिए या ऐसा ख़ल्क के द्वारा पहुँचाए जाने वाली तक्लीफ़ से डरते हैं। यहाँ तक कि ईमान छोड़ देते हैं और कुफ़्र को स्वीकार लेते हैं। ये हाल मुनाफ़ि़कों का है।

(२१) मिसाल के तौर पर मुसलमानों की जीत हो और उन्हें दौलत मिले।

(२२) ईमान और इस्लाम में और तुम्हारी तरह दीन पर डटे हुए थे। तो हमें इस में शरीक करो।

(२३) कुफ़्र या ईमान।

(२४) जो सच्चाई और भलाई के साथ ईमान लाए और बला और मुसीबत में अपने ईमान और इस्लाम पर साबित और काईम रहे।

(२५) और दोनों गिरोहों को नतीजा देगा।

(२६) मक्क के काफ़िरों ने कुरैश के मूमिनों से कहा था कि तुम हमारा और हमारे बाप दादा का दीन स्वीकार करो। तुम को अल्लाह की तरफ़ से जो मुसीबत पहुँचेगी उसके हम ज़िम्मेदार हैं और तुम्हारे गुनाह हमारी गर्दन पर, यानी अगर हमारे तरीक़े पर रहने से अल्लाह तआला ने तुम को पकड़ा और अज़ाब किया तो तुम्हारा अज़ाब हम अपने ऊपर ले लेंगे। अल्लाह तआला ने उन्हें झूठा फ़रार दिया।

(२७) कुफ़्र और गुनाहों के।

(२८) उनके गुनाहों के, जिन्हें उन्होंने गुमराह किया और सही रास्ते से रोका। हदीस शरीफ़ में है जिस ने इस्लाम में कोई बुरा तरीक़ा निकाला उसपर उस बुरा तरीक़ा निकालने का गुनाह भी है और क़यामत तक जो लोग उस पर अमल करें उनके गुनाह भी। बग़ैर इसके कि उनपर से उन के गुनाह के बोझ में कुछ भी कमी हो। (मुस्लिम शरीफ़)

(२९) अल्लाह तआला उनके कर्मों और ग़लत इज़्माओं सब का जानने वाला है लेकिन यह सवाल थिक्कार के लिये है।

सूरए अन्कबूत - दूसरा रूकू

- (१) इस तमाम मुद्दत में क़ौम को तौहीद और ईमान की दावत जारी रखी और उनकी तकलीफ़ों पर सब्र किया। इसपर भी वह क़ौम बाज़ न आई, झुटलाती रही।
- (२) तूफ़ान में डूब गए। इसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि आप से पहले नबीयों के साथ उनकी क़ौमों ने काफ़ी सज़ियाँ की हैं। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पचास कम हज़ार बरस दावत फ़रमाते रहे और इस लम्बे समय में उनकी क़ौम के बहुत थोड़े लोग ईमान लाए; तो आप कुछ ग़म न करें क्योंकि अल्लाह के करम से आपकी थोड़े समय की दावत से बेशुमार लोग ईमान से बुजुर्गी हासिल कर चुके हैं।
- (३) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को।
- (४) जो आप के साथ ये उनकी संख्या ७८ (अठहत्तर) थी आधे मर्द और आधी औरतें। इनमें हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बेटे साम और हाम और याफ़िस और उनकी बीबियाँ भी शामिल हैं।
- (५) कहा गया है कि वह किशती जूदी पहाड़ पर लम्बे समय तक बाकी रही।
- (६) याद करो।
- (७) कि बुता को खुदा का शरीक कहते हो।
- (८) वही रिज़क देने वाला है।
- (९) आख़िरत में।
- (१०) और मुझे न मानो तो इस में मेरा कोई नुक़सान नहीं। मैंने राह दिखा दी, चमत्कार पेश कर दिये। मेरा कर्तव्य पूरा हो गया इसपर भी अगर तुम न मानो।
- (११) अपने नबीयों को जैसे कि आद, नूह और समूद की क़ौमों। उनके झुटलाने का अन्जाम यही हुआ कि अल्लाह तआला ने उन्हें हलाक किया।
- (१२) कि पहले उन्हें नुक्ता बनाता है फिर बंधे हुए खून की सूरत देता है, फिर गोश्त का टुकड़ा बनाता है। इस तरह एक के बाद एक चरणों में उनकी बनावट पूरी करता है।
- (१३) आख़िरत में मरने के बाद उठाए जाने के वक़्त।
- (१४) यानी पहली बार पैदा करना और मरने के बाद फिर दोबारा बनाना।
- (१५) पिछली क़ौमों के शहरों और निशानों को कि ...
- (१६) मख़लूक का, कि फिर उसे मौत देता है।
- (१७) यानी जब यह यक्वीन से जान लिया कि पहली बार अल्लाह तआला ही ने पैदा किया तो मालूम हो गया कि इस ख़ालिक यानी पैदा करने वाले का सृष्टि को मौत के बाद दोबारा पैदा करना कुछ भी मजबूरी की बात नहीं है।

अज़ाब देता है जिसे चाहे^(१८) और रहम फ़रमाता है जिस पर चाहे^(१९) और तुम्हें उसी की तरफ़ फ़िरना है^(२०) और न तुम ज़मीन में^(२१) क़ाबू से निकल सको और न आसमान में^(२२) और तुम्हारे लिये अल्लाह के सिवा न कोई काम बनाने वाला और न मददगार^(२३)

तीसरा रूकू

और वो जिन्होंने मेरी आयतों और मेरे मिलने को न माना^(१) वो हैं जिन्हें मेरी रहमत की आस नहीं और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है^(२) तो उसकी क़ौम को कुछ जवाब वन न आया मगर ये बोले उन्हें क़त्ल करदो या जला दो^(३) तो अल्लाह ने उसे^(४) आग से बचा लिया^(५) बेशक उसमें ज़रूर निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिये^(६) और इब्राहीम ने^(७) फ़रमाया तुम ने तो अल्लाह के सिवा ये बुत बना लिये हैं जिनमें तुम्हारी दोस्ती यही दुनिया की ज़िन्दगी तक है^(८) फिर क़यामत के दिन तुम में एक दूसरे के साथ कुफ़्र करेगा और एक दूसरे पर लानत डालेगा^(९) और तुम सब का ठिकाना जहन्नम है^(१०) और तुम्हारा कोई मददगार नहीं^(११) तो लूत उस पर ईमान लाया^(१२) और इब्राहीम ने कहा मैं^(१३) अपने रब की तरफ़ हिजरत करता हूँ^(१४) बेशक वही इज़्ज़त व हिकमत (बोध) वाला है^(१५) और हमने उसे^(१६) इस्त्राक़ और यअक़ूब अता

وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَالْيَهُ تَقْلُبُونَ ۝ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَكْسِبُونَ مِنْ رَحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا ۚ وَمَا وَكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝ فَأَمِنْ لَهُ لُوطٌ م وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا

مَثَلًا

(१८) अपने व्याप से.

(१९) अपने करम और मेहरबानी से.

(२०) अपने रब के.

(२१) उससे बचने और भागने की कहीं मजाल नहीं. या ये मानी हैं कि न ज़मीन वाले उसके हुक्म और मर्ज़ी से कहीं भाग सकते हैं, न आसमान वाले.

सूरए अन्कबूत - तीसरा रूकू

- (१) यानी क़ुरआन शरीफ़ और मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने पर ईमान न लाए.
- (२) इस नसीहत के बाद फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वाक़ए का बयान फ़रमाया जाता है कि जब आपने अपनी क़ौम का ईमान की दावत दी और तर्क क़ायम किये और नसीहतें फ़रमाई.
- (३) यह उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा या सरदारों ने अपने अयुयाइयों से. बहरहाल कुछ कहने वाले थे, कुछ उस पर राज़ी होने वाले थे, सब सहमत. इसलिये वो सब क़ायल लोगों के हुक्म में हैं.
- (४) यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को, जबकि उनकी क़ौम ने आग में डाला.
- (५) उस आग को ठण्डा करके और हज़रत इब्राहीम के लिये सलामती बनाकर.
- (६) अजीब अजीब निशानियाँ. आग का इस बहुतात के बावजूद असर न करना और ठण्डा हो जाना और उसकी जगह गुलशन पैदा हो जाना और यह सब पल भर से भी कम में होना.
- (७) अपनी क़ौम से.
- (८) फिर टूट जाएगी और आश्रित में कुछ काम न आएगी.
- (९) बुत अपने पुजारियों से बेज़ार होंगे और सरदार अपने मानने वालों से और मानने वाले सरदारों पर लानत करेंगे.
- (१०) बुतों का भी और पुजारियों का भी. उनमें सरदारों का भी और उनके फ़रमाँवरदारों का भी.
- (११) जो तुम्हें अज़ाब से बचाए. और जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आग से सलामत निकले और उसने आपको कोई हानि न पहुंचाई.
- (१२) यानी हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने यह चमत्कार देखकर आपकी रिसालत की तस्दीक की. आप हज़रत इब्राहीम

फरमाए और हमने उसकी औलाद में नबुव्वत^(१५) और किताब रखी^(१६) और हमने दुनिया में उसका सवाब उसे अता फरमाया^(१७) और वेशक आखिरत में वह हमारे खास समीपता के हकदारों में है^(१८) (२७) और लूत को निजात दी जब उसने अपनी क़ौम से फरमाया तुम वेशक बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले दुनिया भर में किसी ने न किया^(१९) (२८) क्या तुम भदों से बुरा काम करते हो और राह मारते हो^(२०) और अपनी मजलिस (बैठक) में बुरी बात करते हो^(२१) तो उसकी क़ौम का कुछ जवाब न हुआ मगर यह कि बोले हम पर अल्लाह का अज़ाब लाओ अगर तुम सच्चे हो^(२२) (२९) अर्ज़ की ऐ मेरे सब मेरी मदद कर^(२३) इन फ़सादी लोगों पर^(२४) (३०)

चौथा स्कू

और जब हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास खुशख़बरी लेकर आए^(१) बोले हम ज़रूर इस शहर वालों को हलाक करेंगे^(२) वेशक इसके बसने वाले सितमगार हैं^(३) (३१) कहा^(४) इसमें तो लूत है^(५) फ़रिश्ते बोले हमें ख़ूब मालूम है जो कुछ इसमें है, ज़रूर हम उसे^(६) और उसके घर वालों को निजात देंगे मगर उसकी औरत को, कि वह रह जाने वालों में है^(७) (३२)

فِي دُرَيْتِهِمُ التَّوْبَةُ وَالْكِتَابُ وَأَتَيْنَهُ أَجْرَهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَكَانَ الصَّالِحِينَ ۝ وَطُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنِّي أَنَا نَذِيرٌ لَّكُمْ لَتَأْتُونَ مَا سَبَقْتُكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ۝ إِنِّي أَنَا نَذِيرٌ لَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ ۚ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيَكُمُ الْمُنْكَرَ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اسْتِئْذِنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ الصَّادِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ۚ وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ۚ قَالَ إِنْ فِيهَا لُوطًا قَالُوا لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا لَنَنْجِيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا أَمْرَاتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۝ وَلَمَّا أَنْ

मदद

अल्लैहिसलाम के सबसे पहले तस्दीक करने वाले हैं। ईमान से रिसालत की तस्दीक ही मुग़ाद है क्योंकि अरल तौहीद का अक्कीदा तो उन्हें हमेशा से हासिल है इसलिये कि नबी हमेशा ही ईमान वाले होते हैं और कुफ़्र का उनके साथ किसी हाल में तसबुह नहीं किया जा सकता।

(१३) अपनी क़ौम को छोड़ कर।

(१४) जहाँ उसका हुक्म हो। चुनान्चे आपने ईराक़ प्रदेश से शाम की तरफ़ हिज़रत की। इस हिज़रत में आपके साथ आपकी बीबी सारा और हज़रत लूत अल्लैहिसलाम थे।

(१५) हज़रत इस्माईल अल्लैहिसलाम के बाद।

(१६) कि हज़रत इब्राहीम अल्लैहिसलाम के बाद जितने नबी हुए सब आपकी नस्ल से हुए।

(१७) किताब से तौरात, इन्जील, जुबूर और क़ुरआन शरीफ़ मुग़ाद हैं।

(१८) कि पाक सन्तान अना फ़रमाई। पैगम्बरों उनकी नस्ल में रखी, किताबें उन पैगम्बरों को अता कीं जो उनकी औलाद में हैं और उनको सृष्टि में सबका प्यारा और चहीता किया कि सारी क़ौमें और दीन वाले उनसे महबूब रखते हैं और उनकी तरफ़ अपनी निरबत पर गर्व करते हैं और उनके लिये संसार के अन्त तक दुरुद मुक़रर कर दिया। यह तो वह है जो दुनिया में अना फ़रमाया।

(१९) जिनके लिये बड़े ऊंचे दर्जे हैं।

(२०) इस बेहयाई की व्याख्या इससे अगली आयत में बयान होती है।

(२१) राहगीरों को क़त्ल करके, उनके माल लूट कर, और यह भी कहा गया है कि वो लोग मुसाफ़िरों के साथ बुरा काम करते थे यहाँ तक कि लोगों ने उस तरफ़ से गुज़रना भी बन्द कर दिया था।

(२२) जो समझदारी के ऐतिबार से बुरा और मना है जैसे ग़ाली देना, बुरी बातें कहना, ताली और सीटी बजाना, एक दूसरे के कंकरियाँ मारना, रास्ता चलने वालों पर पत्थर वग़ैरह फेंकना, शराब पीना, हंसी उड़ाना, गन्दी बातें करना, एक दूसरे पर धूकना वग़ैरह नीच कर्म जिनकी क़ौम लूत आदी थी। हज़रत लूत अल्लैहिसलाम ने इसपर उनको मलामत की।

(२३) इस बात में कि ये बुरे काम हैं और ऐसा करने वाले पर अज़ाब उतरेगा। यह उन्होंने हंसी के अन्दाज़ में कहा। जब हज़रत लूत अल्लैहिसलाम को उस क़ौम के सीधी राह पर आने की कुछ उम्मीद न रही तो आपने अल्लाह की चारगाह में —

(२४) अज़ाब उतारने के बारे में मेरी बात पूरी करके।

(२५) अल्लाह तआला ने आपकी दुआ कुबूल फ़रमाई।

और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास^(१) आए उनका आना उसे नागवार हुआ और उनके कारण दिल तंग हुआ^(२) और उन्होंने कहा न डरिये^(३) और न गम कीजिये^(४) वेशक हम आप को और आप के घर वालों को निजात देंगे मगर आप की औरत, वह रह जाने वालों में है^(५) वेशक हम उस शहर वालों पर आसमान से अज़ाब उतारने वाले हैं बदला उनकी नाफ़रमानियों का^(६) वेशक हमने उससे रौशन निशानी वाकी रखी अक्ल वालों के लिये^(७) ^(३५) मदन की तरफ़, उनके हम क्रौम शुऐब को भेजा तो उसने फ़रमाया ऐ मेरी क्रौम अल्लाह की बन्दगी करो और पिछले दिन की उम्मीद रखो^(८) और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फ़िरो^(९) तो उन्होंने उसे झुटलाया तो उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया तो सुबह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए^(१०) ^(३६) और आद और समूद को हलाक फ़रमाया और तुम्हें^(११) उनकी वस्तियां मालूम हो चुकी हैं^(१२) और शैतान ने उनके कौतुक^(१३) उनकी निगाह में भले कर दिखाए और उन्हें राह से रोका और उन्हें सूझता था^(१४) ^(३८) और कारून और फ़िरऔन और हामान को^(१५) और वेशक उनके पास मूसा

جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سَيِّئًا بِهِمْ وَضَآئٍ بِهِمْ ذُنُوبًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنْجِيُونَ ۝ وَإِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝ وَلَقَدْ تَرَكُنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ فَقَالَ يَقُومُوا عِبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْأَخِيرَ وَلَا تَعْتَوُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جِثِيمِينَ ۝ وَعَادًا وَثَوْدًا وَقَدْ جَاءَكُمْ لَكُمْ مِّنْ مَّسْكِنِهِمْ تَوَزَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَقَضَاهُمْ عَنِ السَّبِيلِ ۖ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۖ وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُّوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ

منزل

सूरए अन्कबूत - चौथा रूकू

- (१) उनके बेटे और पोते हज़रत इस्हाक और हज़रत यअकूब अलैहिमस्सलाम का.
- (२) उस शहर का नाम शदूम था.
- (३) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने.
- (४) और लूत अलैहिस्सलाम तो अल्लाह के नबी और बुज़र्गी वाले बन्द हैं.
- (५) यानी लूत अलैहिस्सलाम को.
- (६) अज़ाब में.
- (७) ख़ूबसूरत मेहमानों की शक्ल में.
- (८) क्रौम के कर्म और हरकतों और उनकी नालायकी का ख़याल करके, उस वक़्त फ़रिश्तों ने ज़ाहिर किया कि वो अल्लाह के भेजे हुए हैं.
- (९) क्रौम से.
- (१०) हमारा, कि क्रौम के लोग हमारे साथ कोई बन्दगी और गुस्ताखी करें. हम फ़रिश्ते हैं. हम लोगों को हलाक करेंगे और ...
- (११) हज़रत इज़्ज अब्बास रदियल्लाह अन्हुमा ने फ़रमाया कि वह रौशन निशानी क्रौमे लूत के वीरान मकान हैं.
- (१२) यानी क़यामत के दिन की, ऐसे काम करके जो आख़िरत के सबाब का कारण हों.
- (१३) मुर्दे बेजान.
- (१४) ऐ मक्का वालो.
- (१५) हज़र और यमन में जब तुम अपनी यात्राओं में वहाँ से गुज़रते हो.
- (१६) कुफ़र और गुनाह.
- (१७) समझ वाले थे. सत्य और असत्य में फ़र्क कर सकते थे लेकिन उन्होंने अक्ल और न्याय से काम न लिया.
- (१८) अल्लाह तआला ने हलाक फ़रमाया.

रोशन निशानियां लेकर आया तो उन्होंने ज़मीन में घमण्ड किया और वो हमसे निकल कर जाने वाले न थे^(१९) ॥३९॥ तो उनमें हर एक को हमने उसके गुनाह पर पकड़ा, तो उनमें किसी पर हमने पथराव भेजा^(२०) और उनमें किसी को चिंघाड़ ने आ लिया^(२१) और उनमें किसी को ज़मीन में धंसा दिया^(२२) और उनमें किसी को डुबो दिया^(२३) और अल्लाह की शान न थी कि उनपर जुल्म करे^(२४) हाँ वो खुद ही^(२५) अपनी जानों पर जुल्म करते थे^(२६) उनकी मिसाल जिन्होंने अल्लाह के सिवा और मालिक बना लिये हैं^(२७) मकड़ी की तरह है, उसने जाले का घर बनाया^(२८) और वेशक सब घरों में कमज़ोर घर मकड़ी का घर^(२९) क्या अच्छा होता अगर जानते^(३०) ॥४१॥ अल्लाह जानता है जिस चीज़ की उसके सिवा पूजा करते हैं^(३१) और वही इज़्ज़त और बोध वाला है^(३२) ॥४२॥ और ये मिसालें हम लोगों के लिये बयान फ़रमाते हैं, और उन्हें नहीं समझते मगर इल्म वाले^(३३) ॥४३॥ अल्लाह ने आसमान और ज़मीन हक बनाए, बेशक उसमें निशानी है^(३४) मुसलमानों के लिए^(३५) ॥४४॥

पारा बीस समाप्त

فَأَسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا لَاسِقِينَ ۖ
فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذُنُوبِهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ
حَاصِبًا ۖ وَمِنْهُمْ مَنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۖ وَمِنْهُمْ مَنْ
خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ۖ وَمِنْهُمْ مَنْ أَغْرَقْنَا ۖ وَمَا
كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ
يُظْلِمُونَ ۝ مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ
اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَثَلُ الْعَنكَبُوتِ ۖ اتَّخَذَتْ بَيْتًا
وَأَنْ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبِيتَ الْعَنكَبُوتُ مَكَوًّا كَانُوا
يَعْلَمُونَ ۝ إِنْ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ
دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا
إِلَّا الْعَالِمُونَ ۝ خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِالْحَقِّ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

मक

- (१९) कि हमारे अज़ाब से बच सकते.
(२०) और वह क़ौम लुत थी जिनको छोटे छोटे पथरों से हलाक किया गया जो तेज़ हवा से उनपर लगते थे.
(२१) यानी क़ौम समूद कि भयावह आवाज़ के अज़ाब से हलाक की गई.
(२२) यानी क़ारून और उसके साथियों को.
(२३) जैसे क़ौम नूह का और फिरऔन और उसकी क़ौम का.
(२४) वह किसी को बिना गुनाह के अज़ाब में नहीं जकड़ता.
(२५) नाफ़रमानियाँ करके और कुफ़्र और सरकशी इज़्तिहार करके.
(२६) यानी बुतों को मअबूद टहराया है, उनके साथ उम्मीदें जोड़ रखी हैं और हकीकत में उनकी लाचारी और बेइज़्तिहारी की मिसाल यह है कि जो आग ज़िक्र फ़रमाई जाती है.
(२७) अपने रहने के लिये, न उससे गर्मी दूर हो न सर्दी. न धूल मिट्टी और बारिश, किसी चीज़ से हिफ़ाज़त. ऐसे ही बुत हैं कि अपने पुजारियों को न दुनिया में नफ़ा पहुंचा सकें न आख़िरत में कोई नुक़सान पहुंचा सकें.
(२८) ऐसे ही सब दीनों में कमज़ोर और निकम्मा दीन बुत परस्तों का है. हज़रत अली मुरतज़ा रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है आपने फ़रमाया अपने घरों से मकड़ी के जाले दूर करो, ये दरिद्रता का कारण होते हैं.
(२९) कि उनका दीन किस ऋद्ध निकम्मा है.
(३०) कि वह कुछ हकीकत नहीं रखती.
(३१) तो समझदार को कब उचित है कि इज़्ज़त व हिक्मत वाले क़ादिर और मुख़्तार की इबादत छोड़ कर बड़लम व इज़्तिहार पथरों की पूजा करे.
(३२) यानी उनके हुस्न और गुण और उनके नफ़े और फ़ायदे और उनकी हिक्मत को इल्म वाले समझते हैं जैसा कि इस मिसाल ने मुश्क़ और ख़ुदा परस्त का हाल ख़ूब अच्छी तरह ज़ाहिर कर दिया और फ़र्क़ खोल दिया. क़ुरैश के काफ़िरों ने बग़्य के तौर पर कहा था कि अल्लाह तआला मक़बी और मकड़ी की उपमाएं देता है. और इसपर उन्होंने हंसी बनाई थी. इस आयत में उनका रद्द कर दिया गया कि जो जाहिल हैं, उदाहरण और उपमा की हिक्मत को नहीं जानते. मिसाल का उद्देश्य समझाना होता है और जैसी चीज़ हो उसकी शान ज़ाहिर करने के लिये वैसी ही मिसाल पेश करना हिक्मत का तकाज़ा है तो बातिल और कमज़ोर दीन के झूठ के इज़हार के लिये यह मिसाल बहुत ही नफ़ा देने वाली है. जिन्हें अल्लाह तआला ने अज़ल और इल्म अता फ़रमाया वो समझते हैं.
(३३) उसकी कुदरत और हिक्मत और उसकी तौहीद और एक होने पर दलील क़ायम करने वाली.

इक्कीसवां पारा - उत्तु-मा-ऊहिया (सूरए अन्कबूत जारी)

पाँचवां रूकू

ऐ मेहबूब, पढ़ो जो किताब तुम्हारी तरफ वही की गई^(१) और नमाज़ कायम फ़रमाओ, वेशक नमाज़ मना करती है वेहयाई और बुरी बात से^(२) और वेशक अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा^(३) और अल्लाह जानता है जो तुम करते हो^(४) और ऐ मुसलमानो किताबियों से न झगड़ो मगर बेहतर तरीक़े पर^(५) मगर वो जिन्होंने उनमें से जुल्म किया^(६) और कहो^(७) हम ईमान लाए उसपर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और हमारा तुम्हारा एक मअबूद है और हम उसके समक्ष गर्दन रखे हैं^(८) और ऐ मेहबूब धूँही तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी^(९) तो वो जिन्हें हमने किताब अता फ़रमाई^(१०) उसपर ईमान लाते हैं, और कुछ उनमें से हैं^(११) जो उसपर ईमान लाते हैं, और हमारी आयतों से इनकारी नहीं होते मगर काफ़िर^(१२) और इस^(१३) से पहले तुम कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने हाथ से कुछ लिखते थे यूँ होता^(१४) तो बातिल(असत्य) वाले ज़रूर शक लाते^(१५) वल्कि वो रौशन आयतें हैं उनके सीनों में जिनको इल्म दिया गया^(१६) और हमारी आयतों का इनकार नहीं करते मगर ज़ालिम^(१७) और वोले^(१८) क्यों न उतरीं कुछ निशानियाँ उनपर उनके रब की तरफ़ से^(१९) तुम फ़रमाओ निशानियाँ

أَتْلُ مَا أُوْحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۚ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۚ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ۝ وَلَا تَجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ الْكَافِرَ الَّذِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ لَئِنْ أَتَيْتُمُوهُمْ وَقُولُوا آمَنَّا بِالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَأُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَإِنَّا لَهَاطِرُونَ وَإِنَّا لَكَاذِبُونَ ۝ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ ۚ فَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمَا يَجْحَدُ بِالَّذِي أُنْزِلَ إِلَّا الْكَافِرُونَ ۝ وَمَا كُنْتُمْ تَتْلُوا مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخُطُّهُ بِيَمِينِكُمْ إِذَا لَرْتَابِ الْمُظْلُمُونَ ۝ بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ ۝ وَقَالُوا لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِّنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ

सूरए अन्कबूत - पाँचवां रूकू

- (१) यानी क़ुरआन शरीफ़ कि उसकी तिलावत भी इबादत है और उसमें लोगों के लिये अच्छी बातें और नसीहतें भी और आदेश और अदब और अच्छे व्यवहार की तालीम भी।
- (२) यानी शरीअत की मना की हुई बातों से, लिहाज़ा जो शस्त्र नमाज़ का पाबन्द होता है और उसे अच्छी तरह अदा करता है, नतीजा यह होता है कि एक न एक दिन वह उन बुराईयों को त्याग देता है जिनमें जकड़ा हुआ था। हज़रत अनस रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि एक अनसाफ़ी जवान सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ा करता था और बहुत से बड़े गुनाह किया करता था। हज़ूर से उसकी शिकायत की गई, फ़रमाया, उसकी नमाज़ किसी दिन उसे उन बातों से रोक देगी। चुनान्वे बहुत ही करीब के ज़माने में उसने तौबत की और उसका हाल बेहतर हो गया। हज़रत हमस रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि जिस की नमाज़ उसको बेहयाई और अवैध बातों से न रोके, वह नमाज़ ही नहीं।
- (३) कि वह सबसे बढ़कर फ़रमाँबरदारी है, तिरमिज़ी की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें न बताऊँ वह अमल जो तुम्हारे कर्मों में बेहतर और रब के रज़्दीक सबसे पाकीज़ा, सबसे ऊँचे दर्जे का और तुम्हारे लिये सोना चांदी देने से बेहतर और जिहाद में लड़ने और मारे जाने से बेहतर है। सहाबा ने अर्ज़ किया, वंशक या रसूलल्लाह, फ़रमाया, वह अल्लाह तआला का ज़िक्र है, तिरमिज़ी ही की एक दूसरी हदीस में है कि सहाबा ने हज़ूर से दरियाफ़्त किया था कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला के रज़्दीक किन बन्दों का दर्जा ऊँचा है, फ़रमाया, बहुत ज़्यादा ज़िक्र करने वालों का। सहाबा ने अर्ज़ किया, और ख़ुदा की राह में जिहाद करने वाला, फ़रमाया, अगर वह अपनी तलवार से काफ़ियों और मुश्कियों का यहाँ तक मार कि तलवार टूट जाए और वह खून में रंग जाए जब भी ज़िक्र करने वालों का दर्जा ही उससे बलन्द है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हो ने इस आयत की तफ़सीर यह फ़रमाई है कि अल्लाह तआला का अपने बन्दों को याद करना बहुत बड़ा है और एक क़ौल इसकी तफ़सीर में यह है कि अल्लाह तआला का ज़िक्र बड़ा है बेहयाई और बुरी बातों से रोकने और मना करने में।
- (४) अल्लाह तआला की तरफ़, उसकी आयतों से दावत देकर और हुज़तों पर आगाही करके।

तो अल्लाह ही के पास हैं^(१९) और मैं तो यही साफ़ डर सुनाने वाला हूँ^(२०) (५०) और क्या यह उन्हें बस नहीं कि हमने तुम पर किताब उतारी जो उनपर पढ़ी जाती है^(२१) वेशक इसमें रहमत और नसीहत है ईमान वालों के लिये^(२२)

छटा रूकू

तुम फ़रमाओ, अल्लाह बस है मेरे और तुम्हारे बीच गवाह^(१) जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और वो जो बातिल (असत्य) पर यकीन लाए और अल्लाह के इन्कारी हुए वही घाटे में हैं^(२) और तुमसे अज़ाब की जल्दी करते हैं^(३) और अगर एक ठहराई मुदत न होती^(४) तो ज़रूर उनपर अज़ाब आ जाता^(५) और ज़रूर उनपर अचानक आएगा जब वो बेखबर होंगे^(६) तुम से अज़ाब की जल्दी मचाते हैं, और वेशक जहन्नम घरे हुए काफ़िरों को^(७) (५१) जिस दिन उन्हें ढाँपेगा अज़ाब उनके ऊपर और उनके पाँव के नीचे से और फ़रमाएगा चखो अपने किये का मज़ा^(८) (५२) ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए वेशक मेरी ज़मीन फैली हुई है तो मेरी ही वन्दगी करो^(९) (५३) हर जान को मौत का मज़ा चखना है^(१०) फिर हमारी ही तरफ़ फ़िरोगे^(११) (५४) और

عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرًا لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا ۖ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۖ وَلَوْ لَا أَجَلٌ مُّسَمًّى لِّآجَاءِهِمُ الْعَذَابِ ۖ وَلَٰكِيَّا تَتَّبِعُهُمُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۖ وَإِنْ جَهَنَّمُ لَسَاطِئُ لِلْكَافِرِينَ ۝ يَوْمَ يَغْشَىٰ الْعَذَابُ مَن قَوْعِهِمْ ۖ وَمَن تَحْتِ أَعْجُلِيمٍ وَيَقُولُ دُوْقُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ يُعَادِلُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا وَإِنْ أَرْضِي وَإِسْعةً فَإِنِّي أَنَا عَابِدُونَ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَٰئِقَةُ الْمَوْتِ ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا

(५) ज़ियादती में हद से गुज़र गए, दुश्मनी इस्तियार की, नसीहत न मानी, नमी से नफा न उठाया, उनके साथ सख्ती करो और एक क़ौल यह है कि मानी ये हैं कि जिन लोगों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तक्तीफ़ दी या जिन्होंने अल्लाह तआला के लिये बेटा और शरीक बताया, उनके साथ सख्ती करो. या-ये मानी हैं ज़िम्मी जिज़िया अदा करने वालों के साथ अच्छे तरीक़े से व्यवहार करो. मगर जिन्होंने ने जुल्म किया और ज़िम्मे से निकल गए और जिज़िया को मना किया उनसे व्यवहार तलवार के साथ है. इस आयत से काफ़िरों के साथ दीनी क़ामों में मुनाज़िरा करने का जवाज़ यानी वैधता साबित होती है और ऐसे ही इल्मे क़लाम यानी तर्क-वितर्क की विद्या सीखने का जवाज़ भी.

(६) किताब वालों से, जब वो तुम से अपनी किताबों का कोई मज़मून बयान करें.

(७) हदीस शरीफ़ में है कि जब पहले किताब तुम से कोई मज़मून बयान करें तो तुम न उनकी तस्दीक करो, न उन्हें झुटलाओ, यह कह दो कि हम अल्लाह तआला और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए. तो अगर वह मज़मून उन्होंने ग़लत बयान किया है तो तुम उसकी तस्दीक के गुनाह से बचे रहोगे और अगर वह मज़मून सही था तो तुम उसे झुटलाने से मेहफूज़ रहोगे.

(८) कुरआने पाक, जैसे उनकी तरफ़ तौरात वगैरह उतारी थीं.

(९) यानी जिन्हें तौरात दी जैसे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथी. यह सूरत मक्के में उतरी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथी मदीने में ईमान लाए. अल्लाह तआला ने इससे पहले उनकी ख़बर दी. यह ग़ैबी ख़बरों में से है. (जुमल)

(१०) यानी मक्का वालों में से.

(११) जो कुफ़्र में बहुत सख्त हैं. जहूद उस इन्कार को कहते हैं जो सब कुछ जान लेने के बाद हो, यानी जान बूझ कर मुकरना और बाफ़िआ भी यही था कि यहूदी ख़ूब पहचानते थे कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला के सच्चे नबी हैं और कुरआन सच्चा है. यह सब कुछ जानते हुए भी उन्होंने दुश्मनी में इन्कार किया.

(१२) कुरआन के उतरने.

(१३) यानी आप लिखते पढ़ते होते.

(१४) यानी पहले किताब कहते कि हमारी किताबों में आख़िरी ज़माने के नबी की विशेषता यह लिखी है कि वो उम्मी होंगे, न लिखेंगे, न पढ़ेंगे, मगर उन्हें इस शक का मौक़ा ही न मिला.

(१५) ज़मीर 'हुवा' यानी वह कुरआन के लिये है. उस सूरत में मानी ये हैं कि कुरआने करीम वो ग़ैशन आयतें हैं जो उलमा और

वेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये जरूर हम उन्हें जन्नत के बालाखानों (अटारियों) पर जगह देंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी हमेशा उनमें रहेंगे, क्या ही अच्छा अन्न काम वालों का^(१०) (५८) वो जिन्होंने सब किया^(११) और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं^(१२) (५९) और ज़मीन पर कितने ही चलने वाले हैं कि अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते^(१३) अल्लाह रोज़ी देता है उन्हें और तुम्हें^(१४) और वही सुनता जानता है^(१५) (६०) और अगर तुम उनसे पूछो^(१६) किसने बनाए आसमान और ज़मीन और काम में लगाए सूरज और चांद तो जरूर कहेंगे अल्लाह ने, तो कहाँ औंधे जाते हैं^(१७) (६१) अल्लाह कुशादा करता है रोज़ी अपने बन्दों में जिसके लिए चाहे और तंगी फ़रमाता है जिसके लिये चाहे वेशक अल्लाह सब कुछ जानता है^(६२) और जो तुम उनसे पूछो किसने उतारा आसमान से पानी तो उसके कारण ज़मीन ज़िन्दा कर दी मरें पीछे, जरूर कहेंगे अल्लाह ने^(६३) तुम फ़रमाओ सब ख़ुबियाँ अल्लाह को, बल्कि उनमें अक्सर वेअक़ल हैं^(१४) (६३)

सातवाँ सूक़

और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद^(१) और वेशक आखिरत का घर जरूर वही सच्ची ज़िन्दगी है^(२) क्या अच्छा था अगर जानते^(३) (६४)

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُم مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نِعَمَ أَجْرَ الْعَامِلِينَ ۝
الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَكَانَ مِن دَابَّتِهِ لَا تَحِلُّ رُزْقَهَا ۚ اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَلَكِن سَأَلْتَهُم مِّن حَتَّى السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَخُرَّ السَّمْسُ وَاقْعَمَ لِيَقُولُوا ۚ اللَّهُ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ ۝ اللَّهُ يَسْطُرُ الزُّرْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَلَكِن سَأَلْتَهُم مِّن نَّزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءٌ فَأَخِيَابُ الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لِيَقُولُوا ۚ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوٌّ وَلَعِبٌ ۚ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَاتِ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

मन्त्र

हाफ़िज़ों के सीनों में मेहफूज़ हैं, रौशन आयत होने के ये मानी कि वह खुले चमत्कार वाली हैं और ये दोनों बातें कुरआन शरीफ़ के साथ ख़ास हैं, और कोई ऐसी किताब नहीं जो चमत्कार हो और न ऐसी कि हर ज़माने में सीनों में मेहफूज़ रही हो, और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने “हुवा” की ज़मीर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जोड़ कर आयत के ये मानी बयान किये कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उन रौशन आयतों के साहिब हैं जो उन लोगों के सीनों में मेहफूज़ हैं जिन्हें पहले किताब में से इल्म दिया गया क्योंकि वो अपनी किताबों में आपकी नअत और सिफ़ात पाते हैं, (ख़ाज़िन)

(१६) यानी दुश्मनी रखने वाले यहूदी कि चमत्कारों के ज़ाहिर होने के बाद जान बूझकर दुश्मनी से इन्कारी होते हैं।

(१७) मक्के के काफ़िर।

(१८) जैसे हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लाठी और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिये आसमान से खाना उतरना।

(१९) हिकमत के अनुसार जो चाहता है उतारता है :

(२०) नाफ़रमानी करने वालों को अज़ाब का, और इसी का मुझे हुक्म दिया गया है, इसके बाद अल्लाह तआला मक्का के काफ़िरों के इस झूल का जवाब इरशाद फ़रमाता है।

(२१) मानी ये हैं कि कुरआने फ़रीम एक चमत्कार है, पहले तबियों के चमत्कार से ज़्यादा भरपूर और सम्पूर्ण, और निशानियों से सच्चाई चाहने वालों को बेनियाज़ करने वाला क्योंकि जब तक ज़माना है, कुरआन शरीफ़ बाक़ी रहेगा और दूसरे चमत्कारों की तरह ख़त्म न होगा।

सूरए अन्कबूत - छटा सूक़

(१) मेरी रिसालत की सच्चाई और तुम्हारे झुटलाने का, चमत्कारों से मेरी ताईद फ़रमाकर।

(२) यह आयत नज़र बिन हारिस के बारे में उतरी जिसने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि हमारे ऊपर आसमान में पत्थरों की बारिश कराइये।

(३) जो अल्लाह तआला ने निर्धारित की है और उस मुद्दत तक अज़ाब में विलम्ब फ़रमाना अल्लाह तआला की मर्ज़ी की बात है।

(४) और विलम्ब न होता।

- (५) उस से उनमें का कोई भी न बचेगा.
- (६) यानी अपने कर्मों की जज़ा.
- (७) जिस धरती पर आसानी से इबादत कर सको. मानी ये हैं कि जब मूमिन को किसी प्रदेश में अपने दीन पर क़ायम रहना और इबादत करना दुशवार हो तो चाहिये कि वह ऐसे प्रदेश की तरफ़ हिजरत कर जाए जहाँ आसानी से इबादत कर सके, और दीन के कामों में कठिनाइयाँ पेश न आएँ. यह आयत मरीब और कमज़ोर मुसलमानों के हक़ में उतरी. जिन्हें मक्का में रहकर ख़तर और तकलीफ़ें थीं और अत्यन्त परेशानी में थे. उन्हें हुक्म दिया गया कि मेरी बन्दगी तो लाज़िम है, यहाँ रह कर न कर सको तो मदीना शरीफ़ को हिजरत कर जाओ, वह लम्बा चौड़ा प्रदेश है और वहाँ अमन है.
- (८) और इस नश्वर संसार को छोड़ना ही है.
- (९) सवाब और अज़ाब और कर्मों की जज़ा के लिये, तो ज़रूरी है कि हमारे दीन पर क़ायम रहो और अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिये हिजरत करो.
- (१०) जो अल्लाह तआला की फ़रमाँबरदारी करे.
- (११) सख्तियों पर और किसी सख्ती में अपने दीन को न छोड़ा. मुश्कियों की तकलीफ़ सहन की हिजरत इख़्तियार करके दीन के लिये अपना वतन छोड़ना ग़वारा किया.
- (१२) सारे कामों में.
- (१३) मक्का मुकर्रमा में मूमिनों को मुश्किलें लगेगी रात दिन तरह तरह की यातनाएं देते रहते थे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे मदीना तैय्यिबह की तरफ़ हिजरत करने को फ़रमाया तो उनमें से कुछ ने कहा कि हम मदीना शरीफ़ कैसे चले जाएँ, न वहाँ हमारा घर, न माल, कौन हमें खिलाएगा, कौन पिलाएगा. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि बहुत से जावदार ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते, इसकी उन्हें कुव्वत नहीं और न वो अगले दिन के लिये कोई ज़ख़ीरा जमा रखते हैं जैसे कि पशु हैं, पक्षी हैं.
- (१४) तो जहाँ होंगे, वही रोज़ी देगा. तो यह क्या पूछना कि हमें कौन खिलाएगा, कौन पिलाएगा. सारी सृष्टि को रिज़क देने वाला अल्लाह है, कमज़ोर और ताक़तवर, मुक़ीम और मुसाफ़िर सब को वही रोज़ी देता है.
- (१५) तुम्हारे कथनों और तुम्हारे दिल की बातों को. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, अगर तुम अल्लाह तआला पर भरोसा करो जैसा चाहिये तो वह तुम्हें ऐसी रोज़ी दे जैसी पक्षियों को देता है कि सुक़ भूखे ख़ाली पेट उड़ते हैं, शाम को पेट भरे वापस होते हैं. (तिरमिज़ी).
- (१६) यानी मक्के के काफ़िरों से.
- (१७) और इस इफ़रार के बावजूद किस तरह अल्लाह तआला की तौहीद से इन्कार करते हैं.
- (१८) इसके इफ़रारी हैं.
- (१९) कि इस इफ़रार के बावजूद तौहीद के इन्कारी हैं.

सूरए अन्कबूत - सातवाँ रूकू

- (१) कि जैसे बच्चे घड़ी भर खेलते हैं, खेल में दिल लगाते हैं फिर उस सब को छोड़कर चल देते हैं. यही हाल दुनिया का है. बहुत जल्दी इसका पतन होता है और मौत यहाँ से ऐसा ही अलग कर देती है जैसे खेल वाले बच्चे अलग हो जाते हैं.
- (२) कि वह ज़िन्दगी पायदार है, हमेशा की है. उसमें मौत नहीं. ज़िन्दगी कहलाने के लायक़ वही है.
- (३) दुनिया और आख़िरत की हक़ीक़त, तो नश्वर संसार की आख़िरत की हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी पर प्राथमिकता न देते.

फिर जब किशती में सवार होते हैं^(४) अल्लाह को पुकारते हैं एक उसी पर अक्रीदा (विश्वास) लाकर^(५) फिर जब वह उन्हें खुशकी की तरफ बचा लाता है^(६) जभी वो शिर्क करने लगते हैं^(७) ﴿६५﴾ कि नाशुकी करें हमारी दी हुई नेअमत की^(८) और बरतें^(९) तो अब जानना चाहते हैं^(१०) ﴿६६﴾ और क्या उन्होंने^(११) यह न देखा कि हमने^(१२) हुमत (इज़्जत) वाली ज़मीन पनाह बनाई^(१३) और उनके आस पास वाले लोग उचक लिये जाते हैं^(१४) तो क्या बातिल (असत्य) पर यक्रीन लाते हैं^(१५) और अल्लाह की दी हुई नेअमत से^(१६) नाशुकी करते हैं^(१७) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधें^(१८) या हक (सत्य) को झुटलाएँ^(१९) जब वह उसके पास आए, क्या जहन्नम में काफ़िरीों का ठिकाना नहीं^(२०) ﴿६८﴾ और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे^(२१) और बेशक अल्लाह नेकों के साथ है^(२२) ﴿६९﴾

३०- सूरए रूम

सूरए रूम मक्का में उतरी, इसमें ६० आयतें, ६ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ^(१) अलिफ़ लाम मीम ^(२) ﴿१﴾ रूमी पराजित हुए ^(३) पास की ज़मीन में ^(४) और अपनी पराजय के बाद बहुत जल्द विजयी होंगे ^(५) ﴿३﴾ चन्द बरस में ^(६) हुक्म अल्लाह ही का है

فَاذْكُرُوا فِي الْفُلِكِ دَعَاُ اللَّهِ مُخْلِصِينَ لَهُ
الْدِّينَ ؕ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ۝
لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ؕ وَلِيَمْتَعُوا ۖ فَسَوْفَ يَعْكُونَ ۝
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا آمِنًا وَيَنْتَضِعُ النَّاسُ
مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ أَيْدِيَ الْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ
يَكْفُرُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ
كُذْبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ؕ أَلَيْسَ فِي
جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۝ وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا
لَنَنْصُرِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْحُسَيْنِينَ ۝
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْع ۝ غُلِبَتِ الرُّومُ ۝ فِي أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِمَّنْ
بَعْدَ عَلَيْهِمْ سَيِّغُلِبُونَ ۝ فِي بَضْعِ سِنِينَ ۝ هُ لِلَّهِ

منزل

- (४) और डूबने का डर होता है तो अपने शिर्क और दुश्मनी के बाबुजूद बुतों को नहीं पुकारते, बल्कि ...
- (५) कि इस मुसीबत से निजात वही देगा.
- (६) और डूबने का डर और परेशानी जाती रहती है, इत्मीनान हासिल होता है.
- (७) जिहालत के ज़माने के लोग समन्दरी सफ़र करते वक्त बुतों को साथ ले जाते थे. जब हवा मुख़ालिफ़ चलती और किशती ख़तरे में आती तो बुतों की पानी में फेंक देते और या ख़ब, या ख़ब, पुकारने लगते और अन्म पाने के बाद फिर उसी शिर्क की तरफ़ लौट जाते.
- (८) यानी इस मुसीबत से निजात की.
- (९) और इससे फ़ायदा उठाएं, मूमीन और नेक बन्दों के विपरीत कि वो अल्लाह तआला की नेअमतों के सच्चे दिल के साथ आभारी रहते हैं और जब ऐसी सूरत पेश आती है और अल्लाह तआला उससे रिहाई देता है तो उसकी फ़रमावशकारी में और ज़्यादा लीन हो जाते हैं. मगर काफ़िरीों का हाल इससे बिल्कुल मुख़लिफ़ है.
- (१०) नतीजा अपने चरित्र अपने व्यवहार का.
- (११) यानी मक्के वालों ने.
- (१२) उनके शहर मक्कए मुकर्रमा की.
- (१३) उनके लिये जो उसमें हों.
- (१४) क़त्ल किये जाते हैं, गिरफ़्तार किये जाते हैं.
- (१५) यानी बुतों पर.
- (१६) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से और इस्लाम से कुफ़्र करके.
- (१७) उसके लिये शरीक ठहराए.
- (१८) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और क़ुरआन को न माने.
- (१९) बेशक सारे काफ़िरीों का ठिकाना जहन्नम ही है.
- (२०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मारी ये हैं कि जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की हम उन्हें सवाब की राह देंगे. हज़रत जुनैद ने फ़रमाया जो तौबत में काशिश करेंगे, उन्हें सच्चाई की राह देंगे. हज़रत फ़ुज़ैल बिन अय्याज़ ने फ़रमाया

आगे और पीछे^(६) और उस दिन ईमान वाले खुश होंगे^(८) अल्लाह की मदद से^(९) मदद करता है जिसकी चाहे, और वही है इज़्जत वाला मेहरबान^(५) अल्लाह का वादा^(८) अल्लाह अपना वादा खिलाफ नहीं करता लेकिन बहुत लोग नहीं जानते^(९) जानते हैं आँखों के सामने की दुनियावी (संसारिक) ज़िन्दगी^(१०) और वो आखिरत से पूरे बेखबर हैं^(६) क्या उन्होंने अपने जी में न सोचा कि अल्लाह ने पैदा न किये आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है मगर सच्चा^(११) और एक निश्चित भीआद से,^(१२) और देशक बहुत से लोग अपने रव से मिलने का इन्कार रखते हैं^(१३) और क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते कि उनसे अंगलों का अंजाम कैसा हुआ^(१४) वो उनसे ज़्यादा ज़ोरआवर (शक्तिशाली) थे और ज़मीन जोती और आबाद की उन^(१५) की आवादी से ज़्यादा और उनके रसूल उनके पास रौशन निशानियां लाए^(१६) तो अल्लाह की शान न थी कि उनपर जुल्म करता^(१७) हाँ वो खुद ही अपनी जानों पर जुल्म करते थे^(१८) फिर

الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ
الْمُؤْمِنُونَ ۖ بَصُرَ اللَّهُ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الرَّحِيمُ ۖ وَعَدَ اللَّهُ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنْ
أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۖ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَفْلُونَ ۖ أَوَلَمْ
يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ مَّا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَدَّدٍ ۚ إِنَّ
كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِإِلْقَائِ رَبِّهِمْ لَكَفِرُونَ ۖ
أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً
وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرُ مِمَّا عَمَرُوهَا وَ
جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۖ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ

مَزْلُومٍ

जो इल्म की तलब में कोशिश करेंगे, उन्हें हम अमल की राह देंगे. हज़रत सअद बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया, जो सुन्नत कायम करने में कोशिश करेंगे, हम उन्हें जन्नत की राह दिखा देंगे.

(२१) उनकी मदद और नुसरत फ़रमाती है.

३० - सूरए रूम - पहला रूकू

(१) सूरए रूम मक्कह में उतरी. इसमें छ रूकू, साठ आयतें, आठ सौ उन्नीस कलिमे, तीन हज़ार पाँच सौ चौतीस अक्षर हैं.

(२) फ़ारस और रूम के बीच लड़ाई थी और चूँकि फ़ारस वाले आग के पुजारी मजूसी थे इसलिये अरब के मुथिक उनका ग़लबा पसन्द करते थे. रूम के लोग किताब वाले थे इस लिये मुसलमानों को उनका ग़लबा अच्छा मालूम होता था. फ़ारस के बादशाह ख़ुसरौ पर्वज़ ने रूम वालों पर लश्कर भेजा और रूम के कैसर ने भी लश्कर भेजा. ये लश्कर शाम प्रदेश के करीब आने सामने हुए. फ़ारस वाले ग़ालिब हुए. मुसलमानों को यह ख़बर अच्छी न लगी. मक्का के काफ़िर इससे खुश होकर मुसलमानों से कहने लगे कि तुम भी किताब वाले और ईसाई भी किताब वाले. और हम भी वेपढ़े लिखे और फ़ारस वाले भी वेपढ़े लिखे. हमारे भाई फ़ारस वाले तुम्हारे भाई रूमियों पर ग़ालिब हुए. हमारी तुम्हारी जंग हुई तो हम भी तुम पर विजयी होंगे. इसपर यह आयतें उतरीं और उनमें ख़बर दी गई कि चन्द साल में फिर रूम वाले फ़ारस वालों पर ग़ालिब आजायेंगे. ये आयतें सुनकर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रदियल्लाहो अन्हो ने मक्के के काफ़िरों में जाकर ऐलान कर दिया कि ख़ुदा की क़स्म रूमि फ़ारस वालों पर ज़रूर ग़लबा पायेंगे. ये मक्का वाले तुम इस वक़्त के जंग के नतीजे से खुश मत हो. हमें हमारे नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़बर दी है. उबई यिन ख़लफ़ काफ़िर आपके सामने खड़ा हो गया और आपके उसके बीच सौ सौ ऊंट की शर्त हो गई. अगर ती साल में फ़ारस वाले ग़ालिब आजायें तो सिद्दीक अक़बर रदियल्लाहो अन्हो उबई को सौ ऊंट देंगे और अगर रूमि विजयी हों तो उबई आपको सौ ऊंट देगा. उस वक़्त तक जुए की दुर्गत नहीं उतरी थी. हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहो अलैहिमा के तज़दीक हर्बी काफ़िरों के साथ इस तरह के मामलात जायज़ हैं और यही बाकिआ उनकी दलील है. सात साल के बाद इम ख़बर की सच्चाई ज़ाहिर हुई और हुदैबियह की लड़ाई में या बद्र के दिन रूम वाले फ़ारस वालों पर ग़ालिब आए. रूमियों ने मदाइन में अपने घाड़े बांध और इराक़ में रूमियह नामी एक शहर की नींव रखी. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रदियल्लाहो अन्हो ने शर्त के ऊंट उबई की औलाद से वसूल किये क्योंकि इस बीच वह मर चुका था. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें हुक्म दिया कि शर्त के माल को सदका कर दें. यह गैबी ख़बर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत की सच्चाई और क़ुरआने अज़ीम के क़लामे इलाही होने

जिन्होंने हद भर की बुराई की उनका अंजाम यह हुआ कि अल्लाह की आयतें झुटलाने लगे और उनके साथ ठहा करते (१०)

दूसरा खूक

अल्लाह पहले बनाता है फिर दोबारा बनाएगा^(१) फिर उसकी तरफ फिरोगे^(२) (११) और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी मुजरिमों की आस टूट जाएगी^(३) (१२) और उनके शरीक^(४) उनके सिफ़ारिश न होंगे और वो अपने शरीकों से इनकारी हो जाएंगे^(५) (१३) और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी उस दिन अलग हो जाएंगे^(६) (१४) तो वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वाग़ की कियारी में उनकी खातिरदारी होगी^(७) (१५) और वो जो काफ़िर हुए और हमारी आयतें और आखिरत का मिलना झुटलाया^(८) वो अज़ाब में ला धरे (डाल दिये) जाएंगे^(९) (१६) तो अल्लाह की पाकी बोलो^(१०) जब शाम करो^(११) और जब सुह्र हो^(१२) (१७) और उसी की तारीफ़ है आसमानों और ज़मीन में^(१३) और कुछ दिन रहे^(१४) और जब तुम्हें दोपहर हो^(१५) (१८) वह ज़िन्दा को निकालता है मुर्दे से^(१६) और और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से^(१७) और ज़मीन को जिलाता है उसके मरे पीछे^(१८) और यूँही तुम निकाले जाओगे^(१९) (१९)

الَّذِينَ اسَاءُوا السَّوْءَ اَنْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللّٰهِ وَ
كَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ ۝ اللّٰهُ يَذُّوْا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ
ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ
الْمُجْرِمُونَ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِّنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاوُا
وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كَافِرِينَ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ
يُؤْمِنُ الَّذِينَ ابْتَتَفَقُوا ۝ فَاَمَّا الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ۝ وَاَمَّا الَّذِينَ
كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْاٰخِرَةِ فَاُولَٰئِكَ فِي
الْعَذَابِ مُخَضَّرُونَ ۝ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِينَ تَسْجُدُ وَ
حِينَ تَقُومُونَ ۝ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ۝ يُخْرِجُ الْحَيَّ
مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۝ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِنَا

مَنْزِلَہ

की रीशन दलील है. (ख़ाज़िन व मदरिक)

- (३) यानी शाम की उस धरती में जो फ़ारस के समीपतर है.
- (४) फ़ारस वालों पर.
- (५) जिन की हद नौ बरस है.
- (६) यानी रूमियों के ग़ालवे से पहले भी और उसके बाद भी. मुराद यह है कि पहले फ़ारस वालों का विजयी होना और दोबारा रूम वालों का, यह सब अल्लाह के हुक़्म और इरादे और उसके लिखे से है.
- (७) कि उसने किताबियों को ग़ैर किताबियों पर विजय दी और उसी दिन बद्र में मुसलमानों को मूश्रिकों पर. और मुसलमानों की सच्चाई और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और क़ुरआन शरीफ़ की ख़बर की तस्दीक़ ज़ाहिर फ़रमाई.
- (८) जो उसने फ़रमाया था कि रूमी चन्द साल में फिर ग़ालिब होंगे.
- (९) यानी बेइल्म हैं.
- (१०) व्यापार, खेती बाड़ी, निर्माण वग़ैरह दुनियावी धन्ये. इसमें इशारा है कि दुनिया की भी हकीक़त नहीं जानते, उसका भी ज़ाहिर ही जानते हैं.
- (११) यानी आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है, अल्लाह तआला ने उनको बिना कारण और यूँही नहीं बनाया, उनकी पैदाइश में बेशुमार हिक़्मतें हैं.
- (१२) यानी हमेशा के लिये नहीं बनाया, बल्कि एक मुदत निर्धारित कर दी है. जब वह मुदत पूरी हो जाएगी तो ये फ़ना हो जाएंगे और वह मुदत क़यामत क़ायम होने का वक़्त है.
- (१३) यानी मरने के बाद दोबारा उठाए जाने पर ईमान नहीं लाते.
- (१४) कि रसूलों को झुटलाने के कारण हलाक किये गए, उनके उजड़े हुए शहर और उनकी बर्बादी के निशान देखने वालों के लिये इब्रत हासिल करने की चीज़ हैं.
- (१५) मक्का वाले.
- (१६) तो वो उनपर ईमान न लाए. फिर अल्लाह तआला ने उन्हें हलाक किया.
- (१७) उनके अधिकार कम करके और उन्हें बिना जुर्म के हलाक करके.
- (१८) रसूलों को झुटलाकर अपने आप को अज़ाब का मुस्तहक़ बनाकर.

तीसरा रूकू

और उसकी निशानियों से है यह कि तुम्हें पैदा किया मिट्टी से^(१) फिर जभी तुम इन्सान हो दुनिया में फैले हुए^(२०) और उसकी निशानियों से है कि तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े बनाए कि उनसे आराम पाओ और तुम्हारे आपस में महबत और रहमत रखी^(२१) वेशक उसमें निशानियाँ हैं ध्यान करने वालों के लिये^(२२) और उसकी निशानियों से है आसमानों और ज़मीन की पैदायश और तुम्हारी ज़बानों और रंगतों का अन्तर^(२३) वेशक इसमें निशानियाँ हैं जानने वालों के लिये^(२४) और उसकी निशानियों में हैं रात और दिन में तुम्हारा सोना^(२५) और उसका फ़ज़ल तलाश करना^(२६) वेशक इसमें निशानियाँ हैं सुनने वालों के लिये^(२७) और उसकी निशानियों से है कि तुम्हें विजली दिखाता है डराती^(२८) और उम्मीद दिलाती^(२९) और आसमान से पानी उतारता है तो उससे ज़मीन को ज़िन्दा करता है उसके मरे पीछे, वेशक इसमें निशानियाँ हैं अक़ल वालों के लिये^(३०) और उसकी निशानियों से है कि उसके हुक्म से आसमान ओर ज़मीन कायम हैं^(३१) फिर जब तुम्हें ज़मीन से एक निदा (पुकार) फ़रमाएगा^(३२) जभी तुम निकल पड़ोगे^(३३) और उसी के हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं, सब

الزّوْمَرُ

५५

اَنْلَ مَا اَنْتَ

اَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَا اَنْتُمْ بِبَشَرٍ تَنْتَشِرُونَ ۝
وَمِنْ اٰيٰتِهٖ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا
لِتَسْكُنُوْا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۚ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَآٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ الَّسِنَتِكُمْ وَالْوَارِكُمْ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَآٰيٰتٍ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَآ مَكْمُرُ
بِالْبَیْلِ وَالتَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ فَضْلِهٖ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَآٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ یُرِيْكُمْ
الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا یُّنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَبِیْهِ
یُخْرِجُ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَآٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ اَنْ تَقُوْمَ السَّمٰوٰتُ
وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ
الْاَرْضِ اِذَا اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ۝ وَلَهُ مَنْ فِی

مِّنْ

सूरए रूम - दूसरा रूकू

- (१) यानी मौत के बाद ज़िन्दा करके.
- (२) तो कर्मों की जज़ा देगा.
- (३) और किसी नफ़ा और भलाई की उम्मीद बाकी न रहेगी. कुछ मुफ़स्सिरों ने ये मानी बयान किये हैं कि उनका क़लाम टूट जाएगा और वो चुप रह जाएंगे क्योंकि उनके पास पेश करने के क़ाबिल कोई हुज़्जत न होगी. कुछ मुफ़स्सिरों ने ये मानी बयान किये हैं कि वो रुस्सा होंगे.
- (४) यानी बुत, जिन्हें वो पूजते थे.
- (५) मुमिन और काफ़िर फिर भी जमा न होंगे.
- (६) यानी ज़न्नत में उनका सत्कार किया जाएगा जिससे वो ख़ुश होंगे. यह ख़ातिरदारी ज़न्नती ने अमलों के साथ होगी. एक क़ौल यह भी है कि इससे मुराद समाअ है कि उन्हें ख़ुशियों भरे गीत सुनाए जाएंगे जो अल्लाह तआला की तस्बीह पर आधारित होंगे.
- (७) मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब किताब के इल्कारी हुए.
- (८) न उस अज़ाब में कटौती हो न उस से कभी निकलें.
- (९) पाकी बोलने से या तो अल्लाह तआला की तस्बीह और स्तुति मुराद है, और इसकी हदीसों में बहुत फ़ज़ीलतें आई ह. या इससे नमाज़ मुराद है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से पूछा गया कि क्या पाँचों वक़्तों की नमाज़ों का बयान कुरआन शरीफ़ में है. फ़रमाया हाँ. और ये आयतें पढ़ीं और फ़रमाया कि इन में पाँचों नमाज़ों और उनके औक़ात बयान किये गए हैं.
- (१०) इसमें मगरिब और इशा की नमाज़ें आ गई.
- (११) यह फ़ज़्र की नमाज़ हुई.
- (१२) यानी आसमान और ज़मीन वालों पर उसकी हम्द लाज़िम है.
- (१३) यानी तस्बीह करो कुछ दिन रहे. यह नमाज़ें अस हुई.
- (१४) यह ज़ोहर की नमाज़ हुई. नमाज़ के लिये ये पाँच वक़्त निर्धारित फ़रमाए गए, इसलिये कि सबसे बेहतर काम वह है जो हमेशा होता है. और इन्सान यह कुदरत नहीं रखता कि अपने सारे औक़ात सारा समय नमाज़ में ख़र्च करे क्योंकि उसके साथ ख़ाने पीने शौहर की ज़रूरतें हैं तो अल्लाह तआला ने बन्दे पर इबादत में कटौती फ़रमाई और दिन के शुरु, मध्य और अंत में और रात के शुरु और अंत में नमाज़ें मुक़रर कीं ताकि उस समय में नमाज़ में लगे रहता हमेशा की इबादत के हुक्म में हो. (मदारिक व ख़ाज़िन)

उसके हुक्म के नीचे हैं (२६) और वही है कि पहले बनाता है फिर उसे दोबारा बनाएगा (२७) और यह तुम्हारी समझ में उसपर ज्यादा आसान होना चाहिये (२८) और उसी के लिये है सबसे बरतार शान आसमानों और ज़मीन में (२९) और वही इज्जत व हिक्मत वाला है (३०)

चौथा सूक़

तुम्हारे लिये (१) एक कहावत बयान फ़रमाता है खुद तुम्हारे अपने हाल से (२) क्या तुम्हारे लिये तुम्हारे हाथ के माल गुलामों में से कुछ शरीक हैं (३) उसमें जो हमने तुम्हें रोज़ी दी (४) तो तुम सब उसमें बराबर हो (५) तुम उनसे डरो (६) जैसे आपस में एक दूसरे से डरते हो (७) हम ऐसी मुफ़्तसल निशानियां बयान फ़रमाते हैं अक़ल वालों के लिये (२८) बल्कि ज़ालिम (२९) अपनी ख्वाहिशों के पीछे हो लिये बेजाने (३०) तो उसे कौन हिदायत करे जिसे खुदा ने गुमराह किया (३१) और उनका कोई मददगार नहीं (३२) (२९) तो अपना मुंह सीधा करो अल्लाह की इताअत (फ़रमावत) के लिये एक अकेले उसी के होकर (३३) अल्लाह की डाली हुई बिना (नींव) जिस पर लोगों को पैदा किया (३४) अल्लाह की बनाई चीज़ न बदलना (३५) यही सीधा दीन है, मगर बहुत लोग नहीं जानते (३६) (३०) उसकी तरफ़ रूजू (तबज्जह) लाते हुए (३७) और उससे डरो और नमाज़ क़ायम रखो और मुश्रिकों से न हो (३८)

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَهٗ فَنُتَوْنَ ۖ وَهُوَ الَّذِي
يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ
الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ۚ ضَرْبَ لَكُمْ مَثَلًا مِّنْ أَنفُسِكُمْ ۚ هَلْ لَّكُمْ
مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاءَ فِي مَآ رَرْتُمْكُمْ
فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنفُسَكُمْ
كَذَٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۚ بَلِ اتَّبَعَ
الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَهْدِي مَنْ
أَضَلَّ اللَّهُ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نَّصِيرِينَ ۚ فَأَقِمْ وَجْهَكَ
لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ
عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۚ مُبِينِينَ إِلَيْهِ
وَأَنْتَوُا ۚ وَأَقِمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ

سورة

- (१५) जैसे कि पक्षी को अंडे से, और इन्सान को नुस्के से, और मूमीन को काफ़िर से.
- (१६) जैसे कि अंडे को पक्षी से, नुस्के को इन्सान से, काफ़िर को मूमीन से.
- (१७) यानी सूख जाने के बाद में बरसाकर सब्जा उगा कर.
- (१८) क़ब्रों से उठाए जाने और हिसाब के लिये.

सूरए रूम - तीसरा सूक़

- (१) तुम्हारे जेदे आला और तुम्हारी अरल हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को उससे पैदा करके.
- (२) कि बग़ैर किसी पहचान और बग़ैर किसी रिश्तेदारी के एक को दूसरे के साथ महबूत और हमदर्दी है.
- (३) ज़बानों की भिन्नता तो यह है कि कोई अरबी बोलता है, कोई अजमी, कोई और कुछ. और रंगतों की भिन्नता यह है कि कोई गोरा है कोई काला और कोई ग़ंघू रंग का. और यह भिन्नता बड़ी अजीब है क्योंकि सब एक अरल से हैं और सब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद हैं.
- (४) जिससे थकन दूर होती है और राहत हासिल होती है.
- (५) फ़ज़ल तलाश करने से रोज़ी को खोज़ मुराद है.
- (६) जो होश के कानों से सुने.
- (७) गिरने और नुक़सान पहुंचने से.
- (८) बारिश की.
- (९) जो सोचें और अल्लाह की क़ुदरत पर ग़ौर करें.
- (१०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा और हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि वो दोनों दिना किसी सहारे के क़ायम हैं.
- (११) यानी तुम्हें क़ब्रों से बुलाएगा. इस तरह कि हज़रत इब्नाफील अलैहिस्सलाम क़ब्र वालों के उठने के लिये सूर फूँकेंगे तो अगलों और पिछलों में से कोई ऐसा न होगा जो न उठे. चूनांये इसके बाद ही इश्राद फ़रमाता है.
- (१२) यानी क़ब्रों से ज़िन्दा होकर.

(१३) हलाक होने के बाद.

(१४) क्योंकि इंसानों का अनुभव और उनकी राय यही बताती है कि किसी चीज़ को दुबारा पैदा करना उसके पहली बार पैदा करने से आसान होता है. और अल्लाह तआला के लिये कुछ भी दुश्वार नहीं है.

(१५) कि उस जैसा कोई नहीं. वह सच्चा मअबूद है, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं.

सूरए रूम - चौथा रूकू

(१) ऐ मुश्रिकों !

(२) वह कहावत यह है.

(३) यानी क्या तुम्हारे गुलाम तुम्हारे साझी हैं.

(४) माल-मत्ता बगैरह.

(५) यानी मालिक और सेवक को उस माल-मत्ता में बराबर का अधिकार हो ऐसा कि ...

(६) अपने माल-मत्ता में, बगैर उन गुलामों की इजाज़त के खर्च करने से.

(७) मकरसद यह है कि तुम किसी तरह अपने गुलामों को अपना शरीक बनाना गबारा नहीं करते तो कितना जुल्म है कि अल्लाह तआला के गुलामों को उसका शरीक करार दो ..ऐ मुश्रिकों ! तुम अल्लाह तआला के सिवा जिन्हें अपना मअबूद ठहराते हो वो उसके बन्दे और ममलूक हैं.

(८) जिन्होंने ने शिर्क करके अपनी जानों पर बड़ा भारी जुल्म किया है.

(९) जिहालत से.

(१०) यानी कोई उसका हिदायत करने वाला नहीं.

(११) जो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा सके.

(१२) यानी सच्चे दिल से अल्लाह के दीन पर दृढ़ता के साथ कायम रहो.

(१३) फ़ितरत से मुराद दीने इस्लाम है. मानी ये हैं कि अल्लाह तआला ने सृष्टि को ईमान पर पैदा किया जैसा कि बुख़ारी और मरिलम की हदीस में है कि हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा किया जाता है यानी उस एहद पर जो "लस्तां बिरब्बिकुम" यानी क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ फ़रमाकर लिया गया है. बुख़ारी-शरीफ़ की हदीस में है फिर उसके माँ बाप उसे यहूदी, ईसाई या मजूसी बना लेते हैं. इस आयत में हुक्म दिया गया कि अल्लाह के दीन पर कायम रहो जिसपर अल्लाह तआला ने सृष्टि को पैदा किया है.

(१४) यानी अल्लाह के दीन पर कायम रहना.

(१५) उसकी हकीकत को, तो इस दीन पर कायम रहो.

(१६) यानी अल्लाह तआला की तरफ़ तौबत और फ़रमाँबंदारी के साथ.

(१७) मअबूद के बारे में मतभेद करके.

उनमें से जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया^(१७) और हों गए गिरोह गिरोह, हर गिरोह जो उसके पास है उसी पर खुश है^(१८) (३२) और जब लोगों को तंकलीफ़ पहुंचती है^(१९) तो अपने रब को पुकारते हैं उसकी तरफ़ रुजू लाते हुए फिर जब वह उन्हें अपने पास से रेहमत का मज़ा देता है^(२०) जभी उनमें से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है^(२१) कि हमारे दिये की नाशुकी करें तो वरत लो^(२२) अब करीब जानना चाहते हो^(२३) (३४) या हमने उनपर कोई सनद उतारी^(२४) कि वह उन्हें हमारे शरीक बता रही है^(२५) (३५) और जब हम लोगों को रहमत का मज़ा देते हैं^(२६) उसपर खुश हो जाते हैं^(२७) और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचे^(२८) बदला उसका जो उनके हाथों ने भेजा^(२९) जभी वो नाऊम्मीद हो जाते हैं^(३०) (३६) और क्या उन्होंने न देखा कि अल्लाह रिज़क वसीअ फ़रमाता है जिसके लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिस के लिये चाहे, बेशक इसमें निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिये^(३१) (३७) तो रिश्तेदार को उसका हक़ दो^(३२) और मस्कीन (दरिद्र) और मुसाफ़िर को^(३३) यह बेहतर है उनके लिये जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं^(३४) और उन्हीं का काम बना^(३५) (३८) और तुम जो चीज़ ज़्यादा लेने को दो कि देने वाले के माल बढ़ें

مِنَ الَّذِينَ فَتَرُوا دِيْنَهُمْ وَكَانُوا شُرَكَاءَ كُلِّ حِزْبٍ
بِمَا لَدَيْهِمْ قَرْحُونَ ۝ وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا
رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا آذَاهُمْ مِنْهُ رَحِمَهُ
إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۝ لِيَكْفُرُوا بِمَا
أَكْبَاهُمْ فَتَمَتَّعُوا بِهِ فُسُوفَ تَعْلَمُونَ ۝ أَمْ أَنْزَلْنَاهُ
عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ۝
وَإِذَا آذَيْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا وَإِنْ تُصِيبُهُمْ
سَيِّئَةٌ مِمَّا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ۝
أَوْ لَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ فَإِنَّ
ذَا الْقُرْآنَ حَقُّهُ وَالْمُسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۝ ذَلِكَ
خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَا آتَيْتُم مِّن رَّبِّا لِّيَرْبُوا فِي أَمْوَالٍ

मन्ज़र

- (१८) और अपने बातिल को सच्चाई गुमान करता है।
(१९) बीमारी की या दुष्काल की या इसके सिवा और कोई।
(२०) उस तकलीफ़ से छुटकारा दिलाता है और राहत अता फ़रमाता है।
(२१) दुनयावी नेअमतों को थोड़े दिन।
(२२) कि आख़िरत में तुम्हारा क्या हाल होता है और इस दुनिया के चाहने का नतीजा क्या निकलने वाला है।
(२३) कोई हुज्जत या कोई किताब।
(२४) और शिर्क करने का हुक्म देती है। ऐसा नहीं है। न कोई हुज्जत है न कोई सनद (प्रमाण)।
(२५) यानी तन्दुरुस्ती और रिज़क की ज़िपादती का।
(२६) और इतराते हैं।
(२७) दुष्काल या डर या और कोई बला।
(२८) यानी गुमराहियों और उनके गुनाहों का।
(२९) अल्लाह तआला की रहमत से और यह बात मूमिन की शान के ख़िलाफ़ है क्योंकि मूमिन का हाल यह है कि जब उसे नेअमत मिलती है तो शुक्र-गुज़ारी करता है और जब सज़ा होती है तो अल्लाह तआला की रहमत का उम्मीदवार रहता है।
(३०) उसके साथ सुलूक और एहसान करो।
(३१) उनके हक़ दो, सदका देकर और मेहमान नवाज़ी करके। इस आयत से महारिम के नफ़के का वुजूब साबित होता है। (मदारीक)
(३२) और अल्लाह तआला से सवाब के तालिब हैं।

तो वह अल्लाह के यहाँ न वक़ेगी^(३३) और जो तुम ख़ैरात दो अल्लाह की रज़ा चाहते हुए^(३४) तो उन्हीं के दूने हैं^(३५) (३९) अल्लाह है जिसने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा^(३६) क्या तुम्हारे शरीकों में^(३७) भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ करे^(३८) पाकी और बरतरी है उसे उनके शिर्क से^(४०)

पाँचवां सूक़

चमकी ख़राबी खुशकी और तरी में^(१) उन बुराइयों से जो लोगों के हाथों ने कमाई ताकि उन्हें कुछ कौतुकों (बुरे कामों) का मज़ा चखाए कहीं वो वाज़ आएँ^(२) (४१) तुम फ़रमाओ ज़मीन में चल कर देखो कैसा अंजाम हुआ अंगलों का, उनमें बहुत मुश्किल थे^(३) (४२) तो अपना मुँह सीधा कर इबादत के लिये^(४) पहले इसके कि वह दिन आए जिसे अल्लाह की तरफ़ से टलना नहीं^(५) उस दिन अलग फट जाएंगे^(६) (४३) जो कुफ़र करे उसके कुफ़र का वबाल उसी पर और जो अच्छा काम करें वो अपने ही लिये तैयारी कर रहे हैं^(७) (४४) ताकि सिला दे^(८) उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अपने फ़ज़ल से, बेशक वह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता^(९) (४५) और उसकी निशानियों से है कि

النَّاسِ فَلَا يَرْبُوا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ زَكَاةٍ تَرْيَدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَن يَفْعَلُ مِنْ ذَٰلِكُمْ مَن شَيْءٌ ۚ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ۚ فَقُمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يُصَدِّعُونَ ۝ مَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۚ وَمَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلَا نَفْسَ لَهُ يَمْهَدُونَ ۚ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ

मज़ल

(३३) लोगों का तरीका था कि वो दोस्त अहबाब और पहचान वालों को या और किसी शख्स को इस नियत से हदिया देते थे कि वह उन्हें उससे ज़्यादा देगा. यह जायज़ तो है लेकिन इसपर सदाब न मिलेगा और इसमें बरकत न होगी क्योंकि यह अमल केवल अल्लाह तआला की खुशी के लिये नहीं हुआ.

(३४) न उससे बदला लेना उद्देश्य हां न जाहिरी दिख़ावा.

(३५) उनका अन्न और सवाब ज़्यादा होगा. एक नेकी का दस गुना ज़्यादा दिया जाएगा.

(३६) पैदा करना, रोज़ी देना, मारना, जिलाना ये सब काम अल्लाह ही के हैं.

(३७) यानी बुतों में जिन्हें तुम अल्लाह तआला का शरीक ठहराते हो उन में ...

(३८) उसके जवाब से . मुश्किल आजिज़ हुए और उन्हें दम मारने की मज़ाल न हुई, तो फ़रमाता है.

सूरए रूम - पाँचवां सूक़

(१) शिर्क और गुमराही के कारण दुष्क़ल, और कम वर्षा और पैदावार में कमी और ख़ेतियों की ख़राबी और ब्यापार में घाटा और आग लगने की घटनाओं में वृद्धि, और आदमियों और जानवरों में मौत और दूबना और हर चीज़ में से बरकत का उट जाना.

(२) कुफ़र और गुनाहों से, और तौबह करें.

(३) अपने शिर्क के कारण हलाक़ किये गए. उनकी मंज़िलें और मक़ान वीरान पड़े हैं उन्हें देखकर सबक़ पकड़ो.

(४) यानी दीने इस्लाम पर मज़बूती के साथ क़ायम रहो.

(५) यानी क़यामत के दिन.

(६) यानी हिसाब के बाद अलग अलग हो जाएंगे. जन्नती जन्नत की तरफ़ जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ की तरफ़.

(७) कि जन्नत के दर्जों में राहत और आराम पाएँ.

(८) और सवाब अता फ़रमाए अल्लाह तआला.

हवाएं भेजता है खुशखबरी सुनाती^(१) और इसलिये कि तुम्हें अपनी रहमत का ज्ञायका दे और इसलिये कि किशती^(२) उसके हुक्म से चले और इस लिये कि उसका फ़ज़ल तलाश करो^(३) और इसलिये कि तुम हक़ मानो^(४) (४६) और बेशक हमने पहले कितने रसूल उनकी कौम की तरफ़ भेजे तो वो उनके पास खुली निशानियाँ लाए^(५) फिर हमने मुजरिमों से बदला लिया^(६) और हमारे करम के ज़िम्मे पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना^(७) (४७) अल्लाह है कि भेजता है हवाएं कि उभारती हैं बादल फिर उसे फैला देता है आसमान में जैसा चाहे^(८) और उसे पारा पारा करता है^(९) तो तू देखे कि उसके बीच में से मेंह निकल रहा है फिर जब उसे पहुंचाता है^(१०) अपने बन्दों में जिसकी तरफ़ चाहे जभी वो खुशियाँ मनाते हैं^(११) अगरचे उसके उतारने से पहले आस तोड़े हुए थे^(१२) तो अल्लाह की रहमत के असर देखो^(१३) किस तरह ज़मीन को जिलाता है उसके मरे पीछे^(१४) बेशक वह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा, और वह सब कुछ कर सकता है^(१५)

إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيَّاحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيَذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَعْلَمُوا أَنَّكُمْ بِأَمْرِهِ وَأَنْتَبَهُوا مِنْ فَضْلِهِ ۝ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَأَنْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۝ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَّاحَ فَتَنفِثُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كُسْفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۝ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِي إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلِهِ لُمُسِيئِينَ ۝ فَاَنْظُرْ إِلَى آلِثَرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۝ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ أَعْيُنِ النَّوْثِ ۝ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

मन्ज़र

- (१) बारिश और पैदावार की बुढ़तात का.
 (२) दरिया में उन हवाओं से.
 (३) यानी समुद्री त्जारातों से रोज़ी हासिल करो.
 (४) इन नेअमतों का और अल्लाह की तौहीद कुबूल करो.
 (५) जो उन रसूलों की रिसालत के सच्चे होने पर खुले प्रमाण थे. तो उस कौम में से कुछ ईमान लाए, कुछ ने कुफ़ किया.
 (६) कि दुनिया में उन्हें अज़ाब करके हलाक कर दिया.
 (७) यानी उन्हें निजात देना और काफ़िरों को हलाक करना. इसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को आख़िरत की कामयाबी और दुश्मनों पर जीत की खुशख़बरी दी गई है. तिरमिज़ी की हदीस में है जो मुसलमान अपने भाई की आबरू बचाएगा अल्लाह तआला उसे रोज़े क़यामत जहन्नम की आग से बचाएगा. यह फ़रमाकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह आयत पढ़ी "काना हक्कन अलैना नरकल भूमिनीन" और हमारे करम के ज़िम्मे पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना.
 (८) थोड़ा या बहुत.
 (९) यानी कभी तो अल्लाह तआला घटा टोप बादल भेज देता है जिससे आसमान घिरा हुआ मालूम होता है और कभी अलग अलग टुकड़े.
 (१०) यानी मेंह को.
 (११) यानी बारिश के असर जो उसपर होते हैं कि बारिश ज़मीन की प्यास बुझाती है, उससे सज़ा हरियाली निकलती है, हरियाली से फल पैदा होते हैं, फलों में ग़िज़ाइयत होती है और उससे जानदारों के शरीर को मदद पहुंचती है. और यह देखो कि अल्लाह तआला ये हरियाली और फल पैदा करके ...
 (१२) और सूखे मैदान को हरा भरा कर देता है, जिसकी यह कुदरत है ...

और अगर हम कोई हवा भेजें^(२१) जिससे वो खेती को ज़र्द देखें^(२२) तो ज़रूर इसके बाद नाशुकी करने लगें^(२३) ॥५१॥ इसलिये कि तुम मुर्दों को नहीं सुनाते^(२४) और न बहरों को पुकारना सुनाओ जब वो पीठ देकर फिरें^(२५) ॥५२॥ और न तुम अंधों को^(२६) उनकी गुमराही से राह पर लाओ, तो तुम उसी को सुनाते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाए तो वो गर्दन रखे हुए हैं ॥५३॥

छटा रूकू

अल्लाह है जिसने तुम्हें शुरू में कमज़ोर बनाया^(१) फिर तुम्हें नातवानी से ताकत वख़शी^(२) फिर कुब्त के बाद^(३) कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया, बनाता है जो चाहे^(४) और वही इल्म व कुदरत वाला है ॥५४॥ और जिस दिन क़यामत कायम होगी मुजरिम क़सम खाएंगे कि न रहे थे मगर एक घड़ी^(५) वो ऐसे ही अंधे जाते थे^(६) ॥५५॥ और बोले वो जिन को इल्म और ईमान मिला^(७) वेशक तुम रहे अल्लाह के लिखे हुए में^(८) उठने के दिन तक, तो यह है वह दिन उठने का^(९) लेकिन तुम न जानते थे^(१०) ॥५६॥ तो उस दिन ज़ालिमों को नफ़ा न देगी उनकी मअज़िरत और न उनसे कोई राज़ी करना मांगें^(११) ॥५७॥

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رِجَالًا فَأَوَّلُ الْمُصَفِّرَاتِ أَظْلَمُوا مِنْ بَعْدِهِ
يَكْفُرُونَ ۝ فَإِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ
الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝ وَمَا أَنْتَ بِهَادٍ الْعُمَى
عَنْ صَلَاتِهِمْ ۝ إِنَّ تَسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا
فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ
ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ
بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَهُوَ
الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ
الْمُجْرِمُونَ مَا لَيْنَا غَيْرَ سَاعَةٍ كَذَلِكَ كَانُوا
يُؤْفَكُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ
لَبِئْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَذَا يَوْمُ
الْبَعْثِ وَلَكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ فَيَوْمَئِذٍ
لَا يُفَعِّلُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعَذَرَتَهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝

مَذَل

(२१) ऐसी जो खेती और हरियाली के लिये हानिकारक हो.

(२२) बाद इसके कि वह हरी भरी तरंगें ताज़ा थी.

(२३) यानी खेती ज़र्द होने के बाद नाशुकी करने लगें और पहली नेअमत से भी मुकर जाएं. मानी ये हैं कि इन लोगों की हालत यह है कि जब उन्हें रहमत पहुंचती है, रिज़क मिलता है, खुश हो जाते हैं और जब कोई सख़्ती आती है, खेती खराब होती है तो पहली नेअमतों से भी मुकर जाते हैं. चाहिये तो यह था कि अल्लाह तआला पर भरोसा करते और जब नेअमत पहुंचती, शुक्र बजा लाते और जब बला आती सब्र करते और दुआ व इस्तिग़फ़ार में लग जाते. इसके बाद अल्लाह तआला अपने हदीबे करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लेम की तसल्ली फ़रमाता है कि आप इन लोगों की मेहरूमी और इनके ईमान न लाने पर रंज न करें.

(२४) यानी जिनके दिल मर चुके और उनसे किसी तरह सच्चाई कुबूल करने की आशा नहीं रही.

(२५) यानी हक़ के सुनने से बहरे हों और बेहरे भी ऐसे कि पीठ देकर फिर गए. उनसे किसी तरह समझने की उम्मीद नहीं.

(२६) यहाँ अर्थों से भी दिल के अंधे मुदाद हैं. इस आयत से कुछ लोगों ने मुर्दों के न सुनने को साबित किया है मगर यह तर्क सही नहीं है क्योंकि यहाँ मुर्दों से मुदाद काफ़िर हैं जो दुनियावी ज़िन्दगी तो रखते हैं मगर नसीहत से फ़ायदा नहीं उठाते इसलिये उन्हें मुर्दों से मिसाल दी गई है जो कर्मभूमि से गुज़र गए और वो नसीहत से लाभ नहीं उठा सकते. इसलिये आयत से मुर्दों के न सुनने पर सबद लाया दुख्त नहीं है और बहुत सी हदीसों में मुर्दों का सुना और अपनी कब्रों पर ज़िपारत के लिये आने वालों को पहचानना साबित है.

सुरा रूम - छटा रूकू

(१) इसमें इन्सान के हालात की तरफ़ इशारा है कि पहले वह माँ के पेट में गोشت का टुकड़ा था फिर बच्चा होकर पैदा हुआ, दूध पीकर बड़ा हुआ. ये हालात बहुत कमज़ोरी के हैं.

(२) यानी बचपन की कमज़ोरी के बाद जवानी की कुब्त अता फ़रमाई.

(३) यानी जवानी की कुब्त के बाद.

(४) कमज़ोरी और कुब्त और जवानी और बुढ़ापा, ये सब अल्लाह के पैदा किये से हैं.

(५) यानी आख़िरत को देखकर उसको दुनिया या क़ब्र में रहने की मुदत बहुत थोड़ी मालूम होती होगी इसलिये वो उस मुदत को एक पल से तअदीर करेंगे.

(६) यानी ऐसे ही दुनिया में ग़लत और बातिल बातों पर ज़मते और सच्चाई से फिरते थे और दोबारा उठाए जाने का इन्कार करते

और बेशक हमने लोगों के लिये इस कुरआन में हर किस्म की मिसाल बयान फरमाई^(१२) और अगर तुम उनके पास कोई निशानी लाओ तो ज़रूर काफ़िर कहेंगे तुम तो नहीं मगर असत्य पर^(१३) यूही मोहर कर देता है अल्लाह जाहिलों के दिलों पर^(१४) तो सब करो^(१५) बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है^(१६) और तुम्हें सुबुक (नीचा दिखाना) न कर दें वो जो यकीन नहीं रखते^(१७) (६०)

३९- सूरए लुकमान

सूरए लुकमान मक्का में उतरी, इसमें ३४ आयतें, ४ रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) अलिफ़ लाम मीम^(२) यह हिकमत वाली किताब की आयतें हैं^(३) हिदायत और रहमत हैं नेकों के लिये^(४) वो जो नमाज़ कायम रखें और ज़कात दें और आखिरत पर यकीन लाएं^(५) वही अपने रब की हिदायत पर हैं और उन्हीं का काम बना^(६) और कुछ लोग खेल की बातें खरीदते हैं^(७) कि अल्लाह की राह से बहका दें वे समझे^(८)

لُقْمٰن

६५१

اٰتِلَ مَا اُوْحِيَ

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
وَلٰكِنْ جَاءَتْهُمْ بِآيٰتِنَا يُنْفَوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِنْ
اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ يَظْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى
قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ فَاَصْبِرْ اِنْ وَعَدَ
اللّٰهُ حَقًّا وَّلَا يَسْتَعْجِلُكَ الَّذِيْنَ لَا يُوقِنُوْنَ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اِلٰهَ الْكَذِبِ الْحَكِيْمِ ۝ هٰدٰى وَ
رَحْمَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُوْنَ ۝
اُوْلٰئِكَ عَلٰى هٰدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُوْلٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُشْتَرِى لَهْوًا
اَلْحَدِيْثَ لِيُبْذَلَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۝

مَثَلٌ

थे जैसे कि अब कब्र या दुनिया में ठहरने की मुदत का क्रसम आकर एक घड़ी बता रहे हैं। उनकी इस क्रसम से अल्लाह तआला उन्हें सारे मेहशर वालों के सामने रूखा करेगा और सब देखेंगे कि ऐसी आम भीड़ में कसम आकर ऐसा खुला झूट बोल रहे हैं।

(७) यानी नबी और फ़रिश्ते और इंसान वाले उनका रद करेंगे और फ़रमाएंगे कि तुम झूट कहते हो।

(८) यानी जो अल्लाह तआला ने अपने इल्म में लौहे मेहफ़ज़ में लिखा उसीके अनुसार तुम करो में रहे।

(९) जिसके तुम दुनिया में इन्कारी थे।

(१०) दुनिया में, कि वह हक़ है, ज़रूर बाक़े होगा। अब तुमने जाना कि वह दिन आगया और उसका आना हक़ था तो इस वक़्त का जानना तुम्हें नफ़ा न देगा जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है।

(११) यानी उससे यह कहा जाए कि तौबह करके अपने रब का राज़ी करो जैसा कि दुनिया में उनसे तौबह तलब की जाती थी।

(१२) ताकि उन्हें तम्बीह हो और डराना अपनी चरम-सीमा को पहुंचे। लेकिन उन्होंने अपने दिल की कालिख और सज़न दिली के कारण कुछ भी फ़ायदा न उठाया बल्कि जब काई कुरआनी आयत आई, उसको झुटलाया और उसका इन्कार किया।

(१३) जिन्हें जानता है कि वो मुमराही इस्तिथार करेंगे और हक़ वालों को बातिल पर बताएंगे।

(१४) उनकी बातनाओं और दुश्मनी पर।

(१५) आपकी मदद फ़रमाने का और देने इस्लाम का सारे दीनों पर ग़ालिब करने का।

(१६) यानी ये लोग जिन्हें आखिरत का यकीन नहीं है और उठाए जाते और हिसाब के इन्कारी हैं और उनकी नालायक हरकतें आपके लिये गुस्से और दुख़ का कारण न हों और ऐसा न हो कि आप उनके हक़ में अज़ाब की दुआ करने में जल्दी फ़रमाएं।

३९ - सूरए लुकमान - पहला रूकू

(१) सूरए लुकमान मक्का में उतरी, सिवाए दो आयतों के जो "बतौ अन्ना मा फ़िल अदे" से शुरू होती हैं। इस सूरा में चार रूकू, चौतीस आयतें, पाँच सौ अइतालीस कलिमें और दो हज़ार एक सौ दस अक्षर हैं।

(२) लहव यानी खेल हर उस बातिल को कहते हैं जो आदमी को नेकी से और काम की बातों से ग़फलत में डाले, कहानियाँ अफ़साने इन्ही में दाख़िल हैं। यह आयत नज़र बिन हारिस बिन कन्दह के हक़ में उतरी जो व्यापार के सिलसिले में दूसरे मुल्कों में सफ़र किया करता था, उसने अजमियों की किताबें ख़रीदीं जिनमें किसी कहानियाँ थीं। वह कुश का सुनाता और कहता कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) तुम्हें आद और समूद के किसी सुनाते हैं और मैं रस्तम और इस्फ़न्दयार और फ़ारस के बादशाहों की कहानियाँ सुनाता हूँ। कुछ लोग उन कहानियों में लौट

और उसे हंसी बनालें, उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब है (६) और जब उसपर हमारी आयतें पढ़ी जाएं तो घमण्ड करता हुआ फिरे (७) जैसे उन्हें सुना ही नहीं जैसे उसके कानों में टैंट (रुई का फाया) है (८) तो उसे दर्दनाक अज़ाब का मुज़दा (खुशखबरी) दो (९) वेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिये चैन के बाग हैं (१०) हमेशा उनमें रहेंगे, अल्लाह का वादा है सच्चा, और वही इज़्जत व हिक्मत वाला है (११) उसने आसमान बनाए वे ऐसे सुतूनों के जो तुम्हें नज़र आएँ (१२) और ज़मीन में डाले लंगर (१३) कि तुम्हें लेकर न कांपें और उसमें हर किस्म के जानवर फैलाए और हमने आसमान से पानी उतारा (१४) तो ज़मीन में हर नफ़ीस जोड़ा उगाया (१५) (१०) यह तो अल्लाह का बनाया हुआ है (१६) मुझे वह दिखाओ (१७) जो इसके सिवा औरों ने बनाया (१८) बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही में हैं (१९)

दूसरा खूक

और वेशक हमने लुकमान को हिक्मत (बोध) अता फ़रमाई (१) कि अल्लाह का शुक्र कर (२) और जो शुक्र करे वह अपने भले को शुक्र करता है (३) और जो नाशुक्र करे तो वेशक अल्लाह बेपर्वाह है सब खूबियों सराहा (१२) और याद करो जब लुकमान ने अपने बेटे से कहा और वह नसीहत करता

وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝
وَإِذَا تَنَثَّلْنَا عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَيَّرْنَاهُ بِعَذَابٍ
أَلِيمٍ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ
جَنَّاتُ النَّعِيمِ ۝ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ
تَرَوْنَهَا ۚ وَالْفِی الْأَرْضِ رَوَاسٍ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ
وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۚ وَآَنَزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً فَأَنبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ هَذَا خَلْقُ
اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ بَلِ
الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ
الْحِكْمَةَ ۖ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ ۚ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّا نَبْزِغُ
لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ وَإِذَا

مترجم

हो गए और कुआने पाक सुनने से रह गए, इसपर यह आयत उतरी,

(३) याती ज़िहालत के तौर पर लोगों को कुआने पाक सुनने और इस्लाम में दाखिल होने से रोकें और अल्लाह की आयतों के साथ टट्टा करें,

(४) और उनकी तरफ़ तबज़्ज़ाह न करे,

(५) और वह बेहरा है,

(६) याती कोई सुतून नहीं है, तुम्हारी नज़र ख़ुद इसकी गवाह है,

(७) ऊंचे पहाड़ों के,

(८) अपने फ़ज़ल से बारिश की,

(९) उमदा किस्मों की वनस्पति, पेड़ पीधे पैदा किये,

(१०) जो तुम देख रहे हो,

(११) ये मुश्कि को !

(१२) याती बुतों ने, जिन्हें तुम इबादत के लायक करार देते हो,

सूरए लुकमान - दूसरा खूक

(१) मुहम्मद बिन इस्हाक ने कहा कि लुकमान का नसब यह है लुकमान बिन बाज़र बिन नाहूर बिन तारिख़, वहब का क़ौल है कि हज़रत लुकमान हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के भांजे थे, मक़ातिल ने कहा कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की ख़ाला के बेटे थे, वाकिदी ने कहा बनी इस्राईल में क़ाज़ी थे, और यह भी कहा गया है कि आप हज़ार साल ज़िन्दा रहे और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना पाया और उनसे इल्म हासिल किया और उनके ज़माने में फ़तवा देना छोड़ दिया, अगरचे पहले से फ़तवा देते थे, आपकी नबुव्वत में इज़्जिलाफ़ है, अक्सर उलमा इसी तरफ़ हैं कि आप हकीम थे, नबी न थे, हिक्मत अक़्त और समझ को कहते हैं और कहा गया है कि हिक्मत वह इल्म है जिसके मुताबिक़ अमल किया जाए, कुट ने कहा कि हिक्मत मअरिफ़त और कामों के सम्बन्ध में भरपूर समझदारी को कहते हैं और यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला इसको जिसके दिल में रखता है, उसके दिल को रौशन कर देती है,

(२) इस नअमत पर कि अल्लाह तआला ने हिक्मत अता की,

था^(५) ऐं मेरे बेटे, अल्लाह का किसी को शरीक न करना, वेशक शिर्क बड़ा जुल्म है^(५) (१३) और हमने आदमी को उसके माँ बाप के बारे में ताकीद फ़रमाई^(६) उसकी माँ ने उसे पेट में रखा कमज़ोरी पर कमज़ोरी झेलती हुई^(७) और उसका दूध छूटना दो बरस में है यह कि हक़ मान मेरा और अपने माँ बाप का^(८) आखिर मुझी तक आना है^(१४) और अगर वो दोनों तुझ से कोशिश करें कि मेरा शरीक ठहराए ऐसी चीज़ को जिसका तुझे इल्म नहीं^(९) तो उनका कहना न मान^(१०) और दुनिया में अच्छी तरह उनका साथ दे^(११) और उसकी राह चल जो मेरी तरफ़ रूजू (तबज्जुह) लाया^(१२) फिर मेरी ही तरफ़ तुम्हें फिर आना है तो मैं बता दूंगा जो तुम करते थे^(१३) (१५) ऐं मेरे बेटे बुराई अगर राई के दाने बराबर हो फिर वह पत्थर की चट्टान में या आसमानों में या ज़मीन में कहीं हो^(१४) अल्लाह उसे ले आएगा^(१५) वेशक अल्लाह हर बारीकी (सूक्ष्मता) का जानने वाला ख़बरदार है^(१६) (१६) ऐं मेरे बेटे नमाज़ क़ायम रख और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मना कर और जो उफ़ताद तुझ पर पड़े^(१७) उस पर सत्र कर, वेशक ये हिम्मत के काम हैं^(१८) (१७)

قَالَ لَقْنَسُ لَا يَنْبَغُ لَهُ وَهُوَ يَعْظُمُ يَبْنَى لَا تَشْرُكْ
يَا اَللّٰهُ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۝ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ
بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ اُمُّهُ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَرَفَضْلَهُ
فِيْ عَامِيْنِ اَنْ اَشْكُرْ لِيْ وَوَالِدَيْكَ اِلٰى الْمَصِيْرِ ۝
وَاِنْ جَاهَدَاكَ عَلٰى اَنْ تَشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ
بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبٰمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا
وَاَتَيْتُمْ سِبْيِلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيْ ۚ ثُمَّ اِلٰى مَرْجِعِكُمْ
فَاَنْتَبِهُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰبَنِيْ اِيْهَا اِنْ تَكُ
مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ
فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يٰۤاَيُّهَا اَللّٰهُ اِنِّ
اَللّٰهُ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝ يٰبَنِيْ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ
بِالْمَعْرُوْفِ وَاَنْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاَصْبِرْ عَلٰى مَا
اَصَابَكَ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ وَلَا تَصْغُرْ

مَنْ

- (३) क्योंकि शुक्र से नेअमत ज्यादा होती है और सवाब मिलता है .
- (४) हज़रत लुक़्मान अला नबिथिना व अलैहिस्सलाम के उन सुपुत्र का नाम अनअम या अश्क़म था . इन्सान का आला मरतबा यह है कि वह म्रुद कामिल हो और दूसरे की तकमील करे . तो हज़रत लुक़्मान अला नबिथिना व अलैहिस्सलाम का कामिल होना था “आतेनल लुक़्मानल हिकमत” में बयान फ़रमा दिया और दूसरे की तकमील करना “व हुवा यजिजुहू” (और वह नसीहत करना था) से ज़ाहिर फ़रमाया . और नसीहत बेटे को की, इससे मालूम हुआ कि नसीहत में घर वालों और क़रीबतर लोगों को पहलने रग़ना चाहिये और नसीहत की शुरुआत शिर्क से मना करके की गई इससे मालूम हुआ कि यह अत्यन्त अहम है .
- (५) क्योंकि इसमें इबादत के लायक जो न हों उसका इबादत के योग्य जो है उसके बराबर करार देना है और इबादत को उसके अर्थ के ख़िलाफ़ रग़ना, ये दोनों बातें बड़ा भारी जुल्म हैं .
- (६) कि उनका फ़रमाँबरदार रहे और उनके साथ नेक सुलूक करे (जैसा कि इसी आयत में आगे इशारा है)
- (७) यानी उसकी कमज़ोरी दम व दम तस्क़ी पर होती है, जितना गर्भ बढ़ता जाता है, बोझ ज्यादा होता है और कमज़ोरी बढ़ती है . औरत का गर्भवती होने के बाद कमज़ोरी और दर्द और मशक्कतें पहुंचती रहती हैं . गर्भ म्रुद कमज़ोर करने वाला है . ज़यगी का दर्द कमज़ोरी पर कमज़ोरी है . और वच्चा होना इसपर और अधिक सख़्ती है . दूध पिलांना इन सब पर और ज्यादा है .
- (८) यह वह ताकीद है जिसका ज़िक्र ऊपर फ़रमाया था . सुफ़ियान बिन ऐनिय्या ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि जिसने पाँचों वक़्त की नमाज़ें अदा कीं वह अल्लाह तआला का शुक्र बजा लाया और जिसने पाँचों वक़्त की नमाज़ों के बाद माँ बाप के लिये दुआएं कीं उसने माँ बाप की शुक्रगुज़ारी की .
- (९) यानी इल्म से तो किसी को मेरा शरीक ठहरा ही नहीं सकते क्योंकि मेरा शरीक असंभव है, हो ही नहीं सकता, अब जो कोई भी कहेगा तो बेइल्मी ही से किसी चीज़ के शरीक ठहराने को कहेगा . ऐसा अगर माँ बाप भी करें .
- (१०) मज़हज़ ने कहा कि माँ बाप की फ़रमाँबरदारी बाजिब है लेकिन अगर वो शिर्क का हुक्म करे तो उनकी फ़रमाँबरदारी न कर . क्योंकि ख़ालिफ़ की नाफ़रमानी करने में किसी मज़हलूक़ की फ़रमाँबरदारी रवा नहीं .
- (११) हुस्ने अख़लाफ़ और हुस्ने सुलूक और ऐहसान और तहम्मूल के साथ .
- (१२) यानी ख़ीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा की राह, इसी को सुन्नत व जमाअत का मज़हब कहते हैं .
- (१३) तुम्हारे कर्मों की जज़ा देकर . ‘व बस्सैनल इन्साना’ (यानी और हमने आदमी को उसके माँ बाप में ताकीद फ़रमाई) से यहां तक जो मज़मून है यह हज़रत लुक़्मान अला नबिथिना व अलैहिस्सलाम का नहीं है बल्कि उन्होंने अपने सुपुत्र को अल्लाह तआला की नेअमत का शुक्र करने का हुक्म दिया था . और शिर्क से मना किया था . तो अल्लाह तआला ने माँ बाप की फ़रमाँबरदारी और

और किसी से बात करने में^(१९) अपना खूबसारा कज (टेढ़ा) न कर^(२०) और ज़मीन में इतराता न चल, बेशक अल्लाह को नहीं भाता कोई इतराता फ़ख़ करता^(२१) और बीच की चाल चल^(२२) और अपनी आवाज़ कुछ पस्त (नीची) कर^(२३) बेशक सब आवाज़ों में बुरी आवाज़ गंधे की^(२४) ^(१९)

तीसरा रूकू

क्या तुमने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये काम में लगाए जो कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं^(१) और तुम्हें भरपूर दी अपनी नेअमतें ज़ाहिर और छुपी^(२) और कुछ आदमी अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं यूं कि न इल्म न अक्ल और न कोई रौशन किताब^(३) ^(२०) और जब उनसे कहा जाए उसकी पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारा तो कहते हैं वल्कि हम तो उसकी पैरवी करेंगे जिसपर हमने अपने बाप दादा को पाया^(४) क्या अगरचे शैतान उनको दौज़ाख के अज़ाब की तरफ़ बुलाता हो^(५) ^(२१) तो जो अपना मुंह अल्लाह की तरफ़ झुकावे^(६) और हो नेकी करने वाला तो बेशक उसने मज़बूत गांठ थामी और अल्लाह ही की तरफ़ है सब कामों की इत्तिहा^(७) ^(२२) और जो कुफ़र करे तो तुम^(८) उसके कुफ़र से ग़म न खाओ उन्हें हमारी ही तरफ़

خَدَاكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَنْتِشْ فِي الْأَرْضِ مَرْحًا
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۖ وَاقْصُدْ
فِي مَشْيِكَ وَاعْصُصْ مِنْ صَوْتِكَ ۚ إِنَّ أَنْكَرَ
الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَبِيرِ ۚ أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ
سَخَّرَ لَكُمْ مِمَّا فِي السَّمَوَاتِ وَمِمَّا فِي الْأَرْضِ
وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۚ وَمِنَ
النَّاسِ مَنْ يَجَادُلُ فِي اللَّهِ يَغْيِرُ عَلَيْهِمْ وَلَا هُدًى
لَهُمْ ۖ وَلَا كِتَابٌ مُبِينٌ ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْمِعُوا مِمَّا
أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ
أَبَاءَنَا ۚ أُولَٰئِكَ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ
السَّعِيرِ ۖ وَمَنْ يُسَلِّمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَقَدْ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۚ وَإِلَى
اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۖ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ

مَنْزِلٌ

उसका महत्व इरशाद फ़रमाया. इसके बाद फिर लुक़्मान अलैहिस्सलाम का क़ौल बयान किया जाता है कि उन्होंने अपने बेटे से फ़रमाया.

(१४) कैसी ही पोशीदा जगह हो, अल्लाह तआला से नहीं छुप सकती.

(१५) क़यामत के दिन, और उसका हिसाब फ़रमाया.

(१६) यानी हर छेदा बड़ा उसके इल्म के घेरे में है.

(१७) अच्छाई का हुक्म देने और बुराई से मना करने से.

(१८) उनका करना लाज़िम है. इस आयत से मालूम हुआ कि नमाज़ और नेकी के हुक्म और बुराई की मनाही और तकलीफ़ पर सब ऐसी ताअतें हैं जिनका तमाम उम्मतों में हुक्म था.

(१९) घमण्ड के तौर पर.

(२०) यानी जब आदमी बात करें तो उन्हें तुच्छ जान कर उनकी तरफ़ से मुंह फेरना, जैसा घमण्डियों का तरीक़ा है, इस्तियार न करना. मालदार और फ़कीर के साथ चिन्मता से पेश आना.

(२१) न बहुत तेज़, न बहुत सुस्त, कि ये दोनों बुरी हैं. एक में घमण्ड है, और एक में छिछोरापन. हदीस शरीफ़ में है कि बहुत तेज़ चलना मूмин का विकार ख़ोता है.

(२२) यानी शोर मुल और चीख़ने से परहेज़ करे.

(२३) मतलब यह है कि शोर मचाना और आवाज़ ऊंची करना मक्क़रूह और ना-पसन्दीदा है और इसमें कुछ बड़ाई नहीं है. गंधे की आवाज़ ऊंची होने के बावजूद कानों को बुरी लगने वाली और डरावनी है. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नर्म आवाज़ से क़लाम करना पसन्द था और सख़्त आवाज़ से बोलने को नापसन्द रखते थे.

सूरए लुक़्मान - तीसरा रूकू

(१) आसमानों में, सूरज चांद तारों की तरह, जिनसे नफ़स उठाते हो. और ज़मीनों में दरिया, नेहरं, ख़ावें, पहाड़, दरख़्त, फ़ल, चौपाए, वगैरह जिन से तुम फ़ायदे हासिल करते हो.

(२) ज़ाहिरी नेअमतों से शरीर के अंगों की दुख़्खती और हस्र व शक़्त सूख़त मुराद हैं और बातिनी नेअमतों से इल्म मआरफ़त वगैरह. हज़रत

फिरना है हम उन्हें बतादेंगे जो करते थे^(१) बेशक अल्लाह दिलों की बात जानता है^(२) हम उन्हें कुछ बरतने देंगे^(३) फिर उन्हें बेबस करके सख्त अज़ाब की तरफ़ लेजाएंगे^(४) और अगर तुम उनसे पूछो किसने बनाए आसमान और ज़मीन तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने, तुम फ़रमाओ सब ख़ूबियाँ अल्लाह को^(५) देशक उनमें अक्सर जानते नहीं^(६) अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है^(७) बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा^(८) और अगर ज़मीन में जितने पेड़ हैं सब क़त्में हो जाएं और समन्दर उसकी सियाही हो उसके पीछे सात समन्दर और^(९) तो अल्लाह की बातें ख़त्म न होंगी^(१०) बेशक अल्लाह इज़ज़त व हिकमत वाला है^(११) तुम सब का पैदा करना और क़यामत में उठाना ऐसा ही है जैसा एक जान का^(१२) बेशक अल्लाह सुनता देखता है^(१३) ऐ सुनने वाले क्या तूने न देखा कि अल्लाह रात लाता है दिन के हिस्से में और दिन करता है रात के हिस्से में^(१४) और उसने सूरज और चांद काम में लगाए^(१५) हर एक, एक मुक़र्रर (निश्चित) मीआद तक चलता है^(१६) और यह कि अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है^(१७) यह इसलिए कि अल्लाह ही इज़ज़त

كُفَرُوا بِالْبَيِّنَاتِ مَرْجِعُهُمْ فَنَرَيْتَهُمْ بِمَا عَمِلُوا إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ ثُمَّ عَرَضَ عَلَيْهِمْ آلِ عَادٍ آيَاتُ الْغَدَاةِ ۝ وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ كَيْقُولُ إِنَّ اللَّهَ قُلُوبُ الْحَمْدِ لِلَّهِ ۝ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ اللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ آبِحَارٍ مَا نَفَذَتْ كَلِمَتُ اللَّهِ إِلَّا اللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ مَا خَلَقَكُمْ وَلَا بَعَثَكُمْ إِلَّا كَتَفْسٍ وَاحِدَةً إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُوحِي الْبَيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوحِي الْبَيْلَ فِي اللَّيْلِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۝ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ

मन्ज़ूर

इन्हे अन्वय रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि नेअमते ज़ाहिर तो इस्लाम और क़ुरआन है और नेअमते बालिन यह है कि तुम्हारे गुनाहों पर पद डाल दिये, तुम्हारा हाल न ख़ाला, सज़ा में जल्दी न फ़रमाई, कुछ मुफ़रिसों ने फ़रमाया कि ज़ाहिरी नेअमत बदन का दुस्वत होना और अच्छी शक़ल सूस्त है और बातिनी नेअमत दिल का अक्कीदा, एक क़ौल यह भी है कि ज़ाहिरी नेअमत रिज़क है और बातिनी नेअमत अच्छा अन्नलाक़, एक क़ौल यह है कि ज़ाहिरी नेअमत इस्लाम का ग़लबा और दुश्मनों पर विजयी होना है और बातिनी नेअमत फ़रिश्तों का मदद के लिये आना, एक क़ौल यह है कि ज़ाहिरी नेअमत रसूल का अनुकरण है और बातिनी नेअमत उनकी महब्वत, अल्लाह तआला हम सब को अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की महब्वत दे और उनका अनुकरण करने की तौफ़ीक़,

(३) तो जो कहेंगे, जिहालत और नादानी होगी और अल्लाह की शान में इस तरह की ज़ुरअत और मुंह खोलना अत्यन्त बेजा और गुमराही है, यह आयत नज़र बिन हारिस और उबई बिन ख़लफ़ वसैरह काफ़िरों के बारे में उतरी जो बेइल्म और जाहिल होना के बावजूद नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात के बारे में झगड़े किया करते थे,

(४) यानी अपने बाप दादा के तरीक़े पर ही रहेंगे, इसपर अल्लाह तआला फ़रमाता है,

(५) जब भी वो अपने बाप दादा ही की पैरवी किये जाएंगे,

(६) दीन ख़ालिस उसके लिये कुबूल करे, उसकी इबादत में लगे, अपने काम उस पर छोड़ दें, उसी पर भरोसा रखें,

(७) ऐ नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम,

(८) यानी हम उन्हें उनके क़र्माँ की सज़ा देंगे,

(९) यानी थोड़ी मोहलत देंगे कि वो दुनिया के मज़े उठाएं,

(१०) आख़िरत में और वह दोज़ख़ का अज़ाब है जिससे वो रिहाई न पाएंगे,

(११) यह उनके इक़रार पर उन्हें इल्ज़ाम देना है कि जिसने आसमान ज़मीन पैदा किये वह अल्लाह वंदहू ला शरीका तहू है तो वाजिब हुआ कि उसकी हम्द की जाए, उसका शुक्र किया जाए और उसके सिवा किसी और की इबादत न की जाए,

(१२) सब उसके ममलूक मज़लूक और बन्दे हैं तो उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं,

(१३) ओर सारी ख़ल्क अल्लाह तआला के क़लिमात को लिखे और वो तमाम क़लम और उन तमाम समन्दरों की स्याही ख़त्म हो जाए,

(१४) क्योंकि अल्लाह तआला का इल्म असोम है, जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हिज़रत करक मदीनए तैय्यिह तशरीफ़ लाए तो यहूदियों के उलमा और पादरियों ने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा कि हम ने सुना है कि आप फ़रमाते हैं “*वमा अत्तीतुम मिनल इल्मे इल्ला क़लीलन*” (यानी तुम्हें थोड़ा इल्म दिया गया) तो उससे आपकी मुराद हम लोग हैं या सिर्फ़

और उसके सिवा जिनको पूजते हैं सब बातिल(असत्य) हैं^(२०) और इसलिये कि अल्लाह ही बलन्द बढ़ाई वाला है^(३०)

चौथा रूकू

क्या तूने न देखा कि किशती दरिया में चल्ली है अल्लाह के फ़ज़ल(कृपा) से^(१) ताकि वह तुम्हें अपनी^(२) निशानियाँ दिखाए, वेशक इसमें निशानियाँ हैं हर बड़े सब्र करने वाले शुक्रगुजार को^(३) ^(३१) और जब उनपर^(४) आ पड़ती है कोई मौज पहाड़ों की तरह तो अल्लाह को पुकारते हैं निरे उसपर अक्रोदा रखते हुए^(५) फिर जब उन्हें खुशकी की तरफ़ बचा लाता है तो उनमें कोई ऐतिदाल(मध्यमार्ग) पर रहता है^(६) और हमारी आयतों का इन्कार न करेगा मगर हर बड़ा बेवफ़ा नाशुक्रा^(३२) ऐ लोगो^(७) अपने रब से डरो और उस दिन का ख़ौफ़ करो जिसमें कोई बाप अपने बच्चे के काम न आएगा, और न कोई कामी (कारोबारी) बच्चा अपने बाप को कुछ नफ़ा दे^(८) वेशक अल्लाह का वादा सच्चा है^(९) तो हरगिज़ तुम्हें धोखा न दे दुनिया की ज़िन्दगी^(१०) और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के इल्म पर धोखा न दें वह बड़ा फ़रेवी(धूर्त)^(११) ^(३३) वेशक अल्लाह के पास है क़यामत का इल्म^(१२) और उतारता है मेंह, और जानता है जो कुछ माओं के पेट में है, और कोई जान नहीं जानती कि कल

هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۖ وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوْجٌ كَالظُّلُمِ دَعَوْا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۖ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ ۖ وَآخِشُوا يَوْمًا لَا يَجُزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ ۚ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَانٌّ عَنْ وَالِدِهِ شَيْئًا ۚ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَلَا يَغُرَّنَّكُمُ بِاللَّهِ الْعُرُورُ ۖ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ۚ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مِمَّا

منزل

अपनी क़ौम. फ़रमाया, सब मुराद हैं. उन्होंने कहा, क्या आपकी किताब में यह नहीं है कि हमें तौरात दी गई है, उसमें हर चीज़ का इल्म है. हज़ुर ने फ़रमाया कि हर चीज़ का इल्म भी अल्लाह के इल्म के सामने थोड़ा है और तुम्हें तो अल्लाह तआला ने इतना इल्म दिया है कि उसपर अमल करो तो नफ़ा पाओ. उन्होंने कहा, आप कैसे यह ख़याल फ़रमाते हैं. आपका क़ौल तो यह है कि जिसे हिक़मत दी गई उसे बहुत भलाई दी गई. तो थोड़ा इल्म और बहुत सी भलाई कैसे जमा हो. इसपर यह आपत उतरी. इस सूदन में यह आपत मदनी होगी. एक क़ौल यह भी है कि यहूदियों ने कुरैश से कहा था कि मक्के में जाकर रगूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इस तरह का कलाम करें. एक क़ौल यह है कि मुशिकों ने यह कहा था कि कुरआन और जो कुछ मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) लाते हैं, यह बहुत जल्द तमाम हो जाएगा, फिर किस्सा ख़त्म. इसपर अल्लाह तआला ने यह आपत उतारी.

(१५) अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं. उसकी कुदरत यह है कि एक कुन से सब को पैदा कर दे.

(१६) यानी एक को घटा कर, दूसरे को बढ़ाकर और जो वक़्त एक में से घटाता है, दूसरे में बढ़ा देता है.

(१७) बन्दों के नफ़े के लिये.

(१८) यानी क़यामत के दिन तक या अपने अपने निर्धारित समय तक. सूरज आख़िर साल तक और चांद आख़िर माह तक.

(१९) वही इन चीज़ों पर कादिर है, तो वही इबादत के लायक़ है.

(२०) फ़ना होने वाले. इन में से कोई इबादत के लायक़ नहीं हो सकता.

सूरए लुक़मान - चौथा रूकू

(१) उसकी रहमत और उसके एहसान से.

(२) कुदरत के चमत्कारों की.

(३) जो बलाओं पर सब्र करे और अल्लाह तआला की नेअमतों का शुक्रगुजार हो. सब्र और शुक्र ये दोनों गुण ईमान वाले के हैं.

(४) यानी काफ़िरों पर.

(५) और उसके समक्ष गिड़गिड़ाते हैं और रोते हैं और उसी से दुआ और इल्तिजा. उस वक़्त सब्र को भूल जाते हैं.

(६) अपने ईमान और सच्चाई पर क़ायम रहता, कुफ़र की तरफ़ नहीं लौटता. कहा गया है कि यह आपत अकरमह बिन अबू जहल के बां में उतरी. जिस साल मक्का मुकर्रमा की फ़तह हुई तो वह समन्दर की तरफ़ भाग गए. वहाँ मुख़ालिफ़ हवा ने घेरा और ख़तरे

क्या कमाएगी, और कोई जान नहीं जानती कि किस ज़मीन में मरेगी, वेशक अल्लाह जानने वाला बताने वाला है^(१३) (३४)

३२- सूरए सज्दा

सूरए सज्दा मक्का में उतरी, इसमें तीस आयतें, तीन रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) अलिम लाम मीम^(२) किताब का उतारना^(३) वेशक परवर्दिगारे आलम की तरफ से है^(४) क्या कहते हैं^(५) उनकी बनाई हुई है^(६) बल्कि वही हक़ (सच) है तुम्हारे रब की तरफ से कि तुम डराओ ऐसे लोगों को जिन के पास तुमसे पहले कोई डर सुनाने वाला न आया^(७) इस उम्मीद पर कि वो राह पाएँ^(८) अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच में है छ दिन में बनाए फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया^(९) उससे छूट कर तुम्हारा कोई हिमायती और न सिफ़ारशी^(१०) तो क्या तुम ध्यान नहीं करते^(११) काम की तदवीर (युक्ति) फ़रमाता है आसमान से ज़मीन तक^(१२) फिर उसी की तरफ रूजू करेगा^(१३) उस दिन कि जिसकी मिक़दार हज़ार बरस है तुम्हारी गिनती में^(१४) (५)

السّجدة ٣٢

५६६

أَنْتُمْ مَا تُحْيِي

ذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ

تَمُوتُ لَرَأَتْ اللَّهُ عَلَيْهِمْ حَيَاتِهِمْ

(٣٢) سُورَةُ السّجدة مَكِّيَّةٌ (٤٥)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْقَمَرِ نَزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ

الْعَالَمِينَ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ

رَبِّكَ لَتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِنْ قَبْلِكَ

لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ

وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى

عَلَى الْعَرْشِ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَجْهِ وَلَا

شَفِيعَ إِلَّا تَعْتَدُونَ يُكَذِّبُ الْأَمْرُ مِنَ

السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ

كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ذَلِكَ

مَدَن

में पड़ गए, तो अकरमह ने कहा अगर अल्लाह तआला हमें इस ख़तरे से छुटकारा दे तो मैं ज़रूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर हाथ में हाथ दे दूंगा यानी इताअत करूंगा. अल्लाह तआला ने करम किया. हवा ठहर गई और अकरमह मक्कए मुकर्रमा की तरफ आगए और इस्लाम लाए और बड़ी सच्चाई के साथ इस्लाम लाए. कुछ उनमें ऐसे थे जिन्होंने एहद पूरा न किया. उनकी निखत अगले जुमले में इरशाद होता है.

(७) यानी ऐ मक्का वालो.

(८) क़यामत के दिन हर इन्सान नफ़सी नफ़सी कहता होगा और बाप बेटे के और बेटा बाप के काम न आ सकेगा, न काफ़िरो की मुसलमान औलाद उन्हें फ़ायदा पहुंचा सकेगी, न मुसलमान माँ बाप काफ़िर औलाद को.

(९) ऐसा दिन ज़रूर आना और दोबारा उठाए जाने और हिसाब ओर जज़ा का वादा ज़रूर पूरा होना है.

(१०) जिसकी तमाम नेअमते और लज़ज़ते मिटने वाली कि उन पर आशिक़ होकर ईमान की नेअमत से मेहरूब रह जाओ.

(११) यानी शैतान दूर दगाज़ की उम्मीदों में डालकर गुनाहों में न जकड़ दे.

(१२) यह आयत हारिस बिन अम्र के बारे में उतरी जिसने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर क़यामत का वक़्त पूछा था और यह कहा था कि मैंने खेती बोई है ख़बर दीजिये मैं कब आएगा और मेरी औरत गर्भ से है, मुझे बताइये कि उसके पेट में क्या है, लड़का या लड़की. यह तो मुझे मालूम है कि कल मैं ने क्या किया, यह मुझे बताइये कि आयन्द कल को क्या करूंगा. मैं यह भी जानता हूँ कि मैं कहाँ पैदा हुआ मुझे यह बताइये कि कहाँ मरूंगा. इसके जवाब में यह आयत उतरी.

(१३) जिसको चाहे अपने औलिया और अपने प्यारों में से, उन्हें ख़बरदार करदे. इस आयत में जिन पांच चीज़ों के इल्म की विशेषता अल्लाह तआला के साथ बयान फ़रमाई गई उन्हीं की निखत सूरए जिन्न में इरशाद हुआ "आलिमुल ग़ैब फ़ला युज़हिरो अला ग़ैबिही अहदन इल्ला मनिर तदा मिर रसूलिन". (यानी ग़ैब का जानने वाला, तो अपने ग़ैब पर किसी की मुसल्लत नहीं करता, सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के - सूरए जिन्न, आयत २६-२७) मरज़ यह कि वग़ैर अल्लाह तआला के बताए इन चीज़ों का इल्म किसी को नहीं और अपने पसन्दीदा रसूलों को बताने की ख़बर खुद उसने सूरए जिन्न में दी है. खुलासा यह कि इल्म ग़ैब अल्लाह तआला के साथ ख़ास है और नबियों रलियों को ग़ैब का इल्म अल्लाह तआला की तालीम से चमत्कार के तौर पर अता होता है. यह उस विशेषता के विरुद्ध नहीं है जो अल्लाह के इल्म के साथ है. बंधुत सी आयतें और हदीसें इस को साबित करती हैं. बारिश का वक़्त और गर्भ में क्या है और कल को क्या करे और कहाँ मरगा. इन बातों की ख़बरें बहुतात से औलिया और नबियों ने दी हैं और क़ुरआन और हदीस से साबित हैं. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की फ़रिशतों ने हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम के पैदा होने की और हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की हज़रत यहया अलैहिस्सलाम के पैदा होने की और हज़रत मरयम को हज़रत ईसा

यह^(११) है हर छुपी और ज़ाहिर बात का जानने वाला, इज़्जत व रहमत वाला^(६) वह जिसने जो चीज़ बनाई ख़ूब बनाई^(१२) और इन्सान की पैदाइश की शुरुआत मिट्टी से फ़रमाई^(१३) (७) फिर उसकी नस्ल रखी एक-बे-क़द्र पानी के खुलासे से^(१४) (८) फिर उसे ठीक किया और उसमें अपनी तरफ़ की रूह फूँकी^(१५) और तुम्हें कान और आँखें और दिल अता फ़रमाए^(१६) क्या ही थोड़ा हक़ मानते हो^(९) और बोले^(१७) क्या जब हम मिट्टी में मिल जाएंगे^(१८) क्या फिर नए बनेंगे? बल्कि वो अपने रब के समक्ष हाज़िरी से इन्कारी हैं^(१९) (१०) तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात (मौत) देता है मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर मुक़रर है^(२०) फिर अपने रब की तरफ़ वापस जाओगे^(२१) (११)

दूसरा रूकू

और कहीं तुम देखो जब मुजरिम^(१) अपने रब के पास सर नीचे डाले होंगे^(२) ऐ हमारे रब अब हमने देखा^(३) और सुना^(४) हमें फिर भेज कि नेक काम करें हमको यकीन आगया^(५) (१२) और अगर हम चाहते हर जान को उसकी हिदायत फ़रमाते^(६) मगर मेरी बात क़रार पाचुकी कि ज़रूर जहन्नम को भरदूंगा उन जिन्हें और आदमियों सब

عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ وَقَالُوا إِذَا إِذَا أَصْلَكْنَا فِي الْأَرْضِ إِنَّا لَبِئْسَ خَلْقٌ جَدِيدٌ بَلْ هُمْ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ كَفِرُونَ قُلْ يَتَوَفَّكُم مَلَكَ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ وَلَوْ تَرَكَهُ إِذَا الْعُجْرُمُونَ نَاكِسُوا رُؤُوسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا لَعَلَّ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًى وَنَاكِسًا وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

مَنْزِلٌ

अलैहिसलाम के पैदा होने की ख़बरें दीं तो उन फ़रिश्तों को भी पहले से मालूम था कि इन गर्भों में क्या है और उन हज़रात को भी जिन्हें फ़रिश्तों ने सूचनाएं दी थीं और उन सब का जानना क़ुरआने करीम से साबित है तो आयत के मानी बिल्कुल यही हैं कि क़ौर अल्लाह तआला के बताए कोई नहीं जानता. इसके मानी यह लेना कि अल्लाह तआला के बताए से भी कोई नहीं जानता केवल बातिल और सैकड़ों आयतों और हदीसों के खिलाफ़ है (मज़ज़िब, बैज़ावी, अहमदी, रुहुल बयान क़ौरह).

३२ - सूरए सज्दा - पहला रूकू

- (१) सूरए सज्दा मक्के में उतरी सिवाय तीन आयतों के जो "अफ़मन काना मूमिनन" से शुरू होती हैं. इस सूरात में तीस आयतें, तीन रूकू, तीन सौ अस्सी कलिमें और एक हज़ार पाँच सौ अठ्ठाह अक्षर हैं.
- (२) याती क़ुरआने करीम का चमत्कार करके, इस तरह कि इस जैसी एक सूरात या छोटी सी इबारत बनाने से तमाम ज़बान वाले और सारे बिद्वान आजिज़ हो गए.
- (३) मुश्किल लोग कि यह पवित्र ग्रन्थ.
- (४) याती रबियों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की.
- (५) ऐसे लोगों से मुराद उस ज़माने के लोग हैं जो ज़माना हज़रत ईसा अलैहिसलाम के बाद से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने तक था कि इस ज़माने में अल्लाह तआला की तरफ़ से कोई रसूल नहीं आया.
- (६) जैसा इस्तिवा कि उसकी शान के लायक है.
- (७) याती ऐ काफ़िरों के समूह, जब तुम अल्लाह तआला की रज़ा की राह इस्त्रियार न करो और ईमान न लाओ तो न तुम्हें कोई मददगार मिलेगा जो तुम्हारी मदद कर सके, न कोई सिफ़ारशी जो तुम्हारी सिफ़ारिश करे.
- (८) याती दुनिया के क़यामत तक होने वाले कामों की, अपने हुक़म और मर्ज़ी और अपने इरादों और हिसाब से.
- (९) अग्र और तदबीर दुनिया की फ़ना के बाद.
- (१०) याती दुनिया के दिनों के हिसाब से और वह दिन क़यामत का दिन है. क़यामत के दिन की तम्बाई कुछ काफ़िरों के लिये हज़ार बरस के बराबर होगी और कुछ के लिये पचास हज़ार बरस के बराबर, जैसे कि सूरए मआरिज में है "तअरुजुल मलाइकतु वर्सुहो इलैहे फ़ी यमीन काना मिक्दारू ख़मसीना अल्फ़ा सनतिन" (फ़रिश्ते और ज़िब्रौल उसकी यागगाह की तरफ़ उरुज करते हैं वह अज़ाब उस दिन होगा जिसकी मिक्दार पचास हज़ार बरस है - सूरए मआरिज, आयत ४). और मूमिन के लिये यह दिन एक

से^(१३) अब चखो बदला उसका कि तुम अपने इस दिन की हाज़िरी भूले थे^(१४) हमने तुम्हें छोड़ दिया^(१५) अब हमेशा का अज़ाब चखो अपने किये का बदला^(१६) हमारी आयतों पर वही ईमान लाते हैं कि जब वो उन्हें याद दिलाई जाती हैं सज्दे में गिर जाते हैं^(१७) और अपने रब की तारीफ़ करते हुए उसकी पाकी बोलते हैं और घमण्ड नहीं करते^(१८) उनकी करवटें जुदा होती हैं ख्वाबगाहों से^(१९) और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते^(२०) और हमारे दिये हुए में से कुछ ख़ैरात करते हैं^(२१) तो किसी जी को नहीं मालूम जो आँख की ठण्डक उनके लिये छुपा रखी है^(२२) सिला उनके कामों का^(२३) तो क्या जो ईमान वाला है वो उस जैसा हो जाएगा जो बेहुकम है^(२४) ये बराबर नहीं^(२५) जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिये बसने के बाग़ हैं, उनके कामों के सिले में मेहमानदारी^(२६) रहे वो जो बेहुकम हैं^(२७) उनका ठिकाना आग है, जब कभी उसमें से निकलना चाहेंगे फिर उसी में फेर दिये जाएंगे और उनसे फ़रमाया जाएगा चखो उस आग का अज़ाब जिसे तुम

اجْمَعِينَ ۝ فذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا ۝
إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا
بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا
يَسْتَكْبِرُونَ ۝ تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ
يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝
فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا
كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُونَ ۝ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ رِزْقًا بِمَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمْ
النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا
وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ فِيهَا

منزل

फ़र्ज नमाज़ के वक़्त से भी हलका होगा जो दुनिया में पड़ता था जैसे कि हदीस शरीफ़ में आया।

(११) तदबीर करने वाला ग़ालिक जल्ल-जलालुद्द.

(१२) अपनी हिकमत के तकाज़े के हिसाब से बनाई. हर जानदार को वह सूरत दी जो उसके लिये बेहतर है और उसको ऐसे अंग अता फ़रमाए जो उसकी रोज़ी के लिये मुनासिब हों.

(१३) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को उससे बनाकर.

(१४) यानी नुस्खे से.

(१५) और उसको बेहिस बेजान होने के बाद हिस वाला और जानदार किया.

(१६) ताकि तुम सुनो और देखो और समझो.

(१७) दोबारा उठाए जाने का इन्कार करने वाले.

(१८) और मिट्टी हो जाएंगे और हमारे अंग मिट्टी से छिक्के न रहेंगे.

(१९) यानी मीत के बाद उठने और ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करके वो इस इन्तिहा तक पहुंचे हैं कि आक़िबत के तमाम उमूर के इन्कारी हैं यहाँ तक कि अल्लाह के समक्ष हाज़िर होने के भी.

(२०) उस फ़रिश्ते का नाम इज़्ज़ाईल है, अलैहिस्सलाम. और वह अल्लाह की तरफ़ से रुहें निकालने पर मुक़रर हैं. अपने काम में कुछ ग़फलत नहीं करते, जिस का वक़्त आ जाता है, उसकी रुह निकाल लेते हैं. रिवायत है कि मीत के फ़रिश्ते के लिये दुनिया हथेली की तरह कर दी गई है. तो वह पूर्व और पश्चिम की मख़लूक की रुहें बिना मशक्कत उठा लेते हैं और रहमत व अज़ाब के बहुत से फ़रिश्ते उनके मातहत हैं.

(२१) और हिसाब व जज़ा के लिये ज़िन्दा करके उठाए जाओगे.

सूरए सज्दा - दूसरा रूक़

(१) यानी काफ़िर और मुश्किल लोग.

(२) अपने कर्मों और व्यवहार से शर्मिन्दा और लज्जित होकर, और अर्ज़ करते होंगे.

(३) मरने के बाद उठने को, और तेरे वादे की सच्चाई को, जिनके हम दुनिया में इन्कारी थे.

(४) तुझ से तेरे रसूलों को सच्चाई को, तो अब दुनिया मे.

झुटलाते थे (२०) और जरूर हम उन्हें चखाएंगे कुछ नज़दीक का अज़ाब (२१) उस बड़े अज़ाब से पहले (२२) जिसे देखने वाला उम्मीद करे कि अभी बाज़ आएंगे (२३) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसे उसके रब की आयतों से नसीहत की गई फिर उसने उनसे मुंह फेर लिया (२४) बेशक हम मुजरिमों से बदला लेने वाले हैं (२५)

तीसरा स्कू

और बेशक हमने मूसा को किताब (१) अता फ़रमाई तो तुम उसके मिलने में शक न करो (२) और हमने उसे (३) बनी इस्राईल के लिये हिदायत किया (२३) और हमने उनमें से (४) कुछ इमाम बनाए कि हमारे हुक्म से बताते (५) जब कि उन्होंने सब्र किया (६) और वो हमारी आयतों पर यकीन लाते थे (२४) बेशक तुम्हारा रब उनमें फ़ैसला कर देगा (२५) क़यामत के दिन जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते थे (२६) और क्या उन्हें (२७) इस पर हिदायत न हुई कि हमने उनसे पहले कितनी संगतें (क़ौमें) (२८) हलाक कर दीं कि आज ये उनके घरों में चल फिर रहे हैं (२९) बेशक इसमें जरूर निशानियाँ हैं, तो क्या सुनते नहीं (३०) (२६) और क्या नहीं देखते कि हम पानी भेजते हैं ख़ुश्क ज़मीन की तरफ़ (३१) फिर उससे खेती निकालते हैं कि उसमें से उनके चौपाए और वो ख़ुद खाते

تَكْذِبُونَ ۝ وَلَنَذِيقَنَّاهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ
دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَمَنْ
أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۖ
إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِسُونَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ
الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ
هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ إِبْرَاهِيمَ
يَهُدُونَ بِأَمْرِنَا إِنَّا صَبَرْنَا وَكَانُوا بِآيَاتِنَا
يُوقِنُونَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يُفَصِّلُ بَيْنَهُم يَوْمَ الْقِيَامَةِ
فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ
أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يَسْتُونَ فِي
مَسْكِنِهِمْ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ۝
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ
فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۖ

مِثْلَهُ

- (५) और अब हम ईमान ले आए, लेकिन उस वक़्त का ईमान लाना उन्हें कुछ काम न देगा।
- (६) और उसपर ऐसी मेहरबानी करते कि अगर वह उसको इख़्तियार करता तो राह पा जाता। लेकिन हमने ऐसा न किया क्योंकि हम काफ़िरों को जानते थे कि वो कुफ़्र ही इख़्तियार करेंगे।
- (७) जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया, और जब वो जहन्नम में दाख़िल होंगे तो जहन्नम के ख़ाज़िन उनसे कहेंगे।
- (८) और दुनिया में ईमान लाए थे।
- (९) अज़ाब में, अब तुम्हारी तरफ़ इल्तिफ़ात न होगा।
- (१०) बिनब्रता और आजिज़ी से और इस्लाम की नेअमत पर शुक्रगुज़ारी के लिये।
- (११) यानी मीठी नींदों के बिस्तारों से उठते हैं और अपनी राहत और आराम को छोड़ते हैं।
- (१२) यानी उसके अज़ाब से डरते हैं और उसकी रहमत की उम्मीद करते हैं। यह तहज़ुद अदा करने वालों की हालत का बयान है। हज़रत अतस रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि यह आयत हम अन्सारियों के हज़क में उतरी कि हम मग़रिब पढ़कर अपने घरों को वापस न आते थे जब तक कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ इशा न पढ़ लेते।
- (१३) जिससे वो राहते पाएंगे और उनकी आँखें ठण्डी होंगी।
- (१४) यानी उन ताअतों का, जो उन्होंने दुनिया में अदा कीं।
- (१५) यानी काफ़िर है। हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो से बलीद बिन अक्रबह बिन अबी मुईत किसी बात में झगड़ रहा था। बात चीत के दौरान कहने लगा, ख़ामोश हो जाओ, तुम लड़के हो मैं बूढ़ा हूँ। मैं बहुत लम्बी ज़वान वाला हूँ। मेरे भाले की नौक तुमसे तेज़ है। मैं तुम से ज़्यादा बहादुर हूँ। मैं बड़ा ज़त्थेदार हूँ। हज़रत अली ने फ़रमाया चुप, तू फ़ासिक है। भूराद यह थी कि जिन बातों पर तू गर्व करता है, इन्सान के लिये उनमें से कोई भी प्रशंसनीय नहीं। इन्सान की महानता और इज़्ज़त ईमान और तक्वा में है। जिसे यह दौलत नसीब नहीं वह हद दर्जे का नीच है। काफ़िर भूमिन के बराबर नहीं हो सकता। अल्लाह तआला ने हज़रत अली की तरदीक में यह आयत उतारी।
- (१६) यानी ईमान वाले नेक बन्दों की जन्नते-मावा में अत्यन्त सम्मान व सत्कार के साथ मेहमानदारी की जाएगी।
- (१७) नाफ़रमान काफ़िर हैं।
- (१८) दुनिया ही में क़त्ल और गिरफ़्तारी और दुष्काल और बीमारियों वग़ैरह में जकड़ के। चुनान्वे ऐसा ही पेश आया कि हज़रत की हिज़रत से पहले क़ुरैश बीमारियों और मुसीबतों में गिरफ़्तार हुए और हिज़रत के बाद बद्र में मारे गए, गिरफ़्तार हुए और सात साल दुष्काल की ऐसी सफ़्त मुसीबत में जकड़े रहे कि हड्डियाँ और मुर्दार कुत्ते तक खा गए।

हैं^(१४) तो क्या उन्हें सूझता नहीं^(१५) ﴿२७﴾ और कहते हैं यह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो^(१६) ﴿२८﴾ तुम फ़रमाओ फ़ैसले के दिन^(१७) काफ़िरों को उनका ईमान लाना नफ़ा न देगा और न उन्हें मोहलत मिले^(१८) ﴿२९﴾ तो उनसे मुंह फेर लो और इत्तिज़ार करो^(१९) वेशक उन्हें भी इत्तिज़ार करना है^(२०) ﴿३०﴾

३३- सूरए अहज़ाब

सूरए अहज़ाब मदीने में उतरी, इसमें ७३ आयतें और नौ रुक़ हैं.

पहला सूक

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला ^(१) ऐ ग़ैब की खबरें बताने वाले (नबी) ^(२) अल्लाह का प्युंही खौफ़ रखना और काफ़िरों-और मुनाफ़िकों (दोस्तों) की न सुनना ^(३) वेशक अल्लाह इल्म व हिकमत (बोध) वाला है ^(४) और उसकी पैरवी (अनुकरण) रखना जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हें वही (देववाणी) होती है, ऐ लोगो अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है ^(५) और ऐ मेहबूब तुम अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह बस है काम बनाने वाला ^(६) अल्लाह ने किसी आदमी के अन्दर दो दिल न रखे ^(७) और तुम्हारी उन औरतों को जिन्हें तुम माँ के बराबर कह दो तुम्हारी माँ न बनाया ^(८) और न तुम्हारे लेपालकों को तुम्हारा बेटा बनाया ^(९)

(१४) चौपाय भूसा और वो खुद गल्ला.

(१५) कि वो ये देखकर अल्लाह तआला की भरपूर कुदरत पर इस्तिदाल करे और समझे कि जो क्रादिर बरहक खुशक जमीन से खेती निकालने पर क्रादिर है, मुदों का जिन्दा करना उसकी कुदरत से क्या मुश्किल.

(१६) मुसलमान कहा करते थे कि अल्लाह तआला हमारे और मुश्रिकों के बीच फ़ैसला फ़रमाएगा और फ़रमावेगा और नाफ़रमान को उनके कर्मों के अनुसार बदला देगा. इससे उनकी मुराद यह थी कि हम पर रहमत और करम करेगा और काफ़िरों व मुश्रिकों को अज़ाब में जकड़ेगा. इसपर काफ़िर हंसी के तौर पर कहते थे कि यह फ़ैसला कब होगा, इसका वक़्त कब आएगा. अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इरशाद फ़रमाता है.

(१७) जब अल्लाह का अज़ाब उतरेगा.

(१८) तीबह और माफ़ी की. फ़ैसले के दिन से या क़यामत का दिन मुराद है या मक्के की विजय का दिन या बद्र का दिन. अगर क़यामत का दिन मुराद हो तो ईमान का नफ़ा न देना ज़ाहिर है क्योंकि ईमान वही मक़बूल है जो दुनिया में हो और दुनिया से निकलने के बाद न ईमान मक़बूल होगा न ईमान लाने के लिये दुनिया में वापस आना मिलेगा. और अगर फ़ैसले के दिन से बद्र का दिन या मक्के की विजय का दिन मुराद हो तो मानी ये होंगे कि जब अज़ाब आजाए और वो लोग क़त्ल होने लगें तो क़त्ल की हालत में उनका ईमान लाना क़बूल न किया जाएगा और न अज़ाब में विलम्ब करके उन्हें मोहलत दी जायगी. चुनान्हे जब मक्का मुकर्रमा फ़तह हुआ तो क़ौम बनी क़नावह भली. हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने जब उन्हें घेरा और उन्होंने देखा कि अब क़त्ल सर पर आ गया, कोई उम्मीद जान बचने की नहीं है तो उन्होंने इस्लाम का इज़हार किया. हज़रत ख़ालिद ने क़बूल न फ़रमाया और उन्हें क़त्ल कर दिया.

(जुमल)

(१९) उनपर अज़ाब उतरने का.

(२०) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम शुक्रवार के दिन फ़ज्र की नमाज़ में यह सूरात यानी सूरए सज्दा और सूरए दहर पढ़ते थे. तिरमिज़ी की हदीस में है कि जब तक हज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम यह सूरात और सूरए तबारक़ल्लज़ी बियदिहिल मुल्क न पढ़ लेते, सोने को न जात. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अहो ने फ़रमाया कि सूरए सज्दा क़ब्र के अज़ाब से मेहफूज़ रखती है. (ख़ाज़िन व मदारिक़ वगैरह)

३३ - सूरए अहज़ाब - पहला खूकू

(१) सूरए अहज़ाब मदीने में उतरी. इसमें नौ खूकू, तिहत्तर आयतें, एक हज़ार दो सौ अस्सी कलिमे और पाँच हज़ार सात सौ नब्बे अक्षर हैं.

(२) यानी हमारी तरफ़ से ख़बरें देने वाले, हमारे राज़ों के रखने वाले, हमारा क़लाम हमारे प्यारे बन्दों तक पहुंचाने वाले. अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की या अम्मुहन्नबीयो के साथ सम्बोधित किया जिसके मानी ये हैं जो बयान किये गए. नामे पाक के साथ या मुहम्मद ज़िक्र फ़रमाकर सम्बोधित नहीं किया जैसा कि दूसरे नबियों को सम्बोधित फ़रमाता है. इससे उद्देश्य आपकी इज़ज़त, आपका सत्कार और सम्मान है और आपकी बुजुर्गी का ज़ाहिर करना है. (मदारिक़)

(३) अबू सुफ़ियान बिन हर्व और अकरमह बिन अबी जहल और अबुल अअवर सलमी जंगे उहद के बाद मदीनए तैय्यिबह आए और मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के यहाँ ठहरे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बात चीत के लिये, अमान हासिल करके, उन्होंने यह कहा कि आप लात, उज़ज़ा, मनात वगैरह हमारे बुतों को जिन्हें मुश्रिकीन अपना मअबूद समझते हैं, कुछ न कहा कीजिये और यह फ़रमा दीजिये कि उनकी शफ़ाअत उनके पुजारियों के लिये है और हम लोग आप को और आप के ख़ब की कुछ न कहेंगे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनकी यह बात बहुत नागवार हुई और मुसलमानों ने उनके क़त्ल का इरादा किया. हज़ूर ने क़त्ल की इजाज़त न दी और फ़रमाया कि मैं उन्हें अमान दे चुका हूँ इसलिये क़त्ल न करो. मदीना शरीफ़ से निकाल दो. चुनान्हे हज़रत उमर रदियल्लाहो अहो ने निकाल दिया इसपर यह आयत उतरी. इसमें सम्बोधन तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ है और मक़सूद है आपकी उम्मत से फ़रमाया कि जब नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अमान दी तो तुम उसके पाबन्द रहो और एहद तोड़ने का इरादा न करो और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की शरीअत विरोधी बात न मानो.

यह तुम्हारे अपने मुंह का कहना है^(१) और अल्लाह हक़ फ़रमाता है और वही राह दिखाता है^(२) ॥ ४ ॥ उन्हें उनके बाप ही का कहकर पुकारो^(३) यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा ठीक है फिर अगर तुम्हें उनके बाप मालूम न हों^(४) तो दीन में तुम्हारे भाई हैं और वशरियत (आदमी होना) में तुम्हारे चचाज़ाद^(५) और तुम पर इसमें कुछ गुनाह नहीं जो अनजाने में तुमसे हो गुज़रा^(६) हाँ वह गुनाह है जो दिल के इरादे से करो^(७) और अल्लाह दख़ने वाला मेहरबान है^(८) ॥ ५ ॥ यह नबी मुसलमानों का उनकी जान से ज़्यादा मालिक है^(९) और उसकी वीबियाँ उनकी माएं हैं^(१०) और रिश्ते वाले अल्लाह की किताब में एक दूसरे से ज़्यादा करीब हैं^(११) वनिस्वत और मुसलमानों और मुहाजिरों के^(१२) मगर यह कि तुम अपने दोस्तों पर कोई एहसान करो^(१३) यह किताब में लिखा है^(१४) ॥ ६ ॥ और ऐ मेहबूब याद करो जब हमने नबियों से एहद लिया^(१५) और तुम से^(१६) और नूह और इब्राहीम और मूसा और ईसा मरयम के बेटे से और हमने उनसे गाढ़ा एहद लिया^(१७) ताकि सच्चीं से^(१८) उनके सच का सवाल करो^(१९) और उसने काफ़िरों के लिये दर्दनाक

يَا قَوْمَهُمْ وَاللّٰهُ يَقُولُ الْحَقُّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ۝
أَدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ فَإِنْ
لَّمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَاَحْوَا نَكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ
وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَكِنْ
مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ وَكَانَ اللّٰهُ عَظِيمًا ۝
رَحِيمًا ۝ النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ
وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ
بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ
إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُمْ مَّعْرُوفًا كَانَ ذَٰلِكَ
فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝ وَإِذَا أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ
مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ
وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ بَيْعَاتًا عَلَىٰ ظُنٍّ
لَّيْسَ لِلْغَافِلِينَ عَن صِدْقِهِمْ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ

मज़ल

(४) कि एक में अल्लाह का शरीफ़ हो, दूसरे में किसी और का। जब एक ही दिल है तो अल्लाह ही सं डरे। अबू मुअम्मर हमीद फ़ेहरी की याददाश्त अच्छी थी जो सुनता था, याद कर लेता था। कुरैश ने कहा कि उसके दो दिल हैं जमी तो उसकी स्मरण शक्ति इतनी तेज़ है। वह खुद भी कहता था कि उसके दो दिल हैं और हर एक में हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से ज़्यादा समझ है। जब बद्र में मुशिक भागे तो अबू मुअम्मर इस तरह से भागा कि एक जूती हाथ में एक पाँव में। अबू सुफ़ियान से मुलाकात हुई तो अबू सुफ़ियान ने पूछा क्या हाल है, कहा लोग भाग गए, तो अबू सुफ़ियान ने पूछा एक जूती हाथ में एक पाँव में क्यों है, कहा इसकी मुझे ख़बर ही नहीं मैं तो यही समझ रहा हूँ कि दोनों जूतियाँ पाँव में हैं। उस वक़्त कुरैश को मालूम हुआ कि दो दिल होते तो जूती जो हाथ में लिये हुए था, भूल न जाता। और एक क़ौल यह भी है कि मुनाफ़िक्कीन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये दो दिल बताते थे और कहते थे कि उनका एक दिल हमारे साथ है और एक अपने सहाबा के साथ है। साथ ही जिहालत के ज़माने में जब कोई अपनी औरत से ज़िहार करता था तो वो लोग इस ज़िहार को तलाक़ कहते और उस औरत को उसकी माँ करार देते थे और जब कोई शरय़ किसी को बेटा कह देता तो उसको हक्कीकी बेटा करार देकर मीरास में हिस्सेदार ठहराते और उसकी बीबी के बेटा कहने वाले के लिये सगे बेटे की बीबी की तरह हराम जानते। इस सब के रव में यह आयत उतरी।

(५) यानी ज़िहार से औरत माँ की तरह हराम नहीं हो जाती। ज़िहार यानी मक्क़हा का ऐसी औरत से मिसाल देना जो हमेशा के लिये हराम हो और यह मिसाल ऐसे अंग में हो जिसे देखना और छूना जायज़ नहीं है। जैसे किसी ने अपनी बीबी से यह कहा कि तू मुझपर मेरी माँ की पीठ या पेट की तरह है तो वह ज़िहार वाला हो गया। ज़िहार से निकाह बातिल नहीं होता लेकिन कफ़फ़रा अदा करना लाज़िम हो जाता है। और कफ़फ़रा अदा करने से पहले औरत से अलग रहना और उससे सोहबत न करना लाज़िम है। ज़िहार का कफ़फ़रा एक गुलाम का आज़ाद करना और यह मयस्सर न हो तो लगातार दो महीने के रोज़े और यह भी न हो सके तो साट मिसकीनों को खाना खिलाना है। कफ़फ़रा अदा करने के बाद औरत से कुर्बत और सोहबत हलाल हो जाती है। (हिदायह) .

(६) चाहे उन्हें लोग तुम्हारा बेटा कहते हों।

(७) यानी बीबी को माँ के मिसल कहना और ले पालक को बेटा कहना बेहकीक़त बात है। न बीबी माँ हो सकती है न दूसरे का बेटा अपना बेटा। नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब हज़रत ज़ैनब बिनत ज़हश से निकाह किया तो यहूदी और मुनाफ़िक्कों ने तअने देने शुरू किये और कहा कि मुहम्मद ने अपने बेटे ज़ैद की बीबी से शादी कर ली क्योंकि पहले हज़रत ज़ैनब ज़ैद के निकाह में थीं और हज़रत ज़ैद उम्मुल मुमिनीन हज़रत ख़दीज़ा रदियल्लाहो अन्हा के ज़ररज़रीद थे। उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में उन्हें हिबा कर दिया। हज़र ने उन्हें आज़ाद कर दिया तब भी वह अपने बाप के पास न गए हज़र की ही ख़िदमत में रहे। हज़र उनपर शाफ़क़तो करम फ़रमाते थे इसलिये लोग उन्हें हज़र का बेटा कहने लगे। इससे वह हक्कीक़त में हज़र के

अज़ाब तैयार कर रखा है (८)

दूसरा रूकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो^(१) जब तुम पर कुछ लश्कर आए^(२) तो हमने उनपर आंधी और वो लश्कर भेजे जो तुम्हें नज़र न आए^(३) और अल्लाह तुम्हारे काम देखता है^(४) (९) जब काफ़िर तुम पर आए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से^(५) और जब कि ठिठक कर रह गई निगाहें^(६) और दिल गलों के पास आगए^(७) और तुम अल्लाह पर तरह तरह के गुमान करने लगे (उम्मीद और यास के)^(८) (१०) वह जगह थी कि मुसलमानों की जांच हुई^(९) और ख़ूब सख्ती से झंझोड़े गए^(११) और जब कहने लगे मुनाफ़िक और जिनके दिलों में रोग था^(१०) हमें अल्लाह व रसूल ने वादा न दिया था मगर फ़रेव का^(११) (१२) और जब उनमें से एक ग़िरोह ने कहा^(१२) ऐ मदीना वालो^(१३) यहाँ तुम्हारे ठहरने की जगह नहीं^(१४) तुम घरों को वापस चलो, और उनमें से एक ग़िरोह^(१५) नबी से इज़्ज़ (आज्ञा) मांगता था यह कहकर कि हमारे घर बेहिफ़ाज़त हैं और वो बेहिफ़ाज़त न थे, वो तो न चाहते थे मगर भागना^(१६) और अगर उनपर फ़ौजें मदीने के अतराफ़ से आतीं फिर उनसे कुछ चाहतीं तो ज़रूर

عَذَابًا أَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝ إِذْ جَاءَكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَكُتِبَتُْونَ بِاللَّهِ الظُّنُونَا ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا ۝ وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۝ وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَانْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ إِذْ يُبَيِّنُونَ لَهَا فِرَارًا ۝ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاتَوَّاهَا

مَلَأَ

बेटे न होंगए और यहूदी व मुनाफ़िकों का तअना ग़लत और बेजा हुआ. अल्लाह तआला ने यहाँ उन तअना देने वालों को झूटा क़रार दिया.

(८) हक़ की . लिहाज़ा लेपालकों को उनके पालने वालों का बेटा न ठहराओ बल्कि -----

(९) जिससे वो पैदा हुए.

(१०) और इस वजह से तुम उन्हें उनके बापों की तरफ़ निश्चय न कर सको.

(११) तो तुम उन्हें भाई कहो और जिसके लेपालक हैं उसका बेटा न कहो.

(१२) मना किये जाने से पहले. या ये मानी हैं कि अगर तुमने लेपालकों को ग़लती से अज्ञाने में उनके पालने वालों का बेटा कह दिया या किसी ग़ैर की औलाद को केवल ज़बान की सबक़्त से बेटा कहा तो इन सूरतों में गुनाह नहीं.

(१३) मना किये जाने के बाद.

(१४) दुनिया और दीन के तमाम मामलों में. और नबी का हुक़म उदपर लागू और नबी की फ़रमाँवरदारी ज़रूरी. और नबी के हुक़म के मुकाबले में नफ़स की ख़्वाहिश का त्याग अनिवार्य. या ये मानी हैं कि नबी ईमान वालों पर उनकी जानों से ज्यादा मेहरबानी, रहमत और करम फ़रमाते हैं और सबसे ज्यादा नफ़ा देने वाले हैं. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया हर मूमिन के लिये दुनिया और आख़िरत में सबसे ज्यादा औला हूँ अगर चाहो तो यह आपत पड़ो "अन नबिय्यो औला बिल मूमिनीन". हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो की क़िरअत में "मिन अन्कुसिहिम" के बाद "व हुवा अबुल लहुम" भी है. मुजाहिद ने कहा कि सारे नबी अपनी उम्मत के बाप होते हैं और इसी रिश्ते से मुसलमान आपस में भाई कहलाते हैं कि वो अपने नबी की दीनी औलाद हैं.

(१५) तअज़ीम व हुर्मत में और निकाह के हमेशा के लिये हराम हाने में और इसके अलावा दूसरे अहक़ाम में जैसे कि विरासत और पर्दा वग़ैरह. उनका वही हुक़म है जो अजनबी औरतों का और उनकी बेटियों को मूमिनीन की बहनें और उनके भाईयों और बहनों को मूमिनो के मामूँ और ख़ाला न कमा जाएगा.

(१६) विरासत में.

(१७) इससे मालूम हुआ कि उलुल अरहाम यानी रिश्ते वाले एक दूसरे के वारिस होते हैं. कोई अजनबी दीनी विरासत के ज़रिये से वारिस नहीं होता.

(१८) इस तरह कि जिसको चाहो कुछ वसीयत करो तो वसीयत तिहाई माल के बराबर विरासत पर मुक़दम की जाएगी. ख़ुलासा यह है कि पहले माल सगे वारिसों को दिया जाएगा फिर करीब के रिश्तेदारों को फिर दूर के रिश्तेदारों को.

उनका मांगा दे बैठते^(१९) और उसमें देर न करते मगर थोड़ी^(१४) और वेशक इससे पहले वो अल्लाह से एहद कर चुके थे कि पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह का एहद पूछा जाएगा^(१०) (१५) तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम्हें भागना नफ़ा न देगा अगर मौत या क़त्ल से भागो^(१६) और जब भी दुनिया न बरतने दिये जाओगे मगर थोड़ी^(११) (१६) तुम फ़रमाओ वह कौन है जो अल्लाह का हुक्म तुम पर से टाल दे और अगर वह तुम्हारा बुरा चाहे^(१७) या तुम पर मेहरबानी (रहम) फ़रमाना चाहे^(१८) और वो अल्लाह सिवा कोई हामी न पाएंगे न मददगार^(१९) वेशक अल्लाह जानता है तुम्हारे उन को जो औरों को जिहाद से रोकते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं हमारी तरफ़ चले आओ^(२०) और लड़ाई में नहीं आते मगर थोड़े^(२१) (१८) तुम्हारी मदद में गई (कमी) करते हैं, फिर जब डर का वक़्त आए तुम उन्हें देखोगे तुम्हारी तरफ़ यूँ नज़र करते हैं कि उनकी आँखें धूम रही हैं जैसे किसी पर मौत छाई हो, फिर जब डर का वक़्त निकल जाए^(२२) तुम्हें तअने देने लगे तेज़ ज़बानों से माले-गानीमत के लालच में^(२३) ये लोग ईमान लाए ही नहीं^(२४) तो अल्लाह ने उनके अमल(कर्म) अकारत कर दिये^(२५) और

وَمَا تَلْبَثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ۝ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهِدًا
لِللّٰهِ مِنْ قَبْلُ لَا يُؤْتُونَ الْأَذْفَادَ ۝ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ
مَسْئُولًا ۝ قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمْ الْفِرَارُ اِنْ قُذِرْتُمْ مِنَ
الْمَوْتِ اَوْ الْقَتْلِ ۝ وَاِذَا لَا تُنْتَعُونَ اِلَّا قَلِيلًا ۝
قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ
سُوْءًا ۝ اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۝ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ
دُونِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ
الْمُعْوِقِينَ مِنْكُمْ ۝ وَالْقَادِلِينَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمُّوا اِلَيْنَا
وَلَا يَأْتُونَ الْبَاسَ اِلَّا قَلِيلًا ۝ اَشْحَبَ عَلَيْكُمْ
۝ فَاِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَاٰهُمْ يَنْظُرُونَ اِلَيْكَ تَدَوَّرُ
اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۝ فَاِذَا
ذَهَبَ الْخَوْفُ سَكَنُوا ۝ بِالسِّنَةِ جَدَادٍ اَشْحَبَ عَلَى
الْخَبِيرِ ۝ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا ۝ فَاجْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ۝

मज़ल

(१९) यानी लौहे मेहफूज़ में.

(२०) रिसालत की तक्लीफ़ और दीने हक़ की दावत देने का.

(२१) खुशसियत के साथ. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ज़िक्र दूसरे नबियों पर मुक़दम करना उन सब पर आपकी फ़ज़ीलत के इज़हार के लिये है.

(२२) यानी नबियों से या उनकी तस्दीक करने वालों से.

(२३) यानी जो उन्होंने ने अपनी क़ौम से फ़रमाया और उन्हें तक्लीफ़ की वह दरिपाफ़्त फ़रमाए या ईमान वालों से उनकी तस्दीक का सवाल क़रे या ये मानी हैं कि नबियों को जो उनकी उम्मतों ने ज़बाब दिये वो पृष्ठ और इस सवाल से मन्क़सूद काफ़िरों को ज़लील करना और नीचा दिखाना है.

सूरए अहज़ाब - दूसरा रुकू

(१) जो उसने जंग अहज़ाब के दिन फ़रमाया जिसको मज़बए ख़न्दाक कहते हैं जो उहद की जंग से एक साल बाद था जबकि मुसलमानों का नबीय़े करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ मदीनए तैय्यिबह में घिराव कर लिया गया था.

(२) कुरैश और मत्फ़ान और कुरैज़ा और नुज़र के यहूदियों के.

(३) यानी फ़रिश्तों के लश्कर.

मज़बए अहज़ाब का संक्षिप्त विवरण : ये मज़बए शबाल चार या पाँच हिज़री में पेश आया जब बनी नुज़र के यहूदियों को जिला-बतन किया गया तो उनके बड़े मक्काए मुकर्रमा में कुरैश के पास पहुंचे और उन्हें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जंग की तरगीब दिलाई और बादा किया कि हम तुम्हारा साथ देंगे यहाँ तक कि मुसलमान नेस्तोताबूद हो जाएं. अबू सुफ़ियान ने इस तहरीक की बड़ी क़द्र की और कहा कि हमें दुनिया में वह प्यारा है जो मुहम्मद की दुश्मनी में हमारा साथ दे. फिर कुरैश ने उन यहूदियों से कहा कि तुम पहली किताब वाले हो बताओ तो हम हक़ पर हैं या मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम). यहूद ने कहा तुम्हीं हक़ पर हो. इसपर कुरैश बहुत ख़ुश हुए. इसी पर आयत उतरी "अलम तरा इलल लज़ीना ऊतू नसीबम मिनल किताबे यूमीनुना बिल जिबे बत ताग़ूते" यानी क्या तुमने वो न देखे जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला, ईमान लाते हैं बुत और शैतान पर - सूरए निसा, आयत ५१. फिर यहूदी मत्फ़ान और कैस और गीलान क़बीलों में गए और वहाँ भी यही तहरीक की. वो सब उनके सहमत हो गए. इस तरह उन्होंने जंगह ज़ग़ह दैरे किये और अरब के क़बीले क़बीले को मुसलमानों के ख़िलाफ़ तैयार कर लिया.

यह अल्लाह को आसान है (१९) वो समझ रहे हैं कि काफ़िरों के लश्कर अभी न गए (२०) और अगर लश्कर दोबारा आए तो उनकी (२१) ख्वाहिश होगी कि किसी तरह गाँव में निकल कर (२२) तुम्हारी खबरें पूछते (२३) और अगर वो तुम में रहते जब भी न लड़ते मगर थोड़े (२४) (२०)

तीसरा रूकू

वेशक तुम्हें अल्लाह के रसूल की पैरवी बेहतर है (१) उसके लिये कि अल्लाह और पिछले दिन की उम्मीद रखता हो और अल्लाह को बहुत याद करे (२) (२१) और जब मुसलमानों ने काफ़िरों के लश्कर देखे बोले यह है वह जो हमें वादा दिया था अल्लाह और उसके रसूल ने (३) और सच फ़रमाया अल्लाह और उसके रसूल ने (४) और उससे उन्हें न बढ़ा मगर ईमान और अल्लाह की रज़ा पर राज़ी होना (२२) मुसलमानों में कुछ वो मर्द हैं जिन्होंने सच्चा कर दिया जो एहद अल्लाह से किया था (५) तो उनमें कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका (६) और कोई राह देख रहा है (७) और वो ज़रा न बदले (२३) ताकि अल्लाह सच्चों को उनके सच का सिला दे और मुनाफ़िकों को अज़ाब करे अगर चाहे या उन्हें तौब दे, वेशक अल्लाह वाक़्तने बाल मेहरवान है (२४)

عَلَيْكُمْ

وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝ يَحْسِبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا وَإِنْ يَأْتِ الْأَحْزَابَ يَوْدُوا لَوْ أَنَّهُمْ بَادُوا فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَائِكُمْ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قُتِلُوا إِلَّا قَلِيلًا ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَ
الْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ۝ وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ
الْأَحْزَابَ ۖ قَالُوا هَذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَ
صَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۖ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا
وَتَسْلِيمًا ۝ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا
عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ۝ لِيَجْزِيَ اللَّهُ
الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ إِنْ شَاءَ
أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

مَنْزِلٌ

जब सब लोग तैयार हो गए तो ख़ुज़ाआ कबीले के कुछ लोगों ने सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को काफ़िरों की इन ज़बरदस्त तैयारियों की सूचना दी. यह सूचना पाते ही हुज़ूर ने हज़रत सलमान फ़ारसी रदियल्लाहो अन्हो की सलाह से ख़न्दक खुदवानी शुरू कर दी. इस ख़न्दक में मुसलमानों के साथ सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने खुद भी काम किया. मुसलमानों ने ख़न्दक की खुदाई का काम पूरा ही किया था कि मुश्किनी बारह हज़ार का भारी लश्कर लेकर उनपर टूट पड़े और मदीना तैयिबह का घिराव कर लिया. ख़न्दक मुसलमानों के और उनके बीच हाड़ल थी. उसको देखकर आश्चर्य में पड़ गए और कहने लगे कि यह ऐसी तदबीर है जिससे अरब लोग अब तक परिचित न थे. अब उन्होंने मुसलमानों पर तीर बरसाने शुरू किये और इस घिराव को पन्द्रह दिन या चौबीस दिन गुज़रे. मुसलमानों पर ख़ौफ़ मालिब हुआ और वो बहुत घबराए और परेशान हुए तो अल्लाह तआला ने मदद फ़रमाई और तेज़ हवा भेजी, बहुत सर्द और अथेरी रात में हवा ने दुश्मनों के ख़ेम गिरा दिये, तनावें तोड़ दीं, खूटे उखाड़ दिये, हाँडियाँ उलट दीं, आदमी ज़मीन पर गिरने लगे और अल्लाह तआला ने फ़रिश्ते भेज दिये जिन्होंने काफ़िरों को लपड़ा दिया और उनके दिलों में दहशत डाल दी. मगर इस जंग में फ़रिश्तों ने मार कट नहीं की. फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुज़ैफ़ा बिन यमान को ख़बर लेने के लिये भेजा. मौसम अत्यन्त ठण्डा था. यह हथियार लगाकर खाना हुए. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने चलते वक़्त उनके चेहरे और बदन पर दस्ते मुबारक फेरा जिससे उनपर सर्दी असर न कर सके और यह दुश्मन के लश्कर में पहुंच गए. वहाँ हवा तेज़ चल रही थी. काफ़िरों के लश्कर के सरदार अबू सुफ़ियान हवा की यह दशा देखकर उठे और उन्होंने कुरैश को पुकार कर कहा कि जासूसों से होशियार रहना. हर शख्स अपने बराबर बाले को देख ले. यह ऐलान होने के बाद हर शख्स ने अपने बराबर बाले को टटोलना शुरू किया. हज़रत हुज़ैफ़ा ने समझदारी से अपने दाईं तरफ़ वाले व्यक्ति का हाथ पकड़ कर पूछा तू क्यों है उसने कहा मैं फ़लाँ बिन फ़लाँ हूँ. इसके बाद अबू सुफ़ियान ने कहा ऐ गिरोहे कुरैश तुम ठहरने के मक़ाम पर नहीं हो. घोड़े और ऊंट हलाक हो चुके बनी कुरैज़ा अपने एहद से फिर गए और हमें उनकी तरफ़ से चिन्ता ज़तक ख़बरें पहुंची हैं. हवा ने जो हाल किया है वह तुम देख ही रहे हो. बस अब यहाँ से कूच कर दो. मैं कूच करता हूँ. यह कहकर अबू सुफ़ियान अपनी ऊंटनी पर सवार हो गए और लश्कर में कूच कूच का शोर मच गया. हवा हर चीज़ को उल्टे डालती थी. मगर यह हवा इस लश्कर से बाहर न थी. अब यह लश्कर भाग निकला और सामान को लाद कर ले जाना उसको बोज़ा हो गया. इसलिये बहुत सा सामान छोड़ गया. (जुमल)

(४) यानी तुम्हारा ख़न्दक खोदना और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमाँबरादारी में साबित क़दम रहना.

(५) यानी घाटी की ऊपरी ओर पूर्व से असद और ग़तफ़ान कबीलों के लोग मालिक बिन औफ़ नसरी और ऐनिया बिन हिस्न फ़राज़ी को सरदारी में एक हज़ार का समूह लेकर और उनके साथ तलीह बिन ख़ुवैलिद असदी बनी असद का समूह लेकर और हयई बिन अस्त्रतब बनी कुरैज़ा के यहूदियों का समूह लेकर और घाटी की निचली ओर पश्चिम से कुरैश और कनानह अबू सुफ़ियान

बिन हर्ब क नेतृत्व में.

(६) और रोअब और हैबत को सख्ती से हैरत में आ गई.

(७) खौफ और बेचैनी चरम सीमा को पहुंच गई.

(८) मुनाफ़िक तो यह भुमान करने लगे कि मुसलमानों का नामो निशान बाक़ी न रहेगा. काफ़िरों की इतनी बड़ी भीड़ सब को नष्ट कर डालेगी और मुसलमानों को अल्लाह तआला की तरफ से मदद आने और अपने विजयी होने की उम्मीद थी.

(९) और उनके सब और निष्ठा का परीक्षण किया गया.

(१०) यानी अक्कीदे की कमजोरी.

(११) ये बात मअतब बिन कुशैर ने काफ़िरों के लश्कर को देखकर कही थी कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) तो हमें फ़ारस और रूम को विजय का वादा देते हैं और हाल यह है कि हम में से किसी की मजाल भी नहीं कि अपने डेरे से बाहर निकल सके, तो यह वादा निरा धोखा है.

(१२) यानी मुनाफ़िकों के एक गिरोह ने.

(१३) यह क़ौल मुनाफ़िकों का है. उन्होंने मदीनए तैय्यिबह को यसरब कहा. मुसलमानों की यसरब नहीं कहना चाहिये. हदीस शरीफ में मदीनए तैय्यिबह को यसरब कहने से मना फ़रमाया गया है. हज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नागवार था कि मदीनए पाक को यसरब कहा जाए क्योंकि यसरब के मानी अच्छे नहीं है.

(१४) यानी रसूल पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लश्कर में.

(१५) यानी बनी हारिस और बनी सलमा.

(१६) यानी इस्लाम से फिर जाते.

(१७) यानी आख़िरत में अल्लाह तआला उसको दरियाफ़्त फ़रमाएगा कि क्यों पूरा नहीं किया गया.

(१८) क्योंकि जो लिखा है वह ज़रूर होकर रहेगा.

(१९) यानी अगर वक्त नहीं आया है तो भी भागकर थोड़े ही दिन, जितनी उम्र बाक़ी है उतने ही दुनिया को बरतोगे और यह एक थोड़ी सी मुदत है.

(२०) यानी उसको तुम्हारा क़त्ल और हलाक़त मन्ज़ूर हो तो उसको कोई दफ़ा नहीं कर सकता.

(२१) अमन और आफ़ियत अतः फ़रमाकर.

(२२) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को छोड़ दो, उनके साथ जिहाद में न रहो. इसमें जान का ख़तरा है. यह आयत मुनाफ़िकों के हक में उतरी. उनके पास यहूदियों ने संदेश भेजा था कि तुम क्यों अपनी जानें अबू सुफ़ियान के हाथों से हलाक़ कराना चाहते हो. उसके लश्करी इस बार अगर तुम्हें पाए तो तुम में से किसी को बाक़ी न छोड़ेंगे. हमें तुम्हारा अन्देशा है. तुम हमारे भाई और पड़ोसी हो. हमारे पास आजाओ. यह ख़बर पाकर अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल मुनाफ़िक और उसके साथी ईमान वालों को अबू सुफ़ियान और उसके साथियों से डरा कर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का साथ देने से रोकने लगे और इसमें उन्होंने बहुत कोशिश की लेकिन जिस क़द्र उन्होंने कोशिश की, ईमान वालों की दृढ़ता और इरादा और बढ़ता गया.

(२३) रियाकारी और दिख़ावट के लिये.

(२४) और अमन और माल हासिल हो.

(२५) और ये कहें हमें ज़्यादा हिस्सा दो. हमारी ही वजह से तुम विजयी हुए हो.

(२६) हकीक़त में अगरचे उन्होंने ज़वान से ईमान का इज़हार किया.

(२७) यानी चूंकि वास्तव में वो ईमान वाले न थे इसलिये उनके सारे ज़ाहिरी कर्म जिहाद वगैरह सब वातिल कर दिये.

(२८) यानी मुनाफ़िक लोग अपनी कायरता और नामर्दी से अभी तक यह समझ रहे हैं कि कुरैश के काफ़िर और ग़तफ़ान और यहूदी वगैरह अभी तक मैदान छोड़कर भागे नहीं हैं अगरचे हकीक़ते हाल यह है कि वो फ़रार हो चुके.

(२९) यानी मुनाफ़िकों की अपनी नामर्दी के कारण यही आरज़ू और --

(३०) मदीनए तैय्यिबह के आने जाने वालों से.

(३१) कि मुसलमानों का क्या अंज़ाम हुआ. काफ़िरों के मुकाबले में उनकी क्या हालत रही.

(३२) रियाकारी और उज्र रखने के लिये, ताकि यह कहने का मौक़ा मिल जाए कि हम भी तो तुम्हारे साथ जंग में शरीक थे.

सूरए अहज़ाब -- तीसरा स्कू

(१) उनका अच्छी तरह अनुकरण करो और अल्लाह के दीन की मदद करो और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का साथ न छोड़ो और मुसीबतों पर सब्र करो और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सुन्नतों पर चलो. यह बेहतर है.

(२) हर अवसर पर उसका ज़िक्र करो, ख़ुशी में भी, ग़म में भी, तंगी में भी, मुशहली में भी.

(३) कि तुम्हें सख्ती और बला पहुंचेगी और तुम परीक्षा में डाले जाओगे और पहलों की तरह तुम पर सख़्तियाँ आएंगी और लश्कर जमा हो हो कर तुम पर दूटेंगे और अन्त में तुम विजयी होगे और तुम्हारी मदद फ़रमाई जाएगी जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है : "अम हसिबतुम अन तदख़ुलुल जन्नता व लम्मा यातिकुम भसलुल लज़ीना ख़लौ मिन क़बलिकुम " यानी क्या इस

और अल्लाह ने काफ़िरों को^(१) उनके दिलों की जलन के साथ पलटाय़ा कि कुछ भला न पाया^(२) और अल्लाह ने मुसलमानों को लड़ाई की क़िफ़ायत फ़रमादी^(३) और अल्लाह ज़बरदस्त इज़्ज़त वाला है^(४) और जिन किताब वालों ने उनकी मदद की थी^(५) उन्हें उनके क़िलों से उतारा^(६) और उनके दिलों में रोव डाला उनमें एक ग़िरोह को तुम क़त्ल करते हो^(७) और एक ग़िरोह को क़ैद^(८) ^(२६) और हमने तुम्हारे होथ लगाए उनकी ज़मीन और उनके मक़ान और उनके माल^(९) और वह ज़मीन जिसपर तुमने अभी क़दम नहीं रखा है^(१०) और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है^(२७)

चौथा रूकू

ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) अपनी वीबियों से फ़रमा दो अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और इसकी आरायश चाहती हो^(१) तो आओ मैं तुम्हें माल दूँ^(२) और अच्छी तरह छोड़ दूँ^(३) ^(२८) और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक अल्लाह ने तुम्हारी नेकी वालियों के लिये बड़ा अज़्र तैयार कर रखा है^(४) ऐ नबी की वीबियों जो तुममें खुली शर्म के ख़िलाफ़ कोई ज़ुरअत करे^(५) उसपर औरों से दूना अज़ाब होगा^(६) और यह अल्लाह को आसान है^(२९)

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا وَ
كَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ۝
وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ
صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ
وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ۝ وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَوَدْيَارَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَمْ تَطُوهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرًا ۝ يَأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَ زُوجَاكَ إِنْ
كُنْتُمْ تُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ
أُمْتِعْكُمْ وَأَسْرِ حُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝ وَإِنْ كُنْتُمْ
تُرِيدُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالذَّارَ الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ
أَعَدَّ لِلْمُحْسِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ يٰنِسَاءَ النَّبِيِّ
مَنْ يَأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ يُضَعَفْ لَهَا
الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

مَنْ

गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर अगलां की सी रुदाद न आई - (सुरह बकरह, आयत २१४) और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने सहाबा से फ़रमाया कि पिछली रात या दस रातों में लश्कर तुम्हारी तरफ़ आने वाले हैं, जब उन्होंने देखा कि उस मीआद पर लश्कर आया तो कहा यह है वह जो हमें अल्लाह और उसके रसूल ने बाँदा दिया था।

(४) यानी जो उसके वादे हैं, सब सच्चे हैं, सब यकीनन वाक़े होंगे, हमारी मदद भी होगी, हमें विजय भी दी जाएगी और मक्का पर मुक़र्रमा और रुम और फ़ारस भी फ़तह होंगे।

(५) हज़रत उस्मान ग़नी और हज़रत तलहा और हज़रत सईद बिन ज़ैद और हज़रत हमज़ा और हज़रत मुसअब बग़ैरह रदियल्लाहो अन्हुमा ने दख़्त मानी थी कि वो जब रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जिहाद का मौक़ा पाएंगे तो डटे रहेंगे यहाँ तक कि शहीद हो जाएँ, उनकी निस्वत इस आयत में इशारा हुआ कि उन्होंने अपना वादा सच्चा कर दिखाया।

(६) जिहाद पर डटा रहा यहाँ तक कि शहीद हो गया जैसे कि हज़रत हमज़ा और हज़रत मुसअब रदियल्लाहो अन्हुमा।

(७) और शहादत का इन्तिज़ार कर रहा है जैसे कि हज़रत उस्मान और हज़रत तलहा रदियल्लाहो अन्हुमा।

(८) अपने एहद पर वैसे ही डटे रहे, शहीद हो जाने वाले भी और शहादत का इन्तिज़ार करने वाले भी, उन मुनाफ़िकों और दिल के बीमार लोगों पर धिक्कार है जो अपने एहद पर कायम न रहे।

(९) यानी कुरैश और ग़तफ़ान के लश्क़ों को, जिनका ऊपर ज़िक्र हो चुका है।

(१०) नाक़ाम और नामुराद वापस हुए।

(११) कि दुश्मन फ़रिश्तों की तकदीरों और हवा की तीव्रता से भाग निकले।

(१२) यानी बनी कुरैज़ा ने रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुक़ाबले में कुरैश और ग़तफ़ान बग़ैरह की मदद की थी।

(१३) इसमें ग़ज़वए बनी कुरैज़ा का बयान है।

ग़ज़वए बनी कुरैज़ा : यह जी-क़अदह सन चार या सन पाँच हिज़री के आख़िर में हुआ, जब ग़ज़वए ख़न्दक में रात को विरोधियों के लश्कर भाग गए जिसका ऊपर की आयतों में बयान हुआ है, उस रात की सुबह को रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और सहाबा मदीनए तैयिबह में तशरीफ़ लाए और हथियार उतार दिये, उस रोज़ ज़ोहर के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का सरे मुबारक धोया जा रहा था, जिब्रैले अमीन हाज़िर हुए और उन्होंने अर्ज किया कि हुज़ूर ने हथियार रख दिये, फ़रिश्तों ने चालीस रोज़ से हथियार नहीं रखे हैं, अल्लाह तआला आपको बनी कुरैज़ा की तरफ़ जाने का हुक्म फ़रमाता है, हुज़ूर ने हुक्म

फरमाया कि पुकार लगा दी जाए बनी कुरैजा में जाकर. हुजूर यह फरमा कर खाना हां गए. और मुसलमान चलने शुरू हुए और एक के बाद दूसरे हुजूर की खिदमत में पहुंचते रहे यहाँ तक कि कुछ लोग ईशा नमाज़ के बाद पहुंचे लेकिन उन्होंने उस वक़्त तक अस्त्र की नमाज़ नहीं पढ़ी थी क्योंकि हुजूर ने बनी कुरैजा में पहुंच कर अस्त्र की नमाज़ पढ़ने का हुक्म फरमाया था इसलिये उस रोज़ उन्होंने अस्त्र की नमाज़ ईशा बाद पढ़ी और इसपर न अल्लाह तआला ने उनकी पकड़ फरमाई न रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने. इस्लामी लश्कर ने पच्चीस दिनों तक बनी कुरैजा का घिराव रखा. इससे वो तंग हो गए और अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोअव डाला. रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे फरमाया कि तुम मेरे हुक्म पर कितनों से उतरोगे? उन्होंने इन्कार किया तो फरमाया क्या कबीला औस के सरदार सअद बिन मआज़ के हुक्म पर उतरोगे? इसपर वह राजी हुए और सअद बिन मआज़ को उनके बारे में हुक्म देने पर मामूर किया. हज़रत सअद ने हुक्म दिया कि मर्द क़त्ल कर दिये जाएं, औरतें और बच्चे कैद किये जाएं. फिर मदीने के बाज़ार में ख़न्दक खोदी गई और वहाँ लाकर उन सब की गर्दन मार दी गई. उन लोगों में बनी नुज़ैर कबीले का मुखिया कअब बिन असद भी था और ये लांग छ सौ या सात सौ जवान थे जो गर्दन काटकर ख़न्दक में डाल दिये गए. (मदारिक व जुमल)

(१४) यानी मुक़तिलीन को.

(१५) औरतों और बच्चों को.

(१६) नक़्द और सामान और मवेशी, सब मुसलमानों के क़ब्ज़े में आई.

(१७) इस ज़मीन से मुराद ख़ैबर है जो कुरैजा की जीत के बाद मुसलमानों के क़ब्ज़े में आया या वह हर ज़मीन मुराद है जो क़यामत तक फ़तह होकर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आने वाली है.

सुरए अहज़ाब - चौथा खूक

(१) यानी अगर तुम्हें बहुत ग़ारा माल और ऐश के साधन दरकार हैं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पाक बीबियों ने आपसे दुनियावी सामान तलब किये और गुज़ारे के खर्च को बढ़ाने की दरखास्त की. यहाँ तां पाकीज़गी अपनी चरम सीमा पर थी और दुनिया का सामान जमा करना ग़वारा ही न था इस लिये यह तलब सरकार के दिल पर बोझ हुई. और तब यह आयत उतरी और हुजूर की मुक़द्दस बीबियों को समझाया गया. उस वक़्त हुजूर की तो बीबियाँ थीं. पाँच कुरैश से, हज़रत आयशा बिनते अयी बक़र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो, हज़रत हफ़सा बिनते उमरे फ़ारक़, उम्मे हबीबह बिनते अबू सुफ़ियान, उम्मे सलमा बिनते अबी उमैया, सौदह बिनते ज़म्अह और चार बीबियाँ गैर कुरैश, ज़ैनब बिनते जहश असदियह, मेमूनह बिनते हारिस हिलालियह, सफ़ियह बिनते हयई बिन अरज़त ख़ैबरियह, जवैरियह बिनते हारिस मुसलिकियह (सबसे अल्लाह तआला राजी). सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सबसे पहले हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा को यह आयत सुनाकर इज़्तिहार दिया और फरमाया कि जल्दी न करो अपने माँ बाप से सलाह करके जो राय हो उस पर अमल करो. उन्होंने अज़ा किया, हुजूर के मामले में सलाह कैसी. मैं अल्लाह को और उसके रसूल की और आख़िरत को चाहती हूँ, और बाँकी बीबियाँ ने भी यही जवाब दिया. जिस औरत को इज़्तिहार दिया जाए वह अगर अपने शौहर को इज़्तिहार करे तो तलाक़ बाँके नहीं होती और अगर अपने नफ़स को इज़्तिहार करे तो हमारे नज़दीक़ तलाक़ बाइन बाँके हो जाती है.

(२) जिस औरत के साथ निकाह के बाद सोहबत हुई हो उसको तलाक़ दी जाए तो कुछ सामान देना मुतहब है और वह सामान तीन कपड़ों का जोड़ा होता है. यहाँ माल से वही मुग़द है. जिस औरत का मेहर निधारित न किया गया हो उसको सोहबत में पहले तलाक़ दी तो यह जोड़ा देना बाज़िब है.

(३) बग़ैर किसी नुक़सान के.

(४) जैसे कि शौहर की फ़रमाँवरदारी में कमी करना और उसके साथ दुर्व्यवहार करना, क्योंकि बदकारी से अल्लाह तआला नबियों की बीबियों की पाक रखता है.

(५) क्योंकि जिस शख्स की क़ज़ीलत ज़्यादा होती है उससे अगर कुसूर बाँके हो तो वह कुसूर भी दूसरों के कुसूर से ज़्यादा सख़्त करार दिया जाता है. इसीलिये आलम का गुनाह जाहिल के गुनाह से ज़्यादा बुरा होता है और इसी लिये आज्ञादों की सज़ा शरीअत में गुलामों से ज़्यादा मुकर्रर है. और नबी अलैहिस्सलामो वसल्लम की बीबियाँ सारे जगत की औरतों से ज़्यादा बुजुर्गी रखती हैं इसलिये उनकी थोड़ी सी बात सख़्त पकड़ के क़ाबिल है. “फ़ाहिशा” यानी हया के ख़िलाफ़ खुली ज़ुरअत का शब्द जब मअरिफ़ह होकर आए तो उससे ज़िना और लिवाहत मुग़द होती है और अगर नकरह गैर मौसूफ़ह होकर लाया जाए तो उससे सारे गुनाह मुग़द होते हैं और जब मौसूफ़ह होकर आए तो उससे शौहर की नाफ़रमानी और उससे लड़ना झगड़ना मुग़द होता है. इस आयत में नकरह मौसूफ़ह है इसीलिये इससे शौहर की इत्ताअत में कमी और उससे दुर्व्यवहार मुग़द है जैसा कि हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से नक़ल किया गया है. (जुमल बग़ैरह)

बाईसवाँ पारा - व मैय-यकनुत (सूरए अहज़ाब जारी)

और^(६) जो तुम में फ़रमाँवरदार रहे अल्लाह और रसूल की और अच्छा काम करे हम उसे औरों से दूना सवाब देंगे^(७) और हमने उसके लिये इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है^(८) (३१) ऐ नबी की बीबियो तुम और औरतों की तरह नहीं हो^(९) अगर अल्लाह से डरो तो बात में ऐसी नमी न करो कि दिल का रोगो कुछ लालच करे^(१०) हाँ अच्छी बात कहो^(११) (३२) और अपने घरों में ठहरी रहो ओर बेपर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलियत की बेपर्दगी^(१२) और नमाज़ कायम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और रसूल का हुक्म मानो, अल्लाह तो यही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे^(१३) (३३) और याद करो जो तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती हैं अल्लाह की आयतें ओर हिकमत^(१४) वेशक अल्लाह हर बारीकी जानता ख़बरदार है^(३४)

पाँचवाँ सूकू

वेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें^(१) ईमान वाले और ईमान वालियाँ और फ़रमाँवरदार और फ़रमाँवरदारें और सच्चे और सच्चियाँ^(२) और सब्र वाले और सब्र वालियाँ और आजिज़ी करने वाले और आजिज़ी करने वालियाँ और

وَمَنْ يَفْعَلْ مِنْكُمْ خَيْرًا	وَمَنْ يَفْعَلْ مِنْكُمْ خَيْرًا
تُؤْتِيهَا أَجْرَهَا مَرْتِينٍ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا	تُؤْتِيهَا أَجْرَهَا مَرْتِينٍ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ كَسِتُنَّ كَأَحَدٍ مِنَ النِّسَاءِ إِنْ اتَّقَيْتُنَّ	يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ كَسِتُنَّ كَأَحَدٍ مِنَ النِّسَاءِ إِنْ اتَّقَيْتُنَّ
فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ	فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ
مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا وَقُرْنِ فِي بَيْوتِكُنَّ	مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا وَقُرْنِ فِي بَيْوتِكُنَّ
وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَى وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ	وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَى وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ
وَاتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنَّمَا يُرِيدُ	وَاتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنَّمَا يُرِيدُ
اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ	اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ
تَطْهِيرًا وَأَذْكُرْنَ مَا يُتْلَى فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ	تَطْهِيرًا وَأَذْكُرْنَ مَا يُتْلَى فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ
آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا	آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا
إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ	إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَ	وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَ
الصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَ	الصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَ

مَنْزِل

(६) ऐ नबी अल्लैहिससलातो वससलाम की बीबियो.

(७) यानी अगर औरों को एक नेकी पर दस गुना सवाब देंगे तो तुम्हें बीस गुना, क्योंकि सारे जगत की औरतों में तुम्हें अधिक सम्मान और बुजुर्गी हासिल है और तुम्हारे अमल में भी दो हिस्से हैं एक इत्ताअत की अदा, दूसरे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को राज़ी रखने की कोशिश और क़नाअत और अच्छे व्यवहार के साथ हुज़ूर को ग्रुश करना.

(८) जन्नत में.

(९) तुम्हारा दर्जा सबसे ज़्यादा है और तुम्हारा इनाम सबसे बढ़कर. जगत की औरतों में कोई तुम्हारे बराबर की नहीं.

(१०) इसमें अदब की तालीम है कि अगर ज़रूरत के हिसाब से किसी ग़ैर मर्द से पर्दे के पीछे से बात करनी पड़े तो कोशिश करो कि लहजे में नज़ाकत न आने पाए और बात में लोच न हो. बात बहुत ही सादगी से की जाए. इज़्ज़त वाली महिलाओं के लिये यही शान की बात है.

(११) दीन और इस्लाम की और नेकी की तालीम और नसीहत व उपदेश की, अगर ज़रूरत पेश आए, मगर बेलोच लहजे से.

(१२) अगली जिहालत से मुराद इस्लाम से पहले का ज़माना है. उस ज़माने में औरतें इतराती हुई निकलती थीं, अपनी सज्जध और श्रंगार का इज़हार करती थीं कि अजनबी मर्द देखें, लिबास ऐसे पहनती थीं जिनसे बदन के अंग अच्छी तरह न छुपें और पिछली जिहालत से आख़िरी ज़माना मुराद है जिसमें लोगों के कर्म पहलों की तरह हो जाएंगे.

(१३) यानी गुनाहों की गन्दगी से तुम प्रदूषित न हो. इस आयत से पहले बैत की फ़ज़ीलत साबित होती है. और पहले बैत में नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बीबियों और हज़रत ख़ातूने जन्नत बीबी फ़ातिमा ज़ह्रा और अली मुर्तज़ा और हसनैन करीमैन (यानी सैयदना इमाम हसन और सैयदना इमाम हुसैन) रदियल्लाहो अन्हुम सब दाख़िल हैं. आयतों और हदीसों को जमा करने से यही नतीजा निकलता है और यही हज़रत इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी रहमतुल्लाह अलैह से नक़ल किया गया है. इन आयतों में पहले बैते रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नसीहत फ़रमाई गई है ताकि दो गुनाहों से बचें और तक्रवा और परहेज़गारी के पाबन्द रहें. गुनाहों को नापाकी से और परहेज़गारी को पाकी से ज़मा दो गई क्योंकि गुनाह करने वाला उनसे ऐसा ही सना होता है जैसा शरीर गन्दगी से. इस अन्दाज़े क़लाम से मक़सद यह है कि समझ वालों को गुनाहों से नफ़रत दिलाई जाए और तक्रवा व परहेज़गारी की तरगीब दी जाए.

खैरात करने वाले और खैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और अल्लाह को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सबके लिये अल्लाह ने बख्शिश और वज़ा सवाब तैयार कर रखा है (३५) और न किसी मुसलमान मर्द न मुसलमान औरत को पहुंचता है कि जब अल्लाह व रसूल कुछ हुक्म फ़रमा दें तो उन्हें अपने मामले का कुछ इख्तियार रहे (३६) और जो हुक्म न माने अल्लाह और उसके रसूल का वह वेशक खुली गुमराही बहका (३६) और ऐ मेहबूब याद करो जब तुम फ़रमाते थे उससे जिसे अल्लाह ने नेअमत दी (३७) और तुमने उसे नेअमत दी (३८) कि अपनी बीवी अपने पास रहने दे (३८) और अल्लाह से डर (३९) और तुम अपने दिल में रखते थे वह जिसे अल्लाह को ज़ाहिर करना मंज़ूर था (४०) और तुम्हें लोगों के तअने का अन्देशा (डर) था (४१) और अल्लाह ज़्यादा सज़ावार है कि उसका ख़ौफ़ रखो (४२) फिर जब ज़ैद की गरज़ उससे निकल गई (४३) तो हमने वह तुम्हारे निकाह में दे दी (४३) कि मुसलमानों पर कुछ हर्ज न रहे उनके लेपालकों की बीबियों में जब उनसे उनका काम ख़त्म हो जाए (४३) और अल्लाह का हुक्म होकर रहना (४६) नबी पर कोई हर्ज नहीं उस बात में जो अल्लाह ने उसके लिये मुकर्रर फ़रमाई (४४) अल्लाह का

التَّصَدِّقِينَ وَالْمُتَّصِدِّقَاتِ وَالصَّامِعِينَ وَالصَّامِعَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝
وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا لِمُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلًّا مُبِينًا ۝ وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتُخْفِي النَّاسُ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَخْفَاهُ ۝ فَلَمَّا قَضَى زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا وَوَجَدْنَاهَا لِبْنَى لَا يَكُونُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۝ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ سُنَّةَ اللَّهِ

मज़ल

(३४) यानी सुन्नत.

सूरए अहज़ाब - पाँचवाँ सूक़

(१) अरमा बित्ते अभीस जब अपने शौहर जअफ़र बिन अबी तालिब के साथ जहश से वापिस आई तो नबीसे करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बीबियों से मिलकर उन्होंने पूछा कि क्या औरतों के बारे में भी कोई आयत उतरती है. उन्होंने फ़रमाया नहीं. तो अस्मा ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर औरतें बड़े टोटे में हैं. फ़रमाया, क्यों. अर्ज़ किया उनका ज़िक्र ख़ैर के साथ होता ही नहीं जैसा कि मर्दों का होता है. इसपर यह आयत उतरी और उनके साथ उनकी तारीफ़ फ़रमाई गई और दर्जों में से पहला दर्जा इस्लाम है जो खुदा और रसूल की फ़रमाओबरदारी है. दूसरा ईमान कि वह सही अक्कीदे और ज़ाहिर वातिद का एक सा सच्चा होना है. तीसरा दर्जा ताअत है.

(२) इसमें चौथे दर्जे का बयान है कि वह नियत की सच्चाई और कहने व करने की सत्यता है. इसके बाद पाँचवें दर्जे सब का बयान है कि अल्लाह के आदेशों का पालन करना और जिन बातों से मना किया गया है उनसे दूर रहना, चाहे नफ़स को कितना ही बुरा लगे. जो काम भी हो अल्लाह की रज़ा के लिये इख्तियार किया जाए. इसके बाद खुशूअ यानी सच्ची लगन का बयान है जो इबादतों और ताअतों में दिलों और पूरे शरीर के साथ एकाग्रता का नाम है. इसके बाद सातवें दर्जे सदक़े का बयान है जो अल्लाह तआला के अता किये हुए माल में से उसकी राह में फ़र्ज़ या नफ़ल की सूरत में देना है. फिर आठवें दर्जे रोज़े का बयान है. यह भी फ़र्ज़ और नफ़ल दोनों को शामिल है. कहा गया है कि जिसने हर हफ़्ते एक दिरहम सदक़ा किया, वह 'मुसहिफ़ीन' (यानी सदक़ा देने वालों) में और जिसने हर माह अथ्यामे बैज़ के तीन रोज़े रखे, वह 'साइमीन' (यानी रोज़ा रखने वालों) में शुमार किया जाता है. इसके बाद नवें दर्जे इफ़्रत यानी पोकीज़गी का बयान है और वह यह है कि अपनी पारसाई की मेहफूज़ रखे और जो हलाल नहीं है, उससे बचे. सब से आख़िर में दसवें दर्जे ज़िक्र की फ़सरत का बयान है. ज़िक्र में तस्बीह, तहमीद, तहलील, तकबीर, कुरआन का पाठ, दीन का इल्म पढ़ना, तमाज़, नसीहत, उपदेश, मौलाद शरीफ़, तअत शरीफ़ पढ़ना, सब दाख़िल हैं. कहा गया है कि बन्दा ज़िक्र करने वालों में तब गिना जाता है जब कि वह खड़े बैठे लेटे हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र करे.

(३) यह आयत ज़ैनब बित्ते जहश असदियह और उनके भाई अब्दुल्लाह बिन जहश और उनकी वानिदा उमैमह बित्ते अब्दुल मुतलिब के दूक़ में उतरी. उमैमह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फुफी थीं. वाकिआ यह था कि ज़ैद बिन हारिसा जिनको रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आज़ाद किया था और वह हुज़ूर ही की ख़िदमत में रहते थे, हुज़ूर ने ज़ैनब के लिये उनका प्रयाम

दिया. उसको ज़ैनब और उनके भाई ने मंजूर नहीं किया. इसपर यह आयत उतरी . और हज़रत ज़ैनब और उनके भाई इस हुक्म को सुनकर राज़ी हो गए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत ज़ैद का निकाह उनके साथ कर दिया और हुज़ूर ने उनका मेहर दस दीनार, साठ दिरहम, एक जोड़ा कपड़ा, पचास मुद (एक नाप है) खाना, तीस साअ खजूरें दीं. इस से मालूम हुआ कि आदमी को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमाँबंदारी हर सूरत में शायिब है और नबी अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले में कोई अपने नफ़स का ख़ुद मुख़्तार नहीं. इस आयत से यह भी साबित हुआ कि अग्र-बुज़ूब यानी आनिवार्यता के लिये होता है. कुछ तफ़सीलों में हज़रत ज़ैद की गुलाम कहा गया है मगर यह भूल से ख़ाली नहीं क्योंकि वह आज़ाद थे.

(४) इस्लाम की, जो बड़ी महान नेअमत है.

(५) आज़ाद फ़रमा कर. इस से मुराद हज़रत ज़ैद बिन हारिसह हैं कि हुज़ूर ने उन्हें आज़ाद किया और उनका पालन पोषण किया.

(६) जब हज़रत ज़ैद का निकाह हज़रत ज़ैनब से हो चुका तो हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास अल्लाह तआला की तरफ़ से वही आई कि ज़ैनब आपकी बीबियों में दाख़िल होंगी, अल्लाह तआला को यही मंज़ूर है. इसकी सूरत यह हुई कि हज़रत ज़ैद और ज़ैनब के बीच ज़मी नहीं और हज़रत ज़ैद ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से हज़रत ज़ैनब की तेज़ ज़बानी और कड़वे बोलों और नाफ़रमानी और अपने आपको बड़ा समझने की शिकायत की. ऐसा बार बार इतिफ़ाक़ हुआ. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत ज़ैद को समझा देते. इसपर ये आयत उतरी.

(७) ज़ैनब पर घमण्ड और शौहर की तकलीफ़ पहुंचाने के इल्ज़ाम लगाने में.

(८) यानी आप यह ज़ाहिर नहीं फ़रमाते थे कि ज़ैनब से तुम्हारा निवाह नहीं हो सकेगा और तलाक़ जरूर बाँके होगा. और अल्लाह तआला उन्हें अज़वाजे मुतहिहरात में दाख़िल करेगा और अल्लाह तआला की इसका ज़ाहिर करना मंज़ूर था.

(९) यानी जब हज़रत ज़ैद ने ज़ैनब की तलाक़ दे दी तो आप को लोगों के तअनों का अन्देशा हुआ कि अल्लाह तआला का हुक्म तो है हज़रत ज़ैनब के साथ निकाह करने का और ऐसा करने से लोग तअना देंगे कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ऐसी औरत से निकाह कर लिया जो उनके मुंह बोले बेटे के निकाह में रही थी. इससे मालूम हुआ कि नेक काम में बेजा तअना करने वालों का कुछ अन्देशा न करना चाहिये.

(१०) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सब से ज़्यादा अल्लाह का ख़ौफ़ रखने वाले और सब से ज़्यादा तक्वा वाले हैं, जैसा कि हदीस शरीफ़ में है.

(११) और हज़रत ज़ैद ने हज़रत ज़ैनब को तलाक़ दे दी और इदत गुज़र गई.

(१२) हज़रत ज़ैनब की इदत गुज़रने के बाद उनके पास हज़रत ज़ैद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का पयाम लेकर गए और उन्होंने ने सर झुका कर भरपूर शर्म और अदब से उन्हें यह पयाम पहुंचाया. उन्होंने ने कहा कि इस मामले मे मैं अपनी राय की कुछ दरख़्त नहीं देती, जो मेरे रब को मंज़ूर हो, उसपर राज़ी हूँ. यह कहकर वह अल्लाह की बारगाह में मुतवज्जहे हुई और उन्होंने ने नमाज़ शुरु कर दी और यह आयत नाज़िल हुई. हज़रत ज़ैनब की इस निकाह से बहुत खुशी और फ़ख़्र हुआ. सैयदे आलम ने इस शादी का बलीमा बड़ी शान से किया.

(१३) ताकि यह मालूम हो जाए कि लेपालक की बीबी से निकाह जायज़ है.

(१४) यानी अल्लाह तआला ने जो उनके लिये जायज़ किया और निकाह के बारे में जो बसअत उन्हें अता फ़रमाई उसपर इक़दाम करने में कुछ हर्ज नहीं.

दस्तूर(तरीका) चला आ रहा है उनमें जो पहले गुज़र चुके^(१५) और अल्लाह का काम मुक़रर तकदीर है^(३८) वो जो अल्लाह के पयाम पहुंचाते और उससे डरते और अल्लाह के सिवा किसी का ख़ौफ़ न करते और अल्लाह बस है हिसाब लेने वाला^(१६) ^(३९) मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नहीं^(१७) हाँ अल्लाह के रसूल हैं^(१८) और सब नबीयों के पिछले^(१९) और अल्लाह सब कुछ जानता है^(४०)

छटा रुकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह को बहुत याद करो ^(४१) और सुबह शाम उसकी पाकी बोलो^(१९) ^(४२) वही है कि दुरुद भेजता है तुम पर वह और उसके फ़रिश्ते^(२०) कि तुम्हें अंधेरियों से उजाले की तरफ़ निकाले^(२१) और वह मुसलमानों पर मेहरबान है^(४३) उनके लिये मिलते वक़्त की दुआ सलाम है^(२२) और उनके लिये इज़ज़त का सवाब तैयार कर रखा है^(४४) ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले(नबी) बेशक हमने तुम्हें भेजा हाज़िर नाज़िर^(२३) और खुशख़बरी देता और डर सुनाता^(२४) ^(४५) और अल्लाह की तरफ़ उसके हुक़म से बुलाता^(२५) और चमका देने वाला आफ़ताब^(२६) ^(४६) और ईमान वालों को खुशख़बरी दो कि उनके लिये अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल(कृपा) है^(४७)

ع

فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَفْعُورًا ۖ الَّذِينَ يَبْتَغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۖ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمُ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۖ وَسَبِّحُوا بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۖ هُوَ الَّذِي يُصَلِّيٰ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۖ تَحِيَّتُكُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۖ وَاعِدَ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۖ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۖ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ۖ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَن لَهُم مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ۖ وَلَا

مَنْ

(१५) यानी नबीयों को निकाह के सिलसिले में वसअतें दी गई कि दूसरों से ज़्यादा औरतें उनके लिये हलाल फ़रमाई गई जैसा कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की सौ बीबियाँ और हज़रत सुलैमान को तीस बीबियाँ थीं। यह उनके ख़ास अहक़ाम हैं उनके अलावा दूसरे को जायज़ नहीं। न कोई इसपर ऐतिराज़ कर सकता है। अल्लाह तआला अपने बन्दों में जिसके लिये जो हुक़म फ़रमाए उसपर किसी को ऐतिराज़ की क्या मजाल। इसमें यहूदियों का रूढ़ है जिन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर चार से ज़्यादा निकाह करने पर तअनना दिया था। इसमें उन्हें बताया गया कि यह हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये ख़ास है जैसा कि पहले नबीयों के लिये कई बीबियाँ रखने के ख़ास आदेश थे।

(१६) तो उसी से डरना चाहिये।

(१७) तो हज़रत ज़ैद के भी आप हकीक़त में बाप नहीं कि उनकी मन्कूहा आपके लिये हलाल न हुई। कासिम, तैयबो ताहिर और हज़रत इब्राहीम हुज़ूर के बेटे थे, मगर इस उम्र को न पहुंचे कि उन्हें मर्द कहा जाए। उन्होंने बचपन में वफ़ात पाई।

(१८) और सब रसूल नसीहत करने वाले, शफ़क़त रखने वाले और इज़ज़त किये जाने के क़ाबिल और उनकी फ़रमाँवरदारी अतिवार्थ होने के कारण अपनी उम्मत के बाप कहलाते हैं बल्कि उनके अधिकार सगे बाप के हुक्क़ से बहुत ज़्यादा हैं लेकिन इससे उम्मत हकीक़ी औलाद नहीं हो जाती और हकीक़ी औलाद के तमाम अहक़ाम विरासत वसौरह उसके लिये साबित नहीं होते।

(१९) यानी आख़िरी नबी कि नबुव्वत आप पर ख़त्म हो गई। आपकी नबुव्वत के बाद किसी को नबुव्वत नहीं मिल सकती यहाँ तक कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उतरेंगे तो अगरचे पहले नबुव्वत पा चुके हैं मगर उतरने के बाद शरीअतें मुहम्मदिया पर चलेंगे और इसी शरीअत पर हुक़म करेंगे और आप ही के क़िबले यानी काबए मुअज़ज़मह की तरफ़ नमाज़ पढ़ेंगे। हुज़ूर का आख़िरी नबी होना क़तई है, कुरआनी आयतें भी साबित करती हैं और बहुत सी सही हदीसें भी। इन सब से साबित है कि हुज़ूर सब से पिछले नबी ह। आपके बाद किसी और को नबुव्वत मिलना संभव जाने, वह ख़त्म नबुव्वत का इन्कार करने वाला काफ़िर और इस्लाम से बाहर है।

सूरए अहज़ाब - छटा रुकू

(१) क्योंकि सुबह और शाम के औक़ात रात दिन के फ़रिश्तों के जमा होने के वक़्त हैं और यह भी कहा गया है कि रात दिन का ज़िक़र करने से ज़िक़र की हमेशगी की तरफ़ इशारा किया गया है।

(२) हज़रत अबस बिन मालिक रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि जब आयत “ इन्नल्लाहा व मलाइकतहू युसल्लूना अलन नबी” उतरी तो हज़रत सिद्दीके अक़बर रदियल्लाहो अन्हो ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम, जब आपके अलाह तआला कोई फ़ज़ल और बुजुर्गी अता फ़रमाता है तो हम नियाज़मन्दों को भी आपके तूफ़ैल में नवाज़ता है। इसपर अल्लाह

और काफ़िरो और मुनाफ़िकों की खुशी न करो और उनकी ईजा पर दरगुज़र (क्षमा) फ़रमाओ^(१) और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह वस है कारसाज़ (काम बनाने वाला) ४८ ऐ ईमान वालो जब तुम मुसलमान औरतों से निकाह करो फिर उन्हें वे हाथ लगाए छोड़ दो तो तुम्हारे लिये कुछ इहत नहीं जिसे गिनो^(२) तो उन्हें कुछ फ़ायदा दो^(३) और अच्छी तरह से छोड़ दो^(४) ४९ ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) हमने तुम्हारे लिये हलाल फ़रमाई तुम्हारी वो बीबियाँ जिन को तुम मेहर दो^(५) और तुम्हारे हाथ का माल कनीज़ें (दासियाँ) जो अल्लाह ने तुम्हें ग़नीमत (युद्ध के बाद का माल) में दीं^(६) और तुम्हारे चचा की बेटियाँ और फुफियों की बेटियाँ और मामू की बेटियाँ और ख़ालाओं की बेटियाँ जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की^(७) और ईमान वाली औरत अगर वह अपनी जान नबी की नज़्र (भेंट) करे अगर नबी उसे निकाह में लाना चाहे^(८) यह ख़ास तुम्हारे लिये है उम्मत के लिये नहीं^(९) हमें मालूम है जो हमने मुसलमानों पर मुकरर (निर्धारित) किया है उनकी बीबियों और उनके हाथ के माल कनीज़ों में^(१०) यह खुसूसियत तुम्हारी^(११) इसलिये कि तुम पर कोई तंगी न हो और अल्लाह बख़्शाने वाला मेहरबान ५० पीछे हटाओ उनमें से जिसे चाहो^(१२) और अपने पास जगह दो

تُطْعِمُ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعُوا أَذْلَهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَكَثَّرَتِ الْمُؤْمِنَاتُ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَكْسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عَدَاوَةٍ تَعْتَدُونَهَا فَمَعَيْتُهُنَّ وَسِرَّجُهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْكَمْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي آتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِنْ أَفْكَاءَ اللَّهِ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِكَ وَبَنَاتِ خَالَكَ وَبَنَاتِ خَلَتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَوَأَمْرًا مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبْتَ نَفْسًا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ تَرْجِي مَنْ نَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤَيِّ إِلَيْكَ مَنْ

مَزْنٌ

तआला ने यह आयत उतारी.

(३) यानी कुफ़्र और गुमराही और खुदा को न पहचानने को अंधेरियों से सच्चाई, हिदायत और अल्लाह की पहचान को रीशनी की तरफ़ हिदायत फ़रमाए.

(४) मिलते वक़्त से मुग़ाद या मौत का वक़्त है या क़ब्रों से निकलने का या जन्नत में दाख़िल होने का. रिवायत है कि हज़रत इब्नाईल अलैहिस्सलाम किसी ईमान वाले की रूह उसको सलाम किये बग़ैर नहीं निकलते. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हां से रिवायत है कि जब मलकुल मौत मूमिन को रूह निकालने आते हैं तो कहते हैं कि तेरा रब तुझे सलाम कहता है और यह भी आया है कि मूमिनीन जब क़ब्रों से निकलेंगे तो फ़रिश्ते सलामती की बशारत के तौर पर उन्हें सलाम करेंगे. (जुमल व श्राज़िन)

(५) शाहिद का अनुवाद हाज़िर नाज़िर बहुत बेहतरीन अनुवाद है. मुफ़रदाते राग़िब में है “अश शुहदो वश शहादतुल हुज़ुरो मअल मुशहदते इम्मा विल वसरे औ विल बसीरते” यानी शुहद और शहादत के मानी हैं हाज़िर होना साथ नाज़िर होने के. वसर के साथ हो या बसीरत के साथ. और ग़वाह को भी इसीलिये शाहिद कहते हैं कि वह अवलोकन या मुशाहिदे के साथ जो इल्म रखता है, उसको बयान करता है. सैयदे आल्लम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम सृष्टि, सारे जगत के लिये भेजे गए हैं. आपकी रियासत सार्वजनिक है जैसा कि सूरफ़ फुरकान की पहली आयत में बयान हुआ तो हुज़ुरे अनवर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम क़यामत तक होने वाली सारी ख़ल्क के शाहिद हैं और उनके अमाल, अफ़आल और अहवाल, तस्दीक, तक्ज़ीब (झुटलाना) हिदायत, गुमराही सब का अवलोकन फ़रमाते हैं. (अबू सऊद व जुमल)

(६) यानी ईमानदारों को जन्नत की खुशख़बरी और काफ़िरो को जहन्नम के अज़ाब का डर सुनाता.

(७) यानी सृष्टि को अल्लाह की ताक़त की तरफ़ बुलाता.

(८) सिराज का अनुवाद आफ़ताव या सूरज क़ुरआने करीम के बिलकुल मुताबिक़ है कि उसमें आफ़ताब को सिराज फ़रमाया गया है जैसा कि सूरफ़ नूर में “वजअलश शम्स सिराजन” और अख़िर पारे की पहली सूत में है “वजअलना सिराजौ बहहाजन” और दर हकीक़त हज़ारों सूरजों से ज़्यादा रीशनी आपकी नबुवत के नूर ने पहुंचाई और कुफ़्र व शिर्क के सन्न अंधेरों को अपने नूर हकीक़त से उजाला कर दिया और सृष्टि के लिये मअरिफ़त और अल्लाह की वहदानियत तक पहुंचने की राहें रीशन और साफ़ कर दीं और गुमराही की तारीक़ घाटी से रह ख़ोजने वालों को अपनी हिदायत के नूर से रास्ता दिखाया और अपनी नबुवत के नूर से इन्सानों के अन्दर और बाहर और दिल तथा आत्मा को उजला किया. हकीक़त में आपका वुजूदे मुबारक ऐसा चमकने वाला सूरज है जिसने हज़ारों सूरज बना दिये इसीलिये उसकी विशेषता में ‘मुनीर’ यानी चमका देने वाला इरशाद फ़रमाया गया.

(९) जब तक कि इस बारे में अल्लाह तआला की तरफ़ से कोई हुक्म दिया जाए.

(१०) इस आयत से मालूम हुआ कि अगर औरत को कुर्वत या सोहबत से पहले तलाक़ दी तो उसपर इहत वाजिब नहीं. ख़िलवते

जिसे चाहो, और जिसे तुम ने किनारे कर दिया था उसे तुम्हारा जी चाहे तो उसमें भी तुम पर कुछ गुनाह नहीं^(११) यह अन्न (खात) इस से नज़दीक तर है कि उनकी आँखें ठण्डी हों और गम न करें और तुम उन्हें जो कुछ अता फ़रमाओ उस पर वो सब की सब राज़ी रहें^(१२) और अल्लाह जानता है जो तुम सब के दिलों में है, और अल्लाह इत्म व हिल्म वाला है^(१३) उनके वाद^(१४) और औरतें तुम्हें हलाल नहीं^(१५) और न यह कि उनके इवज़ और वीबियाँ वदलो^(१६) अगरचे तुम्हें उनका हुस्न (सौंदर्य) भाए मगर कनीज़ तुम्हारे हाथ का माल^(१७) और अल्लाह हर चीज़ पर निगहवान है^(१८)

सातवाँ सूक़

ऐ ईमान वाली नबी के घरों में^(१) न हाज़िर हो जब तक इज़्ज न पाओ^(२) मसलन खाने के लिये बुलाए जाओ न यूँ कि खुद उसके पकने की राह तक^(३) हों जब बुलाए जाओ तो हाज़िर हो और जब खा चुको तो अलग अलग हो जाओ न यह कि बैठे बातों में दिल बहलाओ^(४) वेशक इसमें नबी को तकलीफ़ होती थी तो वह तुम्हारा लिहाज़ फ़रमाते थे^(५) और अल्लाह हक़ (सत्य) फ़रमाने में नहीं शरमाता, और जब तुम उनसे^(६) बरतने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर से मांगो इस में ज़्यादा सुथराई है तुम्हारे दिलों और उनके दिलों

نَسَاءٌ وَمِنْ ابْتِغَايَتِ مَتْنٍ عَزَلْتُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَخْزَنَ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْنَهُنَّ كُلُّهُنَّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ۝ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرِ نَظِيرٍ لِشَيْءٍ وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذَى النَّبِيَّ فَيَسْتَعِجِلُ مِنْكُمْ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ وَمَا كَانَ

مَنْزِلُهُ

सहीदा यानी औरत के साथ बिल्कुल एकान्त सोहबत के हुक्म में है, तो अगर खिलवते सहीदा के बाद तलाक़ दी तो इद्दत बाजिब होगी अगरचे असल सोहबत यानी मुबाशिरत (संभोग) न हुई हो। यह हुक्म ईमानदार औरत और कित्तबी औरत दोनों को लागू है। लेकिन आयत में मूमिन औरतों का ज़िक्र फ़रमाया इस तरफ़ इशारा है कि निकाह करना ईमान वाली औरत से ही बेहतर है।

(११) यानी अगर उनका मेहर मुक़रर हो चुका था तो एकान्त से पहले तलाक़ देने से शौहर पर आधा मेहर बाजिब होगा और अगर मेहर मुक़रर नहीं हुआ था तो एक जोड़ा देना बाजिब है जिसमें तीन कपड़े होते हैं।

(१२) अच्छी तरह छोड़ना यह है कि उनके हुक्क अदा कर दिये जाएं और उनको कोई तकलीफ़ न दी जाए और उन्हें रोका न जाए क्योंकि उनपर इद्दत नहीं है।

(१३) मेहर की अदायगी में जल्दी और अक्कद में इसका निर्धारित किया जाना अफ़ज़ल है। शर्त हुल्लत नहीं क्योंकि मेहर को जल्दी देना या उसको मुक़रर करना बेहतर है, बाजिब नहीं। (तफ़सीरे अहमदी)

(१४) जैसे हज़रत सफ़िया और हज़रत जवरीया, जिन को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आज़ाद फ़रमाया और उनसे निकाह किया। ग़नीमत में मिलने का ज़िक्र भी फ़ज़ीलात के लिये है क्योंकि ममलूकात बमित्के यमीन चाहे ख़रीद से मिल्क में आई हों या हिबा से या विरासत या वसीयत से, वो सब हलाल हैं।

(१५) साथ हिज्रत करने की कैद भी अफ़ज़ल का बयान है क्योंकि बग़ैर साथ हिज्रत करने के भी उनमें से हर एक हलाल है और यह भी हो सकता है कि ख़ास हुज़ूर के हक़ में ३ औरतों की हुल्लत यानी हलाल होना इस कैद के साथ हो कि उम्मे हानी बिनत अबी तालिब की रिवायत इस तरफ़ इशारा करती है।

(१६) मानी ये हैं कि हम ने आपके लिये उस मूमिन औरत को हलाल किया जो बग़ैर मेहर और निकाह की शर्तों के बिना अपनी जान आपको हिबा करे वशतें कि आप उसे निकाह में लाने का इरादा फ़रमाएं। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इसमें आयन्दा के हुक्म का बयान है क्योंकि आयत उतरने के वक़्त हुज़ूर की वीबियों में से कोई ऐसी न थी जो हिबा के ज़रिये से सरकार की बीबी बनी हों और जिन ईमान वाली वीबियों ने अपनी जान हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नज़र कर दी वो मैमूना बिनत हारिस और ख़ौलह बिनत हकीम और उम्मे शरीक और ज़ैनब बिनत ख़ुज़ैमा है। (तफ़सीरे अहमदी)

(१७) यह बिन मेहर का निकाह ख़ास आपके लिये जायज़ है उम्मत के लिये नहीं। उम्मत पर बहर हाल मेहर बाजिब है चाहे वो मेहर निर्धारित न करें या जान वृद्ध कर मेहर की नफ़ी करें। निकाह हिबा शब्द के साथ जायज़ है।

(१८) यानी वीबियों के हक़ में जो कुछ मुक़रर फ़रमाया है चाहे मेहर और ग़वाह और बारी का बाजिब होना और चार आज़ाद औरतों तक को निकाह में लाना। इसमें मालूम हुआ कि शरअई तौर से मेहर की मात्रा अल्लाह तआला के नज़दीक मुक़रर है और

वह दस दिरहम हैं जिससे कम करना मना है जैसा कि हदीस शरीफ में है.

(१९) जो ऊपर बयान की हुई औरतें आपके लिये मात्र हिबा सं बगैर मेहर के हलाल की गई.

(२०) यानी आपको इस्तिथार दिया गया है कि जिस बीबी को चाहें पास रखें और बीबियों में बारी मुकर्रर करें या न करें. लेकिन इस इस्तिथार के बावजूद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम बीबियों के साथ न्याय फरमाते और उनकी बारियाँ बराबर रखते सिवाय हज़रत सौदह रदियल्लाहो अन्हा के जिन्होंने अपनी बारी का दिन हज़रत उम्मुल मूमिनीन आयशा सिदीका रदियल्लाहो अन्हा को दे दिया था और हुज़ूर की खिदमत में अर्ज़ किया था कि मेरे लिये यही काफी है कि मेरा हथ आपकी बीबियों में हो. हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा से रिवायत है कि यह आयत उन औरतों के हक में उतरी जिन्होंने अपनी जानें हुज़ूर की नज़्ज़ कर दीं और हुज़ूर को इस्तिथार दिया गया कि उनमें से जिसे चाहें कुबूल करें, उसके साथ करम फरमाएं और जिसे चाहें इन्कार फरमाएं.

(२१) यानी बीबियों में से आप ने जिसको मअज़ूल या अलग थलग कर दिया हो, आप जब चाहे उसकी तरफ़ तबज़्ज़ह फरमाएं और उसे नवाज़ें, इसका आप को इस्तिथार दिया गया है.

(२२) क्योंकि जब बां यह जानेंगी कि यह तफ़्ज़ीज़ और यह इस्तिथार आपको अल्लाह तआला की तरफ़ से अता हुआ है तो उनके दिल संतुष्ट हो जाएंगे.

(२३) यानी इन नौ बीबियों के बाद जो आपके निकाह में हैं जिन्हें आपने इस्तिथार दिया तो उन्होंने ने अल्लाह तआला और रसूल को इस्तिथार किया.

(२४) क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए बीबियों की गिन्ती नौ है जैसे उम्मत के लिये चार.

(२५) यानी उन्हें तलाक़ देकर उनकी जगह दूसरी औरतों से निकाह कर लो. ऐसा भी न करो यह एहतियाम उन बीबियों का इसलिए है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें इस्तिथार दिया था तो उन्होंने अल्लाह और रसूल को इस्तिथार किया और दुनिया की आसाइश को ठुकरा दिया चुनान्वे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हीं पर इस्तिफ़ा फरमाया और आखिर तक यही बीबियाँ हुज़ूर की खिदमत में रहीं. हज़रत आयशा और उम्मे सलमा रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि आखिर में हुज़ूर के लिये हलाल कर दिया गया था कि जितनी औरतों से चाहें निकाह फरमाएं. इस सूत में यह आयत मन्सूख़ यानी स्थगित है और इसे मन्सूख़ करने वाली आयत "इन्ना अहललना लका अजवाजका" है यानी हमने तुम्हारे लिये हलाल फरमाई तुम्हारी वो बीबियाँ जिनको तुम मेहर दोगे... (सूरए अहज़ाब, आयत ५०)

(२६) कि वह तुम्हारे लिये हलाल है और इसके बाद हज़रत मारियह किब्जिया हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मिल्क में आई और उनसे हुज़ूर के बेटे हज़रत इब्राहीम पैदा हुए जिन्होंने छोटी उम्र में वफ़ात पाई.

सूरए अहज़ाब - सातवाँ स्कू

(१) इस आयत से मालूम हुआ कि घर मर्द का होता है और इसी लिये उससे इज़ाज़त हासिल करना मुनासिब है. शौहर के घर को औरत का घर भी कहा है. इस लिहाज़ से कि वह उसमें सुकूनत का हक़ रखती है. इसी वजह से आयत "बज़कुरना मा युनला फ़ी बुयूतिकुन्ना" (और याद करो जो तुम्हारे घरों में पड़ी जाती हैं अल्लाह की आयतें और हिकमत - सूरए अहज़ाब, आयत ३४) में घरों की निरबत औरतों की तरफ़ की गई है. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मकानात, जिनमें आपकी पाक बीबियों की सुकूनत थी और हुज़ूर की वफ़ात के बाद भी वो अपनी ज़िन्दगी तक उन्हीं में रहीं, वो हुज़ूर की मिल्क थे और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बीबियों को हिबा नहीं फरमाए थे बल्कि रहने की इज़ाज़त दी थी इसलिये बीबियों की वफ़ात के बाद भी उनके वारिसों को न मिले बल्कि मस्जिद शरीफ़ में दाख़िल कर दिये गए जो वक्फ़ है और जिसका नफ़ा सारे मुसलमानों के लिये आम है.

(२) इससे मालूम हुआ कि औरतों पर पर्दा लाज़िम है और ग़ैर मर्दों को किसी घर में बेइज़ाज़त दाख़िल होना जायज़ नहीं. आयत अगरचे ख़ास हुज़ूर की बीबियों के हक़ में आई है लेकिन हुक़म इसका सारी मुसलमान औरतों के लिये आम है. जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब से निकाह किया और वलीमे की आम दावत फरमाई तो जमाअतें की जमाअतें आती थीं और ख़ाने से फ़ारिग़ होकर चली जाती थीं आखिर में तीन साहब ऐसे थे जो ख़ाने से फ़ारिग़ होकर बैठे रह गए और उन्होंने बात चीत का लम्बा सिलसिला शुरू कर दिया और बहुत देर तक ठहरे रहे. मकान तंग था इस से घर वालों को तकलीफ़ हुई और हर्ज हुआ कि वो उनकी वजह से अपना काम काज़ न कर सकें. रसूल करीम उठे और बीबियों के हुज़रों में तशरीफ़ ले गए. और दौरा फरमाकर तशरीफ़ लाए. उस वक़्त तक ये लोग अपनी बातों में लगे हुए थे. हुज़ूर फिर वापिस हो गए. यह देखकर वो लोग ख़ाना हुए तब हुज़ुरे अनवर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दौलत-सरा में दाख़िल हुए और दरवाज़े पर पर्दा डाल दिया. इसपर यह आयत उतरी. इस से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की भरपूर हया और करम की शात और सदब्यवहार मालूम होता है कि ज़रूरत के बावजूद सहाबा से यह न फरमाया कि अब आप चले जाइये बल्कि जो तरीका इस्तिथार फरमाया वह अच्छा अदब और सदब्यवहार सिखाने वाला है.

(३) इस से मालूम हुआ कि बग़ैर दावत किसी के यहाँ ख़ाने न जाए.

(४) कि यह घर वालों की तकलीफ़ और उनके हर्ज का कारण है.

(५) और उनसे चले जाने के लिये नहीं फरमाते थे.

की^(५) और तुम्हें नहीं पहुंचता कि रसूलुल्लाह को ईजा दो^(६) और न यह कि उनके बाद कभी उनकी बीबियों से निकाह करो^(७) बेशक यह अल्लाह के नज़्दीक बड़ी सख्त बात है^(८) (५३) अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या छुपाओ तो बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है^(९) उनपर मुज़ायक़ा (हर्ज) नहीं^(१०) उनके बाप और बेटों और भाइयों और भतीजों और भान्जों^(११) और अपने दीन की औरतों^(१२) और अपनी कनीज़ों में^(१३) और अल्लाह से डरती रहो, बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है^(१४) बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दुरुद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर, ऐ ईमान वाले उनपर दुरुद और ख़ूब सलाम भेजो^(१५) (५६) बेशक जो तकलीफ़ देते हैं अल्लाह और उसके रसूल को उनपर अल्लाह की लअनत है दुनिया और आख़िरत में^(१६) और अल्लाह ने उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है^(१७) (५७) और जो ईमान वाले मर्दों और औरतों को बे किये सताते हैं उन्होंने ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया^(१८) (५८)

आठवाँ रकू

ऐ नबी अपनी बीबियों और बेटियों और मुसलमानों की

لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ
مِنْ بَعْدِهِ أَبْدَانًا إِنَّ ذَلِكَ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝
إِنْ تَبْذُوا شَيْئًا أَوْ خِفْتُمْ إِنْ أَلَّ اللَّهُ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمًا ۝ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي آبَائِهِمْ وَلَا أَبْنَائِهِمْ
وَلَا إِخْوَانِهِمْ وَلَا أَسْبَاقِهِمْ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ
وَأَتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝
إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ
يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَ
الْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا ۝ وَالَّذِينَ
يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغْيٍ مَا كُنْتُمْ
تَقْدِرُونَ عَلَيْهِمْ تَابَ اللَّهُ لِيَوْمَ تَتُوبُونَ ۝

مَنْ

- (६) यानी अपनी पाक बीबियों से.
- (७) कि वसवसों और ख़तरों से अम्न रहता है.
- (८) और कोई काम ऐसा करो जो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मिज़ाज को नगवार हो.
- (९) क्योंकि जिस औरत से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अक्द फ़रमाया वह हुज़ूर के सिवा हर शरफ़ पर हमेशा के लिये हराम हो गई. इसी तरह वो कनीज़ जो सरकार की ख़िदमत में रहीं और कुर्वत से नवाज़ी गई वो भी इसी तरह सबके लिये हराम हैं.
- (१०) इसमें ऐलान है कि अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बहुत बड़ी अज़मत अता फ़रमाई और आपकी हुर्मत हर हाल में वाजिब की.
- (११) यानी उन बीबियों पर कुछ गुनाह नहीं इसमें कि वो उन लोगों से पर्दा न करें जिन का आयत मे आगे ज़िक्र फ़रमाया जाता है. जब पर्दे का हुक्म उतरा तो औरतों के बाप बेटों और फ़रीब के रिश्तेदारों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या हम अपनी माओं बेटियों के साथ पर्दे के बाहर से बात किया करें. इसपर यह आयत उतरी.
- (१२) यानी उन रिश्तेदारों के सामने आने और उनसे बात करने में कोई हर्ज नहीं.
- (१३) यानी मुसलमान बीबियों के सामने आना जायज़ है और काफ़िर औरतों से पर्दा करना और अपने जिस्म को छुपाना लाज़िम है सिवाय जिस्म के उन हिस्सों के जो घर के काम क़ाज के लिये खोलने ज़रूरी होते हैं. (जुमल)
- (१४) यहाँ चचा और मामू का साफ़ साफ़ ज़िक्र नहीं किया गया क्योंकि वो माँ बाप के हुक्म में हैं.
- (१५) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर दुरुद और सलाम भेजना वाजिब हैं. हर एक मजलिस में आपका ज़िक्र करने वाले पर भी और सुनने वाले पर भी एक बार और इस से ज्यादा मुस्तहब है. यही भरोसे का कौल है और इसी पर सहमति है. और नमाज़ की आख़िरी बैठक में तशहहुद यानी अतहियात के बाद दुरुद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है. आपके ताबे करके आप के आल और असहाब और दूसरे मूमिनीन पर भी दुरुद भेजा जा सकता है. यानी दुरुद शरीफ़ में आपके मुबारक नाम के साथ उनको शामिल किया जासकता है और मुस्तक़िल तौर पर हुज़ूर के सिवा उनमें से किसी पर दुरुद भेजना मक़रुह है. दुरुद शरीफ़ में आल व असहाब का ज़िक्र मुतवारिस है. और यह भी कहा गया है कि आल के ज़िक्र के बिना मक़बूल नहीं. दुरुद शरीफ़ अल्लाह तआला की तरफ़ से नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का सम्मान है. उलमा ने अल्लाहुम्मा सल्ले अल्ला मुहम्मद के मानी ये बयान किये हैं कि या अल्ला मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बे इजा नज़्दीक न करे और न उनकी दावत ग़ालिब फ़रमाकर और उनकी शरीअत को बक़ा इनायत करके और आख़िरत में उनकी शफ़अत कुबूल फ़रमाकर और उनका सवाब ज्यादा करके और अग़लों पिछलों पर उनकी बुजुर्गी का इज़हार फ़रमाकर और अंबिया व मुसलीन और फ़रिश्तों और सारी सृष्टि पर उनकी

औरतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुंह पर डाले रहें^(१) यह इससे नज़दीक़ तर है कि उनकी पहचान हो^(२) तो सताई न जाएं^(३) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है^(४) अगर बाज़ न आए मुनाफ़िक़ (दोाले)^(५) और जिनके दिलों में रोग है^(६) और मदीने में झूट उड़ाने वाले^(७) तो ज़रूर हम तुम्हें उनपर शह देंगे^(८) फिर वो मदीने में तुम्हारे पास न रहेंगे मगर थोड़े दिन^(९) ६०० फटकारे हुए जहाँ कहीं मिलें पकड़े जाएं और गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं^(१०) अल्लाह का दस्तूर (तरीका) चला आता है उन लोगों में जो महले गुज़र गए^(११) और तुम अल्लाह का दस्तूर हरगिज़ बदलता न पाओगे^(१२) लोग तुम से क़यामत को पूछते हैं^(१३) तुम फ़रमाओ उसका इल्म तो अल्लाह ही के पास है, और तुम क्या जानो शायद क़यामत पास ही हो^(१४) ६३ बेशक अल्लाह ने काफ़िरों पर लअनत फ़र्माई और उनके लिये भड़कती आग तैयार कर रखी है^(१५) उसमें हमेशा रहेंगे, उसमें से कोई हिमायती पाएंगे न मददगार^(१६) ६५ जिस दिन उनके मुंह उलट उलट कर आग में तले जाएंगे कहते होंगे हाय किसी तरह हमने अल्लाह का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता^(१७) ६६ और कहेंगे ऐ हमारे रब हम अपने सरदारों

لَا زَوَاجَكَ وَبَيْتِكَ وَلِسَاءَ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ
مِنْ جَلَائِبِهِنَّ ذَلِكَ أَذَى أَنْ يَعْرِفْنَ فَلَا يُؤْذِينَ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ لَنْ لَمْ يَنْتَهُ الْمُتَّقُونَ وَ
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْمُجْرِمُونَ فِي الْمَدِينَةِ
لَعْنَتِكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ۝
مَلْعُونِينَ ۝ أَيَّمَا تَقَفُّوا إِحْدُوا وَقَتِلُوا تَقْتِيلًا ۝
سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ
اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝ يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۝ قُلْ إِنَّمَا
عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ ۝ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ
قَرِيبًا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۝
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ يَوْمَ
تَقْلَبُ وَجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَلَيْتَنَّا أَطَعْنَا اللَّهَ
وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ۝ وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا

مَنْزِلَةٌ

शान बलन्द करके . दुरूद शरीफ़ की बहुत बरकतें और महानताएं हैं. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जब दुरूद भेजने वाला मुझ पर दुरूद भेजता है तो फ़रिश्ते उसके लिये मगफ़िरत की दुआ करते हैं. मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है अल्लाह तआला उसपर दस बार भेजता है. तिरमिज़ी को हदीस शरीफ़ में है बज़्ज़ील है वह जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया जाए और वह दुरूद न भेजे.

(१६) वो तकलीफ़ देने वाले काफ़िर हैं जो अल्लाह की शान में ऐसी बातें कहते हैं जिनसे वो पाक है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाते हैं. उनपर दोनों जग़त में लअनत.

(१७) आख़िरत में.

(१८) यह आयत उन मुनाफ़िक़ों के हक़ में उतरी जो हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो को कष्ट देते थे और उनको बुरा भला कहते थे. हज़रत फ़ुज़ैल ने फ़रमाया कि कुत्ते और सुअर को भी नाहक कष्ट देना हलाल नहीं तो ईमान वाले मदों औरतों को तकलीफ़ देना किस क़द्र बदतरीन जुर्म है.

सूरए अहज़ाब - आठवाँ रकू

(१) और सर और चेहरे को छुपाएं, जब किसी आवश्यकता के लिये उनको निकलना हो.

(२) कि ये आज़ाद औरतें हैं.

(३) और मुनाफ़िक़ लोग उनके पीछे न पड़ें. मुनाफ़िक़ों की यह आदत थी कि वो दासियों को छेड़ा करते थे इसलिये आज़ाद औरतों को हुक्म दिया कि वो चादर से बदन ढाँप कर सर और चेहरे को छुपाकर दासियों से अपनी हालत अलग बना लें.

(४) अपनी दोहरी प्रवृत्ति से.

(५) और जो बुरे ख़याल रखते हैं यानी बुरा काम करते हैं वो अगर अपनी बदकारी से बाज़ न आए --

(६) जो इस्लामी लश्क़रों के बारे में झूटी ख़बरें उड़ाया करते थे और यह मशहूर किया करते थे कि मुसलमानों को पराजय हो गई, या वो क़त्ल कर डाले गए, या दुश्मन चढ़ा चला आ रहा है. और इससे उनका उद्देश मुसलमानों का दिल तोड़ना और उनको परेशानी में डालना होता था. उन लोगों के बारे में इश़ाद फ़रमाया जाता है कि अगर वो इन हरकतों से बाज़ न आए.

(७) और तुम्हें उनपर क़ब्ज़ा दे देंगे.

(८) फिर मदीनए तैयिबह उनसे ख़ाली करा लिया जाएगा और वहाँ से निकाल दिये जाएंगे.

और अपने बड़ों के कहने पर चले^(१२) तो उन्होंने हमें राह से बहका दिया^(६७) ऐ रब हमारे उन्हें आग का दूना अज़ाब दे^(१५) और उनपर बड़ी लानत कर^(६८)

नवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो^(१) उन जैसे न होना जिन्होंने ने मूसा को सताया^(२) तो अल्लाह ने उसे बरी फ़रमा दिया उस बात से जो उन्होंने कही^(३) और मूसा अल्लाह के यहाँ आवरू वाला है^(४) ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो^(५) तुम्हारे अमाल(कर्म) तुम्हारे लिये संवार देगा^(६) और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा, और जो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करे उसने बड़ी कामयाबी पाई^(७) वेशक हमने अमानत पेश फ़रमाई^(८) आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्होंने उसके उठाने से इन्कार किया और उससे डर गए^(९) और आदमी ने उठा ली, वेशक वह अपनी जान को मशक़क़त(परिश्रम) में डालने वाला बड़ा नादान है^(१०) ताकि अल्लाह अज़ाब दे मुनाफ़िक़(दोगले) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को^(११) और अल्लाह तोबह कुबूल फ़रमाए मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों की और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है^(१२)

وَكَبِيرًا ۖ فَاصْلَوْا السَّيِّئَةَ رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ
مِّنَ الْعَذَابِ وَالْعَنَهُمُ لَعْنًا كَبِيرًا ۖ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا كَالَّذِينَ أَذَا مَوْسَىٰ فَبَرَّاهُ ۚ اللَّهُ
مِنَّا قَالُوا ۖ وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ۖ يٰٓأَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَفُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۖ
يُضْلِلْكُمْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ
وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۖ
إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَ
الْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا
وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ۖ
لِّيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ
وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَكَانَ اللَّهُ عَفُورًا رَّحِيمًا ۖ

سورة

(१) याती पहली उम्मतों के मुनाफ़िक़ लोग, जो ऐसी हरकतें करते थे, उनके लिये भी अल्लाह का तरीका यही रहा कि जहाँ पाए जाएं, मार डाले जाएं।

(२) कि कब क़यामत होगी. मुश्रिक लोग हंसी उड़ाते के अन्दाज़ में रसूलें करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से क़यामत का वक़्त पूछा करते थे गोया कि उन्हें बहुत जल्दी है और यहूदी इसको आजमाइश के तौर पर पूछते थे क्योंकि तौरात में इसका इल्म छुपाकर रखा गया था तो अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हुक्म फ़रमाया।

(३) इसमें जल्दी करने वालों को चेतावनी और यहूदियों को चुप कराना और उनकी ज़बान बन्द करना है।

(४) जो उन्हें अज़ाब से बचा सके।

(५) दुनिया में, तो हम आज इस अज़ाब में न जकड़े गए होते।

(६) याती क़ौम के सरदारों में और बड़ी उम्र के लोगों और अपनी जमाअत के आलिमों के, उन्होंने हमें कुफ़्र की तलखीन की।

(७) क्योंकि वो ख़ुद भी गुमराह हुए और उन्होंने दूसरों को भी गुमराह किया।

सूरए अहज़ाब - नवाँ रूकू

(१) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अदब और आदर करो और कोई ऐसा काम न करना जो उनके दुख का कारण हो, और ---

(२) याती उन बनी इस्राईल की तरह न होना जो नंगे नहाते थे. और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तअना करते थे कि हज़रत कि हज़रत हमारे साथ क्यों नहीं नहाते. उन्हें सफ़ेद दाग़ वौरह की कोई बीमारी जान पड़ती है।

(३) इस तरह कि जब एक दिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने नहाने के लिये एक एकान्त की जगह में पत्थर पर कपड़े उतार कर रखे और नहाना शुरू किया, तो पत्थर आपके कपड़े ले भागा. आप कपड़े लेने के लिये उसकी तरफ़ बढ़े तो बनी इस्राईल ने देग़्र लिया कि बदने मुबारक पर कोई दाग़ और कोई ऐब नहीं है।

(४) शान वाले, बुजुर्गी वाले और दुआ की कुबूलियत वाले।

(५) याती सच्ची और दुरुस्त, हक़ और इन्साफ़ की, और अपनी ज़बान और बोल की हिफ़ाज़त रखो. यह भलाइयों की जड़ है. ऐसा करोगे तो अल्लाह तआला तुम पर करम फ़रमाएगा, और ---

(६) तुम्हें नेकियों की रुचि देगा और तुम्हारी फ़रमाँबरदारीयाँ कुबूल फ़रमाएगा।

३४- सूरए सबा

सूरए सबा मक्का में उतरी, इसमें ५४ आयतें और ६ रूकू हैं। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)

पहला रूकू

सब ख़ुबियाँ अल्लाह को कि उसी का माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में (२) और आखिरत में उसी की तारीफ़ है (३) और वही है हिकमत (बोध) वाला ख़बरदार (४) जानता है जो कुछ ज़मीन में जाता है (५) और जो ज़मीन से निकलता है (६) और जो आसमान से उतरता है (७) और जो उसमें चढ़ता है (८) और वही है मेहरबान बाख़्शने वाला (९) और काफ़िर बोले हम पर क़यामत न आएगी (१०) तुम फ़रमाओ क्यों नहीं मेरे रब की क़सम बेशक ज़रूर तुमपर आएगी ग़ैब जानने वाला (११) उससे ग़ायब नहीं ज़रूर भर कोई चीज़ आसमानों में और न ज़मीन में और न उससे छोटी और न बड़ी मगर एक साफ़ बताने वाली किताब में है (१२) (३) ताकि सिला दे उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये, ये हैं जिनके लिये वख़्शिश हैं और इज़्जत की रोज़ी (१३) (४) और जिन्होंने हमारी आयतों में हराने की कोशिश की (१४) उनके लिये सज़ा अज़ाब दर्दनाक में से अज़ाब है (१५) और जिन्हें इल्म मिला (१६) वो जानते हैं कि जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा (१७)



(१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अमानत से मुराद फ़रमाँदरदारी और कर्तब्य निष्ठा है। जिन अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर पेश किया, उन्हें आसमानों और ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश किया था कि अगर वो उन्हें अदा करेंगे तो सवाब दिये जाएंगे, नहीं अदा करेंगे तो अज़ाब किये जाएंगे। हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि अमानत नमाज़ें अदा करना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना, श्रावण काबा का हज़, सच बोलना, नाप तौल में और लोगों के साथ व्यवहार में इन्साफ़ करना है। कुछ ने कहा कि अमानत से मुराद वो तमाम चीज़ें हैं जिनका हुक्म दिया गया है और जिनसे मना फ़रमाया गया है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ने फ़रमाया कि तमाम अंग, कान, हाथ और पाँव वगैरह सब अमानत हैं। उसका ईमान ही क्या जो अमानतदार न हो। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अमानत से मुराद लोगों के हुक्क और एहदों को पूरा करना है। तो हर ईमान वाले पर फ़र्ज़ है कि न किसी मूनिन की श्रयानत करे न काफ़िर से किया गया एहद तोड़े, न कम न ज्यादा। अल्लाह तआला ने यह अमानत आसमानों ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश फ़रमाई फिर उनसे फ़रमाया क्या तुम इन अमानतों को उनकी ज़िम्मेदारियों के साथ उठाओगे। उन्होंने अर्ज़ किया ज़िम्मेदारी क्या है। फ़रमाया यह कि अगर तुम उन्हें अच्छी तरह अदा करो तो तुम्हें इनाम दिया जाएगा। उन्होंने अर्ज़ किया नहीं ऐ रब, हम तेरे हुक्म के मुतीअ हैं न सवाब चाहें न अज़ाब और उनका यह अर्ज़ करना ख़ौफ़ और दहशत की बजह से था। और अमानत पेश करके उन्हें इज़्तिहार दिया गया था कि अपने में कुब्रत और हिम्मत पाएँ तो उठाएँ वरना मजबूरी ज़ाहिर कर दें, उसका उठाना लाज़िम नहीं किया गया था और अगर लाज़िम किया जाता तो वो इन्कार न करते।

(२) कि अगर अदा न कर सके तो अज़ाब किये जाएंगे। तो अल्लाह तआला ने वह अमानत हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के सामने पेश की और फ़रमाया कि मैं ने आसमानों ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश की थी वो न उठा सके तो क्या तू इसको ज़िम्मेदारी के साथ उठा सकेगा। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने इक्कार किया।

(३) कहा गया है कि मानी ये हैं कि हमने अमानत पेश की ताकि मुनाफ़िकों की दोहरी प्रवृत्ति, मुश्रिकों का शिक ज़ाहिर हो और अल्लाह तआला उन्हें अज़ाब फ़रमाए और ईमान वाले, जो अमानत के अदा करने वाले हैं उनके ईमान का इज़हार हो और अल्लाह तआला उनकी तौबह कुबूल फ़रमाए और उनपर रहमत और मग़फ़िरत करे, अगरचे उनसे कुछ ताअतों में कुछ कमो भी हुई हो। (श्राज़िन)

वही हक (सत्य) है और इज़्जत वाले सब ख़ुवियों सराहे की राह बताता है (६) और काफ़िर बोले (१५) क्या हम तुम्हें ऐसा मर्द बता दें (१६) जो तुम्हें ख़बर दे कि जब तुम पुर्जा होकर बिल्कुल रेज़ा रेज़ा (कण कण) हो जाओ तो फिर तुम्हें नया बनना है (१७) क्या अल्लाह पर उसने झूट बाँधा या उसे सौदा (पागलपन) है (१८) वल्कि वो जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते (१९) अज़ाब और दूर की गुमराही में हैं (२०) तो क्या उन्होंने न देखा जो उनके आगे और पीछे है आसमान और ज़मीन (२१) हम चाहें तो उन्हें (२२) ज़मीन में धंसा दें या उनपर आसमान का टुकड़ा गिरा दें, बेशक उसमें (२३) निशानी है हर रज़ू लाने वाले वन्दे के लिये (२४) (९)

दूसरा रूकू

और बेशक हमने दाऊद को अपना बड़ा फ़ज़ल (कृपा) दिया (१) ऐ पहाड़ो उस के साथ अल्लाह की तरफ़ रज़ू करो और ऐ परिन्दो (२) और हमने उसके लिये लोहा नर्म किया (३) (१०) कि वसीअ (बड़ी) ज़िरहें बना और बनाने में अन्दाज़े का लिहाज़ रख (४) और तुम सब नेकी करो, बेशक मैं तुम्हारे काम देख रहा हूँ (११) और सुलैमान के वस में हवा कर दी उसकी सुब्ह की मंज़िल एक महीने की राह और शाम की मंज़िल एक महीने की राह (१२) और हमने उसके लिये पिघले हुए तांबे का चश्मा बहाया (१३) और जिन्नो में से वो जो उसके

وَمِنْ يُفْتَنُ ۚ
۞ وَمِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ ۖ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ
الْحَمِيدِ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَى
رَجُلٍ يُبَيِّنُ لَكُمْ إِذَا مَرِضْتُمْ كُلَّ مَرَضٍ ۖ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ
عَلَيْهِ جَدِيدُونَ ۝ أَفَتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جُنَّةٌ
بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ
الْبَعِيدِ ۝ أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۖ إِنَّ شَأْنَهُمْ لَكَرْهٍ ۝ أَوْ لَسَوْفَ
عَلَيْهِمْ كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا
فَضْلًا ۖ يَجْعَلُ أَوِيَّ مَعَهُ وَالظَّيْرُ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ
الْحَدِيدَ ۝ إِنَّ أَكْمَلَ سِغَاتٍ وَقَدَّرَ فِي السَّيْرِ ۖ وَاعْمَلُوا
صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَلَسَكُمُ الزَّيْعُ
عَذَابًا شَدِيدًا ۖ وَرَوَّاحَهَا شَهْرٌ ۖ وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ

مَنْزِلَةٍ

३४ - सूरए सबा - पहला रूकू

- (१) सूरए सबा मक्के में उतरी सिवाय आयत "ब यरल्लज़ीना अतुल इल्मो" (आयत - ६). इस में छ रूकू चौबन आयतें, आठ सौ तैंतीस कलिम और एक हज़ार पाँच सौ बारह अक्षर हैं.
- (२) यानी हर चीज़ का मालिक, ख़ालिक और हाकिम अल्लाह तआला है और हर नेअमत उसी की तरफ़ है तो वही तारीफ़, प्रशंसा और स्तुति के लायक़ है.
- (३) यानी जैसा दुनिया में प्रशंसा का मुस्तहिक़ अल्लाह तआला है वैसा ही आख़िरत में भी हम्द का मुस्तहिक़ वही है क्योंकि दोनों जग़त उसी की नेअमतों से भरे हुए हैं. दुनिया में तो बन्दों पर उसकी प्रशंसा और स्तुति वाजिब है क्योंकि यह दारुल तकलीफ़ है. और आख़िरत में जन्नत वाले नेअमतों की श्रुशी और राहतों की प्रसन्नता में उसकी प्रशंसा करेंगे.
- (४) यानी ज़मीन के अन्दर दाख़िल होता है जैसे कि बारिश का पानी और मुर्दे और दफ़ीने.
- (५) जैसे कि सब्ज़ा और दरख़्त और चश्मे और खाने और हथ के वक्त मुर्दे.
- (६) जैसे कि बारिश, बर्फ़, आँले और तरह तरह की बरक़तें और फ़रिशते.
- (७) जैसे कि फ़रिशते, दुआएं और बन्दों के कर्म.
- (८) यानी उन्होंने क़यामत के आने का इन्कार किया.
- (९) यानी मेरा ख़ब ग़ैब का जानने वाला है उससे कोई चीज़ छुपी नहीं, तो क़यामत का आना और उसके क़ायम होने का वक्त भी उसके इल्म में है.
- (१०) यानी लौहे मेहफूज़ में.
- (११) जन्नत में.
- (१२) और उनमें तअने करके और उनको शायरी और जादू वग़ैरह बता कर लोगों की उनसे रोकना चाहना. (इसका आधिक बयान इसी सूत के आख़िरी रूकू पाँच में आएगा).
- (१३) यानी रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा या किताब वालों के ईमान वाले, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथियों.
- (१४) यानी क़ुरआने मजीद.

आगे काम करते उसके रब के हुक्म से^(१०) और उनमें जो हमारे हुक्म से फिरे^(११) हम उसे भड़कती आग का अज़ाब चखाएंगे^(१२) उसके लिये बनाते जो यह चाहता ऊंचे ऊंचे महल^(१३) और तस्वीरें^(१४) और वड़े हौजों के बराबर लगन^(१५) और लंगरदार देगें^(१६) ऐ दाऊद वालो शुक्र करो^(१७) और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले^(१८) फिर जब हमने उसपर मौत का हुक्म भेजा^(१९) जिन्नों को उसकी मौत न बताई मगर ज़मीन की दीमक ने कि उसका असा खाती थी, फिर जब सुलैमान ज़मीन पर आया जिन्नों की हकीकत खुल गई^(२०) अगर ग़ैब जानते होते^(२१) तो इस ख़्बारी के अज़ाब में न होते^(२२)^(१४) वेशक सबा^(२३) के लिये उनकी आबादी में^(२४) निशानी थी^(२५) दो वांग दाएं और बाएं^(२६) अपने रब का रिज़क खाओ^(२७) और उसका शुक्र अदा करो^(२८) पाकीज़ा शहर और^(२९) बह्ने वाला रब^(३०)^(१५) तो उन्होंने ने मुंह फेरा^(३१) तो हमने उनपर ज़ोर का अहला (सैलाब) भेजा^(३२) और उनके बागों के एक्ज दो वांग उन्हें बदल दिये जिन में बकटा मेवा^(३३) और झाऊ और थोड़ी सी बेरियां^(३४)^(१६) हमने उन्हें यह बदला दिया उनकी नाशुक्री^(३५) की सज़ा,

الْقَطْرِ وَمَنْ يَجْنِ مَنْ يَعْلُ يَنْ يَدَّيْهِ بِأَذْنِ رَبِّهِ
وَمَنْ يُزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ
يَعْلَمُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِبَ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ
كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رَاسِيَتٍ ۚ اِعْمَلُوا آلَ دَاوُدَ شُكْرًا
وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّاكِرِينَ ۚ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ
الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ
مِنْ سَاتِهِ ۚ فَلَمَّا خَسَفْنَا بِهِنَّ الْجَنِّ أَن لَّوْكَانُوا يَعْلَمُونَ
الْغَيْبِ مَا كَبَتُْوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۚ لَقَدْ كَانَ
إِسْرَافًا فِي مَسْكُونَتِهِمْ آيَةٌ ۚ جَنَّتِ عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ
كُلُوا مِن رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلَدَةٌ طَيِّبَةٌ وَ
رَبِّ عَفُورٌ ۚ فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ
وَبَدَّلْنَا لَهُمْ مَحَنَّتَهُمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِ أَكْمَلٍ خُمُطٍ وَ
أَثَلٍ وَشَيْءٍ مِّن سِدْرٍ قَلِيلٍ ۚ ذَلِكَ جَزَيْنَاهُم بِمَا كَفَرُوا

मज़ल

(१५) यानी काफ़िरों ने आपस में आश्चर्य चकित होकर कहा.

(१६) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम .

(१७) जो वो ऐसी अजीबो ग़रीब बातें कहते हैं. अल्लाह तआला ने काफ़िरों के इस क़ौल का रद फ़रमाया कि ये दोनों बातें नहीं, हज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इन दोनों से पाक हैं.

(१८) यानी काफ़िर, मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब का इन्कार करने वाले.

(१९) यानी क्या वो अश्वे हैं कि उन्होंने ने आसमान व ज़मीन की तरफ़ नज़र ही नहीं डाली और अपने आगे पीछे देखा ही नहीं जा उन्हें मालूम होता कि वो हर तरफ़ से घेरे में हैं और ज़मीन व आसमान के दायरे या घेरे से बाहर नहीं जा सकते और अल्लाह की सल्लत से नहीं निकल सकते और उन्हें भागने की कोई जगह नहीं. उन्होंने ने आपतों और रसूल को झुटलाया और इन्कार के भयानक जुर्म को करते हुए ख़ौफ़ न ख़ाया और अपनी इस हालत का ख़याल करके न डरे.

(२०) उनका झुटलाना और इन्कार की सज़ाएं क़ाज़म की तरह.

(२१) नज़र और फ़िक्र, दृष्टि और सोच.

(२२) जो प्रमाण है कि अल्लाह तआला मरने के बाद दोबारा उठाने और इसका इन्कार करने वाले के अज़ाब पर और हर चीज़ पर क़ादिर है.

सूरए सबा - दूसरा रूकू

(१) यानी नबुच्चत और किताब, और कहा गया है कि मुल्क और एक क़ौल यह है कि सौंदर्य शरीरह तमाम चीज़ें जो आपके विशेषता के साथ अता फ़रमाई गईं, और अल्लाह तआला ने पहाड़ों और पक्षियों को हुक्म दिया.

(२) जब वो तस्वीह करें, उनके साथ तस्वीह करो. चुवान्ने जब हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम तस्वीह करते तो पहाड़ों से भी तस्वीह सुनी जाती थी और पक्षी झुक आते, यह आपका चमत्कार था.

(३) कि आपके मुबारक हाथ में आकर मोम या गुंधे हुए आटे की तरह नर्म हो जाता और आप उससे जो चाहते बग़ैर आग और बिना ठोंके पीटे बनालेते. इसका कारण यह बयान किया गया है कि जब आप बनी इस्राईल के बादशाह हुए तो आपका तरीक़ा यह था कि आप लोगों के हालात की खोज में इस तरह निकलते कि वो आपको पहचाने नहीं और जब कोई मिलता और आपको न पहचानता तो उससे आप पूछते कि दाऊद कैसा व्यक्ति है. सब लोग तारीफ़ करते. अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता इन्सान की सूरत भेजा. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अपना आदत क अनुसार उससे भी यही सवाल किया तो फ़रिश्त न कहा कि दाऊद है तो बहुत

अच्छे, काश उनमें एक खसलत न होती. इसपर आप चौकन्ने हुए और फ़रमाया ऐ खुदा के बन्दे कौन सी खसलत ? उसने कहा कि वह अपना और अपने घर वालों का खर्च बैतुलमाल यानी सरकारी खज़ाने से लेते हैं. यह सुनकर आपके ख़याल में आया कि अगर आप बैतुल माल से बज़ीफ़ा न लेते तो ज़्यादा बेहतर होता. इसलिये आपने अल्लाह की बरगाह में दुआ की कि उनके लिये कोई ऐसा साधन कर दे जिससे आप अपने घर वालों का गुज़ारा करें और शाही खज़ाने से आपको बेनियाज़ी हो जाए. आपकी यह दुआ कुबूल हुई और अल्लाह तआला ने आपके लिये लौहे को नर्म कर दिया और आपको ज़िरह बनाने का इल्म दिया. सबसे पहले ज़िरह बनाने वाले आप ही हैं. आप रोज़ एक ज़िरह बनाते थे. वह चार हज़ार को बिकती थी. उसमें से अपने और घर वालों पर भी खर्च फ़रमाते और फ़कीरों और दरिद्रों पर भी सदका करते. इसका बयान आयत में है. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हमने दाऊद के लिये लोहा नर्म करके उनसे फ़रमाया.

(४) कि उसके छत्ते एक से और मध्यम हों, न बहुत तंग न बहुत चौड़े.

(५) चुनान्ने आप सुक़ को दमिशक़ से ख़ाना होते तो दोपहर को खाने के बाद का आराम उस्तख़ुर में फ़रमाते जो फ़ारस प्रदेश में है और दमिशक़ से एक महीने की राह पर और शाम को उस्तख़ुर से ख़ाना होते तो रात को काबुल में आराम फ़रमाते. यह भी तेज़ सवार के लिये एक माह का रस्ता है.

(६) जो तीन रोज़ यमन प्रदेश में पानी की तरह जारी रहा और एक क़ौल यह है कि हर माह में तीन रोज़ जारी रहता और एक क़ौल यह है कि अल्लाह तआला ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के लिये तांबे को पिघला दिया जैसा कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के लिये लौहे को नर्म किया था.

(७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के लिये जिनों की मुतीअ किया.

(८) और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की फ़रमाँबरदारी न करे.

(९) और आलीशान इमारतें और मस्जिदें, और उन्हीं में से बैतुल मक़दिस भी है.

(१०) दरिन्दों और पक्षियों वगैरह की तांबे और बिल्लौर और पत्थर वगैरह से, और उस शरीअत में तस्वीरें बनाना हराम न था.

(११) इतने बड़े कि एक लगन में हज़ार हज़ार आदमी खाते.

(१२) जो अपने पायों पर क़ायम थीं और बहुत बड़ी थीं, यहाँ तक कि अपनी जगह से हटाई नहीं जा सकती थीं. सीढ़ियाँ लगाकर उनपर चढ़ते थे. ये यमन में थीं. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हमने फ़रमाया कि...

(१३) अल्लाह तआला का उन नेअमतों पर जो उसने तुम्हें अता फ़रमाई, उसकी फ़रमाँबरदारी करके.

(१४) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बरगाह में दुआ की थी कि उनकी वफ़ात का हाल जिनों पर ज़ाहिर न हो ताकि इन्सानों को मालूम हो जाए कि जिन ग़ैब नहीं जानते. फिर आप मेहराब में दाख़िल हुए और आदत के अनुसार नमाज़ के लिये अपनी लाटी पर टेक लगाकर खड़े हो गए. जिन्रात हरबे दस्तूर अपने कानों में लगे रहे और समझते रहे कि हज़रत जिन्दा हैं. और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का लम्बे अंसे तक उसी हालत पर रहना उनके लिये कुछ आश्चर्य का कारण न हुआ क्योंकि वो अक्सर देखते थे कि आप एक माह दो माह और इससे ज़्यादा समय तक इबादत में मशगूल रहते हैं और आपकी नमाज़ लम्बी होती है यहाँ तक कि आपकी वफ़ात का पता न चला और अपनी ख़िदमतों में लगे रहे यहाँ तक कि अल्लाह के हुक्म से दीमक ने आपकी लाटी खा ली और आपका मबारक जिस्म, जो लाटी के सहारे से क़ायम था, ज़मीन पर आ रहा. उस वक़्त जिन्रात को आप की वफ़ात की जानकारी हुई.

(१५) कि वो ग़ैब नहीं जानते.

(१६) तो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की वफ़ात से सूचित होते.

(१७) और एक साल तक इमारत के कामों में कटिन् परिश्रम न करते रहते. रिवायत है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने बैतुल मक़दिस की नींव उस स्थान पर रखी थी जहाँ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ख़ैमा लगाया गया था. इस इमारत के पूरा होने से पहले हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात का वक़्त आ गया तो आपने अपने संपुत्र हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को इसके पूरा करने की वसीयत फ़रमाई. चुनान्ने आपने शैतानों को इसके पूरा करने का हुक्म दिया. जब आपकी वफ़ात का वक़्त करीब पहुंचा तो आपने दुआ की कि आपकी वफ़ात शैतानों पर ज़ाहिर न हो ताकि वो इमारत के पूरा होने तक काम में लगे रहें और उन्हें जो इल्म ग़ैब का दावा है वह झूठा हो जाए. हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ तिरपन साल की हुई. तेरह साल की उम्र में आप तख़्त पर जलवा अफ़रोज़ हुए, चालीस साल राज़ किया.

(१८) सबा अरब का एक क़बीला है जो अपने दादा के नाम से मशहूर है और वह दादा सबा बिन यशजब बिन यअरब बिन कहतान हैं.

(१९) जो यमन की सीमाओं में स्थित थी.

(२०) अल्लाह तआला की वहदानियत ओर कुदरत पर दलील लाने वाली और वह निशानी क्या थी इसका आगे बयान होता है.

(२१) यानी उनकी घाटी के दाएं और बाएं दूर तक चल गए और उनसे कहा गया था.

(२२) बाग़ इतने अधिक फ़लदार थे कि जब कोई व्यक्ति सर पर टोकरा लिये गुज़रता तो वगैर हाथ लगाए तग़ह तग़ह के मेचों से उसका टोकरा भर जाता.

(२३) यानी इस नेअमत पर उसकी ताअत बजा लाओ.

और हम किसे सज़ा देते हैं उसी को जो नाशुक्रा है (१७) और हमने किये थे उनमें (१९) और उन शहरों में जिन में हमने बरकत रखी (२२) सरे राह कितने शहर (२३) और उन्हें मंज़िल के अन्दाज़े पर रखा (२४) उनमें चलो रातों और दिनों अमन व अमान से (२५) (१८) तो बोलें ऐ हमारे ख हमारे सफ़र में दूरी डाल (२६) और उन्होंने खुद अपना ही नुक़सान किया तो हमने उन्हें कहानियां कर दिया (२७) और उन्हें पूरी परेशानी से परागन्दा कर दिया (२८) वेशक उसमें ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े सन्न वाले हर बड़े शुक्र वाले के लिये (२९) (१९) और वेशक इबलीस ने उन्हें अपना गुमान सच कर दिखाया (३०) तो वो उसके पीछे हो लिये मगर एक ग़िरोह कि मुसलमान था (३१) (२०) और शैतान का उनपर (३२) कुछ क़ाबू न था मगर इसलिये कि हम दिखा दें कि कौन आख़िरत पर ईमान लाता है और कौन इससे शक में है, और तुम्हारा ख हर चीज़ पर निगहबान है (२१)

तीसरा रूकू

तुम फ़रमाओ (१) पुकारो उन्हें जिन्हें अल्लाह के सिवा (२) समझे बैठे हो (३) और वो ज़रा भर के मालिक नहीं आसमानों में और न ज़मीन में और न उनका इन दोनों में कुछ हिस्सा और न अल्लाह का उनमें से कोई मददगार (२२) और

وَهَلْ نُجِزِي إِلَّا الْكَفُورَ ۖ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ
النَّارِ الَّتِي بُرِكَتْ فِيهَا قُرَى ظَاهِرَةً وَقَدْزْنَا فِيهَا
السَّيْرِ سَيْرًا فِيهَا لِيَالِي وَإِيَامًا أَمِينِينَ ۖ فَقَالُوا
رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ
أَحَادِيثَ ۖ وَمَنْ قَتَلَهُمْ كُلٌّ مَمَرٍ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۖ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ
ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا كَانَ
لَهُ عَلَيْهِمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا لَنَعْلَمَنَّ مَنْ يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ
ۖ وَمَنْ هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ ۖ وَرَبُّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَافِظٌ ۖ
قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ رَضَيْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَنْبَلِكُمْ دُونُ
وَشَقَالَ دَرَّةٌ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ
فِيهَا مِنْ شَرْكَ ۖ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِنْ ظَهِيرٍ ۖ وَلَا تَنْفَعُ
الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ۖ حَتَّىٰ إِذَا فُزِعَ عَنِ

مَذَلٍّ

(२४) अच्छी जलवायु, साफ़ सुथरी ज़मीन, न उसमें मच्छर, न मक्खी, न खटमल, न साँप, न बिच्छू, हवा की पाकीज़गी ऐसी कि अगर कहीं और का कोई व्यक्ति इस शहर में गुज़र जाए और उसके कपड़ों में जुएं हों तो सब मर जाएं, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि सबा शहर सनआ से तीन फ़रसंग के फ़ासले पर था।

(२५) यानी अगर तुम ख की रोज़ी पर शुक्र करो और ताअत बजा लाओ तो वह बख़्शिश फ़रमाने वाला है।

(२६) उसकी शुक्रगुज़ारी से और नवियों को झुटलाया, वहब का कौल है कि अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ तेरह नबी भेजे जिन्होंने उनको सच्चाई की तरफ़ बुलाया और अल्लाह तआला की नेअमतें याद दिलाई और उसके अज़ाब से डराया मगर वो ईमान न लाए और उन्होंने नवियों को झुटलाया और कहा कि हम नहीं जानते कि हम पर खुदा की कोई भी नेअमत हो, तुम अपने ख से कह दो कि उस से हो सके तो वो इन नेअमतों को रोक ले।

(२७) बड़ी बाढ़ जिससे उनके बाग़, अमवाल, सब डूब गए और उनके मकान रेत में दफ़न हो गए और इस तरह तबाह हुए कि उनकी तबाही अरब के लिये कहावत बन गई।

(२८) अत्यन्त बुरे मज़े का।

(२९) जैसी धीरानों में ज़म आती हैं, इस तरह को झाड़ियों और भयानक जंगल को जो उनके सुन्दर बाग़ों की जगह पैदा हो गया था, उपमा के तौर पर बाग़ फ़रमाया।

(३०) और उनके कुफ़र।

(३१) यानी सबा शहर में।

(३२) कि वहाँ के रहने वालों को बहुत सी नेअमतें और पानी और दरख़्त और चश्मे इनायत किये, उन से मुराद शाम के शहर हैं।

(३३) करीब करीब, सबा से शाम तक के सफ़र करने वालों को उस राह में तोशे और पानी साथ लेजाने की ज़रूरत न होती।

(३४) कि चलने वाला एक जगह से सुबह चले तो दोपहर को एक आबादी में पहुँच जाए जहाँ ज़रूरत के सारे सामान हो और जब दोपहर को चले तो शाम को एक शहर में पहुँच जाए, यमन से शाम तक का सारा सफ़र इसी आसायश के साथ तय हो सके और हमने उनसे कहा कि ---

(३५) न रातों में कोई खटका, न दिनों में कोई तकलीफ़, न दुश्मन का अन्देशा, न भूख़ प्यास का ग़म, मालदारों में हसद पैदा हुआ कि हमारे और ग़रीबों के बीच कोई फ़र्क़ ही न रहा, करीब करीब की मंज़िलें हैं, लोग धीमे धीमे हवा ख़ोरी करते चले आते हैं, थोड़ी देर के बाद दूसरी आबादी आ जाती है, वहाँ आराम करते हैं, न सफ़र में थकन है, न कोफ़्त, अगर मंज़िलें दूर होतीं, सफ़र को मुदत लम्बी होती, राह में पानी न मिलता, जंगलों और बयाबानों में गुज़र होता, तो हम तोशा साथ लेते, पानी का प्रबन्ध करते,

उसके पास शफ़ाअत काम नहीं देती मगर जिसके लिये वह इज़्ज़न (आज्ञा) फ़रमाए, यहाँ तक कि जब इज़्ज़न देकर उनके दिलों की घबराहट दूर फ़रमा दी जाती है एक दूसरे से^(१४) कहते हैं तुम्हारे रब ने क्या ही बात फ़रमाई, वो कहते हैं जो फ़रमाया हक़ (सच्चा) फ़रमाया^(१५) (२३) और वही है बलन्द बड़ाई वाला। तुम फ़रमाओ कौन जो तुम्हें रोज़ी देता है आसमानों और ज़मीन से^(१६) तुम खुद ही फ़रमाओ अल्लाह^(१७) और बेशक हम या तुम^(१८) या तो ज़रूर हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में^(१९) (२४) तुम फ़रमाओ हमने तुम्हारे गुमान में अगर कोई ज़ुर्म किया तो उसकी तुमसे पूछ नहीं न तुम्हारे कौतुकों का हमसे सवाल^(२०) (२५) तो फ़रमाओ हमारा रब हम सब को जमा करेगा^(२१) फिर हम में सच्चा फैसला फ़रमा देगा^(२२) और वही है बड़ा न्याय चुकाने वाला सब कुछ जानता^(२३) तुम फ़रमाओ मुझे दिखाओ तो वो शरीक जो तुमने उससे मिलाए हैं^(२४) हिशत, बल्कि वही है अल्लाह इज़्ज़त वाला हिकमत (बोध) वाला^(२५) और ऐ मेहबूब हमने तुमको न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है^(२६) खुशख़बरी देता^(२७) और डर सुनाता^(२८) लेकिन बहुत लोग नहीं जानते^(२९) (२८) और कहते हैं ये वादा कब आएगा^(३०) अगर तुम सच्चे हो^(३१) (२९) तुम फ़रमाओ तुम्हारे लिये एक ऐसे दिन का वादा जिससे तुम न एक घड़ी पीछे हट सको और न आगे बढ़ सको^(३२) (३०)

चौथा रूकू

और काफ़िर बोले हम हरगिज़ न ईमान लाएंगे इस क़ुरआन पर और उन किताबों पर जो इससे आगे थीं^(१) और किसी तरह तू देखे जब ज़ालिम अपने रब के पास खड़े किये जाएंगे, जो उनमें एक दूसरे पर दाँत डालेगा वो जो दबे

قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقُّ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيرُ ۝ قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ قُلْ
اللَّهُ وَإِنَّا أَوْ أَيْنَا كُنَّا لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝
قُلْ لَا تَسْأَلُونَنَا عَمَّا آجُرُونَنَا وَلَا تَسْأَلُنَا عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝
قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ
الْعَلِيمُ ۝ قُلْ أَرَأَوْنِيَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا فِي شُرَكَائِكُم مَّا
بَلَغَ اللَّهُ عَذْرَهُنَّ الْحَكِيمُ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً
لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝
قُلْ لَّكُمْ مَبْعَادٌ يَوْمَ لَا تَسْتَأْذِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا
تَسْتَفِيدُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن نُّؤْمِنَ بِهَذَا
الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ
مَوْفُوقُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ

مَنْزِلَةٌ

- सवारियों और सेवक साथ रखते, सफ़र का मज़ा आता और अमीर ग़रीब का फ़र्क़ ज़ाहिर होता। यह ख्याल करके उन्होंने कहा।
(३६) यात्री हमारे और शाम के बीच जंगल और बयावान कर दे कि बगीर तोशे और सवारी के सफ़र न हो सके।
(३७) बाद वालों के लिये कि उन के हालात से इब्रत हासिल करें।
(३८) कबीला कबीला बिखर गया, वो बस्तियाँ डूब गईं और लोग बेघर होकर अलग अलग शहरों में पहुंचे। मरसान शाम में और अज़ल अम्मान में और ख़ुज़ाअह तिहामा में और आले ख़ुज़ैमह इराक़ में और औस ख़ज़रिज का दादा अम्र बिन आमिर मदीन में।
(३९) और सब और शुक्र मूमिन की सिफ़त है कि जब वह बला में गिरफ़्तार होता है, सब करता है और जब नेअमत पाता है, शुक्र बजा लाता है।
(४०) यात्री इक्लीस जो गुमान रखता था कि बनी आदम को वह शहबत, लालच और ग़ज़ब के ज़रीये गुमराह कर देगा। यह गुमान उसने सब प्रदेश वालों पर बल्कि सारे काफ़िरों पर सच्चा कर दिखाया कि वो उसके मानने वाले हो गए और उसकी फ़रमाँबंदारी करने लगे। हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि शैतान ने ना किसी पर तलवार खींची ना किसी पर कोड़े मारे, झूठे वादों ओर बातिल आशाओं से झूट वालों को गुमराह कर दिया।
(४१) उन्होंने उसका अनुकरण न किया।
(४२) जितके हक़ में उसका गुमान पूरा हुआ।

सूरए सबा - तीसरा रूकू

- (१) ऐ मुहम्मदे मुस्ताफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम ! मक्का मुकर्रमा के काफ़िरों से।

- (२) अपना मअबूद.
- (३) कि वो तुम्हारी मुसीबतें दूर करें लेकिन ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि नफ़ा और नुक़सान में.
- (४) खुशख़बरी के तौर पर.
- (५) यानी शफ़ाअत करने वालों को ईमानदारों की शफ़ाअत की इजाज़त दी.
- (६) यानी आसमान से मंह बरसा कर और ज़मीन से सब्ज़ा उगाकर.
- (७) क्योंकि इस सबाल का इसके सिवा और कोई ज़बाब ही नहीं.
- (८) यानी दोनों पक्षों में से हर एक के लिये इन दोनों हालाँ में से एक हाल ज़रूरी है.
- (९) और यह ज़ाहिर है कि जो शरूय सिर्फ़ अल्लाह तआला को रोज़ी देने वाला, पानी बरसाने वाला, सब्ज़ा उगाने वाला जानते हुए भी बुतों को पूजे जो किसी एक कण भर चीज़ के मालिक नहीं (जैसा कि ऊपर की आयतों में बयान हो चुका), वो यकीनन खुली गुमराही में है.
- (१०) बल्कि हर शरूय से उसके अमल का सबाल होगा और हर एक अपने अमल की जज़ा पाएगा.
- (११) क़यामत के दिन.
- (१२) तो सच्चाई वालों को जन्नत में और बातिल वालों को जहन्नम में दाख़िल करेगा.
- (१३) यानी जिन बुतों को तुमने इबादत में शरीक किया है, मुझे दिखाओ तो किस काबिल हैं. क्या वो कुछ पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं, और जब यह कुछ नहीं तो उनके खुदा का शरीक बनाना और उनकी इबादत करना कैसी भारी ख़ता है, उससे बाज़ आओ.
- (१४) इस आयत से मालूम हुआ कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत सार्वजनिक है, सारे इन्सान उसके घेरे में हैं, गोरे हों या काले, अरबी हों या अज़मी, पहले हों या पिछले, सब के लिये आप रसूल हैं और वो सब आपके उम्मत हैं. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़रमाते हैं मुझे पाँच चीज़ें ऐसी अता फ़रमाई गईं जो मुझसे पहले किसी नबी को न दी गईं - एक माह की दूरी के रोअब से मेरी मदद की गई, तमाम ज़मीन मेरे लिये मस्जिद और पाक की गई कि जहाँ मेरे उम्मत को नमाज़ का वक़्त हो नमाज़ पढ़े और मेरे लिये ग़नीमतें हलाल की गईं जो मुझ से पहले किसी के लिये हलाल न थीं और मुझे शफ़ाअत का दर्जा अता किया गया. दूसरे नबी ख़ास अपनी क़ौम की तरफ़ भेजे जाते थे और मैं तमाम इन्सानों की तरफ़ भेजा गया. हदीस में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विशेष फ़ज़ीलतों का बयान है जिनमें से एक आपकी सार्वजनिक रिसालत है जो तमाम ज़िन्न और इन्सानों को शामिल है. खुलासा यह कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम सृष्टि के रसूल हैं और यह दर्जा ख़ास आपका है जो क़ुरआने करीम की आयतों और बहुत सी हदीसों से साबित है. सूरए फ़ुरक़ान के शुरू में भी इसका बयान गुज़र चुका है. (ख़ाज़िन)
- (१५) ईमान वालों को अल्लाह तआला के फ़ज़ल की.
- (१६) काफ़िरों को उसके इन्साफ़ का.
- (१७) और अपनी जिहालत की वजह से आपकी मुश्क़ालिफ़त करते हैं.
- (१८) यानी क़यामत का वादा.
- (१९) यानी अगर तुम मोहलत चाहो तो ताख़ीर संभव नहीं और अगर जल्दी चाहो तो पहल मुमकिन नहीं, हर हाल में इस वादे का अपने वक़्त पर पूरा होना.

सूरए सबा - चौथा रूकू

- (३) तौरात और इंजील वगैरह.

थे^(१) उनसे कहेंगे जो ऊंचे खिंचते थे^(२) अगर तुम न होते^(३) तो हम जरूर ईमान ले आते^(४) ३१) वो जो ऊंचे खिंचते थे उनसे कहेंगे जो दबे हुए थे क्या हम ने तुम्हें रोक दिया हिदायत से वाद इसके कि तुम्हारे पास आई बल्कि तुम खुद मुजरिम थे^(५) ३२) और कहेंगे वो जो दबे हुए थे उनसे जो ऊंचे खिंचते थे बल्कि रात दिन का दाँव था^(६) जब कि तुम हमें हुक्म देते थे कि अल्लाह का इन्कार करें और उसके बराबर वाले ठहराएं, और दिल ही दिल में पछताने लगे^(७) जब अज़ाब देखा^(८) और हमने तौक डाले उनकी गर्दनो में जो इन्कारी थे^(९) वो क्या बदला पाएंगे मगर वही जो कुछ करते थे^(१०) ३३) और हमने जब कभी किसी शहर में कोई डर सुनाने वाला भेजा वहाँ के आसूदों ने यही कहा कि तुम जो लेकर भेजे गए हम उसके इन्कारी हैं^(११) ३४) और बोले हम माल और औलाद में बढ़ कर हैं और हम पर अज़ाब होना नहीं^(१२) ३५) तुम फ़रमाओ वेशक मेरा रब रिज़क वसीअ करता है जिसके लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है^(१३) लेकिन बहुत लोग नहीं जानते^(३६)

पाँचवां रूकू

और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद इस काबिल नहीं कि

الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتَضَعُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
لَوْلَا اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
لِلَّذِينَ اسْتَضَعُوا اَنْحَنُ صِدَادُكُمْ عَنِ الْهُدٰى
بَعْدَ اِجَآءِكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ
اسْتَضَعُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكَرَ الْبَیْلِ وَالنَّهَارِ
اِذْ كَاْمُرُوْنَا اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهُ اَنْدَادًا ۝ وَ
اَسْرُوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوْا الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْاَغْلَلَ
فِيْ اَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوْا هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ وَمَا اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالِ
مُتْرَفُوْهَا اِنَّا بِمَا اُرْسِلْتُمْ بِهِ كٰفِرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا نَحْنُ
اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۝ وَمَا نَحْنُ بِمُعَدِّيْنَ ۝ قُلْ اِنْ رَّزَقِ
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنْ اَكْثَرُ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا اَمْوَالُكُمْ وَلَا اَوْلَادُكُمْ بِآتِنِ

- (२) यानी तावे और अनुयायी थं.
- (३) यानी अपने सरदारों से.
- (४) और हमें ईमान लाने से न रोकते.
- (५) यानी तुम रात दिन हमारे लिये छलकपट करते थं और हमें हर वक़्त शिर्क पर उभारते थं.
- (६) दोनों पक्ष, तावे भी और मतबूअ भी और उनके बहकाने वाले भी ईमान न लाने पर.
- (७) जहन्नम का.
- (८) चाहे बहकाने वाले हों या उनके कहने में आने वाले, तमाम काफ़िरों की यही सज़ा है.
- (९) दुनिया में कुफ़्र और गुमराही.

(१०) इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली फ़रमाई गई कि आप उन काफ़िरों के झुटलाने और इन्कार से दुखी न हों. काफ़िरों का नबियों के साथ यही तरीका रहा है और मालदार लोग इसी तरह अपने माल व औलाद के घमण्ड में नबियों को झुटलाते रहे हैं. दो व्यक्ति तिजारत में शरीक थे. उनमें से एक शाम प्रदेश की गया और एक मक्का मुकर्रमा में रहा. जब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ लाए और उसने शाम प्रदेश में हुज़ूर की ख़बर सुनी तो अपने शरीक को ख़त लिखा और उससे हुज़ूर का पूरा हाल पूछा. उस शरीक ने जवाब लिखा कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी नबुव्वत का ऐलान तो किया है लेकिन सिवाय छोटे दर्जे के हकीर और गरीब लोगों के और किसी ने उनका अनुकरण नहीं किया. जब यह ख़त उसके पास पहुंचा तो वह अपने तिजारती काम छोड़कर मक्का मुकर्रमा आया और आते ही अपने शरीक से कहा कि मुझे सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का पता बताओ और मालूम करके हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि आप दुनिया को क्या दावंत देते हैं और हम से क्या चाहते हैं. फ़रमाया बुत परस्ती छोड़कर एक अल्लाह तआला को इबादत करना और आपने इस्लाम के आदेश बताए, ये बातें उसके दिल में असर कर गईं और वह शस्त्र पिछली किताबों का आलम या कहने लगा कि मैं गवाही देता हूँ कि आप वेशक अल्लाह तआला के रसूल हैं. हुज़ूर ने फ़रमाया तुम ने यह कैसे जाना उसने कहा कि जब कभी कोई नबी भेजा गया, पहले छोटे दर्जे के गरीब लोग ही उसके तावे हुए यह अल्लाह की सुन्नत हमेशा ही जारी रही. इसपर यह आयत उतरी.

(११) यानी जब दुनिया में हम खुशहाल हैं तो हमारे अमाल और अफ़आल अल्लाह तआला को पसन्द होंगे और ऐसा हुआ तो आख़िरत में अज़ाब नहीं होगा. अल्लाह तआला ने उनके इस बातिल ख़याल का रद्द फ़रमाया कि आख़िरत के सवाब को दुनिया की मईशत पर क़यास करना ग़लत है.

(१२) आज़माइश और परीक्षा के तौर पर, तो दुनिया में रोज़ी की कुशायश अल्लाह की रज़ा की दलील नहीं और ऐसे ही उसकी

तुम्हें हमारे करीब तक पहुंचाएं मगर वो जो ईमान लाए और नेकी की^(१) उनके लिये दूनादू सिला^(२) उनके अमल(कर्म) का बदला और वो वालाखानों(अट्टालिकाओं) में अमन व अमान से हैं^(३) ॥३७॥ और वो जो हमारी आयतों में हराने की कोशिश करते हैं^(४) वो अज्ञाव में ला धरें जाएंगे^(५) ॥३८॥ तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़क वसीअ(विस्तृत). फ़रमाता है अपने बन्दों में जिसके लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिसके लिये चाहे^(६) और जो धीज़ तुम अल्लाह की राह में खर्च करो वह उसके बदले और देगा^(७) और वह सबसे बेहतर रिज़क देने वाला^(८) ॥३९॥ और जिस दिन उन सब को उठाएगा^(९) फिर फ़रिशतों से फ़रमाएगा क्या ये तुम्हें पूजते थे^(१०) ॥४०॥ वो अज़्र करेंगे पाकी है तुझ को तू हमारा दोस्त है न वो^(११) बल्कि वो जिन्नो को पूजते थे^(१२) उनमें अक्सर उन्हीं पर यक़ीन लाए थे^(१३) ॥४१॥ तो आज तुम में एक दूसरे के भले बुरे का कुछ इख़्तियार न रखेगा^(१४) और हम फ़रमाएंगे ज़ालिमों से, उस आग का अज्ञाव चखो जिसे तुम झुटलाते थे^(१५) ॥४२॥ और जब उनपर हमारी रौशन आयतें^(१६) पढ़ी जाएं तो कहते हैं^(१७) ये तो नहीं भगर एक मर्द कि तुम्हें रोकना चाहते हैं तुम्हारे बाप दादा के मअबूदों से^(१८) और कहते हैं^(१९) ये तो नहीं बोहतान जोड़ा

تَقَرَّبَكُمْ عِنْدَنَا وَلَقِيَ الْأَمَنَ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا قَدْ وَلَّيْنَاكَ
لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعِيفِ مَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ۝
وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَئِكَ فِي الْعَذَابِ
مُحْضَرُونَ ۝ قُلْ إِنْ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ
يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا
ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝
قَالُوا سُبْحَنَكَ أَنْتَ وَلَيْسَ مِنْ دُونِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوا
يَعْبُدُونَ الْجِنَّ ۚ الْكُثْرَ مِنْهُمْ مُؤْمِنُونَ ۝ قَالِ يَوْمَ لَا
بِمَلِكِكَ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفَعًا وَلَا ضَرًّا وَقُولُ لِلَّذِينَ
ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝
وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٌ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ
يُرِيدُ أَنْ يَمْدَكَ عَنْ عِمَّاكَ كَانَ يُعْبَدُ آبَاؤُكُمْ ۖ وَقَالُوا

مَنْ

तंगी अल्लाह तआला की नारज़ी को दलील नहीं. कमी गुनाहगार पर बुराअत करता है, कभी फ़रमाँबरदार पर तंगी, यह उसकी हिक्मत है. आख़िरत के सवाब को इसपर क़सास करना मलत और बंजा है.

सूरए सबा - पाँचवां रूकू

- (१) यानी माल किसी के लिये कुर्ब का कारण नहीं सिवाय नेक मूमिन के, जो उसको खुदा की राह में खर्च करे. और औलाद के लिये कुर्ब का कारण नहीं, सिवाय उस मूमिन के जो उन्हें नेक इल्म सिखाए, दीन की तालीम दे, और नेक और तक्रबा वाला बनाए.
- (२) एक नेकी के बदले दस से लेकर सात सौ गुना तक और इससे भी ज्यादा, जितना खुदा चाहे.
- (३) यानी जन्नत की ऊंची मंज़िलों में.
- (४) यानी कुरआने करीम पर आलोचना करते हैं और यह गुमान करते हैं कि अपनी इन गलत हरकतों से बां लोगों को ईमान लाने से रोक देंगे. और उनका यह छलकपट इस्लाम के हक़ में चल जाएगा और वो हमारे अज्ञाव से बच रहेंगे क्योंकि उनका अक़ीदा यह है कि मरने के बाद उठना ही नहीं है तो अज्ञाव सवाब कैसा.
- (५) और उनकी मक्कारियाँ उनके कुछ काम न आएंगी.
- (६) अपनी हिक्मत के अनुसार.
- (७) दुनिया में या आख़िरत में. बुझारी और मुस्लिम की हदीस में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है खर्च करो तुम पर खर्च किया जाएगा. दूसरी हदीस में है सद्के से माल कम नहीं होता, माफ़ करने से इज़्ज़त बढ़ती है, बिनमत से दर्जे बलन्द होते हैं.
- (८) क्योंकि उसके सिवा जो कोई किसी की देता है चाहे बादशाह लश्कर को, या आक्रा गुलाम को, या घर वाला अपने बीवी बच्चों को, वह अल्लाह तआला की पैदा की हुई और उसकी अता की हुई रोज़ी में से देता है. रिज़क और उससे नफ़ा उठाने के साधनों का पैदा करने वाला अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं. वही सच्चा रिज़क देने वाला है.
- (९) यानी उन मुश्रिकों को.
- (१०) दुनिया में.
- (११) यानी हमारी उनसे कोई दोस्ती नहीं तो हम किस तरह उनके पूजने से सज़ी हो सकते थे. हम उससे बरी हैं.
- (१२) यानी शैतानों को कि उनकी इताअत के लिये ग़ैर खुदा को पूजते हैं.
- (१३) यानी शैतानों पर.
- (१४) और बां झूट मअबूद अपने पुजारियों को कुछ नफ़ा नुक़सान न पहुंचा सकेंगे.

हुआ, और काफिरों ने हक़ को कहा^(१०) जब उनके पास आया यह तो नहीं मगर खुला जादू^(११) और हमने उन्हें कुछ किताबें न दीं जिन्हें पढ़ते हों न तुम से पहले उनके पास कोई डर सुनाने वाला आया^(१२) और उनसे अगलों ने^(१३) झुटलाया और ये उसके दसवें को भी न पहुंचे जो हमने उन्हें दिया था^(१४) फिर उन्होंने मेरे रसूलों को झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा इन्कार करना^(१५) (४५)

छटा रसूल

तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें एक नसीहत करता हूँ^(१) कि अल्लाह के लिये खड़े रहो^(२) दो दो^(३) और अकेले अकेले^(४) फिर सोचो^(५) कि तुम्हारे इन साहब में जिन्नों की कोई बात नहीं, वही तो नहीं मगर तुम्हें डर सुनाने वाले^(६) एक सख्त अज़ाब के आगे^(७) (४६) तुम फ़रमाओ मैं ने तुमसे इस पर कुछ अज़्र मांगा हों तो वह तुम्हीं को^(८) मेरा अज़्र तो अल्लाह ही पर है, और वह हर चीज़ पर गवाह है^(९) (४७) तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब हक़ (सत्य) का इल्का फ़रमाता है^(१०) बहुत जानने वाला सब ग़ैबों (आज्ञात) का^(११) (४८) तुम फ़रमाओ हक़ (सत्य) आया^(१२) और बातिल (असत्य) न पहल करे और न फिर कर आए^(१३) (४९) तुम फ़रमाओ अगर मैं बहका तो अपने ही बुरे को बहका^(१४) और अगर मैं ने राह पाई तो उसके कारण जो मेरा रब मेरी तरफ़ वही (देववाणी) फ़रमाता है^(१५) बेशक वह सुनने वाला नज़्दीक है^(१६) (५०)

مَا هَذَا إِلَّا آفَاكُ مُفْتَرًى وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ إِنْ هَذَا إِلَّا أَسْحَرُؤُنَا وَمَا أَتَيْنَهُمْ مِنْ كِتَابٍ يُدْرِسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَّغُوا مَعْشَارَ مَا أُنْذِرُهُمْ فَلَذَبُّوا رَسُولِي كَذِبًا كَانَ كَثِيرًا قُلْ إِنَّمَا أَعْظَمُكُمْ بِوَاحِدَةٍ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مِثْلِي وَفِرَادَى ثُمَّ تَتَفَكَّرُونَ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِنْ جِنَّةٍ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ قُلْ إِنْ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَاقُومًا ۝ عَلَاقُومٌ هِيَ كَثِيرٌ قُلْ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْجَعُونَ قُلْ إِنَّمَا أَمْطَلْتُكُمْ وَأَنَا أَهْتَدِيتُ فِيمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فُرُغُوا

مِنْهُ

- (१५) दुनिया में.
- (१६) यानी कुरआन की आयतें, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़बान से.
- (१७) हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत.
- (१८) यानी बुतों से.
- (१९) कुरआन शरीफ़ की निस्बत.
- (२०) यानी कुरआन शरीफ़ को.
- (२१) यानी आप से पहले अरब के मुथ्रिकों के पास न कोई किताब आई न रसूल जिसकी तरफ़ अपने दीन की निस्बत कर सकें तो ये जिस ख़याल पर हैं उनके पास उसकी कोई सनद नहीं वह उनके नफ़स का धोखा है.
- (२२) यानी पहली उम्मतों ने कुरैश की तरह रसूलों को झुटलाया और उनको.
- (२३) यानी जो कुब्त और माल औलाद की बहुतात और लम्बी उम्र पहलों को दी गई थी, कुरैश के मुथ्रिकों के पास तो उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं. उनके पहले तो उनसे ताक़त और कुब्त, माल दौलत में दस गुना से ज्यादा थे.
- (२४) यानी उनको नापसन्द रखना और अज़ाब देना और हलाक फ़रमाना यानी पहले झुटलाने वालों ने मेरे रसूलों को झुटलाया तो मैं ने अपने अज़ाब से उन्हें हलाक किया और उनको ताक़त व कुब्त और माल दौलत कोई भी चीज़ उनके काम न आई. इन लोगों की क्या हकीकत है, इन्हें डरना चाहिये.

सूरए सबा - छटा रसूल

- (१) अगर तुमने उस पर अमल किया तो तुम पर सच्चाई खुल जाएगी और तुम वसबसों, शुबह और गुमराही की मुसीबत से निजात पाओगे. वह नसीहत ये है ---
- (२) केवल तब की तलब की निस्बत से अपने आपको तत्क़दारी और तत्सुब से ज़ाली करके.
- (३) ताकि आपस में सलाह कर सको और हर एक दूसरे से अपनी फ़िक्र का तबीजा बयान कर सके और दोनों इन्साफ़ के साथ और कर सकें.
- (४) ताकि भीड़ से तबीअत न घबराए और तत्सुब और तरफ़दारी और मुकाबला और लिहाज़ वगैरह से तबीअतें पाक रहें और

और किसी तरह तू देखे^(१५) जब वो घबराहट में डाले जाएंगे फिर बचकर न निकल सकेंगे^(१६) और एक करीब जगह से पकड़ लिये जाएंगे^(१७) (५१) और कहेंगे हम उसपर ईमान लाए^(१८) और अब वो उसे कैसे पाएं इतनी दूर जगह से^(१९) (५२) कि पहले^(२०) तो उससे कुछ कर चुके थे, और वे देखे फैंक मारते हैं^(२१) दूर मकान से^(२२) (५३) और रोक कर दी गई उनमें और उसमें और उसमें जिसे चाहते हैं^(२३) जैसे उनके पहले गिरोहों से किया गया था^(२४) वेशक वो धोका डालने वाले शक में थे^(२५) (५४)

३५- सूरए फ़ातिर

सूरए फ़ातिर मक्का मे उतरी, इसमें ४५ आयतें ५ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) सब खूबियाँ अल्लाह को जो आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला फ़रिश्तों को रसूल करने वाला^(२) जिनके दो दो तीन तीन चार चार पर हैं, बढ़ाता है आफ़रीनश में जो चाहे^(३) वेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर (सक्षम) है^(४) अल्लाह जो रहमत लोगों के लिये खोले^(५) उसका कोई रोकने वाला नहीं और जो कुछ रोक ले तो उसकी रोक के बाद उसका कोई छोड़ने वाला नहीं, और वही इज़्ज़त हिकमत वाला है^(६) ऐ लोगों अपने ऊपर अल्लाह का एहसान याद

فَلَا قُوَّةَ وَأَخِذُوا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۖ وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ ۖ وَأَتَىٰ لَهُمُ التَّنَادُ ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلِ ۚ وَيَقْدِرُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۖ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاءِهِمْ مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُرِيبٍ ۝

سُورَةُ فَاطِرٍ مَكِّيَّةٌ (۳۵) مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَكِ
رُسُلًا أُولَىٰ أَجْنَحَةٍ مَقْشُورَتٌ ۖ وَأَنَّكَ وَرَبُّكَ يُزِيدُ فِي الْخَلْقِ
مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ مَا يَفْقَهُ اللَّهُ
لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ ۖ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكُ
فَلَا يُرْسِلُ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ

مَنْزِلٌ

अपने दिल में इन्साफ़ करने का मौका मिले.

(५) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निखत गौर करो कि क्या जैसा कि काफ़िर आपकी तरफ़ जुनूत की निखत करते हैं उसमें सच्चाई का कुछ भाग भी है. तुम्हारे अपने अनुभव में कुरैश में या मानव जाति में कोई व्यक्ति भी इस दर्जे का अक़ल वाला नज़र आया है, क्या ऐसा ज़हीन, ऐसा सही राय वाला देखा है, ऐसा सच्चा, ऐसा पाक अन्तःकरण वाला कोई और पाया है. जब तुम्हारा नफ़स हुक्म कर दे और तुम्हारा ज़मीर मान ले कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इन गुणों में यक़ता हैं तो तुम यकीन जानो.

(६) अल्लाह तआला के नबी.

(७) और वह आख़िरत का अज़ाब है.

(८) यानी मैं नसीहत और हिदायत और रिसालत की तबलीग़ पर तुम से कोई उजरत नहीं तलब करता.

(९) अपने नबियों की तरफ़.

(१०) यानी क़ुरआन और इस्लाम.

(११) यानी शिर्क और कुफ़र मिट गया. उसकी शुरुआत रही न उसका पलट कर आना. मुराद यह है कि वह हलाक हो गया.

(१२) मक्क़े के काफ़िर हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहते थे कि आप गुमराह हो गए. अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हुक्म दिया कि आप उनसे फ़रमा दें कि अगर यह मान लिया जाए कि मैं वहका तो इसका बवाल मेरे नफ़स पर है.

(१३) हिकमत और बयान की क्योंकि राह पाना उसकी तौफ़ीक़ और हिदायत पर है. नबी सब मअसूम होते हैं, गुनाह उनसे हो ही नहीं सकता और हुज़ूर तो नबियों के सरदार हैं, सृष्टि को नक़ियों की राहें आपके अनुकरण से मिलती हैं. बुजुर्गों और ऊंचे दर्जे के बावजूद आपको हुक्म दिया गया कि गुमराही की निखत सिर्फ़ मान लेने की हद तक अपने नफ़स की तरफ़ फ़रमाएं ताकि ख़ल्क को मालूम हो कि गुमराही का मय्या इन्सान का नफ़स है जब उसको उसपर छोड़ दिया जाता है, उससे गुमराही पैदा होती है और हिदायत अल्लाह तआला की रेहमत और मेहरबानी और उसी के दिये से हासिल होती है, नफ़स उसका मय्या नहीं.

(१४) हर राह पाए हुए और गुमराह को जानता है और उनके कर्मों और चरित्र से बाज़बर है. कोई कितना ही छुपाए किसी का हाल उससे छुप नहीं सकता. अरब के एक बड़े मशहूर शायर इस्लाम लाए तो काफ़िरों ने उनसे कहा कि तुम अपने दीन से फिर गए

करो^(१) क्या अल्लाह के सिवा और भी कोई खालिक (सृष्टा) है कि आसमान और ज़मीन से^(२) तुम्हें रोज़ी दे उसके सिवा कोई मअबूद नहीं तो तुम कहाँ ओंधे जाते हो^(३) और अगर ये तुम्हें झुटलाएं^(४) तो वेशक तुम से पहले कितने ही रसूल झुटलाए गए^(५) और सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं^(६) ऐ लोगो वेशक अल्लाह का वादा सच है^(७) तो हरगिज़ तुम्हें धोखा न दे दुनिया की ज़िन्दगी^(८) और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर फ़रेव न दे वह बड़ा फ़रेवी^(९) वेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो^(१०) वह तो अपने गिरोह को^(११) इसीलिये बुलाता है कि दोज़खियों में हो^(१२) काफ़िरों के लिये^(१३) सख़्त अज़ाब है, और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये^(१४) उनके लिये वज़िश और वड़ा सबाब है^(१५)

दूसरा रूकू

तो क्या वह जिसकी निगाह में उसका बुरा काम आरास्ता किया गया कि उसने उसे बला संमझा, हिदायत वाले की तरह हो जाएगा^(१) इसलिये अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और राह देता है जिसे चाहे, तो तुम्हारी जान उनपर हसरतों में न जाए^(२) अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वो करते हैं^(३) और अल्लाह है जिसने भेजी हवाएं कि बादल उभारती हैं फिर हम उसे किसी मुर्दा शहर की तरफ़ रवाँ करते हैं^(४) तो उसके कारण हम ज़मीन को ज़िन्दा फ़रमाते

خَالِقِ غَيْرِ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ ۝ وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ ۖ وَلَئِنْ اللَّهُ تُرْجِعُ الْأُمُورَ ۖ بِأَيِّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ وَإِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۚ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۚ أَفَمَنْ رُبِّ لَهُ سُوءٌ عَلَيْهِمْ أَهْلُ حَسَنَاتٍ فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۚ وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُبْرِزُ فِيهَا سَحَابًا ۚ فَنُقْفِئُهُ إِلَىٰ بَلََدٍ مَيِّتٍ فَأَحْيَيْنَاهُ بِالْأَرْضِ

مِثْلُ

और इतने बड़े शायर और ज़बान वाले होकर मुहम्मद पर ईमान लाए. उन्होंने कहा हाँ, वह मुझ पर ग़ालिब आ गए. कुरआने करीम की तीन आयतें मैंने सुनीं और चाहा कि उनके क़ाफ़िये पर तीन शेअर कहूँ. बहुत मेहनत की, जान लड़ाई, अपनी सारी शक्ति लगा दी मगर यह संभव न हो सका. तब मुझे यकीन हो गया कि यह इत्सान का क़त्लाम नहीं. वो आयतें इसी सूरा की ४८वीं, ४९वीं और ५०वीं आयतें हैं. (रुहूल बयान)

- (१५) काफ़िरों को, मरने या क़ब्र से उठने के वक़्त या बद्र के दिन.
- (१६) और कोई जगह भागने और पनाह लेने की न पा सकेंगे.
- (१७) जहाँ भी होंगे क्योंकि कहीं भी हों, अल्लाह तआला की पकड़ से दूर नहीं हो सकते. उस वक़्त हक़ की पहचान के लिये बेचैन होंगे.
- (१८) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर.
- (१९) यानी अब मुक़ल्लफ़ होने के महल से दूर होकर तौबह और ईमान कैसे पा सकेंगे.
- (२०) यानी अज़ाब देखने से पहले.
- (२१) यानी बे जाने कह गुज़रते हैं जैसा कि उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में कहा था कि वह शायर हैं, जादूगर हैं, तांत्रिक हैं और उन्होंने कभी हुज़ूर से शेअर, व जादू व तंत्र विद्या का होना न देखा था.
- (२२) यानी सच्चाई से दूर कि उन के उन तअनों को सच्चाई से ज़रा भी नज़दीकी नहीं.
- (२३) यानी तौबह और ईमान में.
- (२४) कि उनकी तौबह और ईमान यास के वक़्त कुबूल न फ़रमाई गई.
- (२५) ईमानियात के मुतअल्लिक.

३५ - सूरए फ़ातिर - पहला रूकू

- (१) सूरए फ़ातिर मक्के में उतरी. इसमें पाँच रूकू, पैतालीस आयतें, नौ सौ सत्तर कलिमे, तीन हज़ार एक सौ अक्षर हैं.
- (२) अपने नवियों की तरफ़.
- (३) फ़रिश्तों में और उनके सिवा और मज़ज़ूक़ में.
- (४) जैसे बारिश, रिज़क़ और सेहत वगैरह.

हैं उसके मरे पीछे^(५) यूँही हथ में उठना है^(६) (९) जिसे इज्जत की चाह हो तो इज्जत तो सब अल्लाह के हाथ है^(६) उसी की तरफ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम^(७) और जो नेक काम है वह उसे बलन्द करता है^(८) और वो जो बुरे दाँव करते हैं उनके लिये सख्त अज़ाब है^(९) और उन्हीं का मक़द (कपट) बरबाद होगा^(१०) (१०) और अल्लाह ने तुम्हें बनाया^(११) मिट्टी से फिर^(१२) पानी की बूंद से फिर तुम्हें किया जोड़े जोड़े^(१३) और किसी मादा के पेट नहीं रहता और न वह जनती है अगर उसके इल्म, और जिस बड़ी उम्र वाले को उम्र दी जाए या जिस किसी की उम्र कम रखी जाए यह सब एक किताब में है^(१४) बेशक यह अल्लाह को आसान है^(१५) (११) और दोनों समन्दर एक से नहीं^(१६) यह मीठा है, ख़ूब मीठा पानी खुशगवार और यह ख़ारी है, तलब और हर एक में से तुम खाते हो ताज़ा गोشت^(१७) और निकालते हो पहनने का एक गहना^(१८) और तू किशितियों को उसमें देखे कि पानी चीरती हैं^(१९) ताकि तुम उसका फ़ज़ल (कृपा) तलाश करो^(२०) और किसी तरह हक़ मानो^(२१) (१२) रात लाता है दिन के हिस्से में^(२२) और दिन लाता है रात के

بَعْدَ مَوْتِهَا كَذَلِكَ النُّشُورُ ۝ مَنْ كَانَ يُرِيدُ
الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا ۝ إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ
الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۝ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ
السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝ وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ
يُجُورُ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ
جَعَلَكُمْ أَرْوَاجًا ۝ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضْمُ إِلَّا
بِعِلْمِهِ ۝ وَمَا يَعْتَمِرُ مِنْ مَّعْمَرٍ وَلَا يُنْقِصُ مِنْ عُمُرٍ
إِلَّا فِي كِتَابٍ ۝ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ وَمَا
يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ ۚ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ
وَهَذَا لَمَلٌ أَجَابٌ ۚ وَمِنْ كُلِّ تَاكُلُونَ لِحَاطِرًا ۚ إِنَّ
لَنَسْتَخْرِجُونَ حَلِيَّةً ۚ نَلْبِسُوهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ
مَوَازِيرَ ۚ لَتَنْبَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَ

مِثْلُ

- (५) कि उसने तुम्हारे लिये ज़मीन को फ़र्श बनाया, आसमान को ख़ैर किसी सुतून के कायम किया, अपनी राह बताने और हक़ की दावत देने के लिये रसूलों को भेजा रिज़क के दरवाज़े खोले.
- (६) मैं ह बरसाकर और तरह तरह की वनस्पति पैदा करके.
- (७) और यह जानते हुए कि वही ख़ालिक और रिज़क देने वाला है, ईमान और तौहीद से क्यों फिरते हो. इसके बाद नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली के लिये फ़रमाया जाता है.
- (८) ये मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम और तुम्हारी नबुव्वत और रिसालत को मानें और तौहीद और दोबारा उठाए जाने और हिसाब और हिसाब और ज़ुल्म का इन्कार करें.
- (९) उन्होंने सब किया, आप भी सब फ़रमाइये. काफ़िरों का नबियों के साथ पहले से यह दस्तूर चला आता है.
- (१०) वह झुटलाने वालों को सज़ा देगा और रसूलों को मदद फ़रमाएगा.
- (११) क़यामत ज़रूर आनी है, मरने के बाद ज़रूर उठना है, कर्मों का हिसाब यकीनन होगा. हर एक को उसके किये की जज़ा बेशक मिलेगी.
- (१२) कि उसकी लज़ज़तों में मशगूल होकर आख़िरत को भूल जाओ.
- (१३) यानी शैतान तुम्हारे दिलों में यह बसवसा डाल कर कि गुनाहों से मज़ा उठाओ. अल्लाह तआला हिल्म फ़रमाने वाला है वह दर गुज़र करेगा. अल्लाह तआला बेशक हिल्म वाला है लेकिन शैतान की फ़रेबकारी यह है कि बन्दों को इस तरह तौबह और नेक अमल से रोकता है और गुनाह और गुमराही पर उकसाता है, उसके धोखे से होशियार रहो .
- (१४) और उसकी इत्ताअत न करो और अल्लाह तआला की फ़रमाँबंदारी में मशगूल रहो.
- (१५) यानी अपने अनुयाइयों को, कुफ़र की तरफ़.
- (१६) अब शैतान के अनुयाइयों और उसके विरोधियों का हाल तफ़रील के साथ बयान फ़रमाया जाता है.
- (१७) जो शैतान के ग़िरोह में से हैं.
- (१८) और शैतान के धोखे में न आए और उसकी राह न चले.

सूरए फ़ातिर - दूसरा रुकू

- (१) हरगिज़ नहीं, बुरे काम को अच्छा समझने वाला राह पाए हुए की तरह क्या हो सकता है. वह बदकार कई दर्जे बेहतर है जो अपने ज़ात में नैक की गुरा मानता हो, सच को सच और बातिल को बातिल समझता हो. यह अख़्त अज़्र ज़हल और ह नफ़र के

हिस्से में^(२३) और उसने काम में लगाए सूरज और चांद हर एक एक निश्चित मीआद तक चलता है^(२४) यह है अल्लाह तुम्हारा रब उसी की बादशाही है, और उसके सिवा जिन्हें तुम पूजते हो^(२५) खुरमा के दाने के छिलके तक के मालिक नहीं^(२६) तुम उन्हें पुकारो तो वो तुम्हारी पुकार न सुनें^(२७) और फ़र्ज़ करो सुन भी लें तो तुम्हारी हाजत रवा (पूरी) न कर सकें^(२८) और क़यामत के दिन वो तुम्हारे शिर्क से इन्कारी होंगे^(२९) और तुझे कोई न बताएगा उस बताने वाले की तरह^(३०) (१४)

तीसरा रूकू

ऐ लोगो तुम सब अल्लाह के मोहताज^(१) और अल्लाह ही वेनियाज़ (वेपवाई) है सब ख़ूबियों सराहा^(२) वह चाहे तो तुम्हें ले जाए^(३) और नई मखलूक ले आए^(४) (१५) और यह अल्लाह पर कुछ दुश्वार (कठिन) नहीं^(५) और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी^(६) और अगर कोई बोझ वाली अपना बोझ बटाने को किसी को बुलाए तो उसके बोझ में से कोई कुछ न उठाएगा अगरचे क़रीबी रिश्तेदार हो^(७) ऐ मेहबूब तुम्हारा डर सुनाना उन्हीं को काम देता है जो वे देखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ क़ायम रखते हैं, और जो सुथरा हुआ^(८) तो अपने ही भले को सुथरा हुआ^(९) और अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है^(१०) और बराबर नहीं अंधा और अख़ियारा^(११) (१६)

سَخَّرَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرَ كُلَّ يَوْمٍ يَجْعَلُ لَاجِلٍ مُّسَمًّى ۖ
ذِكْرُكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ
مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ۚ إِنْ تَدْعُوهُمْ
لَا يَسْمَعُوا دَعَاءَكُمْ ۖ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۚ
وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بَشْرِكِكُمْ ۖ وَلَا يُنَبِّئُكَ
مِثْلُ خَبِيرٍ ۚ يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى
اللَّهِ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۚ إِنْ يَشَاءْ يُدْهِبْكُمْ
وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۚ
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ
إِلَىٰ حِمْلٍ لَا يَحْمِلُ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۚ
إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ ۚ وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى
اللَّهِ الْمَصِيرُ ۚ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۚ

مَنْ ثَابِتٌ

मुश्किलों के बारे में नाज़िल हुई जो अपने कुफ़्र और शिर्क जैसे बुरे कर्मों को शैतान के बहकाने और भला समझाने से अच्छा समझते थे, और एक क़ौल यह भी है कि यह आपत विदअत और हवा वालों के बारे में उतरी जिनमें राफ़ज़ी और ख़ारिजी वग़ैरह दाख़िल हैं जो अपनी बदमज़हबियों को अच्छा जानते हैं और उन्हीं के जुमे में दाख़िल हैं तमाम बदमज़हब, चाहे वहाबी हों या ग़ैर मुक़ल्लिद या मिज़ाई या चक़ड़ालबी, और बड़े गुनाह वाले, जो अपने गुनाहों को बुरा जानते हैं और हलाल नहीं समझते, इसमें दाख़िल नहीं। (२) कि अफ़सोस वो ईमान न लाए और सच्चाई को क़बूल करने से मेहरबम रहे, मुराद यह है कि आप उन के कुफ़्र और हलाकत का ग़म न फ़रमाएं।

(३) जिसमें सब्ज़ा और खेती नहीं और ख़ुश्क साली से वहाँ की ज़मीन बेजान हो गई है।

(४) और उसको हरा भरा कर देते हैं, इससे हमारी कुदरत ज़ाहिर है।

(५) सेयद आलम सल्लल्लाहो अलैह बसल्लम से अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला मुझे किस तरह ज़िन्दा फ़रमाएगा, ख़लक में उसकी कोई निशानी हो तो इशाद फ़रमाइये, फ़रमाया कि क्या तेरा किसी ऐसे जंगल में गुज़र हुआ है जो दुष्काल से बेजान होगया हो और वहाँ हरियाली का नामो निशान न रहा हो, फिर कमी उसी जंगल में गुज़र हुआ हो और उसको हरा भरा लहलहाता पाया हो, उन सहाबी ने अर्ज़ किया, बेशक ऐसा देखा है, हुज़ूर ने फ़रमाया ऐसे ही अल्लाह मुझों को ज़िन्दा करेगा और ख़लक में यह उसकी निशानी है।

(६) दुनिया और आख़िरत में वही इज़ज़त का मालिक है, जिसे चाहे इज़ज़त दे, तो जो इज़ज़त का तलबगार हो वह अल्लाह तआला से इज़ज़त तलब करे क्योंकि हर चीज़ उसके मालिक ही से तलब की जाती है, हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला हर रोज़ फ़रमाता है जिसे दारैन की इज़ज़त की इच्छा हो, चाहिये कि वह इज़ज़त वाले रब की इताअत करे और इज़ज़त की तलब का साधन ईमान और अच्छे कर्म हैं।

(७) यानी उसके क़बूल और रज़ा के मक़ाम तक पहुंचता है, और पाकीज़ा क़लाम से मुराद कलिमए तौहीद व तबीह और तहमीद व तकवीर वग़ैरह हैं जैसा कि हाकिम और बेहिक्की ने रिवायत किया और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने कलिमए तैय्यिबह की तफ़सीर ज़िक्र से फ़रमाई और कुछ मुफ़स्सिरों ने क़ुरआन और दुआ भी मुराद ली है।

(८) नेक काम से मुश्राद वो अमल और इबादत है जो सच्चे दिल से हो और मानी ये हैं कि कलिमए तैय्यिबह अमल को बलन्द करता है क्योंकि अमल तौहीद और ईमान के बिना मक़बूल नहीं, या ये मानी हैं कि नेक अमल का अल्लाह तआला मक़बूलियत अता फ़रमाता है या ये मानी हैं कि अमल नेक अमल करने वाले का दर्जा बलन्द करते हैं तो जो इज़ज़त चाहे उसको लाज़िम है कि

नेक काम करे.

- (९) मुराद इन कपट करने वालों से वो कुशैश हैं जिन्होंने दास्त-नदवा में जमा होकर नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत कैद करने और क़त्ल करने और जिला बतन करने के मशवरे किये थे जिसका तफ़रीली बयान सूरए अनफ़ाल में हो चुका है.
- (१०) और वो अपने दाँव और धोखे में कामयाब न होंगे. चुनांत्व ऐसा ही हुआ. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनके शर और आतंक से मेहफूज़ रहे और उन्होंने अपनी मक्कारियों की सज़ाएँ पाई कि बद्र में कैद भी हुए, क़त्ल भी किये गए और मक्कए मुकर्रमा से निकाले भी गए.
- (११) यानी तुम्हारी अरल हज़रत आदम अलीहिस्सलाम को.
- (१२) उनकी नरल को.
- (१३) मर्द और औरत.
- (१४) यानी लौहे मेहफूज़ में. हज़रत क़तादह से रिवायत है कि जिसकी उम्र साठ साल पहुँचे और कम उम्र वाला वह जो उससे पहले मर जाए.
- (१५) यानी अमल और मौत का लिखना.
- (१६) बल्कि दोनों में फ़र्क़ है.
- (१७) यानी मछली.
- (१८) गौहर यानी मोती और मर्जान यानी मूंगा.
- (१९) दरिया में चलते हुए और एक ही हवा में आती भी हैं जाती भी हैं.
- (२०) तिज़ारत में नफ़ा हासिल करके.
- (२१) और अल्लाह तआला की नेअमतों की शुक्रगुज़ारी करो.
- (२२) तो दिन बढ़ जाता है.
- (२३) तो रात बढ़ जाती है यहाँ तक कि बढ़ने वाली दिन या रात की मिक्कदार पन्द्रह घण्टे तक पहुँचती है और घटने वाला नौ घण्टे का रह जाता है.
- (२४) यानी क़यामत के दिन तक, कि जब क़यामत आ जाएगी तो उनका चलना बन्द हो जाएगा और यह निज़ाम बाक़ी न रहेगा.
- (२५) यानी बुत.
- (२६) क्योंकि पत्थर बेजान हैं.
- (२७) क्योंकि कुछ भी कुदरत और इस्त्रियार नहीं रखते.
- (२८) और बेज़ारी का इज़हार करेंगे और कहेंगे तुम हमें पूजते थे.
- (२९) यानी दोनों जगत के हालात और बुत परस्ती के परिणाम की जैसी ख़बर अल्लाह तआला देता है और कोई नहीं दे सकता.

सूरए फ़ातिर - तीसरा रूकू

- (१) यानी उसके फ़ज़ल व एहसान के हाज़तमन्द हो और तमाम ख़ल्क उसकी मोहताज़ है. हज़रत जुन-नून ने फ़रमाया कि ख़ल्क हर दम हर क्षण अल्लाह तआला की मोहताज़ है और क्यों न होगी उनकी हस्ती और उनकी बक्रा सब उसके करम से है.
- (२) यानी तुम्हें मअदूम करदे क्योंकि वह बेनियाज़ और अपनी ज़ात में ग़नी है.
- (३) बजाय तुम्हारे जो फ़रमाँबरदार हो.
- (४) मानी ये हैं कि क़यामत के दिन हर एक जान पर उसी के गुनाहों का बोझ होगा जो उसने किये हैं और कोई जान किसी दूसरे के बदले न पकड़ी जाएगी अलबत्ता जो गुमराह करने वाले हैं उनके गुमराह करने से जो लोग गुमराह हुए उनकी तमाम गुमराहियों का बोझ उन गुमराहों पर भी होगा और उनके गुमराह करने वालों पर भी जैसा कि क़लामे मजीद में इरशाद हुआ "बला यहमिलुन्ना अस्क़ालहुम व अस्क़ालम सआ अस्क़ालिहिम" यानी और बेशक ज़रूर अपने बोझ उठाएंगे और अपने बोझों के साथ और बोझ - (सूरए अन्कबूत, आयत १३). और वास्तव में यह उनकी अपनी कमाई है, दूसरे की नहीं.
- (५) बाप या माँ, बेटा, भाई, कोई किसी का बोझ न उठाएगा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया माँ बाप, बेटे को लिपटेंगे और कहेंगे ए हमारे बेटे हमारे कुछ गुनाह उठा ले. वह कहेगा मेरे दस में नहीं, मेरा अपना बोझ क्या कम है.
- (६) यानी बंदियों से बचा और नेक अमल किये.
- (७) इस नेकी का नफ़ा वही पाएगा.
- (८) यानी जाहिल और आलिम या काफ़िर और मुमिन.

और न अंधेरियां^(११) और उजाला^(१०) (२०) और न साया^(१३) और न तेज़ धूप^(१२) (२१) और बराबर नहीं ज़िन्दे और मुर्दे^(१३) बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे चाहे^(१४) और तुम नहीं सुनाने वाले उन्हें जो क़ब्रों में पड़े हैं^(१५) (२२) तुम तो यही डर सुनाने वाले हो^(१६) (२३) ऐ महेबुब बेशक हमने तुम्हें हक के साथ भेजा खुशखबरी देता^(१७) और डर सुनाता^(१८) और जो कोई गिरोह था सब में एक डर सुनाने वाला गुजर चुका^(१९) (२४) और अगर ये^(२०) तुम्हें झुटलाएं तो इनसे अगले भी झुटला चुके हैं^(२१) उनके पास उनके रसूल आए रोशन दलीलें^(२२) और सहीफ़े (धर्मग्रन्थ) और चमकती किताब^(२३) लेकर (२४) फिर मैंने काफ़िरों को पकड़ा^(२५) तो कैसा हुआ मेरा इन्कार^(२६) (२६)

चौथा रूकू

क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा^(१) तो हमने उससे फल निकाले रंग विरंगे^(२) और पहाड़ों में रास्ते हैं सफ़ेद और सुर्ख रंग के और कुछ काले भुजंग^(३) (२७) और आदमियों और जानवरों और चौपायों के रंग यूँही तरह तरह के हैं^(४) अल्लाह से उसके बन्दों में वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं^(५) बेशक अल्लाह बाख़्शने वाला इज़्ज़त वाला है^(६) (२८)

وَلَا الظُّلُمُتُ وَلَا النُّورُ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ
وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْواتُ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ
مَنْ يَشَاءُ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَنْ فِي الْقُبُورِ إِنْ أَنْتَ
إِلَّا نَذِيرٌ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَإِنْ
مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ وَإِنْ يَكْفُرُوكَ فَقَدْ
كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ
وَبِالزَّبْرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ
كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُخْتَلِفًا
أَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بَيْضٌ وَحُمْرٌ مُخْتَلِفٌ
أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَّائِ
وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَلِكَ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ
مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ إِنْ

مَزْلُومٌ

- (१) यानी कुफ़र.
- (२) यानी ईमान.
- (३) यानी हक या ज़न्नत.
- (४) यानी बातिल या दोज़ख़.
- (५) यानी मूमीनीन और कुफ़कार या उलमा और जाहिल लोग.
- (६) यानी जिसकी हिदायत मन्ज़ूर हो उसको क़बूल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है.
- (७) यानी काफ़िरों को, इस आयत में काफ़िरों को मुर्दों से तश्बीह दी गई कि जिस तरह मुर्दे सुनी हुई बात से नफ़ा नहीं उठा सकते और नसीहत हासिल नहीं करते, बदअंजाम काफ़िरों का भी यही हाल है कि वह हिदायत और नसीहत से नफ़ा नहीं उठाते. इस आयत से मुर्दों के सुनने पर इस्तिदलाल करना सही नहीं है क्योंकि आयत में क़ब्र वालों से मुराद काफ़िर हैं न कि मुर्दे और सुनने से मुराद वह सुनना है जिस पर राह पाने का नफ़ा मिले. रहा मुर्दों का सुनना, वह कई हदीसों से साबित है. इस मसअले का बयान बीसवें पारे के दूसरे रूकू में गुजर चुका.
- (८) तो अगर सुनने वाला आपके डराने पर कान रखे और मानने की नियत से सुने तो नफ़ा पाए और अगर इन्कार पर डटे रहने वालों में से हो और आपकी नसीहत न माने तो आपका कुछ हर्ज नहीं, वही मेहरूम है.
- (९) ईमानदारों को, ज़न्नत की.
- (१०) काफ़िरों को, अज़ाब का.
- (११) चाहे वह नबी हो या दीन का आलिम जो नबी की तरफ़ से ख़ुदा के बन्दों को अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिलाए.
- (१२) मक्क के काफ़िर.
- (१३) अपने रसूलों को, काफ़िरों का पहले से नबियों के साथ यही बर्ताव रहा है.
- (१४) यानी नबुज्जत पर दलालत करने वाले चमत्कार.
- (१५) तौरात व इन्जील व जुबूर.
- (१६) तरह तरह के अज़ाबों से उनके झुटलाने के कारण.
- (१७) मेरा अज़ाब देना.

वेशक वो जो अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ कायम रखते हैं और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में खर्च करते हैं छुपवां और ज़ाहिर वो ऐसी तिजारेत के उम्मीदवार हैं^(५) (२९) जिसमें हरगिज़ टोटा नहीं ताकि उनके सवाब उन्हें भरपूर दे और अपने फ़ज़ल से और ज़्यादा अता करे वेशक वह बख़्शने वाला क्रूर फ़रमाने वाला है^(६) (३०) और वह किताब जो हमने तुम्हारी तरफ़ वही भेजी^(७) वही हक़ (सत्य) है अपने से अगली किताबों की तस्दीक़ (पुष्टि) फ़रमाती हुई, वेशक अल्लाह अपने बन्दों से ख़बरदार देखने वाला है^(८) (३१) फिर हमने किताब का वारिस किया अपने चुने हुए बन्दों को^(९) तो उनमें कोई अपनी जान पर जुल्म करता है, और उनमें कोई बीच की चाल पर है, और उनमें कोई वह है जो अल्लाह के हुक्म से भलाइयों में सबक़्त ले गया^(१०) यही बड़ा फ़ज़ल है^(११) (३२) वसने के वाग़ों में दाख़िल होंगे वो^(१२) उनमें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और वहाँ उनकी पोशाक रेशमी है^(१३) (३३) और कहेंगे सब ख़ुबियाँ अल्लाह को जिसने हमारा ग़म दूर किया^(१४) वेशक हमारा रब बख़्शने वाला क्रूर फ़रमाने वाला है^(१५) (३४) वह जिसने हमें आराम की जगह उतारा अपने फ़ज़ल से, हमें उसमें कोई तकलीफ़ न पहुंचे और न हमें उसमें कोई तक़ान लाहिक़

الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوْا
مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّنْ
تَبُورَ ۚ لِيُؤْتِيَهُمْ أَجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۗ
إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ
الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ
بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝ ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ
اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۖ وَمِنْهُمْ
مُقْتَصِدٌ ۖ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ ۖ إِنَّ اللَّهَ بِذَلِكَ
هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ جَنَّتٌ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا
يَحْمِلُونَ فِيهَا مِنْ آسَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ
فِيهَا حَرِيرٌ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا
الْحَزْنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝ الَّذِينَ أَحْلَلْنَا
دَارَ الْمَقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ ۖ لَا يَسْتَفْتِنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا

मज़ल

सूरए फ़ातिर - चौथा सूक़

- (१) बारिश उत्तारी.
- (२) सज़ा, सुख़, ज़र्द वग़ैरह, तरह तरह के अवार, सेव, इज़ीर, अंगूर वग़ैरह, वे शुमार.
- (३) जैसे फलों और पहाड़ों में, यहाँ अल्लाह तआला ने अपनी आयतों और अपनी कुदरत की निशानियाँ और ज़ालिकीयत (ख़ुजान-शक्ति) के निशान ज़िब से उसकी ज़ात व सिफ़त पर इस्तिदलाल किया जाए, ज़िक्र करें इसके बाद फ़रमाया.
- (४) और उसकी सिफ़त को जानने और उसकी अज़मत को पहचानने हैं, जितना इल्म ज़्यादा, उतना ख़ौफ़ ज़्यादा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मुराद यह है कि मख़लूक में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ उसको है जो अल्लाह तआला के जव़रत और उसकी इज़ज़त व शात से बाज़रव है. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कसम अल्लाह तआला की कि मैं अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा जानने वाला हूँ और सब से ज़्यादा उसका ख़ौफ़ रखने वाला हूँ.
- (५) यानी सवाब के.
- (६) यानी क्रूर आने मर्जीद.
- (७) और उनके ज़ाहिर व वातिन का जानने वाला.
- (८) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत को यह किताब अता फ़रमाई जिन्हें तमाम उम्मतों पर बुजुर्गी दी और बंदियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की गुलामी और नियाज़मन्दी की क़रामत और शराफ़त से मुशरफ़ फ़रमाया. इस उम्मत के लोग मूख़लिफ़ दर्जे रखते हैं.
- (९) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि सबक़्त ले जाने वाला सच्चा मूमिन है और बीच का रस्ता चलने वाला वह जिसके कर्म रिया से हों और ज़ालिम से मुराद यहाँ वह है जो अल्लाह की नेअमत का इन्कारी तो न हो लेकिन शुक्र बजा न लाए. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि हमारा पिछला तो पिछला ही है और मध्यमार्गी विजात पाया हुआ और ज़ालिम मग़फ़ूर. एक और हदीस में है हुज़ुरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया नेकियों में सबक़्त लेजाने वाला जन्नत में बेहिसाब दाख़िल होगा और बीच की राह चलने वाले से हिसाब में आसानी की जाएगी और ज़ालिम हिसाब के मन्क़रम में रोका जाएगा उसको परेशानी पेश आएगी फिर जन्नत में दाख़िल होगा. उम्मुल मूमिनौन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि साबिक़, एहदे रिसालत के वो मुख़लिस लोग हैं जिनके लिये रसूले क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जन्नत की वशास्त दी और बीच के रस्ते चलने वाले वो सहाबा हैं जो आपके तरीक़े पर चलते रहे और ज़ालिम हम तुम जैसे लोग हैं. यह हद

हो(३५) और जिन्होंने ने कुफ्र किया उनके लिये जहन्नम की आग है न उनकी क़ज़ा(मौत) आए कि मर जाएं(३६) और न उनपर उसका(३७) अज़ाब कुछ हल्का किया जाए, हम ऐसी ही सज़ा देते हैं हर बड़े नाशुक्र को(३८) और वो उसमें चिल्लाते होंगे(३९) ऐ हनारे रब, हमें निकाल(४०) कि हम अच्छा काम करें उसके खिलाफ़ जो पहले करते थे(४१) और क्या हम ने तुम्हें वह उभ्र न दी थी जिसमें समझ लेता जिसे समझना होता और डर सुनाने वाला(४२) तुम्हारे पास तशरीफ़ लाया था(४३) तो अब चखो(४४) कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं(४५)

पाँचवां रूकू

वेशक अल्लाह जानने वाला है आसमानों और ज़मीन की हर छुपी बात का, वेशक वह दिलों की बात जानता है(३८) वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में अगलों का जानशीन किया(३९) तो जो कुफ्र करे(४०) उसका कुफ्र उसी पर पड़े(४१) और काफ़िरों को उनका कुफ्र उनके रब के यहाँ नहीं बढ़ाएगा मगर वेज़ारी(४२) और काफ़िरों को उनका कुफ्र न बढ़ाएगा मगर नुक़सान(४३)(३९) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अपने वो शरीक(४४) जिन्हें अल्लाह के सिवा पूजते हो, मुझे दिखाओ उन्होंने ज़मीन में से कौन सा हिस्सा बनाया या आसमानों में कुछ उनका साझा है(४५) या हमने उन्हें कोई किताब दी है कि

يَسْتَأْذِنُ فِيهَا لُغُوبٌ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۖ
لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفَ عَنْهُمْ مِنْ
عَذَابِهَا كَذَلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۚ وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ
فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا
نَعْمَلُ ۖ أَوَلَمْ نَعْمَرْكُمْ مَا يُبْدُ كُفْرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرْ ۚ وَ
جَاءَكُمْ التَّنْذِيرُ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۚ
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ۚ هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي
الْأَرْضِ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ
كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ
كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ۚ قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَ الَّذِينَ
تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ
الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ أَمْ أُنْزِلَتْهُمْ كُتُبًا

مَثَلًا

दर्जे की चितव्रता थी हज़रत उम्मुल मुमिनीन रदियल्लाहो अन्हा की कि अपने आपको इस तीसरे तक्क (वर्ग) में शुमार फ़रमाया, इस बुजुर्गी और बलन्दी के बाबुजूद जो अल्लाह तआला ने आपको अता फ़रमाई थी और भी इसकी तफ़सीर में बहुत ज़ौल हैं जो तफ़सीरों में तफ़सील से आए हैं।

(१०) तीनों गिरोह।

(११) इस ग़म से मुराद या दोज़ख़ का ग़म है या मौत का या गुनाहों का या ताअतों के ग़ैर मक़बूल होने का या क़यामत के हौल का, ग़रज़ उन्हें कोई ग़म न होगा और वो उसपर अल्लाह की हम्द करेंगे।

(१२) कि गुनाहों को बर्ज़ता है और ताअतें कुबूल फ़रमाता है।

(१३) और मर कर अज़ाब से छूट सकें।

(१४) यानी जहन्नम का।

(१५) यानी जहन्नम में चीख़ते और फ़रियाद करते होंगे कि ---

(१६) यानी दोज़ख़ से निकाल ओर दुनिया में भेज।

(१७) यानी हम वज़ाय कुफ़्र के ईमान लाएं और वज़ाय गुमराही और नाफ़रमायती के तेरी इताअत और फ़रमाँबरदारी करें, इसपर उन्हें जवाब दिया जाएगा।

(१८) तुमने उस रसूले मोहतरम की दावत कुबूल न की और उनकी इताअत व फ़रमाँबरदारी बजा न लाए।

(२०) अज़ाब का मज़ा।

सूरए फ़ातिर - पाँचवां रूकू

(१) और उनके इमलाक और क़ब्ज़े वाली चीज़ों का मालिक और मुतसर्रिफ़ बनाया और उनके मुनाफ़े तुम्हारे लिये मुबाह किये ताकि तुम ईमान और इताअत इस्तिपार करके शुक्रगुज़ारी करो।

(२) और उन नेअमतों पर अल्लाह का शुक्र अदा न किया।

(३) यानी अपने कुफ़्र का बवाल उसी को बर्दाश्त करना पड़ेगा।

(४) यानी अल्लाह का ग़ज़ब।

(५) आख़िरत में।

वो उसकी रौशन दलीलों पर हैं^(६) बल्कि ज़ालिम आपस में एक दूसरे को वादा नहीं देते मगर धोखे का^(७) (४०) देशक अल्लाह रोके हुए है आसमानों और ज़मीन को कि जुंविश (हरकत) न करें^(८) और अगर वो हट जाएं तो उन्हें कौन रोके अल्लाह के सिवा, देशक वह हिल्म वाला बख्शने वाला है^(४१) और उन्होंने अल्लाह की क्रसम खाई अपनी क्रसमों में हद की कोशिश से कि अगर उनके पास कोई डर सुनाने वाला आया तो वो ज़रूर किसी न किसी गिरोह से ज्यादा राह पर होंगे^(११) फिर जब उनके पास डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया^(१२) तो उसने उन्हें न बढ़ाया मगर नफ़रत करना^(१३) (४२) अपनी जान को ज़मीन में ऊंचा खींचना और बुरा दाँव^(१४) और बुरा दाँव अपने चलने वाले पर ही पड़ता है^(१५) तो काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर उसी के जो अगलों का दस्तूर (तरीका) हुआ^(१६) तो तुम हरगिज़ अल्लाह के दस्तूर को बदलता न पाओगे, और हरगिज़ अल्लाह के क़ानून को टलता न पाओगे^(४३) और क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उनसे अगलों का कैसा अंजाम हुआ^(१७) और वो उनसे ज़ोर में सख़्त थे^(१८) और अल्लाह वह नहीं जिसके क़ावू से निकल सके कोई चीज़ आसमानों और ज़मीन में देशक वह इल्म व कुदरत वाला है^(४४)

فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِنْ يَعِدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ
بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ۚ إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
أَنْ تَزُولَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ
بَعْدِهِ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۚ وَأَقْسُوا يَا اللَّهُ جَهْدَ
أَيْمَانِكُمْ لِيَنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لِّيَكُونُوا هُدًى مِنْ أَجْلِ
الْأَمَمِ ۚ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۚ
اسْتَكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ
السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۚ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ
فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ
تَحْوِيلًا ۚ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ
قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا
فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۚ وَلَوْ يُؤَاخِذُ

مَنْ قَاتِلُهُ

- (६) यानी बुत.
- (७) कि आसमान के बनाने में उन्हें कुछ दख़ल हो, किस कारण उन्हें इबादत का मुस्तहक़ करार देते हो.
- (८) इनमें से कोई भी बात नहीं.
- (९) कि उनमें जो बहकाने वाले हैं वो अपने अनुयाइयों को धोखा देते हैं और बुतों की तरफ़ से उन्हें बानिल उम्मीदें दिलाते हैं.
- (१०) बरना आसमान और ज़मीन के बीच शिर्क जैसा गुनाह हो तो आसमान और ज़मीन कैसे कायम रहें.
- (११) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले कु़रैश ने यहूदियों और ईसाइयों के अपने रसूलों को मानने और उनको झुटलाने की ख़िस्त कहा था कि अल्लाह तआला उनपर लअनत करे कि उनके पास अल्लाह तआला की तरफ़ से रसूल आए और उन्होंने ने उन्हें झुटलाया और न माना. ख़ुदा की क्रसम अगर हमारे पास कोई रसूल आए तो हम उससे ज्यादा राह पर रहेंगे और उस रसूल को मानने में उनके बेहतर गिरोह पर सबक़्त ले जाएंगे.
- (१२) यानी नबियों के सरदार हबीबे ख़ुदा मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रौनक अफ़रोज़ी और ज़लवा आगई हुई.
- (१३) हक़ व हिदायत से और.
- (१४) बुरे दाव से मुराद या तो शिर्क व कुफ़्र है या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ छलकपट करना.
- (१५) यानी मक्कार पर, चुनान्ते फ़रेबकारी करने वाले बद्र में मारे गए.
- (१६) कि उन्होंने तकज़ीय की और उनपर अज़ाब उतरे.
- (१७) यानी क्या उन्होंने शाम और इराक़ और यमन के सफ़रों में नबियों को झुटलाने वालों की हलाक़त और बर्बादी और उनके अज़ाब और तबाही के निशानात नहीं देखे कि उनसे इब्रत हासिल करते.
- (१८) यानी वो तबाह हुई क़ौम इन मक्कार वालों से ज्यादा शक्तिशाली थीं इसके बावजूद इतना भी न हो सका कि वो अज़ाब से भाग कर कहीं पनाह ले सकतीं.

और अगर अल्लाह लोगों को उनके किये पर पकड़ता^(१९) तो ज़मीन को पीठ पर कोई चलने वाला न छोड़ता लेकिन एक मुकर्रर(निश्चित) मीआद^(२०) तक उन्हें ढील देता है फिर जब उनका वादा आया तो बेशक अल्लाह के सब वन्दे उसकी निगाह में हैं^(२१) (४५)

३६- सूरए यासीन

सूरए यासीन मक्का में उतरी, इसमें ८३ आयतें और पांच रूक हैं.

पहला रूक

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) यासीन^(२) हिकमत वाले कुरआन की क्रसम^(३) वेशक तुम^(४) सीधी राह पर भेजे गए हो^(५) इज़्जत वाले मेहरवान का उतारा हुआ^(६) ताकि तुम क़ौम को डर सुनाओ जिसके बाप दादा न डराए गए^(७) तो वो बेखबर हैं. वेशक उनमें अक्सर पर बात साबित हो चुकी है^(८) तो वो ईमान न लाएंगे^(९) हमने उनकी गर्दनो में तौक़ कर दिये हैं कि वो ठोड़ियों तक रहें तो ये ऊपर को मुंह उठाए रह गए^(१०) और हमने उनके आगे दीवार बना दी और उनके पीछे एक दीवार और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो उन्हें कुछ नहीं सूझता^(११) और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न डराओ वो ईमान लाने के नहीं^(१२) तुम तो उसी को डर सुनाते हो^(१३) जो नसीहत पर चले और



مَنْزِل

(१९) यात्री उनके गुनाहों पर.

(२०) यात्री क़यामत के दिन.

(२१) उन्हें उनके कर्मों की जज़ा देगा. जो अज़ाब के हकदार हैं उन्हें अज़ाब फ़रमाया और जो क़रम के लायक़ हैं उनपर रहमो क़रम करेगा.

३६ - सूरए यासीन - पहला रूक

(१) सूरए यासीन मक्के में उतरी. इसमें पाँच रूक, तिरासी आयतें, सात सौ उनतीस कलिमे और तीन हज़ार अक्षर हैं. तिरमिज़ी की हदीस शरीफ़ में है कि हर चीज़ के लिये दिल है और कुरआन का दिल यासीन है और जिसने यासीन पढ़ी, अल्लाह तआला उसके लिये दस बार कुरआन पढ़ने का सबाब लिखता है. यह हदीस गरीब है और इसकी असताद में एक रावी मजहूल है. अबू दाऊद की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया अपने मरने वालों पर यासीन पढ़ो. इसी लिये मौत के वक़्त सक़रात की हालत में मरने वाले के पास यासीन पढ़ी जाती है.

(२) ऐ नवियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(३) जो मंज़िले मक़सूद को पहुंचाने वाली है यह राह तौहीद और हिदायत की राह है, तमाम नबी इसी राह पर रहे हैं. इस आयत में काफ़िरों का रव है जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहते थे: "लस्ता मुरसलन" तुम रसूल नहीं हो. इसके बाद कुरआने करीम की निरबत इरशाद फ़रमाया.

(४) यात्री उनके पास कोई नबी न पहुंचे और कुरेश की क़ौम का यही हाल है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पहले उनमें कोई रसूल नहीं आया.

(५) यात्री अल्लाह के हुक्म और उसका लिखा उनके अज़ाब पर जारी हो चुका है और अल्लाह तआला का इरशाद "लअमलअन्ना जहन्नमा मिनल जिन्नते बन्नासे अजमईन" यात्री वेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा जिन्नों और आदमियों को मिलाकर. (सूरए हूद, आयत ११९) उन के हक़ में साबित हो चुका है और अज़ाब का उनके लिये निश्चित हो जाना इस कारण से है कि वो कुफ़्र और इनकार पर अपने इख़्तियार से अड़े रहने वाले हैं.

(६) इसके बाद उनके कुफ़्र में पक्के होने की एक तमसील (उपमा) इरशाद फ़रमाई.

रहमान से वेदेखे डरे, तो उसे बख्शिश और इज़्जत के सवाब की बशारत दो^(१०)॥११॥ बेशक हम मुद्दों को जिलाएंगे और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने आगे भेजा^(११) और जो निशानियाँ पीछे छोड़ गए^(१२) और हर चीज़ हमने गिन रखी है एक वताने वाली किताब में^(१३)॥१२॥

दूसरा सूकू

और उनसे निशानियाँ बयान करो उस शहर वालों की^(१) जब उनके पास भेजे हुए (रसूल) आए^(२)॥१३॥ जब हमने उनकी तरफ दो भेजे^(३) फिर उन्होंने उनको झुटलाया तो हमने तीसरे से ज़ोर दिया^(४) अब उन सबने कहा^(५) कि बेशक हम तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं^(६) बोले तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी और रहमान ने कुछ नहीं उतारा तुम त्रिरे झूटे हो^(७) वो बोले हमारा रब जानता है कि बेशक ज़रूर हम तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं^(८) और हमारे ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना^(९)॥१७॥ बोले हम तुम्हें मनहूस समझते हैं^(१०) बेशक तुम अगर बाज़ न आए^(११) तो ज़रूर हम तुम्हें संगसार करेंगे और बेशक हमारे हाथों तुम पर दुख की मार पड़ेगी^(१२) उन्होंने फ़रमाया तुम्हारी नहसत तो तुम्हारे साथ है^(१३) क्या इस पर बिदकते हो कि तुम समझाए गए^(१४) बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो^(१५)॥१९॥ और शहर के पर्ले किनारे से एक मर्द दौड़ता आया^(१६) बोला ऐ मेरी क़ौम भेजे हुआँ की पेरवी करो^(१७)॥२०॥ ऐसों की पेरवी करो जो तुम से कुछ नेग नहीं मांगते और वो राह पर हैं^(१८)॥२१॥

بِالْغَيْبِ، فَبَشِّرْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا كَرِيمًا ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَرَهُمْ وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ۝ وَاصْرَبْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ إِنَّمَا يَطْرُقُ النَّاسَ أَجْدَاءَ ۚ إِذْ جَاءَهُمُ الْمُرْسَلُونَ ۝ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَهُكُم مُّرْسَلُونَ ۝ قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا ۚ وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ ۚ إِن أَنْتُمْ إِلَّا سَكَّادُونَ ۚ قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَهُكُم لَمُرْسَلُونَ ۚ وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ قَالُوا إِنَّا نَطَّيَّرُكُمْ إِنَّا يَكْفُرُ لَكُمْ فَتَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَكَيْسَبْتُمْ مَنَا عَذَابَ إِلِيمٍ ۝ قَالُوا طَائِفُكُمْ مَعَكُمْ ۚ إِن دُكِرْتُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝ وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدْيَنَةِ رَجُلٌ يُسَبِّحُ قَالَ يَقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۝ اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْئَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ۝

मन्द

(७) यह तमसील है उनके कुकुर में ऐसे पुख्ता होन की कि डराने और चंतावनी वाली आयतों और नसीहत और हिदायत के अहकामात किसी से वो नफा नहीं उठा सकते जैसे कि वो व्यक्ति जिन की गर्दन में "गिल" की क्रिम का तौक पड़ा हो जो ठोड़ी तक पहुंचता है और उसकी वजह से वो सर नहीं झुका सकते, यही हाल उनका है कि किसी तरह उनको हक की तरफ रुचि नहीं होती और उसके हुज़ूर सर नहीं झुकाते, और कुछ मुफ़सिर्सों ने फ़रमाया है कि यह उनके हाल की हकीकत है, ज़हन्नम में उन्हें इसी तरह का अज़ाब किया जाएगा जैसा कि दूसरी आयत में इशारा फ़रमाया : "इज़िल अमलालो फ़ी अअनाक़िहम" जब उनकी गर्दनों में तौक होंगे और जंजीरें, घसीटे जाएंगे (सूरए अल-मूमिन, आयत ७१), यह आयत अब जहल और उसके दो मख़ज़्ज़मी दोस्तों के हक़ में उतरी, अब जहल ने फ़रामा खाई थी कि अगर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नमाज़ पढ़ते देखेगा तो पत्थर से सर कुचल डालेगा, जब उसने हुज़ूर को नमाज़ पढ़ते देखा तो वह इसी ग़लत इरादे से एक भारी पत्थर लाया, जब उस पत्थर को उठाया तो उसके हाथ गर्दन में चिपके रह गए और पत्थर हाथ की लिपट गया, यह हाल देखकर अपने दोस्तों की तरफ वापस हुआ और उनसे बाकिआ बयान किया तो उसके दोस्त बलीद बिन मुगीरह ने कहा कि यह काम मैं करूंगा और मैं उनका सर कुचल कर ही आऊंगा, चुनान्चे पत्थर ले आया, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अभी नमाज़ ही पढ़ रहे थे, जब यह क़रीब पहुंचा, अल्लाह तआला ने उसकी बीनाई यानी दृष्टि छीन ली, हुज़ूर की आवाज़ सुनता था, आँत्रों से देख नहीं सकता था, यह भी परेशान होकर अपने चारों की तरफ लौटा, वो भी नज़र न आए, उन्होंने ही उसे पुकारा और उससे कहा तूने क्या किया, कहने लगा मैं ने उनकी आवाज़ तो सुनी मगर वह मुझे नज़र ही न आए, अब अब जहल के तीसरे दोस्त ने दावा किया कि वह इस काम का अंजाम देगा और बड़े दावे के साथ वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ चला था, पर उल्टे पाँव ऐसा बदहवास होकर भागा कि आँधे मुंह गिर गया, उसके दोस्तों ने हाल पूछा तो कहने लगा कि मेरा दिल बहुत सरस्त है मैं ने एक बहुत बड़ा सांड देखा जो मेरे और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) के बीच आ गया, लात और उज़्ज़ा की क्रिम, अगर मैं ज़रा भी आगे बढ़ता तो मुझे खा ही जाता, इसपर यह आयत उतरी, (स्वाज़िन व जुमल)

(८) यह भी तमसील है कि जैसे किसी शख्स के लिये दोनों तरफ़ दीवारें हों और हर तरफ़ से रास्ता बन्द कर दिया गया हो वह किसी मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुंच सकता, यही हाल इन काफ़िरों का है कि उन पर हर तरफ़ से ईमान की राह बन्द है, सामने उनके सांसारिक घमण्ड की दीवारें हैं और उनके पीछे आग़िरत को झुटलाने की, और वो अज्ञानता के कैदख़ाने में कैद हैं, दलीलों

पर नज़र करना उन्हें मयस्सर नहीं।

(९) यानी आपके डर सुनाने से वहीं लाभ उठाता है।

(१०) यानी जन्नत की।

(११) यानी दुनिया की ज़िन्दगी में जो नेकी या बर्दी की, ताकि उसपर बदला दिया जाए।

(१२) यानी और हम उनकी वो निशानियाँ वो तरीक़े भी लिखते हैं जो वो अपने ब्राद छोड़ गए चाहे वो तरीक़े नेक हों या बुरे जो नेक तरीक़े उम्मतों निकालते हैं उनको बिदअते हसना कहते हैं और उस तरीक़े को निकालने वालों और अमल करने वालों दोनों को सवाब मिलता है और जो बुरे तरीक़े निकालते हैं उनको बिदअते सैयिअह कहते हैं। इस तरीक़े के निकालने वाले और अमल करने वाले दोनों गुनाहगार होते हैं। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख्स ने इस्लाम में नेक तरीक़ा निकाला उसको तरीक़ा निकालने का भी सवाब मिलेगा और उसपर अमल करने वालों का भी सवाब, वगैर इसके कि अमल करने वालों के सवाब में कुछ कमी की जाए। और जिसने इस्लाम में बुरा तरीक़ा निकाला तो उस पर वह तरीक़ा निकालने का भी गुनाह और उस तरीक़े पर अमल करने वालों के भी गुनाह वगैर इसके कि उन अमल करने वालों के गुनाहों में कुछ कमी की जाए। इससे मालूम हुआ कि सैकड़ों भलाई के काम जैसे फ़ातिहा, ग्यारहवीं व तीजा व चालीसवाँ व उर्स व तौशा व ख़तम व ज़िक्र की मेहफ़िलें, मीलाद व शहादत की मजलिसें जिनको बदमज़हब लोग बिदअत कहकर मना करते हैं और लोगों को इन नेकियों से रोकते हैं, ये सब दुरुस्त और अज़ और सवाब के कारण हैं और इनको बिदअते सैयिअह बताना ग़लत और बातिल है। ये ताआत और नेक अमल जो ज़िक्र व तिलावत और सदका व ख़ैरात पर आधारित है बिदअते सैयिअह नहीं। बिदअते सैयिअह वो बुरे तरीक़े हैं जिन से दीन को नुकसान पहुंचता है और जो सुन्नत के विरुद्ध हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि जो कौम बिदअत निकालती है उससे एक सुन्नत उठ जाती है। तो बिदअत सैयिअह वही है जिससे सुन्नत उठती हो जैसे कि रिफ़ज़ व ख़ारिजियत और वहाबियत, ये सब इन्तिहा दर्जे की ख़राब बिदअतें हैं। राफ़जियत और ख़ारिजियत जो सहाबा और अहले बैत रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुश्मनी पर आधारित हैं, उनसे सहाबा और अहले बैत के साथ महबूत और नियाज़मन्दी रखने की सुन्नत उठ जाती है जिसके शरीअत में ताक़ीदी हुक्म हैं। वहाबियत की जड़ अल्लाह के मक़बूल बन्दों, नवियों वलियों की शान में बेअदबी और गुस्ताख़ी और तमाम मुसलमानों को मुश्किल ठहराना है। इससे बुज़ुर्ग़ाने दीन की हुर्मत और इज़्ज़त और आदर सत्कार और मुसलमानों के साथ भाई चारे और महबूत की सुन्नतें उठ जाती हैं जिनकी बहुत सख़्त ताक़ीदें हैं और जो दीन में बहुत ज़रूरी चीज़ें हैं। और इस आयत की तफ़सील में यह भी कहा गया है कि आसार से मुराद वो क़दम हैं जो नमाज़ी मस्जिद की तरफ़ चलने में रखता है और इस मानी पर आयत के उतरने की परिस्थिति यह बयान की गई है कि बनी सलमा मदीनए तैय्यिबह के किनारे पर रहते थे उन्होंने चाहा कि मस्जिद शरीफ़ के करीब आ बसें। इसपर यह आयत उतरी और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारे क़दम लिखे जाते हैं, तुम मक़ान न बदलां, यानी जितनी दूर से आओगे उतने ही क़दम ज़्यादा पड़ेंगे और अज़ व सवाब ज़्यादा होगा।

(१३) यानी लौहें मेहफूज़ में।

सूरए यासीन - दूसरा ख़ूक़

(१) इस शहर से मुराद अन्ताकियह है। यह एक बड़ा शहर है इसमें चश्मे हैं, कई पहाड़ हैं एक पथरीली शहर पनाह यानी नगर सीमा है। बारह मील के घेरे में बसता है।

(२) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के वाक़ए का संक्षिप्त बयान यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने दो हवारीयों सादिक और सुदूक को अन्ताकियह भेजा ताकि वहाँ के लोगों को जो बुत परस्त थे सच्चे दीन की तरफ़ बुलाएं। जब ये दोनों शहर के करीब पहुंचे तो उन्होंने एक बूढ़े व्यक्ति को देखा कि बकरियाँ चरा रहा है। उसका नाम हबीब नज्ज़ार था। उसने उनका हाल पूछा। उन दोनों ने कहा कि हम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के भेजे हुए हैं तुम्हें सच्चे दीन की तरफ़ बुलाने आए हैं कि बुत परस्ती छोड़कर ख़ुदा परस्ती इस्तिफ़ार करो। हबीब नज्ज़ार ने निशानी पूछी। उन्होंने कहा कि निशानी यह है कि हम बीमारों को अय्या करते हैं। अंधों को आँख़ पाला करते हैं, सफ़ेद दाग़ थालों का रोग दूर करते हैं। हबीब नज्ज़ार का बेटा दो साल से बीमार था उन्होंने उस पर हाथ फ़ेरा वह स्वस्थ हो गया। हबीब ईमान ले आए और इस घटना की ख़बर मशहूर हो गई यहाँ तक कि बहुत सारे लोगों ने उनके हाथों अपनी बीमारियों से सेहत पाई। यह ख़बर पहुंचने पर बादशाह ने उन्हें बुला कर कहा कि क्या हमारे मअबूदों के सिवा और कोई मअबूद भी है। उन दोनों ने कहा हाँ वही जिसने तुझे और तेरे मअबूदों को पैदा किया। फिर लोग उनके पीछे पड़ गए और उन्हें मारा। दोनों कैद कर लिये गए। फिर हज़रत ईसा ने शमऊन को भेजा। वह अज़नबी बन कर शहर में दाख़िल हुए और बादशाह के मुसाहिबों और करीब के लोगों से मेल जोल पैदा करके बादशाह तक पहुंचे और उसपर अपना असर पैदा कर लिया। जब देखा कि बादशाह उनसे ख़ूब मानूस हो चुका है तो एक दिन बादशाह से ज़िक्र किया कि दो आदमी जो कैद किये गए हैं क्या उनकी बात सुनी गई थी कि वो क्या कहते थे। बादशाह ने कहा कि नहीं। जब उन्होंने नए दीन का नाम लिया फ़ौरन ही मुझे गुस्सा आ गया। शमऊन ने कहा अगर बादशाह की राय हो तो उन्हें बुलाया जाए देखें उनके पास क्या है। चुनौतिये वो दोनों बुलाए गए। शमऊन ने उनसे पूछा तुम्हें किस ने भेजा है। उन्होंने कहा उस अल्लाह ने जिसने हर चीज़ का पैदा किया और हर जानदार को रोज़ी दी और जिसका कोई शरीक़ नहीं।

शमऊन ने कहा कि उसकी संक्षेप में विशेषताएं बयान करो. उन्होंने कहा वह जो चाहता है करता है जो चाहता है हुक्म देता है. शमऊन ने कहा तुम्हारी निशानी क्या है. उन्होंने कहा जो बादशाह चाहे. तो बादशाह ने एक अंधे लड़के को बुलाया उन्होंने दुआ की वह फौरन आँख वाला हो गया. शमऊन ने बादशाह से कहा कि अब मुनासिब यह है कि तू अपने मअबूदों से कह कि वो भी ऐसा ही करके दिखाएँ ताकि तेरी और उनकी इज्जत ज़ाहिर हो. बादशाह ने शमऊन से कहा कि तुम से कुछ छुपाने की बात नहीं है. हमारा मअबूद ने देखे न सुने न कुछ बिगाड़ सके न बना सके. फिर बादशाह ने उन दोनों हवारीयों से कहा कि अगर तुम्हारे मअबूद को मुर्दे के ज़िन्दा कर देने की ताकत हो तो हम उसपर ईमान ले आएँ. उन्होंने कहा हमारा मअबूद हर चीज़ पर कादिर है. बादशाह ने एक किसान के लड़के को मंगाया जिसे मरे हुए सात दिन हो चुके थे और जिसमें ख़राब होगया था, बदबू फैल रही थी. उनकी दुआ से अल्लाह तआला ने उसको ज़िन्दा किया और वह उठ खड़ा हुआ और कहने लगा मैं मुश्किल भरा था मुझे जहन्नम की सात घाटियों में दाख़िल किया गया. मैं तुम्हें आगाह करता हूँ कि जिस दिन पर तुम हो वह बहुत हानिकारक है. ईमान ले आओ और कहने लगा कि आसमान के दरवाज़े खुले और एक सुन्दर जवान मुझे नज़र आया जो उन तीनों व्यक्तियों की सिफ़ारिश करता है बादशाह ने कहा कौन तीन. उसने कहा एक शमऊन और दो ये. बादशाह को आश्चर्य हुआ. जब शमऊन ने देखा कि उसकी बात बादशाह पर असर कर गई तो उसने बादशाह को नसीहत की वह ईमान ले आया और उसकी क़ौम के कुछ लोग ईमान लाए और कुछ ईमान न लाए और अल्लाह के अज़ाब से हलाक किये गए.

- (३) यानी दो हवारी. वही ने कहा उनके नाम यूहन्ना और बोलस थे और कअब का कौल है कि सादिक व सद्क़.
- (४) यानी शमऊन से तक़वियत और ताईद पहुंचाई.
- (५) यानी तीनों फ़रिस्तादों यानी एलचियों ने.
- (६) खुली दलीलों के साथ और वह अर्थों और बीमारों की अच्छा करता और मुर्दों को ज़िन्दा करता है.
- (७) जब से तुम आए बारिश ही नहीं हुई.
- (८) अपने दीन की तयलीम से.
- (९) यानी तुम्हारा कुफ़्र.
- (१०) और तुम्हें इस्लाम की दावत दी गई.
- (११) गुमराही और सरक्शी में और यही बड़ी नहूसत है.
- (१२) यानी हबीब नज़्ज़ार जो पहाड़ के ग़ार में इबादत में मसरूफ़ था जब उसने सुना कि क़ौम ने इन एलचियों को झुटलाया.
- (१३) हबीब नज़्ज़ार की यह बात सुनकर क़ौम ने कहा कि क्या तू उनके दीन पर है और तू उनके मअबूद पर ईमान लाया, इसके जवाब में हबीब नज़्ज़ार ने कहा.

पारा बाईस समाप्त

तेईसवाँ पारा- वमालिया (सूरए यासीन जारी)

और मुझे क्या है कि उसकी बन्दगी न करूँ जिसने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम्हें पलटना है^(१२) (२२) क्या अल्लाह के सिवा और खुदा ठहराऊँ?^(१३) कि अगर रहमान मेरा कुछ बुरा चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और न वो मुझे बचा सकें^(२३) बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूँ^(१४) (२४) मुकर्रर में तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो मेरी सुनो^(१५) (२५) उससे फ़रमाया गया कि जन्नत में दाख़िल हो^(१६) कहा किसी तरह मेरी क़ौम जानती- (२६) जैसी मेरे रब ने मेरी मग़फ़िरत की और मुझे इज़्ज़त वालों में किया^(१७) (२७) और हमने उसके बाद उसकी क़ौम पर आसमान से कोई लश्कर न उतारा^(१८) और न हमें वहाँ कोई लश्कर उतारना था^(२८) वह तो बस एक ही चीख़ थी जभी वो बुझ कर रह गए^(१९) (२९) और कहा गया कि हाय अफ़सोस उन बन्दों पर^(२०) जब उनके पास कोई रसूल आता है तो उससे ठट्ठा ही करते हैं^(३०) क्या उन्होंने न देखा^(२१) हमने उनसे पहले कितनी संगतें हलाक फ़रमाई कि वो अब उनकी तरफ़ पलटने वाले नहीं^(२२) (३१) और जितने भी हैं सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर लाए जाएंगे^(२३) (३२)

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدَ الَّذِي فَطَرَنِي وَالَّذِي بِهِ مُصِئَاتِي
مَا تَتَّخِذُ مِنْ دُونِهِ آلِهَةً إِنْ يُرِدْنِ الرَّحْمَنُ بِضُرٍّ لَا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونِ ۚ إِنَِّّي إِذَا
لَمْ أَصْلِحْ مَبِينٌ ۚ إِنَِّّي أَمِنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمِعُونِ ۚ
قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۖ قَالَ لِيَبْتَغَىٰ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ۚ وَمَا
عَقَرْتُ رَأْسِي وَلَجَعَلَنِي مِنَ الْمَكْرُمِينَ ۚ وَمَا أَنْزَلُنَا
عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا
مُؤْثِرِينَ ۚ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ
خَائِدُونَ ۚ يَحْضَرُهُ عَلَى الْعِبَادَةِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ
رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۚ أَلَمْ يَرَوْا كَمَا أَهْلَكْنَا
قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَٰهٌ لَا يَرْجِعُونَ ۚ وَإِنْ
كُلُّ لُبٍّ جَمِيعٍ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۚ وَآيَةٌ لَهُمُ الْأَرْضُ
الَّتِي تَنْبَغِي ۚ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَبِتُّهُ

مَثَلٌ

तीसरा रूकू

और उनके लिये एक निशानी मुर्दा ज़मीन है^(१) हमने उसे
जिन्दा किया^(२) और फिर उससे अनाज निकाला तो उसमें

(१४) यानी इन्दिदाए हस्ती से जिसकी हम पर नेअमतें हैं और आख़िरे कार भी उसी की तरफ़ पलटना है, उस हक्कीक़ी मालिक की इबादत न करना क्या मानी और उसकी निस्वत ऐतिराज़ कैसा, हर व्यक्ति अपने बुज़ूद पर नज़र करके उसके हक्क़ नेअमत और एहसान को पहचान सकता है।

(१५) यानी क्या बुतों की मअबूद बनाऊँ।

(१६) जब हबीब नज्ज़ार ने अपनी क़ौम से ऐसा नसीहत भरा क़त्लाम किया तो वो लागे उनपर अचानक टूट पड़े और उनपर पथराव शुरू कर दिया और पाँच से कुचला यहाँ तक कि क़त्ल कर डाला, उनकी क़ब्र अन्ताकियह में है जब क़ौम ने उनपर हमला शुरू किया तो उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के एलचियों से बहुत जल्दी करके यह कहा।

(१७) यानी मेरे ईमान के गवाह रहो जब वो क़त्ल हो चुके तो इकराम (आदर) के तौर पर ---

(१८) जब वो जन्नत में दाख़िल हुए और वहाँ की नेअमतें देखीं।

(१९) हबीब नज्ज़ार ने यह तमन्ना की कि उनकी क़ौम की मालूम हो जाए कि अल्लाह तआला ने हबीब नज्ज़ार की मग़फ़िरत की और मेहरबानी फ़रमाई ताकि क़ौम को रसूलों ले दीन की तरफ़ रगवत हो, जब हबीब क़त्ल कर दिये गए तो अल्लाह तआला का उस क़ौम पर ग़ज़ब हुआ और उनकी सज़ा में देर फ़रमाई गई, हज़रत जिब्रईल को हुक्म हुआ और उनकी एक ही हीलनाक आवाज़ से सब के सब मर गए चुनान्ने इश्शाद फ़रमाया जाता है।

(२०) इस क़ौम की हलाक़त के लिये।

(२१) फ़ना हो गए जैसे आग़ बुझ जाती है।

(२२) उन पर और उनकी तरह और सब पर जो रसूलों को झुटलाकर हलाक़ हुए।

(२३) यानी मक्का वालों ने जो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाने हैं कि --

(२४) यानी दुनिया की तरफ़ लौटने वाले नहीं, क्या ये लोग उनके हाल से इज़त हासिल नहीं करते।

(२५) यानी सारी उम्मतें क़यामत के दिन हमारे हुज़ूर हि़साब के लिये मैदात में हाज़िर की जाएंगी।

से खाते हैं (३३) और हमने उसमें (३) बाग बनाए खजूरों और अंगूरों के और हमने उसमें कुछ चश्मे बहाए (३४) कि उसके फलों में से खाएं और ये उनके हाथ के बनाए नहीं तो क्या हक़ न मानेंगे (३५) पाकी है उसे जिसने सब जोड़े बनाए (५) उन चीज़ों से जिन्हें ज़मीन उगाती है (६) और खुद उनसे (७) और उन चीज़ों से जिनकी उन्हें ख़बर नहीं (८) (३६) और उनके लिये एक निशानी (९) रात है हम उसपर से दिन खींच लेते हैं (१०) जभी वो अंधेरी में हैं (३७) और सूरज चलता है अपने एक ठहराव के लिये (११) यह हुक्म है ज़बरदस्त इल्म वाले का (१२) (३८) और चांद के लिये हमने मंज़िलें मुक़र्रर कीं (१३) यहां तक कि फिर हो गया जैसे खजूर की पुरानी डाली (टहनी) (१४) (३९) सूरज को नहीं पहुंचता कि चांद को पकड़ ले (१५) और न रात दिन पर सबक़त ले जाए (१६) और हर एक एक घेरे में पैर रहा है (४०) और उनके लिये एक निशानी यह है कि उन्हें उनके बुजुर्गों की पीठ में हमने भरी किशती में सवार किया (१७) (४१) और उनके लिये वैसी ही किशतियां बना दीं जिनपर सवार होते हैं (४२) और हम चाहें तो उन्हें डुबो दें (१८) तो न कोई उनकी फ़रियाद को पहुंचने वाला हो और न वो बचाए जाए (४३) मगर हमारी तरफ़ की रहमत और एक वक़्त तक बरतने देना (१९) (४४)

يَا كُونُ ۝ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّتٍ مِّن تَخِيلٍ ۝ وَاعْنَابٍ ۝ وَفَجْرًا فِيهَا مِّن الْعِيُونِ ۝ لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ ۝ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۝ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ سُبْحَنَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُثْبِتُ الْأَرْضُ وَمِمَّا أَنْفُسُهُمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَإِيَّاهُمْ لَئْلُ لَسْخٍ مِّنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ ۝ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۝ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ۝ لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۝ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝ وَإِيَّاهُمْ أَنَا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلِكِ الْمَشْحُونِ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِن مِّثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ۝ وَإِن نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيحَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ ۝ إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝

मक़ाया

सूरए यासीन - तीसरा रूकू

- (१) जो इसको साबित करती है कि अल्लाह तआला मुर्दे को ज़िन्दा फ़रमाएगा.
- (२) पानी बरसा कर.
- (३) यानी ज़मीन में.
- (४) और अल्लाह तआला की नेअमतों का शुक्र अदा न करेंगे.
- (५) यानी तरह तरह, क़िरम क़िरम.
- (६) ग़ले फल सौरह.
- (७) औलाद, नर और मादा.
- (८) ख़ुशकी और तरी की अजीबो गरीब मख़लूक़त में से, जिसकी इन्सानों को ख़बर भी नहीं है.
- (९) हमारी ज़बरदस्त कुदरत को प्रमाणित करने वाली.
- (१०) तो बिल्कुल अंधेरी रह जाती है जिस तरह काले भुजंगे हवशी का सफ़ेद लिबास उतार लिया जाए तो फिर वह काला ही रह जाता है. इस से मालूम हुआ कि आसमान और ज़मीन के बीच की फ़ज़ा अस्ल में तारीक़ है. सूरज की रौशनी उसके लिये एक सफ़ेद लिबास की तरह है. जब सूरज डूब जाता है तो यह लिबास उतर जाता है और फ़ज़ा अपनी अस्ल हालत में तारीक़ रह जाती है.
- (११) यानी जहाँ तक उसकी सैर की हद मुक़र्रर फ़रमाई गई है और वह क्रयामत का दिन है. उस वक़्त तक वह चलता ही रहेगा या ये मानी हैं कि वह अपनी मंज़िलों में चलता है और जब सबसे दूर वाले पश्चिम में पहुंचता है तो फिर लौट पड़ता है क्योंकि वही उसका ठिकाना है.
- (१२) और यह निशानी है जो उसकी भरपूर कुब्त और हिकमत को प्रमाणित करती है.
- (१३) चांद की २८ मंज़िलें हैं, हर रात एक मंज़िल में होता है और पूरी मंज़िल तय कर लेता है, न कम चले न ज्यादा. निकलने की तारीख़ से अष्टाईसवीं तारीख़ तक सारी मंज़िलें तय कर लेता है. और अगर महीना तीस दिन का हो तो दो रात और ज़नीस का हो तो एक रात छुपता है और जब अपनी अन्तिम मंज़िलों में पहुंचता है तो बारीक़ और क़मान की तरह बाँका और पीला हो जाता है.
- (१४) जो सूख कर पतली और बाँकी और पीली हो गई हो.
- (१५) यानी रात में, जो उसकी शौक़त के ज़हूर का वक़्त है, उसके साथ जमा होकर, उसके नूर का मग़लूब करके, क्योंकि सूरज और चांद में से हर एक की शौक़त के ज़हूर के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है. सूरज के लिये दिन, और चाँद के लिये रात.

और जब उनसे फ़रमाया जाता है डरो तुम उससे जो तुम्हारे सामने है^(१०) और जो तुम्हारे पीछे आने वाला है^(११) इस उम्मीद पर कि तुम पर मेहर (बया) हो तो मुंह फेर लेते हैं^(१४५) और जब कभी उनके रब की निशानियों से कोई निशानी उनके पास आती है तो उससे मुंह ही फेर लेते हैं^(१४६) और जब उनसे फ़रमाया जाए अल्लाह के दिये में से कुछ उसकी राह में खर्च करो तो काफ़िर मुसलमानों के लिये कहते हैं कि क्या हम उसे खिलाएं, जिसे अल्लाह चाहता तो खिला देता^(१३) तुम तो नहीं मगर खुली गुमराही में^(१४७) और कहते हैं कब आएगा ये वादा^(१४) अगर तुम सच्चे हो^(१५)^(१४८) राह नहीं देखते मगर एक चीख की^(१६) कि उन्हें आ लेगी जब वो दुनिया के झगड़े में फंसे होंगे^(१७)^(१४९) तो न वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर पलट कर जाएं^(१८)^(१५०)

चौथा सूक

और फूँका जाएगा सूर^(१) जभी वो क़ब्रों से^(२) अपने रब की तरफ़ दौड़ते चलेंगे^(३) कहेंगे हाय हमारी खराबी, किसने हमें सोते से जगा दिया^(४) वह है वह जिसका रहमान ने वादा दिया था और रसूलों ने हक़ फ़रमाया^(५)^(६) वह तो न होगी मगर एक चिंघाड़^(७) जभी वो सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर हो जाएंगे^(८)^(९)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا تَارَافَكُمْ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ اتَّقَوْا أَنْطَعِمُ مِنْ أَوْيَاتِ اللَّهِ طَعَمَةً ۚ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ ۝ قَالُوا يُونُسَ أَنْ يَخْرُجَ مِنْ مَتْنِ هَذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ۝ إِنْ كُنْتَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝

سورة

(१६) कि दिन का वक़्त पूरा होने से पहले आ जाए, ऐसा भी नहीं, बल्कि रात और दिन दोनों निर्धारित हिसाब के साथ आते जाते हैं. कोई उनमें से अपने वक़्त से पहले नहीं आता और सूरज चाँद में से कोई दूसरे की शौकत की सीमा में दाख़िल नहीं होता न आफ़ताब रात में चमके, न चाँद दिन में.

(१७) जो सामान अखाब काँराह से भरी हुई थी, मुग़द इससे कियतीये नूह है जिसमें उनके पहले पूर्वज सवार किये गए थे और ये और इनकी सन्तानें उनकी पीट में थीं.

(१८) किशियाँ के वावुजुद.

(१९) जो उनकी ज़िन्दगी के लिये मुक़रर फ़रमाया है.

(२०) यानी अज़ाबे दुनिया.

(२१) यानी आख़िरत का अज़ाब.

(२२) यानी उनका दस्तूर और काम का तरीक़ा ही यह है कि वो हर आयत और नसीहत से मुंह फेर लिया करते हैं.

(२३) यह आयत क़ुरैश के काफ़िरों के हक़ में उतरी जिनसे मुसलमानों ने कहा था कि तुम अपने मालों का वह हिस्सा मिरकीनों पर खर्च करो जो तुमने अपनी सोच में अल्लाह तआला के लिये निकाला है. इसपर उन्होंने कहा कि क्या हम उन्हें खिलाएं जिन्हें अल्लाह खिलाना चाहता तो खिला देता. मतलब यह था कि खुदा ही को दरिद्रों का मोहताज रखना मंज़ूर है तो उन्हें खाने को देना उसकी मज़ी के खिलाफ़ होगा. यह बात उन्होंने कंज़ूसी से, हंसी मज़ाक़ के तौर पर कही थी पर बिलकुल ग़लत थी क्योंकि दुनिया परीक्षा की जगह है. फ़कीरी और अमीरी दोनों आज़मायशें हैं. फ़कीर की परीक्षा सन्न से और मालदार की अल्लाह की राह में खर्च करने से. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ये रियायत है कि मक्क़ा मुक़र्रमा में ज़िन्दीक़ लोग थे जब उनसे कहा जाता था कि मिरकीनों को सदक़ा दो तो कहते थे कि हरगिज़ नहीं. यह कैसे हो सकता है कि जिसको अल्लाह तआला मोहताज करे, हम खिलाएं.

(२४) दोबारा ज़िन्दा होने और क़यामत का.

(२५) अपने दावे में. उनका यह ख़िलाफ़ नबीय़े करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपक़ सहाबा से था. अल्लाह तआला उनके हक़ में फ़रमाता है.

(२६) यानी सूर के पहले फूँके जाने की, जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फूँकेंगे.

(२७) ख़रीदो फ़रोख़्त में और ख़ाने घीने में, और बाज़ारों और मजलिसों में, दुनिया के कामों में, कि अचानक़ क़यामत हो जाएगी.

तो आज किसी जान पर कुछ जुल्म न होगा और तुम्हें बदला न मिलेगा मगर अपने किये का (५४) वेशक जन्नत वाले आज दिल के वहलावों में चैन करते हैं (५५) वो और उनकी वीवियाँ सायों में हैं तख्तों पर तकिया लगाए (५६) उनके लिये उसमे मेवा है और उनके लिये है उसमें जो मांगें (५७) उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुआ (५८) और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो (५९) ऐ आदम की औलाद क्या मैं ने तुम से एहद न लिया था (६०) कि शैतान को न पूजना (६१) वेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है (६२) और मेरी बन्दगी करना (६३) यह सीधी राह है (६४) और वेशक उसने तुम में से बहुत सी खलक़त को बहका दिया, तो क्या तुम्हें अक्ल न थी (६५) यह है वह जहन्नम जिसका तुम से वादा था (६६) आज उसी में जाओ बदला अपने कुफ़्र का (६७) आज हम उनके मुंहों पर मोहर कर देंगे (६८) और उनके हाथ हम से बात करेंगे और उनके पाँव उनके किये की गवाही देंगे (६९) और अगर हम चाहते तो उनकी आँखें मिटा देते (७०) फिर लपक

فَالْيَوْمَ لَا تَنْظُرُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ۚ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَكِئُونَ ۚ لَهُمْ فِيهَا قَاقَةٌ وَلَهُمْ مَآيِدٌ مِّنْ دُونِهَا ۚ سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِيمٍ ۚ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ۚ أَلَمْ أَعْهَدَ إِلَيْكُمْ لَئِنِّي آتِيكُمْ أَن لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۚ وَإِنِ اعْبُدُونِي هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۚ وَلَقَدْ أَصَلَّ مِنْكُمْ جِبَلٌ كَثِيرٌ أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۚ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۚ اصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۚ الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَنَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَى

مُزْنًا

हदीस शरीफ़ में है कि नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़रीदार और विक्रेता के बीच कपड़ा फैला होगा, न सौदा पूरा होने पाएगा, न कपड़ा लपेटा जाएगा कि क्रयामत हो जाएगी। यानी लोग अपने अपने कामों में लगे होंगे और वो काम वैसे ही अधूरे रह जाएंगे, न उन्हें खुद पूरा कर सकेंगे, न किसी दूसरे से पूरा करने को कह सकेंगे और जो घर से बाहर गए हैं वो वापस न आ सकेंगे, चुनांचे इशारा होता है।

(२८) वहीं मर जाएंगे और क्रयामत फ़ुरत और मोहलत न देगी।

सूरए यासीन - चौथा सूक़

(१) दूसरी बार. यह सूर का दूसरी बार फूँका जाना है जो मुद्दों को उठाने के लिये होगा और इन दानां फूँकों के बीच चालीस साल का फ़ासला होगा।

(२) ज़िन्दा होकर.

(३) यह कहना काफ़िरों का होगा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि वो यह बात इस लिये कहेंगे कि अल्लाह तआला दोनों फूँकों के बीच उनसे अज़ाब उठादेगा और इतना ज़माना वो सहेते रहेंगे और सूर के दूसरी बार फूँके जाने के बाद उठाए जाएंगे और क्रयामत की सज़ियाँ देखेंगे तो इस तरह चीख़ उठेंगे और यह भी कहा गया है कि जब काफ़िर जहन्नम और उसका अज़ाब देखेंगे तो उसके मुक़ाबले में क़ब्र का अज़ाब उन्हें आसान मालूम होगा इसलिये वो अफ़सोस पुकार उठेंगे और उस वक़्त कहेंगे.

(४) और उस वक़्त का इक़रार उन्हें कुछ नफ़ा न देगा.

(५) यानी सूर के आख़िरी बार फूँके जाने की एक हीलनाक आवाज़ होगी.

(६) हिसाब के लिये, फिर उसे कहा जाएगा.

(७) तरह तरह की नेअमतेँ और क्रिस्म क्रिस्म के आनन्द और अल्लाह तआला की तरफ़ से ज़ियाफ़तेँ, जन्नती नेहरों के किनारे जन्नत के वृक्षों की दिलनवाज़ फ़ज़ाएँ, खुशी भरा संगीत, जन्नत की सुन्दरियों का कुर्ब और क्रिस्म क्रिस्म की नेअमतेँ के मज़े, ये उनके शग़ाल होंगे.

(८) यानी अल्लाह तआला उनपर सलाम फ़रमाएगा चाहे सीधे सीधे या किसी ज़रिये से और यह सब से बड़ी और प्यारी मुराद है. फ़रिशते जन्नत वालों के पास हर दरवाज़े से आकर कहेंगे तुमपर तुम्हारे रहमत वाले रब का सलाम.

(९) जिस वक़्त मूमिन जन्नत की तरफ़ ख़ाता किये जाएंगे, उस वक़्त काफ़िरों से कहा जाएगा कि अलग फट जाओ. मूमिनों से अलाहदा हो जाओ और एक क़ौल यह भी है कि यह हुक्म काफ़िरों को होगा कि अलग अलग जहन्नम में अपने अपने ठिकाने पर

कर रस्ते की तरफ जाते तो उन्हें कुछ न सूझता^(१०) (६६) और अगर हम चाहते तो उनके घर बैठे उनकी सूरतें बदल देते^(११) न आगे बढ़ सकते न पीछे लौटते^(१२) (६७)

पाँचवां रूकू

और जिसे हम बड़ी उम्र का करें उसे पैदाइश से उलटा फेरें^(१), तो क्या समझते नहीं^(२) (६८) और हमने उनको शेअर (कविता) कहना न सिखाया^(३) और न वह उनकी शान के लायक है, वह तो नहीं मगर नसीहत और रौशन कुरआन^(४) (६९) कि उसे डराए जो ज़िन्दा हो^(५) और काफ़िरों पर बात साबित हो जाए^(६) (७०) और क्या उन्होंने न देखा कि हम ने अपने हाथ के बनाए हुए चौपाए उनके लिये पैदा किये तो ये उनके मालिक हैं^(७) (७१) और उन्हें उनके लिये नर्म कर दिया^(८) तो किसी पर सवार होते हैं और किसी को खाते हैं^(९) और उनके लिये उनमें कई तरह के नफ़े^(१०) और पीने की चीज़ें हैं^(११) तो क्या शुक्र न करेंगे^(१२) (७३) और उन्होंने अल्लाह के सिवा और खुदा ठहरा लिये^(१३) कि शायद उनकी मदद हो^(१४) (७४) वो उनकी मदद नहीं कर सकते^(१५) और वो उनके लश्कर सब गिरफ्तार हाज़िर आएंगे^(१६) (७५) तो तुम उनकी बात का ग़म न करो^(१७) बेशक हम जानते हैं जो वो छुपाते हैं और ज़ाहिर करते हैं^(१८) (७६) और क्या आदमी ने न देखा कि हमने उसे

२५

२५

أَعْيَيْنَهُمْ فَأَسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَكُنَّا بِبُصْرَتِهِمْ ۖ وَلَوْ
نَشَاءُ لَنُخَوِّنَهُمْ عَلَىٰ مَكَائِدِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا
مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ۖ وَمَنْ نَعْمِرُهُ نُنَكِّسْهُ فِي
الْخَلْقِ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ۖ وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي
لَهُ ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ۖ لِيُذَكِّرَ
مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۖ أَوَلَمْ
يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا
فَهُمْ لَهَا مَلِكُونَ ۖ وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ
وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَاقِبُ وَمَشَارِبٌ ۖ
أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۖ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً
لَّهُمْ يُنْصَرُونَ ۖ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ
لَهُمْ جُنُودٌ مُّحْضَرُونَ ۖ فَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ ۖ إِنَّا
نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا

مَنْ

जायें।

- (१०) अपने नवियों की मशरिफ़त.
- (११) उसकी फ़रमाँवरदारी न करना.
- (१२) और किसी को इबादत में मेरा शरीक न करना.
- (१३) कि तुम उसकी दुश्मनी और गुमराह गरी को समझते और जब वो जहन्नम के करीब पहुँचेंगे तो उनसे कहा जाएगा.
- (१४) कि वो बोल न सकेंगे और यह कृपा करना उनके यह कहने के कारण होगा कि हम मुश्किल न थे, न हमने रसूलों को झुटलाया.
- (१५) उनके अंग बोल उठेंगे और जो कुछ उनसे सादिर हुआ है, सब बयान कर देंगे.
- (१६) कि निशान भी बाक़ी न रहता. इस तरह का अन्धा कर देते.
- (१७) लेकिन हमने ऐसा न किया और अपने फ़ज़्ल से देखने की नेअमत उनके पास बाक़ी रखी तो अब उनपर हक़ यह कि वो शुक्रगुज़ारी करें, कुछ न करें.
- (१८) और उन्हें बन्दर या सुवर बना देते.
- (१९) और उनके जुर्म इसी के क़ाविल थे लेकिन हमने अपनी रहमत और करम और हिकमत के अनुसार अज़ाब में ज़ल्दी न की और उनके लिये मोहलत रखी.

सूरए यासीन - पाँचवां रूकू

- (१) कि वो बचपन की सी कमज़ोरी की तरफ़ वापस आने लगे और दम बंदम उसकी ताक़त, कुब्रत और ज़िस्म और अक्लें घटने लगीं.
- (२) कि जो हालतों के बदलने पर ऐसा क़ादिर हो कि बचपन की कमज़ोरी और शरीर के छोटे अंगों और नादानी के बाद शबाब की कुब्रत और शक्ति और मज़बूत बदन और समझ अता फ़रमाता है और फिर बड़ी उम्र और आख़िरी उम्र में उसी मज़बूत बदन वाले जवान को दुबला और कमज़ोर कर देता है, अब न वह बदन बाक़ी है, न कुब्रत, उठने बैठने में मजबूरियाँ दरपेश हैं, अक्ल काम नहीं करती, बात याद नहीं रहती, अज़ीज़ रिश्ते दार को पहचान नहीं सकता. जिस परबर्दिगार ने यह नयदीली की वह क़ादिर है कि आँखें देने के बाद उन्हें मिटादे और अच्छी सूरतें अता फ़रमाने के बाद उन्हें बिगाड़ दे और मौत देने के बाद फिर ज़िन्दा कर दे.
- (३) मानी ये हैं कि हम ने आपको शेअर कहने की महारत न दी, या यह कि कुरआन शायरी की तालीम नहीं है और शेअर से

पानी की बूंद से बनाया जभी वह खुला झगड़ा लु है^(१०) (७७) और हमारे लिये कहावत कहता है^(११) और अपनी पैदाइश भूल गया^(१२) बोला ऐसा कौन है कि हड्डियों को ज़िन्दा करे जब वो बिल्कुल गल गई^(१३) (७८) तुम फ़रमाओ उन्हें वह ज़िन्दा करेगा जिसने पहली बार उन्हें बनाया, और उसें हर पैदाइश की जानकारी है^(१४) (७९) जिसने तुम्हारे लिये हरे पेड़ म आग पैदा की जभी तुम उससे सुलगाते हो^(१५) (८०) और क्या वह जिसने आसमान और ज़मीन बनाए उन जैसे और नहीं बना सकता^(१६) क्यों नहीं^(१७) और वही है बड़ा पैदा करने वाला, सब कुछ जानता^(१८) (८१) उसका काम तो यही है कि जब किसी चीज़ को चाहे^(१९) तो उससे फ़रमाए हो जा, वह फ़ौरन हो जाती है^(२०) (८२) तो पाकी है उसे जिसके हाथ हर चीज़ का क़बज़ा है और उसी की तरफ़ फ़ेरे जाओ^(२१) (८३)

३७- सूरए साफ़फ़ात

सूरए साफ़फ़ात मक्का में उतरी, इसमें १८२ आयतें, पाँच रूक़ हैं.

पहला रूक़

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) क्रसम उनकी कि वाक्कायदा सफ़(कतार) बांधें^(२) (१) फिर उनकी कि झिड़क कर चलाए^(३) (२) फिर उन जमाअतों की कि कुरआन पढ़ें^(४) (३) बेशक तुम्हारा मअबूद ज़रूर एक है^(५) (४) मालिक आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ

الْإِنْسَانُ أَنَا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ۖ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُؤْتِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۖ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۚ الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقِدُونَ ۚ أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ ۚ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۚ ثُمَّ آتَاهُمُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ فَسُبْحَنَ الَّذِي يَبْدَأُ مَلَكُوتَ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَرَأَيْتُهُ تُرْجَعُونَ ۚ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَالصَّفَّاتِ صَفًّا ۝ فَالْزُجُرِجِ زَجْرًا ۝ فَالتَّالِيَاتِ ذِكْرًا ۚ إِنَّ إِلَهُكُم لَّوَاحِدٌ ۚ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

झूट का कलाम मुग़द है, चाहे मौजू हो या ग़ैर मौजू. इस आयत में इशारा है कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को अल्लाह तआला की तरफ़ से अबल आख़िर का इल्म तालीम फ़रमाया गया जिनसे हकीकतें खुलती हैं और आप की मालूमात वाकई और हकीकती हैं. शेअर का झूट नहीं, जाँ हकीकत में जिहालत है, वह आपकी शान के लायक़ नहीं और आपका दामने अक़दस इससे पाक है. इसमें मौजू कलाम के अर्थ वाले शेअर के जानने और उसके सही या झराब को पहचानने का इन्कार नहीं. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के इल्म में तअने देने वालों के लिये यह आयत किसी तरह सनद नहीं हो सकती. अल्लाह तआला ने हुज़ूर को सारे जगत के ज़लूम अता फ़रमाए, इसके इन्कार में इस आयत को पेश करना मात्र ग़लत है. कुरैश के काफ़िरों ने कहा था कि मुहम्मद शायर हैं और जो वो फ़रमाते हैं, यानी कुरआन शरीफ़, वह शेअर है. इससे उनकी मुग़द यह थी कि मआज़अल्लाह यह कलाम झूटा है जैसा कि कुरआन शरीफ़ में उनका कहना नक्ल फ़रमाया गया है “बलिफ़तराहो बल हुवा शाइरून” यानी बल्कि उनकी मनघड़त है बल्कि ये शायर हैं. (सूरए अंबिया, आयत ५), उसी का इसमें रद फ़रमाया गया कि हमने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को ऐसी बातिल-गोई की महारत ही नहीं दी और यह किताब शेअरों यानी झूटों पर आधारित नहीं. कुरैश के काफ़िर ज़बाब से ऐसे बदज़ौक और नज़्मे उरुज़ी से ऐसे अन्जान न थं कि नख़ यानी गद्य को नज़्म यानी पद्य कह देते और कलामे पाक को शेअर उरुज़ी बता बैठते और कलाम का मात्र उरुज़ के वज़न पर होना ऐसा भी न था कि उसपर ऐतिराज़ किया जा सके. इससे साबित हो गया कि उन बेदीनों की मुग़द शेअर से झूटे कलाम की थी (मदारिक, जुमल व रुहुल बयान) और हज़रत शैख़ अक़बर ने इस आयत के मानी में फ़रमाया है कि मानी ये हैं कि हमने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से मुअम्मे और इज़माल के साथ यानी घुमा फ़िराकर ख़िताब नहीं फ़रमाया जिसमें मानी या मतलब के हूपे रहने का संदेह हो बल्कि साफ़ और खुला कलाम फ़रमाया है जिससे सारे पदें उठ जाएँ और उत्तुम रीशन हो जाएँ.

(४) साफ़ खुला हक़ व हिदायत, कहाँ वह पाक आसमानी किताब, सारे उत्तुम की जामेअ, और कहाँ शेअर जैसा झूटा कलाम. (अल क़ियरियते अहमर लंग्रक शैख़े अक़बर)

(५) दिले ज़िन्दा स्मृता हो, कलाम और ख़िताब को समझे और यह शान इमान वाले की है.

(६) यानी अज़ाब की हुज़त कायम हो जाए.

(७) यानी मुसग़ज़र और हुक्म के अन्तर्गत कर दिया.

- (८) और फ़ायदे हैं कि उनकी खालों, बालों और ऊन वगैरह काम में लाते हैं।
- (९) दूध और दूध से बनने वाली चीज़ें, दही मट्ठा वगैरह।
- (१०) अल्लाह तआला की इन नेअमती का।
- (११) यानी बुतों का पुजने लगे।
- (१२) और मुसीबत के वक़्त काम आएँ और अज़ाब से बचाएँ, और ऐसा संभव नहीं।
- (१३) क्योंकि पत्थर बेजान और बेकुदरत और बेशऊर है।
- (१४) यानी काफ़िरों के साथ उनके बुत भी गिरफ़्तार करके हाज़िर किये जाएंगे और सब ज़हज़म में दाख़िल होंगे, बुत भी और उनके पुजारी भी।
- (१५) यह ख़िताब है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को। अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली फ़रमाता है कि काफ़िरों के झुटलाने और इन्कार से और उनकी यातनाओं और अत्याचारों से आप दुखी न हों।
- (१६) हम उन्हें उनके किरदार की जज़ा देंगे।
- (१७) यह आयत आस बिन वार्डल या अबू जहल और मशहूर यह है कि उबई बिन ख़लफ़ जमही के बारे में उतरी जा मरने के बाद उठने के इन्कार में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बहस और तकरार करने आया था। उसके हाथ में एक गली हुई हड्डी थी, उसको तोड़ता जाता था और हुज़ूर से कहता जाता था कि क्या आपका ख़याल है कि इस हड्डी को गल जाने और टुकड़े टुकड़े हो जाने के बाद भी अल्लाह ज़िन्दा कर देगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, हाँ और तुझे भी मरने के बाद उठाएगा और जहज़म में दाख़िल फ़रमाएगा। इसपर यह आयत उतरी और उसकी जिहालत का इज़हार फ़रमाया गया कि गली हुई हड्डी का बिखरने के बाद अल्लाह तआला की कुदरत से ज़िन्दगी कुबूल करना अपनी नादानी से असंभव समझता है कितना मूर्ख है। अपने आपको नहीं देखता कि शुरू में एक गन्दा नुस्फ़ा था, गली हुई हड्डी से भी तुच्छ। अल्लाह तआला की भरपूर कुदरत ने उसमें जान डाल दी, इन्सान बनाया तो ऐसा घमण्डी इन्सान हुआ कि उसकी कुदरत ही का इन्फ़ारी होकर झगड़ने आगया। इतना नहीं देखता कि जो सच्ची कुदरत वाला पानी की बूंद को मज़बूत इन्सान बना देता है, उसकी कुदरत से गली हुई हड्डी को दोबारा ज़िन्दगी बरक़्त देना क्या दूर है, और इसको असंभव समझना किन्ती खुली हुई जिहालत है।
- (१८) यानी गली हुई हड्डी को हाथ से मलकर मसल बनाता है कि यह तो ऐसी बिख़र गई, कैसे ज़िन्दा होगी।
- (१९) कि वीर्य की बूंद से पैदा किया गया है।
- (२०) पहली का भी और मौत के बाद वाली का भी।
- (२१) अरब में दो दरख़्त होते हैं जो वहाँ के जंगलों में बहुत पाए जाते हैं। एक का नाम मर्ख है, दूसरे का अफ़ार। उनकी ख़ासियत यह है कि जब उनकी हरी टहनियाँ काट कर एक दूसरे पर रगड़ी जाएँ तो उनसे आग निकलती है। जब कि वह इतनी गीली होती है कि उनसे पानी टपकता जाता है। इसमें कुदरत की कैसी अनोखी निशानी है कि आग और पानी दोनों एक दूसरे की ज़िद। हर एक एक जगह एक लकड़ी में मौजूद, न पानी आग को बुझाए न आग लकड़ी की जलाए। जिस क़ादिरे मुतलक़ की यह हिकमत है वह अगर एक बदन पर मौत के बाद ज़िन्दगी लाए तो उसकी कुदरत से क्या अजीब और उसको नामुमकिन कहना आसारे कुदरत देखकर जिहालत और दुश्मनी से इन्कार करना है।
- (२२) या उन्हीं को मौत के बाद ज़िन्दा नहीं कर सकता।
- (२३) बेशक वह इसपर क़ादिर है।
- (२४) कि पैदा करे।
- (२५) यानी मख़लूक़ात का वुजूद उसक़ हुक़म के तावे है।
- (२६) आख़िरत में।

३७ - सूरए साफ़फ़ात- पहला सूक़

- (१) सूरए वस्साफ़ात मक्के में उतरी। इसमें पांच सूक़, एक सौ बयासी आयतें, आठ सौ साठ कलिम और तीन हज़ार आठ सौ छब्बीस अक्षर हैं।
- (२) इस आयत में अल्लाह तआला ने क़सम याद फ़रमाई कुछ गिराहों की। या तो मुराद इससे फ़रिशतों के समूह हैं जो नमाज़ियों की तरह क़तार बांधे उसके हुक़म के मुन्ज़िर रहते हैं, या उलमाए दीन के समूह जो तहज़ज़ुद और सारी नमाज़ों में सफ़े वांधकर इबादत में मसलूक़ रहते हैं, या गाज़ियों के समूह जो अल्लाह की राह में सफ़े वांधष कर हक़ के दुश्मनों के मुक़ाबिल होते हैं। (मदारीक़)
- (३) पहली तक्रदीर पर झिड़क कर चलाने वालों से मुराद फ़रिशते हैं जो बादल पर मुक़रर हैं और उसको हुक़म देकर चलाते हैं और दूसरी तक्रदीर पर वो उलमा जो नसीहत और उपदेश से लोगों को झिड़क कर दीन की राह पर चलाते हैं, तीसरी सूरात में वो गाज़ी जो घोड़ों को डपट कर जिहाद में चलाते हैं।

उनके बीच है और मालिक मशिरकों (पूर्वों) का^(१)॥५॥ बेशक हमने नीचे के आसमान को^(२) तारों के सिंगार से सजाया॥६॥ और निगाह रखने को हर शैतान सरकश से^(३)॥७॥ आलमे वाला की तरफ कान नहीं लगा सकते^(४) और उनपर हर तरफ से मार फेंक होती है^(५)॥८॥ उन्हें भगाने को और उनके लिये^(६) हमेशा का अजाब^(७) मगर जो एक आध बार उचक ले चला^(८) तो रौशन अंगारा उसके पीछे लगा^(९)॥१०॥ तो उनसे पूछो^(१०) क्या उनकी पैदाइश ज्यादा मजबूत है या हमारी और मखलूक आसमानों और फरिशतों वागैरह की^(११) बेशक हमने उनको चिपकती मिट्टी से बनाया^(१२)॥१३॥ वल्कि तुम्हें अचम्भा आया^(१३) और वो हंसी करते हैं^(१४)॥१४॥ और समझाए नहीं समझते^(१५) और जब कोई निशानी देखते हैं^(१६) ठुठा करते हैं^(१७)॥१५॥ और कहते हैं ये तो नहीं मगर खुला जादू^(१८)॥१६॥ क्या जब हम मर कर मिट्टी ओर हड्डियां हो जाएंगे क्या ज़रूर उठए जाएंगे^(१९)॥१७॥ और क्या हमारे अगले वाप दादा भी^(२०)॥१७॥ तुम फ़रमाओ हाँ यूँ कि ज़लील होके^(२१)॥१८॥ तो वंह^(२२) एक ही झिड़क है^(२३) जभी वो^(२४) देखने लगेंगे^(२५)॥१९॥ ओर कहेंगे हाय हमारी ख़राबी, उनसे कहा जाएगा यह इन्साफ़ का दिन है^(२६)॥२०॥ यह है वह फ़ैसले का दिन जिसे तुम झुटलाते थे^(२७)॥२१॥

दूसरा सूक

हंको ज़ालिमों और उनके जोड़ों को^(१) और जो कुछ वो

وَمَا يَنْبَغُهَا وَرَبِّ الْمَشَارِقِ ۝ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا
بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۖ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝
لَّا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَىٰ وَيُقَذَّفُونَ مِّنْ كُلِّ
جَانِبٍ ۖ دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۖ إِلَّا مَنِ
خِطَفَ الْخَطْفَةِ فَأَتْبَعَهُ شَهَابٌ ثَاقِبٌ ۖ فَاسْتَفْتِمُ
أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنِ خَلَقْنَا مَا نَكُ خَلَقْتُمْ مِّنْ طِينٍ
لَّزِبٍ ۖ بَلْ يَعْجَبُونَ وَيَسْحَرُونَ ۖ وَإِذَا دُعُوا لَا
يَلْكَزُونَ ۖ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْجِرُونَ ۖ وَقَالُوا لَإِنْ
هَذَا إِلَّا سَحَرٌ مِّبِينٌ ۖ إِذَا مَنَّا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظْمًا
مَّا نَأْتَا لَمَبْعُوثُونَ ۖ أَوَ آبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۖ قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ
دَاخِرُونَ ۖ فَأَمَّا هِيَ نَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۖ
وَقَالُوا يَوْمَئِذٍ هَذَا يَوْمُ الدِّينِ ۖ هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ
الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۖ أَحْشَرُوا الدِّينَ فَلَکُمُ

منزل

- (४) यानी आसमान व ज़मीन और उनके बीच की सृष्टि और तमाम सीमाएं और दिशाएं सब का नालिक वही है तो कोई दूसरा किस तरह इबादत के लाइक हो सकता है लिहाज़ा वह शरीक से पाक है।
- (५) जो ज़मीन के मुक़ाबले आसमानों से क़रीब तर है।
- (६) यानी हमने आसमान को हर एक नाफ़रमान शैतान से मेहकूज़ रखा कि जब शैतान आसमानों पर जाने का इरादा करें तो फ़रिश्ते शिद्दत मारकर उनको दफ़ा करें। लिहाज़ा शैतान आसमानों पर नहीं जा सकते और ----
- (७) और आसमानों के फ़रिश्तों की बात नहीं सुन सकते।
- (८) अंगारों की, जब वो इस नियत से आसमान की तरफ़ जाएं।
- (९) आख़िरत में।
- (१०) यानी अगर कोई शैतान फ़रिश्तों का कोई कलामा कभी ले भागा।
- (११) कि उसे जलाए और तकलीफ़ पहुंचाए।
- (१२) यानी मक्के के काफ़िरों से।
- (१३) तो जिस क़ादिर बरहक़ को आसमान और ज़मीन जैसी अज़ीम मख़लूक का पैदा कर देना कुछ भी मुश्क़िल और दुश्वार नहीं तो इन्सानों का पैदा करना उसपर क्या मुश्क़िल हो सकता है।
- (१४) यह उनकी कमज़ोरी की एक और शहादत है कि उनकी पैदाइश का असल मादा मिट्टी है जो कोई शिद्दत ओर क़ुव्वत नहीं रखती और इस में उन पर एक और दलील क़ायम फ़रमाई गई है कि चिपकती मिट्टी उनकी उत्पत्ति का तत्व है तो अब फिर जिस्म के गल जाने और इत्तिहा यह है कि मिट्टी हो जाने के बाद उस मिट्टी से दोबारा पैदायश को वह क्यों असंभव जानते हैं। मादा यानी तत्व मौजूद, बनाने वाला मौजूद, फिर दोबारा पैदाइश कैसे असंभव हो सकती है।
- (१५) उनके झुटलाने से कि ऐसी खुली दलीलों, आयतों और निशानियों के बावजूद वो किस तरह झुटलाते हैं।
- (१६) आप से और आपके तअज़्जुब से या मरने के बाद उठने से।
- (१७) जैसे कि चाँद के दो टुकड़े होने वग़ैरह।
- (१८) जा हम से ज़माने में आगे हैं। काफ़िरों के तज़्दीक़ उनके बाप दादा का ज़िन्दा किया जाना ख़ुद उनके ज़िन्दा किये जाने से ज़्यादा

पूजते थे (२२) अल्लाह के सिवा, उन सबको हांको दोज़ाब की राह की तरफ (२३) और उन्हें ठहराओ (२४) उनसे पूछना है (२५) तुम्हें क्या हुआ एक दूसरे की मदद क्यों नहीं करते (२६) बल्कि वो आज गर्दन डाले हैं (२७) और उनमें एक ने दूसरे की तरफ मुंह किया आपस में पूछते हुए बोले (२८) तुम हमारी दाईं तरफ से बहकाने आते थे (२९) जवाब देंगे तुम खुद ही ईमान न रखते थे (३०) और हमारा तुम पर कुछ क़ाबू न था (३१) बल्कि तुम सरकश लोग थे (३२) तो साबित हो गई हम पर हमारे रब की बात (३३) हमें ज़रूर चखना है (३४) तो हमने तुम्हें गुमराह किया कि हम खुद गुमराह थे (३५) तो उस दिन (३६) वो सबके सब अज़ाब में शरीक हैं (३७) मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं (३८) वेशक जब उनसे कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो ऊंची खींचते (घमण्ड करते) थे (३९) और कहते थे क्या हम अपने खुदाओं को छोड़ दें एक दीनाने शायर के कहने से (४०) बल्कि वो तो हक़ (सत्य) लाए हैं और उन्होंने ने रसूलों की तस्दीक़ फ़रमाई (४१) वेशक तुम्हें ज़रूर दुख की मार चखनी है (४२) तो तुम्हें बदला न

وَأَرْوَاهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۖ مَنْ دُونِ اللَّهِ
فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ۖ وَقِفُوهُمْ إِنَّهُمْ
مَسْئُولُونَ ۖ مَا كُنْمْ لَا تَنَاصَرُونَ ۖ بَلْ هُمْ الْيَوْمَ
مُسْتَسْلِمُونَ ۖ وَأَقْبَلْ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ
قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ۖ قَالُوا بَلْ
كُنْمْ كُنْمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا كَانْ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ
سُلْطَانٍ ۖ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طَافِينَ ۖ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ
رَبِّنَا ۖ إِنَّآ لَذَاقُونَ ۖ فَاعْبُدُوا إِنَّا كُنْمْ غَوِينَ ۖ
فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ
نَفْعَلُ بِالْجَارِمِينَ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ
إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۖ وَيَقُولُونَ إِنَّا لَنَارْكُوا إِلَهَيْنَا
إِشَاعِرِ مَجْنُونٍ ۖ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَقَ الْمُرْسَلِينَ ۖ
إِنَّكُمْ لَذَاقُوا الْعَذَابِ الْآلِيمِ ۖ وَمَا تُجْرُونَ

وَمَائِي

असंभव था इसलिये उन्होंने यह कहा . अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाता है.

- (१९) यानी दुबारा ज़िन्दा किया जाना.
- (२०) एक ही हौलनाक आवाज़ है सूर के दो बारा फूँके जाने की.
- (२१) ज़िन्दा होकर अपने कर्म और पेश आने वाले हालात.
- (२२) यानी फ़रिश्ते यह कहेंगे कि यह इन्साफ़ का दिन है, यह हिसाब और बदले का दिन है.
- (२३) दुनिया में, और फ़रिश्तों को हुक्म दिया जाएगा.

सूरए साफ़फ़ात- दूसरा रुकू

- (१) ज़ालिमों से मुराद काफ़िर है और उनके जोड़ों से मुराद उनके शैतान जो दुनिया में उनके साथी और करीब रहते थे. हर एक काफ़िर अपने शैतान के साथ एक ही जंजीर में जकड़ दिया जायगा. और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जोड़ों से मुराद अशबाह और इमसाल हैं यानी हर काफ़िर अपने ही क्रिस्म के साथ काफ़िरों के साथ हँका जाएगा, बुनों को पूजने वाले मुर्ति-पूजकों के साथ, और आग के पुजारी आग के पुजारियों के साथ, इसी तरह दूसरे.
- (२) सिरात के पास.
- (३) हदीस शरीफ़ में है कि क़यामत के दिन बन्दा जगह से हिल न सकेगा जब तक चार बातें उससे न पूछ ली जाएं. एक उसकी उम्र कि किस काम में गुज़री, दूसरे उसका इल्म कि उसपर क्या अमल किया, तीसरे उसका माल कि कहाँ से कमाया कहाँ खर्च किया, चौथा उसका जिस्म कि उसको किस काम में लाया.
- (४) यह उनसे जहन्नम के ख़ाज़िन फ़टकार के तौर पर कहेंगे कि दुनिया में तो एक दूसरे की सहायता पर बहुत घमण्ड रखते थे आज देखो कैसे मजबूर हो, तुम में से कोई किसी की मदद नहीं कर सकता.
- (५) मजबूर और ज़लील होकर.
- (६) अपने सरदारों से जो दुनिया में बहकाते थे.
- (७) यानी कुब्त के ज़ार से हमें गुमराही पर आमादा करते थे, इसपर काफ़िरों के सरदार कहेंगे और--
- (८) पहले ही से काफ़िर थे और ईमान से अपनी मर्जी से मुंह फेरते थे.
- (९) कि हम तुम्हें अपने अनुकरण पर मजबूर करते.
- (१०) जो उसने फ़रमाई कि मैं ज़रूर जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों से भरूंगा, लिहाज़ा---

मिलेगा मगर अपने किये का^(३९) (३९) मगर जो अल्लाह के चुने हुए वन्दे हैं^(४०) (४०) उनके लिये वह रोज़ी है जो हमारे इल्म में है^(४१) मेवे^(४२) और उनकी इज़त होगी^(४३) चैन के बाग़ों में^(४४) तख़्तों पर होंगे आमने सामने^(४५) (४५) उन पर दौरा होगा निगाह के सामने बहती शराब के जाम का^(४६) (४६) सफ़ेद रंग^(४७) पीने वालों के लिये लज़त^(४८) (४८) न उसमें खुमार है^(४९) और न उससे उनका सर फिरे^(५०) (५०) और उनके पास हैं जो शौहरों के सिवा दूसरी तरफ़ आँख उठा कर न देखेंगी^(५१) (५१) बड़ी आँखों वालीयाँ, मानो वो अन्धे हैं छुपे रखे हुए^(५२) (५२) तो उनमें^(५३) एक ने दूसरे की तरफ़ मुंह किया पूछते हुए^(५४) (५४) उनमें से कहने वाला बोला मेरा एक हमनशीन था^(५५) (५५) मुझ से कहा करता क्या तुम इसे सच मानते हो^(५६) (५६) क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे तो क्या हमें जज़ा सज़ा दी जाएगी^(५७) (५७) कहा क्या तुम झांक कर देखोगे^(५८) (५८) फिर झांका तो उसे बीच भड़कती आग में देखा^(५९) (५९) कहा खुदा की कसम करीब था कि तू मुझे हलाक कर दे^(६०) (६०) और मेरा रव फ़ज़ल (कृपा) न करे^(६१) तो ज़रूर मैं भी पकड़ कर हाज़िर किया जाता^(६२) (६२) तो क्या हमें मरना नहीं^(६३) (६३) मगर हमारी पहली मौत^(६४)

إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْخَالَصِينَ ۚ
أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ۖ فَوَاكِهُ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ۖ
فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۖ عَلَى سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ۖ يُطَافُ
عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِينٍ ۖ بَيِّضَاءَ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ۖ
لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ۖ وَعِنْدَهُمْ
فُصْرَتٌ أَلْفُ عِشْرِينَ ۖ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مُّكْنُوتٌ ۖ
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ قَالَ
قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۖ يَقُولُ أَإِنتَكَ
كَمِ الْمُسْتَفْضِينَ ۖ مَرَّادُ امْتِنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا
عَرَّاتًا لَّسَدٍ يُنُوتُونَ ۖ قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُّطْلَعُونَ ۖ
فَأَظْلَمَ قَرَاهُ فِي سَوَاءِ الْحَبِيمِ ۖ قَالَ تَاللَّهِ إِن
كَدَّتْ لِكُرْدِيٍّ ۖ وَلَوْ لَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ
الْمُحْضَرِّينَ ۖ أَفَمَا نَحْنُ بِمَبْتَلَيْنَ ۖ إِلَّا مَا مَوَّتُنَا

مَزَلًا

- (३९) उसका अज़ाब, गुमराहों को भी और गुमराह करने वालों को भी.
- (४०) यानी क़यामत के दिन.
- (४१) गुमराह भी और उनके गुमराह करने वाले सरदार भी, क्योंकि ये सब दुनिया में गुमराही में शरीक थे.
- (४२) और तौहीद कुबूल न करते थे, शिर्क से न रुकते थे.
- (४३) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़रमाने से.
- (४४) दीन व तौहीद में, और शिर्क के इन्कार में.
- (४५) उस शिर्क और झुटलाने का, जो दुनिया में कर आए हो.
- (४६) ईमान और ख़लूस वाले.
- (४७) और बढ़िया और मज़ेदार नेअमतेँ, स्वादिष्ट, सुगंधित और सुन्दर.
- (४८) एक दूसरे से मानूस और खुश.
- (४९) जिसकी पाकीज़ा नेहरे निगाहों के सामने जारी होंगी.
- (५०) दूध से भी ज़्यादा सफ़ेद.
- (५१) दुनिया की शराब के विपरीत जो बदबूदार और घुरे मज़े की होती है और पीने वाला उसको पीते वक़्त मुंह बिगाड़ बिगाड़ लेता है.
- (५२) जिससे अक़ल में ख़लल आए.
- (५३) दुनिया की शराब के विपरीत जिसमें बहुत सी ख़राबियाँ और ऐब हैं. उससे पेट में भी दर्द होता है सर में भी, पंशाब में भी तकलीफ़ होती है, तबियत में उल्टी ज़सी-मेहसूस होती है, सर चकराता है, अक़ल ठिकाने नहीं रहती.
- (५४) कि उसके नज़्दीक उसका शौहर ही सबसे सुन्दर और प्यारा है.
- (५५) धूल मिट्टी से पाक साफ़ और दिलक़श रंग.
- (५६) यानी पहले जन्नत में स.
- (५७) कि दुनिया में क्या हालात और वाकिआत पेश आए.
- (५८) दुनिया में जो मरने के बाद उठने का इन्कारी था और उसकी निरबत ब्यंग्य के तरीक़े पर.
- (५९) यानी मरने के बाद उठने को.
- (६०) और हम से हिसाब लिया जाएगा. यह बयान करके उस जन्नती ने अपने जन्नती दोस्तों से.

और हम पर अज़ाब न होगा^(३९) (५९)। वेशक यही बड़ी कामयाबी है^(६०)। ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये^(६१) तो यह मेहमानी भली^(६०) या थूहड़ का पेड़^(६२)। वेशक हमने उसे ज़ालिमों की जांच किया है^(६३)। वेशक वह एक पेड़ है कि जहन्नम की जड़ में निकलता है^(६४)। उसका शगूफ़ा जैसे देवों के सर^(६५) (६५) फिर वेशक वो उसमें से खाएंगे^(६६) फिर उससे पेट भरेंगे^(६६) फिर वेशक उनके लिये उसपर खौलते पानी की मिलौनी (मिलावट) है^(६७) (६७) फिर उनकी वाज़ग़शत (पलटना) ज़रूर भड़कती आग की तरफ़ है^(६८) (६८) वेशक उन्होंने अपने बाप दादा गुमराह पाए^(६९) तो वो उन्हीं के क़दमों के निशान पर दौड़े जाते हैं^(७०) (७०) और वेशक उनसे पहले बहुत से अगले गुमराह हुए^(७१) (७१) और वेशक हमने उनमें डर सुनाने वाले भेजे^(७२) (७२) तो देखो डराए गये का कैसा अंजाम हुआ^(७३) (७३) मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे^(७४) (७४)।

तीसरा खूक़

और वेशक हमें नूह ने पुकारा^(७) तो हम क्या ही अच्छे कुबूल फ़रमाने वाले^(८) (७५) और हमने उसे और उसके घर वालों को बड़ी तकलीफ़ से निजात दी^(९) (७६) और हमने

الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ۚ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۚ يُوسُفُ هَذَا فَابْعَثِ الْغِيلُونَ ۚ أَذَلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُونِ ۚ إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ ۚ إِنَّمَا شَجَرَةُ زَكْرٍ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ۖ طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُؤُوسُ الشَّيَاطِينِ ۚ فَإِنَّهُمْ لَا يَكُونُونَ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ مِنْهَا الْبُطُونَ ۖ ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِنْ حَمِيمٍ ۖ ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَكُلٌّ إِلَى الْجَحِيمِ ۚ إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ۖ فَهُمْ عَلَىٰ آثَرِهِمْ يَهْرَعُونَ ۚ وَلَقَدْ صَلَّىٰ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ۖ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُنْذِرِينَ ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذِرِينَ ۖ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۖ وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوْحًا فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ۖ وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۖ وَجَعَلْنَا

مَثَلٌ

- (३३) कि मरे उस हमनशीन का जहन्नम में क्या हाल है।
- (३४) कि अज़ाब के अन्दर गिरफ़्तार है, तो उस जन्नती ने उस से।
- (३५) सीधी राह से बहका कर।
- (३६) और अपनी रहमत और करम से मुझे तेरे बहकावे सं मेहफूज़ न रखता और इस्लाम पर क़ायम रहने की तौफ़ीक़ न देता।
- (३७) तेरे साथ जहन्नम भों, और जब मौत जिह्र कर दी जाएगी तो जन्नत वाले फ़रिश्तों से कहेंगे।
- (३८) वही जो दुनिया में हो चुकी।
- (३९) फ़रिश्तें कहेंगे नहीं, और जन्नत वालों का यह पूछना अल्लाह तआला की रहमत के साथ लज़्ज़त उठाना और हमेशा की ज़िन्दगी की नेअमत और अज़ाब से मेहफूज़ होने के ऐहसान पर उसकी नेअमत का ज़िक्र करने के लिये है। और ज़िक्र से उन्हें मुस्ल हासिल होगा।
- (४०) यानी जन्नती नेअमतें और लज़्ज़तें और वहाँ के तफ़ीस और लतीफ़ ख़ान पीने और हमेशा के रेश और बेहद राहत और सुरूर।
- (४१) निहायत कड़वा, अत्यन्त बदबूदार हृद दर्जा का बदमज़ा सख़्त नागबार जिससे जहन्नमियों की मेज़बानी की जाएगी और उन को उसके ख़ाने पर मजबूर किया जाएगा।
- (४२) कि दुनिया में काफ़िर उसका इन्कार करते हैं और कहते हैं कि आग दरख़्तों को जला डालती है तो आग में दरख़्त कैसे होगा।
- (४३) और उसकी शाखें जहन्नम के ग़दों में पहुंचती हैं।
- (४४) यानी बदसूरत और बुरा दिखने वाला।
- (४५) सख़्त भूख़ से मजबूर होकर।
- (४६) यानी जहन्नमी थूहड़ से उनके पेट भरेंगे। वह जलता होगा, पेटों को जलाएगा, उसकी जलन से प्यास का ग़लबा हांगे और मुद्दत तक वो प्यास की तकलीफ़ में रखे जाएंगे फिर जब पीने को दिया जाएगा तो गर्म खौलता पानी उस गर्मी और जलन, उस थूहड़ की गर्मी और जलन से मिलकर और तकलीफ़ और बेचैनी बढ़ाएगी।
- (४७) क्योंकि ज़क़ूम खिलाने और गर्म पानी पिलाने के लिये उनको अपने ग़दों से दूसरे ग़दों में ले जाया जाएगा। इसके बाद फिर अपने ग़दों की तरफ़ लौटाए जाएंगे। इसके बाद उनके अज़ाब का मुस्तहिक़ होने की इल्लत इशारा फ़रमाई जाती है।
- (४८) और गुमराही में उनका अनुकरण करते हैं और सच्चाई के ख़ुल सुबूतों से आँखें बन्द कर लेते हैं।
- (४९) इसी वजह से कि उन्होंने अपने बाप दादा की ग़लत राह न छोड़ी और हुज्जत और दलील से फ़ायदा न उठाया।
- (५०) यानी नबी जिन्होंने उनको गुमराही और बदअमली के बुरे अंजाम का ख़ौफ़ दिलाया।

उसी की औलाद बाक़ी रखी^(१७७) और हमने पिछलों में उसकी तारीफ़ बाक़ी रखी^(१७८) नूह पर सलाम हो जगत वालों में^(१७९) वेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को^(१८०) वेशक वह हमारे उत्तम दर्जे के ईमान के पूरे बन्दों में है^(१८१) फिर हमने दूसरों को डुबो दिया^(१८२) और वेशक उसी के गिरोह से इब्राहीम है^(१८३) जब कि अपने रब के पास हाज़िर हुआ ग़ैर से सलामत दिल लेकर^(१८४) जब उसने अपने वाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया^(१८५) तुम क्या पूजते हो^(१८६) क्या बोहतान से अल्लाह के सिवा और खुदा चाहते हो^(१८७) तो तुम्हारा क्या गुमान है सारे जगत के रब पर^(१८८) फिर उसने एक निगाह सितारों को देखा^(१८९) फिर कहा मैं बीमार होने वाला हूँ^(१९०) तो वो उस पर पीठ देकर फिर गए^(१९१) फिर उनके खुदाओं को तरफ़ छुप कर चला तो कहा क्या तुम नहीं खाते^(१९२) तुम्हें क्या हुआ कि नहीं बोलते^(१९३) तो लोगों की नज़र वचाकर उन्हें दाएं हाथ से मारने लगा^(१९४) तो काफ़िर उसकी तरफ़ जल्दी करते आए^(१९५) फ़रमाया क्या अपने हाथ के तराशों को पूजते हो^(१९६) और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे अअमाल (कर्मों) को^(१९७) बोलें इसके लिये एक ईमारत चुनो^(१९८) फिर इसे भड़कती आग में डाल दो^(१९९) तो उन्होंने उसपर दाँव चलना चाहा हमने उन्हें नीचा दिखाया^(२००)

وَدَرَيْتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ۖ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۚ
سَلَّمَ عَلَى نُوحٍ فِي الْعَمِينَ ۖ إِنَّا كَذَلِكْ نَجْرِي الْمُحْسِنِينَ ۚ
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ ثُمَّ أَغْرَقْنَا
الْآخِرِينَ ۖ وَإِن مِنْ شَيْعَتِهِ لَابْرَهِيمٌ ۖ إِذْ جَاءَ
رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۖ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا
تَعْبُدُونَ ۖ أَفَقُلُوبُكُمْ أَهْوَتْ لِلدُّنُورِ ۖ أَفَتُؤْمِنُونَ
بِمَا ظَنَنْتُمْ يَدْرِبُ الْعَالَمِينَ ۖ فَتَنْظُرُونَ فِي التُّجُورِ ۖ
فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۖ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۖ فَوَاقُوا
الْهَوَاهُمْ فَقَالَ أَتَأْتُونَ ۖ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ۖ
فَوَاقُوا عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ۖ فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزْفُونَ ۖ
قَالَ أَعْبُدُوا مَا تَخْتَرُونَ ۖ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا
تَعْمَلُونَ ۖ قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْفُوهُ فِي الْجَحِيمِ ۖ
فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ۖ وَقَالَ إِنِّي

(१७९) कि वो अज़ाब से हलाक किये गए.

(१८२) ईमानदार जिन्होंने ने अपने इश्वरलास के कारण निजात पाई.

सूरए साफ़रात- तीसरा रुकू

(१) और हम से अपनी क़ौम के अज़ाब और हलाकत की दरख़ास्त की.

(२) कि हम ने उनकी दुआ क़बूल की और उनके दुश्मनों के मुकाबले में मदद की और उनसे पूरा बदला लिया कि उन्हें डुबो कर हलाक कर दिया.

(३) तो अब दुनिया में जितने इन्सान हैं सब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की नस्ल से हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के किशती से उतरने के बाद उनके साथियों में जिस क्रंदर मर्द और औरत थे सभी मर गए सिवा आपकी औलाद और उनकी औरतों के. उन्हीं से दुनिया की नस्लें चलीं. अरब और फ़ारस और रूम आपके बेटे साम की औलाद से हैं और सूदान के लोग आपके बेटे हाम की नस्ल से और तुर्क और याज़ूज माज़ूज वगैरह आपके साहिबज़ादे याफ़िश की औलाद से.

(४) यानी उनके बाद चले नबी और उनकी उम्मतों में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का ज़िक्र जमीन बाक़ी रखा.

(५) यानी फ़रिश्ते और ज़िन्न और इन्सान सब उनपर क़यामत तक सलाम भेजा करें.

(६) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम के काफ़िरों को.

(७) यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के दोनो मिल्लत और उन्हीं के तरीक़े और सुन्नत पर हैं. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बीच दो हज़ार छ सौ चालीस साल का अन्तर है और दोनों हज़रत के बीच जो समय गुज़रा उसमें सिर्फ़ दो नबी हुए, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम और हज़रत सालह अलैहिस्सलाम.

(८) यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने दिल को अल्लाह तआला के लिये ख़ालिस किया और हर चीज़ से फ़ारिग कर लिया.

(९) फटकार के तीर पर.

और कहा मैं अपने रब को तरफ़ जाने वाला हूँ^(१३) अब वह मुझे राह देगा^(१४) (९९) इलाही मुझे लायक औलाद दे^(१००) तो हमने उसे खुशखबरी सुनाई एक अकलमन्द लड़के की^(१०१) फिर जब वह उसके साथ काम के क़ाबिल हो गया कहा ऐ मेरे वेटे मैंने ख़्वाब देखा मैं तुझे ज़िन्ह करता हूँ^(१३) अब तू देख तेरी क्या राय है^(१४) कहा ऐ मेरे बाप कीजिये जिस बात का आपको हुक्म होता है, खुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पाएंगे^(१०२) तो जब उन दोनों ने हमारे हुक्म पर गर्दन रखी और बाप ने वेटे को माथे के बल लिटाया, उस वक़्त का हाल न पूछ^(१५) (१०३) और हमने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम^(१०४) बेशक तूने ख़्वाब सच कर दिखाया^(१६) हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को^(१०५) बेशक यह रौशन जांच थी^(१०६) और हमने एक बड़ा ज़बीहा उसके फ़िदिये (बदले) में देकर उसे वचा लिया^(१०७) (१०७) और हमने पिछलों में उसकी तारीफ़ बाकी रखी^(१०८) सलाम हो इब्राहीम पर^(१०९) हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को^(११०) बेशक वो हमारे उत्तम दर्जे के ईमान के पूरे बन्दों में हैं^(१११) और हमने उसे खुशखबरी दी इस्हाक़ की कि ग़ैब की ख़बरें बताने वाला नबी हमारे ख़ास कुर्ब (समीपता) के सज़ावारों में^(११२) और हमने बरक़त उतारी उसपर और इस्हाक़ पर^(११३) और उनकी औलाद में कोई अच्छा काम करने वाला^(११४) और कोई अपनी जान पर खुला जुल्म करने वाला^(११५) (११५)

चौथा रूक़

और बेशक हमने मूसा और हारून पर एहसान

ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّ سَيِّدَيْنِ ۖ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ
الطّٰلِحِيْنَ ۖ فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيْمٍ ۖ فَلَمَّا بَلَغَ
مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَبْنَئِيْ اِِىْ اَرَبِىْ فِى الْمَنَامِ اِنِّىْ
اَدْبَحْتُكَ فَاَنْظُرْ مَاذَا تَرٰى ۖ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ
سَتَجِدُنِيْ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ۖ فَلَمَّا
اَسْلَمَا وَكَلَهُ الْغَیْبِيْنَ ۖ وَنَادَيْنَاهُ اَنْ يُّبْرِهِيْمَ ۖ قَدْ
صَدَقْتَ الرَّؤْيَا ۖ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۖ
اِنَّ هٰذَا الْهُوَ الْبَلٰٓؤُا السَّيِّئُ ۖ وَقَدْ نَبِّٔنٰهُ بِذٰلِکِ
عَظِيْمٍ ۖ وَتَرَكْنٰا عَلَیْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ سَلٰمٌ عَلٰٓى
اِبْرٰهِيْمَ ۖ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۖ اِنَّهٗ مِنْ
عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۖ وَبَشَّرْنَاهُ بِاسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ
الصّٰلِحِيْنَ ۖ وَبَرَكْنٰا عَلَیْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ۖ وَوَمِنَ
دُرِّیَّتِهٖمَا مُحَمَّدٌ ۖ وَظَلَمْنٰا لِنَفْسِهٖ سَبِيْنٌ ۖ وَلَقَدْ مَنَّا

مَنْزِل

(१०) कि जब तुम उसके सिवा दूसरे की पूजोगे तो क्या वह तुम्हें बेअज़ाब छोड़ देगा जबकि तुम जानते हो कि वही नेअमतें देने वाला सही मानी में इबादत का मुस्तहिक़ है। क़ौम ने कहा कि क़ल को हमारी ईद है, जंगल में मेला लगेगा। हम बढ़िया खाने पकाकर बुत्तों के पास रख जाएंगे और मेले से वापस होकर तदरूक़ के तौर पर उनको खाएंगे आप भी हमारे साथ चलें और भीड़ और मंल की रौनक देखें। वहाँ से वापस आकर बुत्तों की ज़ीनत और सज़ाबट और उनका बनाव सिंघार देखें। यह तमाशा देखने के बाद हम समझते हैं कि बुत परस्ती पर हमें मलामत न करेंगे।

(११) जैसे कि सितारा शनास, नुज़ूम के माहिर सितारों के योग और प्रभाव को देखा करते हैं।

(१२) क़ौम ज्योतिष को बहुत मानती थी, वह समझी कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सितारों से अपने बीमार होने का हाल मालूम कर लिया, अब यह किसी छूत की बीमारी में मुब्तिला होने वाले हैं और छूत की बीमारी से वो लोग बहुत डरते थे। सितारों का इल्म सच्चा है और सीखने में मशगूल होना स्थगित हो चुका। शरीअत के अनुसार कोई बीमारी छूत की नहीं होती, यानी एक व्यक्ति की बीमारी उड़कर बैसी ही दूसरे में नहीं पहुंचती। तबों की ख़राबी और हवा वगैरह की हरितियां के असर से एक वक़्त में बहुत से लोगों को एक तरह की बीमारी हो सकती है लेकिन बीमारी के कारण हर एक में अलग अलग हैं किसी की बीमारी किसी दूसरे में नहीं पहुंचती।

(१३) अपनी ईद की तरफ़ और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की छोड़ गए, आप बुतखाने में आए।

(१४) यानी उस खाने की जो तुम्हारे सामने रखा है, बुत्तों ने इसका कोई जवाब न दिया और वो जवाब ही क्या देते, तो आपने फ़रमाया।

(१५) इसपर भी बुत्तों की तरफ़ से कुछ जवाब न हुआ वो बेजान पत्थर थे जवाब क्या देते।

(१६) और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बुत्तों को मार मार कर टुकड़े टुकड़े कर दिया, जब काफ़िरों को इसकी ख़बर पहुंची।

(१७) और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहने लग कि हम तो इन बुत्तों को पूजते हैं तुम इन्हें तोड़ते हो।

(१८) तो पूजने का मुस्तहिक़ वह है न बुत। इसपर वो हैरान हो गए और उन से कोई जवाब न बन आया।

फरमाया^(१) (११४) और उन्हें और उनकी क्रौम^(२) को बड़ी सख्ती से निजात बख्शी^(३) (११५) और उनकी हमने मदद फरमाई^(४) तो वही गालिब हुए^(५) (११६) और हमने उन दोनों को रौशन किताब अता फरमाई^(६) (११७) और उनको सीधी राह दिखाई^(७) (११८) और पिछलों में उनकी तारीफ़ वाक़ी रखी^(८) (११९) सलाम हो मूसा और हारून पर^(९) (१२०) वेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को^(१०) (१२१) वेशक वो दोनों हमारे उत्तम दर्जे के ईमान के पूरे बन्दों में हैं^(११) (१२२) और वेशक इलियास पैगम्बरों से है^(१२) (१२३) जब उसने अपनी क्रौम से फरमाया क्या तुम डरते नहीं^(१३) (१२४) क्या वअल को पूजते हो^(१४) और छोड़ते हो सबसे अच्छा पैदा करने वाले^(१५) अल्लाह को जो रब है तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादा का^(१६) (१२५) फिर उन्होंने उसे झुटलाया तो वो ज़रूर पकड़े आएंगे^(१७) (१२६) मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे^(१८) (१२७) और हमने पिछलों में उसकी सना (प्रशंसा) वाक़ी रखी^(१९) (१२८) सलांमा हो इलियास पर^(२०) (१२९) वेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को^(२१) (१३०) वेशक वह हमारे उत्तम दर्जे के ईमान के पूरे बन्दों में है^(२२) (१३१) और वेशक लूत पैगम्बरों में है^(२३) (१३२) जब कि हमने उसे और उसके सब घर वालों को निजात बख्शी^(२४) (१३३)

عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۖ وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ
الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۚ وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۖ وَ
آتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ۖ وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيمَ ۖ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ۖ سَلَامٌ عَلَىٰ
مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ
إِنَّمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ الْيَأْسَ لَمِنَ
الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ ۖ أَتَدْعُونَ
بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۖ اللَّهُ رَبُّكُمْ وَ
رَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۖ فَانْتَبِهُوا ۖ إِنَّهُمْ مُنْخَضِرُونَ ۖ
إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۖ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۖ
سَلَامٌ عَلَىٰ آلِ يَأْسِينَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ لَوْطًا لَّمِنَ
الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَآهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۖ إِلَّا نَجَّوْنَا

(१९) पत्थर की तीस गज़ लम्बी, बीस गज़ चौड़ी चार दीवारी फिर उसको लकड़ियों से भर दो और उनमें आग लगा दो यहाँ तक कि आग ज़ार पकड़े.

(२०) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इस आग में सलामत रखकर, चुनांचे आग से आप सलामत बरामद हुए.

(२१) इस दारुल कुफ़्र से हिजरत करके जहाँ जाने का मेरा रब हुक्म दे.

(२२) चुनांचे अल्लाह के हुक्म से आप शाम प्रदेश में अर्जे मुकद्दसा के मक़ाम पर पहुंचे तो आपने अपने रब से दुआ की.

(२३) याती तरे ज़िक्क का इतिज़ाम कर रहा हूँ और नवीयों का ख़ाब सच्चा होता है और उनके काम अल्लाह के हुक्म से हुआ करते हैं.

(२४) यह आपने इसलिये कहा था कि बेटे को ज़िक्क से वंशत न हो और अल्लाह के हुक्म की इताअत के लिये वह दिल से तैयार हो चुनांचे इस सुपुत्र ने अल्लाह की रज़ा पर फ़िदा होने का भरपूर शौक़ से इज़हार किया.

(२५) ये बाक़िआ मिनत में बाक़े हुआ और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बेटे के गले पर छुरी चलाई. अल्लाह की क़ुदरत कि छुरी ने कुछ भी काम न किया.

(२६) इताअत व फ़रमाँबरदारी चरम सीमा पर पहुंचा दी. बेटे को ज़िक्क के लिये बिना हिचकिचाए पेश कर दिया. बस अब इतना काफ़ी है.

(२७) इसमें इस्तिज़ाफ़ है कि यह बेटे हज़रत इस्माईल हैं या हज़रत इस्हाक़. लेकिन प्रमाणों की शक्ति यही बताती है कि ज़िक्क होने वाले हज़रत इस्माईल ही हैं और फ़िदिये में जन्नत से बकरी भेजी गई थी जिसको हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ज़िक्क फ़रमाया.

(२८) हमारी तरफ़ से.

(२९) ज़िक्क के बाक़ए के बाद हज़रत इस्हाक़ की सुश्रूषवरी इस की दलील है कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ही ज़वीह हैं.

(३०) हर तरह की बरक़त, दीनारी भी और दुनियावी भी और ज़ाहिरी बरक़त यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में बहुतात की और हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की नरत से बहुत से नबी किये. हज़रत यअक़ूब से लेकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक.

(३१) याती ईमान वाला.

(३२) याती काफ़िर. इससे मालूम हुआ कि किसी बाप के बहुत सी फ़ज़ीलतां के मालिक होने से औलाद का भी वैसा ही होना लाज़िम नहीं. यह अल्लाह तआला की शान है, कभी नेक से नेक पैदा करता है, कभी बद से बद, कभी बद से नेक. न औलाद का बद होना बापों के लिये सब हो, न बापों की बदी औलाद के लिये.

सूरए साफ़ात- चौथा रुकू

(१) कि उन्हें नबुव्वत और रिसालत अता फ़रमाई.

मगर एक बुकिया कि रह जाने वालों में हुई^(१३) (१३५) फिर दूसरों को हमने हलाक फरमा दिया^(१४) (१३६) और वेशक तुम^(१५) उन पर गुजरते हो सुबह को^(१६) (१३७) और रात में^(१७) तो क्या तुम्हें अक्ल नहीं^(१८) (१३८)

पाँचवां रूकू

और वेशक यूनस पैगम्बरों से है^(१९) जब कि भरी किश्ती की तरफ निकल गया^(२०) (१४०) तो कुरआ डाला तो डकेले हुआ^(२१) (१४१) फिर उसे मछली ने निगल लिया और वह अपने आप को मलामत करता था^(२२) (१४२) तो अगर वह तस्वीह करने वाला न होता^(२३) (१४३) जरूर उसके पेट में रहता जिस दिन तक लोग उठाए जाएंगे^(२४) (१४४) फिर हमने उसे^(२५) मैदान पर डाल दिया और वह बीमार था^(२६) (१४५) और हमने उसपर^(२७) कदू का पेंड़ उगाया^(२८) (१४६) और हमने उसे^(२९) लाख आदमियों की तरफ भेजा बल्कि ज्यादा^(३०) (१४७) तो वो ईमान ले आए^(३१) तो हमने उन्हें एक वक़्त तक वरतने दिया^(३२) (१४८) तो उनसे पूछे क्या तुम्हारे रव के लिये वेटियाँ हैं^(३३) और उनके बेटे^(३४) (१४९) या हमने मलायका (फरिश्तों) को औरतें पैदा किया और वो हाज़िर थे^(३५) (१५०) सुनते हो वेशक वो अपने वोहतान से कहते हैं^(३६) (१५१) कि अल्लाह की औलाद है और वेशक वो जरूर झूटे हैं^(३७) (१५२) क्या उसने वेटियाँ पसन्द कीं वेटे छोड़ कर^(३८) (१५३) तुम्हें क्या है कैसा हुक्म लगाते हो^(३९) (१५४) तो क्या ध्यान नहीं करते^(४०) (१५५)

فِي الْغَيْرِينَ ۖ ثُمَّ دَمَرْنَا الْأَخْرِينَ ۖ وَرَكَّمْنَا لِمَنْ يَنْتَرُونَ عَلَيْهِمْ مَصْبِحِينَ ۚ وَاللَّيْلُ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۚ وَإِنْ يُوَسَّسْ لِمَنِ الْمُرْسَلِينَ ۚ إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۚ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۚ فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۚ فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ۚ لَكُنْتُ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۚ قَبِذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ۚ وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِنْ يَقْطِينٍ ۚ وَرَأْسُنَا إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ۚ فَآمَنُوا فَمَنْعْنَاهُمْ إِلَى حِينٍ ۚ فَاسْتَغْفِرُكَ رَبُّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ۚ أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ۚ أَلَا إِنَّهُمْ مِنْ آفِكِهِمْ لَيَقُولُونَ ۚ وَلَكَ اللَّهُ ۖ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۚ أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ۚ مَا لَكُمْ سِكْفٍ تَخَمُّونَ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۚ

مَنْ

- (२) यानी बनी इस्राईल.
- (३) कि फिरऔन और उसकी क्रीम के अत्याचारों से रिहाई दी.
- (४) क्रिन्तियाँ के मुक्ताबल में.
- (५) फिरऔन और उसकी क्रीम पर.
- (६) जिनका बयान विस्तृत और साफ और वो हुदूद और अहकाम बीरा की सम्पूर्ण किताब. इस किताब से मुराद नौरात शरीफ है.
- (७) जो बअलबक और उसके आस पास के लोगों की तरफ भेजे गए.
- (८) यानी क्या तुम्हें अल्लाह तआला का ख़ौफ़ नहीं.
- (९) बअल उनके वुत का नाम था जो सोने का था. उसकी लम्बाई बीस गज़ थी, चार मुंह थे. वो उसका बहुत सम्मान करते थे. जिस जगह वह था उसका नाम बक था इसलिये बअलबक बना. यह शाम प्रदेश में है.
- (१०) उसकी इबादन छोड़ते हो.
- (११) जहन्नम में.
- (१२) यानी उस क्रीम में से अल्लाह तआला के बुजुर्ग बन्दे जो हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए उन्होंने अज़ाब से निजात पाई.
- (१३) अज़ाब के अन्दर.
- (१४) यानी हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क्रीम के काफ़िरों को.
- (१५) ऐ मक्के वालो.
- (१६) यानी अपने सफ़रों में रात दिन तुम उनके खण्डहरों और मंजिलों पर गुजरते हो.
- (१७) कि उनसे बसीहत पकड़ो.

सूरए साफ़फ़ात- पाँचवां रूकू

- (१) हज़रत इब्ने अब्बास और बहव का क़ौल है कि हज़रत यूनस अलैहिस्सलाम ने अपनी क्रीम से अज़ाब का वादा किया था उसमें

या तुम्हारे लिये कोई खुली सनद है (१५६) तो अपनी किताब लाओ (१५७) अगर तुम सच्चे हो (१५७) और उसमें और जिन्नों में रिश्ता ठहराया (१५८) और वेशक जिन्नों को मालूम है कि वो (१५९) जरूर हाज़िर लाए जाएंगे (१५९) मगर पाकी है अल्लाह को उन बातों से कि ये बताते हैं (१५९) मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे (१६०) तो तुम और जो कुछ अल्लाह के सिवा पूजते हो (१६१) तुम उसके खिलाफ किसी को वहकाने वाले नहीं (१६२) मगर उसे जो भड़कती आग में जाने वाला है (१६३) और फ़रिश्ते कहते हैं हम में हर एक का एक जाना हुआ मक़ाम है (१६४) और वेशक हम पर फैलाए हुक्म के मुन्तज़िर (प्रतीक्षा में) हैं (१६५) और वेशक हम उसकी तस्वीह करने वाले हैं (१६६) और वेशक वो कहते थे (१६७) अगर हमारे पास अगलों की कोई नसीहत होती (१६८) तो जरूर हम अल्लाह के चुने हुए बन्दे होते (१६९) तो उसके इन्कारी हुए तो बहुत जल्द जान लेंगे (१७०) और वेशक हमारा कलाम गुज़र चुका है हमारे भेजे हुए बन्दों के लिये (१७१) कि वेशक उन्हीं की मदद होगी (१७२) और वेशक हमारा ही लश्कर (१७३) ग़ालिब आएगा (१७३) तो एक वक़्त तुम उनसे मुंह फेर लो (१७४) और उन्हें देखते रहो कि बहुत जल्द वो देखेंगे (१७५) तो क्या हमारे अज़ाब की जल्दी करते हैं (१७६) फिर जब उतरेगा उनके आंगन में तो डराए गयों की क्या ही बुरी सुबह होगी (१७७) और एक वक़्त तक उनसे मुंह फेर लो (१७८) और

أَفَلَمْ نَسْطُرْ مُبِينٌ ۖ فَأَتُوا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۚ
وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نِجَافًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتِ الْإِنجَنَةَ
لَهُمْ لِمُحَضَّرُونَ ۚ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ۚ الْإِنجَنَةَ
اللَّهُ الْمُخْلِصِينَ ۚ فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ۚ مَا أَنتُمْ
عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ ۚ إِلَّا مَنْ هُوَ صَالٍ الْجَحِيمِ ۚ وَمَا مَنَّا
إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ۚ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُونَ ۚ وَإِنَّا
لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ۚ وَإِن كَانُوا لَيَقُولُونَ ۚ لَوَ أَنَّا عِنْدَنَا
ذِكْرًا مِّنَ الْآوَلِينَ ۚ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ ۚ
فَكُفُّوا بِهِ فَسُوفَ يَعْلَمُونَ ۚ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا
لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ۚ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ۚ وَإِن
جُنَدُنَا لَهُمُ الْغُلْبَةُ ۚ فَوَلِّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۚ وَ
أَنصِرْهُمْ فَسُوفَ يُصِرُّونَ ۚ أَفَعِزُّوا بِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ۚ
فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ ۚ وَكُلُّ

مَنْزِلٌ

विलम्ब हुआ तो आप उनसे छुपकर निकल गए और आपने समुद्री सफ़र का इशारा किया, किश्ती पर सवार हुए, दरिया के बीच किश्ती ठहर गई और उसके ठहरने का कोई ज़ाहिरी कारण मौजूद न था, मल्लाहों ने कहा, इस किश्ती में अपने मालिक से भागा हुआ कोई गुलाम है, लाटरी डालने से ज़ाहिर हो जाएगा, पर्चा डाला गया तो आप ही के नाम निकला, तो आपने फ़रमाया कि मैं ही वह गुलाम हूँ और आप पानी में डाल दिये गए क्योंकि दस्तूर यही था कि जब तक भागा हुआ गुलाम दरिया में न डबा दिया जाए उस वक़्त तक किश्ती चलती न थी.

(२) कि क्यों निकलने में जल्दी की और क़ौम से अलग होने में अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार न किया.

(३) याती अल्लाह के ज़िक्र की कसरत करने वाला और मछली के पेट में "ला इलाहा इल्ला अन्ता मुहानका इन्नी कुन्ता मिनज़ ज़ालिमीन" पढ़ने वाला.

(४) याती क़यामत के रोज़ तक.

(५) मछली के पेट से निकाल कर उसी रोज़ या तीन रोज़ या सात रोज़ या चालीस रोज़ के बाद.

(६) याती मछली के पेट में रहने के कारण आप ऐसे कमज़ोर, दुबले और ताज़ुक हो गए थे जैसा बच्चा पैदाइश के वक़्त होता है, जिसमें की ख़ाल नर्म हो गई थी, बदन पर कोई बाल बाकी न रहा था.

(७) साया करने और मक्खियों से मेहफूज़ रखने के लिये.

(८) कदू की बेल होती है जो ज़मीन पर फैलती है मगर यह आपका चमत्कार था कि कदू का यह दरख़्त लम्बे दरख़्तों की तरह शाख़ रखता था और उसके बड़े बड़े पत्तों के साए में आप आराम करते थे और अल्लाह के हुक्म से रोज़ाना एक बकरी आती और अपना थन हज़रत के दहने मुबारक में देकर आपको सुबह शाम दूध पिला जाती यहाँ तक कि जिसमें की ख़ाल मज़बूत हुई और अपने मौक़े से बाल जमे और जिसमें ताक़त आई.

(९) पहले की तरह मौसिल प्रदेश में नैनवा क़ौम के.

(१०) अज़ाब के निशान देखकर (इस का बयान सूरए यूनुस के दसवें रूक़ में गुज़र चुका है और इस वाक़ए का बयान सूरए अम्बिया के छठे रूक़ में भी आ चुका है.)

(११) याती उनकी आज़िज़ उम्र तक उन्हें आसायश के साथ रखे इस वाक़ए के बयान फ़रमाते के बाद अल्लाह तआला अपने हबीबे

इन्तिज़ार करो कि वो बहुत जल्द देखेंगे (१७९) पाकी है तुम्हारे रब को इज़्जत वाले रब को उनकी बातों से (१८०) और सलाम है पैगम्बरों पर (१८१) और सब खूबियाँ अल्लाह को जो सारे जगत का रब है (१८२)

३८- सूरए सौद

सूरए सौद मक्का में उतरी, इसमें ८८ आयतें, पांच रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला (१) इस नामवर कुरआन की कसम (२) बल्कि काफिर तकबुर (घमण्ड) और खिलाफ (दुश्मनी) में हैं (३) हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपाई (४) तो अब वो पुकारें (५) और छूटने का वक़्त न था (६) और उन्हें इसका अचंभा हुआ कि उनके पास उन्हीं में का एक डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया (७) और काफिर बोले यह जादूगर है बड़ा झूठा (८) क्या उसने बहुत ख़ुदाओं का एक ख़ुदा कर दिया (९) वेशक़ यह अजीब बात है (१०) और उनमें के सरदार चले (११) कि उसके पास से चल दो और अपने ख़ुदाओं पर साबिर रहो वेशक़ इसमें उसका कोई मतलब है (१२) यह तो हमने सबसे पिछले दीन नसरानियत (ईसाइयत) में भी न सुनी (१३) यह तो निरी नई गढ़त है (१४) क्या उनपर कुरआन उतारा गया हम सब में से (१५) बल्कि वो शक़ में हैं मेरी किताब से (१६) बल्कि अभी मेरी मार नहीं चखी है (१७) क्या वो तुम्हारे रब की रहमत के ख़ज़ानची हैं (१८) वह

عَنهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۖ وَأَبْصُرُ فَسَوْفَ بِبَصِيرَةٍ ۖ سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ۖ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ۖ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ

سُورَةُ ص ۙ مَكِّيَّةٌ ۙ (۳۸)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

صَّ وَالْقُرْآنِ فِي الذِّكْرِ ۖ يَكِلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ۖ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ فَنَادَُوا وَلَا تَجِئْ بِحِينٍ مِّنَاصٍ ۖ وَنَجَّيْنَا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكَافِرُونَ هَذَا سِحْرٌ كَذَّابٌ ۖ أَجْعَلِ الْآلِهَةَ إِلَهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۖ وَانطَلِقِ الْمَلَائِكَةُ مِنْهُمُ أَنْ آمَسُوا وَأَصْبَحُوا ۖ عَلَى الرِّسَالَةِ ۖ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ ۖ مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْمِلَّةِ الْآخِرَةِ ۖ إِنْ هَذَا إِلَّا خِتِلَافٌ ۖ عَنَّا نَزَّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ

अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाता है कि आप मक्क के काफ़िरों से दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करने की वजह पूछिये, चुनान्ते इरशद फ़रमाता है।

- (१२) जैसा कि जुहैना और बनी सलमा बौरह काफ़िरों का अक्कीदा है कि फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियाँ हैं।
- (१३) यानी अपने लिये तो घंटियाँ गवारा नहीं करते, बुरी जानते हैं और फिर ऐसी चीज़ की ख़ुदा की तरफ़ निम्नत करते हैं।
- (१४) देख रहे थे, क्यों ऐसी बेहूदा बात कहते हैं।
- (१५) फ़ासिद और बातिल।
- (१६) और इतना नहीं समझते कि अल्लाह तआला औलाद से پاک और बेनियाज़ है।
- (१७) जिसमें यह सन्द हो।
- (१८) जैसा कि कुछ मुश्किों ने कहा था कि अल्लाह ने ज़िन्नो में शादी की उससे फ़रिश्ते पैदा हुए (मआज़ल्लाह) कैस वड़े भारी कुफ़र करने वाले हुए।
- (१९) यानी इस बेहूदा बात के कहने वाले।
- (२०) जहन्नम में अज़ाब के लिये।
- (२१) ईमानदार, अल्लाह तआला की पाकी बयान करते हैं उन तमाम बातों से, जो ये नावकार काफ़िर कहते हैं।
- (२२) यानी तुम्हारे बुत सबके सब वो ओर।
- (२३) गुमारह नहीं कर सकते।
- (२४) जिसकी किस्मत ही में यह है कि वह अपने बुरे चरित्र से जहन्नम का मुस्तहिक़ हो।
- (२५) जिसमें अपने रब की इबादत करता है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि आसमानों में बालिशत भर भी जगह ऐसी नहीं है जिसमें कोई फ़रिश्ता रमाज़ नहीं पढ़ता हो या तस्बीह न करता हो।
- (२६) यानी मक्कए मुकर्रमा के काफ़िर और मुश्कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने से पहले कहा करते थे कि ---

इज़्ज़त वाला बहुत अता फ़रमाने वाला है^(१५) (१९) क्या उनके लिये है सल्तनत आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके बीच है, तो रसियाँ लटकाकर चढ़ न जाएं^(१६) (२०) यह एक ज़लील लश्कर है उन्हीं लश्करों में से जो वहीं भगा दिया जाएगा^(१७) (२१) उनसे पहले झुटला चुके हैं नूह की क्रौम और आद और चौमेखा करने वाला फ़िरऔन^(१८) (२२) और समूद और लूत की क्रौम और बन वालें^(१९) ये हैं वो ग़िरोह^(२०) (२३) उनमें कोई ऐसा नहीं जिसने रसूलों को न झुटलाया हो तो मेरा अज़ाब लाज़िम हुआ^(२१) (२४)

दूसरा रूकू

और ये राह नहीं देखते मगर एक घीख की^(१) जिसे कोई फेर नहीं सकता^(२) (२५) और बोले ऐ हमारे रब हमारा हिस्सा हमें जल्द दे दे हिसाब के दिन से पहले^(३) (२६) तुम उनकी बातों पर सब करो और हमारे बन्दे दाऊद ने अमलों वाले को याद करो^(४) बेशक वह बड़ा रज़ू करने वाला है^(५) (२७) बेशक हमने उसके साथ पहाड़ मुसख़्बर (वशीभूत) फ़रमा दिये कि तस्बीह करते^(६) शाम को और सूरज चमकते^(७) (२८) और परिदे जमा किए हुए सब उसके फ़रमाँवरदार थे^(८) (२९) और हमने उसकी सल्तनत को मज़बूत किया^(९)

مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْ ذِكْرِي ۚ بَلْ لَمَّا يَدْعُونَ عَذَابَ ۚ أَمْعَدَهُمْ حَزَائِنُ رَحْمَتِي سَرَّيْتُكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۚ أَمْلَهُمْ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَلْيَرْتَقُوا فِي الْاَسْبَابِ ۚ جُنْدٌ مَّا هُنَا لَكَ مَهْرُومٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ۚ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ۚ وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ ۚ وَاَصْحَابُ لَيْكَةِ ۚ اُولٰٓئِكَ الْاَحْزَابُ ۚ اِنْ كُلُّ اِلَّا كَذَّابٌ الرَّسُلُ فَحَقَّ عِقَابِ ۚ وَمَا يَنْظُرُ هُوَ اِلَّا الصَّيْحَةَ ۚ وَاِحْدَاةٌ مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قَطَنًا ۚ قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۚ اِصْبِرْ عَلٰٓى مَا يَقُولُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗ اَوَّابٌ ۚ اِنَّا سَخَرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ ۚ بِسُجُنٍ بِالْعَشِيِّ وَالْاَشْرَاقِ ۚ وَالطَّيْرِ مَحْشُورَةً ۚ كُلُّ لَهٗ اَوَّابٌ ۚ وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ ۚ وَاَتَيْنٰهُ مَرْكَزًا

(२७) कोई किताब मिलती.

(२८) उसकी इताअत करते और इख़लास के साथ इबादत बजा लाते फिर जब तमाम किताबों से अफ़ज़ल और बुज़ुर्गी वाली चमत्कारिक किताब उन्हें मिली यानी क़ुरआने मजीद उतरा.

(२९) अपने कुफ़्र का अंजाम.

(३०) यानी ईमान वाले.

(३१) जब तक कि तुम्हें उनके साथ किताब यानी जंग करने का हुक्म दिया जाए.

(३२) तरह तरह के अज़ाब दुनिया और आख़िरत में. जब यह आयत नाज़िल हुई तो काफ़िरों ने मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में कहा कि यह अज़ाब कब नाज़िल होगा. इसके जवाब में अगली आयत उतरी.

(३३) जो काफ़िर उसकी शान में कहते हैं और उसके लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं.

(३४) जिन्होंने अल्लाह तआला की तरफ़ से तौहीद और शरीअत के अहक़ाम पहुंचाए. इन्सानो दर्जों में सब से ऊंचा दर्जा यह है कि ख़ुद कामिल हो और दूसरों की तक्ज़ील करे. यह नबियों की शान है, तो हर एक पर उन हज़रात का अनुकरण और उन्हें मानना लाज़िम है.

३८ - सूरए सौद - पहला रूकू

(१) सूरए सौद का नाम सूरए दाऊद भी है. यह सूरत मक्के में उतरी, इसमें पांच रूकू, अठासी आयतें और सात सौ बत्तीस कलिमे और तीन हज़ार सड़सठ अक्षर हैं.

(२) जो बुज़ुर्गी वाला है कि ये चमत्कारी क़त्लाम है.

(३) और नबीयें करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दुश्मनी रखते हैं इसलिये सच्चाई को नहीं मानते.

(४) यानी आपकी क़ौम से पहले किन्तनी उम्मतें ह़लाक़ कर दीं, इसी घमण्ड और नबियों के विरोध के कारण.

(५) यानी अज़ाब उतरने के वक़्त उन्हींने फ़रियाद की.

(६) कि झुटकारा या सकते. उस वक़्त की फ़रियाद बेकर थी. मक्के के काफ़िरों ने उनके हाल से इब्रत हासिल न की.

(७) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(८) जब हज़रात उमर रदियल्लाहो अन्हां इस्लाम लाए तो मुसलमानों को ख़ुशी हुई और काफ़िरों को बहुत रंज हुआ. बलीद बिन

मुगीरह ने कुरैश के पन्थीस प्रतिष्ठित आदमियों को जमा किया और उन्हें अबू तालिब के पास लाया और उनसे कहा कि तुम हमारे सरदार हो और बुजुर्ग हो. हम तुम्हारे पास इसलिये आए हैं कि तुम हमारे और अपने भतीजे के बीच फ़ैसला करदो. उनकी जमाअत के छोटे दर्जे के लोगों ने जो आतंक मचा रखा है वह तुम जानते हो. अबू तालिब ने हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुला कर अर्ज़ किया कि ये आपकी क़ौम के लोग हैं और आप से सुलह चाहते हैं आप उनकी तरफ़ से ज़रा सा भी मुंह न फेरिये. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया ये मुझसे क्या चाहते हैं. उन्होंने कहा कि हम इतना चाहते हैं कि आप हमें और हमारे मअबूदों का ज़िक्र छोड़ दीजिये. हम आपको और आपके मअबूद की बदगोई के पीछे न पड़ेंगे. हज़रत अलैहिस्सलामो वसल्लाम ने फ़रमाया क्या तुम एक कलिमा कुबूल कर सकते हो जिस से अरब और अजम के मालिक और शासक हो जाओ. अबू जहल ने कहा कि एक क्या हम दस कलिमे कुबूल कर सकते हैं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कहो ला इलाहा इल्लल्लाह. इसपर वो लोग उठ गए और कहने लगे कि क्या उन्होंने बहुत से खुदाओं का एक खुदा कर दिया इतनी बहुत सी मख़लूक के लिये एक खुदा कैसे काफी हो सकता है.

(९) अबू तालिब की मजलिस से आपस में यह कहते.

(१०) नसरानी भी तीन खुदाओं के क़ाइल थे, ये तो एक ही खुदा बताते हैं.

(११) मक्का वालों के सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मन्सबे नबुच्चत पर हसद आया और उन्होंने यह कहा कि हम में इज़्रत और बुजुर्गी वाले आदमी मौजूद थे उनमें से किसी पर कुरआन न उतरा, ख़ास हज़रत सैयदुल अब्दिया मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर उतरा.

(१२) कि उसके लाने वाले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाते हैं.

(१३) अगर मेरा अज़ाब चख़ लेते तो यह शक, झुटलाने की प्रवृत्ति और हसद कुछ भी बाक़ी न रहता और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तस्दीक करते लेकिन उस वक़्त की तस्दीक लाभदायक न होती.

(१४) और क्या नबुच्चत की कुंजियाँ उनके हाथ में हैं जिस चाहें दें. अपने आपको क्या समझते हैं. अल्लाह तआला और उसकी मालिकियत को नहीं जानते.

(१५) हिकमत के तफ़ाज़े के अनुसार जिसे जो चाहें अता फ़रमाए. उसने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नबुच्चत अता फ़रमाई तो किसी को उसमें दख़ल देने और क्यों कैसे करने की क्या मजाल.

(१६) और ऐसा इज़्तिपार हो तो जिसे चाहें वही के साथ ख़ास करें और संसार की तदवीरें अपने हाथ में लें और जब यह कुछ नहीं तो अल्लाह की हिकमतों और उसके कामों में दख़ल क्यों देते हैं. उन्हें इसका क्या हक़ है. काफ़िरों को यह जवाब देने के बाद अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से नुसरत और मदद का वादा फ़रमाया है.

(१७) यानी इन कुरैश की जमाअत उन्हीं लश्करों में से एक है जो आप से पहले नबियों के बिरुद्ध ग़िराह बांधकर आया करते थे और यातनाएं देते थे. उस कारण हलाक कर दिये गए. अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़बर दी कि यही हाल इनका है इन्हें भी हार होगी. चुनान्दे बद्र में ऐसा ही हुआ. इसके बाद अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली के लिये पिछले नबियों और उनकी क़ौम का ज़िक्र फ़रमाया.

(१८) जो किसी पर गुस्सा करता था तो उसे लिटाकर उसके चारों हाथ पाँव खींच कर चारों तरफ़ खूंटों में बंधवा देता था फिर उसको पिटाता था और उस पर तरह तरह की सज़ियाँ करता था.

(१९) जो शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम से थे.

(२०) जो नबियों के बिरुद्ध ज़त्ये बांधकर आए. मक्के के मुथ्रिक उन्हीं समूहों में से हैं.

(२१) यानी उन गुज़री उम्मतों ने जब नबियों को झुटलाया तो उनपर अज़ाब लाज़िम हो गया. तो उन कमज़ोरों का क्या हाल होगा जब उनपर अज़ाब उतरेगा.

सूरए सौद - दूसरा रुकू

(१) यानी क़यामत के पहले सूर के फूँके जाने की, जो उनके अज़ाब की भीआद है.

(२) यह नज़र बिन हारिस ने हसी के तौर पर कहा था, इसपर अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाया कि ----

(३) जिन को इबादत की बहुत कुबूत दी गई थी. आप का तरीक़ा था कि एक दिन रोज़ा रखते, एक दिन इफ़तार करते और रात के पहले आधे हिस्से में इबादत करते उसके बाद रात की एक तिहाई आराम फ़रमाते फिर बाक़ी छ्त्रा इबादत में गुज़ारते.

(४) अपने रब की तरफ़.

(५) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की तस्बीह के साथ.

(६) इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के लिये पहाड़ों को ऐसा मुग़स्ररर यानी वशीमूत किया था कि जहाँ आप चाहते साथ ले जाते. (मदारिक)

(७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि जब हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम तस्बीह करते तो पहाड़ भी आपके

और उसे हिकमत(बोध)^(१०) और कौलै फ़ैसल दिया^(११) ॥२०॥
और क्या तुम्हें^(१२) उस दावे वालों की भी खबर आई, जब
वो दीवार कूद कर दाऊद की मस्जिद में आए^(१३) ॥२१॥
जब वो दाऊद पर दाखिल हुए तो वह उनसे धवरा गया
उन्होंने अर्ज़ की डरिये नहीं हम दो फ़रीक(पक्ष) हैं कि एक
ने दूसरे पर ज़ियादती की है^(१४) तो हममें सच्चा फ़ैसला
फ़रमा दीजिये और हक़ के ख़िलाफ़ न कीजिये^(१५) और हमें
सीधी राह बताइये^(१६) ॥२२॥ वेशक यह मेरा भाई है^(१७) इसके
पास नित्यानवे दुबियां हैं और मेरे पास एक दुंबी, अब यह
कहता है वह भी मुझे हवाले करदे और बात में मुझ पर
ज़ोर डालता है^(१८) दाऊद ने फ़रमाया वेशक यह तुझ
पर ज़ियादती करता है कि तेरी दुंबी अपनी दुबियों में
मिलाने को मांगता है, और वेशक अक्सर साझे वाले एक
दूसरे पर ज़ियादती करते हैं मगर जो ईमान लाए और
अच्छे काम किये और वो बहुत थोड़े हैं^(१९) अब दाऊद
समझा कि हमने यह उसकी जांच की थी^(२०) तो अपने रव
से माफ़ी मांगी और सज्दे में गिर पड़ा^(२१) और रज़ू
लाया^(२२) तो हमने उसे यह माफ़ फ़रमाया, और वेशक
उसके लिये हमारी बारगाह में ज़रूर नज़्दीकी और अच्छा
ठिकाना है^(२३) ऐ दाऊद वेशक हमने तुझे ज़मीन में नायब
किया^(२४) तो लोगों में सच्चा हुक्म कर और ख़्वाहिश के पीछे
न जाना कि तुझे अल्लाह की राह से वहका देगी वेशक वो

الْحِكْمَةَ وَقَضَلَ الْخُطَابَ ۝ وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ
تَسَوَّرُوا الْحُرَابَ ۝ إِذْ دَخَلُوا عَلَى دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا
لَا تَحْزَنْ خَصْمُنِ بَعْضُنَا عَلَى بَعْضٍ فَأَخَافُ خَاخِمُ بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ وَلَا تَشُوْطْ وَاهِدًا نَّارَ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۝ إِنَّ هَذَا
أَخِي لَهُ تَسَمُّعٌ وَتِسْعُونَ نَجْمَةً وَلِي نَعْبَةِ وَاحِدَةً ۝
فَقَالَ أَكْفُلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخُطَابِ ۝ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ
سُؤَالُ نَجْمَتِكَ إِلَى تِعَاجِهِ ۝ وَإِنْ كُنْتُمْ مِنْ الْخُلَطَاءِ
يُتَبَغَّى بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَقَلِيلٌ مِّنْهُمْ ۝ وَطَنَ دَاوُدَ إِنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ
وَحَزَرَ لَكُمْ وَآثَابَ ۝ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكَ ۝ وَإِنْ لَهُ
عِنْدَنَا لُزْلٌ وَحُسْنٌ مَّآبٍ ۝ يُدَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ
خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَأَخَذْنَا مِنْ بَيْنِ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ
الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ

साथ तरवीह करने और पक्षी आपके पास जमा होकर तरवीह करते.

(८) पहाड़ भी और पक्षी भी.

(९) फ़ौज और लस्कर की कसरत अता फ़रमाकर. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि धरती के बादशाहों में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की बड़ी मज़बूत और ताक़तवर सल्तनत थी, छठीस हज़ार मर्द आप की मेहराब के पहरें पर मुक़रर थे.

(१०) यानी नबुव्वत. कुछ मुफ़रिसरों ने हिकमत की तफ़सीर इन्त्याफ़ की है, कुछ ने अल्लाह की फ़िनाय का इल्म, कुछ ने फ़िक्र, कुछ ने सुन्नत (जुमल)

(११) कौलै फ़ैसल से इन्मे कज़ा मुराद है जो सच और झूठ, सत्य और असत्य में फ़र्क और तमीज़ कर दे.

(१२) ऐ सैयदे आलम माल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(१३) ये आने वाले, मशहूर कौल के अनुसार, फ़रिश्ते थे, जो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की आज्ञामायश के लिये आए थे.

(१४) उनका यह कौल एक मसअले की फ़र्ज़ी शक़ल पेश करके ज़बाव हासिल करना था और किसी मसअले के बारे में हुक्म मालूम करने के लिये फ़र्ज़ी सूरतें मुक़रर कर ली जाती हैं और निर्धारित ब्यक्तियों की तरफ़ उनकी निख़त कर दी जाती है. ताकि मसअले का बयान बहुत साफ़ तरीक़े पर हो और इय़हाम बाक़ी न रहे. यहाँ जो मसअले की सूरत इन फ़रिश्तों ने पेश की इस से मक़सूद हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को तवज़्जह दिलाना था इस बात की तरफ़, जो उन्हें पेश आइ थी और वह यह थी कि आपकी ९९ बीवियाँ थीं. इसके बाद आपने एक और औरत को पयांम दे दिया जिसको एक मुसलमान पहले से पयांम दे चुका था लेकिन आपका संदेश पहुंचने के बाद औरत के अज़ीज़ रिश्तेदार दूसरे की तरफ़ इल्तिफ़ात करने वाले कब थे. आपके लिये रज़ी हो गए और आपसे निकाह हो गया. एक कौल यह भी है कि उस मुसलमान के साथ निकाह हो चुका था, आपने उस मुसलमान से अपनी साबत कब इज़हार किया और चाहा कि वह अपनी औरत को तलाक़ दे दे. वह आपके लिहाज़ से मना न कर सका और उसने तलाक़ दे दी. आपका निकाह हो गया. और उस ज़माने में ऐसा मामूल था कि अगर किसी ब्यक्ति को किसी औरत की तरफ़ साबत होती तो उसके शीहर से इस्तिदा करके तलाक़ दिलवा लेता और इदत के बाद निकाह कर लेता. यह बात न तो शरअई तौर पर नाजायज़ है न उस ज़माने की रस्म और आदत के ख़िलाफ़, लेकिन नबियों की शान बहुत ऊँची होती है इसलिये यह आपके ऊँचे मनसब के लायक न था तो अल्लाह की मर्ज़ी यह हुई कि आपको इसपर आगाह किया जाए और उसका सबब यह पैदा किया कि फ़रिश्ते मुद्ई और मुद्आ अलैह की शक़ल में आपके सामने पेश हुए. इस से मालूम हुआ कि अगर बुजुर्गों से कोई लगज़िश सादिस् हा और कोई बात शान के ख़िलाफ़

जो अल्लाह की राह से बहकाते हैं उन के लिये सख्त अज़ाब है इस पर कि वो हिसाब के दिन को भूल बैठे^(२५)॥२६॥

तीसरा रूकू

और हमने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है बेकार न बनाए, यह काफ़िरों का गुमान है^(१) तो काफ़िरों को ख़राबी है आग से॥२७॥ क्या हम उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन जैसा कर दें जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं या हम परहेज़गारों को शरीर वेहुकों के बराबर ठहराएं^(२)॥२८॥ यह एक किताब है कि हमने तुम्हारी तरफ़ उतारी^(३) बरकत वाली ताकि इसकी आयतों को सोचें और अक्लमन्द नसीहत मानें॥२९॥ और हमने दाऊद को^(४) सुलेमान अता फ़रमाया, क्या अच्छा बन्दा, वेशक वह बहुत रूजू लाने वाला^(५)॥३०॥ जब कि उसपर पेश किये गए तीसरे पहर को^(६) कि रोकिये तो तीन पाँव पर खड़े हों चौथे सुम का किनारा ज़मीन पर लगाए हुए और चलाइये तो हवा हो जाएं^(७)॥३१॥ तो सुलेमान ने कहा मुझे उन घोड़ों की महबूत पसन्द आई है अपने रब की याद के लिये^(८) फिर उन्हें चलाने का हुक्म दिया यहाँ तक कि निगाह से पर्दे में छुप गए^(९)॥३२॥ फिर हुक्म दिया कि उन्हें मेरे पास वापस लाओ तो उनकी पिंडलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा^(१०)॥३३॥ और वेशक हमने सुलेमान को जांचा^(११) और उसके तख़्त पर एक बेजान वदन डाल दिया^(१२)॥३४॥ फिर रूजू लाया^(१३) अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे वाश्र दे और मुझे ऐसी सल्तनत अता कर कि मेरे बाद किसी को लायक न हो^(१४) वेशक तू ही है बड़ी दैन वाला॥३५॥ तो हमने हवा

عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ يَوْمَ نُسَوِّدُ يَوْمَ
الْحِسَابِ ۖ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
بِاطِلٍ ۚ ذَلِكَ ظُنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا
مِنَ النَّارِ ۚ أَمْ يَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ يَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ۚ
كُنْتُ أَنْزِلُهُ إِلَيْكَ مَلَكًا لِّيَدَّبَّرُوا الْبَيْنَ ۚ وَلِيَتَذَكَّرُوا
أُولَئِكَ ۚ وَوَهَبْنَا لِذَاوُدَ سُلَيْمَانَ ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّكَ
أَوَّابٌ ۚ إِذْ عَرَضَ عَلَيْهِ بِالْعِيسَى الصُّفُفُتُ الْحَيَاءُ ۚ
فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي ۚ حَتَّى
تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۚ رُدُّوْهَا عَلَيَّ فَنُفِثَ مَنًى بِالسُّوقِ
وَالْأَعْنَاقِ ۚ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ ۚ وَالْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ
جَسَدًا أَثْمًا ۖ أَنَابَ ۚ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا
يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِّنْ بَعْدِي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۚ فَخَرْنَا

سُورَةُ

वाक़े हो जाए तो अदब यह है कि आलोचनात्मक ज़बान न खोली जाए बल्कि इस वाक़ए जैसा एक वाक़ए की कल्पना करके उसकी निखत जानकारी हासिल करने के लिये सवाल किया जाए और उनके आदर और सम्मान का भी ख़याल रखा जाए और यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह तआला मालिकों मौला अपने नबियों की ऐसी इज़्ज़त फ़रमाता है कि उनको किसी बात पर आगाह करने के लिये फ़रिश्तों को इस तरीक़े पर अदब के साथ हाज़िर होने का हुक्म देता है।

(१५) जिसकी मलती हो, बेझिझक फ़रमा दीजिये।

(१६) यानी दीनी भाई।

(१७) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की यह बात सुनकर फ़रिश्तों में से एक ने दूसरे की तरफ़ देखा और मुस्कुरा के वां आसमान की तरफ़ ख़ाना हो गए।

(१८) और दुम्बी एक किनाया था जिस से मुराद औरत थी क्योंकि निदानवे औरतें आपके पास होते हुए एक और औरत की आपने ख़्वाहिश की थी इसलिये दुम्बी के पैराए में सवाल किया गया जब आप ने यह समझा।

(१९) इस आयत से साबित होता है कि नमाज़ में रूकू करना तिलावत के सज्दे के क़ायम मुक़ाम हो जाता है जब कि नियत की जाए।

(२०) ख़ल्क की तदबीर पर आपको मामूर किया और आपका हुक्म उनमें नाफ़िज़ फ़रमाया।

(२१) और इस वजह से ईमान से मेहरूम रहे, अगर उन्हें हिसाब के दिन का ख़कीन होता तो दुनिया ही में ईमान ले आते।

सुरए सौद - तीसरा रूकू

(१) अगरचे वो साफ़ साफ़ यह न कहें कि आसमान और ज़मीन और तमाम दुनिया बेकार पैदा की गई लेकिन जब कि दोबारा उठाए जाने और जज़ा के इन्क़ारी हैं तो नतीजा यही है कि जगत की सृष्टि को बेकार और बे फ़ायदा मानें।

उसके बस में कर दी कि उसके हुक्म से नर्म नर्म चलती^(१५) जहाँ वह चाहता^(१६) और देव बस में कर दिये हर मेमार^(१७) और गौताखोर^(१८) और दूसरे और बेड़ियों में जकड़े हुए^(१९) ३८ यह हमारी अता है अब तू चाहे तो एहसान कर^(२०) या रोक रख^(२१) तुझ पर कुछ हिसाब नहीं^(२२) और बेशक उसके लिये हमारी वारगाह में ज़रूर नज़दीकी और अच्छा ठिकाना है^(२३)

चौथा स्कू

और याद करो हमारे बन्दे अय्यूब को जब उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने तकलीफ़ और ईज़ा लगा दी^(२४) हमने फ़रमाया ज़मीन पर अपना पाँव मार^(२५) यह है ठण्डा चश्मा नहाने और पीने को^(२६) और हमने उसे उसके घर वाले और उनके बराबर और अता फ़रमा दिये अपनी रहमत करने^(२७) और अक्लमन्दों को नसीहत को^(२८) और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू लेकर उससे मार दे^(२९) और क़सम न तोड़, बेशक हमने उसे साविर पाया, क्या अच्छा बन्दा^(३०) बेशक वह बहुत रज़ू लाने वाला है^(३१) और याद करो हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और यअक़ूब कुदरत और इल्म वालों को^(३२) बेशक हमने उन्हें एक खरी बात से इम्तियाज़ (विशेषता) बाख़्शा कि वह उस घर की याद है^(३३) और बेशक वो हमारे नज़दीक़ चुने हुए पसन्दीदा हैं^(३४) और याद करो इस्माईल और यसआ और जुलकिफ़ल को^(३५) और सब अच्छे हैं^(३६)

لَهُ الرِّبِّيُّ يَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ۝ وَالشَّيْطَانُ
كُلُّ بَنَاءٍ وَغَوَايِصٍ ۝ وَآخِرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝
هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَإِنَّ
لَهُ عِنْدَنَا لَوْفِي وَحُصْنٌ مَّائٍ ۝ وَادْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ ۝
إِذْ نَادَى رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصِيبٍ وَعَذَابٍ ۝
أَلْكُضْ بِرِجْلِكَ هَذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ۝ وَ
وَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرًا
لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْتًا فَاضْرِبْ بِهِ
وَلَا تُخَذِّلْ مَلَأًا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۝ نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ
أَوَّابٌ ۝ وَادْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ ۝ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ أُولِي
الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ۝ إِنَّا اخْتَلَصْنَاهُمْ بِنَخْلَةٍ ۝ وَكَرَّمْنَا
الدَّارَةَ ۝ وَلَنَنصُرَنَّ الْمُصْطَفِينَ الْأَخْيَارَ ۝
وَادْكُرْ إسماعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِنَ الْأَخْيَارِ ۝

مَنْ

(२) यह बात बिल्कुल हिकमत के खिलाफ़. और जो व्यक्ति जज़ा का कायल नहीं वह फ़सादी और इस्लाह करने वाले और बदकार और परहेज़गार को बराबर करार देगा और उन में फ़र्क़ न करेगा. काफ़िर इस जिहालत में गिरफ़्तार हैं. कुरैश के काफ़िरों ने मुसलमानों से कहा था कि आख़िरत में जो नेअमतें तुम्हें मिलेंगी वही हमें भी मिलेंगी. इसपर यह आयत उतरी और इशाराद फ़रमाया गया कि अच्छे बुरे, मूमिन और काफ़िर को बराबर कर देना हिकमत का तक्काज़ा नहीं, काफ़िरों का ख़याल ग़लत है.

(३) यानी कुरआन शरीफ़.

(४) लायक़ बेटा.

(५) अल्लाह तआला की तरफ़ और सारे वक़्त तस्बीह और ज़िक्र में मशगूल रहने वाला.

(६) ज़ोहर के बाद ऐसे घोड़े.

(७) ये हज़ार घोड़े थे जो जिहाद के लिये हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में ज़ोहर के बाद पेश किये गए.

(८) यानी मैं उनसे अल्लाह की रज़ा और दीन की कुब्त और ताईद के लिये महबूत करता हूँ, मेरी महबूत उनके साथ दुनिया की गरज़ से नहीं है. (तफ़सीर कबीर)

(९) यानी नज़र से गायब हो गए.

(१०) और इस हाथ फ़ेरने के कुछ कारण थे, एक तो घोड़ों की इज़ज़त और बुजुर्गी का इज़हार कि वो दुश्मन के मुकाबले में बेहतरीन मददगार हैं, दूसरे सल्तनत के कामों की झुद निगरानी फ़रमाना कि तमाम काम करने वाले मुस्तइद रहें, तीसरे यह कि आप घोड़ों के अहवाल और उनके रोगों और दोषों के ऊँचे माहिर थे. उनपर हाथ फ़ैर कर उनकी हालत का इम्तिहान फ़रमाते थे. कुछ मुफ़ससिरो ने इन आयतों की तफ़सीर में बहुत से ऐसे वैसे क़ौल लिख दिये जिन की सच्चाई पर कोई प्रमाण नहीं और वो केवल हिकायतें हैं जो मज़बूत प्रमाणों के सामने किसी तरह कुबूल करने के योग्य नहीं और यह तफ़सीर जो ज़िक्र की गई, यह इबारात कुरआन से बिल्कुल मुताबिक़ है. (तफ़सीर कबीर)

(११) बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहो अन्हो की हदीस है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि मैं आज रात में अपनी नब्बे बीवियों पर दौरा करूँगा. हर एक हामिला

यह नसीहत है, और वेशक^(१०) परहेज़गारों का ठिकाना भला^(११) बसने के वाग उनके लिये सब दरवाज़े खुले हुए^(१२) उनमें तकिया लगाए^(१३) उनमें बहुत से मेवे और शराब मांगते हैं^(१४) और उनके पास वो बीबियाँ हैं कि अपने शौहर के सिवा और की तरफ आंख नहीं उठाती एक उम्र की^(१५)^(१६) यह है जिसका वादा दिया जाता है हिसाब के दिन^(१७) वेशक यह हमारा रिज़क है कि कभी खत्म न होगा^(१८)^(१९) उनको तो यह है^(२०) और वेशक सरकशों का बुरा ठिकाना^(२१) जहन्नम कि उसमें जाएंगे तो क्या ही बुरा बिछौना^(२२)^(२३) उनको यह है तो इसे चखें खोलता पानी और पीप^(२४)^(२५) और इसी शक्त के और जोड़े^(२६)^(२७) उनसे कहा जाएगा यह एक और फ़ौज तुम्हारे साथ धंसी पड़ती है जो तुम्हारी थी^(२८)^(२९) वो कहेंगे उनको खुली जगह न मिलियो, आग में तो उनको जाना ही है. वहाँ भी तंग जगह रहें, तावे (फरमावरदार) बोले बल्कि तुम्हीं खुली जगह न मिलियो, यह मुसीबत तुम हमारे आगे लाए^(३०) तो क्या ही बुरा ठिकाना^(३१)^(३२) वो बोले ऐ हमारे रब जो यह मुसीबत हमारे आगे लाया उसे आग में दूना अज़ाब बढ़ा^(३३) और^(३४) बोले हमें क्या हुआ हम उन मदों को नहीं देखते जिन्हें बुरा समझते थे^(३५)^(३६) क्या हमने उन्हें हंसी बना लिया^(३७) या आँखें उनकी तरफ़ फिर गई^(३८)^(३९) वेशक यह ज़रूर हक़ है दोज़खियों का

هَذَا إِذْ كُرِّهَ وَإِنْ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنُ مَا بٍ ۝ جَدَّتْ
عَدْنٌ مُّقْتَحَةٌ لَهُمُ الْبُؤَابُ ۝ مُتَكِينِينَ فِيهَا يَدْعُونَ
فِيهَا بِمَا كَانُوا كَثِيرَةً مِّنْ شَرَابٍ ۝ وَعِنْدَهُمْ قُصِرَاتُ
الْظَّرَفِ أَتْرَابٍ ۝ هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ إِنْ
هَذَا لِرِزْقِنَا مَا لَهُ مِنْ تَفَادٍ ۝ هَذَا وَإِنَّ لِلطَّغْيِينِ
لَشَرَّ مَا بٍ ۝ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَيَسْأَلُونَ لَهَا ۝ هَذَا
فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ۝ وَآخِرُ مِنْ سُكُلِهِ آزَوَاجٌ ۝
هَذَا قُوَّةٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ لَا مَرْجَاءَ بِهِمْ ۝ إِنَّهُمْ صَالُوا
النَّارَ ۝ قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لَأَمْزَجَاءُ بِكُمْ ۝ أَنْتُمْ قَدْ مَتَّوْهُ
لَنَا ۝ فَيَسْأَلُ الْقُرْآنُ ۝ قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا
فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ۝ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَى
رِجَالًا نَعْلَهُمْ ۝ مِنَ الْأَشْرَارِ ۝ اتَّخَذْتُهُمْ سَخِرِيًّا
أَمْ رَأَيْتُ عَنْهُمْ الْإِبْصَارَ ۝ إِنْ ذَلِكَ لَحَقٌّ تَخَافُهُمْ

होगी और हर एक से खुदा की राह में जिहाद करने वाला सवार पैदा होगा. मगर यह फ़रमाते वक़्त जबाने मुबारक से इन्शाअल्लाह न फ़रमाया (शायद हज़रत किसी ऐसे शख्स में थे कि इसका ख़याल न रहा) तो कोई भी औरत गर्भवती न हुई सिवाए एक के और उसके भी अधूरा बच्चा पैदा हुआ. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने इन्शाअल्लाह फ़रमाया होता तो उन सब औरतों के लड़कें ही पैदा होते और वो खुदा की राह में जिहाद करते. (बुख़ारी पारा तेरह, किताबुल अम्बिया)

(१२) यानी अधूरा बच्चा.

(१३) अल्लाह तआला की तरफ़ इस्तिफ़ाफ़ करके इन्शाअल्लाह कहने की भूल पर और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बाग़ाह में.

(१४) इससे यह मक़सूद था कि ऐसा मुल्क आपके के लिये चमत्कार हो.

(१५) फ़रमावरदारी के तरीके से.

(१६) जो आपके हुक़म और मज़ी के अनुसार अजीब इमारतें तामीर करता.

(१७) जो आपके लिये समन्दर के मोती निकालता. दुनिया में सब से पहले समन्दर से मोती निकालने वाले आप ही हैं.

(१८) सर्वशक्ति शैतान भी आपके बस में कर दिये गए जिनको आप फ़साद से रोकने के लिये बेड़ियों और ज़ंजीरों में जकड़वा कर कैद करते थे.

(१९) जिस पर चाहे.

(२०) जिस किसी से चाहे यानी आप को देने और न देने का इस्तियार दिया गया जैसी मज़ी हो करे.

सूरए सौद - चौथा रूक़

(१) जिस्म और माल में, इस से आप की बीमारी और उसकी सख्तियाँ मुराद हैं. इस वाकए का तफ़सीली बयान सूरए अम्बिया के छठे रूक़ में गुज़र चुका है.

(२) चुवान्ने आपने ज़मीन में पाँच मारा और उससे मीठे पानी का एक चश्मा ज़ाहिर हुआ और आप से कहा गया.

आपसी झगड़ा (६४)

पाँचवाँ स्कू

तुम फरमाओ^(१) मैं डर सुनाने वाला हूँ^(२) और मअबूद कोई नहीं मगर एक अल्लाह सब पर गालिब (सर्वोपरि) (६५) मालिक आसमानों और जमीन का और जो कुछ उनके बीच है, इज्जत वाला बड़ा बख्शने वाला (६६) तुम फरमाओ वह^(३) बड़ी खबर है (६७) तुम उससे मफ़लत में हो^(४) (६८) मुझे आलमे बाला की क्या खबर थी जब वो झगड़ते थे^(५) (६९) मुझे तो यही वही होती है कि मैं नहीं मगर रौशन डर सुनाने वाला^(६) जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तो से फ़रमाया कि मैं मिट्टी से इन्सान बनाऊंगा^(७) (७०) फिर जब मैं उसे ठीक बना लूँ^(८) और उसमें अपनी तरफ़ की रूह फूंकूँ^(९) तो तुम उसके लिये सज्दे में गिरना (७१) तो सब फ़रिश्तों ने सज्दा किया एक एक ने कि कोई वाकी न रहा (७२) मगर इब्लीस ने^(१०) उसने घमण्ड किया और वह था ही काफ़िरों में^(११) (७३) फ़रमाया ऐ इबलीस तुझे किस चीज़ ने रोका कि तू उसके लिये सज्दा करे जिसे मैं ने अपने हाथों से बनाया क्या तुझे घमण्ड आ गया या तू था ही घमण्डियों में^(१२) (७४) बोला मैं उससे बेहतर हूँ^(१३) तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से पैदा किया (७५) फ़रमाया तो जन्नत से निकल जा कि तू रांदा गया^(१४) (७६) और बेशक तुझ पर मेरी लअनत है क़यामत तक^(१५) (७७) बोला ऐ मेरे रब ऐसा है तो मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि उठाए जाएँ^(१६) (७८)

أَهْلُ النَّارِ قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَمَا مِّنْ إِلَهِ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَأِ الْأَعْلَى إِذْ يَخْتَصِمُونَ إِنْ يُؤَخَّرِ إِلَى الْآخِرَةِ إِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَأِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ طِينٍ فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ يَسْجُودِينَ فَسَجَدَ الْمَلَأُ كُلُّهُمِ إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِإِيْدِي اسْتَكْبَرْتَ أَتُكْبِرُتَ أَفَكُنْتُ مِنَ الْعَالَمِينَ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ وَإِن عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ

مَزَل

- (३) चुनान्वे आप ने उससे पिया और गुस्ल किया और तमाम ज़ाहिरी और बातिनी बीमारियाँ और तकलीफें दूर हो गईं.
- (४) चुनान्वे रिवायत है कि जो औलाद आप की मर चुकी थी अल्लाह तआला ने उसको ज़िन्दा किया और अपने फ़ज़ल और रहमत से उतने ही और अता फ़रमाए.
- (५) अपनी बीबी को जिसको सौ ज़रबें मारने की क़स्म खाई थी, देर से हाज़िर होने के कारण.
- (६) यानी अय्यूब अलैहिस्सलाम.
- (७) जिन्हें अल्लाह तआला ने इल्म और अमल की हिक़मत अता फ़रमाई और अपनी पहचान और फ़रमाँवरदारी पर दृढ़ता अता की.
- (८) यानी आख़िरत की कि वह लोगों की उसी की चाह दिलाते हैं और बहुतात से उसका ज़िक्र करते हैं. दुनिया की महबूत ने उनके दिलों में जगह नहीं पाई.
- (९) यानी उनके फ़ज़ाइल और उनके सब्र को, ताकि उनकी पाक ख़सलतों से लोग नेकियों का ज़ौक व शौक हासिल करें और जुलकिफ़ल की नबुव्वत में मतभेद है.
- (१०) आख़िरत में.
- (११) सजे हुए तर्रतों पर.
- (१२) यानी सब उम्र में बराबर, ऐसे ही हुस्न व जवानी में आपस में महबूत रखने वाले, न एक को दूसरे से बुज़्र, न रश्क, न हसद.
- (१३) हमेशा बाक़ी रहेगा. वहाँ जो चीज़ ली जाएगी और ख़र्च की जाएगी वह अपनी जगह वैसी ही हो जाएगी. दुनिया की चीज़ों की तरह फ़ना और नेस्त नाबूद न होगी.
- (१४) यानी ईमान वालों को.
- (१५) भड़कने वाली आग कि वही फ़र्श होगी.
- (१६) जो जहन्नमियों के जिस्मों और उनके सड़े हुए ज़र्रों और नापाकी की जगहों से बहेगी जलती बदबूदार.
- (१७) तरह तरह के अज़ाब.
- (१८) हज़रत उब्बे अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जब काफ़िरों के सरदार जहन्नम में दाख़िल होंगे और उनके पीछे पीछे

फ़रमाया तो तू मोहलत वालों में है (७९) उस जाने हुए वक़्त के दिन तक (८०) बोला तेरी इज़ज़त की कसम ज़रूर मैं उन सब को गुमराह कर दूंगा (८१) मगर जो उनमें तेरे चुने हुए वन्दे हैं (८२) फ़रमाया तो सच यह है और मैं सच ही फ़रमाता हूँ (८३) वेशक मैं ज़रूर जहन्नम भर दूंगा तुझसे (८४) और उनमें से (८५) जितने तेरी पैरवी करेंगे, सब से (८६) तुम फ़रमाओ मैं इस क़ुरआन पर तुम से कुछ अन्न नहीं मांगता और मैं वनावट वालों में नहीं (८७) वह तो नहीं मगर नसीहत सारे जगत के लिये (८८) और ज़रूर एक वक़्त के बाद तुम इसकी ख़बर जानोगे (८९) (९०)

३९- सूरए जुमर

सूरए जुमर मक्का में उतरी, इसमें ७५ आयतें, आठ रूक़ हैं।

पहला रूक़

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) किताब (२) उतारना है अल्लाह इज़ज़त व हिकमत (बोध) वाले की तरफ़ से (३) वेशक हमने तुम्हारी तरफ़ (४) यह किताब हक़ (सत्य) के साथ उतारी तो अल्लाह को पूजा निरे उसके वन्दे होकर (५) हाँ ख़ालिस अल्लाह ही की वन्दगी है (६) और वो जिन्होंने उसके सिवा और वाली (संरपरस्त) बना लिये (७) कहते हैं हम तो उन्हें (८) सिर्फ़ इतनी बात के लिये पूजते हैं कि ये हमें अल्लाह के पास नज़दीक कर दें, अल्लाह

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۝ إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ۝ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَا أُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ ۝ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقُولُ ۝ لَا مَلَكُتُ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمَنْ يَبْعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ۝ إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ بِالْحَقِّ وَالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۝ أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ

مَزْلُ

उनके मानने वाले तो जहन्नम के ख़ाज़िन उन सरदारों से कहेंगे ये तुम्हारे अनुयाइयों की फ़ौज है जो तुम्हारी तरह तुम्हारे साथ जहन्नम में धंसी पड़ती है।

(१९) कि तुम ने पहले कुछ इस्तिथार किया और हमें उस राह पर चलाया।

(२०) यानी जहन्नम अत्यन्त बुरा ठिकाना है।

(२१) काफ़िरों के बड़े और सरदार।

(२२) यानी ग़रीब मुसलमानों को और उन्हें वो अपने दीन का मुख़ालिफ़ होने के कारण शरीर कहते थे और ग़रीब हांन के कारण तुच्छ समझते थे। जब काफ़िर जहन्नम में उन्हें न देखेंगे तो कहेंगे वो हमें नज़र क्यों नहीं आते।

(२३) और वास्तव में वो ऐसा न थे, दोज़ख़ में आए ही नहीं, हमारा उनके साथ टट्टा करना और उनकी हंसी बनाना बातिल था।

(२४) इसलिये वो हमें नज़र न आए या ये मानी हैं कि उनकी तरफ़ से आँखें फिर गईं और दुनिया में हम उनके रूखे और बुजुर्गों को न देख सकें।

सूरए सौद - पाँचवां रूक़

(१) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लाम, मक्के के काफ़िरों से।

(२) तुम्हें अल्लाह के अज़ाब का डर दिलाता हूँ।

(३) यानी क़ुरआन या क़यामत या मेरा डराने वाला रसूल होना या अल्लाह तआला का वहदहू ला शरीक लहू होना।

(४) कि मुझ पर ईमान नहीं लाते और क़ुरआन शरीफ़ और मेरे दीन को नहीं मानते।

(५) यानी फ़रिश्ते हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाव में, यह हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम के सच्चे नबी होने की एक दलील है। मुद्दा यह है कि आलमे वाला मैं फ़रिश्तों का हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाव में सवाल जवाब करना मूझे क्या मालूम होता, अगर मैं नबी न होता, उसकी ख़बर देना नबुव्वत और मेरे पास वही आने की दलील है।

(६) दारिमी और तिरमिज़ी की हदीसों में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम ने फ़रमाया कि मैं अपने बेहतरीन ज़ालात में अपने इज़ज़त और जलाल वाले रब के दीदार से मूशरफ़ हुआ। (हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मेरे ख़याल में यह वाक़िआ ख़ाब का है) हुज़ूर अलैहिस्सलाम वसल्लाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मुहम्मद, आलमे वाला

उनमें फैसला कर देगा उस बात का जिसमें इखिलाफ (मतभेद) कर रहे हैं^(१)। वेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो झूठा बड़ा नाशुक्रा हो^(२)। अल्लाह अपने लिये वच्चा बनाता तो अपनी मखलूक में से जिसे चाहता चुन लेता^(३)। माकी है उसे^(४)। वही है एक अल्लाह^(५)। सब पर गालिब^(६)। उसने आसमान और ज़मीन हक बनाए रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है^(७)। और उसने सूरज और चांद को काम में लगाया हर एक एक ठहराई मीआद के लिये चलता है^(८)। सुनता है वही इज़्ज़त वाला वरख्ने वाला है^(९)। उसने तुम्हें एक जान से बनाया^(१०)। फिर उसी से उसका जोड़ा पैदा किया^(११)। और तुम्हारे लिये चौपायों में से^(१२)। आठ जोड़े उतारे^(१३)। तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट में बनाता है एक तरह के बाद और तरह^(१४)। तीन अधेरियों में^(१५)। यह है अल्लाह तुम्हारा रब उसी की वादशाही है, उसके सिवा किसी की वन्दगी नहीं फिर कहा फिर जाते हो^(१६)। अगर तुम नाशुक्रा करो तो वेशक अल्लाह बेनियाज़ है तुम से^(१७)। और अपने बन्दों की नाशुक्रा उसे पसन्द नहीं, और अगर शुक्र करो तो इसे तुम्हारे लिए पसन्द

رَفَعِي ۝ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ۝ لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَنَهُ ۚ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يَكُونُ اللَّيْلُ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ وَسَعَرَ الشُّسَّ وَالْقَمَرَ ۚ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝ خَلَقَكُمْ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَانزَلَ لَكُمْ مِنَ الْأَنْعَامِ ثَمِينَةَ أَنْوَاعٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ۚ ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَاتَّعِزُّوا ۚ إِنَّكُمْ تَكْفُرُونَ ۝ إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفِيٌّ عَنْكُمْ ۖ وَلَا يَرْصُقْ لِعِبَادِهِ الْكَافِرَةِ ۚ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ۚ

مَزَلَا

के फ़रिश्ते किस बहस में हैं। मैंने अर्ज़ किया या रब तू ही दाना है, हुज़ूर ने फ़रमाया फिर रब्बुल इज़्ज़त ने अपना दस्त रहमतों करम में दोनों शांतों के बीच रखा और मैं ने उसके फ़ैज़ का असर अपने दिल में पाया तो आसमान व ज़मीन की सारी चीज़ें मेरे इल्म में आ गईं। फिर अल्लाह तआला ने फ़रमाया या मुहम्मद, क्या तुम जानते कि आलमे बाला के फ़रिश्तों किस चीज़ में बहस कर रहे हैं। मैं ने अर्ज़ किया, हाँ ऐ रब मैं जानता हूँ वह कफ़रों में बहस कर रहे हैं और कफ़रों से हैं नमाज़ों के बाद मस्जिद में ठहरना और पैदल जमाअतों के लिये जाना और जिस वक़्त सदी दौरेह के कारण पानी का इस्तेमाल बग़वार हो उस वक़्त अच्छी तरह बुज़ू करना, जिसने यह किया उसकी ज़िन्दगी भी बेहतर, मौत भी बेहतर, और गुनाहों से ऐसा पाक साफ़ निकलेगा जैसा अपनी विलादत के दिन था, और फ़रमाया, ऐ मुहम्मद ! नमाज़ के बाद यह दुआ किया करो "अल्लाहुम्मा इन्नी असअलोक़ा फ़िअलल ख़ैराते व तर्कल मुन्कराते व हुबल मसाकीने व इज़्ज़ा अरदता बि इबादिका फ़ित-नतन फ़रविदनी इलैका ग़ैरा मुफ़तूनिन"। कुछ रिवायतों में यह है कि हज़रत सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मुझे हर चीज़ रौशन हो गई और मैंने पहचान ली और एक रिवायत में है कि जो कुछ पूरब और पच्छिम में है सब मैं ने जान लिया, इमाम अल्लामा अलाऊद्दीन अली बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम बग़दादी जो ख़ाज़िन के नाम से जाने जाते हैं, अपनी तफ़्सीर में इसके मानी ये बयान फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का सीता मुबारक ख़ोल दिया और क़त्बे शरीफ़ मुनब्वर कर दिया और जो कोई न जाने उस सच की पहचान आप को अता कर दी यहाँ तक कि आपने तंअमत और मअरिफ़त की सदी अपने क़त्बे मुबारक में पाई और जब क़त्बे शरीफ़ मुनब्वर हो गया और सीता पाक खुल गया तो जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीनों में है अल्लाह तआला के दिये से जान लिया।

- (७) यानी आदम को पैदा करूंगा।
- (८) यानी उसकी पैदायश तमाम कर दूँ।
- (९) और उसको ज़िन्दगी अता कर दूँ।
- (१०) सज्दा न किया।
- (११) यानी अल्लाह के इल्म में।
- (१२) यानी उस क़ौम में से जिनका शेवा ही घमण्ड है।
- (१३) इससे उसकी मुसद यह थी कि अगर आदम आप से पैदा किये जाते और मेरे बराबर भी होते जब भी मैं उन्हें सज्दा न करता, तो फिर उनसे बेहतर होकर उन्हें कैसे सिजदा करूँ।
- (१४) अपनी सरकशी और नाफरमानी और घमण्ड के कारण, फिर अल्लाह तआला ने उसकी सूरत बदल दी, वह पहले हसीन था, बदशक्ल काला मुंह कर दिया गया और उसकी तूसानियत सलब कर ली गई।
- (१५) और क़यामत के बाद लानत भी और तरह तरह के अज़ाब भी।

- (१६) आदम अलैहिस्सलाम और उनकी सन्तान अपने फ़ना होने के बाद जज़ा के लिये, और इससे उसकी मुराद यह थी कि वह इन्सानों को गुमराह करने के लिये छूट पाए और उनसे अपना बुग़्ज़ ख़ूब निकाले और मौत से बिल्कुल बच जाए क्योंकि उठने के बाद फिर मौत नहीं।
- (१७) यानी सूर के पहले फूँके जाने तक जिसको ख़ल्क की फ़ना के लिये निर्धारित फ़रमाया गया।
- (१९) यानी इन्सानों में से।
- (२०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मौत के बाद, और एक क़ौल यह है कि क़यामत के दिन।

३९ - सूरए जुमर - पहला सूक़

- (१) सूरए जुमर मक्के में उतरी सिवा आयत "कुल या इबादियल लज़ीना असरफू" और आयत "अल्लाहो नज़ज़ला अहसनल हदीसे" के। इस सूरा में आठ सूक़, पठहत्तर आयतें, एक हज़ार एक सौ बहत्तर कलिमें और चार हज़ार नौ सौ आठ अक्षर हैं।
- (२) किताब से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है।
- (३) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम।
- (४) उसके सिवा कोई इबादत का मुस्तहिक़ नहीं।
- (५) मअबूद ठहरा लिये। मुराद इससे बुत-परस्त हैं।
- (६) यानी बुतों को।
- (७) ईमानदारों को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमा कर।
- (८) झूठा इस बात में कि बुतों को अल्लाह तआला से नज़्दीक करने वाला बताए और ख़ुदा के लिये औलाद ठहराए और नाशुक्रा ऐसा कि बुतों को पूजे।
- (९) यानी अगर बिलफ़र्ज़ अल्लाह तआला के लिये औलाद मुमकिन होती तो वह जिसे चाहता औलाद बनाता न कि यह प्रस्ताव काफ़िरों पर छोड़ता कि वो जिसे चाहें ख़ुदा की औलाद करार दें।
- (१०) औलाद से और हर उस चीज़ से जो उसकी शाने अक़्दस के लायक़ नहीं।
- (११) न उसका कोई शरीक़ न उसकी कोई औलाद।
- (१२) यानी कभी रात की तारीकी से दिन के एक हिस्से को छुपाता है और कभी दिन की रौशनी से रात के हिस्से का। मुराद यह है कि कभी दिन का वक़्त घटा कर रात को बढ़ाता है कभी रात घटा कर दिन को ज़्यादा करता है और रात और दिन में से घटने वाला घटने घटने दस घण्टे का रह जाता है और बढ़ने वाला बढ़ते बढ़ते चौदह घण्टे का हो जाता है।
- (१३) यानी क़यामत तक वह अपने निर्धारित निज़ाम पर चलते रहेंगे।
- (१४) यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से।
- (१५) यानी हज़रत हब्बा को।
- (१६) यानी ऊँट, गाय, बकरी, भेड़ से।
- (१७) यानी पैदा किये जोड़ों से, मुराद नर और मादा हैं।
- (१८) यानी नुत्फ़ा, फिर बँधा हुआ ख़ून, फिर गोश्त का टुकड़ा।
- (१९) एक अंधेरी पेट की, दूसरी गर्म की, तीसरी बच्चे दानी की।
- (२०) और सच्चाई के रास्ते से दूर होते हो कि उसकी इबादत छोड़ कर ग़ैर की इबादत करते हो।
- (२१) यानी तुम्हारी ताअत व इबादत से और तुम ही उसके मोहताज हो, ईमान लाने में तुम्हारा ही नफ़ा है, और काफ़िर हो जाने में तुम्हारा ही नुक़सान है।

फरमाता है^(२२) और कोई वोझ उठाने वाली जान दूसरे का वोझ नहीं उठाएगी^(२३) फिर तुम्हें अपने रब ही की तरफ फिरना है^(२४) तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे^(२५) वेशक वह दिलों की बात जानता है^(२६) और जब आदमी को कोई तकलीफ पहुंचती है^(२७) अपने रब को पुकारता है उसी तरफ झुका हुआ^(२८) फिर जब अल्लाह ने उसे अपने पास से कोई नअमत दी तो भूल जाता है जिस लिये पहले पुकारा था^(२९) और अल्लाह के लिये बराबर वाले ठहराने लगता है^(३०) ताकि उसकी राह से वहका दे, तुम फरमाओ^(३१) थोड़े दिन अपने कुफ्र के साथ बरत ले^(३२) वेशक तू दो जखियों में है^(३३) क्या वह जिसे फरमावरदारी में रात की घड़ियां गुजरीं सूजुद और क्रयाम में^(३४) आखिरत से डरता और अपने रब की रहमत की आस लगाए^(३५) क्या वह नाफरमानों जैसा हो जाएगा तुम फरमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अनजान, नसीहत तो वही मानते हैं जो अकल वाले हैं^(३६)

दूसरा खूकू

तुम फरमाओ ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए अपने रब से डरो जिन्होंने भलाई की^(३७) उनके लिये दुनिया में भलाई है^(३८) और अल्लाह की ज़मीन फैली हुई है^(३९) साबिरों ही को उनका सवाव भरपूर दिया जाएगा वेगिनती^(४०) (१०)

अल्फ़र

५३८

मक़ाली ३३

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۚ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِنْهُ نِسَىٰ مَا كَانَ يُدْعُوا إِلَيْهِ ۚ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْتَادًا لِلضُّلِّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَتَّبِعُوا كَيْفَ تُرِيدُونَ ۚ وَلَقَدْ آتَيْنَا الْبَنِيَّانَ الْإِسْمَ الْأَوَّلَ وَالْآخِرَ ۚ وَيَرْجُونَ رَحْمَةَ رَبِّهِ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْمَلُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْمَلُونَ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ۚ قُلْ يُعْبَادُوا الَّذِينَ أَمَرُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ ۚ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

(२२) कि वह तुम्हारी कामयाबी का कारण है, उसपर तुम्हें सवाव देगा और जन्नत अता फरमायएगा।

(२३) यानी कोई व्यक्ति दूसरे के गुनाह में न पकड़ा जाएगा।

(२४) आखिरत में।

(२५) दुनिया में और उसकी तुम्हें जज़ा देगा।

(२६) यहाँ आदमी से निरा काफ़िर या झ्रास अबू जहल या उतबा बिन रबीआ मुराद है।

(२७) उसी से फ़रियाद करता है।

(२८) यानी उस सख़्ती और तकलीफ़ को भुला देता है जिसके लिये अल्लाह से फ़रियाद की थी।

(२९) यानी हाजत की पूर्ति के बाद फिर वुत परस्ती में पड़ जाता है।

(३०) ऐ मुस्तफ़न सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, उस काफ़िर से।

(३१) और दुनिया की ज़िन्दगी के दिन पूरे कर ले।

(३२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि यह आयत हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हुमा की शान में नाज़िल हुई और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि यह आयत हज़रत उस्माने गानी रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में नाज़िल हुई और एक कौल यह है कि हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत अम्मार और हज़रत सलमान रदियल्लाहो अन्हुम के हक़ में उतरी। इस आयत से साबित हुआ कि रात के नफ़ल और इबादत दिन के नफ़लों से बढ़कर हैं। इसकी वजह तो यह है कि रात का अमल पोशीदा होता है इसलिये वह रिया में बहुत दूर होता है। दूसरे यह कि दुनिया के कारोबार बन्द होते हैं इसलिये दिल दिन की अपेक्षा बहुत फ़ारिग होता है और अल्लाह की तरफ़ तवज्जह और एकाग्रता दिन से ज़्यादा रात में मयस्सर आती है। तीसरे, रात चूंकि राह़त और नींद का समय होता है इसलिये उसमें जागना नफ़स को कठिन परिश्रम में डालता है तो सवाव भी उसका ज़्यादा होगा।

(३३) इस से साबित हुआ कि ईमान वाले के लिये लाज़िम है कि वह डर और उम्मीद के बीच हो। अपने कर्मों की कमी पर नज़र करके अज़ाब से डरता रहे और अल्लाह तआला की रहमत का उम्मीदवार रहे। दुनिया में बिलकुल निडर होना या अल्लाह तआला की रहमत से बिलकुल मायूस होना, ये दोनों कुरआने पाक में काफ़िरों की हालतें बताई गई हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है “फ़ल्ला यअमनो मकरल्लाहे इल्लल कौमुल झ्रासिरुन” यानी तो अल्लाह की छुपी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तवाही वाले (सूरए अअराफ़, आयत ९९), और इश्शाद है “ला यएसो मिन रीहिल्लाहे इल्लल कौमुल काफ़िरुन” यानी वेशक अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद नहीं

तुम फ़रमाओ^(१) मुझे हुक्म है कि अल्लाह को पूजो निरा उसका बन्दा होकर^(११) और मुझे हुक्म है कि मैं सबसे पहले गर्दन रखूँ^(१२) तुम फ़रमाओ फ़र्ज करो अगर मुझसे नाफ़रमानी हो जाए तो मुझे भी अपने रव से एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है^(१३) तुम फ़रमाओ मैं अल्लाह ही को पूजता हूँ निरा उसका बन्दा होकर^(१४) तो तुम उसके सिवा जिसे चाहो पूजो^(१५) तुम फ़रमाओ पूरी हार उन्हें जो अपनी जान और अपने घर वाले क़यामत के दिन हार बैठे^(१६) हां हां यही खुली हार है^(१७) उन के ऊपर आग के पहाड़ हैं और उन के नीचे पहाड़^(१८) इससे अल्लाह डराता है अपने बन्दों को^(१९) ऐ मेरे बन्दो तुम मुझ से डरो^(२०) ^(१६) और वो जो बुतों की पूजा से बचे और अल्लाह की तरफ़ रूजू हुए उन्हीं के लिये खुशख़बरी है तो खुशी सुनाओ मेरे उन बन्दों को^(२१) जो कान लगाकर बात सुनें फिर उसके बेहतर पर चलें^(२२) ये हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत फ़रमाई और ये हैं जिनको अक़ल है^(२३) ^(१८)

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ
الدِّينَ ۖ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ۖ
قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رِبِّيَ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ۖ قُلْ اللَّهُ أَعْبَدُ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ۖ
وَأَعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ ۚ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ
أَلَا ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۖ لَهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ
ظُلُلٌ مِنَ النَّارِ وَ مِنْ تَحْتِهِمْ ظُلُلٌ ۚ ذَلِكَ يُخَوِّفُ
اللَّهُ بِهِ عِبَادَهُ لِيُعْبَادُوا ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَالَّذِينَ
اجْتَنَبُوا الظَّالِمَاتِ أَنْ يَعْْبُدُوا مَا أَكْبَرُوا لِي
اللَّهُ لَهُمُ الْبُشْرَى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۖ الَّذِينَ
يَسْمَعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۖ

مَنْ

होते मगर काफ़िर लोग. (सूरा यूसुफ़, आयत ८७)

सूरा जुमर - दूसरा रूकू

- (१) फ़रमाँबरदारी की और अच्छे कर्म किये.
- (२) यानी सेहत और आफ़ियत.
- (३) इसमें हिज़रत की तरगीब है कि जिस शहर में गुनाहों की ज़ियादती हो और वहाँ के रहने वाले आदमी को अपनी दीनदारी पर क़ायम रहना दुश्वार हो जाए, चाहिये कि उस जगह को छोड़ दे और वहाँ से हिज़रत कर जाए. यह आयत हबशा के मुहज़िरो के हक़ में उतरी और यह भी कहा गया है कि हज़रत जअफ़र बिन अबी तालिब और उनके साथियों के हक़ में उतरी जिन्हों ने मुसीबतों और बलाओं पर सब्र किया और हिज़रत की ओर अपने दीन पर क़ायम रहे, उसको छोड़ना ग़वारा न किया.
- (४) हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि हर नेकी करने वाले की नेकियों का वज़न किया जाएगा, सिवाय सब्र करने वालों के कि उन्हें बेअन्दाज़ा और बेहिसाब दिया जाएगा और यह भी रिवायत है कि मुसीबत और बला वाले लोग हाज़िर किये जाएंगे, न उन के लिये मीज़ान क़ायम की जाए, न उनके लिये दफ़्तर खोलें जाएं. उन पर अन्न और सबाब की बेहिसाब बारिश होगी, यहाँ तक कि दुनिया में आफ़ियत की ज़िन्दगी बसर करने वाले उन्हें देखकर आरजू करेंगे कि काश वो मुसीबत वालों में से होते और उनके जिस्म क़ैनियों से काटे गए होते कि आज यह सब्र का फल पाते.
- (५) ऐ नबीयों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.
- (६) और फ़रमाँबरदार और ख़लूस वालों में मुक़द्दम और साबिक यानी आगे ओर पीछे हों. अल्लाह तआला ने पहले इज़लास का हुक्म दिया जो दिल का अमल है फिर फ़रमाँबरदारी यानी अंगों के कामों का. चूँकि शरीअत के अहक़ाम रसूल से हासिल होते हैं वही उनके पहुंचाने वाले हैं तो वो उनके शुरू करने में सब से मुक़द्दम और अबल हुए. अल्लाह तआला ने अपने रसूल को यह हुक्म देकर तम्बीह की कि दूसरों पर इसकी पाबन्दी निहायत ज़रूरी है और दूसरों की तरगीब के लिये नबी अलैहिस्सलाम को यह हुक्म दिया गया.
- (७) क़ुरैश के काफ़िरों ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि आप अपनी क़ौम के सरदारों और अपने रिश्तेदारों को नहीं देखते जो लात और उज़्ज़ा की पूजा करते हैं उनके रद में यह आयत उतरी.
- (८) हिदायत और तम्बीह के तरीक़े पर फ़रमाया.
- (९) यानी गुमराही इख़्तियार करके हमेशा के लिये जहन्नम के मुस्तहक़ हो जाए और जन्नत की नेअमतों से मेहरूम हो गए जो ईमान

तो क्या वह जिसपर अज़ाब की बात साबित हो चुकी निजात वालों के बराबर हो जाएगा तो क्या तुम हिदायत देकर आग के मुस्तहिक को बचा लोगे^(१५) (१९) लेकिन वह जो अपने रब से डरे^(१६) उनके लिये वालाखाने हैं उनपर वालाखाने बने^(१७) उनके नीचे नेहरें बहे, अल्लाह का वादा, अल्लाह वादा खिलाफ नहीं करता^(२०) क्या तुने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा फिर उससे ज़मीन में चश्मे बनाए फिर उससे खेती निकालता है कई रंगत की^(२१) फिर सूख जाती है तो तू देखे कि वह^(२२) पीली पड़ गई फिर उसे रेज़ा रेज़ा कर देता है। वेशक इसमें ध्यान की बात है अक्लमन्दों को^(२३) (२१)

तीसरा रूकू

तो क्या वह जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिये खोल दिया^(१) तो वह अपने रब की तरफ से नूर पर है^(२) उस जैसा हो जाएगा जो संगदिल है तो खराबी है उनकी जिनके दिल खुदा की याद की तरफ से संख्त हो गए हैं^(३) वो खुली गुमराही में हैं^(४) अल्लाह ने उतारी सबसे अच्छी किताब^(५) कि अब्बल से आखिर तक एक सी है^(६) दोहरे वयान वाली^(७) इससे बाल खड़े होते हैं उनके बदन पर जो अपने रब से डरते हैं फिर उनकी खालें और दिल नर्म पड़ते हैं खुदा की याद की तरफ रागवत में^(८) यह अल्लाह की हिदायत है राह दिखाए इससे जिसे चाहे, और जिसे अल्लाह

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ أَفَأَنْتَ تُنقِذُ
مَنْ فِي النَّارِ ۚ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ
مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
وَعَدَ اللَّهُ لَا يَخْلِفُ اللَّهُ الْمِيعَادَ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ
أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ
يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّغْتَلِقًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهَيِّجُ فَتَرَاهُ مُصْفًّراً
ثُمَّ يَجْعَلُهُ حَبًّا إِنَّا فِي ذَلِكَ لَذِكْرٌ لِّلَّذِينَ
أَلْبَابٌ ۝ أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ
فَهُوَ عَلَى نُورٍ مِّنْ رَبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِّلْفَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ
مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ اللَّهُ
نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعُرُ
مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ
وَقُلُوبُهُمْ ۚ لَّا يَذْكُرُ اللَّهُ ذَلِكَ هُدًى لِّلَّذِينَ يَهْتَدُونَ بِهِ

मन्क

लाने पर उन्हें मिलतीं।

(१०) यानी हर तरफ से आग उन्हें घेरें हुए है।

(११) कि ईमान लाएं और मना की हुई बातों से बचें।

(१२) वह काम न करो जो मेरी नाराज़ी का कारण हो।

(१३) जिसमें उनकी भलाई हो।

(१४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो अन्हु इमान लाए तो आपके पास हज़रत उस्मान और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और तलहा और जुबैर और सअद बिन अबी वक्कास और सईद बिन ज़ैद आए और उनसे पूछा, उन्होंने अपने ईमान की ख़बर दी ये हज़रत भी सुनकर ईमान ले आए। इन के हक में यह आयत उतरी “फ़यश्शिर इवादिल्लज़ीना” खुशी सुनाओ मेरे उन बन्दों को जो कान लगाकर बात सुनें ...

(१५) जो अज़ली बदबश्त और अल्लाह के इल्म में जहन्नमी है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मुराद इससे अबू लहब और उसके लड़के हैं।

(१६) और उन्होंने अल्लाह तआला की फ़रमाँबरदारी की।

(१७) यानी जन्नत की ऊंची मंज़िलें जिनके ऊपर और बलन्द मंज़िलें हैं।

(१८) पीली हरी सुर्ख सफ़ेद, क्रिम क्रिम की, गेहूँ जौ और तरह तरह के ग़ल्ले।

(१९) हरी भरी होने के बाद।

(२०) जो उससे अल्लाह तआला की वहदातियत और कुदरत पर दलीलें कायम करते हैं।

सूरए जुमर - तीसरा रूकू

(१) और उसको हक़ कुबूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

(२) यानी यकीन और हिदायत पर। रसूलें करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब यह आयत तिलावत फ़रमाई तो सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, सीने का खुलना किस तरह होता है फ़रमाया कि जब नूर दिल में दाख़िल होता है तो वह खुलता है और उसमें फैलावा होता है। सहाबा ने अर्ज़ किया इसकी निशानी क्या है। फ़रमाया, जन्नतों की दुनिया की तरफ़ मृतक़ज़्रह होना और

गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं (२३) तो क्या वह जो क़यामत के दिन बुरे अज़ाब की दाल न पाएगा अपने चेहरे के सिवा (८) निजात वालों की तरह हो जाएगा (९) और ज़ालिमों से फ़रमाया जाएगा अपना कमाया चखो (१०) (२४) उनसे अगलों ने झुटलाया (११) तो उन्हें अज़ाब आया जहाँ से उन्हें खबर न थी (१२) (२५) और अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में रूसवाई का मज़ा चखाया (१३) और वेशक आखिरत का अज़ाब सबसे बड़ा, क्या अच्छा था अगर वो जानते (१४) (२६) और वेशक हमने लोगों के लिये इस कुरआन में हर किस्म की कहावत वयान फ़रमाई कि किसी तरह उन्हें ध्यान हो (१५) (२७) अरबी ज़बान का कुरआन (१६) जिसमें असलन कज़ी नहीं (१७) कि कहीं वो डरे (१८) (२८) अल्लाह एक मिसाल बयान फ़रमाता है (१९) एक गुलाम में कई वदखू आका शरीक और एक निरे एक मौला का, क्या उन दोनों का हाल एक सा है (२०) सब ख़ुदियाँ अल्लाह को (२१) वल्कि उनके अक्सर नहीं जानते (२२) (२९) वेशक तुम्हें इन्तिकाल फ़रमाना है और उनको भी मरना है (२३) (३०) फिर तुम क़यामत के दिन अपने खब के पास झगड़ोगे (२४) (३१)

مَنْ يَشَاءْ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۖ
أَفَمَنْ يَتَّبِعِ بَوَجهَهُ سَوَاءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۖ كَذَبَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَنْهَمُ الْعَذَابِ مِنْ حَيْثُ لَا
يَنْتَعِرُونَ ۖ فَأَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَلِلْعَذَابِ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۖ وَلَقَدْ
صَرَّيْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۖ قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي
عِوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۖ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلًا
فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ
هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا الْحَسِدُ لِلْهِ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ۖ إِنَّكَ مَدَيْتَ وَأَنْتُمْ مَبْتُونُونَ ۖ ثُمَّ
إِنَّا نَكْفِيكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَحْتِمْوُونَ ۖ

मन्क

दुनिया से दूर रहना और मौत के लिये उसके आन से पहले तैयार होना।

(३) नफ़स जब ख़बीस होता है तो सच्चाई कुबूल करने से उस का बहुत दूरी हो जाती है और अल्लाह का ज़िक्र सुनने से उसकी सज़्ज़ी और दिल की कदता बढ़ती है जैसे कि सूरज की गर्मी से मोम नर्म हो जाता है और नमक मसज़त होता है ऐसे ही अल्लाह के ज़िक्र से ईमान वालों के दिल नर्म होते हैं और काफ़िरों के दिलों की सज़्ज़ी और बढ़ती है। इस आयत से उन लोगों को इब्रत पकड़नी चाहिये जिन्होंने अल्लाह के ज़िक्र को रोकना अपना तरुका बना लिया है। वो सूफ़ियों के ज़िक्र को भी मना करते हैं, नमाज़ों के बाद अल्लाह का ज़िक्र करने वालों का भी रोकते हैं और मना करते हैं। ईसाले सबाब के लिये कुरआन शरीफ़ और कलिमा पढ़ने वालों को भी विदअती बताते हैं और उन ज़िक्र की मेहफ़िना से बहुत घबराते हैं। अल्लाह तआला हिदायत दे।

(४) कुरआन शरीफ़, जो इबारात में ऐसा फ़सीह बलीग़ कि कोई कलाम उससे कुछ निखत ही नहीं रख सकता। मज़मून बहुत मन भावन जब कि न कविता है न शअर। निराले ही अब्दाज़ पर आधारित है और मानी में ऐसा ऊंचे दर्जे का कि तमाम उलूम का जमा करने वाला और अल्लाह की पहचान जैसी महान नेअमत की तरफ़ लं जाने वाला।

(५) हुसुनो ख़ूबी में।

(६) कि उसमें ख़शख़बरी के साथ चेतावनी, और हुक़म के साथ मनाही, और सूचनाओं के साथ आदेश मौजूद हैं।

(७) हज़रत क़तादह रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि ये अल्लाह के बलियों की विशेषता है कि अल्लाह के ज़िक्र से उनके बाल खड़े होते हैं, शरीर काँपते हैं और दिल चैन पाते हैं।

(८) वह काफ़िर है जिसके हाथ गर्दन के साथ मिलाकर बाँध दिये जाएंगे और उसकी गर्दन में गन्धक का एक जलता हुआ पहाड़ पड़ा होगा जो उसके चेहरे को भून डालता होगा। इस हाल से औथा करके जहन्नम की आग में गिराया जाएगा।

(९) यानी उस मूмин की तरह जो अज़ाब से अम्न और हिफ़ाज़त में हो।

(१०) यानी दुनिया में जो कुफ़र और मरक़्शी इज़्तिहार की थी अब उसका बवाल और अज़ाब वर्दाश्त करा।

(११) यानी मक्के के काफ़िरों से पहले काफ़िरों ने रसूलों को झुटलाया।

(१२) अज़ाब आने का ख़तरा भी न था, मफ़लत में पड़े हुए थे।

(१३) किसी क़ौम की सूरतें बिगाड़ीं, किसी को ज़मीन में धंसाया।

(१४) और ईमान लेआते, झुटलाते नहीं।

(१५) और वो नसीहत कुबूल करें।

(१६) ऐसा फ़सीह जिम्ने फ़सीह और बलीग़ लोगों का लाचार कर दिया।

(१७) यानी दोष और इज़्तिलाफ़ से पाक।

- (१८) और कुफ़र और झुटलाने से बाज़ आए।
- (१९) मुथ्रिक और एक खुदा को मानने वाले की।
- (२०) यानी एक जमाअत का गुलाम काफ़ी परेशान होता है कि हर एक आक्व उसे अपनी तरफ़ खींचता है और अपने अपने काम बताता है वह हैरान है कि किस का हुक्म माने और किस तरह आक्वों को राज़ी करे और खुद उस गुलाम को जब कोई हाज़त पेश हो तो किस आक्व से कहे उस गुलाम के विपरीत जिसका एक ही स्वामी हो, वह उसकी छिद्रमत करके उसे राज़ी कर सकता है और जब कोई हाज़त पेश आए तो उसी से अज़्र कर सकता है उसको कोई परेशानी पेश नहीं आती। यह हाल मूमिन का है जो एक मालिक का बन्दा है उसी की इबादत करता है और मुथ्रिक जमाअत के गुलाम की तरह है कि उसने बहुत से मअबूद करार दे दिये हैं।
- (२१) जो अकेला है उसके सिवा कोई मअबूद नहीं।
- (२२) कि उसके सिवा कोई इबादत का मुस्तहिक नहीं।
- (२३) इसमें काफ़िरों का रूढ़ है जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ात का इन्तिज़ार किया करते थे उन्हें फ़रमाया गया कि खुद मरने वाले होकर दूसरे की मौत का इन्तिज़ार करना मूर्खता है। काफ़िर तो ज़िन्दगी में भी मरे हुए हैं और नवियों की मौत एक आन के लिये होती है फिर उन्हें ज़िन्दगी अता फ़रमाई जाती है इसपर बहुत सी शरई दलीलें कायम हैं।
- (२४) नबी उम्मत पर तर्क कायम करेंगे कि उन्होंने रिसालत की तबलीग़ की और दीन की दावत देने में अनथक कोशिश की और काफ़िर बेकार के वहाने पेश करेंगे। यह भी कहा गया है कि यह आम तरह का झगड़ना है कि लोग सांसारिक अधिकारों के लिये झगड़ेंगे और हर एक अपना हक़ तलब करेगा।

पारा तेईस समाप्त

Nafilehulalim

चौबीसवां पारा - फ़रमन अज़लमो (सूरए जुमर जारी)

चौथा सूक़

तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे^(१) और हक़ (सत्य) को झुटलाए^(२) जब उसके पास आए, क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं^(३) और वो जो यह सच लेकर तशरीफ़ लाए^(४) और वो जिन्होंने उनकी तस्दीक़ (पुष्टि) की^(५) यही डर वाले हैं^(६) उनके लिये है जो वो चाहें अपने रब के पास, नेकों का यही सिला है^(७) ताकि अल्लाह उनसे उतार दे बुरे से बुरा काम जो उन्होंने किया और उन्हें उनके सबाब का सिला दे अच्छे से अच्छे काम पर^(८) जो वो करते थे^(९) क्या अल्लाह अपने बन्दों को काफ़ी नहीं^(१०), और तुम्हें डराते हैं उसके सिवा औरों से^(११) और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसकी कोई हिदायत करने वाला नहीं^(१२) और जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई बहकाने वाला नहीं, क्या अल्लाह इज़्ज़त वाला बदला लेने वाला नहीं?^(१३) और अगर तुम उनसे पूछो आसमान और ज़मीन किसने बनाए? तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने^(१४), तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो^(१५) अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे^(१६) तो क्या वो उसकी भेजी तकलीफ़ टाल देंगे या वह मुझ पर मेहर (रहम) फ़रमाना चाहे तो क्या वो उसकी मेहर को रोक रखेंगे^(१७) तुम फ़रमाओ अल्लाह मुझे बस है^(१८), भरोसे वाले उसपर भरोसा करें^(१९) तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम अपनी जगह

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۝ وَالَّذِينَ جَاءُوا بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاُ الْمُحْسِنِينَ ۝ لِيَكْفُرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۚ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۚ وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ ۚ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝ وَلَٰئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّيهِ أَوْ أَرَادَنِيَ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ قُلْ يَقُومُ	الزُّمَر	٧٣٧	سُورَةُ الزُّمَرِ
--	----------	-----	-------------------

सूरए जुमर - चौथा सूक़

- (१) और उसके लिये शरीक और औलाद क़यार दे।
- (२) यानी कुरआन शरीफ़ को या रसूलें करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत को।
- (३) यानी रसूलें करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम, जो तौहीदी इलाही लाए।
- (४) यानी हज़रत अबू बक्र रदियल्लाहो अन्हो या सारे भूमिन लोग।
- (५) यानी उन की बुराईयों पर पकड़ न करें और नेकियों की बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाए।
- (६) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये, और एक क़िरअत में “इबादह” भी आया है। उस सूरा में नबी अलैहमुस्सलाम मुराद हैं, जिन के साथ उनकी क़ौम ने ईज़ा रसानी के इरादे किये। अल्लाह तआला ने उन्हें दुश्मनों की शरारत से मेहफूज़ रखा और उनकी मदद फ़रमाई।
- (७) यानी बुतों से। वाक़िआ यह था कि अरब के काफ़िरों ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को डराना चाड़ा और आपसे कहा कि आप हमारे मअबूदों यानी बुतों की बुराईयों बयान करने से बाज़ आइये वरना वो आप को नुक़सान पहुंचाएंगे। बलाक कर देंगे, या अक्ल को ख़राब कर देंगे।
- (८) वेशक़ वह अपने दुश्मनों से बदला लेता है।
- (९) यानी ये मुश्रिक लोग हिक़मत, कुदरत और इल्म वाले ख़ुदा की हस्ती को तो मानते हैं और यह बात तमाम ख़ल्क के नज़्दीक मुसल्लम है और ख़ल्क की फ़ितरत इसकी गवाह है और जो ब्याक़ि आसमान और ज़मीन के चमत्कारों में नज़र करे उसको यकीनी तौर पर मालूम हो जाता है कि ये मौजूदात एक क़ादिर हकीम की बनाई हुई हैं। अल्लाह तआला अपने नबी अलैहिसलाम को हुक्म देता है कि आप इन मुश्रिकों पर हुज्जत क़ायम कीजिये चुनान्दे फ़रमाता है।

काम किये जाओ^(१०) में अपना काम करता हूँ^(११) तो आगे जान जाओगे^(१२) किस पर आता है वह अज़ाब कि उसे रुखा करेगा^(१३) और किस पर उतरता है अज़ाब कि रह पड़ेगा^(१४) ^(४०) बेशक हमने तुम पर यह किताब लोगों की हिदायत को, हक के साथ उतारी^(१५) तो जिसने राह पाई तो अपने भले को^(१६), और जो वहका वह अपने ही बुरे को वहका^(१७) और तुम कुछ उनके ज़िम्मेदार नहीं ^(४१)

पाँचवां सूक़

अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उनकी मौत के वक़्त और जो न मरे उन्हें उनके सोते में, फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमा दिया उसे रोक रखता है^(१) और दूसरी^(२) एक निश्चित मीआद तक छोड़ देता है^(३) बेशक इसमें ज़रूर निशानियाँ हैं सोचने वालों के लिये^(४) ^(४२) क्या उन्होंने ने अल्लाह के मुक़ाविल कुछ सिफ़ारिशों बना रखे हैं^(५) तुम फ़रमाओ क्या अगरचे वो किसी चीज़ के मालिक न हों^(६) और न अक्ल रखें^(७) ^(४३) तुम फ़रमाओ शफ़ाअत तो सब अल्लाह के हाथ में है^(८) उसी के लिये है आसमानों और ज़मीन की वादशाही, फिर तुम्हें उसी की तरफ़ पलटना है^(९) ^(४४) और जब एक अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है दिल सिमट जाते हैं उनके जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते^(१०), और जब उसके सिवा औरों का ज़िक्र होता है^(११) जभी वो खुशियाँ मनाते हैं^(१२) ^(४५) तुम अर्ज़ करो ऐ अल्लाह आसमानों ओर ज़मीन के पैदा करने वाले, निहो (छुपे हुए) और अयाँ (जाहिर) के

اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ فَتَوَفَّ تَعْلَمُونَ مَنْ
يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ إِنَّا
أَنْزَلْنَاهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ ۖ فَمِنْ اهْتَدَىٰ
فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّا يَحْمِلُ عَلَيْهِ ۖ وَمَا أَنْتَ
عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝ اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا
وَالَّتِي كُفِّرَتْ فِي مَنَاقِبِهَا ۖ فِيمَسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا
الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ أَمَّا تَخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ
شَفَعَاءَ ۖ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ۝
قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۖ إِنَّهُ مَلِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْتَبَهَتْ
قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ
مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ قُلْ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ

مَعْلُوم

- (१०) यानी बुतों की, यह भी तो देखो कि वो कुछ भी कुदरत रखते हैं और किसी काम भी आ सकते हैं।
- (११) किसी तरह की बीमारी की या दुष्काल की या नादारी की या और कोई।
- (१२) जब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुश्किं से यह सवाल फ़रमाया तो वो लाजवाब हुए और साक्षित रह गए अब हुज़्जत तमाम हो गई और उनकी इस ख़मोशी वाली सहमति से साबित हो गया कि बुत मात्र बेकुदरत हैं, न कोई नफ़ा पहुंचा सकते हैं, न कुछ हानि, उनको पूजना निरी जिहालत है, इसलिये अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इशाराद फ़रमाया।
- (१३) मेरा उम्मी पर भरोसा है और जिसका अल्लाह तआला हो वह किसी से भी नहीं डरता, तुम जो मुझे बुत जैसी बेकुदरत व बेइज्जियार चीज़ों से डरते हो, यह तुम्हारी बहुत ही मूर्खता और जिहालत है।
- (१४) और जो जो छलकपट और बहाने तुम से हो सकें, मेरी दुश्मनी में, सब ही कर गुज़रो।
- (१५) जिसपर मामूर हूँ, यानी दीन का क़ायम करना और अल्लाह तआला मेरा मददगार हैं और उसी पर मेरा भरोसा है।
- (१६) चुनाने वद के दिन वो रुखाई के अज़ाब में जकड़े गए।
- (१७) यानी हमेशा होगा और वह जहन्नम का अज़ाब है।
- (१८) ताकि उससे हिदायत हासिल करें।
- (१९) कि इस राह पाने का नफ़ा वही पाएगा।
- (२०) उसकी गुमराही का ज़रूर और वबाल उसी पर पड़ेगा।
- (२१) तुम से उनके गुनाहों की पकड़ न की जाएगी।

सूरए जुमर - पाँचवां सूक़

- (१) यानी उस जान को उसके जिस्म की तरफ़ वापस नहीं करता।
- (२) जिसकी मौत मुक़द्दर नहीं फ़रमाई, उसको ---
- (३) यानी उसकी मौत के वक़्त तक।

जानने वाले, तू अपने बन्दों में फैसला फरमाएगा जिसमें वो इख्तिलाफ रखते थे^(११) (४६) और अगर जालिमों के लिये होता जो कुछ जमीन में है सब और उसके साथ उस जैसा^(१२) तो ये सब छुड़ाई (छुड़ाने) में देते क्रयामत के रोज के बड़े अज़ाब से^(१३) और उन्हें अल्लाह की तरफ से वह बात ज़ाहिर हुई जो उनके खयाल में न थी^(१४) (४७) और उनपर अपनी कमाई हुई बुराईयां खुल गई^(१५) और उनपर आ पड़ा वह जिसकी हंसी बनाते थे^(१६) (४८) फिर जब आदमी को कोई तंकलीफ पहुंचती है तो हमें बुलाता है फिर जब उसे हम अपने पास से कोई नेअमत अता फरमाएं, कहता है यह तो मुझे एक इल्म की वदौलत मिली है^(१७), बल्कि वह तो आजमाइश है^(१८) मगर उनमें वहुतों को इल्म नहीं^(१९) (४९) उनसे अगले भी ऐसे ही कह चुके^(२०) तो उनका कमाया उनके कुछ काम न आया^(२१) तो उनपर पड़ गई उनकी कमाइयों की बुराईयां^(२२) और वो जो उनमें ज़ालिम हैं, बहुत जल्द उनपर पड़ेंगी उनकी कमाइयों की बुराईयां और वो काबू से नहीं निकल सकते^(२३) (५१) क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह रोज़ी कुशाद करता है जिसके लिये चाहे और तंग फरमाता है, वेशक इसमें ज़रूर निशानियां है ईमान वालों के लिये^(५२)

وَالْأَرْضِ عِلْمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۖ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَا تَبْدَأُوا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ وَبَدَأَ اللَّهُ مَا لَهُمْ لِيَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ۖ وَبَدَأَ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۖ فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ صُرْدُوعَانَا ۖ ثُمَّ إِذَا حَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۖ قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَكِنَ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۖ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۖ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۖ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَمَا لَهُمْ مُجْزِئِينَ ۖ أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

मदल

- (४) जो साँचें और समझें कि जो इसपर क़ादिर है वह ज़रूर मुद्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है।
- (५) यानी बुत, जिनके बारे में वो कहते थे कि ये अल्लाह के पास हमारे शफ़ीअ या सिफ़ारिशि हैं।
- (६) न शफ़ाअत के न और किसी चीज़ के।
- (७) जो इसका माज़ून हो वही शफ़ाअत कर सकता है और अल्लाह तआला अपने बन्दों में से जिसे चाहे शफ़ाअत का इज़ज देता है। बुतों को उसने शफ़ीअ (सिफ़ारिशि) नहीं बनाया और इबादत तो ख़ुदा के सिवा किसी की भी जायज़ नहीं, शफ़ीअ हो या न हो।
- (८) आख़िरत में।
- (९) और वो बहुत तंग दिल और परेशान होते हैं और नागवारी का असर उनके चेहरों पर ज़ाहिर हो जाता है।
- (१०) यानी बुतों का।
- (११) यानी दीन के काम में, इन्हे मुसैयब से नक़ल है कि यह आयत पढ़कर जो दुआ मांगी जाए, कुबूल होती है।
- (१२) यानी अगर फ़र्ज़ किया जाए कि काफ़िर सारी दुनिया के माल और ज़मीनों के मालिक होते और इतना ही और भी उनके क़ब्ज़े में होता।
- (१३) कि किसी तरह ये माल देकर उन्हें इस भारी अज़ाब से छुटकारा मिल जाए।
- (१४) यानी ऐसे ऐसे सज़ा अज़ाब जिनका उन्हें खयाल भी न था, इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि वो गुनाह करते होंगे कि उनके पास नेकियां हैं और जब कर्मों का लेखा खुलेगा तो बुराईयां और गुनाह ज़ाहिर होंगे।
- (१५) जो उन्होंने दुनिया में की थीं, अल्लाह तआला के साथ शरीक करना और उसके दोस्ती पर जुल्म करना वगैरह।
- (१६) यानी नबीये करीम अलैहिस्सलाम तो बसलाम के ख़बर देने पर वो जिस अज़ाब की हंसी बनाया करते थे, वह उतर गया और उसमें घिर गए।
- (१७) यानी मैं मआश यानी रोज़ी का जो इल्म रखता हूँ उसके ज़रिये से मैं ने यह दौलत कमाई जैसा कि क़ारून ने कहा था।
- (१८) यानी यह नेअमत अल्लाह तआला की तरफ़ से परीक्षा और आजमाइश है कि बन्दा उसपर शुक्र करता है या नाशुक्री।
- (१९) कि यह नेअमत और अता इस्तिदराज और इम्तिहान है।
- (२०) यानी यह बात क़ारून ने भी कही थी कि यह दौलत मुझे अपने इल्म की वदौलत मिली और उसकी क़ौम उसकी इस बक़वास पर राज़ी रही थी तो वह भी मानने वालों में गिनी गई।
- (२१) यानी जो कुकर्म उन्होंने ने किये थे, उनकी सज़ाएं।
- (२२) चुनान्ने वो सात वर्ष दुष्काल की मुसीबत में गिरफ़्तार रखे गए।

छटा, रुकूँ

तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वो बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की^(१) अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो, वेशक अल्लाह सब गुनाह बांश्खा देता है^(२), वेशक वही बांश्खने वाला मेहरवान है^(३) और अपने रब की तरफ़ रूजू लाओ^(४) और उसके हुज़ूर गर्दन रखो^(५) इसके पहले कि तुम पर अज़ाब आए फिर तुम्हारी मदद न हो^(६) और उसकी पैरवी करो जो अच्छी से अच्छी तुम्हारे रब से तुम्हारी तरफ़ उतारी गई^(७) इसके पहले कि अज़ाब तुम पर अचानक आ जाए और तुम्हें ख़बर न हो^(८) ^(५५) कि कहीं कोई जान यह न कहे कि हाय अफ़सोस उन तक़सीरों (ग़लतियों) पर जो मैंने अल्लाह के बारे में कीं^(९) और वेशक मैं हंसी बनाया करता था^(१०) ^(५६) या कहे अगर अल्लाह मुझे राह दिखाता तो मैं डर वालों में होता^(११) ^(५७) या कहे जब अज़ाब देखे किसी तरह मुझे वापसी मिले^(१२) कि मैं नेकियां करूँ^(१३) ^(५८) हाँ क्यों नहीं, वेशक तेरे पास मेरी आयतें आईं तो तूने उन्हें झूटलाया और घमण्ड किया और तू काफ़िर था^(१४) ^(५९) और क़यामत के दिन तुम देखोगे उन्हें जिन्होंने अल्लाह पर झूट बांधा^(१५) कि उनके मुंह काले हैं क्या घमण्डी का ठिकाना जहन्नम में नहीं^(१६) ^(६०) और अल्लाह बचाएगा परहेज़गारों को उनकी निजात की जगह^(१७)

قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْعَفْوُ الرَّحِيمُ ۝ وَيَذَرُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلُمُوا لَهُ ۚ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُبَاتِيَكُمْ الْعَذَابَ ثُمَّ لَا تُنصُرُونَ ۝ وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ ۖ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُبَاتِيَكُمْ الْعَذَابَ بِغَتَّةٍ ۚ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝ أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ يُحْشَرْتُ عَلَىٰ مَا فَرَطْتُ فِي حُبِّ اللَّهِ وَلَنْ كُنْتُ لِمِنَ الشَّاخِرِينَ ۝ أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۝ أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَىٰ الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَزَّةٌ فَأَكُونُ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝ بَلَىٰ قَدْ جَاءَ ثَلَثُ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُمْ مُّسْوَدَةٌ ۚ لَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ۝ وَيُنَبِّئُ اللَّهُ الَّذِينَ

منزله

सूरए जुमर - छटा लक्कू

- (१) गुनाहों और गुमराहियों में गिरफ्तार होकर.
- (२) उसके, जो कुछ सं बाज़ आए. मक्के के मुश्रिकों में से कुछ आदमी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने हुज़ूर से अर्ज़ की कि आप का दीन तो बेशक सच्चा है लेकिन हमने बड़े गुनाह किये हैं. बहुत सी गुमराहियों में गिरफ्तार रहे हैं, क्या किसी तरह हमारे वो गुनाह माफ़ हो सकते हैं. इसपर यह आयत उतरी.
- (३) तौबह करके.
- (४) और सच्चे दिल के साथ फ़रमाँबरदारी करो.
- (५) वह अल्लाह की किताब क़ुरआन मजीद है.
- (६) तुम भूल में पड़े रहो इसलिये चाहिये कि पहले से होशियार रहो.
- (७) कि उसकी इताअत बजा न लाया और उसके हक़ को न पहचाना और उसकी रज़ा हासिल करने की फ़िक्र न की.
- (८) अल्लाह तआला के दीन की और उसकी किताब की.
- (९) और दोबारा दुनिया में जाने का मौक़ा दिया जाए.
- (१०) इन बातों बहानों का जवाब अल्लाह तआला की तरफ़ से वह है जो अगली आयत में इशारा होता है.
- (११) यानी तेरे पास क़ुरआन पाक पहुंचा और सच झूट की राहें साफ़ स्पष्ट कर दीं गईं और तुझे हक़ और हिदायत इस्तिफ़ार करने की कुदरत दी गई इसके बावजूद तूने हक़ को छोड़ा और उसको कुबूल करने से मुंह मोड़ा, गुमराही अपनाई, जो हुक्म दिया गया उसकी ज़िद और विरोध किया, तो अब तेरा यह कहना ग़लत है कि अगर अल्लाह तआला मुझे राह दिखाता तो मैं डर वालों में होता. और तेरे तमाम बहाने झूटे हैं.
- (१२) और अल्लाह की शांन में ऐसी बात कही जो उसके लायक़ नहीं है. उसके लिये शरीक़ बनाए, औलाद बताई, उसकी विशेषताओं का इन्कार किया. उसका नतीज़ा यह है.
- (१३) जो घमण्ड के कारण ईमान न लाए.
- (१४) उन्हें जन्नत अता फ़रमाएगा.

न उन्हें अज़ाब छुए और न उन्हें ग़म हो॥६१॥ अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह हर चीज़ का मुख्तार है॥६२॥ उसी के लिये हैं आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ, ^(१५) और जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया वही नुक़सान में हैं॥६३॥

सातवाँ सूक्त

तुम फ़रमाओ^(१) तो क्या अल्लाह के सिवा दूसरे के पूजने को मुझ से कहते हो ऐ जाहिलो^(२) ॥६४॥ और वेशक वही की गई तुम्हारी तरफ़ और तुम से अंगलों की तरफ़, कि ऐ सुनने वाले अगर तूने अल्लाह का शरीक किया तो ज़रूर तेरा सब किया धरा अकारत जाएगा और ज़रूर तू हार में रहेगा ॥६५॥ बल्कि अल्लाह ही की वन्दगी कर और शुक्र वालों से हो^(३) ॥६६॥ और उन्होंने अल्लाह की क़द्र न की जैसा कि उसका हक़ था^(४), और वह क़यामत के दिन सब ज़मीनों को समेट देगा और उसकी क़ुदरत से सब आसमान लपेट दिये जाएंगे^(५), और अल्लाह उनके शिर्क से पाक और वरतर है ॥६७॥ और सूर फूँका जाएगा तो वेहोश हो जाएंगे^(६) जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में मगर जिसे अल्लाह चाहे^(७) फिर वह दोबारा फूँका जाएगा^(८) जबी वो देखते हुए खड़े हो जाएंगे^(९) ॥६८॥ और ज़मीन जगमगा उठेगी^(१०) अपने रब के नूर से^(११) और रखी जाएगी किताब^(१२) और लाए जाएंगे अंबिया, और ये नबी और उसकी उम्मत के उनपर गवाह होंगे^(१३) और लोगों में

٢٢٨
٢٢٥
٢٢٩

اَتَقْوَا عِقَابَ رَبِّهِمْ لَا يَسْتَسْمُونَ السُّوءَ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ اَللّٰهُ
خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝ لَهُ مَقَالِيدُ
السَّمَوَاتِ وَالْاَرْضِ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللّٰهِ اُولَٰئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝ قُلْ اَفَعَيِّرُ اللّٰهَ تَاْمُرُوْنِيْ اَعْبُدْ اَيُّهَا
الْجَاهِلُونَ ۝ وَلَقَدْ اَوْحٰى اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ
لَئِنْ اَشْرَكَتَ لَيَحْطَبُنَّ عَمَلَكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝
بَلِ اللّٰهُ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ
حَتّٰى قَدَرُوْهُ ۝ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَ
السَّمٰوٰتُ مَطْوِيٰتٌ يَّمِيْنًا ۝ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ
وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَوِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي
الْاَرْضِ اِلَآ مَنْ شَاءَ اللّٰهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اٰخَرًا ۝ وَاِذَا هُمْ
قِيٰمًا يَنْظُرُوْنَ ۝ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ
الْكِتٰبُ وَجِئَتْ بِالنَّبِيِّيْنَ وَالشَّهَادَةِ وَفُضِيَ بَيْنَهُمْ

منزل

(१५) यादी रहमत, बारिश और रिज़क के ख़ज़ानों की कुंजियाँ उसी के पास हैं। वही उनका मालिक है। यह भी कहा गया है कि हज़रत उस्मान ने गनी रदियल्लाहो अन्हो ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इस आयत की तफ़सील पूछी तो फ़रमाया कि आसमान और ज़मीन की कुंजियाँ ये हैं “ ला इलाहा इल्लल्लाहो बल्लाहो अकबर व सुब्हानल्लाहे व बिहम्दिही व अस्तग़्फ़िल्लाहो बला हौला बला कुस्मता इल्ला बिल्लाहि बहुवल अब्वलो वल-आख़िरो वज़्ज़ाहिरो वल-बातिनो वियदिहिल ख़ैरो युहयी व युमीनो बहुवा अल्ला कुल्ले शैइन क़दीर ” (सूरए हदीद आयत २) मुराद यह है कि इन कलिमात में अल्लाह तआला की तौहीद और तारीफ़ है यह आसमान और ज़मीन की भलाइयों की कुंजियाँ हैं, जिस मूमिन ने ये कलिमे पढ़े, दोनों ज़हान की बेहतरी पाएगा।

सूरए जुमर - सातवाँ रुकू

- (१) ऐ मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, इन कुशै के काफ़िरों से, जो आपको अपने दीन यानी बुत परानी की तरफ बुलाते हैं।
- (२) जाहिल इस वास्ते फ़रमाया कि उन्हें इनका भी नहीं मालूम कि अल्लाह तआला के सिवा और कोई इबादत का मुस्तहिक नहीं जब कि इसपर कतई दलीलें कायम हैं।
- (३) जो नेअमते अल्लाह तआला ने तुझको अता फ़रमाई उसकी ताअत बजा लाकर उनकी शुक्रगुजारी कर।
- (४) ज़मी तो शिर्क में गिरफ़्तार हुए अगर अल्लाह की महानता से परिचित होते और उसकी हकीकत पहचानते तो ऐसा क्यों करते. इसके बाद अल्लाह तआला की महानता और वैभव का बयान है।
- (५) बुग़्तारी और मुस्लिम की हदीस में हज़रत अब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला आसमानों को लपेट कर अपने दस्ते कुदरत में लेगा फिर फ़रमाएगा मैं हूँ बादशाह, कहाँ हैं जब्बार, कहाँ हैं घमण्ड वाले, मुल्क और हुक्मत के दावेदार. फिर ज़मीनों को लपेट कर अपने दूसरे दस्ते कुदरत में लेगा और यही फ़रमाएगा. फिर फ़रमाएगा मैं हूँ बादशाह, कहाँ हैं ज़मीन के बादशाह.
- (६) यह पहले सूर फूँके जाने का बयान है. इसका यह असर होगा कि फ़रिश्ते और ज़मीन वालों में से उस वक़्त जो लोग ज़िन्दा होंगे जिन पर मौत न आई होगी वो उससे मर जाएंगे और जिन पर मौत आ चुकी, फिर अल्लाह तआला ने उन्हें ज़िन्दागी दी, वो अपनी

सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा और उनपर जुल्म न होगा (६९) और हर जान को उसका किया भरपूर दिया जाएगा और उसे ख़ूब मालूम है जो वो करते थे (७०) (७०)

आठवाँ सूक़

और काफ़िर जहन्नम की तरफ़ हाँके जाएंगे (१) ग़िरोह ग़िरोह (२), यहाँ तक कि जब वहाँ पहुँचेंगे उसके दरवाज़े खोले जाएंगे (३) और उसके दारोगा उनसे कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से वो रसूल न आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें इस दिन के मिलने से डराते थे, कहेंगे क्यों नहीं (४) मगर अज़ाब का क़ौल काफ़िरो पर ठीक उतरा (५) (७१) फ़रमाया जाएगा जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में उसमें हमेशा रहने, तो क्या ही बुरा ठिकाना घमण्डियों का (७२) और जो अपने रब से डरते थे उनकी सवारियाँ (६) ग़िरोह ग़िरोह जन्नत की तरफ़ चलाई जाएंगी यहाँ तक कि जब वहाँ पहुँचेंगे और उसके दरवाज़े खुले हुए होंगे (७) और उसके दारोगा उनसे कहेंगे सलाम तुम पर तुम ख़ूब रहे तो जन्नत में जाओ हमेशा रहने (७३) और वो कहेंगे सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने अपना वादा हमसे सच्चा किया और हमें इस ज़मीन का वारिस किया कि हम जन्नत में रहें जहाँ चाहें, तो क्या ही अच्छा सवाब कामियों (अच्छे काम करने वालों) का (७४) और तुम फ़रिश्तों को देखोगे अर्श के आस पास हलक़ा किये (धेरा डाले) अपने रब की तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बोलते और लोगों में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया

بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَوَقَّيْتُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ وَسَيِّقُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ
جَهَنَّمَ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ
لَهُمْ حَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ
آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا قَالُوا
بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝
قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَبِئْسَ
مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ وَسَيِّقُ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَىٰ
الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ
لَهُمْ حَزَنَتُهَا سَلِّمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ۝
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا
الْأَرْضَ نَتَّبِعُوهُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ فَنِعْمَ أَجْرُ
الْعَامِلِينَ ۝ وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ

مَنْزِلِ

क़ब्रों में ज़िन्दा हैं, जैसे कि नबी और शहीद, उनपर इस सूर के फूँके जाने से बेहोशी की सी हालत छाएगी और जो लोग क़ब्रों में मरे पड़े हैं, उन्हें इस सूर के फूँके जाने का शज़र भी न होगा. (जुमल बौरह)

(७) इस इस्तसना (छूट) में कौन कौन दाख़िल हैं इसमें मुफ़सिरों के बहुत से क़ौल हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाह अन्हुमा ने फ़रमाया कि सूर फूँके जाने पर सारे आसमान और ज़मीन वाले मर जाएंगे सिवाए जिब्रईल व मीकाईल व इसाकील और इब्राईल के. फिर अल्लाह तआला दोनों सूर के फूँके जाने के बीच, जो चालीस साल की मुद्दत है, उसमें इन फ़रिश्तों को भी मौत देगा. दूसरा क़ौल यह है कि मुस्तसना (छूट पाए हुए) शहीद हैं जिनके लिये क़ुरआने मजीद में बल अहयाउन आया है. हदीस शरीफ़ में भी है कि वो शहीद हैं जो तलवारों लगाए अर्श के चारों तरफ़ हाज़िर होंगे. तीसरा क़ौल हज़रत जाबिर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि मुस्तसना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हैं चूंकि आप तूर पर बेहोश हो चुके हैं इसलिये इस सूर के फूँके जाने से बेहोश नहीं होंगे बल्कि आप पूरी तरह होश में रहेंगे. चौथा क़ौल यह है कि मुस्तसना रिज़वान और हूरें और वो फ़रिश्ते जो जहन्नम पर मामूर हैं वो, और जहन्नम के साँप बिच्छू हैं. (तफ़सीर कबीर व जुमल बौरह)

(८) यह सूर का दूसरी बार फूँका जाना है जिससे मुर्दे ज़िन्दा किये जाएंगे.

(९) अपनी क़ब्रों से, ओर देखते हुए खड़े होने से या तो यह मुराद है कि वो हैरत में आकर आश्चर्यचकित की तरह हर तरफ़ निगाह उठा उठा कर देखेंगे या ये मानी है कि वो ये देखते होंगे कि अब उन्हें क्या मामला पेश आएगा और मूमिनों की क़ब्रों पर अल्लाह तआला की रहमत से सवारियाँ हाज़िर की जाएंगी जैसा कि अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है : यौमा नहथकूल मुत्तकीना इलर रहमाने दफ़दन" यानी जिस दिन हम फरहेज़गारों को रहमान की तरफ़ ले जाएंगे मेहमान बना कर. (सुरा मरयम, आयत ८५)

(१०) बहुत तेज़ रौशनी से, यहाँ तक कि सूर्य की झलक नमूदार होगी. यह ज़मीन दुनिया की ज़मीन न होगी बल्कि नई ही ज़मीन होगी जो अल्लाह तआला क़यामत के दिन की मेहफ़िल के लिये पैदा फ़रमाएगा.

(११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ये चाँद सूरज का नूर न होगा बल्कि यह और ही नूर होगा जिसको अल्लाह तआला पैदा फ़रमाएगा. उससे ज़मीन रौशन हो जाएगी. (जुमल)

(१२) यानी कर्मों की किताब हिसाब के लिये. इससे मुराद या तो लौहे मेहफूज़ है जिसमें दुनिया की सारी घटनाएं क़यामत तक साफ़ साफ़ विस्तार से दर्ज हैं या हर शख्स का कर्म-लेखा जो उसके हाथ में होगा.

जाएगा^(१) और कहा जाएगा कि सब खूबियां अल्लाह को जो सारे जगत का रब^(१०) (७५)।

४०- सूरए मूमिन

सूरए मूमिन मक्का में उतरी, इसमें ८५ आयतें, नौ रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) हा मीम^(१) यह किताब उतारना है अल्लाह की तरफ से जो इज़्ज़त वाला इल्म वाला^(२) गुनाह बख़्शने वाला और तौबह कुबूल करने वाला^(३) सख्त अज़ाब करने वाला^(४) बड़े इनाम वाला^(५) उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, उसी की तरफ़ फिरना है^(६) (३) अल्लाह की आयतों में झगड़ा नहीं करते मगर काफ़िर^(७) तो ऐ सुनने वाले तुझे धोखा न दे उनका शहरों में अहले गहले (इतराते) फिरना^(८) (४) उनसे पहले नूह की क्रौम और उनके बाद के गिरोहों^(९) ने झुटलाया और हर उम्मत ने यह क़स्द किया कि अपने रसूल को पकड़ लें^(१०) और बातिल(असत्य) के साथ झगड़े कि उससे हक़ को टाल दें^(११) तो मैं ने उन्हें पकड़ा, फिर कैसा हुआ मेरा अज़ाब^(१२) (५) और यूँही तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो चुकी है कि वो दोज़ाबी हैं^(१३) वो जो अर्श उठाते हैं^(१४) और जो उसके गिर्द हैं^(१५) अपने रब की तअरीफ़ के साथ उसकी पाकी बोलते^(१६) और उसपर ईमान लाते^(१७) और मुसलमानों की मग़फ़िरत

النّٰمِیْنِ ۙ ۝۱۴۷

الْعَرْشِ یَسْتَحْیُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِیَ بَیْنَهُمُ بِالْحَقِّ ۚ وَفُیْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

حَمْدٌ تَبَیْرُبُّ الْعَرْشَ الْعَلِیْمِ ۝

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِیْدِ الْعِقَابِ ۚ ذَٰلَ ۝

الْقَوْلِ ۚ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ إِلَیْهِ الْمَصِیْرُ ۝ مَا یَجَادِلُ ۝

فِیْ اٰیٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فَلَا یَعْرِکُ تَقْلُبُهُمْ ۝

فِی الْاِیْدِیْهِ ۚ کَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍ بِرَسُوْلِهِمْ لِنَاخِذُوْهُ ۚ وَ ۝

جَدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِیُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ ۚ فَاَخَذْنَاهُمْ فَکِیْفَ ۝

كَانَ عِقَابٌ ۝ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ کَلِمَتُ رَبِّکَ عَلَی ۝

الَّذِیْنَ کَفَرُوْا مِنْهُمْ اَصْحَابُ النَّارِ ۚ الَّذِیْنَ یَحْمِلُوْنَ ۝

سُوْرٰتُ

(१३) जो रसूलों की तबलीग़ की गवाही देंगे।

(१४) उससे कुछ छुपा नहीं, न उसको गवाह और लिखने वाले की ज़रूरत: यह सब हुज़्जत तमाम करने के लिये होंगे। (जुमल)

सूरए जुमर - आठवाँ रूकू

- (१) सख्ती के साथ कैदियों की तरह।
- (२) हर हर जमाअत और उम्मत अलग अलग।
- (३) यानी जहन्नम के सातों दरवाज़े खोले जाएंगे जो पहले से बन्द थे।
- (४) वेशक नबी तशरीफ़ भी लाए और उन्होंने अल्लाह तआला के एहकामात भी सुनाए और इस दिन से भी डराया।
- (५) कि हम पर हमारी बदनसीबी ग़ालिब हुई और हमने गुमराही इस्तिफ़ार की और अल्लाह के इरशाद के मुताबिक जहन्नम में भरे गए।
- (६) इज़्ज़त और एहतिराम और लुफ़ और करम के साथ।
- (७) उनकी इज़्ज़त और सत्कार के लिये, और जन्नत के दरवाज़े आठ हैं। हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अक़्हो से रिवायत है कि जन्नत के दरवाज़े के करीब एक दरख़्त है उसके नीचे से दो चश्मे निकलते हैं। मूमिन वहाँ पहुँच कर एक चश्मे में गुस्स करेगा उससे उसका बदन पाक साफ़ हो जाएगा और दूसरे चश्मे का पानी पियेगा इससे उसका बातिल पाकीज़ा हो ज, फिर फ़रिश्ते जन्नत के दरवाज़े पर स्वागत करेंगे।
- (८) यानी अल्लाह तआला और रसूल का कहा मानने वालों का।
- (९) कि मूमिन को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल किया जाएगा।
- (१०) जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल होकर शुक्र की अदायगी के लिये अल्लाह की स्तुति और हम्द अर्ज़ करेंगे।

४० - सूरए मूमिन - पहला रूकू

(१) सूरए मूमिन का नाम सूरए गाफ़िर भी है। यह सूरत मक्के में उतरी सिवाय दो आयतों के जो “अल्लज़ीना युजादिलूना फ़ी आयातिल्लाह” से शुरू होती हैं। इस सूरत में नौ रूकू, पचासी आयतें, एक हज़ार एक सौ तिनानवे कलिमें और चार हज़ार नौ सौ

माँगते हैं^(१५) ऐ रब हमारे तेरी रहमत व इल्म में हर चीज़ की समाई है^(१६) तो उन्हें वख़्श दे जिन्होंने तौबह की और तेरी राह पर चले^(१७) और उन्हें दोज़ख के अज़ाब से बचा ले^(१८) ऐ हमारे रब और उन्हें बसने के बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तू ने उनसे वादा फ़रमाया है और उनको जो नेक हों उनके बाप दादा और बीवियों और औलाद में^(१९) वेशक तूही इज़ज़त व हिकमत वाला है^(२०) और उन्हें गुनाहों की शामत से बचा ले और जिसे तू उस दिन गुनाहों की शामत से बचाए तो वेशक तूने उसपर रहम फ़रमाया, और यही वड़ी कामयाबी है^(२१)

दूसरा रूकू

वेशक जिन्होंने कुफ़्र किया उनको निद्रा की जाएगी^(१) कि ज़रूर तुमसे अल्लाह की वेज़ारी इससे बहुत ज़्यादा है जैसे तुम आज अपनी जान से वेज़ार हो जबकि तुम^(२) ईमान की तरफ़ बुलाए जाते तो तुम कुफ़्र करते^(३) कहेंगे ऐ हमारे रब तूने हमें दोबारा मुर्दा किया और दोबारा ज़िन्दा किया^(४) अब हम अपने गुनाहों पर मुक़िर हुए (अड़गए) तो आग से निकलने की भी कोई राह है^(५) ^(११) यह उस पर हुआ कि जब एक अल्लाह पुकारा जाता तो तुम कुफ़्र करते^(६) और उस का शरीक ठहराया जाता तो तुम मान लेते^(७) तो हुक्म अल्लाह के लिये है जो सब से दलन्द बड़ा^(१२) वही है कि तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है^(८) और तुम्हारे लिये आसमान से रोज़ी उतारता है^(९) और नसीहत नहीं मानता^(१०) मगर जो रूजू लाए^(११) ^(१३) तो अल्लाह की बन्दगी करो

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ قُلْ أَطِيعُوا الرَّسُولَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ يَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادُونَ لِمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ۝ قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا أَثْنَتَيْنِ وَأَخْيَيْنَا أَثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ مِنْ سَبِيلٍ ۝ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ وَلَنْ يَبْشُرَ بِهِ تَوْمًا فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝ هُوَ

مَنْ

साट अक्षर हैं.

(२) ईमानदारों की.

(३) काफ़िरों पर.

(४) आरिफ़ों यानी अल्लाह को पहचानने वालों पर.

(५) बन्दों का, आस्त्रित में.

(६) यानी कुरआन पाक में झगड़ा करना काफ़िर के सिवा मूमीन का काम नहीं. अबू दाऊद की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि कुरआन में झगड़ा करना कुफ़्र है. झगड़े और ज़िदाल से मुराद अल्लाह की आयतों में तअन करना और तकज़ीब (झुटलाने) और इन्कार के साथ पेश आना है. और मुश्किलों को सुलझाने और गहराई का पता चलाने के लिये इल्म और उसूल की वहाँ झगड़ा नहीं बल्कि महानताअतां में से हैं. काफ़िरों का झगड़ा करना आयतों में यह था कि वां कभी कुरआन शरीफ़ को जादू कहते, कभी काब्य, कभी तांत्रिक विद्या, कभी क्रिस्से कहानियाँ.

(७) यानी काफ़िरों का सेहत व सलामती के साथ मुल्क मुल्क तियास्त करते फिरना और नफ़ा पाना तुम्हारे लिये चिंता का विषय न हो कि यह कुफ़्र जैसा महान जुर्म करने के बाद भी अज़ाब से अमन में रहे, क्योंकि उनका अन्न ख़्तारी और अज़ाब है. पहली उम्मतों में भी ऐसे हालात गुज़र चुके हैं.

(८) आद व समूद व कौमे लूत वऔरह.

(९) और उन्हें क़त्ल और हलाक कर दें.

(१०) जिसका नबी लाए हैं.

(११) क्या उनमें का कोई उससे बच सका.

(१२) यानी अर्श उटाने वाले फ़रिश्ते जो कुर्ब वालों और फ़रिश्तों में बुजुर्गों व इज़ज़त वाले हैं.

(१३) यानी जो फ़रिश्ते कि अर्श की परिक्रमा करने वाले हैं, उन्हें क़रूबी कहते हैं और ये फ़रिश्तों में सरदारी पाए हुए हैं.

निरे उसके बन्दे होकर^(११) पड़े बुरा मानें काफिर^(१४) बलन्द दर्जे देने वाला^(१२) अर्श का मालिक, ईमान की जान वही डालता है अपने हुक्म से अपने बन्दों में जिस पर चाहे^(१३) कि वह मिलने के दिन से डराए^(१५) जिस दिन वो बिल्कुल ज़ाहिर हो जाएंगे^(१६) अल्लाह पर उनका कुछ हाल छुपा न होगा^(१७) आज किस की बादशाही है^(१८) एक अल्लाह सब पर गालिव की^(१९) आज हर जान अपने किये का बदला पाएगी^(२०) आज किसी पर ज़ियादती नहीं, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है^(२१) और उन्हें डराओ उस नज़्दीक आने वाली आफ़त के दिन से^(२२) जब दिल गलों के पास आ जाएंगे^(२३) गम में भरे, और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशि जिस का कहा माना जाए^(२४) अल्लाह जानता है चोरी छुपे की निगाह^(२५) और जो कुछ सीनों में छुपा है^(२६) और अल्लाह सच्चा फ़ैसला फ़रमाता है और उसके सिवा जिनको^(२७) पूजते हैं वो कुछ फ़ैसला नहीं करते^(२८) बेशक अल्लाह ही सुनता और देखता है^(२९)

الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنِيبُ ۖ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۚ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنْزِلَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۚ يَوْمَ هُمْ بِلِزْوَنٍ لَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۚ الْيَوْمَ تُجْزَى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۚ وَأَنْذَرَهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَظِيمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حِمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ۚ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ۚ وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۚ

مَزَاج

(१४) और सुद्धानल्लाहे व बिहम्दिही कहते.

(१५) और उसके एक होने की पुष्टि करते. शहर बिन होशब ने कहा कि अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते आठ हैं उनमें से चार की तस्बीह यह है : "सुद्धानकल्लाहुम्मा व बिहम्दिका लकल हम्दो अला हिल्मिका वअदा इल्मिका" और चार की यह : "सुद्धानकल्लाहुम्मा व बिहम्दिका लकल हम्दो अला अफविका वअदा कुदरतिका".

(१६) और अल्लाह की बासगाह में इस तरह अर्ज करते हैं.

(१७) याती तेरी रेहमत और तेरा इल्म हर चीज़ को वसीअ है. दुआ से पहले प्रशंसा के शब्द कहने से मालूम हुआ कि दुआ के संस्कारों में से यह है कि पहले अल्लाह तआला की स्तुति और तारीफ की जाए फिर अपनी मुराद अर्ज की जाए.

(१८) याती दीने इस्लाम पर.

(१९) उन्हें भी दाख़िल कर.

सूरए मुमिन - दूसरा रूकू

(१) क़यामत के दिन जबकि वो जहन्नम में दाख़िल होंगे और उनकी बर्दियाँ उनपर पेश की जाएंगी और वो अज़ाब देखेंगे तो फ़रिश्ते उनसे कहेंगे.

(२) दुनिया में.

(३) क्योंकि पहले बेजान तुल्फ़ा थे, इस मौत के बाद उन्हें जान देकर ज़िन्दा किया, फिर उम्र पूरी होने पर मौत दी, दोबारा उठाने के लिये ज़िन्दा किया.

(४) उसका जवाब यह होगा कि तुम्हारे दोज़ख़ से निकलने का कोई रास्ता नहीं और तुम जिस हाल में हो, जिस अज़ाब में गिरफ़्तार हो, और उससे रिहाई की कोई राह नहीं पा सकते.

(५) याती इस अज़ाब और इसकी हमेशगी का कारण तुम्हारा यह कर्म है कि जब अल्लाह की तौहीद का ग़ैलान होता और लाइलाहा इल्लल्लाहो कहा जाता तो तुम उसका इन्कार करते और कुफ़्र इज़्तिघार करते.

(६) और इस शिर्क की तस्दीक करते.

(७) याती अपनी मसनूआत के चमत्कार जो उसकी भरपूर कुदरत के प्रमाण हैं जैसे हवा और बादल और बिजली वगैरह.

(८) मेंह बरसा कर.

(९) और उन निशानियों से नसीहत हासिल नहीं करता.

तीसरा सूक

तो क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते कैसा अंजाम हुआ उनसे अगलों का^(१), उनकी कुब्रत और ज़मीन में जो निशानियाँ छोड़ गए^(२) उनसे ज़्यादा तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ा, और अल्लाह से उनका कोई बचाने वाला न हुआ^(३) (२१) यह इसलिये कि उनके पास उनके रसूल रौशन निशानियाँ लेकर आए^(४) फिर वो कुफ़र करते तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ा, वेशक अल्लाह ज़वरदस्त सख्त अजाब वाला है (२२) और वेशक हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और रौशन सनद के साथ भेजा (२३) फिर औन और हामान और कारून की तरफ़ तो वो बोले जादूगर है बड़ा झूठा^(५) (२४) फिर जब वह उनपर हमारे पास से हक़ (सच्चाई) लाया^(६) बोले जो इस पर ईमान लाए उनके बेटे क़त्ल करो ओर औरतें ज़िन्दा रखो^(७) और काफ़िरों का दाव नहीं मगर भटकता फिरता^(८) (२५) और फिर औन बोला^(९) मुझे छोड़ो मैं मूसा को क़त्ल करूँ^(१०) और वह अपने रब को पुकारे^(११) मैं डरता हूँ कहीं वह तुम्हारा दीन बदल दे^(१२) या ज़मीन में फ़साद चमकाए^(१३) (२६) और मूसा ने^(१४) कहा मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूँ हर मुतकब्बिर (घमण्डी) से कि हिसाब के दिन पर

النّٰوِيْنَ

५०

فَوْنِ اَطْلَمَ

اَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا هُمْ اَسَدًا مِنْهُمْ قُوَّةً وَ
اَنْتَارًا فِي الْاَرْضِ فَآخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ
لَهُمْ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَاْتِيهِمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَاَكْفَرُوا فَآخَذَهُمُ اللّٰهُ ۗ لَآ اِنَّهُ قَوِيٌّ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوسٰٓى بِآيٰتِنَا وَ
سُلٰطِنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَكَارُوْنَ فَقَالُوْا
سِحْرٌ كَذٰبٌ ۝ فَلَمَّا جَآءَهُمُ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا
اقْتُلُوْا اَبْنَاءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ
وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِيْنَ اِلَّا فِي ضَلٰلٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ
دَرُوْنِيْ اَقْتُلْ مُوسٰٓى وَلْيَدْعُ رَبِّهٖ ۚ اِنِّىْٓ اَخَافُ اَنْ
يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ۝
وَقَالَ مُوسٰٓى اِنِّىْٓ عُدْتُ بِرَبِّىْ وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ

منزل

- (१०) सारे कामों में अल्लाह तआला की तरफ़ और शिर्क से तौबत करे.
- (११) शिर्क से अलग होकर.
- (१२) नबियाँ, बलियाँ और उलमा को, जन्नत में.
- (१३) यानी अपने बन्दों में से जिसे चाहता है नबुव्वत की उपाधि अता करता है और जिसको नबी बनाता है उसका काम होता है.
- (१४) यानी सृष्टि के क़यामत का ख़ौफ़ दिलाए जिस दिन आसमान और ज़मीन वाले और अगले पिछले मिलेंगे और आत्माएं शरीरों से और हर कर्म करने वाला अपने कर्म से मिलेगा.
- (१५) क़ब्रों से निकल कर और कोई ईमारत या पहाड़ और छुपने की जगह और आड़ न पाएंगे.
- (१६) न कहनी न करनी, न दूसरे हालात और अल्लाह तआला से तो कोई चीज़ कभी नहीं छुप सकती लेकिन यह दिन ऐसा होगा कि उन लोगों के लिये कोई पर्दा और आड़ की चीज़ न होगी जिसके ज़रिये से वो अपने ख़याल में भी अपने हाल को छुपा सकें, और सृष्टि के नाश के बाद अल्लाह तआला फ़रमाएगा.
- (१७) अब कोई न होगा कि जवाब दे. ख़ुद ही जवाब में फ़रमाएगा कि अल्लाह वाहिद व क़हहार की. और एक क़ौल यह है कि क़यामत के दिन जब सारे अगले पिछले हाज़िर होंगे तो एक पुकारने वाला पुकारेगा, आज किसकी बादशाही है ? सारी सृष्टि जवाब देगी "लिल्लाहिल वाहिदिल क़हहार" अल्लाह वाहिद व क़हहार की जैसा कि आगे इरशाद होता है.
- (१८) मुमिन तो यह जवाब बहुत मज़े के साथ अर्ज करेंगे क्योंकि वो दुनिया में यही अक़ीदा रखते थे. यही कहते थे और इसी की वदौलत उन्हें दर्जे मिलें और काफ़िर ज़िल्लत और शर्मिन्दगी के साथ इसका इक़रार करेंगे और दुनिया में अपने इक्बारी रहने पर लज्जित होंगे.
- (१९) नेक अपनी नेकी का और बद अपनी बदी का.
- (२०) इससे क़यामत का दिन मुराद है.
- (२१) ख़ौफ़ की सन्नती से न बाहर ही निकल सकें न अन्दर ही अपनी जगह वापस जा सकें.
- (२२) यानी काफ़िर शफ़ाअत से मेहरूम होंगे.
- (२३) यानी निगाहों की ख़यालत और चोरी, ना-मेहरम को देखना और मवा की हुई चीज़ों पर नज़र डालना.
- (२४) यानी दिलों के राज़, सब चीज़ें अल्लाह तआला के इल्म में हैं.
- (२५) यानी जिन बुतों को ये मुश्रिक लोग.
- (२६) क्योंकि न वो इल्म रखते हैं न कुदरत, तो उनकी इबादत करना और उन्हें ख़ुदा का शरीक ठहराना बहुत ही ख़ुला हुआ असत्य है.

यक्रीन नहीं लाता^(१५) (२७)

चौथा रूकू

और बोला फिरऔन वालों में से एक मर्द मुसलमान कि अपने ईमान को छुपाता था क्या एक मर्द को इसपर मारे डालते हो कि वह कहता है मेरा रब अल्लाह है और वेशक वह रौशन निशानियाँ तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से लाए^(१) और अगर फर्ज करो वो ग़लत कहते हैं तो उनकी ग़लत गोई का बवाल उनपर, और अगर वो सच्चे हैं, तो तुम्हें पहुंच जाएगा कुछ वह जिसका तुम्हें वादा देते हैं^(२) वेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो हद से बढ़ने वाला बड़ा झुटा हो^(३) (२८) ऐ मेरी क्रौम आज वादशाही तुम्हारी है इस ज़मीन में ग़लतवा रखते हो, ^(४) तो अल्लाह के अज़ाब से हमें कौन बचा लेगा अगर हम पर आए, फिरऔन बोला मैं तो तुम्हें वही समझाता हूँ जो मेरी सूझ है ^(५) और मैं तो तुम्हें वही बताता हूँ जो भलाई की राह है^(६) (२९) और वह ईमान वाला बोला ऐ मेरी क्रौम मुझे तुमपर ^(७) अगले गिरोहों के दिन का सा डर है^(८) (३०) जैसा दस्तूर गुज़रा नूह की क्रौम और आद और समूद और उनके बाद औरों का, ^(९) और अल्लाह वन्दों पर जुल्म नहीं चाहता^(१०) (३१) और ऐ मेरी क्रौम मैं तुम पर उस दिन से डरता हूँ जिस दिन पुकार मचेगी^(११) (३२) जिस दिन पीठ देकर भागोगे, ^(१२) अल्लाह से ^(१३) तुम्हें कोई बचाने वाला नहीं, और जिसे

لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۚ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ وَإِن يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۚ وَإِن يَكُ صَادِقًا يُضَيِّبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعْلَمُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِئٌ كَذَابٌ ۚ يَقَوْمُ لَكُمْ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَهَرَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ ۚ فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ ۚ إِنَّ جَاءَنَا قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۚ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَوْمَ يَأْتِي أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۚ مِثْلَ دَاوُدَ ۚ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۚ وَيَقَوْمُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۚ يَوْمَ تَوَلَّوْنَ مُدْبِرِينَ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ

(२७) अपनी मज़लूक की कहनी व करनी और सारे हालात को.

सूरए मूमिन - तीसरा रूकू

- (१) जिन्होंने ने रसूलों को झुटलाया था.
- (२) कितने और महल, नेहरे और हीज़, और बड़ी बड़ी इमारतें.
- (३) कि अल्लाह के अज़ाब से बचा सकता. समझदार का काम है कि दूसरे के हाल से इब्रत हासिल करे. इस एहद के काफ़िर यह हाल देखकर क्यों इब्रत हासिल नहीं करते, क्यों नहीं सोचते कि पिछली क्रौम उनसे ज्यादा मज़बूत और स्वस्थ, मालदार और अधिकतर वाली होने के बावजूद, इस इब्रत से भरपूर तरीके पर तवाह कर दी गई, यह क्यों हुआ.
- (४) चमत्कार दिखाते.
- (५) और उन्होंने हमारी निशानियाँ और प्रमाणों को जादू बताया.
- (६) यानी नबी होकर अल्लाह का संदेश लाए तो फिरऔन और उसकी क्रौम.
- (७) ताकि लोग हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के अनुकरण से बाज़ आए.
- (८) कुछ भी तो कारआमद नहीं, बिल्कुल निकम्मा और बेकार. पहले भी फिरऔनियों ने फिरऔन के हुक्म से हज़ारों कत्ल किये मगर अल्लाह की मर्जी होकर रही और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ख ने फिरऔन के घर बार में पाला, उससे ख़िदमतें कराई. जैसा वह दाब फिरऔनियों का बेकार गया ऐसे ही अब ईमान वालों को रोकने के लिये फिर दोबारा कत्ल शुरू करना बेकार है. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दीन का प्रचलन अल्लाह तआला को मंज़ूर है, उसे कौन रोक सकता है.
- (९) अपने गिरोह से.
- (१०) फिरऔन जब कभी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के कत्ल का इशारा करता तो उसकी क्रौम के लोग उसे इस से मना करते और कहते कि यह वह व्यक्ति नहीं है जिसका तुझे अन्देशा है. यह तो एक मामूली जादूगर है इसपर तो हम अपने जादू से गालिब आ जाएंगे और अगर इसको कत्ल कर दिया तो आम लोग शुबह में पड़ जाएंगे कि वह व्यक्ति सच्चा था, हक पर था, तू दलील से उसका मुकाबला करने में आजिज़ हुआ, जवाब न दे सका, तो तूने उसे कत्ल कर दिया. लेकिन हक़ीकत में फिरऔन का यह कहना कि मुझे

अल्लाह गुमराह करे उसका कोई राह दिखाने वाला नहीं (३३) और बेशक इससे पहले (३३) तुम्हारे पास यूसुफ़ रौशन निशानियां लेकर आए तो तुम उनके लिए हुए से शक ही में रहे, यहां तक कि जब उन्होंने इन्तिक़ाल फ़रमाया तुम बोले हरगिज़ अब अल्लाह कोई रसूल न भेजेगा (३४), अल्लाह यू ही गुमराह करता है उसे जो हद से बढ़ने वाला शक लाने वाला है (३४) वो जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं (३५) वे किसी सनद के कि उन्हें मिली हो, किस क़द्र संख़्त बेज़ारी की बात है अल्लाह के नज़्दीक और ईमान वालों के नज़्दीक, अल्लाह यू ही मुहर कर देता है मुतक़विर सरकश के सारे दिल पर (३५) और फिरऔन बोला (३६) ऐ हामान मेरे लिये ऊंचा महल बना शायद मैं पहुंच जाऊं रास्तों तक (३६) काहे के रास्ते आसमानों के तो मूसा के ख़ुदा को झाँक कर देखूँ और बेशक मेरे गुमान में तो वह झूटा है (३७) और यू ही फिरऔन की निगाह में उसका बुरा काम (३७) भला कर दिखाया गया (३७) और वह रास्ते से रोका गया, और फिरऔन का दाँव (३८) हलाक होने ही को था (३८)

पाँचवां सूक़

और वह ईमान वाला बोला ऐ मेरी क़ौम मेरे पीछे चलो मैं तुम्हें भलाई की राह बताऊँ (३८) ऐ मेरी क़ौम यह दुनिया का जीना तो कुछ बरतना ही है (३९) और बेशक वह पिछला

مِنْ عَصِيْمٍ ۖ وَمَنْ يُضِلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝
وَلَقَدْ جَاءَ كُرَيْمُ يُوسُفُ مِنْ قَبْلِ الْيَتِيْمِ فَمَا زِلْتُمْ
فِي شَكٍّ مِّمَّا جَاءَكُمْ بِهِ ۚ حَتّٰى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ
يَبْعَثَ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِهِ رَسُوْلًا ۚ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ۝ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْ
اٰيَاتِ اللّٰهِ يَغَيِّرُ سُلٰطِيْنَ اَتٰهُمْ كِبٰرٌ مِّمَّا عِنْدَ اللّٰهِ وَ
عِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ يُطْعِمُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبٍ
مُّتَكَبِّرٍ جَبَّارٌ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهٰمٰنُ ابْنِ لِىْ
صَرْحًا لَّعَلِّىْ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ۝ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ
فَاُظْلِمُ اِلٰى اللّٰهِ مَوْسًى وَاِنِّىْ لَظَنُّنُهٗ كَاذِبًا ۚ وَكَذٰلِكَ
رُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عِلٰهِ وَصَدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۚ وَمَا
كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبٰبٍ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
بِقَوْمِ اٰتِيْعُوْنَ اٰهْدٰكُمْ سَبِيْلَ الرّٰشِدِ ۝ يَقُوْمُ اِنَّا

مَنْ

छोड़ दो मैं मूसा को क़त्ल करूँ, ख़ालिस धमकी ही थी: उसको ख़ुद आपके सच्चे नबी होने का यकीन था और वह जानता था कि जो चमत्कार आप लाए हैं वह अल्लाह की आयतें हैं, जादू नहीं। लेकिन यह समझता था कि अगर आप के क़त्ल का इरादा करेगा तो आप उसको हलाक करने में जल्दी फ़रमाएंगे, इससे यह बेहतर है कि वहस बढ़ने में ज़्यादा वक़्त गुज़ार दिया जाए। अगर फिरऔन अपने दिल में आप को सच्चा नबी न समझता और यह न जानता कि अल्लाह की ताईदें जो आपके साथ हैं, उनका मुक़ाबला नामुमकिन है, तो आपके क़त्ल में हरगिज़ देरी न करता क्योंकि वह बड़ा ख़ूबख़ार, सफ़ाक़, ज़ालिम, बेदर्द था, छोटी सी बात में हज़ारहा ख़ून कर डालता था।

(११) जिसका अपने आप को रसूल बताता है ताकि उसका रब उसको हमसे बचाए। फिरऔन का यह क़ौल इसपर ग़वाह है कि उसके दिल में आपका ओर आपकी दुआओं का झीरफ़ था। वह अपने दिल में आप से डरता था। दिग्ग़ावे की इज़्ज़त बनी रखने के लिये यह ज़ाहिर करता था कि यह क़ौम के मना करने के कारण हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल नहीं करता।

(१२) और तुम से फिरऔन परस्ती और वुत परस्ती छुड़ा दे।

(१३) ज़िदाल और क़िताल करके।

(१४) फिरऔन की धमकियाँ सुनकर।

(१५) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फिरऔन की सज़्तियों के ज़वाब में अपनी तरफ़ से कोई क़लिमा अतिशयोक्ति या बड़ाई का न फ़रमाया बल्कि अल्लाह तआला से पनाह चाही और उसपर भरोसा किया। यही ख़ुदा की पहचान वालों का तरीक़ा है और इसी लिये अल्लाह तआला ने आपको हर एक बला से मेहफूज़ रखा। इन मुबारक जुमलों में कैसी बढ़िया हिदायतें हैं। यह फ़रमाना कि तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूँ और इसमें हिदायत है कि रब एक ही है। यह भी हिदायत है कि जो उसकी पनाह में आए उस पर भरोसा करे तो वह उसकी मदद फ़रमाए, कोई उसको हाँति नहीं पहुँचा सकता। यह भी हिदायत है कि उसी पर भरोसा करता बन्दगी की शान है और तुम्हारे रब फ़रमाने में यह भी हिदायत है कि अगर तुम उसपर भरोसा करोगे तो तुम्हें भी सआदत नसीब हो।

सूरए मुमिन - चौथा सूक़

(१) जिनसे उनकी सच्चाई ज़ाहिर हो गई यानी नबुव्वत साबित हो गई।

(२) मतलब यह है कि दो हाल से ख़ाली नहीं या ये सच्चे होंगे या झूटे। अगर झूटे हों तो ऐसे मामले में झूट बोलकर उसके बवाल

से बच नहीं सकते, हलाक हो जाएंगे और अगर सच्चे हैं तो जिस अज़ाब का तुम्हें वादा देते हैं उसमें से बिल-फ़ेअल कुछ तुम्हें पहुंच ही जाएगा. कुछ पहुंचना इसलिये कहा कि आपका अज़ाब का वादा दुनिया और आख़िरत दोनों को आम था उसमें से बिलफ़ेअल दुनिया का अज़ाब ही पेश आता था.

(३) कि ख़ुदा पर झूठ बांधे.

(४) यानी मिस्र में तो ऐसा काम न करो कि अल्लाह का अज़ाब आए अगर अल्लाह का अज़ाब आया.

(५) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल कर देना.

(६) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को झुटलाने और उनके पीछे पड़ने से.

(७) जिन्होंने रसूलों को झुटलाया.

(८) कि नवियों को झुटलाते रहे और हर एक को अल्लाह के अज़ाब ने हलाक किया.

(९) यौगु गुनाह के उनपर अज़ाब नहीं फ़रमाता और बिना हुज़त क़ायम किये उनको हलाक नहीं करता.

(१०) वह क़यामत का दिन होगा. क़यामत के दिन को यौमुत-तनाद यानी पुकार का दिन इसलिये कहा जाता है कि इस राज़ तरह तरह की पुकारें मची होंगी, हर व्यक्ति अपने सरदार के साथ और हर जमाअत अपने इमाम के साथ बुलाई जाएगी. जन्नती दाज़िख़ियों को और दाज़िख़ी जन्नतियों को पुकारेंगे. सआदत और शक़ावत की निदाएं की जाएंगी कि अमुक ख़ुशनसीब हुआ अब कभी बदनसीब न होगा और अमुक व्यक्ति बदनसीब हो गया अब कभी सईद न होगा और जिस व़क्त मौत ज़िन्न की जाएगी उस व़क्त निदा की जाएगी कि ऐ जन्नत वालो अब हमेशगी है, मौत नहीं और ऐ जहन्नम वालो, अब हमेशगी है, मौत नहीं.

(११) हिसाब के मैदान से दाज़िख़ की तरफ़.

(१२) यानी उसके अज़ाब से.

(१३) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से पहले.

(१४) यह बेदलील बात तुम ने यानी तुम्हारे पहलों ने ख़ुद ग़द्दी ताकि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बाद आने वाले नवियों को झुटलाओ और उनका इन्कार करो तो तुम कुफ़्र पर क़ायम रहे, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की नबुव्वत में शक़ करते रहे और बाद वालों की नबुव्वत के इन्कार के लिये तुम ने यह योजना बना ली कि अब अल्लाह तआला कोई रसूल ही न भेजगा.

(१५) उन चीज़ों में जिन पर रौशन दलीलें ग़वाह हैं.

(१६) उन्हें झुटला कर.

(१७) कि उसमें हिदायत कुबूल करने का कोई महल बाक़ी नहीं रहता.

(१८) जिहालत और धोखे के तौर पर अपने वज़ीर से.

(१९) यानी मूसा मेरे मिस्र और ख़ुदा बताने में और यह बात फिरऔन ने अपनी क़ौम को धोख़ा देने के लिये कहा क्यों कि वह जानता था कि सच्चा मअबूद सिर्फ़ अल्लाह तआला है और फिरऔन अपने आप को धोख़ा थड़ी के लिये ख़ुदा कहलवाता है. (इस घटना का बयान सूरए क़सस में गुज़रा).

(२०) यानी अल्लाह तआला के साथ शरीक करना और उसके रसूल को झुटलाना.

(२१) यानी शैतानों ने बसबसे डाल कर उसकी बुराइयाँ उसकी नज़र में भली कर दिखाई.

(२२) जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की निशानियों को झूठा ठहराने के लिये उसने इज़्तिहार किया.

सूरए मूमिज़ - पाँचवाँ रकू

(१) यानी थोड़ी मुदत के लिये नापायदार नफ़ा है जो बाक़ी रहने वाला नहीं है.

हमेशा रहने का घर है^(२) (३९) जो बुरा काम करे तो उसे बदल न मिलेगा मगर उतना ही और जो अच्छा काम करे मर्द चाहे औरत और हो मुसलमान^(३) तो वो जन्नत में दाखिल किये जाएंगे वहाँ बेगिनती रिज़क पाएंगे^(४) (४०) और ऐ मेरी कौम मुझे क्या हुआ मैं तुम्हें बुलाता हूँ निजात की तरफ^(५) और तुम मुझे बुलाते हो दोज़ख की तरफ^(६) (४१) मुझे उस तरफ बुलाते हो कि अल्लाह का इन्कार करूँ और ऐसे को उसका शरीक करूँ जो मेरे इल्म में नहीं, और मैं तुम्हें उस इज़्ज़त वाले बहुत बख़्शने वाले की तरफ बुलाता हूँ^(७) (४२) आप हो साबित हुआ कि जिसकी तरफ मुझे बुलाते हो^(८) उसे बुलाना कहीं काम का नहीं दुनिया में न आखिरत में^(९) और यह हमारा फिरना अल्लाह की तरफ है^(१०) और यह कि हद से गुज़रने वाले^(११) ही दोज़खी हैं^(१२) तो जल्द वह वक़्त आता है कि जो मैं तुम से कह रहा हूँ उसे याद करोगे^(१३) और मैं अपने काम अल्लाह को सौंपता हूँ, वेशक अल्लाह बन्दों को देखता है^(१४) (४४) तो अल्लाह ने उसे बचा लिया उनके मक़द (कपट) की बुराईयों से^(१५) और फिरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने आ घेरा^(१६) (४५)

الْمُؤْمِنِينَ

१५३

سُورَةُ الْأَنْعَامِ

هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۖ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنَّىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَوْلِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۖ وَيَقُومُ مَا لِي أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجْوَىٰ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ ۖ تَدْعُونَنِي لَأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَ أَشْرِكُ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ ۖ وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْعَفَّارِ ۖ لَا جَرَمَ أَنَا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ ۖ وَأَن مَّرَدُّنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ فَتَذَكَّرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ وَأَقِصُّ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۖ فَوَقَّهَ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكَدُوا وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ۖ

مَنْزِل

- (२) मुराद यह है कि दुनिया नष्ट हो जाने वाली है और आखिरत बाक़ी रहने वाली, सदा ज़िन्दा रहने वाली और सदा ज़िन्दा रहना ही बेहतर, इसके बाद अच्छे और बुरे कर्मों और उनके परिणामों का बयान किया।
- (३) क्योंकि कर्मों की मक़बूलियत ईमान पर आधारित है।
- (४) यह अल्लाह तआला की भारी मेहरबानी है।
- (५) जन्नत की तरफ, ईमान और फ़रमाँबरदारी की सीख देकर।
- (६) कुफ़्र और शिर्क की दावत देकर।
- (७) यानी बुन की तरफ़।
- (८) क्योंकि वह बेजान पत्थर है।
- (९) वही हमें जज़ा देगा।
- (१०) यानी काफ़िर।
- (११) यानी अज़ाब उतरने के वक़्त तुम मेरी नसीहतें याद करोगे और उस वक़्त का याद करना कुछ काम न आएगा। यह सुनकर उन लोगों ने उस मूमीन को धमकाया कि अगर तू हमारे दीन की मुख़ालिफ़त करेगा तो हम तेरे साथ बुरा पेश आएंगे, इसके जवाब में उसने कहा।
- (१२) और उनके कर्मों और हालतों को जानता है। फिर वह मूमीन उन में से निकल कर पहाड़ की तरफ़ चला गया और वहाँ नमाज़ में मशग़ूल हो गया। फिरऔन ने हज़ार आदमी उसे ढूँढने को भेजे। अल्लाह तआला ने ख़तरनाक जानवर उसकी हिफ़ाज़त पर लगा दिये, जो फिरऔनी उसकी तरफ़ आया, जानवरों ने उसे हलाक किया और जो वापस गया और उसने फिरऔन से हाल बयान किया, फिरऔन ने उसे मूर्खी दे दी ताकि यह हाल मशहूर न हो।
- (१३) और उसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ होकर निजात पाई अगरचे वह फिरऔन की क़ौम का था।
- (१४) दुनिया में यह अज़ाब कि वह फिरऔन के साथ गर्क हो गए और आखिरत में दोज़ख़।

आग जिसपर सुबह शाम पेश किये जाते हैं^(१५) और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी, हुक्म होगा, फिरऔन वालों को सख्त तर अज़ाब में दाखिल करो^(१६) और^(१७) जब वो आग में आपस में झगड़ेंगे तो कमज़ोर उनसे कहेंगे जो बड़े बनते थे हम तुम्हारे तावे (अधीन) थे^(१८) तो क्या तुम हमसे आग का कोई हिस्सा घटा लोगे^(१९) वो तकबुर (धमण्ड) वाले बोले^(२०) हम सब आग में हैं^(२१) वेशक अल्लाह बन्दों में फ़ैसला फ़रमा चुका^(२२) और जो आग में हैं उसके दारोगों से बोले अपने रब से दुआ करो हम पर अज़ाब का एक दिन हल्का कर दे^(२३) ^(२४) उन्होंने कहा क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल रौशन निशानियाँ न लाते थे^(२५) बोले क्यों नहीं^(२६) बोले तो तुम्हीं दुआ करो^(२७) और काफ़िरों की दुआ नहीं मगर भटकते फिरने को^(२८)

छटा रूकू

वेशक ज़रूर हम अपने रसूलों की मदद करेंगे और ईमान वालों की^(१) दुनिया की ज़िन्दगी में और जिस दिन गवाह खड़े होंगे^(२) ^(३) जिस दिन ज़ालिमों को उनके बहाने कुछ काम न देंगे^(४) और उनके लिये लअनत है और उनके लिये

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا ۖ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ۚ وَ إِذْ يَتَحَاجُّونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضَّعُفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنْناَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ۚ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا ۚ إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَتِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنْنايَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۖ قَالُوا أَوَلَمْ تَكُنَّا نَدْعُوهُمَا بِالْأَيْمِينَةِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۖ قَالُوا فَادْعُوا ۚ وَمَا دُعَاؤُا الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۚ إِنَّا كُنَّا نُرْمِئُكُمْ سُلُتًا ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْحُكْمُ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذَرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۚ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ

مَزَل

(१५) उसमें जलाए जाते हैं, हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया फिरऔनियों की रूहें काले पक्षियों के शरीर में हर दिन दो बार सुबह शाम आग पर पेश की जाती हैं, और उसी कहा जाता है कि यह आग तुम्हारा टिकाना है और क़यामत तक उनके साथ यही मअमूल रहेगा, इस आयत से क़ब्र के अज़ाब के सुबूत पर इस्तदलाल किया जाता है, बुज़रारी और मुस्लिम की हदीस में है कि हर मरने वाले पर उसका मक़ाम सुबह शाम पेश किया जाता है, जन्नती पर जन्नत का और जहन्नमी पर जहन्नम का और उससे कहा जाता है कि यह तेरा टिकाना है, जब तक कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला तुझे इसकी तरफ़ उठाए,

(१६) ज़िक्र फ़रमाइये ये नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम अपनी क़ौम से जहन्नम के अन्दर काफ़िरों के आपस में झगड़ने का हाल कि —

(१७) दुनिया में और तुम्हारी बदौलत ही काफ़िर बने,

(१८) याती काफ़िरों के सरदार जवाब देंगे,

(१९) हर एक अपनी मुसीबत में गिरफ़्तार, हम में से कोई किसी के काम नहीं आ सकता,

(२०) ईमानदारों को उसने जन्नत में दाखिल कर दिया और काफ़िरों को जहन्नम में, जो होना था हो चुका,

(२१) याती दुनिया के एक दिन के बराबर हमारे अज़ाब में कमी रहे,

(२२) क्या उन्होंने खुले चमत्कार पेश न किये थे याती अब तुम्हारे लिये बहानों की कोई जगह बाक़ी न रही,

(२३) याती काफ़िर नबियों के आने और अपने कुफ़्र का इज़्हार करेंगे,

(२४) हम काफ़िर के हक़ में दुआ न करेंगे और तुम्हारा दुआ करना भी बेकार है,

सूरा मुमिन - छटा रूकू

(१) उनकी ग़लबा अता फ़रमाकर और मज़बूत तर्क देकर और उनके दुश्मनों से बदला लेकर,

(२) वह क़यामत का दिन है कि फ़रिश्तों रसूलों की तबलीग़ और काफ़िरों के झुटलाने की गवाही देंगे,

(३) और काफ़िरों का कोई बहाना कुबूल न किया जाएगा,

बुरा घर^(४) ॥५२॥ और बेशक हम ने मूसा को रहनुमाई अता फ़रमाई^(५) और बनी इस्राईल को किताब का वारिस किया^(६) ॥५३॥ अक्लमन्दों की हिदायत और नसीहत को^(७) ॥५४॥ तो ऐ महबूब तुम सब्र करो^(८) बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है^(९) और अपनों के गुनाहों की माफ़ी चाहो^(१०) और अपने रब की तारीफ़ करते हुए सुबह और शाम उसकी पाकी बोलो^(११) ॥५५॥ वो जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं वे किसी सनद के जो उन्हें मिली हो^(१२) उनके दिलों में नहीं मगर एक बड़ाई की हविस^(१३) जिसे न पहुँचेंगे^(१४) तो तुम अल्लाह की पनाह माँगो^(१५) बेशक वही सुनता देखता है^(१६) बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदायश आदमियों की पैदायश से बहुत बड़ी^(१७) लेकिन बहुत लोग नहीं जानते^(१८) ॥५७॥ और अंधा और अंधियारा बराबर नहीं^(१९) और न वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और बदकार^(२०) कितना कम ध्यान करते हो^(२१) ॥५८॥ बेशक क़ायमत ज़रूर आने वाली है इसमें कुछ शक नहीं लेकिन बहुत लोग ईमान नहीं लाते^(२२) ॥५९॥ और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ करो मैं कुबूल करूँगा^(२३) बेशक वो जो मेरी इबादत से ऊँचे खिंचते (घमण्ड करते) हैं बहुत जल्द जहन्नम में

وَأَوْثَقْنَا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ ۖ هُدًى وَ
ذِكْرًا لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۖ قَاصِدِينَ إِن وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ
وَأَسْتَغْفِرُ لَذُنُوبِكَ وَسَجِّدَ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَتَمَةِ وَ
الْإِبْكَارِ ۖ إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ
سُلْطَانٍ أَتَتْهُمْ إِن فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ
بِبَالِغِيهِ ۖ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۖ
لَخَلْقُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَ
لَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۖ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَى
وَالْبَصِيرُ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا
الْمُوتَىٰ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ۖ إِنَّ السَّاعَةَ لَأَتِيَةٌ
وَلَا رَيْبَ فِيهَا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ
وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ
يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرَيْنَ

- (४) यानी जहन्नम.
- (५) यानी तौरात और चमत्कार.
- (६) यानी तौरात का या उन नबियों पर उतरी तमाम किताबों का.
- (७) अपनी क़ौम की तकलीफ़ पर.
- (८) वह आपकी मदद फ़रमाएगा, आपके दीन को मालिम करेगा, आपके दुश्मनों को हलाक करेगा. कलबी ने कहा कि सब्र की आयत जंग की आयत से मन्सूख हो गई.
- (९) यानी अपनी उम्मत के. (मदारिक)
- (१०) यानी अल्लाह तआला की इबादत पर हमेशगी रखो और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया इससे पाँचों नमाज़ें मुराद हैं.
- (११) इन झगड़ा करने वालों से कुरैश के काफ़िर मुराद हैं.
- (१२) और उनका यही घमण्ड उनके झुटलाने और इन्कार और कुफ़र के अपनाने का कारण हुआ कि उन्होंने यह ग़वारा न किया कि कोई उनसे ऊँचा हो. इसलिये सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दुश्मनी की, इस झूठे ग्रन्थाल से कि अगर आपको नबी मान लेंगे तो अपनी बड़ाई जाती रहेगी और उम्मती और छोटा बनना पड़ेगा और हविस रखते हैं बड़े बनने को.
- (१३) और बड़ाई मयस्सर न आएगी बल्कि हुज़ूर की मुश्कालिफ़त और इन्कार उनके हक़ में ज़िल्लत और रुखाई का कारण होगा.
- (१४) हासिदों के छलकपट से.
- (१५) यह आयत दोबारा उठाए जाने का इन्कार करने वालों के रद में उतरी. उनपर हुज़रत क़ायम की गई कि जब तुम आसमान और ज़मीन की पैदायश पर उनकी इस विशालता और बड़ाई के बावजूद अल्लाह तआला की क़ादिर मानते हो तो फिर इन्सान को दोबारा पैदा करदेता उसकी कुदरत से क्यों दूर समझते हो.
- (१६) बहुत लोगों से मुराद यहाँ काफ़िर हैं और उनके दोबारा उठाए जाने के इन्कार का सबब उनकी अज्ञानता है कि वो आसमान और ज़मीन की पैदायश पर क़ादिर होने से दोबारा उठाए जाने पर इस्तिदलाल नहीं करते तो वो अन्धे की तरह हैं और जो मन्सूलूक़ात के बुज़ूद से ख़ालिक की कुदरत पर इस्तिदलाल करते हैं वह अँधेरे की तरह हैं.
- (१७) यानी जाहिल और आलिम एक से नहीं.
- (१८) यानी नेक ईमान वाला और बुरे काम करने वाला, ये दोनों भी बराबर नहीं.
- (१९) मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने पर यक़ीन नहीं करते.
- (२०) अल्लाह तआला अपने बन्दों की दुआएं अपनी रज़मत से कुबूल फ़रमाता है और उनके कुबूल के लिये कुछ शर्तें हैं एक

जाएंगे जलील होकर (६०)

सातवाँ सूकू

अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई कि उसमें आराम पाओ और दिन बनाया आँखें खोलता^(१) वेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़ल (कृपा) वाला है लेकिन बहुत आदमी शुक्र नहीं करते (६१) वह है अल्लाह तुम्हारा रब हर चीज़ का बनाने वाला, उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो कहां आँधे जाते हो^(२) (६२) यूँही आँधे होते हैं^(३) वो जो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं^(४) (६३) अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन ठहराव बनाई^(५) और आसमान छत^(६) और तुम्हारी तस्वीर की, तो तुम्हारी सुरतें अच्छी बनाई^(७) और तुम्हें सुथरी चीज़ें^(८) रोज़ी दीं, यह है अल्लाह तुम्हारा रब, तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह रब सारे जगत का (६४) वही ज़िन्दा है^(९) उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो उसे पूजो निरे उसी के वन्दे होकर, सब खूबियाँ अल्लाह को जो सारे जगत का रब (६५) तुम फ़रमाओ मैं मना किया गया हूँ कि उन्हें पूजूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो^(१०) जब कि मेरे पास रौशन दलीलें^(११) मेरे रब की तरफ़ से आईं और मुझे हुक्म हुआ है कि जगत के रब के हुज़ूर (समक्ष) गर्दन रखूँ (६६) वही है जिसने तुम्हें^(१२) मिट्टी से बनाया फिर^(१३) पानी की बूंद

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝ ذِكْرُ اللَّهِ رَبِّكُمْ خَالِي كُلِّ شَيْءٍ أَلَا هُوَ قَائِمٌ تُوَفَّقُونَ ۝ كَذَلِكَ يُؤَفِّكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوْرَكُمْ فَاحْسَنَ صُورَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ذِكْرُ اللَّهِ رَبِّكُمْ فَتَبَرَّكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۝ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهُيْتُ أَنْ أُعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِي الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ

مَرْءٍ

इस्रलास दुआ में, दूसरे यह कि दिल ग़ैर की तरफ़ न लगे, तीसरे यह कि वह दुआ किसी ग़लत मक़सद के लिये न हो, चौथे यह कि अल्लाह तआला की रहमत पर यकीन रखता हो, पाँचवें यह कि शिकायत न करे कि मैंने दुआ माँगी, कुबूल न हुई, जब इन बातों से दुआ की जाती है, कुबूल होती है, हदीस शरीफ़ में है कि दुआ करने वाले की दुआ कुबूल होती है, या तो उससे उसकी मुराद दुनिया ही में उसको जल्द दे दी जाती है या आख़िरत में उसके लिये जमा होती है या उसके गुनाहों का कफ़फ़ारा कर दिया जाता है, इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि दुआ से मुराद इबादत है और क़ुरआन करीम में दुआ इबादत के अर्थ में बहुत जगह आई है, हदीस शरीफ़ में है “अद-दुआओ दुबल इबादतो” (अबू दाऊद, तिरमिज़ी) इस सूरत में आयत के मानी ये होने कि तुम मेरी इबादत करो मैं तुम्हें सबाव दूँगा।

सूरत मूमिन - सातवाँ सूकू

- (१) कि उसमें अपना काम इत्मीनान के साथ करो।
- (२) कि उसको छोड़कर बुतों को पूजते हो और उसपर ईमान नहीं लाते जबकि दलीलें कायम हैं।
- (३) और हक़ से फिरते हैं, दलीलें कायम होने के बावजूद।
- (४) और उनमें सच्चाई जानने के लिये नज़र और ग़ौर नहीं करते।
- (५) कि वह तुम्हारी क़रारगाह हो, ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी।
- (६) कि उसको कुब्बे की तरह बलन्द फ़रमाया।
- (७) कि तुम्हें अच्छे डील डोल, नूरानी चेहरे और सुडौल किया, जानवरों की तरह न बनाया कि आँधे चलते।
- (८) नफ़ीस खाने पीने की चीज़ें।
- (९) कि उसकी फ़ना मुहाल है, असंभव है।
- (१०) शरीर काफ़िरों ने जिहालत और गुमराही के तौर पर अपने झूठे दीन की तरफ़ हुज़ूर पुरनूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को दावत दी थी और आपसे बुत परस्ती की दग़्ग़ाबत की थी, इसपर यह आयत उतरी।
- (११) अक़ल व बही की तौहीद पर दलालत कमन वाली।
- (१२) यानी तुम्हारे अस्त और तुम्हारे पितामह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को।
- (१३) हज़रत आदम के बाद उनकी नस्ल को।

से^(१४) फिर खून की फुटक से फिर तुम्हें निकालता है वच्चा फिर तुम्हें वाकी रखता है कि अपनी जवानी को पहुंचो^(१५) फिर इसलिये कि बूढ़े हो और तुम में कोई पहले ही उठा लिया जाता है^(१६) और इसलिये कि तुम एक मुकरर वादे तक पहुंचो^(१७) और इसलिए कि समझो^(१८) (६७) वही है कि जिलाता है और मारता है, फिर जब कोई हुक्म फरमाता है तो उससे यही कहता है कि होजा जभी वह हो जाता है^(१९) (६८)

आठवाँ रूक

क्या तुमने उन्हें न देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं^(१) कहाँ फेरे जाते हैं^(२) (६९) वो जिन्होंने झुटलाई किताब^(३) और जो हमने अपने रसूलों के साथ भेजा^(४) वो बहुत जल्द जान जाएंगे^(५) (७०) जब उनकी गर्दनो में तौक होंगे और जंजीरों^(६) घसीटे जाएंगे^(७) (७१) खोलते पानी में, फिर आग में दहकाए जाएंगे^(८) (७२) फिर उनसे फरमाया जाएगा कि कहाँ गए वो जो तुम शरीक बनाते थे^(९) (७३) अल्लाह के मुकाबिल, कहेंगे वो तो हम से गुम गए^(१०) बल्कि हम पहले कुछ पूजते ही न थे^(११) अल्लाह यूही गुमराह करता है काफिरों को (७४) यह^(१२) उसका बदला है जो तुम ज़मीन में वातिल पर खुश होते थे^(१३) और उसका

الذّٰر

५५८

فَمَنْ أَظْلَمُ

عَلَقْتُمْ ثُمَّ يَخْرِجُكُمْ طِفْلاً ثُمَّ لَتَبْتُمْ أُشْدَّكُمْ
ثُمَّ لَتَكُونُوا شُيُوخًا وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَقَّى مِنْ قَبْلُ
وَلَتَبْلُغُوا أَجْلاً مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ هُوَ
الَّذِي يُبَيِّنُ لَكُمْ آيَاتِهِ فَإِذَا قُضِيَ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ
لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ
فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنَّى يُصْرِفُونَ ۝ الَّذِينَ كَذَبُوا
بِالْكِتَابِ وَمِمَّا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا فَتُفَسِّحُونَ ۝
إِذَا الْأَغْطَلُ فِي أَعْنَاقِهِمُ وَالسَّيْلُ لِيُسْحَبُونَ ۝
فِي الْحَيَمَةِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ۝ ثُمَّ قِيلَ
لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ۝ مِنْ دُونِ اللَّهِ
قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُوا مِنْ قَبْلُ شَيْئًا
كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ۝ ذَلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ

مُتَرَفِّعِينَ

- (१४) यानी मनी के कतरे से.
- (१५) और कुचत सम्पूर्ण हो.
- (१६) यानी बुढ़ापे या जवानी के पहुंचने से पहले, यह इसलिये किया कि तुम ज़िन्दगानी करो.
- (१७) ज़िन्दगी के सीमित समय तक.
- (१८) तौहीद की दलीलों को, और ईमान लाओ.
- (१९) यानी चीज़ों का बुजूद उसके इरादे के आधीन है कि उसने इरादा फरमाया और चीज़ भौजूद हुई. न कोई कुलफ्त है न मशक्कत है न किसी सामान की हाज़त, यह उसकी भरपूर कुदरत का बयान है.

सूरए मूमिन - आठवाँ रूक

- (१) यानी कुरआने पाक में.
- (२) ईमान और सच्चे दीन से.
- (३) यानी काफिर जिन्होंने कुरआन शरीफ की झुटलाई.
- (४) उसको भी झुटलाया और उसके रसूलों के साथ जो चीज़ भेजी. इससे मुराद या तो वो किताबें हैं जो पहले रसूल लाए या वो सच्चे अक्कीदे जो तमाम नबियों ने पहुंचाए जैसे अल्लाह की वहदानियत और मरने के बाद उठाए जाने का अक्कीदा.
- (५) अपने झुटलाने का परिणाम.
- (६) और इन जंजीरों से.
- (७) और यह आग बाहर से भी उन्हें घेरे होगी और उनके अन्दर भी भरी होगी. (अल्लाह तआला की पनाह)
- (८) यानी वो बुत क्या हुए जिनकी तुम पूजा करते थे.
- (९) कहीं नज़र ही नहीं आते.
- (१०) बुतों की पूजा का इन्कार कर जाएंगे. फिर बुत हाज़िर किये जाएंगे और काफिरों से फरमाया जाएगा कि तुम और तुम्हारे ये मअबूद सब जहन्नम का ईंधन हो. कुछ मुफ़सिरो ने फरमाया कि जहन्नमियों का यह कहना कि हम पहले कुछ पूजते ही न थे इसके यह मानी है कि अब हमें जाहिर होगया कि जिन्हें हम पूजते थे वो कुछ न थे कि कांई दफ़ा या नुक़सान पहुंचा सकते.
- (११) यानी यह अज़ाब जिसमें तुम गिरफ़्तार हो.
- (१२) यानी शिर्क और बुत परस्ती और दांवारा उठाए जाने के इन्कार पर.

बदला है जो तुम इतराते थे (७५) जाओ जहन्नम के दरवाजों में उसमें हमेशा रहने, तो क्या ही बुरा ठिकाना घमण्डियों का (७६) तो तुम सब करो बेशक अल्लाह का वादा (७७) सच्चा है, तो अगर हम तुम्हें दिखा दें (७८) कुछ वह चीज जिसका उन्हें वादा दिया जाता है (७९) या तुम्हें पहले ही वफ़ात (मृत्यु) दें बहरहाल उन्हें हमारी ही तरफ़ फिरना (८०) और बेशक हमने तुमसे पहले कितने ही रसूल भेजे कि जिन में किसी का अहवाल तुम्हें बयान फ़रमाया (८१) और किसी का अहवाल न बयान फ़रमाया (८२), और किसी रसूल को नहीं पहुंचता कि कोई निशानी ले, आए खुदा के हुक्म के बिना, फिर जब अल्लाह का हुक्म आएगा (८३) सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा (८४) और बातिल (असत्य) वालों का वहाँ ख़सारा (८५)

नवाँ रूकू

अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिये चौपाए बनाए कि किसी पर सवार हो और किसी का गोशत खाओ (८६) और तुम्हारे लिये उनमें कितने ही फ़ायदे हैं (८७) और इसलिये कि तुम उनकी पीठ पर अपने दिल की मुरादों को पहुंचो (८८) और उनपर (८९) और किशतियों पर (९०) सवार होते हो (९१) और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है (९२) तो अल्लाह की कौन सी निशानी का इन्कार करोगे (९३) तो क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उनसे अगलों का कैसा

تَمَرَحُونَ ۖ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا، فَبُئْسَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ۝ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَإِمَّا نُرَبِّيكَ بِعُصَىٰ نَدْعُهُمْ أَوْ نَتَوَقَّيْكَ فَإِلَيْنَا يَرْجِعُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ فُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْبَاطِلُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَى الْفُلَاكِ تُحْمَلُونَ ۝ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ ۚ فَآتَىٰ آيَةَ اللَّهِ تَنْكُرُونَ ۝ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا

مَدَن

(१३) जिन्होंने घमण्ड किया और हक को कुबूल न किया।

(१४) काफ़िरों पर अज़ाब फ़रमाने का।

(१५) तुम्हारी वफ़ात से पहले।

(१६) अज़ाब की क्रियाओं से, जैसे वदर में मारे जाने के, जैसा कि यह वाक़े हुआ।

(१७) और सब अज़ाब में गिरफ़्तार होना।

(१८) इस क़ुरआन में तफ़सील के साथ।

(१९) क़ुरआन शरीफ़ में तफ़सील से और खुला खुला (गिरफ़्तार) और उन तमाम नदियों को अल्लाह तआला ने निशानी और चमत्कार अता फ़रमाए और उनकी क़ौमों ने उनसे जंग की और उन्हें झुटलाया इसपर उन हज़रात ने सब किया। इस बयान से तात्पर्य नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है कि जिस तरह के बाकिआत कौम की तरफ़ से आपको पेश आ रहे हैं जैसी तकलीफ़ें पहुंच रही हैं, पहले नदियों के साथ भी यही हालात गुज़र चुके हैं। उन्होंने सब किया, आप भी सब फ़रमाएं।

(२०) काफ़िरों पर अज़ाब उतारने के बारे में।

(२१) रसूलों के, और उनके झुटलाने वालों के बीच।

सूरए मूमिन - नवाँ रूकू

(१) कि उनके दूध और ऊन वगैरह काम में लाते हो और उनकी नसल से नफ़ा उठाते हो।

(२) यानी अपने सफ़रों में अपने बज़नी सामान उनकी पीठों पर लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हो।

(३) झुशकी के सफ़रों में।

(४) दरियाई सफ़रों में।

(५) जो उसकी कुदरत और वहदानियत पर दलालत करती हैं।

(६) यानी वो निशानियाँ ऐसी ज़ाहिर व ख़ुली हैं कि उनके इन्कार की कोई सूरत ही नहीं।

अंजाम हुआ, वो उनसे बहुत धे^(७) और उनकी कुव्वत^(८) और ज़मीन में निशानियाँ उनसे ज़्यादा^(९) तो उनके क्या काम आया जो उन्होंने ने कमाया^(१०) (८२) तो जब उनके पास उनके रसूल रोशन दलीलें लाए तो वो उसी पर खुश रहे जो उनके पास दुनिया का इल्म था^(११) और उन्हीं पर उलट पड़ा जिसकी हंसी बनाते थे^(१२) फिर जब उन्हीं ने हमारा अज़ाब देखा बोले हम एक अल्लाह पर ईमान लाए और जो उसके शरीक करते थे उनसे इन्कारी हुए^(१३) (८३) तो उनके ईमान ने उन्हें काम न दिया जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया, अल्लाह का दस्तूर जो उसके बन्दों में गुज़र चुका^(१४) और वहाँ काफ़िर घाटे में रहे^(१५) (८४)

४९- सूरए हामीम सज्दा

सूरए हामीम सज्दा मक्का में उतरी, इसमें ५४ आयतें, ६ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ^(१) हा-मीम. (१) यह उतारा है बड़े रहम वाले मेहरबान का (२) एक किताब है जिसकी आयतें मुफ़रसल फ़रमाई गईं^(३) अरबी कुरआन अक्ल वालों के लिये^(३)

حَمِّ السَّجْدَةِ

५५९

فَتَنُ الظُّلُمِ

كَيْفَ كَانَ عَذَابُهُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا أَكْثَرُ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَأَثَرًا فِي الْأَرْضِ فَمَا آخَى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِنْدَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ۝ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۝ وَخَسِرَ هُنَاكَ الْكَافِرُونَ ۝

(۴۱) سُوْرَةُ حَمِّ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ (۶۱) (۴۱)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

حَمِّ ۝ تَنْزِيلٌ مِنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ كِتَابٌ فَضَّلْتَ آيَتَهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

منزل

- (७) उनकी संग्रह्या अधिक थी.
- (८) और जिस्मानी ताक़त भी उनसे अधिक थी.
- (९) यानी उनके महल और इमारतें बग़ैरह.
- (१०) मानी ये हैं कि अगर ये लोग ज़मीन में सफ़र करते तो उन्हें मालूम हो जाता कि इन्कार और ज़िद करने वालों का क्या परिणाम हुआ और वो किस तरह हलाक ओर बर्बाद हुए और उनकी तादाद उनके ज़ोर और उनके माल कुछ भी उनके काम न आ सके.
- (११) और उन्होंने नबियों के इल्म की तरफ़ तवज्जह न की. उसे हासिल करने और उससे नफ़ा उठाने पर ध्यान न दिया बल्कि उसके तुच्छ जाना और उसकी हंसी बनाई और अपने दुनियावी इल्म की जो हकीकत में जिहालत है, पसन्द करते रहे.
- (१२) यानी अल्लाह तआला का अज़ाब.
- (१३) यानी जिन बुतों को उसके सिवा पूजते थे उनसे बेज़ार हुए.
- (१४) यह है कि अज़ाब उतरने के वक़्त ईमान लाना नफ़ा नहीं देता उस वक़्त ईमान कुबूल नहीं किया जाता और यह भी अल्लाह तआला की सुन्नत है कि रसूलों के झुटलाने वालों पर अज़ाब उतरता है.
- (१५) यानी उनका घाटा और टोटा अच्छी तरह ज़ाहिर हो गया.

४९ - सूरए हामीम सज्दा - पहला रूकू

- (१) इस सूरा का नाम सूरए फुस्सेलत भी है और सूरए सज्दा और सूरए मसावीह भी है. यह सूरा मक्के में उतरी. इसमें ८ रूकू, चबन आयतें, सात सौ छिपानवे कलिमे और तीन हजार तीन सौ पचास अक्षर हैं.
- (२) जहक़ाम, मिसालें, कहावतें, नसीहतें, वादे, खुशख़बरियाँ, चेतावनी बग़ैरह के बयान में.
- (३) अल्लाह तआला के दोस्तों को सचाव की.

खुशखबरी देता^(४) और डर सुनाता^(५) तो उनमें अक्सर ने मुंह फेरा तो वो सुनते ही नहीं^(६) और बोले^(६) हमारे दिल गलाफ में हैं उस बात से जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो^(७) और हमारे कानों में टेंट (रुई) है^(८) और हमारे और तुम्हारे बीच रोक है^(९) तो तुम अपना काम करो हम अपना काम करते हैं^(१०) तुम फ़रमाओ^(११) आदमी होने में तो मैं तुम्हीं जैसा हूँ^(१२) मुझे वही होती है कि तुम्हारा मअवूद एक ही मअवूद है तो उसके हुज़ूर सीधे रहो^(१३) और उससे माफ़ी मांगो^(१४) और ख़राबी है शिर्क वालों को^(१५) वो जो ज़कात नहीं देते^(१६) और वो आख़िरत के मुन्किर हैं^(१७) वेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिये वे इन्तिहा सवाब है^(१८)

दूसरा खूकू

तुम फ़रमाओ क्या तुम लोग उसका इन्कार रखते हो जिसने दो दिन में ज़मीन बनाई^(१) और उसके हमसर ठहराते हो^(२) वह है सारे जगत का रब^(३) और उसमें^(४) उसके ऊपर से लंगर डाले^(५) और उसमें बरकत रखी^(६) और उसमें उसके बसने वालों की रोज़ियाँ मुक़रर कीं यह सब मिलाकर चार दिन में^(७), ठीक जवाब पूछने वालों को^(१०)

بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۖ فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۖ
وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِي أَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ ۖ وَ
فِي أَذَانِنَا وَقْرٌ وَمِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ ۚ
فَاعْمَلْ إِنَّا عَمِلُونَا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ
يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ ۚ فَاسْتَقِيمُوا
إِلَيْهِ ۖ وَاسْتَغْفِرُوا لَهُ ۖ وَوَيْلٌ لِلشَّارِكِينَ ۖ
الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ
كَافِرُونَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَهُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۖ قُلْ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الْكَافِرِينَ
بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ
أَشْدَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۖ وَجَعَلَ فِيهَا
رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا
أَفْوَاقَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِّلسَّاعِدِينَ ۖ

مَزْك

- (४) अल्लाह तआला के दुश्मनों को अज़ाब का.
- (५) तवज्जह से कुबूल का सुनना.
- (६) मुश्किल लोग, हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से.
- (७) हम उसको समझ ही नहीं सकते, यानी तौहीद और ईमान को.
- (८) हम बेहरे हैं आपकी बात हमारे सुनने में नहीं आती. इससे उनकी मुसद यह थी कि आप हमसे ईमान और तौहीद कुबूल करने की आशा न रखिये. हम किसी तरह मानने वाले नहीं और न मानने में हम उस व्यक्ति की तरह हैं जो न समझता हो, न सुनता हो.
- (९) यानी दीनी मुख़ालिफ़त, तो हम आपकी बात मानने वाले नहीं.
- (१०) यानी तुम अपने दीन पर रहो, हम अपने दीन पर क़ायम हैं, या ये मानी हैं कि तुम से हमारा काम बिगाड़ने की जो कोशिश हो सके वह करो. हम भी तुम्हारे ख़िलाफ़ जो हो सकेगा करेंगे.
- (११) ऐ मख़लूक में सबसे बुजुर्गों वाले सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम, विनम्रता के तौर पर उन लोगों को राह दिखाने और हिदायत के लिये कि ---
- (१२) ज़ाहिर में कि मैं देखा भी जाता हूँ मेरी बात भी सुनी जाती है और मेरे बीच में ज़ाहिर तौर पर कोई जिन्सी इख़्तिलाफ़ भी नहीं है तो तुम्हारा यह कहना कैसे सही हो सकता है कि मेरी बात न तुम्हारे दिल तक पहुँचे न तुम्हारे सुनने में आए और मेरे तुम्हारे बीच कोई रोक हो बजाय मेरे कोई ग़ैर जिन्ना फ़रिश्ता या जिन्न आता तो तुम कह सकते थे कि न वो हमारे देखने में आए न उनकी बात सुनने में आए न हम उनके कलाम का समझ सकें हमारे उनके बीच तो जिन्स का अलग होना ही बड़ी रोक है. लेकिन यहाँ तो ऐसा नहीं है क्योंकि मैं इन्सान की सूरत में जलवानुमा हुआ तो तुम्हें मुझसे मानस होना चाहिये और मेरे कलाम के समझने और उससे फ़ायदा उठाने की बहुत कोशिश करनी चाहिये क्योंकि मेरा दर्जा बहुत बलन्द है, मेरा कलाम बहुत ऊँचा है इसलिये कि मैं वही कहता हूँ जो मुझ वही होती है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ज़ाहिर तौर से "आदमी होने में तो मैं तुम्हीं जैसा हूँ" फ़रमाना हिदायत और राह दिखाने की हिकमत से है और विनम्रता के तरीके से है और जो विनम्रता के लिये कलिमात कहे जाएं वो विनम्रता करने वाले के बलन्द दर्जे की दलील होते हैं छोटों का इन कलिमात को उसकी शान में कहना या उससे बराबरी दूँदना अदब छोड़ना और गुस्ताख़ी होती है. तो किसी उम्मीती को जायज़ नहीं कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जैसा होने का दावा करे. यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि आपकी बशरियत भी सबसे अलता है. हमारी बशरियत को उससे कुछ निरबत नहीं.
- (१३) उस पर ईमान लाओ उसकी फ़रमाँबर्दारी करो और उसकी राह से न फिरो.
- (१४) अपने अक़ीदे और अमल की ख़राबी की.
- (१५) यह ज़कात के इन्कार से ख़ौफ़ दिलाने के लिये फ़रमाया गया ताकि मालूम हो कि ज़कात को मना करना ऐसा बुरा है कि

फिर आसमान की तरफ क्रुद फरमाया और वह धुआ था^(८) तो उससे और ज़मीन से फरमाया कि दोनों हाज़िर हो खुशी से चाहे नाखुशी से, दोनों ने अर्ज़ की कि हम रगबत के साथ हाज़िर हुए^(९) तो उन्होंने पूरे सात आसमान कर दिया दो दिन में^(१०) और हर आसमान में उसी के काम के अहकाम भेजे^(११) और हमने नीचे के आसमान को^(१२) चिरागों से आरास्ता किया^(१३) और निगहबानी के लिये^(१४), यह उस इज़्ज़त वाले इल्म वाले का ठहराया हुआ है^(१५) फिर अगर वो मुंह फेरें^(१६) तो तुम फरमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूँ एक कड़क से जैसी कड़क आद और समुद पर आई थी^(१७)^(१८) जब रसूल उनके आगे पीछे फिरते थे^(१९) कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो, बोले^(२०) हमारा रव चाहता तो फ़रिश्ते उतारता^(२१) तो जो कुछ तुम लेकर भेजे गए हम उसे नहीं मानते^(२२)^(२३) तो वो जो आद थे उन्होंने ज़मीन में नाहक़ धमण्ड किया^(२४) और बोले हम से ज्यादा किस का ज़ोर और क्या उन्होंने न जाना कि अल्लाह जिसने उन्हें बनाया उनसे ज्यादा क़वी (शक्तिशाली) है, और हमारी

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۖ قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ۖ فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأُحِطَ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَاهَا ۚ وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ ۖ وَحِفْظًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۖ فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صُفْعَةً مِّثْلَ صُفْعَةِ عَادَ وَثَمُودَ ۚ إِذْ جَاءَهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۚ قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً فَأَنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۖ فَأَنَّا عَادُوا فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۚ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَكَانُوا

مَنَازِلَ

कुरआने प्राक में मुशिकों की विशेषताओं में ज़िक्र किया गया और इसकी वजह यह है कि इन्सान को माल बहुत प्यारा होता है। माल का खुदा की राह में खर्च कर डालना उसके पक्के इरादे, दृढ़ता और सच्चाई और नियत की नेकी की मज़बूत दलील है और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ज़क़ात से मुराद है तौहीद को मानना और लाइलाहा इल्लल्लाहा कहना। इस सूरत में मानी ये होंगे कि जो तौहीद का इक़रार करके अपने नफ़सों को शिर्क से वाज़ नहीं रखते, और क़तादह ने इसके मानी ये लिये हैं कि जो लोग ज़क़ात को वाज़िब नहीं जानते, इसके अलावा और भी क़ौल हैं।

(१६) कि मरने के बाद उठने और जज़ा के मिलने के क़ायल नहीं।

(१७) जो ख़त्म न होगा, यह भी कहा गया है कि आयत बीमारों अपाहिजों और बूढ़ों के हक़ में उतरी जो अमल और फ़रमाँबरदारी के क़ायिल न रहें, उन्हें वही मिलेगा जो तन्दुरुस्ती में अमल करते थे, बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है कि जब बन्दा कोई अमल करता है और किसी बीमारी या सफ़र के कारण वो काम करने वाला उस अमल से मजबूर हो जाता है तो स्वास्थ्य और इक़ामत की हालत में जो करता था वैसा ही उसके लिये लिखा जाता है।

सूरत हामीम सज्दा - दूसरा रूकू

(१) उसकी ऐसी भरपूर कुदरत है, और चाहता तो एक पल से भी कम में बना देता।

(२) यानी शरीक।

(३) और वही इबादन का मुस्तहिक है उसके सिवा कोई पूजे जाने के लायक नहीं। सब उसकी ममलूक और मख़लूक हैं, इसके बाद फिर उसकी कुदरत का बयान फ़रमाया जाता है।

(४) यानी ज़मीन में।

(५) पहाड़ों के।

(६) नदी और नेहरों और दरख़्त और फल और तरह तरह के जानदार दग़ैरह पैदा करके।

(७) यानी दो दिन ज़मीन की पैदायश और दो दिन में ये सब।

(८) यानी बुख़ार (भाप) बलन्द होने वाला।

(९) ये कुल छ दिन हुए, इनमें सबसे पिछला जुमआ (शुक्रवार) है।

(१०) वहाँ के रहने वालों का ताअतों और इबदातों और, यह करो वह न करो, के आदेशों के।

سورة السجدة

५५१

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ

आयतों का इन्कार करते थे (१५) तो हमने उनपर एक आंधी भेजी सख्त गरज की (१६) उनकी शामत के दिनों में कि हम उन्हें रूस्वाई का अज़ाब चखाएं दुनिया की ज़िन्दगी में और बेशक आखिरत के अज़ाब में सबसे बड़ी रूस्वाई है और उनकी मदद न होगी (१६) और रहे समुद्र उन्हें हमने राह दिखाई (१७) तो उन्होंने सूझने पर अंधे होने को पसन्द किया (१८) तो उन्हें ज़िल्लत के अज़ाब की कड़क ने आ लिया (१९) सज़ा उनके किये की (२०) (१७) और हमने (२१) उन्हें बचा लिया जो ईमान लाए (२२) और डरते थे (२३) (१८)

और तुम्हारी खाली^(१) लेकिन तुम तो यह समझ बैठे थे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से काम नहीं जानता^(२) (२२) और यह है तुम्हारा वह गुमान जो तुमने अपने रब के साथ किया और उसने तुम्हें हलाक कर दिया^(३) तो अब रह गए हारे हुआओं में^(४) फिर अगर वो सब करें^(५) तो आग उनका ठिकाना है^(६) और अगर वो मनाना चाहें तो कोई उनका मनाना न माने^(७) (२४) और हमने उनपर कुछ साथी तैनात किये^(८) उन्होंने उन्हें भला कर दिखाया जो उनके आगे है^(९) और जो उनके पीछे^(१०) और उनपर बात पूरी हुई^(११) उन गिरोहों के साथ जो उनसे पहले गुजर चुके जिन और आदमियों के, बेशक वो ज़ियांकार (पापी) थे^(१२) (२५)

चौथा सूक़

और काफ़िर बोले^(१) यह कुरआन न सुनो और इसमें बेहूदा गुल करो^(२) शायद यूँही तुम ग़ालिब आओ^(३) (२६) तो बेशक ज़रूर हम काफ़िरों को सख्त अज़ाब चखाएंगे और बेशक हम उनके बुरे से बुरे काम का उन्हें बदला देंगे^(४) (२७) यह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला आग, इसमें उन्हें हमेशा रहना है, सज़ा उसकी कि हमारी आयतों का इन्कार

أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَيْفَ يَكْشِفُ مَا تَعْمَلُونَ ۖ وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرَدْتُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۖ إِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۖ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ ۖ وَقَيِّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْعَوْا لَهُذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَبُونَ ۖ فَلَنذِيقَنَ الَّذِينَ الْكَفْرَ عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَشْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ ذَلِكَ جَزَاءُ عِبَادِ اللَّهِ النَّارِ ۖ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْآخِلَةِ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَأْتِينَ

مَنْ

- (२०) कौमे आद के लोग बड़े मज़बूत और शहज़ोर थे जब हूद अलैहिस्सलाम ने उन्हें अल्लाह के अज़ाब से डराया तो उन्होंने कहा कि हम अपनी ताक़त से अज़ाब का हटा सकते हैं।
- (२१) निहायत ठण्डी बगैर बारिश के।
- (२२) और नेकी और बदी के तरीके उनपर ज़ाहिर फ़रमाए।
- (२३) और ईमान के मुक़ाबले में कुफ़र इस्तिस्नान किया।
- (२४) और हीलनाक आवाज़ के अज़ाब से हलाक किये गए।
- (२५) यानी उनके शिर्क और नबी को झुटलाने और गुनाहों की।
- (२६) साइका यानी कड़क के उस ज़िल्लत वाले अज़ाब से।
- (२७) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम पर।
- (२८) शिर्क और बुरे कर्मों से।

सूरए हामीम सज्दा - तीसरा सूक़

- (१) यानी काफ़िर अगले और पिछले।
- (२) फिर सबको दोज़ख़ में होंक दिया जाएगा।
- (३) शरीर के अंग अल्लाह के हुक्म से बोल उठेंगे और जो जो कर्म किये थे बता देंगे।
- (४) गुनाह करते वक़्त।
- (५) तुम्हें तो इसका गुमान भी न था बल्कि तुम तो मरने के बाद उठाए जाने और जज़ा के सिरे से ही कायल न थे।
- (६) जो तुम छुपा कर करते हो, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि काफ़िर यह कहते थे कि अल्लाह तआला ज़ाहिर की बातें जानता है और जो हमारे दिलों में है उसको नहीं जानता।
- (७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया यानी ये हैं कि तुम्हें जहन्नम में डाल दिया।
- (८) अज़ाब पर।
- (९) यह सब भी कारआमद नहीं।
- (१०) यानी हक़ तआला उनसे राज़ी न हो चाहे कितनी ही मिन्नत करें किसी तरह अज़ाब से रिहाई नहीं।
- (११) शैतानों में से।

करते थे (२८) और काफिर बोले (२९) ऐ हमारे रब हमें दिखा वो दोनों जिन्न और आदमी जिन्होंने हमें गुमराह किया (३०) कि हम उन्हें अपने पाँव तले डालें (३१) कि वो हर नीचे से नीचे रहें (३२) वेशक वो जिन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर उसपर क्रायम रहे (३३) उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं (३४) कि न डरो (३५) और न ग़म करो (३६) और खुश हो उस जन्नत पर जिस का तुम्हें वादा दिया जाता था (३७) (३८) हम तुम्हारे दोस्त हैं दुनिया की ज़िन्दगी में (३९) और आखिरत में (४०) और तुम्हारे लिये है उसमें (४१) जो तुम्हारा जी चाहे और तुम्हारे लिये उसमें जो मांगो (४२) मेहमानी बख़्शने वाले मेहरबान की तरफ से (४३)

पाँचवां रूकू

और उससे ज्यादा किसकी बात अच्छी जो अल्लाह की तरफ बुलाए (१) और नेकी करे (२) और कहे मैं मुसलमान हूँ (३) और नेकी और वदी बराबर न हो जाएगी ऐ सुनने वाले, बुराई को भलाई से ढाल (४) जभी वह कि तुझ में और उसमें दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त (५) (६) और यह दौलत (७) नहीं मिलती मगर साबिरों को, और इसे नहीं पाता मगर बड़े

يَجْعَدُونَ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرَبْنَا
الَّذِينَ أَضَلَّنَا مِنَ الْجَنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلُهُمَا نَحْبًا
أَقْدَامَنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ
قَالُوا رَبَّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَفْتَا مُوَّا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ
الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْبِشُرُوا بِالْجَنَّةِ
الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۖ نَحْنُ أَوْلِيَاكُمْ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَفِي الْأُخْرَىٰ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهُي
أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ۖ نُزُلًا مِنْ عَفْوٍ
رَحِيمٍ ۖ وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَ
عَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۖ وَلَا تَسْتَوِي
الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۖ مَادَّعَىٰ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ
فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ
حَمِيمٌ ۖ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا

مَنْ

- (१२) यानी दुनिया की ज़ेबो ज़ीवत और नफ़स की ख्वाहिशों का अनुकरण.
(१३) यानी आखिरत की बात यह बसबसा डालकर कि न मरने के बाद उठना है न हिसाब न अज़ाब, चैन ही चैन है.
(१४) अज़ाब की.

सूरए हामीम सज्दा - चौथा रूकू

- (१) यानी कुरैश के मुश्रिक लोग.
(२) और शोर मचाओ. काफिर एक दूसरे से कहते थे कि जब मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) कुरआन शरीफ पढ़े तो जोर जोर से शोर करो, झूब चिल्लाओ, ऊंची ऊंची आवाज़ें निकाल कर चीखो, बेमानी कलिमात से शोर करो. तालियाँ और सीटियाँ बजाओ ताकि कोई कुरआन न सुनने पाए और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) परेशान हों.
(३) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पढ़ना बन्द कर दें.
(४) यानी कुफ़्र का बदला सज़ा अज़ाब.
(५) जहन्नम में.
(६) यानी हमें वो दोनों शैतान दिखा, जिन्नी भी और इत्सी भी. शैतान दो किस्म के होते हैं एक जिन्नों में से, एक इन्सानों में से जैसा कि कुरआने पाक में है, “शयातीनल इन्से बल जिन्ने” (सूरए अनआम, आयत ११२) जहन्नम में काफिर इन दोनों को दंगने को ख्वाहिश करेंगे.
(७) आग में.
(८) पाताल में, हम से ज्यादा सज़ा अज़ाब में.
(९) हज़रत सिद्दीक़े अक़्बर रदियल्लाहो अन्हो से पूछा गया इस्तिक्कामत क्या है, फ़रमाया यह कि अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न करें. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि इस्तिक्कामत यह है कि अल्लाह ने जिन बातों की इजाज़त दी है और जिन बातों से रोका है उसपर क्रायम रहे. हज़रत उस्मान गनी रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया इस्तिक्कामत यह है कि अमल में इख़लास करे. हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि इस्तिक्कामत यह है कि फ़रायज़ अदा करे. और इस्तिक्कामत के मानी में यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला के हुक्म की बजा लाए और गुमराही से बचे.
(१०) मौत के वक़्त या वो जब कब्रों से उठेंगे और यह भी कहा गया है कि मूमिन को तीन बार बशारत दी जाती है एक मौत के वक़्त, दूसरे कब्र में तीसरे कब्रों से उठने के वक़्त.

नसीब वाला (३५) और अगर तुझे शैतान का कोई कौंचा (तकलीफ़) पहुँचे (३६) तो अल्लाह की पनाह माग (३७) वेशक वही सुनता जानता है (३८) और उसकी निशानियों में से हैं रात और दिन और सूरज और चांद (३९) सज्दा न करो सूरज को और न चांद को (४०) और अल्लाह को सज्दा करो जिसने उन्हें पैदा किया (४१) अगर तुम उसके बन्दे हो (४२) तो अगर ये घमण्ड करें (४३) तो वो जो तुम्हारे रव के पास हैं (४४) रात दिन उसकी पाकी बोलते हैं और उकताते नहीं (४५) और उसकी निशानियों से है कि तू ज़मीन को देखे वेक़द़ पड़ी (४६) फिर जब हमने उसपर पानी उतारा (४७) तरो ताज़ा हुई और बढ़ चली, वेशक जिसने उसे जिलाया ज़रूर मुर्दे जिलाएगा, वेशक वह सब कुछ कर सकता है (४८) वेशक वो जो हमारी आयतों में टेढ़े चलते हैं (४९) हम से छुपे नहीं, (५०) तो क्या आग में डाला जाएगा (५१) वह भला या जो क़यामत में अमान से आएगा (५२) जो जी में आए करो वेशक वह तुम्हारे काम देख रहा है (५३)

سَمِيعٌ عَلِيمٌ

५५

فَسَبِّحْهُ

يُكْفِّرُهَا إِلَّا دُوحًا عَظِيمًا ۝ وَإِنَّمَا يُدْرِكُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْوٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِمَسَّ الْكَوْكَبُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُ لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدْ وَاقِرًا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝ فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَنكِرْ إِلَى الْأَرْضِ خَاشِعَةً ۚ إِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَّتْ ۖ ذَاتُ الْحَيَاةِ هُمَزًا ۚ لَمَّا خَالَتْ كَأَنَّهُ بُذِيَ مَاءٌ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُدْعُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَحْقُقُونَ ۚ عَلَيْنَا دَأُؤُا نُنَزِّلُ فِي النَّارِ خَبِيرٌ ۚ أَمْ مِّنْ بَآئِنٍ أَيْنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ اْعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ إِنَّ

مَزَلْ

- (११) मौत से, और आखिरत में पेश आने वाले हालात से।
 (१२) घर वालों और औलाद के छूटने का या गुनाहों का।
 (१३) और फ़रिश्ते कहेंगे।
 (१४) तुम्हारी हिफ़ाज़त करते थे।
 (१५) तुम्हारे साथ रहेंगे और जब तक तुम जन्नत में दाख़िल हो तुम से जुदा न होंगे।
 (१६) यानी जन्नत में वह क़यामत और नेअमत और लज़ज़त।

सूरए हामीम सज्दा - पाँचवां रूकू

- (१) उसकी तौहीद और इबादत की तरफ़. कहा गया है कि इस दावत देने वाले से मुराद हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं और यह भी कहा गया है कि वह मूमिन मुराद है जिसने नबी अलैहिस्सलातो वससलाम की दावत को कुबूल किया और दूसरों को नेकी की दावत दी।
 (२) हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया, मेरे नज़दीक यह आयत मुअज़्ज़िनों के हक़ में उतरी और एक क़ौल यह भी है कि जो कोई किसी तरीके पर भी अल्लाह तआला की तरफ़ दावत दे, वह इसमें दाख़िल है. अल्लाह तआला की तरफ़ दावत के कई दर्जे हैं. अब्बल नबियों की दावत, चमत्कारों और हुज़्जतों और दलीलों और तलवार के साथ. यह दर्जा नबियों के साथ खास है. दूसरी दावत उलमा की, फ़क़त हुज़्जतों और प्रमाणों के साथ. और उलमा कई तरह के हैं एक आलिम बिल्लाह, दूसरे आलिम बिस्फ़ातिल्लाह, तीसरे आलिम बिअहकामिल्लाह. तीसरा दर्जा मूजाहिदीन की दावत का है, यह काफ़िरों को तलवार के साथ होती है. यहाँ तक कि वो दीन में दाख़िल हों और ताअत कुबूल कर लें. चौथा दर्जा मुअज़्ज़िनों की दावत नमाज़ के लिये. नेक क़र्मा की दो क्रिम है एक वह जो दिल से हो, वह मअरिफ़ते इलाही है. दूसरे जो शरीर से हो, वो तमाम ताअतें हैं.
 (३) और यह फ़क़त क़ौल न हो बल्कि इस्लाम को दिल से मान कर कहे कि सच्चा कहना यही है.
 (४) मिसाल के तौर पर गुस्से को सब्र से और जिहालत को हिल्म से और दुर्बवहार को माफ़ी से, कि अगर तेरे साथ कोई बुराई करे तो तू माफ़ कर.
 (५) यानी इस ख़सलत का नतीजा यह होगा कि दुश्मन दोस्तों की तरह महबूब करने लगेंगे. कहा गया है कि यह आयत अबू सुफ़ियान के हक़ में उतरी कि उनकी दुश्मनी की सख़्ती के बावजूद नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनके साथ नेक ब्यवहार किया. उनकी साहिबज़ादी को अपने निकाह में लिया. इसका नतीजा यह हुआ कि वह महबूब में सच्चे और जाँ निसार हो गए.

वेशक जो ज़िन्न से मुक्तिर हुए^(२०) जब वह उनके पास आया उनकी खराबी का कुछ हाल न पूछ और वेशक यह इज़्जत वाली किताब है^(२१) (४१) वातिल को उसकी तरफ़ राह नहीं न उसके आगे से न उसके पीछे से^(२२) उतारा हुआ है हिकमत (बोध) वाले सब खूबियों सराहे का^(४२) तुम से न फ़रमाया जाएगा^(२३) मगर वही जो तुम से अगले रसूलों को फ़रमाया गया, कि वेशक तुम्हारा रव वख़्शिश वाला^(२४) और दर्दनाक अज़ाब वाला है^(२५) (४३) और अगर हम इसे अजमी ज़बान का कुरआन करते^(२६) तो ज़रूर कहते कि इसकी आयतें क्यों न खोली गई^(२७) क्या किताब अजमी और नबी अरबी^(२८) तुम फ़रमाओ वह^(२९) ईमान वालों के लिये हिदायत और शिफ़ा है^(३०) और वो जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में टेंट (रुई) है^(३१) और वह उनपर अन्धापन है^(३२) मानो वो दूर जगह से पुकारे जाते हैं^(३३) (४४)

छटा रूकू

और वेशक हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई^(३४) तो उसमें इस्तिलाफ़ किया गया^(३५) और अगर एक बात तुम्हारे रव की तरफ़ से गुज़र न चुकी होती^(३६) तो ज़भी उनका फ़ैसला हो जाता^(३७) और वेशक वो^(३८) ज़रूर उसकी तरफ़ से एक धोखा डालने वाले शक में हैं^(३९) जो नेकी करे वह अपने भले को ओर जो बुराई करे तो अपने बुरे को, और तुम्हारा रव बन्दों पर जुल्म नहीं करता^(४०) (४६)

الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ تَنْزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَبِيبٍ ۝ مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِن قَبْلِكَ ۝ إِنْ رَّبُّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ ۝ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ۝ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَجَبِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۚ أَعْجَبِيٌّ وَاعْرَبِيٌّ ۚ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۚ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِيهِ إِذَا تُنْزِلُ فِيهِ آيَاتُهُمْ يَقُولُوا سِحْرٌ عَرَبِيٌّ ۚ أُولَٰئِكَ يَتْلَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ ۚ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَفُضِّلَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ۝ مَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَالَمِينَ ۝

- (६) यानी बंदियों को नेकियों से दफ़ा करने की ख़सलत.
- (७) यानी शैतान तुझ को बुराइयों पर उभारे और इस नेक ख़सलत से और इसके अलावा और नेकियों से फेर दे.
- (८) उसके शर से और अपनी नेकियों पर क़ायम रह, शैतान की राह न इस्तिफ़ार कर, अल्लाह तआला तेरी मदद फ़रमाएगा.
- (९) जो उसकी कुदरत और हिकमत ओर उसके रव होने और एक होने को प्रमाणित करते हैं.
- (१०) क्योंकि वो मज़लूक हैं और ख़ालिक के हुक्म के तहत हैं और जो ऐसा हो वह इबादत का मुस्तहिक नहीं हो सकता.
- (११) वही सज़्दा और इबादत का मुस्तहिक है.
- (१२) सिर्फ़ अल्लाह को सज़्दा करने से.
- (१३) फ़रिशते वो.
- (१४) सूखी कि उसमें सब्जे का नामो निशान नहीं.
- (१५) बारिश उतारी.
- (१६) और आयतों की व्याख्या में सेहत व इस्तिफ़ामत से मुंह फेरते हैं.
- (१७) हम उन्हें इसकी सज़ा देंगे.
- (१८) यानी काफ़िर, अल्लाह को न मानने वाले.
- (१९) सब्जे अक्कीदे और ईमान वाला, वेशक वही बेहतर है.
- (२०) यानी कुरआने करीम से और उन्हीं ने उसमें बुराइयाँ निकालीं.
- (२१) बेमिसाल और अद्वितीय, जिसकी एक सूरत की तरह बनाने से सारी सृष्टि लाचार है.
- (२२) यानी किसी तरह और किसी तरीक़े से भी वातिल उस तक राह नहीं पा सकता. वह परिवर्तन और कमी बेसी से मेहफूज़ है. शैतान उसमें बढ़ाने घटाने की कुदरत नहीं रखता.
- (२३) अल्लाह तआला की तरफ़ से.
- (२४) अपने नबियों के लिये और उन पर ईमान लाने वालों के लिये.
- (२५) नबियों के दुश्मनों और झुटलाने वालों के लिये.
- (२६) जैसा कि ग़े काफ़िर ऐतिराज़ के तौर पर कहते हैं कि यह कुरआन अजमी ज़बान में क्यों न उतरा.

- (२७) और अरबी ज़बान में बयान न की गई कि हम समझ सकते।
- (२८) यानी किताब नबी की ज़बान के ख़िलाफ़ क्यों उतरी। हासिल यह है कि कुरआने पाक अज़मी ज़बान में होता तो ऐतिराज़ करते, अरबी में आया तो ऐतिराज़ करने लगे। बात यह है कि घुरी ख़सलत वाले के लिये हज़ार बहाने। ऐसे ऐतिराज़ सच्चाई की तलब करने वाले की शान के लायक नहीं।
- (२९) कुरआन शरीफ़।
- (३०) कि हक़ की राह बताता है, गुमराही से बचाता है, जिहालत और शक़ वगैरह दिल की बीमारियों से शिफ़ा देता है और शारीरिक रोगों के लिये भी इसका पढ़कर दम करना बीमारी के लिये असर कारक है।
- (३१) कि वो कुरआने पाक सुनने की नेअमत से मेहरूम हैं।
- (३२) कि शक़ और शुबह की अंधेरियों में जकड़े हुए हैं।
- (३३) यानी वो अपने इन्कार से इस हालत को पहुँच गए हैं जैसा कि किसी को दूर से पुकारा जाए तो वह पुकारने वाले की बात न सुने, न समझे।

सूरए हामीम सज्दा - छटा रूकू

- (१) यानी पवित्र तौरात।
- (२) कुछ ने उसको माना और कुछ ने न माना। कुछ ने इसकी तस्दीक़ की और कुछ ने इसे झुटलाया।
- (३) यानी हिस्साव और जज़ा को क़यामत तक विलम्बित न फ़रमा दिया होता।
- (४) और दुनिया ही में उन्हें उसकी सज़ा दे दी जाती।
- (५) यानी अल्लाह की किताब को झुटलाने वाले।

पारा चौबीस समाप्त

पच्चीसवां पारा - इलैहि युरहु

सूरए हामीम सज्दा

(छटा रूकू जारी)

क्रयामत के इल्म का उसी पर हवाला है^(६) और कोई फल अपने गलाफ़ से नहीं निकलता और न किसी मादा को पेट रहे और न जने मगर उसके इल्म से^(७) और जिस दिन उन्हें निदा फ़रमाएगा^(८) कहाँ हैं मेरे शरीक^(९) कहेंगे हम तुझसे कह चुके कि हम में कोई गवाह नहीं^(१०) (४७) और गुम गया उनसे जिसे पहले पूजते थे^(११) और समझ लिये कि उन्हें कहीं^(१२) भागने की जगह नहीं^(१३) आदमी भलाई मांगने से नहीं उकताता^(१४) और कोई बुराई पहुंचे^(१५) तो नाउम्मीद आस टूटा^(१६) (४९) और अगर हम उसे कुछ अपनी रहमत का मज़ा दें^(१७) उस तकलीफ़ के बाद जो उसे पहुंची थी तो कहेगा यह तो मेरी है^(१८) और मेरे गुमान में क्रयामत क़ायम न होगी और अगर^(१९) मैं रब की तरफ़ लौटाया भी गया तो ज़रूर मेरे लिए उसके पास भी ख़ूबी ही है^(२०) तो ज़रूर हम बता देंगे काफ़िरों को जो उन्होंने ने किया^(२१) और ज़रूर उन्हें गाढ़ा अज़ाब चखाएंगे^(२२) (५०) और जब हम आदमी पर एहसान करते हैं तो मुंह फेर लेता है^(२३) और अपनी तरफ़ दूर हट जाता है^(२४) और जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है^(२५) तो चौड़ी बुआ वाला है^(२६) (५१) तुम फ़रमाओ^(२७)

الْبَيْدُ يَذُكُّ عِلْمَ السَّاعَةِ وَمَا تَحْشُرُهُمْ مِنْ نِّمَارَاتٍ
مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أَنْثَى وَلَا تَضْمُ إِلَّا
بِعِلْمِهِ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِيَ ۖ قَالُوا
أَذْنُكَ ۖ مَا مَعَنَا مِنْ شَهِيدٍ ۖ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا
كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ وَطُوتُوا مَا لَهُمْ مِّنْ
مَّجْبُئٍ ۖ لَا يَسْمِعُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ
وَإِنَّ مَسَّهُ الشَّرُّ فَيَكُونُ قَنُوطٌ ۖ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ
رَحْمَةً مِنَّا مِن بَعْدِ ضَرَاءٍ مِّثْنَهُ لَيَقُولَنَّ هَذَا
لِيَ ۖ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ رُجِعْتُ إِلَى
رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْنَى ۖ فَكَفَنَّا الَّذِينَ كَفَرُوا
بِمَا عَمِلُوا ۖ وَكَفَنَّا يَقْنَهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۖ
وَإِذَا أُنْعِمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْزَّضَ وَنَا بِجَانِبِهِ
وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَوَدَّ دُعَاءَ عَرِيضٍ ۖ قُلْ

مَنْزِل

सूरए हामीम सज्दा - छटा रूकू जारी

- (६) तो जिससे क्रयामत का वक़्त पूछा जाए उसका लाज़िम है कि कहे, अल्लाह तआला जानने वाला है।
(७) यानी अल्लाह तआला फल के गलाफ़ से निकलने से पहले उसकी हालतों को जानता है, और मादा के गर्भ को और उसकी घड़ियों को और पैदायश के वक़्त को और उसके बुरे और अच्छे और नर व मादा होने सब को जानता है। इसका इल्म भी उसी की तरफ़ हवाले करना चाहिये। अगर यह ऐतिराज़ किया जाए कि अल्लाह के वली और छुपी बातें जानने वाले लोग अक्सर इन बातों की ख़बर देते हैं और वह दुरुस्त साबित होती हैं वल्कि कभी ज्योतिषी और तांत्रिक भी ख़बर देते हैं। इसका जवाब यह है कि ज्योतिषियों और तांत्रिकों की बातें मात्र अटकल होती हैं जो बहुधा ग़लत हो जाती हैं, वह इल्म ही नहीं, बेहकीक़्त बातें हैं। और अल्लाह के वलियों की ख़बरें बेशक़ सही होती हैं और वो इल्म से फ़रमाते हैं और यह इल्म उनका ज़ाती नहीं, अल्लाह तआला का अता फ़रमाया हुआ है तो हकीक़त में यह उसी का इल्म हुआ, ग़ैर का नहीं। (स्वाज़िन)
(८) यानी अल्लाह तआला मुश्क़ों से फ़रमाएगा कि ---
(९) जो तुमने दुनिया में घड़ रखे थे जिन्हें तुम पूजा करते थे। इसके जवाब में मुश्क़ लोग ---
(१०) जो आज यह झूठी गवाही दे कि तेरा कोई शरीक है यानी हम सब ईमान वाले एके ख़ुदा में यक़ीन रखने वाले हैं। ये मुश्क़ लोग अज़ाब देखकर कहेंगे और अपने बुतों से बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे।
(११) दुनिया में, यानी बुत।
(१२) अल्लाह के अज़ाब से बचने और।
(१३) हमेशा अल्लाह तआला से माल और ख़ुशहाली और तंदुरुस्ती मांगता रहता है।
(१४) यानी कोई सख़्ती और बला और रोज़ी की तंगी।
(१५) अल्लाह तआला के फ़रज़ और रहमत से निराश हो जाता है। यह और इसके बाद जो ज़िक्र फ़रमाया जाता है वह काफ़िर का हाल है। मूमिन अल्लाह तआला की रहमत से मायूस नहीं होते।
(१६) संहत व सलामती और माल दौलत अता फ़रमाकर।
(१७) ख़ालिस मेरा हक़ है, मैं अपने अमल से इसका मुस्तहक़ हूँ।
(१८) बिलफ़र्ज़ जैसा कि मुसलमान कहते हैं।

भला बताओ अगर यह कुरआन अल्लाह के पास से है^(२०) फिर तुम इसके मुन्किर हुए तो उससे बहकर गुमराह कौन जो दूर की ज़िद में है^(२१) (५२) अभी हम उन्हें दिखाएंगे अपनी आयतें दुनिया भर में^(२२) और खुद उनके आपे में^(२३) यहाँ तक कि उनपर खुल जाए कि बेशक वह हक है^(२४) क्या तुम्हारे रब का हर चीज़ पर गवाह होना काफी नहीं^(२५) सुनो उन्हें ज़रूर अपने रब से मिलने में शक है^(२६) सुनो वह हर चीज़ को घेरे है^(२७) (५४)

४२ - सूरए शूरा

सूरए शूरा मक्का में उतरी, इसमें ५३ आयतें, ५ रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) हा-मीम (१) ऐन सीन काफ़ (२) यूँही वही फ़रमाता है तुम्हारी तरफ़^(३) और तुमसे अगलों की तरफ़^(४) अल्लाह इज़ज़त व हिकमत वाला (३) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और वही बलन्दी व अज़मत वाला है (४) करीब होता है कि आसमान अपने ऊपर से शक़ हो जाए^(५) और फ़रिश्ते अपने रब की तारीफ़

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) हा-मीम (१) ऐन सीन काफ़ (२) यूँही वही फ़रमाता है तुम्हारी तरफ़^(३) और तुमसे अगलों की तरफ़^(४) अल्लाह इज़ज़त व हिकमत वाला (३) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और वही बलन्दी व अज़मत वाला है (४) करीब होता है कि आसमान अपने ऊपर से शक़ हो जाए^(५) और फ़रिश्ते अपने रब की तारीफ़

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) हा-मीम (१) ऐन सीन काफ़ (२) यूँही वही फ़रमाता है तुम्हारी तरफ़^(३) और तुमसे अगलों की तरफ़^(४) अल्लाह इज़ज़त व हिकमत वाला (३) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और वही बलन्दी व अज़मत वाला है (४) करीब होता है कि आसमान अपने ऊपर से शक़ हो जाए^(५) और फ़रिश्ते अपने रब की तारीफ़

- (१९) यानी वहाँ भी मेरे लिए दुनिया की तरह पेश और ग़हत, इज़ज़त और बुजुर्गी है।
 (२०) यानी उनके कुकर्म और उनके दुष्कर्मों के परिणाम, और जिस अज़ाब के वो मुस्तहक़ हैं, उससे उन्हें आगाह कर देंगे।
 (२१) यानी अतपन्न सज़ा।
 (२२) और इस एहसास का शुक्र बजा नहीं लता और इस नेअमत पर इतराता है और नेअमत देने वाले परवर्दिगार को भूल जाता है।
 (२३) अल्लाहा की याद से घमण्ड करता है।
 (२४) किसी क्रिस्म की परेशानी, बीमारी या नादारी वगैरह पेश आती है।
 (२५) ख़ूब दुआएं करता है, रोता है, गिड़गिड़ता है, और लगातार दुआएं मांगे जाता है।
 (२६) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम, मक्के के काफ़िरों से।
 (२७) जैसा कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम फ़रमाते हैं और साफ़ ख़ुली दलीलें साबित करती हैं।
 (२८) सच्चाई का विरोध करता है।
 (२९) आसमान व ज़मीन के घेरो में। सूरज चांद सितारे पेड़ पौधे जानवर, ये सब उसकी कुदरत और हिकमत को प्रमाणित करने वाले हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इन आयतों से मुग़ाद गुज़री हुई उम्माओं की उजड़ी हुई वस्तियाँ हैं जिनसे नबियों को झुटलाने वालों का हाल मालूम होता है। कुछ मुफ़सिरो ने फ़रमाया कि इन निशानियों से पूर्व और पश्चिम की वो विजयें मुग़ाद हैं जो अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम और उनके साथियों को बहुत जल्द अता फ़रमाते वाला है।
 (३०) उनकी हस्तियों में लाखों अनोखी दारीकियाँ और अनगिनत चमत्कार हैं। या ये मानी हैं कि बद्र में काफ़िर मग़लूब व मक़हूर करके खुद उनके अपने हालात में अपनी निशानियों का अवलोकन करा दिया। या ये मानी हैं कि मक्का फ़न्ह फ़रमाकर उनमें अपनी निशानियाँ ज़ाहिर कर देंगे।
 (३१) यानी इस्लाम और कुरआन की सच्चाई उन पर ज़ाहिर हो जाए।
 (३२) क्योंकि वो दोबारा उठाए जाने और क़यामत को नहीं मानते।
 (३३) कोई चीज़ उसके इल्म के घेरे से बाहर नहीं और उसकी मालूमात असीम है।

४२ - सूरए शूरा - पहला रूकू

(१) सूरए शूरा जमहूर के तज़वीक़ मक्क़ा सूरत है और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा के एक क़ौल में इसकी चार आयतें मदीनए तैय्यिबह में उतरीं जिनमें पहली "कुल ला असअलुकुम अलैहे अजरन" है। इस सूरत में पाँच रूकू, चिपन आयतें, आठ मौ

के साथ उसकी पाकी बोलते और ज़मीन वालों के लिये माफ़ी मांगते हैं, (५) सुन लो वेशक अल्लाह ही बख़्शने वाला मेहरबान है (५) और जिन्होंने अल्लाह के सिवा और वाली बना रखे हैं (६) वो अल्लाह की निगाह में हैं (६) और तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं (६) और यूँही हमने तुम्हारी तरफ़ अरबी कुरआन वही भेजा कि तुम डराओ सब शहरों की अस्ल मक्का वालों को और जितने उसके गिर्द हैं (७) और तुम डराओ इकट्ठे होने के दिन से जिसमें कुछ शक नहीं (७) एक गिरोह जन्नत में है और एक गिरोह दोज़ाख़ में (७) और अल्लाह चाहता तो उन सब को एक दिन पर कर देता लेकिन अल्लाह अपनी रहमत में लेता है जिसे चाहे (११) और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न मददगार (१२) (८) क्या अल्लाह के सिवा और वाली ठहरा लिये हैं (१३) तो अल्लाह ही वाली है और वह मुद्दे जिलाएगा और वह सब कुछ कर सकता है (१४) (९)

दूसरा रूकू

तुम जिस बात में (१) इख़िलाफ़ करो तो उसका फैसला अल्लाह के सुपुर्द है (२) यह है अल्लाह मेरा रव मैं ने उसपर भरोसा किया और मैं उसकी तरफ़ रूजू लाता हूँ (३) (१०)

وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ اللَّهَ
هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ
دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيفٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا أَنْتَ
عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝ وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ
قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا
وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ
وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ۝ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً
وَاحِدَةً وَلَكِنْ يَدْخُلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ
وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ أَمْ
اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۚ قَالَ هُوَ الْوَلِيُّ
وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ۖ
ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

مَزَل

कलिमे और तीन हजार पाँच सौ अठ्ठासी अक्षर हैं.

(२) गैबी ख़बरें. (ख़ाज़िन)

(३) नवियों से बही फ़रमा चुका.

(४) अल्लाह तआला की महानता और उसकी ऊँची शान से.

(५) यानी ईमानदारों के लिये, क्योंकि काफ़िर इस लायक नहीं हैं कि फ़रिश्ते उनके लिये माफ़ी चाहें. यह हो सकता है कि काफ़िरों के लिये यह हुआ करें कि उन्हें ईमान देकर उनकी माफ़िरत फ़रमा.

(६) यानी बुत, जिनको वो पूजते और मअबूद समझते हैं.

(७) उनकी कहनी और करनी उसके सामने हैं और वह उन्हें बदला देगा.

(८) तुम से उनके कर्मों की पकड़ नहीं की जाएगी.

(९) यानी सारे जगत के लोग उन सब को.

(१०) यानी क़यामत के दिन से डराओ जिसमें अल्लाह तआला अगले पिछ्लों और आसमान व ज़मीन वालों सब को जमा फ़रमाएगा और इस इकट्ठा होने के बाद फिर सब बिखर जाएंगे.

(११) उसको इस्लाम की तौफ़ीक़ देता है.

(१२) यानी काफ़िरों को कोई अज़ाब से बचाने वाला नहीं.

(१३) यानी काफ़िरों ने अल्लाह तआला को छोड़ कर बुतों का अपना वाली बना लिया है, यह भलत है.

(१४) तो उसी को वाली बनाना सज़ावार है.

सूरए शूरा - दूसरा रूकू

(१) दीन की बातों में से, काफ़िरों के साथ.

(२) क़यामत के रोज़ तुम्हारे बीच फैसला फ़रमाएगा, तुम उनसे कहो

(३) हर बात हर काम में.

(४) यानी तुम्हारी ज़िम्मा में से.

आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला तुम्हारे लिये तुम्हीं में से^(५) जोड़े बनाए और नर मादा चौपाए, इससे^(६) तुम्हारी नस्ल फैलाता है, उस जैसा कोई नहीं और वही सुनता देखता है^(७) उसी के लिये हैं आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ^(८) रोज़ी वसीअ करता है जिस के लिये चाहे और तंग फ़रमाता है^(९) बेशक वह सब कुछ जानता है^(१०) तुम्हारे लिये दीन की वह राह डाली जिसका हुक्म उसने नूह को दिया^(११) और जो हमने तुम्हारी तरफ़ वही की^(१२) और जिसका हुक्म हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा को दिया^(१३) कि दीन ठीके रखो^(१४) और उसमें फूट न डालो^(१५) मुश्रिकों पर बहुत ही भारी है वह^(१६) जिसकी तरफ़ तुम उन्हें बुलाते हो, और अल्लाह अपने क़रीब के लिये चुन लेता है जिसे चाहे^(१७) और अपनी तरफ़ राह देता है उसे जो रूजू लाए^(१८) ^(१३) और उन्होंने फूट न डाली मगर बाद इसके कि उन्हें इल्म आ चुका था^(१९) आपस के हसद से^(२०) और अगर तुम्हारे रब की एक बात न गुज़र चुकी होती^(२१) एक निश्चित मीआद तक^(२२) तो कब का उनमें फैसला कर दिया

فَاَطْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَعَلْ لَكُمْ مِنْ
اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَمِنْ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا
يَذَرُوْكُمْ فِيْهِ وَلَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ
الْبَصِيْرُ ۝ لَهُ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝ شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّيْنِ مَا وَضَعَ بِهٖ
نُوحًا وَّ الَّذِي اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖ
اِبْرٰهِيْمَ وَمُوسٰى وَعِيسٰى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ
وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ۚ كَبُرَ عَلٰى الْمُشْرِكِيْنَ مَا
تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ۚ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَاءُ
وَيَهْدِيْ اِلَيْهِ مَنْ يُنٰبِ ۚ وَمَا تَفَرَّقُوْا اِلَّا
مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعِيًّا ۚ بَيْنَهُمْ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ اِلَّا اَجَلَ مُّسَمًّى لَّفُضِّضَ

مَنْزِل

- (५) यानी इस जोड़ी से. (ख़ाज़िन)
- (६) मुराद यह है कि आसमान ज़मीन के सारे ख़ज़ानों की कुंजियाँ चाहे मेंह के ख़ज़ाने हों या रिज़क के.
- (७) जिसके लिये चाहे, वह मालिक है. रिज़क की कुंजियाँ उसके दस्ते कुदरत में हैं.
- (८) नूह अलैहिस्सलाम शरीअत वाले नबियों में सबसे पहले नबी हैं.
- (९) ये नबियों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.
- (१०) मानी ये हैं कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से आप तक ऐ सैयदे अम्बिया जितने नबी हुए सबके लिये हमने दीन की एक ही राह निर्धारित की है जिसमें वां सब सहमत हैं. वह राह यह है.
- (११) दीन से मुराद इस्लाम है. मानी ये हैं कि अल्लाह तौहीद और उसकी फ़रमाँवरदारी और उसपर उसके रसूलों पर और उसकी किताबों पर और बदले के दिन पर और बाक़ी दीन की तमाम ज़रूरतों पर ईमान लाना वाजिब करे, कि ये बातें सारे नबियों की उम्मतों के लिये एक सी ज़रूरी हैं.
- (१२) हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि जमाअत रहमत और फ़ुर्क़त अज़ाब है. ख़ुलासा यह है कि दीन के रसूलों में तमाम मुसलमान चाहे वो किसी एहद या किसी उम्मत के हों, एक बराबर हैं उनमें कोई मतभेद या विरोध नहीं, अलबत्ता आदेशों में उम्मतें अपने हालाँ और विशेषताओं के ऐतिदार से अलग अलग हैं. चुनाँत्वे अल्लाह तआला ने फ़रमाया "लिकुल्लिन जअलना मिनकुम शिरअतौ व मिन्हाजन" यानी हमने सबके लिये एक एक शरीअत और रास्ता रखा. (सूरए माइदह, आयत ४८)
- (१३) यानी बुतों को छोड़ना और तौहीद इस्तियार करना.
- (१४) अपने बन्दों में से उसी को तौफीक देता है.
- (१५) और उसकी इताअत क़बूल करे.
- (१६) यानी एहले किताब ने अपने नबियों के बाद जो दीन में इस्तिलाफ़ डाला कि किसी ने तौहीद इस्तियार का, कोई काफ़िर हो गया. वो इससे पहले जान चुके थे कि इस तरह इस्तिलाफ़ करना और सम्प्रदायों में बट जाना गुमराही है, फिर भी उन्होंने यह सब कुछ किया.
- (१७) और रियासत और नाहक की हुक्मत के शीक में.
- (१८) अज़ाब में देरी फ़रमाने की.
- (१९) यानी क़यामत के दिन तक.
- (२०) काफ़िरों पर, दुनिया में अज़ाब उतार कर.

होता^(२०) और वेशक वो जो उनके बाद किताब के वारिस हुए^(२१) वो उससे एक धोखा डालने वाले शक में हैं^(२२) (१४) तो उसी लिये बुलाओ^(२३) और डटे रहो^(२४) जैसा तुम्हें हुक्म हुआ है, और उनकी ख्वाहिशों पर न चलो, और कहो कि मैं ईमान लाया उसपर जो कोई किताब अल्लाह ने उतारी^(२५) और मुझे हुक्म है कि मैं तुम में इन्साफ़ करूँ^(२६) अल्लाह हमारा और तुम्हारा सब का रब है^(२७) हमारे लिये हमारा अमल और तुम्हारे लिये तुम्हारा किया^(२८) कोई हुज्जत नहीं हममें और तुममें^(२९) अल्लाह हम सब को जमा करेगा^(३०) और उसी की तरफ़ फिरना है^(३१) और वो जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं बाद इसके कि मुसलमान उसकी दावत कुबूल कर चुके हैं^(३२) उनकी दलील मेहज़ बेसवात है उनके रब के पास और उनपर ग़ज़ब है^(३३) और उनके लिये सख्त अज़ाब है^(३४) (१६) अल्लाह है जिसने हक़ के साथ किताब उतारी^(३५) और इन्साफ़ की तराजू^(३६) और तुम क्या जानो शायद क़यामत करीब ही हो^(३७) (१७) इसकी जल्दी मचाते रहे हैं वो जो उस पर ईमान नहीं रखते^(३८) और जिन्हें उसपर ईमान है वो उस से डर रहे हैं और जानते हैं कि वेशक वह हक़ है, सुनते हो वेशक जो क़यामत में शक

بَيْنَهُمْ وَأَنَّ الَّذِينَ أَوْرَثُوا الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِهِمْ
لَكُنْفَىٰ شَرٌّ مِّنْهُ مُرِيبٌ ۖ فَلَوْلَا لَكُمُ فَادَعُ
وَأَسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَقُلْ
أَمِنتُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيَّ مِنْ كِتَابِ ۖ وَأُمِرْتُ
لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۖ لَنَا أَعْمَالُنَا
وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۖ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ
يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۖ وَاللَّهُ الْمَصِيرُ ۚ وَالَّذِينَ يُمَاجُونَ
فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتَجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ
دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيدٌ ۚ اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ
وَالْبَيِّنَاتِ ۖ وَمَا يَذُرِّيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ
قَرِيبٌ ۚ كَيْسَعَجَلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا
وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَأَوْ يَعْلَمُونَ أَنَّهَا

مَعْرُون

(२१) यानी यहूदी और ईसाई.

(२२) यानी अपनी किताब पर मज़बूत ईमान नहीं रखते. या ये मानी हैं कि वो क़ुरआन की तरफ़ से या सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ से शक में पड़े हैं.

(२३) यानी उन काफ़िरो के इस इन्जिल्लाफ़ और बिख़र जाने की वजह से उन्हें तौहीद और मिल्लते हनीफ़िया पर सहमत होने की दावत दी.

(२४) दीन पर और दीन की दावत देने पर.

(२५) यानी अल्लाह तआला की तमाम किताबों पर क्योंकि विरोधी कुछ पर इमान लाते थे और कुछ से इन्कार करते थे.

(२६) सारी चीज़ों में, और सारे हालात में, और हर फ़ैसले में.

(२७) और हम सब उसके बन्दे.

(२८) हर एक अपने अमल की जज़ा पाएगा.

(२९) क्योंकि सच्चाई ज़ाहिर हो चुकी.

(३०) क़यामत के दिन.

(३१) मुराद उन झगड़ने वालों से यहूदी हैं. वो चाहते थे कि मुसलमानों को फिर कुफ़्र की तरफ़ लौटाएं. इसलिये झगड़ा करते थे और कहते थे कि हमारा दीन पुराना, हमारी किताब पुरानी, नबी पहले. हम तुमसे बेहतर हैं.

(३२) उनके कुफ़्र के कारण.

(३३) आग़्रिस्त में.

(३४) यानी क़ुरआने पाक, जो तरह तरह की दलीलों और आदेशों पर आधारित है.

(३५) यानी उसने अपनी उतारी हुई किताबों में न्याय का निर्देश दिया है. कुछ मुफ़ससिरो ने कहा है कि मीज़ान से मुराद सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पवित्र ज्ञात है.

(३६) नबीय करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने क़यामत का ज़िक्र फ़रमाया तो मुथ़िकों ने झुटलाने के अन्दाज़ में कहा कि क़यामत कब होगी. इसके जवाब में यह आयत उतरी.

(३७) और ये गुमान करते हैं कि क़यामत आने वाली ही नहीं, इसी लिये हंसी उड़ाने के लिये जल्दी मचाते हैं.

(३८) बेशुमार एहसान करता है, नैकियों पर भी और बदियों पर भी, यहाँ तक कि बन्दे गुनाहों में मशगूल रहते हैं और वह उन्हें भूख

करते हैं ज़रूर दूर की गुमराही में हैं (१८) अल्लाह अपने बन्दों पर लुत्फ (कृपा) फ़रमाता है (१९) जिसे चाहे सौजी देता है (२०) और वही कुब्त व इज़ज़त वाला है (२१)

तीसरा रूकू

जो आखिरत की खेती चाहे (१) हम उसके लिये उसकी खेती बढ़ाएँ (२) और जो दुनिया की खेती चाहे (३) हम उसे उसमें से कुछ देंगे (४) और आखिरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं (५) (२०) या उनके लिये कुछ शरीक हैं (६) जिन्होंने उन लिये (७) वह दीन निकाल दिया है (८) कि अल्लाह ने उसकी इजाज़त न दी (९) और अगर एक फ़सले का वादा न होता (१०) तो यही उनमें फ़ैसला कर दिया जाता (११) और बेशक ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अज़ाब है (१२) (२१) तुम ज़ालिमों को देखोगे कि अपनी कमाइयों से सहमे हुए होंगे (१३) और वो उनपर पड़ कर रहेंगे (१४) और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वो जन्नत की फुलवारियों में हैं, उनके लिये उनके रब के पास है जो चाहें वही बड़ा फ़ज़ल है (२२) यह है वह जिसकी खुशखबरी देता है अल्लाह अपने बन्दों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये, तुम फ़रमाओ मैं इस (२३)

الْحَقُّ ۚ اَلَا اِنَّ الَّذِيْنَ يَبَايُؤُنَ فِي السَّاعَةِ	الشُّرَا	٧٤٢	التَّوْبَةِ
لَعَنَى صَلَّى بَعِيْدٍ ۝ اَللّٰهُ لَطِيْفٌ بِعِبَادِهِ ۝ يَرْزُقُ			
مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝ مَنْ كَانَ			
يُرِيْدُ حَرْكَ الْاِحْرَةِ يَرْذُكَ فِي حَرْثِهِ ۚ وَمَنْ			
كَانَ يُرِيْدُ حَرْكَ الدُّنْيَا تُؤْتِيْهِ مِنْهَا ۚ وَمَا لَهُ فِي			
الْاِحْرَةِ مِنْ تَصِيْبٍ ۝ اَمْ لَهُمْ شُرَكَاۗءُ شَرَعُوْا			
لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهٖ اللّٰهُ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ			
الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَاِنَّ الظَّالِمِيْنَ لَهُمْ			
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ تَرٰۤى الظَّالِمِيْنَ مُسْتَقْبِلِيْنَ مِّمَّا			
كَسَبُوْا وَهُوَ وَاِقَعٌ بِهِمْ ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا			
الصَّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضَتٍ الْحَنَّتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَاءُوْنَ			
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝ ذٰلِكَ الَّذِي			
يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهٗ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحٰتِ			
مَقْرٰن			

से हलाक नहीं करता।

(२१) और पेश की फ़राख़ी अता फ़रमाता है, मूिम को भी और काफ़िर को भी, अपनी हिकमत के तकाज़े के मुताबिक़. हदीस शरीफ़ में है अल्लाह तआला फ़रमाता है मेरे कुछ मूिम बन्दे ऐसे हैं कि तबतग़ी उनकी कुब्त और ईमान का कारण है, अगर मैं उन्हें फ़कीर मोहताज कर दू तो उनके अक्कीदे फ़ासिद हो जाएं और कुछ बन्दे ऐसे हैं कि तंगी और मोहताजी उनके ईमान की कुब्त का कारण है, अगर मैं उन्हें ग़नी मालदार कर दू तो उनके अक्कीदे ख़राब हो जाएं.

सूरए शूरा - तीसरा रूकू

- (१) यानी जिसको अपन कर्मों से आखिरत का नज़्म चाहिये.
- (२) उसको नेकियों की तौफ़ीक़ देकर और उनके लिये ख़ैरात और ताअतों की राहें सरल करके और उसकी नेकियों का मचाव बढ़ाकर.
- (३) यानी जिसका अमल केवल दुनिया हासिल करने के लिये हो और वह आखिरत पर ईमान न रखता हो. (मदारीक़)
- (४) यानी दुनिया में जितना उसके लिये मुक़्दर किया है.
- (५) क्योंकि उसने आखिरत के लिये अमल किया ही नहीं.
- (६) यानी ये हैं कि क्या मक्के के काफ़िर उस दिन को कुबूल करते हैं जो अल्लाह तआला ने उनके लिये मुक़्दर फ़रमाया या उनके कुछ ऐसे साथी हैं शैतान वग़ैरह.
- (७) कुफ़री दीनों में से.
- (८) जो शिर्क और दोबारा उठाए जाने के इनकार पर आधारित है.
- (९) यानी वह अल्लाह के दीन के ख़िलाफ़ है.
- (१०) और जज़ा के लिये क़्यामत का दिन निश्चित न फ़रमा दिया गया होता.
- (११) और दुनिया ही में झुटलाने वालों को अज़ाब में जकड़ दिया जाता.
- (१२) आखिरत में, और ज़ालिमों से मुराद यहाँ काफ़िर हैं.
- (१३) यानी कुछ और बुरे कर्मों से जो उन्होंने दुनिया में कमाए थे, इस अन्देश से कि अब उनकी सज़ा मिलने वाली है.
- (१४) ज़रूर उनसे किसी तरह बच नहीं सकते. डरें या न डरें.
- (१५) मिसालत की तबलीग़ और हिदायत व उपदेश.

पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता^(१६) मगर कराबत की महबूत,^(१७) और जो नेक काम करे^(१८) हम उसके लिये उसमें और खूबी बढ़ाएं, वेशक अल्लाह वाइश्ने वाला कद्र फरमाने वाला है^(२३) या^(१९) ये कहते हैं कि उन्होंने अल्लाह पर झूठ बांध लिया^(२०) और अल्लाह चाहे तो तुम्हारे दिल पर अपनी रहमत व हिफाजत की मोहर फरमा दे^(२१) और मिटाता है बातिल को^(२२) और हक को साबित फरमाता है अपनी बातों से^(२३) वेशक वह दिलों की बातें जानता है^(२४) और वही है जो अपने बन्दों की तौबह कुबूल फरमाता है और गुनाहों से दरगुजर (क्षमा) फरमाता है^(२५) और जानता है जो कुछ तुम करते हो^(२६) और दुआ कुबूल फरमाता है उनकी जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उन्हें अपने फजल से और इनआम देता है^(२७) और काफ़िरो के लिये सख्त अज़ाब है^(२८) और अगर अल्लाह अपने सब बन्दों का रिज़क वसीअ कर देता तो ज़रूर ज़मीन में फ़साद फैलाते^(२९) लेकिन वह अन्दाज़े से उतारता है जितना चाहे, वेशक वह अपने बन्दों से खबरदार है^(३०)^(२७) उन्हें देखता है और वही है कि मेंह उतारता है उनके नाउम्मीद होने पर और अपनी रहमत फैलाता है^(३१) और वही काम बनाने वाला सब खूबियों सराहा^(३२) और उसकी निशानियों

قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ
وَمَنْ يَفْقَرَفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ شَكُورٌ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
قَالَ يَتَشَأُ اللَّهُ يُخْتَلَمَ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۖ وَبِئْسَ اللَّهُ
الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكُلِّ لَيْتَةٍ إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِدَايَاتِ الصُّدُورِ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ
عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا
تَكْفُرُونَ ۖ وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۖ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ
لَبَغَا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنْزِلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ ۖ
إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ۖ وَهُوَ الَّذِي يُنْزِلُ
الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ ۖ وَهُوَ

مَنْزِلًا

(१६) और सारे बन्धियों का यही तरीका है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि जब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीनए तैयिबह तशरीफ़ फरमा हुए और अन्सार ने देखा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातो वसल्लाम के ज़िम्मे खर्चें बहुत हैं और माल कुछ भी नहीं है तो उन्होंने आपस में सलाह की और हुज़ूर के अधिकार और एहसान याद करके हुज़ूर की ख़िदमत में पेश करने के लिये बहुत सा माल जमा किया और उसको लेकर ख़िदमत अक़दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हुज़ूर की बदौलत हमें हिदायत हुई, हम ने गुमराही से निजात पाई. हम देखते हैं कि हुज़ूर के खर्चें बहुत ज्यादा हैं इसलिये हम ये माल सरकार की ख़िदमत में भेंट के लिये लाए हैं, कुबूल फरमाकर हमारी इज़ज़त बढ़ाई जाए. इसपर यह आयत उतरी और हुज़ूर ने वो माल वापस फरमा दिये.

(१७) तुम पर लाज़िम हैं, क्योंकि मुसलमानों के बीच भाईचारा, प्रेम वाजिब है जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया “अल मूमिनुना वलमूमिनातो वअदुहुम औलियाओ वअदिन” यानी और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं. (सूरा तौबह, आयत ७१) और हदीस शरीफ़ में है कि मुसलमान एक इमारत की तरह हैं जिसका हर एक हिस्सा दूसरे हिस्से को कुबूत और मदद पहुंचाता है. जब मुसलमानों में आपस में एक दूसरे के साथ महबूत वाजिब हुई तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ किस कद्र महबूत फ़र्ज़ होगी. मानी ये हैं कि मैं हिदायत और उपदेश पर कुछ बेतन नहीं चाहता लेकिन रिश्तेदारी के हक़ तो तुम पर वाजिब हैं, उनका लिहाज़ करो और मेरे रिश्तेदार तुम्हारे भी रिश्तेदार हैं, उन्हें तकलीफ़ न दो. हज़रत सईद बिन जुबैर से रिवायत है कि रिश्तेदारों से मुराद हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की आल पाक है. (बुख़ारी) रिश्तेदारों से कौन कौन मुराद हैं इसमें कई क़ौल हैं. एक तो यह कि मुराद इससे हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा व हज़रत इमामे हसन और हज़रत इमामे हुसैन रदियल्लाहो अन्हुम हैं. एक क़ौल यह है कि आले अली, और आले अक़ील व आले जअफ़र व आले अब्बास मुराद हैं. और एक क़ौल यह है कि हुज़ूर के वो रिश्तेदार मुराद हैं जिन पर सदक़ा हराम है और वो बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब हैं. हुज़ूर की पाक पवित्र बीवियों हुज़ूर के पहले बैत में दाख़िल हैं. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की महबूत और हुज़ूर के रिश्तेदारों की महबूत दीन के फ़र्ज़ों में से है. (जुमल व ख़ाज़िम वग़ैरह)

(१८) यहाँ नेक काम से मुराद या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की आले पाक से महबूत है, या तमाम नेक काम.

(१९) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत, मक्के के काफ़िर.

(२०) नबुव्वत का दावा करके, या कुरआने करीम को अल्लाह की किताब बताकर.

(२१) कि आपको उनके बुरा भला कहने से तकलीफ़ न हो.

(२२) जो काफ़िर कहते हैं.

से है आसमानों और ज़मीन की पैदायश और जो चलने वाले उनमें फैलाए, और वह उनके इकट्ठा करने पर^(११) जब चाहे क़ादिर है^(१२)।

चौथा सूक़

और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वह इसके कारण से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया^(१३) और बहुत कुछ तो माफ़ फ़रमा देता है^(१४) और तुम ज़मीन में काबू से नहीं निकल सकते^(१५) और न अल्लाह के मुकाबले तुम्हारा कोई दोस्त न मददगार^(१६)^(१७) और उसकी निशानियों से हैं^(१८) दरिया में चलने वालीयां जैसे पहाड़ियां^(१९) वह चाहे तो हवा थमा दे^(२०) कि उसकी पीठ पर^(२१) ठहरी रह जाएं^(२२) वेशक़ इसमें ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े सब्र करने शुक्र करने वाले को^(२३)^(२४) या उन्हें तवाह कर दे^(२५) लोगों के गुनाहों के कारण^(२६) और बहुत कुछ माफ़ फ़रमा दे^(२७)^(२८) और जान जाएं वो जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं कि उन्हें^(२९) कहीं भागने की जगह नहीं^(३०) तुम्हें जो कुछ मिला है^(३१) वह जीती दुनिया में वरतने का है^(३२) और वह जो अल्लाह के पास है^(३३) बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला उनके लिये जो ईमान लाए और अपने सब्र पर भरोसा करते हैं^(३४)^(३५) और वो जो बड़े बड़े गुनाहों और बेहयाइयों से बचते हैं और जब गुस्सा आए माफ़ कर देते हैं^(३६) और

الْحَمِيدُ

५६२

الْحَمِيدُ

الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا مِنْ دَابَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلَى
جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ۝ وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ
مُصِيبَةٍ فِيمَا كَسَبْتُمْ أَيْدِيَكُمْ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ ۝
وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ
دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ
فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝ إِنْ يَشَاءْ يُنْزِلِ الرِّيحَ فَتُطْلَلْنَ
رَوَاكِدٌ عَلَى ظَهْرِهِ ۚ إِنْ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُورٍ ۝ أَوْ يُوبِقْهُمْ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ
كَثِيرٍ ۝ وَيَعْلَمُ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا
لَهُمْ مِنْ مَّجِيصٍ ۝ فَمَا أُوتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَّاءُ
الْحَيَوةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ
آمَنُوا وَعَلَىٰ رُبِّهِمْ يُتَوَكَّلُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ

مَنْزِلَ

(२३) जो अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर उतारें, चुनान्ने ऐसा ही किया कि उनके बातिल को मिटाया और इस्लाम के कलिमे को शालिब किया।

(२४) तोबह हर एक गुनाह से वाजिब है और तोबह की हकीकत यह है कि आदमी बुराई और गुनाह से बाज़ आए और जो गुनाह उससे हो उस पर शर्मिन्दा हो और हमेशा गुनाह से दूर रहने का पक्का निश्चय करे और अगर गुनाह में किसी बन्दे का हक़ मारा गया था तो उसकी बहाली की कोशिश करे।

(२५) यानी जितना दुआ मांगने वाले ने तलब किया था उससे ज़्यादा अता फ़रमाता है।

(२६) घमण्ड में गिरफ़्तार है।

(२७) जिसके लिये जितना उसकी हिक्मत का तकाज़ा है, उसको उतना अता फ़रमाता है।

(२८) और मेंह (वर्षा) से तफ़ा देता है, और कहंत को दफ़ा फ़रमाता है।

(२९) हथ्र के लिये।

सूरए शूरा - चौथा सूक़

(१) यह ख़िताब आक़िल बालिग़ मुमिनों से है जिनसे गुनाह सरज़द होते हैं। मुराद यह है कि दुनिया में जो तकलीफ़ें और मुसीबतें ईमान वालों को पहुंचती हैं, अक्सर उनका कारण उनके गुनाह होते हैं। उन तकलीफ़ों को अल्लाह तआला उनके गुनाहों का कफ़फ़ारा कर देता है और कभी ईमान वाले की तकलीफ़ उसके दजों की बलबंदी के लिये होती है। जैसा कि बुध्दारी और मुस्लिम को हदीस में आया है। नबी जो गुनाहों से पाक होते हैं और छोटे बच्चे जो नासमझ होते हैं इस आयत के घेरे में नहीं आते। कुछ गुमराह फ़िक्के जो आवागवन को मानते हैं इस आयत से साबित करने की कोशिश करते हैं कि छोटे बच्चों को जो तकलीफ़ पहुंचती है इस आयत से साबित होता है कि वह उनके गुनाहों का नतीजा हो और अभी तक उनसे कोई गुनाह हुआ नहीं तो लाज़िम आया कि इस ज़िन्दगी से पहले कोई और ज़िन्दगी हां जिसमें गुनाह हुए हों। यह बात बातिल है क्योंकि यह कलाम बच्चों से कहा ही नहीं गया है। जैसा आम तौर पर सारा संबोधन आक़िल बालिग़ से होता है। इसलिये आवागवन वालों की दलील झूठी हुई।

(२) जो मुसीबतें तुम्हारे लिये लिखी जा चुकी हैं उनसे कहीं भाग नहीं सकते, बच नहीं सकते।

(३) कि उसकी मर्ज़ी के बिस्वद्ध तुम्हें मुसीबत और तकलीफ़ से बचा सके।

(४) बड़ी बड़ी किश्तियां।

वो जिन्होंने अपने रब का हुक्म माना^(१७) और नमाज़ कायम रखी^(१८) और उनका काम उनके आपस की सलाह से है^(१९) और हमने दिये से कुछ हमारी राह में खर्च करते हैं^(२०) और वो कि जब उन्हें बगावत पहुंचे बदला लेते हैं^(२१) और बुराई का बदला उसी की बराबर बुराई है^(२२) तो जिसने माफ़ किया और काम संवारा तो उसका अन्न अल्लाह पर है, वेशक वह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को^(२३) और वेशक जिसने अपनी मज़लूमी पर बदला लिया उनपर कुछ मुआखिज़े की राह नहीं^(२४) मुआखिज़ा तो उन्हीं पर है जो^(२५) लोगों पर जुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक सरकशी फैलाते हैं^(२६) उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है^(२७) और वेशक जिसने सत्र किया^(२८) और बाख़्श दिया तो यह ज़रूर हिम्मत के काम है^(२९)

पाँचवां रूकू

और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसका कोई दोस्त नहीं अल्लाह के मुकाबिल^(३०) और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब अज़ाब देखेंगे^(३१) कहेंगे क्या वापस जाने का कोई रास्ता है^(३२) और तुम उन्हें देखोगे कि आग पर पेश किये जाते हैं ज़िल्लत से दवे लचे छुपी निगाहों देखते हैं^(३३) और ईमान वाले कहेंगे वेशक हार में वो हैं जो अपनी जानें और

كَتَبَ الْإِثْمَ وَالْفَوَاحِشَ وَأَدَامَا عَصِيْبًا لَهُمْ يَغْفِرُونَ
وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ
شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ
إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَكْتُمُونَ ۝ وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ
سَيِّئَةٌ مُّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى
اللَّهِ إِنَّهُ لَا يَجِبُ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَكِنْ انْتَصَرْنَا بَعْدَ
ظُلْمِهِ ۚ فَأُولَٰئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلٍ ۚ إِنَّمَا السَّبِيلُ
عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ وَلَكِنْ صَبَرُوا
وَعَفَوْا ۚ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ۚ وَمَنْ يَكْفُفْ يَكْفُفْ ۚ وَتَرَىٰ
النَّاسَ رَاوِيَ الْعَذَابِ يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مَرْجٍ مِّنْ
سَبِيلٍ ۚ وَتَرَىٰ لَهُمْ لُجُومًا ۚ عَلَيْهِمْ حُشْعَانٌ مِّنْ

مَنْزِلٍ

- (५) जो किशियों को चलाती है.
- (६) यानी दरिया के ऊपर.
- (७) चलने न पाएं.
- (८) सत्र और शुक्र वालों से मुराद सच्चा ईमान वाला है जो सरस्त्री और तकलीफ में सत्र करता है और राहत व खुशहाली में शुक्र
- (९) यानी किशियों को डुबा दे.
- (१०) जो उसमें सवार हैं.
- (११) गुनाहों में से कि उनपर अज़ाब न करे.
- (१२) हमारे अज़ाब से.
- (१३) दुनियावी माल असबाब.
- (१४) सिर्फ कुछ रोज़, उसको हमेशगी नहीं.
- (१५) यानी सबाब देने वाला.
- (१६) यह आयत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो अन्हो के हक में उतरी जब आपने कुल माल सदका कर दिया और उसपर अरब के लोगों ने आपको बुरा भला कहा.
- (१७) यह आयत अन्सार के हक में उतरी जिन्हो ने अपने रब की दावत कुबूल करके ईमान और फरमाँबरदारी को अपनाया.
- (१८) उसपर डटे रहे.
- (१९) वो जल्दी और अहंकार में फैसले नहीं करते. हज़रत हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फरमाया, जो कौम मशवरा करती है वह सही राह पर पहुंचती है.
- (२०) यानी जब उनपर कोई जुल्म करे तो इन्साफ से बदला लेते हैं और बदले में हद से आगे नहीं बढ़ते. इब्ने जैद का कौल है कि मूमीन दो तरह के हैं, एक जो जुल्म को माफ़ करते हैं. पहली आयत में उनका जिक्र फरमाया गया. दूसरे वो जो ज़ालिम से बदला लेते हैं. उनका इस आयत में जिक्र है. अता ने कहा कि ये वो मूमीनीन हैं जिन्हें काफ़िरों ने मक्कर मूकरमा से निकाला और उनपर जुल्म किया. फिर अल्लाह तआला ने उन्हें उस सरज़मीन पर कब्ज़ा दिया और उन्हो ने ज़ालिमों से बदला लिया.
- (२१) मानी ये हैं कि बदला बराबर का होना चाहिये उसमें ज़ियादती या अन्पाय न हो. और बदले को बुराई कहना मजाज़ है कि देखने में एक सा होने के कारण कहा जाता है और जिसको वह बदला दिया जाए उसे बुरा मालूम होता है. और बदले को बुराई के साथ ताबीर करने में यह भी इशारा है कि अगरचे बदला लेना जायज़ है लेकिन माफ़ कर देना उससे बेहतर है.

अपने घर वाले हार बैठे क़यामत के दिन^(१) सुनते हो बेशक ज़ालिम^(२) हमेशा के अज़ाब में हैं^(३) और उनके कोई दोस्त न हुए कि अल्लाह के मुकाबिल उनकी मदद करते^(४) और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसके लिये कहीं रास्ता नहीं^(५) ^(४६) अपने रब का हुक्म मानो^(६) उस दिन के आने से पहले जो अल्लाह की तरफ़ से टलने वाला नहीं^(७) उस दिन तुम्हें कोई पनाह न होगी और न तुम्हें इन्कार करते बने^(८) ^(४७) तो अगर वो मुंह फेरे^(९) तो हमने तुम्हें उनपर निगहबान बनाकर नहीं भेजा^(१०) तुम पर तो नहीं मगर पहुंचा देना^(११) और जब हम आदमी को अपनी तरफ़ से किसी रहमत का मज़ा देते हैं उसपर खुश हो जाता है, और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचे^(१२) बदला उसका जो उनके हाथों ने आगे भेजा^(१३) तो इन्सान बड़ा नाशुक्रा है^(१४) ^(४८) अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत^(१५) पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अता करे^(१६) और जिसे चाहे बेटे दे^(१७) ^(४९) या दोनों मिला दे बेटे

الَّذِينَ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفٍ وَقَالَ الَّذِينَ
أَمَنُوا إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَ
أَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي
عَذَابٍ مُّقِيمٍ ۚ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ أَوْلِيَاءَ
يَنْصُرُوهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ
فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ۚ اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُمْ مِنْ
قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ مَا لَكُمْ
مِنْ مَلْجَأٍ يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُمْ مِنْ نَكِيرٍ ۚ فَإِنْ
أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيطًا ۚ إِنَّ عَلَيْكَ
إِلَّا الْبَلَاءُ ۚ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً
فَرَحَ بِهَا ۚ وَإِنْ تَضَيُّعُهُمْ سَبَيْتُهُمْ ۚ وَمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ
فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ۚ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَ
الْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَّا ثَا

مِلَّةٌ

- (२२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ज़ालिमों से वो मुराद हैं जो जुल्म की शुरुआत करें.
(२३) शुरु में.
(२४) घमण्ड और गुनाहों का शिकार होकर.
(२५) जुल्म और तक्लीफ़ पर, ओर बदला न लिया.

सूरए शूरा - पाँचवां सूक़

- (१) कि उसे अज़ाब से बचा सके.
(२) क़यामत के दिन.
(३) यानी दुनिया में, ताकि वहाँ जाकर ईमान ले आए.
(४) यानी ज़िल्लत और ख़ौफ़ के कारण आग को ऐसी तेज़ नज़रों से देखेंगे जैसे कोई क़त्ल होने वाला अपने क़त्ल के वक़्त जल्लाद की तलवार तेज़ निगाह से देखता है.
(५) जानों का हारना तो यह है कि वो कुछ इस्तियार करके जहन्नम के हमेशागी के अज़ाब में गिरफ़्तार हुए और घर वालों का हारना यह है कि ईमान लाने की सूरत में जन्नत की जो हूँ उनके लिये रखी गई थीं, उनसे मेहरूम हो गए.
(६) यानी काफ़िर.
(७) और उनके अज़ाब से बचा सकते.
(८) ख़ैर का, न वो दुनिया में हक़ तक पहुंच सके, न आख़िरत में जन्नत तक.
(९) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमाँबर्दारी करके तौहीद और अल्लाह की इबादत इस्तियार करें.
(१०) इससे मुराद या मौत का दिन है, या क़यामत का.
(११) अपने गुनाहों का, यानी उस दिन कोई रिहाई की सूरत नहीं. न अज़ाब से बच सकते हों न अपने बुरे कर्मों का इन्कार कर सकते हों जो तुम्हारे आमाँल नामों में दर्ज हैं.
(१२) ईमान लाने और फ़रमाँबर्दारी करने से.
(१३) कि तुम पर उनके कर्मों की हिफ़ाज़त अनिवार्य हो.
(१४) और वह तुमने अदा कर दिया.
(१५) चाहे वह दौलत और जायदाद हो या सेहत व आफ़ियत या अमन व सलामती या शान व शौक़त.
(१६) या और कोई मूसीबत और बला जैसे दुष्काल, बीमारी, ग़रीबी वगैरह सामने आए.

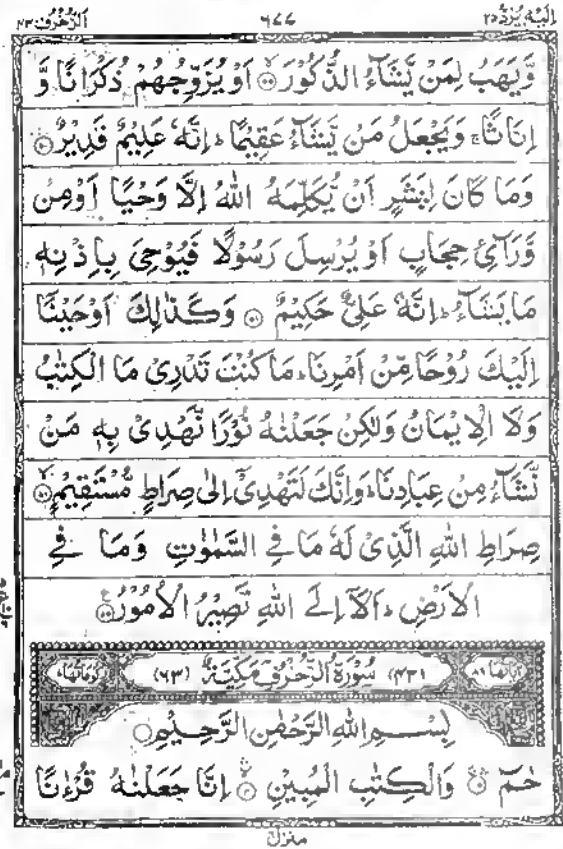
और बेटियाँ, और जिसे चाहे बाँझ कर दे^(२२) वेशक वह इल्म व कुदरत वाला है^(५०) और किसी आदमी को नहीं पहुँचता कि अल्लाह उससे कलाम फरमाए मगर वही के तौर पर^(२३) या यूँ कि वह वशर महानता के पर्दे के उधर हो^(२४) या कोई फरिश्ता भेजे कि वह उसके हुक्म से वही करे जो वह चाहे^(२५) वेशक वह बलन्दी व हिकमत (बोध) वाला है^(५१) और यूँही हमने तुम्हें वही भेजी^(२६) एक जाँफ़ज़ा चीज़^(५२) अपने हुक्म से, इस से पहले न तुम किताब जानते थे न शरीअत के आदेशों की तफ़सील हाँ हमने उसे^(२७) नूर किया जिससे हम राह दिखाते हैं अपने वन्दों से जिसे चाहते हैं, और वेशक तुम ज़रूर सीधी राह बताते हो^(२८)^(५३) अल्लाह की राह^(२९) कि उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में, सुनते हो सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं^(५३)

४३ : सूरए जुखरूफ़

सूरए जुखरूफ़ मक्का में उतरी, इसमें ८९ आयतें, सात रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) हा-मीम^(१) रौशन किताब की कसम^(२)^(२) हमने इसे अरबी कुरआन उतारा कि तुम समझो^(३)^(३) और वेशक



(१७) यानी उनकी नाफ़रमानियाँ और गुमराहियों के कारण।

(१८) नेअमतों को भूल जाता है।

(१९) जैसे चाहता है, उपयोग में लाता है, कोई दख़ल देने और ऐतिराज़ करने की मजाल नहीं रखता।

(२०) बेटा न दे।

(२१) बेटी न दे।

(२२) कि उसके औलाद ही न हो, वह मालिक है अपनी नेअमत को जिस तरह चाहे तक्सीम करे, जिसे जो चाहे दे, नबियों में भी ये सूतें पाई जाती हैं, हज़रत ख़ुत और हज़रत शूऐब अलैहिस्सलाम के सिर्फ़ बेटियाँ थीं, कोई बेटा न था और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सिर्फ़ बेटे थे, कोई बेटी हुई ही नहीं। और नबियों के सरदार अल्लाह के हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह तआला ने चार बेटे अता फ़रमाए और चार बेटियाँ, और हज़रत यहया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के कोई औलाद ही नहीं।

(२३) यानी बेवास्ता उसके दिल में इल्का फ़रमाकर और इल्हाम करके, जागते में या सपने में, इसमें वही की प्राप्ति कानों के माध्यम यानी सुनने के बग़ैर है और आयत में इल्का बहबन से यही मुराद है, इसमें यह कैद नहीं कि इस हाल में सुनने वाला बोलने वाले को देखता हो या न देखता हो, मुजाहिद ने नक्ल किया कि अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के सीने में ज़बूर की वही फ़रमाई और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बेटे के ज़िद्द की ख़्वाब में वही फ़रमाई, और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मेअराज में इसी तरह की वही फ़रमाई, जिसका “फ़ औहा इला अब्दिही मा औहा” में बयान है, यह सब इसी क्रिम में दाख़िल हैं, नबियों के ख़्वाब सच्चे होते हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि अम्बिया के ख़्वाब वही हैं, (तफ़सीर अबू सऊद व कबीर व मदारिक व ज़रक़ारी अलल मवाहिब बग़ैरह)

(२४) यानी रसूल पर्दे के पीछे से उसका कलाम सुने, वही के इस तरीक़े में भी कोई वास्ता नहीं मगर सुनने वाले को इस हाल में बोलने वाले का दर्शन नहीं होता, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम इसी तरह के कलाम से बुजुर्गी दिये गए, यहूदियों ने हज़रत पुरनूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो अल्लाह तआला से कलाम करते वक़्त उसको क्या नहीं देखते जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम देखते थे, हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जवाब दिया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम नहीं देखते थे और अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी, अल्लाह तआला इससे पाक है कि उसके लिये कोई ऐसा पर्दा हो जैसा जिस्मानियात के लिये होता है, इस पर्दे से मुराद सुनने वाले का दुनिया में दर्शन से मंरूज़ होना है।

(२५) वही के इस तरीक़े में रसूल की तरफ़ फ़रिश्ते की वसातत है।

वह अस्ल किताब में^(४) हमारे पास ज़रूर बलन्दी व हिकमत(बोध) वाला है^(५) तो क्या हम तुम से ज़िक्र का पहलू फेर दें इस पर कि तुम लोग हद से बढ़ने वाले हो^(६) और हमने कितने ही ग़ैब बताने वाले(नबी) अगलों में भेजे^(७) और उनके पास जो ग़ैब बताने वाला(नबी) आया उसकी हंसी ही बनाया किये^(८) तो हमने वो हलाक कर दिये जो उनसे भी पकड़ में सख्त थे और अगलों का हाल गुज़र चुका है^(९) और अगर तुम उनसे पूछो^(१०) कि आसमान और ज़मीन किसने बनाए तो ज़रूर कहेंगे उन्हें बनाया उस इज़्ज़त वाले इल्म वाले ने^(११) वह जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना किया और तुम्हारे लिये उसमें रास्ते किये कि तुम राह पाओ^(१२) और वह जिसने आसमान से पानी उतारा एक अन्दाज़े से^(१३) तो हमने उस से एक मुर्दा शहर ज़िन्दा फ़रमा दिया, यूँ ही तुम निकाले जाओगे^(१४) और जिसने सब जोड़े बनाए^(१५) और तुम्हारे लिये किशतियाँ और चौपायों से सवारियाँ बनाई^(१६) कि तुम उनकी पीठों पर ठीक बैठो^(१७) फिर अपने रब की नेअमत याद करो जब उसपर ठीक बैठ लो और यूँ कहो पाकी है उसे जिसने इस सवारी को हमारे

عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ
لَدَيْنَا لَعَلٌّ حَكِيمٌ ۝ أَفَتَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا
أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۝ وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَبِيٍّ
فِي الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِئُونَ ۝ فَاهْلِكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَ مَضَى
مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ الَّذِي
جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
بِقَدَرٍ فَأَنْشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَيْتًا كَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ۝
وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ
الْفُلُكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ۝ لِتَسْتَوُوا عَلَى ظُهُورِهِ
ثُمَّ تَنْزِلُكُمْ عَنْهُ رِجَالًا إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَ

مَرَاتِنَ

- (२६) ऐ बतियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लतम.
(२७) यानी कुरआने पाक, जो दिलों में ज़िन्दगी पैदा करता है.
(२८) यानी दीने इस्लाम.
(३०) जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये मुकर्रर फ़रमाई.

४३ - सूरए जुखरुफ़ - पहला रुकू

- (१) सूरए जुखरुफ़ मक्के में उतरी. इस में सात रुकू, नवासी आयतें, और तीन हज़ार चार सौ अक्षर हैं.
(२) यानी कुरआन शरीफ़ की, जिसमें हिदायत और गुमराही की राहें अलग अलग और साफ़ कर दीं और उम्मत की सारी शरई ज़रूरतों का बयान फ़रमा दिया.
(३) उसके मानी ओर आदेशों को.
(४) अस्ल किताब से मुराद लौहे मेहफूज़ है. कुरआने करीम इसमें दर्ज है.
(५) यानी तुम्हारे रुकू में हद से बढ़ने की वजह से क्या हम तुम्हें बेकार छोड़ दें और तुम्हारी तरफ़ से कुरआन की बही का रुख़ फेर दें और तुम्हें न कोई हुक्म दें और न किसी बात से रोकें. मानी ये है कि हम ऐसा न करेंगे. हज़रत क़तादह ने कहा कि खुदा की क़सम अगर यह कुरआन पाक उठा लिया जाता उस वक़्त जबकि इस उम्मत के पहले लोगों ने इस से मुंह फेरा था तो वो सब हलाक होजात लेकिन उसने अपनी रहमत और करम से इस कुरआन का उतारना जारी रखा.
(६) जैसा कि आपकी क़ौम के लोग करते हैं. काफ़िरों का पहले से यह मामूल चला आया है.
(७) और हर तरह का ज़ोर व कुबत रखते थे. आपकी उम्मत के लोग जो पहले के काफ़िरों की चालें चलते हैं उन्हें डरना चाहिये कि कहीं उनका भी वही अंजाम न हो जो उनका हुआ कि ज़िल्लत और रुखाई की मुसीबतों से हलाक किये गए.
(८) यानी मुश्रिक लोगों से.
(९) यानी इक्कार करेंगे कि आसमान व ज़मीन की अल्लाह तआला ने बनाया और यह भी मानेंगे कि वह इज़्ज़त और इल्म वाला है. इस इक्कार के बावजूद दाबारा उठाए जाने का इक्कार कैसी इल्तिहा दर्ज की जिहालत है. इस के बाद अल्लाह तआला अपनी कुदरत के इज़्ज़हार के लिये अपनी सृजन-शक्ति का ज़िक्र फ़रमाता है और अपने औमाफ़ और शान का इज़्ज़हार करता है.
(१०) सफ़रों में अपनी मंज़िलों और उद्देश्यों की तरफ़.
(११) तुम्हारी हाज़तों की क़दर, न इतना कम कि उससे तुम्हारी हाज़तें पूरी न हों न इतना ज़्यादा कि कौमे नूह की तरह तुम्हें हलाक

बस में कर दिया और यह हमारे बूते की न थी (१३) और वेशक हमें अपने रब की तरफ पलटना है (१४) (१४) और उसके लिये उसके बन्दों में से टुकड़ा ठहराया, (१५) वेशक आदमी (१६) खुला नाशुका है (१७) (१५)

दूसरा रकू

क्या उसने अपने लिये अपनी मखलूक (सृष्टि) में से बेटियाँ लीं और तुम्हें बेटों के साथ खास किया (१८) (१८) और जब उनमें किसी को खुशखबरी दी जाए उस चीज़ की (१९) जिसका वस्फ रहमान के लिये बता चुका है (२०) तो दिन भर उसका मुंह काला रहे और गम खाया करे (२१) (२१) और क्या (२२) वह जो गहने (जेवर) में पर्वान चढ़े (२३) और वहस में साफ बात न करे (२४) (२४) और उन्होंने फ़रिश्तों को कि रहमान के बन्दे हैं और तें ठहराया (२५) क्या उनके बनाते वक़्त ये हाज़िर थे (२६) अब लिखली जाएगी उनकी गवाही (२७) और उन से जवाब तलब होगा (२८) (२८) और बोले अगर रहमान चाहता हम इन्हें न पूजते, (२९) उन्हें इसकी हकीकत कुछ मालूम नहीं (३०) यूँही अटकलें दोड़ते हैं (३१) (३१) या इससे पहले हमने उन्हें कोई किताब दी है जिसे वो थामे हुए हैं (३२) (३२) वल्कि बोले हमने अपने बाप दादा को एक दीन पर पाया और हम उनकी लकीर पर चल रहे हैं (३३) (३३) और ऐसे ही हमने तुम से पहले जब किसी शहर में कोई डर सुनाने वाला भेजा वहाँ के आसूदों ने यही कहा कि हमने

تَقُولُوا سُبْحَنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ۝ وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادَةٍ جُزْءًا إِنْ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ۝ أَمْ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَكُمْ بِالْبَنِينَ ۝ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا صَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝ أَوْ مَنْ يُنشِؤُا فِي الْحَيَاطَةِ وَهُوَ فِي الْإِخْصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ۝ وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَنِ إِنَاثًا أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ۝ وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ مَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ أَمْ أَنْتُمْ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ فَرِحْتُمْ بِكُمْ مُسْتَمْسِكُونَ ۝ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ۝ وَكَذَلِكَ مَا

कर दे.

(१२) अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा करके:

(१३) यानी सारी अरनाफ़ और क्रिमों, कहा गया है कि अल्लाह तआला तहा है, ज़िद और बराबरी और ज़ाजियत से पाक है उसके सिवा ख़ल्क में जो है, जोड़े से है.

(१४) ख़श्की और तरी के सफ़र में.

(१५) अन्त में, मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जब सफ़र में तशरीफ़ लेजाते तो अपनी ऊँटनी पर सवार होते वक़्त पहले अल्हम्दु लिल्लाह पढ़ते फिर सुक़ानल्लाह और अल्लाहो अकबर. ये सब तीन तीन बार फिर यह आयत पढ़ते "सुक़ानल्लाज़ी सफ़रारा लना हाज़ा व मा कुन्ना लहु मुक़रिनीन, व इन्ना इला रब्बिना ल मुक़लिबून" यानी पाकी है उसे जिसने इस सवारी को हमारे बस में कर दिया और यह हमारे बूते न थी और वेशक हमें अपने रबकी तरफ़ पलटना है. (सूरह जुश्ररुफ़, आयत १३) और इसके बाद और दुआएँ पढ़ते और जब हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम किशती में सवार होते तो फ़रमाते "बिस्मिल्लाहे मजरीहा व मुरसाहा इन्ना रब्बी ल ग़फ़ूर रहीम" यानी अल्लाह के नाम पर उसका चलना और उसका ठहरना वेशक मेरा रब ज़स्त्र बरख़्शने वाला मेहरबाव है. (सूरह हूद, आयत ४१)

(१६) यानी काफ़िरों ने इस इकरार के वाबुजूद कि अल्लाह तआला आसमान व ज़मीन का ख़ालिक है यह सितम किया कि फ़रिश्तों को अल्लाह तआला की बेटियाँ बताया और औलाद साहिबे औलाद का हिस्सा होती है. ज़ालिमों ने अल्लाह तआला के लिये हिस्सा क़रार दिया कैसा भारी ज़ुर्म है.

(१७) जो ऐसी बातों को मानता है.

(१८) उसका कुफ़र ज़ाहिर है.

सूरह जुश्ररुफ़ - दूसरा रकू

(१) अदना अपने लिये और आला तुम्हारे लिये, कैसे जाहिल हो, क्या बक्ते हो.

(२) यानी बेटी की कि तेरे घर में बेटी पैदा हुई है.

अपने बाप दादा को एक दिन पर पाया और हम उनकी लकीर के पीछे हैं^(१३) ॥२३॥ नबी ने फरमाया और क्या जब भी कि मैं तुम्हारे पास वह^(१४) लाऊं जो सीधी राह हो उससे^(१५) जिसपर तुम्हारे बाप दादा थे, बोले जो कुछ तुम लेकर भेजे गए हम उसे नहीं मानते^(१६) ॥२४॥ तो हमने उनसे बदला लिया^(१७) तो देखो झुटलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ^(१८) ॥

तीसरा सूक

और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क्रौम से फरमाया मैं बेजार हूँ तुम्हारे मअबूदों से^(१९) ॥२६॥ सिवा उसके जिसने मुझे पैदा किया कि ज़रूर वह बहुत जल्द मुझे राह देगा^(२०) ॥२७॥ और उसे^(२१) अपनी नस्ल में वाकी कलाम रखा^(२२) कि कहीं वो बाज़ आए^(२३) ॥२८॥ बल्कि मैं ने उन्हें^(२४) और उनके बाप दादा को दुनिया के फ़ायदे दिये^(२५) यहाँ तक कि उनके पास हक़^(२६) और साफ़ बताने वाला रसूल तशरीफ़ लाया^(२७) ॥२९॥ और जब उनके पास हक़ (सत्य) आया बोले यह जादू है और हम इसके इन्कारी हैं^(३०) ॥३०॥ और बोले क्यों न उतारा गया ये कुरआन इन दो शहरों^(३१) के किसी बड़े आदमी पर^(३२) ॥३१॥ क्या तुम्हारे रब की रहमत वो वाँटते हैं, ^(३३) हमने उनमें उनकी ज़िन्दगी का सामान दुनिया

الزُّحُر

५८०

الْبُرْ

أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ الشِّرْهِ مُقْتَدُونَ ۚ قُلْ أُولَٰئِكَ بِأَهْدَىٰ مِنَّا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِمْ آبَاءَكُمْ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۚ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ۚ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ۖ إِلَّا الَّذِي قُطِرْتُمْ فِيهِ فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ۚ وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۚ بَلْ مَتَّعْتُ هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ۚ وَلَكِنَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ۚ وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَٰذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ۚ أَهَمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۚ

مَنْ

- (३) कि मआज़ल्लाह वह बेटी वाला है.
- (४) और बेटी का होना इस क़द्र नागवार समझे, इसके बावजूद अल्लाह तआला के लिये बेटियाँ बनाए.
- (५) काफ़िर हज़रत रहमान के लिये औलाद की क्रिस्मों में से तजवीज़ करते हैं.
- (६) यानी ज़वरो की सज्जध में बाज़ और नज़ाफ़त के साथ पले बढ़े. इससे मालूम हुआ कि ज़ेवर से श्रंगार नुक़सान की दलील है तो मर्दों को इस से परहेज़ करना चाहिये. परहेज़गारी से अपनी जीनत करें. अब आगे आयत में लड़की की एक और कमज़ोरी का इज़हार फ़रमाया जाता है.
- (७) यानी अपनी हालत की कमज़ोरी और अक्ल की कमी की वजह से. हज़रत क़तादह रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि औरत जब बात चीत करती है और अपनी तार्ईद में कोई दलील पेश करना चाहती है तो अक्सर ऐसा होता है कि वह अपने ही ख़िलाफ़ दलील पेश कर देती है.
- (८) हासिल यह है कि फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ बताने में बेदीनों ने तीन कुक़्र किये, एक तो अल्लाह तआला की तरफ़ औलाद की निस्वत, दूसरे उस ज़लील चीज़ को उसकी तरफ़ जोड़ना जिस को वो ख़ुद बहुत ही तुच्छ समझते हैं और अपने लिये ग़वार नहीं करते, तीसरे फ़रिश्तों की तौहीन, उन्हें बेटियाँ बताना (मदारीक़) अब उसका रद फ़रमाया जाता है.
- (९) फ़रिश्तों का नर या मादा होना ऐसी चीज़ तो है नहीं जिस पर कोई अक़ली दलील कायम हो सके और उनके पास ख़बर आई नहीं तो जो काफ़िर उनको मादा क़रार देते हैं उनकी जानकारी का ज़रिया क्या है, क्या उनकी पैदायश के वक़्त मौजूद थे और उन्होंने अवलोकन कर लिया है. जब यह भी नहीं तो केवल जिहालत वाली गुमराही की बात है.
- (१०) यानी काफ़िरों का फ़रिश्तों के मादा होने पर ग़वाही देना लिखा जाएगा.
- (११) आख़िरत में और उसपर सज़ा दी जाएगी. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने काफ़िरों से पूछा कि तुम फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ किस तरह कहते हो. तुम्हारी जानकारी का स्रोत क्या है. उन्होंने ने कहा हमने अपने बाप दादा से सुना है और हम ग़वाही देते हैं वो सच्चे थे. इस ग़वाही की अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि लिखी जाएगी और उस पर ज़वाब तलब होगा.
- (१२) यानी फ़रिश्तों की. मतलब यह था कि अगर फ़रिश्तों की पूजा करने से अल्लाह तआला राज़ी न होता तो हम पर अज़ाब उतारता और जब अज़ाब न आया तो हम समझते हैं कि वह यही चाहता है. यह उन्होंने ऐसी ग़लत बात कही जिससे लाज़िम आए कि सारे ज़ुर्म जो दुनिया में हांते हैं उनसे ख़ुदा राज़ी है. अल्लाह तआला उन्हें झुटलाता है.
- (१३) वो अल्लाह की रज़ा के जानने वाले ही नहीं.
- (१४) झूट बक़ते हैं.

की ज़िन्दगी में बाँटा^(११) और उनमें एक दूसरे पर दर्जो बलन्दी दी^(१२) कि उनमें एक दूसरे की हंसी बनाए^(१३) और तुम्हारे रब की रहमत^(१४) उनकी जमा जथा से बेहतर^(१५) **﴿३२﴾** और अगर यह न होता कि सब लोग एक दीन पर हो जाएं ^(१६) तो हम ज़रूर रहमान का इन्कार करने वालों के लिये चांदी की छत्तें और सीढ़ियाँ बनाते जिनपर चढ़ते **﴿३३﴾** और उनके घरों के लिये चांदी के दरवाज़े और चांदी के तख्त जिन पर तकिया लगाते **﴿३४﴾** और तरह तरह की आरायश, ^(१७) और यह जो कुछ है जीती दुनिया ही का सामान है, और आखिरत तुम्हारे रब के पास परहेजगारों के लिये है **﴿३५﴾**

चौथा रूकू

और जिसे रतौंद आए रहमान के ज़िक्र से^(१) हम उस पर एक शैतान तैनात करें कि वह उसका साथी रहे **﴿३६﴾** और बेशक वो शयातीन उनको^(२) राह से रोकते हैं और^(३) समझते यह हैं कि वो राह पर हैं **﴿३७﴾** यहाँ तक कि जब^(४) काफ़िर हमारे पास आएगा अपने शैतान से कहेगा हाय किसी तरह मुझ में तुझ में पूरब पश्चिम का फ़ासला होता तू क्या ही बुरा साथी है **﴿३८﴾** और हरगिज़ तुम्हारा उस^(५) से भला न होगा आज जब कि^(६) तुम ने जुल्म किया कि तुम सब अज़ाब में शरीक हो

نَحْنُ قَسَمًا بَيْنَهُمْ مُعِيشَتُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَ
رَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ
بَعْضًا سَخِرَآءَ وَرَحِمَتْ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْعَلُونَ ۝ وَلَوْ كُنَّا
أَن يَكُونُ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ
بِالرَّحْمَنِ لِيُؤْتِيَهُمْ سُقْفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَمَعَارِمَ عَلَيْهَا
يُظْهِرُونَ ۝ وَلِيُؤْتِيَهُمْ أَبْوَابًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا
يَتَّكِبُونَ ۝ وَزُخْرَفًا وَإِن كُلِّ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَّاعٌ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ۝ وَمَن
يَعِشْ عَن ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقِصْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ
قَرِينٌ ۝ وَإِنَّهُمْ لَيُصِدُّوهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَجْسِبُونَ
أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ لَّيْلَتٌ بَيِّنَتٌ
وَبَيْنَكُمْ بَعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَيُشْسِ الْقَرِينَ ۝ وَلَكِن
يَنْفَعُكُمُ الْيَوْمَ إِذْ ظَلَمْتُمْ أَنْتَکُم فِي الْعَذَابِ

مَثَلٌ

(१५) और उसमें ग़ैर श्रुदा की पूजा की इजाज़त है ऐसा नहीं यह बातिल है और इसके सिवा भी उनके पास कोई हज़रत नहीं है।
(१६) आँखें मीच कर, वं सांचे समझे उनका अनुकरण करते हैं। वो मख़लूक परस्ती किया करते थे। मतलब यह है कि उसकी कोई दलील इसके अलावा नहीं है कि यह काम वो अपने बाप दादा के अनुकरण में करते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उनसे पहले भी ऐसा ही कहा करते थे।

(१७) इसमें मालूम हुआ कि बाप दादा की अन्धे बन कर पैरवी करना काफ़िरों की पुरानी बीमारी है। और उन्हें इतनी तमीज़ नहीं कि किसी का अनुकरण या पैरवी करने के लिये यह देख लेना ज़रूरी है कि वह सीधी राह पर हो, चुनान्व --

(१८) सच्चा दीन।

(१९) यानी उस दीन से।

(२०) अगरचे तुम्हारा दीन सच्चा और अच्छा हो मगर हम अपने बाप दादा का दीन छोड़ने वाले नहीं चाहें वह कैसा ही हो। इसपर अल्लाह तआला इशाराद फ़रमाता है।

(२१) यानी रसूलों के न मानने वालों और उन्हें झुटलाने वालों से।

सूरए जुखरूफ़ - तीसरा रूकू

(१) यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने उस तौहीदी कलिमे को जो फ़रमाया था कि मैं बेज़ार हूँ तुम्हारे मअबूदों से सिवाय उसके जिसने मुझे पैदा किया।

(२) तो आपकी औलाद में एक अल्लाह को मानने वाले तौहीद के दावेदार हमेशा रहेंगे।

(३) शिर्क से और ये सच्चा दीन कुबूल करें। यहाँ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाने में चेतावनी है कि ऐ मक्का वालो अगर तुम्हें अपने बाप दादा का अनुकरण करना ही है तो तुम्हारे बाप दादा में जो सब से बेहतर हैं हज़र इब्राहीम अलैहिस्सलाम, उनका अनुकरण करो और शिर्क छोड़ दो और यह भी देखो कि उन्होंने ने अपने बाप और अपनी क्रौम को सीधी राह पर नहीं पाया तो उनसे बेज़ारी का ऐलान फ़रमा दिया। इससे मालूम हुआ कि जो बाप दादा सीधी राह पर हों, सच्चा दीन रखते हों, उनका अनुकरण किया जाए और जो बातिल पर हों, गुमराही में हों उनके तरीक़े से बेज़ारी का इज़हार किया जाए।

(४) यानी मक्का के काफ़िरों को।

(५) लम्बी उम्र अता फ़रमाई और उनके कुफ़्र के कारण उनपर अज़ाब उतारने में जल्दी न की।

(६) यानी कुरआन शरीफ़।

॥३९॥ तो क्या तुम वहरों को सुनाओगे^(७) या अंधों को राह दिखाओगे^(८) और उन्हें जो खुली गुमराही में हैं^(९) ॥४०॥ तो अगर हम तुम्हें ले जाएं^(१०) तो उनसे हम ज़रूर बदला लेंगे^(११) ॥४१॥ या तुम्हें दिखा दें^(१२) जिसका उन्हें हमने वादा दिया है तो हम उनपर वड़ी कुदरत वाले हैं^(१३) ॥४२॥ तो मजबूत धामे रहो उसे जो तुम्हारी तरफ़ वही की गई^(१४) वेशक तुम सीधी राह पर हो^(१५) ॥४३॥ और वेशक वह^(१६) शरफ़ (बुजुर्गी) है तुम्हारे लिये^(१७) और तुम्हारी क्रौम के लिये^(१८) और बहुत जल्द तुम से पूछा जाएगा^(१९) ॥४४॥ और उनसे पूछो जा हमने तुमसे पहले रसूल भेजे क्या हमने रहमान के सिवा कुछ और ख़ुदा ठहराए जिनको पूजा हो^(२०) ॥४५॥

पाँचवां सूक़

और वेशक हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उसके सरदारों की तरफ़ भेजा तो उसने फ़रमाया वेशक मैं उसका रसूल हूँ जो सारे जगत का मालिक है^(२१) ॥४६॥ फिर जब वह उनके पास हमारी निशानियाँ लाया^(२२) जभी वो उन पर हंसने लगे^(२३) ॥४७॥ और हम उन्हें जो निशानी दिखाते वह पहले से बड़ी होती^(२४) और हमने उन्हें मुसीबत में गिरफ़्तार किया कि वो बाज़ आएँ^(२५) ॥४८॥ और बोले^(२६) कि ऐ जादूगर^(२७) हमारे लिये अपने रव से दुआ कर उस एहद के कारण जो उसका तेरे पास है^(२८) वेशक हम हिदायत पर आएँगे^(२९) ॥४९॥ फिर जब हमने उन से वह मुसीबत टाल दी जभी वो एहद तोड़ गए^(३०) ॥५०॥ और

مُشْتَرِكُونَ ۖ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْى وَمَنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ فَأَمَّا نَذْرَ هَبْنِ بِكَ فَأَنَّا مِنْهُمْ مُنْتَقِمُونَ ۖ أَوْ تُرِيدُنَا الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَأَنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُونَ ۖ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ ۖ إِنَّكَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ وَإِنَّهُ لَكُذُّكَ وَلِلْقَوْمِكَ وَسُوءٌ تَسْأَلُونَ ۖ وَسَأَلَ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا ۖ أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِلَهًا ۚ يُعْبَدُونَ ۖ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَضْحَكُونَ ۖ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَاهُمْ بِالْعُلْبِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۖ وَقَالُوا يَا أَيُّهُ الشُّعْرَاءُ ذُرْ لَنَا رَبِّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۖ إِنَّا لَمُهْتَدُونَ ۖ فَلَمَّا كَشَفْنَا

مَنْ

(७) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सबसे ज़्यादा रौशन आयतों और चमत्कारों के साथ तशरीफ़ लाए और अपनी शरीअत के अहकाम ख़ुले तौर पर बयान फ़रमा दिये और हमारे इस इनाम का हक़ यह था कि उस रसूले मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बात मानते लेकिन उन्होंने ऐसा न किया।

(८) मक्कए मुकर्रमा और ताइफ़।

(९) जो मालदार ज़त्येदार हो, जैसे कि मक्कए मुकर्रमा में वलीद बिन मुगीरह और ताइफ़ में अर्वा बिन मसऊद सक़स्बी अल्लाह तआला उनकी इस बात का रद्द फ़रमाता है।

(१०) यानी क्या नबुव्वत की कुंजियाँ उनके हाथ में हैं कि जिसको चाहें दे दें। किन्ती जिहालत वाली बात कहते हैं।

(११) तो किसी का मालदार किया, किसी को फ़क्कीर, किसी का ताक़तवर किया, किसी को कमज़ोर। मख़लूक में कोई हमार हुक़म का बदलन और हमारे तख़्त से बाहर निकलने की ताक़त नहीं रखता। तो जब दुनिया जैसी साधारण चीज़ में किसी का ऐतियाज़ की ताक़त नहीं तो नबुव्वत जैसी ऊँची उपाधि में किसी को दम मारने का क्या भोका है? हम जिसे चाहते हैं मनी करते हैं, जिसे चाहते हैं ख़ादिम बनाते हैं, जिसे चाहते हैं नबी बनाते हैं जिसे चाहते हैं उम्मीती बनाते हैं। अमीर क्या कोई अपनी यांग्यता से हो जाता है? हमारी अता है जिसे जो चाहे करें।

(१२) कुब्त व दौलत वगैरह दुनियावी नेअमत में।

(१३) यानी मालदार फ़क्कीर की हंसी करे, यह करतबी की तफ़रीर के मुताबिक़ है और दूसरे मुफ़रसिरी ने हंसी बनाने के मानी में नहीं लिया है बल्कि अअमाल व अशग़ाल के मुसह़रर बनाने के मानी में लिया है। उस सूरात में मानी ये होंगे कि हमने दौलत और माल में लोगों को अलग किया ताकि एक दूसरे से माल के ज़रिये ख़िदमत लें और दुनिया का निज़ाम मजबूत हो। गरीब को रोज़ी का साधन हाथ आए और मालदार को काम करने वाला उपलब्ध हो। तो इसपर कौन ऐतियाज़ कर सकता है कि इस आदमी को क्यों मालदार किया और उसको फ़क्कीर। और जब दुनिया के कामों में कोई व्यक्ति दम नहीं मार सकता तो नबुव्वत जैसे ऊँचे रूब में किसी का ज़वान ख़ालने की क्या ताक़त और ऐतियाज़ का क्या हक़। उसकी मर्ज़ी जिसको चाहें सरफ़राज़ फ़रमाए।

(१४) यानी ज़वत।

- (१५) यानी उस माल से बेहतर है जिसको दुनिया में काफिर जमा कर के रखते हैं।
 (१६) यानी अगर इसका लिहाज न होता कि काफिरों का खुशहाली में देखकर सब लोग काफिर हो जायेंगे।
 (१७) क्योंकि दुनिया और उसके सामान की हमारे नज़दीक कुछ कीमत नहीं। वह पतनशील है, जल्दी खत्म हो जाने वाला है।
 (१८) जिन्हें दुनिया की चाहत नहीं। तिरमिज़ी की हदीस में है कि अगर अल्लाह तआला के नज़दीक दुनिया मच्छर के पर के बराबर भी कीमत रखती तो काफिर को उससे एक घूंट पानी न देता। दूसरी हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम नियाज़मन्दों की एक जमाअत के साथ तशीफ़ ले जाते थे। रास्ते में एक मुर्दा बकरी देखी फ़रमाया देखते हो इसके मालिकों ने इसे बहुत बेकदरी से फ़ैंक दिया। दुनिया की अल्लाह तआला के नज़दीक इतनी भी कदर नहीं जितनी बकरी वालों के नज़दीक इस मरी बकरी की हो। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला अपने किसी बन्दे पर मेहरबानी फ़रमाता है तो उस दुनिया से ऐसा बचाता है जैसा तुम अपने बीमार को पानी से बचाओ। हदीस में है दुनिया मूмин के लिये कैद ख़ाना और काफिर के लिये जन्नत है।

सूरए जुखरूफ - चौथा रूकू

- (१) यानी कुरआन पाक से अन्धा बन जाए कि उसकी हिदायतों को न देखे और उनसे फ़ायदा न उठाए।
 (२) यानी अन्धा बनने वालों को।
 (३) वो अन्धा बनने वाले गुमराह होने के बावजूद।
 (४) क़यामत के दिन।
 (५) हसरत और शर्मिन्दगी।
 (६) ज़ाहिर और साबित हो गया कि दुनिया में शिकं करके।
 (७) जो कुबूल करने वाले कान नहीं रखते।
 (८) जो सच्चे देखने वाली आँख से मेहरूम हैं।
 (९) जिनके नसीब में ईमान नहीं।
 (१०) यानी उन्हें अज़ाब करने से पहले तुम्हें वफ़ात दें।
 (११) आपक बाद।
 (१२) तुम्हारी ज़िन्दगी में उनपर अपना वह अज़ाब।
 (१३) हमारी किताब कुरआन मजीद।
 (१४) कुरआन शरीफ़।
 (१५) कि अल्लाह तआला ने तुम्हें नबुच्चत व हिकमत अता की।
 (१६) यानी उम्मत के लिये, कि उन्हें उससे हिदायत फ़रमाई।
 (१७) क़यामत के दिन कि तुम ने कुरआन का क्या हक़ अदा किया, उसकी क्या तज़्ज़ीम की, उस नेअमत का क्या शुक्र बजा लाए।
 (१८) रसूलों से सवाल करने के मानी ये हैं कि उनके दीनों और मिल्लतों को तलाश करो, क्या कहीं भी किसी नबी की उम्मत में बुत परस्ती स्वा रखी गई है। और अक्सर मुफ़सिरों ने इसके मानी ये बयान किये हैं कि किताब वालों के मूमिनो से पूछो कि क्या कभी किसी नबी ने अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत की इज़ाज़त दी, ताकि मुश्रिकों पर साबित हो जाए कि मख़लूक परस्ती न किसी रसूल ने बताई न किसी किताब में आई। यह भी एक रिवायत है कि मेंअराज की रात में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सारे नबियों की बैतुल मक़दिस में इमामन फ़रमाई। जब हुज़ूर नमाज़ से फ़ारिग हुए, जिब्रील अमीन ने अर्ज़ किया कि ऐ सरवरे अक़रम, अपने से पहले नबियों से पूछ लीजिये कि क्या अल्लाह तआला ने अपने सिवा किसी और की इबादत की इज़ाज़त दी। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि इस सवाल की कुछ हाज़त नहीं, यानी इसमें कोई शक़ ही नहीं कि तमाम नबी तौहीद की दावत देते आए, सब ने मख़लूक परस्ती से मना फ़रमाया है।

सूरए जुखरूफ - पाँचवां रूकू

- (१) जो मूसा अलैहिस्सलाम की रिसालत को प्रमाणित करती थीं।
 (२) और उनके जादू बताने लगे।
 (३) यानी हर एक निशानी अपनी विशेषता में दूसरी से बढ़ी चढ़ी थी। मुराद यह है कि एक से एक उत्तम थीं।
 (४) कुफ़्र से ईमान की तरफ़ और यह अज़ाब दुष्काल और तूफ़ान और टिड्डी क़ौरह से किये गए। ये सब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की निशानियाँ थीं जो उनके नबी होने की दलील थीं और उनमें एक से एक उत्तम थी।
 (५) अज़ाब देखकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से।
 (६) ये क़लिमा उनकी बोली और मुहावरे में बहुत आदर और सम्मान का था। वो आलिम व माहिर और हाज़िक़ कामिल का जादूगर कहा करते थे और इसका कारण यह था कि उनकी नज़र में जादू की बहुत अज़मत थी और वो इसको प्रशंसा की बात समझते

फिरऔन अपनी कौम में^(१०) पुकारा कि ऐ मेरी कौम क्या मेरे लिये मिस्र की सल्तनत नहीं और ये नहरें कि मेरे नीचे बहती हैं^(११) तो क्या तुम देखते नहीं^(१२) या मैं बेहतर हूँ^(१३) उससे कि ज़लील है^(१४) और बात साफ़ करता मालूम नहीं होता^(१५) तो उस पर क्यों न डाले गए सोने के कंगन^(१६) या उसके साथ फ़रिश्ते आते कि उसके पास रहते^(१७) फिर उसने अपनी कौम को कम अक़ल कर लिया^(१८) तो वो उसके कहने पर चले^(१९) वेशक वो बेहुक़म लोग थे^(२०) फिर जब उन्होंने वह किया जिसपर हमारा राज़ब (प्रकोप) उनपर आया हमने उनसे बदला लिया तो हमने उन सबको डुबो दिया^(२१) उन्हें हमने कर दिया अगली दास्तान और कहावत पिछलों के लिये^(२२)

छटा रूकू

और जब मरयम के बेटे को मिसाल वयान की जाए ज़भी तुम्हारी कौम उससे हंसने लगते हैं^(१) और कहते हैं क्या हमारे मअबूद बेहतर हैं या वो^(२) उन्होंने तुम से यह न कही मगर नाहक झगड़े को^(३) बल्कि वो हैं झगड़ालू लोग^(४) वह तो नहीं मगर एक बन्दा जिस पर हमने एहसान फ़रमाया^(५) और उसे हमने बनी इस्राईल के लिये अजीब नमूना बनाया^(६) और अगर हम चाहते तो^(७) ज़मीन में तुम्हारे बदले फ़रिश्ते बसाते^(८) और वेशक ईसा कयामत

عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ۝ وَنَادَىٰ قِرْعُونُ فِي قَوْمِهِ قَالَ بِقَوْمِ الْبَيْتِ لِي مَلِكٌ مِّصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝ أَمْرًا أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مِثْلُ ۙ وَلَا يُكَادُ يُبِينُ ۝ فَلَئِمَّا لَقِيَ عَلَيْهِ آسُورَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ أَوْجَاءَ مَعَهُ الْمَلِكَةُ مُقْتَرِبِينَ ۝ فَاسْتَحَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ فَلَمَّا اسْقَوْا اتَّقَيْنَا مِنْهُمْ فَأَعْرَفْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ۝ وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ۝ وَقَالُوا آءِ إِلَهُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ ۚ مَا صَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصَصُونَ ۝ إِنَّ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ اتَّعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً فِي

थे. इसलिये उन्हीं ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को इल्तिजा के समय इस कलाम से पुकारा, कहा.

(७) वह एहद या तो यह है कि आपकी दुआ कुबूल है या नबुच्चत या ईमान लाने वालों और हिदायत कुबूल करने वालों पर से अज़ाब उठा लेना.

(८) ईमान लाएंगे. चुनान्ये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की और उनपर से अज़ाब उठा लिया गया.

(९) ईमान न लाए; कुफ़र पर अड़ रहे.

(१०) बहुत गर्व से.

(११) ये नील नदी से निकली हुई बड़ी बड़ी नहरें थीं जो फिरऔन के महल के नीचे जारी थीं.

(१२) मेरी महानता और कुबूत और शानों शौकत. अल्लाह तआला की अजीब शान है. ख़लीफ़ा रशीद ने जब यह आयत पढ़ी और मिस्र की हुकूमत पर फिरऔन का घमण्ड देखो तो कहा कि मैं वह मिस्र अपने मामूली गुलाम को दे दूंगा. चुनान्ये उन्होंने मिस्र ख़सीब को दे दिया जो उनका गुलाम था और बुज़ु कराने की ख़िदमत पर था.

(१३) यानी क्या तुम्हारे नज़्दीक साबित हो गया और तुमने समझ लिया कि मैं बेहतर हूँ.

(१४) यह उस बेईमान घमण्डी ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शान में कहा.

(१५) ज़बाब में गिरह होने को बज़ह से जो बचपन में आग मुह में रखने के कारण पड़ गई थी और यह उस मलज़न ने झूठ कहा क्योंकि आपकी दुआ से अल्लाह तआला ने ज़ब्रान की वह गिरह ज़ायल कर दी थी लेकिन फिरऔनी पहले ही ख़याल में थे. आगे फिर उसी फिरऔन का कलाम ज़िक्र फ़रमाया जाता है.

(१६) यानी अगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सच्चे हैं और अल्लाह तआला ने उनको सरदार बनाया है तो उन्हें सोने का कंगन क्यों नहीं पहनाया. यह बात उसने अपने ज़माने के दस्तूर के अनुसार कही कि उस ज़माने में जिस किसी को सरदार बनाया जाता था उसे सोने के कंगन और सोने का तौक पहनाया जाता था.

(१७) और उसकी सच्चाई को गवाही देते.

(१८) उन जाहिलों की अक़ल भ्रष्ट कर दी और उन्हें बहला फुसला लिया.

(१९) और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को झुटलाने लगे.

(२०) कि बाद वाले उनके हाल से नसीहत और इन्नत हासिल करें.

की खबर है^(१) तो हरगिज़ क़यामत में शक न करना और मेरे पैरो(अनुयायी) होना^(२) यह सीधी राह है^(३) और हरगिज़ शैतान तुम्हें न रोक दे^(४) बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है^(५) और जब ईसा रौशन निशानियाँ^(६) लाया उसने फ़रमाया मैं तुम्हारे पास हिकमत(बोध) लेकर आया^(७) और इस लिये मैं तुम से वयान कर दूँ कुछ वो बातें जिन में तुम इख़्तिलाफ़ रखते हो^(८) तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो^(९) बेशक अल्लाह मेरा रब और तुम्हारा रब तो उसे पूजो, यह सीधी राह है^(१०) फिर वो ग़िरोह आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए^(११) तो ज़ालिमों की ख़राबी है^(१२) एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से^(१३) काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर क़यामत के कि उनपर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर न हो^(१४) गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़गार^(१५)

सातवाँ सूक़

उनसे फ़रमाया जाएगा ऐ मेरे बन्दो आज न तुम पर ख़ोफ़ न तुम को ग़म हो^(१६) वो जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और मुसलमान थे^(१७) दाख़िल हो जन्नत में तुम और तुम्हारी वीवियाँ और तुम्हारी ख़ातिरें होती^(१८) उन पर दौरा हांगा सोने के प्यालों और ज़ामों का और उसमें जो

الْأَرْضِ يَخْلُقُونَ ۝ وَإِنَّ أَعْلَمَ لِلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُونَ
بِهَا وَتَبْعُونَ هَذَا صِرَاطَ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَلَا يَصُدُّكُمْ
الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝ وَلَمَّا جَاءَ عِيسَى
بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ
بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلَفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَأَطِيعُوا
إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَذَا صِرَاطٌ
مُسْتَقِيمٌ ۖ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابٍ يَوْمَ إِلْيَاسَ ۖ هَلْ
يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا
يَشْعُرُونَ ۖ الْآخِلَاءُ يُؤْمِنُ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ
إِلَّا الْمُتَّقِينَ ۖ يُعِيدُ لَأَخَوْفَ عَلَيْكُمْ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ
تَحْزَنُونَ ۖ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ۖ
ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ۖ يُطَافُ

مَنْزِلَ

सूरए जुखरूफ़ - छटा सूक़

(१) जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कुर्अ के आमतें यह आयत 'वमा तअबुदूना मिन दूबिल्लाहे हसबो जहन्नमा' पढ़ी जिसके मानी ये हैं कि ऐ मुशिकों, तुम और जो चीज़ अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो सब जहन्नम का ईंधन है, यह सुनकर मुशिकों का बहुत गुस्सा आया और इन्हे जुबअरी कहने लगा या मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) क्या यह ख़ास हमारे और हमारे मअबूदों ही के लिये है या हर उम्मत और ग़िराह के लिये ? सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि यह तुम्हारे और तुम्हारे मअबूदों के लिये भी है और सब उम्मतों के लिये भी, इसपर उसने कहा कि आपके नज़दीक ईसा दिन मर्यम तवी हैं और आप उनकी और उनकी वालिदा की तारीफ़ करते हैं और आपको मालूम है कि ईसाई इन दोनों का पूजते हैं और हज़रत उज़ैर और फ़रिश्ते भी पूजे जाते हैं, यानी यहूदी वगैरह उनको पूजते हैं तो अगर ये हज़रत (मआज़ल्लाह) जहन्नम में हों तो हम राज़ी हैं कि हम और हमारे मअबूद भी उनके साथ हों और यह कह कर काफ़िर खूब हंसे, इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी 'इन्नल लज़ीना सवक़त लहुम मिन्नल हुसना उलाइका अन्हा मुअबूद' यानी बेशक वो जिनके लिये हमारा वादा भलाई का हां चुका वां जहन्नम से दूर रखे गए हैं, (सूरए अंविशा, आयत १०१) और यह आयत उतरी 'व लम्मा दुरिबचना मर्यमा मसलन इज़ा कौमुक़ मिन्हां यसिद्द' यानी जब इबमन मर्यम की मिसाल बयान की जाए जभी तुम्हारी कौम (के लोग) उससे हंसने लगते हैं, (सूरए ज़ुख़रूफ़, आयत ५७) जिसका मतलब यह है कि जब इन्हे जुबअरी ने अपने मअबूदों के लिये हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मिसाल बयान की और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से झगड़े कि ईसाई उन्हें पूजते हैं तो कुर्अ उसकी इस बात पर हंसने लगें।

(२) यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, मतलब यह था कि आपके नज़दीक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बेहतर हैं तो अगर (मआज़ल्लाह) वह जहन्नम में हुए तो हमारे मअबूद यानी धृत भी हुआ करें कुछ पराह नही, इसपर अल्लाह तआला फ़रमाता है,

(३) यह ज्ञात हो भी कि वो जो कुछ कह रहे हैं यातिल है और आयत 'इन्नकुम वमा तअबुदूना मिन दूबिल्लाहे' में सिर्फ़ वत मुग़द हैं हज़रत ईसा व हज़रत उज़ैर और फ़रिश्ते कोई मुग़द नहीं लिये जा सकते, इन्हे जुबअरी अथवा ज़वान का जानने वाला था यह उसका खूब मालूम था कि 'मा-तअबुदना' में ज 'मा' है उसके मानी चीज़ के हैं इससे बेजत बेअक़ल मुग़द होते हैं लेकिन इसके वाबुद उसका अथवा ज़वान के उसूल से जाहिल बनकर हज़रत ईसा और हज़रत उज़ैर और फ़रिश्तों को उसमें दाख़िल करना कट हज़रती और अज्ञानता है,

(४) यातिल के दरपै होने वाले, अथ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की निखन इरशाद फ़रमाया जाता है,

(५) नबुच्चत अता फ़रमा कर,

(६) अपनी कुदरत का कि बिना आप के पैदा किया,

(७) ऐ मक्का वालों हम तुम्हें हलाक कर देंगे और ---

जी चाहे और जिससे आँख को लज़्ज़त पहुँचे^(४) और तुम उसमें हमेशा रहोगे^(५) और यह है वह जन्नत जिसके तुम वारिस किये गए अपने कर्मों से^(६) तुम्हारे लिये इसमें बहुत मेवे हैं कि उनमें से खाओ^(७)^(८) वेशक मुजरिम^(९) जहन्नम के अज़ाब में हमेशा रहने वाले हैं^(१०) वह कभी उन पर से हलका न पड़ेगा और वो उसमें बेआस रहेंगे^(११) और हमने उनपर कुछ जुल्म न किया हाँ वो खुद ही ज़ालिम थे^(१२) और वो पुकारेंगे^(१३) ऐ मालिक तेरा रब हमें तमाम कर चुके^(१४) वह फ़रमाएगा^(१५) तुम्हें तो ठहरना है^(१६) वेशक हम तुम्हारे पास हक़ लाए^(१७) मगर तुम में अक्सर को हक़ नागवार है^(१८) क्या उन्होंने^(१९) अपने खयाल में कोई काम पक्का कर लिया है^(२०) तो हम अपना काम पक्का करने वाले हैं^(२१) क्या इस घमण्ड में हैं कि हम उनकी आहिस्ता बात और उनकी मशविरत (सलाह) नहीं सुनते, हाँ क्यों नहीं^(२२) और हमारे फ़रिश्ते उनके पास लिख रहे हैं^(२३) तुम फ़रमाओ फ़र्ज़ करो रहमान के कोई बच्चा होता तो सब से पहले मैं पूजता^(२४) पाकी है आसमानों और ज़मीन के रब को अर्श के रब को उन बातों से जो ये वनाते हैं^(२५) तो तुम उन्हें छोड़ो कि वेहूदा बातें करें और खेलें^(२६) यहाँ

عَلَيْهِمْ بِصَحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۖ وَفِيهَا
مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنتُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ۖ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ۖ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ۖ
إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّهِينٍ ۖ خَالِدُونَ
لَا يَفْتَرُّ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۖ وَمَا ظَنُّهُمْ
وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ۖ وَنَادُوا يَبْنَكَ لِيُقْضَىٰ
عَلَيْكَ رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ تُكْتَبُونَ ۖ لَقَدْ جِئْتُمْكُمْ
بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ۖ أَمْ أَبْرَمُوا
أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ۖ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ
وَنَجْوَاهُمْ ۖ بَلَىٰ ۖ وَرُسُلْنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ۖ قُلْ إِن
كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَكَدٌّ فَانَا أَوَّلُ الْعَمِيدِينَ ۖ سُبْحَانَ
رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۖ

- (८) जो हमारी इबादत और फ़रमाँवरदारी करते।
(९) यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से उतरना क़यामत की निशानियों में से है।
(१०) यानी मेरी हिदायत व शरीअत का पालन करना।
(११) शरीअत के पालन या क़यामत के यकीन या दीन इलाही पर क़ायम रहने से।
(१२) यानी चमत्कार।
(१३) यानी नबुव्वत और इन्जील के आदेश।
(१४) तौरात के आदेशों में से।
(१५) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का क़त्लामे मुबारक पूरा हो चुका। आगे ईसाईयों के शिकों का बयान किया जाता है।
(१६) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद उनमें से किसी ने कहा कि ईसा खुदा था किसी ने कहा कि खुदा के बेटे, किसी ने कहा तीन में के तीसरे। गरज़ ईसाई फ़िक्कों में बट गए यअक़ूबी, नस्तूरी, मल्लकानी, शमज़नी।
(१७) जिन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में कुछ की बातें कहीं।
(१८) यानी क़यामत के दिन के।
(१९) यानी दीनी दोस्ती और वह महबूत जो अल्लाह तआला के लिये है, बाकी रहेगी। हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो से इस आयत की तफ़सीर में रिवायत है आपने फ़रमाया दो दोस्त मुमिन और दो दोस्त काफ़िर, मुमिन दोस्तों में एक मर जाता है तो अल्लाह की बाग़माह में अर्ज़ करता है याख़ फ़लों मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमाँवरदारी का और नफी करने का हुक्म देता था और मुझे बुराई से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे हुज़ूर हाज़िर होना है। याख़ उसको मेरे बाद गुमराह न कर और उसको हिदायत दे जैसी मेरी हिदायत फ़रमाई और ज़ाक़ा सम्मान का जैसा मेरा सम्मान फ़रमाया। जब उसका मुमिन दोस्त मर जाता है तो अल्लाह तआला दोनों को जमा करता है और फ़रमाता है कि तुम में हर एक दूसरे की तारीफ़ करे तो हर एक कहता है कि यह अच्छा भाई है अच्छा दोस्त है अच्छा साथी है। और दो काफ़िर दोस्तों में से जब एक मर जाता है तो दुआ करता है याख़ फ़लों मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमाँवरदारी से मना करना था और बुराई का हुक्म देता था नेकी से रोकना था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे समक्ष हाज़िर नहीं होना है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम में से हर एक दूसरे की तारीफ़ करे तो उनमें से एक दूसरे को कहता है बुरा भाई बुरा दोस्त बुरा साथी।

सूरए जुखरूफ़ - सातवाँ रूकू

- (१) यानी जन्नत में तुम्हारा सम्मान, नअमत् दी जाएगी, ऐसे खुश किये जाओगे कि तुम्हारे चेहरों पर ख़शी के आसार नमूदार होंगे।

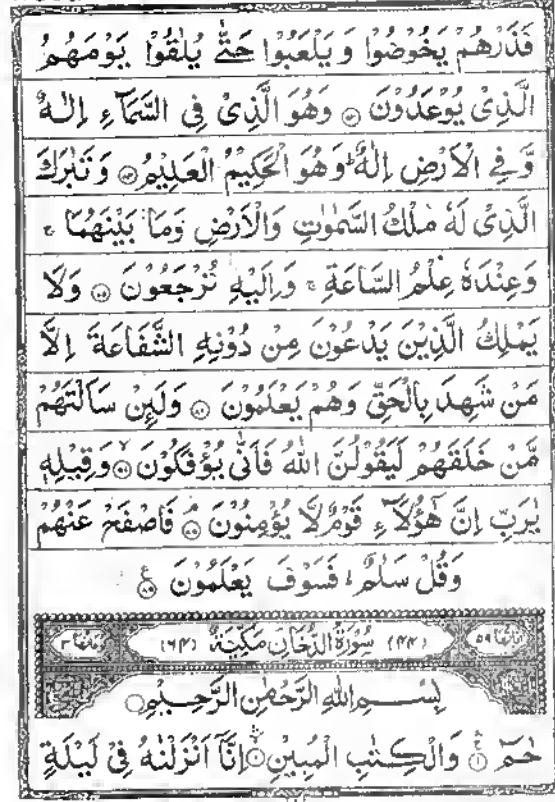
तक कि अपने उस दिन को पाएं जिसका उनसे वादा है^(११) (८३) और वही आसमान वालों का खुदा^(१२) और ज़मीन वालों का खुदा, और वही हिकमत (बोध) व इल्म वाला है^(८४) और बड़ी वरकत वाला है वह कि उसी के लिये है सल्लतनत आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके बीच है और उसी के पास है क़यामत का इल्म, और तुम्हें उसी की तरफ़ फ़िरना^(८५) और जिन को ये अल्लाह के सिवा पूजते हैं शफ़ाअत का इख़्तियार नहीं रखते हैं शफ़ाअत का इख़्तियार उन्हें है जो हक़ की गवाही दें^(८६) और अगर तुम उनसे पूछो^(८७) कि उन्हें किसने पैदा किया तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने^(८८) तो कहाँ औंधे जाते हैं^(८९) (८७) मुझे रसूल^(९०) के इस कहने की क़सम^(९१) कि ऐ मेरे रब ये लोग ईमान नहीं लाते^(९२) तो इन से दरगुज़र करो (छोड़ दो) और फ़रमाओ बस सलाम है, ^(९३) कि आगे जान जाएंगे^(९४) (८९)

४४- सूरए दुखान

सूरए दुखान मक्का में उतरी, इसमें ५९ आयतें, तीन रूक़ हैं।

पहला रूक़

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला ^(१) हा-मीम^(२) क़सम इस रौशन किताब की^(३) (२) बेशक हमने इसे वरकत वाली रात में उतारा^(४) वेशक हम डर



- (२) तरह तरह की नेअमतें.
- (३) ज़ब्रती दरख्त फलदार सदा बहार हैं उनकी ताज़गी और जीवत में फ़र्क़ नहीं आता . हदीस शरीफ़ में है कि अगर कोई उनसे एक फल लेगा तो दरख्त में उसकी जगह दो फल निकल आएंगे.
- (४) यानी काफ़िर.
- (५) रहमत की उम्मीद भी न होगी.
- (६) कि सरकशी और नाफ़रमानी करके इस हाल को पहुंचें.
- (७) जहन्नम के दारोगा को कह.
- (८) यानी मौत दे दे. मालिक से प्रर्थना करेंगे कि वह अल्लाह तदारक व तआला से उनकी मौत की दुआ कर.
- (९) हज़ार बरस बाद.
- (१०) अज़ाब में हमेशा, कभी उससे रिहाई न पाओगे, न मौत से और न और किसी प्रकार. इसके बाद अल्लाह तआला मक्का वालों से ख़ि़ताब फ़रमाता है.
- (११) अपने रसूलों द्वारा.
- (१२) यानी मक्के के काफ़िरों ने.
- (१३) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ छत्र करने और धोखे से तक्लीफ़ पहुंचाने का और वास्तव में ऐसा ही था कि कु़रैश दरख्त-नदवा में जमा होकर हुज़ुर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तक्लीफ़ देने के तरीक़े सोचते थे.
- (१४) उनके इस छलकपट का बदला जिसका अन्त उनकी हलाकत है.
- (१५) हम ज़रूर सुनते हैं और छुपी खुली हर बात जानते हैं. हम से कुछ भी नहीं छुप सकता.
- (१६) लेकिन उसके बच्चा नहीं है और उसके लिये औलाद असंभव है, किसी सूरत मुमकिन नहीं. नज़र बिन हारिस ने कहा था कि फ़रिश्ते खुदा की बैटियाँ हैं . इसपर यह आयत उतरी तो नज़र कड़ने लगा देखते हो कु़रआन में मेरी तस्दीक़ आगई. बलीद ने कहा कि तेरी तस्दीक़ नहीं हुई बल्कि यह फ़रमाया गया है कि रहमान के बेटा नहीं है और मैं मक्का वालों में से पहला व्यक्ति हूँ जो अल्लाह के एक होने में यक्नी रख़ता हूँ और उसके औलाद होने का इन्कार करता हूँ. इसके बाद अल्लाह तआला की तन्ज़ीह का बयान है.
- (१७) और उसके लिये औलाद फ़रार देते हैं.
- (१८) यानी जिस बेहूदगी और बातिल में हैं उसी में पड़े रहें.

सुनाने वाले हैं^(१३) इस में बाँट दिया जाता है हर हिकमत वाला काम^(१४) हमारे पास के हुक्म से वेशक हम भेजने वाले हैं^(१५) तुम्हारे रब की तरफ से रहमत, वेशक वही सुनता जानता है^(१६) वह जो रब है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके बीच है अगर तुम्हें यकीन हो^(१७) उसके सिवा किसी की बुन्दगी नहीं वह जिलाए और मारे, तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का रब^(१८) बल्कि वो शक में पड़े खेल रहे हैं^(१९) तो तुम उस दिन के मुत्तज़िर रहो (प्रतीक्षा करो) जब आसमान एक ज़ाहिर धुआँ लाएगा^(२०) कि लोगों को ढांप लेगा^(२१) यह है दर्दनाक अज़ाब^(२२) उस दिन कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर से अज़ाब खोल दे हम ईमान लाते हैं^(२३) कहां से हो उन्हें नसीहत मानना^(२४) हालांकि उनके पास साफ़ बयान फ़रमाने वाला रसूल तशरीफ़ ला चुका^(२५) फिर उससे मुंह फेर लिये और वोले सिखाया हुआ दीवाना है^(२६) हम कुछ दिनों को अज़ाब खोले देते हैं तुम फिर वही करो^(२७) जिस दिन हम सबसे बड़ी पकड़ पकड़ेंगे^(२८) वेशक हम बदला लेने

مُبَارَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِينَ ۝ فِيهَا يُفْرَقُ
كُلُّ اَفْرِحٍ كَرِيمٍ ۝ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۝ اِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِينَ ۝ رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ ۝ اِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ ۝ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۝
اِنْ كُنْتُمْ مُّوقِنِينَ ۝ لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ يَحْيِي وَيُمِيتُ ۝
رَبُّكُمْ وَرَبُّ اَبَائِكُمُ الْاَوَّلِينَ ۝ بَلْ هُمْ
فِي شَكٍّ يَّلْعَبُونَ ۝ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ
بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ۝ يُغْشَى النَّاسَ ۝ هَذَا عَذَابٌ
اَلِيمٌ ۝ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ ۝ اِنَّا مُّؤْمِنُونَ ۝
اِنِّي لَهُمُ الذِّكْرُ ۝ وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِينٌ ۝
ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ۝ اِنَّا
كَاشَفُوْا الْعَذَابَ قَلِيْلًا ۝ اِنَّكُمْ عَاثِرُونَ ۝
يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى ۝ اِنَّا مُنْتَقِمُونَ ۝

- (१९) जिसमें अज़ाब किये जाएंगे, और वह क़यामत का दिन है.
- (२०) यानी वही मअबूद है आसमान और ज़मीन में. उसी की इबादत की जाती है उसके सिवा कोई पूजनीय नहीं.
- (२१) यानी अल्लाह के एक होने की.
- (२२) इसका कि अल्लाह उनका रब है. ऐसे मक़बूल बन्दे ईमानदारों की शफ़ाअत करेंगे.
- (२३) यानी मुश्किों से.
- (२४) और अल्लाह तआला के जगत का पैदा करने वाला होने का इक़्रार करेंगे.
- (२५) और इस इक़्रार के बावजूद उसकी तौहीद से फिरते हैं.
- (२६) सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
- (२७) अल्लाह तआला का हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़ौले मुबारक की क़सम याद फ़रमाना हुज़ूर के सम्मान और हुज़ूर की दुआ और इल्तिजा के सम्मान का इज़हार है.
- (२८) और उन्हें छोड़ दो.
- (२९) यह सलाम बेज़ारी का है इसके मानी ये हैं कि हम तुम्हें छोड़ते हैं और तुम से अमन में रहना चाहते हैं.
- (३०) अपना अन्त या अंजाम.

४४ - सूरए दुख़ान - पहला रूकू

- (१) सूरए दुख़ान मक्की है. इसमें तीन रूकू, सत्तावन या उत्सठ आयतें हैं, तीन सौ छियालीस कलिमे और एक हज़ार चार सौ इकतीस अक्षर हैं.
- (२) यानी क़ुरआने पाक की जो हलाल और हराम बग़ैरह निर्देशों का बयान फ़रमाने वाला है.
- (३) इस रात से या शबे क़द्र मुराद है या शबे बराअत. इस रात में क़ुरआने पाक पूरे का पूरा लौह मेहफूज़ में दुनिया के आसमान की तरफ़ उतारा गया फिर वहाँ से जिब्रीले अमीन तेईस साल के असे में थोड़ा थोड़ा लेकर उतरे. इस रात को मुबारक रात इसलिये फ़रमाया गया कि इसमें क़ुरआने पाक उतरा और हमेशा इस रात में मलाई और बरक़त उतरती है. दुआएं कुबूल की जाती हैं.
- (४) अपने अज़ाब का.
- (५) साल भर के रिज़क और मौत और अहक़ाम.
- (६) अपने रसूल श्वातमुल अंबिया मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनसे पहले नबियों को.
- (७) कि वह आसमान और ज़मीन का रब है तो यकीन करो कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके रसूल हैं.

वाले हैं (१६)

और वेशक हमने उनसे पहले फिरऔन की कौम को जांचा और उनके पास एक इज्जत वाला रसूल तशरीफ लाया (१७) कि अल्लाह के बन्दों को मुझे सुपुर्द कर दो (१८) वेशक मैं तुम्हारे लिये अंमोनत वाला रसूल हूँ (१९) और अल्लाह के मुकाबिल सरकशी न करो, मैं तुम्हारे पास एक रोशन सनद लाता हूँ (२०) और मैं पनाह लेता हूँ अपने रब और तुम्हारे रब की इससे कि तुम मुझे संगसार करो (२१) और अगर तुम मेरा यकीन न लाओ तो मुझ से किनारे हो जाओ (२२) तो उसने अपने रब से दुआ की कि ये मुजरिम लोग हैं (२३) हमने हुक्म फरमाया कि मेरे बन्दों (२४) को रातों रात ले निकल ज़रूर तुम्हारा पीछा किया जाएगा (२५) और दरिया को यूँही जगह जगह से खुला छोड़ दे (२६) वेशक वह लश्कर डुबोया जाएगा (२७) कितने छोड़ गए बाग और चशमे (२८) और खेत और ऊमदा मकानात (२९) और नेअमतें जिनमें फारिगुलवाल थे (३०) हमने यूँही किया और उनका वारिस दूसरी कौम को कर दिया (३१) तो उनपर आसमान और ज़मीन न रोए (३२) और उन्हें मुहलत न दी गई (३३)

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ۖ أَنْ أَدُّوا إِلَيَّ عِبَادَ اللَّهِ ۖ إِنَّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ وَأَنْ لَا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ ۖ إِنِّي آتِيكُمْ بِسُلْطَنِ مُبِينٍ ۖ وَإِنِّي عَذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُؤُنِ ۖ وَإِنْ لَمْ تُؤْمِنُوا إِلَيَّ فَأَعْتَزَلُوكُنِ ۖ فَدَعَا رَبَّهُ أَنْ هَلْؤَلَاءَ قَوْمٌ مُجْرِمُونَ ۖ فَأَسْرَبْنَاكَ كَيْدًا وَكَيْدًا مُتَّبِعُونَ ۖ وَاتْرَكْنَاهُ الْيَمَّ رَهْوًا ۖ فَهُمْ جُنْدٌ مُعْرَقُونَ ۖ كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۖ وَزُرُوعٍ وَ مَقَامٍ كَرِيمٍ ۖ وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ۖ كَذَلِكَ نَذَرْنَا قَوْمَ الْآخِرِينَ ۖ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ۖ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا يَسْرَاءَ بِلَ مِنْ

مَنْ

(८) उनका इकरार इल्म और यकीन से नहीं बल्कि उनकी रात में हंसी और ठट्ठा शामिल हैं और वो आपके साथ खिलती करते हैं। तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन पर दुआ की कि या रब उन्हें ऐसे सात साल के दुष्काल में गिरफ्तार कर जैसे सात साल का दुष्काल हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के ज़माने में भेजा था। यह दुआ कुबूल हुई और हज़रत सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इरशाद फरमाया गया।

(९) चुनान्वं कुरैश पर दुष्काल आया और यहाँ तक उसकी तंज़ी हुई कि लोग मुर्दा खा गए और भूख से इस हाल को पहुंच गए कि जब ऊपर का नज़र उठाते आसमान की तरफ देखते तो उनका धुआँ ही धुआँ मालूम होता यानी कमज़ोरी से निगाहों में खीरगी आगई थी। और दुष्काल से ज़मीन सूख गई, धूल उड़ने लगी, मिट्टी धूल ने हवा को प्रदूषित कर दिया। इस आयत की तफ़सीर में एक कौल यह भी है कि धुएं से मुराद यह धुआँ है जो क़्यामत की निशानियों में से है और क़्यामत के करीब ज़ाहिर होगा। पूर्व और पश्चिम उससे भर जाएंगे, चालीस दिन रात रहेगा। मूमिन की हालत तो उससे पसी हो जाएगी जैसे जुकाम हो जाए और काफ़िर मदहोश हो जाएंगे। उनके नथानों और कानों और छेदों से धुआँ निकलेगा।

(१०) और तेंरे नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरदीक करते हैं।

(११) यानी इस हालत में वो कैसे नसीहत मानेंगे।

(१२) और खुल चमत्कारों और साफ़ ज़ाहिर निशानियों को पंश फरमा चुका।

(१३) जिसको वही की ग़शी तारी होने के वक़्त जिज़्रात ये क़लिमे तलकीन कर जाते हैं। (मआज़ल्लाह)

(१४) जिस क़ुफ़्र में थें उसी की तरफ़ लौटेंगे। चुनान्वं ऐसा ही हुआ। अब फरमाया जाता है कि उस दिन को याद करो।

(१५) उस दिन से मुराद क़्यामत का दिन है या बद्र का दिन।

(१६) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम।

(१७) यानी बनी इस्राईल को मेरे हवाले कर दो और उनपर जो सज़ियाँ करते हो, उससे रिहाई दो।

(१८) अपनी नबुव्वत और रिसालत की सच्चाई की। जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने यह फरमाया तो फिरऔनियों ने आपको क़त्ल की धमकी दी और कहा कि हम तुम्हें संगसार करेंगे। तो आपने फरमाया।

(१९) यानी मेरा भरोसा और ऐतिमाद उस पर है। मुझे तुम्हारी धमकी की कुछ परवाह नहीं। अल्लाह तआला मेरा नशक है।

(२०) मेरी तकलीफ़ के दरपै न हो। उन्होंने इसको भी न माना।

(२१) यानी बनी इस्राईल।

(२२) यानी फिरऔन अपने लश्करों समेत तुम्हारे पीछे होगा। चुनान्वं हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम खाना हुए और दरिया पर पहुंचकर आपने नाटी

दूसरा स्कू

और वेशक हमने बनी इस्राईल को जिल्लत के अज़ाब से निजात वांछी^(१) (३०) फिरऔन से वेशक वह मुतकव्विर (घमण्डी) हद से बढ़ने वालों में से था^(२) (३१) और वेशक हमने उन्हें^(३) जानकर चुन लिया उस ज़माने वालों से^(४) (३२) और हमने उन्हें वो निशानियाँ अता फ़रमाई जिन में खुला इनाम था^(५) (३३) वेशक ये^(६) कहते हैं^(७) (३४) वह तो नहीं मगर हमारा एक बार का मरना^(८) और हम उठाए न जाएंगे^(९) (३५) तो हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो^(१०) (३६) क्या वो बेहतर हैं^(११) या तुव्वा की क्रौम^(१२) और जो उनसे पहले थे^(१३) हमने उन्हें हलाक कर दिया^(१४) वेशक वो मुजरिम लोग थे^(१५) (३७) और हमने न बनाए आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है खेल के तौर पर^(१६) (३८) हमने उन्हें न बनाया मगर हक़ (सत्य) के साथ^(१७) लेकिन उनमें अक्सर जानते नहीं^(१८) (३९) वेशक फ़ैसले का दिन^(१९) उन सबकी मीआद है^(२०) जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा^(२१) और न उनकी मदद होगी^(२२) (४१) मगर जिसपर

الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝ مِنْ فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُ كَانَ
عَالِيًا مِنَ الْمُسْرِفِينَ ۝ وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَى
عِلْمِ عَالِيَيْنَ ۝ وَأَتَيْنَهُمْ مِنَ الْآيَاتِ مَا
فِيهِ بَلَاءٌ مُبِينٌ ۝ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۝
إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِينَ ۝
فَأْتُوا بِآيَاتِنَا ۚ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝
أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ
أَهْلَكْنَاهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝ وَمَا
خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لِعِبَادٍ ۝
مَا خَلَقْنَاهُمْ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝
يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْتَكَ عَنْ مَوْتِكَ شَيْئًا وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ۝ إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ

مَلِكٌ

मारी. उसमें बारह राते सूखे पैदा हो गए. आप बनी इस्राईल के साथ दरिया में से गुज़र गए. पीछे फिरऔन और उसका लश्कर आ रहा था. आपने चाहा कि फिर असा मास्कर दरिया का मिला दें ताकि फिरऔन उसमें से न गुज़र सकें. तो आपको हुक्म हुआ.

(२३) ताकि फिरऔनी इन रास्तों से दरिया में दाख़िल हो जाए.

(२४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को इम्तीनान हो गया और फिरऔन और उसके लश्कर दरिया में डूब गए और उनकी सारी माल मत्ता और सामान वहीं रह गया.

(२५) सजे सजाए.

(२६) पेश करते इतराते.

(२७) यानी बनी इस्राईल को जो न उनके हम मज़हब थे न रिश्तेदार न दोस्त.

(२८) क्योंकि वो ईमानदार न थे और ईमानदार जब मरता है तो उसपर आसमान और ज़मीन चालीस रोज़ नक़ रोंते हैं जैसा कि तिरमिज़ी की हदीस में है. मुजाहिद से कहा गया कि क्या मूमिन की मौत पर आसमान व ज़मीन रोंते हैं. फ़रमाया ज़मीन क्यों न रोए उम बन्दे पर जो ज़मीन को अपने स्कू और सज्दों से आवाद रखता था और आसमान क्यों न रोए उस बन्दे पर जिसकी तस्बीह और तक्वीर आसमान में पहुंचती थी. हसन का कौल है कि मूमिन की मौत पर आसमान वाले और ज़मीन वाले रोंते हैं.

(२९) तौबह वगैरह के लिये अज़ाब में गिरफ़्तार करने के बाद.

सूरए दुखान - दूसरा स्कू

(१) यानी गुलामी और सज़्ज़ ज़िदमतों और मेहनतों से और औलाद के क़त्ल किये जाने से जो उन्हें पहुंचता था.

(२) यानी बनी इस्राईल को.

(३) कि उनके लिये दरिया में ख़ुशक़ रस्ते बनाए, बादल को सायवान किया, मन्न और सलवा उतागा, इसके अलावा और नेअमतें दीं.

(४) मक्के के काफ़िर.

(५) यानी इस ज़िन्दगानी के बाद सिवाय एक मौत के हमारे लिये और कोई हाल बाक़ी नहीं. इससे उनका तात्पर्य मौत के बाद ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करता था जिसको अगले जुमले में साफ़ कर दिया. (कबीर)

(६) मौत के बाद ज़िन्दा करके.

(७) इस बात में कि हम मरने के बाद ज़िन्दा करके उठाए जाएंगे. मक्के के काफ़िरों ने यह सवाल किया था कि कुसई बिन क्लाब को ज़िन्दा कर दो. अगर मौत के बाद किसी का ज़िन्दा होना संभव हो और यह उनकी जाहिलाना बात थी क्योंकि जिस काम के लिये समय निर्धारित हो उसका उस समय से पहले बुज़ूद में न आना उसके असंभव होने का प्रमाण नहीं है और न उसका इन्कार सही

अल्लाह रहम करे^(११) वेशक वही इज़्जत वाला मेहरवान है^(४२)

तीसरा रूकू

वेशक थूहड़ का पेड़^(१) (४३) गुनहगारों की खुराक है^(२) (४४) गले हुए ताँवे की तरह पेटों में जोश मारता है^(३) (४५) जैसा खोलता पानी जोश मारे^(४) (४६) उसे पकड़ो^(५) ठीक भड़कती आग की तरफ़ ज़ोर से घसटते ले जाओ^(६) (४७) फिर उसके सर के ऊपर खोलते पानी का अज़ाब डालो^(७) (४८) चख^(८) हाँ हाँ तू ही वड़ा इज़्जत वाला करम वाला है^(९) (४९) वेशक यह है वह^(१०) जिसमें तुम शुद्ध करते थे^(११) (५०) वेशक डर वाले अमान की जगह में हैं^(१२) (५१) बागों और चश्मों में^(१३) पहनेंगे क्रेव और क़नादीज़^(१४) आमने सामने^(१५) (५२) यूँही है और हमने उन्हें ब्याह दिया निहायत सियाह और रौशन वड़ी आँखों वालियों से^(१६) (५३) उसमें हर क्रिस्म का मेवा माँगेंगे^(१७) अमन व अमान से^(१८) (५४) उसमें पहली मौत के सिवा^(१९) फिर मौत न चखेंगे और अल्लाह ने उन्हें आग के अज़ाब से बचा लिया^(२०) (५५) तुम्हारे रब के फ़ज़ल से, यही वड़ी कामयाबी है^(२१) (५६) तो

الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ اِنْ شَجَرْتَ الرَّقُومَ ۝ طَعَامُ
الْاَرْنَبِ ۝ كَالْمُهْلِ ۝ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلِي
الْحَبِيمِ ۝ خُدُوهُ فَاعْتَلُوهُ ۝ اِلَيْ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝
ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَاسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَبِيمِ ۝
ذُقْ ۝ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝ اِنَّ
هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝ اِنَّ الشَّقِيْنَ
فِي مَقَامٍ اَمِينٍ ۝ فِي جَنَّتٍ وَعُيُوبٍ ۝
يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ۝
كَذَلِكَ نَوْرُوْهُمْ بِخُورٍ عَبِيْنٍ ۝ يَدْعُوْنَ
فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اَمْنِيْنٍ ۝ لَا يَدْعُوْنَ
فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُولٰٓءِ ۝ وَوَقَّعَهُمْ
عَذَابُ الْجَحِيْمِ ۝ فَضَلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۝ ذٰلِكَ
هُوَ الْقُوْرُ الْعَظِيْمُ ۝ فَاَنشَا۟ يَسْرُنٰهُ بِلِسَانِكَ

होता है। अगर कोई व्यक्ति किसी नए जन्मे हुए द्रव्य या पौधे को कहे कि इसमें से अभी फल निकालो वरना हम नहीं मानेंगे कि इस पेड़ में फल निकलता है तो उसको जाहिल करार दिया जाएगा और उसका इन्कार मात्र मूर्खता या हठधर्मी होगी।

- (८) यानी मक्के के काफ़िर ज़ोर और कुब्त में।
- (९) तुब्बा हमीयरी, यमन के बादशाह ईमान वाले थे और उनकी क़ौम काफ़िर थी जो बहुत शक्तिशाली और बहुसंख्यक थी।
- (१०) काफ़िर उम्मतों में से।
- (११) उनके कुफ़र के कारण।
- (१२) काफ़िर मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने का इन्कार।
- (१३) अगर मरने के बाद उठना और हिसाब व सबाब न हो तो सृष्टि की पैदाइश मात्र फ़ना के लिये होगी और यह बर्थ है। तो इस दलील में साबित हुआ कि इस दुनियावी ज़िन्दगी के बाद आख़िरत की ज़िन्दगी ज़रूरी है जिसमें हिसाब और जज़ा हो।
- (१४) कि फ़रमाँबरदारी पर सबाब दें और गुनाहों पर अज़ाब करें।
- (१५) कि पैदा करने की हिक्मत यह है और हिक्मत वाले का काम बेवजह नहीं होता।
- (१६) यानी क़यामत का दिन जिसमें अल्लाह तआला अपने बन्दों में फैसला फ़रमाएगा।
- (१७) और रिश्तेदारी और महब्वत नफ़ा न देगी।
- (१८) यानी काफ़िरों की।
- (१९) यानी सिवाय मूमीनीन के कि वो अल्लाह तआला की इज़ाज़त से एक दूसरे की शफ़ाअत करेंगे। (जुमल)

सूरए दुखान - तीसरा रूकू

- (१) थूहड़ कि ख़बीस अत्यन्त कड़वा पेड़ है जो जहन्नम वालों की खुराक होगा। हदीस शरीफ़ में है कि अगर एक क़तरा उस थूहड़ का दुनिया में टपका दिया जाए तो दुनिया वालों की ज़िन्दगी ख़राब हो जाए।
- (२) अबू जहल की, और उसके साथियों की जो बड़े गुनहगार हैं।
- (३) जहन्नम के फ़रिश्तों को हुक्म दिया जाएगा कि ---
- (४) यानी गुनहगार को।
- (५) और उस वक़्त दोज़ख़ी से कहा जाएगा कि ---
- (६) इस अज़ाब को।
- (७) फ़रिश्ते यह क़लाम अपमान के लिये कहेंगे क्योंकि अबू जहल कहा करता था कि बतहा में मैं बड़े सम्मान वाला बुजुर्गी वाला

हमने इस कुरआन को तुम्हारी ज़बान में^(१३) आसान किया कि वो समझें^(१४) (५८) तो तुम इन्तिज़ार करो^(१५) वो भी किसी इन्तिज़ार में हैं^(२०) (५९)

४५ - सूरए जासियह

सूरए जासियह मक्का में उतरी, इसमें ३७ आयतें, चार रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) हा-मीम (१) किताब का उतारना है अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत वाले की तरफ से^(२) वेशक आसमानों और ज़मीन में निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिये^(३) (३) और तुम्हारी पैदाइश में^(४) और जो जो जानवर वह फैलाता है उनमें निशानियाँ हैं यक़ीन वालों के लिये^(५) (४) और रात और दिन की तब्दीलियों में^(६) और इसमें कि अल्लाह ने आसमान से रोज़ी का साधन में उतारा तो उससे ज़मीन को उसके मरे पीछे ज़िन्दा किया और हवाओं की गर्दिश में^(७) निशानियाँ हैं अक्लमन्दों के लिये^(८) (५) ये अल्लाह की आयतें हैं कि हम तुम पर हक़ के साथ पढ़ते हैं, फिर अल्लाह और उसकी आयतों को छोड़कर कौन सी बात पर ईमान लाएंगे^(६) ख़राबी है हर बड़े बोहतानहाए गुनहगार के लिये^(७) (६) अल्लाह की आयतों को सुनता है कि उसपर पढ़ी जाती हैं फिर हठ पर जमता है^(८) घमण्ड करता^(९) मानो उन्हें सुना

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدانا لهذا وَكُنَّا لَهُ مُشْكِرِينَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَمْدٌ ۝ نَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝

إِنَّا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُوقِنُونَ ۝

وَمَا أَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مِنْ رِزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ ۝

إِنَّكَ لَقَوْمٌ يَعْقِلُونَ ۝ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ تَنْزِيلُهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۝ فَبِآيَةٍ حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ وَ

آيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ۝ وَيَلْزَمُ أَفَّاكَ أَثِيمٌ ۝

بِسْمِ اللَّهِ تَتْلُو عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا

مَذَن

हैं, उसको अज़ाब के वक़्त यह तअना दिया जाएगा और क़ाफ़िरों से यह भी कहा जाएगा कि ---

- (८) अज़ाब, जो तुम देखते हो.
- (९) और उस पर ईमान नहीं लाते थे. इसके बाद परहेज़गारों का ज़िक्र फ़रमाया जाता है.
- (१०) जहाँ कोई ख़ौफ़ नहीं.
- (११) यानी रेशम के बारीक और मोटे लिबास.
- (१२) कि किसी की पीठ किसी की तरफ़ न हो.
- (१३) यानी जन्नत में अपने जन्नती सेवकों को मेवे हाज़िर करने का हुक्म देंग.
- (१४) कि किसी किस्म का अन्देशा ही न होगा. न मेवे की कमी का, न ख़त्म हो जाने का, न नुक़सान पहुंचाने का न और कोई.
- (१५) जो दुनिया में हो चुकी.
- (१६) उससे निजात अता फ़रमाई.
- (१७) यानी अरबी में.
- (१८) और नसीहत कुबूल करें और ईमान लाएं, लेकिन लाएंगे नहीं.
- (१९) उनकी हलाक़त और अज़ाब का.
- (२०) तुम्हारी मौत के (कहते हैं कि यह आयत आयतें सैफ़ से मन्सूख़ हो गई)

४५ - सूरए जासियह - पहला रूकू

- (१) यह सूरए जासियह है. इसका नाम सूरए शरीअह भी है. यह सूरत मक्के में उतरी, सिवाय आयत "कुल लिल-लज़ीना आमन यफ़िरु" के. इस सूरत में चार रूकू सैंतीस आयतें, चार सौ अठ्ठासी कलिमे और दो हजार एक सौ इक्यान्वे अक्षर हैं.
- (२) अल्लाह तआला की कुदरत और उसके एक होने पर दलालत करने वाली.
- (३) यानी तुम्हारी पैदाइश में भी उसकी कुदरत और हिकमत की निशानियाँ हैं कि तुम्हें को ख़ून बनाता है, ख़ून को बांधता है बंध ख़ून को गोश्त का टुकड़ा, यहाँ तक कि पूरा इन्सान बना देता है.
- (४) कि कभी घटते हैं कभी बढ़ते हैं और एक जाता है दूसरा आता है.
- (५) कि कभी गर्म चलती है कभी ठण्डी, कभी दक्षिणी, कभी उत्तरी, कभी पुरवैया कभी पछागिया.

ही नहीं, तो उसे खुशखबरी सुनाओ दर्दनाक अज़ाब की (८) और जब हमारी आयतों में से किसी पर इत्तिहा (सूचना) पाए उसकी हंसी बनाता है. उनके लिये ख़वारी (ज़िल्लत) का अज़ाब (९) उनके पीछे जहन्नम है (१०) और उन्हें कुछ काम न देगा उनका कमाया हुआ (११) और न वो जो अल्लाह के सिवा हिमायती ठहरा रखे थे (१२) और उनके लिये बड़ा अज़ाब है (१३) यह (१४) राह दिखाना है और जिन्होंने अपने रव की आयतों को न माना उनके लिये दर्दनाक अज़ाब में से सख्त तर अज़ाब है (१५)

दूसरा रूकू

अल्लाह है जिसने तुम्हारे वस में दरिया कर दिया कि उसमें उसके हुक्म से किश्तियां चले और इसलिये कि उसका फ़ज़ल तलाश करो (१) और इसलिये कि हक़ (सत्य) मानो (२) (१२) और तुम्हारे लिये काम में लगाए जो कुछ आसमानों में है (३) और जो कुछ ज़मीन में (४) अपने हुक्म से, वेशक इसमें निशानियां हैं सोचने वालों के लिये (१३) ईमान वालों से फ़रमाओ दरगुज़र करें उनसे जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते (१४) ताकि अल्लाह एक क़ौम से उसकी कमाई का बदला दे (१५) (१४) जो भला काम करे तो अपने

كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۖ وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۖ وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ مَا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ هَٰذَا هُدًى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِالْآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رَجْزِ أَلِيمٍ ۚ اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمْ الْبَحْرَ لَتَجْزِيَ الْفُلُكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ ۖ وَلِتُذَبَّتُوا مِنْ فَضْلِهِ ۖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۖ قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لَٰذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا

(६) यानी नज़र बिन हारिस के लिये. कहा गया है कि यह आयत नज़र बिन हारिस के बारे में उतरी जो अज़म के क्रिस्से कहागियां सुनाकर लोगों को कुरआने पाक सुनने से रोकता था और यह आयत हर ऐसे व्यक्ति के लिये आम है जो दीन को हानि पहुंचाए और ईमान लाने और कुरआन सुनने से घंमण्ड करे.

- (७) यानी अपने कुफ़र पर.
- (८) ईमान लाने से.
- (९) यानी मौत के बाद उनका अंजामेकार दोज़म है.
- (१०) माल जिस पर वो बहुत इतराते हैं.
- (११) यानी बुत, जिन को पूजा करते थे.
- (१२) कुरआन शरीफ़.

सूरए जासियह - दूसरा रूकू

- (१) समुद्री यात्राओं से और तिजारतों से और गोता लगाने और मोती वगैरह निकालने से.
- (२) उस के नेअमत व करम और कृपा तथा एहसान का.
- (३) सूरज चांद सितारे वगैरह.
- (४) चौपाए दरग़्त नेहें वगैरह.
- (५) जो दिन कि उसने ईमान वालों के लिये निर्धारित किये. या अल्लाह तआला के दिनों से वो वाक़ए मुराद हैं जिनमें वह अपने दुश्मनों को गिरफ़्तार करता है. बहरहाल उद उम्मीद न रखने वालों से मुराद काफ़िर हैं और मानी ये हैं कि काफ़िरों से जो तकलीफ़ पहुंचे और उनकी बातें जो तकलीफ़ पहुंचाएं, मुसलमान उन से दरगुज़र करें, झगड़ा न करें. (कहा गया है कि यह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ कर दी गई) इस आयत के उतरने की परिस्थितियों के बारे में कई कथन हैं. एक यह कि ग़ज़व बनी मुस्तलक़ में मुसलमान बीर मरीसीअ पर उतरे. यह एक कुँवा था. अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ ने अपने गुलाम को पानी के लिये भेजा. वह दर में आया तो उससे कारण पूछा. उसने कहा कि हज़रत उमर कुँए के किनारे पर बैठे हुए थे, जब तक नदीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की और हज़रत अबूबक्र की मश्क़ न भर गई, उस वक़्त तक उन्होंने किसी को पानी न भरने दिया. यह सुनकर उस बदबख़्त ने उन हज़रत की शान में गुस्ताख़ी के क़तिमे कहे. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो को इसकी ख़बर हुई तो आप तलवार लेकर तैयार हुए. इसपर यह आयत उतरी. इस सूरत में यह आयत मदनी होगी. मक़ातिल का क़ौल है कि क़बीलए बनी मिक़र के एक व्यक्ति ने मक्कए मुकर्रमा में हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो को ग़ाली दी तो आपने उसको पकड़ने का इरादा किया इसपर यह आयत उतरी.

लिये और बुरा करे तो अपने वुरे को^(१०) फिर अपने रब की तरफ फेरे जाओगे^(११) और बेशक हमने बनी इस्राईल को किताब^(१२) और हुक्मत और नवव्यत अता फरमाई^(१३) और हमने उन्हें सुधरी रोजियाँ दीं^(१४) और उन्हें उनके जमाने वालों पर फज़ीलत (बुजुर्गी) वख़शी^(१५) और हमने उन्हें इस काम की^(१६) रौशन दलीलें दीं तो उन्होंने इख़्तिलाफ़ न किया^(१७) मगर बाद उसके कि इल्म उनके पास आ चुका^(१८) आपस के हंसद से^(१९) बेशक तुम्हारा रब क्रयामत के दिन उनमें फैसला कर देगा जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते हैं^(२०) फिर हमने उस काम के^(२१) ऊमदा रास्ते पर तुम्हें किया^(२२) तो उसी राह चलो और नादानों की ख्वाहिशों का साथ न दो^(२३) बेशक वो अल्लाह के मुकाबिल तुम्हें कुछ काम न देंगे, और बेशक ज़ालिम एक दूसरे के दोस्त हैं^(२४) और डर वालों का दोस्त-अल्लाह^(२५) यह लोगों की आँखें खोलना है^(२६) और ईमान वालों के लिये हिदायत व रहमत^(२७) क्या जिन्होंने वुराईयों का इर्तिकाब

بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَوَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝ وَآتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِنَ الْأَمْرِ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعْيًا بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِّعَةٍ مِنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّهُمْ كُنْ يُغْنُوا عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَاللَّهُ وَلَى الْمُتَّقِينَ ۝ هَذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى

और एक कौल यह है कि जब आयत “मन ज़ल-लज़ी युक्रिदुल्लाहा कर्दन हसना” यानी है कोई जो अल्लाह को क़र्ज़ हसना दे . (सूरए बक्ररह, आयत २४५) उतरी तो फ़िन्हास यहूदी ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम)का रब मोहताज हो गया (मआज़ल्लाह), इस को सुनकर हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने तलवार खींची और उसकी तलाश में निकले. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आदमी भेज कर उन्हें वापस बुला लिया.

- (६) यानी उनके कर्मों का.
- (७) नेकी और बदी का सवाब और अज़ाब उसके करने वाले पर है.
- (८) वह नेकों और बदों को उनके कर्मों का बदला देगा.
- (९) यानी तौरात.
- (१०) उनमें अधिकांश नबी पैदा करके.
- (११) हलाल कुशायश के साथ, फिरऔन और उसकी क़ैस के माल और इलाकों का मालिक करके और मन्न व सलवा उतार कर.
- (१२) यानी दीन के काम और हलाल व हराम के बयान और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरिफ़ लाने की.
- (१३) हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के नबी बनाए जाने में.
- (१४) और इल्म मतभेद मिटने का कारण होता है. यहाँ उन लोगों के लिये मतभेद का कारण हुआ. इसकी वजह यह है कि इल्म उनका लक्ष्य न था बल्कि उनका लक्ष्य जाहो रियासत की तलब थी, इसी लिये उन्होंने विरोध किया.
- (१५) कि उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की जलवा-अफ़रोज़ी के बाद अपनी शानो शौकत और हुक्मत के अन्देशों से आपके साथ हंसद और दुशानी की और काफ़िर हो गए.
- (१६) यानी दीन के.
- (१७) ऐ हबीब मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.
- (१८) यानी कुरैश के सरदारों की जो अपने दीन की तरफ़ बुलाते हैं.
- (१९) सिर्फ़ दुनिया में, और आग़िरत में उनका कोई दोस्त नहीं.
- (२०) दुनिया में भी ओर आग़िरत में भी. डर वालों से मुराद ईमान वाले हैं और आगे क़ुरआने पाक के बारे में इरशाद होता है.
- (२१) कि इससे उन्हें दीन की बातों में नज़र हासिल होती है.
- (२२) क़ुर्र और गुमराही का.
- (२३) यानी ईमान वालों और क़ाफ़िरो की ज़िन्दगी बराबर हो जाए ऐसा हरगिज़ न होगा क्योंकि ईमानदार ज़िन्दगी में ताअत पर कायम रहे और क़ाफ़िर वुराईयों में डूबे रहे तो उन दोनों की ज़िन्दगी बराबर न हुई. ऐसे ही मौत भी एक सी नहीं कि ईमान वाले की

किया^(२२) यह समझते हैं कि हम उन्हें उन जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि इनकी उनकी ज़िन्दगी और मौत बराबर हो जाए^(२३) क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं^(२४) (२१)

तीसरा खूकू

और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ (सत्य) के साथ बनाया^(१) और इसलिये कि हर जान अपने किये का बदला पाए^(२) और उनपर जुल्म न होगा^(३) भला देखो तो वह जिसने अपनी ख्वाहिश को अपना ख़ुदा ठहरा लिया^(४) और अल्लाह ने उसे इल्म होने के बावजूद गुमराह किया^(५) और उसके कान और दिल पर मोहर लगा दी और उस की आँखों पर पर्दा डाला^(६) तो अल्लाह के बाद उसे कौन राह दिखाए, तो क्या तुम ध्यान नहीं करते^(७) और बोले^(८) वो तो नहीं मगर यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी^(९) मरते हैं और जीते हैं^(१०) और हमें हलाक नहीं करता मगर ज़माना^(११) और उन्हें इसका इल्म नहीं^(१२) वो तो निरे गुमान दौड़ाते हैं^(१३) (२४) और जब उनपर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाएं^(१४) तो बस उनकी हुज्जत यह होती है कि कहते

وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ
اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَّعْيَاهُمْ
وَمِمَّا نُهُمْ ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝ وَخَلَقَ اللَّهُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلَتُجْزَىٰ كُلُّ
نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَفَرَأَيْتَ
مَنْ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ
وَجَعَلَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ
غِشَاةً ۖ فَكَيْفَ يُبْصِرُ ۚ مَنْ بَعْدَ اللَّهِ ۚ أَفَلَا
تَذَكَّرُونَ ۝ وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا
الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ
وَمَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا
يُظْلَمُونَ ۝ وَإِذَا شَأْنُهُ عَلَيْهِمُ ابْتِغَاءَ بَيِّنَاتٍ

मौत खुशख़बरी व रहमत और बुजुर्गी पर होती है और काफ़िर की रहमत से निराशा और शर्मिन्दगी पर, मक्के के मुश्रिकों की एक जमाअत ने मुसलमानों से कहा था कि अगर तुम्हारी बात सत्य हो और मरने के बाद उठना हो तो भी हमही अफ़ज़ल रहेंगे जैसा कि दुनिया में हम तुमसे बेहतर रहे, उनके रद्द में यह आयत उतरी।

(२४) मुग़त्रालिफ़ सरकश, मुग़त्रलिस फ़रमाँबरदार के बराबर कैसे हो सकता है, ईमान वाले जन्नत के ऊँचे दर्जों में इज़ज़त बुजुर्गी और राहतें पाएंगे और काफ़िर जहन्नम के निचले दर्जों में ज़िल्लत और ख़ुवाई के साथ सज़ा तरीन अज़ाब में गिरफ़्तार होंगे।

सूरए जासियह - तीसरा खूकू

(१) कि उसकी कुदरत और बदलानियत की दलील हो।

(२) नेक नेकी का और बुरा बुरी का, इस आयत से मालूम हुआ कि इस सृष्टि की उत्पत्ति से इन्साफ़ और रहमत का इज़हार करना मक़सूद है और यह पूरी तरह क़यामत में ही हो सकता है कि सच्चाई वालों और बुराई वालों में पूरा पूरा फ़र्क़ हो, मूमिने मुग़त्रलिस जन्नत के दर्जों में हों और नाफ़रमान काफ़िर जहन्नम के गढ़ों में।

(३) और अपनी इच्छा का गुलाम हो गया जिसे नफ़स ने चाहा पूजने लगा, मुश्रिकों का यही हाल था कि वो पत्थर और सोने चांदी बग़ैरह को पूजते थे, जब कोई चीज़ उन्हें पहली चीज़ से अच्छी मालूम होती थी तो पहली को तोड़ देते फेंक देते और दूसरी को पूजने लगते।

(४) कि उस गुमराह ने हक़ को जान पहचान कर बेराही अपनाई, मुफ़सिरी ने इसके ये मानी भी बयान किये हैं कि अल्लाह तआला ने उसके अन्त और उसके बदनसीब और शक्ती हान को जानते हुए उसे गुमराह किया यानी अल्लाह तआला पहने से जानता था कि यह अपनी मर्ज़ी से सच्चाई की राह से फिरेगा और ग़लत राह अपनाएगा।

(५) तो उसने हिदायत और उपदेश को न सुना और न समझा और सच्चाई की राह को न देखा।

(६) मरने के बाद उठाए जाने का इन्कार करने वाला।

(७) यानी इस ज़िन्दगी के अलावा और कोई ज़िन्दगी नहीं।

(८) यानी कुछ मरते हैं और कुछ पैदा होते हैं।

(९) यानी रात दिन का चक्र, वो इसी को प्रभावी मानते थे और मौत के फ़रिश्ते का और अल्लाह के हुक्म से रूढ़ निकाले जाना का इन्कार करते थे और हर एक घटना को दुनिया और ज़माने के साथ निश्चय देते थे, अल्लाह तआला फ़रमाता है।

(१०) यानी वो यह बात बेइल्मी से कहते हैं।

(११) वास्तविकता से दूर, घटनाओं को ज़माने की तरफ़ मन्सूब करना और दुर्घटना होने पर ज़माने को बुरा कहना मना है, हदीसों

हैं हमारे बाप दादा को ले आओ^(१३) तुम अगर सच्चे हो^(१४) ॥२५॥ तुम फ़रमाओ अल्लाह तुम्हें जिलाता है^(१५) फिर तुमको मारेगा^(१६) फिर तुम सब को इकट्ठा करेगा^(१७) क़यामत के दिन जिसमें कोई शक नहीं लेकिन बहुत आदमी नहीं जानते^(१८) ॥२६॥

चौथा रूकू

और अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत और जिस दिन क़यामत होगी बातिल वालों की उस दिन हार है^(१) ॥२७॥ और तुम हर ग़िरोह^(२) को देखोगे ज़ानू के बल गिरे हुए, हर ग़िरोह अपने आमा-ल-नामे की तरफ़ बुलाया जाएगा^(३) आज तुम्हें तुम्हारे किये का बदला दिया जाएगा^(४) हमारा यह नविश्ता तुम पर हक़ (सत्य) बोलता है हम लिखते रहे थे^(५) जो तुमने किया^(६) ॥२९॥ तो वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनका रब उन्हें अपनी रहमत में लेगा^(७) यही खुली कामयाबी है^(८) ॥३०॥ और जो काफ़िर हुए उनसे फ़रमाया जाएगा क्या न था कि मेरी आयतें तुम पर पढ़ी जाती थीं तो तुम घमण्ड करते थे^(९)

الْحَاقَّةُ

५९०

الْبُرْجُ

مَا كَانَ حُجَّتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا اسْتُوا
بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلِ اللَّهُ
يُعَذِّبُكُمْ ثُمَّ يُنْفِثُكُمْ ثُمَّ يُجْبِعُكُمْ إِلَى يَوْمِ
الْقِيَامَةِ لَا رَبَّ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلِلَّهِ تِلْكَ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ
وَالْيَوْمُ تَقُومُ السَّاعَةُ يُعَذِّبُ يَخْسِرُ الْبَاطِلُونَ ۝
وَسَرَّ كُلِّ أُمَّةٍ جَائِثِيَّةٌ تُدْعَى أُمَّةٌ تُدْعَى
إِلَى كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
هَذَا كِتَابُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ إِنَّا
كُنَّا نَسْتَنسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ فَأَمَّا
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ
رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝
وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ الْبَنَى تُنْثَى

مَذْنُون

में इसकी मनाही आई है.

(१२) यानी क़ुरआने पाक की वो आयतें जिनमें अल्लाह तआला के मौत के बाद उठाने पर क़ादिर होने की दलीलें बयान की गई हैं. जब काफ़िर उनके जवाब से लाचार हो जाते हैं.

(१३) ज़िन्दा करके.

(१४) इस बात में कि मुर्दे ज़िन्दा करके उठाए जाएंगे.

(१५) दुनिया में, इसके बाद कि तुम ये जान नुस्खा थे.

(१६) तुम्हारी उम्में पूरी होने के वक़्त.

(१७) ज़िन्दा करके, तो जो रब ऐसी कुदरत वाला है वह तुम्हारे बाप दादा के ज़िन्दा करने पर भी यक़ीनन क़ादिर है वह सब को ज़िन्दा करेगा.

(१८) इसका कि अल्लाह तआला मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है और उनका न जानना दलीलों की तरफ़ ग़ौर न करने के कारण है.

सूरए जासियह - चौथा रूकू

(१) यानी उस दिन काफ़िरों का टोटे में होना ज़ाहिर होगा.

(२) यानी हर दीन वाले.

(३) और फ़रमाया जाएगा.

(४) यानी हमने फ़रिश्तों को तुम्हारे कर्म लिखने का हुक्म दिया था.

(५) जन्नत में दाख़िल फ़रमाया.

(६) और उनपर ईमान न लाते थे.

और तुम मुजरिम लोग थे (३१) और जब कहा जाता बेशक अल्लाह का वादा (७) सच्चा है और क़यामत में शक नहीं (८) तुम कहते हम नहीं जानते क़यामत क्या चीज़ है हमें तो यूँही कुछ गुमान सा होता है और हमें (९) यकीन नहीं (३२) और उनपर खुल गई (१०) उनके कामों की बुराईयाँ (११) और उन्हें घेर लिया उस अज़ाब ने जिसकी हंसी बनाते थे (३३) और फ़रमाया जाएगा आज हम तुम्हें छोड़ देंगे (१२) जैसे तुम अपने इस दिन के मिलने को भूले हुए थे (१३) और तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं (१४) (३४) यह इसलिये कि तुमने अल्लाह की आज्ञाओं का ठट्ठा बनाया और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम्हें धोखा दिया (१५) तो आज न वो आग से निकाले जाएं और न उनसे कोई मनाना चाहे (१६) (३५) तो अल्लाह ही के लिये सब ख़ूबियाँ हैं आसमानों का रब और ज़मीन का रब और सारे जगत का रब (३६) और उसी के लिये बढ़ाई है आसमानों और ज़मीन में और वही इज़्ज़त व हिक़मत (बोध) वाला है (३७)

عَلَيْكُمْ فَاسْكُرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ
وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ وَاعِدَ اللَّهُ هَٰذَا وَاسْتَنْصِرُوا
لَهُ يَوْمَ السَّاعَةِ
لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ مَا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ
إِنْ نَظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُتَّقِينَ
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَخَافُوا
بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ
وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنسِفُكُمْ
كَمَا نَسِفْنَا لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا وَمَا لَكُمْ
بِالتَّارِكِ
وَمَا لَكُمْ مِنْ تُصْرِيرٍ
ذُكِّرْتُمْ بَٰكُكُمْ اتَّخَذْتُمْ
إِلٰهَ اللَّهِ هُزُورًا وَعَزَّزْكُمْ
الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
فَالْيَوْمَ لَا يَخْرُجُونَ مِنْهَا
وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ
فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ
وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ
الْعٰلَمِينَ
وَلَهُ الْكِبَرِيَّاءُ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

منزل

- (७) मुदों को ज़िन्दा करने का.
(८) वह ज़रूर आएगा, तो ---
(९) क़यामत के आने का.
(१०) यानी काफ़िरों पर आध्मिरत में.
(११) जो उन्होंने ने दुनिया में किये थे और उनकी सज़ाएं.
(१२) दोज़ख़ के अज़ाब में.
(१३) कि ईमान और फ़रमाँदारी छोड़ बैठे.
(१४) जो तुम्हें उस अज़ाब से बचा सके.
(१५) कि तुम उसके दीवाने हो गए और तुमने मरने के बाद उड़ाए जाने और हिसाब का इन्कार कर दिया.
(१६) यानी अब उनसे यह भी नहीं चाहिये कि वो तौबह करके और ईमान व फ़रमाँवरदारी इज़्तिहार करके अपने रब को राज़ी करें क्योंकि उस दिन कोई बहाना कुबूल नहीं.

पारा पच्चीस समाप्त

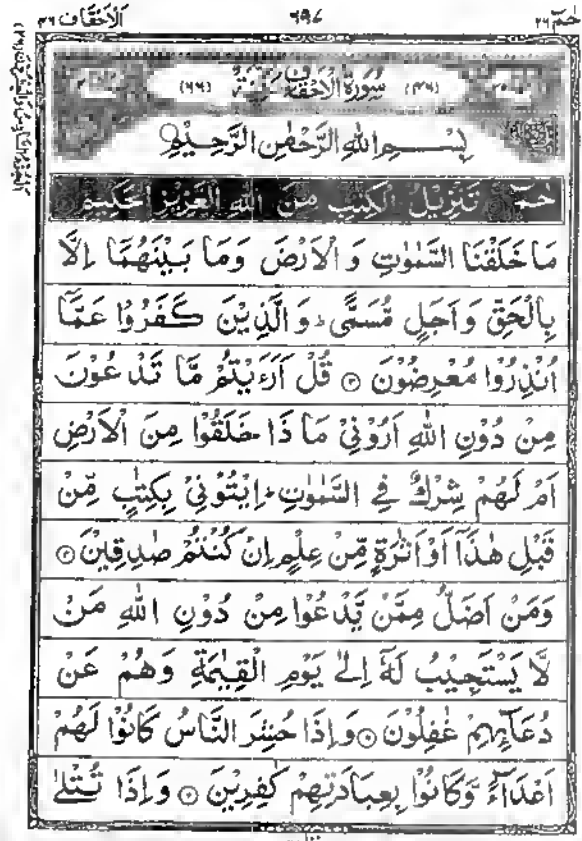
छब्बीसवां पारा - हा-मीम

४६ - सूरए अहक्राफ़

सूरए अहक्राफ़ मक्का में उतरी, इसमें ३५ आयतें, चार रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला ^(१) हा-मीम ^(२) यह किताब ^(३) उतारना है अल्लाह इज़ज़त व हिक्मत (बोध) वाले की तरफ़ से ^(४) हमने न बनाए आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन के बीच है मगर हक़ के साथ ^(५) और एक मुकर्रर (निश्चित) मीआद पर ^(६) और काफ़िर उस चीज़ से कि डराए गए ^(७) मुंह फेरें हैं ^(८) ^(९) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वो जो तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो ^(१०) मुझे दिखाओ उन्होंने ज़मीन का कौन सा ज़रा (कण) बनाया या आसमान में उनका कोई हिस्सा है, मेरे पास लाओ इससे पहली कोई किताब ^(११) या कुछ वचा खुदा इल्म ^(१२) अगर तुम सच्चे हो ^(१३) ^(१४) और उससे बढ़कर कौन गुमराह जो अल्लाह के सिवा ऐसी को पूजे ^(१५) जो क़यामत तक उसकी न सुनें और उन्हें उनकी पूजा की ख़बर तक नहीं ^(१६) ^(१७) और जब लोगों का हथ्र होगा वो उनके दुश्मन होंगे ^(१८) और उनसे इन्कारी हो जाएंगे ^(१९) ^(२०) और जब उनपर ^(२१) पड़ी जाए



छब्बीसवाँ पारा- हा-मीम

४६ - सूरए अहक्राफ़ - पहला रूकू

(१) सूरए अहक्राफ़ मक्का में उतरी मगर कुछ के नज़्दीक इसकी कुछ आयतें मदनी हैं जैसे कि आयत "कुल अरएतुम" और "फ़स्विर कमा सबरा" और तीन आयतें "ववस्सैनल इन्नाना विवाल्लिदैहे". इस सूरात में चार रूकू, पैंतीस आयतें, छ सौ चवालीस कलिमें और दस हज़ार पाँच सौ पचानवे अक्षर हैं.

(२) यानी कुरआन शरीफ़.

(३) कि हमारी कुदरत और एक होने को प्रमाणित करें.

(४) वह निश्चित अवधि क़यामत का दिन है जिस के आ जाने पर आसमान और ज़मीन नष्ट हो जाएंगे.

(५) इस चीज़ से मुराद या अज़ाब है या क़यामत के दिन की घबराहट या कुरआने पाक जो मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब का डर दिलाता है.

(६) कि उस पर ईमान नहीं लाते.

(७) यानी बुत, जिन्हें मअबूद ठहराते हो.

(८) जो अल्लाह तआला ने कुरआन से पहले उतारी हो. मुराद यह है कि वह किताब यानी कुरआने मजीद तीहीद की सच्चाई और शिर्क के बातिल होने का बयान करती है और जो किताब भी इससे पहले अल्लाह तआला की तरफ़ से आई उसमें यही बयान है. तुम अल्लाह तआला की किताबों में से कोई एक किताब तो ऐसी ले आओ जिसमें तुम्हारे दीन (बुत-परस्ती) की गवाही हो.

(९) पहलों का.

(१०) अपने इस दावे में कि खुदा का कोई शरीक है जिसकी इबादत का उसने तुम्हें हुक्म दिया है.

(११) यानी बुतों को.

(१२) क्योंकि वो पत्थर और बेजान है.

(१३) यानी बुत, अपने पुजारियों के.

(१४) और कहेंगे कि हमने उन्हें अपनी इबादत की दावत नहीं दी. अस्ल में ये अपनी ख़्वाहिशों के पुजारी थे.

(१५) यानी मक्के वालों पर.

हमारी रौशन आयतें तो काफिर अपने पास आए हुए हक को^(१६) कहते हैं यह खुला जादू है^(१७) (७) क्या कहते हैं उन्होंने उसे जी से बनाया^(१८) तुम फरमाओ अगर मैं ने उसे जी से बना लिया होगा तो तुम अल्लाह के सामने मेरा कुछ इख्तियार नहीं रखते^(१९) वह खूब जानता है जिन बातों में तुम मशगूल हो^(२०) और वह काफ़ी है मेरे और तुम्हारे बीच गवाह और वही बख़्शने वाला मेहरवान है^(२१) (८) तुम फरमाओ मैं कोई अनोखा रसूल नहीं^(२२) और मैं नहीं जानता मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या^(२३) मैं तो उसी का तावेअ हूँ जो मुझे वही होती है^(२४) और मैं नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला^(२५) तुम फरमाओ भला देखो तो अगर वह कुरआन अल्लाह के पास से हो और तुम ने उसका इन्कार किया और बनी इस्राईल का एक गवाह^(२६) उसपर गवाही दे चुका^(२७) तो वह ईमान लाया और तुमने घमण्ड किया^(२८) वेशक अल्लाह राह नहीं देता ज़ालिमों को^(२९)

दूसरा रूकू

और काफ़िरों ने मुसलमानों को कहा आग उसमें^(१) कुछ भलाई होती तो ये^(२) हमसे आगे उसतक न पहुँच जाते^(३) और जब उन्हें उसकी हिदायत न हुई तो अब^(४) कहेंगे कि

عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ
لَنَا جَاۗءُ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۱۰۷ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
اِفْتَرٰهُ ۚ قُلْ اِنْ اِفْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنْ
اِلٰهٍ شَيْۢءًا ۚ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُوْنَ فِيْهِ ۚ كَفٰى بِهٖ
شَهِيدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۚ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝۱۰۸
قُلْ مَا كُنْتُ بِدَعَاۤءِ الرُّسُلِ وَمَا اَدْرِى مَا
يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ۚ اِنْ اَتَيْتُمْ اِلَّا مَا يُوْحٰى
اِلَيَّ وَمَا اَنَاۤ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۱۰۹ قُلْ اَدْعَيْتُمْ اَنْ
كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَآءِدٌ
مِّنْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰۤى مِثْلِهٖ ۚ قَامَنَّ وَ
اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۱۰
وَقَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا
سَبَقُوْنَاۤ اِلَيْهِ ۚ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْاۤ بِهٖ فَيَقُوْلُوْنَ

مُتَوَلِّ

- (१६) यानी कुरआन शरीफ़ को बग़ैर ग़ौरो फ़िक्र किये और अच्छी तरह सुने।
 (१७) कि इसके जादू होने में शुचक नहीं और इससे भी बुरी बात कहते हैं जिसका आगे बयान है।
 (१८) यानी सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने।
 (१९) यानी अगर फ़र्ज़ करो मैं दिल से बनाता और उसके अल्लाह तआला का कलाम बताता तो वह अल्लाह तआला पर लांछन होता और अल्लाह तआला ऐसे लांछन लगाने वालों को जल्द मुसीबत और अज़ाब में गिरफ़्तार करता है। तुम्हें तो यह कुदरत नहीं कि तुम उसके अज़ाब से बचा सको या उसके अज़ाब को दूर कर सको तो किस तरह हो सकता है कि मैं तुम्हारी वजह से अल्लाह तआला पर झूट बोलता।
 (२०) और जो कुछ कुरआन पाक की निस्वत कहते हो।
 (२१) यानी अगर तुम कुर्र से तौबह करके ईमान लाओ तो अल्लाह तआला तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाएगा। और तुम पर रहमत करेगा।
 (२२) मुझसे पहले भी रसूल आ चुके हैं तो तुम क्यों नुबूत का इन्कार करते हो।
 (२३) इसके मानी में मुफ़स्सिरों के कुछ क़ौल हैं एक तो यह कि क़यामत में जो मेरे और तुम्हारे साथ किया जाएगा वह मुझे मालूम नहीं। यह मानी हों तो यह आयत मन्सूख है। रिवायत है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो मुश्रिक खुश हुए और कहने लगे लात और उज़्ज़ा की क़सम, अल्लाह के नज़्दीक हमारा और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का एक सा हाल है। उन्हें हमपर कुछ फ़ज़ीलत नहीं। अगर यह कुरआन उनका अपना बनाया हुआ न होता तो उनका भेजने वाला उन्हें ज़रूर ख़बर देता कि उनके साथ क्या करेगा। तो अल्लाह तआला ने आयत “लियग़फ़िरा तक़ल्लाहो मा तक़दमा भिन ज़विका वमा तअसख़बरा” यानी ताकि अल्लाह तुम्हारे कारण से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अग़लों के और तुम्हारे पिछलों के और अपनी नेअमतें तुमपर पूरी करदे। (सूरफ़ फ़तह, आयत २) नाज़िल फ़रमाई। सहाबा ने अज़्र किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम, हुज़ूर को मुबारक हो आपको मालूम हो गया कि आप के साथ क्या किया जाएगा। यह इन्तिज़ार है कि हमारे साथ क्या करेगा। इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी “लियुदख़िलल मुमिनीना बल मुमिनाते ज़व़ातिन तजरी भिन तहतहिल अन्हारो” यानी ताकि ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को बाग़ों में ले जाए जिनके नीचे नेह्रें बहें हमेशा उनमें रहें। (सूरफ़ फ़तह, आयत ५) और यह आयत उतरी “वशिशरिल मुमिनीना विअन्ना लहुम भिनल्लाहे फ़दलन क़बीरा” यानी और ईमान वालों को खुशख़बरी दो कि उनके लिये अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल है। (सूरफ़ अहज़ाब, आयत ५७) तो अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाया कि हुज़ूर के साथ क्या करेगा और मुमिनीन के साथ क्या। दूसरा क़ौल आयत

यह पुराना बोहतान है (११) और इससे पहले मूसा की किताब (१२) है पेशवा और मेहरवानी, और यह किताब है तस्वीक (पुष्टि) फरमाती (१३) अरबी ज़बान में कि ज़ालिमों को डर सुनाए, और नेकों को वशारत (१४) वेशक वों जिन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर साबित कदम रहे (डटे रहे) (१५) न उनपर खोफ़ (१६) न उनको ग़म (१७) (१८) वो जन्नत वाले हैं हमेशा उसमें रहेंगे, उनके कर्मों का इनाम (१९) और हमने आदमी को हुक्म किया कि अपने माँ बाप से भलाई करे, उसकी माँ ने उसे पटे में रखा तकलीफ़ से और जनी उसको तकलीफ़ से और उसे उठाए फिरना और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में है (२०) यहाँ तक कि जब अपने जोर को पहुँचा (२१) और चालीस बरस का हुआ (२२) अर्ज की ऐ मेरे रब मेरे दिल में डाल कि मैं तेरी नेअमत का शुक्र करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ बाप पर की (२३) और मैं वह काम करूँ जो तुझे पसन्द आए (२४) और मेरे लिये मेरी औलाद में सलाह रख (२५) मैं तेरी तरफ़ ख़जू लाया (२६) और मैं मुसलमान हूँ (२७) (२८) ये हैं वो जिनकी नेकियाँ हम

هَذَا إِنْكَ قَدِيمٌ ۝ وَمِنْ قَبْلِهِ كُتِبَ مُوسَى
إِمَامًا وَرَحْمَةً ۝ وَهَذَا كِتَابٌ مُصَدِّقٌ لِّسَائِ
عَرَبِيًّا لِّبَيِّنَاتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۝ وَيُشِيرُ إِلَى الْحَسَنِينَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَفْتَمُوا فَلَا خَوْفَ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ
خَالِدِينَ فِيهَا ۝ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَ
وَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۝ حَلَلَتْهُ
أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا وَحَمْلُهُ وَفِصْلُهُ
ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۝ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ
سَنَةً ۝ قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي
أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا
تَرْضَاهُ ۝ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۝ إِنِّي تُخِيتُ
إِلَيْكَ وَإِلَيَّ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أُولَئِكَ الَّذِينَ

की तफ़सीर में यह है कि आख़िर का हाल तो हुज़ूर को अपना भी मालूम है और मूभिनीन का भी और झुटलाने वालों का भी. यानी ये हैं कि दुनिया में क्या किया जाएगा, यह नहीं मालूम. अगर ये यानी लिये जाएं तो भी यह आयत मन्सूख है. अल्लाह तआला ने हुज़ूर को यह भी बता दिया "लियुज़हिरू अलद दीने कुल्लिही" कि उस सब दीनों पर ग़ालिब करे. (सूरए तौबह, आयत ३३) और "माकानल्लाहो लियुअज़िज़हुम व अन्ता फ़ीहिम" यानी जबतक ऐ मेहबूब, तुम उनमें तशरीफ़ फ़रमा हो और अल्लाह उन्हें अज़ाब करने वाला नहीं. (सूरए अरफ़ाल, आयत ३३) बहर हाल अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हुज़ूर के साथ और हुज़ूर की उम्मत के साथ पेश आने वाले उमूर पर मुत्तला फ़रमा दिया चाहे वो दुनिया के हों या आख़िरत के और अगर "दरायत" अक़्त से जानने के अर्थ में लिया जाए तो मज़मून और भी ज़्यादा साफ़ है और आयत का इसके बाद वाला वाक्य इसकी पुष्टि करता है. अल्लामा नौशापुरी ने इस आयत के अल्लर्भत फ़रमाया कि इसमें नज़ी अपनी ज़ान से जानने की है, वही के ज़रिये जानने का इन्कार नहीं है.

(२४) यानी मैं जो कुछ जानता हूँ अल्लाह तआला की तालीम से जानता हूँ.

(२५) वह हुज़ूरन अब्दुल्लाह बिन सलाम हैं जो नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए और आपकी तबुवत की सच्चाई की गवाही दी.

(२६) कि वह कुरआन अल्लाह तआला की तरफ़ से है.

(२७) और ईमान से मेहरूम रहे तो इसका नतीजा क्या होता है.

सूरए अहक्राफ़ - दूसरा रूकू

(१) यानी दीने मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम में.

(२) गरीब लोग.

(३) यह आयत मक्के के मुश्रिकों के बारे में उतरी जो कहते थे कि अगर दीने मुहम्मदी सच्चा होता तो फ़लों और फ़लों उसकों हम से पहले कैसे कुबूल कर लेते.

(४) दुश्मनी से, कुरआन शरीफ़ की निस्बत.

(५) तौरात.

(६) पहली किताबों की.

(७) अल्लाह तआला की ताहीद और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शरीअत पर आख़िरी दम तक.

(८) क़यामत में.

कुबूल फरमाएंगे^(१८) और उनकी तकसीरों से दरगुजर फरमाएंगे जन्नत वालों में, सच्चा वादा जो उन्हें दिया जाता था^(१९) (१६) और वह जिसने अपने माँ बाप से कहा^(२०) उफ़ तुम से दिल पक गया क्या मुझे यह वादा देते हो कि फिर ज़िन्दा किया जाऊंगा हालांकि मुझसे पहले संगतें गुज़र चुकीं^(२१) और वो दोनों^(२२) अल्लाह से फ़रियाद करते हैं तेरी ख़राबी हो ईमान ला वेशक अल्लाह का वादा सच्चा है^(२३) तो कहता है ये तो नहीं मगर अगलों की कहानियाँ^(२४) ये वो हैं जिन पर बात साबित हो चुकी^(२५) उन ग़िरोहों में जो उन से पहले गुज़रे जिन्न और आदमी, वेशक वो ज़ियाँकार थे^(२६) और हर एक के लिये कर्म के अपने अपने^(२७) दर्जे हैं^(२८) और ताकि अल्लाह उनके काम उन्हें पूरे भर दे^(२९) और उनपर जुल्म न होगा^(३०) और जिस दिन काफ़िर आग पर पेश किये जाएंगे उनसे फ़रमाया जाएगा, तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुनिया ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके^(३१) तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब बदला दिया जाएगा सज़ा उसकी कि तुम ज़मीन में नाहक

تَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَتَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ دُعَاءُ الْيَدِّ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝ وَالَّذِي قَالَ لِوَالَيْدِيهِ أُوتِ لَكُمْ مَّا أَعِدَّيْنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ ۖ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَيَقُولُ مَا هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ أُولَئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خُسرِينَ ۝ وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِمَّا عَمِلُوا وَرِيعُهُمْ ۖ أَعْمَالُهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَدْهَبْتُمْ طِبْعَتَكُمْ فِي حَيَاتِكُمْ الدُّنْيَا وَأَسْمَعْتُمْ بَيِّنَاتٍ يَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي

منزل

(९) मौत के वक्त.

(१०) इस आयत से साबित होता है कि गर्भ की कम से कम मुदत छ माह है क्योंकि जब दूध छुड़ाने की मुदत दो साल हुई जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया “हौलैने कामिलैन” तो गर्भ के लिये छ माह बाकी रहे. यही कौल है इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहो अलैहिमा का और हज़रत इमाम साहिब रदियल्लाहो अन्हो के तज़दीक़ इस आयत से रिज़ाअत की मुदत दई साल साबित होती है. मसअले की तफ़सील दलीलों के साथ उसूल की किताबों में मिलती है.

(११) और अक़ल और कुबूत मुस्तहक़म हुई और यह बात तीस से चालीस साल तक की उम्र में हासिल होती है.

(१२) यह आयत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में उतरी. आपकी उम्र सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दो साल कम थी. जब हज़रत सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो की उम्र अट्ठारह साल की हुई तो आपने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सोहबत इज़्तिहार की. उस वक्त हुज़ूर की उम्र शरीफ़ बीस साल की थी. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की हमसाही ने तिज़ारत की गरज़ से शाम का सफ़र किया. एक मंज़िल पर टहरे वहाँ एक बेरी का दरख़्त था. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके साए में तशरीफ़ फ़रमा हुए. फ़रीब ही एक पादरी रहता था. हज़रत सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो उसके पास चले गए. उसने आपसे कहा यह कौन साहिब हैं जा इस बेरी के साए में जलवा फ़रमा हैं. हज़रत सिद्दीक़ ने फ़रमाया कि यह मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह हैं, अब्दुल मुतल्लिब के पोते. राहिब ने कहा ख़ुदा की क़सम ये नबी हैं इस बेरी के साए में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद से आज तक इनके सिवा कोई नहीं बैठा. यही आख़िरी ज़माने के नबी हैं. राहिब की यह बात हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ के दिल में उतर गई और नबुव्वत का यक़ीन आपके दिल में जम गया. और आपने सरकार की सोहबत शरीफ़ की मुलाज़िमत इज़्तिहार करली. सफ़र व हज़र में आपसे जुदा न होते. जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्र शरीफ़ चालीस साल की हुई और अल्लाह तआला ने हुज़ूर को अपनी नबुव्वत और रिस्सालत का ताज पहनाया तो हज़रत सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो आप पर ईमान ले आए. उस वक्त आप की उम्र अड़तीस बरस की थी. जब आप चालीस साल के हुए तो आपने अल्लाह तआला से यह दुआ की.

(१३) कि हम सबका हिदायत फ़रमाई और इस्लाम से मुशरफ़ किये. हज़रत सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के बालिद का नाम अबू क़हाफ़ा और बालिदा का नाम उम्मुल ख़ैर था.

(१४) आपकी यह दुआ भी कुबूल हुई और अल्लाह तआला ने आपको अच्छे कर्मों की वह दौलत अता फ़रमाई कि सारी उम्मत के कर्म आपके एक कर्म के बराबर नहीं हो सकते. आपकी नेकियों में से एक यह है कि नौ भूमिन जो ईमान की वजह से सज़ा यातनाओं और तकलीफ़ों में जकड़े हुए थे, आपको आपने आज्ञाद कराया: उन्हीं में से हज़रत बिलाल रदियल्लाहो अन्हो भी हैं. और आप ने यह दुआ की.

(१५) यह दुआ भी कुबूल हुई. अल्लाह तआला ने आपकी औलाद में नेकी रखी. आपकी तमाम औलाद भूमिन है और उनमें हज़रत

घमण्ड करते थे और सज़ा उसकी कि हुक्मअदूली (नाफरमानी) करते थे (२१) (२०)

तीसरा सूक़

और याद करो आद के हमक़ौम^(१) को जब उसने उनको अहक़ाफ़ की सरज़मीन (धरती) में डराया^(२) और बेशक इससे पहले डर सुनाने वाले गुज़र चुके और उसके बाद आए कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बेशक मुझे तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब का भय है (२१) बोले क्या तुम इसलिये आए कि हमें हमारे मअबूदों से फेर दो तो हमपर लाओ^(३) जिसका हमें वादा देते हो अगर तुम सच्चे हो^(४) (२२) उसने फ़रमाया^(५) इसकी ख़बर तो अल्लाह ही के पास है^(६) मैं तो तुम्हें अपने रब के पयाम (संदेश) पहुंचाता हूँ हाँ मेरी दानिस्त (जानकारी) में तुम निरे जाहिल लोग हो^(७) (२३) फिर जब उन्होंने अज़ाब को देखा बादल की तरह आसमान के किनारे में फैला हुआ उनकी वादियों की तरफ़ आता^(८) बोले यह बादल है कि हम पर बरसेगा^(९) बल्कि यह तो वह है जिसकी तुम जल्दी मचाते थे, एक आंधी है जिसमें दर्दनाक अज़ाब (२४) हर चीज़ को तबाह कर डालती है अपने रब के हुक्म से^(१०) तो सुक़ रह गए कि नज़र न आते थे मगर उनके सुने मकान हम ऐसी ही सज़ा देते हैं मुजरिमों को (२५) और बेशक हमने उन्हें वो मक़दूर (साधन) दिये थे जो तुम को न दिये^(११) और उनके लिये कान और आँख

الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنَّمَا كُنْتُمْ تَحْسِبُونَ ۖ وَإِذْ كُنْتُمْ
أَحْزَانًا إِذْ أَنْذَرَكُمْ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَّتِ
النُّذُورُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا
إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۖ
قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَأْفِكَنَّ عَنْ إِلَهِنَا فَإِنَّا بِمَا تَعِدُّنَا
إِنْ كُنْتُمْ الصّٰدِقِينَ ۖ قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ
اللّٰهِ وَأُبْلِغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي أَرِكُمْ قَوْمًا
تُجْهَلُونَ ۖ فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ
قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُّمْطَرُنَا بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ
رِيحٌ فِيْهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ تَدْمِرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ
رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰ إِلَّا مَسَكِنُهُمْ ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي
الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۖ وَلَقَدْ مَكَنَّهُمْ فِيْهَا اثْنَ
مَكْنَكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَارًا وَ

उम्मुल मूमिनीन आयशा सिद्दीका रदियल्लाहो अन्हा का दर्जा किस कदर बलन्द है कि तमाम औरतों पर अल्लाह ने उन्हें बुजुर्गी अता की है। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रदियल्लाहो अन्हो के बालिदेन भी मुसलमान और आपके बेटे मुहम्मद और अब्दुल्लाह और अब्दुल रहमान और आपकी बेटियाँ हज़रत आयशा और हज़रत असमा और आपके पोते मुहम्मद बिन अब्दुर रहमान, ये सब मूमिन और सब सहाबियत की बुजुर्गी रखने वाले हैं। आपके सिवा कोई ऐसा नहीं है जिसको यह फ़ज़ीलत हासिल हो कि उसके बालिदेन भी सहाबी हों, खुद भी सहाबी, औलाद भी सहाबी, पोते भी सहाबी, चार पुश्तें सहाबियत का शरफ़ रखने वाली।

(१६) हर उस काम में जिसमें तेरी रज़ा हो।

(१७) दिल से भी और ज़बान से भी।

(१८) उन पर सबाब देंगे।

(१९) दुनिया में नबीए अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़बाने मुबारक से।

(२०) इससे मुराद कोई ख़ास व्यक्ति नहीं है बल्कि काफ़िर जो मरने के बाद उठाए जाने का इन्कार हो और माँ बाप का नाफ़रमान और उसके माँ बाप उसका सच्चे दीन की तरफ़ बुलाते हों और वह इन्कार करता हों।

(२१) उनमें से कोई मरकर ज़िन्दा न हुआ।

(२२) माँ बाप।

(२३) मुर्दे ज़िन्दा फ़रमाने का।

(२४) अज़ाब की।

(२५) मूमिन हो या काफ़िर।

(२६) यानी अल्लाह तआला के नज़्दीक मन्ज़िलों और दर्जों में। क़यामत के दिन जन्नत के दर्जे बलन्द हाते चले जाते हैं और जहन्नम के दर्जे पस्त होते जाते हैं तो जिनके कर्म अच्छे हों वो जन्नत के ऊँचे दर्जे में होंगे और जो कुफ़्र और गुमराही में चरम सीमा को पहुंच गए हों वो जहन्नम के सब से नीचे दर्जे में होंगे।

(२७) यानी मूमिन और काफ़िरों को फ़रमाँबंदारी और नाफ़रमानी की पूरी जज़ा दे।

(२८) यानी लज़ज़त और ऐश जो तुम्हें पाना था, वह सब दुनिया में तुमने ख़त्म कर दिया। अब तुम्हारे लिये आख़िरत में कुछ भी बाक़ी न रहा और कुछ मुफ़र्रिसों का कौल है कि "तैय्यिवात" से शरीर के अंग और ज़वानी मुराद है और मानी ये हैं कि तुम ने

और दिल बनाए^(१२) तो उनके कान और आँखें और दिल कुछ काम न आए जब कि वो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और उन्हें घेर लिया उस अज़ाब ने जिसकी हंसी बनाते थे^(२६)

चौथा रूकू

और वेशक हमने हलाक कर दीं^(१) तुम्हारे आस पास की बस्तियां^(२) और तरह तरह की निशानियां लाए कि वो बाज़ आए^(३) ^(२७) तो क्यों न मदद की उनकी^(४) जिनको उन्होंने अल्लाह के सिवा कुर्व(समीपता) हासिल करने को खुदा ठहरा रखा था^(५) वल्कि वो उनसे गुम गए^(६) और यह उनका वोहतान और इफ़तिरा है^(७) ^(२८) और जब कि हमने तुम्हारी तरफ़ कितने जिन फेरे^(८) कान लगाकर कुरआन सुनाते फिर जब वहाँ हाज़िर हुए आपस में बोले खामोश रहो^(९) फिर जब पढ़ना हो चुका अपनी क़ौम की तरफ़ डर सुनाते पलटे^(१०) ^(२९) बोले ऐ हमारी क़ौम, हमने एक किताब सुनी^(११) कि मूसा के बाद उतारी गई^(१२) अगली किताबों की तस्दीक़(पुष्टि) फ़रमाती हक़ और सीधी राह दिखाती^(३०) ऐ हमारी क़ौम अल्लाह के मनादी(उदघोषक)^(३१)

أَفِدَّةً ۖ فَمَا آغْنَاهُمْ عَنْهُمْ سَعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ
وَلَا أَفْدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ
اللَّهِ وَكَانَ بِهِمْ مَأْكَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۚ وَلَقَدْ
أَهْلَكْنَا مَا هَوَّكُم مِّنَ الْقَرْيَةِ وَصَرَفْنَا الْآلِيَةَ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۚ فَلَوْلَا نَصْرُهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا
مِنْ دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً ۚ بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ
وَذَلِيلٌ لَّهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْقَهُونَ ۚ وَإِذْ
صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ ۚ
فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنْصِتُوا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا
إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِينَ ۚ قَالُوا يَاقَوْمُنَا إِنَّا سَمِعْنَا
كِتَابًا أَنْزَلَ مِنْ بَعْدِ مَوْسَىٰ مَصْدَقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ۚ
يَقَوْمُنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ ۚ يَغْفِرَ لَكُمْ

مَنْزِلٌ

अपनी जवानी और अपनी कुवतों को दुनिया के अन्दर कुफ़ और गुनाहों में खर्च कर दिया.

(२९) इस आयत में अल्लाह तआला ने दुनियावी लज्जतें इज़्तिहार करने पर काफ़िरों को मलामत फ़रमाई तो उसने फ़रमा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हुज़ूर के सहाबा ने दुनिया की लज्जतों से किनासा क़शी इज़्तिहार फ़रमाई. कुत्रारी और मुस्लिम की हदीस में है कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ात तक हुज़ूर के घर बालों ने क़मी जी की रोटी भी दो दिन बराबर न खाई. यह भी हदीस में है कि पूरा पूरा महीना गुज़र जाता था, सरकार के मक़ान में आग न जलती थी. कुछ ख़द्ग़ों और पानी पर गुज़ारा कर लिया जाता था. हज़रत उमर रदियल्लाहो अहो से रिवायत है आप फ़रमाते थे कि मैं चाहता तो तुमसे अच्छा खाना खाता और तुम से बेहतर लिबास पहनता लेकिन मैं अपना ऐश और राहत अपनी आख़िरत के लिये बाक़ी रखना चाहता हूँ.

सूरए अहक़ाफ़ - तीसरा रूकू

- (१) हज़रत हूद अलैहिस्सलाम.
- (२) शिर्क़ रो. अहक़ाफ़ एक रेगिस्तानी घाटी है जहाँ क़ौम आद के लोग रहते थे.
- (३) वह अज़ाब.
- (४) इस बात में कि अज़ाब आने वाला है.
- (५) यानी हूद अलैहिस्सलाम ने.
- (६) कि अज़ाब कर आणगा.
- (७) जो अज़ाब में जल्दी करत हो और अज़ाब को जानने नहीं हो कि क्या चीज़ है.
- (८) और लम्बी मुद्दत से उनकी सरज़मीन में बारिश न हुई थी. इस काले बादल को देखकर खुश हुए.
- (९) हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया.
- (१०) चुनाने उस आंधी के अज़ाब ने उनके मदों औरतो छांटों बड़ों को हलाक कर दिया और उनके माल आसमान और ज़मीन के बीच उड़ते फिरते थे. चीज़ें टुकड़े टुकड़े हो गईं. हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने अपने और अपने ऊपर ईमान लाने वालों के चारों तरफ़ एक लकीर खींच दी थी. हवा जब उस लकीर के अन्दर आती तो अत्यन्त नर्म पाकीज़ा और राहत देने वाली ठण्डे होती और वही हवा क़ौम पर अत्यन्त सज़ा हलाक करने की होती. और यह हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का एक महान चमत्कार था.
- (११) ये मक्के वालो, वो कुवत और माल और लम्बी उम्र में तुम से ज्यादा थे.
- (१२) ताकि दीन के काम में लाएं. मगर उन्होंने सिवाय दुनिया की तलब के खुदा की दी हुई उन नेअमतां से दीन का काम हो

की बात मानो और उस पर ईमान लाओ कि वह तुम्हारे कुछ गुनाह बख्शा दे^(११) और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा ले^(३१) और जो अल्लाह के मनादी की बात न माने वह ज़मीन में क़ाबू से निकल कर जाने वाला नहीं^(१५) और अल्लाह के सामने उसका कोई मददगार नहीं^(१६) वो^(१७) खुली गुमराही में हैं^(३२) क्या उन्होंने^(१८) न जाना कि वह अल्लाह जिसने आसमान और ज़मीन बनाए और उनके बनाने में न थका क़ादिर है कि मुर्दे ज़िलाए, क्यों नहीं, वेशक वह सब कुछ कर सकता है^(३३) और जिस दिन काफ़िर आग पर पेश किये जाएंगे, उनसे फ़रमाया जाएगा, क्या यह हक़ (सत्य) नहीं, कहेंगे, क्यों नहीं हमारे रब की क़सम, फ़रमाया जाएगा, तो अज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का^(१९)^(३४) तो तुम सब करो जैसा हिम्मत वाले रसूलों ने सब किया^(२०) और उनके लिये जल्दी न करो^(२१) गोया वो जिस दिन देखेंगे^(२२) जो उन्हें वादा दिया जाता है^(२३) दुनिया में न ठहरे थे मगर दिन की एक घड़ी भर, यह पहुंचाना है^(२४) तो कौन हलाक किये जाएंगे, मगर वेहुक़्म लोग^(२५)^(३५)

مَنْ ذُنُوبَكُمْ وَيُجْزَكُم مِّنْ عَذَابِ إِلِيمٍ ۖ وَمَنْ لَا يُجِيبُ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعِجِزٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا لَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءُ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَبْغِ يَخْلُقْهُنَّ يَقْدِرُ عَلَىٰ أَنْ يُبْغِيَ الْمَوْتِ ۚ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۖ فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ ۚ كَانَتْهُمْ يَوْمَ يُرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ ۚ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ۚ بَلَّغْ ۚ فَبَلِّغْهُم بَلِّغْكَ إِلَّا الْقَوْمَ الْفَاسِقُونَ ۖ

नहीं लिया।

सूरए अहक़ाफ़ - चौथा रुकू

- (१) ऐ कुरैश:
- (२) समुद्र व आस व क़ौम लूट की तरह.
- (३) कुफ़्र और सरकशी से, लेकिन वो बाज़ न आए तो हमने उन्हें उनके कुफ़्र के कारण हलाक कर दिया.
- (४) उन काफ़िरों की, उन बुतों ने.
- (५) और जिनकी निश्चय यह कहा करते थे कि इन बुतों को पूजने से अल्लाह को क़र्ब हासिल होता है.
- (६) और अज़ाब उतरने के समय काम न आए.
- (७) कि वो बुतों को मअबूद कहते हैं और बुत परस्ती को अल्लाह के तज्दीक होने का ज़रिया ठहराते हैं.
- (८) यानी ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहो वसल्लम, उस वक़्त को याद कीजिये जब हमने आपकी तरफ़ जिन्नों की एक जमाअत भेजी. इस जमाअत की संख्या में मतभेद है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अहुमा ने फ़रमया कि सात जिन्न थे जिन्हें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहो वसल्लम ने उनकी क़ौम की तरफ़ संदेश ले जाने वाला बनाया. कुछ रिवायतों में आया है कि नौ थे. तद्वकीक़ करने वाले उलमा इसपर सहमत हैं कि जिन्न सब के सब मुक़त्लिफ़ हैं यानी आक़िन्त व बालिग़. अब उन जिन्नों का हाल बयान होता है कि आप बले तज़ल्लह में, मक्कए मुक़र्रमा और तइफ़ के बीच, मक्कए मुक़र्रमा को आते हुए अपने सहाया के साथ फ़त्र की नामाज़ पढ़ रहे थे उस वक़्त जिन्न.
- (९) ताकि अच्छी तरह हज़रत की क़िरअत सुन लें.
- (१०) यानी रसूलें करीम सल्लल्लाहो अलैहो वसल्लम पर ईमान लाकर हज़रत के हुक़्म से अपनी क़ौम की तरफ़ ईमान की दावत दें गए और उन्हें ईमान न लाने और रसूलें करीम सल्लल्लाहो अलैहो वसल्लम के विरोध से डराया.
- (११) यानी कुरआन शरीफ़.
- (१२) अता ने कहा चूंकि वो जिन्न दीने यहूदियत पर थे इसलिये उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक़्र किया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की किताब का नाम न लिया. कुछ मुफ़ससिरो ने कहा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की किताब का नाम न लेने का कारण यह है कि उसमें सिर्फ़ नसीहतें हैं, अहक़ाम बहुत ही कम हैं.
- (१३) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहो वसल्लम.

४७- सूरह मुहम्मद

सूरह मुहम्मद मदीने में उतरी, इसमें ३८ आयतें, चार रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) जिन्होंने कुफ़ किया और अल्लाह की राह से रोका^(२) अल्लाह ने उनके कर्म बर्बाद किये^(३) और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उसपर ईमान लाए जो मुहम्मद पर उतारा गया^(४) और वही उनके रब के पास से हक़ है अल्लाह ने उनकी बुराइयाँ उतार दीं और उनकी हालतें संवार दीं^(५) यह इसलिये कि काफ़िर वातिल (असत्य) के पैरो (अनुयायी) हुए और ईमान वालों ने हक़ (सत्य) की पैरवी (अनुकरण) की जो उनके रब की तरफ़ से है^(६) अल्लाह लोगों से उनके अहवाल थूँही वयान फ़रमाता है^(७) तो जब काफ़िरों से तुम्हारा सामना हो^(८) तो गर्दन मारना है^(९) यहाँ तक कि जब उन्हें ख़ूब क़त्ल कर लो^(१०) तो मज़बूत बांधो, फिर उसके बाद चाहे एहसान करके छोड़ दो चाहे फिदिया ले लो^(११) यहाँ तक कि लड़ाई अपना बोज़ रख दे^(१२) बात यह है, और अल्लाह चाहता तो आप ही उनसे बदला ले लेता^(१३) मगर इसलिये^(१४) कि तुम में एक को दूसरे से जांचे^(१५) और जो अल्लाह की राह में मारे गए



- (१४) जो इस्लाम से पहले हुए और ज़िन्द में बन्दों का हक़ नहीं।
 (१५) अल्लाह तआला से कहीं भाग नहीं सकता और उसके अज़ाब से बच नहीं सकता।
 (१६) जो उसे अज़ाब से बचा सके।
 (१७) जो अल्लाह तआला के मुनादी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बात न माने।
 (१८) यानी मरने के बाद उठाए जाने का इन्कार करने वालों ने।
 (१९) जिसके तुम दुनिया में मुरतक़िब हुए थे। इसके बाद अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से ख़िताब फ़रमाता है।
 (२०) अपनी क़ौम की तकलीफ़ पर।
 (२१) अज़ाब तलब करने में क्योंकि अज़ाब उनपर ज़रूर उतरने वाला है।
 (२२) आख़िरत के अज़ाब को।
 (२३) तो उसकी दरज़ी और हमेशगी के सामने दुनिया में टहरने की मुदत को बहुत कम समझेंगे और ख़याल करेंगे कि ..
 (२४) यानी यह क़ुरआन और वह हिदायत और निशानियाँ जो इसमें हैं यह अल्लाह तआला की तरफ़ से तबलीग़ है।
 (२५) जो ईमान और फ़रमाँवरदारी से बाहर हैं।

४७ - सूरह मुहम्मद - पहला रूकू

- (१) सूरह मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) मदीनी है। इसमें चार रूकू, अइतीस आयतें, पाँच सौ अठ्ठावन कलिमे और दो हज़ार चार सौ पचत्तर अक्षर हैं।
 (२) यानी जो लोग श्रुद इस्लाम में दाख़िल न हुए और दूसरों को उन्होंने इस्लाम से रोका।
 (३) जो कुछ भी उन्होंने किए हों, भूग्रां को ख़िलाया हो या कैदियों को छुड़ाया हो या ग़रीबों की मदद की हो या मस्जिदें हारम यानी ख़ातण काबा की इमारत में कोई ख़िदमत की हो, सब बर्बाद हुई। आख़िरत में उसका कुछ सवाब नहीं। जुदाक का कौल है कि मुवाद यह है कि काफ़िरों ने सेपदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये जो मक़द गोचे थे और बहाने बनाए थे अल्लाह तआला ने उनके या तमाम काम वातिल कर दिये।
 (४) यानी क़ुरआन पाक।

अल्लाह हरगिज़ उनके अमल ज़ाया न फ़रमाएगा^(१५)॥४॥ जल्द उन्हें राह देगा^(१६) और उनका काम बना देगा^(१७) और उन्हें जन्नत में लेजाएगा उन्हें उसकी पहचान करा दी है^(१८)॥६॥ ऐ ईमान वाले अगर तुम खुदा के दीन की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा^(१९) और तुम्हारे क़दम जमा देगा^(२०)॥७॥ और जिन्होंने कुफ़्र किया तो उनपर तवाही पड़े और अल्लाह उनके अअमाल (कर्म) बर्बाद करे^(२१) यह इसलिये कि उन्हें नागवार हुआ जो अल्लाह ने उतारा^(२२) तो अल्लाह ने उनका किया धरा अकारत किया^(२३) तो क्या उन्होंने ने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उनसे अगलों का^(२४) कैसा अंजाम हुआ, अल्लाह ने उनपर तवाही डाली^(२५) और उन काफ़िरों के लिये भी वैसी कितनी ही हैं^(२६)॥१०॥ यह^(२७) इसलिये कि मुसलमानों का मौला अल्लाह है और काफ़िरों का कोई मौला नहीं^(२८)॥११॥

दूसरा सूकू

वेशक अल्लाह दाखिल फ़रमाएगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बाग़ों में जिनके नीचे नेहरें वहेँ, और काफ़िर वरतते हैं और खाते हैं^(१) जैसे चौपाए खाएँ^(२) और आग में उनका ठिकाना है^(३)॥१२॥ और कितने ही शहर कि इस शहर से^(४) कुव्वत में ज़्यादा थे जिसने तुम्हें तुम्हारे शहर से बाहर किया, हमने उन्हें हलाक फ़रमाया तो उनका कोई

يُضِلُّ أَعْمَالَهُمْ ۖ سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُهُم بِآلِهِمْ ۖ وَ
يُدْخِلُهُم الْجَنَّةَ عَرَفَهَا لَهُمْ ۖ يَكُونُ الَّذِينَ
آمَنُوا إِنْ تَصَرُّوا اللَّهُ يَنْصُرَكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ۖ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعَسَا لَهُمْ وَأَصْلًا ۖ أَعْمَالَهُمْ ۖ
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أُنْزِلَ اللَّهُ فَاحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۖ
أَكْفَرُ بَيْسِيرًا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ
أَمْثَالُهَا ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُ مَوَّلَى الَّذِينَ آمَنُوا ۖ وَأَنَّ
الْكَافِرِينَ لَا مَوَّلَى لَهُمْ ۖ إِنْ اللَّهُ يُدْخِلُ الَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا
تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۖ وَكَأَيِّنْ مِنْ
قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجْتِكَ ۖ

مَنْزِلٌ

(१५) दीन के कामों में तीफ़ीक़ अता फ़रमाकर और दुनिया में उनके दुश्मनों के मुकाबिल उनकी मदद फ़रमाकर. हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहो तआला अन्हूमा ने फ़रमाया कि उनकी ज़िन्दगी के दिनों में उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाकर कि उनसे कोई गुनाह न हो.

(१६) यानी क़ुरआन शरीफ़.

(१७) यानी पक्षों के कि काफ़िरों के कर्म अकारत और ईमान वालों की ग़ल्लियाँ भी माफ़.

(१८) यानी जंग हो.

(१९) यानी उनको क़त्ल करो.

(२०) यानी बहुतायत से क़त्ल कर चुको और बाक़ी को कैद करने का मौक़ा आ जाए.

(२१) दोनों बातों का इस्तिस्नान है. मुश्किों के कैदियों का हुक़म हमारे नज़दीक यह है कि उन्हें क़त्ल किया जाए या गुलाम बना लिया जाए और एहसान से छोड़ना और फ़िदिया लेना जो इस आयत में बयान किया गया है वह सूरफ़ बराअत की आयत "उक़तलूल मुश्किीन" से मन्सूख़ हो गया.

(२२) यानी जंग ख़त्म हो जाए इस तरह कि मुश्कि इनाअत कुबूल कर लें और इस्लाम लाएं.

(२३) बगीर किताल के उन्हें ज़मीन में धंसा कर या उन पर पत्थर बरसाकर या और किसी तरह.

(२४) तुम्हें किताल का हुक़म दिया.

(२५) किताल में ताकि मुसलमान मक़तूल सवाब पाएं और काफ़िर अज़ाब.

(२६) उनके कर्मों का सवाब पूरा पूरा देगा.

(२७) ऊंचे दर्जों की तरफ़.

(२८) वो जन्नत की मंज़िलों में अज़नबी और अन्नज़ान की तरह न पहुँचेंगे जो किसी जगह जाता है तो उसको हर चीज़ पुरख़ की हाज़त होती है. बल्कि वो जाने पहचाने अन्दाज़ में दाख़िल होंगे अपनी मंज़िलों और ठिकानों का पहचानते होंगे अपनी बीबी और आदिमों को जानते होंगे. हर चीज़ का मौक़ा उनकी जावकारी में होगा जैसे कि वो हमेशा से यहीं के रहने वाले हों.

(२९) तुम्हारे दुश्मन के मुकाबिल.

(३०) जंग में और हुज्रते इस्लाम पर और फुले सिरात पर.

(३१) यानी क़ुरआने पाक. इसलिये कि उसमें शहबात और लज़ज़तों का छोड़ना और फ़रमावशदारी और इयादतों में मेहनत ज़राने का आदेश है जो नफ़स पर भारी गुज़रते हैं.

मददगार नहीं^(१३) तो क्या जो अपने रब की तरफ से रौशन दलील पर हो^(१४) उसे^(१५) जैसा होगा जिसके बुरे अमल(कर्म) उसे भले दिखाए गए और वह अपनी ख्वाहिशों के पीछे चले^(१६) अहवाल उस जन्नत का जिसका वादा परहेज़गारों से है, उसमें ऐसी पानी की नेहरें हैं जो कभी न विगड़ें^(१७) और ऐसे दूध की नेहरें हैं जिसका मज़ा न बदला^(१८) और ऐसी शराब की नेहरें हैं जिसके पीने में लज़्जत है^(१९) और ऐसी शहद की नेहरें हैं साफ़ किया गया^(२०) और उनके लिये उसमें हर क्रिस्म के फ़ल हैं और अपने रब की माफ़िरत^(२१) क्या ऐसे चैन वाले उनके बराबर हो जाएंगे जिन्हें हमेशा आग में रहना और उन्हें खोलता पानी पिलाया जाए कि आंतों के टुकड़े टुकड़े कर दे^(२२) और उन^(२३) में से कुछ तुम्हारे इरशाद(प्रवचन) सुनते हैं^(२४) यहाँ तक कि जब तुम्हारे पास से निकल कर जाएं^(२५) इत्म वालों से कहते हैं^(२६) अभी उन्होंने क्या फ़रमाया^(२७) ये हैं वो जिनके दिलों पर अल्लाह ने मोहर कर दी^(२८) और अपनी ख्वाहिशों के तावेअ(अधीन) हुए^(२९) और जिन्होंने राह पाई^(३०) अल्लाह ने उनकी हिदायत^(३१) और ज़्यादा फ़रमाई और उनकी परहेज़गारी उन्हें अता फ़रमाई^(३२) तो काहे के इन्तिज़ार में हैं^(३३) मगर क़यामत के कि उनपर अचानक आ जाए, कि उसकी अलामतें(चिन्ह) तो आही चुकी हैं^(३४) फिर जब वह आ जाएगी तो कहाँ वो और कहाँ उनका समझना^(३५) तो जान लो कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं

أَهْلَكْتَهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝ أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ ۝
مِّن رَّبِّهِ كُنْزَيْنِ لَهُ سُوءٌ عَلَيْهِ ۝ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۝
مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّنْ
مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ ۝ وَأَنْهَارٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ ۝
وَأَنْهَارٌ مِّنْ حَمِيمٍ لَّدَّةٍ لِلشَّرْبِ ۝ وَأَنْهَارٌ مِّنْ
عَسَلٍ مُّصَفًّى ۝ وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۝
وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۝ كُنْزٌ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ ۝
سُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يَسْمَعُ إِلَيْكَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا
لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ الْأَنفَاءُ ۝ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ ۝ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۝
وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًىٰ وَاتَّبَعُوا تَقْوَاهُمْ ۝
فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۝

مَثَلٌ

(२२) यानी पिछली उम्मतों का।

(२३) कि उन्हें और उनकी औलाद और उनके माल को सब को हलाक कर दिया।

(२४) यानी अगर ये काफ़िर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान न लाएं तो उनके लिये पहले जैसी बहुत सी तबाहियाँ हैं।

(२५) यानी मुसलमानों का विजयी होना और काफ़िरों का पराजित और ज़लील होना।

सुरा मुहम्मद - दूसरा रूक़

(१) दुनिया में थोड़े दिन ग़फ़लत के साथ, अपने अंजाम को भुलाए हुए।

(२) और उन्हें तमीज़ न हो कि इस ख़ाने के बाद वो ज़िन्न किये जाएंगे। यही हाल काफ़िरों का है जो ग़फ़लत के साथ दुनिया हासिल करने में लगे हुए हैं और आने वाली मुसीबतों का ख़याल भी नहीं करते।

(३) यानी मक्के वालों से।

(४) जो अज़ाब और हलाकत से बचा सके। जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मक्के से हिजरत की और ग़ार की तरफ़ तशरीफ़ ले चले तो मक्के की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया अल्लाह तआला के शहरों में तू अल्लाह तआला को बहुत प्यारा है और अल्लाह तआला के शहरों में तू मुझे बहुत प्यारा है अगर मुश्रिक मुझे न निकालते तो मैं तुझसे न निकलता। इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी।

(५) और वो ईमान वाले हैं कि वो कुन्नआन और नदी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चमत्कारों की ख़ुली निशानियाँ पर भरपूर यक़ीन रखते हैं।

(६) उस काफ़िर मुश्रिक।

(७) और उन्होंने ने कुफ़्र और बुतपरस्ती इम्तियार की, हरगिज़ वो मूमिन और ये काफ़िर एक से नहीं हो सकते और इन दोनों में कुछ भी निस्बत नहीं।

(८) यानी ऐसा लतीफ़ कि न सड़े न उसकी बू बदले न उसके मज़े में फ़र्क़ आए।

और ए मेहबूब अपने ख़ासों और आम मुसलमान मर्दों और औरतों के गुनाहों की माफ़ी मांगो^(१५) और अल्लाह जानता है दिन को तुम्हारा फिरना^(१६) और रात को तुम्हारा आराम लेना^(१७) (१९)

तीसरा रूकू

और मुसलमान कहते हैं कोई सूरत क्यों न उतारी गई^(१) फिर जब कोई पुख्ता सूरत उतारी गई^(२) और उसमें जिहाद का हुक्म फ़रमाया गया तो तुम देखोगे उन्हें जिन के दिलों में वीमारी है^(३) कि तुम्हारी तरफ़^(४) उसका देखना देखते हैं जिसपर मुर्दनी छाई हो तो उनके हक़ में बेहतर यह था कि फ़रमावर्दारी करते^(५) (२०) और अच्छी बात कहते फिर जब नातिक्रम हुक्म हो चुका^(६) तो अगर अल्लाह से सच्चे रहते^(७) तो उनका भला था (२१) तो क्या तुम्हारे ये लक्षण नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुक्मत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ^(८) और अपने रिश्ते काट दो (२२) ये हैं वो^(९) लोग जिन पर अल्लाह ने लअनत की और उन्हें हक़ (सत्य) से बेहरा कर दिया और उनकी आँखें फ़ोड़ दीं^(१०) (२३) तो क्या वो कुरआन को सोचते नहीं^(११) या कुछ दिलों पर उनके कुपल (ताले) लगे हैं^(१२) (२४) बेशक

مُحَمَّدٌ

٤٠٤

سُورَةُ

فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا فَأَنَّى لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ
ذِكْرُهَا قَالُوا إِنَّهَا لَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرُ
لِذُنُوبِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مُنْتَفِلَبَكُمْ وَمَثُوكُمْ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا كُولا
نُزِلَتْ سُورَةٌ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُحْكَمَةٌ
وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ
مَرَضٌ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ فَأُولَئِكَ لَهُمْ طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَعْرُوفٌ
وَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا
لَّهُمْ فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي
الْأَرْضِ وَتَقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ أُولَئِكَ الَّذِينَ
لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعَمَّى أَبْصَارَهُمْ أَفَلَا
يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْرًا قُلُوبٌ أَقْفَالُهَا إِنْ

مُحَمَّدٌ

(१) दुनिया के दूध के विपरीत कि ख़राब हो जाते हैं।

(१०) ख़ालिस लज़्ज़त ही लज़्ज़त. न दुनिया की शराबों की तरह उसका मज़ा ख़राब, न उसमें मेल कुचैल, न ख़राब चीज़ों की मिलावट. न वो सड़कर बनी, न उसके पीने से अक़ल घटे, न सर चक्कराए, न ख़ुमार आए, न दर्द सर पैदा हो. ये सब आफ़तें दुनिया ही की शराब में हैं, वहाँ की शराब इन सारे दोषों से پاک, अत्यन्त मज़ेदार, फ़रहत देने वाली और अच्छी लगने वाली।

(११) पैदाइश में यानी साफ़ ही पैदा किया गया. दुनिया के शहद की तरह नहीं जो मक्ख़नी के पेट से निकलता है और उसमें मोम वग़ैरह की मिलावट होती है।

(१२) कि वह सब उनपर एहसान फ़रमाता है और उनसे राज़ी है और उनपर से सारे तकलीफ़ी अहक़ाम उठा लिये गए हैं. जो चाहें ख़ाएँ जितना चाहें ख़ाएँ, न हिसाब न सज़ा.

(१३) काफ़िर लोग.

(१४) ख़ुत्बे वग़ैरह में अत्यन्त बेइल्तिफ़ाती के साथ.

(१५) ये मुनाफ़िक़ लोग तो.

(१६) यानी आलिम सहाबा जैसे इब्ने मसऊद और इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा, से मज़ाक़ के तौर पर.

(१७) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने, अल्लाह तआला इन मुनाफ़िक़ों के हक़ में फ़रमाता है.

(१८) यानी जब उन्होंने सत्य का अनुकरण छोड़ दिया तो अल्लाह तआला ने उनके दिलों को मुर्दा कर दिया.

(१९) और उन्होंने दोहरी प्रवृत्ति इज़्तिपार कर ली.

(२०) यानी वो ईमान वाले जिन्होंने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का क़लाम ग़ौर से सुना और उससे नफ़ा उठाया.

(२१) यानी दृष्टि या बसीरत और दिल की बात जानने का इल्म.

(२२) यानी परहेज़गारी की तौफ़ीक़ दी और उसपर मदद फ़रमाई या ये मानी हैं कि उन्हें परहेज़गारी की ज़ज़ा दी और उसका सबाब अता फ़रमाया.

(२३) काफ़िर और मुनाफ़िक़ लोग.

(२४) जिनमें से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का तशरीफ़ लाना और चाँद का दो टुकड़ा होना है.

(२५) यह इस उम्मत पर अल्लाह तआला की मेहरबानी है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाया कि उनके लिये मग़फ़िरत तलब फ़रमाएँ और आप ऐसे सिफ़ारिशी हैं कि आपकी सिफ़ारिश अल्लाह तआला के यहाँ मक्बूल है. इसके बाद ईमान वालों और येईमानों सबसे आम सम्बाशन है.

वो जो अपने पीछे पलट गए^(१३) बाद इसके कि हिदायत उनपर खुल चुकी थी^(१४) शैतान ने उन्हें धोखा दिया^(१५) और उन्हें दुनिया में मुद्दतों रहने की उम्मीद दिलाई^(१६) (२५) यह इसलिये कि उन्होंने^(१७) कहा उन लोगों से^(१८) जिन्हें अल्लाह का उतारा हुआ^(१९) नागवार है एक काम में हम तुम्हारी मानेंगे^(२०) और अल्लाह उनकी छुपी हुई जानता है^(२१) तो कैसा होगा जब फ़रिश्ते उनकी रूह कब्ज करेंगे उनके मुँह और उनकी पीठें मारते हुए^(२२) (२६) यह इसलिये कि वो ऐसी बात के ताबेअ हुए जिसमें अल्लाह की नाराज़ी है^(२३) और उसकी खुशी^(२४) उन्हें ग़वार न हुई तो उसने उनके कर्म अकारत कर दिये^(२५)

चौथा रूकू

क्या जिनके दिलों में बीमारी है^(१) इस घमण्ड में हैं कि अल्लाह उनके छुपे वर्र जाहिर न फ़रमाएगा^(२) (२९) और अगर हम चाहें तो तुम्हें उनको दिखा दें कि तुम उनकी सूरत से पहचान लो^(३) और ज़रूर तुम उन्हें बात के उसलूव (अन्दाज़) में पहचान लोगे^(४) और अल्लाह तुम्हारे कर्म जानता है^(५) (३०) और ज़रूर हम तुम्हें जाँचेंगे^(६) यहाँ तक कि देख लें^(७) तुम्हारे जिहाद करने वालों और साबिरो को और तुम्हारी ख़बरें आज़मा लें^(८) (३१) वेशक वो जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से^(९) रोका और रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध)

الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ۖ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأُمْرِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ۖ فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۖ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا مَا أَصْحَبَ اللَّهُ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَاحْبِطْ أَعْمَالَهُمْ ۖ إِنَّ مَصِيبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَن لَّنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَصْعَانَهُمْ ۖ وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيمِهِمْ ۖ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ۖ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجْتَهِدِينَ مِنكُمُ الصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَنَّكُمْ أَجْبَارَكُمْ ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا

مَنْزُور

(२६) अपने मशालों में और रोज़ी के कामों में.

(२७) यानी वो तुम्हारे तमाम हालात का जानने वाला है, उससे कुछ छुपा हुआ नहीं है.

सूरए मुहम्मद - तीसरा रूकू

(१) ईमान वालों को अल्लाह तआला की राह में जिहाद का बहुत ही शौक था वो कहते थे कि ऐसी सूरत क्यों नहीं उतरती जिसमें जिहाद का हुक्म हो ताकि हम जिहाद करें. इसपर यह आयत उतरी.

(२) जिसमें साफ़ खुला खुला बयान हो और उसका कोई हुक्म मन्सूख होने वाला न हो.

(३) यानी मुनाफ़िकों को.

(४) परेशान होकर.

(५) अल्लाह तआला और रसूल की.

(६) और जिहाद फ़र्ज़ कर दिया गया.

(७) ईमान और फ़रमाँबरदारी पर कायम रहकर.

(८) रिशवतें लो, जुल्म करो, आपस में लड़ो, एक दूसरे को क़त्ल करो.

(९) फ़साद करने वाले.

(१०) कि सच्चाई की राह नहीं देखते.

(११) जो सत्य को पहचानें.

(१२) कुफ़्र के, कि सच्चाई की बात उनमें पहुँचने ही नहीं पाती.

(१३) दोहरी प्रवृत्ति से.

(१४) और हिदायत का रास्ता साफ़ हो चुका था. क़तादा ने कहा कि यह पहले किताब के काफ़िरो का हाल है जिन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को पहचाना और आपकी तारीफ़ अपनी किताबों में देखी फिर पहचानने और जानने के बावजूद कुफ़्र इज़्तियार किया. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा और जुहाक और सदी का ब्रौल है कि इससे मुनाफ़िक मुग़ाद हैं जो ईमान लाकर कुफ़्र की तरफ़ फिर गए.

(१५) और बुराइयों को उनकी नज़र में ऐसा सजाया कि उन्हें अच्छा समझे.

की वाद इसके कि हिदायत उनपर ज़ाहिर हो चुकी थी वो हरगिज़ अल्लाह को कुछ नुकसान न पहुँचाएंगे, और बहुत जल्द अल्लाह उनकी किया धरा अकारत कर देगा^(१९) (३२) ऐ ईमान वाले अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो^(२०) और अपने कर्म बातिल न करो^(२१) (३३) बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका फिर काफ़िर ही मर गए तो अल्लाह हरगिज़ उन्हें न बख़्शेगा^(२२) (३४) तो तुम सुस्ती न करो^(२३) और आप सुलह की तरफ न बुलाओ^(२४) और तुम ही ग़ालिब आओगे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह हरगिज़ तुम्हारे कर्मों में तुम्हें नुकसान न देगा^(२५) (३५) दुनिया की ज़िन्दगी तो यही खेल कूद है^(२६) और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो वह तुम को तुम्हारे सवाब अता फ़रमाएगा और कुछ तुम से तुम्हारे माल न माँगेगा^(२७) (३६) अगर उन्हें^(२८) तुम से तलब करे और ज़्यादा तलब करे तुम बुख़ल (कंजूसी) करोगे और वह बुख़ल तुम्हारे दिलों के मेल ज़ाहिर कर देगा^(२९) हाँ हाँ यह जो तुम हो बुलाए जाते हो कि अल्लाह की राह में खर्च करो^(३०) तो तुम में कोई बुख़ल करता है और जो बुख़ल करे^(३१) वह अपनी ही जान पर बुख़ल करता है और अल्लाह बेनियाज़ है^(३२) और तुम सब मोहताज^(३३) और अगर तुम मुंह फ़ेरो^(३४) तो वह तुम्हारे

مَكِّيَّةٌ

८०९

حَمْدٌ

الرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۖ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحِطُّ أَعْمَالُهُمْ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۝ فَلَا تَهْتَفُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلَامَةِ وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ ۖ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتَرَكَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ۝ إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوَ ۖ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أَجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلَكُمْ أَمْوَالَكُمْ ۝ إِنْ يَسْأَلْكُمْ فِيهَا فَيَكْفِمْكُمْ تَحْكُمُوا وَيُخْرِجْ أَمْثَالَكُمْ ۝ هَآأَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخُلُ ۚ وَمَنْ يَبْخُلْ فَإِنَّمَا يَبْخُلُ عَنْ نَفْسِهِ ۚ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ ۚ

مَزْنٌ

- (१६) कि अभी बहुत उम्र पड़ी है, ख़ूब दुनिया के मजे उठा लो और उनपर शैतान का फ़रेब चल गया।
- (१७) यानी पहले किताब या मुनाफ़िक्क़ ने छुपवाँ तौर पर:
- (१८) यानी मुश्किलों से।
- (१९) कुआन और दीन के अहक़ाम।
- (२०) यानी सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुश्मनी और हुज़ूर के ख़िलाफ़ उनके दुश्मनों की मदद करने में और लोगों को जिहाद से रोकने में।
- (२१) लोहे के गदाओं से।
- (२२) और वह बात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जिहाद को जाने से रोकना और काफ़िरों की मदद करना है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि वह बात तौरात के उन मज़ामीन का छुपाना है जिनमें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नअत शरीफ़ है।
- (२३) ईमान फ़रमावसदारी और मुसलमानों की मदद और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जिहाद में हाज़िर होना।

सूरए मुहम्मद - चौथा सूक़

- (१) दाहरी प्रवृत्ति की।
- (२) यानी उनकी वो दुश्मनियाँ जो वो ईमान वालों के साथ रखते हैं।
- (३) हदीस शरीफ़ में हज़रत अनस रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कोई मुनाफ़िक्क़ छुपा न रहा। आप सब को उनकी सूतों से पहचानते थे।
- (४) और वो अपने ज़मीर का हाल उनसे न छुपा सकेंगे। चुनाने इसके बाद जो मुनाफ़िक्क़ लब धिलाता था हुज़ूर उसके दोग़लेपन को उसकी बात से और उसके बोलों से पहचान लेते थे। अल्लाह तआला ने हुज़ूर को बहुत से इल्म अता फ़रमाए उनमें से सूत पहचानना भी है। और बात से पहचानना भी।
- (५) यानी अपने बन्दा के सारे कर्म, हर एक को उसके लयक़ जज़ा देगा।
- (६) आज़माइश में डालेगे।
- (७) यानी ज़ाहिर फ़रमा दें।

सिवा और लोग बदल लेगा फिर वो तुम जैसे न होंगे^(२५) (२८)

४८ - सूरए फ़तह

सूरए फ़तह मदीने में उतरी, इसमें २९ आयतें, चार रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) वेशक हमने तुम्हारे लिये रौशन फ़तह फ़रमा दी^(२) (१) ताकि अल्लाह तुम्हारे कारण से गुनाह वख़ो तुम्हारे अगलों के और तुम्हारे पिछलों के^(३) और अपनी नेअमतें तुम पर पूरी कर दे^(४) और तुम्हें सीधी राह दिखा दे^(५) (२) और अल्लाह तुम्हारी ज़वरदस्त मदद फ़रमाए^(६) (३) वही है जिसने ईमान वालों के दिलों में इत्मीनान उतारा ताकि उन्हें यकीन पर यकीन वढ़े^(७) और अल्लाह ही की मिल्क (स्वामित्व में) हैं तमाम लश्कर आसमानों और ज़मीन के^(८) और अल्लाह इल्म व हिकमत (बोध) वाला है^(९) (४) ताकि ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को बाग़ों में ले जाए जिनके नीचे नेहरें बहें हमेशा उनमें रहें और उनकी बुराइयाँ उनसे उतार दे, और यह अल्लाह के यहाँ बड़ी कामयाबी

وَأَن تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلَ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۖ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْنًا لَّكُمْ ۝

سُورَةُ الْفَتْحِ مَدِينَةُ (۲۸)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۝ لِيُغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝ وَيَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَظِيمًا ۝ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَعَ إِيمَانِهِمْ ۝ وَاللَّهُ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ لِيَدْخُلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَيُكَفِّرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۖ وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ قَوْلًا مَنظُورًا

(८) ताकि ज़ाहिर हो जाए कि फ़रमाँबरदारी और दिल की सच्चाई के दावे में तुम में से कौन अच्छा है।

(९) उसके बन्दों को।

(१०) और वो सड़के वगैरह किसी चीज़ का सवाब न पाएंगे क्योंकि जो काम अल्लाह तआला के लिये न हो, उसका सवाब ही क्या। जंग बद्र के लिये जब कुरैश निकले तो वह साल दुष्काल का था। लश्कर का ख़ाना कुरैश के अमीरों ने बारी बारी अपने ज़िम्मे ले लिया था। मक्काए मुकर्रमा से निकल कर सबसे पहला ख़ाना अबू जहल की तरफ़ से था जिसके लिये उसने दस ऊंट ज़िद्ध किये थे। फिर सफ़वान ने मक्कामे उस्फ़ान में नौ ऊंट, फिर सहल ने मक्कामे क़दीद में दस, यहाँ से वो लोग समन्दर की तरफ़ फिर गए और रस्ता गुम हो गया। एक दिन ठहरे। वहाँ शैबा की तरफ़ से ख़ाना हुआ, नौ ऊंट ज़िद्ध हुए। फिर मक्कामे अबवा में पहुंचे वहाँ मुक़ैयस जहनी ने नौ ऊंट ज़िद्ध किये। हज़रत अब्बास की तरफ़ से भी दावत हुई। उस वक़्त तक आप इस्लाम नहीं लाए थे। आपकी तरफ़ से दस ऊंट ज़िद्ध किये गए फिर हारिस की तरफ़ से नौ और अबुल वज़्रारी की तरफ़ से बद्र के चश्मे पर दस ऊंट। इस ख़ाना देने वालों के बारे में यह आयत उतरी।

(११) यानी ईमान और फ़रमाँबरदारी पर क़ायम रहो।

(१२) दिखावे या दोमलेपन से। कुछ लोगों का ख़याल था कि जैसे शिर्क की वजह से सारी नेकियाँ नष्ट हो जाती हैं उसी तरह ईमान की वरक़त से कोई गुनाह नुस्ख़ान नहीं पहुंचाता। उनके बारे में यह आयत उतरी और बताया गया कि मूमिन के लिये अल्लाह और रसूल की फ़रमाँबरदारी ज़रूरी है, गुनाहों से बचना अनिवार्य है। इस आयत में कर्मों के वातिल करने की मुमानिअत फ़रमाई गई तो आदमी जो अमल शुरू से करे, चाहे वह नफ़ल ही हो, नमाज़ या रज़ा या कोई और, लाज़िम है कि उसको वातिल न करे।

(१३) यह आयत क़लीब वालों के बारे में उतरी। क़लीब बद्र में एक कुँवा है जिसमें मरने वाले काफ़िर डाले गए थे। अबू जहल और उसके साथी और आयत का हुक्म हर काफ़िर के लिये आम है। जो कुफ़र पर मरा हो अल्लाह तआला उसकी मग़फ़िरत न फ़रमाएगा। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहै वसल्लम के सहाबा को सम्बोधित किया जा रहा है और हुक्म में तमाम मुसलमान शामिल हैं।

(१४) यानी दुश्मन के मुकाबले में कमज़ोरी न दिखाओ।

(१५) काफ़िरों को। क़रतबी में है कि इस आयत के हुक्म में उल्मा का मतभेद है। कुछ ने कहा है कि यह आयत “व इन जनहू” को नासिख़ है क्योंकि अल्लाह ने मुसलमानों को सुलह की तरफ़ झुकने को मना फ़रमाया है जबकि सुलह की हाज़त न हो और कुछ उलमा ने कहा कि यह आयत मन्सूख़ है और आयत “व इन जनहू” इसकी नासिख़ और एक कौल यह है कि यह आयत मोहक़म है और दोनों आयतें दो अलग अलग वक़्तों और अलग अलग हालतों में उतरीं और एक कौल यह है कि आयत “व इन जनहू” का हुक्म एक निश्चित क़ौम के साथ ख़ास है और यह आयत आम है कि काफ़िरों के साथ समझौता जायज़ नहीं मगर ज़रूरत के लिहाज़ से जबकि मुसलमान कमज़ोर हों और मुकाबला न कर सकें।

है (५) और अज़ाब दे मुनाफ़िक (दो गले) मर्दों और मुनाफ़िक औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को जो अल्लाह पर गुमान रखते हैं (१०) उन्हीं पर है बड़ी गर्दिश (मुसीबत) (११) और अल्लाह ने उनपर राज़ब फ़रमाया और उन्हें लनत की और उनके लिये जहन्नम तैयार फ़रमाया, और वह क्या ही बुरा अंजाम (६) और अल्लाह ही की मिल्क में आसमानों और ज़मीन के सब लश्कर, और अल्लाह इज़ज़त व हिकमत (बोध) वाला है (७) वेशक हमने तुम्हें भेजा हाज़िर व नाज़िर (सर्व दृष्टा) (१२) और खुशी और डर सुनाता (१३) ताकि ऐ लोगो तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की तअज़ीम व तौकीर (आदर व सत्कार) करो, और सुबह शाम अल्लाह की पाकी (प्रशंसा) बोलो (१४) वो जो तुम्हारी वैअत करते (अपना हाथ तुम्हारे हाथ में देते) हैं (१५) वो तो अल्लाह ही से वैअत करते हैं (१६) उनके हाथों पर (१७) अल्लाह का हाथ है, तो जिसने एहद तोड़ा उसने अपने बड़े एहद को तोड़ा, (१८) और जिसने पूरा किया वह एहद जो उसने अल्लाह से किया था तो बहुत जल्द अल्लाह उसे बड़ा सवाब देगा (१९) (२०)

दूसरा रकू

अब तुम से कहेंगे जो गंवार पीछे रह गए थे (१) कि हमें हमारे माल और हमारे घर वालों ने जाने से मशगूल रखा (२) अब हुज़ूर हमारी मग़फ़िरत चाहें (३) अपनी ज़बानों से वो

الْفَتْح

٤١

حَمْد

عَظِيمًا ۝ وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّالِمِينَ يَا اللَّهُ طَلَبُ
التَّوْبَةِ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۝ وَعَذِبُ اللَّهِ
عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۝ وَسَاءَتْ
مَصِيرًا ۝ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝
وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ
شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ لَتَتُومُنُوا بِاللَّهِ وَ
رَسُولِهِ وَتَعَزَّزُوا وَتُؤْتُوا زَكَاةً وَسَبِّحُوهُ بِكُرَّةٍ
وَآخِرًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكُمَا إِنَّمَا يُبَايِعُونَ
اللَّهَ ۝ يَبْدُ اللَّهُ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۝ فَمَنْ تَكَنَّ
فَأَنَّمَا يُتَكَّنُ عَلَى نَفْسِهِ ۝ وَمَنْ أَوْفَى بِمَا عَاهَدَ
عَلَيْهِ اللَّهُ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ سَيَقُولُ
لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا

مَذَلَّ

- (१६) तुम्हें कर्मों का पूरा पूरा इनाम अता फ़रमाएगा।
- (१७) अत्यन्त जल्द गुज़रने वाली और इसमें लग जाता कुछ भी नफ़ा देने वाला नहीं है।
- (१८) हौं राहें खुदा में खर्च करने का हुक्म देगा, ताकि तुम्हें इसका सवाब मिले।
- (१९) यानी अमवाल को।
- (२०) जहाँ खर्च करना तुम पर फ़र्ज़ किया गया है।
- (२१) सदका देने और फ़र्ज़ अदा करने में।
- (२२) तुम्हारे सदकात और ताअत से।
- (२३) उसके फ़ज़ल और रहमत के।
- (२४) उसकी और उसके रसूल की फ़रमाँवरदारी से।
- (२५) बल्कि अत्यन्त मुतीअ और फ़रमाँवरदार होंगे।

४८ - सूरत फ़तह - पहला रकू

- (१) सूरत फ़तह मदनी सूरत है इसमें चार रकू, उन्तीस आयतें, पाँच सौ अड़सठ कलिम और दो हज़ार पाँच सौ उन्सठ अक्षर हैं।
- (२) इना फ़तहना हुदैबियह से वापस होते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर नाज़िल हुई। हुज़ूर को इसके नाज़िल होने से बहुत खुशी हुई और सहाबा ने हुज़ूर को मुबारकबादें दीं। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी) हुदैबियह एक कुआ है मक्कए मुकर्रमा के नज़दीक। संक्षिप्त विवरण यह है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़ाब देखा कि हुज़ूर अपने सहाबा के हमराह अम्न के साथ मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुए। कोई सर मुँडाए, कोई बाल छोटे कराए हुए, काबए मुअज़्ज़मा में दाख़िल हुए और कबे की कुंजी ली, तवाफ़ फ़रमाया, उमरा किया। सहाबा को इस ख़ाब की ख़बर दी। सब खुश हुए। फिर हुज़ूर ने उमरे का इरादा किया और एक हज़ार चार सौ सहाबा के साथ पहली ज़िलक़अदा सन ८ हिजरी को रवाता हुए। जुल हलीफ़ा में पहुंचकर वहाँ मस्जिद में दो रक़अतें पढ़कर उमरे का एहराम बाँधा और हुज़ूर के साथ अक्सर सहाबा ने भी। कुछ सहाबा ने जोहफ़ा में एहराम बाँधा। राह में पानी ख़त्म हो गया। सहाबा ने अर्ज़ किया कि पानी लश्कर में विल्कुल नहीं है सिवाय हुज़ूर के आफ़तावे यानी लांटे के कि उसमें थोड़ा पानी बाक़ी है। हुज़ूर ने आफ़तावे में दस्ते मुबारक डाला तो दूरानी उंगलियों से चमड़े फूट निकले। तमाम लश्कर ने पिया, बुजू किया।

बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं^(३) तुम फ़रमाओ तो अल्लाह के सामने किसे तुम्हारा कुछ इख्तियार है अगर वह तुम्हारा बुरा चाहे या तुम्हारी भलाई का इरादा फ़रमाए बल्कि अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है^(४) बल्कि तुम तो ये समझे हुए थे कि रसूल और मुसलमान हरगिज़ धरों को वापस न आएंगे^(५) और उसी को अपने दिलों में भला समझे हुए थे और तुमने बुरा गुमान किया^(६) और तुम हलाक होने वाले लोग थे^(७) ^(१२) और जो ईमान न लाए अल्लाह और उसके रसूल पर^(८) तो बेशक हमने काफ़िरों के लिये भड़कती आग तैयार कर रखी है^(९) और अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत जिसे चाहे बाख़्शे और जिसे चाहे अज़ाब करे^(१०) और अल्लाह बाख़्शने वाला मेहरवान है^(११) अब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले^(१२) जब तुम ग़नीमतें लेने चलो^(१३) तो हमें भी अपने पीछे आने दो^(१४) वो चाहते हैं अल्लाह का क़लाम बदल दें^(१५) तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम हमारे साथ न आओ अल्लाह ने पहले से यूँही फ़रमा दिया है^(१६) तो अब कहेंगे बल्कि तुम हमसे

وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا، يَقُولُونَ بِآلِسْتِهِمْ
مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ، قُلْ مَنْ يَمْلِكُ لَكَ
مِنْ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ
بِكُمْ نِعْمًا، بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا
بَلْ كُنتُمْ أَنْ لَنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ
إِلَى أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَرَبِّينَ ذَلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ
وَكُنتُمْ ظَنُّ السَّوءِ وَكُنتُمْ قَوْمًا بُورًا
وَمَنْ لَمْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۝ وَيَلِلَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ، وَاللَّهُ
غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ سَيَقُولُ الْخَالِفُونَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ
إِلَى مَفَازٍ لِمَا أَخَذُوا مِنْ دُرُونَا نَنْبَغِكُمْ
يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَ اللَّهِ قُلْ لَنْ تَبَدِّلُوا

مَذْكُورًا

जब उसफ़ात मक़ाम पर पहुंचे तो ख़बर आई कि कुफ़राने कुरैश बड़ी तैयारी से जंग के लिये उतावले हैं। जब हुदैबियह पहुंचे तो उसका पानी ख़त्म हो गया। एक बूंद न रहा। गर्मी बहुत सख्त थी। हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कुएं में कुल्ली फ़रमाई, उसकी बरक़त से कुआ पानी से भर गया, सब ने पिया, ऊंटों को पिलाया। यहाँ कुफ़राने कुरैश की तरफ़ से हाल मालूम करने के लिये कई व्यक्ति भेजे गए। सबने जाकर यही बयान किया कि हुज़ूर उमर के लिये आए हैं। जंग का इरादा नहीं है। लेकिन उन्हें यकीन न आया। आग्रिस्कार उन्होंने अर्वा दिन मसऊद सफ़रकी को जो ताइफ़ के बड़े सरदार और अरब के बहुत मालदार आदमी थे, हालात की जांच के लिये भेजा। उन्होंने आकर देखा कि हुज़ूर दस्ते मुबारक धोते हैं तो सहाबा तबरूक के लिये वह धोवन हासिल करने को दूट पड़ते हैं। अगर हुज़ूर कमी थूकते हैं तो लोग उसे हासिल करने की कोशिश करते हैं और जिसको वह मिल जाता है वह अपने चेहरे और बदन पर बरक़त के लिये मलता है। कोई बाल हुज़ूर का गिरने नहीं पाता। सहाबा उसको बहुत अदब के साथ लेने और जान से ज़्यादा अज़ीज़ रखते हैं। जब हुज़ूर क़लाम फ़रमाते हैं तो सब साक़ित हो जाते हैं। हुज़ूर के अदब और सम्मान के कारण कोई व्यक्ति नज़र ऊपर को नहीं उठाता। अर्वा ने कुरैश से जाकर यह सारा हाल बयान किया और कहा कि मैं फ़ारस, रोम और मिस्र के दरबारों में गया हूँ मैं ने किसी बादशाह की यह महानता नहीं देखी जो मुहम्मद की उन के सहाबा में है। मुझे डर है कि तुम उनके मुक़ाबले में सफल न हो सकोगे। कुरैश ने कहा ऐसी बात मत कहो। हम इस साल उन्हें वापस कर देंगे। बां अगले साल आएँ। अर्वा ने कहा मुझे डर है कि तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे। यह कहकर वह अपने साथियों समेत ताइफ़ चले गए और इस घटना के बाद अल्लाह तआला ने उन्हें इस्लाम से नज़ाज़ा। यही हुज़ूर ने अपने सहाबा से वैअत ली, इसको वैअते रिज़वान कहते हैं। वैअत की ख़बर से काफ़िर बहुत भयभीत हुए और उनके सलाहकारों ने यही मुनासिब समझा कि सुलह कर लें। चुवान्ये सुलहनामा लिखा गया और अगले साल हुज़ूर का तशरीफ़ लाना करार पाया और यह सुलह मुसलमानों के हित में बड़ी लाभदायक साबित हुई बल्कि वतोजां के अनुसार विजयी सिद्ध हुई। इसी लिये अक्सर मुफ़स्सिरीन फ़क्त से सुलह हुदैबियह मुराद लेते हैं और कुछ इस्लाम की सारी फ़ूतूहात, जां आगे आने वाली थीं और भूतकाल की क्रिया से उनका ज़िक्र उनके निश्चित होने की वजह से है। (ख़ाज़िन और रूहुल बयान)

(३) और तुम्हारी बदौलत उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमाए। (ख़ाज़िन और रूहुल बयान)

(४) दुनियावी भी ओर आग्रिस्त का भी।

(५) रिसालत की तबलीग और रियासत के कामों की मज़बूती में। (वैज़ावी)

(६) दुश्मनों पर भरपूर ग़लबा अता करे।

(७) और भरपूर अक्कीदे के बाबुजुद नफ़स का इल्मीतान हासिल हो।

(८) वह कादिर है जिससे चाहे अपन रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मदद फ़रमाए। आसमान ज़मीन के लश्करों से या तो

आसमान और ज़मीन के फ़रिश्ते मुराद हैं या आसमानों के फ़रिश्ते और ज़मीन के जानदार.

- (९) उसने ईमान वालों के दिलों का तसल्ली और विजय का वादा फ़रमाया.
- (१०) कि वह अपने रसूल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनपर ईमान लाने वालों की मदद न फ़रमाएगा.
- (११) अज़ाब और हलाकत का.
- (१२) अपनी उम्मत के कर्मों और हालात का; ताकि क़यामत के दिन उनकी गवाही दो.
- (१३) यानी सच्चे ईमान वालों को जन्नत की खुशी और नाफ़रमानों को दोज़न्न के अज़ाब का डर सुनाता.
- (१४) सुरू की तस्वीह में नमाज़े फ़न्न और शाम की तस्वीह में बाक़ी चारों नमाज़ें दाख़िल हैं.
- (१५) इस बैअत से मुराद बैअते रिज़वान है जो तबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुदैबियह में ली थी.
- (१६) क्योंकि रसूल से बैअत करना अल्लाह तआला ही से बैअत करना है जैसे कि रसूल की इताअत अल्लाह तआला की इताअत है.
- (१७) जिनसे उन्होंने न सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बैअत का सम्मान प्राप्त किया.
- (१८) इस एहद तोड़ने का बवाल उसी पर पड़ेगा.
- (१९) यानी हुदैबियह से तुम्हारी वापसी के वक़्त.

सूरए फ़तह - दूसरा ख़ूब

- (१) क़बीलए शिफ़ार और मुज़ैय्यिनह व जुहैनह व अंशजअ व असलम के, जब कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुदैबियह के साल उमरा की नियत से मक्कए मुकर्रमा का इरादा फ़रमाया तो मदीने के आस पास के गाँवों वाले और सहराओं में रहने वाले कुरैश के डर से आपके साथ जाने से रुक़े जबकि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उमरे का एहराम बाँधा था और क़ुर्बानी के जानवर साथ थे और इससे साफ़ ज़ाहिर था कि जंग का इरादा नहीं है फिर भी बहुत से लोगों पर जाना बाँझ हुआ और वो काम का बहाना करके रह गए और उनका गुमान यह था कि कुरैश बहुत ताक़तवर हैं. मुसलमान उनसे बच कर न आएंगे सब वहीं हलाक हो जाएंगे. अब जबकि अल्लाह की मदद से मामला उनके गुमान के बिल्कुल विपरीत हुआ तो उन्हें अपने न जाने पर अफ़सोस होगा और मअज़िरत करेंगे.
- (२) क्योंकि औरतें और बच्चे अकेले थे और उनका कोई ख़बरगोरी करने वाला न था इसलिये हम धँवस हो गए.
- (३) अल्लाह उनको झुटलाता है.
- (४) यानी वो बहाना बनाने और माफ़ी मांगने में झूटे हैं.
- (५) दुश्मन उन सबका वहीं ख़ात्मा कर देंगे.
- (६) कुफ़्र और फ़साद के ग़लबे का और अल्लाह के वादे के पूरा न होने का.
- (७) अल्लाह के अज़ाब के हक़दार.
- (८) इस आयत में चुनौती है कि जो अल्लाह तआला पर और उसके रसूल पर ईमान न लाए, उनमें से किसी एक का भी इन्कार हो, वह काफ़िर है.
- (९) यह सब उसकी मर्ज़ी और हिक़मत पर है.
- (१०) जो हुदैबियह की हाज़िरी से लाचार रहे, ऐ ईमान वालो.
- (११) ख़ैबर की. इसका वाकिआ यह था कि जब मुसलमान सुलह हुदैबियह से फ़ारिग होकर वापस हुए तो अल्लाह तआला ने उनसे ख़ैबर की विजय का वादा फ़रमाया और वहाँ की ग़नीमतें हुदैबियह में हाज़िर होने वालों के लिये मख़सूस कर दी गईं. जब मुसलमानों के ख़ैबर की तरफ़ ख़ाना होने का वक़्त आया तो उन लोगों को लालच आया और उन्होंने ग़नीमत के लालच में कहा.
- (१२) यानी हम भी ख़ैबर को तुम्हारे साथ चलें और जंग में शारीक हों अल्लाह तआला फ़रमाता है.
- (१३) यानी अल्लाह तआला का वादा जो हुदैबियह वालों के लिये फ़रमाया था कि ख़ैबर की ग़नीमत ख़ास उनके लिये है.
- (१४) यानी हमारे मदीना आने से पहले.

जलते हो^(१५) वल्कि वो बात न समझते थे^(१६) मगर थोड़ी^(१७) (१५) उन पीछे रह गए हुए गंवारों से फरमाओ^(१८) बहुत जल्द तुम एक सख्त लड़ाई वाली क्रीम की तरफ बुलाए जाओगे^(१९) कि उनसे लड़ो या वो मुसलमान हो जाएं, फिर अगर तुम फरमान मानोगे अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब देगा^(२०) और अगर फिर जाओगे जैसे पहले फिर गए^(२१) तो तुम्हें दर्दनाक अज्ञाव देगा^(२२) अंधे पर तंगी नहीं^(२३) और न लंगड़े पर मुजायका और न बीमार पर मुआखिजा^(२४) और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने अल्लाह उसे बागों में ले जाएगा जिनके नीचे नेहरें बहें, ओर जो फिर जाएगा^(२५) उसे दर्दनाक अज्ञाव फरमाएगा^(२६)

तीसरा रूकू

बेशक अल्लाह राज़ी हुआ ईमान वालों से जब वो उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअत करते थे^(१) तो अल्लाह ने जाना जो उनके दिलों में है^(२) तो उनपर इत्मीनान उतारा और उन्हें जल्द आने वाली फ़तह का इनाम दिया^(३) (१८) और बहुत

كذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُ عَلَيْنَا يَا اَبْنٰى اٰدَمَ ۚ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلَيْهِ فَوْمَ اُولٰٓئِىْ بِاَيْسَ شَدِيْدٍ تَقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسَلِّمُوْنَ ۚ فَاِنْ تَطِيعُوا بُوْءِيْكُمْ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ كَيْسَ عَلٰى الْاَعْمٰى حَرِيْمٌ وَلَا عَلٰى الْاَعْرَجِ حَرِيْمٌ وَلَا عَلٰى الْمَرِيْضِ حَرِيْمٌ ۚ وَمَنْ يُطِيعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ يَدْخُلْهُ جَنَّتٌ تَجْرٰى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارُ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ لَقَدْ رَضٰى اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝ وَمَعَانِمَ

- (१५) और यह गवारा नहीं करते कि हम तुम्हारे साथ गतीमते पाएँ. अल्लाह तआला फरमाता है.
- (१६) दीन की.
- (१७) यानी मात्र दुनिया की. यहाँ तक कि उनका ज़बानी इक्कार भी दुनिया ही की गरज़ से था और आखिरत की बातों को बिल्कुल नहीं समझते थे. (जुमल)
- (१८) जो विभिन्न कबीलों के लोग हैं और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिनके तौबह करने की आस की जाती है. कुछ ऐसे भी हैं जो दोहरी प्रवृत्ति या दोगलेपन में बहुत पुरखा और सन्नत हैं. उन्हें आजमाइश में डालना मन्ज़ूर है ताकि तौबह करने वालों और न करने वालों में फर्क हो जाए इसलिये हुक्म हुआ कि उनसे फरमा दीजिये.
- (१९) इस क्रीम से बनी हनीफा यमामह के रहने वाले जो मुसैलिना कज़्ज़ाव की क्रीम के तांग हैं वो मुराद हैं जिनमें हज़रत अबू बक्र सिदीक रदियल्लाहो अन्हो ने जंग फरमाई और यह भी कहा गया है कि उनसे मुराद फ़ारस और रोम के लोग हैं जिनमें जंग के लिये हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने दावत दी.
- (२०) यह आयत हज़रत अबू बक्र सिदीक और हज़रत उमर फ़ारूक रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त की सच्चाई की दलील है कि उन हज़रत की इत्ताअत पर जन्नत का और उनकी मुख़ालिफ़त पर जहन्नम का वादा किया गया.
- (२१) हुदैबियह के मौक़े पर.
- (२२) जिहाद से रह जाने में. जब ऊपर की आयत उतरी तो जो लोग अपंग और मजबूर थे उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, हमारा क्या हाल होगा. इसपर यह आयत उतरी.
- (२३) कि ये उन्न ज़ाहिर हैं और जिहाद में हाज़िर न होना उन लोगों के लिये जायज़ है क्योंकि न ये लोग दुश्मन पर हमला करने की ताक़त रखते हैं न उनके हमले से बचने और भागने की. उन्हीं के हुक्म में दाख़िल है वो बूढ़े दुर्बल जिन्हें उठने बैठने की ताक़त नहीं या जिन्हें दमा और खाँसी है या जिनकी तिल्ली बहुत बढ़ गई है और उन्हें चलना फिरना कठिन है. ज़ाहिर है कि ये मजबूरियाँ जिहाद से रोकने वाली हैं. उनके अलावा और भी मजबूरियाँ हैं जैसे बहुत ज्यादा मोहताज़ी और सफ़र की ज़रूरी हाज़ताँ पर कुदरत न रखना या ऐसे ज़रूरी काम जो सफ़र से रोकते हों जैसे किसी ऐसे बीमार की ख़िदमत जिसकी देखभाल उस पर बाज़िब है और उसके सिवा कोई करने वाला नहीं.
- (२४) ताअत से मुंह फेरना और कोई कुछ और दोगलेपन पर रहेगा.

सूरए फ़तह - तीसरा रूकू

- (१) हुदैबियह में चूँकि उन बैअत करने वालों की अल्लाह की रज़ा की खुशख़बरी दी गई इसलिये उस बैअत का बैअत ग़िज़वान

सी गनीमतें^(१) जिन को लें, और अल्लाह इज्जत व हिकमत वाला है^(१९) और अल्लाह ने तुम से वादा किया है बहुत सी गनीमतों का कि तुम लोग^(२) तो तुम्हें यह जल्द अता फ़रमा दी और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिये^(३) और इसलिये कि ईमान वालों के लिये निशानी हो^(४) और तुम्हें सीधी राह दिखा दे^(५) ^(२०) और एक और^(६) जो तुम्हारे बल की न थी^(७) वह अल्लाह के क़वज़े में है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है^(८) ^(२१) और अगर काफ़िर तुम से लड़ें^(९) तो ज़रूर तुम्हारे मुक़ाबले से पीठ फेर देंगे^(१०) फिर कोई हिमायती न पाएंगे न मददगार^(२२) अल्लाह का दस्तूर है कि पहले से चला आता है^(११) और हरगिज़ तुम अल्लाह का दस्तूर बदलता न पाओगे^(२३) और वही है जिसने उनके हाथ^(१२) तुम से रोक दिये और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिये मक्का की घाटी में^(१३) वाद इसके कि तुम्हें उन पर क़ाबू दे दिया था और अल्लाह तुम्हारे काम देखता है^(१४) ^(२४) वो हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से^(१५) रोका और कुरबानी के जानवर रुके पड़े अपनी

كُفْرًا يَأْخُذُونَهَا وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝
وَعَدَ اللَّهُ مَعَكُمْ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَلَ
لَكُمْ هَذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ
آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۝
وَأُخْرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا
وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝ وَلَوْ قَتَلَكُمُ
الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا الْأَذْوَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا
وَلَا نَصِيرًا ۝ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ حَكَمْتَ مِنْ
قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝ وَهُوَ
الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ
بَبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۖ
وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝ هُمُ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدَىٰ

مَزْلُومًا

कहते हैं, इस बैअत का ज़ाहिरी करण यह हुआ कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुदैबियह से हज़रत उस्माने गनी रदियल्लाहो अन्हो को कु़रैश के सरदारों के पास मक्काए मुकर्रमा भेजा कि उन्हे ख़बर दे कि हम बैतुल्लाह की ज़ियारत और उमरे की नियत से आए हैं हमारा इरादा जंग का नहीं है, और यह भी फ़रमा दिया था कि जो कमज़ोर मुसलमान वहाँ हैं उन्हें इम्तीनान दिला दें कि मक्काए मुकर्रमा बहुत जल्द फ़तह होगा और अल्लाह तआला अपने दीन को ग़ालिब फ़रमाएगा, कु़रैश इस बात पर सहमत रहे कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इस साल न आएँ और हज़रत उस्माने गनी रदियल्लाहो अन्हो से कहा कि अगर आप काबे का तवाफ़ करना चाहें तो कर लें, हज़रत उस्माने गनी ने फ़रमाया कि ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बिना तवाफ़ करूँ, यहाँ मुसलमानों ने कहा कि उस्माने गनी रदियल्लाहो अन्हो बड़े ख़ुशनसीब हैं जो काबए मुअज़्ज़मा पहुंचे और तवाफ़ से मुशरफ़ हुए, हुज़ूर ने फ़रमाया मैं जानता हूँ कि वो हमारे बग़ैर तवाफ़ न करेंगे, हज़रत उस्माने गनी रदियल्लाहो अन्हो ने मक्के के कमज़ोर मुसलमानों को आदेशनुसार फ़तह की ख़ुशख़बरी भी पहुंचाई फिर कु़रैश ने हज़रत उस्माने गनी को रोक लिया, यहाँ यह ख़बर मशहूर हो गई कि उस्माने गनी रदियल्लाहो अन्हो शहीद कर दिये गए, इसपर मुसलमानों को बहुत जोश आया और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सहाबा से काफ़िरों के मुक़ाबले में जिहाद में डटे रहने पर बैअत ली, यह बैअत एक बड़े काँटेदार दरख़्त के नीचे हुई जिसको अरब में समुरह कहते हैं, हुज़ूर ने अपना बायाँ दस्तें मुबारक दाएं दस्तें अक़दस में लिया और फ़रमाया कि यह उस्मान (रदियल्लाहो अन्हो) की बैअत है और फ़रमाया या रब उस्मान तेरे और तेरे रसूल के काम में हैं, इस घटना से मालूम होता है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नबुव्वत के नूर से मालूम था कि हज़रत उस्मान रदियल्लाहो अन्हो शहीद नहीं हुए ज़बो तो उनकी बैअत ली, मुश्रिकों में इस बैअत का हाल सुनकर डर छा गया और उन्होंने हज़रत उस्माने गनी रदियल्लाहो अन्हो को भेज दिया, हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जिन लोगों ने दरख़्त के नीचे बैअत ली थी उनमें से कोई भी दाज़िज़ में दाख़िल न होगा, (मुस्लिम शरीफ़) और जिस दरख़्त के नीचे बैअत की गई थी अल्लाह तआला ने उसको आँखों से धोशीदा कर दिया सहाबा ने बहुत तलाश किया किसी को उसका पता न चला,

(२) सच्चाई, सच्ची महबूत और वफ़ादारी,

(३) यानी ख़ैबर की विजय का जो हुदैबियह से वापस होकर छ माह बाद हासिल हुई,

(४) ख़ैबर की और ख़ैबर शालों के माल कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने तक्सीम फ़रमाए,

(५) और तुम्हारी विजय होती रहेगी,

(६) कि वो डर कर तुम्हारे बाल बच्चों को हानि न पहुंचा सके, इसका वाकिआ यह था कि जब मुसलमान ख़ैबर की जंग के लिये ख़ाना हुए तो ख़ैबर वासियों के हलीफ़ बनी असद और शिताफ़ान ने चाहा कि मदीनए तैयिबह पर हमला करके मुसलमानों के बाल बच्चों को लूट लें, अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोब डाला और उनके हाथ रोक दिये,

जगह पहुंचने से^(१०) और अगर यह न होता कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसलमान औरतें^(११) जिनकी तुम्हें खबर नहीं^(१२) कहीं तुम उन्हें रौंदे डालो^(१३) तो तुम्हें उनकी तरफ से अनजानी में कोई मकरूह पहुंचे तो हम तुम्हें उनके क़िताल की इजाज़त देते उनका यह बचाव इसलिये है कि अल्लाह अपनी रहमत में दाखिल करे जिसे चाहे, अगर वो जुदा हो जाते^(१४) तो हम ज़रूर उनमें के काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब देते^(१५) (२५) जब कि काफ़िरों ने अपने दिलों में आड़ रखी है वही अज्ञानता के ज़माने की आड़^(१६) तो अल्लाह ने अपना इत्मीनान अपने रसूल और ईमान वालों पर उतारा^(१७) और परहेज़गारी का कलिमा उनपर अनिवार्य फ़रमाया^(१८) और वो उसके ज़्यादा सज़ावार और उसके योग्य थे^(१९) और अल्लाह सब कुछ जानता है^(२०) (२६)

चौथा रूकू

वेशक अल्लाह ने सच कर दिया अपने रसूल का सच्चा ख़्वाब^(१) वेशक तुम ज़रूर मस्जिदे हराम में दाखिल होगे अगर अल्लाह चाहे अम्नों अमान से अपने सरो के^(२) वाल मुंडाते या^(३) तरशवाते वेख़ौफ़, तो उसने जाना जो तुम्हें मालूम नहीं^(४) तो उससे पहले^(५) एक नज़्दीक आने वाली फ़तह रखी^(६) (२७)

مَعُكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَجْلَهُ وَلَوْ لَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ
وَنِسَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَّوُّهُمْ
فَتُصِيبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ لِّئَدْ خَلَّ
اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ اذْجَعَلَ
الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ الْحَمِيَّةَ
الْجَاهِلِيَّةَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ
وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى وَكَانُوا
أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلُهَا وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝
لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّبُوبَ بِالْحَقِّ ۚ لَشَدَّ خُلُقُ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ مُحَلِّقِينَ
رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ ۚ لَا تَخَافُونَ ۚ فَعَلِمَ مَا لَمْ
تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ۝

مَكِّيَّة

- (७) यह ग़नीमत देना और दुश्मनों के हाथ रोक देना.
- (८) अल्लाह तआला पर तयक्कुन्न करने और काम उस पर छोड़ देने की जिससे वसीरत और यक़ीन ज़्यादा हो.
- (९) फ़तह.
- (१०) मुराद इससे फ़रस और रूम की ग़नीमतें हैं या ख़ैबर की जिसका अल्लाह तआला ने पहले से वादा फ़रमाया था और मुसलमानों को कामयाबी की उम्मीद थी. अल्लाह तआला ने उन्हें विजय दिलाई और एक क़ौल यह है कि वह फ़तह मक्का है. और एक यह क़ौल है कि वह हर फ़तह है जो अल्लाह तआला ने मुसलमानों को अता फ़रमाई.
- (११) यानी मक्के वालों या ख़ैबर बासियों के सहयोगी असद, ग़ितसब.
- (१२) पराजित होंगे और उन्हें मुंह की ग़ानी पड़ेगी.
- (१३) कि वह ईमान वालों की मदद फ़रमाता है और काफ़िरों की ज़लील करता है.
- (१४) यानी काफ़िरों के.
- (१५) मक्का की विजय का दिन. एक क़ौल यह है कि बले मक्का से हुदैबियह मुराद है और इस आयत के उतरने की परिस्थितियों में हज़रत अबस रदियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि मक्के वालों में से अस्सी हथियार बन्द जवान जबले तनईम से मुसलमानों पर हमला करने के इरादे से उतरे. मुसलमानों ने उन्हें गिरफ़्तार करके सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किया. हुज़ूर ने माफ़ फ़रमा दिया और उन्हें जाने दिया.
- (१६) मक्के के काफ़िर.
- (१७) वहाँ पहुंचने से और उसका तवाफ़ करने से.
- (१८) यानी ज़िद्ध के मक़ाम से जो हरम में है.
- (१९) मक्का मुकर्रमा में है.
- (२०) तुम उन्हें पहचाने नहीं.
- (२१) काफ़िरों से जंग करने में.
- (२२) यानी मुसलमान काफ़िरों से मुत्ताज़ हो जाते.
- (२३) तुम्हारे हाथ से क़त्ल कराके और तुम्हारी क़ैद में लाके.
- (२४) कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हुज़ूर के सहाबा को काबए मुअज़्ज़मा से रोका.
- (२५) कि उन्होंने अगले साल आने पर सुलह की, अगर वो भी कुरैश के काफ़िरों की तरह ज़िद करते तो ज़रूर जंग हो जाती.

वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चा दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर गालिब करे^(१) और अल्लाह काफ़ी है गवाह^(२) २८) मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उनके साथ वाले^(३) काफ़िरो पर सख्त हैं^(४) और आपस में नर्म दिल^(५) उन्हें देखेगा रूक करत सज्दे में गिरते^(६) अल्लाह का फ़ज़ल और रज़ा चाहते, उनकी निशानी उनके चेहरों में है सज्दों के निशान से^(७) यह उनकी सिफ़त (विशेषता) तौरात में है और उनकी सिफ़त इजील में है^(८) जैसे एक खेती उसने अपना पट्टा निकाला फिर उसे ताक़त दी फिर दबीज़ (मोटी) हुई फिर अपनी पिंडली पर सीधी खड़ी हुई किसानों को भली लगती है^(९) ताकि उनसे काफ़िरो के दिल जलें, अल्लाह ने वादा किया उनसे जो उनमें ईमान और अच्छे कामों वाले हैं^(१०) बख़्शिश और बड़े सवाब का^(११)

४९ - सूरए हुजुरात

सूरए हुजुरात मदीने में उतरी, इसमें १८ आयते, दो रूक हैं।

पहला रूक

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१)
ऐ ईमान वालो अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो^(२)

النَّحُورُ ۙ

۴۹

حم

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ

لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَكَيْفَ يَاللَّهُ شَهِيدًا ۝

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى

الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ

فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا لِّسِنَاهُمْ فِي وَجْهِهِمْ

مِّنْ أَكْثَرِ السُّجُودِ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ ۖ وَ

مَّثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ ۖ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْطًا فَازْرَعَهُ

فَاسْتَعْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ

لِيُغَيِّظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَ

عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْدِمُوا بَيْنَ يَدَيْهِ

مَنْزِل

- (२६) कलिमए तक्वा यानी परहंज़गारी के कलिमे से मुराद “ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह” है।
(२७) क्योंकि अल्लाह तआला ने उन्हें अपने दीन और अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की साहबत से नवाज़ा।
(२८) काफ़िरो का हाल भी जानता है, मुसलमानों को भी, कोई चीज़ उससे छुपी नहीं है।

सूरए फ़तह - चौथा रूक

(१) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुदैविष्यह का इरादा फ़रमाने से पहले मदीनए तैयिबह में ख़्बाब देखा था कि आप सहाबा के साथ मक्कए मुअज़्ज़मा में दाख़िल हुए और सहाबा ने सर के बाल मुंडाए, कुल ने छंटे करवाए, यह ख़्बाब आपने अपने सहाबा से बयान किया तो उन्हें ख़ुशी हुई और उन्होंने ख़याल किया कि इसी साल वो मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होंगे, जब मुसलमान हुदैविष्यह से सुलह के बाद वापस हुए और उस साल मक्कए मुकर्रमा में दाख़िला न हुआ तो मुनाफ़िकों ने मज़ाक़ किया, तअनं दिये और कहा कि वह ख़्बाब क्या हुआ, इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और उस ख़्बाब के मज़मून की तस्दीक़ फ़रमाई कि ज़रूर ऐसा होगा, चुनान्चे अगले साल ऐसा ही हुआ और मुसलमान अगले साल बड़ी शान व शौक़त के साथ मक्कए मुकर्रमा में बिजेता के रूप में दाख़िल हुए।

- (२) सारे।
(३) थोड़े से।
(४) यानी यह कि तुम्हारा दाख़िल होना अगले साल है और तुम इसी साल समझे थे और तुम्हारे लिये यह देरी बेहतर थी कि इसके कारण वहाँ के कमज़ोर मुसलमान पामाल होने से बच गए।
(५) यानी हरम में दाख़िले से पहले।
(६) ख़ैबर की विजय, कि वादा की गई विजय के हासिल होने तक मुसलमानों के दिल इस से राहत पाएँ, उसके बाद जब अगला साल आया तो अल्लाह तआला ने हुबुर के ख़्बाब का जलवा दिखाया और घटनाएं उसी के अनुसार घटीं, चुनान्चे इश़ाद फ़रमाता है।
(७) चाहें वो मुशिकों के दीन हों या एहले किताब के, चुनान्चे अल्लाह तआला ने यह नअमत अता फ़रमाई और इस्लाम को तमाम दीनों पर गालिब फ़रमा दिया।
(८) अपने हबीब मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की।
(९) यानी उनके साथी।
(१०) जैसा कि शेर शिकार पर, और सहाबा की सख़्ती काफ़िरो के साथ इस कदर थी कि वो लिहाज़ रखते थे कि उनका बदन किसी

और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह सुनता जानता है^(१)।
ऐ ईमान वाले अपनी आवाज़ें ऊँची न करो उस ग़ैब बताने
वाले (नबी) की आवाज़ से^(२) और उनके हुज़ूर (समक्ष) बात
चिल्लाकर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने
चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे कर्म अकारत न हो जाएँ और
तुम्हें ख़बर न हो^(३)। वेशक वो जो अपनी आवाज़ें पस्त
करते हैं रसूलुल्लाह के पास^(४) वो हैं जिनका दिल अल्लाह
ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है, उनके लिये वख़्शिश
और बड़ा सवाब है^(५)। वेशक वो जो तुम्हें हुज़रों के बाहर
से पुकारते हैं उनमें अक्सर वे अक्ल हैं^(६)। और अगर
वो सत्र करते यहाँ तक कि तुम आप उनके पास तशरीफ़
लाते^(७) तो यह उनके लिये बेहतर था, और अल्लाह बख़्शाने
वाला मेहरवान है^(८)। ऐ ईमान वाले अगर कोई फ़ासिफ़
तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहक़ीक़ कर लो^(९) कि कहीं
किसी क़ौम को बेजा ईज़ा (कष्ट) न दे बैठो फिर अपने किये
पर पछताते रह जाओ^(१०) और जान लो कि तुम में

وَرَسُولِهِ وَأَتَقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ
صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ
بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنتُمْ
لَا تَشْعُرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَبْغُضُونَ أَصْوَابَهُمْ
عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ
قُلُوبَهُمْ لِلنَّبَاةِ وَلَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝
إِنَّ الَّذِينَ يُبَادُونَكَ مِنَ زُرَّاءِ الْهَجَرِ أَكْثَرُ
لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ
إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ
فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِمَهَالِكِهِمْ تَصْحُحُوا عَلَى
مَا كُنتُمْ لِنَذِيرِهِ ۝ وَاعْلَمُوا أَن فِيكُمْ رَسُولٌ

काफ़िर के वदन से न छू जाए और उनके कपड़े पर किसी काफ़िर का कपड़ा न लगने पाए। (मदारीक)

(११) एक दूसरे पर मेहरबानी करने वाले कि जैसे बाप बेटे में हो और यह महबूत इस हद तक पहुंच गई कि जब एक भूमिद दूसरे
का देखे तो महबूत के जोश से हाथ मिलाए और गले से लगाए।

(१२) बहुतात से नमाज़ें पढ़ते, नमाज़ों पर हमेशगी करते।

(१३) और यह अलामत वह नूर है जो क़यामत के दिन उनके चेहरों पर चमकता होगा उससे पहचान जाएंगे कि उन्होंने दुनिया में
अल्लाह तआला के लिये बहुत सच्चे किये हैं और यह भी कहा गया है कि उनके चेहरों में सच्चे की जगह चौदहवीं के चाँद की तरह
चमकती होगी। अता का कौल है कि रात की लम्बी नमाज़ों से उनके चेहरों पर नूर नुमाया होता है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि
जो रात की नमाज़ की बहुतात रखता है सुद को उसका चेहरा ख़ूबसूरत हो जाता है और यह भी कहा गया है कि मिट्टी का निशान
भी सच्चे की अलामत है।

(१४) यह बयान किया गया है कि।

(१५) यह उदाहरण इस्लाम की शुरुआत और उसकी तरक्की की बयान की गई कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अक्वो
उठे फिर अल्लाह तआला ने आप को आपके सच्चे महबूत रखने वाले साथियों से कुबूत अता फ़रमाई। कतादह ने कहा कि सैयदे
आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा की मिसाल इन्ज़ील में यह लिखी है कि एक क़ौम खेती को तरह पैदा होगी और वो
नेकियों का हुक्म करेंगे, बुराईयों से रोकेंगे। कहा गया है कि खेती हुज़ूर हैं और उसकी शाखें सहाबा और ईमान वाले।

(१६) सहाबा सबके सब ईमान वाले और नेक कर्मों वाले हैं इसलिये यह वादा सभी से है।

४९ - सूरए हुजुरात - पहला रूकू

(१) सूरए हुजुरात मदनी है, इसमें दो रूकू, अठारह आयतें, तीन सौ तैंतालीस कलिमे और एक हजार चार सौ छिहत्तर अक्षर हैं।

(२) यानी तुम्हें लाज़िम है कि कभी तुम से तक्दीम वाके न हो, न कौल में न फ़ेअल, यानी न कहनी में न करनी में कि पहल
करना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अदब और सम्मान के मज़िलाफ़ है। उनकी वारगाह में नियज़मन्दी और आदाव
लाज़िम है। कुछ लोगों ने बक्र ईद के दिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पहले कुर्वानी कर ली तो उनको हुक्म दिया
गया कि दोबारा कुर्वानी करें और हुज़रत आबशारा रदियल्लाहो अन्हा से सिबायत है कि कुछ लोग रमज़ान से एक रोज़ पहले ही रोज़ा
रखना शुरू कर देते थे उनके बारे में यह आयत उतरी और हुक्म दिया गया कि रोज़ा रखने में अपने नबी से आगे मत जाओ।

(३) यानी जब हुज़ूर में कुछ अर्ज़ करो तो आहिस्ता धीमी आवाज़ में अर्ज़ करो यही दायरे रिसालत का अदब और एहतियाम है।

(४) इस आयत में हुज़ूर की बुजुर्गी और उनका सम्मान बताया गया और हुक्म दिया गया कि पुकारने में अदब का पूरा ध्यान रखें

अल्लाह के रसूल हैं^(१०) बहुत मामलों में अगर यह तुम्हारी खुशी करें^(११) तो तुम ज़रूर मशक़त में पड़ो लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान प्यारा कर दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता कर दिया और कुफ़्र और हुक़्म अदुली और नाफ़रमानी तुम्हें नागवार कर दी, ऐसे ही लोग राह पर हैं^(१२) ﴿७﴾ अल्लाह का फ़ज़ल और एहसान, और अल्लाह इल्म व हिक़मत वाला है ﴿८﴾ और अगर मुसलमानों के दो दल आपस में लड़ें तो उनमें सुलह कराओ^(१३) फिर अगर एक दूसरे पर ज़ियादती करे^(१४) तो उस ज़ियादती वाले से लड़ो यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक़्म की तरफ़ पलट आए फिर अगर पलट आए तो इन्साफ़ के साथ उनमें इस्लाह कर दो और इन्साफ़ करो, वेशक़ इन्साफ़ वाले अल्लाह को प्यारे हैं ﴿९﴾ मुसलमान मुसलमान भाई हैं^(१५) तो अपने दो भाइयों में सुलह करो^(१६) और अल्लाह से डरो कि तुम पर रहमत हो^(१७) ﴿१०﴾

दूसरा रुकू

ऐ ईमान वाले न मर्द मर्दों पर हंसें^(१) अजब नहीं कि वो उन हंसने वालों से बेहतर हों^(२) और न औरतें औरतों से दूर

اللّٰهُ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ
وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي
قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ
أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّشِدُونَ ۖ فَضَلَّ اللَّهُ ۖ
نِعْمَهُ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِنْ طَائِفَتَيْنِ
مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا فَإِنْ
بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَجَاءَاكَ
تَبَعِي حَتَّىٰ تَفْقِيَءَ بَيْنَهُمَا فَإِنْ فَاءَتْ
فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْضُوا ۚ إِنَّ
اللَّهَ يُحِبُّ الْفَاسِقِينَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ
فَأَصْلَحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ
تُرحَمُونَ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ
مِّن قَوْمٍ عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا

﴿١٠﴾

مَزَل

जैसे आपस में एक दूसरे को नाम लेकर पुकारते हैं उस तरह न पुकारें बल्कि अदब और सम्मान के शब्दों के साथ अर्ज़ करो जो अर्ज़ करना हो, कि अदब छोड़ देने से नैकियों के बर्बाद होने का डर है, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि यह आयत साबित बिन कैस बिन शम्मास के बारे में उतरी, वो ऊँचा सुनते थे और आवाज़ उनकी ऊँची थी, बात करने में आवाज़ बलबद हो जाया करती थी, जब यह आयत उतरी तो हज़रत साबित अपने घर बैठ रहे और कहने लगे मैं दोज़खी हूँ, हुज़ूर ने हज़रत सअद से उनका हाल दर्याफ़्त किया, उन्होंने अर्ज़ किया कि वह मेरे पड़ोसी हैं और मेरी जानकारी में उन्हें कांडे बीमारी तो नहीं हुई, फिर आकर हज़रत साबित से इसका ज़िक्र किया, साबित ने कहा यह आयत उतरी है और तुम जानते हो कि मैं तुम मबस ज़्यादा ऊँची आवाज़ वाला हूँ तो मैं जहन्नमी हो गया, हज़रत सअद ने यह हाल ख़िदमत अक़दस में अर्ज़ किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि वह जन्नत वालों में से हैं,

(५) अदब और सम्मान के तौर पर, आयत “या अय्युहल्लज़ीना आमनू ला तरफ़ऊ असवातकुम” के उतरने के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक और उमर फ़ारूक रदियल्लाहो अन्हुमा और कुछ और सहाबा ने बहुत एहतियात लाज़िम करली और ख़िदमत अक़दस में बहुत ही धीमी आवाज़ से बात करते, उन हज़रत के हक़ में यह आयत उतरी,

(६) यह आयत बनी तमीम के वफ़द के हक़ में उतरी कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में दोपहर का पहुँच जब कि हुज़ूर आराम कर रहे थे, इन लोगों ने हुज़ूर के बाहर से हुज़ूर को पुकारना शुरू किया, हुज़ूर तशरीफ़ ले आए, उन लोगों के हक़ में यह आयत उतरी और हुज़ूर की शान की बुजुर्गी का बयान फ़रमाया गया कि हुज़ूर की बारगाह में इस तरह पुकारना जिहालत और बेअक़्ती है और उनको अदब की तलकीन की गई,

(७) उस वक़्त वो अर्ज़ करते जो उन्हें अर्ज़ करना था, यह अदब उन पर लाज़िम था, इसको बजा लाते,

(८) इन में से उनके लिये जो तीबह करें,

(९) कि सही है या ग़लत, यह आयत बलीद बिन अक़बह के हक़ में उतरी कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनको बनी मुस्तलक से सदक़ात वसूल करने भेजा था और जिहालत के ज़माने में इनके और उनके दर्मियान दुश्मनी थी, जब बलीद उनके इलाक़े के क़बीब पहुँचे और उन्हें ख़बर हुई तो इस ख़याल से कि वो रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के भेजे हुए हैं, बहुत से लोग अदब से उनके स्वागत के लिये आए, बलीद ने गुमान किया कि ये पुरानी दुश्मनी से मुझ क़त्ल करने आ रहे हैं, यह ख़याल करके बलीद वापस हो गए और सयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ कर दिया कि हुज़ूर उन लोगों ने सदक़ा देव को मना कर दिया और मेरे क़त्ल का इरादा किया, हुज़ूर ने ख़ालिद बिन बलीद को तहज़ीक़ के लिये भेजा, हज़रत ख़ालिद ने देखा कि वो लोग अज़ाते कहते हैं, तमाज़ पढ़ते हैं और उन लोगों ने सदक़ात पेश कर दिये, हज़रत ख़ालिद से सदक़ात ख़िदमत अक़दस में लेकर हाज़िर हुए और हाल अर्ज़ किया, इसपर यह आयत उतरी, कुछ मुफ़सिरी ने कहा कि यह आयत आम है, इस बयान में

नहीं कि वो उन हंसने वालियों से बेहतर हों^(१) और आपस में तअना न करो^(२) और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो^(३) क्या ही बुरा नाम है मुसलमान होकर फ़ासिक कहलाना^(४) और जो तौवह न करें तो वही ज़ालिम है^(५) ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से बचो^(६) वेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है^(७) और ऐब(दोष)न ढूँढो^(८) और एक दूसरे की गीबत न करो^(९) क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो यह तुम्हें गवारा न होगा^(१०) और अल्लाह से डरो वेशक अल्लाह बहुत तौवह कुबूल करने वाला मेहरबान है^(११) ऐ लोगो हमने तुम्हें एक मर्द^(१२) और एक औरत^(१३) से पैदा किया^(१४) और तुम्हें शाखें और कवीले किया कि आपस में पहचान रखो^(१५) वेशक अल्लाह के यहाँ तुम में ज्यादा ईज़ाजत वाला वह जो तुम में ज्यादा परहेज़गार है^(१६) वेशक अल्लाह जानने वाला ख़बरदार है^(१७) गंवार बोले हम ईमान लाए^(१८) तुम फ़रमाओ तुम ईमान तो न लाए^(१९) हाँ यूँ कहो कि हम मुतीअ हुए^(२०) और अभी ईमान तुम्हारे दिलों में कहाँ दाखिल हुआ^(२१) और

نِسَاءً مِّن نِّسَاءٍ عَلَىٰ أَن يَكُنَّ حَيْرًا مِّنْهُنَّ ،
وَلَا تَلْبِسُوا أُنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَرُوا بِالْأَلْقَابِ ،
بِئْسَ الْإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ، وَمَنْ
لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ
بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَ
بِعَعْضِكُمْ بَعْضًا أَيُّوبُ أَحَدَكُمْ أَن يَبَآكُلَ لَحْمَ
أَخِيهِ مِمَّا فَكَرَ هُنْمُوهُ ، وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ
اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ۝
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاهُ
مِّن دَكِّ رِوَانْتِي وَجَعَلْنَاهُ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ
لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاهُ ۚ
وَلَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ قَالَتِ الْأَعْرَابُ
أُمَمٌ ۖ قُلْ لَّمْ تَأْمِنُوا وَلَكِن قَوْلُوا أَسَلْنَا لَنَا

مَنَزَلٌ

उतरी है कि फ़ासिक के क़ौल पर भरोसा न किया जाए. इस आयत से साबित हुआ कि एक व्यक्ति अगर आदिल हो तो उसको ख़बर भरोसे के लायक है.

(१०) अगर तुम झूट बोलोगं तो अल्लाह तआला के ख़बरदार करने से वह तुम्हारा राज़ खोल कर तुम्हें रूसवा कर देगे.

(११) और तुम्हारी राय के मुताबिक़ हुक्म दे दें.

(१२) कि सच्चाई के रास्ते पर कायम रहे.

(१३) नबीय करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दराज़ गोश (गधे) पर सवार तशरीफ़ ले जाते थे. अन्सार की मजलिस पर गुज़र हुआ. वहाँ थोड़ी देर ठहरे. उस जगह गधे ने पेशाब किया तो इन्हे उर्ई ने नाक बन्द कर ली. हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि हुज़ूर के दराज़गोश का पेशाब तेरे मुश्क से बेहतर ग़ुशू रखता है. हुज़ूर तो तशरीफ़ ले गए. उन दोनों में बात बढ़ गई और उन दोनों की क़ीमें आपस में लड़ गई और हाथा पाई की नौबत आई तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ लाए और उनमें सुलह करा दी. इस मामले में यह आयत उतरी.

(१४) जुल्म करे और सुलह से इन्कारी हो जाए. वागी दल का यही हुक्म है कि उससे जंग की जाए यहाँ तक कि वह लड़ाई से वाज़ आए.

(१५) कि आपस में दीनी सम्बन्ध और इस्लामी महब्वत के साथ जुड़े हुए हैं. यह रिश्ता सारे दुनियावी रिश्तों से ज्यादा मज़बूत है.

(१६) जब कभी उनमें मतभेद बाके हो.

(१७) क्योंकि अल्लाह तआला से डरना और परहेज़गारी इज़्तिहार करना ईमान वालों की आपसी महब्वत और दोस्ती का कारण है और जो अल्लाह तआला से डरता है, अल्लाह तआला की रहमत उसपर होती है.

सूरए हुजुरात - दूसरा रूकू

(१) यह आयत कई घटनाओं में उतरी. पहली घटना यह है कि साबित बिन कैस शम्मास ऊंचा सुनते थे. जब वह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मजलिस शरीफ़ में हाज़िर होते तो सहाबा उन्हें आगे बिठाते और उनके लिये जगह ख़ाली कर देते ताकि वह हुज़ूर के करीब हाज़िर रहकर क़लामे मुबारक सुन सकें. एक रोज़ उन्हें हाज़िरी में देर हो गई और मजलिस शरीफ़ ख़ूब भर गई, उस वक़्त साबित आए और क़ायदा यह था कि जो व्यक्ति ऐसे वक़्त आता और मजलिस में जगह न पाता तो जहाँ होता खड़ा रहता. साबित आए तो वह रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के करीब बैठने के लिये लोगों को हटाते हुए यह कहते चलें कि जगह दो, जगह दो. यहाँ तक कि वह हुज़ूर के करीब पहुंच गए और उनके और हुज़ूर के बीच में सिर्फ़ एक व्यक्ति रह गया. उन्होंने उससे भी कहा कि जगह दो. उसने कहा कि तुम्हें जगह मिल गई, बैठ जाओ. साबित ग़ुस्से में आकर उससे पीट बैठ गए और जब

अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की फरमाँबरदारी करोगे^(११) तो तुम्हारे किसी कर्म का तुम्हें नुकसान न देगा^(१२) बेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरवान है^(१३) ईमान वाले तो वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर शक न किया^(१४) और अपनी जान और माल से अल्लाह की राह में जिहाद किया, वही सच्चे हैं^(१५) तुम फरमाओ क्या तुम अल्लाह को अपना दीन बताते हो और अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, ^(१६) और अल्लाह सब कुछ जानता है^(१७) ऐ मेहबूब वो तुम पर एहसान जताते हैं कि मुसलमान हा गए, तुम फरमाओ अपने इस्लाम का एहसान मुझे पर न रखो, बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की अगर तुम सच्चे हो^(१८) बेशक अल्लाह जानता है आसमानों और ज़मीन के सब गैब, और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है^(१९)

يَدْخُلُ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِفْكُمْ مِنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ ذَكِيمٌ ۝ إِنَّا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجْهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ۝ قُلْ أَعْلَمُونَ اللَّهُ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ يَكْتُمُونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْكُمُوا ۚ قُلْ لَا تَمُوتُوا عَلَىٰ إِسْلَامِكُمْ ۚ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَذَا كُمُ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

मन्ज़िल

दिन खूब रोशन हुआ तो सावित्र ने उसका बदन दबा कर कहा कि कौन? उसने कहा मैं फलाना व्यक्ति हूँ, सावित्र ने उसकी माँ का नाम लेकर कहा कि फलानी का लड़का, इसपर उस आदमी ने शर्म से सर झुका लिया, उस ज़माने में ऐसा कलाम शर्म दिलाने के लिये बोला जाता था, इसपर यह आयत उतरी, दूसरा व्यक्ति जो हाक ने बयान किया कि यह आयत बनी तमीम के हक में उतरी जो हज़रत अम्मार व ख़बाब व बिलाल व सुहैब व सलमान व सालिम वगैरह ग़रीब सहाबा की ग़रीबी देखकर उनका मज़ाक उड़ाते थे, उनके हक में यह आयत उतरी और फरमाया गया कि मर्द मर्दों से न हंसें यानी मालदार ग़रीबों की हंसी न बताएं, न ऊंचे ख़ानदान वाले नीचे ख़ानदान वालों की, और न तन्दुरुस्त अपाहिज की, न आँख वाले उसकी जिसकी आँख में दोष हो.

(२) सच्चाई और इस्लाम में.

(३) यह आयत उम्मुल मूमिनीन हज़रत सफ़िया बिनते हैय रदियल्लाहो अन्हा के हक में उतरी, उन्हें मालूम हुआ था कि उम्मुल मूमिनीन हज़रत हफ़सा ने उन्हें यहूदी की बेटी कहा, इसपर उन्हें दुख हुआ और रोई और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से शिकायत की तो हज़ूर ने फरमाया कि तुम नबीज़ादी और नबी की बीवी हो तुम पर वह क्या फ़ख़र रखती हैं और हज़रत हफ़सा से फरमाया, मैं हफ़सा खुदा से डरों. (तिरमिज़ी)

(४) एक दूसरे पर ऐब न लगाओ, अगर एक मूमिन ने दूसरे मूमिन पर ऐब लगाया तो गोया अपने ही आपको ऐब लगाया.

(५) जो उन्हें नागवार मालूम हो, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फरमाया कि अगर किसी आदमी ने किसी बुराई से तौबह कर ली हो, उसको तौबह के बाद उस बुराई से शर्म दिलाना भी इस मनाही में दाख़िल है, कुछ उलमा ने फरमाया कि किसी मुसलमान को कुत्ता या गधा या सुअर कहना भी इसी में दाख़िल है, कुछ उलमा ने फरमाया कि इससे वो अलकाब मुराद हैं जिन से मुसलमान की बुराई निकलती हो और उसके नागवार हो, लेकिन तारीफ़ के अलकाब जो सच्चे हों मना नहीं जैसे कि हज़रत अबू बक्र का लक़ब अतीक और हज़रत उमर का फ़ारूक और हज़रत उस्मान का जुन-नूरन और हज़रत अली का अबू तुराब और हज़रत ख़ालिद का सैफ़ुल्लाह, रदियल्लाहो अन्हुम, और जो अलकाब पहचान की तरह हो गए और व्यक्ति विशेष को नागवार नहीं वो अलकाब भी मना नहीं जैसे कि अअमश, अअरज.

(६) ता ऐ मुसलमानों किसी मुसलमान की हंसी बनाकर या उसको ऐब लगाकर या उसका नाम बिगाड़ कर अपने आपको फ़ासिक न कहलाओ.

(७) क्योंकि हर गुमान सही नहीं होता.

(८) नेक मूमिन के साथ बुरा गुमान मना है इसी तरह उसका कोई कलाम सुनकर ग़लत अर्थ निकालना जबकि उसके दूसरे सही माली मौजूद हों और मुसलमान का हाल उनके अनुसार हो, यह भी बुरे गुमान में दाख़िल है, सुफ़ियान सौरी रदियल्लाहो अन्हा ने फरमाया गुमान दो तरह का होता है एक वह कि दिलों में आए और ज़बान से भी कह दिया जाए, यह अगर मुसलमान पर बुराई

के साथ है तो गुनाह है. दूसरा यह कि दिल में आप और ज़बान से न कहा जाए, यह अगरचे गुनाह नहीं मगर इससे भी दिल खाली करना ज़रूरी है. गुमान की कई किस्में हैं एक वाजिब है, वह अल्लाह के साथ अच्छा गुमान रखना. एक मननूअ और हराम, वह अल्लाह तआला के साथ बुरा गुमान करना और मूभिन के साथ बुरा गुमान करना. एक जायज़, वह खुले फ़ासिक के साथ ऐसा गुमान करना जैसे काम वह करता हो.

(९) यानी मुसलमानों के दोष तलाश न करो और उनके छुपे हाल की जुस्तजू में न रहो, जिसे अल्लाह तआला ने अपनी सत्तारी से छुपाया. हदीस शरीफ़ में है गुमान से बचो, गुमान बड़ी झूठी बात है, और मुसलमानों के दोष मत तलाश करो. उनके साथ ज़हल, हसद, बुज़ और बेमुरब्बती न करो. ऐ अल्लाह तआला के बन्दो, भाई बने रहो जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया. मुसलमान मुसलमान का भाई है, उसपर जुल्म न करो, उसको रूखा न करो, उसकी तहकीर न करो. तक्रबा यहाँ है, तक्रबा यहाँ है, तक्रबा यहाँ है. (और “यहाँ” के शब्द से अपने सीने की तरफ़ इशारा फ़रमाया) आदमी के लिये यह बुराई बहुत है कि अपने मुसलमान भाई को गिरी हुई वज़रा से देखे. हर मुसलमान मुसलमान पर हराम है. उसका ख़ून भी, उसकी आबरू भी, उसका माल भी. अल्लाह तआला तुम्हारी जिम्में और सूरतों और कर्मों पर नज़र नहीं फ़रमाता, लेकिन तुम्हारे दिलों पर नज़र फ़रमाता है. (बुख़ारी व मुस्निम) हदीस में है जो बन्दा दुनिया में दूसरे की पर्दा पोशी करता है, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी पर्दा पोशी फ़रमाएगा.

(१०) हदीस शरीफ़ में है कि ग़ीबत यह है कि मुसलमान भाई के पीठ पीछे ऐसी बात कही जाए जो उसे नागवार गुज़रे अगर यह बात सच्ची है तो ग़ीबत है, बरता बोहतान.

(११) तो मुसलमान भाई की ग़ीबत भी ग़बारा नहीं होती चाहिये. क्योंकि उसको पीठ पीछे बुरा कहना उसके मरने के बाद उसका गोश्त ख़ाने के बराबर है. क्योंकि जिस तरह किसी का गोश्त काटने से उसको तकलीफ़ होती है उसी तरह उसको बदमाई से दिली तकलीफ़ होती है. और वास्तव में आबरू गोश्त से ज्यादा प्यारी है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जब जिहाद के लिये ख़ाना होते और सफ़र फ़रमाने तो हर दो मालदारों के साथ एक ग़रीब मुसलमान को कर देते कि वह ग़रीब उनकी ख़िदमत करे, वो उसे ख़िलाएँ पिलाएँ. हर एक का काम चले. इसी तरह हज़रत सलमान रदियल्लाहो अन्हो दो आदमियों के साथ किय गए. एक रोज़ वह सो गए और ख़ाना तैयार न कर सके तो उन दोनों ने उन्हें ख़ाना तलब करने के लिये रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में भेजा. हुज़ूर की रसोई के ख़ादिम हज़रत उसामह रदियल्लाहो अन्हो थे. उनके पास कुछ रहा न था. उन्होंने फ़रमाया कि मेरे पास कुछ नहीं है. हज़रत सलमान ने आकर यहाँ कह दिया तो उन दोनों साथियों ने कहा कि उसामह न कंजूसी की. जब वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, फ़रमाया मैं तुम्हारे मुँह में गोश्त की रंगत देखता हूँ. उन्होंने अर्ज किया हम ने गोश्त ख़ाया ही नहीं. फ़रमाया तुमने ग़ीबत की और जो मुसलमान की ग़ीबत करे उसने मुसलमान का गोश्त ख़ाया. ग़ीबत के बारे में सब एकमत हैं कि यह बड़े गुनाहों में से है. ग़ीबत करने वाले पर तौबह लाज़िम है. एक हदीस में यह है कि ग़ीबत का कफ़ारा यह है कि जिसकी ग़ीबत की है उसके लिये मशफ़िरत की दुआ करे. कहा गया है खुले फ़ासिक के दोषों का बयान करो कि लोग उससे बचें. हसन रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि तीन धक्कियाँ की बुराई या उनके दोष बयान करना ग़ीबत नहीं, एक साहिब हवा (बदमज़हब), दूसरा खुला फ़ासिक, तीसरा ज़ालिम बादशाह.

(१२) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम.

(१३) हज़रत हवा.

(१४) नसब के इस इन्तिहाई दर्जे पर जाकर तुम सब के सब मिल जाते हो तो नसब में घमण्ड करने की कोई वजह नहीं. सब बराबर हो. एक जेद अहला की औलाद.

(१५) और एक दूसरे का नसब जाने और कांई अपने बाप दादा के सिवा दूसरे की तरफ़ अपनी तिखत न करे, न यह कि नसब पर घमण्ड करे और दूसरों की तहकीर करे. इसके बाद उस चीज़ का बयान फ़रमाया जाता है जो इन्सान के लिये शराफ़ और फ़ज़ीलत का कारण और जिससे उसको अल्लाह की वारगाह में इज़्ज़त हासिल होती है.

(१६) इससे मालूम हुआ कि इज़्ज़त और फ़ज़ीलत का आधार परहेज़गारी पर है न कि नसब पर. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मदीने के बाज़ार में एक हथ्थी गुलाम देखा जो यह कह रहा था कि जो मुझे ख़रीदे उससे मेरी यह शर्त है कि मुझे रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पीछे पाँचों नमाज़ों अदा करने से मना न करे. उस गुलाम को एक शरस ने ख़रीद लिया फिर वह गुलाम बीमार हो गया तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसकी अयादत के लिये तशरीफ़ लाए फिर उसकी वज़हत हो गई और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके दफ़न में तशरीफ़ लाए. इसपर लोगों ने कुछ कहा. तब यह आयत उतरी.

(१७) यह आयत बनी असद बिन ख़ुज़ैमह की एक जमाअत के हक़ में नाज़िल हुई जो दुष्काल के ज़माने में रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने इस्लाम का इज़हार किया और हक्कीकत में वो ईमान न रखते थे. उन लोगों ने मदीने के रस्ते में गन्दगियों की और वहाँ के भाव मेंहमे कर दिये. सुबह शाम रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में आकर अपने इस्लाम लाने का एहसान जताते और कहते हमें कुछ दीजिये. उनके बारे में यह आयत उतरी.

(१८) दिल की सच्चाई से.

(१९) ज़ाहिर में.

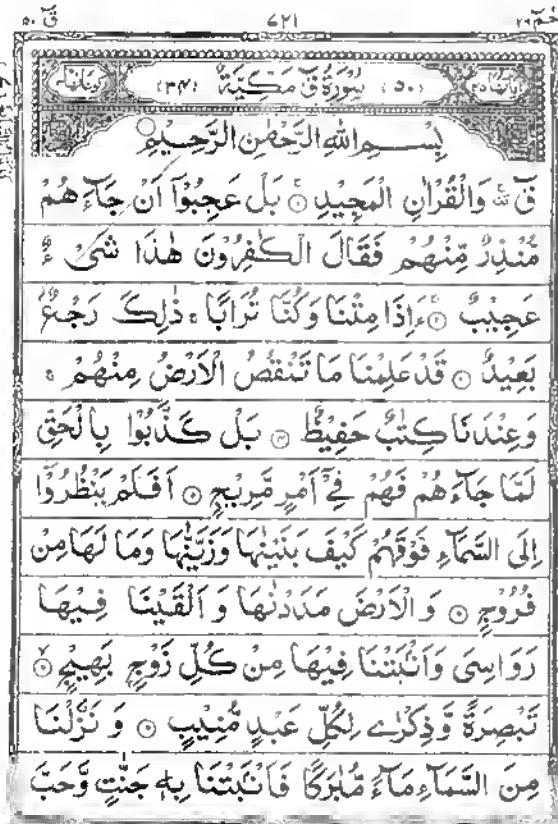
(२०) केवल ज़बानी इकरार, जिसके साथ दिल की तस्दीक न हो, भरोसे के कायिल नहीं. इससे आदमी मूभिन नहीं होता. इताअत

५० - सूरए काफ़

सूरए काफ़ मक्के में उतरी, इसमें ४५ आयतें, तीन रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ^(१) काफ़ ^(२) इज़्ज़त वाले कुरआन की क़सम ^(३) वल्कि उन्हें इसका अचंभा हुआ कि उनके पास उन्हीं में का एक डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया ^(४) तो काफ़िर बोले यह तो अजीब बात है ^(५) क्या जब हम मर जाएं और मिट्टी हो जाएं फिर जियेंगे यह पलटना दूर है ^(६) हम जानते हैं जो कुछ ज़मीन उनमें से घटाती है ^(७) और हमारे पास एक याद रखने वाली किताब है ^(८) वल्कि उन्होंने हक़ (सत्य) को झुटलाया ^(९) जब वह उनके पास आया तो वह एक मुज़तरिव बेसवात बात में हैं ^(१०) तो क्या उन्होंने अपने ऊपर आसमान को न देखा ^(११) हमने उसे कैसा बनाया ^(१२) और संवारा ^(१३) और उसमें कहीं रखना नहीं ^(१४) और ज़मीन का हम ने फैलाया ^(१५) और उसमें लंगर डाले ^(१६) और उसमें हर रौनक वाला जोड़ा उगाया ^(१७) सूझ और समझ ^(१८) हर रूजू वाले वन्दे के लिये ^(१९) और हमने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा ^(२०) तो उससे बाग़



- और फ़रमाँबरदारी इस्लाम के लुगवी मानी हैं, और शरई मानी में इस्लाम और ईमान एक हैं, कोई फ़र्क़ नहीं।
- (२१) ज़ाहिर में और बातिन में, दिल की गहराई और सच्चाई से निफ़ाक़ अर्थात् दोहरी प्रवृत्ति को छोड़ कर।
- (२२) तुम्हारी नेकियों का सचाव कम न करेगा।
- (२३) अपने दीन और ईमान में।
- (२४) ईमान के दावे में। जब ये दोनों आयतें उतरीं तो अरब लोग सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने क़समें खाई कि हम सच्चे मूनिन हैं। इसपर अगली आयत उतरी और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़िदाव फ़रमाया गया।
- (२५) उससे कुछ छुपा हुआ नहीं।
- (२६) मूनिन का ईमान भी और मुनाफ़िक् का दोगलापन भी। तुम्हारे बताने और ख़बर देने की हाज़त नहीं।
- (२७) अपने दावे में।
- (२८) उससे तुम्हारा कोई हाल छुपा नहीं, न ज़ाहिर न बातिन।

५० - सूरए काफ़ - पहला रूकू

- (१) सूरए काफ़ मक्के में उतरी। इसमें तीन रूकू, पैंतालीस आयतें, तीन सौ सत्तावन कलिमे और एक हज़ार चार सौ चौरानवे अक्षर हैं।
- (२) हम जानते हैं कि मक्के के काफ़िर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान नहीं लाए।
- (३) जिसकी अदालत और अमानत और सच्चाई और रास्तबाज़ी को वो ख़ूद जानते हैं और यह भी उनके दिमाग़ में बैठा हुआ है कि ऐसी पिशपनाओं वाला व्यक्ति सच्ची नसीहत करने वाला होता है। इसके बावजूद उनका सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और हुज़ूर के अन्दाज़ से तअज्जुब और इन्कार करना आश्चर्यजनक है।
- (४) उनकी इस बात के रद और ज़बाब में अल्लाह तआला फ़रमाता है।
- (५) यानी उनके जिस्म के जो हिस्से गोश्त ख़ून हड्डियाँ बग़ैर ज़मीन या जाती है उनमें से कोई चीज़ हमसे छुपी नहीं, तो हम उनको वैसा ही ज़िन्दा करने पर कादिर हैं जैसे कि वो पहले थे।
- (६) जिसमें उनके नामों, गिनी और जो कुछ उनमें से ज़मीन ने ख़ाया सब साधित ओर लिखा हुआ और मेहफूज़ है।
- (७) बग़ैर सांचे समझे, और हक़ से या मुराद नबुव्वत है जिसके साथ खुले चमत्कार हैं या कुरआने मजीद।
- (८) तो कभी नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को शायर, कभी जादूगर, कभी तांत्रिक और इसी तरह कुरआन शरीफ़ को शंकर,

उगाए और अनाज कि काटा जाता है^(१०) और खजूर के लम्बे दरख्त जिन का पक्का गाभा^(१०) बन्दों की रोजी के लिये और हमने उस^(११) से मुर्दा शहर जिलाया^(१२) यूही कब्रों से तुम्हारा निकलना है^(१३) उनसे पहले झुटलाया^(१३) नूह की क्रीम और रस वालों^(१३) और समूद^(१२) और आद और फिरऔन और लूत के हमकौमों^(१३) और वन वालों और तुब्बा की क्रीम ने^(१४) उनमें हर एक ने रसूलों को झुटलाया तो मेरे अज़ाब का वादा साबित हो गया^(१५) तो क्या हम पहली बार बनाकर थक गए^(१६) बल्कि वो नए बनने सं^(१७) शुबह में हैं^(१५)

दूसरा रूकू

और बेशक हमने आदमी को पैदा किया और हम जानते हैं जो बसवसा उसका नफ़्त डालता है^(१) और हम दिल की रग से भी उससे ज़्यादा नज़दीक हैं^(२) जब उससे लेते हैं वो लेने वाले^(३) एक दाएं बैठ और एक बाएं^(४) कोई बात वह ज़वान से नहीं निकालता कि उसके पास एक मुहाफ़िज़ तैयार न बैठ हो^(५) और आई मौत की सख्ती^(६) हक़ के साथ^(७) यह है जिससे तू भागता था^(८) और सूर फूका गया^(९) वह है अज़ाब के वादे का दिन^(१०) और हर जान यूं हाज़िर हुई कि उसके साथ एक हांकने

الْحَصِيدُ ۝ وَالنَّخْلُ يَسْقِي لَهَا طَلْعُ ثَمَرِهِ ۝
رَزَقًا لِّلْعِبَادِ ۝ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلَدًا مَّيِّتًا ۚ كَذَٰلِكَ
الْخُرُوجُ ۝ كَذَبْتَ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ
وَنُوحٌ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۚ وَأَصْحَابُ
الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبُعُ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدُ ۝
أَفَعَيَيْنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ
جَدِيدٍ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعَلَهُ مَا تَوَسَّوسُ
بِهِ نَفْسُهُ ۚ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝
إِذْ يَتَلَفَّى السَّالِقِينَ رَحِيمًا ۖ وَعَيْنَ السَّمَاءِ
قَابِئُ ۝ مَا يُلْقُوه مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ
عَتِيدٌ ۝ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ
مَا كُنْتُمْ مِنْهُ تَحِيدُونَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ذَٰلِكَ
يَوْمُ الْوَعْدِ ۝ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ

مِّنْ

जादू और तंत्रविद्या कहते हैं, किसी एक बात पर करार नहीं।

(९) देखने वाली आँख और मानने वाली नज़र से कि उसकी आफ़रीनश (उत्पत्ति या पैदाइश) में हमारी कुदरत के आसार नुमायाँ हैं।

(१०) बग़ैर मुतून के बलन्द किया।

(११) सितारे किये रीशत ग़दो से।

(१२) कांई दोष और कुसूर नहीं।

(१३) पानी तक।

(१४) पहाड़ों के कि कायम रहे।

(१५) कि उसमें बीनाई और नसीहत हासिल हो।

(१६) जो अल्लाह तआला की बनाई हुई चीज़ों में नज़र करके उसके तरफ़ रुजू हो।

(१७) यानी बारिश जिसमें हर चीज़ को ज़िन्दगी और बहुत ख़ैरो बरक़त है।

(१८) तरह तरह का गेहूँ जो चना बग़ैरह।

(१९) बारिश के पानी।

(२०) जिसकी वनस्पति ग़ुश्च चुकी थी फिर उसको हरा भरा कर दिया।

(२१) तो अल्लाह तआला की कुदरत के आसार देख कर मरने के बाद फिर ज़िन्दा होने का क्या इन्कार करने हो।

(२२) रसूलों को।

(२३) रस एक कुँवा है जहाँ ये लोग अपने मवेशी के साथ टहरे हुए थे और बुतों को पूजते थे। यह कुँआ ज़मीन में धँस गया और उसके क़रीब की ज़मीन भी। ये लोग और उनके अमवाल उसके साथ धँस गए।

(२४) उन सब के तर्ज़िके सूरज फुरकान व हिज़र और दुश्मान में गुज़र चुके।

(२५) इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली और क़ुरैश को चेतावनी है। नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाया गया है कि आप क़ुरैश के कुफ़्र से तंग दिल न हों, हम हमेशा रसूलों की मदद फ़रमाने और उनके दुश्मनों पर अज़ाब करने रहे हैं। इसके बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करने वालों का जवाब इरश़ाद होता है।

(२६) जो दोबारा पैदा करना हमें दुश्वार हो। इसमें दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करने वालों की जिहालत का इज़हार है कि इस इन्कार के बावज़ूद कि सृष्टि अल्लाह तआला ने पैदा की, उसके दोबारा पैदा करने का असम्भव समझते हैं।

(२७) यानी मौत के बाद पैदा किये जाने से।

वाला^(१०) और एक गवाह^(११) (२३) बेशक तू इस से गफ़लत में था^(१२) तो हमने तुझ पर से पर्दा उठाया^(१३) तो आज तेरी निगाह तेज़ है^(१४) (२४) और उसका हमनशीं फ़रिश्ता^(१५) बोला यह है^(१६) जो मेरे पास हाज़िर है (२५) हुक्म होगा तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर बड़े नाशुके हटधर्म को (२६) जो भलाई से बहुत-रोकने वाला हव से बढ़ने वाला शक करनेवाला^(१७) (२७) जिसने अल्लाह के साथ कोई और मअवूद ठहराया तुम दोनो उसे सख्त अज़ाब में डालो (२८) उसके साथी शैतान ने कहा^(१८) हमारे रव में ने इसे सरकश न किया^(१९) हों यह आप ही दूर की गुमराही में था^(२०) (२९) फ़रमाएगा मेरे पास न झगड़ो^(२१) मैं तुम्हें पहले ही अज़ाब का डर सुना चुका था^(२२) (३०) मेरे यहाँ बात बदलती नहीं और न मैं बन्दों पर जुल्म करूँ (३१)

तीसरा रूकू

जिस दिन हम जहन्नम से फ़रमाएंगे क्या तू भर गई^(१) वह अर्ज़ करेगी कुछ और ज़्यादा है^(२) (३०) और पास लाई जाएगी जन्नत परहेज़गारों के कि उनसे दूर न होगी^(३) (३१) यह है वह जिस का तुम वादा दिये जाते हो^(४) हर रूजू लाने वाले निगहदाश्त वाले के लिये^(५) (३२) जो रहमान से वेदेखे डरता है और जो रूजू करता हुआ दिल लाया^(६) (३३) उनसे फ़रमाया जाएगा जन्नत में जाओ सलामती के साथ^(७)

وَمَشْهَدٌ ۝ لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۝ وَقَالَ قَرِينُهُ هَذَا مَا لَدَائِكَ عَيْنِي ۝ أَتَقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۝ مَّمَّاءٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ ۝ مُّرِيْبٍ ۝ الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيهِ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۝ قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْعَيْتُهُ وَ لَكِن كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَائِي وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُمْ بِالْوَعِيدِ ۝ مَا يُبَدِّلُ الْقَوْلُ لَدَائِي وَمَا أَنَا بِظَالِمٍ لِّلْعَبِيدِ ۝ يَوْمَ نَقُولُ لِّجَهَنَّمَ خَلِ امْتَلَأِي وَنَقُولُ هَلْ مِنْ مَّزِيدٍ ۝ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۝ هَذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ۝ مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ الْعَلِيمَ ۝ وَجَاءَ بِقُلُوبٍ مَُّرِيْبٍ ۝ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ذَٰلِكَ يَوْمُ

مَنْزِل

सूरए क़ाफ़ - दूसरा रूकू

- (१) हमसे उसके भंद और अन्दर की बातें छुपी नहीं.
- (२) यह भरपूर इल्म का बयान है कि हम बन्दे के हाल को खुद उससे ज़्यादा जानने वाले हैं. वरीद वह रग है जिसमें खून जारी होकर बदन के हर हर अंग में पहुंचता है. यह रग गर्दन में है. मानी ये हैं कि इन्सान के अंग एक दूसरे से पर्दे में हैं मगर अल्लाह तआला से कोई चीज़ पर्दे में नहीं.
- (३) फ़रिश्ते, और वो इन्सान का हर काम और उसकी हर बात लिखने पर मुकर्रर हैं.
- (४) दाई तरफ़ वाला नेकियाँ लिखता है और बाई तरफ़ वाला गुनाह. इसमें इज़हार है कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों के लिखने से भी ग़नी है, वह छुपी से छुपी बात का जानने वाला है. दिल के अन्दर की बात तक उससे छुपी नहीं है. फ़रिश्तों का लिखना तो अल्लाह तआला की हिकमत का एक हिस्सा है कि क़यामत के दिन हर व्यक्ति का कर्म लेखा या नामए अमाल उसके हाथ में दे दिया जाएगा.
- (५) चाहे वह कहीं हो सिवाए पेशाव पाख़ाना या हमबिस्तरी करते समय के. उस वक़्त ये फ़रिश्ते आदमी के पास से हट जाते हैं. इन दोनों हालतों में आदमी को बात करना जायज़ नहीं ताकि उसके लिखने के लिये फ़रिश्तों को उस हालत में उससे क़रीब होने की तकलीफ़ न हो. ये फ़रिश्ते आदमी की हर बात लिखते हैं बीमारी का कराहना तक. और यह भी कहा गया है कि सिर्फ़ वही चीज़ें लिखते हैं जिन में अज़ व सवाब या गिरफ़्त और अज़ाब हो. इमाम बग़वी ने एक हदीस रिवायत की है कि जब आदमी एक नेकी करता है तो दाई तरफ़ वाला फ़रिश्ता दस लिखता है, और जब बदी करता है तो दाई तरफ़ वाला फ़रिश्ता बाई तरफ़ वाला फ़रिश्ते से कहता है कि अभी रुक़ा रह कि शायद यह व्यक्ति इस्तिग़फ़ार करल. मौत के बाद उठाए जाने का इन्कार करने वालों का रद फ़रमाने और अपनी कुदस्त व इल्म से उन पर हुज़्ज़तें क़ायम करने के बाद उन्हें बताया जाता है कि वो जिस चीज़ का इन्कार करते हैं वह जल्द ही उनकी मौत और क़यामत के वक़्त पेश आने वाली है और भूतकाल से उनकी आमद की ताबीर फ़रमाकर उसके कुर्ब का इज़हार किया जाता है चुनान्हे इशारा होता है.
- (६) जो अक्ल और हवास को बिगाड़ देती है.
- (७) हक़ से मुराद या मौत की हक़ीक़त है या आख़िरत का वुजूद जिसको इन्सान खुद मुआयना करता है या आख़िरी अंजाम, सआदत और शक़ावत. सकरात यानी जान निकलते वक़्त मरने वाले से कहा जाता है कि मौत --

यह हमेशगी का दिन है^(८) (३४) उनके लिये है इसमें जो चाहें और हमारे पास इससे भी ज्यादा है^(९) (३५) और उनसे पहले^(१०) हमने कितनी संगतें हलाक फरमा दीं कि गिरफ्त में उनसे सख्त थीं^(११) तो शहरों में काबिश कीं^(१२) है कहीं भागने की जगह^(१३) (३६) वेशक इसमें नसीहत है उसके लिये जो दिल रखता हो^(१४) या कान लगाए^(१५) और मुतवज्जह हो^(१६) और वेशक हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है छः दिन में बनाया, और तबकान हमारे पास न आई^(१७) (३८) तो उनकी बातों पर सब करो और अपने रब की तारीफ़ करते हुए उसकी पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले और डूबने से पहले^(१८) (३९) और कुछ रात गए उसकी तस्वीह करो^(१९) और नमाज़ों के बाद^(२०) (४०) और कान लगाकर सुनो जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा^(२१) एक पास जगह से^(२२) (४१) जिस दिन चिंघाड़ सुनेंगे^(२३) हक के साथ, यह दिन है क़ब्रों से बाहर आने का^(२४) (४२) वेशक हम जिलाएँ और हम मारें और हमारी तरफ़ फिरना है^(२५) (४३) जिस दिन ज़मीन उन से फटेगी तो जल्दी करते हुए निकलेंगे^(२६) यह हथ्र है हम को आसान^(४४)

الْخُلُودِ ۝ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝
وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَّخِيصٍ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرَ لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِنْ غُيُوبٍ ۝ فَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۝ وَاسْمِعْ يَوْمَ يُنَادِ النَّادُ مَنْ مَكَانٍ قَرِيبٍ ۝ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ۝ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۝

مَثَلٌ

- (८) दोबारा उठाने के लिये.
- (९) जिसका अल्लाह तआला ने काफ़िरों से वादा फ़रमाया था.
- (१०) फ़रिश्ता जो उसे मेहशर की तरफ़ हॉके.
- (११) जो उसके कर्मों की गवाही दे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हॉकने वाला फ़रिश्ता होगा और गवाह खुद उसका अपना नफ़स. जुदाक का कौल है कि हॉकने वाला फ़रिश्ता है और गवाह अपने बदन के हिस्से हाथ पाँव वगैर. हज़रत उस्माने गनी रदियल्लाहो अन्हु ने मिम्बर से फ़रमाया कि हॉकने वाला भी फ़रिश्ता है और गवाह भी फ़रिश्ता (जुमल). फिर काफ़िर से कहा जाएगा.
- (१२) दुनिया में.
- (१३) जो तेरे दिल और कानों और आँखों पर पड़ा था.
- (१४) कि तू उन चीज़ों को देख रहा है जिनका दुनिया में इन्कार करता था.
- (१५) जो उसके कर्म लिखने वाला और उसपर गवाही देने वाला है. (मदारिक और ख़ाज़िन)
- (१६) उसके कर्मों का लेखा. (मदारिक)
- (१७) दीन में.
- (१८) जो दुनिया में उसपर मुसल्लत था.
- (१९) यह शैतान की तरफ़ से काफ़िर का जवाब है जो जहन्नम में डाले जाते वक़्त कहेगा कि ऐ हमारे रब मुझे शैतान ने बहकाया. उसपर शैतान कहेगा कि मैं ने इसे गुमराह न किया.
- (२०) मैं ने उसे गुमराही की तरफ़ बुलाया उसने कुबूल कर लिया. इसपर अल्लाह तआला का इरशाद होगा अल्लाह तआला..
- (२१) कि हिसाब और जज़ा के मैदान में झगड़ा करने का कोई फ़ायदा नहीं.
- (२२) अपनी किताबों में, अपने रसूलों की ज़बानों पर, मैं ने तुम्हारे लिये कोई हुज़त बाक़ी न छोड़ी.

सूरए काफ़ - तीसरा रुकू

- (१) अल्लाह तआला ने जहन्नम से वादा फ़रमाया है कि उसे जिन्नों और इन्सानों से भरेगा. इस वादे की तहकीक़ के लिये जहन्नम से यह सवाल किया जाएगा.
- (२) इसके मानी ये भी हो सकते हैं कि अब मुझ में गुनाइश बाक़ी नहीं, मैं भरचुकी. और ये भी हो सकते हैं कि अभी और गुनाइश है.

- (३) अर्श के दाईं तरफ, जहाँ से मेहशर वाले उसे देखेंगे और उनसे कहा जाएगा.
- (४) रसूलों के माध्यम से दुनिया में.
- (५) रूजू लाने वाले से वह मुराद है जो गुनाहों को छोड़कर फरमाँवरदारी इस्तिथार करे. सईद बिन मुसैयब ने फरमाया अब्बाव यानी रूजू लाने वाला वह है जो गुनाह करे फिर तीवह करे, फिर गुनाह करे फिर तीवह करे. और तिगहदाशत करने वाला वह है जो अल्लाह के हुक्म का लिहाज़ रखे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फरमाया जो अपने आपको गुनाहों से मंहफूज़ रखे और उनसे इस्तिफाफार करे और यह भी कहा गया है कि जो अल्लाह तआला की अमानतों और उसके हुक्म की हिफ़ाज़त करे और यह भी बयान किया गया है कि जो ताअतों का पाबन्द हो, खुदा और रसूल के हुक्म बजा लाए और अपने नफ़्सा की तिगहबानी करे यानी एक क्षण भी याद-इलाही से माफ़िल न हो. पासे-अल्लास करे यानी अपनी एक एक सांस का हिसाब रखे.
- (६) यानी इस्त्रासा वाला, फरमाँवरदार और अक़ीदे का सच्चा दिल.
- (७) बेख़ौफ़ी ख़तर, अमन व इत्मीनान के साथ, न तुम्हें अज़ाब हो न तुम्हारी नेअमतें ख़त्म या कम हों.
- (८) अब न फ़ना है न मौत.
- (९) जो वो तलब करें और वह अल्लाह का दीदार और उसकी तजल्ली है जिससे हर शुक्रवार का बुज़ुर्गी के साथ नवाज़ जायेंगे.
- (१०) यानी आपके ज़माने के काफ़ियों से पहले.
- (११) यानी या उम्मतों उनसे ताक़तवर और मज़बूत थीं.
- (१२) और जुम्नजू में जगह जगह फिरा किये.
- (१३) मौत और अल्लाह के हुक्म से मगर कोई ऐसी जगह न पाई.
- (१४) जानने वाला दिला. शिबली रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि कुत्रआनी नसीहतों से फ़ैज़े हासिल करने के लिये हाज़िर दिल चाहिये जिसमें पलक झपकने तक की गफ़लत न आए.
- (१५) कुत्रआन और नसीहत पर.
- (१६) मुफ़स्सिरों ने कहा कि यह आयत यहूदियों के रद में नाज़िल हुई जो यह कहते थे कि अल्लाह तआला ने आसमान और ज़मीन और उनके दरमियान की कायनात को छ रोज़ में बनाया जिनमें से पहला एकशमसा है और पिछला शुक्रवार, फिर वह (मआज़ल्लाह) थक गया और सनीचर को उसने अर्श पर लेट कर आराम किया. इस आयत में इसका रद है कि अल्लाह तआला इससे पाक है कि वह थक. वह क़ादिर है कि एक आन में सारी सृष्टि बना दे. हर चीज़ को अपनी हिक़मत के हिसाब से हस्ती अता फ़रमाता है. शाने इलाही में यहूदियों का यह कलिमा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को बहुत बुरा लगा और मुससे से आपके चेहरे पर लाली धागई ता अल्लाह तआला ने आपकी तस्कीन फ़रमाई और ख़िताब फ़रमाया.
- (१७) यानी फ़ज्र व ज़ाहर व अस्व के वक़्त.
- (१८) यानी मग़रिब व इशा व नहज़्जुद के वक़्त.
- (१९) हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने तमाम नमाज़ों के बाद तस्बीह करने का हुक्म फ़रमाया. (बुख़ारी) हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जो व्यक्ति हर नमाज़ के बाद ३३ बार सुहानल्लाह, ३३ बार अल्हम्दुलिल्लाह और तैतीस बार अल्लाहो अक़बर और एक बार ला इलाहा इल्लल्लाहो वहदू ला शरीका लहू लहुल मुल्को व लहुल हम्दो व हुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर पढ़े उसके गुनाह बर्झो जाएं चाहे समन्दर के झागों के बराबर हों यानी बहुत ही ज़्यादा हों. (मुस्लिम शरीफ़)
- (२०) यानी हज़रत इसाफ़ील अलैहिस्सलाम.
- (२१) यानी बैतुल मक़दिस के गुम्बद से जो आसमान की तरफ़ ज़मीन का सबसे करीब मक़ाम है. हज़रत इसाफ़ील की निदा यह होगी ऐ ग़लौ हुई हड्डियाँ, बिखरे हुए जोड़ो, कण कण हुए गांशों, बिखरे हुए बालों ! अल्लाह तआला तुम्हें फ़ैसले के लिये जमा होंगे का हुक्म देता है.
- (२२) सब लोग, मुराद इससे सूर का दूसरी बार फूँका जाना है.
- (२३) आख़िरत में.
- (२४) मूर्दे मेहशर की तरफ़.

हम खूब जान रहे हैं जो वो कह रहे हैं^(१५) और कुछ तुम उनपर जबर करने वाले नहीं^(१६) तो कुरआन से नसीहत करो उसे जो मेरी धमकी से डरे^(१७)

५९ - सूरए ज़ारियात

सूरए ज़ारियात मक्के में उतरी, इसमें ६० आयतें, तीन रूकू हैं

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) क्रसम उनकी जो बिखेर कर उड़ाने वालियाँ^(२) फिर बोझ उठाने वालियाँ^(३) फिर नर्म चलने वालियाँ^(४) फिर हुक्म से वाँटने वालियाँ^(५) वेशक जिस बात का तुम्हें वादा दिया जाता है^(६) ज़रूर सच है^(७) और वेशक इन्साफ़ ज़रूर होना^(८) आरायश वाले आसमान की क्रसम^(९) तुम मुख्तलिफ़ बात में हो^(१०) इस कुरआन से वही औंधा किया जाता है जिसकी क्रिस्मत ही में औंधाया जाना हो^(११) मारे जाएं दिल से तराशने वाले^(१२) जो नशे में भूले हुए हैं^(१३) पूछते हैं^(१४) इन्साफ़ का दिन कब होगा^(१५) उस दिन होगा जिस दिन वो आग पर तपाए जाएंगे^(१६) और फ़रमाया जाएगा चखो अपना तपना यह है वह जिसकी तुम्हें जल्दी थी^(१७) वेशक परहेज़गार बाग़ों और चश्मों में हैं^(१८) अपने रब की अताएं लेते हुए, वेशक वो उससे पहले^(१९) नेकी करने वाले



(२५) यानी कुश के काफ़िर.

(२६) कि उन्हें ज़बरदस्ती इस्लाम में दाखिल करो. आपका काम दावत देना और समझा देना है.

५९ - सूरए ज़ारियात - पहला रूकू

- (१) सूरए ज़ारियात मक्की है इसमें तीन रूकू, साठ आयतें, तीसरी साठ कलिमें और एक हजार दो सौ उन्तालीस अक्षर हैं.
- (२) यानी वो हवाएं जो झाक बग़ैरह को उड़ाती हैं.
- (३) यानी वो घटाएं और बदलियाँ जो बारिश का पानी उठाती हैं.
- (४) वो किशियाँ जो पानी में आसानी से चलती हैं.
- (५) पानी फ़रिशतों की वो जमाअतें जो अल्लाह के हुक्म से बारिश और रिज़क बग़ैरह की तकसीम करती हैं और जिनको अल्लाह तआला ने संसार का बन्दोबस्त करने पर लगाया है और इस दुनिया के निज़ाम को चलाने और उसमें रद्दबदल का इज़्तिहार अता फ़रमाया है. कुछ मुफ़सिरो का क़ौल है कि ये तमाम विशेषताएं हवाओं की हैं कि वो धूल भी उड़ाती हैं, बादलों को भी उठाए फिरती हैं, फिर उन्हें लेकर बसहूलत चलती हैं, फिर अल्लाह तआला के शहरों में उसके हुक्म से बारिश तकसीम करती हैं. क्रसम का उद्देश्य उस चीज़ की महानता बयान करना है जिसके साथ क्रसम याद फ़रमाई गई क्योंकि ये चीज़ें अल्लाह की बेपनाह कुदरत पर दलील लाने वाली हैं. समझ वालों को मौक़ा दिया जाता है कि वो इनमें तज़र करके मरने के बाद उठाए जाते और कर्मों का बदला दिये जाने को प्रमाणित करें कि जो कुदरत वाला अब ऐसी अतोख़ी बातों पर कुदरत रखता है वह अपनी पैदा की हुई चीज़ों को नष्ट करने के बाद दोबारा अस्तित्व में लाने पर वेशक क़ादिर है.
- (६) यानी दोबारा ज़िन्दगी दिये जाने और कर्मों का बदला दिये जाने.
- (७) और हिमाव के बाद नेकी वदी का बदला ज़रूर मिलता.
- (८) जिसका सितारा से सजाया है कि मक्के वाले नदीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में और कुरआन पाक के बारे में.
- (९) कभी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का जादूगर कहते हो, कभी शायर, कभी तांत्रिक, कभी पागल (मआज़ल्लाह) इसी तरह कुरआन पाक को भी कभी जादू बताते हो कभी शायरी, कभी तंत्र विद्या कभी अगलों की कहानियाँ.

थे (१६) वो रात में कम सोया करते थे (१७) और पिछली रात इस्तिफ़ार (गुनाहों से माफ़ी मांगा) करते (१८) और उनके मालों में हक़ था मंगता और बेनसीब का (१९) और ज़मीन में निशानियाँ हैं यकीन वालों को (२०) और खुद तुम में (२१) तो क्या तुम्हें सूझता नहीं (२२) और आसमान में तुम्हारा रिज़क़ है (२३) और जो तुम्हें वादा दिया जाता है (२४) तो आसमान और ज़मीन के रब की क़सम वेशक़ यह क़ुरआन हक़ है वैसी ही ज़वान में जो तुम बोलते हो (२५)

दूसरा रूक़

ऐ मेहबूब क्या तुम्हारे पास इब्राहीम के इज़ज़त वाले मेहमानों की ख़बर आई (१) (२४) जब वो उसके पास आकर बोले सलाम, कहा सलाम, नाशानासा लोग हैं (२) (२५) फिर अपने घर गया तो एक मोटा ताज़ा वछड़ा ले आया (३) (२६) फिर उसे उनके पास रखा (४) कहा क्या तुम खाते नहीं (२७) तो अपने जी में उनसे डरने लगा (५) वो बोले डरिये नहीं (६) और उसे एक इल्म वाले लड़के की खुशख़बरी दी (२८) इस पर उसकी बीबी (७) चिल्लाती आई फिर अपना माथा ठोका और बोली क्या बुढ़िया बांझ (८) (२९) उन्होंने कहा तुम्हारे रब ने यूँही फ़रमा दिया है, और वही हकीम दाना (जानने वाला) है (३०)

الذّٰر ۙ

ۛۛۛ

خۛۛ

كَانُوا قَبْلَ ذٰلِكَ مُّحْسِنِينَ ۝ كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ الْاٰیِلِ
مَا يَهۡجَعُونَ ۝ وَاِلٰۤاٰ سَخٰرَهُمۡ يَسۡتَغۡفِرُوۡنَ ۝ وَفِيۡ
اَمْۡۤوَالِهِمۡ حَقٌّ لِّلۡسَّٰبِلِ وَالۡمَحۡرُومِ ۝ وَفِيۡ الْاَرۡضِ اٰیٰتٌ
لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝ وَفِيۡ اَنْفُسِكُمۡ اَفۡلَا تُبۡصِرُوۡنَ ۝ وَفِيۡ
السَّمَآءِ رِزۡقُكُمۡ وَمَا تَوَعَّدُوۡنَ ۝ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ
وَالۡاَرۡضِ اِنَّهُۥ لَحَقُّ مَثَلٍ ۭ مَّا اَنْتُمْ تَنۡظُرُوۡنَ ۝ هَلْ
اَتٰكَ حَدِيۡثُ صَبِيۡءٍ اِبۡرٰهِيۡمَ الْمَكۡرَمِیۡنَ ۝ اِذۡ دَخَلُوۡا
عَلَيْهِ فَقَالُوۡا سَلٰمًا قَالَ سَلٰمٌ قَوۡمُ مُنۡكَرُوۡنَ ۝
فَوَاعَدُوۡا اِلٰی اَهۡلِهِۦ فَمَجٰءَ بِصَبۡیَۡءٍ سَمِیۡمٍ ۝ فَقَرَّبَۡهُ اِلَیۡهِمْ
قَالَ اِلَّا تَاۡكُلُوۡنَ ۝ فَاَوۡجَسَ مِنْهُمۡ خِیۡفَةٌ ۭ قَالُوۡا لَا
تَخۡفُ ۭ وَبَشِّرُوۡهُ بِغُلٰمٍ عَلِیۡمٍ ۝ فَاَقْبَلَتِ امۡرَاۡتُهُ فِیۡ
صَدۡرِهَا فَصَبَّتْ وَجۡهَهَا وَقَالَتۡ عَجُوۡزٌ عَقِیۡمٌ ۭ قَالُوۡا
كَذٰلِكَ ۭ قَالَ رَبُّكۡ اِنَّهُۥ هُوَ الْحَكِیۡمُ الْعَلِیۡمُ ۝

مَنۡكُ

(१०) और जो हमेशा का मेहरूम है, इस सआदत से मेहरूम रहता है और बहकाने वालों के बहकाने में आ जाता है। सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने के काफ़िर जब किसी को देखते कि ईमान लाने का इरादा करता है तो उससे नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तिसवत कहते कि उनके पास क्यों जाता है, वह तां शायर हैं, जादूगर हैं, तांत्रिक हैं, झूठे हैं (मआज़ल्लाह) और इसी तरह कुरआन शरीफ़ को शायरी, जादू और झूठ बताने (मआज़ल्लाह)।

(११) यानी जिहालत के नश में आख़िरत को भूलें हुए हैं।

(१२) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर।

(१३) उनके ज़वाब में फ़रमाया जाता है।

(१४) और उन्हें अज़ाब दिया जाएगा।

(१५) और दुनिया में मज़ाक़ के तौर पर कहा करते थे कि वह अज़ाब जल्दी लाओ जिसका वादा दंत हो।

(१६) यानी अपने रब की नेअमत में हैं बाग़ों के अन्दर जिनमें लतीफ़ चश्म जारी हैं।

(१७) दुनिया में।

(१८) और ज़्यादा हिस्सा रात का नमाज़ में गुज़ारते।

(१९) यानी रात तहज़ुद और जागने में गुज़ारते हैं और बहुत थोड़ी देर सोते और रात का पिछला हिस्सा इस्तिफ़ार में गुज़ारते हैं और इतने सो जाने को भी गुनाह समझते हैं।

(२०) मंगता तो वह जो अपनी हाज़त के लिये लोगों से सवाल करे और मेहरूम वह कि हाज़तमन्द हो और शर्म से सवाल भी न करे।

(२१) जो अल्लाह तआला के एक होने और उसकी क़ुदरत और हिक़मत को प्रमाणित करती हैं।

(२२) तुम्हारी पैदाइश में और तुम्हारे परिवर्तन में और तुम्हारे ज़ाहिर और बानिनि में अल्लाह तआला की क़ुदरत के ऐसे वंशुमार अजूबे और चमत्कार हैं जिससे बन्दे को उसके रब होने की शान मालूम होती है।

(२३) कि उसी तरफ़ से बारिश करके ज़मीन को पैदावार से मालामाल किया जाता है।

(२४) आख़िरत के सवाब और अज़ाब का, वह सब आसमान में लिखा हुआ है।

सूरए ज़ारियात - दूसरा रूक़

(१) जो दस या बारह फ़रिश्ते थे।

- (२) यह बात आपने अपने दिल में फरमाई.
- (३) नफ़ीस भुना हुआ.
- (४) कि ख़ाण और ये मंज़वान के आदाब में से हैं कि मेहमान के सामने ख़ाना पेश करें. जब उन फ़रिश्तों ने ख़ाया तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ---
- (५) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि आपके दिल में बात आई कि ये फ़रिश्ते हैं और अज़ाब के लिये भेजे गए हैं.
- (६) हम अल्लाह तआला के भेजे हुए हैं.
- (७) यानी हज़रत सारा.
- (८) जिसके कभी बच्चा नहीं हुआ नब्बे या तिरानवे साल की उम्र हो चुकी. मतलब यह था कि ऐसी उम्र और ऐसी हालत में बच्चा होना अत्यन्त आश्चर्य की बात है.

पारा छब्बीस समाप्त



Narayan.com

सत्ताईसवां पारा- काला फ़माख़तबुकुम (सूरए ज़ारियात जारी)

इब्राहीम ने फ़रमाया, तो ऐ फ़रिश्तां तुम किस काम से आए^(१) (३१) वोले हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं^(२) (३२) कि उनपर गारे के बनाए हुए पत्थर छोड़ें^(३) (३३) जो तुम्हारे रब के पास हद से बढ़ने वालों के लिये निशान किये रखे हैं^(४) (३४) तो हमने उस शहर में जो ईमान वाले थे निकाल लिये^(५) (३५) तो हमने वहाँ एक ही घर मुसलमान पाया^(६) (३६) और हमने उसमें^(७) निशानी बाँकी रखी उनके लिये जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं^(८) (३७) और मूसा में^(९) जब हमने उसे रौशन सनद लेकर फ़िरऔन के पास भेजा^(१०) (३८) तो अपने लश्कर समेत फिर गया^(११) और बोला जादूगर है या दीवाना^(१२) (३९) तो हमने उसे और उसके लश्कर को पकड़ कर दरिया में डाल दिया इस हाल में कि वह अपने आपको मलामत कर रहा था^(१३) (४०) और आद में^(१४) जब हमने उनपर खुशक आंधी भेजी^(१५) (४१) जिस चीज़ पर गुज़रती उसे गली हुई चीज़ की तरह कर छोड़ती^(१६) (४२) और समूद में^(१७) जब उनसे फ़रमाया गया एक वक़्त तक बरत लो^(१८) (४३) तो उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की^(१९) तो उनकी आंखों के सामने उन्हें कड़क ने आ लिया^(२०) (४४)

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّا

أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ۖ لَنُرْسِلَ عَلَيْهم حِجَارَةً

مِنْ طِينٍ ۖ مَّسْمُومَةً ۖ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ۖ

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ فَمَا

وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۖ وَتَرَكْنَا

فِيهَا آيَةً لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۖ

وَفِي مِثْلِهِ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ

مُتَّبِعِينَ ۖ فَتَوَلَّىٰ بُرْكَانِهِ وَقَالَ سِحْرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ۖ

فَأَخَذْنَاهُ وَجُودَهُ فَنَبَذْنَاهُ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ۖ

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ۖ مَا

تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَنْتَ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلْنَاهُ كَالرَّمِيمِ ۖ

وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ۖ فَتَعَاوَا

عَنْ أَمْرِ رَبِّهم ۖ فَأَخَذْنَاهُمُ الصُّعْقَةَ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۖ

مَرْكَبًا

(१) यानी सिवाय इस खुशख़बरी के तुम्हारा और क्या काम है।

(१०) यानं कौमे लूत की तरफ़।

(११) उन पत्थरों पर निशान थे जिनसे मालूम होता था कि ये दुनिया के पत्थरों में से नहीं हैं। कुछ मुफ़सिरो ने फ़रमाया कि हर एक पत्थर पर उसका नाम लिखा था जो उससे हलाक किया जाने वाला था।

(१२) यानी एक ही घर के लोग और वो हज़रत लूत अलैहिस्सलाम और आपकी दोनों बेटियाँ हैं।

(१३) यानी कौमे लूत के उस शहर में काफ़िरो को हलाक करने के बाद।

(१४) ताकि वो इब्रत हासिल करें और उनके जैसे कामों से बाज़ रहें और वह निशानी उनके उजड़े हुए शहर थे या वो पत्थर जिनसे वो हलाक किये गए या वह काला बदबूदार पानी जो उस धरती से निकला था।

(१५) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वाक़ए में भी निशानी रखी।

(१६) रौशन सनद से मुराद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार हैं जो आपने फ़िरऔन और उसके लोगों पर पेश फ़रमाए।

(१७) यानी फ़िरऔन ने अपनी जमाअत के साथ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने से इन्कार किया।

(१८) कि क्यों वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान न लाया और क्यों उन्हें बुरा भला कहा।

(१९) यानी कौमे आद के हलाक करने में इब्रत वाली निशानियाँ हैं।

(२०) जिसमें कुछ भी ज़ैरां बरक़त न थी। यह हलाक करने वाली हवा थी।

(२१) चाहे वो आदमी हो या जानवर या और अमवाल, जिस चीज़ को छू गई उसको हलाक करके ऐसा कर दिया मानों वह मुद्दतों की नष्ट की हुई है।

(२२) यानी कौमे समूद की हलाकत में भी निशानियाँ हैं।

(२३) यानी मौत के वक़्त तक दुनिया में जी लो तो यही ज़माना तुम्हारी मोहलत का है।

(२४) और हज़रत सालह अलैहिस्सलाम का झुटलाया और कंटनी की कूचें कांटीं।

(२५) और भयानक आवाज़ के अज़ाब से हलाक कर दिये गए।

तो वो न खड़े हो सके^(२३) और न वो बदला ले सकते थे^(४५) और उनसे पहले नूह की क्रौम को हलाक करमाया, वेशक वो फ्रासिक लोग थे^(४६)

तीसरा रूकू

और आसमान को हमने हाथों से बनाया^(१) और वेशक हम वुसअत देने वाले हैं^(२) और ज़मीन को हमने फ़र्श किया तो हम क्या ही अच्छे विछाने वाले^(४८) और हमने हर चीज़ के दो जोड़े बनाए^(३) कि तुम ध्यान करो^(४९) तो अल्लाह की तरफ़ भागो^(५) वेशक मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिये साफ़ डर सुनाने वाला हूँ^(५०) और अल्लाह के साथ और मअबूद न ठहराओ, वेशक मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिये खुला डर सुनाने वाला हूँ^(५१) यूँही^(५) जब उनसे अगलों के पास काई रसूल तशरीफ़ लाया तो यही बोले कि जादूगर है या दीवाना^(५२) क्या आपस में एक दूसरे को यह बात कह मरे हैं, बल्कि वो सरकश लोग हैं^(५३) तो ऐ मेहबूब, तुम उनसे मुंह फेर लो तो तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं^(५४) और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ायदा देता है^(५५) और मैंने जिन्न और आदमी इतने ही के लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें^(५६) मैं उनसे कुछ रिज़क नहीं मांगता^(५७) और न यह चाहता हूँ कि वो मुझे खाना दें^(५८) वेशक अल्लाह ही बड़ा रिज़क देने वाला कुव्वत वाला कुदरत वाला है^(५९)

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِبَائِهِ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ۝
وَقَوْمُ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝
وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَنُوسِعُونَ ۝ وَالْأَرْضَ
فَوَشَّعْنَاهَا فَنِعْمَ الْمُهْدُونَ ۝ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ
خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ فَفِرُّوْا إِلَى
اللّهِ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ
اللّهِ إِلَهًا آخَرَ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ كَذَلِكَ
مَا آتَى الدِّينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ
أَوْ مَجْنُونٌ ۝ أَنْوَاصُ بِهِ ۝ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَآغُونَ ۝
فَقَوْلَ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمَلُومٌ ۝ وَذَكَرَ فَإِنَّ الدِّكَرَ
تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا
لِيَعْبُدُونِ ۝ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ
يُطْعَمُوا ۝ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ۝

(२६) अज़ाब उतरने समय न भाग सके.

सूरए ज़ारियात - तीसरा रूकू

- (१) अपने दस्ते कुदरत से.
- (२) उसको इतनी कि ज़मीन अपनी फ़ज़ा के साथ उसके अन्दर इस तरह आजाए जैसे कि एक चौड़े मैदान में गेंद पड़ी हो या ये मानी हैं कि हम अपनी सृष्टि पर रिज़क फैलाने वाले हैं.
- (३) आसमान और ज़मीन और सूरज और चाँद और रात और दिन और खुश्की और तरी और गमी व सर्दी और ज़िन्न व इन्त और रौशनी और अंधेरा और ईमान व कुफ़र और सआदत व शकावत और हक़ व बातिल और नर व मादा की तरह.
- (४) और समझो कि उन तमाम जोड़ों को पैदा करने वाली एक ही हस्ती है, न उसका नज़ीर है, न शरीक, न ज़िद न थरावर. वही इबादत के लायक है.
- (५) उसके मासिवा को छाड़ कर उसकी इबादत इम्तिज़ार करो.
- (६) जैसे कि उन काफ़िरों ने आपको झुटलाया और आपको जादूगर और दीवाना कहा, ऐम ही.
- (७) यानी पहले काफ़िरों ने अपने पिछलों को यह बर्मायत तो नहीं की कि तुम नबियों को झुटलाना और उनकी शान में इस तरह की बातें बनाना लेकिन चूंकि सरकशी और क्सावत की इल्लत दोनों में है इसलिये गुमराही में एक दूसरे के मुवाफ़िक़ रह.
- (८) क्योंकि आप रिस्ालत की तबलीग़ फ़रमा चुके और दावत व हिदायत में काफ़ी मेहनत कर चुके और आपने अपनी काशिश में कोई कसर उठा न रखी. जब यह आयत उतरी तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम गमगीन हुए और आपके सहाबा को रंज हुआ कि जब रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मुंह फेरने का हुक्म हो गया तो अब वही क्यों आपसी और जब नबी ने उम्मत को तबलीग़ पूरा तौर पर फ़रमादी और उम्मत सरकशी से बाज़ न आई और रसूल को उनसे मुंह फेरने का हुक्म मिल गया तो वक्त आगया कि उनपर अज़ाब उतर. इसपर वह आयत उतरी जो इस आयत के बाद है और उममें तस्कीन दी गई कि वही का सिलसिला टूटा नहीं है. सयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नसीहत सआदतमन्दों के लिये जारी रहेगी चुनाने इरशाद हुआ.
- (९) और मेरी मअरिफ़त यानी पहचान हो.

तो वेशक उन जालिमों के लिये^(१३) अज़ाब की एक बारी है^(१४) जैसे उनके साथ वालों के लिये एक बारी थी^(१५) तो मुझसे जल्दी न करो^(१६) तो काफ़िरों की ख़राबी है उनके उस दिन से जिसका वादा दिये जाते हैं^(१७) ६०

५२ - सूरए तूर

सूरए तूर मक्के में उतरी, इसमें ४९ आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) तूर की क़सम^(२) और उस नविशते (लिखे) की^(३) जो खुले दफ़्तर में लिखा है^(४) और वेते मअमूर^(५) और बलन्द छत^(६) और सुलगाए हुए समन्दर की^(७) वेशक तेरे रब का अज़ाब ज़रूर होना है^(८) उसे कोई टालने वाला नहीं^(९) जिस दिन आसमान हिलना सा हिलना हिलेंगे^(१०) और पहाड़ चलना सा चलना चलेंगे^(११) तो उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी है^(१२) वो जो मशाले में^(१३) खेल रहे हैं^(१४) जिस दिन जहन्नम की तरफ़ धक्का देकर धकेले जाएंगे^(१५) यह है वह आग़ जिसे तुम झुटलाते थे^(१६) तो क्या यह जादू है या तुम्हें सूझता नहीं^(१७) १५

الطور

८३२

قَالَ قَتَا خَطْبَكُم

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِّثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ

فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝ قَوْلِ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ

يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝

سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ - ٤٩ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالتُّورِ ۝ وَكِتَابٍ مُّسْطُورٍ ۝ فِي رَقٍّ مَنْشُورٍ ۝

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۝ وَالسَّعْفِ الْمَرْفُوعِ ۝ وَالْبَحْرِ

السَّجُورِ ۝ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝ مَا لَكَ

مِنْ دَافِعٍ ۝ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۝ وَتَسِيرُ

الْجِبَالُ سَيْرًا ۝ قَوْلِ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

الَّذِينَ هُمْ فِي حَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۝ يَوْمَ يُدْعَوْنَ

إِلَى نَارٍ جَهَنَّمَ دَعَا ۝ هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ

بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝ أَفَحَرَّ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تَبْصُرُونَ ۝

سُورَةُ

(१०) कि मेरे बन्दों को रोज़ी दें या सब की नहीं तो अपनी ही रोज़ी झुट पैदा करें क्योंकि रिज़क देने वाला मैं हूँ और सब की रोज़ी का मैं ही पूरा करने वाला हूँ।

(११) मेरी सृष्टि के लिये।

(१२) सबको वही देता, वही पालता है।

(१३) जिन्होंने रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाकर अपनी जानों पर जुल्म किया।

(१४) हिस्सा है नरीब है।

(१५) यानी पिछली उम्मतों के काफ़िरों के लिये जो रबियों को झुटलाने में इनके साथी थे। उनका अज़ाब और हलाकत में हिस्सा था।

(१६) अज़ाब नाज़िल करने की।

(१७) और वह क़यामत का दिन है।

५२ - सूरए तूर - पहला रूकू

(१) सूरए तूर मक्की है इस में दो रूकू, उन्चास आयतें, तीन सौ बारह कलिमे और एक हज़ार पाँच सौ अक्षर हैं।

(२) यानी उस पहाड़ की क़सम जिस पर अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से क़लाम फ़रमाया।

(३) इस नविशते से मुराद या तौरात है या क़ुरआन या लौहे मैहफूज़ या कर्मलेख़ा लिखने वाले फ़रिश्तों के दफ़्तर।

(४) बैतुल मअमूर सातवें आसमान में अर्श के सामने काबा शरीफ़ के चिक्कल ऊपर है। यह आसमान वालों का क़िबला है हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इसमें तवाफ़ और नमाज़ के लिये दाख़िल होते हैं फिर भी उन्हें लौटने का मौक़ा नहीं मिलता। हर रोज़ नए सत्तर हज़ार हाज़िर होते हैं। मेअराज की हदीस में साबित हुआ कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सातवें आसमान में बैतुल मअमूर को देखा।

(५) इससे मुराद आसमान है जो ज़मीन के लिये छत की तरह है या अर्श जो जन्नत की छत है। (करतवी)

(६) रिवायत है कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन तमाम समन्दरों को आग़ करदेगा जिससे जहन्नम की आग़ में और भी ज़ियादती हो जाएगी। (ख़ाज़िन)

(७) जिसका काफ़िरों को वादा दिया गया है।

(८) चक्की की तरह घूमंगे और इस तरह हस्त में आएंगे कि उनके हिस्से अलग अलग बिग़र जाएंगे।

(९) जैसे कि धूल हवा में उड़ती है। यह दिन क़यामत का दिन होगा।

इस में जाओ अब चाहें सब करो या न करो, सब तुम पर एक सा है^(१०) तुम्हें उसीका बदला जो तुम करते थे^(११) (१६) बेशक परहेज़गार बागों और चैन में हैं^(१७) अपने रव की देन पर शाद शाद खुश खुश^(१८) और उन्हें उनके रव ने आग के अज़ाब से बचा लिया^(१९) (१८) खाओ और पियो खुशगवारी से सिला (इनआम) अपने कर्मों का^(२०) (१९) तख्तों पर तकिया लगाए जो क़तार लगाकर विछे हैं और हमने उन्हें व्याह दिया बड़ी आँखों वाली हूरों से^(२०) और जो ईमान लाए और उनकी औलाद ने ईमान के साथ उनकी पैरवी की, हमने उनकी औलाद उनसे मिला दी^(२१) और उनके कर्म में उन्हें कुछ कमी न दी^(२२) सब आदमी अपने किये में गिरफ़्तार हैं^(२३) (२१) और हमने उनकी मदद फ़रमाई मेवे और गोश्त से जो चाहें^(२४) (२२) एक दूसरे से लेते हैं वह जाम जिसमें न बेहूदगी और न गुनहगारी^(२५) (२३) और उनके खिदमतगार (सेवक) लड़के उनके गिर्द फिरंगे^(२६) मानो वो मोती हैं छुपा कर रखे गए^(२७) (२४) और उनमें एक ने दूसरे की तरफ़ मुंह किया पूछते हुए^(२८) (२५) वाले बेशक हम इस से पहले अपने घरों में सहमे हुए थे^(२९) (२६) तो अल्लाह ने हमपर एहसान किया^(३०) और

رَضُوا مَا قَاصِدُوا أَوْ لَا تَضِيرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ۖ
إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّ الشَّقِيقِينَ
فِي جَنَّتٍ وَنَعِيمٍ ۖ فَكُفِّهِمْ بِمَا أَتَتْهُمْ رُبُّهُمْ ۖ وَوَقِّمْ
رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۖ كُلُّوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ مُتَّكِئِينَ عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۖ وَ
زَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ
ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ
مِّنْ عَمَلِهِمْ ۖ وَفَنَّا كُلَّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينَ ۖ
وَأَمَدَدْنَاهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْفِيهِمْ ۖ وَلَكِنْ مِّمَّا يَشْتُمُونَ ۖ يَتَنَازَعُونَ
فِيهَا كَاسًا لَا تَغُوفِيهَا وَلَا تَأْتِيهِمْ ۖ وَيَطُوفُ
عَلَيْهِمْ غُلَامٌ لَّهُمْ كَانَتْهُمْ لَوْلَا يُكْنُونَ ۖ وَأَقْبَلَ
بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّا كُنَّا
قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ۖ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا

مَنْزِل

(१०) जो रसूलों को झुटलाने थे।

(११) कुफ़र और चातिल के।

(१२) और जहन्नम के ग़्राज़िन काफ़िरों के हाथ गर्दनो और पाँव पेशानियों से मिलाकर बांधेंगे और उन्हें मुंह के बल जहन्नम में धकेल देंगे और उनसे कहा जाएगा ---

(१३) दुनिया में।

(१४) यह उनसे इसलिये कहा जाएगा कि वो दुनिया में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ जादू की निशान्यत करते थे और कहते थे कि हमारी वज़र बन्दी कर दी है।

(१५) न कहीं भाग सकते हों, न अज़ाब से बच सकते हों, और यह अज़ाब।

(१६) दुनिया में कुफ़र और झुटलाना।

(१७) उसकी अता व नेअमते ख़ैसे करामत पर।

(१८) और उनसे कहा जाएगा।

(१९) जो तुमने दुनिया में किये कि ईमान लाए और खुदा और रसूल की इताअत इस्तिथार की।

(२०) जन्नत में अगरचें बाप दादा के दर्जे बलन्द हों तो भी उनकी खुशी के लिये उनकी औलाद उनके साथ मिला दी जाएगी और अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ज़ों कर्म से उस औलाद को भी वह दर्जा अता फ़रमाएगा।

(२१) उन्हें उनके कर्मों का पूरा सवाब दिया और औलाद के दर्जे अपने फ़ज़्ज़ों कर्म से बलन्द किये।

(२२) यानी हर काफ़िर अपने कुफ़री अमल में दोज़ाब के अन्दर गिरफ़्तार है। (ग़्राज़िन)

(२३) यानी जन्नत वालों को हमने अपने एहसान से दमवदम ज्यादा नेअमते अता फ़रमाईं।

(२४) जैसा कि दुनिया की शराब में क्रिस्म क्रिस्म की घुराइयाँ थीं क्योंकि जन्नत की शराब पीने से न अक़ल भ्रष्ट होती है न अस्सलतें ग़राब होती हैं न पीने वाला बेहूदा बक़्ता है न गुनहगार होता है।

(२५) खिदमत के लिये और उनके हुसनों सफ़र और पाकीज़गी का यह हाल है।

(२६) जिन्हें कोई हाथ ही न लगा। हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि किसी जन्नती के पास खिदमत में दोइन वाले गुलाम हज़ार से कम न होंगे और हर गुलाम अलग अलग खिदमत पर मुकरर होगा।

(२७) यानी जन्नती जन्नत में एक दूसरे से पूछेंगे कि दुनिया में किस हाल में थे और क्या अमल करते थे और यह पूछना अल्लाह की नेअमत के ऐतिराफ़ के लिये होगा।

(२८) अल्लाह तआला के श्राफ़ से और इस डर से कि नफ़स और शैतान ईमान की ख़राबी का कारण न हों और बेक़ियों के रोके

हमें लू के अज़ाब से बचा लिया^(३०) (२७) बेशक हमने अपनी पहली ज़िन्दगी में^(३१) उसकी इबादत की थी, बेशक वही एहसान फ़रमाने वाला मेहरबान है^(३२)

दूसरा रूकू

तो ऐ मेहबूब तुम नसीहत फ़रमाओ^(३) कि तुम अपने रब के फ़ज़ल से न काहिन हो न मजनून^(२९) या कहते हैं^(३) ये शायर हैं हमें इन पर ज़माने के हादसों का इन्तिज़ार है^(३०) तुम फ़रमाओ इन्तिज़ार किये जाओ^(३) मैं भी तुम्हारे इन्तिज़ार में हूँ^(३१) क्या उनकी अक्लें उन्हें यही बताती हैं^(३) या वो सरकश लोग हैं^(३२) या कहते हैं उन्होंने^(३) यह कुरआन बना लिया बल्कि वो ईमान नहीं रखते^(३३) तो उस जैसी एक बात तो ले आएँ^(३४) अगर सच्चे हैं^(३४) क्या वो किसी अस्ल से न बनाए गए^(३५) या वही बनाने वाले हैं^(३६) या आसमान और ज़मीन उन्हीं ने पैदा किये^(३७) बल्कि उन्हें यक़ीन नहीं^(३८) या उनके पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं^(३९) या वो करोड़ों (बड़े हाकिम) हैं^(४०) या उनके पास कोई ज़ीना है^(४१) जिसमें चढ़कर सुन लेते हैं^(४२) तो उनका सुनने वाला कोई रौशन सन्द लाए^(४३) क्या उसको बेटियाँ और तुम को बेटे^(४४) या तुम उनसे^(४५) कुछ उजरत (मजदूरी) मांगते हो तो वो चिट्ठी के बोझ में दबे हैं^(४६)

النّٰزِعَاتِ

८३४

قَالَ كَيْفَ تَكْفُرُونَ

وَوَقَدْ عَلِمْنَا عَذَابَ السَّمُومِ ۖ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ۚ
إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ۖ فَذَكِّرْ كَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ
رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ۖ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ
تَتَّبِعُ بِهِ رَبِّبَ الْبَنُونَ ۖ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي
مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْزِلِينَ ۖ أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَاءُهُمْ
بِهَذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ۖ أَمْ يَقُولُونَ نَقُولُهُ
بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ فَلْيَاثُوا بِحَدِيثِ مَثَلِهِ إِن كَانُوا
صَادِقِينَ ۖ أَمْ خَلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ۖ
أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ۖ بَلْ لَا يُوقِنُونَ ۖ
أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصِيطِرُونَ ۖ
أَمْ لَهُمْ سُلْمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۖ فَلْيَأْتِ مُسْتَعْمِلُهُمْ
بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۖ أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ۖ
أَمْ نَشَاءُهُمْ آبَاءَهُمْ مِنْ مَّغْرَمٍ مُثْقَلُونَ ۖ أَمْ

مَدِينَةٍ

जाने और गुनाहों पर पकड़ किये जाने का भी डर था।

(२९) रहमत और मग़फ़िरत फ़रमा कर।

(३०) यानी जहन्नम की आग के अज़ाब से, जो जिस्मों में दाख़िल होने के कारण समूह यानी लू के नाम से मौसूम की गई।

(३१) यानी दुनिया में इज़्रलास के साथ सिर्फ --

सूरए तूर - दूसरा रूकू

(१) मक्क़े के काफ़िरों को और उनके तांत्रिक और दीवाना कहने की वजह से आप नसीहत से बाज़ न रहें इसलिये।

(२) ये मक्क़े के काफ़िर आपकी शान में।

(३) कि जैसे इनसे पहले शायर मर गए और उनके ज़य्द टूट गए यही हाल इनका होना है (मुआज़ल्लाह) और वो काफ़िर यह भी कहते थे कि इनके वालिद की मौत ज़वानी में हुई है इन की भी ऐसी ही होगी। अल्लाह तआला अपने हबीब से फ़रमाता है।

(४) मेरी मौत का।

(५) कि तुम पर अल्लाह का अज़ाब आए। चुनाने यह हुआ और वो काफ़िर वद में क़त्ल और कैद के अज़ाब में गिरफ़्तार किये गए।

(६) जो वो हुज़ूर की शान में कहते हैं शायर, जादूगर, तांत्रिक, ऐसा कहना बिल्कुल अक्ल के खिलाफ़ है और भजे की बात यह कि पागल भी कहने जाएं और शायर और तांत्रिक भी और फिर अपने अक्ल वाले होने का दावा।

(७) कि दुश्मनी में अंधे हो रहे हैं और कुफ़्र और सरकशी में हद से गुज़र गए।

(८) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने दिल से।

(९) और दुश्मनी और नफ़र की बुराई से ऐसा बुरा भला कहते हैं। अल्लाह तआला उनपर हुज़्जत कायम फ़रमाता है कि अगर उनके ख़याल में कुरआन जैसा क़लाम कोई इन्सान बना सकता है।

(१०) जो हुस्नो ख़ूबी और फ़साहत व बलागत में इसकी तरह हो।

(११) यानी क्या वो माँ बाप से पैदा नहीं हुए, पत्थर बेजान, बेअक्ल हैं जिनपर हुज़्जत कायम न की जाएगी। ऐसा नहीं। मानी ये हैं कि क्या वो तुलक से पैदा नहीं हुए और क्या उन्हें खुदा ने नहीं बनाया।

या उनके पास गैव हैं जिससे वो हुक्म लगाते हैं^(२२) (४१) किसी दाँव के इरादे में हैं^(२३) तो काफ़िरों ही पर दाँव पड़ना है^(२४) (४२) या अल्लाह के सिवा उनका कोई और खुदा है^(२५) अल्लाह को पाकी उनके शिर्क से^(२६) और अगर आसमान से कोई टुकड़ा गिरते देखें तो कहेंगे तह व तह वादल है^(२७) (४४) तो तुम उन्हें छोड़ दो यहाँ तक कि वो अपने उस दिन से मिलें जिसमें बेहोश होंगे^(२८) (४५) जिस दिन उनका दाँव कुछ काम न देगा और न उनकी मदद हो^(२९) (४६) और बेशक ज़ालिमों के लिये इससे पहले एक अज़ाब है^(३०) मगर उनमें अक्सर को ख़बर नहीं^(३१) (४७) और ऐ मेहबूब, तुम अपने रव के हुक्म पर ठहरे रहो^(३२) कि बेशक तुम हमारी निगहदाशत में हो^(३३) और अपने रव की तारीफ़ करते हुए उसकी पाकी बोलो जब तुम खड़े हो^(३४) (४८) और कुछ रात में उसकी पाकी बोलो और तारों के पीठ देते^(३५) (४९)

५३ - सूरत नज्म

सूरत नज्म मक्के में उतरी, इसमें ६२ आयतें, तीन स्कू हैं।

पहला स्कू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) इस प्यारे चमकते तारे मुहम्मद की क़सम जब यह मअेरज से उतरे^(२) (१) तुम्हारे साहब न वहके न बेराह चले^(३) (२)

قَالَ مَا خَطْبُكُمْ
عَنْدَ الْغَيْبِ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۝ أَمْ يُرِيدُونَ
كَيْدًا ۚ قَالُوا بَلَىٰ ۖ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ۝ أَمْ لَهُمْ
إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ وَإِنْ
يَبْرُوا كَسَفًا مِنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ
مَّرْكُومٌ ۝ فَذَرَهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ
يُصْعَقُونَ ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝ وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا
دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَاضْبُرْ
لِحُكْمِ رَبِّكَ ۖ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ
تَقُومُ ۖ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ۝

سُورَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ (۵۳)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ۝ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ۝

- (२२) कि उन्होंने अपने आपको खुद ही बना लिया हो, यह भी मुहाल है. तो लामुहाला उन्हें इकरार करना पड़ेगा कि उन्हें अल्लाह तआला ने ही पैदा किया और क्या कारण है कि वो उसकी इबादत नहीं करते और बुतों को पूजते हैं.
- (२३) यह भी नहीं और अल्लाह तआला के सिवा आसमान और ज़मीन पैदा करने की कोई क़ुदरत नहीं रखता तो क्यों उसकी इबादत नहीं करते.
- (२४) अल्लाह तआला की ताहीद और उसकी क़ुदरत और ख़ालिक होने का. अगर इसका यकीन होता तो ज़रूर उसके नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाते.
- (२५) तबुल्लत और रिज़क बग़ैरह के कि उन्हें इज़्तिपार हो जहाँ चाहे ख़र्च करें और जिसे चाहे दें.
- (२६) खुद-मुख्तार, जो चाहे करं कोई पूछने वाला नहीं.
- (२७) आसमान की तरफ़ लगा हुआ.
- (२८) और उन्हें मालूम हो जाता है कि कौन पहले हलाक होगा और किसकी फ़ल्ह होगी. अगर इसका दावा हो.
- (२९) यह उनकी मूर्खता का बयान है कि अपने लिये तो बेटे पसन्द करते हैं और अल्लाह तआला की तरफ़ बेटियों की निखत करते हैं. जिनको बुरा जानते हैं.
- (३०) दीन की तालीम पर.
- (३१) और तावान की ज़ेरादारी के कारण इस्लाम नहीं लाते. यह भी तो नहीं है, फिर इस्लाम लाने में उन्हें क्या उन्न है.
- (३२) कि मरने के बाद न उठेंगे और उठे भी तो अज़ाब न किये जाएंगे, यह बात भी नहीं है.
- (३३) दारुन नदवा में जमा होकर अल्लाह तआला के नबी होदिये बरहक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तकलीफ़ देने और उनके क़त्ल के षडयंत्र रचाने हैं.
- (३४) उनके छलकपट का वधात उन्हीं पर पड़ेगा. चुनाने ऐसा ही हुआ अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनके छलकपट से मेहफूज़ रखा और उन्हें बद्र में हलाक किया.
- (३५) जो उन्हें रोज़ी दे और अल्लाह के अज़ाब से बचा सक.
- (३६) यह जवाब है काफ़िरों के उस क़ौल का जो कहते थे कि हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा कर अज़ाब कीजिये. अल्लाह तआला उसी के जवाब में फ़रमाता है कि उनका कुफ़्र और दुश्मनी इस हद पर पहुँच गई है कि अगर उनपर ऐसा ही किया जाए कि आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दिया जाए और आसमान से उसे गिरते हुए देखें तो भी कुफ़्र से बाज़ न आएँ और दुश्मनी से यही

और वह कोई बात अपनी ख्वाहिश से नहीं करते (३) वह तो नहीं मगर वही जो उन्हें की जाती है (४) उन्हें (५) सिखाया (६) सख्त कुव्वतो वाले (७) ताकतवर ने (८) फिर उस जलवे ने क्रन्द फरमाया (९) और वह आसमाने वरी के सबसे वलन्द किनारे पर था (१०) फिर वह जलवा नज़्दीक हुआ (११) फिर खूब उतर आया (१२) तो उस जलवे और उस मेहबूब में दो हाथ का फ़ासला रहा बल्कि उस से भी कम (१३) अब वही फ़रमाई अपने बन्दे को जो वही फ़रमाई (१४) दिल ने झूट न कहा जो देखा (१५) तो क्या तुम उनसे उनके देखे हुए पर झगड़ते हो (१६) और उन्होंने ने वह जलवा दो बार देखा (१७) सिदरतुल मुन्तहा के पास (१८) उसके पास जन्नतुल मावा है (१९) जब सिदरह पर छा रहा था जो छा रहा था (२०) आँख न किसी तरफ़ फिरी न हद से बढ़ी (२१) वेशक अपने रव की बहुत बड़ी निशानियां देखीं (२२) तो क्या तुमने देखा लात और उज़्ज़ा (२३) और उस तीसरी मनात को (२४) क्या तुम को बेटा और उसको बेटी (२५) जब तो यह सख्त भौंडी तकसीम है (२६) वो तो नहीं मगर कुछ नाम कि तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये हैं (२७) अल्लाह ने उनकी कोई सनद नहीं उतारी, वो तो निरे गुमान और नफ़्स को ख्वाहिशों के पीछे हैं (२८) हालांकि वेशक उनके पास उनके रव की तरफ़ से हिदायत

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۚ
عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۖ ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ۖ وَهُوَ
بِالْأَفْقِ الْأَعْلَىٰ ۚ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ۚ فَكَانَ قَابَ
قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ۖ فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَّا أَوْهَىٰ ۖ مَا
كَذَّبَ الْفَوَادِ مَا رَأَىٰ ۖ أَفْتَقَرُّوْهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ۖ
وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۖ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ ۖ
عِنْدَ مَا جَنَّتُ الْمَاوَىٰ ۖ إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ۖ
مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ۖ لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ
الْكُبْرَىٰ ۖ أَفَوَيْتُمْ لِلَّهِ وَالْعُرَىٰ ۖ وَمَنْوَةٌ الثَّالِثَةُ
الْأُخْرَىٰ ۖ أَلَكُمُ الذِّكْرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ۖ تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ
ضِيزَىٰ ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمِيَتْهُمَا أَنْتُمْ وَ
أَبَاؤُكُمْ مَّا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهِمَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ
إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ

कहें कि यह तो बादल है इससे हमें पानी मिलेगा।

(३७) इससे मुराद सूर के पहली बार फूँके जाने का दिन है।

(३८) गरज़ किसी तरह अज़ाबे आख़िरत से बच न सकेंगे।

(३९) उनके कुफ़्र के कारण अज़ाबे आख़िरत से पहले और वह अज़ाब या तो वज़्र में क़त्ल होना है या भूय़ और दुष्काल की सात साल की मुरीबत या क़ब्र का अज़ाब।

(४०) कि वो अज़ाब में मुजिला हाने वाले हैं।

(४१) और जो मोहलत उन्हें दी गई है उसपर दिल तंग न हो।

(४२) तुम्हें वो कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकते।

(४३) नमाज़ के लिये, इससे पहली तकबीर के बाद सवा यानी सुक़ातक़ल्लाहुम्मा पढ़ना मुराद है या ये मानी हैं कि जब सोकर उठो तो अल्लाह तआला की हम्द और तस्बीह किया करो या ये मानी हैं कि हर मजलिस से उठते वक़्त हम्द व तस्बीह बजा लाया करो।

(४४) यानी तारों के छुपने के बाद, मुराद यह है कि उन औक़ात में अल्लाह तआला की तस्बीह और तारीफ़ करो, कुछ मुफ़सि़रों ने फ़रमाया कि तस्बीह से मुराद नमाज़ है।

५३ - सूरए नज़्म - पहला ख़ूक़

(१) सूरए नज़्म मक्की है, इसमें तीन ख़ूक़, शायद आठ, तीन सौ साठ कलामे, एक हज़ार चार सौ पौंच अक्षर हैं, यह वह पहली सूरत है जिसका रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ऐलान फ़रमाया और हरम शरीफ़ में मुन्थि़कों के सामने पढ़ी।

(२) नज़्म की तफ़्सीर में मुफ़सि़रों के बहुत से क़ौल हैं कुछ ने सुरैया मुराद लिया है अगरचे सुरैया कई तार हैं लेकिन नज़्म का इतलाक़ उनपर अरब की आदत है, कुछ ने नज़्म से नज़्म की ज़िन्स मुराद ली है, कुछ ने वो वनस्पति जो तने नहीं रग़्त, ज़मीन पर फैलते हैं, कुछ ने नज़्म से कु़रआन मुराद लिया है लेकिन सबसे अच्छी तफ़्सीर यह है जो इमाम अहमद रज़ा ने इज़्ति़यार फ़रमाई कि नज़्म से मुराद है नवियां के सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुबारक ज़ान (ख़ाज़ि़र)

(३) साहब से मुराद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं, मानी ये हैं कि हुज़ुर अव्वर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कभी सच्चाई के रास्ते और हिदायत से मुंह न फ़ेरा, हमेशा अपने रव की तौहीदे और इबादत में रहे, आपके पाक दामन पर कभी किसीबुरे

काम की धूल न आई. और बेराह न चलने से मुराद यह है कि हुजूर हमेशा सच्चाई और हिदायत की आला मंजिल पर फायज़ रहे. वृं और गलत अज़ीदे भी कभी आपके मुबारक वजूद तक न पहुंच सके.

(४) यह पहले वाक्य की दलील है कि हुजूर का बहकना और बेराह चलना संभव ही नहीं क्योंकि आप अपनी इच्छा से कोई बात फ़रमाने ही नहीं, जो फ़रमाने हैं वह अल्लाह की तरफ़ से वही होती है और इसमें हुजूर के ऊंचे दर्जे और आपकी पाकीज़गी का बयान है. तफ़्सीर का सबसे ऊंचा दर्जा यह है कि वह अपनी इच्छा छोड़ दे. (तफ़्सीर कबीर) और इसमें यह भी इशारा है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह की ज्ञात और सिफ़ात और अफ़आल में फ़ना के उस ऊंचे दर्जे पर पहुंचे कि अपना कुछ वाक़ी न रहा. अल्लाह की तजल्ली का ऐसा आम फ़ैज़ हुआ कि जो कुछ फ़रमाने हैं वह अल्लाह की तरफ़ से होता है. (रुहुल बयान)

(५) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की.

(६) जो कुछ अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ वही फ़रमाया और इस तालीम से मुराद क़ल्बे मुबारक तक पहुंचा देना है.

(७) कुछ मुफ़सिरीन इस तरफ़ गए हैं कि सज़न कुब्तों वाले ताक़तवर से मुराद हज़रत जिब्रईल हैं और सिख़ाने से मुराद अल्लाह की वही का पहुंचना है. हज़रत हसन बसरी रदियल्लाहो अन्हो का क़ौल है कि शदीदुल कुबा जू मिरतिन से मुराद अल्लाह तआला है उसने अपनी ज्ञात को इस गुण के साथ बयान फ़रमाया. मानी ये हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह तआला ने बेयास्ता तालीम फ़रमाई. (तफ़्सीर रुहुल बयान)

(८) आम मुफ़सिरीयों ने फ़स्तवा का क़र्ता भी हज़रत जिब्रईल को फ़रार दिया है और ये मानी लिये हैं कि हज़रत जिब्रईल अमीन अपनी असली सूरत पर क़ायम हुए और इसका कारण यह है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें उनकी असली सूरत में देखने की इच्छा ज़ाहिर फ़रमाई थी तो हज़रत जिब्रईल पूर्व की ओर से हुजूर के सामने नमूदार हुए और उनके वजूद से पूर्व से पश्चिम तक भर गया. यह भी कहा गया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सिवा किसी इत्सान ने हज़रत जिब्रईल अलैहिससलाम को उनकी असली सूरत में नहीं देखा. इमाम फ़ररुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाने हैं कि हज़रत जिब्रईल को देखना तो सही है और हदीस से साबित है लेकिन यह हदीस में नहीं है कि इस आयत में हज़रत जिब्रईल को देखना मुराद है बल्कि ज़ाहिर तफ़्सीर में यह है कि मुराद फ़स्तवा से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मकाने आली और ऊंची मंजिल में इस्तवा फ़रमाना है. (कबीर) तफ़्सीर रुहुल बयान में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आसमानों के ऊपर क़ायम फ़रमाया और हज़रत जिब्रईल सिद्धतुल मुनहा पर रुक गए, आगे न बढ़ सके. उन्होंने कहा कि अगर मैं ज़रा भी आगे बढ़ा तो अल्लाह के ज़लाल की तजल्लियाँ मुझे जला डालेंगी. हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आगे बढ़ गए और अर्थ के फैलाव से भी गुज़र गए और इमाम अहमद राज़ा का अनुवाद इस तरफ़ इशारा करता है कि इस्तवा की अस्नाद अल्लाह तआला की तरफ़ है और यही क़ौल हसन रदियल्लाहो अन्हो का है.

(९) यहाँ भी आम मुफ़सिरीन इस तरफ़ गए हैं कि यह हाल जिब्रईल अमीन का है. लेकिन इमाम राज़ी फ़रमाने हैं कि ज़ाहिर यह है कि यह हाल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का है कि आप आसमानों के ऊपर थे जिस तरह कहने वाला कहता है कि मैंने छत पर चढ़ देखा. इसके मानी ये नहीं होने कि चढ़ छत पर या पहाड़ पर या, बल्कि यही मानी होते हैं कि देखने वाला छत पर या पहाड़ पर था. इसी तरह यहाँ मानी हैं कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आसमानों के ऊपर पहुंचे तो अल्लाह की तजल्ली आपकी तरफ़ मुतवज्जह हुई.

(१०) इसके मानी में भी मुफ़सिरीयों के कई क़ौल हैं. एक क़ौल यह है कि हज़रत जिब्रईल का सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से क़रीब होना मुराद है कि वह अपनी असली सूरत दिखा देने के बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कुर्व में हाज़िर हुए. दूसरे मानी ये हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला के कुर्व से मुशरफ़ हुए. तीसरे यह कि अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अपने कुर्व की नेअमत से नवाज़ा और यही ज़्यादा सही है.

(११) इसमें में चन्द क़ौल हैं एक तो यह कि नज़्दीक होने से हुजूर का ऊरुज और वुसूल मुराद है और उतर आने से नुज़ूल व उत्र, तो हासिल मानी ये हैं कि हज़रत जिब्रईल अपने लुत्फ़ व रहमत के साथ अपने हबीब से क़रीब हुआ और इस कुर्व में ज़ियादती फ़रमाई. तीसरा क़ौल यह है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अल्लाह तआला की नारगाह में कुर्व पाकर ताअत का सज़्दा अदा किया (रुहुल बयान) बुख़ारी और मुस्लिम की हबीस में है कि क़रीब हुआ जब्बार रबुल इज़ज़त. (ख़ाज़िन)

(१२) यह इशारा है ताक़ीदे कुर्व की तरफ़ कि कुर्व अपने क़माल को पहुंचा और जो नज़्दीकी अदब के दापरे में रहकर सोची जासकती है वह अपनी चरम सीमा को पहुंची.

(१३) अक्सर मुफ़सिरीयों के नज़्दीक इसके मानी ये हैं कि अल्लाह तआला ने अपने ख़ास बन्दे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को वही फ़रमाई. (जुमल) हज़रत जअफ़रे सादिक रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अपने बन्दे को वही फ़रमाई, जो वही फ़रमाई वह बेयास्ता थी कि अल्लाह तआला और उसके हबीब के बीच कोई वास्ता न था और ये झुदा और रसूल के बीच के रहस्य हैं जिन पर उनके सिवा किसी को सूचना नहीं. वक़ली ने कहा कि अल्लाह तआला ने इस रहस्य को तमाम सृष्टि से छुपाए रखा और न बयान फ़रमाया कि अपने हबीब को क्या वही फ़रमाई और मुहबिब व मेहबूब के बीच ऐसा राज़ होता है जिनको उनके सिवा कोई नहीं जानता. (रुहुल बयान) उलमा ने यह भी बयान किया है कि उस रात में जो आपको वही फ़रमाई गई वह कई क़िस्म के उलूम थे. एक तो शरीअत और अहक़ाम का इल्म जिस की सब को तबलीग़ की जाती है, दूसरे अल्लाह तआला

की मअरिफतें जो ख़ास लोगों को बताई जाती हैं, तीसरे हकीकतें और अन्दर की बातें जो ख़ासुल ख़ास लोगों को बताई जाती हैं। और एक क्रिम बां राज जो अल्लाह तआला और उसके रसूल के साथ ख़ास हैं कोई उनका बोझ नहीं उठा सकता। (रुहुल बयान) (१४) आँख ने यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़त्बे मुबारक ने उसकी तस्दीक़ की जो चश्मे मुबारक ने देखा। मानी ये हैं कि आँख से देखा, दिल से पहचाना और इस देखने और पहचानने में शक़ और वहम ने राह न पाई। अब यह बात कि क्या देखा? कुछ मुफ़सिरों का कहना है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने रब को देखा और यह देखना किस तरह था? सर की आँखों से या दिल की आँखों से? इस में मुफ़सिरों के दोनों क़ौल पाए जाते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास का क़ौल है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने रब तआला को अपने क़त्बे मुबारक से दोबार देखा (मुस्लिम) एक जमाअत इस तरफ़ गई कि आपने रब तआला को हकीकत में सर की आँखों से देखा। यह क़ौल हज़रत अनस दिन मालिक और हसन व अकरमह का है और हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम को ख़ुल्लत और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को क़लाम और सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अपने दीदार से इम्तियाज़ बरश्था। कअब ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से दोबार क़लाम फ़रमाया और हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अल्लाह तआला को दोबार देखा (तिर्मिज़ी) लेकिन हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा ने दीदार का इन्कार किया और आयत को जिब्रईल के दीदार पर महमूल किया और फ़रमाया कि जो कोई कहे कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने रब को देखा, उसने झूट कहा और प्रमाण में आयत "ला तुदरिकुहुल अब्सा" (आँखें उसे अहाता नहीं करती - सूरए अनआम, आयत १०३) तिलावत फ़रमाई। यहाँ चन्द बातें क़ाबिले लिहाज़ हैं एक यह कि हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा का क़ौल नफ़ी में है और हज़रत इब्ने अब्बास का हौं में और हौं वाला क़ौल ही ऊपर होता है क्योंकि ना कहने वाला किसी चीज़ की नफ़ी इसलिये करता है कि उसने सुना नहीं और हौं करने वाला हौं इसलिये करता है कि उसने सुना और जाना। तो इल्म हौं कहने वाले के पास है। इसके अलावा हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा ने यह क़लाम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से नक़ल नहीं किया बल्कि आयत से अपने इस्तम्बात (अनुमान) पर ऐतिमाद फ़रमाया। यह हज़रते सिद्दीका रदियल्लाहो अन्हा की राय और आयत में इदराक़ यानी इहाता की नफ़ी है, न रुयत की। सही मसअला यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के दीदार से मुशरफ़ फ़रमाए गए। मुस्लिम शरीफ़ की हदीसे मरफूअ से भी यही साबित है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा जो बहख़ल उम्मत हैं, वह भी इसी पर हैं। मुस्लिम की हदीस है "रपेता रब्बी बिणेनी व बिक़ल्बी" मैं ने अपने रब को अपनी आँख और अपने दिल से देखा। हज़रत हसन बसरी रदियल्लाहो अन्हो क़सम खाते थे कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मेराज की रात अपने रब को देखा। हज़रत इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैहे ने फ़रमाया कि मैं हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा की हदीस का क़ायल हूँ। हुज़ूर ने अपने रब को देखा, उसको देखा, उसको देखा। इमाम साहब यह फ़रमाते ही रहे यहाँ तक कि सौंस ख़त्म हो गई।

(१५) यह मुश्क़ी को ख़िताब है जो मेराज की रात के वाक़िआत का इन्कार करते और उसमें झगड़ा करते।

(१६) क्योंकि कम कराने की दरख़ास्तों के लिये चन्द बार आना जाना हुआ। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने रब तआला को अपने क़त्बे मुबारक से दोबार देखा और उन्हीं से यह भी रिवायत है कि हुज़ूर ने रब तआला को आँख से देखा।

(१७) सिद्धतुल मुत्तहा एक दरख़त है जिसकी अस्त जड़ छटे आसमान में है और इसकी शाखें सातबें आसमान में फैली हुई हैं और बलन्दी में वह सातवें आसमान से भी गुज़र गया। फ़रिश्ते और शहीदों और नेक लोगों की रूहे उससे आगे नहीं बढ़ सकतीं।

(१८) यानी फ़रिश्ते और अनवार।

(१९) इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की भरपूर कुबूत का इज़हार है कि उस मक़ाम में जहाँ अक़लें हैरत में डूबी हुई हैं, आप साबित क़दम रहे और जिस नूर का दीदार मक़सूद था उससे बेहराअन्दोज़ हुए। दाएं बाएं किसी तरफ़ मुलतफ़िज़ न हुए, न मक़सूद की दीद से आँख फेरी, न हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरह चेहरा हुए, बल्कि इस मक़ाम अज़ीम में साबित रहे।

(२०) यानी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने शबे मेअराज मुल्क और मलकूत के चमत्कारों को देखा और आप का इल्म तमाम मअलूमाते ग़ैबियह मलकूतियह से भर गया जैसा कि हदीस शरीफ़ इख़्तिसाम मलायक़ह में बारिद हुआ है और दूसरी हदीसों में आया है। (रुहुल बयान)

(२१) लात व उज़्ज़ा और मनात बुतों के नाम हैं जिन्हें मुश्क़ि पूजते थे। इस आयत में इश़ाद फ़रमाया कि क्या तुमने उन बुतों को देखा, यानी तहकीक़ व इन्साफ़ की नज़र से, अगर इस तरह देखा हो तो तुम्हें मालूम होगया होगा कि यह महज़ बेक़ुदरत बुतों को पूजना और उसका शरीक़ ठहराना किस क्रंदर अज़ीम जुल्म और अक़ल के ख़िलाफ़ बात है। मक्के के मुश्क़ि कहा करते थे कि ये बुत और फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियाँ हैं। इसपर अल्लाह तआला इश़ाद फ़रमाता है।

(२२) जो तुम्हारे नज़्दीक़ ऐसी बुरी चीज़ है कि जब तुम में से किसी को बेटी पैदा होना की ख़बर दी जाती है तो उसका चेहरा बिगड़ जाता है और रंग काला हो जाता है और लोगों से छुपता फिरता है यहाँ तक कि तुम बेटियों को ज़िन्दा दर ग़ोर कर डालते हो; फिर भी अल्लाह तआला की बेटियाँ बताते हो।

(२३) कि जो अपने लिये बुरी समझते हो, वह ख़ुदा के लिये तजवीज़ करते हो।

(२४) यानी उन बुतों का नाम इलाह और मअबूद तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने बिल्कुल बेजा और ग़लत तौर पर रखलिया है, वो न हकीकत में इलाह हैं न मअबूद।

आई^(२५) ॥ २३ ॥ क्या आदमी को मिल जाएगा जो कुछ वह खयाल बांधे^(२६) ॥ २४ ॥ तो आखिरत और दुनिया सब का मालिक अल्लाह ही है^(२७) ॥ २५ ॥

दूसरा रूकू

और कितने ही फ़रिश्ते हैं आसमानों में कि उनकी सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आती मगर जब कि अल्लाह इजाज़त दे दे जिसके लिये चाहे और पसन्द फ़रमाए^(२८) ॥ २६ ॥ वेशक वो जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते^(२९) मलायका (फ़रिश्तों) का नाम औरतों का सा रखते हैं^(३०) ॥ २७ ॥ और उन्हें इसकी कुछ ख़बर नहीं, वो तो निरे गुमान के पीछे हैं, और वेशक गुमान धकीन की जगह कुछ काम नहीं देता^(३१) ॥ २८ ॥ तो तुम उससे मुंह फेर लो जो हमारी याद से फ़िरा^(३२) और उसने न चाही मगर दुनिया की ज़िन्दगी^(३३) ॥ २९ ॥ यहाँ तक उनके इल्म की पहुँच है^(३४) वेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बहका और वह ख़ूब जानता है जिसने राह पाई^(३५) ॥ ३० ॥ और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में ताकि बुराई करने वालों को उनके किये का बदला दे और नेकी करने वालों को निहायत (अत्यन्त) अच्छा (सिला) इनआम अता फ़रमाए^(३६) ॥ ३१ ॥ वो जो बड़े गुनाहों और वेहयाइयों से वचते हैं^(३७) मगर इतना कि गुनाह

رَبِّهِمُ الْهُدَى ۖ أَمْرٌ لِلْإِنْسَانِ مَا شَتَّى ۚ فَلْيُفْهِمِ
الْآخِرَةَ وَالْأُولَى ۚ وَكَهْمُ مَن مَّلَكٍ فِي السَّمَوَاتِ لَا
تُعْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مَن بَعِدَ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ
لِمَن يَشَاءُ وَيُرِضْهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
لَيَسْتَوْنَ الْمَلَائِكَةَ نَسِيَهُ الْأَنْثَى ۚ وَمَا لَهُمْ بِهِ
مِنْ عِلْمٍ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۚ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا
يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ فَأَعْرِضْ عَنْ مَن كُوتِلَ ۚ
عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمَّا بَرَدْنَا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۚ ذَلِكَ
مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ
عَنْ سَبِيلِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَن اهْتَدَى ۚ وَلِلَّهِ مَا
فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ لَيَجِزْنَ الْبَازِينَ
أَسَاءُوا وَبِمَا عَمَلُوا وَيَجْزِي الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى ۚ
الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ

مَنْزِلٌ

(२५) यानी उनका बुतों का पूजना अकल व इल्म व तालीम इलाही के खिलाफ़, केवल अपने नफ्स के इत्तिआ, हठधर्मी और वहम परस्ती की बिना पर है।

(२६) यानी किताबे इलाही और श्रुदा के रसूल जिन्होंने सफ़ाई के साथ बार बार यह बताया कि बुत मअबूद नहीं हैं और अल्लाह तआला के सिवा कोई भी इबादत के लायक नहीं।

(२७) यानी काफ़िर जो बुतों के साथ झूठी उम्मीद रखते हैं कि वो उनके काम आएंगे, ये उम्मीदें बातिल हैं।

(२८) जिसने जो चाहे दे, उसी की इबादत करना और उसी की राज़ी रखना काम आएगा।

सूरए नज्म - दूसरा रूकू

(१) यानी फ़रिश्ते, जबकि वो अल्लाह की वारगाह में इज़ज़त रखते हैं इसका बाद सिर्फ़ उसके लिए शफ़ाअत करेंगे जिसके लिये अल्लाह तआला की मर्ज़ी हो यानी तौहीद वाले मूмин के लिये, तो बुतों से शफ़ाअत की उम्मीद रखना अत्यन्त ग़लत है कि न उन्हें हक़ तआला की वारगाह में कुर्ब हासिल, न काफ़िर शफ़ाअत के योग्य।

(२) यानी काफ़िर जो दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करते हैं।

(३) कि उन्हें श्रुदा की बेटियाँ बताते हैं।

(४) सही बात और वास्तविकता इल्म और यकीन से मालूम होती है न कि वहम और गुमान से।

(५) यानी कुरआन पर ईमान से।

(६) आख़िरत पर ईमान न लाया कि उसका तालिब होता।

(७) यानी वो इस कदर कमइल्म और कमअक़ल हैं कि उन्होंने आख़िरत पर दुनिया को प्राथमिकता दी है या ये मानी हैं कि उनके इल्म की इत्तिहा वहम और गुमान हैं जो उन्होंने बाँध रखे हैं कि (मआज़ल्लाह) फ़रिश्ते श्रुदा की बेटियाँ हैं उनकी शफ़ाअत करेंगे और इस बातिल वहम पर भरोसा करके उन्हें ईमान और कुरआन की पर्वाह न की।

(८) गुनाह वह अमल है जिसका करने वाला अज़ाब का मुस्तहिक़ हो और कुछ जानकारों ने फ़रमाया कि गुनाह वह है जिसका करने वाला सवाब से मेहरम हो, कुछ का कहना है नाजायज़ काम करने को गुनाह कहते हैं, बहरहाल गुनाह की दो किस्में हैं सगीरा और कबीरा, कबीरा वो जिसका अज़ाब सज़ा हो और कुछ उलमा ने फ़रमाया कि सगीरा वो जिसपर सज़ा न हो, कबीरा वो जिसपर सज़ा हो, और फ़वाहिश वो जिसपर हद हो।

के पास गए और रुक गए^(९) वेशक तुम्हारे रब की मगफिरत वसीअ है, वह तुम्हें ख़ूब जानता है^(१०) तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी माँओं के पेट में हमल (गर्भ) थे, तो आप अपनी जानों को सुधरा न बताओ^(११) वह ख़ूब जानता है जो परहेज़गार हैं^(१२) (३२)

तीसरा रूकू

तो क्या तुमने देखा जो फिर गया^(१३) (३३) और कुछ थोड़ा सा दिया और रोक रखा^(१४) (३४) क्या उसके पास ग़ैब (अज्ञात) का इल्म है तो वह देख रहा है^(१५) (३५) क्या उसे उसकी ख़बर न आई जो सहीफ़ों (धर्मग्रन्थों) में है मूसा के^(१६) (३६) और इब्राहीम के जो पूरे अहक़ाम (आदेश) वजा लाया^(१७) (३७) कि कोई वोझ उठाने वाली जान दूसरी का वोझ नहीं उठाती^(१८) (३८) और यह कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश^(१९) (३९) और यह कि उसकी कोशिश बहुत जल्द देखी जाएगी^(२०) (४०) फिर उसका भरपूर बदला दिया जायगा^(२१) (४१) और यह कि वेशक तुम्हारे रब ही की तरफ़ इन्तिहा (अन्त) है^(२२) (४२) और यह कि वही है जिसने हंसाया और रूलाया^(२३) (४३) और यह कि वही है जिसने मारा और जिलाया^(२४) (४४) और यह कि उसी ने दो जोड़े बनाए नर और मादा^(२५) (४५) नुस्के से जब डाला जाए^(२६) (४६) और यह कि उसी के ज़िम्मे है पिछला उठाना^(२७) (दोबारा ज़िन्दा करना) (४७) और यह कि उसीने गिना दी और क़नाअत दी^(२८) (४८) और यह कि वही शिअरा सितारे का रब है^(२९) (४९) और यह कि उसीने पहली आद को हलाक फ़रमाया^(३०) (५०)

النجم २७

८३०

قَالَ قَبْلَ خَلْقِهِ

إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْغُفْرِ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَحْنَاءُ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْا أَنْفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّبَعْتُم ۖ أَفَرَبِّتَ الَّذِي تَوَلَّى ۖ وَآعْطَى قَلِيلًا وَآكَدَ ۖ أَعْنَدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ بِرَبِّهِ ۖ أَمَلَكُم مِّنْ بَيْنَ يَدَيْهِ فِي صُحُفٍ مُّوسَىٰ ۖ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّى ۖ أَكَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرَىٰ ۖ وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ۖ وَأَن سَعِيَهُ سَوْفَ يَرَىٰ ۖ ثُمَّ يُجْزَى الْجَزَاءُ الْآوْفَىٰ ۖ وَأَن إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ ۖ وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ۖ وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ۖ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۖ مِن نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ۖ وَأَن عَلَيْهِ النَّشَأُ الْأَخْرَىٰ ۖ وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ۖ وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ السَّعَرِ ۖ وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ۖ

مَنْ

(९) कि इतना तो कबीरा गुनाहों से बचने की बरक़त से माफ़ हो जाता है.

(१०) यह आयत उन लोगों के हक़ में नाज़िल हुई जो नेकियाँ करते थे और अपने कामों की तारीफ़ करते थे और कहते थे कि हमारी बमाज़ें, हमारे रोज़े, हमारे हज़ --

(११) यानी घमण्ड से अपनी नेकियों की तारीफ़ न करा क्योंकि अल्लाह तआला अपने बन्दों के हालात का ख़ुद जानने वाला है. वह उनकी हस्ती की शुरुआत से आख़िर तक सारे हालात जानता है. इस आयत में बतावटीपन, दिखावे और अपने मुंह मियाँ मिट्टू बनने की मना किया गया है. लेकिन अगर अल्लाह की नेअमत के ऐतिहास और फ़रमावशदारी व इबादत और अल्लाह के शुक्र के लिये नेकियों का ज़िक्र किया जाए तो जायज़ है.

(१२) और उसी का जानना काफी, वही ज़ादा देने वाला है. दूसरों पर इज़हार और दिखावे का क्या फ़ायदा.

सूरए नज्म - तीसरा रूकू

(१) इस्लाम से. यह आयत बलीद दिन मुगीरा के हक़ में उतरी जिसने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दीन में इत्तिबाअ किया था. मुश्रिकों ने उसे शर्म दिलाई और कहा कि तूने बुजुगों का दीन छोड़ दिया और तू गुमराह हो गया. उसने कहा मैं ने अज़ाबे इलाही के डर से ऐसा किया तो शर्म दिलाने वाले काफ़िर ने उससे कहा कि अगर तू शिर्क की तरफ़ लौट आए और इस क़द्र माल मुझको दे तो तूरा अज़ाब में अपने ज़िम्मे लेंता हूँ. इसपर बलीद इस्लाम से फिर गया और मुरतद हो गया और फिर से शिर्क में जकड़ गया. और जिस आदमी से माल देना ठहरा था उसने थोड़ा सा दिया और बाकी से मुकर गया.

(२) बाकी. यह भी कहा गया है कि यह आयत आस दिन वाइल सहमी के लिये उतरी. वह अक्सर कामों में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ताईद और हिमायत किया करता था और यह भी कहा गया है कि यह आयत अबू जहल के बारे में उतरी कि उसने कहा था अल्लाह की क़सम, मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) हमें देहतरिब अज़लाक का हुक्म फ़रमाते हैं. इस सूरत में

और समूद को^(१९) तो कोई वाकी न छोड़ा^(२०) और उनसे पहले नूह की कौम को^(२१) बेशक वह उनसे भी जालिम और सरकश (नाफरमान) थे^(२२) और उसने उलटने वाली वस्ती को नीचे गिराया^(२३) तो उसपर छाया जो कुछ छाया^(२४) तो ऐ सुनने वाले अपने रव की कौन सी नेअमतों में शक करेगा^(२५) यह^(२६) एक डर सुनाने वाले हैं अगले डराने वालों की तरह^(२७) पास आई पास आने वाली^(२८) अल्लाह के सिवा उसका कोई खोलने वाला नहीं^(२९) तो क्या इस बात से तुम आश्चर्य करते हो^(३०) और हंसते हो और रोते नहीं^(३१) और तुम खेल में पड़े हो तो अल्लाह के लिये सजदा और उसकी वन्दगी करो^(३२)

५४ - सूरए क़मर

सूरए क़मर मक्के में उतरी, इसमें ५५ आयतें, तीन रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) पास आई क़यामत और^(२) शक हो गया (चिर गया) चांद^(३) और अगर देखें^(४) कोई निशानी तो मुंह फेरते^(५) और कहते हैं यह तो जादू है चला आता^(६) और उन्होंने ने झुटलाया^(७) और अपनी ख्वाहिशों के पीछे हुए^(८) और हर काम करार पा चुका है^(९) और बेशक उनके पास वो ख़बरें आई^(१०) जिनमें काफ़ी रोक थी^(११) इन्तिहा को पहुंची



मानी ये हैं कि थोड़ा सा इक्करार किया और ज़रूरी सच्चाई में कम अदा किया और बाकी से मुंह फेरा यानी ईमान न लाया.

(३) कि दूसरा शम्स उसके गुनाहों का बोझ उठा लेगा और उसके अज़ाब को अपने ज़िम्मे लेगा.

(४) यानी तौरात में.

(५) यह हज़रत इब्राहीम की विशेषता है कि उन्हें जो कुछ हुक्म दिया गया था वह उन्होंने ने पूरी तरह अदा किया. इसमें बेटे का ज़िद्द भी है और अपना आग में डाला जाना भी. इसके अलावा और अहक़ाम भी. इसके बाद अल्लाह तआला उस मज़मून का ज़िक्र फ़रमाता है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की किताब और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सहीफ़ों में बयान फ़रमाया गया था.

(६) और कोई दूसरे के गुनाह पर नहीं पकड़ा जाएगा. इस में उस व्यक्ति के क़ौल का रद्द है जो बलीद बिन मुगीरा के अज़ाब का ज़िम्मेदार बना था और उसके गुनाह अपने ऊपर लेने का कहता था. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम के ज़माने से पहले लोग आदमी को दूसरे के गुनाह पर भी पकड़ लेते थे. अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया होता तो उसके क़ातिल की बज़ाय उसके बेटे या भाई या बीबी या गुलाम को क़त्ल कर देते थे. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़माना अगया तो आपने इससे मना फ़रमाया और अल्लाह तआला का यह आदेश पहुंचाया कि कोई किसी के गुनाह के लिये नहीं पकड़ा जाएगा.

(७) यानी अमल. मुराद यह है कि आदमी अपनी ही नेकियों से फ़ायदा उठाता है. यह मज़मून भी हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सहीफ़ों का है और कहा गया है कि उनकी ही उम्मतों के लिये ग़्रास था. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया यह हुक्म हमारी शरीअत में आयत "अलहक़ना बिहिम ज़ुर्रियतहुम वमा अलतनाहुम मिन अमलिहिम मिन शैइन" यानी हमने उनकी औलाद उनसे मिला दी और उनके अमल में उन्हें कुछ कमी न दी. (सूरए तूर, आयत २१) से मन्सूज़ हो गया. हदीस शरीफ़ में है कि एक व्यक्ति ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अज़्र किया कि मेरी माँ की बज़ात होगई अगर मैं उसकी तरफ़ से सदक़ा दूँ, क्या नफ़ा देगा? फ़रमाया हाँ. और बहुत सी हदीसों से साबित है कि म़ैयत को सदक़ात व ताआत से जो सवाब पहुंचाया जाता है, पहुंचता है और इसपर उम्मत के ज़लमा की सहमति है और इसीलिये मुसलमानों में रिवाज़ है कि वो अपने मरने वालों को सोयम, चहल्लूम, वरसी, उर्स वगैरह की फ़ातिहा में ताआत व सदक़ात से सवाब पहुंचाते रहते हैं. यह अमल हदीसों के मुताबिक़ है. इस आशय की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि यहाँ इन्सान से काफ़िर मुराद हैं और मानी ये हैं कि काफ़िर को

काई भलाई न मिलेगी, सिवाय उसके जो उसने की हो। दुनिया ही में सिर्फ़ की दुसअत या तन्दुरुस्ती वगैरह से उसका बदला दे दिया जाएगा ताकि आखिरत में उसका कुछ हिस्सा वाक्की न रहे, और एक मानी इस आयत के मुफ़सिरों ने ये भी बयान किये हैं कि आदमी इन्साफ़ के तहत वही पाएगा जो उसने किया हो और अल्लाह तआला अपने फ़रज़ से जो चाहें अना फ़रमाए, और एक क़ील मुफ़सिरों का यह भी है कि मूमिन के लिये दूसरा मूमिन जो नेकी करता है वह नेकी श्रुद उसी मूमिन की गिनी जाती है जिसके लिये की गई हो क्योंकि उसका करने वाला नायब और वकील की तरह उसका कायम मुक़ाम होता है।

(८) आखिरत में,

(९) आखिरत में उसी की तरफ़ रुजू है वही आमात की जज़ा देगा,

(१०) जिसे चाहा ख़ुश किया जिसे चाहा ग़मगीन किया,

(११) यानी दुनिया में मौत दी और आखिरत में ज़िन्दगी अता की, या ये मानी कि बाप दादा का मौत दी और उनकी औलाद को ज़िन्दगी वरख़ी, या यह मुराद है कि काफ़िरों का कुफ़र की मौत से हलाक किया और ईमानदारों का ईमानी ज़िन्दगी वरख़ी,

(१२) रहम में,

(१३) यानी मौत के बाद ज़िन्दा फ़रमाना,

(१४) जो कि गर्मी की सख़्ती में जौज़ा के बाद उदय होता है, एहल ज़ाहिलियत उसकी पूजा करते थे, इस आयत में बताया गया है कि सब का ख़ अल्लाह है, उस सितारे का ख़ भी अल्लाह ही है लिहाज़ा उसी की इबादत करा,

(१५) तेज़ झक्झकी वाली हवा से, आद दा हैं एक तो क़ौम हूद, उसको पहली आद कहते हैं और उनके बाद वालों का दूसरी आद कि वो उन्हीं के वंशज थे,

(१६) जो सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम थी,

(१७) डुबा कर हलाक किया,

(१८) कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम उनमें हज़ार बरस के करीब तशरीफ़ फ़रमा रहे मगर उन्होंने दावत कुबूल न की और उनकी सरकशी कम न हुई,

(१९) मुराद इस से क़ौम लूत की वस्तियाँ हैं जिन्हें हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से उठाकर औंधा डाल दिया और उथल पुथल कर दिया,

(२०) यानी निशान किये हुए पत्थर बरसाए,

(२१) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम,

(२२) जो अपनी क़ौमों की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गए थे,

(२३) यानी क़यामत,

(२४) यानी वही उसको ज़ाहिर फ़रमाएगा, या ये मानी हैं कि उसकी दहशत और सख़्ती को अल्लाह तआला के सिवा कोई दफ़अ नहीं कर सकता और अल्लाह तआला दफ़अ न फ़रमाएगा,

(२५) यानी कुरआन शरीफ़ का इन्कार करते हो,

(२६) उसके वादे और चेतावनी सुनकर,

(२७) कि उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं,

५४ - सूरए क्रमर - पहला रूकू

(१) सूरए क्रमर मक्की है सिवाय आयत "सयुहज़मुल जमओ" के, इस में तीन रूकू, पचपन आयत और तीन सौ बयालीस कलाम और एक हज़ार चार सौ तेईस अक्षर हैं,

(२) उसके नज़्दीक होने की निशानी ज़ाहिर हुई है कि नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चमत्कार से ...

(३) दो टुकड़े हो कर, शक्कुल क्रमर जिसका इस आयत में बयान है नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के खुले चमत्कारों में से है, मक्क के वालों ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से एक चमत्कार की मांग की थी तो हुज़ूर ने चाँद टुकड़े करके दिख़ाया, चाँद के दो हिस्से हो गए एक हिस्सा दूसरे से अलग होगया और फ़रमाया कि गवाह रहो, कुनैश ने कहा कि मुहम्मद ने जादू से हमारी नज़र बन्दी कर दी है, इसपर उन्हीं की जमाअत के लोगों ने कहा कि अगर यह नज़र बन्दी है तो बाहर कहीं भी किसी को चाँद के दो हिस्से नज़र न आए होंग, अब जो काफ़िले आने वाले हैं उनकी प्रतीक्षा करा और मुसाफ़िरों से पूछो, अगर दूसरी जगहों पर भी चाँद शक़ होना देखा गया है तो बेशक़ चमत्कार है, चुनान्दे सफ़र से आने वालों से पूछा, उन्होंने बयान किया कि हम ने देखा कि उस रोज़ चाँद के दो हिस्से हो गए थे, मुश्रिकों का इन्कार की गुन्दाइश न रही और वो जिहालत के तौर पर जादू ही जादू कहते रहे, सही हदीसों में इस महान चमत्कार का बयान है और ख़बर इस दर्जा शोहरत को पहुंच गई है कि इसका इन्कार करना अक़ल और इन्साफ़ से दुश्मनी और बेदीनी है,

(४) मक्के वाले नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खुबत और उनकी सच्चाई पर दलालत करने वाली,

(५) उसकी तस्दीक़ और नबी अलैहिस्सलामो वसल्लम पर ईमान लाने से,

हुई हिकमत, फिर क्या काम दें डर सुनाने वाले (५) तो तुम उनसे मुंह फेर लो (११) जिस दिन बुलाने वाला (१२) एक सख्त वे-पहचानी बात की तरफ बुलाएगा (१३) (६) नीची आँखें किये हुए कब्रों से निकलेंगे गोया वो टिड्डी हैं फैली हुई (१४) (७) बुलाने वाले की तरफ लपकते हुए (१५) काफिर कहेंगे यह दिन सख्त है (८) उनसे (१६) पहले नूह की क्रोम ने झुटलाया तो हमारे बन्दे (१७) को झूटा बताया और बोले वह मजनून (पागल) है और उसे झिड़का (१८) (९) तो उसने अपने रब से दुआ की कि मैं मगालूब हूँ तू मेरा बदला ले (१०) तो हमने आसमान के दरवाजे खोल दिये जोर के बहते पानी से (११) (११) और ज़मीन चश्मे करके बहा दी (२०) तो दोनों पानी (२१) मिल गए उस मिक्कदार (मात्रा) पर जो मुकद्दर थी (२२) (१२) और हमने नूह को सवार किया (२३) तख्तों और कीलों वाली पर (१३) कि हमारी निगाह के खबर बहती (२४) उसके सिले में (२५) जिसके साथ कुफ़्र किया गया था (१४) और हमने उसे (२६) निशानी छोड़ा तो है कोई ध्यान करने वाला (२७) (१५) तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरी धमकियाँ (१६) और वेशक हमने कुरआन याद करने के लिये आसान फ़रमा दिया तो है कोई याद करने वाला (२८) (१७) आद ने झुटलाया (२९) तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरे डर दिलाने के फ़रमान (३०) (१८) वेशक हमने उन पर एक

نَحْنُ النَّذِيرُ ۖ قَتَلْنَا عَنْهُمْ يُومَ يَذُّعُ الدَّاعِيَ إِلَىٰ
شَيْءٍ تُكْبِرُ ۖ خُشْعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ
الْأَجْدَاثِ ۖ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ۖ مَّهْطِعِينَ إِلَىٰ
الدَّاعِ ۖ يَقُولُ الْكُفْرُ وَنَ هَذَا يَوْمُ عَسِرٍ ۖ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ ۖ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ
وَأَزْدُجِرَ ۖ فَكَذَّبَ رَبُّنَا ۖ إِنِّي مَغْلُوبٌ فَأَنْتَصِرُ ۖ
فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ ۖ وَفَجَّرْنَا
الْأَرْضَ عُيُونًا ۖ فَالْتَفَتِ الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۖ
وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسْرٍ ۖ تَجْرِىٰ بِأَعْيُنِنَا
ۖ جَزَاءً لِّمَن كَانَ كُفِرَ ۖ وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً ۖ فَهَلْ
مِّنْ مُّذَكِّرٍ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ۖ وَلَقَدْ
يَسِّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ ۖ فَهَلْ مِّنْ مُّذَكِّرٍ ۖ كَذَّبَتْ
عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ۖ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

- (६) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को और उन चमत्कारों को जो अपनी आँखों से देखें.
- (७) उन बातिल बातों के जो शैतान ने उनके दिल में बिटा रखी थीं कि अगर नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चमत्कारों की तरदीक की तो उनकी सरदारी सारे जगत में सर्वमान्य हो जाएगी और कुरैश की कुछ भी इज्जत और कद्र बाक़ी न रहेगी.
- (८) वह अपने वक्त पर ही होने वाला है कोई उसको रोकने वाला नहीं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दीन ग़ालिब होकर रहेगा.
- (९) पिछली उम्मतों की जो अपने रसूलों को झुटलाने के कारण हलाक किये गए.
- (१०) कुफ़्र और झुटलाने से और इन्तिहा दर्जे की नसीहत.
- (११) क्योंकि वो नसीहत और डराने से सबक सीखने वाले नहीं.
- (१२) यानी हज़रत इस्माहील अलैहिस्सलाम बैतुल मक़दिस के गुम्बद पर खड़े होकर.
- (१३) जिसकी तरह की सज़नी कभी न देखी होगी और वह क़यामत और हिसाब की दहशत है.
- (१४) हर तरफ़ ख़ौफ़ से हैरान, नहीं जानते कहाँ जाएं.
- (१५) यानी हज़रत इस्माहील अलैहिस्सलाम की आवाज़ की तरफ़.
- (१६) यानी कुरैश से.
- (१७) नूह अलैहिस्सलाम.
- (१८) और धमकाया कि अगर तुम अपनी नसीहत और उपदेश और दावत से वाज़ न आए तो तुम्हें हम क़त्ल करदेंगे संगसार का डालेंगे.
- (१९) जो चालीस रोज़ तक न थमा.
- (२०) यानी ज़मीन से इतना पानी निकला कि सारी ज़मीन चश्मों की तरह हो गई.
- (२१) आसमान से बरसने वाले और ज़मीन से उबलने वाले.
- (२२) और लौहे मेहफूज़ में लिखा था कि तूफ़ान इस हद तक पहुँचेगा.
- (२३) एक क्षिती.
- (२४) हमारी हिफ़ाज़त में.
- (२५) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के.

सख्त आंधी भेजी^(२१) ऐसे दिन में जिसकी नहसत उनपर हमेशा के लिये रही^(२२) ॥२९॥ लोगों को घुं दे मारती थी कि मानो वो उखड़ी हुई खजूरों के डुन्ड (सूखे तने) हैं^(२०) तो कैसा हुआ मेरा अज्ञाव और डर के फ़रमान^(२३) और वेशक हमने आसान किया कुरआन याद करने के लिये तो है कोई याद करने वाला^(२२)

दूसरा रूकू

समूद ने रसूलों को झुटलाया^(१) ॥२३॥ तो बोले क्या हम अपने में के एक आदमी की तावेदारी करें^(२) जब तो हम ज़रूर गुमराह और दीवाने हैं^(३) ॥२४॥ क्या हम सब में से उसपर^(४) ज़िफ़ उतारा गया^(५) वल्कि यह सख्त झूटा इतरौना (शेखीबाज़) है^(६) ॥२५॥ बहुत जल्द कल जान जाएंगे^(७) कौन था बड़ा झूटा इतरौना^(८) ॥२६॥ हम नाक़ा भेजने वाले हैं उनकी जांच को^(९) तो ऐ सालेह तू राह देख^(१०) और सब कर^(११) ॥२७॥ और उन्हें खबर दे दे कि पानी उनमें हिस्सों से है^(१२) हर हिस्से पर वह हाज़िर हो जिसकी वारी है^(१३) ॥२८॥ तो उन्होंने अपने साथी को^(१४) पुकारा तो उसने^(१५) लेकर उसकी कूचें काट दीं^(१६) ॥२९॥ फिर कैसा हुआ मेरा अज्ञाव और डर के फ़रमान^(१७) ॥३०॥ वेशक हमने उनपर एक चिंघाड़ भेजी^(१८) जभी वो हो गए जैसे घेरा बनाने वाले की बची हुई घास सूखी रेंदी हुई^(१९) ॥३१॥ और वेशक हमने आसान किया कुरआन याद करने के लिये तो है कोई याद करने वाला^(२०) ॥३२॥ लूत की कौम ने रसूलों को झुटलाया^(२३)

يٰۤاَيُّهَا صَرْصَرٌ فِيْ يَوْمٍ مُّحِيْثٍ مُّسَوِّمٌ تَنْزِيْعُ النَّاسِ
كَأَنَّهُمْ اَنْجَارٌ تُخْلِيْ مُنْقَعِرٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَ
نَذْرِيْ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ
مُّدَكِّرٍ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ۝ كَفَالُوْا اَبْنٰٓءَ مَنَا
وَاحِدًا تَتَّبِعُوْهُ اِنَّا لَفِيْ صَلٰٓئِلٍ وَسُعِرَ ۝ اَلْفٰى
الَّذِيْ عَلَيْنَا مِنْ بَيِّنٰتٍ بَلْ هُوَ كَذٰبٌ اَشْرُ ۝
سَيَعْلَمُوْنَ عَذَابَ الْكَذٰبِ الْاَشْرِ ۝ اِنَّا مُرْسِلُوْا
التَّافَةِ فَذَنَّةٌ لَهُمْ فَاَرْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝ وَبَيِّنْهُمْ
اَنَّ الْمَآءَ فَيَمَنَّةٌ بَيْنَهُمْ كُلٌّ شَرْبٌ فَمَتَّضِرٌ ۝ فَنَادَوْا
صٰحِبَهُمْ فَعٰطٰى فَعَقَرَ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَ
نَذْرِيْ ۝ اِنَّا اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوْا
كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ
فَهَلْ مِنْ مُّدَكِّرٍ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوٓطٍ بِالنُّذُرِ ۝

मन्दा

(२६) यानी उस वाक़ए को कि काफ़िर डुबो कर हलाक़ कर दिये गए और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को निजात दी गई और कुछ मुफ़ससियों के नज़्दीक "तरक़नाहा" की ज़मीर किश्ती की तरफ़ पलटती है. क़तादह में रिवायत है कि अल्लाह तआला ने उस किश्ती को सरज़मीने जज़ीरा में और कुछ के नज़्दीक ज़ुदी पहाड़ पर मुदतत वाक़ी रखा, यहाँ तक कि हमारी उम्मत के पहले लोगों ने उसको देखा.

(२७) जो नसीहत माने और इब्रत हासिल करें.

(२८) इस आयत में कुरआन शरीफ़ की तालीम और तअल्लुम और उसके साथ लगे रहने और उसका कटुस्त करने की तर्ज़ीय है और यह भी मालूम होता है कि कुरआन याद करने वाले की अल्लाह तआला की तरफ़ से मदद होती है. और इसका याद करना आसान बना देने का ही फल है कि बच्चे तक इसको याद करलेते हैं सिवाय इसके कोई मज़हबी किताब ऐसी नहीं है जो याद की जाती हो और सहूलत से याद हो जाती हो.

(२९) अपने नबी हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को, इसपर वह अज्ञाव में जकड़े गए.

(३०) जो अज्ञाव उतरने से पहले आयुके थे.

(३१) बहुत तेज़ चलने वाली निहायत ठण्डी सख्त सन्नाटे वाली.

(३२) यहाँ तक कि उनमें कोई न बचा, सब हलाक़ हो गए और वह दिन महीने का पिछला बुध था.

सूरए क्रमर - दूसरा रूकू

(१) अपने नबी हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का इन्कार करके और उनपर ईमान न लाकर.

(२) यानी हम बहुत से हांकर एक आदमी के तावे हो जाएं. हम ऐसा न करेंगे क्योंकि अगर ऐसा करें.

(३) यह उन्होंने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का कलाम लौटाया. आपने उनसे फ़रमाया था कि अगर तुमने मेरा इत्तिबाअ न किया तो तुम गुमराह और नासमझ हो.

(४) यानी हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम पर.

वेशक हमने उनपर^(११) पथरावे भेजा^(१२) सिवाय लूत के घर वालों के^(१३) हमने उन्हें पिछले पहर^(१४) वचा लिया^(१५) अपने पास की नेअमत फ़रमा कर, हम यूँही सिला देते हैं उसे जो शुक्र करे^(१६) और वेशक उसने^(१७) उन्हें हमारी गिरफ्त से^(१८) डराया तो उन्होंने डर के फ़रमानों में शक किया^(१९) उन्होंने उसे उसके मेहमानों से फुसलाना चाहा^(२०) तो हमने उनकी आँखें मीट दीं^(चौपट कर दीं)^(२१) फ़रमाया चखो मेरा अज़ाव और डर के फ़रमान^(२२) और वेशक सुबह तड़के उनपर ठहरने वाला अज़ाव आया^(२३) ताँ चखो मेरा अज़ाव और डर के फ़रमान^(२४) और वेशक हमने आसान किया कुरआन याद करने के लिये ताँ है कोई याद करने वाला^(२५)

तीसरा रूकू

और वेशक फिरऔन वालों के पास रसूल आए^(१) उन्होंने हमारी सब निशानियाँ झुटलाई^(२) तो हमने उनपर^(३) गिरफ्त की जो एक इज़्ज़त वाले और अज़ीम कुदरत वाले की शान थी^(४) क्या^(५) तुम्हारे काफ़िर उनसे बेहतर हैं^(६) या किताबों में तुम्हारी छुट्टी लिखी हुई है^(७) या ये कहते हैं^(८) कि हम सब मिलकर बदला ले लेंगे^(९) अब भगाई जाती है यह जमाअत^(१०) और पीठें फेर देंगे^(११) वल्कि उनका वादा क़यामत पर है^(१२) और क़यामत निहायत^(अत्यन्त) कड़वी और सख्त कड़वी^(१३) वेशक मुजरिम गुमराह और दीवाने हैं^(१४) जिस दिन आग

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُمْ
بِسَحَرٍ ۖ نِعْمَةٌ مِّنْ عِنْدِنَا ۚ كَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ
شَكَرَ ۖ وَلَقَدْ آتَيْنَاهُمْ بَطْشَتَيْنِ فَتَتَارَا بِالنُّذُرِ ۖ
وَلَقَدْ آتَيْنَاهُ دَاوُدَ وَهُوَ غَافِلٌ ۖ فَطَسَّيْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا
عَذَابِي وَنُذُرِي ۖ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ
مُّسْتَفِزٌّ ۖ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِي ۖ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا
الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَكِّرٍ ۖ وَلَقَدْ
جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۖ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذِبًا
فَآخَذْنَاهُمْ أَخَذَ عَزِيزٌ مُّقْتَدِرٌ ۖ أَكْفَرُكُمْ خَبِيرٌ مِّنْ
أُولَئِكَ ۖ أَمْرُكُمْ بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۖ أَمْ يَقُولُونَ
نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَقِمُونَ ۖ سَيُزَمُّ الْمُجْرِمُونَ ۖ وَيَقُولُونَ
بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ ۖ وَالسَّاعَةُ أَذْهَبُ ۖ وَآمُرُ
إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۖ يَوْمَ يُسْحَبُونَ

مَزَلُونَ

- (१) बही नाज़िल की गई और काँई हम में इस काविल हो न था.
- (२) कि नबुच्चन का दावा करके बड़ा बतता चाहता है. अल्लाह तआला फ़रमाता है.
- (३) जब अज़ाव में जकड़े ग्राएँ.
- (४) यह उस पर फ़रमाया गया कि हज़रत सालह अलैहिस्सलाम की क़ौम ने आप से कहा था कि आप पथर से एक ऊंटनी निकाल दीजिये. आपने उनसे ईमान की शर्त करके यह बात मंज़ूर कर ली थी. चुनान्वे अल्लाह तआला ने ऊंटनी भेजने का वादा फ़रमाया और हज़रत सालह अलैहिस्सलाम से इशारा किया.
- (५) कि वो क्या करते हैं और उनके साथ क्या किया जाता है.
- (६) उनकी यादना पू.
- (७) एक दिन उनका, एक दिन ऊंटनी का.
- (८) जो दिन ऊंटनी का है उस दिन ऊंटनी हाज़िर हो और जो दिन क़ौम का है उस दिन क़ौम पानी पर हाज़िर हो.
- (९) यानी क़दार चित साबिक को ऊंटनी को क़त्ल करने के लिये.
- (१०) तेज़ तलवार.
- (११) और उसका क़त्ल कर डाला.
- (१२) जो अज़ाव उतरने में पहले मेरी तरफ़ से आए थे और अपने वस्तु पर बाँके हुए.
- (१३) यानी फ़रिश्तों की हीलनाक आवाज़.
- (१४) यानी जिस तरह चबूत बंगल में अपनी बकरियों की हिफ़ाज़त के लिये घास काँटों का घेरा बना लेते हैं उसमें से कुछ घास चब रह जाती है और वह जानवरों के पाँव में रुक कर कण कण हो जाती है. यह हालत उनकी हो गई.
- (१५) इस झुटलाने की सज़ा में.
- (१६) यानी उनपर छोटे छोटे गंगरेज़ बरसाए.
- (१७) यानी हज़रत लूत अलैहिस्सलाम और उनकी दोनों साहिवज़ादियाँ इस अज़ाव से मेहफूज़ रहीं.
- (१८) यानी सुबह होते से पहले.

में अपने मुंहों पर घसीटे जाएंगे, और फरमाया जाएगा चखो दोज़ाख की आंच (४८) वेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़े से पैदा फरमाई (४९) और हमारा काम तो एक बात की बात है जैसे पलक मारना (५०) और वेशक हमने तुम्हारी वज़अ के (५१) हलाक कर दिये तो है कोई ध्यान करने वाला (५२) और उन्होंने जो कुछ किया सब किताबों में है (५३) और हर छोटी बड़ी चीज़ लिखी हुई है (५४) वेशक परहेजगार वालों और नहर में हैं (५५) सच की मजलिस में अज़ीम कुदरत वाले वादशाह के हुज़ूर (५६) (५७)

५५ - सूरए रहमान

सूरए रहमान मदीने में उतरी, इसमें ७८ आयतें, तीन रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला (१) रहमान ने (२) अपने मेहबूब को कुरआन सिखाया (३) इन्सानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया (४) माकाना व मायकून (जो हुआ और जो होने वाला है) का वयान उन्हें सिखाया (५) सूरज और चांद हिसाब से हैं (६) और सच्चे और पेड़ सच्चे करते हैं (७) और आसमानों को अल्लाह ने बलन्द किया (८) और तराजू रखी (९) कि तराजू में बेएतिदाली न करो (१०) और इन्साफ के साथ तौल कायम करो और वज़न न घटाओ (११) और ज़मीन रखी मखलूक के लिये (१२)

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ؟ ٤٣٠ الرَّحْمَنُ

فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ ذُقُوا مَسَّ سَقَرٍ ۖ إِنَّكَ كَلَّ شَيْءٌ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ۖ وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ۖ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاءَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ۖ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزَّيْرِ ۖ وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُسْتَطَرٌ ۖ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ۖ فِي مَقْعَدِ صَدِيقٍ ۖ عِنْدَ مَلِكٍ مُّقْتَدِرٍ ۖ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرَّحْمَنُ ۖ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ۖ خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۖ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۖ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۖ وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ۖ وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ۖ أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۖ وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ۖ وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ۖ

مَزَل

(२३) अल्लाह तआला की नअमतों का और शुरुगुज़ार यह है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनकी फरमावशदारी करें.

(२४) यादी हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने.

(२५) हमारे अज़ाब से.

(२६) और उनकी तरदीक न की.

(२७) और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम से कहा कि आप हमारे और अपने मेहमानों के बीच न पड़ें और उन्हें हमारे हवाले कर दें और यह उन्होंने माल नोयत और बुरे इरादे से कहा था और मेहमान फ़रिश्ते थे उन्होंने हज़रत लूत अलैहिस्सलाम से कहा कि आप उन्हें छोड़ दीजिये, घर में आने दीजिये. ज़मी बो घर में आए तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने एक दस्तक दी.

(२८) और वो फ़ौरन अन्ध हो गए और आँखें ऐसी तापैद हो गई कि निशान भी बाकी न रहा. चोहरे सपाट हो गए. आश्चर्य चकित मारे मारे फिरते थे दरवाज़ा हाथ न आता था. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने उन्हें दरवाज़े से बाहर किया.

(२९) जो तुम्हें हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने सुनाए थे.

(३०) जो अज़ाब आग़िरत तक बाकी रहेगा.

सूरए क्रमर - तीसरा रूकू

(१) हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम, तो फिरऔती उनपर ईमान न लाए.

(२) जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को दी गई थीं.

(३) अज़ाब के साथ.

(४) ऐ मक्के वालो.

(५) यादी उन क़र्बों से ज़्यादा क़बी और मज़बूत हैं था कुफ़र और दुश्मनी में कुछ उनसे कम हैं.

(६) कि तुम्हारे कुफ़र की पकड़ न होगी और तुम अल्लाह के अज़ाब से अन्न में रहोगे.

- (७) मक्के के काफ़िर.
- (८) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से.
- (९) मक्के के काफ़िरों की.
- (१०) और इस तरह भागों कि एक भी कायम न रहेगा. बद्र के रोज़ जब अबू जहल ने कहा कि हम सब मिलकर बदला ले लेंगे, तब यह आयत उतरी और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ज़िरह पहन कर यह आयत निलावत फ़रमाई. फिर ऐसा ही हुआ कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़ल्ह हुई और काफ़िर परास्त हुए.
- (११) यानी उस अज़ाब के बाद उन्हें क़यामत के दिन के अज़ाब का वादा है.
- (१२) दुनिया के अज़ाब से उसका अज़ाब बहुत ज़्यादा सज़ा है.
- (१३) न समझते हैं न राह पाते हैं. (तफ़सीर कबीर)
- (१४) अल्लाह की हिक़मत के अनुसार. यह आयत क़दरियों के रद में उतरी जो अल्लाह की क़ुदरत के इन्कार हैं और दुनिया में जो कुछ होता है उसे सितारों वगैरह की तरफ़ मन्सूब करते हैं. हदीसों में उन्हें इस उम्मत का मज़ूस कहा गया है और उनके पास उठने बैठने और उनके साथ बात चीत करने और वो भीमार हो जाएं तो उनकी पूछ ताछ करने और मर जाएं तो उनके जनाज़े में शरीक होने से मना फ़रमाया गया है और उन्हें दज़्जाल का साथी फ़रमाया गया. वो बदतरीन लोग हैं.
- (१५) जिस चीज़ के पैदा करने का इरादा हो वह हुक्म के साथ ही हो जाती है.
- (१६) काफ़िर पहली उम्मतों के.
- (१७) जो इब्रत हासिल करें और नसीहत मानें.
- (१८) यानी बन्दा के सारे कर्म आमाँल के निगहबान फ़रिश्तों के लेखों में हैं.
- (१९) लौहे मेहफूज़ में.
- (२०) यानी उसकी बारगाह के प्यारे चहीते हैं.

५५ - सूरए रहमान - पहला रूकू

- (१) सूरए रहमान मक्की है इसमें तीन रूकूअ, छिद्दतर या अठहत्तर आयतें, तीन सौ इस्पावन कलिम और एक हज़ार छ सौ छत्तीस अक्षर हैं.
- (२) जब आयत "उस्जुदू लिर्रहमाने" यानी रहमान को सज़दा करो (सूरए अलफ़ुजक़ान, आयत ६०) उतरी, मक्के के काफ़िरों ने कहा, रहमान क्या है हम नहीं जानते. इसपर अल्लाह तआला ने अर्हरमान उतारी कि रहमान जिसका तुम इन्कार करते हो वही है जिसने क़ुरआन नाज़िल किया और एक क़ौल है कि मक्के वालों ने जब कहा कि मुहम्मद को कोई वंशर सिखाता है तो यह आयत उतरी और अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि रहमान ने क़ुरआन अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सिखाया. (ख़ाज़िन)
- (३) इन्सान से इस आयत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुराद हैं. और बयान से माकाता वमा यकून का बयान क्योंकि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अग़लों पिछलों की ख़बरें देते थे. (ख़ाज़िन)
- (४) कि निर्धारित तक्दीर के साथ अपने बुजों और मंज़िलों में यात्रा करते हैं और उसमें सृष्टि के लिये फ़ायदे हैं. अक़्वात के हिसाब से बरसों और महीनों की गिनती उन्हीं पर है.
- (५) अल्लाह के हुक्म के आधीन हैं.
- (६) और अपने फ़रिश्तों का ठिकाना और अपने अहक़ाम का केन्द्र बनाया.
- (७) जिससे चीज़ों का बज़न किया जाए और उनकी मात्राएं मालूम हों ताकि लैन देन में न्याय हो सके.
- (८) ताकि किसी का अधिकार न मारा जाए.
- (९) जो उसमें रहती बस्ती है ताकि उसमें आराम करें और फ़ायदे उठाएं.
- (१०) जिनमें बहुत बरक़त है.
- (११) मेहँ जौ वगैरह के समान.
- (१२) इस सूरत में यह आयत ३१ बार आई है. बारबार नेअमतों का ज़िक़र फ़रमाकर यह इशाराद फ़रमाया गया है कि अपने रब की कौन सी नेअमत को झुटलाओगे. यह हिदायत और सीख का बेहतरीम अन्दाज़ है ताकि सुनने वाले की अन्तरात्मा को तम्बीह हो और उसे अपने जुर्म और नाशुक़ी का हाल मालूम हो जाए कि उसने कितनी नेअमतों को झुटलाया है और उसे शर्म आए और वह

उसमें मेवे और गलाफ़ वाली खजूरें^(१०) (११) और भुस के साथ अनाज^(११) और खुशबू के फूल^(१२) तो ऐ जिन्न व इन्स (मानव), तुम दोनों अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(१३) (१३) आदमी को बनाया वजती मिट्टी से जैसे ठीकरी^(१३) (१४) और जिन्न को पैदा फ़रमाया आग के लूके (लपट) से^(१४) (१५) तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(१५) (१६) दोनों पूरव का रब और दोनों पश्चिम का रब^(१५) (१६) तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(१६) (१७) उसने दो समन्दर बहाए^(१६) कि देखने में मालूम हों मिले हुए^(१७) (१८) और है उनमें रोक^(१७) कि एक दूसरे पर वढ़ नहीं सकता^(१८) (२०) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(२०) (२१) उनमें से मोती और मूंगा निकलता है^(२१) (२२) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(२२) (२३) और उसी की हैं वो चलने वालीयाँ कि दरिया में उठी हुई हैं जैसे पहाड़^(२३) (२४) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(२४) (२५)

दूसरा रूकू

ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है^(१) (२६) और वाकी है तुम्हारे रब की ज़ात अज़मत और बुज़ुर्गी वाला^(२) (२७) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(२७) (२८) उसी के मंगता हैं जितने आसमानों और ज़मीन में हैं^(३) उसे हर

فِيهَا فَالْكَمَّةُ وَالنَّعْلُ ذَاتُ الْاَلْكَامِ وَالْحَبُّ
ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبِينَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝
وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِنْ نَارٍ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۚ
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ
يَلْتَقِيَانِ ۚ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ يَخْرُجُ مِنْهُمَا الْمَأْوُوءُ وَالْمَرْجَانُ ۚ
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ
فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ
كُلٌّ مِنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۚ وَيَبْقَى وَجْهُ رَبِّكَ
ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبِينَ ۚ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْاَرْضِ

مَوْلَى

शुक्र अदा करने और फ़रमाँवरदारी की तरफ़ माइल हो और यह समझ ले कि अल्लाह तआला की अदगिन नेअमतेँ उस पर हैं. हदीस शरीफ़ में है सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि यह सूरत मैंने जिन्नान को सुनाई, वो तुमसे अच्छा जवाब देते थे. जब मैं आयत "तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे" पढ़ता, वो कहते थे रब हमार हम तेरी किसी नेअमत को नहीं झुटलाते, तुझे हम्द है. (तिर्मिज़ी)

(१३) यानी सूखी मिट्टी से जो बजाते से बजे और कोई चीज़ खरखराती आवाज़ दे. फिर उस मिट्टी का तर किया कि वह गार की तरह हो गई फिर उसके गलाया कि वह काली कीच तरह हो गई.

(१४) यानी खालिस बगर धुएँ वाले शोले से.

(१५) दोनों पूरव और दोनों पच्छिम से मुराद सूरज के उदय होने के दोनों स्थान हैं गर्मी के भी और जाड़े के भी. इसी तरह अस्त होने के भी दोनों स्थान हैं.

(१६) मीठा और खारी.

(१७) न उनके बीच ज़ाहिर में कोई दीवार न कोई रोक.

(१८) अल्लाह तआला की कुदमत से.

(१९) हर एक अपनी सीमा पर रहता है और किसी का स्वाद नहीं बदलता.

(२०) जिन चीज़ों से वो किश्तियाँ बनाई गई वो भी अल्लाह तआला ने पैदा कीं और उनको तर्क़ीब देने और किश्ती बनाने और सज्जाई करने की अक्ल भी अल्लाह तआला ने पैदा की और दरियाओं में उन किश्तियों का चलना और तैरना यह सब अल्लाह तआला की कुदमत से है.

सूरए रहमान - दूसरा रूकू

(१) हर जानदार बरीरह हलाक होने वाला है.

(२) कि वह सृष्टि के नाश के बाद उन्हें ज़िन्दा करेगा और हमेशा की ज़िन्दीगी अता करेगा और इमानदारों पर तुम्हो करम करेगा.

(३) फ़रिश्ते हों या जिन्न या इन्सात या और कोई प्राणी, कोई भी उससे बेतियाज़ नहीं. सब उसकी महस्वानी के मोहनाज़ हैं और हर सूरत में उसकी वाग्गाह में सवाली.

दिन एक काम है^(४) (२९) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(५) (३०) जब सब काम निपटाकर हम तुम्हारे हिसाब का क़स्द फ़रमाते हैं ऐ दोनों भारी ग़िरोह^(६) (३१) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(७) (३२) ऐ जिन्न व इन्स के ग़िरोह, अगर तुम से हो सके कि आसमानों और ज़मीन के किनारों से निकल जाओ तो निकल जाओ, जहाँ निकल कर जाओगे उसी की सल्लनत है^(८) (३३) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(९) (३४) तुम पर^(१०) छोड़ी जाएगी वेंधुएं की आग की लपट और बेलपट का काला धुआं^(११) तो फिर बदला न ले सकोगे^(१२) (३५) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(१३) (३६) फिर जब आसमान फट जाएगा तो गुलाब के फूल सा हो जाएगा^(१४) जैसे सुर्ख नरी (वक़रे की रंगी हुई खाल) (३७) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(१५) (३८) तो उस दिन^(१६) गुनाहगार के गुनाह की पूछ न होगी किसी आदमी और जिन्न से^(१७) (३९) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(१८) (४०) मुजरिम अपने चेहरे से पहचाने जाएंगे^(१९) (४१) तो माथा और पाँव पकड़ कर जहन्नम में डाले जाएंगे^(२०) (४२) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे^(२१) (४३) फेरे यह है वह जहन्नम जिसे मुजरिम झुटलाते हैं^(२२) (४३) फेरे

كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا شُكِّرُوا بِكُمْ
سَفَرُكُمْ لَكُمْ آيَةُ الْفَقْلِ ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا
شُكِّرُوا بِكُمْ ۖ لِيَعْلَمَ الْحَيُّ وَالْإِنْسَانُ إِنِ اسْتَطَاعَ
أَنْ يَنْفَعُ وَأَنْ يَضُرَّ ۚ وَتَنْفَعُونَ إِلَّا لِسُلْطَانٍ ۖ فَيَا أَيُّهَا
الَّذِينَ كَفَرُوا شُكِّرُوا بِكُمْ ۖ يُرْسَلُ عَلَيْكُمْ شَوَاطِلٌ مِنْ
ثَارٍ وَخَسَسَ فَلَا تُنْتَصِرُونَ ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا
شُكِّرُوا بِكُمْ ۖ فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً
كَالدِّهَانِ ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا شُكِّرُوا بِكُمْ
فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ۖ
فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا شُكِّرُوا بِكُمْ ۖ يُعْرِفُ الْجَوْنُ مِنْ بَيْنِهِمْ
فَيُؤْخَذُ بِالْوِثَاقِ الْأَقْدَامِ ۖ فَيَا أَيُّهَا
الَّذِينَ كَفَرُوا شُكِّرُوا بِكُمْ ۖ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا

مَذَل

(४) यानी वह हर वक़्त अपनी कुदरत के निशान ज़ाहिर फ़रमाता है किसी को रोज़ी देता है, किसी को मारता है, किसी को ज़िलाता है, किसी को इज़ज़त देता है, किसी को ज़िल्लत, किसी को ग़नी करता है, किसी को मोहताज, किसी के गुनाह वग़ैरा है, किसी की तफ़्तीफ़ दूर करता है, कहा गया है कि यह आयत यहूदियों के रूढ़ में उतरी जो कहते थे कि अल्लाह तआला सरीक़ के दिन कोई काम नहीं करता, उनके क़ौल का ख़ुला रूढ़ फ़रमाया गया, कहते हैं कि एक बादशाह ने अपने वज़ीर से इस आयत के मानी पूछे, उसने एक दिन का समय मांगा और बड़ी चिन्ता और दुख की हालत में अपने मक़ान पर आया, उसके एक हथेली गुलाम ने वज़ीर को पेशान देखकर कहा ऐ मेरे मालिक आपको क्या मुसीबत पेश आई, वज़ीर ने बयान किया तो गुलाम ने कहा कि इसके मानी में बादशाह को समझा दूंगा, वज़ीर ने उसको बादशाह के सामने पेश किया तो गुलाम ने कहा ऐ बादशाह अल्लाह की शान यह है कि वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में और मुर्दे से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दे को और बीमार को स्वास्थ देता है और स्वास्थ को बीमार करता है, मुसीबत ज़दा को ग़िहाई देता है और बेग़मों को मुसीबत में जकड़ता है, इज़ज़त वालों को ज़लील करता है और ज़लीलों को इज़ज़त देता है, मालदारों को मोहताज करता है, मोहताजों को मालदार, बादशाह ने गुलाम का जवाब पसन्द किया और वज़ीर को हुक़्म दिया कि गुलाम को बिज़ारत का ख़िलअत पहनाए, गुलाम ने वज़ीर से कहा ऐ आज्ञा यह भी अल्लाह की एक शान है,

(५) जिन्न व इन्स के,

(६) तुम उससे कहीं भाग नहीं सकते,

(७) क़्यामत के दिन जब तुम क़ब्रों से निकलोगे,

(८) इमाम अहमद रज़ा ने फ़रमाया लपट में धुँवाँ हो तो उसके सब हिस्से जलाने वाले न होंगे कि ज़मीन के हिस्से शामिल हैं जिनसे धुँवाँ बनता है और धुँवे में लपट हो तो वह पूरा सियाह और अंधेरा न होगा कि लपट की रंगत शामिल है, उक्थ वेंधुओं की लपट भेजी जाएगी जिसके सब हिस्से जलाने वाले होंगे और बेलपट का धुँवाँ जो सूरत काला अंधेरा और उसी के क़स्म की पनाह...

(९) उस अज़ाब से न बच सकोगे और आपस में एक दूसरे की मदद न कर सकोगे बल्कि यह लपट और धुँवाँ तुम्हें मेहशर की तरफ़ ले जाएंगे, पहले से इसकी ख़बर दे देना यह भी अल्लाह तआला का क़रम है ताकि उसकी नाफ़रमानी से बाज़ रह कर अपने आपको उस बला से बचा सको,

(१०) कि जगह जगह से अक्र और रंगत का मुज़्र,

(११) यानी जबकि मुर्दे क़ब्रों से उठाए जाएंगे और आसमान फटेगा,

(१२) उस ग़ज़ फ़रिश्ते मुजरिमों से पूछेंगे नहीं, उनकी सूरत ही देखकर पहचान लेंगे, और सबाल दूसरे वक़्त होगा जब मंदाने मेहशर

करेंगे इसमें और इन्तिहा के जलते खोलते पानी में (४४) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे (४५)

तीसरा रूकू

और जो अपने रब के हुज़ूर (समक्ष) खड़े होने से डरे (४५) उसके लिये दो जन्नतें हैं (४६) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे (४७) बहुत सी डालों वालीयाँ (४८) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे (४९) उनमें दो चश्मे बहते हैं (५०) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे (५१) उनमें हर मेवा दो दो क्रिस्म का (५२) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे (५३) और ऐसे विछोनों पर तकिया लगाए जिनका अस्तर कनादीज़ का (५४) और दोनों के मेवे इतने झुके हुए कि नीचे से चुन लो (५५) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे (५६) उन विछोनों पर वो औरतें हैं कि शौहर के सिवा किसी को आँख उठा कर नहीं देखती (५७) उनसे पहले उन्हें न छुआ किसी आदमी और न जिन्न ने (५८) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे (५९) गोया वो लाल और याकूत और मूंगा हैं (६०) तो अपने रब की कौन सी

الْمُجْرِمُونَ ۖ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَبِيبٍ ۚ إِنَّ ۖ
فِي آتِ الْآءِ رَبِّكُمْ ۖ شَكَدْتُمْ ۖ وَلَسْنَا خَافَ ۖ
مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّاتٍ ۖ فِي آتِ الْآءِ رَبِّكُمْ ۖ شَكَدْتُمْ ۖ
ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ۖ فِي آتِ الْآءِ رَبِّكُمْ ۖ تَكْذِبُونَ ۖ
فِيهِمَا عَيْنِينَ تَجْرِيانِ ۖ فِي آتِ الْآءِ رَبِّكُمْ ۖ
شَكَدْتُمْ ۖ فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ۖ
فِي آتِ الْآءِ رَبِّكُمْ ۖ شَكَدْتُمْ ۖ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ
بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۖ
فِي آتِ الْآءِ رَبِّكُمْ ۖ شَكَدْتُمْ ۖ فِيهِمَا قُصْرَتُ
الْطَّرِيفِ ۖ لَمْ يَطْمِئِنَّهُنَّ أَنَّهُ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۖ
فِي آتِ الْآءِ رَبِّكُمْ ۖ شَكَدْتُمْ ۖ كَانَتْهُنَّ أَلْيَا قُوتٍ
وَالْمُحَاجِّانِ ۖ فِي آتِ الْآءِ رَبِّكُمْ ۖ شَكَدْتُمْ ۖ
هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ۖ فِي آتِ

مَدَن

में जमा होंगे।

(१३) कि उनके मुंह काले और आँखें नीली होंगी।

(१४) पाँच पीठे के पीछे से लाख पेशानियों से मिला दिये जाएंगे और घसीट कर जहन्नम में डाले जाएंगे और यह भी कहा गया है कि कुछ लोग पेशानियों से घसीटे जाएंगे, कुछ पाँच से।

(१५) और उनसे कहा जाएगा।

(१६) कि जब जहन्नम की आग से जल भुनकर फ़रियाद करेंगे तो उन्हें जलता खोलता पानी पिलाया जाएगा और उसके अज़ाब में मुजिला किये जाएंगे। खुदा की नाफ़रमानी के इस परिणाम से आगाह करना अल्लाह की नेअमत है।

सूरए रहमान - तीसरा रूकू

(१) यात्री जिसे अपने रब के हुज़ूर क़यामत के दिन मेहशर के मैदान में हिस्सा के लिये खड़े होने का डर हो और वह गुनाह छोड़ दे और अल्लाह के अहक़ाम पर अमल करे।

(२) जन्नते अदन और जन्नते नूर और यह भी कहा गया है कि एक जन्नत रब से डरने का सिल्ला और एक चासना त्यागने का इनाम।

(३) और हर डाली में क्रिस्म क्रिस्म के मेवे।

(४) एक भींट पानी का और एक पवित्र शराब का या एक तस्वीम दूसरा सलसबील।

(५) यात्री संगीत रेशम का जब अस्तर का यह हाल है तो अबरा कैसा होगा, सुक़ानल्लाह !

(६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि दरख़्त इतना करीब होगा कि अल्लाह तआला के प्यारे खड़े बैठे उसका मेवा चुन लेंगे।

(७) जन्नती बीवियाँ अपने शौहर से कहेंगी मुझे अपने रब के इज़्ज़तों जलाल की क़सम, जन्नत में मुझे काँई चीज़ तुझ से ज़्यादा अच्छी नहीं मालूम होती, तो उस खुदा की हम्द है जिसने तुझे मेरा शौहर किया और मुझे तेरी बीवी बनाया।

(८) सफ़ाई और खुशगंभी में हदीस शरीफ़ में है कि जन्नती हूरों के शरीर की नफ़ासत का यह हाल है कि उनकी पिंडली का गूदा इस तरह नज़र आता है जिस तरह विल्लौर की सुराही में लाल शराब।

नेअमत झुटलाओगे(५९) नेकी का बदला क्या है मगर नेकी(५९)(६०) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे(६१) और इनके सिवा दो जन्नतें और हैं(५९)(६२) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे(६३) निहायत सब्ज़ी से सियाही की झलक दे रही है(६४) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे(६५) उनमें दो चशमे हैं छलकते हुए(६६) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे(६७) उनमें मेवे और खजूरें और अनार हैं(६८) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे(६९) उनमें औरते हैं आदत की नेक, सूरत की अच्छी(७०) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे(७१) हूरें हैं खैमों में पर्दा नशीन(७२) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे(७३) उनसे पहले उन्हें हाथ न लगाया किसी आदमी और न जिन्न ने(७४) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे(७५) तकिया लगाए हुए सब्ज़ विछौनों और मुनक्कश खूबसूरत चांदनियों पर(७६) तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे(७७) बड़ी वरकत वाला है तुम्हारे रब का नाम जो अज़मत और बुजुर्गी वाला(७८)

الْاٰءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝ وَ مِنْ دُوْنِهِمَا
جَنَّتَيْنِ ۝ فِىْ اَيِّ الْاٰءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝
مُدْهَمَّتَيْنِ ۝ فِىْ اَيِّ الْاٰءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝
فِيْهِمَا عَيْنِيْنَ نَّصَّاحَتِيْنَ ۝ فِىْ اَيِّ الْاٰءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبِيْنَ ۝ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ۝
فِىْ اَيِّ الْاٰءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝ فِيْهِنَّ خَيْرُ
حَسَنٍ ۝ فِىْ اَيِّ الْاٰءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝ حُورٌ
مَّقْصُوْرَاتٌ فِى الْخِيَاوَرِ ۝ فِىْ اَيِّ الْاٰءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبِيْنَ ۝ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اُنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌ ۝
فِىْ اَيِّ الْاٰءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝ مُتَكِيْنَ عَلٰٓى
رَفْرَفٍ خُضِرٍ وَعَبَقَرِيْٓةٍ حَسَنٍ ۝ فِىْ اَيِّ الْاٰءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبِيْنَ ۝ تَبَرَّكَ اَسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلَلِ
وَ الْاِكْرَامِ ۝

- (९) यानी जिसने दुनिया में नेकी की उसकी जज़ा आखिरत में अल्लाह का एहसान है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जो लाइलाहा इल्लल्लाह का कायल हो और शरीअते मुहम्मदिया पर आमिल, उसकी जज़ा जन्नत है।
- (१०) हदीस शरीफ़ में है कि दो जन्नतें तो ऐसी हैं जिनके वर्तन और सामान चाँदी के हैं और दो जन्नतें ऐसी हैं जिनके सामान और वर्तन सोने के। और एक कौल यह भी है कि पहली दो जन्नतें सोने और चाँदी की और दूसरी याफ़्त और ज़बरजद की।
- (११) कि उन खैमों से बाहर नहीं निकलती यह उनकी शराफ़त और फ़यामत है। हदीस शरीफ़ में है कि अगर जन्नती औरतों में से किसी एक की झलक ज़मीन की तरफ़ पड़ जाए तो आसमान और ज़मीन के बीच की तमाम फ़ज़ा रौशन हो जाए और खुशबू से भर जाए और उनके खैमे माँती और ज़बरजद के होंगें।

५६ - सूरए वाकिआ

सूरए वाकिआ मक्का में उतरी, इसमें ९६ आयत, तीन रूक हैं।

पहला रूक

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) जब होलंगी वह होने वाली (२) उस वक्त उसके होने में किसी इन्कार की गुन्जायश न होगी (३) किसी को पस्त करने वाली (४) किसी को बलन्दी देने वाली (५) जब ज़मीन कांपेगी थरथरा कर (६) और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे चूरा होकर (७) तो हो जाएंगे जंसे रौज़न की धूप में गुवार के बारीक ज़र्रे फैले हुए (८) और तुम तीन किस्म के हो जाओगे (९) तो दाएं तरफ़ वाले (१०) कैसे दाएं तरफ़ वाले (११) और बाई तरफ़ वाले (१२) कैसे बाई तरफ़ वाले (१३) और जो सबक़त ले गए (१४) वो तो सबक़त ही ले गए (१५) वही बारगाह के मुकर्रब हैं (१६) चैन के बाग़ों में (१७) अगलों में से एक गिरोह (१८) और पिछलों में से थोड़े (१९) जड़ाऊ ताख़्तों पर होंगे (२०) उनपर तकिया लगाए हुए आमने सामने (२१) उनके गिर्द लिये फिरेंगे (२२) हमेशा रहने वाले लड़के (२३) कूजे और आफ़तावे और जाम और आँखों के सामने बहती शराब कि उससे न उन्हें सरदर्द हो (२४) न होश में फ़र्क आए (२५) और मेवे जो पसन्द करें (२६) और

الواقعة

८५

قال شاذان

الواقعة	سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ (٩٦)	الواقعة
إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۚ لَيْسَ لَوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۖ		
خَافِضَةٌ رَافِعَةٌ ۚ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًا ۖ		
وُسِّتِ الْجِبَالُ نَسًا ۚ فَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًا ۖ		
وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ۚ فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۚ		
مَا أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۚ وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ۚ		
مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ۚ وَالشَّاقُونَ الشَّاقُونَ ۚ		
أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۚ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۚ		
ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَقْلَبِينَ ۚ وَقِيلَ لِلَّذِينَ مِنَ الْآخِرِينَ ۚ		
عَلَى سُرُرٍ مَوْضُوعَةٍ ۚ مُتَنَكِّينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ۚ		
يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّحَلَّدُونَ ۚ بِأَكْوَابٍ ۚ		
وَأَبَارِيقَ ۚ وَكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ۚ لَا يُصَدَّعُونَ		

(२७) और उनके शीहर जन्नत में ऐंश करेंगे।

५० - सूरए वाकिआ - पहला रूक

(१) सूरए वाकिआ मक्की है सिवाय आयत "अफ़-बिहाज़ल हदीसे" और आयत, "सुल्लतुम मिल्ल अबलतीना" के इस सूत्र में तीन रूक और छियानवे या सत्तानवे या तिनानवे आयतें, तीन सौ अटहत्तर कलिमे और एक हज़ार सात सौ तीन अक्षर हैं, इमाम बसवी ने एक हदीस रिवायत की है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शरख हर रात सूरए वाकिआ को पढ़े वह फ़ाकि से हमेशा मेहफूज़ रहेगा (स्वाज़िर)

(२) यात्री जब क़यामत क़ायम हो जो ज़रूर होते वाली है।

(३) जहन्नम में गिरा कर।

(४) जन्नत में दाख़िल के साथ, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जो लोग दुनिया में ऊंचे थे क़यामत उन्हें पस्त करेगी और जो दुनिया में पस्ती में थे उनके दर्जे बलन्द करेगी और यह भी कहा गया है कि मुताहगारों को पस्त करेगी और फ़रमाँबरदारों को बलन्द।

(५) यहाँ तक कि उसकी सारी इमारतें गिर जाएंगी।

(६) यानी जिनके आमालनामे उनके दाएं हाथ में दिये जाएंगे।

(७) यह उनकी शान की ताज़ीम के लिये फ़रमाया, वो बड़ी शान रखते हैं, सड़द हैं, जन्नत में दाख़िल होंगे।

(८) जिनके आमालनामे बाएं हाथों में दिये जाएंगे।

(९) यह उनकी ज़िल्लत के लिये फ़रमाया कि वो शकी हैं जहन्नम में दाख़िल होंगे।

(१०) नेकियों में।

(११) जन्नत में दाख़िल होने में, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि वो हिज़रत में पहल करने वाले हैं कि आख़िरत में जन्नत की तरफ़ पहल करेंगे, एक क़ौल यह है कि वो इस्लाम की तरफ़ पहल करने वाले हैं और एक क़ौल यह है कि वो मुहाजिरों और अन्सार हैं, जिन्होंने दोनों क़िबलों की तरफ़ नमाज़ें पढ़ीं।

(१२) यानी साबिकीन, अगलों में से बहुत हैं और पिछलों में से थोड़े और अगलों में से मुराद या तो पहली उम्मत हैं हज़रत आदम

परिन्दों का गोश्त जो चाहें^(१५)॥२१॥ और बड़ी आँख वालियाँ हूँ^(१६)॥२२॥ जैसे छुपे रखे हुए मोती^(१७)॥२३॥ सिला उनके कर्मों का^(१८)॥२४॥ उसमें न सुनेंगे न कोई वेकार बात न गुनहगारी^(१९)॥२५॥ हाँ यह कहना होगा सलाम सलाम^(२०)॥२६॥ और दाहिनी तरफ वाले, कैसे दाहिनी तरफ वाले^(२१)॥२७॥ बेकाँटे की बेरियों में^(२२)॥२८॥ और केले के गुच्छों में^(२३)॥२९॥ और हमेशा के साथ में^(२४)॥३०॥ और हमेशा जारी पानी में^(२५)॥३१॥ और बहुत से मेवों में^(२६)॥३२॥ जो न खत्म हों^(२७) और न रोके जाएँ^(२८)॥३३॥ और वलन्द विछौनों में^(२९)॥३४॥ बेशक हमने उन औरतों को अच्छे उठान उठाया^(३०)॥३५॥ तो उन्हें बनाया कुवारियाँ^(३१)॥३६॥ अपने शौहर पर प्यारियाँ, उन्हें प्यार दिलातियाँ एक उम्र वालियाँ^(३२)॥३७॥ दाई तरफ वालों के लिये^(३३)॥३८॥

दूसरा सूक़

अगलों में से एक गिरोह^(३५)॥३९॥ और पिछलों में से एक गिरोह^(४०)॥४०॥ और बाई तरफ वाले^(४१) कैसे बाई तरफ वाले^(४२)॥४१॥ जलती हवा और खोलते पानी में^(४३)॥४२॥ और जलते धुँए की छाँव में^(४४)॥४३॥ जो न ठण्डी न इज्जत

عَنْهَا وَلَا يُزْنُونَ ۖ وَكَاهِنَةٌ مِّمَّا يَتَخَبَّرُونَ ۖ
وَلَحْمٌ طَيْرٍ مِّمَّا يَبْنَتُهُونَ ۖ وَخَوْرٌ عَيْنٍ ۖ
كَامْشَالُ الْوُلُوْءِ الْمَكْنُونِ ۖ جَزَاءٌ بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۖ لَا يَسْعَوْنَ فِيْهَا كَعَمَلِ وَلَا تَأْتِيْهَا
إِلَّا قَبِيْلًا سَلْمًا سَلْمًا ۖ وَأَصْحَبُ الْيَمِيْنِ ۖ مَا
أَصْحَبُ الْيَمِيْنِ ۖ فِي سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۖ وَطَلْحٍ
مَّنْصُوْدٍ ۖ وَظِلٍّ مَّنْصُوْدٍ ۖ وَمَاءٍ مَّسْكُوْبٍ ۖ وَ
فَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۖ لَا مَقْطُوْعَةٍ وَلَا مَمْنُوْعَةٍ ۖ
وَقُرْشٍ مَّرْقُوْعَةٍ ۖ إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنْشَاءً ۖ
فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ۖ عُرْبًا ۖ أَثَرَابًا ۖ لِأَصْحَبِ
الْيَمِيْنِ ۖ ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَوَّلِيْنَ ۖ وَثَلَاثَةٌ مِنَ
الْآخِرِيْنَ ۖ وَأَصْحَبُ الشِّمَالِ ۖ مَا أَصْحَبُ
الشِّمَالِ ۖ فِي سُوْمٍ وَحَبِيْمٍ ۖ وَظِلٍّ مِّنْ

अलैहिसलाम के ज़माने से हमारा हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने तक की, जैसा कि अक्सर मुफ़सिरों का क़ौल है, लेकिन यह क़ौल निहायत ज़ईफ़ है, अगरचे मुफ़सिरों ने इसका ज़ईफ़ होने के कारण में बहुत सी तौजीहान की हैं, सही बात तफ़सीर में यह है कि अगलों से उम्मत मुहम्मदिया ही के पहले लोग, मुहजिरीन व अन्सार में से जो साबिकीने अब्बलीन हैं वो भुगद हैं और पिछलों से उनके बाद वाले, हदीसों से भी इसकी ताईद होती है, मरफ़ूअ हदीस में है कि अब्बलीन व आख़िरीन यहाँ इसी उम्मत के पहले और पिछले हैं और यह भी रियायत है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि दोनों गिरोह मेरी ही उम्मत के हैं, (तफ़सीर कबीर, बहश्श-उलूम वगैरह)

- (१३) जिनमें नअल, याक़ूत, मोती औरह ज़वाहिरात जड़े होंगे.
- (१४) बड़े आगम के साथ, शान व शौक़त से एक दूसरे को देखकर खुश होंगे.
- (१५) ख़िदमत के आदाव के साथ.
- (१६) जो न मरें न बूढ़े हों न उनमें बदलाव आएँ, यह अल्लाह तआला ने जन्नत वालों की ख़िदमत के लिये जन्नत में पैदा फ़रमाए.
- (१७) दुनिया की शराब के विपरीत कि उसके पीने से होश व हवास बिगड़ जाते हैं.
- (१८) क़ज़रत इन्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया अगर जन्नती को परिन्दों के गोश्त की ख़्वाहिश होगी तो उसकी इच्छातुसार पक्षी उड़ता हुआ सामने आएगा और रंकाबी में आकर पेश होगा, उसमें से जितना चाहे ख़ाएगा फिर वह उड़ जाएगा. (ग़्राज़िन)
- (१९) उनके लिये होंगे.
- (२०) यानी जैसा मोती सीपी में छुपा होता है कि न तो उसे किसी के हाथ ने छुआ न धूप और हवा लगी, उसकी सफ़ाई अपनी चर्म सीमा पर है, इस तरह वो हूँ अछूती होगी, यह भी रियायत है कि हूँ की मुस्कान से जन्नत में तूर चमकेगा और जब वो चलेंगी तो उनके हाथों और पाँव के ज़वरों से तक़दीस व तमज़ीद की आवाज़ें आएंगी और याक़ूती हार उनकी गर्दनो के सौंदर्य से ख़ूब हँसेंगे.
- (२१) कि दुनिया में उन्होंने फ़रमावसदारी की.
- (२२) यानी जन्नत में कोई नागवार और ग़लत बात सुनने में न आएगी.
- (२३) जन्नती आपस में एक दूसरे को सलाम करेंगे, फ़रिश्ते जन्नत वालों को सलाम करेंगे, अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी तरफ़ सलाम आएगा, यह हाल तो साबिकीन मुक़रबीन का था, इसके बाद जन्नतियों के दूसरे गिरोह असह्रावे यमीन का ज़िक़र फ़रमाया जाता है.
- (२४) उनकी अनोखी शान है कि अल्लाह के हुजूर इज्ज़त और वुजुर्गी वाले हैं.
- (२५) जिनका दरमस्त जड़ से चोटी तक फलों से भरे होंगे.
- (२६) जब कोई फल तोड़ा जाए, फ़ौरन उसकी जगह वैसे ही दो मौजूद.

की (४४) वेशक वो उससे पहले (४५) नेअमतों में थे (४५) और उस बड़े गुनाह की (४६) हठ रखते थे (४६) और कहते थे क्या जब हम मर जाएं और हड्डियाँ मिट्टी हो जाएं तो क्या जरूर हम उठाए जाएंगे (४७) और क्या हमारे अगले बाप दादा भी (४८) तुम फरमाओ वेशक सब अगले और पिछले (४९) जरूर इकट्ठे किये जाएंगे, एक जाने हुए दिन की मीआद पर (५०) फिर वेशक तुम ऐ गुमराहों (५१) झुटलाने वालों (५२) जरूर थूहड़ के पेड़ में चखाओगे (५२) फिर उससे पेट भरोगे (५३) फिर उस पर खौलता पानी पियोगे (५४) फिर ऐसा पियोगे जैसे सख्त प्यासे ऊंट पियें (५५) यह उनकी मेहमानी है इन्साफ़ के दिन (५६) हमने तुम्हें पैदा किया (५७) तो तुम क्यों नहीं सच मानते (५७) (५८) क्या तुम उसका आदमी बनाते हो या हम बनाने वाले हैं (५९) हमने तुम में मरना ठहराया (६०) और हम इससे हारे नहीं (६०)

يَحْمُومٌ ۖ لَا بَارِدٌ وَلَا كَرِيمٌ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا
قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ۚ وَكَانُوا يَقُولُونَ ۚ أَيُّذَا
عَلَىٰ الْحَنُوتِ الْعَظِيمِ ۚ وَكَانُوا يَقُولُونَ ۚ أَيُّذَا
مِثْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ وَعِظَامًا ۚ لَنَبْعُوهُنَّ ۚ
أَوَابًا ۚ وَكُنَّا الْأَوَّلُونَ ۚ قُلْ ۚ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَ
الْآخِرِينَ ۚ لَنَجْعُوهُنَّ ۚ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمِ
مَعْلُومٍ ۚ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيْهَا الضَّالُّونَ الْمَكِيدُونَ ۚ
لَأَكُونَنَّ مِنْ شَجَرٍ مِنْ زُقُومٍ ۚ فَمَا لَتَوْنَ
مِنْهَا الْبُطُونَ ۚ فَشَرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ
الْحَمِيمِ ۚ فَشَرِبُونَ شُرْبَ الْهَلِيمِ ۚ هَذَا
نَزَّلْنَاهُ يَوْمَ الدِّينِ ۚ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ فَلَوْلَا
نُصَدِّقُونَ ۚ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُنْبِئُونَ ۚ ءَأَنْتُمْ
تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ۚ نَحْنُ قَدَّرْنَا

مِنْهَا

(२७) जन्नत वाले फलों के लेने से।

(२८) जो सजे सजाए ऊंचे ऊंचे तख्तों पर होंगे और यह भी कहा गया है कि बिछौनों से मुराद औरतें हैं। इस सूरत में मानी ये होंगी कि औरतें फ़ज़ल और ज़माल में बलन्द दर्जों रखती होंगी।

(२९) जवान और उनके शीहर भी जवान और यह जवानी हमेशा कायम रहने वाली।

सूरए बाक्रिआ - दूसरा रूकू

(१) यह असहाबे यमीन के दो गिरोहों का बयान है कि वो इस उम्मत के पहले पिछले दोनों गिरोहों में से होंगे। पहले गिरोह तो असहाबे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं और पिछले उनके बाद वाले। इससे पहले रूकू में साबिकीने मुकर्रवीन की दो जमाअतों का जिक्र था और इस आयत में असहाबे यमीन के दो गिरोहों का बयान है।

(२) जिनके आमलनामे बाएं हाथ में दिये जाएंगे।

(३) उनका हाल शकावत में अजीब है। उनके अज़ाब का बयान फ़रमाया जाता है कि वो इस हाल में होंगे।

(४) जो अत्यन्त काला और अंधेरा होगा।

(५) दुनिया के अन्दर।

(६) यानी शिर्क की।

(७) वह क़यामत का दिन है।

(८) सच्चाई की राह से बहकने वालों और हक़ को।

(९) उनपर ऐसी भूल मुसल्लत की जाएगी कि वो बेचैन होकर जहन्नम का जलता थूहड़ खाएंगे फिर जब उससे पेट भर लेंगे तो उन पर प्यास मुसल्लत की जाएगी जिससे बेताब होकर ऐसा खौलता पानी पियेंगे जो आँतें काट डालेगा।

(१०) नेस्त से हस्त किया यानी शून्य से अस्तित्व में लाया।

(११) मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को।

(१२) औरतों के गर्भ में।

(१३) कि तुम्हें कां इन्सानी सूरत देते हैं ज़िन्दगी अता फ़रमाते हैं तो मुद्दों को ज़िन्दा करना हमारी कुन्दरत से क्या दूर है।

(१४) अपनी हिकमत और मर्जी के अनुसार उन्हें विभिन्न रस्खों। कोई बचपन ही में मरजाता है कोई जवान होकर, कोई अघेड़ उम्र

कि तुम जैसे और बदल दें और तुम्हारी सूरतें वह कर दें जिसकी तुम्हें खबर नहीं^(१५) (६१) और वेशक तुम जान चुके हो पहली उठान^(१६) फिर क्यों नहीं सोचते^(१७) (६२) तो भला बताओ तो जो बाते हो^(१८) (६३) क्या तुम उसकी खेती बनाते हो या हम बनाने वाले हैं^(१९) (६४) हम चाहें तो^(२०) उसे रौंदन (पामाल) कर दें^(२०) फिर तुम बातें बनाते रह जाओ^(२१) (६५) कि हम पर चटी पड़ी^(२२) (६६) बल्कि हम वेनसीव रहे^(२३) (६७) तो भला बताओ तो वह पानी जो पीते हो^(२४) क्या तुमने उसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले^(२५) (६८) हम चाहें तो उसे खारी कर दें^(२६) फिर क्यों नहीं शुक्र करते^(२७) (७०) तो भला बताओ तो वह आग जो तुम रौशन करते हो^(२८) (७१) क्या तुमने उसका पेड़ पैदा किया^(२९) या हम हैं पैदा करने वाले^(३०) (७२) हमने उसे^(३१) जहन्नम का यादगार बनाया^(३१) और जंगल में मुसाफिरों का फायदा^(३२) (७३) तो ऐ मेहबूब तुम पाकी वालो अपने अज़मत वाले रब के नाम की^(३३) (७४)

तीसरा रुकू

तो मुझे कसम है उन जगहों की जहाँ तारे डूबते हैं^(३४) (७५)

يَبْكُمُ امُوتَ وَمَا نَحْنُ بِمُسَوِّقِينَ ۚ عَلَىٰ اَن
تَبْدِلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۚ
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْاُولٰٓئِ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۚ
اَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ۚ اَءَانتُمْ تَزْرَعُونَهَا اَمْ
نَحْنُ الزَّارِعُونَ ۚ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا
فَقُلْتُمْ تَفْكُهْوُونَ ۚ اِنَّا لَمُغْرَمُونَ ۚ بَلْ نَحْنُ
مَحْرُومُونَ ۚ اَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۚ
اَآَنْتُمْ اَنْزَلْنَاهُ مِنَ الْمَزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ۚ
لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۚ
اَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ۚ اَآَنْتُمْ اَنْشَأْتُمْ
شَجَرَتَهَا اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُونَ ۚ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا
تَذْكِرَةً ۚ وَمَتَاعًا لِّلْمُقْوِينَ ۚ فَسَبِّحْ بِاسْمِ
رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۚ فَلَا اُفْسُ ۚ بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ ۚ

مَنْ

में, कोई बुढ़ापे तक पहुंचता है, जो हम मुकद्दर करते हैं वही होता है.

(१५) यानी मसख्र कर्क बन्दर सूअर वगैरह की सूरत बनादी यह सब हमारी क़ुदरत में है.

(१६) कि हमने तुम्हें शून्य से अस्तित्व में लाया.

(१७) कि जो नस्त को हस्त कर सकता है वह यक़ीनन मुर्दे को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है.

(१८) इसमें शक नहीं कि बालें बनाना और उसमें दाँने पैदा करना अल्लाह तआला ही का काम है और किसी का नहीं.

(१९) जो तुम बाते हो.

(२०) ख़ुश्क घास चूरा चूरा जो किसी काम को न रहे.

(२१) आश्चर्य चकित, शर्मिन्दा और दुखी.

(२२) हमारा माल बेकार जाया हो गया.

(२३) अपनी भरपूर क़ुदरत से.

(२४) कि कोई पी न सके.

(२५) अल्लाह तआला की नेअमत और उसके एहसान और करम का.

(२६) दो गीली लकड़ियाँ से जिनको ज़न्द व ज़न्द कहते हैं उनके रगड़ने से आग निकलती है.

(२७) मसख़ों ऐफ़र जिनसे ज़न्द व ज़िन्दा ली जाती है.

(२८) यानी आग को.

(२९) कि देखने वाला उसको देखकर जहन्नम की बड़ी आग को याद करे और अल्लाह तआला से और उसके अज़ाब से डरे.

(३०) कि अपने सफ़रों में उससे नफ़ा उठाते हैं.

सूरए वाक़िआ - तीसरा रुकू

(१) कि बां क़ुदरत के जुहूर और अल्लाह के जलाल के मक़ाम हैं.

और तुम समझो तो यह बड़ी कसम है (७६) बेशक यह इज़्ज़त वाला कुरआन है (७७) महफूज़ नविश्ते में (७८) उसे न छुए मगर बावजू (७९) उतारा हुआ है सारे जगत के रव का (८०) तो क्या इस बात में तुम सुस्ती करते हो (८१) और अपना हिस्सा यह रखते हो कि झुटलाते हो (८२) फिर क्यों न हो जब जान गले तक पहुंचे (८३) और तुम (८४) उस वक़्त देख रहे हो (८५) और हम (८६) उसके ज़्यादा पास हैं तुमसे मगर तुम्हें निगाह नहीं (८७) तो क्यों न हुआ अगर तुम्हें बदला मिलना नहीं (८८) कि उसे लौटा लाते अगर तुम सच्चे हो (८९) फिर वह मरने वाला अगर नज़्दीकों में से है (९०) तो राहत है और फूल (९१) और चैन के वाग (९२) और अगर (९३) दाई तरफ़ वालों से हो (९४) तो ऐ मेहबूब तुम पर सलाम हो दाई तरफ़ वालो से (९५) और अगर (९६) झुटलाने वाले गुमराहों में से हो (९७) तो उसकी मेहमानी खोलता पानी (९८)

وَأَنَّهُ لَقَسَمٌ لِّوَتَلَكُمُوتٌ عَظِيمٌ ۚ إِنَّهُ لَقَرَّانٌ كَرِيمٌ ۚ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ۚ لَا يَبْصُرُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ۚ تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَفَبِهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُذْهِبُونَ ۚ وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْتُمْ تُكْذِبُونَ ۚ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ۚ وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ۚ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ۚ فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۚ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ۚ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْأُخْرَىٰ ۚ أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۚ فَسَلَامٌ لَّكَ مِنَ الْأُصْحَابِ الْيَمِينِ ۚ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمَكْذِبِينَ ۚ الضَّالِّينَ ۚ فَتَنَزَّلُ مِنْ حَمِيمٍ ۚ وَتَصْلِيَةٌ

مَنْ

- (२) जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर उतारा गया क्योंकि यह अल्लाह का क़त्नाम और वही है।
- (३) जिसमें तबदील और तहरीफ़ यानी ग़द्दोबदल संभव नहीं।
- (४) जिसको मुरल की हाज़त हो या जिसका बुज़ू न हो या हैज़ वाली औरत या निफ़ास वाली, इनमें से किसी को कुरआन शरीफ़ का शिलाफ़ वसीरह बिना कपड़े के छूना जायज़ नहीं। वे-बुज़ू को याद पर यानी मुंह ज़वानी कुरआन शरीफ़ पढ़ना जायज़ है लेकिन वेगुस्ल और हैज़ वाली को यह भी जायज़ नहीं।
- (५) और नहीं मानते।
- (६) हज़रत हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया वह बन्दा बड़े टोटे में है जिसका हिस्सा अल्लाह की किताब की झुटलाना हो।
- (७) ऐ मैयत वालो।
- (८) अपने इल्म और कुदरत के साथ।
- (९) तुम बसीरत यानी दृष्टि नहीं रखते, तुम नहीं जानते।
- (१०) मरने के बाद उठकर।
- (११) काफ़िरों से फ़रमाया गया कि अगर तुम्हारे ख़याल के मुताबिक़ तुम्हारे मरने के बाद उठना और कर्मों का हिसाब किया जाना और जज़ा देने वाला मअबूद, यह कुछ भी न हो तो फिर क्या कारण है कि जब तुम्हारे प्यारों की रूह हलक़ तक पहुंचती है तो तुम उसे लौटा क्यों नहीं लाते और जब यह तुम्हारे बस में नहीं तो समझ लो कि क़सम अल्लाह तआला के इस्तिपार में है। उस पर ईमान लाओ। इसके बाद मख़लूक के तबकों का मौत के वक़्त के हालात और उनके दर्जों का बयान फ़रमाया।
- (१२) साबिकीन में से जिनका ज़िक़ ऊपर हो चुका तो उसके लिये।
- (१३) अबुल आलिषा ने कहा कि मुकर्रबीन से जो कोई दुनिया से जुदा होता है उसके पास जन्नत के फूलों की डाली लाई जाती है वह उसकी खुशबू लेता है तब रूह क़ब्ज़ होती है।
- (१४) आख़िरत में।
- (१५) मरने वाला।
- (१६) मानी ये हैं कि ऐ सैयदुल अम्निया सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम, आप उनका इस्लाम कुबूल फ़रमाएं और उनके लिये रज़ीदा न हों वो अल्लाह तआला के अज़ाब से सलामत और मेहफूज़ रहेंगे और आप उनका उसी हाल में देखेंगे जो आपके पास हो।
- (१७) मरने वाला।
- (१८) यानी असहाब शिमाल में से।

और भड़कती आग में धंसाना^(१९) (९४) ये वेशक आला दर्जे की यकीनी बात है (९५) तो ऐ मेहबूब तुम अपने अज़मत वाले रब के नाम की पाकी बोलो^(२०) (९६)

५७- सूरए हदीद

सूरए हदीद मदीने में उतरी, इसमें २९ आयतें, चार रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है^(२) और वही इज़्ज़त व हिकमत (बोध) वाला है^(३) उसी के लिये है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत, जिलाता है^(४) और मारता^(५) और वह सब कुछ कर सकता है^(६) वही अक्वल (आदि)^(७) वही आखिर (अनन्त)^(८) वही ज़ाहिर^(९) वही बातिन^(१०) और वही सब कुछ जानता है^(११) वही है जिसने आसमान और ज़मीन छ दिन में पैदा किये^(१२) फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा कि उसकी शान के लायक है जानता है जो ज़मीन के अन्दर जाता है^(१३) और जो उससे बाहर निकलता है^(१४) और जो आसमान से उतरता है^(१५) और जो उसमें चढ़ता है^(१६) और वह तुम्हारे साथ है^(१७) तुम कहीं हो, और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है^(१८) (९४) उसी की है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत और अल्लाह ही की तरफ़ सब कामों की

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۝ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۝ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُعَلِّمُ مَا يَلِيهِ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَرْجُفُ فِيهَا ۝ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۝ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ لَهُ

مَزْنٌ

(१९) जहन्नम की, और मरने वालों के हालात और जो मज़ामीन इस सूरत में बयान किये गए.

(२०) हदीस में है जब यह आयत उतरी "फ़सब्हे बि-इस्मे रब्बिकल अज़ीम" (सूरए वाक़िआ, आयत ७४) तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया इसको अपने रूकू में दाख़िल कर लो और जब "सब्हेहिस्मा रब्बिकल आला" (सूरए आअला, आयत १) उतरी तो फ़रमाया इस अपने सज़्दों में दाख़िल कर लो. (अबू द्राऊद) इस आयत से साबित हुआ कि रूकू और सज़्द की तम्बीह कुरआन करीम से ली गई हैं.

५७ - सूरए हदीद - पहला रूकू

- (१) सूरए हदीद मक्की है या मदीनी, इस में चार रूकू, उन्तीस आयतें, पांच सौ चवालीस कलिमे, दो हज़ार चार सौ छिहत्तर अक्षर हैं.
- (२) जानदार हो या बेजान.
- (३) मख़लूक को पैदा करके या ये मानी हैं कि मुदों को ज़िन्दा करता है.
- (४) यानी मौत देता है ज़िन्दों को.
- (५) क़दीम, हर चीज़ की पहल से पहले, यानी आदि, बेइन्दिदा, कि वह था और कुछ न था.
- (६) हर चीज़ की हलाकत और नाश होने के बाद रहने वाला यानी अनन्त, सब फ़ना होजांगे और वह हमेशा रहेगा उसके लिये अंत नहीं.
- (७) दलीलों और विशानियों से, या ये मानी कि ग़ालिब हर चीज़ पर.
- (८) ह्वास उसे समझने से मजबूर या ये मानी कि हर चीज़ का ज़मने वाला.
- (९) दुनिया के दिनों से कि पहला उनका यक़शम्बा और पिछला जुमआ है: इसने रदियल्लाहो अन्हां ने फ़रमाया कि वह अगर चाहता तो आनन फ़ानन पैदा कर देता लेकिन उसकी हिकमत यही थी कि छ को असल बनाए और उनपर मदद रखे.
- (१०) चाहे वह दाना हो या क़तरा या ख़ज़ाना हो या मुदा.
- (११) चाहे वह नवात हो या धात या और कोई चीज़.
- (१२) रहमत व अज़ाय और फ़रिश्ते और बारिश.
- (१३) आमाँल और दुआएं.
- (१४) अपने इल्म और क़ुदरत के साथ आम तौर से, और फ़ज़ल व रहमत के साथ ख़ास तौर पर.

रुजू (१५) रात को दिन के हिस्से में लाता है (१५) और दिन को रात के हिस्से में लाता है (१५) और वह दिलों की बात जानता है (१५) (६) अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी राह में कुछ खर्च करो जिसमें तुम्हें औरों का जानशीन किया (१५) तो जो तुम में ईमान लाए और उसकी राह में खर्च किया उनके लिये बड़ा सवाब है (७) और तुम्हें क्या है कि अल्लाह पर ईमान न लाओ, हालांकि ये रसूल तुम्हें बुला रहे हैं कि अपने रब पर ईमान लाओ (१५) और वेशक वह (१५) तुमसे पहले ही एहद ले चुका है (१५) अगर तुम्हें यकीन हो (८) वही है कि अपने वन्दे पर (१५) रोशन आयतें उतारता है ताकि तुम्हें अंधेरियों से (१५) उजाले की तरफ ले जाए (१५) और वेशक अल्लाह तुम पर ज़रूर मेहरवान रहम वाला (९) और तुम्हें क्या है कि अल्लाह की राह में खर्च न करो हालांकि आसमानों और ज़मीन में सब का वारिस अल्लाह ही है (१५) तुम में बराबर नहीं वो जिन्होंने मक्के की विजय से पहले खर्च और जिहाद किया (१५) वो मर्तवों में उनसे बड़े हैं जिन्होंने विजय के बाद खर्च और जिहाद किया और उन सबसे (१५) अल्लाह जन्नत का वादा

अल्लाह

८५८

क़ाल नुसख़ि

مَلِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَاللَّهُ شَرُّهُ
الْأُمُورِ ۚ يُؤْتِيهِ الْبَيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤْتِيهِ النَّهَارَ
فِي الْبَيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۚ أَمِنُوا
بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلِفِينَ
فِيهِ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ
كَبِيرٌ ۚ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۚ وَالرَّسُولُ
يَدْعُوكُمْ لِيُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِنْكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ هُوَ الَّذِي يُكْزِلُ عَلَى
عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ
إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَعَزِيزٌ ۚ وَمَا
لَكُمْ أَنْ تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ
مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلَ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً

मन्ज़ल

- (१५) तो तुम्हें कर्मों के अनुसार बदला देगा।
- (१६) इस तरह कि रात को घटाता है और दिन की मिक़दार बढ़ाता है।
- (१७) दिन घटाकर और रात की मिक़दार बढ़ा कर।
- (१८) दिल के अक़ीदे और राज़ सबको जानता है।
- (१९) जो तुमसे पहले थे और तुम्हारा जानशीन करेगा तुम्हारे बांद वालों को। मानी ये हैं कि जो माल तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं सब अल्लाह तआला के हैं उसने तुम्हें नफ़ा उठाने के लिये दे दिये हैं। तुम असल में इन के मालिक नहीं हो बल्कि नायब और वकील की तरह हो। इन्हें खुदा की राह में खर्च करो और जिस तरह नायब और वकील का मालिक के हुक़म से खर्च करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होती, तुम्हें भी कोई हिचकिचाहट न हो।
- (२०) और निशानियाँ और हज़तें पेश करते हैं और अल्लाह की किताब सुनाते हैं तो अब तुम्हें क्या उच्च हो सकता है।
- (२१) यानी अल्लाह तआला।
- (२२) जब उसने तुम्हें आदम अलैहिस्सलाम की पुश्त से निकाला था, कि अल्लाह तआला तुम्हारा रब है उसके सिवा कोई मअबूद नहीं।
- (२३) संयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर।
- (२४) कुफ़्र और शिर्क की।
- (२५) यानी ईमान के दूर की तरफ़।
- (२६) तुम हलाक हो जाओगे और माल उसी की मिल्क रह जाएंगे और तुम्हें खर्च करने का सवाब भी न मिलेगा और अगर तुम खुदा की राह में खर्च करो तो सवाब भी पाओ।
- (२७) जबकि मुसलमान कम और कमज़ोर थे, उस वक़्त जिन्होंने खर्च किया और जिहाद किया वो मुहाजिरीन व अन्सार में से साबिकीन अब्बलौन हैं, उनके हक़ में नबीय करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुममें से कोई उहद पहाड़ के बराबर सोना खर्च कर दे तो भी उनके एक मुद की बराबर न हो न आधा मुद की। मुद एक पैमाना है जिससे जौ नापे जाते हैं। कलबी ने कहा कि यह आयत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में उतरी क्योंकि आप पहले वो शम्स हैं जिसने खुदा की राह में माल खर्च किया और रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की हिमायत की।
- (२८) यानी पहले खर्च करने वालों से भी और फ़तह के बाद खर्च करने वालों से भी।

फ़रमा चुका^(२९) और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है^(३०)

दूसरा सूक़

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़^(३१) तो वह उस के लिये दून् करे और उसको इज़्जत का सबाब है^(३२) जिस दिन तुम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को^(३३) देखोगे कि उनका नूर है^(३४) उनके आगे और उनके दाएं दौड़ता है^(३५) उनसे फ़रमाया जा रहा है कि आज तुम्हारी सब से ज़्यादा खुशी की बात वो जन्नतें हैं जिनके नीचे नेहरें वहें, तुम उनमें हमेशा रहो यही बड़ी कामयाबी है^(३६) जिस दिन मुनाफ़िक़ (दोगले) मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मुसलमानों से कहेंगे कि हमें एक निगाह देखो कि हम तुम्हारे नूर से कुछ हिस्सा लें, कहा जाएगा अपने पीछे लौटो^(३७) वहाँ नूर दूँदो वो लौटेंगे, जभी उनके^(३८) बीच दीवार खड़ी कर दी जाएगी^(३९) जिसमें एक दरवाज़ा है^(४०) उसके अन्दर की तरफ़ रहमत^(४१) और उसके बाहर की तरफ़ अज़ाब^(४२) मुनाफ़िक़^(४३) मुसलमानों को पुकारेंगे क्या हम तुम्हारे साथ न थे^(४४) वो कहेंगे क्यों नहीं मगर तुमने तो अपनी जानें फ़िस्ते में डाली^(४५) और मुसलमानों की बुराई तकते और शक़ रखते^(४६) और झूटे लालच ने तुम्हें धोखा दिया^(४७) यहाँ तक कि

مِنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدِ وَقْتِنَا وَكَلَّا
وَعَدَ اللَّهُ الْحُسَيْنِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ
مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ
لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ
يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ
يُشْرِكُمْ الْيَوْمَ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ هُوَ الْقَوْزُ الْعَظِيمُ
يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا
انظُرُوا نَفْتِنِسَ مِنْ تَوْرِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا
وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُورٍ لَهُ
بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ
الْعَذَابُ يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ قَالُوا بَلَى
وَكُنْتُمْ فِتْنَةً أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُكُمْ

مَنْ

(२९) अलबत्ता दर्जों में अन्तर है, फ़त्ह से पहलें ख़र्च करने वालों का दर्जा ऊंचा है।

सूरए हदीद - दूसरा सूक़

- (१) यानी खुशदिली के साथ ख़दा की राह में ख़र्च करे, इस ख़र्च करने को इस मुनासिबत से फ़र्ज़ फ़रमाया गया है कि इसपर जन्नत का वादा फ़रमाया गया है।
- (२) पुल सिरात पर।
- (३) यानी उनके ईमान और ताअत का नूर।
- (४) और जन्नत की तरफ़ उनका मार्गदर्शन करता है।
- (५) जहाँ से आए थे यानी हथ्र के मैदान की तरफ़ जहाँ हमें नूर दिया गया वहाँ बुर तलब करो या ये मानी हैं कि तुम हमारा नूर नहीं पा सकते, दूर की तलब के लिये पीछे लौट जाओ फिर वो नूर की तलाश में वापस होंगे और कुछ न पाएंगे तो दांचारा मूमिनीन की तरफ़ फ़िरेंगे।
- (६) यानी मूमिनीन और मुनाफ़िक़ीन के।
- (७) कुछ मुफ़सि़रों ने कहा कि वही अअराफ़ है।
- (८) उससे जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे।
- (९) यानी उस दीवार के अन्दरूनी जानिब जन्नत।
- (१०) उस दीवार के पीछे से।
- (११) दुनिया में नमाज़ें पढ़ते, रोज़ा रखते।
- (१२) दोगलेपन और कुफ़्र को अपना कर।
- (१३) इस्लाम में।
- (१४) और तुम बातिल उम्मीदों में रहे कि मुसलमानों पर हादसे आएंगे, वो तबाह हो जाएंगे।

अल्लाह का हुक्म आ गया^(१५) और तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर उस बड़े फ़रेबी ने घमण्डी रखा^(१६) (१४) तो आज न तुमसे कोई फ़िदिया लिया जाए^(१७) और न खुले काफ़िरों से, तुम्हारा ठिकाना आग है, वह तुम्हारी रफ़ीक़ है, और क्या ही बुरा अंजाम^(१८) क्या ईमान वालों को अभी वह वक़्त न आया कि उनके दिल झुक जाएं अल्लाह की याद और उस हक़ के लिये जो उतरा^(१९) और उन जैसे न हों जिन को पहले किताब दी गई^(२०) फिर उन पर मुदत दराज़ हुई^(२१) तो उनके दिल सख़्त हो गए^(२२) और उनमें बहुत फ़ासिफ़ा हैं^(२३) (१६) जान लो कि अल्लाह ज़मीन को ज़िन्दा करता है उसके मरे पीछे^(२४) वेशक़ हमने तुम्हारे लिये निशानियाँ बयान फ़रमा दीं कि तुम्हें समझ हो^(२५) वेशक़ सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें और वो जिन्होंने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया^(२६) उनके दूने हैं और उनके लिये इज़ज़त का सबाब है^(२७) (१८) और वो जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाए वही हैं पूरे सच्चे और औरों पर^(२८) गवाह अपने रब के यहाँ, उनके लिये

وَعَزَّيْتُمْ الْأَمَانِي حَتَّى جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَعَزَّيْتُمْ
بِاللَّهِ الْعَرُّورُ ۖ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ
وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مَا وَلَكُمْ النَّارُ هِيَ
مَوْلَاكُمْ ۖ وَبِشِّ الْمَصِيرِ ۚ أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ
آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ
مِنَ الْحَقِّ ۖ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ۖ
وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ اْعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
يُبْخِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمْ
الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ إِنَّ الْمَصْدِقِينَ
وَالْمَصْدِقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يَضَعُفُ
لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا
بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ۖ وَالشَّهَدَاءُ

(१५) यानी मौत।

(१६) यानी शैतान ने धोखा दिया कि अल्लाह तआला बड़ा हिलम वाला है तुम पर अज़ाब न करेगा और न मरने के बाद उठवा न हिमाव, तुम उसके इस फ़रेब में आ गए।

(१७) जिसको देकर तुम अपनी जान अज़ाब से छुड़ा सको, कुछ मुफ़सिगों ने फ़रमाया यानी ये हैं कि आज न तुम से ईमान क़बूल किया जाए, न तौबह।

(१८) हज़रत उम्मुल भूमिनीन आयशा सिद्दीका रदियल्लहो अन्हा से रिवायत है कि नबीयें फ़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दोलतसग से बाहर तशरीफ़ लाए तो मुसलमानों को देखा कि आपस में हंस रहे हैं फ़रमाया तुम हंसते हो, अभी तक तुम्हारे रब की तरफ़ से अमाव नहीं आई और तुम्हारे हंसने पर यह आघत उतरी, उन्होंने अज़ा किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम, इस हंसी का कफ़ारा क्या है? फ़रमाया इतना ही राता, और उतरने वाले हक़ से मुग़द कुरआन शरीफ़ है।

(१९) यानी यहूदी और ईसाइयों के तरीक़े इज़्तिहार न करें।

(२०) यानी वह ज़माना जो उनके और उन नवियों के बीच था।

(२१) और अल्लाह की याद के लिये नर्म न हुए दुनिया की तरफ़ माइल होगए और नसीहतों उपदेशों से मुंह फ़ेरा।

(२२) दीन से निकल जाने वाले।

(२३) मेंह बग़साकर सब्ज़ा उगा कर, बाद इसके कि ख़ुश्क हो गई थी, ऐसे ही दिलों का सख़्त हो जाने के बाद नर्म करता है और उन्हें इल्म व तिक़मत से ज़िन्दीगी अता फ़रमाता है, कुछ मुफ़सिगों ने फ़रमाया कि यह मिसाल है ज़िक़ के दिलों में असर करने की जिस तरह बारिश से ज़मीन का ज़िन्दीगी हासिल होती है ऐसे ही अल्लाह के ज़िक़ से दिल ज़िन्दा होते हैं।

(२४) यानी ख़ुशदिली और नेक नियत के साथ मुस्तहिक़कों को सदक़ा दिया और ख़ुदा की राह में ख़र्च किया।

(२५) और वह ज़रूरत है।

(२६) गुज़री हुई उम्मतों में से।

उनका सवाब^(२७) और उनका नूर है^(२८) और जिन्होंने कुफ्र किया और हमारी आयतें झुटलाई वो दोज़खी हैं^(२९)

तीसरा रूकू

जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद^(१) और आराइश और तुम्हारी आपस में बढ़ाई मारना और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहना^(२) उस मेंह की तरह जिसका उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा^(३) कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रौंदन हा गया^(४) और आखिरत में सख्त अज़ाब है^(५) और अल्लाह की तरफ से बख्शिश और उसकी रज़ा^(६) और दुनिया का जीना तो नहीं मगर धोखे का माल^(७) ^(२०) बढ़कर चलो अपने रब की बख्शिश और उसी जन्नत की तरफ^(८) जिसकी चौड़ाई जैसे आसमान और ज़मीन का फैलाव^(९) तैयार हुई है उनके लिये जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाए, यह अल्लाह का फ़ज़ल है जिसे चाहे दे, और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है^(२१) नहीं पहुंचती कोई मुसीबत ज़मीन में^(२०) और

عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَحِيمِ ۖ إِعْكُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ
وَلَهُمْ زِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمِثْلِ غَبِيثٍ الْعَجِبِ الْكُفَّارِ
نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهْبِيهِ فَنَجْرُهُ مُصَفَّرًا ثُمَّ يَكُونُ
حُطَامًا ۖ وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَمَغْفِرَةٌ
مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ ۖ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
إِلَّا مَتَاعٌ الْعُرُورِ ۖ سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ
مِّنَ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ ۖ أَعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللهِ وَ
رُسُلِهِ ۚ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۖ مَا أَصَابَ مِنْ

(२७) जिसका वादा किया गया.

(२८) जो हथ में उनके साथ होगा.

सूरए हदीद - तीसरा रूकू

(१) जिस में बक़्त नष्ट करने के सिया कुछ हासिल नहीं.

(२) और उन चीज़ों में मशगूल रहना और उनसे दिल लगाता दुनिया है, लेकिन ताअत और इबादत और जो चीज़ें कि ताअत पर सहायक हों और वो आखिरत के कामों में से हैं. अब इस दुनिया की ज़िन्दगी की एक मिमाल इशारा फ़रमाई जाती है.

(३) उसकी सब्ज़ी जाती रही, पीला पड़ गया, किसी आसमानों आफ़न या ज़मीनी मुसीबत से.

(४) कण कण, यही हाल दुनिया की ज़िन्दगी का है जिसपर दुनिया का तालिब बहुत श्रुश होता है और उसके साथ बहुत सी उम्मीदें रखता है. वह निहायत जल्द गुज़र जाती है.

(५) उसके लिये जो दुनिया का तालिब हो और ज़िन्दगी लहब ब लईय में गुज़ारे और वह आखिरत की परवाह न करे ऐसा हाल काफ़िर का होता है.

(६) जिसने दुनिया को आखिरत पर प्राथमिकता न दी.

(७) यह उसके लिये है जो दुनिया ही का हो जाए और उस पर भरोसा करले और आखिरत की फ़िक्र न करे और जो शायद दुनिया में आखिरत का तालिब हो और दुनियावी सामान से भी आखिरत ही के लिये इलाक़ा रख तो उसके लिये दुनिया की कामयाबी आखिरत का ज़रिया है. हज़रत जुन्नून मिस्त्री रज़ियल्लहो अन्हो ने फ़रमाया कि ऐ मुसीदों के गिराह, दुनिया तत्व न करो और अगर तत्व करो तो उससे महबूब न करो. तोशा यहाँ से लो, आरामगाह और है.

(८) अल्लाह की रज़ा के तालिब बनो, उसकी फ़रमाँवरदारी इज़्जियार करो और उसकी इताअत बजा लाकर जन्नत की तरफ बढ़ो.

(९) यानी जन्नत की चौड़ाई ऐसी है कि सानों आसमान और सातों ज़मीनों के बरक बनाकर आपस में मिला दिय जाए जितने वो हों उतनी जन्नत की चौड़ाई, फिर लम्बाई की क्या इलिहा.

(१०) दुष्काल की, कम रपा की, पैदावार न होने की, फलों की कमी की, खेतियों के तबाह होने की.

न तुम्हारी जानों में^(११) मगर वह एक किताब में है^(१२) पहले इसके कि हम उसे पैदा करें^(१३) वेशक यह^(१४) अल्लाह को आसान है^(१५) इसलिये कि गम न खाओ उस^(१६) पर जो हाथ से जाए और खुश न हो^(१७) उसपर जो तुम को दिया^(१८) और अल्लाह को नहीं भाता कोई इतरीना बड़ाई मारने वाला^(१९) वो जो आप बुखल (कंजूसी) करें^(२०) और औरों से बुखल को कहें^(२१) और जो मुंह फेरे^(२२) तो वेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है सब खूबियों सराहा^(२३) वेशक हमने अपने रसूलों को दलीलों के साथ भेजा और उनके साथ किताब^(२४) और इन्साफ़ की तराजू उतारी^(२५) कि लोग इन्साफ़ पर कायम हों^(२६) और हमने लोहा उतारा^(२७) उसमें सख्त आंच नुकसान^(२८) और लोगों के फ़ायदे^(२९) और इसलिये कि अल्लाह देखे उसको जो वे देखे उसकी^(३०) और उसके रसूलों की मदद करता है, वेशक अल्लाह कुव्वत वाला गालिब है^(३१)^(३२)

चौथा स्कू

और वेशक हमने नूह और इब्राहीम को भेजा और उनकी औलाद में नवुव्वत और किताब रखी^(३) तो उनमें^(३) कोई

مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا إِنَّ ذَلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ لَكُمْ آيَاتُ مَا
فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا
يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ
وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّ
فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ لَقَدْ أَرْسَلْنَا
رُسُلًا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ
وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَأَنْزَلْنَا
الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ
وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مِنْ يَنْصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَ
إِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ

مَنْعَل

(११) बीमारियों की और औलाद के दुश्मनों की.

(१२) लौहे में फूज़ में.

(१३) यानी ज़मीन को या जानों का या मुसीबत को.

(१४) यानी इन बातों का कसरत के बावजूद लौह में दर्ज फ़रमाता.

(१५) दुनिया की माल मत्ता.

(१६) यानी न इतराओ.

(१७) दुनिया की माल मत्ता, और यह समझ लो कि जो अल्लाह तआला ने मुक़दर फ़रमाया है ज़रूर होता है, न ग़म करने से कोई गई हुई चीज़ वापस मिल सकती है न फ़ना होने वाली चीज़ इतराने के लायक है तो चाहिये कि खुशी की जगह शुक्र और ग़म की जगह सब्र इम्तिथार करो. ग़म से मुрад यहाँ इन्सान की वह हालत है जिसमें सब्र और अल्लाह की मर्ज़ी से राज़ी रहना और सब्र की उम्मीद बाक़ी न रहे और खुशी से वह इतराना मुрад है जिसमें मस्त होकर आदमी शुक्र से ग़ाफ़िल हो जाए और वह ग़म और रंज जिसमें बन्दा अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो और उसकी रज़ा पर राज़ी हो. ऐसे ही वह खुशी जिस पर अल्लाह तआला का शुक्र गुज़ार हो, मना नहीं है. हज़रत इमाम जअफ़रे सादिक़ रदियल्लाहो अन्हां ने फ़रमाया ऐ आदम के बेटे, किसी चीज़ के न हाने पर ग़म क्यों करता है यह उसको तरे पास वापस न लाएगा और किसी मौजूद चीज़ पर क्यों इतरता है मौत उसका तरे हाथ में न छेड़ेगी.

(१८) और अल्लाह की राह और भलाई के कामों में ख़र्च न करें और माली हुक्क की अदायगी से कासिर (असमर्थ) रहें.

(१९) इसकी तरफ़ीर में मुफ़र्रिरीयों का एक क़ौल यह भी है कि यह यहूदियों के हाल का बयान है और कंजूसी से मुрад उनका सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के उन गुणों को छुपाना है जो पिछली किताबों में दर्ज थे.

(२०) ईमान से या माल ख़र्च करने से या खुदा और रसूल की फ़रमाँवरदारी से.

(२१) अहक़ाम और क़ानून को बयान करने वाली.

(२२) तराजू से मुрад इन्साफ़ है. मानी ये हैं कि हम ने इन्साफ़ का हुक्म दिया और एक क़ौल यह है कि तराजू से वज़न का आला मी मुрад है कि हज़रत जिब्रैल अलैहिस्सलाम हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पास तराजू लाए और फ़रमाया कि अपनी क़ीम का हुक्म दीजिये कि इससे वज़न करें.

(२३) और कोई किसी का हक़ न मारे.

(२४) कुछ मुफ़र्रिरीयों ने फ़रमाया कि उतारना यहाँ पैदा करने के मानी में है. मुрад यह है कि हमने लोहा पैदा किया और लोगों के लिये ख़ानों से निकाला और उन्हें उसकी सनअत का इल्म दिया और यह भी ख़ासत है अल्लाह तआला ने चार घरक़त वाली

राह पर आया, और उनमें बहुतेरे फ़ासिक हैं (२६) फिर हमने उनके पीछे (३) उसी राह पर अपने रसूल भेजे और उनके पीछे मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उसे इन्जील अता फ़रमाई और उसके अनुयाइयों के दिल में नमी और रहमत रखी (४) और राहिव बनना (५) तो यह बात उन्होंने दीन में अपनी तरफ़ से निकाली हमने उनपर मुकर्रर न की थी हाँ यह विदअत उन्होंने अल्लाह की रज़ा चाहने को पैदा की फिर उसे न निवाहा, जैसा उसके निवाहने का हक़ था (६) तो उनके ईमान वालों को (७) हमने उनका सवाव अता किया, और उनमें से बहुतेरे (८) फ़ासिक हैं (२७) ऐ ईमान वालों (९) अल्लाह से डरो और उसके रसूल (१०) पर ईमान लाओ वह अपनी रहमत के दो हिस्से तुम्हें अता फ़रमाएगा (११) और तुम्हारे लिये नूर कर देगा (१२) जिसमें चलो और तुम्हें वरदा देगा, और अल्लाह वरदा करने वाला मेहरबान है (२८) यह इसलिये कि किताब वाले काफ़िर जान जाएं कि अल्लाह के फ़ज़ल पर उनका कुछ क़ाबू नहीं (१३) और यह कि फ़ज़ल अल्लाह के हाथ है देता है जिसे चाहे, और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है (२९)

فَمِنْهُمْ مُهْتَدٍ - وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَافِقَةً ذُرِّيَّتَهُ وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرُسُولِهِ يُؤْتِكُمْ أَجْرَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُخَفِّضْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ لَيْسَ لَكَ بِأَنْ يَكْتُمَ الْأَنْبِيَاءُ عَلَىٰ شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

مَزْن

चीज़ें आसमान से ज़मीन की तरफ़ उतारें, लोहा, आग, पानी और नमक.

(२५) और निहायत कुब्रत कि उससे जंग के हथियार बनाए जाते हैं.

(२६) कि सनअतों और हिरफ़तों में वह बहुत काम आता है. खुलासा यह कि हमने रसूलों को भेजा और उनके साथ इन चीज़ों को उतारा ताकि लोग सच्चाई और इन्साफ़ का मामला करें.

(२७) यानी उसके दीन की.

(२८) उसको किमी की मदद दरकार नहीं. दीन की मदद करने का जो हुक्म दिया गया है उन्हीं के नफ़ के लिये है.

सूरए हदीद - चौथा रूक़

(१) यानी तौरान व इन्जील और जुबूर और कुरआन.

(२) यानी उनकी सन्तान में जिनमें नबी और किताबें भजी.

(३) यानी हज़रत नूह और इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने तक एक के बाद दूसरा.

(४) कि वो आपस में एक दूसरे के साथ महब्वत और शफ़रक़्त रखते.

(५) पहाड़ों और ग़ारों और अकेले मकानों में एकान्त में बैठना और दुनिया वालों से रिश्ते तांड लेना और इबादतों में अपने ऊपर अतिरिक्त मंज़ूतें बढ़ा लेना, सन्यासी हो जाना, निकाह न करना, खुरदुर कपड़े पहना, साधारण ग़िज़ा निहायत कम मात्रा में खाना.

(६) बल्कि उसका ज़ाया कर दिया और त्रिमूर्ति और इल्हाद में गिरफ़्तार हुए और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दीन से मुंह फेर कर अपने बादशाहों के दीन में दाख़िल हुए और कुछ लोग उनमें से मसीही दीन पर क़ायम और गावित भी रहे और हुज़ूर ग़ालतन्नाहों अलैहे बसालतम के मुबारक ज़माने को पाया तो हुज़ूर पर ईमान भी लाए. इस आयत से मालूम हुआ कि विदअत यानी दीन में किमी नई बात का निकालना, अगर वह बात नेक हो और उससे अल्लाह की रज़ा मकसूद हो, तो बेहतर है, उसपर सवाव मिलता है और उसका जारी रखना चाहिये. ऐसी विदअत को विदअते हसना कहते हैं आनवना दीन में वुरी बात निकालना विदअते सैइया कहलाता है और वह ममत्रूअ और नाजायज़ है. और विदअते सैइया हदीस शरीफ़ में वह बताई गई है जो सुन्नत के ख़िलाफ़ हो उसके निकालने से कोई सुन्नत उठ जाए. इसमें हज़रतों मसअलों का फ़ैसला हो जाता है. जिनमें आजकल लोग इख़िलाफ़ करते हैं और अपनी हवाए तफ़्फ़ीरी से ऐसे भले कामों को विदअत बताकर मना करते हैं जिनसे दीन की तक्रियत और ताईद होती है और मुसलमानों को आख़िरत के फ़ायदे पहुंचते हैं और वो ताअतों और इबादतों में ज़ौक और शौक से मशग़ूल रहते हैं. ऐसे कामों को विदअत बताना कुरआने मजीद की इस आयत के ख़िलाफ़ है.

(७) जो दीन पर क़ायम रहे थे.

- (८) जिन्होंने सन्यास का छोड़ दिया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दीन से कट गए.
- (९) हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर. यह खिताब किताब वालों को है उनसे फ़रमाया जाता है.
- (१०) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
- (११) यानी तुम्हें दुगना अन्न देगा क्योंकि तुम पहली किताब और पहले नबी पर ईमान लाए और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और कुरआने पाक पर भी.
- (१२) मिरात पर.
- (१३) वो उसमें से कुछ नहीं पायकने न दुगना अन्न, न तूर, न मगफ़िरत, क्योंकि वो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान न लाए तो उनका पहले नवियों पर ईमान लाना भी लाभदायक न होगा. जब ऊपर की आयत उतरी और उसमें किताब वालों के मूमिनां का सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ऊपर ईमान लाने पर दुगने अन्न का वादा दिया गया तो पहले किताब के काफ़िगों ने कहा कि अगर हम हज़र पर ईमान लाएं तो दुगना अन्न मिले और न लाएं तो एक अन्न तब भी रहेगा. इसपर यह आयत उतरी और उनके इस शत्रुपाल को शान्त करार दिया गया.

पारा सत्ताईस समाप्त



अट्टाईसवां पारा - क़द समिअल्लाहु

५८ - सूरए मुजादलह

सूरए मुजादलह मदीने में उतरी, इसमें २२ आयतें, तीन रूकू हैं

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) वेशक अल्लाह ने सुनी उसकी बात जो तुम से अपने शौहर के मामले में वहस करती है (२) और अल्लाह से शिकायत करती है और अल्लाह तुम दोनों की बातचीत सुन रहा है, वेशक अल्लाह सुनता देखता है (३) वो जो तुम में अपनी वीबियों को अपनी माँ की जगह कह बैठते हैं (४) वो उनकी माएँ नहीं (५) उनकी माएँ तो वही हैं जिन से वो पैदा हैं (६) और वह वेशक बुरी और निरी झूठ बात कहते हैं (७) और वेशक अल्लाह ज़ख़र माफ़ करने वाला और वख़्शने वाला है (८) और वो जो अपनी वीबियों को अपनी माँ की जगह कहें (९) फिर वही करना चाहें जिस पर इतनी बड़ी बात कह चुकें (१०) तो उनपर लाज़िम है (११) एक गुलाम आज़ाद करना (१२) पहले इसके कि एक दूसरे को हाथ लगाएँ (१३) यह है जो नसीहत तुम्हें की जाती है, और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है (१४) फिर जिसे गुलाम न मिले (१५) तो लगातार दो महीने के रोज़े (१६) पहले इसके कि एक दूसरे को हाथ लगाएँ (१७) फिर जिस से रोज़े भी न हो सकें (१८) तो साठ मिस्कीनों (फ़क़ीरों) का पेट भरना (१९) यह इसलिये कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखो (२०) और ये



अट्टाईसवाँ पारा - क़द समिअल्लाहो

५८ - सूरए मुजादलह - पहला रूकू

- (१) सूरए मुजादलह मदीनी है, इसमें तीन रूकू, बाईस आयतें, चार सौ तिहत्तर कलिमें और एक हजार सात सौ बानव अक्षर हैं।
- (२) वह ख़ूल्ह बिनते सअल्यह थीं औस बिन सायित की बीबी। किसी बात पर औस ने उनसे कहा कि तू मुझ पर मेरी माँ की पुष्ट की तरह है। यह कहने के बाद औस को शर्मिन्दगी हुई। जिहललत के ज़माने में यह कलिमा तलाक़ था। औस ने कहा मेरे ख़याल में तू मुझ पर हराम हो गई। ख़ूल्ह ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर सारा हाल अर्ज़ किया कि मेरा माल ख़त्म हो चुका, माँ बाप गुज़र गए, उम्र ज्यादा होगई, बच्चे छोटे छोटे हैं, उनके बाप के पास छोड़ दूँ तो हलाक हो जाएँ, अपने साथ रखूँ तो भूख़ मर जाएँ। क्या सूत है कि मेरे और मेरे शौहर के बीच जुदाई न हो। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि तरे सिलसिले में मेरे पास कोई हुक्म नहीं है यानी अभी तक जिहारा के बारे में कोई नया हुक्म नहीं उतरा। पुराना तरीका यही है कि जिहारा से औरत हराम हो जाती है। औरत ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम, औस ने तलाक़ का शब्द न कहा, वह मेरे बच्चों का बाप है और मुझ बहुत ही प्यारा है। इसी तरह वह बारबार अर्ज़ करती रही और जवाब अपनी इच्छानुसार न पाया तो आसमान की तरफ़ सर उठाकर कहने लगी, या अल्लाह मैं तुझ से अपनी मोहताज़ी, बंकसी और परेशानी की शिकायत करती हूँ, अपने नदी पर मेरे हक़ में ऐसा हुक्म उतार जिस से मेरी मुसीबत दूर हो। हज़रत उम्मुल मुमिनीन आयशा सिदीका रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया ख़ामोश हो। देख रसूलने अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक चेहरे पर वही के आसार हैं। जब वही पूरी हो गई तो फ़रमाया, अपने शौहर को बुला। औस हाज़िर हुए तो हज़रत ने ये आयतें पढ़कर सुनाई।
- (३) यानी जिहारा करते हैं। जिहारा उसका कहने है कि अपनी बीबी को नसब वाली मेहरमात या मिज़ाई रिश्ते की औरतों के किसी ऐसे अंग से उपमा दी जाए जिसको देखना हराम है। जैसे कि बीबी से कहे कि तू मुझ पर मेरी माँ की पीठ की तरह है या बीबी के किसी अंग को जिससे वह तावीर की जाती हो या उसके शरीर और उसके अंगों को मेहरम औरतों के किसी ऐसे अंग से मिसाल दे जिसका देखना हराम है जैसे कि यह कहे कि तेरा सर या तेरा आधा बदन मेरी माँ की पीठ या उसके पेट या उसकी रान या मेरी

अल्लाह की हदें हैं^(१८) और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अज़ाब है^(१९) वेशक वो जो मुखालिफ़त करते हैं अल्लाह और उसके रसूल की, ज़लील किये गए जैसे उनसे आंगलों को ज़िल्लत दी गई^(२०) और वेशक हमने रौशन आयतें उतारीं^(२१) और काफ़िरों के लिये ख़वारी का अज़ाब है^(२२) जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा^(२३) फिर उन्हें उनके कौतुक जता देगा^(२४) अल्लाह ने उन्हें गिन रखा है और वो भूल गए^(२५) और हर चीज़ अल्लाह के सामने है^(२६)

दूसरा सूक़

ऐ सुनने वाले क्या तूने न देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में^(१) जहाँ कहीं तीन लोगों की कानाफ़ूसी हो^(२) तो चौथा वह मौजूद है^(३) और पाँच की^(४) तो छटा वह^(५) और न उससे कम^(६) और न उससे ज़्यादा की मगर यह कि वह उनके साथ है^(७) जहाँ कहीं हों, फिर उन्हें क़यामत के दिन बतादेगा जो कुछ उन्होंने किया, वेशक अल्लाह सब कुछ जानता है^(८) क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्हें बुरी मशविरत से मना फ़रमाया गया था फिर वही करते हैं^(९) जिसकी मुमानिअत हुई थी और आपस में गुनाह और हद से बढ़ने^(१०) और रसूल की नाफ़रमानी के मशविरे करते हैं^(११) और जब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर होते हैं तो उन लफ़्ज़ों से तुम्हें मुजरा करते हैं जो लफ़्ज़ अल्लाह ने तुम्हारे एज़ाज़ में न कहे^(१२) और अपने

اللَّهُ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُكَادُونَ
اللَّهُ وَرَسُولَهُ كَبِتُوا كَمَا كَبَتِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ
أَنْزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ
أَخْصَصَهُ اللَّهُ لِمَنْ يُشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝
الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هُمْ يَكْتُمُونَ ۚ وَمَا فِي الْأَرْضِ
مَا يَكُونُ مِنْ نَجْوَى ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُمْ رَاِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ
إِلَّا هُمْ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَى مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرُ إِلَّا هُمْ
مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هُمْ
يَكْتُمُونَ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا كَانُوا عَنِ اللَّهِ وَيَنْجَوْنَ
بِالْإِيمَانِ وَالْعَدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ ۚ وَإِذَا جَاءُوكَ
حَبْرًا بِمَا لَمْ يُحِبِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ

مَنْكُ

बहन या फुफ़ी या दूध पिलाने वाली की पीठ या पेट की तरह है तो ऐसा कहना ज़िहार कहलाता है।

(४) यह कहने से वो माँ नहीं हो गई।

(५) और दूध पिलाने वालीयाँ दूध पिलाने के कारण माँ के हुक्म में हैं और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुकद्दस बीबीयाँ कमाल हुर्मत के कारण माँ वल्कि माओं से बढ़कर हैं।

(६) जो बीबी को माँ कहते हैं उसको किसी तरह माँ के साथ मिसाल देना ठीक नहीं।

(७) यानी उनसे ज़िहार करें। इस आयत से मालूम हुआ कि दासी से ज़िहार नहीं होता। अगर उसका महरम औरतां से तश्बीह दे तो मुज़ाहिर न होगा।

(८) यानी इस ज़िहार का तोड़ देना और हुर्मत को उठा देना।

(९) कफ़रारा ज़िहार का, लिहाज़ा उनपर ज़रूरी है।

(१०) चाहे वह मूमिन हो या काफ़िर, छोटा हो या बड़ा, मर्द हो या औरत, अलबत्ता मुदम्बर और उम्मे बलद और ऐसा मक़ातिब जायज़ नहीं जिसने किताब के बदल में से कुछ अदा किया हो।

(११) इससे मालूम हुआ कि इस कफ़रारे के देने से पहले बती (संभोग) और उसके दवाई (संभोग इच्छुक काम) हराम हैं।

(१२) उसका कफ़रारा।

(१३) जुड़े हुए इसतरह कि न उन दो महीनों के बीच रमज़ान आए न उन पाँच दिनों में से कोई दिन आए जिनका रोज़ा मना है, और न किसी उज्र से, या बग़ैर उज्र के, दरमियान कोई रोज़ा छोड़ा जाए। अगर ऐसा हुआ तो नए सिर से रोज़े रखने पड़ेंगे।

(१४) यानी रोज़ों से जो कफ़रारा दिया जाए उसका भी हमबिस्तरी से पहले होना ज़रूरी है और जब तक वो रोज़े पूरे हों, शहर बीची में से किसी को हाथ न लगाए।

(१५) यानी उसे रोज़े रखने की ताक़त ही न हो, बुढ़ापे या बीमारी के कारण, या रोज़े तो रख सकता हो मगर लगातार एक के बाद एक न रख सकता हो।

(१६) यानी साठ मिसकीनां का ख़ाना देना और यह इसतरह कि हर मिसकीन को निस्फ़ साअ गेहूँ या एक साअ ख़जूर या जौ दे और अगर मिसकीनों को उसकी कीमत दी या सुक़ शाम दोनों समय उन्हें पेट भर ख़ाना खिला दिया तब भी जायज़ है। इस कफ़रारे में यह शर्त नहीं कि एक दूसरे का हाथ लगाने से पहले हो, यहाँ तक कि अगर ख़ाना खिलाने के बीच में शहर और बीची में कुर्बत

दिलों में कहते हैं हमें अल्लाह अज़ाब क्यों नहीं करता हमारे इस कहने पर^(१३) उन्हें जहन्नम वस है, उसमें धंसेंगे तो क्या ही बुरा अंजाम^(१८) ऐ ईमान वालो तुम जब आपस में मशविरत (परामर्श) करो तो गुनाह और हद से बचने और रसूल की नाफरमानी की मशविरत न करो^(१३) और नेकी और परहेजगारी की मशविरत करो, और अल्लाह से डरो जिसकी तरफ उठाए जाओगे^(१९) वह मशविरत तो शैतान ही की तरफ से है^(१४) इसलिये कि ईमान वालों को रंज दे और वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता खुदा के हुक्म के बिना और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये^(१५)^(१०) ऐ ईमान वालो! जब तुम से कहा जाए मजलिसों में जगह दो तो जगह दो, अल्लाह तुम्हें जगह देगा^(१६) और जब कहा जाए उठ खड़े हो तो उठ खड़े हो^(१७) अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उनके जिनको इल्म दिया गया^(१८) दर्जे बलन्द फरमाएगा, और अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है^(१९) ऐ ईमान वालो ! जब तुम रसूल से कोई बात आहिस्ता अर्ज करना चाहो तो अपने अर्ज से पहले कुछ सदका दे लो^(२०) यह तुम्हारे लिये बहुत बेहतर और बहुत सुथरा है, फिर अगर तुम्हें मकरूर न हो

لَوْلَا يَعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ حَسْبُكُمْ جَهَنَّمُ يَصَافُونَ فِيهَا
فَيْسُ الْمَصِيرُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا
تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ
وَتَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ وَأَتَقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ۝ إِنَّمَا التَّجْوِسُ مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ
الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَرَرِهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ
وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ
اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ انشُرُوا فَانْشُرُوا يَرْفَعِ اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۖ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
إِذَا تَنَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْكُمْ
صَدَقَةً ۚ ذَلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَظْهَرُ ۚ وَإِنْ لَمْ تَجِدُوا

مَنْزِلَ

वाक़े हुई तो नया कफ़फ़ारा देना लाज़िम न होगा.

(१७) और खुदा और रसूल की फ़रमावशकारी करो और जिहालत के तरीके को छोड़ दो.

(१८) उनका ताड़ना और उनसे आगे बढ़ना जायज़ नहीं.

(१९) रसूलों की मुख़ालिफ़्त करने के कारण.

(२०) रसूलों की सच्चाई को प्रमाणित करने वाली.

(२१) किसी एक का बाक़ी न छोड़ेगा.

(२२) रुखा और शर्मिन्दा करने के लिये.

(२३) अपने कर्म जां दुनिया में करते थे.

सूरए मुजादलह - दूसरा रूकू

(१) उससे कुछ छुपा नहीं.

(२) और अपने राज़ आपस में कानों में कहें और अपनी बात चीत पर किसी को सूचित न होंगे.

(३) यानी अल्लाह तआला उन्हें देखता है, उनके राज़ जानता है.

(४) कानाफूसी हो.

(५) यानी अल्लाह तआला.

(६) यानी पाँच और तीन से.

(७) अपने इल्म और कुदरत से.

(८) यह अल्लाह यहूदियों और दोहरी प्रवृत्ति वाले मुनाफ़िक्कों के बारे में उतरी. वो आपस में काना फूसी करते और मुसलमानों की तरफ़ देखते जाते और आँखों से उनकी तरफ़ इशारे करते जाते ताकि मुसलमान समझें कि उनके खिलाफ़ कोई दुसी बात है और इससे उन्हें दुख हो. उनकी इस हरकत से मुसलमानों को दुख होता था और वो कहते थे कि शायद इन लोगों को हमारे उन भाइयों की निस्वत क़त्ल या हार की कोई ख़बर पहुंची जो जिहाद में गए हैं और ये उसी के बारे में बातें बताते और इशारे करते हैं. जब मुनाफ़िक्कों की ये हरकत ज़्यादा होगई और मुसलमानों ने सैयदे आलम के हुज़ूर में इसकी शिकायत की तो सैयदे आलम सल्लल्लहू अलैहे वसल्लम ने कानाफूसी करने वालों को मना फ़रमाया लेकिन वो नहीं माने और यह हरकत करते ही रहे इसपर यह आयत उतरी.

(९) गुनाह और हद से बढ़ना यह कि मक्क़री के साथ कानाफूसी करके मुसलमानों की दुख में डालने हैं.

तो अल्लाह बख्शने वाला मेहरवान है (१२) क्या तुम इससे डरे कि तुम अपनी अर्ज से पहले कुछ सदका दो (१०) फिर जब तुमने यह न किया और अल्लाह ने अपनी कृपा से तुम पर तबज्जुह फरमाई (११) तो नमाज़ कायम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल के फ़रमाँवरदार रहो, और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है (१३)

तीसरा सूक़

क्या तुमने उन्हें न देखा जो ऐसों के दोस्त हुए जिन पर अल्लाह का अज़ाब है (१) वो न तुम से न उनसे (२) वो जानकर झूठी क़सम खाते हैं (३) (१४) अल्लाह ने उनके लिये सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है, वेशक वो बहुत ही बुरे काम करते हैं (१५) उन्होंने अपनी क़समों को (१६) ढाल बना लिया है (१७) तो अल्लाह की राह से रोका (१८) तो उनके लिये ख़्तारी का अज़ाब है (१९) (१६) उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम न देंगे (२०) वो दोज़खी हैं, उन्हें उसमें हमेशा रहना (१७) जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा तो उसके हुज़ूर भी ऐसे ही क़समें खाएंगे जैसे तुम्हारे सामने खा रहे हैं (१८) और वो यह समझते हैं कि उन्होंने कुछ किया (१९) सुनते हो वेशक वही झूठे हैं (२०) (१८)

فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ أَشَقَقْتُمْ أَنْ تَقْرَبُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقْتُمْ ۖ فَإِذَا لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِمَّا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝ كُنْ تُغْنِي عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۖ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝

منزل

(१०) और रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नाफ़रमानी यह कि मना करने के बाद भी बाज़ नहीं आते और यह भी कहा गया कि उनमें एक दूसरे को राय देते थे कि रसूल की नाफ़रमानी करो।

(११) यहूदी नबीये अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास आते तो अस्सामो अलैका (तुमपर मौत हो) कहते, साम मौत को कहते हैं, नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनके जवाब में अलैकुम (और तुपर भी) फ़रमा देते।

(१२) इससे उनकी मुग़द यह थी कि अगर हुज़ूर नबी होते तो हमारी इस गुस्ताख़ी पर अल्लाह तआला हमे अज़ाब करता, अल्लाह तआला फ़रमाता है।

(१३) और जो तरीका यहूदियों और मुनाफ़िकों का है उससे बचो।

(१४) जिसमें गुनाह और हद से बढ़ना और रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नाफ़रमानी हो और शैतान अपने दोस्तों को उसपर उभारता है।

(१५) कि अल्लाह पर भरोसा करने वाला टोटे में नहीं रहता।

(१६) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बद्र में हाज़िर होने वाले सहाबा की इज़ज़त करते थे, एक रोज़ चन्द बड़ी सहाबा ऐसे वक़्त पहुंचे जबकि मजलिस शरीफ़ भर चुकी थी, उन्होंने हुज़ूर के सामने खड़े होकर सलाम अर्ज़ किया हुज़ूर ने जवाब दिया, फिर उन्होंने हाज़िरीन को सलाम किया उन्होंने जवाब दिया फिर वो इस इन्तिज़ार में खड़े रहे कि उनके लिये मजलिस शरीफ़ में जगह की जाए मगर किसी ने जगह न दी, यह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुरा लगा तो हुज़ूर ने अपने करीब बैठने वालों को उठाकर उनके लिये जगह की, उठने वालों को उठना अच्छा नहीं लगा इसपर यह आयत उतरी।

(१७) नमाज़ के या ज़िहाद के या और किसी नेक काम के लिये और इसी में ज़िक्र रसूल की ताज़ीम के लिये खड़ा होना।

(१८) अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँवरदारी के कारण।

(१९) कि उसमें रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बारगाह में हाज़िरी की ताज़ीम और फ़क्दीरों का नफ़ा है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बारगाह में जब मालदारों ने अर्ज़ मअरुज़ का सिलसिला दराज़ किया और नीबत यहाँ तक पहुंची कि फ़क्दीरों का अपनी अर्ज़ पेश करने की मौका कम मिलने लगा, तो अर्ज़ पेश करने वालों को अर्ज़ पेश करने से पहले सदका देने का हुक्म दिया गया और इस हुक्म पर हज़रत अली मुरतज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने अमल किया और एक दीनार सदका करके दस मसअले दरियाफ़्त किये अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम वफ़ा क्या है? फ़रमाया, तौहीद और तौहीद की शहादत देना, अर्ज़ किया, फ़साद क्या है? फ़रमाया, फ़ुक़ और शिर्क, अर्ज़ किया, हक़ क्या है? फ़रमाया, इस्लाम और कुरआन और विलायत, जब तुझे मिले, अर्ज़ किया, हीला क्या है? यानी तदबीर? फ़रमाया, तर्क हीला, अर्ज़ किया, मुझ पर क्या लाज़िम है? फ़रमाया, अल्लाह तआला और उसके रसूल की फ़रमाँवरदारी, अर्ज़ किया, अल्लाह तआला से दुआ कैसे माँगू? फ़रमाया, सच्चाई

उन पर शैतान गालिब आ गया तो उन्हें अल्लाह की याद भुलादी, वो शैतान के गिरोह हैं, सुनता है वेशक शैतान ही का गिरोह हार में है (१३) (१९) वेशक वो जो अल्लाह और उसक रसूल की मुखालिफ़त करते हैं, वो सबसे ज़्यादा ज़लीलों में हैं (२०) अल्लाह लिख चुका (१३) कि ज़रूर मैं गालिब आऊंगा और मेरे रसूल (१४) वेशक अल्लाह कुव्वत वाला इज़्जत वाला है (२१) तुम न पाओगे उन लोगों को जो यकीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उनसे जिन्होंने ने अल्लाह और उसके रसूल से मुखालिफ़त की (१५) अगरचे वो उनके वाप या बेटे या भाई या कुंवे वाले हों (१६) ये हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उनकी मदद की (१७) और उन्हें वाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नेहरें बहें उनमें हमेशा रहें, अल्लाह उनसे राज़ी (१८) और वो अल्लाह से राज़ी (१९) यह अल्लाह की जमाअत है सुनता है अल्लाह ही की जमाअत कामयाब है (२२)

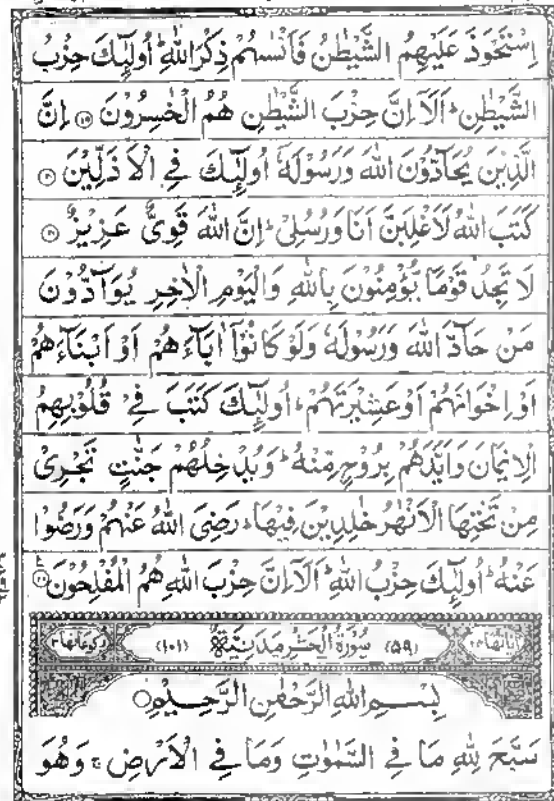
५९- सूरए हथ्र

सूरए हथ्र मदीने में उतरी, इसमें २४ आयतें, तीन रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और



और यकीन के साथ अर्ज़ किया, क्या माँगूँ? फ़रमाया, आक्रिबत अर्ज़ किया, अपनी निजात के लिये क्या करूँ? फ़रमाया, हलाल खा और सच बोल अर्ज़ किया, सुरू क्या है? फ़रमाया, ज़न्नत अर्ज़ किया, राहत क्या है? फ़रमाया, अल्लाह का दीवार जब अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो इन सवालों के जवाब से फ़ारिग हो गए तो यह हुक्म मन्सूज़ हो गया और रूयसन नाज़िल हुई और हज़रत अली के सिवा और किसी को इसपर अमल करने का वक़्त नहीं मिला (मदारिक व ख़ाज़िन) हज़रत इमाम अहमद रज़ा ने फ़रमाया, यह इसकी अस्ल है जो औलिया की मज़ारात पर तस्दीक के लिये शीरीनी ले जाते हैं।

(२०) अपनी गरीबी और नादारी के कारण।

(२१) और सड़के की पहल छोड़ने की पकड़ तुम पर से उटाली और तुमको इज़्तिहार दे दिया।

सूरए मुजादलह - तीसरा रूकू

(१) जिन लोगों पर अल्लाह तआला का ग़ज़ब है उनसे मुराद यहूदी हैं और उनसे दोस्ती करने वाले मुनाफ़िक़ यह आयत मुनाफ़िक़ों के बारे में उतरी जिन्होंने यहूदियों से दोस्ती की और उनकी ख़ैर ख़्वाही में लगे रहते और मुसलमानों के राज़ उनसे कहते।

(२) यानी न मुसलमान न यहूदी बल्कि मुनाफ़िक़ हैं बीच में लटके हुए।

(३) यह आपन अब्दुल्लाह बिन नवतल मुनाफ़िक़ के बारे में उतरी जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मजलिस में हाज़िर रहता यहाँ की बात यहूदियों के पास पहुँचाता एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दौलत सराय अक़दस में तशरीफ़ फ़रमा थं हुज़ूर ने फ़रमाया इस वक़्त एक आदमी आया जिसका दिल निहायत सम्राट और शैतान की आँखों से देखना है थोड़ी ही देर बाद अब्दुल्लाह बिन नवतल आया उसकी आख़ें नीली थीं सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उससे फ़रमाया तू और तेरे साथी हमें क्या गालियाँ देते हैं वह क्रसम ख़ाग़या कि ऐसा नहीं करता और अपने यारों को ले आया उन्होंने भी क्रसम ख़ाई कि हमने आपको गाली नहीं दी इसपर यह आयत उतरी।

(४) जो झूटी हैं।

(५) कि अपना जान माल मेहफूज़ रहे।

(६) यानी मुनाफ़िक़ों ने अपनी इस हीला साज़ी से लोगों को जिहाद से रोक़ा और कुछ मुफ़सि़सों ने कहा कि मानी यह है कि लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने से रोक़ा।

जो कुछ ज़मीन में, और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है^(१) वही है जिसने उन काफ़िर किताबियों को^(२) उनके घरों से निकाला^(३) उनके पहले हथ्र के लिये^(४) तुम्हें गुमान न था कि वो निकलेंगे^(५) और वो समझते थे कि उनके किले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, तो अल्लाह का हुक्म उनके पास आया जहाँ से उनका गुमान भी न था^(६) और उस ने उनके दिलों में रोव डाला^(७) कि अपने घर वीरान करते हैं अपने हाथों^(८) और मुसलमानों के हाथों^(९) तो इवरत लो ऐ निगाह वालो^(१०) और अगर न होता कि अल्लाह ने उनपर घर से उजड़ना लिख दिया था तो दुनिया ही में उनपर अज़ाब फ़रमाता^(११) और उनके लिये^(१२) आख़िरत में आग का अज़ाब है^(१३) यह इसलिये कि वो अल्लाह और उसके रसूल से फटे (जुदा) रहे^(१४) और जो अल्लाह और उसके रसूल से फटा रहे, तो वेशक अल्लाह का अज़ाब सख्त है^(१५) जो दरख्त तुमने काटे या उनकी जड़ों पर कायम छोड़ दिये यह सब अल्लाह की इज़ाज़त से था^(१६) और इसलिये कि फ़ासिकों को रूसवा करे^(१७) और जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को उनसे^(१८) तो तुमने उनपर न अपने घोड़े दौड़ाए थे और न ऊंट^(१९) हाँ अल्लाह अपने रसूलों के काबू में दे देता है जिसे चाहे^(२०)

الْعَرَبُ الْحَكِيمُ ۝ هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا أَنْهُمْ مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَتَتْهُمْ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ ۝ فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ ۝ وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ النَّارِ ۝ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۝ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لَيْنَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَى أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْرِجَ الْفَاسِقِينَ ۝ وَمَا أَقَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى

مَذْكُورٌ

- (७) आख़िरत में.
- (८) और क़यामत के दिन उन्हें अल्लाह के अज़ाब से न बचा सकेंगे.
- (९) कि दुनिया में मूमिन मुसलिस थे.
- (१०) यानी वो अपनी उन झूठी क़स्मों को कारआमद समझते हैं.
- (११) अपनी क़स्मों में और ऐसे झूटे कि दुनिया में भी झूट बोलते रहे और आख़िरत में भी रसूल के सामने भी और खुदा के सामने भी.
- (१२) कि जन्नत की हमेशा की नअमतों से मेहरूम और जहन्नम के अवदी अज़ाब में गिरफ़्तार.
- (१३) लौहे मेहफूज़ म.
- (१४) हुज्जत के साथ या तलवार के साथ.
- (१५) यानी मूमिनों से यह हो ही नहीं सकता और उनकी यह शान ही नहीं और ईमान इसको ग़वार ही नहीं करता कि खुदा और रसूल के दूश्मन से दोस्ती करे. इस आयत से मालूम हुआ कि बददीनों और बदमज़हबों और खुदा और रसूल की शान में गुस्ताख़ी और बेअदबी करने वालों से ताल्लुक़ात और मेलजोल जायज़ नहीं.
- (१६) चुनांचे हज़रत अबूउबैदह बिन ज़र्रह ने उहुद की जंग में अपने बाप ज़र्रह को क़त्ल किया और हज़रत अबूबक्र सिदीक़ रदियल्लाहो अन्हो ने बद्र के दिन अपने बेटे अब्दुरहमान को लड़ने के लिये पुकारा लेकिन रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें इस जंग की इज़ाज़त न दी और मुसअब बिन उमैर ने अपने भाई अब्दुल्लाह बिन उमैर को क़त्ल किया और हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्होने अपने मामूँ आस बिन हिशाम बिन मुगीरह को बद्र के दिन क़त्ल किया और हज़रत अली बिन अबी तालिब व हमज़ा व अबू उबैदह ने रबीआ के बेटों उतबह और शैबह को और बलौद बिन उतबह को बद्र में क़त्ल किया जो उनके रिश्तेदार थे. खुदा और रसूल पर ईमान लाने वालों को रिश्तेदारी का क्या लिहाज़.
- (१७) इस रूह से या अल्लाह की मदद मुराद है या ईमान या क़ुरआन या जिब्रईल या अल्लाह की रहमत या ग़ूर.
- (१८) उनके ईमान, इज़्जलास और फ़रमाँबरदारी के कारण.
- (१९) उसके रहमत और करम से.

५९ - सूरए हथ्र - पहला रुकू

- (१) सूरए हथ्र मदीने में उतरी. इसमें तीन रूकू, ३४ आयतें. ४४५ कलिमे एक हज़ार नौ सौ तेरह अक्षर हैं.
- (२) यह सूरत बनी नुज़ैर के हक़ में नज़िल हुई. ये लोग यहूदी थे. जब तबीये क़नीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीनए

तैय्यिबह में सैनिक अफ़रोज़ हुए तो उन्होंने हुज़ूर से इस शर्त पर सुलह की कि न आपक साथ होकर किसी से लड़ें, न आपसे जंग करें। जब जंग बंद में इस्लाम की जीत हुई तो बनी नुज़ैर ने कहा कि यह वही नबी हैं जिनकी सिफ़त तौरान में है। फिर जब उहद में मुसलमानों को आरिज़ी हार की सूत पेश आई तो थो शक में पड़े और उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हुज़ूर के निषाज़मन्दों के साथ दुश्मनी ज़ाहिर की। और जो मुआहिदा किया था वह तोड़ दिया और उनका एक सरदार कअब बिन अशरफ़ यहूदी चालीस यहूदी सवारों के साथ मक्कह मुकर्रमा पहुंचा और काबा मुअज़्ज़मा के पदें थाम कर कुरैश के सरदारों से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के खिलाफ़ समझौता किया। अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इस की ख़बर दे दी थी। और बनी नुज़ैर से एक ख़यानत और भी बाक़े हो चुकी थी कि उन्होंने क़िन के ऊपर से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर बुरे इरादे से एक पत्थर गिराया था। अल्लाह तआला ने हुज़ूर को ख़बरदार कर दिया और अल्लाह के फ़ज्र से हुज़ूर महफूज़ रहे। जब बनी नुज़ैर के यहूदियों ने ख़यानत की और एहद तोड़ा और कुरैश के काफ़िरों से हुज़ूर के खिलाफ़ एहद जोड़ा तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुहम्मद बिन मुसिलमा अन्सारी को हुक्म दिया और उन्होंने कअब बिन अशरफ़ को क़त्ल कर दिया। फिर हुज़ूर लश्कर के साथ बनी नुज़ैर की तरफ़ ख़ाना हुए और उनका मुहासिरा कर लिया। यह घिराव २१ दिन चला। उस बीच मुनाफ़िक़ों ने यहूदियों से हमदर्दी और मदद के बहुत से मुआहिदे किये लेकिन अल्लाह तआला ने उन सबको नाकाम किया। यहूद के दिलों में रोअब डाला। आग्रिकार उन्हें हुज़ूर के हुक्म से जिलाबतन होना पड़ा। ओर वो शाम और अरीहा और ख़ैर की तरफ़ चले गए।

(३) यानी बनी नुज़ैर के यहूदियों का।

(४) जो मदीनए तैय्यिबह में थे।

(५) यह जिलाबतनी उनका पहला हथ और दूसरा हथ उनका यह है कि अमीरुल मूमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने उन्हें अपनी खिलाफ़त के ज़माने में ख़ैर से शाम की तरफ़ निकाला था। आग्रिकार हथ क़यामत के दिन का हथ है कि आग सब लोगों को सरज़मीने शाम की तरफ़ ले जाएगी और वहीं उनपर क़यामत क़ायम होगी। उसके बाद मुसलमानों से ख़िताब किया जाता है।

(६) मदीने से, क्योंकि कुबत और लश्कर वाले थे। मज़बूत क़िले रखते थे। उनकी संख्या भी काफ़ी थी, ज़ारीर थीं, दौलत थी।

(७) यानी ख़तरा भी न था कि मुसलमान उनपर हमला कर सकते हैं।

(८) उनके सरदार कअब बिन अशरफ़ के क़त्ल से।

(९) और उनको दाते हैं ताकि जो लकड़ी वगैरह उन्हें अच्छी मालूम हो वो जिलाबतन होते वक़्त अपने साथ लें जाएं।

(१०) कि उनके मकाबों के जो हिस्से बाक़ी रह जाते थे उन्हें मुसलमान गिरा देंगे ताकि जंग के लिये मैदान साफ़ हो जाए।

(११) और उन्हें क़त्ल और कैद में जकड़ता जैसा कि बनी कुरैज़ा के यहूदियों के साथ किया।

(१२) हर हाल में, चाहे जिलाबतन किये जाएं या क़त्ल किये जाएं।

(१३) यानी विरोध पर डटे रहे।

(१४) जब बनी नुज़ैर ने अपने क़िलों में पनाह ले ली तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनके पेड़ काट डालने और उन्हें जला देने का हुक्म दिया। इसपर वो बहुत घबराए और रंजीदा हुए और कहने लगे कि क्या तुम्हारी किनाव में इसी का हुक्म है। मुसलमान इस मुद्दे पर अलग अलग राय के हो गए। कुछ ने कहा, पेड़ न काटो कि ये गनीमत यानी दुश्मन का छोड़ा हुआ माल है जो अल्लाह तआला ने हमें अता किये हैं। कुछ ने कहा, काट डाले जाएं कि इससे काफ़िरों को ख़ुश करना और उन्हें गुस्सा दिलाना मकर्रसूद है। इसपर यह आयत उतरी। और इसमें बताया गया कि मुसलमानों में जो पेड़ काटने वाले हैं उनका कहना भी ठीक है और जो न काटने की कहते हैं उनका ख़याल भी सही है, क्योंकि दरख़्तों का काटना और उनका छोड़ देना ये दोनों अल्लाह तआला के इज़्ज़ और इज़ाज़त से हैं।

(१५) यानी यहूदियों को ज़लील करे पेड़ काटने की इज़ाज़त देकर।

(१६) यानी बनी नुज़ैर के यहूदियों से।

(१७) यानी उसके लिये तुम्हें कोई कोफ़्त या मशक्कत नहीं उठानी पड़ी। सिर्फ़ दो मील का फ़ासला था। सब लोग पैदल चले गए सिर्फ़ रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सवार हुए।

(१८) अपने दुश्मनों में से, मुराद यह है कि बनी नुज़ैर से जो गनीमतें हासिल हुई उनके लिये मुसलमानों को जंग करना नहीं पड़े। अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनपर मुसल्लत कर दिया। ये माल हुज़ूर की मर्ज़ी पर है, जहां चाहें ख़र्च करें। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह माल मुहाजिरों पर तक़सीम फ़रमा दिया। और अन्सार में से सिर्फ़ तीन हाज़तमन्द लोगों को दिया वो अबू दुजाना समाक बिन ख़रशाहकी और सहल बिन हनीफ़ और हारिस बिन सुम्मा हैं।

(१९) पहली आयत में गनीमत का जो ज़िक्र हुआ इस आयत में उसीकी व्याख्या है और कुछ मुफ़ससिमें ने इस क़ौल का विरोध किया और फ़रमाया कि पहली आयत बनी नुज़ैर के अमवाल के बारे में उतरी। उनको अल्लाह तआला ने अपने रसूल के लिये ख़ास किया और यह आयत हर उस शहर की गनीमतों के बारे में है जिसको मुसलमान अपनी कुबत से हासिल करें।

(मदारीक)

(२०) रिस्तेदारों से मुग़ाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के एहले क़राबत हैं यानी बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब।

और अल्लाह सब कुछ कर सकता है (६) जो गनीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को शहर वालों से (११) वह अल्लाह और रसूल की है और रिश्तेदारों (२०) और यतीमों और मस्कीनों (दरिद्रों) और मुसाफ़िरों के लिये कि तुम्हारे मालदारों का माल न हो जाए (२१) और जो कुछ तुम्हें रसूल अता फ़रमाएँ वह लो (२३) और जिससे मना फ़रमाएँ बाज़ रहो, और अल्लाह से डरो (२३) बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है (२४) (७) उन फ़कीर हिजरत करने वालों के लिये जो अपने घरों और मालों से निकाले गए (१५) अल्लाह का फ़ज़ल (२६) और उसकी रज़ा चाहते और अल्लाह व रसूल की मदद करते (२७) वही सच्चे हैं (२८) (८) और जिन्होंने पहले से (२९) इस शहर (३०) और ईमान में घर बना लिया (३१) दोस्त रखते हैं उन्हें जो उनकी तरफ़ हिजरत करके गए (३२) और अपने दिलों में कोई हाज़त नहीं पाते (३३) उस चीज़ की जो दिये गए (३४) और अपनी जानों पर उनको तरजीह देते हैं (३५) अगरचे उन्हें शदीद (सख़्त) मुहताजी हो (३६) और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया (३७) तो वही कामयाब हैं (३८) और वो जो उनके वाद आए (३८) अर्ज़ करते हैं ऐ

بِئْسَ

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ مَا آفَأَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرْبَىٰ ۚ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ كَيْ لَا يَكُونَ دُولُهُمْ بَيْنَ الْغَنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمِمَّا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ ۚ وَمَا نَهَكُمُ عَنْهُ فَأْتَهُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصَرُونَ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ۖ وَالَّذِينَ تَبَوُّوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقِ شَهْرَ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۖ وَالَّذِينَ جَاءُوا

مَذَك

(२१) और गरीब और फ़कीर नुक़सान में रहें जैसा कि इस्लाम से पहले के ज़माने में तरीका था कि गनीमत में से एक चौथाई तो सरदार ले लेता था, बाक़ी क़ौम के लिये छोड़ देता था। इसमें से मालदार लोग बहुत ज़ि़यादा ले लेते थे और गरीबों के लिये बहुत थोड़ा बचता था। इसी तरीक़े के अनुसार लोगों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर गनीमत में से चौथा हिस्सा ले लें बाकी हम आपस में तक्कसीम कर लेंगे। अल्लाह तआला ने इसका रद फ़रमाया और तक्कसीम का इस्तिथार नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को दिया और उसका तरीका इरशाद फ़रमाया।

(२२) गनीमत में से क्योंकि बां तुम्हारे लिये हलाल है। या ये मानी हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जो तुम्हें हुक्म दें उसका पालन करो क्योंकि रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इताअत हर काम में वाजिब है।

(२३) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुख़ालिफ़त न करो और उनके इरशाद पर तअमील में सुस्ती न करो।

(२४) उनपर जो रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नाफ़रमाती करो और गनीमत के माल में, जैसा कि ऊपर ज़िक्र किये हुए लोगों का हक़ है, ऐसा ही।

(२५) और उनके घरों और मालों पर मक्का के काफ़िरों ने क़ज़ा कर लिया। इस आयत से साबित हुआ है कि काफ़िर इस्तीला (गालिब हाने) से मुसलमानों के अमवाल के मालिक हो जाते हैं।

(२६) यानी आख़िरत का सचाव।

(२७) अपने जानो माल से दीन की हिमायत में।

(२८) ईमान और इग़्मलास में। क़तादह ने फ़रमाया कि उन मुहाजिरों ने घर और माल और कुंवे अल्लाह तआला और रसूल की महबूत में छोड़ दिए और इस्लाम को क़बूल किया और उन सारी सज़ियाँ का ग़वार किया जो इस्लाम क़बूल करने की वजह से उन्हें पेश आईं। उनकी हालतें यहां पहुंचीं कि भूक की शिदत से पेट पर पत्थर बांधते थे और जाइयों में कपड़ा न होने के कारण गद्दों और गारों में गुज़ारा करते थे। हदीस शरीफ़ में आया है कि फ़कीर मुहाजिरिन मालदारों से चालीस साल पहले जन्मत में जाएंगे।

(२९) यानी मुहाजिरों से पहले या उनकी हिजरत से पहले बल्कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले।

(३०) मदीनए पाक।

(३१) यानी मदीनए पाक को बतन और ईमान को अपनी मंज़िल बनाया और इस्लाम लाए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से दो साल पहले मस्जिदें बनाई उनका यह हाल है कि।

हमारे रब ! हमें बख्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की तरफ से कीना न रख^(११) ऐ रब हमारे ! वेशक तू ही बहुत मेहरवान रहम वाला है^(१०)

दूसरा रूकू

क्या तुमने मुनाफ़िकों(दोषालों) को न देखा^(१) कि अपने भाइयों काफ़िर किताबियों^(२) से कहते हैं कि अगर तुम निकाले गए^(३) तो ज़रूर हम तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और हरगिज़ तुम्हारे बारे में किसी की न मानेंगे^(४) और तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाह है कि वो झूठे हैं^(५) (११) अगर वो निकाले गए^(६) तो ये उनके साथ न निकलेंगे, और उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद न करेंगे^(७) अगर उनकी मदद की भी तो ज़रूर पीठ फेर कर भागेंगे फिर^(८) मदद न पाएंगे^(९) (१२) वेशक^(१०) उनके दिलों में अल्लाह से ज़्यादा तुम्हारा डर है^(११) यह इस लिये कि वो नासमझ लोग हैं^(१२) (१३) ये सब मिलकर भी तुम से न लड़ेंगे मगर किलेबन्द शहरों में या धुसों (शहर-पनाह) के पीछे, आपस में उनकी आंच (जोश)

مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا
الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا
غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۝ أَمْ
تَرَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ
مَعَكُمْ وَلَا نُبْطِئُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا ۖ وَإِن
قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝
لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ ۖ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا
يَنْصُرُوهُمْ ۖ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيَبْغُلَنَّ الَّذِينَ
يَبْغُلُونَ ۖ لَكَ نَتْمٌ أَشَدُّ رَهَبَةً ۖ فِي صُدُورِهِمْ
مِّنَ اللَّهِ ذُلٌّ لِّكَ يَا أَيُّهَا الْقَوْمُ لَا يَفْقَهُونَ ۝ لَا
يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قَرْعٍ مُّحْصَنَةٍ أَوْ مِنْ
وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا

مَنْ

(१२) चुनान्ते अपने घरों में उन्हें उतारते हैं अपने मालों में उन्हें आधे का शरीक करते हैं.

(१३) यानी उनके दिलों में कोई ख्वाहिश और तलब नहीं पैदा होती.

(१४) यानी मुहाजिरों को जो ग़नीमत के माल दिये गए, अन्सार के दिल में उनकी कोई ख्वाहिश पैदा नहीं होती, रश्क तो क्या होता. सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वरकत ने दिल ऐसे पाक कर दिये कि अन्सार मुहाजिरों के साथ ये सुलूक करते हैं.

(१५) यानी मुहाजिरों को.

(१६) हदीस शरीफ़ में है कि रसूलु क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में एक भूख़ा आदमी आया. हुज़ूर ने अपनी पाक मुकद्दस बीबियों के हुज़रों पर मालूम कराया कि क्या खाने की कोई चीज़ है. मालूम हुआ कि किसी बीबी साहिबा के यहां कुछ भी नहीं है तो हुज़ूर ने सहाबा से फ़रमाया जो इस आदमी को मेहमान बनाए, अल्लाह तआला उसपर रहमत फ़रमाए. हज़रत अबू तलहा अन्सारी खड़े हो गए और हुज़ूर से इजाज़त लेकर मेहमान को अपने घर ले गए. घर जाकर बीबी से पूछा, कुछ है? उन्होंने कहा, कुछ भी नहीं. सिर्फ़ बच्चों के लिये थोड़ा सा खाना रखा है. हज़रत अबूतलहा ने फ़रमाया बच्चों को वहलाकर सुला दो और जब मेहमान खाने बैठे तो चिराग़ दुरुस्त करने उठो और चिराग़ को घुंझा दो ताकि वह अच्छी तरह खाले. यह इस लिये कहा कि मेहमान यह न जान सके कि घर वाले उसके साथ नहीं खा रहे हैं. क्योंकि उसको यह मालूम होगा तो वह इसरार करेगा और खाना कम है, भूख़ा रह जाएगा. इस तरह मेहमान को खिलया और आप उन लोगों ने भूख़े पेट रात गुज़ारी. जब सुबह हुई और सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हुज़ुरे अक़दस ने फ़रमाया, रात फ़लां फ़लां लोगों में अजीब मामला पेश आया. अल्लाह तआला उनमें बहुत सज़ा है और यह आपत उतरी.

(१७) यानी जिसके नफ़स को लालच से पाक किया गया.

(१८) यानी मुहाजिरों और अन्सार के, इसमें क़यामत तक पैदा होने वाले मुसलमान दाख़िल हैं.

(१९) यानी रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा की तरफ़ से. जिसके दिल में किसी सहाबी की तरफ़ से बुज़्र और कदूरत हो और वह उनके लिए रहमत और माफ़िरत की दुआ न करे वह मूनिन की किस्म से बाहर है क्योंकि यहां मूनिनों की तीन किस्में फ़रमाई गई, मुहाजिर, अन्सार और उनके बाद वाले जो उनके ताबेअ हों और उनकी तरफ़ से दिल में कोई कदूरत न रखें और उनके लिए माफ़िरत की दुआ करें तो जो सहाबा से कदूरत रखे, राफ़िज़ी हो या झारिज़ी, वह मुसलमानों की इन तीनों किस्मों से बाहर है. हज़रत उम्मुल मुमिनीन आयशा सिद्दीका रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि लोगों को हुक्म तो यह दिया गया कि सहाबा के लिये इस्तिफ़ाअर करें और करते हैं यह, कि ग़ालियां देते हैं.

सूरए हश् - दूसरा रूकू

(१) अब्दुल्लाह बिन उदैई बिन सुलूल मुनाफ़िक और उसके साथियों को.

सख्त है^(१२) तुम उन्हें एक जथा समझोगे और उनके दिल अलग अलग हैं, यह इसलिये कि वो बेअकल लोग हैं^(१३) (१४) उनकी सी कहावत जो अभी करीब ज़माने में उनसे पहले थे^(१५) उन्होंने ने अपने काम का बवाल चखा^(१६) और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है^(१७) (१८) शैतान की कहावत जब उसने आदमी से कहा कुफ़्र कर, फिर जब उसने कुफ़्र कर लिया, बोला मैं तुझसे अलग हूँ, मैं अल्लाह से डरता हूँ जो सारे जगत का रब^(१९) (२०) तो उन दोनों का^(२१) अंजाम यह हुआ कि वे दोनों आग में हैं हमेशा उसमें रहे, और ज़ालिमों की यही सज़ा है^(२२)

तीसरा रूकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो^(१) और हर जान देखे कि कल के लिये क्या आगे भेजा^(२) और अल्लाह से डरो^(३) वेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है^(४) और उन जैसे न हो जो अल्लाह को भूल बैठे^(५) तो अल्लाह ने उन्हें बला में डाला कि अपनी जानें याद न रहीं^(६) वही फ़ासिक हैं^(७) दोज़ख़ वाले^(८) और जन्नत वाले^(९) बराबर नहीं, जन्नत वाले ही मुराद को पहुंचे^(१०) अगर हम यह कुरआन किसी पहाड़ पर उतारते^(११) तो ज़रूर तू उसे देखता झुका

وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۝
كَمَثَلِ الْيَزِيدِ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا دَاخِلًا وَبَالَ أَعْمَاهُمْ ۝
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ
لِلْإِنْسَانِ الْكَفَرُ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي
أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي
النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاُ الظَّالِمِينَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ
مَّا قَدَّامَتْ لِعَذَابٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا
تَعْمَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ
أَنفُسَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ لَا يَسْتَوِي
أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۚ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ
الْقَائِمُونَ ۝ لَوْ أَنزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ
لَّرَأَيْنَاهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ

- (२) यानी बनी कुरैज़ा और बनी नुज़ैर के यहूदी.
- (३) मदीना शरीफ़ से.
- (४) यानी तुम्हारे खिलाफ़ किसी का कहना न मारेंगे न मुसलमानों का, न रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का.
- (५) यानी यहूदियों से मुनाफ़िकों के ये सब वादे झूठे हैं. इसके बाद अल्लाह तआला मुनाफ़िकों के हाल की ख़बर देता है.
- (६) यानी यहूदी.
- (७) चुनान्व ऐसा ही हुआ कि यहूदी निकाले गए और मुनाफ़िक उनके साथ न निकले और यहूदियों से जंग हुई और मुनाफ़िकों ने यहूदियों की मदद न की.
- (८) जब ये मददगार भाग निकलेंगे तो मुनाफ़िक.
- (९) ये मुसलमानो.
- (१०) कि तुम्हारे सामने तो कुफ़्र ज़ाहिर करने में डरते हैं और यह जानते हुए भी कि अल्लाह तआला दिलों की छुपी बातें जानता है, दिल में कुफ़्र रखते हैं.
- (११) अल्लाह तआला की अज़मत को नहीं जानते करना जैसा उससे डरने का हक़ है डरते.
- (१२) यानी जब वो आपस में लड़ें तो बहुत सख्ती और कुच्चत वाले हैं लेकिन मुसलमानों के मुकाबिल में बुज़दिल और नमर्द साबित होंगे.
- (१३) इसके बाद यहूदियों की एक मिसाल इरशाद फ़रमाई.
- (१४) यानी उनका हाल मक्के के मुश्रिकों जैसा है कि बद्र में ---
- (१५) यानी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ दुश्मनी रखने और कुफ़्र करने का कि ज़िल्लत और रुखाई के साथ हलाक़ किये गए.
- (१६) और मुनाफ़िकों का बनी नुज़ैर यहूदियों के साथ सुलूक ऐसा है जैसे --
- (१७) ऐसे ही मुनाफ़िकों ने बनी नुज़ैर को मुसलमानों के खिलाफ़ उभारा जंग पर आमादा किया उनसे मदद के वादे किये और जब उनके कद्रे से वो अहले इस्लाम के मुकाबले में लड़ने आए तो मुनाफ़िक बैठ रहे उनका साथ न दिया.
- (१८) यानी उस शैतान और इन्सान का.

सूरए हश्र - तीसरा रूकू

- (१) और उसके हुक्म का विरोध न करो.
- (२) यानी क़यामत के दिन के लिये क्या कर्म किये.

हुआ पाश पाश होता, अल्लाह के डर से^(१) और ये मिसालें लोगों के लिये हम बयान फरमाते हैं कि वो सोचें^(२) वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, हर छुपे ज़ाहिर का जानने वाला^(३) वही है बड़ा मेहरवान रहमत वाला^(४) वही है अल्लाह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, बादशाह^(५) निहायत (परम) पाक^(६) सलामती देने वाला^(७) अमान बख्शने वाला^(८) हिफाज़त फरमाने वाला इज़मत वाला अज़मत वाला तकबुर (बड़ाई) वाला^(९) अल्लाह को पाकी है उनके शिर्क से^(१०) वही है अल्लाह बनाने वाला पैदा करने वाला^(११) हर एक को सूरत देने वाला^(१२) उसी के हैं सब अच्छे नाम^(१३) उसकी पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और वही इज़ज़त व हिकमत (बोध) वाला है^(१४)

६० - सूरए मुम्तहिन्ह

सूरए मुम्तहिन्ह मदीने में उतरी, इसमें १३ आयतें, दो रूकू हैं .

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) ऐ ईमान वालो ! मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ^(२) तुम उन्हें खबरें पहुंचाते हो दोस्ती से हालांकि वो मुन्किर है उस हक के जो तुम्हारे पास आया^(३) घर से अलग

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۝ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ
السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيَّمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۝
سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۝ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ
أَوْلِيَاءَ تَلْقَوْنَ إِلَيْهِمْ بِالْمُودَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا
جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ ۝ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ

- (३) उसकी ताअत और फ़रमाँबरदारी में सरगर्म रहो.
- (४) उसकी ताअत छोड़ दी.
- (५) कि उनके लिये फ़ायदा देने वाले और काम आने वाले अमल कर लेते.
- (६) जिनके लिये हमेशा का अज़ाब है.
- (७) जिनके लिये हमेशा का ऐश और हमेशा की राहत है.
- (८) और उसको इन्सान की सी तमीज़ अता करते.
- (९) यानी क़ुरआन की अज़मत व शान ऐसी है कि पहाड़ को अगर समझ होती तो वह बावजूद इतना सन्न और मज़बूत होने के टुकड़े टुकड़े हो जाता इससे मालूम होता है कि काफ़िरों के दिल कितने सन्न है कि ऐसे अज़मत वाले क़त्लाम से प्रभावित नहीं होते.
- (१०) मौजूद का भी और मअदूम का भी दुनिया और आख़िरत का भी.
- (११) मुल्क और हुक्मत का हकीकती मालिक कि तमाम मौजूदात उसके तहत मुल्को हुक्मत है और उसकी मालिकियत और सलतनत दायमी है जिसे ज़वाल नहीं.
- (१२) हर ऐश से और तमाम बुराइयों से.
- (१३) अपनी मज़लुक का.
- (१४) अपने अज़ाब से अपने फ़रमाँबरदार बन्दों को.
- (१५) यानी अज़मत और बड़ाई वाला अपनी ज़ात ओर तमाम सिफ़त में और अपनी बड़ाई का इज़हार उसी के शायों और लायक है उसका हर क़माल अज़ीम है और हर सिफ़त आली . मज़लुक में किसी को नहीं पहुंचता कि घमण्ड यानी अपनी बड़ाई का इज़हार करे. बन्दे के लिये विनम्रता सबसे बेहतर है.
- (१६) नेस्त में हस्त करने वाला.
- (१७) जैसी चाहे.
- (१८) विनाशे जो हदीस में आए हैं.

करते हैं^(१) रसूल को और तुम्हें इस पर कि तुम अपने रव अल्लाह पर ईमान लाए अगर तुम निकले हो मेरी राह में जिहाद करने और मेरी रज़ा चाहने को, तो उनसे दोस्ती न करो तुम उन्हें खुफिया संदेश महबूत का भेजते हो और मैं खूब जानता हूँ जो तुम छुपाओ और जो ज़ाहिर करो, और तुम में जो ऐसा करे वेशक वह सीधी राह से बहका^(२) अगर तुम्हें पाएँ^(३) तो तुम्हारे दुश्मन होंगे और तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ^(४) और अपनी ज़वानें^(५) बुराई के साथ बराज़ करंगे और उनकी तमन्ना है कि किसी तरह तुम काफ़िर हो जाओ^(६) हरगिज़ काम न आएँगे तुम्हें तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद^(७) कयामत के दिन तुम्हें उनसे अलग कर देगा^(८) और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है^(९) वेशक तुम्हारे लिये अच्छी पैरवी थी^(१०) इब्राहीम और उसके साथ वालों में^(११) जब उन्होंने अपनी क्रोम से कहा^(१२) वेशक हम बेज़ार हैं तुम से और उनसे जिन्हें अल्लाह के सिवा पूजते हो, हम तुम्हारे इन्कारी हुए^(१३) और हम में और तुम में दुश्मनी और अदावत ज़ाहिर होगई हमेशा के लिये जब तक तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ मगर इब्राहीम का अपने वाप से कहना कि मैं ज़रूर तेरी मनाफ़िरत

أَنْ تُوْمِنُوا بِاللّٰهِ رِبْكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِم بِالْمُؤَدَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ إِنْ يَتُفَقُّوْكُمْ يَكُونُوا كَكُمْ أَعْدَاءً وَيَنْسِفُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَالسِّنَنُهَا بِالسَّوْءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ۝ كُنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامَكُمْ وَلَا أَوْلَادَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءُكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ وَحْدَهُ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَا اسْتَفْعِرْتُكَ لَكَ وَمَا

منزل

६० - सूरए मुम्तहिन्ह - पहला सूकू

- (१) सूरए मुम्तहिन्ह मदनी है इसमें दो सूकू, तेरह आयतें, तीन सौ अड़तालीस कलिमें, एक हजार पाँच सौ दस अक्षर हैं।
 (२) यानी काफ़िरों को, बनी हाशिम के ख़ानदान की एक बौंदी सारह मदीनए तय़िबह में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में हाज़िर हुई जबकि हुज़ूर मक्के की फ़तह का सामान फ़रमा रहे थे, हुज़ूर ने उससे फ़रमाया क्या तू मुसलमान होकर आई है? उसने कहा, नहीं, फ़रमाया, क्या हिज़रत करके आई? अर्ज़ किया, नहीं, फ़रमाया, फिर क्या आई? उसने कहा, मोहताजी से तंग होकर, बनी अब्दुल मुत्तलिब ने उसकी इमदाद की, कपड़े बनाए, सामान दिया, हातिब बिन अबी बलतअह रदियल्लाहो अन्हो उससे मिले, उन्होंने उसको दस दीनार दिये, एक चादर दी और एक ख़त मक्के वालों के पास उसकी मअरिफ़त भेजा जिसका मज़मून यह था कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तुम पर हमल का इग़ादा ख़त हैं, तुम से अपने बचाव की जो तदबीर हो सके करो, सारह यह ख़त लेकर ख़ाना हो गई, अल्लाह तआला ने अपने हबीब को इसकी ख़बर दा, हुज़ूर ने अपने कुछ सहाबा को, जिनमें हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो भी थे, घोड़ों पर ख़ाना किया और फ़रमाया मक़ामे रौज़ा ख़ास पर तुम्हें एक मुसाफ़िर औरत मिलेगी उसके पास हातिब बिन अबी बलतअह का ख़त है जो मक्के वालों के नाम लिखा गया है, वह ख़त उससे ले लो और उसका छोड़ दो, अगर इन्कार करे तो उसकी गर्दन मार दो, ये हज़रत ख़ाना हुए और औरत को ठीक उसी जगह पर पाया जहाँ हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया था, उससे ख़त माँगा, वह इन्कार कर गई और फ़रम ख़ागई, सहाबा ने शपसी का इग़ादा किया, हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रम ख़ाकर फ़रमाया कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़बर ग़लत हो ही नहीं सकती और तलख़ार ख़ाँच कर औरत से फ़रमाया या ख़त निकाल या गर्दन रख, जब उसने देखा कि हज़रत बिल्कुल फ़क़्त करने का तैयार हैं तो अपने जूड़े में से ख़त निकाला, हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत हातिब को बुलाकर फ़रमाया कि ये हातिब इसका क्या कारण, उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम मैं जबसे इस्लाम लाया कभी मैंने कुछ नहीं किया और जबसे हुज़ूर की नियाज़मन्दी मय़सर आई कभी हुज़ूर की ख़यानत न की और जब से मक्के वालों को छोड़ा कभी उनकी महबूत न आई लेकिन वाकिआ यह है कि मैं कुनैश में रहता था और उनकी क्रोम से न था मेरे सिखा और ज़ा मुद्दाज़िर हैं उनके मक्कए मुकर्रमा में रिश्तेदार हैं जो उनके घरबार की निगरानी करते हैं, मुझे अपने घर वालों का अन्देशा था इसलिये मैंने यह चाहा कि मैं मक्के वालों पर कुछ एहसान रखूँ ताकि वो मेरे घरवालों को न सताएं और यह मैं यकीन से जानता हूँ कि अल्लाह तआला मक्के वालों पर अज़ाब उतारने वाला है मेरा ख़त उन्हें बचा न सकेगा, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनका यह उज्र कुबूल फ़रमाया और उनकी तस्दीक की, हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम मुझे इजज़त दीजिये इस मुनाफ़िक की गर्दन मार दूँ, हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ उमर अल्लाह तआला ख़बरदार है जब

चाहूंगा^(१५) और मैं अल्लाह के सामने तेरे किसी नफ़े का मालिक नहीं^(१६) ऐ हमारे रब ! हमने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही तरफ़ रुजू लाए और तेरी ही तरफ़ फिरना है^(१७) ऐ हमारे रब ! हमें काफ़िरी की अज़मायश में न डाल^(१८) और हमें बख़्श दे ऐ हमारे रब, वेशक तू ही इज़्ज़त व हिकमत वाला है^(१९) वेशक तुम्हारे लिये^(२०) उनमें अच्छी पैरवी थी^(२१) उसे जो अल्लाह और पिछले दिन का उम्मीदवार हो^(२२) और जो मुंह फेरे^(२३) तो वेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है सब खूबियों सराहा^(२४)

दूसरा रूकू

करीब है कि अल्लाह तुम में और उनमें जो उनमें से^(१) तुम्हारे दुश्मन हैं दोस्ती कर दे^(२) और अल्लाह कादिर (सक्षम) है^(३) और बख़्शने वाला मेहरबान है^(४) अल्लाह तुम्हें उनसे^(५) मना नहीं करता जो तुम से दीन में न लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से न निकाला कि उनके साथ एहसान करो और उनसे इन्साफ़ का वर्ताव बरतो, वेशक इन्साफ़ वाले अल्लाह को मेहबूब हैं^(६) अल्लाह तुम्हें उन्हीं से मना करता है जो तुम से दीन में लड़े या तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला या तुम्हारे निकालने पर मदद की कि उनसे दोस्ती

أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا
وَإِلَيْكَ أُنَبِّئُكَ الْهَاسِئِرُ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفِرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ
لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَمَن يَتَوَلَّ
فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ عَسَى اللَّهُ أَن يَجْعَلَ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُم مِّنْهُم مَّوَدَّةً ۚ وَاللَّهُ
قَدِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَفْوٌ رَّحِيمٌ ۝ لَا يَنْهَضُكُمْ اللَّهُ عَنِ
الَّذِينَ لَمْ يِقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم
مِّن دِيَارِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ يُحِبُّ السَّقِيطِينَ ۝ إِنَّمَا يَنْهَضُكُمْ اللَّهُ عَنِ
الَّذِينَ قَتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم مِّن
دِيَارِكُمْ وَظَهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ

مَنْ

ही उसने बद्र वालों के हक में फ़रमाया कि जो चाहो करो मैंने तुम्हें बख़्श दिया, यह सुनकर हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो के आँसू जारी हो गए और ये आयतें उतरीं.

(३) यांनी इस्लाम और कुरआन.

(४) यांनी मक्कए मुकर्रमा से.

(५) यांनी अगर काफ़िर तुम पर मौका पा जाएं.

(६) ज़र्व (हमला) और क़त्ल के साथ.

(७) जुल्म अत्याचार और —

(८) तो ऐसे लोगों को दोस्त बनाना और उनसे भलाई की उम्मीद रखना और उनकी दुश्मनी से साफ़िल रहना हरगिज़ न चाहिय.

(९) जिनकी वजह से तुम काफ़िरी से दोस्ती और मेलजोल करते हो.

(१०) कि फ़रमाँवरदार जन्नत में होंगे और काफ़िर नाफ़रमान जहन्नम में.

(११) हज़रत हातिब रदियल्लाहो अन्हो और दूसरे मूमिनों को ख़िताब है और सब को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अनुकरण करने का हुक्म है कि दीन के मामले में रिश्तेदारों के साथ उनका तरीक़ा इस्तिथार करें.

(१२) साथ वालों से ईमान वाले मुराद हैं.

(१३) जो मुश्रिक थी.

(१४) और हमने तुम्हारे दीन की मुख़ालिफ़त इस्तिथार की.

(१५) यह अनुकरण के क़ाबिल नहीं है क्योंकि वह एक वादे की बिना पर था और जब हज़रत इब्राहीम को ज़ाहिर हो गया कि वो कुफ़र पर अटल है तो आपने उससे बेज़ारी की लिहाज़ा यह किसी के लिये जायज़ नहीं कि अपने बेईमान रिश्तेदार के लिये माफ़ी की दुआ करें.

(१६) अगर तू उसकी नाफ़रमानी करे और शिर्क पर क़ायम रहे. (ख़ाज़िन)

(१७) यह भी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की और उन मूमिनों की दुआ है जो आपके साथ थे और माक़बन इस्तरा के साथ जुड़ा हुआ है लिहाज़ा मूमिनों को इस दुआ में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अनुकरण करना चाहिय.

(१८) उन्हें हम पर ग़लतवा न दे कि वो अपने आपको सच्चाई पर गुमान करने लगें.

(१९) ऐ हबीबे ग़ुदा मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत.

(२०) यांनी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनके साथ वालों में.

(२१) अल्लाह तआला की रहमत और सबाब और आग्रिस्त की रहमत का तालिब हो और अल्लाह के अज़ाब से डर.

करो^(१) और जो उनसे दोस्ती करे तो वही सितमगार हैं^(२) ऐ ईमान वालो ! जब तुम्हारा पास मुसलमान औरतें कुफ़िस्तान से अपने घर छोड़ कर आए तो उनका इम्तिहान करो^(३) अल्लाह उनके ईमान का हाल बेहतर जानता है फिर अगर तुम्हें ईमान वालीयाँ मालूम हों तो उन्हें काफ़िरों को वापस न दो, न ये^(४) उन्हें हलाल^(५) न वो इन्हें हलाल^(६) और उनके काफ़िर शौहरों को दे दां जो उनका खर्च हुआ^(७) और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उनसे निकाह कर लो^(८) जब उनके मेहर उन्हें दो^(९) और काफ़िरनियों के निकाह पर जमे न रहो^(१०) और मांग लो जो तुम्हारा खर्च हुआ^(११) और काफ़िर मांग लें जो उन्होंने खर्च किया^(१२) यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम में फैसला फ़रमाता है, और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है^(१३) और अगर मुसलमानों के हाथ से कुछ औरतें काफ़िरों की तरफ़ निकल जाएं^(१४) फिर तुम काफ़िरों को सज़ा दो^(१५) तो जिनकी औरतें जाती रही थीं^(१६) गनीमत में से उतना दे दो जो उनका खर्च हुआ था^(१७) और अल्लाह से डरो जिसपर तुम्हें ईमान है^(१८) ऐ नबी जब तुम्हारे हुज़ूर मुसलमान औरतें हाज़िर हों इस पर बैअत करने को कि अल्लाह का कुछ शरीक न ठहराएंगी न

وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَاُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهَاجِرٰتٍ
فَاَمْتَحِنُوْهُنَّ ۚ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ اِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ
مُّؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ لَا هُنَّ حِلٌّ
لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ دَوَآئُهُمْ مَّا اَنفَقُوْا
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوهُنَّ اِذَا اتَّيَسَّرُوهُنَّ
اُجُوْرُهُنَّ ۚ وَلَا تُمَسِّكُوْا بَعْضِمُ الْكُفَّارِ وَتَسْكُنُوْا مَّا
اَنفَقْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ اَنفَقُوْا ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ
بِحُكْمِ نَبِيِّكُمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَاِنْ فَآتَكُمْ
شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقِبْتُمْ فَانْكُحُوْا
الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَا اَنفَقُوْا وَاتَّقُوْا
اللّٰهَ الَّذِيْ اَنْتُمْ بِهٖ مُّؤْمِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا
جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَا يُشْرِكْنَ

مَنْكُ

(२२) ईमान से और काफ़िरों से दोस्ती करे.

सूर ए मुम्तहिन्ह - दूसरा खूकू

(१) यानी मक्क के काफ़िरों में से.

(२) इस तरह कि उन्हें ईमान की तौफ़ीक़ दे. चुनाने अल्लाह तआला ने ऐसा किया और फ़रहे मक्का के बाद उनमें से बहुत से लोग ईमान ले आए और मूमिनां के दास्त और भाई बन गए और आपसी प्यार बढ़ा. जब ऊपर की आयतें उतरीं तो ईमान वालों ने अपने रिश्तेदारों की दुश्मनी में सख़ती की, उनसे बेज़ार हो गए और इस मामले में बड़े सख़्त हो गए तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतार कर उन्हें उम्मीद दिलाई कि उन काफ़िरों का हाल बदलने वाला है. और यह आयत उतरी.

(३) दिल बदलने और हाल तब्दील करने पर.

(४) यानी उन काफ़िरों से. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत ख़ूज़ाअह के हक़ में उतरी जिन्होंने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इस शर्त पर सुलह की थी कि न आपसे लड़ेंगे न आपके विरोधियों का साथ देंगे. अल्लाह तआला ने उन लोगों के साथ सुलूक करने की इज़ाज़त दे दी. हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुवैर ने फ़रमाया कि यह आयत उनकी बालिदा अस्मा बिनते अबूवक़ सिदीक़ रदियल्लाहो अन्हा के हक़ में नाज़िल हुई. उनकी बालिदा मदीनए तैयिबह उनके लिये ताहफ़े लेकर आई थीं और थीं मुश्रिका. तो हज़रत अस्मा ने उनके तोहफ़े कुबूल न किये और उन्हें अपने घर में आने की आज्ञा न दी और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दरियाफ़्त किया कि क्या हुक्म है. इसपर यह आयत उतरी और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इज़ाज़त दी कि उन्हें घर में बुलाएं, उनके तोहफ़े कुबूल करें उनके साथ अच्छा सुलूक करें.

(५) यानी ऐसे काफ़िरों से दोस्ती मना है.

(६) कि उनकी हिज़रत ख़ालिस दीन के लिये है ऐसा तो नहीं है कि उन्होंने शौहरों की दुश्मनी में घर छोड़ा हो. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि उन औरतों को क्रम दी जाए कि वां न शौहरों की दुश्मनी में निकली हों और न किसी दुनियावी कारण से. उन्होंने केवल अपने दीन और ईमान के लिये हिज़रत की है.

(७) मुसलमान औरतें.

(८) यानी काफ़िरों को.

(९) यानी न काफ़िर मर्द मुसलमान औरतों को हलाल. और न मुसलमान होकर काफ़िर की बीबी होने से बाहर हो गई.

(१०) यानी जो मेहर उन्होंने उन औरतों को दिये थे वां उन्हें लौटा दो. यह हुक्म पहले ज़िम्मा के लिये है जिनके हक़ में यह आयत

चोरी करेंगी और न बदकारी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी^(१०) और न वह बोहतान लाएंगी जिसे अपने हाथों और पाँवों के बीच यानी मौज़ए विलादत (गुप्तांग) में उठाए^(११) और किसी नेक बात में तुम्हारी ना फ़रमानी न करेंगी^(१२) तो उनसे बैअत लो और अल्लाह से उनकी माफ़िरत चाहो^(१३) वेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (१२) ऐ ईमान वाला ! उन लोगों से दोस्ती न करा जिन पर अल्लाह का ग़ज़व है^(१४) वो आख़िरत से आस तोड़ बैठे हैं^(१५) जैसे काफ़िर आस तोड़ बैठे क़ब्रवालों से^(१६) (१३)

६९ - सूरए सफ़

सूरए सफ़ मदीने में उतरी, इसमें १४ आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और वही इज़ज़त व हिकमत वाला है। (१) ऐ ईमान वालो ! क्यों कहते हो वह जो नहीं करते^(२) (२) कैसी सख़्त नापसन्द है अल्लाह को वह बात कि वह कहो जो न करो^(३) वेशक अल्लाह दोस्त रखता है उन्हें जो उसकी राह में लड़ते हैं परा बांधकर, मानो वो ईमारत है रांगा पिलाई^(४) (४) और याद करो जब मूसा

بِاللّٰهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ
أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ
وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِبْنَكَ فِيْ مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَ
اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ إِنْ اللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ يٰٓأَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَكْسِبُوا
مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَبِيسُ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ۝

سُورَةُ الضَّمَّتْ مَكِّيَّةٌ (١١٩)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا
تَفْعَلُونَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ اَنْ تَقُولُوا مَا لَا
تَفْعَلُونَ ۝ اِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِيْ
سَبِيْلِهِ صَفًا كَاَتَهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُومٌ ۝ وَاِذْ

مَنْ

उतरी लेकिन हर्ब औरतों के मेहर वापस करना न बाजिब है न सुन्नत. और ये मेहर देना उम सूरत में है जबकि औरत का काफ़िर शौहर उसको तलब करे और अगर तलब न करे तो उसके कुछ न दिया जाएगा. इसी तरह अगर काफ़िर ने उस मुहाजिरा को मेहर नहीं दिया था तो भी वह कुछ न पाएगा. यह आयत सुलह हुदैवियह के बाद उतरी. सुलह में यह शर्त थी कि मक्के वालों में से जो शरअ ईमान लाकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हो उसको मक्के वाले वापस ले सकते हैं. इस आयत में यह बयान फ़रमा दिया गया कि यह शर्त सिर्फ़ मर्दों के लिये है औरतों की तसरीह एहदनामे में नहीं न औरतें इस करारदाद में दाख़िल हो सकती हैं क्योंकि मुसलमान औरत काफ़िर के लिये हलाल नहीं. कुछ मुफ़ससिग़ां ने फ़रमाया कि यह आयत पहले आदेश को स्थगित करने वाली है यह इस सूरत में है कि औरतें सुलह के एहद में दाख़िल हों मगर औरतों का इस एहद में दाख़िल होना सही नहीं क्योंकि हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो से एहदनामे के ये अल्फ़ाज़ आए हैं कि हम में से जो मर्द आपके पास पहुँचे चाहें वह आप के दीन पर ही हो आप उसका वापस कर देंगे.

(११) यानी हिज़रत करने वाली औरतों से अगरचे दाख़ल हर्ब में उनके शौहर हों. क्योंकि इस्लाम लाने से वो उन शौहरों पर हारम हो गई और उनकी ज़ौजियत में न रहीं.

(१२) मेहर देने से मुग़द उसका ज़िम्मे लाज़िम कर लेना है अगरचे बिलफेअल न दिया जाए. इससे यह भी साबित हुआ कि इन औरतों से निकाह करने पर नया मेहर बाजिब होगा. उनके शौहरों को जो अदा करदिया गया वह उसमें जोड़ा या गिनती नहीं किया जाएगा.

(१३) यानी जो औरतें दाख़ल हर्ब में रह गई या इस्लाम से फिर कर दाख़ल हर्ब में चली गई उनसे ज़ौजियत का सम्बन्ध न रखो. चुनावे यह आयत उतरने के बाद असहाबे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन काफ़िर औरतों का तलाक़ देदी जो मक्कए मुकर्रमा में थीं. अगर मुसलमान की औरत इस्लाम से फिर जाए तो उसके निकाह की कैद से बाहर न होगा.

(१४) यानी उन औरतों का तुमने जो मेहर दिये थे वो उन काफ़िरों से वुसूल करलो जिन्होंने उनसे निकाह किया.

(१५) अपनी औरतों पर जो हिज़रत करके दाख़ल इस्लाम में चली आई उनके मुसलमान शौहरों से जिन्होंने उनसे निकाह किया.

(१६) इस आयत के उतरने के बाद मुसलमानों ने तो मुहाजिरह औरतों के मेहर उनके काफ़िर शौहरों को अदा करदिये और काफ़िरों ने इस्लाम से फिर जाने वाली औरतों के मेहर मुसलमानों को अदा करने से इन्कार किया. इसपर यह आयत उतरी.

(१७) जिहाद में और उनसे ग़नीमत पाओ.

(१८) यानी इस्लाम से फिर कर दाख़ल हर्ब में चली गई थीं.

(१९) उन औरतों के मेहर देने में. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मूनिव मुहाजिरीन की औरतों में से छ औरतें ऐसी थीं जिन्होंने दाख़ल हर्ब को इस्त्रियार किया और मुथ्रिकों के साथ जुड़ गई और इस्लाम से फिर गई. रसूल करीम

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनके शौहरों को माले गनीमत से उनके मेहर अता फरमाए. इन आयतों में मुहाजिर औरतों के इन्तिहात और काफ़िरों ने जो अपनी बीबीयों पर खर्च किया हो वह हिज़रत के बाद उन्हें देना और मुसलमानों ने जो अपनी बीबीयों पर खर्च किया हो वह उनके मर्तद होकर काफ़िरों से मिल जाने के बाद उनसे मांगना और जितनी बीबीयाँ मर्तद होकर चली गईं हों उन्होंने जो उनपर खर्च किया था वह उन्हें माले गनीमत में से देना, ये तमाम अहकाम स्थगित हो गए आयने सैफ़ या आयने गनीमत या सुन्नत से, क्योंकि ये अहकाम ज़र्भी तक बाक़ी रहे जब तक ये एहद रहा और जब वह एहद उट गया तो अहकाम भी न रहे.

(२०) जैसा कि जिहालत के ज़माने में तरीक़ों था कि लड़कियों को शर्मिन्दगी के ख़याल और नादारी के डर से ज़िन्दा गाड़ देने थे. उससे और हर ताहक़ क़त्ल से बाज़ रहना इस एहद में शामिल है.

(२१) यानी पराया बच्चा लेकर शौहर को धोखा दें और उसके अपने पेट से जना हुआ बताएं जैसा कि इस्लाम के पहले के काल में तरीक़ा था.

(२२) नेक बात अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँवरदारी है.

(२३) ग़ियायत है कि जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़न्ह मक्का के दिन मदों की बैअत लेकर फ़ारिस हुए तो सफ़ा पहाड़ी पर औरतों से बैअत लेना शुरू की और हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो तींचे खड़े हुए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का क़लामे मुबारक औरतों को सुनाते जाते थे. हिन्द बिल्ले उतबह अबू सुफ़ियान की बीबी डरी हुई चुर्का पहन कर इस तरह हाज़िर हुई कि पहचानी न जाए. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम से इस बात पर बैअत लेना हूँ कि तुम अल्लाह तआला के साथ किसी चीज़ को शरीक न करो. हिन्द ने कहा कि आप हम से वह एहद लेते हैं जो हमने आपको मदों से लंते नहीं देखा और उस रोज़ मदों से सिर्फ़ इस्लाम और जिहाद पर बैअत की गई थी. फिर हुज़ूर ने फ़रमाया और चोरी न करेंगी. तो हिन्द ने अर्ज़ किया कि अबू सुफ़ियान कंज़ूस आदमी है और मैं उनका माल ज़रूर लिया है, मैं नहीं समझती मुझे हलाल हुआ या नहीं. अबू सुफ़ियान हाज़िर थे उन्होंने कहा जो तुने पहले लिया और जो आगे ले सब हलाल. इसपर नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुस्कुराए और फ़रमाया तू हिन्द बिल्ले उतबह है? अर्ज़ किया जी हाँ, मुझ से जो कुछ कुसूर हुए हैं माफ़ फ़रमाइये. फिर हुज़ूर ने फ़रमाया, और न बदकारी करेंगी. तो हिन्द ने कहा क्या कोई आज़ाद औरत बदकारी करती है. फिर फ़रमाया, न अपनी औलाद को क़त्ल करें. हिन्द ने कहा, हमने छोटे छोटे पाले जब बड़े होगए तुमने उन्हें क़त्ल कर दिया. तुम जाना और वो जानें. उसका लड़का हुज़ुला बिन अबी सुफ़ियान बद्र में क़त्ल कर दिया गया था. हिन्द की ये बातचीत सुनकर हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो को बहुत हंसी आई फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि अपने हाथ पाँवों के बीच कोई लांछन नहीं घड़ेगी. हिन्द ने कहा ख़ुदा की क़स्म वोहदात बहुत बुरी चीज़ है और हुज़ूर हमको नेक बातों और अच्छी आदतों का हुक्म देते हैं. फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि किसी नेक बात में रसूल (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) की नाफ़रमानी नहीं करेंगी. इसपर हिन्द ने कहा कि इस मज़लिस में हम इसलिये हाज़िर ही नहीं हुए कि अपने दिल में आपकी नाफ़रमानी का ख़याल आने दें. औरतों ने इन सारी बातों का इज़्ज़ार किया और चार सौ सत्तावन औरतों ने बैअत की. इस बैअत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुसाफ़हा न फ़रमाया और औरतों को दस्ते मुबारक छूने न दिया. बैअत की कैफ़ियत में भी यह वधान किया गया है कि एक प्याला पानी में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपना दस्ते मुबारक डाला फिर उसी में औरतों ने अपने हाथ डाले और यह भी कहा गया है बैअत कपड़े के वास्ते से लीगई और बईद नहीं कि दोनों सूरतें अमल में आई हों. बैअत के वक़्त कैदी का इस्तेमाल मशायख़ का तरीक़ा है. यह भी कहा गया है कि यह हज़रत अली मर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो की सुन्नत है. ख़िलाफ़त के साथ टोपी देना मशायख़ का मामूल है और कहा गया है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मन्कूल है औरतों की बैअत में अजनबी औरत का हाथ छूना हमम है या बैअत ज़वान से हो या कपड़े बग़िर की मदद से.

(२४) इन लांगों से मुराद यहूदी है.

(२५) क्योंकि उन्हें पिछली किताबों से मालूम हो चुका था और वो यकीन से जानते थे कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला के रसूल हैं और यहूदियों ने इसे झुटलाया है इसलिये उन्हें अपनी मग़फ़िरत की उम्मीद नहीं.

(२६) फिर दुनिया में वापस आने की, या ये मानी है कि यहूदी आख़िरत के सवाब से ऐसे निराश हुए जैसे कि मरे हुए काफ़िर अपनी क़ब्रों में अपने हाल को जानकर आख़िरत के सवाब से बिल्कुल मायूस हैं.

६१ - सूरए सफ़ - पहला रूक़

(१) सूरए सफ़ मक्की सूरत है और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हमा के कौन के मुताबिक़ और अक्सर मुफ़ससिगं के अनुसार मदनी है. इसमें दो रूक़, चौदह आयतें, दो सौ इक्कीस कलिमे और ना सौ अक्षर हैं.

(२) राहावए क़िराम की एक जमाअत बातचीत कर रही थी. यह वह वक़्त था जब तक कि जिहाद का हुक्म नहीं उतरा था. इस जमाअत में यह तज़क़िरा था कि अल्लाह तआला को सबसे ज्यादा कौन सा अमल प्यारा है. हमें मालूम होता दो हम वही करते चाहे उसमें हमारे जान और माल काम आ जाते. इसपर यह आयत उतरी. इस आयत के उतरने की परिस्थिति में और भी कई क़ील हैं. उनमें एक यह है कि यह आयत मुताफ़िक्कों के बारे में उतरी जो मुसलमानों से मदद का झूठा वादा करते थे.

(३) एक से दूसरा मिला हुआ, हर एक अपनी अपनी जगह जमा हुआ, दुश्मन के मुक़ायले में सब के सब एक जुबूद की तरह.

ने अपनी क़ौम से कहा-ऐ मेरी क़ौम मुझे क्यों मताते हो^(४) हालांकि तुम जानते हो^(५) कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ^(६) फिर जब वो^(७) टेढ़े हुए अल्लाह ने उनके दिल टेढ़े कर दिये^(८) और अल्लाह फ़ासिक लोगों को राह नहीं देता^(९) और याद करो जब ईसा मरयम के बेटे ने कहा, ऐ बनी इस्राईल ! मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ अपने से पहली किताब तौरैत की तस्दीक़ करता हुआ^(१०) और उन रसूल की वशारत सुनाता हुआ, जो मेरे बाद तशरीफ़ लाएंगे उनका नाम अहमद है^(११) फिर जब अहमद उनके पास रौशन निशानियाँ लेकर तशरीफ़ लाए बोले यह खुला जादू है^(१२) और उससे बड़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे^(१३) हालांकि उसे इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता हो^(१४) और ज़ालिम लोगों को अल्लाह राह नहीं देता^(१५) चाहते हैं कि अल्लाह का नूर^(१६) अपने मुंहों से बुझा दें^(१७) और अल्लाह को अपना नूर पूरा करना, पड़े बुरा मानें काफ़िर^(१८) वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे^(१९) पड़े बुरा मानें मुश्रिक^(२०)

قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَقَوْمِ لِمَ تُؤْذُونَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ
أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ
قُلُوبَهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝ وَإِذْ
قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ بَنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ
اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ
وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ
فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ وَمَنْ
أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ
إِلَى الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝
يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ
مُتِمِّمُ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ
رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى
الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝ يَأْتِيهَا الَّذِينَ

مَزِين

(४) आयतों का इन्कार करके और मेरे ऊपर झूटी तोहमतें लगा कर.

(५) यत्नीन के साथ.

(६) और रसूल आदर के पात्र होते हैं उनका सम्मान और अदब बाजिब होता है . उन्हें तक्लीफ़ देना सख्त हाराम और बड़ी ही बदमासीवी है.

(७) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तक्लीफ़ देकर सच्चाई की राह से मुनहरिफ़ यानी फिरे हुए और --

(८) उन्हें सच्चाई के अनुकरण की तोफ़ीक़ से मेहरूम करके.

(९) जो उसके इल्म में नाफ़रमान हैं. इस आयत में चेतावनी है कि रसूलों को तक्लीफ़ देना सख्त जुर्म है और इसके बवाल से दिल टेढ़े हो जाते हैं और आदमी हिदायत से मेहरूम हो जाता है.

(१०) और तौरात व दूसरी आसमानी किताबों का इक्कार और एतिराफ़ करता हुआ और तमाम पहले नबियों का मानना हुआ.

(११) रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक़म से सहाबा नज़ाशी बादशाह के पास गए तो उसने कहा मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और वही रसूल हैं जिनकी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने खुशख़बरी दी अगर सरकारी कामों की पाबन्दियाँ न होंती तो मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर होकर उनकी ज़ुतियाँ उठाना (अबू दाऊद) हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम से रिवायत है तौरात में सयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सिफ़ात दर्ज हैं और यह भी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आप के पास दफ़न होंगे. अबू दाऊद मदनी ने कहा कि रोज़ए अक़दस में एक क़ब्र की जगह बाक़ी है. (तिरमिज़ी) हज़रत कअब अहदर से रिवायत है कि हवारियों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया या रुहल्लाह क्या हमारे बाद कोई और उम्मत भी है. फ़रमाया हाँ, अहमद मुजतबा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत. वो लोग हिकमत वाले, इल्म वाले, नेकी वाले, तक्व वाले हैं और फ़िक़ह में नबियों के नायब हैं. अल्लाह तआला से थोड़े रिज़क़ पर राज़ी और अल्लाह तआला उनसे थोड़े अमल पर राज़ी.

(१२) उसकी तरफ़ शरीफ़ और औलाद की निस्बत करके और उसकी आयतों को जादू बता कर.

(१३) जिसमें दोनों ज़हान को सआदन है.

(१४) यानी सच्चा दीन इस्लाम.

(१५) क़ुरआने पाक को शायरी जादू और तांत्रिक विद्या बता कर.

(१६) चुनाने हर एक दीन अल्लाह की इनायत से इस्लाम से ममलूब होगया. मुजाहिद से मन्कूल है कि जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दोबारा तशरीफ़ लाएंगे तो धरती पर सिवाय इस्लाम के कोई और दीन न होगा.

दूसरा सूक

ऐ ईमान वालों^(१) ! क्या मैं बता दूँ वह तिजारात जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचावे^(२) (१०) ईमान रखो अल्लाह और उसके रसूल पर और अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिये बेहतर है^(३) अगर तुम जानो^(४) (११) वह तुम्हारे गुनाह वसूला देगा और तुम्हें बागों में ले जाएगा जिनके नीचे नेहरें बहें और पाकीजा महलों में जो वसने के बागों में हैं, यही बड़ी कामयाबी है^(५) (१२) और एक नेमत तुम्हें और देगा^(६) जो तुम्हें प्यारी है अल्लाह की मदद और जल्द आने वाली फ़तह^(७) और ऐ मेहबूब ! मुसलमानों को खुशी सुना दो^(८) (१३) ऐ ईमान वालों, खुदा के दीन के मददगार रहो जैसे^(९) ईसा मरयम के वेटे ने हवारीयों से कहा था कौन हैं जो अल्लाह की तरफ़ होकर मेरी मदद करें, हवारी बोले^(१०) हम खुदा के दीन के मददगार हैं, तो बनी इस्राईल से एक गिरोह ईमान लाया^(११) और एक गिरोह ने कुफ़्र किया^(१२) तो हमने ईमान वालों को उनके दुश्मनों पर मदद दी तो ग़ालिब हो गए^(१३) (१४)

أَمِنُوا هَلْ أَتُكْمُ عَلَى تِجَارَةٍ تُفْعِيكُمْ مِّنْ عَذَابِ
الْأَلِيمِ ۝ تَوَفُّوْنَ بِاللّٰهِ وَرِسُوْلِهِ وَتُجَاهِدُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ دُوْنَكُمْ
وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارُ وَ
مَسْكِنٍ طَيِّبَةٍ فِىْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ۝ وَاٰخِرَىٰ تُحِبُّوْنَهَا نَصَرَ مِنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ
قَرِيْبٌ ۚ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
كُوْنُوْا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
لِلْحَوَارِيْنَ مَنْ اَنْصَارِيْ اِلَى اللّٰهِ ۚ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ
نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاَمْنَتْ طَآئِفَةٌ مِّنْ بَنِيْ اِسْرَآءِيْلَ
وَكَفَرَتْ طَآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى
عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝

मज़ल

सूरए सफ़ - दूसरा सूक

(१) ईमान वालों ने कहा था कि अगर हम जानते कि अल्लाह तआला को कौन सा अमल बहुत पसन्द है तो हम वही करते। इसपर यह आयत उतरी और इस आयत में उस अमल की तिजारात से तावीर फ़रमाया गया क्योंकि जिस तरह तिजारात से नफ़े की उम्मीद होती है उसी तरह इन आमाल से बेहतरीन नफ़ा अल्लाह की रज़ा और जन्नत व निजात हासिल होती है।

(२) अब वह तिजारात बताई जाती है।

(३) जान और माल और हर एक चीज़ से।

(४) और ऐसा करो तो।

(५) उसके अलावा जल्द मिलने वाली।

(६) इस फ़तह से या मक्के की फ़तह मुराद है या फ़ारस और रोम के इलाकों की विजय।

(७) दुनिया में विजय की और आख़िरत में जन्नत की।

(८) हवारीयों में अल्लाह के दीन की मदद की थी जबकि ---

(९) हवारी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मुख़लिसों को कहते हैं, ये बारह लोग थे जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर सबसे पहले ईमान लाए, उन्होंने अर्ज़ किया---

(१०) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर।

(११) उन दोनों में लड़ाई हुई।

(१२) ईमान वाले, इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर उठा लिये गए तो उनकी कौन तीन सम्प्रदायों में बँट गई। एक सम्प्रदाय ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की निश्चय कहा कि वह अल्लाह था, आसमान पर चला गया, दूसरे सम्प्रदाय ने कहा वह अल्लाह तआला का बेटा था उसने अपने पास बुला लिया। तीसरे ने कहा कि वह अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल थे उसने उठा लिया। यह तीसरे सम्प्रदाय वाले मूिमिन थे। उनकी इन दोनों सम्प्रदायों से लड़ाई रही और काफ़िर गिरोह उन पर ग़ालिब रहे यहाँ तक कि नदियों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ लाए। उस वक़्त ईमानदार सम्प्रदाय उन काफ़िरों पर ग़ालिब हुआ। इस सूरत में मतलब यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वालों की हमने मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तस्दीक करने से मदद फ़रमाई

अल्लाह के दोस्त हो और लोग नहीं^(१४) तो मरने की आरज़ू न करो^(१५) अगर तुम सच्चे हो^(१६) ॥६॥ और वो कभी इसकी आरज़ू न करेंगे, उन कौतुकों के कारण जो उनके हाथ आगे भेज चुके हैं^(१७) और अल्लाह ज़ालिमों को जानता है^(१८) तुम फ़रमाओ वह मौत जिससे तुम भागते हो वह तो जरूर तुम्हें मिलनी है^(१९) फिर उसकी तरफ़ फेरे जाओगे जो छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुमने किया था^(२०)

दूसरा रूकू

ऐ ईमान वाले ! जब नमाज़ की अज़ान हो जुमुअह के दिन^(१) तो अल्लाह के रिज़क की तरफ़ दौड़ो^(२) और खरीद फ़रोख़्त छोड़ दो^(३) यह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानो^(४) फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़ल तलाश करो^(५) और अल्लाह को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि भलाई पाओ^(६) और जब उन्होंने कोई तिजारात या खेल देखा उसकी तरफ़ चल दिये^(७) और तुम्हें खुल्वे में खड़ा छोड़ गए^(८) तुम फ़रमाओ वह जो अल्लाह के पास है^(९) खेल से और तिजारात से बेहतर है और अल्लाह का रिज़क सब से अच्छा^(१०)

الْجُمُعَةِ

८८४

قَدْ جُمِعَ لِلَّهِ

يَلَهُ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَبَدُّوا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ وَلَا يَمْتَنِعُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمْتُمْ آيَاتِهِمْ ۝ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝ قُلْ إِنْ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلْقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِلًا قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝

مَنْ

दाखिल हों, उनको.

(११) उनका ज़माता न पाया उनके बाद आए या बुजुर्गों में उनके दर्जे को न पहुंचे क्योंकि सहाबा के बाद के लोग चाहे ग़ोस व कुतुब हो जाएं मगर सहाबियत की फ़ज़ीलत नहीं पा सकते.

(१२) अपनी सृष्टि पर उसने उनकी हिदायत के लिये अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का भेजा.

(१३) और उसके आदेशों का अनुकरण उनपर लाज़िम किया गया था सो लोग यहूदी हैं.

(१४) और उसपर अमल न किया और उसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नान व सिफ़त देखने के बावजूद हुज़ूर पर ईमान न लाए.

(१५) और बोझ के सिवा उनसे कुछ भी नफ़ा न पाए और जो उलूम उनमें हैं उनसे कुछ भी वाक्फ़ न हो, यही हाल उन यहूदियों का है जो तौरात उठाए फिरते हैं उसके शब्द रटते हैं और उससे नफ़ा नहीं उठाते, उसके अनुसार अमल नहीं करते और यही मिसाल उन लोगों पर सादिक आती है जो कुरआने करीम के मानी न समझें और उसपर अमल न करें और उससे मुंह फेर लें.

(१६) जैसा कि तुम कहते हो कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं.

(१७) कि मौत तुम्हें उस तक पहुंचाए.

(१८) अपने इस दावे में.

(१९) यानी उस क़फ़ और झुटलाने के कारण जो उनसे सादिर है.

(२०) किसी तरह उससे बच नहीं सकते.

सूरए जुमुअह - दूसरा रूकू

(१) जुमुआ का दिन. इस दिन का नाम अरबी ज़बन में अरुवह था. जुमुआ इसलिये कहा जाता है कि नमाज़ के लिये जमाअतें जमा होती हैं. इसका यह नाम पड़ने के और भी कारण बताए गए हैं. सबसे पहले जिस व्यक्ति ने इस दिन का नाम जुमुआ रखा वह कअब बिन लोई है. पहला जुमुआ जो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने सहाबा के साथ पड़ा, सीरत बयान करने वालों का कहना है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम अब हिज़रत करके मदीनए तैय्यिह तशरीफ़ लाए तो बारहवीं रबीउल अब्तल पीर का दिन चाश के वक़्त मक़ामे कुबा में ठहरे. पीर, मंगल, बुध, ज़ुमेरात यहाँ क़याम फ़रमाया और मस्जिद की नींव रखी. जुमुआ के दिन मदीनए तैय्यिह का इग़दा किया. बनी सालिम इब्ने औफ़ के बले वादी में जुमुआ का वक़्त आया. इस जगह का लोगों ने मस्जिद बनाया. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने वहाँ जुमुआ पढ़ाया और खुल्वे फ़रमाया. जुमुआ का दिन सैयदुल अय्याम यानी

६३ - सूरए मुनाफिकून

सूरए मुनाफिकून मदीने में उतरी, इसमें ११ आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला ^(१) जब मुनाफिक तुम्हारे हुजूर हाज़िर होते हैं ^(२) कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि हुजूर बेशक यकीनन अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह जानता है कि तुम उसके रसूल हो, और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफिक ज़रूर झूठे हैं ^(३) ^(१) और उन्होंने अपनी कसमों को ढाल ठहरा लिया ^(४) तो अल्लाह की राह से रोका ^(५) बेशक वो बहुत ही बुरे काम करते हैं ^(६) ^(२) यह इसलिये कि वो ज़वान से ईमान लाए फिर दिल से काफिर हुए तो उनके दिलों पर मोहर कर दी गई तो अब वो कुछ नहीं समझते ^(३) और जब तू उन्हें देखे ^(४) उनके जिस्म तुझे भले मालूम हों और अगर बात करें तो तू उनकी बात गौर से सुने ^(५) मानो वो कड़ियाँ हैं दीवार से टिकाई हुई ^(६) हर वलन्द आवाज़ अपने ही ऊपर लेजाते हैं ^(७) वो दुश्मन हैं ^(८) तो उनसे बचते रहो ^(९) अल्लाह उन्हें मारे कहाँ ओंधे जाते हैं ^(१०) ^(४) और जब उन से कहा जाए कि आओ ^(५) अल्लाह के रसूल तुम्हारे लिये माफ़ी चाहें तो अपने सर घुमाते हैं और तुम उन्हें देखो कि गौर करते हुए मुंह फेर लेते हैं ^(६) ^(५)



दियों का सरदार है जो मूमिन इस दिन मरे, हदीस शरीफ में है कि अल्लाह तआला उसे शहीद का सवाब अता फ़रमाता है। और क़ब्र के फ़िल्ने से मंहफूज़ रखता है। अज़ान से मुराद पहली अज़ान है, न दूसरी अज़ान जो ख़ुत्बे से जुड़ी होती है। अगरचे पहली अज़ान हज़रत उस्मान गनी रदियल्लाहो अन्हो के ज़माने में बढ़ाई गई मगर नमाज़ के लिये दौड़ना और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ देने का वाजिब होना इसी से मूतअल्लिक है। (दुर्गे मुख़्तार)

(२) दौड़ने से भागना मुराद नहीं है बल्कि मतलब यह है कि नमाज़ की तैयारी शुरू करो और अल्लाह के ज़िक्र से जमहूर के नज़्दीक ख़ुत्बा मुराद है।

(३) इससे मालूम हुआ कि जुमुआ की अज़ान होते ही ख़रीदो फ़रोख़्त ह़राम हो जाती है और दुनिया के सारे काम जो ज़िक्र इलाही से ग़फ़लत का कारण हों इसमें दाख़िल हैं। अज़ान होने के बाद सब काम छोड़देना लाज़िम है। इस आयत से जुमुआ की नमाज़ की फ़र्ज़ियत और क़य विक़य वग़ैरह दुनियावी कामों की हुरमत और नमाज़ की तैयारी का वाजिब होना साबित हुआ और ख़ुत्बा भी साबित हुआ। जुमुआ मुसलमान आक़िल बालिग़ आज़ाद और तन्दुरुस्त मुक़ीम पर शहर में वाजिब होता है। नाबीना और लंगड़े पर वाजिब नहीं होता। जुमुआ की सेहत के लिये सात शर्तें हैं: (१) शहर, जहाँ मुक़दमों का फैसला करने का इस्तिथार रखने वाला कोई हाकिम मौजूद हो या फ़नाए शहर जो शहर से जुड़े हों और शहर वाले उसको अपनी ज़रूरतों के काम में लाते हों। (२) हाकिम (३) ज़ोहर का वक़्त (४) वक़्त के अन्दर ख़ुत्बा (५) ख़ुत्बे का नमाज़ से पहले होना, इतनी जमाअत में जो जुमुआ के लिये ज़रूरी है। (६) जमाअत और उसकी कम से कम संख्या तीन मर्द हैं इमाम के अलावा (७) आम इज़ाज़त कि नमाज़ियाँ को नमाज़ की जगह आने से न रोका जाए।

(४) यानी अब तुम्हारे लिये जायज़ है कि मआश के कामों में लग जाओ या इल्म हासिल करने में या मरीज़ की देखभाल में या जनाज़े में शिरक़त या उलमा की ज़ियारत और इस जैसे कामों में मशग़ूल होकर नेकियाँ हासिल करो।

(५) नबीयं कीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीनाए तैय्यिबह में जुमुआ के दिन ख़ुत्बा फ़रमा रहे थे इस हाल में ताजिरो का एक क़ाफ़िला आया और दस्तूर के मुताबिक़ पैलान के लिये तक्करा बजाया गया। ज़माना बहुत तंगी और मंहगाई का था लोग इस ख़याल से उसकी तरफ़ चले गए कि ऐसा न हो कि देर करने से अजनास (चीज़ें) ख़तम हो जाएँ और हम न पा सकें और मस्जिद शरीफ़ में सिर्फ़ बारह आदमी रह गए, इसपर यह आयत उतरी।

उनपर एक सा है तुम उनकी माफ़ी चाहो या न चाहो अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा^(६) वेशक अल्लाह फ़ासिकों को राह नहीं देता^(६) वही हैं जो कहते हैं कि उनपर खर्च न करो जो रसूलुल्लाह के पास हैं यहाँ तक कि परेशान हो जाएं, और अल्लाह ही के लिये हैं आसमानों और ज़मीन के खज़ाने^(७) मगर मुनाफ़िकों को समझ नहीं^(८) कहते हैं हम मदीना फिर कर गए^(९) तो ज़रूर जो बड़ी इज़्ज़त वाला है वह उसमें से निकाल देगा उसे जो बहुत ज़िल्लत वाला है^(१०) और इज़्ज़त तो अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों ही के लिये है मगर मुनाफ़िकों को ख़बर नहीं^(१०) (८)

दूसरा रकू

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से गाफ़िल न करे^(१) और जो ऐसा करे^(२) तो वही लोग नुक़सान में हैं^(३) (९) और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में खर्च करो^(४) इसके पहले कि तुम में किसी को मौत आए, फिर कहने लगे ऐ मेरे रब ! तूने मुझे थोड़ी मुदत तक क्यों मुहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۚ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝ هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُوا ۚ وَرَبُّهُ خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝ يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۖ فَأَصَّدَّقَ ۚ وَ أَكُنْ مِنَ الْمُنْذَرِينَ ۝

मैं

(६) इससे साबित हुआ कि ख़तीब को खड़े होकर ख़ुत्बा पढ़ना चाहिये.

(७) यानी नमाज़ का अज़ और सबाब और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर रहने की दरक़्त और सआदत.

६३ - सूरए मुनाफ़िकून - पहला रकू

(१) सूरए मुनाफ़िकून मदनी है, इसमें दो रकू, ग्यारह आयतें, एक सौ अरसी कलिमे और नौसौ छिहत्तर अक्षर हैं.

(२) तो अपने ज़मीर के खिलाफ़.

(३) उनका बातिन ज़ाहिर के अनुसार नहीं, जो कहते हैं उसके विपरीत अक़ीदा रखते हैं.

(४) कि उनके ज़रिये से क़त्ल और कैद से मेहफूज़ रहें.

(५) लोगों को यानी जिहाद से या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने से तरह तरह के बसबसे और संदेह डाल कर.

(६) कि ईमान के मुकाबले में कुछ इस्तिफ़ार करते हैं.

(७) यानी मुनाफ़िकों को जैसे कि अब्दुल्लाह बिन उवई इब्ने सुलूल.

(८) इब्ने उवई मोटा ताज़ा गोरा चिट्ठा सुन्दर और अच्छा बोलने वाला आदमी था और उसके साथ वाले मुनाफ़िक करीब करीब वैसे ही थे. नबीय करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मजलिस शरीफ़ में जब ये लोग हाज़िर होते तो ख़ूब बातें बनाते जो सुनने वाले को अच्छी लगतीं.

(९) जिनमें बेजान तख़ीर की तरह न ईमान की रूढ़ न अंजाम सोचने वाली अक़ल.

(१०) कोई किसी को पुकारता हो या अपनी थोड़ी चीज़ दूँदता हो या लश्कर में किसी ज़रूरत से कोई बात ऊंची आवाज़ से कहे तो ये अपने नफ़स की बुराई और बदगुमानी से यही समझते हैं कि उन्हें कुछ कहा गया और उन्हें यह अन्देशा रहता है कि उनके बारे में कोई ऐसा मज़मून उतरा जिससे उनके भेद खुल जाएं.

(११) दिल में सख़्त दुश्मनी रखते हैं और काफ़िरों के पास यहाँ की ख़बरें पहुंचाते हैं, उनके जासूस हैं.

(१२) और उनके ज़ाहिरी हाल से धोखा न खाओ.

(१३) और रौशन दलील कायम होने के बावजूद सच्चाई से मुंह फेरते हैं.

(१४) माफ़ी चाहने के लिये.

नेकों में होता (१०) और हरगिज़ अल्लाह किसी जान को मुहलत न देगा जब उसका वादा आजाए (११) और अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है (१२)

६४- सूरए तगाबुन

सूरए तगाबुन मदीने में उतरी, इसमें १८ आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में, उसी का मुल्क है और उसी की तारीफ़ (२) और वह हर चीज़ पर कादिर है (३) वही है जिसने तुम्हें पैदा किया तो तुममें कोई काफ़िर और तुम में कोई मुसलमान (४) और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है (५) उसने आसमान और ज़मीन हक़ के साथ बनाए और तुम्हारी तस्वीर की तो तुम्हारी अच्छी सूरत बनाई (६) और उसी की तरफ़ फिरना है (७) जानता है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है और जानता है जो तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो, और अल्लाह दिलों की बात जानता है (८) क्या तुम्हें (९) उनकी खबर न आई जिन्होंने तुमसे पहले कुफ़्र किया (१०) और अपने काम का बवाल चखा (११) और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब

الضّٰلّٰجِيْنَ ۝ وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اٰجَلُهَا ۚ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝
سُوْرَةُ التّٰغٰوْبِ مَدَنِيَّةٌ (۱۸)
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يَسْمُوْهُ اللّٰهُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۚ وَهُوَ عَلٰۤى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝
هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ فِىْ بُطُوْنِ اٰمِهٰتِكُمْ ۚ كَافِرٌۢ وَمُؤْمِنٌ ۚ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوْرَكُمْ ۚ
وَالِيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسْرُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذٰتِ الصُّدُوْرِ ۝ اَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ فَقَدِ اتُّوْا وَاَبَالْ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ

مَدَنِيَّةٌ

(१५) ग़ज़वए मरीसीअ से फ़ारिश होकर जब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कुए के पास क़याम फ़रमाया तो यहाँ यह वाकिआ पेश आया कि हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो के अज़ीर जहज़ाह शिफ़ारी और इब्ने उबई के सहायक सेनान बिन दवर जुहनी के बीच जंग हो गई. जहज़ाह ने मुहाजिरों को और सेनाए ने अस्वार को पुकारा. उस वक़्त इब्ने उबई मुनाफ़िक्क ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शाव में बहुत ख़राब और अपमान जनक बातें बर्की और यह कहा कि मदीनए तैय्यिह पहुँचकर हममें से इज़ज़त वाले ज़लीलों को निकाल देंगे और अपनी क़ौम से कहने लगा कि अगर तुम इन्हें अपना झूठा खाना न दो तो ये तुम्हारी गर्दनो पर सवार न हों. अब इन पर कुछ ख़र्च न करो ताकि ये मदीने से भाग जाएं. उसकी यह बेहूदा बक्वास सुनकर ज़ैद बिन अरक़म को ताव न रही उन्होंने उससे फ़रमाया कि खुदा की क़स्म तूही ज़लील है अपनी क़ौम में बुज़्र डालने वाला और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सरे मुबारक पर मेराज का ताज है अल्लाह तआला ने उन्हें इज़ज़त और कुव्वत दी है. इब्ने उबई कहने लगा चुप, मैं तो हंसी से कह रहा था. ज़ैद इब्ने अरक़म ने यह ख़बर हुज़ूर की ख़िदमत में पहुँचाई हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने इब्ने उबई के क़त्ल की इज़ाज़त चाही. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मना फ़रमाया और इरशाद किया कि लांग कहेंगे कि मुहम्मद अपने साथियों को क़त्ल करते हैं. हुज़ूर अनवर ने इब्ने उबई से दरियाफ़्त फ़रमाया कि तूने ये बातें कही थीं, वह इन्कार कर गया और क़स्म खागया कि मैंने कुछ भी नहीं कहा. उसके साथी जो मजलिस शरीफ़ में हाज़िर थे वो अर्ज़ करने लगे कि इब्ने उबई बूढ़ा बड़ा आदमी है यद जो कहता है ठीक ही कहता है. ज़ैद बिन अरक़म को शायद धोखा हुआ हो और बात याद न रही हो. फिर जब ऊपर की आयतें उतरीं और इब्ने उबई का झूट ज़ाहिर होगया तो उससे कहा गया कि जा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दरखास्त कर कि हुज़ूर तेरे लिये अल्लाह तआला से माफ़ी चाहें. तो गर्दन फेरी और कहने लगा कि तुमने कहा ईमान ला तो ईमान ले आया, तुमने कहा कि ज़कात दे तो मैंने ज़कात दी अब यही दाक्की रह गया है कि मुहम्मद को सजदा करू. इसपर यह आयत उतरी.

- (१६) इसलिये कि वो दोगलेपन में पक्के हो चुके हैं.
(१७) वही सबका रिज़्क देने वाला है.
(१८) इस ग़ज़वे से लौट कर.
(१९) मुनाफ़िक्को ने अपने को इज़ज़त वाला कहा और ईमान वालों को ज़िल्लत वाला. अल्लाह तआला फ़रमाता है.
(२०) इस आयत के उतरने के कुछ ही दिन बाद इब्ने उबई मुनाफ़िक्क अपने दोगलेपन की हालत पर मर गया.

है (१५) यह इसलिये कि उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें लाते (१६) तो बोले क्या आदमी हमें राह बताएंगे (१७) तो काफ़िर हुए (१८) और फिर गए (१९) और अल्लाह ने वेनियाज़ी को काम फ़रमाया और अल्लाह वेनियाज़ है सब ख़ुबियों सराहा (६) काफ़िरो ने वका कि वो हरगिज़ न उठाए जाएंगे. तुम फ़रमाओ क्यों नहीं, मेरे रब की क़सम, तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर तुम्हारे कौतुक तुम्हें जता दिये जाएंगे, और यह अल्लाह को आसान है (७) तो ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल और उस नूर पर (१४) जो हमने उतारा और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है (८) जिस दिन तुम्हें इक़ट्टा करेगा सब जमा हाने के दिन (१५) वह दिन है हार वालों की हार खुलने का (१६) और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे अल्लाह उसकी बुराइयाँ उतार देगा और उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नेहरे वहाँ कि वो, हमेशा उनमें रहें, यही बड़ी कामयाबी है (९) और जिन्होंने ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाई वो आग वाले हैं हमेशा उसमें रहें, और क्या ही बुरा अंजाम (१०)

أَلَيْسَ ذَلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَبَشَرٌ يَهْدُونَنَا فَكُفِّرُوا وَ
تَوَلَّوْا وَاسْتَعْتَى اللَّهُ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ رَعِمَ
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا قُلْ بَلْ وَرَبِّي
لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبُّونَ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَلِكَ عَلَى
اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ فَاْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي
أَنْزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَوْمَ يُجْعَلُكُمْ
لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ التَّعَابِينِ ۚ وَمَنْ يُؤْمِنْ
بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ
وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ مَا أَصَابَ

सूरए मुनाफ़िकून - दूसरा रूकू

- (१) पाँच वक़्त की नमाज़ों से या क़ुरआन शरीफ़ से.
- (२) कि दुनिया में मशगूल होकर दीन को भुला दे और माल की महबत में अपने हाल की पर्वाह न करे और औलाद की खुशी के लिये आख़िरत की राहत से नाफ़िल रहे.
- (३) कि उन्होंने फ़ानी दुनिया के पीछे आख़िरत की वाक़ी रहने वाली नेअमतों की पर्वाह न की.
- (४) यानी जो सदाक़ात वाजिब हैं वो अदा करो.
- (५) जो लौटे मंहफ़ूज़ में दर्ज हैं.

६४ - सूरए तगाबुन - पहला रूकू

- (१) सूरए तगाबुन अक्सर के नज़्दीक मदनी है और कुछ मुफ़सिरो का कहना है कि मक्के में उतरी. सिवाय तीन आयतों के जो 'या अय्युहल्लज़ीना आमनू इन्ना मिन अज़वाजिकुम' से शुरू होती हैं. इस सूरत में दो रूकू, अठारह आयतें, दोसरी इक्तालीस कलिमें और एक हज़ार सत्तर अक्षर हैं.
- (२) अपने मुल्क में अपनी मर्ज़ी का मालिक है जो चाहता है जैसा करता है, न कोई शरीक न साझी, सब नेअमतें उसी की हैं.
- (३) हदीस शरीफ़ में है कि इन्सान की सआदत और शक़ावत फ़रिश्ता अल्लाह के हुक्म से उसी वक़्त लिख देता है जब कि वह अपनी माँ के पेट में होता है.
- (४) तो लाज़िम है कि तुम अपनी सीरत भी अच्छी रखो.
- (५) आख़िरत में.
- (६) ऐ मक्के के काफ़िरो.
- (७) यानी क्या तुम्हें गुज़री हुई उम्मतों के हालात मालूम नहीं जिन्होंने नबियों को झुटलाया.
- (८) दुनिया में अपने कुफ़्र की सज़ा पाई.
- (९) आख़िरत में.
- (१०) चमत्कार दिखाते.
- (११) यानी उन्होंने बशर के रसूल होने का इन्कार किया और यह सरासर बेअक्ली और नादानी है. फिर बशर का रसूल होना तो न माना और पत्थर का खुदा होना तस्लीम कर लिया.

दूसरा रूकू

कोई मुसीबत नहीं पहुंचती^(१) मगर अल्लाह के हुक्म से, और जो अल्लाह पर ईमान लाए^(२) अल्लाह उसके दिल को हिदायत फ़रमावेगा^(३) और अल्लाह सब कुछ जानता है^(४) और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो फिर अगर तुम मुंह फेरो^(५) तो जान लो कि हमारे रसूल पर सिर्फ़ खुला पहुंचा देना है^(६) अल्लाह है जिसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं और अल्लाह ही पर ईमान वाले भरोसा करें^(७) ऐ ईमान वाला! तुम्हारी कुछ बीवियां और बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं^(८) तो उनसे एहतियात रखो^(९) और अगर माफ़ करो और दरगुज़र करो और बख़्श दो तो वेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरवान है^(१०) तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं^(११) और अल्लाह के पास बड़ा सवाब है^(१२) तो अल्लाह से डरो जहाँ तक हो सके^(१३) और फ़रमान सुनो और हुक्म मानो^(१४) और अल्लाह की राह में खर्च करो अपने भले को, और जो अपनी जान के लालच से बचाया गया^(१५) तो वही भलाई पाने वाले हैं^(१६) अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे^(१७) वह तुम्हारे लिये उसके दूने कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और

مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ
يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَأَطِيعُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا
عَلَيْ رَسُولِنَا الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ بَيَّأْتُمُ
الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا
لَكُمْ فَأَخَذُوا هُمُ ۚ وَإِنْ تَغْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأُ
أَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَ أَجْرٍ عَظِيمٍ ۝
فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمِعُوا وَأَطِيعُوا
وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِأَنْفُسِكُمْ ۚ وَمَنْ يُوقْ شَحْمَ
نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ إِنْ تَقْرَضُوا
اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يَضْعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ

मन्ज़िल

(१२) रसूलों का इन्कार करके.

(१३) ईमान से.

(१४) नूर से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है क्योंकि इसकी बदौलत गुमराही की तारीकियाँ दूर होती हैं और हर चीज़ की हकीकत बाज़ग़ होती है.

(१५) याती क़यामत के दिन जिसमें सब अगले पिछले जमा होंगे.

(१६) याती काफ़िरों की मेहरबानी ज़ाहिर होने का.

सूरए तगाबुन - दूसरा रूकू

(१) मौत की या बीमारी की या माल के नुक़सान की या और कोई.

(२) और जानें कि जो कुछ होता है अल्लाह तआला की मर्ज़ी और उसके इरादे से होता है और मुसीबत के वक़्त इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजिऊन पढ़ें. और अल्लाह तआला की अता पर शुक्र और बला पर सब्र करें.

(३) कि वह और ज़्यादा नेकियों और ताअतों में लगे.

(४) अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमावशकारी से.

(५) चुनान्वे उन्होंने अपना क़र्ज़ अदा कर दिया और भरपूर तरीक़े पर दीन की तच्चीग़ फ़रमादी.

(६) कि तुम्हें नेकी से रोकते हैं.

(७) और उनके कहने में आकर नेकी से बाज़ न रहो. कुछ मुसलमानों ने मक्कए मुकर्रमा से हिजरत का इरादा किया तो उनके बाल बच्चों ने उन्हें रोका और कहा हम तुम्हारी जुदाई पर सब्र न कर सकेंगे. तुम चले जाओगे, हम तुम्हारे पीछे हलाक हो जाएंगे. यह बात उनपर असर कर गई और वो ठहर गए. कुछ समय बाद जब उन्होंने हिजरत की तो उन्होंने रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा को देखा कि वो दीन में बड़े माहिर और फ़कीह हो गए हैं. यह देखकर उन्होंने अपने बाल बच्चों को सज़ा देने की ठानी और यह निश्चय किया कि उनका खर्चा पानी दन्द कर दें क्योंकि वही लोग उन्हें हिजरत से रोकें हुए थे. जिसका नतीजा यह हुआ कि हुज़ूर के साथ हिजरत करने वाले सहाबा इत्म और फ़िक़ह में उनसे कहीं आगे निकल गए. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें अपने बीबी बच्चों से दरगुज़र करने और माफ़ करने की तसीब फ़रमाई गई. चुनान्वे आगे इरशाद होता है.

(८) कि कभी आदमी उसकी वजह से गुनाह और गुमराही में जकड़ जाता है और उनमें लगकर आख़िरत के काम करने से माफ़िल हो जाता है.

अल्लाह क़द्र फ़रमाने वाला हिल्म वाला है (१७) हर छुपे और ज़ाहिर का जानने वाला इज़्ज़त वाला हिकमत वाला (१८)

६५- सूरए तलाक़

सूरए तलाक़ मदीने में उतरी, इसमें बारह आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) ऐ नबी (२) जब तुम लोग औरतों को तलाक़ दो तो उनकी इदत के वक़्त पर उन्हें तलाक़ दो और इदत की गिनती रखो (३) और अपने रब अल्लाह से डरो इदत में उन्हें उनके घरों से न निकालो और वो आप निकलें (४) मगर यह कि कोई खुली बेहयाई की बात लाए (५) और ये अल्लाह की हदें हैं, और जो अल्लाह की हदों से आगे बढ़े, बेशक उसने अपनी जान पर जुल्म किया, तुम्हें नहीं मालूम शायद अल्लाह इसके बाद कोई नया हुक्म भेजे (६) तो जब वो अपनी मीआद तक को पहुंचने को हों (७) तो उन्हें भलाई के साथ रोक लो या भलाई के साथ जुदा करो (८) और अपने में दो सिकह को गवाह कर लो और अल्लाह के लिये गवाही क़ायम करो, (९) इससे नसीहत फ़रमाई जाती है उसे जो

وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ عَلِيْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۝

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ

لِعَدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمۡ ۚ

لَا تَخْرِجُوْهُنَّ مِنْ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ

اِلَّا اَنْ يَّبَيِّنَنَّ يَفَاحِشَةً مُّبِيْنَةً ۚ وَتِلْكَ

حُدُوْدُ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ

ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۚ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللّٰهَ يُخْرِجُكَ

بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ

فَامْسِكُوْهُنَّ يَمْعُرُوْنَ اَوْ قَارِعُوْهُنَّ يَمْعُرُوْنَ

وَاَشْهَدُوْا ذَوْنَهُ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِمُوْا

مَوَاقِفَ

- (१) तां लिहाज़ रखो ऐसा न हो कि माल और औलाद में लगकर अज़ीम सवाब ग़ो बैठो।
 (१०) यानी अपनी शक्ति और क्षमता के अनुसार ताअत और इयादन करो। यह तफ़सीर है इब्नुल्लाह हक्का तुकातिही (अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिये) की।
 (११) अल्लाह नआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का।
 (१२) और उसने अपने माल को इन्मीनान के साथ शरीअत के आदेश के मुताबिक खर्च किया।
 (१३) यानी खुशदिली से, नक नियती के साथ हलाल माल से सदक़ा दांगे। सदक़ा देने को तुम्हो करम के साथ क़र्ज़ से तारीफ़ फ़रमाया। इसमें सदक़ा की तारीफ़ है कि सदक़ा देने वाला तुम्हारा में नहीं है। उसका इनाम ज़रूर ज़रूर पागमा।

६५ - सूरए तलाक़ - पहला रूकू

- (१) सूरए तलाक़ मदीनी है इसमें दो रूकू, बारह आयतें और दो सौ उनचास कलिमें और एक हजार साठ अक्षर हैं।
 (२) अपनी उम्मत से फ़रमा दीजिये।
 (३) यह आयत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में उतरी, उन्होंने अपनी पीवी का औरतों के ख़ास दिनों में तलाक़ दी थी। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें हुक्म दिया कि ख़जमत करें फिर अगर तलाक़ देना चाहें तो पाकी के दिनों में तलाक़ दें। इस आयत में औरतों से मुराद वो औरतें हैं जो अपने शौहरों के पास गई हों, छोटी, गर्भवती और ऐसी न हों जिनकी माहवारी बुढ़ापे की वजह से बन्द हो गई हो। जिस औरत ने शौहर के साथ हमबिस्तरी न की हो उसपर इदत नहीं है बाकी तीनों क्रिस्म की औरतें, जो बताई गई, उन्हें माहवारी नहीं होती तो उनकी इदत माहवारी से नहीं गिनी जाएगी। जिस औरत से शौहर ने हमबिस्तरी न की हो उस माहवारी में तलाक़ देना जायज़ है। आयत में जो हुक्म दिया गया उससे मुराद शौहरों के साथ सोई हुई ऐसी औरतें हैं जिनकी इदत माहवारी से गिनी जाए, उन्हें तलाक़ देना हो तो ऐसी पाकी के दिनों में तलाक़ दें जिसमें उनसे हमबिस्तरी न की गई हो। फिर इदत गुज़रने तक उससे तअरूज़ न करें इसको तलाक़े अहसन कहते हैं। तलाक़ हसन - यानी जिस औरत से शौहर ने कुर्वत न की हो उसको एक तलाक़ देना तलाक़े हसन है चाहे यह तलाक़ माहवारी में हो। और औरत अगर माहवारी वाली हो तो उसे तीन तलाक़ें ऐसी तीन पाकियों में देना जिनमें उससे कुर्वत न की हो, तलाक़े हसन है। और अगर औरत माहवारी वाली न हो तो उसके तीन तलाक़ें तीन महीनों में देना तलाक़े हसन है। तलाक़े बिदई - माहवारी की हालत में तलाक़ देना या ऐसी पाकी में तलाक़ देना जिसमें कुर्वत की गई हो, तलाक़े बिदई है। ऐसे ही एक पाकी में तीन या दो तलाक़ें एक साथ या दोबार में देना तलाक़े बिदई है अगरच उस पाकी में कुर्वत न की गई हो। तलाक़े बिदई मक्रूह है मगर बाक़ हो जाती है और ऐसी तलाक़ देना वाला गुनाहगार होता है।

अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान रखता हो^(१०) और जो अल्लाह से डरे^(११) अल्लाह उसके लिये निजात की राह निकाल देगा^(१२) और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ उसका गुमान न हो, और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसे काफ़ी है^(१३) वेशक अल्लाह अपना काम पूरा करने वाला है, वेशक अल्लाह ने हर चीज़ का अन्दाज़ा कर रखा है^(१३) और तुम्हारी औरतों में जिन्हें हैज़ की उम्मीद न रही^(१४) अगर तुम्हें कुछ शक हो^(१५) तो उनकी इद्त तीन महीने है और उनकी जिन्हें अभी हैज़ न आया^(१६) और हमल बालियों की मीआद यह है कि वो अपना हमल जन लें^(१७) और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उसके काम में आसानी फ़रमा देगा^(१८) यह^(१९) अल्लाह का हुक्म है कि उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा, और जो अल्लाह से डरे^(२०) अल्लाह उसकी बुराईयाँ उतार देगा और उसे बड़ा सवाब देगा^(२१) औरतों को वहाँ रखो जहाँ खुद रहते हो अपनी ताक़त भर^(२२) और उन्हें ज़रर (कष्ट) न दो कि उनपर तंगी करो, ^(२३) और अगर^(२४) हमल बालियाँ हों तो उन्हें नान

الشَّهَادَةُ لِلَّهِ ۖ ذَلِكُمْ يُوعِظُ بِهِ مَنِ كَانَ
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ
يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ۖ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ
إِنَّ اللَّهَ بِأَلْبَابِ أَمْرِكُمْ ۖ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ
قَدَرًا ۖ وَالَّذِي يُنْسِنُ مِنَ الْحَيْضِ مِنْ نِسَائِكُمْ
إِنْ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ ۖ وَالَّذِي لَمْ
يَحْضَنْ ۖ وَأُولَئِكَ الْأَحْصَالُ أَجْلُهُنَّ أَنْ
يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۖ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ
مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۖ ذَٰلِكَ أَهْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ
إِلَيْكُمْ ۖ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَكْفُرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ
وَيُعْظِمَ لَهُ أَجْرًا ۖ أَشْكُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ
سَكَنْتُمْ مِنْ وَجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِضَعْفِهِنَّ

(४) औरत को इद्त शौहर के घर पूरी करनी लाज़िम है. न शौहर को जायज़ कि तलाक़शुदा औरत को घर से निकाले न उन औरतों को वहाँ से निकलना दुर्लभ.

(५) उनसे कोई ख़ुली बुराई सरज़द हो जिसपर हद आती है जैसे कि ज़िना और चोरी, इसके लिये उन्हें निकालना ही होगा. अगर औरत गालियाँ बकती है और घरवालों को तकलीफ़ देती है तो उसको निकालना जायज़ है. जो औरत तलाक़े रजई या बाइन की इद्त में हो उसको घर से बाहर निकालना बिल्कुल जायज़ नहीं और जो मौत की इद्त में हो वह हाज़त पड़े तो दिन में निकल सकती है लेकिन रात गुज़ारना उसका शौहर के घर में ही ज़रूरी है. जो औरत तलाक़े बाइन की इद्त में हो उसके और शौहर के बीच पर्दा ज़रूरी है और ज़्यादा बेहतर यह है कि कोई और औरत उन दोनों के बीच हाथल हो. अगर शौहर फ़ासिक़ हो या मकान बहुत तंग हो तो शौहर को उस मकान से चला जाना बेहतर है.

(६) रजअत का.

(७) यानी इद्त आख़िर होने के करीब हो.

(८) यानी तुम्हें इज़्तिहार है अगर तुम उनके साथ अच्छी तरह से रहना चाहते हो तो रजअत कर लो और दिल में फिर दोबारा तलाक़ देने का इरादा न रखो और अगर तुम्हें उनके साथ भलाई के साथ बसर करने की उम्मीद न हो तो मेहर वगैरह उनके हक़ अदा करके उनसे जुदाई करलो और उन्हें तकलीफ़ न पहुंचाओ इस तरह कि इद्त ख़त्म होने से ज़रा पहले रजअत करलो, फिर तलाक़ दे दो और इस तरह उन्हें उनकी इद्त तम्बी करके परेशानी में डालो. ऐसा न करो चाहे रजअत करो या जुदाई इज़्तिहार करो, दोनों सूतों में तोहमत से दूर रहने और झगड़ा दूर रखने के लिये दो मुसलमानों को गवाह कर लेना मुस्तहब है, चुनावे इरशाद होता है.

(९) इससे मक़सूद उसकी रज़ाजूई हो और सच्चाई की स्थापना और अल्लाह के हुक्म की तामील के सिवा अपना कोई बुरा स्वार्थ उसमें न हो.

(१०) इससे इस्तिदलाल किया जाता है कि काफ़िर शरीअत और अहक़ाम के साथ मुखातब नहीं.

(११) और तलाक़ दे तो स्पष्ट शब्दों में तलाक़ दे और इद्त वाली को तकलीफ़ न पहुंचाए न उसे घर से निकाले और अल्लाह के हुक्म के अनुसार मुसलमानों को गवाह करले.

(१२) जिससे वह दुनिया और आख़िरत के ग़मों से निजात पाए और हर तंगी और परेशानी से मेहफूज़ रहे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से रिवायत है कि जो व्यक्ति इस आयत को पढ़े अल्लाह तआला उसके लिये दुनिया के शुबहात और मौत की तकलीफ़ों और क़यामत की सज़ियाँ से निजात की राह निकालेगा. इस आयत की निबत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि मेरे इल्म में एक ऐसी आयत है जिसे लोग मेहफूज़ करले तो उनकी हर ज़रूरत और हाज़त के लिये काफ़ी है. ओफ़ बिन मालिक के बेटे का मुथ़िक्को ने कैद करलिया तो ओफ़ नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने यह भी अर्ज़ किया कि मेरा बेटा मुथ़िक्को

नफ़का दो, यहाँ तक कि उनके बच्चा पैदा हो^(२३) फिर अगर वो तुम्हारे लिये बच्चे को दूध पिलाए तो उन्हें उसकी उजरत दो^(२४) और आपस में मअकूल तौर पर मशवरा करो^(२५) फिर अगर आपसी मज़ायका करा (दुशवार समझो)^(२६) तो करीब है कि उसे और दूध पिलाने वाली मिल जाएगी^(२७) मक़दूर वाला^(२८) अपने मक़दूर के काबिल नफ़का दे, और जिस पर उसका रिज़क तंग किया गया वह उसमें से नफ़का दे जो उसे अल्लाह ने दिया, अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं रखता मगर उसी काबिल जितना उसे दिया है करीब है अल्लाह दुशवारी के बाद आसानी फ़रमा देगा^(२९) ^(३०)

दूसरा सूक़

और कितने ही शहर थे जिन्होंने अपने ख़ के हुक़म से और उसके रसूलों से सरकशी की तो हमने उनसे सख़्त हिसाब लिया^(१) और उन्हें बुरी मार दी^(२) ^(३) तो उन्होंने अपने किये का ववाल चखा और उनके काम का अंजाम घाटा हुआ^(४) अल्लाह ने उनके लिये सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है तो अल्लाह से डरो, ऐ अक़ल वालो ! जो ईमान लाए हो, बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिये इज़्ज़त उतारी है^(५) वह रसूल^(६) कि तुम पर अल्लाह की रौशन आयतें पड़ता है

عَلَيْهِنَّ ۖ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتٍ حَمِلٌ فَلْيَضْحَكُوا عَلَيْهِنَّ
حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَارْضَعْنَ
أُجُورَهُنَّ ۚ وَأَنْتُمْ بِبَيْنِكُمْ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَإِنْ
تَعَاَسَیْتُمْ فَسَرُّضُهُمْ لَهُ ۚ خُذْ مِنْ رِزْقِهِ ۚ ذُو سَعَةٍ
مِّنْ سَعَتِهِ ۚ وَمَنْ قُدِّرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ
مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يَكْفُلُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مِمَّا آتَاهَا
سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۚ وَكَآيِنٌ مِّنْ قُرْبَيَّةٍ
عَلَّتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَنُحِاسِبُنَهَا حِسَابًا
شَدِيدًا ۚ وَعَذَابُهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ فَذَاقَتْ
وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ۝
أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۚ فَاتَّقُوا
اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ
قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۚ رَسُولًا يَتْلُوهُ

مَنْ

ने क्रोध कर लिया है और उसी के साथ अपनी मोहताजी और नादारी की शिकायत क. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का डर सत्रा और सत्र करण और बहुलात से लाहौल बला कुबत इल्ला विल्लाहिल अलियिल अज़ीम पड़ते रहो. औरफ ने घर आकर अपनी बीबी से यह कहा और दोनों ने पढ़ना शुरू किया. वो पढ़ ही रहे थे कि बेटे ने दरवाज़ा खटखटाया. दुस्मन गाफिल होगया था उसने मोक्का पाया, क्रोध से निकल भागा और चलते हुए चार हजार बकरियाँ भी दुस्मन की साथ ले आया. औरफ ने ख़िदमतने अक़दस में हाज़िर होकर दरियाफ़्त किया क्या ये बकरियाँ उनके लिये हलाल हैं. हुज़ूर ने इजाज़त दी और यह आयत उतरी.

(१३) दोनों ज़हान में.

(१४) बूढ़ी होजान की बज़ह से कि वो माहवारी से आज़ाद हो गई हों. पाकी की उम्र एक क़ौल में पचपन और एक क़ौल में साट साल की उम्र है और सही यह है कि जिस उम्र में माहवारी बन्द हो जाए वही पाकी की उम्र है.

(१५) इसमें कि उनका हुक़म क्या है. सहाबा ने रसूलें करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि माहवारी वाली औरतों की इद्दत तो हमें मालूम होगई. जो माहवारी वाली न हों उनकी इद्दत क्या है. इसपर यह आयत उतरी.

(१६) यानी वो छेटी उम्र की हैं या बालिम होने की उम्र तो आगई मगर अभी माहवारी शुरू न हुई, उनकी इद्दत भी तीन माह है.

(१७) गर्भवती औरतों की इद्दत बच्चे की पैदायश है चाहे वह इद्दत तलाक़ की हो या मौत की.

(१८) आदेश जो बयान हुए.

(१९) और अल्लाह तआला के उतारे हुए अहक़ाम पर अमल करे और अपने ऊपर जो हुक्क़ वाजिव हैं उन्हें अच्छी तरह अदा करे.

(२०) तलाक़ दी हुई औरत को इद्दत तक रहने के लिये अपनी हैसियत के मुताबिक़ मक़ान देना शौहर पर वाजिव है और उस मुद्दत में नान नफ़का देना भी वाजिव है.

(२१) जगह में उनके मक़ान को घेर कर या किसी ग़लत व्यक्ति को उनके साथ ठहराकर या और कोई ऐसी तकलीफ़ देकर कि वह निकलने पर मजबूर हों.

(२२) वो तलाक़ पाई औरतें.

(२३) क्योंकि उनकी इद्दत जय ही पूरी होगी. नफ़का जैसा गर्भवती को देना वाजिव है ऐसा ही ग़ैर गर्भ वाली का भी चाहें उसका तलाक़ ख़र्च दी हो या बाइन.

(२४) बच्चे को दूध पिलाना माँ पर वाजिव नहीं. बाप के ज़िम्मे है कि बेटे देकर दूध पिलाए. लेकिन अगर बच्चा माँ के सिवा किसी और औरत का दूध न पिये या बाप फ़कीर हो तो उस हालत में माँ पर दूध पिलाना वाजिव हो जाता है. बच्चे की माँ जबतक उसके बाप के तिकाह में हो या तलाक़ ख़र्च की इद्दत में, ऐसी हालत में उसका दूध पिलाने की उजरत लेना जायज़ नहीं, इद्दत के बाद जायज़ है. किसी औरत को निर्धारित वतन पर दूध पिलाने के लिये नियुक्त करना जायज़ है. ग़ैर औरत के मुकाबले में उजरत पर दूध पिलाने की माँ ज़ादा मुत्तहिक्क़ है. अगर

अपनी वीवियों की मर्जी चाहते हो, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरवान है (१) वेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी कसमों का उतार मुकर्रर फ़रमा दिया (२) और अल्लाह तुम्हारा मौला है, और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है (३) और जब नबी ने अपनी एक वीवी (४) से एक राज़ की बात फ़रमाई (५) फिर जब वह (६) उसका ज़िक्र कर बैठी और अल्लाह ने उसे नबी पर ज़ाहिर कर दिया तो नबी ने उसे कुछ जताया और कुछ से चश्मपोशी फ़रमाई (७) फिर जब नबी ने उसे उसकी खबर दी, वोली (८) हुज़ूर को किसने बताया, फ़रमाया मुझे इल्म वाले खबरदार ने बताया (९) (१०) नबी की दोनों वीवियों अगर अल्लाह की तरफ़ तुम रज़ू करो तो (११) ज़रूर तुम्हारे दिल राह से कुछ हट गए हैं (१२) और अगर उन पर ज़ोर बांधो (१३) तो वेशक अल्लाह उनका मददगार है और जिब्रईल और नेक ईमान वाले, और उसके बाद फ़रिश्ते मदद पर हैं (१४) उनका रव करीब है अगर वो तुम्हें तलाक दे दें कि उन्हें तुम से बेहतर वीवियाँ बदल दे इताअत वालियाँ, ईमान वालियाँ, अदब वालियाँ (१५), तौबह वालियाँ, वन्दगी वालियाँ (१६), रोज़ादार ब्याहियाँ और

تَبْتَغِي مَرْضَاتِ أَرْوَاحِكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ ۝ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۝ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَرْوَاحِهِ حَدِيثًا ۝ فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضُهُ ۝ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ ۝ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَأَكَ هَذَا ۝ قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝ إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۝ وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝ عَلَيْهِ رُبَّةٌ إِنْ طَلَّقْتُمْ أَنْ يَبْدِلَ لَهُ أَرْوَاحًا خَيْرًا مِنْكُمْ مَسْلُومَاتٍ ۝ مُؤْمِنَاتٍ فَنِيَّتٍ ثَلَاثٍ عِدَّتٍ سَبْعٍ

यह हज़रत हफ़्सह को अच्छा न लगा। हुज़ूर ने उनका दिल रखने के लिये फ़रमाया कि मैंने मारियह को अपने ऊपर हज़ाम किया और मैं तुम्हें खुशख़बरी देता हूँ कि मेरे बाद उम्मत के कामों के मालिक अबूबक्र और उमर होंगे। वह इससे खुश होगई और बड़ी खुशी में उन्होंने यह सारी बात चीत हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा को सुनाई। इसपर यह आयत उतरी और इरशाद फ़रमाया गया कि जो चीज़ अल्लाह तआला ने आप के लिये हलाल की यानी मारियह क़िज़ियह, आप उन्हें अपने ऊपर क्यों हज़ाम किये लेते हैं, अपनी वीवियों हफ़्सह और आयशा रदियल्लाहो अन्हुमा की रज़ा हासिल करने के लिये। और एक क़ौल इस आयत के उतरने की परिस्थितियों में यह भी है कि उम्मत मूमिनीन ज़ैनब बिनते जह्श के यहाँ जब हुज़ूर तशरीफ़ ले जाते तो वह शहद पेश करती। इस ज़रिये से उनके यहाँ कुछ ज़्यादा देर तशरीफ़ रखते। यह बात हज़रत आयशा और हज़रत हफ़्सह को नागवार गुज़री और उन्हें रुक हुआ। उन्होंने आपस में मशवरा किया कि जब हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हों तो अज़्र किया जाए कि दहने मुबारक से मगाफ़ीर की बू आती है और मगाफ़ीर की बू हुज़ूर को नापसन्द थी। चुनान्ने ऐसा किया गया। हुज़ूर को उनका मक़सद मालूम था, फ़रमाया मगाफ़ीर तो मेरे करीब नहीं आया। ज़ैनब के यहाँ मैंने शहद पिया है उसको मैं अपने ऊपर हज़ाम किये लेता हूँ। मतलब यह कि ज़ैनब के यहाँ शहद का शकल होने से तुम्हारी दिल शिकनी होती है तो हम शहद ही छोड़े देते हैं। इसपर यह आयत उतरी।

(२) यानी कफ़फ़ारा, तो मारियह को ख़िदमत का मौका दीजिये या शहद नोश फ़रमाइये या क़सम के उतार से यह मुराद है कि क़सम के बाद इयाअल्लाह कहा जाए ताकि उसके ख़िलाफ़ करने से क़सम न टूटे। मक़ातिल से रिवायत है कि संघदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत मारियह की तहरीम के कफ़फ़ारे में एक गुलाम आज़ाद किया और हज़रत रदियल्लाहो अन्हा की रिवायत है कि हुज़ूर ने कफ़फ़ारा नहीं दिया क्योंकि आप मगाफ़ूर हैं। कफ़फ़ारे का हुक्म उम्मत की तालीम के लिये है। इस आयत से साबित हुआ कि हलाल को अपने ऊपर हज़ाम कर लेना यमीन यानी क़सम है।

(४) यानी हज़रत हफ़्सह।

(५) मारियह को अपने ऊपर हज़ाम कर लेने की, और इसके साथ यह फ़रमाया कि इसका इज़हार किसी पर न करना।

(६) यानी हज़रत हफ़्सह हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हुमा से:

(७) यानी मारियह की तहरीम और हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर की ख़िलाफ़त के मुतअल्लिफ़ जा दो बातें फ़रमाई थीं उनमें से एक बात का ज़िक्र फ़रमाया कि तुमने यह बात ज़ाहिर कर दी और दूसरी बात का ज़िक्र न फ़रमाया। यह शाने करीमी थी कि ग़िरफ़्त फ़रमाने में बअज़ से चश्मपोशी फ़रमाई।

(८) हज़रत हफ़्सह रदियल्लाहो अन्हा।

(९) जिससे कुछ भी छुपा नहीं। इसके बाद अल्लाह तआला हज़रत आयशा और हज़रत हफ़्सह रदियल्लाहो अन्हुमा को ख़िताब फ़रमाता है।

(१०) यह तुम पर बाज़िब है।

कुंवारीयाँ^(१५) ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ^(१६) जिसके ईधन आदमी^(१७) और पत्थर हैं^(१८) उसपर सख्त करें (ताक़तवर) फ़रिश्ते मुक़रर (तैनात) हैं^(१९) जो अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वही करते हैं^(२०) ऐ काफ़िरो, आज बहाने न बनाओ^(२१) तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे^(२२)

दूसरा रूकू

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की तरफ़ ऐसी तौबह करो जो आगे को नसीहत हो जाए^(१) करीब है कि तुम्हारा रब^(२) तुम्हारी बुराइयाँ तुम से उतार दे और तुम्हें बाग़ों में ले जाए जिनके नीचे नेहरें बहें जिस दिन अल्लाह रूखा न करेगा नवी और उनके साथ के ईमान वालों को^(३) उनका नूर दौड़ता होगा उनके आगे और उनके दाएं^(४) अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हमारे लिये हमारा नूर पूरा कर दे^(५) और हमें बख़्श दे वेशक तुझे हर चीज़ पर कुदरत है^(६)

تُبَيِّتْ وَأَنْبَغَارًا ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ
وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَّا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا
يُؤْمَرُونَ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا
الْيَوْمَ إِنَّكُمْ تَجْرُونَ مَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً
نَّصُوحًا ۚ عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَنْ يُكَفِّرَ عَنْكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ۚ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ
أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا
نُورَنَا وَاعْفِ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

منزل

- (११) कि तुम्हें वह बात पसन्द आई जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नागवार है यानी तहरीमे मारिजह अर्थात् मारियह का अपने ऊपर हुराम कर लेना.
- (१२) और आपस में मिलकर ऐसा तरीका इस्तियार करो जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का नागवार हो.
- (१३) जो अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमावदी और उनकी रज़ा चाहने वालियाँ हों.
- (१४) यानी बहुत ज़्यादा इबादत करने वाली.
- (१५) यह अज़वाजे मुतहिरात को चेतावनी है कि अगर उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दुस्मि किया और हुज़ूर ने उन्हें तलाक़ दी तो हुज़ूर को अल्लाह तआला अपने लुत्फ़ों कम से और बेहतर वीबियाँ अता फ़रमाएगा. इस चेतावनी से अज़वाजे मुतहिरात प्रभावित हुई और उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत के शरफ़ का हर नेअमत से ज़्यादा समझा और हुज़ूर का दिल रखने और आपकी रज़ा चाहने को सबसे ज़्यादा अहम समझा. लिहाज़ा आपने उन्हें तलाक़ न दी.
- (१६) अल्लाह तआला और उसके रसूल की फ़रमावदी इस्तियार करके, इबादतें पूरी करके, गुनाहों से दूर रहकर और घर वालों को उनकी की हिदायत और बदी से बचा करके और उन्हें इल्म और अदब सिखाकर.
- (१७) यानी काफ़िर.
- (१८) यानी बुत वगैरह. मुराद यह है कि ज़हन्नम की आग बहुत ही सख्त ताप वाली है और जिस तरह दुनिया की आग लकड़ी वगैरह से जलती है, ज़हन्नम की आग इन चीज़ों से जलती है जिनका ज़िक्र किया गया.
- (१९) जो अत्यन्त शक्तिशाली और ज़ागरवर हैं और उनकी तबीयत में रहम नहीं.
- (२०) काफ़िरों से दोज़ख़ में दाख़िल के वक़्त कहा जाएगा जबकि वो दोज़ख़ की आग की सज़ा और उसका अज़ाब देखेंगे.
- (२१) क्योंकि अब तुम्हारे लिये उज़्र की कोई जगह नहीं बाकी रही न आज कोई उज़्र कुबूल किया जाए.

सूरत तहरीम - दूसरा रूकू

- (१) यानी सच्ची तौबह जिसका अमर तौबह करने वाले के कर्मों में ज़ाहिर हो और उसकी ज़िन्दगी ताअतों और इबादतों से भरपूर हो जाए और वह गुनाहों से दूर रहे. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हां ने और दूसरे असहाब ने फ़रमाया तौबह नुसूह यह है कि तौबह के बाद आदमी फिर गुनाह की तरफ़ न लौटे जैसा कि तिक़ला हुआ दूध फिर थन में वापिस नहीं होता.
- (२) तौबह कुबूल फ़रमाने के बाद.
- (३) इसमें काफ़िरों पर तअरीज़ है कि वह दिन उनकी रूखाई का होगा और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हुज़ूर के साथ वालों की इज़ज़त का.

ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) (४) काफ़िरों पर और मुनाफ़िकों पर (५) जिहाद करो और उनपर सख्ती फ़रमाओ और उनका ठिकाना जहन्नम है, और क्या ही बुरा अंजाम (६) अल्लाह काफ़िरों की मिसाल देता है (७) नूह की औरत और लूत की औरत, वो हमारे बन्दों में दो नज़दीकी के सज़ावार बन्दों के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनसे दगा की (८) तो वो अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम न आए और फ़रमा दिया गया (९) कि तुम दोनों औरतें जहन्नम में जाओ जानेवालों के साथ (१०) (१०) और अल्लाह मुसलमानों की मिसाल बयान फ़रमाता है (११) फ़िरऔन की वीवी (१२) जब उसने अर्ज की ऐ मेरे रब, मेरे लिये अपने पास जन्नत में घर बना (१३) और मुझे फ़िरऔन और उसके काम से निजात दे (१४) और मुझे ज़ालिम लोगों से निजात दख़ा (१५) (१५) और इमरान की बेटी मरयम जिसने अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त की तो हमने उसमें अपनी तरफ़ की रूह फूँकी और उसने अपने रब की बातों (१६) और उसकी कितावों (१७) की तस्दीक (पुष्टि) की और फ़रमाँवरदारों में हुई (१८) (१८)

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ
وَاعْلِظْ عَلَيْهِمْ وَمَا أَوْفَتْهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ۝ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتَ
نُوحَ وَامْرَأَتَ لُوطٍ ۚ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ
عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتَهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا
عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ
مَعَ الدَّاسِخِينَ ۝ وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ
آمَنُوا امْرَأَتَ فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ
لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنَ
فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝
وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا
فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا وَصَدَّقْتَ بِكَلِمَاتِ
رَبِّهَا وَكُتِبَ عَلَيْهَا إِتْقَانُ الْإِسْلَامِ ۝

मन्ज़र

- (४) सिरात पर, और जब मूमिन देखेंगे कि मुनाफ़िकों का नूर बुझ गया.
- (५) यानी इसका बाकी रख कि जन्नत में दाख़िल तक बाकी रहे.
- (६) तलवार से.
- (७) सख्त बात और अच्छी नसीहत और मज़बूत तर्क से.
- (८) इस बात में कि उन्हें उनके कुफ़्र और मुमिनीन की दुश्मनी पर अज़ाब किया जाएगा और इस कुफ़्र और दुश्मनी के होते हुए उनका नसब, और ईमान वालों और कुर्व वालों के साथ उनकी रिश्तेदारी और मित्रता उन्हें कुछ फ़ायदा न देगी.
- (९) दीन में कुफ़्र इज़्तिफ़ार किया. हज़रत नूह की औरत बाहिला अपनी क़ौम से हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की निरबत कहती थी कि वह पागल हैं और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की ओरत बाइला अपना दोसलापन छुपाती थी और जो मेहमान आपकें यहाँ आते थे, आग जलाकर अपनी क़ौम को उनके आन से ख़बरदार करती थी.
- (१०) उनसे मरते बख़्त या क़यामत के दिन. भूत काल का इस्तेमाल यह जताने के लिये है कि ऐसा होना है.
- (११) यानी अपनी क़ौमों के काफ़िरों के साथ क़य़ाँकि तुम्हारे और इन नबियों के बीच तुम्हारे कुफ़्र के कारण सम्बन्ध बाकी न रहा.
- (१२) कि उन्हें दूसरों की गुमराही नुक़सान नहीं देनी.
- (१३) जिनका नाम आसियह बिले मज़ाहिम है. जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जादूगरों को पराजित किया तो यह आसियह आप पर ईमान ले आई. फ़िरऔन का ख़बर हुई तो उसने उनपर सख्त अज़ाब किये. उन्हें चौमेज़्रा किया और भारी चयकी सीने पर रखी और धूप में डाल दिया. जब फ़िरऔन उनके पास से हटते तो फ़रिश्ते उनपर साया करते.
- (१४) अल्लाह तआला ने उनका मकान जो जन्नत में है, उनपर ज़ाहिर फ़रमाया और उसकी ख़ुशी में फ़िरऔन की तकलीफ़ों की सख्ती उनपर आसान हो गई.
- (१५) फ़िरऔन के काम से या उसका शिर्क और कुफ़्र और अत्याचार मुराद है या उसका कुर्व.
- (१६) यानी फ़िरऔन के दीन वालों से. चुनाने उनकी यह दुआ कुबूल हुई और अल्लाह तआला ने उनकी रूह क़दज़ फ़रमाई और इज़्ज़ कीसाम ने कहा कि वह ज़िन्दा उठाकर जन्नत में दाख़िल की गई.
- (१७) रच की बातों से शरीअत के क़ानून और एहक़ाम मुराद हैं जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये निर्धारित किये.
- (१८) कितावों से वो किताबें मुराद हैं जो नबियों पर उतरती थीं.

पारा अष्टाईस समाप्त

उन्तीसवाँ पारा - तबारकल्लज़ी

६७ - सूरए मुल्क

सूरए मुल्क मक्का में उतरी, इसमें तीस आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) बड़ी वरकत वाला है वह जिसके कब्जे में सारा मुल्क^(२) और वह हर चीज़ पर कादिर है^(३) वह जिसने मौत और ज़िन्दगी पैदा की कि तुम्हारी जांच हो^(४) तुम में किस का काम ज़्यादा अच्छा है^(५) और वही इज़्ज़त वाला वख़िश वाला है^(६) जिसने सात आसमान बनाए एक के ऊपर दूसरा, तो रहमान के बनाने में क्या फ़र्क़ देखता है^(७) तो निगाह उठाकर देख^(८) तुझें कोई रखना नज़र आता है^(९) फिर दोबारा निगाह उठा^(१०) नज़र तेरी तरफ़ नाकाम पलट आएगी थकी मांदा^(११) और वेशक हमने नीचे के आसमान को^(१२) चिरागों से सजया^(१३) और उन्हें शैतानों के लिये मार किया^(१४) और उनके लिये^(१५) भड़कती आग का अज़ाब तैयार फ़रमाया^(१६) और जिन्होंने अपने रव के साथ कुफ़्र किया^(१७) उनके लिये जहन्नम का अज़ाब है और क्या ही बुरा अंजाम^(१८) जब उसमें डाले जाएंगे, उसका रैंकना सुनेंगे कि जोश मारती है^(१९) मालूम होता है



उन्तीसवाँ पारा - तबारकल्लज़ी

६७ - सूरए मुल्क - पहला रूकू

(१) सूरए मुल्क मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, तीस आयतें, तीन सौ तीस कलिमे और एक हज़ार तीन सौ तेरह अक्षर हैं। हदीस में है कि सूरए मुल्क शफ़ाअत करती है। (तिरमिज़ी व अबू दाऊद) एक और हदीस में है रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा ने एक जगह ख़ैमा लगाया, वहाँ एक क़ब्र थी और उन्हें ख़याल न था कि वह साहिबे क़ब्र सूरए मुल्क पढ़ते रहे, यहाँ तक कि पूरी की। तो ख़ैमे वाले सहाबी ने नविये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया मैं ने एक क़ब्र पर ख़ैमा लगाया, मुझे ख़याल न था कि यहाँ क़ब्र है और थी वहाँ क़ब्र और साहिबे क़ब्र सूरए मुल्क पढ़ते थे यहाँ तक कि ख़त्म किया, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि यह सूरत निजात दिलाने वाली है, अज़ाबे क़ब्र से निजात दिलाती है। (तिरमिज़ी)

(२) जो चाहे करे, जिसे चाहे इज़्ज़त दे, जिसे चाहे ज़िल्लत.

(३) दुनिया की ज़िन्दगी में.

(४) यानी कौन ज़्यादा फ़रमाँवरदार और दिल का सच्चा है.

(५) यानी आसमानों को पैदाइश से अल्लाह की कुदरत ज़ाहिर है कि उसने कैसे मुस्तहक़म (मज़बूत), उसुवार (ठीक ठीक) मुस्तकीम (अडिग), और मुतनासिब (संतुलित) बनाए.

(६) आसमान की तरफ़, दोबारा.

(७) और बार बार देख.

(८) कि बार बार की जुस्तजू से भी कोई ख़लल न पा सकेगी.

(९) जो ज़मीन की तरफ़ सबसे ज़्यादा करीब है.

(१०) यानी सितारों से.

(११) कि जब शैतान आसमान की तरफ़ उनकी बातचीत सुनने और बातें चुराने पहुंचें तो तारों से शोले और चिंगारियाँ निकलें जिनसे उन्हें मार जाए.

कि शिदते ग़ज़ब में फट जाएगी जब कभी कोई ग़िरोह उसमें डाला जाएगा उसके दारोगा^(१५) उनसे पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डर सुनाने वाला नहीं आया था^(१६) कहेंगे क्यों नहीं वेशक हमारे पास डर सुनाने वाले तंशरीफ़ लाए^(१७) फिर हमने झुटलाया और कहा अल्लाह ने कुछ नहीं उतारा, तुम तो नहीं मगर बड़ी गुमराही में^(१८) और कहेंगे अगर हम सुनते या समझते^(१९) तो दोज़ख़ वालों में न होते^(२०) अब अपने गुनाह का इकरार किया^(२१) तो फिटकार हो दोज़ख़ियों को^(२२) वेशक वो जो वे देखे अपने रब से डरते हैं^(२३) उनके लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है^(२४) और तुम अपनी बात आहिस्ता कहो या आवाज़ से, वह तो दिलों की जानता है^(२५) क्या वह न जाने जिसने पैदा किया^(२६) और वही है हर बारीकी जानता ख़बरदार^(२७)

दूसरा रूकू

वही है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन राम कर दी तो उसके रस्तों में चलो और अल्लाह की रोज़ी में से खाओ^(१) और उसी की तरफ़ उठना है^(२) क्या तुम उससे निडर हो गए जिसकी सल्तनत आसमान में है कि तुम्हें ज़मीन में धंसा दे^(३) ज़मीन वह कांपती रहे^(४) या तुम निडर हो गए उससे जिसकी सल्तनत आसमान में है कि तुम पर पथराव

كَلِمَاتٍ أَلْقَىٰ فِيهَا قُوًى سَالَتْهُمْ حَزَنُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۚ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ ۚ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۚ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۚ فَاعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ ۚ فَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ لَاصْحَابِ السَّعِيرِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۚ وَأَسْرَأَ قَوْلُكُمْ أَوْ أَجْهَرُ ۚ بِهِ إِذْ رَأَىٰ عَلَيْهِمُ يَدَاتِ الصُّدُورِ ۚ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۚ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ ۚ ذُلِيلًا ۚ وَأَلَيْهِ النُّشُورُ ۚ أَمْ أَنْتُمْ مِّنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ۚ أَمْ أَنْتُمْ مِّنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ

مِنْ

- (१२) यानी शैतानों के.
- (१३) आखिरत में.
- (१४) चाहे वो इंसानों में से हों या जिनों में से.
- (१५) मालिक और उनके मातहत, फटकार के तौर पर.
- (१६) यानी अल्लाह का नबी जो तुम्हें अल्लाह के अज़ाब का डर दिलाता है.
- (१७) और उन्होंने ने अल्लाह के अहक़ाम पहुंचाए और ख़ुदा के ग़ज़ब और आखिरत के अज़ाब से डराया.
- (१८) रसूलों की हिदायत और उसका मानते. इससे मालूम हुआ कि तकलीफ़ का आधार सुनने और समझने की दलीलों पर है और दोनों हुज्जतें लाज़िम हैं.
- (१९) कि रसूलों को झुटलाते थे और इस वक़्त का इकरार किसी काम का नहीं.
- (२०) और उसपर ईमान लाते हैं.
- (२१) उनकी नेकियों का इवआम.
- (२२) उसपर कुछ छुपा हुआ नहीं. मुश्किल लोग आपस में कहते थे, चुपके चुपके बात करो, मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का छुदा न सुन पाए. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें बताया गया कि उससे कोई चीज़ छुप नहीं सकती, यह कोशिश बेकार है.
- (२३) अपनी मस्रलूक के हालात को.

सूरए मुल्क - दूसरा रूकू

- (१) जो उसने तुम्हारे लिये पैदा फ़रमाई.
- (२) क़ब्रों से, जज़ा के लिये.
- (३) जैसा क़ारून को धंसाया.
- (४) ताकि तुम उसके असफल में यानी आख़िरी गहराई में पहुंचो.

भेजे^(५) तो अब जानोगे^(६) कैसा था मेरा डराना^(७) और वेशक उनसे अगलों ने झुटलाया^(८) तो कैसा हुआ मेरा इन्कार^(९) और क्या उन्होंने अपने ऊपर परिन्दे न देखे पर फैलाते^(१०) और समेटते, उन्हें कोई नहीं रोकता^(११) सिवा रहमान के^(१२) वेशक वह सब कुछ देखता है^(१३) या वह कौन सा तुम्हारा लश्कर है कि रहमान के मुकाबिल तुम्हारी मदद करे^(१४) काफिर नहीं मगर धोखे में^(१५) और या कौन ऐसा है जां तुम्हें रोजी दे अगर वह अपनी रोजी रोक ले^(१६) वल्कि वो सरकश और नफरत में ढीट बने हुए हैं^(१७) तो क्या वो जो अपने मुंह के बल आँधा चले^(१८) ज्यादा राह पर है या वह जो सीधा चले^(१९) सीधी राह पर^(२०) तुम फरमाओ^(२१) वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिये कान और आँख और दिल बनाए^(२२) कितना कम हक मानते हो^(२३) तुम फरमाओ वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ उठाए जाओगे^(२४) और कहते हैं^(२५) यह वादा^(२६) कब आएगा अगर तुम सच्चे हो^(२७)

حَاصِبًا ۖ فَتَتَعَلَّمُونَ كَيْفَ تَنْذِرُ ۚ وَلَقَدْ كَذَّبَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلْيَعْلَمِ كَآفَ تَكْذِبِهِمْ ۚ اَوَلَمْ يَرَوْا
اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَفًى وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ
اِلَّا الرَّحْمَنُ ۚ اِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ۚ اَمَنْ هَذَا
الَّذِي هُوَ جُنْدُكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ
اِنَّ الْكَافِرُونَ لَا فِيْ غُرُوْرٍ ۚ اَمَنْ هَذَا الَّذِي
يَزْعُمُ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَلْ لَّجُوْا فِيْ عُتُوٍّ وَ
نُفُوْرٍ ۚ اَمَنْ يَّمْنُئِيْ مُكِبًا عَلٰٓى وُجُوْهِهِ اَهْلَآءُ
اَمَنْ يَّمْنُئِيْ سَوِيًّا عَلٰٓى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ قُلْ هُوَ
الَّذِيْ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمْ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
وَالْاَفْئِدَةَ ۚ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۚ قُلْ هُوَ الَّذِيْ
دَرَاكُمْ فِيْ الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ
فَهٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۚ قُلْ

مَنْ

- (५) जैसा लूत अलैहिस्सलाम की क्रौम पर भेजा था.
- (६) यानी अज़ाब दंष्ट्र कर.
- (७) यानी पहली उम्मतों ने.
- (८) जब मैंने उन्हें हलाक किया.
- (९) हवा में उड़ने वस्तु.
- (१०) पर फैलाने और समेटने की हालत में, गिरने से.
- (११) यानी इसके वाबुजूद कि पक्षी भारी, मांटे जिस्म वालें होते हैं और भारी चीज़ प्राकृतिक तौर से पस्ती की तरफ आती है, वह फ़ज़ा में नहीं रुक सकती, अल्लाह तआला की क़ुदरत है कि वो ठहरे रहते हैं. ऐसे ही आसमानों को जब तक वह चाहे रुकें हुए हैं और वह न रोकें तो गिर पड़ें.
- (१२) अगर वह तुम्हें अज़ाब करना चाहें.
- (१३) यानी काफिर शैतान के इस धोखे में हैं कि उनपर अज़ाब न उतरेगा.
- (१४) यानी उसके सिवा कोई रोजी देने वाला नहीं.
- (१५) कि हक़ से क़रीब नहीं होते. इसके बाद अल्लाह तआला ने काफिर और भूमिन के लिये एक उपमा बयान फ़रमाई.
- (१६) न आगे देखें न पीछे, न दाएं न बाएं.
- (१७) रास्ते को देखता.
- (१८) जो अरुल मंज़िल तक पहुंचाने वाली है. इस उदाहरण का उद्देश्य यह है कि काफिर गुमराही के मैदान में इस तरह हिरान परेशान जाता है कि न उस मंज़िल मालूम, न राह पहचाने. और भूमिन आँखें खोलें सत्यमार्ग देखता पहचाना चलता है.
- (१९) ए मुत्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहो वसल्लाम, मुश्किों से कि जिस श्रुदा की तरफ़ मैं तुम्हें बुलाता हूँ वह —
- (२०) जो विद्या के साधन हैं लेकिन तुमने उन आंगों से फ़ायदा न उठाया. जो सुना वह न माना, जो देखी उससे सबक न सीखा, जो समझा उसमें गौर न किया.
- (२१) कि अल्लाह तआला के अता फ़रमाए हुए अंगों और समझने की शक्तियों से वो काम नहीं लेंते जिसके लिये वो अता हुए. यही कारण है कि शिर्क और कुफ़्र में गिरफ़्तार होते हैं.
- (२२) क़यामत के दिन, हिसाब और जज़ा के लिये.
- (२३) मुमलमानों में, टट्टा और हंसी मज़ाक के तौर पर.
- (२४) अज़ाब या क़यामत का.

तुम फ़रमाओ यह इल्म तो अल्लाह के पास है और मैं तो यही साफ़ डर सुनाने वाला हूँ^(२५) ॥ २६ ॥ फिर जब उसे^(२६) पास देखेंगे काफ़िरो के मुंह बिगड़ जाएंगे^(२७) और उनसे फ़रमा दिया जाएगा^(२८) यह है जो तुम मांगते थे^(२९) ॥ २७ ॥ तुम फ़रमाओ^(३०) भला देखो तो अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथ वालों को^(३१) हलाक कर दे या हम पर रहम फ़रमाए^(३२) तो वह कौन सा है जो काफ़िरो को दुख के अज़ाब से बचा लेगा^(३३) ॥ २८ ॥ तुम फ़रमाओ वही रहमान है^(३४) हम उसपर ईमान लाए और उसी पर भरोसा किया तो अब जान जाओगे^(३५) कौन खुली गुमराही में है^(३६) ॥ २९ ॥ तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुख को तुम्हारा पानी ज़मीन में धंस जाए^(३७) तो वह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता^(३८) ॥ ३० ॥

६८- सूरए क़लम

सूरए क़लम मक्का में उतरी, इसमें ५२ आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) क़लम^(२) और उनके लिखे की क़सम^(३) ॥ १ ॥ तुम अपने रब के फ़ज़ल से मंजून नहीं^(४) ॥ २ ॥ और ज़रूर तुम्हारे लिये वेइन्तिहा सबाब है^(५) ॥ ३ ॥ और वेशक तुम्हारी खू-बू बड़ी शान की है^(६) ॥ ४ ॥ तो अब कोई दम जाता है कि तुम भी देख लोगे और वो भी देख लेंगे^(७) ॥ ५ ॥

تَبَارَكَ الَّذِي فِي يَدَيْهِ الْمَصِيرَاتُ ٤٩

إِنَّا أَعْلَمُ عِنْدَ اللَّهِ - وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ٥٠

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ٥١

وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ٥٢

أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكْنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا ٥٣

فَمَنْ يَجْزِي الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ٥٤

الَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَلِمُوا تَوْكَلْنَا ٥٥

فَسَتَعْلَمُونَ ٥٦

مَنْ هُوَ فِي صَلَاتٍ مُبِينٍ ٥٧

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَعِينٍ ٥٨

سُورَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ (٢)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ١

مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُونٍ ٢

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ٣

إِنَّكَ لَعَلَى خُلُقٍ عَظِيمٍ ٤

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ ٥

- (२५) यानी अज़ाब और क़्यामत के आने का तुम्हें डर सुनाता हूँ, इतने ही का मामूर हूँ, इसी से मेरा फ़र्ज़ अदा हो जाता है, वक़्त का बताता मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है।
- (२६) यानी अज़ाब को, जिसका वादा है।
- (२७) धंड़े काले पड़ जाएंगे, वहशत और ग़म से सूरतें बिगड़ जाएंगी।
- (२८) ज़हज़म के फ़रिस्त कहेंगे।
- (२९) और नवियों से कहते थे कि वह अज़ाब कहाँ है, जल्दी लाओ, अब देख लो, यह है वह अज़ाब जिसकी तुम्हें तलब थी।
- (३०) ऐ मुस्ताफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, मक्के के काफ़िरो से जो आपकी मौत की आज़ू रखते हैं।
- (३१) यानी मेरे सहाबा को।
- (३२) और हमारी उम्में लम्बी कर दे।
- (३३) तुम्हें तो अपने कुफ़्र के कारण ज़रूर अज़ाब में गिरफ़्तार होना, हमारी मौत तुम्हें क्या फ़ायदा देगी।
- (३४) ज़िगकी तरफ़ हम तुम्हें बुलाते हैं।
- (३५) यानी अज़ाब के वक़्त।
- (३६) और इतनी गहराई में पहुंच जाए कि डोल बग़ैरह से हाथ न आ सके।
- (३७) कि उसतक हर एक का हाथ पहुंच सके, यह सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की कुदरत में है, ता जो किसी चीज़ पर कुदरत रखें उन्हें क्या इबादत में उस सच्ची कुदरत वाले का शरीक करते हो।

६८ - सूरए क़लम - पहला रूकू

- (१) इस सूरा का नाम सूरए नून और सूरए क़लम है, यह सूरा मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, वाबन आयतें, तीस सी कलाम और एक दज़ार दो सौ छपन अक्षर हैं।
- (२) अल्लाह तआला ने क़लम की क़सम ज़िक्र फ़रमाई, इस क़लाम से मुराद या तो लिखने वालों के क़लम हैं जिनसे दीन व दुनिया की नेकियां और फ़ायदे जुड़े हुए हैं, या क़लमे अजला मुराद है जो पूरी क़लम है और उसकी लम्बाई आसमानों और ज़मीन के बीच

कि तुम में कौन मजनून था (६) वेशक तुम्हारा रव खूब जानता है जो उसकी राह से बहके, और वह खूब जानता है जो राह पर है (७) तो झुटलाने वालों की बात न सुनना (८) वो तो इस आरजू में हैं कि किसी तरह तुम नर्मी करो (९) तो वो भी नर्म पड़ जाएं और हर ऐसे की बात न सुनना जो बड़ा क्रसमें खाने वाला (१०) जलील बहुत तअने देने वाला, बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला (११) भलाई से बड़ा रोकने वाला (१२) हद से बढ़ने वाला गुनहगार (१३) दुखस्तखू (१४) इस सब पर तुरा यह कि उसकी अस्ल में खता (१५) उसपर कि कुछ माल और वेटे रखता है (१६) जब उस पर हमारी आयतें पड़ी जाएं (१७) कहता है कि अगलों की कहानियाँ हैं (१८) करीब है कि हम उसकी सुअर की सी थूथनी पर दाग देंगे (१९) वेशक हमने उन्हें जांचा (२०) जैसा उस बाग वालों को जांचा था (२१) जब उन्होंने क्रसम खाई कि ज़रूर सुक होते उसके खंत काट लेंगे (२२) और इन्शाअल्लाह न कहा (२३) तो उसपर (२४) तेरे रव की तरफ से एक फेरी करने वाला फेरा कर गया (२५) और वो सोते थे (२६) तो सुक रह गया (२७) जैसे फल टूटा हुआ (२८) फिर उन्होंने सुक होते एक दूसरे को पुकारा (२९) कि तड़के अपनी खेती को चलो अगर तुम्हें काटनी है (३०) तो चले और आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहते जात थे (३१) कि

يَا أَيُّهَا الْمُتَشَوُّونَ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تَصْلَوْنَ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِينَ وَدُّوا لَوْ تَذَرَهُمْ فَيَذْهَبُونَ وَلَا تُطِعِ كُلَّ حَلَّافٍ مَهِينٍ هَتَّاءِ مِثْقَالِ بُرْمَةٍ مَنَاءِ تَلْخِيرٍ مُّغْتَدٍ أَنِيْمٍ عَثَلٍ بَعْدَ ذَلِكَ رَيْبٍ أَن كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ سَنَسِفُهُ عَلَى الْحَرُومِ إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْبَمُوا لِيَصْرُفَهُمْ مُّصْحِينَ وَلَا يَسْتَشْئِرُونَ فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ فَأَصْبَحَتْ كَالضَّرِيمِ فَتَنَّا دَاوُدَ مُصْحِينَ إِنِ اعْبُدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ فَانطَفَؤْا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ أَن لَّا يَكِدْ خُلَّتْهَا

مَرْك

की दूरी के बराबर है। उसने अल्लाह के हुक्म से लौह मेहफज़ पर कयामत तक होने वाले तमाम काम लिग्न दिये।

(३) यानी आदम की आलाद के कर्मों के तिगहवान प्ररिश्तों के लिग्न की क्रसम।

(४) उसका लुत्फ और क्रसम तुम्हारे साथ है। उसने तुम पर एहसास और इजाम फरमाए। नबुव्वत और हिकमत अता की, अच्छी ज़वान, भरपूर बुद्धि, पाकीज़ा आदतें, पसन्दीदा आचरण अता किये। मख़लूक के लिये जिस क़द्र क़मालात संभव हैं सब ऊंचे दर्जे के और भरपूर तौर पर अता फरमाए। हर ऐश से पाक रखता। इसमें काफ़िरों के उस कथन का रद है जो उन्होंने कहा था “या अशुहल्लज़ी मुज़िला अलैहिज़ जिज़ने इन्नका ल-मज्ज़नू” यानी ऐ वह जिनपर कुत्रआत उनरा वेशक तुम मज्ज़नू हो (सूरए हिज़र, आयत ६)

(५) रिसालत की तन्वीग और नबुव्वत का इज़हार और ख़ल्क को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाने और काफ़िरों की इन बेहूदा बातों और झूट इज़्ज़ामों और तअनों पर सब करने का।

(६) हज़रत उम्मुल मुमिनीन आयशा सिदीका रदियल्लाहो अन्हा से पूछा गया तो आपने फ़रमाया कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम का ख़ुल्फ़ कुत्रआने अज़ीम है। हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे अच्छे आचरण और नेक कामों की पूर्ति के लिये भेजा है।

(७) यानी मक्के वाले भी, जब उनपर अज़ाब उतरगा।

(८) दीन के मामल में उनकी रिआयत करके।

(९) कि झूटी और वातिल बातों पर क्रसमें ख़ाने में दिलेर है। मुराद इससे या बलीद बिन मुगीरह है या असवद बिन यगूस या अम्रनस बिन शुरैक। आगे उसकी सिफ़तों का बयान होता है।

(१०) ताकि लोगों के बीच फ़साद डाले।

(११) कंज़ूस न ख़ुद ख़र्च करे न दूसरे को नेक कामों में ख़र्च करने दे। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने इसके मानी में यह फ़रमाया है कि भलाई से रोकने से तात्पर्य इसलाम से रोकना है क्योंकि बलीद बिन मुगीरह अपने बेटों और रिश्तेदारों से कहता था कि अगर तुम में से कोई इसलाम में दाख़िल हुआ तो मैं उसे अपने माल में से कुछ न दूंगा।

(१२) फ़ाजिर, बदकार।

(१३) बदमिज़ाज, बदज़वान।

(१४) यानी बदमीज़र, तां उससे बुरे कामों का होना क्या तअज्ज़ुब की बात है। रिवायत है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो बलीद बिन मुगीरह ने अपनी माँ से जाकर कहा कि मुहम्मद ने मेरे हज़र में दस बातें फ़रमाई हैं। तौ कां तो मैं जानता हूँ कि मुझ में मौज़ुद

हरगिज़ आज कोई मिसकीन (दरिद्र) तुम्हारे बाग़ में आने न पाए (२४) और तड़के चले अपने इस इरादे पर कुदरत समझते (२५) (२५) फिर जब उसे देखा (२६) बोले वेशक हम रास्ता बहक गए (२७) (२६) बल्कि हम वनसीब हुए (२७) (२७) उनमें जो सब से गनीमत था बोला, क्या मैं तुम से नहीं कहता था कि तस्वीह क्यों नहीं करते (२८) (२८) बोले पाकी है हमारे रब को, वेशक हम ज़ालिम थे (२९) अब एक दूसरे की तरफ़ मलामत करता मुतवज्जेह हुआ (३०) (३०) बोले हाय खराबी हमारी वेशक हम सरकश थे (३१) (३१) उम्मीद है हमें हमारा रब इससे बेहतर बदल दे हम अपने रब की तरफ़ रगवत लाते हैं (३२) (३२) मार ऐसी होती है (३३) और वेशक आखिरत की मार सब से बड़ी क्या अच्छा था अगर वो जानते (३४) (३४)

दूसरा रूक

वेशक डर वालों के लिये उनके रब के पास (१) चैन के बाग़ हैं (२) (२) क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों का सा कर दें (३) (३) तुम्हें क्या हुआ कैसा हुक़म लगाते हो (४) (४) क्या तुम्हारे लिये कोई किताब है उसमें पढ़ते हो (५) (५) कि तुम्हारे लिये उसमें जो तुम पसन्द करो (६) (६) या तुम्हारे लिये हम पर कुछ क़समें हैं क़यामत तक पहुंचती हुई (७) (७) कि तुम्हें

الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مَسْكِينٌ ۖ وَغَدَا عَلَيَّ خَزِيرٌ ۚ قَالُوا ۖ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا ۖ إِنَّا لَصَبَاؤُنَ ۚ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۚ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ۚ قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۚ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۚ قَالُوا ۖ يُونُسَ إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۚ عَسَىٰ رَبُّنَا أَنْ يُبَدِّلَ لَنَا خَيْرًا مِّنْهَا ۚ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُعَبُوثُونَ ۚ كَذَلِكَ الْعَذَابُ ۚ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ مَلَوْكَانُوا يَعْلَمُونَ ۚ إِنْ لِّلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ ۚ أَفْتَجْعَلُ السُّلَيْمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ۚ مَا لَكُمْ فِيهِ تَحْكُمُونَ ۚ أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ۚ إِنْ لَّكُمْ فِيهِ لَمَّا تَخَيَّرُونَ ۚ أَمْ لَكُمْ آيْمَانٌ عَلَيْنَا بِالْغَنَةِ ۚ إِنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ إِنَّ لَكُمْ

مَذَل

हैं लेकिन दसवीं बात, अरल में ख़ता होने की, इसका हाल मुझे मालूम नहीं। तू मुझे सच सच बता दे दरना मैं तेरी गर्दन मार दूंगा। इसपर उसकी माँ ने कहा कि तेरा बाप नामर्द था मुझे अन्देशा हुआ कि वह मर जाएगा तो उसका माल ग़ैर ले जाएंगे तो मैं ने एक चरवाहे को बुला लिया, तू उससे है। बलीद ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में एक झुटा कलिमा कहा था, मजनून, उसके जवाब में अल्लाह तआला ने उसके दस वास्तविक ऐब ज़ाहिर फ़रमा दिये। इससे सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़ज़ीलत और मेहबूबियत की शान मालूम होती है।

(१५) यानी कुदरताने मर्जीद।

(१६) और इससे उसकी मुराद यह होती है कि झूट है और उसका यह कहना इसका नतीजा है कि हमने उस को माल और औत्ताद दी।

(१७) यानी उसका चेहरा बिगाड़ देंगे और उसके अन्दर की बुराई के निशान उसके चेहरे पर उभार देंगे ताकि वह किसी को मुंह न दिखा सके। आखिरत में तो यह सब कुछ होगा ही मगर दुनिया में भी यह ख़बर पूरी होकर रही और उसकी नाक दमीली हो गई। कहते हैं कि बद्र में उसकी नाक कट गई थी। (स्त्राज़िब, मदारिक और जलालैन)

(१८) यानी मक्के वालों को नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुआ से जो आपने फ़रमाई थी कि या रब उन्हें ऐसे दुष्काल में गिरफ़्तार कर जैसा हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में उतरा था। चुनान्वे मक्के वाले अकाल की ऐसी मुसीबत में गिरफ़्तार किये गए कि वह भूख की सज़्ज़ा में मुर्दार और हड्डियाँ तक खा गए और इस तरह आजमाइश में डाल गए।

(१९) उस बाग़ का नाम ज़रदान था यह बाग़ सनआ यमन से दो फ़रसंग के फ़ायल पर रास्ते के किनारे पर था। उसका मालिक एक नेक आदमी था जो बाग़ के मेवे फ़कीरों को देता था। जब बाग़ में जाता फ़कीरों को बुला लेता, तमाम गिरे पड़े मेवे फ़कीरों को लेते और बाग़ में बिस्तर बिछा दिये जाते। जब मेवे तोड़े जाते तो जितने मेवे बिस्तरों पर गिरते वा भी फ़कीरों को दे दिये जाते और जो ख़ालिफ़ अपना हिस्सा होता उसमें से भी दसवीं हिस्सा फ़कीरों को दे देता। इसी तरह खेती काटते वक़्त भी उसने फ़कीरों के अधिकार बहुत ज़्यादा निर्वास्त किये थे। उसके बाद उसके तीन बेटे बारिस हुए उन्होंने आपस में सलाह की कि माल थोड़ा है, कुदुम्ब बहुत है अगर बालिद की तरह हम भी ग़ैरात जारी रखेंगे तो तंगदस्त हो जाएंगे। आपस में मिलकर क़समें खाई कि सुबह तड़के लोगों के उठने से पहले बाग़ चलकर मेवे तोड़ लें। चुनान्वे इरशाद होता है।

(२०) ताकि मिसकीनों को ख़बर न हो।

(२१) ये लोग तो क़समें खाकर सो गए।

(२२) यानी बाग़ पर।

(२३) यानी एक बला आई। अल्लाह के हुक़म से एक आग़ उतरी और बाग़ को तबाह कर गई।

मिलेगा जो कुछ दावा करते हो^(३९) (३९) तुम उनसे पूछो^(४०) उनमें कौन सा इसका जामिन है^(४०) या उनके पास कुछ शरीक हैं^(४१) तो अपने शरीकों को लेकर आए अगर सच्चे हैं^(४१) (४१) जिस दिन एक साक़ खोली जाएगी (जिसके मानी अल्लाह ही जानता है)^(४१) और सज्दे का बुलाए जाएंगे^(४२) तो न कर सकेंगे^(४२) नीची निगाहें किये हुए^(४३) उनपर ख़्तारी चढ़ रही होगी, और वेशक़ दुनिया में सज्दे के लिये बुलाए जाते थे^(४३) जब तंदुरुस्त थे^(४३) (४३) तो जो इस बात को^(४३) झुटलाता है उसे मुझ पर छोड़ दो^(४४) क़रीब है कि हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता ले जाएंगे^(४४) जहाँ से उन्हें ख़बर न होगी^(४४) और मैं उन्हें ढील दूंगा, वेशक़ मेरी खुफ़िया (छुपवाँ) तदबीर बहुत पक्की है^(४५) (४५) या तुम उनसे उजरत मांगते हो^(४५) कि वो चट्टी के बोझ में दबे हैं^(४५) (४६) या उनके पास गैव है^(४६) कि वो लिख रहे हैं^(४६) (४६) तो तुम अपने रब के हुक्म का इन्तिज़ार करो^(४६) और उस मछली वाले की तरह न होना^(४६) जब इस हाल में पुकारा कि उसका दिल घुट रहा था^(४७) (४७) अगर उसके रब की नेअमत उसकी ख़बर को न पहुँच जाती^(४७) तो ज़ख़र मैदान पर फैक़ दिया जाता इल्जाम दिया हुआ^(४८) (४८) तो उस उसके रब ने चुन लिया और अपने कुर्व के ख़ास सज़ावारों (हक़दारों) में कर लिया^(४९) (४९)

لَا تَحْكُمُونَ ۖ سَلُّهُمْ أَيُّهُمْ بِذَلِكَ زَعِيمٌ ۖ
أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ ۖ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ ۖ إِنْ كَانُوا
صَادِقِينَ ۖ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ
إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ۖ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ
تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ
وَهُمْ سَالِكُونَ ۖ فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبْ ۖ بِهَذَا
الْحَدِيثِ ۖ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۖ وَ
أَصْلَى لَهُمْ ۖ إِنْ كَيْدِي مَتِينٌ ۖ أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا
فَهُمْ مِنْ مَّعْرَمٍ مَثْقُلُونَ ۖ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ
فَهُمْ يَكْتُمُونَ ۖ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ
كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ۖ لَوْلَا
أَنْ تَذَرْنَاهُ فِعْمَهُ ۖ مَنْ رَبِّهِ لَكُنِيذٌ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ
مَعْمُومٌ ۖ فَاجْتَبِهْ رَبَّهُ ۖ فَجَعَلَهُ مِنَ الضَّالِّينَ ۖ

मन्ज़र

- (२४) वह बाग़।
(२५) और इन लोगों को कुछ ख़बर नहीं। ये मुझ तड़के उठे।
(२६) कि किसी मिसकीन को न आने देंगे और तमाम मेवा अपने क़ब्ज़े में लाएंगे।
(२७) यानी बाग़ को कि उसमें मेवे का नामा निशान नहीं।
(२८) यानी किसी और बाग़ पर पहुँच गए। हमारा बाग़ तो मेवेदार है। फिर जब गौर किया उसके दरों दीवार का देखा और पहचाना कि अपना ही बाग़ है तो बोले।
(२९) उसके मुनाफ़े से मिसकीनों को न देने की नियत करके।
(३०) और हम बुरे इरादों से तौबह क्यों नहीं कर लेते और अल्लाह तआला की नेअमत का शुक्र क्यों अदा नहीं करते।
(३१) और आख़िरकार सबने ऐतिराफ़ किया कि हमसे भूल हुई और हम हद से आगे बढ़ गए।
(३२) कि हमने अल्लाह तआला की नेअमत का शुक्र अदा नहीं किया और बाप दादा के नेक तरीक़ों को छोड़ा।
(३३) उसके क़रम और माफ़ी की उम्मीद रखते हैं। उन लोगों ने सच्चे दिल से तौबह की तो अल्लाह तआला ने उसके एवज़ उससे बेहतर बाग़ अता फ़रमाया जिसका नाम बाग़ हँज़ल था और उसमें पैदावार की बहुतायत और अच्छी आबो-हवा का यह हाल था कि उसके अंगूरों का एक गुच्छा एक गंधे पर लादा जाता था।
(३४) ऐ मक्क़ के काफ़िरों। हाँश में आओ, यहाँ तो दुनिया की मार है।
(३५) आख़िरत के अज़ाब का और उससे बचने के लिये अल्लाह तआला और उसके रसूल की फ़रमावज़दारी करने।

सूरए क़लम - दूसरा रूकू

- (१) यानी आख़िरत में।
(२) मुश्किं ने मुसलमानों से कहा था कि अगर मरने के बाद फिर हम उठाए भी गए तो वहाँ भी हम तुम से अच्छे रहेंगे और हमारा ही दर्ज़ा ऊँचा रहेगा जैसा कि दुनिया में हमें ख़ुशहाली हासिल है। इसपर यह आयत उतरी जो आगे आती है।
(३) और उन मुख़लिस फ़रमावज़दारों को उन दुश्मन बाग़ियों पर फ़ज़ीलत न देंगे। हमारी निस्बत ऐसा मालत गुमान—
(४) जिहालत से।
(५) जो मुक्ते न हों, इस मज़मून की —

और ज़रूर काफ़िर तो ऐसे मालूम होते हैं कि मानो अपनी बुरी नज़र लगाकर तुम्हें गिरा देंगे जब कुरआन सुनते हैं^(१०) और कहते हैं^(११) ये ज़रूर अक्ल से दूर हैं^(१२) और वह^(१३) तो नहीं मगर नसीहत सारे जगत के लिये^(१४) (५२)

६९ - सूरए हाक्का

सूरए हाक्का मक्का में उतरी, इसमें ५२ आयतें, दो रकू हैं।

पहला रकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) वह हक़ होने वाली^(२) (१) कैसी वह हक़ होने वाली^(३) (२) और तुमने क्या जाना कैसी वह हक़ होने वाली^(४) (३) समूद और आद ने उस सख्त सदमा देने वाली को झुटलाया^(४) तो समूद तो हलाक किये गए हद से गुज़री हुई चिंघाड़ से^(५) (५) और रहे आद, वो हलाक किये गए बहुत सख्त गरजती आंधी से^(६) वह उनपर कुब्त से लगा दी सात रातें और आठ दिन^(६) लगातार तो उन लोगों को उनमें^(७) देखो विछड़े हुए^(८) मानो वो खज़ूर के टुंड हैं गिरे हुए^(९) (६) तो तुम उनमें किसी को बचा हुआ देखते हो^(१०) (७) और फिर औन और उससे अगले^(११) और उलटने वाली बस्तियाँ^(११) ख़ता लाए^(१२) (८) तो उन्होंने ने अपने रब के रसूलों का हुक्म

وَأَن يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَنَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ۚ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

سُورَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ (٦٨)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَاقَّةُ ۝ مَا الْحَاقَّةُ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطُغْيَانِهِ وَاتَّخَذَ آلُهَا بِيوتًا فَاهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ۝ وَاتَّخَذَ إِسْمَاعِيلُ آلَهُ كَانْهُمْ أَجْنَادًا فَنَعَلَ آلَ إِبْرَاهِيمَ خُزُنًا فَاهْلِكُوا بِالْجَبَّةِ ۝ وَكَانُوا فِيهَا كَافِرِينَ ۝ فَنَافَخَتْ فَجَاةٌ فَزَعَوْنَ فُجُوءًا ۝ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتُ ۝ فَأَخَذَهُنَّ فَأَخَذَهُنَّ فَأَخَذَهُنَّ ۝ فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَفُونَ ۝

- (६) अपने लिये अल्लाह तआला के नज़्दीक ख़ैरो क़रामत का। अब अल्लाह तआला अपने हवीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लतम को ख़ैताब फ़रमाता है।
- (७) यानी काफ़िरों से।
- (८) कि आख़िरत में उन्हें मुसलमानों से बेहतर या उनके बराबर मिलेगा।
- (९) जो इस दावे में उनकी मुवाफ़िक़त करें और ज़िम्मेदार बनें।
- (१०) हक़ीक़त में वो ग़लती पर हैं। न उनके पास कोई किताब जिसमें यह दर्ज हो जाँ वो कहते हैं न अल्लाह तआला का कोई एहद, न कोई उनका ज़ामिन, न मुवाफ़िक़त।
- (११) ज़महर के नज़्दीक साफ़ ख़ोलना सख़्ती और मुसीबत से इबारत है जो क़्यामत के दिन हिसाब और जज़ा के लिये पेश आएगी। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि क़्यामत में वह बड़ा सख़्त वक़्त है। बुज़ुर्ग़ों का यही तरीक़ा है कि वो उसके मानी में ज़बान नहीं ख़ोलते और यह फ़रमाते हैं कि हम उसपर ईमान लाते हैं और उससे जो मुराद है वह अल्लाह तआला पर छोड़ते हैं।
- (१२) यानी काफ़िर और दोगली प्रवृत्ति वाले लोग, इन्तिहान और फटकार के तौर पर।
- (१३) उनकी पीठों तांबे के तख़्तों की तरह सख़्त हो जाएंगी।
- (१४) कि उनपर ज़िल्लत और शर्मिन्दगी छाई हुई होगी।
- (१५) और अज़ाबों और तक़बीरों में हय्या अलस सलात, हय्या अलल फ़लाह के साथ उन्हें नमाज़ और सज़्दे की दावत दी जाती थी।
- (१६) इसके बावजूद सज़्दा न करते थे। उसी का नतीजा है जो यहाँ सज़्दे में मेहरम रहे।
- (१७) यानी कुरआन शरीफ़ को।
- (१८) उसको सज़ा दूंगा।
- (१९) अपने अज़ाब की तरफ़ इस तरह कि गुनाहों और नाफ़रमानियों के बावजूद उन्हें सेहत और रिज़क़ सब कुछ मिलता रहेगा और दम बंदम अज़ाब करीब होता जाएगा।
- (२०) मेरा अज़ाब सख़्त है।
- (२१) रिसालत की तबलीग़ पर।
- (२२) और तावान का उनपर ऐसा भारी बोझ है जिसकी वजह से ईमान नहीं लाते।
- (२३) ग़ैब से मुराद यहाँ लौहे मेहफूज़ है।
- (२४) उससे जो कुछ कहते हैं।
- (२५) जो वह उनके हक़ में फ़रमाए और थोड़ा उनकी यातनाओं पर सब करा।

न माना^(१३) तो उसने उन्हें वही चढ़ी गिरफ्त से पकड़ा^(१०) वेशक जब पानी ने सर उठाया था^(१४) हमने तुम्हें^(१५) किशती में सवार किया^(१६) कि उसे^(१७) तुम्हारे लिये यादगार करें^(१८) और उसे मेहफूज़ रखे वह कान कि सुन कर मेहफूज़ रखता हो^(१९) फिर जब सूर फूंक दिया जाए एक दम^(२०) और ज़मीन और पहाड़ उठकर दफ़ातन (अचानक) चूरा कर दिये जाएं^(२१) वह दिन है कि हो पड़ेगी वह होने वाली^(२२) और आसमान फट जाएगा, तो उस दिन उमका पतला हाल होगा^(२३) और फ़रिश्ते उसके किनारों पर खड़े होंगे^(२४) और उस दिन तुम्हारे रव का अर्श अपने ऊपर आठ फ़रिश्ते उठाएंगे^(२५) उस दिन तुम सब पेश होगे^(२६) कि तुममें कोई छुपने वाली जान छुप न सकेगी^(२७) तो वह जो अपना अअमालनामा (कर्मलेखा) दाएं हाथ में दिया जाएगा^(२८) कहेगा, लो मेरे अअमालनामे पढ़ो^(२९) मुझे यकीन था कि मैं अपने हिसाब को पहुंचूंगा^(३०) तो वह मन मानते चैन में है^(३१) वलन्द बाग में^(३२) जिसके खोशे झुके हुए^(३३) खाओ और पियो रचता हुआ सिला उसका जो तुमने गुज़रे दिनों में आगे भेजा^(३४) और वह जो अपना अअमालनामा वाएं

رَأَيْتُمْ ۖ إِنَّا لَنَّا طَعْنَا الْمَاءَ حَمَلْنَكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۖ
لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أَذُنٌ وَأَعْيُنٌ ۖ
وَإِذَا نَفَخْنَا فِي الصُّورِ نَفْخَةً وَاحِدَةً ۖ وَخَبِلَتِ
الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدَكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۖ
فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۖ وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ
يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۖ وَالْمَلَكُ عَلَى أَرْجَائِهَا وَيَخْمِلُ
عَرْشُ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَّةٌ ۖ يَوْمَئِذٍ
نُفِثُوهُمْ لَا تَخْفُفُ عَنْكُمْ خَافِيَةٌ ۖ فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ
كِتَابَهُ يَمِينًا ۖ فَيَقُولُ هَآؤُمُ اقْرَءُوا كِتَابِيَةَ ۖ
إِنِّي كُنْتُ مِنَ الْمُلْكِ حَسْبِيئَةٍ ۖ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ
رَاضِيَةٍ ۖ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۖ قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ۖ
كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ
الْعَالِيَةِ ۖ وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ شِمَالًا ۖ

(२६) क़ौम पर गुस्से की जल्दी में और मछली वाले से मुराद यूतुस अलैहिस्सलाम हैं।

(२७) मछली के पेट में गम से।

(२८) ओर अल्लाह तआला उनके उज्र और दुआ को कुबूल फ़रमाकर उन पर इनआम न फ़रमाता।

(२९) लेकिन अल्लाह तआला ने रहमत फ़रमाई।

(३०) और बुज़ और दुश्मनी की निगाहों से घूर घूर कर देखते हैं। रिवायत है कि अरब में कुछ लोग नज़र लगाने में प्रख्यात थे और उनकी हालत यह थी कि दावा कर के नज़र लगाते थे और जिस चीज़ को उन्होंने नुकसान पहुंचाने की नज़र से देखा, देखते ही हलाक हो गई। ऐसे बहुत से वाकिआत उनके अनुभव में आ चुके थे। काफ़िरों ने उनसे कहा कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नज़र लगाएं तो उन लोगों ने हुज़ूर को बड़ी तेज़ निगाहों से देखा और कहा कि हम ने अब तक न ऐसा आदमी देखा न ऐसी दलीलें देखीं और उनका किसी चीज़ को देखकर हैरत करना ही सितम होता था लेकिन उनकी यह तमाम जिदोजहद कभी मिलल उनके और बुरे कामों और हक़तों के जो वो रात दिन करते थे, बेकार गई और अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनके शर से मेहफूज़ रखा और यह आयत उतरी। हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया जिसको नज़र लगे उस पर यह आयत पढ़कर दम की जाए।

(३१) हसद और दुश्मनी और लोगों को नफ़रत दिलाने के लिये सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को शान में जब आपको क़ुरआन करीम पढ़ते देखते हैं।

(३२) यानी क़ुरआन शरीफ़ या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।

(३३) जिन्नों के लिये भी और इन्सानों के लिये भी या ज़िक्र फ़ज़ल और बुजुर्गी के मानी में है। इस तक्दीर पर मानी ये हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सारे जगत के लिये शरफ़ हैं उनकी तरफ़ जुनून की निस्वत करना अन्दर का अन्धेरा है। (मदारिक)

६९ - सूरए हाक्का - पहला रूकू

(१) सूरए हाक्का मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, बावन आयतें, दो सौ छप्पन कलिमे, एक हजार चार सौ तेईस अक्षर हैं।

(२) यानी क़यामत जो अटल और होनी है जिसमें कोई शक़ नहीं।

(३) यानी वह अत्यन्त अजीब और महान शान वाली है।

(४) जिसकी सज़्ज़ी और भयानकता तक इन्सानो सोच की पहुंच नहीं।

(५) यानी सज़्ज़ा भयानक आवाज़ स।

(६) बुध से बुध तक, शबाल मास के आख़िर में अत्यन्त तेज़ सर्दी के मौसम में।

हाथ में दिया जाएगा^(१०) कहेगा, हाथ किसी तरह मुझे अपना लिखा न दिया जाता ^(२५) और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है^(२६) हाथ किसी तरह मौत ही किस्सा चुका जाती^(२७) मेरे कुछ काम न आया मेरा माल^(२८) मेरा सब ज़ोर जाता रहा^(२९) उसे पकड़ो फिर उसे तौक डालो^(३०) फिर उसे भड़कती आंग में धंसाओ^(३१) फिर ऐसी जंजीर में जिसका नाप सत्तर हाथ है^(३२) उसे पिरो दो^(३३) बेशक वह अज़मत वाले अल्लाह पर ईमान न लाता था^(३४) और मिस्कीन को खाना देने की रगवत न देता^(३५) तो आज यहाँ^(३६) उसका कोई दोस्त नहीं^(३७) और न कुछ खाने को मगर दो ज़रखियों का पोप ^(३८) उसे न खाएंगे मगर खताकार (पापी)^(३९)

दूसरा रूकू

तो मुझे कस्म उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो^(४०) और जिन्हें तुम नहीं देखते^(४१) बेशक यह कुरआन एक करम वाले रसूल^(४२) से बातें हैं^(४३) और वह किसी शायर की बात नहीं^(४४) कितना कम यक़ीन रखते हो^(४५) और न किसी काहिन की बात^(४६) कितना कम ध्यान करते हो^(४७) उसने उतारा है जो सारे जगत का रव है^(४८) और अगर वो हम पर एक बात भी बना कर कहते^(४९) ज़रूर हम उन से बकुवत बदला लेते ^(५०)

قِيْقُولُ يَلِيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيهِ ۖ وَلَمْ أَدْرِمَا
حِسَابِيهِ ۖ يَلِيْتَهَا كَأَنّ الْقَاضِيَةُ ۖ مَا
أَعْنَى عَنِّي مَالِيهِ ۖ هَلْكَ عَنِّي سُلْطَانِيهِ ۖ
خُدُوهُ فَعُلُوهُ ۖ ثُمَّ انْحِرِمْ مَكُونُهُ ۖ ثُمَّ فِي
سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۖ
إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللهِ الْعَظِيمِ ۖ وَلَا يَحْضُرُ
عَلَى طَعَامِ الْمُسْكِينِ ۖ فَلَئِنْ كُنْهُ الْيَوْمَ هَهُنَا
حَمِيمٌ ۖ وَلَا طَعَامُ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ۖ لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا
الْفَاطِطُونَ ۖ فَلَا أُفْسِمُ بِمَا تُبْصَرُونَ ۖ وَمَا لَا
تُبْصَرُونَ ۖ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۖ وَمَا هُوَ
بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تُوْمَنُونَ ۖ وَلَا يَقُولُ
كَاهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَدَّكَّرُونَ ۖ تَنْزِيلٌ
مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۖ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ

مثال

- (७) यानी उन दिनों में.
- (८) कि मौत ने उन्हें ऐसा द्वा दिया.
- (९) कहा गया है कि आठवें रोज़ जब सुक़ को वो सब हलाक हो गए तो हवाओं ने उन्हें उड़ाकर समन्दर में फेंक दिया और एक भी बाक़ी न रहा.
- (१०) इससे भी पहली उम्मतों के काफ़िर लोग.
- (११) नाफ़रमानियों की शामत से मिस्ल क़ौम लूट की बस्तियों के ये सब.
- (१२) बुरे कर्म और गुनाह और शिर्क किये.
- (१३) जो उनकी तरफ़ भेजे गए थे.
- (१४) और वह दरख़्तों इमारतों और पहाड़ों हर चीज़ से ऊंचा हो गया था. यह बयान तुफ़ाने नूह का है.
- (१५) जबकि तुम अपने बापां की पीट में थे, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ...
- (१६) और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को और उनके साथ वालों को जो उनपर ईमान लाए थे, निजात दी और बाक़ियों को डुबा दिया.
- (१७) यानी मूमिनीन को निजात देने और काफ़िरों के हलाक करने को.
- (१८) कि इब्रत और नसीहत का कारण हो.
- (१९) काम की बातों को ताकि उनसे नफ़ा उठाए.
- (२०) यानी क़यामत क़ायम हो जाएगी.
- (२१) यानी वह बहुत कमज़ोर होगा जबकि पहले मज़बूत था.
- (२२) यानी जिन फ़रिश्तों का मस्कन आसमान है वह उसके फटने पर उसके किनारों पर खड़े होंगे. फिर अल्लाह के हुक्म से उतर कर ज़मीन घेर लेंगे.
- (२३) हदीस शरीफ़ में है कि अशं उठाने वाले फ़रिश्ते आजकल चार हैं क़यामत के दिन उनका साथ देने के लिये चार और बढ़ाए जाएंगे, आठ हो जाएंगे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि इससे फ़रिश्तों की आठ क़तारें मुराद है जिनकी तादाद अल्लाह तआला ही जानता है.
- (२४) अल्लाह तआला के सामने हिसाब के लिये.
- (२५) यह समझ लेगा कि वह निजात पाने वालों में है और बहुत ही खुशी के साथ अपनी जमाअत और अपने साथ वालों

रिश्तेदारों से ----

- (२६) यानी मुझे दुनिया में यकीन था कि आखिरत में मुझ से हिसाब लिया जाएगा।
- (२७) कि खड़े बंटे लेटे हर हाल में आसानी से लें सके और उन लोगों से कहा जाएगा।
- (२८) यानी जो नेक कर्म कि दुनिया में तुमने आखिरत के लिये किये।
- (२९) जब अपने नाम-अमाल को देखेगा और उसमें अपने बुरे अमाल दर्ज पाएगा तो शर्मिन्दा और जलील होकर।
- (३०) और हिसाब के लिये न उड़ाया जाता और यह जिल्लत व रस्वाई पेश न आती।
- (३१) जो मैंने दुनिया में जमा किया था वह ज़रा भी मेरा अज़ाब न टाल सका।
- (३२) और मैं जलील और मोहताज रह गया। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इससे उसकी मुराद यह होगी कि दुनिया में जो तर्क किया करता था वो सब ग़लत हो गए अब अल्लाह तआला ज़हन्नम के रखवालों को हुक्म देगा।
- (३३) इस तरह कि उसके हाथ उसकी गर्दन से मिलाकर तौक में बाँध दो।
- (३४) फ़रिश्तों के हाथ से।
- (३५) यानी वह ज़ंजीर उसमें इस तरह दाख़िल कर दो जैसे किसी चीज़ में डोरा पिरोया जाता है।
- (३६) उसकी महानता और एक होने को नहीं मानता था।
- (३७) न अपने नफ़्स को न अपने घर वालों को न दूसरों को। इसमें इशारा है कि वह दोबारा उड़ाए जाने को नहीं मानता था क्योंकि मिस्कीन का ख़ाना देने वाला मिस्कीन से तो किसी बदले की उम्मीद रखता ही नहीं, केवल अल्लाह तआला की रज़ा और आख़िरत के सवाब की उम्मीद पर मिस्कीन को देता है और जो दोबारा उड़ाए जाने और आख़िरत पर ईमान ही न रखता हो उसे मिस्कीन ख़िलाने की क्या गरज़।
- (३८) यानी आख़िरत में।
- (३९) जो उसे कुछ नफ़ा पहुंचाए या शफ़ाअत करे।
- (४०) बुरे आचरण वाले काफ़िर लोग।

सूरए हाक्का - दूसरा स्कू

- (१) यानी सारी सृष्टि की क़सम, जो तुम्हारे देखने में आए उसकी भी, जो न आए उसकी भी। कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि “मा तुब्सिरूना” से दुनिया और “मा-ला-तुब्सिरूना” से आख़िरत मुशरह है। इसकी तफ़सीर में मुफ़स्सिरों के और भी कई कोल हैं।
- (२) मूहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।
- (३) जो उनके सब तआला ने फ़रमाई।
- (४) जैसा कि काफ़िर कहते हैं।
- (५) बिल्कुल बेईमान हो, इतना भी नहीं समझते कि न यह शेअर है न इसमें कविता की कोई बात पाई जाती है।
- (६) जैसा कि तुम में से कुछ काफ़िर अल्लाह की इस किताब की निखत कहते हैं।
- (७) न इस किताब की हिदायतों को देखते हो न इसकी तालीमों पर ग़ौर करते हो कि इसमें कैसी रुहानी तालीम है न इसकी फ़साहत और बलागत और अद्वितीय होने के चमत्कार पर ग़ौर करते हो जो यह समझो कि यह क़ताम।
- (८) जो हमने न फ़रमाई होती तो -

फिर उन की दिल की रग काट देते^(१) (४६) फिर तुम में कोई उनका बचाने वाला न होता^(२) (४७) और वेशक यह कुरआन डर वालों को नसीहत है^(३) (४८) और जरूर हम जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं^(४) (४९) और वेशक वह काफ़िरों पर हसरत है^(५) (५०) और वेशक वह यक़ीनी हक़ है^(६) (५१) तो ऐ मेहबूब, तुम अपने अज़मत वाले रब की पाकी बोलो^(७) (५२)

७० - सूरए मआरिज

सूरए मआरिज मक्का में उतरी, इसमें ४४ आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) एक मांगने वाला वह अज़ाब मांगता है^(२) जो काफ़िरों पर होने वाला है उसका कोई टालने वाला नहीं^(३) (२) वह होगा अल्लाह की तरफ़ से जो बलन्दियों का मालिक है^(४) (३) फ़रिश्ते और जिब्रिल^(५) उसकी वारगाह की तरफ़ उरुज करते हैं^(६) वह अज़ाब उस दिन होगा जिस की मिक्दाद पचास हज़ार वरस है^(७) (४) तो तुम अच्छी तरह सब्र करो^(८) वो उसे^(९) दूर समझ रहे हैं^(१०) (५) और हम उसे नज़दीक देख रहे हैं^(११) (६) जिस दिन आसमान होगा जैसी गली चांदी^(१२) (७) और पहाड़ ऐसे हल्के हो जाएंगे जैसे

الْأَقَاوِيلُ ۝ لَا خُدَاتًا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۝ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝ فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَتَذْكُرَةٌ لِلْمُتَّقِينَ ۝ وَإِنَّا نَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝ فَتَنَّبِئْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

(५९) سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ (६०)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۝ لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ۝ مِنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۝ تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّؤُومُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۝ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَوِيدًا ۝ إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۝ وَنَرَاهُ قَرِيبًا ۝ يَوْمَ

مَثَلُ

- (१) जिसके काटते ही मौत हो जाती है।
- (२) कि वह क़यामत के रोज़ जब कुरआन पर ईमान लाने वालों का सवाब और उसके इन्कार करने वालों और झुटलाने वालों का अज़ाब देखेंगे तो अपने ईमान न लाने पर अफ़सोस करेंगे और हसरत और निदामत में गिरफ़्तार होंगे।
- (३) कि इसमें कुछ शक और शुबह नहीं।
- (४) और उसका शुक्र करो कि उसने तुम्हारी तरफ़ अपने इस अज़ीम क़लाम की बही फ़रमाई।

७० - सूरए मआरिज - पहला रूकू

- (१) सूरए मआरिज मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, चवालीस आयतें, दो सौ चौबीस कलिमे और नां सौ उन्नीस अक्षर हैं।
- (२) नबीय करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब मक्के वालों को अल्लाह के अज़ाब का डर दिलाया तो वो आपस में कहने लगे कि इस अज़ाब के मुस्तहिक कौन लोग हैं और यह किन पर आएगा। सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पूछा। तो उन्होंने हुज़ूर से दरियाफ़्त किया। इसपर यह आयत उतरी और हुज़ूर से सवाल करने वाला नज़र बिन हारिस था। उसने दुआ की थी कि या रब अगर यह कुरआन सच्चा हो और तेरा क़लाम हो तो हमारे ऊपर आसमान से पत्थर बरसा या दर्दनाक अज़ाब भेज। इन आयतों में इरशाद फ़रमाया गया कि काफ़िर तलब करें या न करें अज़ाब जो उनके लिये मुक़द्दर है जरूर आना है उसे कोई टाल नहीं सकता।
- (३) यानी आसमानों का।
- (४) जो फ़रिश्तों में विशेष वुज़ुर्गी और सम्मान रखते हैं।
- (५) यानी उस मक़ामे कुर्ब की तरफ़ जा आसमान में उसके आदेशों के उतरने का स्थान है।
- (६) वह क़यामत का दिन है जिसकी सज़ियाँ काफ़िरों की निश्चय इतनी लम्बी होंगी और मूमिन के लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ से भी ज़्यादा सरल होगी।
- (७) यानी अज़ाब को।
- (८) और यह ख़याल करते हैं कि बाके होने वाला ही नहीं।
- (९) कि जरूर होने वाला है।

ऊन^(१०) (१) और कोई दोस्त किसी दोस्त की बात न पूछेगा^(११) (१०) होंगे उन्हें देखते हुए^(१२) मुजरिम^(१३) आरजू करेगा कि काश इस दिन के अज़ाब से छुटने के बदले में दे दं अपने बेटे (११) और अपनी जोरू और अपना भाई (१२) और अपना कुंवा जिसमें उसकी जगह है (१३) और जितने ज़मीन में हैं सब, फिर यह बदला देना उसे बचा ले (१४) हरगिज़ नहीं^(१५) वह तो भड़कती आग है (१५) खाल उतार लेने वाली, बुला रही है^(१६) (१६) उसको जिसने पीठ दी और मुंह फेरा^(१७) (१७) और जोड़ कर सैंत रखा^(१८) (१८) बेशक आदमी बनाया गया है बड़ा वेसब्रा लालची (१९) जब उसे घुराई पहुंचे^(२०) तो सख्त घबराने वाला (२०) और जब भलाई पहुंचे^(२१) तो रोक रखने वाला^(२२) (२१) मगर नमाज़ी (२२) जो अपनी नमाज़ के पाबन्द हैं^(२३) (२३) और वो जिनके माल में एक मालूम हक है^(२४) (२४) उसके लिये जो मांगे और जो मांग भी न सके तो मेहरूम रहे^(२५) (२५) और वो जो इन्साफ़ का दिन सच जानते हैं^(२६) (२६) और वो जो अपने रब के अज़ाब से डर रहे हैं^(२७) (२७) बेशक उनके रब का अज़ाब निडर होने की चीज़ नहीं^(२८) (२८)

تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ
وَلَا يَنْتَلِ حَيْثُمْ حَيْثُهَا يُبْصَرُونَ وَهُمْ يَوَدُّ
الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابٍ يَوْمِيذٍ بِذَنبِهِ
وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤَيُّوهُ
وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ كَلَّا
إِنَّهَا لَظُ نَزَاعَةٍ لِّلشَّوْءِ تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ
وَتَوَلَّى وَجَمَعَ قَاوِمٌ إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ
هَلُوعًا إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا وَإِذَا مَسَّهُ
الْحَيْرُ مَنْوَعًا إِلَّا الْمُصَلِّينَ الَّذِينَ هُمْ عَلَى
صَلَاتِهِمْ دَائِبُونَ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ
مَّعْلُومٌ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ
بَيِّمَاتِ الدِّينِ وَالَّذِينَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ
مُشْفِقُونَ إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَا مُنِ

مَنْكَ

- (१०) और हवा में उड़ते फिरेंगे.
- (११) हर एक को अपनी ही पड़ी होगी.
- (१२) कि एक दूसरे को पहचानेंगे लेकिन अपने हाल में ऐसे मुज्जिला होंगे कि न उन से हाल पूछेंगे न बात कर सकेंगे.
- (१३) यानी काफिर.
- (१४) यह कुछ उसके काम न आएगा और किसी तरह वह अज़ाब से बच न सकेगा.
- (१५) नाम ले लेकर कि ऐ काफिर मेरे पास आ, ऐ मुनाफ़िक मेरे पास आ.
- (१६) सच्चाई के कुबूल करने और ईमान लाने से.
- (१७) माल को और उसके अनिवार्य हक़ अदा न किये.
- (१८) तंगदस्ती और बीमारी बसोह की.
- (१९) दौलतमंदी और माल.
- (२०) यानी इन्सान की हालत यह है कि उसे कोई नागवार बात पेश आती है तो उस पर सब्र नहीं करता और जब माल मिलता है तो उसको खर्च नहीं करता.
- (२१) कि पंजगाना फ़राइज़ उनके समय में पाबन्दी से अदा करते हैं यानी मूमिन हैं.
- (२२) मुराद इससे ज़क़ात है जिसकी मात्रा मालूम है या वह सदक़ा जो आदमी अपने नफ़स पर निर्धारित करे तो उसे निर्धारित समय पर अदा किया करे. इससे मालूम हुआ कि मुस्तहब सदक़ात के लिये अपनी तरफ़ से वक्त निर्धारित करना शरीअत में जायज़ और प्रशंसनीय है.
- (२३) यानी दोनों तरह के मुहताज़ों को दे. उन्हें भी जो हाज़ते के वक्त सवाल करते हैं और उन्हें भी जो शर्म से सवाल नहीं करते और उनकी मुहताज़ी ज़ाहिर नहीं होती.
- (२४) और मरने के बाद उठने और हथ व नथ व जज़ा व क़यामत सब पर ईमान रखते हैं.
- (२५) चाहे आदमी कितना ही पारसा, ताअत और इबादत की बहुनात वाला हो मगर उसे अल्लाह के अज़ाब से बख़्शोफ़ न होना चाहिये.

और वो जो अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करते हैं^(२९) मगर अपनी वीवियों या अपने हाथ के माल कनीज़ों (दासियों) से कि उनपर कुछ मलामत नहीं^(३०) तो जो उन दो^(३१) के सिवा और चाहे वही हद से बढ़ने वाले हैं^(३२) और वो जो अपनी आमानतों और अपने एहद की हिफाजत करते हैं^(३३) और वो जो अपनी गवाहियों पर कायम हैं^(३४) और वो जो अपनी नमाज़ की हिफाजत करते हैं^(३५) ये हैं जिनका वाग़ा में सत्कार होगा^(३६)

दूसरा रूकू

तो इन काफ़िरों को क्या हुआ तुम्हारी तरफ़ तेज़ निगाह से देखते हैं^(३७) दाएं और बाएं गिरोह के गिरोह^(३८) क्या इनमें हर व्यक्ति यह लालच करता है कि^(३९) चैन के बाग़ में दाख़िल किया जाए^(४०) हरगिज़ नहीं, बेशक हमने उन्हें उस चीज़ से बनाया जिसे जानते हैं^(४१) तो मुझे क्रसम है उसकी जो सब पुरवों सब पश्चिमों का मालिक है^(४२) कि ज़रूर हम कादिर हैं^(४३) कि उनसे अच्छे बदल दें^(४४) और हम से कोई निकल कर नहीं जा सकता^(४५) तो उन्हें छोड़ दो उनकी बेहूदगियों में पड़े और खेलते हुए, यहाँ

فَإِنَّ

وَالَّذِينَ هُمْ يُفَرِّجُهُمْ حَفُوتُونَ ۖ إِلَّا عَلَىٰ
أَرْوَاحِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ
مَلُومِينَ ۚ فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْعُدُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ
رَاعُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ بِعَهْدِهِمْ قَائِمُونَ ۚ وَ
الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۚ أُولَٰئِكَ
فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ۚ فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا
فَبِكَ مَا مُهْطِعِينَ ۚ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ
عِزِينَ ۚ أَيُطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ
نَعِيمٍ ۚ كُلًّا مَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ۚ فَلَا
أَقِيمُ رَبِّ السَّيْرِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا لَافْقِدُونَ ۚ عَلَىٰ
أَنْ تَبْذُلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا تَحْنُ بِمُسْبُوحِينَ ۚ
فَذَرَهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ

مَالِكِ

(२९) यानी वीवियों और ममलूक़त अर्थात् दासियों।

(३०) कि हलाल से हराम की तरफ़ बढ़ते हैं, इस आयत से मुतआ, लौंडबाज़ी, जानवरों के साथ बदफ़ेअली और हथलस वगैरह की दुर्मत साबित होती है।

(३१) शरई अमानतों की भी और बन्दों की अमानतों की भी और ख़ल्क के साथ जो एहद है उनकी भी और हक़ के जो एहद हैं उनकी भी, नज़रें और क्रसमें भी इस में दाख़िल हैं।

(३२) सच्चाई और इन्साफ़ के साथ, न उसमें रिश्तेदारी का पास करते हैं न ज़बरदस्ती का कमज़ोर पर प्राथमिकता देते हैं, न किसी हक़ वाले का हक़ छीनना ग़बारा करते हैं।

(३३) नमाज़ का ज़िक्र दावाए फ़रमाया गया, इसमें यह इज़हार है कि नमाज़ बहुत अहम है या यह कि एक जगह फ़र्ज़ मुग़द है और दूसरी जगह नफ़ल, और हिफाजत से मुराद यह है कि उसके अरकान और वाजिबात और सुन्नतों और मुस्तहिब्बात को भरपूर तरीक़े से अदा करते हैं।

(३४) ज़च़त के।

सूरफ़ मआरिज - दूसरा रूकू

(१) यह आयत काफ़िरों की उस जमाअत के हक़ में उतरी जो रमूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम के चारों तरफ़ घेरा बाँध कर गिरोह के गिरोह जमा होते और आपका क़लाम मुबारक सुनते और उसको झुटलाते और टुट्टा करते और कहते कि अगर ज़च़त में ये लोग दाख़िल होंगे जैसा कि मुहम्मद फ़रमाते हैं तो हम ज़रूर इनसे पहलें उसमें दाख़िल होंगे, उनके हक़ में यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि उन काफ़िरों का क्या हाल है कि आपके पास बैठते भी हैं और गदंग उठा, उठा कर देखते भी हैं फिर भी जो आप से सुनते हैं उससे नफ़ा नहीं उठाते।

(२) ईमान वालों की तरह।

(३) यानी नुत्के से जैसे मव आदमियों को पैदा किया तो इस कारण से कोई ज़च़त में दाख़िल न होगा, ज़च़त में प्रवेश ईमान पर आधारित है।

(४) यानी आफ़ताव के उदय का हर स्थान और अस्त होने का हर स्थान या हर हर सितार के पूर्व और पश्चिम का स्थान, तात्पर्य अपने मअबूद होने की क्रसम याद फ़रमाना है।

(५) इस तरह कि उन्हें हलाक कर दें, और बजाय उनके अपनी फ़रमाँबरदार ममलूक़ पैदा करें।

(६) और हमारी कुदरत के घेरे से बाहर नहीं हो सकता।

तक कि अपने उस^(१) दिन से मिलें जिसका उन्हें वादा दिया जाता है^(२) जिस दिन क़ब्रों से निकलेंगे झपटते हुए^(३) मानो वो निशानों की तरफ़ लपक रहे हैं^(४) आँखें नीची किये हुए उनपर ज़िल्लत सवार, यह है उनका वह दिन^(५) जिसका उनसे वादा था^(६)॥४४॥

७१ - सूरए नूह

सूरए नूह मक्का में उतरी, इसमें २८ आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) वेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा कि उनको डरा इससे पहले कि उनपर दर्दनाक अज़ाब आए^(२)॥१॥ उसने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम, मैं तुम्हारे लिये साफ़ डर सुनाने वाला हूँ^(३) कि अल्लाह की वन्दगी करो^(४) और उससे डरो^(५) और मेरा हुक्म मानो^(६) वह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्शा देगा^(७) और एक निश्चित मीआद तक^(८) तुम्हें मुहलत देगा^(९) वेशक अल्लाह का वादा जब आता है, हटाया नहीं जाता किसी तरह तुम जानते^(१०)॥४॥ अर्ज़ की^(११) ऐ मेरे रब, मैं ने अपनी क़ौम को रात दिन बुलाया^(१२)॥५॥ तो मेरे बुलाने से उन्हें भागना ही बढ़ा^(१३)॥६॥

سُورَةُ نُوحٍ مَكِّيَّةٌ (٤١)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالَ يَبْقُومُ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ إِنَّ أَعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقَوْهُ وَأَطِيعُوا ۝ يَعِزُّ لَكُمْ مِنْ دُونِكُمْ وَيُخَذِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۝ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۝ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۝ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَايَ إِلَّا فِرَارًا ۝

مَنْزِلٌ

- (७) अज़ाब के।
- (८) मंहशर की तरफ़।
- (९) जैसे झण्डे वाले अपने झण्डे की तरफ़ दौड़ते हैं।
- (१०) यानी क़यामत का दिन।
- (११) दुनिया में और वो उसको झुटलाते थे।

७१ - सूरए नूह - पहला रूकू

- (१) सूरए नूह मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, अठ्ठाईस आयतें, दो सौ चौबीस कलिमें और नौ सौ नितानव अक्षर हैं।
- (२) दुनिया और आख़िरत का।
- (३) और उसका किसी को शरीक न बताओ।
- (४) ताफ़रमानियों से बचकर ताकि वह ग़ज़ब न फ़रमाए।
- (५) जो तुमसे ईमान के वक़्त तक सादिर हुए होंगे या जो बन्दों के अधिकारों से संबंधित न होंगे।
- (६) यानी मौत के वक़्त तक।
- (७) कि इस दौरान मैं तुम पर अज़ाब न फ़रमाएगा।
- (८) उसका और ईमान ले आते।
- (९) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम।
- (१०) ईमान और ताअत की तरफ़।
- (११) और जितनी उन्हें ईमान लाने की तरसीब दी गई उतनी ही उनकी सरक़शी बढ़ती गई।

और मैं ने जितनी वार उन्हें बुलाया^(१२) कि तू उनको बख़्शो उन्होंने अपने कानों में उंगलियाँ दे लीं^(१३) और अपने कपड़े ओढ़ लिये^(१४) और हठ की^(१५) और बड़ा घमण्ड किया^(१६) फिर मैं ने उन्हें खुल्लम खुल्ला बुलाया^(१७) फिर मैं ने उनसे ऐलान से भी कहा^(१८) और आहिस्ता छुपवाँ भी कहा^(१९) तो मैं ने कहा अपने रब से माफ़ी मांगो^(२०) वह बड़ा माफ़ फ़रमाने वाला है^(२१) तुम पर शरीफ़े का मेंह भेजेगा^(२२) और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा^(२३) और तुम्हारे लिये वाग़ बनाएगा और तुम्हारे लिये नेहरें बनाएगा^(२४) तुम्हें क्या हुआ अल्लाह से इज़्जत हासिल करने की उम्मीद नहीं करते^(२५) हालाँकि उसने तुम्हें तरह तरह बनाया^(२६) क्या तुम नहीं देखते अल्लाह ने कैसे सात आसमान बनाए एक पर एक^(२७) और उनमें चांद को रौशन किया^(२८) और सूरज को विराग़^(२९) और अल्लाह ने तुम्हें सब्जे की तरह ज़मीन से उगाया^(३०) फिर तुम्हें उसी में ले जाएगा^(३१) और दोबारा निकालेगा^(३२) और अल्लाह ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना बनाया^(३३) कि उसके वसीअ (विस्तृत) रास्तों में चलो^(३४)

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا
اسْتِكْبَارًا ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ثُمَّ إِنِّي
أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا فَقُلْتُ
اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا يُرْسِلُ السَّمَاءَ
عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَ
يَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا مَا لَكُمْ
لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا
أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا
وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا
وَاللَّهُ أَتَبَّكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ثُمَّ يُعِيدُكُمْ
فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ
الْأَرْضَ سَبَاطًا لَتَسْكُنُوا مِنْهَا سُبُلًا وَجَاوِجًا

مائل

- (१२) तुझ पर ईमान लाने की तरफ़.
(१३) ताकि मेरी दावत को न सुनें.
(१४) और मुंह छुपा लिये ताकि मुझे न देखें क्योंकि उन्हें अल्लाह के दीन की तरफ़ नसीहत करने वाले को देखना भी ग़बारा न था.
(१५) अपने कुफ़्र पर.
(१६) और मेरी दावत को कुबूल करना अपनी शान के ख़िलाफ़ जाना.
(१७) ज़ार शोर से मेहफ़िलों में.
(१८) और खुल्लम खुल्ला दावत की तकरार भी की.
(१९) एक एक से और कोई कसर दावत की उठा न रखी. क़ौम लम्बे असें तक हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का झुटलाती ही रही तो अल्लाह तआला ने उनसे बारिश रोक दी और उनकी औरतें बाँझ कर दीं. चालीस साल तक उनके माल हलाक हो गए, जानवर मर गए. जब यह हाल हुआ तो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उन्हें तौबह का हुक्म दिया.
(२०) कुफ़्र और शिर्क और ईमान लाकर मग़फ़िरत तलब करो ताकि अल्लाह तआला तुम पर अपनी रहमतों के दर्वाज़े खोल दे क्योंकि ताअतों में मशगूल होना शैरो बरक़त और रिज़्क में कुशादगी का कारण होता है.
(२१) तौबह करने वालों को, अगर तुम ईमान लाए और तुमने तौबह की तो वह.
(२२) माल और औलाद बहुत सी अता फ़रमाएगा.
(२३) हज़रत हसन रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि एक शख़्स आपके पास आया और उसने बारिश की कमी की शिकायत की. आपने इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया. दूसरा आया, उसने ग़रीबी की शिकायत की, उसे भी यही हुक्म फ़रमाया. फिर तीसरा आया, उसने औलाद न होने की शिकायत की, उससे भी यही फ़रमाया, फिर चौथा आया, उसने अपनी ज़मीन की पैदावार में कमी की शिकायत की, उससे भी यही फ़रमाया. ख़बीअ बिन सबीह जो हाज़िर थे, उन्होंने अज़्र किया, कुछ लोग आए, तरह तरह की हाज़तें बयान कीं, आप ने सब को एक ही जवाब दिया कि इस्तिग़फ़ार करो. तो आपने यह आयत पढ़ी. (इन हाज़तों के लिये यह क़ुरआनी अमल है.)
(२४) इस तरह कि उसपर ईमान लाओ.
(२५) कभी नुफ़ा, कभी अलज़ा, कभी मुद़ा, यहाँ तक कि तुम्हारी ख़िलफ़त पूरी की. उसकी आफ़रीनश (उत्पत्ति) में नज़र करना उसकी ख़ालिफ़ियत और कुदरत और उसकी वहदानियत पर ईमान लाने को बाज़िब करता है.
(२६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा और हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि सूरज और चांद के

दूसरा सूक़

नूह ने अर्ज की ऐ मेरे रब, उन्होंने मेरी नाफ़रमानी की^(१) और^(२) ऐसे के पीछे हो लिये जिसे उसके माल और औलाद ने नुक़सान ही बढ़ाया^(३) और^(४) बहुत बड़ा दाव खेले^(५) और बोले^(६) हरगिज़ न छोड़ना अपने खुदाओं को^(७) और हरगिज़ न छोड़ना वह और सुबाअ और यगूस और यऊक़ और नस्र को^(८) और बेशक उन्होंने बहुतों को बहकाया^(९) और तू ज़ालिमों का^(१०) ज़्यादा न करना मगर गुमराही^(११) अपनी कैसी ख़ताओं पर डुबोए गए^(१२) फिर आग में दाख़िल किये गए^(१३) तो उन्होंने अल्लाह के मुकाबिल अपना कोई मददगार न पाया^(१४) और नूह ने अर्ज की, ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़^(१५) बेशक अगर तू उन्हें रहने देगा^(१६) तो तेरे बन्दों को गुमराह कर देंगे और उनके औलाद होगी तो वह भी न होगी मगर बदकार, बड़ी नाशुकी^(१७) ऐ मेरे रब, मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को^(१८) और उसे जो ईमान के साथ मेरे घर में है और सब मुसलमान मदों और सब मुसलमान औरतों को और काफ़िरों को न बढ़ा मगर तबाही^(१९)

قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَأَسْأَلُكَ مِنْ لَدُنْكَ
يَزِيدُهُ مَالَهُ وَلَوْلَاكَ إِلَّا خَسَارًا وَمَكَرُوا
مَكْرًا كِبَارًا وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا
تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ
وَسُرًّا وَقَدْ أَصْلُوا كَثِيرًا وَلَا تَزِدِ
الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا وَمِمَّا خَطَبْتَهُمْ أُغْرِقُوا
فَأَذْخَلُوا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ
اللَّهِ أَنْصَارًا وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى
الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ ذَرِيًّا إِنِّي
تَذَرُهُمْ يُضِلُّونَ عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا
كَفَّارًا رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ
بَيْتِي مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ
الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا

- चेहरा तो आसमानों की तरफ़ है और हर एक की पीठ ज़मीन की तरफ़. तो आसमानों की लताफ़त के कारण उनकी रौशनी नमाम आसमानों में पहुंचती है. अगरचे चाँद दुनिया के आसमाव में है.
- (२७) कि दुनिया को रौशन करता है और उसकी रौशनी चाँद के प्रकाश से अधिक है और सूरज चौथे आसमान में है.
- (२८) तुम्हारे बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को उससे पैदा करके.
- (२९) मौत के बाद.
- (३०) उससे क़यामत के दिन.

सूरए नूह - दूसरा सूक़

- (१) और मैंने जा ईमान और इस्तिफ़ाफ़र का हुक्म दिया था उसे उन्होंने नहीं माना.
- (२) उनके अवाम गरीब और छोटें लोग सरकश मालदारों और माल व औलाद वालों के अनुयायी हुए.
- (३) और वह माल के घमण्ड में मस्त होकर कुक़ और सरकशी की तरफ़ बढ़ता रहा.
- (४) वो मालदार लोग.
- (५) कि उन्होंने नूह अलैहिस्सलाम की झुटलाया और उन्हें और उनके मानने वालों को यातनाएं दीं.
- (६) काफ़िरों के रईस अपने अवाम से.
- (७) यानी उनकी इबादत न छोड़ना.
- (८) ये उनके बुतों के नाम हैं जिन्हें वो पूजते थे. बुत तो उनके बहुत थे मगर ये पाँच उनके नज़दीक बड़ी अज़मत वाले थे. वह तो मर्द की सूत पर था और सुबाअ औरत की सूत पर और यगूस शेर की शकल और यऊक़ घाँड़ की और नस्र गिध की. ये बुत क्रौमे नूह से मुन्तख़िल होकर अरब में पहुंचे और मुश्किं के क़बीलों से एक ने एक को अपने लिये ग़्राप्त कर लिया.
- (९) यानी ये बुत बहुत से लोगों के लिये गुमराही का कारण बने या ये मानी हैं कि क्रौमे के रईसों ने बुतों की इबादत का हुक्म करके बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया.
- (१०) जो बुतों को पूजते हैं.
- (११) यह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दुआ है जब उन्हें वही से मालूम हुआ कि जो लोग ईमान ला चुके, क्रौमे में उनके सिवा और लोग ईमान लाने वाले नहीं तब आपने यह दुआ की.
- (१२) तूफ़ान में.
- (१३) डूबने के बाद.

७२ - सूरए जिन्न

सूरए जिन्न मक्का में उतरी, इसमें २८ आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला (१) तुम फरमाओ (२) मुझे वही हुई कि कुछ जिन्नों ने (३) मेरा पढ़ना कान लगाकर सुना (४) तो बोले (५) हम ने एक अजीब कुरआन सुना (६) (१) कि भलाई की राह बताता है (२) तो हम उसपर इमान लाए, और हम हरगिज किसी को अपने रव का शरीक न करेंगे (३) और यह कि हमारे रव की शान बहुत बलन्द है न उसने औरत इख्तियार की और न बच्चा (४) (३) और यह कि हम में का बेवकूफ अल्लाह पर बढ़कर बात कहता था (५) (४) और यह कि हमें खयाल था कि हरगिज आदमी और जिन्न अल्लाह पर झूट न बांधेंगे (५) (५) और यह कि आदमियों में कुछ मर्द जिन्नों के कुछ मर्दों की पनाह लेते थे (६) तो उससे और भी उनका घमण्ड बढ़ा (६) और यह कि उन्होंने (७) गुमान किया जैसा तुम्हें गुमान है (८) कि अल्लाह हरगिज कोई रसूल न भेजेगा (९) और यह कि हमने आसमान को छुआ (१०) तो उसे पाया कि (११) सख्त पहरे और आगे की चिंगारियों से भर दिया गया है (१२) (८) और यह कि हम (१३) पहले आसमान में सुनने के लिये कुछ मौकों पर बैठा करते थे, फिर अब (१४)

الجن

८०३

سُورَةُ الْجِنِّ



- (१४) जो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा सकता।
 (१५) और हलाक न फरमाएगा।
 (१६) यह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को वही से मालूम हो चुका था और हज़रत नूह ने अपने और अपने बालिदैन और मूमिन मर्दों और औरतों के लिये दुआ फरमाई।
 (१७) कि दो दोनों मूमिन थे।
 (१८) अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दुआ कुबूल फरमाई और उनकी क़ौम के तमाम काफ़िरों को अज़ाब से हलाक कर दिया।

७२ - सूरए जिन्न - पहला रूकू

- (१) पूरए जिन्न मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, अष्टाईस आयतें, दो सौ पचास कलिमें और आठ सौ सत्तर अक्षर हैं।
 (२) ये मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम।
 (३) नसीबीन के जिनकी संख्या मुफ़सिरों ने नौ बयान की।
 (४) फ़न्न की नमाज़ में तख़ल्लह स्थान पर, मक्का मुकर्रमा और ताइफ़ के दरमियान।
 (५) बां जिन्न अपनी क़ौम में जाकर।
 (६) जो अपनी फ़साहत और बलागत और बिपय सामग्री की सुन्दरता और गहरे अर्थों में ऐसा अच्छता है कि मख़लूक का कोई कलाम इससे कोई निस्वत नहीं रखता और इस की यह शान है।
 (७) यानी तीहीद और ईमान की।
 (८) जैसा कि जिन्नों और इत्सानों को काफ़िर कहते हैं।
 (९) झूट बोलता था, बेअदबी करता था कि उसके लिये शरीक और औलाद बीबी बताता था।
 (१०) और उसपर झूट नहीं बांधेंगे इसलिये हम उनकी बातों की तस्दीक करते थे और उसकी तरफ़ बीबी और बच्चे की निस्वत करते थे यहाँ तक कि कुरआन शरीफ़ की हिदायत से हमें उनका झूट और बांहतान ज़ाहिर हो गया।
 (११) जब सफ़र में किसी भयातक स्थान पर उतरते तो कहते हम इस जगह के सरदार की पनाह चाहते हैं यहाँ के शरीरों से।

जो कोई सुने वह अपनी ताक में आग का लूका पाए^(१९) (९) और यह कि हमें नहीं मालूम कि^(२०) ज़मीन वालों से कोई बुराई का इरादा फ़रमाया गया है या उनके रब ने कोई भलाई चाही है^(२०) और यह कि हम में^(२१) कुछ नेक हैं^(२२) और कुछ दूसरी तरह के हैं, हम कई राहें फटे हुए हैं^(२३) (११) और यह कि हम को यकीन हुआ कि हरगिज़ ज़मीन में अल्लाह के क़ाबू से न निकल सकेंगे और न भाग कर उसके क़ब्ज़े से बाहर हों^(२२) और यह कि हमने जब हिदायत सुनी^(२४) उस पर ईमान लाए, तो जो अपने रब पर ईमान लाए उसे न किसी कमी का डर^(२५) और न ज़ियादती का^(२६) (१३) और यह कि हम में कुछ मुसलमान हैं और कुछ ज़ालिम^(२७) तो जो इस्लाम लाए उन्होंने ने भलाई सोची^(२८) (१४) और रहे ज़ालिम^(२९) वो जहन्नम के ईंधन हुए^(३०) (१५) और फ़रमाओ कि मुझे यह बही हुई है कि अगर वो^(३१) राह पर सीधे रहते^(३२) तो ज़रूर हम उन्हें पर्याप्त पानी देते^(३३) (१६) कि उसपर उन्हें जांचें^(३४) और जो अपने रब की याद से मुंह फेरे^(३५) वह उसे चढ़ते अज़ाब में डालेगा^(३६) (१७) और यह कि मस्जिदें^(३७) अल्लाह ही की हैं तो अल्लाह के साथ किसी की बन्दगी न करो^(३८) (१८) और यह कि जब अल्लाह का वन्दा^(३९) उसकी वन्दगी करने

يَسْمِعُ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شَهَادًا ۖ وَآثَا لَا
تَذَرِي أَشْرًا يُرِيدُ يَمْنُ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ
رَشْدًا ۖ وَآثَا مِنَّا الضَّلُوعُونَ وَمِنَّا دُونَ
ذَلِكَ كُنَّا طَرَائِقَ قَدَرًا ۖ وَآثَا ظَلَمْنَا أَنْ لَنْ
نُجْزِيَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ نُجْزِيَ هَرَبًا ۖ وَآثَا
لَنَا سَمْعًا الْهُدَىٰ أَمَّا بِهِ ۖ فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ
فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۖ وَآثَا مِنَّا السُّلُوعُونَ
وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ ۖ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا
رَشْدًا ۖ وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۖ
وَأَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَهُمْ مَّاءً
عَذَقًا ۖ لَنُفِثَنَّهُمْ فِيهِ ۖ وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ
يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۖ وَأَنْ السَّجِدَ لِلَّهِ فَلَا
تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۖ وَآثَا لَنَا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ

مَثَلًا

(१२) यानी कुरैश के काफ़िरों ने.

(१३) ऐ जिन्नो !

(१४) यानी आसमान वालों का क़लाम सुनने के लिये दुनिया के आसमान पर जाना चाह।

(१५) फ़रिश्तों के.

(१६) ताकि जिन्नों को आसमान वालों की बातें सुनने के लिये आसमान तक पहुंचने से रोका जाए.

(१७) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने से.

(१८) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने के बाद.

(१९) जिससे उसको मारा जाए.

(२०) हमारी इस बन्दिश और रोक से.

(२१) कुरआन शरीफ़ सुनने के बाद.

(२२) सच्चा मूмин परहेज़गार और नेक लोग.

(२३) फ़िक्रें फ़िक्रें मुस्त्रलिफ़.

(२४) यानी कुरआन पाक.

(२५) यानी नेकियों या सवाब की कमी का.

(२६) बंदियों की.

(२७) सच्चाई या अल्लाह तआला से फिरे हुए काफ़िर.

(२८) और हिदायत व सच्चाई की राह को अपना लक्ष्य ठहराया.

(२९) काफ़िर राहे हक़ से फिरने वाले.

(३०) इस आयत से साबित होता है कि काफ़िर जिन्न जहन्नम की आग के अज़ाब में गिरफ़्तार किये जाएंगे.

(३१) यानी इन्सान.

(३२) यानी सच्चे दीन और इस्लाम के तरीक़े पर.

(३३) इससे मुराद रिज़क़ की बहुतायत है और यह वाक़िआ उस वक़्त का है जबकि सात बरस तक वो बारिश से मंहरूम कर दिये गए थे. यानी ये हैं कि अगर वो लोग ईमान लाते तो हम दुनिया में उनपर रिज़क़ बसीअ करते और उन्हें बहुत सा पानी और ढेर सारी मुशहाली इनायत फ़रमाते.

खड़ा हुआ^(१०) तो करीब था कि वो जिन्न उसपर ठठ के ठठ हो जाएं^(११) (१९)

दूसरा सूकू

तुम फ़रमाओ, मैं तो अपने रब ही की बन्दगी करता हूँ और किसी को उसका शरीक नहीं ठहराता^(२०) तुम फ़रमाओ, मैं तुम्हारे किसी बुरे भले का मालिक नहीं^(२१) तुम फ़रमाओ हरगिज़ मुझे अल्लाह से कोई न बचाएगा^(२२) और हरगिज़ उसके सिवा कोई पनाह न पाऊंगा^(२३) मगर अल्लाह के पयाम (आदेश) पहुंचाना और उसकी रिसालतें^(२४) और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माने^(२५) तो वेशक उनके लिये जहन्नम की आग है जिसमें हमेशा हमेशा रहें^(२६) यहाँ तक कि जब देखेंगे^(२७) जो वादा दिया जाता है तो अव जान जाएंगे कि किस का मददगार कमज़ोर और किसकी गिनती कम^(२८) (२४) तुम फ़रमाओ, मैं नहीं जानता कि नज़दीक है वह जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है या मेरा रब उसे कुछ वक्फ़ा देगा^(२९) (२५) ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर^(३०) किसी को मुसल्लत नहीं करता^(३१) (२६) सिवाय अपने पसन्दीदा रसूलों के^(३२) कि उनके आगे पीछे पहरा मुक़र्रर कर देता है^(३३) (२७) ताकि देख ले कि उन्होंने अपने रब के संदेश पहुंचा दिये और जो कुछ उनके पास है

يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۖ قُلْ إِنَّمَا
أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۖ قُلْ إِنِّي لَنْ
يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَكِنْ أَجِدُ مِنْ دُونِهِ
مُلْتَحَدًا ۖ إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَةً ۚ وَمَنْ
يَعُصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ ثَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَيَجْعَلُونَ
مَنْ أضعف ناصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ۚ قُلْ إِنْ
أَدْرَيْتُ أَقْرَبَ مَا تُوْعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ
رَبِّي أَمَدًا ۖ عَلِيمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهَرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ
أَحَدًا ۖ إِلَّا مَنْ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ
يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۖ
لِّيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا رِسَالَتِي رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ

- (३४) कि वो कैसी शुक्रगुजारी करते हैं.
- (३५) कुरआन से या तौहीद या इबादत से.
- (३६) जिसकी सख्ती दम ब दम बढ़ेगी.
- (३७) यानी वो मकान जो नमाज़ के लिये बनाए गए.
- (३८) जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों का तरीका था कि वो अपने गिरजाओं और इबादतघरानों में शिर्क करते थे.
- (३९) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बले नख़लह में फ़ख़ के वक़्त.
- (४०) यानी नमाज़ पढ़ने.
- (४१) क्योंकि उन्हें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इबादत और तिलावत और आपके सहावा का अनुकरण अत्यन्त अजीब और पसन्दीदा मालूम हुआ. इससे पहले उन्होंने कभी ऐसा दृश्य न देखा था और ऐसा वमिसाल क़राम न सुना था.

सूरए जिन्न - दूसरा सूकू

- (१) जैसा कि हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था “फ़र्मिय यन्सुरुनी मिनल्लाहे इन असीतुहू” यानी तो मुझे उससे कौन बचाएगा अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूँ तो तुम मुझे सिवा नुक़सान के कुछ न बढ़ाओगे. (सूरए हूद, आयत ६३)
- (२) यह मेरा फ़ज़्र है जिसको पूरा करता हूँ.
- (३) और उनपर ईमान लाए.
- (४) वह अज़ाब.
- (५) काफ़िर की या मूमिन की, यानी उस रोज़ काफ़िर का कोई मददगार न होगा और मूमिन की मदद अल्लाह तआला और उसके अम्बिया और फ़रिश्ते सब फ़रमाएंगे. नज़र बिन हारिस ने कहा था कि यह वादा कब पूरा होगा, इसके जवाब में अगली आयत उतरी.
- (६) यानी अज़ाब के वक़्त का इल्म ग़ैब है जिसे अल्लाह तआला ही जानें.
- (७) यानी अपने ख़ास ग़ैब पर, जिसके साथ वह मुक़र्रर है. (श्वाज़िन व बैज़ावी वगैरह)
- (८) यानी सम्पूर्ण सूचना नहीं देता जिससे वास्तविकता की सम्पूर्ण जानकारी विश्वास के सर्वश्रेष्ठ दर्जे के साथ हासिल हो.
- (९) तो उन्हें ग़ैबों पर मुसल्लत करता है और भरपूर सूचना और सम्पूर्ण जानकारी अंता फ़रमाता है. और यह इल्म ग़ैब उनके लिये चमत्कार होता है. बलियों को भी अगरचे ग़ैबों की जानकारी दी जाती है मगर नबियों का इल्म बलियों के इल्म से बहुत ऊंचा है और बलियों की जानकारीयों नबियों ही के माध्यम और उन्हीं के फ़ैज़ से होती हैं. माअतज़िला एक गुमराह सम्प्रदाय है. वह बलियों के इल्म ग़ैब को नहीं मानता.

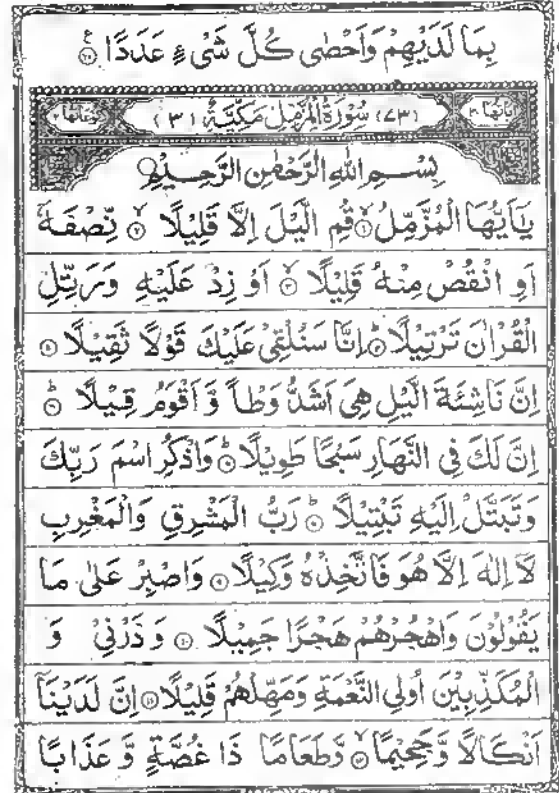
सब उसके इल्म में है और उसने हर चीज़ की गिनती शुमार कर रखी है^(११) (२८)

७३ - सूरए मुज़म्मिल

सूरए मुज़म्मिल मक्का में उतरी, इसमें बीस आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान, रहमत वाला^(१) ऐ झुरमुट मारने वाले^(२) (१) रात में क़याम फ़रमा^(३) सिवा कुछ रात के^(४) (२) आधी रात या उससे कुछ कम करा^(५) (३) या उसपर कुछ बढ़ाओ^(६) और कुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो^(७) (४) बेशक बहुत जल्द हम तुम पर एक भारी बात डालेंगे^(८) (५) बेशक रात का उठना^(९) वह ज़ियादा दवाव डालता है^(१०) और बात ख़ूब सीधी निकलती है^(११) (६) बेशक दिन में तो तुम को बहुत से काम हैं^(१२) (७) और अपने रब का नाम याद करो^(१३) और सबसे दूट कर उसी के हो रहो^(१४) (८) वह पूरब का रब और पश्चिम का रब, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं तो तुम उसी को अपना कारसाज़ बनाओ^(१५) (९) और काफ़िरों की बातों पर सब्र फ़रमाओ और उन्हें अच्छी तरह छोड़ दो^(१६) (१०) और मुझपर छोड़ो उन झुटलाने वाले मालदारों को और उन्हें थोड़ी मुहलत दो^(१७) (११) बेशक हमारे पास^(१८) भारी वेदियाँ हैं और भड़कती आग^(१९) और गले में फंसता खाना



उनका ख़याल बातिल और बहुत सी हद्दीसों के ख़िलाफ़ है। रसूलों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम रसूलों में सबसे श्रेष्ठ हैं। अल्लाह तआला ने आपको सारी चीज़ों की जानकारी अता फ़रमाई जैसा कि सही हद्दीसों की विश्वसनीय किताबों से साबित है। और यह आयत हुज़ूर के और सारे इज़्ज़त वाले रसूलों के लिये शैब का इल्म साबित करती है।

(१०) फ़रिश्तों को जो उनकी हिफ़ाज़त करने हैं।

(११) इससे साबित हुआ कि सारी चीज़ें सीमित, घिरी हुई और अन्त वाली है।

७३ - सूरए मुज़म्मिल - पहला रूकू

(१) सूरए मुज़म्मिल मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, बीस आयतें, दो सौ पचासी कलिमे, आठ सौ अड़तीस अक्षर हैं।
(२) यानी अपने कपड़ों से लिपटने वाले, इस के उतरने की परिस्थितियाँ में कई कथन हैं। कुछ मुफ़सिरो ने कहा कि वही के दौर की शुरुआत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ख़ौफ़ से अपने कपड़ों में लिपट जाते थे। ऐसी हालत में आपको हज़रत जिब्रईल ने ऐ झुरमुट मारने वाले कहकर पुकारा। एक क़ौल यह है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम चादर शरीफ़ में लिपटे हुए आराम फ़रमा रहे थे इस हालत में आपको पुकारा गया ऐ झुरमुट मारने वाले। बहरहाल यह पुकार बताती है कि मेहबूब की हर अदा प्यारी है। और यह भी कहा गया है कि इसके मानी ये हैं कि नुबूत्त की रिदा और रिਸालत की चादर ओढ़ने वाले और उसके योग्य।

(३) नमाज़ और इबादत के साथ।

(४) यानी थोड़ा हिस्सा आराम के लिये हो बाक़ी रात इबादत में गुज़ारिये। अब वह बाक़ी कितनी हो उसकी तफ़सील आगे इरशाद फ़रमाई जाती है।

(५) मुराद यह है कि आपको इस्तिस्नार दिया गया है कि चाहे क़याम आधी रात से कम हो या आधी रात या उससे ज़्यादा (बैजावी) मुराद इस क़याम से तहज़ज़ुद है जो इस्लाम के प्रारम्भ में बाज़िव और कुछ के अनुसार फ़र्ज़ था। नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा रात को क़याम फ़रमाते थे और लोग न जानते कि तिहाई रात या आधी रात या दो तिहाई रात कब हुई तो वह सारी रात क़याम में रहते और सुबह तक नमाज़ें पढ़ते इस डर से कि क़याम बाज़िव मात्रा से कम न हो जाए यहाँ तक कि उन हज़रात के पाँव सूज जाते थे। फिर यह हुक्म एक साल के बाद मन्सूख़ हो गया और इसका नासिख़ भी इसी सूरत में है “फ़क़रऊ मा तयस्सरा मिन्हो” यानी कुरआन में से जितना तुम पर आसान हो उतना पढ़ो।

और दर्दनाक अज़ाब^(१८) (१३) जिस दिन धर धराएंगे ज़मीन और पहाड़^(१९) और पहाड़ हो जाएंगे रेतें का टीला बहता हुआ (१४) वेशक हमने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजे^(२०) कि तुम पर हाज़िर नाज़िर हैं^(२१) जैसे हमने फ़िरऔन की तरफ़ रसूल भेजे^(२२) (१५) तो फ़िरऔन ने उस रसूल का हुक्म न माना तो हमने उसे सख्त गिरफ्त से पकड़ा (१६) फिर कैसे बचोगे^(२३) अगर^(२४) कुफ़्र करो उस दिन^(२५) जो वच्चों को बूढ़ा कर देगा^(२६) (१७) आसमान उसके सदमे से फट जाएगा अल्लाह का वादा होकर रहना (१८) वेशक यह नसीहत है तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह ले (२७) (१९)

दूसरा खूकू

वेशक तुम्हारा रब जानता है कि तुम क़याम करते हो कभी दो तिहाई रात के करीब, कभी आधी रात, कभी तिहाई, और एक जमाअत तुम्हारे साथ वाली^(१) और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है, उसे मालूम है कि ऐ मुसलमानो तुम से रात की गिनती न हो सकेगी^(२) तो उसने अपनी मेहर से तुम पर रज़ू फ़रमाई अब कुरआन में से जितना तुम पर आसान हो उतना पढ़ो^(३) उसे मालूम है कि बहुत जल्द कुछ तुम में से बीमार होंगे और कुछ ज़मीन में

إِنَّمَا ۖ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ
الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۖ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ
رَسُولًا ۖ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
رَسُولًا ۖ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنَ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخَذًا
وَبِيلًا ۖ فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا
يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۖ السَّمَاءُ مُنْقَطِعَةٌ بِهَا
كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ۖ إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ
شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۖ إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ
تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثَيِّ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَ
طُلُوفَهُ مِنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۖ وَاللَّهُ يَقْدَرُ اللَّيْلَ وَ
النَّهَارَ ۖ عَلِمَ أَن لَّنْ تَحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ
فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۖ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ
مِنْكُمْ مَّرْضَىٰ ۖ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ

- (६) जहाँ रुकना है वहाँ रुकें और एक एक अक्षर की साफ़ और स्पष्ट अदायगी के साथ सही पढ़ना नमाज़ में फ़र्ज़ है।
- (७) यानी अत्यन्त बुझी और महानतापूर्ण, इससे कुरआने मजीद मुराद है। यह भी कहा गया है कि मानी ये हैं कि हम आप पर कुरआन उतारेंगे जिसमें करने और न करने वाले कामों के निर्देश और भारी परिश्रम और कठिनाइयों वाली बातें हैं जिन पर अमल करना लोगों पर भारी होगा।
- (८) सोने के बाद।
- (९) दिन की नमाज़ के मुक़ाबले में।
- (१०) क्योंकि वह वक़्त सुकून और इत्मीनान का है। शोर गुल से अमन रहता है, एकाग्रता और एकसूई हासिल होती है, दिखाने का मौक़ा नहीं होता।
- (११) रात का वक़्त इबादत के लिये ख़ूब फ़ुरसत का है।
- (१२) रात और दिन के कुल औक़ात में तस्बीह, तहलील, नमाज़, तिलावते कुरआन शरीफ़, दसैं इल्म क़ौरह के साथ। और यह भी कहा गया है कि इसके मानी ये हैं कि अपनी क़िरअत की शुरुआत में विस्मिल्लाह पढ़ो।
- (१३) यानी इबादत में सबसे अलग हो जाने की सिफ़त हो कि दिल अल्लाह ताअला के सिवा और किसी की तरफ़ न लगे। सब इलाक़े सारे सम्बन्ध टूट जाएं, सिर्फ़ अल्लाह तआला की तरफ़ ध्यान रहे।
- (१४) और अपने काम उसी को सौंप दो।
- (१५) यह क़िताल की आयत से मन्सूख़ है।
- (१६) बद्र तक या क़यामत के दिन तक।
- (१७) आख़िरत में।
- (१८) उनके लिये जिन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाया।
- (१९) वह क़यामत का दिन होगा।
- (२०) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।
- (२१) मूमीन के ईमान और काफ़िर के कुफ़्र को जानते हैं।
- (२२) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम।
- (२३) अल्लाह के अज़ाब से।
- (२४) दुनिया में।

सफ़र करेंगे अल्लाह का फ़ज़ल तलाश करने^(१) और कुछ अल्लाह की राह में लड़ते होंगे^(२) तो जितना कुरआन मयस्सर हो पढ़ो^(३) और नमाज़ कायम रखो^(४) और ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो^(५) और अपने लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे अल्लाह के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे, और अल्लाह से बख़्शिश मांगो, वेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (२०)

७४ - सूरए मुद्स्सिर

सूरए मुद्स्सिर मक्का में उतरी, इसमें ५६ आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) ऐ बालापोश ओढ़ने वाले^(२) (१) खड़े हो जाओ^(३) फिर डर सुनाओ^(४) (२) और अपने रब की ही बड़ाई बोलो^(५) (३) और अपने कपड़े पाक रखो^(६) (४) और बुतों से दूर रहो^(५) और ज़्यादा लेने की नियत से किसी पर एहसान न करो^(६) (६) और अपने रब के लिये सब्र किये रहो^(७) (७) फिर जब सूर फूँका जाएगा^(८) (८) तो वह दिन कर्दा दिन है^(९) काफ़िरों पर आसान नहीं^(१०) (१०) उसे मुझ पर छोड़ जिसे मैंने अकेला पैदा किया^(११) (११) और उसे वसीअ

يَتَّبِعُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۖ وَآخَرُونَ يَقَاتِلُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَأَقْرُهُمَا مَا تُبَسِّرُ مِنْهُ ۖ وَاقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا
وَمَا تَقْتَدِرُ مَوْلَا إِلَّا نَفْسُكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ
اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ أَجْرًا ۖ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

(۴۴) سُوْرَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ (۲۰ آيَاتٍ)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۖ قُمْ فَأَنْذِرْ ۚ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۚ
وَتُوبَاكَ فَطَهِّرْ ۚ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۚ وَلَا تَمْنُنْ
تَسْتَكْثِرْ ۚ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۚ وَإِذَا نْفَرَ فِي النَّافِرِ
فَإِنَّكَ بِوَيْحٍ يَوْمَ عَسِيرٍ ۚ عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ
يَسِيرٍ ۚ ذُرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۚ وَجَعَلْتُ

مَنْزِلَ

- (२५) यानी क़यामत के दिन जो अत्यन्त डरावना होगा।
(२६) अपनी दहशत की तीव्रता से।
(२७) ईमान और ताअत इस्तियार करके।

सूरए मुज़म्मिल - दूसरा रूकू

- (१) तुम्हारे सहाबा की, वो भी रात के क़याम में तुम्हारा अनुकरण करते हैं।
(२) और समय की पाबन्दी न कर सकोगे।
(३) यानी रात का क़याम माफ़ फ़रमाया, इस आयत से नमाज़ में मुतलक़ क़िरअत यानी कुरआन पढ़ने की अनिवार्यता सिद्ध हुई, कम से कम कुरआन पढ़ने की मात्रा एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें हैं।
(४) यानी तिजारत या इल्म हासिल करने के लिये।
(५) उन सब पर रात का क़याम दुश्वार होगा।
(६) इससे पहला हुक्म मन्सूख़ अर्थात् स्थगित हो गया और यह भी पंजगाना नमाज़ों से मन्सूख़ हो गया।
(७) यहाँ नमाज़ से फ़र्ज़ नमाज़ें मुराद हैं।
(८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इस क़र्ज़ से मुराद ज़कात के सिवा राहें खुदा में श्रर्च करना है रिश्तेदारों का ख़याल रखने और मेहमावदारी में, और यह भी कहा गया है कि इससे तमान सदकात मुराद हैं जिन्हें अच्छी तरह हलाल माल खुले दिल से खुदा की राह में श्रर्च किया जाए।

७४ - सूरए मुद्स्सिर - पहला रूकू

- (१) सूरए मुद्स्सिर मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, छप्पन आयतें, दो सौ पचपन क़लिमे, एक हज़ार दस अक्षर हैं।
(२) यह ख़िताब हज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को है, हज़रत जाबिर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मैं हिरा पहाड़ पर था कि मुझे पुकारा गया “या मुहम्मदो इन्नका रसूलुल्लाहे” (ऐ मुहम्मद तुम अल्लाह के रसूल हो) मैंने अपने दाएं बाएं देखा, कुछ न पाया, ऊपर देखा एक व्यक्ति आसमान और ज़मीन के बीच बैठा है, (यानी बही फ़रिश्ता जिसने पुकारा था) यह देखकर मुझे पर रोब हुआ और मैं ख़दीजह के पास आया और मैं ने कहा मुझे बालापोश (चादर) उढ़ाओ, उन्होंने उढ़ादी तो ज़िब्रईल आए और उन्होंने कहा ऐ बालापोश ओढ़ने वाले,

माल दिया^(१२) और बेटे दिये सामने हाज़िर रहते^(१३) और मैंने उसके लिये तरह तरह की तैयारियाँ की^(१४) फिर यह लालच करता है कि मैं और ज्यादा दूँ^(१५) हरगिज़ नहीं^(१६) वो तो मेरी आयतों से दुश्मनी रखता है^(१६) करीब है कि मैं उसे आग के पहाड़ सऊद पर चढ़ाऊँ^(१७) बेशक वह सोचा और दिल में कुछ बात ठहराई^(१८) तो उसपर लानत हो कैसी ठहराई^(१९) फिर उसपर लानत हो कैसी ठहराई^(२०) फिर नज़र उठाकर देखा^(२१) फिर त्योंरी चढ़ाई और मुंह बिगाड़ा^(२२) फिर पीठ फेरी और घमण्ड किया^(२३) फिर बोला, यह तो वही जादू है अगलों से सीखा^(२४) यह नहीं मगर आदमी का कलाम^(२५) कोई दम जाता है कि मैं उसे दोज़ख में धंसाता हूँ^(२६) और तुमने क्या जाना दोज़ख क्या है^(२७) न छोड़े न लगी रखे^(२८) आदमी की खाल उतार लेती है^(२९) उसपर उन्नीस दारोगा हैं^(३०) और हमने दोज़ख के दारोगा न किये मगर फ़रिश्ते और हमने उनकी यह गिन्ती न रखी मगर काफ़िरों की जांच को^(३१) इसलिये कि किताब वालों को यकीन आए^(३२) और ईमान वालों का ईमान बढ़े^(३३) और किताब वालों और मुसलमानों को कोई शक न रहे और दिल के रोगी^(३४) और

لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا ۖ وَبَيْنَ شُهُودًا ۖ وَمَهْدَتْ لَهُ
تَمْهِيدًا ۖ ثُمَّ يَطْبَعُ أَنْ أَزِيدَ ۖ كَلَّا ۖ إِنَّهُ
كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ۖ سَاهِقُهُ صَعُودًا ۖ إِنَّهُ
فَكَرَّ وَقَدَّرَ ۖ فَقَتِلْ كَيْفَ قَدَّرَ ۖ ثُمَّ قُتِلْ كَيْفَ
قَدَّرَ ۖ ثُمَّ نَظَرَ ۖ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۖ ثُمَّ أَدْبَرَ وَ
اسْتَكْبَرَ ۖ فَفَالَ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْخَرُ ۖ إِنَّ
هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۖ سَاصِلِيلُهُ سَقَرٌ ۖ وَمَا
أَدْرَاكَ مَا سَقَرُهُ ۖ لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ۖ لَوَاحِشُهُ
لِلْبَشَرِ ۖ عَلَيْهَا تَسْعَةُ عَشْرَ ۖ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ
النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۖ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا
فِتْنَةً ۖ لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْفِنَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْكَابَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ

مَلَأَ

- (३) अपनी स्वाबगाह से.
- (४) क़ौम को अल्लाह के अज़ाब का ईमान न लाने पर.
- (५) जब यह आयत उतरी तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अल्लाहो अकबर फ़रमाया. हज़रत ख़दीजह ने भी हुज़ूर की तकबीर सुनकर तकबीर कही और ख़ुश हुई और उन्हें यकीन हुआ कि वही आई.
- (६) हर तरह की नापाकी से. क्योंकि नमाज़ के लिये तहारात यानी पाकी ज़रूरी है और नमाज़ के सिवा और हालतों में भी कपड़े पाक रखना बेहतर है या ये मानी हैं कि अपने कपड़े कोताह कीजिये. ऐसे लम्बे न हों जैसी कि अरबों की आदत है क्योंकि बहुत ज्यादा लम्बे होने से चलने फिरने में नापाक होने का डर रहता है.
- (७) यानी जैसे कि दुनिया में हदिये और न्योते देने का तरीक़ा है कि देने वाला यह ख़याल करता है कि जिसको मैंने दिया है वह उससे ज्यादा मुझे देगा. इस क्रिम के न्योते और हदिये शरीअत से जायज़ हैं मगर नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इससे मना फ़रमाया गया क्योंकि नबुव्वत की शान बहुत ऊंची है और इस ऊंची उपाधि के योग्य यही है कि जिस को जो दें वह मात्र करम हो उससे लेने या नफ़ा हासिल करने की नियत न हो.
- (८) जिन कामों का हुक्म है और जिन काम न करने का आदेश है और उन बातनाओं पर जो दीन की ख़ातिर आपको बर्दाश्त करनी पड़ीं.
- (९) इससे मुराद सूर का दूसरी बार फूँका जाना है.
- (१०) इसमें इशारा है कि वह दिन अल्लाह के फ़ज़ल से ईमान वालों पर आसान होगा.
- (११) उसकी माँ के पेट में बग़ैर माल और औलाद के. यह आयत बलीद बिन मुगीरह मख़ज़ूमि के बारे में उतरी वह अपनी क़ौम में चहीद के लक़ब से मशहूर था.
- (१२) खेतियाँ और ढेर सार मवेशी और तिजारतें. मुजाहिद सं नक़्त है कि वह एक लाख दीनार नक़द की हैसियत रखता था और ताइफ़ में उसका ऐसा बड़ा दाग़ था जो साल के किसी वक़्त फ़लों से ख़ाली न होता था.
- (१३) जिनकी तादाद दस थी और चूँकि मालदार थे उन्हें रोज़ी जुदा देने के लिये सफ़र की हाज़त न थी इसलिये सब बाप के सामने रहते उनमें से तीन इस्लाम में दाख़िल हुए, ख़ालिद और हिशाम और बलीद इब्ने बलीद.
- (१४) इज़ज़त भी दी और रियासत भी अता फ़रमाई, ऐश भी दिया और लम्बी उम्र भी अता फ़रमाई.
- (१५) नाशुक्र के बाबुज़द.
- (१६) यह न होगा. चुनाँचे इस आयत के उतरने के बाद बलीद के माल और औलाद और इज़ज़त में कमी शुरू हुई यहाँ तक कि हलाक हो गया.
- (१७) जब "हा-मीम तन्ज़ीलुल किताबे भिनल्लाहिल अज़ीज़िल अलीम" उतरी और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मस्जिद में

काफ़िर कहें इस अचंभे की बात में अल्लाह का क्या मतलब है, यही अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे और तुम्हारे रब के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं जानता, और वह^(१५) तो नहीं मगर आदमी के लिये नसीहत. (३१)

दूसरा सूकू

हाँ हाँ चांद की क़सम (३२) और रात की जब पीठ फेरे (३३) और सुबह की, जब उजाला डाले^(१) (३४) वेशक दौज़ख बहुत बड़ी चीज़ों में की एक है (३५) आदमियों को डराओ (३६) उसे जो तुममें चाहे कि आगे आए^(२) या पीछे रहे^(३) (३७) हर जान अपनी करनी में गिरवी है (३८) मगर दाएं तरफ़ वाले^(४) (३९) बाग़ों में पूछते हैं (४०) मुजरिमों से (४१) तुम्हें क्या बात दौज़ख में ले गई (४२) वो बोले हम^(५) नमाज़ न पढ़ते थे (४३) और मिस्कीन (दरिद्र) को खाना न देते थे^(६) (४४) और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्र करते थे (४५) और हम इन्साफ़ के दिन को^(७) झुटलाते रहे (४६) यहाँ तक कि हमें मौत आई (४७) ताँ उन्हें सिफ़ारिशियों की सिफ़ारिश काम न देगी^(८) (४८) तो उन्हें

فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ
بِهَذَا مَثَلًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَ
يَهْدِي مَن يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا
هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَى لِلْبَشَرِ ۚ كَلَّا وَالْقُرْ
آنَ وَاللَّيْلَ إِذَا دُخِرَ وَالصُّبْحَ إِذَا أَسْفَرَ ۚ إِنَّهَا إِحْثَا
الْكُفْرَ ۚ تَذَكُّرًا لِلْبَشَرِ ۚ لِمَن شَاءَ مِنْكُمْ أَن
يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۚ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ
ۚ إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۚ فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ۚ عَنِ
الْخَيْرِ مِمَّن مَّا سَلَكُوكُمْ فِي سَفَرٍ ۚ قَالُوا لِمَ
نَكَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۚ وَلَمْ نَكْ نَطْعِمِ السَّكِينِ ۚ
وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ۚ وَكُنَّا مُكَذِّبِينَ
يَوْمَ الدِّينِ ۚ حَتَّى أَتَيْنَا الْيَقِينَ ۚ فَمَا
تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ۚ فَمَا لَهُمْ عَنِ

مَثَلًا

तिलावत फ़रमाई, वलीद ने सुना और उस क़ौम की मजलिस में आकर कहा कि खुदा की क़सम मैंने मुहम्मद से अभी एक क़त्लाम सुना, न वह आदमी का, न ज़िन्न का. खुदा की क़सम, उसमें अजीब मिठास और ताज़गी और फ़ायदे और दिलकशी है, वह क़त्लाम सब पर ग़ालिब रहेगा. कुरैश को उसकी इन बातों से बहुत ग़म हुआ और उन में मशहूर हो गया कि वलीद बाप दादा के दीव से फिर गया. अबू जहल ने वलीद का हमवार करने का ज़िम्मा लिया और उसके पास आकर बहुत दुखी सूत बनाकर बैठ गया. वलीद ने कहा, क्या दुख है. अबू जहल ने कहा, ग़म कैसे न हो तू बुढ़ा हो गया है, कुरैश तेरे ख़र्च के लिये ख़यया जमा कर देंगे. उन्हें ख़याल है कि तूने मुहम्मद की तअरीफ़ इसलिये की है कि तुझ उन के दस्तख़्तान का बचा ख़ाना मिल जाए. इसपर उसे बड़ा गुस्सा आया और कहने लगा कि क्या कुरैश को मेरे माल व दीलत का हाल मालूम नहीं है और क्या मुहम्मद और उनके साथियों ने कभी पेट भर के ख़ाना खाया है, उनके दस्तख़्तान पर क्या बचेगा. फिर अबू जहल के साथ उठा और क़ौम में आकर कहने लगा, तुम्हें ख़याल है कि मुहम्मद पागल हैं, क्या तुमने उनमें कभी दीवानगी की कोई बात देखी. सब ने कहा, हागिज़ नहीं. कहने लगा, तुम उन्हें ताज़िक समझते हो, क्या तुमने कभी उन्हें तंब विधा करते देखा है. सबने कहा, नहीं. फिर बोला, तुम उन्हें शायर गुमान करते हो, क्या तुमने कभी उन्हें शेर कहते पाया. सबने कहा, नहीं. कहने लगा, तुम उन्हें झूटा कहते हो, क्या तुम्हारे अनुभव में कभी उन्होंने झूट बोला. सबने कहा, नहीं. और कुरैश में आपकी सच्चाई और दयानतदारी मशहूर थी कि कुरैश आपको अमीन और सादिक कहा करते थे. यह सुनकर कुरैश ने कहा, फिर क्या बात है. तो वलीद ने सांचकर कहा कि बात यह है कि वो जादूगर हैं तुमने देखा होगा कि उनकी बदौलत रिश्तेदार रिश्तेदार से, बाप बेटे से अलग हो जाते हैं. वस यही जादूगर का काम है और जो कुरआन वह पढ़ते हैं वह दिल में असर कर जाता है इसका कारण यह है कि वह जादू है. इस आयत में इसका ज़िक्र फ़रमाया गया.

(१८) यानी न किसी अज़ाब के मुस्तहिक़ को छोड़े न किसी के ज़िम्मा पर गोश्त पोस्त लगी रहने दे बल्कि अज़ाब के मुस्तहिक़ को गिरफ़्तार करे और उसे जलाए और जब जल जाए फिर वैसे ही कर दिये जाए.

(१९) जलाकर.

(२०) फ़रिश्ते, एक मालिक और अद्वारह उनके साथी.

(२१) कि अल्लाह की हिक़मत पर विश्वास न करके उस तादाद में क़त्लाम करें और कहें उन्नीस क्यों हुए.

(२२) यानी यहूदियों को यह तादाद अपनी किताबों के मुवाफ़िक़ देखकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सच्चाई का यक़ीन हासिल हो.

(२३) यानी पहले किताब में से जो ईमान लाए उनका ऐतिहाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ और ज़्यादा हो और जान लें कि हुज़ूर जो कुछ फ़रमाते हैं वह अल्लाह की बही है इसलिये पिछली किताबों से मुताबिक़ होती है.

(२४) जिनके दिलों में दोशलापन है.

(२५) यानी जहन्नम और उसकी सिफ़त या कुरआन की आयतें.

क्या हुआ नसीहत से मुंह फेरते हैं^(१) ॥४९॥ मानो वो भड़के हुए गधे हों^(२) ॥५०॥ कि शेर से भागे हों^(३) ॥५१॥ बल्कि उनमें का हर व्यक्ति चाहता है कि खुले सहीफे (धर्मग्रन्थ) उसके हाथ में दे दिये जाएं^(४) ॥५२॥ हरगिज़ नहीं, बल्कि उनको आखिरत का डर नहीं^(५) ॥५३॥ हाँ हाँ वेशक वो^(६) नसीहत है^(७) ॥५४॥ तो जो चाहे उससे नसीहत ले^(८) ॥५५॥ और वो क्या नसीहत मानें मगर जब अल्लाह चाहे, वही है डरने के लायक और उसी की शान है मगफिरत(क्षमा) फरमाना^(९) ॥५६॥

७५ - सूरए क्रियामह

सूरए क्रियामह मक्का में उतरी, इसमें ४० आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) क्रियामत के दिन की कसम याद फरमाता हैं^(२) ॥१॥ और उस जान की कसम जो अपने ऊपर बहुत मलामत करे^(३) ॥२॥ क्या आदमी^(४) यह समझता है हम हरगिज़ उसकी हड्डियाँ जमा न फरमाएंगे^(५) ॥३॥ क्यों नहीं हम कादिर हैं कि उसके पोर ठीक बना दें^(६) ॥४॥ बल्कि आदमी चाहता है कि उसकी निगाह के सामने बदी करे^(७) ॥५॥ पूछता है क्रियामत का दिन कब होगा^(८) ॥६॥ फिर जिस दिन आँख चौंधियाएगी^(९) ॥७॥ और चांद गहेगा^(१०) ॥८॥

التَّذَكُّرَ مُعْرِضِينَ ۖ كَانَتْ حَرْمٌ مُسْتَفْرَّةً ۖ فَزَتْ
مِنْ قُسْوَةٍ ۖ بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ
يُؤْتَى صُحُفًا مَنشُورَةً ۖ كَلَّا بَلْ لَا يَخَافُونَ
الْآخِرَةَ ۖ كَلَّا إِنَّهُ تَذَكُّرٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ۖ
وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۖ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَى
وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۖ

سُورَةُ الْقِيَامَةِ مَكِّيَّةٌ (٢١)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
لَا أَقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَمَةِ ۖ وَلَا أَقْسِمُ بِالنَّفْسِ
اللَّوَامَةِ ۖ أَيْحَسِبُ الْإِنْسَانُ أَنْ تَجْعَلَ عِظَامَهُ ۖ
بَلَىٰ قَلِيلًا عَلَىٰ أَنْ تُسَوَّىٰ بَنَانَهُ ۖ بَلْ يُرِيدُ
الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۖ يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيَمَةِ ۖ
فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۖ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۖ وَجُمِعَ الشَّمْسُ

सूरए मुंदस्सिर - दूसरा रूकू

- (१) खूब रोशन हो जाए।
- (२) भलाई या जन्नत की तरफ ईमान लाकर।
- (३) कुफ़र इस्तिफ़ार करके और बुराई और अज़ाब में गिरफ़्तार हो।
- (४) यानी भूमिनीन, वो गिरवी नहीं, वो निजात पाने वाले हैं और उन्होंने नेकियाँ करके अपने आपको आज़ाद करा लिया है, वो अपने स्व की रहमत के साए में हैं।
- (५) दुनिया में।
- (६) यानी मिरकीनों पर सदक्का न करते थे।
- (७) जिसमें अअमाल का हिसाब होगा और जज़ा दी जाएगी, इससे मुराद क्रियामत का दिन है।
- (८) यानी नबी, फ़रिश्ते, शहीद और नेक लोग, जिन्हें अल्लाह तआला ने शफ़ाअत करने का अधिकार दिया है वो ईमानदारों की शफ़ाअत करेंगे, काफ़िरों की शफ़ाअत न करेंगे तो जो ईमान नहीं रखते उन्हें शफ़ाअत भी मयस्सर न आएगी।
- (९) यानी क़ुरआन के उपदेशों से मुंह फेरते हैं।
- (१०) यानी मुश्रिक लोग नादानी और भ्रष्टता में गधे की तरह हैं जिस तरह शेर को देखकर वह भागता है उसी तरह ये नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़ुरआन पढ़ने को मुनकर भागते हैं।
- (११) कुरैश के काफ़िरों ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि हम हरगिज़ आपका अनुकरण न करेंगे जब तक कि हम में से हर एक के पास अल्लाह तआला की तरफ़ से एक एक किताब न आए जिस में लिखा हो कि यह अल्लाह तआला की किताब है, फ़लाँ बिन फ़लाँ के नाम, हम इस में तुम्हें रसूलुल्लाह के अनुकरण का हुक्म देते हैं।
- (१२) क्योंकि अगर उन्हें आख़िरत का डर होता तो दलीलें क़ायम होने और चमत्कार ज़ाहिर होने के बाद इस तरह की सरकशी वाली बहाने बाज़ियाँ न करते।
- (१३) क़ुरआन शरीफ़।

और सूरज और चांद मिला दिये जाएंगे^(१) (१९) उस दिन आदमी कहेगा किधर भाग कर जाऊं^(२) (२०) हरगिज़ नहीं, कोई पनाह नहीं^(३) (२१) उस दिन तेरे रब की तरफ़ जाकर ठहरना है^(४) (२२) उस दिन आदमी को उसका सब अगला पिछला जता दिया जाएगा^(५) (२३) बल्कि आदमी खुद ही अपने हाल पर पूरी निगाह रखता है^(६) (२४) और अगर उसके पास जितने बहाने हों सब ला डाले, जब भी न सुना जाएगा^(७) (२५) तुम याद करने की जल्दी में कुरआन के साथ अपनी ज़बान को हरकत न दो^(८) (२६) वेशक इसका मेहफूज़ करना^(९) और पढ़ना^(१०) हमारे ज़िम्मे है^(११) (२७) तो जब हम उसे पढ़ चुकें^(१२) उस वक़्त उस पढ़े हुए की इत्तिबाअ (अनुकरण) करो^(१३) (२८) फिर वेशक उसकी बारीकियों का तुम पर ज़ाहिर फ़रमाना हमारे ज़िम्मे है^(१४) (२९) कोई नहीं बल्कि ऐ काफ़िरो, तुम पाँव तले की दोस्त रखते हो^(१५) (३०) और आख़िरत को छोड़ बैठे हो^(१६) (३१) कुछ मुंह उस दिन^(१७) तरो ताज़ा होंगे^(१८) (३२) अपने रब को देखते^(१९) (३३) और कुछ मुंह उस दिन बिगड़े हुए होंगे^(२०) (३४) समझते होंगे कि उनके साथ वह की जाएगी जो कमर को तोड़ दे^(२१) (३५) हाँ हाँ जब जान गले को पहुंच जाएगी^(२२) (३६) और कहेंगे^(२३) कि है कोई झाड़ फूंक करे^(२४) (३७) और वह^(२५) समझ लेगा कि यह जुदाई की घड़ी है^(२६) (३८) और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी^(२७) (३९) उस दिन तेरे रब ही की तरफ़ हाँकना है^(२८) (४०)

दूसरा रूकू

उसने^(१) न तो सच माना^(२) और न नमाज़ पढ़ी^(३) (३१) हाँ झुटलाया और मुंह फेरा^(४) (३२) फिर अपने घर को अकड़ता

وَالْقَوْمُ يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمِيذٍ آيِنَ الْمَقَرِّ ۖ
كَلَّا لَا وَزَرَ ۖ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۖ
يَكْتَبُوا الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۖ بَلِ
الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۖ وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرُهُ ۖ
لَا تَنفَعُكَ بِهِ لِسَانُكَ لَتَجْعَلَ بِهِ ۖ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ
وَقُرْآنَهُ ۖ فَإِذَا قَرَأَهُ قَاتِلُهُ قَتْلَهُ ۖ ثُمَّ إِنَّا
عَلَيْنَا بَيَانُهُ ۖ كَلَّا بَلْ يَتَّبِعُونَ الْعَاجِلَةَ ۖ وَتَذَرُونَ
الْآخِرَةَ ۖ وَجُوعًا يَوْمَئِذٍ ثَاوِسَةٌ ۖ إِلَىٰ رَبِّهَا
ثَاوِسَةٌ ۖ وَوُجُوعًا يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۖ تَظُنُّ أَنْ
يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۖ كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۖ
وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ۖ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۖ وَ
التَّفَقُّتِ السَّاقِ بِالسَّاقِ ۖ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ
السَّاقُ ۖ فَلَا صَدَقَ وَلَا صَلَّىٰ ۖ وَلَكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۖ

مَثَلٌ

७५ - सूरए क्रियामह - पहला रूकू

- (१) सूरए क्रियामह मक्के में उतरी. इसमें दो रूकू, चालीस आयतें, एक सौ नितानवे कलिमे, छ सौ बानवे अक्षर हैं.
- (२) तक्वा वाले और बहुत फरमाँबरदार होने के बावजूद तुम मरने के बाद ज़रूर उठाए जाओगे.
- (३) यहाँ आदमी से मुग़ाद दोबारा उठाए जाने का इन्कार करने वाला काफ़िर है. यह आयत अदी बिन रबीआ के बारे में उतरी जिसने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि अगर मैं क़यामत का दिन देख भी लूँ जब भी न मानूँ और आप पर ईमान न लाऊँ. क्या अल्लाह तआला बिखरी हुई हड्डियाँ जमा कर देगा. इसपर यह आयत उतरी जिसके मानी ये हैं कि क्या उस काफ़िर का यह गुमान है कि हड्डियाँ बिखरने और गलने और कण कण होकर मिट्टी में मिलने और हवाओं के साथ उड़ कर दूर दराज़ जगहों में मुत्तशिर हो जाने से ऐसी हो जाती हैं कि उनका जमा करना काफ़िर हमारी कुदरत से बाहर समझता है. यह मालत ख़याल उसके मन में क्यों आया और उसने क्यों नहीं जाना कि जो पहली बार पैदा करने पर क़ादिर है वह मरने के बाद दोबारा पैदा करने पर ज़रूर क़ादिर है.
- (४) यानी उसकी उंगलियाँ जैसी थीं बाँर फ़र्क के वैसी ही कर दीं और उनकी हड्डियाँ उनके मौक़े पर पहुंचा दीं. जब छोटी हड्डियाँ इस तरह तरतीब दे दी जाएं तां बड़ी का क्या कहना.
- (५) इन्सान के दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार संदेह और दलील न होने के कारण नहीं है बल्कि हाल यह है कि वह सवाल की हालत में भी अपने फुज़ूर पर क़ायम रहना चाहता है कि हंसी के तौर पर पूछता है क़यामत का दिन कब होगा (जुमला) हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने इस आयत के मानी में फ़रमाया कि आदमी दोबारा उठाए जाने और हिसाब को झुटलाता है जो उसके सामने है. सईद बिन जुबैर ने कहा कि आदमी गुनाह को मुक़द्दम करता है और तौबत को मुअख़्ख़र. यही कहता रहता है अब

तोबह करूंगा, अब अमल करूंगा. यहाँ तक कि मौत आ जाती है और वह अपनी बंदियों में मुन्तिला होता है.

- (६) और हैरत दामनगीर होगी.
- (७) तारीक हो जाएगा और रौशनी ज़ाइल हो जाएगी.
- (८) यह मिला देना या उदय में होगा, दोनों पश्चिम से निकलेंगे या बेनूर होने में.
- (९) जो इस हाल और दहशत से रिहाई मिले.
- (१०) तमाम सृष्टि उसके सामने हाज़िर होगी, हिसाब किया जाएगा. जज़ा दी जाएगी. जिस चाहेगा अपनी रहमत से जन्नत में दाखिल करेगा, जिस चाहेगा अपने इन्साफ़ से जहन्नम में डालेगा.
- (११) जो उसने किया है.
- (१२) सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जिब्रिले अमीन के वही पहुंचाकर फ़ारिग होने से पहले याद फ़रमाने की कोशिश करते थे और जल्दी जल्दी पढ़ते और मुबारक ज़बान को हरकत देते. अल्लाह ताअला ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मशक़क़त ग़वारा न फ़रमाई और क़ुरआने पाक का आपके सीने में मेहफूज़ करना और ज़बाने अक़दस पर जारी फ़रमाना अपने ज़िम्मे क़रम पर ले लिया और इस आयत के ज़रिये हुज़ूर को मुतमइन फ़रमा दिया.
- (१३) आपके सीने पाक में.
- (१४) आपका.
- (१५) यानी आपके पास वही आ चुके.
- (१६) इस आयत के उतरने के बाद नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम वही को इत्मीनान से सुनते और जब वही पूरी हो जाती तब पढ़ते थे.
- (१७) यानी तुम्हें दुनिया की चाहत है.
- (१८) यानी क़यामत का दिन.
- (१९) अल्लाह ताअला की नेअमत और क़रम पर खुश चेहरों से प्रकाश ही प्रकाश, यह भूमिनों का हाल है.
- (२०) उन्हें अल्लाह के दीदार की नेअमत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा. इस आयत से साबित हुआ कि आख़िरत में भूमिनों को अल्लाह का दीदार मय़स्सर आएगा. यही पहले सुन्नत का अक़ीदा. क़ुरआन और हदीस और इजमाअ की बहुत सी दलीलें इसपर कायम हैं और यह दीदार बेक़ैफ़ और बेजिहत होगा.
- (२१) सियाह तारीक, ग़मज़दा, माफ़ूस, यह काफ़िरों का हाल है.
- (२२) यानी वह अज़ाब की सज़्ज़ी और भयानक मुसीबतों में गिरफ़्तार किये जाएंगे.
- (२३) मौत के वक़्त.
- (२४) जो उसके करीब होंगे.
- (२५) ताकि उसको शिफ़ा हासिल हो.
- (२६) यानी मरने वाला.
- (२७) कि मक्कं वाले और दुनिया सबसे जुदाई होती है.
- (२८) यानी मौत की तकलीफ़ और सज़्ज़ी से पाँव बाहम लिपट जाएंगे या ये मानी हैं कि दोना पाँव कफ़न में लपेटे जाएंगे या ये मानी हैं कि सज़्ज़ी पर सज़्ज़ी होगी, एक दुनिया की जुदाई की सज़्ज़ी, उसके साथ मौत की तकलीफ़, या एक मौत की सज़्ज़ी और उसके साथ आख़िरत की सज़्ज़ियाँ.
- (२९) यानी वन्दों का लौटना उसी की तरफ़ है वही उनमें फ़ैसला फ़रमाएगा.

सूरए क़ियामह - दूसरा रूकू

- (१) यानी इन्सान ने. मुराद इससे अबू ज़ह्रत है.
- (२) रिसालत ओर क़ुरआन को.
- (३) ईमान लाने से.
- (४) घमण्ड के अन्दाज़ से. अब उससे ख़िताब फ़रमाया जाता है.

चला^(५) (३३) तेरी खराबी आ लगी, अब आ लगी (३४) फिर तेरी खराबी आ लगी, अब आ लगी (३५) क्या आदमी इस घमण्ड में है कि आज़ाद छोड़ दिया जाएगा^(६) (३६) क्या वह एक बूंद न था उस मनी का कि गिराई जाए^(७) (३७) फिर खून की फुटक हुआ तो उसने पैदा फ़रमाया^(८) फिर ठीक बनाया^(९) (३८) तो उससे^(१०) दो जोड़ बनाए^(११) मर्द और औरत (३९) क्या जिसने यह कुछ किया, वह मुर्दे न जिला सकेगा (४०)

७६ - सूरए दहर

सूरए दहर मदीने में उतरी, इसमें ३९ आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) वेशक आदमी पर^(२) एक वक्त वह गुज़रा कि कहीं उसका नाम भी न था (३) वेशक हमने आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से^(४) कि वो उसे जांचे^(५) तो उसे सुनता देखता कर दिया^(६) (२) वेशक हमने उसे राह बताई^(७) या हक मानता^(८) या नाशुकी करता^(९) (३) वेशक हमने काफ़िरो के लिये तैयार कर रखी हैं जंजीरें^(१०) और तौक़^(११) और भड़कती आग^(१२) (४) वेशक नेक पियेंगे उस ज़ाम में से जिसकी मिलौनी काफ़ूर है (५) वह काफ़ूर क्या एक चंश्मा

تَمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَمِيطُ ۚ أَوَّلَىٰ لَكَ فَآوَىٰ ۖ ثُمَّ أَوَّلَىٰ لَكَ فَآوَىٰ ۚ أَيْحَسِبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدَّةً ۚ أَلَمْ يَكُنْ لُطْفَةً مِنِّي يَتَنَبَّأُ ۖ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا نَسُوهُ ۖ فَجَعَلْ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۚ أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ نُنْجِيَ الْنُفُوسَ ۚ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ۚ إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۚ إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ ۖ إِنَّمَا شَاكَرًا وَآمَنًا كَفُورًا ۚ إِنَّا آعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَاقًا وَسَعِيرًا ۚ إِنَّ الْآبَرَارَ يُشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۚ عَيْنًا يَشْرَبُ

(५) जब यह आयत उतरी, नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बतहा में अबू जहल के कपड़े पकड़ कर उससे फ़रमाया तेरी खराबी आ लगी, अब आ लगी। तो अबू जहल ने कहा, ऐ मुहम्मद क्या तुम मुझे धमकाते हो, तुम और तुम्हारा रव मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मक्के के पहाड़ों के बीच में सबसे ज़्यादा ताक़तवर ज़ोरआवर साहिबे शीक़्त व क़व्वत हूँ, मगर क़ुरआनी ख़बर ज़रूर पूरी होनी थी और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का फ़रमाना ज़रूर सच होने वाला था। चुनान्वे ऐसा ही हुआ और जंगे बद्र में अबू जहल ज़िल्लत और ख़्बारी के साथ बुरी तरह मारा गया। नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया हर उम्मत में एक फ़िरऔन होता है, मेरी उम्मत का फ़िरऔन अबू जहल है। इस आयत में उसकी ख़राबी का ज़िक्र चार बार फ़रमाया गया। पहली ख़राबी बेईमानी की हालत में ज़िल्लत की मौत, दूसरी ख़राबी क़य़ की सज़ियाँ और वहाँ की शिहतें, तीसरी ख़राबी मरने के बाद उठने के वक़्त मुसीबतों में गिरफ़्तार होता, चौथी ख़राबी जहन्नम का अज़ाब।

(६) कि न उसपर हलाल हराम वग़ैरह के अहक़ाम हों न वह मरने के बाद उठाया जाए न उससे अअमाल का हिसाब लिया जाए, न उसे आख़िरत में जज़ा दी जाए, ऐसा नहीं।

(७) गर्भ में, तो जो ऐसे गन्दे पानी से पैदा किया गया उसका घमण्ड करना, इतराना और पैदा करने वाले की नाफ़रमनी करना निहायत बेज़ा है।

(८) इन्सान बनाया।

(९) उसके अंगों को पूरा किया, उस में रूह डाली।

(१०) यानी वीर्य से या इन्सान से।

(११) दो सिफ़तें पैदा कीं।

७६ - सूरए दहर - पहला रूकू

(१) इस सूरत का नाम सूरए इन्सान भी है। मुजाहिद व क़तादा और जमहूर के नज़दीक यह सूरत मदनी है। कुछ ने इसको मक्की कहा है। इसमें दो रूकू, इकत्तिस आयतें, दो सौ चालीस कलिमे और एक हज़ार चवन अक्षर हैं।

(२) यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर रूह फूँके जाने से पहले चालीस साल का।

(३) क्योंकि वह एक मिट्टी का ख़मीर था, न कहीं उसका ज़िक्र था, न उसको कोई जानता था, न किसी को उसकी पैदाइश की हिक़मतें मालूम थीं। इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि इन्सान से जिन्स मुराद है और वक़्त से उसके गर्भ में रहने का ज़माना।

है^(१३) जिसमें से अल्लाह के बहुत खास बन्दे पियेंगे अपने महलों में उसे जहाँ चाहें बहाकर ले जाएंगे^(१४) अपनी मन्नतें पूरी करते हैं^(१५) और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई^(१६) फैली हुई है^(१७) और खाना खिलाते हैं उसकी महबूत पर^(१८) मिस्कीन (दरिद्र) और यतीम (अनाथ) और असीर (कैदी) को^(१९) उनसे कहते हैं हम तुम्हें खास अल्लाह के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुजारी (कृतज्ञता) नहीं मांगते^(२०) वेशक हमें अपने रब से एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श (कड़वा) निहायत संख्त है^(२१) तो उन्हें अल्लाह ने उस दिन के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी^(२२) और उनके सत्र पर उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े इनाम में दिये^(२३) जन्नत में तख्तों पर तकिया लगाए होंगे, न उसमें धूप देखेंगे न ठ्ठर^(२४) और उसके^(२५) साएँ उनपर झुके होंगे और उसके गुच्छे झुका कर नीचे कर दिये गए होंगे^(२६) और उनपर चांदी के वर्तनों और कूजों का दौर होगा जो शीशे की तरह हो रहे होंगे^(२७) कैसे शीशे चांदी के^(२८) साकियों ने उन्हें पूरे अन्दाज़े पर रखा होगा^(२९) और उसमें वो जाम पिलाए जाएंगे^(३०) जिसकी

بِهَآ عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۝ يُوفُونَ
بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝ وَ
يُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا
وَأَسِيرًا ۝ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لَوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ
جَزَاءً وَلَا شُكْرًا ۝ إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا
غُيُوسًا ۝ قُوتُهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ
وَلَقَدْ هَمُّوا نَصْرَةَ وَسُورًا ۝ وَجَزَّيْنَهُمَا صَبْرًا
جَنَّةً وَحَرِيرًا ۝ مُتَكِينِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرْآكِ ۝ لَا
يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ۝ وَدَائِبِيَّةٌ
عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا وَذُلَّتْ أَطْوَافُهَا ۝ وَ
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِانِيَّةٍ مِنْ فَضَّةٍ وَأَكْوَابٍ
كَانَتْ قَوَارِيرًا ۝ قَوَارِيرًا مِنْ فِضَّةٍ قَدَرُوهَا
تَقْدِيرًا ۝ وَيَشْقُونَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا

وَيُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا

مَذْكُورًا

- (४) मर्द और औरत की.
- (५) पाबन्द करके अपने हलाल और हराम से.
- (६) ताकि दलीलों का अवलोकन और आयतों का निरीक्षण कर सके.
- (७) दलीलों कायम करके, रसूल भेजकर, किताबें उतार कर, ताकि हो.
- (८) यानी मूमिन सईद.
- (९) काफिर शक्की.
- (१०) जिन्हें बाँधकर दोज़ख की तरफ घसीटे जाएंगे.
- (११) जो गलों में डाले जाएंगे.
- (१२) जिसमें जलाए जाएंगे.
- (१३) जन्नत में.
- (१४) नेकों के सवाब बयान फरमाने के बाद उनके अमाल का जिक्र फरमाया जाता है जो उस सवाब का कारण हुए.
- (१५) मन्नत यह है कि जो चीज़ आदमी पर वाजिब नहीं है वह किसी शर्त से अपने ऊपर वाजिब करे. जैसे कि यह कहें कि अगर मेरा भरीज़ अच्छा हो या मेरा मुसाफिर बख़ैर वापिस आए तो मैं खुदा की राह में इस क़द्र सदका दूँगा या इतनी रक़अतें नमाज़ पढ़ूँगा. इस नज़्र की अदायगी वाजिब होती है. मानी ये हैं कि वो लोग ताअत और इबादत और शरीअत के वाजिबात के आमिल हैं यहाँ तक कि जो शैर वाजिब ताअतें अपने ऊपर नज़्र से वाजिब कर लेते हैं उसको भी अदा करते हैं.
- (१६) यानी शिदत और सख्ती.
- (१७) क़नादह ने कहा कि उस दिन की सख्ती इतनी फैली हुई है कि आसमान फट जाएंगे, सितारे गिर पड़ेंगे, चाँद सूरज बेवूर हो जाएंगे, पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे. कोई इमारत बाक़ी न रहेगी. इसके बाद यह बताया जाता है कि उनके कर्म दिव्राने से ख़ाली हैं.
- (१८) यानी ऐसी हालत में जबकि झुद उन्हें ख़ाने की हाज़त और इच्छा हो. और कुछ मुफ़सिरो ने इसके ये मानी लिये हैं कि अल्लाह ताअला की महबूत में खिलाते हैं. यह आपत हज़रत अली मुरतज़ा रदियल्लाह अन्हो और हज़रत फ़ातिमा रदियल्लाहो अन्हो और उनकी कनीज़ फ़िदा के हक़ में उतरी. हमने करीमैन रदियल्लाहो अन्होमा (यानी इमाम पसन और इमाम हुसैन) बीमार हुए, इन हज़रात ने उनकी सेहत पर तीन रोज़ों की नज़्र मानी. अल्लाह तआला ने सेहत दी. नज़्र की अदायगी का वक़्त आया सब साहिबों ने रोज़े रखे. हज़रत अली मुरतज़ा रदियल्लाहो अन्हो एक यहूदी से तीन साअ (साअ एक पैमाता है) जौ लाए. हज़रत ख़ातूने जन्नत ने एक एक साअ तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्तार का वक़्त आया और रोटियाँ सामने रखीं तो एक दिन मिस्कीन, एक रोज़ यतीम, एक रोज़ असीर आया और तीनों रोज़ ये सब रोटियाँ उन लोगों का दे दी गई और सिर्फ़ पानी से इफ़्तार करके रोज़ा रख

मिलौनी अदरक होगी ^(२६)﴿१७﴾ वह अदरक क्या है जन्नत में एक चश्मा है जिसे सल-सबील कहते हैं ^(२७)﴿१८﴾ और उनके आस-पास खिदमत में फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के ^(२८) जब तू उन्हें देखे तो उन्हें समझे कि मोती हैं बिखरे हुए ^(२९)﴿१९﴾ और जब तू उधर नज़र उठाए एक चैन देखे ^(३०) और वड़ी सल्तनत ^(३१)﴿२०﴾ उनके वदन पर हैं क्रेव के सब्ज़ (हरे) कपड़े ^(३२) और क़नादीज़ के ^(३३) और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए गए ^(३४) और उन्हें उनके रब ने सुथरी शराब पिलाई ^(३५)﴿२१﴾ उनसे फ़रमाया जाएगा, यह तुम्हारा इनआम है ^(३६) और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी ^(३७)﴿२२﴾

दूसरा खूकू

वेशक हमने तुम पर ^(१) कुरआन वतदरीज उतारा ^(२)﴿२३﴾ तो अपने रब के हुक्म पर साविर रहो ^(३) और उनमें किसी गुनाहगार या नाशुके की बात न सुनो ^(४)﴿२४﴾ और अपने रब का नाम सुबह शाम याद करो ^(५)﴿२५﴾ और कुछ रात में उसे सज्दा करो ^(६) और वड़ी रात तक उसकी पाकी वोलो ^(७)﴿२६﴾ वेशक ये लोग ^(८) पाँव तले की अज़ीज़ रखते हैं ^(९) और अपने पीछे एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं ^(१०)﴿२७﴾ हमने उन्हें पैदा किया और उनके जोड़ बन्द मज़बूत किये और हम जब चाहें ^(११) उन जैसे और बदल दें ^(१२)﴿२८﴾ वेशक यह नसीहत है ^(१३) तो जो चाहे अपने रब की तरफ़

رَّجِيْبًا ۚ عَيْنًا فِيْهَا تُسْنَىٰ سَلْسِيْلًا ۚ وَ
يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وَلَدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۚ اِذَا رَاٰتَهُمْ
حَسِبَتْهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ۚ وَاِذَا رَاٰتِ ثُمَّ رَاٰتِ
نَعِيْمًا وَمَلَكًا كَبِيْرًا ۚ عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٍ
خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ وَحُلُوْرٌ اَسْوَدٌ مِّنْ فَضَّةٍ وَّسَقَمُ
رَبِّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۚ اِنْ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَ
كَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۚ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلٰىكَ
الْقُرْآنَ تَنْزِيْلًا ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ
مِنْهُمْ اِمَّا اَوْ كُفُوْرًا ۚ وَاذْكُرْ اِسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً
وََّاَصِيْلًا ۚ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ ۚ وَسَبِّحْهُ
لَيْلًا طَوِيْلًا ۚ اِنْ هُوَ اِلَّا بِحُجُوْنِ الْعَاجِلَةِ ۚ وَ
يَذَرُوْنَ وَّرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ۚ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ
وَشَدَدْنَا اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بِدَلٰلِنَا اٰمَنَّا لَهُمْ

مَنْ

लिया गया.

(१९) लिहाज़ा हम अपने अमल की जज़ा या शुक्रगुज़ारी तुम से नहीं चाहते. यह अमल इस लिये कि हम उस दिन ख़ौफ़ से अन्न में रहें.

(२०) यानी गर्मी या सर्दी की कोई तकलीफ़ वहाँ न होगी.

(२१) यानी जन्नती दरख़्तों के.

(२२) कि खड़े बैठे लेटे हर हाल में ख़ोशे वआसानी ले सकें.

(२३) जन्नती वर्तन चाँदी के होंगे और चाँदी के रंग और उसके हुस्न के साथ आबगीने की तरह साफ़ शफ़ाफ़ होंगे कि उनमें जो चीज़ पी जाएगी वह बाहर से नज़र आएगी.

(२४) यानी पीने वालों की रगवत के बराबर, न इस से कम न ज़्यादा. यह सलीका जन्नती खुदाय के साथ ख़ास है, दुनिया के साक़ियों को मयस्सर नहीं.

(२५) शराबे तहूर के.

(२६) उसकी मिलावट से शराब की लज़ज़त और बढ़ जाएगी.

(२७) मुकर्रबिन तो ख़ालिस उसी को पियेंगे और बाकी जन्नत वालों की शराबों में उसकी मिलावट हांगी. यह चश्मा अर्श के नीचे से जन्नते अदन होता हुआ तमाम जन्नतों में गुज़रता है.

(२८) जो न कमी मरेंगे न बूढ़े होंगे न उम्र कोई तबदीली आएगी न ख़िदमत से उकताएंगे. उनके हुस्न का यह आलम होगा.

(२९) यानी जिस तरह साफ़ फ़र्श पर चमकता मोती पड़ा हो. इस हुस्न और यौवन के साथ जन्नती ग़िलमान ख़िदमत में मशगूल होंगे.

(३०) जिसका बरफ़ और गुण बयान में नहीं आ सकता.

(३१) जिसकी सीमा और अन्त नहीं, न उसका ज़वाल, न जन्नती को वहाँ से कहीं और जाना. वसुअत अर्थात् विस्तार का यह आलम कि अदना दर्जे का जन्नती जब अपने मुल्क में नज़र करेगा तो हज़ार बरस की राह तक ऐसे ही देखेगा जैसे अपने क़रीब की जगह देखता हो. शौक़त व शिकोह यह होगा कि फ़रिश्ते बेइजाज़त न आएंगे.

(३२) यानी बारीक रेशम के.

(३३) यानी मोटे रेशम के.

(३४) हज़रत इब्न मुसय्यिव रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि हर एक जन्नती के हाथ में तीन कंगन होंगे एक चाँदी का एक सोने

का एक मोती का.

(२५) जो अत्यन्त पाक साफ़, न उस किसी का हाथ लगा, न किसी ने छुआ, न वह पीने के बाद दुनिया की शराब की तरह बदन के अन्दर सड़कर गन्दगी बने, बल्कि उसकी सफ़ाई का यह हाल है कि बदन के अन्दर उतर कर पाकीज़ा खुशबू बनकर जिस्म से निकलती है. जन्नत वालों को खाने के बाद शराब पेश की जाएगी. उसको पीने से उनके पेट साफ़ हो जाएंगे और जो उन्होंने खिया है वह पाकीज़ा खुशबू बनकर उनके जिस्मों से निकलेगा और उनका इच्छाएं और रुचियाँ फिर ताज़ा हो जाएंगी.

(२६) यानी तुम्हारी फ़रमाँवरदारी का.

(२७) कि तुम से तुम्हारा सब राज़ी हुआ और उसने तुम्हें अज़ीम सवाय अता फ़रमाया.

सूरए दहर - दूसरा स्कू

(१) ऐ सयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(२) आयत-आयत करके और उसमें अल्लाह तआला की बड़ी हिक्मते हैं.

(३) रिसालत की तबलीग़ फ़रमाकर और उसमें मशवक़तें उठाकर और दीन के दुश्मनों की तकलीफ़ें बर्दाश्त करके.

(४) उतबह बिन रबीआ और बलीद बिन मुगीरह ये दोनों नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास आए और कहने लगे आप इस काम से बाज़ आइये, यानी दीन से. उतबह ने कहा कि आप ऐसा करें तो मैं अपनी बेटी आपको ब्याह दूँ और वग़ैर मेहर के आपकी ख़िदमत में हाज़िर कर दूँ. बलीद ने कहा कि मैं आपको इतना माल दूँ कि आप राज़ी हो जाएं. इसपर यह आयत उतरी.

(५) नमाज़ में, सुन्न के ज़िक्र से फ़ेन्न और शाम के ज़िक्र से ज़ोहर और अन्न मुराद हैं.

(६) यानी मगरिब और इशा की नमाज़ें पढ़ो. इस आयत में पाँचों नमाज़ों का ज़िक्र फ़रमाया गया.

(७) यानी फ़ज़्रों के बाद नवाफ़िल पढ़ते रहो. इसमें तहज्जुद की नमाज़ भी आ गई. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया है कि इससे मुराद ज़बानी ज़िक्र है. मतलब यह है कि रात दिन के तमाम औकात में दिल और ज़बान से अल्लाह के ज़िक्र में लगे रहो.

(८) यानी काफ़िर.

(९) यानी दुनिया की महबूत में गिरफ़्तार हैं.

(१०) यानी क़यामत के दिन को कि जिसकी सज़ियाँ काफ़िरों पर बहुत भारी होंगी, न उस पर ईमान लाते हैं, न उस दिन के लिये अमल करते हैं.

(११) उन्हें हलाक कर दें और उनके बजाय.

(१२) जो फ़रमाँवरदार हों.

(१३) मन्ज़लूक के लिये.

राह ले^(११) (२९) और तुम क्यों चाहो मगर यह कि अल्लाह चाहे^(१२) वेशक वह इल्म व हिकमत वाला है (३०) अपनी रहमत में लेता है^(१३) जिसे चाहे^(१४) और ज़ालिमों के लिये उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है^(१५) (३१)

७७ - सूरए मुर्सलात

सूरए मुर्सलात मक्का में उतरी, इसमें ५० आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ^(१) क्रसम उनकी जो भजी जाती हैं लगातार^(२) (१) फिर ज़ोर से झाँका देने वालियाँ^(३) (२) फिर उभार कर उठने वालियाँ^(४) (३) फिर हक नाहक को खूब अलग करने वालियाँ^(५) (४) फिर उनकी क्रसम जो ज़िक्र का इल्का करती हैं^(६) (५) हुज्जत (तर्क) तमाम करने या डराने को ^(६) वेशक जिस बात का तुम वादा दिये जाते हो^(७) ज़रूर होनी है ^(८) (६) फिर जब तारे महव कर दिये जाएं ^(९) और जब आसमान में रखने पड़ें ^(१०) और जब पहाड़ गुवार करके उड़ा दिये जाएं ^(११) और जब रसूलों का वक़्त आए^(१२) (११) किस दिन के लिये

تَبْدِيلًا ۚ إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَاءَ
اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۚ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا
أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۚ
يَدْخُلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۚ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَالرُّسُلَاتِ عُرْفًا ۚ فَالْعَصْفِ عَصْفًا ۚ
وَالنَّشْرِ نَشْرًا ۚ فَالْفُرْقِ فُرْقًا ۚ
فَالْبُلْقِ بُلْغًا ۚ عَذَابًا أَوْ تَذَرًا ۚ
إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعَ ۚ فَإِذَا الْنُجُومُ طُمِسَتْ ۚ
وَإِذَا السَّمَاءُ فُرْجَتْ ۚ وَإِذَا الْبُجَالُ سُفِثَتْ ۚ
وَإِذَا الْوُجُوهُ أُقْنِثَتْ ۚ أَتَىٰ يَوْمِ الْحِثِّ ۚ

منزل

- (१४) उसका कहना, अहकाम पर अमल करके और उसके रसूल का अनुकरण करके।
(१५) क्योंकि जो कुछ होता है उसी की मर्जी से होता है।
(१६) यानी जन्नत में दाखिल फ़रमाता है।
(१७) ईमान अता फ़रमा कर।
(१८) ज़ालिमों से मुराद काफ़िर हैं।

७७ - सूरए मुर्सलात - पहला रूकू

- (१) सूरए मुर्सलात मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, पचास आयतें, एक सौ अस्सी कलिमें और आठ सौ सोलह अक्षर हैं। हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अहो ने फ़रमाया कि सूरए मुर्सलात शबे जिन्न में उतरी। हम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हमराह थे जब मिना की गुफ़ा में पहुंचे, बलमुर्सलात नाज़िल हुई। हम हुज़ूर से इसको पढ़ते थे और हुज़ूर इसकी निलावन फ़रमाते थे, अचानक एक साँप ने छायांग लगाई। हम उसको मारने के लिये लपके, वह भाग गया। हुज़ूर ने फ़रमाया तुम उसकी बुराई से बचाए गए, वह तुम्हारी बुराई से। यह ग़ार मिना में ग़ारे बलमुर्सलात के नाम से मशहूर है।
(२) इन आयतों में जो क्रसमें मज़कूर हैं वो पाँच विशेषताएँ हैं जिनके धारक या रखने वाले ज़ाहिर में बयान नहीं किये गए हैं। इमी लिये मुफ़सिरी ने इसकी तफ़सीर में बहुत सी बातें बयान की हैं। कुछ ने ये पाँच विशेषताएँ हवाओं की क्रसर दी हैं, कुछ ने फ़रिश्तों की, कुछ ने कुआली आयतों की, कुछ ने सम्पूर्ण और कमिल नफ़सों की जो और ज़्यादा सम्पूर्णता हासिल करने के लिये शरीरों में भेजे जाते हैं फिर ये रियाज़तों या तपस्याओं के झाँकों से अल्लाह के सिवा जो कुछ हो उसे उड़ा देने हैं फिर सारे शरीर में उसका असर फैलाते हैं फिर सत्य और असत्य की छान फटक करते हैं और अल्लाह की ज़ात के सिवा हर चीज़ को जाद लेवा और हलाक करने वाली समझते हैं फिर ज़िक्र का इल्का करते हैं इस तरह कि ज़बान और दिल में अल्लाह तआला का ही ज़िक्र होता है। और एक क़ज़ह यह ज़िक्र की है कि पहली तीन सिफ़तों से हवाएँ मुराद हैं और बाक़ी दो से फ़रिश्ते। इस सूत में मानी ये हैं कि क्रसम उन हवाओं की जो लगातार भेजी जाती हैं फिर ज़ोर से झाँके देती हैं। इनसे मुराद अज़ाब की हवाएँ हैं। (ख़ाज़िन, जुमल बग़ैरह)
(३) यानी वो रहमत की हवाएँ जो बादलों को उठाती हैं। इसके बाद जो सिफ़तें बयान की गई हैं, एक दूसरी क़ौल पर, फ़रिश्तों की जमाअतों की हैं। इब्ने कसीर ने कहा कि हक़ नाहक को खूब जुदा करने वालियाँ और ज़िक्र का इल्का करने वालियाँ से फ़रिश्तों की जमाअतें मुराद होने पर सहमति है।
(४) नबियों और रसूलों के पास बही लाकर।
(५) यानी दोबारा उठाए जाते और अज़ाब और क़यामत के आने का।

ठहराए गए थे (१२)

फैसले के दिन के लिये (१३) और तू क्या जाने वह फैसले का दिन क्या है (१४) झुटलाने वालों की उस दिन खराबी (१५) क्या हमने अगलों को हलाक न फरमाया (१६) फिर पिछलों को उनके पीछे पहुंचाएंगे (१७) मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं (१८) उस दिन झुटलाने वालों की खराबी (१९) क्या हमने तुम्हें एक बेकदर पानी से पैदा न फरमाया (२०) फिर उसे एक मेहफूज़ जगह में रखा (२१) एक मालूम अन्दाज़े तक (२२) फिर हमने अन्दाज़ा फरमाया तो हम क्या ही अच्छे क़ादिर (२३) उस दिन झुटलाने वालों की खराबी (२४) क्या हम ने ज़मीन को जमा करने वाली न किया (२५) तुम्हारे ज़िन्दों और मुर्दों की (२६) और हमने उसमें ऊंचे ऊंचे लंगर डाले (२७) और हमने तुम्हें खूब मीठा पानी पिलाया (२८) उस दिन झुटलाने वालों की खराबी (२९) चलो उसकी तरफ (३०) जिसे झुटलाते थे (३१) चलो उस धुँए के साए की तरफ जिस की तीन शाखें (३२) न साया दे (३३) न लपट से बचाए (३४) बेशक दौज़ाख चिंगारियाँ उड़ाती है (३५) जैसे ऊंचे महल (३६)

لَيَوْمِ الْفَصْلِ ۖ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ
وَبَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ أَلَمْ نُهْلِكْ الْأَوَّلِينَ ۚ
ثُمَّ نُنْعِمُهُمُ الْآخِرِينَ ۖ كَذَلِكَ نَفْعَلُ
بِالْمُجْرِمِينَ ۖ وَبَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ أَلَمْ
نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ۖ فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ
مَّكِينٍ ۖ إِلَى قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۖ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ
الْقَدِيرُونَ ۖ وَبَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ أَلَمْ
نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۖ أَحْيَاءَ وَأَمْوَاتًا ۖ
وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَاخِصَاتٍ وَأَسْقَيْنَكُم مَّاءً
فَرَاتًا ۖ وَبَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ إِنَّا نَطْلُقُوهَا
إِلَى مَا كُنْتُمْ بِهِ نَكَذِّبُونَ ۖ إِنَّا نَطْلُقُوهَا إِلَى
ظِلِّ ذِي تِلْكَ شَعْبٍ ۖ لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي
مِنَ اللَّهَبِ ۖ إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرِّهَا كَالْقَصْرِ ۖ

منزل

- (६) कि उसके होने में कुछ भी शक नहीं।
- (७) वो उम्मतों पर गवाही देने के लिये जमा किये जाएं।
- (८) और उनकी दहशत और सख्ती का क्या आलम है।
- (९) जो दुनिया में तौहीद, नबुव्वत, आखिरत, दोबारा उठाए जाने और हिसाब के इन्कारी थे।
- (१०) दुनिया में अज़ाब उतार के, जब उन्होंने रसूलों को झुटलाया।
- (११) यानी जो पहली उम्मतों के झुटलाने वाला की राह इस्तिथार करके सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाते हैं, उन्हें भी पहलों की तरह हलाक फरमाएंगे।
- (१२) यानी नुत्के से।
- (१३) यानी गर्भ में।
- (१४) पैदाइश के समय तक जिसे अल्लाह तआला जानता है।
- (१५) अन्दाज़ा फरमाने पर (जुमल)।
- (१६) कि ज़िन्दे उसकी पीठ पर जमा रहते हैं और मुर्दे उसके पेट में।
- (१७) ऊंचे पहाड़ों के।
- (१८) ज़मीन में चश्मे और स्रोत पैदा करके। ये तमाम बातें मुर्दों को ज़िन्दा करने से ज़्यादा अजीब हैं।
- (१९) और क़यामत के दिन काफ़िरों से कहा जाएगा कि जिस आग का तुम इन्कार करते थे उसकी तरफ जाओ।
- (२०) यानी उस अज़ाब की तरफ।
- (२१) इससे जहन्नम का धुँआ मुराद है जो ऊंचा होकर तीन शाखों में बँट जाएगा, एक काफ़िरों के सरो पर, एक उनके दाएं और एक उनके बाएं और हिसाब से फ़ारिग होने तक उन्हें इसी धुँए में रहने का हुक्म होगा। जबकि अल्लाह तआला के प्यारे बन्दे उसके अर्थ के साए में होंगे। इसके बाद जहन्नम के धुँए की शान बयान फरमाई जाती है कि वह ऐसा है कि—
- (२२) जिससे उस दिन की गर्मी से कुछ अन्न पा सकें।
- (२३) जहन्नम की आग की।
- (२४) इतनी इतनी बड़ी।

मानो वो जर्द रंग के ऊंट हैं (३३) उस दिन झुटलाने वालों की खराबी (३४) यह दिन है कि वो न बोल सकेंगे (३५) और न उन्हें इजाज़त मिले कि बहाना करें (३६) उस दिन झुटलाने वालों की खराबी (३७) यह है फ़ैसले का दिन, हमने तुम्हें जमा किया (३८) और सब अगलों को (३९) अब अगर तुम्हारा कोई दाव हो तो मुझ पर चला लो (४०) उस दिन झुटलाने वालों की खराबी (४०)

दूसरा रूकू

वेशक डर वाले (४१) सायों और चश्मों में हैं (४२) और मेवों में जो कुछ उनका जी चाहे (४३) खाओं और पियो रचता हुआ (४४) अपने कर्मों का इनआम (४५) वेशक नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं (४६) उस दिन झुटलाने वालों की खराबी (४७) कुछ दिन खालो और बरत लो (४८) ज़रूर तुम मुजरिम हो (४९) उस दिन झुटलाने वालों की खराबी (५०) और जब उनसे कहा जाए कि नमाज़ पढ़ो तो नहीं पढ़ते (५१) उस दिन झुटलाने वालों की खराबी (५२) फिर उस (५३) के बाद कौन सी बात पर ईमान लाएंगे (५४)

كَانَ لَهُ جِلَتْ صُفْرٌ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ
هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ۖ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۖ
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ هَذَا يَوْمُ الْقَصْفِ ۖ
جَعَلَكُمْ وَالْأُولَى ۖ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ
فَكِيدُوا ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ إِنْ
الْمُتَّقِينَ فِي ظِلِّ وَعُيُونٍ ۖ وَقَوَّاحٍ مِمَّا
يَسْتَهْوُونَ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۖ إِنْ كَذَّبْتُمْ فَتَزِرُ الْعُصْبِينَ ۖ
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ كُلُوا وَتَشْتَعُوا
قَلِيلًا ۖ إِنَّكُمْ مُجْرِمُونَ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ
لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ارْكَعُوا لَا
يُزْكَوْنَ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ فَيَايَ
حَدِيثٍ بَعْدَ يُؤْمِنُونَ ۖ

مَنْ

- (२५) न कोई ऐसी हज़त पेश कर सकेंगे जो उन्हें काम दे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन बहुत से मौक़े होंगे, कुछ में क़लाम करेंगे, कुछ में ज़रा भी बोल न सकेंगे.
- (२६) और हकीक़त में उनके पास कोई उज़्र ही न होगा क्योंकि दुनिया में हज़रतें तमाम कर दी गईं और आख़िरत के लिये कोई उज़्र की जगह बाज़ी नहीं रखी गई अलबत्ता उन्हें यह मालत ख़याल आएगा कि कुछ बहाने बनाएं. ये बहाने पेश करने की इजाज़त न होंगी. जुनैद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि उसको उज़्र ही क्या है जिसने नेअमत देने वाले से मुंह फेरा, उसकी नेअमतों को झुटलाया, उसके एहसानों की नाशक़ी की.
- (२७) ऐ सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को झुटलाने वालो.
- (२८) जो तुमसे पहले नबियों को झुटलाते थे. तुम्हारा उनका सबका हिसाब किया जाएगा और तुम्हें उन्हें सबको अज़ाब किया जाएगा.
- (२९) और किसी तरह अपने आपको अज़ाब से बचा सको तो बचा लो, यह इन्तिहा दर्जे की फटकार है क्योंकि यह तो वो यकीनी जानते होंगे कि न आज कोई छलकपट चल सकता है न कोई बहाना काम दे सकता है.

सूरए मुर्सलात - दूसरा रूकू

- (१) जो अल्लाह के अज़ाब का ख़ीफ़ रखते थे, जन्नती दरख्तों के.
- (२) उससे लज़ज़त उठाते हैं. इस आयत से साधित हुआ कि जन्नत वालों को उनकी मज़ी के मुताबिक़ नेअमतें मिलेंगी दुनिया के विपरीत कि यहाँ आदमी को जो मयस्सर आता है उसी पर राज़ी होना पड़ता है. और जन्नत वालों से कहा जाएगा --
- (३) लज़ीज़ ख़ालिस जिसमें ख़राबी नाम मात्र का नहीं.
- (४) उन ताअतों और फ़रमाँवरदारियों का जो तुम दुनियाँ में बजा लाए थे.
- (५) इसके बाद तहदीद के तौर पर काफ़िरों को ख़िताब किया जाता है कि ऐ दुनिया में झुटलाने वालो तुम दुनिया में --
- (६) अपनी मौत के वक़्त तक.
- (७) काफ़िर हो, हमेशा के अज़ाब के मुस्तहिक़ हो.
- (८) क़ुरआन शरीफ़.
- (९) यानी क़ुरआन शरीफ़ आसमानी किताबों में सबसे आख़िरी किताब है और बहुत ज़ाहिर चमत्कार है उसपर. ईमान न लाए तो फिर ईमान लाने की कोई सूरत नहीं.

पारा उन्तीस समाप्त

तीसवाँ पारा : अम्म

७८ - सूरए नबा

सूरए नबा मक्का में उतरी, इसमें ४० आयतें, दो रूकू हैं।

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला (१) ये (२) आपस में काहे की पूछ गछ कर रहे हैं (३) (१) बड़ी खबर की (२) जिसमें वो कई राह हैं (३) हों हों अव जान जाएंगे (४) फिर हों हों जान जाएंगे (५) क्या हमने ज़मीन को बिछौना न किया (६) और पहाड़ों को मेखें (७) और तुम्हें जोड़े बनाया (८) और तुम्हारी नींद को आराम किया (९) और रात को पर्दा पोश किया (१०) और दिन को रोज़गार के लिये बनाया (११) और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत चुनाइयाँ चुनीं (१२) और उनमें एक बहुत चमकता चिराग़ रखा (१३) और फिर बदलियों से जोर का पानी उतारा (१४) कि उस से पैदा फ़रमाएं नाज और सब्ज़ा (१५) और घने बाग़ (१६) वेशक फ़ैसले का दिन (१७) ठहरा हुआ वक़्त है (१८) जिस दिन सूर फूँका जाएगा (१९) तो तुम चले आओगे (२०) फ़ौजों की फ़ौजें (२१) और आसमान खोला जाएगा कि दरवाज़े हो जाएंगे (२२) और पहाड़ चलाए जायेंगे कि हो जाएंगे जैसे चमकता रेत, दूर से पानी का धोखा देता (२३) वेशक जहन्नम ताक में है (२४) सरकशों का ठिकाना (२५) उसमें ढ़रनों रहेंगे (२६) उसमें किसी तरह की ठण्डक का मज़ा न पाएंगे और न कुछ पीने को (२७)

النَّبَا ۝ ٧٨ ۝ سُوْرَةُ النَّبَا ۝ مَكِّيَّةٌ ۝ اَرْبَعُوْنَ اٰیَةً ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

عَمَّ يَتَسَاءَلُوْنَ ۝ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۝ الَّذِیْ هُمْ یَوْمٌ ۝

مُخْتَلِفُوْنَ ۝ کَلَّا سَیَعْلَمُوْنَ ۝ ثُمَّ کَلَّا سَیَعْلَمُوْنَ ۝ اَلَمْ یَجْعَلِ

اَلْاَرْضَ جُجْدًا ۝ وَاَلْجِبَالَ اَوْتَادًا ۝ وَخَلَقَ لَکُمْ اَزْوَاجًا ۝

وَجَعَلْنَا بَیْنَکُمْ سَبَاطًا ۝ وَجَعَلْنَا الَّیْلَ لِبَاسًا ۝ وَجَعَلْنَا

النَّهَارَ مَعَاشًا ۝ وَبَنَبْنَا نُفُوْکَکُمْ سَبْعًا ۝ اَدَا ۝ وَجَعَلْنَا

سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۝ وَاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرِ مَآءً ۝ نَّجَّاجًا ۝

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَنَبَاتًا ۝ وَجَعَلْنَا الْفَاقَ ۝ اِنْ یَوْمَ الْفَصْلِ

کَانَ مِیقَاتًا ۝ یَوْمَ یُنْفَعُ ۝ فِی الصُّوْرِ فَنُتَوْنَ اَفْوَاجًا ۝ وَ

فُتِحَتِ السَّمَآءُ ۝ فَکَانَتْ اَبْوَابًا ۝ وَسُیِّرَتِ الْجِبَالُ ۝ فَکَانَتْ

سَرَابًا ۝ اِنْ جَهَنَّمَ کَانَتْ مِرْصَادًا ۝ لِلظَّٰغِیْنَ مَآبًا ۝

لِّیَشِیْنَ فِیْهَا اَحْقَابًا ۝ لَا یَذُرُوْنَ فِیْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۝

مَنْزِلٌ

तीसवाँ पारा - अम्म

७८ - सूरए नबा - पहला रूकू

(१) इसको सूरए तसाज्जल और सूरए उम्मा यतसाअलून भी कहते हैं। यह सूरत मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, चालीस या इक्तालीस आयतें, एक सौ तिहत्तर कलिमें और नौ सौ सत्तर अक्षर हैं।

(२) कुरैश के काफ़िर।

(३) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब मक्के वालों को तौहीद की तरफ़ बुलाया और मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी और कुरआने करीम तिलावत फ़रमा कर उन्हें सुनाया तो उनमें आपस में बात चीत शुरू हुई और एक दूसरे से पूछने लगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) क्या दीन लाए हैं। इस आयत में उनकी बात चीत का वयात फ़रमाया है और अज़मत के इज़हार के लिये समझाने के अन्दाज़ में बयान फ़रमाया, यानी वह क्या अज़ीमूशान बात है जिसमें ये लोग एक दूसरे से पूछ गछ कर रहे हैं। इसके बाद वह बात बयान फ़रमाई जाती है।

(४) बड़ी ख़बर से मुराद या कुरआन है या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और आपका दीन या मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने का मसअला।

(५) कि कुछ तो बिल्कुल इन्कार करते हैं, कुछ सन्देह में हैं और कुरआने करीम को उनमें से कोई ता जादू कहता है कोई शायरी, कोई तंत्र विद्या और कोई कुछ और। इसी तरह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को कोई जादूगर कहता है, कोई शायर, कोई तांत्रिक।

(६) उस झुटलाने और इन्कार के नतीजे की। इस के बाद अल्लाह तआला ने अपने अजायबे कुदरत में से कुछ चीज़ें ज़िक्र फ़रमाई ताकि ये लोग उनकी दलालत से अल्लाह तआला की तौहीद को जानें और यह समझें कि अल्लाह तआला आलम को पैदा करने और उसके बाद उसको फ़ना करने और फ़ना के बाद फिर हिसाब और जज़ा के लिये पैदा करने पर कादिर है।

मगर खोलता पानी और दोड़ाखियों का जलता पीप (२५) जैसे को तैसा बदला (२६) वेशक उन्हें हिसाब का डर न था (२७) और उन्होंने हमारी आयतें हद भर झुटलाई (२८) और हमने (२९) हर चीज़ लिख कर शुमार कर रखी है (३०) अब चखो कि हम तुम्हें न बढ़ाएंगे मगर अज़ाब (३०)

दूसरा रूकू

वेशक डर वालों को कामयाबी की जगह है (३१) बाग़ हैं (३२) और अंगूर (३३) और उठते जोवन वालियाँ एक उम्र की (३४) और छलकता जाम (३५) जिस में न कोई वेहदा वात सुनें और न झुटलाना (३६) सिला तुम्हारे रव की तरफ़ से (३७) निहायत काफ़ी अता (३८) वह जो रव है आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनके बीच है रहमान कि उस से वात करने का इख्तियार न रखेंगे (३९) जिस दिन ज़िब्रिल खड़ा होगा और सब फ़रिश्ते परा बांधे, कोई न बोल सकेगा (४०) मगर जिस रहमान ने इज़्ज (आज़ा) दिया (४१) और उसने ठीक वात कही (४२) वह सच्चा दिन है अब जो चाहे अपने रव की तरफ़ राह बना ले (४३) हम तुम्हें (४४) एक अज़ाब से डराते हैं कि नज़्दीक आ गया (४५) जिस दिन आदमी देखेगा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा (४६) और काफ़िर कहेगा, हाय मैं किसी तरह खाक हो जाता (४७) (४८)

७९ - सूरए नाज़िआत

सूरए नाज़िआत मक्का में उतरी, इसमें ४६ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) क़सम उनकी (२) कि सज़्ज़ती से जान खींचें (३) और नमी से बन्द खोलें (४)

الْأَحْمِيَّاءُ وَعَسَافًا ۝ جَزَاءُ وَفَاقًا ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ
حِسَابًا ۝ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا ۝ وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ
كِتَابًا ۝ فَلَوْ فَزَعْنَا لَهُمُ الرُّزْزَ لَكُنَّا مُتَّقِينَ ۝ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ
مَقَارًا ۝ حَقَائِقَ وَأَعْنَابًا ۝ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝ وَكَأَسًا
دِهَاقًا ۝ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا مِنْ غَوَاةٍ وَلَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا مِنْ بَغْيٍ ۝ عَطَاءٌ
حِسَابًا ۝ رَبُّ السَّمَوَاتِ الْأَرْضِ مَا يَبْنِيهِمَا الرَّحْمَنُ لَا يَمْلِكُونَ
مِنْهُ خُطَابًا ۝ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْكَلِمَةُ صَفًّا ۝ لَا يَسْأَلُونَ
الْأَمَنَ ۝ ذُنُوبَهُ ۝ الرَّحْمَنُ قَالَ صَوَابًا ۝ ذَلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۝ فَمَنْ
شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ مَآبًا ۝ إِنَّ الْأَذْرَ ۝ عَذَابًا قَرِيبًا ۝ يَوْمَ يَنْظُرُ
الرَّءُفُ مَا قَامَتْ يَدُهُ وَيَقُولُ لَكَفِّرْ لِيَنبِيئِي كُنْتُ شَرًّا ۝
(۴۹) سُوْرَةُ النَّازِعَاتِ مَكِّيَّةٌ (۸۱)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَالنَّازِعَاتِ غَرْقًا ۝ وَالنَّشِيطَاتِ تَشِيطًا ۝ وَالشَّجَرَاتِ
مَنْزِلًا

- (७) कि तुम उसमें रहो और वह तुम्हारी करारगाह हो.
- (८) जिन से ज़मीन सावित और कायम रहे.
- (९) मर्द और औरत.
- (१०) तुम्हारे जिस्मों के लिये, ताकि उससे कोपल और थकान दूर हो और राहत हासिल हो.
- (११) जो अपनी तारीकी से हर चीज़ को छुपाती है.
- (१२) कि तुम उस में अल्लाह तआला का फ़ज़ल और अपनी रोज़ी तलाश करो.
- (१३) जिन पर ज़माना गुज़रने का असर नहीं होता और पुरानापन और बोसीदगी यानी सड़न गलन उन तक राह नहीं पाती, इन चुनाइयों से मुराद सात आसमान हैं.
- (१४) यारी सूरज जिसमें रौशनी भी है और गर्मी भी.
- (१५) तो जिसने इतनी चीज़ें पैदा कर दीं, वह इन्सान को मरने के बाद ज़िन्दा करे तो क्या तअज्जुब. और इन चीज़ों का पैदा करना हिकमत वालों का काम है और हिकमत वाले का काम हरगिज़ बेकार नहीं होता और मरने के बाद उठने और सज़ा और जज़ा के इन्कार करने से लाज़िम आता है कि इन्कार करने वाले के नज़्दीक तमाम काम बेकार हों और बेकार होना बातिल, तो दाबारा उठाए जानें और जज़ा का इन्कार भी बातिल. इस मज़बूत दलील से साबित हो गया कि मरने के बाद उठना और हिसाब व जज़ा ज़रूर है, इसमें शक नहीं.
- (१६) सवाव और अज़ाब के लिये.
- (१७) इससे मुराद सूर का आखिरी बार फूँका जाता है.

और आसनी से पैरें^(१३) फिर आगे बढ़कर जल्द पहुंचें^(१४) फिर काम की तदवीर करें^(१५) कि काफ़िरों पर ज़रूर अज़ाब होगा जिस दिन धरधराएगी धरधराने वाली^(१६) उसके पीछे आएगी पीछे आने वाली^(१७) कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे^(१८) आँख ऊपर न उठा सकेंगे^(१९) काफ़िर^(२०) कहते हैं क्या हम फिर उलटे पाँव पलटेंगे^(२१) क्या जब हम गली हड़ियाँ हो जाएंगे^(२२) बोलें यूँ तो यह पलटना तो निरा नुकसान है^(२३) तो वह^(२४) नहीं मगर एक झिड़की^(२५) जभी वो खुले मैदान में आ पड़े होंगे^(२६) क्या तुम्हें मूसा की खबर आई^(२७) जब उसे उसके रब ने पाक जंगल तुवा में^(२८) पुकारा^(२९) कि फिरौन के पास जा उसने सर उठवाया^(३०) उससे कह, क्या तुझे रागवत इस तरफ़ है कि सुथरा हो^(३१) और तुझे तेरे रब की तरफ़^(३२) राह बताऊँ कि तू डरे^(३३) फिर मूसा ने उसे बहुत बड़ी निशानी दिखाई^(३४) इस पर उसने झुटलाया^(३५) और नाफ़रमानी की^(३६) फिर पीठ दी^(३७) अपनी कोशिश में लगा^(३८) तो लोगों को जमा किया^(३९) फिर पुकारा^(४०) फिर बोला, मैं तुम्हारा सबसे ऊँचा रब हूँ^(४१) तो अल्लाह ने उसे दुनिया और आखिरत दोनों के अज़ाब में पकड़ा^(४२) बेशक इस में सीख मिलती है उसे जो डरे^(४३)

दूसरा रूकू

क्या तुम्हारी समझ के मुताबिक़ तुम्हारा बनाना^(१) मुश्किल या आसमान का, अल्लाह ने उसे बनाया^(२) उसकी छत

سَجًّا ۚ فَالْسَّيْفُ سَبْقًا ۚ فَالْمَدِينَةُ امْرَأًا ۚ يَوْمَ
تَرْجُفُ الرَّاحِفَةُ ۚ تَنْبَعُهَا الرِّادِفَةُ ۚ قُلُوبٌ
يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ۚ أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۚ يَقُولُونَ
عَمَّا نَزَّدُونَهُ فِي الْحَافِرَةِ ۚ إِذَا كُنَّا عِظَامًا تَحْرُكَ ۚ
قَالُوا رَبُّكَ إِذَا كُنَّا خَاسِرَةً ۚ فَوَيْلٌ لَّيْكُمْ يَوْمَئِذٍ ۚ
فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۚ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۚ
إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۚ إِذْ هَبَّ إِلَى
فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ۚ فَقَالَ هَلْ لَكَ إِلَٰهٌ إِلَّا أَن تَتَزَكَّى ۚ وَ
أَهْدِيكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَى ۚ فَارَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَى ۚ
فَكَذَّبَ وَعَصَى ۚ ثُمَّ أَذْبَرَ يَسْعَى ۚ فَخَشَرَ فَنَادَى ۚ
فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَى ۚ فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ
وَالْأُولَى ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَى ۚ
ءَاَنظَرُ أَشَدَّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ بَيْنَهُمَا ۚ رَفَعَ سَكَهَا

مَنْزِلٌ

- (१८) अपनी क़ब्रों से हिसाब के लिये हथ के मैदान की तरफ़.
- (१९) और उसमें राहें बन जाएंगी, उनसे फ़रिश्ते उतरेंगे.
- (२०) जिनकी हद नहीं यानी हमेशा रहेंगे.
- (२१) जैसे अमल, वैसी जज़ा यानी जैसा कुफ़्र बदतरीन जुर्म है वैसा ही सख़्त तरीन अज़ाब उनका होगा.
- (२२) क्योंकि वो मरने के बाद उठने के इच्छारी थे.
- (२३) लौहे मेहफूज़ में.
- (२४) उनके तमाम अच्छे बुरे कर्म हमारी जानकारी में हैं हम उनपर जज़ा देंगे और आख़िरत में अज़ाब के वक़्त उनसे कहा जाएगा.

सूरए नबा - दूसरा रूकू

- (१) जन्नत में, जहाँ उन्हें अज़ाब से निजात होगी और हर मुराद हासिल हांगी.
- (२) जिन में किस्म किस्म के नफ़ीस फलों वाले दरख़्त.
- (३) नफ़ीस शराब का.
- (४) यानी जन्नत में न कोई बेहूदा बात सुनने में आएगी, न वहाँ कोई किसी को झुटलाएगा.
- (५) तुम्हारे कर्मों का.
- (६) उसके ख़ौफ़ के कारण.
- (७) उसके रोब और जलाल से.
- (८) कलाम या शफ़ाअत का.
- (९) दुनिया में, और उसी के मुताबिक़ अमल किया. कुछ मुफ़ससियों ने फ़रमाया कि ठीक बात से कलाम तैय़िबह ला इलाहा

इल्लाहा मुराद है.

(१०) नेक कर्म करके ताकि अज्ञाव से मेहफूज़ रहे.

(११) ऐ काफ़िरों !

(१२) इससे मुराद आख़िरत का अज्ञाव है.

(१३) यानी हर नेकी बदी उसके अअमाल-नामे में दर्ज होगी जिसको वह क़यामत के रोज़ देखेगा.

(१४) ताकि अज्ञाव से मेहफूज़ रहता. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन जब जानवारों और चौपायों को उठाया जाएगा और उन्हें एक दूसरे से बदला दिलाया जाएगा. अगर सींग वाले ने बेसींग वाले को मारा होगा तो उसे बदला दिलाया जाएगा. इसके बाद वो सब खाक कर दिये जाएंगे. यह देखकर काफ़िर तमन्ना करेंगे कि काश मैं भी खाक कर दिया जाता. कुछ मुफ़ससिरो ने इसके ये मानी बयान किये हैं कि मूमिनों पर अल्लाह तआला के इनआम देखकर काफ़िर तमन्ना करेंगे कि काश वह दुनिया में खाक होता यानी विनम्र होता, घमण्डी और सक्कश न होता. एक क़ौल मुफ़ससिरो का यह भी है कि काफ़िर से मुराद इब्नीस है जिसने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर तअना किया था कि वो मिट्टी से पैदा किये गए और अपने आप से पैदा किये जाने पर घमण्ड किया था. जब वह हज़रत आदम और उनकी ईमानदार औलाद के सवाब को देखेगा और अपने आपको अज्ञाव की सज़्ज़ी में जकड़ा पाएगा तो कहेगा कि काश मैं मिट्टी होता यानी हज़रत आदम की तरह मिट्टी से पैदा किया हुआ होता.

७९ - सूरए नाज़िआत - पहला रूकू

(१) सूरए नाज़िआत मक्कं में उतरी. इसमें दो रूकू, छियालीस आयतें, एक सौ सत्तानवे कलिमे, सात सौ तिरपन अक्षर हैं.

(२) यानी उन फ़रिशतों की.

(३) काफ़िरों की.

(४) यानी मूमिनों की जानें नमी से निकालें.

(५) जिस्म के अन्दर या आसमान और ज़मीन के बीच मूमिनों की रूहें लेकर. (जैसा कि हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है)

(६) अपनी ख़िदमत पर जिसके मामूर हैं. (रूहल बयान)

(७) यानी दुनिया के कामों के इन्तिज़ाम जो उनसे सम्बन्धित हैं, उनको पूरा करें. यह क़सम उस पर है.

(८) ज़मीन और पहाड़ और हर चीज़, पहली बार सूर फूँके जाने से बेचैन हो जाएगी और तमाम ख़ल्क मर जाएगी.

(९) यानी सूर दूसरी बार फूँका जाएगा जिससे हर चीज़ अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा कर दी जाएगी. इन दोनों सूरों के बीच चालीस साल का अन्तर होगा.

(१०) उस दिन की हौल और दहशत से यह हाल काफ़िरों का होगा.

(११) जो मरने के बाद उठने का इन्कार करते हैं. जब उनसे कहा जाता है कि तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो --

(१२) यानी मौत के बाद फिर ज़िन्दगी की तरफ़ वापस किये जाएंगे.

(१३) कण कण बिखरी हुई, फिर भी ज़िन्दा किये जाएंगे.

(१४) यानी अगर मौत के बाद ज़िन्दा किया जाना सही है और हम मरने के बाद उठाए गए तो उसमें हमारा बड़ा नुक़सान है क्योंकि हम दुनिया में उसको झुटलाने रहे. यह क़ौल उनका हंसी के तौर पर था. इसपर उन्हें बताया गया कि तुम मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को यह न समझो कि अल्लाह तआला के लिये कुछ दुश्वार है क्योंकि सच्ची कुदरत वाले पर कुछ भी दुश्वार नहीं.

(१५) सूर का आख़िरी बार फूँका जाना.

(१६) जिससे सब जमा कर लिये जाएं और जब आख़िरी बार सूर फूँका जाएगा.

(१७) ज़िन्दा होकर.

(१८) ये सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़िताब है. जब क़ौम का झुटलाना आपको शाक़ और नागवार गुज़रा तो अल्लाह तआला ने आपकी तसल्ली के लिये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाया जिन्होंने अपनी क़ौम से बहुत तक्लीफ़ें उठाई थीं. मुराद यह है कि नवियों को ये बातें पेश आती रहती हैं आप इससे ग़मगीन न हों.

(१९) जो मुल्के शाम में तूर के क़रीब है.

(२०) और वह कुफ़्र और फ़साद में हद से गुज़र गया.

(२१) कुफ़्र और शिर्क और गुमराही और नाफ़रमानी से.

(२२) यानी उसकी ज़ात और सिफ़ात की पहचान की तरफ़.

(२३) उसके अज्ञाव से.

(२४) चमकती हथैली और लाठी, दोनों चमत्कार.

(२५) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को.

(२६) यानी ईमान से मुंह फेरा.

ऊंची की^(२) फिर उसे ठीक किया^(३) (२८) उसकी रात अंधेरी की और उसकी रौशनी चमकाई^(४) (२९) और उसके बाद ज़मीन फैलाई^(५) (३०) उसमें से^(६) उसका पानी और चारा निकाला^(७) (३१) और पहाड़ों को जमाया^(८) (३२) तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे को^(९) (३३) फिर जब आएगी वह आम मुसीबत सब से बड़ी^(१०) (३४) उस दिन आदमी याद करेगा जो कोशिश की थी^(११) (३५) और जहन्नम हर देखने वाले पर ज़ाहिर की जाएगी^(१२) (३६) तो वह जिसने सरकशी की^(१३) (३७) और दुनिया की ज़िन्दगी को तर्ज़ीह (प्राथमिकता) दी^(१४) (३८) तो बेशक जहन्नम ही उसका ठिकाना है^(१५) (३९) और वह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा^(१६) और नफ़स को ख्वाहिश से रोका^(१७) (४०) तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है^(१८) (४१) तुम से क़यामत को पूछते हैं कि वह कब के लिये ठहरी हुई है^(१९) (४२) तुम्हें उसके वयान से क्या तअल्लुक^(२०) (४३) तुम्हारे रब ही तक उसकी इन्तिहा है^(२१) (४४) तुम तो फ़क़त (केवल) उसे डराने वाले हो जो उससे डरे^(२२) (४५) मानो जिस दिन वो उसे देखेंगे^(२३) दुनिया में न रहे थे मगर एक शाम या उसके दिन चढ़े^(२४) (४६)

८० - सूरए अबस

सूरए अबस मक्का में उतरी, इसमें ४२ आयतें, एक रकू है . अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान, रहमत वाला^(१) तय्यारी चढ़ाई और मुंह फेरा^(२) (१) उसपर कि उसके पास वह नावीना (अंधा) हाज़िर हुआ^(३) (२) और तुम्हें क्या मालूम

عَبَسَ

۸۲۲

عَبَسَ

فَسَوَّلَهَا وَأَعْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُغْمَهَا وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا مَتَاعًا لِلْمُنْعَمِينَ وَإِذَا جَاءَتِ الطَّاغُتُ الْكُبْرَى يَوْمَ يَكْفُرُ الْإِنْسَانُ مَا سَمِعَ وَبَرَزَتْ الْجَحِيمُ لِمَنْ يَرَى فَاثِمًا مَنْ طَغَى وَأَثَرَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَى وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَى يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرِهَا إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْهَاهَا إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرٌ مَّنْ يَخْشَاهَا كَانَتْهُمْ يَوْمَ يُبْرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُفَاهًا

(۸۰) سُورَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ (۴۲) وَمِنْهَا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عَبَسَ وَتَوَلَّىٰ أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَىٰ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهِ

مَزْلُ

- (२७) फ़साद फैलाया.
- (२८) यानी जादूगरों को और अपने लश्करों का.
- (२९) यानी मेरे ऊपर और कोई रब नहीं.
- (३०) दुनिया में डुबोया और आखिरत में दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमाया.
- (३१) अल्लाह तआला से . इसके बाद दोबारा उठाए जाते का इन्कार करने वालों को इताव फ़रमाया जाता है.

सूरए नाज़िआत - दूसरा रकू

- (१) तुम्हारे मरने के बाद.
- (२) सुतून या खम्भे के बिना.
- (३) ऐसा कि उसमें कोई खलल या रुकावट नहीं.
- (४) आफ़ताव के नूर को ज़ाहिर फ़रमाकर.
- (५) जो पैदा तो आसमान से पहले फ़रमाई गई थी मगर फैलाई न गई थी.
- (६) चश्मे जारी फ़रमाकर.
- (७) जिस जानदार खाते हैं.
- (८) धरती पर, ताकि उसका सुकून हो.
- (९) यानी दूसरी बार सूर फूँका जाएगा जिसमें मुँदें उठाए जाएंगे.
- (१०) दुनिया में, अच्छी या बुरी.
- (११) और तमाम खलक उसको देखे.
- (१२) हद से गुज़रा और कुफ़्र इज़्तिहार किया.

शायद वह सुथरा हो^(१३)॥३॥ या नसीहत ले तो उसे नसीहत फ़ायदा दे^(१४) वह जो वेपरवाह बनता है^(१५)॥४॥ तुम उसके तो पीछे पड़ते हो^(१६)॥५॥ और तुम्हारा कुछ नुकसान नहीं इसमें कि वह सुथरा न हो^(१७)॥६॥ और वह जो तुम्हारे हुज़ूर मलकता आया^(१८)॥७॥ और वह डर रहा है^(१९)॥८॥ तो उसे छोड़ कर और तरफ़ मशगूल होते हो^(२०) ये यूँ नहीं^(२१)॥९॥ यह तो समझाना है^(२२)॥१०॥ तो जो चाहे उसे याद करे^(२३)॥११॥ उन सहीफों (धर्मग्रन्थों) में कि इज़्ज़त वाले हैं^(२४)॥१२॥ बलन्दी वाले^(२५) पाकी वाले^(२६)॥१३॥ ऐसों के हाथ लिखे हुए^(२७)॥१४॥ जो करम वाले ने कोई वाले^(२८)॥१५॥ आदमी मारा जाइयो क्या नाशुक्रा है^(२९)॥१६॥ उसे काहे से बनाया^(३०)॥१७॥ पानी की बूंद से उसे पैदा फ़रमाया फिर उसे तरह तरह के अन्दाज़ों पर रखा^(३१)॥१८॥ फिर उसे रास्ता आसान किया^(३२)॥१९॥ फिर उसे मौत दी फिर क़ब्र में रखवाया^(३३)॥२०॥ फिर जब चाहा उसे बाहर निकाला^(३४)॥२१॥ कोई नहीं उसने अब तक पूरा न किया जो उसे हुक्म हुआ था^(३५)॥२२॥ तो आदमी को चाहिये अपने खानों को देखे^(३६)॥२३॥ कि हमने अच्छी तरह पानी डाला^(३७)॥२४॥ फिर ज़मीन को खूब चीरा^(३८)॥२५॥ तो उसमें उगाया अनाज^(३९)॥२६॥ और अंगूर और चारा^(४०)॥२७॥ और ज़ैतून और खजूर^(४१)॥२८॥ और घने वागीचे^(४२)॥२९॥ और मेवे और दूध^(४३)॥३०॥ तुम्हारे फ़ायदे को और तुम्हारे चौपायों के^(४४)॥३१॥ फिर जब आएगी वह कान फाड़ने वाली चिंघाड़^(४५)॥३२॥ उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई^(४६)॥३३॥ और माँ और बाप^(४७)॥३४॥ और जोरू

يَزْكُرُ ۚ اَوْ يَدُلُّكُمْ فَنَقُصَّهٗ ۚ الَّذِي كَرِهَ ۚ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰی ۚ
فَاَنْتَ لَهُ تَصَدِّیْ ۚ وَمَا عَلَیْكَ الْاَلْبِیْسُ ۚ وَاَمَّا مَنِ جَاءَكَ
یَسْعٰی ۚ وَهُوَ یَخْشٰی ۚ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهٰی ۚ كَلَّا اِنَّهَا
تَذٰكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهَا ۚ فِیْ صُحُفٍ مُّكْرَمَةٍ ۚ مَرْفُوعَةٍ
مُّطَهَّرَةٍ ۚ بِاَیْدِیْ سَفَرَةٍ ۚ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۚ قَبْلَ الْاِنْسَانِ
مَا اَكْفَرَهُ ۚ مِنْ اٰیِ شَیْءٍ خَلَقَهُ ۚ مِنْ نُّطْفَةٍ ۚ
خَلَقَهُ ۚ فَقَدَرَهُ ۚ ثُمَّ السَّبِيلَ یَسِّرُهُ ۚ ثُمَّ اَمَاتَهُ ۚ فَاَقْبَرَہُ ۚ
ثُمَّ اِذَا شَاءَ اَنْشُرُهُ ۚ كَلَّا لَیَاْقِضَنَّ مَا اَمْرُهُ ۚ فَلَیْلَیْطُرُ
الْاِنْسَانُ اِلٰی طَعَامِهِ ۚ اَلَا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ۚ ثُمَّ شَقَقْنَا
الْاَرْضَ شَقًّا ۚ فَاَنْبَتْنَا مِنْهَا حَبًّا ۚ وَعَبَبْنَا وَقُصْبًا ۚ
وَزَيَّنَّوْنَا وَنَخْلًا ۚ وَحَدَاقٍ عَلْبًا ۚ وَفَاكِهَةً ۚ وَابًّا ۚ
مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلَا تَعْلَمُكُمْ ۚ فَاِذَا جَاءَتْ السَّاعَةُ ۚ
یَوْمَ یَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيهِ ۚ وَاُوْلٰہِ ۚ وَابْنِہِ ۚ وَصَاحِبَتِہِ

مَنْكَل

- (१३) आश्रित पर, और नफ्सानियत का पालन किया।
(१४) और उसने जाना कि उसे क़यामत के दिन अपने ख के सामने हिसाब के लिये हाज़िर होना है।
(१५) ह़राम चीज़ों की।
(१६) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम, मक्के के काफ़िर।
(१७) और उसका वक्त बताने से क्या गरज़।
(१८) पानी काफ़िर क़यामत को, जिस का इन्कार करते हैं। तो उसके हील और दहशत से अपनी ज़िन्दगी की मुदत भूल जाएंगे और ख़याल करेंगे कि --

८० - सूरए अबस

- (१) सूरए अबस मक्के में उतरी, इसमें एक रूकू, बयालीस आयतें, एक सौ तीस कलिमें और पाँच सौ तैंतीस अक्षर हैं।
(२) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने।
(३) यानी अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम। नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनवह बिन रबीआ, अबू जहल बिन हिशाम और अबब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिव और उबई बिन मलफ़ और उमैश बिन मलफ़, इन कुरैशी सरदारों को इस्लाम की तरफ़ बुला रहे थे। इस बीच अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम नबीना हाज़िर हुए और उन्होंने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बार बार पुकार कर अज़ किया कि जो अल्लाह तआला ने आपका सिखाया है, मुझे तालीम फ़रमाइये। इन्ने उम्मे मक्तूम ने यह व समझा कि हुज़ूर दूसरों से बात कर रहे हैं इससे बात चीत में रुकवट पड़गी। यह बात हुज़ुरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुरी लगी और नागवारी के निशान चेहरा अक़दस पर ज़ाहिर हुए और हुज़ूर अपनी दौलत सराए अक़दस की तरफ़ वापस हुए। इसपर ये आयतें उतरीं और नबीना फ़रमाने में अब्दुल्लाह इन्ने उम्मे मक्तूम की मअज़री की तरफ़ इशारा है कि बात काटने की ग़लती उनसे इस कारण वाक़े हुई कि वह देखने से मअज़ूर हैं। इस आयत के उतरने के बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम की इज़्ज़त फ़रमाते थे।

और बेटों से^(२६) (३६) उनमें से हर एक को उस दिन एक फ़िक्र है कि वही उसे बस है^(२७) (३७) कितने मुंह उस दिन रोशन होंगे^(२८) (३८) हंसते खुशियाँ मनाते^(२९) (३९) और कितने मुंहों पर उस दिन गर्द पड़ी होगी^(४०) (४०) उनपर सियाही चढ़ रही है^(४१) (४१) ये वही हैं काफ़िर बदकार^(४२) (४२)

८९ - सूरए तकवीर

सूरए तकवीर मक्का में उतरी, इसमें २९ आयतें, एक सूकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) जब धूप लपेटे जाए^(२) (१) और जब तारे झड़ पड़ें^(३) (२) और जब पहाड़ चलाए जाएं^(४) (३) और जब थकी ऊंटनियाँ^(५) छूटी फिरें^(६) (४) और जब वहशी जानवर जमा किये जाएं^(७) (५) और जब समन्दर सुलगाए जाएं^(८) (६) और जब जानों के जोड़ बनें^(९) (७) और जब ज़िन्दा दवाई हुई से पूछा जाए^(१०) (८) किस ख़ता पर मारी गई^(११) (९) और जब अमालनामे खोले जाएं^(१२) (१०) और जब आसमान जगह से खींच लिया जाए^(१३) (११) और जब जहन्नम भड़काया जाए^(१४) (१२) और जब जन्नत पास लाई जाए^(१५) (१३) हर जान को मालूम हो जाएगा जो हाज़िर लाई^(१६) (१४) तो क़सम है उन^(१७) की जो उलटे फिरें^(१८) (१५) सीधे चलें थम रहें^(१९) (१६) और रात की जब पीठ दे^(२०) (१७)

وَبَيْنَهُ ۖ لِكُلِّ أَمْرٍ ۖ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۖ
وَجُودٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۖ ضَآئِحَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۖ
وَوُجُودٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهِمْ غَبْرَةٌ ۖ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۖ
أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرَةُ الْفَجَرَةُ ۖ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۖ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۖ وَإِذَا الْجِبَالُ
سُيِّرَتْ ۖ وَإِذَا الْعُشَارُ عُطِّلَتْ ۖ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۖ
وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۖ وَإِذَا النُّفُوسُ رُجِرَتْ ۖ وَإِذَا
الْمُودَّةُ سُيِّلَتْ ۖ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۖ وَإِذَا الصُّعُفُ
نُشِرَتْ ۖ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۖ وَإِذَا الْجَبَلُ تُسَجِّرَتْ ۖ
وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۖ عَلِمْتُ نَفْسٌ مَّا أُخْضِرَتْ ۖ فَلَا
أَقِيمُ بِالْخُنُفِ ۖ الْجَوَارِ الْكُنُفِ ۖ وَالْيَلِيلُ إِذَا عَسَسَتْ ۖ

- (४) गुनाहों से, आपका इरशाद सुनकर.
- (५) अल्लाह तआला से और ईमान लाने से अपने माल के कारण.
- (६) और उसके ईमान लाने के लालच में उसके पीछे पड़ते हो.
- (७) ईमान लाकर और हिदायत पाकर क्योंकि आपके ज़िम्मे दावत देना और अल्लाह का संदेश पहुंचा देना है.
- (८) यानी इन्ने उम्मे मक्तूम.
- (९) अल्लाह तआला से.
- (१०) ऐसा न कीजिये.
- (११) यानी कुआनी आयतें लोगों के लिये नसीहत हैं.
- (१२) और उससे सबक हासिल करें.
- (१३) अल्लाह तआला के नज़्दीक.
- (१४) बड़ी इज़्ज़त और क़द्र वाला.
- (१५) कि इन्हें पाकों के सिवा कोई न छुए.
- (१६) अल्लाह तआला के फ़रमाँबरदार, और वो फ़रिश्ते हैं जो इसको लॉहे मेहफूज़ से नक़ल करते हैं.
- (१७) कि अल्लाह तआला की बहुत सी नेअमतों और बेहद एहसानों के बावजूद कुफ़्र करता है.
- (१८) कभी नुत्के की शकल में, कभी अलत्के की सूरत में, कभी मुदग़े की शकल में, आफ़रीनश यानी उत्पत्ति के पूरे होने तक.
- (१९) माँ के पेट से निकल आने का.
- (२०) कि मौत के बाद बेइज़्ज़त न हो.
- (२१) यानी मरने के बाद हिसाब और जज़ा के लिये फिर उसके वास्ते ज़िन्दगानी मुक़रर की.
- (२२) उसके रब का, यानी काफ़िर ईमान लाकर अल्लाह का हुक्म बजा न लाया.
- (२३) जिन्हें खाता है और जो उसकी ज़िन्दगी का आधार हैं कि उनमें उसके रब की क़ुदरत ज़ाहिर है किस तरह शरीर का अंग बनते हैं और किस अदभुत निज़ाम से काम में आते हैं और किस तरह रब तआला अता फ़रमाता है. इन हिक्मतों का बयान फ़रमाया जाता है.
- (२४) बादल से.
- (२५) यानी क़यामत के दिन दूसरी बार सूर फूँके जाने की हौलनाक आवाज़, जो मज़लूक को बहरा कर देगी.

और सुबह की जव दम ले (११) (१८) वेशक यह (२०) इज्जत वाले रसूल (२१) का पढ़ना है (१९) जो कुव्वत वाला है अर्श के मालिक के हुजूर इज्जत वाला (२०) वहाँ उसका हुक्म माना जाता है (२२) अमानत दार है (२३) (२१) और तुम्हारे साहब (२४) मजनुन (पागल) नहीं (२५) (२२) और वेशक उन्होंने (२६) उसे रौशन किनारे पर देखा (२७) (२३) और यह नबी गौब बताने में कंजूस नहीं (२४) और कुरआन, मरदूद शैतान का पढ़ा हुआ नहीं (२५) फिर किधर जाते हो (२६) (२६) वह तो नसीहत ही है सारे जगत के लिये (२७) उसके लिये जो तुम में सीधा होना चाहे (२८) (२८) और तुम क्या चाहो मगर यह कि चाहे अल्लाह सारे जगत का रब (२९)

८२ - सूरए इन्फितार

सूरए इन्फितार मक्का में उतरी, इसमें १९ आयतें, एक रूकू हैं.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला (१) जब आसमान फट पड़े (१) और जब तारे झड़ पड़ें (२) और जब समन्दर बहा दिये जाएं (३) (३) और जब कब्रें कुरेदी जाएं (४) (४) हर जान जान लेगी जो उसने आगे भेजा (५) और जो पीछे (५) (५) ऐ आदमी, तुझे किस चीज ने धोखा दिया अपने करम वाले रब से (६) (६) जिसने तुझे पैदा किया (७) फिर ठीक बनाया (८) फिर हमवार फरमाया (९) (९) जिस सूरत में चाहा तुझे तरकीब

وَالصَّبْرِ إِذَا تَنَفَّسَ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ وَمَا صَاحِبُكُمْ بِبَغِيٍّ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيزٍ فَإِنْ تَذَهَّبُونَ إِنَّ هُوَ أَلَّا ذَكَرُوا لِلْعَالَمِينَ لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْقِيَهُ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

سُورَةُ الْإِنْشَارِ مَكِّيَّةٌ (۸۲) (۸۲)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ وَإِذَا الْجِبَالُ فَجُورَتْ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ عَلِمْتَ نَفْسٌ مِمَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّبَكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ الَّذِي خَلَقَكَ فَسُبْحَانَكَ فَقَدْ لَكَ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ

مَثَلٌ

- (२६) उनमें से किसी की तरफ न देखेगा, अपनी ही पड़ी होगी.
- (२७) क़यामत का हाल और उसकी दहशत बयान फरमाने के बाद मुकल्लिफ़ीन का ज़िक्र फरमाया जाता है कि वो दो क्रिसम हैं - सईद और शक्की. जो सईद हैं उनका हाल बयान होता है.
- (२८) ईमान के नूर से या रात की इबादतों से या वुजू के निशानों से.
- (२९) अल्लाह तआला की नेअमत और करम और उसकी रज़ा. इसके बाद शक्की लोगों का हाल बयान फरमाया जाता है.
- (३०) ज़लील हाल, दहशत ज़दा सूरत.

८९ - सूरए तकवीर

- (१) सूरए कुबिरत मक्के में उतरी, इसमें एक रूकू, उन्तीस आयतें, एक सौ चार कलिमे, पाँच सौ तीस अक्षर हैं. हदीस शरीफ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि जिसे पसन्द हो कि क़यामत के दिन को ऐसा देखे गोया वह नज़र के सामने है तो चाहिये कि सूरए तकवीर और सूरए इज़समाउन फ़तरत और सूरए इज़समाउन शक़रत पढ़े. (तिरमिज़ी)
- (२) यानी सूरज का नूर ढल जाए.
- (३) बारिश की तरह आसमान से ज़मीन पर गिर पड़ें और कोई तारा अपनी जगह बाकी न रहे.
- (४) और धूल की तरह हवा में उड़ते फिरें.
- (५) जिनके गर्भ को दस महीने गुज़र चुके हों और ब्याहने का वक़्त करीब आ गया हो.
- (६) न उनको कोई चरान वाला हो न देखभाल करने वाला. उस राज़ की दहशत का यह आलम हों और लोग अपने हाल में ऐसे मुबिला हों कि उनकी परवाह करने वाला कोई न हो.
- (७) क़यामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किये जाएं कि एक दूसरे से बदला लें फिर ख़ाक कर दिये जाएं.
- (८) फिर वो ख़ाक हो जाएं.
- (९) इस तरह कि नेक नेकों के साथ और बुरे बुरों के साथ या ये मानी कि जानें अपने जिसमें से मिला दी जाए या यह कि अपने कर्मों से मिला दी जाएं या यह कि ईमानदारों की जानें हूरों के और काफ़िरों की जानें शैतानों के साथ मिला दी जाएं.
- (१०) यानी उस लड़की से जो ज़िन्दा दफ़न की गई हो जैसा कि अरब का तरीका था कि जिहालत के ज़माने में लड़कियों का ज़िन्दा दफ़न कर देते थे.

दिया ^(१०) (८) कोई नहीं ^(११) बल्कि तुम इन्साफ़ होने को झुटलाते हो ^(१२) (९) और वेशक तुम पर कुछ निगहबान हैं ^(१३) (१०) इज़्जतदार लिखने वाले ^(१४) (११) जानते हैं जो कुछ तुम करो ^(१५) (१२) वेशक नेकी करने वाले ^(१६) ज़रूर चैन में हैं ^(१७) (१३) और वेशक बदकार ^(१८) ज़रूर दोज़ख में हैं ^(१९) (१४) इन्साफ़ के दिन उसमें जाएंगे ^(२०) (१५) और उससे कहीं छुप न सकेंगे ^(२१) (१६) और तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन ^(२२) (१७) फिर तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन ^(२३) (१८) जिस दिन कोई जान किसी जान का कुछ इख्तियार न रखेगी ^(२४) और सारा हुक्म उस दिन अल्लाह का है ^(२५) (१९)

८३ - सूरए मुतफ़िफ़ीन

सूरए मुतफ़िफ़ीन मक्का में उतरी, इसमें ३६ आयतें, एक रकू है.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला ^(१) कम तौलने वालों की खराबी ह ^(२) वो कि जब औरों से माप लें पूरा लें ^(३) और जब उन्हें माप तौल कर दें कम कर दें ^(४) क्या इन लोगों को गुमान नहीं कि इन्हें उठना है ^(५) एक अज़मत वाले दिन के लिये ^(६) जिस दिन सब लोग ^(७) सारे जगत के रब के हुज़ूर खड़े होंगे ^(८) वेशक काफ़िरों की लिखत ^(९) सबसे नीची जगह सिज्जीन में है ^(१०) (६) और तू क्या

رَبِّكَ ۚ كَلَّا بَلْ كَذَّبْتُمْ بِآيَاتِنَا ۖ وَإِنْ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ۖ كَرَامًا كَاتِبِينَ ۖ يَكْتُبُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۖ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۖ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۖ يُصَلُّونَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۖ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۖ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۖ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۖ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۚ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَيْلٌ لِلْمُطَفِّفِينَ ۚ الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۚ وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۚ أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۚ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۚ كِتَابٌ

- (११) यह सवाल क़ातिल की फटकार के लिये है ताकि वह लड़की जवाब दे कि मैं बेगुनाह मारी गई.
- (१२) जैसे ज़िक्र की हुई बकरी के जिस्म से ख़ाल खींच ली जाती है.
- (१३) अल्लाह के दुश्मनों के लिये.
- (१४) अल्लाह तआला के प्यारों के.
- (१५) नेकी या बदी.
- (१६) सितारों.
- (१७) ये पाँच सितारे हैं, जुहल, मुश्तरी, मिरिख़, ज़ोहरा, अतारुद. (जैसा हज़रत अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहो अन्हो ने रिवायत किया)
- (१८) और उसकी तारीकी हलकी पड़े.
- (१९) और उसकी रौशनी ख़ूब फैले.
- (२०) कुरआन शरीफ़.
- (२१) हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम.
- (२२) यानी आसमानों में फ़रिश्ते उसकी फ़रमाँवरदारी करते हैं.
- (२३) अल्लाह की बही का.
- (२४) हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम.
- (२५) जैसा कि मक्के के काफ़िर कहते हैं.
- (२६) यानी जिब्रईले अमीन को उनकी असली सूरत में.
- (२७) यानी सूरज के उदय होने की जगह पर.
- (२८) और क्यों कुरआन से मुंह फेरते हो.
- (२९) यानी जिसको हक़ का अनुकरण और उसपर डटे रहना मन्ज़ूर हो.

८२ - सूरए इन्फ़ितार

- (१) सूरए इन्फ़ितार मक्के में उतरी, इसमें एक रकू, उन्नीस आयतें, अस्सी कलिमे और तीन सौ सत्ताईस अक्षर हैं.

- (२) और मीठा व खारी सब मिलकर एक हो जाएं।
- (३) और उनके मुँह ज़िन्दा करके निकाले जाएं।
- (४) नेक कर्म या बुरे।
- (५) छोड़ी, नेकी या बदी और एक क़ौल यह है कि जो आगे भंजा, उससे सदक़ात मुराद हैं और जो पीछे छोड़ा उससे माल जायदाद और मीरास मुराद हैं।
- (६) कि तूने उसकी नेअमत और करम के बावजूद उसका हक़ न पहचाना और उसकी नाफ़रमानी की।
- (७) और नेअल से हस्त किया, शून्य से अस्तित्व में लाया।
- (८) सम्पूर्ण अंगों वाला, सुनता देखता।
- (९) अंगों में संतुलन रखता।
- (१०) लम्बा या टिमना, सुन्दर या बदसूरत, गोरा या काला, मर्द या औरत।
- (११) तुम्हें अपने ख़ास के करम पर घमण्डी न होना चाहिये।
- (१२) और जज़ा के दिन के इन्क़ारी हो।
- (१३) तुम्हारी करनी और कहनी के, और बां फ़रिश्ते हैं।
- (१४) तुम्हारे कर्मों के।
- (१५) नेकी या बदी, उनसे तुम्हारा कोई कर्म छुपा नहीं।
- (१६) यानी सच्चे ईमान वाले मूमिन।
- (१७) जन्नत में।
- (१८) काफ़िर।
- (१९) यानी कोई काफ़िर किसी काफ़िर को नफ़ा न पहुंचा सकेगा। (स्वाज़िन)

८३ - सूरए मुतफ़िफ़ीन

- (१) सूरए मुतफ़िफ़ीन एक क़ौल में मक्की है और एक में मदीनी, और एक क़ौल यह है कि हिजरत के ज़माने में मक्का मुकर्रमा और मदीनए तैय्यिबह के बीच उतरी। इस सूरत में एक ऊकू, छत्तीस आयतें, एक सौ उन्हत्तर कलिमे और सात सौ तीस अक्षर हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जब मदीनए तैय्यिबह तशरीफ़ फ़रमा हुए तो यहाँ के लोग नाप तौल में बेईमानी करते थे विशेषकर एक व्यक्ति अबू जुहैना ऐसा था कि वह दो माप रखता था, लेने का और, देने का और। उन लोगों के बारे में ये आयतें नाज़िल हुईं और उन्हें माप तौल में इन्साफ़ करने का हुक्म दिया गया।
- (२) यानी क़यामत का दिन। उस रोज़ कण कण का हिसाब किया जाएगा।
- (३) अपनी क़ब्रों से उठकर।
- (४) यानी उनके अअमात-नाम।
- (५) सिज्जीन सानबी ज़मीन की तह में एक जगह है जो इब्नीस और उसके लश्क़रों का स्थान है।

जाने सिज्जीन कैसी है^(६) (८) वह लिखत एक मुहर किया लेखा है^(७) (९) उस दिन^(८) झुटलाने वालों की खराबी है^(१०) जो इन्साफ के दिन को झुटलाते हैं^(११) (११) और उसे न झुटलाएगा मगर हर सरकश^(१०) (१२) जब उसपर हमारी आयतें पढ़ी जाएं कहे^(११) अगलों की कहानियाँ हैं^(१२) कोई नहीं^(१२) बल्कि उनके दिलों पर जंग चढ़ा दिया है उनकी कमाइयों ने^(१३) (१४) हाँ हाँ वेशक वो उस दिन^(१४) अपने रब के दीदार से मेहरूम हैं^(१५) (१५) फिर वेशक उन्हें जहन्नम में दाखिल होना^(१६) फिर कहा जाएगा यह है वह^(१६) जिसे तुम झुटलाते थे^(१७) (१७) हाँ हाँ वेशक नेकों की लिखत^(१८) सब से ऊँचा महल इल्लीयीन में है^(१९) (१८) और तू क्या जाने इल्लीयीन कैसी है^(२०) (१९) वह लिखत एक मुहर किया लेखा है^(२१) (२०) कि नज़्दीकी वाले^(२२) जिसकी ज़ियारत करते हैं^(२३) वेशक नेकी वाले जरूर चैन में हैं^(२४) तख्तों पर देखते हैं^(२५) (२३) तू उनके चेहरों में चैन की ताज़गी पहचाने^(२६) (२४) निथरी शराब पिलाई जाएंगे जो मुहर की हुई रखी है^(२५) (२५) उसकी मुहर मुश्क पर है, और उसी पर चाहिये कि ललचाएँ ललचाने वाले^(२६) (२६) और उसकी मिलौनी तस्नीम से है^(२७) (२६) वह चश्मा जिससे नज़्दीकी वाले पीते हैं^(२८) (२८) वेशक मुजरिम लोग^(२९) ईमान वालों से^(३०) हंसा करते थे^(२९) और जब वो^(३१) उनपर गुज़रते तो ये आपस में उनपर आँखों से इशारे करते^(३२) (३०)

قُرْءُومُ وَيَلُومُ يَوْمَئِذٍ الْمُكَذِّبِينَ الَّذِينَ يَكْذِبُونَ يَوْمَ
الَّذِينَ وَمَا يَكْذِبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ إِذَا تُنْزِلُ
عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالِ اسْأَلُوا أَكُذِّبِينَ ۚ كَلَّا بَلْ عَرَّانٍ
عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ كَلَّا لَأَنزَلْنَاهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ
يَوْمَئِذٍ لَمْخَجُونَ ۚ ثُمَّ لَتَهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ۚ ثُمَّ
يَقَالُ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُونَ ۚ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ
الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ۚ وَمَا أَذْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ۚ كِتَابٌ
مُّرْقُومٌ ۚ يَشْهَدُهُ الْمُرْسَلُونَ ۚ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۚ
عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ۚ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ
النَّعِيمِ ۚ يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِينٍ ۚ تَخْتُمُونَ خِتَمَهُمْ ۚ وَهُمْ فِي
ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ۚ وَهِيَ رَاجِعَةٌ ۚ مَنْ تَسْتَنِيمُ ۚ
عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ
الَّذِينَ آمَنُوا يُضْحَكُونَ ۚ وَإِذَا امْرَأُوهُمْ يَتَنَامُونَ ۚ

مَرْكُومٌ

- (६) यानी वह अत्यन्त हौल और हैबत की जगह है.
- (७) जो न मिट सकता है न बदल सकता है.
- (८) जबकि वह लेखा निकाला जाएगा.
- (९) और जज़ा के दिन यानी क़यामत के इन्कारी हैं.
- (१०) हद से गुज़रने वाला.
- (११) उनकी लिखत, कि ये --
- (१२) उसका कहना ग़लत है.
- (१३) उन बुराइयों और गुनाहों ने जो वो करते हैं यानी अपने दुरे कर्मों की शामत से उनके दिल जंग वाले और काले पड़ गए. हदीस शरीफ़ में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहूँ अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जब दब्दा कोई गुनाह करता है उसके दिल में एक काला बिन्दु पैदा होता है. जब उस गुनाह से बाज़ आता है और तौबत इस्तिफ़ाकार करता है तो दिल साफ़ हो जाता है और अगर फिर गुनाह करता है तो वह बिन्दु बढ़ता है यहाँ तक कि सारा दिल काला हो जाता है और यही रैन यानी वह जंग है जिसका आयत में ज़िक्र हुआ. (तिरमिज़ी)
- (१४) यानी क़यामत का दिन.
- (१५) जैसा कि दुनिया में उसकी तौहीद से मेहरूम रहे. इस आयत से साबित हुआ कि मूमिनों को आग़िरत में अल्लाह के दीदार की नेअमत मयस्सर आणी क्योंकि दीदार से मेहरूमी का ज़िक्र काफ़िरों के सिलसिले में किया गया और जो चीज़ काफ़िरों के लिये सज़ा हो वह मुसलमान के हक़ में साबित नहीं हो सकती तो लाज़िम आया कि मूमिनों के हक़ में यह मेहरूमी साबित न हो. हज़रत इमाम मलिक रदियल्लाहूँ अन्हां ने फ़रमाया कि जब उसने अपने दुश्मनों को अपने दीदार से मेहरूम किया तो दोस्तों को अपनी तज़ल्ली से नवाज़ेगा और अपने दीदार से सरफ़राज़ फ़रमाएगा.
- (१६) अज़ाब.
- (१७) दुनिया में.
- (१८) यानी सच्चे मूमिनों के अजमाल-नामे.

और जब^(३१) अपने घर पलटते खुशियाँ करते पलटते^(३१) (३१) और जब मुसलमानों को देखते कहते वेशक ये लोग बहके हुए हैं^(३५) (३२) और ये^(३५) कुछ उनपर निगहवान बना कर न भंजे गए^(३७) (३३) तां आज^(३८) ईमान वाले काफ़िरों से हंसते हैं^(३९) (३४) तख्तों पर बैठे देखते हैं^(४०) (३५) क्यों कुछ बदला मिला काफ़िरों को अपने किये का^(४१) (३६)

८४ - सूरए इन्शिकाक़

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) जब आसमान शक़ हो^(२) (१) और अपने रब का हुक्म सुने^(३) और उसे सज़ावार ही यह है^(२) और जब ज़मीन दराज़ की जाए^(४) (३) और को कुछ उसमें है^(५) डाल दे और खाली हो जाए^(४) और अपने रब का हुक्म सुने^(६) और जैसे सज़ावार ही यह है^(७) (५) ऐ आदमी, वेशक़ तुझे अपने रब की तरफ़^(८) ज़रूर दौड़ना है फिर उससे मिलना^(९) (६) तो वह जो अपना अअमाल-नामा दाएं हाथ में दिया जाए^(१०) (७) उससे बहुत जल्द सहल हिसाब लिया जाएगा^(११) (८) और अपने घर वालों की तरफ़^(१२) खुश खुश पलटेगा^(१३) (९) और वह जिसका अअमाल-नामा उसकी पीठ के पीछे दिया जाए^(१४) (१०) वह जल्द ही मौत मांगेगा^(१५) (११) और भड़कती आग में जाएगा^(१६) (१२) वेशक़

وَاِذَا انْقَلَبُوا۟ اِلٰى اٰهْلِهِمْ اُنْقَلَبُوۡا فِلٰهِيۡنَ ۚ وَاِذَا رَاوْهُمۡ قَالُوۡا اِنَّ هٰؤُلَاءِ لَصٰلُوۡنَ ۚ وَاَنْزَلُوۡا عَلَيْهِمۡ حُفٰظِيۡنَ ۚ ۝۲۱ ۚ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنَ الْكٰفِرِ يَصْحٰكُوۡنَ ۚ عَلٰى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوۡنَ ۚ ۝۲۲ ۚ هَلْ تَوۡبَ الْكٰفِرُ مَا كَانُوۡا يَفْعَلُوۡنَ ۚ ۝۲۳ ۚ

سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ (۸۳) وَفِيهَا ۲۳ اٰیَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اِذَا السَّمَاءُ اُنْشَقَّتْ ۚ وَاِذْ اُنۡزِلَتْ رِيۡحُهَا وَحُمُتْ ۚ وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ۚ وَاَلْقَتْ مَا فِيۡهَا وَتَخَلَّتْ ۚ وَاِذْ اُنۡزِلَتْ رِيۡحُهَا وَحُمُتْ ۚ يٰۤاَيُّهَا الْاِنۡسَانُ اِنَّكَ كَادِمٌ اِلٰى رَبِّكَ ۚ كَذٰۤاۤنَ فُلَقِيۡعِهِ ۚ فَاَمَّا مَنْ اُوۡتِيَ كِتٰبًا بِيَمِيۡنِهٖ ۚ فَسَوْفَ يَحۡسَبُ حَسٰبًا ۚ يَّسِّرًا ۚ وَيُقَلِّبُ اِلٰى اٰهْلِهٖ مَسْرُوۡدًا ۚ وَاَمَّا مَنْ اُوۡتِيَ كِتٰبًا وَّرَآءَ ظَهْرِهٖ ۚ فَسَوْفَ يَدْعُوۡا ثُبُوۡرًا ۚ وَيَصِلُ سَعِيۡرًا ۚ اِنَّهٗ كَانَ فِیۡ اٰهْلِهٖ

مَنْزِلًا

- (१९) इल्लिख्थीन सातवें आसमान में अर्श के नीचे है.
- (२०) यानी उसकी शान अजीब अज़मत वाली है.
- (२१) इल्लिख्थीन में, उसमें उनके कर्म लिखे हैं.
- (२२) फ़रिशत.
- (२३) अल्लाह तआला के करम और उसकी नेअमतों को, जो उसने उन्हें अता फ़रमाई और अपने दुश्मनों की जो तरह तरह के अज़ाब में गिरफ़्तार हैं.
- (२४) कि वो खुशी से चमकते दमकते होंगे और खुशदिली के निशान उनके चेहरों पर दिखते होंगे.
- (२५) कि नेक लोग ही उसकी मोहर तोड़ेंगे.
- (२६) फ़रमाँबरदारी की तरफ़ पहल करके और बुराइयों से बाज़ रहकर.
- (२७) जो जन्नत की शराबों में उत्तम है.
- (२८) यानी मुक़र्रिबीन श्वालिस शराबे तरनीम पीते हैं और बाक़ी जन्नत वालों की शराब में शराबे तस्नीम मिलाई जाती है.
- (२९) अबू जहल और यलीद बिन मुगीरह और आस बिन वाईल वग़ैरह काफ़िरों के सरदारों की तरह.
- (३०) हज़रत अम्मार व ख़बाब व सुहैब व बिलाल वग़ैरह ग़रीब मूमिनों की तरह.
- (३१) ईमान वाले.
- (३२) तअने और एब के अन्दाज़ में. तबल है कि हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो मुसलमानों की एक जमाअत में तशरीफ़ ले जा रहे थे. मुनाफ़िक्को ने उन्हें देखकर आँखों से इशारे किये और मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ से हँसे और आपस में उन हज़रात के बारे में बेहूदा कलमात कहे तां इससे पहले कि अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में पहुंचें, ये आयतें उतरें.
- (३३) काफ़िर.
- (३४) यानी मुसलमानों का बुरा कहकर आपस में उनकी हँसी बताते और खुश होते हुए.
- (३५) कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए और दुनिया की लज़ज़तों का आख़िरत की उम्मीदों पर छाड़ दिया. अल्लाह तआला फ़रमाता है.
- (३६) काफ़िर.

वह अपने घर में^(१५) खुश था^(१६) वह समझा कि उसे फिरना नहीं^(१७) हाँ क्यों नहीं^(१८) वेशक उसका रव उसे देख रहा है^(१९) तो मुझे कसम है शाम के उजाले की^(२०) और रात की और जो चीज़ें उसमें जमा होती हैं^(२१) और चांद की जब पूरा हो^(२२) जरूर तुम मंज़िल व मंज़िल चढ़ोगे^(२३) तो क्या हुआ उन्हें ईमान नहीं लाते^(२४) और जब कुरआन पढ़ा जाए सच्चा नहीं करते^(२५) वल्कि काफिर झुटला रहे हैं^(२६) और अल्लाह खूब जानता है जो अपने जी में रखते हैं^(२७) तो तुम उन्हें दर्दनाक अज़ाब की बशारत (सूचना) दो^(२८) मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिये वह सवाब है जो कभी खत्म न होगा^(२९)

८५ - सूरत बुरुज

सूरत बुरुज मक्का में उतरी, इसमें २२ आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) कसम आसमान की जिसमें वुर्ज हैं^(२) और उस दिन की जिसका वादा है^(३) और उस दिन की जो गवाह है^(४) और उस दिन की जिसमें हाज़िर होते हैं^(५) खाई वालों पर लानत हो^(६) उस भड़कती आग वाले^(७) जब वो उसके किनारों पर बैठे थे^(८) और वो खुद गवाह हैं जो कुछ मुसलमानों के साथ कर रहे थे^(९) और उन्हें मुसलमानों का क्या बुरा लगा, यही न, कि वो ईमान लाए

سُورَةُ الْبُرُوجِ ٨٥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ۝ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ۝ وَشَاهِدٍ وَمَشْهُودٍ ۝ قَبِيلِ أَصْحَابِ الْأُخْدُودِ ۝ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ۝ إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ۝ وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُعُودٌ ۝ وَمَا نَقُصُّوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا

سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ ۝ ثَمَانِي وَخَمْسُونَ آيَةً ۝

مَنْزِلٌ

- (३७) कि उनके अहवाल और अअमाल पर पकड़ करें वल्कि उन्हें अपनी इस्लाम का हुक्म दिया गया है, वो अपना हाल दुस्मत् करें। दूसरों को बंधकूफ बताते और उनकी हंसी उड़ाने से क्या फायदा उठा सकते हैं।
- (३८) यानी क़यामत के दिन।
- (३९) जैसा काफिर दुनिया में मुसलमानों की ग़रीबी और मेहनत पर हसते थे, यहां मामला उलटा है, मूमिन हमेशा के ऐश और ग़हत में है और काफिर ज़िल्लत और ख़्तारी के हमेशा के अज़ाब में, जहन्नम के दरवाज़ की तरफ़ दौड़ते हैं, जब दरवाज़े के करीब पहुंचते हैं, दरवाज़ा बन्द हो जाता है, बार बार ऐसा ही होता है, काफिरों की यह हालत देखकर मुसलमान उनसे हंसी करते हैं और मुसलमानों का हाल यह है कि वह जन्नत में जवाहिरात के।
- (४०) काफिरों की ज़िल्लत और ख़्तवाई और अज़ाब की सख़्ती को, और उसपर हसते हैं।
- (४१) यानी उन कर्मों का जो उन्होंने दुनिया में किये थे।

८४ - सूरत इन्शिकाक़

- (१) सूरत इन्शिकाक़ मक्के में उतरी, इसमें एक रकू, पच्चीस आयतें, एक सौ सात कलिमें, चार सौ तीस अक्षर हैं।
- (२) क़यामत क़याम होने के वक़्त।
- (३) अपने शक़ हाने (फट जाने) के मुतअल्लिक और उसकी इत्ताअत करे।
- (४) और उसपर कोई इमारत और पहाड़ बाक़ी न रहे।
- (५) यानी उसके पेट में ख़ज़ाने और मुर्दे, सबको बाहर।
- (६) अपने अन्दर की चीज़ें बाहर फेंक देने के मुतअल्लिक और उसकी इत्ताअत करे।
- (७) उस वक़्त इन्सान अपने कर्मों के फल देखेगा।
- (८) यानी उसके समक्ष हाज़िरों के लिये, मुग़ाद इसस मौत है (मदारिक)
- (९) और अपने कर्मों का बदला पाना।
- (१०) और वह मूमिन है।
- (११) आसान हिसाब यह है कि उसपर उसके कर्म पेश किये जाएं, वह अपनी फ़रमाँवरदारी और गुमराही का पहचाने फिर

फरमावारी पर स्वाब दिया जाए और नाफरमानी से तजावुज फरमाया जाए. यह सरल हिमाय है न इरामें सख्ती, न यह कहा जाए कि ऐसा क्यों किया, न उज्र की तलब हो, न उन पर हुज्जत कायम की जाए क्योंकि जिससे मुतालिबा किया गया उसे कोई उज्र हाथ न आएगा. और वह कोई हुज्जत न पाएगा, रुखा होगा. (अल्लाह तआला हिसाब की सख्ती से पनाह दे)

(१२) घर वालों से जन्नती घर वाले मुराद हैं चाहे वो दूरों में से हों या इन्सानों में से.

(१३) अपनी इस कामयाबी पर.

(१४) और वह काफिर है जिसका बायाँ हाथ तो उसकी गर्दन के साथ मिलाकर तौक में बाँध दिया जाएगा और बायाँ हाथ पीठ के पीछे कर दिया जाएगा, उसमें उसका अमाल-नामा दिया जाएगा. इस हाल को देखकर वह जान लेगा कि वह जहन्नम वालों में से है तो —

(१५) और या सुबुराह कहेंगे. सुबुर के मानी हलाकत के हैं.

(१६) दुनिया के अन्दर.

(१७) अपनी इच्छाओं और वासनाओं में और घमण्डी.

(१८) अपने रब की तरफ, और वह मरने के बाद उठाया न जाएगा.

(१९) ज़रूर अपने रब की तरफ पलटेंगे और मरने के बाद उठाया जाएगा और हिसाब किया जाएगा.

(२०) जो लाली के बाद नमूदार होता है और जिसके गायब होने पर इमाम साहिब के नज़्दीक इशा का वक्त शुरू होता है. यही क़ौल है बहुत से सहाबा का और कुछ उल्मा शफ़क़ से लाली मुराद लेते हैं.

(२१) जानवरों की तरह जो दिन में मुन्तशिर होते हैं और रात में अपने घोंसलों और ठिकानों की तरफ चले आते हैं और तारीकी की तरह और सितारों और उन कर्मों की तरह जो रात में किये जाते हैं जैसे कि तहज्जुद.

(२२) और उसका नूर कामिल हो जाए और ये चाँदनी के दिनों यानी तेरहवीं, चौदहवीं, पंद्रहवीं तारीखों में होता है.

(२३) यह ख़िताब या तो इन्सानों को है, उस सूरत में मानी ये हैं कि तुम्हें हाल के बाद हाल पेश आएगा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फरमाया कि मौत की सज़्जियाँ, फिर मरने के बाद उठना, फिर हिसाब के मैदान में पेश होना. और यह भी कहा गया है कि इन्सान के हालात में तदरीज है. एक वक्त दूध पीता बच्चा होता है, फिर दूध छूटता है, फिर लड़कपन का ज़माना आता है, फिर जवान होता है, फिर ज़्यादा दलती है, फिर बूढ़ा होता है. और एक क़ौल यह है कि यह ख़िताब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को है कि आप मेअराज की रात एक आसमान पर तशरीफ़ ले गए, फिर दूसरे पर, इसी तरह दर्जा ब दर्जा क़ुर्व की मंज़िलों में वासिल हुए. बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि इस आयत में नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का हाल बयान फरमाया गया है. मानी ये हैं कि आपको मुश्क़ों पर फ़तह हासिल होगी और अंजाम बहुत बेहतर होगा. आप काफ़िरों की सरकशी और उनके झुटलाने से दुखी न हों.

(२४) यानी अब ईमान लाने में क्या उज्र है. दलीलें ज़ाहिर होने के बावजूद क्यों ईमान नहीं लाते.

(२५) इस से मुराद तिलावत का सज़्दा है. जब सूरए इकरा में “बसुद वक्तरिब” उतरा तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह आयत पढ़कर सज़्दा किया. मूमिनों ने आपके साथ सज़्दा किया और क़ुरेश के काफ़िरों ने सज़्दा न किया. उनके इस काम की बुराई में यह आयत उतरी कि काफ़िरों पर जब क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वो तिलावत का सज़्दा नहीं करते. इस आयत से साबित हुआ कि तिलावत का सज़्दा वाजिब है, सुनने वाले पर, और हदीस से साबित है कि पढ़ने वाले और सुनने वाले दोनों पर सज़्दा वाजिब हो जाता है. क़ुरआने करीम में सज़्दे की चौदह आयतें हैं जिनको पढ़ने या सुनने से सज़्दा वाजिब हो जाता है चाहे सुनने वाले ने सुनने का इशारा किया हो या न किया हो. तिलावत के सज़्दे के लिये भी वही शर्तें हैं जो नमाज़ के लिये जैसे कि पाकी और क़िबले की तरफ़ मुंह होना और सतरे औरत वीरह. सज़्दे के अन्त और आखिर अल्लाहो अक़बर कहना चाहिये. इमाम ने सज़्दे की आयत पढ़ी तो उसपर और मुक़्तदियों पर और जो व्यक्ति नमाज़ में न हो और सुन ले, उसपर सज़्दा वाजिब है. सज़्दे की ज़िती आयतें पढ़ी जाएंगी उतने ही सज़्दे वाजिब होंगे. अगर एक ही आयत एक बैठक में बार बार पढ़ी गई तो एक ही सज़्दा वाजिब हुआ. बाकी की तफ़सील फ़िक़ह की किताबों में है. (तफ़सीर अहमदी).

(२६) क़ुरआन को और मरने के बाद उठने को.

(२७) कुफ़्र और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाना.

(२८) उनके कुफ़्र और दुश्मनी पर.

८५ - सूरए बुरुज

(१) सूरए बुरुज मक्के में उतरी. इसमें एक रुक़, बाईस आयतें, एक सौ नवे क़लिमे, चार सौ पैंसठ अक्षर हैं.

(२) जिनकी संख्या बारह है और उनमें अल्लाह की हिकमत के चमत्कार नमूदार हैं. सूरज चाँद और सितारों की सैर उनमें निर्धारित अन्दाज़ पर है जिसमें अन्तर नहीं पड़ता.

(३) वह क़यामत का दिन है.

(४) इससे मुराद जुमए का दिन है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है.

(५) आदमी और फ़रिश्ते. इससे मुराद अफ़ के दिन है.

(६) रिवायत है कि पड़ले ज़माने में एक बादशाह था, जब उसका जादूगर बूढ़ा हुआ तो उसने बादशाह से कहा कि मेरे पास एक

अल्लाह इज़्जत वाले सब खूबियों सराहे पर (८) कि उसी के लिये आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है, और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है (९) वेशक जिन्होंने तकलीफ दी मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को (१०) फिर तौबह न की (१०) उनके लिये जहन्नम का अज़ाब है (११) और उनके लिये आग का अज़ाब (१२) (१०) वेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिये बाग है जिनके नीचे नहरें बहें, यही बड़ी कामयाबी है (११) वेशक तेरे रब की गिरफ्त बहुत सख्त है (१२) (१२) वेशक वह पहले करे और फिर करे (१३) (१३) और वही है बख्शने वाला अपने नेक बन्दों पर प्यारा (१४) इज़्जत वाले अर्श का मालिक (१५) हमेशा जो चाहे कर लेने वाला (१६) क्या तुम्हारे पास लश्करों की बात आई (१७) (१७) वो लश्कर कौन, फिरऔन और समूद (१८) (१८) बल्कि (१९) काफिर झुटलाने में हैं (२०) (२०) और अल्लाह उनके पीछे से उन्हें घेरे हुए है (२१) (२१) बल्कि वह बहुत वुजुर्गी वाला कुरआन है (२२) लोहे महफूज़ में (२२)

८६- सूरए तारिक

सूरए तारिक मक्का में उतरी, इसमें १७ आयतें, एक खूब है. अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) आसमान की कसम और रात को आने वाले की (२) (२) और कुछ तुम ने जाना वह रात को आने वाला क्या है (३) खूब

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابٌ جَحِيمٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ
الْحَرِيقِ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ إِنَّ
بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِي وَيُعِيدُ وَهُوَ
الْعَفُورُ الْوَدُودُ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ فَعَالٌ لَمَّا
يُرِيدُ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ فِرْعَوْنُ وَثَمُودُ
بَنِي الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْوِينٍ وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ
مُحِيطٌ بَلْ هُوَ قُدْرَانٌ مَجِيدٌ فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ النَّجْمُ

लड़का भेज जिसे में जादू सिखा है. बादशाह ने एक लड़का मुक़र्रर कर दिया. वह जादू सीखने लगा. राह में एक पादरी रहता था. उसके पास बैठने लगा और उसका कलाम उसके दिल में बैठता गया. अब आते जाते उसने पादरी की सोहबत में बैठना मुक़र्रर कर लिया. एक रोज़ गस्ते में एक ख़तरनाक जानवर मिला. लड़के ने एक पत्थर हाथ में लेकर यह दुआ की कि थारब अगर पादरी तुझे प्यारा हो तो मेरे पत्थर से इस जानवर को हलाक कर दे. वह जानवर उस पत्थर से मर गया. इसके बाद लड़के की दुआओं में असर पैदा हो गया और उसकी दुआ से कोढ़ी और अंधे अच्छे होने लगे. बादशाह का एक मुसाहिब अंधा हो गया था, वह आया, लड़के ने दुआ की, वह अच्छा हो गया और अल्लाह तआला पर ईमान ले आया और बादशाह के दरबार में पहुंचा. उसने कहा तुझे किसने अच्छा किया. कहा मेरे रब ने. बादशाह ने कहा, मेरे सिवा और भी कोई रब है. यह कहकर उसने उसपर सज़्जियाँ शुरू कीं. यहाँ तक कि उसने लड़के का पता बताया. लड़के पर सज़्जियाँ कीं. उसने पादरी का पता बताया. पादरी पर सज़्जियाँ कीं और उससे कहा कि अपना दीन छोड़. उसने इन्कार किया तो उसके सर पर आरा रखकर चिरवा दिया. फिर मुसाहिब को भी चिरवा दिया. फिर लड़के के लिये हुक्म दिया कि उसे पहाड़ की चोटी से गिरा दिया जाए. सिपाही उसको पहाड़ की चोटी पर ले गए. उसने दुआ की, पहाड़ पर ज़लज़ला आया, सब गिर कर हलाक हो गए. लड़का सही सलामत चला आया. बादशाह ने कहा सिपाही क्या हुए, कहा सबको खुदा ने हलाक कर दिया. फिर बादशाह ने लड़के को समन्दर में डुबाने के लिये भेजा. लड़के ने दुआ की, किशती डूब गई, तमाम शाही आदमी डूब गए, लड़का सही सलामत बादशाह के पास आया. बादशाह ने कहा, वो आदमी क्या हुए, कहा सबको अल्लाह तआला ने हलाक कर दिया और तू मुझे क़त्ल ही नहीं कर सकता जब तक वह काम न करे जो मैं बताऊँ. कहा, वह क्या. लड़के ने कहा, एक मैदान में सब लोगों को जमा कर और मुझे खज़ूर के टुंड पर सूली दे फिर मेरे तरफ़ से एक तीर निकाल कर बिस्मिल्लाहे रबिल गुलाम कहकर मार. ऐसा करेगा तो मुझे क़त्ल कर सकेगा. बादशाह ने ऐसा ही किया. तीर लड़के की कनपड़ी पर लगा, उसने अपना हाथ उस पर रखा और अल्लाह को प्यारा हो गया. यह देख कर सारे लोग ईमान ले आ. इससे बादशाह का ज़्यादा दुख हुआ और उसने एक खाई खुदवाई और उसमें आग जलवाई और हुक्म दिया जो दीन से न फिरे उसे इस आग में डाल दो. लोग डाले गए यहाँ तक कि एक औरत आई उसकी गोद में बच्चा था. वह ज़रा झिझकी. बच्चे ने कहा ऐ माँ सन्न कर, न झिझक. तू सच्चे दीन पर है. वह बच्चा और माँ भी आग में डाल दिये गए. यह हदीस सही है, मुस्लिम ने इसकी तख़रीज की. इस से ओलिया की करामतें साबित होती हैं. आयत में इस वाक़ए का ज़िक्र है.

(७) कुरसियाँ बिठाए और मुसलमानों को आग में डाल रहे थे.

(८) शाही लोग बादशाह के पास आकर एक दूसरे के लिये गवाही देते थे कि उन्होंने हुक्म की तामील में कोताही नहीं की.

चमकता तारा(३) कोई जान नहीं जिसपर निगहवान न हो (३)॥४॥ तो चाहिये कि आदमी गौर करे कि किस चीज़ से बनाया गया(५)॥५॥ जस्त करते पानी से(६)॥६॥ जो निकलता है पीठ और सीनों के बीच से(७)॥७॥ वेशक अल्लाह उसके वापस कर देने पर(८) क़ादिर है(८)॥ जिस दिन छुपी बातों की जांच होगी(९)॥९॥ तो आदमी के पास न कुछ जोर होगा न कोई मददगार(१०)॥१०॥ आसमान की क्रसम जिससे मेंह उतरता है(११)॥११॥ और ज़मीन की जो उससे खुलती है(१२)॥१२॥ वेशक कुरआन ज़रूर फ़ैसले की बात है(१३)॥१३॥ और कोई हंसी की बात नहीं(१४)॥१४॥ वेशक काफ़िर अपना सा दाँव चलते हैं(१५)॥१५॥ और मैं अपनी खुफ़िया (छुपवा) तदवीर फ़रमाता हूँ(१६)॥१६॥ तो तुम काफ़िरों को ढील दो(१७) उन्हें कुछ थोड़ी मुहलत दो (१७)॥१७॥

८७ - सूरए अल-अअला

सूरए अल-अअला मक्के में उतरी, इसमें १९ आयतें, एक रूकू है.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला (१) अपने रव के नाम की पाकी बोलो जो सब से वलन्द है(२)॥१॥ जिसने बनाकर ठीक किया(३)॥२॥ और जिसने अन्दाज़े पर रख कर राह दी(४)॥३॥ और जिसने चारा निकाला(४)॥ फिर उसे खुशक सियाह कर दिया(५)॥ अब हम तुम्हें पढ़ाएंगे कि तुम न भूलोगे(६)॥६॥ मगर जो अल्लाह चाहे(७) वेशक वह जानता है हर खुले और छुपे को (७)॥७॥ और हम तुम्हारे लिये आसानी का सामान कर देंगे(८)॥८॥

الْثَّاقِبُ ۚ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۚ فَلْيَنْظُرِ
الْاِنْسَانُ يَمَّ خُلُقٍ ۚ خُلُقٍ مِنْ مَّاءٍ ۚ دَافِقٍ ۚ يَخْرُجُ مِنْ
بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۚ اِنَّهُ عَلٰى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۚ
يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۚ فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۚ وَالتَّمَاءُ
ذَاتِ الرَّجْعِ ۚ وَالْاَرْضُ ذَاتِ الصَّدُوحِ ۚ اِنَّهُ لَقَوْلٌ
فَصْلٌ ۚ وَمَا هُوَ بِهَازِلٍ ۚ اِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۚ
وَيَكِيدُ كَيْدًا ۚ فَمَهْلِكُ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهَلُهُمْ رُوْبُدًا ۚ
سُوْرَةُ الْاَنْطِ مَكِّيَّةٌ (۸)
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يَسْمِ اَسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى ۚ الَّذِى خَلَقَ فَتَوٰى ۚ وَالَّذِى
قَدَّرَ فَهَدٰى ۚ وَالَّذِى اَخْرَجَ الْمَرْصٰى ۚ فَجَعَلَهُ غُثًا
اَخْوٰى ۚ سَتَقْبُرُوْكَ فَاَلَا تَتَسَوٰى ۚ اِلَّا مَا شَاءَ اللّٰهُ ۚ اِنَّهُ
بِعِلْمِ الْجَهْرِ وَمَا يَخْفٰى ۚ وَنُيُّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۚ فَذَكِّرْ ۚ

مَنْزِل

ईमानदारों का आग में डाल दिया गया. रिवायत है कि जो मुमिन आग में डाल गए, अल्लाह तआला ने उनके आग में पड़ने से पहले उनकी रूहें निकाल कर उन्हें निजात दो और आग ने झाड़ के किनारों से बाहर निकल कर किनारे पर बैठ हुए काफ़िरों का जला दिया. इस वाक़ए में मुमिनों का सत्र और मक्के वालों की यातनाओं पर सत्र और ज़ब्त से काम लेने की तर्गीय फ़रमाई गई.

- (९) आग में जला कर.
- (१०) और अपने कुफ़्र से बाज़ न आए.
- (११) आख़िरत में बदला उनके कुफ़्र का.
- (१२) दुनिया में, कि उसी आग में उन्हें जला डाला. यह बदला है मुसलमानों को आग में डालने का.
- (१३) जब वह ज़ालिमों को अज़ाब में पकड़े.
- (१४) यानी पहल दुनिया में पैदा करे फिर क़यामत में कर्मों की जज़ा देने के लिये, मौत के बाद, दोबारा ज़िन्दा करे.
- (१५) जिन का काफ़िर, नबियों अलैहिमुसलाम के मुकाबिल लाए.
- (१६) जो अपने कुफ़्र के कारण हलाक किये गए.
- (१७) ऐ सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैव वसल्लम, आपकी उम्मत के.
- (१८) आपको और कुरआने पाक को जैसा कि पहले काफ़िरों का तरीका था.
- (१९) उससे उन्हें कोई बचाने वाला नहीं.

८६ - सूरए तारिक

- (१) सूरए तारिक मक्के में उतरी, इसमें एक रूकू, सतरह आयतें, इकसठ कलिम, दो सौ उन्नालीम अक्षर हैं.
- (२) यानी सितारे की, जो रात का चमकता है. एक रात सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैव वसल्लम की ख़िदमत में अबू तालिब कुछ हदिया लाए. हुज़ूर उसको ग्रा रहे थे. इस बीच में एक ताग टूटा और सारे वातावरण में आग भर गई. अबू तालिब घबरा कर कदने लगे यह क्या है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैव वसल्लम ने फ़रमाया यह सितारा है जिससे शैतान मार जाते हैं और यह

अल्लाह की कुदरत की विशालियों में से है. अबू तालिब को इससे तअज्जुब हुआ और यह सूरत उतरी.

(३) उसके सब की तरफ से जो उसके कर्मों की निगहबानी करे और उसकी नेकी बर्दी सब लिख ले. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मुराद इससे फ़रिश्ते हैं.

(४) ताकि वह जाने कि उसका पैदा करने वाला उसको मौत के बाद जज़ा के लिये ज़िन्दा करने पर कादिर है इसलिये उसको जज़ा के दिन के लिये अमल करना चाहिये.

(५) यानी मर्द और औरत के तुलकों से जो बच्चेदाती में मिल कर एक हो जाते हैं.

(६) यानी मर्द की पीठ से और औरत के सीने के मक्काम से. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया सीने के उस मक्काम से जहाँ पर हार पहना जाता है और उन्हीं से मन्कूल है कि औरत की दोनों छातियों के बीच से. यह भी कहा गया है कि वीर्य इन्सान के तमाम अंगों से निकलता है और उसका ज़्यादा हिस्सा दिमाग से मर्द की पीठ में आता है और औरत के बदन के अगले हिस्से की बहुत सी रंगों में जो सीने की जगह पर हैं, उतरता है. इसी लिये इन दोनों जगहों का ज़िक्र विशेष रूप से फ़रमाया गया.

(७) यानी मौत के बाद ज़िन्दगी की तरफ लौटा देने पर.

(८) दुमी बातों से मुराद अक़ीदे और नियतों और वो कर्म हैं जिनको आदमी छुपाता है. क़यामत के दिन अल्लाह तआला उन सबको ज़ाहिर कर देगा.

(९) यानी जो आदमी दोबारा उठाए जाने का इत्कारी है, न उसको ऐसी कुबत होगी जिससे अज़ाब को रोक सके, न उसका कोई ऐसा मददगार होगा जो उसे बचा सके.

(१०) जो ज़मीनी पैदावार पेड़ पौधों के लिये बाप की तरह है.

(११) और तबातान (वतर्पति) के लिये माँ की तरह है. ये दोनों अल्लाह तआला की अजीब नेअमतें हैं और इनमें अल्लाह की कुदरत के अनगिन विशाल मौजूद हैं जिनमें शौर करने से आदमी को मौत के बाद उठाए जाने की बहुत सी दलीलें मिलती हैं.

(१२) कि सत्य असत्य में फ़र्क और इम्तियाज़ कर देता है.

(१३) जो निकम्मी और बेकार हो.

(१४) और अल्लाह के दीन को मिटाने और सच्चाई के तूर को बुझाने और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तक्लीफ़ पहुँचाने के लिये तरह तरह के दाँव करते हैं.

(१५) जिसकी उन्हें ख़बर नहीं.

(१६) ए नवियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(१७) कुछ राज़, कि वो जल्द ही हलाक किये जाएंगे. चुनान्ते ऐसा ही हुआ और बद्र में उन्हें अल्लाह के अज़ाब ने पकड़ा.

८७ - सूरए अल-अअला

(१) सूरए अल-अअला मक्की है. इसमें एक सूक़, उन्नीस आयतें, बहतर कलिमे, दो सौ इकरनचे अक्षर हैं.

(२) यानी उसका ज़िक्र अज़मत और ऐहदिराम के साथ करो. हदीस में है जब यह आयत उतरी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया इमका अपने सज़दे में दाख़िल करो यानी सज़दे में सुन्नाना रब्बियल अअला कहाँ. (अबू दाऊद)

(३) यानी हर चीज़ की पैदाइश ऐसी मुनासिब फ़र्माई जो पैदा करने वाले के इल्म और हिकमत पर दलालत करती है.

(४) यानी सारी बातों के पहले से लिख दिया और उनकी तरफ़ राह दी या ये मानी है कि रोज़ियाँ मुक़द्दर की और उन्हें हासिल करने की तक्दीर बताई.

(५) यह अल्लाह तआला की तरफ़ से अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को खुशख़बरी है कि आपको क़ुरआन याद करने की नेअमत वेमहन्नत अता फ़रमाई और यह आपका चमत्कार है कि इतनी बड़ी किनाय बग़ैर मेहन्नत व मशक्कत और बिना वाग़ वार दोहराए आपको याद हो गई.

(६) मुफ़सिरो ने फ़रमाया कि ये इस्तसना बाक़े न हुआ और अल्लाह तआला ने न चाहा कि आप कुछ भूलें. (जुमल)

(७) कि वही तुम्हें वेमहन्नत याद रहेगी. मुफ़सिरो का एक क़ौल यह है कि आसानी के सामान से इस्लामी शरीअत मुराद है जो

तो तुम नसीहत फ़रमाओ^(८) अगर नसीहत काम दे^(९) बहुत जल्द नसीहत मानेगा जो डरता है^(१०) और उसे^(११) से वह बड़ा बदबख्त दूर रहेगा^(१२) जो सब से बड़ी आग में जाएगा^(१३) फिर न उसमें मरे^(१४) और न जिये^(१५) वेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुआ^(१६) और अपने रब का नाम लेकर^(१७) नमाज़ पढ़ी^(१८) बल्कि तुम जीती दुनिया को तरजीह देते हो^(१९) और आखिरत बेहतर और वाकी रहने वाली^(२०) वेशक यह^(२१) अगले सहीफ़ों (धर्मग्रन्थों) में है^(२२) इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में^(२३)

८८ - सूरए अल-गाशियह

सूरए अल-गाशियह मक्क़े में उतरी, इसमें २६ आयतें, एक रकू है।

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) वेशक तुम्हारे पास^(२) उस मुसीबत की ख़बर आई जो छा जाएगी^(३) कितने ही मुंह उस दिन ज़लील होंगे^(४) काम करें मशक्क़त झेलें^(५) जाएं भड़कती आग में^(६) निहायत जलते चश्मे का पानी पिलाए जाएं^(७) उनके लिये कुछ खाना नहीं मगर आग के काँटे^(८) कि न मोटापा लाएं और न भूख में काम दें^(९) कितने ही मुंह उस दिन चैन में हैं^(१०) अपनी कोशिश पर राज़ी^(११) बलन्द वाग़ में^(१२)

عَمَّة ۸۳۲

إِنْ تَفْعَلِ الْكَرَّ سَيَكُونُ يَحْتَمِلُ ۖ وَ
يَجْتَنِبُهَا الْأَشْءُ ۖ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَى ۖ ثُمَّ
لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۖ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى ۖ وَ
ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ۖ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۖ
وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۖ إِنَّ هَذَا لَفِي الضُّعْفِ الْأُولَى ۖ
صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ۖ

سُورَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ (۸۸)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ۖ وَجُودٌ يُومِئِدُ خَاشِعَةً ۖ
عَامِلَةٌ تَأْسِبَةُ ۖ نَارًا حَامِيَةً ۖ تَسْفُ مِنْ
عَيْنٍ إِنِّيهِ ۖ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ صَرْفٍ ۖ لَا يُؤْمِنُ
وَلَا يُغْنِي عَنْ جُودٍ ۖ وَجُودٌ يُومِئِدُ تَائِعَةً ۖ
لَسَعِيهَا رَاضِيَةً ۖ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۖ لَا تَسْمَعُ فِيهَا

مَثَلٌ

अत्यन्त सरल और आसान है।

(८) इस क़ुरआने मजीद से।

(९) और कुछ लोग इससे फ़ायदा उठाएं।

(१०) अल्लाह तआला से।

(११) उपदेश और नसीहत।

(१२) कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि यह आयत बलीद बिन मुगीरह और उतबह बिन रबीआ के हक़ में उतरी।

(१३) कि मर कर ही अज़ाब से छूट सके।

(१४) ऐसा जीना जिससे कुछ भी आराम पाए।

(१५) ईमान लाकर, या ये मानी हैं कि उसने नमाज़ के लिये तहास्त की। इम सूस्त में आयत से नमाज़ के लिये बुज़ और स्नान साबित होता है। (तफ़सीर अहमदी)

(१६) यानी शुरू की तकबीर कहकर।

(१७) पंजगाना। इस आयत से शुरू की तकबीर साबित हुई और यह भी साबित हुआ कि वह नमाज़ का हिस्सा नहीं है क्योंकि नमाज़ का उस पर अतक किया गया है और यह भी साबित हुआ कि नमाज़ की शुरुआत अल्लाह तआला के हर नाम से जायज़ है। इस आयत की तफ़सीर में यह कहा गया है कि 'तज़क्का' यानी जो सुथरा हुआ से सदक़ए फ़िज देना और रब का नाम लेने से ईदगाह के रास्ते में तकबीरें कहना और नमाज़ से ईद की नमाज़ मुराद है। (मदारिक व अहमदी)

(१८) आखिरत पर, इसी लिये वो अमल नहीं करते जो वहाँ काम आएँ।

(१९) यानी सुथरों का मुराद को पहुंचना और आखिरत का बेहतर होना।

(२०) जो क़ुरआने करीम से पहले नाज़िल हुए।

८८ - सूरए अल-गाशियह

(१) सूरए गाशियह मक्क़ी है इसमें एक रकू, छब्बीस आयतें, बानवे कलिमे, तीन सौ इक्यासी अक्षर हैं।

(२) ऐ सेयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम।

(३) ख़ल्क पर, इससे मुराद क़यामत है जिसकी सज़ियाँ हर चीज़ पर छा जाएंगी।

कि उसमें कोई बेहूदा बात न सुनें (११) उसमें बहता चश्मा है (१२) उसमें बलन्द तख्त हैं (१३) और चुने हुए कूजे (१४) और बराबर बराबर बिछे हुए कालीन (१५) और फैली हुई चांदनियाँ (१६) तो क्या ऊँट को नहीं देखते कैसा बनाया गया (१७) और आसमान को कैसा ऊँचा किया गया (१८) और पहाड़ों को कि कैसे कायम किये गए (१९) और ज़मीन को कि कैसे बिछाई गई (२०) तो तुम नसीहत सुनाओ (२१) तुम तो यही नसीहत सुनाने वाले हो (२२) तुम कुछ उनपर करोड़ा नहीं (२३) हाँ जो मुंह फेरे (२४) और कुफ़्र करे (२५) तो उसे अल्लाह बड़ा अज़ाब देगा (२६) बेशक हमारी ही तरफ़ उनका फिरना है (२७) फिर बेशक हमारी ही तरफ़ उनका हिसाब है (२८)

८९ - सूरए फ़ज्र

सूरए फ़ज्र मक्के में उतरी, इसमें ३० आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) उस सुबह की कसम (२) और दस रातों की (३) और जुप्त और ताक़ की (४) और रात की जब चल दे (५) क्यों इसमें अक्लमन्द के लिये कसम हुई (६) क्या तुमने न देखा (७) तुम्हारे रब ने आद के साथ कैसा किया (८) वो इरम हद से ज़्यादा लम्बाई वाले (९) कि उन जैसा शहरों

سُورَةُ الْفَجْرِ ۝ ۸۳ ۝ عَمَّ

لَاغِيَةً ۝ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝ فِيهَا سُرٌّ مَّرْفُوعَةٌ ۝
وَأَكْوَابٌ مَوْضُوعَةٌ ۝ وَنَارٌ مَّصْفُوفَةٌ ۝ وَزُرَّائِنٌ
مَبْشُورَةٌ ۝ أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِلَهِ كَيْفَ خَلَقَتْ ۝ وَ
إِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝ وَرَأَى الْجِبَالَ كَيْفَ
نُصِبَتْ ۝ وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝ فَذَكِّرْ إِنَّمَا
أَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيِّطٍ ۝ إِلَّا مَنْ
تَوَلَّى وَكَفَرَ ۝ فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝
إِنَّمَا إِلَهُ الْبَنَى ۝ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۝

سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ (۱۰) رَحْمَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْفَجْرِ ۝ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝ وَالْإِيلِ إِذَا
يَسِرُّ ۝ هَلْ فِي ذَلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حَمِيرٍ ۝ كَيْفَ
فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝ إِرَامَ دَابَّ الْعِمَادِ ۝ الَّتِي لَمْ يُخَلِّقْ

مِثْلَ

- (४) हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया इससे बां लांग मुराद हैं जो इस्लाम पर न थे, वुत पूजते थे या किताबी काफ़िर जैसे पादरी और पुजारी, उन्होंने मेहनत भी उठाई, मशक्कतें भी झेली और नतीजा यह हुआ कि जहन्नम में गए।
- (५) अज़ाब तरह तरह का होगा और जो लोग अज़ाब दिये जाएंगे उनके बहुत तबके होंगे, कुछ की ज़क़ूम खाने का दिया जाएगा, कुछ को मिरलीन (दोज़खियों का पीप), कुछ को आग के काँटे।
- (६) याती उससे ग़िज़ा का नफ़ा हासिल न होगा क्योंकि ग़िज़ा के दो फ़ायदे हैं एक भूख की तकलीफ़ दूर करे दूसरे यह कि बदन को मोटा करे, ये दोनों विशेषताएँ जहन्नमियों के खाने में नहीं, बल्कि वो सज़ा अज़ाब है।
- (७) ऐश और खुशी में और नेअमत व करामत में।
- (८) याती उस अमल और ताअत पर जो दुनिया में बजा लाए थे।
- (९) चश्मे के किनारों पर जिनके देखने से भी लज़ज़त हासिल हो और जब पीता चाहें तो वो भरे मिलें।
- (१०) इस सूरत में जन्नत की नेअमतों का ज़िक्र गुनकर काफ़िरों ने आश्चर्य किया और झुटलाया तो अल्लाह तआला उन्हें अपने अज़ाबसे सनअत में नज़र करने की हिदायत फ़रमाता है ताकि वो समझें कि जिस कादिर हिकमत वाले ने दुनिया में ऐसी अजीब अनोखी चीज़ें पैदा की हैं उसकी कुदरत से जन्नती नेअमतों का पैदा फ़रमाता, किस तरह आश्चर्य जनक और इन्कार के काबिल हो सकता है, चुनान्वे इरशाद फ़रमाता है।
- (११) बग़ैर सुतून के।
- (१२) अल्लाह तआला की नेअमतों और उसकी कुदरत की दलीलें बयात फ़रमा कर।
- (१३) कि जन्न करो, (यह आयत किताब की आयत से मन्सूख हो गई)
- (१४) ईमान लाने से।
- (१५) नसीहत के बाद।
- (१६) आख़िरत में कि उसे जहन्नम में दाख़िल करेगा।
- (१७) मौत के बाद।

८९ - सूरए फ़ज्र

- (१) सूरए फ़ज्र मक्की है, इसमें एक रकू, उन्तीस या तीस आयतें, एक सौ उन्तालीस कलिमे, पाँच सौ सत्तरवें अक्षर हैं।

में पैदा न हुआ^(१८) और समुद्र जिन्होंने ने वादी में^(१९) पत्थर की चट्टानें काटीं^(२०) और फिर औन कि चौमेखा करता^(२१) जिन्होंने शहरों में सरकशी को^(२२) फिर उनमें बहुत फ़साद फैलाया^(२३) तो उनपर तुम्हारे रब ने अज़ाब का कोड़ा कुव्वत से मारा^(२४) बेशक तुम्हारे रब की नज़र से कुछ शायब नहीं^(२५) लेकिन आदमी तो जब उसे उसका रब आजमाए कि उसको जाह और नजेमत दे जब तो कहता है मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी^(२६) और अगर आजमाए और उसका रिज़क उसपर तंग करे तो कहता है मेरे रब ने मुझे ज़लील किया^(२७) यूँ नहीं^(२८) बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते^(२९) और आपस में एक दूसरे को मिस्कीन (दरिद्र) के खिलाने की रागबत नहीं देते^(३०) और मीरास का माल हप हप खाते हो^(३१) और माल की बहुत महव्वत रखते हो^(३२) हाँ हाँ जब ज़मीन टकराकर पाश पाश कर दी जाए^(३३) और तुम्हारे रब का हुक्म आए और फ़रिश्ते क्रतार क्रतार^(३४) और उस दिन जहन्नम लाई जाए^(३५) उस दिन आदमी सोचेगा^(३६) और अब उसे सोचने का वक़्त कहाँ^(३७) कहेगा, हाय किसी तरह मैं ने जीते जी नेकी आगे भेजी होती^(३८) तो इस दिन उसका सा अज़ाब^(३९) कोई नहीं करता^(४०) और उसका सा बांधना कोई नहीं बांधता^(४१)

مِثْلَهَا فِي الْبِلَادِ ۖ وَتَمُودَ الَّذِي جَاءَ بِالصَّخْرِ بِالْوَادِ ۖ
وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۚ الَّذِينَ طَعَوْا فِي الْبِلَادِ ۖ
فَاكْثُرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۖ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ
عَذَابٍ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَبَاسُ صُدُودٍ ۚ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا
مَّا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ
وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي
أَهَانَنِ ۚ كَلَّا بَلْ لَا تَنْكُرُونَ الْيَتِيمَ ۚ وَلَا تَحْضُونِ
عَلَىٰ طَعَامِ الْمَسْكِينِ ۚ وَتَأْكُلُونَ التَّرَائِفَ أَكْلًا لَّمًّا ۚ
وَتُخْبِتُونَ أَمْوَالَ الْغَنَىٰ جُبْنَ ۚ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا
دَكًّا ۚ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالسَّكَّابُ صَفًّا ۚ وَجَاءَ يَوْمَئِذٍ
بِجَهَنَّمَ ۚ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ۚ
يَقُولُ يٰلَيْتَنِي قَدَّمْتُ حِيَاطِي ۖ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ
عَذَابَهُ أَحَدٌ ۚ وَلَا يُؤْتِيهِمْ شَاقَّةً أَحَدٌ ۚ يٰكَايِبُتْهَا

منك

- (२) इससे मुराद या पहली मुहर्रमुल हगम की सुक़ है जिससे साल शुरू होता है या पहली ज़िलहज की जिससे दस रातें मिली हैं या इंदुल अदहा की सुक़ और कुछ मुफ़सिरों ने फ़रमाया कि इससे मुराद हर दिन की सुक़ है क्योंकि वह रात के गुज़रने और रौशनी के ज़ाहिर होने और तमाम जानदारों के रोज़ी की तलाश में मुत्ताशिर होने का वक़्त है और यह मुदों के क़ब्रों से उठने के वक़्त के साथ मुशाबिहत और मुतासिबत रखता है।
- (३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि इन से मुराद ज़िलहज की पहली दस रातें हैं क्योंकि यह ज़माना हज के कामों में मशगूल होने का ज़माना है और हदीस शरीफ़ में इस अशरे की बहुत फ़ज़ीलतें आई हैं और यह भी रिवायत है कि रमज़ान के आश्विरी अशरे की रातें मुराद हैं या मुहर्रम के पहले अशरे की।
- (४) हर चीज़ के या उन रातों के या दमाज़ों के और यह भी कहा गया है कि जुफ़्त से मुराद ख़ल्क और तारक़ से मुराद अल्लाह तआला है।
- (५) यानी गुज़रे, यह पाँचवी फ़िस्म है आम रात की, इससे पहले दस ख़ास रातों की फ़िस्म ज़िक्र फ़रमाई गई, कुछ मुफ़सिरीन फ़रमाते हैं कि इससे ख़ास मुज़दलिफ़ा की रात मुराद है, जिसमें अल्लाह के बन्दे अल्लाह की ताअत के लिये जमा होते हैं, एक फ़ौल यह है कि इससे शबे क़द्र मुराद है जिसमें रहमत का नुज़ूल होता है और जो सवाब की बहुतात के लिये विशेष है।
- (६) यानी ये बातें समझ वालों के लज़्ज़ाफ़ ऐसी अज़मत रखती हैं कि ख़बरों को उनके साथ मुअक्कद करना शायी है क्योंकि ये ऐसे अज़ायब और दलीलों पर आधारित हैं जो अल्लाह तआला की तौहीद और उसकी ख़ूबियत पर दलालत करती हैं और जवाबे क़सम यह है कि काफ़िर ज़ग्न अज़ाब किये जाएंगे, इस जवाब पर अगली आयतें दलालत करती हैं।
- (७) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम।
- (८) जिनके क़द बहुत लम्बे थे उन्हें आदे इरम और आद उल्ला कहते हैं, तात्पर्य इससे मक्के वालों की ख़ौफ़ दिलाना है कि आदे उल्ला जिनकी उम्र बहुत ज़्यादा और क़द बहुत लम्बे और अत्यन्त शक्तिशाली थे उन्हें अल्लाह तआला ने हलाक कर दिया तो ये काफ़िर अपने आपको क्या समझते हैं और अज़ाबे इलाही से क्यों बेग़मूफ़ हैं।
- (९) ज़ोर और कुव्वत और क़द की लम्बाई में, आद के बेटों में से शदाद भी है जिसने दुनिया पर बादशाहत की और तमाम बादशाह उसके मुतीअ हो गए और उसने जन्नत का ज़िक्र सुनकर सरकशी के तौर पर दुनिया में जन्नत बनानी चाही और इस इरादे से एक विशाल शहर बनाया जिसके महल सोने चाँदी की ईंटों से तामीर किये गए और जबरजद और याकूत के सुतून उसकी इमारतों में लगाए गए और ऐसे ही फ़र्श मकानों और रातों में बनाए गए, संगरज़ों की जगह चमकदार मांती बिछाए गए, हर महल के चारों तरफ़ जवांहरात पर नेहरें जारी की गईं, फ़िस्म फ़िस्म के दरज़त सजे सजाए लगाए गए, जब यह शहर पूरा हुआ तो शदाद बादशाह

ऐ इत्मीनान वाली जान^(१३) (२७) अपने रब की तरफ वापस हो यूँ कि तू उससे राजी वह तुझ से राजी (२८) फिर मेरे खास बन्दों में दाखिल हो (२९) और मेरी जन्नत में आ (३०)

९० - सूरए बलद

सूरए बलद मक्के में उतरी, इसमें २० आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) मुझे इस शहर की कसम^(२) (१) कि ऐ मेहबूब, तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो^(३) (२) और तुम्हारे बाप इब्राहीम की कसम और उसकी औलाद की कि तुम हो^(४) (३) बेशक हमने आदमी को मशक़क़त में रहता पैदा किया^(५) (४) क्या आदमी यह समझता है कि हरगिज़ उस पर कोई कुदरत नहीं पाएगा^(६) (५) कहता है मैं ने ढेरों माल फ़ना कर दिया^(७) (६) क्या आदमी यह समझता है कि उसे किसी ने न देखा^(८) (७) क्या हमने उसकी दो आँखें न बनाई^(९) (८) और ज़वान^(१०) और दो होंट^(११) (९) और उसे दो उभरी चीज़ों की राह बताई^(१२) (१०) फिर बेझिजक घाटी में न कूदा^(१३) (११) और तूने क्या जाना वह घाटी क्या है^(१४) (१२) किसी बन्दे की गर्दन छुड़ाना^(१५) (१३) या भूख के दिन खाना देना^(१६) (१४) रिश्तेदार यतीम को^(१७) (१५) या खाकनशीन मिस्कीन को^(१८) (१६) फिर हो उनसे जो ईमान लाए^(१९) (१७) और उन्होंने ने आपस में सब्र की वसीयतें कीं^(२०) (१८) और आपस में मेहरबानी की वसीयतें कीं^(२१) (१९)

النَّفْسُ الطَّيِّبَةُ ۖ أَرْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۖ فَادْخُلِي فِي عِبْدِي ۖ وَأَدْخُلِي جَنَّتِي ۖ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا أَفْهَمُ يَهْدَا الْبَلَدَ ۖ وَأَنْتَ حَلٌّ يَهْدَا الْبَلَدَ ۖ وَالْإِلَهُ وَمَا وَلَدَ ۖ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ ۖ

أَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ۖ يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُبَدًا ۖ أَيْحَسِبُ أَنْ لَمْ يَرِكْ أَحَدٌ ۖ أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۖ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۖ وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۖ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۖ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۖ فَكَيْ رَقَبَةٍ ۖ أَوْ لَطَعُمُ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۖ يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۖ أَوْ مَسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۖ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۖ

अपने सरदारों के साथ उसकी तरफ़ रवाना हुआ। जब एक मंज़िल दूरी बाकी रही तो आसमान से एक हौलनाक आवाज़ आई जिससे अल्लाह तआला ने उन सबको हलाक कर दिया। हज़रत अमीरे मुआवियह के एहद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़लाबह अदन के सहरा में अपने खोए हुए ऊंट तलाश करते हुए उस शहर में पहुँचे और उसकी सारी सजावट देखी और कोई रहने बसने वाला न पाया। थोड़े से जवाहरात वहाँ से लेकर चले आए। यह ख़बर अमीर मुआवियह को मालूम हुई उन्होंने उन्हें बुलाकर हाल पूछा। उन्होंने सारी कहानी सुनाई तो अमीर मुआवियह ने कअब अहबार को बुलाकर दरिपास्त किया कि क्या दुनिया में कोई ऐसा शहर है। उन्होंने फ़रमाया हाँ जिसका ज़िक्र कुरआने पाक में भी आया है। यह शहर शद्दाद बिन आद ने बनाया था। वो सब अल्लाह के अज़ाब से हलाक हो गए। उनमें से कोई बाक़ी न रहा और आपके ज़माने में एक मुसलमान सुख़ रंग, कबूद चश्म, छोटे कद का जिसकी भी पर एक तिल होगा अपने ऊंट की तलाश में दाख़िल होगा फिर अब्दुल्लाह बिन क़लाबह को देखकर फ़रमाया ख़ुदा की कसम यही वह शख्स है। (१०) यानी वादिये कुरा में। (११) और मकान बनाए। उन्हें अल्लाह तआला ने किस तरह हलाक किया। (१२) उसको जिस पर वह गुस्सा होता था। अब आद व समूद और फिरऔन, इन सब की निरबत इरश़ाद होता है। (१३) और गुनाहों और गुमराही में इन्तिहा को पहुँचे और अब्दियत की हद से गुज़र गए। (१४) कुफ़्र और क़त्ल और जुल्म करके। (१५) यानी इज़ज़त व ज़िल्लत, दौलत व ग़रीबी पर नहीं। यह उसकी हिकमत है, कभी मुख़लिस बन्दे को मुख़लिसी में मुश्किला कर देता है। इज़ज़त और ज़िल्लत का आधार, ताअत और गुमराही पर है। काफ़िर इस हकीकत को नहीं समझते। (१६) और दौलतमन्द होने के बावजूद उनके साथ अच्छा सुलूक नहीं करते और उन्हें उनके अधिकार नहीं देते जिनके वो वारिस हैं। मुख़तिल ने कहा कि उमैया बिन ख़लफ़ के पास क़दामह बिन मज़ज़न यतीम थे वह उन्हें उनका हक़ नहीं देता था। (१७) और हलाल हराम का अन्तर नहीं रखते और औरतों और बच्चों को विसर्ग नहीं देते, उनके हिस्से ख़ुद खा जाते हो। जिहालत के ज़माने में यही तरीक़ा था। (१८) उसको ख़र्च करना ही नहीं चाहते। (१९) और उसपर पहाड़ और इमारत किसी चीज़ का नामो निशान न रहे।

ये दाईं तरफ वाले हैं^(१९) (१८) और जिन्होंने हमारी आयतों से कुफ्र किया वो बाएं तरफ वाले^(२०) (१९) उनपर आग है कि उसमें डाल कर ऊपर से बन्द कर दी गई^(२१) (२०)

१९ - सूरए शम्स

सूरए शम्स मक्के में उतरी, इसमें १५ आयतें, एक सूकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) सूरज और उसकी रौशनी की क्रसम^(२) (१) और चांद की जब उसके पीछे आए^(३) (२) और दिन की जब उसे घमकाए^(४) (३) और रात की जब उसे छुपाए^(५) (४) और आसमान और उसके बनाने वाले की क्रसम^(६) (५) और जमीन और उसके फैलाने वाले की क्रसम^(७) (६) और जान की और उसकी जिसने उसे ठीक बनाया^(८) (७) फिर उसकी वदकारी और उसकी परहेजगारी दिल में डाली^(९) (८) बेशक मुराद को पहुंचाया जिसने उसे^(१०) सुधरा किया^(११) (९) और नामुराद हुआ जिसने उसे मअसियत में छुपाया^(१२) (१०) समूद ने अपनी सरकशी से झुटलाया^(१३) (११) जब कि उसका सबसे वदबख्त^(१४) उठ खड़ा हुआ^(१५) (१२) तो उनसे अल्लाह के रसूल^(१६) ने फरमाया अल्लाह के नाक्रे^(१७) (ऊंटनी) और उसके पीने की वारी से बचो^(१८) (१३) तो उन्होंने उसे झुटलाया फिर नाक्रे की कूचें काट दीं तो उनपर उनके रब ने उनके गुनाह के कारण^(१९) तवाही डालकर वह बस्ती वरावर कर दी^(२०) (१४) और उसके पीछा करने का उसे डर नहीं^(२१) (१५)

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَزِيدُهُم
هُم أَصْحَابُ الشُّمُولِ ۖ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤَصَّدَةٌ ۖ
سُورَةُ الشَّمْسِ (۹۱) (۲۶)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَالشَّمْسُ وَضُحَاهَا ۖ وَالْقَمَرُ إِذَا تَلَّهَا ۖ وَالنَّهَارُ
إِذَا جَلَّهَا ۖ وَاللَّيْلُ إِذَا يَغْشَاهَا ۖ وَالسَّمَاءَ وَمَا
بَنَاهَا ۖ وَالْأَرْضَ وَمَا طَرَاهَا ۖ وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۖ
فَالْهَمَّهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ۖ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ رَزَّاهَا ۖ
وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ۖ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۖ
إِذِ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا ۖ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ
اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۖ فَكَذَّبُوهُ فَفَعَلُوا مَا كَانُوا يَكْفُرُونَ
عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ يَدْبُرُهُمُ فَتُونَاهَا ۖ وَلَا يَخَافُ
عُقُوبَهَا ۖ

- (२०) जहन्नम की सत्तर हज़ार वार्गे होंगी। हर बाग पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जमा होकर उसको खींचेंगे और वह जोश और ग़ज़ब में होगी यहाँ तक कि फ़रिश्ते उसको अर्श के बाएं तरफ लाएंगे। उस रोज़ सब नफ़सी नफ़सी कहते होंगे सिवाए हुज़ूर पुरनूर हबीबे मुदा सैयिदुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के, कि हुज़ूर यारब्बे उम्मीती उम्मीती फ़रमाते होंगे। जहन्नम हुज़ूर से अर्ज़ करेगी कि ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम, आपका मेरा क्या वास्ता। अल्लाह तआला ने आपको मुझपर हराम किया है। (जुमल)
- (२१) और अपनी तक्रसीर अर्थात् दोष को समझेगा।
- (२२) उस वक्ल का सोचना समझना कुछ फ़ायदे का नहीं।
- (२३) यानी अल्लाह का सा।
- (२४) जो ईमान और यक़ीन पर डटी रही और अल्लाह तआला के हुक्म के आगे इताअत की गर्दन झुकाती रही। यह मूमिन से मौत के वक्ल कहा जाएगा जब दुनिया से उसके सफ़र करने का समय आया।

१० - सूरए बलद

- (१) सूरए बलद मक्की है, इसमें एक सूकू, बीस आयतें, बयासी कलिमे, तीन सौ बीस अक्षर हैं।
- (२) यानी मक्कए मुकर्रमा की।
- (३) इस आयत से मालूम हुआ कि यह अज़मत मक्कए मुकर्रमा को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रौनक अफ़रोज़ी की बदौलत हासिल हुई।
- (४) एक क़ौल यह भी है कि वालिद से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और औलाद से आपकी उम्मत मुराद है। (हुसैनी)
- (५) कि गर्भ में एक तंग और तारीक मक़ान में रहे। पैदाइश के वक्ल तकलीफ़ उठाए, दूध पीने, दूध छोड़ने, रोज़ी हासिल करने और ज़िन्दगी और मौत की मशक़क़तों को बर्दाश्त कर ले।
- (६) यह आयत अबुल अशद उसैद बिन क़िन्नदह के बारे में उतरी। वह निहायत शक्तिशाली और ज़ोरावर था और उसकी त्राक़त का यह आलम था कि चमड़ा पाँव के नीचे दबा लेता था। दस दस आदमी उसको खींचते और वह फट कर टुकड़े टुकड़े हो जाता मगर जितना उसके पाँव के नीचे होता हरगिज़ न निकल सकता। और एक क़ौल यह है कि यह आयत वलीद बिन मुगीरह के हक़ में उतरी। मानी यह है कि ये क़ाफ़िर अपनी कुब्रत पर घमण्ड करने वाला मुसलमानों को कमज़ोर समझता है। किस गुमान में है।

१२ - सूरए लैल

सूरए लैल मक्के में उतरी, इसमें २१ आयतें, एक सूकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान-रहमत वाला (१) और रात की क्रम जव छाए (२) और दिन की जव चमके (३) और उसे (४) की जिसने नर और मादा बनाए (५) वेशक तुम्हारी कोशिश मुखलिफ़ है (६) तो वह जिसने दिया (७) और परहेज़गारी की (८) और सबसे अच्छी को सब माना (९) तो बहुत जल्द हम उसे आसानी मुहैया कर देंगे (१०) और वह जिसने कंजूसी की (११) और वेपरवाह बना (१२) और सबसे अच्छी को झुटलाया (१३) तो बहुत जल्द हम उसे दुश्वारी मुहैया कर देंगे (१४) और उसका माल उसे काम न आएगा जब हलाकत में पड़ेगा (१५) वेशक हिदायत फ़रमाना (१६) हमारे ज़िम्मे है (१७) और वेशक आखिरत और दुनिया दोनों के हमी मालिक हैं (१८) तो मैं तुम्हें डराता हूँ उस आग से जो भड़क रही है (१९) न जाएगा उसमें (२०) मगर बड़ा बदबख़्त (२१) जिसने झुटलाया (२२) और मुंह फेर (२३) और बहुत उससे दूर रखा जाएगा जो सबसे बड़ा परहेज़गार (२४) जो अपना माल देता है कि सुधरा हो (२५) और किसी का उसपर कुछ एहसान नहीं जिसका बदला दिया जाए (२६) सिर्फ़ अपने ख़ब की रज़ा चाहता है जो सब से बलन्द है (२७) और वेशक करीब है कि वह राज़ी होगा (२८) और

अनिल

८३६

१२

سُورَةُ اللَّيْلِ مَكِّيَّةٌ (٩١)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى ۚ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى ۚ وَمَا خَلَقَ
الدُّكْرَ وَالْأُنثَى ۚ إِنْ سَعَيْكُمْ لَشَأْنِي ۚ فَأَمَّا مَنْ آعْطَى
وَآتَقَى ۚ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى ۚ فَسَنِيَرُهُ لِلْيُسْرَى ۚ وَ
أَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى ۚ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى ۚ فَسَنِيَرُهُ
لِلْعُسْرَى ۚ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّى ۚ
إِنْ عَلَيْنَا لَلْهُدَى ۚ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَى ۚ
فَأَنْذَرَكُمْ نَارًا تَلْقَوْنَ ۚ لَا يَصْلُحُهَا إِلَّا آسَفُنِي ۚ
الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۚ وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۚ الَّذِي
يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّى ۚ وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ
نِعْمَةٍ تُجْزَى ۚ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَى ۚ
وَلَسَوْفَ يَرْضَى ۚ

منزل ٤

अल्लाह सच्ची कुदरत वाले की कुदरत को नहीं जानता, इसके बाद उसका कौल नक़ल फ़रमाया।

- (७) सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुश्मनी में लोगों को रिश्तों दे दे कर, ताकि हज़ूर का आज़ार पहुंचाएं।
- (८) यानी क्या उसका यह गुमान है कि उसे अल्लाह तआला ने नहीं देखा और अल्लाह तआला उसमें नहीं सवाल करेगा कि उसने यह माल कहाँ से हासिल किया, किस काम में खर्च किया, इसके बाद अल्लाह तआला अपनी नेअमतों का जिक्र फ़रमाता है ताकि उसको इब्रत हासिल करने का मौका मिले।
- (९) जिनसे देखता है।
- (१०) जिससे बोलता है और अपने दिल की बात बयान में लाता है।
- (११) जिनसे मुंह को बन्द करता है और बात करने और खाने पीने और फूंकने में उनसे काम लेता है।
- (१२) यानी छतियों की, कि पैदा होने के बाद उनसे दूध पीता और ग़िज़ा हासिल करता रहा, मुराद यह है कि अल्लाह तआला की नेअमतें ज़ाहिर और काफ़ी हैं उनका शुक्र लाज़िम।
- (१३) यानी नेक अअमाल बना लाकर इन बड़ी नेअमतों का शुक्र अदा न किया, इसको घाटी में कूदने की उपमा दी इस मुनाग़िबत से कि इस राह में चलना नफ़स पर शाक़ है। (अदुस्सऊद)
- (१४) और उसमें कूदना क्या यानी इससे उसके ज़ाहिरी मानी मुराद नहीं बल्कि इसकी तफ़सीर वह है जो अगली आयतों में इरशाद होती है।
- (१५) गुलामी से, चाहे इस तरह हो कि किसी गुलाम को आज़ाद कर दे या इस तरह कि मक़ातिब का इतना माल दे जिससे वह आज़ादी हासिल कर सके या किसी गुलाम को आज़ाद कराने में मदद करे या किसी असीर या कर्ज़दार के रिहा कराने में सहायता दे और ये मानी भी हो सकते हैं कि नेक कर्म इज़्तिहार करके अपनी गर्दन आखिरत के अज़ाब से छुड़ाए। (रुहुल बयान)
- (१६) यानी क़हत और मंहगई के वक्त कि उस वक्त माल निकालना नफ़स पर बहुत शाक़ और अज़े अज़ीम का मूजिब हाता है।
- (१७) जो विहायत तंगदस्त और गरीब हो, न उसके पास ओढ़ने को हो न बिछाने को, हदीस शरीफ़ में है कि यतीमों और भिस्कीनों की मदद करने वाला, जिहाद में कोशिश करने वाले और बेतक़ान रात भर जागने वाले और हमेशा रोज़ा रखने वाले की तरह है।
- (१८) यानी ये तमाम काम जब मक़बूल हैं कि काम करने वाला ईमानदार हो और जबही उसको कहा जाएगा कि घाटी में कूदा और अगर ईमानदार नहीं तो कुछ नहीं, सब कर्म व्यर्थ, बेकार।

- (१९) सुखीबतों से बाज़ रहने और ताअतों के बजा लाने और उन मशक्कतों के बर्दाश्त करने पर जिन में मूमिन मुजिला हों।
- (२०) कि ईमान वाले एक दूसरे के साथ महबूत और शफ़्फ़त का सुलूक करें।
- (२१) जिन्हें उनके अअमाल-नाम दिए हाथ में दिये जाएंगे और अर्श की दाई ओर से जन्नत में दाखिल होंगे।
- (२२) कि उन्हें उनके अअमाल-नाम बाएं हाथ में दिये जाएंगे और अर्श की बाई ओर से जहन्नम में दाखिल किये जाएंगे।
- (२३) कि न उसमें बाहर से हवा आ सके न अन्दर से थूँआ बाहर जा सके।

९१ - सूरए शम्स

- (१) सूरए शम्स मक्की है, इसमें एक रकू, पन्द्रह आयतें चबन कलिम, दो सौ सैंतालीस अक्षर हैं।
- (२) यानी सूर्यास्त के बाद उदय हो। यह क़मरी महीने के पहले पन्द्रह दिन में होता है।
- (३) यानी सूरज को ख़ूब बाज़ेह करे क्योंकि दिन सूर्य के प्रकाश का नाम है तो दिन जितना ज़्यादा रोशन होगा उतना ही सूरज का जुहूर ज़्यादा होगा क्योंकि प्रभाव की शक्ति और उसका क़माल प्रभावित करने वाले की शक्ति और क़माल पर दलालत करता है। या ये मानी हैं कि जब दिन दुनिया को या ज़मीन को रोशन करे या रात की तारीकी की दूर करे।
- (४) यानी सूरज को और आसमान के किनारे ज़ुलमत और अंधेरे से भर जाएं या ये मानी कि जब रात दुनिया को छुपाए।
- (५) और बहुत सी इन्द्रियों अता फ़रमाई, बोलने की, सुनने की, देखने की, सोचने समझने की, सब कुछ अता फ़रमाया।
- (६) अच्छाई और बुराई और फ़रमाँबरदारी और सरक़शी से उसे बाख़बर कर दिया और अच्छा और बुरा बता दिया।
- (७) यानी नफ़्स को।
- (८) बुराइयों से।
- (९) अपने रमूल हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को।
- (१०) केदार बिन सालिफ़, उन सब की मज़ी से ज़ेदती की कुँचें काटने के लिये।
- (११) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम।
- (१२) कां तकलीफ़ पहुंचाने।
- (१३) यानी जो दिन उसके पीने का मुक़रर है उस रोज़ यानी में छेड़ छड़ न करो ताकि तुम पर अज़ाब न आए।
- (१४) यानी हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को झुटलाने और ज़ेदती की कुँचें काटने के कारण।
- (१५) और सब को हलाक कर दिया। उनमें से कोई न बचा।
- (१६) जैसा बादशाहों को होता है क्योंकि वह मालिकूल मुल्क है, जो चाहे करे। किसी को दम मारने की मज़ाल नहीं। कुछ मुफ़र्रिसों ने इसके ये मानी भी बयान किये हैं कि हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को उनमें से किसी का ख़ौफ़ नहीं कि अज़ाब उतरने के बाद उन्हें ईज़ा पहुंचा सके।

९२ - सूरए लैल

- (१) सूरए वल-लैल मक्की है, इस में एक रकू, इक्कीस आयतें, इकहतर कलिम, तीन सौ दस अक्षर हैं।
- (२) दुनिया पर अपनी तारीकी से, कि वह वक़्त है ख़ल्क के सुकून का। हर जानदार अपने ठिकाने पर आता है और हरकत और भाग-दौड़ से साकिन होता है, और अल्लाह के मक़बूल बन्दे सच्चे दिल से स्तुति और मुनाज़ात में लग जाते हैं।
- (३) और रात के अंधेरे का दूर करे कि वह वक़्त है सोतों के जागने का और जानदारों के हरकत करने का और रोज़ी की तलाश में लग जाने का।
- (४) परम कुदरत वाला कादिर।
- (५) एक ही पानी से।
- (६) यानी तुम्हारे कर्म अलग अलग हैं, कोई ताअत बजा लाकर जन्नत के लिये अमल करता है, कोई नाफ़रमानी करके जहन्नम के लिये।
- (७) अपना माल खुदा की राह में, और अल्लाह तआला के हक़ को अदा किया।
- (८) बर्जित और हराम बातों से बचा।
- (९) यानी इस्लाम वालों को।
- (१०) जन्नत के लिये और उसे ऐसी ख़सलत की तौफ़ीक़ देंगे जो उसके लिये आसानी का सबब और राहत का कारण हो और वह ग़ैस अमल करे जिनसे उसका ख़राबी हो।
- (११) और माल नेक कामों में ख़र्च न किया और अल्लाह तआला के हक़ अदा न किये।
- (१२) सबाब और आख़िरत की नेअमत से।
- (१३) यानी मिल्लते इस्लाम को।

९३ - सूरए दुहा

सूरए दुहा मक्के में उतरी, इसमें ११ आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) चाशत की कसम (२) और रात की जब पर्व डाले (३) कि तुम्हें तुम्हारे रब ने न छोड़ा और न मकरूह जाना (४) और वेशक पिछली तुम्हारे लिये पहली से बेहतर है (५) और वेशक करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें (६) इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे (७) क्या उसने तुम्हें यतीम न पाया फिर जगह दी (८) और तुम्हें अपनी महबूत में खुदरफ़ता पाया तो अपनी तरफ़ राह दी (९) और तुम्हें हाजतमन्द पाया फिर गनी (मालदार) कर दिया (१०) तो तुम यतीम पर दबाव न डालो (११) और मंगता को न झिड़को (१२) और अपने रब की नअमत का खूब चर्चा करो (१३) (१४)

९४ - सूरए इन्शराह

सूरए इन्शराह मक्के में उतरी, इसमें ८ आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) क्या हमने तुम्हारा सीना कुशादा न किया (२) और तुम पर से तुम्हारा वह बोझ उतार लिया (३) जिसने तुम्हारी पीठ तोड़ी थी (४) और हमने तुम्हारे लिये तुम्हारा जिक्र वलन्द कर दिया (५) तो वेशक दुश्वारी के साथ आसानी है (६) वेशक दुश्वारी के साथ आसानी है (७) तो जब तुम नमाज़ से फ़ारिग हो तो दुआ में (८) मेहनत करो (९) और अपने रब ही की तरफ़ रगदत करो (१०)

سُورَةُ الدُّهَانِ مَكِّيَّةٌ (٩٣)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالضُّحَىٰ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ۝

لَلْآخِرَةِ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ ۝

فَتَرْضَىٰ ۝ الْوَجْدَ لَكَ بَيْنِنَا ۝ فَأَوْسَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ ضَالًّا ۝

فَهَدَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ۝ فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝ وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

سُورَةُ الْاِنْشَارِ مَكِّيَّةٌ (٩٤)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْمُنَشَّرَ لَكَ صَدْرُكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝

الَّذِي أَقْبَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

(१४) यानी ऐसी ख़सलत जो उसके लिये दुश्वारी और सज़्ज़ी का कारण हो और उस जहन्नम में पहुंचाए। ये आयतें हज़रत अबूबक्र सिदीक रदियल्लाहो अन्हो और उमैया बिन ख़लफ़ के हक़ में उतरीं जिनमें से एक हज़रत सिदीक परहेज़गार हैं और दूसरा उमैया बदबख़्त। उमैया इन्ने ख़लफ़ हज़रत बिलाल को, जो उसकी गुलामी में थे, दीन से फेरने के लिये तरह तरह की तकलीफ़ें देता था और इल्तिहाज़ जुल्म और सज़्ज़ियाँ करता था। एक रोज़ हज़रत सिदीक रदियल्लाहो अन्हो ने देखा कि उमैया ने हज़रत बिलाल को गर्म ज़मीन पर डालकर तपते हुए पत्थर उनके सीने पर रखे हैं और इस हाल में ईमान का कलिमा उनकी ज़बान पर जारी है। आपने उमैया से फ़रमाया, ऐ बदनसीब, एक खुदापरस्त पर सज़्ज़ियाँ क्यों करता है। उसने कहा, आपको उसकी तकलीफ़ नागवार हो तो ख़रीद लीजिये। आपने भारी क़ीमत पर उनको ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। इसपर यह सूरत उतरी। इसमें बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी कोशिशें अलग अलग हैं, हज़रत अबूबक्र रदियल्लाहो अन्हो की कोशिश और, उमैया की और, हज़रत सिदीक अल्लाह की रज़ा के तालिब हैं, उमैया हक़ की दुश्मनी में अन्धा।

(१५) मर कर क़ब्र में जाएगा या जहन्नम के गढ़े में पहुंचेगा।

(१६) यानी हक़ और बातिल की राहों को वाज़ेह कर देना और हक़ पर दलीलें और प्रमाण कायम करना और आदेश निर्देश बयान फ़रमाना।

(१७) लाज़िमी तौर से और हमेशा के लिये।

(१८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को।

(१९) ईमान से।

(२०) अल्लाह तआला के नज़्दीक, यानी उसका ख़र्च करना दिग्ग़ावे और नुमाइश से पाक है।

(२१) जब सिदीक अक़बर रदियल्लाहो अन्हो ने हज़रत बिलाल को बहुत भारी क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद कर दिया तो काफ़िरों को अचंभा हुआ और उन्होंने कहा हज़रत सिदीक अक़बर ने ऐसा क्यों किया। शायद बिलाल का उनपर कोई एहसान होगा जो उन्होंने इतनी भारी क़ीमत देकर ख़रीदा और आज़ाद किया। इसपर यह आयत उतरी और ज़ाहिर फ़रमा दिया गया कि हज़रत सिदीक रदियल्लाहो अन्हो का यह काम केवल अल्लाह तआला की रज़ा के लिये है, किसी के एहसान का बदला नहीं और न उनपर हज़रत

विलाल वगैरह का कोई एहमान है, हज़रत सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो ने बहुत लोगों को उनके इस्लाम के कारण ख़रीद कर आज़ाद किया।

(२२) उस नेअमत और करम से जो अल्लाह तआला उनको जन्नत में अता फ़रमाएगा।

९३ - सूरए दुहा

(१) सूरए वदुहा मक्की है, इसमें एक रूक़, ग्यारह आयतें, चालीस कलिमे, एक सौ बहतर अक्षर हैं। एक बार ऐसा इतिफ़ाक़ हुआ कि कुछ राज़ वही न आई तो काफ़िरों ने तअने के तौर पर कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) को उनके ख़य न छोड़ दिया और मकरूह यानी बुरा जाना, इसपर यह सूरत उतरी।

(२) जिस वक़्त कि सूरज बलन्द हो क्योंकि यह वक़्त वही है जिसमें अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया और इसी वक़्त जादूगर सज्दे में गिरे। चाश्त की नमाज़ सुन्नत है और इसका वक़्त सूरज बलन्द होने से ज़वाल के पहले तक है। इमाम साहिब के नज्दीक़ चाश्त की नमाज़ दो रक़अतें हैं या चार, एक सलाम के साथ। कुछ मुफ़सिरी ने फ़रमाया कि दुहा से दिन मुराद है।

(३) और उसकी तारीकी आम हो जाए। इमाम जअफ़रे सादिक़ रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि चाश्त से मुराद वह चाश्त है जिसमें अल्लाह ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया। कुछ मुफ़सिरी ने फ़रमाया कि चाश्त इशारा है हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माल के तूर की तरफ़ और रात किनायह है आपके ख़ुशबूदार ग़ेसुओं की तरफ़। (रुहुल बयान)

(४) यानी आख़िरत दुनिया से बेहतर, क्योंकि वहाँ आपके लिये मक़ामे मेहमूद और हीजे कौसर और भलाई और तमाम नबियाँ और रसूलों पर ऊँचा दर्जा और आपकी उम्मत का सारी उम्मतों पर ग़वाह होना और आपकी शफ़ाअत से मूमिनों के दर्जे और बलन्द होना, और बेइन्तिहा इज़ज़त और करामते हैं जो बयान में नहीं आ सकतीं। और मुफ़सिरी ने इसके ये मानी भी बयान किये हैं कि आने वाले हालात आपके लिये पिछले हालात से बेहतर और बरतर हैं गोया कि हक़ तआला का वादा है कि वह रोज़ बरोज़ आपके दर्जे बलन्द करेगा और इज़ज़त और मन्सब पर मन्सब ज़्यादा अता फ़रमाएगा और घड़ी दर घड़ी आपके दर्जे तरक्कियों पर रहेंगे।

(५) दुनिया और आख़िरत में।

(६) अल्लाह तआला का अपन हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से यह बड़ा वादा उन नेअमतों को भी शामिल है जो आपको दुनिया में अता फ़रमाई यानी कमाले नफ़स और अगलों पिछलों के उलूम और ज़हूँ अम्र और दीन का फैलान और वो फ़ुनूहात जो एहदे मुबारक में हुई और सहाबा के ज़माने में हुई और क्रयामत तक मुसलमानों को होती रहेंगी और दावत का आम होना और इस्लाम का पूर्व से पश्चिम तक फैल जाना और आपकी उम्मत का बेहतरीन उम्मत होना और आपकी वह बुजुर्गी और चमत्कार ज़िब का इल्म अल्लाह ही को है और आख़िरत की इज़ज़त और सम्मान को भी शामिल है कि अल्लाह तआला ने आपको आम और ख़ास शफ़ाअत और मक़ामे मेहमूद वगैरह बड़ी नेअमतें अता फ़रमाईं। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है नबीयं करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने दोनों हाथ उठाकर उम्मत के हक़ में रो रो कर दुआ फ़रमाई और अर्ज़ किया अल्लाहुम्मा उम्मती उम्मती (यानी ऐ अल्लाह मेरी उम्मत, मेरी उम्मत) अल्लाह तआला ने जिब्रईल को हुक्म दिया कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) की ख़िदमत में जाकर पूछो, रोने का क्या कारण है। जबकि अल्लाह तआला हर बात जानता है। जिब्रईल ने हुक्म के अनुसार हाज़िर होकर दरियाफ़्त किया। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें तमाम हाल बताया और उम्मत के ग़म का इज़हार फ़रमाया। जिब्रईले अमीन ने अल्लाह की बारग़ह में अर्ज़ किया कि तेरे हबीब यह फ़रमाते हैं, जबकि तू ख़ूब जानने वाला है। अल्लाह तआला ने जिब्रईल को हुक्म दिया कि जाओ और मेरे हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहो कि हम आपकी उम्मत के बारे में बहुत जल्द आपको राज़ी करेंगे और आपके दिल को दुख़ी न होने देंगे। हदीस शरीफ़ में है कि जब यह आयत उतरी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तक मेरा एक उम्मती भी दोज़ख़ में रहे, मैं राज़ी न होऊंगा। आयत साफ़ प्रमाणित करती है कि अल्लाह तआला वही कंग़ा जिसमें उसके हबीब राज़ी हों। और शफ़ाअत की हदीसों से साबित है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रज़ा इसी में है कि उम्मत के सारे गुनहगार बख़्श दिये जाएं। तो आयत और हदीसों से यह नतीजा निकलता है कि हुज़ूर की शफ़ाअत मक़बूल और आपकी मुबारक मर्ज़ी के मुताबिक़ उम्मत के गुनहगार बख़्शे जाएंगे। सुक़ानल्लाह ! क्या बलन्द दर्जा है कि जिस ख़य की राज़ी करने के लिये तमाम मुक़र्रब बन्दे तक्लीफ़ें बर्दाश्त करते और महनते करते हैं वह इस हबीब करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को राज़ी करने के लिये अता आम करता है। इसके बाद अल्लाह तआला ने उन नेअमतों का ज़िक़्र फ़रमाया जो आपके शुरू से आप पर फ़रमाईं।

(७) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अभी वालिदा माजिदा के गर्भ में थे। गर्भ दो माह का था कि आपके वालिद साहिब ने मदीना शरीफ़ में वफ़ात पाई और न कुछ माल छोड़ा न कोई जगह छोड़ी। आपकी परवरिश के ज़िम्मेदार आपके दादा अब्दुल-मुत्तलिब हुए। जब आपकी उम्र शरीफ़ चार या छ साल की हुई तो वालिदा साहिबा ने भी वफ़ात पाई। आठ साल की उम्र में दादा अब्दुल-मुत्तलिब का साया सर से उठ गया। उन्होंने अपनी वफ़ात से पहले अपने बेटे अबू तालिब को जो हुज़ूर के सगे चचा थे आपकी ख़िदमत और देख भाल की बर्सीयत की। अबू तालिब आपकी ख़िदमत में सरग़म रहे। यहाँ तक कि आपको अल्लाह तआला ने नबुव्वत से नवाज़ा। इस आयत की तफ़सीर में मुफ़सिरी ने एक मानी ये बयान किये हैं कि यतीम यक़ता और बेनज़ीर के अर्थ में हैं इस सूरत में आयत के मानी ये हैं कि अल्लाह तआला ने आपको सम्मान और बुजुर्गी में यक़ता और बेनज़ीर पाया और आपको

९५ - सूरए तीन

सूरए तीन मक्के में उतरी, इसमें ८ आयतें, एक रूकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) इन्जीर की कसम और जैतून (२) और तूरे सीना (३) और उस अमान वाले शहर की (४) वेशक हमने आदमी को अच्छी सूरत पर बनाया (५) फिर उसे हर नीची से नीची हालत की तरफ़ फेर दिया (६) मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उन्हें वेहद सवाब है (७) तो अब (८) क्या चीज़ तुझे इन्साफ़ के झुटलाने पर वाइस है (९) क्या अल्लाह सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम नहीं (१०)

९६ - सूरए अलक़

सूरए अलक़ मक्के में उतरी, इसमें १९ आयतें, एक रूकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) पढ़ो अपने रब के नाम से (२) जिसने पैदा किया (३) आदमी को खून की फुटक से बनाया (४) पढ़ो (५) और तुम्हारा रब ही सबसे बड़ा करीम (६) जिसने कलम से लिखना सिखाया (७) आदमी को सिखाया जो न जानता था (८) हाँ हाँ वेशक आदमी सरकशी करता है (९) इसपर कि अपने आप को गनी समझ लिया (१०) वेशक तुम्हारे रब ही की तरफ़ फिरना है (११) भला देखो तो जो

سُورَةُ التِّينِ مَكِّيَّةٌ (٩٥) ۞

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ۖ وَطُورِ سِينِينَ ۖ وَهَٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۖ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۖ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ۖ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۖ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدَ بِالذِّكْرِ ۖ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمَ الْحَاكِمِينَ ۖ

سُورَةُ الْاَلَكِ مَكِّيَّةٌ (٩٦) ۞

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۖ خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۖ اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ۖ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۖ عَلَّمَ الْإِنسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۖ كَلَّا إِنَّ الْإِنسَانَ لِكَبِيرٌ ۖ أَن تَرَاهُ اسْتَغْنَى ۖ إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ۖ أَرَأَيْتَ الَّذِي

अपने कुर्ब के मक़ाम में जगह दी और अपनी हिफ़ाज़त में आपके दुश्मनों के बीच आपकी परवरिश फ़रमाई और आपको नबुच्चत और रिसालत के ऊँचे मन्सबों के लिये चुना। (स्वाज़िन, जुमल और रुहुल बयान)

(८) और ग़ैब के रहस्य आप पर खोल दिये और जो हुआ है और जो होने वाला है उसकी जानकारी आपको अता फ़रमाई, अपनी ज़ात और सिफ़ात की पहचान में सबसे बलन्द दर्जा इनायत किया। मुफ़स्सिरों ने एक मानी इस आयत के ये भी बयान किये हैं कि अल्लाह तआला ने आप को ऐसा वारूफ़ता पाया कि आप अपने नफ़्स और अपने भरतबों की ख़बर भी नहीं रखते थे तो आप की आपकी ज़ात और सिफ़ात और भरतबों और दर्जों की पहचान अता फ़रमाई, मारे नबी मअसूम होने हैं, नबुच्चत से पहले भी और नबुच्चत के बाद भी, और अल्लाह तआला की तौहीद और उसकी सिफ़ात के हमेशा से जातकार होते हैं।

(९) क़नाअत यानी सन्तोष की नेअमत अता फ़रमा कर, बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि मालदारी माल की बहुतात से नहीं होती, अस्ली मालदारी नफ़्स का बेनियाज़ होना है।

(१०) जैसा कि जाहिलों का तरीक़ा था कि यतीमों को दबाते और उनपर अत्याचार करते थे, हदीस शरीफ़ में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मुसलमानों के घरों में वह घर बहुत अच्छा है जिसमें यतीम के साथ अच्छा सुलूक किया जाता हो और वह घर बहुत बुरा है जिसमें यतीम के साथ बुरा व्यवहार किया जाता हो।

(११) या कुछ दे दो या हुने अज़लाक और नमी के साथ उच्च कर दो, यह भी कहा गया है कि सवाल करने वाले से विद्यार्थी मुराद है, उसकी इज़ज़त करनी चाहिये और उसकी जो हाज़त हो उसकी पूरा करना चाहिये और उसके साथ बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिये।

(१२) नेअमतों से मुराद वो नेअमतें हैं जो अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अता फ़रमाई और वो भी जिनका हुज़ूर से वादा फ़रमाया, नेअमतों के ज़िक्र का इसलिये हुक्म फ़रमाया कि नेअमत का बयान करना शुक्रगुज़ारी है।

९८ - सूरए इन्शाराह

(१) सूरए अलम नशरह मक्की है, इसमें एक रूकू, आठ आयतें, सत्ताईस कलिमे और एक सौ तीन अक्षर हैं।

(२) यानी हमने आपके सीने को कुशादह और वसीअ किया, हिदायत व मअरिफ़त और रहनुमाई व नबुच्चत और इल्म व हिकमत के लिये, यहाँ तक कि ग़ैब और शहादत के आलम उसकी वुसअत में समा गए और जिस्म की सीमाएं रूह के अनचार के लिये रोक न बन सकीं और अल्लाह की तरफ़ से अता किये गए उलूम और अल्लाह के अहक़ामात और उसकी मअरिफ़त और हकीकतों सीताए

पाक में जलवा गुभा हुई और ज़ाहिरी तौर पर भी सीने का खोला जाना बार बार हुआ। उम्र शरीफ की शुरुआत में, और वही के आरंभ के समय, और मअर्राज की रात में जैसा कि हदीसों में आया है। उसकी शकल यह थी कि जिब्रईले अमीन ने सीना पाक को चाक करके कच्चे मुबारक निकाला और सोने के थाल में आवे जमजम से गुल्ल दिया और नूर और हिकमत से भरकर उसका उसकी जगह रख दिया।

(३) इस बोझ से मुगद या वह गम है जो आपको काफ़िरों के ईमान न लाने से रहता था, या उम्मत के गुनाहों का गम जिस में कच्चे मुबारक मशगूल रहता था। मुगद यह है कि हमने आपको शफ़ाअत का मन्सब देकर वह बोझ कम कर दिया।

(४) हदीस शरीफ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत जिब्रईल से इस आयत को दरियाफ्त फ़रमाया तो उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि आपके ज़िक्र की बलन्दी यह है कि जब मेरा ज़िक्र किया जाए, मेरे साथ आपका भी ज़िक्र किया जाए। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा फ़रमाते हैं कि इससे मुगद यह है कि अज़ाब में, तकदीर में, तशह्हुद में, मिम्वरों पर खुत्बों में, तो अगर कोई अल्लाह तआला की इबादत करे, हर बात में उसकी तस्दीक करे और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत की गवाही न दे, तो यह सब बेकार। वह काफ़िर ही रहेंगे। क़तादह ने कहा कि अल्लाह तआला ने आपका ज़िक्र दुनिया और आख़िरत में बलन्द किया। हर ख़तीब, हर तशह्हुद पढ़ने वाला अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाहों के साथ वअशहदो अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह पुकारता है। कुछ मुफ़सिरों ने फ़रमाया कि आपके ज़िक्र की बलन्दी यह है कि अल्लाह तआला ने नवियों से आप पर ईमान लाने का एहद लिया।

(५) यानी जो शिद्दत और सख़्ती कि आप काफ़िरों के मुक़ाबले में बर्दाश्त फ़रमा रहे हैं उसके साथ ही आसानी है कि हम आपको उनपर ग़ल्बा अता फ़रमाएंगे।

(६) यानी आख़िरत की।

(७) कि दुआ नमाज़ के बाद मक्बूल होती है। इस दुआ से मुगद नमाज़ के आख़िर की वह दुआ है जो नमाज़ के अन्दर हो या वह दुआ जो सलाम के बाद हो, इसमें मतभेद है।

(८) उसी की मेहरबानी चाहते रहो और उसी पर भरोसा रखो।

९५ - सूरए तीन

(१) सूरए त्तीन मक्की है। इसमें एक रकू, आठ आयतें, चौतीस कलिमे, एक सौ पाँच अक्षर हैं।

(२) इज़ीर बहुत बढ़िया मेवा है जिसमें फुज़लह नहीं, जल्दी हज़म होने वाली, बहुत फ़ायदे वाली, पेट साफ़ रखने वाली, जिगर वदन को स्वस्थ रखने वाली, बलगम को छँटने वाली। ज़ैतून एक मुबारक दरख़्त है, इसका तेल रौशनी के काम में भी लाया जाता है और सालन को जगह भी ग़ाया जाता है। यह ख़ुश्क पहाड़ों में पैदा होता है जहाँ तरी बिल्कुल नहीं होती। वग़ैर ख़िदमत के पलतत बढ़ता है, हज़ारों बरस रहता है। इन चीज़ों में अल्लाह की कुदरत की निशानियाँ ज़ाहिर हैं।

(३) यह वह पहाड़ है जिसपर अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कलाम से मुशरफ़ फ़रमाया और सीना उस जगह का नाम है जहाँ बहुतायत से फलदार दरख़्त हैं।

(४) यानी मक्कए मुक़रमा की।

(५) यानी बुढ़ापे की तरफ़ जबकि बदन कमज़ोर, अंग नाकार, बुद्धि दूषित, पीठ झुकी, बाल सफ़ेद हो जाते हैं, ख़ाल में झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, अपनी ज़रूरत पूरी करने में आदमी बंसे हो जाता है या ये मानी हैं कि जब उसने अच्छी शकल व मूरत की शुरुआत की न की और नाफ़रमानी पर जमा रहा और ईमान न लाया तो जहन्नम के सबसे निचले दर्जों को हमने उसका ठिकाना बना दिया।

(६) अगरचें बुढ़ापे की कमज़ोरी के कारण वह जवानी की तरह ताअते भरपूर तरीक़े से बज़ा न ला सकें और उनके कर्म कम हो जाएं। लेकिन अल्लाह के करम से उन्हें वही अज़्र मिलेगा जो शयाब और कुच्चत के ज़मानों में अमल करने से मिलता था और उनमें ही अमल उनके लिखे जायेंगे।

(७) इस ख़ाले ययान और वाज़ेह तर्क के बाद, ऐ काफ़िर।

(८) और तू अल्लाह तआला की ये कुदरतें देखने के बावजूद क्यों दोबास उठार जाने और हिसाब और जज़ा का इन्कार करता है।

९६ - सूरए अलक़

(१) इसे सूरए इक़रा भी कहते हैं। यह मूरत मक्की है। इसमें एक रकू, उन्नीस आयतें, बानवे कलिमे, दो सौ अस्सी अक्षर हैं। अक्सर मुफ़सिरों के नज़्दीक यह मूरत सबसे पहले उतरी और इसकी पहली पाँच आयतें मालम यअलम तक ग़ारे हिरा मे उतरीं। फ़रिश्ते ने आकर हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अज़्र किया इक़रा यानी पढ़िये। फ़रमाया, हम पढ़ें नहीं हैं। उसने सीने से लगाकर बहुत ज़ोर से दयाया फिर छोड़कर कहा, पढ़िये। फिर आपने वही जवाब दिया। तीन बार ऐसा ही हुआ। फिर उसके साथ साथ आपने मालम यअलम तक पढ़ा।

(२) यानी पढ़ने की शुरुआत अदब के तौर पर अल्लाह के नाम से हो। इस मूरत में आयत में साबित होता है कि क़िरअत की शुरुआत बिस्मिल्लाह के साथ मूरतहव है।

मना करता है (९) वन्दे को जब वह नमाज़ पढ़े (१०) भला देखो तो अगर वह हिदायत पर होता (११) या परहेज़गारी बताता तो क्या खूब था (१२) भला देखो तो अगर झुटलाया (१३) और मुंह फेरा (१४) तो क्या हाल होगा क्या न जाना (१५) कि अल्लाह देख रहा है (१६) हाँ हाँ अगर बाज़ न आया (१७) तो ज़रूर हम पैशानी के बाल पकड़ कर खींचेंगे (१८) कैसी पैशानी झूठी खताकार (१९) अब पुकारे अपनी मजलिस को (२०) अभी हम सिपाहियों को बुलाते हैं (२१) हाँ हाँ उसकी न सुनो और सज्दा करो (२२) और हमसे करीब हो जाओ (२३)

९७ - सूरए कद्र

सूरए कद्र मक्के में उतरी, इसमें पांच आयतें, एक रूकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) वेशक हमने उसे (२) कद्र की रात में उतारा (३) और तुमने क्या जाना क्या कद्र की रात (४) कद्र की रात हज़ार महीनों से बेहतर (५) उसमें फ़रिश्ते और जिब्रील उतरते हैं (६) अपने रव के हुक्म से हर काम के लिये (७) वह सलामती है सुक़्क़ चमकने तक (८) (९)

९८ - सूरए बय्यिनह

सूरए बय्यिनह मदीने में उतरी, इसमें ८ आयतें, एक रूकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) किताबी काफ़िर (२) और मुश्रिक (३) अपना दीन छोड़ने को न

يُنْهَى عَبْدًا إِذَا صَلَّيَ ۖ أَرَادَتْ أَنْ كَانَ عَلَى
الْهُدَى ۖ أَوْ أَمَرَ بِالْقَوْلِ ۖ أَرَادَتْ أَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۖ
أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَرَى ۖ كَلَّا لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعًا
بِالنَّاصِيَةِ ۖ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۖ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۖ
سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۖ كَلَّا لَا تَطْعَهُ وَانْجِدْ وَاقْتَرِبْ ۖ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۖ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۖ
لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَبْرٌ مِّنَ الْغَيْبِ شَهْرٌ ۖ نَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ
فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ۖ سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۖ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ الْمُنَافِقِينَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- (३) तमाम ख़ल्क को.
- (४) दोबारा पढ़ने का हुक्म ताकीद के लिये है और यह भी कहा गया है कि दोबारा फिरअत के हुक्म से मुराद यह है कि तल्लीम और उम्मत की तालीम के लिये पढ़िये.
- (५) इससे किताबत की फ़ज़ीलत साबित होती है और दर हकीकत किताबत में बड़े मुनाफ़े हैं. किताबत ही से इल्म ज़क़ में आना है गुज़रे हुए लोगों की ख़बरे और उनके हालात और उनके कलाम में हफ़ूज़ रहते हैं. किताबत न होती तो दुनिया के काम कायम न रह सकतें.
- (६) आदमी से मुराद यहाँ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम है और जो उन्हें सिखाया उससे मुराद नामां का इल्म. और एक क़ौल यह है कि इन्सान से मुराद यहाँ संयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं कि आपको अल्लाह तआला ने तमाम चीज़ों की जानकारीयाँ अता कीं. (मआलिम और ख़ाज़िन)
- (७) याती ग़फ़लत का कारण दुनिया की महबूत और माल पर घमण्ड है. ये आयतें अबू ज़हल के हक़ में उतरीं. उसका कुछ माल हाथ आ गया था तो उसने लिबास और सवारी और खाने पीने में तक्लुफ़ात शुरू किये और उसका घमण्ड बहुत बढ़ गया.
- (८) याती इन्सान को यह बात पेशे नज़र रखनी चाहिये और समझना चाहिये कि उसे अल्लाह की तरफ़ पलटना है तो सरकशी और वगावत और घमण्ड का अंजाम अज़ाब होगा.
- (९) यह आयत भी अबू ज़हल के हक़ में उतरी. उसने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नमाज़ पढ़ने से मना किया था और लोगों से कहा था कि अगर मैं उन्हें ऐसा करता देखूंगा तो (मआज़ल्लाह) गर्दन पाँव से कुचल डालूंगा और चेहरा ख़ाक़ में मिला दूंगा. फिर वह उसी ग़लत इरादे से हज़ूर के नमाज़ पढ़ने में आया और हज़ूर के करीब पहुंच कर जलटे पाँव पीछे भागा. हाथ आंगे बढ़ाए हुए जैसे कोई मुसीबत को रोकने के लिये हाथ बढ़ाता है, चंहरा का रंग उड़ गया, शरीर काँपने लगा, लोगों ने कहा, क्या हाल है. कहने लगा मेरे और मुहम्मद के बीच एक ख़ाई है जिसमें आग़ भरी हुई है और दहशतनाक पक्षी पंख फैलाए हुए हैं. संयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, अगर वह मेरे करीब आता तो फ़रिश्ते उसका अंग अंग अलग कर डालते.
- (१०) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को.
- (११) ईमान लाने से.
- (१२) अबू ज़हल ने.

- (१३) उसके कर्म को, इसलिये जज़ा देगा।
- (१४) सैयद आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ईज़ा और आपको झुटलाने से।
- (१५) और उसको जहन्नम में डालेंगे।
- (१६) जब अबू जहल ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नमाज़ से मना किया तो हुज़ूर ने उसे सरज़ी से झिड़क दिया, इसपर उसने कहा कि आप मुझे झिड़कते हैं खुदा की क्रम में आपके मुकाबिल नौजवान सवारों और पैदलों से इस जंगल को भर देंगा, आप जानते हैं कि मक्के में मुझसे ज्यादा बड़े जत्थे और मजलिस वाला कोई नहीं है।
- (१७) यानी अज़ाब के फ़रिशतों को। हदीस शीफ़ में है कि अगर वह अपनी मजलिस का बुलाता तो फ़रिशते उसका खुल्लम खुल्ला गिरफ़्तार करते।
- (१८) यानी नमाज़ पढ़ते रहो।

९७ - सूरए क़द्र

- (१) सूरए क़द्र मदनी है, और कुछ के अनुसार मक्की है। इसमें एक रकू, पाँच आयतें, तीस कलिमे, एक सौ बारह अक्षर हैं।
- (२) यानी क़ुरआन शरीफ़ को लौहे मेहफूज़ से आसमाने दुनिया की तरफ़ एक साथ।
- (३) शबे क़द्र बुजुर्गी और वरक़त वाली रात है। इसको शबे क़द्र इसलिये कहते हैं कि इस रात में साल भर के एहकाम लागू किये जाते हैं और फ़रिशतों को साल भर के वज़ीफ़ों और ख़िदमतों पर लगाया जाता है। यह भी कहा गया है कि इस रात की बुजुर्गी और क़द्र के कारण इसे शबे क़द्र कहते हैं और यह भी मक़ूल है कि चूंकि इस रात में नेक कर्म मक़ूल होते हैं और अल्लाह की बारगाह में उनकी क़द्र की जाती है इसलिये इसको शबे क़द्र कहते हैं। हदीसों में इस रात की बहुत फ़ज़ीलते आई हैं। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि जिसने इस रात जाग कर इबादत को, अल्लाह तआला उसके साल भर के मुनाह वग़्था देता है। आदमी का चाहिये कि इस रात कमरत से इस्तिग़फ़ार करे और रात इबादत में गुज़ारे। साल भर में शबे क़द्र एक बार आती है और बहुत सी रिवायतों में है कि वह रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी दस दिनों में होती है और अक्सर इसकी भी ताक़ रातों में से किसी रात में। फ़ूछ उलमा के क़द्दीक़ रमज़ानुल मुबारक की सत्ताइसवीं रात शबे-क़द्र होती है। यही हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है। इस रात की फ़ज़ीलतें अगली आयतों में इरशाद फ़रमाई जाती हैं।
- (४) जो शबे क़द्र से ग़ाली हों, उस एक रात में नेक अमल करना हाज़ार रातों के अमल से बेहतर है। हदीस शरीफ़ में है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पिछली उम्मतों के एक व्यक्ति का ज़िक़र फ़रमाया जो सारी रात इबादत करता था और तमाम दिन जिहाद में लगा रहता था। इस तरह उसने हाज़ार महीने गुज़ारे थे। मुसलमानों को इससे आश्चर्य हुआ तो अल्लाह तआला ने आपको शबे क़द्र अता फ़रमाई और यह आयत उतरी कि शबे क़द्र हाज़ार महीनों से बेहतर है। (इन्ने ज़रीर) यह अल्लाह तआला का अपने हबीब पर करम है कि आपके उम्मतों शबे क़द्र की एक रात इबादत करें तो पिछली उम्मतों के हाज़ार माह इबादत करने वालों से ज्यादा हो।
- (५) ज़मीन की तरफ़ और जो बन्दा खड़ा या बैठा अल्लाह की याद में मशगूल होता है उसको मनाम करते हैं और उसके हक़ में दुआ और इस्तिग़फ़ार करते हैं।
- (६) जो अल्लाह तआला ने उस साल के लिये लिख दिया।
- (७) बलाओं और आफ़तों से।

९८ - सूरए बय्यिनह

- (१) इसे सूरए लम यक़ून भी कहते हैं। जम्हूर के नज़दीक़ यह सूरत मदनी है और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा की एक रिवायत यह है कि मक्की है। इस सूरत में एक रकू, आठ आयतें, चौरानवे कलिमे, तीन सौ नितानवे अक्षर हैं।
- (२) यहूदी और ईसाई।
- (३) वुत परस्त।

थे जब तक उनके पास रौशन दलील न आए^(१) वह कौन वह अल्लाह का रसूल^(२) कि पाक सहीफ़े (ग्रन्थ) पढ़ता है^(३) उनमें सीधी बातें लिखी हैं^(४) और फूट न पड़ी किताब वालों में मगर बाद इसके कि वह रौशन दलील^(५) उनके पास तशरीफ़ लाए^(६) और उन लोगों को तो^(७) यही हुक्म हुआ कि अल्लाह की बन्दगी करें निरे उसी पर अक्कीदा लाते^(८) एक तरफ़ के होकर^(९) और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें और यह सीधा दीन है^(१०) वेशक जितने काफ़िर हैं किताबी और मुश्रिक सब जहन्नम की आग में हैं हमेशा उसमें रहेंगे, वही तमाम मखलूक में बदतर हैं^(११) वेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वही तमाम मखलूक में बेहतर हैं^(१२) उनका सिला उनके रब के पास वसने के बाग़ हैं जिनके नीचे नेहरे वहाँ उनमें हमेशा हमेशा रहे, अल्लाह उनसे राज़ी^(१३) और वो उससे राज़ी^(१४) यह उसके लिये है जो अपने रब से डरे^(१५)

९९ - सूरए ज़िलज़ाल

सूरए ज़िलज़ाल मदीने में उतरी, इसमें ८ आयतें एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) जब ज़मीन धरधरा दी जाए^(२) जैसा उसका धरधराना ठहरा है^(३) और ज़मीन अपने बोज़ बाहर फेंक



(४) यानी सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जलवा अफ़रोज़ हों क्योंकि हुज़ुरे अक़दम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आदरी से पहले ये सारे यही कहते कि हम अपना दीन छोड़ने वाले नहीं जब तक कि वह नबीये मौजूद तशरीफ़ फ़रमा न हों जिनका तौरात और इन्जील में ज़िक्र है।

(५) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।

(६) यानी कुरआन शरीफ़।

(७) हक़ और इन्साफ़ की।

(८) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।

(९) मुग़ाव यह है कि पहले से तो सब इसपर सहमत थे कि जब वादा किये गए नबी तशरीफ़ लाएं तो हम उनपर ईमान लाएंगे लेकिन जब वह नबी जलवा अफ़रोज़ हुए तो कुछ तो आप पर ईमान लाए और कुछ ने हसद और दुश्मनी से कुफ़्र अपनाया।

(१०) तौरात और इन्जील में।

(११) सच्चे दिल से, शिर्क और दोहरी प्रवृत्ति से दूर रहकर।

(१२) यानी सारे दीनों को छोड़ कर ख़ालिस इस्लाम के मानने वाले होकर।

(१३) और उनकी ताअत और इख़लास से।

(१४) उसके क़रम और अता से।

(१५) और उसके नाफ़रमानी से बचे।

९९ - सूरए ज़िलज़ाल

(१) इसे सूरए इज़ा ज़िलज़िलत और सूरए ज़लज़लह भी कहते हैं। यह सूरत मक्की और कुछ की राय में मदीनी है। इसमें एक रकू, आठ आयतें, पैंतीस कलिमे, एक सौ उन्नालीस अक्षर हैं।

(२) क़यामत क़ायम होने के तज़्दीक़ या क़यामत के दिन।

(३) और ज़मीन पर कोई दरख़्त कोई पहाड़ बाकी न रहे, हर चीज़ टूट फूट जाए।

दे^(१) (२) और आदमी कहे उसे क्या हुआ^(३) (३) उस दिन वह अपनी खबरें बताएगी^(४) (४) इसलिए कि तुम्हारे रब ने उसे हुक्म भेजा^(५) (५) उस दिन लोग अपने रबों की तरफ फिरेगे^(६) कई राह होकर^(७) ताकि अपना किया^(८) दिखाए जाए (६) तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा^(९) (६) और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा^(१०) (७)

१०० - सूरए आदियात

सूरए आदियात मक्के में उतरी, इसमें ११ आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) क़सम उनकी जो दौड़ते हैं सीने से अवाज़ निकलती हुई^(२) (१) फिर पथरों से आग निकालते हैं सुम मार कर^(३) (२) फिर सुबह होते ताराज करते हैं^(४) (३) फिर उस वक़्त गुबार उड़ाते हैं, (४) फिर दुश्मन के बीच लश्कर में जाते हैं^(५) (४) बेशक आदमी अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है^(६) (५) और बेशक वह उस घर^(७) खुद गवाह है^(८) (६) और बेशक वह माल की चाहत में ज़रूर करा है^(९) (७) तो क्या नहीं जानता जब उठाए जाएंगे^(१०) जो क़ब्रों में हैं^(११) (८) और खोल दी जाएगी^(१२) जो सीने में है^(१३) (९) बेशक उनके रब को उस दिन^(१४) उनकी सब खबर है^(१५) (१०)

اٰثَقَالَهَا ۚ وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اٰخْبَارَهَا ۚ يٰۤاَن رَّبِّكَ اَوْحٰى لَهَا ۚ يَوْمَئِذٍ يُصْدِرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۚ لِيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۚ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۚ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۚ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

وَالْعٰدِیْنَ صُبْحًا ۚ وَالْمُؤْرِیْنَ قَدْحًا ۚ فَاَلْمُعْرِیْتَ صُبْحًا ۚ فَاَثَرُنَ بِهٖ نَقْعًا ۚ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۚ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ وَاِنَّهٗ عَلٰۤی ذٰلِكَ لَشَهِیْدٌ ۚ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخٰیْرِ لَشَدِیْدٌ ۚ اَفَلَا یَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِی الْقُبُوْرِ ۚ وَحُصِّلَ مَا فِی الصُّدُوْرِ ۚ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ یَوْمَئِذٍ لَّخَبِیْرٌ ۚ

مَزْلُک

- (४) यानी खज़ाने और नुदें जो उसमें हैं सब निकल कर बाहर आ पड़ें।
- (५) कि ऐसी बेचैन हुई और ऐसा भारी ज़लज़लह आया कि जो कुछ उसके अन्दर था, सब बाहर फेंक दिया।
- (६) और जो नेकी बदी उस पर की गई सब बयान करेगी। हदीस शरीफ़ में है कि हर मर्द और औरत ने जो कुछ उसपर किया उसकी गवाही देगी, कहेगी, उस दिन यह किया और उस दिन यह। (तिरमिज़ी)
- (७) कि अपनी ख़बरें बयान करे और जो कर्म उस पर किये गए हैं उनकी ख़बरें दे।
- (८) हिसाब के मैदान से।
- (९) कोई दाईं तरफ़ से हांकर जन्नत की तरफ़ जाएगा और कोई बाईं तरफ़ से दोज़ख़ की तरफ़।
- (१०) यानी अपने कर्मों की जज़ा।
- (११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हर मूмин और काफ़िर को क़यामत के दिन उसके अच्छे बुरे कर्म दिखाए जाएंगे। मूмин को उसकी नेकियाँ और बदियाँ दिखाकर अल्लाह तआला बदियाँ बर्ज़ा देगा और नेकियों पर सवाब अता फ़रमाएगा और काफ़िर की नेकियाँ रद्द कर दी जाएंगी क्योंकि कुफ़्र के कारण अकारत हो चुकी और बदियों पर उसका अज़ाब किया जाएगा। मुहम्मद बिन कअब कज़ी ने फ़रमाया कि काफ़िर ने ज़र्रा भर नेकी को होगी तो उसका बदला दुनिया ही में देख लेगा यहाँ तक कि जब दुनिया से निकलेगा तो उसके पास कोई नेकी न होगी और मूмин अपनी बदियों की सज़ा दुनिया में पाएगा तो आख़िरत में उसके साथ कोई बदी न होगी। इस आयत में तर्ज़ीब है कि नेकी थोड़ी सी भी हो, काम आने वाली है और चेतावनी है कि गुनाह छोटा सा भी हो, बवाल है। कुछ मुफ़स्सिरों ने यह फ़रमाया है कि पहली आयत मूमिनों के हक़ में है और पिछली काफ़िरों के।

१०० - सूरए आदियात

- (१) सूरए बल-आदियात हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हुमा के क़ौल के मुताबिक़ मक्की है और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा इसे मदनी बताते हैं। इसमें एक रकू, ग़याह आयतें, चालीस कलिमे, एक सौ तिरैसठ अक्षर हैं।
- (२) उनसे मुराद गाज़ियाँ के घोड़े हैं जो जिहाद में दौड़ते हैं तो उनके सीनों से अवाज़ निकलती हैं।
- (३) जब पथरीली ज़मीन पर चलते हैं।
- (४) दुश्मन को।
- (५) कि उसकी नेअमतों से मुकर जाता है।
- (६) अपने अमल से।

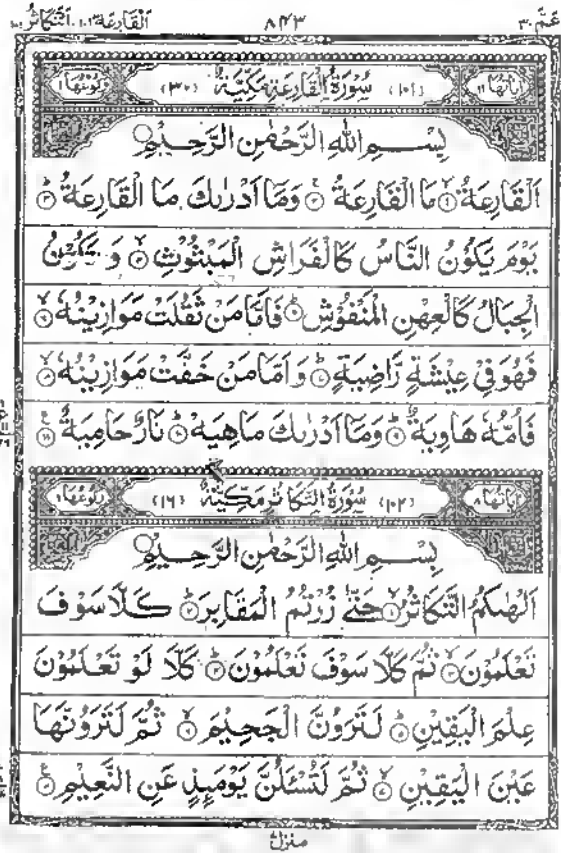
१०१ - सूरए अल-कारिअह

सूरए अल-कारिआ मक्के में उतरी, इसमें ११ आयतें, एक रूकू है।

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला (१) दिल दहलाने (१८) क्या वह दहलाने वाली (२) और तूने क्या जाना क्या है दहलाने वाली (३) जिस दिन आदमी होंगे जैसे फैले पतंगे (४) और पहाड़ होंगे जैसे धुनकी ऊन (५) तो जिसकी तौलें भारी हुई (६) वो तो मन मानते ऐश में है (७) और जिसकी तौलें हलकी पड़ी (८) वह नीचा दिखाने वाली गोद में है (९) और तूने क्या जाना क्या नीचा दिखाने वाली (१०) एक आग शोले मारती (११)

१०२ - सूरए तकासुर

सूरए तकासुर मक्के में उतरी, इसमें ८ आयतें, एक रूकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला (१) तुम्हें गाफिल रखा (२) माल की ज़ियादा तलबी ने (३) यहाँ तक कि तुमने क़ब्रों का मुंह देखा (४) हाँ हाँ जल्द जान जाओगे (५) फिर हाँ हाँ जल्द जान जाओगे (६) हाँ हाँ अगर यक़ीन का जानना चाहते तो माल की महबूत न रखते (७) वेशक़ ज़रूर जहन्नम को देखोगे (८) फिर वेशक़ ज़रूर उसे यक़ीनी देखना देखोगे (९) फिर वेशक़ ज़रूर उस दिन तुम से नअमतों की पुछताछ होगी (१०)



- (७) निहायत क़बी और शक्तिशाली है और इबादत के लिये कमज़ोर.
- (८) मुर्दे.
- (९) वह हकीकत या वह नेकी और बदी.
- (१०) याती क़यामत का दिन, जो फ़ैसले का दिन है.
- (११) जैसी कि हमेशा है, तो उन्हें अच्छे बुरे कर्मों का बदला देगा.

१०१ - सूरए अल-कारिअह

- (१) सूरए अल-कारिअह मक्की है. इसमें एक रूकू, आठ आयतें, छत्तीस कलिमे, एक सौ बावन अक्षर हैं.
- (२) इससे मुराद क़यामत है जिसकी हील और हैबत से दिल दहलेंगे और कारिअह क़यामत के नामों में से एक नाम है.
- (३) याती जिस तरह पतंगे शोले पर गिरने के वज़त मुत्ताशिर होते हैं और उनके लिये कोई एक दिशा निर्धारित नहीं होती, हर एक दूसरे के ख़िलाफ़ दिशा से जाता है, यही हाल क़यामत के दिन ख़ल्क के बिखराव का होगा.
- (४) जिसके टुकड़े अलग अलग होकर उड़ते हैं, यही हाल क़यामत के हील और दहशत से पहाड़ों का होगा.
- (५) और वज़तदार अमल याती नेकियाँ ज़्यादा हुई.
- (६) याती जन्नत में मूमिन की नेकियाँ अच्छी सूरत में लाकर मीज़ान पर रखी जाएंगी तो अगर वो भारी हुई तो उसके लिये जन्नत है. और काफ़िर की बुराइयाँ बदतरीन सूरत में लाकर मीज़ान में रखी जाएंगी और तौल हलकी पड़ेगी क्योंकि काफ़िर के कर्म बातिल हैं उनका कुछ वज़न नहीं. तो उन्हें जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा.
- (७) क्योंकि वह बातिल का अनुकरण करता था.
- (८) याती उसका ठिकाना दोज़ख़ की आग है.
- (९) जिसमें जलन और तेज़ी है, अल्लाह तआला उससे पनाह में रखे.

१०३ - सूरए अस्र

सूरए अस्र मक्के में उतरी, इसमें तीन आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) इस ज़मान-ए-महबूब की कसम (२) (१) वेशक आदमी ज़रूर नुक़सान में है (३) (२) मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और एक दूसरे को हक़ की ताकीद की (४) और एक दूसरे को सब्र की वसीयत की (५) (३)

१०४ - सूरए हुमुज़ह

सूरए हमज़ा मक्के में उतरी, इसमें ९ आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) ख़राबी है उसके लिये जो लोगों के मुंह पर ऐव करे पीठ पीछे वदी करे (२) (१) जिसने माल जोड़ा और गिन गिन कर रखा (२) क्या यह समझता है कि उसका माल उसे दुनिया में हमेशा रखेगा (३) (३) हरगिज़ नहीं ज़रूर वह रौंदने वाली में कैका जाएगा (४) (४) और तूने क्या जाना क्या रौंदने वाली (५) अल्लाह की आग़ भड़क रही है (६) वह जो दिलों पर चढ़ जाएगी (७) (६) वेशक वह उनपर बन्द कर दी जाएगी (८) (८) लम्बे लम्बे सुतूनों (खम्भों) में (९) (९)

१०५ - सूरए फ़ील

सूरए फ़ील मक्के में उतरी, इसमें पांच आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) ऐ मेहबूब क्या तुम ने न देखा तुम्हारे रव ने उन हाथी वालों का क्या हाल किया (२) (१) क्या उनका दाँव तवाही में न



१०२ - सूरए तकासुर

- (१) सूरए तकासुर मक्की है। इसमें एक रकू, आठ आयतें, अठ्ठाईस कलिमें, एक सौ बीस अक्षर हैं।
- (२) अल्लाह तआला की ताअतों से।
- (३) इससे मालूम हुआ कि माल की कसरत का लालच और उसपर घमण्ड अच्छा नहीं और इसमें गिरफ़्तार होकर आदमी आग़्रित की सआदत से मेहरूम रह जाता है।
- (४) यानी मौत के वक़्त तक लालच तुम्हारे साथ जुड़ा रहा। हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, मुंदे के साथी तीन होते हैं, दो लौट आते हैं एक उसके साथ रह जाता है, एक माल, एक उसके रिश्तेदार, एक उसका अमल। अमल साथ रह जाता है बाकी दोनों वापस आ जाते हैं। (बुख़ारी)
- (५) मरने के वक़्त, अपने इस हाल के बुरे नतीज का।
- (६) कश्मों में।
- (७) और माल के लालच में मुक्तिला होकर आग़्रित से गाफ़िल न होते।
- (८) मरने के बाद।
- (९) जो अल्लाह तआला ने तुम्हें अता फ़रमाई थीं, सेहत व खुशहाली, अमन, ऐश और माल वग़ैरह, जिनसे दुनिया में लज़्ज़तें उठाते थे। पृछा जाएगा कि ये चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं, इनका क्या शुक्र अदा किया और नाशुक्री पर अज़ाब किया जायेगा।

१०३ - सूरए वल-अस्र

- (१) सूरए वल-अस्र जम्हूर के नज़्दीक मक्की है। इसमें एक रकू, तीन आयतें, चौदह कलिमें, अड़सठ अक्षर हैं।
- (२) अस्र ज़माने को कहते हैं और ज़माना चूंकि अजाइवात पर आधारित है, इसमें हालात का बदलाव, उतार चढ़ाव देखने वाले के लिये सबक़ पकड़ने का कारण होता है और ये चीज़ें हिक्मत वाले ख़ालिक की कुदरत और उसकी वहदानियत को प्रमाणित करती

हैं इसलिये हो सकता है कि जमाने की कसम मुराद हो. और अख उस वक्त को भी कहते हैं जो सूर्यास्त से पहले होता है. हो सकता है कि ख़सारे वाले के हक में उस वक्त की कसम याद फ़रमाई जाए जैसा कि रावेअ के हक में दुहा याती चाश्त के वक्त की कसम याद फ़रमाई थी. और एक कौल यह भी है कि अख से अख की नमाज़ मुराद हो सकती है, जो दिन की इबादतों में सबसे पिछली इबादत है. और सबसे लज़ीज़ और बेहतर तफ़सीर वही है जो इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैह ने इस्तिथार फ़रमाई कि ज़माने से मन्त्रसूस ज़माना सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मुराद है जो बड़ी ख़ैरी बरकत का ज़माना और तमाम ज़मानों में सबसे बुजुर्गी वाला है. अल्लाह तआला ने हुज़ूर के मुबारक ज़माने की कसम याद फ़रमाई जैसा कि लाउक़िसमो बिहाज़ल बलद में हुज़ूर के मस्कन और मकान की कसम याद फ़रमाई है और जैसा कि 'लउमरका' में आपकी उम्र शरीफ़ की कसम याद फ़रमाई और इसमें शाने मेहबूबियत का इज़हार है.

(३) उसकी उम्र जो उसका रासुल माल है और अस्त पूंजी है वह हर दम घट रही है.

(४) याती ईमान और नेक कर्मों की.

(५) उन तकलीफ़ों और मशक्कतों पर जो दीन की राह में पेश आईं. ये लोग अल्लाह के फ़ज़ल से टोटे में नहीं हैं क्योंकि उनकी जितनी उम्र गुज़री नेकी और ताअत में गुज़री तो वो नफ़ा पाने वाले हैं.

१०४ - सूरए हुमुज़ह

(१) सूरए हुमुज़ह मक्की है इसमें एक रूकू, नौ आयतें, तीस कलिमे, एक सौ तीस अक्षर हैं.

(२) ये आयतें उन काफ़िरों के बारे में उतरीं जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा को बुरा भला कहते थे और इन हज़रत की ग़ीबत करते थे जैसे अख़नस बिन शरीक और ज़ैय्या बिन ख़लफ़ और बलीद बिन मुगीरह वगैरहम और हुक्म हर ग़ीबत करने वाले के लिये आम है.

(३) मरने न देगा जो वह माल की महबूत में मरत है और नेक कर्मों की तरफ़ तवज़ह नहीं करता.

(४) याती जहन्नम के उस गढ़े में जहाँ आग़ हड्डियाँ पसलियाँ तोड़ डालेंगी.

(५) और कभी ठण्डी नहीं होती. हदीस शरीफ़ में है जहन्नम की आग़ हज़ार बरस धोंकी गई यहाँ तक कि सुख़ हो गई फिर हज़ार बरस धोंकी गई यहाँ तक कि सफ़ेद हो गई फिर हज़ार बरस धोंकी गई यहाँ तक कि काली हो गई, तो वह काली है अंधेरी. (तिरमिज़ी)

(६) याती बाहरी जिस्म को भी जलाएगी और जिस्म के अन्दर भी पहुंचेगी और दिलों को भी जलाएगी. दिल ऐसी चीज़ है जिसको ज़मा सी गर्मों को ताब नहीं. तो जब जहन्नम को आग़ उपर आएगी और मौत आएगी नहीं तो क्या हाल होगा. दिलों को जलाना इसलिये है कि वो कुफ़्र और ग़लत अक्कीदों और बुरी नियतों के स्थान हैं.

(७) याती आग़ में डालकर दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे.

(८) याती दरवाज़ों की बन्दिश लौहे के जलते सुतूनों से मज़बूत कर दी जाएगी कि कभी दरवाज़ा न खुले. कुछ मुफ़सिरों ने ये मानी बयान किये हैं कि दरवाज़े बन्द करके जलते हुए सुतूनों से उनके हाथ पाँव बाँध दिये जाएंगे.

१०५ - सूरए फ़ील

(१) सूरए फ़ील मक्की है. इसमें एक रूकू, पाँच आयतें, बीस कलिमे और छियानवे अक्षर हैं.

(२) हाथी वालों से मुराद अबरहा और उसका लश्कर है. अबरहा यमन और हवशा का बादशाह था. उसने सनआ में एक कनीसा (इबादतग़राना) बनवाया था और चाहता था कि हज करने वाले मक्कए मुकर्रमा के बजाय यहाँ आएँ और इसी कनीसा का तवाफ़ करें. अरब के लोगों को यह बात बहुत नागवार थी. कबीलए बनी कनानह के एक वक्ते ने मौक़ा पाकर उस कनीसा में पाग़्राना कर दिया और उसको नापाकी से भर दिया. इस पर अबरहा को बहुत गुस्सा आया और उसने काबे को दाने की कसम खाई और इसी इरादे से अपना लश्कर लेकर चला जिसमें बहुत से हाथी थे. और उलका अगुवा एक बड़ा पहाड़ जैसा बदन वाला हाथी था जिसका नाम मेहमूद था. अबरहा ने मक्कए मुकर्रमा के क़रीब पहुंचकर मक्के वालों के जानवर कैद कर लिये. उनमें २०० ऊँट हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के भी थे. हज़रत अब्दुल मुत्तलिब अबरहा के पास पहुंचे. अबरहा बड़े भारी डील डौल का रोअवदार आदमी था. उसने हज़रत अब्दुल मुत्तलिब का सत्कार किया और अपने पास बिठाया और पूछा कि किस बजह से आना हुआ. आपने फ़रमाया, मैं वस यह कहने आया हूँ कि मेरे ऊँट मुझे वापस कर दे. अबरहा बोला, हैरत है कि मैं श्रानए काबा को दाने के लिये आया हूँ और वह तुम्हारे वाप दादा का सम्मान वाला स्थान है. तुम उसके लिये तो कुछ नहीं कहते, अपने ऊँटों की बात करते हो. आपन फ़रमाया, मैं ऊँटों ही का मालिक हूँ, उन्हीं की बात करता हूँ और काबे का जो मालिक है वह खुद ही उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा. अबरहा ने आपके ऊँट वापस कर दिये. अब्दुल मुत्तलिब ने कुरैश को हाल सुनाया और उन्हें सलाह दी कि वो पहाड़ों की घाटियों और चोटियों पर शरण ले लें. चुनावें कुरैश ने ऐसा ही किया. अब्दुल मुत्तलिब ने काबे के दरवाज़े पर पहुंचकर अल्लाह की बारगाह में काबे की हिफ़ाज़त की दुआ की और दुआ से फ़ारिस होकर आप अपनी कौम की तरफ़ चले गए. अबरहा ने सुन्ने तड़के अपने लश्कर को तैयारी का हुक्म दिया और हाथियों को तैयार किया, लेकिन मेहमूद नाम का सरदार हाथी न उठा और काबे की तरफ़ चलने का राज़ी न हुआ.

डाला (२) और उनपर परिन्दों की टुकड़ियाँ भेजी (३) (३) कि उन्हें कंकर के पत्थरों से मारते (४) (४) तो उन्हें कर डाला जैसे खाई खेती की पत्ती (५) (५)

१०६ - सूरए कुरैश

सूरए कुरैश मक्के में उतरी, इसमें चार आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) इसलिये कि कुरैश को मेल दिलाया (१) उनके जाड़े और गर्मी दोनों के कूच में मेल दिलाया (२) (२) तो उन्हें चाहिये इस घर के (३) खर की वन्दगी करें (३) जिसने उन्हें भूख में (४) खाना दिया और उन्हें एक बड़े डर से अमान वस्त्री (५) (५)

१०७ - सूरए माऊन

सूरए माऊन मक्के में उतरी, इसमें ७ आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) भला देखो तो जो दीन को झुटलाता है (१) (१) फिर वह वह है जो यतीम को धक्के देता है (२) (२) और मस्कीन को खाना देते की रगवत नहीं देता (३) (३) तो उन नमाज़ियों की खराबी है (४) जो अपनी नमाज़ भूल बैठे हैं (५) (५) वो जो दिखावा करते हैं (६) (६) और बरतने की चीज़ (७) मांगे नहीं देते (७) (७)

الفُرْقَانُ ۱०६

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ۚ فَتَعَالَى الْإِلَهِ الْمَلِكُ ۚ

الْقَدِيمُ ۚ لَا يَأْخُذُ بِهِ سِنٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَئِنْ سَأَلْتَهُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ لَغَابٌ فِي رَأْسِهِ ۚ

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كِبَارُ سِنِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۚ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ۚ فَذَلِكَ الَّذِي يَدُعُّ

الْيَتِيمَ ۚ وَلَا يَحْضُرْ عَلَى طَعَامِ الْيَسْكِينِ ۚ فَوَيْلٌ

لِلْمُصَلِّينَ ۚ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ

الَّذِينَ هُمْ يُرَآؤُونَ ۚ وَيَسْتَعُونَ الْمَاعُونَ ۚ

مَذَكَّ

जिस तरफ़ चलाते थे, चलता था। जब काबे की तरफ़ उसका रुख करते, वह बैठ जाता था। अल्लाह तआला ने छोटे छोटे पक्षियों को उनपर भेजा जो छोटी छोटी कंकरियाँ गिराते थे, जिनसे वो हलाक हो जाते थे।

- (३) जो समन्दर की तरफ़ से फ़ौज दर फ़ौज आई हर एक के पास तीन तीन कंकरियाँ थीं, दो दोनों पंजों में और एक चौंच में।
- (४) जिसपर वह पक्षी कंकरी छोड़ता तो वह कंकरी उसका ख़ोद तोड़ कर सर से निकल कर जिस्म को चीरकर हाथी में से गुजर कर ज़मीन पर पहुंचती। हर कंकरी पर उस व्यक्ति का नाम लिखा था जो उससे हलाक किया गया।
- (५) जिस साल यह घटना हुई उसी साल, इस घटना के ५० दिन बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादत हुई।

१०६ - सूरए कुरैश

- (१) सूरए कुरैश सही क़ौल के मुताबिक मक्की है। इसमें एक रकू, चार आयतें, सत्तरह क़लिमे और तिहत्तर अक्षर हैं।
- (२) यानी अल्लाह की नेअमते बेशुमार हैं, उनमें से एक खुली नेअमत यह है कि उसने हर साल दो सफ़रों की तरफ़ रगवत दिलाई और इनकी महबूत उनके दिलों में डाली। जाड़े के मौसम में यमन का सफ़र और गर्मी के मौसम में शाम का, कि कुरैश तिजारत के लिये इन मौसमों में ये सफ़र करते थे। और हर जगह के लोग उन्हें एहले हरम यानी हरम वाले कहते थे। और उनका आदर सत्कार करते थे। ये अम्न के साथ व्यापार करते और मुनाज़ा कमाते और मक्कए मुकर्रमा में टहरने के लिये पूंजी जुटाते जहाँ न खेती है न रोज़ी के और दूसरे साधन। अल्लाह तआला की यह नेअमत ज़ाहिर है और इससे फ़ायदा उठाते हैं।
- (३) यानी काबा शरीफ़ के।
- (४) जिसमें उनके सफ़रों से पहले अपने बदन में खेती न होने के कारण मुन्तिला थे। उन सफ़रों के ज़रिये से।
- (५) हरम शरीफ़ और एहले मक्का होने के कारण कि कोई उनका विरोध नहीं करता जब कि आस पास के इलाक़ों में क़त्ल और लूटमार होती रहती है। क़ाफ़िले लुटते हैं, मुसाफ़िर मारे जाते हैं। या ये मानी हैं कि उन्हें कोढ़ से अम्न दिया कि उनके शहर में उन्हें कभी कोढ़ न होगी। या यह मुराद है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बरक़त से उन्हें बड़े भारी ख़ौफ़ से अमान अता फ़रमाई।

१०७ - सूरए माऊन

- (१) सूरए माऊन मक्की है। और यह भी कहा गया है कि आधी मक्कए मुकर्रमा में उतरी, आस बिन वाइल के बारे में और आधी मदीनए तैयिबह में अब्दुल्लाह बिन उवई बिन सलूल मुनाफ़िक के बारे में। इसमें एक रकू, सात आयतें, पच्चीस क़लिमे और एक

१०८ - सूरए कौसर

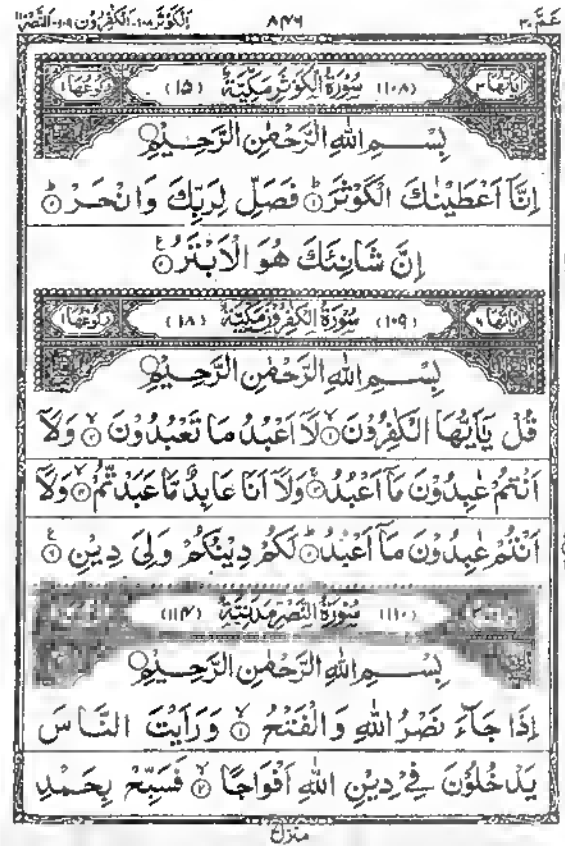
सूरए कौसर मक्के में उतरी, इसमें तीन आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ^(१) ऐ मेहबूब वेशक हमने तुम्हें बेशुमार खूबियाँ अता फरमाई ^(२) ^(३) तो तुम अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो ^(४) और कुरबानी करो ^(५) ^(६) वेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वही हर खैर (अच्छाई) से मेहरबान है ^(७) ^(८)

१०९ - सूरए काफ़िरून

सूरए काफ़िरून मक्के में उतरी, इसमें ६ आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ^(१) तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो ^(२) ^(३) न मैं पूजता हूँ जो तुम पूजते हो ^(४) और न तुम पूजते हो जो मैं पूजता हूँ ^(५) और न मैं पूजूंगा जो तुमने पूजा ^(६) और न तुम पूजोगे जो मैं पूजता हूँ ^(७) तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन ^(८) ^(९)

११० - सूरए नस्र

सूरए नस्र मदीने में उतरी, इसमें तीन आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ^(१) जब अल्लाह की मदद और फ़तह आए ^(२) ^(३) और लोगों को तुम देखो कि अल्लाह के दीन में फ़ौज फ़ौज दाख़िल होते हैं ^(४) ^(५) तो अपने रब की सना करते हुए उसकी



सौ पच्चीस अक्षर हैं।

- (२) याती हिसाब और जज़ा का इन्कर करता है, जबकि दलीलें साफ़ हो चुकीं। ये आयतें आस बिन वाईल सहमी यी वलीद बिन मुगीरह के बारे में उतरीं।
- (३) और उसपर सख्ती करता है और उसका हक़ नहीं देता।
- (४) याती न खुद देता है और न दूसरे से दिलाता है, बहुत ही कंजूस है।
- (५) इससे मुसद मुनाफ़िक लोग हैं जो तनहाई में नमाज़ नहीं पढ़ते क्योंकि उसके मानने वाले नहीं और लोगों के सामने नमाज़ी बनते हैं और अपने आपको नमाज़ी ज़ाहिर करते हैं और दिखावे के लिये उठक बैठक कर लेते हैं और हकीकत में नमाज़ से नाफ़िल हैं।
- (६) इबादतों में, आगे उनकी कंजूसी का बयान फ़रमाया जाता है।
- (७) सुई न हाँडी न प्याले की तरह।
- (८) उलमा ने फ़रमाया है कि आदमी अपने घर में ऐसी चीज़ें अपनी हाज़त से ज़्यादा रखे जिनकी पड़ोसियों को हाज़त होती है और उन्हें उधार दिया करे।

१०८ - सूरए कौसर

- (१) सूरए कौसर तमाम मुफ़सिरीन के तज्वीद मदनी है, इसमें एक रकू, तीन आयतें, दस कलिमें और बयालीस अक्षर हैं।
- (२) और बहुत सी फ़ज़ीलतें अता करके तमाम ख़ल्क पर अफ़ज़ल किया। ज़ाहिरी हुस भी दिया और बातिनी भी, ऊंचा ख़ानदान भी, नबुव्वत भी, किताब भी, हिकमत भी, इल्म भी, शफ़ाअत भी, हाँज़े कौसर भी, मक्कामे मेहमूद भी, उम्मत की कसरत भी, दीन के दुश्मनों पर ग़ालबा भी, फ़तह की कसरत भी, और बेशुमार नेअमतें और फ़ज़ीलतें जिनकी सीमा नहीं।
- (३) जिसने तुम्हें इज़ात और शराफ़त दी।
- (४) उसके लिये उसके नाम पर, बुत परस्तों के विपरीत कि जो बुतों के नाम पर ज़िक्क करते हैं। इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि नमाज़ से ईद की नमाज़ मुसद है।
- (५) न आप, क्योंकि आपका सिलसिला क़यामत तक जारी रहेगा। आपकी औलाद में भी कसरत होगी और आपके मानने वालों से दुनिया भर जाएगी। आपका ज़िक्क मिम्बरों पर बलन्द होगा। क़यामत तक पैदा होने वाले आलिम और उपदेशक अल्लाह तआला के ज़िक्क के साथ आपका ज़िक्क करते रहेंगे। बेनामो निशान और हर भलाई से मेहरबान तो आपके दुश्मन हैं, जब सैयद आलम

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़रज़न्द हज़रत कासिम का विसाल हुआ तो काफ़िरों ने आपका अवतर यानी नस्ल से कटा हुआ कहा और यह कहा कि अब इनकी नस्ल नहीं रही. इनके बाद अब इनका ज़िक्र भी न रहेगा, यह सब चर्चा ख़त्म हो जाएगा. इसपर यह बुजुर्गी वाली सूरत उतरी और अल्लाह तआला ने उन काफ़िरों को झुटलाया और उनका खुला रद्द फ़रमाया.

१०९ - सूरए अल-काफ़िरून

(१) सूरए अल-काफ़िरून मक्के में उतरी. इसमें एक रकू, छ आयतें, छबीस कलिमे और चौरानवे अक्षर हैं. कुरैश की एक जमाअत ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा कि आप हमारे दीन को मानिये, हम आपके दीन को मानेंगे. एक साल आप हमारे बुतों को पूजें, एक साल हम आपके मअबूद को इबादत करेंगे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया - अल्लाह की पनाह कि मैं उसके साथ किसी ग़ैर को शरीक करूँ. कहने लगे तो आप हमारे किसी मअबूद को हाथ ही लगा दीजिये, हम आपकी तरदीक कर देंगे. इसपर यह सूरत उतरा. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मस्जिद शरीफ़ में तशरीफ़ ले गए. वहाँ कुरैश की वह जमाअत मौजूद थी. हज़ूर ने यह सूरत उन्हें पढ़ कर सुनाई तो वो मायूस हो गए और हज़ूर और आपके असहाब को तकलीफ़ पहुँचाने पर क़मर बांध ली.

(२) सम्बोधन यहाँ विशेष काफ़िरों से है जो अल्लाह के इल्म के अनुसार ईमान से मेहरूम हैं.

(३) यानी तुम्हारे लिये तुम्हारा कुफ़्र और मेरे लिये मेरी तौहीद और मेरा इम्ब्रलास. इसमें जताना है. यह आयत क़ित्राल की आयत उतरने के बाद स्थगित हो गई.

११० - सूरए नस्र

(१) सूरए नस्र मदीने में उतरी. इसमें एक रकू, तीन आयतें. सत्तरह कलिमे और सत्तरह अक्षर हैं.

(२) नबीये करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये दुश्मनों के मुकाबले में. इससे या इस्लाम की आम फ़तूहात मुराद हैं या ख़ास मक्के की विजय.

(३) जैसा कि मक्के की विजय के बाद हुआ कि लोग दूर दूर से गुलामी के शौक में चले आते थे और इस्लाम के दाइरे में दाख़िल होते थे.

पाकी बोलो और उससे वख्शिाश चाहो^(१) वेशक वह बहुत तौबह कुबूल करने वाला है^(२)

१११ - सूरए लहव

सूरए लहव मक्के में उतरी, इसमें पांच आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) तबाह हो जाएं अबू लहव के दोनों हाथ और वह तबाह हो ही गया^(२) उसने कुछ काम न आया उसका मौल और न जो कमाया^(३) अव धंसता है लपट मारती आग में वह^(४) और उसकी जोरू^(५) लकड़ियों का गड्ढा सर पर उठाती^(६) उसके गले में खजूर की छाल का रस्सा^(७)

११२ - सूरए इखलास

सूरए इखलास मक्के में उतरी, इसमें चार आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) तुम फ़रमाओ वह अल्लाह है वह एक है^(२) अल्लाह वेनियाज़ है^(३) न उसकी कोई औलाद^(४) और न वह किसी से पैदा हुआ^(५) और न उसके जोड़ का कोई^(६)

११३ - सूरए फ़लक़

सूरए फ़लक़ मक्के में उतरी, इसमें पाँच आयतें, एक रकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरवान रहमत वाला^(१) तुम फ़रमाओ मैं उसकी पनाह लेता हूँ जो सुबह का पैदा करने वाला है^(२) उसकी सब माखलूक के शर से^(३) और

السَّحَابِ الْمُرِّيَّةِ الْفَلَقِ

۱۱۶

ع. ۳

رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ كَانَ تَوَّابًا

(۱۱۱) سُورَةُ الْاَلْهَبِ مَكِّيَّةٌ (۹)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

تَنَزَّلَتْ يَدًا اٰنٰی لَهَبٍ وَتَبَّ مَا اَغْنٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا

كَسَبُ سَيَصْبٰی نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ وَامْرَاَتُهُ

حَمَّالَةَ الْحَطَبِ فِيْ جِدَارِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ

(۱۱۲) سُورَةُ الْاٰخِلَاقِ مَكِّيَّةٌ (۲۲)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ اللّٰهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ

يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

(۱۱۳) سُورَةُ الْفٰلِقِ مَكِّيَّةٌ (۲)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفٰلِقِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَ

مَنْزِل

(४) उम्मत के लिये.

(५) इस सूत के उतरने के बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सुद्दानल्लाहे वविहम्दिही अस्तगफ़िल्लाहा व अतूबो इलैहे की बहुत कसरत फ़रमाई. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि यह सूत हज़्जतुल वदाअ में मीना में उतरी. इसके बाद आयत अलथौमा अक्मल्लो लकुम दीनकुम उतरी. इसके उतरने के बाद अस्सी दिन तक सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने दुनिया में तशरीफ़ रखी. फिर आयत अलकलालता उतरी. इसके बाद हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पचास दिन तशरीफ़ फ़रमा रहे फिर आयत वक्तू यौमन तपरजऊना फ़ीहे इलल्लाहे उतरी, इसके बाद हुज़ूर इक्कीस दिन या सात दिन तशरीफ़ फ़रमा रहे. इस सूत के उतरने के बाद सहाबा ने समझ लिया था कि दीन कामिल और तमाम हो गया तो अब हुज़ूर दुनिया में ज़्यादा तशरीफ़ नहीं रखेंगे. चुनान्वे हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो यह सूत सुनकर इसी ख़याल से राए. इस सूत के उतरने के बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने खुद में फ़रमाया कि एक बन्दे को अल्लाह तआला ने इम्त्रियार दिया है चाहें दुनिया में रहे चाहें उसकी महबूत और क़ुरबत क़बूल फ़रमाए. इस बन्दे ने अल्लाह की क़ुरबत कुबूल कर ली. यह सुनकर हज़रत अबूवक्र सिद्दीक़ ने फ़रमाया- आप पर हमारी जानें, हमारे माल, हमारे माँ बाप, हमारी औलादें सब कुबदान.

१११ - सूरए लहव

(१) सूरए अबी लहव मक्के में उतरी. इसमें एक रकू, पाँच आयतें, बीस कलिमे सतहत्तर अक्षर हैं. जब सफ़ा पहाड़ी पर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अरब के लोगों को दावत दी, हर तरफ़ से लोग आए और हुज़ूर ने उनसे अपनी सच्चाई और अमानत की गवाही लेने के बाद फ़रमाया - इन्नी लकुम नज़ीरूम बैना यदैय अज़ाविन शदीदिन यायी मैं तुम्हें उस अज़ाब का डर दिनाता हूँ जो तुम्हारे बहुत करीब है. इसपर अबू लहव ने कहा था कि तुम तबाह हो जाओ, क्या तुमने हमें इसी लिये जमा किया था. इसपर यह सूत उतरी और अल्लाह तआला ने अपने हबीब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ से ज़वीव दिया.

(२) अबू लहव का नाम अब्दुल उज़्ज़ा है. यह अब्दुल मुत्तलिब का बेटा और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का चर्चा था. बहुत ग़ोरा ख़ुवमीरत आदमी था इसीलिये इसकी कुनियत अबू लहव है और इसी कुनियत से वह मशहूर था. दोनों हाथों से मुराद उसकी ज्ञान है.

(३) यानी उसकी औलाद. रिवायत है कि अबूलहब ने जब पहली आयत सुनी तो कहने लगा कि जो कुछ मेरे भतीजे ने कहा है,

वह अगर सच है तो मैं अपनी जान के लिये माल और औलाद को फ़िदिये कर दूंगा. इस आयत में उसका रद फ़रमाया गया कि यह ख़याल ग़लत है, उस वक़्त कोई चीज़ काम आने वाली नहीं है.

(४) उम्मे ज़मील बिल्ले हर्ब बिन उमैया अबू सुफ़ियान की बहन जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से काफ़ी जलन और दुश्मनी रखती थी और काफ़ी दौलतमन्द और बड़े घराने की थी लेकिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुश्मनी में इस हद तक पहुंची हुई थी कि खुद अपने सर पर कौंटों का ग़ड़ा लाकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रास्ते में डालती थी. ताकि हुज़ूर को और आपके असहाय को तकलीफ़ और बेआरामी हो. और हुज़ूर को तकलीफ़ देना उसे इनना प्यारा था कि वह इस काम में किसी दूसरे की मदद लेना भी ग़वारा नहीं करती थी.

(५) जिससे कौंटों का ग़ड़ा बाँधती थी. एक दिन यह बोझ उठाकर ला रही थी कि थक कर आराम लेने के लिये एक पत्थर पर बैठ गई. एक फ़रिश्ते ने अल्लाह के हुक्म से उसके पीछे से उसके ग़ड़े को खींचा, वह गिरा और रस्सी से गले में फँसी लग गई. और वह मर गई.

११२- सूरए इम्रलास

(१) सूरए इम्रलास मक्के में उतरी और कुष्ठ ने कहा कि मदीने में नाज़िल हुई. इसमें एक रूकू, चार या पाँच आयतें, पन्द्रह कलिमे और सैंतालीस अक्षर हैं. हदीसों में इस सूरत की बहुत सी फ़ज़ीलतें आई हैं. इसको तिहाई कुरआन के बराबर फ़रमाया गया है यानी इसे तीन बार पढ़ लेने से पूरे कुरआन की तिलावत का सबाब मिले. एक व्यक्ति ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि मुझे इस सूरत से बहुत मेहबूत है. फ़रमाया, इसकी मेहबूत तुझे जन्नत में दाख़िल करेगी. (तिरमिज़ी) अरब काफ़िरों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अल्लाह तआला के बारे में तरह तरह के सवाल किये. कोई कहता था कि अल्लाह की वंशावली यानी नसब क्या है, कोई कहता कि वह सोने का है कि चांदी का है या लोहे का है या लकड़ी का है, किस चीज़ का है. किसी ने कहा वह क्या खाता है क्या पीता है. रब होना उसने किससे मीरास में पाया है और उसका कौन वारिस होगा. उनके जबाब में अल्लाह तआला ने यह सूरत उतारी और अपनी ज़ात व सिफ़ात का बयान फ़रमाकर मअरिफ़त की राह बाज़ेह कर दी और जिहालत भरे विचारों और वहमों के अंधेरे को ज़िन् में वो लोग मिरफ़्तार थे, अपनी ज़ात और सिफ़ात के अनवार के बयान से निडाल कर दिया.

(२) ख़ुबियत और उलूहियत में अज़मत और क़माल की सिफ़ातों का मालिक है. उस जैसा, उसके बराबर, उससे मिलता जुलता कोई नहीं, उसका कोई शरीक नहीं.

(३) हर चीज़ से, न ख़ाए न पिये, हमेशा से है, हमेशा रहे.

(४) क्योंकि कोई उसका जोड़ा नहीं.

(५) क्योंकि वह क़दीम है और पैदा होना हादिस की शान है.

(६) यानी कोई उसका हमता यानी बराबर वाला नहीं. इस सूरत की कुष्ठ आयतों में अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात के मुतअल्लिफ़ उलूम के तफ़ीस और आला अर्थ बयान फ़रमा दिये गए जिनकी तफ़सील में कुतुब ख़ाने के कुतुब ख़ाने भर जाएं.

११३ - सूरए फ़लक

(१) सूरए फ़लक मदनी है और एक क़ौल यह है कि मक्की है लेकिन पहला क़ौल सही है. इस सूरत में एक रूकू पाँच आयतें, तेईस कलिमे, चौहत्तर अक्षर हैं. यह सूरत और सूरए नास जो इसके बाद है, उस वक़्त उतरी जबकि लबीद बिन अअसम यहूदी और उसकी बेटीयों ने हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर जादू किया और हुज़ूर के जिस्मे मुबारक और ज़ाहिरी अंगों पर उसका असर हुआ. दिल, अक्ल और ऐतिकाद पर कुछ न हुआ. कुछ रोज़ के बाद जिब्रईल आए और उन्होंने ने अर्ज़ किया कि एक यहूदी ने आप पर जादू किया है और जादू का जो कुछ सामान है वह फ़लों कुएं में एक पत्थर के नीचे दाब दिया है. हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो को भेजा उन्होंने कुएं का पानी निकालने के बाद पत्थर उठाया उसके नीचे से खज़ूर के गांभे की थैली मिली उसमें हुज़ूर के बाल जो कंघी से निकले थे और हुज़ूर की कंघी के कुछ दनदाने और एक डोरा या कमान का चिल्ला जिसमें ग्यारह गाँठें लगी हुई थी और एक मोम का पुतला जिसमें ग्यारह सुईयाँ चुभी थीं, यह सब सामान पत्थर के नीचे से निकला और हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर किया गया. इसपर अल्लाह तआला ने यह दोनों सूरतें उतारीं. इन दोनों सूरतों में ग्यारह आयतें हैं. पाँच सूरए फ़लक में, छ सूरए नास में, हर एक आयत के पढ़ने से एक एक गाँठ खुलती जाती थी यहाँ तक कि सारी गाँठें खुल गई और हुज़ूर बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गए. तअवीज़ और अमल जिसमें कोई कलिमा कुफ़ या शिर्क का न हो, जाइज़ है खासकर वह अमल जो कुरआनी आयतों से किये जाएं या हदीसों में आए हों. हदीस शरीफ़ में है कि अस्मा बिल्ले अमीस ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहा वसल्लम, जअफ़र के बच्चों को जल्द जल्द नज़र हो जाती है क्या मुझे इजाज़त है कि उनके लिए अमल करूं. हुज़ूर ने इजाज़त दे दी. (तिरमिज़ी).

(२) पनाह मांगने में अल्लाह तआला का इस गुण के साथ ज़िक्र इस लिये है कि अल्लाह तआला सुन्न पैदा करके रात की तारीकी को दूर करता है तो वह कादिर है कि पनाह चाहने वाले को जिन हालात से ख़ाफ़ है उनको दूर फ़रमा दे. साथ ही जिस तरह अंधेरी

अंधेरी डालने वाले के शर से जब वह डूवे^(३) और उन औरतों के शर से जो गाँठों में फूँकती हैं^(४) और हसद वाले के शर से जब वह मुझ से जले^(५)।

११४ - सूरए नास

सूरए नास मक्के में उतरी, इसमें ६ आयतें, एक रूकू है। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला^(१) तुम कहो मैं उसकी पनाह में आया जो सब लोगों का रब^(२) सब लोगों का बादशाह^(३) सब लोगों का खुदा^(४) उसके शर से जो दिल में बुरे खतरे डाले^(५) और दुबक रहे^(६) जो जो लोगों के दिलों में बसवसे डालते हैं^(७) जिन्न और आदमी^(८)।



रात में आदमी सुक़ निकलने का इंतज़ार करता है ऐसा ही डरने वाला अन्न और राहत की राह देखता रहता है। इसके अतिरिक्त सुक़ बेचैन और बेकरार लोगों की दुआओं का और उनके कुबूल होने का वक़्त है तो मुराद यह हुई कि जिस वक़्त दुख दर्द से पीड़ित व्यक्ति को खुशहाली दी जाती है और दुआएं कुबूल की जाती हैं, मैं उस वक़्त के पैदा करने वाले की पनाह चाहता हूँ। एक क़ौल यह भी है कि फ़लक जहन्नम में एक घाटी है।

(३) जानदार हो या बेजान, आक़िल, बालिग, आज्ञादा हो या दीवाना और मजनून, कुछ मुफ़सिरो ने फ़रमाया है कि ख़लक़ से मुराद यहाँ ख़ास इब्नीस है जिससे बदतर मख़लूक में कोई नहीं और जादू के अमल उसकी और उसके साथी शैतानों की मदद से पूरे होते हैं।

(४) उम्मुल भूमिनीन हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने चाँद की तरफ़ नज़र करके उनसे फ़रमाया- ऐ आयशा, अल्लाह की पनाह लो उसके शर से यह अंधेरी डालने वाला है जब डूवे। (तिरमिज़ी) यानी आख़िर माह में जब चाँद छुप जाए तो जादू के वो अमल जो बीमार करने के लिए हैं इसी वक़्त में किये जाते हैं।

(५) यानी जादूगर औरतें जो डोसों में गाँठें लगा लगा कर उनमें जादू के मंत्र पढ़ पढ़कर फूँकती हैं जैसे कि लबीद की लड़कियाँ गन्डे बनाना और उनपर गिरह लगाना, कुरआनी आयतें या अल्लाह के नाम दम करना जायज़ है। जम्हूर सहाबा व ताबईन इसी पर हैं और हदीसे आयशा रदियल्लाहो अन्हा में है कि जब हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के घर वालों में से कोई बीमार होता तो हुज़ूर ये सूत्र पढ़कर उस पर दम फ़रमाते।

(६) हसद वाला वह है जो दूसरे के ज़वाले नेअमत की तमन्ना करे। यहाँ हासिद से यहूदी मुराद हैं जो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से हसद करते थे या ख़ास लबीद बिन अअसम से। हसद बदतरीन ख़सलत है और यही सबसे पहला गुनाह है जो आसमान में इब्नीस से सरज़द हुआ और ज़मीन में काबिल से।

११४ - सूरए नास

- (१) सूरए अन्नास सही क़ौल के अनुसार मंदनी है। इसमें एक रूकू, छह आयतें, बीस कलिमे, उनासी अक्षर हैं।
- (२) सब का ख़ालिक और मालिक। ज़िक्र में इन्सानों की तख़सीस उनके बड़प्पन के लिये है कि उन्हें अशरफ़ुल मख़लूक़ात किया।
- (३) उनके कामों की तदबीर फ़रमाने वाला।
- (४) कि इलाह और मअबूद होना उसी के साथ ख़ास है।
- (५) इससे मुराद शैतान है।
- (६) यह उसकी आदत ही है कि इन्सान जब माफ़िअ होता है तो उसके दिल में बसवसे डालता है और जब इन्सान अल्लाह का

ज़िन्न करता है तो शैतान दुबक रहता है और हट जाता है.

(७) यह बयान है बसबसे डालने वाले शैतान का कि वह ज़िन्नों में से भी होता है और इन्सानों में से भी जैसा कि शैतान ज़िन्न इन्सानों को बसबसे में डालते हैं ऐसे ही शैतान इन्सान भी उपदेशक बनकर आदमी के दिल में बसबसे डालते हैं फिर अगर आदमी उन बसबसे को मानता है तो उसका सिलसिला बढ़ जाता है और ख़ूब गुमराह करने हैं और अगर उससे तफ़रत करता है तो हट जाते हैं और दुबक रहते हैं. आदमी को चाहिये कि शैतान ज़िन्न के शर से भी पनाह मांगे और शैतान इन्सान के शर से भी. बुग़्रारी और मुस्लिम की हदीस में है कि सैय्यदे आलम सल्लल्लाहू अलैह वसल्लम रात को जब बिस्ते मुबारक पर तशरीफ़ लाने तो दोनों दस्त मुबारक जमा फ़रमाकर उनपर दम करते और सूरज कुल हुवल्लाहो अहद और कुल अउज़ो विरन्जिल फ़लक और कुल अऊज़ो बिरन्जिन नास पढ़कर अपने मुबारक हाथों को सरे मुबारक से लेकर तमाम जिस्मे अक़दस पर फ़रते जहाँ तक दस्त मुबारक पहुँच सकने. यह अमल तीन बार फ़रमाते.

अल्लाह तआला सब से ज़्यादा इल्म रखने वाला है अपने राज़ों का, और अपनी किताब कं भेदों का. और आग्रिर में हम अपनी दुआओं में अल्लाह की तारीफ़ दोहराते हैं और सबसे उत्तम दरुद और सलाम पेश करते हैं अल्लाह के हबीब व नबीयों के सरदार सैय्यदना मुहम्मद और उनकी आल और उनके सहाबा, सब पर एक साथ.

क़ुरआन का पाठ सम्पूर्ण हो जाने के बाद की दुआ -

अल्लाहुम्मा आनिस वहशती फ़ी क़ब्री, अल्लाहुम्मा हमनी बिल क़ुरआनिल अज़ीमे वज्जल्हु ली ईमानौव न नूरौव व हुदौव व रहमतव. अल्लाहुम्मा ज़किरनी मिहो मा नसीतु व अल्लिमी मिहो मा जहिल्लु वज़ुक्नी तिलावतहू आनाअल-लैल व-आनाअन्नहारे वज्जल्हु ली हुज्जतैय या रब्बल आलमीन. (यानी ऐ श्रुदा मेरे ! क़ब्र में मेरी परेशानी दूर फ़रमा और क़ुरआने अज़ीम के वसीले से मुझ पर रहम फ़रमा और क़ुरआन को मेरे लिये पेशवा और प्रकाश तथा हिदायत का साधन बना और क़ुरआन में से जो कुछ मैं भूल गया हूँ, वह याद दिला, और जो कुछ क़ुरआन में से मैं नहीं जानता वह सिखला दे और दिन रात मुझे इसकी तिलावत नसीब कर और क़यामत के दिन इसको मेरे लिये दलील बना. ऐ आलम के पालनहार ! मेरी यह दुआ कुबूल फ़रमा.)

पारा तीस समाप्त

सज्दा वाली आयतें

नं.	पारा	सूरत	सज्दे वाले शब्द	सज्दे की जगह	आयत
१	९	अल-अर्राफ़	يَسْجُدُونَ	يَسْجُدُونَ	२०६
२	१३	अर-रअद	وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ	وَالْأَصْبَالِ	१५
३	१४	अन-नहल	وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ	مَا يُؤْمَرُونَ	४९/५०
४	१५	बनी इस्राईल	وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ	خُشُوعًا	१०७/१०९
५	१६	मरयम	خَرُّوا سُجَّدًا	وَبُكْيًا	५८
६	१७	अल-हज	يَسْجُدُ لَهُ	مَا يَشَاءُ	१८
*	१७	अल-हज (शाफ़ई)	يَسْجُدُ	تَقْلِيحُونَ	७७
७	१९	अल-फ़ुरक़ान	أَسْجُدُ	نُفُورًا	६०
८	१९	नम्ल	أَلَّا يَسْجُدُوا	رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ	२५/२६
९	२१	अस-सज्दा	خَرُّوا سُجَّدًا	يَسْتَكْبِرُونَ	१५
१०	२३	सौद	وَحَرُّرَ الْكَعْبَاءِ	وَأَنَابَ	२४
११	२४	हामीम सज्दा	وَأَسْجُدُوا	لَا يَسْمُونَ	३७/३८
१२	२७	अन-नज्म	فَأَسْجُدُوا	وَأَعْبُدُوا	६२
१३	३०	अल-इन्शिकाक़	لَا يَسْجُدُونَ	لَا يَسْجُدُونَ	२१
१४	३०	अल - अलक़	وَأَسْجُدُوا	وَاقْتَرِبْ	१९

* सूरए हज में आयत ७७ का सज्दा इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह के नज़दीक है लेकिन इमामे अजज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह के नज़दीक नहीं है.

कुरआन में क्या क्या, कहाँ कहाँ

अल्लाह तआला मअबूद है सब चीज़ों का पैदा करने वाला

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१६३
३	बक़रह	२५५
३	आलं इमरान	६२
६	निसा	१७१
६	माइदा	७३
७	अनआम	४६
८	अअराफ़	६५
१३	इब्राहीम	५२
१४	नहल	२२
१४	नहल	५१
१५	बनी इस्राईल	२२
१६	कहफ़	११०
१७	अंबिया	१०८
१७	हज	१३४
१८	मूमिनून	९१
२०	नमल	६०
२०	कसस	७१
२२	सौद	६५
२४	हमीम सज्दा	६
२५	जुअरुफ़	८४
२७	नूर	४३

सब चीज़ों का पैदा करने वाला अल्लाह तआला ही है

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	२९
७	अनआम	१०२
७	"	१०३
१३	रअद	१६
१७	अंबिया	३३
१८	मूमिनून	१३/१४
१८	नूर	४५
१८	फ़ुरक़ान	२
२१	लुक़मान	१०
२४	अल-मूमिन	६३
२७	रहमान	४-५

३०

अलक़

१-२

हर चीज़ का हक़ीक़ी मालिक अल्लाह तआला ही है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	फ़ातिहा	३
३	आलं इमरान	२६
२६	फ़त्त	११
६	माइदा	१७
११	यूनुस	५५
६	माइदा	४०
७	माइदा	१२०
१५	बनी इस्राईल	१११
१८	मूमिनून	८८
२२	फ़ातिर	१३
२४	जुमर	४४
२५	जुअरुफ़	८२
२५	जुअरुफ़	८५
२६	फ़त्त	१४
३०	नास	२

हर नफ़ा नुक़सान अल्लाह तआला ही के इस्तिथार में है

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	माइदा	४१
९	अअराफ़	१८८
११	यूनुस	४९
११	यूनुस	१०७
२४	जुमर	३४

मुसीबत टालना, बीमारों को शिफ़ा और बेअीनादों को औलाद ज़ाती तौर से अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं दे सकता

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	यूनुस	१०७
७	अनआम	१७
११	यूनुस	१२
१५	बनी इस्राईल	५२
१७	अंबिया	८४

११	शुअरा	८०
२४	जुमर	३८
२५	शूरा	४९

अल्लाह तआला के सिवा किसी से दुआ न मांगी जाए.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	४०-४१
८	अअराफ़	२९
११	यूनुस	१०६
१३	रअद	१४
२४	मूमिनून	१४
१९	फुरक़ान	६५

अल्लाह तआला बेकरारों की दुआ कुबूल करता है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	१८६
२०	नमल	६२
२४	जुमुर	४९

रिज़्क की कमी-बेशी ज़ाती तौर पर अल्लाह तआला के इस्तिथार में है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	२१२
७	माइदा	८८
१२	हूद	६
१३	रअद	२६
१७	हज़	५८
२०	अन्कबूत	१७
२१	अन्कबूत	६०
२२	फ़ातिर	१३
२४	मूमिन	१३
२५	शूरा	२७
२७	ज़ारियात	५८
२९	मुल्क	२१

इल्मे ग़ैब ज़ाती तौर पर अल्लाह तआला ही के साथ ख़ास है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्ररह	३३
७	माइदा	१०९
७	माइदा	११६
७	अनआम	५९
७	अनआम	७५
१०	तौबह	७८
११	तौबह	९२
११	तौबह	१०५
११	यूनुस	२०
१२	हूद	१२३
१५	कहफ़	२६
२२	फ़ातिर	३
२२	सबा	३
२६	हुजुयत	१८

अल्लाह तआला के सिवा कोई ज़ाती तौर पर शिफ़ा नहीं दे सकता.

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	शुअरा	८०

अल्लाह तआला की अता से ही कुरआन शरीफ़ और दवाओं में शिफ़ा है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	यूनुस	५७
१४	बहल	६९
१५	बनो इस्माईल	८२
२४	हमीम सज्दा	४४

अल्लाह तआला के हुक्म से ही उसके बंदे औलाद देते हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	कहफ़	८२
१६	मरयम	१९
३०	नाज़िआत	५

बातिल मअबूदों को कोई इस्तिथार नहीं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१३	रअद	१६
१५	बनी इस्राईल	५६
१८	फुरकान	३
२०	अन्कबूत	१७
२२	फ़ातिर	१३
२२	सबा	२२
२४	जुमार	३८

रिसालत का बयान - नबी मअसूम और वे-ऐव होते हैं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	६५
२३	साद	८३
१३	यूसुफ़	३५
२७	नज्म	२
८	अअराफ़	६१
२९	हाक्काह	२४
१५	बनी इस्राईल	४४
१२	यूसुफ़	७४
१२	हूद	३८
१	बक्रह	८८
३	आलेइमरान	३३
२१	अहज़ाब	२१

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम गुणों, नबुच्चत के कमालात, रिसालत की विशेषताओं के मालिक हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	४५-४६
१	बक्रह	११९
२	बक्रह	११५
५	निसा	७९
१०	तौबह	३३
१३	रअद	३०
१५	बनी इस्राईल	१०५
१७	अंबिया	१०७
२२	सबा	८
२२	यासीन	३
२२	अहज़ाब	४५-४६

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम नवियों और रसूलों से महान हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	९०
१८	फुरकान	१
२२	अहज़ाब	४०
२२	सबा	२८

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आखिरी नबी हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्रह	९८
६	मायदह	३
७	अनआम	११
१०	तौबह	३३
१७	अंबिया	१०७
१८	फुरकान	१
२२	अहज़ाब	४०-४५
२३	सबा	२८
२६	फ़ल्ह	३८
२८	सफ़	९

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सारी सृष्टि के नबी हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अअराफ़	१५८
१७	अंबिया	१०७
१८	फुरकान	१
२२	सबा	२८
३०	कौसर	१

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला की दलील हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	निसा	१७५
२६	फ़ल्ह	२८

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अदब करना ईमान का अंग है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	६५
६	माइदा	१२
९	अनफ़ाल	२४
९	अअरफ़	१५७
१८	नूर	६३
२२	अहज़ाब	३६
२२	अहज़ाब	५३
२६	फ़क्त	९
२६	हुजुरात	१-२

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अपमान कुफ़्र है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्ररह	१०४
१०	तौबह	६१
१०	तौबह	६६
२२	अहज़ाब	५७
२३	नूर	७७
२६	हुजुरात	२

जिसे हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से निस्वत हो जाए वह अज़मत वाला है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	१४३
४	आले इमरान	११०
१४	अल-हिज्र	७२
२२	अल-अहज़ाब	३२
३०	बलद	१-२
३०	तीन	३
३०	दुहा	१-२

नबी की हर बात पूरी होती है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्ररह	१२६
१	बक्ररह	१२९

११	यूनुस	८८
१२	यूसुफ़	४१
१३	इब्राहीम	३७
१६	तौहा	९७
२९	नूर	२६

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ज़ाती तौर पर ग़ैब जानने वाले नहीं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	५०
९	अअरफ़	१८७-१८८
२९	जिन्न	२५-२८

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इल्मे ग़ैब दिया गया

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१७९
५	निसा	११३
७	अनआम	३८
११	यूनुस	३७
१४	नहल	८९
२७	रहमान	१-२
२९	जिन्न	२६
३०	तकवीर	२४

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला के ज़िक्र हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१३	रअद	२८
२८	तलाक़	१०
३०	माशियह	२१

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम नूर हैं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	माइदा	१५
१०	तौबह	३२

१८	नूर	२५
२२	अहज़ाब	४५-४६
२८	सफ़	८

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हाज़िर नाज़िर हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१४३
४	आले इमरान	१०१
४	आले इमरान	१०३
५	निसा	६४
५	निसा	४१
९	अनफ़ाल	३२
११	तौबह	१२८
२१	अहज़ाब	६
२६	फ़ल्ह	८
२९	मुज़म्मिल	१५

किसी नबी ने भी इन्सानों को अपनी इबादत का हुक्म नहीं दिया.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	७९

फ़ज़ायले ख़िलाफ़ते राशिदह व ख़िलाफ़ते अबू बक्र सिद्दीक

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२०४
८	अअराफ़	२०४
१०	तौबह	४०
१८	नूर	५५
२२	अहज़ाब	४३
२२	अहज़ाब	४३
२४	जुमर	३३
२६	फ़ल्ह	१६
२६	हुज़ुरात	३
२७	हदीद	१०

नबी की पाक बीबियाँ एहलेबैत है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१२१
२२	अहज़ाब	३३
१७	अंबिया	७६
१२	हूद	७३

एहलेबैत के फ़ज़ायल

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	३३
३	आले इमरान	६१
२२	अहज़ाब	५६
९	अनफ़ाल	३३
२३	साफ़फ़ात	७३

आयशा सिद्दीका रदियल्लाहो अन्हा के फ़ज़ायल

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	३२
५	निसा	४३
१८	नूर	११-२०

फ़ज़ायले हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रदियल्लाहो अन्हो

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१२५
२	बक़रह	१८७
१०	अनफ़ाल	६४
२८	तहरीम	१
२८	सफ़	१३

फ़ज़ायले हज़रत उस्मान ग़दी रदियल्लाहो अन्हो

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२६१
२२	अहज़ाब	२३

२७	हदीद	७
३०	अअला	१०

फ़ज़ायले मौला अलीये मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	मुजादलह	१२
२९	दहर	७

फ़ज़ायले सहावए किराम रदियल्लाहो अन्हुम

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्रह	१२९
१	बक्रह	१३७
२	बक्रह	२१८
४	आले इमरान	१५५
५	निसा	९५
५	निसा	५४
६	माइदा	७
९	अनफ़ाल	४
९	अनफ़ाल	३३
११	तौबह	११७
११	तौबह	१००
२२	सबा	४
२३	सफ़	२४
२६	हुजुरात	७
२६	फ़ल्ह	२९
२८	जुमुआ	३
२८	हथ्र	९
३०	बैय्यिनह	८

अल्लाह के बली मुश्किल कुशा और साहिबे अता हैं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	२४८
३	आले इमरान	४९
७	माइदा	११४
१३	इब्राहीम	५
३७	ज़ारियात	२५

गैरुल्लाह से मदद मांगना जायज़ है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	१५३
६	माइदा	२
१०	अनफ़ाल	६४
२६	मुहम्मद	२
२८	तहरीम	४
२८	सफ़	१४

मीलाद शरीफ़ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१६४
६	मायदह	७
११	तौबह	१२८
२८	सफ़	९
२८	सफ़	६
३०	दुहा	११

ज़िन्दगी, मौत के बाद

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	२५
८	अअराफ़	२९
८	अनआम	१३३
१६	तौहा	५५
१९	नमल	२२
२२	यासीन	१२

ज़िन्दा होने की कैफ़ियत

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	तौहा	५५
१९	शुअरा	८१
१६	तौहा	५५
१९	रूम	२५
१७	हज	५
२०	नमल	६४
२०	अन्क़वत	१९

मौत के बाद ज़िन्दगी का इन्कार करने वाला काफ़िर है

पारा	सूरत	आयत नंबर
१२	हूद	७
१३	इब्राहीम	४९
१५	बनी इस्राईल	५०
१५	बनी इस्राईल	९८
१६	मरयम	३३
१६	मरयम	६६
२३	सफ़	५९
२२	सबा	३

मुनाफ़िकों पर अज़ाब

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	मुहम्मद	२७

शहीद की ज़िन्दगी

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्करह	१५४
६	निसा	६९

शहीदों के लिये बशारत

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आल इमरान	१५७
४	आल इमरान	१६९

रब के हुज़ूर सब पेश होंगे .

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	१२

अल्लाह की तरफ़ से चमत्कार के तौर पर ज़िन्दगी

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्करह	२५९

रात को सोने की मिसाल

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	अनआम	६०

क्रज़ा और क्रद्र का बयान खुदा के यहाँ हर चीज़ का अन्दाज़ा मुकरर है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	हज़र	२१
२७	क्रमर	४९
२८	तलाक़	३
३०	आला	३

हर बात कुरआन में लिखी है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	हज़	२
१७	हज़	७०
२२	फ़ातिर	११
२७	क्रमर	५२
२७	हदीद	२२-२३
१३	रअद	३९

कुल काम आसमान से उतरते हैं, सब कुछ खुदा की तरफ़ से है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	७८
९	अनफ़ाल	१७
२१	सजदह	१५
२८	तगावुन	७८

इन्सान का दिल खुदा के इश्तिहार में है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	२४

लोगों का इस्त्रिलाफ और उनका ईमान लाना खुदा की मर्जी से है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	११
७	अनआम	२
१०	तौबह	९
११	युनुस	१९
११	युनुस	९६
११	युनुस	९९-१००
१२	हूद	११८-११९
२२	फातिर	११
२७	वाकिअह	१४४

मौत का वक़्त बदल नहीं सकता.

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	५३
५	निसा	७८
८	अअराफ़	३४
११	युनुस	४९
१४	हजर	५
१४	नहल	६१
२१	अहज़ाब	१६
२२	सबा	३०
२८	मुनाफ़िकून	११
२९	नूह	४

इन्सान की भर्जी पूरी हो सकती है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२७	तज्म	२४-२५

नेकी खुदा से बड़ी इन्सान से .

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	७९
२०	शम्स	८
५	निसा	७८
१	अअराफ़	१३१

अज़ाब क़ब्र बरहक़ है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२९	नूह	२५
२४	मुमिन	४६

फ़रिश्तों का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्ररह	३०
१	बक्ररह	३४

तोहीद पर शहादत

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	१८

हज़रत ज़करिया को नमाज़ में खुशख़बरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	२५

हज़रत मरयम से बातचीत

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	४५

हक़ और बातिल की जंग में फ़रिश्तों की भूमिका

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१२४

फ़रिश्ते अपने फ़रायज़ में कोताही नहीं करते

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	६१

फरिश्ते पैदायशी सच्चे होते हैं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अनआम	१५०

फरिश्तों की सिफात

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अअराफ़	२०६
८	अअराफ़	३७
११	यूनुस	२१
१२	हद	६९

फरिश्ते अल्लाह की तस्वीह करते हैं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१३	रअद	१३

फरिश्ते नेकी के गवाह

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	७८

अर्श उठाने वाले फरिश्ते

पारा	सूरत	आयत नंबर
२४	भूमिन	७

फरिश्ते हम्द करते हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२५	शूरा	५

उनका काम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	फातिर	१

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	साफ़फ़ात	१
२८	तहरीम	६
३०	नाज़िआत	१
२९	तहरीम	४
२९	मआरिज	४
२९	जिन्न	२७
२९	मुदस्सिर	३१
३०	अवस	१६
३०	इन्कितार	१२
३०	मुतफ़िफ़ीन	२३
३०	कद	५

उनकी मुख़ालिफ़त कुफ़्र है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बकरह	१०२

रुह निकालना

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	९७
७	अनआम	६१

हर आदमी पर निगरानी

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	८

खुल्लमखुल्ला आने की सूरतें

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	८

ज़ालिमों की जान कैसे निकालते हैं

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	९३

मुश्रिकों के अक्कीदों की तरदीद

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१३	रअद	१३
१३	रअद	१७
१५	बनी इसाईल	४०

खुदाई में हिस्सेदार नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१७	हज	७५
----	----	----

काफिर फरिश्तों को देवियाँ कहते

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२७	नज्म	२६
२२	सबा	४०

गुमराह क्रौम पर अज़ाब लाए

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२६	ज़ारियात	२५
----	----------	----

काफिरों को हाँके

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२४	काफ	२१
----	-----	----

हश् के दिन

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२४	जुमर	७५
----	------	----

मुश्रिकों ने खुदा की बेटियाँ कहा

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२५	जुअररुफ	१६
----	---------	----

अज़ाब लाना

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१९	फुरकान	२१
----	--------	----

आखिरत में नेकियों का स्वागत

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१७	अंबिया	१०३
----	--------	-----

रसूल फ़रिश्ते के अर्थ में

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१६	मरयम	१७
----	------	----

अपनी मर्ज़ी से वही नहीं लाते

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१६	मरयम	६४
----	------	----

फ़रिश्तों की सिफ़ात

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१७	अंबिया	२०
१७	अंबिया	२६

इन्सानी शकल में आते हैं

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१२	हूद	६९-७०
१२	हूद	७७
१४	हिज्र	५२
१४	हिज्र	६२
१४	हिज्र	८
१४	नहल	२
१४	नहल	१०२
९	अनफ़ाल	९

फरिस्तों और जिन्न का फरक

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१५	काहफ	५०
----	------	----

कुरआने मजीद

कुरआन लोगों के लिए बयान, नसीहत, और हिदायत है

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१	बकरह	२
४	आले इमरान	३८
९	अअराफ	२-३
१९	नमल	१

कुरआन में शक की गुंजायश नहीं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१	बकरह	२
---	------	---

कुरआन में इस्तिलाफ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

५	निसा	८२
---	------	----

कुरआन प्रमाण और नूर है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

६	निसा	१७४
२५	शूरा	५२

कुरआन मुबारक है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

७	अनआम	९३
१७	अंबिया	५०
२३	सौद	२९

कुरआन अमल करनेवालों के लिए मार्गदर्शक है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

७	अनआम	९३
८	अअराफ	९

कुरआन मुफस्सल किताब है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

८	अनआम	११४
८	अअराफ	५२
११	हूद	१
१३	यूसुफ	१११

कुरआन शिफा है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

११	यूनस	५७
१५	बनी इसाईल	८२

कुरआन में हर चीज़ का वाज़ेह बयान है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१४	नहल	८५
----	-----	----

कुरआन सारे जगत के लिये नसीहत है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२९	कलम	५२
३०	तक्वीर	२७

कुरआन पाकीज़ा ग्रन्थ है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

३०	अवसा	१६
----	------	----

कुरआन अल्लाह की तरफ से उतारा हुआ है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२७	बाकिअह	७७-८०
----	--------	-------

कुरआन विवरण है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२९	मुजम्मिल	१९
२९	मुदसिर	५४
२९	दहर	२९

कुरआन आसान है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२७	क्रमर	१७
----	-------	----

कुरआन अगली किताबों की तस्दीक करता है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

३	आले इमरान	३
६	मायदह	४८
२७	अहकाफ	१२
७	अनआम	१२
११	यूनुस	३७
१२	यूसुफ	१११
२२	फातिर	३१

कुरआन सारी किताबों पर अमीन और हाकिम है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

६	मायदह	४८
---	-------	----

कुरआन, बुजुर्गी वाला

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२६	क्राफ	१
३०	बुरुज	२१

कुरआन, करामत वाला

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२७	बाकिअह	७७
----	--------	----

कुरआन, हिकमत वाला

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२२	यासीन	२
----	-------	---

कुरआन किताबे मुचीन

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१९	नमल	१
१५	दुश्शान	२

कुरआन को पाक लोग छुएं

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२७	बाकिअह	७९
----	--------	----

कुरआन रुह है

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२५	शूरा	५२
----	------	----

कुरआन जैसा मुमकिन नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१५	बनी इस्राईल	८८
----	-------------	----

कुरआन के राजों का इल्म अल्लाह तआला को ही है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

३	आले इमरान	७
---	-----------	---

हुकम वाली आयतें अस्ल मकसूद है .

पास	सूरत	आयत नंबर
-----	------	----------

३	आले इमरान	७
---	-----------	---

कुरआन की आयतें एक दूसरे से मिलती जुलती हैं.

पास	सूरत	आयत नंबर
-----	------	----------

२३	जुमर	२३
----	------	----

कुरआन बारबार पढ़ा जाता है.

पास	सूरत	आयत नंबर
-----	------	----------

२३	जुमर	२३
----	------	----

कुरआन अरबी जवान में है.

पास	सूरत	आयत नंबर
-----	------	----------

१४	नहल	१०३
१२	यूसुफ	२
१९	शूअरा	१९५
२३	जुमर	२८
२४	हासीम सजदह	३

कुरआन गूंगा नहीं.

पास	सूरत	आयत नंबर
-----	------	----------

२४	हासीम सजदह	४४
----	------------	----

हदीस की जरूरत

पास	सूरत	आयत नंबर
-----	------	----------

१	बकरह	२६
१	बकरह	१३९
२	आले इमरान	२२
५	निसा	८०
५	निसा	६५
६	मायदह	१५

९	अअराफ	१५७
२५	शूरा	५२
३८	हथ	७

तहारत का बयान पानी का पाक होना .

पास	सूरत	आयत नंबर
-----	------	----------

९	अतफाल	११
१९	फुरकान	४८

इस्तजे का बयान

पास	सूरत	आयत नंबर
-----	------	----------

११	तौबह	१०८
----	------	-----

बुजू का जिक्र

पास	सूरत	आयत नंबर
-----	------	----------

६	मायदह	६
---	-------	---

बुजू तोड़नेवाली बातें

पास	सूरत	आयत नंबर
-----	------	----------

६	मायदह	६
---	-------	---

मुस्ल का बयान

पास	सूरत	आयत नंबर
-----	------	----------

२	बकरह	२२२
५	निसा	४३
६	मायदह	६

तयम्मुम का बयान

पास	सूरत	आयत नंबर
-----	------	----------

५	निसा	४३
६	मायदह	६

माहवारी का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्रह	२२२
२	बक्रह	२२८

अज्ञान का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२४	हामीम सजदह	३३
६	मायदह	५८
२८	जुमुअह	९

नमाज़ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१	बक्रह	४४
२	बक्रह	२३८

नोट :- नमाज़ का जिक्र ज़कात के साथ कुरआन में ८२ बार है .

नमाज़ के औक्रात

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

५	निसा	१०३
१२	हूद	१४४
१५	बनी इस्राईल	७८
१८	भूमिनुत	९
२१	रूम	१७

नमाज़ की शर्तें

कपड़ों और बदन की पाकी

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

७	हज	२६
२९	मुदस्सिर	४

सतरे औरत

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

८	अअराफ़	३१
८	अअराफ़	२६
१८	नूर	३१

किबला

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्रह	१४४
---	-------	-----

सफ़र में भी किबले की तरफ़ मुंह ज़रूरी है, नफ़ल नमाज़ में भी.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्रह	१४५
२	बक्रह	१५०
२	बक्रह	११५

नियत

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

३०	बैयिनह	५
२३	जुमार	३

तकबीरे तहरीमह

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

३०	आला	१५
२९	मुदस्सिर	३
१५	बनी इस्राईल	१११

नमाज़ व कियाम के फ़र्ज

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

६	मायदह	६
२	बक्रह	२३८
८	अअराफ़	२९

१५

बनी इस्राईल

७८

किरातें कुरआन (फातिहा जरूरी नहीं)

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१५	बनी इस्राईल	७८
१५	बनी इस्राईल	११०
२९	मुज्जम्मिल	२०

रुकू

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१	बकरह	४३
१७	हज	७७

सजदह

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१७	हज	७७
----	----	----

इमाम किरात करे तो मुक्तदी आमांश रहे

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

९	अअराफ	२०४
---	-------	-----

नमाज़ की रकअतों का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

५	निसा	१०१-१०२
३०	फ़ख़	३

इमामत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१	बकरह	४३
५	निसा	१०२

जमाअत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१	बकरह	४३
५	निसा	१०२

नफ़ल नमाज़ें

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१५	बनी इस्राईल	७९
१९	फ़ुरक़ान	६४
२१	सजदह	१६
२६	काफ़	४०
२७	तूर	४९
२९	मुज्जम्मिल	२०

नमाज़ बेहयाई से रोकती है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२१	अनकबूत	४५
----	--------	----

मुसाफ़िर की नमाज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

५	निसा	१०१
---	------	-----

जुमुअ की नमाज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२८	जुमुअह	९
----	--------	---

ईद की नमाज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बकरह	४५
३०	कौसर	२

बारिश की दुआ की नमाज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
२९	नूर	१०

ख़ोफ़ की नमाज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	२३९
५	तिसा	१०२

क्रज़ा नमाज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	तौह	१४

जनाज़े की नमाज़ सिर्फ़ मूम्निन की है, काफ़िर और मुनाफ़िक की नहीं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	८४

मस्जिद के अहकाम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२९	जिन्न	१८

मस्जिदें अच्छी बनाएं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३६

सिर्फ़ मुसलमान मस्जिद तामीर करें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	१७-१८

मस्जिद के मुतवल्ली परहेज़गार हों.

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	३४

मस्जिद में अल्लाह के ज़िक्र से रोकना सख्त जुर्म है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्ररह	११४

मस्जिद की बुनियाद तकवा पर है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	१०८-१०९

मुनाफ़िकों की मस्जिद में नमाज़ जायज़ नहीं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्ररह	११४

ज़कात का बयान
ज़कात का फ़र्ज़ होना.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्ररह	३
८	मूमिनूत	४

रुलमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो. कुरआन में वेशुमार जगहों पर आया है.

ज़कात देनेवाला कामयाब है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
३०	आला	१४

ज़कात माल को पाक करती है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	१०३

ज़कात देनेवाले को अल्लाह बहुत देता है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्ररह	२६८
२१	रूम	३९
२	बक्ररह	२६१
२७	हदीद	१८

ज़कात नेक नियत से दें .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	रूम	२९

ज़कात में उमदा चीज़ें दें.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्ररह	२२७

ज़कात देकर एहसान न जताएं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्ररह	२६२

जिसके पास न हो वह अच्छी बात कहे

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्ररह	२६३

अपनी महेबूब चीज़ खर्च करो

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	६२
२	बक्ररह	१७७

ज़कात न देनेवाले और कंजूस पर अज़ाब है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१८०
२६	मुहम्मद	३७
१०	तौबह	३४

बाग़ और खेत पर ज़कात है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अनआम	१४०
२	बक्ररह	२६७

तिजारी माल पर ज़कात

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्ररह	२६७

सख़्ती से मांगना मना है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्ररह	१७३

खुले छुपे दोनों तरह से ज़कात दी जा सकती है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्ररह	२७१
२२	फ़ातिह	२९
६	निसा	१४९

किन लोगों को ज़कात दें .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	६०
१८	नूर	२२

रोज़े का बयान
रोज़े का फ़र्ज़ होना

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्ररह	१८३
---	--------	-----

रमज़ान मास के रोज़े फ़र्ज़ हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्ररह	१८२
---	--------	-----

२	बक्ररह	१८५
---	--------	-----

मुसाफ़िर और रोगी पर तुस्त रोज़ा फ़र्ज़ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्ररह	१८४
---	--------	-----

रोज़े का वक्त

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्ररह	१८७
---	--------	-----

रमज़ान की रात

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्ररह	१८७
---	--------	-----

जो शख्स बुढ़ापे के कारण रोज़ा न रख सके वह कफ़ारा दे .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्ररह	१८४
---	--------	-----

क़सम के कफ़ारे में रोज़ा है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

७	मायदह	८९
---	-------	----

हलाल को हराम बनालेने में रोज़े का हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२८	तहरीम	४
----	-------	---

क़त्ले ख़ता में रोज़ा है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२८	मुजादलह	२
----	---------	---

जुमें हज का कफ़ारा रोज़ा

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

७	मायदह	१९६
---	-------	-----

चाँद देखने का बयान .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्ररह	१८९
---	--------	-----

२	बक्ररह	१८५
---	--------	-----

शवे क़द्र

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२५	दुख़ान	३
----	--------	---

३०	क़द्र	१
----	-------	---

ऐतिकाफ़ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्ररह	१८७
---	--------	-----

१७	हज	२५-२६
----	----	-------

ऐतिकाफ़ में हमबिस्तरी रात में भी हराम है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्ररह	१८७
---	--------	-----

हज का बयान

बैतुल्लाह, अल्लाह का सबसे पहला घर

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१२५
४	आले इमरान	९६
१७	हज	५
१७	हज	२९

हज फर्ज है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१९६
४	आले इमरान	९७

हज का वक्त मुकरर है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१९७
२	बकरह	२००

हज साहिबे इस्तताअत पर फर्ज है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	९७

एहराम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१९७
६	मायदह	१
७	मायदह	९५

एहराम की हालत में जानवर का शिकार हराम.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	९४-९६

एहराम में पानी का शिकार जायज है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	९६
१४	नहल	१४
२२	फातिर	१२

हज व उमरह का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१९६

तमत्तोअ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१९६

हज और उमरह एक साथ

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१९६

तवाफ़ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बकरह	१२५
१७	हज	२९

मक़ामे इब्राहीम

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बकरह	१२५
४	आले इमरान	९७

सफ़ा व मर्वाह

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१२८

अरफात की हाजिरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१९८-१९९

मुजदलिफा में क्रयाम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१९८

मिना की हाजिरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	२००
२	बकरह	२०३
१७	हज	२८-२९

कुरबानी

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१९६
७	मायदह	१९७
१७	हज	२८
१७	हज	२३
१७	हज	३४
१७	हज	३६-३७

सर के बाल मुंडाने और कतरवाने का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१९६
१७	हज	२९
२७	फरह	२७

तवाफे फर्ज

पारा	सूरत	आयत नंबर
१७	हज	२९

जुर्म और उनके कफ़ारे

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१९६
७	मायदह	९५

मुस्तफा जाने रहमत के दरबार में हाजिरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	६४

निकाह का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	३
५	निसा	२४
१८	नूर	३२

निकाह नबीयों की सुन्नत

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	२६
१३	रअद	३८
२२	अहज़ाव	३८-३९

अज़दवाजी ज़िन्दगी की रूह

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	रूम	३७

मेहरम औरतों का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	२२१
४-५	निसा	२२-२४

चार औरतों तक निकाह जायज़ है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	४

बली का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	२३२
१८	नूर	३२

औरत पर किसी का ज़ब्र जायज़ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	१९

मेहर का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	२०
५	निसा	२३
२२	अहज़ाब	५०
२८	मुमतहिन्ह	१०
४	निसा	२५
६	निसा	५

दूध पिलाने का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	२३

पति पत्नी के अधिकार

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	१९
५	निसा	३४
२८	तलाक़	२

अगर औरतें नाफरमानी करें तो उनको नसीहत की जाए

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४
२८	तहरीम	२

अगर नसीहत कारगर न हो तो उनके साथ सोना छोड़ दिया जाए

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४

अगर अब भी बाज़ न आए तो हलकी मार की इजाज़त है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४

अगर बीबी पसन्द न भी हो तब भी भलाई के साथ रखें.

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१९

मर्द औरत अपनी अपनी कमाई में खुद मुस्ततार हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४

औरत अगर खर्च न लेने पर राजी हों

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	२८

इदत वाली औरत से मंगनी जायज़ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	२२५

इदत में निकाह हराम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	२३५

जिना वाली औरत से निकाह अच्छा नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३

बदकार मर्द औरत से शादी नाजायज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३

बालिग होने का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	दिसा	६
१८	नूर	५९

**तलाक़ का बयान
तलाक़ जायज़ है .**

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	२२९
२८	तलाक़	१

एक या दो तलाक़ के बाद रूजूअ जायज़ है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	२२९
२	बक्ररह	२४०
२८	तलाक़	२

तलाक़ पर गवाही मुस्तहब है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	तलाक़	२३०

इदत में रूजू हानि पहुंचाने के लिये हराम है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	२३१

दो तलाक़ में इदत गुज़रने के बाद उसी शौहर से निकाह जायज़ है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	२३१

केवल तलाक़ में मेहर न देना मना है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	२२९

अनछुई पत्नी को तलाक़ जायज़ है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	२३६
२२	अहज़ाब	४९

तलाक़ औरत को सुपुर्द देने का हुक़म

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	अहज़ाब	२८

गर्भावस्था में तलाक़ जायज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	तलाक़	२८

रजअत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	२२८-२३१
२८	तलाक	२

रजआत में गवाह बनाना

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	तलाक	२

ईला का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	२३६

खुलअ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	२२९

ज़िहार का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	मुजादलह	२-४

ज़िहार का कफ़ारह

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	मुजादलह	३-४

लआन का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	६-९

पहले मर्द गवाही दे

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	६-७

औरत को सज़ा न दी जाए अगर वह भी लआन करे.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	८-९

इद्दत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	२२८
२	बक्रह	२३४
२८	तलाक	१
२८	तलाक	४

निकाह के बाद हमविस्तरी करने से पहले तलाक देने पर इद्दत नहीं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	४९

नफ़के का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	२३३
२८	तलाक	६-७

सोग का बयान

सोग में मंगनी और निकाह हराम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	२३५

ज़ीनत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

३	आले इमरान	१४
८	अअराफ़	३२
८	अअराफ़	३०
१३	रअद	१८
१४	नहल	१४
२२	फ़ातिर	१२
२५	जुस्सुफ़	१८

ज़ेवर उधार लेना जायज़ है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

९	अअराफ़	१३८
१६	तौहा	८७

मोती और मर्जान के ज़ेवर

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२७	रहमान	२२
----	-------	----

औरतें अपने ज़ेवरात की जगहों को गैर मर्दों पर ज़ाहिर न करें

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१८	नूर	३१
----	-----	----

पाँव में ज़ेवर पहनना जायज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१८	नूर	३१
----	-----	----

पदे का बयान

मर्द औरतें निगाह नीची रखें

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१८	नूर	३०-३१
१८	नूर	६०

२२ अहज़ाब

५९

मकान में जाने की इजाज़त

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१८	नूर	३१
१८	नूर	२८
१८	नूर	२७
१८	नूर	२९
१८	नूर	५८
१८	नूर	५९

मिली जुली तालीम और उठना बैठना मना है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२२	अहज़ाब	३३
२२	अहज़ाब	५३
२२	अहज़ाब	५९

ज़िना का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१९	फुरकान	६८
१८	मूमिनून	६०
१८	बनी इस्राईल	३२
१८	अअराफ़	३३

ज़िना की सज़ा

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

४	निसा	२५
५	निसा	२५
१८	नूर	२
१८	नूर	३३

मुतअ हराम है

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१८	मूमिनून	६
२९	मआरिज़	२९-३०

लिवातत हराम है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	८०
२	बक़रह	२२२
१८	मूमिनून	७

ख़ानदानी मन्सूबा बन्दी, बर्थ कंट्रोल

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३१-३२

गर्भपात भी क़त्ल है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१७८
५	निसा	९२-९३
६	मायदह	३२
७	अनआम	४५
७	अनआम	१५
७	अनआम	३१
७	अनआम	१३७
२८	मुमतहिबह	१२

जिहाद का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९०-१९२
२	बक़रह	१९३
२	बक़रह	२९६
२	बक़रह	१५५
९	अनफ़ाल	५-६
१०	अनफ़ाल	६१
११	तौबह	१२१
११	तौबह	१२०
१७	हज	३९-४०
२६	मुहम्मद	४
२६	मुहम्मद	७
२६	मुहम्मद	४
२६	मुहम्मद	३०
२६	मुहम्मद	२१

मुसलमान ही कामयाब

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	मुहम्मद	२५

जिहाद में कंज़ूसी बुरी है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	मुहम्मद	२१

जिहाद की वैअत

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२०७
२	बक़रह	१५४
४	आले इमरान	१६९-१७०
१८	नूर	६२
२६	फ़त्ह	१०
२६	फ़त्ह	१८
२६	फ़त्ह	१६
२६	फ़त्ह	१७

जिहाद में कभी हार भी होती है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१३९
४	आले इमरान	१४६-१४८
४	आले इमरान	१५४-१५५
४	आले इमरान	१६५

मुजाहिद के लिये बड़ा सवाब है

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१७२-१७५
४	आले इमरान	१९५
५	निसा	७४
५	निसा	९५-९६

जिहाद में कसरत से जिक्र

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	अनफ़ाल	४५

जिहाद की पूरी पूरी तैयारी

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	अनफ़ाल	६६

एक मुसलमान पर दो काफ़िरों का मुकाबला फ़र्ज़ है,

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	अनफ़ाल	७४

जिहाद से भागना हराम

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	१५-१६
१०	अनफ़ाल	४५

मुजाहिदों से अल्लाह का वादा

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	९४
१०	अनफ़ाल	६९
२२	अहज़ाब	२७
२६	फ़त्ह	१५
२६	फ़त्ह	१६-२१
२६	फ़त्ह	२०

जिहाद की फ़ज़ीलत

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	सफ़	४

इस्लाम में जंग का बुनियादी नज़रिया

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	१
१०	अनफ़ाल	२९
१०	तौबह	२९
१०	तौबह	३८
११	तौबह	१११
११	तौबह	१२०
११	तौबह	१०१
११	तौबह	८१
११	तौबह	४२

जंग और सुलह के क़ानून

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	१
१०	अनफ़ाल	४१
१०	अनफ़ाल	६२
२६	फ़त्ह	२५
२६	हुजुरात	९
२६	हुजुरात	१०
२६	मुहम्मद	३५
२६	फ़त्ह	१
२८	हथ	५

बग़ावत का क़ानून

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	३३
२६	हुजुरात	९
२६	फ़त्ह	३४

मुरतद का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	२१७
६	मायदह	५४
१०	तौबह	६५-६६

इल्म का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	८४
११	तौबह	१२२
११	यूनस	७२
१२	हूद	५१
१३	यूसुफ़	८६
१३	यूसुफ़	१०४
१३	यूसुफ़	५५
१९	शुअरा	१८०
१९	शुअरा	१६३
१९	शुअरा	१४३
२२	सबा	४७
२२	फ़ातिर	२८
२३	जुमर	८८
२३	जुमर	९
२३	जुमर	८८
२५	शूरा	२२
२८	मुजादलह	११
३०	दुहा	११

सच्चाई जानने के लिये मुनाज़िरह जायज़ है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नहल	१२५
१७	हज़	६७
२४	मूमिन	५

औरतों की तालीम घरेलू कामों तक ही हो.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	३३
२२	अहज़ाब	३४

पहले किस चीज़ की तालीम

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	तौहा	१३२
२१	लुक़मान	१३

तालीम में सख़्ती भी

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४

मुसलमानों की फ़ज़ीलत

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१०९

हलाल हराम की पाबन्दी का हुक्म ज़रूरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	२०
४	आले इमरान	१०४
७	मायदह	९२
८	अअराफ़	७५
९	अअराफ़	१४२
९	अअराफ़	९३
१०	तौबह	९१
१२	हूद	८८
१२	हूद	३४
१३	रअद	४०
२१	लुक़मान	१६
२२	यासीन	१७
२८	तगावुन	१२

अगर हक़ गोई में मुसीबत आए तो सब्र करें

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	२१
९	अअराफ़	१२६
३०	अन्न	३

नसीहत करने से गरज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अअराफ़	१६४
९	अअराफ़	१६५

दुनिया के लालच में सच्ची बात से मुंह फेरना बेअक़ली

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

९	अअरफ़	१७५
---	-------	-----

नसीहत से ख़ौफ़े खुदा पैदा होना चाहिये

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

९	अनफ़ाल	२-४
---	--------	-----

नसीहत मूमिन की फ़ज़ीलत है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

४	आले इमरान	११४
---	-----------	-----

१०	तौबह	७
----	------	---

१०	तौबह	१७
----	------	----

११	तौबह	११२
----	------	-----

नसीहत कैसे करें

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

५	निसा	३४
---	------	----

१०	तौबह	१३
----	------	----

११	यूनुस	२
----	-------	---

२८	मुजादलह	९
----	---------	---

२८	जुमुअह	११
----	--------	----

२९	मुदस्सिर	२
----	----------	---

कंज़ूसी और नाजायज़ कामों का हुक्म देनेवाले को अज़ाब

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

५	निसा	३७
---	------	----

२७	हदीद	२४
----	------	----

बन्दों के अधिकार -
माँ बाप से नेक सुलूक.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१	बक़रह	८३
---	-------	----

५	निसा	३६
---	------	----

८	अनआम	१५१
---	------	-----

१५	बनी इस्राईल	२३
----	-------------	----

१६	मरयम	१४
----	------	----

१६	मरयम	३२
----	------	----

२६	अहक़ाफ़	१५
----	---------	----

माँ बाप पर ख़र्च

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक़रह	२१५
---	-------	-----

३	इब्राहीम	४२
---	----------	----

५	निसा	१३५
---	------	-----

७	मायदह	११०
---	-------	-----

१५	बनी इस्राईल	२३
----	-------------	----

१५	बनी इस्राईल	२३
----	-------------	----

१९	नमल	१९
----	-----	----

२१	लुक्मान	१५
----	---------	----

२६	अहक़ाफ़	१९
----	---------	----

माँ बाप अगर शिर्क और गुनाह करें तो उनकी इताअत नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

११	तौबह	११४
----	------	-----

२०	अनकबूत	८
----	--------	---

२१	लुक्मान	१५
----	---------	----

औलाद के कारण माँ बाप को हानि न पहुंचाएं

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक़रह	२३३
---	-------	-----

औलाद पर शफक्त

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अनआम	१५१
१५	बनी इस्राईल	२४
१६	मरयम	६
२१	लुक्मान	१३-१९

घरवालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म दें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	मरयम	५५
१६	तौहा	१३२

माँ बाप की मुहब्बत अल्लाह और रसूल के मुकाबले में कुछ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	२४

मुसलमानों के अधिकार

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१७८
२	बकरह	२२०
४	आले इमरान	१०३
६	मायदह	२
१०	तौबह	११
१२	हिज्र	४७
१८	नूर	६१
२१	अहज़ाब	५
२६	हुजुरात	१०
२८	हथ	१०

काफिर रिश्तेदारों से दोस्ती नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४
१०	तौबह	२३
१९	फुरकान	६३

मुसलमान गुनाहगारों से रिश्ता तोड़ लें.

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	११८

काफिरों और मुश्रिकों से रिश्ता नहीं रखें.

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	११४
२५	जुम्ररुफ	२६
२९	मुज़म्मिल	११

यतीमों के माल की हिफाज़त और उनका खयाल रखना.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	२२०
४	निसा	३
४	निसा	६
४	निसा	१०
८	अनआम	१५२
१५	बनी इस्राईल	३४
१६	कहफ	८२
२९	दहर	८
३०	फ़ुज्र	१७
३०	दुहा	२
३०	माऊन	२
३०	बलद	१४-१६

यतीमों का काम मुफ्त करना बेहतर है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	कहफ	८२

तीजा और चहल्लुम का सुबूत

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	८

अल्लाह की मख़लूज़ पर मेहरबानी

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	२
२६	हुजुरात	१०

बुरी सोहबत से बचो

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१४०
७	अनआम	६८
१०	तौबह	८३
११	तौबह	१०८
१९	फुरक़ान	७२
२४	हामीम सजदह	२५

नेकों का साथ अपनाओ

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	५२
१०	तौबह	६
११	तौबह	१०८
१९	शुअरा	११४

औलाद और बीवी की ग़लतीयों से दरगुज़र

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	तगावुन	१४

मुसलमान एक दूसरे के मददगार हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	७१

अल्लाह के लिये दोस्ती-दुश्मनी

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	२३
२८	मुजादलह	२२

२८	मुजादलह	१४-२५
२८	मुस्तहिज़ह	१
२८	मुजादलह	१३

मुहाजिरों से दोस्ती

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	हथ्र	९

अन्सार की अज़मत

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	हथ्र	४

अल्लाह के दुश्मनों से खुली दुश्मनी

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	२३
२६	फ़न्ह	२९
२८	मुस्तहिज़ह	४
२८	तहरीम	९

मुसलमानों पर रहमत

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१५९
११	तौबह	१२८
२६	हुजुरात	२९

तक्लीम के वक़्त नर्म गुफ्तारी

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नमल	१२५
१६	तौहा	४४
२४	हामीम सजदह	३४-३५

मआशी मसायल-
मर्द औरत दोनों कमा सकते हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

३	बक्ररह	२६७
५	निसा	३२

रात और दिन में तिजारत

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२०	क्रसस	७३
२९	मुज्जम्मील	२०

सूद में बरकत नहीं, हराम है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

३	बक्ररह	२७५
३	बक्ररह	२७८
३	बक्ररह	२७९
३	बक्ररह	२७६
४	आले इमरान	१३०
४	रुम्	३९
६	निसा	१६१

इजारह, मजदूरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१६	कहफ	८२
२०	क्रसस	२६
२०	क्रसस	२५
२०	क्रसस	२७

इस्लामी मईशत का फलसफा

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

११	रअद	३६
१५	वनी इस्राईल	३०
२१	अनकबूत	६२
२१	रुम्	१७
२२	सबा	३६

२४	जुमर	५२
२५	शूरा	१२
२५	जुम्बरुफ	३२
२८	तलाक	७

माल जमा करना

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१०	तौबह	३४
१५	वनी इस्राईल	३१
१५	वनी इस्राईल	६७-७०
१९	शुअरा	१८२
१९	शुअरा	१५०
२०	क्रसस	७२
२०	क्रसस	५७
२१	रुम्	३७-४०
२५	जुम्बरुफ	१८

मआशी निजाम और सोशलिज्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२७	नज्म	३९
२७	वाकिअह	६४
२८	हथ	६
२९	दहर	९
२९	मुदसिर	४५
२९	कलम	१७
२९	हाक्कह	२८
३०	हुमज़ह	३
३०	लैल	१८
३०	लैल	११
३०	लैल	६
३०	वलद	६
३०	फन्न	२०
३०	मुनफिककीन	१

सोशलिज्म की नफ़ी

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२२	सबा	३९
२४	जुमर	५२
२५	जुम्बरुफ	३३

इस्लामी इस्टेट के फरायज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	८०
१७	हज	४१
२५	शूरा	१३

इस्लामी स्टेट की तालीमी पॉलीसी

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	१२२
१२	अहज़ाब	३४

आर्थिक व सामाजिक नीति

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३१

आन्तरिक व विदेश नीति

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३४

मुनाफ़िकों के बारे में नीति

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	७३
११	तौबह	१२३

इस्लामी रियासत के उमूल

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	३६
२५	शूरा	३८
२५	अहज़ाब	१५

हाकिम अल्लाह ही है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	फ़ातिर	१३

हुकूमत के गुण

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	सौद	२६
२५	शूरा	३४

अमीर (हाकिम) की इताअत की सीमा

पारा	सूरत	आयत नंबर
२९	दहर	२४

इस्लामी रियासत की ज़िम्मेदारियां

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	५४-५७

अमीर शराब बन्द कराए

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	९०

ज़िना को ख़त्म करे

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३२

मुजरिमों को माफ़ी नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	२

इस्लाम के दुश्मनों को घनपने से रोकना

पारा	सूरत	आयत नंबर
२४	अहज़ाब	६०-६२

कर्मचारियों के गुण

पारा	सूरत	आयत नंबर
१७	हज	४१

परिवार का महत्व

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	२६

शासक तिजारात को बेईमानों से पाक रखें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३५

शासक घमण्ड से वचें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३७

विदेश नीति साहसिक हो

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	अनफ़ाल	६२

तहकीक के बिना कार्यवाही मना

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३६

मुआहिदों का सम्मान

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	९२
१०	तौबह	८
१०	तौबह	१
१०	तौबह	१३
१०	अनफ़ाल	५७
१०	अनफ़ाल	५८
१०	अनफ़ाल	७२
१०	तौबह	४
१०	तौबह	७
१४	नहल	९१
१४	नहल	९५
१५	बनी इस्राईल	३४

अरल फ़ैसला अल्लाह का

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	४४-४५
१२	रअद	४१
२०	नम्ल	७८

हुज़ूर के फ़ैसले हमेशा सही

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१०५

अल्लाह ने नबीयों को फ़ैसलों का इस्तिथार दिया है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	७९
६	मायदह	७२
६	मायदह	४९

फ़ैसला इन्साफ़ से

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	५८
१७	अंबिया	७८-७९

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२३	सौंद	२२
२३	सौंद	२६

जिहालत के दौर के फ़ैसले शून्य

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

६	मायदह	१५
---	-------	----

सम्मन पर हाज़िर न होना जुर्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१८	दूर	४८
----	-----	----

अदालत की इस्लामी कार्यप्रणाली

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

५	निसा	१०६
५	निसा	३५

कुरआन की रीशनी में फ़ैसला न करने वाले

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

६	मायदह	४७
---	-------	----

रिश्वत हराम है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्करह	१८८
६	मायदह	४२
६	मायदह	६२

शहादत (गवाही)

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१	बक्करह	१४०
६	बक्करह	२८३

३	बक्करह	२८२
७	अनआम	१९
७	मायदह	१०६
७	मायदह	१०७
२६	हुजुगत	६

झुटी गवाही जुर्म है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१७	हज	३०
१९	फुरकान	७२

गवाह इन्साफ़ वाले हों.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२	बक्करह	२८२
३	बक्करह	२९२
५	निसा	१३५
६	मायदह	८
७	मायदह	१०६

ज़िना की गवाही

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१८	दूर	४
१८	दूर	१३

हलफ़ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

५	निसा	६२
७	मायदह	१०६
१०	तौबह	४२
१०	तौबह	५६
१०	तौबह	६२
१७	अंबिया	५७

इक्रार का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

३	बक्करह	२८२
---	--------	-----

३	आले इमरान	८१
५	निसा	३५
विकालत का वयान		
पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	कहफ़	१९
अरल फ़तवा अल्लाह का		
पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१२७
६	निसा	१७६
उलमा से सवाल करें		
पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	मल्ल	४३
उलमा जवाब में गौर करें .		
पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	८३
पंच बनाना		
पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३५
७	मायदह	९५
२५	शूरा	२१
इस्लामी संविधान में प्राथमिकता अल्लाह और रसूल के हुक्म को है.		
पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	हुजुरत	१
२७	हदीद	२
२८	हथ	२३

अल्लाह की कानूनी हाकिमियत

पारा	सूरत	आयत नंबर
१३	यूसुफ़	४०
१५	बनी इस्राईल	३२
२३	यासीन	८३
२५	शूरा	१०-१२

कानून बनाने का अधिकार

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	३१
११	यूनस	५७
१४	नहल	११६
२२	अहज़ाब	३६
२८	मुजादलह	४

गौर इस्लामी क़ानून बनाना और उन्हें अच्छा समझना कुफ़्र है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	मुजादलह	५

किन लोगों की इताअत की जाए

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	कहफ़	२८
१९	फ़ुरक़ान	५२
१९	शुअरा	१५१

ग़िलाफ़त का सही अर्थ

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	सौद	२६

इस्लामी समाज की सदस्यता

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	११

कानूनी व हकीकी मुसलमान का अन्तर

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१०	तौबह	९
----	------	---

रियासत के वाजिबात जनता पर

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१०	अनफाल	७२
----	-------	----

शूरा का हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२५	शूरा	३८
----	------	----

इस्लामी संविधान में नमाज़ रोज़े का महत्व

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१०	तौबह	५
----	------	---

हलाल व हराम करार देने का हक़

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

९	अउराफ़	५७
---	--------	----

११	यूनस	३१
----	------	----

१४	नहल	११६
----	-----	-----

ईमान लाने पर ज़ब्र नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

११	यूनस	९९
----	------	----

ज़बरदस्ती कराया हुआ गुनाह जुर्म नहीं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१४	नहल	१०६
----	-----	-----

अस्ल से ज़्यादा बदला नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१४	नहल	१२६
----	-----	-----

ज़ालिमों की मदद जायज़ नहीं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२०	क़सस	१७
----	------	----

कोई व्यक्ति दूसरे के कर्म का ज़िम्मेदार नहीं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२०	अनकबूत	१२
----	--------	----

२२	फ़ातिर	१८
----	--------	----

२३	जुमर	७
----	------	---

२७	नज़्म	३८
----	-------	----

कुरआन अल्लाह का क़ानून

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

६	मायदह	४८
---	-------	----

२५	शूरा	१३
----	------	----

क़ानून की बुनियाद न्याय है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२५	शूरा	१५
----	------	----

अल्लाह व रसूल के सामने राय की आज़ादी का हक़ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२२	अहज़ाब	२६
----	--------	----

अविश्वसनीय ख़बर पर कार्यवाई नहीं की जा सकती.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२६	हुजुरात	६
----	---------	---

नेकों को इनाम, बुरों को सज़ा

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२६	ज़ारियात	२४
----	----------	----

इस्लामी कल्चर -

गायिका का गाना सुनना हराम

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२१	लुक्मान	६
----	---------	---

तस्वीर और मूर्तियों की हुर्मत

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२२	सबा	१३
----	-----	----

लेपालक हकीकी औलाद नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२१	अहज़ाब	४
----	--------	---

लेपालक को हकीकी बापसे मन्सूब किया जाए

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२१	अहज़ाब	५
----	--------	---

सामाजिक मेल जोल

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२२	अहज़ाब	५३
----	--------	----

पवित्र स्थानों का अदब

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१	बक्करह	१८
---	--------	----

१	बक्करह	२५
---	--------	----

२	बक्करह	११८
---	--------	-----

१६	तौहा	१५
----	------	----

३०	बलद	१
----	-----	---

३०	नीत	३
----	-----	---

जूते का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१६	तौहा	१२
----	------	----

उठने बैठने सोने चलने के तरीक़े

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

१५	बनी इस्राईल	३७
----	-------------	----

१९	फ़ुरकान	११
----	---------	----

२२	लुक्मान	१८
----	---------	----

२८	मुजादलह	११
----	---------	----

किसी का बुरा नाम न रखें.

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

२६	हुजुरात	११
----	---------	----

पैदायश से पहले नाम रखना

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

३	आले इमरान	३९
---	-----------	----

१६	मरयम	७
----	------	---

पैदायश के बाद नाम रखना

पारा	सूरत	आयत नंबर
------	------	----------

३	आले इमरान	३६
---	-----------	----

रसूलुल्लाहा के नाम से न पुकारें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३०

कम नाप तौल हराम है

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	८५
१२	हूद	८४
१५	बनी इस्राईल	३५

समाज को बिगाड़ने वाले साधनों की रोक थाम

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	१६
१५	बनी इस्राईल	३१

पारस्परिक जीवन

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	६१

खेल कूद तमाशे का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१२	यूसुफ़	१२
२१	लुक्मान	६
२७	हदीद	२०

गुप्त अंगों का छुपाना फ़र्ज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	३१

रात की कपड़े उतारकर सो सकते हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	५८

ज़ेवर औरतों के लिये

पारा	सूरत	आयत नंबर
२५	जुअरुफ़	१८
१८	नूर	३१

सलाम का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१४
५	निसा	५८
७	अनआम	५४
१२	हूद	४८
१२	हूद	६९
१३	इब्राहीम	२३
१४	नहल	३२
१६	मरयम	४७
१६	मरयम	३३
१८	नूर	६१
२०	कसस	५५
२८	मुजादलह	२८

अंधिया पर योमे विलादत, योमे वफ़ात और योमे क़यामत सलाम

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	मरयम	१५
१६	मरयम	३३
२३	साफ़फ़ात	११९
२३	साफ़फ़ात	१२०

इलाज का बयान -

अल्लाह ही शिफ़ा देता है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१९	शुअरा	८०

शहद में शिफा

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नहल	६८-६९

शराब की हुर्मत

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	२१९
५	निसा	४३
७	मायदह	९०-९२
८	अअराफ़	३३
१४	नहल	६७

आरायश और खाने पीने की सारी चीज़ें हलाल

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	३२

पानी का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बकरह	६०
९	अअराफ़	१६०
१२	यूसुफ़	१९
१४	नहल	१०
१९	शुअरा	१०५
२३	सौद	४२
२७	क्रमर	२८

ज़ियाफ़्त का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१२	हुद	६९
१४	हिज्र	५१
२६	ज़रियात	२४

पानी पीने के लिये है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	२४९
१४	नहल	१०

दूध पीना जायज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नहल	६६

पाकीज़ह चीज़ें खाएं

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१७२
१८	मूमिनून	५१

क्रय विक्रम का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	२७५
५	निसा	२९

शलत तरीक़ों से माल ख़ाना जायज़ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१८८
५	निसा	२९
७	मायदह	८८

तिज़ास्त ज़िक़े इलाही से न रोके

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	२७
१०	तौबह	२४

सही नाप तौल का हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अनआम	१५२
८	अअराफ	८५
१२	हृद	८४-८५
२७	बनी इस्राईल	३५
२७	रहमान	९
३०	मुतफिफकीन	१-३

क्रम बिक्रय में गवाही अच्छी

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्ररह	३८२
३	बक्ररह	२८२

सोना और चांदी लोगों के लिए मेहबूब कर दी गई

पारा	सूरत	आयत नंबर
२७	रहमान	९

पाकीजा कमाई से जकात अदा करें

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्ररह	२६७

तिजारत के लिए सफर

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	२७३
१४	नहल	१४
१५	बनी इस्राईल	६६
२०	कसस	७३
२२	फातिर	१२
२५	जासियह	१२
२९	मुज्जम्मिल	२

हज के जमाने में तिजारत

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	१९२

तिजारत खुदा का फज़ल

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्ररह	१९८
४	आले इमरान	१८०
१४	नहल	१४
१४	नहल	७१
१५	बनी इस्राईल	१२
१५	बनी इस्राईल	६६
२०	कसस	७३
२१	रूम	२३
२२	फातिर	१२
२५	जासियह	१२
२८	जुमुअह	१०

उधार में लिख्रा पढ़ी और गवाही

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्ररह	२८२
३	बक्ररह	१८२

तंगदस्त से मोहब्बत

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्ररह	२८०

किफायत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	३४
३	आले इमरान	३७
६	तौहा	४०
१३	यूसुफ	७३
२०	कसस	१२

अमानत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	१८८
३	बक्रह	२८३
५	निसा	५८
५	अनफ़ाल	७२
१८	मूमिनून	६८
२२	अहज़ाब	७२

हलाल व हराम जानवर

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	१७३
५	निसा	८०
६	मायदह	३
६	मायदह	३०
६	मायदह	४
७	मायदह	१०३
८	अनआम	१३५
८	अनआम	४३
८	अनआम	१२१
८	अनआम	१४५
८	मायदह	५
८	अनआम	११८-११९
९	अअराफ़	५०
१४	नहल	११४-११५
१७	हज	३६
१७	हज	३४
१७	हज	२८
२८	हथ	७

कुरबानी का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	२७
८	अनआम	६२
८	अनआम	१४२
१७	हज	३६-३७
१७	हज	३४
१७	हज	३
१७	हज	२८
२३	सफ़	१०७
३०	कौसर	२

पाकीज़ह चीज़ें हलाल हैं

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	८७-८८
७	मायदह	१४२
८	अअराफ़	३२
१५	बनी इस्राईल	७०
२८	तहरीम	१-२

अलग अलग खाना जायज़ है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	६१

ज़िन्दगी बचाने के लिये खाना फ़र्ज़ है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रह	१७३
५	निसा	२९
८	अनआम	१४५
१४	नहल	११५

झुटे पर झुदा की लानत

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	६१
४	आले इमरान	९४
५	निसा	५०
६	मायदह	४१
७	मायदह	३०
११	यूनुस	६९
१४	नहल	११६
१४	नहल	६२
१७	अंबिया	१८
१८	नूर	७
२८	मुजादलह	१५
२८	सफ़	७

गाली मत दो

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	१०८
२६	हुजुरात	११

जासूसी मना है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	हुजुरात	१२

पीठ पीछे बुराई हराम है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	निसा	१४८
१५	बनी इस्राईल	३६
२६	हुजुरात	१२

चीखना मना है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	लुकमान	१९

हासिद के शर से पनाह

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्करह	१५
५	निसा	३२

मुस्सा पी लेना

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१३४
२४	हामीम सजदह	३३-३६
२५	शूरा	३७

तकच्चुर, घमण्ड

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३६
१२	हूद	२१९
१५	बनी इस्राईल	३७
२०	क्रसस	७६
२१	लुकमान	१८
२५	शूरा	४८
२७	हदीद	२३

काफ़िरों ने घमण्ड के कारण इमान कुबूल न किया

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्करह	८७
८	अअराफ़	७६
११	यूनस	७५
१८	मूमिनून	४४-४८
१९	फुरकान	२१
२२	फ़ातिर	४२-४३
२६	अहक़ाफ़	१०
२९	नूह	७

घमण्ड करनेवालों पर अज़ाब

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	निसा	१७३
८	अअराफ़	३६
१३	इब्राहीम	२१
२०	अनकबूत	३९-४०
२२	सबा	३१-३२
२४	मूमिन	२५
२५	जासियह	३१

माल और जमाअत पर घमण्ड करनेवालों की मिसाल

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	कहफ़	३२-४२
२७	हदीद	२०

घुड़ दौड़ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	गौद	३१
३०	आदिपात	१

दिखावे का सदका बातिल

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बकरह	२६४
३	बकरह	२६९

रियाकार न बनो

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१४२
१०	अनहाल	४७
१६	कहफ	१२
२३	जुमर	२
३०	माऊन	८

जुल्म का बयान -

शिक सबसे बड़ा जुल्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	२२५
४	आले इमरान	९४
४	आले इमरान	१५७
६	निसा	१४८
७	अनआम	४१
७	अनआम	१३५
७	अनआम	४५
७	अनआम	९३
१०	नौबह	२३
१२	यूमुफ	२३
१२	हूद	१०२
१३	इब्राहीम	४२
१५	कहफ	२९
१८	मूमिन	९४
१९	फुरकान	२७
१९	फुरकान	२९
२०	क्सस	५९

२१	लुकमान	१३
२२	फातिर	३७
२२	सबा	३१-३२
२२	फातिर	४०
२३	गौद	२२-२४
२४	मूमिन	१८
२४	मूमिन	५२
२५	शूरा	४१-४३
२५	शूरा	४४-४५
२५	शूरा	१२
२५	जुवदरुफ	७४
२८	हथ्र	१७
२६	अहकाफ	१०
२८	सफ	७
२८	जुमुअह	५
२८	तहरीम	११

शराब की हुर्मत -

पहला हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बकरह	२१९

दूसरा हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	४३

आखिरी हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	९०

शराब पीना शैतानी काम

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	९०-९१

जुआ - पहला हुकम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	२१९

आखिरी हुकम

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	३
६	मायदह	९०

शेअर शायरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
१९	शुअरा	२२४-२२६
१९	शुअरा	२२७
२९	मआरिज़	४१

हजामत के अहकाम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१९६
२६	फतह	२७

दाढ़ी बढ़ाना नवियों की सुन्नत

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	तौहा	९४

सफ़र के आदाब - दुआएं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१२	हूद	४१
२५	जुम्ररुफ	१३

शिकार का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	१
६	मायदह	२
६	मायदह	४
७	मायदह	९५-९६

रहन का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बकरह	२८३

क़त्ल का बदला

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	१७८
२	बकरह	१७९
५	निसा	९२-९३
६	मायदह	३९
६	मायदह	३२
१९	फुरकान	६८

ज़िना की तोहमत

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	४
२२	अहज़ाब	५८

मुसलमान का मज़ाक़ न उड़ाओ

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	हुजुरात	११

चोर की सज़ा

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	३८-३९
६	मायदह	३३-३४

क्रसम को नेक काम न करने का ज़रिया न बनाओ

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्करह	२२४
१८	नूर	२२

क्रसम के अहकामात

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	७७
७	मायदह	८९
१४	नहल	९१
१४	नहल	९४
१८	मूमिनून	८
२१	अहज़ाब	१५
२८	तहरीम	२

मन्नत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्करह	२७०
२१	अहज़ाब	२३
२९	दहर	७

शिरकत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	कहफ़	७९
१६	कहफ़	८२

दफन और क़ब्र का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	यासीन	५२
२९	दहर	३५-३६
३०	अवसा	२१

शहीद का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्करह	१५४
४	आले इमरान	१६९

मुर्तद का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्करह	२४७
६	मायदह	५४
१०	तौबह	६५-६६

सुलह का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	११
५	निसा	१२८
२६	हुजुरात	९

ज़बरदस्ती का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	२८
१४	नहल	१०६
१६	तौह	७२-७३
१८	नूर	३३

तक्रसीम का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	८
२७	झमर	२८

जिज़ियह

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	२९

सिंचाई

पारा	सूरत	आयत नंबर
१९	शुअरा	१५५
२७	क्रमर	२८

वारिश

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	जुमर	२१
३०	निसा	१४-१६
३०	नाज़िआत	३१-३२
३०	अवसा	२४

ईसाले सवाब और मशफिरत की दुआ

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	११३-११४
१०	तौबह	८४
११	तौबह	८०
१३	इब्राहीम	४०
२४	मूमिन	९
२६	मुहम्मद	९१
२८	हथ	१०

विरासत का क़ानून

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक्रर	१८१
४	निसा	५
४	निसा	८
४	निसा	१४
१०	अनफ़ाल	७५
२१	अहज़ाब	६
२१	अहज़ाब	४
३०	फ़ज्र	१९

विरासत में औरत भी हक़दार

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	७

औलाद के हिस्से

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	११

माँ-बाप के हिस्से

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	११

मीरास की तक्रसीम

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	१२

मुंह बोले रिश्तों का हिस्सा नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३३
४	निसा	१२
५	निसा	७६

जमाअत में शामिल होने की शर्त

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	११

अमीर(हाकिम) की इताअत

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	१
९	अनफ़ाल	२०
९	अनफ़ाल	२४
१०	अनफ़ाल	४६

मदारी और खियानत सं वचें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	अनफाल	२७

फासिको के साथ सुलूक

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	८४
१०	तौबह	७३
११	तौबह	१२३
११	तौबह	१०५

इस्लाम में क्रीमियत का तसबुर

पारा	सूरत	आयत नंबर
१२	यूसुफ	३५
२१	रूम	१५
२१	अनकबूत	५६

तकलीद का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक्रह	२८२-२८६
५	निसा	५९
५	निसा	८३
५	निसा	११५
११	तौबह	१००
११	तौबह	११२
१५	दनी इखार्ईल	७१
१७	अंविया	७
१९	फुरकान	७४
२१	लुकमान	१५

यहूदियों का रद

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्रह	१०९
१	बक्रह	१११
१	बक्रह	१२०
१	बक्रह	१४०

१	बक्रह	१४
१	बक्रह	४४
१	बक्रह	४२
२	बक्रह	१४६
२	बक्रह	१४४
२	आले इमरान	६४
२	आले इमरान	७५
२	आले इमरान	८६
२	आले इमरान	६७
२	आले इमरान	२३
२	आले इमरान	६५
२	आले इमरान	७२
२	आले इमरान	७
२	आले इमरान	७
४	आले इमरान	१८७
६	मायदह	४१
६	मायदह	४३
६	मायदह	६४
६	निसा	१५३
६	मायदह	५७-५८
१०	तौबह	२९-३०
१०	तौबह	३४
१०	तौबह	५६
१५	कहफ	२१
२४	मूमिन	२६
२५	जुमरुफ	५१
२८	हथ	१
२८	हथ	२१
२८	जुमुअद	१
२८	सफ	५
२८	जुमुअह	५
३०	वय्यिनह	१

ईसाइयों का रद

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्रह	१३६
१	बक्रह	१४०
२	आले इमरान	४२
२	आले इमरान	५५
२	आले इमरान	६५
२	आले इमरान	५९
२	आले इमरान	३
२	निसा	१७१
२	मायदह	४६
२	मायदह	१५७
२	मायदह	१६

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	८२
६	मायदह	१७३
७	मायदह	१२
७	मायदह	४७
७	मायदह	११७
१०	तौबह	३
११	यूनस	६८
१६	मरयम	३५
२१	रूम	३०
२१	रूम	१
२५	जुधरुफ़	८१
२५	रूम	५७
२७	हदीद	२७
२८	तहरीम	१२

दहरियत का रद

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	५४
११	यूनस	३१
१२	हूद	६१
१४	नमल	१५
१४	नमल	४७
१४	नमल	७०
१५	कहफ़	५१
१६	तौबा	५३
१७	अंविया	१९
१७	हज	६
१७	हज	१८
१७	हज	७३
१८	मूमिनुन	१४
१८	मूमिनुन	७८
१८	फुरक़ान	६
१८	फुरक़ान	४५
१९	शुअरा	७
१९	शुअरा	२८
१९	शुअरा	६८
१९	शुअरा	७८
१३	रअद	२
२०	नमल	६०
२०	नमल	६४
२०	अनकबूत	४४
२१	अनकबूत	६१

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	अनकबूत	२९
२१	रूम	४६
२१	रूम	८
२१	रूम	४२
२२	फ़ातिर	११
२२	फ़ातिर	२७
२२	फ़ातिर	४६
२४	मूमिन	६१
२४	हामीम सजदह	३७
२५	शूरा	४९
३०	नबा	८
३०	तारिक़	५

मुनाफ़ि व मुतद

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	२३
१०	तौबह	११३

अल्लाह व रसूल के दुश्मनों का बहिष्कार

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	तहरीम	२२

जिहाद में शामिल न होनेवालों का बहिष्कार

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	११८

ज़ालिमों की मजलिस का बहिष्कार

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	६८
८	अअराफ़	४
९	अअराफ़	१६३
२८	मुजादिलह	९
२८	मुम्ताहिनह	१३

खुदा भी हथ के रोज़ हुज़ूर के दुश्मनों का बहिष्कार करेगा

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	यासीन	५९
२७	हदीद	१३

नाफरमान बीवी का बहिष्कार

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	२८
४	आले इमरान	१२०
५	निसा	३४
५	निसा	१४४

मिर्जाइयत का रद

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	५५
६	निसा	१५८
९	अअराफ़	१५८
१८	फुरक़ान	१
२२	सबा	३
२२	अहज़ाब	४०
२५	जुमरुफ़	६१

शीओं का रद

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बकरह	१४
३	आले इमरान	६४
५	निसा	९७
५	निसा	२४
६	मायदह	६७
११	यूनस	१०४
१४	हिज़्र	९४
१७	अंबिया	५१
१८	नूर	३३
२८	मुनाफ़िक़ून	३
२८	अअराफ़	२१
२९	मआरिज	३१

वलियों के फ़ज़ायल

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	३४
११	यूनस	६२

वलियों के करामतें

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	३७
१५	कहफ़	७१
१५	कहफ़	७४
१५	कहफ़	७७
१६	मरयम	२५
१९	नम्ल	४०

बुज़ुर्गों के तबर्क़ात से बला दूर होती है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बकरह	२४८
१३	यूसुफ़	९३
१६	मरयम	२६
१६	तौहा	९६

नबियों और वलियों के कुर्ब से दुआ कुबुल होती है

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	३८
५	निसा	६४

नबी और बली दूर से सुनते, देखते और मदद करते हैं

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	७५
८	अअराफ़	२८
१९	नम्ल	४०
२१	सिजदह	११

अच्छों के सदेके बुरों पर अजाव नहीं आता

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफाल	३३
१७	हज	३८
२६	फल्ह	२५
२७	जारियात	३५
२९	नूह	२७

औलियाअल्लाह का बसीला जरूरी है

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक्रह	६१
१	बक्रह	३७
१	बक्रह	८९
२	बक्रह	१४४
३	आले इमरान	३८
४	आले इमरान	१६४
६	मायदह	३५
९	अअराफ	१२४
११	तावह	१०३

कुरआन करीम के पारे

- (१) अलिफ लाम मीम
- (२) सयकूल
- (३) तिलकुरुसुल
- (४) लनतनालू
- (५) वलमुहसनात
- (६) लायुहिवुल्लाह
- (७) वइज़ा समिक
- (८) बली अन्नना
- (९) कालिल मलऊ
- (१०) वअलमू
- (११) यअतज़िरून
- (१२) वमा मिन दाब्बह
- (१३) वमा उवरिऊ
- (१४) रुवुमा
- (१५) सुद्धानल्लज़ी
- (१६) काला अलम
- (१७) इक़तसिवा लिन्नास
- (१८) क़दअफलहा
- (१९) वकालल लज़ीना
- (२०) अम्मन ख़लक़
- (२१) उल्लामा ऊहिया
- (२२) वमैय यक़नुत
- (२३) वमा लिया
- (२४) फ़मन अज़लम
- (२५) इलैहे युरदो
- (२६) हामीम
- (२७) क़ाला फ़मा ख़त्वोक़ुम
- (२८) क़द समिअल्लाह
- (२९) तबारकल्लज़ी
- (३०) अम्म

कुरआन पाक की सूरतें

सूराह का नम्बर	सूराह का नाम	कहाँ उतरी	रुकू	आयतें
(१)	अल-फ़ातिहा	मक्का	१	७
(२)	अल-बकरह	मदीना	४०	२८६
(३)	आले इमरान	मदीना	२०	२००
(४)	अन-निसा	मदीना	२४	१७६
(५)	अल-मायदह	मदीना	१६	१२०
(६)	अल-अनआम	मक्का	२०	१६५
(७)	अल-अअराफ़	मक्का	२४	२०६
(८)	अल-अनफ़ाल	मदीना	१०	७५
(९)	अत-तौबह	मदीना	१६	१२९
(१०)	यूनुस	मक्का	११	१०९
(११)	हूद	मक्का	१०	१२३
(१२)	यूसुफ़	मक्का	१२	१११
(१३)	अर-रअद	मदीना	६	४३
(१४)	इब्राहीम	मक्का	७	५२
(१५)	अल-हिज्र	मक्का	६	९९
(१६)	अल-नहल	मक्का	१६	१२८
(१७)	बनी इस्राईल	मक्का	१२	१११
(१८)	अल-कहफ़	मक्का	१२	१११
(१९)	मरयम	मक्का	६	९८
(२०)	ताहा	मक्का	८	१३५
(२१)	अल-अम्बिया	मक्का	७	११२
(२२)	अल-हज	मदीना	१०	७८
(२३)	अल-मूमिनून	मक्का	६	११८
(२४)	अन-नूर	मदीना	९	६४
(२५)	अल-फ़ुरक़ान	मक्का	६	७७
(२६)	अश-शुअरा	मक्का	११	२२७
(२७)	अन-नमल	मक्का	७	९३
(२८)	अल-अक़सस	मक्का	९	८८
(२९)	अल-अनकबूत	मक्का	७	९६
(३०)	अर-रूम	मक्का	६	६०
(३१)	लुक़मान	मक्का	४	३४
(३२)	अस-सजदह	मक्का	३	३०
(३३)	अल-अहज़ाब	मदीना	९	७३
(३४)	सबा	मक्का	६	५४
(३५)	फ़ातिर	मक्का	५	४५
(३६)	यासीन	मक्का	५	८३

सूराह का नम्बर	सूराह का नाम	कहाँ उतरी	रुकू	आयतें
(३७)	अस-साफ़ात	मक्का	५	१८२
(३८)	सौद	मक्का	५	८८
(३९)	अज़-ज़ुमर	मक्का	८	७५
(४०)	अल-मूमिन	मक्का	९	८५
(४१)	हामीम सजदह	मक्का	६	५४
(४२)	अश-शूरा	मक्का	५	५३
(४३)	अज़-ज़ुमरुफ़	मक्का	७	८९
(४४)	अद-दुख़ान	मक्का	३	५९
(४५)	अल-जासियह	मक्का	४	३७
(४६)	अल-अहक़ाफ़	मक्का	४	३५
(४७)	मुहम्मद	मदीना	४	३८
(४८)	अल-फ़तह	मदीना	४	२९
(४९)	अल-हुजुरात	मदीना	२	१८
(५०)	क्राफ़	मक्का	३	४५
(५१)	ज़ारियात	मक्का	३	६०
(५२)	तूर	मक्का	२	४९
(५३)	नज़्म	मक्का	३	६२
(५४)	क़मर	मक्का	३	५५
(५५)	रहमान	मक्का	३	७८
(५६)	वाक़िअह	मक्का	३	९६
(५७)	हदीद	मदीना	४	२९
(५८)	मुजादलह	मदीना	३	२२
(५९)	हथ़	मदीना	३	२४
(६०)	मुम्तहिनह	मदीना	२	१३
(६१)	सफ़	मदीना	२	१४
(६२)	जुमुअह	मदीना	२	११
(६३)	मुनाफ़िकून	मदीना	२	११
(६४)	तसाबून	मदीना	२	१८
(६५)	तलाक़	मदीना	२	१२
(६६)	तहरीम	मदीना	२	१२
(६७)	मुल्क	मक्का	२	३०
(६८)	क़लम	मक्का	२	५२
(६९)	हाक्क़ह	मक्का	२	५२
(७०)	मआरिज़	मक्का	२	४४
(७१)	नूह	मक्का	२	२८
(७२)	जिन्न	मक्का	२	२८
(७३)	मुज़म्मिल	मक्का	२	२०

सूराह का नम्बर	सूराह का नाम	कहाँ उतरी	रुकू	आयतें
(७४)	मुद्स्सिर	मक्का	२	५६
(७५)	कियामह	मक्का	२	४०
(७६)	दहर	मदीना	२	३१
(७७)	मुरसलात	मक्का	२	५०
(७८)	नवा	मक्का	२	४०
(७९)	नाजिआत	मक्का	१	४६
(८०)	अवसा	मक्का	१	४२
(८१)	तक्वीर	मक्का	१	२९
(८२)	इन्फितार	मक्का	१	१९
(८३)	मुतफ्फिनीन	मक्का	१	३६
(८४)	इन्तिक्राफ़	मक्का	१	२५
(८५)	बुरूज	मक्का	१	२२
(८६)	तारिक़	मक्का	१	१७
(८७)	अअला	मक्का	१	१९
(८८)	शाशियह	मक्का	१	२६
(८९)	फ़त्र	मक्का	१	३०
(९०)	बलद	मक्का	१	२०
(९१)	शम्स	मक्का	१	१५
(९२)	लैल	मक्का	१	२१
(९३)	दुहा	मक्का	१	११
(९४)	अलम नशरह	मक्का	१	८
(९५)	तीन	मक्का	१	८
(९६)	अलक़	मक्का	१	१९
(९७)	क़द्र	मक्का	१	५
(९८)	बय्यिनह	मदीना	१	८
(९९)	ज़िलफ़ाल	मदीना	१	८
(१००)	आदियात	मक्का	१	११
(१०१)	कारिअह	मक्का	१	११
(१०२)	तकासुर	मक्का	१	८
(१०३)	अस्र	मक्का	१	३
(१०४)	हुमज़ह	मक्का	१	९
(१०५)	फील	मक्का	१	५
(१०६)	कुरैश	मक्का	१	४
(१०७)	माऊन	मक्का	१	७
(१०८)	कौसर	मक्का	१	२
(१०९)	काफ़िरून	मक्का	१	३
(११०)	नस्र	मक्का	१	२

सूराह का नम्बर	सूराह का नाम	कहाँ उतरी	रुकू	आयतें
(१११)	लहब	मक्का	१	५
(११२)	इस्लाम	मक्का	१	४
(११३)	फलक	मदीना	१	५
(११४)	नास	मदीना	१	६
कुल			५५८	६२६४

वो आयतें जिन्हें जानबूझ कर ग़लत पढ़ना कुफ़्र है।

कुरआने पाक की तिलावत के दौरान ठहरने के मक़ाम, निशानियाँ और तिलावत के क़ानूनों का पूरे होश के साथ एहतियात बेहद ज़रूरी है। कुरआने पाक में बीस जगहें ऐसी हैं कि सही लिखा होने के बावजूद पढ़ने में ज़रा सी लापरवाही से अनजाने में कुछ के कुछ मानी हो जाते हैं और जानबूझ कर पढ़ने से तो कुफ़्र की नीवत पहुंच जाती है। वो बीस जगहें ये हैं।

नंबर	सूरत	आयत	सही	ग़लत
१	फ़ातिहा	४	इय्याका नअबुदु	इयाका नअबुदु (बग़ैर तशदीद)
२	फ़ातिहा	६	अनअम्त अलैहिम	अनअम्तु अलैहिम
३	बक्ररह	१२४	इब्राहीमा रब्बुहू	इब्राहीमु रब्बहू
४	बक्ररह	२५१	क़तला दाऊदु जालूता	क़तला दाऊदा जालूतू
५	बक्ररह	२५५	अल्लाहु लाइलाहा	अल्लाहु लाइलाह
६	बक्ररह	२६१	बल्लाहु युदाइफ़ो	बल्लाहु युदाअफ़ो
७	निसा	१६५	मुवशशीरीना व मुन्ज़िरीना	मुवशशीरीना व मुन्ज़रीना
८	तौबह	३	मिनलमुश्रिकीना व रसूलुह	मिनलमुश्रिकीना व रसूलिही
९	बनी इस्राईल	१५	वमा कुन्ना मुअज़्ज़ीबीन	वमा कुन्ना मअज़्ज़बीन
१०	तौहा	१२१	वअसा आदमो रब्बहू	वअसा आदमा रब्बहू
११	अंबिया	८७	इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन	इन्नी कुन्ता मिनज़्ज़ालिमीन
१२	शुअरा	१९४	लितकूना मिनल मुन्ज़िरीन	लितकूना मिनल मुन्ज़रीन
१३	फ़ातिर	२८	यस्शल्लाहा मिन इबादी	यस्शल्लाहु मिन इबादी
१४	साफ़फ़ात	७२	फ़ीहिम मुन्ज़िरीन	फ़ीहिम मुन्ज़रीन
१५	फ़ल्ह	२७	सदक़ल्लाहो रसूलहू	सदक़ल्लाहा रसूलहू
१६	हथ	२४	मुसचिरो	मुसचरो
१७	हाक्कह	३७	इल्लल ख़ातिऊन	इल्लल ख़ातऊन
१८	मुज़्ज़मिल	१६	फ़असा फिरऔनुरसूला	फ़असा फिरऔनरसूलो
१९	मुर्सलात	४१	फ़ी ज़िलालिंब	फ़ी ज़िलालिंब
२०	नाज़िआत	४५	इन्नमा अन्ता मुन्ज़िरो	इन्नमा अन्ता मुन्ज़रो

कुरआने पाक की मंज़िलें

- पहली मंज़िल - सूरए फ़ातिहा से सूरए निसा तक
 दूसरी मंज़िल - सूरए माइदा से सूरए तौबह तक
 तिसरी मंज़िल - सूरए यूनुस से सूरए नहल तक
 चौथी मंज़िल - सूरए बनी इस्राईल से सूरए फ़ुरक़ान तक
 पाँचवी मंज़िल - सूरए शुअरा से सूरए यासीन तक
 छठी मंज़िल - सूरए बस्साफ़ात से सूरए हुजुरात तक
 सातवीं मंज़िल - सूरए क़ाफ़ से सूरए बन्नास तक

आयतों की क्रिमें

आयाते बअदह	एक हजार
आयाते बईद	एक हजार
आयाते नहय	एक हजार
आयाते अम्र	एक हजार
आयाते मिसाल	एक हजार
आयाते क़सस	एक हजार
आयाते तहलील	ढाई सौ
आयाते तहरीम	ढाई सौ
आयाते तस्बीह	सौ
आयाते मुतफ़र्रिका	छियासठ

कुरआन नाज़िल होने की पूरी मुदत - २२ साल ५ माह.

जुमला क़ातिबाने वही - चालीस सहाबए किराम रदियल्लाहो अन्हुम.

पहली वही - इक़रअ बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक - (सूरए अलक़, १ से ५)
 आख़िरी वही - वक्तू यौमन तुर्जऊना फ़ीहि इलल्लाह (सूरए बक्रह - आयत २८१)
 अल यौमा अकमल्लु लकुम दीनकुम व अत्मम्लु अलैकुम
 निअमती व रदीतु लकुमुल इस्लामा दीना .
 (सूरए माइदा - आयत तीन)

ऐराब यानी ज़बर ज़ेर पेश की तफ़सील

ज़बर	५३२२३
ज़ेर	३९५८२
पेश	८८०४
मद	१७७१
तश्दीद	१२७४
नुक़ते	१०५६८४

कुल हुरूफ़ (अक्षर)	३२३७६०
कुल कलिम (शब्द)	८६४३०
कुल आयतें	६६६६
कुल रूकू	५५८*

* कुछ वर्सों से एक आम ग़लती चली आ रही है वह यह कि रूकू की तादाद ५४० लिखी जाती है। इस्लामी तारीख़ के किस मोड़ पर ये १८ रूकू भूल में पड़े, अल्लाह ही बोहतार जाने।

हुरूफ़े तहज़्ज़ी (मूलअक्षरों) की तफ़सील

अलिफ़	४८,८७२
ब	११,४२८
त	१,१९९
स	१,२७६
जीम	३,२७३
ह	९७३
झ	२,४१६
दाल	५,६०२
ज़ाल	४,६७७
रे	११,७९३
जे	१,५९०
सीन	५,९९१
शीन	२,११५
स्वाद	२,०१२
दुवाद	१,३०७
तौ	१,२७७
ज़ौ	८४२
ऐन	९,२२०
ग़ैन	२,२०८
फ़े	८,४९९
क़ाफ़	६,८१३
काफ़	९,५००
लाम	३,४३२
मीम	३,६५३५
नून	४,०१९०
वाव	२,५५३६
हे	१,९०७०
लाम अलिफ़	७२०
य	४,५९१९

(आभार - अल-मअजमुल मुफ़हसुल कुरआन - कराची, पाकिस्तान में प्रकाशित)

उन किताबों का परिचय जिनके हवाले तफ़सीरे ख़ज़ाइनल इरफ़ान में मिलते हैं -

१. तनवीरुल मिक़ियास या तफ़सीरे इब्ने अब्बास.
२. ज़ामिउल बयान या तफ़सीरे इब्ने जरीर तबरी.
३. अहक़ामुल कुरआन,
लेखक : इमाम अबूवक्र अहमद बिन अली ज़स्सास राज़ी हनफ़ी
४. तफ़सीरुल कुरआन,
लेखक : अबू इस्हाक़ अहमद बिन मुहम्मद सअलवी.
५. तफ़सीरुल कुरआन,
लेखक : वेहक़ी बिन हुसैन
६. तफ़सीरे वसीत,
लेखक : अली उर्फ़ वाहिदी बिन अहमद.
७. ज़वाहिदुल कुरआन,
लेखक : अबू हामिद ज़ैनुद्दीन मुहम्मद ग़ज़ाली
८. मआलिमुत तन्ज़ील, लेखक : हुसैन बिन मसऊद अबू मुहम्मद नक्रवी शाफ़ई
९. मफ़ातिहुल ग़ैब या तफ़सीरे कबीर,
लेखक : इमाम फ़रूद्दीन उमर राज़ी.
१०. अल-वह्रुल मुहीत,
लेखक : असीरुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यूसुफ़ बिन हय्यान उन्दुलुसी.

११. तफसीरे ज़ाहिदी.
 १२. अल-जामेउल अहकामिल कुरआन या तफसीरे
 करतबी,
 लेखक : अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद
 अन्सारी करतबी.
 १३. मदरिकुत-तन्ज़ील या तफसीरे मदरिक,
 लेखक : हाफिज़ुद्दीन मेहमूद अबुल वरकात
 अन-नसफ़ी
 १४. तफसीरे इब्ने कसीर,
 लेखक : हाफिज़ इमामुद्दीन अबुल इफ़दा
 इस्माईल इब्ने कसीर दमिश्की.
 १५. अन्वारुत तन्ज़ील या तफसीरे वैज़ावा,
 लेखक : काज़ी नासिरुद्दीन अबू सईद
 अब्दुल्लाह बिन उमर वैज़ानी.
 १६. तफसीरुल कश्शाफ़,
 लेखक : ज़ाहिरुल्लाह मेहमूद बिन उमर
 ज़मख़शरी.
 १७. तफसीरे जलालैन,
 पहले भाग के लेखक : अल्लामा जलालुद्दीन
 सियूती बिन अब्दुर्रहमान.
 दूसरे भाग के लेखक : जलालुद्दीन महल्ली.
 १८. तफसीरे सराइबुल कुरआन या तफसीरे
 नीशापूरी.
 १९. दुररुल मन्सूर,
 लेखक : जलालुद्दीन सियूती.
 २०. तफसीरे ख़ाज़िन शरहे मआलिमुत-तन्ज़ील
 २१. रुहुल मआना,
 लेखक : अल्लामा शहाबुद्दीन सैयद मेहमूद
 आलूसी.

कुरआन शरीफ के ग़लत अनुवाद

(आला हज़रत के किये हुए कुरआन शरीफ के अनुवाद और दुसरे अनुवादों का तुलनात्मक अध्ययन)

आला हज़रत ने जो ख़िदमत की कुरआने पाक की
थी सरासर उन पे रहमत साहिब लौलाक की
नज़्दियों से क्या घटेगा रुतबए अहमद रज़ा
हैसियत तूफ़ाँ के आगे क्या ख़सो ख़ाशाक की

कज़े ईमों तर्जुमा जो हर जगह मशहूर है
हर चरक में जिसके नाते मुस्तफ़ा मस्तूर है
हर सतर में जिसकी इश्के मुस्तफ़ा जलवा फ़िगन
हाँ वह हर मुन्नी के दिलका और नज़र का दूर है

उत्तर प्रदेश के बरेली शहर के एक इज़्ज़त वाले पठान ख़ानदान में एक ऐसी हस्ती ने जन्म लिया जो अल्लाह तआला के दिये हुए इल्म और फ़ज़ल से इस्लामी जगत के क्षितिज पर चमकता सूरज बनकर छा गया। ये थे अब्दुल मुस्तफ़ा अहमद रज़ा ख़ाँ जिन्हें दुनिया के मुसलमानों की अक्सरीयत बीसवीं सदी के मुजद्दिद की हैसियत से अपना इमाम मानती है।

युं तो इमाम अहमद रज़ा के इल्मी कारनामों की सूची काफ़ी लम्बी है - दस हज़ार पन्नों पर आधारित अहम फ़तवों का संग्रह, एक हज़ार से ऊपर रिसाले और किताबें, इश्के रसूल में डूबी हुई शायरी - इत्यादि। लेकिन इनमें सबसे बड़ा इल्मी कारनामा है कुरआन शरीफ का उर्दू अनुवाद। यह अनुवाद नहीं बल्कि अल्लाह तआला के कलाम की उर्दू में व्याख्या है।

मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि कुरआन का ठीक ठीक अनुवाद किसी भी ज़बान, यहां तक कि अरबी में भी नहीं किया जा सकता। एक भाषा से दुसरी भाषा में केवल शब्दों को बदल देना मुश्किल नहीं है। लेकिन किसी भाषा की फ़साहत, बलागत, सादगी और उसके अन्दर छुपे अर्थ, उसके मुहावरों और दूसरे रहस्यों को समझना, और उसकी पृष्ठभूमि का अध्ययन करके उसकी सही सही व्याख्या करना अत्यन्त कठिन काम है। यही आज तक कोई न कर सका। रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लिम, जिन पर कुरआन उतरा, ने अल्लाह के कलाम की तशरीह की और वह यही तशरीह थी जो सहाबए किराम, ताबईन, तबए ताबईन और उलमा व मुफ़रिसीं और मुहद्दिसों से होती हुई हम तक पहुंची।

कुरआन शरीफ के दूसरी भाषाओं में जो अनुवाद हुए हैं उनके अध्ययन से यह बात साफ़ हो जाती है कि किसी शब्द का अनुवाद उसके मशहूर और प्रचलित अर्थ के अनुसार कर दिया गया है, जब कि हर भाषा में किसी भी शब्द के कई अर्थ होते हैं। इन मुख़्तलिफ़ अर्थों में से किसी एक उचित अर्थ का चुनाव अनुवाद करने वाले की ज़िम्मेदारी होती है। वरना शब्द का ज़ाहिरी अनुवाद तो एक नौसीख़िया भी कर सकता है।

इमाम अहमद रज़ा ने कुरआन शरीफ का जो अनुवाद किया है उसे देखने के बाद जब हम दुनिया भर के कुरआन-अनुवादों पर नज़र डालते हैं तो यह वास्तविकता सामने आती है कि अक्सर अनुवादकों की नज़र कुरआन के शब्दों की गहराई तक नहीं पहुंच सकी है और उनके अनुवाद से कुरआन शरीफ का मफ़हूम ही बदल गया है। बल्कि कुछ अनुवादकों से तो जाने अनजाने तहरीफ़ अर्थात् क़तर-ब्यूत भी हो गई है। यह शब्द के ऊपर शब्द रखने के कारण कुरआन की हुरमत और नबीयों के सम्मान को भी ठेस पहुंची है। और इससे भी बढ़कर, अल्लाह तआला ने जिन चीज़ों को हलाल ठहराया है, इन अनुवादों के कारण वह ह़राम करार पा गई है। और इन्हीं अनुवादों से यह भी मालूम होता है कि मआज़ल्लाह कुछ कामों की जानकारी अल्लाह तआला को भी नहीं होती। इस किस्म का

अनुवाद करके वो खुद भी गुमराह हुए और मुसलमानों के लिए गुमराही का रास्ता खोल दिया और यहूदियों ईसाइयों और हिन्दुओं के हाथों में (इस तरह का अनुवाद करके) इस्लाम विरोधी हथियार दे दिया गया. आर्य-समाजियों का काफी लिटरेचर इस्लाम पर किये गये तीखे तर्ज़ और कटाक्ष से भरा पड़ा है.

इमाम अहमद रज़ा ने मशहूर और मुस्तनद तफ़्सीरों की रीशनी में क़ुरआन शरीफ़ का अनुवाद किया. जिस आयत की व्याख्या मुफ़रिसरों ने कई कई पन्नों में की, आला हज़रत ने अल्लाह तआला की प्रदान की हुई विद्या से वही व्याख्या अनुवाद के एक वाक्य या एक शब्द में अदा कर दी. यही वजह है कि आला हज़रत के अनुवाद से हर पढ़ने वाले की निगाह में क़ुरआन शरीफ़ का आदर, नबीयों का सम्मान और इन्सानियत का वक्कार बलन्द होता है.

आइये देखें कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा और दूसरे लोगों के क़ुरआन-अनुवाद के बीच क्या अंतर है.

पारा चार, सूरए आले इमरान, आयत १४२

وَلَيْسَ يَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمُ الصَّابِرِينَ

अनुवाद :-

- शाह अब्दुल कादिर - "और अभी मालूम नहीं किये अल्लाह ने जो लड़ने वाले हैं तुम में."

- फ़रह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी - "हालांकि अभी खुदा ने तुम में से जिहाद करने वालों को तो अच्छी तरह मालूम किया ही नहीं."

- शाह वलीउल्लाह - "य हनोज़ तमीज़ नसाख़्ता अस्त खुदा औरा कि जिहाद करदा अन्द अज़ शुमा." (फ़ारसी)

- अब्दुल माजिद दरियावादी देवबन्दी - "हालांकि अभी अल्लाह ने उन लोगों को तुम में से जाना ही नहीं जिन्होंने जिहाद किया."

- डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी - "और अभी तक अल्लाह ने न तो उन लोगों को जाँचा जो तुम में से जिहाद करने वाले हैं."

- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी - "हालांकि हनोज़ अल्लाह तआला ने उन लोगों को तो देखा ही नहीं जिन्होंने तुम में से जिहाद किया हो."

- देवबन्दी मेहमूदुल हसन - "और अभी तक मालूम नहीं किया अल्लाह ने जो लड़ने वाले हैं तुम में."

- इमाम अहमद रज़ा - "और अभी अल्लाह तआला ने तुम्हारे गाज़ियों का इम्तिहान न लिया."

देखा आपने ! आला हज़रत को छोड़कर दूसरे अनुवादक क़ुरआन की व्याख्या करने वक़्त कितने ग़ैर हाज़िर थे कि तफ़्सीर के अध्ययन का कष्ट न उठाया और किस सादगी से क़लम चला दिया. एक तरफ़ तो अल्लाह तआला के सर्वज्ञाता, सर्वव्याप्त, सर्व शक्तिमान होने में ईमान, दूसरी तरफ़ उसको ऐसा बेख़बर बताना कि मूमिनों में से कौन लोग जिहाद की भावना से ओत प्रोत हैं, इसकी जानकारी अल्लाह को नहीं, या अभी जाना ही नहीं.

पारा नौ, सूरए अनफ़ाल, आयत नं. ३०

وَيَبْكُرُونَ وَيُبَكِّرُ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمُبَكِّرِينَ

- शाह अब्दुल कादिर - "और वो भी फ़रेब करते थे और अल्लाह भी फ़रेब करता था और अल्लाह का फ़रेब सबसे बेहतर है."

- शाह रफीउद्दीन - "औग़ मक़्र करते थे वो और मक़्र करता था अल्लाह तआला और अल्लाह तआला नेक मक़्र करने वालों का है."

- शाह वलीउल्लाह - "व ईशॉ बदसगाली मी करदन्द व खुदा बदसगाली मी कर्द (यानी व-ईशॉ) व खुदा बेहतरिने बदसगाली कुन्दगान अस्त." (फ़ारसी)
- मेहमुदुल हसन देवबन्दी - "वो भी दाव करते थे और अल्लाह भी दाव करता था और अल्लाह का दाव सबसे बेहतर है"
- डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी - "और हाल यह कि काफ़िर अपना दाव कर रहे थे और अल्लाह अपना दाव कर रहा था और अल्लाह सब दाव करने वालों से बेहतर दाव करने वाला है."
- थानवी अशरफ़ अली देवबन्दी - "और वो तो अपनी तदबीर कर रहे थे और अल्लाह मियाँ अपनी तदबीर कर रहे थे और सबसे ज़्यादा मुस्तहक़म तदबीर वाला अल्लाह है."
- इमाम अहमद रज़ा - "और वो अपना सा मक़्र करते थे और अल्लाह अपनी खुफ़िया तदबीर फ़रमाता था और अल्लाह की खुफ़िया तदबीर सबसे बेहतर."

आला हज़रत के अलावा दूसरे अनुवादकों ने उर्दू में जो शब्द इस्तेमाल किये वो अल्लाह की शान के ख़िलाफ़ हैं। मक़्र और फ़रेब की निस्वत उसकी शान में गुस्ताख़ी है। यह बुनियादी ग़लती सिर्फ़ इस वज़ह से है कि अल्लाह और रसूल के पाक कामों को अपने कामों से जाँचा है।

अल्लाह तआला के आदर के लिये थानवी साहब ने "मियाँ" इस्तेमाल किया है, जो एक बहुत ही साधारण शब्द है और अल्लाह तआला की शान घटाता है।

पारा तीस, सूरा वद-दुहा, आयत नं. ७

وَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ

अनुवाद :-

- मक़बूल शीआ :- "और तुमको भटका हुआ पाया और मंज़िले मक़सूद तक पहुंचाया।"
- शाह अब्दुल कादिर :- "और पाया तुमको भटकता फिर राह दी।"
- शाह रफ़ीउद्दीन :- "और पाया तुमको राह भूला हुआ पस राह दिखाई।"
- शाह वलीउल्लाह :- "व याफ़्त तुरा राह गुम कर्दा यानी शरीअत नमी दानिस्ती पर राह नमूद।"
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- "और आपको बेख़बर पाया सो रास्ता बताया।"
- देवबन्दी डिप्टी नज़ीर अहमद :- "और तुमको देखा कि राहें हक़ की तलाश में भटके भटके फिर रहे हों तो तुमको दिने इस्लाम का सीधा रास्ता दिखा दिया।"
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- "और अल्लाह तआला ने आपको (शरीअत से) बेख़बर पाया सो आपको (शरीअत का) रास्ता बतला दिया।"
- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा :- "और तुम्हें अपनी महबूत में ख़ुदरफ़्त पाया तो अपनी तरफ़ राह दी।"

ऊपर की आयत में "दाल्लन" शब्द इस्तेमाल हुआ है। इसके मशहूर मानी गुमराही और भटकना है। चूनायें अनुवादकों ने आँख बंद करके यही अर्थ लगा दिये, यह न देखा कि अनुवाद में किस राह-गुमकर्दा, भटकता, बेख़बर, राह भूला कहा जा रहा है। रसूल क़रीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का आदर सम्मान बाक़ी रहता है या नहीं, इसकी कोई चिन्ता नहीं। एक तरफ़ तो है "मा वदअका रब्बुका वमा क़ला, बलल आख़िरतो ख़ैरुल लका मिनल अला" (यानी तुम्हें तुम्हारे रब ने न छोड़ा और न मक़रूह जाना और बेशक पिछली तुम्हारे लिये पहली से बेहतर है ...) इसके बाद ही शान वाले रसूल की गुमराही का वर्णन कैसे आ गया। आप खुद ग़ौर करें, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अगर किसी लम्हा गुमराह होते तो राह पर कौन होता था। यूँ कहिये कि जो खुद गुमराह हो, भटकता फिरा हो, राह भूला हुआ हो, वह हिदायत देने वाला कैसे हो सकता है?

खुद कुरआन शरीफ़ में साफ़ तौर से कहा गया है “मा दल्ला साहिबुकुम वमा गवा” (आपके साहिब अर्थात् नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम न गुमराह हुए और न बेराह चले - पारा सत्ताईस, सूरफ़ नज़्म, आयत दो) जब एक स्थान पर अल्लाह तआला गुमराह और बेराह की नफ़ी फ़रमा रहा है तो दूसरे स्थान पर खुद ही कैसे गुमराह इरशाद फ़रमाएगा ?

पारा छब्बीस, सूरफ़ फ़तह. आयत ?

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا

अनुवाद :-

- शाह अब्दुल कादिर :- “हमने फैसला कर दिया तेरे वास्ते सरीह फैसला ताकि माफ़ करे तुझको अल्लाह जो आगे हुए तेरे गुनाह और जो पीछे रहे.”
- शाह रफीउद्दीन :- “तहकीक़ फ़तह दी हमने तुझको फ़तहे ज़ाहिर ताकि बख़्शो वास्ते तेरे खुदा जो कुछ हुआ था पहले गुनाहों से तेरे आगे और जो कुछ पीछे हुआ”
- शाह वलीउल्लाह :- “हर आइना मा हुक्म करदन बराए तो बफ़ते ज़ाहिर आक्बिते फ़तह आनस्त कि बियामुर्ज तुरा खुदा आन्वे कि साबिक़ गुज़श्त अज़ गुनाहे तो व आन्वे पसमानद.”
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- “बेशक़ हमने आपको खुल्लमखुल्ला फ़तह दी ताकि अल्लाह आपकी सब अगली पिछली ख़ताएं माफ़ कर दे.”
- फ़तह मुहम्मद जालम्यरी देवबन्दी :- “ऐ मुहम्मद हमने तुमको फ़तह दी फ़तह भी सरीह व साफ़ ताकि खुदा तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह बख़्श दे.” (यही अनुवाद मेहमूदुल हसन देवबन्दी का है)
- देवबन्दी डिप्टी नज़ीर अहमद :- “ऐ पैग़म्बर यह हुदैबिय्यह की सुलह क्या हुई दर हकीक़त हमने तुम्हारी खुल्लम खुल्ला फ़तह करा दी ताकि तुम इस फ़तह के शुक्रिये में दीने हक़ की तरक्की के लिये और ज़्यादा कोशिश करो और खुदा इस के सिले में तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह माफ़ कर दे.”
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- “बेशक़ हमने आपको खुल्लम खुल्ला फ़तह करा दी ताकि अल्लाह तआला आपकी सब अगली पिछली ख़ताएं माफ़ फ़रमा दे.”
- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा :- “बेशक़ हमने तुम्हारे लिये रीशन फ़तह दी ताकि अल्लाह तआला तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शो तुम्हारे अगलों के और तुम्हारे पिछलों के.”

आम अनुवादकों से ज़ाहिर होता है कि नबीए मअसूम अतीत में भी गुनाहगार था, भविष्य में भी गुनाह करेगा. मगर खुली फ़तह के सदके में अगले पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो गए और आइन्दा रसूल के गुनाह माफ़ होते रहेंगे.

नबीयों के मअसूम होने का सिद्धांत अगर ईमान का हिस्सा है तो क्या गुनाहगार ख़ताकार नबी हो सकता है ? आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा का जोशे अक्कीदत नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये अपने कमाल पर है. उनको भी अनुवाद के समय यह चिन्ता हुई होगी कि अस्मते रसूल पर हर्फ़ न आए और कुरआन शरीफ़ का अनुवाद भी सही हो जाए. वह अक्कीदत भरी हुई निगाह जो आस्तानए रसूल पर हर वक़्त बिछी हुई है, उसने देखा कि “लका” में “लाम” सबब के अर्थ में इस्तेमाल हुआ है लिहाज़ा जब हुज़ूर के सबब से गुनाह बख़्शे गए तो वो शख़्सियतें और हुईं जिनके गुनाह बख़्शे गए.

पारा पच्चीस, सूरह शूरा, आयत २४

فَإِنْ يَشَاءِ اللَّهُ يَخْتِمْ عَلَى قَلْبِكَ

अनुवाद -

- शाह वलीउल्लाह :- "पस अगर ख्वाहद खुदा मुहर बिहाद बर दिले तो."
- शाह रफ़ीउद्दीन :- "पस अगर चाहता अल्लाह, मोहर रख देता ऊपर दिल तेरे के."
- शाह अब्दुल क़ादिर :- "सो अगर अल्लाह चाहे तो आपके क़ल्ब पर मोहर लगा दे."
- फ़तह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी :- "अगर खुदा चाहे तो ऐ मुहम्मद तुम्हारे दिल पर मोहर लगा दे."
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- "तो अगर अल्लाह चाहे तो आपके क़ल्ब पर मोहर लगा दे."
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- "सो खुदा अगर चाहे तो आपके दिल पर बन्द लगा दे (साबिका अनुवाद) दिल पर मोहर लगा दे."
- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा :- "और अगर अल्लाह चाहे तो तुम्हारे दिल पर अपनी रहमत और हिफ़ाज़त की मोहर लगा दे."

दूसरे अनुवादों से यह अन्दाज़ा होता है कि "ख़तमल्लाहो अला कुलूबिहम" के बाद मोहर लगाने की कोई जगह थी तो यही थी कि सिर्फ़ डरा धमका कर छोड़ दिया। कितना भयानक विचार है। वह पाक ज्ञात कि जिसके सरे मुबारक पर मेअराज का ताज रखा गया, आज उससे फ़रमाया जा रहा है कि हम चाहें तो तुम्हारे दिल पर मोहर लगा दें !

मोहर दो क्रिस्म की होती है एक तो वह जो "ख़तमल्लाहो अला कुलूबिहम" में इस्तेमाल हुई है और दूसरी "ख़ातमुन्नबियीन" की। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का क़ल्बे मुबारक कि जिस पर अल्लाह तआला की रहमत और अनवार की बारिश हो रही है, जिस दिल को हर चीज़ से मेहफूज़ कर दिया गया है, इस मुबारक आयत में इसकी मज़ीद वज़ाहत कर दी गई।

पारा दो, सूरह बकरह, आयत १४५

وَلَيْنِ اتَّبَعَتْ أَهْوَاءَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّكَ إِذًا لِّمِنَ الظَّالِمِينَ

अनुवाद -

- शाह अब्दुल क़ादिर :- "और कभी चला तू उनकी पसन्द पर बाद उस इल्म के जो तुझको पहुंचा तो तेरा कोई नहीं अल्लाह के हाथ से हिमायत करने वाला न मददगार."
- शाह रफ़ीउद्दीन :- "और अगर पैरवी करेगा तू ख्वाहिशों उनकी पीछे उस चीज़ से कि आई तेरे पास इल्म से, नहीं वास्ते तेरे अल्लाह से कोई दोस्त और न कोई मददगार."
- शाह वलीउल्लाह :- "अगर पैरवी कर दी आरजूहाए बातिल ईशॉरा पस आन्वे आमदह अस्त बतो अज़ दानिश न बाशद तुरा बराए इस्लास अज़ अज़ाबे खुदा हेच दोस्ते व न यारे दहन्द."
- दरियाबादी देवबन्दी :- "और अगर आप बाद उस इल्म के जो आपको पहुंच चुका है उनकी ख्वाहिशों की पैरवी करने लगे तो आपके लिए अल्लाह ख़ूबी गिरफ्त के मुक़ाबले में न कोई यार होगा न मददगार."

- डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी और फ़क़ह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी :- “और ऐ पैग़म्बर अगर तुम इसके बाद कि तुम्हारे पास इल्म यानी क़ुरआन आ चुका है उनकी ख़्वाहिशों पर चले तो फिर तुमको ख़ुदा के ग़ज़ब से बचाने वाला न कोई दोस्त और न कोई मददगार.”

- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- “और अगर आप इतिबाअ करने लगे उनके ग़लत ख़यालात का इल्मे क़तई साबित बिल वही आ चुकने के बाद तो आपका कोई ख़ुदा से बचाने वाला न याद निकले न मददगार.”

- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा :- “और (ऐ सुनने वाले, जो कोई भी हो) अगर तू उनकी ख़्वाहिशों का पैरो हुआ बाद इसके कि तुझे इल्म आ चुका तो अल्लाह से कोई तेरा बचाने वाला होगा और न मददगार.”

पाक पवित्र नबी जिनकी निस्वत तारीफ़ से क़ुरआन के पन्ने भर हैं, जिनको तौहा, यासीन, मुज़म्मिल, मुद्स्सिर जैसे अल्लफ़ाब व आदाब दिये गए, अचानक इस क़दर सख़्त अलफ़ाज़ से अल्लाह तआला उनको संबोधित करे ? आला हज़रत ने तफ़सीर ख़ाज़िन की रीशनी में आपत का अनुवाद किया कि मुख़ातब हर सुनने वाला हैं न कि पाक पवित्र नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

पारा पच्चीस, सूरए शूरा, आयत ५२

مَا كُنْتُ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ

अनुवाद -

- शाह अब्दुल क़ादिर :- “तू न जानता था कि क्या है किताब और न ईमान.”

- शाह रफ़ीउद्दीन :- “न जानता था तू क्या है किताब और न ईमान.”

- शाह बलीउल्लाह :- “नमी दानिस्ती कि चीस्त किताब व नमी दानिस्ती कि चीस्त ईमान.”

- फ़क़ह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी :- “तुम न तो किताब को जानते थे और न ईमान”

- अबुल-अअला मौदूदी देवबन्दी :- “तुम्हें कुछ पता न था कि किताब क्या होती है और ईमान क्या चीज़ है.”

- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- “आपको न यह ख़बर थी किताब क्या चीज़ है और न यह कि ईमान क्या चीज़ है.”

- डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी :- “तुम नहीं जानते थे कि किताबुल्लाह क्या चीज़ है और न यह जानते थे कि ईमान किसको कहते हैं.”

- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- “आपको न यह ख़बर थी कि किताब (अल्लाह) क्या चीज़ है और न यह ख़बर थी कि ईमान (का इन्तिहाई कमाल) क्या चीज़ है”

- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा :- “इससे पहले न तुम किताब जानते थे न एहकामे शरअ की तफ़सील.”

लौहो क़लम का इल्म ही नहीं बल्कि जिनको माकाना व मायकून का इल्म है, मआज़ल्लाह, इस आयत के उतरने से पहले मूमिन भी न थे. क्योंकि इन अनुवादकों के अनुवादों के अनुसार ईमान से भी अज़ान(कोरे) थे, तो ग़ैर मुस्लिम हुए. मुवह्हिद भी नहीं कह सकते कि वह आपकी तशरीफ़ आवरी से पहले मूमिन होता है (बाद में रिसालत पर ईमान लाना शर्त है) इन अनुवादों से यह मालूम होता है कि ईमान की ख़बर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बाद में हुई. आला हज़रत के अनुवाद से इस तरह के सारे ऐतिराज़ात ख़त्म हो गए कि आप शरीअत के एहकाम की तफ़सील न जानते थे. ईमान और शरीअत के एहकाम की तफ़सील में जो अन्तर है वही आला हज़रत और दूसरे अनुवादकों में है.

पारा सत्ताईस, सूरए रहमान , आयत १-४

الرَّحْمٰنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۝ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ

अनुवाद :

- शाह अब्दुल क़ादिर :- "रहमान ने सिखाया कुरआन, बनाया आदमी, फिर सिखाई उसको बात."
- शाह रफ़ीउद्दीन :- "रहमान ने सिखाया कुरआन, पैदा किया आदमी को, सिखाया उसको बोलना."
- शाह वलीउल्लाह :- "ख़ुदा आमोख्त कुरआन रा, आफ़रीद आदमी रा व आमोख्तश सुखन गुफ्तन."
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- "ख़ुदाए रहमान ही ने कुरआन की तालीम दी, उसी ने इन्सान को पैदा किया उसको गोयाई सिखाई."
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी और फ़तह मुहम्मद जालख़री देवबन्दी :- "रहमान ने कुरआन की तालीम दी. उसने इन्सान का पैदा किया फिर उसको गोयाई सिखाई."
- डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी :- "जिन्नो और आदमियों पर ख़ुदाए रहमान के जहाँ और बेशुमार एहसानात हैं अज़ाँ जुमला यह कि उसीने कुरआन पढ़ाया, उसी ने इन्सान को पैदा किया फिर उसको बोलना सिखाया."
- आशिक़े रसूल इमाम अहमद रज़ा :- "रहमान ने अपने मेहबूब को कुरआन सिखाया, इन्सानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया माकाना व मायकून का बयान उन्हें सिखाया."

ऊपर के अनुवादों को गौर से पढ़ियं, फिर आला हज़रत का अनुवाद पढ़ें. आयत नम्बर दो में "अल्लमा" शब्द आया. सारे अनुवादकों ने लिखा "रहमान ने सिखाया कुरआन" सवाल पैदा होता है कि किस को कुरआन सिखाया. इससे किसे इन्कार हो सकता है. खुद कुरआन शाहिद है "अल्लमका मा लम तकुन तअलम" अल्लाह ने आपको हर उस चीज़ का इल्म दिया जो आप न जानते थे.

आयत नंबर तीन का अनुवाद है- आदमी को पैदा किया. वह इन्सान कौन है. अनुवादकों ने शब्द पर शब्द रख के अनुवाद कर दिया. कुछ ने अपनी तरफ़ से भी शब्द जोड़ दिये. फिर भी इन्सान शब्द की व्याख्या न हो सकी. अब आप उस इज़ज़त वाली ज़ात का तसबुर करें जो हर अरल की अरल है. जिनकी हकीकत सारी हकीकतों की जननी है. जिनपर तख़लीक़ की नींव रखी गई, जो उत्पत्ति का स्रोत है, कायनात की रुह, इन्सानियत की जान है. आला हज़रत फ़रमाते हैं - इन्सानियत की जान मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) को पैदा किया. अल-इन्सान से जब हुज़ूर सरदार कौनैन के व्यक्तित्व का निर्धारण हो गया तो उनकी शान के लायक़ अल्लाह तआला की तरफ़ से तालीम भी होनी चाहिये. चुनान्वे आम अनुवादकों की रविश से हट कर आला हज़रत फ़रमाते हैं माकाना व मा यकून का बयान उन्हें सिखाया.

इस जगह रसूल की शान में गुस्ताख़ी करने वाले ज़हनों में ज़रूर यह सवाल उभरता है कि यहां माकाना व मा यकून का बयान सिखाया कहाँ से आ गया. यहाँ तो मुराद बोलना सिखाया है. या यह कहिये कि कुरआन का इल्म दूसरी आयत ज़ाहिर कर रही है तो उस चौथी आयत में उसका बयान सिखाया मुराद है.

इसका जवाब यह है कि माकाना व मा यकून (जो कुछ हुआ और जो क़यामत तक होगा) का इल्म लौहे महफूज़ में और लौहे महफूज़ कुरआन शरीफ़ के एक जुज़ में और कुरआन का बयान (जिसमें माकाना व मायकून का बयान भी शामिल है) सिखाया.

पारा ३०, सूरए बलद, आयत १

لَا اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ

अनुवाद -

- शाह अब्दुल कादिर :- "कसम खाता हूँ इस शहर की और तुझ को कैद न रहेगी इस शहर में."
- शाह रफीउद्दीन :- "कसम खाता हूँ मैं इस शहर की और तू दाखिल होने वाला है इस शहर में."
- शाह वलीउल्लाह :- "कसम मी खुरम बड़े शहर."
- अशरफ अली थानवी देवबन्दी :- "मैं कसम खाता हूँ इस शहरे मक्का की."
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- "मैं कसम खाता हूँ इस शहर की."
- मेहमूदुल हसन देवबन्दी :- "कसम खाता हूँ इस शहर की."
- डिप्टी नज़ीर देवबन्दी :- "हम इस शहरे मक्का की कसम खाते हैं."
- अबुल अअला मौदूदी बहावी :- "नहीं, मैं कसम खाता हूँ इस शहर की."
- इमाम अहमद रज़ा मुहम्मिक्के बरेलवी :- "मुझे इस शहर की कसम कि ऐ मेहबूब तुम इस शहर में तशरीफ़ फरमा हो."

इन्सान कसम खाता है. उर्दू और फ़ारसी में कसम खाई जाती है. अल्लाह तआला खाने पीने से बेनियाज़ है. अनुवादकों ने अल्लाह तआला को अपने मुहावरे का क्यों पाबन्द किया ? क्या इसलिये कि उस बेनियाज़ ने कुछ नहीं खाया तो कम से कम कसम ही खाए ! ऐसी भी क्या बेनियाज़ी कि कुछ नहीं खाता ! आलाहज़रत ने किस उमदा तरीक़े से अनुवाद फ़रमाया - मुझे इस शहर का कसम.

पारा एक, सूरए फ़ातिहा, आयत चार

إِيَّاكَ تَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

अनुवाद -

- शाह वलीउल्लाह :- "तुम भी परस्तम व अज़ तो मदद मी तलबम."
- फ़तह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी :- "हम तेरी ही बंदगी करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं."
- शाह रफीउद्दीन व मेहमूदुल हसन देवबन्दी :- "तुझ ही को इबादत करते हैं हम और तुझ ही से मदद चाहते हैं हम."
- अशरफ अली थानवी देवबन्दी :- "हम आपकी ही इबादत करते हैं और आप ही से दरख़ास्त इआनत करते हैं."
- इमाम अहमद रज़ा :- "हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें."

सूरए फ़ातिहा सूरए दुआ है. दुआ के दौरान दुआ के शब्द बोले जाते हैं, ख़बर नहीं दी जाती. इबादत करते हैं, मदद चाहते हैं, जबकि सारे अनुवादों में ख़बर का मफ़हूम है, दुआ का नहीं. इबादत करते हैं, मदद चाहते हैं, ये शब्द दुआ के नहीं, ख़बर के हैं. जबकि आलाहज़रत ने दुआ के शब्दों के साथ अनुवाद किया है.

पारा दस, सूरए अनफ़ाल, आयत ७०

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ

अनुवाद -

- शाह अब्दुल कादिर :- ऐ नबी !
- शाह रफीउद्दीन :- ऐ नबी !
- शाह वलीउल्लाह :- ऐ पैग़म्बर !

- अब्दुल माजिद दरियावादी देवबन्दी :- ऐ नबी !
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- ऐ नबी !
- डिप्टी नज़ीर देवबन्दी :- ऐ पैगम्बर !
- इमाम अहमद रज़ा :- ऐ ग़ैव की ख़बर बताने वाले !

कुरआन शरीफ़ में “रसूल” और “नबी” शब्द कई जगह आया है। अनुवादक की ज़िम्मेदारी है कि वह इसका अनुवाद करे। रसूल का अनुवाद पैगम्बर तो ज़ाहिर है मगर नबी का अनुवाद पैगम्बर अधूरा है। आला हज़रत ने नबी शब्द का अनुवाद इस ढंग से किया है कि शब्द की वास्तविकता सामने आ गई। मगर अफ़सोस कि कुछ लोगों को इस अनुवाद से गहरा दुःख हुआ है कि उनकी तंगतज़री और बदअकीदगी का जवाब आलाहज़रत के अनुवाद से ज़ाहिर हो गया।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अनुवाद -

- शाह अब्दुल क़ादिर :- शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला।
- शाह रफीउद्दीन :- शुरु करता हूँ मैं साथ नाम अल्लाह बख़्शिश करने वाले मेहरबान के।
- अब्दुल माजिद दरियावादी देवबन्दी :- शुरु अल्लाह निहायत रहम करने वाले बारबार रहम करने वाले के नाम से।
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान निहायत रहम वाले हैं।
- इमाम अहमद रज़ा :- अल्लाह के नाम से शुरु जो निहायत मेहरबान रहम वाला।

समस्त उर्दू अनुवाद देखिये, सबने इसी तरह अनुवाद किया है “शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से” या “शुरु साथ नाम अल्लाह के”। चुनान्ते अनुवादक का कथन ख़ुद अपनी ज़बान से ग़लत हो गया। क्योंकि शुरु करता हूँ से अनुवाद शुरु किया है, अल्लाह के नाम से शुरु नहीं किया। थानवी जी ने आख़िर में “हूँ” बढ़ा दिया उनके चले या अनुयायी बताएँ कि यह किस शब्द का अनुवाद है ?

पारा दो, सूरफ़ बक्ररह, आयत १७३

وَمَا أَهْلٌ بِهِ لِمَا يَغَيِّرُ اللَّهُ

अनुवाद-

- शाह अब्दुल क़ादिर :- और जिसपर नाम पुकारा अल्लाह के सिवा का।
- शाह रफीउद्दीन :- और जो कुछ पुकारा जावे ऊपर उसके वास्ते ग़ैरुल्लाह के।
- शाह वलीउल्लाह :- व आंचे नामे ग़ैरे ख़ुदा बवक्ते ज़िन्हे ऊ याद कर्दा शवद।
- मेहमूदुल हसन देवबन्दी :- और जिस जानवर पर नाम पुकारा जाए अल्लाह के सिवा किसी और का।
- अब्दुल माजिद दरियावादी, अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- और जो जानवर ग़ैरुल्लाह के लिये नामज़द कर दिया गया।
- फ़तह मुहम्मद जालमथरी देवबन्दी :- और जिस चीज़ पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए हग़म कर दिया है।
- इमाम अहमद रज़ा :- और वह जिसके ज़िन्हे में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया हो।

जानवर कभी शादी के लिये नामज़द होता है, कभी अक्कीका, वलीमा, कुर्बानी और ईसाले सवाब के लिये, जैसे कि ग्यारहवीं शरीफ़, बारहवीं शरीफ़. तो गोया हर वह जानवर जो इन कामों के लिये नामज़द किया गया है वह अनुवादकों के नज़्दीक हाराम है. आला हज़रत ने हदीस, फ़िक़ह और तफ़सीर के अनुसार अनुवाद किया. "जिसके ज़िह्न में ग़ैरे खुदा का नाम पुकारा गया है."

कुरआन शरीफ़ का तफ़सीर की दृष्टि से अनुवाद, न कि शब्द पर शब्द रख देना.

यदि कुरआने करीम का लफ़्ज़ी अनुवाद कर दिया जाए अर्थात् कुरआन के किसी शब्द के बदले दूसरी भाषा में उसके पर्यायवाची या उसके अर्थ जैसा शब्द रख दिया जाए तो इससे बेशुमार ख़राबियाँ पैदा होंगी. कहीं अल्लाह तआला की शान में बेअदबी होगी तो कहीं नबियों की शान में. और कहीं इस्लाम का बुनियादी अक्कीदा ज़ख़मी होगा.

हमने ऊपर जो मिसालें दी हैं उनपर अगर आप ग़ौर करें तो सारे अनुवादकों ने कुरआन के शब्द के अनुसार सीधा सीधा उर्दू में अनुवाद कर दिया है. मगर इसके बावजूद वो अनुवाद कानों पर भारी गुज़रते हैं, और इस्लामी अक्कीदे पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है.

क्या आप पसन्द करेंगे ?

कि कोई कहे "अल्लाह उनसे ठुड़ा करता है", "अल्लाह उनसे हंसी करता है", "अल्लाह उनसे दिल लगी करता है", "अल्लाह उन्हें बना रहा है", "अल्लाह उनकी हंसी उड़ाता है."

पारा एक, सूरए बक्रह, आयत १५

اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِرِمِّ

अल्लाह उनसे इस्तहज़ा फ़रमाता है (जैसा कि उसकी शान के लायक है.) इस आयत का अक्सर अनुवादकों ने, जिनमें मशहूर डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी, शेख़ मेहमूदुल हसन देवबन्दी, फ़तह मुहम्मद जालन्धरी, देवबन्दी, अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी, मिर्ज़ा हैरत देहलवी (ग़ैर मुक़ल्लिद), नवाब वहीदुज़ ज़माँ (ग़ैर मुक़ल्लिद), सर सैयद अहमद ख़ाँ अलीगढ़ी (नेचरी), हज़रत शाह रफ़ीउद्दीन वग़ैरह हैं.

इसी तरह एक मशहूर आयत है :

"ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ" पारा आठ, सूरए अअराफ़, आयत ५४.

अनुवाद -

- आशिक्क इलाही देवबन्दी : फिर क़ायम हुआ अर्श पर.
- शाह रफ़ीउद्दीन : फिर क़रार पकड़ा ऊपर अर्श के.
- डिप्टी नज़ीर अहमद : फिर अल्लाह अर्शें बरीं पर जा बिराजा.
- शाह अब्दुल कादिर : फिर बैठा तख़्त पर.
- नवाब वहीदुज़ ज़माँ ग़ैर मुक़ल्लिद : फिर तख़्त पर चढ़ा.
- वज़्दी साहब व मुहम्मद यूसुफ़ काकोरवी : फिर अर्श पर दराज़ हो गया.
- इमाम अहमद रज़ा ने "इस्तवा" का उर्दू अनुवाद नहीं किया इसलिये कि इस शब्द को दर्शाने के लिये उर्दू में कोई शब्द है ही नहीं.

इसलिये आला हज़रत ने अनुवाद किया :-

“फिर अर्श पर इस्तवा फ़रमाया (जैसा कि उसकी शान के लायक है)”

इसी तरह आयत :

فَاَيْنَمَا تُولُوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ पारा एक, सूरए बकरह, आयत ११५

में बज्हुल्लाह का अनुवाद अक्सर अनुवादकों ने किया है - “अल्लाह का मुँह”, “अल्लाह का रुख”.

- शाह रफ़ीउद्दीन : पस जिधर को मुँह करो पस वही है मुँह अल्लाह का.
- नवाब वहीदुज़ जमाँ ग़ैर मुक़ल्लिद व मुहम्मद यूसुफ़ : अल्लाह का चेहरा है.
- शेख़ मेहमूदुल हसन देवबन्दी और अशरफ़ अली थातवी देवबन्दी : उधर अल्लाह ही का रुख़ है.
- डिप्टी नज़ीर अहमद व मिर्ज़ा हैरत ग़ैर मुक़ल्लिद देहलवी व सैयद फ़रमान अली शीआ : उधर अल्लाह का सामना है.
- आला हज़रत ने “बज्हु” का अनुवाद नहीं किया. आपने लिखा : “तो तुम जिधर मुँह करो उधर बज्हुल्लाह है (ख़ुदा की रहेमत तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह है.)”

इससे मालूम हुआ कि क़ुरआन शरीफ़ का तफ़्सीरी अनुवाद करना हर अवसर पर लगभग असंभव है. ऐसे में अनुवाद का हल यही है कि तफ़्सीर के अनुसार अनुवाद किया जाए ताकि मतलब भी अदा हो जाए और अनुवाद में किसी प्रकार की त्रुटि बाकी न रहे. आला हज़रत के ईमान-वर्धक अनुवाद की ख़ूबियों को देखकर यह कहना मुबालिगा न होगा कि सारे अनुवादों में आलाहज़रत का अनुवाद एक उच्चस्तरीय अनुवाद है जो अनुवाद की त्रुटियों से پاک है. दूसरे अनुवादकों ने ख़ालिक को मख़लूक के दर्जे में ला खड़ा किया है.

पारा पाँच, सूरए निसा आयत १४२

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خٰدِعُهُمْ

अनुवाद -

- आशिक इलाही मेरठी, मेहमूदुल हसन देवबन्दी व शाह अब्दुल कादिर : मुनाफ़िक्कीन दगाबाज़ी करते हैं अल्लाह से और अल्लाह भी उनको दगा देगा.
- शाह रफ़ीउद्दीन : और अल्लाह फ़रेब देने वाला है उनको.
- डिप्टी नज़ीर अहमद : ख़ुदा उन ही को धोका दे रहा है.
- फ़क़्द मुहम्मद जालन्धरी : अल्लाह उन्हीं को धोके में डालने वाला है.
- नवाब वहीदुज़ जमाँ ग़ैर मुक़ल्लिद व मिर्ज़ा हैरत ग़ैर मुक़ल्लिद देहलवी व सैयद फ़रमान अली शीआ : वह उनका फ़रेब दे रहा है.

दगाबाज़ी, फ़रेब, धोखा किसी तरह अल्लाह तआला की शान के लायक नहीं. आला हज़रत ने इस आयत का तफ़्सीर के अनुसार स़ू अनुवाद किया : “बेशक मुनाफ़िक् लोग अपने गुमान में अल्लाह को फ़रेब दिया चाहते हैं और वही उनको ग़ाफ़िल करके मारेगा.”

क़ुरआन की तफ़्सीरों के अध्ययन के बाद अन्दाज़ा होता है कि इस अनुवाद में आयत का सम्पूर्ण अर्थ अत्यन्त मोहतात तरीक़े पर बयान किया गया है.

पारा म्बारह, सूरए यूनुस, आयत २१

قُلْ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا

अनुवाद :

- शाह अब्दुल क़ादिर, फ़तह मुहम्मद जालन्धरी, मेहमूदुल हसन देवबन्दी : कह दो अल्लाह सबसे जल्द बता सकता है हीला।

- शाह रफ़ीउद्दीन : कह दो अल्लाह बहुत जल्द करने वाला है मक्र।

- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी : अल्लाह चालों में उनसे भी बढ़ा हुआ है।

- नवाब यहीदुज़ जमाँ ग़ैर मुकल्लिद : कह दो अल्लाह की चाल बहुत तेज़ है।

इन अनुवादों में अल्लाह तआला के लिये मक्र करने वाला, चाल चलने वाला, हीला करने वाला कहा गया है हालांकि ये कलिमात किसी तरह अल्लाह तआला की शान के लायक नहीं हैं। इमाम अहमद रज़ा ने लफ़्ज़ी अनुवाद फ़रमाया है फिर भी किस क़दर पाकीज़ा ज़बान इस्तेमाल की है, फ़रमाते हैं - “तुम फ़रमा अल्लाह की ख़ुफ़िया तदबीर सबसे जल्द हो जाती है।”

पारा दस, सूरए तौबह , आयत ६७

لَسُوا لِلَّهِ فَتْسِيمٌ

अनुवाद -

- फ़तह मुहम्मद जालन्धरी व डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी : ये लोग अल्लाह को भूल गए और अल्लाह ने उनको भुला दिया।

- शाह अब्दुल क़ादिर, शाह रफ़ीउद्दीन, मेहमूदुल हसन देवबन्दी : वो अल्लाह को भूल गए अल्लाह उनको भूल गया।

अल्लाह के लिये भुला देना, भूल जाने के शब्द का इस्तेमाल अपने मानी के ऐतिबार से किसी तरह दुरुस्त नहीं हैं। क्योंकि 'भूल' से इल्म का इन्कार होता है और अल्लाह तआला हमेशा “आलिमुल ग़ैब वश शहादह” है। आला हज़रत ने इस आयत का तफ़सीर के अनुसार अनुवाद किया है : “वो अल्लाह को छोड़ बैठे तो अल्लाह ने उन्हें छोड़ दिया।”

ये कुछ उदारण पाठकों के सामने पेश किये गए। इसके अलावा भी सैकड़ों मिसालें हैं। इस संक्षिप्त तुलनात्मक अध्ययन के बाद आपने अनुवाद के महत्व को महसूस कर लिया होगा।

आला हज़रत मुहद्दिसे बरेलवी अक्सर किसी आयत के अनुवाद के लिये समस्त मशहूर तफ़सीरों का अध्ययन करके मुनासिब और उचित अनुवाद करते थे और यही उनके अनुवाद “कन्जुल ईमात” की सबसे बड़ी खूबी है।

- बशुक्रिया हज़रत अल्लामा रज़ाउल मुस्तफ़ा साहब आजमी

शहज़ादए हुज़ूर सद्दुश-शरीअह

अलैहिर्रहमतो वर्रिदवान।

हिन्दी अनुवाद: सैयद आले रसूल नज़्मी बरक़ाती

कुरआने अजीम का खुलासा

पहली सूरा सूरए फातिहा कहलाती है जिसे अवाम अल्हम्दु शरीफ भी कहते हैं। सूरए फातिहा नमाज़ की हर स्कअत में पढ़ी जाती है दर अस्ल यह एक दुआ है जो अल्लाह तआला ने हर उस इन्सान को सिखाई है जो इस मुक़द्दस किताब का मुतालिआ शुरू कर रहा है। इस में सब से पहले अल्लाह की अहम सिफ़ात खुसूसन तमाम जहानों के सब होने, सब से ज़ियादा रहमान और रहीम होने और साथ साथ इन्साफ़ करने वाले की हैसियत से तारीफ़ की गई है। और उसके एहसानों और नेमतों का शुक्र भी अदा किया गया है। फिर अपनी बन्दगी और आजिज़ी का ऐतिराफ़ करते हुए उससे ज़िन्दिगी के मामलात में सीधे रास्ते की हिदायत तलाब की गई है जो हमेशा से उसके इनामयाफ़ता और मक़बूल बन्दों को हासिल रही है और जिससे सिर्फ़ वही लोग मेहरूम होते हैं जिन्होंने उसके रास्ते को छोड़ दिया है। या उसकी कोई परवाह ही नहीं की है।

सूरए बकरह

दूसरी सूरा सूरए बकरह अलिफ़ लाम मीम से शुरू होती है जिस में दुआ का जवाब दिया गया है कि अल्लाह ने सीधा रास्ता बताने के लिये यह किताब उतारी है। इसमें कोई शक व शुबह नहीं फिर बताया गया कि अल्लाह के नज़दीक इन्सानों की तीव्र किसमें हैं एक वह जो इस किताब पर ईमान लाएं और इसके अहकामात की इताअत करें, यानी नमाज़ कायम करें अल्लाह के रास्ते में अपना माल खर्च करें, कुरआन और इससे पहले की किताबों पर ईमान लाएं और जो कुछ अल्लाह और उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बताएं उसपर भी ईमान लाएं चाहे वह ज़ाहिरी हवास से जाना जा सके या न जाना जा सके, यानी जन्नत व दोज़ख़ मलाइका और आख़िरत और दूसरे अनदेखे (गैबी) हक़ाइक जो इस किताब में बयान किये गए हों, ये लोग मूमिन हैं और यही लोग इस किताब से सही फ़ाइदा उठा सकेंगे, दूसरे वो हैं जो इस किताब का हटधर्मी से इन्कार करें, ये काफ़िर हैं, तीसरी किसम के वो लोग हैं जो समाज़ी दवाब और दुनियावी फ़ाइदों की खातिर अपने को मुसलमान कहलाते हैं, मगर दिल से इस्लाम की क़दों को नहीं मानते बल्कि इस्लाम के बाग़ियों और मुन्क़िरों की तरफ़ झुकाव रखते हैं, इस तरह इस्लाम की राह में रुकावटों और हराम व नाजाइज़ बातों से परहेज़ की बिना पर पहुँचने वाले ज़ाहिरी नुक़सानात से डर कर शक व शुबह में मुब्तिला हैं, ये दोनों ग़िरोह अपने को दोहरे फ़ाइदे में समझते हैं हालांकि सरासर नुक़सान में हैं।

फिर तमाम इन्सानों को मुख़ातिब करके उन्हें कुरआने पाक पर ईमान लाने की दावत दी गई है और कहा गया है कि अपने पैदा करने वाले और परवरिश करने वाले मालिक व आका की बन्दगी इस्तिथार करो, गुमराही का सबसे बड़ा सबब यह बताया कि जो लोग अल्लाह के किये एहद को तोड़ देते हैं और जिन रिश्तों को बांधने का हुक्म अल्लाह ने दिया है उन्हें काटते हैं और वो काम करते हैं जिनसे इन्सान नेकी के बजाय बुराई की तरफ़ चल पड़ते हैं, ऐसे ही लोग हक़ीक़त में फ़सादी हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है।

फिर दुनिया में इन्सान की अस्ल हैसियत को बाज़ेह किया गया है कि अल्लाह तआला ने उसे अपने ख़लीफ़ा की हैसियत से पैदा किया है और इसको दुनिया की हर चीज़ के बारे में ज़रूरी इल्म समझा और सलाहियत अता करके तमाम मख़लूक़ात पर फ़ज़ीलत वरख़शी है, इस फ़ज़ीलत को फ़रिश्तों और उनके ज़रिये दूसरी मख़लूक़ात ने तसलीम किया मगर शैतान ने तकबुर और घमन्ड में आकर इसकी फ़ज़ीलत को मानने से इन्कार कर दिया, इस लिये वह अल्लाह के दरबार से धुत्कार दिया गया।

इसके बाद आदम और हवा को जन्नत में रखने का ज़िक्र किया गया है ताकि मालूम हो कि औलादे आदम की अस्ल जगह वही है, मगर शैतान के फ़रेब से आगाह करने के लिये अल्लाह तआला ने आदम और हवा को आजमाइश के लिये एक काम से मना किया मगर दोनों शैतान के बहकावे में

आकर अल्लाह का हुक्म भुला बैठे और वह काम कर डाला जिससे मना किया गया था. अल्लाह ने शैतान, आदम और हच्चा तीनों को दुनिया में भेज दिया और फ़रमाया कि अल्लाह की तरफ़ से बार बार रसूल अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम हिदायत लेकर आते रहेंगे. जो इस हिदायत पर चले वही कामयाब होकर फिर अपनी जगह वापस आएगा. और जो इन्कार करेगा वह शैतान के साथ जहन्नम का ईंधन बना दिया जाएगा.

इसके बाद तमाम इन्सानों की हिदायत के लिये पहले किताब (यहूदी और ईसाई दोनों) की एक अहम बीमारी का ज़िक्र किया गया कि ये एक दूसरे की निजात के मुन्किर बन गए हैं. यहूदी कहते हैं ईसाइयों की कोई बुनियाद नहीं है और ईसाई कहते हैं कि यहूदियों की कोई बुनियाद नहीं है. इसी तरह मुश्रिक भी वे सोचे समझे यही कहते हैं कि हम ही हक़ पर हैं और हमारे सिवा सब बातिल हैं. हालांकि निजात याफ़्ता और जन्नत का मुस्तहिक़ होने के लिये इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल में होना या यहूदी या ईसाई होना शर्त नहीं बल्कि शर्त यह है कि आदमी एक तो मुस्लिम यानी अल्लाह का इताअत गुज़ार बने और दूसरे मुहसिन बने यानी नियत और अमल दोनों में ख़ुलूस और एहसान की सिफ़त उसमें पाई जाए. दीन को आबाई नस्ल से वायस्ता समझने की तर्दीद करते हुए पूरे ज़ोर से फ़रमाया गया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और इस्माईल अलैहिस्सलाम दोनों ही अल्लाह के पैग़म्बर थे और हज़रत इब्राहीम को जो अअला मक़ाम मिला था वह नस्ल या विरासत की बुनियाद पर नहीं मिला था बल्कि अल्लाह ने मुस्तलिफ़ इम्तहानों में उनको डाला था और जब वह उनमें कामयाब उतरे तो तमाम इन्सानों की इमामत और पेशवाई का मन्सब इनआम के तौर पर अता फ़रमाया और आइन्दा के लिये भी यही क़ायदा मुक़र्रर किया. यह मन्सब विरासत में नहीं बल्कि उसके लाइक़ होने की शर्त के साथ मिलेगा. इस मौक़े पर उनके हाथों काबतुल्लाह की तामीर का ज़िक्र किया और बताया कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इस मौक़े पर उनकी मांगी हुई दुआ का मज़हर हैं. और क़यामत तक इन्सानों की हिदायत तालीम और तज़किये के लिये भेजे गए हैं. और इसी लिये अब बैतुल मक़दिस की क़िबले की हैसियत ख़त्म की जाती है और काबतुल्लाह का क़िबला क़रार दिया जाता है. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद रखूंगा और मेरा शुक्र अदा करो, मेरी दी हुई नेमतों का इन्कार न करो. ऐ ईमान वालो! सब और नमाज़ से मदद लो, अल्लाह सब करने वालों के साथ है. और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो, ऐसे लोग हक़ीक़त में ज़िन्दा हैं मगर तुम्हें उनकी ज़िन्दगी का शऊर नहीं होता और हम ज़रूर तुम्हें ख़ौफ़ो ख़तर, फ़ाक़ाक़शी, जान और माल के नुक़सान और आमदनियों के घाटे में मुन्तिला करके तुम्हारी आजमाइश करेंगे. इन हालात में जो लोग सब करें उन्हें ख़ुशख़बरी दे दो. ये वो लोग हैं कि जब उन्हें कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की तरफ़ हमें पलट कर जाना है. उनपर उनके रब की तरफ़ से बड़ी इनायात हाँगी, उसकी रहमत उनपर साया करेगी और ऐसे ही लोग सीधे रास्ते पर हैं. जो लोग हमारी नाज़िल की हुई रीशन तालीमात और हिदायात को छुपाते हैं जिन्हें हम सारे इन्सानों की रहनुमाई के लिये अपनी किताब में बयान कर चुके हैं. यक़ीन जानो कि अल्लाह उनपर लानत करता है और लानत करने वाले भी उनपर लानत भेजते हैं अलबत्ता जो इस रविश से बाज़ आ जाएं और अपने तज़े अनल की इस्लाह कर लें और जो कुछ छुपाते थे उसे बयान करने लगे तो अल्लाह उन्हें माफ़ कर देगा. वह बड़ा दसगुज़र करने वाला और रहम वाला है.

इसके बाद तौहीद का बयान किया गया है जो दीन की अस्ल बुनियाद है. यानी उलूहियत और ज़ाती सिफ़ात में अल्लाह का कोई शरीक़ नहीं है. वह तन्हा सारी कुच्चतों का मालिक ओर सारे ख़ैर का सरचश्मा है. वह कायनात बनाकर कहीं एक कोने में बैठ नहीं गया बल्कि उसका इन्तिज़ाम ख़ुद चला रहा है और जिस तरह सारी कायनात एक मुनज्ज़म व मरबूत निज़ाम की ताबे है उसी तरह इन्सानों की हिदायत के लिये उसने अपने अहक़ाम का एक निज़ाम बनाया है और उसे अपने रसूलों और किताबों के ज़रिये इन्सानों तक भेजा है और वह एक ही है जो अल्लाह हर ज़माने के लिये एक किताब एक रसूल और आदम की औलाद तमाम इन्सानों के लिये ज़िन्दा एक ही निज़ामे फ़िक़्रो अमल भेजता रहा है.

तौहीद के ज़रूरी तक्राजों और इन्सानी ज़िंदगी में उनके तमाम नताइज वाज़ेह करने के लिये बताया गया है कि अल्लाह के साथ वफ़ादारी और नेकी का हक़ मशरूक और मगरिब की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ लेने से अदा नहीं होगा जैसा कि पहले किताब ने समझ लिया है। बल्कि ईमानियात यानी अक्माइद की दुरुस्तगी के साथ अल्लाह के रास्ते में रिश्ते दारों, यतीमों, मिस्कीनों, मुसाफ़िरों, मज़रूजों और कैदियों की मदद करना, नमाज़ कायम करना, ज़कात देना, आपस के मुआहिदों को पूरा करना, मुसीबत के वक़्त, तंगी तुरशी दुख़ बीमारी में और अल्लाह के दुश्मन हमला आवर हों तो सब्र और इस्तिस्कामत से काम लेना। यह है अस्ल दीन, सच्चाई और तक्रवा। जो ऐसा नमूना कायम करें वो सही माना में दीनदार, सच्चे और मुत्तकी हैं। फिर यह बताया कि एक दूसरे के जानो माल का एहतियार करना भी नेकी और तक्रवा का हिस्सा है। चुनान्चे क़ातिल मुआशिरे का सब से बड़ा दुश्मन है और उसका क्रिसास सब के ज़िम्मे है इसी में मुआशिरे की ज़िंदगी है इसी तरह कमज़ोरों को हक़ देना चाहिये और दिलवाना चाहिये। विरसे के मामलात और वसियत को पूरा करना चाहिये। इसके बाद रोज़ों की फ़ज़ीलत का बयान हुआ और इसके अहक़ाम बताए गए। यहाँ रोज़ों का ज़िक्र नमाज़ और इफ़ाक़ के साथ नहीं बल्कि मामलात के साथ किया गया है। इससे पता चलता है कि रोज़े अस्ल में पहले ईमान को अपनी ज़िन्दगी के मामलात, इन्साफ़ एहसान और तक्रवा के साथ अन्जाम देने की तरबियत देते हैं और आदमी को लालच बुख़ल और इसी तरह की दूसरी बुराइयों से बचना सिखाते हैं। इसी मौक़े पर रिशवत की बुराई बयान की गई और बताया गया कि यहाँ हुक्काम को रिशवत की चाट सबसे पहले मुआशिरे के लोग ही लगाते हैं। इसी लिये उन्हें खुद पर क़ाबू पाना चाहिये। फिर हज और जिहाद का ज़िक्र किया गया। क्योंकि रेज़ा सब्र सिखाता है और हज और जिहाद भी सब्र की आला किस्में हैं।

तलाक़ के तअल्लुक़ से अल्लाह तआला ने इस सूत में वाज़ेह एहक़ाम दिये हैं जिनका खुलासा यह है (१) दौराने तलाक़ औरत शौहर के घर क़ायम करे, बाहर न निकले, न शौहर उसे निकाले इल्ला यह कि वह बेहयाई की मुरतकिब हुई हो। (२) शौहर को चाहिये कि वह पाकी की हालत में सिर्फ़ एक तलाक़ दे। दौराने इदत वह रुजू कर सकता है। इदत गुज़र जाने के बाद वह जुदा हो जाएगी अलबत्ता वग़ैर निकाह के उसे दोबारा रख सकता है। हलाले की ज़रूरत नहीं। (३) यही अहक़ामात उस वक़्त भी होंगे जब वह दूसरे माह दूसरी तलाक़ दे यानी दौराने इदत रुजू कर सकता है अगर इदत गुज़र जाने के बाद रुजू करता है तो उसे उस औरत के साथ दोबारा निकाह करना पड़ेगा। हलाले की ज़रूरत नहीं। इन दो तलाकों के बाद शौहर को चाहिये कि या तो औरत को भले तरीक़े से रख ले रुजू करले और अगर शौहर अपनी बीबी को नहीं रखना चाहता तो उसे दे दिलाकर इज़ज़त के साथ रुख़सत करे। (४) तीसरी तलाक़ देने के बाद रुजू करने का हक़ ख़त्म हो जाता है अब वह औरत उस शौहर के लिये हलाल नहीं है जब तक कि वह किसी और मर्द से शादी न करे, उसके अज़दवाजी हक़ अदा करे फिर वह मर्द अपनी मर्जी से उसे तलाक़ दे तब वह इदत गुज़ारे। इसके बाद ही वह पहले शौहर से निकाह कर सकती है। इसे हलाला कहते हैं। मगर पहले से तयशुदा हलाला शरई तौर से जाइज़ नहीं इसे हदीस में क़िराण का साँड कहा गया है। और हलाला करने और कराने वालों पर लानत की गई है। (५) मियाँ बीबी में निबाह नहीं हो रहा हो और शौहर तलाक़ न दे रहा हो तो औरत की खुलअ का हक़ है कि वह शौहर को कुछ दे दिलाकर छुटकारा हासिल कर ले अलबत्ता शौहर की औरत के मनाफ़ी है कि वह औरत से मेहर की रक़म से ज़ियादा का मुतालिबा करे। (६) औरत के लिये यह जाइज़ नहीं है कि वह अपने हमल को छुपाए तलाक़ के बाद अगर वह हामिला है तो उसे बच्चा पैदा होने तक इदत गुज़ारनी है। (७) औलाद शौहर की होगी उसके जुमला इस्वराजात शौहर को अदा करने होंगे बच्चा अगर दूध पीता है तो मुदते रिज़ाअत दो साल है। हक्के परवरिश माँ को है बच्चे के समझदार होने तक माँ पालेगी और शौहर इस्वराजात उठाएगा। शौहर के लिये यह जाइज़ नहीं कि बच्चे को माँ से अलग करे ख़ास तौर पर जब वह दूध पीता हो। (८) इदत की मुदत तीन बार हैज़ का आना और पाक होना है। (९) जिन औरतों के शौहरों का इन्तिज़ाल हो जाए उनकी इदत चार माह दस दिन है और इस दौरान उन्हें बनाव सिंघार नहीं करना चाहिये। (१०) एक या दो तलाक़ वाली

औरत इदत के दौरान शौहर के घर में ही रहेगी और जेबो जीनत करेगी ताकि शौहर रुजू पर आमादा हो. (११) तलाक़ शुदा औरत की इदत पूरी होने लगे तो शौहर सन्जीदगी से फ़ैसला कर ले कि वह भले तरीक़े से रुख़सत करदेगा या फिर वह रुजू करना चाहता है तो खुलूसे दिल से रुजू करके औरत के साथ बा इज़्जत जिन्दगी गुज़ारेगा. औरत को सताने के लिये रुजू करना जुल्म है. (१२) इदत के बाद जब जुदा हो जाए और कहीं और निकाह करना चाहे तो शौहर के लिये जाइज़ नहीं कि वह रुकावट बनें उसे सताए या बदनाम करे. (१३) इन तमाम अहक़ामात में अल्लाह की हुदूद यही हैं. जो अल्लाह की इन हुदूद की ख़िलाफ़वर्ज़ी करेगा, ज़ालिम शुमार किया जाएगा. एक मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि इन अहक़ामात की ख़िलाफ़वर्ज़ी करके अल्लाह की आयतों का मज़ाक़ उड़ाए.

यहूदियों की तारीख़ के एक वाकए का ज़िक्र करते हुए बताया गया कि अल्लाह की याद से ग़फ़लत ने उन्हें बुजदिल बना दिया था और वो एक मौक़े पर बहुत बड़ी तादाद में होने के बावजूद अपने दुश्मनों से डर कर भाग खड़े हुए. और इस तरह उन्होंने अपनी इस्त्रलाकी और सियासी मौत ख़रीद ली. गोया मुसलमानों को बताया जा रहा है कि मक्के से मदीने हिजरत दुश्मनों के डर से नहीं बल्कि इस्लाम को बचाने और फिर फैलाने के लिये है. चुनान्चे यही काम सहाबाए किराम रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन ने अन्जाम दिया. इस तरह क़यामत तक के मुसलमानों को रास्ता दिखाया कि उन्हें भी कभी हिजरत करना पड़े तो इस्लाम को कायम करने का नख़ुल ऐन आँखों से औझल नहीं होना चाहिये. साथ ही तफ़सील से बनी इस्त्राईल की एक जंग का क़िस्सा बयान किया गया जो तालूत और जालूत में हुई थी. इस तरह मुसलमानों को बताया कि उन्हें भी इन्हीं मरहलों से गुज़रना पड़ेगा. अल्लाह के हाँ काम आने वाली अस्ल चीज़ उसकी राह में जान और माल की क़ुरबानी है. अल्लाह ने अपनी किताब और अपने रसूल के ज़रिये अल्लाह की राह बता दी है अब जिस का जी चाहे हर तरफ़ से कट कर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम ले. फिर सूद को ह़राम करने का ऐलान किया. चूंकि सूदी निज़ाम लोगों में दुनिया परस्ती और माल की पूजा का जज़्बा पैदा करता है. पस अगर समाज में नेकियाँ फैलाना, अल्लाह तरसी और बन्दों की इमदाद का निज़ाम लाना है तो सूदी निज़ाम ख़त्म करना होगा.

इसके बाद तीसरी सूरत आले इमरान के दो रूक़ में बताया गया है कि यहूद व नसारा ने अल्लाह की तरफ़ से आई हुई किताबों में इस्त्रिलाफ़ पैदा करके अस्ल हक़ीक़त को गुम कर दिया अब अल्लाह ने इस गुमशुदा हक़ीक़त को वाज़ेह करने के लिये क़ुरआन उतारा है ताकि लोग इस्त्रिलाफ़ात की भूल भुलधियों से निकल कर हिदायत की शाहराह पर आ जाएं. अब जो लोग इस किताब का इन्कार करेंगे उनके लिये अल्लाह के यहाँ सज़ा अज़ाब है.

नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहलवाया गया कि ऐ एहले किताब और दूसरे मज़हब वालो ! मैं और मेरे मानने वाले तो सही इस्लाम को अपना चुके जो अल्लाह का अस्ल दीन है । अब तुम बताओ क्या तुम भी अपने और अपने बाप-दादा की बढ़ाई हुई बातों को छोड़कर इसी असली और सच्चे दीन की तरफ़ आते हो । ज़ाहिर है कि हठधर्म लाग किसी तरह भी अपना तरीक़ा नहीं छोड़ा करते । इसलिये फ़रमाया गया जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते रहे, इसके नबियों को क़त्ल करते रहे और इन लोगों की जान के भी दुश्मन बन गए जो लोगों में इन्साफ़ की दावत लेकर उठे, तो ऐसे लोगों को दर्दनाक अज़ाब की चेतावनी दे दो । ये अपने करतूतों पर दुनिया में कितने ही ख़श होते रहें, मगर वास्तव में उनके कर्म और कौशिशें सब दुनिया और आख़िरत में बर्बाद हो गई और अल्लाह की पकड़ से उन्हें बचाने वाला कोई न होगा ।

एहले किताब की निरन्तर मुजरिमाना हरकतों का कारण बताया गया कि उनके मनघड़त अक्कीदों ने उनको ग़लतफ़हमी में डालकर अल्लाह से बेख़ौफ़ बना दिया है । फिर मुसलमानों को तम्बीह की कि राज़दारी के मामलों में मूमिनों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त न बनाओ । सब के लिये ऐलान कर दिया गया कि ऐ नबी ! आप फ़रमा दीजिये कि अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी करो ।

अल्लाह भी तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाहों को बरखा देगा। बस अल्लाह की इताअत करो और रसूल की। अगर लोग इससे फिरे तो मालूम हो कि अल्लाह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता।

फिर अल्लाह ने ईसाइयों की गुमराही को वाज़ेह करते हुए हज़रत मरयम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार बयान करके बताया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश बग़ैर बाप के ऐसा ही चमत्कार है जैसा कि अल्लाह ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बग़ैर माँ-बाप के पैदा किया। इस दलील से मालूम हुआ कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम खुदाई में शरीक नहीं तो हज़रत मरयम और हज़रत ईसा को कैसे खुदाई में शरीक ठहराते हो।

एहले किताब पर हुज़त तमाम करने के बाद उन्हें इसतरह इस्लाम की दावत दी कि आओ उस कलिमे पर जमा हो जाँ जो हम और तुम दोनों मानते हैं और वह है अल्लाह की तौहीद। अगर अल्लाह की तौहीद का इन्कार करते हो तो गोया पिछली किताबों और नबियों का इन्कार करते हो। फिर हज़रत इब्राहीम का हवाला दिया गया कि उनको अपनी गुमराहियों में शरीक करते हो। वह न तो यहूदी थे न ईसाई थे बल्कि सच्चे और ख़ालिस मुस्लिम थे। तौरैत और इन्जील तो उनके बाद आई हैं। हज़रत इब्राहीम से सही निस्बत के हक़दार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनकी पैरवी करने वाले हैं क्योंकि वही उनके दीन को लेकर उठे हैं।

यहूदियों की कुछ चालों का ज़िक्र भी किया गया ताकि मुसलमान उनकी साज़िशों से होशियार रहें। उनमें से एक तो यह है कि कुछ लोग पहले तो इस्लाम कुबूल कर लेते हैं फिर कुछ अरसे बाद इस्लाम और मुसलमानों पर इल्ज़ान लगाकर इस्लाम से निकल जाते हैं। उनकी पूरी तारीख़ इस तरह की चालों से भरी पड़ी है।

यहूदियों के उलमा और लीडरों को सम्बोधित करके कहा गया कि तुम अपनी क़ौम के अन्दर तअस्सुब को भड़काते हो कि किसी इस्माईली के लिये जाइज़ नहीं कि ग़ैर इस्माईली को नबी माने। हालांकि अरल हिदायत तो अल्लाह की हिदायत है जिसका तुम्हें तालिब होना चाहिये चाहे वह हिदायत बनी इस्लाम पर आए, चाहे बनी इस्माईल पर। तुम अगर समझते हो कि किसी को इज़्ज़त तुम्हारे देने से मिलेगी तो यह तुम्हारी भूल है। इज़्ज़त और बुजुर्गी अल्लाह के दस्ते कुदरत में है, जिसे चाहें दे।

इसी तरह ईसाइयों पर उनके अक्कीदे की ग़लती वाज़ेह करते हुए बताया गया कि अल्लाह ने तमाम नबियों से यह एहद लिया है कि जब तुम्हारे पास एक रसूल उम भविष्यवाणियों का सही रूप लेकर आए जो तुम्हारे पास हैं तो तुम उसपर ईमान लाना और उसकी मदद करना। सूरए बक्रह की तरह सूरएआल इमरान में भी वाज़ेह कर दिया गया कि अल्लाह की वफ़ादारी का मक़ाम केवल झूटी रस्मों पर चलने और दिखावे की दीनदारी से हासिल नहीं हो सकता। इस लिये असमल चीज़ यह है कि अल्लाह की राह में उन चीज़ों में से ख़र्च करो जो तुम्हें मेहबूब हैं। एहले किताब को मलामत की गई कि अल्लाह ने तुम्हें सीधा रास्ता बताने के लिये मुक़र्र किया था, पर यह किस क्रदर अफ़सोस की बात है कि तुम अब लोगों को सीधे रास्ते से रोकने और उन्हें राह से बेराह करने में लगे हुए हो। बस अब तुम्हें मअज़ूल किया जाता है और यह अमानत उम्मत मुहम्मदिया के सुपुर्द की जाती है। साथ ही उम्मत मुहम्मदिया को यह बशास्त भी दी गई कि एहले किताब तुम्हारी मुख़ालिफ़त में कितना भी ज़ैर लगा लें, तुम्हारा कुछ न बिगाड़ पाएंगे। शर्त यह है कि तुम सब्र करते रहो और अल्लाह से डरते रहो।

जंगे उहद में मुसलमानों को अपनी ही ग़लती से जो तकलीफ़ पहुंची, (जबकि उनकी तादाद बढ़ के मुक़ाबले में दुगुनी से भी ज़्यादा थी) उसपर बेलाग़ तबसिरा फ़रमाया गया और बताया गया कि मुनाफ़िकों के साथ छोड़ जाने से कुछ लोगों ने हिम्मत हार दी हालांकि अरल भरोसा अल्लाह पर करना चाहिये। जबकि वो पहले भी बद्र में तुम्हारी मदद कर चुका है और अल्लाह ने तो तीन सौ मुनाफ़िकों के रास्ते में से कट कर चले जाने पर तीन हज़ार फ़रिश्तों से मदद फ़रमाई। चुनांचे पहले मुसलमान कामयाब हो गए मगर उनके एक दस्ते ने माले ग़नीमत के लालच में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म की नाफ़रमानी की जिस के कारण अल्लाह ने सबक सिखाने के लिये जीत को हाथ में बदल दिया।

आगे की आयतों में अल्लाह तआला ने सूद की मज़मूत फ़रमाई और हुक्म दिया कि ऐ ईमान वाले ! बढ़ता चढ़ता सूद न खाओ और अल्लाह से डरते रहो । इससे पहले भी अल्लाह का फ़रमान है जो लोग सूद खाते हैं उनका हाल उस शख्स जैसा होता है जिसे शैतान ने छू कर बाचला कर दिया हो और इस हालत में उसके जकड़े जाने की वजह यह है कि उसका कहना है कि तिजारात भी तो आख़िर सूद ही जैसी चीज़ है । हालांकि अल्लाह ने तिजारात की हलाल किया और सूद को हाराम, लिहाज़ा जिस शख्स को उसके रब की तरफ़ से यह नसीहत पहुंचे और आइन्दा के लिये वह सूद खाने से बाज़ आजाए तो जो कुछ वह पहले खा चुका उसका मामला अल्लाह के हवाले है और जो इस हुक्म के बाद फिर यही काम करे, उसका टिकाना जहन्नम है, जहाँ वह हमेशा रहेगा । अल्लाह सूद का मुंह मार देता है और सद्कात को बढ़ावा देता है । अल्लाह किसी नाशुकरे बदअमल इन्सान को पसन्द नहीं फ़रमाता । हाँ जो लोग ईमान लाएं और नेक अमल करें और नमाज़ें क़ायम करें और ज़कात दें, उनका अन्न बेशक उनके रब के पास है और उनके लिये किसी ख़ाफ़ और रंज का मौक़ा नहीं है । ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरो और जो कुछ तुम्हारा सूद लोगों पर बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर बाक़ई तुम भूमिन हो । अगर तुमने ऐसा न किया तो जान लो कि अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से तुम्हारे खिलाफ़ जंग का ऐलान है । अब भी तौबह कर लो और सूद छोड़ दो । अपनी अस्ल पूंजी लेने का तुम्हें पूरा हक्क है । न तुम जुल्म करो, न तुमपर जुल्म किया जाए । तुम्हारा क़र्ज़दार अगर तंगदस्त हो तो हाथ खुलने तक उसे मोहलत दो और अगर तुम माफ़ कर दो तो यह तुम्हारे लिये ज़्यादा बेहतर है, अगर तुम समझो ।

आगे क़ुरआने करीम ने सूद की सख़्त बुराई बयान फ़रमाई और अल्लाह के रास्ते में श्रर्च करने की तरसीब दी और फ़रमाया कि अल्लाह की बख़्शिश और उसकी जन्नत को पाने के लिये एक दूसरे से बाज़ी ले जाने की कोशिश करो । जन्नत का फेलाव आममानों से भी ज़्यादा है और यह उन लोगों के लिये तैयार की गई है जो हर हाल में अल्लाह की राह में श्रर्च करने, गुस्से को धो जाने और लोगों से दस्गुज़र करने वाले हैं । किसी हाल में पस्त हिम्मत न बनो और न ग़म करो । अगर तुम सच्चे भूमिन बन गए तो तुम ही ग़ालिब रहोगे ।

आगे नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की एक अहम सिफ़त यह बताई गई, जो उम्मत के सारे रहवरों के लिये भी ज़रूरी है, कि यह अल्लाह का क़रम है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम लोगों के साथ नमी से पेश आने वाले हैं । अगर सख़्तगीर होते तो फिर ये लोग आपके गिर्द जमा नहीं हो सकते थे । फिर फ़रमाया आप उनसे मामलात में मशवरा लेते रहिये और उनकी माग़फ़िरत की दुआकीजिये । फिर भूमिनों को बताया गया कि उनके अन्दर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को भेज कर उनपर बहुत बड़ा एहसान किया है । इस लिये आजमाइशों और काफ़िरों से मुकाबला करने से मत घबराओ क्योंकि अल्लाह आजमाइशों के ज़रिये पाक लोगों को नापाक लोगों से अलग करके रहेगा ।

सूरए बकरह की तरह सूरए आले इमरान को भी निहायत असरदार दुआ पर श्रत्म किया गया है । दुआ से पहले इस हकीक़त की तरफ़ ध्यान दिलाया गया है कि अल्लाह की कुदरत और हिक़मत की निशानियाँ सागे जहान में हर जगह फैली हुई हैं ज़रूरत इस बात की है कि आदमी आँखें खोलें, अल्लाह की बातें सुनने के लिये कान लगाए और उसकी हिक़मतों पर ग़ौर करने के लिये दिल और दिमाग़ का इस्तेमाल करें । आख़िर में मुसलमानों के हिदायत दी गई है कि चार चीज़ें हैं जो तुम्हें दुनिया और आख़िरत दोनों में कामयाब करवाएंगी, उन्हें अपनाओ । ये हैं - सब्र, दीन की मुग़्बालिफ़त करने वालों के मुकाबले में साबित क़दमी और हर वक़्त चौकन्ना रहना, दीन की हिफ़ाज़त करना और तक्वा यानी अल्लाह की मुक़रर की हुई हदों की पाबन्दी ।

सूरए निसा में सबसे पहले अल्लाह से डरते रहने की हिदायत, जिसने सबको एक जान से पैदा किया । तमाम मर्द और औरतें एक ही आदम व हव्वा की औलाद हैं । इसी वजह से अल्लाह और रहम यानी ख़ीन का रिश्ता सब के बीच मुश्तरक़ है । इन्हीं दो बुनियादों पर इस्लामी समाज की इमारत क़ायम है । इसके बाद यतीमों के हुक्क़ अदा करने की ताकीद की गई और इस मामले में किसी बिम्बि की हेरा

फेरी और रद्दोबदल को सख्ती से मना किया गया। इस मौके पर यतीमों के हुक्क की हिफाजत के दृष्टिकोण से उनकी माओं से निकाह करने की इजाजत दी गई। अरबों में बीवियों की तादाद पर कोई पाबन्दी नहीं थी। इस मौके पर चार तक तादाद को मेहदूद कर दिया गया। और शर्त लगा दी गई कि उनके हुक्क की अदायगी और मेहर में कमी नहीं होना चाहिये। विरासत की तकसीम के ज़ाबते की तफसील बताई गई ताकि सबके हुक्क निश्चित हो जाएं। यह ज़ाबता इस तरह होगा - (१) मीरास में सिर्फ़ मर्दों ही का हिस्सा नहीं, बल्कि औरतों भी इसकी हकदार हैं अगरचे उनका हिस्सा मर्द से आधा है। (२) मीरास हर हाल में तकसीम होनी चाहिये चाहे वह कितनी ही कम हो। यहाँ तक कि अगर मरने वाले ने एक गज कपड़ा छेड़ा है और दस बारिस है तो भी उसे दस हिस्सों में तकसीम होना चाहिये। (३) बारिस का क़ानून हर प्रकार के माल और जायदाद पर जारी होगा चाहे वो चल हों या अचल, ज़रई (खेती बाड़ी की) हों या ग़ैर ज़रई, आबाई हों या ग़ैर आबाई, सारी जायदाद को बारिसों में शरीअत के हिसाब से तकसीम किया जाना ज़रूरी है। (४) करीब के रिश्तेदार की मौजूदगी में दूर का रिश्तेदार मीरास न पाएगा।

विरासत में हर एक का हिस्सा निश्चित करने के बाद बताया गया कि यह तकसीम अल्लाह तआला के कामिल इल्म की बुनियाद पर है। तुम्हें नहीं मालूम कि कौन कितना करीब है और कौन कितना दूर है। एहकामात अल्लाह की तरफ़ से फ़र्ज़ करार दिये गए हैं। यह अल्लाह की मुकर्रर की हुई हदें हैं, जो इनपर अमल करेगा और सबको शरई हक के मुताबिक देगा, अल्लाह तआला उसे अपनी बेशबाह ज़न्नत में दाख़िल करेगा जो हमेशा रहने की जगह है। और यह एक बड़ी कामयाबी है। और जो अल्लाह के इन आदेशों की खिलाफ़वर्ज़ी या अवहेलना करेगा और लोगों को विरासत से मेहरूम करेगा, दूसरों का माल नाजाइज़ तरीक़े से ख़ाएगा, वह गोया अल्लाह की मुकर्रर की हुई हदों का उल्लंघन करेगा, उसे अल्लाह आग में डालेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा। और उसके लिये ज़िल्लत वाली सज़ा है। ये एहकामात इस लिये हैं कि कोई ताक़तवर पक्ष कमज़ोर पक्ष को उसक़्ते हक़ से मेहरूम न कर सके। और आपस में जुल्म और हक़ मारने के झगड़ों को रोका जा सके।

फिर फ़रमाया गया कि शरीअत में मर्दों और औरतों के लिये जो हदें और अधिकार निश्चित कर दिये गए हैं, सबको उनके अन्दर रहना चाहिये। हर एक अपनी अपनी हद के अन्दर की हुई हर मेहनत का बदला अल्लाह के यहाँ पाएगा। ख़ानदान और समाज नेतृत्व और सरदारी का मक़ाम मर्द को दिया गया क्योंकि अपनी जन्मजात विशेषताओं और परिवार का पोट भरने का ज़िम्मेदार होने के कारण वही इस के लिये उचित है। नेक बीवियाँ इसका आदर करें और जिन औरतों से सरक़शी का डर हो तो उनके शौहर उन्हें नसीहत करें। अगर ज़रूरत मेहसूस हो तो मुनासिब तर्ज़ीह भी की जा सकती है। और विरोध बहुत बढ़ जाए तो ऐसी सूरत में शौहर और बीवी दोनों के ख़ानदानों में से एक एक पंच मुकर्रर किया जाए जो दोनों पक्षों के हालात को सुधारने की कोशिश करें।

आगे अल्लाह तआला ने माँ-बाप, ख़ून के रिश्ते वाले, यतीम, निर्धन, पड़ोसी (रिश्तेदार हों या न हों) मुसाफ़िर और मातहत सबके अधिकार पहचानने और उन्हें अदा करने की ताक़ीद फ़रमाई है। अल्लाह को वही बन्दे पसन्द हैं जो सहज प्रकृति और नर्म मिज़ाज वाले हों। अल्लाह उन लोगों को पसन्द नहीं करता जो अकड़ने वाले, कंज़ूस और कंज़ूसी की सलाह देने वाले हों। इसी तरह वो भी पसन्द नहीं हैं जो अल्लाह की ख़ुशनूदी के बजाय लोगों को दिख़ाने और नाम कमाने के लिये ख़र्च करें। याद रखो लोगों के अधिकार अदा क़तरने और अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाले कभी घाटे में नहीं रहने वाले, उनके लिये अल्लाह के यहाँ बड़ा अज़्र है।

इसके बाद क़ुरआन ने उन लोगों के लिये बड़े अफ़सोस का इज़हार किया जो आख़िरत से बिल्कुल बेपरवाह हो करउसके रसूल की नाफ़रमानी पर अड़े हज़ुए थे, ईमान और नेक क़र्मों की राह न ख़ुद अपनाने थे और न दूसरों को अपनाने देते थे। अल्लाह ने चेतावनी दी कि इस आख़िरी रसूल के ज़रिये तबलीग़ का हक़ अदा हो चुकी है। जो अब भी न सुनंगे, वो सोच लें कि एक दिन ऐसा आने वाला है जिस दिन

अल्लाह सब रसूलों को उनकी उम्मतों पर गवाह ठहरा कर पूछेगा कि तुमने अपनी उम्मतों को क्या दावत दी। और उन्होंने क्या जवाब दिया। फिर यही सवाल इस आखिरी उम्मत के बारे में आखिरी रसूल से भी होगा। वह दिन ऐसा होगा कि न किसी के लिये कोई पनीह की जगह होगी और न कोई शस्त्र कोई बात छुपा सकेगा।

इस चेतावनी के बाद अल्लाह के सबसे बड़े हक़ यानी नमाज़ के कुछ संस्कार और शर्तें बताई गई हैं। यहूदियों की कुछ शरारतों का जिक्र भी किया गया। ख़ास तौर पर नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में ऐसे शब्द बोलने की आदत जिनके दो दो अर्थ निकलते हों, कि मुसलमान जो अर्थ समझें वो उससे उलट मतलब ही मुराद लें। बताया गया कि ये हरकतें वो हसद के कारण करते हैं लेकिन अल्लाह ने फ़ैसला कर लिया है कि वह रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपकी उम्मत को कितना बहिष्कृत और शानदार सल्लत अता फ़रमाएगा और ये हसद करने वाले उनका कुछ बिगाड़ न पाएंगे। चुनावें दुनिया ने देख लिया कि अरब के बहू उठे, रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दामन थामा और ८०० साल दुनिया की इमामत की। यह दीर्घकालीन हुकूमत और सल्लत इस्लामी समाज कायम करने का परिणाम था।

कुरआन मुसलमानों को हिदायत फ़रमाता है कि जब यह अमानत यहूदियों से लेकर तुम्हें सौंपी जा रही है तो तुम इस अमानत में ख़याल न करना बल्कि इसका हक़ ठीक ठीक अदा करना और हर हाल में इन्साफ़ पर कायम रहना। अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और जो तुम में से शासक हों, उनकी आज्ञा का पालन करते रहना और अगर तुम में और शासकों में मतभेद हो जाए तो अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ मामले की लौटाना ताकि झगड़े का सही फ़ैसला हो सके और तुम बिखरने न पाओ। अल्लाह ने मुनाफ़िकों को मलामत की कि वो रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमाँबरदारी करने के बजाय इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मनों से मेल जाल रखते हैं और इसको अपनी अक्लमन्दी समझते हैं। हालांकि ईमान उस वक़्त तक भरोसे का नहीं जब तक वो पूरे तौर पर अपने को नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हवाले न कर दें और हर मामले में उनके हुक़म पर चलें।

पांचवें पारे के आखिरी रूकू से सातवें पारे के ५वें रूकू तक का खुलासा इससे पहले की आयतों में एक यह बात कही गई थी कि जब कोई सलाम करे यानी अस्सलामो अलैकुम कहें तो उससे बेहतर जवाब देना चाहिये वरना कम से कम उतना ही लौटा देना चाहिये। यह इतना अहम मामला है कि अगर कोई सलाम का जवाब सलाम से न दे तो गोया उसने उसका सलाम भी कुबूल न किया। इस बात की अगर इजाज़त दे दी जाए तो समाज में एक दूसरे से नफ़रतें बढ़ेंगी, इन्तिशार हांगा और शीराज़ा बिखर जाएगा। इस गुनाह से समाज को मेहफूज़ रखने के लिये छठे पारे ला युहिब्युल्लाह को इन अल्फ़ाज़ से शुरू किया गया है कि अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है। मज़लूम होने की मूरत में अगरचे बुराई से उसका जिक्र करने की इजाज़त दी गई है लेकिन अगर तुम जाहिर और वातिन में भलाई ही किये जाओ या कम से कम बुराई से दरगुज़र करो तो अल्लाह की सिफ़त भी यही है कि वह बड़ा माफ़ करने वाला है। हालांकि वह सज़ा देने की पूरी कुदरत रखता है। गोया बताया कि कि माफ़ी और दरगुज़र करने की आदत डालो। जिस अल्लाह से तुम करीब होना चाहते हो उसकी शान यह है कि वह निहायत हलीम और बर्दबा़र है। सरज़ से सरज़ मुजरिमों को भी रिज़्क देता है और बड़े से बड़े कुसूर को माफ़ कर देता है। लिहाज़ा उससे करीब होने के लिये तुम भी आली हौसला और बर्सीउन्नज़र बनो। फिर बताया गया कि जिस तरह खुल्लमखुल्ला इन्कार कुफ़्र है उसी तरह अपनी शर्तों पर ईमान लाना भी कुफ़्र है। यानी हम ईमान लाते हैं, फ़लाँ रसूल को मानेंगे और फ़लाँ को न मानेंगे और इस्लाम और कुफ़्र के बीच रास्ता निकालने की कोशिश यह सब भी कुफ़्र ही है।

आगे की आयतों में यहूदियों की तारीख़ दोहराई जाती है कि वो किस तरह गुनाह करते चले गए मगर हमने फिर भी उनके साथ माफ़ी का सुलूक किया। ऐसे लोगों से अब भलाई की उम्मीद नहीं रखनी

चाहिये। फिर ख़ास तौर पर ईसाइयों को तंबीह फ़रमाई कि अल्लाह ने क़ुरआन की शकल में जो तूरेमुबीन ख़ल्क की रहनुमाई के लिये उतारा है उसकी क़द्र करो और गुमराही छोड़कर हिदायत पर आजाओ। ईसाइयों से कहा कि अपने दीन में गुलू न करो (गुलू यह है कि जो चीज़ पाब भर है उसे सेर भर कर दिया जाए) दीन में जो चीज़ मुस्तहब है उसे फ़र्ज़ और वाजिब का दर्जा दे दिया जाए और जो शरय़ मुजतहिद है उसे इमाम मासूम बना दिया जाए। और जिसे अल्लाह ने नबी और रसूल बनाया है उसे अल्लाह की सिफ़तों में शरीक़ करार दिया जाए। और ताज़ीम से बढ़कर उसकी इबादत शुरू कर दी जाए। ये लोग इस गुलू को दीन की ख़िदमत और बुजुर्गों से अक़ीदत समझते हैं हालांकि अल्लाह के नज़दीक़ यह जुर्म है। ईसाइयों की मिसाल अल्लाह ने दी कि उन्होंने मस्यम के बेटे मसीह को अल्लाह के रसूल से आगे बढ़ाकर अल्लाह का बेटा बना दिया। मुसलमानों की भी गुलू से बचना चाहिये।

सूरए माइदह में अल्लाह ने ज़िक्र किया है कि उसने आख़िरी उम्मत की हैसियत से मुसलमानों से अपनी आख़िरी कामिल शरीअत पर पूरी पाबन्दी से कायम रहने और इसको कायम करने का एहद लिया है। यही एहद पहले पहले किताब से लिया गया था। मगर वो इसके एहल साबित नहीं हुए। अब मुसलमानों से एहद लिया जा रहा है कि तुम पिछली उम्मतों की तरह अल्लाह की शरीअत के मामले में ख़यालत और ग़दारी न करना। बल्कि पूरी वफ़ादारी से इस एहद की निभाना। इसपर ख़ुद भी कायम रहना और दूसरों को भी कायम रखने की कोशिश करना। इस राह में पूरे संकल्प और साहस के साथ तमाम आज़माइशों और ख़तरों का सामना करना। सबसे पहले अल्लाह से बांधे हुए एहद की पाबन्दी की ताक़ीद की गई है। फिर हराम महीनों और तमाम दीनी शिआइर के आदर का हुक्म दिया गया। और फ़रमाया कि हर नेकी और तक्वा के काम में एक दूसरे की मदद करना और गुनाह और ज़ियादती के कामों में हरगिज़ किसी का साथ न देना। ख़ाने की जो चीज़ें हैं उन्हें गिनाया गया और बताया गया कि दूसरों के कहने की कोई परवाह न करना। अल्लाह के किये हुए हराम और हलाल की पाबन्दी करना। हराम की हुई चीज़ों की तफ़सील यह है - (१) मुरदार जानवर जो तबई मौत मर गया हो। (२) ख़ून जो बहता हुआ हो उसे पीना ख़ाना जाइज़ नहीं। (३) सुअर का गोश्त बल्कि उसकी हर चीज़ हराम है। (४) वह जानवर जो ख़ुदा के सिवा किसी और के नाम पर ज़िह्र किया गया हो। (५) वह जानवर भी हराम है जो मुख़्तलिफ़ कारणों से मर गया हो जैसे गला घोट कर या चोट खाकर या ऊँचाई से गिरकर या टक्कर खाकर मर गया हो या किसी दरिन्दे ने उसे फाड़ा हो। अलबत्ता जिसे हमने ज़िन्दा पाकर अल्लाह के नाम से ज़िह्र कर लिया वह जानवर हलाल है। (६) पांशों या फ़ालगीरी के ज़रिये जो तक्सीम कर रखा वह भी हराम है। मुथ्रिकाना फ़ालगीरी जिसमें किसी देवी देवता से क्रिस्मत का फ़ैसला पूछा जाता है या आइन्दा की ख़बर दरयाफ़्त की जाती है या आपसी विवादों का फ़ैसला कराया जाता है। मक्के के मुथ्रिकों ने इस मक़सद के लिये काबे के अन्दर हबल देवता को ख़ास कर लिया था उसके स्थान पर सात तीर रखे हुए थे जिन पर अलग अलग शब्द ख़ुदे हुए थे। किसी काम के करने या न करने का सवाल या ख़ोए हुए का पता लगाना हो या ख़ून का फ़ैसला हो, हबल के पाँसेदार के पास पहुंच कर नज़राना देते, दुआ मांगते, फिर तीरों के ज़रिये फ़ाल निकाला जाता, जो तीर भी निकलता उसे हबल का फ़ैसला समझा जाता। तवहहमपरस्ती पर आधारित फ़ालगीरी जैसे रमल, नुजूम, शगुन, नक्षत्र की चालें भी हराम हैं। इसके आलावा जुए की क्रिस्म के वो सारे खेल जिनमें इनाम की तक्सीम हुकूक़, ख़िदमात और अक़ली फ़ैसलों पर रखने की बजाय केवल इत्तिफ़ाकी अम्र पर रख दी जाए जैसे लॉटरी, मुअम्मे वग़ैरह। अलबत्ता क़ुरआ-अन्दाज़ी की सिर्फ़ वह सूरत इस्लाम में जाइज़ है जिस में दो बराबर जाइज़ कामों या हुकूक़ के बीच फ़ैसला करना हो। इन तफ़सीलात के बाद फ़रमाया गया कि अब यह दीन तुम्हारे लिये मुकम्मल कर दिया गया और अल्लाह ने शरीअत की नेमत तुम पर तमाम कर दी, वस उसी की पैवदी करो।

अगली आयतों में सधाए हुए शिकारी जानवरों के ज़रिये किये जाने वाले शिकार, पहले किताब के

खाने और उनकी औरतों के साथ शादी के बारे में एहकाम बताए गए। साथ ही यह कैद भी लगा दी कि इस इजाज़त से फ़ाइदा उठाने वाले को अपने ईमान और इस्त्रलाक़ की तरफ़ से होशियार रहना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि कित्ताबियह औरत ईमान और इसके किसी तक्रज़ पर डाका डाल लें। नमाज़ के लिये बुज़ू का हुक्म और मजबूरी की हालत में तयम्मुम की इजाज़त दी गई। बनी इस्राईल से एहद का ज़िक्र किया गया जब उन्होंने शरीअत की पाबन्दी से मुंह मोड़ा तो अल्लाह तआला ने उनपर लानत की। इसी तरह ईसाइयों से एहद लिया था मगर उन्होंने भी एक हिस्सा भुला दिया यानी इबादत के नाम से जो रस्में हैं उनके नज़दीक वो तो दीन का एक हिस्सा हैं मगर बाक़ी के मामले जो दुनिया से सम्बन्धित हैं उनमें ख़ुदाई हिदायत के पाबन्द नहीं रहे। इस वजह से अल्लाह ने उनके अन्दर अहमकार और मत भेद की आग़ भड़का दी वो आख़िरत तक इसकी सज़ा भुगतेंगे। गोया मुसलमानों को चेतावनी दी जा रही है कि वो एहद की पाबन्दी करें। अगर वो यहूदियों और ईसाइयों के रास्ते पर चले तो फिर उनका भी वही अंजाम होगा इन आयतों की रौशनी में हम तारीख़ को देख सकते हैं और अपने ज़वाल की वजहें भी जान सकते हैं और उससे निकलने का रास्ता भी पा सकते हैं। फिर अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल का वह वाकिआ दोहराया कि उसने अपने फ़ज़ल से उन्हें नवाज़ा और फ़ल्ह और नुसरत के वादे के साथ उन्हें बशारत दी कि फ़लस्तीन की पाक धरती तुम्हारा इन्तिज़ार कर रही है, जाओ और उस पर क़ब्ज़ा कर लो। मगर क़ौम में बड़ड़े की पूजा यानी दुनिया परस्ती ने इतनी बुज़दिली पैदा कर दी थी कि वो कहने लगे - ऐ मूसा! तू और तेरा सब जाकर पहले लड़कर जीत हासिल कर लें तो हम आ जाएंगे। इसपर 80 साल के लिये उनपर पाक धरती को हराम कर दिया गया और उन्हें सहारा में भटकने के लिये छोड़ दिया गया। यहाँ मालूम हुआ कि अल्लाह के फ़ैसले भी क़ौमों के तर्ज़े अमल से वावस्ता हैं। मुसलमानों को ताकीद की गई कि अल्लाह की हदों पर क़ायम रहें और शरीअत की पाबन्दी को अल्लाह से करीब होने का ज़रिया बनाएं। अस्ल अल्फ़ज़ ये हैं - ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह से डरते रहो और उसके कुर्व का बसीला तलाश करो। यह बसीला ही है जिसका ज़िक्र अल्लाह ने हज़िल्लाह (अल्लाह की रस्सी) के नाम से किया है। यानी इस्लाम को मजबूती से मिलकर पकड़ो और पूरी मुस्तइदी से अल्लाह के आदेशों का पालन करो और उसकी राह में अपनी सारी ताक़त लगा दो। ख़ुदा के अज़ाब से यही चीज़ छुटकारा दिलाने वाली है। इसके सिवा कोई चीज़ नफ़ा नहीं पहुंचाएगी।

आज सातवें पारे के छठे रूकू से आठवें पारे के सातवें रूकू तक तिलावत की गई। सूरए माइदह के आख़िरी दो रूकू में क़यामत का तक्रशा ख़ींचा गया है कि मारे नबी अपनी अपनी उम्मतों के बारे में गवाही देंगे कि उन्होंने अल्लाह की तरफ़ से लोगों को क्या क्या बातें बताई थीं और अपने मानने वालों से किन किन बातों के न करने का एहद लिया था ताकि हर उम्मत पर हुज़्जत क़ायम हो सके कि जिसने कोई बदएहदी की तो उसकी सारी ज़िम्मेदारी उसी पर होगी, अल्लाह के रसूल पर नहीं। इस गवाही की व्याख्या के तौर पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र तफ़सील से किया गया ताकि वाज़ेह हो सके कि अल्लाह ने अपने रसूलों पर सच्चाई की गवाही की जो ज़िम्मेदारी डाली है वो उसके बारे में जवाबदेह होंगे और उनके वास्ते से उनकी उम्मतों ने अदुल और इन्साफ़ का निज़ाम समाज में क़ायम करने का जो एहद ईमान लाकर किया है उनसे उसके बारे में मालूम किया जाएगा आख़िरत में वही फ़लाह और कामयाबी के हक़दार होंगे जो दुनिया में इस एहद को निभाएंगे और इसकी ज़िम्मेदारी पूरी करेंगे।

सूरए माइदह के बाद छठी सूरत **सूरए अनआम** शुरू होती है जो मक्की ज़िन्दगी के बिल्कुल आख़िरी दौर में उस रात में उतरी जब मदीना से अन्सार की एक जमाअत हज के लिये आई हुई थी और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे एक पहाड़ी ग़ार में मुलाक़ात की थी। इस सूरत में मक्के के मुश्रिकीन के तवह्दुमात की काट की गई है जो वो खाने पीने की चीज़ों और जानवरों में करते थे। इस्लाम पर उनकी आलोचनाओं का जवाब दिया गया है और उन बड़े बड़े इस्त्रलाकी उसूलों की तलक़ीन की गई है जिनपर इस्लाम एक नई सोसाइटी बनाता चाहता है। इन उसूलों की पैरवी को सिराते मुस्तक़ीम करार दिया गया है जिसकी दुआ सूरए फ़ातिहा पढ़ते वक़्त बन्दे करते हैं। फ़रमाया तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह के

लिये हैं जिसने ज़मीन आसमान बनाए, अथेरा उजाला पैदा किया, फिर भी लोग दूसरों को उसका हमसर करार दे रहे हैं। वही तो है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर तुम्हारे लिये ज़िन्दगी की एक मुदत मुक़रर की और एक दूसरी मुदत और भी है जो उसके यहाँ निश्चित है। याती क़यामत की घड़ी, जब इस दुनिया के कर्मों का हिसाब लिया जाएगा और फैसला कर दिया जाएगा। क्या उन्होंने देखा नहीं कि उनसे पहले कितनी ऐसी क़ौमें हमने हलाक कर दीं जिनका अपने अपने ज़माने में दौर दौरा रहा है। उनको तो हमने ज़माने में इक़तिदार बख़्शा था, तुम्हें नहीं बख़्शा है। पहले हमने उनपर आसमानों से ख़ूब नेमतें उतारीं मगर जब उन्होंने उन नेमतों का इन्कार किया तो आख़िरकार हमने उनके गुनाहों की सज़ा में उन्हें तबाह कर दिया। और उनकी जगह दूसरी क़ौमों को उठाया। काश तुम उस वक़्त की हालत अभी देख सकते जब ये मुथ़िकीन दोज़ख़ के किनारे खड़े किये जाएंगे। उस वक़्त कहेंगे काश कोई सूरत ऐसी होती कि हम फिर से दुनिया में वापस भेजे जाते और अपने रब की निशानियों को न झुटलाते और इमान लाने वालों में शामिल हो जाते। वास्तव में वो यह बात इस वजह से कहेंगे कि जिस हकीक़त पर उन्होंने पर्दा डाल रखा था वह उस वक़्त वे निकाव होकर उनके सामने आ चुकी होगी। वरना अगर उन्हें पिछली ज़िन्दगी की तरफ़ याती दुनिया में वापस भेजा जाए तो वो फिर वही सब कुछ करेंगे जिससे उन्हें मना किया गया है। घाटे में पड़ गए वो लोग जिन्होंने यह समझा कि ज़िन्दगी जो कुछ भी है बस यही ज़िन्दगी है और अल्लाह के सामने अपनी पेशी की बात को उन्होंने झूट करार दिया जब अचानक वह घड़ी आ जाएगी तो उनका यह हाल होगा कि अपनी पीठों पर अपने गुनाहों के बोझ लादे होंगे देखो क्या बुरा बोझ है जो ये उठाए हुए हैं। दुनिया की ज़िन्दगी तो एक खेल और एक तमाशा है। हज़ीक़न में आख़िरत का मक़ाम ही उन लोगों के लिये बेहतर है जो गुनाहों से बचना चाहते हैं। फिर क्या तुम लोग अक्ल से काम नहीं लोगे। लोग अल्लाह से निशानियाँ मांगते हैं। ज़मीन पर चलने वाले किसी जानवर और हवा में उड़ने वाले किसी परिन्द को देख लो, ये सब तुम्हारी तरह की जिनस हैं, ये सब अपने रब की तरफ़ सिमटे जाते हैं। तुम भी इन्हीं की तरह अपने रब की तरफ़ समेटे जाओगे याती जिस तरह दिन भर चुगने और उड़ते रहने के बावुजूद शाम को ये सब अपने निश्चित समय पर घरों को लौट आते हैं उसी तरह तुम अपनी ज़िन्दगियाँ दुनिया में बसर करके अल्लाह ही की तरफ़ लौट जाते हो जहाँ तुम्हारा हमेशा हमेश का ठिकाना है। मगर जो लोग हमारी निशानियों को झुटलाते हैं वो गूंगे बहरे हैं, अथेरों में पड़े हुए हैं। ऐ नबी ! जब तुम्हारे पास वो लोग आएँ जो हमारी आयतों पर इमान लाते हैं तो उनसे कहो सलामती है तुम पर। तुम्हारे रब ने रहमों करम का शेवा अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है। यह उसका रहम और करम ही तो है कि अगर तुम में से कोई नादानि से कोई बुराई कर बैठा हो और उसके बाद तौबत कर ले और अपनी इस्लाम क़ ले तो अल्लाह उसे माफ़ कर देता है और नमी से काम लेता है।

अगली आयतों में शिर्क की तर्दीद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बाकिआ बयान किया गया है कि किस तरह उन्होंने सितारा परस्ती की काट की। फ़रमाया जो छुप जाए और ज़वाल पज़ीर हो वह कभी ख़ुदा नहीं हो सकता। मेरा ख़ुदा तो वही है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ। अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़िक्र के बाद फ़रमाया - नबुव्वत का सिलसिला काफ़ी लम्बा है। हमने इब्राहीम को इस्लाम और यअक़ूब जैसी औलाद दी और हर एक को सीधा रास्ता दिखाया। पहले नूह फिर उनकी नस्ल से दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ़, मूसा व हारून, ज़करिया, यहया, इलियास, अल-यसअ, इस्माईल, यूनुस, लूत इन सभी को अल्लाह ने हिदायत बख़्शी और नबुव्वत का ताज पहनाया, उन्हें तमाम दुनिया वालों पर बुज़ुर्गी दी, उनके बाप दादा, उनकी औलाद और भाई बन्दों में से बहुतों को नवाज़ा, उन्हें दीन के लिये चुन लिया, सीधे रास्ते की तरफ़ उनकी रहनुमाई की। अल्लाह यह हिदायत अपने जिस बन्दे को चाहता है इनायत फ़रमाता है मगर कुफ़्र और शिर्क इतना बड़ा गुनाह है कि अगर ये मुक़र्रब बन्दे भी अल्लाह के साथ शिर्क करते तो इनके सारे कर्म अकारत जाते। लिहाज़ा ये काफ़िर और मुथ़िक लोग अल्लाह की इस हिदायत को कुबूल करने से इन्कार करते हैं तो कर दें, हमने इमान वालों में एक ग़िरोह ऐसा पैदा किया है जो इस

नेमत की कद्र करने वाला है। ये तमाम नबी अल्लाह की तरफ से हिदायत पाए हुए थे। ऐ मेहबूब ! आप उन्हीं के रास्ते पर चलिये और कह दीजिये कि मैं तुम से किसी अन्न का तालिव नहीं हूँ। यह कुरआन तो एक नसीहत और हिदायत है तमाम दुनिया वालों के लिये। ऐ मेहबूब ! कह दीजिये - देखो तुम्हारे पास तुम्हारे सब की तरफ से बसीरत की रौशनी आ गई है, अब जा बीनाई से काम लेगा, अपना भला करेगा और जो अन्धा बना रहेगा, वह खुद नुकसान उठाएगा। मैं तुम पर कोई पासवान नहीं हूँ।

इसके बाद कुरआन शरीफ ने मुश्किलों के अपने हलाल और हराम करार दिये हुए जानवरों और तबद्दुमात का जिक्र करके उनकी बेअकली को वाजिह किया और जो कुछ अल्लाह तआला ने हराम और हलाल किया है उसे बताते हुए ऐलान किया कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये ज़िन्दगी का क्या तरीका उतारा है जिसपर चलना सीधी राह पर चलना है। फरमाया - ऐ नबी ! उनसे कहाँ आओ मैं तुम्हें सुनाऊँ तुम्हारे सब ने तुम्हें किन बातों का पाबन्द किया है। (१) उसके साथ किसी को शरीक न ठहराना, (२) माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करना, (३) अपनी आँलाद को मुफलिसी के डर से क़त्ल न करना, हम तुम्हें भी राज़ी देते हैं और उनको भी देंगे, (४) वेशर्मी की बातों के करीब भी न फटकना चाहे वो खुली हों या छुपी, (५) किसी जान को जिसे अल्लाह ने मुहतरम ठहराया है, हलाक न करो मगर हक के साथ यानी क़ातून के दापरे में, (६) यतीम के माल के करीब न जाओ मगर ऐसे तरीके से जो बेहतराँ है यहाँ तक कि वो उस उम्र को पहुँच जाए कि अपने अच्छे बुरे में तमीज़ करने लगे, (७) नाप तौल में पूरा इन्साफ़ करो, हम हर शय्स पर ज़िम्मेदारी का उतना ही बोझ डालते हैं जिसे उठाने की वह ताक़त रखता हो, (८) जब बात कहाँ इन्साफ़ की कहाँ चाहे मामला अपनी रिश्तेदारी का ही क्यों न हो, (९) अल्लाह के एहद को पूरा करो।

इन बातों की हिदायत अल्लाह ने तुम्हें की है शायद कि तुम नसीहत पकड़ो। यही अल्लाह का सीधा रास्ता है इसलिये इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो क्योंकि वो तुम्हें अल्लाह के रास्ते से बिचलित करदेंगे। दाने और गुठली का फाड़ने वाला अल्लाह है। वही ज़िन्दा का मुर्दा और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है। सारे काम तो अल्लाह के ही हुक्म से होते हैं फिर तुम कहाँ बहके जाते हो। रात के पदों को चाक करके वही तो सुबह को निकालता है, उसी ने रात को सुकून का वज़न बनाया, उसी ने चाँद सूरज के उदय और अस्त होने का हिसाब निश्चित किया है और वही है जिसने तारों को सहारा और समन्दर के अन्दरों में रास्ता मालूम करने का ज़रिया बनाया है।

दुनिया की विभिन्न चीज़ों और इन्सान की पैदाइश का जिक्र फरमाकर अल्लाह ने फरमाया कि इन चीज़ों में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं। इसपर भी लोगों ने जिन्नो को अल्लाह का शरीक ठहरा दिया है हालाँकि वह उनका पैदा करने वाला है। और वे जाने बूझे अल्लाह के लिये बेटियाँ और बेटे बना दिये हैं हालाँकि वह पाक और बाला तर है इन बातों से जाँ ये लोग कहते हैं। वह तो आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला है उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसकी कोई शरीक ज़िन्दगी ही नहीं। उसने हर चीज़ को पैदा किया और हर चीज़ का इल्म रखता है। यह है अल्लाह तुम्हारा सब, कोई उसके सिवा पूजे जाने के क़ाबिल नहीं, वही हर चीज़ का ख़ालिक है, लिहाज़ा तुम उसी की बन्दगी करो। निगाहें उसको पा नहीं सकतीं और वह निगाहों को पा लेता है। बारीक से बारीक चीज़ उस की नज़र में है।

सूरए अअराफ़ में सब से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नसल्लती दी कि कि इस किताब के मुतअल्लिक आपकी ज़िम्मेदारी बस इतनी है कि इसके ज़रिये लोगों को ख़बरदार करें ताकि अल्लाह की हुज़त उनपर तमाम हो जाए। आप पर यह ज़िम्मेदारी नहीं कि लोग इसे कुबूल भी करें। हकीकत में इस किताब से फ़ायदा तो सिर्फ़ ईमान वाले ही उठाएंगे। फिर कुरआन ने सबको तम्बीह की कि एक दिन ऐसा ज़रूर आने वाला है जब तुम से तुम्हारी ज़िम्मेदारियों की बाबत पूछा जाएगा और रसूलों से उनकी ज़िम्मेदारियों के बारे में। उस दिन जो इन्साफ़ की तराजू कायम की जाएगी वह हर एक के अअमाल को तौल कर बता देगी कि किस के पास कितना हक़ है और कितना बातिल। उस रोज़ सिर्फ़

वही फलाह पाएंगे जिनके नेकियों के पलड़े भारी होंगे । बाकी सब नामुराद होंगे बल्कि दीवालिया ।

आग की आयतों में कुरैश को और उनके ज़रिये सबको आगाह किया कि तुम्हें जो इक़तदार हासिल हुआ है वह खुदा का बरक़्शा हुआ है । उसी ने तुम्हारे लिये ज़िन्दगी और उसका सामान पैदा किया है लेकिन शैतान ने तुमपर हावी होकर तुमको नाशुकी की राह पर डाल दिया है । फिर आदम अलैहिस्सलाम और इब्नीस का वाकिआ बयान करके बाज़ेह किया गया कि जिस तरह शैतान ने हज़रत आदम को धोखा देकर जन्नत से निकलवाया था उसी तरह उसने फ़रेब का जाल फैलाकर तुम्हें भी फंसा लिया है । तुम उसके चक्मे में आकर उसकी उम्मीदें पूरी करने के सामान न करो । अल्लाह ने हर मामले में हक़ और इन्साफ़ का हुक्म दिया, अपनी इबादत का हुक्म दिया, और तौहीद का हुक्म दिया । शैतान बेहयाई का रास्ता दिखाता है और तुमने उसकी पैरवी में अपने आप को फ़िलों में जकड़ लिया है । और दावा करते हो कि यही सीधी राह है । अल्लाह ने बेहयाई को, लोगों के हुक्क मारने और सरकशी करने को शिर्क और अल्लाह का नाम लेकर दिल से हराम-हलाल बना लेने को हराम टहराया है । लेकिन आज तुम ये सब हरकतें कर रहे हो । इसके बावजूद तुम्हें मोहलत दी जा रही है तो इसकी वजह यह है कि अल्लाह के यहाँ हर उम्मत की तवाही के लिये एक वक़्त मुकर्रर है ।

अल्लाह ने फ़रमाया ऐ आदम की औलाद ! हमने तुमपर लिबास उतारा है कि तुम्हारे जिस्म के शर्म वाला हिस्सों को ढाँपें और तुम्हारे लिये जिस्म की हिफ़ाज़त और ज़ीनत का ज़रिया भी हो । और बेहतरीन लिबास तक्रवा का लिबास है । यह अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी है शायद लोग इससे सबक लें । ऐ आदम के बेटो ! ऐसा न हो कि शैतान फिर तुम्हें फ़िलों में डाल दे जिस तरह उसने तुम्हारे बालिदैन को जन्नत से निकलवाया था और उनके लिबास उनपर से उतरवा दिये थे ताकि उनकी शर्मगाहें एकदूसरे के सामने खोले । वह और उसके साथी तुम्हें ऐसी जगह से देखते हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते । ऐ आदम की औलाद ! हर इबादत के मौक़े पर अपनी ज़ीनत से आरास्ता रहो और खाओ पियो मगर हद से आगे न बढ़ो । अल्लाह हद उलांघने वालों के पसन्द नहीं करता । ऐ मेहबूब ! इन से कह दो कि किस ने अल्लाह की उस ज़ीनत को हराम कर दिया है जिसे अल्लाह ने अपने बन्दों के लिये बनाया । और किसने अल्लाह की अता की हुई पाक चीज़ों पर प्रतिबन्ध लगा दिया । आप कह दजीजिये कि ये सारी चीज़ें दुनिया की ज़िन्दगी में भी इम्मान लाने वालों के लिये हैं और क़यामत के रोज़ तो सिर्फ़ उन्हीं के लिये होंगी क्योंकि वही वफ़ादार हैं । इस तरह अल्लाह अपनी बात साफ़ साफ़ बयान फ़रमाता है उन लोगों के लिये जो इल्म रखते हैं । ऐ मेहबूब ! इनसे कहिये, मेरे रब ने जो चीज़ें हराम कर दी हैं वो ये हैं - वेशर्मी के काम, चाहे खुले हों या छुपे और गुनाह और हक़ के ख़िलाफ़ ज़ियादती और यह कि अल्लाह के साथ तुम किसी को शरीक करो जिसके लिये उसने कोई सनद नाज़िल नहीं की और यह कि अल्लाह के नाम पर कोई ऐसी बात कहो जिसके बारे में तुम्हें जानकारी न हो कि वह हक़ीक़त में उसी ने फ़रमाई है । मक़ामे अअराफ़ से, जो जन्नत और दोज़ख़ दोनों के बीच एक ऊंची जगह होगी, एक ग़िरोह को दोज़ख़ और जन्नत का अवलोकन कराया जायगा ताकि वो देख लें कि अल्लाह ने अपने रसूलों के ज़रिये जिन बातों की ख़बर दी थी वो सब पूरी हुई । अअराफ़ वाले जन्नत वालों को मुबारकबाद देंगे और दोज़ख़ वालों पर मलामत करेंगे । दोज़ख़ वाले जन्नत वालों से दरख़्नास्त करेंगे कि वो उनपर कुछ करम करें और उनपर थोड़ा सा जन्नत का पानी डाल दें और जो रिज़क उन्हें मिला है उसमें से कुछ उन्हें भी दें । जन्नत वाले जवाब देंगे कि अल्लाह ने दोनों चीज़ें कुरआन का इन्कार करने वालों पर हराम कर दी हैं अल्लाह की तरफ़ से ऐलान होगा - जिन्होंने दुनिया में अल्लाह की बातों से आँखें फेरी थीं, आज अल्लाह ने उनको नज़र अन्दाज़ कर दिया है । काफ़िर अपनी बदबख़्ती और मेहरूमी पर अफ़सोस और हसरत के सिवा कुछ न कर सकेंगे ।

इस बात से आगाह किया गया कि पैदा करना और लोगों को हुक्म देना कि क्या करें क्या न करें, यह सब अल्लाह का हक़ है । बस उम्मीद हो या ना उम्मीदी, हर हाल में उसी को पुकारो । ज़मीन में वो काम न करो जिनसे फ़साद फैले । क़यामत ज़रूर आनी है । मौत के बाद ज़िन्दगी का अवलोकन

तुम खुद इस दुनिया में बग़ार कर रहे हो कि अल्लाह मुर्दा ज़मीन को वारिस से ज़िन्दा कर देता है। अल्लाह ने हर पहलू से अनी निशानियाँ बाज़ेह कर दी हैं। नूह, सालेह, हूद, लूत और शूएब अलैहुमुसलाम की क़ौमों का ज़िक्र किया गया। यह इस बात का तारीख़ी सुबूत है कि जो क़ौम फ़साद फैलाती हैं और अपने रसूल की दावत को झुटलाती हैं, अल्लाह तआला आख़िरकार उन्हें मिटा देता है। ज़ालिम क़ौमों का तबाह करने का अल्लाह का जो तरीक़ा है, उसे तफ़सील से बताया गया कि कभी ऐसा न हुआ कि हमने किसी बस्ती में नबी भेजा और उसी बस्ती के लोगों का पहले तंगी और सज़ा में मुजिला न किया हो, इस ख़याल से शायद वो आजिज़ी इज़्तिहार करें।

सूरए अन्फ़ाल में अल्लाह तआला ने जंगे बद्र का ज़िक्र फ़रमाया है। यह पहली जंग है जो मक्क़े के काफ़िरों और मुसलमानों के बीच १७ रमज़ान सन दो हिज़री में बद्र के मक़ाम पर लड़ी गई। इसका पसे मन्ज़र यह था कि मदीनए तैय्यिबह में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आ जाने के बाद मुसलमानों को एक मक्क़ा मिल गया था। पूरे अरब से मुसलमान जो वहाँ के क़बीलों में थे, वहाँ आकर पनाह ले रहे थे और मक्क़ा से बड़ी नादाद में हिज़रत करके वहाँ आए थे। इस तरह मुसलमानों की बिस्त्ररी हुई ताक़त एक जगह जमा हो गई थी और कु़श के लिये यह बात सग़्रत नागवार थी कि मुसलमान इस तरह एक बड़ी ताक़त बन जाएं। इस लिये उन्हीं ने फ़ैसला किया कि अपने एक निज़ारती क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त के बहाने मदीनए पर चढ़ाई कर दें और मुसलमानों की मुट्ठी भर जमाअत का ख़ात्मा कर दें।

इन संगीन हालात में १७ रमज़ान का बद्र के मक़ाम पर मुकाबला हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने देखा कि तीन काफ़िरों के मुक़ाबले में एक मुसलमान है और वह भी पूरी तरह मुसल्लह नहीं है। तो अल्लाह की बारगाह में सग़ डुका दिया और हुआ की - ऐ अल्लाह! ये कु़श है जो अपने सामान और ताक़त के घमन्ड के साथ आए हैं ताकि तेरे रसूल को झुटा साबित करें। ऐ अल्लाह! बस आ जाए तेरी वह मद जिसका तूने मुझ से वादा किया था। ऐ अल्लाह! अगर आज यह मुट्ठी भर जमाअत हताक हो गई तो रूए ज़मीन पर फिर तेरी इबादत न होगी।

आख़िरकार अल्लाह की तरफ़ से मदद आ गई और कु़श अपने साथ असलहे और ताक़त के बावजूद इन बे सरो मानान जौनिगारों के हाथों मात खा गए। काफ़िरों के सत्तर आदमी मारे गए और मनस कैदी बनाए गए। बड़े बड़े सग़दारी और अबू जहल का ख़ात्मा हो गया। और काफ़िरों का सारा सामान माले शरीमत के तौर पर मुसलमानों के हाथ आया। अल्लाह ने फ़रमाया इस जीत में अल्लाह की ताईद और मदद का कितना बड़ा हाथ था। फ़रमाया, ऐ मन्थूर! जब तुम अपने ख़व से फ़र्ग़ियाद कर रहे थे तो जवाब में उसने फ़रमाया कि मैं तुम्हारी मदद को एक हजार फ़रिशतों की जमाअत एक के बाद एक भेज रहा हूँ। बस हकीकत यह है कि तुमने इन्हें क़त्ल नहीं किया, अल्लाह ने उन्हें हत्ताक किया। और मूमिनां के हाथ जो इस काम में इस्तेमाल हुए तो यह इण लिये था कि अल्लाह मूमिनां को एक बदनरीन आजमाइश से कामयाबी के साथ गुज़ार दे।

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँवरदारी करो और हुक्म सुनते के बाद उससे मुंह न मोड़ो। उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने कहा हमने सुना हालांकि वो नहीं सुनते। यक़ीनन अल्लाह के नज़दीक बदनरीन किस्म के जानवर वो गूंगे बहरे इन्सान हैं जो अक़ल से काम नहीं लेते। अगर अल्लाह की मज़ी होती तो वह ज़रूर उन्हें सुनने की तौफ़ीक़ देता। लेकिन भलाई के बिना अगर वह कुछ सुनते तो वे सज़ी के साथ मुंह फेर जाते।

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल की पुकार पर लम्बैक कहो जबकि उसका रसूल तुम्हें उस चीज़ की तरफ़ बुलाए जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शने वाली है या तो ज़िहाद और बच उस फ़ितने से जिसकी शामत ख़ास तौर से सिर्फ़ उन्हीं लोगों तक मेहदूद नहीं रहेगी जिन्होंने तुम में से गुनाह किया हो। और जान रखा कि अल्लाह सग़्रत सज़ा भी देने वाला है।

मक्क़े का वह बक़्न भी बाद करने जैसा है जबकि सच्चाई का इन्कार करने वाले तुम्हारे ख़िलाफ़ तदबीरें सोच रहे थे कि तुम को कैद कर दें या क़त्ल कर डालें या ज़िला वतन कर डालें। वो अपनी चालें

चल रहे थे और अल्लाह अपनी छुपवाँ तदबीर फ़रमा रहा था। और अल्लाह सब से बेहतर तदबीर फ़रमाने वाला है। उस वक़्त वो यह बात भी कह रहे थे कि खुदाया अगर वाकई यह हक़ है और तेरी तरफ़ से है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या कोई और अज़ाब ले आ। उस वक़्त तो अल्लाह उनपर कोई अज़ाब लाने वाला नहीं था क्योंकि ऐ मेहबूब आप उनके बीच तशरीफ़ फ़रमा थे। यह अल्लाह का क़ायदा नहीं कि उसकी बाग़माह में इस्तिग़फ़ार करने वाले मौजूद हों और वह उनपर अज़ाब उतारे।

लेकिन अब क्यों न वह उनपर अज़ाब नाज़िल करे जबकि वो मस्जिदे हराम का रास्ता रोक रहे हैं। हालांकि वो इस मस्जिद के जाइज़ मुतबल्ली नहीं हैं। इसके जाइज़ मुतबल्ली तो सिर्फ़ तक्वा वाले लोग ही हो सकते हैं। ऐ ईमान वालो! इन काफ़िरों से जंग करो यहाँ तक कि फ़ितना बाकी न रहे और दीन पूरे का पूरा अल्लाह के लिये हो जाए। फिर अगर वो फ़ितने से रुक जाएं तो अल्लाह उनके अअमाल देखने वाला है और अगर न मानें तो जान रखो कि अल्लाह तुम्हारा सरपरस्त है और वही बेहतरीन मददगार है।

इस मौक़े पर यह भी बाज़ेह कर दिया गया कि ग़नीमत का माल हकीक़त में लड़ने वालों का ज़ाती माल नहीं है बल्कि अल्लाह का इनाम है। इस लिये अपनी मर्ज़ी से उसके मालिक मत बना। चुनान्ते उसका ५: बाँ हिस्सा अल्लाह, उसके रसूल और उसके रिश्ते दारों, यतीमों, भिखीनों और मुआफ़िरों के लिये है। बाकी चार हिस्से जंग में हिस्सा लेने वालों के लिये हैं। ऐ ईमान वालो! जब किसी ग़िराह से तुम्हारा मुकाबला हो तो क़दम मज़बूत रखो और अल्लाह को क़सरत से याद करते रहो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँवरदारी करो और आपस में झगड़ो नहीं करना तुम्हारे अन्दर कमज़ोरी पैदा हो जाएगी। और तुम्हारी हवा उग्रड़ जाएगी। सब्र से काम लो, यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है अल्लाह की यह सुन्नत है कि वह किसी नेमत को जो उसने किसी क़ौम को अता की है, उस वक़्त तक नहीं बदलता जब तक वह क़ौम खुद अपने व्यवहार के नहीं बदल देती। जिन काफ़िर क़ौमों से मुआहिदा हो उनके बारे में फ़रमाया कि अगर किसी क़ौम से तुम्हें ख़यानत का अन्देशा है तो उसका मुआहिदा खुल्लाम खुल्ला उसके आगे फेंक दो। यक़ीनन अल्लाह ख़यानत करने वालों को पसन्द नहीं करता। और तुम लोग जहाँ तक तुम्हारा बस चले अधिक से अधिक ताक़त और तैयार बंधे रहने वाले घोड़े उनके मुकाबले के लिये उपलब्ध कर रखो ताकि उनके ज़रिये अल्लाह के और खुद अपने दुश्मनों को और उन दूसरे दुश्मनों का भयभीत कर सको जिन्हें तुम नहीं जानते, मगर अल्लाह जानता है। अल्लाह की राह में

जो कुछ तुम ख़र्च करोगे उसका पूरा पूरा बदल तुम्हारी तरफ़ पलटाया जाएगा। और तुम्हारे साथ हरगिज़ जुल्म न होगा। और अगर दुश्मन सुलह व सलामती की तरफ़ आए तो तुम भी उसके लिये राज़ी हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो, वह सब कुछ जानने सुनने वाला है और अगर वो धोखे की नियत रखते हों तो तुम्हारे लिये अल्लाह काफ़ी है। वही तो है जिसने अपनी मदद से और मूमिनों के ज़रिये से तुम्हारी ताईद की और मूमिनों के दिल एक दूसरे के साथ जोड़ दिये। तुम धरती की सारी दौलत भी ख़र्च कर डालते तब भी इल लोगों के दिल न जोड़ सकते थे। मगर यह अल्लाह ही है जिसने इनके दिल जोड़े। यक़ीनन वह बड़ा ज़बरदस्त और दाना है। ऐ मेहबूब! तुम्हारे और तुम्हारे मानने वालों के लिये अल्लाह काफ़ी है।

ऐ नबी! मूमिनों को जंग पर उभारो। अगर तुम में से बीस साबिर हों तो वो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर सौ आदमी ऐसे हों तो हक़ के मुख़ालिफ़ों में से बीस हज़ार आदमियों पर भारी होंगे। जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अल्लाह की रज़ा के लिये अपने घर बाँस छोड़े और जिद्दोज़हद की और जिन्होंने उन्हें पनाह दी और उनकी मदद की, वही सच्चे मूमिन हैं। उनके लिये ख़ताओं से दरगुज़र है और बेहतरीन रिज़क है और जो लोग बाद में ईमान लाए और हिज़रत करके आ गए और तुम्हारे साथ मिल कर दीन के क़याम की जिद्दोज़हद करने लगे, वो भी तुम में शामिल हैं।

सूरए तौबह के बाकी के पाँच स्कू में जंगे तबूक के मौक़े पर मुनाफ़िक़ों ने जो ख़ैया अपनाया और कुछ ऐसे मुसलमान जो थे तो मुख़लिस मगर काहिली की बिना पर जंग में शरीक़ होने से पीछे रह

गए थे, उन सबका जिक्र किया गया। पहले यह बताया गया कि जब तुम जंगे तबूक के सफर से लौटोगे तो ये मुनाफ़िक़ीन अपने खैये के बारे में तुम्हें झूठी बातें दिलाने के लिये तरह तरह के उज्र पेश करेंगे। उन से साफ़ कह देना कि हम तुम्हारे ये मन घड़त बहाने मानने वाले नहीं। अब अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे अमल का जाइज़ा लेंगे। तुम अपने अमल से साबित करने की कोशिश करो कि तुम वास्तव में अल्लाह और रसूल पर ईमान रखते हो। अभी तो इस्लाम से उनकी बदख्वाही का यह हाल है कि अबल तो ये अल्लाह के रास्ते में कुछ खर्च नहीं करते और अगर हालात से मजबूर होकर कुछ करना भी पड़े तो इस अपने ऊपर ज़बरदस्ती का जुर्माना समझते हैं। और चाहते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी गर्दिश आए कि जिस से हमारी जान उन से छूट जाए हालांकि हकीकत में गर्दिश खुद उन पर है और गर्दिश भी बहुत बुरी यानी आख़िरत में निजात से मेहरूमी। कुछ दूसरे लोग थे जिन्होंने अपने गुनाह को स्वीकार कर लिया था। उनके बारे में फ़रमाया गया कि उनकी नेकियाँ और बुराइयाँ दोनों तरह की कमाई है, उम्मीद है कि अल्लाह उनपर अपनी रहमत फ़रमाएगा। ऐ नबी! आप उनसे सदाक़ा लेकर उन्हें पाक बना दीजिये और उन के लिये दुआ कीजिये। आपकी दुआ उनके लिये तसकीन का सामान बनेगी। और उन से यह भी कहिये कि अब अल्लाह, उसका रसूल और मूमिनीन तुम्हारे तर्ज अमल को देखेंगे और बहरहाल तुम बहुत जल्द अल्लाह के हुज़ूर पेश किये जाने वाले हो। मुनाफ़िक़ी में वो भी हैं जिन्होंने एक मस्जिद बनाई है, इस्लाम को नुक़सान पहुंचाने, ईमान वालों में फूट डालने और उन लोगों के लिये ख़ुफ़िया अह्दा उपलब्ध कराने के लिये जो अल्लाह और रसूल से पहले जंग कर चुके हैं। और उसमें कभी न खड़े हों। आप के खड़े होने के लिये वह मस्जिद सबसे ज्यादा हक़दार है जिसकी बुनियाद पहले दिन से ही तक्वा पर रखी गई है। निफ़ाक़ पर बनाई हुई इमारत की मिसाल ऐसी है जैसे किसी समन्दर में निकली हुई कगार पर इमारत बनाई हो, वह किसी भी वक़्त अपने रहने वालों समेत दाँजग्र में गिर जाएगी। वेशक़ अल्लाह ने ईमान वालों से उनके जान और दिल जन्नत के बदले में ख़रीद लिये हैं। वो अल्लाह की राह में जंग करते हैं, वो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं। जन्नत का वादा अल्लाह के ज़िम्मे एक सच्चा वादा है। तौरात में भी और इन्ज़ील में भी और अब क़ुरआन में भी। अल्लाह से ये जन्नत का सौदा करने वाले दर असल हमेशा तौबह करने वाले इबादत गुज़ार, शुक्र गुज़ार, अपनी इस्लाह और दीन का इल्म हासिल करने के लिये घरों से निकलने वाले, अल्लाह के आगे झुकने वाले, नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की हदों की हिफ़ाज़त करने वाले लोग हैं। यही सच्चे मूमिन हैं। ऐसे मूमिनों को ख़ुश ख़बरी सुना दीजिये।

सूरत ख़तम करते वक़्त मुसलमानों को कुछ ख़ास हिदायतें दी गई हैं। पहली हिदायत यह फ़रमाई कि नबी और ईमान वालों के लिये यह जाइज़ नहीं कि वो मुश्क़ों के लिये अल्लाह से मग़फ़िरत की दुआ मांगें, चाहे वो उनके रिश्ते दार ही क्यों न हों। इस हिदायत का मतलब यह है कि मुसलमानों को शिर्क के हर शाइये से पाक करके सिर्फ़ अल्लाह के लिये जीने और मरने के मक़सद पर कायम कर दिया जाए और हक़ के सिवा और किसी तबअ की हिमायत का शाइया उनमें बाक़ी न ख़ा जाए क्योंकि सिर्फ़ रिश्तेदारी और तअल्लुक की बिना पर जो हिमायत होती है उससे निफ़ाक़ और कुफ़्र की राहें खुलती हैं।

जिन मुसलमानों का सुस्ती और काहिली के कारण जंगे तबूक से पीछे रह जाने पर वायक़ाट किया गया था उनकी तौबह की कुबूलियत की बशारत सुनाई गई और मदीने वालों और बहुओं में से जो ताइब हो गए थे उनको नसीहत की गई कि हमेशा सच और हक़ के लिये जीने वालों से खुद को जोड़े रखो ताकि उनकी सोहबत में रहकर तुम्हारी कमज़ोरियों की इस्लाह हो सके।

सूरत यूनुस में क़ुरैश की उस हालत पर अफ़सोस का इज़हार किया गया कि अल्लाह ने उन्हीं में से एक व्यक्ति पर यह हिक़मत वाली क़िताब उतारी। चाहिये तो यह था कि वो इसकी क़द्र करने और ईमान लाते। अल्लाह सरक़श लोगों का डील देता है। इसकी वज़ह यह है कि वह रहमत करने में जल्दी करता है लेकिन क़हर करने में जल्दी नहीं करता। वह ऐसे लोगों को मौक़ा देता है कि वो सरक़शी में अच्छी तरह भटक लें, कोई हसरत बाक़ी न रह जाए और अल्लाह की हुज़्जत तमाम हो जाए। वरना

अल्लाह जब चाहे उनका क्रिस्सा पाक करदे ये पिछली उम्मतों के अंजाम से सबक क्यों नहीं लेते ।

कुरैश की एक मांग यह थी कि इस कुरआन के अलावा कोई दूसरा कुरआन लाओ जिसमें हमारी कुछ बातें भी मानी गई हों या अब रद्दोबदल कर लो, कुछ दो, कुछ लो के उसूल पर मामला करजो । इसका जवाब यह दिया गया कि ऐ मेहबूब ! आप बता दीजिये कि मुझे रद्दोबदल या मंशोधन करने का कोई इस्तिनयार नहीं है । ये तो अल्लाह के आदेश हैं जिनके पालन के लिये मैं भेजा गया हूँ । अगर अल्लाह का हुक्म न होता तो मैं हरगिज़ इसे पेश न करता ।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम का अंजाम बयान करने के बाद हूद अलैहिस्सलाम की क़ौम आद और सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम समूद के इत्रत अंगेज़ अंजाम को बताया गया ताकि कुरैश को डराने और क्रयामत तक आने वाले संशकश लोगों की नसीहत हो । फिर लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम का ज़िक्र किया गया । इस मुनासिबत से कि कुरैश फ़रिश्तों के उतार जाने का मुताल्लाफ़ कर रहे थे । बताया गया कि फ़रिश्तों का आना कोई मामूली बात नहीं होती । वो जब काफ़िर क़ौमों की मांग पर आते हैं तो अपने साथ अज़ाब लाते हैं । फिर हज़रत शूएब अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र करते हुए इन क्रिस्सों को बयान करने का मक़सद इन शब्दों में बयान किया ।

ये बस्तियों के कुछ हालात हैं जो हम तुम्हें सुना रहे हैं । इनमें से कुछ अभी क्रायम हैं और कुछ मिट चुकी हैं । हमने उनपर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि उन्होंने खुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया । तो उनके बनावटी खुदा जिन्हें वो अल्लाह के सिवा पुकारते थे, तरे रब का अज़ाब आने पर उनके कुछ काम न आए । तरे रब की पकड़ इसी तरह होती है । बेशक उसकी पकड़ बड़ी सख्त और दर्दनाक है ।

हम रसूलों की सरगुज़श्तों में से एक तुम्हें सुना रहे हैं ताकि तुम्हारे दिल को तक्रवियत हो और उनके हालात का सही इल्म हो सके । और मुमिनों के लिये इनमें नसीहत और याददिहानी है । तुम सब अल्लाह की बन्दगी करने रहो और उसी पर भरोसा रखो । जो कुछ तुम कर रहे हो, तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं है ।

अब **सूरए यूसुफ़** शुरू होती है । इसके नुज़ूल का कारण यह हुआ कि कुरैश हज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को क़त्ल करने या ज़िला बतन करने या कैद करने के मुतअल्लिक सांच रहे थे कि मदीना के यहूदियों ने उन्हें पट्टी पढ़ाई कि मुहम्मद से यह पूछें कि वनी इस्राईल तो शाम में रहते थे, वो मिस्र कैसे चले गए । हज़रत मूसा का सारा वाकिआ मिस्र से ही तअल्लुक रखता है । यहूदी इस गुमात में थे कि जब कुरैश नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इस तरह का सवाल पूछेंगे तो हज़रत ज़रूर किसी न किसी तरह यहूदियों से सम्पर्क करेंगे, इस तरह सारी पोल खुल जाएगी । मगर अल्लाह तआला ने अपने हबीब की ज़बान से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाकिआ सुनवा दिया । साथ ही इसे कुरैश पर चर्प्पा भी कर दिया कि आप जो कुछ भी बयान करते हैं वो अल्लाह की बताई हुई बातें हैं । इस तरह गोया उन्हें चेतावनी भी दे दी कि यही अंजाम तुम्हारा भी होने वाला है कि तुम एक दिन नबीये करीम के रहमो करम पर होगे ।

इसी वाक़िए में कुरआन ने इस्लाम की दावत पेश करने हुए बाज़ह कर दिया कि हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़, हज़रत यअक़ूब और हज़रत यूसुफ़ अलैहिमुसलाम का दीन भी वही था जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का है और वो सब भी ज़िन्दगी गुज़ारने के उसी तरीक़े की दावत देते थे जिसकी दावत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दे रहे हैं ।

इस क्रिस्से में एक तरफ़ हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का किरदार पेश किया गया है तो दूसरी तरफ़ अज़ीज़े मिस्र, उसकी बीबी, मिस्र के दूसरे बड़े घरानों की बेगमात और मिस्र के हाकिमों का किरदार भी मिलता है और दोनों की तुलना करके बताया गया है कि एक तरह का किरदार वह है जो इस्लाम कुबूल करके बतता है और दूसरा किरदार वह है जो दुनिया परस्ती और आख़िरत से बेख़ोफ़ी से पैदा होता है । अब तुम खुद अपने ज़मीर से पूछ लो कि कौन सा किरदार

बेहतर है। फिर अल्लाह तआला ने यह बात भी सामने रख दी है कि दर असल अल्लाह तआला जो कुछ करना चाहता है वह पूरा होकर रहता है। इन्सान अपनी तदबीरों से अल्लाह के मन्सूबों को राकने में कभी कामयाब नहीं हो सकता। बल्कि इन्सान अपने मन्सूबों के लिये तदबीर अपनाता है, अल्लाह चाहता है तो उसकी तदबीर के ज़रिये अपना मन्सूबा पूरा कर लेता है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों ने उन्हें अपने रास्ते से हटाने के लिये कुँवों में फँका मगर यह कुँवों ही हज़रत यूसुफ़ के उरुज का ज़रिया बन गया। इसी तरह अज़ीज़े मिस्र की बीवी जुलैय्या ने हज़रत यूसुफ़ को कैद ख़ाने भिजवाकर इस बात का बदला लिया कि उन्होंने उसका गुलाम होने के बावजूद उसकी ख़ातिश को पूरा करने से इन्कार कर दिया था। मगर यही कैद ख़ाना उनके राजसिंहासन पर बैठने का कारण बन गया। और जुलैय्या को सब के सामने अपनी ग़लती का ऐतिराफ़ करना पड़ा। इसी तरह के वेशुमार तारीख़ी वाकिआत इस हकीकत का ऐलान करते हैं कि अल्लाह जिसे उठाना चाहता है, सारी दुनिया मिलकर भी उसे गिरा नहीं सकती। इसी तरह अल्लाह जिसे गिराना चाहता है, उसे सारी दुनिया मिलकर भी उठा नहीं सकती।

सूरह यूसुफ़ से पहला सबक इन्सान को यह मिलता है कि उसे अपने मक़सद और तदबीर दोनों में अल्लाह की मुक़रर की हुई हदों से आगे नहीं जाना चाहिये। कामयाबी और नाकामी दर असल अल्लाह की मज़ी पर है। जो आदमी पाक मक़सद के लिये सीधी सीधी जाइज़ तदबीरें अपनाएगा वह यहाँ कामयाब न भी हो तो किसी रुखाई से दोचार नहीं होगा। लेकिन जो आदमी नापाक मक़सद लेकर चलेगा और उसके लिये टेढ़ी तदबीर करेगा, वह आख़िरत में यक़ीनन रुखाई का सामना करेगा।

दूसरा सबक इस क्रिसे से यह मिलता है कि अल्लाह पर पूरा पूरा भरोसा रखो और अपने सारे काम उसी के सुपुर्द करदो। जो लोग हक़ और सच्चाई के लिये कोशिश करते हैं, चाहे दुनिया उन्हें मिटाने पर तुल जाए तब भी वो इस बात को सामने रखते हैं कि सब कुछ अल्लाह के दस्ते कुदरत में है। इस यक़ीन से उन्हें असाधारण तसल्ली मिलती है और वो तमाम दुश्वारियों और रुकावटों के मुक़ाबले में अपना काम बराबर करते चले जाते हैं।

सबसे बड़ा सबक इस क्रिसे से यह मिलता है कि एक मूमिन अगर हकीक़ी इस्लामी सीरत और किरदार रखता हो और हिकमत की सिफ़त भी उस में हो तो वह अक़ला सारे मुल्क को फ़तह कर सकता है। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखिये, १७ बरस की उम्र, बिल्कुल अकेले, बे सरो सामान, अजनबी देश और फिर कमज़ोरी की इन्तिहा यह कि गुलाम बनाकर बेचे गए, इस पर मज़ीद जुल्म कि एक इन्तिहाई घिनौने इख़लाक़ी ज़ुर्म का इल्ज़ाम लगाकर जेल में बन्द कर दिया गया जिसकी कोई मीआद भी नहीं थी। इस हालत तक गिरा दिये जाने के बावजूद वो मेहज़ अपने ईमान और अख़लाक़ के बल पर ऊपर उठते हैं और सारा मुल्क उनके क़दमों तले आ जाता है।

सूरह रउद में बताया गया है कि किताने इलाही की आयतें हैं पचाई बातें नहीं हैं। इसकी हर बात एक हकीक़त है और जिन बातों की ख़बर दी जा रही है वो एक एक करके पूरी होकर रहेंगी। लेकिन अक्सर लोग ज़िद पर अड़े हुए हैं ऐसे लोग ईमान नहीं लाएंगे। फिर काइनात की उन निशानियों की तरफ़ तबज़्जह दिलाई जो कुरआन की बयान की हुई हकीक़तों को बाज़ेह करने वाली हैं और यह यक़ीन दिलाने के लिये काफ़ी हैं कि एक ग़ेज़ उसके सामने पेश होता है जो हर ख़ुली और ढकी चीज़ से वाकिफ़ है। हर शख्स के आगे पीछे उसके मुक़रर किये हुए निगारों लगे हुए हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी देखभाल कर रहे हैं।

क्रौमों की तबदीली के बारे में बताया गया कि अल्लाह किसी क्रौम की हालत नहीं बदलता जब तक कि वह क्रौम अपने औसाफ़ को नहीं बदल देती। और जब अल्लाह किसी क्रौम की शामत लाने का फ़ैसला फ़रमा लेता है तो कोई ताक़त इस फ़ैसले को टाल नहीं सकती।

हक़ और बातिल की कशमक़श को अजीब मिसाल के ज़रिये समझाया गया कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया और नदी नाले अपनी विसात के मुताबिक़ उसे लेकर चल निकल फिर जब

सैलाब उठा तो सतह पर झाग भी आ गए और ऐसे ही झाग धातों पर भी उठते हैं जिन्हें ज़ेवर बनाने के लिये पिघलाया जाता है। जो झाग है यानी वातिल वह आखिर उड़ जाता है और जो चीज़ इन्सान के लिये नफ़ा बरक़ा है यानी हक़ वह ज़मीन में ठहर जाता है। इस तरह अल्लाह मिसालों से अपनी बात समझाता है।

भला बताइये यह किस तरह मुमकिन है कि जो शरअ खुदा की नाज़िल की हुई किताब को हक़ जानता है क्या वह उस शरअ की तरह हो सकता है जो बिल्कुल ग्राफ़िल (अब्दा) है। नसीहत तो दानिशमन्द लोग ही कुबूल करते हैं। उनका तर्ज़ अमल यह है कि वो अल्लाह से किये हुए वादे को पूरा करते हैं उसे तोड़ते नहीं। जो सिला रहमी करते हैं, अपने रब से डरते रहते हैं कि कहीं उनसे बुरा हिसाब न लिया जाए, जो खुदा की रज़ा के लिये सब्र से काम लेते हैं, नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और हमने उन्हें जो रोज़ी दी है उसमें से वो अलानिया और पांशादा खर्च करते हैं और बुराई को भलाई से दफ़्त करते हैं, आखिरत का घर उन्हीं लोगों के लिये है यानी ऐसे बागात जो उनकी अबदी आरामगाह होंगे, वो खुद भी उनमें रहेंगे और उनके साथ उनके बाप दादा बीबी बच्चे जो सालेह हैं वो भी जन्नत में रहेंगे.. फ़रिश्ते हर दरवाज़े से दाख़िल होकर उन्हें सलाम करेंगे और कहेंगे तुमने दुनिया में जिस तरह सब्र से काम लिया उसकी बदौलत आज तुम इसके मुस्तहिक़ होगए। वो लोग जो अल्लाह से किये हुए वादे को तोड़ते हैं और क़तअ रहमी करते हैं, ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, वो लानत के मुस्तहिक़ हैं और उनका बुरा ठिकाना है। गोया सबसे पहले कुरआन की दावत कुबूल करके अल्लाह के रास्ते पर चल खड़े होने वालों के लिये अन्जामेकार में कामयाबी की वशारत दी गई है और उसकी मुख़ालिफ़त और मज़ाहिमत करने वालों पर अल्लाह की लानत की ख़बर दी गई। फिर उस शुबह का जवाब दिया गया कि अगर अल्लाह की नमाम इनायतों के हक़दार सिर्फ़ ईमान वाले ही है तो वो लोग क्यों रिज़क और फ़ज़ल के मालिक बने बैठे हैं जो रात दिन अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुख़ालिफ़त में सरग़म हैं।

फ़रमाया गया कि अल्लाह जिसके लिये चाहता है रिज़क कं दरवाज़े खोल देता है और जिस के लिये चाहता है तंग कर देता है। जिसका वह कुशादगी देता है उससे चाहता है कि वह अपने रब का शुक्र गुज़ार बन्दा बने और जिसके लिये तंगी करता है उससे वह चाहता है कि वह सब्र करे। इसी सब्रो शुक्र पर दीन की इमारत खड़ी है। जो लोग इस दुनिया के कंकड़ पत्थर पाकर घमन्ड में आखिरत को भूल बैठे हैं वो जब आखिरत के दिन सब्र और शुक्र करने वालों के अज़ को देखेंगे तब उन्हें अन्दाज़ा होगा कि निहायत ही हकीर चीज़ के लिये उन्होंने आखिरत की बादशाहत खो दी।

कुफ़्फ़ार के बार बार के इस मुतालिवे पर, कि कोई ऐसा ज़वरदस्त मोअजिज़ा दिखाया जाए कि माने बग़ैर चारा न रहे, चाज़ेह किया गया कि काइनात और खुद इन्सानी ज़िंदगी में जो दलीलें और निशानियाँ अल्लाह ने रखी हैं, उनसे जिन लोगों का इत्मीनान नहीं होता वो दुनिया ज़हान के मोअजिज़े भी देख लें तो भी अन्धे के अन्धे बने रहेंगे।

फिर कुफ़्फ़ार के ठहराए हुए शरीकों की हकीक़त बयान की गई कि उनकी कोई बुनियाद नहीं, ये केवल मन घड़त बातें हैं। इस फ़रेब में मुबिला होकर जिन्होंने अल्लाह के रास्ते में मुंह मोड़ा वह इस दुनिया में भी अज़ाब से दोचार होंगे और आखिरत का अज़ाब तो इस से कहीं ज़ियादा सरस्त होगा, कोई शफ़ीअ या शरीक वहाँ उन्हें बचाने वाला न होगा।

सूरए इब्राहीम में अल्लाह तआला ने शिर्क और इस्लाम के फ़र्क़ का बेहतरीन मिसाल से चाज़ेह फ़रमाया कि शिर्क के जिस निज़ाम पर तुम ज़िंदगी बसर कर रहे हो (कि अपने मन माने अहक़ाम चला रहे हो), इसकी कोई बुनियाद न ज़मीन में है न आसमान में। इसकी मिसाल गन्दगी के ढेर पर उगे हुए एक नापाक काँटेदार पौदे की है जो ज़री सी हक़त से उग्राड़ फेंका जा सकता है। अगर यह अब तक बख़्तर है तो इस वजह से कि अभी कोई हाथ ऐसा नहीं आया जो इसे उग्राड़ फेंके। अब अल्लाह ने वो हाथ पैदा कर दिये हैं तो तुम देखोगे कि कितनी जल्दी सारा बिस्सा पाक हो जाएगा।

इसके मुकाबले में इस्लाम की दावत की मिसाल एक पाकीजा फलदार दरख्त की सी है जिसकी जड़ें पाताल में उतरी हुई हैं और शाखें आसमान में फैली हुई हैं। अल्लाह तआला ईमान वालों को दुनिया में मजबूत और मुस्तहकम करेगा और आखिरत में भी सुखरूई बरसेगा। बशर्तकि वो सब और इस्तिस्लामत के साथ हक पर डटे रहें और इस राह में पेश आने वाली आजमाइश का अल्लाह पर भरोसा करने हुए मुकाबला करें। इस हकीकत को तारीख की रौशनी में वाज्हे करने के लिये हजरत मूसा अलैहिस्सलाम और दूसरे अम्बियाए किराम के वो वाकिआत पेश किये जिनसे इस पहलू पर रौशनी पड़ती है सब करने वाले और राहें हक में डटे रहने वाले गालिब आए, मुख्तलिफ़ीन तबाह कर दिये गए। लेकिन यह भी बताया गया कि मलबा उन्हीं को हासिल होगा जो पहले मरहले में सब्रो इस्तिस्लामत दिखाएंगे।

सूरए हिज्र में रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को खिताब करके यह इत्मीनान दिलाया गया कि यह कुरआन बजाए खुद एक वाज्हे हुज्जत है। अगर ये लोग इसको नहीं मान रहे हैं तो यह कोई अनोखी बात नहीं है। हमेशा से रसूलों को झुटलाने वालों की यही रविश रही है। आप को तो जो कुछ हुक्म मिला है उसको अलल ऐलान सुनाते रहिये और मुश्किलों से दामन बचाइये। हम आपकी तरफ से उनसे निपटने की काफ़ी हैं। आप तो अपने स्व की हम्दो सना करते रहिये और सिद्धा करने वालों के साथ शामिल रहिये और अपने स्व की इताअत व इबादत में लगे रहिये, यहाँ तक कि वह यकीनी वक़्त आ जाए यानी मौत या क़यामत।

सूरए नह्ल की शुरुआत ही ज़बरदस्त वारनिंग से हुई है - बस आया ही चाहता है अल्लाह का फ़ैसला, अब इसके लिये जल्दी न मचाओ। पाक है वह और बालातर है उस शिर्क से जो ये लोग कर रहे हैं। वह इस रूह यानी वही को अपने जिस बन्दे पर चाहता है, अपने हुक्म से मलाइका के ज़रिये नाज़िल फ़रमा देता है कि आगाह करो मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं है, लिहाज़ा तुम मुझी से डरो। उसने आसमान और ज़मीन को बरहक पैदा किया, उसने इन्सान को ज़रा सी बूंद से पैदा किया और देखते ही देखते वह सरीहन एक झगड़ालू हस्ती बन गया। और उन तमाम निशानियों को नज़रअन्दाज़ कर दिया कि अल्लाह ने उसकी ख़ुराक और तरह तरह के बेशुमार फ़ाइदों के लिये जानवर पैदा किये। समन्दर जैसी अर्जीमुश्शान और पुर ख़तर चीज़ को उसके लिये मुसख़्ख़र कर दिया तो क्या वह जिसने इन चीज़ों को पैदा किया और वह जो कुछ भी पैदा नहीं करते, दोनों बराबर हैं। वो जिन्हें लोग खुदा को छोड़ कर पुकारते हैं, खुद मख़लूक हैं, मुर्दा हैं न कि ज़िंदा और उनको कुछ नहीं मालूम कि उन्हें कब दोबारा ज़िंदा करके उठाया जाएगा।

इससे पहले बताया गया था कि जो लोग अपने आप को खुदा के हवाले कर दें उनके लिये यह किताब सिराते मुस्तकीम की तरफ़ रहनुमाई करेगी इन्साफ़ यह है कि जिसका जो हक़ बनता है हम बिना किसी कमी बेशी के उसको अदा करें। फिर रिश्तेदारों पर अदुल और एहसान के अलावा मज़ीद अपना माल इर्च करें। इसी तरह बदकारी, बेहयाई के कामों से और हर उस काम से जो एक शरीफ़ाना मुआशिर में अच्छा नहीं समझा जाता, हमें बचना चाहिये और अपनी ताक़त और असर से कोई नाजाइज़ फ़ायदा नहीं उठाना चाहिये। जो शक्स भी नेक अमल करेगा, मर्द हो या औरत, बशर्तकि मूमिन हो, हम उसे दुनिया में पाकीजा ज़िंदगी अता करेंगे। और आखिरत में उनके बेहतरीन अअमाल के मुताबिक़ बरधेंगे। जब भी कुरआन पढ़ने का इरादा हो तो अऊज़ोबिल्लाह पढ़नी ज़रूरी है यहाँ तक कि बीच में दुनिया की बातचीत हो तो दोबारा शुरु करने के लिये अऊज़ो पढ़नी ज़रूरी है क्योंकि कुरआन हिदायत की किताब है और शैतान कभी न चाहेगा कि बन्दा राहें रास्त पर रहे। अल्लाह ने अऊज़ो बिल्लाह पढ़ने का हुक्म देकर शैतान के शर से मेहफूज़ फ़रमाया। शैतान का तसल्लुत उन लोगों पर नहीं होता जो ईमान लाते हैं और खुदा पर भरोसा करते हैं। शैतान का जोर उन्हीं पर चलता है जो उसे अपना सरपरस्त बनाने हैं और उसके बहाने से शिर्क करते हैं।

सूरज बनी इस्राईल में उन्हें उनकी अपनी तारीख की रीशनी में बताया गया कि अगर तुम इस घमंड में हो कि अल्लाह के चहीते और मेहबूब हो तो यह खुदा का धागा देना है। तुम्हारी अपनी तारीख गवाह है कि जब तुमने खुदा से बगावत की तो तुमपर मार भी पड़ी। खुदा की रहमत के मुस्तहिक तुम उस वक़्त हुए जब तुमने इसलाह की राह अपनाई।

साथ ही मंअराज के वाक़ए को बताकर मुश्किन और बनी इस्राईल दोनों पर यह वाज़ेह कर दिया गया कि अब मस्जिदे हराम और मस्जिदे अक़सा दोनों अमानतें तुम ग़ाइनों से छीन कर इसी नबी के हवाले कर देने का फ़ैसला हो चुका है। जिसको सुख़रू होना हो वह अपनी रविश बदल कर इस रसूल की हिदायत के मुताबिक़ कर ले वरना अपनी ज़िद और सरकशी के नतीजे भुगतने के लिये तैयार हो जाओ।

इसी ज़िम्न में इज़लाक़ और तमहुन के दो बड़े उसूल बयान किये गए जिनपर ज़िंदगी के निज़ाम को क़ाइम करने के लिये मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को यह आख़िरी किताब दी गई। यह गोया इस्लाम का मयूरा है जिसे मदीने में इस्लामी रिवाज़त क़ाइम से एक साल पहले सबके सामने पेश कर दिया गया। मक्क़े के काफ़िरों के सामने भी और पहले किताब के सामने भी (और अब तमाम इन्सानों के लिये क़यामत तक यही मयूरा काफ़ी है)।

फ़रमाया गया हर इन्सान का शुगुन हमने उसके गले में डाल दिया है और क़यामत के दिन हम उसका नामाए अअमाल निकालेंगे और कहेंगे ले पढ़ ले अपना नामाए अअमाल। आज अपना हिसाब करने के लिये तू खुद ही काफ़ी है। जो सीधी राह पर होगा उसका फ़ायदा उसी को होगा। जो गुमराह होगा उसका बवाल उसी पर होगा। कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा।

फिर फ़रमाया गया हमारा क़ानून यह है कि जब तक हम पैग़म्बर न भेज दें, हम अज़ाब देने वाला नहीं और जब हम किसी बस्ती को हलाक़ करना चाहते हैं तो उसके खुशहाल लोगों को हुक्म (ढील) देते हैं वो उसमें नाफ़रमानियाँ करने लगते हैं। तब अज़ाबे इलाही का फ़ैसला उसी बस्ती पर चस्पा हो जाता है और हम उसे बरबाद करके रख देते हैं। नूह अलैहिस्सलाम के बाद हमने कितनी ही नस्लों को बरबाद किया। तेरा सब अपने बन्दों के गुनाहों से पूरी तरह बाज़वर है और सब कुछ देख रहा है। जो दुनिया चाहता है, हम जिसको जितना चाहते हैं दे देते हैं फिर उसकी किस्मत में जहन्नम लिख देते हैं जिसमें वह दाख़िल होगा। और जो आख़िरत का ख़्वाहिशमन्द हो और उसके लिये वैसी ही कोशिश करे जैसी करनी चाहिये और वह मूмин हो तो ऐसों की कोशिशें हमारे नज़दीक़ काबिले क़द्र होंगी इनको भी और उनको भी (दोनों को) हम दुनिया दे रहे हैं। यह तेरे सब का अतिथ्या है कोई इसे रोकने वाला नहीं मगर देख तो दुनिया में ही हमने एक ग़िराह को दूसरे पर कैसी फ़ज़ीलत दे रखी है और आख़िरत में उसके दर्जे और भी ज़ियादा होंगे और फ़ज़ीलत भी बढ़चढ़ कर होगी। फिर तम्बीह फ़रमाई गई कि खुदा के साथ किसी को मअवूद न बनाया जाए वरना मलामत ज़दा बेयारो मददगार बनकर बैठे रह जाओगे।

फ़रमाया गया तुम्हारे सब ने फ़ैसला फ़रमा दिया है कि (१) इबादत सिर्फ़ अल्लाह की करो। (२) माँ बाप के साथ नैक मुलूक करो। (३) रिश्तेदारों, मिस्कीनों और मुभाफ़िरों का हक़ दो। (४) फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो। (५) अगर किसी की ज़रूरत पूरी न करो, तो नमी से जवाब दे दो। (६) न कंज़ूसी करो न फ़ुज़ूल ख़र्ची, बीच की राह अपनाओ। (७) अपनी औलाद को मुफ़लिसी के डर से क़त्ल न करो। (८) ज़िना के क़रीब भी न फ़टको। (९) क़ानूनी जवाज़ के बिना किसी को क़त्ल न करो। (१०) क़ानूनी हदों से बाहर यतीम के माल के पास भी न फ़टको। (११) बाहमी क़ौलो क़रार की पाबन्दी करो। (१२) नाप तौल में कमी बेशी न करो। (१३) जिस बात का तुम्हें इल्म न हो उसके पीछे मत पड़ो। (१४) घमंड और तक़बुर की चाल न चलो। ये वो हिक़मत की बातें हैं जो तुम्हारे सब ने तुमपर वही की हैं। सीधे रास्ते पर साबित-क़दमी के लिये नमाज़ के इहतिमाम की ताकीद की और फ़रमाया नमाज़ क़ाइम करो ज़वाले आफ़ताव से लेकर रात के अन्धेरे तक और फ़ज़्र के क़ुरआन का इल्तिज़ाम करो क्योंकि फ़ज़्र में पड़े जाने वाले क़ुरआन के ख़ास तौर पर अल्लाह के फ़रिश्ते गवाह बनते हैं। और रात को तहज़ुद पड़ो ताकि तुम्हारा अल्लाह तुम्हें मक़ामे मेहमूद पर फ़ाज़ल कर दे और दुआ करो कि परवर्दिगार तू मुझे जहाँ भी ले जा, सच्चाई के साथ ले जा और जहाँ

से भी निकाल, सच्चाई के साथ निकाल और अपनी तरफ से एक इक्तिदार को मेरा मददगार बना. और एलान कर दो कि हक आ गया और बातिल मिट गया बातिल तो है ही मिटने के लिये.

हर ज़माने की जिहालतों में से एक यह है कि लोग इस गलत प्रहमी में मुन्निला रहे हैं कि बशर कभी पैगम्बर नहीं हो सकता. इसी लिये जब कोई रसूल आया तो उन्होंने यह देख कर कि यह तो खाता पीता है, बीबी बच्चे रखता है, गोश्त पोस्त का बना हुआ है, फैसला कर दिया कि यह पैगम्बर नहीं है क्योंकि यह हमारी तरह एक बशर है. और जब वह गुजर गया तो एक मुदत के बाद उसके मानने वालों में ऐसे लोग पैदा हुए जो कहने लगे वह बशर नहीं था क्योंकि वह पैगम्बर था. चुनांचे किसी ने अल्लाह का बेदा कहा और किसी ने उसको अल्लाह ही बना लिया. किसी ने कहा अल्लाह इसमें समा गया है. गरज बशरियत और नबुव्वत का इन जाहिलों के नज़दीक जमा होना एक मुअम्मा बना रहा. हालांकि बात बिल्कुल खुली है कि अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते चल फिर रहे होते तो ज़रूर हम आसमान से किसी फ़रिश्ते ही को पैगम्बर बनाकर भेजते. जब बशर ज़मीन पर बसते हैं तो उनकी रहनुमाई के लिये बशर ही को रसूल बनाया गया.

आगे बताया गया कि इस दुनिया में बज़ाहिर सरकशों और नाफ़रमानों को ढील मिलती है और पहले हक को मुख़्तलिफ़ किस्म की आजमाइशों से गुज़रना पड़ता है. यह सूरते हाल देखकर बहुत से लोग ईमान खो बैठते हैं और उनके लिये सब करना और सच्चाई पर डट रहना मुश्किल हो जाता है. इस आजमाइश में सिर्फ़ वही लोग साबित क़दम रह सकते हैं जिनपर यह बात अच्छी तरह बाज़ेह हो जाए कि यहाँ जो कुछ हो रहा है सब अल्लाह के इरादे के तहत हो रहा है और उसकी हिक़मतों के तकाज़ों के मुताबिक़ हो रहा है. लेकिन इन्सान का इल्म बहुत मेहदूद है वह अल्लाह की हिक़मतों और मसलहतों का इहाता नहीं कर सकता. इस वजह से सही तरीका यही है कि हिदायत के रास्ते में नामुआफ़िक़ और मुश्किल हालात भी पेश आएँ तो आदमी उनसे हिम्मत न हारे और अल्लाह की हिक़मत के ज़ाहिर होने का इन्तिज़ार करे. और यकीन रखे कि अगर इस दुनिया में अच्छे नतीजे न भी निकले तो आख़िरत में उसको अच्छा मक़ाम मिल कर रहेगा. इस हिक़मत इलाही पर ईमान ब यकीन और फिर मगर यही दीन की असल बुनियाद है. इस वजह से अल्लाह तआला ने जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को एक अज़ीम मुहिम यानी फिरऔन के मुक़ाबले के लिये मुत्ताख़र किया तो आपको इस सब की तरबियत के लिये एक ख़ास बन्दे के पास भेजा जिन्हें आम तौर पर हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम कहा जाता है. इस लिये कि यह चीज़ सिर्फ़ जानने की नहीं बल्कि अमली तरबियत की मुहताज है. यहाँ यह बाकिआ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके वास्ते से आपके उस दौर के साथियों को इस मक़सद से सुनाया गया कि अल्लाह के बागियों और नाफ़रमानों को जो दनदनाते देख रहे हों उससे हिरासों और मरजब होने की ज़रूरत नहीं. इस दुनिया में अगर किसी मिरकीन और गरीब की किशती में छेद कर दिया जाता है तो उसमें आइन्दा उसी की भलाई मक़सूद होती है. और अगर ज़ालिमों की किसी बस्ती में किसी गिरनी हुई दीवार को सहारा दिया जाता है तो उसमें भी किसी मज़लूम के लिये भलाई पोशीदा होती है लेकिन इन्सान का मेहदूद इल्म अल्लाह के सारे भेदों का इहाता नहीं कर सकता.

फिर एक सवाल के जवाब में एक आदिल और मुन्सिफ़ बादशाह जुलकरनैन का ज़िक्र करके क़ुरैश को इब्रत दिलाई जाती है कि एक मूमिन बन्दा जुलकरनैन था जो मश्रिक और मगरिव के तमाम इलाक़ों को जीत कर भी हर कामयाबी पर अल्लाह का शुक्रगुज़ार होता था और हर कदम अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ उठाता था और एक तुम हो कि ज़रा सा इक्तिदार मिला हुआ है तो उसके नशे में अल्लाह, आख़िरत और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सबका मज़ाक़ उड़ाते हों. बार बार मांजिज़े तलब करने के जवाब में फ़रमाया देखने वाली आँख के लिये तो इस काइवात और खुद तुम्हारी ज़िंदगी में इतनी निशानियाँ इलाह परस्ती, तौहीद और आख़िरत की भरी पड़ी हैं कि अगर समन्दर रौशनाई बन जाएं तब भी उन्हें लिखा नहीं जा सकता. पस जो यह समझता है कि उसे एक दिन अल्लाह के सामने जाना है उसे चाहिये कि किसी को अल्लाह का शरीक बनाए वग़ैर ख़ालिस एक ही खुदा की वन्दगी करे

और उसके एहकामात के मुताबिक अमल करे।

सूरए मरयम में सबसे पहले हज़रत ज़क़रिया अलैहिस्सलाम की उस दुआ का बयान किया गया जो उन्होंने अपने बुढ़ापे में और अपनी बीबी के बाँझ होने के बावजूद एक बेटे के लिये की और अल्लाह तआला ने उनकी दुआ कुबूल करके उन्हें हज़रत यहया अलैहिस्सलाम के पैदा होने की खुशख़बरी सुनाई। यह बाक़िआ हज़रत मरयम के यहाँ मोज़िज़े के तौर पर वग़ैर वाप के हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश का बाक़िआ बयान करने से पहले तमहीद के तौर पर बयान किया गया है कि हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की विलादत भी आम क़ानून से हटी हुई है कि मर्द बूढ़ा हो गया था और औरत बिल्कुल बाँझ और औलाद पैदा करने के नाएहल थी, मगर जब अल्लाह ने चाहा तो उनके औलाद हो गईं। मगर हज़रत यहया ने तो इलाह होने का दावा नहीं किया और न किसी ने उन्हें इलाह बनाया।

फिर हज़रत मरयम की पाकीज़ा ज़िंदगी और उनकी इबादत गुज़ारी का हाल बयान किया गया। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश के बारे में बताया गया कि लोगों के ऐतिराज़ के जवाब में खुद हज़रत ईसा ने पालने में ही अपने बन्दे होने और अल्लाह की तरफ़ से नमाज़ और ज़कात की हिदायत पाने की मनादी की फिर बताया कि इन बदबस्तीयों की हालत पर अफ़सोस है कि ये सब जानते बूझते अल्लाह के एक फ़रमाँबरदार बन्दे की अल्लाह का बेटा और उसकी इबादतगुज़ार माँ की अल्लाह की बीबी बना रहे हैं। ऐ नबी ! जो बातें ये लोग बताते हैं उनपर सब्र करो और अपने सब की हम्दो सना के साथ उसकी तस्बीह करो सूरज निकलने से पहले(फ़ज्र) और डूबने से पहले(अस्र) और रात के आँक़ात में तस्बीह करो (इशा) और दिन के किनारों पर भी(ज़ोहर और मग़रिब), शायद कि तुम राज़ी हो जाओ जो तुम्हें आइन्दा मिलने वाला है और निगाह उठाकर भी न देखो दुनियावी ज़िंदगी की उस शानो शौक़त की तरफ़ जो हमने उन मुश्क़लफ़्र लोगों को दे रखी है। वह तो हमने इन्हें आजमाने के लिये दी है। और तेरे सब का दिया हुआ रिज़्क हलाल ही बेहतर और हमेशा रहने वाला है कि पहले ईमान फ़ासिकों फ़ाजिरों की तरह जाइज़ और नाजाइज़ पैसे जमा करके दुनियावी चमक दमक से मरज़ब नहीं होते बल्कि वो तो जो पाक कमाई अपनी मेहनत से कमाते हैं चाहे वह कितनी ही थोड़ी क्यों न हो वही उनके लिये बेहतर है जो दुनिया से आख़िरत तक बरकरार रहेगी। फिर फ़रमाया अपने एहलो अयाल को नमाज़ की तलक़ीन करो और खुद भी इसके पाबन्द रहो। हम तुमसे कोई रिज़्क नहीं चाहते। रिज़्क तो हम खुद देते हैं और बेहतरीन अंजाम तक़्वा इश्तिहार करने वालों का है। यह न समझना कि नमाज़ पढ़ने से अल्लाह की ज़ात की कुछ मिलता है, नमाज़ पढ़ने वाला ही इससे फ़ाइदा उठाता है कि तक़्वा की सलाहियत पैदा होती है और यही परहेज़गारी उसे दुनिया और आख़िरत की मुस्तक़िल कामयाबी अता करती है।

सूरए अन्बिया के पहले चार रूक़ में इस हकीक़त की फिर याददिहानी कराई गई कि मुहासिबे का वक़्त करीब आगया है और लोगों का हाल यह है कि ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और जो ताज़ा याददिहानी अल्लाह की तरफ़ से आई है उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं। क्या ये नहीं समझते कि हमने कितनी ही बस्तियाँ को हलाक कर दिया जिनके लोग अपनी जानों पर जुल्म करते थे। वस जब उन्होंने हमारे अज़ाब की आहट पाई तो भाग खड़े हुए। हमने कहा - अब कहाँ भागते हो। इसपर वो बावेल कर रहे लगे - हाए हमारी कमबस्ती, बेशक हमही अपनी जानों पर जुल्म ढाने वालों में से थे। वो यही बावेल करते रहे यहाँ तक कि हमने उनको ख़सो ख़ाशाक और राख़ बनाकर रख दिया।

इन्सान जल्दबाज़ी के ख़मीर से पैदा हुआ इसलिये जल्दी मचा रहा है कि आख़िर अज़ाब का वादा कब पूरा होगा। काश ये कुफ़्र वाले जान सकें कि उस वक़्त जब ये दोज़ख़ के अज़ाब को न अपने चेहरों से दफ़ा कर सकेंगे, न अपनी पीठों से ओर, न कहीं से मदद हासिल कर सकेंगे। बल्कि वह घड़ी उनपर अचानक आ धमकेगी और उनको मबहूत कर देगी। हमने मूसा और हारून को हक़ ओर बातिल के बीच फ़र्क़ करने वाली कसौटी, रौशनी और याददिहानी अता फ़रमाई उनके लिये जो ग़ैब में रहते हुए सब से डरते हैं और वो क़यामत से लरज़ाँ रहते हैं और यह भी एक बाबरक़त याददिहानी है जो हमने नाज़िल

फ़रमाई है तो क्या तुम इसके मुन्किर बने रहोगे.

आगे का हिस्सा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तज़क़िरे से शुरू होता है यह बताते हुए कि हम ने उन्हें वह हिदायत व मअरिफ़त अता फ़रमाई जो उनके शायाने शान थी और वह यूँही नहीं बरश्श दी थी. बल्कि बड़े कड़े इम्तिहानों से गुज़ारकर बरश्शो थी जिनके ज़रिये उन्होंने अपने आप को इसका हक़दार साबित कर दिखाया. इस तरह यह बताना मक़सूद है कि तुम लोग अपने अन्दर तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की किसी सुन्नत पर चलने की भी सक्त नहीं रखते लेकिन उनके साथ निस्बत के दावेदार हो. और इस निस्बत के बल पर अपने आपको दुनिया और आख़िरत दोनों में बड़े से बड़े मरतबे का हक़दार समझते हो. फ़रमाया कि अल्लाह के यहाँ किसी भी खुशफ़हमी की हौसला अफ़ज़ाई नहीं की जाती. वह जिसको भी अपनी मअरिफ़त और हिक़मत अता करता है उसका ज़र्फ़ और हौसला देखकर अता करता है.

फ़िर उनकी ज़वानी का हाल बयान किया कि अगरचे वह एक बुत परस्त क़ौम और मुश्रिक और बुत बनाने वाले ख़ानदान में पैदा हुए थे लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें तौहीद का वह नूर अता फ़रमाया कि जिसकी रौशनी से दुनिया आजतक मुनब्वर है और क़यामत तक मुनब्वर रहेगी. उन्होंने होश संभालते ही अपने घर वालों और अपनी क़ौम के लोगों को दावत दी कि ये मूर्तियाँ क्या हैं जिनपर तुम धरना दिये बैठे हो. इस कमउमरी में और ऐसे माहौल में वही यह नारा लगा सकता है जिसे अल्लाह की ख़ास इनायत हासिल हो. इस सवाल का उन्हें भी वही ज़वाब मिला जो हमेशा से गुमराह लोग देते आए हैं कि हमारे बाप दादा इनकी इबादत करते आए हैं. उन्होंने पूरी बेस्त्रीफ़ी से कहा - तुम और तुम्हारे बाप दादा (जो खुद हज़रत इब्राहीम के भी अजदाद थे) सब खुली गुमराही में रहे और तुम भी हो. कोई गुमराही इस दलील से हिदायत नहीं बन जाती कि वह बाप दादा से होती चली आई है.

फ़िर हज़रत इब्राहीम ने मौक़ा पाकर सब छोटे बुतों को पाश पाश कर दिया और बड़े बुत को रहने दिया. जब हज़रत इब्राहीम पर शुबह करके उन्होंने बाज़पुर्स की तो आपने कहा - मुझसे क्या पूछते हैं, इन बुतों से ही पूछो कि इनका यह हाल किसने किया है. बल्कि मैं तो यह समझता हूँ कि यह सारी हरकत इस बड़े बुत की है. हज़रत इब्राहीम ने अपनी हिक़मत से पूरी क़ौम को ऐसे मक़ाम पर ला खड़ा किया कि उन्होंने खुद ऐतिराफ़ किया कि ये बुत क्या बताएंगे, ये तो बोल ही नहीं सकते. तो आपने कहा - फिर ये किस मर्ज़ की दवा हैं. तुम ऐसे बेबस बुतों के पूजते हो.

अपनी ग़लती मानने के बजाए क़ौम ने ख़िसियाकर आपको आग में डाल दिया. तअस्सुब में लोगों की अक़लें इसी तरह मारी जाती हैं. मगर अल्लाह ने उस आग को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिये ठंडक और सलामती बनाया. अल्लाह के लिये यह कुछ मुश्किल नहीं. वही हर चीज़ में तासीर पैदा करता है. क्या देखते नहीं कि एक ही दवा से कितने लोग अच्छे हो जाते हैं और उस दवा से जिसे मरना लिख़ा होता है उसकी तबीअत उल्टी ख़राब हो जाती है. इस पर भी लोगों की आँखें न खुलीं तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनकी बीवी और चचाज़ाद भाई हज़रत लूत अलैहिस्सलाम हिज़रत करके निकल खड़े हुए और अल्लाह ने उन दोनों को अलग अलग ठिकाने दिये. फिर सफ़ाईये तरतीब के साथ नबियों का ज़िक़्र किया गया जो सब्र और शुक्र के इम्तिहानों से गुज़रे और उनमें सौ फ़ीसदी कामयाब रहे.

इसके बाद सूरए हज़ है. यह मक्की दौर की आख़िरी सूरत है जबकि कुरैश के जुल्मों सितम से तंग आकर मुसलमानों ने मदीना हिज़रत शुरू कर दी थी और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की हिज़रत का वक़्त भी करीब आ गया था. इसमें कुरैश को खुदा के ग़ज़ब से डराते हुए और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दावत और बैतुल्लाह की तामीर करने के मक़सद की रीशनी में वाज़ेह किया गया कि इस घर के मुतवल्ली होने के अस्ल हक़दार मुश्रिकीन नहीं बल्कि वो मुसलमान हैं जिनको यहाँ से निकालने के लिये उनपर जुल्म ढाए जा रहे हैं. इस तरह कुरैश को खुदा का ग़दर और गा़सिब करार दिया गया और मुसलमानों को बशारत दी गई कि अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा. और कुरैश की जगह उनको अपनी अमानत का अमीन बनाएगा. याद करें वह वक़्त जब हमने इब्राहीम को इस घर की तामीर का

हुकम दिया था इस हिदायत के साथ कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना और मेरे घर को तवाफ करने वालों, क़याम, रुकू और सुजूद करने वालों के लिये पाक साफ़ रखना। लोगों में हज का ऐलान करदों कि वो तुम्हारे पास दूर दराज़ मक़ाम से पैदल और सवार होकर आएँ तोकि वो फ़ाइदे देखें जो उनके लिये यहाँ रखे गए हैं। और कुछ मुकर्रर दिनों में उन जानवरों पर अल्लाह का नाम ले जो उसने उन्हें बग़्शे हैं। खुद भी खाएं और ज़रूरत मन्दों को भी खिलाएं। मुराद यह कि कुरबानी का गोश्त खुद भी खा सकते हैं और मोहताज फ़कीर के अलावा दोस्त हमसाएँ और रिश्तेदारों को खिलाना भी जाइज़ है। (ज़मानए जाहिलियत के लोग कुरबानी का गोश्त खाना बुरा समझते थे)। फिर अपना मेल कुचैल दूर करें। हज और कुरबानी के बाद एहराम खोल दें हंजामत कराएँ और नहाएँ धोएँ। अगर नज़्र मानी हो तो नज़्र पूरी करें और ख़ानए काबा का तवाफ़ करें।

यह था तामीर काबा का मक़सद कि जो कोई अल्लाह की काइम की हुई हुस्मतों का एहतिराम करे तो यह अल्लाह के नज़दीक उसके लिये बेहतर है। फिर बताया गया कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये मवेशी जानवर हलाल किये। बहीरा, साइमा, बसीला, हाम - ये मुख्यलिफ़ जावरों की मुख्यलिफ़ हालतें थीं, इन्हें छोड़ दिया जाता। पहले अरब इनसे ख़िदमत लेना, ज़िबह करना, फ़ाइदा उठाना हाराम समझते थे। अल्लाह ने तमाम मवेशी हलाल किये हैं सिवाए उन जानवरों के जो पहले बताए जा चुके हैं। पस बुतों की गन्दगी से बचो और झूठी बातों से गुरेज़ करो। एकसू होकर अल्लाह के बन्दे बनो, उसके साथ किसी को शरीक न करो। जो कोई अल्लाह के साथ शरीक करे तो गोया वह आसमान से गिर गया और परिन्दों ने उचक लिया। हवा ने उसे ऐसी जगह फेंक दिया जहाँ उसके चीथड़े उड़ें जाएँ।

जाहिलियत के ज़माने में मुश्किन बुतों के नाम पर जानवर ज़िबह करके उसका खून और गोश्त बुतों पर चढ़ाते थे और अल्लाह के नाम की कुरबानी का खून गोश्त काबे के पास लाकर रखते थे और खून दीवारों पर मलते थे। वो समझते थे कि कुरबानी का यह हिस्सा अल्लाह को पहुंचता है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया खून और गोश्त नहीं बल्कि अल्लाह के यहाँ तुम्हारा जज़बए कुरबानी पहुंचता है।

सूरए नूर के तीन रुकू का खुलासा ऊपर पेश किया गया था। यह सूरा मदनी है इससे पहली **सूरए अल मूमिनून** मक्की थी। इसमें ईमान के जो तकाज़े जैसे कि नमाज़ों में खुशूओ खुजूअ, लगवियात से परहेज़, तज़क़ियए नफ़स, शर्मगाहों की हिफ़ाज़त और जिन्सी जज़वात काबू में रखना, अपनी अमानतों और क़ौलो करार की पासदारी, इनके असरात ज़ाहिर हैं कि मक्का में रहते हुए मुसलमानों की इत्किरादी ज़िंदगियाँ ही में उभर सकते थे इसलिये कि मक्के में उनकी कोई इज्तिमाई और मुअसिर कुव्वत नहीं थी। लेकिन हिजरत के बाद जब मुसलमान मदीने में जमा हो गए और उनकी एक इज्तिमाई और सियासी शकल बन गई तब वक़्त आया कि उस ईमान के तकाज़े उनकी मुआशिरती ज़िंदगी में भी नुमायाँ हों। चुनांचे जिस रफ़्तार से हालात साज़गार होते गए, मुआशिरे की इस्लाह के अहक़ाम नाज़िल होते गए और ईमान की नूरानियत जो अब तक सिर्फ़ अफ़राद तक मेहदूद थी, अब एक पूरे मुआशिरे को मुनब्वर करने लगी। **सूरए नूर** इसी सिलसिले की एक सूरा है जिसमें ईमान वालों को उन अहक़ामात और हिदायत से आगाह किया गया है जो उनके नए तशक़ील पाने वाले मुआशिरे को ईमान के असरात से मज़ीद फ़ायदा पहुंचाने और ईमान की नफ़ी करने वाले अनासिर से मेहफूज़ रखने के लिये ज़रूरी थे।

सूरए नूर की शुरुआत ही में फ़रमाया गया कि यह एक अज़ीम सूरा है। हमारा उतारा हुआ फ़रमान, जो अहक़ाम दिये जा रहे हैं उनकी हैसियत फ़र्ज़ की सी है जिनकी इताअत वे चूना चरा की जानी चाहिये। फिर ज़िना का ज़िक्र किया गया क्योंकि समाज के इन्तिशार और ख़राबी में सबसे ज़ियादा इसी का दग़ल है। समाज के इस्तिहक़ाम का इन्तिशार इस बात पर है कि रहम के रिश्तों की पाकीज़गी बरकरार रखी जाए, उनका एहतिराम किया जाए और उन्हें हर तरह के ख़लल और बिगाड़ से मेहफूज़ रखा जाए। ज़िना इस पाकीज़गी को ख़त्म करके समाज को बिलआख़िर जानवरों का एक रेवड़ बना कर रख देता है। रिश्तों पर से बाहमी एतिमाद उठ जाता है। इसी लिये इस्लाम ने पहले दिन से इस इन्तिशार को रोकने

के लिये तफसील से अहकाम जारी किये और ज़िना की सज़ा को अल्लाह का दीन करार दिया। आजकल यह फ़लसफ़ा खड़ा किया गया है कि जो लोग जुर्म करते हैं वह ज़हनी बीमारी के सबब करते हैं इसलिए वो सज़ा के नहीं बल्कि हमदर्दी के मुस्तहिक हैं, उनकी तरबियत और इस्लाह की जानी चाहिये। इस फ़लसफ़े की वजह से खुदा की ज़मीन गुन्डों और बदमआशों से भर गई है और चारों ओर ज़िना करने वालों की हमदर्दी में लोग यहां तक कि मुसलमान भी नज़्ज़ोविल्लाह खुदा से ज़ियादा रहीम बन गए हैं।

समाज को खराबियों से बचाने के लिये जो अहकाम दिये गए उनमें से कुछ ये हैं -

(१) मुसलमान मर्द और औरत का हक यह है कि दूसरे लोग उनके बारे में अच्छे गुमान रखें और जब तक दलील से किसी का ग़लत होना साबित न हो जाए, सुनी सुनाई बातों पर कोई फ़ैसला नहीं करना चाहिये। (२) शरीर लोगों को भी खुली घूट नहीं मिलनी चाहिये बल्कि उन्हें बुराई से रोकना चाहिये और मसनून तरीक़ों की तलकीद करनी चाहिये। (३) बदमआश लोग अच्छे समाज को बरदाश्त नहीं कर सकते इस लिये बेहयाई का चर्चा करने हैं मगर यह बात अल्लाह के नज़्ज़दीक बहुत बुरी है। बेहयाई फैलाने वालों के लिये दुनिया और आख़िरत में रुसवा करने वाला अज़ाब है। (४) बे इजाज़त किसी के घर के अन्दर दाख़िल नहीं होना चाहिये। तीन बार इजाज़त मांगने पर भी कोई ज़वाब न आए तो वापस लौट जाना चाहिये। (५) औरत और मर्द दोनों को आमना सामना होने पर निगाहें नीची रखने का हुक्म दिया गया क्योंकि दोनों के बीच सबसे पहला कारिद निगाह होती है। (६) तफ़सियाती इश्तिआल से बचने के लिये बावकार लिबास पहनने और दुपट्टा ओढ़ने को ज़रूरी करार दिया गया जिससे गर और ग़ला छुपा रहे यहाँ तक कि सीना भी ढक जाए। (७) बेवा औरतों और लौंडी व गुलाम तक का निकाह करने की तालीद की गई और कहा गया कि जब कोई निकाह की उम्र को पहुंच जाए तो लाज़िमन निकाह का बन्दोबस्त होना चाहिये।

इसके बाद काइनात की निशानियों पर गौर करने की दावत दी गई कि इस काइनात में तमाम इश्तिआरात और तसरूफ़ात का मालिक अल्लाह है उसका कोई शरीक नहीं। हर चीज़ उसी की हमद और तस्बीह करती है। इस लिये इंसानों का भी फ़र्ज़ है कि उसपर ईमान लाएं, उसकी इबादत और इताअत में किसी को शरीक करके उसके मज़ब के मुस्तहिक न बनें। यहाँ इशारा है इस बात की तरफ़ कि अल्लाह के हुक्म के खिलाफ़ किसी की इताअत न की जाए। हमारे यहाँ एक बीमारी यह फैला हुई है कि शौहर अगर बेहयाई आर बेपर्दिगी चाहता है तो औरत यह कहकर बही रविश अपना लेती है कि शौहर की मर्जी यही है, इस का कोई जवाज़ नहीं।

आगे मुनाफ़िक्कों का तम्बीह की गई कि उन्होंने यह रविश अपना रखी है कि अपने मफ़ाद की हद तक खुदा और रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का कहना मानते हैं और मफ़ाद के खिलाफ़ उनके हुक्म को टाल जाते हैं। यह रविश अब नहीं चलेगी। मानना है तो पूरी यकसूई से खुदा और रसूल का हुक्म मानो वरना खुदा को तुम्हारी कोई परवाह नहीं है। रसूल के सच्चे साथियों को निहायत वाज़ेह अल्फ़ाज़ में खुशख़बरी दी गई कि ज़मीन की खिलाफ़त तुम्हें मिलेगी और दीन के दुश्मन और मुख़ालिफ़ीन तुम्हारा और दीन का कुछ न बिगाड़ सकेंगे। तुम नमाज़ का एहतिमाम करो, ज़कात अदा करते रहो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इताअत पर पूरी दिलजमई से डटो रहो। जल्द वह वक़्त आने वाला है कि खुदा ख़ाफ़ की हालत को अमन और इत्मीनान से बदल देगा।

सूरत के आख़िर में कुछ मआशिरती अहकामात दिये गए हैं। जैसे कि घर के नौकर चाकर और नाबालिग बच्चों को चाहिये कि इन तीन औज़ात में इजाज़त लेकर कमरे में दाख़िल हों (१) फ़त्र नमाज़ से पहले (२) दोपहर को जब कपड़े उतारकर लेटने हो (३) इशा की नमाज़ के बाद, ये तीन औज़ात तुम्हारे पर्दे के हैं। इन औज़ात के अलावा विला इजाज़त आए तो तुम्हारे ऊपर और उनपर कोई गुनाह न होगा।

फिर यह बताया गया कि बच्चे जब बड़े हो जाएं तो चाहिये कि इसी तरह इजाज़त लेकर आया करें जिस तरह उनके बड़े इजाज़त लेते रहे हैं। जो औरतें अर्धे उम्र की हैं और उन्हें निकाह में दिलचस्पी न

हो वो अगर अपनी चादर उतार कर रख दें तो उनपर कोई गुनाह नहीं। बशर्तकि जीवन की नुमाइश करने वाली न हों। फिर भी वो एहतियात करें और हयादारी बरतें तो उनके हक में अच्छा है।

अब **सूरए अल फुरकान** निहायत मुअस्सिर अन्दाज़ में शुरू होती है। बड़ी ही बाबरकत है वह ज्ञात जिसने अपने बन्दे पर हक और बातिल के बीच फर्क कर देने वाली किताब उतारी ताकि वह दुनिया वालों को होशियार करदे कि वह ज्ञात आसमानों और ज़मीन की बादशाही की मालिक, किसी बेटे या बादशाही में किसी की शिरकत से पाक है। उसने हर चीज़ को पैदा किया फिर उसकी तकदीर मुकर्रर की। लोगों ने ऐसी हस्ती को छोड़कर उन्हें मअबूद बना लिया जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते बल्कि खुद पैदा किये जाते हैं, जो न जिला सकते हैं न मार सकते हैं।

सूरत के ख़ातिमें पर खुदा के अस्ल बन्दे कहलाने के मुस्तहिक अफ़राद का नक्शा खींचा है। रहमान के अस्ल बन्दे वो हैं जो नर्म चाल चलने वाले, जाहिलों से बहस में न उलझने वाले, इबादत गुज़ार, अज़ाब से बचने की दुआएं मांगने वाले, एतिदाल के साथ ख़र्च करने वाले, नाहक किसी का हक न मारने वाले, बदकारी, झूठी गवाही और लख बातों से बचने वाले और अपने स्व की आयतों का गहरा असर कुबूल करने वाले हैं, ऐसे बन्दों का जन्नतों में शानदार इस्तिक्वाल होगा।

सूरए शुअरा की शुरुआत इन अल्फ़ाज़ से होती है - ऐ मुहम्मद ! क्या आप अपनी जान इस ग़म में ख़ां देंगे कि ये लोग ईमान क्यों नहीं लाते। हम चाहें तो इनके मुतालिबे के मुताबिक आसमान से ऐसी निशानी नाज़िल कर सकते हैं कि इनकी गर्दन उसके आगे झुक जाएं। मगर इस तरह का जबरी ईमान हमें नहीं चाहिये। हम चाहते हैं कि लोग अक्ल और समझदारी से काम लेकर ईमान लाएं।

सूरए नमल में यह वाज़ेह फ़रमा दिया कि इस किताब को अल्लाह ने हिदायत और बशारत बनाकर नाज़िल किया है लेकिन इसपर ईमान बही लोग लाएंगे जिनके दिलों में आख़िरत का ख़ौफ़ है। जो लोग दुनिया के ऐशों आराम में मगन हैं वो अपने मशगलों को छोड़ नहीं सकते उनके अमाल उनकी निगाहों में इस तरह ख़शनुमा बना दिये गए हैं कि अब कोई याददिलानी और डर उनपर कारगर नहीं हो सकता। इस सिलसिले में उनके सामने तीन किस्म की सीरतों के नमूने रखे गए - एक नमूना फ़िरऔन, कौमे समूद के सरदारों और कौमे लूत के सरकशों का जिनकी सीरत आख़िरत की जवाबदारी के तसबुर से ख़ाली थी और इसके नतीजे में उन्होंने नफ़्स की बन्दिगी इस्त्रियार की, किसी निशानी को भी देखकर ईमान लाने को तैयार न हुए बल्कि उल्टे उन लोगों के दुश्मन बन गए जिन्होंने उन्हें नेकी की तरफ़ बुलाया। उन्होंने अपनी बदकारियों पर इसरार किया आख़िर उन्हें अल्लाह के अज़ाब ने पकड़ा और एक लम्हे पहले भी उन्हें हाश न आया।

दूसरा नमूना हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का है जिन्हें अल्लाह ने दौलत, हुकूमत और शौकतो हशमत से इस पैमाने पर नवाज़ा था कि मक्के के कुम्हार ख़्वाब भी न देख सकते थे। लेकिन इसके बावजूद अपने आपको खुदा के हुज़ूर जवाबदेह समझते थे और उन्हें एहसास था कि उन्हें जो कुछ हासिल है वह सब खुदा की अता से हासिल है इसलिये उनका सर हमेशा उस हक़ीक़ी इनाम देने वाले के आगे झुका रहता और नफ़्स के घमन्ड का ज़रा सा शाइबा भी उनकी सीरत में नहीं पाया जाता था।

तीसरा नमूना मल्कए सबा का है जो तारीख़े अरब की निहायत दौलत मन्द कौम की हुक्मरान थी। उसके पास वो तमाम अख़्बाब जमा थे जो किसी भी इन्सान को घमन्ड और सरकशी में मुज्जिला कर सकते थे और सरदाराने कुरैश के मुकाबले में लाखों दर्जे ज़ियादा हासिल थे। फिर वह एक मुश्रिक कौम से तअल्लुक रखती थी, बाप दादा की तकलीद की बिना पर भी और अपनी कौम में सरदारी बरकरार रखने की ख़ातिर भी उस के लिये शिर्क के दीन को छोड़कर तौहीद के दीन का अपनाना इससे कहीं ज़ियादा मुश्किल काम था जितना किसी आम मुश्रिक के लिये हो सकता है। लेकिन जब उसपर हक़ वाज़ेह हो गया तो कोई चीज़ उसे हक़ को कुबूल करने से न रोक सकी क्योंकि गुमराही सिर्फ़ इस वजह से थी कि उसकी

आँख ही मुश्किलाना माहौल में खुली थी लेकिन नफस की बन्दिगी और स्वादिशात की गुलामी का मर्ज़ उसपर मुसल्लत नहीं था। इसलिये खुदा के हुज़ूर जबाबदिही का एहसास उसके ज़मीन में मौजूद था इसी वजह से उसे हक़ कुबूल करने की सआदत हासिल हुई।

इसके बाद काइनात की चन्द नुमायाँतरीन मशहूर हज़ाइक की तरफ़ इशारे किये गए हैं। और पूछा गया है कि अल्लाह बेहतर है या वो मअबूद जिन्हें लोग खुदा का शरीक बनाए बैठे हैं। फिर बनावटी मअबूदों के मुतअल्लिक जो लोग यह ऐतिक्वाद रखते हैं कि उन्हें ग़ैब का इल्म हासिल है, इसकी तर्दीद की गई। और फ़रमाया गया अल्लाह के सिवा आसमान और ज़मीन में कोई ग़ैब का इल्म नहीं रखता और जिन दूसरों के बारे में यह गुमान किया जाता है कि वो भी ग़ैब का इल्म रखते हैं और इसी बिना पर उन्हें खुदाई में शरीक ठहरा लिया गया है, उन को तो अपने मुस्तक़बिल तक की ख़बर नहीं है। वो नहीं जाते कि क़यामत की घड़ी कब आएगी और कब अल्लाह तआला उनको दोबारा उठाकर खड़ा करेगा, और क्या गुज़रेगी उस रोज़ जब सूर फूँका जाएगा और हौल ख़ा जाएंगे वो सब जो आसमान और ज़मीन में हैं सिवाए उनके जिन्हें अल्लाह हौल से बचाना चाहेगा और सब कान दबाए उसके हुज़ूर हाज़िर हो जाएंगे। आज तुम पहाड़ों को देखते हो और समझते हो कि वो ख़ूब गड़े हुए हैं मगर उस वक़्त ये बादलों की तरह उड़ रहे होंगे। यह अल्लाह की कुदरत का करिश्मा होगा जिसने हर चीज़ को हिक़मत के साथ उस्तुवार किया है। वह ख़ूब जानता है कि तुम लोग क्या कर रहे हो। जो शस्त्र भलाई लेकर आएगा उसे ज़ियादा बेहतर सिला मिलेगा और ऐसे ही लोग उस दिन हौल से मेहफूज़ होंगे और जो बुराई लेकर आएगा ऐसे सब लोग औंधे मुँह आग में फेंक दिये जाएंगे। क्या तुम लोग इसके सिवा कोई और बदला पा सकते हो, जैसा करो, वैसा भरो।

इन से फ़रमा दीजिये कि मुझे तो यही हुक्म दिया गया है कि इस शहर यानी मक्के के ख की बन्दिगी करूं जिसने इस हरमे मुहतरम बनाया है और जो हर चीज़ का मालिक है। मुझे हुक्म दिया गया है कि मुस्लिम यानी फ़रमाँवरदार बनकर रहूं और यह कुरआन पढ़ कर सुनाऊँ अब जो हिदायत इस्त्रियास करेगा और जो गुमराह होगा वह अपने किये का खुद ज़िम्मेदार होगा, इन से कह दीजिये कि मैं तो बग़ ख़बरदार करने वाला हूँ।

सूरए अल-क़सस में उन शुबहात को दूर किया गया है जो पहले मक्का नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम की रिसालत पर कर रहे थे और उनके उन बहानों रद किया गया है जो ईमान न लाने के लिये पेश कर रहे थे। इस गरज़ के लिये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का क्रिस्सा बयान किया गया और चन्द हज़ाइक ज़हन नशीन कराए गए। मसलन जो कुछ अल्लाह तआला करना चाहता है उस के लिये ग़ैर मेहसूस तरीक़े पर अस्बाब फ़राहम कर देता है। जिस बच्चे के हाथों फ़िरऔन का तज़ना उलटता था, अल्लाह ने उस बच्चे की परवरिश फ़िरऔन के घर में करा दी और फ़िरऔन यह न जान सका कि किसकी परवरिश कर रहा है। अपने खुदा से लड़ कर कौन कामयाब हो सकता है।

इसी तरह बताया गया कि नबुच्चत की ज़िम्मेदारी बड़े ज़शन मनाकर और आसमान व ज़मीन में ज़बरदस्त ऐलान करके नहीं दी गई। तुम हैरत करते हो कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम की चुपकें से नबुच्चत कैसे मिल गई। मगर मूसा अलैहिस्सलाम को भी इसी तरह रस्ता चलते हमने नबुच्चत दे दी थी कि किसी को कानों कान ख़बर न हुई कि आज- तूरे सीना की वादिये ऐमन में क्या बाकिआ पेश आया। खुद हज़रत मूसा भी एक पल पहले न जानते थे कि उन्हें क्या चीज़ मिलने वाली है। वह आग लेने गए और पैगम्बरी मिल गई। फिर यह कि जिस बन्दे से अल्लाह कोई काम लेना चाहता है वह बग़ैर किसी लाब लश्कर और सरो सामान के उठता है। बज़ाहिर कोई ताक़त उसकी मददगार नहीं मगर बड़े बड़े लाब लश्कर वाले आख़िर कार उसके मुक़ाबले में बेवस हो जाते हैं। आज जो निरबत तुम अपने और मुहम्मद के बीच पा रहे हो उससे कहीं ज़ियादा फ़र्क़ मूसा और फ़िरऔन की ताक़त के दरमियान था, मगर देख ला कौन जीता और कौन हारा।

सीरते इब्ने हिशाम में है कि हिज़रते हवशा के बाद जब नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम की बेअसत

और दावत की खबरें हवशा में फैलीं तो वहाँ से बीस कं करीब ईसाईयों का एक गिरोह आया और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मस्जिद हाराम में मिला। कुर्श के बहुत से लोग भी वहाँ मौजूद थे। ईसाई वपद ने आपसे सवालियात किये, आपने जवाब दिया और कुरआन की आयतें उन्हें सुनाईं। उनकी आँखों से आँसू जारी हो गए और वो ईमान ले आए। मन्त्रालिस बरख्रास्त होने के बाद अबूजहल और उसके साथियों ने रास्ते में उन्हें जा लिया और उन्हें मलामत की। इसपर उन्होंने कहा - तुमपर सलामती हो, हम जिहालत वाज़ी नहीं कर सकते। हमें हमारे तरीक़े पर चलने दो तुम अपने तरीक़े पर चलते रहो हम अपने आपको ज़ान बूझ कर भलाई से मेहरूम नहीं रख सकते। इस ज़िम्न में ये आयत नाज़िल हुई कि जिन लोगों को इस से पहले हमने किताब दी थी वो इस कुरआन पर ईमान लाते हैं। उन्हें जब यह कुरआन सुनाया जाता है तो वो कहते हैं हम इसपर ईमान लाए बाक़ई यह हक़ है हमारे ख़ की तरफ़ से, हम तो पहले ही मुस्लिम हैं। ये लोग हैं जिन्हें उनका अज़्र दूना दिया जाएगा (पिछले नबी पर और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने की वज़ह से) उस साबित कदमी के बदले जो उन्होंने दिखाई। वो बुराई को भलाई से दफ़ा करते हैं। हम उन्हें जो रोज़ी देते हैं उसमें से वो अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं। जब उन्होंने बेहदा बात सुनी, वो किनाराक़श हो गए और कहा हमारा अमल हमारे साथ और तुम्हारा अमल तुम्हारे साथ है। तुमको सलाम है। हम जाहिलों का सा तरीक़ा नहीं अपनाना चाहते। ये नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ! आप त्रिसे चाहें हिदायत नहीं दे सकते। मगर अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। वह ख़ूब जानता है कौन हिदायत कुबूल करने वाले हैं।

आगे की आयतें आपके चचा अबूतालिब के बारे में उतरीं। उनका आख़िरी वक़्त आया तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी हृद तक इत्तिहाई कोशिश की कि वह कलिमा पढ़ लें मगर उन्होंने आवाई मज़हब पर ही जान देने को तरज़ीह दी। खुलासा यह है कि अल्लाह तआला मक्के वालों को ग़ैरत दिला रहा है कि तुम अपने घर आई हुई नेमत को दुकरा रहे हो हालांकि दूर दूर से लोग इस की ख़बरे सुन सुन कर आ रहे हैं इसकी क़द्र पहचानकर इससे फ़ाड़दा उठा रहे हैं। तुम किन्तुने बदनसीब हो कि इससे मेहरूम हो। आपको ख़िताब करके यह बात कही जा रही है कि आप चाहते हैं कि क़ौम के लोग अज़ीज़ो अक्राबिब ईमान ले आएँ मगर हिदायत तो अल्लाह के इस्तिवार में है। वह इस नेमत से उन्हीं लोगों को फ़ैज़याब करता है जिनमें वह हिदायत को कुबूल करने की आमादगी पाता है। तुम्हारे रिश्तेदारों में अगर यह ज़ाहिर मौजूद न हो तो उन्हें यह फ़ैज़ कैसे नसीब हो सकता है।

सूरए अन्कवूत की आयतों में पहले ईमान में अज़म और हिम्मत पैदा करने के साथ साथ कुपकार को समझने का पहलू भी छूटने नहीं पाया। तौहीद और आख़िरत दोनों हकीक़तों को दलीलों के साथ उनके सामने बयान किया गया। फ़रमाया अगर तुम उन लोगों से पूछो कि ज़मीन और आसमान को किसने पैदा किया और चाँद और सूरज को किसने तुम्हारी ख़िदमत पर लगाया है तो ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह ने ! फिर ये कैसे धोका खा रहे हैं अगर तुम इनसे पूछो कि आसमान से पानी किसने बरसाया और उसके बाद मुर्दा ज़मीन का ज़िंदगी अता की, तो वो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने ! कहो अल्हम्दु लिल्लाह, यानी जब सारे काम अल्लाह कर रहा है तो फिर हम्द और तारीफ़ और इयादत भी उसी की होनी चाहिये। यह दुनिया की ज़िंदगी कुछ भी नहीं मगर एक खेल और दिल का बहलावा है। यानी इसकी हकीक़त बस इतनी सी है जैसे थोड़ी देर के लिये खेल कूद लें और फिर अपने घर को सिधारे। यहाँ जो बादशाह बन गया वह हकीक़त में बादशाह नहीं है बल्कि बादशाही का (ड्रामा) खेल कर रहा है। एक वक़्त आता है जब उसका यह खेल ख़त्म हो जाता है और उसी तरह ख़ाली हाथ ख़ुबसत हो जाता है जिस तरह दुनिया में आया था। असल ज़िंदगी का घर तो आख़िरत का घर है, काश ये लोग जानते।

क्या ये लोग नहीं देखते कि हमने चारों तरफ़ लूटमार करने वालों के बीच मक्के को पुर अम्न हरम बना दिया है, फिर भी ये वातिल को मानते हैं और अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं। क्या ऐसे लोगों का टिकाना जहन्नम नहीं है। जो लोग हमारी ख़ातिर मुजाहिदा करेंगे, उन्हें हम अपने रास्ते की तरफ़ हिदायत देंगे और यकीनन अल्लाह दीन के काम करने वालों के साथ है।

अब **सूरए रूम** शुरू होती है. ६१५ ईसवी में ईरानियों ने रूमियों पर ग़लबा हासिल कर लिया. इसी साल मुसलमानों ने हबशा की तरफ़ हिजरत की. रूम पर आतिशपरस्तों के कब्ज़े से लोगों में चर्चा होने लगा कि आसमानी मज़हब मानने वाले आग की पूजा करने वालों से हार गए. इस बात को मुश्रिकों ने अपने मज़हब की सच्चाई की दलील समझा. चुनांचे ईरान के बादशाह ख़ुसरो परवेज़ ने बैतुल मक़दिस पर कब्ज़ा करके हिरक़िल को ख़त लिखा - तू कहता है कि तुझे अपने ख़ब पर भरोसा है, क्यों न मेरे ख़ब ने यरोशलम को मेरे हाथ से बचा लिया. आज भी दुनिया में यही हो रहा है कि कम ज़र्फ़ों का दुनिया में ज़रा सी कामयाबी होती है तो फ़ौरन अल्लाह से मन्सूब मज़हब (दीने इस्लाम) का मज़ाक़ उड़ाते लगते हैं. इसी तरह अरब के मुश्रिक भी कहने लगे थे कि मुसलमानों का दीन भी इसी तरह मिटा दिया जाएगा.

इस पर अल्लाह तआला ने यह सूरात नाज़िल फ़रमाई. फ़रमाया गया - हाँ, करीब की सरज़मीन में रूमी मग़लूब हो गए हैं मगर चन्द साल के अन्दर अन्दर वो ग़ालिब आ जाएंगे. और यह दिन वह होगा जब अल्लाह की दी हुई फ़तह से पहले ईमान ख़ुश हो रहे होंगे. इसमें दो बातों की पेशीनगोई की गई, एक यह कि रूमी ग़ालिब आएंगे, दूसरी यह कि मुसलमानों का भी फ़तह नसीब होगी. किसी को यकीन नहीं आता था कि यह पेशीनगोइयाँ पूरी हो सकती हैं. चुनांचे कुफ़रान ने ख़ूब मज़ाक़ उड़ाया और आठ साल तक रूमी भी हार पर हार खाते रहे. यहाँ तक कि क्रैसर कुस्तुनतुनिया छोड़ कर त्यूनिस में पनाह लेने पर मजबूर हो गया. और मुसलमानों पर मक्के वालों के जुल्म इतिहा को पहुँच गए. ६२२ ईसवी में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हिजरत करके मदीना तशरीफ़ लाए. ६२४ ईसवी में हिरक़िल ने आज़र बाइज़ान में घुसकर ईरानियों पर पुश्त से हमला किया और ईरान के आतिशकन्द की ईंट से ईंट बजा दी. इधर मुसलमानों पर मक्के के मुश्रिकों ने बद्र के मक़ाम पर हमला किया मगर अल्लाह ने उनका ज़ार तोड़ कर रखदिया और मुसलमानों को तारीख़ की अज़ीमुशान फ़तह नसीब हुई और इस तरह दोनों पेशीनगोइयाँ सच साबित हुई.

सूरए रूम से यह बात सामने आ गई कि इन्सान बज़ाहिर वही कुछ देखता है जो उसकी आँखों के सामने होता है मगर इस ज़ाहिर के पदों के पीछे जा कुछ है उसकी उसे ख़बर नहीं होती. जब यह ज़ाहिरबीनी दुनिया के ज़ग़ ज़रा से मामलात में ग़लत अन्दाज़ों का सबब बनकर बाज़ औकात इन्सान को बड़े मुक़सान में डाल देती है, तो फिर पूरी ज़िंदगी के पूरे सरमाए, माल, औलाद, जायदाद सबको दाव पर लगा देना - कि खुदा परस्ती के बजाय दुनिया परस्ती पर चलने लगना कितनी बड़ी ग़लती है. रूम और ईरान के मामले का रुख़ आख़िरत के मज़मून की तरफ़ फेरते हुए बहुत अच्छे तरीक़े से समझाया गया है कि आख़िरत मुमकिन भी है और मअकूल भी, इसकी ज़रूरत भी है इन्सान की ज़िंदगी के निज़ाम को दुरुस्त रखने के लिये भी यह ज़रूरी है कि आदमी आख़िरत का यकीन रखकर मौजूदा ज़िंदगी का प्रोग्राम बनाए वरना वही ग़लती होगी जा ज़ाहिर पर ऐतिमाद करके बड़े बड़े फ़ैसले करने से अक्सर होती है.

सूरए लुक़मान में अल्लाह तआला ने हज़रत लुक़मान की वो नसीहतें बयान की हैं जो उन्होंने अपने बेटे को की थीं. पहले अरब हज़रत लुक़मान की हिक़मत और दानिश पर फ़ख़र करते थे. और उनके किस्से सारे अरब में मशहूर थे. अल्लाह ने इसी से इस्तिदलाल करते हुए बताया है कि हज़रत लुक़मान ने भी अपने बेटे को वही नसीहतें कीं जिनकी दावत यह किताब दे रही है. यह इस बात का सुबूत है कि अक्ले सलीम इस दावत के हक़ में हैं और जो लोग इसकी मुख़ालिफ़त कर रहे हैं वो दर अस्ल अक्ले सलीम और फ़ितरत से जंग कर रहे हैं. साथ ही इस बातकी तरफ़ भी इशारा हो गया कि लुक़मान अपने बेटे को जिन बातों पर अमल करने के लिये इस दिल-सोज़ी से नसीहत करते थे आज उन्हीं बातों से रोकने के लिये बापों की तरफ़ से बेटों पर सितम दाय जा रहे हैं.

सबसे बड़ी बात यह कि उन्हें बताया गया कि उनके अन्दर भी जो लोग सही फ़िक्क़ और दानिश रखने वाले गुज़रे हैं उन्होंने भी इन्हीं बातों की तालीम दी है जो पैग़म्बर दे रहे हैं. यानी यही बेटे इन्सानी फ़ितरत के मुताबिक़ हैं. आज भी यह बात मल्हूज़ रहे कि मगरिबी फ़लसफ़ी जब अख़लाक़ियात पर बहस करते

हैं तो वो भी उसकी बुनियाद आम अक्ल के जाने पहचाने और जाने माने उसूलों पर ही रखते हैं। मगर आग्रिशन और खुदा का इन्कार करने की वजह से वो यह नहीं बता पाते कि इन्सान को आग्रिशन नेकी क्यों करनी चाहिये और बदी से क्यों बचना चाहिये। अस्ल बुनियाद यानी अपने पैदा करने वाले को राजी करना और उसकी नाराज़गी से बचना, बस इससे भागते हैं। इसकी सज़ा मिली है कि तमाम अखलाकियात बेबुनियाद और बेमानी होकर रह गई हैं। इन फ़लसफ़ियों ने बुनियाद यह बताई है कि फ़ायदा पहुंचे, लज्जत मिले, खुशी हासिल हो और ज़ियादा से ज़ियादा यह कि फ़र्ज़ बराए फ़र्ज़, यानी ड्युटी है इसे ड्युटी समझकर अदा करो। नतीजा यह निकला है कि नफ़्स परस्ती और हवसनाकी को खुशी कहा जाता है और इसी को ज़िंदगी का मक़सद बना लिया गया है। महबूत के रिश्ते भी मअसूमियत और इन्सानियत से ख़ाली हो गए हैं और सिर्फ़ नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करने का नाम महबूत रख लिया गया है। इस फ़लसफ़े ने उनकी सब अच्छी तालीमात का हुलिया बिगाड़ दिया है। ख़ानदानी निज़ाम के बख़्शिये उधड़ गए हैं और मफ़ाद परस्ती के सिवा कोई रिश्ता काबिले एहतियाम नहीं रह गया है।

इसके बरख़िलाफ़ कुरआन न सिर्फ़ अख़लाकियात बल्कि सारे दीन की बुनियाद फ़ितरत पर रखता है। मगर जानवरों की फ़ितरत पर नहीं बल्कि इन्सानी फ़ितरत पर जिसकी गुथियां सुलझाने और ग़लतफ़हमियों को दूर करने के लिये उसने किताबें और रसूल भेजे हैं और सही इन्सानी फ़ितरत को उनके ज़रिये बाज़ूह किया है। और बताया है कि अस्ल चीज़ अपने स्व को राजी करना और उसकी नाराज़गी से बचना है। इसपर मुश्किलीन ऐतिराज़ करते थे कि इस हकीक़त को झुटलाने का अन्जाम क़यामत का आना है, तो वह क्यों नहीं आ जाती। इस का जवाब सूरत के आख़िर में दिया गया है कि क़यामत के आने का वक़्त अल्लाह को मालूम है। अगर आम इन्सानो को मालूम नहीं तो इसका मतलब यह नहीं कि वह हकीक़त नहीं है। बारिश एक हकीक़त है मगर क्या तुम बता सकते हो कि जो बादल आए हैं वो ज़रूर बरसेंगे या ऐसे ही बढ़ जाएंगे। इसी तरह औरत को हमल से औलाद होगी मगर क्या होगी, यही हाल मौत का है जो ज़बरदस्त हकीक़त है मगर किस को कब मौत आएगी कौन जानता है। जब इन चीज़ों का इल्म नहीं जबकि ये हकीक़त हैं तो फिर क़यामत का अगर इल्म न हो तो वह कैसे मशकूक हो गई। उस घड़ी का सही इल्म अल्लाह ही के पास है जैसे बारिश, होने वाली औलाद, कल क्या होगा और किस सरज़मीन में इन्सान को मौत आएगी, यह सब अल्लाह ही जानने वाला है।

सूरए अस-सज्दा में है काफ़िर कहते हैं कि जब हम मिट्टी में मिल जाएंगे तो फिर क्या हम नए सिरे से पैदा किये जाएंगे। आप उनसे कहिये मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है वह तुम को पूरा पूरा अपने क़ब्ज़े में ले लेगा फिर तुम अपने स्व की तरफ़ पलटाए जाओगे। काश आप देखते कि मुज़रिम सर झुकाए स्व के हुज़ूर खड़े होंगे। उस वक़्त वो कहेंगे ऐ हमारे स्व, हमने देख लिया और सुन लिया अब हमें वापस भेज दे हम अच्छे अमल करेंगे। अब हमें यकीन आ गया। जवाब में इरशाद होगा हम चाहते तो हर एक को यह सब दिखाकर हिदायत दे देते मगर हम हकीक़त को ओझल रखकर इम्तिहान लेना चाहते थे। और हमारी बात पूरी हो गई कि जहन्नम को जिन्नो और इन्सानो से (जो नाफ़रमानी करेंगे) भर देंगे। आज के दिन भूल जाने का मज़ा चख़ो। आज अपने कर्तूतों की वजह से दाइमी अज़ाब चख़ो। हमारी आयतों पर वो लोग ईमान लाते हैं जिन्हें यह बात सुनाकर नसीहत की जाती है तो वो सज़्दे में गिर पड़ते हैं (यह सज़्दे की आयत है) और अपने स्व की हम्द के साथ तस्बीह करते हैं। तकब्यूर नहीं करते। उनकी पीठें बिस्तरों से अलग रहती हैं। अपने स्व को उम्मीद और ख़ौफ़ से पुकारते हैं। हमने जो रेज़ी दी है उसमें से ख़र्च करते हैं कोई नहीं जानता कि हमने उनकी आँखों की टाटक के लिये क्या कुछ तैयार कर रखा है। यह उनके अअमाल का बदला है। मूमिन और फ़ासिक दोनों बराबर नहीं हो सकते। ईमान और नक़ अमल वाले के लिये जन्नतुल मावा है। यह उनके अअमाल के बदले उनकी ज़ियाफ़त के तौर पर है। जिन्होंने फ़िरक़ किया उनका ठिकाना जहन्नम है। जब जब उससे निकलना चाहेंगे, डबकल दिये जाएंगे। उनसे कहा जाएगा जिस अज़ाब को तुम झुटलाते थे अब उसे चख़ो। इस बड़े अज़ाब से पहले दुनिया में भी हम छोटे छोटे अज़ाब देते रहेंगे ताकि तुम बाज़ आ जाओ।

सूरए अहज़ाब में तीन अहम बाकिआत से बहम् की गई है। एक ग़ज़वए ख़न्दक, दूसरा ग़ज़वए बनी कुरैज़ा और तीसरा हज़रत ज़ैनब से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का निकाह, यानी मुंह वाले बेटे की तलाक़ दी हुई औरत से निकाह।

जंगे उहद में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की एक हिदायत को नज़रअन्दाज़ करने के सबब जा हार हुई उसका असर अरबों पर यह पड़ा कि मुश्किनी, यहूद और मुनाफ़िक़ीन तीनों की हिम्मतें बढ़ गई और वो समझने लगे कि मुसलमानों को ख़त्म करना कुछ ज़ियादा मुश्किल काम नहीं है। चुनांचे उहद की जंग को अभी दो माह भी नहीं हुए थे कि नब्द के एक क़बीले ने मदीने पर छापा मारने की तैयारियां शुरू कर दीं। फिर एक साल बाद तीन क़बीलों ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दीन सिम्झाने के लिये आदमी मांगे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ७० के करीब मुबल्लिगीन उनके क़बीलों में भेजे। मगर उन्हें धोका देकर शहीद कर दिया गया। जिसपर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक माह तक इन क़बीलों के ख़िलाफ़ कुनूते नाज़िलह पढ़ी। इन्हीं हालात में शवाल ५ हिजरी में अरब के बहुत से क़बीलों ने मदीने पर एक मिली जुली कुचत के साथ हमला किया। तीन चार हज़ार की बस्ती पर जिनमें कई मुनाफ़िक़ भी शामिल थे, दस बारह हज़ार की तादाद ने हमला किया। अगर यह हमला अचानक हो जाता तो सख़्त तबाहकुन होता मगर तहरीक़ इस्लामी के हमदर्द और मुतासिरीन अफ़राद जो मुश्वाकिफ़ क़बीलों में रहते थे, नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सारी कार रवाइयों की ख़बरें देने रहते थे। इस लिये हमले से कुछ दिन पहले आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मदीने के दो तरफ़ ख़न्दक खोद डाली और तीन हज़ार अफ़राद के साथ जंग के लिये तैयार हो गए।

कुफ़्रकार के ख़्वाबो ख़याल में भी न था कि उन्हें ख़न्दक से पाला पड़ेगा, क्योंकि अरब इसमें पहले इस तरीक़े पर कभी नहीं लड़े थे। अरब के मुश्किनों को जाड़े के मौसम में लम्बे असे के मुहासिरों के लिये मजबूर होना पड़ा जिसके लिये वो घरों से तैयार होकर नहीं आए थे। यह मुहासिरा २५ दिनों से ज़ियादा जारी रहा। कुछ तो मुहासिरों की तवालात, कुछ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की जंगी तदबीरों और फिर एक रात अल्लाह ने ऐसी आँधी चलाई कि तमाम ख़ैमें उखड़ गए और कोई उनमें न टहर सका। इस पूरे असे में एक बार शदीद हमला हुआ था जो सुबह से रात तक जारी रहा और पाँचों वक़्त की नमाज़ें रात को जंग से फ़ारिग़ होकर एक साथ पढ़ी गईं।

मुसलमानों ने इन्तिहाई बेजिगरी से मुकाबला किया। मअरिकाए ख़न्दक ख़त्म हुआ तो ज़िब्रइल अलैहिस्सलाम ने अल्लाह का हुक्म सुनाया कि अभी हथियार न खोलें जाएं बल्कि यहूदी क़बीले बनी कुरैज़ा पर बार करके उनसे निपट लिया जाए। क्योंकि उन्होंने ग़द्दारी की थी। चुनांचे फ़ौरन ही मुसलमान उनके इलाके में पहुंच गए और यहूदियों के मुक़रर किये हुए सालिस हज़रत सअद बिन मआज़ के फ़ैमले के मुताबिक़ उनके तमाम मदों को क़त्ल कर दिया गया और औरतों बच्चों को गुलाम बना लिया गया।

जंगे उहद से जंगे ख़न्दक तक का दो साल का तमाम अर्सा सख़्त बुहरानी ज़माना था मगर इसमें मुआशिरों के इस्तिहकाम और इस्लाह का काम जारी रहा। चुनांचे मुसलमानों के निकाह व तलाक़ के क़ानून इसी ज़माने में मुक़म्मल हुए। विरासत का क़ानून नाज़िल हुआ और शराब और जुए को हराम किया गया। और दूसरे भी कई पहलुओं के मुतअल्लिक़ क़वानीन नाज़िल हुए। इस सिलसिले का एक अहम मसअला जो इस्लाह का तकाज़ा कर रहा था, वह मुंह बोली बेटे का मसअला था जिसे लोग अमली बेटे जैसा समझते थे, उसे विरासत में हिस्सा मिलता था, उससे मुंह बोली मां और मुंह बोली बहनें इस तरह बेतक़ल्लुफ़ होती थीं जैसे उसकी सगी मां और सगी बहनें हों। इसी तरह अगर वह मर जाए या अपनी बीबी को तलाक़ दे दे तो उसकी बीबी से उसका मुंह बोला बाप शादी नहीं कर सकता था।

ये बातें क़दम क़दम पर क़ुरआन के उन उसूलों और क़वानीन से टकरा रही थीं जो अल्लाह ने सूरए निसा और सूरए बकरह में निकाह, तलाक़ और विरासत के बारे में उतारे हैं। साथ ही साथ यह बात अख़लाकी पहलू से भी बुरी थी कि कितना ही सग़ों की तरह समझा जाए, मगर फिर भी यह हकीक़ी बेटा या भाई नहीं था। और बहुत से ज़हन बेतक़ल्लुफ़ी का नाजाइज़ फ़ाइदा उठा लेते थे। ज़रूरत इस बात

की थी कि इन बुराइयों को रोका जाए, मगर यह रास्ता सिर्फ़ क़ानून बनाने से नहीं रुक सकता था। इस लिये अल्लाह ने ऐसे हालात पैदा किये कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को खुद इस रस्म को तोड़ना पड़ा। आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फुफ़ीज़ाद बहन हज़रत ज़ैनब को उनके शौहर ज़ैद बिन हारिसा ने तलाक़ दे दी जो हज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुँह बोले बेटे थे तो अल्लाह ने हुक्म दिया कि आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत ज़ैनब से शादी कर लें। जब आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत ज़ैद से उनका निकाह पढ़ाया था तो अरबों की यह रस्म तांडी थी कि बां आज़ाद किये हुए गुलाम को अपने बराबर का नहीं समझते थे। बल्कि उससे गुलामों जैसा ही सुलूक करने थे। आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी फुफ़ीज़ाद आज़ाद औरत से उनकी शादी करके यह साबित किया कि इस्लाम में आज़ाद किया हुआ गुलाम भी अशराफ़ का दर्जा रखता है। अब अल्लाह ने चाहा कि इस रस्म का भी तोड़ें कि मुँह बोले बेटे को सगा बेटा न समझा जाए।

इसी तरह पर्दे के अहक़ाम जारी हुए और करीबी रिश्तेदारों के अलावा ग़ैर मर्दों के साथ मेल ज़ौल हाराम करार दिया गया। अगर उन्हें बात करनी है या कुछ लेना देना हो तो पर्दे के पीछे से लें दें और औरतें ख़याल रखें कि आवाज़ में लोच न पैदा करें। कोई ऐसी हरकत न करें जिससे किसी मर्द को ग़लत फ़हमी हो। नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बीवियों को तमाम मुसलमानों की माएं करार दिया गया और आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ात के बाद उनसे निकाह हाराम करार दिया गया। आम मुसलमान औरतों को हुक्म दिया गया कि जब भी घर से बाहर निकलें तो चादरों से अपने आप को ढांप कर निकलें, घूँघट निकाल लिया करें। इसी मौक़े पर इस बात का ऐलान किया गया कि नबी आख़िरी नबी हैं और चूंकि आपके बाद कोई नबी आने वाला नहीं है लिहाज़ा जाहिलियत के दौर की जो रस्में जड़ पकड़ चुकी हैं उनका ख़ातिमा रसूल के ज़रिये ज़रूरी है। इसी वजह से अल्लाह ने हज़रत ज़ैद के तलाक़ देने के बाद हज़रत ज़ैनब का निकाह आप से कर दिया। अल्लाह तआला ने तर्दीद फ़रमा दी कि ज़ैद सिर से आपके बेटे नहीं हुए फिर उनकी बीबी बहू किस तरह होंगी। अल्लाह ने फ़रमाया कि आप मर्दों में से किसी के बाप नहीं, फिर बहू का सवाल कहाँ पैदा होता है।

दूसरी शैसियत आप की रसूल की थी और रसूल जिहालत की बातें ख़त्म करने के लिये आते हैं। तीसरी बात यह कि आप ख़ातिमुन नबिय्यीन हैं, आपके बाद कोई नबी आने वाला नहीं, लिहाज़ा यह ज़रूरी है कि इस क़बीह रस्म को आप खुद ख़त्म करके जाएं।

कुफ़्रफ़ार, भुश्किनीन और मुनाफ़िक्कीन नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बदनाम करने की कोशिश करते रहते थे मगर अल्लाह ने बाज़ेह फ़रमा दिया कि दुनिया कुछ भी कहे मगर नबी का मतवा यह है कि खुद खुदा अपनी तरफ़ से उनपर दुरुद भेजता है, और फ़रिश्तों को भी दुरुद भेजते रहने का हुक्म देता है। इस लिये ईमान वालों को भी ज़रूरी है कि वो अपने नबी से बेहद महबूब रखें, उनके ग़िरवीदा हो जाएं, उनकी मदद सना करें, उनके हक़ में कामिल सलामती की दुआ करें, दिल जान से उनका साथ दें। जो लोग खुदा और रसूल को अज़ियत देने हैं उनपर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह ने लानत फ़रमाई है। उनके लिये रुसवा करने वाला अज़ाब है। फ़रमाया कि जिनमें ने इन्कार किया उनके लिये जहन्नम की आग है, न तो वो जहन्नम में मरेंगे, न अज़ाब कम होगा। हम हर इन्कार करने वाले को ऐसी ही सज़ा देते हैं। बां वहां चीखेंगे - ऐ हमारे रब, हमें यहां से निकाल, अब हम पहले जैसे काम नहीं करेंगे। बल्कि अच्छे अमल करेंगे। उनसे कहा जाएगा कि क्या हम ने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि समझदार सबक ले लेता। और तुम्हारे पास तो डराने वाला भी आया था। अब मज़ा चखो, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं होता। ज़मीन और आसमान के ख़ुफ़िया राज़ अल्लाह ही जानता है। वह सीनों तक की बातें जानता है। उसने तुमको ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया है और जो इन्कार करेगा उसका बवाल उसी के सर पर है। काफ़िरों का कुफ़र रब की नाराज़गी बढ़ाता है, ख़सारे में इज़ाफ़ा करता है।

मूरत के आख़िर में फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआला लोगों के कर्तूतों पर पकड़ करने लगे तो ज़मीन पर कोई जानदार बाक़ी न बचे। लेकिन यह अल्लाह का करम है कि वह लोगों को एक मुक़रर वक़्त

तक मुहलत देता है. जब उनका वक्त पूरा होगा तो अल्लाह अपने बन्दों को देख लेगा कि उनके साथ कैसा सुलूक करना चाहिये.

सूरए यासीन कुरआन का दिल है, इसमें कुरआन की दावत को पुरजोर अन्दाज़ में पेश किया गया है. किसी शरूस की आखिरी घड़ियों में सूरए यासीन सुनाने का हुक्म दिया गया है ताकि इस्लामी अक्कीदे ताज़ा हो जाएं और आखिरत की मन्ज़िल को मरने वाला अपनी आँखों से देख ले. फ़रमाया गया कि जब सूर फूँका जाएगा तो लोग अपनी क़ब्रों से उठ खड़े होंगे, घबरा कर कहेंगे यह किसने हमें हमारी ख़्वाबगाह से उठाया. उनसे कहा जाएगा यह वही चीज़ है जिसका रहमान ने तुम से वादा किया था और रसूलों की बात सच्ची थी. एक ज़ोर की आवाज़ होगी और सब के सब हमारे सामने हाज़िर कर दिये जाएंगे. आज किसी पर ज़र्रा भर जुल्म न किया जाएगा. जैसा तुम अमल करते थे वैसा ही बदला दिया जाएगा. जन्नती लोग मज़ें में होंगे. वो और उनकी बीवियां सायों में मसनदों पर तकिया लगाए होंगे. उनके लिये हर तरह की लज़्ज़तें और वो जो कुछ मांगेंगे. रब्बे रहीम की तरफ़ से उनको सलाम कहा जाएगा और मुजरिमों से कहा जाएगा तुम छट कर अलग हो जाओ आदम के बेटो, क्या मैंने तुमको हिदायत न की थी कि शैतान की बन्दिगी न करो कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है. और मेरी बन्दिगी करो कि यह सीधा रास्ता है. मगर इसके बावजूद उसने तुम में से बहुत सों को गुमराह किया. क्या तुम अक्ल नहीं रखते. यह वह जहन्नम है जिससे तुमको डराया जाता था. अब इसमें चले जाओ कि तुम इन्कार करते थे. आज हम उनके मुंह पर मुहर लगा देंगे. उनके हाथ बोलेंगे, पाँव गवाही देंगे ये दुनिया में जो कुछ करते थे.

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अजीब अन्दाज़ में तसल्ली दी गई कि लोग आपकी मुख़ालिफ़त में जो कुछ कह रहे हैं उसका ग़म न कीजिये. जो लोग अल्लाह पर फ़वतियां कसने से बाज़ नहीं आते अगर वो आपका मज़ाक़ उड़ाए तो क्या तअज्जुब. उनका मामला अल्लाह पर छोड़ दीजिये. फ़रमाया क्या इन्सान ने ग़ौर नहीं किया कि हमने उसे पानी की एक बूंद से पैदा किया. तो वह एक खुला हुआ दुश्मन बन कर उठ खड़ा हुआ और उसने हमपर एक फ़वती चुस्त की और अपनी पैदाइश को भूल गया. कहता है कि भला हड्डियों को कौन ज़िंदा कर सकता है जबकि वो बोसीदा हो जाएंगी. ऐ मेहबूब आप कह दीजिये इनको वही ज़िंदा करेगा जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया था. वही है जिसने तुम्हारे हरे भरे दरख़्त से आग पैदा की और तुम उससे आग जला लेते हो. यानी तुम सरसब्ज़ दरख़्त से दो शाख़ें लेते हो और उनको आपस में रगड़ कर आग जला लेते हो. तो खुदा के लिये राख़ और मिट्टी के अन्दर से ज़िंदगी नमूदार करते क्या देर लगती है. उसका मामला तो बस यूँ है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो कहता है हो जा और वह हो जाती है. पस पाक है वह ज़ात जिसके यदे कुदरत में हर चीज़ का इस्तियार है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे.

सूरए साफ़फ़ात में मक्के के काफ़िरों की बताया गया कि तुम जिस नबी की मुख़ालिफ़त कर रहे हो वह बहुत जल्द तुम पर ग़ालिब आ जाएगा. और तुम अल्लाह के लश्करों को खुद अपने सहन में उतरते देखोगे. तो ऐ नबी, सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, ज़रा कुछ मुदत के लिये इन्हें इनके हाल पर छोड़ दीजिये और देखते रहिये कि बहुत जल्द ये भी ख़ूब देख लेंगे.

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की बेमिसाल कुरबानी का ज़िक्र फ़रमाया गया जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ की ऐ मेरे परबर्दिगार मुझे एक नेक बेटा अता फ़रमा. फिर हमने उन्हें एक साबिर बेटे की बशारत दी. वह लड़का जब बड़ा हुआ तो एक रोज़ इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा बेटा, मैंने ख़्वाब देखा है कि मैं तुम्हें ज़िह्न कर रहा हूँ. बेटा, तेरा क्या ख़्याल है. हज़रत इस्माईल ने कहा, अब्बाजान जो कुछ आपको हुक्म दिया जा रहा है उसे पूरा कीजिये, इश्शाअल्लाह आप मुझे सब करने वालों में पाएंगे. आखिर को उन दोनों ने सरे तसलीम ख़म किया और इब्राहीम ने बेटे को माथे के बल ज़मीन पर लिटा दिया ताकि ज़िह्न करें. हमने उसे निदा दी, कहा ऐ इब्राहीम तूने ख़्वाब सच कर दिख़ाया. हम तेकी करने वालों को ऐसी ही जज़ा देते हैं यकीनन यह एक खुली हुई आजमाइश थी और हमने एक बड़ी कुरबानी

फ़िदिय में देकर उस बच्चे को छुड़ा लिया. और बाद के लोगों में इस सुन्नत को जारी कर दिया. सलामती हो इब्राहीम पर. हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं. यकीनीन वह हमारे मूमिन बन्दों में से था.

इसी सूरत में हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का ज़िक्र किया गया. कि जब वह अल्लाह के हुक्म का इत्तज़ार किये बिना बस्ती छोड़ कर चले गए तो अल्लाह तआला उनसे नाराज़ हुआ. रास्ते में वह किश्ती में सवार हुए और ज़ियादा अफ़राद की वजह से जब वह डगमगाने लगी तो चिट्ठी डाली गई कि किसे किश्ती से उतरना होगा. चिट्ठी हज़रत यूनुस के नाम निकली और वह समन्दर में उतार दिये गए. फिर एक मछली ने उन्हें निगल लिया. उन्हें अपने कुसूर का एहसास हुआ और अल्लाह तआला से उन्होंने ने तरबीह पढ़कर माफ़ी मांगी - *ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तो मिनज़ ज़ालिमीन* - अगर यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट में इस्तिग़फ़ार न करते तो क़यामत तक मछली के पेट में ही पड़े रहते. आख़िरकार बड़ी ख़राब हालत में मछली ने उन्हें एक चटियल मैदान में ज़माने पर उगल दिया. और वहीं कुदरती तौर पर अल्लाह ने एक बेलदार दरख़्त उगा दिया जिसका फल उन्होंने ख़ाया. फिर अपनी क़ौम की तरफ़ पलटे, उन्हें इस्लाम की दावत दी, वो सब मुसलमान हुए. आप अपनी क़ौम में एक असें तक रहे. पाक है आपका रब, इज़ज़त का मालिक और सलाम है रसूलों पर और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिये जो सारे ज़हान वालों का रब है. इन्सान को चाहिये कि ख़ालिस अल्लाह की वन्दगी इस्तियार करे और किसी दूसरे की इताअत से अपनी खुदा परस्ती को आलूदा न करे और दीने ख़ालिस यानी बेमेल इताअत सिर्फ़ अल्लाह का हक़ है. रहे वो लोग जिन्होंने उसके सिवा दूसरे सरपरस्त बना रखे हैं और कहते हैं कि हम उनकी इबादत सिर्फ़ इस लिये करते हैं कि वो अल्लाह तक हमें पहुंचाने का ज़रिया हैं. अल्लाह यकीनन उनके दरमियान उन तमाम बातों का फ़ैसला फ़रमा देगा जिनमें वो इस्तिलाफ़ कर रहे हैं. यानी अल्लाह तक पहुंचाने का ज़रिया बनने वालों के मुतअल्लिक भी उनमें कोई इत्तिफ़ाक़ नहीं. कोई चांद सूरज और सितारों को देवता बनाए हुए है, कोई किसी और को. इसका सबब यह है कि उनमें से किसी के पास इल्म नहीं है कि जिसकी बिना पर उनके अल्लाह तक पहुंचाने का ज़रिया होने का यकीन हो सके. और न कभी अल्लाह के पास नामों की कोई फ़हरिस्त आई है कि सब उनको इस हैसियत से मान लें. वस अन्ही अक्कीदत में मेहज़ अपने क़यास से अपने पिछलों की तक्लीद करते चले आ रहे हैं. इस लिये इस्तिलाफ़ होना ज़रूरी है.

फिर अल्लाह तआला ने उन्हें काज़िबुन कुफ़र कह दिया. और कहा है कि अल्लाह किसी ऐसे शख्स को हिदायत नहीं देता जो झूठा और सच्चाई का इन्कार करने वाला हो. यानी ऐसे लोग झूठा घड़ा हुआ अक्कीदा लोगों में फैलाते हैं फिर फ़रमाया कि अगर अल्लाह चाहता कि किसी को अपना बेटा बनाए तो अपनी मख़लूक ही में से किसी की यह मक़ाम देता (मगर ख़ालिको मख़लूक में यह रिश्ता मुमकिन नहीं.). चुनांचे पाक है वह इससे कि किसी को अपना बेटा बनाए. वह अल्लाह है अकेला ग़ालिब, यह मक़ाम कुरआन के मुश्किल मक़ामात से है. इसका वाज़ह मतलब यह है कि अल्लाह जिसको भी अपना बेटा बनाता वह बहर हाल मख़लूक होता. और मख़लूक उलूहियत में शरीक नहीं हो सकती. हाँ सिर्फ़ बरगुज़ीदा बुजुर्ग हो सकती है इस लिये अल्लाह ने किसी को अपना बेटा नहीं बनाया. बनाता तो वह तुम्हें ज़रूर ख़बर करता. उसने अपने रसूल को बरगुज़ीदा किया है मगर वह भी उसके बन्दे और रसूल हैं, उलूहियत में उसके शरीक नहीं. हमने इस कुरआन में लोगों को तरह तरह की मिसालें दी हैं कि ये होश में आएँ. ऐसा कुरआन जो अरबी ज़बान में है जिस में कोई कज़ी नहीं है.

अल्लाह एक मिसाल देता है. एक शख्स तो वह जिसके मालिक बहुत से बंद मिज़ाज आका हों और हर एक उसको अपनी तरफ़ खींच रहा हो कि वह उसकी ख़िदमत करे. और सब एक दूसरे के ख़िलाफ़ हुक्म जारी करते हों और जिसकी ख़िदमत करने यानी हुक्म मानने में वह कोताही करे. वही उसे डांटने फटकारने लगे और सज़ा देने पर तुल जाएँ. इसके बरख़िलाफ़ वह शख्स है जिसका सिर्फ़ एक ही आका हो और उसे वस एक ही की ख़िदमत करनी हो और उसी एक को राज़ी रखना हो. एक का गुलाम

अच्छा या बहुत से आक्राओं का गुलाम ! ऐ नबी ! सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम आपको भी अल्लाह के सामने जाना है और इन लोगों को भी वहीं पहुंचना है. आखिरकार क़यामत के दिन सब अपने सब के हुज़ूर अपना अपना मुक़दमा पेश करेंगे.

सूरए जुमुर में अक्कीदे की इस्लाह का काम जारी है. वह अल्लाह ही है जो मौत के वक़्त रुहें क़ब्ज़ करता है. जो अभी नहीं मरा, उसकी रुह नींद में क़ब्ज़ कर लेता है यानी शऊर, फ़हम और इदराक़ की कुच्चतों को मुअत्तल कर देता है. फिर जिसपर वह मौत का फ़ैसला नाफ़िज़ करता है उसे रोक लेता है और जिसे ज़िंदा रखना होता है उनकी रुहें एक मुक़ररा वक़्त के लिये वापस भेज देता है. यह कैफ़ियत इन्सान के साथ हर रोज़ होती है यानी वह रोज़ाना मरता है और जीता है. फिर सोने के बाद इन्सान नहीं कह सकता कि वह कल सही सलामत ज़िंदा ही उठेगा, वह मर भी सकता है. इस तरह जो इन्सान खुदा के हाथ में इतना बेबस है वह कैसा सग़्रत नादान है अगर उसी खुदा से गाफ़िल और मुहरिफ़ हो.

इसमें कुरआन का इन्कार करने वालों की हालत बयान करते हुए इरशाद फ़रमा दिया कि अल्लाह को छोड़ कर दूसरे सिफ़ारशी उन्होंने समझ रखे हैं कि उन्हें खुदा की पकड़ से बचा लेंगे जबकि उनकी कोई हक्कीक़त नहीं, न वो किसी चीज़ पर इस्तियार रखते हैं और न ही उन्हें कोई शऊर है. सिफ़ारिश का सारा इस्तियार तो अल्लाह के हाथ है कि उसकी इजाज़त के बिना न कोई किसी की सिफ़ारिश कर सकेगा और न कोई ग़लत बात किसी के हक़ में कह सकेगा. दूसरी बात यह कि शफ़ाअत के बारे में ग़लत अक्कीदा क़ाइम कर लेने की वजह से उनका ऐतिमाद अपने घड़े हुए सिफ़ारिशियों पर क़ाइम हो गया है, इसी लिये जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र होता है तो आख़िरत पर हक्कीकी ईमान न रखने वालों के दिल धड़कने लगते हैं क्योंकि इस तरह उसकी पकड़ का तसब्बुर सामने आ जाता है. मगर जब अल्लाह को छोड़कर दूसरों का ज़िक्र किया जाता है तो उनके चेहरे खुशी से दमकने लगते हैं क्योंकि इस तरह आख़िरत से वे कैद ज़िंदगी बसर करने का परवाना उनके हाथ आ जाता है. इस मसअले में फ़ैसलाकुन अन्दाज़ में फ़रमा दिया गया - फ़रमा दीजिये, ऐ खुदा, आसमानों और ज़मीनों के पैदा करने वाले, हाज़िरो गाइब के जानने वाले, तू ही अपने बन्दों के बीच उस चीज़ का फ़ैसला करेगा जिसमें वो इस्तिलाफ़ कर रहे हैं.

फ़िर फ़रमाया - ऐ नबी कह दो कि ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ियादती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हों, यकीनन अल्लाह सारे गुनाह माफ़ कर देता है. वह माफ़ करने वाला रहम करने वाला है. पलट आओ अपने सब की तरफ़ और मुतीअ हो जाओ इस से पहले कि तुमपर अज़ाब आ जाए. और फिर तुम्हें कहीं से मदद न मिल पाए और पैरवी करो अपने सब की भेजी हुई किताब की इससे पहले कि तुमपर अचानक अज़ाब आजाए और तुमको ख़बर न हो. कहीं ऐसा न हो कि बाद में कोई शरअ कहे अफ़सोस मेरी इस कोताही पर जो मैंने अल्लाह की जनाब में की है बल्कि मैं तो मज़ाक़ उड़ाने वालों में था, या कहे काश अल्लाह ने मुझे हिदायत बरश्शी होती तो मैं भी परहेज़गार होता, या अज़ाब देख कर कहे काश मुझे एक ओर मौक़ा मिल जाता तो मैं नेकी करने वाला बन जाता. उससे कह जाएगा क्यों नहीं, मेरी आयतें तेरे पास आ चुकी थीं फिर तूने उन्हें झुटलाया और तकबुर किया. तू तो इन्कार करने वालों में था. जिन लोगों ने खुदा पर झूट बांधा, क़यामत के दिन उनके मुंह काले होंगे. जन्नत में मुत्कब्बिरों के लिये कोई जगह नहीं है.

फ़रमाया हक़ का इन्कार करने वालों ने अल्लाह की क़द्र ही न की जैसा कि उसकी क़द्र करने का हक़ है. उसकी कुदरत कामिला का हाल तो यह है कि क़यामत के दिन पूरी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी और आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे. पाक और बालातर है वह उस शिर्क से जो ये करते हैं. और उसी रोज़ सूर फूँका जाएगा तो वो सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे. जो आसमानों और ज़मीनों में है सिवाए उनके जिन्हें अल्लाह ज़िंदा रखना चाहता है. फिर एक दूसरा सूर फूँका जाएगा और यकायक सब के सब उठकर देखने लगेंगे. ज़मीन अपने सब के नूर से चमक उठेगी. अमाल की किताब लाकर रख दी जाएगी. सारे रसूल और तमाम गवाह हाज़िर कर दिये जाएंगे. लोगों के दरमियान ठीक फ़ैसला

कर दिया जाएगा. और उनपर कोई जुल्म न होगा. और हर मुतनफ़फ़स को जो कुछ भी उसने अमल किया था उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा. लोग जो कुछ भी करते हैं, अल्लाह उसको ख़ूब जानता है. इस फ़ैसले के बाद वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया था जहन्नम की तरफ़ ग़िरोह दर ग़िरोह हाँके जाएंगे और उसके कारिन्दे कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हारे लोगों में से ऐसे रसूल नहीं आए थे जिन्होंने तुमको तुम्हारे रब की आयतें सुनाई हों और तुम्हें इस बात से डराया हो कि एक वक़्त तुम्हें यह दिन भी देखना पड़ेगा. वो जवाब देंगे - हाँ आए थे. कहा जाएगा - दाख़िल हो जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में, यहां अब तुम्हें हमेशा हमेशा रहना है. बड़ा ही बुरा टिकाना है यह इन्कार करने वालों के लिये.

जो लोग अपने रब की नाफ़रमानी से परहेज़ करते थे उन्हें ग़िरोह दर ग़िरोह जन्नत की तरफ़ ले जाया जाएगा. यहां तक कि जब वो वहां पहुंचेंगे और उसके दरवाज़े पहले ही खोले जा चुकें होंगे तो उसके मुन्तज़िमीन उनसे कहेंगे - सलाम हो तुम पर तुम बहुत अच्छे रहे, दाख़िल हो जाओ इसमें हमेशा हमेशा के लिये. और कहेंगे शुक्र है अल्लाह का जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया और हमें ज़मीन का वारिस बनाया. अब हम जन्नत में जहां चाहें अपनी जगह बना सकते हैं. यह कितना अच्छा बदला है अमल करने वालों के लिये और तुम देखोगे कि फ़रिश्ते अर्श के गिर्द घेरा डाले अपने रब की हम्द और तस्बीह कर रहे होंगे. और लोगों के दरमियान ठीक ठीक हक के साथ फ़ैसला चुका दिया जाएगा और पुकारा जाएगा - हम्द है अल्लाह के लिये जो सारे जहान वालों का रब है.

सूरए जुमुर के बाद **सूरए अल-मूमिन** है और यह उतरी भी इस के बाद ही है. सूरए मूमिन में अल्लाह तआला ने मुसलमानों के एक बड़े एज़ाज़ का ज़िक्र फ़रमाया है वह यह है कि बन्दए मूमिन दुनिया में जिस हाल में भी हो, अल्लाह के नज़दीक इतना बरगुज़ीदा है कि अर्श उटाने वाले फ़रिश्ते जो अर्श के इर्द गिर्द रहते हैं और जो सब के सब अपने रब की हम्द और तस्बीह करते हैं, वो मुसलमानों के लिये मग़फ़िरत की दुआ मांगते रहते हैं. कि ऐ अल्लाह तू इनकी मग़फ़िरत फ़रमा और इनको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले. ऐ हमारे रब, तू इन्हें जन्नत में अदन में दाख़िल फ़रमा जिसका तूने इनसे वादा फ़रमाया है. इनके मा बाप और औलाद में से जो नेक हों उन्हें भी दाख़िल फ़रमा. तू क़ादिर मुत्तलक और हकीम है. तूने इन्हें क़यामत के दिन की बुराइयों से बचा लिया. जिसको तूने इस दिन बचाया उसपर तूने बड़ा रज़म किया और यही बड़ी कामयाबी है. अल्लाह तआला ने मुसलमानों को यह खुशख़बरी सुनाई कि उनके लिये अर्श के फ़रिश्ते दुआ करते हैं.

सूरए हामीम सज्दा में फ़रमाया गया - खुदाए रहमानो रहीम ने अरब वालों पर एहसाने अज़ीम किया है कि क़ुरआन को अरबी ज़बान में उनके लिये खुशख़बरी सुनाने और डराने वाला बना कर उतारा है. इस एहसान का हक़ यह था कि लोग उसकी क़द्र करते लेकिन ये तकबुर के साथ उसकी नेमत का दुकरा रहे हैं. और ईमान लाने की जगह उस अज़ाब का मुतालिबा कर रहे हैं जिससे उन्हें डराया जा रहा है. जवाब में ऐ मेहबूब आप इन्हें बता दीजिये कि मुझे जिस तौहीद की वही हुई थी वह मैंने तुम तक पहुंचा दी. रहा अज़ाब का मामला तो यह चीज़ मेरे इस्तिथार में नहीं है. मैं एक बशर हूं, अल्लाह नहीं हूं. इस काइनात में जो कुदरत, हिक़मत, रहमत, रुबूबियत और जो नज़्म व एहतिमाम तुम्हें नज़र आ रहा है वह गवाह है कि यह किसी ख़िलन्दे का खेल नहीं है न यह मुख़्तलिफ़ देवताओं के खेल या उनकी आपसी जंग का मैदान है. बल्कि यह एक ज़वरदस्त कुदरत और इल्म रखने वाले वाहिद अल्लाह की मन्सूबा बन्दी से वुजूद में आया हुआ कारख़ाना है. इस लिये जो लोग अपने घड़े हुए खुदाओं और सिफ़ारिशियों के भरोसे पर अल्लाह और आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं वो अपनी शामत के मुन्तज़िर हैं. क़यामत के दिन हर एक के कान आँख और हाथ पाँव खुद उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे और उन्हें मालूम हो जाएगा कि उनकी गुमराही का एक सबब यह था कि वो समझते थे कि उनके बहुत से अअमाल की ख़बर अल्लाह को भी नहीं होती.

जो लोग तमाम मुख़ालिफ़तों और साजिशों के बरख़िलाफ़ तौहीद पर जमे रहेंगे, क़यामत के दिन

उनके पास फ़रिश्ते अल्लाह तआला की अबदी रहमतों और नेमतों की खुशख़बरी लेकर आएंगे और कहेंगे बस अब न कोई अन्देशा है न ग़म, जन्नत में तुम्हारे लिये हर वह चीज़ मौजूद है जिसको तुम्हारा दिल चाहे और जो तुम तलब करो। मुसलमानों के सब्र और इस्तक़्क़ाल को ख़िराजे तहसीन पेश किया गया ति जब हर तरफ़ से हिम्मत शिकन हालात से साबिका हो उस वक़्त एक शरअ डंके की चोट पर कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ और दूसरों को भी वह अल्लाह की तरफ़ बुलाए और नेक अमल करे, उससे बढ़कर और अच्छी बात किस की हो सकती है !

सूरए अश-शूरा में पहले ईमान की यह सिफ़त बयान की गई है कि वो आपस में मशवरे से काम करते हैं। शुरुआत इस तरह की गई है कि तुम लोग हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पेश की हुई बातों पर तअज्जुब करते हो, यह कोई नई बात नहीं कि किसी आदमी पर अल्लाह की वही आए। ऐसी ही वही और ज़िंदगी बसर करने की हिदायत इनसे पहले बहुत से नबियों को दी जा चुकी है। इसी तरह यह भी कोई तअज्जुब की बात नहीं है कि आसमान और ज़मीन के मालिक ही को मअबूद माना जाए, बल्कि तअज्जुब की बात तो यह है कि उसके बन्दे होकर उसकी खुदाई में रहते हुए लोग किसी दूसरे को अल्लाह और हाकिम तस्लीम करें। तौहीद पर बिगड़ते हो हालांकि काइनात के मालिक और हकीक़ी रिज़क देने वाले के साथ जो शिर्क तुम कर रहे हो तो यह इतना बड़ा जुर्म है कि आसमान इस पर फट पड़े तो कोई तअज्जुब की बात नहीं। तुम्हारी इस ढिटाई पर फ़रिश्ते भी हैरान हैं और हर वक़्त डर रहे हैं कि न मालूम कब तुम पर अल्लाह का अज़ाब टूट पड़े।

इसके बाद बताया गया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का काम सिर्फ़ गाफ़िल लोगों को ख़बरदार करना और भटके हुआँ को रास्ता दिखाना है। उनकी बात न मानने वालों का मुहासबा करना और उन्हें अज़ाब देना अल्लाह का काम है। उनका काम इस तरह के दावे करना नहीं है जिस तरह के दावे तुम्हारे बनावटी मज़हबी पेशवा किया करते हैं कि जो उनकी बात न मानेगा वो उसे भस्म कर देंगे। याद रखो नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तुम्हारी भलाई के लिये आए हैं और इसी लिये तुम्हें बार बार ख़बरदार कर रहे हैं और तुम्हारी सारी बातों को बरदाश्त कर रहे हैं।

इस के बाद बताया गया है जो दीन नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पेश कर रहे हैं वह हकीक़त में है क्या। यह वही दीन है जो पहले भी हज़रत नूह, हज़रत ईब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलाम और दूसरे लेकर आ चुके हैं। गोया अम्बिया अलैहिमुस्सलाम को पूरी तारीख़ में अल्लाह की तरफ़ से यही एक दीन आता रहा है। और फ़रमाया कि उन सबको यही हुक्म दिया गया था कि अल्लाह के दीन को क़ाइम करना और क़ाइम रखना। और इस मामले में अलग अलग न हो जाना। अल्लाह का दीन कौनसा है। फ़रमाया अल्लाह के नज़दीक सच्चा दीन इस्लाम है। यानी हज़रत आदम व हज़रत नूह से लेकर मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तक एक ही दीन आया है। अगर फ़र्क है तो हालात और ज़मानों के लिहाज़ से कुछ जुज़ियात में फ़र्क है। इसकी मिसाल ऐसी है जैसे बच्चे के बालिश होने तक क़द और जसामत में फ़र्क होता चला जाता है। इस फ़र्क के लिहाज़ से कपड़े भी छोटे बड़े होते जाते हैं मगर बुनियादी ढांचा एक ही रहता है साथ ही यह भी बताया गया कि तुम लोगों को एहसास नहीं है कि अल्लाह के दीन को छोड़कर शैक़ल्लाह के बनाए हुए दीन और क़ानून इस्तियार करना अल्लाह के मुकाबले में कितनी बड़ी ढिटाई है। तुम इसे मामूली बात समझते हो मगर यह अल्लाह की ग़ैरत को ललकारने वाली बात है। और इसकी सज़ा भी उनको भुगतनी पड़ेगी जो ऐसा करेंगे।

रिज़क और मआश के तअल्लुक से अल्लाह तआला ने बताया कि अल्लाह बन्दों पर हद दर्जे मेहरबान है, जिसे जो कुछ चाहता है देता है। सबको एक सी चीज़ें नहीं देता। किसी को कोई चीज़ दी तो किसी को कुछ और, किसी को कम, किसी को ज़ियादा। अगर वह ज़मीन में रोज़ी फैला दे और सब बन्दों को खुला रिज़क दे दे तो वो ज़मीन में सरकशी और तूफ़ान बरपा कर देंगे। मगर वह एक हिसाब से जितना चाहता है नाज़िल करता है। यक़ीनन वह अपने बन्दों से वास्त्रबर है और सब कुछ देख रहा है। अलबत्ता जो सिर्फ़ दुनिया चाहता है, अल्लाह उसे दुनिया दे देता है मगर आख़िरत में उसका कोई हिस्सा

नहीं रहता और जो आखिरत चाहता है, अल्लाह उसे आखिरत दे देता है और मजीद अपनी इनायात निछावर करता है। अब बन्दे का काम कि वह अपनी भलाई के लिये किस चीज़ का इन्तिज़ाब करता है।

फ़रमाया गया तुम्हें जो मुसीबतें पहुंचती हैं तुम्हारे करतूतों की वजह से ही। बहुत सारी कोताहियों का अल्लाह यूँही दरगुज़र कर देता है। तुम ज़मीन में खुदा को आजिज़ नहीं कर सकते। अल्लाह के मुकाबले में तुम्हारा कोई मददगार नहीं। तुम इन्सानों को जो कुछ दिया गया है वह बहुत मामूली और चन्द रोज़ा फ़ाड़दा बरश्श है। खुदा के पास आखिरत में जो कुछ है वह पायदार और ज़ियादा बेहतर है। वह उन लोगों के लिये है जो खुदा को मानते हैं, उसपर भरोसा करते हैं, बड़े गुनाहों से बचते हैं, बेहयाई के कामों से परहेज़ करते हैं, गुस्सा आ जाए तो दरगुज़र करते हैं, अपने सब का हुक्म मानते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, अपने मामलात आपस के मशवरे से चलाते हैं, हमने जो दिया है उसे हमारी राह में खर्च करते हैं, कोई ज़ियादती करे तो मुक़बला करते हैं, बुराई का बदला बस उतनी ही बुराई है, जो दर गुज़र कर दे और इस्लाह करे उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है।

अल्लाह ज़ियादती करने वालों को पसन्द नहीं करता। जो लोग जुल्म होने के बाद बदला लें उन्हें मलामत नहीं की जा सकती। मलामत के लायक वो हैं जो दूसरों पर जुल्म करते हैं, ज़मीन में नाहक ज़ियादतियां करते हैं, उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है। जो शक्स सब्र से काम ले और दरगुज़र करे तो यह बड़ी हिम्मत का काम है। जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब खुदा का है जिसे चाहता है लड़कियां देता है, जिसे चाहता है लड़के देता है, जिसे चाहता है लड़के और लड़कियां दोनों देता है, जिसे चाहता है बाँझ कर देता है। वह सब कुछ जानता है और हर चीज़ पर कादिर है।

सूर अज़-ज़ुख़रफ़ का मरकज़ी मज़मून भी तौहीद ही है। क़यामत का ज़िक्र करते हुए मुश्किन के इस अक्कीदे की भी तरदीद की गई है कि वो फ़रिश्तों को उलूहियत में शरीक समझते हैं और उनकी शफ़ाअत का यकीन रखते हैं। काफ़िरों के कुफ़्र का असल सबब यह करार दिया कि उनकी दुनियावी कामयाबी ने उन्हें धोखे में डाल रखा है और वो यह समझते हैं कि आखिरत में भी वही कामयाब होंगे। यह शैतान का धोखा है। असल कामयाबी आखिरत की कामयाबी है। और इसका मेअयार दुनिया में माल दौलत का मालिक होना या इक्तिदार और कुव्वत मिल जाना नहीं है बल्कि इसका मेअयार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बताए हुए रास्ते पर चलना है।

जो शख्स खुदा के पैग़ाम में ग़फ़लत बरतता है हम उसपर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं। वह उसका साथी बन जाता है। ये शैतान ऐसे लोगों की सीधी राह से भटकाते हैं और अपनी जगह यह समझते हैं कि हम सीधी राह जा रहे हैं। आखिरकार जब यह शख्स हमारे यहां पहुंचेगा तो अपने शैतान से कहेगा काश मेरे और तेरे बीच मश्रिक और मगरिब की दूरी होती। तू तो बदतरीन साथी निकला। उस वक़्त उनसे कहा जाएगा तुम्हारे पछताने से क्या फ़ाड़दा, दुनिया में तुमने अपनी जानों पर जुल्म किया आज तुम और शैतान अज़ाब साथ साथ भुगतोगे। फिर फ़रमाया कि ये खुदा से बेख़ौफ़ लोग आप के साथ जो बेहूदगियों कर रहे हैं आप उनपर सब्र कीजिये और अपने काम में लगे रहिये। खुदा इनसे खुद निपट लेगा और आपको अज्रे अज़ीम अता फ़रमाएगा।

आखिरत के बारे में दलीलें देते हुए फ़रमाया गया जिस तरह तुम आप से आप ज़िंदा नहीं हो गए, बल्कि हमारे ज़िंदा करने से ज़िंदा हुए हो उसी तरह तुम आप से आप नहीं मर जाते बल्कि हमारे मौत देने से मरते हो। और एक वक़्त यकीनन ऐसा आता है जब तुम सब एक ही वक़्त जमा किये जाओगे। इस बात को तुम अपनी नादानी और जिहालत में आज नहीं मानते तो न मानो, जब वह वक़्त आ जाएगा, तुम खुद अपनी आंखों से देख लोगे कि अपने खुदा के हुज़ूर हाज़िर हो और तुम्हारा पूरा अज़माल नामा वगैर किसी कमी वेशी के तैयार है और तुम्हारे एक एक करतूत की गवाही दे रहा है। उस वक़्त तुम्हें मालूम हो जाएगा कि आखिरत के अक्कीदे से यह इन्कार और इसका यह मज़ाक जो तुम आज उड़ा रहे हो, तुम्हें किस क़दर मेंहगा पड़ा है।

सूरए अहक़ाफ़ हिज़रत से तीन साल पहले उस वक़्त नाज़िल की गई जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ताइफ़ से वापस तशरीफ़ ला रहे थे। यह नवुव्वत का दसवां साल था। इसे आमूल हुज़्न यानी रंजो ग़म का साल कहते हैं क्योंकि इसी साल हुज़ूर के चचा जनाब अबू तालिब और हज़रत ख़दीजतुल कुव्सा दोनों का विसाल हो गया जिसके बाद कुरैश बहुत दिलेर हो गए और आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बहुत तंग करने लगे। यहां तक कि घर से निकलना दूभर कर दिया। आख़िरकार आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मक्के से ताइफ़ तशरीफ़ ले गए कि शायद वहाँ के तीन बड़े सरदारों में से कोई ईमान ले आए मगर उन्होंने आपकी कोई बात न मानी बल्कि आपके पीछे गुठे लगा दिये जो रास्ते के दोनों तरफ़ दूर तक आप पर आवाज़े कसते, गालियां देते और पत्थर मारते चले गए यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ज़ख़्मों से चूर हो गए और आपकी जूतियां खून से भर गईं। इस हालत में ताइफ़ के बाहर एक बाग़ की दीवार से टेक लगाकर बैठ गए और अपने रब से फ़रियाद करने लगे - ऐ अरहमुर राहिमीन, तू सारे कमज़ोरों का रब है और मेरा भी, तू मुझे किसके हवाले कर रहा है। इसके जवाब में हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम पहाड़ों के फ़रिश्ते को लेकर आए। उसने अर्ज़ की आप हुज़्म दें दोनों तरफ़ के पहाड़ों को इनपर उलट दें। आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया - नहीं बल्कि मैं उम्मीद रखता हूँ कि इनकी नस्ल से आने वाले अल्लाह वहदहू ला शरीक की वन्दिगी कुबूल करलेंगे। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कुछ रोज़ तक नख़लह के मक़ाम पर ठहरे रहे। आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पेशान थे कि मक्का कैसे वापस जाएं। यह ख़बर सुनकर तो वहाँ के लोग और भी शेर हो जाएंगे।

उन्हीं दिनों ग़क़ रात आप नमाज़ में कुरआने मजीद की तिलावत फ़रमा रहे थे कि ज़िन्नो का एक ग़िरोह उधर से गुज़रा, उन्होंने कुरआन सुना तो ईमान ले आए और वापस जाकर अपनी क़ौम में इस्लाम की तब्लीग़ शुरू कर दी। अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इस सूरत के ज़रिये यह खुशख़बरी सुनाई कि इन्सान चाहे आपकी दावत से भाग रहे हो मगर बहुत से ज़िन्न इसके गिरवीदा हो गए हैं और वो इस अपनी ज़िन्न में फैला रहे हैं। साथ ही कुफ़्रार को उनकी गुमराहियों के नतीजों से आगाह किया और फ़रमाया कभी सोचा कि अगर कुरआन अल्लाह ही का कलाम है तो इस के इन्कार पर तुम्हारा क्या अंजाम होगा। फिर यह वाज़ेह किया कि मां बाप के हुक्क की अदाइगी का शज़र इन्सान को खुदा के हुक्क के शज़र की तरफ़ ले जाता है। चुनांचे फ़रमाया हमने इन्सान को हिदायत की कि वह अपने वालिदैन् के साथ नेक सुलूक करे। उसकी माँ ने मशक्कत उठाकर उसे अपने पेट में रखा और मशक्कत उठा कर उसे जना और हमल और दूध छुड़ाने में तीस माह लग गए यहाँ तक कि वह जवाती को पहुंच गया। अब अगर वह इन नेमतों का शुक्र अदा करता है जो अल्लाह ने उसको और उसके वालिदैन् को अता कीं और ऐसे नेक अमल करता है जिससे खुदा राज़ी हो तो इस तरह के लोगों से हम उनके बेहतरीन अअमाल को कुबूल करते हैं और उनकी लगज़िशों को दरगुज़र करते हैं। ये ज़न्नती लोगों में शामिल होंगे और जो नाफ़रमान बनकर अपने मां बाप से झगड़ा करते हैं खुसूसन इस बात पर कि वो उनको अल्लाह की इताअत पर आमादा करें, ये वो लोग हैं जिनपर अज़ाब का फ़ैसला चसपां हो चुका है। फिर जब ये नाफ़रमान लोग आग के सामने खड़े किये जाएंगे तो इनसे कहा जाएगा तुम अपने हिस्से की नेमतें अपनी दुनिया की ज़िंदगी में ख़त्म कर चुके और तुम ने उनके मज़े उड़ा लिये अब जो तकबुर तुम ज़मीन पर बग़ैर किसी हक़ के करते रहे, जो भी नाफ़रमानियां तुमने कीं उनके बदले में आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब दिया जाएगा।

सूरए अल-हुज़ुरात दर अरल मुसलमानों की बयान कर्दा सिफ़त आपस में रहम दिल हैं की तफ़सीर है। इसमें बताया गया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के किसी फ़ैसले पर कोई मुसलमान अपनी राय थोपने की कोशिश न करे। मुसलमानों का मामला आपस में भाईचारे पर होना चाहिये न कि पार्टि और ग़िरोहबन्दी की बुनियाद पर। किसी को अपने से कमतर समझना, बुरे नाम से पुकारना और ग़ीबत करना दिलों में नफ़रत पैदा करने का सबब हैं, इन से बचो। किसी के ऐबों की टोह

में न रहो. अल्लाह के यहां इज्जत और बुजुर्गी का मेअयार सिर्फ़ तक्वा है. इस्लाम कुबूल करके अल्लाह पर एहसान न जताओ. यह तो अल्लाह का एहसान है कि उसने तुम्हें इस्लाम कुबूल करने की और नेकी की तौफ़ीक़ आता की. अगर उसका हक़ अदा करोगे तो भरपूर सिला पाओगे.

इस सूरत में बहुत से मआशिरती एहकामात दिये गए हैं - (१) ऐ ईमान वालो, अल्लाह और रसूल के आगे पेशकदमी न करो और अल्लाह से डरो, अल्लाह सुनने और जानने वाला है. (२) ऐ ईमान वालो, नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की आवाज़ पर अपनी आवाज़ ऊंची न करो जैसा कि तुम आपस में बातें करते हो. (३) नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी सारे अअमाल के अकारत होने का सबब बन सकती है. (४) जो लोग नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने अपनी आवाज़ परत रखते हैं वो परहेज़गार हैं, उनके लिये माफ़िरत और अज़े अज़ीम है. (५) जो लोग नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को कमरों के पीछे से पुकारते हैं उनमें अक्सर नादान हैं किसी को कमरे के पीछे से नहीं दाख़िली दरवाज़े से पुकारना चाहिये. पुकारने के बाद थोड़ा इन्तिज़ार करना चाहिये. (६) ऐ ईमान वालो, जब कोई फ़ासिक़ कोई ख़बर लेकर आए तो तस्दीक़ कर लिया करा, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी ग़िरोह को अनजाने में कोई नुक़सान पहुंचा बैठो फिर अपने किये पर पछताना पड़े. (७) मुसलमानों के बीच रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ात मौजूद है, हर मामले में अपनी बात नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मनवाने की कोशिश न करो न ही किसी बात पर इसरार करो. (८) मूमिनो के दो ग़िरोह आपस में लड़ पड़ें तो बाक़ी मुसलमानों को तमाशा नहीं देखना चाहिये बल्कि उनके बीच सुलह सफ़ाई में अदल और इन्साफ़ से काम लेना चाहिये कि अल्लाह अदल को पसन्द करता है, जानिबदारी को नहीं. (९) मुसलमान एक दूसरे का मज़ाक़ न उड़ाएं, हो सकता है जिसका मज़ाक़ उड़ा रहे हों वह उनसे बेहतर हो. (१०) औरतें भी औरतों का मज़ाक़ न उड़ाएं, हो सकता है जिसका मज़ाक़ उड़ा रही हों वह उनसे बेहतर हो. (११) किसी मुसलमान भाई को ताना न दिया जाए. अपने भाई को ताना देना खुद को ताना देना है. (१२) किसी को बुरे लक़ब से न पुकारा जाए, मुसलमान होने के बाद बुरे अलक़ाब रखना बहुत बुरी बात है. (१३) बहुत ज़ियादा गुमान करने से परहेज़करना चाहिये कि कुछ गुमान गुनाह होते हैं. (१४) एक दूसरे की टोह में न रहो कि इससे आपस का एतिमाद ज़ख़मी होता है. (१५) पीठ पीछे किसी मुसलमान की बुराई नहीं करनी चाहिये, ऐसा करना मरे भाई का गोश्त ख़ाने के बराबर है. (१६) तमाम इन्सानों की अरल एक मां बाप हैं. ज़ात बिरादरी की तक़सीम सिर्फ़ पहचान के लिये है, अल्लाह के नज़दीक़ सबसे मक़बूल वह है जो अल्लाह से डरता है. (१७) ईमान लाने के बाद ईमान का एहसास जताना सही नहीं है जो ईमान लाएगा उसका फ़ायदा उसी को होगा जो अमल करेगा. अल्लाह उसको पूरा पूरा अज़्र देगा. अल्लाह ज़मीन और आसमान की हर छुपी हुई चीज़ का इल्म रखता है जो कुछ तुम करते हो वह सब उसकी निगाह में है.

सूरए ज़ारियात की बक़िया आयतों में अपनी शानो शौक़त पर मगरूर क़ौमों की हलाक़त के वाकिआत बयान करने के बाद कुरआन का अरल पैग़ाम दोहराया गया है. और लोगों को तक्वज़ह दिलाई गई है कि उनकी ज़िंदगी का मक़सद क्या है. अल्लाह ने उन्हें क्यों पैदा किया है. कुछ फलसफ़ी कहते हैं कि अल्लाह अपनी कुच्चतों का ज़हूर चाहता था कि लोग तरह तरह की मख़लूक़ देख कर उसकी तारीफ़ करें और वह खुश हो जैसा कि ओछा इन्सान चाहा करता है. या फिर वह तमाशा देखना चाहता है...नहीं....फ़रमाया हमने ज़िन्नो और इन्सानों को सिर्फ़ इसलिये पैदा किया कि वो हमारी बन्दिगी करें, इबादत करें. न मैं उनसे यह चाहता हूं कि वो रिज़क़ का सामान करें और न यह चाहता हूं कि वो मुझे खिलाएं. बिला शुबह अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है और कुच्चत सारी की सारी उसी के पास है.

सूरए तूर, सूरए नज़्म और सूरए क्रमर के बाद **सूरए रहमान** में इस बात को बार बार दोहराया गया है कि अपने सब की किन किन नेमतों को तुम झुटलाओगे और बताया गया है कि अल्लाह की रहमानियत है कि उसने तुम्हारी तालीम के लिये कुरआन उतारा. जब अल्लाह ने तुम्हें बोलने की

सलाहियत दी है तो तुम बात समझ भी सकते हो. इस आला सलाहियत का हक है कि इसी सलाहियत को तुम्हारी तालीम का जरिया बनाया जाए न कि अज़ाब के डंढे को. लेकिन तुम्हारी बदबस्ती है कि तुम इस नेमत से फ़ाड़दा उड़ाने के बजाए तवाही की निशानी मांग रहे हो.

सूरए बाकिआ में बताया कि तुम्हें लाज़िमन ऐसे ज़हान से साबिका पेश आना है जिसमें इज़ज़त और ज़िल्लत के पैमाने और मेअयार उन पैमानों और मेअयारों से बिल्कुल अलग होंगे जो इस दुनिया में आम तौर से इस्तेमाल होते हैं. वहाँ इज़ज़त और सरफ़राज़ी ईमान और नेक अअमाल की कमाई होगी ऐसे लोग मुक़र्रबीन और असहाबिल यमीन (दाएं हाथ वालों) का दर्जा पाएंगे. जन्नत की तमाम कामयाबियां और आसाइशें इन्हीं के हिस्से में आएंगी. रहे वो जो इस दुनिया ही के ग़ेश और राहत में मगन हैं वो असहाबिल शिमाल (बाएं हाथ वाले) होंगे. उनको दोज़ख़ में अबदी अज़ाब से साबिका पेश आएगा.

अल्लाह ने कई सवालात करके गौर करने की दावत दी है. कभी तुमने गौर किया है यह नुस्ख़ा जो तुम डालते हो इस तख़लीक़ (बच्चे) को तुम बनाते हो या हम बनाने वाले हैं. हमने तुम्हारे बीच मौत रखी है और इस बात से कमज़ोर नहीं हैं कि तुम्हारी शक्लें बदल दें और किसी और शक्ल में पैदा कर दें जिसको तुम नहीं जानते अपनी पहली पैदाइश को तो तुम जानते ही हो फिर क्यों सबक नहीं लेते. कभी तुमने सोचा, बीज जो तुम बोते हो उससे खेतियां तुम उगाते हो या हम उगाते हैं. हम चाहें तो इन खेतों को भूसा बना कर रख दें और तुम बातें बनाते रह जाओ कि हमें नुक़सान हो गया, हमारे नसीब फूटे हैं. कभी तुमने सोचा जो पानी तुम पीते हो उसे तुमने बादल से बरसाया है या उसके बरसाने वाले हम हैं. हम चाहें तो उसे ख़ारा पानी बना दें फिर क्यों तुम शुक्रगुजारी नहीं करते. कभी तुमने ख़याल किया जो आग तुम जलाते हो उसका दरख़्त (ईंधन) तुमने पैदा किया या उसके पैदा करने वाले हम हैं. हमने उसको हाजत मन्दों की ज़रूरत का सामान बनाया पस ऐ नबी रब्बे अज़ीम की तस्बीह करते रहिये.

सूरए अल-हदीद में मुसलमानों को ख़िताब करके उनको साबिकुल अच्छलून की सिफ़्त में अपनी जगह बनाने पर उभारा है यानी वह जो हक़ पहुंचते ही सब से आगे बढ़कर उसे कुबूल करते हैं और उसका तरीक़ा यह बताया है कि जिस ज़माने में हक़ मग़लूब है और उसके ग़ालिब आने का दूर दूर तक पता नहीं, उसी ज़माने में अपनी जान और माल उसके लिये ख़पा दो. ऐसे लोगों का मरतबा उनसे कहीं ऊंचा होगा जो हक़ को ग़ालिब आता देख कर उस के लिये ख़र्च करें या जानें सुपुर्द करें. अगरचे अल्लाह का वादा दोनों से अच्छा है मगर अल्लाह का कुर्व हासिल करने के लिये दोनों में बड़ा फ़र्क़ है.

तमाम मुसलमानों को ख़िताब करके कहा अगर दुनिया की मेहबूत में फंस कर तुमने आख़िरत की अबदी बादशाहत हासिल करने का हौसला खो दिया तो यहूद की तरह तुम्हारे दिल भी सख़्त हो जाएंगे और तुम्हारा अंजाम भी वही होगा जो उनका हुआ. कौन है जो अल्लाह को कर्ज़ हसना दे और अल्लाह उसको कई गुना करक़ लौटा दे. क़यामत के दिन मूमिनीन के आगे पीछे तूर दौड़ रहा होगा. उन्हें जन्नत की बशाऱत दी जाएगी. यह बड़ी कामयाबी है. मुनाफ़िक्कीन अख़्यरे में कहेंगे कि हमें भी थोड़ी सी रौशनी दे दो. जवाब मिलेगा पीछे हट जाओ. उनके बीच एक दीवार हाइल होगी, एक तरफ़ रहमत दूसरी तरफ़ अज़ाब होगा. वो मूमिनों को पुकार के कहेंगे हम तो दुनिया में तुम्हारे साथ थे. वो कहेंगे मगर तुम्हें शक़ था. झूठी तबक्कुआत में पड़े रहे. धाख़ेवाज़ शैतान ने तुम्हें धोख़े में रखा. आज तुमसे और काफ़िरी से कोई फ़िदिया न लिया जाएगा. तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है. क्या ईमान लाने वालों के लिये अभी वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक़्र से पिघल जाएं और हक़ के आगे झुक जाएं. मुसलमानों को उनकी तरह नहीं होना चाहिये जिन्हें किताब दी गई फिर एक लम्बी मुदत उनपर गुज़र गई तो उनके दिल सख़्त हो गए और आज उनमें अक्सर फ़ासिक़ हो गए. अफ़सोस कि मुसलमान आज उन्हीं के तक्शे क़दम पर चल रहे हैं.

उन लोगों के ख़याल की तरदीद की गई है जो मज़हब के रहबानी तसच्चुर के तहत जिहाद और उससे

लिये खर्च करने को दुनियादारी समझते थे और मुसलमानों के जिहाद के शौक पर लअन तअन करते थे। फ़रमाया, वेशक हमने अपने रसूलों को बाज़ेह दलीलों और हिदायत के साथ भेजा। उनके साथ शरीअत और किताब उतारी ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ाइम हो सकें। और लोहा भी उतारा जिसमें बड़ी ताक़त भी है और लोगों के लिये बहुत फ़ाइदे भी हैं और इससे अल्लाह ने यह भी चाहा कि वह उन लोगों को नुमायां कर दे जाँ वे देखें अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं। यानी लोहे की ताक़त से दीन क़ाइम करने हैं हालाँकि अल्लाह और रसूल ग़ैब में हैं। वेशक अल्लाह बड़ा ही ज़ोर आवर और मालिक है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी उम्मत का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया ईसा बिन मरयम और उन लोगों के दिलों में जिन्होंने अल्लाह की पैरवी की, रहमत रखी। रोहबानिषत तो उन्होंने खुद ईजाद कर ली। हमने तो उनपर सिर्फ़ अल्लाह की ख़ूशनूदी की तलब फ़र्ज़ की थी तो उन्होंने उसकी हुदूद जैसी कि मलहूज़ रखनी चाहिये थीं, नहीं रखीं।

सूरए मुजादिलह में एक ख़ानदान की पेश आने वाली मुश्किल का हल बताते हुए सबक़ दिया गया है कि अगर किसी को इस्लाम के किसी हुक्म के सबब ज़िंदगी में कोई मुश्किल पेश आए तो उसको निहायत खुलूस के साथ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने अर्ज़ करे उम्मीद है कि उसकी मुश्किल हल होने की राह निकल आएगी। नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद यही काम उन ख़ुदातरस उलमा और फ़ुक्कहा के ज़रिये पूरा हो सकता है जो अयाम की मुश्किलात को समझने और हल करने की सलाहियत भी रखते हों। वह अमली मिसाल यह है कि एक ख़ातून के शौहर ने एक दफ़ा गुस्से में यह कह दिया कि अगर मैं तुम्हें हाथ लगाऊँ तो ऐसा है जैसे मैंने अपनी माँ को हाथ लगाया। अरबों में इन अलफ़ाज़ से तलाक़ हो जाती थी और मियाँ बीवों में लाज़िमन जुदाई हो जाती थी। चुनांच ख़ातून बहुत परेशान हुई कि अर्धेइ उम्र में शौहर और बच्चों से जुदा होकर कहां जाएगी। उन्होंने सारा मामला हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से आकर बयान किया और बड़ी आजिज़ी से दरख़्वास्त की कि इस मसअले का हल तजवीज़ फ़रमाएं। मगर उस वक़्त तक वही से ऐसी बात के बारे में कोई फ़ैसला नहीं आया था इस लिये आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ख़ामोश रहे। ख़ातून बार बार तबज्जह दिलाती रहीं।

आख़िर में वही नाज़िल हुई कि अल्लाह तआला इस ने औरत की बात सुन ली जो तुम से झगड़ती थी। तुम में जो लोग अपनी बीवियों को माँ कह बैठें तो इस कहने से वो माएं नहीं हो जातीं अलबत्ता इस तरह के लोग एक नागवार और झूठी बात कहते हैं। अब अगर वो पलटना चाहें तो उन्हें हाथ लगाने से पहले कफ़फ़ारे के तौर पर एक गुलाम आज़ाद करना होगा। अगर गुलाम मयस्सर न हो तो लगातार दो माह के रोज़े रखने होंगे और इसकी ताक़त न हो तो साट मिरकीनों की ख़ाना ख़िलाएं। इसके बाद कुछ ज़रूरी मजलिसी आदाब की तलक़ीन की गई है। फ़रमाया आप जानते हैं कि आसमातों ज़मीनों की हर चीज़ का इल्म अल्लाह को है। जहां कहीं तीन आदमी बात चीत करते हों चौथी ज़ात अल्लाह की होती है। जब पांच होते हैं तो छठी ज़ात अल्लाह की होती है। ख़ुफ़िया बात करने वाले इससे कम हों या ज़ियादा, वो जहां कहीं होते हैं अल्लाह उनके साथ होता है। फिर क़यामत के रोज़ अल्लाह उन्हें बताएगा कि उन्होंने क्या कुछ किया। अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखता है। जैसा कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और ख़ातून के बीच बात हुई जो अल्लाह ने सुन ली और उसके बारे में हुक्म नाज़िल फ़रमाया। अलबत्ता सरगोशी से मना किया गया ख़ास तौर पर यह कि गुनाह, जुल्म और ज़ियादती और रसूल की नाफ़रमानी के लिये सरगोशियां अल्लाह के नज़दीक़ कुफ़र की बात है। ऐसी बातें या हरकतें भी नहीं करना चाहियें जिनसे लोगों के लिये तंगदिली का इज़हार हो या तकलीफ़ पहुंचे।

सूरए हथ में मुनाफ़िक़ीन से ख़िताब है। उन्हें आगाह किया गया है कि वो इन वाक़िआत से सबक़ लें। जिन दुश्मनों की वो नाक्राबिले तसख़ीर समझते थे, यानी मदीने के यहूदी, अल्लाह ने किस तरह वो हालात पैदा कर दिये कि वो खुद ही अपने घर उजाड़ कर मदीना छोड़ने पर मजबूर हो गए और कोई भी उनके काम न आ सका। मुसलमानों से कहा गया, ऐ ईमान वाले ! अल्लाह से डरो और हर शय्स

को फिक्रमन्द रहना चाहिये कि उसने कल के लिये क्या सामान तैयार किया है. तुम हर हाल में अल्लाह तआला से डरते रहो वह तुम्हारे सारे अमाल से बाख़बर है. उन लोगों की तरह न हो जाओ जो अल्लाह को भूल गए. तो अल्लाह ने खुद उन्हें नज़र अंदाज़ कर दिया. यही लोग नाफ़रमान हैं. जन्नती और देज़ध्री बराबर नहीं हो सकते. जन्नत में जाने वाले ही अस्ल में कामयाब हैं. साथ ही उनके दिलों में नमी पैदा करने के लिये बताया कि यह कुरआन वह चीज़ है कि अगर पहाड़ पर नाज़िल किया जाता तो वह भी अल्लाह के झ्रौफ़ से पाश पाश हो जाता. अगर यह भी तुम्हारे दिलों पर असर नहीं कर रहा तो गोया तुम्हारे दिल पत्थर से भी ज़ियादा सख़्त हो चुके हैं और खुद को संगदिली की सज़ा के मुस्तहक़ बना रहे हो.

सूरए मुत्तहिना में उन मुसलमानों से ख़िताब है जिन्होंने हिजरत के तकाज़ों को अच्छी तरह नहीं समझा उन्हें बताया गया कि हिजरत इस तरह होती है जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हिजरत की थी कि पिछले माहौल से बिल्कुल तअल्लुकात तोड़ कर सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से वाबस्ता हो जाओ. मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ. तुम उनसे महबूब की पैंगें बढ़ाते हो जो चाहते हैं कि तुम उल्टे काफ़िर हो जाओ. तुम्हारे रिश्ते नाते और आल औलाद क़यामत के दिन कुछ भी तुम्हारे काम न आएंगे.

फिर यह वज़ाहत की कि काफ़िरों से दिली दोस्ती रखने को मना किया जा रहा है. खुसूसन उनसे जिन्होंने दीन के मामले में तुम से जंग की हो. अल्लाह तुम्हें उन लोगों के साथ हुस्ने सुलूक और इन्साफ़ करने से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में न तुमसे जंग की है और न तुम्हें घर से निकाला है. इसी तरह यह भी ऐलान किया गया कि मुसलमान औरत का काफ़िर शहर से और मुसलमान मर्द का काफ़िर औरत से निकाह जाइज़ नहीं है. फिर हिदायत की कि जो औरतें इस्लाम कुबूल करें उनसे आप बड़ी बड़ी बुराइयों से बचने का एहद लें जो उस वक़्त अरब समाज में फैली हुई थीं.

सूरए सफ़ में उन मुसलमानों से ख़िताब है जो पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इताअतगुज़ारी का एहद कर चुकने के बाद अल्लाह की राह में जिहाद से जी चुरा रहे थे उनको ख़बरदार किया गया कि अगर इताअत का एहद याती कलिमा पढ़ने के बाद तुम्हारी यही रविश रही तो तुम्हारा भी वही हाल होगा जो यहूदियों का हुआ कि अल्लाह तआला ने उनके दिल टेढ़े कर दिये और हमेशा के लिये हिदायत से मेहरूम कर दिये गए. जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उनके पास आए तो मुअजिज़ात के बावजूद उनका इन्कार कर दिया और अब इस्लाम की मुअ़ालिफ़त कर रहे हैं. हालांकि इस्लाम उनकी (मुश्रिकीन की) मर्ज़ी के ख़िलाफ़ इस सरज़मीन में सारे दीनों पर ग़ालिब आ कर रहेगा. कमज़ोर मुसलमानों को सही राह अपनाने की तलकीन की गई कि दीन की राह में जान माल से जिहाद करो कि कामयाबी की यही राह है. आख़िरत में भी और दुनिया में भी अल्लाह की मदद और उसकी फ़तह से हमकिन्तार होंगे जो अब आने वाली है और जो तुम्हारी तमन्ना भी है. जिस तरह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारियों के साथ हुआ था कि उन्हें अल्लाह के रास्ते में पुकारा गया तो उन्होंने लब्यैक कहा.

सूरए जुमुआ में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ की तरफ़ इशारा करके मुश्रिकीने मक्का पर बाज़ेह कर दिया गया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बिअसत की शकल में अल्लाह ने जिस अज़ीम नेमत से उन्हें नवाज़ा है उसकी क़द्र करें और यहूदियों की साज़िशों का शिकार होकर अपने को इस फ़ेअले अज़ीम से मेहरूम न करें. जिन यहूदियों को तौरात दी गई मगर उन्होंने इसका बार न उठाया उनकी मिसाल उस ग़धे की तरह है जिसपर किताबें लदी हुई हों. इससे भी बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयात को झुटला दिया. अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता. इस आयात में बहुत बड़ी बात कही गई है कि अगर तौरात दी गई और वो उसपर अमल न कर सके या पढ़ना नहीं चाहते उनकी मिसाल ग़धे पर लदी हुई किताबों जैसी है कि ग़धा जानता ही नहीं कि उसकी पीठ पर क्या लदा हुआ है. अगर यह मिसाल यहूदियों पर सादिक़ आती है तो क्या मुसलमानों पर सादिक़ नहीं आ सकती जो कुरआन नहीं पढ़ते, न उसपर अमल करते हैं. आख़िर उनपर भी तो यह किताब उतारी गई और वो

भी गधे की तरह इसे उड़ाए हुए हैं। मगर उन्हें यह नहीं मालूम कि इस किताब के अन्दर क्या है।

जुमुए की अज्ञान होते ही नमाज़ की तरफ़ दौड़ने का हुक्म दिया गया है और ख़रीदो फ़रोख़्त मना कर दी गई है। और इस अमल को बेहतरीन अमल करार दिया गया है। अलबत्ता नमाज़ के बाद फिर कारोबार करने की इजाज़त है। अल्लाह का फ़ज़ल तलाश करने का हुक्म है साथ ही कसरत से खुदा की याद भी होनी चाहिये। फिर मुसलमानों के एक गिरोह को मलामत की गई कि उसने दुनियावी कारोबार के लालच में जुमुआ और रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का एहतियाम मलहूज़ नहीं रखा, इसका मतलब यह है कि उन्होंने उस सौदे की हकीकत को नहीं समझा जो उन्होंने कलिमा पढ़कर अपने रब से किया है।

सूरए मुनाफ़िकून के पहले रूकू में मुनाफ़िकों का किरदार बताया गया है कि ईमान कस्में खाकर जताने की नहीं बल्कि अमल करके दिखाने की चीज़ है मगर उनका हाल यह है कि दुनिया की महबूत में गिरफ़्तार हैं। दूसरे रूकू में मुसलमानों की ख़बरदार किया गया है कि वो माल और औलाद की महबूत में फंस कर अल्लाह की याद से माफ़िल न हों। अगर आज उन्होंने अल्लाह की राह में माल ख़र्च न किये तो मरते वक़्त पछताने के सिवा कुछ हाथ न आएगा। गोया मुनाफ़िक़ का जो अस्त सबब है उससे बचने की ताकीद की गई है।

सूरए तगावुन में बताया गया कि इस दुनिया की ज़िंदगी ही कुल ज़िंदगी नहीं बल्कि अस्त ज़िंदगी तो आख़िरत की ज़िंदगी है जो लाज़िमन आकर रहेगी और यह फ़ैसला वहीं होता है कि इस दुनिया में आकर कौन हारा और कौन जीता। पस जो आख़िरत में कामयाबी हासिल करने का हौसला रखता है उस पर वाज़िब है कि वह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खुशनुदी हासिल करने की राह में हर कुरबानी देने के लिये तैयार रहे। और किसी की मलामत और नसीहत की परवाह न करें।

सूरए तलाक़ और सूरए तहरीम दोनों में बताया गया है कि तफ़रत और महबूत दोनों तरह के हालात में सही रवैया क्या है।

सूरए मुल्क की शुरुआत ही अल्लाह की अज़मत के इज़हार से की गई है। बड़ी ही अज़मत और बरकत वाली है वह ज़ात जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में इस काइनात की बादशाही है और वह हर चीज़ पर कादिर है। जिसने पैदा किया मौत और ज़िंदगी की ताकि इम्तिहान ले कि तुम में से कौन सबसे अच्छे अअमाल वाला बनता है। काफ़िरों पर अज़ाब की कैफ़ियत बयान करते हुए फ़रमाया कि जिन्होंने अपने रब का इन्कार किया उनके लिये जहन्नम का अज़ाब है। जो बुरा ठिकाना है। जब उसमें फँके जाएंगे, हदाइने की आवाज़ सुनेंगे, वह जोश ख़ा रही होगी, शिंदते ग़ज़ब से फटी जा रही होगी। हर बार जब कोई गिरोह डाला जाएगा उससे दारोगा पूछेगा क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था। वो कहेंगे आया था मगर हमने उसे झुटला दिया और कह दिया कि खुदा ने कुछ उतारा ही नहीं, तुम ही लोग भटके हुए हो। यह भी कहेंगे कि काश हम सुनते और समझते तो इस तरह जहन्नमी न बनते। इस तरह वो अपने कुसूर का एतियारा कर लेंगे। लानत है दोज़खियों पर।

रहे वो लोग जो बिना देखे खुदा से डरते हैं, उनके लिये मग़फ़िरत और बड़ा अज़्र है। तुम चुपके से बात करो या बलन्द आवाज़ से, अल्लाह के लिये बराबर है। वह तो दिलों के हाल तक जानता है। क्या वही न जानेगा जिसने पैदा किया। वह तो बहुत ही बारीक बूँ और बाख़बर है। फिर नाफ़रमानों को ललकारा गया कि तुम बेख़ौफ़ हो गए हो कि अब तुम्हें ज़मीन में धंसाने और आसमान से पथराव करने वाला अज़ाब नहीं आ सकता। बताओ तुम्हारे पास वह कौनसा लश्कर है जो खुदाए रहमान के मुकाबले में तुम्हारी मदद कर सकता है। बताओ वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे सके अगर वह अपनी रोज़ी रोक ले। इनसे पूछो अगर तुम्हारा पानी उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिये यह साफ़ पाक और शफ़फ़ पानी निकाल कर लाए। कह दो वह रहमान है, हम उसपर ईमान लाए हैं और उसी पर हमने भरोसा किया है।

तुम बहुत जल्द जान लोगे कि खुली गुमराही में कौन है।

सूरए अल-क़लम में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दावत आपकी लाई हुई किताब और आपके आला किरदार का मवाज़ना कुरैश के फ़ासिक लीडरों के किरदार से करके यह दिखाया कि वह वक्त भी दूर नहीं जब दोस्त दुश्मन दोनों पर बाज़ह हो जाएगा कि कितनी बाग़डोर फ़ितना पड़े हुए लीडरों के हाथों में है जो उनका तबाही के रास्ते पर ले जा रहे हैं। और कौन लोग हैं जो हिदायत के रास्ते पर हैं और वही फ़लाह पाने वाले बनेंगे। नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में गवाही दी कि आप एक आला किरदार पर हैं और कुरैश का किरदार बताया कि झूठी क़समें खाने वाले ज़लील, इशाराबाज़, नेकियों से रोकने वाले, हृद से आगे बढ़ने वाले, लोगों का हक़ मारने वाले, पत्थर दिल और शेख़री बाज़, यह सब इस लिये कि अल्लाह ने उन्हें माल और औलाद अता कर दी है। इस मौक़े पर एक बाग़ वालों की मिसाल देकर समझाया गया कि इस थोख़े में न रहो कि अब तुम्हारे पेश में कोई ख़लल डालने वाला नहीं। जिस खुदा ने तुम्हें दिया है उसके इस्तिथार में है कि वह सब कुछ छीन ले। आख़िरत के अंजाम की तरफ़ तबज़्जह दिलाते हुए सवाल किया गया कि आख़िर उन्होंने खुदा को इतना बेंडसाफ़ कैसे समझ रखा है कि वह नेकों और बंदों में कोई फ़र्क़ नहीं करेगा। साथ ही हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तसल्ली दी गई कि ये लोग जो बातें बना रहे हैं उनका भ्रम न कीजिये, सब्र के साथ अपने रव कं फ़ैसले का इन्तिज़ार कीजिये और उस तरह की जल्दी दिखावे से बचिये जिसमें हज़रत यूनूस अलैहिस्सलाम मुवतिला हो गए थे। और फिर उन्हें आजमाइशों से गुज़रना पड़ा था।

सूरए अलहाक्क़ह में रसूलों की दावत को झुटलाने वालों का अंजाम बताते हुए क़यामत की हौलताक तसवीर खींची गई है। फ़रमाया याद रखो जब सूर में एक ही फूँक मारी जाएगी और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में पाश पाश कर दिया जाएगा तो उस दिन तुम्हारी पेशी होगी और तुम्हारी कोई बात ढकी छुपी न रहेगी। पस पेशी के दिन जिस दाएं हाथ में अअमाल नामा मिलेगा उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहेगा जिसे बाएं हाथ में अअमाल नामा मिलेगा वह हज़रत से मौत मांग रहा होगा। आवाज़ आएगी इसको पकड़ो, इसकी गर्दन में तौक डाल दो, इसको जहन्नम में झाँक दो और एक ज़ंजीर में जिसकी लम्बाई सत्तर हाथ है जकड़ दो। यह वह है जो खुदाए अज़ीम पर ईमान नहीं रखना और न मिरकीनों को खाना खिलाने पर आमादा होता था।

सूरए अलमआरिज में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सब्र की तलकीन की गई है कि यह बहुत तंग नज़र लोग हैं इस वक्त खुदा ने इनको ढील दी है तो इनके पाँव ज़मीन पर नहीं पड़ रहे हैं। ज़रा पकड़ में आ जाएं तो सारी शेख़री भूल जाएंगे और तमन्ना करेंगे काश इस दिन के अज़ाब से छूटने के लिये अपने बेटों, अपनी बीबी, अपने भाई और अपने कुम्बे को जो उसका मददगार रहा है और तमाम एहले ज़मीन को बदला में देकर अपनी जान छुड़ा ले।

सूरए नूह में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को पिछली सूरत में तलकीन किये हुए सब्र के लिये नमूने के तौर पर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का क़िससा बयान किया कि उन्होंने कितने लम्बे असें तक याती साढ़े नौ सौ बरस अपनी क़ौम को दावत दी और इतने तबील सब्र और इन्तिज़ार के बाद उनकी क़ौम को अज़ाब में डाला गया। इस तरह हक़ का दावा करने वालों को बताया गया कि अपनी आख़िरी मंज़िल के लिये सब्र और इन्तिज़ार के कितने मरहलों से गुज़रना पड़ता है साथ ही यह बात भी कि अल्लाह नआला जल्दबाज़ों की जल्दबाज़ी और तअनो तशनीअ के बावजूद उनको अगरचे एक लम्बी मुदत तक ढील देता है मगर विलआख़िर एक रोज़ पकड़ लेता है तो उनको कोई छुड़ाने वाला नहीं होता।

सूरए जिन्न में कुरैश को ग़ैरत दिलाई गई कि जिन्नात जो कुरआन के बग़हे रास्त मुन्नातव नहीं हैं, वो जब रास्ता चलते इसको सुन लेते हैं तो तड़प उठते हैं और अपनी क़ौम के अन्दर इसे फैलाने के लिये उठ खड़े होते हैं। एक तुम हो कि इसे ख़ास तुम्हारे लिये उतारा जा रहा है और इसकी बरकतों से

नवाज़ने के लिये खुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दिन रात एक किये हुए हैं मगर तुम्हारी बदबस्ती कि इस तरफ़ ध्यान देना तो दूर तुम उलटे इसके दुश्मन बन गए हो।

सूरए मुज्जम्मिल और सूरए मुद्स्सिर दोनों सूरतों की शुरूआत ऐ चादर में लपिटने वाले और ऐ चादर लपेटे रखने वाले से की गई है। इससे यह ज़ाहिर करना मकसूद है कि अम्बियाए किराम अलैहिमुस्साम अल्लाह की मख़लूक के लिये बेइन्तिहा रहम करने वाले, शफ़ीक़ और अपने स्व की डाली हुई ज़िम्मेदारियों के मामले में बहुत हस्सास बाक़े होते हैं। वो अपनी जान तोड़ कोशिशों के बावजूद जब यह देखते हैं कि लोगों की दुश्मनी उनसे बढ़ती जा रही है तो उन्हें यह ख़याल होता है कि कहीं उनके काम में कोई कोताही तो नहीं हुई और यह फ़िक्र उन्हें बहुत रंजीदा कर देती है और वो चादर में सिमट कर अपने माहौल से किनारा कशी इग्निपार करते हुए अन्दर ही अन्दर कोताहियों की तलाश शुरू कर देते हैं।

सूरए अल-मुज्जम्मिल में चादर ओढ़ने वाले के प्यारे लफ़्ज़ से नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़िताब करते हुए इस हालत से निकलने का रास्ता बताया गया है कि रात के वक़्त उसके हुज़ूर क़याम का एहतिमाम करें, इसमें टहर टहर के कुरआन पढ़ो। इससे दिल को टहराव मिलेगा और दिमाग़ को बसीरत हासिल होगी। और आगे की ज़िम्मेदारियों का बोझ उठाने की अहलियत पैदा होगी।

सूरए दहर में क़यामत की यह दलील दी गई है कि अल्लाह तआला ने इन्सान के अन्दर सुनने और देखने और इनके ज़रिये अच्छे बुरे में तमोज़ा करने की जो सलाहियत रखी है उसका तक्ज़ा यह है कि ऐसा दिन आए जिसमें लोगों को उनके किये का बदला मिल सके वरना फिर नैकी बदी का ख़ड़ाग़ करने की क्या ज़रूरत थी।

सूरए अल-मुरसलात में तेज़ चलने वाली हवाओं की गवाही पेश की गई है कि यह हर वक़्त के आने की याद दिहानी कराती रहती है जब अल्लाह लगाम छोड़ देता है तो यह अन्धाधुन्ध गुबार उड़ाती बादलों का फैला देती है। कहीं पानी बरसाकर तबाही बरपा कर देती है और कहीं से उन्हें उड़ा ले जाकर लोगों को तबाही से बचा लेती है। इस तरह कहीं नाफ़रमानी के अज़ाब में मुन्निला किये जाने की याद दिहानी कराती है और कहीं अल्लाह की शुक्रगुज़ारी और रबूबियत और आदमी की ज़बाबदिही की ज़िम्मेदारी को याद दिलाती है। बस इस तरह एक दिन आसमान फट पड़ेगा, पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे, वही दिन फ़ैसले का होगा। झुटलाने वालों से कहा जाएगा चलो इस धुंए की तरफ़ जो तीन तरफ़ से छुपा हुआ है और बस वही तरफ़ बची हुई होगी जिस तरफ़ मुज़रिमां को रंगद कर लाया जा रहा होगा। यह है फ़ैसले का दिन। हमने तुमको भी और तुम से पहलों को भी आज जमा कर लिया है। तो क्या है आज तुम्हारे पास बचाव के लिये कोई दाव ! यहाँ जब उनसे कहा जाता है कि अपने स्व के आगे झुको तो नहीं झुकते अब इसके वाद किस चीज़ पर ये ईमान लाएंगे।

सूरए नबा में ज़मीन और उस पर पहाड़, खुद इन्सानों में मर्द और औरत के जोड़े, महनत और मशक्कत की थकान दूर करने के लिये नींद, आराम के लिये रात और कमाने के लिये दिन, सर पर सात मोहक़म आसमान और उसमें एक रौशन चिराग़, पानी से भरे बादल और उनके ज़रिये ग़ल्ला नवातात और घने बाग़ की पैदाइश, क्या ये सब चीज़ें गवाही नहीं दे रही हैं कि इस दुनिया का भी एक जोड़ा होना चाहिये यानी अम्बिरत और वही है फ़ैसले का दिन। उस दिन सब उथल पुथल हो जाएगा और जहन्नम अचानक सरकशों का टिकाना बन कर सामने आजाएगी और जिन्होंने रोज़े जज़ा से डरते हुए ज़िंदगी गुज़ारी होगी वो बेअब्दज़ा ऐश में होंगे और अपनी नेकियों का पूरा पूरा बदला पाएंगे। उस रोज़ अल्लाह के हाँ कोई उसकी इज़ाज़त के बिना किसी के लिये सिफ़ारिश की हिम्मत नहीं कर सकेगा। और जो इज़ाज़त के बाद बोलेगा तो बिल्कुल सच सच बोलेगा। सरकश उस रोज़ बदबस्ती से सर पीट लेंगे कश हम मिट्टी ही में रहें होते, हमारा वुजूद ही न होता। हम तुम्हें उस अज़ाब से डरा रहे हैं जो करीब आ लगा

है, जिस रोज़ आदमी वह सब कुछ देख लेगा जो उसने दुनिया में किया है और इन्कार करने वाला काफ़िर कहेगा कि काश मैं मर के मिट्टी में मिला रहता और कभी उठाया न जाता।

सूरए नाज़िआत में बताया गया कि सरकश सिर्फ़ उस वक़्त तक अल्लाह के अज़ाब से महफूज़ हैं जब तक उन्हें उसने मोहलत दे रखी है। वह जब हुक्म देगा यही हवाएं और वादल जो ज़िंदगी का लाज़िमा हैं, उसके लिये अल्लाह का क्रहर बन जाएंगे। जब वह हंगामए अज़ीम बरपा होगा, इन्सान अपने करतूतों को याद करेगा, जहन्नम खोल कर रख दी जाएगी। जिसने खुदा के मुक़ाबले में सरकशी की दुनियावी ज़िंदगी को तरजीह दी, दोज़ख़ ही उसका ठिकाना होगा। जिसको डर है कि अल्लाह के सामने खड़ा होना है, और इस डर से उसने अपने तपस को बुराइयों से रोके रखा, उसका ठिकाना जन्नत में होगा।

सूरए अबस में फ़रमाया गया जो चाहते हैं कि जब वो मिलने आएंगे तो आप ग़रीबों को अपने पास से हटा दिया करें, तो आप उनकी नाज़बंदारी में ऐसा न करें। शौक़ से आने वालों का तरबियत आपका फ़र्ज़ है। यह तो एक नसीहत है जिसका जी चाहे कुबूल करे। इन्सान काइनात पर ग़ौर करे, अपनी पैदाइश को सोचे, अपनी खुराक पर ग़ौर करे। जब क़यामत आएगी, आदमी अपने भाई माँ बाप भाई बहन बेटियों और बेटों से दूर भागेगा। हर आदमी अपनी फ़िक्र में रहेगा। कुछ चेहरे चमक रहे होंगे हश्शाश बश्शाश, खुशो ख़ुर्म होंगे। कुछ चेहरों पर ख़ाक उड़ रही होगी, कलौंस छाई हुई होगी। यही काफ़िर और फ़ाजिर लोग होंगे।

सूरए तकवीर में क़यामत की हौलनाकी बयान की गई है। जब सूरज लपट दिया जाएगा, जब तारे झड़ जाएंगे, जब पहाड़ हिलने लगेंगे, जब गा़भन ऊंटनी से लोग गाफ़िल हो जाएंगे, जब वहशी जानवर जमा किये जाएंगे, जब समन्दर में आग लगा दी जाएगी, जब रूह जिस्मों से जोड़ी जाएगी, जब ज़िंदा दर गोर बच्ची से पूछा जाएगा तुझे किस जुर्म में ज़िंदा दफ़न किया गया था, जब अअमाल नामे खोलते जाएंगे, जब आसमान का पर्दा हटाया जाएगा, जब जहन्नम दहकाई जाएगी, जब जन्नत करीब लाई जाएगी, जब हर तरफ़ नफ़सी-नफ़सी होगी, किसी को किसी की ख़बर न होगी, इन्सान और वहशी, दोस्त और दुश्मन हौल के मारें इकट्ठे हो जाएंगे और जब जहन्नम दहकाई जाएगी और जन्नत करीब ले आई जाएगी उस वक़्त हरशख्स जान जाएगा कि वह क्या लेकर आया है।

सूरए इन्फितार में है कि ऐसा दिन आना लाज़िमी है जब यह सारा निज़ाम हौलनाकी के साथ ख़त्म हो जाएगा। यहां मुजरिमों को मुहलत से धोखा नहीं खाना चाहिये। यह तो परबर्दिगार की शाने करीमी के सबब है ताकि वो अपनी इस्लाह कर लें। खुदा ने तुमपर लिखने वाले निगराँ मुकर्रर कर रखे हैं जो तुम्हारे हर काम को जानते हैं। बेशक नेकियां करने वाले ऐश में होंगे और नाबकार दोज़ख़ में। उस दिन कोई जान किसी दूसरी जान के लिये कुछ न कर सकेगी। यह फ़ैसला उस दिन सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह के इख़्तियार में होगा।

सूरए मुतफ़िफ़ीन में इस आम बेईमानी पर गिरफ़्त की गई है कि दूसरों से लेना हो तो पूरा ताप तौल कर लें और देना हो तो डब्दी मार दें। यह बददियानती आख़िरत के हिज़ाब किताब से सफलत का नतीजा है। डब्दी मारों के अअमाल पहले ही मुजरिमों के रजिस्टर में दर्ज हो रहे हैं और उन्हें सग़्न अज़ाब का सामना करना होगा। और नेक लोगों के अअमाल बलन्द पाया लोगों के रजिस्टर में दर्ज हो रहे हैं। आज कुफ़्रार अपने हाल में मगन हैं और ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। उस दिन ईमान वाले अपनी कामयाबी और ऐश पर खुश होंगे और काफ़िरों का मज़ाक़ उड़ाएंगे।

सूरए शिक़ाक़ में फ़रमाया ज़मीन और आसमान एक दिन पाश पाश हो जाएंगे, इस लिये कि अल्लाह उन्हें ऐसा हुक्म देगा वो बे चूतों चिरा उसकी तामील करेंगे। उस रोज़ जो कुछ ज़मीन के पेट में है यानी मुर्दा इन्सानों के जिस्म और उनके अअमाल की शहादतें सब को निकाल कर वह बाहर फेंक देगी और उस रोज़ जज़ा और सज़ा का होना इतना यकीनी है जितना दिन के बाद रात का आना।

सूरए अल-बुरुज के मुताबिक काफिर ईमान वालों पर जो जुल्मी सितम तोड़ रहे थे उसपर उन्हें तसल्ली देते हुए असहाबुल उख्रदूद का क्रिस्सा सुनाया गया। जिन्होंने ईमान लाने वालों को आग से भरे हुए गढ़ों में फैंक फैंक कर जला दिया था। ईमान लाने वालों ने आग में जलना गवारा कर लिया मगर ईमान से फिरना गवारा न किया। इस तरह अब ईमान वालों को चाहिये कि वो भी सख्तियों का गवारा कर लें मगर ईमान की राह न छोड़ें। अल्लाह देख रहा है, वह जालिमों को सज़ा देकर रहेगा। जालिमों से कहा गया कि वो अपनी ताकत के घमण्ड में न रहे फिरऔन जैसे ताकत वालों के अंजाम से सबक लें।

सूरए अत-तारिक में कहा गया कि काइनात के सैयारों का निज़ाम गवाह है कि यहां कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो एक हस्ती की निगहबानी के बिना अपनी जगह क़ाइम रह सके। खुद इन्सान पानी की एक बूंद से पैदा किया गया। पस जो अल्लाह उसे वुजूद में लाया वह यकीनन उसे दोबारा भी पैदा कर सकता है ताकि उसके उन तमाम राज़ों की जांच पड़ताल की जाए जिनपर दुनिया में पर्दा पड़ा रह गया था। उस वक़्त अपने अअमाल की सज़ा भुगतने से उसे कोई न बचा सकेगा। ख़ातिमे पर बताया गया कि कुफ़र समझ रहे हैं कि अपनी चालों से कुरआन वालों को ज़क़ दे देंगे। मगर उन्हें ख़बर भी नहीं है कि अल्लाह भी तदबीर में लगा हुआ है और उसकी तदबीर के आगे काफ़िरों की चालें धरी की धरी रह जाएंगी।

सूरए अल-अअला में फ़रमाया गया कि अल्लाह के हर काम में एक तरतीब और तदरीज है जो तमामतर उसकी हिकमत पर मवनी है। जिस तरह ज़मीन की हरियाली धीरे धीरे घनी और हरी भरी होता है उसी तरह अल्लाह की यह नेमत कुरआन भी आप पर दर्जा ब दर्जा नाज़िल होगी, याद कराई जाएगी और आप इसके एक हर्फ़ को भी न भूलेंगे। इसी तरह पेश आने वाली मुश्किलात के अन्दर से भी वही आहिस्ता आहिस्ता राह निकालेगा। फिर बताया कि तबलीग़ का तरीक़ा है कि जो नसीहत सुनने और कुबूल करने को तैयार हो उसे नसीहत की जाए और जो इसके लिये तैयार न हो उसके पीछे न पड़ा जाए। लोगों का सारी फ़िक्र इस दुनिया के आराम की है हालांकि अरल फ़िक्र आख़िरत के अंजाम की होनी चाहिये थी। क्योंकि दुनिया तो फ़ानी है और आख़िरत बाक़ी है। जिसकी नेमतें दुनिया से कहीं ज़ियादा बेहतर और बढ़कर हैं।

सूरए शाशियह में कहा गया तुम्हें उस वक़्त की भी कुछ ख़बर है जब सारे आलम पर छ जाने वाली एक आफ़त नाज़िल होगी। उस वक़्त इन्सानों का एक ग़िरोह जहन्नम में जाएगा और दूसरा बलन्द जन्नतों में। ये इन्कार करने वाले अपनी आँखों के सामने की चीज़ पर भी ग़ौर नहीं करते। ये ऊंट जिनके बिना सहारा में उनकी ज़िंदगी मुमकिन नहीं, ये आसमान, ज़मीन, पहाड़ क्या किसी बनाने वाले के लगे बन गए। और जो अल्लाह इन्हें बनाने पर क़ादर है वह क़यामत लाने, इन्सानों को दोबारा पैदा करने और जज़ा और सज़ा देने पर क्यों क़ादिर नहीं।

ऐ नबी, ये लोग नहीं मानते तो न मानें। आप इनपर दोरोगा बनाकर नहीं भेजे गए कि ज़बरदस्ती मनवाकर छोड़ें। आपका काम तो नसीहत करना है सो आप नसीहत किये जाइये। आख़िरकार इन्हें आना तो हमारे ही पास है। उस वक़्त हम इनसे पूरा पूरा हिसाब लेंगे।

सूरए अल-फ़ज्र में फ़रमाया गया सुबह से रात तक का सारा निज़ाम गवाह है कि अल्लाह का कोई काम बेमक़सद और मसलहत से ख़ाली नहीं। तो फिर इन्सान की पैदाइश बे मक़सद कैसे। इन्सान की तारीख़ में आद, समूद और फिरऔन जो इन्जीनियरिंग के कमालात और फ़ौजों के मालिक थे, जब उन्होंने सरकशी की और हद से ज़ियादा फ़साद फैलाया तो अल्लाह ने अज़ाब का कोड़ा उनपर बरसा दिया। हकीक़त यह है कि तुम्हारा ख़ब सरकशों पर निगाह रखे हुए है। यहाँ हर एक का इम्तिहान हो रहा है। जो न खुद यतीमों और बेकसों का ख़याल करता है और न दूसरों को उनकी ज़रूरतें पूरी करने (के फ़लाही निज़ाम को क़ाइम करने) पर उकसाता है वह एक अज़ाब का शिकार हो गया। इन्सान का हाल

यह है कि जब उसका खुदा उसे आजमाता है तो उसे इज्जत और नेमत देता है तो कहता है कि मेरे सब ने मुझे इज्जतदार बनाया है और जब वह उसे आजमाइश में डालता है और उसकी रोजी तंग करता है तो वह कहता है मेरे सब ने मुझे जलील किया। यह बात हरगिज़ नहीं है। वाक़िआ यह है कि तुम यतीम की इज्जत नहीं करते, मिरकीन को खाना खिलाने पर एक दूसरे को नहीं उकसाते, विरासत का माल अकेले ही खा जाते हो, पैसे की महबूत में गिरफ्तार हो, जब ज़मीन कूट कूट कर रेज़ा कर दी जाएगी, तुम्हारा सब जलवा फ़रमा हांगा, फ़रिश्ते सफ़्र बांधे खड़े होंगे, जहन्नम सामने लाई जाएगी, उस दिन इन्सान की समझ में आ जाएगा मगर अब समझना किस काम का। कहेगा काश अपनी ज़िंदगी में मैंने कुछ नेक कर लिया होता। फिर उस दिन अल्लाह जो अज़ाब देगा वैसा अज़ाब देने वाला कोई नहीं और अल्लाह जैसा बांधेगा वैसा बांधने वाला कोई नहीं और जो फ़रमावशदारी में शामिल रहा उसे कद्रा जाएगा चल अपने सब की तरफ़, अब तू उससे राज़ी और वह तुझ से राज़ी, शामिल हो जा मेरे ख़ास बन्दों में और दाख़िल हो जा मेरी जन्नत में।

सूरए अलक़ की पहली पांच आयतें सब से पहली वही की हैसियत से ग़ारे हिरा में नाज़िल हुई हैं। इनमें अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हुक्म दिया पढ़िये अपने सब के नाम से जो सारे ज़हानों का ख़ालिक है और लोगों को उसका फ़रमान सुना दीजिये कि उसने इन्सान को ख़ून के जमे हुए लोथड़े से पैदा किया और यह फ़ज़ल फ़रमाया कि इल्म सिख़ाने के लिये क़लम के ज़रिये उसकी तालीम का मुसतक़िल इन्तिज़ाम किया और उसको वो बातें बताई जो वह पहले नहीं जानता था।

सूरए क़द्र - क़द्र के दो मानी हैं एक तक्दीर बनाना दूसरे निहायत क़द्र वाली चीज़। वह रात जिसमें क़ुरआन नाज़िल हुआ और जो रमज़ान की ताक़ रातों में से एक रात थी। दोनों मानी पर पूरी उतरी है। इस रात में क़ुरआन को उतार कर इस इन्सानियत की तक्दीर बदलने और इस की बिगड़ी बना देने का फैसला किया गया जो इस ज़मीन पर अपने करतूत से हर जगह ज़लील हो रही थी। ओर इसी लिये यह रात इन्सानी तारीख़ में सबसे ज़ियादा मोहतरम, काबिले क़द्र और क़ीमती रात है कि इसमें इन्सानीयत के लिये आइन्दा दुनिया में तरक्की और बलन्दी और आख़िरत में फ़लाह और कामयाबी का वह सामान उतारा गया जो पिछले एक हज़ार महीनों में भी कभी न उतर सका था इस लिये हर साल इस रात को जिब्रईल अलैहिस्सलाम अपने साथ फ़रिश्तों को लिये दुनिया में उतरते हैं और जो लोग इस रात में जाग कर अल्लाह को याद कर रहे होते हैं उनसे मुसाफ़हा करते और मग़फ़िरत की बशारत देते हैं। सुन्न तक यही चलता रहता है।

सूरए अल-बैय्यिनह में बताया गया कि एहले किताब (यहूदी और ईसाई) और मुश्किन दोनों गठजोड़ करके क़ुरआन को झुटलाने के लिये उठ खड़े हुए हैं। इसकी वजह यह नहीं है कि क़ुरआन के बारे में वो शक में मुज्जिला है, बल्कि इसका अरल सबब उनका तक्बुर और घमन्ड है। लोग तारीख़ के आड़ने में एहले किताब का किरदार देखें तो उनपर यह हकीक़त बाज़ेह हो जाएगी कि उनकी तरह उनके बाप दादा भी अपने ज़माने में पैगम्बरों से मोअजिज़ात तलब करते रहे मगर मोअजिज़ात देख लेने के बावजूद अल्लाह की किताब और उसके दीन का इनकार किया या फिर अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ तीन पांच करते रहे हैं। ईमान लाने का अरल ज़रिया मोअजिज़ात नहीं, खुदा का ख़रीफ़ है जिससे मंहरूम होने के सबब खुदा के हाँ उनका शुमार बदतरीन मख़लूक में है और बेहतरीन मख़लूक वो हैं जो ईमान लाकर नेक अमल करें। उनकी जज़ा जन्नत है और अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी।

सूरए ज़िलज़ाल में बताया गया कि वह दिन ज़रूर आने वाला है जब इन्सान की हर नेकी बदी चाहे वह कितने ही पदों में की गई हो, उसके सामने रख दी जाएगी। तो जिसने ज़र्रा भर नेकी की होगी उसे उस नेकी का भरपूर अज़्र दिया जाएगा और जिसने ज़र्रा भर बदी की होगी, उसे उस बदी की पूरी सज़ा दी जाएगी।

सूरए आदियात में बताया गया कि इन्सान आखिरत से गाफिल होकर कैसी अश्वलाकी पस्ती में गिर जाता है। उसे समझाने के लिये उस आम बद अमनी को पेश किया गया है जिससे सारा मुल्क तंग आया हुआ था। हर तरफ लूटमार का बाज़ार गर्म था। कबीलों पर कबीले छापे मारते थे और कोई शस्त्र भी रात चैन से नहीं गुज़ार सकता था। क्योंकि हर वक्त यह धड़का लगा रहता था कि कब कोई दुश्मन सुन्न सवरे अचानक उनकी बस्ती पर टूट पड़े यह एक ऐसी हालत थी जिसे सारा अरब मेहसूस कर रहा था, मगर कोई इसे ख़त्म करने के बारे में नहीं सोचता था।

सूरए अल-कारिआ में जिस क़यामत से डराया जा रहा है उसका वक्त अगरचे मालूम नहीं लेकिन उसका आना यकीनी है। जिस तरह कोई अचानक आकर दरवाज़े पर दस्तक देता है उस तरह वह भी अचानक आ धमकेगी। उस दिन किसी के पास कोई कुव्वत और जमाअत नहीं होगी। लोग क़दरों से इस तरह सरासीमगी की हालत में निकलेंगे जिस तरह बरसात में पतंगें निकलती हैं।

सूरए तकासुर में लोगों को इस दुनिया परस्ती के अंजाम से ख़बरदार किया गया है जिसकी वजह से वो मरने तक ज़िंदा से ज़िंदा माल दौलत और दुनियावी फ़ाइदे और लज़्ज़तें और जाह व इक्तिदार हासिल करने और उसमें एक दूसरे से बाज़ी ले जाने और इन्हीं चीज़ों के हुसूल पर फ़ख़र करने में लगे रहते हैं।

सूरए अल-अस्न में बताया गया कि ज़िंदगी की असल कीमत क्या है, इन्सान की फ़लाह का रास्ता क्या है और तबाही का रास्ता कौनसा है। ज़माने की कसम इन्सान दर असल बड़े घाटे में है सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अअमाल करते रहे और एक दूसरे को हक़ की नसीहत और सन्न की तलकीन करते रहे। इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि अगर लोग इस सूरत पर ग़ौर करें तो यही उनकी अबदी हिदायत के लिये काफ़ी है। सहाबए क़िराम जब आपस में मिलते तो एक दूसरे को यह सूरत सुनाए बिना अलग न होते।

सूरए अल-हुमज़ा में बताया गया है कि लोगों पर लअन तअन, ऐब जोई माल की हविस और कंज़ूसी दोज़ख़ का ईंधन बनाने का सबब हैं। फ़रमाया तबाही है हर उस शख्स के लिये जो मुंह दर मुंह लोगों पर तअन और पीट पीछे बुराई करने का आदी है। जिसने माल जमा किया और उसे गिन गिन कर रखा।

सूरए अल-फ़ील में अल्लाह तआला ने दीन की मुख़ालिफ़त करने वालों को बताया कि अगर दीन की मुख़ालिफ़त इसी तरह जारी रही तो हाथियों से काबे की हिफ़ाज़त करने वाला अल्लाह तुम्हें भी मज़ा चखा देगा। यानी अवरहा की उस फ़ौजक़शी की तरफ़ तबज्जह दिलाई है जो उसने बैतुल्लाह को ढाने के नापाक इरादे से साठ हज़ार लश्करे ज़रार के साथ मक्के पर की थी।

सूरए अल-कुरैश में अल्लाह ने कुरैश के लोगों पर अपने खुसूसी फ़ज़ल और इनायत का तज़क़िरा किया है कि ख़ानए काबा के मुतवल्ली होने की बिना पर किस तरह बदअमनी के माहौल में भी उनकी जानें और उनकी तिजारतें मेहफूज़ हैं लिहाज़ा उन्हें चाहिये कि वो उन ३६० बातिल मअबूदों के बजाय इस घर के हकीक़ी और वाहिद स्व की इबादत करें। जिसने उन्हें एक ऐसी वादी में जहां अनाज का एक दाना भी नहीं उगता, वाफ़िर मिक्दार में ग़िज़ा फ़राहम की। ओर ऐसे बदअमनी के माहौल में मुक़म्मल अमन और सुकून अता किया।

सूरए अल-माऊन की पहली तीन आयतों में उन काफ़िरों का हाल बयान किया गया है जो खुल्लमखुल्ला आख़िरत को झुटलाते हैं। तुमने देखा उसको जो आख़िरत की जज़ा और सज़ा को झुटलाता है वही तो है जो यतीमों की थक्का देता है और लोगों को मिरकीन को ख़ाना ख़िलाने पर नहीं उकसाता।

सूरए अल-कौसर में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बराहे रास्त खिताब करके बशारत दी है कि अब खैरे कसीर के खजाने यानी बैतुल्लाह को उन बदकिस्दारों से छीन कर आप के सुपुर्द किया जाने वाला है। जब ऐसा हो तो आप अपने ख ही के लिये तमाज़ पढ़ें और उसके लिये कुरबानी दें और मुश्कियों की किसी तरह किसी किस्म के शिर्क से इसे आलूदा न होने दें। साथ ही मुश्कालियों का धमकी दी गई कि उन लोगों को अल्लाह की तरफ से बरकतें और रहमतें मिली थीं। जब यह घर इन से छिन जाएगा तो वो तमाम बरकतों से मेहरूम हो जाएंगे और नतीजे में इनकी जड़ ही कट जाएगी। यह बशारत पूरी हो कर रही।

सूरए अल-काफिरून

इससे पहले की तमाम सूरतों में कुरैश के लीडरों को कौमी और इन्सानी बुनियादों पर खिताब किया गया है वहीं भी ऐ काफिरो कहकर नहीं पुकारा गया है। मगर इस सूरत में साफ़ साफ़ ऐ काफिरो कहकर मुख़ातब किया गया है। इस सूरत में बताया गया है कि कुफ़्र और दीने इन्साम एक दूसरे से बिल्कुल अलग अलग हैं।

सूरए अन-नस्र हज्जतुल बिदाअ के मौके पर मिता में नाज़ल हुई थी और इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपना वह मशहूर खुत्या इरशाद फ़रमाया जिसमें फ़रमाया कि मैं नहीं जानता शायद इसके बाद मैं तुम से मिल सकूँ। ख़बरदार रहो तुम्हारे खून तुम्हारी इज़्ज़तें एक दूसरे पर इसी तरह हराम हैं जिस तरह यह दिन और मक़ाम हराम हैं। इस सूरत का नज़ूल इस बात की अलामत समझा गया कि अब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का आख़िरी वक़्त आ पहुंचा और अब इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह की हम्द और इस्तिफ़ा करें।

सूरए लहब सूरए नस्र में मदद और फ़तह व ग़लबे की बशारत देने के बाद **सूरए लहब** को ख़्वा ताकि मालूम हो जाए कि अल्लाह ने अपने पैग़म्बर को ग़लबा दे दिया और आपके दुश्मन को बरबाद कर दिया और यह पैग़मोई थी जो अबू लहब की ज़िंदगी में की गई। वह अल्लाह के बजाय माल पर बहुत भरोसा करता था और उसने जंगे बद्र में जंग पर जाने के बजाय माल देकर क़ियाए के आदमियों को अपनी तरफ़ से लड़ने भेज दिया था। ऐसे लोग यहां तक आगे बढ़े जाते हैं कि समझने लगते हैं अगर पैसा है तो उसके ज़रिये खुदा की पकड़ से भी मेहफूज़ रहेंगे। इस सूरत में पैसे की बे हकीकती को भी वाज़ह किया है कि वह उसके कुछ काम न आया फिर उसके अअमाल का ज़िक्र किया जो उसने नकी समझकर किये थे कि वो भी उसके कुछ काम न आएंगे बल्कि वह भड़कती आग में जा पड़ेगा और उसकी बीबी ईधन दोती हुई वहीं जाएगी और उसकी गर्दन में आग की तपती हुई रस्सी होगी।

फ़ते मक्का के बाद अक़ीदे की पुरस्ती और साबित क़दमी और इस्तिफ़ामत की तरफ़ तवज्जह दिलाते हुए **सूरए इख़लास** में जो कुछ बयान किया गया उसका मन्शा अल्लाह वहदह ला शरीक पर इस तरह ईमान लाना है कि उसकी ज़ात या सिफ़ात के लाज़मी तकाज़ों में किसी पहलू से भी किसी दूसरे की शिक़त का ख़याल ज़हन में न रहे।

सूरए अल-फलक़ और सूरए अन-नास

अल्लन आख़िरी सूरत इख़लास है मगर तौहीद के ख़जाने की हिफ़ाज़त के लिये ये दो सूरतें अल-फलक़ और अन-नास आख़िर में लगाई गईं। इनमें बन्दों को उन तमाम आफ़तों से अपने ख की पनाह मांगने का हुक्म दिया गया है जो तौहीद के बारे में उसके क़दम डगमगा सकती थीं। शैतान बराबर वहकाने पर लगा हुआ है, बसवसे डाल रहा है और उसकी ज़ुरियत भी तरह तरह से उन्हें वहकाने पर लगी हुई है। मज़हबी लोगों के भेस में भी जो दोनों टोटकों और जन्तर मन्तर के ज़रिये उन्हें अपनी राह पर लगाने हैं। इन दोनों सूरतों में खुद शैतान की बसवसा अन्दाज़ी और उसके एजन्टों की फ़नकारियों से पनाह मांगने की तलकीन की गई है और बताया गया है कि अल्लाह ही पनाह दे सकता है जो तमाम इन्सनों का ख

उत्तका इलाह और अस्ल बादशाह है. फ़रमाया कहिये मैं पनाह मांगता हूँ माहे को फाड़कर अशिया निकालने वाले की हर उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की है और रात की तारीकी के शर से जब वह छा जाए और गांठों में फूंकने वालियों के शर से जब वो हसद करें. कहिये मैं पनाह मांगता हूँ इन्सानों के सब इन्सानों के बादशाह इन्सानों के हक्कीकी मअबूद की बसबसा डालने वाले के शर से जो बार बार पलट कर आता है जो लोगों में बसबसा डालता है चाहे जिन्नों में से हों या इन्सानों में से.



Nafizul Quran